Guru-Granth-Sahib-Punjabi

(Hindi)

राग सूची

भाग पहिला

भाग दूसरा

भाग तीसरा

भाग चौथा

पंजाबी (गुरमुखी)-देवनागरी वर्णमाला

ਅ अ	ਆ आ	ਇ इ	ਈ ई	
ਉ उ	ਊ ऊ	ਰੀ ऋ	ਏ ए	
ਐ ऐ	ਓ ओ	ਔ औ	ਅੰ अं	ਅ: अः
ਕ क	ਖ ख	ਗ ग	ਘ घ	ਙ ङ
ਚ च	ਛ छ	ਜ ज	ਝ झ	ਞ ञ
ਟ ट	ਠ ठ	ਡ ड	ਢ ढ	ਣ ण
ਤ त	ਥ थ	ਦ द	ਧ ध	ਨ न
ਪ प	ਫ फ	ਬ ब	ਭ भ	ਮ म
ਯ य	ਰ र	ਲ ल	ਵ व	ੜ ड़
ਸ਼ श	ਖ਼ ष	ਸ स	ਹ ह	

शब्दार्थ

१. ओंकार – ब्रह्म जिसका वाचक ओम् है।
२. अरदास – प्रार्थना, वंदना।
३. अगम अगोचर – मन वाणी से परे, ईश्वर
४. अमर – हुक्म, कानून
५. आलम – संसार, दुनिया
६. अंतर्यामी – मन की भावना को जानने वाला
७. आदेसु – वंदन, नमस्कार
८. अविनासी – अनश्वर, अटल
६. अछल – छल से रहित
१०. अलख – अदृष्ट
११. अमृत वेला – ब्रह्ममुहूर्त
१२. अष्टपदी – आठ पंक्तियों वाले शब्द
१३. अंगीकार – स्वीकार
१४. एकंकार – अद्वितीय ईश्वर
१५. इआणा – नादान, नासमझ
१६. करम – मेहर, अनुकंपा
१७. कंत – पति-प्रभु
१८. करणैहार – कर्ता परमेश्वर
१६. करता – रचयिता
२०. किलविख – पाप, दोष
२१. कुदरत – ईश्वरीय शक्ति, प्रकृति
२२. कूड़ – झूठ, मिथ्या, नाशवान
२३. कामणि – कामिनी, जीव-स्त्री
२४. खसम – मालिक, पति-प्रभु
२५. खुदा – अल्लाह
२६. गुरु – परमेश्वर
२७. गुरमुख – जिसने गुरु से मंत्र लिया हो, गुरु-आज्ञानुसार चलने वाला।
२८. गुरमति – गुरु की शिक्षा
२६. गुरसिख – गुरु का शिष्य
३०. घाल – साधना, मेहनत, परिश्रम
३१. घरु – ताल अथवा लय, गाने वाले राग की सुर संख्या बताना।
३२. चाकरी – सेवा
३३. छंत – प्रशंसागान
३४. ताड़ी – ध्यान, समाधि
३५. दात – देन, वरदान
३६. दातार – देने वाला
३७. धुर दरगाह – ईश्वर की अदालत
३८. द्विपदे – दो पंक्तियों वाले शब्द
३६. त्रिपदे – तीन पंक्तियों वाले शब्द
४०. चौपदे – चार पंक्तियों वाले शब्द
४१. पंचपदे – पाँच पंक्तियों वाले शब्द
४२. जिंद – जिंदगी, जान, प्राण
४३. हरिजन – ईश्वर का उपासक, भक्त
४४. हउमै – अहंत्व, अभिमान, अहंकार
४५. हुक्म – आदेश, आज्ञा
४६. पउड़ी – गाथा गीत

४७.परमपद – मुक्ति, मोक्ष

४८. परवाणु – मंजूर, स्वीकार

४९.परवरदगार – पालनहार, परमात्मा

५०. पैज – लाज, मान-प्रतिष्ठा

५१.बोहिथ – जहाज

५२.बखसिंद – रहमदिल

५३.ठाकुर – स्वामी

५४.बावा – पुरुष के लिए आदरसूचक शब्द

५५.विसरत – भुलाना, विस्मृत

५६.भाणा – रज़ा, इच्छा, मर्जी

५७.भगत – प्रभु की भक्ति करने वाला

५८. भरवासा – भरोसा, विश्वास

५९.भउजल – संसार-सागर

६०.भक्तवत्सल – भक्तों से प्रेम करने वाला

६१. मति – शिक्षा, सीख, उपदेश

६२. मनमुख – स्वेच्छाचारी

६३. नदरि – करुणा-दृष्टि, कृपा-दृष्टि

६४.निगुरा – गुरु-विहीन

६५.निरंजन – मायातीत, प्रभु

६६. सतिगुरु – सच्चा गुरु, परमेश्वर

६७.साकत – शाक्त, मतावलंबी

६८.सचिआर – सत्यवादी, सत्यशील

६९. सहु – पति प्रभु

७०.सिमरन – आराधना, वंदन

७१.सतसंगति – सत्संग, साधु-संतों की संगति

७२.सिक्ख – शिष्य, शार्गिद

७३.सबद – शब्द, ब्रह्म, नाम

७४. सिफत – प्रशंसा, स्तुति

७५.सिरंदा – रचयिता

७६.साहिब – मालिक, परमेश्वर

७७.हरि – ईश्वर

७८. सवैये – कविता का एक रूप

७९.सोलहे – सोलह पंक्तियों वाले शब्द

८०. भाई – भ्राता एवं सिक्ख धर्म का प्रचारक

८१.भजु – भजन

८२.रहाउ – रुको, दुबारा चिंतन करो

८३. राखनहार – संरक्षक

८४. रसना – जीभ, जिह्वा

८५. लाव – विवाह का फेरा

८६. वडिआई – बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा

८७. विधाता – परमेश्वर

८८. वडभागी – भाग्यवान, भाग्यशाली,

८९. बेपरवाह – सर्वाधिकार सम्पन्न

९०. वार – काव्य रूप, जिससे स्तुतिगान करना

९१. श्लोक – काव्य रचना।

☆☆☆

१ओं सतिगुर प्रसादि॥

ततकरा शबदों का

भगत बेणी जीउ

रविदास जीउ

रागु माझ

महला ४

महला ५

असटपदीआ महला १

महला ३

महला ४

महला ५

बारह माहा मांझ महला ५

माझ महला ५ दिन रैणि

वार माझ की महला १

रागु गउड़ी

महला १

महला ३

महला ४

महला ५

महला ९

असटपदीआ महला १

महला ३ असटपदीआ

महला ४ करहले

महला ५ असटपदीआ

छंत महला १

छंत महला ३

छंत महला ५

बावन अखरी महला ५

असटपदीआ सुखमनी म: ५

थिती गउड़ी महला ५

गउड़ी की वार महला ४

गउड़ी की वार महला ५

स्री कबीर जीउ

बावन अखरी

थिती

वार

नामदेव जीउ की

रविदास जीउ

☆☆☆

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ततकरा रागों का

भाग पहिला

अंग १ से ३४६ तक

मूलपाठ एवं हिन्दी अनुवाद

मूल मंत्र

ੴ

ਸਤਿਨਾਮੁਕਰਤਾਪੁਰਖੁਨਿਰ

ਭਉਨਿਰਵੈਰੁਅਕਾਲਮੂਰ

ਤਿਅਜੂਨੀਸੈਭੰਗੁਰਪ੍ਰਸਾ

ਦਿ ॥ਜਪੁ॥

श्री गुरु अर्जुन देव जी के निशान साहिब करतारपुरी बीड़ साहिब में से।

आदि
श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

१ ओं – इस शब्द का शुद्ध उच्चारण है – 'एक ओंकार'। इसके उच्चारण में इसके तीन अंश किए जाते हैं। इन तीनों के भावार्थ भी अलग-अलग ही हैं।

१ – एक (अद्वितीय)।

ओं – वही।

ओंकार (⌒) निरंकार ; अर्थात्–ब्रह्म, करतार, ईश्वर, परमात्मा, भगवान, वाहिगुरु।

१ ओं – निरंकार वही एक है।

सति नामु – उसका नाम सत्य है।

करता – वह सृष्टि व उसके जीवों को रचने वाला है।

पुरखु – वह यह सब कुछ करने में परिपूर्ण (शक्तिवान) है।

निरभउ – उसमें किसी तरह का भय व्याप्त नहीं। अर्थात् – अन्य देव-दैत्यों तथा सांसारिक जीवों की भाँति उसमें द्वेष अथवा जन्म-मरण का भय नहीं है ; वह इन सबसे परे है।

निरवैरु– वह वैर से रहित है।

अकाल– वह काल (मृत्यु) से परे है; अर्थात्–वह अविनाशी है।

मूरति – वह अविनाशी होने के कारण उसका अस्तित्व सदैव रहता है।

अजूनी – वह कोई योनि धारण नहीं करता, क्योंकि वह आवागमन के चक्कर से रहित है।

सैभं – वह स्वयं से प्रकाशमान हुआ है।

गुर – अंधकार (अज्ञान) में प्रकाश (ज्ञान) करने वाला (गुरु)।

प्रसादि– कृपा की बख्शिश। अर्थात्–गुरु की कृपा से यह सब उपलब्ध हो सकता है।

आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के इस प्रथम महावाक्य में सिख मत के आदि गुरु, श्री गुरु नानक देव जी ने निरंकार के स्वरूप को कथन किया है। इस महावाक्य को सिख धर्म का मूल-मन्त्र माना गया है। यही मूल-मन्त्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी व जपु जी साहिब जी का मंगलाचरण भी है। इसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अंकित प्रत्येक राग के पूर्व दोहराया गया है और कई स्थानों पर इसे संक्षिप्त रूप में '१ ओं सतिगुर प्रसादि' दिया गया है। इस मूल-मन्त्र के पश्चात् ही प्रथम पिता, आरम्भिक ज्योति श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की गई वाणी 'जपु जी साहिब' प्रारम्भ होती है।

॥ जपु ॥

जाप करो।

(इसे गुरु की वाणी का शीर्षक भी माना गया है।)

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ १ ॥

निरंकार (अकाल पुरुष) सृष्टि की रचना से पहले सत्य था, युगों के प्रारम्भ में भी सत्य (स्वरूप) था। अब वर्तमान में भी उसी का अस्तित्व है, श्री गुरु नानक देव जी का कथन है – भविष्य में भी उसी सत्यस्वरूप निरंकार का अस्तित्व होगा॥ १॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ १ ॥

यदि कोई लाख बार शौच (स्नानादि) करता रहे तो भी इस शरीर के बाहरी स्नान से मन की पवित्रता नहीं हो सकती। मन की पवित्रता के बिना परमेश्वर (वाहिगुरु) के प्रति विचार भी नहीं किया जा सकता। यदि कोई एकाग्रचित्त समाधि लगाकर मुँह से चुप्पी धारण कर ले तो भी मन की शांति (चुप) प्राप्त नहीं हो सकती; जब तक कि मन से झूठे विकार नहीं निकल जाते। बेशक कोई जगत् की समस्त पुरियों के पदार्थों को ग्रहण कर ले तो भी पेट से भूखे रह कर (व्रतादि करके) इस मन की तृष्णा रूपी भूख को नहीं मिटा सकता। चाहे किसी के पास हज़ारों–लाखों चतुराई भरे विचार हों लेकिन वे सब अहंयुक्त होने के कारण परमेश्वर तक पहुँचने में कभी सहायक नहीं होते। अब प्रश्न पैदा होता है कि फिर परमात्मा के समक्ष सत्य का प्रकाश पुंज कैसे बना जा सकता है, हमारे और निरंकार के बीच मिथ्या की जो दीवार है वह कैसे टूट सकती है ? सत्य रूप होने का मार्ग बताते हुए श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं – यह सृष्टि के प्रारम्भ से ही लिखा चला आ रहा है कि ईश्वर के आदेश अधीन चलने से ही सांसारिक प्राणी यह सब कर सकता है॥ १॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥ २ ॥

(सृष्टि की रचना में) समस्त शरीर (निरंकार के) आदेश द्वारा ही रचे गए हैं, किन्तु उसके आदेश को मुँह से शब्द निकाल कर ब्यान नहीं किया जा सकता। परमेश्वर के आदेश से (इस धरा पर) अनेकानेक योनियों में जीवों का सृजन होता है, उसी के आदेश से ही मान–सम्मान (अथवा ऊँच – नीच का पद) प्राप्त होता है। परमेश्वर (वाहिगुरु) के आदेश से ही जीव श्रेष्ठ अथवा निम्न जीवन प्राप्त करता है, उसके द्वारा ही लिखे गए आदेश से जीव सुख और दुख की अनुभूति करता है। परमात्मा के आदेश से ही कई जीवों को कृपा मिलती है, कई उसके आदेश से आवागमन के चक्र में फँसे रहते है। उस सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर के अधीन ही सब–कुछ रहता है, उससे बाहर संसार का कोई कार्य नहीं है। हे नानक ! यदि जीव उस अकाल पुरुष के आदेश को प्रसन्नचित्त होकर जान ले तो कोई भी अहंकारमयी 'मैं' के वश में नहीं रहेगा। यही अहंत्व सांसारिक वैभव में लिप्त प्राणी को निरंकार के निकट नहीं होने देता॥ २॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥ ३ ॥

(परमेश्वर की कृपा से ही) जिस किसी के पास आत्मिक शक्ति है, वही उस (सर्वशक्तिमान) की ताकत का यश गायन कर सकता है। कोई उसके द्वारा प्रदत्त बख्शिशों को (उसकी) कृपादृष्टि मानकर ही उसकी कीर्ति का गुणगान कर रहा है। कोई जीव उसके अकथनीय गुणों व महिमा को गा रहा है। कोई उसके विषम विचारों (ज्ञान) का गान विद्या द्वारा कर रहा है। कोई उसका गुणगान रचयिता व संहारक ईश्वर का रूप जानकर करता है। कोई उसका बखान इस प्रकार करता है कि वह परम सत्ता जीवन देकर फिर वापिस ले लेती है। कोई जीव उस निरंकार को स्वयं से दूर जानकर उसका यश गाता है। कोई उसे अपने अंग–संग जानकर उसकी महिमा गाता है। अनेकानेक ने उसकी कीर्ति का कथन किया है किन्तु फिर अन्त नहीं हुआ। करोड़ों जीवों ने उसके गुणों का कथन किया है। फिर भी उसका वास्तविक स्वरूप पाया नहीं जा सका। अकाल पुरुष दाता बनकर जीव को भौतिक पदार्थ (अथक) देता ही जा रहा है, (परंतु) जीव लेते हुए थक जाता है। समस्त जीव युगों–युगों से इन पदार्थों का भोग करते आ रहे हैं। आदेश करने वाले निरंकार की इच्छा से ही (सम्पूर्ण सृष्टि के) मार्ग चल रहे हैं। श्री गुरु नानक देव जी सृष्टि के जीवों को सुचेत करते हुए कहते हैं कि वह निरंकार (वाहिगुरु) चिंता रहित होकर (इस संसार के जीवों पर) सदैव प्रसन्न रहता है॥ ३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुही कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥ ४ ॥

वह अकाल पुरुष (निरंकार) अपने सत्य नाम के साथ स्वयं भी सत्य है, उस (सत्य एवं सत्य नाम वाले) को प्रेम करने वाले ही अनंत कहते हैं। (समस्त देव, दैत्य, मनुष्य तथा पशु इत्यादि) जीव कहते रहते हैं, माँगते रहते हैं, (भौतिक पदार्थ) दे दे करते हैं, वह दाता (परमात्मा) सभी को देता ही रहता है। अब प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि (जैसे अन्य राजा – महाराजाओं के समक्ष कुछ भेंट लेकर जाते हैं वैसे ही) उस परिपूर्ण परमात्मा के समक्ष क्या भेंट ले जाई जाए कि उसका द्वार सरलता से दिखाई दे जाए ? जुबां से उसका गुणगान किस प्रकार का करें कि सुनकर वह अनंत शक्ति (ईश्वर) हमें प्रेम– प्रशाद प्रदान करे ? इनका उत्तर गुरु महाराज स्पष्ट करते हैं कि प्रभात काल (अमृत वेला) में (जिस समय व्यक्ति का मन आम तौर पर सांसारिक उलझनों से विरक्त होता है) उस सत्य नाम वाले अकाल पुरुष का नाम–स्मरण करें और उसकी महिमा का गान करें, तभी उसका प्रेम प्राप्त कर सकते हैं। (इससे यदि उसकी कृपा हो जाए तो) गुरु जी बताते हैं कि कर्म मात्र से जीव को यह शरीर रूपी कपड़ा अर्थात् मानव जन्म प्राप्त होता है, इससे मुक्ति नहीं मिलती, मोक्ष प्राप्त करने के लिए उसकी कृपामयी दृष्टि चाहिए। हे नानक ! इस प्रकार का बोध ग्रहण करो कि वह सत्य स्वरूप निरंकार ही सर्वस्व है इससे मनुष्य की समस्त शंकाएँ मिट जाएँगी॥ ४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥

वह परमात्मा किसी के द्वारा मूर्त्त रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता, न ही उसे बनाया जा सकता है। वह मायातीत होकर स्वयं से ही प्रकाशमान है। जिस मानव ने उस ईश्वर का नाम–स्मरण किया है उसी ने उसके दरबार में सम्मान प्राप्त किया है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि उस गुणों के भण्डार निरंकार की बंदगी करनी चाहिए। उसका गुणगान करते हुए, प्रशंसा सुनते हुए अपने हृदय में उसके प्रति श्रद्धा धारण करें। ऐसा करने से दुखों का नाश होकर घर में सुखों का वास हो जाता है। गुरु के मुँह से निकला हुआ शब्द ही वेदों का ज्ञान है, वही उपदेश रूपी ज्ञान सभी जगह विद्यमान है। गुरु ही शिव, विष्णु, ब्रह्मा और माता पार्वती है, क्योंकि गुरु परम शक्ति हैं। यदि मैं उस सर्गुण स्वरूप परमात्मा के बारे में जानता भी हूँ तो उसे कथन नहीं कर सकता, क्योंकि उसका कथन किया ही नहीं जा सकता। हे सच्चे गुरु ! मुझे सिर्फ यही समझा दो कि समस्त जीवों का जो एकमात्र दाता है मैं कभी भी उसे भूल न पाऊं॥ ५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ६ ॥

तीर्थ–स्नान भी तभी किया जा सकता है यदि ऐसा करना उसे स्वीकार हो, उस अकाल पुरुष की इच्छा के बिना मैं तीर्थ–स्नान करके क्या करूँगा, क्योंकि फिर तो यह सब अर्थहीन ही होगा। उस रचयिता की पैदा की हुई जितनी भी सृष्टि मैं देखता हूँ, उसमें कर्मो के बिना न कोई जीव कुछ प्राप्त करता है और न ही उसे कुछ मिलता है। यदि सच्चे गुरु का मात्र एक ज्ञान ग्रहण कर लिया जाए तो मानव जीव की बुद्धि रत्न, जवाहर व माणिक्य जैसे पदार्थों से परिपूर्ण हो जाए। हे गुरु जी ! मुझे सिर्फ यही बोध करवा दो कि सृष्टि के समस्त प्राणियों को देने वाला निरंकार मुझ से विस्मृत न हो॥ ६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥ ७ ॥

यदि किसी मनुष्य अथवा योगी की योग–साधना करके चार युगों से दस गुणा अधिक, अर्थात्–चालीस युगों की आयु हो जाए। नवखण्डों (पौराणिक धर्म–ग्रन्थों में वर्णित इलावृत, किंपुरुष, भद्र, भारत, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश) में उसकी कीर्ति हो, सभी उसके सम्मान में साथ चलें। संसार में प्रख्यात पुरुष बनकर अपनी शोभा का गान करवाता रहे। यदि अकाल पुरुष की कृपादृष्टि में वह मनुष्य नहीं आया तो किसी ने भी उसकी क्षेम नहीं पूछनी। इतने वैभव तथा मान–सम्मान होने के बावजूद भी ऐसा मनुष्य परमात्मा के समक्ष कीटों मे क्षुद्र कीट अर्थात् अत्यंत

अधम समझा जाता है, दोषयुक्त मनुष्य भी उसे दोषी समझेंगे। गुरु नानक जी का कथन है कि वह असीम-शक्ति निरंकार गुणहीन मनुष्यों को गुण प्रदान करता है और गुणी मनुष्यों को अतिरिक्त गुणवान बनाता है। परंतु ऐसा कोई और दिखाई नहीं देता, जो उस गुणों से परिपूर्ण परमात्मा को कोई गुण प्रदान कर सके॥७॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥

{आगे की चार पउड़ियों में गुरु जी परमात्मा का नाम सुनने के महात्म्य की व्याख्या करते हैं।} गुरु जी का फुरमान है कि परमात्मा का नाम सुनने, अर्थात्-उसकी कीर्ति में अपने हृदय को लगाने के कारण ही सिद्ध, पीर, देव तथा नाथ इत्यादि को परम-पद की प्राप्ति हुई है। नाम सुनने से ही पृथ्वी, उसको धारण करने वाले वृषभ (पौराणिक धर्म ग्रन्थों के अनुसार जो धौला बैल इस भू-लोक को अपने सींगों पर टिकाए हुए है) तथा आकाश के स्थायित्व की शक्ति का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। नाम सुनने से शाल्मलि, क्रौंच, जम्बू, पलक आदि सप्त द्वीप; भूः भवः, स्वः आदि चौदह लोक तथा अतल, वितल, सुतल आदि सातों पातालों की अन्तर्यामता प्राप्त होती है। नाम सुनने वाले को काल स्पर्श भी नहीं कर सकता। हे नानक! प्रभु के भक्त में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है, परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मों का नाश होता है॥ ८॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ६ ॥

परमात्मा का नाम सुनने से ही शिव, ब्रह्मा तथा इन्द्र आदि उत्तम पदवी को प्राप्त कर सके हैं। मंदे लोग यानी कि बुरे कर्म करने वाले मनुष्य भी नाम को श्रवण करने मात्र से प्रशंसा के लायक हो जाते हैं। नाम के साथ जुड़ने से योगादि तथा शरीर के विशुद्ध, मणिपूरक, मूलाधार आदि षट्-चक्र के रहस्य का बोध हो जाता है। नाम सुनने से षट्-शास्त्र, (सांख्य, योग, न्याय आदि), सत्ताईस स्मृतियों (मनु, याज्ञवल्कय स्मृति आदि) तथा चारों वेदों का ज्ञान उपलब्ध होता है। हे नानक! संत जनों के हृदय में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है। परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मों का नाश होता है॥ ६॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ १० ॥

नाम सुनने से मनुष्य को सत्य, संतोष व ज्ञान जैसे मूल धर्मों की प्राप्ति होती है। नाम को सुनने मात्र से समस्त तीर्थों में श्रेष्ठ अठसठ तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है। निरंकार के नाम को सुनने के बाद बार-बार रसना पर लाने वाले मनुष्य को उसके दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। नाम सुनने से परमात्मा में लीनता सरलता से हो जाती है, क्योंकि इससे आत्मिक शुद्धि होकर ज्ञान प्राप्त होता है। हे नानक! प्रभु के भक्तों को सदैव आत्मिक आनंद का प्रकाश रहता है। परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मों का नाश होता है॥ १०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥

नाम सुनने से गुणों के सागर श्री हरि में लीन हुआ जा सकता है। नाम-श्रवण के प्रभाव से ही शेख, पीर और बादशाह अपने पद पर शोभायमान हैं। अज्ञानी मनुष्य प्रभु-भक्ति का मार्ग नाम-श्रवण

करने से ही प्राप्त कर सकते हैं। इस भव–सागर की अथाह गहराई को जान पाना भी नाम–श्रवण की शक्ति से सम्भव हो सकता है। हे नानक! सद्–पुरुषों के अंतर में सदैव आनंद का प्रकाश रहता है। परमात्मा का नाम सुनने से समस्त दुखों व दुष्कर्मों का नाश होता है॥ ११॥

मंने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मंने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १२ ॥

उस अकाल पुरुष का नाम सुनने के पश्चात उसे मानने वाले अर्थात् उसे अपने हृदय में बसाने वाले मनुष्य की अवस्था कथन नहीं की जा सकती। जो भी उसकी अवस्था का बखान करता है तो उसे अंत में पछताना पड़ता है क्योंकि यह सब कर लेना सरल नहीं है, ऐसी कोई रसना नहीं जो नाम से प्राप्त होने वाले आनन्द का रहस्योद्घाटन कर सके। ऐसी अवस्था को यदि लिखा भी जाए तो इसके लिए न कागज़ है, न कलम और न ही लिखने वाला कोई जिज्ञासु, जो वाहिगुरु में लिवलीन होने वाले का विचार कर सकें। परमात्मा का नाम सर्वश्रेष्ठ व मायातीत है। यदि कोई उसे अपने हृदय में बसा कर उसका चिन्तन करे॥ १२॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल भवण की सुधि ॥ मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मंनै जम कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १३ ॥

परमात्मा का नाम सुनकर उसका चिन्तन करने से मन और बुद्धि में उत्तम प्रीति पैदा हो जाती है। चिन्तन करने से सम्पूर्ण सृष्टि का ज्ञान–बोध होता है। चिन्तन करने वाला मनुष्य कभी सांसारिक कष्टों अथवा परलोक में यमों के दण्ड का भोगी नहीं होता। चिन्तनशील मनुष्य अंतकाल में यमों के साथ नरकों में नहीं जाता, बल्कि देवगणों के साथ स्वर्ग–लोक को जाता है। परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है। यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे॥ १३॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥ मंनै मगु न चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १४ ॥

निरंकार के नाम का चिन्तन करने वाले मानव जीव के मार्ग में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आती। चिन्तनशील मनुष्य संसार में शोभा का पात्र होता है। ऐसा व्यक्ति दुविधापूर्ण मार्ग अथवा साम्प्रदायिकता को छोड़ धर्म–पथ पर चलता है। चिन्तनशील का धर्म–कार्यों से सुदृढ़ सम्बन्ध होता है। परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है। यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे॥ १४॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥ मंनै परवारै साधारु ॥ मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥ मंनै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १५ ॥

प्रभु के नाम का चिन्तन करने वाले मनुष्य मोक्ष द्वार को प्राप्त कर लेते हैं। चिन्तन करने वाले अपने समस्त परिजनों को भी उस नाम का आश्रय देते हैं। चिन्तनशील गुरसिख स्वयं तो इस भव–सागर को पार करता ही है तथा अन्य संगियों को भी पार करवा देता है। चिन्तन करने वाला मानव जीव, हे नानक! दर–दर का भिखारी नहीं बनता। परमात्मा का नाम बहुत ही श्रेष्ठ एवं मायातीत है। यदि कोई उसे अपने हृदय में लीन करके उसका चिन्तन करे॥ १५॥

(उपरोक्त चार पउड़ियों में नाम को सुनने के पश्चात उसका चिन्तन करने तथा निदिध्यासनम् की महिमा का वर्णन किया गया है। यदि गौर किया जाए तो यह गुरु–काल से ही परम्परा चली आ

रही है कि पहले गुरु–मंत्र कानों द्वारा जिज्ञासु के अंतर में प्रवेश करता है फिर उस अमृत नाम का निरंतर चिन्तन जिह्वा द्वारा किया जाता है। यही नाम फिर हृदय में सुमिरन का रूप ले लेता है। हृदय से किए जाने वाले सुमिरन से यूं प्रतीत होता है मानो मुँह, रसना, नेत्र तथा शरीर के रोम–रोम में वाहिगुरु विद्यमान है। इस चिन्तन से ही साधक उत्तम पदवी प्राप्त करता है।}

पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिस ते होए लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १६ ॥

{इस पउड़ी में अकाल–पुरुष के नाम का चिन्तन व निदिध्यासन करने वाले गुरुमुख को 'पंच' शब्द से शोभायमान किया गया है, क्योंकि ईश्वर का नाम सुनने, मनन करने, निरन्तर चिन्तन करने, आदेशाधीन चलने तथा मन में प्रीत रखने वाले ये पाँचों सद्‌गुण उस मानव जीव में होंगे।}

जिन्होंने प्रभु–नाम का चिन्तन किया है वे श्रेष्ठ संतजन निरंकार के द्वार पर स्वीकृत होते हैं, वे ही वहाँ पर प्रमुख होते हैं। ऐसे गुरुमुख प्यारे अकाल पुरुष की सभा में सम्मान पाते हैं। ऐसे सद्–पुरुष राज दरबार में शोभावान होते हैं। सद्‌गुणी मानव का ध्यान उस एक सतगुरु (निरंकार) में ही दृढ़ रहता है। यदि कोई व्यक्ति उस सृजनहार के बारे में कहना चाहे अथवा उसकी रचना का लेखा करे तो उस रचयिता की कुदरत का आकलन नहीं किया जा सकता। निरंकार द्वारा रची गई सृष्टि धर्म रूपी वृषभ (धौला बैल) ने अपने ऊपर टिका कर रखी हुई है जो कि दया का पुत्र है (क्योंकि मन में दया–भाव होगा तभी धर्म–कार्य इस मानव जीव से सम्भव होगा।) जिसे संतोष रूपी सूत्र के साथ बांधा हुआ है। यदि कोई परमात्मा के इस रहस्य को जान ले तो वह सत्यनिष्ठ हो सकता है। यदि कोई ईश्वर के इस कौतुक को नहीं मानता तो उसके मन में यही शंका उत्पन्न होगी कि उस शरीर धारी बैल पर इस धरती का कितना बोझ है, वह कितना बोझ उठाने की समर्था रखता है। क्योंकि इस धरती पर सृजनहार ने जो रचना की है वह परे से परे है, अनन्त है। फिर उस बैल का बोझ किस शक्ति पर आश्रित है।

सृजनहार की इस रचना में अनेक जातियों, रंगों तथा अलग–अलग नाम से जाने जाने वाले लोग मौजूद हैं। जिनके मस्तिष्क पर परमात्मा की आज्ञा में चलने वाली कलम से कर्मों का लेखा लिखा गया है। किन्तु यदि कोई जन–साधारण इस कर्म–लेख को लिखने की बात कहे तो वह यह भी नहीं जान पाएगा कि यह लिखा जाने वाला लेखा कितना होगा। लिखने वाले उस परमात्मा में कितनी शक्ति होगी, उसका रूप कितना सुन्दर है। उसकी कितनी दात है, ऐसा कौन है जो उसका सम्पूर्ण अनुमान लगा सकता है। अकाल पुरुष के मात्र एक शब्द से समस्त सृष्टि का प्रसार हुआ है। उस एक शब्द रूपी आदेश से ही सृष्टि में एक से अनेक जीव–जन्तु, तथा अन्य पदार्थों के प्रवाह चल पड़े हैं। इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्था का विचार कर सकूँ। हे अनन्त स्वरूप! मैं तुझ पर एक बार भी कुर्बान होने के लायक नहीं हूँ। जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है। हे निरंकार! हे पारब्रह्म! तू सदा शाश्वत रूप हैं॥ १६॥

असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १७ ॥

इस सृष्टि में असंख्य लोग उस सृजनहार का जाप करते हैं, असंख्य ही उसको प्रीत करने वाले हैं। असंख्य उसकी अर्चना करते हैं, असंख्य तपी तपस्या कर रहे है। असंख्य लोग धार्मिक ग्रंथों व वेदों आदि का मुँह द्वारा पाठ कर रहे हैं। असंख्य ही योग–साधना में लीन रह कर मन को आसक्तियों से मुक्त रखते हैं। असंख्य ऐसे भक्तजन हैं जो उस गुणी निरंकार के गुणों को विचार कर ज्ञान की उपलब्धि करते हैं। असंख्य सत्य को जानने वाले अथवा परमार्थ–पथ पर चलने वाले तथा दानी सज्जन हैं। असंख्य शूरवीर रणभूमि में शत्रु का सामना करते हुए शस्त्रों की मार सहते हैं। असंख्य मानव जीव मौन धारण करके एकाग्रचित होकर उस अकाल–पुरुष में लिवलीन रहते हैं। इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्था का विचार कर सकूँ। हे अनन्त स्वरूप! मैं तुझ पर एक बार भी कुर्बान होने के लायक नहीं हूँ। जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है। हे निरंकार! हे पारब्रह्म! तू सदा शाश्वत रूप हैं॥ १७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर ॥ असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १८ ॥

इस सृष्टि में असंख्य मनुष्य विमूढ़ तथा गहन अज्ञानी हैं। असंख्य चोर तथा अभक्ष्य खाने वाले हैं, जो दूसरों का माल चुरा कर खाते हैं। असंख्य ही ऐसे हैं जो अन्य लोगों पर जब्र–जुल्म से अत्याचार का शासन करके इस संसार को त्याग जाते हैं। असंख्य अधर्मी मनुष्य जो दूसरों का गला काट कर हत्या का पाप कमा रहे हैं। असंख्य ही पापी इस संसार से पाप करते हुए चले जाते हैं। असंख्य ही झूठा स्वभाव रखने वाले मिथ्या वचन बोलते फिरते हैं। असंख्य मानव ऐसे हैं जो मलिन बुद्धि होने के कारण विष्टा का भोजन खाते हैं। असंख्य लोग दूसरों की निन्दा करके अपने सिर पर पाप का बोझ रखते हैं। श्री गुरु नानक देव जी स्वयं को निम्न कहते हुए फुरमाते हैं कि हमने तो कुकर्मी जीवों अर्थात् तामसी व आसुरी सम्पदा वाली सृष्टि का कथन किया है। हे अनन्त स्वरूप! मैं तुझ पर एक बार भी कुर्बान होने के लायक नहीं हूँ। जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है। हे निरंकार! हे पारब्रह्म! तू सदा शाश्वत रूप हैं॥ १८॥

असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १९ ॥

उस सृजनहार की सृष्टि में असंख्य ही नाम तथा असंख्य ही स्थान वाले जीव विचरन कर रहे हैं; अथवा इस सृष्टि में अकाल–पुरुष के अनेकानेक नाम हैं तथा अनेकानेक ही स्थान हैं, जहाँ पर परमात्मा

का वास रहता है। असंख्य ही अकल्पनीय लोक हैं। किन्तु जो मनुष्य उसकी रचना का गणित करते हुए 'असंख्य' शब्द का प्रयोग करते हैं उनके सिर पर भी भार पड़ता है। शब्दों द्वारा ही उस निरंकार के नाम को जपा जा सकता है, शब्दों से ही उसका गुणगान किया जा सकता है। परमात्मा के गुणों का ज्ञान भी शब्दों द्वारा हो सकता है तथा उसकी प्रशंसा भी शब्दों द्वारा ही कही जा सकती है। शब्दों द्वारा ही उसकी वाणी को लिखा व बोला जा सकता है। शब्दों द्वारा मस्तिष्क पर लिखे गए कर्मों को बताया जा सकता है। किन्तु जिस निरंकार ने यह कर्म लेख लिखे हैं उसके मस्तिष्क पर कोई कर्म–लेख नहीं है; अर्थात्–उसके कर्मों को न तो कोई कह सकता है और न उनका हिसाब रख सकता है। अकाल–पुरुष जिस प्रकार मनुष्य के कर्मों के अनुसार आदेश करता है, वैसे ही वह अपने कर्मों को भोगता है। सृजनहार ने इस सृष्टि का जितना प्रसार किया है, वह समस्त नाम–रूप ही है। कोई भी स्थान उसके नाम से रिक्त नहीं है। इसलिए मुझ में इतनी बुद्धि कहाँ कि मैं उस अकथनीय प्रभु की समर्था का विचार कर सकूँ। हे अनन्त स्वरूप! मैं तुझ पर एक बार भी कुर्बान होने के लायक नहीं हूँ। जो तुझे भला लगता है वही कार्य श्रेष्ठ है। हे निरंकार! हे पारब्रह्म! तू सदा शाश्वत रूप है॥ १६॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥

(सतिगुरु जी ने इस पउड़ी में पापयुक्त बुद्धि को पुनः शुद्ध कर लेने का उपाय अकाल–पुरुष के नाम के प्रति श्रद्धा रखना बताया है)

यदि यह शरीर, हाथ–पैर अथवा कोई अन्य अंग मलिन हो जाए तो पानी से धो लेने से उसकी गन्दगी व मिट्टी साफ हो जाती है। यदि कोई वस्त्र पेशाब आदि से अपवित्र हो जाए तो उसे साबुन के साथ धो लिया जाता है। यदि मनुष्य की बुद्धि दुष्कर्मों के करने से मलिन हो जाए तो वह वाहिगुरु के नाम का सिमरन करने से ही पवित्र हो सकती है। पुण्य और पाप मात्र कहने को ही नहीं हैं। अपितु इस संसार में रहकर जैसे–जैसे कर्म किए जाएँगे वही धर्मराज द्वारा भेजे गए चित्र–गुप्त लिख कर ले जाएँगे ; अर्थात् मानव जीव द्वारा इस धरती पर किए जाने वाले प्रत्येक अच्छे व बुरे कर्मों का हिसाब उसके साथ ही जाएगा, जिसके फलानुसार उसे स्वर्ग अथवा नरक की प्राप्ति होगी। सो मनुष्य स्वयं ही कर्म बीज बीजता है और स्वयं ही उसका फल प्राप्त करता है। गुरु नानक का कथन है कि जीव इस संसार में अपने कर्मों का फल भोगने हेतु अकाल–पुरुष के आदेश से आता जाता रहेगा ; अर्थात् जीव के कर्म उसे आवागमन के चक्र में ही रखेंगे, निरंकार जीव के कर्मों के अनुसार ही उसके फल की आज्ञा करेगा॥ २०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥ २१ ॥

तीर्थ–यात्रा, तप–साधना, जीवों पर दया–भाव करके तथा निःस्वार्थ दान देने से ; यदि कोई मनुष्य सम्मान प्राप्त करता है तो वह अति लघु होता है। किन्तु जिन्होंने परमेश्वर के नाम को मन में प्रीत करके सुना व उसका निरन्तर चिन्तन किया है। उन्होंने अपने अंतर के तीर्थ का मानो स्नान कर लिया और अपनी मलिनता को दूर कर लिया। (अर्थात् उस जीव ने अपने हृदय में बसे हुए निरंकार में लीन होकर अपनी अन्तरात्मा की मैल को साफ कर लिया है।) हे सर्गुण स्वरूप! समस्त गुण आप में हैं, मुझ में शुभ–गुण कोई भी नहीं है। सदाचार के गुणों को धारण किए बिना परमेश्वर की भक्ति भी नहीं हो सकती। हे निरंकार! तुम्हारी सदा जय हो, तुम कल्याण स्वरूप हो, ब्रह्म रूप हो। तुम सत्य हो, चेतन्य हो और सदैव आनन्द स्वरूप हो। परमात्मा ने यह सृष्टि जब पैदा की थी तब कौन–सा समय, कौन–सा वक्त, कौन–सी तारीख, तथा कौन–सा दिन था। तब कौन–सी ऋतु, कौन–सा महीना था, जब यह प्रसार हुआ था, यह सब कौन जानता है। सृष्टि के प्रसार का निश्चित समय महा विद्वान, ऋषि–मुनि आदि भी नहीं जान पाए, यदि वे जान पाते तो निश्चय ही उन्होंने वेदों अथवा धर्म–ग्रन्थों में इसका उल्लेख किया होता। इस समय का ज्ञान तो काजियों को भी नहीं हो पाया, यदि उन्हें पता होता तो वे कुरानादि में इसका उल्लेख अवश्य करते। इस सृष्टि की रचना का दिन, वार, ऋतु व महीना आदि कोई योगी भी नहीं जान पाया है। इसके बारे में तो जो इस जगत् का रचयिता है वह स्वयं ही जान सकता है कि इस सृष्टि का प्रसार कब किया गया। मैं किस प्रकार उस अकाल पुरुष के कौतुक को कहूँ, कैसे उसकी प्रशंसा करूँ, किस प्रकार वर्णन करूँ और कैसे उसके भेद को जान सकता हूँ ? सतगुरु जी कहते हैं कि कहने को तो हर कोई एक दूसरे से अधिक बुद्धिमान बनकर उस परमात्मा की श्लाघा को कहता है। किंतु परमेश्वर महान् है, उसका नाम उससे भी महान् है, सृष्टि में जो भी हो रहा है वह सब उसके किए से ही हो रहा है। हे नानक! यदि कोई उसके गुणों को जानने की बात कहता है तो वह परलोक में जाकर शोभा प्राप्त नहीं करता। अर्थात्– यदि कोई जीव उस अभेद निरंकार के गुणात्मक रहस्य को जानने का अभिमान करता है तो उसे इस लोक में तो क्या परलोक में भी सम्मान नहीं मिलता॥ २१॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥ २२ ॥

सतगुरु जी जन–साधारण के मन में सात आकाश व सात पाताल होने के संशय की निवृत्ति करते हुए कहते हैं कि सृष्टि की रचना में पाताल–दर–पाताल लाखों ही हैं तथा आकाश–दर–आकाश भी लाखों ही हैं। वेद–ग्रंथों में भी यही एक बात कही गई है कि ढूंढने वाले इसको अंतरिम छोर तक ढूँढ कर थक गए हैं किंतु इनका अंत किसी ने नहीं पाया है। सभी धर्म ग्रन्थों में अट्ठारह हजार जगत् होने की बात कही गई है परंतु वास्तव में इनका मूल एक ही परमेश्वर है जो कि इनका स्रष्टा है। यदि उसकी सृष्टि का लेखा हो सके तो कोई लिखे, किंतु यह लेखा करने वाला स्वयं नष्ट हो जाता है। हे नानक! जिस सृजनहार को इस सम्पूर्ण जगत् में महान कहा जा रहा है वह स्वयं को स्वयं ही जानता है अथवा जान सकता है॥ २२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥ २३ ॥

स्तुति करने वाले साधकों ने भी उस परमात्मा की स्तुति करके उसकी सीमा को नहीं पाया। जैसे

नदियां–नाले समुद्र में मिलकर उसका अथाह अंत नहीं पा सकते, बल्कि अपना अस्तित्व भी खो लेते हैं, वैसे ही स्तुति करने वाले स्तुति करते–करते उसमें ही लीन हो जाते हैं। समुद्रों की शाह, शहंशाह होकर, पर्वत समान धन–सम्पत्ति के मालिक होकर भी, उस चींटी के समान नहीं हो सकते, यदि उनके मन से परमेश्वर विस्मृत नहीं हुआ होता॥ २३॥

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अंत न पाए जाहि ॥ एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥ २४ ॥

सतिगुरु जी निरंकार के अनंत गुणों, आकार, प्रशंसा तथा उसके द्वारा रची गई सृष्टि के बारे में कथन करते हैं कि उसकी स्तुति करने की कोई सीमा नहीं तथा कहने से भी उसकी प्रशंसा का अन्त नहीं हो सकता। सृजनहार द्वारा रची गई सृष्टि का भी कोई अन्त नहीं परंतु जब वह देता है तब भी उसका कोई अन्त नहीं है। उसके देखने व सुनने का भी अन्त नहीं है, अर्थात्–वह निरंकार सर्वद्रष्टा व सर्वश्रोता है। ईश्वर के ह्रदय का रहस्य क्या है, उसका बोध भी नहीं हो सकता। इस सृष्टि का प्रसार जो उसने किया उसकी अवधि अथवा सीमा को भी नहीं जाना जा सकता। उसके आदि व अन्त को भी नहीं जाना जा सकता। अनेकानेक जीव उसका अन्त पाने के लिए बिलखते फिर रहे हैं। किन्तु उस अथाह, अनन्त अकाल पुरुष का अंत नहीं पाया जा सकता। उसके गुणों का अन्त कहाँ होता है यह कोई नहीं जान सकता। उस पारब्रह्म की प्रशंसा, स्तुति, आकार अथवा गुणों को जितना कहा जाता है वह उतने ही अधिक होते जाते हैं। निरंकार सर्वश्रेष्ठ है, उसका स्थान सर्वोच्च है। किन्तु उस सर्वश्रेष्ठ निरंकार का नाम महानतम है। यदि कोई शक्ति उससे बड़ी अथवा ऊँची है तो वह ही उस सर्वोच्च मालिक को जान सकती है। निरंकार अपना सर्वस्व स्वयं ही जानता है अथवा जान सकता है, अन्य कोई नहीं। सतिगुरु नानक देव जी का कथन है कि वह कृपासागर जीवों पर करुणा करके उनके कर्मों के अनुसार उन्हें समस्त पदार्थ प्रदान करता है॥ २४॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥ २५ ॥

उसके उपकार इतने अधिक हैं कि उनको लिखने की समर्था किसी में भी नहीं। वह अनेक बख्शिशें करने वाला होने के कारण बड़ा है किंतु उसे लोभ तिनका मात्र भी नहीं है। कई अनगिणत शूरवीर उसकी कृपा–दृष्टि की चाहना रखते हैं। उनकी संख्या की तो बात ही नहीं हो सकती। कई मानव निरंकार द्वारा प्रदत्त पदार्थों को विकारों हेतु भोगने के लिए जूझ–जूझ कर मर जाते हैं। कई अकाल पुरुष द्वारा दिए जाने वाले पदार्थों को लेकर मुकर जाते हैं। कई मूढ़ व्यक्ति परमात्मा से पदार्थ ले लेकर खाते रहते हैं, कभी उसे स्मरण नहीं करते। कईयों को दुख व भूख की मार सदैव पड़ती रहती है, क्योंकि यह उनके कर्मों में ही लिखा होता है। किन्तु ऐसे सज्जन ऐसी मार को उस परमात्मा की बख्शिश ही मानते हैं। इन्हीं कष्टों के कारण ही मानव जीव को वाहिगुरु का स्मरण होता है। मनुष्य

को माया–मोह के बंधन से छुटकारा भी ईश्वर की आज्ञा में रहने से ही मिलता है। इसके लिए कोई अन्य विधि हो, कोई भी नहीं कह सकता; अर्थात्–ईश्वर की आज्ञा में रहने के अतिरिक्त माया के मोह–बंधन से छुटकारा पाने की कोई अन्य विधि कोई नहीं बता सकता। यदि अज्ञानतावश कोई व्यक्ति इसके बारे में कथन करने की चेष्टा करे तो फिर उसे ही मालूम पड़ेगा कि उसे अपने मुँह पर यमों आदि की कितनी चोटें खानी पड़ी हैं। संसार में सभी जीव कृतघ्न ही नहीं है, कई व्यक्ति ऐसे भी हैं जो इस बात को मानते हैं कि परमात्मा संसार के समस्त प्राणियों की जरूरतों को जानता है और उन्हें स्वयं ही प्रदान भी करता है। परमात्मा प्रसन्न होकर जिस व्यक्ति को अपनी स्तुति को गाने की शक्ति प्रदान करता है। हे नानक ! वह बादशाहों का भी बादशाह हो जाता है ; अर्थात्–उसे ऊँचा व उत्तम पद प्राप्त हो जाता है॥ २५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥ २६ ॥

निरंकार के जिन गुणों को कथन नहीं किया जा सकता वे अमूल्य हैं, और इस निरंकार का सुमिरन अमूल्य व्यापार है। यह सुमिरन रूपी व्यापार का मार्गदर्शन करने वाले संत भी अमूल्य व्यापारी हैं और उन संतों के पास जो सद्‌गुणों का भण्डार है वह भी अमूल्य है। जो व्यक्ति इन संतों के पास प्रभु–मिलाप हेतु आते हैं वे भी अमूल्य हैं और इनसे जो गुण ले जाते हैं वे भी अमूल्य हैं। परस्पर गुरु–सिख का प्रेम अमूल्य है, गुरु के प्रेम से आत्मा को प्राप्त होने वाला आनंद भी अमूल्य है। अकाल–पुरुष का न्याय भी अमूल्य है, उसका न्यायालय भी अमूल्य है। अकाल पुरुष की न्याय करने वाली तुला अमूल्य है, और जीवों के अच्छे–बुरे कर्मों को तोलने हेतु परिमाण (तौल) भी अमूल्य है। अकाल पुरुष द्वारा प्रदान किए जाने वाले पदार्थ भी अमूल्य हैं और उन पदार्थों का चिन्ह भी अमूल्य है। निरंकार की जीव पर होने वाली कृपा भी अमूल्य है तथा उसका आदेश भी अमूल्य है। वह परमात्मा अति अमूल्य है उसका कथन घनिष्ठता से कर पाना असम्भव है। परंतु फिर भी अनेक भक्त जन उसके गुणों का व्याख्यान करके अर्थात् उसकी स्तुति कर–करके भूत, भविष्य व वर्तमान काल में उसमें लिवलीन हो रहे हैं। चारों वेद व अट्ठारह पुराणों में भी उसकी महिमा कही गई है। उनको पढ़ने वाले भी अकाल–पुरुष का व्याख्यान करते हैं। सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा व स्वर्गाधिपति इन्द्र भी उसके अमूल्य गुणों को कथन करते हैं। गिरिधर गोपाल कृष्ण तथा उसकी गोपियाँ भी उस निरंकार का गुणगान करती हैं। महादेव तथा गोरखादि सिद्ध भी उसकी कीर्ति को कहते हैं। उस सृष्टिकर्त्ता ने इस जगत् में जितने भी बुद्धिमान किए हैं वे भी उसके यश को कहते हैं। समस्त दैत्य व देवतादि भी उसकी महिमा को कहते हैं। संसार के सभी पुण्य–कर्मी मानव, नारदादि ऋषि–मुनि तथा अन्य भक्त जन उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं। कितने ही जीव वर्तमान में कह रहे हैं, तथा कितने ही भविष्य में कहने का यत्न करेंगे।

कितने ही जीव भूतकाल में कहते हुए अपना जीवन समाप्त कर चुके हैं। इतने तो हम गिन चुके हैं यदि इतने ही और भी साथ मिला लिए जाएँ तो भी कोई किसी साधन से उसकी अमूल्य स्तुति कह नहीं सकता। जितना स्व–विस्तार चाहता है उतना ही विस्तृत हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि वह सत्य स्वरूप निरंकार ही अपने अमूल्य गुणों को जानता है। यदि कोई निरर्थक बोलने वाला परमेश्वर का अंत कहे कि वह इतना है तो उसे महामूर्खों में अंकित किया जाता है॥ २६॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे॥ गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ २७ ॥

{इस पउड़ी की प्रथम पंक्ति में उस प्रतिपालक निरंकार के घर–द्वार के बारे में प्रश्न पैदा हो गया, जिसकी निवृत्ति सतिगुरु जी तुरंत ही अगली पंक्तियों में करते हैं।}

उस प्रतिपालक ईश्वर का द्वार तथा घर कैसा है, जहाँ बैठकर वह सम्पूर्ण सृष्टि को सम्भाल रहा है ? (यहाँ पर सतिगुरु जी इस प्रश्न की निवृत्ति में उत्तर देते हैं) हे मानव ! उसके द्वार पर नाना प्रकार के असंख्य वादन गूंज रहे हैं और कितने ही उनको बजाने वाले विद्यमान हैं। कितने ही राग हैं जो रागिनियों के संग वहाँ गान किए जा रहे हैं और उन रागों को गाने वाले गंधर्वादि रागी भी कितने ही हैं। उस निरंकार का यश पवन, जल तथा अग्नि देव गा रहे हैं तथा समस्त जीवों के कर्मों का विश्लेषक धर्मराज भी उसके द्वार पर खड़ा उसकी महिमा को गाता है। जीवों द्वारा किए जाने वाले कर्मों को लिखने वाले चित्र–गुप्त भी उस अकाल–पुरुष का यशोगान करते हैं तथा धर्मराज चित्रगुप्त द्वारा लिखे जाने वाले शुभाशुभ कर्मों का विचार करता है। परमात्मा द्वारा प्रतिपादित शिव, ब्रह्मा व उनकी देवियाँ (शक्ति) जो शोभायमान हैं, सदैव उसका स्तुति–गान करते हैं। हे निरंकार ! समस्त देवताओं व स्वर्ग का अधिपति इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठा अन्य देवताओं के साथ मिलकर तुम्हारे द्वार पर खड़ा तुम्हारा यश गा रहे हैं। सिद्ध लोग समाधियों में स्थित हुए तुम्हारा यश गाते हैं, जो विचारवान साधु हैं वे विवेक से यशोगान करते हैं। तुम्हारा स्तुतिगान यति, सती और संतोषी व्यक्ति भी गाते हैं तथा पराक्रमी योद्धा भी तुम्हारी महिमा का गान करते हैं। संसार के समस्त विद्वान व महान् जितेन्द्रिय ऋषि–मुनि युगों–युगों से वेदों को पढ़–पढ़ कर उस अकाल पुरुष का यशोगान कर रहे हैं। मन को मोह लेने वाली समस्त सुन्दर स्त्रियाँ स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक व पाताल लोक में तुम्हारा गुणगान कर रही हैं। निरंकार द्वारा उत्पन्न किए हुए चौदह रत्न, संसार के अठसठ तीर्थ तथा उन में विद्यमान संत जन (श्रेष्ठ जन) भी उसके यश को गाते हैं। सभी योद्धा, महाबली, शूरवीर अकाल पुरुष

का यश गाते हैं, उत्पत्ति के चारों स्रोत (अण्डज, जरायुज, स्वेदज व उद्भिज्ज) भी उसके गुणों को गाते हैं। नवखण्ड, मण्डल व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, जो उस सृजनहार ने बना-बना कर धारण कर रखे हैं, वे सभी तेरी स्तुति गाते हैं। वास्तव में वे ही तेरी कीर्ति को गा सकते हैं जो तेरी भक्ति में लीन हैं, तेरे नाम के रसिया हैं, और जो तुझे अच्छे लगते हैं। अनेकानेक और भी कई ऐसे जीव मुझे स्मरण नहीं हो रहे हैं, जो तुम्हारा यशोगान करते हैं, हे नानक! मैं कहाँ तक उनका विचार करूँ; अर्थात् यशोगान करने वाले जीवों की गणना मैं कहाँ तक करूँ। वह सत्यस्वरूप अकाल पुरुष भूतकाल में था, वही सद्गुणी निरंकार वर्तमान में भी है। वह भविष्य में सदैव रहेगा, वह सृजनहार परमात्मा न जन्म लेता है और न ही उसका नाश होता है। जिस सृष्टि रचयिता ईश्वर ने रंग-बिरंगी, तरह-तरह के आकार वाली व अनेकानेक जीवों की उत्पत्ति अपनी माया द्वारा की है। अपनी इस उत्पत्ति को कर-करके वह अपनी रुचि अनुसार ही देखता है अर्थात् उनकी देखभाल अपनी इच्छानुसार ही करता है। जो भी उस अकाल पुरुष को भला लगता है वही कार्य वह करता है और भविष्य में करेगा, इसके प्रति उसको आदेश करने वाला उसके समान कोई नहीं है। गुरु नानक जी का फुरमान है कि हे मानव! वह ईश्वर शाहों का शाह अर्थात् शहंशाह है, उसकी आज्ञा में रहना ही उचित है॥ २७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २८ ॥

{अग्रिम चार पउड़ियों में गुरु जी ने सिद्धों द्वारा मुद्राएँ, चोली व गुदड़ी आदि धारण किए हुए भेष के यथार्थ को बताते हुए सांसारिक योगी मानव को वास्तविक धर्म के प्रति सुचेत किया है।}

गुरु जी कहते हैं कि हे मानव योगी! तुम संतोष रूपी मुद्राएँ, दुष्कर्मों से लाज रूपी पात्र, पाप रहित होकर लोक-परलोक में बनाई जाने वाली प्रतिष्ठा रूपी चोली ग्रहण कर तथा शरीर को प्रभु की नाम-सिमरन रूपी विभूति लगाकर रख। मृत्यु का स्मरण करना तेरी गुदड़ी है, शरीर का पवित्र रहना योग की युक्ति है, अकाल पुरुष पर दृढ़ विश्वास तुम्हारा डण्डा है। इन सब सदाचारों को ग्रहण करना ही वास्तविक योगी भेष है। (आई पंथ-यह नाथ पंथी सम्प्रदाय की बारह शाखाओं में से नौवीं शाखा मानी जाती है। इस पंथ के योगियों के नाम में अंतिम अक्षर ई होने से यह पंथ 'आई पंथ' प्रचलित हो गया ; जैसे बाल गुंदाई नाथ, सुरजाई नाथ, करकाई नाथ आदि। यह पंथ योगियों में श्रेष्ठ भी माना जाता है।) संसार के समस्त जीवों में तुम्हारा प्रेम हो अर्थात् उनके दुख-सुख को तुम अपना दुख-सुख अनुभव करो, यही तुम्हारा आई पंथ है। कामादिक विकारों से मन को जीत लेना जगत् पर विजय प्राप्त कर लेने के समान है। संसार को किसी अन्य युक्ति अथवा भेष धारण कर लेने से नहीं जीता जा सकता। नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है। जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ २८॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ २९ ॥

{योगियों द्वारा किए जाने वाले भण्डारे में जो उनका चूरमे का भोजन होता है उसकी चर्चा में गुरु जी कहते हैं कि}

हे मानव! निरंकार की सर्व-व्यापकता के ज्ञान का भण्डार होना तुम्हारा भोजन है, तुम्हारे हृदय

की दया भण्डारिन होगी, क्योंकि दया–भाव रखने से ही सद्‌गुणों की प्राप्ति होती है। घट–घट में जो चेतन सत्ता प्रकट हो रही है वह नाद बजने के समान है। जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को एक सूत्र में बांध रखा है, वही सृजनहार परमात्मा नाथ है, सभी ऋद्धियाँ–सिद्धियाँ अन्य प्रकार का स्वाद हैं। संयोग व वियोग रूपी नियम दोनों मिलकर इस सृष्टि का कार्य चला रहे हैं, कर्मानुसार ही जीवों को अपने–अपने भाग्य की प्राप्ति होती है। नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है। जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ २६॥

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३० ॥

[अब गुरु जी संसार की उत्पत्ति के बारे में विस्तारपूर्वक कथन करते हैं कि]

एक ब्रह्म की किसी रहस्यमयी युक्ति द्वारा माया की प्रसूति से तीन पुत्र पैदा हुए। इन में से एक ब्रह्मा सृष्टि रचयिता, एक विष्णु संसार का पोषक, और एक शिव संहारक के रूप में दरबार लगाकर बैठ गया। जिस तरह उस अकाल पुरुष को भला लगता है उसी तरह वह इन तीनों को चलाता है और जैसा उसका आदेश होता है वैसा ही कार्य ये देव करते हैं। वह अकाल पुरुष तो इन तीनों को आदि व अन्त समय में देख रहा है किंतु इनको वह अदृश्य स्वरूप निरंकार नज़र नहीं आता, यह अत्याश्चर्यजनक बात है। नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है। जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ ३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥ जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ ३१ ॥

[अब प्रश्न पैदा हुआ कि उस परमात्मा रूपी नाथ का आसन कहाँ है? इसके उत्तर में गुरु जी कहते हैं कि]

उसका आसन प्रत्येक लोक में है तथा प्रत्येक लोक में उसका भण्डार है। उस परमात्मा ने सभी भण्डारों को एक ही बार परिपूर्ण कर दिया है। वह सृजनहार रचना कर करके सृष्टि को देख रहा है। हे नानक! उस सत्यस्वरूप निरंकार की सम्पूर्ण रचना भी सत्य है। नमस्कार है, सिर्फ उस सर्गुण स्वरूप निरंकार को नमस्कार है। जो सभी का मूल, रंग रहित, पवित्र स्वरूप, आदि रहित, अनश्वर व अपरिवर्तनीय स्वरूप है॥ ३१॥

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥ ३२ ॥

[ऐसे स्वामी के दर्शन अथवा प्राप्ति हेतु गुरु जी स्पष्ट करते हैं कि]

एक जिह्वा से लाख जिह्वा हो जाएँ, फिर लाख से बीस लाख हो जाएँ। फिर एक–एक जिह्वा से लाख–लाख बार उस जगदीश्वर का एक नाम उच्चारण करें, अर्थात् निशदिन उस प्रभु का नाम सिमरन किया जाए। इस मार्ग से पति–परमेश्वर को मिलने हेतु बनी नाम रूपी सीढ़ियों पर चढ़ कर ही उस अद्वितीय प्रभु से मिलन हो सकता है। वैसे तो ब्रह्म–ज्ञानियों की बड़ी–बड़ी बातें सुनकर

निकृष्ट जीव भी देहाभिमान में अनुकरण करने की इच्छा रखते हैं। परंतु गुरु नानक जी कहते हैं कि उस परमात्मा की प्राप्ति तो उसकी कृपा से ही होती है, वरन् ये तो मिथ्या लोगों की मिथ्या ही बातें हैं॥ ३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥ ३३ ॥

अकाल पुरुष की कृपा–दृष्टि के बिना इस जीव में कुछ भी कहने व चुप रहने की शक्ति नहीं है अर्थात् रसना को चला पाना जीव के वश में नहीं है। माँगने की भी इसमें ताकत नहीं है और न ही कुछ देने की समर्था है। यदि जीव चाहे कि मैं जीवित रहूँ तो भी इसमें बल नहीं है, क्योंकि कई बार मनुष्य उपचाराधीन ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, मरना भी उसके वश में नहीं है। धन, सम्पत्ति व वैभव प्राप्त करने में भी इस जीव का कोई बल है, जिन के लिए मन में जो जुनून होता है। श्रुति वेदों के ज्ञान का विचार करने का भी इसमें बल नहीं है। संसार से मुक्त होने की षट्–शास्त्रों में दी गई युक्तियाँ धारण कर लेने की शक्ति भी इसमें नहीं है। जिस अकाल पुरुष के हाथ में ताकत है वही रचना करके देख रहा है। गुरु नानक जी कहते हैं कि फिर तो यही जानना चाहिए कि इस संसार में न कोई स्वेच्छा से नीच है, न उत्तम है, वह प्रभु जिस को कर्मानुसार जैसा रखता है वैसा ही वह रहता है॥ ३३॥

राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ तिन के नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइ ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥ ३४ ॥

[आगे की पउड़ियों में गुरु नानक देव जी कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड व ज्ञान काण्ड का वर्णन करते हुए आत्मा के परमात्मा से मिलन हेतु धर्म खण्ड से चल कर सचखण्ड तक का पथ पार करने की विधि बताते हैं कि किस प्रकार जीवात्मा नाम सिमरन का आश्रय लेकर परमात्मा तक पहुँच पाती है।]

रात्रियों, ऋतुओं, तिथियों, सप्ताह के वारों, वायु, जल, अग्नि व पाताल आदि यावत प्रपंच हैं। स्रष्टा प्रभु ने उस में पृथ्वी रूपी धर्मशाला स्थापित करके रखी हुई है, इसी को कर्मभूमि कहते हैं। उस धर्मशाला में नाना प्रकार के जीव हैं, जिनकी अनेक भाँति की धर्म–कर्म की उपासना की युक्ति है और उनके श्वेत–श्यामादि अनेक प्रकार के वर्ण हैं। उनके अनेक प्रकार के अनंत नाम हैं। संसार में विचरन कर रहे उन अनेकानेक जीवों को अपने शुभाशुभ कर्मों के अनुसार ही उन पर विचार किया जाता है। विचार करने वाला वह निरंकार स्वयं भी सत्य है और उसका दरबार भी सत्य है। जो प्रामाणिक संत हैं, जिनके माथे पर कृपालु परमात्मा की कृपा का चिन्ह अंकित होता है। वही उसके दरबार में शोभायमान होते हैं। प्रभु के दरबार में कच्चे–पक्के होने का परीक्षण होता है। हे नानक! इस तथ्य का निर्णय वहाँ जाकर ही होता है॥ ३४॥

धरम खंड का एहो धरमु ॥ गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥ ३५ ॥

(कर्मकाण्ड में) धर्मखण्ड का यही नियम है; जो पूर्व पंक्तियों में कथन किया गया है। (गुरु नानक जी) अब ज्ञान खण्ड का व्यवहार वर्णन करते हैं। (इस संसार में) कितने प्रकार के पवन, जल, अग्नि हैं, और कितने ही रूप कृष्ण व रुद्र (शिव) के हैं। कितने ही ब्रह्मा इस सृष्टि में अनेकानेक रूप–रंगों के भेष में जीव पैदा करते हैं। कितनी ही कर्म भूमियाँ, सुमेर पर्वत, ध्रुव भक्त व उनके उपदेष्टा हैं। इन्द्र व चंद्रमा भी कितने हैं, कितने ही सूर्य, कितने ही मण्डल व मण्डलांतर्गत देश हैं। कितने ही सिद्ध, विद्वान व नाथ हैं, कितने ही देवियों के स्वरूप हैं। कितने ही देव, दैत्य व मुनि हैं और रत्नों से भरपूर कितने ही समुद्र हैं। कितने ही उत्पत्ति के स्रोत हैं (अण्डज–जरायुजादि), कितनी प्रकार की वाणी है (परा, पश्यन्ती आदि) कितने ही बादशाह हैं और कितने ही राजा हैं। कितनी ही वेद–श्रुतियाँ हैं, उनके सेवक भी कितने ही हैं, गुरु नानक जी कहते हैं कि उसकी रचना का कोई अन्त नहीं है; इन सबके अन्त का बोध ज्ञान–खण्ड में जाने से होता है, जहाँ पर जीव ज्ञानवान हो जाता है॥ ३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥ ३६ ॥

ज्ञान खण्ड में जो ज्ञान कथन किया है वह प्रबल है। इस खण्ड में रागमयी, प्रसन्नतापूर्ण व कौतुकी आनंद विद्यमान है। (गुरु नानक जी अब उपासना काण्ड व सरम खण्ड का वर्णन करते हैं। इसमें परमेश्वर की भक्ति को प्रमुख माना गया है) परमेश्वर की भक्ति करने का उद्यम करने वाले संतजनों की वाणी मधुर है। वहाँ (सरम खण्ड में) पर अद्वितीय सुन्दरता वाले स्वरूप की गढ़न की जाती है। उनकी बातों का कथन नहीं किया जा सकता। यदि कोई उनकी महिमा कथन करने की चेष्टा करता भी है तो उसे बाद में पछताना पड़ता है। वहाँ पर वेद–श्रुति, ज्ञान, मन और बुद्धि गढ़े जाते हैं। वहाँ पर दिव्य बुद्धि वाले देवों व सिद्ध अवस्था की प्राप्ति वाली सूझ गढ़ी जाती है॥ ३६॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥ ३७ ॥

(गुरु नानक जी अब कर्म खण्ड का वर्णन करते हैं जो कि सचखण्ड का विशेष अंग है। सचखण्ड एक स्वतंत्र खण्ड है। यही समस्त खण्डों–धर्म, ज्ञान, सरम व कर्म को चला रहा है। कर्म खण्ड में आ जाने से जीव पर प्रभु की कृपा हो जाती है जो परमेश्वर के मिलन में सहायक होती है और जीव का सचखण्ड में प्रवेश हो जाता है।)

जिन उपासकों पर परमेश्वर की कृपा हुई उनकी वाणी शक्तिवान हो जाती है। जहाँ पर ये उपासक विद्यमान होते हैं वहाँ पर कोई और नहीं होता। उन उपासकों में देह को जीतने वाले योद्धा, इन्द्रियों को जीतने वाले महाबली तथा मन को जीतने वाले शूरवीर होते हैं। उन में प्रभु राम परिपूर्ण रहते हैं। उन निर्गुण स्वरूप राम के साथ महिमा रूपी सीता चन्द्रमा समान प्रकाशमान व मन को शीतल करने वाली है। ऐसा स्वरूप प्राप्त करने वालों के गुण कथन नहीं किए जा सकते। वे उपासक न तो मरते हैं और न ही ठगे जाते हैं, जिनके हृदय में परमात्मा राम का स्वरूप विद्यमान होता है।

वहाँ कई लोकों के भक्त निवास करते हैं। जिनके हृदय में सत्यस्वरूप निरंकार वास करता है, वे आनंद प्राप्त करते हैं। सत्य धारण करने वालों के हृदय (सचखण्ड) में वह निरंकार निवास करता है; अर्थात् बैकुण्ठ लोक, जहाँ सद्‌गुणी व्यक्तियों का वास है, में वह सर्गुण स्वरूप परमात्मा रहता है। वह सृजनहार परमात्मा अपनी सृजना को रच–रचकर कृपा–दृष्टि से देखता है अर्थात् उसका पोषण करता है। उस सचखण्ड में अनन्त ही खण्ड, मण्डल व ब्रह्माण्ड हैं। यदि कोई उसके अन्त को कथन करे तो अन्त नहीं पा सकता, क्योंकि वह असीम है। वहाँ अनेकानेक लोक विद्यमान हैं और उनमें रहने वालों के अस्तित्व भी अनेक हैं। फिर जिस तरह वह सर्वशक्तिमान परमात्मा आदेश करता है उसी तरह वे कार्य करते हैं। अपने इस रचे हुए प्रपंच को देख कर व शुभाशुभ कर्मों को विचार कर वह प्रसन्न होता है। गुरु नानक जी कहते हैं कि उस निरंकार के मूल–तत्व का जो मैंने उल्लेख किया है उसे कथन करना अत्यंत कठिन है॥ ३७॥

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥ ३८ ॥

[सुनार व उसकी कार्य–विधि के दृष्टांत को मानव के समक्ष रख कर गुरु नानक जी जिज्ञासु जीव को जीवन में सदाचरण को ग्रहण करने की प्रेरणा देते हैं कि]

इन्द्रिय–निग्रह रूपी भट्ठी हो, संयम रूपी सुनार हो। अचल बुद्धि रूपी अहरन हो, गुरु ज्ञान रूपी हथौड़ा हो। निरंकार के भय को धौंकनी तथा तपोमय जीवन को अग्नि ताप बनाओ। हृदय – प्रेम को बर्तन बनाकर उसमें नाम – अमृत को गलाया जाए। इसी सच्ची टकसाल में नैतिक जीवन को गढ़ा जाता है। अर्थात्–ऐसी टकसाल से ही सद्‌गुणी जीवन बनाया जा सकता है। जिन पर अकाल पुरुष की कृपा–दृष्टि होती है, उन्हीं को ये कार्य करने को मिलते हैं। हे नानक! ऐसे सद्‌गुणी जीव उस कृपासागर परमात्मा की कृपा–दृष्टि के कारण कृतार्थ होते हैं॥ ३८॥

सलोकु ॥ पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ १ ॥

[इस अन्तिम श्लोक में गुरु नानक जी ने मनुष्य के जीवन और उसकी यथार्थता का बहुत ही उचित ढंग से चित्रण किया है।]

समस्त सृष्टि का गुरु पवन है, पानी पिता है, और पृथ्वी बड़ी माता है। दिन और रात दोनों धाय एवं धीया (बच्चों को खिलाने वाले) के समान हैं तथा सम्पूर्ण जगत् इन दोनों की गोद में खेल रहा है। शुभ व अशुभ कर्मों का विवेचन उस अकाल–पुरुष के दरबार में होगा। अपने शुभाशुभ कर्मों के फलस्वरूप ही जीव परमात्मा के निकट अथवा दूर होता है। जिन्होंने प्रभु का नाम–सुमिरन किया है, वे जप–तप आदि की गई मेहनत को सफल कर गए हैं। गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि ऐसे सद्‌प्राणियों के मुख उज्ज्वल हुए हैं और कितने ही जीव उनके साथ, अर्थात् उनका अनुसरण करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो गए हैं॥ १॥

सो दरु रागु आसा महला १* ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इस शब्द की व्याख्या बेशक जपु जी साहिब के २७वें पद्य 'सो दरु' में हो चुकी है किन्तु इन दोनों में सूक्ष्म शब्द–भेद अवश्य है। इस पद्य के प्रति यह कथन भी प्रचलित है कि जब श्री गुरु नानक देव जी वेई नदी में डुबकी लगाकर बैकुण्ठ लोक में अकाल–पुरुष के सम्मुख गए थे तो वहाँ उन्होंने इसका उच्चारण 'आसा राग' में किया था। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि जब आप बैकुण्ठ लोक से वापस आए थे तो बेबे नानकी जी ने वहाँ प्रभु के घर–द्वार बारे आप से पूछा था और आप ने 'जपु जी' का सो दरु सुनाया था, लेकिन इसमें कुछ पाठांतर रख दिया। जिस प्रकार 'जपु जी' वाणी का अमृत–समय में पाठ करने का महात्म्य है, उसी प्रकार इस वाणी का पाठ संध्या–काल में करने का महात्म्य है। इस वाणी को 'रहरासि साहिब' भी कहा जाता है। बेशक इसके बारे में कोई लिखित प्रमाण नहीं है, क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादना के समय तक इसे 'सो दरु' वाणी ही कहा गया है, किंतु 'सो दरु' वाणी के चतुर्थ पद्य में अंकित पंक्ति – गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि॥ ही इसका नाम 'रहरासि' प्रमाणित करती है। वास्तव में 'रहरासि' का अर्थ भी – वंदना, विनय, मर्यादा आदि ही हैं। इसके अतिरिक्त इसमें दशम पिता के काल में चौपई आदि दसम ग्रंथ की वाणी भी सम्मिलित की गई है।

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ १ ॥

हे निरंकार ! तेरा वह (अकथनीय) द्वार कैसा है, वह निवास–स्थान कैसा है, जहाँ पर विराजमान

---

*'महला' शब्द का सम्पूर्ण गुरु ग्रंथ साहिब में एक विशेष स्थान व महात्म्य है। इसके साथ ही अंक १,२,३, आदि भी अंकित किए गए हैं, जिन से स्पष्ट होता है श्रवण अथवा अध्ययन किया जा रहा शब्द किन गुरु साहिबान द्वारा उच्चारण किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में छः गुरु साहिब की वाणी अंकित है और सभी गुरु साहिब ने वाणी का उच्चारण श्री गुरु नानक देव जी के मार्गदर्शन में किया है। इसी कारण उन्होंने अपनी वाणी में 'नानक' शब्द का प्रयोग किया है जैसे कि 'सिरीरागु महला ३ घरु १' में श्री गुरु अमरदास जी ने उच्चारण किया है-नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु॥ श्री गुरु नानक देव जी (महला १), श्री गुरु अंगद देव जी (महला २), श्री गुरु अमरदास जी (महला ३), श्री गुरु रामदास जी (महला ४) श्री गुरु अर्जुन देव जी (महला ५) तथा श्री गुरु तेग बहादुर जी (महला ६)

होकर तुम सम्पूर्ण सृष्टि का प्रतिपालन करते हो ; (इसके बारे में कैसे कथन करूँ)। हे अनन्त स्वरूप! तुम्हारे द्वार पर अनगिनत दिव्य नाद गूंज रहे हैं, कितने ही वहाँ पर नादिन् हैं। तुम्हारे द्वार पर कितने ही रागिनियों के संग राग कहते हैं और कितने ही वहाँ पर उन रागों व रागिनियों को गाने वाले हैं। (आगे गाने वालों का वर्णन करते हैं) हे अकाल पुरुष! तुझे पवन, जल व अग्नि देव आदि गाते हैं और धर्मराज भी तुम्हारे द्वार पर तुम्हारा यश गाता है। जीवों के शुभाशुभ कर्म लिखने वाले चित्र–गुप्त तुम्हारा ही यशोगान करते हैं तथा लिख कर शुभ व अशुभ कर्मों का विचार करते हैं। शिव व ब्रह्मा अपनी दैवी–शक्तियों सहित तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं, जो तुम्हारे संवारे हुए सदैव शोभा पा रहे हैं। देवताओं के संग अपने सिंहासन पर बैठा इन्द्र भी तुम्हारी महिमा को गा रहा है। समाधि में स्थित हुए सिद्ध भी तुम्हारा यश गा रहे हैं, विचारवान साधु भी तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं। तुम्हारा गुणगान यति, सत्यवादी व संतोषी व्यक्ति भी कर रहे हैं और शूरवीर भी तुम्हारे गुणों की प्रशंसा कर रहे हैं। युगों–युगों तक वेदाध्ययन द्वारा विद्वान व ऋषि–मुनि आदि तुम्हारी कीर्ति को कहते हैं। मन को मोह लेने वाली स्त्रियाँ स्वर्ग, मृत्यु व पाताल लोक में तुम्हारा यशोगान कर रही हैं। तुम्हारे उत्पन्न किए हुए चौदह रत्न व संसार के अठसठ तीर्थ भी तुम्हारी स्तुति कर रहे हैं। योद्धा, महाबली व शूरवीर भी तुम्हारा यशोगान कर रहे हैं, चारों उत्पत्ति के स्रोत भी तुम्हारे यश को गा रहे हैं। नवखण्ड, द्वीप व ब्रह्माण्ड आदि के जीव भी तुम्हारा गान कर रहे हैं जो तुम ने रच–रच कर इस सृष्टि में स्थित कर रखे हैं। जो तुम्हें अच्छे लगते हैं व तेरे प्रेम में रत हैं वे भक्त ही तुम्हारा यशोगान करते हैं। और भी अनेकानेक तुम्हारा गुणगान कर रहे हैं, वे मेरे चिंतन में नहीं आ रहे हैं। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि मैं उनका क्या विचार करूँ। सत्य स्वरूप निरंकार भूतकाल में था और वह सत्य सम्मान वाला अब भी है। पुनः भविष्य में भी वही सत्य स्वरूप होगा, जिसने इस सृष्टि की रचना की है, वह न नष्ट होता है, न नष्ट होगा। अनेक प्रकार के रंगों की और विभिन्न तरह की माया द्वारा पशु–पक्षी आदि जीवों की जिसने रचना की है, वह सृजनहार परमात्मा अपने किए हुए प्रपंच को कर–करके अपनी इच्छानुसार ही देखता है। जो उसे भला लगता है वही करता है, पुनः उस पर आदेश करने वाला कोई भी नहीं है। हे नानक! वह शाहों का शाह शहंशाह है, उसकी आज्ञा में रहना ही उचित है॥ १॥

आसा महला १ ॥ सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ केवडु वडा डीठा होइ ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ २ ॥

हे निरंकार स्वरूप! (शास्त्रों व विद्वानों से) सुन कर तो प्रत्येक कोई तुझे बड़ा कहता है। किंतु कितना बड़ा है, यह तो तभी कोई बता सकता है यदि किसी ने तुझे देखा हो अथवा तुम्हारे दर्शन किए हों। वास्तव में उस सर्गुण स्वरूप परमात्मा की न तो कोई कीमत आंक सकता है और न ही उसका कोई अंत कह सकता है, क्योंकि वह अनन्त व असीम है। जिन्होंने तेरी महिमा का अंत पाया है अर्थात् तेरे सच्चिदानन्द स्वरूप को जाना है वे तुझ में ही अभेद हो जाते हैं॥ १॥ हे मेरे अकाल पुरुष! तुम सर्वोच्च हो, स्वभाव में स्थिर व गुणों के निधान हो। तुम्हारा कितना विस्तार है, इस तथ्य का ज्ञान

किसी को भी नहीं है॥ १॥ रहाउ॥*

समस्त ध्यान–मग्न होने वाले व्यक्तियों ने मिलकर अपनी वृत्ति लगाई। समस्त विद्वानों ने मिलकर तुम्हारा अन्त जानने की कोशिश की। शास्त्रवेत्ता, प्राणायामी, गुरु व गुरुओं के भी गुरु तेरी महिमा का तिनका मात्र भी व्याख्यान नहीं कर सकते॥ २॥ सभी शुभ–गुण, सभी तप और सभी शुभ कर्म; सिद्ध – पुरुषों सिद्धि समान महानता; तुम्हारी कृपा के बिना पूर्वोक्त गुणों की जो सिद्धियाँ हैं वे किसी ने भी प्राप्त नहीं की। यदि परमेश्वर की कृपा से ये शुभ–गुण प्राप्त हो जाएँ तो फिर किसी के रोके रुक नहीं सकते॥ ३॥ यदि कोई कहे कि हे अकाल–पुरुष! मैं तुम्हारी महिमा कथन कर सकता हूँ तो वह बेचारा क्या कह सकता है। क्योंकि हे परमेश्वर! तेरी स्तुति के भण्डार तो वेदों, ग्रंथों व तेरे भक्तों के हृदय में भरे पड़े हैं। जिन को तुम अपनी स्तुति करने की बुद्धि प्रदान करते हो, उनके साथ किसी का क्या ज़ोर चल सकता है। गुरु नानक जी कहते हैं कि वह सत्यस्वरूप परमात्मा ही सबको शोभायमान करने वाला है॥ ४॥ २॥

आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि के आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ ३ ॥

{एक बार माता तृप्ता जी ने नानक देव जी को कहा कि हे पुत्र! तुम प्रभु का सिमरन प्रत्येक पल की बजाय एक समय किया करो तो आप ने इस शब्द का उच्चारण करते हुए कहा कि}

हे माता जी! जब तक मैं परमेश्वर का नाम सिमरन करता हूँ तब तक ही मैं जीवित रहता हूँ, जब मुझे यह नाम विस्मृत हो जाता है तो मैं स्वयं को मृत समझता हूँ; अर्थात् मैं प्रभु के नाम में ही सुख अनुभव करता हूँ, वरन् मैं दुखी होता हूँ। किंतु यह सत्य नाम कथन करना बहुत कठिन है। यदि प्रभु के सत्य नाम की (भूख) चाहत हो तो वह चाहत ही समस्त दुखों को नष्ट कर देती है॥ १॥ सो हे माता जी! ऐसा नाम फिर मुझे विस्मृत क्यों हो। वह स्वामी सत्य है और उसका नाम भी सत्य है॥ १॥ रहाउ॥

परमात्मा के सत्य नाम की तिनका मात्र महिमा; (व्यासादि मुनि) कह कर थक गए हैं, किंतु वे उसके महत्व को नहीं जान पाए हैं। यदि सृष्टि के समस्त जीव मिलकर परमेश्वर की स्तुति करने लगें तो वह स्तुति करने से न बड़ा होता है और न निन्दा करने से घटता है॥ २॥

वह निरंकार न तो कभी मरता है और न ही उसे कभी शोक होता है। वह संसार के जीवों को खान–पान देता रहता है जो कि उसके भण्डार में कभी भी समाप्त नहीं होता। दानेश्वर परमात्मा जैसा गुण सिर्फ उसी में ही है, अन्य किसी में नहीं। ऐसे परमेश्वर जैसा न पहले कभी हुआ है और न ही आगे कोई होगा॥ ३॥ जितना महान् परमात्मा स्वयं है उतनी ही महान उसकी बख्शिश है। जिस ने दिन बनाकर फिर रात की रचना की है। (यदि रात न होती तो जीव सांसारिक धन्धों में लिप्त ही मर जाते, इसलिए रात भी अनिवार्य थी। ऐसे परमेश्वर को जो विस्मृत कर दे वह नीच है। गुरु नानक जी कहते हैं कि परमात्मा के नाम–सिमरन के बिना मनुष्य संकीर्ण जाति का होता है॥ ४॥ ३॥

*'रहाउ' का अर्थ विश्राम माना गया है। इस पंक्ति में शब्द का केन्द्रिय-भाव होता है। कई शब्दों में 'रहाउ' एक से अधिक भी होते हैं। सो शब्द का विचार करने के लिए इस पंक्ति का अध्ययन किया जाना चाहिए।

रागु गूजरी महला ४ ॥ हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ ४ ॥

(इस शब्द का उच्चारण श्री गुरु रामदास जी ने तब किया माना जाता है, जब श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी पुत्री बीबी भानी के विवाह के बाद गुरु रामदास जी को कहा कि जेठा जी! हमारे यहाँ की रीति है कि जब दामाद स्वेच्छा से जो माँगता है उसे दिया जाता है। तब गुरु साहिब ने इस शब्द का उच्चारण किया था।)

हे परमात्मा स्वरूप, सतिगुरु, सति पुरुष जी! मेरी आप से यही विनती है कि मैं अति सूक्ष्म कृमियों के समान जीव हूँ, सो हे सतगुरु जी! मैं आपकी शरण में उपस्थित हूँ, कृपा करके मेरे अंत: करण में प्रभु–नाम का प्रकाश कर दो॥ १॥ हे मेरे मित्र गुरुदेव! मुझे राम के नाम का प्रकाश प्रदान करो। गुरु उपदेश के अनुसार जो परमात्मा का नाम सिमरन करता है वही मेरे प्राणों का सहायक है, परमेश्वर की महिमा कथन करना ही मेरी रीति है॥ १॥ रहाउ॥ हे सतिगुरु जी! आपकी कृपा से मैं जानता हूँ कि जिन की प्रभु–नाम में निष्ठा है, और उसको जपने की तृष्णा है उन हरि–भक्तों का सौभाग्य है। क्योंकि उस हरि का हरि–नाम प्राप्त होने से ही उसके भक्तों को संतुष्टि प्राप्त होती है तथा संतों की संगत मिलने से उनके हृदय में हरि के गुणों का ज्ञान रूपी प्रकाश होता है॥ २॥ जिन्होंने हरि के हरि हरि नाम रस को नहीं चखा, अर्थात् जो प्राणी ईश्वर के नाम में लीन नहीं हुए, वे भाग्यहीन यमों के चंगुल में फँस जाते हैं। जो सतिगुरु की शरण में आकर सत्संगति प्राप्त नहीं करते उन विमुख व्यक्तियों के जीवन पर धिक्कार है और भविष्य में उनके जीने पर भी धिक्कार है॥ ३॥ जिन हरि–भक्तों ने सतिगुरु की संगति प्राप्त की है, उनके मस्तिष्क पर अकाल–पुरुष द्वारा जन्म से पूर्व ही शुभ लेख लिखा होता है। सतिगुरु जी का फुरमान है कि हे निरंकार! धन्य है वह सत्संगति, जिस से हरि–रस प्राप्त होता है और प्रभु भक्तों को उसके नाम का ज्ञान–प्रकाश मिलता है। इसलिए हे सतिगुरु जी! मुझे तो अकाल–पुरुष के नाम की बख्शिश करो॥ ४॥ ४॥

रागु गूजरी महला ५ ॥ काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

(इस शब्द के प्रति साहित्य में यह तथ्य प्रमाणित है कि श्री गुरु अर्जुन देव जी के गुरुगद्दी पर स्थित होने के पश्चात् एक बार लंगर में खर्च की न्यूनता अनुभव की गई, क्योंकि सेवकों व श्रद्धालुओं द्वारा जो भेंट भेजी जाती थी वह पृथी चंद जी सम्भाल लेते थे। उन्हीं दिनों वहाँ भाई गुरदास जी का

करहि सु होई ॥ तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ १ ॥

वह अकाल पुरुष सृष्टि के समस्त जीवों में व्यापक है, फिर भी मायातीत है, अगम्य है तथा अनन्त है। हे सत्यस्वरूप सृजनहार परमात्मा! तुम्हारा ध्यान अतीत में भी सब करते थे, अब भी करते हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। सृष्टि के समस्त जीव तुम्हारी ही रचना हैं और तुम ही सब जीवों के प्रतिभोग व मुक्ति दाता हो। हे भक्त जनो! उस निरंकार का सिमरन करो जो समस्त दुखों का नाश करके सुख प्रदान करता है। निरंकार स्वयं स्वामी व स्वयं ही सेवक है, सो हे नानक! मुझ दीन जीव की क्या योग्यता है कि मैं उस अकथनीय प्रभु का वर्णन कर सकूँ॥ १॥

सर्वव्यापक निरंकार समस्त प्राणियों के हृदय में अभेद समा रहा है। संसार में कोई दाता बना हुआ है, कोई भिक्षु का रूप लिया हुआ है, हे परमात्मा! यह सब तुम्हारा ही आश्चर्यजनक कौतुक है। तुम स्वयं ही देने वाले हो और स्वयं ही भोक्ता हो, तुम्हारे बिना मैं किसी अन्य को नहीं जानता। तुम पारब्रह्म हो, तुम तीनों लोकों में अंतरहित हो, मैं तुम्हारे गुणों को मुख से कथन कैसे करूँ। सतगुरु जी कथन करते हैं कि जो जीव आप का अंतर्मन से सिमरन करते हैं, सेवा-भाव से समर्पित होते हैं उन पर मैं न्यौछावर होता हूँ॥ २॥

हे निरंकार! जो आपका मन व वाणी द्वारा ध्यान करते हैं, वो मानव-जीव युगों-युगों तक सुखों का भोग करते हैं। जिन्होंने आपका सिमरन किया है वे इस संसार से मुक्ति प्राप्त करते हैं और उनका यम-पाश टूट जाता है। जिन्होंने भय से मुक्त होकर उस अभय स्वरूप अकाल-पुरुष का ध्यान किया है उनके जीवन का समस्त (जन्म-मरण व यमादि का) भय वह समाप्त कर देता है। जिन्होंने निरंकार का चिन्तन किया, सेवा-भाव से उस में लीन हुए, वे तुम्हारे दुखहर्ता रूप में ही विलीन हो गए। हे नानक! जिन्होंने नारायण स्वरूप निरंकार का सिमरन किया, वे धन्य ही धन्य हैं, मैं उन पर कुर्बान होता हूँ॥ ३॥

हे अनंत स्वरूप! तेरी भक्ति के खजाने भक्तों के हृदय में अनंतानंत भरे हुए हैं। तेरे भक्त तीनों काल तेरी प्रशंसा के गीत गाते हैं कि हे परमेश्वर! तू अनेकानेक व अनंत स्वरूप है। संसार में तेरी नाना प्रकार से आराधना और जप-तपादि द्वारा साधना की जाती है। अनेकानेक ऋषि-मुनि व विद्वान कई तरह के शास्त्र, स्मृतियों का अध्ययन करके तथा षट्-कर्म, यज्ञादि धर्म कार्यों द्वारा तुम्हारा स्तुति-गान करते हैं। हे नानक! वे समस्त श्रद्धालु भक्त संसार में भले हैं जो निरंकार को अच्छे लगते हैं॥ ४॥

हे अकाल पुरुष! तुम अपरिमेय पारब्रह्म अनन्त स्वरूप हो, तुम्हारे समान अन्य कोई भी नहीं है। युगों युगों से तुम एक हो, सदा सर्वदा तुम अद्वितीय स्वरूप हो और तुम ही निश्चल रचयिता हो। जो तुम्हें भला लगता है वही घटित होता है, जो तुम स्वेच्छा से करते हो वही कार्य होता है। तुमने स्वयं ही इस सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही रच कर उसका संहार भी करता है। हे नानक! मैं उस स्रष्टा प्रभु का गुणगान करता हूँ, जो समस्त सृष्टि का सृजक है अथवा जो समस्त जीवों के अन्तर्मन का ज्ञाता है॥ ५॥ १॥

आसा महला ४ ॥ तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि

विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे निरंकार ! तुम ही सृजनहार हो, सत्यस्वरूप हो और मेरे मालिक हो। जो तुम्हें भला लगता है वही होता है, जो तुम देते हो वही मैं प्राप्त करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ सम्पूर्ण सृष्टि तुम्हारी पैदा की हुई है, तुम्हें सभी जीवों ने स्मरण किया है। किंतु जिन पर तुम्हारी दया होती है, उन्होंने ही तुम्हारा नाम रूपी रत्न–पदार्थ प्राप्त किया है। यह नाम–रत्न श्रेष्ठ साधक पा जाते हैं और स्वेच्छाचारी मनुष्य इसे गंवा बैठते हैं। तुम स्वयं ही विच्छिन्न करते हो और स्वयं ही सम्मिलित करते हो॥ १॥ हे परमेश्वर ! तुम नदी हो, सारा प्रपंच तुझ में ही तरंग रूप है। तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है। सृष्टि के सभी छोटे–बड़े जीव तुम्हारा ही कौतुक हैं। वियोगी कर्मों के कारण जो तुम में लीन था, वह विछुड़ गया और संयोग के कारण विछुड़ा हुआ तुम से आ मिला है; अर्थात् तुम्हारी कृपा से जिन्हें सत्संगति प्राप्त नहीं हुई वे तुम से अलग हो गए और जिन्हें संतों का संग मिल गया उन्हें तुम्हारी भक्ति प्राप्त हो गई॥ २॥ हे परमात्मा ! जिसे तुम गुरु द्वारा ज्ञान प्रदान करते हो वही इस विधि को जान सकता है। फिर वही सदैव तेरे गुणों का व्याख्यान करता है। जिन्होंने उस अकाल पुरुष का सिमरन किया है, उन्होंने आत्मिक सुखों की प्राप्ति की है। फिर वह परम पुरुष सरलता से ही प्रभु–नाम में समाहित हो जाता है॥ ३॥ तुम स्वयं रचयिता हो, तुम्हारे आदेश से ही सब कुछ होता है। तुम्हारे अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई नहीं है। तुम ही रचना कर–करके जीवों के कौतुक देख रहे हो और उनके बारे सब कुछ जानते हो। हे नानक ! यह भेद गुरु के उन्मुख होने वाले व्यक्ति के अन्दर प्रकाशमान होता है॥ ४॥ २॥

आसा महला १ ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ ३ ॥

हे मन ! तेरा ऐसे संसार–सागर में वास हुआ है जहाँ पर शब्द–स्पर्श रूपी रस–गंध जल व तृष्णाग्नि है। वहाँ मोह रूपी कीचड़ में फँस कर तेरा बुद्धि रूपी चरण परमात्मा की भक्ति की ओर नहीं चल पाएगा, उस सागर में हमने स्वेच्छाचारी जीवों (जो मन के होते हैं) को डूबते देखा है॥ १॥ हे विमूढ़ मन ! यदि तुम एकाग्रचित होकर प्रभु का सिमरन नहीं करोगे तो हरि–प्रभु के विस्मृत हो जाने से तेरे सभी गुण नष्ट हो जाएँगे, अथवा परमात्मा को विस्मृत कर देने से तेरे गले में (यमादि का) फँदा पड़ जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ अतः हे मन ! तू अकाल पुरुष के समक्ष विनती कर कि मैं यति, सती व ज्ञानी नहीं हूँ, मेरा जीवन महामूर्खों की भाँति निष्फल हो गया है। हे नानक ! जिन को तू विस्मृत नहीं होता, मैं उन संतों की शरण पड़ता हूँ तथा उन्हें प्रणाम करता हूँ॥ २॥ ३॥

आसा महला ५ ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ १ ॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ ४ ॥

हे मानव ! तुझे जो यह मानव जन्म प्राप्त हुआ है। यही तुम्हारा प्रभु को मिलने का शुभावसर है ; अर्थात् प्रभु का नाम सिमरन करने हेतु ही यह मानव जन्म तुझे प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त किए जाने वाले सांसारिक कार्य तुम्हारे किसी काम के नहीं हैं। सिर्फ तुम साधुओं–संतों का संग करके उस अकाल–पुरुष का चिन्तन ही करो॥ १॥ इसलिए इस संसार–सागर से पार उतरने के उद्यम में लग। अन्यथा माया के प्रेम में रत तुम्हारा यह जीवन व्यर्थ ही चला जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ हे मानव ! तुमने जप, तप व संयम नहीं किया और न ही कोई पुनीत कार्य करके धर्म कमाया है। साधु–संतों की सेवा नहीं की है तथा न ही परमेश्वर को स्मरण किया है। हे नानक ! हम मंदकर्मी जीव हैं। मुझ शरणागत की लाज रखो॥ २॥ ४॥

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

सोहिला–इस वाणी की प्रथम पंक्ति में 'कीरति' तथा पूरे शबद में दो बार 'सोहिला' पद्य होने के महात्म्य के मद्देनज़र ही इसका नाम 'सोहिला' विख्यात हुआ है, क्योंकि इनका अर्थ है 'यश'। इसके अतिरिक्त इसे 'कीर्तन सोहिला' भी कहा जाता है, क्योंकि गुरमति मर्यादानुसार गुरुद्वारों में 'सो दरु' के पाठ के पश्चात् शब्द–कीर्तन होता है। कीर्तन के पश्चात् आरती के शबद तथा 'सोहिला' बाणी का पाठ होता है। इस बाणी के तीसरे शबद 'गगन मै थालु रवि चंद' में 'आरती' पद्य होने के कारण इसे 'आरती सोहिला' भी कहा जाता है। अतः इन सब में सर्वव्यापक 'एकमेव अद्वितीय' अकाल पुरुष का गुणगान किया जाता है।

इस वाणी का पाठ पहले–पहल मध्याह्न काल (दूसरी संध्या–दोपहर) में किया जाता था, किन्तु एक दिन श्री गुरु अंगद देव जी ने सेवा करते समय श्री गुरु नानक देव जी के चरणों में से रक्त बहता देख कर कारण पूछा तो आप जी ने बताया कि आज एक भेड़ें चराने वाला भेड़ों के पीछे–पीछे श्रद्धा से 'सोहिला' का पाठ करता जा रहा था, जिसे सुनने हेतु हम भी उसके पीछे–पीछे नंगे पांव चलते रहे, तो मार्ग में कांटे हमारे पांव में चुभ गए। इस पर गुरु अंगद देव जी ने विनय की कि हजूर ! इस वाणी का पाठ रात के समय करने की आज्ञा दी जाए। तब गुरु साहिब के आदेश से इस वाणी का पाठ रात को सोने से पहले किया जाता है।

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥ १ ॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥

जिस सत्संगति में निरंकार की कीर्ति का गान होता है तथा करतार के गुणों का विचार किया जाता है; उसी सत्संगति रूपी घर में जाकर सृष्टि रचयिता के यश का गायन करो और उसी का सिमरन करो॥ १॥ हे मानव ! तुम उस भय–रहित मेरे वाहिगुरु की प्रशंसा के गीत गाओ। साथ में यह कहो कि मैं उस सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ। जिसका सिमरन करने से सदैव सुखों की प्राप्ति होती है॥ १॥ रहाउ॥ हे मानव जीव ! जो पालनहार ईश्वर नित्य–प्रति अनेकानेक जीवों का पोषण कर रहा है, वह तुम पर भी अपनी कृपा–दृष्टि करेगा। उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थों का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं॥ २॥ इस मृत्यु–लोक का त्याग करके जाने का समय निश्चित किया

हुआ है अर्थात् इस लोक से जाने के लिए साहे–पत्र रूपी संदेश संवत्–दिन आदि लिख कर नियत किया हुआ है, इसलिए वाहिगुरु से मिलाप के लिए अन्य सत्संगियों के साथ मिलकर तेल डालने का शगुन कर लो। अर्थात् – मृत्यु रूपी विवाह होने से पूर्व शुभ–कर्म कर लो। हे मित्रो ! अब शुभाशीष दो कि सतिगुरु से मिलाप हो जाए॥ ३॥ प्रत्येक घर में इस साहे–पत्र को भेजा जा रहा, नित्य यह संदेश किसी न किसी घर पहुँच रहा है। (नित्य ही कोई न कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है।) श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि हे जीव ! मृत्यु का निमंत्रण भेजने वाले को स्मरण कर, क्योंकि वह दिन निकट आ रहे हैं॥ ४॥ १॥

रागु आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥ २ ॥ २ ॥

छिअ घर = छः शास्त्र–सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, योग और वेदांत। छिअ गुर = इन शास्त्रों के रचयिता– कपिल मुनि, गौतम ऋषि, कणाद ऋषि, जैमिनी ऋषि, पातञ्जलि ऋषि, आचार्य वेद व्यास जी। छिअ उपदेस = इन शास्त्रों की अलग–अलग मान्यताएँ (उपदेश)। विसुए = आँख के १५ बार फरकने के समान (काष्ठा)। चसिआ = १५ विसुए के समान (चसा)। घड़ीआ = ६० पलों की एक घड़ी (किन्तु ३० चसों का एक पल)। पहरा = साढ़े सात घड़ियों का एक पहर। आठ पहर का रात–दिन होता है। पंद्रह दिनों का एक पक्ष तथा पंद्रह दिनों की पंद्रह ही तिथियाँ होती हैं। सात दिनों का एक सप्ताह (जिन में सात वार होते हैं)। चार सप्ताह का एक माह होता है। बारह माह का एक वर्ष हुआ।

सृष्टि की रचना में छः शास्त्र हुए, इनके छः ही रचयिता तथा उपदेश भी अपने– अपने तौर पर छः ही हैं। किंतु इनका मूल तत्व एक ही केवल परमात्मा है, जिसके भेष अनन्त हैं। हे मनुष्य ! जिस शास्त्र रूपी घर में निरंकार की प्रशंसा हो, उसका गुणगान हो, उस शास्त्र को धारण कर, इससे तेरी इहलोक व परलोक दोनों में शोभा होगी॥ १॥ रहाउ॥ काष्ठा, चसा, घड़ी, पहर, तिथि व वार मिलकर जैसे एक माह बनता है। इसी तरह ऋतुओं के अनेक होने पर भी सूर्य एक ही है। (यह तो इस सूर्य के अलग–अलग अंश हैं।) वैसे ही हे नानक ! कर्त्ता–पुरुष के उपरोक्त सब स्वरूप ही दिखाई पड़ते हैं॥ २॥ २॥

रागु धनासरी महला १ ॥ गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥ ४ ॥ ३ ॥

प्रकृति द्वारा तैयार की गई आरती–सामग्री का संकेत देते हुए सतिगुरु जी का फुरमान है कि सम्पूर्ण गगन रूपी थाल में सूर्य व चंद्रमा दीपक बने हुए हैं, तारों का समूह जैसे थाल में मोती जड़े हुए हों। मलय पर्वत की ओर से आने वाली चंदन की सुगंध धूप के समान है, वायु चंवर कर रही है, समस्त वनस्पति जो फूल आदि खिलते हैं, ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष की आरती के लिए समर्पित हैं॥ १॥ सृष्टि के जीवों का जन्म–मरण नाश करने वाले हे प्रभु ! प्रकृति में तेरी कैसी अलौकिक आरती हो रही है कि जो एक रस वेद ध्वनि हो रही है वह मानों नगारे बज रहे हों॥ १॥ रहाउ॥ हे सर्वव्यापक निराकार ईश्वर ! तुम्हारी हज़ारों आँखें हैं, लेकिन निर्गुण स्वरूप में तुम्हारी कोई भी आँख नहीं है, इसी प्रकार हज़ारों तुम्हारी मूर्तियाँ हैं, परंतु तुम्हारा एक भी रूप नहीं है क्योंकि तुम निर्गुण स्वरूप हो, सर्गुण स्वरूप में तुम्हारे हज़ारों निर्मल चरण–कंवल हैं किंतु तुम्हारा निर्गुण स्वरूप होने के कारण एक भी चरण नहीं है, तुम घ्राणेन्द्रिय (नासिका) रहित भी हो और तुम्हारी हजारों ही नासिकाएँ हैं; तुम्हारा यह आश्चर्यजनक स्वरूप मुझे मोहित कर रहा है॥ २॥ सृष्टि के समस्त प्राणियों में उस ज्योति–स्वरूप की ज्योति ही प्रकाशमान है। उसी की प्रकाश रूपी कृपा से सभी में जीवन का प्रकाश है। किंतु गुरु उपदेश द्वारा ही इस ज्योति का बोध होता है। जो उस ईश्वर को भला लगता है वही उसकी आरती होती है॥ ३॥ हरि के चरण रूपी पुष्पों के रस को मेरा मन लालायित है, नित्य–प्रति मुझे इसी रस की प्यास रहती है। हे निरंकार ! मुझ नानक पपीहे को अपना कृपा–जल दो, जिससे मेरे मन का टिकाव तुम्हारे नाम में हो जाए॥ ४॥ ३॥

{उपरोक्त शबद में सतिगुरु नानक देव जी ने सांसारिक जीवों द्वारा परमात्मा के सिमरन में की गई आरती में विद्यमान पाखंडों का निवारण करते हुए जीव को प्रकृति द्वारा प्रत्यक्ष हो रही आरती का कथन किया है, इसलिए मान्यता है कि यह शबद श्री गुरु नानक देव जी ने हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ जगन्नाथ पुरी के मंदिर में हो रही आरती के बाद उच्चारण किया।}

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥ १ ॥ करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ २ ॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥ ४ ॥ ४ ॥

यह मानव शरीर काम व क्रोध जैसे विकारों से पूरी तरह भरा हुआ है; लेकिन सन्तजनों के मिलाप से तुमने काम, क्रोध को क्षीण कर दिया हैं। जिस मनुष्य ने पूर्व लिखित कर्मों के माध्यम से गुरु को प्राप्त किया है, उसका चंचल मन ही ईश्वर में लीन हुआ है॥ १॥ संत–जनों को हाथ जोड़कर वंदना करना बड़ा पुण्य कर्म है। उन्हें दण्डवत् प्रणाम करना भी महान् पुण्य कार्य है॥ १॥ रहाउ॥ पतित मनुष्यों (माया में लिप्त अथवा जो परमेश्वर से विस्मृत) ने अकाल पुरुष के रस का आनंद नहीं पाया, क्योंकि उनके अंतर में अहंकार रूपी कांटा होता है। जैसे–जैसे वह अहंकारवश जीवन मार्ग पर चलते हैं, वह अहं का कांटा उन्हें चुभ–चुभ कर कष्ट देता रहता है और अंतिम समय में यमों द्वारा

दी जाने वाली यातना को सहन करते हैं॥ २॥ इसके अतिरिक्त जो मानव जीव सांसारिक वैभव अथवा भौतिक पदार्थों का त्याग करके परमेश्वर के भक्त बन कर उसके सिमरन में लिवलीन रहते हैं, वे आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करके संसार के दुखों से छूट जाते हैं, उन्हें नाश रहित सर्वव्यापक परमात्मा मिल जाता है और खण्डों-ब्रह्माण्डों में उनको शोभायमान किया जाता है॥ ३॥ हे प्रभु ! हम निर्धन व निराश्रय तुम्हारे ही अधीन हैं, तुम सर्वोच्चत्तम शक्ति हो, इसलिए हमें इन विकारों से बचा लो। हे नानक ! जीव को तुम्हारे ही नाम का आश्रय है, हरि के नाम में लिप्त होने से ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है॥ ४॥ ४॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥ १ ॥ अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥ २ ॥ जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥ ३ ॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे सत्संगी मित्रो ! सुनो, मैं तुम्हे प्रार्थना करता हूँ कि यह जो मानव शरीर प्राप्त हुआ हैं, वह संत जनों की सेवा करने का शुभावसर है। यदि यह सेवा करोगे तो इस जन्म में प्रभु के नाम-सिमरन का लाभ प्राप्त होगा, जिससे परलोक में वास सरलता से होगा॥ १॥ हे मन! समय व्यतीत होते हुए निशदिन यह उम्र कम हो रही है। इसलिए तुम गुरु से मिलकर उनकी शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन के पार हेतु समस्त कार्य पूर्ण कर लो॥ १॥ रहाउ॥ इस जगत् में समस्त जीव काम-क्रोधादि विकारों और भ्रमों में लिप्त हैं, यहाँ से कोई तत्वेत्ता यानी ब्रह्म का ज्ञान रखने वाला ही मोक्ष को प्राप्त हुआ है। विकारों में लिप्त जिस मानव को ईश्वर ने स्वयं माया रूपी निद्रा से जगाकर नाम-रस पिला दिया, वही उस अकथनीय प्रभु की अलौकिक कथा को जान सका है॥ २॥ इसलिए हे सत्संगियों ! जिस नाम रूप अमूल्य वस्तु का व्यापार करने आए हो उसे ही खरीदो, इस मन में हरि का वास गुरु द्वारा ही होता है। यदि तुम गुरु की शरण लोगे तभी इस हृदय रूपी घर में हरि का स्वरूप बसा सकोगे और आत्मिक सुखों का आनंद प्राप्त करोगे, जिससे फिर इस संसार में आने-जाने का चक्र समाप्त हो जाएगा॥ ३॥ हे मेरे अंतर्मन को जानने वाले सर्वव्यापक सृजनहार ! मेरे मन की श्रद्धा को पूर्ण करो। गुरु साहिब कथन करते हैं कि यह सेवक सिर्फ यही कामना करता है कि मुझे केवल संतों की चरण-रज बना दो॥ ४॥ ५॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

रागु सिरीरागु महला पहिला १ घरु १ ॥

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ १ ॥ हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥ मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ २ ॥ सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥ गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ ३ ॥ सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥ हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥ मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

घरु – जैसे कि पहले 'महला' शब्द का वर्णन किया जा चुका है, इसी तरह किन्हीं शब्दों के शीर्षक में 'घरु' शब्द भी अंकित किया गया है। इसका संबंध गायन करते समय ताल से रखा गया है कि आगामी शब्द किस ताल–स्वर में गायन किया जाना है। 'घरु' शब्द के साथ भी १ से १७ तक के सूचकांकों का उल्लेख किया गया है। इसलिए वाणी में जिस प्रकार 'महला' शब्द का विशेष महात्म्य है, उसी तरह 'घरु' शब्द का कीर्तनियों के लिए अति महत्वपूर्ण है।

(एक बार जब कलियुग ने श्री गुरु नानक देव जी को जगन्नाथ में समुद्र के किनारे पर भक्ति में लीन बैठे हुओं को अपना विकराल स्वरूप दिखा कर भयभीत करना चाहा तो उनकी अडोलता को देखकर वह उन्हें भौतिक पदार्थों से भ्रमित करने लगा। इस पर सतिगुरु जी ने इस शब्द के उच्चारण से उसको ईश्वर की भिन्नता करवाई कि प्रभु व उसका नाम इन सांसारिक पदार्थों से कितना मूल्यवान है। इसमें सतिगुरु जी के परम वैराग का दर्शन होता है।)

यदि मेरे लिए मोती व रत्न जड़ित भवन निर्मित हो जाएँ। उन भवनों पर कस्तूरी, केसर, सुगंधित काष्ठ व चंदन की लकड़ी आदि के लेपन करके मन में उत्साह पैदा हो जाए। कहीं ऐसा न हो कि इन्हें देखकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ। (इसलिए मैं ऐसे भ्रमित करने वाले पदार्थों की ओर देखता भी नहीं हूँ)॥ १॥ परमात्मा अथवा उसके नाम सिमरन के बिना जीव तृष्णग्नि में जल जाता है। मैंने अपने अराध्य इष्ट से पूछ कर देख लिया है कि निरंकार के अतिरिक्त अन्य कोई पदार्थ व स्थान जीव की मुक्ति के योग्य नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ धरती में हीरे जड़े हुए हों, मेरे घर में पड़ा पलंघ लाल–रत्न से सुशोभित हो। घर में मन को मोह लेने वाली सुन्दर स्त्रियों का मुख मणियों की भाँति प्रकाशमान हो और वे प्रेम–भाव का आनंद प्रकट करती हों। कहीं ऐसा न हो कि इन्हें देखकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ। (इसलिए मैं ऐसे भ्रमित करने वाले पदार्थों की ओर देखता भी नहीं हूँ।)॥२॥ सिद्ध होकर सिद्धियाँ भी लगाऊं और ऋद्धियाँ भी कहने मात्र से मेरे पास आ जाएँ। स्वेच्छा से अलोक व आलोक हो जाऊँ, जिससे लोगों के मन में श्रद्धा पैदा हो। कहीं ऐसा न हो कि इन शक्तियों से भ्रमित होकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ। इसलिए मैं ऐसे भ्रमित करने वाले पदार्थों की ओर देखता भी नहीं हूँ॥ ३॥ बादशाह होकर सेना एकत्रित कर लूँ और सिंहासन पर विराजमान हो जाऊँ। वहाँ बैठ कर जो चाहूँ आदेश करके प्राप्त कर लूँ, सतिगुरु जी कहते हैं कि यह सब कुछ व्यर्थ है। कहीं ऐसा

न हो कि इन शक्तियों से भ्रमित होकर मैं भूल जाऊँ और निरंकार का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दूँ॥ ४ ॥ १॥

सिरीरागु महला १ ॥ कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥ चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ १ ॥ साचा निरंकारु निज थाइ ॥ सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥ अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ २ ॥ पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥ नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ ३ ॥ नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥ मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ ४ ॥ २ ॥

[जब गुरु नानक देव जी वेईं नदी में प्रवेश करके सचखण्ड में अकाल–पुरुष के सम्मुख गए तब उन्होंने इस शब्द द्वारा परमात्मा की स्तुति की थी]

हे निरंकार ! बेशक मेरी आयु करोड़ों युगों तक हो जाए (समस्त पदार्थों को छोड़कर) पवन ही मेरा खाना–पीना हो। जहाँ पर चंद्रमा व सूर्य दोनों का प्रवेश न हो, ऐसी गुफा में बैठ कर मैं तुम्हारा चिन्तन करूँ और स्वप्न में भी निद्रा का स्थान न हो। (ऐसी कठिन तपस्या करने के उपरान्त भी) मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूँ। अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है॥ १॥ सत्यस्वरूप निरंकार सदा अपनी महिमा में ही स्थित है। शास्त्रों से अध्ययन करके ही कोई उसके गुणों को कथन करता है, किन्तु जिस पर निरंकार की कृपा होती है उसी में (उसके गुण श्रवण व कथन करने की) जिज्ञासा उत्पन्न होती है॥ १॥ रहाउ॥ यदि मैं पुनः पुनः कष्ट देकर काट दिया जाऊँ तथा चक्की में डाल कर पीस दिया जाऊँ। अग्नि में मेरे शरीर को जला दिया जाए अथवा शरीर को भस्म लगा कर रखूं तो भी मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूँ, अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है॥ २॥ (सिद्धियों के बल पर) मैं पक्षी बनकर आकाश में भ्रमण करूँ और इतना ऊँचा चला जाऊँ कि सैंकड़ों ही आसमान छू लूं। ऐसा सूक्ष्म हो जाऊँ कि किसी की दृष्टि में न आऊं और न कुछ पीऊं न कुछ खाऊं। तो भी मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूँ, अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है॥ ३॥ सतगुरु जी कथन करते हैं कि लाखों मन कागज़ पढ़–पढ़ कर, अर्थात् अनेकानेक शास्त्रों व धर्म ग्रंथों का अध्ययन करके, ईश्वर से प्रेम किया जाए। उसकी स्तुति लिखने हेतु स्याही का भी अभाव न हो और कलम पवन की भाँति चलती रहे। तो भी मैं तेरा मूल्यांकन नहीं कर सकता, तेरे नाम को मैं कितना महान् कथन करूँ, अर्थात् तेरे नाम की महिमा का व्याख्यान करना कठिन है॥ ४॥२॥

सिरीरागु महला १ ॥ लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥ लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ॥ लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥ १ ॥ बाबा माइआ रचना धोहु ॥ अंधे नामु विसारिआ ना तिसु एह न ओहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ॥ जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिओ नालि ॥ रोवण वाले जेतड़े सभि बंनहि पंड परालि ॥ २ ॥ सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥ साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥ ३ ॥ नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥ नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥ ४ ॥ ३ ॥

[यहाँ पर सतिगुरु जी मानव जीव को उसके जीवन का हिसाब बताते है कि]

हे मानव! शब्दों का बोलना सीमित है। खाना–पीना भी सीमित है। मार्ग पर चलने की सीमा बंधी हुई है, देखने व श्रवण करने की सीमा निश्चित है। यहाँ तक कि स्रष्टा (प्रभु) ने जो तुझे श्वास प्रदान किए हैं उनके लेने की भी सीमा है, (इसकी पुष्टि हेतु) किसी विद्वान से पूछने की क्या आवश्यकता है॥ १॥ इसलिए हे जीव! यह सांसारिक माया सब–कुछ कपट है। जिस अज्ञानी ने परमात्मा का नाम अपने हृदय से विस्मृत कर दिया, उसके हाथ न तो यह माया आई और न उसे परमात्मा की प्राप्ति हुई है॥ १॥ रहाउ॥ जन्म से लेकर मृत्यु काल तक मानव इस संसार में अपने सम्बन्धियों के संग सांसारिक पदार्थों का भोग करता रहता है। किन्तु जिस धर्मराज की सभा में बिठा कर जीव को उसके कर्मों का लेखा बताया जाता है, वहाँ तक जाने के लिए अथवा वहाँ उसकी सहायता करने हेतु कोई साथ नहीं चलता। मृत्यु के पश्चात् जो रोते हैं वे सभी व्यर्थ का भार बांधते हैं:, अर्थात् वे रोने का व्यर्थ–कर्म करते हैं॥ २॥ परमात्मा को प्रत्येक अधिक ही अधिक ही कहता है, अल्प कोई नहीं कहता। किन्तु उसका मूल्यांकन कोई नहीं कर सकता, कहने मात्र से वह बड़ा अथवा महान् नहीं होता है। सत्य स्वरूप निरंकार तू सिर्फ एक ही हैं, तथा अन्य प्राणियों के हृदय में ज्ञान का प्रकाश करने वाला हैं॥ ३॥ निम्न में जो निम्न जाति के लोग हैं और फिर उनमें भी जो अति निम्न प्रभु भक्त हैं। सतिगुरु जी कहते हैं कि हे निरंकार! उनके साथ मेरा मिलाप करो, माया व ज्ञानाभिमान के कारण जो बड़े हैं उनसे मेरी क्या समानता है। जिस स्थान पर उन निम्न व्यक्तियों की सम्भाल की जाती है, वहाँ पर ही हे कृपासागर! मेरे प्रति तेरी कृपा होगी॥ ४॥ ३॥

सिरीरागु महला १ ॥ लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥ पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥ रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥ १ ॥ बाबा बोलीऐ पति होइ ॥ ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥ रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥ एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥ २ ॥ जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ॥ फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥ जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥ ३ ॥ तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥ तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ॥ नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥

खाने में लोभ करने वाला कुत्ते के समान, मिथ्या बोलने वाला भंगी, छल–कपट से दूसरे को खाने वाला शव–भक्षक होता है। दूसरे की निंदा करने से मुँह में सर्वथा पराई मैल पड़ती है, क्रोधाग्नि से मनुष्य चाण्डाल का रूप धारण कर लेता है। आत्म–प्रशंसा खट्टे–मीठे रसों का पदार्थ है, हे करतार! यही तुम से विमुख करने वाले अस्मदादिक जीवों के कर्म हैं॥ १॥ हे मानव! ऐसे वचन करो जिनसे प्रतिष्ठित हुआ जाए। क्योंकि जो जीव इस लोक में श्रेष्ठ हैं वही परमात्मा के द्वार पर भी उत्तम कहे जाते हैं और मंद कर्मी जीवों को नरकों के कष्ट भोग कर रोना पड़ता है॥ १॥ रहाउ॥ (मानव मन में) सोने के आभूषणों का प्रेम है, चांदी के प्रति स्नेह है, सुंदर स्त्री के भोग का रस है, सुगन्धि का प्यार है, घुड़सवारी की प्रीत है, आकर्षक सेज पर सोने व भव्य महलों में रहने का चाव है, मीठे पदार्थों के खाने तथा माँस–मदिरा सेवन करने की लगन है। ये जो कथन किए हैं, ये सभी रसानंद शरीर में विद्यमान हो रहे हैं तो परमात्मा का नाम–रस अंत: करण के किस स्थान पर निवास करे॥ २॥ जो वचन बोलने से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है वही कथन परमात्मा के दरबार में स्वीकृत होता है। हे अज्ञानी मन! सुन, नीरस वचन बोलने वाला व्यक्ति दुखी होता है। जो परमेश्वर को भले लगते हैं वही वचन श्रेष्ठ हैं, और क्या कथन व बखान किया जाए॥ ३॥ उन व्यक्तियों की बुद्धि, प्रतिष्ठा व दैवी

सम्पदा रूपी धन श्रेष्ठ है, जिनके हृदय में परमेश्वर का समावेश है। उनकी प्रशंसा क्या की जाए, अन्य कौन प्रशंसनीय हो सकते हैं। सतिगुरु जी कहते हैं कि जो लोग निरंकार की कृपा–दृष्टि से परे हैं, वे परमात्मा द्वारा प्रदत्त विभूतियों में ही खचित रहते हैं, नाम में नहीं॥ ४॥ ४॥

सिरीरागु महला १ ॥ अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥ मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ॥ सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवारु ॥ १ ॥ नानक साचे कउ सचु जाणु ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु सरा गुड़ बाहरा जिसु विचि सचा नाउ ॥ सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥ २ ॥ नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ॥ ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ॥ दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ॥ ३ ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥ तिसु विणु सभु अपवित्रु है जेता पैनणु खाणु ॥ होरि गलां सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥

(श्री गुरु नानक देव जी देहाभिमान का निषेध करते हुए कहते हैं कि)

प्रदाता निरंकार ने जीव को जो नश्वर शरीर रूपी नशे की गोली प्रदान की है। अर्थात् मानव को जो परमात्मा ने देह प्रदान की है, उसके अभिमान रूपी नशे में जीव अचेत हो रहा है। उसके अभिमान में मस्त बुद्धि ने मृत्यु को भुला रखा है और अल्पकालिक खुशी में परमेश्वर से विमुख हो रहा है जिन को यह नशा नहीं हुआ उन सूफियों को सत्य स्वरूप अकाल पुरुष प्राप्त हुआ है ताकि उन्हें बैकुण्ठ में स्थान मिले॥ १॥ इसलिए नानक जी का कथन है कि हे मानव! सत्यस्वरूप अकाल पुरुष को ही निश्चित व सत्य जान। जिसका सिमरन करने से आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है और निरंकार के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ वास्तव में मदिरा गुड़ के बिना नहीं बनती, इसलिए निरंकार के नाम की खुमारी हेतु सत्यता रूपी मदिरा में ज्ञान रूपी गुड़ का सम्मिलित होना आवश्यक है, जिसमें प्रभु–नाम मिला हुआ हो। जितने पुरुष नाम के श्रोता व वाचक हैं, उन पर मैं कुर्बान जाता हूँ। इस नाम सिमरन रूपी मदिरा से मन मस्त हुआ तभी जाना जा सकता है, जब जिज्ञासु निरंकार के स्वरूप को प्राप्त कर ले॥२॥ जो नाम–जाप व सत्कर्म रूपी जल में स्नान करते हैं और सत्य वचन रूपी सुगंधि को तन पर लगाते हैं। उनका ही मुँह उज्ज्वल होता है और अन्त लाखों प्राप्तियों में एक नाम की प्राप्ति ही श्रेष्ठ है। दुख भी उसके सम्मुख ही कथन किए जाएँ जिसके पास देने के लिए सुख हों॥ ३॥ फिर उस वाहिगुरु को हृदय से विस्मृत क्योंकर किया जाए, जिसने संसार के समस्त प्राणियों को प्राण दिए हुए हैं। उस निरंकार के बिना खाना–पीना व पहनना सब अपवित्र है। अन्य सभी बातें व्यर्थ अथवा मिथ्या हैं सिर्फ वही सत्य व स्वीकृत हैं जो तुझे भला लगता है॥ ४॥ ५॥

सिरीरागु महलु १ ॥ जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥ भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥ १ ॥ बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥ तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥ २ ॥ इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥ इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥ अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥ ३ ॥ भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥ नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥ नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥ ४ ॥ ६ ॥

(प्रथम सतिगुरु जी ने यह शब्द अपने विद्या–गुरु पांधे के प्रति उच्चारण किया है)

मोह को जलाकर, तदनन्तर रगड़ स्याही बना लें और श्रेष्ठ बुद्धि को कागज़ बना लें। प्रेम–रूपी लेखनी से एकाग्र मन रूपी लेखक द्वारा गुरु से सत्यासत्य का विचार उस बुद्धि रूपी कागज़ पर लिखें। वाहिगुरु का नाम लिखें, उसकी स्तुति को लिखें और फिर उसकी अनंतता को लिखें॥ १॥ हे पांधा जी ! ऐसा लेखा लिखा जाना चाहिए। तांकि जहाँ (परलोक में) जीवों से कर्मों का हिसाब लिया जाता है वहाँ सत्य नाम का चिन्ह साथ हो॥ १॥ रहाउ॥ जिस परलोक में भक्त जनों को सम्मान मिलता है, सदैव प्रसन्नता तथा सदैव आनन्द की प्राप्ति होती है। जिनके हृदय में सत्य नाम बसा हुआ है, उनके ललाट पर तिलक सुशोभित होते हैं। ऐसा नाम जब निरंकार की कृपा हो तभी प्राप्त होता है, अन्यथा जो और वार्ता करनी है वह व्यर्थ है॥२॥ कोई यहाँ जन्मता है और कोई मृत्यु को प्राप्त होता है, किन्हीं यहाँ पर मुखिया बन बैठते हैं। कोई भिखारी पैदा होता है, कोई यहाँ पर बड़े दरबार लगा कर रहते हैं। किन्तु परलोक में जाकर ही प्रतीत होता है कि निरंकार के नाम बिना यह सब–कुछ व्यर्थ है॥ ३॥ हे पांधा जी ! आप के हृदय में परलोक का भय है अथवा नहीं, किन्तु मुझे आगे परलोक का भय बहुत है। इसलिए यह शरीर व्यवहारिक कार्यों में खप–खप कर टूट रहा है। जिनके नाम बादशाह व सरदार होते हैं, वे भी ख्वार होते यहाँ देखे गए हैं। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जब जीव इस नश्वर संसार को त्याग कर चला जाता है तो जितने भी यहाँ पर मिथ्या प्रेम–सम्बन्ध स्थापित किए होते हैं, वे टूट जाते हैं॥ ४॥ ६॥

सिरीरागु महला १ ॥ सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे॥ खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥ छतीह अंम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥ १ ॥ बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥ जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥ नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥ कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥ २ ॥ बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥ जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥ तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥ वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥ ३ ॥ बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥ जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥ हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥ नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥ ४ ॥ बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥ जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥

(सतिगुरु जी ने यह शब्द अपने माता–पिता के प्रति उच्चारण करते हुए फुरमान किया है कि)

हे पिता जी ! परमेश्वर के नाम का चिन्तन करने से मीठे रस तथा श्रवण करने से लवणीय रस प्राप्त होते हैं। मुँह से उसकी स्तुति कथन करने से खट्टे व तुर्श पदार्थों का स्वाद प्राप्त होता है और रागों में कीर्तन करने से सर्व प्रकार के मसालों का स्वाद मिलता है। वास्तव में छत्तीस प्रकार का अमृत रूपी भोजन एक परमेश्वर का प्रेम है, परंतु जिन पर परमात्मा की कृपा होती है यह उसी को प्राप्त होते हैं॥ १॥ हे पिता जी ! जिह्वा के स्वाद हेतु अन्य पदार्थों का भक्षण करना ख्वार करता है। जिसके खाने से मन में कामादिक विकारों की प्रवृत्ति हो, उससे परलोक में देह को पीड़ित किया जाता है ॥ १॥ रहाउ॥ मन को वाहिगुरु–नाम में लीन करने को ही मैंने लाल रंग का पहरावा बनाया है, सत्य वचन कथन करने को श्वेत पहरावा बनाया है। पाप रहित होकर प्रभु के चरणों का ध्यान करने को मैंने नील वस्त्र का पहरावा बनाया है। संतोष को कमरबंद और ईश्वर–नाम को धन व यौवन माना है॥ २॥ हे पिता जी ! मन–भावना के अनुसार अन्य पहनने से मानव ख्वार होता है। जिसके पहनने

से तन को पीड़ा हो तथा मन में विकारों की उत्पति हो, ऐसे वस्त्र पहनने व्यर्थ है॥१॥ रहाउ॥ धर्म रूपी घोड़े को सत्य वचन की ज़ीन पहना कर, उसको करुणादि स्वर्ण के दुमची भूषण से सजा कर निरंकार की प्राप्ति के मार्ग की सूझ पर मैंने चलना किया है। शुद्धचित्त रूपी तरकश में प्रेम रूपी तीर हैं, परमेश्वर की ओर उन्मुख बुद्धि मेरा कमान है, शांति मेरे लिए बर्छी है, ज्ञान को मैंने म्यान माना है, इन शुभ गुणों की ओर ही मैंने दौड़ना किया है। ईश्वर–कृपा से आपके घर में प्रतिष्ठा से प्रकट होना मेरे लिए धौंसा व भाला है, आपकी साक्षात् कृपा ही मानों मेरी उच्च जाति है॥३॥ हे पिता जी! चित्त प्रसंन करते हेतु किसी अन्य की सवारी करने से मानव ख्वार होता है। जिस पर चढ़ने से तन को पीड़ा हो और मन में विकारों की उत्पति हो, ऐसी सवारी करना व्यर्थ है॥ १॥ रहाउ॥ हे निरंकार! तेरे नाम की प्रसंनता ही मेरे लिए भवनादि है और तुम्हारी कृपा–दृष्टि मेरा परिवार है। हे अनंत परमेश्वर! तुम्हारी रज़ा से सांसारिक क्रिया हेतु आदेश होता है, अन्य निरर्थक बातों का करना निष्फल है। सतिगुरु जी का फुरमान है कि वह सत्य स्वरूप अकाल पुरुष किसी अन्य से पूछ कर विचार नहीं करता अर्थात् वह स्वतंत्र शक्ति है॥ ४॥ हे पिता जी! अन्य भोग–विलास की निद्रा से मानव ख्वार होता है। जिस सोने से तन को पीड़ा हो और मन में विकारों की उत्पत्ति हो, ऐसी निद्रा लेना व्यर्थ है॥ १॥ रहाउ॥ ४॥ ७॥

सिरीरागु महला १ ॥ कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥ १ ॥ बाबा होर मति होर होर ॥ जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥ नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥ जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥ २ ॥ जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥ ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥ नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥ ३ ॥ खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥ जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥ नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥ ४ ॥ ८ ॥

[सतिगुरु जी इस शब्द में मानव को सुचेत करते हैं कि मनुष्य जितना भी विद्वान व बुद्धिमान हो, किन्तु यदि उसने बुद्धि को नाम–सुमिरन में नहीं लगाया तो जीवन व्यर्थ है।]

शुभ कर्म करने से शरीर केसर के समान पवित्र है, वैरागमयी वचन बोलने से जिह्वा रत्न समान है तथा निरंकार का यशोगान करने से शरीर में विद्यमान श्वास चंदन की सुगन्ध के समान हैं। अठसठ तीर्थों के स्नान–फल का तिलक मस्तिष्क पर शोभायमान होता है, ऐसे संतों की बुद्धि में प्रकाश होता है। फिर तो उस प्रकाशमान बुद्धि द्वारा परमेश्वर के गुणों की प्रशंसा की जाए॥ १॥ हे मानव जीव! परमेश्वर के ज्ञान के बिना अन्य सांसारिक विकारों में लिप्त बुद्धि व्यर्थ है। यदि सौ बार लुभावने पदार्थों को अर्जित किया जाए, तो वे मिथ्या पदार्थ व उनका बल मिथ्या है॥ १॥ रहाउ॥ अन्य ज्ञान–बल से पूजा होने लगे, लोग पीर–पीर कहने लगें तथा सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर उसके सम्मुख हो जाए। अपना नाम भी कहलाए तथा पुनः सिद्धों में भी गिना जाए। किन्तु यदि अकाल पुरुष के दरबार में उसकी प्रतिष्ठा स्वीकृत न हो तो उसकी यह सब पूजादि उसे ख्वार करती है॥ २॥ जिनको सतिगुरु ने उच्च पद पर आसीन किया है, उन्हें कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। क्योंकि उनके अंतर्मन में वाहिगुरु नाम का खजाना है और नाम के कारण ही संसार में उनका अस्तित्व है। जो सत्य स्वरूप, त्रैकालाबाध, भेद रहित निरंकार है उसके नाम के कारण ही (परमात्मा द्वारा प्रतिष्ठित व्यक्ति) वे पूजनीय व मानने योग्य होते हैं॥ ३॥ जब मानव शरीर (मृत्यु के पश्चात्) धूल में मिल जाता है तब जीवात्मा की दशा कैसी होगी। फिर उसकी सभी चतुराइयां जल जाती हैं और वह विलाप करता हुआ यमदूतों के साथ उठ कर चला जाता है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि वाहिगुरु का नाम विस्मृत करके यमों के द्वार पर जाने से क्या होता है॥४॥८॥

सिरीरागु महला १ ॥ गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥ जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥ ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥ गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥ मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥ बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥ २ ॥ गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥ गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥ जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावण जाउ ॥ ३ ॥ पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥ पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥ नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥ ४ ॥ ६ ॥

{सतिगुरु जी ने प्रभु–प्राप्ति का मार्गदर्शन करते हुए इस शब्द का उच्चारण किया है।}

हे मानव! जो शुभ गुणों से युक्त संत रूप गुणवती (जीवात्मा) है, वह अकाल पुरुष के गुणों का विस्तार करती है और जो अवगुणों से युक्त मनमुख रूप गुणहीन है, वह पश्चाताप करती है। इसलिए यदि जीव रूपी स्त्री पति–परमेश्वर को मिलना चाहती हो तो उसे हृदय में सत्य को धारण करना होगा, क्योंकि झूठ के आश्रय से पति–परमेश्वर प्राप्त नहीं होता। उस जीव–स्त्री के पास तृष्णा रूपी नदी पार करने हेतु न तो भक्ति–भाव की नाव है और न ही प्रेम–भाव का तुल्हा (रस्सों से बांध कर काष्ठ का बनाया हुआ तख्ता) है, इन साधनों के बिना तो वह परमात्मा इतना दूर है कि उसकी प्राप्ति सम्भव नहीं॥ १॥ मेरा निरंकार सर्व–सम्पन्न है और अचल सिंहासन पर विराजमान है। यदि कोई गुरु के उन्मुख होने वाला सद्पुरुष कृपा करे तो अपरिमेय व सत्य स्वरूप परमेश्वर किसी साधक को प्राप्त हो सकता है॥ १॥ रहाउ॥ मानव शरीर रूपी परमेश्वर का मंदिर अत्यंत सुंदर है, उसमें चिन्तन रूपी माणिक्य व प्रेम रूपी लाल विद्यमान हैं। वैराग रूपी मोती है, ज्ञान रूपी निर्मल हीरा है तथा धातुओं में श्रेष्ठ स्वर्ण की भाँति यह मानव देह भी एक श्रेष्ठ मनोहर दुर्ग है। (यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि) इस दुर्ग पर बिना सीढ़ी के कैसे चढ़ा जाए, (सतिगुरु जी उत्तर देते हैं) इस मानव देह रूपी दुर्ग पर चढ़ने हेतु, अर्थात् इस मानव शरीर की मुक्ति हेतु, गुरु द्वारा निरंकार का चिन्तन करके प्रसंनचित्त, यानी गुरु उपदेश से परमात्मा का नाम सिमरन करके मुक्ति प्राप्त कर॥२॥ हे मानव! (इस दुर्ग पर चढ़ने हेतु) गुरु रूप सीढ़ी, (तृष्णा रूपी नदी पार करने हेतु) गुरु रूप नाव व गुरु रूप तुल्हा और (आवागमन से मुक्ति प्राप्ति हेतु) गुरु द्वारा हरिनाम रूपी जहाज का सहारा लिया जा सकता है, अथवा निरंकार के नाम–सिमरन की प्राप्ति के लिए गुरु–उपदेश रूपी सीढ़ी, नाव व तुल्हा को अपना आश्रय बनाओ। गुरु के पास भवसागर पार करने हेतु ज्ञान रूपी जहाज़ है, और गुरु ही पाप कर्मों की निवृत्ति हेतु तीर्थ स्थान व तन शुद्धि हेतु पवित्र दरिया है। यदि निरंकार को उस जीव–स्त्री का आचरण भला लगता है तो उसकी बुद्धि निर्मल होती है और वह सत्संगति रूपी सरोवर में स्नान करने जाती है॥ ३॥ वह जो परिपूर्ण निरंकार है उसकी पूर्ण श्रद्धा से उपासना करें तो उस अधिष्ठान स्वरूप अकाल पुरुष में स्थिर हुआ जा सकता है। परिपूर्ण परमेश्वर को प्राप्त हुआ मानव जीव शोभायमान होकर निराश व्यक्तियों की आशाएँ पूर्ण करने के समर्थ हो जाता है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि वह परिपूर्ण अकाल पुरुष जिसको प्राप्त हो जाए तो उसके शुभ गुणों में कमी कैसे आ सकती है॥४॥६॥

सिरीरागु महला १ ॥ आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥ मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ॥ साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥ १ ॥ करता सभु को तेरै जोरि ॥ एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणंी ॥ सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥ पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥ २ ॥ केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥ केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥ केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥ ३ ॥ सचु मिलै सचु उपजै सच महि साचि समाइ ॥ सुरति होवै पति ऊगवै गुर बचनी भउ खाइ ॥ नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥ ४ ॥ १० ॥

{गुरु नानक देव जी जब देश–देशान्तर का भ्रमण करते हुए पाक–पटन में पहुँचे तो वहाँ उनकी मुलाकात शेख फरीद के पोत्रे शेख ब्रह्म के साथ हुई। इस मुलाकात के दौरान ही सतिगुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया।}

हे सत्संगिनी बहन! आओ, मेरे गले मिलो, क्योंकि हम एक ही पति–परमेश्वर की सखियाँ हैं। हम दोनों मिलकर उस सर्वशक्तिमान निरंकार पति की कीर्ति की बातें करें, उस सत्य स्वरूप वाहिगुरु में सर्वज्ञानादि के सभी गुण हैं और हम में सभी अवगुण ही हैं॥ १॥ हे कर्त्ता पुरुष! सम्पूर्ण सृष्टि तेरी शक्ति के कारण ही है। जब एकमेव अद्वितीय ब्रह्म का विचार करें तो तू ही तू व्यापक है फिर अन्य किसी की क्या आवश्यकता है॥ १॥ रहाउ॥ हे सखियो! जिन्हें पति–परमेश्वर की प्राप्ति हुई है, उन सौभाग्यवती स्त्रियों से जाकर पूछो कि तुम ने कौन से गुणों के कारण पति–परमेश्वर को प्राप्त किया है, अर्थात् ब्रह्मानंद का उपभोग किया है। (प्रत्युत्तर में कहा है कि) संतोष धारण करने व मधुर–वाणी के कारण स्वाभाविक ही श्रृंगारित हुई हैं। जिज्ञासु रूपी स्त्री जब गुरु का उपदेश श्रवण करे तब उसे सुन्दर स्वरूप अकाल पुरुष रूपी पति मिलता है॥ २॥ हे निरंकार! कितनी ही तेरी शक्तियाँ हैं और तेरा दिया हुआ दान भी कितना महान् है (यह सब अकथनीय है)। कितने ही असंख्य सूक्ष्म व स्थूल जीव–जंतु हैं जो तेरा निशदिन स्तुतिगान कर रहे हैं। असंख्य ही तेरे गौरश्यामादि रूप–रंग हैं तथा कितनी ही ब्राह्मण–क्षत्रियादि उच्च जातियाँ व शूद्रादि निम्न जातियाँ रची हुई हैं॥ ३॥ फिर तो हे सखियो! जब सद्पुरुषों की सत्संगति प्राप्त होती है तो हृदय में सुगुणों की उत्पत्ति होती है और सत्य नाम सुमिरन में श्रद्धा करके जीव सत्यस्वरूप अकाल पुरुष में समा जाता है। (पुनः क्या होता है इसका विचार सतिगुरु जी ने कथन किया है) जब मानव–मन प्रभु चरणों में लीन होता है तब पति–परमेश्वर प्रकट होता है, किन्तु यह सब गुरु–उपदेश द्वारा हृदय में परमात्मा का भय धारण करने से ही सम्भव है। सतिगुरु जी कहते हैं कि वह सत्य स्वरूप निरंकार (बादशाह) ऐसी गुणवती ज्ञानी रूप सुहागिन सखियों को स्वयं ही अपने स्वरूप में अभेद कर लेता है॥४॥१०॥

सिरीरागु महला १ ॥ भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥ दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥ कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥ १ ॥ मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥ भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥ मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥ जिस के जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥ २ ॥ जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥ संजोगी मिलि एकसे विजोगी उठि जाइ ॥ जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥ जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥ नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥ ४ ॥ ११ ॥

भला हुआ, जो मेरी बुद्धि अवगुणों से रिक्त हो गई है और मेरे हृदय–घर से अहंत्व व ममत्व विकारों का नाश हो गया है। (जब इन विकारों से हृदय व बुद्धि रिक्त हो गई तो) सतिगुरु का भरोसा प्राप्त हुआ और विकारों में लिप्त रूपी दूत ऐन्द्रिक दूत मेरे दास बन गए। उस निश्चिन्त परमात्मा में निश्चय करते हुए व्यर्थ की कल्पना का त्याग कर दिया है॥ १॥ हे मानव मन! सत्य नाम हृदय में धारण करने से ही यमादि का भय क्षीण होता है। परमेश्वर का भय माने बिना निर्भय कैसे हुआ जा सकता है परमेश्वर का भय पाने हेतु गुरु के मुख से किया गया उपदेश मनन करना पड़ता है॥ १॥ रहाउ॥ फिर तो हे भाई! उस निरंकार का यश कितना कथन किया जाए, क्योंकि उसके यशोगान की तो कोई सीमा ही नहीं है। उस प्रदाता अकाल पुरुष से माँगने वाले तो अनेकानेक जीव हैं और देने वाला वह मात्र एक ही है। जिस के आसरे जीव और प्राण हैं उस निरंकार को मन में बसा लेने से ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति हो सकती है॥ २॥ उसके अतिरिक्त अन्य जो जगत् की रचना है वह एक स्वप्न व तमाशा ही है, क्षण मात्र में यह खेल की भाँति समाप्त हो जाएगा; अर्थात् परमात्मा के

बिना यह संसार व अन्य पदार्थ सब नश्वर हैं। जीव संयोगी कर्मों के कारण संसार में एकत्र होते हैं और वियोगी कर्मों से यहाँ से प्रस्थान कर जाते हैं। जो निरंकार को भला लगता है वही होता है, अपनी समर्था से अन्य कोई भी कुछ नहीं कर सकता॥ ३॥ जिनके पास श्रद्धा रूपी पूँजी है उन गुरु के उन्मुख सौदागरों ने ही वाहिगुरु–नाम रूपी सौदा क्रय किया है और वे नामी पुरुष ही आत्म–वस्तु को खरीदते हैं। जिन्होंने गुरु द्वारा सत्य नाम रूपी सौदा खरीदा है, वे परलोक में भी दृढ़ होते हैं। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिसके पास नाम रूपी सच्चा सौदा है, वही लोक–परलोक में आत्म–वस्तु को पहचान सकेगा॥ ४॥ ११॥

सिरीरागु महलु १ ॥ धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ॥ लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ॥ सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥ १ ॥ भाई रे संत जना की रेणु ॥ संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ॥ सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ॥ गुरमुखि मनु समझाईऐ आतम रामु बीचारि ॥ २ ॥ त्रिबिधि करम कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥ किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥ निज घरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥ ३ ॥ बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥ एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥ नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥ ४ ॥ १२ ॥

(यहाँ पर सतिगुरु मनमुख व गुरमुख में अंतर कथन करते हैं)

जो माया से प्रीत करने वाला प्राणी पुन: माया में ही लिप्त होता है, अर्थात् आवागमन के चक्र में भ्रमण करता है, और गुरु से मिल कर जो अकाल पुरुष का स्तुति गान करता है वह उस परमेश्वर में ही अभेद हो जाता है। (स्तुति करने वालों को) उन्हें आनंददायक (लाल) अति आनंददायक (गुलाल) व अत्यंतानंददायक (गहबरा) सत्य रंग चढ़ जाता है। यह सत्य रंग संतोषी पुरुषों को मिलता है और जो श्रद्धापूर्वक एकाग्रचित होकर वाहिगुरु–नाम का सिमरन करते हैं॥१॥ हे भाई ! संत जनों की चरण–धूलि होकर रहो। क्योंकि इन संतों की सभा रूपी सत्संगति के कारण ही गुरु की प्राप्ति होती है और वे गुरु मुक्ति जैसा दुर्लभ पदार्थ देने हेतु कामधेनु गाय के समान है॥१॥रहाउ॥ सर्वोच्च व शोभनीय स्थान मानव जन्म है, उसे सर्वश्रेष्ठ मानकर ही निरंकार ने अपना निवास स्थान बनाया है। नाम–सिमरन व जप–तपादि सत्कर्मों के करने से ही मानव देह में जो निरंकार का स्वरूप है, उसके साथ प्रेम प्राप्त होता है। गुरु के मुख से हुए उपदेश द्वारा मन को समझाने से ही जीवात्मा और परमेश्वर दोनों की अभेदता का विचार प्रकट होता है॥ २॥ (नित्य, नैमित्तिक व काम्य अथवा सत्व, रजस् व तमस्) त्रिविध कर्म करने से प्रथम तो स्वर्ग प्राप्ति की आशा होती है, फिर इसके छूट जाने की चिन्ता सताने लगती है। इस तीन गुणों की पेचीदगी गुरु के बिना कैसे छूट सकती है जिससे ज्ञान प्राप्ति होकर आत्मिक सुख उपलब्ध हों। जब निरंकार कृपालु होकर पापों की मैल को धो देता है तभी इस मानव शरीर में विद्यमान अकाल पुरुष का स्वरूप पहचाना जा सकता है॥ ३॥ इसलिए यही निश्चय कर कि गुरु के बिना पापों की यह मैल हृदय से नहीं उतर सकती और (जब तक इस मैल की निवृत्ति नहीं हो जाती तब तक) हरि–परमेश्वर की कृपा नहीं हो सकती तथा आत्मस्वरूप में निवास असम्भव है॥३॥ इसलिए समस्त आशाओं का त्याग करके जिज्ञासु को एक ही गुरु का उपदेश मनन करना चाहिए। सतिगुरु जी कहते हैं कि जो सद्पुरुष (नश्वर पदार्थों का त्याग करके) स्वयं निरंकार को देखते हैं फिर अन्य जिज्ञासुओं को दिखाते हैं, उन पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ॥४॥१२॥

सिरीरागु महला १ ॥ ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥ कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥ बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥ १ ॥ मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥ दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥ पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥ नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥ २ ॥ गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥ अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥ आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥ ३ ॥ चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू मांग संधूरु ॥ चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥ जे धन कंति न भावई त सभि अडंबर कूड़ु ॥ ४ ॥ सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥ जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ॥ नानक धंनु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥ ५ ॥ १३ ॥

[इस शब्द में सतिगुरु जी सौभाग्यवती व दुर्भाग्यवती स्त्री के दृष्टांत से मनमुखों की निंदा तथा गुरुमुखों की श्लाघा करते हैं।]

जो अभागिन जीव-स्त्री द्वैत-भाव के कारण ठगी गई है उसके जीवन को धिक्कार है। एक के अतिरिक्त किसी अन्य से अनुरक्त होने के कारण अभागिन जीव स्त्री का जीवन कल्लर की दीवार की भाँति है, जो निशदिन किर-किर कर अंत में गिर पड़ती है; अर्थात् मनमुख जीव आवागमन के चक्र में ही फँसा रहता है। गुरु उपदेश के बिना जीव-स्त्री को पति-परमेश्वर के मिलाप का आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं होता तथा आत्मानंद के बिना दैहिक एवं दैविक कष्टों की निवृत्ति नहीं होती॥१॥ हे मुग्ध जीव-स्त्री! परमात्मा पति के बिना शृंगार का क्या लाभ है, अर्थात् निरंकार में श्रद्धा-भाव के बिना जप-तपादि का किया हुआ शृंगार क्या सुख देगा? जैसे पति से विमुख हुई स्त्री को उस के घर में समीपता प्राप्त नहीं होती, वैसे ही निरंकार की विमुखता के कारण अभागिन स्त्री की भाँति परलोक में भी झूठ में लिप्त जीव को अपमानित होना पड़ता है॥१॥रहाउ॥ निरंकार स्वयं समझदार, सत्य व बड़ा किसान है जो जीवों के कर्मों को नहीं भूलता। पहले तो वह अंतःकरण रूपी बुद्धि को शोध कर फिर उसमें सत्य नाम रूपी बीज को बोता है। उस नाम रूपी एक बीज से नौ निधियों की उत्पत्ति होती है, फिर जीव के मस्तिष्क पर प्रभु की कृपा का चिन्ह अंकित होता है॥२॥ किन्तु जो मनमुख जीव वेद-शास्त्रों आदि से गुरु की महिमा जानकर भी अनभिज्ञ हेता है, अर्थात् गुरु-उपदेश को ग्रहण नहीं करता उसके कर्म उत्तम कैसे हो सकते हैं। अज्ञानी पुरुषों ने अज्ञान के अंधेरे कारण ही वाहिगुरु के नाम को विस्मृत कर दिया है। फिर उसका इस संसार से आवागमन समाप्त नहीं होता और वह पुनः-पुनः जन्म-मरण के चक्र में फँस कर (मुक्ति प्राप्ति हेतु) कमजोर होता रहता है अर्थात्-परमात्मा से विमुख होकर कर्म करने वाला जीव इहलोक व परलोक में अपमानित होकर दुखों को भोगता है॥ ३॥ जैसे कोई स्त्री चंदन केसर को मोल मंगवा लेती है और सिंदूर से माँग भर लेती है। इत्र, कर्पूर व चंदन आदि से कपड़ों को अति सुगंधित कर ले। इतना सब कुछ कर लेने पर भी यदि स्त्री अपने पति को प्रिय न लगी तो शृंगार के किए गए वे सभी आडम्बर मिथ्या है, व्यर्थ हैं। अर्थात् जीवात्मा बेशक जप, तप, यज्ञ, उपासना व संन्यासादि के भेष धारण कर ले किंतु जब तक निरंकार से वह विमुख है ये सब निष्फल हैं॥ ४॥ मनमुख जीव के समस्त रसों का भोगना व्यर्थ है और जप-तपादि का शृंगार करना निरर्थक है। क्योंकि जब तक गुरु-उपदेश को ग्रहण नहीं करता, तब तक वह गुरु के सम्मुख सत्संगति में शोभायमान नहीं होगा। सतिगुरु जी कहते हैं कि उस सौभाग्यवती रूप गुरमुख का जीवन कृतार्थ है जिसका पति-परमात्मा के साथ प्रेम है॥ ५॥ १३॥

सिरीरागु महला १ ॥ सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ ॥ भाहि बलंदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ॥ पंचे रुंने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ॥ १ ॥ मूड़े रामु जपहु गुण सारि ॥ हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ॥ दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि त्रिसना अगि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ॥ २ ॥ मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ॥ धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ॥ करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ॥ ३ ॥ सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ॥ सो नरु जंमै ना मरै ना आवै ना जाइ ॥ नानक दरि परधानु सो दरगहि पैधा जाइ ॥ ४ ॥ १४ ॥

{किसी मृतक शरीर को देखकर वैराग में गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया है।}

जब पुर्यष्टक सहित चेतन सत्ता शरीर में निकल जाती है तब रिक्त देह भयानक हो जाती है। चेतन सत्ता रूपी अग्नि जो पहले प्रज्वलित हो रही थी, वह जब बुझ गई तो शरीर में से प्राण रूपी धुआं नहीं निकला। पिता-पुत्रादि पांचों सम्बन्धी दुख में रुदन कर रहे हैं, अर्थात् पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ वियोग में विलख रही हैं, क्योंकि यह मानव जन्म द्वैत-भाव में ही नाश हो गया॥ १॥ हे मूढ़ जीव! शुभ गुणों को सम्भालते हुए वाहिगुरु नाम का सिमरन करो। जो देहाभिमान स्त्री-पुत्रादि का ममत्व तथा माया का मोह है, इस के कारण सम्पूर्ण सृष्टि ठगी हुई है॥१॥रहाउ॥ जिन्होंने अन्य सांसारिक विकारों में संलग्न होकर वाहिगुरु नाम को भुला दिया है। उनके अंतःकरण में तृष्णाग्नि जल रही है और वे द्वैत-भाव में लग कर जल मरे हैं जिनकी गुरु ने रक्षा की, वे बच निकले तथा अन्य सभी को दुनियावी कार्यों रूपी ठगों ने ठग लिया है॥२॥ अब तो स्त्रियों में जो प्रीत लगी थी वह नष्ट हो गई, सगे-सम्बन्धियों से जो स्नेह था वह भी समाप्त हो गया तथा शत्रु-भाव भी खत्म हो गया है। सांसारिक क्रिया-कलापों से थक गया, अहंत्व, ममत्व व क्रोध नष्ट हो गए। अकाल पुरुष की कृपा द्वारा गुरु उपदेश की प्राप्ति होती है और (उस उपदेश द्वारा ही) चित्तवृतियों का दमन करके निरंकार के सत्य नाम को प्राप्त किया जा सकता है॥३॥ हे मानव! गुरु-उपदेश द्वारा अंतर्मन से नाम सिमरन रूपी सत्कर्म करके सत्य स्वरूप निरंकार की प्राप्ति सम्भव है। फिर तो वह मानव न जन्म लेता है और न मृत्यु को प्राप्त होता है तथा न आता है व न जाता है; अर्थात् वह सांसारिक बंधन व आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि अकाल पुरुष के द्वार पर वह मुखिया होता है और आगे परलोक में भी उसको प्रतिष्ठा प्राप्त होती है॥ ४॥ १४॥

सिरीरागु महल १ ॥ तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ॥ अउगण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ॥ बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ॥ १ ॥ मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ॥ जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ॥ भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥ सची नदरि निहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ॥ २ ॥ साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥ जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥ निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ॥ ३ ॥ इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ॥ पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ॥ नानक अउगण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ॥ ४ ॥ १५ ॥

हे मानव जीव! यह जो शरीर प्राप्त हुआ था वह चिन्ता में जल कर राख हो गया और माया में लिप्त मन (मण्डूर) लोहे की जंग के समान निरर्थक हो गया है। जो पाप कर्म किए गए वे उल्ट

कर उन पर ही लागू हो जाते हैं और झूठ उनके समक्ष तुरही बजाता है। गुरु–उपदेश के बिना जीव भटकता रहता है तथा द्वैत–भाव ने पूर्ण समूह को नरकों में धकेल दिया है॥ १॥ हे मन! तू गुरु–उपदेश में चित्त लगा कर इस भवसागर को पार कर। जिन जीवों ने गुरु द्वारा नाम–ज्ञान को प्राप्त नहीं किया, वे बार–बार आवागमन में ही व्यस्त रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिस अंतर्मन में सत्य–नाम विद्यमान हो, वही पवित्र कहा जाता है। शरीर सत्य स्वरूप निरंकार के भय में रत है और रसना सत्य–नाम का स्वाद चख रही है। उस जीव पर जब परमेश्वर की कृपा–दृष्टि हो गई तब उसे नरकों की अग्नि का ताप नहीं सहना पड़ता॥२॥ (अब सतिगुरु जी पुनः सृष्टि की रचना का चित्रण करते हैं।) सत्य स्वरूप निरंकार से पवन हुआ, पवन से जल की उत्पत्ति हुई। फिर सृजनहार परमात्मा ने जलादि तत्वों से तीनो लोकों (सम्पूर्ण सृष्टि) की रचना की, फिर इस रचना के कण–कण में उसने जीव रूप में अपनी ज्योति विद्यमान की। गुरु उपदेश में तदाकार होने से जिसका मन निर्मल होता है, वह फिर कभी द्वैत के कारण दूषित नहीं होता, इसी से वह प्रतिष्ठित होता है॥ ३॥ जब यह मन सत्य द्वारा संतुष्ट हो जाता है तब उस पर निरंकार की कृपा होती है। जिस सत्य स्वरूप के भय में पांचों भौतिक तत्व (सम्पूर्ण मानव शरीर) अनुरक्त हैं उस सत्य स्वरूप परमात्मा की परम ज्योति मन में निवास करती है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि उस मानव जीव को समस्त अवगुण विस्मृत हो गए हैं और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा स्वयं गुरु करते हैं॥४॥१५॥

सिरीरागु महला १ ॥ नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥ इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ॥ मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ॥ १ ॥ गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ॥ जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ॥ जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ॥ आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ॥ २ ॥ साहि साहि तुझु संमला कदे न विसारेउ ॥ जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अंम्रितु पेउ ॥ मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ॥ ३ ॥ जिनि एहु जगतु उपाइआ त्रिभवणु करि आकारु ॥ गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ॥ घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारु ॥ ४ ॥ गुरमुखि जिनी जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥ सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि॥ नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभ पासि ॥ ५ ॥ १६ ॥

गुरु नानक देव जी कथन करते हैं गुरु–उपदेश का मनन करने से ही सत्य नाम रूपी नौका में सवार होकर जीव भवसागर को पार कर सकता है। लेकिन अनेक जीव अभिमान करते हुए जन्म ले रहे हैं और मृत्यु को प्राप्त कर रहे हैं। हठी इन्सान मन की बुद्धि के कारण संसार–सागर के विकारों में डूबा रहता है, लेकिन गुरु के बताए सत्य मार्ग पर चल कर इस संसार सागर को पार किया जा सकता है॥ १॥ गुरु के आश्रय बिना कैसे यह भवसागर पार किया जा सकता है और कैसे आत्मिक–आनंद प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए उस परमात्मा में ऐसा निश्चय रख कर विनती करो कि जैसे आप को अच्छा लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो, आप के अतिरिक्त मेरा अन्य कोई आश्रय नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ सृष्टि के आश्चर्यजनक दृश्य का वर्णन करते हुए गुरु जी कथन करते हैं कि हे मानव! जब संसार के आगे (श्मशान भूमि में) मैं देखता हूँ तो दावानल प्रज्वलित है, और पीछे (संसार में) देखता हूँ तो अंकुर स्फुटित हो रहे हैं अर्थात् नए जीव पैदा हो रहे हैं। जिस सृष्टिकर्ता के आदेश से यह सांसारिक जीव पैदा हो रहे हैं और जिस संहारक शक्ति की आज्ञा से नष्ट हो रहे हैं, वह परिपूर्ण सत्य परमेश्वर कण–कण में व्याप्त है। वह स्वयं गुरु से मिलाप करवाता है और गुरु

से मिलकर जीव सत्य स्वरूप के समक्ष होता है॥ २॥ हे प्रभु! कृपा करो, मैं श्वास–श्वास आप को स्मरण करूँ, कभी भी न भुलाऊं। हे साहिब! जब–जब तुम मेरे मन में वास करोगे, तब–तब मैं आत्मिक आनंद देने वाला नाम रूपी अमृत पीता रहूँगा। हे परमात्मा! मेरा यह तन और मन तुम्हारा ही दिया हुआ है, तुम मेरे स्वामी हो, इसलिए कृपा करके मेरे अंतर्मन से अहंकार दूर करके मुझे अपने में लिवलीन कर लो॥ ३॥ जिस परमात्मा ने इस सृष्टि का निर्माण किया है, उसने इसे तीन लोकों का आकार दिया है। इस रहस्यमयी ज्ञान को गुरमुख जीव ही जानते है, मायाधारी मनमुख विमूढ़ जीव अंधकार में रहते हैं। श्रेष्ठ गुरु की शिक्षा प्राप्त जीव ही सर्वव्यापक ज्योति को निरंतर जान सकता है॥४॥ जिन गुरमुख जीवों ने उस परमात्मा को जान लिया है, वे धन्य हैं। जो परमात्मा के सत्य नाम में लिप्त होकर उसी सत्य में अभेद हो गए हैं। श्री गुरु नानक जी कथन करते हैं कि वे नाम द्वारा संतुष्ट हो गए हैं और उन्होंने अपने प्राण व शरीर उस परमेश्वर को ही अर्पित कर दिए हैं॥ ५॥ १६॥

सिरीरागु महला १ ॥ सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥ जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥ बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥ १ ॥ मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥ गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ॥ त्रिसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥ ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ॥ २ ॥ लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥ बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥ हरि जपि जीअरे छुटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ॥ ३ ॥ तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥ त्रिभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥ सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥ ४ ॥ १७ ॥

हे प्रिय मित्र मन! सुनो, यह समय (मानव जन्म) परमात्मा से मिलने का है। जब तक यह यौवनावस्था के श्वास चल रहे हैं, तब तक ही यह शरीर नाम सुमिरन करने के योग्य है। अर्थात्–वृद्धावस्था में निर्बलता सुमिरन नहीं करने देती। शुभ गुणों के बिना यह तन किसी काम का नहीं है, अंत में इसने नष्ट होकर राख का ढेर बन जाना है॥ १॥ हे मेरे प्रिय मन! तुम नाम–सुमिरन का लाभ उठा कर सत्य स्वरूप के घर जाओ। गुरु के उन्मुख होकर नाम–सुमिरन कर, इससे अहंकार की अग्नि बुझ जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ अनेकानेक कथा–कहानियाँ सुन–सुन कर बौद्धिक उधेड़–बुन में लगे रहते हैं, और अनेकानेक लिख–लिख कर, पढ़–पढ़ कर तथा सोच–विचार कर पदों का संग्रह करते हैं वह सब एक बोझ के समान हैं। उनकी तृष्णा में दिन–रात वृद्धि होती रहती है और अहंकार के रोग में ग्रस्त होकर कई तरह के विकार उत्पन्न हो जाते हैं। वह प्रभु निश्चित तथा अपरिमेय है, उसके बारे में ज्ञान गुरु की शिक्षा द्वारा ही होता है॥ २॥ हम लाखों तरह की चतुराई कर लें और लाखों ही लोगों के साथ प्रीत कर लें। (तो भी) संतों की संगति किए बिना तृप्ति नहीं होती तथा नाम सुमिरन के बिना सांसारिक दुख एवं संताप बने रहते हैं। हे जीव! गुरु उपदेश द्वारा स्वयं को पहचान कर हरि सिमरन करके इन विकारों से छुटकारा पाया जा सकता है॥ ३॥ जिसने अपना तन–मन गुरु के पास बेच दिया है, अंतः करण और सिर भी अर्पित कर दिया है। उसने जिस प्रभु को तीनों लोकों में ढूँढा था, उसे गुरु उपदेश द्वारा खोज कर प्रसंनता प्राप्त की है। गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि सतिगुरु ने अपने साथ मिला कर उस प्रभु से मिलाप करवा दिया है॥ ४॥ १७॥

सिरीरागु महला १ ॥ मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥ तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥ अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥ १ ॥ जीअरे राम जपत मनु

मानु ॥ अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ॥ मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ॥ अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥ २ ॥ अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ॥ सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ॥ खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरि नाम निवासु ॥ ३ ॥ जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥ त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥ विजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥ ४ ॥ मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥ गिआन महा रसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥ नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥ ५ ॥ १८ ॥

गुरु के उन्मुख जीवों को न मरने की चिन्ता होती है और न ही जीने की आशा। वह निश्चय करके कहते हैं कि हे प्रभु ! तुम समस्त प्राणियों की प्रतिपालना करने वाले हो, प्रत्येक के श्वास–ग्रास का लेखा तुम्हारे पास है। गुरमुखों के हृदय में तुम वास करते हो, जैसे आपको अच्छा लगता है, वैसे तुम निर्णय लेते हो॥ १॥ हे जीव ! अकाल पुरुष का चिंतन करते हुए मन में निश्चय धारण करो। जब गुरु द्वारा गुरमुख को ज्ञान प्राप्त हुआ तो अंतर्मन में लगी तृष्णा रूपी आग की जलन समाप्त हो गई॥ १॥ रहाउ॥ अंतर्मन का रहस्य तभी जाना जा सकता है, जब सभी शंकाओं को दूर करके गुरु से मिला जाए। मरणोपरान्त जिस यम घर में जाना है, क्यों न जीवित रह कर नाम सिमरन द्वारा उस यम को ही मार लें। गुरु के उपदेश से ही पारब्रह्म की अनाहत वाणी श्रवण करने को मिलती है॥ २॥ जब यह अनाहत वाणी प्राप्त होती है तो अभिमान का विनाश हो जाता है। जो अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं, उन पर सदैव कुर्बान जाएँ। जिनके मुँह में हरिनाम का वास होता है, उसे परमात्मा की सभा में ले जाकर प्रतिष्ठा के परिधान से सुशोभित किया जाता है॥ ३॥ जहाँ कहीं भी मेरी दृष्टि पड़ती है, वहाँ पर शिव (चेतन) और शक्ति (प्रवृति) का संयोग है। त्रिगुणी (तम,रज,सत्त्व) आत्मिक माया से यह शरीर बंधा हुआ है, जो इस संसार में आया है, उसने इनके साथ ही खेलना है। जो गुरु से विमुख हैं, वह परमात्मा से बिछुड़ कर दुखी होते हैं तथा मनमुख (स्वेच्छाचारी) मिलाप की अवस्था को प्राप्त नहीं करते॥ ४॥ यदि माया में लिप्त रहने वाला मन सत्य स्वरूप परमात्मा के भय में लीन हो जाए तो वह अपने वास्तविक गृह में निवास प्राप्त कर लेता है। वह ज्ञान द्वारा ब्रह्मानंद रूपी महारस को भोगता है तथा उसे फिर कोई तृष्णा नहीं होती। गुरु नानक जी कथन करते हैं कि इस चंचल मन को मोह–माया से दूर करके परमात्मा से मिलाप करो फिर तुझे कोई दुख–संताप नहीं सताएगा॥ ५॥ १८॥

सिरीरागु महला १ ॥ एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लुोभानु ॥ सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥ साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥ १ ॥ मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥ हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥ सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ॥ निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगुरि दीआ नामु ॥ २ ॥ कूकर कूड़ु कमाईऐ गुर निंदा पचै पचानु ॥ भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥ मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥ ३ ॥ ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ॥ हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ॥ नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥ ४ ॥ १९ ॥

यह मन विमूढ़ व लोभी है, जो भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए लालायित है। शाक्त (शक्ति उपासक लोभी जीवों) का मन गुरु–शब्द (प्रभु–नाम) में लिवलीन नहीं होता, इसलिए दुर्मति वाले

आवागमन के चक्र में पड़े रहते हैं। यदि श्रेष्ठ सतिगुरु की प्राप्ति हो जाए तो शुभ गुणों का कोष (परमात्मा) प्राप्त हो जाता है॥ १॥ हे मेरे चंचल मन! तू अभिमान और गर्व का त्याग कर दे। गुरु को हरि (जो सुखों का सरोवर है) का रूप मान कर उसकी सेवा कर, तभी तुम परमात्मा के दरबार में सम्मान प्राप्त करोगे॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के उपदेशानुसार दिन–रात राम–नाम का सुमिरन करो और इस हरि–नाम की पहचान करो। हरि–नाम में ही सभी सुखों का भोग करने को मिलता है, लेकिन ऐसा ज्ञान संत–सभा (सत्संग) में ही प्राप्त होता है। जिनको सत्संगति में सतिगुरु ने हरि का नाम प्रदान किया है, उन्होंने नित्य दिन–रात इस हरि प्रभु की उपासना की है॥ २॥ जो कुत्ते (लोभी पुरुष) मिथ्या कमाई करते हैं, अर्थात् झूठ बोलते हैं, गुरु की निन्दा करना उनका आहार बन जाता है। इसके फलस्वरूप वह भ्रम में विस्मृत हो कर बहुत कष्ट सहन करते हैं और यमों के दण्ड से नष्ट हो जाते हैं। मनमुख जीव कभी आत्मिक सुख प्राप्त नहीं करते, केवल गुरु के उन्मुख प्राणी ही सर्वसुखों को प्राप्त करते हैं॥ ३॥ इहलोक में मनमुख जीव माया के धंधों में खपते रहते हैं, वे असत्य कर्म हैं, लेकिन परमात्मा के दर पर सत्य कर्मों का लेखा ही स्वीकृत है। जो गुरु की सेवा करता है, वह हरि का मित्र है, उसकी करनी श्रेष्ठ है। गुरु नानक जी कहते हैं कि जिनके मस्तिष्क पर सत्य कर्मों का लेखा लिखा है, उनको प्रभु का नाम कभी विस्मृत नहीं होता॥ ४॥ १६॥

सिरीरागु महला १ ॥ इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥ किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि॥ गुरि मिलिऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुण माहि ॥ १ ॥ मन रे अहिनिसि हरि गुण सारि ॥ जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोती जोति मिलाईऐ सुरती सुरति संजोगु ॥ हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥ गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥ २ ॥ काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥ तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥ गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ॥ ३ ॥ चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जलु पाइ ॥ अंतरि कमलु प्रगासिआ अंम्रितु भरिआ अघाइ ॥ नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ॥ ४ ॥ २० ॥

अल्पतम समय के लिए भी यदि प्रियतम प्रभु विस्मृत हो जाए तो मन में बहुत बड़ा रोग अनुभव होता है, अर्थात् पश्चाताप होता है। जब मन में हरि का वास ही नहीं होगा तो उसके दरबार में प्रतिष्ठा कैसे प्राप्त करेगा। गुरु से मिलाप करके आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है, प्रभु का यशोगान करके तृष्णाग्नि मिट जाती है॥ १॥ हे मन! दिन–रात हरि–गुणों का स्मरण कर। जिनको क्षण–मात्र भी प्रभु का नाम विस्मृत नहीं होता। ऐसे लोग विरले ही इस संसार में होते हैं॥ १॥ रहाउ॥ यदि जीवात्मा को परमात्मा की ज्योति में विलीन कर दिया जाए और निज चेतना को दिव्य चेतना में संलिप्त कर दिया जाए तो मन से हिंसा, अभिमान, शोक, शंका और चंचलता आदि वृत्तियाँ समाप्त हो जाएँगी और साथ ही संशय व शोक भी मिट जाएँगे। जिस गुरमुख के मन में हरि का वास है, उसे सतिगुरु संयोगवश अपने साथ मिला लेते हैं॥ २॥ यदि बुद्धि रूपी स्त्री को निष्काम कर्मों द्वारा शुद्ध करके गुरु उपदेश का श्रेष्ठतम भोग भोगने को तत्पर किया जाए। सभी नश्वर पदार्थों की कामना का त्याग किया जाए तो वह गुरमुख सदैव गुरु उपदेश के कारण सुहागिन जीवन व्यतीत कर सकता है और अपने प्रभु–पति के साथ आनंद प्राप्त कर सकता है॥ ३॥ गुरमुख जीव हरि–नाम रूपी जल डाल कर चहु–अग्नि (हिंसा, मोह, क्रोध, लोभ) बुझा देता है। उनका हृदय कमल की भाँति खिल उठता है, क्योंकि उनके हृदय में नाम–अमृत भरा हुआ है। गुरु जी कथन करते हैं कि हे जीव! तू सतिगुरु को अपना मित्र बना, जिनकी कृपा से तुम परलोक में सुख प्राप्त करोगे॥ ४॥ २०॥

सिरीरागु महला १ ॥ हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥ मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥ कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥ १ ॥ भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥ सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥ जिउ अगनि मरै जलि पाइऐ तिउ त्रिसना दासनि दासि ॥ जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥ २ ॥ गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥ साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥ सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥ ३ ॥ मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ॥ सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गंभीरु ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥ ४ ॥ २१ ॥

हे प्रिय जीव ! हरि–नाम का जाप करो तथा गुरु उपदेश द्वारा प्रभु का नाम–सुमिरन करो। मन को सत्य की कसौटी पर कस कर परमात्मा की यथार्थ तुला पर तोला जाता है। उस मन की कीमत कही नहीं डाली जा सकती, क्योंकि वह माणिक्य की भाँति शुद्ध है और वह मूल्य से अमूल्य है॥ १॥ हे भाई ! हरि रूपी हीरा गुरु के हृदय में ही देखा जा सकता है। उस हीरे को सत्संगति में तथा दिन–रात प्रभु के यशोगान से प्राप्त किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे जिज्ञासु ! श्रद्धा रूपी पूँजी लेकर गुरु के ज्ञान–प्रकाश में सत्य सौदा करो। जैसे जल डालने से अग्नि बुझ जाती है, वैसे तृष्णाग्नि गुरु–भक्ति रूपी जल से दासों की दास बन जाती है। इससे जीव यमों के दण्ड से बच जाता है और स्वयं भी भवसागर से पार हो जाता है तथा अन्य को भी पार होने में सहायता करता है॥ २॥ गुरु के उन्मुख जीवों को असत्य अच्छा नहीं लगता, वे प्रायः सत्य परमात्मा में लिप्त रहते हैं और सत्य ही उनको भाता है। शक्ति उपासक (शाक्त) गुरु से विमुख जीव को सत्य नहीं भाता, असत्य की नींव भी असत्य ही होती है। पूर्ण गुरु से मिल कर जो सत्य नाम में रम रहे हैं, वे गुरमुख सत्य होकर सत्य स्वरूप परमात्मा में अभेद हो रहे हैं॥ ३॥ मन में माणिक्य, लाल, हीरे, रत्न के तुल्य हरि–नाम पदार्थ विद्यमान है। वह गहन–गम्भीर प्रभु प्रत्येक हृदय में वास करता है, उसका नाम–धन ही सच्चा सौदा है। नानक जी कहते हैं कि हीरे की भाँति अमूल्य हरि यदि कृपा करे तो गुरु द्वारा ही नाम रूपी सच्चा सौदा प्राप्त किया जा सकता है॥ ४॥ २१॥

सिरीरागु महला १ ॥ भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥ अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥ होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥ १ ॥ मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥ गुर का कहिआ मनि वसै हउमै त्रिसना मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु माणकु निरमोलु है राम नामि पति पाइ ॥ मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥ आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥ २ ॥ जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥ जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥ इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥ ३ ॥ जिंना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥ गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥ नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥ ४ ॥ २२ ॥

देश–देशान्तर का भ्रमण करने से भी भ्रमाग्नि शांत नहीं होती, चाहे कोई कितना भी भ्रमण क्यों न कर ले। अंतर्मन से मल दूर नहीं होता, ऐसे जीवन को धिक्कार है, ऐसे भेष को भी धिक्कार है। सतिगुरु के उपदेश बिना किसी भी प्रकार से प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती॥ १॥ हे प्रिय मन ! गुरु के मुँह से निकलने वाले उपदेश द्वारा नाम जल लेकर तृष्णाग्नि को बुझा ले। यदि गुरु–उपदेश मन

में बस जाए तो अहंकार व तृष्णग्नि जैसे सभी विकार नष्ट हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा के नाम में लिवलीन होकर यह मन अमूल्य माणिक्य बन जाता है, और प्रतिष्ठित होता है। लेकिन परमात्मा का नाम सत्संगति करने से ही प्राप्त होता है, गुरु की शरण पड़ने से ही परमात्मा के चरणों में सुरति लगती है। अहंकार दूर होने से सुख प्राप्त होता है। तब जीवात्मा परमात्मा में उसी प्रकार विलीन हो जाती है, जैसे जल में जल मिल जाता है॥ २॥ जिस ने हरि–हरि नाम का सुमिरन नहीं किया, वह अपने अवगुणों के फलस्वरूप आवागमन के चक्र में ही पड़ा रहता है। जिस ने सतिगुरु महापुरुषों के साथ भेंट नहीं की, वे भवसागर में स्वयं भी दुखों के साथ खपता है और अन्य जीवों को भी खपाता है। यह अमूल्य रत्नों के समान मानव जन्म यूं ही कौड़ी के बदले व्यर्थ चला जाता है॥ ३॥ जिन को सतिगुरु जी प्रसन्न होकर मिले हैं, वे पुरुष पूर्ण ज्ञानी हैं। गुरु से मिल कर ही भवसागर पार किया जा सकता है तथा परलोक में सम्मान प्राप्त होता है। नानक जी कथन करते हैं कि उनके मुख उज्ज्वल होते हैं जिन के मुख से नाम–ध्वनि उत्पन्न हो रही हो और जो गुरु के उपदेश का प्रतीक हैं॥ ४॥ २२॥

सिरीरागु महला १ ॥ वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥ तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥ अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥ १ ॥ भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥ हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥ खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥ फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥ २ ॥ खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥ खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥ खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥ ३ ॥ नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥ राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥ हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥ ४ ॥ २३ ॥

हे जीव रूपी व्यापारियो ! नाम रूपी व्यापार करो और सौदा सम्भाल कर रख लो। गुरु–उपदेशानुसार ऐसी वस्तु का क्रय करो जो सदा तुम्हारे साथ रहे। आगे परलोक में परमात्मा रूपी सौदागर बहुत सूझवान बैठा है, वह तुम्हारी वस्तु की सम्भाल कर लेगा। अर्थात्–तुम्हारे सौदे को वह जांच–परख कर ही ग्रहण करेगा॥ १॥ हे भाई ! एकाग्रचित होकर राम–नाम जपो। इस संसार में जो श्वास रूपी पूँजी लेकर आए हो, इससे हरि यश का सौदा खरीद कर ले चलो, जिसे देख कर पति–परमात्मा प्रसंन होगा॥ १॥ रहाउ॥ जिनके पास सत्य नाम की पूँजी नहीं है, उनको आत्मिक सुख कैसे प्राप्त हो सकता है। पाप रूपी अनिष्टकारी पदार्थ क्रय कर लेने से मन व तन भी दूषित हो जाता है। ऐसे जीव की दशा जाल में फँसे मृग के समान होती है, वह नित्य प्रति गहन दुखों को सहता हुआ रोता है॥ २॥ जिस प्रकार खोटा सिक्का खजाने में नहीं पड़ता, वैसे ही मिथ्या जीव को परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होता। मिथ्या जीव की न कोई जाति है न उसकी कोई प्रतिष्ठा होती है, पाप कर्म करने वाले जीव को आत्मिक जीवन में कभी सफलता नहीं मिलती। मिथ्या पुरुषों के कर्म भी मिथ्या ही होते हैं, इसलिए वे आवागमन में ही अपनी प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं॥ ३॥ गुरु नानक जी कथन करते हैं कि हमें गुरु उपदेश द्वारा प्रभु का यशोगान करने हेतु मन को समझाना चाहिए। जो प्रभु–प्रेम में रंगे होते हैं उनको न पापों का भार तथा न ही कोई भ्रम होता है। ऐसे जीवों को हरि के नाम–सुमिरन का बहुत लाभ मिलता है तथा उनके मन में निर्भय परमात्मा का वास होता है॥ ४॥ २३॥

सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥ पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार ॥ १ ॥ रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥ दिन थोड़ड़े थके भइआ

पुराणा चोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥ हंं भी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥ २ ॥ की न सुणेही गोरीए आपण कंनी सोइ ॥ लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥ ३॥ नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥ गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥ ४ ॥ २४ ॥

मानव जीवन में धन व यौवन तो फूल की भाँति चार दिनों के अतिथि हैं, जो चले जाएँगे। यह पद्मिनी के पत्तों के समान गिर कर गल–सड़ कर नष्ट हो जाने वाले हैं॥ १॥ अतः हे जीव ! जब तक यौवन में नवोल्लास है, तब तक नाम–सुमिरन का आनन्द प्राप्त कर ले। तुम्हारे यौवनावस्था के दिन कम रह गए हैं, क्योंकि तुम्हारा शरीर रूपी चोला अब वृद्ध हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे प्रिय मित्र भी (वृद्धावस्था उपरांत) श्मशान में जाकर गहरी निद्रा में सो गए हैं अर्थात्–मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं। मैं भी दुविधा में वहाँ जाकर धीमे स्वर में रोऊं॥ २॥ हे सुन्दर जीव रूपी नारी ! तुम अपने कानों से ध्यानपूर्वक यह बात क्यों नहीं सुन रही कि तुझे भी परलोक रूपी ससुराल में आना है। मायके रूपी इस लोक में तुम्हारा सदा के दिए वास नहीं हो सकता॥ ३॥ नानक जी कहते हैं कि जो जीवात्मा निश्चित होकर इस लोक में अज्ञान निद्रा में लीन है, उसे दिन के प्रकाश में ही सेंध लग रही है। यह जीव रूप स्त्री सद्‌गुणों की गठरी गंवा कर अवगुणों को एकत्रित करके चल पड़ी है॥ ४॥ २४॥

सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ॥ आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥ आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥ १ ॥ रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥ आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥ २ ॥ आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥ नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥ ३ ॥ प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥ कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥ ४ ॥ २५ ॥

{एक बार गुरु नानक देव जी बाला और मरदाना सहित कहीं भ्रमण कर रहे थे तो मार्ग में एक पुरुष को कामुकता में देख कर बाला और मरदाना कहने लगे कि यह पुरुष कितना पापी है जो दिन में कामवासना में लम्पट हो रहा है। तब गुरु जी ने उन्हें समझाते हुए निम्न पंक्तियों का उच्चारण किया}

गुरु नानक देव जी इन पंक्तियों में परम पिता परमात्मा के गुणों का व्याख्यान करते हुए कहते हैं कि वह परिपूर्ण परमात्मा स्वयं ही रसिया है, स्वयं ही रस रूप है तथा स्वयं ही रमण करने वाला है। स्वयं स्त्री रूप हो रहा है, स्वयं ही सेज और स्वयं ही पति रूप में व्याप्त है॥ १॥ समस्त रूपों में मेरा स्वामी परिपूर्ण होकर रमण कर रहा है॥ १॥ रहाउ॥

{आगे जाकर एक नदी में से मछुआ मछली पकड़ रहा था तो बाला–मरदाना कहने लगे कि कैसे यह तड़पती मछलियों को देख प्रसंन हो रहा है। तभी गुरु जी ने निम्न पंक्तियों द्वारा समझाया:–}

वह स्वयं ही मछुआ है, स्वयं मछली रूप में है, स्वयं जल है और स्वयं ही जाल रूप हो रहा है। स्वयं ही जाल के आगे बंधा हुआ लोहे का मनका है तथा स्वयं ही उस जाल में लगा हुआ माँस का टुकड़ा (लालु) है; अर्थात्– सर्वस्व स्वयं वह परमेश्वर ही है॥ २॥ सतिगुरु जी कथन करते हैं कि हे सखी ! मेरा प्रियतम प्रभु स्वयं ही अनेक तरह के आनन्द वाला हो रहा है। वह नित्य ही सुहागिनों (प्रभु–प्रेमियों) को प्रीत करता है, हम द्वैत–भावी जीवों का हाल बहुत बुरा है॥ ३॥ गुरु नानक जी कथन करते हैं कि हे जीव ! तुम यही विनती करो कि हे परम पिता ! तुम ही स्वयं सरोवर हो, उस पर रहने वाले हंस भी तुम ही हो। तुम स्वयं ही कमल हो, कुमुदिनी भी तुम हो, इन सब को देख कर तुम स्वयं ही प्रसंन होने वाले हो॥ ४॥ २५॥

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥ मनु किरसाणु हरि रिदै जंमाइ लै इउ पावसि पदु निरबाणी ॥ १ ॥ काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥ पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई ॥ जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ॥ २ ॥ बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥ दस अठार मै अपरंपरो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥ ३ ॥ २६ ॥

उपरोक्त पंक्तियों में गुरु जी कृषक को कृषि करते देख कर अंतर्मन में की जाने वाली कृषि का दृष्टांत देते हुए उच्चारण करते हैं कि इस तन रूपी भूमि में सद्‌कर्मों का बीजारोपण करके प्रभु–चिन्तन रूपी जल से इसकी सिंचाई करो। मन को कृषक बना कर हृदय में हरि–प्रभु को उगाओ, अर्थात् हृदय में प्रभु को धारण करो तथा इस तरह निर्वाण–पद रूपी फसल प्राप्त कर लोगे॥ १॥ हे विमूढ़ जीव! माया का अभिमान क्यों करता है। माता, पिता, पुत्र व स्त्री आदि समस्त सगे–सम्बन्धी अंत समय में तेरे सहायक नहीं होंगे॥ रहाउ॥

जिस प्रकार नदीन खेती में उग जाते हैं और कृषक उन्हें उखाड़ फैंकता है, इसी प्रकार हे मानव! विषय–विकार रूपी नदीनों को हृदय में पनप रही खेती में से उखाड़ कर फैंक दो और इन विकारों को त्याग कर मन की एकाग्रता से प्रभु को स्मरण करो। जप, तप, संयम जब शरीर रूपी भूमि के रक्षक हो जाते हैं तो हृदय में कमल खिलता है और उस में से ब्रह्मानंद रूपी शहद टपक पड़ता है॥ २॥ जब मनुष्य पाँच स्थूल तत्त्व, पाँच सूक्ष्म तत्त्व, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच प्राण तथा मन व बुद्धि के निवास स्थान वश में करे, तीनों अवस्थाओं–बाल्यावस्था, युवावस्था व जरावस्था में काल को स्मरण रखे। दस दिशाओं तथा समस्त वनस्पतियों में अपरम्पार परमेश्वर को जाने तो हे नानक! ऐसा एकमेय अद्वितीय प्रभु उसको भवसागर से पार उतार लेगा॥ ३॥ २६॥

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥ होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥ १ ॥ मतु जाण सहि गली पाइआ ॥ माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥ भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥ २ ॥ आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥ खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥ ३ ॥ तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥ नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू संजिआही ॥ ४ ॥ २७ ॥

निम्नांकित पंक्तियों में गुरु साहिब एक काजी को आत्मिक शांति प्राप्त करने के लिए कृषि का दृष्टांत देकर समझाते हैं:– गुरु जी कथन करते हैं कि हे जीव! शुभ कर्मों को भूमि बना कर उसमें गुरु–उपदेश रूपी बीज का रोपण करो और सत्य–नाम रूपी जल से इसकी सिंचाई करो। इस प्रकार तुम कृषक बन कर धार्मिक–निष्ठा को उत्पन्न करो, इससे तुझे स्वर्ग–नरक का ज्ञान प्राप्त होगा ॥ १॥ यह मत समझ लेना कि ज्ञान केवल बातों से ही प्राप्त हो जाता है। धन–सम्पति के अभिमान तथा रूप की शोभा में तुम ने अपना जन्म निष्फल ही गंवा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ मानव शरीर में अवगुण कीचड़ की भाँति हैं तथा मन मेंढक समान, ऐसे में निकट ही विकसित हुए कमल की उसे कोई सूझ नहीं है। अर्थात्–अवगुणों के कीचड़ में फँसे मानव मन रूपी मेंढक ने परमात्मा रूपी कमल की पहचान

कदाचित नहीं की है। गुरु रूपी भँवरा नित्य प्रति आकर अपनी भाषा बोलता है, अर्थात–उपदेश देता है, लेकिन मेंढक रूपी मानव मन इसे कैसे समझ सकता है, जब तक प्रभु स्वयं इस मन को समझा न दे॥ २॥ जिनका मन माया में रंजित है, उनको उपदेश देना अथवा उनके द्वारा उपदेश श्रवण करना (पवन की बाणी) व्यर्थ की बात है। स्वामी की कृपा–दृष्टि में तथा हृदय में प्रिय वही जीव हैं, जिन्होंने एक परमेश्वर को स्मरण किया है॥ ३॥ हे काजी ! सुनो, तुम तीस रोज़े रखते हो, तथा पाँच समय की नमाज़ तुम्हारी साथी है, किन्तु देखना, कहीं ऐसा न हो (काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार में से कोई) शैतान इन को नष्ट न कर दे। गुरु जी कहते हैं कि हे काज़ी ! एक दिन तुम ने भी मृत्यु–मार्ग पर चलना है, फिर यह धन–सम्पत्ति तुम किस के लिए संग्रहित कर रहे हो॥ ४॥ २७॥

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥ आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारो ॥ १ ॥ मरणा मुला मरणा ॥ भी करतारहु डरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥ जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥ २ ॥ सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥ है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥ ३ ॥ पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥ नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥ ४ ॥ २८ ॥

(इतने में वहाँ पर मुल्लां भी आ गया। तब गुरु जी दोनों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि)

वही परमात्मा है, जिसने इस जगत् को प्रफुल्लित किया है तथा संसार को हरा–भरा किया है। जिस परमात्मा ने पानी व पृथ्वी आदि पाँच तत्त्वों से सम्पूर्ण सृष्टि को बांध रखा है, वह सृजनहार परमात्मा धन्य है॥ १॥ हे मुल्लां ! मृत्यु अपरिहार्य है। (इस पर मुल्लां ने कहा कि यदि मृत्यु ही आनी है तो फिर क्यों न सांसारिक आनंद प्राप्त करें, भयभीत होने की क्या आवश्यकता है) इस पर गुरु जी कहते हैं कि तब भी परमात्मा से डरना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ तभी तुम श्रेष्ठ मुल्लां हो सकते हो, तभी तुम श्रेष्ठ काज़ी हो सकते हो, यदि तुम परमात्मा के नाम के बारे में जानते हो। यदि तुम बहुत विद्वान हो तो भी तुम मृत्यु से बच कर नहीं रह सकते अर्थात् पनघड़ी की भाँति भर जाने पर डूब जाओगे॥ २॥ असली काज़ी तो वही है, जिस ने अहंत्व का त्याग किया है और एक प्रभु के नाम का आश्रय लिया है। सत्य सृष्टि का सृजनहार आज भी है, भविष्य में भी होगा, उसकी यह रचना तो नष्ट हो जाएगी, किन्तु वह नष्ट नहीं होगा॥ ३॥ बेशक तुम पांचों समय की नमाज़ पढ़ते हो, चाहे कुरान शरीफ आदि धार्मिक ग्रंथ भी पढ़ते हो। नानक देव जी कहते हैं कि हे काज़ी ! जब तुम्हें मृत्यु कब्र की ओर बुलाएगी तो तुम्हारा खाना–पीना ही समाप्त हो जाएगा॥ ४॥ २८॥

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ १ ॥ मै पति की पंदि न करणी की कार ॥ हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥ मै एहा आस एहो आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥ पर घरु जोही नीच सनाति ॥ कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ २ ॥ फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥ खरा सिआणा बहुता भारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ ३ ॥ मै कीता न जाता हरामखोरु ॥ हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ धाणक रूपि रहा करतार ॥ ४ ॥ २९ ॥

[इन पंक्तियों में गुरु साहिब ने मानव मन में विद्यमान दुष्ट वृत्तियों से बचने का उपाय प्रस्तुत किया है।]

गुरु जी कहते हैं कि जीव के साथ लोभ रूपी कुत्ता है तथा आशा व तृष्णा रूपी दो कुतियाँ हैं। सदैव प्रातः होते ही ये आहार हेतु भौंकने लग जाते हैं। जीव के पास झूठ रूपी छुरा है, जिससे वह सांसारिक प्राणियों को ठग कर खाता है। अर्थात् जीव झूठ के आसरे अभक्ष्य पदार्थ सेवन करता है। हे प्रभु ! सांसारिक जीव हत्यारे के रूप में रह रहा है॥ १॥ जीव के लिए गुरु जी स्वयं को पुरुष मान कर कहते हैं कि मैंने उस प्रभु–पति की प्रतिष्ठित शिक्षा ग्रहण नहीं की तथा न ही कोई श्रेष्ठ कार्य किया है। मैं ऐसे विकृत विकराल रूप में रह रहा हूँ। हे प्रभु ! आपका एक नाम ही भवसागर पार करने वाला है। मुझे इसी नाम की आशा है और इसी नाम का आश्रय है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपने मुँह से दिन–रात निन्दा करता रहता हूँ। मैं निम्न वर्ग वाला चोरी करने हेतु पराए घरों की ओर देखता रहता हूँ। इस देह में काम–क्रोधादि चाण्डाल बसते हैं। हे प्रभु ! मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ॥ २॥ मेरा ध्यान लोगों को फँसाने में लगा रहता है, यद्यपि मेरा बाह्य भेष फकीरों वाला है। मैं बड़ा ठग हूँ तथा दुनिया को ठग रहा हूँ। मैं स्वयं को बहुत चतुर समझता हूँ, लेकिन मेरे ऊपर पापों का बहुत भार पड़ा हुआ है। हे प्रभु ! मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ॥ ३॥ मैंने प्रभु के किए उपकारों को भी नहीं जाना, अतः मैं कृतघ्न हूँ। मैं दुष्ट चोर हूँ, सो मैं किस मुँह से परमात्मा के दरबार में जाऊँगा। अर्थात् मैं अपने कुकृत्यों से इतना शर्मिन्दा हूँ कि प्रभु के द्वार पर क्या मुँह लेकर जाऊँ। गुरु नानक देव जी स्वयं को जीव रूप में सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि मैं इतना नीच हो गया हूँ। मैं हत्यारे के रूप में रह रहा हूँ। अर्थात्–इस स्वरूप में मेरी मुक्ति कैसे होगी ?॥ ४॥ २६॥

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ एका सुरति जेते है जीअ ॥ सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥ जेही सुरति तेहा तिन राहु ॥ लेखा इको आवहु जाहु ॥ १ ॥ काहे जीअ करहि चतुराई ॥ लेवै देवै ढिल न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे जीअ जीआ का तोहि ॥ कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥ जे तू साहिब आवहि रोहि ॥ तू ओना का तेरे ओहि ॥ २ ॥ असी बोलविगाड़ विगाड़ह बोल ॥ तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥ जह करणी तह पूरी मति ॥ करणी बाझहु घटे घटि ॥ ३ ॥ प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥ आपु पछाणै बूझै सोइ ॥ गुर परसादि करे बीचारु ॥ सो गिआनी दरगह परवाणु ॥ ४ ॥ ३० ॥

इस दुनिया में जितने भी जीव हैं, उन सब में एक–सी सूझ है। इस सूझ से वंचित कोई भी नहीं है। जैसी सूझ तुम उनको प्रदान करते हो, वैसा ही मार्ग उनको मिल जाता है। अर्थात्–प्रत्येक जीव अपनी सूझ–बूझ के अनुसार इस संसार में कर्म–मार्ग अपना चुका है। सभी जीवों के कर्मो के निर्णय का नियम एक ही है, जिसके अनुसार वे आवागमन के चक्र में रहते हैं॥ १॥ हे जीव ! तुम चतुराई क्यों करते हो ? वह दाता प्रभु लेने और देने में कभी भी विलम्ब नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर ! यह समस्त जीव तुम्हारे बनाए हुए हैं तथा इन सब जीवों के तुम स्वामी हो। हे प्रभु ! फिर तुम (इन जीवों की भूलों पर) क्रोध क्यों करते हो? यदि तुम इन पर क्रोध करते भी हो। तो भी तुम इन जीवों के हो और ये जीव तुम्हारे हैं॥ २॥ हम अपशब्द बोलने वाले हैं तथा निरर्थक बातें करते हैं। हमारी निरर्थक बातों को तुम अपनी कृपा–दृष्टि में तोलते हो। जहाँ सत्कर्म हैं, वहाँ बुद्धि भी परिपक्व होती है। सत्कर्मों के बिना जीवन में हानि ही हानि है॥ ३॥ नानक देव जी विनयपूर्वक कथन करते हैं कि सूझवान जीव कैसा होना चाहिए? प्रत्युत्तर में कहते हैं, स्वयं को जो पहचानता है और उस परमात्मा को समझता है। उस गुरु रूप परमात्मा की कृपा से उसके गुणों का चिन्तन (विचार) करता है। ऐसा सूझवान, परम ज्ञानी ही परमात्मा के दरबार में अथवा परलोक में स्वीकृत होता है॥ ४॥ ३०॥

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥ जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥ १ ॥ न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥ जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥ जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥ तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥ तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥ २ ॥ जेता देहि तेता हउ खाउ ॥ बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥ ३ ॥ आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनुो ॥ आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानुो ॥ जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानुो ॥ ४ ॥ ३१ ॥

मछली का दृष्टांत देकर गुरु साहिब परमेश्वर के समक्ष विनती करते हैं कि हे प्रभु! तुम दरिया के समान विशाल हो, सर्वज्ञाता हो, सर्वद्रष्टा हो और मैं एक छोटी मछली के समान हूँ तो मैं तुम्हारी सीमा को कैसे जान सकता हूँ, (क्योंकि तुम तो असीम प्रभु हो)। जिस ओर भी मेरी दृष्टि जाती है, वहाँ सब ओर तुम परिपूर्ण व्यापक हो, अतः तुम से बिछुड़ कर मैं तड़प कर मर जाऊँगी, अर्थात्–तुम्हारे नाम–सुमिरन से विस्मृत होने पर मैं दुखी होकर मर जाऊँगी॥ १॥ न ही मैं यम रूपी मछुए को जानती हूँ तथा न उसके जाल को जानती हूँ। जीवन में जब भी कोई कष्ट आता है तो मैं तुझे ही स्मरण करती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे परमात्मा! तुम सर्वव्यापक हो, किन्तु मैंने तुझे अपनी तुच्छ बुद्धि के कारण कहीं दूर ही समझा है। जो कुछ भी मैं करती हूँ, वह सब कुछ तेरी दृष्टि में ही है। अर्थात्– क्योंकि तुम सर्वव्यापक हो, इसलिए जीव जो भी कर्म करता है वह तुम्हारी उपस्थिति में ही होता है। मेरे किए कर्मों को जबकि तुम देख रहे हो, लेकिन मैं फिर भी इन्कार करती हूँ। न तो मैं तुम्हारे द्वारा स्वीकृत होने वाले कार्य ही करती हूँ तथा न ही मैं तुम्हारा नाम–सुमिरन करती हूँ॥ २॥ हे परमात्मा! जितना तुम देते हो, मैं उतना ही खाती हूँ। तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई द्वार नहीं, तो फिर मैं किस द्वार पर जाऊँ। मैं नानक तुम्हारे समक्ष यही एक प्रार्थना करता हूँ कि मेरे प्राण एवं तन–मन आदि सब कुछ तुम्हारे अधीन ही रहें॥ ३॥ तुम स्वयं निकट हो, दूर भी तुम ही हो तथा मध्य स्थान में भी आप हो। तुम स्वयं (हमारे कर्मों को) देखते हो, तुम ही (अच्छे–बुरे वचन) सुनते हो तथा तुम स्वयं ही अपनी शक्ति द्वारा इस सृष्टि की रचना करते हो। नानक देव जी कथन करते हैं कि जो आप को आदेश करना अच्छा लगता है, वही हम सब को मान्य है॥ ४॥ ३१॥

सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ कीता कहा करे मनि मानु ॥ देवणहारे कै हथि दानु ॥ भावै देइ न देई सोइ ॥ कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥ १ ॥ आपे सचु भावै तिसु सचु ॥ अंधा कचा कचु निकचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा के रुख बिरख आराउ॥ जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥ फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥ आपि बीजि आपे ही खाइ ॥ २ ॥ कची कंध कचा विचि राजु ॥ मति अलूणी फिका सादु ॥ नानक आणे आवै रासि ॥ विणु नावै नाही साबासि ॥ ३ ॥ ३२ ॥

परमात्मा द्वारा रचित जीव अपने मन में किस प्रकार अभिमान कर सकता है? जबकि सभी पदार्थ तो उस दाता के हाथ में हैं। जीव को देना अथवा न देना उस प्रभु की ही इच्छा है। जीव के कहने से क्या होता है॥ १॥ वह स्वयं तो सत्य स्वरूप है ही, उसे सत्य ही स्वीकृत भी है। अज्ञानी जीव पूर्णतया कच्चा है॥ १॥ रहाउ॥ जिस कर्त्ता–पुरुष के ये मानव रूपी पेड़–पौधे हैं वही इन्हें संवारता है। जैसी उनकी नस्ल बन जाती है, वैसा ही इनका नाम पड़ जाता है। अर्थात्–जीव के कर्मानुसार ही संसार में उसका नाम प्रसिद्ध होता है। इनकी भावना के अनुसार ही फूल लगता है तथा लिखे हुए कर्मानुसार फल प्राप्त करता है। जीव स्वयं ही बोता है और स्वयं ही खाता है। अर्थात्–जीव जैसे कर्म करता है, वैसे ही फल को भोगता है॥ २॥ जीव की तन रूपी दीवार दुर्बल है और इसके

अन्दर बैठा मन रूपी राज–मिस्त्री भी अनाड़ी है। इसकी बुद्धि भी नाम रूपी नमक से रहित है, इसलिए इसे आत्मिक पदार्थों का स्वाद भी रसहीन ही लगेगा। नानक देव जी कथन करते हैं कि परमेश्वर जब मानव–जीवन को संवारता है तभी उसका जीवन सफल होता है। प्रभु के नाम–सुमिरन के बिना उसको दरबार में सम्मान प्राप्त नहीं होता॥ ३॥ ३२॥

सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥ अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥ जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥ १ ॥ बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पोथी पुराण कमाईऐ ॥ भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥ सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥ २ ॥ इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥ करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इतु तनि लागै बाणीआ ॥ सुखु होवै सेव कमाणीआ ॥ सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥ ३ ॥ विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥ ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥ ४ ॥ ३३ ॥

अछल माया भी मानव को छलने में स्वयं सफल नहीं हो सकती, तथा न ही कटार उसको कोई घाव लगा सकती है। क्योंकि प्रभु सदैव उसका रक्षक है, किन्तु मानव लोभी होने के कारण माया के पीछे भटकता रहता है॥ १॥ नाम सुमिरन रूपी तेल के बिना भला यह आत्मिक प्रकाश करने वाला ज्ञान रूपी दीपक कैसे जल सकता है?॥ १॥ रहाउ॥ गुरु जी प्रत्युत्तर में कथन करते हैं कि ज्ञान रूपी दीपक जलाने के लिए धर्म–ग्रंथों के सिद्धान्तों पर चल कर जीवन को संवारना तेल है। इस शरीर रूपी दीपक में भय की बाती डाली जाए। सत्य ज्ञान रूपी अग्नि की लौ द्वारा यह दीपक जलाया जाए॥ २॥ इस प्रकार की सामग्री से ही यह ज्ञान रूपी दीपक जल सकता है। जब ज्ञान रूपी दीपक प्रकाश करता है तो निरंकार से मिलाप हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मानव शरीर धारण करने पर जीव को गुरु उपदेश ग्रहण करना चाहिए। प्रभु की उपासना करने से ही सुखों की प्राप्ति होती है। यह समस्त संसार तो आने–जाने वाला है। अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि नश्वर है॥ ३॥ इस दुनिया में रहते हुए ही यदि जीव सेवा–सुमिरन करता रहे। तभी प्रभु के दरबार में बैठने के लिए स्थान प्राप्त होता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि यह जीव उन्हीं कर्मों द्वारा चिन्ता मुक्त होकर रह सकता है॥ ४॥ ३३॥

सिरीरागु महला ३ घरु १

[सिरीराग के अंतर्गत महला ३, तीसरी पातिशाही श्री गुरु अमरदास जी की वाणी का आरंभ]

१ ॐ सतिगुर प्रसादि ॥ हउ सतिगुरु सेवी आपणा इक मनि इक चिति भाइ ॥ सतिगुरु मन कामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥ मन चिंदिआ वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥ नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥ १ ॥ मन मेरे हरि रसु चाखु तिख जाइ ॥ जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥ अंतरि हरि रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥ हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥ मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥ हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उर धारि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥ सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥ ३ ॥ गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥ जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥ नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

इन पंक्तियों में अब तीसरे पातशाह गुरु अमरदास जी अपने गुरु की स्तुति करते हुए मन को प्रेरित कर रहे हैं कि मैं अपने सतिगुरु की सेवा एकाग्रचित और मन व प्रेम–भाव के साथ करता हूँ। मेरा सतिगुरु मनोकामना पूर्ण करने वाला तीर्थ है, किन्तु जिस पर परमेश्वर की कृपा होती है, उसी को ऐसी समझ होती है। प्रभु की स्तुति करने से ही मनवांछित आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है और इच्छानुसार फल की प्राप्ति होती है। इसलिए उस परमेश्वर का नाम–सुमिरन करें, नाम की ही कामना करें, इसी नाम द्वारा हम सहजावस्था में लीन हो सकते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! हरि का नाम–रस चखने से ही तृष्णा मिट सकती है। जिन गुरुमुख जीवों ने इसे चखा है, वे ही सहजावस्था में समाए हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिन्होंने सतिगुरु की सेवा की है, उन्होंने परमेश्वर का नाम–कोष प्राप्त किया है। इससे अंतर्मन में हरिनाम रस भरपूर हो जाता है और मन से अभिमान समाप्त हो जाता है। सहजावस्था में लीन हो जाने से हृदय रूपी कंवल खिल जाता है। जिस मन में हरि व्याप्त है, वह निर्मल हो जाता है, और उसने प्रभु के दरबार में सम्मान प्राप्त किया है॥ २॥ वे जीव इस संसार में बहुत कम हैं जो अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं। ऐसे जीवों ने अभिमान, मोह आदि विकारों का दमन करके प्रभु को हृदय में धारण कर रखा है। मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जिनको प्रभु–नाम के साथ प्रीत हुई है। वे चारों युगों में सुखी हैं, जिनके पास अक्षय एवं अपार नाम की निधि है॥ ३॥ गुरु के मिलने से नाम की प्राप्ति होती है और इसी नाम के कारण ही माया का मोह व विषयों की तृष्णा समाप्त होती है। ऐसे में जीव का मन हरि के साथ मिल जाता है तथा जीव को गृहस्थ जीवन में रह कर ही उदासीनता प्राप्त हो जाती है। जिन को हरि की उपासना का आनंद मिला है, उन पर मैं सदा बलिहारी जाऊँ। नानक देव जी कथन करते हैं कि प्रभु की कृपा–दृष्टि से ही गुणों का खज़ाना सत्य नाम प्राप्त किया जा सकता है॥ ४॥ १॥ ३४॥

सिरीरागु महला ३ ॥ बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥ १ ॥ मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ॥ सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ॥ हरि का नामु धिआईऐ सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ २ ॥ जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राजु कमाहि ॥ बिनु सतगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ ३ ॥ हरि हारु कंठि जिनी पहिरिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥ तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ ॥ ४ ॥ जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ ३५॥

मनुष्य कितने ही तरह–तरह के भेष बना कर इधर–उधर भटकता है, ऐसा करके वह हृदय में छल अर्जित करता है। छलिया मन के साथ मनुष्य प्रभु के दर्शन नहीं पाता और अंततः मर कर वह नरकों की गंदगी में समा जाता है॥ १॥ हे मन! गृहस्थ जीवन में रह कर ही मोह–मायादि बंधनों से उदासीन होकर रहो। सत्य व संयम की क्रिया वही करता है, जिस मनुष्य को गुरु के उपदेश द्वारा ज्ञान रूपी प्रकाश प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसने गुरु के उपदेश द्वारा विषयों–विकारों से मन को जीत लिया है, उसने गृहस्थ जीवन में ही सद्‌गति व मुक्ति पा ली है। हरि का नाम–सिमरन करने से ही सत्संगति द्वारा प्रभु से मिलन होता है॥ २॥ मनुष्य यदि लाखों स्त्रियों का भोग कर ले, सम्पूर्ण सृष्टि पर राज्य कर ले। तब भी बिना सतिगुरु के आत्मिक सुख नहीं मिलता तथा मनुष्य पुनः पुनः योनियों में पड़ता है॥ ३॥ जिन्होंने हरि नाम रूपी हार अपने गले में पहन लिया तथा गुरु–चरणों में मन को लीन किया है। उनके पीछे ऋद्धि –सिद्धि आदि सम्पूर्ण शक्तियाँ फिरती हैं, किन्तु उन्हें

इन सब की तिनका मात्र भी लालसा नहीं है॥ ४॥ जो ईश्वर को अच्छा लगे वही होता है, अन्य कुछ भी नहीं किया जा सकता। नानक देव जी कथन करते हैं कि हे प्रभु ! मैं आपके नाम–सिमरन द्वारा ही जीवित रहता हूँ, इसलिए आप मुझे शांत स्वभाव प्रदान कीजिए॥ ५॥ २॥ ३५॥

सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥ जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥ गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥ अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥ सचि मिले से न विछुड़हि तिन निज घरि वासा होइ ॥ १ ॥ मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥ दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥ सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥ जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥ २ ॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥ मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥ लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ ३ ॥ सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥ ४ ॥ मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥ लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥ निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ ५ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

जिस परमेश्वर की यह सृष्टि रूपी सरकार है, प्रत्येक जीव उसका ही दास है। गुरु के उपदेशानुसार जिसने भी सद्कर्म किए हैं, उसके हृदय में सत्य स्वरूप परमात्मा प्रकट हुआ है। जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है, उस गुरमुख व्यक्ति की सच्ची शोभा होती है। जब जीव सत्य स्वरूप परमेश्वर के साथ मिल जाता है, तो फिर वह उससे कभी नहीं बिछुड़ता क्योंकि उसका आत्म–स्वरूप में निवास हो जाता है॥ १॥ हे मेरे राम! परमेश्वर के बिना मेरा अन्य कोई नहीं है। परन्तु सत्य–स्वरूप एवं पवित्र परमात्मा के साथ मिलन सतिगुरु के उपदेश द्वारा ही होता है॥ १॥ रहाउ॥ जो जीव गुरु के उपदेश को ग्रहण करते हैं, वे परमात्मा से मिल पाते हैं, लेकिन गुरु के उपदेश को भी वही प्राप्त करता है, जिस पर स्वयं परमात्मा कृपा करता है। द्वैत–भाव रखने वाले को परमात्मा नहीं मिलता तथा वह जीव इस संसार में पुनः पुनः आता–जाता रहता है। समस्त प्राणियों में वह एक ही परमात्मा व्याप्त है और सभी जगह वही समाया हुआ है। जिस पर वह स्वयं कृपालु होता है, वही गुरुमुख जीव नाम–सिमरन में लीन होता है॥ २॥ विद्वान तथा ज्योतिषी लोग ग्रंथों को पढ़–पढ़ कर वाद–विवाद निमित्त विचार करते हैं। ऐसे लोगों की बुद्धि तथा विवेक भटक जाते हैं और वे यह नहीं समझते कि उनके अंतर्मन में लोभ का विकार है। वे चौरासी लाख योनियों में भटकते रहते हैं और भटक–भटक कर अपमानित होते हैं। पूर्व कर्मानुसार जो लेख भाग्य में लिखे हैं, उन्हें भोगना ही होगा, उन्हें कोई नहीं मिटा सकता॥ ३॥ सतिगुरु की सेवा करना अति विषम है, इस कार्य के लिए सिर और अहंत्व का त्याग करना पड़ता है। गुरु की सेवा करते हुए जो गुरु–उपदेश प्राप्त होता है उसी से प्रभु–प्राप्ति संभव है तब जाकर कहीं सेवा सफल होती है। गुरु रूपी पारस के संकर्षण से जीव पारस हो जाता है तथा आत्मिक ज्योति परम ज्योति में अभेद हो जाती है। पूर्व–जन्म के कर्मानुसार प्रारब्ध में जिनके लिखा है, उन्हें सतिगुरु आकर मिला है॥ ४॥ हे जीव ! तुम ऐसी बात मत कहो कि मैं भूखा हूँ, मैं भूखा हूँ और न ही चीख–चीख कर पुकार करो। चौरासी लाख योनियों के रूप में जिसने सृष्टि की रचना की है, वही परमात्मा समस्त जीवों को आश्रय देता है। भय–रहित परमात्मा सदैव

दयालु रहा है, वह सभी की रक्षा करता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि यह सब क्रीड़ा गुरुमुख जीव ही समझता है और वही मोक्ष-द्वार को प्राप्त करता है॥ ५॥ ३॥ ३६॥

सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ॥ गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥ सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥ हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥ गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥ जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥ मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥ २ ॥ जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ कूड़ा रंगु कसुंभ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥ जिसु अंदरि नाम प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥ ३ ॥ इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरि नामु न चेतै लिव लाइ ॥ पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ॥ ओह वेला हथि न आवई अंति गइआ पछुताइ ॥ जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥ ४ ॥ देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥ जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥ हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाइ समाइ ॥ नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

जिन जीवों ने गुरु-उपदेश श्रवण करके उसका चिन्तन किया है, उनका निज-स्वरूप घर में वास हुआ है। जिन्होंने गुरु-उपदेश ग्रहण करके सत्य परमात्मा की स्तुति की है, उन्होंने गुण-निधान हरि को प्राप्त किया है। जो गुरुओं की वाणी में लीन हैं, वे पवित्रात्मा हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। जिनके हृदय में हरि का निवास है, उनके हृदय में ज्ञान रूपी प्रकाश होता है॥ १॥ हे मेरे मन! उस पवित्र प्रभु का नाम-सुमिरन कर। जिनके मस्तिष्क पर आदि से ही प्रभु का नाम सुमिरन लिखा हुआ है, वे गुरुमुख बनकर उसमें लीन हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे संत जनो! अपनी दिव्य दृष्टि से देखो कि वह परमेश्वर परिपूर्ण होकर सभी के अंतःकरण में व्याप्त है। जिन्होंने गुरु-उपदेश के मार्ग पर चल कर उस परमेश्वर को पहचाना है, वे प्रायः उसे अपने समक्ष ही देखते हैं। जो सद्‌गुणी जीव हैं, उनके हृदय में सदा हरि वास करता है, अवगुणी जीवों से वह दूर ही रहता है। स्वेच्छाचारी (मनमुख) जीव गुण-रहित होते हैं और वे बिना नाम-सुमिरन किए यूं ही दुखी होकर मरते हैं॥ २॥

जिन्होंने गुरु-उपदेश को सुन कर उसको मान लिया है, उन्होंने ही उस हरि-परमात्मा को हृदय में स्मरण किया है। प्रतिदिन भक्ति में अनुरक्त होने के कारण उनका तन-मन पवित्र हो जाता है। (गुरु-वाणी में भौतिक पदार्थों की तुलना कुसुम्भ-पुष्प के साथ की गई है। अर्थात् विषयों का आनन्द कुसुम्भ पुष्पवत् शीघ्र नष्ट हो जाने वाला है) जिस प्रकार कुसुम्भ पुष्प का रंग अस्थिर होता है उसी प्रकार भौतिक पदार्थ भी अस्थिर हैं, उनका नाश हो जाने से जीव दुख में व्याकुल होकर रोता है। जिसके हृदय में नाम का प्रकाश है, वह सदा-सदा के लिए प्रभु में स्थिर होता है॥ ३॥ यह मानव-जन्म रूपी पदार्थ पाकर जो जीव एकाग्रचित होकर प्रभु-नाम को स्मरण नहीं करता। वह श्वास रूपी पांव फिसलने के कारण इस संसार में भी नहीं रहता और उसे परलोक में भी ठिकाना नहीं मिलता। फिर यह मानव-जन्म का समय हाथ नहीं लगता तथा अंत में प्रायश्चित करता हुआ इस संसार से चला जाता है। जिन पर परमेश्वर की कृपा होती है, वे परमात्मा में लिवलीन होकर आवागमन के चक्र से बच जाते हैं॥ ४॥ एक-दूसरे को देख कर तो सभी नाम-सुमिरन करने लगते हैं, लेकिन स्वेच्छाचारी इसे समझ नहीं पाता। जिन गुरुमुख जीवों का हृदय पवित्र है, उनकी उपासना

सफल होती है। ऐसे जीव कीर्तन द्वारा हरि का गुणगान करते हैं और धर्म–ग्रंथों में हरि के गुणों को पढ़ते हैं तथा हरि के गुणों को गाते हुए उसी में समाधिस्थ हो जाते हैं। नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव प्रभु–नाम में लिवलीन रहते हैं, उनकी वाणी सदा सत्य होती है॥ ५॥ ४॥ ३७॥

सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी इक मनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ ओइ अंम्रितु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ॥ १ ॥ भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ॥ हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ॥ सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ॥ विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ॥ २ ॥ तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ॥ कुलु उधारहि आपणा धंनु जणेदी माइ ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥ ३ ॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ॥ ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥ नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३८ ॥

जिन्होंने भी गुरु उपदेशानुसार एकाग्र मन से प्रभु के नाम का सुमिरन किया है। इस सत्य स्वरूप परमात्मा के दरबार में उनके मुँह सदा उज्ज्वल होते हैं, अर्थात् वे प्रभु दरबार में सम्मानित होते हैं। वे ही गुरुमुख जीव सत्य नाम के साथ प्रीत करके सदैव ब्रह्मानंद रूपी अमृत–पान करते हैं॥ १॥ हे भाई ! गुरुमुख जीवों का सदा सम्मान होता है। हरि प्रभु का नाम–सुमिरन सदा करें तो वह अहंकार रूपी मैल हृदय से धोकर निकाल देता है॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी जीव नाम–सुमिरन के बारे में नहीं जानता तथा नाम–सुमिरन के बिना सम्मान नष्ट हो जाता है। ऐसे जीवों को द्वैत–भाव में लिप्त होने के कारण गुरु–शिक्षा का रस अनुभव नहीं होता। जिस प्रकार विष्ठा के कीड़े विष्ठा में ही पड़े रहते हैं, और वही पर ही मर जाते हैं (उसी प्रकार स्वेच्छाचारी जीव भी विषय–विकारों की गंदगी में लिप्त रह कर अंत में नरकों की गंदगी में समा जाता है)॥ २॥ उन जीवों का जन्म सफल है जो सतिगुरु के विचारानुसार चलते हैं। वह स्वयं ही मुक्त नहीं होते, बल्कि अपने कई कुटुम्ब भी मुक्त कर लेते हैं, ऐसे जीवों की जन्मदात्री माँ धन्य है। सो हे भाई ! परम पिता परमेश्वर का नाम–सुमिरन करो, किन्तु नाम सुमिरन भी वही जीव कर सकता है, जिस पर वह परमात्मा कृपा करता है॥ ३॥ जिन गुरुमुख जीवों ने अहं–भाव त्याग कर नाम–सुमिरन किया है। ये अन्दर–बाहर से (अंतर्मन व तन से) निर्मल हैं और निश्चित ही उस सत्य स्वरूप परमात्मा में अभेद हो रहे हैं। नानक देव जी कथन करते हैं कि उन गुरुमुख जीवों का संसार में आना स्वीकृत है, जिन्होंने गुरु की शिक्षा द्वारा प्रभु का नाम–सुमिरन किया है॥ ४॥ ५॥ ३८॥

सिरीरागु महला ३ ॥ हरि भगता हरि धनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥ हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु अधारु ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥ १ ॥ भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥ ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥ पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥ सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥ २ ॥ सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥ मनु तनु सउपे आगै धरे हउमै विचहु मारि ॥ धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ॥ ३ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ॥ नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरि नामि समाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ३९ ॥

हरि भक्तों के पास हरि की नाम रूपी पूँजी है और वे गुरु से पूछ कर नाम का व्यापार करते हैं, वे सदैव परमात्मा का नाम स्मरण करते हैं और वे हरिनाम रूपी सौदे के आश्रय में ही रहते हैं। पूर्ण गुरु ने उन्हें परमात्मा का नाम दृढ़ करवाया है, इसलिए उनका अक्षय भण्डार नाम ही है॥ १॥ हे भाई ! इस चंचल मन को समझाओ। यह आलस्य क्यों करता है, गुरु के द्वारा इस मन को नाम–स्मरण में लीन करो॥ १॥ रहाउ॥ इन पंक्तियों में गुरु जी हरि–भक्ति का वृतांत देते हुए कथन करते हैं कि यदि कोई जीव गुरु उपदेश द्वारा चिन्तन करे कि हरि भक्ति क्या है? तो प्रत्युत्तर है कि हरि–भक्ति हरि–परमेश्वर का प्रेम है। छल–कपट करने से भक्ति नहीं हो सकती, छल–कपट से किए वचन दुविधापूर्ण अर्थात्–द्वैत–भाव वाले होते हैं, जो जीव को अपमानित करते हैं। जिसके अंतर्मन में ज्ञान–विवेक होता है, वह गुरुमुख जीव किसी के मिलाने से नहीं मिलता॥ २॥ वही जीव परमेश्वर का सेवक कहलाता है, जो प्रायः परमात्मा को हृदय में धारण करके रखता है। इसके अतिरिक्त अंतर्मन से अहंत्व का त्याग करके अपना तन–मन उस परमात्मा को अर्पित कर देता है। वह गुरुमुख जीव धन्य एवं परमात्मा के द्वार पर स्वीकृत होता है, जो विषय–विकारों के समक्ष कभी अपनी पराजय स्वीकार करके नहीं आता॥ ३॥ परमात्मा अपनी कृपा से ही किसी जीव को मिले तो उसे प्राप्त किया जा सकता, अन्यथा उसकी कृपा के बिना उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है। चौरासी लाख योनियों के जीव अर्थात्–सृष्टि के समस्त प्राणी उस परमात्मा के मिलन को तरस रहे हैं, किन्तु जिसे वह स्वयं दया–दृष्टि करके मिलाता है, वही परमात्मा से आकर मिल सकता है। नानक देव जी कथन करते हैं जो गुरु उपदेशानुसार हरि–नाम में लीन हुए हैं, उन्होंने ही हरि–प्रभु को प्राप्त किया है॥४॥६॥३६॥

सिरीरागु महला ३ ॥ सुख सागरु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥ अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ ॥ गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ॥ गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अंम्रित नामि समाइ ॥ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ २ ॥ मनमुख मैले मलु भरे हउमै त्रिसना विकारु ॥ बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जंमहि होइ खुआरु ॥ धातुर बाजी पलचि रहे ना उरवारु न पारु ॥ ३ ॥ गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ॥ गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ॥ नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४० ॥

हरि–नाम सुखों का सागर है तथा इसे गुरु के उपदेशानुसार ही पाया जा सकता है। प्रतिदिन प्रभु–नाम का चिंतन करने से जीव स्वाभाविक ही परमेश्वर में समा जाता है। यदि जीव का अंतर्मन सत्य स्वरूप परमात्मा के साथ मिल जाए तो जिह्वा हरि–प्रभु का गुणगान करती है॥ १॥ हे भाई ! द्वैत–भाव के कारण सम्पूर्ण जगत् दुखी हो रहा है। यदि गुरु की शरण में आकर जीव नित्य प्रति नाम–स्मरण करता रहे तो वह आत्मिक सुख प्राप्त करता है॥ १॥ रहाउ॥ ऐसे सत्य प्राणी को कभी पापों की मैल नहीं लगती और वह शुद्ध मन से हरि–प्रभु का नाम–सिमरन करता है। गुरु–उपदेश को पहचानने से हरि–प्रभु के अमृत रूपी नाम में समाया जा सकता है। जिस जीव ने अपने हृदय में तीक्ष्ण ज्ञान का दीपक जला लिया तो उसके हृदय से अज्ञानता का अंधेरा नष्ट हो जाता है॥ २॥ स्वेच्छाचारी जीव अहंकार, तृष्णादि विकारों की मैल से मलिन हो रहे हैं। गुरु के उपदेश बिना यह मैल कभी नहीं उतरती, ऐसे में जीव आवागमन के चक्र में फँस कर पीड़ित होता है। वह मायावी क्रीड़ा में खचित हुए रहते हैं और इस कारण वह न तो इस संसार का सुख भोग पाते हैं तथा न ही परलोक

का आनंद ले पाते हैं॥ ३॥ गुरुमुख जीव जप, तप व संयम में रह कर हरि-प्रभु के नाम से प्रीति करता है। ऐसा जीव सदैव ईश्वर के एक नाम का सिमरन करता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि समस्त प्राणियों का आसरा केवल नाम सिमरन ही है॥ ४॥ ७॥ ४०॥

स्रीरागु महला ३ ॥ मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ॥ सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ ॥ हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ॥ १ ॥ मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ॥ सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करम कमावै बिगसै हरि बैरागु अनंदु ॥ अहिनिसि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ॥ वडै भागि सतसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनंदु ॥ २ ॥ सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ॥ अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए ॥ नामु निधानु सतगुरू दिखालिआ हरि रसु पीआ अघाए ॥ ३ ॥ जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ॥ मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ॥ नानक सबदि रते हरि नामि रंगाए बिनु भै केही लागि ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४१ ॥

स्वेच्छाचारी जीव माया के मोह में फँसा होने के कारण उदासीनता एवं वैराग्य प्राप्त नहीं कर सकता। वह गुरु-उपदेश के रहस्य को नहीं समझता, इसलिए वह परमात्मा के दर पर अपनी प्रतिष्ठा खो देता है। यदि वह गुरुमुख होकर अहंत्व का त्याग करके परमात्मा के नाम में लीन होता है, तभी उसे आत्मिक आनंद की प्राप्ति होगी॥ १॥ हे प्राणी मन! तुझ में सदैव भौतिक पदार्थों की कामना ही भरी रहती है। परिपूर्ण सतिगुरु की सेवा करने से यह मोह पूरी तरह सड़ जाता है तथा जीव गृहस्थ जीवन में ही उदासीन रहता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की शरण लेकर यदि जीव धर्म कार्य करे तो वह परमात्मा की प्रसंनता प्राप्त करता है तथा वैराग्य का आनंद उठाता है। वह अपने अंतर्मन से अहंत्व का त्याग करके निश्चिंत होकर नित्य-प्रति दिन-रात ईश्वर की उपासना करता है। ऐसा जीव सौभाग्य से ही सत्संगति पाता है और वह स्वाभाविक ही परमात्मा को प्राप्त कर लेता है॥ २॥ वास्तविक तौर पर साधू और वैरागी वही है जो हृदय में प्रभु-नाम को धारण कर ले। उसके मन में तनिक भी तामसिकता नहीं रहती तथा वह अंतर्मन से अहंत्व को मिटा लेता है। प्रभु का यह नाम रूपी खज़ाना सतिगुरु ने ही दिखाया है और हरि-प्रभु का नाम-रस पीकर वह तृप्त हो गए॥ ३॥ जिस किसी ने भी हरि-नाम को प्राप्त किया तो उसने सौभाग्य, वैराग्य तथा सत्संगति द्वारा ही पाया है। भौतिक पदार्थों में आसक्त जीव (मनमुख) सतिगुरु को नहीं पहचानता अर्थात् वह गुरु का उपदेश ग्रहण नहीं करता, क्योंकि उसके अंदर अहंकार प्रबल होता है तथा वह योनियों में ही भटकता रहता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु के उपदेश में अनुरक्त जीव परमात्मा के नाम में रंग गए तथा यह रंग प्रभु के भय के बिना नहीं लग सकता॥ ४॥ ८॥ ४१॥

सिरीरागु महला ३ ॥ घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ॥ खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ॥ १ ॥ मेरे मन तजि निंदा हउमै अहंकारु ॥ हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखा के मुख उजले गुर सबदी बीचारि ॥ हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ॥ घर ही विचि महलु पाइआ गुर सबदी वीचारि ॥ २ ॥ सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥ अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥ सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥ ३ ॥ सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ ॥ कहणा किछू न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ४२ ॥

शरीर (घर) द्वारा ही नाम रूपी सौदा प्राप्त होता है, क्योंकि अंतर्मन में समस्त पदार्थ व्याप्त हैं। लेकिन यह सौदा किसी विशेष गुरुमुख जीव को प्रतिक्षण नाम-सिमरन करने से ही प्राप्त होता है। प्रभु का नाम-भण्डार अक्षुण्ण है और यह सौभाग्य से ही प्राप्त होता है॥ १॥ हे प्राणी मन ! अपने भीतर से निंदा, अहंकार और गर्व का त्याग कर दे। तुम गुरुमुख होकर परमेश्वर हरि-प्रभु को स्मरण करो॥ १॥ रहाउ॥ जो गुरुमुख जीव गुरु उपदेश ग्रहण करके उस पर विचार करता है, वह लोक-परलोक में प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। वह अपने हृदय में मुरारि के नाम को जपने से मृत्युलोक व परलोक में सुखों को प्राप्त करता है। गुरु के उपदेश का चिन्तन करने से वह गृह रूपी अंतः करण में परमात्मा के स्वरूप को पा लेता है॥ २॥ जो जीव सतिगुरु से परामुख होते हैं उनके मुख कलंकित होते हैं। वे प्रतिदिन कष्ट भोगते हैं और नित्य यमों के जाल में फँसते हैं। उनको स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता तथा कई तरह की चिंताग्नि उन्हें पूर्णतया जला देती है॥ ३॥ समस्त प्राणियों को देने वाला ईश्वर एक ही है और वह स्वयं ही अनुग्रह करता है। उसके अनुग्रह के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जिसे चाहे वह देता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु की शरण में जाकर जो प्रभु को पाने का उद्यम करता है, वही उसके आनंद को जान सकता है॥ ४॥ ६॥ ४२॥

सिरीरागु महला ३ ॥ सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥ गुर परसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ ॥ इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥ भाई रे गुरमुखि हरि नामु धिआइ ॥ नामु निधानु सद मनि वसै महली पावै थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ ॥ बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञैं घरि काउ ॥ गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरि नाउ ॥ २ ॥ त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥ लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करै पूकार ॥ बिखिआ अंदरि पचि मुए ना उरवारु न पारु ॥ ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि ॥ बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥ नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि ॥ ४ ॥ १० ॥ ४३ ॥

सत्य परमात्मा की सेवा-उपासना की जाए तो वह सत्य स्वरूप रूपी सम्मान प्रदान करता है। गुरु की कृपा द्वारा वह हृदय में वास करता है और अहंकार को दूर करता है। यह मन भटकने से तभी बच सकता है, जब वह परमेश्वर स्वयं कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥ हे भाई ! गुरु के उपदेश द्वारा हरि-प्रभु के नाम का सिमरन करो। यदि नाम-भण्डार सदा के लिए मन में स्थिर हो जाए तो जीव उस प्रभु के स्वरूप में स्थान प्राप्त कर लेता है॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी जीव का हृदय व शरीर अविद्या के कारण अन्धा हो रहा है, इसलिए उसे ठहरने के लिए कोई आश्रय नहीं होता। वह अनेकानेक योनियों में भटकता फिरता है, जैसे सूने घर में कौवा रहता हो। गुरु की शिक्षा द्वारा हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है और वाणी द्वारा परमेश्वर का नाम प्राप्त होता है॥ २॥ संसार में त्रिगुणी (सत्त्व, रज, तम) विषय-विकारों का अंधेरा छाया हुआ है और माया के मोह की धूलि चढ़ी हुई है। लोभी जीव वेद आदि धर्म ग्रंथों को पढ़-पढ़ कर परमेश्वर को पुकारते तो हैं, लेकिन द्वैत-भाव के कारण वह एकेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को स्मरण करते हैं। विषय-विकारों की अग्नि में जल कर वे मर गए तथा वह न इस संसार के सुख भोग सके और न ही परलोक में स्थान पा सके॥ ३॥ उन्होंने माया-मोह में लिप्त होकर उस प्रतिपालक परमात्मा को विस्मृत कर दिया है। सम्पूर्ण सृष्टि गुरु के बिना चेतना रहित है और वह यमों के जाल में फँसी हुई है। नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु के उपदेशानुसार सत्य-नाम का सिमरन करके ही जीव यमों के बंधन से बच सकते हैं॥ ४॥ १०॥ ४३॥

सिरीरागु महला ३ ॥ त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥ करि किरपा मेलाइअनु हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ॥ १ ॥ भाई रे गुरमति साचि

रहाउ ॥ साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥ आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥ लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥ २ ॥ बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥ ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥ असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ॥ ३ ॥ जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥ एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥ नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ४४ ॥

गुरुमुख जीवों ने त्रिगुणी माया का मोह त्याग कर तुरीयावस्था (चौथा पद) को प्राप्त किया है। परमात्मा ने कृपा करके जिस जीव को अपने साथ मिलाया है, उसके हृदय में ही उस हरि–प्रभु का नाम बसा है। जिनके भाग्य रूपी खज़ाने में पुण्य जमा है, प्रभु उनको सत्संगति में मिलाता है॥ १॥ हे भाई ! गुरु की शिक्षा द्वारा सत्य में निवास करो। केवल सत्य की साधना करो, जिससे उस सत्य स्वरूप से मिलन संभव हो सके॥ १॥ रहाउ॥ जिन्होंने पारब्रह्म परमेश्वर के नाम को पहचाना है, उन पर मैं बलिहारी जाता हूँ। अहंत्व का त्याग करके उनके चरणों में पड़ जाऊँ और उनकी इच्छानुसार चलूं। क्योंकि उनकी संगति में रह कर नाम–सिमरन का लाभ मिलता है, तथा सहज ही नाम की प्राप्ति हो जाती है॥ २॥ किन्तु गुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती और नाम के बिना सत्य स्वरूप को नहीं पाया जा सकता। फिर कोई ऐसा सत्य गुरु ढूँढ लो, जिसके द्वारा वह सत्य परमात्मा प्राप्त किया जाए। जो जीव गुरु के मार्गदर्शन में सत्य परमात्मा को पा लेता है उसके काम, क्रोध, लोभ रूपी दैत्यों का संहार हो जाता है और वह आत्मिक आनंद का सुख–भोग करता है। जो उस परमात्मा को अच्छा लगता है, वही होता है॥ ३॥ जैसी सतिगुरु में श्रद्धा होगी, वैसा सुख–फल जीव को प्राप्त होगा। इस तथ्य में बिल्कुल भी संदेह नहीं है, निस्संकोच कोई भी जीव सतिगुरु से प्रेम करके देख ले। नानक देव जी कथन करते हैं कि अकाल पुरुष एवं गुरु बेशक दो रूप दिखाई देते हैं, परंतु इन दोनों में ज्योति एक ही है, गुरु के उपदेश द्वारा ही अकाल–पुरुष से मिलन संभव है॥ ४॥ ११॥ ४४॥

सिरीरागु महला ३ ॥ अंम्रितु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥ आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥ मनमुख अंध न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥ १ ॥ मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥ गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥ आवणु जाणा जंमणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥ सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥ २ ॥ सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाए ॥ जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ ३ ॥ जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥ दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥ नानक नदरी पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ४५ ॥

जो स्वेच्छाचारी जीव नाम–अमृत को छोड़ कर विषय–विकार रूपी विष में मोहित हैं, सत्य वाहिगुरु के अतिरिक्त अन्य कोई पार्थिव पूजा करते हैं। वे मायातीत होकर अपने मूल कर्त्तव्य से विमुख हो रहे हैं और अपने मानव–जन्म का तात्पर्य नहीं समझते तथा अपनी आयु नित्य ही दुखों में व्यतीत करते हैं। ऐसे जीव अज्ञानी होकर उस परमात्मा को स्मरण नहीं करते और वे माया में ग्रसे हुए विषय रूपी सागर में बिना जल के ही डूब कर मर रहे हैं॥ १॥ हे जीव ! गुरु की शरण में रह कर हरि–प्रभु का चिन्तन करो। जब गुरु का उपदेश अंतर्मन में प्रविष्ट हो जाता है तो फिर कभी हरि–प्रभु भूल नहीं पाता॥ १॥

रहाउ॥ जीव के माया निर्मित तन में अहंकार रूपी विकार भरा हुआ है। इसलिए जीव स्वेच्छाचारी होकर जन्म–मरण के चक्र में फँस कर परमात्मा समक्ष अपनी प्रतिष्ठा को गंवा रहा है। सतिगुरु की सेवा करने से सदैव सुख की प्राप्ति होती है और आत्म–ज्योति का परमात्म–ज्योति से मिलन हो जाता है॥ २॥ सतिगुरु की सेवा अति सुखदायी है, जिससे मनवांछित फल प्राप्त होता है। सतिगुरु की सेवा के परिणामस्वरूप संयम, सत्य व तप प्राप्त होते हैं और तन पवित्र हो जाता है तथा जीव हरि–नाम को हृदय में धारण कर लेता है। हरि–प्रभु से मिलन होने पर जीव आत्मिक सुख अनुभव करता है और प्रायः रात–दिन आनंद में रहता है॥ ३॥ जो जीव सतिगुरु की शरण में आए हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ। उस सत्य–स्वरूप परमात्मा की सभा में सत्य को ही सम्मान प्राप्त होता है, ऐसा जीव सहज ही उस सत्य में समा जाता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि परमात्मा से मिलाप तो केवल अकाल–पुरुष की कृपा–दृष्टि एवं गुरु–उपदेश द्वारा ही संभव है॥ ४॥ १२॥ ४५॥

सिरीरागु महला ३ ॥ मनमुख करम कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ॥ सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ॥ पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ॥ १ ॥ भाई रे इक मनि नामु धिआइ ॥ संता संगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उर धारि ॥ मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥ सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥ २ ॥ पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥ अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ॥ गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ ॥ ३ ॥ गुर के भाणे विचि अंम्रितु है सहजे पावै कोइ ॥ जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सचि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ४६ ॥

स्वेच्छाचारी जीव के लिए सद्कर्म इस प्रकार व्यर्थ होते हैं, जैसे किसी दुहागिन स्त्री के तन पर किया हुआ शृंगार व्यर्थ है। क्योंकि उसकी शय्या पर उसका स्वामी तो आता नहीं और वह नित्य ही ऐसा करके अपमानित होती है। अर्थात्–स्वेच्छाचारी जीव द्वारा नाम–सिमरन रूपी सद्कर्म करने पर परमात्मा उसके समीप नहीं आता और वह पति–परमात्मा का स्वरूप प्राप्त नहीं करता, क्योंकि उसे परमात्मा का घर–द्वार दिखाई ही नहीं देता॥ १॥ हे भाई ! एकाग्र मन होकर नाम–सिमरन करो। संतों की संगति में मिल कर रहो, उस सत्संगति में नाम–स्मरण करने से आत्मिक सुख की प्राप्ति होगी॥ १॥ रहाउ॥ गुरुमुख जीव सदा सुहागिन स्त्री की भाँति होता है, क्योंकि उसने पति–परमात्मा को अपने हृदय में धारण करके रखा होता है। उसके बोल मीठे होते हैं और उसका स्वभाव विनम्र होता है, उसी कारण उस हृदय रूपी शय्या पर पति–परमात्मा का रमण प्राप्त होता है। जिनको गुरु का अनंत प्रेम प्राप्त हुआ है, वह गुरुमुख जीव सुहागिन व शोभा वाली स्त्री के समान है॥ २॥ सद्कर्मों के कारण जीव का जब भाग्योदय होता है तभी उसे सौभाग्य से सतिगुरु की प्राप्ति होती है। गुरु के मिलाप द्वारा अंतर्मन से दुख देने वाला भ्रम दूर हो जाता है तथा आत्मिक सुख प्राप्त होता है। जो जीव गुरु की आज्ञानुसार व्यवहार करता है, उसके जीवन में कभी कोई कष्ट नहीं आता॥ ३॥ गुरु की आज्ञा में नाम–अमृत होता है, उस नाम–अमृत को ज्ञान द्वारा ही पाया जा सकता है। जिस जीव ने हृदय में से अहंत्व का त्याग किया है, उसी ने गुरु द्वारा नाम–अमृत प्राप्त करके उसका पान किया है। नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव गुरुमुख होकर नाम–सिमरन करते हैं, उनका सत्य–स्वरूप परमेश्वर से मिलन होता है॥ ४॥ १३॥ ४६॥

सिरीरागु महला ३ ॥ जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ॥ सोहागणी करम कमावदीआ सेई करम करेइ ॥ सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ॥ १ ॥ भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ॥ बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ ॥ बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ॥ बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा जनमु गवाइ ॥ २ ॥ हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु संपै नालि ॥ अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ॥ सतगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरि नामा रिदै समालि ॥ ३ ॥ नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइ॥ नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ४७ ॥

जब जीव रूपी स्त्री परमात्मा को अपना पति मानती है तो वह अपना सर्वस्व उसको अर्पण कर देती है। फिर जो कर्म सुहागिनें करती हैं, वही कर्म तुम भी करो। इससे स्वाभाविक ही सत्य स्वरूप परमात्मा रूपी पति से मिलाप होगा और वह परमात्मा-पति तुझे सत्य प्रतिष्ठा प्रदान करेगा॥ १॥ हे जीव! परमात्मा का चिन्तन गुरु के बिना नहीं हो सकता। बेशक प्रत्येक जीव उस परमात्मा को पाने की कामना करे, किन्तु गुरु के बिना उस परमात्मा की भक्ति प्राप्त नहीं होती॥ १॥ रहाउ॥ जीव रूपी स्त्री द्वैत-भाव में फँस कर चौरासी लाख योनियों के चक्र में भटकती है। गुरु उपदेश के बिना उसे शांति नहीं मिलती और वह दुखों में ही जीवन रूपी रात व्यतीत करती है। गुरु के शब्द बिना वह पति-परमात्मा को प्राप्त नहीं कर पाती और वह अपना जन्म यूं ही व्यर्थ गंवा देती है॥ २॥ ऐसी जीव-कामिनी 'मैं-मैं' करती हुई सम्पूर्ण संसार में भटकती फिरती है, किन्तु यह धन-सम्पत्ति किसी के साथ नहीं गई। भौतिक पदार्थों के लोभ में अंधी हुई सम्पूर्ण सृष्टि प्रभु का नाम-सिमरन नहीं करती और वह यमों के जाल में बंधी पड़ी है। सतिगुरु के मिलाप से जिसने हरि-नाम को हृदय में सम्भाला है, उसने ही सत्य पूँजी अर्जित की है॥ ३॥ जो जीव गुरु के उपदेशानुसार नाम में अनुरक्त हुए हैं, वे ही निर्मल व शांत स्वभाव वाले हुए है। उनका मन व तन प्रभु के प्रेम-रंग में अनुरक्त हुआ है और जिह्वा नाम-रस में रत हो गई। नानक देव जी कथन करते हैं कि जो रंग अकाल-पुरुष ने आरम्भ से लगा दिया है वह कभी नहीं उतरता॥ ४॥ १४॥ ४७॥

सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ॥ आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ॥ हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ॥ १ ॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे जगजीवनु सुखदाता आपे बखसि मिलाए ॥ जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ गुरमुखि आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ॥ २ ॥ देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस दी कीम न पाई ॥ हरि प्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई ॥ ३ ॥ आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥ ४ ॥ १५ ॥ ४८ ॥

सतिगुरु की कृपा हो तो प्रभु-भक्ति की जा सकती है, अन्यथा गुरु के बिना भक्ति संभव नहीं है। जो जीव स्वयं को गुरु के साथ मिला कर नाम का रहस्य समझता है तो वह निर्मल होता है। हरि-प्रभु स्वयं सत्य है, उसका नाम सत्य है, परन्तु गुरु-उपदेश द्वारा उस सत्य स्वरूप से मिलन हो सकता है॥ १॥ हे जीव! जिसने प्रभु-भक्ति नहीं की, उसका इस संसार में आना व्यर्थ है। पूर्ण

गुरु की जिसने सेवा नहीं की, उसने अपना मानव जन्म व्यर्थ गंवा लिया॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा स्वयं ही सांसारिक जीवों का जीवनाधार व सुखों का दाता है और वह जीवों के अवगुण क्षमा करके स्वयं में अभेद कर लेता है। ये बेचारे दीन–हीन जीव–जन्तु क्या समर्था रखते हैं और क्या कुछ कह कर सुना सकते हैं। वह परमेश्वर स्वयं ही गुरुमुख जीवों को नाम द्वारा प्रतिष्ठित करता है और स्वयं ही उन से सेवा करवाता है॥ २॥ स्वेच्छाचारी जीव अपने कुटुम्ब–मोह में लिप्त हो रहा है, किन्तु अंतकाल में किसी ने भी साथ नहीं देना। जिसने सतिगुरु की सेवा करके गुणों के खज़ाने वाले परमात्मा को प्राप्त कर लिया है, उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती। हरि–परमेश्वर सदैवकाल मेरा मित्र व साथी है और अंतकाल में भी वह सहायक होगा॥ ३॥ अपने मन–चित्त में कोई चाहे कहता रहे अथवा किसी अन्य से कहलाए कि मुझ में अभिमान नहीं है, किन्तु गुरु की कृपा के बिना जीव के अंतर्मन से अभिमान समाप्त नहीं होता। परमेश्वर समस्त जीवों का दाता एवं भक्त–वत्सल है, और वह स्वयं ही कृपा करके जीव के हृदय में भक्ति बसाता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि परमात्मा स्वयं ही यश व ज्ञान देता है और स्वयं गुरु द्वारा प्रतिष्ठा प्रदान करता है अर्थात्–अकाल–पुरुष स्वयं ही गुरुमुख जीव को आत्म ज्ञान देकर इस लोक में यश तथा परलोक में प्रतिष्ठित पद प्रदान करता है॥ ४॥ १५॥ ४८॥

सिरीरागु महला ३ ॥ धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता परधानु ॥ सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥ दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ॥ १ ॥ मेरे मन गुरमुखि धिआइ हरि सोइ ॥ गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ॥ गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ ॥ सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ ॥ २ ॥ जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ॥ चिरी विछुंने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ ॥ आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ॥ ३ ॥ मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ॥ अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ॥ नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार ॥ ४ ॥ १६ ॥ ४६ ॥

वह माता धन्य है, जिसने (गुरु को) जन्म दिया और पिता भी श्रेष्ठ है। ऐसे सतिगुरु की सेवा करके जिन जीवों ने आत्मिक सुख प्राप्त किया है और अपने अंतर्मन से अभिमान को समाप्त किया है। ऐसे सद्‌कर्मी पुरुष के द्वार पर अनेक जिज्ञासु खड़े सेवा करते हुए गुणनिधान परमात्मा को पा रहे हैं॥ १॥ हे मेरी जीवात्मा! तुम गुरु के मुँह से उच्चारण होने वाले उपदेश द्वारा आचरण करते हुए उस अकाल–पुरुष हरि का सिमरन करो। जब गुरु–उपदेश हृदय में धारण हो जाता है तो तन व मन दोनों पवित्र हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु उपदेशानुसार चिन्तन करने से परमात्मा जीव पर कृपालु होकर उसके अंतर्मन में वास करता है और स्वयं उसे आकर मिलता है। इसलिए गुरु–उपदेश द्वारा उस परमात्मा का गुणगान करें तो स्वाभाविक ही उसके प्रेम का रंग चढ़ जाता है। इस प्रकार जीव निर्मल होकर उस सत्य स्वरूप में लीन हो जाता है और उसके साथ ही मिला रहता है, फिर कभी उससे वियुक्त होकर आवागमन के चक्र में नहीं पड़ता॥ २॥ उस परमात्मा ने जो कुछ करना है, वह कर रहा है, इसके अतिरिक्त कुछ किया भी नहीं जा सकता। सतिगुरु की शरण में डाल कर परमात्मा ने चिरकाल से वियुक्त हुई जीवात्मा को अपने स्वरूप में अभेद कर लिया। वह अपनी इच्छानुसार ही जीवों से कर्म करवाएगा, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं किया जा सकता॥ ३॥ जिस जीव ने अहंत्व और विषय–विकारों का त्याग करके अपना मन व तन परमात्मा के प्रेम–रंग में लीन कर लिया है, वह जीव निर्भय होकर अपने हृदय में परमात्मा का नाम–सिमरन करता रहता है। नानक

देव जी कथन करते हैं कि परमात्मा ने स्वयं ही ऐसे जीव को परिपूर्ण गुरु के उपदेश द्वारा अपने स्वरूप में मिला लिया है॥ ४॥ १६॥ ४६॥

सिरीरागु महला ३ ॥ गोविदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ॥ कथनी बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥ सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥ बिनु बूझे करम कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥ अंम्रितु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥ पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥ २ ॥ आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥ देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥ जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे करम कमाइ ॥ ३ ॥ जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥ पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥ नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरि गुण पावै सोइ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ५० ॥

गुरुबाणी द्वारा लब्ध पारब्रह्म गुणों का भण्डार है, उसका अंत नहीं पाया जा सकता। मात्र कथन कर देने से उसकी प्राप्ति संभव नहीं है, बल्कि वह तो हृदय से अहंत्व का त्याग करने से ही मिलता है। सतिगुरु के मिलन से प्रायः हृदय में परमात्मा का भय रहता है और वह स्वयं ही मन में आकर निवास करता है॥ १॥ हे जीव! गुरुमुख होकर कोई विरला ही इस भेद को जान सकता है। इस भेद को समझे बिना कर्म करने से सम्पूर्ण जीवन को व्यर्थ गंवाना है॥ १॥ रहाउ॥ जिसने नाम-रस को चखा है, उसी ने इसका स्वाद पाया है, अर्थात्-जिस जीव ने प्रभु-नाम का सिमरन किया, उसी ने इसका आनंद अनुभव किया है, नाम-रस चखे बिना तो वह भ्रम में ही भटकते हैं। परमात्मा का सत्य नाम अमृत समान है, उसका आनंद वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस जीव ने इस नामामृत का पान किया, वह पीते ही उस प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो गया तथा वह परिपूर्ण पारब्रह्म में अभेद हो गया॥ २॥ यह नाम भी यदि वह प्रभु स्वयं कृपालु होकर प्रदान करे तो मिलता है अन्यथा और कुछ नहीं किया जा सकता। उस देने वाले प्रभु के हाथ में ही यह बख्शिश है लेकिन उस दाता को गुरु द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। जीव ने पूर्व जन्म में जो कर्म किए हैं, उनके अनुसार ही अब फल प्राप्त हुआ है और जो वर्तमान में कर्म वह कर रहा है, उस अनुसार फल भविष्य में प्राप्त होगा॥ ३॥ संयम, सत्य और इन्द्रिय-निग्रह ये सभी नाम के अंतर्गत आते हैं, नाम के बिना मन निर्मल नहीं होता। सौभाग्य से ही जीव के मन में नाम बसता है, जिससे पारब्रह्म से मिलाप होता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव स्वाभाविक ही प्रभु के प्रेम-रंग में रमण करता है, वही हरि-गुणों को प्राप्त करता है॥ ४॥ १७॥ ५०॥

सिरीरागु महला ३ ॥ कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥ अधिआतम करम जे करे नामु न कब ही पाइ ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥ गुर परसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥ पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥ सतगुरि मिलिऐ त्रिकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥ २ ॥ गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥ सबदि मरै ता उधरै पाए मोख दुआरु ॥ गुर परसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥ ३ ॥ इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥ दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥ नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ५१ ॥

बेशक यदि जीव शरीर द्वारा साधना कर ले, उर्ध्व तप कर ले, किन्तु यह सब कर लेने से उसके अंतर्मन से अहंत्व नहीं मिट जाता। आत्म–ज्ञान हेतु किए जाने वाले बाह्य कर्म भी कर ले, तब भी वह कभी प्रभु–नाम प्राप्त नहीं कर सकता। परंतु जो जीव गुरु–उपदेश द्वारा जीवित मरता है अर्थात्–मोह–माया से अनासक्त होता है, उसके हृदय में आकर ही प्रभु का नाम बसता है॥ १॥ हे मेरे जीव रूपी मन! सुनो, तुम सतिगुरु की शरण में जाओ। गुरु की कृपा द्वारा ही माया के मोह से बचा जा सकता है और विषय–विकारों से लिप्त भवसागर को पार किया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ समस्त जीव त्रिगुणात्मक माया की ओर भागते हैं और इसमें जो द्वैत–भाव है, वही विकारों की उत्पत्ति करने वाला है। वेद–शास्त्रादि को पढ़ने वाला पंडित भी मोहपाश में बँधा हुआ है, तथा माया के वश में होने के कारण परमात्मा को भी नहीं बूझता। सतिगुरु के मिलाप द्वारा त्रिकुटी छूट जाती है तथा तुरीयावस्था में पहुँच कर मोक्ष–द्वार की प्राप्ति होती है॥ २॥ यदि गुरु के उपदेश द्वारा ज्ञान–भक्ति रूपी मार्ग पर जीव चले तो मोह रूपी गर्द दूर हो जाती है। यदि जीव गुरु के उपदेश में लीन होकर माया के मोह से मृत हो जाए तो वह भवसागर से तर जाता है। गुरु की कृपा द्वारा ही मानव जीव सत्य नाम वाले परमात्मा को मिल सकता है॥ ३॥ यह चंचल मन अत्यंत बलशाली है, किसी भी यत्न से यह मन जीव को नहीं छोड़ता। द्वैत–भाव वालों को यह मन कष्ट देता है तथा बहुत यातना देता है। गुरु जी कथन करते हैं कि जो जीव गुरु उपदेश द्वारा अहंत्व को गंवा कर नाम–सिमरन में लीन रहते हैं, वे यमों की यातना से बच गए हैं॥ ४॥ १८॥ ५१॥

सिरीरागु महला ३ ॥ किरपा करे गुरु पाईऐ हरि नामो देइ द्रिड़ाइ ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥ मनमुख करम कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥ १ ॥ मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥ अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥ रहाउ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥ हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥ मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ २ ॥ हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जंमै आवै जाइ ॥ मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥ गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहे समाइ ॥ ३ ॥ सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥ नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ ५२ ॥

जब परमेश्वर कृपा करता है, तब गुरु की प्राप्ति होती है, और गुरु हरिनाम को दृढ़ करवा देता है। गुरु के बिना हरिनाम को किसी ने भी प्राप्त नहीं किया और नामहीन व्यक्तियों ने अपना जन्म व्यर्थ गंवाया है। अपने मन की बात मान कर जो व्यक्ति कर्म करते हैं, उन्हें परमात्मा की सभा में सज़ा मिलती है॥ १॥ हे मन! तू द्वैत–भाव को दूर कर दे। क्योंकि तेरे अंदर हरि का वास है, उसकी प्राप्ति के लिए गुरु की सेवा करो, तभी सुखों की प्राप्ति होगी॥ रहाउ॥ जब जीव सत्य–स्वरूप परमात्मा से प्रेम करता है तो उसके वचन एवं कर्म सत्य हो जाते हैं। परमात्मा का नाम मन में बस जाए तो अहम् व क्रोधादि समस्त विकार निवृत्त हो जाते हैं। निर्मल मन से प्रभु के नाम का ध्यान करने से ही जीव मोक्ष द्वार को प्राप्त करता है॥ २॥ अहंकार में ही सम्पूर्ण जगत् नष्ट होता है तथा पुनःपुनः आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है। स्वेच्छाचारी जीव गुरु–उपदेश को नहीं जानते, इसलिए वे अपना सम्मान गंवा कर चले जाएँगे। गुरु–सेवा द्वारा प्रभु नाम प्राप्त होता है और उस सत्य स्वरूप परमात्मा में लीन होते हैं॥ ३॥ गुरु–उपदेश मान कर अंत:करण में से अभिमान समाप्त किया जा सकता है तथा सर्वश्रेष्ठ परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। नित्यप्रति भक्ति करके स्थिर व सत्य–स्वरूप परमात्मा में लीन होना करो। नानक देव जी कथन करते हैं कि जिस जीव के मन में नाम–पदार्थ बस गया, वह सहजावस्था में समा गया॥ ४॥ १९॥ ५२॥

सिरीरागु महला ३ ॥ जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥ घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥ सतगुरू किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥ सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु ॥ १ ॥ मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥ जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥ सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥ मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥ २ ॥ हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥ माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥ सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उर धारि ॥ किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ॥ ३ ॥ सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥ आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥ धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥ सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥ ४ ॥ सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥ इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ हरि जीउ आपणी क्रिपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥ नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥ ५ ॥ २० ॥ ५३ ॥

जिन व्यक्तियों ने सतिगुरु की सेवा नहीं की वे चहुं युगों में दुखी रहते हैं। उन्होंने हृदय रूपी घर में स्थिर परमात्मा को नहीं पहचाना, इसलिए वे अभिमान एवं अहंकार आदि विकारों में ग्रस्त होकर ठगे गए हैं। जो व्यक्ति सतिगुरु के धिक्कारे हुए हैं, वे संसार में माँग–माँग कर थक गए हैं। उन्होंने उस सत्य स्वरूप परमात्मा का सिमरन नहीं किया, जो समस्त कार्य संवारने वाला है॥ १॥ हे मेरे मन! तू हरि को सदैव प्रत्यक्ष ही देख। यदि तुम परमात्मा को परिपूर्ण मान लो तो वह तुम्हें आवागमन के चक्र से मुक्त कर देगा॥ १॥ रहाउ॥ जो सत्य नाम का आश्रय लेकर सत्य की स्तुति करते हैं, वे ही सत्य हैं। जिसने भक्ति रूपी सत्य कर्म किया है, उसका सत्य परमात्मा (वाहिगुरु) के साथ प्रेम है। सत्य स्वरूप परमात्मा ही है, जिसका आदेश चलता है, उसके आदेश को कोई भी मिटा नहीं सकता। स्वेच्छाचारी जीव परमात्मा के महल तक नहीं पहुँचते, वे असत्य जीव मार्ग में ही असत्य द्वारा लूटे जाते हैं॥ २॥ अभिमान करता हुआ सम्पूर्ण संसार नष्ट हो गया, गुरु के बिना इस संसार में अज्ञानता का घोर अंधकार बना रहता है। माया में लिप्त प्राणियों ने सुख प्रदान करने वाले परमात्मा को विस्मृत कर दिया है। यदि प्राणी सतिगुरु की सेवा करेगा, तथा सत्य नाम को हृदय में धारण करेगा, तभी इस अज्ञान रूपी अंधकार से उबर सकेगा। गुरु द्वारा प्रदत्त सत्य उपदेश का मनन करने से ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है॥ ३॥ जीव सतिगुरु की सेवा करके अहंकारादि विकारों का त्याग करता हुआ अपने हृदय को पवित्र करे। गुरु उपदेश द्वारा परमात्मा की गुणस्तुति का मनन करके अहंकार को त्याग कर विकारों से क्षीण हो जाता है। जब सत्य के साथ प्रीत हो गई तो सांसारिक मोह–माया के धन्धों से निवृत्ति मिल जाती है। जो सत्य में अनुरक्त हैं, उनके मुँह उस सत्य परमात्मा के दरबार में उज्ज्वल होते हैं॥ ४॥ जिन्होंने सतिगुरु में श्रद्धा व्यक्त नहीं की, उनके उपदेश में प्रीत नहीं लगाई। वे जितना भी तीर्थ–स्नान अथवा दान आदि कर लें, द्वैत–भाव के कारण वे अपमानित होते हैं। जब परमात्मा अपनी कृपा करता है, तभी नाम–सिमरन में प्रीत लगती है। नानक देव जी कथन करते हैं कि हे जीव! तुम गुरु के अपार प्रेम द्वारा परमात्मा के नाम का सिमरन किया कर॥ ५॥ २०॥ ५३॥

सिरीरागु महला ३ ॥ किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ॥ सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ॥ एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥ नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ॥ १ ॥ मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥ आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥ १ ॥

रहाउ ॥ मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥ भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ॥ सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥ निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥ २ ॥ जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥ सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ॥ सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाइ ॥ मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥ ३ ॥ सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ॥ गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥ सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ५४ ॥

जब मैं अपने गुरु से जाकर पूछता हूँ कि किस की सेवा करूँ और कौन-सा जाप करूँ तो आदेश मिलता है कि अपने अंतर्मन से अहंत्व का त्याग करके सतिगुरु का आदेश मान लेना। सतिगुरु का आदेश मानना ही वास्तविक सेवा एवं चाकरी है, इसके द्वारा ही मन में प्रभु का नाम बसता है। ईश्वर के नाम सिमरन द्वारा ही सुखों की प्राप्ति होती है तथा सत्य नाम से ही जीव शोभायमान होता है॥ १॥ हे मेरे मन ! तुम दिन-रात प्रभु के चिन्तन में जागृत रहो। अपने प्रेमा-भक्ति मूलक जीवन को सम्भालो, वरन् आयु रूपी खेती को मृत्यु रूपी कूंज खा जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ जिन्होंने ब्रह्म को परिपूर्ण माना है, उनकी सम्पूर्ण मनोकामनाएँ पूर्ण हुई हैं। जो व्यक्ति परमात्मा का भय मानकर दिन-रात प्रेमा-भक्ति करते हैं, वे सदैव परमात्मा को प्रत्यक्ष देखते हैं। उनका मन परमात्मा की गुणस्तुति में स्थिर अनुरक्त रहता है, इसी से शरीर में से भ्रम दूर होता है। वही जीव शुभ-गुण स्वरूप पवित्र खज़ाने वाले परमात्मा को प्राप्त करते हैं॥ २॥ जो जीव मोह-माया से सुचेत रहते हैं, वे विकारों की मृत्यु से बच जाते हैं और जो अज्ञानता की निद्रा में सो जाते हैं, वे शुभ-गुण स्वरूप सम्पति को लुटा गए। वे प्रभु की गुणस्तुति का सार नहीं पहचान पाते और उनका जीवन स्वप्न भाँति व्यतीत हो जाता है। ऐसे जीव खाली घर के अतिथि की भाँति भूखे आते हैं और भूखे ही चले जाते हैं। स्वेच्छाचारी जीव का जन्म व्यर्थ चला जाता है, ऐसे में वह आगे परलोक में जाकर क्या मुँह दिखाएगा ?॥ ३॥ वह परमात्मा ही सर्वस्व है, यह बात अहंकारी जीव द्वारा नहीं कही जा सकती। गुरु का उपदेश पहचान कर ही कष्टदायक अहंकार को हृदय में से निकाला जा सकता है। अपना कर्त्तव्य जान कर जो सतिगुरु की सेवा करता है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ। नानक देव जी कथन करते हैं कि सत्यस्वरूप परमात्मा के द्वार पर वे जीव ही सत्य धारण करते हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ ४॥ २१॥ ५४॥

सिरीरागु महला ३ ॥ जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥ इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥ मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥ साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ॥ खेती जंमी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥ गुर का सबदु अम्रितु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥ २ ॥ आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥ बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥ हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥ तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥ ३ ॥ नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥ नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ५५ ॥

परमात्मा का चिन्तन करने हेतु यदि समय निश्चित करने का विचार करते रहें तो किस समय भक्ति हो सकती है, अर्थात्– कभी भी भक्ति नहीं हो सकती। दिन–रात परमात्मा के नाम में विलीन रहने वाले जीव की शोभा होती है। यदि क्षण भर के लिए भी प्रियतम प्रभु विस्मृत हो जाए तो वह कैसी भक्ति हुई। सत्य सिमरन द्वारा ही मन–तन शीतल रहता है और कोई भी श्वास निष्फल नहीं जाता॥ १॥ हे मेरे मन! तुम भी प्रभु–नाम का सिमरन करो। सत्य भक्ति तभी होती है, जब हरि–प्रभु मन में आकर बस जाए॥ १॥ रहाउ॥ सहजावस्था में स्थिर होकर हृदय–रूपी खेत में सत्य नाम का बीज डाल कर खेती बोई जाए तो शुभगुण रूपी खेती बहुत पैदा होती है, अर्थात्– फसल देख कर मन स्वाभाविक ही तृप्त हो जाता है। गुरु का उपदेश अमृत रूप है, जिसका पान करने से माया की तृष्णा बुझ जाती है। जिस गुरुमुख जीव का यह सत्य मन सत्य नाम में लीन है, वह सत्य–स्वरूप परमात्मा में समा गया है॥ २॥ उनका स्वयं कुछ बोलना, कहना व देखना आदि शब्द गुरु–वाणी में ही समाया होता है। उनके वचन चार–युगों में विख्यात हो जाते हैं, क्योंकि वे पूर्ण रूप से सत्य पर आधारित होते हैं। जीव का अहंकार व अहंभाव समाप्त हो जाता है और सत्य प्रभु उन्हें स्वयं में मिला लेता है। जो जीव सत्य–स्वरूप में लीन हैं, उन्हें परमात्मा का स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई देता है॥ ३॥ परमात्मा की कृपा–दृष्टि से ही परमात्मा का नाम–सिमरन किया जा सकता है, बिना सद्कर्मों के नाम–सिमरन को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जिस जीव को सौभाग्य से सत्संगति मिलती है, उसे सतिगुरु आकर मिलते हैं। प्रतिदिन नाम में अनुरक्त होने पर हृदय में से विषय–विकारों का दुख दूर हो जाता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि गुरु के उपदेश द्वारा ही जीव का परमात्मा से मिलन होता है तथा नाम–सिमरन में लीन रहता है॥ ४॥ २२॥ ५५॥

सिरीरागु महला ३ ॥ आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥ दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उर धारि ॥ सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥ १ ॥ मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥ हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥ जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥ २ ॥ विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥ भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥ नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए मिलाइ ॥ ३ ॥ सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ॥ पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ॥ सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ॥ जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ५६ ॥

जिन्होंने गुरु के उपदेश का मनन किया है, परमेश्वर ने उनके मन में अपना भय डाला है। वे व्यक्ति प्रायः सत्संगति में मिले रहते हैं तथा सत्य परमात्मा के गुणों को ग्रहण करते हैं। परमात्मा ने उनके हृदय में से दुविधा की मैल को दूर कर दिया है तथा ऐसे व्यक्ति परमात्मा के नाम को हृदय में धारण करके रखते हैं। गुरु का सत्य उपदेश उनके मन में बस जाता है और उस सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ उनका प्रेम हो जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! यह जीव अहंकार रूपी मैल से भरा हुआ है। परमात्मा इस मैल से रहित है और वह पवित्र व सुंदर है, परमात्मा पवित्र जीवों को ही गुरु–उपदेश से जोड़ कर संवारने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के सत्य उपदेश से जिस जीव का मन मोहित हो गया, उसे प्रभु ने स्वयं ही अपने स्वरूप में मिला लिया। रात–दिन नाम सिमरन में लीन रहने से उनकी

ज्योति प्रभु की ज्योति में समा जाती है। अपने अंतर्मन के प्रकाश द्वारा ही परमात्मा की पहचान होती है, किन्तु सतिगुरु के बिना ऐसा ज्ञान प्राप्त होना असंभव है। जिनके भाग्य में पूर्व काल से ही लिखा है, वे गुरु को आकर मिल गए॥ २॥ नाम-साधना के बिना समस्त जीव द्विचितापन हो रहे हैं और द्वैत-भाव में नष्ट हो रहे हैं। उस परमात्मा के बिना एक क्षण भी सुख के साथ नहीं बिताया जा सकता दुख में ही रात व्यतीत होती है। भ्रम में भूला हुआ अज्ञानी जीव आवागमन के चक्र में भटकता है। परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करे, तो अपने साथ मिला लेता है॥ ३॥ परमात्मा हमारा सब-कुछ कहा व किया, सुनता व देखता है, फिर उसके समक्ष कैसे इन्कार किया जा सकता है। स्वेच्छाचारी जीव असंख्य पाप कमाते हैं, पापों में गलते-सड़ते रहते हैं। उनको वह परमात्मा दृश्यमान नहीं है, क्योंकि स्वेच्छाचारी जीव ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता। नानक देव जी कथन करते हैं कि जिस गुरुमुख जीव को परमात्मा शुभ-मार्ग दिखाता है, वही उस मार्ग द्वारा परमात्मा को देख पाता है॥ ४॥ २३॥ ५६॥

स्रीरागु महला ३ ॥ बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ॥ गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ॥ गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ॥ १ ॥ मन रे निज घरि वासा होइ ॥ राम नामु सालाहि तू फिरि आवण जाणु न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ॥ सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ॥ सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइ ॥ २ ॥ हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ॥ बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ॥ बिनु नावै ठउरु न पाइनी जम पुरि दूख सहाहि ॥ ३ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ॥ गुर परसादी बुझीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ॥ ४ ॥ २४ ॥ ५७ ॥

गुरु के बिना नाम की प्राप्ति संभव नहीं, नाम-सिमरन के बिना अहंकार रूपी रोग का निवारण नहीं होता और इस रोग के निवारण के बिना जीव आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं होता। गुरु की कृपा द्वारा मन में नाम बसता है और वह जीव नाम में समाया रहता है। गुरु के उपदेश द्वारा हरि परमात्मा को पाया जा सकता है, इसके बिना मनमुख व्यक्ति भ्रम में ही भटकते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! नाम-सिमरन के कारण ही परमात्मा के स्वरूप में निवास होता है। इसलिए तुम राम-नाम की स्तुति करो, तभी तुम्हारा आवागमन छूट सकेगा॥ १॥ रहाउ॥ हरि-परमेश्वर दाता एक ही सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है, इसके अतिरिक्त दूसरा अन्य कोई नहीं है। गुरु-उपदेश द्वारा परमात्मा का चिन्तन मन में बस जाए तो सुख सरलता से प्राप्त हो जाता है। वह परमात्मा अपनी दृष्टि में सभी को देखता है, जिसे वह चाहता उसी को सुख प्रदान करता है॥ २॥ समस्त प्राणी अहंकार में लिप्त होकर पाप-पुण्य, धर्म-कर्म अथवा शुभ कर्मों आदि की गणना करते हैं, किन्तु गणना करने वाले को कोई सुख नहीं मिलता। ऐसे जीव विषय-विकारों की कमाई ही करते हैं और अंततः इस विष में ही समा जाते हैं। परमात्मा के नाम के बिना विशेष स्थान प्राप्त नहीं कर पाते तथा परलोक में जाकर दुख सहारते हैं॥ ३॥ जीव को शरीर आदि सब कुछ उस परमात्मा का दिया हुआ है, सभी को उस परमेश्वर का ही आसरा है। गुरु की कृपा द्वारा उस परमात्मा को जाने, तभी मोक्ष द्वार की प्राप्ति होती है। नानक देव जी कहते हैं कि हे जीव! उस परमात्मा का स्तुति गान करो, जिसके गुणों का अंत नहीं पाया जा सकता॥ ४॥ २४॥ ५७॥

सिरीरागु महला ३ ॥ तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥ गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥ सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥ किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥ १ ॥ मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ॥ सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥ १ ॥

रहाउ ॥ सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ॥ गुर सबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ ॥ जिहवा रती सबदि सचै अंम्रितु पीवै रसि गुण गाइ ॥ गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥ संसा इहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ ॥ इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ ॥ आपे ही आपि मनि वसिआ माइआ मोहु चुकाइ ॥ आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइ बुझाइ ॥ ३ ॥ सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ॥ इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ॥ गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइ ॥ अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ५८ ॥

उन जीवों को सुख आनंद की प्राप्ति होती है, जिनको सत्य नाम का आश्रय प्राप्त है। गुरु का उपदेश ग्रहण करने वालों ने सत्य स्वरूप परमात्मा को पाया है, जो समस्त दुखों की निवृत्ति करता है। प्रायः सत्य स्वरूप परमात्मा के गुणों का गायन करें तथा सत्य नाम के साथ प्रेम करें। परमात्मा ने अपनी कृपा-दृष्टि द्वारा उन्हें भक्ति का भण्डार प्रदान किया है॥ १॥ हे मेरे मन! उस परमात्मा के गुणों का गायन करते रहो, तुम्हें सदा आनंद बना रहेगा। सतिगुरु के उपदेश द्वारा हरि-नाम को प्राप्त करें, तो जीव हरि के संग ही समाया रहता है॥ १॥ रहाउ॥ सत्य भक्ति करने वाले जीव का मन गहन रंग में रंग जाता है तथा स्वतः ही परमात्मा में लीन रहता है। गुरु-उपदेश द्वारा गुरुमुख जीवों का मन परमेश्वर में ऐसा मोहित हो गया है कि कुछ कथन ही नहीं किया जा सकता। ऐसे जीवों की जिह्वा सत्य उपदेश में रत है, नाम-अमृत का पान करती है और प्रेम सहित गुणों का गायन करती है। इस परमात्मा के आनंद को गुरु के मुख से उच्चारण होने वाले उपदेश द्वारा वही जीव पाते हैं, जिन पर उस परमात्मा की कृपा होती है॥ २॥ यह संसार संशय रूप है, इसमें जीव आयु रूपी रात सोकर (अज्ञानता में) व्यतीत करता है। कुछेक को वह अपनी इच्छानुसार इस संसार-सागर में से निकाल लेता है, और अपने साथ मिला लेता है। उनके मन में परमात्मा स्वयं ही विद्यमान होता है, जिन्होंने माया का मोह त्याग दिया है। परमात्मा ने स्वयं ही उन्हें सम्मान प्रदान किया है, जिन्हें वह गुरु द्वारा समझा देता है॥ ३॥ समस्त जीवों का दाता परमेश्वर एक है, जो विस्मृत प्राणियों को समझा लेता है। किन्हीं जीवों को उसने स्वयं से विस्मृत आप ही किया हुआ है, उन्हें द्वैत-भाव में लगाया हुआ है। गुरु के उपदेश द्वारा परमात्मा प्राप्त होता है तथा आत्मा को परमात्मा से मिलाता है। नानक देव जी कथन करते हैं कि नित्य-प्रति हरि-नाम के चिन्तन में लीन होकर नाम में ही अभेद होता है॥ ४॥ २५॥ ५८॥

सिरीरागु महला ३ ॥ गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ॥ गुर सबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ॥ मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुर सबदि न करे पिआरु ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥ निज घरि वसहि अंम्रितु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥ मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥ जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ॥ गुर सबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥ २ ॥ आपे रंगणि रंगिओनु सबदे लइओनु मिलाइ ॥ सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ॥ चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ॥ जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ ॥ ३ ॥ मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥ मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥ सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥ सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ५९ ॥

गुणों से विभूषित जीवों ने तृष्णादि विकारों का त्याग करके सत्य स्वरूप को प्राप्त किया है। उसका हृदय गुरु के उपदेश में रंग गया है और जिह्वा परमात्मा के भक्ति प्रेम में रंग गई है। सतिगुरु के बिना परमात्मा को किसी ने भी नहीं पाया, बेशक अपने हृदय में विचार करके देख लो। जब तक जीव गुरु के उपदेश से प्रीति नहीं करता, अर्थात् अपना मन गुरु के उपदेश में नहीं टिकाता, ऐसे मनमुख के हृदय से तब तक विषय–विकारों की मैल नष्ट नहीं होती॥ १॥ हे मेरे मन! तुम सतिगुरु की इच्छानुसार चलो। तभी तुम निज स्वरूप में रह कर नामामृत पान कर सकोगे तथा सुख धाम को प्राप्त करोगे॥ १॥ रहाउ॥ जिस जीव में अवगुण ही विद्यमान हैं, कोई भी गुण नहीं है, उनको प्रभु के सम्मुख बैठने का अवसर प्राप्त नहीं होता। ऐसे स्वेच्छाचारी जीव गुरु के उपदेश को नहीं जानते तथा अवगुणों के कारण वह परमात्मा से दूर रहते हैं। जिन्होंने सत्य–नाम को पहचाना है, वे उस सत्य–स्वरूप में पूर्ण–रूपेण अनुरक्त हैं। उनका हृदय गुरु के उपदेश में बिंधा गया है तथा परमात्मा उन्हें स्वयं प्रत्यक्ष रूप में मिला है॥ २॥ प्रभु ने स्वयं ही जीवों को अपने रंग की मटकी में रंगा है तथा गुरु–उपदेश द्वारा अपने साथ मिला लिया है, जो लिवलीन होकर सत्य परमात्मा में जुड़े हैं, उनका नाम रूपी सत्य रंग नहीं उतरता। स्वेच्छाचारी जीव सम्पूर्ण सृष्टि में भटकता हुआ थक जाए, किन्तु उन्हें कहीं से भी परमात्मा का रहस्य पता नहीं चल सकता। जिस जीव को सत्य गुरु मिलाता है, वही मिल पाता है, वह सत्य ब्रह्म में अभेद हो जाता है॥ ३॥ जीव रूपी स्त्री कहती है कि मैं संसार में अनेकानेक व्यक्तियों को मित्र बना–बना कर थक गई हूँ कि कोई तो मेरा दुख निवृत्त करे। अंततः प्रियतम प्रभु से मिल कर दुख निवृत्त होता है, जिसका मिलन गुरु उपदेश द्वारा ही संभव है। सत्य श्रद्धा रूपी पूँजी द्वारा जिसने सत्य–नाम रूपी पदार्थ को कमाया है, उस सत्य की सत्य शोभा होती है। नानक देव जी कथन करते हैं कि जो जीव गुरुमुख बनकर सत्य स्वरूप में समाए हैं, फिर वे कभी भी सत्य–स्वरूप से बिछुड़ते नहीं हैं॥ ४॥ २६॥ ५६॥

सिरीरागु महला ३ ॥ आपे कारणु करता करे स्रिसटि देखै आपि उपाइ ॥ सभ एको इकु वरतदा अलखु न लखिआ जाइ ॥ आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥ गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥ गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥ २ ॥ गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥ घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥ गुर सबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥ सा धन नावै बाहरी अवगणवंती रोइ ॥ ३ ॥ सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ त्रिपति होइ ॥ गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ ॥ आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ॥ नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ६० ॥

परमात्मा स्वयं ही कारण एवं स्वयं ही कर्ता है, जो सृष्टि को उत्पन्न करता है और उसकी परवरिश करता है। समस्त प्राणियों में वह एक ही विद्यमान है, पुनः वह अलक्ष्य भी है जो समझा नहीं जा सकता। स्वयं परमात्मा दयालु भी है जो अपनी कृपा–दृष्टि से अपना स्वरूप समझा भी देता है। गुरु के उपदेश द्वारा जिन जीवों के मन में वह परमात्मा व्याप्त रहता है, वे उस सत्य स्वरूप में सदा लीन रहते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! तुम गुरु की आज्ञा मान कर चलो। ऐसा करने से तन–मन शांत हो जाता है और मन में नाम आकर बस जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस प्रभु ने इस सृष्टि को मूल रूप से रच कर सम्भाल रखा है, वही इसका ध्यान रखता है। यदि गुरु के उपदेश को पहचानें, तभी वह

परमेश्वर स्वयं कृपा–दृष्टि करता है वह मानव जीव गुरु उपदेश द्वारा ही उस सत्य परमात्मा के द्वार पर शोभनीय होते हैं। गुरुन्मुख जीव उस सत्य उपदेश में लीन रहते हैं, उन जीवों को कर्त्ता पुरुष (परमात्मा) ने अपने श्री–चरणों से जोड़ा है॥ २॥ हे जीव! गुरु का उपदेश ग्रहण करके उस सत्य स्वरूप परमात्मा का गुणगान करो, जिसके गुणों की कोई सीमा नहीं है। सर्वव्यापक परमेश्वर अपने ही आदेश से प्रत्येक हृदय में विद्यमान होता तथा अपने आदेश द्वारा ही जीवों की पालना का विचार करता है। हे मानव! गुरु उपदेश द्वारा अपने हृदय में से अहंकार को त्याग कर उस सर्व–सम्पन्न परमात्मा की स्तुति करो। जो नाम–विहीन जीव रूपी स्त्री है। वह अवगुणवती रोती रहती है॥ ३॥ मैं सत्य स्वरूप परमात्मा का चिन्तन करूँ, सत्य में लीन रहूँ तथा सत्य–नाम द्वारा तृप्त रहूँ। शुभ गुणों का विचार करूँ, शुभ गुणों को ही एकत्र करूँ, अवगुणों की मैल को नाम–जल से धोकर बाहर निकाल दूँ। तब परमेश्वर स्वयं ही मिला लेता है और पुनः वियोग नहीं होता। नानक देव जी कथन करते हैं कि अपने पूर्ण गुरु की श्लाघा करूँ, जिनके द्वारा वह प्रभु प्राप्त होता है॥ ४॥ २७॥६०॥

सिरीरागु महला ३ ॥ सुणि सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह लुडाइ ॥ आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइ ॥ जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ १ ॥ मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर बीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि कंतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ ॥ गरबि अटीआ त्रिसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥ २ ॥ गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥ अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥ ३ ॥ से सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेइ ॥ खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ॥ घरि वरु पाइआ आपणा हउमै दूरि करेइ ॥ नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ६१ ॥

हे कामना में ग्रस्त जीव–रूपी स्त्री! सुनो, तुम बाहें उलार–उलार कर क्यों चलती हो? इस लोक में तो तुम अपने पति–परमात्मा को पहचानती नहीं, आगे परलोक में जाकर क्या मुँह दिखाओगी? जिस ज्ञानवान सखी ने अपने पति–परमात्मा को पहचान लिया है, गुरु जी कहते हैं कि मैं उनके पांव लगती हूँ। मैं उनके सत्संग के मिलन द्वारा उनके जैसी ही हो जाऊँ॥ १॥ हे जीव रूपी मुग्ध स्त्री! तू झूठ द्वारा ठगी हुई झूठी बन रही है। सत्य व सुन्दर पति–परमात्मा गुरु के उपदेश द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी जीव रूपी स्त्रियाँ पति–परमेश्वर को नहीं पहचानतीं, इसलिए उनकी जीवन रूपी रात कैसे व्यतीत हो? अहंकार में पूर्ण रूप से भरी हुई वह स्त्री, तृष्णाग्नि में जलती है तथा द्वैत–भाव में दुख पाती है। जो सुहागवती स्त्रियाँ गुरु–उपदेश में रत हैं, उनके हृदय में से अहंत्व नष्ट हो जाता है। वह अपने पति–परमेश्वर के आनंद को सदैव भोगती हैं, इसलिए उनका जीवन पूर्ण सुख में व्यतीत होता है॥ २॥ जो स्त्रियाँ (जीव) ज्ञान–रहित हैं, उनको पति–परमात्मा द्वारा परित्यक्त किया हुआ है और वह पति–परमात्मा का प्रेम ग्रहण नहीं कर पातीं। उनकी बुद्धि में अज्ञानता का अंधकार है, परमात्मा को देखे बिना भौतिक पदार्थों की भूख नहीं जाती। हे सत्संगिनो! सत्संग में आओ और मिल कर विनती करो कि मुझे भी परमात्मा से मिला दो। जिस जीव रूपी स्त्री को सौभाग्य से सतिगुरु की प्राप्ति होती है, उसने ही पति–परमात्मा को प्राप्त किया है और वह सत्य स्वरूप में समा जाती है॥ ३॥ वे सखियाँ सुहागिन होती हैं, जिन पर परमात्मा कृपा–दृष्टि करता है। वह अपना तन–मन अर्पण करके

अपने पति–परमात्मा को पहचानती हैं। गुरु कृपा द्वारा अहंकार दूर करके अपने हृदय रूपी घर में पति–परमात्मा पा लेती हैं। गुरु जी कथन करते हैं कि वह यशस्वी सुहागिनें होती हैं जो प्रतिदिन पति–परमात्मा का चिन्तन करती हैं॥ ४॥ २८॥ ६१॥

सिरीरागु महला ३ ॥ इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥ सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥ सभु उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥ जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥ १ ॥ मुंधे तू चलु गुर कै भाइ ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥ हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥ सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥ सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥ २ ॥ पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ मनु तनु अरपी सिरु देई तिन कै लागा पाइ ॥ जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥ गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥ ३ ॥ २६ ॥ ६२ ॥

कई जीव रूपी स्त्रियाँ अपने पति–परमेश्वर के साथ सुख मान रही हैं परन्तु मैं किसके द्वार पर जाकर प्रभु–मिलन की युक्ति पूछूँ ? गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्राणी ! तू श्रद्धापूर्वक सच्चे हृदय से अपने सतिगुरु की सेवा कर और सतिगुरु तुझ पर अपार कृपा करके तेरा परमेश्वर–पति से मिलन करवा देगा। अकाल पुरुष समस्त जीवों का रक्षक है और उसके लिए कोई निकट एवं दूर नहीं। जिस प्राणी ने अपने पति–परमेश्वर को पा लिया है, वह उसकी संगति का सदैव आनंद प्राप्त करता है॥ १॥ हे ज्ञानहीन प्राणी ! तू अपने गुरु की आज्ञानुसार कर्म करता रह, गुरु के मार्गदर्शन से प्रभु मिलन रूपी फल अवश्य प्राप्त होगा। गुरु के उपदेशानुसार चलने से हे प्राणी ! तुझे परमात्मा का रात–दिन सुख अनुभव होगा और तू प्रभु के हृदय में समा जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ जो जीवात्माएँ गुरु–शब्दों में लीन हैं, वही सुहागिनें हैं। वे सत्यनाम से शृंगार करती हैं। वे गुरु के साथ प्रेम में रहने से अपने अन्तर में हरि–रूपी वर प्राप्त कर लेती हैं। उनकी सेज अति सुन्दर है, जिस पर परमात्मा रूपी पति से उनका मिलन होता है और उनके पास भक्ति के अमूल्य भण्डार विद्यमान होते हैं। वह प्रीतम प्रभु जो संसार के समस्त जीवों का आश्रय है, वह उनके हृदय में निवास करता है॥ २॥ गुरु जी कथन करते हैं कि मैं उन जीवात्माओं (प्रभु–भक्तों) पर बलिहारी जाता हूँ, जो अपने स्वामी की प्रशंसा करती हैं। मैं उन प्रभु–भक्तों पर अपना तन–मन समर्पित करता हूँ और अपना शीश निवाता हूँ। जिन्होंने विषय–विकार एवं द्वैत भावना त्यागकर एक पारब्रह्म को पहचान कर अपना लिया है, वह द्वैतवाद के प्रेम को अस्वीकृत कर देते हैं। गुरु जी वचन करते हैं कि हे नानक ! गुरु–उपदेश से ही पारब्रह्म का ज्ञान प्राप्त होता है और गुरु की कृपा से वह ईश्वर में लीन हो जाता है॥ ३॥ २६॥ ६२॥

सिरीरागु महला ३ ॥ हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥ लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ॥ हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ॥ गुर परसादी सेव करी सचु गहिर गंभीरै ॥ १ ॥ मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥ गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धरम राइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥ दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥ अधिआतमी हरि गुण तासु मनि जपहि एकु मुरारि ॥ तिन की सेवा धरम राइ करै धंनु सवारणहारु ॥ २ ॥ मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ॥ आतम रामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥ बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ॥ सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु

॥ ३ ॥ सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ॥ जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ॥ गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥ नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६३ ॥

हे पूज्य–परमेश्वर ! तू ही सत्य है और सब कुछ तेरे ही वश में है। चौरासी लाख योनियों में प्राणी गुरु–मिलन के बिना सर्वत्र भटकता रहता है और प्रभु प्राप्ति के लिए डगमगाता फिरता है। परमात्मा की कृपा–दृष्टि हो तो क्षमा करने पर मनुष्य देह दुखों से निवृत्त होकर सदा सुख सागर में रहती है। गुरु की दया–दृष्टि से ही प्राणी सच्चे, गहर, गंभीर परम सत्य को प्राप्त करता है॥ १॥ इसलिए हे मेरे मन ! भगवान के नाम में मग्न होने से सुख की उपलब्धि होती है। गुरु उपदेशानुसार परमात्मा के नाम का यश गान करता जा, क्योंकि इसके अतिरिक्त और कोई अन्य उपाय नहीं॥ १॥ रहाउ॥ धर्मराज को सच्चे न्याय का उपदेश उसी परमात्मा ने प्रदान किया था कि सबके साथ बैठ कर एक सच्चा–न्याय कर। उस महान् परमात्मा ने धर्मराज को अधिकार प्रदान किया था कि दुष्ट आत्माएँ जो लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि विकारों में ग्रस्त हैं वह तेरे नरकों की प्रजा है। आध्यात्मिक प्राणी जो गुणों के भण्डार से ओतप्रोत हैं तथा परमेश्वर का सिमरन करते हैं। प्रभु–भक्तों की धर्मराज स्वयं उनकी लगन से सेवा करता है, वे प्राणी धन्य हैं और उनका सृजनहार प्रभु धन्य–धन्य है॥ २॥ जिन प्राणियों ने मन के विकार मन से त्याग दिए हैं, वे मोह–अभिमान इत्यादि से मुक्त होकर निर्मल हो जाते हैं। वे प्राणी आत्मा में ही परमात्मा को पहचान लेते हैं और सहज ही हरि नाम में लीन हो जाते हैं। किन्तु सतिगुरु के बिना प्राणी को मोक्ष प्राप्त नहीं होता, वह मनमुखी प्राणी दीवानों की तरह दर–दर भटकता रहता है। वह प्राणी उस प्रभु के शब्द का चिंतन नहीं करता अपितु व्यर्थ ही वाद–विवाद करता रहता है और पापों में ग्रस्त होने के कारण उस जीव की मुक्ति नहीं होती॥ ३॥ पारब्रह्म स्वयं ही सर्वस्व है और इसके अलावा अन्य कोई नहीं। पारब्रह्म जैसे प्राणी को स्वयं बुलाता है, प्राणी वैसे ही बोलता है और प्राणी उसके बुलाने पर ही बोलते हैं। गुरु की वाणी स्वयं ब्रह्म है और गुरु के शब्द द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है। हे नानक ! तू उस अकाल पुरुष का नाम सिमरन कर जिसकी आराधना से तुझे शांति एवं सुख उपलब्ध होगा॥ ४॥ ३०॥ ६३॥

सिरीरागु महला ३ ॥ जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ॥ मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ॥ बहु बिधि करम कमावदे दूणी मलु लागी आइ ॥ पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ॥ मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥ मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ॥ गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ ॥ जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ तिउ गुर गिआनि अगिआनु तजाइ ॥ २ ॥ हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥ करणै वाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ॥ माइआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ॥ गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उर धारि ॥ ३ ॥ जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ॥ ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निज थाउ ॥ मनि रते जिहवा रती हरि गुण सचे गाउ ॥ नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ६४ ॥

समूचा जगत् मोह–माया में लिप्त होने के कारण अहंकार की मैल से बहुत दुखी है। सांसारिक ममत्व के कारण ही अहंकार की मैल लगती है। यह अहंकार की मैल किसी भी विधि द्वारा निवृत्त नहीं होती, चाहे प्राणी सैंकड़ों तीर्थों का भी स्नान कर ले। अनेकों कर्मकाण्डों द्वारा भी यह मैल दुगुणी हो

जाती है और प्राणी के साथ कर्मों के फलस्वरूप लगी ही रहती है। धर्म ग्रंथों के अध्ययन द्वारा भी यह मलिनता दूर नहीं होती, इस बारे चाहे ब्रह्मवेत्ताओं से पता कर लो॥ १॥ हे मेरे मन! यद्यपि तू गुरु साहिब के आश्रय में आ जाओ तो इस मलिनता से निवृत्त हो सकते हो। गुरु की शरण में आने से प्राणी निर्मल हो सकता है। मनमुख प्राणी हरि के नाम का उच्चारण भले ही कितना भी करते रहे, वे इससे थक गए हैं किन्तु उनकी मलिनता निवृत्त नहीं हुई॥ १॥ रहाउ॥ मन अशुद्ध होने के कारण भगवान की भक्ति नहीं होती और न ही नाम (प्रभु) प्राप्त होता है। मनमुख प्राणी मलिन ही जीवन व्यतीत करते हैं और फिर मलिन ही इस संसार से प्राण त्याग कर चले जाते हैं। वह अपना मान-सम्मान गंवा कर संसार से कूच कर जाते हैं। यदि गुरु की कृपा-दृष्टि हो तो प्राणी की मलिनता नाश हो जाती है और पारब्रह्म प्राणी के हृदय में वास करता है। जैसे दीपक जलाने से अंधकार में प्रकाश होता है, वैसे ही सतिगुरु की कृपा-दृष्टि से अज्ञान का नाश होकर ज्ञान का आगमन होता है। सतिगुरु के ज्ञान द्वारा अज्ञान रूपी अँधेरा दूर हो जाता है॥ २॥ जो प्राणी कहते फिरते हैं कि हमने किया या हम करेंगे, ये अहंकार के कारण मूर्ख तथा गंवार हैं। ये प्राणी कर्त्ता परमेश्वर को भूलकर गए हैं तथा ईर्ष्या-द्वेष में लिप्त रहते हैं, जिसके कारण उन्हें दुख भोगने पड़ते हैं। प्राणी के लिए कोई पीड़ा इतनी बड़ी नहीं जितनी माया की है, इसलिए प्राणी सारा संसार भ्रमण करके सुख संचय के प्रयास में ही लगा रहता है और धन के लोभ में भ्रष्ट होकर सारे जगत् से थक-हार कर चूर हो जाता है। लेकिन सतिगुरु के उपदेश द्वारा सत्य-नाम को हृदय में बसा कर परमात्मा मिलन का सुख प्राप्त करता है॥ ३॥ जिस पुण्यात्मा को परमात्मा प्राप्त हो जाता है, वही परमेश्वर से मिलन करवाता है, मैं उस पर कुर्बान हूँ। इस मन के ईश्वर-भक्ति में लीन होने से सत्यवाणी द्वारा जीव निजस्वरूप में स्थिर रहता है। मन के लीन होने से जिह्वा भी सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा गायन करती है। हे नानक! जिन्हें भगवान का नाम विस्मृत नहीं होता, वहीं सत्य में लीन होते हैं॥ ४॥ ३१॥ ६४॥

[महला ४, चौथी पातिशाही श्री गुरु रामदास जी की वाणी का शुभारंभ]

सिरीरागु महला ४ घरु १ ॥ मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ॥ जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ॥ जाइ पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु दाता हरि नाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ॥ सतिगुरि हरि प्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ हउ गुर सरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभु सोइ ॥ २ ॥ मनहठि किनै न पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥ सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ॥ कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥ ३ ॥ सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥ प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥ बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥ ६५ ॥

मेरी आत्मा व देह विरह की दुख अग्नि में अत्यंत जल रही है। अब मेरा प्रियतम प्रभु किस तरह मेरे हृदय रूपी गृह में आकर मिलेगा। जब मुझे प्रियतम (प्रभु) के दर्शन प्राप्त होते हैं, तो उसके दर्शन-मात्र से ही समस्त दुख निवृत्त हो जाते हैं। जीवात्मा को अपने स्वामी (प्रभु) के दर्शनों की आकांक्षा है और वह कहती है कि मैं साधु-संतों के पास जाकर निवेदन करती हूँ कि किस विधि से मुझे प्रियतम प्रभु के दर्शन प्राप्त हो सकते हैं॥ १॥ हे मेरे सतिगुरु! आपके बिना मेरा अन्य कोई नहीं। मैं मूर्ख एवं नासमझ हूँ, इसलिए आपकी शरण में आई हूँ, मुझ पर कृपा करके उस प्रीतम-प्रभु से

मिलन करवा दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु ही प्रभु के नाम का दाता है। सतिगुरु ही आत्मा का परमात्मा से सुमेल करवाता है, इसलिए सतिगुरु महान् है। सतिगुरु ने ही अकाल पुरुष को जान लिया है, गुरु के बिना जगत् में अन्य कोई बड़ा नहीं। जीवात्मा कहती है कि मैं गुरु की शरण में नतमस्तक हूँ। अतः गुरु जी की कृपा–दृष्टि द्वारा मेरा मिलन उस परमात्मा से अवश्य होगा॥ २॥ मन के हठ के कारण गुरु विहीन जीव को अकाल पुरुष कदापि प्राप्त नहीं होगा। समस्त लोग प्रत्येक उपाय करके हार गए हैं। हजार चतुराईयों का प्रयोग करके प्राणी असफल हो गए हैं। उनके कोरे मन पर ईश्वर के प्रेम का रंग धारण नहीं हुआ। झूठ एवं छल–कपट का प्रयोग करके कोई भी प्राणी परमेश्वर को नहीं पा सकता। प्राणी जैसे बीज बोता है वैसा ही फल उसे प्राप्त होता है॥ ३॥ हे पारब्रह्म! इस जगत् के समस्त प्राणी तुम्हारे ही हैं, उन जीवों की समस्त पूँजी तुम ही हो और तुम्हीं से उनकी आशा–उम्मीद है। हे अकालपुरुष! तेरी शरण में आने वाला प्राणी कदापि खाली हाथ नहीं जाता, तुम कृपालु एवं दयालु हो। तेरे दर में आने वाला गुरमुख प्रशस्ति का अधिकारी बन जाता है। गुरु जी वचन करते हैं कि हे परमेश्वर! मेरी सादर विनती है कि मनुष्य पापों के भयानक समुद्र के भीतर डूब रहे हैं, इनकी रक्षा करो। हे प्रभु! जगत् के जीवों को भवसागर में डूबने से बचा लो॥ ४॥ १॥ ६५॥

सिरीरागु महला ४ ॥ नामु मिलै मनु त्रिपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥ कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥ हउ तिसु विटहु चउ खंनीऐ मै नाम करे परगासु ॥ १ ॥ मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥ बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु द्रिड़ाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥ सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥ धंनु वडभागी वडभागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥ २ ॥ जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥ ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥ ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥ ३ ॥ सतिगुरु पुरखु अम्रित सरु वडभागी नावहि आइ ॥ उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ ॥ जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ६६ ॥

भगवान का नाम मिलने से मन तृप्त हो जाता है लेकिन नामविहीन मनुष्य का जीवन धिक्कार योग्य है। इस बारे गुरु जी उत्तर देते हैं कि यदि सतिगुरु से मिलन हो जाए तो वही मुझे गुणनिधान ईश्वर के बारे में ज्ञान प्रदान करे। जो मुझे नाम का आलोक दे मैं उस पर चार टुकड़े होकर कुर्बान जाऊँ ॥ १॥ हे मेरे प्रियतम प्रभु! नाम–सिमरन से ही मेरा यह समूचा जीवन है। नाम के बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ है। इसलिए हे मेरे सतिगुरु! मुझ पर प्रभु के नाम का रहस्य दृढ़ करवा दो॥ १॥ रहाउ॥ भगवान का नाम अमूल्य रत्न है, जो सतिगुरु के पास विद्यमान है। सतिगुरु वह उज्ज्वल नाम रूपी रत्न निकाल कर प्रकाशमान कर देते है, जो उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करता है। भाग्यवानों में भी सौभाग्यशाली वे धन्य हैं, जो गुरु के पास आकर उनसे मिलते हैं और नाम रूपी उस खजाने को प्राप्त कर लेते हैं॥ २॥ जो प्राणी सतिगुरु महापुरुष के मिलन से वंचित हैं, वे भाग्यहीन काल (मृत्यु) के अधीन हैं। ऐसे प्राणी पुनः पुनः जन्म–मरण के चक्कर में पड़कर विभिन्न योनियों में भटकते रहते हैं। ऐसे प्राणी मलिनता के भयानक कीट बने पड़े हैं। उनके समीप आकर छूना भी नहीं चाहिए, क्योंकि हृदय के भीतर दुश्वृत्तियाँ पनपती हैं॥ ३॥ महापुरुष सतिगुरु अमृत के सरोवर हैं, जहाँ पर भाग्यशाली इसमें आकर स्नान करते हैं। अर्थात् उनकी कृपा–दृष्टि से कृपा–पात्र बनते हैं। उनकी जन्म–जन्मांतर की मलिनता धुल जाती है और उनके भीतर पवित्र नाम सुदृढ़ हो जाता है। गुरु जी कहते हैं कि हे नानक! सतिगुरु की ओर सुरति लगाने से (गुरु–भक्तों को) परम पद की प्राप्ति होती है॥ ४॥ २॥ ६६॥

सिरीरागु महला ४ ॥ गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥ गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥ हीरै हीरु मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥ १ ॥ मेरे गोविंदा गुण गावा त्रिपति मनि होइ ॥ अंतरि पिआस हरि नाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥ गुरु नामु द्रिड़ाए रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ बिनु सतिगुर हरि नामु न लभई लख कोटी करम कमाउ ॥ २ ॥ बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥ अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥ बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥ ३ ॥ सतिगुरु बोहिथु हरि नाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥ धंनु धंनु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

हे मेरी माता ! मैं तो उस पारब्रह्म का ही यश गान करता हूँ, उसकी प्रशंसा मैं प्रत्यक्ष करता हूँ और उनके गुणों की व्याख्या करता हूँ। प्रभु प्रेमी गुरमुख परोपकारी एवं गुणों के भण्डार हैं, उनसे मिलकर मैं पारब्रह्म का यश–कीर्ति करता हूँ। गुरु रूपी रत्न से मिलकर मेरा ह्रदय बंध गया है और हरिनाम से गहन लाल वर्ण रंग गया है॥ १॥ हे मेरे गोविन्द ! तेरा गुण–गान करने से मेरा मन तृप्त हो गया है। मेरे ह्रदय के भीतर तेरे नाम की तृष्णा है। परमात्मा कृपा–दृष्टि करे तो गुरु जी हर्षित होकर वह नाम (प्रभु) मुझे प्रदान करें॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! अपने ह्रदय को प्रभु के प्रेम से रंग लो। हे सौभाग्यशालियो ! गुरु जी आपकी सेवा भावना से प्रसन्न होकर आपको अपनी दातें प्रदान करेंगे। मैं उस सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ, जो मेरे भीतर हरि नाम को प्रीत से दृढ़ करते हैं। सतिगुरु के बिना अकालपुरुष का नाम प्राप्त नहीं होता। चाहे प्राणी लाखों करोड़ों कर्मकाण्ड संस्कार इत्यादि करता रहे, उसे ईश्वर प्राप्त नहीं होता॥ २॥ प्राणी को भाग्य के बिना सच्चा गुरु प्राप्त नहीं होता चाहे वह गृह में सदा इसके निकट एवं पास ही बैठा है। मनुष्य के भीतर मूर्खता एवं संदेह की पीडा ने वास किया हुआ है। मनुष्य एवं परमात्मा के बीच अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है। जब अज्ञान निवृत्त हो तो ज्ञान के उजाले से मनुष्य एवं परमात्मा के बीच का पर्दा निवृत्त हो जाता है। सतिगुरु के मिलन के बिना प्राणी स्वर्णमय नहीं होता। अपितु अधर्मी लोहे की भाँति डूब जाता है, जबकि नाव इतनी करीब ही हो॥ ३॥ सतिगुरु जी हरि–नाम रूपी जहाज है, किस विधि द्वारा उस पर सवार हुआ जा सकता है ? गुरु जी कथन करते हैं कि जो सतिगुरु की आज्ञानुसार चलता है, वह हरि नाम रूपी जहाज में बैठ जाता है। हे नानक ! वे व्यक्ति धन्य–धन्य एवं भाग्यवान हैं जिनको सतिगुरु जी अपने साथ मिला कर परमात्मा से मिलन करवाते हैं॥ ४॥ ३॥ ६७॥

सिरीरागु महला ४ ॥ हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥ जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥ करि मिंनति करि जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥ १ ॥ मेरे भाई जना कोई मोकउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥ हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥ निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥ हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥ २ ॥ सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥ बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥ जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोइ ॥ ३ ॥ आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥ आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥ सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

(इस पद में गुरु साहिब एक जिज्ञासु स्त्री के रूप में सम्बोधन करते हैं।)

जीव रूपी नारी नित्य खड़ी होकर कहती है कि मैं प्रतिदिन अपने प्रियतम प्रभु का मार्ग देखती रहती हूँ कि यदि कोई मुझे मार्गदर्शन करे तो उस प्रियतम-पति के पास जाकर मिल सकूँ। मैं उन महापुरुषों के आगे-पीछे लगी रहती हूँ अर्थात् सेवा-भावना करती हूँ, जिन्होंने परमेश्वर को माना है। मैं उनका अनुकरण करती हूँ क्योंकि मुझे प्रभु-पति के मिलन का चाव है कृपा करके मुझे परमात्मा से मिला दो॥ १॥ हे मेरे भाई! कोई तो मेरे हरि-प्रभु से मेरा मिलन करवा दे। मैं सतिगुरु पर तन-मन से न्यौछावर हूँ जिन्होंने हरि-प्रभु के दर्शन करवा दिए हैं। सतिगुरु ने मेरी मनोकामना पूर्ण की है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अत्यंत विनम्र होकर अपने सतिगुरु पर नतमस्तक होती हूँ। सतिगुरु जी बेसहारा प्राणियों का एकमात्र सहारा हैं। मेरे सतिगुरु ने परमात्मा से मिलन करवा दिया है, इसलिए मैं उनका गुणगान करते तृप्त नहीं होती। जीवात्मा कहती है कि मेरे भीतर सतिगुरु की स्तुति की भूख लगी रहती है॥ २॥ सतिगुरु से समस्त प्राणी उतना ही स्नेह रखते हैं, जितना सारा जगत् एवं सृष्टि कर्त्ता प्रभु प्रेम करते हैं। भाग्यहीन प्राणी दर्शन न होने के कारण अश्रु बहाते रहते हैं क्योंकि जो विधाता को स्वीकार होता है वैसा ही होता है। उस पारब्रह्म के हुक्म से जो लिखा होता है, उसे कोई मिटा नहीं सकता॥ ३॥ हरि-परमेश्वर स्वयं ही सतिगुरु है, वह स्वयं ही जिज्ञासु रूप है और स्वयं ही सत्संग द्वारा मिलन करवाता है। हरि-परमेश्वर प्राणी पर दया करके उसे सतिगुरु की शरण प्रदान करता है। गुरु जी कथन करते हैं कि प्रभु-परमेश्वर ही सम्पूर्ण सृष्टि का जीवनाधार है और प्राणी को स्वयं में विलीन कर लेता है। हे नानक! जैसे जल में जल अभेद हो जाता है वैसे ही परमात्मा का भक्त परमात्मा के भीतर ही लीन हो जाता है॥ ४॥ ४॥ ६८॥

सिरीरागु महला ४ ॥ रसु अंम्रितु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउ करि मिलिआ प्रभु आइ ॥ ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ॥ १ ॥ भाई रे मिलि सजण हरि गुण सारि ॥ सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥ सतिगुर वचनु रतंनु है जो मंने सु हरि रसु खाइ ॥ से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरि रसु खाधा गुर भाइ ॥ २ ॥ इहु हरि रसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥ बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥ ओइ सतिगुर आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥ ३ ॥ हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरि रसु होइ ॥ आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अंम्रितु चोइ ॥ सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६९ ॥

नाम-रस अमृत समान मधुर तथा सर्वश्रेष्ठ है। इस प्रभु रूपी रस का पान करने के लिए इसे किस तरह प्राप्त किया जाए? इस जगत् की सुहागिनों से जाकर पता करूँगी कि उन्होंने प्रभु-पति की संगति क्योंकर प्राप्त की है। ऐसा न हो कि वे बेपरवाही से मेरी उपेक्षा करें, किन्तु मैं तो पुनः पुनः उनके चरण धोऊंगी, शायद वह प्रभु मिलन का रहस्य बता दें॥ १॥ हे भाई! मित्र गुरु से मिल तथा परमात्मा की प्रशंसा करते हुए गुणगान कर। सतिगुरु जी महापुरुष हैं, जो दुख, दरिद, कलह एवं अभिमान निवृत्त करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरमुख आत्माएँ विवाहित जीवन का सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त करती हैं अर्थात् प्रभु-पति को प्राप्त करके वे करुणावती हो जाती हैं। उनके हृदय में दया निवास करती है। सच्चे गुरु की वाणी अनमोल रत्न है, जो कोई प्राणी उसे स्वीकृत करता है, वह हरि रूपी अमृत का पान करता है। वे प्राणी बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने गुरु के कथनानुसार हरि-रस का पान किया है॥ २॥ यह हरि-रस वन-तृण

सर्वत्र उपस्थित है अर्थात् सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। लेकिन वे प्राणी भाग्यहीन हैं जो इससे वंचित रहते हैं। सतिगुरु की दया के बिना इसकी सही पहचान असंभव है, इसलिए मनमुखी प्राणी अश्रु बहाते रहते हैं। वे प्राणी सतिगुरु के समक्ष अपना तन-मन समर्पित नहीं करते, अपितु उनके भीतर काम, क्रोध इत्यादि विकार विद्यमान रहते हैं॥ ३॥ वह हरि-प्रभु ही स्वयं नाम का स्वाद है एवं स्वयं ही ईश्वरीय अमृत है। दया करके हरि स्वयं ही गुरु के माध्यम से यह नामामृत दुहकर प्राणी को प्रदान करता है। हे नानक ! प्राणी की देह एवं आत्मा मन में हरिनाम के बस जाने से हर्षित हो जाती है एवं परमात्मा उसके चित्त के भीतर समा जाता है॥ ४॥ ५॥ ६६॥

सिरीरागु महला ४॥ दिनसु चड़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥ आव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥ गुड़ु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥ १ ॥ भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥ पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥ ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ गुरमुखि दरगह मंनीअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥ २ ॥ गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥ हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥ अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥ ३ ॥ जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥ तिन की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥ नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ३१ ॥ ६ ॥ ७० ॥

दिन उदय होता है एवं पुनः सूर्यास्त हो जाता है और सारी रात्रि बीत जाती है। इस तरह उम्र कम हो रही है लेकिन मनुष्य समझता नहीं, काल रूपी मूषक प्रतिदिन जीवन की रस्सी को कुतर रहा है। उसके आसपास माया रूपी मीठा गुड़ बिखरा पड़ा है और मक्खी की भाँति उससे चिपक कर मनमुख मानव अपना अनमोल जीवन गंवा रहा है॥ १॥ हे भाई ! वह प्रभु ही मेरा मित्र एवं सखा है। सुपुत्रों एवं माया की ममता विष समान है। अंतकाल में प्राणी का कोई भी सहायक नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ जो प्राणी गुरु उपदेशानुसार पारब्रह्म से वृत्ति लगा कर रखता है वह इस संसार से मोक्ष प्राप्त करता है और पारब्रह्म के आश्रय में रहकर इस संसार से अप्रभावित रहते हैं। वह सदैव मृत्यु को अपने नेत्रों के समक्ष रखते हैं और प्रवास हेतु व्यय के लिए परमेश्वर के नाम की राशि एकत्र करते हैं, जिससे लोकों में उन्हें मान-यश प्राप्त होता है। गुरमुख जीवों की प्रभु के दरबार भरपूर प्रशंसा होती है। ईश्वर इन जीवों को आलिंगन में ले लेता है॥ २॥ गुरमुख जीवों हेतु यह मार्ग प्रत्यक्ष है। ईश्वर के दरबार में प्रवेश करने में कोई बाधा नहीं आती। वे सदैव हरिनाम का यशगान करते हैं, उनके नाम में चित्त को भीतर रखते हैं तथा नित्य हरिनाम के यश में लिवलीन रहते हैं। प्रभु के दर पर अनाहत ध्वनि होती है, जो गुरमुख प्राणी प्रभु आश्रय में पहुँचते हैं तथा प्रभु के सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करते हैं॥ ३॥ जो गुरमुख प्राणी गुरुओं द्वारा प्रभु का यशोगान करते हैं, उन्हें सबकी प्रशंसा प्राप्त होती है। हे मेरे परमेश्वर ! मुझे उन पवित्र आत्माओं की संगति प्रदान करो, मैं तेरा याचक यही वंदना करता हूँ। हे नानक ! उन गुरमुख प्राणियों के बड़े सौभाग्य हैं, जिनके हृदय के भीतर भगवान के नाम का प्रकाश उज्ज्वल है॥ ४॥ ३३॥ ३१॥ ६॥ ७०॥

{महला ५, पाँचवी पातिशाही श्री गुरु अर्जुन देव जी की वाणी का आरंभ}

सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥ रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥ बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥ करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥ १ ॥ मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥ गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा खाकु ॥ हैवर गैवर बहु रंगे कीए रथ अथाक ॥ किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥ सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥ २ ॥ लैदा बद दुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥ जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥ अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ॥ तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥ ३ ॥ सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥ हरि जन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥ जो हरि जन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ॥ नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ७१ ॥

इस पद में गुरु जी माया, पुत्र, स्त्री व भौतिक पदार्थों में लिप्त स्वेच्छाचारी जीव को उपदेश देते हैं कि हे मूर्ख ! तुम अपने पुत्रों, स्त्री व सांसारिक पदार्थों को देखकर इतने मुग्ध क्यों हो रहे हो ? तू संसार के विभिन्न रस भोग रहा है, हर्ष, आनंद तथा अनंत स्वादों में रत हो। तुम बहुत सारे आदेश प्रदान करते हो और लोगों से अहंभाव से व्यवहार करते हो। कर्त्ता–पुरुष परमात्मा तुझे स्मरण नहीं होता, इसलिए तुम मनमुख, अज्ञानी एवं गंवार हो॥१॥ हे मेरे मन ! वास्तविक सुख–समृद्धि प्रदान करने वाला वह भगवान है। मनुष्य के सुकर्मों द्वारा ही उसे गुरु मिलता है और गुरु की अपार कृपा से ही परमेश्वर प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ हे मूर्ख ! तुम सुन्दर वस्त्र पहनने, नाना प्रकार के व्यंजन सेवन करने तथा सोने–चांदी के आभूषण व सम्पति इत्यादि एकत्र करने में लगे हो। ये अश्व, हाथी तथा अनेक प्रकार के रथ इत्यादि तुम्हारे पास हैं। वह न थकने वाली गाड़ियाँ जमा करता है। इस वैभव में वह किसी अन्य को स्मरण ही नहीं करता। अपने समस्त संबंधियों की भी उपेक्षा कर दी है। उसने इस सृष्टि के रचनाकार प्रभु को विस्मृत कर दिया है और नाम के बिना वह अपवित्र है॥ २॥ लोगों की बद–दुआएँ ले–लेकर तुमने इतनी धनराशि जमा कर ली है। जिन संबंधियों की प्रसन्नता हेतु तुम यह सब करते हो, वे भी तुम्हारे सहित नश्वर हैं। हे अहंकारी मनुष्य ! तुम अभिमान करते हो तथा घमण्ड में लीन होकर मन–मति पर चलते हो। जिस प्राणी ने कुमार्ग पर चलकर प्रभु को विस्मृत कर दिया है, उसकी न तो कोई जाति है और न ही कोई मान–सम्मान॥३॥ सतिगुरु ने कृपावश उस परम–पुरुष से मुझे मिला दिया है जो कि मेरा अद्वितीय मित्र तथा एकमात्र सहारा है। प्रभु–भक्तों का एक परमेश्वर ही रक्षक है। अहंकारी मनुष्य अहंकारवश व्यर्थ क्यों विलाप करते रहते हो। परमेश्वर वही करता है, जो कुछ भक्तों को अच्छा लगता है। ईश्वर के दरबार से भगवान के भक्तों को कोई लौटा नहीं सकता। हे नानक ! जो मानव जीव भगवान के प्रेम रंग में मग्न हैं वह सम्पूर्ण संसार में प्रकाश पुंज बन जाता है॥ ४॥ १॥ ७१॥

सिरीरागु महला ५ ॥ मनि बिलासु बहु रंगु घणा द्रिसटि भूलि खुसीआ ॥ छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ॥ १ ॥ भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ॥ लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ॥ धन पाती वड भूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ॥ २ ॥ हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ॥ सभु को वसगति करि लइओनु बिनु नावै खाकु रलिआ ॥ ३ ॥ कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥ गिरंबारी वड साहबी सभु नानक सुपनु थीआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ७२ ॥

हे मानव ! तेरा मन आनंद–उल्लास, गहरे तथा अनेकों विलास मनाने तथा नेत्रों के दृश्यों के रस में डूबा होने के कारण जीवन का मनोरथ भूल गया है। छत्रपति बादशाह जिन्हें सिंहासन प्राप्त हुआ हैं, वह भी संशय में पड़े हुए हैं॥ १॥ हे भाई ! सत्संग के भीतर बड़ा सुख प्राप्त होता है। उस विधाता ने जिस पुरुष का शुभ भाग्य लिख दिया है उसकी समस्त चिंताएँ मिट जाती हैं॥१॥ रहाउ॥

मैं इतने स्थानों के भीतर चक्र काट आया हूँ कि जितनी की सर्वत्र हैं। धन के स्वामी एवं बड़े–बड़े जिमींदार 'यह मेरी है, यह मेरी है' पुकारते हुए नश्वर हो गए हैं॥ २॥ वे निर्भय होकर आदेश जारी करते हैं तथा अहंकारवश होकर समस्त कार्य करते हैं। उसने सारे वश में कर लिए हैं, परन्तु हरि–नाम के बिना वे मिट्टी में मिल जाते हैं॥ ३॥ प्रभु के दरबार में तेतीस करोड़ देवी–देवता, सिद्ध इत्यादि कर्मचारियों तथा अभ्यासी अनुचरों की भाँति खड़े थे और जो पहाड़ों, समुद्रों पर साम्राज्य कायम करके शासन करते थे, हे नानक! ये सारे ही स्वप्न हो गए हैं॥ ४॥ २॥ ७२॥

सिरीरागु महला ५ ॥ भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥ सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥ १ ॥ प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥ लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥ मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥ २ ॥ जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥ जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥ फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥ ३ ॥ कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥ चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥ नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७३ ॥

मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर अपनी देहि का पालन–पोषण करता है, किन्तु जब तक ईश्वर बारे ज्ञान नहीं होता, वह मूर्ख तथा नासमझ ही बना रहता है। यदि परमेश्वर को स्मरण न किया तो व्यर्थ ही यह (देहि) उजाड़ श्मशान घाट में फैंक दी जाएगी। यदि इस देहि में अर्थात् मानव योनि में रहते हम सतिगुरु को हृदय में बसा लें तो सदैव के लिए आनंद की प्राप्ति होगी॥१॥ हे नश्वर प्राणी! तुम मानव–योनि में लाभ प्राप्ति हेतु आया था। हे प्राणी! तुम व्यर्थ के कर्मों में संलग्न क्यों हो गए हो? जिससे शनैः शनैः तेरी सारी जीवन रात्रि समाप्त होती जा रही है॥१॥ रहाउ॥ जिस तरह पशु–पक्षी क्रीड़ा मग्न रहते हैं और मृत्यु के बारे कुछ नहीं सूझता। इसी प्रकार मनुष्य है जो मोह–माया के जाल में फँसा हुआ है। जो प्राणी सच्चे परमेश्वर के नाम की आराधना करते हैं, उन्हें ही मोक्ष की प्राप्ति होती है॥ २॥ वह घर जिसे त्यागकर खाली कर देना है, वह मन से जुड़ा हुआ है। तुझे उसकी कोई चिन्ता नहीं, जहाँ जाकर तूने निवास करना है। जो प्राणी गुरु के चरण आश्रय में आ जाते हैं, वह फाँसी अर्थात् जीवन–मृत्यु के चक्कर से मोक्ष प्राप्त करते हैं॥३॥ गुरु के बिना कोई बचा नहीं सकता। मुझे अन्य कोई दिखाई नहीं देता। मैं चारों दिशाओं में खोज–भाल करके गुरु की शरण में आ गया हूँ। हे नानक! मैं डूब रहा था, परन्तु सच्चे पातशाह ने मेरी रक्षा करके मुझे पार कर दिया है॥४॥३॥७३॥

सिरीरागु महला ५ ॥ घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥ माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥ उठि चलिआ पछुताइआ परिआ वसि जंदार ॥ १ ॥ अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ॥ जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥ लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥ जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥ २ ॥ पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥ तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥ कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥ ३ ॥ साधसंगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥ जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥ नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७४ ॥

हे जीव ! तुम घड़ी दो घड़ी के अतिथि बनकर उस दुनिया में आए हो, अतः अपना सिमरन रूपी कार्य संवार लो। किन्तु जीव तो मोह–माया व कामवासना में ही लिप्त है और जीवन के असल मनोरथ को यह मूर्ख समझ ही नहीं रहा। जब इस से यह कूच कर करेगा और यमों के वश में हो जाएगा, तब यह पश्चाताप करेगा॥ १॥ हे अज्ञानी मनुष्य ! तू काल रूपी नदी के तट पर विराजमान है। अर्थात् मृत्यु रूपी सागर के तट पर बैठे हुए हो। यदि तेरे पूर्व कर्म शुभ हैं तो तू गुरु के उपदेश को पा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे कच्ची फसल, कच्ची–पक्की अथवा पूर्ण पक्की फसल किसी भी अवस्था में काटी जा सकती है, वैसे ही बाल्यावस्था, युवावस्था अथवा वृद्धावस्था में कभी भी मृत्यु आ सकती है। जैसे फसल काटने वाले दरांत लेकर कृषक के बुलावे पर फसल काटने के लिए तैयार हो जाते हैं, वैसे ही यम के आदेश पर यमदूत किसी भी समय पाश लेकर मानव को लेने आ जाते हैं। जब कृषक का आदेश हुआ तो फसल काटने वाले सारा खेत काट कर नाप लेते हैं और अपना पारिश्रमिक ले लेते हैं, वैसे ही कृषक रूपी परमात्मा के आदेश होते ही यमदूत मानव जीव का शरीर रूपी खेत नाप लेते हैं अर्थात् श्वासों की गिनती करते हैं और श्वास पूरे होते ही शरीर रूपी खेत श्वास रूपी फसल से रिक्त कर देते हैं॥ २॥ मानव की आयु का प्रथम भाग बाल्यावस्था तो क्रीड़ा में व्यतीत हो गया तथा दूसरा भाग किशोरावस्था गहन निद्रा में चला गया। तीसरा भाग युवावस्था सांसारिक व्यर्थ कार्यों में गुजर गया तथा चौथा भाग वृद्धावस्था के आते ही काल रूपी दिन उदय हो गया। इतने लम्बे समय में वह परमात्मा स्मरण नहीं हुआ, जिसने यह मानव तन प्रदान किया है॥ ३॥ गुरु जी कथन करते है कि मैंने तो साधु–संगति पर जीवन न्यौछावर कर दिया। मुझे ऐसा सतिगुरु रूपी मित्र मिल गया है, जिससे मेरे अन्तर्मन में उस परमात्मा का ज्ञान प्रकाश उदय हुआ। हे नानक ! उस अन्तर्यामी परमात्मा को जान लो, जो सबके साथ रहता है॥ ४॥ ४॥ ७४॥

सिरीरागु महला ५ ॥ सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥ धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥ आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥ १ ॥ मन मेरे करते नो सालाहि ॥ सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥ कित ही कंमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥ जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥ सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥ २ ॥ सेवा मंगै सेवको लाईआं अपुनी सेव ॥ साधू संगु मसकते तूठै पावा देव ॥ सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥ सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥ ३ ॥ इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥ इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥ इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ॥ सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७५ ॥

मैं प्रत्येक बात भूल जाऊँ, परन्तु एक ईश्वर को कदापि न विस्मृत करूँ। गुरु ने समस्त धंधों को नष्ट करके सत्य आनंद को प्राप्त करने वाला परमेश्वर का नाम प्रदान किया है। मन की सभी आशाएँ त्याग कर केवल एक ही आशा प्रभु–मिलन की आशा मैं अर्जित करूँ। जो प्राणी सतिगुरु की भरपूर सेवा करता है, उसे परलोक में प्रभु के दरबार में बैठने का सम्मान प्राप्त होता है॥ १॥ हे मेरे मन ! सृष्टिकर्ता का गुणगान कर। अपनी समस्त चतुराइयाँ त्याग कर गुरु के चरणों की शरण ग्रहण करो॥ १॥ रहाउ॥ यदि सर्वगुण सम्पन्न सुखदाता परमेश्वर हृदय में बसा हुआ हो तो दुखों एवं तृष्णाओं की लालसा से मुक्ति मिल जाती है। यदि वह सच्चा स्वामी मनुष्य के हृदय में वास कर जाए तो उसे किसी भी कार्य में असफलता नहीं मिलती। परम–परमेश्वर जिसे भी अपना हाथ देकर रक्षा करता है, उसे

कोई भी नहीं मार सकता। सुखों के दाता गुरु की आज्ञानुसार आचरण करना ही सर्वोत्तम है, क्योंकि वह प्राणी के समस्त अवगुणों को धोकर निर्मल कर देते हैं॥ २॥ भक्तजन भगवान के समक्ष विनती करें कि हे प्रभु! यह सेवक उनकी सेवा करना चाहता है, जिन्हें तूने अपनी सेवा में लगाया हुआ है। हे गुरुदेव! आपकी प्रसन्नता से ही साधु-संगति एवं नाम-सिमरन का कठिन परिश्रम किया जा सकता है। सृष्टि के समस्त कार्य सच्चे पातशाह के अधीन हैं, वह स्वयं ही सब कुछ करने एवं करवाने वाला है। मैं उस सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जो सभी की कामनाएँ पूर्ण करने वाला है॥ ३॥ हे मेरे मित्र। मुझे वह परमात्मा ही मात्र अपना सज्जन दिखाई देता है और केवल एक ही मेरा भ्राता तथा मित्र है। समूचे ब्रह्माण्ड की सारी सामग्री एक परमेश्वर की ही है और केवल उस हरि ने ही प्रत्येक वस्तु को नियमबद्ध किया है। एक परमेश्वर में ही मेरा मन लीन हो गया, तभी मेरा मन निश्चल हुआ है। हे नानक! सत्य नाम ही उसके मन का आहार है, सत्य नाम उसकी पोशाक और सत्य नाम को ही उसने अपना आश्रय बनाया है॥ ४॥ ५॥ ७५॥

सिरीरागु महला ५॥ सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥ जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥ गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥ १ ॥ मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ॥ एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ ॥ निमख एक हरि नामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥ जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥ २ ॥ सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥ दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥ बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥ ३ ॥ थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥ ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥ नानक बधा घरु तहां जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७६ ॥

एक परमेश्वर की प्राप्ति से जीवन की समस्त वस्तुएँ (आनंद-उल्लास) प्राप्त हो जाती हैं। यदि प्रभु का नाम-स्मरण किया जाए तो अमूल्य मनुष्य जीवन भी फलदायक हो जाता है। जिसके मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य लिखा हुआ हो, वह गुरु की कृपा-दृष्टि से परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है॥१॥ हे मेरे मन! एक प्रभु के स्मरण में अपना चित्त लगा। एक परमात्मा के अलावा अन्य कर्म-धर्म समस्त विपदा ही हैं। धन-दौलत की लालसा समस्त मिथ्या है॥ १॥ रहाउ॥ यदि सतिगुरु की कृपा-दृष्टि हो जाए तो लाखों साम्राज्य (उच्च पद) एवं ऐश्वर्य-वैभव के आनंद चरणों में बिखर जाएँ। यदि सतिगुरु एक क्षण-मात्र के लिए भी मुझे परमेश्वर के नाम की अनुकंपा कर दें तो मेरी आत्मा एवं देहि शीतल हो जाएँगे। जिस प्राणी के भाग्य में पूर्व-कर्मों का भाग्य-फल लिखा हुआ हो, वही सतिगुरु के चरणों की शरण लेता है॥२॥ वह मुहूर्त एवं घड़ी भी फलदायक है, जब सत्य स्वरूप परमेश्वर से प्रेम किया जाता है। जिस प्राणी को ईश्वर के नाम का आधार प्राप्त है, उसे कोई भी दुःख-दर्द उत्पन्न नहीं होता। जिस प्राणी को गुरु ने भुजा से पकड़कर उबारा है, वह भवसागर से पार हो जाता है॥३॥ वह स्थान बहुत पावन एवं शोभायमान है, जहाँ प्रभु के नाम का यशगान (सत्संग) होता है। उस व्यक्ति को ही प्रभु के दरबार का आश्रय मिलता है, जिसको पूर्ण गुरुदेव की प्राप्ति हो गई है। हे नानक! गुरुमुख प्राणी ने अपना घर वहाँ बनाया है, जहाँ न मृत्यु है, न जन्म है और न ही बुढ़ापा है॥४॥६॥७६॥

स्रीरागु महला ५ ॥ सोई धिआईऐ जीअड़े सिरि साहां पातिसाहु ॥ तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥ सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥ १ ॥ मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ॥ आठ पहर प्रभु धिआइ तूं गुण गोइंद नित गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की सरनी

परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥ सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ॥ २ ॥ साधसंगति होइ निरमला कटीऐ जम की फास ॥ सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥ मिहर करे जिसु मिहरवानु तां कारजु आवै रासि ॥ ३ ॥ बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ॥ वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ॥ नानक कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ७७ ॥

हे जीव ! उस भगवान का ध्यान कर, जो राजाओं और महाराजाओं का भी बादशाह है। उस भगवान की मन में आशा रख, जिस पर सब को भरोसा है। अपनी समस्त चलाकियाँ त्याग कर गुरु के चरणों में शरण प्राप्त कर॥१॥ हे मेरे मन ! सुख और शांति से प्रभु के नाम का अभ्यास कर। आठों पहर प्रभु का ध्यान करो तथा गोविन्द–हरि की महिमा नित्य ही गायन करो॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे मन ! जिस परमात्मा के स्वरूप जितना बड़ा अन्य कोई नहीं है, तुम उस परमात्मा की शरण में रहो। उसकी आराधना करने से बहुत आत्मिक सुख मिलता है तथा पीड़ा एवं दुःख का बिल्कुल नाश हो जाता है। इसलिए तू सदैव उस पारब्रह्म की सेवा अर्थात् यशोगान में रत रहा कर॥२॥ साधू–संतों की संगति करने से मन पवित्र हो जाता है और मृत्यु का फँदा कट जाता है। वह परमात्मा सुखों का दाता तथा भय नाश करने वाला है, इसलिए उसके समक्ष वंदना करो। वह कृपालु तथा दयालु परमात्मा जिस पर अपनी कृपा–दृष्टि करता है, उसके समस्त कार्य सम्पन्न हो जाते हैं॥३॥ उस प्रभु को विशाल से भी विशाल कहा जाता है और उसका निवास ऊँचे से भी ऊँचा सर्वोच्च है। वह वर्ण–भेद जाति–चिन्ह आदि से रहित है और मैं उसके मूल्य का वर्णन नहीं कर सकता। हे सत्य परमेश्वर ! नानक पर अपनी दया–दृष्टि करके उसे अपना सत्य–स्वरूप नाम प्रदान करो॥ ४॥ ७॥ ७७॥

सीरागु महला ५ ॥ नामु धिआए सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइ ॥ पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइ ॥ साधसंगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥ माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥ जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा परधानु ॥ २ ॥ साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥ उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥ तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै भागु ॥ ३ ॥ तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥ नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७८ ॥

जो व्यक्ति प्रभु का नाम–सिमरन करता है, वह इहलोक में सुखी रहता है तथा उसका मुख प्रभु की सभा में उज्ज्वल होता है किन्तु प्रभु का नाम पूर्ण गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है, वह समस्त लोकों में प्रसिद्ध हो जाता है। वह सत्य परमेश्वर साधसंगत के गृह में निवास करता है॥ १॥ हे मेरे मन ! तू हरि–परमेश्वर के नाम का ध्यान किया करो। चूंकि भगवान का नाम–सिमरन ही सदैव साथ रहता है और सहायक होता है जो आगे जाकर यमों के कष्टों से छुड़ा लेता है॥ १॥ रहाउ॥ हे जीव ! दुनिया का दिया हुआ सम्मान कभी काम नहीं आता। माया का रंग फीका है, जो अन्त में नष्ट हो जाता है। जिसके हृदय में प्रभु वास करता है, वही आदरणीय पूर्ण एवं मुख्य है॥२॥ हे प्राणी ! अपनी अहं–भावना त्याग कर संतों के चरणों की धूल हो जाओ। व्यर्थ के उपाय तथा चतुराईयाँ समस्त त्याग दे और गुरु के चरणाश्रय में आ जा। केवल वहीं नाम रूपी रत्न को प्राप्त करता है, जिसके मस्तक

पर भाग्य रेखाएँ उज्ज्वल होती हैं॥३॥ हे सज्जनो ! जिसको परमात्मा स्वयं प्रदान करता है, वही नाम को प्राप्त करता है। जिस मनुष्य ने अपना अहंत्व रूपी रोग दूर कर लिया है, वही सतिगुरु की सेवा कर सकता है। हे नानक ! जिसे गुरु मिला है, उसके सभी दुःख-संताप नष्ट हो गए हैं॥४॥८॥७८॥

सिरीरागु महला ५ ॥ इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥ इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रहमु करतारु ॥ १ ॥ मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥ गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥ इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥ सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥ २ ॥ घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ॥ जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥ इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥ ३ ॥ पारब्रहमु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥ गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७६ ॥

एक परमात्मा ही मनुष्य का ज्ञाता है तथा वही एक उसका संरक्षक है। केवल वही मन का सहारा है और प्राणाधार वही एक प्रभु है। उस पारब्रह्म परमात्मा की शरण लेने से सदैव सुखों की उपलब्धि होती है॥ १॥ हे मेरे मन ! प्रभु-प्राप्ति के अपने अन्य सभी उपाय त्याग दे। केवल परिपूर्ण गुरु की नित्य आराधना करो तथा गुरु के मार्गदर्शन से उसी एक परमात्मा में लिवलीन हो जाओ॥१॥रहाउ॥ एक ईश्वर ही सच्चा भ्राता, मित्र एवं माता-पिता है। मेरे मन के भीतर उस प्रभु का ही आश्रय है, जिसने मुझे आत्मा तथा यह देह प्रदान की है। उस प्रभु को, जो संसार की प्रत्येक वस्तु अपने अधीन रखता है, मुझे अपने मन में कदापि विस्मृत न हो॥ २॥ वह सर्वव्यापक परमेश्वर हृदय रूपी घर में भी विद्यमान है और शरीर के बाहर भी मौजूद है। वह स्वयं ही समस्त स्थानों के भीतर बसा हुआ है। जिस सृष्टिकर्ता ने मनुष्य एवं अन्य जीवों की रचना की है, उसकी आठों पहर आराधना करनी चाहिए। यदि एक ईश्वर के प्रेम में मग्न हो जाओगे तो तुम्हारे समस्त शोक-संतापों का विनाश हो जाएगा॥ ३॥ एक परमात्मा ही पारब्रह्म है, अन्य कोई नहीं। मनुष्य का जीवन एवं शरीर समस्त उसी की देन हैं, जो कुछ उसे अच्छा लगता है, वही होता है। हे नानक ! परिपूर्ण गुरु द्वारा मनुष्य भी सम्पूर्ण हो गया है, क्योंकि उसने गुरुन्मुख होकर भगवान का नाम-सिमरन किया है॥ ४॥ ६॥ ७६॥

सिरीरागु महला ५ ॥ जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ॥ जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥ जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु ॥ १ ॥ मन मेरे एको नामु धिआइ ॥ सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ॥ साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥ जनम मरण की मलु कटीऐ गुर दरसनु देखि निहाल ॥ २ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ ॥ सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥ तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ ॥ ३ ॥ जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान ॥ तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥ जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान ॥ ४ ॥ १० ॥ ८० ॥

जिन्होंने सतिगुरु के उपदेश का चिन्तन किया है, वह मनुष्य पूर्ण व श्रेष्ठ हो जाते हैं। जिन पर भगवान स्वयं कृपालु होता है, उनके मन में ज्ञान उत्पन्न होता है, जिनके माथे पर शुभ भाग्य अंकित होते हैं, वही भगवान का नाम-सिमरन प्राप्त करते हैं॥ १॥ हे मेरे मन ! इसीलिए तुम उस एक परमात्मा के नाम का ध्यान करो, क्योंकि नाम-सिमरन से ही मानव के जीवन में श्रेष्ठ सुख उत्पन्न

होते हैं तथा प्रभु के दरबार में वह प्रतिष्ठित पोशाक पहन कर जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ भगवान की प्रेमा–भक्ति करने से मनुष्य जन्म–मरण के भय से मुक्त होता है। संतों की संगति करने से मनुष्य निर्मल हो जाता है जिसके फलस्वरूप स्वामी (प्रभु) स्वयं उसका पालन–पोषण करता है। उनके आवागमन (जन्म–मरण) की मैल कट जाती है और वे सतिगुरु का दर्शन करके कृतार्थ हो जाता है॥ २॥ परम–परमेश्वर कण–कण में विद्यमान है। केवल परमात्मा ही समस्त प्राणियों का स्वामी है, अन्य दूसरा कोई नहीं। उसकी शरण में आने से जीव को जन्म–मरण के बंधनों से मुक्ति मिल जाती है, जो कुछ परमेश्वर करना चाहता है, वही होता है॥३॥ जिनके हृदय में सर्वज्ञाता परमेश्वर वास करता है, वह सम्पूर्ण एवं प्रमुख है। वह जीव शुभ गुणों के कारण श्रेष्ठ पुरुष हो जाते हैं। उनकी सुकीर्ति पवित्र होकर सम्पूर्ण विश्व में फैल जाती है। हे नानक! जिन्होंने मेरे परमात्मा का ध्यान किया है, मैं उन पर कुर्बान हूँ॥ ४॥ १०॥ ८०॥

सिरीरागु महला ५ ॥ मिलि सतिगुर सभु दुखु गइआ हरि सुखु वसिआ मनि आइ ॥ अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ मिलि साधू मुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥ गुण गोविंद नित गावणे निरमल साचै नाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥ गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन कीआ इछां पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥ अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥ गुर परसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥ कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥ २ ॥ पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होए काम ॥ करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥ आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥ सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥ ३॥ भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥ हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥ आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥ पारब्रहमु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥ ४॥ ११॥ ८१ ॥

सतिगुरु के मिलन से समस्त दुःख निवृत्त हो गए हैं और सुख स्वरूप परमात्मा हृदय में आ बसा है। एक ईश्वर के साथ सुरति लगाने से अन्तर्मन में पवित्र ज्ञान–ज्योति का प्रकाश हो गया है। साधू–संतों से भेंट करके मेरा चेहरा उज्ज्वल हो गया है तथा पूर्व कर्मों के लिखे शुभ लेख के कारण मैंने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है। सृष्टि के स्वामी गोविंद तथा सत्य नाम का यश सदैव करने से मैं निर्मल हो गया हूँ॥१॥ हे मेरे मन! गुरु के शब्द द्वारा ही सुख प्राप्त होता है। सतिगुरु की सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती, अपितु गुरु की सेवा से अवश्य फल प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ भगवान ने मेरी मनोकामनाएँ पूर्ण कर दी हैं और मुझे नाम रूपी खजाना प्राप्त हो गया है। अंतर्यामी सदैव तेरे अंग–संग है तथा वह निरपेक्ष कर्त्ता है, उसकी पहचान कर लो। गुरु कृपा द्वारा नाम–सिमरन, दान–पुण्य एवं पवित्र तीर्थ–स्नान करने से मानव का मुख उज्ज्वल हो जाता है अर्थात् ख्याति प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति के अन्तर्मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि सब नष्ट हो जाते हैं तथा अहंकार का त्याग कर देते हैं॥२॥ जिन्होंने भगवान के नाम–सिमरन का जीवन में लाभार्जित किया है, उनके समस्त कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं। ऐसे जीवों को भगवान स्वयं कृपा करके अपने साथ मिलाता है और उन्हें अपना नाम–सिमरन प्रदान करता है। जिन पर भगवान कृपालु हुआ है, उनका आवागमन समाप्त हो गया है। उन्होंने गुरु के उपदेश का मनन करके सत्यस्वरूप परमात्मा का दर प्राप्त किया है॥ ३॥ परमात्मा अपनी दया–दृष्टि से भक्तों की स्वयं विषय–विकारों से रक्षा करता है। इहलोक एवं परलोक में उनके मुख उज्ज्वल हो जाते हैं, जो पारब्रह्म के गुणों को हृदय में स्मरण करते हैं। दिन के आठों पहर ही वह ईश्वर के सर्वगुणों का यशोगान करते हैं तथा उसकी अनन्त प्रीत में मग्न हैं। हे नानक! मैं सुखों के सागर पारब्रह्म पर सदैव बलिहारी जाता हूँ॥४॥११॥८१॥

सिरीरागु महला ५ ॥ पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नामु ॥ जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥ १ ॥ मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥ हरि बिनु दूजा को नही एको नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥ वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥ करि सेवा सुख सागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥ २ ॥ चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥ मै धर तेरी पारब्रहम तेरै ताणि रहाउ ॥ निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥ ३ ॥ हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥ जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥ नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रहम बखसिंदु ॥ ४ ॥ १२ ॥ ८२ ॥

मानव को यदि पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तो उसे नाम रूपी खजाना मिल जाता है। हे प्रभु ! तुम मुझ पर अपनी ऐसी कृपा करो कि मैं तुम्हारे नामामृत का जाप करूँ। मेरे जन्म-मरण का दुख दूर हो जाए तो मेरा सहजावस्था में ध्यान लग जाए॥१॥ हे मेरे मन ! तुम प्रभु की शरण प्राप्त करो। उस एक परमात्मा के नाम का ध्यान करो, क्योंकि उस हरि के बिना अन्य कोई नहीं है॥१॥ रहाउ॥ उस परमेश्वर का मूल्यांकन कदापि नहीं किया जा सकता। क्योंकि वह परमात्मा अथाह गुणों का सागर है। सौभाग्य के कारण तुम सत्संग में मिल जाओ तथा वहाँ से श्रद्धा रूपी मूल्य देकर गुरु से सत्य उपदेश खरीद लो। उस सुखों के सागर की सेवा कर अर्थात् श्रद्धा सहित उस परमात्मा की आराधना कर, वह राजाओं का भी महाराजा सबसे बड़ा मालिक है॥ २॥ हमें प्रभु के चरण कंवलों का सहारा है क्योंकि उसके अतिरिक्त अन्य कोई ठिकाना नहीं। हे परमेश्वर ! तुम्हारी शक्ति से ही मेरा अस्तित्व है। मुझे आपका ही आश्रय है और आपके सत्य द्वारा ही मैं जीवित हूँ। हे प्रभु ! सम्मानहीनों का ही तू सम्मान है जिन पर तुम्हारी कृपा हुई है, वह तुझ में ही विलीन हुए हैं॥३॥ गोविन्द को आठों प्रहर जपते रहना चाहिए, उसकी आराधना करनी चाहिए। भगवान अपनी कृपा करके जीवों के प्राणों, तन, धन की विषय-विकारों से रक्षा करता है। हे नानक ! परमात्मा ने मेरे समस्त पाप दूर कर दिए हैं, चूंकि वह पारब्रह्म क्षमाशील है॥ ४॥ १२॥ ८२॥

सिरीरागु महला ५ ॥ प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥ ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥ दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सत भाइ ॥ अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥ १॥ भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥ माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥ सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥ बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥ जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥ २ ॥ जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै सांति ॥ इक मनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भरांति ॥ गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥ सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥ ३ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥ तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिंदु ॥ देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रहमु रविंदु ॥ अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥ ४ ॥ १३ ॥ ८३ ॥

भक्तों की उस परमसत्य परमात्मा से प्रीति लगी है, जो न कभी जन्म लेता है और न ही मरता है। जुदा किए भी वह जुदा नहीं होता क्योंकि वह परमात्मा कण-कण में विद्यमान है। वह प्रभु अनाथों के दुःख-दर्द नाश करता है और अपने भक्तों को आदर-सहित मिलता है। हे मेरी माता ! वह माया रहित प्रभु आश्चर्यजनक स्वरूप वाला है तथा गुरु ने आकर

नहीं देता॥१॥ रहाउ॥ वह परमेश्वर सर्वज्ञ, महान दाता, शीलवान, पवित्र, सुन्दर तथा बेअंत है। वह प्राणी का साथी, सहायक, महान्, अनंत, विशाल एवं सर्वोच्च है। परमात्मा को न बालक अथवा न ही वृद्ध समझना चाहिए, उस परमात्मा का दरबार सदैव स्थिर है। हम जो कुछ भी परमात्मा के समक्ष श्रद्धापूर्वक याचना करते हैं, वह उससे प्राप्त कर लेते हैं। सर्वगुण सम्पन्न परमात्मा आश्रयहीनों का आश्रय है॥२॥ जिस प्रभु के दर्शन–मात्र से समस्त पाप दूर हो जाते हैं, मन एवं देह शीतल हो जाते हैं तथा मन की समस्त भ्रांतियाँ मिट जाती हैं, उस प्रभु को एकाग्रचित होकर स्मरण करना चाहिए। वह परमेश्वर गुणों का भण्डार है, वह सदैव निरोग एवं दानशील है। उसकी अनुकंपा अपरम्पार है। दिन एवं रात उसे कभी भी विस्मृत मत करो, सदैव उस पारब्रह्म की आराधना करते रहनी चाहिए ॥ ३॥ जिसके माथे पर पूर्व से ही शुभ कर्मो का भाग्य लिखा है, गोविन्द उसका घनिष्ठ बना है। उसे मैं अपना तन, मन, धन सब कुछ समर्पित करता हूँ और यह जीवन भी उस परमेश्वर पर न्यौछावर करता हूँ। सर्वव्यापक परमात्मा नित्य ही जीवों को अपने समक्ष देखता एवं सुनता है। वह घट–घट प्रत्येक हृदय में व्याप्त है। परमात्मा इतना दयालु–कृपालु है कि वह कृतघ्नों का भी पालन–पोषण करता है। हे नानक! वह परमात्मा सदैव क्षमाशील है॥४॥१३॥८३॥

सिरीरागु महला ५ ॥ मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥ सरब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उर धारि ॥ १ ॥ मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन पदारथ माणका सुइना रुपा खाकु ॥ मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥ २ ॥ अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥ त्रिसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥ भगती नाम विहूणिआ आवहि वंञहि पूर ॥ ३ ॥ राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥ बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु महा बिकट जम भइआ ॥ नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ॥ ४॥ १४॥ ८४॥

जिस प्रभु ने यह मन, तन व धन इत्यादि सब कुछ दिया है तथा इनको सजा संवार कर रखा हुआ है। उस प्रभु ने सर्वकला सम्पूर्ण शक्तियों द्वारा शरीर की रचना की है और अन्तर्मन में अपनी ज्योति प्रकट की है। उस प्रभु की सदा आराधना करनी चाहिए तथा हृदय में बसाकर रखें॥१॥ हे मेरे मन! ईश्वर के बिना अन्य कोई समर्थ नहीं। सदैव उस प्रभु की शरण में रहने से तुझे कोई विपत्ति नहीं आएगी॥ १॥ रहाउ॥ स्वर्ण, चांदी, माणिक्य, हीरे–मोती रत्न पदार्थ समस्त मिट्टी समान हैं। माता–पिता, सगे–संबंधी, रिश्तेदार समस्त झूठे रिश्तेदार हैं। जिस प्रभु ने सब कुछ उत्पन्न किया है, उसे स्वेच्छाचारी एवं अपवित्र पशु समान जीव स्मरण नहीं करता॥२॥ परमेश्वर शरीर के अन्दर एवं बाहर परिपूर्ण है, वह कण–कण में व्याप्त है लेकिन उसे मनुष्य दूर समझता है। जीव के अन्तर्मन में भोग विलास की तृष्णा है, वह विषय–विकारों में लिप्त है और उसका हृदय अहंकार एवं झूठ में भरा हुआ है। प्रभु की भक्ति एवं नाम–सिमरन से वंचित होने के कारण प्राणियों के समुदाय योनियों में फँसकर आते जाते रहते हैं॥ ३॥ हे करुणा निधान पारब्रह्म! इन जीव–जन्तुओं पर कृपा–दृष्टि करके उनकी रक्षा करो। यमराज बड़ा विकट हो गया है। प्रभु के बिना अन्य कोई रखवाला नहीं है। नानक जी का कथन है कि हे प्रभु! अपनी कृपा करो तांकि मैं कभी भी तेरा नाम न भूलूँ॥४॥१४॥८४॥

सिरीरागु महला ५ ॥ मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥ सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रंग अरु वेस ॥ हरि नामु रिदै न वसई कारजि किते न लेखि ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥

करि संगति नित साध की गुर चरणी चितु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥ कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥ हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ ना आवै ना जागु ॥ २ ॥ करि संगति तू साध की अठसठि तीरथ नाउ ॥ जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥ ऐथै मिलहि वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥ ३ ॥ करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥ मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥ नानक प्रभ सरणागती सरब घटा के नाथ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ८५ ॥

मनुष्य गर्व से कहता है कि यह तन–मन एवं धन मेरा है, इस देश पर शासन मेरा है। मैं सुन्दर स्वरूप वाला हूँ तथा मेरे पुत्र हैं, स्त्री है, पुत्री है और अनेकानेक रंगों के भेष मैं ही धारण कर सकता हूँ। हे भाई ! जिस मानव के हृदय में प्रभु नाम का निवास नहीं है, उसके समस्त किए काम गणना में नहीं आते॥ १॥ हे मेरे मन! हरि–परमात्मा के नाम की आराधना करो प्रतिदिन साधु–संतों की संगति में रहने का प्रयास करो और गुरु के चरणों में अपने चित्त को लगाओ॥१॥ रहाउ॥ हरि–नाम, जो सर्व प्रकार की निधि है, उसका चिन्तन तभी हो सकता है, यदि मनुष्य के माथे पर शुभ भाग्य अंकित हो। गुरु के चरणों में लगने से समस्त कार्य संवर जाते हैं। इस प्रकार अहंकार के रोग एवं शंकाएँ निवृत्त हो जाती हैं और प्राणी का आवागमन कट जाता है और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है॥२॥ इसलिए हे जीव ! तू साधू की संगति कर, जो अठसठ तीर्थों के स्नान के समान अति पावन है। नाम–सिमरन से तुम्हारी आत्मा, प्राण, मन एवं देहि प्रफुल्लित हो जाएँगे और यही जीवन का सत्य मनोरथ है। यहाँ पर तुझे मान–सम्मान प्राप्त होगा और प्रभु के दरबार में भी श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा॥३॥ अकाल पुरुष स्वयं ही करने–करवाने वाला है। परमेश्वर सर्व–कर्त्ता है, सब कुछ उसके अधीन है। वह सर्वव्यापक प्रभु कण–कण में विद्यमान है, जो स्वयं ही मारने वाला तथा जीवन दाता है। अन्दर तथा बाहर वह प्राणी का साथी है। हे नानक ! प्रभु समस्त जीवों का स्वामी है, अत: मैं उसकी शरण में आया हूँ॥४॥१५॥८५॥

सिरीरागु महला ५ ॥ सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ॥ सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सरब जंजाल ॥ अंदरु लगा राम नामि अंम्रित नदरि निहालु ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ॥ करे दइआ प्रभु आपणी इक निमख न मनहु विसारु ॥ रहाउ ॥ गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार ॥ बिनु हरि नाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ॥ सहजे सिफती रतिआ भवजलु उतरे पारि ॥ २ ॥ तीरथ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि ॥ लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ॥ ३ ॥ सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ॥ सची कुदरति धारीअनु सचि सिरजिओनु जहानु ॥ नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८६ ॥

जब मेरा गुरु मुझ पर कृपालु हुआ तो मैं अपने प्रभु की शरण में आ गया। सतिगुरु के उपदेश द्वारा मेरे समस्त बन्धन दूर हो गए हैं। जब अन्तर्मन राम नाम के सिमरन में लीन हो गया तो मैं गुरु की कृपा से कृतार्थ हो गया॥ १॥ हे मेरे मन ! सतिगुरु की सेवा श्रेष्ठ है। उस प्रभु को एक पल के लिए भी विस्मृत मत करना, तभी वह तुझ पर कृपा–दृष्टि करेगा॥ रहाउ॥ हमें प्रतिदिन उस गोविन्द–प्रभु का यशगान करना चाहिए, जो मनुष्य के समस्त अवगुणों को निवृत्त करने वाला है। अनेक व्यक्तियों ने माया के प्रपंच करके देख लिए हैं किन्तु हरि–नाम के अलावा सुख नहीं मिलता। जो व्यक्ति भगवान की उपमा करने में मग्न रहते हैं, वे सहज ही भवसागर से पार हो जाते हैं॥२॥ लाखों तीर्थों के स्नान, लाखों व्रत रखने व इन्द्रियों को विषय–विकारों से रोकने का फल संतजनों की चरण–धूलि ग्रहण करने से ही प्राप्त हो

जाता है। हे भाई ! मानव किससे छिपकर पाप कमाता है, जबकि वह प्रभु सदैव समक्ष देख रहा है। मेरा परिपूर्ण परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त हो रहा है॥३॥ सत्य परमेश्वर का साम्राज्य सत्य है, उसका आदेश भी सत्य है, उस सत्य परमेश्वर का स्थिर रहने वाला स्थान भी सत्य है। उसने सत्य शक्ति धारण की हुई है और उसने सत्य–सृष्टि की रचना की हुई है। हे नानक ! मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ, जो सत्यस्वरूप परमात्मा का नाम–सिमरन करता है॥४॥१६॥८६॥

सिरीरागु महला ५ ॥ उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥ संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥ १ ॥ मन मेरे राम नामु जपि जापु ॥ मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥ रहाउ ॥ जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥ २ ॥ मनु तनु निरमलु होइआ लागी साचु परीति ॥ चरण भजे पारब्रहम के सभि जप तप तिन ही कीति ॥ ३ ॥ रतन जवेहर माणिका अंम्रितु हरि का नाउ ॥ सूख सहज आनंद रस जन नानक हरि गुण गाउ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ८७ ॥

हे भाग्यवान पुरुष ! परिश्रम करके हरि नाम सिमरन रूपी आत्म–धन एकत्र करो। सत्संग में जाकर हरि नाम का सिमरन किया जाता है, जिससे जन्म–जन्म के पापों की मैल कट जाती है॥१॥ हे मेरे मन ! राम–नाम रूपी जाप का सिमरन करो। इससे तुझे मनोवांछित फल प्राप्त होंगे और तुम्हारे दुख तथा संताप सब नष्ट हो जाएँगे॥रहाउ॥ जिस भगवान को पाने के लिए यह मानव–देह को धारण किया है, वह प्रभु अपने अंग–संग ही देख लिया है। वह परिपूर्ण प्रभु जल में, धरती में, गगन में सर्वत्र व्यापक है, वह सब प्राणियों को दया की दृष्टि से देखता है॥२॥ सच्चे स्वामी प्रभु के साथ प्रीति लगाने से तन–मन सभी पवित्र हो जाते हैं। जो प्राणी प्रभु के चरणों का ध्यान करता है, मानो उसने समस्त जप–तप (उपासना–तपस्या) कर लिए हैं॥३॥ अमृत रूपी हरि का नाम हीरे, जवाहर–रत्नों की भाँति अमूल्य है। हे नानक ! जिसने प्रेम भाव से भगवान की महिमा का गायन किया है, उसे सहज ही अच्युत सुख के आनंद का रस प्राप्त हुआ है॥४॥१७॥८७॥

सिरीरागु महला ५ ॥ सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ चरण कमल गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ साची पूंजी सचु संजमो आठ पहर गुण गाउ ॥ करि किरपा प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु सदा इक रंगि ॥ घट घट अंतरि रवि रहिआ सदा सहाई संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविंदु ॥ जिन चाखिआ से त्रिपतासिआ उह रसु जाणै जिंदु ॥ संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥ जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥ २ ॥ अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥ रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥ द्रिसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥ जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥ ३ ॥ मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥ दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥ भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥ नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥ ४ ॥ १८ ॥ ८८ ॥

वह धार्मिक शास्त्र उचित है और वही शगुन शुभ है जिसके द्वारा हरि–नाम का सिमरन किया जाए। जिस मानव जीव को गुरु ने चरण कमल रूपी धन दिया है उस आश्रयहीन व्यक्ति को आश्रय मिल गया। आठ पहर भगवान के गुणों का गायन करना ही सत्य राशि है तथा सत्य संयम है। भगवान स्वयं जिनको कृपा करके मिला है वह जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त हो जाता है॥१॥ हे मेरे मन !

तू सदैव एकाग्रचित होकर भगवान का भजन किया कर, चूंकि भगवान तो प्रत्येक हृदय के अन्दर समाया हुआ है तथा जीव के साथ होकर सहायता करता है॥१॥ रहाउ॥ जब प्रभु स्मरण किया तो इतने सुखों की उपलब्धि होती है कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। जिसने भी हरि रस को चखा है, वह तृप्त हो गया तथा उस रस को वही आत्मा जानती है। संतों की संगति द्वारा क्षमावान प्रियतम प्रभु हृदय में बसता है। जिसने अपने प्रभु नाम का सिमरन किया है। वह राजाओं का भी राजा है॥ २॥ जिस समय हरि नाम के यश व गुणों का चिन्तन किया जाए, वह करोड़ों तीर्थों के स्नान के पुण्य–फल के समान है। हरि स्मरण द्वारा रसना गुणों वाली हो जाती है, पुनः उसके तुल्य कोई दान नहीं है। अकालपुरुष दयालु एवं मेहरबान है, वह अपनी कृपा–दृष्टि द्वारा जीव के मन व तन में विराजमान होता है। जीव को तन एवं धन उस परमात्मा का दिया हुआ है, मैं उस पर सदैव ही न्यौछावर हूँ॥ ३॥ जिसे कर्त्ता–पुरुष परमात्मा अपने साथ मिला ले, वह परमात्मा से मिला ही रहता है फिर कभी नहीं विछुड़ता। सृजनहार प्रभु ने अपने सेवकों के माया रूपी बंधनों को काट दिया है। अपने सेवकों के गुणों–अवगुणों का विचार किए बिना भूले हुए को भी भक्ति–मार्ग पर डाल देता है। नानक कथन करते हैं कि उस भगवान की शरण में पड़ जा, जो समस्त जीवों का आधार है॥ ४॥ १८॥ ८८॥

सिरीरागु महला ५ ॥ रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥ मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥ १ ॥ मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥ बिनु सचे सभ कूड़ु है अंते होइ बिनासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ ॥ मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥ चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवरु न जाइ ॥ २ ॥ तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥ सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥ सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ ३ ॥ परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥ सदा सदा आराधीऐ एहा मति विसेख ॥ मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८६ ॥

यदि सत्य परमात्मा को रसना द्वारा स्मरण किया जाए तो जीव का मन एवं तन दोनों पवित्र हो जाते हैं। जीव के माता–पिता एवं अन्य सगे–संबंधी तो बहुत होते हैं किन्तु इहलोक एवं परलोक में उस परमात्मा के सिवाय अन्य कोई सहायक नहीं है। परमात्मा यदि अपनी कृपा–दृष्टि करे तो मनुष्य उसको क्षण–मात्र के लिए भी विस्मृत नहीं करता॥ १॥ हे मेरे मन! जब तक तेरे प्राण हैं, उस सत्य परमात्मा का सिमरन करता जा। उस परमात्मा के अलावा समस्त सृष्टि मिथ्या है और अंत में नाश हो जाने वाली है॥१॥ रहाउ॥ मेरा परमात्मा बड़ा निर्मल है। उसके बिना मैं कभी नहीं रह सकता। मेरे मन एवं तन के भीतर परमेश्वर हेतु परम तृष्णा है। कोई भी आकर उससे मुझे मिला दे, मैंने चारों दिशाओं में उसकी खोज कर ली है। परम–पिता परमेश्वर के बिना अन्य कोई भी विश्राम स्थल नहीं॥ २॥ उस गुरु के समक्ष प्रार्थना कर, जो तुझे इस सृष्टि के सृजनहार से तेरा मिलाप करवा दे। सतिगुरु जी नाम के दाता हैं, जिनके पास भक्ति का पूर्ण भंडार है। सदैव उस प्रभु की प्रशंसा करो, जिसकी सीमा को अंत तक नहीं जाना जा सकता॥३॥ उस पालनहार परमात्मा की सराहना करो, जिसके अनेक कौतुक हैं। विशेष बुद्धिमत्ता यही है कि उस परमात्मा की हमेशा आराधना करनी चाहिए। हे नानक! परमात्मा का नाम उसी जीव के मन एवं तन को मीठा लगता है, जिसके मस्तक पर शुभ–कर्मों के भाग्य लिखे हुए हैं॥४॥१६॥८६॥

सिरीरागु महला ५ ॥ संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥ तोसा बंधहु जीअ का ऐथै ओथै नालि ॥ गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥ करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ दइआलु ॥ १ ॥ मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥ गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥ गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइ ॥ गुरु परमेसरु पारब्रहमु गुरु डुबदा लए तराइ ॥ २ ॥ कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करण कारण समरथु ॥ से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥ गुरि अंम्रित नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥ गुरु परमेसरु सेविआ भै भंजनु दुख लथु ॥ ३ ॥ सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघ खंडु ॥ जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥ गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥ नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ॥ ४ ॥ २० ॥ ९० ॥

हे भाईयो ! संतजनों की संगति करके सत्यनाम की आराधना करो। जीवन के सफर में रास्ते का नाम रूपी भोजन बुद्धि रूपी दामन के साथ बांध लो, जो इहलोक एवं परलोक में तेरा सहायक होगा। यदि स्वामी अपनी कृपा करे तो यह भोजन गुरु की संगति से प्राप्त कर सकते हो। जिस पर ईश्वर कृपालु हो जाता है, उसे नाम रूपी भोजन शुभ कर्मों द्वारा मिल जाता है॥ १॥ हे मेरे मन ! गुरु जैसा अन्य कोई (महान्) नहीं। मैं किसी अन्य स्थान का ख्याल नहीं कर सकता। केवल गुरु ही मुझे सत्य परमेश्वर से मिला सकता है॥१॥ रहाउ॥ जो प्राणी गुरु जी के दर्शन करता है, उसको संसार के समस्त पदार्थ (धन–दौलत,ऐश्वर्य) प्राप्त हो जाते हैं। हे मेरी माता ! वह प्राणी बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिनका मन गुरु–चरणों में लीन हो जाता है। गुरु जी दानशील हैं, गुरु जी सर्वशक्तिमान, गुरु ही ईश्वर रूप सभी के भीतर विद्यमान हैं। गुरु ही परमेश्वर एवं पारब्रह्म हैं। गुरु जी ही डूबते हुओं को पार लगाने वाले हैं जो प्राणियों को जीवन–मृत्यु रूपी सागर से पार करवाते हैं॥२॥ किस मुख से गुरु की प्रशंसा करूँ, जो करने एवं करवाने में समर्थ हैं। वे मस्तक (व्यक्ति) सदैव स्थिर रहते हैं, जिन पर गुरु ने अपना अनुकंपा का हाथ रखा है। गुरु ने मुझे जन्म–मरण का भय नाश करने वाला अमृत नाम पान करवाया है। मैंने गुरु परमेश्वर की भरपूर सेवा का फल प्राप्त किया है, जिसने सब भय–भंजन एवं मेरे दुखों को निवृत्त कर दिया है॥३॥ सतिगुरु गहन, गंभीर एवं सुखों का सागर हैं और समस्त पापों का नाश करने वाले हैं। जिस प्राणी ने अपने गुरु की सेवा का फल प्राप्त किया है, उसे यमदूतों का कदापि दंड नहीं मिलता अपितु वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। गुरु के बराबर कोई भी समर्थ नहीं, क्योंकि मैंने यह सारा ब्रह्माण्ड खोजकर देख लिया है। सतिगुरु ने नाम का खजाना प्रदान कर दिया है और उस द्वारा नानक ने अपने चित्त के भीतर सुख धारण कर लिया है॥४॥२०॥९०॥

सिरीरागु महला ५ ॥ मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ॥ भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ॥ जांदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ॥ १ ॥ मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ॥ जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दह दिस जाइ ॥ लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥ काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ २ ॥ माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ॥ त्रिसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ॥ जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥ ३ ॥ अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ॥ जिस नो रखै सो रहै संम्रिथु पुरखु अपारु ॥ हरि जन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥ ४ ॥ २१ ॥ ९१ ॥

प्राणी सांसारिक रसों को बड़ा मीठा समझकर भोगता है परन्तु उनका स्वाद बड़ा कटु निकलता है। भाई, मित्र से सुहृद करके व्यर्थ का विवाद उत्पन्न कर लिया है और तुम व्यर्थ ही पापों में ग्रस्त हो गए हो। अलोप होते इनको विलम्ब नहीं होता। नाम के अतिरिक्त सब नश्वर है, व्यक्ति दुख में चूर–चूर हो जाता है॥१॥ हे मेरे मन! सतिगुरु की सेवा में लीन हो जाओ। दुनिया में जो कुछ दिखाई देता है, वह समस्त नश्वर हो जाएगा। हे प्राणी! तू मन की चतुरता को त्याग दे॥१॥रहाउ॥ यह मन इतना दुःशील है कि पागल कुत्ते की भाँति दसों–दिशाओं में भागता तथा भटकता फिरता है। इसी तरह लालची प्राणी कुछ भी ध्यान नहीं करता। लोभी पशु की तरह खाद्य तथा अखाद्य सबको ग्रहण कर लेता है। प्राणी काम, क्रोध तथा अहंकार के नशे में लीन होकर बार–बार योनियों में पड़ता है॥२॥ माया ने अपना जाल (फांसने का) बिछा रखा है और इस जाल में तृष्णा रूपी दाना भी रख दिया है। हे मेरी माता! लालची पक्षी (प्राणी) इसके भीतर वहाँ फँस जाता है और निकल नहीं पाता। मनुष्य उसको नहीं पहचानता जिस सृष्टिकर्त्ता ने इसकी रचना की है और पुनःपुनः आवागमन में भटकता फिरता है॥ ३॥ माया ने इस विश्व को विभिन्न विधियों एवं अनेको ढंगों से मोह कर रखा हुआ है। जिसकी अपार एवं समर्थ अकालपुरुष रक्षा करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है। हे नानक! प्रभु भक्तों पर मैं सदैव न्यौछावर हूँ, जो भगवान में सुरति लगाने के कारण भवसागर से पार हो गए हैं॥४॥२१॥६१॥

सिरीरागु महला ५ घरु २ ॥ गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु डंफु पसारु ॥ मुहलति पुंनी चलणा तूं संमलु घर बारु ॥ १ ॥ हरि गुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥ किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥ किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥ २ ॥ मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥ सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥ ३ ॥ लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥ नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ६२ ॥

ग्वाला अपनी गायें लेकर थोड़ी देर के लिए चरागाह में आता है। उसका वहाँ आडम्बर करने का क्या अभिप्राय है? हे प्राणी! जब तेरा इस दुनिया में आने का समय खत्म हो जाएगा, तब तूने यहाँ से चले जाना है। इसलिए अपने वास्तविक घर प्रभु–चरणों को याद रख॥१॥ हे मेरे मन! भगवान का गुणगान करो तथा प्रेम से सतिगुरु की सेवा का फल प्राप्त करो। तुम थोड़े समय के लिए मिले इस जीवन का अहंकार क्यों करते हो?॥१॥ रहाउ॥ रात्रिकाल के अतिथि की तरह तुम सुबह–सवेरे उठकर गमन कर जाओगे। हे प्राणी! तुम अपने गृहस्थ के साथ क्यों मोहित हुए फिरते हो? क्योंकि सृष्टि के समस्त पदार्थ उद्यान के पुष्पों की भांति क्षणभंगुर हैं॥ २॥ हे प्राणी! तुम यह क्यों कहते फिरते हो कि 'यह मेरा है, वो मेरा है।' उस ईश्वर को स्मरण कर, जिसने यह सबकुछ तुझे प्रदान किया है। हे प्राणी! तुम इस नश्वर संसार से अवश्य ही गमन कर जाओगे (जब मृत्युकाल की अवधि आएगी और लाखों, करोड़ों अमूल्य पदार्थ सब कुछ त्याग कर ही जाओगे)॥ ३॥ हे प्राणी! चौरासी लाख योनियों में भटकने के पश्चात् तूने यह दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त किया है। हे नानक! तू नाम का सिमरन किया कर क्योंकि तेरा इस संसार को छोड़ने का दिवस निकट आ गया है॥४॥२२॥६२॥

सिरीरागु महला ५ ॥ तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥ जा साथी उठी चलिआ ता धन खाकू रालि ॥ १ ॥ मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥ धंनु सु तेरा थानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥ जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात

॥ २ ॥ पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥ गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥ ३ ॥ सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥ नानक धंनु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥ ४ ॥ २३ ॥ ६३ ॥

हे शरीर रूपी स्त्री! तू तब तक ही इस दुनिया में सुखी है, जब तक तेरा साथी (आत्मा) तेरे साथ है। जब आत्मा रूपी साथी निकल जाएगा, यह शरीर रूपी स्त्री मिट्टी में मिल जाएगी॥१॥ हे प्रभु! मेरा मन सांसारिक तृष्णाओं से विरक्त हो गया है और तेरे दर्शनों की तीव्र अभिलाषा है। हे प्रभु! आपका वह निवास स्थान धन्य है॥१॥रहाउ॥ हे शरीर रूपी स्त्री! जब तक तेरा मालिक (आत्मा) तेरे हृदय में रहता है, तब तक सभी लोग तुझे 'जी-जी' कहते हैं अर्थात आदर-सत्कार करते हैं। जब उस देहि से प्राण निकल जाते हैं तो देहि रूपी नारी को कोई भी नहीं पूछता। तदुपरांत पार्थिव शरीर को सभी हटाने के लिए कहेंगे॥२॥ बाबुल के घर (इस संसार) में अपने पति-परमेश्वर की सेवा करो और ससुराल (परलोक) सुख में निवास करो। गुरु की शरण में आकर शुभ आचरण एवं रहन-सहन की शिक्षा ग्रहण कर। फिर तुझे कदाचित दुखी नहीं होना पड़ेगा॥३॥ समस्त जीव स्त्रियों ने अपने पति-परमेश्वर के घर (परलोक में) जाना है और सभी का विवाह उपरांत गौना (विदायगी) होनी है। अर्थात् सभी प्राणियों ने इस संसार में आकर मृत्यु के उपरांत परलोक गमन करना है, इसलिए इस संसार में अपने पिया प्रभु की स्तुति अवश्य करनी चाहिए ताकि उसके घर (परलोक) में स्थान प्राप्त हो। हे नानक! वह सुहागिनें (प्राणी) धन्य हैं, जिन्होंने अपने पति-परमेश्वर का प्रेम प्राप्त कर लिया है॥ ४॥ २३॥ ६३॥

सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥ करण कारण एकु ओही जिनि कीआ आकारु ॥ तिसहि धिआवहु मन मेरे सरब को आधारु ॥ १ ॥ गुर के चरन मन महि धिआइ ॥ छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुर मंतु हिरदै होइ ॥ कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिओ न कोइ ॥ २ ॥ देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥ ३ ॥ साधसंगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥ से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ६४ ॥

जिस एक परमात्मा ने सृष्टि-रचना की है, वह परमात्मा ही करने एवं कराने वाला है। हे मेरे मन! उसका सिमरन करो, जो समस्त जीवों का आधार है॥१॥ हे मन! अपने हृदय में गुरु के चरणों का ध्यान करो और अपनी समस्त चतुराइयाँ त्यागकर सत्य नाम में सुरति लगाओ॥१॥ रहाउ॥ यदि मनुष्य के हृदय में गुरु का मंत्र (शब्द) बस जाए तो उसके समस्त दुःख-संताप अथवा मृत्यु का भय कदापि आगमन नहीं करते। मनुष्य करोड़ों ही उपाय करके असफल हो गए हैं। परन्तु गुरु के बिना किसी का भी इस भवसागर से उद्धार नहीं हुआ॥२॥ गुरदेव के दर्शन-मात्र से ही आत्मा को सहारा प्राप्त होता है और समस्त दोष निवृत्त हो जाते हैं। मैं उन पर न्यौछावर होता हूँ, जिन्होंने गुरु-चरणों पर स्वयं को अर्पण किया है॥३॥ साधू की संगति करने से ही ईश्वर का सत्य नाम मन में आकर बसता है। हे नानक! वे मनुष्य बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिनके हृदय में भगवान के लिए प्रेम है॥४॥२४॥६४॥

सिरीरागु महला ५ ॥ संचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥ जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥ १ ॥ जपि मन नामु एकु अपारु ॥ प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामि क्रोधि अहंकारि माते विआपिआ संसारु ॥ पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै

दूखु अंधारु ॥ २ ॥ सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥ आपु छोडि सभ होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥ ३ ॥ जो दीसै सो सगल तूंहै पसरिआ पासारु ॥ कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रहम बीचारु ॥ ४ ॥ २५ ॥ ९५ ॥

हे प्राणी ! समस्त पाप विकारों को त्याग दो। सतिगुरु की पूजा करो एवं हरि नाम रूपी धन संचित करो। जिस परमात्मा ने तुझे पैदा करके संवारा है, उसका सिमरन करने से तेरा उद्धार हो जाएगा॥१॥ हे मेरे मन ! एक अपार प्रभु का ही नाम जपो। जिस ईश्वर ने तुझे प्राण, मन एवं तन दिया है, वही समस्त जीवों के हृदय का आधार है॥१॥ रहाउ॥ सम्पूर्ण जगत् काम, क्रोध अहंकार इत्यादि में मग्न है, दुनिया माया के मोह में फँसी हुई है। हे प्राणी ! तू संतों के चरणों में लगकर उनकी शरण में जा। फिर तेरा दुख मिट जाएगा और तेरे मन में से अज्ञानता का अँधेरा दूर हो जाएगा ॥२॥ हे प्राणी ! जीवन की श्रेष्ठ करनी यही है कि तू सत्य, संतोष एवं दया की पूँजी संचित कर। जिस प्राणी पर निरंकार प्रभु ने कृपा-दृष्टि की है, वह अपना अहंकार त्याग कर उसी की चरण धूल बन जाता है॥३॥ समूचा दृश्यमान संसार उसी प्रभु का प्रसार है, वही उसमें व्यापक है। हे नानक ! कहो- गुरु ने जिस व्यक्ति की शंका निवृत्त कर दी है, वह सारे जगत् को ब्रह्म ही समझता है॥ ४॥ २५॥ ९५॥

सिरीरागु महला ५ ॥ दुक्रित सुक्रित मंधे संसारु सगलाणा ॥ दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥ १ ॥ ठाकुरु सरबे समाणा ॥ किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वड पुरखु सुजाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥ तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥ २ ॥ कहन कहावन इहु कीरति करला ॥ कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥ ३ ॥ गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥ संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९६ ॥

समूचा जगत् शुभ एवं अशुभ कर्मों के जाल में फँसा हुआ है। कोई विरला प्रभु-भक्त ही मिलता है, जो इन दोनों प्रकार के कर्मों से रहित हो॥१॥ परमात्मा समस्त जीवों में समाया हुआ है। हे मेरे मालिक ! मैं तेरे बारे में क्या कहूँ और क्या सुनुँ? तू सबसे महान चतुर पुरुष है॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति मान-अभिमान में फँसा हुआ है, वह ईश्वर का भक्त नहीं। हे संतो ! करोड़ों मनुष्यों में से कोई विरला ही है जिसे परमतत्व प्रभु का ज्ञान है और जो समस्त जीवों को एक दृष्टि से देखता है॥ २॥ भगवान बारे वाद-विवाद करना दुनिया में व्यर्थ शोभा प्राप्ति का एकमात्र साधन है। लेकिन कोई विरला ही गुरमुख है जो इस वाद-विवाद से परे रहता है। वाद-विवाद करने वालों को गति एवं अवगति की अवस्था कुछ भी दिखाई नहीं देती॥३॥ हे नानक ! मैंने संतों की चरण-धूलि का दान प्राप्त कर लिया है॥४॥२६॥९६॥

सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥ तैरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥ भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥ १ ॥ सुहेला कहनु कहावनु ॥ तेरा बिखमु भावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥ सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥ २ ॥ पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता ॥ बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥ ३ ॥ भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥ गुर मिलि नानक पारब्रहमु पछाणा ॥ ४ ॥ २७ ॥ ९७ ॥

हे प्रिय प्रभु ! तेरे भरोसे पर मैंने बालक भाँति प्रीति में रहकर हास-विलास किए हैं। हे भगवान !

तुम ही मेरी माता एवं मेरे पिता हो, मैं तेरा बालक हूँ जो भूल चूक करता हूँ॥१॥ बातें करनी बड़ी सरल हैं। परन्तु आपके विधान अनुसार चलना बड़ा कठिन है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! मुझे आपके ऊपर बड़ा मान है, क्योंकि मुझे आपके बल का ही आधार है और मैं आपको अपना रक्षक समझता हूँ। हे परम पिता ! आप समस्त जीवों के भीतर मौजूद हो, सबसे बाहर भी आप ही हो॥ २॥ हे मेरे पिता ! मैं तेरी युक्ति को नहीं जानता जिससे तू प्रसन्न होता है। हे संतों ! वह मुझे समस्त बन्धनों से मुक्ति प्रदान करता है और मेरे लिए ममता–प्यार रखता है॥३॥ मेरा ठाकुर बड़ा दयालु हो गया है और मेरा (जन्म–मरण) आवागमन मिट गया है। हे नानक! गुरु से मिलकर मैंने पारब्रह्म को पहचान लिया है॥ ४॥ २७॥ ६७॥

सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥ सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥ १ ॥ मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥ तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अंम्रित नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥ तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ॥ गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥ २ ॥ आए से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइ ॥ सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ॥ करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ॥ ३ ॥ सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥ सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ॥ सरब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै एक ॥ ४ ॥ २८ ॥ ६८ ॥

हे भाइयो ! संतजनों ने मिलकर मेरा यम का भय दूर कर दिया है। मेरा मालिक प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है और उस सच्चे परमेश्वर ने मेरे मन में वास कर लिया है। पूर्ण सतिगुरु के मिलन से समस्त बंधन विनष्ट हो गए हैं॥ १॥ हे मेरे सतिगुरु ! मैं आप पर बलिहारी जाता हूँ। मैं आपके दर्शनों पर बलिहारी जाता हूँ। आप ने प्रसन्न होकर मुझे अमृत रूप नाम प्रदान किया है॥१॥रहाउ॥ जो प्रेमपूर्वक आपकी सेवा करते हैं, वे पुरुष बड़े बुद्धिमान हैं। जिनके अन्तर्मन में नाम का खजाना है, उनकी संगति में आकर प्राणी जन्म–मरण से मुक्त हो जाता है। गुरु जैसा दानशील दाता इस संसार में कोई भी नहीं, जिन्होंने मेरी आत्मा को नाम दान प्रदान किया है॥ २॥ जो प्रेम भावना से गुरु जी से भेंट करते हैं, उनका मनुष्य जन्म धारण करके जगत् में आगमन प्रभु के दरबार में स्वीकृत है। जो सत्य–प्रभु के प्रेम में लिवलीन हो जाते हैं, उन्हें भगवान के दरबार में बैठने हेतु स्थान प्राप्त हो जाता है। परमात्मा के हाथ समूची उपलब्धियाँ विद्यमान हैं, जिनकी किस्मत में शुभ कर्मो द्वारा लिखा हो, उन्हें प्राप्त हो जाती है॥३॥ सत्य प्रभु समस्त जगत् का कर्त्ता है। सत्य प्रभु ही समस्त जीवों को पैदा करने वाला है। वह सत्य प्रभु ही सबका मालिक है। सत्य प्रभु ही सबका आधार है। उस सत्य प्रभु को सभी सच्चा कहते हैं। मनुष्य को विवेक बुद्धि सत्य प्रभु से ही मिलती है। हे नानक ! जो परमात्मा इस जगत् के कण–कण में विद्यमान है, उस परमात्मा का चिंतन करके ही मैं जीवित हूँ॥ ४॥ २८॥ ६८॥

सिरीरागु महला ५ ॥ गुरु परमेसुरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥ सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥ सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥ बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु ॥ १ ॥ मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥ साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥ गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥ गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ ॥ २ ॥

गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥ गुरु दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु ॥ गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु उचा अगम अपारु ॥ गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु ॥ ३ ॥ जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥ पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥ सतिगुर सरणी आइआं बाहुड़ि नही बिनासु ॥ हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९६ ॥

हे प्राणी ! तन–मन में प्रेम बनाकर परमेश्वर के रुप गुरु की पूजा करनी चाहिए। सतिगुरु जीवों का दाता है। वह सभी को सहारा देता है। सत्य ज्ञान यही है कि सतिगुरु की शिक्षा अनुसार ही आचरण करना चाहिए। साधु–संतों की संगति में लीन हुए बिना माया का मोह धूल समान है॥१॥ हे मेरे मित्र ! तू ईश्वर के हरि–नाम का सिमरन कर। साधु की संगति में रहने से मनुष्य के हृदय में प्रभु निवास करता है और मनुष्य की सेवा सफल हो जाती है॥१॥ रहाउ॥ गुरु ही समर्थावान एवं गुरु ही अनंत है। बड़े सौभाग्य से जीव को उसके दर्शन प्राप्त होते हैं। गुरु ही अगोचर है, गुरु पवित्र पावन है। गुरु जैसा अन्य कोई महान् नहीं। गुरु ही जगत् का कर्त्ता है और गुरु ही सभी को पैदा करने वाले हैं। गुरु द्वारा ही शरण में आए जीव की वास्तविक शोभा है। गुरु की अभिलाषा से परे कुछ भी नहीं। जो कुछ भी गुरु जी चाहते हैं, वहीं होता है॥२॥ गुरु ही सर्वश्रेष्ठ तीर्थ स्थल है, गुरु ही कल्प–वृक्ष और गुरु ही समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण करने वाले हैं। गुरु ही दाता है जो ईश्वर का नाम प्रदान करते हैं, जिससे समूचे विश्व का उद्धार हो जाता है। गुरु ही समर्थाशाली है और गुरु ही निरंकार है। गुरु ही माया के गुणों से परे है। गुरु सर्वोच्च, अथाह, अपार है। गुरु की महिमा अपरम्पार है। कोई भी कथन करने वाला उसकी महिमा को कथन नहीं कर सकता॥३॥ प्राणी को समस्त मनोवांछित फल सतिगुरु द्वारा ही प्राप्त होते हैं, जितना भी मन करे उसे सतिगुरु से पाया जा सकता है। गुरु के पास सत्यनाम के धन के भरपूर भण्डार हैं, जिसके भाग्य में लिखा हो, उसे अवश्य प्राप्त होता है। सतिगुरु की शरण में आने से जीवन–मृत्यु के चक्कर से प्राणी को मुक्ति प्राप्त होती है। हे प्रभु ! यह आत्मा, देहि तथा श्वास सब तेरे ही दिए हुए हैं। हे नानक ! परमात्मा मुझे कभी भी विस्मृत न हो॥४॥२६॥९६॥

सिरीरागु महला ५ ॥ संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥ गुर के चरण सरेवणे तीरथ हरि का नाउ ॥ आगै दरगहि मंनीअहि मिलै निथावे थाउ ॥ १ ॥ भाई रे साची सतिगुर सेव ॥ सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥ अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचे सचा नाउ ॥ २ ॥ सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥ गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥ नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥ ३ ॥ गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥ नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ १०० ॥

हे संतजनो, हे भाइयों, ध्यानपूर्वक सुनो, आपको इस नश्वर संसार के बंधनों से मुक्ति केवल सत्यनाम की प्राप्ति से ही मिल सकती है। आप गुरु के चरणों की उपासना करो तथा ईश्वर के नाम को अपना तीर्थस्थल जानकर स्नान करो। आगे परलोक में प्रभु के दरबार के भीतर निःआश्रयों को आश्रय प्राप्त होता है, आपको मान–यश की प्राप्ति होगी॥ १॥ हे भाई ! केवल सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक निष्काम सेवा ही सत्य है। जब सतिगुरु परम–प्रसन्न हो जाते हैं, तभी सर्वव्यापक अगाध, अदृश्य स्वामी प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ मैं सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मुझे सत्य–नाम प्रदान किया है। अब तो रात्रि–दिवस उस सत्यपुरुष का यशोगान करता रहता हूँ और सत्य की ही मैं कीर्ति

करता रहता हूँ। उस सत्य स्वरूप परमात्मा का भोजन भी सत्य है और उसकी पोशाक भी सत्य है और उस सच्चे प्रभु के सत्य नाम का स्मरण करता हूँ॥ २॥ हे प्राणी! श्वास लेते तथा भोजनपान करते मुझे गुरु कभी विस्मृत नहीं होते, जो स्वयं ही दाता गुरु–मूर्ति हैं। गुरु के समान अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता, इसलिए दिन के आठों पहर उनकी ही वंदना करनी चाहिए। यदि गुरु जी अपनी कृपा–दृष्टि करें, तब मनुष्य गुणों के भण्डार सत्य नाम को पा लेता है॥३॥ गुरदेव एवं ईश्वर एक है और ईश्वर रूप गुरु सब के भीतर व्यापक हो रहा है। जिनके सुकर्मों से भाग्य में लिखा हो तो वह ईश्वर के नाम का सुमिरन करते हैं। हे नानक! गुरु के आश्रय में आने से जन्म–मरण का चक्कर छूट गया है, वह अब पुनः आवागमन के चक्कर में नहीं आएगा॥४॥ ३०॥१००॥

१ ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥ जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ॥ आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥ १ ॥ बाबा अलहु अगम अपारु ॥ पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥ जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥ २ ॥ पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥ सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥ बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥ ३ ॥ पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥ सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥ ४ ॥ थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥ जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥ ५ ॥ वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥ ६ ॥ सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥ केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥ नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥ ७ ॥ १ ॥

{यहाँ से गुरु नानक देव जी की उक्त छंद की वाणी का श्रीगणेश होता है। आठ पंक्तियों के पद को असटपदीआ कहा गया है। गुरु जी इस पद में बताते हैं कि अल्लाह अगम्य तथा अपार है}

जैसे–जैसे हम मन रूपी वाद्य को बजाते हैं, वैसे–वैसे ही अल्लाह की महिमा को समझते हैं। जितना अधिक वाद्य बजाते हैं, उतना ही उसे समझते हैं। जिसे मन वाद्य बजा कर सुनाया जाता है। वह कितना महान है और किस स्थान पर रहता है। जितने भी अल्लाह का यश करने वाले है, वह सभी उसका यश करते एवं उसमें सुरति लगाते हैं॥१॥ हे बाबा! अल्लाह अगम्य एवं अपार है। उस अल्लाह का नाम बड़ा पवित्र है तथा बड़ा ही पावन स्थल है जहाँ वह रहता है। वह सदैव सत्य है और सारे संसार का पालन पोषण करता है॥१॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर! कोई ज्ञान नहीं होता कि तेरा हुक्म कितना महान है? कोई भी तेरे हुक्म को नहीं जानता और न ही वह उसे लिख सकता है। यदि सैंकड़ों कवि एकत्रित हो जाएँ, वे भी तेरे हुक्म को तिल–मात्र वर्णन करने में भी समर्थ नहीं। कोई भी तेरा मूल्यांकन करने में समर्थ नहीं हो सका, सभी लोग दूसरों से सुन कर तेरे बारे कहते जाते हैं॥२॥ मुसलमानों के पीर, पैगम्बर, रहबर, विवेकशील, धैर्यवान फकीर, भद्रपुरुष, धर्म हेतु बलिदान देने वाले। शेख, काजी, मुल्लां, दरवेश, साहिब के दरबार में पहुँचे हुए साधु, जो प्रभु का यशोगान करते रहते

हैं उन्हें प्रभु की कृपा से बड़ा यश प्राप्त होता है॥३॥ परमात्मा जब सृष्टि का निर्माण करता है तो वह किसी की सलाह नहीं लेता और जब विनाश करता है तो भी किसी की सलाह नहीं लेता। वह जीवों को दान किसी से पूछकर नहीं देता और न ही किसी से पूछकर उनसे वापिस लेता है। अपनी कुदरत को वह स्वयं ही जानता है और वह स्वयं ही सारे कार्य सम्पूर्ण करता है। वह सबको समान कृपा दृष्टि से देखता है। परन्तु वह उसको फल प्रदान करता है। जिस पर उसकी प्रसन्नता होती है॥४॥ नाम ने इतने स्थान रचे हुए हैं कि उनके नाम जाने नहीं जा सकते। उस प्रभु का नाम कितना महान् है इस बारे असमर्थ मनुष्य अनभिज्ञ हैं। वह स्थान कितना महान् है, जहाँ मेरा पारब्रह्म परमेश्वर निवास करता है? वहाँ तक कोई भी प्राणी नहीं पहुँच सकता। मैं वहाँ तक जाने का रहस्य किससे पूछूं॥५॥ जब प्रभु किसी एक को बड़ा करता है तो उसे उसकी उच्च अथवा निम्न जाति अच्छी नहीं लगती। परमात्मा समर्थाशाली है, वह जिसे चाहे बड़ाई दे सकता है लेकिन बड़ाई उसी को देता है जिसे वह पसंद करता है। सब कुछ उसी के वश में है। वह अपने हुक्म से उसका जीवन संवार देता है। परमेश्वर क्षण मात्र भी विलम्ब नहीं होने देता॥६॥ उससे प्राप्ति के विचार से सभी इसकी महानता का गुणगान करते हैं कि "मुझे और अधिक प्रदान करो, और अधिक।" किन्तु वह प्रभु बड़ा दानशील है। वह गणना से बाहर बेअंत फल प्रदान करता है। हे नानक! उस परमात्मा के भण्डार असीम हैं, प्रत्येक युग में परिपूर्ण हैं और कदाचित उनमें कमी नहीं आती॥७॥१॥

महला १ ॥ सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥ गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥ पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥ १ ॥ हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥ तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥ दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥ लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥ २ ॥ प्रिअ की चेरी कांढीऐ लाली मानै नाउ ॥ साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥ सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥ ३ ॥ सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥ पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥ नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥ ४ ॥ साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥ चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥ दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥ ५ ॥ नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥ बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥ ६ ॥ निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥ अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाइ ॥ जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥ ७ ॥ सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥ हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥ सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

समस्त जीव उस प्राणपति (प्रभु) की स्त्रियाँ हैं एवं सभी जीव–स्त्रियाँ उसे प्रसन्न करने के लिए हार–शृंगार करती हैं। जो अपने प्राणपति से अनुकंपा करने की जगह उससे हिसाब–किताब मोल करने आई हैं, उनका दुल्हन–वेष लाल पहरावा भी बेकार है, अर्थात् आडम्बर है। हे जीवात्मा! आडम्बर से उसकी प्रीति प्राप्त नहीं होती। खोटा आडम्बर विनाशकारी होता है, इससे प्रभु–पति की प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती॥१॥ हे प्रभु जी! प्रियवर अपनी स्त्री से ऐसे रमण करता है। हे ईश्वर! वही सुहागिन है जो तुझे अच्छी लगती है और अपनी दया–दृष्टि से तुम उसे संवार लेते हो॥१॥ रहाउ॥ गुर–शब्द से वह सुशोभित हुई हैं और उसका तन एवं मन उसके प्रीतम के समक्ष समर्पित है। अपने दोनों हाथ जोड़कर वे प्रभु–परमेश्वर की प्रतीक्षा करती हैं और सच्चे हृदय से

उसके समक्ष वंदना करके सत्य प्राप्ति की लालसा बनाए रखती हैं। वह अपने प्रीतम के प्रेम में लिवलीन हो गई हैं और सत्यपुरुष के भय में रहती हैं। उसकी प्रीत में रंग जाने से उसकी सत्य की रंगत में लिवलीन हो जाती हैं॥२॥ वह अपने प्रियतम की अनुचर कही जाती है, जो अपने नाम को समर्पण होती है। प्रीतम का सच्चा प्रेम कभी टूटता नहीं और वह सच्चे स्वामी के मिलाप अंदर मिल जाती है। गुरुवाणी में रंग जाने से उसका मन बिंध गया है। मैं सदैव उस पर बलिहारी जाता हूँ॥३॥ वह नारी जो अपने सतिगुर के (उपदेशों–शिक्षाओं) भीतर लीन हुई है, वह कदापि विधवा नहीं होती। उसका प्रीतम रसों का घर हमेशा नवीन देह वाला एवं सत्यवादी है। वह जीवन–मृत्यु के चक्कर से विमुक्त है। वह हमेशा अपनी पवित्र–पाक नारी को हर्षित करता है और उस पर अपनी सत्य–दृष्टि रखता है, क्योंकि वह उसकी आज्ञानुसार विचरण करती है॥४॥ ऐसी जीवात्माएँ सत्य की माँग संवारती हैं और प्रभु प्रीत को अपनी पोशाक तथा हार–शृंगार बनाती हैं। स्वामी का हृदय में धारण करने का चन्दन लगाती हैं और दसवें द्वार को अपना महल बनाती हैं। वह गुर–शब्द का दीपक प्रज्वलित करती हैं और राम–नाम ही उनकी माला है॥ ५॥ नारियों में वह अति रूपवान सुन्दर है और अपने मस्तक पर उसने स्वामी के स्नेह का माणिक्य शोभायमान है। उसकी महिमा तथा विवेक अति मनोहर है तथा उसकी प्रीति अनंत प्रभु के लिए सच्ची है। वह अपने प्रियतम के अतिरिक्त किसी को भी परम–पुरुष नहीं समझती। केवल सतिगुरु हेतु ही वह प्रेम तथा अनुराग रखती है॥ ६॥ परन्तु जो अंधेरी निशा में सोई हुई है, वह अपने प्रियतम के अलावा अपनी रात्रि किस तरह व्यतीत करेगी? तेरे अंग जल जाएँगे, तेरी देहि जल जाएगी और तेरा हृदय एवं धन सभी जल जाएँगे। यदि जीव रूपी नारी को प्राणपति सम्मान प्रदान नहीं करता, तब उसका यौवन व्यर्थ जाता है॥ ७॥ जीव रूपी स्त्री एवं मालिक प्रभु दोनों का एक ही हृदय रूपी सेज पर निवास है। लेकिन जीव–स्त्री माया के मोह की निद्रा में मग्न है परन्तु सोई हुई पत्नी को उस बारे ज्ञान ही नहीं। मैं निद्रा–मग्न हूँ, मेरा पति प्रभु जाग रहा है। मैं किसके पास जाकर पूछूं? हे नानक ! जिस जीव–स्त्री को सतिगुरु उसके पति–प्रभु से मिला देते हैं, वह सदैव पति–प्रभु के भय में रहती है। प्रभु का प्रेम उस जीव–स्त्री का साथी बन जाता है॥८॥२॥

सिरीरागु महला १ ॥ आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥ आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥ साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥ १ ॥ हरि जीउ तूं करता करतारु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं हरि नामु मिलै आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥ आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥ गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥ २ ॥ आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥ साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ॥ निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥ ३ ॥ असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥ आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाइ ॥ गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥ ४ ॥ हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥ तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥ नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥ ५ ॥ जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥ हउमै त्रिसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥ जग महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥ ६ ॥ साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥ साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥ पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥ ७ ॥ ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ जह देखा तह एकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे स्वामी ! तू स्वयं ही रत्न में गुण है। तू जौहरी बन कर स्वयं ही रत्न के गुणों को कथन करता है। तुम स्वयं ही ग्राहक बनकर उसके गुणों को सुनते एवं विचार करते हो। तुम स्वयं ही नाम रूपी रतन हो तुम स्वयं ही इसकी परख करने वाले हो और तुम अनन्त मूल्यवान हो। हे ईश्वर ! तुम ही मान–प्रतिष्ठा और महत्ता हो और स्वयं ही दानशील प्रभु उनको मान–सम्मान देने वाले हो॥१॥ हे हरि ! तुम ही जगत् के रचयिता एवं सृजनहार हो। जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, मेरी रक्षा करो। हे परमात्मा ! मुझे अपना नाम–सुमिरन एवं जीवन आचरण प्रदान करो॥१॥ रहाउ॥ तुम स्वयं ही शुद्ध–निर्मल रत्न हो और स्वयं ही भक्ति का मजीठ रंग भी हो। तुम ही निर्मल मोती हो और स्वयं ही भक्तों में मध्यस्थ भी हो। गुरु के शब्द द्वारा अदृश्य प्रभु को प्रशंसित किया जाता है और प्रत्येक हृदय में उसके दर्शन किए जाते हैं॥ २॥ हे प्रभु ! तुम स्वयं ही सागर तथा पार होने का जहाज हो तथा स्वयं ही इस पार का किनारा और उस पार का किनारा हो। हे सर्वज्ञ स्वामी ! तू ही सत्य मार्ग है। और तेरा नाम पार करने के लिए मल्लाह है। जो प्रभु के नाम से भय नहीं रखते, वही भवसागर में भयभीत होते हैं। गुरदेव के अतिरिक्त घनघोर अंधकार है॥३॥ केवल सृष्टि का कर्त्ता ही सदैव स्थिर देखा जाता है। अन्य सभी आवागमन के चक्कर में रहते हैं। हे पारब्रह्म ! केवल एक तू ही अपने आप शुद्ध है। शेष सांसारिक कर्मों के भीतर अपने–अपने धंधों में बंधे हुए हैं। जिन प्राणियों की गुरु जी रक्षा करते हैं, वे प्रभु की भक्ति में लिवलीन सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करते हैं॥ ४॥ नाम द्वारा इन्सान पूज्य प्रभु को पहचान लेता है और गुरु की वाणी द्वारा वह सत्य के रंग में लिवलीन हो जाता है। उस प्राणी की देहि को तुच्छ मात्र भी मलिनता नहीं लगती, जिसने सच्चे घर के भीतर निवास कर लिया है। यदि प्रभु अपनी कृपा–दृष्टि करे तो सत्यनाम प्राप्त हो जाता है। परमात्मा के नाम के अतिरिक्त प्राणी का अन्य संबंधी कौन है?॥ ५॥ जिन्होंने सत्य को अनुभव किया है, वे चारों युगों में सुखी रहते हैं। अहंकार एवं तृष्णा का नाश करके वह सत्य–नाम को अपने हृदय में धारण करके रखते हैं। इस जगत् में केवल नाम (प्रभु–भक्ति) का ही लाभ उचित है। इसकी प्राप्ति केवल गुरु की कृपा सोच–विचार द्वारा ही होती है॥ ६॥ यदि सत्य की पूँजी द्वारा सत्यनाम का सौदा व्यवसायिक तौर पर किया जाए तो सदैव ही लाभ होता है। प्रेममयी सुमिरन एवं सच्ची लगन से प्रार्थना द्वारा मनुष्य ईश्वर के दरबार के अन्दर बैठ जाता है। सर्वव्यापक परमेश्वर के नाम के उजाले में मनुष्य का हिसाब सम्मान–पूर्वक स्पष्टता हो जाता है॥ ७॥ बुलंदों में परम बुलंद स्वामी कहा जाता है, पर वह किसी द्वारा भी नहीं देखा जा सकता। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, सर्वत्र मैं केवल तुझे ही पाता हूँ। मुझे सतिगुरु ने आपके दीदार–दर्शन करवा दिए हैं। हे नानक ! प्रेम द्वारा सहज अवस्था प्राप्त होने पर हृदय में विद्यमान प्रभु की ज्योति की सूझ होती है॥ ८॥३॥

सिरीरागु महला १ ॥ मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥ अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥ कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥ १ ॥ भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥ जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥ सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥ हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥ २ ॥ सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥ बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥ ३ ॥ सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥ जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥ मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥ ४ ॥ सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥ साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥ नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥ ५ ॥ बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥ गुरमती परगासु होइ सचि

रहे लिव लाइ ॥ तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥ ६ ॥ तूंहै साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥ गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥ ७ ॥ हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥ हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥ नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥ ८ ॥ ४ ॥

जब मछली की मृत्यु आई तो उसने मछेरे के जाल की पहचान नहीं की। वह गहरे खारे समुद्र में रहती है। वह बहुत चतुर एवं सुन्दर है। उसने मछेरे पर विश्वास क्यों किया? वह विश्वास करने के कारण ही जाल में पकड़ी गई। उसके सिर पर मृत्यु को टाला नहीं जा सकता, जो अटल है॥ १॥ हे भाई ! इस तरह तू मृत्यु को अपने सिर पर मंडराता हुआ समझ, क्योंकि काल बहुत बलवान है। जिस तरह मछली है, उसी तरह ही मनुष्य है। मृत्यु का जाल अकस्मात ही उस पर आ गिरता है॥ १॥ रहाउ॥ सारे संसार को काल (मृत्यु) ने दबोचा हुआ है। गुरु की कृपा बिना मृत्यु अनिवार्य है। जो सत्य में लिवलीन हो गए हैं और द्वैत-भाव तथा पापों को त्याग देते हैं, वह बच जाते हैं। मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो सत्य के दरबार में सत्यवादी माने जाते हैं॥२॥ जैसे बाज पक्षियों को मार देता है और शिकारी के हाथ में पकड़ा हुआ जाल उन्हें फँसा लेता है, वैसे ही माया के मोह के कारण सभी मनुष्य यम के जाल में फँस जाते हैं। जिनकी गुरदेव रक्षा करते हैं, वह यम के जाल से बच जाते हैं, शेष दाने (मृत्यु) के साथ फँस जाते हैं। हरि नाम के बिना वे मृत्यु के वश में दाने की तरह चुन लिए जाएँगे, फिर उनका कोई भी साथी या सहायक नहीं होगा॥३॥ सत्य प्रभु को सभी सत्य कहते हैं। सत्य प्रभु का निवास भी सत्य है सत्य प्रभु उनके हृदय में निवास करता है, जो उसका सिमरन एवं ध्यान करते हैं। गुरु द्वारा ज्ञान प्राप्त करने वाले प्राणियों के हृदय एवं मुख पवित्र माने जाते हैं॥ ४॥ हे प्राणी ! सतिगुरु के समक्ष वंदना करो कि वह तुझे तेरे मित्र (प्रभु) से मिलन करवा दे। मित्र (ईश्वर) के मिलन से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है और यमदूत विष सेवन करके कालवश हो जाते हैं। मैं परमात्मा के नाम (भक्ति) में वास करता हूँ और नाम ने मेरी आत्मा में निवास कर लिया है॥ ५॥ गुरु के बिना मनुष्य के हृदय में अज्ञानता का अन्धेरा विद्यमान रहता है और ईश्वर के नाम के बिना उसे ज्ञान-बुद्धि की प्राप्ति नहीं होती। जब गुरु की मति द्वारा उसके भीतर ज्योति का प्रकाश होता है, फिर वह सत्य प्रभु में सुरति लगाकर रखता है। इस अवस्था में वहाँ मृत्यु प्रवेश नहीं करती और मनुष्य की ज्योति (आत्मा) परम ज्योति (परमात्मा) के साथ अभेद हो जाती है॥ ६॥ हे प्रभु ! तुम बुद्धिमान हो, तुम मेरे मित्र हो और तुम ही मनुष्य को अपने साथ मिलाने वाले हो। मैं गुरु की वाणी द्वारा तेरी महिमा करता हूँ। तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता एवं ओर-छोर भी नहीं पाया जा सकता। गुरु बेअंत है। जहाँ पर गुरु का अनहद शब्द विद्यमान है, काल वहाँ पर कदापि प्रवेश नहीं करता॥ ७॥ प्रभु की इच्छा द्वारा समस्त जीव-जन्तु उत्पन्न होते हैं और उसकी इच्छानुसार ही वे कार्य व्यवहार करते हैं। प्रभु की इच्छानुसार ही वे काल के अधीन है और उसकी इच्छानुसार वे सत्यस्वरूप परमात्मा में विलीन हो जाते हैं। हे नानक ! जो कुछ भी प्रभु को लुभाता है, वही होता है। सांसारिक जीवों के वश में कुछ भी नहीं॥८॥४॥

सिरीरागु महला १ ॥ मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥ मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥ बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ॥ १ ॥ मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥ पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिरु परदेसी जे थीऐ धन वांढी झूरेइ ॥ जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥ पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि

करेइ ॥ २ ॥ पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥ तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥ सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥ ३ ॥ कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥ ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥ आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥ ४ ॥ पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥ पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥ दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥ ५ ॥ पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥ अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥ कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥ ६ ॥ केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥ वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥ बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥ ७ ॥ सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥ हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥ नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥ ८ ॥ ५ ॥

यदि मन में जूठन है तो तन में भी जूठन आ जाती है और जूठन के कारण जिह्वा भी जूठी हो जाती है। अर्थात् विषय-विकारों में लीन होने के कारण तन-मन-जिह्वा मलिन हो जाती है। मुख झूठा हो तो झूठा मनुष्य असत्य वचन ही व्यक्त करता है, फिर वह किस तरह पवित्र-पावन हो सकता है? नाम (भक्ति) के जल बिना आत्मा स्वच्छ नहीं होती। सत्य नाम द्वारा ही सत्य प्रभु प्राप्त होता है॥ १॥ हे भोली जीव-स्त्री ! गुण के बिना सुख कहाँ है? प्रियतम प्राणपति उनके साथ आनंद एवं रस के साथ रमण करता है जो सत्य नाम की प्रीति के भीतर शांति-सुख अनुभव करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ यदि प्राणपति परदेस चला जाए तो नारी (जीवात्मा) वियोग में ऐसे पीड़ित अनुभव करती है जिस तरह थोड़े से जल में मछली तड़पती है। जब प्राणपति को अच्छा लगता है तो वह स्वयं ही अपनी कृपा-दृष्टि करता है और पत्नी को सुख-समृद्धि प्राप्त हो जाती है॥२॥ अपनी सखियों एवं सहेलियों के साथ बैठकर हे जीवात्मा ! तू अपने पति परमेश्वर का यशोगान कर। उसके दर्शन करने से तेरा शरीर सुन्दर तथा मन मोहित हो गया है और तू उसकी प्रीति के साथ रंग गई है। सुन्दर पत्नी, जिसने नाम के साथ शृंगार किया है, वह गुणवती होकर अपने पति की भरपूर सेवा करती है॥३॥ बुराइयों तथा विषय-विकारों में लिप्त नारी गुणहीन होने के कारण पति के किसी भी काम नहीं आती। इस जीवात्मा को न तो बाबुल के घर (इहलोक) में सुख मिलता है और न ही ससुराल (परलोक) में और वह बुराइयों तथा पापों के अंदर व्यर्थ ही तड़पती रहती है। उसका आवागमन (जन्म-मरण) बड़ा दुलर्भ है, जिसे उसके पति ने प्रेम से वंचित करके भुला दिया है॥४॥ प्राणपति परमेश्वर की अति सुन्दर नारी सुहागिन है, किन्तु विषय-विकारों के कारण त्यक्ता के लिए जीवन का कोई भी रस नहीं। जो नारी व्यर्थ ही विवादपूर्ण बकवाद करती है, वह पति के किसी भी काम योग्य नहीं। सांसारिक रसों के कारण वह त्याग दी गई है और उसको अपने स्वामी के द्वार एवं मंदिर में आश्रय नहीं मिलता॥५॥ पण्डित धर्म ग्रंथों का अध्ययन करते हैं परन्तु वे यथार्थ ज्ञान का मनन नहीं करते। वे दूसरों को उपदेश देते रहते हैं। किन्तु स्वयं ज्ञान की उपलब्धि के बिना संसार से चले जाते हैं। उन्होंने उपदेश देने को धन ऐंठने का व्यापार बना लिया है। उनकी झूठी कथनी से गुमराह होकर सारा संसार भटक रहा है। सत्य नाम की कमाई करना ही श्रेष्ठ जीवन आचरण है॥६॥ कितने ही पंडित तथा ज्योतिष वेदों को सोचते-विचारते हैं। वे विवादों एवं निरर्थक झगड़ों की प्रशंसा करते हैं और वाद-विवाद में फँसे जन्म-मरण के चक्कर में आवागमन करते रहते हैं। किन्तु गुरु के बिना उनकी अपने कर्मों से मुक्ति नहीं होनी, चाहे वे जितने भी कथन, श्रवण करें, उपदेश दें अथवा व्याख्या करते रहें। गुरु की अपार कृपा के बिना इनकी मुक्ति नहीं हो सकती॥ ७॥ समस्त जीव-स्त्रियों को गुणवान कहा जाता है

परन्तु मुझ में कोई भी गुण विद्यमान नहीं। यदि प्रभु मुझे भी पसंद करने लगे तो मैं भी प्रभु की सुन्दर पत्नी बन सकती हूँ। हे नानक! जीव–स्त्री का प्रभु–पति से मिलन नाम द्वारा ही होता है। प्रभु से मिलन उपरांत फिर उसका पति से बिछोड़ा कभी नहीं होता॥८॥५॥

सिरीरागु महला १ ॥ जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ॥ पुंन दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥ जेहा राधे तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ॥ १ ॥ मुंधे गुण दासी सुखु होइ ॥ अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥ मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घर बारि ॥ विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ २ ॥ लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥ वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रहमु बीचारि ॥ ३ ॥ संतां संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ॥ मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ॥ सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥ ४ ॥ जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥ त्रिभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥ ५ ॥ सा धन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥ महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥ सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥ ६ ॥ भूली भूली थलि चड़ा थलि चड़ि डूगरि जाउ ॥ बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥ नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥ ७ ॥ पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥ राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ॥ नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइ ॥ ८ ॥ ६ ॥

भगवान का भजन किए बिना मनुष्य को जप, तपस्या एवं संयम की साधना करने, तीर्थ स्थलों में जाकर निवास करने, पुण्य–दान इत्यादि अन्य शुभ कर्म करने का कोई लाभ नहीं होता। प्राणी जैसा बोता है, वैसा ही फल काटता है। गुण ग्रहण किए बिना मानव जीवन व्यर्थ ही व्यतीत हो जाता है॥१॥ हे भोली जीव–स्त्री! दासी वाले गुण पैदा करने से सुख उपलब्ध होता है। अवगुणों का त्याग करके गुरु की मति द्वारा पूर्ण प्रभु में समाया जाता है॥१॥ रहाउ॥ जिस व्यापारी के पास गुणों की पूँजी विद्यमान नहीं, वह चारों दिशाओं में व्यर्थ भटकता रहता है। वह मूल–प्रभु का नाम बोध नहीं करता। नाम रूपी वस्तु उसके दसम द्वार रूपी घर में विद्यमान है। इस नाम–वस्तु के बिना वह बहुत दुखी होता है। झूठी माया ने झूठ का व्यापार करने वाले को ठग लिया है॥२॥ जो नाम–रत्न का ध्यान से सिमरन (जांच पड़ताल) करता है, उसे नित्य अधिकाधिक लाभ मिलता है। वह नाम रूपी वस्तु को अपने हृदय गृह में ही पा लेता है और अपने कार्य को संवार गमन करता है अर्थात् जीवन में शुभ कर्म करके अपने जीवन को सफल करके परमात्मा में विलीन हो जाता है। ईश्वर के व्यापारियों (भक्तों) के साथ व्यापार (भक्ति) करो और अपने गुरु से मिलकर परमेश्वर का चिंतन करो॥३॥ साधु–संगति द्वारा ही प्रभु को पाया जाता है, जब प्रभु से मिलन करवाने वाले गुरु जी अपनी दया से प्राणी को परमात्मा से मिलाते हैं। जिस की आत्मा के भीतर प्रभु का अनन्त प्रकाश प्रज्वलित है, वह उसे मिल जाता है और पुनः जुदा नहीं होता अर्थात् जीवन–मृत्यु के चक्र से छूटकर वह मोक्ष प्राप्त करता है। ऐसे पुरुष का निवास सत्य है, जो सत्य के भीतर निवास करता है और सत्य स्वरूप परमेश्वर के प्रेम में सदैव विचरता है॥ ४॥ जीवात्मा का स्वरूप ज्योति है। जिसने अपने इस स्वरूप को पहचान लिया है, वह अपने हृदय गृह के श्रेष्ठ स्थान में ही स्वामी के मन्दिर को पा लेते हैं। सत्य नाम के रंग में लिवलीन होने से सत्य प्रभु प्राप्त हो जाता है। सत्य प्रभु के नाम द्वारा वह उसे पहचान लेते हैं, जो पाताल, धरती एवं आकाश तीनों लोकों में रहता है॥ ५॥ वह जीव–स्त्री बहुत ही सुन्दर है जिसने अपने प्रियतम–प्रभु को समझ लिया है, जो सदैव इसके

साथ रहता है। दसम द्वार रूपी महल में रहने वाला प्रियतम प्रभु जीव–स्त्री को अपने महल में आमन्त्रित कर लेता है। पति उसे बड़ी प्रीति से रखता है। वही नारी सचमुच प्रसन्न तथा गुणवान सुहागिन है, जो अपने प्रियतम पति के गुणों पर मोहित होती है॥६॥ मुझ नाम से भूली हुई को गुरु के बिना नाम की सूझ नहीं होगी। चाहे मैं सारी धरती पर फिरती रहूँ, धरती पर घूमने के पश्चात पर्वतों पर चढ़ जाऊँ और जंगलों में भटकती रहूँ। यदि हरि नाम को विस्मृत करके मैं भटकती रहूँ तो मैं पुनः पुनः आवागमन के चक्र में रहूँगी॥७॥ हे जीव–स्त्री! जाकर उन पथिकों से पता कर लो जो प्रभु के भक्त होकर उसके मार्ग पर चलते हैं। वह ईश्वर को अपना सम्राट मानते हैं और उनको प्रभु के दरबार एवं घर में जाते समय कोई भी रोक नहीं होती। हे नानक! एक परमेश्वर ही सर्वव्यापक है, इसके अलावा अन्य कोई भी अस्तित्व में नहीं॥८॥६॥

सिरीरागु महला १ ॥ गुर ते निरमलु जाणीऐ निरमल देह सरीरु ॥ निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ॥ सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥ १ ॥ भाई रे मैलु नाही निरमल जलि नाइ ॥ निरमलु साचा एकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥ रवि ससि दीप अनूप जोति त्रिभवणि जोति अपार ॥ हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ॥ २ ॥ गिआन अंजनु भै भंजना देखु निरंजन भाइ ॥ गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लए मिलाइ ॥ ३ ॥ कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइ ॥ खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ॥ आस अंदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ॥ ४ ॥ सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥ सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥ सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ॥ ५ ॥ बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रहम बिआसु ॥ मुनि जन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ॥ सचि रते से जिणि गए हउ सद बलिहारै जासु ॥ ६ ॥ चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ॥ भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पति खोइ ॥ जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ॥ ७ ॥ खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ॥ आपु पछाणै घरि वसै हउमै तिसना जाइ ॥ नानक निरमल ऊजले जो राते हरि नाइ ॥ ८ ॥ ७ ॥

जब गुरु द्वारा मनुष्य का शरीर एवं मन निर्मल हो जाते हैं तो निर्मल प्रभु को जाना जाता है। सत्य निर्मल प्रभु मन में आ बसता है। वह परमेश्वर जीव के हृदय की पीड़ा को अनुभव करता है। सहज अवस्था प्राप्त होने पर मन बहुत सुखी होता है और काल (मृत्यु) का बाण उसे नहीं लगता॥ १॥ हे भाई! हरि नाम के निर्मल जल में स्नान करने से तुझे कोई भी मलिनता नहीं लगी रहेगी, अपितु तेरे समस्त अवगुणों की मैल उतर जाएगी। हे प्रभु! एकमात्र तू ही सत्य और निर्मल है, अन्य समस्त स्थानों पर मैल विद्यमान है॥ १॥ रहाउ॥ यह जगत् ईश्वर का अति सुन्दर महल है। सृजनहार प्रभु ने स्वयं इसकी रचना की है। सूर्य एवं चंद्रमा की ज्योतियों की चमक अनूप है। ईश्वर का अनन्त प्रकाश तीनों ही लोकों में प्रज्वलित हो रहा है। तन के अन्दर दुकानें, नगर तथा किले विद्यमान हैं। जहाँ पर व्यापार करने के लिए सत्य नाम का सौदा है॥ २॥ ज्ञान का सुरमा भय को नाश करने वाला है और प्रेम के द्वारा ही पवित्र प्रभु के दर्शन किए जाते हैं। प्राणी अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष समूह को जान लेता है, यदि वह अपने मन को एक स्थान पर केन्द्रित रखे। यदि मनुष्य को ऐसा सतिगुरु मिल जाए तो वह सुखैन ही उसको प्रभु से मिला देता है॥३॥ जैसे सोने को परखने के लिए कसौटी पर परख लिया जाता है, वैसे ही पारब्रह्म अपने उत्पन्न किए हुए प्राणियों के आत्मिक जीवन को बड़े प्रेम से ध्यान लगाकर परखता है। गुणहीन मंदे जीवों को स्थान नहीं मिलता और गुणवान वास्तविक कोष में डाले

जाते हैं। अपनी आशा एवं चिन्ता को निवृत्त कर दे, इस तरह तेरी मलिनता धुल जाएगी॥ ४॥प्रत्येक व्यक्ति सुख की कामना करता है, कोई भी दुख की याचना नहीं करता। रसों-स्वादों के पीछे अत्यंत कष्ट प्राप्त होता है परन्तु मनमुखी प्राणी इसको नहीं समझते। जो सुख और दुख को एक समान जानते हैं और अपनी आत्मा को नाम के साथ अभेद करते हैं, वह ईश्वरीय सुख-समृद्धि प्राप्त करते हैं॥ ५॥ ब्रह्मा के वेद तथा व्यास के शब्दों के पाठ पुकारते हैं कि मौनधारी ऋषि, प्रभु के भक्त एवं साधक गुणों के भण्डार नाम के साथ रंगे हुए हैं। जो सत्यनाम के साथ रंग जाते हैं, वे सदैव विजय प्राप्त करते हैं। मैं उन पर सदैव ही बलिहारी जाता हूँ॥६॥ जिनके मुख में प्रभु का नाम नहीं, वे मैल से भरे रहते हैं और चारों ही युगों में मैले रहते हैं। जो भगवान से प्रेम नहीं करते उन भक्तिहीनों का भगवान के दरबार में मुँह काला किया जाता है और वे अपना मान-सम्मान गंवा लेते हैं। जिन्होंने भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया है, उन्हें उनके अवगुणों ने ठग लिया है, इसलिए वे विलाप करते हैं॥७॥ भगवान खोज करने से मिल जाता है। जब मनुष्य के मन में भगवान का भय पैदा हो जाता है फिर गुरु के द्वारा उसे भगवान मिल जाता है। जीवात्मा का स्वरूप ज्योति है। जब जीवात्मा को अपने ज्योति स्वरूप की पहचान हो जाती है तो वह अपने दसम द्वार रूपी घर में जाकर बसती है। उसकी अहंकार एवं तृष्णा मिट जाती है। हे नानक! जो व्यक्ति भगवान के नाम में मग्न रहते हैं, वे निर्मल हो जाते हैं और उनके मुख भी उज्ज्वल हो जाते हैं॥८॥७॥

सिरीरागु महला १ ॥ सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥ हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥ दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥ १ ॥ भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥ मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥ मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥ २ ॥ गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥ ३ ॥ बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥ तब लगु महलु न पाईऐ जब लगु साचु न चीति ॥ सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥ ४ ॥ हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥ सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥ सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥ ५ ॥ सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥ नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥ ६ ॥ सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥ सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥ बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥ ७ ॥ सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥ गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥ नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥ ८ ॥ ८ ॥

हे मेरे भूले बावले मन! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन। तू गुरु के चरणों में जाकर लग। तू ईश्वर का नाम जप और भगवान का ध्यान किया कर, नाम से यमदूत भी भयभीत होता है और समस्त दुख निवृत्त हो जाते हैं। अभाग्यशाली नारी बहुत कष्ट झेलती है, उसका सुहाग कैसे स्थिर रह सकता है॥ १॥ हे भाई! गुरु के बिना मेरा अन्य कोई भी स्थान नहीं। गुरु ने कृपा करके मुझे हरि-नाम की दौलत का खजाना प्रदान किया है, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ गुरु के उपदेश द्वारा बड़ा यश प्राप्त होता है। ईश्वर करे मेरा उनके साथ मेल-मिलाप हो। उसके बिना मैं क्षण-मात्र भी जीवित नहीं रह सकता। उसके नाम के बिना मैं प्राण त्याग देता हूँ। मुझ नेत्रहीन (ज्ञानहीन) को उस पारब्रह्म-प्रभु का नाम कदापि विस्मृत न हो। उसकी शरण में रह कर मैं अपने धाम (परलोक) में पहुँच जाऊँगा॥२॥

जिनका गुरु नेत्रहीन (ज्ञानहीन) है, उन शिष्यों को कहीं भी स्थान नहीं मिलता। सतिगुरु के बिना परमेश्वर का नाम प्राप्त नहीं होता। नाम के बिना मनुष्य जीवन का क्या मनोरथ है? उजाड़ गृह में कौए की भाँति चक्कर लगाने की तरह मनुष्य अपने आवागमन पर दुःख व्यक्त करता है॥३॥ नाम के बिना मानव देहि ऐसे संताप झेलती है जैसे शोरा लगी ईंटों की दीवार ध्वस्त होती है। जब तक सत्य नाम प्राणी के मन में प्रवेश नहीं करता, तब तक सत्य (प्रभु) की संगति इसे प्राप्त नहीं होती। नाम के साथ रंग जाने से अपने गृह में ही प्राणी को सदैव स्थिर मोक्ष–पद मिल जाता है॥४॥ मैं अपने गुरु से जाकर पूछूंगी और उससे पूछकर आचरण करूँगी। मैं नाम द्वारा भगवान की महिमा करूँगी चूंकि जो वह मेरे मन में आकर बस जाए और मेरे अहंकार का दुख जल जाए। सहज ही मेरा भगवान से मिलन हो जाए और मैं सत्य प्रभु में सदैव के लिए मिली रहूँ॥ ५॥ वही पवित्र पावन हैं जो काम, क्रोध एवं अहंकार को त्याग कर नाम में मग्न रहते हैं। वह सदैव ही नाम की महिमा करते हैं और भगवान को अपने ह्रदय में बसाते हैं। अपने चित्त के अंदर हम उसको क्यों भुलाएँ, जो समस्त प्राणियों का आधार है?॥ ६॥ जो व्यक्ति शब्द द्वारा अपने अहंकार को मार लेता है। वे मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है और पुनः दूसरी बार नहीं मरता। गुर–उपदेश से ही ईश्वर के नाम हेतु प्रीति उत्पन्न हो जाती है और परमात्मा मिल जाता है। ईश्वर के नाम बिना जगत् यथार्थ से अनजान होकर भटकता फिरता और पुनः पुनः आवागमन में पड़ता है॥७॥ हरेक अपने आप की प्रशंसा करता है और अपने आप को महान् बताना चाहता है। गुरु के बिना आत्म–पहचान नहीं हो सकती। केवल कहने–सुनने से क्या हो सकता है? हे नानक! यदि मनुष्य प्रभु के सुमिरन द्वारा आत्म–स्वरूप की पहचान कर ले तो वह अपने आप पर अहंकार नहीं करता॥८॥ ८॥

सिरीरागु महला १ ॥ बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥ ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥ दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥ १ ॥ मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥ बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥ सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥ गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥ २ ॥ सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥ मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥ हरि वरु घरि सोहागणी निरमल साचै नाइ ॥ ३ ॥ मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥ इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥ संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥ ४ ॥ खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥ सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ॥ साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥ ५ ॥ वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥ कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥ पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ ६ ॥ गुरमुखि तोलि तुोलाइसी सचु तराजी तोलु ॥ आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥ आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥ ७ ॥ कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥ काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥ नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥ ८ ॥ ९ ॥

प्राणपति परमेश्वर के बिना भार्या का हार–शृंगार एवं सुन्दर यौवन व्यर्थ एवं विनष्ट है। वह अपने प्राणपति की सेज का आनंद नहीं भोगती। पति की अनुपस्थिति पर उसका समस्त हार–शृंगार व्यर्थ है। भाग्यहीन पत्नी को अत्यंत कष्ट होता है। उसका पति उसकी गृह की सेज पर विश्राम नहीं करता॥१॥ हे मेरे मन! राम नाम जप, तभी सुख मिलेगा। गुरु के बिना भगवान से प्रेम नहीं होता। यदि नाम मिल जाए तभी प्यार का रंग चढ़ता है॥१॥ रहाउ॥ गुरु की सेवा से बड़ा सुख मिलता है और ज्ञान का

हार–शृंगार करने से पत्नी ईश्वर को अपने पति के तौर पर पा लेती है। प्रभु के प्रगाढ़ प्रेम द्वारा पत्नी निश्चित ही अपने प्रीतम की सेज पर आनंद पाती हैं। गुरु की कृपा से पत्नी की अपने प्राणपति प्रभु से पहचान होती है। गुरु के मिलन से वह सुशील नेक आचरण वाली हो जाती है॥२॥ हे जीव–स्त्री ! सत्य के द्वारा तू अपने पति से मिलन कर। उससे प्रेम करके तुम अपने प्रियतम पर आकर्षित हो जाओगी। हे जीव–स्त्री ! तेरे पति ने तुझे अपने प्रेम पर आकर्षित किया है, इसलिए उसके प्रेम में लीन हो जा। सत्य परमेश्वर के साथ उसका तन–मन प्रफुल्लित हो जाएँगे और उसका मोल नहीं पाया जा सकता। जिस जीव–स्त्री के हृदय में उसका पति–परमेश्वर समाया है, वह उसके सत्य नाम के साथ पवित्र हुई है॥३॥ यदि वह अपने अहंकार को चित्त के भीतर ही कुचल दे तो प्राणपति प्रभु उसे भरपूर सुख सम्मान देता है। धागे पिरोए हुए मोतियों की माला जैसे गले से मिलकर सुन्दर बनावट होती है, वैसे ही पति–पत्नी एक–दूसरे से मिल जाते हैं। सत्संग के भीतर गुरु द्वारा नाम का आश्रय लेने से सुकून प्राप्त होता है॥ ४॥ मनुष्य का मन एक क्षण में यूं हो जाता है, जैसे मृत जीवित हो जाए। वह एक क्षण में मृत समान हो जाता है। यह एक क्षण में कहाँ से आ जाता है और एक क्षण में कहाँ चला जाता है। यदि यह नाम को पहचान ले और नाम–सिमरन में लगा रहे फिर इसे मृत्यु दुखी नहीं करती॥ ५॥ जीव वणजारे हैं। वह जगत् में नाम का व्यापार करने आते हैं। वह प्रभु के दरबार में अपना वेतन लिखवाकर लाते हैं। जो सत्य की कमाई करते हैं और ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करते हैं। वह कर्मों का लाभ कमाते हैं। सत्य की पूँजी द्वारा वही गुरु प्राप्त करते हैं, जिनको तुल्य मात्र भी लोभ–लालच नहीं॥ ६॥ सत्य के तराजू पर सत्य के वजन से गुरमुख प्राणियों को गुरदेव स्वयं तोलते हैं तथा अन्यों को तुलाते हैं। गुरु ने, जिसका वचन सत्य है, आशा–तृष्णा जो सभी को बहका लेती है, उनकी रोकथाम (गुरु) करते हैं॥ परमेश्वर कर्मो अनुसार प्राणियों को स्वयं तराजू पर तोलता है, पूर्ण पुरुष का तोल–परिमाण पूर्ण है॥ ७॥ केवल कहने तथा बातचीत द्वारा किसी की मुक्ति नहीं होती और न ही ढेर सारे ग्रंथों के अध्ययन द्वारा। हरि की भक्ति और प्रीति के बिना तन की पवित्रता प्राप्त नहीं होती। हे नानक ! मुझे भगवान का नाम विस्मृत न हो और गुरु मुझे भगवान से मिला दे॥८॥९॥

सिरीरागु महला १ ॥ सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥ मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥ मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥ १ ॥ भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥ सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥ लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ॥ २ ॥ गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥ साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥ सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ॥ ३ ॥ भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥ ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥ सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥ ४ ॥ इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ॥ जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ॥ घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥ ५ ॥ मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥ बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥ साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥ ६ ॥ आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ॥ पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥ बिनु हरि नाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥ ७ ॥ तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥ हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥ नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥ ८ ॥ १० ॥

यदि प्राणी को पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तो उसे ज्ञान रूपी रत्न प्राप्त हो जाता है। यदि अपना मन अपने गुरु को अर्पित कर दे तो उसे सबका प्रेम प्राप्त हो जाता है। उसे गुरु से मोक्ष–रूपी धन मिल जाता है जो समस्त अवगुणों का नाश करने वाला है॥१॥ हे भाई ! गुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता। चाहे कोई भी जाकर ब्रह्मा, नारद एवं वेदों के रचयिता व्यास से पूछ ले॥१॥ रहाउ॥ ज्ञान एवं ध्यान गुरु के शब्द द्वारा ही प्राप्त होते हैं और गुरु अपने सेवक से अकथनीय हरि का वर्णन करवा देते हैं। गुरु जी हरे भरे, फल प्रदान करने वाले एवं छायादार पेड़ के समान हैं। सर्वगुण मणियाँ, जवाहर एवं पन्ने ये गुरु जी के अमूल्य भण्डार में हैं॥ २॥ गुरु जी के कोष गुरुवाणी में से पवित्र–पावन नाम की प्रीति प्राप्त होती है। अनंत परमेश्वर की पूर्ण कृपा द्वारा हम सत्य नाम का सौदा संचित करते हैं। सुखों के दाता सतिगुरु सुख प्रदान करने वाले, कष्ट निवृत्त करने वाले एवं दुष्कर्मों के दैत्यों का संहार करने वाले हैं॥३॥ यह भवसागर बड़ा विषम एवं भयानक है, इसका कोई भी तट नहीं तथा न ही उसका कोई आर–पार किनारा है। इसकी न ही कोई नैया, न ही कोई लकड़ी है, न ही कोई चप्पू और न ही कोई खेवट है। केवल सतिगुरु ही भयानक सागर पर एक जहाज है, जिसकी कृपा–दृष्टि मनुष्यों को पार कर देती है अर्थात् इहलोक से परलोक तक पहुँचाती है॥ ४॥ यदि मैं एक क्षण भर के लिए भी प्रीतम प्रभु को विस्मृत कर दूँ तो मुझे कष्ट घेर लेते हैं तथा सुख चला जाता है। जो जिह्वा प्यार से ईश्वर के नाम का उच्चारण नहीं करती, उसे जल जाना चाहिए, क्योंकि नाम का उच्चारण न करने वाली जिह्वा जलाने योग्य ही है। जब देहि का घड़ा टूट जाता है, मनुष्य बहुत पीड़ा तथा कष्ट भोगता है और यमदूत जब शिकंजे में लेता है तो मनुष्य अफसोस प्रकट करता है॥५॥ मनुष्य "मुझे, मैं, मेरी" पुकारते हुए संसार से चले गए हैं और उनका तन, धन एवं नारियाँ उनके साथ नहीं गई अर्थात् मृत्युकाल के समय कोई भी साथ नहीं देता। नामविहीन पदार्थ रसहीन है। धन इत्यादि के मोह में बहका हुआ प्राणी कुमार्ग लग जाता है। इसलिए गुरु के आश्रय में आकर परमेश्वर की भक्ति कर और अकथनीय परमात्मा का वर्णन कर॥६॥ प्राणी आवागमन के चक्कर में पड़कर जन्म लेता और मरता रहता है और योनियों में पड़ा रहता है। वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों अनुसार काम करता है। विधाता की लिखी विधि को कैसे मिटाया जा सकता है, जबकि लिखी विधि परमेश्वर की इच्छानुसार लिखी गई हो? ईश्वर के नाम के बिना प्राणी की मुक्ति नहीं हो सकती। गुरु उपदेशानुसार ही वह परमात्मा के मिलाप में मिल जाता है॥७॥ मेरे प्राणों के स्वामी परमात्मा के अलावा मेरा कोई भी अपना नहीं, मेरी आत्मा व जीवन सब पर उसका अधिकार है। हे मेरे अहंकार एवं सांसारिक मोह ! तू जल कर राख हो जा, मेरे लोभ, ममता, अभिमान इत्यादि सब जल जाएँ जो मुझे ईश्वर से दूर करते हैं। हे नानक ! नाम की आराधना करने से गुणों के भण्डार (ईश्वर) की प्राप्ति हो जाती है॥॥८॥१०॥

सिरीरागु महला १ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥ लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥ जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥ १ ॥ मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥ गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥ बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥ २ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ॥ सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ॥ करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥ ३ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ॥ आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥ आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥ ४ ॥ रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥ खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥ मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ ५ ॥ मनमुखि गणत

गणावणी करता करे सु होइ ॥ ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥ गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥ ६ ॥ सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ॥ निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥ ७ ॥ खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ॥ घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ मलि ॥ ८ ॥ बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥ सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥ ९ ॥ मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥ मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥ नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥ १० ॥ ११ ॥

हे मेरे मन! ईश्वर से ऐसी मुहब्बत कर, जैसी कमल की जल से है। इसको जल की लहरें टपका कर लगातार धकियाती हैं परन्तु फिर भी यह प्रेम के भीतर प्रफुल्लित रहता है। प्रभु जल के भीतर ऐसे प्राणी उत्पन्न करता है, जिनकी जल के बिना मृत्यु हो जाती है॥१॥ हे मेरे मन! प्रभु से प्रेम के बिना तेरी मुक्ति किस तरह होगी ? भगवान तो गुरु के हृदय में निवास करता है और वह जीवों को भक्ति के भण्डार प्रदान करता है अर्थात् गुरु की कृपा से ही भक्ति प्राप्त होती है॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे मन! ईश्वर से ऐसी प्रेम-भक्ति कर जैसी मछली की जल से है। जितना अधिक जल बढ़ता है उतना अधिक सुख प्राप्त करती है। मछली आत्मा, तन व शरीर में सुख-शाति अनुभव करती है। जल के बिना वह एक क्षण मात्र भी जीवित नहीं रहती। स्वामी उसके हृदय की पीड़ा को जानता है॥२॥ हे मेरे मन! ईश्वर से ऐसी प्रीति कर, जैसी चात्रिक की बारिश से प्रीति है। यदि वर्षा की बूँद इसके मुख में न पड़े, तो इसको लबालब भरे तालाबों एवं हरी-भरी धरती का क्या लाभ है? यदि परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हो तो वह बारिश की बूँदों की बौछार करेगा, अन्यथा अपने पूर्व कर्मों अनुसार वह अपना शीश दे देता है॥३॥ हे मेरे मन! तू परमेश्वर के साथ ऐसी प्रीति कर जैसी जल की दूध के साथ है। जल स्वयं तपस बर्दाश्त करता है और दूध को जलने नहीं देता। ईश्वर स्वयं ही बिछुड़ों का मिलन करवाता है और स्वयं ही सत्य द्वारा प्रशंसा प्रदान करता है॥४॥ हे मेरे मन! प्रभु से ऐसी प्रीति कर जैसी चकवी की सूर्य के साथ है। कुमार्गी पुरुष को सूझ नहीं पड़ती। गुरमुख के लिए प्रभु सदैव निकट ही है॥५॥ स्वार्थी प्राणी लेखा-जोखा करते हैं, परन्तु जो कुछ सृजनहार की इच्छा हो, वही होता है। चाहे सभी जैसी इच्छा करें, उसका मोल नहीं पाया जा सकता। परन्तु, गुरु की शिक्षा अनुसार इसका बोध होता है। परमात्मा से मिलन द्वारा सुख प्राप्त होता है॥६॥ यदि प्राणी को सतिगुरु मिल जाएँ तो सच्ची प्रीति नहीं टूटती। जब मनुष्य को ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो फिर उसे आकाश, पाताल, मृत्युलोक तीनों लोकों की सूझ हो जाती है। यदि प्राणी प्रभु के गुणों का ग्राहक बन जाए तो वह पवित्र नाम को कदापि विस्मृत नहीं करता॥७॥ जो जीव रूपी पक्षी संसार सागर के तट पर दाना चुगते थे, वह जीवन बाजी खेल कर चले गए हैं। प्रत्येक जीव ने एक घड़ी अथवा मुहूर्त उपरांत यहाँ से चले जाना है। उसकी खुशी का खेल आज अथवा कल के लिए है। हे प्रभु! तुझे वहीं मिलता है, जिसे तुम स्वयं मिलाते हो। वह यहाँ से सच्ची बाजी जीत कर जाता है॥८॥ इसलिए गुरु के बिना मनुष्य के मन में प्रभु के लिए प्रेम उत्पन्न नहीं होता और उसकी अहंकार की मलिनता दूर नहीं होती। जो ईश्वर की अपने हृदय में स्तुति करता है और उसके नाम के साथ बिंध गया है, उसकी तृप्ति हो जाती है। जब मनुष्य गुरु के ज्ञान द्वारा अपने स्वरुप को समझ लेता है, तब उसके लिए अन्य क्या करना या करवाना शेष रह जाता है ?॥९॥ उनको परमेश्वर से मिलाने बारे क्या कहना हुआ, जो आगे ही गुरु के शब्द द्वारा उसके मिलन में है। नाम प्राप्त करने से उनको संतोष हो गया है। मनमुख

प्राणियों को प्रभु का ज्ञान नहीं होता। ईश्वर से अलग होकर वे यमों की मार खाते हैं। हे नानक ! प्रभु का दर एवं घर ही जीव का एकमात्र सहारा है। उसके लिए अन्य कोई टिकाना नहीं है॥१०॥११॥

सिरीरागु महला १ ॥ मनमुखि भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥ गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥ गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥ १ ॥ बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥ भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूली फिरै दिसंतरी भूली ग्रिहु तजि जाइ ॥ भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥ धुरहु विछुंनी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥ २ ॥ विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम पिआरि ॥ साचि सहजि सोभा घणी हरि गुण नाम अधारि ॥ जिउ भावै तिउ रखु तूं मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥ ३ ॥ अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥ तीरथ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥ गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥ ४ ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥ सा धन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥ घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥ ५ ॥ गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥ गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥ नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥ ६ ॥ करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ॥ गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ॥ सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥ ७ ॥ भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥ गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ॥ नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥ ८ ॥ १२ ॥

मनमुख जीव-स्त्री भगवान को भूल जाती है। माया उसे मोह में फँसाकर भुला देती है। भूली हुई जीव-स्त्री को सहारा लेने हेतु कोई स्थान नहीं मिलता। गुरु के बिना कोई भी उसे प्रभु-मिलन का मार्ग नहीं दिखा सकता। वह ज्ञानहीन जन्मती-मरती रहती है। जिस ने ज्ञान-पदार्थ गंवा लिया है, वह लुट जाता है॥१॥ हे भाई ! भ्रम में पड़कर भूली हुई दुहागिन प्रभु पति के आलिंगन में नहीं आ सकती॥१॥ रहाउ॥ वह भूली हुई अपना घर छोड़कर चली जाती है और देश-देशांतरों में भटकती रहती है। संदेह के कारण उसका चित्त डगमगाता फिरता है और वह अपना सद्मार्ग भूलकर ऊँचे मैदानों तथा पर्वतों पर आरोहण करती है। वह आदि से ही प्रभु के हुक्म से बिछुड़ी हुई है, वह प्रभु से कैसे मिल सकती है? अहंकारवश ठगी हुई वह दुखी होकर विलाप करती है॥२॥ गुरु जी बिछुड़ी आत्माओं का प्रभु के साथ मिलन करवा देते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रेम से नाम जप कर हरि रस का आनंद प्राप्त करते हैं। सत्य ईश्वर के यशोगान से उन्हें सहज अवस्था की उपलब्धि होती है और मनुष्य बहुत शोभा प्राप्त करता है। वे हरि नाम के सहारे रहते हैं। हे प्रभु ! जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तुम मुझे रखो चूंकि तेरे अलावा मेरा अन्य कोई नहीं॥३॥ निरंतर ग्रंथों के अध्ययन करके मनुष्य भूल में पड़ जाते हैं और धार्मिक वेष धारण करके वे बहुत अभिमान करते हैं। तीर्थ स्थल पर स्नान करने का क्या लाभ है, जबकि उसके चित्त में अहंकार की मैल है? मन शरीर रूपी नगरी का राजा है, सुलतान है। इसे गुरु बिना अन्य कौन समझा सकता है॥४॥ गुरु द्वारा वास्तविकता को सोचने-समझने से प्रभु-प्रेम का धन प्राप्त होता है। अपने आपको गुरु के शब्द द्वारा श्रृंगार कर, पत्नी ने अपना अहंकार निवृत्त कर दिया है। गुरु के अपार प्रेम द्वारा वह अपने गृह के भीतर ही उस प्रीतम को प्राप्त कर लेती है॥ ५॥ गुरु की चाकरी और सेवा करने से मन निर्मल हो जाता है और उसे सुख की उपलब्धि होती है। जब गुरु का शब्द अंतःकरण में निवास कर लेता है तो अभिमान भीतर से निवृत्त हो जाता है। इससे नाम रूपी दौलत प्राप्त हो जाती है और आत्मा सदैव लाभ अर्जित करती है॥ ६॥ यदि हम पर परमात्मा की अनुकंपा हो तो हमें नाम प्राप्त होता है। हम अपने साधन से इसे

प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए अहंकार का नाश करके गुरु के आश्रय में आओ। सत्यनाम के साथ रंग जाने से सच्चा साहिब परमात्मा प्राप्त हो जाता है॥ ७॥ सारे प्राणी भूल करने वाले हैं परन्तु गुरु और सृष्टिकर्त्ता परमात्मा ही अचूक है। जिसने गुरु के उपदेश द्वारा अपने मन को सुधारा है, उसका ईश्वर से स्नेह हो जाता है। हे नानक ! जिसे अपार प्रभु अपने नाम के साथ मिला लेता है। वह सत्यनाम को कदापि विस्मृत नहीं करता॥ ८॥ १२॥

सिरीरागु महला १ ॥ त्रिसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ॥ धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥ मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥ १ ॥ मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥ जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥ वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥ २ ॥ आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥ नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥ जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥ ३ ॥ गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥ असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥ आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥ ४ ॥ तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥ गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥ ५ ॥ जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥ गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥ बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥ ६ ॥ आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ ॥ आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥ अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥ ७ ॥ सरबे थाई एकु तूं जिउ भावै तिउ राखु ॥ गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साखु ॥ हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥ ८ ॥ आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥ आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइ ॥ नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइ ॥ ९ ॥ १३ ॥

मोहिनी माया की तृष्णा पुत्रों, रिश्तेदारों एवं घर की स्त्री सब को लगी हुई है। इस जगत् को धन, यौवन, लालच, लोभ और अहंकार ने छल लिया है। मोह रूपी ठग बूटी के हाथों मैं लुट गई हूँ। ऐसा हाल ही बाकी दुनिया का (इसके द्वारा) होता है॥१॥ हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तुझ बिन मेरा अन्य कोई नहीं। तुझ बिन, अन्य कुछ भी मुझे नहीं लुभाता। तुझे प्रेम करने से मुझे सुख–शांति प्राप्त होती है॥१॥ रहाउ॥ गुरु के शब्द द्वारा संतोष धारण करो और प्रेमपूर्वक परमात्मा के नाम की सराहना करो। समस्त दृश्यमान संसार नश्वर है, इसके झूठे मोह के साथ प्रीति न लगा। तुम मार्ग के पथिक की भाँति आए हो अर्थात् सारा जगत् यात्री है। प्रतिदिन अपने साथियों को हम चलता देखते हैं॥२॥ कई पुरुष धर्मोपदेश का प्रचार करते हैं, परन्तु गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता। यदि व्यक्ति को नाम की प्रशंसा प्राप्त हो जाए तो वह सत्य के साथ रंग जाता है और मान–सम्मान पा लेता है। हे प्रभु ! जो तुझे अच्छे लगते हैं, वह सर्वोत्तम हैं। अपने आप कोई भी खोटा अथवा खरा नहीं॥ ३॥ गुरु की शरण लेने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है। मनमुख की पूँजी ही असत्य है। बादशाह की अपनी आठ धातुओं पर अधिकार होता है। उसकी इच्छानुसार ही सिक्के ढाले जाते हैं और मूल्य पाया जाता है। परीक्षक स्वयं ही सिक्कों की परीक्षा कर लेता है और विशुद्ध को अपने कोष में डाल लेता है॥४॥ हे प्रभु ! तेरा मूल्य नहीं पाया जा सकता। मैंने सब कुछ मूल्यांकन करके देख लिया है। कहने से उसकी गहराई नहीं पाई जा सकती। यदि मनुष्य सत्य के अंदर टिक जाए, वह सम्मान पा लेता है। गुरु के उपदेश द्वारा हे प्रभु ! मैं तेरी कीर्ति करता हूँ। कोई अन्य तरीका तेरी कद्र बयान करने का

नहीं॥ ५॥ जिस तन को नाम अच्छा नहीं लगता, वह तन अहंकार वाद–विवाद का सताया हुआ है। गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता, अन्य रस पूरी तरह विषैले हैं। गुणों के बिना कुछ भी काम नहीं आना। धन–दौलत का स्वाद बहुत फीका है॥६॥ आशा में ही मनुष्य उत्पन्न हुआ है और आशा के अंदर ही वह मीठे तथा खट्टे पदार्थ सेवन करता है। तृष्णा में बंधा हुआ वह आगे को धकेला जाता है और अपने मुख पर पुनःपुनः चोटें खाता है। अवगुणों का फँसा हुआ वह अपने कर्मों की मार खाता है। लेकिन गुरु की शिक्षा अनुसार नाम–सिमरन करने से उसकी मुक्ति हो जाती है॥७॥ हे जगत् के पालनहार ! तुम सर्वव्यापक हो, संसार के कण–कण में तुम विद्यमान हो। जिस तरह तुझे लुभाता है उसी तरह मेरी रक्षा करो। गुरु–उपदेशानुसार सत्यनाम मनुष्य के हृदय में वास करता है। नाम की संगति में उसकी बहुत इज्जत होती है। अहंकार के रोग को दूर करके वह परमात्मा के सत्यनाम की आराधना करता है॥८॥ हे प्रभु ! तुम आकाश, पाताल तीनों लोकों में समाए हुए हो। तुम ही जीवों को भक्ति में लगाते हो और स्वयं ही तुम अपने मिलाप में मिलाते हो। हे नानक ! मैं प्रभु के नाम को कदाचित विस्मृत न करूँ। हे जगत् के पालनहार ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तेरी इच्छा काम करती है, अपनी इच्छानुसार ही मेरी पालना करो॥६॥१३॥

सिरीरागु महला १ ॥ राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥ सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरि नामु अधारु ॥ १ ॥ मन रे साची खसम रजाइ ॥ जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥ तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥ हरि नामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥ २ ॥ अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ॥ तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥ हरि नामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ ३ ॥ कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥ भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥ राम नामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥ ४ ॥ मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥ केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोख दुआर ॥ सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥ ५ ॥ सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥ इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥ करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥ ६ ॥ साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ॥ अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ पी अंम्रितु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥ ७ ॥ घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥ विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥ नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥ ८ ॥ १४ ॥

राम नाम से मेरा मन बिंध गया है। इसलिए किसी अन्य के विचार की कोई आवश्यकता नहीं रह गई ? नाम में सुरति लगाने से मन में आनंद उत्पन्न होता है। अब मैं प्रभु के प्रेम में रंग गया हूँ, यही सुख का आधार है। हे ईश्वर ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मुझे रखो, तेरा हरि–नाम मेरा आधार है॥१॥ हे मेरे मन ! पति–परमेश्वर की इच्छा ही बिल्कुल सत्य है, तुम उसी के प्रेम में लीन रहो, जिसने तेरे तन एवं मन की रचना करके संवारे हैं॥१॥ रहाउ॥ यदि मैं अपने तन को रत्ती–रत्ती के टुकड़ों में काटकर अग्नि में जला दूँ, यदि मैं अपने तन तथा मन को ईंधन बना लूँ और दिन–रात इनको अग्नि में प्रज्वलित करूँ और यदि मैं लाखों–करोड़ों धार्मिक यज्ञ करूँ तो भी ये सारे कर्म हरि–नाम के तुल्य नहीं पहुँचते॥२॥ यदि मेरे सिर पर आरा रख कर मेरी देहि को दो आधे–आधे टुकड़ों में कटवा दिया जाए अथवा हिमालय की बर्फ में जाकर गाल दिया जाए तो भी मन के रोग निवृत्त नहीं होते। ये ईश्वर के नाम के तुल्य नहीं पहुँचते। यह सब कुछ मैंने जांच–परखकर निर्णय करके देख लिया है॥३॥ यदि मैं सोने के किले दान करूँ और बहुत सारे बढ़िया नस्ल के हाथी–घोड़े

दान करूँ और यदि भूमिदान तथा बहुसंख्यक गाएँ भी दान करूँ, तो भी मेरे मन के भीतर अहंकार एवं घमंड विद्यमान रहेगा। राम नाम ने मेरा मन विंध लिया है और गुरु की कृपा–दृष्टि ने मुझे सच्चा दान प्रदान किया है, इस राम नाम में ही मेरा मन लीन हो गया है॥४॥ मनुष्य अपने मन के हठ से कितने ही कर्म अपनी बुद्धि अनुसार करता है और वेदों में बताए हुए अन्य कितने ही कर्मकांड करता है उसकी आत्मा को कितने ही बंधन पड़े हुए हैं। मोक्ष द्वार गुरु द्वारा ही मिलता है। सभी धर्म–कर्म प्रभु के नाम से न्यून हैं। सत्य आचरण सर्वश्रेष्ठ है॥ ५॥ सभी जीवों को ऊँचा समझना चाहिए और जीवों को अपने से नीचा मत समझो। क्योंकि यह सभी शरीर रूपी बर्तन एक प्रभु की रचना हैं। तीनों लोकों के जीवों में एक ही प्रभु की ज्योति प्रज्वलित हो रही है। प्रभु का सत्य नाम उसकी कृपा से ही मिलता है। आदि से लिखी हुई प्रभु की मेहर को कोई मिटा नहीं सकता॥६॥ जब कोई साधु दूसरे साधु से मिलता है तो गुरु की प्रीति द्वारा वह संतोष प्राप्त कर लेता है। यदि मनुष्य सतिगुरु में लीन हो जाए तो वह अकथनीय स्वामी की वार्ता को सोचने समझने लग जाता है। सुधा रस अमृत पान से वह तृप्त हो जाता है और मान–प्रतिष्ठा का वेष धारण करके प्रभु के दरबार को जाता है॥७॥ रात–दिन उन सबके हृदय में अनहद शब्द रूपी वीणा बज रही है, जो ईश्वर के नाम से प्रेम करते हैं। कोई विरला प्राणी ही है जो गुरु की अनुकंपा से अपनी आत्मा को सद्मार्ग में लगाकर ज्ञान प्राप्त करता है। हे नानक! मुझे भगवान का नाम कभी भी विस्मृत न हो। मनुष्य जन्म–मरण के चक्र में से नाम की साधना करके ही मुक्त हो सकता है॥८॥१४॥

सिरीरागु महला १ ॥ चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर ॥ करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥ अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥ १ ॥ भाई रे तनु धनु साथि न होइ ॥ राम नामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥ आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥ २ ॥ मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥ नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥ गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥ ३ ॥ चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥ बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥ मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥ ४ ॥ साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥ रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥ पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥ ५ ॥ बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥ सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥ नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरि गुर दरसु न होइ ॥ ६ ॥ जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जब लगि निद्रा होइ ॥ इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ ॥ गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जगु लोइ ॥ ७ ॥ अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥ बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥ नानक गुरमुखि हरि रसि मिलै जीवा हरि गुण गाइ ॥ ८ ॥ १५ ॥

मनुष्य को अपने चित्रित किए महल दिखाई देते हैं जिनके सफेद एवं सुन्दर द्वार हैं। उसने उन्हें मन में बड़े चाव से माया के प्रेम में बनाया है परन्तु उसका हृदय भगवान के प्रेम के बिना खाली है। उसके ये सुन्दर महल ध्वस्त हो जाएँगे और उसका शरीर भी राख का ढेर हो जाएगा॥१॥ हे भाई! मृत्यु के समय तन और धन तेरे साथ नहीं जाएँगे। राम का नाम ही निर्मल धन है। भगवान का रूप गुरु ही नाम का दान जीव को देते हैं॥१॥ रहाउ॥ राम नाम रूपी निर्मल धन मनुष्य को तभी मिलता है, यदि देने वाला गुरु स्वयं ही प्रदान करें। सृष्टिकर्ता रुप गुरु जिसका मित्र बन जाए, उसकी आगे परलोक में पूछताछ नहीं होती। यदि ईश्वर मनुष्य को स्वयं मुक्त करे, तो वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह

स्वयं ही क्षमाशील है॥ २॥ कुमार्गी पुरुष पुत्र-पुत्रियों एवं सगे-संबंधियों को अपना मान बैठता है। वह अपनी गृहलक्ष्मी पत्नी को देख कर बड़ा प्रसन्न होता है। उसे हर्ष-शोक दोनों का सामना करना पड़ता है। पर गुरमुख गुरु-शब्दों द्वारा हरि-नाम में लिवलीन हैं और वह दिन-रात प्रभु के अमृत का आनंद लेते हैं॥ ३॥ शाक्त व्यक्ति का मन क्षण-भंगुर धन-दौलत की तलाश में भटकता रहता है। जबकि पदार्थ उनके गृह के पवित्र स्थान में है, मनुष्य उसकी बाहर तलाश करने से बर्बाद हो जाते हैं। गुरमुख इसको अपने दामन में प्राप्त कर लेते हैं, जबकि कुमार्गी अहंकार द्वारा इसको गंवा लेते हैं॥४॥ हे गुणहीन शाक्त! तू अपने मूल की पहचान कर। यह शरीर रक्त और वीर्य का बना है। इसका अन्त अग्नि में जलकर राख हो जाने में है। यह शरीर प्राण रूप वायु के वश में है। तेरे माथे पर सच्चा निशान पड़ा हुआ है कि तूने कितने समय तक जीना है॥५॥ प्रत्येक प्राणी लम्बी आयु की कामना करता है और कोई भी मरना नहीं चाहता। उसी का जीवन सुखदायक कहा जा सकता है, जिस सज्जन पुरुष के भीतर गुरु-कृपा से प्रभु वास करता है, नाम-विहीन प्राणी का क्या महत्त्व है जिसको भगवान का रूप गुरु के दर्शन नहीं होते॥६॥ जिस तरह मनुष्य स्वप्न में रात्रिकाल निद्रा-मग्न रहता है, भूला फिरता है, इसी तरह वह प्राणी मुश्किलों में भटकता है, जिसके हृदय में अहंकार तथा द्वैत-भावना है और जो माया रूपी सर्पिणी के वश में है। गुरु के उपदेशानुसार ही प्राणी अनुभव करता एवं देखता है कि यह संसार केवल स्वप्न मात्र ही है॥ ७॥ जिस तरह जल से अग्नि बुझ जाती है, जिस तरह माता के दुग्ध से शिशु संतुष्ट हो जाता है। जिस तरह जल के बिना कमल नहीं रहता और जिस तरह जल के बिना मछली मर जाती है, इसी तरह ही हे नानक! यदि मुझे गुरु द्वारा हरि रस मिल जाए तो ही मैं भगवान की महिमा गाकर जीवित रह सकता हूँ॥८॥१५॥

सिरीरागु महला १ ॥ डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥ ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥ गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥ १ ॥ भाई रे भवजलु बिखमु डरांउ ॥ पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरि नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥ जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥ भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ॥ २ ॥ दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥ हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥ किस ही नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार ॥ ३ ॥ सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥ सभ जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥ पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥ ४ ॥ पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ॥ चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ु रूपु सीगारु ॥ खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ॥ ५ ॥ महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ॥ चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ॥ मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ॥ ६ ॥ हउमै करि करि जाइसी जो आइआ जग माहि ॥ सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥ गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥ ७ ॥ नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ॥ मै हरि नामु न वीसरै हरि नामु रतनु वेसाहु ॥ मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ॥ ८ ॥ १६ ॥

मैं अपने पीहर (इहलोक) में भयानक पर्वत देखकर सहम गई हूँ। पर्वत ऊँचा और चढ़ाई कठिन है। वहाँ तक पहुँचने के लिए कोई भी सीढ़ी नहीं। गुरु की कृपा से मैंने पर्वत को भीतर ही पहचान लिया है। गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है और मैं (भवसागर) से पार हो गई हूँ॥१॥ हे भाई! भवसागर बड़ा विषम एवं भयभीत करने वाला है। यदि हरि रस का पान कराने वाला पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तो गुरु उसे भगवान का नाम प्रदान करके भवसागर से पार करवा देते हैं॥१॥ रहाउ॥ यदि मैं कहूँ, "मैंने चले

जाना है'' इसका मुझे कोई लाभ नहीं होना। परन्तु यदि मैं वास्तव तौर पर अनुभव कर लूँ मैं कूच कर जाने वाला हूँ, तभी होगा। जो कोई भी दुनिया में आया है, वह एक न एक दिन चला जाएगा केवल करतार रूप गुरु ही अमर है। इसलिए सच्चे स्थान सत्संगत में मिलकर श्रद्धा से सत्य परमात्मा की महिमा–स्तुति करनी चाहिए॥२॥ जिनके पास सुन्दर दरवाजे, मकान, मन्दिर एवं हजारों ही मजबूत किले, हाथी–घोड़े पालकियाँ एवं लाखों ही सेना हो, इन में कुछ भी किसी के साथ नहीं जाते। मूर्ख लोग व्यर्थ ही इनके लिए जूझ–जूझकर मरते हैं॥ ३॥ मनुष्य सोना तथा चांदी कितना भी एकत्रित कर ले, परन्तु दौलत मनुष्य को फँसाने वाला जाल है। वह अपनी सल्तनत का ढिंढोरा सारे जगत् में करवा दें परन्तु हरि–नाम के बिना मृत्यु उसके सिर पर सवार है। जब मनुष्य प्राण त्याग देता है तो शरीर पार्थिव हो जाता है और जीवन का अंत हो जाता है। तब दुष्टों का क्या हश्र होगा॥४॥ मनुष्य अपने पुत्रों को देखकर एवं अपनी पत्नी को सेज पर निहार कर बहुत खुश होता है। मनुष्य शरीर पर इत्र और चन्दन लगाता है और सुन्दर वस्त्रों के साथ अपना शृंगार करता है। किन्तु जब वह प्राण त्याग कर इस संसार से चला जाता है तो शरीर मिट्टी में मिला दिया जाता है॥५॥ कोई व्यक्ति स्वयं को भूमिपति, महाराजा, बादशाह, उच्चाधिकारी कहलवाता है। कोई स्वयं को चौधरी एवं नवाब कहलवाता है परन्तु ये सभी अभिमान की अग्नि में जल मरते हैं। मनमुख जीव ने भगवान के नाम को भुला दिया है। वह ऐसे बन गया है जैसे जंगल को लगी अग्नि में जला हुआ सरकण्डा होता है॥६॥ जो भी इस संसार में आया है, उसको अभिमान बुरी तरह लिपटा हुआ है और अभिमान का खेल खेलकर गमन कर जाता है। यह संसार कालिख की कुटिया है। शरीर, आत्मा एवं मनुष्य तन सब उसके साथ काले हो जाते हैं। लेकिन जिनकी गुरु जी स्वयं रक्षा करते हैं, वह निर्मल हैं और ईश्वर के नाम के साथ वह तृष्णाओं की अग्नि को बुझा देते हैं॥७॥ हे नानक! सम्राटों के सम्राट परमेश्वर के सत्यनाम के साथ मनुष्य भवसागर पार कर जाता है। हे प्रभु! मुझे आपका हरि–नाम कदापि विस्मृत न हो, मैंने हरि के नाम का आभूषण खरीद लिया है। स्वेच्छाचारी भयानक भवसागर में माया–लिप्त होने के कारण नष्ट हो जाते हैं परन्तु गुरमुख भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ८॥ १६॥

सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥ मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥ १ ॥ दुनीआ कैसि मुकामे ॥ करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥ पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देव सथानि ॥ २ ॥ सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥ दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥ ३ ॥ सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥ घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥ ४ ॥ सबदाह माहि वखाणीऐ विरला त बूझै कोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥ ५ ॥ अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु ॥ सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥ ६ ॥ मुकामु तिस नो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥ ७ ॥ दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥ मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥ ८ ॥ १७ ॥ महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥

यदि कोई प्राणी सांसारिक गृह को अपना स्थाई निवास समझकर बैठा रहे, परन्तु फिर भी उसे यहाँ से गमन कर जाने की (मृत्यु की) सदैव चिन्ता लगी रहती है। इस संसार घर को स्थाई निवास तभी समझा जा सकता है, यदि इस जगत् ने सदैव स्थिर रहना हो, परन्तु यह जगत् तो क्षणभंगुर है॥१॥ यह दुनिया स्थाई कैसे हो सकती है? इसलिए श्रद्धायुक्त होकर शुभ कर्म करके सदाचरण की

कमाई कर और ईश्वर भक्ति में लीन रह॥१॥ रहाउ॥ योगी ध्यान–अवस्था में आसन बनाकर विराजमान होता है और मुल्लां विश्राम स्थल पर विराजता है। ब्राह्मण ग्रंथों का पाठ करते हैं और सिद्ध देव–मन्दिरों में वास करते हैं॥२॥ देवता, सिद्ध–पुरुष, शिवगण, गंधर्व, ऋषि–मुनि, शेख, पीर, सेनापति समस्त उच्चाधिकारी एक–एक करके प्राण त्याग गए हैं और जो दिखाई दे रहे हैं, वे भी चले जाने वाले हैं॥ ३॥ सम्राट, खान, फरिश्ते व सरदार बारी–बारी संसार त्याग गए हैं। प्राणी को एक क्षण या घड़ी में यह संसार त्यागना पड़ेगा। हे मेरे मन! तुम भी वहाँ पहुंचने वाले हो, इस संसार को त्याग कर तुम भी परलोक गमन करोगे॥४॥ शब्दों द्वारा तो सभी कहते हैं परन्तु किसी विरले को ही इस बारे ज्ञान है। नानक प्रार्थना करते हैं कि वह प्रभु जल, थल, पाताल, आकाश में विद्यमान हैं॥५॥ अल्लाह को जाना नहीं जा सकता। वह अगम्य एवं कुदरत का मालिक है, सृष्टि–रचयिता एवं जीवों पर मेहर करने वाला है। शेष सारी दुनिया जन्म एवं मृत्यु के अधीन है। परन्तु जीवों पर मेहर करने वाला एक अल्लाह ही सदैव स्थिर है॥६॥ स्थिर केवल उसे ही कहा जा सकता है, जिसके सिर पर कर्मों का आलेख नहीं। गगन तथा धरती नष्ट हो जाएँगे परन्तु सदैव स्थिर केवल ईश्वर ही रहेगा॥७॥ दिन में उजाला करने वाला सूर्य नाश हो जाएगा और रात्रि व चाँद नष्ट हो जाएँगे और लाखों ही सितारे लुप्त हो जाएँगे। नानक सत्य कथन करता है कि एक अल्लाह ही अनन्त है॥८॥१७॥ प्रथम सतिगुरु नानक देव जी की सत्रह अष्टपदियाँ।

सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि क्रिपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥ आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥ हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥ १ ॥ भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥ जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥ २ ॥ देखि कुटंबु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥ प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ॥ ३ ॥ पेईअड़ै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥ बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ॥ हरि सुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥ ४ ॥ पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥ जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥ ५ ॥ आपे नदरि करे भाउ लाए गुर सबदी बीचारि ॥ सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै त्रिसना मारि ॥ हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उर धारि ॥ ६ ॥ प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥ नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ॥ सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥ ७ ॥ आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ॥ नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥ ८ ॥ १ ॥ १८ ॥

यदि गुरु कृपा करे तो ही मनुष्य भक्ति करता है, गुरु के बिना भक्ति नहीं हो सकती। यदि गुरु जी दया करके अपनी संगति में रखें तो ईश्वर बोध का रहस्य समझकर प्राणी निर्मल हो जाता है। भगवान सत्य है और उसकी वाणी भी सत्य है। शब्द द्वारा ही प्राणी का ईश्वर से मिलन होता है॥ १॥ हे भाई! भक्तिविहीन प्राणी इस जगत् में क्यों आया है? यदि इस संसार में उसने पूर्ण गुरु

की सेवा का फल प्राप्त नहीं किया तो उसने यह जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर जगत् के जीवों का दाता और जगत् का पालनहार है और क्षमा प्रदान करके तुच्छ जीवों को अपने साथ मिला लेता है। ये जीव–जन्तु बेचारे क्या हैं ? वह क्या कह तथा समझ–सुना सकते हैं? गुरमुख को ईश्वर स्वयं मान–प्रतिष्ठा प्रदान करता है और स्वयं ही अपनी भक्ति में लगाता है॥ २॥ अपने कुटुम्ब को देखकर उसके आकर्षण में प्राणी लुभायमान हो गया है परन्तु मृत्युकाल पर कोई भी साथ नहीं देता अर्थात् परलोक गमन के समय कोई भी सदस्य साथ नहीं जाता। जिसने सतिगुरु की भरपूर सेवा करके गुणों के भण्डार प्रभु को प्राप्त कर लिया है उसका मूल्य नहीं आंका जा सकता। पूज्य प्रभु मेरा मित्र है और अंतिम काल मेरा सहायक होगा॥३॥ जगत् का पालनहार, प्राणदाता, प्रभु पीहर इस संसार में ही है जिसे इसी लोक में पाया जा सकता है। उससे बेखबर मनमुख प्राणी ने अपना सम्मान गंवा दिया है। सतिगुरु के बिना कोई भी ईश्वर का मार्ग नहीं जानता। अज्ञानन्ध प्राणी को परलोक में स्थान नहीं मिलना। यदि सुखदाता परमेश्वर मनुष्य के हृदय में निवास नहीं करता तो अंतिमकाल वह मनुष्य पश्चाताप करता हुआ गमन कर जाता है॥४॥ जिसने गुरु से मति लेकर जगत् के जीवन एवं जीवों के दाता प्रभु को अपने मन में बसा लिया है, वह प्रतिदिन भगवान की भक्ति करता है तथा वह अपने अहंत्व एवं मोह को मिटा देता है। मनुष्य जिसके प्रेम में मग्न रहता है, वह स्वयं भी उस जैसा बन जाता है तथा सत्य में ही समा जाता है॥ ५॥ जिस पर भगवान स्वयं कृपा–दृष्टि करता है, उसके भीतर अपना प्रेम उत्पन्न कर देता है। फिर वह गुरु की वाणी द्वारा भगवान की महिमा का विचार करता है। सतिगुरु की सेवा से प्राणी को बड़ा सुख उत्पन्न होता है और मनुष्य का अहंकार एवं तृष्णा मिट जाती है। गुणदाता प्रभु क्षमाशील है, वह सदैव ही उसके चित्त में वास करता है, जो सत्य को अपने हृदय में बसाए रखता है॥ ६॥ मेरा प्रभु सदैव निर्मल है। निर्मल मन के साथ ही वह प्राप्त होता है। यदि गुणों के भण्डार भगवान का नाम उसके हृदय में बस जाए, तो अहंकार एवं दुःख निवृत्त हो जाते हैं। सतिगुरु ने मुझे परमात्मा का नाम सुनाया है। मैं उन पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ ७॥ प्राणी के अन्तर्मन का अभिमान कहने–कहलाने अथवा पढ़ने–पढ़ाने से दूर नहीं होता और गुरु के बिना अभिमान का कोई अंत नहीं। हरि आप ही भक्त–वत्सल है, और सुखों का दाता है। वह कृपा करके स्वयं ही मन में आकर बसता है। हे नानक ! भगवान स्वयं ही गुरु के माध्यम से मनुष्य को शोभा, सुरति एवं ख्याति प्रदान करता है॥ ८॥ १॥ १८॥

सिरीरागु महला ३ ॥ हउमै करम कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ॥ जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥ १ ॥ मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥ सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥ २ ॥ जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ॥ हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दरि थाइ ॥ ३ ॥ गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ ना जाइ ॥ जे सउ अंम्रितु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ॥ ४ ॥ से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥ सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥ ५ ॥ मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिम्रिति सासत सोधहु जाइ ॥ मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥ ६ ॥ हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥ ७ ॥ नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥ गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥ ८ ॥ २ ॥ १९ ॥

जो प्राणी अपने कर्म अहंकारवश करते हैं, उन्हें यमदूतों की बड़ी प्रताड़ना सहन करनी पड़ती है। जो प्राणी सतिगुरु की सेवा करते हैं, वे भगवान में सुरति लगाकर यमदूतों की प्रताड़ना से बच जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! गुरु की संगति में ईश्वर की आराधना कर। जिनके भाग्य में विधाता ने पूर्व से ही निर्दिष्ट कर लिखा है, वह सतिगुरु के उपदेश द्वारा नाम के अंदर लिवलीन हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु के बिना प्राणी के हृदय में भगवान के प्रति श्रद्धा कायम नहीं होती और न ही ईश्वर नाम के साथ प्रीति उत्पन्न होती है। ऐसे प्राणी को स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता और वह पीड़ा में ही सोता और मरता है॥ २॥ चाहे जीव भगवान का नाम जपने की तीव्र इच्छा रखता हो परन्तु उसके पूर्व जन्म के कर्म मिटाए नहीं जा सकते। भक्तों ने भगवान की इच्छा को ही माना है और ऐसे भक्त भगवान के दरबार पर स्वीकृत हुए हैं॥ ३॥ गुरु बड़ी प्रेम–भावना से उपदेश प्रदान करते हैं परन्तु उसकी कृपा के बिना नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती। चाहे विषैले पौधे को सैंकड़ों बार अमृत रस से सींचा जाए, फिर भी विषैले पौधे पर विषैले फल ही लगेंगे॥ ४॥ वह पुरुष सत्यवादी एवं निर्मल हैं, जिनका सतिगुरु के साथ प्रेम है। वह सतिगुरु की इच्छानुसार कर्म करते हैं और अहंकार एवं बुराइयों के विष को त्याग देते हैं॥ ५॥ मन के हठ द्वारा किसी भी विधि से मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती। चाहे स्मृति, शास्त्रादि प्रामाणिक ग्रंथों का अध्ययन करके देख लो। जो साधु की संगति में मिलकर गुरु की वाणी की साधना करते हैं, वे जन्म–मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं॥ ६॥ हरि का नाम गुणों का अमूल्य भण्डार है, जिसका कोई अंत अथवा पारावार नहीं। परमात्मा की जिन पर कृपा होती है, वहीं गुरमुख शोभा पाते हैं॥ ७॥ हे नानक! एक प्रभु ही समस्त जीवों का दाता है, अन्य दूसरा कोई नहीं। गुरु की कृपा से ही प्रभु की प्राप्ति होती है और प्रारब्ध द्वारा ही गुरु जी मिलते हैं॥ ८॥ २॥ १६॥

सिरीरागु महला ३ ॥ पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥ हरि रसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥ निज घरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥ १ ॥ मन रे गुर की कार कमाइ ॥ गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरि नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥ जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥ बिनु गुर महलु न जापई ना अंम्रित फल पाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि ब्रहमु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥ साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥ अंम्रित फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥ ३ ॥ मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥ तिंना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥ कटीअहि तै नित जालीअहि ओना सबदु न नाउ ॥ ४ ॥ हुकमे करम कमावणे पइऐ किरति फिराउ ॥ हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥ हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥ ५ ॥ हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥ मनहठि करम कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥ अंतरि सांति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥ ६ ॥ गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥ सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥ आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥ ७ ॥ सभ नदरी करम कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥ जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥ नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ॥ ८॥ ३॥ २०॥

जीव रूपी पक्षी, शरीर रूपी सुन्दर वृक्ष पर विराजमान होकर गुरु जी की इच्छानुसार सत्य नाम रूपी दाना चुगता है। वह हरि रस का पान करता है, और परम आनंद में रहता है और वह वहाँ न ही उड़ता, आता या जाता है। वह अपने आत्म स्वरूप के अन्दर आवास हासिल कर लेता है और हरि–नाम में लीन हो जाता है॥१॥ हे मेरे मन! तू गुरु की सेवा करके उनके उपदेशानुसार पालन

कर। यदि तुम गुरु की इच्छानुसार चलोगे, तब तुम रात-दिन ईश्वर के नाम में लीन रहोगे॥१॥ रहाउ॥ कई शरीर रूपी वृक्ष अत्यन्त सुन्दर हैं परन्तु जीव रूपी पक्षी उन पर टिक कर नहीं बैठते। वह माया रूपी दाना चुगने के लिए उड़कर चारों दिशाओं में जाते रहते हैं। जितना अधिक वह (ऊपर) उड़ते हैं, उतना अधिक कष्ट सहन करते हैं। वे सदैव दुखों-संतापों में ग्रस्त रहकर जलते एवं विलाप करते हैं। गुरु के अतिरिक्त उनको परमेश्वर का महल दिखाई नहीं देता, न ही वह अमृत फल को प्राप्त करते हैं॥२॥ ब्रह्म का रूप गुरुमुख सदैव हरे-भरे वृक्ष जैसा है। उसको स्वाभाविक ही सत्य परमेश्वर की प्रीत की कृपा प्राप्त होती है। वह तीनों शाखाओं (सत्, रज और तम्) को काट कर ऊँचा उठता है और एक शब्द के साथ प्रेम लगाता है। केवल ईश्वर का नाम ही अमृतमयी फल है। वह स्वयं ही कृपा करके इसका सेवन करने के लिए देता है॥३॥ मनमुख ऐसे वृक्ष हैं, जो खड़े-खड़े सूख जाते हैं। उनमें कोई फल और छाया नहीं। इन अज्ञानी प्राणियों की संगति नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनका कोई भी घर और गांव नहीं होता। वे सदैव काटे और जलाए जाते हैं। उनके पास न तो गुरु का उपदेश और न ही हरि का नाम है॥४॥ मनुष्य ईश्वर के आदेश अनुसार कर्म करते हैं और अपने पूर्व-जन्म के कर्मो के अनुकूल भटकते फिरते हैं। ईश्वर के आदेशानुसार गुरमुख उसके दर्शन करते हैं और जहाँ वह उनको भेजता है, वहाँ वह जाते हैं। अपने आदेश द्वारा ईश्वर गुरमुखों के चित्त में टिकता है और उसके आदेश द्वारा ही वह सत्य में लीन हो जाते हैं॥५॥ मूर्ख, दुरात्मा ईश्वर की इच्छा को नहीं समझते और भ्रम में पड़े जन्म-मरण के चक्र में पड़कर भटकते फिरते हैं। मन के हठ अनुसार वह कर्म करते हैं और नित्य ही कलंकित होते हैं। उनके अंदर सुख-शांति नहीं आती और वे सत्य-स्वरूप हरि के साथ प्रेम नहीं कर पाते॥६॥ जो गुरु के साथ प्रीति एवं स्नेह करते हैं। उन गुरमुखों के मुख सुन्दर हो जाते हैं। वे सत्य की भक्ति में लीन रहते हैं और सत्य के साथ रंगे रहते हैं और परमेश्वर के द्वार पर वे सत्यवादी रूप में सम्मानित होते हैं उन मनुष्यों का ही जगत् में आगमन स्वीकृत होता है, और अपनी समस्त कुल का भी उद्धार कर देते हैं॥७॥ प्रत्येक प्राणी ईश्वर की दृष्टि अधीन कर्म करता है। कोई भी प्राणी उसकी दृष्टि से ओझल नहीं। परमात्मा जिस पर जैसी कृपा-दृष्टि करता है, मनुष्य वैसा ही हो जाता है। हे नानक! मनुष्य को नाम द्वारा ही यश मिलता है और नाम की उपलब्धि भगवान की मेहर से होती है॥८॥३॥२०॥

सिरीरागु महला ३ ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥ सहजे ही सुखु पाईऐ सहजे रहै समाइ ॥ १ ॥ भाई रे दासनि दासा होइ ॥ गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥ सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥ २ ॥ हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥ गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥ ३ ॥ माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती सहजि सुभाइ ॥ बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥ सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥ ४ ॥ माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥ तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥ बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥ ५ ॥ माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ करम कमाइ ॥ दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै करम कमाइ ॥ बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥ ६ ॥ बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ ॥ सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥ ७ ॥ बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण

भगति न होइ ॥ भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥ नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥ ८ ॥ ४ ॥ २१ ॥

गुरमुख भगवान के नाम का ध्यान करते हैं किन्तु मनमुख को भगवान के ध्यान की सूझ नहीं होती। गुरमुख का मुख हमेशा उज्ज्वल रहता है और भगवान उसके हृदय में निवास करता है। उसे सहज ही सुख की उपलब्धि होती है। वह सहज ही नाम में मग्न रहता है॥१॥ हे भाई! तू परमात्मा के अनुचरों का अनुचर बन जा। गुरु की सेवा से ही गुरु की भक्ति है किन्तु इसकी उपलब्धि कोई विरला ही प्राप्त करता है॥१॥ रहाउ॥ जो भाग्यशाली नारी सतिगुरु की इच्छानुसार आचरण करती है, वह सदैव सौभाग्यवती होती है। वह अमर व अचल स्वामी को प्राप्त हो जाती है। न वह मरता है और न ही जाता है। वह शब्द द्वारा प्रभु से मिलाप करती है, इसलिए उसे वियोग नहीं होता। अपितु अपने स्वामी की गोद में लीन हो जाती है॥ २॥ हरि पवित्र व अत्यंत उज्ज्वल है। गुरु के बिना वह प्राप्त नहीं होता। धर्म-ग्रंथों के अध्ययन द्वारा मनुष्य को उसका बोध नहीं होता। आडम्बर करने वाले भ्रम-भुलैया में पड़े भटके हुए हैं। भगवान तो सदैव ही गुरु की मति द्वारा प्राप्त हुआ है। गुरमुख की रसना में हरि रस समाया रहता है॥३॥ गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य माया के मोह को नष्ट कर देता है। वह सहज अवस्था प्राप्त करके भगवान के प्रेम में मग्न रहता है। नाम के अतिरिक्त सारा संसार दुखी है। माया मनमुखी प्राणियों को निगल गई है। शब्द द्वारा मनुष्य नाम-सिमरन करता है और शब्द द्वारा ही वह भगवान में समा जाता है॥४॥ माया में फँसकर सिद्ध पुरुष भी भटकते रहते हैं और भगवान के प्रेम में लीन करने वाली उनकी समाधि नहीं लगती। माया आकाश, पाताल, धरती तीनों लोकों में जीवों को अपने मोह में फँसा रही है। वह समस्त जीवों को अत्याधिक लिपटी हुई है। गुरु के बिना माया से मुक्ति प्राप्त नहीं होती और न ही दुविधापन व सांसारिक ममता दूर होते हैं॥५॥ माया किसे कहते हैं? माया क्या कार्य करती है? दुःख व सुख के भीतर माया ने इस प्राणी को जकड़ा हुआ है और जिससे प्राणी अहंकार का कर्म करता है। शब्द के बिना भ्रम दूर नहीं होता और न ही अन्तर्मन से अहंकार दूर होता है॥६॥ प्रेम के बिना भगवान की भक्ति नहीं हो सकती और नाम के अतिरिक्त मनुष्य को प्रभु के दरबार में स्थान नहीं मिलता। जब अहंत्व को नाम द्वारा मार दिया जाता है तो माया का पैदा किया भ्रम दूर हो जाता है। गुरमुख सहज ही हरि-नाम के धन को प्राप्त कर लेता है॥७॥ गुरु के बिना शुभ गुणों का पता नहीं लगता तथा शुभ गुण ग्रहण किए बिना भगवान की भक्ति नहीं होती। जब भक्तवत्सल श्री हरि मन में आकर बसता है तो मनुष्य के भीतर सहज अवस्था उत्पन्न हो जाती है। फिर वह प्रभु स्वयं आकर मिल जाता है। हे नानक! किस्मत से ही सतिगुरु की प्राप्ति होती है और गुरु के शब्द द्वारा ही भगवान की महिमा-स्तुति करनी चाहिए॥८॥४॥२१॥

सिरीरागु महला ३ ॥ माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥ मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥ गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥ १ ॥ मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥ गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥ घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥ २ ॥ नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥ ब्रहम के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥ सुरि नर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥ ३ ॥ दैत पुतु करम धरम किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥ सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥ एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥ ४ ॥ खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु

गुर भरमि भुलाए ॥ सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥ सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥ ५ ॥ पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥ जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ ६ ॥ सतसंगति महि नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाए ॥ मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ॥ सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाए ॥ ७ ॥ सो ब्राहमणु ब्रहमु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ॥ प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥ ८ ॥ ५ ॥ २२ ॥

भगवान ने स्वयं ही माया–मोह की रचना की है। उसने स्वयं ही जीवों को माया के मोह में फँसा कर भुलाया हुआ है। मनमुख कर्म तो करते हैं परन्तु उन्हें इसकी सूझ नहीं होती। लेकिन वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। गुरुवाणी इस संसार में ईश्वरीय प्रकाश है। प्रभु की दया से प्राणी के मन में यह वाणी आकर बसती है॥१॥ हे मेरे मन! भगवान का नाम जपो, इससे ही सुख की उपलब्धि होती है। पूर्ण गुरु की महिमा करने से परमेश्वर सहज ही प्राणी को मिल जाता है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर के चरणों में चित्त लगाने से मनुष्य का माया का भ्रम एवं मृत्यु का भय नाश हो जाता है। जिज्ञासु प्राणी जब गुरु–कृपा से नाम की आराधना करता है तो ईश्वर स्वयं उसके हृदय में निवास करता है। मनुष्य सत्य प्रभु के आत्म स्वरूप रूपी महल के अन्दर लीन हो जाता है और यमदूत उसे कदापि नहीं निगल सकता॥२॥ निम्न जाति के नामदेव छींबे और कबीर जुलाहे ने पूर्ण गुरु की कृपा से मोक्ष प्राप्त किया था। वे गुरु–शब्द का ज्ञान पाकर ब्रह्मज्ञानी बने और उन्होंने जातिगत गौरव अथवा अहंत्व का पूर्ण त्याग कर दिया। देवते एवं मनुष्य उनकी पावन वाणी का गायन करते है। उनकी शोभा कोई भी मिटा नहीं सकता॥३॥ दैत्य हिरण्यकशिपु का पुत्र भक्त प्रहलाद कोई धर्म–कर्म नहीं करता था। वह मन को स्थिर करने वाली संयम, ध्यान एवं समाधि रूप विधियों बारे कुछ भी नहीं जानता था। वह माया के मोह को नहीं जानता था। सतिगुरु से मिलकर वह निर्मल हो गया था वह रात–दिन नाम का जाप करता था और एक नाम को ही जानता था तथा अन्य किसी दूसरे को नहीं जानता था॥४॥ छः शास्त्रों के उपदेशों को मानने वाले योगी, संन्यासी इत्यादि गुरु के बिना संदेह में भूले पड़े हैं। यदि वे सतिगुरु की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करें तो वे मोक्ष एवं ईश्वर को खोजने में समर्थ होते हैं और पूज्य हरि को अपने चित्त में टिका लेते हैं। सच्ची गुरुवाणी से उनका मन जुड़ जाता है और उनका आवागमन (जन्म–मरण के चक्र से) मिट जाता है॥५॥ गुरु के बिना भ्रम में भूले हुए पण्डित शास्त्र इत्यादि का अध्ययन करके वाद–विवाद करते हैं, किन्तु शब्द के बिना उन्हें मोक्ष प्राप्त नहीं होता, वे चौरासी लाख योनियों में भटकते फिरते हैं। जब ईश्वर की अनुकंपा होती है तो सतिगुरु से मिलन होता है और जब सतिगुरु के उपदेशानुसार नाम की आराधना करते हैं, तब वह गति प्राप्त करते हैं॥ ६॥ यदि प्राणी का गुरु से मिलन हो जाए तो सत्संग के कारण वह हरि–नाम स्मरण कर पाता है। मैं अपनी आत्मा एवं देहि समर्पित करता हूँ और अपनी अहंकार–भावना त्यागता हूँ और सतिगुरु के उपदेशानुसार आचरण करता हूँ। मैं सदैव अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जो मेरी आत्मा को प्रभु के साथ मिलाते हैं॥ ७॥ ब्राह्मण वही है जिसे ब्रह्म का ज्ञान है और प्रभु की प्रीति के साथ रंगा हुआ है। पारब्रह्म–परमेश्वर समस्त प्राणियों के अति निकट उनके भीतर ही निवास करता है, किन्तु इस रहस्य को कोई विरला प्राणी गुरु के द्वारा ही जानता है। हे नानक! हरि–नाम द्वारा प्राणियों को बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और गुरु के शब्द द्वारा वह स्वामी को पहचान लेता है॥८॥५॥२२॥

सिरीरागु महला ३ ॥ सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाइ ॥ गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥ भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ॥ सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥ सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥ सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ॥ २ ॥ सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ॥ सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ॥ सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरि रसु खाइ ॥ ३ ॥ सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ॥ सहजे हरि नामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥ से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥ ४ ॥ माइआ विचि सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥ मनमुख करम कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥ जंमणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥ ५ ॥ त्रिहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥ पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ॥ चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥ ६ ॥ निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ ॥ गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइ ॥ भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥ ७ ॥ बिनु सहजै सभु अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥ सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥ आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥ ८ ॥ सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥ सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥ पूरै सबदि सलाहीऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥ ९ ॥ गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥ अनदिनु लाहा हरि नामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥ नानक तोटि न आवई दीए देवणहारि ॥ १० ॥ ६ ॥ २३ ॥

सारी दुनिया सहज सुख की कामना करती है परन्तु गुरु के बिना सहज की प्राप्ति नहीं होती। पण्डित एवं ज्योतिषी वेद एवं शास्त्रों का अध्ययन कर करके थक गए हैं और धार्मिक वेष धारण करने वाले साधु भ्रमों में भूले हुए हैं। जिस पर भगवान स्वयं कृपा करता है, वही गुरु से मिलकर सहज सुख को प्राप्त करता है॥१॥ हे भाई! गुरु के बिना सहज सुख प्राप्त नहीं हो सकता। भगवान का नाम जपने से ही सहज उत्पन्न होता है और फिर भगवान मिल जाता है॥१॥ रहाउ॥ भगवान का गायन किया यश तभी स्वीकृत होता है, यदि वह सहज ही गाया जाए। सहज के बिना भगवान के गुणों की कथा करना व्यर्थ है। सहज से ही मनुष्य के हृदय में भक्ति उत्पन्न होती है। सहज से ही भगवान हेतु प्रेम एवं उसके मिलन हेतु वैराग्य उत्पन्न होता है। सहज से ही सुख एवं शांति मिलती है। सहज के बिना जीवन व्यर्थ है॥२॥ भगवान की महिमा सदैव सहज ही करनी चाहिए और सहज ही समाधि लगानी चाहिए। सहज ही भगवान की महिमा उच्चारण करनी चाहिए और सहज ही सुरति लगाकर भगवान की भक्ति करनी चाहिए। शब्द द्वारा भगवान मन में आकर बसता है और रसना हरि-रस का पान करती है॥३॥ सत्य की शरण में आने वाला प्राणी सहजावस्था में मृत्यु-भय से मुक्त हो जाता है। यदि प्राणी सच्ची जीवन मर्यादा की कमाई करे तो ईश्वर का नाम सहज ही उसके चित्त में टिक जाता है। वे प्राणी बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने ईश्वर को पा लिया है और सहज ही उस हरि के नाम में लीन रहते हैं॥४॥ माया में लिप्त प्राणी कभी सहज-ज्ञान को नहीं पा सकता, क्योंकि माया द्वैत-भाव को बढ़ाती है। मनमुख प्राणी चाहे धार्मिक संस्कार करते हैं परन्तु अहंभावना उनको जला देती है। वे कभी जन्म-मरण के चक्र से निवृत नहीं होते अपितु पुनः पुनः जन्म लेते और मृत्यु को प्राप्त होते हैं॥५॥ जब तक माया के तीनों गुणों-रजस्, तमस्, सत में प्राणी का चित्त लिप्त रहता है, वह सहज का अधिकारी नहीं हो पाता; उक्त तीनों गुण भ्रान्ति उत्पन्न करते हैं। ऐसे प्राणी को

पढ़ने–लिखने एवं बोलने का क्या लाभ है, यदि वह जगत् के मूल (प्रभु) को ही विस्मृत किए रहता है। वास्तव में सहज सुख चौथे पद पर लभ्य होता है, जिसकी प्राप्ति केवल गुरमुख के दामन में ही होती है॥६॥ निर्गुण प्रभु का नाम एक अमूल्य भण्डार है। मनुष्य को इसका ज्ञान सहज अवस्था में ही होता है। भगवान की महिमा गुणवान जीव ही करते हैं। भगवान की महिमा करने वाला सच्ची शोभा वाला बन जाता है। प्रभु भूले हुए जीवों को भी सहज द्वारा अपने साथ मिला लेता है। यह मिलाप शब्द द्वारा होता है॥७॥ सहज ज्ञान के बिना सारा जगत् ज्ञानहीन है। मोह–माया की ममता बिल्कुल अंधेरा है। सहज ज्ञान द्वारा अपार सच्चे शब्द की सूझ हो जाती है पूर्ण गुरु करतार स्वयं ही क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है॥ ८॥ सहज ज्ञान द्वारा ही उस अदृश्य, निर्भय, निरंकार ज्योति प्रभु को जिज्ञासु प्राणी पहचानता है। समस्त प्राणियों का एकमात्र पालनहार दाता है। वह सबकी ज्योति को अपनी ज्योति के साथ मिलाने में समर्थ है। पूर्ण शब्द द्वारा तू उस परमात्मा का यशोगान कर जिसका कोई अन्त या सीमा नहीं अथवा सागर की भाँति अपरिमित है॥६॥ भगवान का नाम ही ज्ञानियों का धन है। वह सहज अवस्था में रहकर नाम का व्यापार करते हैं। वे दिन–रात हरि नाम रूपी लाभ प्राप्त करते हैं तथा उनके भण्डार नाम से भरे रहते हैं और कभी समाप्त नहीं होते। हे नानक! यह नाम के भण्डार दाता प्रभु ने स्वयं उन्हें दिए हैं और इन भण्डारों में कोई कमी नहीं आती॥१०॥६॥२३॥

सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥ पूरै सबदि सभ सोझी होई हरि नामै रहै समाइ ॥ १ ॥ मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥ गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥ २ ॥ वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ॥ आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥ ३ ॥ इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥ लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ४ ॥ भगता मनि आनंदु है सचै सबदि रंगि राते ॥ अनदिनु गुण गावहि सद निरमल सहजे नामि समाते ॥ ५ ॥ गुरमुखि अंम्रित बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥ एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ ६ ॥ सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥ ७ ॥ आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥ आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥ ८ ॥ ७ ॥ २४ ॥

यदि सतिगुरु मिल जाए तो प्राणी जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। उसकी जन्म एवं मृत्यु की पीड़ा निवृत्त हो जाती है। पूर्ण गुरु के उपदेश द्वारा सारी समझ आ जाती है और मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन रहता है॥१॥ हे मेरे मन! अपना चित्त गुरु के साथ लगाओ। हरि का नित्य नवीन और पवित्र नाम स्वतः साधु के मन में टिक जाता है॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे परमेश्वर! मुझे अपने शरणाश्रय में रखो; आप मुझे जैसे रखोगे, मुझे उसी अवस्था में रहना है। गुरु के द्वारा भवसागर से पार तभी हुआ जा सकता है, यदि गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व को मार कर जीवन व्यतीत किया जाए॥२॥ भगवान का नाम बड़ी किस्मत से मिलता है। गुरु की मति पर चलकर नाम–सिमरन से जीवन सुन्दर बन जाता है। जगत् का कर्त्ता प्रभु स्वयं ही मनुष्य के हृदय में आकर बसता है। फिर मनुष्य सहज ही भगवान में लीन रहता है॥३॥ कई मनमुखी प्राणियों को प्रभु का नाम अच्छा नहीं लगता। ऐसे मनमुखी प्राणी अज्ञान–बंधन में बंधे चौरासी लाख योनियों में भटकते फिरते हैं। वे चौरासी लाख योनियों के अंदर बारंबार भटकते हैं और अपना अनमोल जीवन व्यर्थ

गंवा देते हैं॥ ४॥ भगवान के भक्तों के मन में आनंद बना रहता है। क्योंकि वे सच्चे शब्द में ही मग्न रहते हैं। वह सदैव ही रात–दिन भगवान की निर्मल महिमा गायन करते हैं और सहज ही नाम में लीन रहते हैं॥५॥ गुरमुख सदैव अमृत समान मधुर वाणी बोलते हैं, क्योंकि वे समस्त प्राणियों के भीतर प्रभु के अंश आत्मा की समानता को पहचानते हैं। गुरमुखों की कथा अकथनीय है। वे एक प्रभु की सेवा एवं आराधना करते हैं॥६॥ गुरमुख सच्चे प्रभु की आराधना करते हैं और प्रभु गुरमुख के मन में आकर बसता है। जो सदैव ही भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं, उन्हें भगवान अपनी कृपा करके अपने साथ मिला लेता है॥७॥ प्रभु स्वयं ही करता है और स्वयं ही करवाता है। वह माया की निद्रा से भी प्राणियों को जगा देता है। हे नानक! गुरु के शब्द में मिलाकर वह स्वयं ही भक्तों को अपने मिलाप में मिला लेता है॥८॥७॥२४॥

सिरीरागु महला ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥ मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गंभीरु ॥ सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥ १ ॥ मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥ सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥ २ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥ सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ गुरमती निज घरि वासु ॥ ३ ॥ सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥ सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥ जिंनी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ ॥ ४॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ॥ जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥ बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमहि वारो वार ॥ ५ ॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥ सतिगुरि सचु दिड़ाइआ सदा सचि संजमि रहणा ॥ सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥ ६ ॥ लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥ सतिगुरि सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥ ७ ॥ जो सचै लाए से सचि लगे नित सची कार करंनि ॥ तिना निज घरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि ॥ नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि ॥ ८ ॥ १७ ॥ ८ ॥ २५ ॥

सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य का मन निर्मल और शरीर पवित्र हो जाता है। समुद्र जैसे गहरे एवं गंभीर प्रभु को पाकर मन आनन्दित हो जाता है और परमसुख प्राप्त करता है। सत्संग में बैठने वाला जिज्ञासु सत्यनाम के रहस्य को जानकर मन में धैर्य प्राप्त करता है॥१॥ हे मेरे मन! तू निःशंक होकर अपने सतिगुरु की सेवा कर। सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से मन में प्रभु का वास होता है और तुझे मोह–माया रूपी मलिनता नहीं लगती अपितु चित्त पूर्णतः पावन हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ सत्य नाम द्वारा मनुष्य को लोक–परलोक में बड़ी शोभा प्राप्त होती है। सत्य स्वरूप स्वामी का नाम सत्य है। मैं उन प्राणियों पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने अपनी अहंकार–भावना का नाश करके सत्य को पहचान लिया है। मनमुखी प्राणी उस सत्य को नहीं पा सकते, उनको कहीं भी पनाह अथवा ठिकाना प्राप्त नहीं होता॥२॥ गुरमुखों का खाना, पहनना एवं रहना सब सत्य ही है। वह सदैव सच्चे स्वामी की प्रशंसा करते हैं और सत्य नाम के अन्दर उनका निवास है। वे समस्त प्राणियों को ब्रह्मस्वरूप से ही पहचानते हैं और स्वयं भी सदैव गुरु उपदेशानुसार अपने आत्म–स्वरूप में रहते हैं॥३॥ वह सत्य देखते हैं और सत्य ही बोलते हैं और उनके तन व मन के भीतर वह सत्य ही होता है। ऐसे भक्तजन ईश्वर का अनुभूत सत्य दूसरों पर प्रकट करते हैं, परम–सत्य का उपदेश देते हैं,

इसी से जगत् में उनकी सच्ची शोभा होती है। जिन्होंने सत्य को विस्मृत कर दिया है, वह सदा दुखी रहते हैं और विलाप करते हुए असफल जीवन के कारण चले जाते हैं॥४॥ जिन्होंने सतिगुरु की सेवा नहीं की, वह संसार में क्यों आए हैं? काल (मृत्यु) के द्वार पर ऐसे प्राणियों को बांधकर पीटा जाता है और कोई भी उनकी चिल्लाहट व विलाप नहीं सुनता। वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं और पुनः पुनः मरते और जन्मते रहते हैं अर्थात् उन्हें मुक्ति नहीं मिलती॥५॥ इस संसार को मोह–तृष्णा की अग्नि में जलता देखकर जो जिज्ञासु प्राणी भागकर सतिगुरु की शरण लेते हैं। सतिगुरु उनके हृदय में भगवान का सत्य नाम बसा देते हैं और उन्हें संयम द्वारा सदैव ही सत्य प्रभु के नाम में रहने का जीवन जीना सिखा देते हैं। भवसागर से पार होने के लिए सतिगुरु शाश्वत जहाज है। शब्द द्वारा ही भवसागर से पार हुआ जाता है॥६॥ विमुख प्राणी चौरासी लाख योनियों के अन्दर भटकते रहते हैं और गुरु के बिना उन्हें मुक्ति नहीं मिलती। बड़े–बड़े पण्डित धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन करते और मौनधारी साधु समाधि लगाकर थक गए हैं, किन्तु द्वैत–भाव में लीन होने के कारण वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा देते हैं। केवल सतिगुरु ने ही उपदेश प्रदान किया है कि सत्य ईश्वर के सिवाय जगत् में मोक्ष का अन्य कोई साधन नहीं॥७॥ जिन्हें सत्य प्रभु ने अपने नाम–सिमरन में लगाया था, वहीं सत्य प्रभु के नाम सिमरन में लगे थे। फिर वे सदैव निर्मल कर्म करते रहे। उन्होंने मरणोपरांत अपने आत्मस्वरूप में निवास प्राप्त कर लिया है और सच्चे महल में ही रहते हैं। हे नानक! भक्तजन सदैव सुखी रहते हैं। वे सत्य प्रभु के नाम में समा जाते हैं॥८॥१७॥८॥२५॥

सिरीरागु महला ५ ॥ जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥ लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥ सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु लगै न तती वाउ ॥ १ ॥ साहिबु निताणिआ का ताणु ॥ आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥ दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥ सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निहचलु होवै राजु ॥ २ ॥ जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥ ग्रिसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥ गउणु करे चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु तनु मनु सीतलु होइ ॥ ३ ॥ कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥ चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ॥ पोथी गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ॥ चिति आवै ओसु पारब्रहमु ता निमख सिमरत तरिआ ॥ ४ ॥ सासत सिम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥ तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥ खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥ रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ॥ ५ ॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ॥ बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥ रंग तमासे बहु बिधी चाइ लगि रहिआ ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु ता सरप की जूनि गइआ ॥ ६ ॥ बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निरमल रीति ॥ मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥ लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु ता खड़ि रसातलि दीत ॥ ७ ॥ काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥ मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥ सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ ॥ चिति न आइओ पारब्रहमु जमकंकर वसि परिआ ॥ ८ ॥ किरपा करे जिसु पारब्रहमु होवै साधू संगु ॥ जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥ दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥ सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥ ९ ॥ १ ॥ २६ ॥

यदि किसी व्यक्ति पर भारी विपत्ति आ जाए, उसे बचाने के लिए कोई उसकी मदद न करे, उसे मारने के लिए उसके दुश्मन उसके पीछे फिरते हों, यदि उसके रिश्तेदार भी उसका साथ छोड़कर भाग गए हों, उसका हर प्रकार का सहारा खत्म हो गया हो। यदि ऐसी विपत्ति के समय उसे भगवान स्मरण हो जाए तो उसको गर्म हवा भी नहीं छू सकती॥१॥ भगवान निर्बलों का बल है। वह जन्मता एवं मरता नहीं, सदैव स्थिर अर्थात् अनश्वर है। गुरु के शब्द द्वारा सत्य प्रभु को समझ लो॥१॥ रहाउ॥ यदि कोई मनुष्य अति दुर्बल है और भूख मिटाने के लिए भोजन का अभाव है और तन ढांपने के लिए वस्त्र भी नहीं, यदि उसके पास कोई धन–राशि नहीं और न ही उसको कोई दिलासा देने वाला है। यदि कोई भी उसका मनोरथ व इच्छाएँ पूर्ण न करे और उसका कोई भी कार्य सम्पूर्ण न हो। यदि वह अपने हृदय में उस पारब्रह्म का स्मरण कर ले तो उसका शासन सदैव स्थिर हो जाता है॥ २॥ जिसे अधिक चिन्ता लगी हो। उसके शरीर को बहुत सारे रोग लगे हों। जो गृहस्थ में पारिवारिक दुःखों–सुखों में घिरा हुआ है और किसी समय हर्ष एवं किसी समय शोक अनुभव करता हो और चारों दिशाओं में भटकता फिरता है और एक क्षण भर के लिए भी बैठ अथवा निद्रा नहीं कर सकता। यदि वह पारब्रह्म परमेश्वर की आराधना करे तो उसका तन–मन शीतल हो जाते हैं॥३॥ जिस प्राणी को काम–क्रोध–मोहादि ने अपने वश में कर रखा है और जो धन–दौलत के निरन्तर लोभ में कृपण बना रहता है, जिसने चारों ही वज्र पाप एवं अन्य कुकर्म किए हों, दानव–प्रवृत्ति के कारण निर्दयता पूर्वक जिसने जीव–हत्या की हो, जिसने कभी कोई धर्म–पुस्तक उपदेश अथवा ईश्वर–प्रेम की कविता तक न सुनी हो, यदि क्षण भर के लिए भी वह मन प्रभु का नाम सिमरन कर ले तो इस भवसागर से पार हो जाता है॥४॥ चाहे प्राणी को चारों वेद, छः शास्त्र और समस्त स्मृतियाँ कण्ठाग्र हों; चाहे वह पश्चातापी, महान ऋषि एवं योगी हो; और अठसठ तीर्थों की यात्रा करे और चाहे वह छः संस्कारों द्वारा कर्मों को करता हो और सुबह एवं शाम स्नान करके उपासना करता हो, फिर भी यदि उसकी प्रीति परमात्मा के रंग में नहीं रंगी गई तो वह निश्चत ही नरक को जाएगा॥५॥ चाहे मनुष्य के पास राज्याधिकार, धन–सम्पत्ति, शासन एवं अन्य असंख्य स्वादिष्ट भोग हो; उसके पास मनोहर व सुन्दर उद्यान हो और जिसके आदेश की सब पालना करते हों, अथवा रंग तमाशों के विषय विलास में आसक्त व्यक्ति हों, फिर भी यदि वह भगवान का सिमरन नहीं करता, तो वह सर्प–योनि में जन्म लेता है॥६॥ मनुष्य यदि धनवान, सदाचारी, निर्मल व्यवहारी तथा सर्वप्रिय हो, उसे माता–पिता, सुत–भाई एवं अन्य स्वजनों से अनुराग भी हों; उसके पास शस्त्र हों, सेना हो और असंख्य लोग उसकी चापलूसी करते हों, तब भी यदि उसका मन पारब्रह्म के निर्मल नाम से रहित है तो उसे ले जाकर कुंभी नरक में फैंक दिया जाता है॥ ७॥ यदि काया भी पूर्णतः नीरोग है और कोई रोग नहीं, यदि उसको कोई शोक–संताप नहीं, वह मृत्यु का ख्याल तक भी नहीं करता हो और दिन–रात भोग विलास में लीन रहता है, यदि उसने भुजबल से सबको अपने अधीन कर लिया है और उसके मन में कोई भय भी न हो, यदि वह परमात्मा को स्मरण नहीं करता तो वह यमदूत के वश में आ जाता है॥८॥ जिस पर भगवान अपनी कृपा करता है, उसे साधु–संतों की संगति प्राप्त होती है। ज्यों ज्यों सत्संग में चित्त लगता है, उतना ही ज्यादा उस प्रभु के साथ प्रेम प्रगाढ़ हो जाता है। परमात्मा ही लोक–परलोक का स्वामी है, उसके बिना प्राणियों के सुख का और कोई आधार नहीं। परन्तु उस परमेश्वर के पवित्र नाम की प्राप्ति सतिगुरु की प्रसन्नता से ही होती है। हे नानक! यदि सतिगुरु प्रसन्न हो जाए तो मनुष्य को सत्य नाम की उपलब्धि हो जाती है॥६॥१॥२६॥

सिरीरागु महला ५ घरु ५ ॥ जानउ नही भावै कवन बाता ॥ मन खोजि मारगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धिआनी धिआनु लावहि ॥ गिआनी गिआनु कमावहि ॥ प्रभु किन ही जाता ॥ १ ॥ भगउती रहत जुगता ॥ जोगी कहत मुकता ॥ तपसी तपहि राता ॥ २ ॥ मोनी मोनिधारी ॥ सनिआसी ब्रहमचारी ॥ उदासी उदासि राता ॥ ३ ॥ भगति नवै परकारा ॥ पंडितु वेदु पुकारा ॥ गिरसती गिरसति धरमाता ॥ ४ ॥ इक सबदी बहु रूपि अवधूता ॥ कापड़ी कउते जागूता ॥ इकि तीरथि नाता ॥ ५ ॥ निरहार वरती आपरसा ॥ इकि लूकि न देवहि दरसा ॥ इकि मन ही गिआता ॥ ६ ॥ घाटि न किन ही कहाइआ ॥ सभ कहते है पाइआ ॥ जिसु मेले सो भगता ॥ ७ ॥ सगल उकति उपावा ॥ तिआगी सरनि पावा ॥ नानकु गुर चरणि पराता ॥ ८ ॥ २ ॥ २७ ॥

मैं नहीं जानता कि प्रभु को कौन–सी बातें अच्छी लगती हैं। हे मेरे मन! प्रभु को प्रसन्न करने का मार्ग खोज॥१॥ रहाउ॥ ध्यानी इन्सान समाधि लगाकर भगवान में ध्यान लगाता है। ज्ञानी ज्ञान–मार्ग द्वारा प्रभु को समझने का प्रयास करता है। परन्तु कोई विरला पुरुष ही भगवान को जानता है॥१॥ भगवती जन अपनी धार्मिक क्रियाओं में लीन रहता है। योगी अष्टांग–भाव से मुक्ति की कल्पना करते हैं। तपस्वी लोग तपस्या में ही कल्याण मानते हैं॥२॥ मौनी साधु मौन धारण करने में ही ईश्वर की प्राप्ति संभव मानते हैं। संन्यासी ब्रह्मचारी बन गया है। उदासी वैराग्य में मग्न हुआ है॥३॥ कोई कहता है कि वह नौ प्रकार की भक्ति करता है। पण्डित वेदों को सस्वर उच्चारण करते हैं। गृहस्थ–जन धर्मशास्त्रानुसार यज्ञ–दानादि धर्मों के पालन में ही कल्याण समझते हैं॥४॥ कोई साधु एक नाम 'अलख' ही बोलता है। कोई साधु बहुरूपिया बन गया है। कोई साधु नग्न घूमता है और अवधूत कहलाता है। कई साधु शरीर पर विभूति रमाने में ही कल्याण समझते हैं। कापड़िए साधु केसरिया कपड़े पहनते हैं अर्थात् राम–कृष्ण का यशोगान करने वाले कविजन काव्य–गान में मुक्ति समझते हैं, जागूता अर्थात् रात्रि जागरण करने वाले लोग भी जगराते में ही मोक्ष सम्भव मानते हैं। कुछ लोग तीर्थ–यात्रा में स्नान द्वारा भी प्रभु–प्राप्ति की संभावना स्वीकारते हैं॥५॥ निराहार रहने वाले व्रत को ही ईश्वर मिलन का साधन मानते हैं, ऊँची जाति के लोग निम्न जाति से परहेज करते हैं। कुछ लोग गुफाओं में छिपे रहते हैं और किसी को अपने दर्शन नहीं देते। कुछ लोग अपने चित्त के भीतर ही बुद्धिमान हैं॥६॥ कोई भी अपने आपको कम नहीं कहता। हर कोई कहता है कि उसने भगवान को पा लिया है। लेकिन भगवान का भक्त वही होता है जिसे भगवान अपने साथ मिला लेता है॥ ७॥ हे नानक! मैं समस्त युक्तियाँ एवं उपाय त्याग कर भगवान की शरण में आ गया हूँ। भगवान की प्राप्ति हेतु गुरु के चरणों में पड़ना सर्वोत्तम युक्ति है॥८॥२॥२७॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ जोगी अंदरि जोगीआ ॥ तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥ तेरा अंतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥ १ ॥ हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु संसारु उपाइआ ॥ सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥ वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥ २ ॥ परगटि पाहारै जापदा ॥ सभु नावै नो परतापदा ॥ सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥ सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥ ४ ॥ सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥ जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥ ५ ॥ इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ आपहु

तुधु खुआइआ ॥ परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥ ६ ॥ दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥ मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइ जीउ ॥ ७ ॥ सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥ नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥ ८ ॥ हुकमु जिना नो मनाइआ ॥ तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥ सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥ ९ ॥ जिना भाणे का रसु आइआ ॥ तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥ नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥ १० ॥ सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥ जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥ दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥ ११ ॥ अंम्रितु तेरी बाणीआ ॥ तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥ सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥ १२ ॥

हे ईश्वर ! तू सृष्टि में अनेक रूपों में विचरण कर रहा है। योगियों में तुम योगीराज हो एवं भोगियों में तुम महाभोगी हो। स्वर्ग लोक के देवता, मृत्युलोक के वासी तथा पाताल के नागादि जीवों ने तुम्हारा भेद नहीं पाया॥१॥ मैं तुझ पर कुर्बान हूँ, मैं तेरे पावन नाम पर न्यौछावर हूँ॥१॥ रहाउ॥ तुम सृष्टि कर्त्ता हो, तुम ने ही संसार की रचना करके उनकी किस्मत निर्धारत करके सांसारिक कार्यों में लगाया है। अपनी रचना का तुम स्वयं ध्यान रखते हो और अपनी माया–शक्ति से इस संसार की चौपड़ पर निरन्तर पासा फैंक रहे हो॥२॥ समूचे विश्व में तुम प्रत्यक्ष दिखते हो। प्रत्येक प्राणी तेरे नाम की कामना करता है। किन्तु सतिगुरु के बिना तुम्हें कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता। समस्त प्राणी मोह–माया के जाल में लुभायमान होकर फँसे हुए हैं॥३॥ मैं सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ, जिनके मिलन से परमगति प्राप्त होती है। सतिगुरु ने मुझे उस प्रभु बारे बताया है जिस परमात्मा को पाने की देवता, मानव और ऋषि–मुनि कामना करते हैं॥४॥ सत्संगति किस प्रकार जानी जा सकती है? एक प्रभु के नाम का वहाँ उच्चारण होता है। हे नानक ! हरिनाम ही ईश्वर का हुक्म है, यह बात मुझे गुरु जी ने समझा दी है॥५॥ यह संसार संदेह के कारण भ्रम भुलैया में पड़ा हुआ है। हे प्रभु ! तुमने स्वयं ही प्राणियों के कर्मानुसार उन्हें भुलाया है। वे प्राणी जिनके भाग्य में परमात्मा का मिलन नहीं, वियोगिनी स्त्री के समान प्रतिदिन तड़पते रहते हैं॥६॥ दुहागिन नारियों के क्या लक्षण हैं? वे पति द्वारा उपेक्षित मान–रहित होकर भटकती रहती हैं। उन दुर्भाग्यशाली नारियों की वेश–भूषा मलिन होती है और प्रतिदिन तड़प–तड़प कर रात्रि बिताती हैं॥७॥ सुहागिन ने आखिर क्या शुभ कर्म कमाया है? उसे ईश्वर ने पूर्व जन्म के किसी उत्तम कर्म का फल प्रदान किया है। अपनी कृपा–दृष्टि करके परमेश्वर उनको अपने साथ मिला लेता है॥८॥ जिन जिज्ञासु प्राणियों ने परमात्मा के आदेश की पालना की है, वे गुरु का सच्चा उपदेश मन में धारण करते हैं। ऐसी सखियाँ सत्यवती पत्नी हैं, जो अपने पिया के साथ प्रीति करती हैं॥६॥ जो ईश्वर की इच्छानुसार प्रसन्नता अनुभव करती हैं, उनके भीतर से संदेह निवृत्त हो जाते हैं। हे नानक ! सतिगुरु ऐसा दयालु है जो सभी को भगवान के साथ मिला देता है॥१०॥ जो अपने अहंकार को नाश कर देता है, वह सतिगुरु से मिलन करके हरि–नाम रूपी फल प्राप्त कर लेता है। उसकी मंद–बुद्धि की पीड़ा निवृत्त हो जाती है और उसके मस्तक पर भाग्योदय हो जाता है॥११॥ हे प्रभु ! तेरी वाणी अमृत समान है। यह तेरे भक्तों के मन में रमी हुई है। तुम्हारी सेवा में ही वास्तविक सुख की उपलब्धि है और अपनी कृपा–दृष्टि से तुम अपने भक्तों को भवसागर से पार कर देते हो॥१२॥

सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥ जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥ सतिगुर बाझु न पाइओ सभ थकी करम कमाइ जीउ ॥ १३ ॥ हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ ॥ जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ॥ नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥ १४ ॥ तूं सभना माहि समाइआ ॥ तिनि करतै आपु लुकाइआ

॥ नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥ १५ ॥ आपे खसमि निवाजिआ ॥ जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥ १६ ॥ सभि संजम रहे सिआणपा ॥ मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥ प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥ १७ ॥ मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥ प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥ कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥ १८ ॥ मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥ जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥ साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥ १९ ॥ तुधु आपे आपु उपाइआ ॥ दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥ सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥ २० ॥ गुर परसादी पाइआ ॥ तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥ किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥ २१ ॥ गोपी नै गोआलीआ ॥ तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥ हुकमी भांडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥ २२ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥ निरमल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥ २३ ॥ तेरीआ सदा सदा चंगिआईआ ॥ मै राति दिहै वडिआईआं ॥ अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥ २४ ॥ १ ॥

सतिगुरु से मिलन तभी समझा जाता है। यदि इस मिलन द्वारा ईश्वर के नाम का उच्चारण किया जाए। सतिगुरु के बिना किसी को भी प्रभु प्राप्त नहीं हुआ। सारी दुनिया धर्म–कर्म करते–करते थक गई है॥१३॥ मैं अपने सतिगुरु पर बलिहार जाता हूँ, जिसने मुझे माया–तृष्णा के भ्रमों से निकाल कर सद्मार्ग लगाया है। यदि सतिगुरु अपनी कृपा–दृष्टि करे तो वह मनुष्य को अपनी संगति में मिला लेता है॥१४॥ हे भगवान! तुम समस्त प्राणियों के भीतर समाए हुए हो। ईश्वर ने अपनी ज्योति गुप्त रूप में मनुष्य के हृदय में रखी हुई है। हे नानक! जिस मनुष्य के हृदय में ईश्वर ने अपनी ज्योति रखी हुई है, ईश्वर गुरु के माध्यम से उस मनुष्य के हृदय में प्रगट हो जाता है॥१५॥ हे ईश्वर! तुमने ही तन की मूर्ति गढ़कर उसमें प्राणों का संचार करके मुझे पैदा किया है। अपने दोनों हाथ उसके मस्तक पर रखकर प्रभु अपने सेवक की प्रतिष्ठा बरकरार रखता है॥१६॥ समूह अटकलें और चतुराईयाँ किसी काम नहीं आती। मेरा प्रभु सब कुछ जानता है। ईश्वर ने मेरा प्रताप सब ओर प्रकट किया है और सब मेरी जय–जयकार करने लगे हैं॥१७॥ परमात्मा ने मेरे गुणों–अवगुणों पर ध्यान नहीं दिया, उसने तो केवल अपने विरद की लाज निभाई है। ईश्वर ने अपने गले लगा कर मेरी रक्षा की है और मुझे गर्म हवा भी नहीं छूती॥१८॥ अपने तन–मन से मैंने प्रभु की स्तुति की है। इसलिए मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हुआ है। हे ईश्वर! तुम सम्राटों के भी सम्राट हो, इसलिए हे नानक! मैं तुम्हारे ही नाम–सिमरन से जीवन धारण करता हूँ॥१६॥ हे भगवान! तुमने स्वयं ही सृष्टि की रचना की है और जगत् रूपी खेल को साज कर प्रत्यक्ष किया है। समस्त स्थानों पर सत्य प्रभु के सत्य हुक्म का प्रसार हो रहा है, किन्तु उसके मूल रहस्य को वही समझता है जिसे तुम समझाते हो॥२०॥ गुरु की कृपा से जिसने भगवान को पा लिया है, भगवान ने उसका माया का मोह नष्ट कर दिया है। अपनी कृपा करके वह स्वयं अपने साथ मिला लेता है॥ २१॥ हे प्रभु! तुम ही गोपी हो, तुम ही यमुना हो, तुम ही कृष्ण हो। तूने ही कृष्ण रूप में गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठाया था। तूने ही अपने हृदय में जीवों के शरीर रूपी बर्तन निर्मित किए हैं। तुम स्वयं ही इन शरीर रूपी बर्तनों को नष्ट करते एवं निर्माण करते हो॥२२॥ जिन्होंने अपना चित्त सतिगुरु से लगाया है, उन्होंने माया का मोह दूर कर दिया है। ऐसे प्राणियों की ज्योति निर्मल हो जाती है। वह अपने जीवन को संवार कर परलोक में जाते हैं॥२३॥ हे भगवान! तुम हमेशा ही मुझ पर उपकार करते रहते हो। मुझ पर कृपा करो चूंकि मैं दिन–रात तेरी महिमा करता रहूँ। तू इतना दयालु है कि बिना माँगे ही जीवों को दान देता रहता है। हे नानक! हमेशा ही भगवान का सिमरन करते रहो॥२४॥१॥

सिरीरागु महला ५ ॥ पै पाइ मनाई सोइ जीउ ॥ सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोसाई मिहंडा इठड़ा ॥ अंम अबे थावहु मिठड़ा ॥ भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥ १ ॥ तेरै हुकमे सावणु आइआ ॥ मै सत का हलु जोआइआ ॥ नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥ २ ॥ हउ गुर मिलि इकु पछाणदा ॥ दुया कागलु चिति न जाणदा ॥ हरि इकतै कारै लाइओनु जिउ भावै तिंवै निबाहि जीउ ॥ ३ ॥ तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥ गुरि दीबाणि कवाइ पैनाइओ ॥ हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥ ४ ॥ हउ आइआ साम्है तिहंडीआ ॥ पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥ कंनु कोई कढि न हंघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥ ५ ॥ हउ वारी घुंमा जावदा ॥ इक साहा तुधु धिआइदा ॥ उजड़ु थेहु वसाइओ हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ६ ॥ हरि इठै नित धिआइदा ॥ मनि चिंदी सो फलु पाइदा ॥ सभे काज सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥ ७ ॥ मै छडिआ सभो धंधड़ा ॥ गोसाई सेवी सचड़ा ॥ नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥ ८ ॥ मै सुखी हूं सुखु पाइआ ॥ गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ॥ सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ॥ ९ ॥ मै बधी सचु धरम साल है ॥ गुरसिखा लहदा भालि कै ॥ पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ॥ १० ॥ सुणि गला गुर पहि आइआ ॥ नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ॥ सभु मुकतु होआ सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ॥ ११ ॥ सभ स्रिसटि सेवे दिनु राति जीउ ॥ दे कंनु सुणहु अरदासि जीउ ॥ ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ ॥ १२ ॥ हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥ पै कोइ न किसै रञाणदा ॥ सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥ १३ ॥ झिंमि झिंमि अम्रितु वरसदा ॥ बोलाइआ बोली खसम दा ॥ बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ॥ १४ ॥ तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ॥ हरि लोचा पूरन मेरीआ ॥ देहु दरसु सुखदातिआ मै गल विचि लैहु मिलाइ जीउ ॥ १५ ॥ तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ॥ तूं दीप लोअ पइआलिआ ॥ तूं थानि थनंतरि रवि रहिआ नानक भगता सचु अधारु जीउ ॥ १६ ॥ हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ॥ मै गुर मिलि उच दुमालड़ा ॥ सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥ १७ ॥ वात वजनि टंमक भेरीआ ॥ मल लथे लैदे फेरीआ ॥ निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ॥ १८ ॥ सभ इकठे होइ आइआ ॥ घरि जासनि वाट वटाइआ ॥ गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ॥ १९ ॥ तूं वरना चिहना बाहरा ॥ हरि दिसहि हाजरु जाहरा ॥ सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ॥ २० ॥ मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ॥ गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ॥ हउ बाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ ॥ २१ ॥ २ ॥ २९ ॥

मैं सतिगुरु के चरणों में पड़कर मन्नत करता हूँ, क्योंकि महापुरुष सतिगुरु ने मुझे उस ईश्वर से मिला दिया है। उस जैसा महान् जगत् में अन्य कोई भी नहीं॥१॥ रहाउ॥ मेरा मालिक प्रभु मुझे बहुत प्रिय है। वह माता और पिता से बहुत मीठा लगता है। हे प्रभु! बहन–भाई, मित्रादि स्वजनों में तुम्हारे जैसा अन्य कोई नहीं॥१॥ तुम्हारे आदेश से श्रावण का महीना आया है। तुम्हारी प्रसन्नता हेतु मैंने सत्य का हल जोड़ा है। इस आशा में कि ईश्वर, अपनी कृपा से दातों का अम्बार उत्पन्न करेगा, मैं नाम बीज बोने लगा हूँ॥२॥ हे ईश्वर! गुरु से मिलन के कारण मैं केवल तुम्हें ही पहचानता हूँ। मैं अपने मन के अन्दर किसी अन्य हिसाब को नहीं जानता हूँ। ईश्वर ने एक कार्य मेरी जिम्मेदारी में लगाया है, जिस तरह उसको अच्छा लगता है, उसी तरह मैं उसको सम्पन्न करता हूँ॥३॥ हे मेरे भाईयो! आप नाम

पदार्थ सेवन करो एवं आनंद मानो। परमेश्वर के दरबार में गुरदेव ने मुझे भक्ति रूपी पोशाक भेंटकर प्रतिष्ठा प्रदान की है। मैं शरीर रूपी गांव का स्वामी हो गया हूँ और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि अपने पांचों शरीकों को मैंने बांध लिया है॥४॥ हे प्रभु ! जब से मैंने तेरी शरण ली है। तब से मेरी पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ मेरे सेवकों की भाँति मेरी आज्ञा में रहती हैं। मेरे खिलाफ अब कोई कान (सिर) उठाने का साहस नहीं कर सकता। हे नानक ! इसलिए शरीर रूपी गांव आध्यात्मिक सम्पदा की सघन्ता से बस गया है॥५॥ हे मेरे प्रभु ! मैं तुझ पर बलिहार हूँ, कुर्बान हूँ; श्वास–श्वास मैं तुम्हारा ही नाम जपता हूँ। मेरा मन ऊजड़–गांव (गुण–रहित) की भाँति था, तुमने उसे बसा दिया है, इसलिए मैं तुझ पर बलिहार जाता हूँ॥६॥ हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तेरा मैं सदैव ही सिमरन करता हूँ और जैसी मेरी अभिलाषा थी मेरी वह कामना पूरी हो गई है। तुमने मेरे समस्त कार्य संवार दिए हैं और मेरी आत्मा की भूख निवृत्त कर दी है॥७॥ मैंने संसार के मिथ्या कार्य त्याग दिए हैं। मैं सृष्टि के स्वामी की आराधना करता हूँ। नवनिधि को देने में समर्थ कल्पवृक्ष–समान हरिनाम मुझे मिला है, जिसे बड़े यत्न से मैंने अन्तर्मन में संजोया हुआ है॥८॥ मैं बहुत सुखी हूँ चूंकि मैंने सुख प्राप्त कर लिया है। गुरु ने मेरे हृदय में भगवान का नाम बसा दिया है। सतिगुरु ने मेरे माथे पर हाथ रखकर अर्थात् आशीर्वाद देकर मुझे भगवान के साक्षात् दर्शन करवा दिए हैं॥६॥ मैंने सच्चाई के मन्दिर की धर्मशाला बनाई है। गुरु के शिष्यों को ढूँढ कर मैं यहाँ पर लेकर आया हूँ। मैं उनके चरण धोता हूँ, पंखा झुलाता और विनम्रतापूर्वक झुक–झुककर उनके चरण स्पर्श करता हूं॥१०॥ गुरु के शिष्यों से बातें सुनकर मैं गुरु के पास आया हूँ। गुरु ने मुझे नाम, दान–पुण्य और स्नान निश्चित करवा दिया है। हे नानक ! नाम रूपी सच्ची नाव पर सवार होने के कारण सारा संसार बच गया है॥ ११॥ हे प्रभु ! सारी सृष्टि दिन–रात तेरी सेवा का फल पाती है। हे स्वामी ! अपना कान देकर मेरी प्रार्थना सुनो। मैंने सभी को भलीभांति निर्णय करके देख लिया है। केवल तुम ही अपनी प्रसन्नता द्वारा प्राणियों को मोक्ष प्रदान करते हो॥१२॥ अब मेहरबान परमात्मा का आदेश जारी हो गया है। कोई भी किसी को दुखी नहीं करता। सारी दुनिया सुखपूर्वक रहती है। क्योंकि अब यहाँ सात्विक का राज्य स्थापित हो गया है॥१३॥ सतिगुरु मेघ की भाँति अमृत बरसा रहे हैं। मैं उस तरह बोलता हूँ, जिस तरह भगवान मुझे बुलाता है। हे दाता ! मुझे तुम पर बड़ा गर्व है। तुम स्वयं ही मेरे कर्मों को निर्दिष्ट कर सफल बनाते हो॥१४॥ हे प्रभु ! तुम्हारे भक्तों को सदा तुम्हारे दर्शनों की लालसा है। हे प्रभु ! मेरी मनोवांछित कामनाओं को सफल करो। हे सुखदाता ! मुझे अपने दर्शन देकर अपने गले से लगा लो॥१५॥ तेरे जैसा महान् मुझे अन्य कोई नहीं मिला। तुम धरती, आकाश व पाताल में व्यापक हो। सातों द्वीपों और १४ लोकों में तुम्हारा ही आलोक प्रसारित है। हे नानक ! भक्तों को परमात्मा का ही सहारा है॥१६॥ मैं अपने मालिक प्रभु का एक छोटा–सा पहलवान हूँ। गुरु से मिलकर मैंने ऊँची दस्तार सजा ली है। मेरी कुश्ती देखने के लिए तमाशा देखने वालों की भीड़ एकत्र हो गई है और दयालु परमात्मा स्वयं बैठ कर देख रहा है॥१७॥ अखाड़े में बाजे, नगाड़े और तूतीयाँ बज रहे हैं। पहलवान अखाड़े के अन्दर प्रवेश करते हैं और इसके आसपास चक्कर काट रहे हैं। मैंने अकेले ही पाँच जवानों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) को पराजित कर दिया है और गुरु ने मेरी पीठ पर शाबाश (आशीर्वाद) दी है॥१८॥ समस्त जीव जन्म लेकर दुनिया में इकट्ठे हुए हैं। ये विभिन्न योनियों में पड़कर अपने घर परलोक में चले जाएँगे। गुरमुख नाम रूपी पूँजी का लाभ प्राप्त करके जाएँगे, जबकि मनमुख अपना मूल भी गंवा देंगे॥१६॥ हे प्रभु ! तेरा कोई वर्ण अथवा चिन्ह नहीं। परमात्मा प्रत्यक्ष ही सबको दर्शन देता है। हे गुणों के भण्डार ! हे पारब्रह्म–परमेश्वर ! तुम्हारे भक्त तुम्हारा यशोगान निरन्तर सुनते, तेरा सुमिरन करते और तेरे ही रंग में मग्न हैं॥२०॥ मैं समस्त युगों में भगवान की भक्ति करता रहा हूँ। गुरु ने माया–बन्धन की बेड़ियाँ काट फैंकी है। मैं संसार के अखाड़े में पुनः पुनः दंगल करने नहीं जाऊँगा, क्योंकि हे नानक ! मैंने मनुष्य–जीवन का सही मूल्य जानकर उसे सार्थक कर लिया है॥ २१॥२॥२६॥

१ ਓं सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥ उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥ खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥ जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥ हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥ हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥ हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥ हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥ धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥ धरम सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥ जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥ भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥ ४ ॥ १ ॥

{प्रस्तुत पद में गुरु नानक देव जी ने प्राणी को वणजारा एवं आयु को रात्रि संबोधित करके एक रूपक प्रस्तुत किया है। उल्लेखनीय है कि गुरु जी ने वणजारों के एक गांव में एक वणजारे को पुत्र–शोक पर उपदेश प्रदान किया था।}

हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर के आदेशानुसार प्राणी माता के गर्भ में आता है। हे मेरे वणजारे मित्र ! वह गर्भ में उलटा लटका हुआ तपस्या करता है और भगवान के समक्ष प्रार्थना करता रहता है। वह उलटा लटका हुआ भगवान के ध्यान में सुरति लगाता है। वह रस्मों की मर्यादा के बिना दुनिया में नग्न आता है और मरणोपरांत नग्न ही जाता है। विधाता ने प्राणी के कर्मानुसार उसके मस्तक पर जो भाग्य रेखाएँ खींच दी हैं, उसी के अनुसार उसे सुख–दुख उपलब्ध होते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि रात्रि के प्रथम–प्रहर में ईश्वर की इच्छानुसार प्राणी गर्भ में प्रवेश करता है॥१॥ हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में मनुष्य परमेश्वर के सिमरन को विस्मृत कर देता है। अर्थात्–जब प्राणी गर्भ से बाहर आता और जन्म लेता है तो गर्भ में की गई प्रार्थना को भूल जाता है। उसके परिजन, भाई–बन्धु सब उसे ऐसे नचाते हैं, हर्षित होते हैं, जैसे माता यशोदा के घर कृष्ण नचाया जाता था। हे मेरे वणजारे मित्र ! परिवार के समस्त लोग नश्वर प्राणी उस बच्चे को उछालते–खेलाते हैं और माता मोह–वश उसे अपना पुत्र कहकर बड़ा मान करती है। हे मेरे अज्ञानी एवं मूर्ख मन ! परमात्मा को स्मरण कर। अंतकाल तेरा कोई साथी नहीं होना। तू उसको नहीं समझता जिसने रचना रची है। अब तू अपने मन में ज्ञान प्राप्त कर ले। गुरु जी कहते हैं कि रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी परमेश्वर का ध्यान भुला देता है॥२॥ हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में प्राणी का मन, धन–यौवन (स्त्री–यौवन) में रम जाता है। वह हरि–नाम का चिंतन नहीं करता, जिसके द्वारा वह संसार–बंधन से मुक्ति पा सकता है। नश्वर प्राणी प्रभु के नाम का सुमिरन नहीं करता और सांसारिक पदार्थों के साथ व्याकुल रहता है। वह भार्या–प्रेम की

आसक्ति और यौवन की मस्ती में ऐसा लीन हो जाता है कि इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ ही गंवा देता है। वह न तो धर्मानुसार आचरण करता है और न ही शुभ कर्मों के साथ मैत्री बनाता है। गुरु जी कहते हैं कि हे नानक ! मनुष्य का जीवन रूपी तृतीय प्रहर भी धन-यौवन की तृष्णा में नष्ट हो जाता है॥३॥ हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चौथे प्रहर (वृद्धावस्था) में जीवन-रूपी कृषि को काटने के लिए यमदूत उपस्थित हो जाते हैं अर्थात् देहि की कृषि तब तक पककर कटने को तैयार हो जाती है। हे वणजारे मित्र ! जब यमदूत उसको पकड़कर चल देते हैं तो प्राणों के अलग होने का रहस्य किसी को भी पता नहीं चलता। इस रहस्य बारे कि कब यमदूतों ने प्राणी को पकड़कर आगे ले जाना है, किसी को भी पता नहीं लगा। सो हरि का चिन्तन कर, हे मनुष्य ! झूठा है रुदन उसके आसपास। एक क्षण में ही प्राणी परदेसी हो जाता है। सगे-संबंधी रुदन करते हैं किन्तु वह भी स्वार्थपूर्ण होने के कारण सब मिथ्या है। आगामी लोक में प्राणी को वही उपलब्धि होती है, जिसमें उसने चित्त एकाग्र किया होता है। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हे नानक ! जीवन रूपी चौथे प्रहर में मानव जीवन पकी कृषि लावी द्वारा काट ली जाती है। अर्थात् वृद्धावस्था में देहि का अन्त निकट आ जाता है और समय पर यमदूत प्राणी को पकड़ कर ले जाते हैं॥४॥१॥

सिरीरागु महला १ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥ मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥ संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥ राम नामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ तीरथ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ॥ जोबनु घटै जरूआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु जाइ ॥ अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ॥ बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ॥ कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ॥ अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कंनी सुणै न वैण ॥ अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥ गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवण जाणा ॥ खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु॥ ४ ॥ ओड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥ इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥ गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जंमणु मरणा ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥ पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥ कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥ ५ ॥ २ ॥

हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में जीव बालक बुद्धि वाला एवं ज्ञानहीन होता है। बालक माता का दूध पीता है और उससे बड़ा लाड-प्यार किया जाता है। हे मेरे वणजारे मित्र ! माता-पिता अपने बालक से बड़ा अनुराग करते हैं। संसार में व्याप्त मोह-माया के कारण माता-पिता स्नेह में उसके पोषण में उठाए कष्टों की भी उपेक्षा कर देते हैं। संयोग और पूर्व जन्मों

के कर्मो की बदौलत प्राणी संसार में आता है और अब अपनी अगली जीवन मर्यादा के लिए कर्म कर रहा है। राम नाम के बिना मुक्ति नहीं हो सकती और द्वैत भाव में लीन रहने के कारण समूची सृष्टि का विनाश हो जाता है। हे नानक ! प्राणी जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान का नाम-सिमरन करके ही जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है॥१॥ हे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी यौवन की भरपूर मस्ती में मस्त रहता है। हे वणजारे मित्र ! दिन-रात वह भोग-विलास में आसक्त रहता है और उस अज्ञानी को भगवान का नाम याद ही नहीं आता। राम नाम उसके हृदय में नहीं बसता। वह अन्यों रसों को ही मीठा समझता है। जिन्हें प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं, जो भगवान का ध्यान नहीं करते, जो प्रभु की महिमा को स्मरण नहीं करते, जो संयम नहीं करते, ऐसे झूठे प्राणी जन्मते-मरते रहेंगे। हे नानक ! जो तीर्थ-स्नान नहीं करते, व्रत नहीं रखते, शुद्धिकरण, संयम एवं पाठ-पूजा नहीं करते, ऐसे प्राणियों का प्रेमपूर्वक भगवान की भक्ति करने से उद्धार हो जाता है। दुविधा में फँसे हुए जीवों को माया का मोह लगा रहता है॥२॥ हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में शरीर-सरोवर पर हंस आ बैठते हैं अर्थात् प्राणी के सिर पर सफेद बाल पकने लगते हैं। हे वणजारे मित्र ! यौवन बीतने पर शरीर की शक्ति क्षीण हो जाती है और धीरे-धीरे शरीर पर प्रौढ़ावस्था हावी होने लगती है। अज्ञानी प्राणी, अन्तकाल पश्चाताप करता है, जब यमदूत इसे आ पकड़ते हैं अर्थात् काल आने पर प्राणी पछतावा करने लगता है। वह सब कुछ जिसे प्रतिदिन वह अपना कहता था, क्षण में ही उससे पराया हो जाता है। यमदूतों के वश पड़ते ही प्राणी का विवेक कुण्ठित हो जाता है। सारी चतुराई धरी रह जाती है और वह अपने अवगुणों को याद कर-करके पछताने लगता है। हे नानक ! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में चित्त लगाकर भगवान का सिमरन करो॥३॥ हे मेरे वणजारे मित्र ! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में शरीर वृद्ध होकर क्षीण हो जाता है। तन में कमजोरी आ जाती है। हे मेरे वणजारे मित्र ! आँखों-कानों की शक्ति भी चली जाती है, उसे आँखों से दिखाई नहीं देता और कानों से वह सुन नहीं पाता। दाँतों की असमर्थता के कारण जिह्वा का रस भी जाता रहता है और वह पराए सहारे की आशा में जीवनयापन करने लगता है। उस मनमुख के भीतर कोई आध्यात्मिक गुण कभी नहीं पनपता, इसलिए उसे सुख कैसे प्राप्त हो। बेचारा यूं ही जीवन-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। शरीर-रूपी खेती पककर झुक जाती है। कभी अपने आप अंग टूटते लगते हैं, शरीर नष्ट हो जाता है। प्राणी के जीवन-मरण की इस लोक में कोई प्रतिष्ठा नहीं रह जाती। हे नानक ! प्राणी को अपनी जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में गुरु के माध्यम से नाम की पहचान करनी चाहिए॥४॥ हे मेरे वणजारे मित्र ! जब जीव को मिले श्वासों का अन्तिम समय निकट आ जाता है तो जालिम बुढ़ापा उसके कंधों पर आ चढ़ता है। हे मेरे वणजारे मित्र ! जिस जीव ने अपने हृदय में कोई गुण संचित नहीं किए, उसके अवगुण ही उसे बांधकर ले जाते हैं। जो जीव संयम,ध्यान एवं समाधि द्वारा अपने भीतर गुण पैदा करके दुनिया से जाता है, वह यमों की मार नहीं खाता और उसका जन्म-मरण मिट जाता है। वह यम के जाल में नहीं फँसता और यम उसकी तरफ दृष्टि नहीं करता। वह प्रेमपूर्वक भगवान की भक्ति करके भवसागर से पार हो जाता है। फिर प्रभु के दरबार में उसे बड़ी शोभा प्राप्त होती है। वह सहज ही भगवान में समा जाता है और उसके सभी दुःख मिट जाते हैं। हे नानक ! गुरु के माध्यम से ही प्राणी की जीवन-मृत्यु से मुक्ति होती है और वह सत्य प्रभु से सम्मान प्राप्त करता है॥५॥२॥

सिरीरागु महला ४ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥ हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥ हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि

जपि जीविआ ॥ बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥ जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥ मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥ लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥ जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥ कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥ कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥ धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरि नामा हरि न समालि ॥ हरि नामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै अंति सखाई ॥ इहु धनु संपै माइआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥ जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥ कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥ हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥ हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥ गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखांदी ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओु रैणि भगता दी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

(यह चौथी पातशाही श्री गुरु रामदास जी का पद है और जीवन-रूपी रात्रि के चारों प्रहरों में वणजारे को सम्बोधन कर रहे हैं।)

हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर प्राणी को माँ के गर्भ में डाल देता है। हे वणजारे मित्र! माँ के उदर में पड़ा प्राणी ईश्वर की आराधना करता है, वह हरि का नाम अपने मुख से उच्चरित करता रहता है। वह अपने मन द्वारा हरि नाम का सिमरन करता रहता है। प्राणी बार-बार हरि-नाम की स्तुति और आराधना करता है। गर्भ की अग्नि में वह परमात्मा के नाम के कारण ही जीवित रह पाता है। जब वह जन्म लेकर माँ के गर्भ में से बाहर आता है तो माता-पिता उसका मुख देखकर प्रसन्न होते हैं। हे प्राणी! जिसकी यह वस्तु (बालक) है। उसे स्मरण करो। गुरु की दया से अपने हृदय में हरि-नाम का स्मरण करो। हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में तभी नाम-सिमरन किया जा सकता है। यदि भगवान अपनी कृपा धारण करें॥१॥ हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी का मन माया के आकर्षणों में लीन हो जाता है। माता-पिता उसे 'मेरा-मेरा' करके बड़े प्यार से पालन-पोषण करते हैं और उसे अपने गले से लगाते हैं। माता-पिता (स्वार्थवश) गले से लगाते हुए सोचते हैं कि वह बड़ा होकर उन्हें कमाकर खिलाएगा। प्राणी कितना मूर्ख है कि देने वाले (दाता) को तो पहचानने का प्रयास नहीं करता और उसकी प्रदान की हुई नश्वर वस्तुओं से लिपटता फिरता है। कोई गुरमुख ही भक्ति करता है और वह अपने मन में सुरति लगाकर भगवान का ध्यान करता है। हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में जो प्राणी भगवान का ध्यान करता है, उसे काल कदापि नहीं निगलता॥२॥ हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में मनुष्य का मन दुनिया के धंधे-व्यवहार में आसक्त हो जाता है। वह धन-दौलत का ही ध्यान करता है और धन-दौलत ही संग्रह करता है। हे मेरे वणजारे मित्र! परन्तु हरि-नाम और हरि का चिन्तन नहीं करता। वह कदाचित हरि-नाम और स्वामी हरि को स्मरण नहीं करता, जो अंत में उसका सहायक होना है। यह धन-सम्पत्ति और मोह-माया सब झूठे हैं। जिसे अन्तकाल त्याग कर पश्चाताप करते

हुए प्राणी चला जाता है। जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, उसका गुरु से मिलन होता है और वह ईश्वर की उपासना में लीन हो जाता है। गुरु जी उद्‌बोधन करते हैं हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में जो प्राणी हरि-भजन करता है, वह प्रभु में ही विलीन हो जाता है॥ ३॥ हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में ईश्वर ने मृत्यु काल निकट ला दिया है। इसलिए हे मित्र! अपने हाथों से पूर्ण सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा कर, क्योंकि जीवन रूपी समूची रात्रि अब व्यतीत होती जा रही है। प्रतिक्षण परमेश्वर की सेवा करो, इसमें विलम्ब उचित नहीं, क्योंकि इससे तुम युग-युग के लिए अमर हो जाओगे। हे प्राणी! ईश्वर के रंग में आनंद मनाओ और जन्म-मरण के दुःख को सदैव के लिए भुला दो। सतिगुरु एवं भगवान में कोई अन्तर मत समझो। सतिगुरु को मिलकर भगवान की भक्ति अच्छी लगती है। हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में जो प्राणी भगवान की भक्ति करते हैं, उन भक्तों की जीवन-रात्रि सफल हो जाती है॥४॥१॥३॥

सिरीरागु महला ५ ॥ पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥ दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति करम कमाहि ॥ मुहलति करि दीनी करम कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइआ ॥ करम सुकरम कराए आपे इसु जंतै वसि किछु नाहि ॥ कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥ १ ॥ दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥ बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहंमेइ ॥ बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥ पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥ धरम राइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥ कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥ २ ॥ तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥ पुत्रि कलत्रि मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ॥ अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥ साधसंगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥ सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ॥ कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥ ३ ॥ चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥ गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥ गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते होइ सखाई ॥ इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥ सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥ कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥ ४ ॥ लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥ इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ॥ लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥ जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥ करम धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥ कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥ ५ ॥ १ ॥ ४ ॥

(यह पद पाँचवीं पातिशाही श्री गुरु अर्जुन देव जी का है।)

हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में ईश्वर प्राणी को माता के उदर में डाल देता है। माता के उदर में ही प्रभु दस माह में उसे मनुष्य बना देता है। प्रभु उसे जीवन रूपी समय देता है और इस समय में प्राणी शुभ-अशुभ कर्म करता है। प्रभु यह जीवन-अवधि निर्धारित कर देता है। जीव के पूर्व जन्म के कर्मों अनुसार उसके माथे पर ऐसी किस्मत लिख दी जाती है, जैसे वह कर्म करता है। परमात्मा प्राणी को माता-पिता, भाई, पुत्र-पत्नी इत्यादि के संबंधों में बांध देता है। हरि

स्वयं ही शुभ अथवा अशुभ कर्म प्राणी से करवाता है तथा प्राणी के अपने वश में कुछ नहीं। हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान प्राणी को माता के उदर में डाल देता है॥१॥ हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी की भरी जवानी नदी के समान काम, मोह और तृष्णा की तरंगों में बहती है। हे मेरे वणजारे मित्र! अहंकार में मदमस्त होने के कारण प्राणी बुरा-भला पहचानने में असमर्थ होता है। प्राणी अच्छे-बुरे की पहचान नहीं करता और आगे बढ़ने का मार्ग उसके लिए अधिक कठोर है। वह सतिगुरु को पहचानकर उसकी सेवा में लीन नहीं होता और निर्दयी यमदूत उसके सिर पर (मृत्यु रूपी) दण्ड धारण किए खड़ा रहता है। हे मूर्ख मनुष्य! जब धर्मराज तुझे पकड़कर पूछेगा? तुम उसको अपने कर्मों का क्या उत्तर दोगे? हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्राणी की भरी जवानी नदी के समान काम, मोह एवं तृष्णा की तरंगों में बहती है॥२॥ हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में ज्ञानहीन, मूर्ख प्राणी विषय-वासनाओं का विष संग्रह करता है। वह अपने पुत्र एवं पत्नी के मोह में फँसा हुआ है और उसके मन में लोभ की लहरें उठती हैं। मन में आकर्षक पदार्थों के लोभ की लहरें विद्यमान हैं। वह ईश्वर की ओर चित्त नहीं लगाता और ईश्वर-उपासना नहीं करता। वह सत्संग के साथ मेल-मिलाप नहीं करता और विभिन्न योनियों के अन्दर कष्ट सहन करता है। जगत् के सृजनहार स्वामी को उसने विस्मृत कर दिया है और वह एक क्षण मात्र भी अपनी वृत्ति प्रभु की तरफ नहीं लगाता। हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के तृतीय प्रहर में अज्ञान में अंधा हुआ प्राणी विषय-वासनाओं का विष संचित करता रहता है॥३॥ हे मेरे वणजारे मित्र! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में मृत्यु का दिन निकट आ रहा है। हे मेरे वणजारे मित्र! तू सतिगुरु की शरण लेकर ईश्वर का नाम स्मरण कर, वह परलोक में तेरा एकमात्र सहारा होगा। हे प्राणी! गुरु-उपदेशानुसार नाम को स्मरण कर और अंत में यही तेरा सखा होगा। जिस मोह-माया के साथ तुमने लगन लगा रखी है, वह मिथ्या है, मृत्यु के समय वह तुम्हारा साथ नहीं देगी। तेरी जीवन रूपी समूह रात्रि अज्ञानता के अंधेरे में बीत गई है, अब भी यदि सतिगुरु की शरण लेकर उनकी सेवा करोगे तो तेरे अर्न्तमन में ज्ञान का प्रकाश उदय हो जाएगा। हे नानक! जीवन रूपी रात्रि के चतुर्थ प्रहर में मृत्यु-काल निकट आ रहा है॥४॥ हे मेरे वणजारे मित्र! जब भगवान का सन्देश आ जाता है तो प्राणी इस दुनिया को छोड़कर चल देता है। उसके किए कर्म उसके साथ जाते हैं। हे मेरे वणजारे मित्र! वह एक क्षण की भी देरी नहीं करने देते। यमदूत नश्वर प्राणी को मजबूत हाथों से पकड़कर ले जाते हैं। प्रभु का लिखित आदेश मिलते ही प्राणी को यमदूत संसार से अलग कर देते हैं। ऐसे में मनमुखी प्राणी सदा कष्ट सहन करते हैं। जो प्राणी पूर्ण सतिगुरु की भरपूर सेवा करते हैं, वे परमात्मा के दरबार में सदैव सुखी रहते हैं। इस कलियुग में शरीर धरती रूप है। इस शरीर रूपी धरती में मनुष्य जो कर्म रूपी बीज बोता है, वह उसका वही फल प्राप्त करता है। हे नानक! भगवान के भक्त उसके दरबार में सुन्दर लगते हैं और मनमुख हमेशा ही जन्म-मरण के चक्र में पड़कर भटकते रहते हैं॥५॥१॥४॥

सिरीरागु महला ४ घरु २ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मुंध इआणी पेईअड़ै किउ करि हरि दरसनु पिखै ॥ हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कंम सिखै ॥ साहुरड़ै कंम सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआए ॥ सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाए ॥ लेखा धरम राइ की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ॥ मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥ १ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ

गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥ बलिआ गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥ अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ॥ वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ २ ॥ हरि सति सते मेरे बाबुला हरि जन मिलि जंञ सुहंदी ॥ पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ॥ साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ॥ सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥ हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइआ पुरखु अनंदी ॥ हरि सति सति मेरे बाबोला हरि जन मिलि जंञ सोहंदी ॥ ३ ॥ हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइआ ॥ खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ॥ होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥ हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ ४ ॥ हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ॥ जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोहंदी ॥ हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ ५ ॥ १ ॥

यदि नवयौवन जीव–स्त्री अपने बाबुल (इहलोक) के घर में ज्ञानहीन ही रहे तो वह अपने पति–प्रभु के दर्शन कैसे कर सकती है? जब भगवान अपनी कृपा करता है तो वह गुरु के माध्यम से ससुराल (परलोक) के कार्य सीख लेती है। गुरमुख पत्नी पिया के घर के कामकाज सीखती है और सदैव ही अपने ईश्वर का चिन्तन करती है। वह अपनी सत्संगी सखियों में रहकर सुखी जीवन व्यतीत करती है और मरणोपरांत वह अपनी बाह घुमाती हुई अर्थात निश्चिंत होकर हरि के दरबार में जाती है। हरि–परमेश्वर के नाम का उच्चारण करने से वह धर्मराज के हिसाब–किताब से बच जाती है। इस तरह अपने पीहर (इहलोक) में ही ज्ञानहीन नवयौवन जीव–स्त्री अपने पति–परमेश्वर के साक्षात् दर्शन कर लेती है॥१॥ हे मेरे बाबुल ! अब मेरा विवाह हो गया है, गुरु के उपदेश द्वारा मैंने पति–परमेश्वर को पा लिया है। गुरु ने मेरे अन्तर्मन से अज्ञान का अंधेरा दूर कर दिया है। गुरु ने मेरे अन्तर्मन में ज्ञान का प्रचण्ड दीपक प्रज्वलित कर दिया है। गुरु का प्रदान किया हुआ ज्ञान का प्रकाश होने पर अँधेरा नष्ट हो गया है और उस आलोक में हरि के नाम का अमूल्य रत्न–पदार्थ मिल गया है। मेरे अहंकार का रोग दूर हो गया है और मेरा दुख मिट गया है। गुरु के उपदेश अधीन अपने अहंकार को मैंने स्वयं ही निगल लिया है। मैंने अकालमूर्ति को अपना पति वरण कर लिया है। वह अनश्वर है और इसलिए वह जन्म और मरण से सदा ऊपर है। हे मेरे बाबुल ! अब मेरा विवाह हो गया है और गुरु के उपदेश अनुसार पति–परमेश्वर हरि को प्राप्त कर लिया है॥२॥ हे मेरे बाबुल ! मेरा हरि–परमेश्वर सत्यस्वरूप है; भगवान के भक्त मिलकर भगवान की बारात में आए हैं। उनके आगमन से बारात बहुत सुन्दर लगती है। मैं अपने पीहर (इहलोक) में भगवान का नाम जपकर सुखपूर्वक रहती हूँ। अब मैं अपने ससुराल (परलोक) में शोभा प्राप्त कर रही हूँ। जिन्होंने अपने पीहर (इहलोक) में नाम–सिमरन किया होता है, उनकी ससुराल (परलोक) में बड़ी शोभा होती है। उनका समूचा जीवन सफल हो जाता है, जिन्होंने गुरु के उपदेशानुसार मन की तृष्णाओं पर विजय प्राप्त की है। ईश्वर के सन्तजनों से भेंट करके मेरा विवाह कार्य सफल हुआ है और आनन्द के स्वरूप प्रभु को मैंने पति के तौर पर पा लिया है। हे मेरे बाबुल ! भगवान सत्यस्वरूप है। भगवान के भक्तों के आगमन से बारात बहुत सुन्दर लगती है॥३॥ हे मेरे बाबुल ! मुझे दहेज में हरि–प्रभु के नाम

का दान दो। वस्त्रों के स्थान पर हरि का नाम दो और शोभा बढ़ाने वाले आभूषणों इत्यादि के स्थान पर भगवान का नाम ही दो। भगवान के नाम से मेरा विवाह कार्य संवर जाएगा। भगवान की भक्ति से ही विवाह-कार्य सुखदायक होता है। सतिगुरु ने मुझे भगवान की भक्ति का ही दान दिलवाया है। इस दान से समूचे ब्रह्माण्ड एवं समस्त खण्डों में मेरी शोभा हो गई है। कोई अन्य दान इस दान की बराबरी नहीं कर सकता। हरिनाम के दहेज के अतिरिक्त जो लोग दान-दहेज का प्रदर्शन करते हैं, वे मिथ्याडम्बरी और अहंकारी हैं। हे मेरे बाबुल! मुझे दहेज में केवल हरि-नाम का ही दान व दहेज प्रदान करो॥४॥ हे मेरे बाबुल! प्रभु-परमेश्वर सर्वव्यापक है। हे मेरे बाबुल! हरि प्रभु को मिलकर जीव-स्त्री की लता विकसित होती है। अनेक युगों से गुरु वंश सदैव चला आता है। जो गुरु के माध्यम से नाम-सिमरन करते हैं वहीं गुरु का वंश होता है। सतिगुरु का वंश प्रत्येक युग में चलता है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर कदापि मरता या जन्मता नहीं। वह जो कुछ देता है सदैव ही बढ़ता जाता है। हे नानक! अद्वितीय प्रभु संतों का संत है। ईश्वर के नाम का उच्चारण करने से पत्नी सुशोभित हो जाती है। हे मेरे बाबुल! मुझे हरि-रूप पति मिला है, हरि सर्वव्यापक है। अपने पति से मिलकर पत्नी की अपने परिवार में अभिवृद्धि हुई है॥५॥१॥

सिरीरागु महला ५ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥ मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥ संगि सहाई हरि नामु धिआई बिरथा कोइ न जाए ॥ मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥ जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥ १ ॥ मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥ चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न बिआपै ॥ गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥ आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥ २ ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥ हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥ तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइआ ॥ चित्र गुपत का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥ ३ ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि नामु जपत परगासो ॥ सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुंनीआ ॥ पुरबे कमाए स्रीरंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥ अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥ नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥ ४ ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥ हरि पी आघाने अंम्रित बाने स्रब सुखा मन वुठे ॥ स्रीधर पाए मंगल गाए इछ पुंनी सतिगुर तुठे ॥ लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ॥ नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ ५ ॥ १ ॥ २ ॥

हे मेरे प्रिय मित्र मन! भगवान का नाम-सिमरन करो। हे मेरे प्रिय मित्र मन! भगवान का नाम हमेशा तेरे साथ रहेगा। अतः भगवान के नाम का ध्यान करो। यह तेरे साथ रहेगा और तेरी सहायता करेगा। नाम-सिमरन करने वाला कोई भी दुनिया से खाली हाथ नहीं जाता। जो भगवान के चरण-कमलों में अपना चित्त लगाता है, उसे मनोवांछित फल प्राप्त होता है। वह प्रभु जल एवं थल

में सर्वव्यापक है। वह समस्त जीवों के हृदय में विद्यमान है और सबको अपनी कृपा–दृष्टि से देखता है। नानक शिक्षा देते हैं कि हे मेरे प्रिय मन! संतों की संगति करके माया के भ्रम–जाल को नष्ट कर दो॥१॥ हे मेरे प्रिय मित्र मन! भगवान के बिना माया का जगत् रूप प्रसार झूठा है। यह संसार विष से भरा हुआ सागर है। अतः ईश्वर के चरणों को अपना जहाज बनाओ फिर तुझे कोई दुःख एवं भय नहीं लगेगा। जिस भाग्यशाली को पूर्ण गुरु मिल जाता है, वह आठ प्रहर प्रभु नाम का भजन करता रहता है। हे प्रभु! तू सृष्टि के आदि एवं युगों से ही अपने सेवकों का स्वामी है। तेरा नाम भक्तों का आधार है। नानक शिक्षा देते हैं कि हे मेरे प्रिय मित्र मन! भगवान के बिना जगत् का यह माया–प्रसार झूठा है॥२॥ हे मेरे प्रिय मित्र मन! हरिनाम के व्यापार में ही लाभ है। हे मेरे मित्र मन! ईश्वर के द्वार पर आसन जमा ले। जिन प्राणियों ने अगाध व भेद–रहित ईश्वर का द्वार पकड़ा है, वे वहीं समाधिस्थ हो गए हैं। वे जन्म–मरण तथा आवागमन से मुक्त हो गए हैं, उनके संशयों एवं दुःखों का नाश हो जाता है। चित्रगुप्त द्वारा उनके कर्मो का लेखा–जोखा भी मिट जाता है और यमदूत विवश हो जाते हैं। नानक शिक्षा देते हैं कि हरि नाम रूपी व्यापार लाभदायक है। अतः इस व्यापार को लेकर अपने साथ ले जाओ॥३॥ हे मेरे प्रिय मित्र मन! संतों की संगति में निवास करो। हे मेरे मित्र मन! ईश्वर का नाम जपने से ज्ञान का प्रकाश उज्ज्वल होता है। प्रभु जगत् का स्वामी है और जीवों को सुख देने वाला है। उसकी आराधना करने से समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। वही सर्वोत्तम प्राणी ईश्वर को पाता है, जिसके पूर्व जन्म के कर्म शुभ होते हैं, वह लम्बे वियोग से मुक्त होकर अपने भगवान में मिल जाता है। मेरे चित्त के भीतर उसमें विश्वास उत्पन्न हो गया है जो प्रत्येक जगह अन्दर और बाहर व्यापक हो रहा है। नानक शिक्षा देते हैं कि हे मेरे प्रिय मित्र मन! संतों की संगति में निवास करो॥४॥ हे मेरे प्रिय मित्र मन! जैसे मछली जल को मिल कर ही जीवित रहती है। वैसे ही मनुष्य का मन भगवान की भक्ति में लीन होकर उसमें मिलकर जीवित रहता है। जो व्यक्ति अमृत वाणी द्वारा भगवान के नाम रूपी जल को पीकर तृप्त हो जाते हैं, उनके मन में सर्व सुख आ बसते हैं। वह भगवान को पा लेते हैं और भगवान का मंगल गायन करते हैं। सतिगुरु उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उनकी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। प्रभु उन्हें अपने साथ मिला लेता है। जगत् का स्वामी प्रभु उन्हें अपना नाम प्रदान करता है, जो नवनिधियाँ प्रदान करने वाला है। हे नानक! जिसे संतों ने नाम–सिमरन की शिक्षा समझा दी है, वह भगवान की प्रेम–भक्ति में मग्न रहता है॥५॥१॥२॥

सिरीराग के छंत महला ५ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

डखणा ॥ हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥ संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥ १ ॥ छंतु ॥ चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवए जीउ ॥ दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ॥ दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु धीरजु किउ करै ॥ नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥ मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साधसंगि मिलि गावए ॥ नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावए ॥ १ ॥

(इसमें श्री गुरु अर्जुन देव जी के पाँच डखणे तथा छन्त हैं। दोहे अथवा सोरठे के प्रवाह का जो छन्द बहावलपुरी तथा सिंधी भाषा में लिखा जाए तथा जिसमें 'द' की जगह 'ड' एवं 'स' के स्थान पर 'ह' का इस्तेमाल हो, उसे डखणा कहते हैं। छंत छन्द को कहा जाता है।)

डखणा॥ मेरा प्रिय–प्रभु मेरे अन्तर्मन में ही निवास करता है। फिर मैं उसके दर्शन कैसे करूँ। हे नानक! संतों की शरण ग्रहण करने से प्राणों का आधार प्रभु मिल जाता है॥ १॥ छंद॥ प्रभु के

चरण–कमलों से प्रेम करने की मर्यादा संतों के मन में बसती है। माया से प्रेम करना मर्यादा और नीति के विरुद्ध है। प्रभु के भक्तों को यह विपरीत मर्यादा अच्छी नहीं लगती। भगवान के दर्शनों के बिना उसके भक्त एक क्षण भर के लिए भी कैसे धैर्य कर सकते हैं ? जैसे मछली जल के बिना तड़प–तड़प कर मर जाती है, वैसे ही नाम के बिना प्रभु–भक्तों का मन एवं तन मृत समान हो जाते हैं। हे मेरे प्राणों के आधार प्रिय प्रभु ! मुझे मिलो, चूंकि संतों की सभा में मिलकर मैं तेरी महिमा–स्तुति करूँ। हे नानक के स्वामी ! मुझ पर कृपा करो, चूंकि मेरा मन एवं तन तेरे ही स्वरूप में समा जाए॥ १॥

डखणा ॥ सोहंदड़ो हभ ठाइ कोइ न दिसै डूजड़ो ॥ खुल्हड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥ १ ॥ छंतु ॥ तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ ॥ सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥ किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥ मन बांछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥ अनाथ के नाथे सब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥ नानक की बेनंती प्रभ पहि क्रिपा करि भवजलु तारीऐ ॥ २ ॥

डखणा॥ हे नानक ! सतिगुरु को मिलने से मेरे कपाट खुल गए हैं। अब मुझे ज्ञान हो गया है कि परमात्मा सर्वव्यापक है। उस प्रभु के अलावा मुझे अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता॥१॥ छंद॥ हे संतों के आधार प्रभु ! तेरे वचन बहुत सुन्दर एवं अपार हैं। मनुष्य को वाणी का ही चिन्तन करना चाहिए। जो व्यक्ति श्वास– श्वास एवं भोजन के ग्रास के साथ प्रभु के नाम का सिमरन करते हैं, उनकी प्रभु में पूर्ण आस्था हो जाती है। हे प्रभु ! तुम्हें हम क्यों विस्मृत करें? हे अनंत गुणों वाले प्रभु ! तुम ही मेरे प्राण हो। फिर तुझे एक क्षण भर के लिए भी क्यों विस्मृत किया जाए। मेरा प्रभु मुझे मनोवांछित फल प्रदान करता है। वह मेरे मन की पीड़ा को जानता है। हे अनाथों के नाथ प्रभु ! तू हमेशा समस्त जीवों के साथ रहता है। तेरा नाम–स्मरण करने से मानव जन्म जुए की बाजी की तरह व्यर्थ नहीं जाता। नानक की प्रभु के समक्ष यही प्रार्थना है कि हे प्रभु ! कृपा करके मुझे भवसागर से पार कर दीजिए॥ २॥

डखणा ॥ धूड़ी मजनु साध खे साई थीए क्रिपाल ॥ लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥ १ ॥ छंतु ॥ सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥ मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अंम्रितु पीवते जीउ ॥ अंम्रितु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥ भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥ सरबसो सूख आनंद घन पिआरे हरि रतनु मन अंतरि सीवते ॥ इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥ ३ ॥

डखणा॥ हे नानक ! संतों की चरण–धूलि में वही व्यक्ति स्नान करता है, जिस पर मालिक–प्रभु कृपालु होता है। जिन्हें हरि–नाम रूपी धन मिल जाता है, समझ लो उन्हें सभी पदार्थ मिल गए हैं॥ १॥ छंद॥ जगत् के स्वामी प्रभु का धाम अत्यंत सुन्दर है। वह प्रभु के भक्तों का निवास–स्थान है। प्रभु के भक्त उस सुन्दर स्थान की प्राप्ति की आशा में जीते हैं। वह अपने मन एवं तन द्वारा भगवान का नाम–सिमरन करने में मग्न रहते हैं। वे हरि–रस का पान करते हैं और सदैव स्थिर जीवन वाले हो जाते हैं। वे विष रूप संसार के रसों को फीका समझते हैं। जब मेरा गोपाल प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया तो मेरे मन ने सत्संगति को नाम की निधि स्वीकार कर लिया। प्रभु के प्रिय भक्त समस्त सुख एवं बड़ा आनंद प्राप्त करते हैं। वह हरि–नाम रूपी रत्न को अपने हृदय में पिरो कर रखते हैं। हे नानक ! प्राणों का आधार प्रभु उन्हें तिल भर समय के लिए भी विस्मृत नहीं होता। वे हर समय उसका नाम–सिमरन करके ही जीवित रहते हैं॥ ३॥

डखणा ॥ जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिओहि ॥ आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ॥ १ ॥ छंतु ॥ प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥ संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ॥ हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भए ॥ मनि सरब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥ सखी मंगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ॥ करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ॥ ४ ॥

डखणा॥ हे प्रभु! तुम उन्हें ही मिलते हो, जिन्हें तुम अपना बना लेते हो। हे नानक! प्रभु भक्तजनों से अपनी महिमा सुनकर स्वयं मुग्ध हो जाता है॥१॥ छंद॥ भक्तों ने प्रेम की नशीली बूटी से भगवान को प्रसन्न करके अपने मोह–जाल में फँसा लिया है। संतों की दया से अथाह परमेश्वर के गले लगकर वह शोभा प्राप्त करता है। वह भगवान के कण्ठ से लगकर शोभा प्राप्त करता है और उसके सभी दुख नाम के फलस्वरूप नष्ट हो गए हैं। उसकी भक्ति के गुणों के कारण प्रभु उसके वश में हो गया है और सभी सुख उसके मन में आकर बस गए हैं। जीव रूपी स्त्री ने अपनी सत्संगी सहेलियों के साथ मिलकर मंगल गायन किया है। उसकी मनोकामनाएँ पूरी हो गई है। अब वह माया के मोह में नहीं फँसेगी। हे नानक! प्रिय प्रभु ने जिनका हाथ पकड़ा है उसे भवसागर ने स्पर्श नहीं किया॥४॥

डखणा ॥ साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥ जिना भाग मथाहि से नानक हरि रंगु माणदो ॥ १ ॥ छंतु ॥ कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ ॥ जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ॥ ब्रहमु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥ करु गहि लीने हरि जसो दीने जोनि ना धावै नह मरी ॥ सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥ कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

डखणा॥ ईश्वर का नाम अमूल्य है। इसका मूल्य कोई भी नहीं जानता। जिनके मस्तक पर भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं, हे नानक! वे ईश्वर की प्रीति का आनंद प्राप्त करते हैं॥ छंद॥ हरिनाम इतना पावन है कि उसका मुख से उच्चारण करने वाले पवित्र हो जाते है। वे सभी धन्य हैं, जो प्रभु के नाम को सुनते हैं और प्रभु नाम महिमा को लिखने वालों का तो समूचा वंश ही भवसागर से पार हो जाता है। जिन्हें संतों की संगति मिल जाती हैं, वे परमात्मा के नाम में मग्न हो जाता है और ईश्वर का चिन्तन करता हैं। जो ब्रह्म का चिन्तन करते हैं वे अपना जीवन सफल कर लेते हैं और उन पर ठाकुर की बड़ी कृपा होती है। ईश्वर उनका हाथ थाम कर उन्हें यश प्रदान करता है और योनियों के आवागमन से मुक्त होकर जन्म–मरण के बंधन में नहीं पड़ते। दयालु एवं कृपालु सतिगुरु को मिलकर काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार नष्ट हो गए हैं। जगत् का स्वामी अकथनीय है और उसकी महिमा कथन नहीं की जा सकती। नानक उस पर तन–मन से न्यौछावर हैं। इसलिए वह उस पर कुर्बान जाता है॥ ५॥ १॥ ३॥

सिरीरागु महला ४ वणजारा ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥

हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥ हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥ सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥ १ ॥ मै हरि बिनु अवरु

न कोइ ॥ हरि गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥ विचि हउमै करम कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥ पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥ वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥ जन नानकि ब्रहमु पछाणिआ हरि कीरति करम कमाउ ॥ २ ॥ मनि हरि हरि लगा चाउ ॥ गुरि पूरै नामु द्रिड़ाइआ हरि मिलिआ हरि प्रभ नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जोबनि सासु है तब लगु नामु धिआइ ॥ चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥ जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥ ३ ॥ मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ गुर सबदी पारि लघाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥ हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥ गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ॥ जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥ ४ ॥ मनि हरि हरि जपनु करे ॥ हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥ गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥ मै धर नामु अधारु है हरि नामै ते गति मति ॥ मै हरि हरि नामु विसाहु है हरि नामे ही जति पति ॥ जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥ ५ ॥ हरि धिआवहु हरि प्रभु सति ॥ गुर बचनी हरि प्रभु जाणिआ सभ हरि प्रभु ते उतपति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥ सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥ धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥ गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥ जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥ ६ ॥ हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥ मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरि नामु जिना रहरासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ १ ॥

जिस परमात्मा ने यह सृष्टि–रचना की है, उसका 'हरि–हरि' नाम सबसे उत्तम है। वह हरि–परमेश्वर समस्त जीवों का पालन–पोषण करता है और वहीं राम सर्वव्यापक है। इसलिए सदैव उस परमात्मा का ध्यान करना चाहिए। चूंकि उसके अतिरिक्त जीव का अन्य कोई सहारा नहीं है। जो व्यक्ति अपना चित्त माया के मोह में लगाकर रखते हैं, वे मृत्यु समय दुखी होकर विलाप करते हुए सबकुछ दुनिया में छोड़कर ही चले जाते हैं। हे नानक ! जो व्यक्ति भगवान का नाम–सिमरन करते हैं, अन्तिम समय भगवान का नाम ही उनका साथी बनता है॥ १॥ मेरे भगवान के अलावा मेरा अन्य कोई सहारा नहीं है। हे मेरे वणजारे मित्र ! भगवान तो गुरु की शरण ग्रहण करने से ही मिलता है। यदि मनुष्य की किस्मत अच्छी हो तो ही भगवान मिलता है॥१॥ रहाउ॥ हे भाई ! संतजनों की कृपा बिना ईश्वर का नाम प्राप्त नहीं हुआ। स्वेच्छाचारी अहंकारवश ऐसे कर्म करते हैं, जैसे वेश्या–पुत्र पिता का नाम नहीं जानता। वैसे ही ऐसे लोगों का प्रभु पिता का पता नहीं चलता। प्राणी पितृ–जाति को तभी प्राप्त करता है, यदि गुरु जी प्रसन्न होकर उस पर कृपा धारण करे। मनुष्य को बड़े सौभाग्य से गुरु प्राप्त होता है और दिन–रात वह प्रभु की प्रीति में लगा रहता है। हे नानक ! जिसने ब्रह्म को पहचान लिया है, वहीं भगवान की महिमा का कर्म करता है॥२॥ उसके हृदय में भगवान के सिमरन हेतु चाव उत्पन्न हो गया है। पूर्ण गुरु ने उसके हृदय में नाम बसा दिया है। जिसके कारण उसे हरि–प्रभु का नाम मिल गया है और भगवान भी मिल गया है॥१॥ रहाउ॥ जब तक शरीर स्वस्थ है,

और उसमें प्राणों का संचार होता है, तब तक तुम हरि–नाम की आराधना करो। तेरे नश्वर संसार से गमन करते समय ईश्वर का नाम तेरे साथ जाएगा और अंत में स्वामी तुझे मृत्यु से मुक्त कराएगा। मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिनके हृदय में ईश्वर ने आकर वास कर लिया है। जो लोग दुखभंजक हरि के नाम का चिन्तन नहीं करते, वे अंतिम समय पश्चाताप करते हुए चले जाएँगे। हे नानक ! ईश्वर ने जिसके मस्तक पर भाग्य–रेखा लिखी है, वह ईश्वर के नाम का स्मरण करते हैं॥३॥ हे मेरे मन ! तू ईश्वर के नाम के साथ प्रीति लगा। किसी भाग्यशाली व्यक्ति को ही गुरु मिलता है और गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर इस सृष्टि को स्वयं उत्पन्न करता है और स्वयं ही प्राण देता और लेता है। हरि स्वयं ही मोह–माया के भ्रम में भुला देता है और स्वयं ही बुद्धि प्रदान करता है। गुरमुखों के मन में आत्मिक प्रकाश होता है और ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं। मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने गुरु के उपदेश द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया है। हे नानक ! मेरा हृदय प्रफुल्लित हो गया है और मेरे चित्त के अन्दर ईश्वर आकर बस गया है॥४॥ हे मेरे मन ! तू ईश्वर के नाम का जाप कर। हे मेरे मन ! तू भागकर ईश्वर रूप गुरु की शरण ग्रहण कर। वह तेरे सर्व पापों–दुःखों का निवारण कर देंगे॥१॥ रहाउ॥ राम प्रत्येक प्राणी के हृदय में वास करता है। कैसे और किस भेद से वह प्राप्त किया जा सकता है? यदि प्राणी को भाग्यवश पूर्ण सतिगुरु मिल जाए तभी उसके हृदय में हरि आकर टिक जाता है। ईश्वर का नाम ही मेरा आश्रय और निर्वाह है। स्वामी के नाम से ही मुझे मोक्ष एवं मुक्तिदायिनी सूझ मिलती है। ईश्वर के नाम में मेरा विश्वास है और ईश्वर का नाम ही मेरी जाति एवं प्रतिष्ठा है। नानक ने नाम की आराधना की है और वह ईश्वर–रंग में मग्न उसी का नाम स्मरण करता है॥५॥ भगवान का ध्यान करो, भगवान सदैव सत्य है। गुरु के शब्द द्वारा मनुष्य ईश्वर को समझता है। परमेश्वर ही सृष्टि का कर्त्ता है॥१॥ रहाउ॥ जिन प्राणियों के भाग्य में प्राप्ति लिखी है, वे गुरु के पास आते हैं और उनको मिलते हैं। हे मेरे वणजारे मित्र ! जो व्यक्ति श्रद्धा भावना से गुरु के पास आते हैं, गुरु उनके हृदय में भगवान के नाम का प्रकाश कर देता है। वह व्यापार और व्यापारी दोनों ही धन्य हैं, जिन्होंने ईश्वर के नाम का व्यापार किया है अर्थात् जो श्रद्धा की पूँजी लगाकर प्रभु नाम की सामग्री लादते हैं। गुरमुख जनों के मुख प्रभु–दरबार में उज्ज्वल हैं। ईश्वर के दरबार में वह प्रभु के पास आते हैं और उसमें लीन हो जाते हैं। हे नानक ! गुरु उन्हें ही मिलता है, जिन पर गुणों का भण्डार भगवान स्वयं प्रसन्न होता है॥६॥ हे मनुष्य ! प्रत्येक श्वास एवं भोजन के ग्रास के साथ तुम ईश्वर का ध्यान करो। जिन्होंने भगवान के नाम को अपने जीवन सफर की पूँजी बनाया है, उन गुरमुखों के मन में भगवान के लिए प्रेम उत्पन्न होता है॥ १॥ रहाउ॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥

सलोक मः ३ ॥ रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥ सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥ रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥ जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥ नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥ १ ॥

['वार' यशोगान की कविता को कहते हैं। 'पउड़ी' एक तरह का छन्द है, जिसमें वीरता की गाथा का वर्णन किया जाता है। यहाँ पर गुरु जी भगवान की महिमा कर रहे हैं।]

श्लोक महला ३॥ रागों में श्री राग तभी सर्वोत्तम राग है, यदि इसके द्वारा प्राणी का सत्य–परमेश्वर से प्रेम हो जाए। फिर मन में हमेशा ही सत्य प्रभु निवास करता है और प्राणी की बुद्धि अपार प्रभु में स्थिर होती है। गुरु के शब्द का चिंतन करने से प्राणी नाम रूपी अमूल्य रत्न को प्राप्त

कर लेता है। नाम–सिमरन करने से मनुष्य की जिह्वा एवं मन सत्य हो जाते हैं और उसका शरीर एवं आकार भी सत्य हो जाता है। हे नानक! नाम का सत्य व्यापार हमेशा सत्य के पुंज सतिगुरु की सेवा करने से ही होता है॥ १॥

मः ३ ॥ होरु बिरहा सभ धातु है जब लगु साहिब प्रीति न होइ ॥ इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥ सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ॥ नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जब तक प्रभु से सच्चा प्यार नहीं होता, मनुष्य की शेष प्रीति निरर्थक है। मन को माया ने मोहित कर रखा है, इसलिए वह प्रभु को देखता–सुनता ही नहीं। पति–परमेश्वर के दर्शन के बिना प्रेम उत्पन्न नहीं होता। अंधा अर्थात ज्ञानहीन आदमी क्या कर सकता है? हे नानक! जिस प्रभु ने मनुष्य को नेत्रहीन (ज्ञानहीन) किया है, वही उसे ज्ञान रूपी नेत्र दे भी सकता है॥२॥

पउड़ी ॥ हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥ हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥ हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥ हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥ १ ॥

पउड़ी॥ एक ईश्वर ही समस्त जीवों का रचयिता है और एक ही ईश्वर का दरबार है। एक ईश्वर का ही आदेश सब पर चल रहा है और तुम एक ईश्वर को उपने हृदय में धारण करो। उस स्वामी के अलावा अन्य कोई नहीं। तुम अपना डर, संदेह तथा भय निवृत्त कर दो। उस हरि की ही स्तुति करो, जो तेरे घर के अन्दर व बाहर रक्षा करता है। ईश्वर जिस पर दयालु होता है, वह प्रभु का भजन करने से भय के विकराल सागर से पार हो जाता है॥१॥

सलोक मः १ ॥ दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ समस्त नियामतें उस भगवान की दी हुई हैं। उसके साथ कोई बल नहीं चल सकता है? कई प्राणी जागते हुए भी उससे नियामतें प्राप्त नहीं कर सकते और कई प्राणियों को वह नींद से जगाकर नियामतें देता है॥१॥

मः १ ॥ सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकां ॥ दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥ २ ॥

महला १॥ विश्वास एवं संतोष धैर्यशालियों के गुण हैं और सहनशीलता फरिश्तों का यात्रा–व्यय हैं। ऐसे व्यक्ति पूर्ण प्रभु के दर्शन कर लेते हैं परन्तु दोषियों को कहीं भी स्थान नहीं मिलता॥२॥

पउड़ी ॥ सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ॥ तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥ हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ॥ तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥ हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! इस दुनिया की रचना आपने की है और स्वयं ही तुमने दुनिया को अलग–अलग धंधों में लगाया है। अपनी महानता को देखकर तुम स्वयं ही प्रसन्न होते हो। मेरे प्रभु तेरे अलावा अन्य कुछ भी नहीं। तुम सच्चे मालिक हो। तुम स्वयं ही सर्वत्र व्यापक हो। हे संतजनो! आप उस परमेश्वर की उपासना करो, जो अंतिम समय तुम्हें मुक्ति प्रदान करेगा॥२॥

सलोक मः १ ॥ फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥ सभना जीआ इका छाउ ॥ आपहु जे को भला कहाए ॥ नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ ऊँची जाति एवं नाम का अहंकार व्यर्थ है। समस्त जीवों में एक ही ईश्वर रूपी वृक्ष की छाया का सुख उपलब्ध है। हे नानक! यदि कोई व्यक्ति स्वयं को अच्छा कहलवाता है तो उसे तभी अच्छा जाना जाएगा, यदि उसका सम्मान प्रभु के दरबार में स्वीकृत होगा॥१॥

मः २ ॥ जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥ ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥ २ ॥

महला २॥ जिस प्रियतम से प्रेम होता है, उसके ज्योति ज्योत समाने से पूर्व ही जगत् में प्राण त्याग कर चले जाना बेहतर है। प्रियतम के पश्चात् जीना संसार में धिक्कार का जीवन व्यतीत करना है॥२॥

पउड़ी ॥ तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ॥ दस चारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥ इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥ तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अंम्रितु पीवे ॥ ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! तूने स्वयं इस धरती की रचना की है, चाँद एवं सूर्य ये दो दीपक बनाए हैं। तुम्हीं ने इस ब्रह्माण्ड में चौदह पुरियों की रचना की है, जहाँ पर प्राणियों के कर्मों का व्यापार होता है। जो प्राणी गुरमुख हो जाते हैं, ईश्वर उन्हें मोक्ष रूपी लाभ प्रदान करता है। जो सत्य नाम के अमृत का पान करते हैं, उन्हें यमदूत नहीं पकड़ते। ऐसे ईश्वर से स्नेह करने वाले प्राणी स्वयं भी मुक्त होते हैं और उनका परिवार भी बच जाता है तथा जो उनके पीछे चलता है, वह भी बच जाता है॥३॥

सलोक मः १ ॥ कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥ वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥ कुदरति है कीमति नही पाइ ॥ जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥ सरै सरीअति करहि बीचारु ॥ बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥ सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥ जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ भगवान अपनी कुदरत की रचना करके स्वयं ही इसमें निवास कर रहा है। जो प्राणी जीवन काल का विचार करता है, वही परमात्मा का सच्चा भक्त होता है। भगवान कुदरत में निवास करता है परन्तु उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। यदि इन्सान मूल्य जान भी ले, तो वह ब्यान नहीं कर सकता। कुछ लोग शरीयत द्वारा मालिक-प्रभु बारे विचार करते हैं। परन्तु ईश्वर को समझने के बिना वह किस तरह पार हो सकते हैं? धैर्य को नमन करो और मन को नाम-सिमरन में लगाने का जीवन-मनोरथ बनाओ। फिर जिस तरफ भी देखोगे, उधर ही ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन करोगे॥१॥

मः ३ ॥ गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ नानक सतिगुरु तां मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥ २॥

महला ३॥ गुरु की संगति (शारीरिक रूप से) निकट अथवा दूर रहने से प्राप्त नहीं होती। हे नानक! सतिगुरु तभी मिलते हैं, यदि मन उनकी उपस्थिति के अन्दर सदैव विचरण करे॥२॥

पउड़ी ॥ सपत दीप सपत सागरा नव खंड चारि वेद दस असट पुराणा ॥ हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥ सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारग पाणा ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥ तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ सृष्टि में सात द्वीप, सात समुद्र, नौ खण्ड, चार वेद एवं अठारह पुराण हैं। हे प्रभु! तुम इन सबमें विद्यमान हो और तुम सबको प्रिय हो। हे सारिंगपाणि ईश्वर! समस्त जीव-जन्तु सदैव तुम्हारा ही सिमरन करते हैं। जो गुरमुख हरि की वंदना करते हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ। हे ईश्वर! तुम ही आश्चर्यजनक लीलाओं को रचकर स्वयं ही सबमें विद्यमान हो रहे हो॥४॥

सलोक मः ३ ॥ कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ॥ सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ॥ कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ॥ नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ *(एक बार गुरु अमरदास जी श्रद्धालुओं को उपदेश प्रदान कर रहे थे कि तभी किसी सिक्ख ने उनके उपदेश लिख लेने के लिए कलम-दवात मंगवाई। इसी पर यह श्लोक उच्चरित किया गया।)*

लेखनी और दवात मंगवाने की क्या आवश्यकता है? जो लिखना चाहते हो, उसे अपने ह्रदय में ही लिखो। ह्रदय में लिख लेने से तुम सदैव प्रभु के प्रेम में लीन रहोगे और कभी भी उस परमेश्वर से विलग नहीं होगे। कलम और दवात नाशवान हैं, लिखित कागज भी नष्ट हो जाएगा। हे नानक! जो प्रेम प्रभु ने प्रारम्भ से ही जीव की किस्मत में लिख दिया है, वह प्रेम कभी भी मिट नहीं सकता॥१॥

मः ३ ॥ नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ॥ सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ॥ नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जो वस्तु दृश्यमान है, वह कभी अनतकाल तक प्राणी का साथ नहीं देती। चाहे तुम परख कर देख सकते हो। अतः सतिगुरु ने सदैव सत्य की प्रेरणा दी है; उसी सत्य में सुरति लगाने से सत्य की प्राप्ति होगी। हे नानक! वह सत्य प्रभु नाम द्वारा ही मिलता है, किन्तु उसकी उपलब्धि शुभ कर्मो से होती है॥२॥

पउड़ी ॥ हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ॥ जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥ सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥ तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ॥ जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! अन्दर-बाहर अर्थात् समस्त सृष्टि में तू ही मौजूद है। इस रहस्य को तू ही जानता है। मनुष्य जो कुछ भी करता है, उसको परमात्मा जानता है। हे मेरे मन! तू ईश्वर का चिन्तन कर। जो प्राणी पाप करता है, केवल वही भय में रहता है। परन्तु धर्म करने वाला नित्य प्रसन्नचित्त रहता है। हे भगवान! तुम सत्य-स्वरूप हो, तुम्हारा न्याय भी सत्य है। अतः (प्रभु की शरण में) हमें किस बात का भय है। हे नानक! जिन्होंने सत्य (परमात्मा) को पहचान लिया, वे उस सत्य में ही विलीन हो जाते हैं॥५॥

सलोक मः ३ ॥ कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ॥ लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ दवात सहित कलम भी जल जाए, लिखा हुआ कागज भी जल जाए, स्वयं लिखने वाला भी जल कर मर जाए, जिसने द्वैत-भाव बारे लिखा है। हे नानक! प्राणी वही कर्म करता है, जो उसके पूर्व-जन्म के कर्म-फलानुसार है। अन्य कुछ नहीं किया जा सकता॥१॥

मः ३ ॥ होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ॥ नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ॥ २ ॥

महला ३॥ भगवान के नाम के सिवाय अन्य कुछ पढ़ना एवं बोलना मिथ्या है। ये तो माया से प्रेम उत्पन्न करते हैं। हे नानक! भगवान के नाम के सिवाय कुछ भी अटल नहीं रह सकता। इसके अलावा अन्य पढ़-पढ़कर मनुष्य नष्ट ही होते हैं॥

पउड़ी ॥ हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धरम का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥ हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥ हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ भगवान की महिमा महान है और भगवान का भजन करना ही जीव हेतु उत्तम है। भगवान की महिमा महान है, क्योंकि भगवान का न्याय धर्म का है। भगवान की महिमा महान है, जो जीव को महिमा करने का ही फल प्राप्त होता है। भगवान की महिमा महान है, जो वह निंदक की बात नहीं सुनता। भगवान की महिमा महान है, क्योंकि वह बिना पूछे ही सबकी कामनाएँ पूरी करता है॥६॥

सलोक मः ३ ॥ हउ हउ करती सभ मुई संपउ किसै न नालि ॥ दूजै भाइ दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सारी दुनिया मैं-मैं अर्थात् अहंकार करती हुई नष्ट हो गई है। मृत्यु के समय यह धन-संपत्ति किसी के साथ नहीं जाती। मोह-माया में फँसकर सभी ने दुःख ही प्राप्त किया है। यमदूत सभी को प्रताड़ित करता है। हे नानक! सत्य नाम की आराधना करने से गुरमुख प्राणियों को मोक्ष प्राप्त हुआ है॥१॥

मः १ ॥ गलीं असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥ मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥ रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥ नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥ नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥ २ ॥

महला १॥ बातों में हम उत्तम विचार व्यक्त करते हैं परन्तु आचरण से अपवित्र हैं। मन में हम अशुद्ध और मलिन हैं परन्तु बाहरी वेशभूषा से सफेद दिखते हैं। हम उनकी समानता करते हैं जो प्रभु के द्वार पर उसकी सेवा में मग्न हैं। किन्तु वे अपने पति-परमेश्वर के रंग में लीन हैं और सुख एवं आनंद भोगती हैं। वे सशक्त होने पर भी विनीत होती हुई सदैव दीन एवं नम्र हैं। हे नानक! हमारा जीवन तभी सफल हो सकता है, यदि हम उन मुक्तात्माओं के साथ संगति करें॥२॥

पउड़ी ॥ तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥ तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥ तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥ तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥ हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुर सबदी वेखि निहालु ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ हे जगत् के स्वामी! तू स्वयं ही जल है और स्वयं ही जल में रहने वाली मछली है। हे प्रभु! तू स्वयं ही मछली को फँसाने वाला जाल है। तुम स्वयं ही मछेरा बनकर मछली को पकड़ने हेतु जाल फैंकते हो और स्वयं ही जल में रखा हुआ टुकड़ा हो। हे ईश्वर! तुम स्वयं ही सैंकड़ों हाथ

गहरे जल में गहरे लाल रंग का निर्लिप्त कमल हो। हे भगवान ! जो प्राणी क्षण भर के लिए भी तुम्हारा चिन्तन करते हैं। उन्हें तुम स्वयं ही जन्म–मरण के चक्र से मुक्त कर देते हो। हे परमेश्वर ! तेरे हुक्म से परे कुछ भी नहीं। गुरु के शब्द द्वारा तेरे दर्शन करके प्राणी कृतार्थ हो जाता है॥ ७॥

सलोक मः ३ ॥ हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥ अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥ जे धन खसमै चलै रजाई ॥ दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥ नानक करमी इह मति पाई ॥ गुर परसादी सचि समाई ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो जीव–स्त्री परमेश्वर के आदेश को नहीं जानती, वह बहुत विलाप करती है। उसके मन में छल–कपट विद्यमान होता है, सो वह सुख की गहरी नींद नहीं सोती। यदि जीव–स्त्री अपने पति–प्रभु की इच्छानुसार चले, तो वह अपने प्रभु के दरबार एवं घर में ही सम्मान पा लेती है और पति–प्रभु उसे अपने आत्म–स्वरूप में बुला लेता है। हे नानक ! उसे यह ज्ञान भगवान की कृपा द्वारा ही होता है। गुरु की कृपा से वह सत्य में ही समा जाती है॥१॥

मः ३ ॥ मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुंभा देखि न भुलु ॥ इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥ दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ॥ बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ॥ नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे नामविहीन मनमुख ! माया का रंग कुसुंभे के फूल जैसा सुन्दर होता है। तू इसे देखकर भूल मत जाना। इसका रंग थोड़े दिन ही रहता है। इसका मूल्य भी बहुत न्यून है। जो व्यक्ति माया से प्रेम करते हैं, वे मूर्ख ज्ञानहीन एवं गंवार हैं। वे माया के मोह में जल कर मरते हैं। मरणोपरांत वे विष्टा के कीड़े बनते हैं, जो पुनः पुनः जन्म लेकर विष्टा में जलते रहते हैं। हे नानक ! जो व्यक्ति सहज अवस्था में गुरु के प्रेम द्वारा प्रभु–नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही सुख भोगते हैं। उनका भक्ति का प्रेम कभी नाश नहीं होता और वे सहज अवस्था में समाए रहते हैं॥२॥

पउड़ी ॥ सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु संबाहिआ ॥ इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ॥ तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कंमि ओइ लाइआ ॥ इकना सचु बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ॥ हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! तुमने समूची सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही भोजन देकर सबका पालन करते हो। कई प्राणी छल–कपट करके भोजन खाते हैं और अपने मुख से वह झूठ एवं असत्यता व्यक्त करते हैं। हे प्रभु ! जो तुम्हें भला प्रतीत होता है, तुम वहीं करते हो और प्राणियों को अलग–अलग कार्यों में लगाते हो और वह वही कुछ करते हैं। कई प्राणियों को तुमने सत्य नाम की सूझ प्रदान की है और उनको गुरु द्वारा नाम के अमूल्य भण्डार दिलवाए हैं। जो प्राणी ईश्वर का सिमरन करके खाते हैं उनका खाना फलदायक है। जो प्राणी ईश्वर को स्मरण नहीं करते, वह दूसरे से माँगने के लिए हाथ फैलाते हैं॥८॥

सलोक मः ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ हरि नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु संबाहि ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ॥ मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखदाता नामु वसै मनि आइ ॥ सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥ नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ माया–मोह के स्वाद कारण पण्डित वेदों को पढ़–पढ़कर उनकी कथा करते हैं। माया के प्रेम में मूर्ख मन ने भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया है। अतः उसे प्रभु के दरबार में अवश्य दण्ड मिलेगा। जिस परमेश्वर ने मनुष्य को प्राण और शरीर दिया है, उसे वह कदाचित स्मरण नहीं करता, जो सबका भोजन देकर पालन कर रहा है। मनमुख प्राणियों के गले यम–पाश प्रतिदिन बना रहता है और वे सदैव जन्म–मरण के बंधन में कष्ट सहन करते हैं। ज्ञानहीन मनमुख इन्सान कुछ भी नहीं समझता और वही कुछ करता है जो पूर्व–जन्म के कर्मों अनुसार लिखा है। सौभाग्यवश जब सुखदाता सतिगुरु जी मिलते हैं तो हरि–नाम मनुष्य के हृदय में निवास करने लगता है। ऐसा व्यक्ति सुख ही भोगता है। उसके लिए सुख ही वस्त्रों का पहनावा है और उसका समूचा जीवन सुख में ही व्यतीत होता है। हे नानक! अपने हृदय में से उस नाम को विस्मृत मत करो, जिसकी बदौलत सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त होती है॥१॥

मः ३ ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥ गुरमती आपु पछाणिआ राम नाम परगासु ॥ सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥ सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥ जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु ॥ गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ॥ जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ॥ २ ॥

महला ३॥ भगवान का सत्यनाम गुणों का खजाना है। जिसने सतिगुरु की सेवा की है, उसे सुख ही उपलब्ध हुआ है। जिस व्यक्ति ने गुरु की मति द्वारा अपने स्वरूप को पहचान लिया है, उसके हृदय में प्रभु नाम का प्रकाश हो जाता है। जो व्यक्ति सत्य–नाम का सिमरन करते हैं, उन्हें भगवान से बड़ी शोभा मिलती है। मैं उस भगवान की महिमा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि हे प्रभु! मेरे प्राण एवं मेरा शरीर यह सब कुछ तेरा ही दिया हुआ है। यदि सत्य प्रभु की महिमा नाम द्वारा की जाए तो मनुष्य अनंत सुख भोगता है। मन द्वारा भगवान की महिमा करनी ही जप, तप एवं संयम है। नामविहीन मनुष्य का जीवन धिक्कार योग्य है। नाम गुरु की मति द्वारा ही मिलता है। माया के मोह में फँसकर मनमुख व्यक्ति का विनाश हो जाता है। हे जगत् के स्वामी! जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो, नानक तेरा सेवक है॥२॥

पउड़ी ॥ सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ॥ सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ॥ जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥ तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि वेखहु को निरजासि ॥ सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! सारे प्राणी तेरी संतान हैं और तुम सबके पिता हो। तुम हरेक प्राणी की पूँजी हो। सभी जीव प्रार्थना करके हमेशा तुझसे माँगते रहते हैं। हे प्रभु! जिस किसी को भी तुम देते हो, वह सब कुछ पा लेता है। कई जीवों को तू कहीं दूर ही निवास करता लगता है और कई तुझे अपने पास ही निवास करते समझते हैं। तेरे अलावा कोई स्थान नहीं जिससे माँगा जाए। अपने मन में इसका निर्णय करके देख ले। हे प्रभु! सभी तेरी उपमा करते हैं, गुरमुखों को तेरे दरबार पर तेरे प्रकाश के दर्शन होते हैं॥६॥

सलोक मः ३ ॥ पंडितु पड़ि पड़ि उचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ॥ अंतरि ब्रहमु न चीनई मनि मूरखु गावारु ॥ दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ॥ बिरथा जनमु गवाइआ मरि जंमै वारो वार ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ पण्डित ग्रंथ पढ़-पढ़कर उच्च स्वर में लोगों को सुनाता है। उसे तो माया-मोह से ही प्रेम है। वह मूर्ख एवं गंवार है जो अपने हृदय में विद्यमान परमात्मा को नहीं पहचानता। वह माया-मोह में मुग्ध हुआ जगत् के लोगों को उपदेश देता है और ज्ञान को नहीं समझता। उसने अपना जन्म व्यर्थ गंवा दिया है और वह बार-बार जन्मता एवं मरता रहता है॥१॥

मः ३ ॥ जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ॥ सदा सांति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ॥ आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुर सबदी वीचारु ॥ नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ॥ २ ॥

महला ३॥ विचार करके यह बात समझ लो कि जिन्होंने सतिगुरु की सेवा की है, उन्होंने ईश्वर के नाम को प्राप्त किया है। उनके चित्त में सदैव सुख-शांति का निवास होता है और उनके दुःख, विलाप-शिकायत नष्ट हो जाते हैं। जब मन गुरु के शब्द को विचार कर अपने अहंत्व को स्वयं ही नष्ट कर देता है तो वह निर्मल हो जाता है। हे नानक! जो प्राणी हरिनाम में लीन रहते हैं, वे मोक्ष प्राप्त करते हैं और भगवान से उनका प्रेम हो जाता है॥२॥

पउड़ी ॥ हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ॥ जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरि नामु धिआइ ॥ गुर सबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ॥ मनहठि किनै न पाइओ पुछहु वेदा जाइ ॥ नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लए हरि लाइ ॥ १० ॥

पउड़ी॥ हरि की सेवा तभी सफल होती है, जब वह गुरु द्वारा इसे स्वीकृत करता है। जिस पर प्रभु प्रसन्न होता है, उसको गुरु जी मिल जाते हैं, केवल वही हरिनाम का ध्यान करता है। गुरु की वाणी द्वारा वह प्रभु को पा लेता है। फिर भगवान उसे भवसागर से पार कर देता है। मन के हठ से किसी को भी ईश्वर प्राप्त नहीं हुआ। चाहे वेदों-शास्त्रों का मनन करके देख लो। हे नानक! वही प्राणी ईश्वर की भक्ति करता है, जिसको भगवान अपने साथ मिला लेता है॥१०॥

सलोक मः ३ ॥ नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥ गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥ आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ॥ सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ ॥ मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ॥ सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ॥ आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ॥ नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे नानक! वही व्यक्ति शूरवीर एवं महान योद्धा है, जिसने अपने अन्तर्मन से दुष्ट अहंकार का नाश कर लिया है। उसने गुरु के माध्यम से नाम की महिमा करके अपना जन्म संवार लिया है। वह स्वयं सदैव के लिए मुक्त हो जाता है तथा अपने समूचे वंश को भी भवसागर से बचा लेता है। वह सत्य प्रभु के दरबार पर बड़ी शोभा प्राप्त करता है और उसे प्रभु का नाम ही प्रिय लगता है। मनमुख प्राणी अहंकार में मरते हैं और अपनी मृत्यु को भी दुःखदायक बना लेते हैं। सब ओर ईश्वर का आदेश चलता है। बेचारे प्राणी क्या कर सकते हैं? उन्होंने स्वयं ही माया के प्रेम में लगकर प्रभु को विस्मृत कर दिया है। हे नानक! नाम से विहीन होने के कारण उन्हें दुःख आकर लग जाते हैं तथा सुख तो उन्हें भूल ही जाता है॥१॥

मः ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ राम नामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥ हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ गुरमती जमु जोहि

न साकै साचै नामि समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिन्हें पूर्ण गुरु ने भगवान का नाम दृढ़ करवा दिया है, उन्होंने अपने अन्तर्मन में से भ्रम को दूर कर लिया है। वह राम नाम द्वारा भगवान की महिमा–स्तुति करते है। भगवान ने उनके अन्तर्मन में अपनी ज्योति का प्रकाश करके उन्हें भक्ति–मार्ग दिखा दिया है। उन्होंने अपने अहंकार को नष्ट करके एक प्रभु में सुरति लगाई है, जिससे उनके अन्तर्मन में भगवान के नाम का निवास हो गया है। गुरु की मति पर अनुसरण करने से मृत्यु उन्हें देख भी नहीं सकती। वे सत्य–प्रभु के नाम में ही मग्न रहते हैं। सृष्टिकर्त्ता स्वयं सब में मौजूद हो रहा है। जो उसे अच्छा लगता है, उसे वह अपने नाम–सिमरन में लगा देता है। यदि नानक भगवान का नाम–सिमरन करता रहता है तो ही वह जीवित रहता है। नाम के बिना तो वह एक क्षण में ही मर जाता है॥२॥

पउड़ी ॥ जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ॥ जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू उस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥ ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ॥ नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ॥ जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ जो प्रभु के दरबार में सम्मानित होता है, वह संसार की समस्त सभाओं के भीतर सम्मानित होता है। जहाँ कहीं भी वह जाता है, उधर ही वह प्रफुल्लित हो जाता है। उसका चेहरा देखने से सारे दोषी पार हो जाते है। उसके भीतर नाम का अमूल्य भण्डार है और हरि के नाम द्वारा ही वह स्वीकृत होता है। नाम की वह पूजा करता है, नाम पर ही उसका निश्चय है और हरिनाम ही उसके समस्त पापों को नष्ट करता है। जो प्राणी प्रभु के नाम का, एक मन व एक चित्त से सिमरन करते हैं, वह इस संसार के अन्दर अमर रहते हैं॥११॥

सलोक मः ३ ॥ आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥ आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥ गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥ खिनु पलु हरि नामु मनि वसै सभ अठसठि तीरथ नाइ ॥ सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥ धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीरथ नाइ ॥ मनमुख करम करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥ नानक मैला उजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सहज अवस्था में गुरु की आज्ञानुसार परमात्मा की पूजा करो। जब जीवात्मा की परमात्मा में आस्था हो जाती है तो जीवात्मा का अपने हृदय–घर में ही भगवान से प्रेम हो जाता है। गुरु के आचरण में रहकर जीवात्मा अटल हो जाती है और वह कहीं भी डगमगाती नहीं। गुरु के बिना सहज सुख उपलब्ध नहीं होता और मन में से लालच की मलिनता दूर नहीं होती। यदि हरि का नाम एक पल व क्षण भर के लिए चित्त में वास कर जाए तो अठसठ तीर्थों के स्नान का फल मिल जाता है। पवित्रात्मा कभी मैली नहीं होती परन्तु यह मैल माया के प्रेम द्वारा ही लगती है। चाहे मनुष्य अठसठ तीर्थस्थलों पर स्नान कर ले, यह मैल धोने से बिल्कुल दूर नहीं होती। मनमुख व्यक्ति अहंकार में धर्म–कर्म करता है और वह सदैव दुःखों का बोझ वहन करता है। हे नानक ! मैला मन तभी पवित्र होता है, यदि वह सतिगुरु में लीन हुआ रहे॥१॥

मः ३ ॥ मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥ मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥ लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥ गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥ मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥ मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥ अंम्रित नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥ विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥ मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥ गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥ नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ यदि मनमुख व्यक्ति को समझाने का प्रयास भी किया जाए तो वे समझाने से भी कभी नहीं समझते। ऐसे मनमुख प्राणियों को यदि गुरमुखों के साथ मिलाने का प्रयास करें तो भी कर्म–बन्धनों के कारण आवागमन में भटकते रहते हैं। प्रभु की प्रीति व माया की लगन दो मार्ग हैं, मनुष्य कौन–सा कर्म करता है अर्थात् किस मार्ग चलता है, वह प्रभु की इच्छा पर निर्भर है। गुरुवाणी की कसौटी का अभ्यास करने से गुरमुख ने अपने मन को वश में कर लिया है। अपने मन के साथ वह विवाद करता है, मन के साथ ही वह सुलह की बात करता है और मन के साथ ही वह संघर्ष के लिए जुटता है। सच्ची गुरुवाणी की प्रीति से मनुष्य सब कुछ पा लेता है जो कुछ वह चाहता है। वह हमेशा अमृत नाम का पान करता है और गुरु के उपदेशानुसार कर्म करता है। जो अपने मन के अलावा किसी अन्य के साथ झगड़ा करता है, वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा कर चला जाएगा। मन के हठ और झूठ तथा मिथ्या कुत्सा के कर्म द्वारा मनमुख प्राणी जीवन का खेल हार जाते हैं। विवेकशील गुरमुख गुरु की दया से अपने मंदे–अहंकार पर विजय पा लेता है और उसकी प्रीति हरि के साथ लग जाती है। हे नानक ! गुरमुख सत्य नाम की कमाई करता है और मनमुख प्राणी आवागमन के चक्र में फँसा रहता है॥२॥

पउड़ी ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥ जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥ हरि अंम्रित कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी ॥ तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥ अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि आखी ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ हे भगवान के संतजनों, भाईओ ! भगवान रूप सतिगुरु की एक कथा सुनो। जिस व्यक्ति के माथे पर प्रारम्भ से ही उसकी किस्मत में लिखा होता है, वहीं इस कथा को सुनकर अपने हृदय में बसाता है। भगवान की अमृत कथा सर्वोत्तम एवं श्रेष्ठ है। गुरु की वाणी द्वारा सहज ही इसका स्वाद प्राप्त होता है। उनके हृदय में प्रभु की ज्योति का प्रकाश हो जाता है। उसके हृदय में से अज्ञान रूपी अँधेरा यूं मिट जाता है जैसे सूर्य रात्रि के अन्धेरे को नाश कर देता है। गुरमुख अपने नेत्रों से उस अदृष्ट, अगोचर, अलक्ष्य परमेश्वर के साक्षात् दर्शन कर लेता है॥ १२॥

सलोक मः ३ ॥ सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ॥ विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो व्यक्ति अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं, वह अपना सिर प्रभु के लेखे में लगा देते हैं अर्थात् वह अपना जन्म सफल कर लेते हैं। ऐसा मनुष्य अपने अहंकार का नाश करके

सत्यस्वरूप ईश्वर की प्रीति में लीन रहते हैं। जिन्होंने सतिगुरु की सेवा नहीं की, वह मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं। हे नानक ! परमात्मा वहीं कुछ करता है, जो कुछ उसे अच्छा लगता है। उसमें किसी का कोई हस्तक्षेप नहीं॥ १॥

मः ३ ॥ मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा करम कमाइ ॥ दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ॥ आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ॥ जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइ ॥ नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसका मन पापों में घिरा हुआ है, वह मंदे कर्म करता है। ज्ञानहीन मनुष्य माया के मोह में फँसकर माया की पूजा करते हैं। जिसके फलस्वरुप उन्हें भगवान के दरबार में दण्ड मिलता है। अतः हमें सदैव ही भगवान की पूजा करनी चाहिए परन्तु सतिगुरु के बिना मनुष्य को ज्ञान नहीं मिलता। सतिगुरु की आज्ञा में रहने वाले प्राणी को ईश्वर की दया से जप-तप, संयम सब कुछ सहज ही मिल जाता है। हे नानक ! भगवान की सेवा-भक्ति उसके चरणों में सुरति लगाने से होती है। जो भगवान को बेहतर लगता है, वहीं उसे स्वीकार होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥ जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखि नामु जपाती ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे मन ! उस हरि-परमेश्वर के नाम का हमेशा भजन करो, जिससे तुझे दिन-रात सदैव सुख उपलब्ध होता है। हे मेरे मन ! तू हरिनाम का भजन कर, जिसका सिमरन करने से तेरे पाप मिट जाते हैं। हे मेरे मन ! उस हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करो, जिससे दरिद्रता, दुख एवं भूख सब दूर हो जाती है। हे मेरे मन ! तू हरिनाम का चिन्तन कर, जिससे जिज्ञासु की सतिगुरु से आसक्ति होती है। जिसके माथे पर परमेश्वर ने भाग्य लिखा है, वह अपने मुख से हरि के नाम का भजन करता है॥ १३॥

सलोक मः ३ ॥ सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥ लख चउरासीह फेरु पइआ मरि जंमै होइ खुआरु ॥ सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोइ ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति होइ ॥ सचि रते गुर सबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ॥ नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो प्राणी सतिगुरु की सेवा नहीं करते और न ही गुरु-शब्द का चिन्तन करते हैं, उनके अन्तर्मन में ज्ञान प्रवेश नहीं करता और वह इस जगत् में मृतक समान हैं। ऐसे प्राणी चौरासी लाख योनियों में चक्र काटते हैं और जीवन-मृत्यु के चक्र में पड़कर नष्ट होते हैं। सतिगुरु की सेवा वही करता है, जिससे प्रभु स्वयं करवाता है। सतिगुरु में नाम रूपी खजाना है, जो प्रभु की दया से उपलब्ध होता है। जो व्यक्ति गुरु की वाणी द्वारा सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं, उनकी सच्ची सुरति हमेशा ही प्रभु में लगी रहती है। हे नानक ! जिसे परमात्मा अपने साथ मिला लेता है, वह उससे कभी भी जुदा नहीं होता और सहज ही उसमें लीन हो जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ सो भगउती जुो भगवंतै जाणै ॥ गुर परसादी आपु पछाणै ॥ धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥ ऐसा भगउती उतमु होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ भगवद् भक्त का पद उसी को दिया जा सकता है, जो भगवान को जानता है। गुरु की कृपा से वह अपने स्वरूप को पहचान लेता है। वह अपने भटकते हुए मन को संयमित करके एक स्थान पर स्थिर कर देता है। वह जीवित ही मृतक समान रहता है और हरिनाम का जाप करता है। ऐसा भगवद् भक्त ही उत्तम होता है। हे नानक! वह सत्य (परमात्मा) में ही समा जाता है॥ २॥

मः ३ ॥ अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥ पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥ पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ॥ बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥ सतसंगति सिउ बादु रचाए ॥ अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥ हरि नामु न चेतै बहु करम कमाए ॥ पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे मोखु न पाए ॥ ३ ॥

महला ३॥ जिस व्यक्ति के हृदय में छल–कपट है और वह अपने आपको सच्चा भक्त कहलवाता है। ऐसा पाखंडी व्यक्ति परमात्मा को कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता। जो व्यक्ति पराई निंदा करता है, वह अपने हृदय को अहंकार की मैल लगाता रहता है। वह स्नान करके बाहर से शरीर की मैल को ही स्वच्छ करता है परन्तु उसके मन की अपवित्रता दूर नहीं होती। साधु–संतों से वह विवाद खड़ा कर लेता है। वह द्वैत–भाव में लीन हुआ दिन–रात दुखी रहता है। वह हरि नाम का चिन्तन नहीं करता और अधिकतर कर्मकाण्ड करता है। जो कुछ उसकी किस्मत में पूर्व–जन्म के कर्मों द्वारा लिखा हुआ है, वह मिटाया नहीं जा सकता। हे नानक! सतिगुरु की सेवा के बिना वह मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता॥३॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़ि न सवाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही ॥ सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ॥ जिन कउ होआ क्रिपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥ तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति सतिगुरु को स्मरण करते हैं, वह जलकर राख नहीं होते। जो व्यक्ति सतिगुरु का चिन्तन करते हैं, वह संतुष्ट और तृप्त हो जाते हैं। जो व्यक्ति सतिगुरु का ध्यान करते हैं, उनको मृत्यु का कोई भय नहीं होता। जिन पर परमात्मा दयालु होता है, वह सतिगुरु पर नतमस्तक होते हैं। लोक तथा परलोक में उनके चेहरे उज्ज्वल होते हैं। वह परमात्मा के दरबार में प्रतिष्ठा की पोशाक धारण करके जाते हैं॥ १४॥

सलोक मः २ ॥ जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥ नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ जो सिर ईश्वर की याद में नमन नहीं होता, उस सिर को काट देना चाहिए। हे नानक! उस मनुष्य ढांचे को लेकर जला देना चाहिए, जिस मनुष्य ढांचे में ईश्वर से विरह की पीड़ा नहीं॥१॥

मः ५ ॥ मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥ कसतूरी के भोलड़ै गंदे डुंमि पईआसु ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक! जो जीव–स्त्री जगत् के मूल प्रभु को भूली हुई है, वह पुनः पुनः जन्मती और मरती है। वह कस्तूरी के भ्रम में गंदे पानी के गड्ढे में पड़ी हुई है॥ २॥

पउड़ी ॥ सो ऐसा हरि नामु धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ॥ सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसरि लए छडाए ॥ सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जु मन की त्रिसना

सभ भुख गवाए ॥ सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी पाए ॥ नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे मन ! तू हरि–परमेश्वर के ऐसे नाम का ध्यान कर, जो समस्त जीवों पर अपना हुक्म चलाता है। हे मेरे मन ! तू हरि–परमेश्वर के ऐसे नाम का जाप कर, जो अंतिम समय तुझे मोक्ष प्रदान करेगा। हे मेरे मन ! तू हरि–परमेश्वर के ऐसे नाम का सिमरन कर, जो तेरे चित्त की समस्त तृष्णाएँ एवं भूख को मिटा देता है। वे गुरमुख बड़े सौभाग्यशाली हैं, जो उस परमेश्वर के नाम का चिन्तन करके निन्दकों–दुष्टों को अपने अधीन कर लेते हैं। हे नानक ! उस नाम की आराधना करो जो सबसे महान है। प्रभु ने तो समस्त जीवों को नाम के समक्ष झुका दिया है॥१५॥

सलोक मः ३ ॥ वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ॥ पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ॥ गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ॥ लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि लिखिआ करतारि ॥ मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ॥ बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ॥ नानक सा सुआलिओ सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ कुरूप एवं आचरणहीन जीव–स्त्री बड़े सुन्दर वस्त्र सुशोभित करती है परन्तु मन में खोट होने के कारण वह झूठी है। वह अपने पति–प्रभु की इच्छानुसार नहीं चलती। वह गंवार अपने पति–प्रभु पर आदेश चलाती है। जो जीव–स्त्री गुरु की आज्ञानुसार चलती है, वह समस्त दुःखों से बच जाती है। परमात्मा ने पूर्व–कर्म फल रूप में जो लिख दिया है, वह मिटाया अथवा बदला नहीं जा सकता। इसलिए उसे अपना तन–मन पति–परमेश्वर को अर्पण करके नाम में अपना प्रेम लगाना चाहिए। अपने मन में विचार करके देख लो कि नाम–स्मरण के अलावा किसी को भी परमात्मा प्राप्त नहीं हुआ। हे नानक ! वही जीव–स्त्री सुन्दर एवं सुलक्षणा है, जिसकी सेज पर सृजनहार स्वामी रमण करता है॥१॥

मः ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ॥ मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरि नामु विसारि ॥ भलके उठि बहु करम कमावहि दूजै भाइ पिआरु ॥ सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ॥ नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उर धारि ॥ २ ॥

महला ३॥ माया का मोह अज्ञानता का अँधकार है। यह मोह रूपी अँधेरा एक समुद्र की तरह है, जिसका कोई आर–पार नजर नहीं आता। अज्ञानी मनमुख व्यक्ति ईश्वर के नाम को विस्मृत करके डूब जाते हैं और भयानक दुःख सहन करते हैं। वह माया के मोह में मुग्ध हुए प्रातः काल उठकर बहुत सारे कर्मकाण्ड करते हैं। जो व्यक्ति अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं, वह भवसागर से पार हो जाते हैं। हे नानक ! गुरमुख जन सत्यनाम को अपने हृदय में लगा कर रखते हैं और सत्य प्रभु में लीन हो जाते हैं॥२॥

पउड़ी ॥ हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ॥ हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइ ॥ सचिआरा देइ वडिआई हरि धरम निआउ कीओइ ॥ सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीओइ ॥ जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर सागर, मरुस्थल, धरती एवं गगन के अन्दर परिपूर्ण है। उसके अलावा अन्य दूसरा कोई नहीं। ईश्वर अपने दरबार में विराजमान होकर जीवों के कर्मों का स्वयं न्याय करता है और समस्त झूठों को पीटकर बाहर निकाल देता है। सत्यवादियों को परमेश्वर शोभा प्रदान करता है

और कर्मानुसार प्रत्येक प्राणी को फल देकर न्याय करता है। इसलिए तुम सभी हरि की महिमा– स्तुति करो, जो निर्धनों एवं अनाथों की रक्षा करता है। वह भद्रपुरुषों को मान–प्रतिष्ठा प्रदान करता है और दोषियों को वह दण्ड देता है॥१६॥

सलोक मः ३ ॥ मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥ पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥ त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥ नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मनमुख जीव–स्त्री विषय–विकारों से मलिन, कुलक्षणी एवं बुरी नारी है। वह अपने स्वामी एवं घर को त्याग देती है और पराए पुरुष के साथ प्रीत करती है। उसकी तृष्णा कभी बुझती नहीं, वह तृष्णाग्नि में जलती है और तृष्णग्नि में जलती हुई विलाप करती रहती है। हे नानक! हरिनाम के अलावा वह कुरूप और कुलक्षणी है और उसके स्वामी ने उसे त्याग दिया है॥ १॥

मः ३ ॥ सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥ सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥ अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ॥ नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ॥ २ ॥

महला ३॥ सुहागिन जीव–स्त्री सतिगुरु की रज़ा में प्रेमपूर्वक नाम में मग्न रहती है। वह सत्य–प्रेम से अपने पति–प्रभु के साथ सदैव ही रमण करती है। वह बड़ी सुन्दर रूप वाली सुन्दरी एवं शोभावान नारी है। हे नानक! मिलाने वाले पति–प्रभु ने नाम में मग्न हुई सुहागिन को अपने साथ मिला लिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥ हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥ हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढी हूं तूं डाढिआ ॥ हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ॥ हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ हे भगवान! माया–मोह के जाल में से जिन जीवों को तूने निकाला है, वे सभी तेरी महिमा–स्तुति करते हैं। जिन जीवों की तूने पापों से रक्षा की है, वे सभी तुझे नमन करते हैं। हे हरि! तुम मान–हीनों के मान हो। तुम बलशालियों में बलशाली हो। हे प्रभु! तूने अहंकारियों को दण्डित करके झुका दिया है। मनमुख विमूढ़ जीवों का तूने ही सुधार किया है। हे भगवान! तुम हमेशा ही अपने निर्धन एवं अनाथ भक्तों को मान–प्रतिष्ठा प्रदान करते हो॥१७॥

सलोक मः ३ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥ हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥ किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥ नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की रजा अनुसार चलता है, वह बड़ा यश प्राप्त करता है। हरि का उत्तम नाम उसके हृदय में वास करता है और इस नाम को उसके हृदय में से कोई भी मिटा नहीं सकता। जिस पर ईश्वर अपनी कृपा करता है, वह शुभ कर्मों के कारण भाग्य से नाम को प्राप्त कर लेता है। हे नानक! सृष्टि की तमाम रचना का कारण परमात्मा के अधीन है। कोई गुरमुख व्यक्ति ही इस भेद को समझता है॥ १॥

मः ३ ॥ नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिव तार ॥ माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥ पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥ गुर परसादी जिनी बुझिआ तिनि

पाइआ मोख दुआरु ॥ मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ॥ गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥ सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ॥ २ ॥

महला ३॥ हे नानक! जो व्यक्ति हरि के नाम का सिमरन करते हैं, वह रात–दिन ईश्वर के एक रस स्नेह में बसते हैं। भगवान की दासी माया उनकी सेवा करती है। संवारने वाले प्रभु के हुक्म में पूर्ण सतिगुरु ने उन व्यक्तियों को गुणों से पूर्ण कर दिया है। गुरु की कृपा से जिन्होंने भगवान को पहचान लिया है, उन्हें ही मोक्ष द्वार प्राप्त हुआ है। मनमुख व्यक्ति परमात्मा के हुक्म को नहीं जानते, इसलिए यमदूत उन्हें मारता रहता है। जो गुरमुख व्यक्ति ईश्वर की आराधना करते हैं, वह भयानक जगत् सागर से पार हो जाते हैं। गुरु जी स्वयं ही क्षमावान हैं, वह जीवों को गुण प्रदान करके उनके समस्त अवगुण मिटा देते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥ हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥ काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ॥ सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥ सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ भगवान के भक्तों की भगवान पर पूर्ण आस्था है। हरि–प्रभु सब कुछ जानता है। परमेश्वर जैसा महान कोई अन्य मत समझो। हरि पूर्ण न्याय करता है। जब परमात्मा अन्याय करके किसी को भी मारता नहीं तो फिर हम क्यों चिंता एवं भय करें? वह परमात्मा सत्य है और उसका न्याय भी सत्य है। उसके दरबार में पापी व्यक्ति ही पराजित होते हैं। हे भक्तजनो! दोनों हाथ जोड़कर भगवान की महिमा–स्तुति करो। भगवान अपने भक्तजनों को भवसागर से पार कर देता है॥ १८॥

सलोक मः ३ ॥ आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥ सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥ नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मेरी यही कामना है कि मैं अपने प्रियतम–प्रभु से मिली रहूँ और उसे अपने हृदय में हमेशा बसाकर रखूं। गुरु के स्नेह एवं अनुराग द्वारा मैं हमेशा प्रभु की स्तुति करती रहूँ। हे नानक! जिस जीव–स्त्री पर प्रभु अपनी कृपा–दृष्टि करता है, उसे वह अपने साथ मिला लेता है और वही जीव–स्त्री सुहागिन है॥ १॥

मः ३ ॥ गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥ हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥ नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी क्रिपा करे ॥ २ ॥

महला ३॥ जिस पर ईश्वर दयालु होता है, वह गुरु की सेवा से उसको पा लेता है। जो लोग हरिनाम की आराधना करते हैं, वह मनुष्य से देवते बन जाते हैं। वह अपने अहंकार को मिटा देते हैं तथा प्रभु के साथ मिल जाते हैं और गुरु के शब्द द्वारा पार हो जाते हैं। हे नानक! जिन पर ईश्वर अपनी कृपा–दृष्टि करता है, वह सहज ही उसमें लीन हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥ आपणी आपि करे परतीति आपे सेव घालीअनु ॥ हरि भगता नो देइ अनंदु थिरु घरी बहालिअनु ॥ पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ॥ हरि भगता नो देइ पिआरु करि अंगु निसतारिअनु ॥ १९ ॥

पउड़ी॥ भगवान ने स्वयं ही भक्तजनों से अपनी भक्ति करवा कर उन्हें अपनी महिमा दिखाई है। भगवान स्वयं ही भक्तों के हृदय में अपनी आस्था उत्पन्न करता है। वह स्वयं ही उनसे अपनी सेवा

करवाता है। भगवान भक्तों को आनंद प्रदान करता है और उन्हें अपने अटल घर में स्थिर करके विराजमान करता है। वह पापियों को स्थिर नहीं रहने देता और उन्हें चुन-चुनकर घोर नरकों में डालता है। भगवान अपने भक्तों से बहुत प्रेम करता है और उनका पक्ष लेते हुए उन्हें भवसागर से पार कर देता है॥ १६॥

सलोक मः १ ॥ कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥ कारी कढी किआ थीऐ जां चारे बैठीआ नालि ॥ सचु संजमु करणी कारां नावणु नाउ जपेही ॥ नानक अगै उतम सेई जि पापां पंदि न देही ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु साहिब जी फुरमाते हैं कि हे पण्डित! तेरे शरीर रूपी घर में कुबुद्धि का निवास है, जो डोमनी है, हिंसा का भी निवास है, जो कसाइन है, जो पराई निंदा रहती है, वह भंगिन है और क्रोध चाण्डाल के रूप में रहता है। यह सभी वृत्तियाँ तेरे शुभ गुणों को लूट रही हैं। लकीरें खींचने का तुझे क्या लाभ है, जब ये चारों ही तेरे साथ विराजमान हैं ? सत्य को अपना संयम, शुभ आचरण को अपनी लकीरें एवं नाम स्मरण को अपना स्नान बना। हे नानक! परलोक में केवल वही सर्वश्रेष्ठ होंगे, जो गुनाहों के मार्ग पर नहीं चलते॥ १॥

मः १ ॥ किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥ जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! यदि प्रभु चाहे तो वह विष्टा खाने वाले कौए को भी मोती चुगने वाला हंस बना देता है। जिस पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह बगुले जैसे पाखंडी पापी को भी हंस जैसा पवित्र बना देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ कीता लोड़ीऐ कंमु सु हरि पहि आखीऐ ॥ कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥ संता संगि निधानु अंम्रितु चाखीऐ ॥ भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥ नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥ २० ॥

पउड़ी॥ यदि कोई कार्य करने की आवश्यकता पड़ जाए तो उसकी सफलता के लिए भगवान के पास प्रार्थना करनी चाहिए। सतिगुरु की शिक्षा द्वारा सत्य प्रभु अपने सेवक का कार्य संवार देता है। संतों की संगति में मिलकर ही नाम रूपी अमृत भण्डार को चखा जाता है। हे भय को नाश करने वाले मेहरवान प्रभु! अपने सेवकों की लाज-प्रतिष्ठा रखो। हे नानक! भगवान की महिमा-स्तुति करने से अलक्ष्य प्रभु से साक्षात्कार हो जाता है॥ २०॥

सलोक मः ३ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु ॥ नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरंकारु ॥ ओना के मुख सद उजले ओना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यह शरीर एवं प्राण सब कुछ भगवान की देन है, वह सभी जीवों को सहारा देता है। हे नानक! गुरु के माध्यम से हमेशा ही उस दाता-प्रभु का सिमरन करना चाहिए। मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ जो निरंकार प्रभु की आराधना करते हैं। उनके मुख सदैव उज्ज्वल रहते हैं और सारा संसार उनको प्रणाम करता है॥ १॥

सोई हुई ज्ञान बुद्धि जाग जाती है। गुरु की कृपा से उसके अन्तर्मन में भगवान से सुरति लग जाती है॥ ३॥ परमात्मा की संगति में रहने से जन्म–मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। ईश्वर की आज्ञा को पहचान कर ही जीव का उससे मिलन हो जाता है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥

सिरीरागु त्रिलोचन का ॥ माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ कुटंबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥ १ ॥ दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥ तिन आगलड़े मै रहणु न जाइ ॥ कोई कोई साजणु आइ कहै ॥ मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥ मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥ माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥ २ ॥ बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥ माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥ ३ ॥ आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरम राओ॥ तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥ ४ ॥ जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा॥ ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ॥ ५ ॥ २ ॥

हे प्राणी ! तेरे मन में मोह–माया की इतनी आसक्ति है कि तुझे बुढ़ापा और मृत्यु का भय भी भूल गया है। जैसे कमल का फूल जल में खिलता है, वैसे ही तुम अपने परिवार को देखकर प्रसन्न होते हो। परन्तु हे कपटी मानव ! तुम पराई–नारी को देखते रहते हो॥१॥ जब बलवान यमदूत आते हैं तो मैं उनके समक्ष टिक नहीं सकता। कोई विरला ही संत है जो इस जगत् में आकर यह बात कहता है। हे मेरे प्रभु ! मुझे दर्शन दीजिए और अपनी भुजाएँ गले में डालकर मुझसे भेंट करो। हे मेरे राम ! मुझे मिलो और बन्धन से मुक्त करो॥१॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! तूने विभिन्न प्रकार के भोग–विलासों एवं राजकीय शान–शौकत में पड़कर ईश्वर को विस्मृत कर दिया है तथा इस संसार सागर में पड़कर तुम ध्यान करते हो कि तुम अमर हो गए हो। तुझे माया ने छल लिया है इसलिए तू प्रभु को स्मरण ही नहीं करता। हे आलसी प्राणी ! तूने अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ २॥ हे प्राणी ! मरणोपरांत तुझे यमपुरी जाते वक्त बहुत ही भयानक अंधकारमय मार्ग से चलना पड़ेगा। उस यमपुरी में सूर्य एवं चन्द्रमा का भी प्रवेश नहीं। जब प्राणी संसार को त्याग देता है, तब वह माया के मोह को भूल जाता है॥३॥ आज मेरे मन में यमराज प्रगट हो गया था और मैंने उसे नेत्रों से देख लिया है। वहाँ यमराज के शक्तिशाली दूत लोगों को अपने हाथों से दलन करते हैं और मैं उनके समक्ष टिक नहीं सकता॥४॥ हे नारायण ! जब कोई मुझे उपदेश करता है तो मुझे यूं लगता है कि जैसे तुम वनों एवं घास के तृणों में भी विद्यमान हो। भक्त त्रिलोचन जी प्रार्थना करते हैं कि हे मेरे राम ! तुम स्वयं ही सबकुछ जानते हो॥५॥२॥

सीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ सुरि नर गण गंध्रब जिनि मोहे त्रिभवण मेखुली लाई ॥ १ ॥ राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाठी गगनु सिंङिआ अरु चुंङिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥ तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥ २ ॥ एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥ तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥ ३ ॥ ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥ अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे पण्डित ! परमात्मा की माया की एक आश्चर्यजनक बात सुनो। उस बारे अब कुछ कहा नहीं जा सकता, उसने देवते, मनुष्य, स्वर्ग के गण–गंधर्व सभी मोहित कर रखे हैं और उसने तीनों लोकों–

आकाश, पाताल एवं पृथ्वी को जकड़ा हुआ है॥१॥ हे मेरे राम ! तेरी वीणा बज रही है, जिससे अनहद नाद उत्पन्न हो रहा है। तेरी कृपा–दृष्टि से भक्तों की उस नाद में सुरति लगती है॥१॥ रहाउ॥ (दशम द्वार पर मदिरा खींचने की भट्ठी है, इड़ा–पिंगला दोनों नलकियाँ हैं और शुद्ध अन्तःकरण मदिरा भरने के लिए स्वर्ण–पात्र है।) मुझे दशम द्वार की भट्ठी सहित एक नलकी अंदर खींचने वाली और एक नलिका बाहर फैंकने वाली के अन्तःकरण का स्वर्ण–पात्र प्राप्त हुआ है। उस पात्र में निर्मल हरि रस की धारा स्रवित होती है। यह बहने वाला हरि रस अन्यों रसों से श्रेष्ठ रस है॥ २॥ एक बहुत ही सुन्दर बात बनी है कि प्रभु ने श्वास रूपी पवन को हरि रस पान करने के लिए प्याला बना दिया है। तीनों लोकों में एक प्रभु ही योगी रूप में निवास कर रहा है। बताओ, उस प्रभु के अतिरिक्त इस जगत् का राजा अन्य कौन है?॥ ३॥ भक्त कबीर जी कहते हैं कि मेरे अन्तर्मन में पुरुषोत्तम प्रभु का ऐसा ज्ञान प्रगट हो गया है कि मैं प्रभु के प्रेम में मग्न हो गया हूँ। शेष सारी दुनिया भ्रम में भूली हुई है। मैं तो समस्त रसों के स्रोत प्रभु नाम में मग्न रहता हूँ॥४॥३॥

स्रीराग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥ पहरिआ कै घरि गावणा ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥ मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआनु सु नागा ॥ ते दिन संमलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥ गरभ छोडि म्रित मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥ १ ॥ फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥ चेति रामु नाही जम पुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥ रसु मिसु मेधु अंम्रितु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥ जपु तपु संजमु छोडि सुक्रित मति राम नामु न अराधिआ ॥ उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बांधिआ ॥ २ ॥ तरुण तेजु पर त्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥ उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुंनु न पछानिआ ॥ सुत संपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥ अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥ ३ ॥ पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥ लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥ ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥ अवगति बाणि छोडि म्रित मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥ ४ ॥ निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥ लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आंगनि न सुखाई ॥ बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥ ५ ॥

(प्रस्तुत पद को 'पहरे' वाणी के स्वर में गाने का आदेश दिया गया है।)

हे मानव ! जब तुम मातृ–गर्भ में थे तो सिर के बल खड़े होकर ईश्वर के स्मरण में लीन थे। उस समय तुझे पार्थिव देहि की गरिमा का अहंकार नहीं था और अज्ञानी एवं पूर्ण विहीन होने के कारण तुम दिन–रात एक हरि की आराधना करते थे। कष्ट एवं दुखों के वह दिन स्मरण करो। अब तुमने अपने मन के जाल को अत्याधिक फैला लिया है। जब से गर्भ को त्याग कर तू इस नश्वर संसार में आया है। तब से तूने हे मानव ! ईश्वर को अपने मन से विस्मृत कर दिया॥१॥ हे मूर्ख ! तुम्हें फिर पछताना पड़ेगा। क्यों भ्रम में पड़कर तुम कुमति कर रहे हो। राम का चिन्तन कर, अन्यथा यमपुरी जाओगे। हे मानव ! मूर्खों की भाँति क्यों भटकते फिरते हो?॥१॥ रहाउ॥ तू अपने बचपन में मनपसंद क्रीड़ाओं–विनोद के स्वाद में लीन रहा है। तुझे क्षण–क्षण उनका मोह उलझा रहा था। अब युवावस्था

में तू विष रूप माया के रसों को पवित्र समझ कर भोग रहा है। इसलिए काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पांचों विकार तुझे दुखी कर रहे हैं। तूने जप, तप, संयम एवं शुभ कर्मों वाली बुद्धि छोड़ दी है। तू राम नाम की आराधना भी नहीं करता। तेरे अन्तर्मन में कामवासना का वेग तरंगें मार रहा है। तुझे काल रूपी बुद्धि आ लगी है। अब तूने कामपिपासा हेतु स्त्री को लाकर अपने गले लगा लिया है॥ २॥ यौवन के जोश में तू पराई–नारियों को देखता है और भले–बुरे की पहचान नहीं करता। तू कामवासना में मग्न रहकर विष रूपी प्रबल माया के मोह में फँसकर भटकता रहता है। फिर तू पाप एवं पुण्य की पहचान नहीं करता। अपने पुत्रों एवं सम्पत्ति को देखकर तेरा यह मन अहंकारी हो गया है और अपने हृदय से तूने राम को विस्मृत कर दिया है। सगे–सम्बन्धियों की मृत्यु पर तू अपने मन में सोचता है कि तुझे उसका कितना धन प्राप्त होगा। हे मानव ! सौभाग्य से मिले अपने अमूल्य जीवन को तूने व्यर्थ गंवा दिया है॥ ३॥ बुढ़ापे में तेरे बाल चमेली के फूलों से भी अधिकतर सफेद हैं और तेरी वाणी इतनी धीमी पड़ गई है, जैसे वह सातवें लोक से आती हो। तेरे नेत्रों से जल बह रहा है। तेरी बुद्धि एवं बल शरीर में से लुप्त हो गए हैं। ऐसी अवस्था में काम तेरे मन में से यूं मंथन करता है, जैसे दूध का मंथन किया जाता है। इसलिए तेरी बुद्धि में विषय–विकारों की झड़ी लगी हुई है। तेरा शरीर मुरझाए हुए फूल जैसा हो गया है। तुम अलक्ष्य प्रभु की वाणी को छोड़कर नश्वर जगत् के कार्यों में लीन हो रहे हो। तदुपरांत तुम पश्चाताप करोगे॥४॥ नन्हे–मुन्ने छोटे बच्चों को देखकर तेरे मन में बड़ा प्रेम उत्पन्न होता है और तू उन पर गर्व करता है परन्तु तू ईश्वर बारे कोई सूझ प्राप्त नहीं करता। चाहे तेरे नेत्रों से कुछ भी नहीं दिखाई देता फिर भी तू लम्बी आयु की लालच करता है। अंत को शरीर का बल काम करने से थक जाता है और मन रूपी पक्षी शरीर रूपी पिंजरे में से उड़ जाता है। घर के आंगन में पड़ा मृतक शरीर किसी को अच्छा नहीं लगता। भक्त वेणी जी कहते हैं, हे भक्तो ! सुनो, मृत्यु के पश्चात किसी ने भी मुक्ति प्राप्त नहीं की॥५॥

सिरीरागु ॥ तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ १ ॥ जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥ पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥ २ ॥ सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥ रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥ ३ ॥

सिरीरागु॥ हे प्रभु ! तू ही मैं हूँ और मैं ही तुम हूँ। तेरे और मेरे बीच कोई अन्तर नहीं है। यह अन्तर ऐसा है जैसे स्वर्ण एवं स्वर्ण से बने आभूषण का है। जैसे जल एवं इसकी लहरों में है। वैसे ही प्राणी और ईश्वर है॥१॥ हे अनंत परमेश्वर ! यदि मैं पाप न करता तो तेरा पतितपावन नाम कैसे होता ?॥१॥ रहाउ॥ हे अन्तर्यामी प्रभु ! तुझे जगत् का स्वामी कहा जाता है। प्रभु से उसके दास की एवं दास से उसके स्वामी की पहचान हो जाती है॥ २॥ हे प्रभु ! मुझे यह ज्ञान दीजिए कि जब तक मेरा यह शरीर है, तब तक मैं तेरा नाम–सिमरन करता रहूँ। भक्त रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु ! मेरी यही कामना है कि कोई महापुरुष आकर मुझे यह ज्ञान दे जाए कि तू समस्त स्थानों में विद्यमान है॥३॥

॥ सिरीराग समाप्त ॥

रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सबका मालिक एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला सर्वशक्तिमान, निर्भय, निर्वेर, अकालमूर्ति, अयोनि एवं स्वयंभू है, जिसकी लब्धि गुरु की कृपा से होती है।

हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥ वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥ गुरि पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥ १ ॥ मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥ मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥ कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥

हरि–परमेश्वर एवं उसका 'हरि–हरि' नाम मुझे मन में अति प्रिय है। मेरे सौभाग्य ही हैं कि मैं हरि–नाम का सिमरन करता रहता हूँ। हरि–नाम सिमरन की सिद्धि मैंने पूर्ण गुरु से प्राप्त की है। कोई विरला पुरुष ही गुरु की मति पर चलता है॥१॥ मैंने परलोक में जाने हेतु यात्रा व्यय हेतु हरि–नाम का धन दामन में बांध लिया है। हरि–नाम मेरे प्राणों का साथी बन गया है और यह हमेशा ही मेरे साथ रहता है। पूर्ण गुरु ने मेरे मन में हरि का नाम बसा दिया है। यह हरि धन सदैव स्थिर रहने वाला है। गुरु ने हरिनाम रूपी धन मेरे दामन में डाल दिया है॥२॥ हरि–परमेश्वर मेरा सज्जन एवं प्रियतम बादशाह है। कोई संत–महापुरुष आकर मुझे हरि से मिला दे, क्योंकि वह मेरे प्राणों का जीवन है। हे मेरी माँ! मैं अपने प्रियतम के दर्शनों बिना रह नहीं सकता। मेरे नेत्रों में से अश्रु बह रहे हैं॥ ३॥ सद्गुरु मेरा मित्र एवं मेरा बचपन का साथी है। हे मेरी माँ! मैं उसके दर्शनों से वंचित हुआ जीवित नहीं रह सकता। हे हरि! मुझ पर कृपा करो और मुझे गुरु से मिला दो। हे नानक! गुरु हरि–नाम रूपी धन मेरे दामन में डाल देगा॥४॥१॥

माझ महला ४ ॥ मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥ हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥ कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥ १ ॥ हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥ किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥ मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥ २ ॥ मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥ हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥ ३ ॥ मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥ मेरे मन तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मधुसूदन! तू ही मेरा मन, तन एवं प्राण हैं, क्योंकि हरि के अलावा मैं किसी अन्य को नहीं जानता। भाग्य से यदि कोई सज्जन संत मुझे मिल जाए तो वह मुझे मेरे प्रियतम हरि–प्रभु का मार्गदर्शन करेगा॥१॥ मैं अपने मन एवं तन की खोज से उस परमेश्वर को ढूँढ रहा हूँ। हे मेरी माँ! मेरा प्रियतम प्रभु मुझे किस प्रकार मिले? संतों की संगति में रहकर मैं उस ईश्वर का पता पूछता हूँ क्योंकि संतों की संगति के बीच हरि–प्रभु का निवास है॥२॥ हे प्रभु! मुझे मेरे प्रिय प्रियतम सतिगुरु

से मिला दो, जो मेरा रखवाला है। मैं एक विवश बालक हूँ, मेरा पालन—पोषण कीजिए। पूर्ण सतिगुरु ही मेरे माता—पिता हैं। उनके दर्शन रूपी जल के मिलन से मेरा हृदय रूपी कमल प्रफुल्लित हो जाता है॥ ३॥ गुरु के दर्शनों के बिना मुझे नींद नहीं आती क्योंकि मेरा मन एवं तन गुरु के विरह की पीड़ा सहता है। हे हरि प्रभु ! मुझ पर दया कीजिए और मेरा गुरु से मिलन करवा दो। गुरु के मिलन से दास नानक आनंदित हो जाता है॥४॥२॥

माझ महला ४ ॥ हरि गुण पड़ीऐ हरि गुण गुणीऐ ॥ हरि हरि नाम कथा नित सुणीऐ ॥ मिलि सतसंगति हरि गुण गाए जगु भउजलु दुतरु तरीऐ जीउ ॥ १ ॥ आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥ मेरे प्रीतम का मै देइ सनेहा ॥ मेरा मितु सखा सो प्रीतमु भाई मै दसे हरि नरहरीऐ जीउ ॥ २ ॥ मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥ हउ रहि न सका बिनु नाम वखाणे ॥ मै अउखधु मंतु दीजै गुर पूरे मै हरि हरि नामि उधरीऐ जीउ ॥ ३ ॥ हम चात्रिक दीन सतिगुर सरणाई ॥ हरि हरि नामु बूंद मुखि पाई ॥ हरि जलनिधि हम जल के मीने जन नानक जल बिनु मरीऐ जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥

हमें हरि—परमेश्वर की महिमा को ही पढ़ना चाहिए और हरि की महिमा का ही चिन्तन करना चाहिए। सदैव ही हरि नाम की कथा को सुनना चाहिए तथा संतों की सभा में मिलकर हरि की महिमा—स्तुति का गायन करना चाहिए। इस प्रकार भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥१॥ हे मेरी सखियो ! आओ हम हरि मिलन का प्रयास करें। कोई मुझे मेरे प्रियतम का संदेश दे जाए। केवल वही मेरा मित्र एवं सखा है, वही प्रियतम एवं बन्धु है, जो मुझे नरसिंह—हरि का मार्गदर्शन करता है॥२॥ मेरी वेदना को पूर्ण हरि—रूप गुरु जी समझते हैं। मैं प्रभु का नाम सिमरन किए बिना रह नहीं सकता। हे मेरे पूर्ण गुरदेव जी ! मुझे नाम मंत्र रूपी औषधि दीजिए एवं हरि के नाम द्वारा मेरा उद्धार कर दीजिए॥ ३॥ मैं दीन चातक हूँ और सतिगुरु की शरण में आया हूँ। गुरु जी ने हरि प्रभु के नाम की बूँद मुख में डाली है। हरि जल का समुद्र है और मैं उस जल की मछली हूँ। हे नानक ! इस जल के बिना मैं मर जाती हूँ॥४॥३॥

माझ महला ४ ॥ हरि जन संत मिलहु मेरे भाई ॥ मेरा हरि प्रभु दसहु मै भुख लगाई ॥ मेरी सरधा पूरि जगजीवन दाते मिलि हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥ १ ॥ मिलि सतसंगि बोली हरि बाणी ॥ हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥ हरि हरि अंम्रितु हरि मनि भावै मिलि सतिगुर अंम्रितु पीजै जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि संगति पावहि ॥ भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥ बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥ ३ ॥ मै आइ मिलहु जगजीवन पिआरे ॥ हरि हरि नामु दइआ मनि धारे ॥ गुरमति नामु मीठा मनि भाइआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरे हरि के संतजनों ! हे भाइओ ! मुझे मिलो। मुझे मेरे हरि प्रभु बारे बताओ, क्योंकि मुझे हरि के दर्शनों की भूख लगी हुई है। हे जगत् के जीवन दाता ! मेरी मनोकामना पूरी करो। हरि से मिलकर उसके दर्शन करके मेरा मन प्रसन्न हो जाएगा॥१॥ सत्संग में मिलकर मैं हरि की वाणी बोलता हूँ। हरि की कथा मेरे मन को बहुत अच्छी लगती है। हरि का हरि नाम रूपी अमृत मेरे मन को मधुर लगता है। गुरु से भेंट करके मैं नाम अमृत का पान करता हूँ॥२॥ भाग्यशाली व्यक्ति हरि की संगति प्राप्त करता है। किन्तु भाग्यहीन मनुष्य भ्रम में भटकते और चोटें सहते हैं। भाग्य के बिना सत्संगति नहीं मिलती। सत्संग के बिना मनुष्य पापों की मलिनता के साथ लथपथ हो जाता है॥३॥ हे मेरे प्रियतम ! हे जगजीवन ! आकर मुझे दर्शन दीजिए। अपने मन में दया धारण करके मुझे हरि नाम प्रदान कीजिए। गुरु के उपदेश से मेरे मन को हरि—नाम मधुर एवं अच्छा लगने लग गया है। हे नानक ! मेरा मन हरि नाम से भीग गया है॥४॥४॥

माझ महला ४ ॥ हरि गुर गिआनु हरि रसु हरि पाइआ ॥ मनु हरि रंगि राता हरि रसु पीआइआ ॥ हरि हरि नामु मुखि हरि हरि बोली मनु हरि रसि टुलि टुलि पउदा जीउ ॥ १ ॥ आवहु संत मै गलि मेलाईऐ ॥ मेरे प्रीतम की मै कथा सुणाईऐ ॥ हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरबाणी मुखि चउदा जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि संतु मिलाइआ ॥ गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइआ ॥ भागहीन सतिगुरु नही पाइआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥ ३ ॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥ नानक हट पटण विचि कांइआ हरि लैंदे गुरमुखि सउदा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मैंने हरि बारे गुरु के दिए ज्ञान द्वारा हरि–रस प्राप्त किया है। जब गुरु ने मुझे हरि–रस का पान करवाया तो मेरा मन हरि के प्रेम में मग्न हो गया। मैं हरि का हरिनाम अपने मुख से बोलता रहता हूँ। मेरा मन हरि रस पान करने को उत्सुक होता है॥१॥ हे संतजनो ! आओ और मुझे अपने गले से लगाओ। मेरे प्रियतम प्रभु की कथा सुनाओ। हे हरि के संतजनो ! मुझे मिलो। जो मेरे मुँह में गुरुवाणी डालता है, मैं उसे अपना मन अर्पण कर दूँगा॥२॥ पूर्ण सौभाग्य से ईश्वर ने मुझे अपने संत से मिला दिया है। पूर्णगुरु ने मेरे मुख में हरि–रस डाल दिया है। भाग्यहीन मनुष्य को सतिगुरु प्राप्त नहीं होता। मनमुख व्यक्ति सदा गर्भ–योनि में प्रवेश करता है॥३॥ दयालु ईश्वर ने स्वयं मुझ पर दया की है और उसने अहंकार की समस्त विषैली मलिनता हटा दी है। हे नानक ! गुरमुख मनुष्य देह रूपी नगर में इन्द्रिय रूपी दुकानों पर ईश्वर के नाम का सौदा खरीदते हैं॥४॥५॥

माझ महला ४ ॥ हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई ॥ मिलि संगति मनि नामु वसाई ॥ हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी मिलि सतिगुर हरि रसु कीचै जीउ ॥ १ ॥ धनु धनु हरि जन जिनि हरि प्रभु जाता ॥ जाइ पुछा जन हरि की बाता ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा मिलि हरि जन हरि रसु पीचै जीउ ॥ २ ॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ ॥ अंम्रित रसु सचु अंम्रितु बोली गुरि पूरै अंम्रितु लीचै जीउ ॥ ३ ॥ हरि सतसंगति सत पुरखु मिलाईऐ ॥ मिलि सतसंगति हरि नामु धिआईऐ ॥ नानक हरि कथा सुणी मुखि बोली गुरमति हरि नामि परीचै जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मैं गोविन्द का गुणानुवाद करता हूँ और हरि नाम का ध्यान करने में ही मग्न रहता हूँ। मैं सत्संग में मिलकर नाम को अपने मन में बसाता हूँ। मेरा स्वामी हरि–प्रभु अगम्य एवं अगोचर है तथा सतिगुरु से मिलकर मैं हरि–रस का आनंद प्राप्त करता हूँ॥१॥ वह हरि के सेवक धन्य हैं, जिन्होंने हरि–प्रभु को समझ लिया है। मैं जाकर ऐसे सेवकों से हरि की बातें पूछता हूँ। मैं उनके चरण दबाता हूँ और उन्हें स्वच्छ करता एवं धोता हूँ। हरि के सेवकों से भेंट करके मैं हरि–रस का पान करता हूँ॥२॥ दाता सतिगुरु ने मेरे हृदय में ईश्वर का नाम बसा दिया है। परम सौभाग्य से मुझे गुरु के दर्शन प्राप्त हुए हैं। सतिगुरु सत्य अमृत रस का पान करते हैं और सत्य अमृत वाणी ही बोलते हैं। अतः पूर्ण गुरु से अमृत नाम प्राप्त करो॥३॥ हे प्रभु ! मुझे सद्पुरुषों की संगति में मिलाओ। पवित्र पुरुषों की सभा में मिलकर मैं हरि के नाम की आराधना करता रहूँ। हे नानक ! मैं हरि कथा ही सुनता हूँ और अपने मुँह से वाणी ही बोलता हूँ। गुरु के उपदेश द्वारा हरि के नाम से मैं तृप्त हो जाता हूँ॥४॥६॥

माझ महला ४ ॥ आवहु भैणे तुसी मिलहु पिआरीआ ॥ जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥ मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ॥ १ ॥ जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ तू घटि घटि रविआ अंतरजामी ॥ गुरि पूरै हरि नालि दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥ २ ॥ एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥ सभ इका जोति

वरतै भिनि भिनि न रलई किसै दी रलाईआ ॥ गुर परसादी इकु नदरी आइआ हउ सतिगुर विटहु वताइआ जीउ ॥ ३ ॥ जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥ उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सत चउपदे महले चउथे के ॥

हे मेरी प्यारी सत्संगी बहनो ! तुम मुझे आकर मिलो। जो मुझे मेरे प्रियतम प्रभु का पता बताएगी, मैं उस पर कुर्बान हो जाऊँगी। सत्संग में मिलकर मैंने अपने साजन हरि को ढूँढ लिया है। अपने सतिगुरु पर मैं बलिहारी जाती हूँ॥१॥ जहाँ कहीं भी मैं देखती हूँ, उधर ही मैं अपने स्वामी को देखती हूँ। हे अन्तर्यामी प्रभु ! तू सर्वत्र व्यापक है। पूर्ण गुरु ने मेरे परमेश्वर को मेरे साथ हृदय में बसता दिखा दिया है। मैं सतिगुरु पर हमेशा कुर्बान जाती हूँ॥२॥ समस्त शरीरों में एक ही पवन है, एक ही मिट्टी है और सबमें एक ही ज्योति विद्यमान है। भिन्न–भिन्न शरीरों में एक ही ज्योति कार्य कर रही है। परन्तु एक शरीर की ज्योति दूसरे शरीर की ज्योति में नहीं मिलाई जा सकती। गुरु की कृपा से मुझे एक परमात्मा ही सबमें मौजूद दिखाई देता है। मैं अपने सतिगुरु पर न्यौछावर हूँ॥३॥ सेवक नानक अमृत वाणी उच्चारण करता है। गुरु के सिक्खों के हृदय को यह वाणी बड़ी प्यारी एवं अच्छी लगती है। पूर्ण सतिगुरु वाणी द्वारा उपदेश देते हैं और वह सतिगुरु बड़े परोपकारी हैं॥४॥७॥ सात चउपदे सतिगुरु रामदास जी के हैं।

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ ४ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥ १ ॥ ८ ॥

{इतिहास साक्षी है कि गुरु रामदास जी ने लाहौर में अपने एक संबंधी भाई सिहारी मल के लड़के के विवाह पर गुरु अर्जुन देव जी को भेजा था। गुरु रामदास जी ने कहा था कि जब तक हम न बुलाएँ आप मत आना। इस तरह गुरु अर्जुन देव जी को लाहौर में दो वर्ष बीत गए थे। प्रस्तुत पद के विभिन्न अंश अलग–अलग लिखे गए थे। गुरु अर्जुन देव जी पिता गुरु रामदास जी को मिलने की आज्ञा पाने हेतु एक–एक अंश भेजते रहे}

मेरे मन को गुरु के दर्शनों की तीव्र अभिलाषा हो रही है। यह चातक की भाँति विलाप करता है। हे सन्तजनों के प्रिय ! आपके दर्शनों के बिना मेरी प्यास नहीं बुझती और न ही मुझे शांति प्राप्त होती है॥१॥ हे संत जनों के प्रिय ! गुरु के दर्शनों पर मैं तन, मन से न्यौछावर हूँ और सदैव ही कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे गुरु ! तेरा मुख अति सुन्दर है और तेरी वाणी की ध्वनि मन को आनंद प्रदान करती है। हे सारंगपाणि ! तेरे दर्शन किए मुझे चिरकाल हो चुका है। हे मेरे सज्जन एवं मित्र

प्रभु ! वह धरती धन्य है जहाँ तुम वास करते हो॥२॥ हे मेरे सज्जन एवं मित्र प्रभु रूप गुरु जी ! मैं आप पर तन–मन से न्यौछावर हूँ और आप पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ यदि मैं तुझे एक क्षण भर नहीं मिलता तो मेरे लिए कलियुग उदय हो जाता है। हे मेरे प्रिय भगवान ! मैं तुझे अब कब मिलूंगा? आपका दरबार देखे बिना न ही मुझे नींद आती है, न ही मेरी रात्रि बीतती है। मैं पूज्य गुरु के सच्चे दरबार पर तन–मन से कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ मेरे भाग्य उदय हो गए हैं और संत–गुरु से मिल पाया हूँ। मैंने अनश्वर प्रभु को अपने हृदय–घर में ही प्राप्त कर लिया है। हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों की सेवा करता रहता हूँ और मैं उनसे एक पल अथवा क्षण मात्र भी जुदा नहीं होता। हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों पर तन एवं मन से कुर्बान जाता हूँ॥ रहाउ॥१॥८॥

रागु माझ महला ५ ॥ सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ सो कंमु सुहेला जो तेरी घाली ॥ सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥ १ ॥ तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥ जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥ २ ॥ सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूंहै वुठा ॥ सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ ३ ॥ तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥ नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ९ ॥

हे प्रभु ! वहीं ऋतु अति सुन्दर है जब मैं तेरा सिमरन करता हूँ। वहीं कार्य मुझे सुखदायक लगता है। जो कार्य मैं तेरे नाम–सिमरन के लिए करता हूँ। हे समस्त जीवों के दाता ! वही हृदय सुखी है, जिस हृदय में तुम्हारा निवास होता है॥१॥ हे मालिक ! तुम हम सब के संयुक्त पिता हो। तेरे पास नवनिधियाँ हैं, तेरा भण्डार अक्षय है। तू जिसे यह भण्डार देता है, वह मन और तन से तृप्त हो जाता है और वही तेरा भक्त बन जाता है॥२॥ हे मेरे मालिक ! सभी प्राणी तेरी आशा में ही बैठे हैं। तू घट–घट में वास कर रहा है। समस्त प्राणी तेरे भागीदार कहलाते हैं और किसी भी प्राणी को ऐसा नहीं लगता कि तुम उससे बाहर किसी अन्य स्थान पर निवास करते हो॥३॥ गुरमुखों को तुम स्वयं ही बंधनों से मुक्त कराते हो और मनमुख प्राणियों को तुम स्वयं जीवन–मृत्यु के बंधन में धकेल देते हो। दास नानक तुझ पर कुर्बान जाता है। हे प्रभु ! यह सबकुछ तेरा ही खेल तमाशा है॥ ४॥ २॥ ९॥

माझ महला ५ ॥ अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥ सबदि अनंद करे सद केला ॥ सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥ १ ॥ फिरि घिरि अपुने ग्रिह महि आइआ ॥ जो लोड़ीदा सोई पाइआ ॥ त्रिपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥ २ ॥ आपे राजनु आपे लोगा ॥ आपि निरबाणी आपे भोगा ॥ आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥ ३ ॥ जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ॥ तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥ जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥

मेरे मन में सुखदायक अनहद शब्द मधुर ध्वनि में बजता रहता है। उस अनहद शब्द को सुनकर मेरा मन सदैव आनंदित एवं प्रसन्न रहता है। मन ने सहज गुफा में समाधि लगाई है और उच्चमण्डलों में अपना आसन बना लिया है॥ १॥ मन बाहर भटकने के पश्चात अपने आत्म स्वरूप रूपी घर में आया है। जिस प्रभु को पाने की कामना थी, उसे मैंने पा लिया है। हे सन्तजनो ! अब मेरा मन तृप्त तथा शांत हो गया है क्योंकि गुरदेव ने मुझे निडर स्वामी के दर्शन करवा दिए हैं॥२॥ प्रभु स्वयं ही राजन है और स्वयं ही प्रजा है। वह स्वयं ही विरक्त है और स्वयं ही पदार्थों को भोगता है। सत्य प्रभु

सिंघासन पर विराजमान होकर स्वयं ही सत्य का न्याय करता है, मेरे अन्तर्मन की चीख–पुकार दूर हो गई है॥३॥ जैसा प्रभु मैंने देखा है, वैसा ही मैंने कह दिया है। जब मेरी ज्योति परम–ज्योति प्रभु में विलीन हो गई तो मुझे सुख उपलब्ध हो गया। हे नानक! एक प्रभु का ही सारे जगत् में प्रसार हो रहा है॥ ४॥ ३॥ १०॥

माझ महला ५ ॥ जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ तितु घरि सखीए मंगलु गाइआ ॥ अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥ १ ॥ सा गुणवंती सा वडभागणि ॥ पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥ रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥ २ ॥ अचारवंति साई परधाने ॥ सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥ सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥ ३ ॥ महिमा तिस की कहणु न जाए ॥ जो पिरि मेलि लई अंगि लाए ॥ थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥

हे सखी! जिस जीव–स्त्री के हृदय–घर में पति–प्रभु ने सुहाग बना लिया है अर्थात् अपना निवास कर लिया है, उसके हृदय–घर में मंगल गायन किया जाता है। जिस जीव–स्त्री को पति–प्रभु ने शुभ गुणों से अलंकृत कर दिया है, उसके हृदय–घर में आनंद एवं उल्लास बना रहता है॥१॥ जो जीव–स्त्री अपने पति–प्रभु को प्यारी लगती है, वही जीव–स्त्री गुणवान, सौभाग्यशालिनी, पुत्रवती, शीलवान एवं सुहागिन है और वह जीव–स्त्री रूपवान, चतुर एवं पटरानी है॥ २॥ जो जीव–स्त्री पति–प्रभु के प्रेम में मग्न होकर सुन्दर बन जाती है, वही शुभ आचरण वाली एवं सर्वश्रेष्ठ है। उस ज्ञानवान को सभी श्रृंगार सुन्दर लगते हैं। जो पति–प्रभु के प्रेम में संवारी गई है, वही कुलीना एवं पटरानी हैं॥ ३॥ जिसे पति–प्रभु ने अपने गले से लगाकर अपने साथ मिला लिया है, उसकी महिमा कथन नहीं की जा सकती। हे नानक! जो पति–प्रभु अगम्य एवं अगोचर है, वह उस जीव–स्त्री का सदैव स्थिर रहने वाला सुहाग बन जाता है। पति–प्रभु का प्रेम उस जीव–स्त्री का आधार बन जाता है॥ ४॥ ४॥ ११॥

माझ महला ५ ॥ खोजत खोजत दरसन चाहे ॥ भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥ १ ॥ खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥ निवली करम आसन चउरासीह इन महि सांति न आवै जीउ ॥ २ ॥ अनिक बरख कीए जप तापा ॥ गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ इकु खिनु हिरदै सांति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥ मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ प्रभु अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥

हे मेरे प्रभु! तुझे ढूँढता–ढूँढता मैं तेरे दर्शनों का अभिलाषी बन गया हूँ। मैंने विभिन्न प्रकार के वनों में भ्रमण किया है। मेरा हरि–प्रभु निर्गुण भी है और सगुण भी है। क्या कोई ऐसा महापुरुष है जो आकर मुझे उससे मिला दे?॥१॥ कई लोग छः शास्त्रों का ज्ञान अपने मुँह से बोलकर दूसरों को सुनाते हैं। कई लोग तीर्थों के स्नान करते हैं। कई लोग देवतों की पूजा करते हैं और माथे पर तिलक लगाते हैं। कई लोग निम्नस्तरीय कर्म करते हैं और कई लोग चौरासी प्रकार के आसन लगाते हैं परन्तु इन विधियों द्वारा मन को शांति नहीं मिलती॥२॥ कुछ लोगों ने अनेक वर्ष जप एवं तप किए हैं। योगी धरती पर भ्रमण कर रहा है और अनेकों स्थानों पर भी गया है परन्तु उसके हृदय में एक क्षण भर के लिए भी शांति प्राप्त नहीं होती। योगी का मन पुनःपुन विषयों की तरफ दौड़ता रहता है॥३॥ प्रभु ने कृपा करके मुझे संतों से मिला दिया है। मेरा मन और तन अत्यंत शीतल हो गए हैं और मुझे धैर्य

मिल गया है। अमर परमात्मा ने मेरे हृदय में निवास कर लिया है और नानक ईश्वर का मंगल रूप गुणानुवाद ही करता है॥४॥५॥१२॥

माझ महला ५ ॥ पारब्रहम अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥ १ ॥ गुरमुखि मधुसूदनु निसतारे ॥ गुरमुखि संगी क्रिसन मुरारे ॥ दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ होरतु कितै न भाती जीउ ॥ २ ॥ निरहारी केसव निरवैरा ॥ कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥ गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥ ३ ॥ अमोघ दरसन बेअंत अपारा ॥ वड समरथु सदा दातारा ॥ गुरमुखि नामु जपीऐ तितु तरीऐ गति नानक विरली जाती जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥

पारब्रह्म–प्रभु अपरंपार एवं हम सबका पूज्य देव है। वह अगम्य, अगोचर एवं अलक्ष्य है और उसका भेद पाया नहीं जा सकता। परमात्मा दीनदयालु एवं जीवों का पालनहार है। गुरु के माध्यम से उस प्रभु का ध्यान करो जो मोक्षदाता है॥१॥ हे मधुसूदन! आपने गुरमुखों को पार किया है। हे कृष्ण मुरारी! आप गुरमुखों के साथी हो। गुरु की कृपा से दयालु दामोदर प्राप्त होता है और किसी अन्य विधि से वह प्राप्त नहीं होता॥२॥ हे केशव! आप हमेशा निराहारी, निर्वैर हो। करोड़ों ही मनुष्य आपके चरणों की पूजा करते हैं। जिसके मन में गुरु के द्वारा हरि–परमेश्वर का नाम बसता है वहीं उसका अनन्य भक्त है॥३॥ प्रभु अनंत एवं अपार है और उसके दर्शन अवश्य ही फलदायक हैं। वह बहुत महान एवं सब कुछ करने में समर्थ है। वह सदैव ही जीवों को दान देता रहता है। जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से उसका नाम–सिमरन करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है। हे नानक! ऐसे गुरमुख की गति को कोई विरला पुरुष ही जानता है॥४॥६॥१३॥

माझ महला ५ ॥ कहिआ करणा दिता लैणा ॥ गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥ सभ किछु तूंहै तूंहै मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥ १ ॥ भाणै उझड़ भाणै राहा ॥ भाणै हरि गुण गुरमुखि गावाहा ॥ भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥ २ ॥ ना को मूरखु ना को सिआणा ॥ वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥ अगम अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥ ३ ॥ खाकु संतन की देहु पिआरे ॥ आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥ दरसनु पेखत मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

हे प्रभु! जो तुम कथन करते हो, वहीं कुछ मैं करता हूँ और जो कुछ तुम मुझे देते हो, मैं वही कुछ लेता हूँ। गरीब एवं अनाथ तुझ पर गर्व करते हैं। हे मेरे प्रिय प्रभु! जगत् में सब कुछ तू ही कर रहा है और मैं तेरी कुदरत पर कुर्बान जाता हूँ॥१॥ हे प्रभु! तेरी इच्छा से हम पथ भ्रष्ट होते हैं और तेरी इच्छा पर ही हम सद्मार्ग लगते हैं। गुरमुख प्राणी प्रभु की इच्छा पर ही प्रभु की महिमा गाते हैं। तेरी इच्छा पर ही जीव भ्रमवश योनियों के अन्दर भटकते हैं। इस तरह सब कुछ प्रभु के आदेश पर ही हो रहा है॥२॥ इस जगत् में न कोई मूर्ख है और न ही कोई बुद्धिमान है। प्रत्येक स्थान पर तेरी इच्छा ही कारगर हो रही है। हे मेरे परमात्मा! तुम अगम्य, अगोचर, अनन्त और अपार हो। तेरा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥३॥ हे प्रियतम प्रभु! मुझे संतों के चरणों की धूल प्रदान करो। हे परमेश्वर! मैं तेरे द्वार पर आकर नतमस्तक हो गया हूँ। प्रभु के दर्शनों से मेरा मन तृप्त हो जाता है। हे नानक! प्रभु से मिलन उसकी इच्छा से ही होता है॥४॥७॥१४॥

माझ महला ५ ॥ दुखु तदे जा विसरि जावै ॥ भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥ सिमरत नामु सदा सुहेला जिसु देवै दीन दइआला जीउ ॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा वड समरथा ॥ जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥ चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥ २ ॥ बारिक वांगी हउ सभ किछु मंगा ॥ देदे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥ हिरदै नामु दे निरमल कीए नानक रंगि रसाला जीउ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥

मनुष्य जब भगवान को विस्मृत कर देता है तो वह बहुत दुखी होता है। जब मनुष्य को धन-दौलत की भूख लगती है तो वह अनेक विधियों द्वारा धन प्राप्ति हेतु भरसक प्रयास करता है। दीनदयालु प्रभु जिसे अपना नाम देता है, वही उसका नाम-सिमरन करके सदैव सुखी रहता है॥१॥ मेरा सतिगुरु सर्वशक्तिमान है। यदि मैं अपने मन में उसका चिंतन करूँ, तब मेरे समस्त दुख निवृत्त हो जाते हैं। मेरी चिंता का रोग व अहंकार का दर्द दूर हो गए हैं और प्रभु स्वयं ही मेरा पालन-पोषण करता है॥ २॥ बालक की भाँति मैं भगवान से सबकुछ माँगता रहता हूँ। वह मुझे बड़े प्यार से सबकुछ देता रहता है और उसकी दी हुई वस्तुओं में मुझे कोई कमी नहीं आती। मैं अपने दीनदयालु गोपाल के चरणों में बारंबार पड़-पड़कर मनाता रहता हूँ॥३॥ मैं अपने पूर्ण सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मेरे समस्त बन्धन काट दिए हैं। सतिगुरु ने मेरे हृदय में नाम देकर मुझे निर्मल कर दिया है। हे नानक! परमेश्वर के प्रेम से मैं अमृत का घर बन गया हूँ॥४॥८॥१५॥

माझ महला ५ ॥ लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥ गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे ॥ ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥ १ ॥ दुख भंजन निधान अमोले ॥ निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥ अकाल मूरति अजूनी संभौ मन सिमरत ठंढा थीवां जीउ ॥ २ ॥ सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ नामु रसाइणु मनु त्रिपताइणु गुरमुखि अंम्रितु पीवां जीउ ॥ ३ ॥ दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ एह सुमति गुरू ते पाई ॥ नानक की धर तूंहै ठाकुर हरि रंगि पारि परीवां जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६ ॥

हे मेरे प्रियतम प्रभु! तुम सृष्टि के पालनहार, दयालु एवं परम सुखी हो। हे मेरे गोविन्द! तू गहरे सागर की तरह है। तू बड़ा गंभीर स्वभाव वाला एवं अनंत है। तुम सर्वोच्च, असीम एवं बेअंत हो। हे प्रभु! मैं तुझे मन-तन से स्मरण करके ही जीवित रहता हूँ॥१॥ हे दुखों के नाशक! तू अमूल्य गुणों का भण्डार है। तू निर्भय, निर्वैर, असीम एवं अतुलनीय है। हे अकालमूर्ति! तू अयोनि एवं स्वयंभू है और मन में तेरा सिमरन करने से बड़ी शांति प्राप्त होती है॥ २॥ भगवान सदैव जीवों के साथ रहता है। वह जगत् का पालनहार एवं आनंद का स्रोत है। हमेशा ऊँच-नीच की वह रक्षा करता है। अमृत के घर परमेश्वर के नाम से मेरा मन तृप्त हो जाता है। गुरु की दया से मैं नाम रूपी अमृत का पान करता हूँ॥३॥ हे प्रियतम प्रभु! मैं दुख और सुख में तुझे ही स्मरण करता हूँ। यह सुमति मैंने गुरु से प्राप्त की है। हे ठाकुर जी! तुम ही नानक का सहारा हो। मैं हरि के प्रेम में मग्न होकर भवसागर से पार हो जाऊँगा॥४॥६॥१६॥

माझ महला ५ ॥ धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥ सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ धंनु मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु ओइ संजोगा जीउ ॥ १ ॥ उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ हरि

मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥ नामु निधानु सतिगुरू सुणाइआ मिटि गए सगले रोगा जीउ ॥ २ ॥ अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ गुरि कहिआ सभु एको एको अवरु न कोई होइगा जीउ ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु हरि गुर ते पीआ ॥ हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥ नामि रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥

वह समय बड़ा शुभ है, जब मुझे मेरे सतिगुरु मिले। गुरु के दर्शन सफल हो गए हैं, क्योंकि नेत्रों से उनके दर्शन करके मैं भवसागर से पार हो गया हूँ। वह मुहूर्त, पल और घड़ी एवं संयोग भी शुभ है, जिससे मेरा सतिगुरु से मिलन हुआ है॥ १॥ पुरुषार्थ करने से मेरा मन पवित्र हो गया है। हरि-प्रभु के मार्ग पर चलने से मेरा भ्रम दूर हो गया है। सतिगुरु ने मुझे गुणों का भण्डार नाम सुनाया है और नाम सुनकर मेरे तमाम रोग नाश हो गए हैं॥२॥ हे प्रभु ! घर के अन्दर और बाहर मैं तेरी वाणी गाता रहता हूँ। यह वाणी तूने स्वयं ही उच्चारण की है और स्वयं ही इसका वर्णन किया है। गुरु ने कहा है कि समस्त स्थानों पर एक प्रभु ही है और एक प्रभु ही होगा और प्रभु जैसा जगत् में अन्य कोई नहीं होगा॥ ३॥ मैंने हरि-रस रूपी अमृत गुरु से पान किया है। अब हरि का नाम ही मेरा पहरावा एवं भोजन बन गया है। हे नानक ! नाम में मग्न रहना ही मेरे लिए आनंद, खेल एवं मनोरंजन है और नाम ही पदार्थों का भोग है॥ ४॥ १०॥ १७॥

माझ महला ५ ॥ सगल संतन पहि वसतु इक मांगउ ॥ करउ बिनंती मानु तिआगउ ॥ वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन की धूरा जीउ ॥ १ ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥ तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥ २ ॥ दरसनि तेरै भवन पुनीता ॥ आतम गड़ु बिखमु तिना ही जीता ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥ ३ ॥ रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥ दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ सच घरि बैसि रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा जीउ ॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥

मैं समस्त संतजनों से एक वस्तु ही माँगता हूँ। मैं एक प्रार्थना करता हूँ कि मैं अपना अहंकार त्याग दूँ। मैं संतजनों पर लाख-लाख बार कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु ! मुझे संतों की चरण-धूलि प्रदान कीजिए॥१॥ हे प्रभु ! तुम ही जीवों के दाता हो और तुम ही विधाता हो। तुम सर्वशक्तिमान हो और तुम ही सदैव सुख देने वाले हो। हे प्रभु ! सभी जीव तुझसे ही मनोकामनाएँ प्राप्त करते हैं। मेरा यह अमूल्य जीवन मेरे लिए तुझ से मिलने का एक सुनहरी अवसर है, अतः मेरा जीवन समय सफल कर दीजिए॥२॥ हे प्रभु ! जिन लोगों ने तेरे दर्शन करके अपने शरीर रूपी भवन को पवित्र कर लिया है। उन्होंने मन रूपी विषम किले पर विजय प्राप्त की है। तुम ही जीवों के दाता और तुम ही विधाता हो तथा जगत् में तेरे जैसा अन्य कोई शूरवीर नहीं॥३॥ जब संतों के चरणों की धूल मेरे माथे में लगी, तब मेरी खोटी बुद्धि और कुबुद्धि लुप्त हो गई। हे नानक ! अब मैं सत्य घर में बसता हूँ और परमात्मा का यशोगान ही करता हूँ। मेरे अन्तर्मन से मेरा झूठ भी नाश हो गया है॥४॥११॥१८॥

माझ महला ५ ॥ विसरु नाही एवड दाते ॥ करि किरपा भगतन संगि राते ॥ दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥ १ ॥ माटी अंधी सुरति समाई ॥ सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥ २ ॥ जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥ छतीह अंम्रित भोजनु खाणा ॥ सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल रंग करणा जीउ ॥ ३ ॥ सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥ सास सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुर चरणा जीउ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥

हे इतने महान दानशील प्रभु ! मैं तुझे कदापि विस्मृत न करूँ। इसलिए मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मेरा मन तेरे भक्तों के प्रेम में मग्न रहे। हे प्रभु ! जिस तरह तुझे अच्छा लगे, मुझे यह दान दीजिए कि दिन–रात मैं तेरा ही सिमरन करता रहूँ॥१॥ जीवों के शरीर ज्ञानहीन मिट्टी के बने हुए हैं और इन शरीरों में चेतन सुरति समाई हुई है। हे प्रभु ! तू जीवों को सबकुछ देता है। तू जीवों को रहने के लिए अच्छे स्थान देता है और ये जीव विभिन्न प्रकार के विलास, विनोद, आश्चर्यमयी कौतुक एवं मनोरंजन प्राप्त करते हैं। जो कुछ तुझे भाता है, वही होता है॥२॥ (उस परमात्मा को स्मरण करो) जिस भगवान का दिया हुआ हम सब कुछ ले रहे हैं और छत्तीस प्रकार के भोजन खा रहे हैं। हमें सुखदायक सेज सोने के लिए मिल रही है, हम शीतल पवन का आनंद लेते हैं तथा विलासपूर्ण क्रीड़ाएँ करते हैं॥३॥ हे प्रियतम प्रभु ! मुझे वह बुद्धि दीजिए, जो तुझे विस्मृत न करे। मुझे ऐसी मति प्रदान करो जिससे मैं तेरा ही ध्यान करता रहूँ। हे प्रभु ! अपने प्रत्येक श्वास से मैं तेरा यशोगान करता हूँ। नानक ने गुरु के चरणों की शरण ली है॥४॥१२॥१९॥

माझ महला ५ ॥ सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥ सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥ १ ॥ अंम्रितु नामु तेरा सोई गावै ॥ जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥ २ ॥ तूं संतन की करहि प्रतिपाला ॥ संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥ अपुने संत तुधु खरे पिआरे तू संतन के प्राना जीउ ॥ ३ ॥ उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥ जिन तूं जाता जो तुधु मनि भाने ॥ तिन कै संगि सदा सुखु पाइआ हरि रस नानक त्रिपति अघाना जीउ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

हे प्रभु ! तेरी महिमा–स्तुति करना ही तेरे हुक्म एवं इच्छा को मानना है। जो तुझे अच्छा लगता है, उसे भला समझना ही ज्ञान एवं ध्यान है। जो पूज्य प्रभु को भाता है, वही जप है, उसकी इच्छा में रहना ही पूर्ण ज्ञान है॥१॥ हे प्रभु ! तेरा नाम अमृत है परन्तु इस नाम को वहीं गाता है, जो तेरे मन को प्यारा लगता है। तुम संतों के हो और संत तुम्हारे हैं। हे स्वामी ! संतों का चित्त तुझ में माना हुआ है॥२॥ हे ईश्वर ! तुम संतों का पालन करते हो। हे गोपाल ! संत तेरे साथ प्यार की खेल खेलते हैं। तुझे अपने संत अति प्रिय हैं। तुम अपने संतों के प्राण हो॥३॥ मेरा मन उन संतों पर कुर्बान जाता है, जिन्होंने तुझे पहचान लिया है और जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं। उनकी संगति में रहकर मैंने सदैव सुख पा लिया है। हे नानक ! हरि रस का पान करके मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया हूँ॥४॥ १३॥ २०॥

माझ महला ५ ॥ तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ तेरा नामु बूंद हम चात्रिक तिखहारे ॥ तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥ १ ॥ जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥ जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥ त्रिखावंत जलु पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥ २ ॥ जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥ भरता चितवत पूरन आसा ॥ मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥ ३ ॥ संतन मोकउ हरि मारगि पाइआ ॥ साध क्रिपालि हरि संगि गिझाइआ ॥ हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥ ४ ॥ १४ ॥ २१ ॥

हे परमेश्वर ! तुम जलनिधि हो और हम जल में रहने वाली तेरी मछलियाँ हैं। तेरा नाम वर्षा की बूँद है और हम प्यासे पपीहे हैं। तुम ही मेरी आशा हो और मुझे तेरे नाम रूपी अमृत का पान करने की प्यास लगी हुई है। मुझ पर ऐसी कृपा करो ताकि मेरा मन तुझ में ही लीन हुआ रहे॥१॥ जिस

तरह बालक दुग्धपान करके तृप्त होता है, जैसे एक निर्धन दौलत मिल जाने पर प्रसन्न होता है, जैसे प्यासा पुरुष शीतल जल पान करके शीतल हो जाता है वैसे ही मेरा यह मन भगवान के प्रेम में भीग गया है॥२॥ जिस तरह दीपक अंधेरे में प्रकाश कर देता है, जिस तरह अपने पति का ध्यान करने वाली पत्नी की आशा पूरी हो जाती है, जिस तरह प्राणी अपने प्रियतम से मिलकर प्रसन्न होता है, वैसे ही मेरा यह मन भगवान के प्रेम में मग्न हो गया है॥३॥ संतजनों ने मुझे प्रभु के मार्ग लगा दिया है। संतों की कृपा से मेरा मन भगवान से मिल गया है। भगवान मेरा स्वामी है और मैं भगवान का सेवक हूँ। हे नानक! गुरदेव ने मुझे सत्य नाम का दान दिया है॥४॥१४॥२१॥

माझ महला ५ ॥ अंम्रित नामु सदा निरमलीआ ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ अवरि साद चखि सगले देखे मन हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥ १ ॥ जो जो पीवै सो त्रिपतावै ॥ अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥ नाम निधान तिसहि परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु पाइआ सो त्रिपति अघाना ॥ जिनि हरि सादु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥ तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥ ३ ॥ हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥ तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥ नामु निधाना गुरमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २२ ॥

भगवान का अमृतमयी नाम सदैव ही निर्मल रहता है। भगवान सुख देने वाला और दुखों का नाश करने वाला है। हे मेरे मन! तूने अन्य स्वाद चखकर देख लिए हैं परन्तु हरि-रस ही सबसे मीठा है॥१॥ जो कोई भी इस हरि-रस का पान करता है, वह प्रसन्न हो जाता है। जो नाम रस को प्राप्त कर लेता है, वह अमर हो जाता है। नाम की निधि उसको मिलती है, जिसके हृदय में गुरु की वाणी वास करती है॥२॥ जिसने भी हरि रस को पाया है, वह तृप्त हो गया है। जो व्यक्ति हरि-रस का स्वाद प्राप्त कर लेता है, वह फिर कभी डगमगाता नहीं। भगवान का हरि नाम उसे ही प्राप्त होता है, जिसके मस्तक पर भाग्य विद्यमान होता है॥३॥ परमात्मा अकेले गुरु के हाथ लगा है, जिससे बहुत ही लाभ प्राप्त करते हैं। उससे संगति करके बहुत सारे लोग मुक्त हो जाते हैं। नाम की निधि गुरदेव से ही प्राप्त होती है। हे नानक! उस नाम-निधि के विरले पुरुषों ने ही दर्शन किए हैं॥४॥ १५॥२२॥

माझ महला ५ ॥ निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ जनमु पदारथु गहिर गंभीरै ॥ लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ सगल उधारे भाई मीता ॥ अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥ २ ॥ जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥ वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ ऊच अपार अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥ ३ ॥ गहिर गंभीर अंम्रित नामु तेरा ॥ मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २३ ॥

हरि-परमेश्वर का हरि-नाम ही मेरी निधियाँ, सिद्धियाँ एवं ऋद्धियाँ हैं। गहरे एवं गम्भीर ईश्वर की दया से मुझे दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है। जो प्राणी गुरु की चरण-सेवा में लगा है, वह लाखों, करोड़ों खुशियाँ एवं आनन्द भोगता है॥१॥ गुरु के दर्शन करके प्राणी पवित्र हो जाता है और वह अपने भ्राताओं एवं सज्जनों को बचा लेता है। गुरदेव की दया से मैं अपने अगम्य, अगोचर व महान सत्य परमात्मा का चिन्तन करता हूँ॥२॥ जिस भगवान की उसके उत्पन्न किए हुए समस्त जीव खोज करते रहते हैं, उसके दर्शन कोई विरला भाग्यशाली ही प्राप्त करता है। प्रभु का निवास सर्वोच्च, अपार एवं अगोचर है तथा गुरु ने मुझे प्रभु निवास के दर्शन करवा दिए हैं॥३॥ हे प्रभु! तू

गहरा और गम्भीर है, तेरा नाम अमृत रूप है। जिसके हृदय में प्रभु वास करता है, वह मुक्त हो जाता है। हे नानक! गुरदेव ने जिनके समस्त बन्धन काट दिए हैं, वह सहज ही प्रभु में विलीन हो जाता है॥४॥१६॥२३॥

माझ महला ५ ॥ प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥ प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥ १ ॥ नामु अउखधु मोकउ साधू दीआ ॥ किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥ २ ॥ जिस का अंगु करे मेरा पिआरा ॥ सो मुकता सागर संसारा ॥ सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥ ३ ॥ जब ते साधू संगति पाए ॥ गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥ ४ ॥ १७ ॥ २४ ॥

प्रभु की कृपा से मैं हरि–परमेश्वर का ध्यान करता हूँ। प्रभु की दया से मैं उसका मंगल गायन करता हूँ। उठते–बैठते, सोते और जागते सब अवस्थाओं में हमें हरि का ध्यान करना चाहिए॥१॥ संतों ने मुझे नाम रूपी औषधि प्रदान की है। इसने मेरे समस्त पाप काट दिए हैं और मैं पवित्र हो गया हूँ। मेरी सारी पीड़ा दूर हो गई है और मेरे कष्ट मिट गए हैं तथा बड़ा आनंद प्राप्त हो रहा है॥२॥ मेरा प्रियतम प्रभु जिसकी सहायता करता है, वह संसार सागर से मुक्त हो जाता है। जिस व्यक्ति ने गुरु को सत्य रूप में समझ लिया है, वह मृत्यु से क्यों भयभीत हो॥३॥ जब से मैंने साधु की संगति प्राप्त की है, तब से गुरु को मिलने से अहंकार का भूत दूर हो गया है। हे प्रभु! श्वास–श्वास से नानक परमात्मा की कीर्ति गायन करता है। सतिगुरु ने मेरे पाप ढांप लिए हैं॥४॥१७॥२४॥

माझ महला ५ ॥ ओति पोति सेवक संगि राता ॥ प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥ पाणी पखा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥ १ ॥ काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥ हुकमु साहिब का सेवक मनि भाइआ ॥ सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अंतरि बाहरि माहरु जीउ ॥ २ ॥ तूं दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥ ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥ जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ ॥ ३ ॥ अपुनै ठाकुरि जो पहिराइआ ॥ बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥ तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ २५ ॥

भगवान अपने सेवकों से ताने–बाने की तरह मिला रहता है। सुखदाता परमेश्वर अपने सेवकों का पालन करता है। हे ईश्वर! जो भक्त तेरे भजन में लीन हैं, मैं उनके घर पानी ढ़ोता, पंखा करता एवं चक्की से आटा पीसता हूँ॥१॥ हे परमात्मा! आपने मेरी वासना रूपी फाँसी को काट मुझे अपनी सेवा में प्रवृत्त कर लिया है। इसलिए प्रभु का हुक्म सेवक के मन को अच्छा लगता है। सेवक वही कर्म करता है जो प्रभु के मन को भला लगता है। इसलिए सेवक भीतर–बाहर सेवा करने में परिपक्व हो जाता है॥२॥ हे प्रभु! तुम बुद्धिमान स्वामी हो और समस्त युक्तियों में सर्वज्ञ हो। परमात्मा के सेवक ईश्वर की प्रीति का आनन्द भोगते हैं। जो कुछ परमात्मा का है, वही उसके सेवक का है। सेवक अपने परमात्मा की संगति में जगत् में लोकप्रिय होता है। जिसको उसका परमात्मा प्रतिष्ठा की पोशाक पहनाता है, उसे फिर बुलाकर उसके कर्मों का लेखा नहीं पूछता। हे नानक! मैं उस सेवक पर सदैव कुर्बान हूँ जो प्रभु की तरह अथाह, गंभीर एवं अमूल्य मोती बन जाता है॥४॥१८॥२५॥

माझ महला ५ ॥ सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥ १ ॥ झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा ॥ मनु पीवै

सुनि सबदु बीचारा ॥ अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥ २ ॥ जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥ साध क्रिपा ते सूका हरिआ ॥ सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥ ३ ॥ जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥ तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ॥ कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईऐ जउला जीउ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २६ ॥

सब कुछ शरीर रूपी घर में ही है और शरीर से बाहर कुछ भी नहीं है। जो व्यक्ति भगवान को हृदय से बाहर ढूँढता है, वह भ्रम में पड़कर भटकता रहता है। गुरु की दया से जिसने भगवान को हृदय में पाया है, वह अन्दर एवं बाहर से सुखी है॥ १॥ उसके अन्दर नाम रूपी अमृत की धारा रिमझिम कर बरसती है। मन उस नाम रूपी अमृत का पान करता है। अनहद शब्द को सुनकर मन उस बारे चिन्तन करता है। मेरा मन दिन–रात आनंद प्राप्त करता है और भगवान के साथ विलास करता है॥२॥ मैं भगवान से जन्म–जन्मांतरों का बिछुड़ा हुआ उससे मिल गया हूँ। साधु की कृपा से मेरा मुरझाया हुआ मन प्रफुल्लित हो गया है। गुरु से सुमति प्राप्त करके नाम–सिमरन करने से मेरा भगवान से मिलाप हो गया है॥३॥ जिस तरह जल की लहरें जल में मिल जाती हैं, इसी तरह मेरी ज्योति परमात्मा की ज्योति में मिल गई है। हे नानक! भगवान ने भ्रम रूपी किवाड़ काट दिए हैं और अब मेरा मन पुनः माया के पीछे नहीं भटकेगा॥४॥१६॥२६॥

माझ महला ५ ॥ तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥ तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥ १ ॥ तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चाले ॥ नैन निहाली तिसु पुरख दइआले ॥ मनु देवा तिसु अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥ २ ॥ से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ सभ कै मधे अलिपत निरबाणे ॥ साध कै संगि उनि भउजलु तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥ ३ ॥ तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥ माणु ताणु तजि मोहु अंधेरा ॥ नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥ ४ ॥ २० ॥ २७ ॥

हे ईश्वर! मैं उस महापुरुष पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने तेरा नाम श्रवण किया है। जिसने अपनी जिह्वा से तेरे नाम का उच्चारण किया है, मैं उस महापुरुष पर कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु! जो प्राणी मन–तन से तेरी आराधना करता है, मैं सदैव ही तन–मन से उस पर न्यौछावर हूँ॥१॥ मैं उस व्यक्ति के चरण धोता हूँ जो तेरे मार्ग पर चलता है। मैं उस दयालु महापुरुष के नयनों से दर्शन करता हूँ। मैं अपना मन अपने उस मित्र को अर्पण करता हूँ, जिसने गुरु से मिलकर उस प्रभु को ढूँढ लिया है॥२॥ हे भगवान! वे मनुष्य बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने तुझे समझ लिया है। ये पुरुष सबके मध्य निर्लिप्त और निर्विकार हैं। संतों की संगति करके वे भवसागर से पार हो जाते हैं और काम आदि सकल दूत वश में कर लिए हैं॥३॥ अहंकार, बल एवं अँधेरा पैदा करने वाले मोह को त्याग कर मेरा मन उनकी शरण में आ गया है। हे प्रभु! नानक को अगम्य, अगोचर परमात्मा के नाम का दान प्रदान कीजिए॥४॥२०॥२७॥

माझ महला ५ ॥ तूं पेडु साख तेरी फूली ॥ तूं सूखमु होआ असथूली ॥ तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ॥ १ ॥ तूं सूतु मणीए भी तूंहै ॥ तूं गंठी मेरु सिरि तूंहै ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई अवरु न कोइ दिखालीऐ जीउ ॥ २ ॥ तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ तूं निरबाणु रसीआ रंगि राता ॥ अपणे करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥ ३ ॥ तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे ॥ तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥ नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ २८ ॥

हे पूज्य परमेश्वर! तू एक पेड़ है और यह सृष्टि तेरी प्रफुल्लित हुई शाखा है। तू सूक्ष्म रूप से स्थूल रूप में बदल गया है। तू जल का सागर है और तू ही इसकी झाग से पैदा हुआ बुलबुला है। तेरे अलावा जगत् में मुझे अन्य कोई दिखाई नहीं देता॥१॥ हे ईश्वर! देहि रूपी माला के लिए तुम ही प्राण रूपी सूत हो। उस माला की गांठ भी तुम हो और सब मनकों के ऊपर मेरु मनका भी तुम ही हो। जगत् के आदि, मध्य और अंत में वही परमेश्वर है, तुझ से अलग कोई दृष्टिगोचर नहीं होता॥२॥ हे सुखदाता परमेश्वर! तू ही निर्गुण एवं तू ही सगुण है। तू स्वयं ही निर्लेप, आनंदकारी और समस्त रंगों में अनुरक्त है। हे प्रभु! अपनी कला में तुम स्वयं ही दक्ष हो और तुम स्वयं ही अपना सिमरन करते हो॥२१॥ तुम ठाकुर हो और फिर तुम स्वयं ही सेवक। हे पारब्रह्म! तू स्वयं ही गुप्त भी है और तू ही प्रगट भी है। सेवक नानक सदैव ही प्रभु का यशोगान करता है। एक बार तो अपनी दया दृष्टि से देख॥४॥२१॥२८॥

माझ महला ५ ॥ सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥ गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥ धंनु सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आए ते परवाना जीउ ॥ १ ॥ से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥ से कर भले जिनी हरि जसु लेखा ॥ से चरण सुहावे जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन संगि पछाणा जीउ ॥ २ ॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ साधसंगि खिन माहि उधारे ॥ किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गए आवण जाणा जीउ ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि इकु बिनउ करीजै ॥ करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥ नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला प्रभ नानक मनि भाणा जीउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २६ ॥

वही वाणी शुभ फलदायक है, जिससे हरि के नाम का जाप किया जाता है। कोई विरला ही पुरुष है, जिसने गुरु की कृपा से ऐसी वाणी को समझा है। वह समय बड़ा शुभ है, जब परमात्मा का यशोगान किया जाता एवं सुना जाता है। जगत् में जन्म लेकर उनका आगमन ही स्वीकृत है, जो भगवान का यश गाते एवं सुनते हैं॥ १॥ भगवान को वहीं नेत्र स्वीकृत होते हैं, जिन्होंने भगवान के दर्शन किए हैं। वह हाथ प्रशंसनीय है जो (ईश्वर की) उपमा लिखते हैं। वह चरण सुन्दर हैं जो परमेश्वर के मार्ग पर चलते हैं। मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ जिनकी संगति करके मैंने भगवान को पहचान लिया है॥ २॥ हे मेरे प्रिय मित्र एवं सज्जन! सुनो, भगवान ने मुझे संतों की संगति में मिलाकर एक क्षण में ही मेरा उद्धार कर दिया है। उसने मेरे पाप काट दिए हैं और मेरा मन निर्मल हो गया है। अब मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है॥ ३॥ हे प्रभु! अपने दोनों हाथ जोड़कर मैं एक प्रार्थना करता हूँ। मुझ पर दया कीजिए और डूबते हुए पत्थर को बचा लीजिए। भगवान नानक पर दयालु हो गया है और नानक के मन को भगवान ही अच्छा लगता है॥ ४॥ २२॥ २६॥

माझ महला ५ ॥ अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥ सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥ जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥ १ ॥ सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥ संत रसन हरि नामु वखाना ॥ जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइ न जाए जीउ ॥ २ ॥ दइआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ मिहरवान किरपाल दइआला सगले त्रिपति अघाए जीउ ॥ ३ ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु कीतोनु हरिआ ॥ करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३० ॥

हे हरि-परमेश्वर! तेरी वाणी अमृत है। इस अमृत वाणी को सुन-सुनकर मुझे परमगति प्राप्त हुई है। सतिगुरु के दर्शन करके मेरे मन की तृष्णा रूपी जलन बुझ गई है और मेरा मन शीतल हो

गया है॥ १॥ जब सन्तजन अपनी जिह्वा से परमात्मा के नाम का उच्चारण करते हैं, तो उसे सुनकर बड़ा सुख प्राप्त होता है और दुख दूर भाग जाते हैं। जैसे वर्षा होने से तमाम सरोवर जल से भलीभांति भर जाते हैं, वैसे ही गुरु के पास आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता॥ २॥ सृजनहार प्रभु ने अपनी दया न्यौछावर की है और समस्त जीव-जन्तुओं की पालना की है। भगवान मेहरबान है, कृपालु एवं बड़ा दयालु है। भगवान की दी हुई नियामतों से सभी जीव-जन्तु तृप्त एवं संतुष्ट हो गए हैं। वन, तृण, तीनों लोक प्रभु ने हरे-भरे कर दिए हैं। कर्त्ता परमेश्वर ने एक क्षण में ही यह सब कुछ कर दिया। हे नानक ! जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान की आराधना करता है, भगवान उसके मन की आशा पूरी कर देता है॥ ४॥ २३॥ ३०॥

माझ महला ५ ॥ तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥ १ ॥ तुमरी क्रिपा ते तुधु पछाणा ॥ तूं मेरी ओट तूंहै मेरा माणा ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥ २ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥ जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥ सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥ ३ ॥ नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥ हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥ गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३१ ॥

हे भगवान ! तू ही मेरा पिता है एवं तू ही मेरी माता है। तू ही मेरा रिश्तेदार है और तू ही मेरा भ्राता है। जब तू ही समस्त स्थानों में मेरा रक्षक है तो मुझे कैसा भय व चिंता कैसी होगी॥ १॥ तुम्हारी दया से मैं तुझे समझता हूँ। तू ही मेरी शरण है और तू ही मेरी प्रतिष्ठा है। तेरे बिना मेरा अन्य कोई नहीं। यह सारी सृष्टि तेरी एक खेल है और यह धरती जीवों के लिए जीवन खेल का मैदान है॥ २॥ हे भगवान ! समस्त जीव-जन्तु तूने ही उत्पन्न किए हैं। जिस तरह तेरी इच्छा है वैसे ही कार्यों में तूने उन्हें कार्यरत किया है। जगत् में जो कुछ भी हो रहा है, सब तेरा ही किया हो रहा है। इसमें हमारा कुछ भी नहीं॥ ३॥ तेरे नाम की आराधना करने से मुझे महासुख प्राप्त हुआ है। हरि प्रभु का यशोगान करने से मेरा मन शीतल हो गया है। हे नानक ! पूर्ण गुरु की दया से मैंने काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी विषम मैदान-ए-जंग जीत लिया है और मुझे विजय की शुभकामनाएँ मिल रही हैं॥ ४॥ २४॥ ३१॥

माझ महला ५ ॥ जीअ प्राण प्रभ मनहि अधारा ॥ भगत जीवहि गुण गाइ अपारा ॥ गुण निधान अंम्रितु हरि नामा हरि धिआइ धिआइ सुखु पाइआ जीउ ॥ १ ॥ मनसा धारि जो घर ते आवै ॥ साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥ आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥ २ ॥ अगम अगोचर किछु मिति नही जानी ॥ साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥ खुदी मिटी चूका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥ ३ ॥ अनद मंगल कलिआण निधाना ॥ सूख सहज हरि नामु वखाना ॥ होइ क्रिपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३२ ॥

भगवान अपने भक्तों की आत्मा, प्राण एवं मन का आधार है। भक्त भगवान की अपार महिमा-स्तुति गायन करके ही जीते हैं। भगवान का नाम अमृत एवं गुणों का भण्डार है और भगवान के भक्त उसका नाम-सिमरन करके बड़ा सुख प्राप्त करते हैं॥ १॥ जो व्यक्ति अभिलाषा धारण करके घर से आता है, वह संतों की संगति करके अपना जन्म-मरण का चक्र मिटा लेता है। गुरु के दर्शन करने से समस्त मनोरथ व दिल की इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं॥ २॥ अगम्य व अगोचर प्रभु का अंत

जाना नहीं जा सकता। ज्ञानी, सिद्ध, साधक उस भगवान का ही ध्यान करते हैं। जिस व्यक्ति का अहंकार मिट जाता है और भ्रम दूर हो जाता है, गुरु उसके हृदय में ही भगवान को प्रगट कर देते हैं॥ ३॥ भगवान के नाम का जाप करने से आनंद एवं खुशियाँ प्राप्त हो जाती हैं और यह मुक्तिदायक एवं गुणों का भण्डार है। जो व्यक्ति भगवान के नाम का सिमरन करता है, उसे सुख एवं आनंद उपलब्ध हो जाते हैं। हे नानक ! जिस व्यक्ति पर मेरा स्वामी कृपालु हो जाता है, उसके हृदय-घर में ही भगवान का नाम आ बसता है॥ ४॥ २५॥ ३२॥

माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ तूं प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥ तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी ओट गोपाला जीउ ॥ १ ॥ गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥ कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ भेटत संगि साध संतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥ २ ॥ प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥ इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥ तुमरी क्रिपा ते होइ प्रगासा सरब मइआ प्रतिपाला जीउ ॥ ३ ॥ सति सति सति प्रभु सोई ॥ सदा सदा सद आपे होई ॥ चलित तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३३ ॥

हे प्रभु ! अपने कानों से तेरी शोभा सुन-सुनकर ही जीता हूँ। हे मेरे महान ठाकुर ! तुम मेरे प्रियतम हो। हे गोपाल ! अपने कर्म तू ही जानता है। मुझे तेरा ही आश्रय है॥ १॥ तेरी महिमा-स्तुति गाने से मन प्रफुल्लित हो जाता है। तेरी कथा सुनने से मन के विकारों की तमाम मलिनता दूर हो जाती है। साधुओं एवं संतों की संगति में मिलकर मैं सदैव दया के घर परमात्मा का चिन्तन करता हूँ॥ २॥ अपने प्रभु को मैं श्वास-श्वास से स्मरण करता हूँ। यह मति गुरु की कृपा से अपने मन में धारण करो। हे भगवान ! तेरी कृपा से ही मेरे मन में तेरी ज्योति का प्रकाश हुआ है। तू समस्त जीव-जन्तुओं तथा सबका रक्षक है॥ ३॥ वह प्रभु सदैव ही सत्य है और आप ही सदैव होता है। हे प्रिय प्रभु ! तेरी अद्भुत लीलाएँ जगत् में प्रत्यक्ष हैं। हे नानक ! मैं प्रभु की उन अद्भुत लीलाओं को देखकर कृतार्थ हो गया हूँ॥ ४॥ २६॥ ३३॥

माझ महला ५ ॥ हुकमी वरसण लागे मेहा ॥ साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥ सीतल सांति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥ १ ॥ सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥ दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि ध्रापे जीउ ॥ २ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥ जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥ ३ ॥ सासि सासि नानकु सालाहे ॥ सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३४ ॥

भगवान के हुक्म से मेघ बरसने लगे हैं। सज्जन संत मिलकर भगवान के नाम का जाप करते हैं। संतों के हृदय शीतल एवं शांत हो गए हैं और उन्हें सहज सुख उपलब्ध हो गया है। भगवान ने स्वयं ही संतों के हृदय में शांति प्रदान की है॥ १॥ भगवान ने सब कुछ अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न किया है। अपनी कृपा से परमात्मा ने सभी को सन्तुष्ट कर दिया है। हे मेरे दाता ! अपनी देन प्रदान करो ताकि सभी जीव-जन्तु तृप्त हो जाएँ॥ २॥ मेरा मालिक प्रभु सदैव सत्य है और उसकी महिमा भी सत्य है। गुरु की कृपा से मैं सदैव ही उसका ध्यान करता रहता हूँ। उस प्रभु ने मेरा जन्म-मरण का भय एवं माया का मोह नाश कर दिया है॥३॥ नानक तो श्वास-श्वास से भगवान की महिमा-स्तुति ही करता है। भगवान का सिमरन करने से उसकी तमाम जंजीरें कट गई हैं। भगवान ने एक क्षण में उसकी आशा पूरी कर दी है, अब तो वह भगवान के नाम का ही जाप करता रहता है और उसकी ही महिमा गाता रहता है॥ ४॥ २७॥ ३४॥

आउ साजन संत मीत पिआरे ॥ मिलि गावह गुण अगम अपारे ॥ गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥ १ ॥ जनम जनम के किलबिख जावहि ॥ मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥ २ ॥ नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥ जिनि सेविआ सो पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥ ३ ॥ आइ पइआ तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥ करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अंम्रितु पीए जीउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३५ ॥

हे मेरे सन्तजनों एवं प्रिय मित्रों! आओ हम मिलकर अगम्य व अनन्त प्रभु का यशोगान करें। भगवान की महिमा गाने एवं सुनने वाले सभी व्यक्ति माया के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। आओ हम उस प्रभु की आराधना करें जिसने हमें उत्पन्न किया है॥ १॥ भगवान का सिमरन करने से जन्म-जन्मांतरों के तमाम पाप नष्ट हो जाते हैं और मनोवांछित फल प्राप्त होता है। उस सत्य प्रभु-परमेश्वर की आराधना करो, जो सभी को भोजन पदार्थ देता है॥ २॥ भगवान के नाम का जाप करने से सर्व सुख मिल जाते हैं। हरि-प्रभु की आराधना करने से तमाम भय नाश हो जाते हैं। जो परमात्मा की सेवा करता है, वह पूर्ण पुरुष है और उसके समस्त कार्य संवर जाते हैं॥ ३॥ हे प्रभु! मैं तेरी शरण में आ गया हूँ, जैसे तुझे अच्छा लगता है वैसे ही मुझे अपने साथ मिला लो। हे प्रभु! कृपा करके मुझे अपनी भक्ति में लगा लो जिससे हे नानक! वह प्रभु के सत्य नाम रूपी अमृत का पान करता रहे॥ ४॥ २८॥ ३५॥

माझ महला ५ ॥ भए क्रिपाल गोविंद गुसाई ॥ मेघु वरसै सभनी थाई ॥ दीन दइआल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥ १ ॥ अपुने जीअ जंत प्रतिपारे ॥ जिउ बारिक माता संमारे ॥ दुख भंजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ ॥ २ ॥ जलि थलि पूरि रहिआ मिहरवाना ॥ सद बलिहारि जाईऐ कुरबाना ॥ रैणि दिनसु तिसु सदा धिआई जि खिन महि सगल उधारे जीउ ॥ ३ ॥ राखि लीए सगले प्रभि आपे ॥ उतरि गए सभ सोग संतापे ॥ नामु जपत मनु तनु हरीआवलु प्रभ नानक नदरि निहारे जीउ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ३६ ॥

जैसे बादल समस्त स्थानों पर वर्षा करता है, वैसे ही सृष्टि का स्वामी गोविन्द गुसाईं समस्त जीवों पर दयालु हो गया है। सृष्टिकर्त्ता सदैव ही दीनदयालु एवं कृपालु है और उसने अपने भक्तों के हृदय शीतल कर दिए हैं॥ १॥ जैसे माता अपने शिशु की देखभाल करती है, वैसे ही प्रभु अपने जीव-जन्तुओं की पालना करता है। भगवान दुखनाशक एवं सुखों का सागर है। वह समस्त जीवों को खाने के लिए भोजन देता है॥ २॥ दयालु परमात्मा जल एवं धरती में सर्वत्र समाया हुआ है। मैं सदैव उस पर बलिहारी व कुर्बान जाता हूँ। दिन-रात हमें सदैव ही उस भगवान का ध्यान करना चाहिए जो एक क्षण में ही सभी का उद्धार कर देता है॥ ३॥ भगवान ने स्वयं ही अपने भक्तों की रक्षा की है और उनके सभी दुःख एवं संताप दूर हो गए हैं। हे नानक! भगवान जब कृपा-दृष्टि से देखता है तो उसका नाम-सिमरन करने से मनुष्य का मन एवं तन हरा-भरा हो जाता है॥ ४॥ २९॥ ३६॥

माझ महला ५ ॥ जिथै नामु जपीऐ प्रभ पिआरे ॥ से असथल सोइन चउबारे ॥ जिथै नामु न जपीऐ मेरे गोइदा सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥ १ ॥ हरि रुखी रोटी खाइ समाले ॥ हरि अंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥ खाइ खाइ करे बदफैली जाणु विसू की वाड़ी जीउ ॥ २ ॥ संता सेती रंगु न लाए ॥ साकत संगि विकरम कमाए ॥ दुलभ देह खोई अगिआनी जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ॥ ३ ॥ तेरी सरणि

मेरे दीन दइआला ॥ सुख सागर मेरे गुर गोपाला ॥ करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम असाड़ी जीउ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ३७ ॥

हे प्रियतम प्रभु ! जिस स्थान पर तेरे नाम का जाप किया जाता है, वह स्थान स्वर्ण के चौबारे के तुल्य है। हे मेरे गोबिन्द ! जिस स्थान पर तेरे नाम का जाप नहीं किया जाता, वह नगर वीरान भूमि के तुल्य है॥१॥ जो व्यक्ति रूखी-सूखी रोटी खा कर भगवान का सिमरन करता रहता है, उसे भगवान घर एवं बाहर सर्वत्र कृपा-दृष्टि से देखता रहता है। जो व्यक्ति भगवान के दिए पदार्थ खा-खाकर दुष्कर्म करता रहता है, उसे विष की वाटिका समझो॥ २॥ जो व्यक्ति संतों से प्रेम नहीं करता और शाक्तों के साथ मिलकर दुष्कर्म करता है, ऐसा ज्ञानहीन व्यक्ति अपने दुर्लभ जन्म को व्यर्थ गंवा रहा है तथा वह अपनी जड़ को स्वयं ही उखाड़ रहा है॥ ३॥ हे दीनदयाल ! मैं तेरी शरण में आया हूँ। हे मेरे गुरु गोपाल ! तू सुखों का सागर है। मुझ पर कृपा करो। नानक तेरी ही महिमा गायन करता है। मेरी लाज-प्रतिष्ठा रखो॥४॥३०॥३७॥

माझ महला ५ ॥ चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥ कलि कलेस सभ दूरि पइआणे ॥ सांति सूख सहज धुनि उपजी साधू संगि निवासा जीउ ॥ १ ॥ लागी प्रीति न तूटै मूले ॥ हरि अंतरि बाहरि रहिआ भरपूरे ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुण गावा काटी जम की फासा जीउ ॥ २ ॥ अंम्रितु वरखै अनहद बाणी ॥ मन तन अंतरि सांति समाणी ॥ त्रिपति अघाइ रहे जन तेरे सतिगुरि कीआ दिलासा जीउ ॥ ३ ॥ जिस का सा तिस ते फलु पाइआ ॥ करि किरपा प्रभ संगि मिलाइआ ॥ आवण जाण रहे वडभागी नानक पूरन आसा जीउ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ३८ ॥

जब भगवान के सुन्दर चरण मेरे हृदय में स्थित हो गए तो मेरे तमाम दुःख एवं संताप नाश हो गए। संतों की संगति में निवास होने से मेरे अन्तर्मन में अनहद शब्द की मधुर ध्वनि उत्पन्न हो गई और मन में शांति एवं सहज सुख उपलब्ध हो गया है॥ १॥ भगवान से ऐसी प्रीति लगी है, जो कदापि नहीं टूटती। भगवान मेरे अन्दर व बाहर सर्वत्र व्यापक हो रहा है। भगवान का सदैव नाम-सिमरन करने तथा उसकी महिमा-स्तुति द्वारा मेरी मृत्यु की फाँसी कट गई है॥२॥ मेरे मन में अनहद शब्द के प्रगट होने से हरि-रस रूपी अमृत-वर्षा होने लग गई है। मेरे मन एवं तन में शांति प्रवेश कर गई है। हे भगवान ! सतिगुरु ने तेरे भक्तों को आश्वासन दिया है और हरि-रस रूपी अमृत का पान करवा कर उन्हें तृप्त एवं संतुष्ट कर दिया है॥३॥ जिस भगवान का मैं सेवक था, उससे मैंने अपनी की हुई सेवा का फल पाया है। सतिगुरु ने कृपा करके मुझे भगवान से मिला दिया है। हे नानक ! सौभाग्य से मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है और भगवान से मिलन की कामना पूरी हो गई है॥४॥३१॥३८॥

माझ महला ५ ॥ मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाइआ ॥ गइआ कलेसु भइआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥ १ ॥ जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥ पारब्रहम प्रभ भए रखवारे ॥ सुणी बेनंती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥ २ ॥ सरब जीआ कउ देवणहारा ॥ गुर परसादी नदरि निहारा ॥ जल थल महीअल सभि त्रिपताणे साधू चरन पखाली जीउ ॥ ३ ॥ मन की इछ पुजावणहारा ॥ सदा सदा जाई बलिहारा ॥ नानक दानु कीआ दुख भंजनि रते रंगि रसाली जीउ ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ३९ ॥

वर्षा हुई है, इसे परमेश्वर ने ही बरसाया है। इससे प्रभु ने समस्त जीव-जन्तुओं को सुखी बसा दिया है। हरि-परमेश्वर के नाम का सिमरन करने से उनकी पीड़ा दूर हो गई है और उनको सच्चा

सुख मिल गया है॥१॥ ये जीव–जन्तु जिस परमात्मा के उत्पन्न किए हुए हैं, उसने ही उनकी रक्षा की है। पारब्रह्म–परमेश्वर उनका रक्षक बन गया है। मेरे ठाकुर जी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है और मेरी भक्ति सफल हो गई है॥२॥ परमेश्वर समस्त प्राणियों को देने वाला है। गुरु की दया से मैंने उसको अपने नेत्रों में देख लिया है। सागर, धरती एवं गगन में रहने वाले समस्त प्राणी तृप्त हो गए हैं। मैं संत–गुरु के चरण धोता हूँ॥३॥ परमात्मा मन की इच्छा पूरी करने वाला है। मैं सदैव ही उस पर कुर्बान जाता हूँ। हे नानक ! दुख नाशक प्रभु ने मुझे यह दान दिया है कि मैं उसकी प्रीति में मग्न हो गया हूँ जो प्रसन्नता का घर है॥४॥३२॥३६॥

माझ महला ५ ॥ मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥ तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥ १ ॥ सदा सदा तूंहै सुखदाई ॥ निवि निवि लागा तेरी पाई ॥ कार कमावा जे तुधु भावा जा तूं देहि दइआला जीउ ॥ २ ॥ प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥ जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥ जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ ॥ ३ ॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ ॥ आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥ सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४० ॥

हे भगवान ! मेरा मन एवं तन तेरा ही दिया हुआ है और धन भी तेरा ही दिया हुआ है। हे ईश्वर ! तुम मेरे ठाकुर एवं स्वामी हो। हे प्रभु ! मेरे प्राण एवं तन तेरी ही पूँजी है। हे गोपाल ! मेरी प्रभुता तुझ से ही है॥१॥ हे परमेश्वर ! सर्वदा तुम सुख प्रदान करने वाले हो। मैं नतमस्तक होकर तुझे ही नमन करता हूँ और तेरे चरण स्पर्श करता हूँ। हे दयालु परमात्मा ! मैं वहीं कार्य करूँगा जो तू मुझे करने के लिए देगा और जो तुझे अच्छा लगे॥ २॥ हे भगवान ! मैं सबकुछ तुझ से ही लेता हूँ और तुम ही मेरे आभूषण हो। हे अकालपुरुष ! जो कुछ तुम मुझे दुःख–सुख देते हो, मैं उसको सुख समझकर सहता हूँ। हे भगवान ! जहाँ कहीं भी तुम मुझे रखते हो, वही मेरा स्वर्ग है। तुम सबकी रक्षा करने वाले हो॥३॥ हे नानक ! उस परम पिता परमेश्वर की आराधना करने से मुझे सुख उपलब्ध हो गया है। हे प्रभु ! दिन के आठों प्रहर तेरी महिमा गायन करता हूँ। उसके हृदय के समस्त मनोरथ पूर्ण हो गए हैं और अब वह कभी भी दुखी नहीं होता॥४॥३३॥४०॥

माझ महला ५ ॥ पारब्रहमि प्रभि मेघु पठाइआ ॥ जलि थलि महीअलि दह दिसि वरसाइआ ॥ सांति भई बुझी सभ तिसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥ १ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा ॥ आपे बखसि करे जीअ सारा ॥ अपने कीते नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥ २ ॥ जा की सरणि पइआ गति पाईऐ ॥ सासि सासि हरि नामु धिआईऐ ॥ तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥ ३ ॥ तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥ तूं सचा साहिबु गुणी गहेरा ॥ नानकु दासु कहै बेनंती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४१ ॥

पारब्रह्म प्रभु ने मेघ को वर्षा करने के लिए भेजा है। मेघ ने सागर, धरती एवं आकाश दसों दिशाओं में वर्षा की है। वर्षा से जीवों के अन्तर्मन में सुख–शांति हो गई है तथा उनकी सारी प्यास मिट गई है और समस्त स्थानों पर प्रसन्नता हो गई है॥१॥ हे भगवान ! तू सुख प्रदान करने वाला और दुःख नाश करने वाला है। तू स्वयं ही समस्त प्राणियों को क्षमा करता है। अपनी सृष्टि का वह स्वयं ही पालन पोषण करता है। मैं उसके चरणों में नतमस्तक होकर उसे प्रसन्न करता हूँ॥२॥ जिस भगवान की शरण लेने से मुक्ति प्राप्त होती है, श्वास–श्वास से उस भगवान के नाम का ही ध्यान करना चाहिए। उसके अलावा अन्य कोई दूसरा स्वामी नहीं। समस्त स्थान केवल उसी के हैं॥३॥ हे प्रभु ! मुझे तेरा ही मान एवं तेरा ही बल है। तू ही मेरा सच्चा स्वामी एवं गुणों का सागर है। दास नानक एक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! दिन के आठों प्रहर मैं तेरा ही ध्यान करता रहूँ॥४॥३४॥ ४१॥

माझ महला ५ ॥ सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥ गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥ सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ ॥ १ ॥ अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥ घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥ सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥ २ ॥ प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥ मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥ सहजि संतोखि सदा त्रिपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥ ३ ॥ हथी दिती प्रभि देवणहारै ॥ जनम मरण रोग सभि निवारे ॥ नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रंग माणे जीउ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४२ ॥

जब प्रभु प्रसन्न हो जाते हैं तो समस्त सुख उपलब्ध हो जाते हैं। फिर पूर्ण गुरु के चरण मन में निवास कर लेते हैं। जिसकी प्रभु की सुरति में सहज समाधि लग जाती है, वही व्यक्ति इस आनंद को जानता है॥१॥ मेरा परमेश्वर अगम्य एवं अगोचर है। वह प्रत्येक हृदय में निकट ही रहता है। वह सदैव निर्लेप है और जीवों का दाता है। कोई विरला पुरुष ही अपने स्वरूप को समझता है॥२॥ प्रभु के मिलन का यही लक्षण है कि मनुष्य अपने मन में एक सत्यस्वरूप परमात्मा के हुक्म की ही पहचान करता है। प्रभु की इच्छानुसार चलने वाले मनुष्य को सदैव सुख, संतोष, तृप्ति एवं हर्ष प्राप्त होता है॥ ३॥ दाता परमेश्वर ने मुझे अपना हाथ दिया है अर्थात् सहारा दिया है और प्रभु ने जीवन–मृत्यु के समूह कष्ट दूर कर दिए हैं। हे नानक! जिनको परमात्मा ने अपना सेवक बना लिया है, वह प्रभु का यशोगान करने का आनंद प्राप्त करते हैं॥४॥३५॥४२॥

माझ महला ५ ॥ कीनी दइआ गोपाल गुसाई ॥ गुर के चरण वसे मन माही ॥ अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ ॥ १ ॥ मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥ बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥ दूत दुसमण सभि सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपै ॥ बुधि सिआणप किछू न जापै ॥ आपणिआ संता नो आपि सहाई प्रभि भरम भुलावा लाहिआ जीउ ॥ ३ ॥ चरण कमल जन का आधारो ॥ आठ पहर राम नामु वापारो ॥ सहज अनंद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४३ ॥

सृष्टि के पालनहार गोपाल ने मुझ पर कृपा–दृष्टि की है और गुरु के चरण मेरे मन में स्थित हो गए हैं। अब उस सृजनहार प्रभु ने मुझे अपना सेवक स्वीकार करके मुसीबतों का डेरा ही ध्वस्त कर दिया है॥१॥ मेरे तन एवं मन में सत्यस्वरूप परमेश्वर वास करता है और अब मुझे कोई स्थान दुखदायी नहीं लगता। काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी दूत जो मेरे शत्रु थे, अब वह सभी मेरे मित्र बन गए हैं, क्योंकि मुझे एक जगत् का स्वामी ही प्रिय है॥२॥ भगवान जो कुछ भी करता है, वह स्वयं ही करता है। उसके कार्यों में किसी अन्य की बुद्धि एवं चतुराई काम नहीं करती। ईश्वर अपने संतों का स्वयं ही सहायक होता है। उसने मेरा भ्रम व संशय दूर कर दिया है॥३॥ प्रभु के चरण कमल उसके भक्तों का सहारा है। वह दिन–रात आठ प्रहर राम नाम का व्यापार करते हैं। वह सहज अवस्था में आनंदपूर्वक गोविन्द की महिमा गायन करते रहते हैं। हे नानक! प्रभु समस्त जीवों में समाया हुआ है॥४॥३६॥४३॥

माझ महला ५ ॥ सो सचु मंदरु जितु सचु धिआईऐ ॥ सो रिदा सुहेला जितु हरि गुण गाईऐ ॥ सा धरति सुहावी जितु वसहि हरि जन सचे नाम विटहु कुरबाणो जीउ ॥ १ ॥ सचु वडाई कीम न पाई ॥ कुदरति करमु न कहणा जाई ॥ धिआइ धिआइ जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि माणो जीउ ॥ २ ॥ सचु सालाहणु वडभागी पाईऐ ॥ गुर परसादी हरि गुण गाईऐ ॥ रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु

नामु नीसाणो जीउ ॥ ३ ॥ सचे अंतु न जाणै कोई ॥ थानि थनंतरि सचा सोई ॥ नानक सचु धिआईऐ सद ही अंतरजामी जाणो जीउ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४४ ॥

सत्य का मन्दिर वहीं है, जहाँ सत्य प्रभु का सिमरन किया जाता है। वही ह्रदय सुखी है, जिससे भगवान की महिमा का गायन किया जाता है। वह धरती बड़ी सुन्दर है, जहाँ प्रभु के भक्त रहते हैं। वे तेरे सत्य नाम पर कुर्बान जाते हैं॥१॥ सत्य-स्वरूप परमात्मा की महिमा का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। परमेश्वर की कुदरत एवं करम का वर्णन नहीं किया जा सकता। हे प्रभु ! तेरे भक्त सदैव तुझे स्मरण करके जीते हैं। उनकी आत्मा सत्य रूपी वाणी का आनंद लेती हैं॥२॥ सद्पुरुष परमात्मा की महिमा करनी सौभाग्य से ही प्राप्त होती है। गुरु की दया से परमात्मा का गुणगान किया जाता है। जो तेरी प्रीति में मग्न रहते हैं, वह तुझे अच्छे लगते हैं। हे प्रभु ! तेरे दरबार में जाने के लिए सत्यनाम उनका परिचय चिन्ह है॥३॥ सत्यस्वरूप परमात्मा का अंत कोई नहीं जानता। सच्चा प्रभु सर्वव्यापक है। हे नानक ! उस सत्य प्रभु का सदैव ही सिमरन करना चाहिए, वह अन्तर्यामी समस्त जीवों की भावना को जानता है॥ ४॥ ३७॥ ४४॥

माझ महला ५ ॥ रैणि सुहावड़ी दिनसु सुहेला ॥ जपि अंम्रित नामु संतसंगि मेला ॥ घड़ी मूरत सिमरत पल वंञहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥ १ ॥ सिमरत नामु दोख सभि लाथे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु साथे ॥ भै भउ भरमु खोइआ गुरि पूरै देखा सभनी जाई जीउ ॥ २ ॥ प्रभु समरथु वड ऊच अपारा ॥ नउ निधि नामु भरे भंडारा ॥ आदि अंति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ जाचिकु जाचै साध रवाला ॥ देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ४५ ॥

वह रात्रि सुन्दर है और वह दिन भी बड़ा सुखदायक है, जब संतों की सभा में मिलकर अमृत नाम का जाप किया जाता है। जहाँ जीवन-समय की घड़ियाँ, मुहूर्त एवं पल सभी नाम-सिमरन में व्यतीत होते हैं, वहाँ जीवन सफल हो जाता है॥१॥ नाम की स्तुति करने से मेरे समस्त दोष मिट गए हैं और अन्दर-बाहर हरि-प्रभु मेरे साथ रहता है। पूर्ण गुरु ने मेरे भीतर से भय, खौफ व भ्रम निवृत्त कर दिए हैं और अब मैं परमेश्वर को सर्वत्र देखता हूँ॥२॥ परमात्मा सर्वशक्तिमान, महान, सर्वश्रेष्ठ एवं अनन्त है। नवनिधियाँ प्रदान करने वाले नाम से उसके भण्डार भरे हुए हैं। परमात्मा जगत् के आदि, अन्त एवं मध्य तक विद्यमान है। किसी अन्य को मैं अपने निकट नहीं आने देता॥३॥ हे दीनदयाल ! मुझ पर दया कीजिए। मैं तेरे दर का भिखारी हूँ और संतों की चरण-धूलि ही माँगता हूँ। हे प्रभु ! दास नानक तुझ से यही माँगता है कि मुझे यह दान दीजिए कि मैं सदैव ही तेरा सिमरन करता रहूँ॥४॥३८॥४५॥

माझ महला ५ ॥ ऐथै तूंहै आगै आपे ॥ जीअ जंत्र सभि तेरे थापे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर ओट तुमारी जीउ ॥ १ ॥ रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥ पारब्रहम प्रभ अंतरजामी ॥ जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइआ सो जनमु न जूऐ हारी जीउ ॥ २ ॥ नामु अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥ जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु नमसकारिआ ॥ इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इह मति सारी जीउ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४६ ॥

हे प्रभु ! इस मृत्यु लोक में तू ही (मेरा आधार) है और आगे परलोक में भी तू ही (मेरा आधार) है। समस्त जीव–जंतु तेरी ही रचना है। हे सृजनहार प्रभु ! तेरे अलावा मेरा अन्य कोई नहीं। तुम ही मेरा सहारा और आधार हो॥१॥ हे जगत् के स्वामी ! मैं तेरा नाम अपनी रसना से जप–जप कर जीता हूँ। पारब्रह्म प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है। जो प्राणी प्रभु की भक्ति करता है, वह सुख प्राप्त करता है। वह अपना मनुष्य जीवन जुए के खेल में नहीं हारता॥२॥ हे प्रभु ! तेरे जिन भक्तों ने नाम रूपी औषधि को पा लिया है, उन्होंने अपना जन्म–जन्मांतरों का पुराना रोग दूर कर लिया है। हे मानव ! दिन–रात भगवान का भजन करते रहो, क्योंकि यहीं कार्य फलदायक है॥३॥ अपनी कृपा–दृष्टि करके प्रभु अपने जिस भक्त को गुणवान बना देता है, वह भक्त प्रत्येक हृदय में विद्यमान प्रभु को नमस्कार करता रहता है। एक ईश्वर के अलावा अन्य कोई नहीं है। हे नानक ! यही मति सर्वश्रेष्ठ है॥४॥३६॥४६॥

माझ महला ५ ॥ मनु तनु रता राम पिआरे ॥ सरबसु दीजै अपना वारे ॥ आठ पहर गोविंद गुण गाईऐ बिसरु न कोई सासा जीउ ॥ १ ॥ सोई साजन मीतु पिआरा ॥ राम नामु साधसंगि बीचारा ॥ साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ॥ २ ॥ चारि पदारथ हरि की सेवा ॥ पारजातु जपि अलख अभेवा ॥ कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥ ३ ॥ पूरन भाग भए जिसु प्राणी ॥ साधसंगि मिले सारंगपाणी ॥ नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥ ४ ॥ ४० ॥ ४७ ॥

यह मन एवं तन तो प्रिय राम के प्रेम में ही मग्न रहना चाहिए। हमें अपना सर्वस्व ही प्रभु को न्यौछावर कर देना चाहिए। हमें दिन के आठ प्रहर भगवान की महिमा–स्तुति करनी चाहिए और कोई एक सांस लेते भी उस प्रभु को भूलना नहीं चाहिए॥१॥ वहीं मेरा प्रिय मित्र एवं सज्जन है, जो सत्संग में राम के नाम का चिन्तन करता है। संतों की संगति करने से ही भवसागर पार किया जाता है और मृत्यु की फाँसी कट जाती है॥२॥ चारों पदार्थ–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रभु की भक्ति से प्राप्त होते हैं। अदृष्य एवं भेद रहित परमात्मा की उपासना ही कल्प वृक्ष है। सतिगुरु जिस व्यक्ति के अन्तर्मन से काम, क्रोध एवं पाप निवृत कर देते हैं, उसकी प्रभु मिलन की आशा पूरी हो जाती है॥३॥ जिस प्राणी के पूर्ण भाग्य उदय होते हैं, उसे संतों की संगति करने से सारंगपाणि भगवान मिल जाता है। हे नानक ! जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास कर जाता है, वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता हुआ भी माया से उदासीन रहता है और भगवान के दरबार में स्वीकृत हो जाता है॥४॥४०॥४७॥

माझ महला ५ ॥ सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥ करि किरपा भगतीं प्रगटाइआ ॥ संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥ १ ॥ जा कै ग्रिहि नव निधि हरि भाई ॥ तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥ २ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ आपि इकंती आपि पसारा ॥ लेपु नही जगजीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥ ३ ॥ अंचलि लाइ सभ सिसटि तराई ॥ आपणा नाउ आपि जपाई ॥ गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ४८ ॥

हरि का नाम–सिमरन करने से मुझे हृदय में सुख प्राप्त हुआ है। भगवान के भक्तों ने कृपा करके उसे मेरे मन में प्रगट कर दिया है। संतों की सभा में मिलकर मैंने हरि–प्रभु के नाम का ही जाप किया है और मेरा आलस्य रोग मिट गया है॥१॥ हे भाई ! जिस (भगवान) के गृह में नवनिधियाँ हैं, भगवान उस व्यक्ति को ही मिलता है, जिसने पूर्व जन्म में नाम–सिमरन के शुभ कर्म किए हैं। पूर्ण परमेश्वर

ज्ञान एवं ध्यान से भरपूर है। प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है॥२॥ परमेश्वर क्षण में ही जगत् की उत्पत्ति तथा विनाश करने वाला है। ईश्वर स्वयं ही निराकार स्वरूप है और ब्रह्माण्ड रूप सगुण भी स्वयं ही है। प्रभु जगत् का जीवन एवं दाता है और माया उसे प्रभावित नहीं करती, वह निर्लिप्त है। उस प्रभु के दर्शन करने से विरह की पीड़ा निवृत्त हो जाती है॥३॥ वह परमात्मा गुरु के आंचल से लगाकर सारी सृष्टि को भवसागर से पार करवाता है। भगवान गुरु द्वारा अपने नाम की जीवों से स्वयं ही आराधना करवाता है। हे नानक! जिसकी किस्मत में प्रारब्ध से ही संयोग लिखे होते हैं, उसे भगवान की कृपा से भवसागर पार करने के लिए गुरु रूपी जहाज मिल जाता है॥४॥४१॥४८॥

माझ महला ५ ॥ सोई करणा जि आपि कराए ॥ जिथै रखै सा भली जाए ॥ सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥ १ ॥ सभ परोई इकतु धागै ॥ जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥ ऊंध कवलु जिसु होइ प्रगासा तिनि सरब निरंजनु डीठा जीउ ॥ २ ॥ तेरी महिमा तूंहै जाणहि ॥ अपणा आपु तूं आपि पछाणहि ॥ हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥ ३ ॥ तूं निरवैरु संत तेरे निरमल ॥ जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै बिनसिआ भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ४९ ॥

हे भगवान! मैं वही कुछ करता हूँ जो तुम स्वयं ही मुझ से करवाते हो। मेरे लिए वहीं स्थान उत्तम है, जिस स्थान पर तुम रखते हो। वहीं व्यक्ति बुद्धिमान और प्रतिष्ठित है जिसको ईश्वर का हुक्म मीठा लगता है॥१॥ सारी सृष्टि भगवान ने माया रूपी एक धागे में पिरोई हुई है। वहीं व्यक्ति भगवान के चरणों में लगता है, जिसे वह स्वयं अपने चरणों में लगाता है। भगवान का निवास मनुष्य के हृदय-कमल में है। यह कमल पहले उलटा पड़ा होता है परन्तु भगवान के सिमरन द्वारा सीधा हो जाता है। फिर इस सीधे हुए कमल में भगवान की ज्योति का प्रकाश हो जाता है। जो व्यक्ति उस प्रकाश को देखता है, वह उस सर्वव्यापक निरंजन के दर्शन करता है॥२॥ हे भगवान! अपनी महिमा को तुम स्वयं ही जानते हो और तुम अपने स्वरूप को स्वयं ही पहचान सकते हो। मैं तेरे संतों पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने अपने काम, क्रोध एवं लालच को पीस दिया है॥३॥ हे ईश्वर! तुम निर्वेर हो और तेरे सन्त पवित्र हैं, जिनके दर्शनों से समस्त पाप दूर हो जाते हैं। हे नानक! मैं प्रभु के नाम की वंदना एवं सिमरन करके ही जीवित हूँ और मेरा कठोर स्वभाव, भ्रम एवं भय नाश हो गए हैं॥४॥४२॥४९॥

मांझ महला ५ ॥ झूठा मंगणु जे कोई मागै ॥ तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥ पारब्रहमु जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥ १ ॥ प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥ गुण गावै अनदिनु निति जागी ॥ बाह पकड़ि तिसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥ २ ॥ चरन कमल भगतां मनि वुठे ॥ विणु परमेसर सगले मुठे ॥ संत जनां की धूड़ि नित बांछहि नामु सचे का गहणा ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि गाईऐ ॥ जिसु सिमरत वरु निहचलु पाईऐ ॥ नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५० ॥

यदि कोई व्यक्ति झूठी माया की याचना करे तो उसे मृत्युकाल में एक क्षण भी नहीं लगता। जो व्यक्ति पारब्रह्म प्रभु की सदैव भक्ति करता रहता है, वह गुरु से मिलकर सदैव जीवन प्राप्त कर लेता है॥१॥ जिसका मन प्रभु की भक्ति में मग्न है, वह दिन-रात प्रभु की कीर्ति गायन करता है और सदैव मग्न रहता है। जिसकी किस्मत में नाम की देन लेने का लेख विद्यमान है, उसे ही भुजा से पकड़ कर प्रभु अपने साथ मिला लेता है॥२॥ हरि के चरण कमल उसके भक्तों के हृदय में बसते हैं। महान

परमेश्वर की दया के अलावा सारे ठगे जाते हैं। जो व्यक्ति संतों की चरण-धूलि की नित्य कामना करते रहते हैं, उन्हें संतों द्वारा सत्य प्रभु का नाम रूपी आभूषण मिल जाता है॥३॥ उठते-बैठते हर वक्त हमें भगवान की महिमा-स्तुति करते रहना चाहिए, भगवान का सिमरन करने से अटल प्रभु मिल जाता है। हे नानक! परमात्मा उस पर दयालु हुआ है। हे प्रभु! तुम जो कुछ करते हो, मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ॥४॥ ४३॥ ५०॥

रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥ सची दरगह महलि बुलाए ॥ सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता गुरमती मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को मेरा हउ किसु केरा ॥ साचा ठाकुरु त्रिभवणि मेरा ॥ हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ हुकमु पछाणै सु हरि गुण वखाणै ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥ सभना का दरि लेखा सचै छूटसि नामि सुहावणिआ ॥ ३ ॥ मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥ जम दरि बधा चोटा खाए ॥ बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥ ४ ॥ साकत कूड़े सचु न भावै ॥ दुबिधा बाधा आवै जावै ॥ लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥ ५ ॥ पेईअड़ै पिरु जातो नाही ॥ झूठि विछुंनी रोवै धाही ॥ अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥ ६ ॥ पेईअड़ै जिनि जाता पिआरा ॥ गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥ आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥ सचे ठाकुर साचो भावै ॥ नानक सचु कहै बेनंती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥

ईश्वर के हुक्म द्वारा सभी गुरु के शब्द में मग्न हैं और परमात्मा के सत्य दरबार में उसकी उपस्थिति में आमंत्रित किए जाते हैं। हे मेरे मालिक! तू दीनदयाल एवं सदैव सत्य है और तेरे सत्य से मेरा मन प्रसन्न हो गया है॥ १॥ मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने शब्द द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लिया है। प्रभु का अमृत नाम सदा ही सुख देने वाला है। गुरु के उपदेश द्वारा मैंने प्रभु के नाम को अपने मन में बसा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ न ही कोई मेरा है, न ही मैं किसी का हूँ। तीनों लोकों का स्वामी सत्य परमात्मा ही मेरा है। अनेक जीव अहंकार करके प्राण त्याग गए हैं। दुष्कर्म करके प्राणी को बड़ा पश्चाताप होता है॥ २॥ जो परमात्मा के हुक्म को पहचानता है, वही उसका यशोगान करता है। वह गुरु के शब्द द्वारा नाम रूपी परवाना अपने साथ लेकर दरबार में जाता है। सत्य प्रभु के दरबार में समस्त जीवों के कर्मों का लेखा होता है। वहाँ वही व्यक्ति मुक्त होते हैं, जो नाम द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लेते हैं॥ ३॥ मनमुख व्यक्ति को कहीं भी सुख नहीं मिलता। मृत्यु के द्वार पर बंधा हुआ वह चोटें खाता है। वहाँ नाम के अलावा मनुष्य का कोई मित्र अथवा सज्जन नहीं होता। नाम सिमरन करने वाला व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है॥ ४॥ झूठे शाक्त को सत्य उत्तम नहीं लगता। वह दुविधा में फँसा होने के कारण जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। जीव की किस्मत को कोई मिटा नहीं सकता। गुरु की दया से ही मनुष्य मोक्ष पाता है॥ ५॥ जिस जीव-स्त्री ने अपने पीहर (इहलोक) में अपने मालिक-प्रभु को नहीं समझा, वह झूठी प्रभु से जुदा हुई ऊँची ऊँची विलाप करती है। उस अवगुणों की ठगी हुई जीव-स्त्री को प्रभु के महल में स्थान नहीं मिलता। गुणों का स्वामी प्रभु स्वयं ही जीव के अवगुणों को क्षमा कर देता है॥ ६॥ जिस जीव-स्त्री ने अपने पीहर (मृत्युलोक) में अपने पति-प्रभु को समझ लिया है, वह गुरु के माध्यम से परम तत्त्व अर्थात् प्रभु के

गुणों को समझ लेती है। प्रभु उसके जन्म-मरण के चक्र को मिटा देता है। तदुपरांत वह सत्य प्रभु के नाम में लीन रहती है॥ ७॥ गुरमुख प्रभु के गुणों को स्वयं समझता है और दूसरों से अकथनीय प्रभु की लीला एवं उसके गुणों की कथा करवाता है। सच्चे ठाकुर प्रभु को सत्य नाम ही अच्छा लगता है। हे नानक! वह सत्य प्रभु के समक्ष सच्ची प्रार्थना करता है कि उसे सत्य नाम मिले ताकि वह उसकी महिमा करता रहे॥ ८॥ १॥

माझ महला ३ घरु १ ॥ करमु होवै सतिगुरू मिलाए ॥ सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ माइआ मोहु चुकावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥ गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ ॥ २ ॥ इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥ गुरमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥ नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥ ४ ॥ पाप पुंन की सार न जाणी ॥ दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥ अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥ ६ ॥ हउमै मारि मंनि वसाइआ ॥ गुर चरणी सदा चितु लाइआ ॥ गुर किरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ ॥ ७ ॥ जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तूं जंमणु मरणु सवारणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

जिस व्यक्ति पर परमात्मा की मेहर हो जाती है, उसे वह सतिगुरु से मिला देता है। फिर वह व्यक्ति अपनी सुरति प्रभु की सेवा में लगाता और अपना मन शब्द में जोड़ता है। वह अपने अहंकार को त्याग कर सदैव सुख पाता है और अपने माया के मोह को मिटा देता है॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ, क्योंकि गुरु की मति द्वारा उसके हृदय में प्रभु ज्योति का प्रकाश हो जाता है। वह व्यक्ति प्रतिदिन भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जब मनुष्य अपने तन एवं मन में ही उसकी खोज करता है तो उसे ईश्वर का नाम प्राप्त हो जाता है। वह अपने भटकते मन को स्थिर करता है और इसको अपने वश में रखता है। वह रात-दिन गुरु की वाणी गायन करता है और सहज ही प्रभु की भक्ति में जुट जाता है॥ २॥ इस शरीर में विद्यमान अनंत गुणों वाली नाम रूपी वस्तु जब किसी को मिल जाती है तो वह सत्य प्रभु के दर्शन करता है। शरीर रूपी घर को आँखें, कान, नाक, मुँह इत्यादि नौ द्वार लगे हुए है। इन दरवाजों द्वारा मन बाहर भटकता रहता है। जब वह विकारों एवं मोह-माया से मुक्त होकर निर्मल हो जाता है तो वह दसम द्वार में आ जाता है। फिर निर्मल मन में अनहद शब्द बजने लगता है॥ ३॥ परमात्मा सदैव सत्य है एवं उसकी महिमा भी सत्य है। गुरु की कृपा से ही परमात्मा मन में आकर निवास करता है। फिर व्यक्ति दिन-रात परमात्मा के प्रेम में मग्न रहता है और उसे सत्य दरबार की सूझ हो जाती है॥ ४॥ मनमुख प्राणी को पाप एवं पुण्य की पहचान नहीं होती। उसकी बुद्धि मोह-माया में मग्न हो जाती है, जिससे वह भ्रम में फँसकर भटकती रहती है। मोह-माया में ज्ञानहीन मनमुख भगवान के मिलन के मार्ग को नहीं जानता, जिसके कारण वह बार-बार जन्मता एवं मरता रहता है॥ ५॥ गुरमुख गुरु की सेवा करके सदैव ही सुख प्राप्त करते हैं। वह अहंकार को नष्ट करके अपने भटकते हुए मन को विकारों की तरफ जाने से वर्जित करते हैं। गुरु की शिक्षा से उनका अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है और वज्र कपाट

खुल जाते हैं॥६॥ वह अपना अहंकार मिटाकर भगवान को अपने मन में बसा लेते हैं। फिर वह अपना चित्त सदैव ही गुरु के चरणों में लगाकर रखते हैं। गुरु की कृपा से उनका मन एवं तन निर्मल हो जाता है। फिर वह भगवान के निर्मल नाम का सिमरन करते रहते हैं॥ ७॥ हे प्रभु! जीवों का जन्म एवं मृत्यु सब कुछ तुझ पर निर्भर है और हे प्रभु! आप उसे महानता प्रदान करते हैं, जिसे तुम क्षमा कर देते हो। हे नानक! तू सदैव ही परमेश्वर के नाम का भजन कर, जो मनुष्य के जन्म और मृत्यु को संवार देता है॥८॥१॥२॥

माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा ॥ बिनु तकड़ी तोलै संसारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥ जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे सुणै तै आपे वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ आपे लाइ लए सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ ॥ २ ॥ जिसु आपि भुलाए सु किथै हथु पाए ॥ पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि मिलावणिआ ॥ ३ ॥ पेईअड़ै धन अनदिनु सुती ॥ कंति विसारी अवगणि मुती ॥ अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअड़ै सुखदाता जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ सेज सुहावी सदा पिरु रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ जिस नो नदरि करे तिसु गुरू मिलाए ॥ किलबिख काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥ ६ ॥ लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥ सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥ आपे बखसि लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ पूरे गुर कै सबदि मिलाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥

मेरा निर्मल प्रभु अगम्य एवं अपार है। वह तराजु के बिना जगत् को तोलता है। इस तथ्य को वहीं व्यक्ति समझता है, जो गुरु के सान्निध्य में रहता है। वह प्रभु के गुणों को कह-कह कर उसी में विलीन हो जाता है॥१॥ जो व्यक्ति भगवान के नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। मेरा तन-मन उन पर न्यौछावर है। जो व्यक्ति सत्य प्रभु के नाम-सिमरन में मग्न हैं, वह रात-दिन जागृत रहते है और सत्य दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तू स्वयं ही समस्त जीवों की प्रार्थना सुनता है और स्वयं ही उन्हें देखता रहता है। जिस पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह व्यक्ति प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो जाता है। जिसे प्रभु स्वयं ही अपने सिमरन में लगाता है, वहीं व्यक्ति उसके सिमरन में लगता है। गुरमुख ही सत्य नाम की साधना करते हैं॥२॥ वह किस का आश्रय ले सकता है, जिसको प्रभु स्वयं गुमराह करता है? विधाता के विधान को मिटाया नहीं जा सकता अर्थात् पूर्व जन्म का लिखा लेख मिटाया नहीं जाता। वह व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें सतिगुरु मिले हैं। पूर्ण भाग्य से ही सतिगुरु जी मिलते हैं॥३॥ मनमुख जीव-स्त्री अपने पीहर (इहलोक) में दिन-रात अज्ञानता में निद्रामग्न रहती है। उसके पति-प्रभु ने उसे विस्मृत कर दिया है और अवगुणों के कारण वह त्याग दी गई है। वह रात-दिन सदैव ही विलाप करती रहती है। अपने पति-प्रभु के बिना उसको सुख की निद्रा नहीं आती॥ ४॥ गुरमुख जीव-स्त्री ने अपने पीहर (इहलोक) में सुखदाता पति-प्रभु को जान लिया है। उसने अपना अहंकार त्याग कर गुरु के शब्द द्वारा अपने पति-प्रभु को पहचान लिया है। वह सदैव ही सुन्दर शय्या पर शयन करती है और पति-प्रभु के साथ रमण करती है। ऐसी जीव-स्त्री प्रभु के सत्य-नाम को अपना श्रृंगार बनाती है॥५॥ पारब्रह्म-प्रभु ने चौरासी लाख योनियों में अनंत जीव उत्पन्न किए हैं। जिस जीव पर वह अपनी दया-दृष्टि करता है, उसको गुरु से मिला

देता है। वह जीव अपने पापों को धोकर हमेशा के लिए पवित्र हो जाता है और सत्य दरबार के अन्दर नाम से सुहावना लगता है॥६॥ यदि प्रभु कर्मो का हिसाब माँगेगा, वह तब कौन दे सकेगा? तब द्वैत अथवा त्रिगुणी अवस्था में कोई सुख प्राप्त नहीं होना। सत्यस्वरूप परमात्मा स्वयं क्षमाशील है और क्षमा करके अपने आप से मिला लेता है॥७॥ प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। पूर्ण गुरु के उपदेश से ही प्रभु अपने साथ मिला लेता है। हे नानक ! जिस जीव को प्रभु के नाम की शोभा मिलती है, सृष्टि का स्वामी स्वयं ही उसे अपने मिलाप में मिलाता है॥ ८॥२॥३॥

माझ महला ३ ॥ इको आपि फिरै परछंना ॥ गुरमुखि वेखा ता इहु मनु भिंना ॥ त्रिसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ चितु लावणिआ ॥ गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु भूला तैं आपि भुलाइआ ॥ इकु विसारि दूजै लोभाइआ ॥ अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ जो रंगि राते करम बिधाते ॥ गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥ जिस नो आपि देइ वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ माइआ मोहि हरि चेतै नाही ॥ जम पुरि बधा दुख सहाही ॥ अंना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥ ४ ॥ इकि रंगि राते जो तुधु आपि लिव लाए ॥ भाइ भगति तेरै मनि भाए ॥ सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि पुजावणिआ ॥ ५ ॥ हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥ आपे बखसिहि दे वडिआई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै जो हरि हरि नामु धिआवणिआ ॥ ६ ॥ अनदिनु राते जो हरि भाए ॥ मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ॥ सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ ॥ ७ ॥ जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥ हरि गुण गावहि सचु वखाणे ॥ नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ४ ॥

एक परमेश्वर ही अदृष्य होकर सर्वत्र भ्रमण करता रहता है। जिस व्यक्ति ने गुरु के माध्यम से उसके दर्शन कर लिए हैं, उसका मन उसके प्रेम में भीग गया है। उसने अपनी तृष्णा को त्यागकर सहज सुख प्राप्त कर लिया है। फिर उसने एक प्रभु को ही अपने मन में बसाया है॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, मेरी आत्मा कुर्बान है, जो एक ईश्वर से अपनी सुरति लगाते हैं। गुरु की मति द्वारा उसका मन एक ही आत्मस्वरूप घर में आकर बसता है और सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! यह संसार भ्रम में पड़ा हुआ है और तूने स्वयं ही इसे भ्रम में डाल दिया है। एक ईश्वर को विस्मृत करके यह लोभ लालच में ग्रस्त हुआ पड़ा है। रात-दिन यह भ्रम का भ्रमित हुआ हमेशा भटकता रहता है और नाम के बिना कष्ट उठाता है॥२॥ जो भाग्य विधाता के प्रेम में मग्न रहते हैं, वह गुरु की सेवा करके चारों युगों में प्रसिद्ध हो जाते हैं। जिस प्राणी को प्रभु स्वयं महानता प्रदान करता है, वह ईश्वर के नाम में लीन हो जाता है॥३॥ माया-मोह में ग्रस्त मनुष्य परमेश्वर को स्मरण नहीं करता। फिर यमदूतों की नगरी में जकड़ा हुआ वह कष्ट सहन करता है। मनमुख व्यक्ति अन्धा एवं बहरा है, उसे कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता और गुनाहों में ही नष्ट हो जाता है॥४॥ हे प्रभु ! कई जीव तेरे प्रेम में मग्न रहते हैं, जिन्हें तूने ही नाम के साथ लगाया है। प्रेमा-भक्ति द्वारा वह तेरे हृदय को अच्छे लगते हैं। वह सदैव सुखदाता सतिगुरु की सेवा करते रहते हैं और ईश्वर स्वयं ही उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी करता है॥५॥ हे पूज्य परमेश्वर ! जो व्यक्ति सदैव तेरी शरण में रहता है, तू स्वयं ही उसे क्षमादान करके शोभा प्रदान करते हो। जो व्यक्ति भगवान का नाम-सिमरन करता रहता है, यम उसके निकट नहीं आता॥६॥ जो व्यक्ति भगवान को अच्छे लगते हैं, वह रात-दिन भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं। मेरे प्रभु ने उनका सतिगुरु से मिलाप करवा कर अपने साथ मिला

लिया है। हे सत्य स्वरूप परमेश्वर! जो व्यक्ति सदैव तेरी शरण में हैं। तुम स्वयं ही उन्हें सत्य का ज्ञान प्रदान करते हो॥७॥ जो व्यक्ति सत्य प्रभु को समझ लेते हैं, वे सत्य में ही लीन रहते हैं। वह हरि का यशोगान करते हैं और सत्य का ही बखान करते हैं। हे नानक! जो नाम में मग्न रहते हैं, वे निर्लेप हैं और अपने निज घर आत्मस्वरूप में समाधि लगाते हैं॥८॥३॥४॥

माझ महला ३ ॥ सबदि मरै सु मुआ जापै ॥ कालु न चापै दुखु न संतापै ॥ जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ सोभा पावणिआ ॥ सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरमती सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कची कचा चीरु हंढाए ॥ दूजै लागी महलु न पाए ॥ अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ देही जाति न आगै जाए ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै सचु कमाए ॥ सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ भै भाइ सीगारु बणाए ॥ गुर परसादी महलु घरु पाए ॥ अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ ॥ ४ ॥ सभना पिरु वसै सदा नाले ॥ गुर परसादी को नदरि निहाले ॥ मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ माइआ मोहि इहु जगु सुता ॥ नामु विसारि अंति विगुता ॥ जिस ते सुता सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ ॥ ६ ॥ अपिउ पीऐ सो भरमु गवाए ॥ गुर परसादि मुकति गति पाए ॥ भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ आपि उपाए धंधै लाए ॥ लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाए ॥ नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ५ ॥

जो व्यक्ति शब्द द्वारा अपने अहंकार को नष्ट कर देता है, वही मृत माना जाता है। उसे काल (मृत्यु) भी नहीं कुचलता और न ही कोई कष्ट दुखी करता है। उसकी ज्योत परम ज्योति में मिलकर उस में ही समा जाती है। उसका मन भी सत्य नाम को सुनकर सत्य में ही समा जाता है॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो ईश्वर के नाम द्वारा जगत् में शोभा पाते हैं। जो व्यक्ति सतिगुरु की सेवा करते हैं एवं सत्य प्रभु में अपना चित्त लगाते हैं, वह गुरु के उपदेश द्वारा सहज अवस्था में लीन रहते हैं॥१॥ रहाउ॥ मनुष्य का शरीर कच्चा अर्थात् क्षणभंगुर है। शरीर जीवात्मा का वस्त्र है और जीवात्मा इस क्षणभंगुर वस्त्र को पहनकर रखती है। जीवात्मा माया के मोह में लीन रहने के कारण अपने आत्मस्वरूप को नहीं पा सकती। वह दिन–रात तृष्णाग्नि में जलती रहती है और पति–प्रभु के बिना बहुत दुखी रहती है॥२॥ मनुष्य का शरीर एवं जाति परलोक में नहीं जाते। जहाँ कर्मों का लेखा तलब किया जाता है, वहाँ सत्य की कमाई द्वारा ही वह मोक्ष को प्राप्त होगा। जो सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वह धनवान हैं। वह लोक तथा परलोक में हरिनाम में विलीन रहते हैं॥३॥ जो जीव–स्त्री प्रभु के भय एवं प्रेम को अपना हार–श्रृंगार बनाती है, वह गुरु की दया से अपने घर में ही उसकी उपस्थिति को पा लेती है। वह दिन–रात हमेशा उपने प्रियतम के साथ रमण करती है और मजीठ जैसे पक्की रंगत निश्चित कर लेती है॥४॥ समस्त जीव–स्त्रियों का प्रियतम प्रभु हमेशा ही सभी के साथ रहता है। गुरु की दया से कोई विरला ही अपने नेत्रों से उसके दर्शन करता है। मेरा प्रभु सर्वश्रेष्ठ है। वह अपनी कृपा करके स्वयं ही जीव–स्त्री को अपने साथ मिला लेता है॥ ५॥ यह जगत् मोह–माया में फँसकर अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ है। प्रभु के नाम को विस्मृत करके यह अंतः नष्ट हो जाता है। जिस परमात्मा के हुक्म से यह जगत् निद्रामग्न है, वही इसे ज्ञान प्रदान करके जगाता है। गुरु के उपदेश द्वारा इसको सूझ प्राप्त होती है॥६॥ जो व्यक्ति नाम रूपी अमृत पान करता है, वह अपना भ्रम निवृत्त कर देता है। गुरु की दया से वह मोक्ष की पदवी को प्राप्त कर लेता है।

जो परमेश्वर की भक्ति में मग्न रहता है, वह सदैव ही निर्लेप है। अपने अहं को मारकर वह अपने प्रभु को मिल जाता है॥७॥ हे ईश्वर! तूने स्वयं ही सृष्टि की रचना करके प्राणी उत्पन्न किए हैं और अपने–अपने कर्म में लगा दिया है। हे प्रभु! चौरासी लाख योनियों को स्वयं ही तुम जीविका पहुँचाते हो। हे नानक! जो व्यक्ति प्रभु का नाम–सिमरन करते रहते हैं, वे सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं। वह वहीं कार्य करते हैं, जो प्रभु को अच्छा लगता है॥८॥४॥५॥

माझ महला ३ ॥ अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥ गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥ जिन सचु पले सचु वखाणहि सचु कसवटी लावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥ अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा ॥ नामु निरंजनु अति अगम अपारा ॥ गुरमुखि होवै सोई पाए आपे बखसि मिलावणिआ ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरु सचु द्रिड़ाए ॥ गुर परसादी सचि चितु लाए ॥ सचो सचु वरतै सभनी थाई सचे सचि समावणिआ ॥ ३ ॥ वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा ॥ किलविख अवगण काटणहारा ॥ प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइ भगति द्रिड़ावणिआ ॥ ४ ॥ तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ सभना जीआ का एको दाता सबदे मारि जीवावणिआ ॥ ५ ॥ हरि तुधु बाझहु मै कोई नाही ॥ हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही ॥ आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि तूं पावणिआ ॥ ६ ॥ मै होरु न कोई तुधै जेहा ॥ तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ७ ॥ तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥ तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥ तूं आपे ही घड़ि भंनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥ ८ ॥ ५ ॥ ६ ॥

भगवान ने आत्मस्वरूप में हीरे एवं लाल जैसा अमूल्य नाम रखा हुआ है। गुरु के शब्द द्वारा इसकी परख की तथा करवाई जाती है। जिनके पास सत्यनाम है, वह सत्य–नाम का ही बखान करते हैं तथा इसकी परख करने के लिए सत्यनाम की ही कसौटी लगानी पड़ती है॥१॥ जिन्होंने गुरु की वाणी को अपने मन में बसा लिया है, मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ। वह माया के अंजन में ही निरंजन प्रभु को पा लेते हैं। वह अपनी ज्योति को प्रभु की परम–ज्योति में मिला देते हैं॥१॥ रहाउ॥ जैसे ब्रह्माण्ड में परमात्मा ने अपना प्रसार किया हुआ है, वैसे ही उसने मनुष्य की काया में अपना अत्यधिक प्रसार किया हुआ है। प्रभु का निरंजन नाम अत्यंत अगम्य एवं अपरंपार है। जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहता है, इस नाम की लब्धि उसे ही हो सकती है। प्रभु गुरमुख व्यक्ति को क्षमा करके स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥२॥ मेरा ठाकुर प्रभु जिस व्यक्ति के हृदय में सत्य नाम बसा देता है और गुरु की कृपा से वह सत्य में ही अपना चित्त लगाता है। सत्य का पुंज परमेश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक है। वह मनुष्य सत्य प्रभु में ही लीन रहता है॥३॥ मेरा प्रिय प्रभु सदैव सत्य एवं बेपरवाह है। वह जीवों के पापों एवं अवगुणों को नाश करने वाला है। अतः प्रेमपूर्वक सदैव ही उसका सिमरन करते रहना चाहिए। उसका भय मानते हुए प्रेमपूर्वक उसकी भक्ति को अपने हृदय में बसाना चाहिए॥४॥ हे भगवान! तेरी भक्ति सदैव सत्य है और इसकी देन जीव को तेरी इच्छानुसार ही मिलती है। तू स्वयं ही अपनी भक्ति की देन प्रदान करता है परन्तु देन देकर तू पश्चाताप नहीं करता। समस्त जीव–जन्तुओं का दाता एक प्रभु ही है। वह नाम द्वारा जीवों के अहंकार को नष्ट करके उन्हें सत्य जीवन प्रदान करने वाला है॥ ५॥ हे भगवान! तेरे सिवाय मेरा अन्य कोई नहीं। मैं तेरी ही भक्ति करता हूँ और तेरी ही महिमा–स्तुति करता हूँ। हे सत्य परमेश्वर! आप ही मुझे अपने साथ मिला लो। तेरी पूर्ण कृपा से ही तुझे पाया जा सकता है॥ ६॥ हे भगवान! मुझे तेरे जैसा अन्य कोई नजर नहीं

आता। तेरी कृपा–दृष्टि से मेरा शरीर सफल हो सकता है। भगवान प्रतिदिन जीवों की देखरेख करके उनकी रक्षा करता है। अतः गुरमुख सहज ही प्रभु में लीन रहते हैं॥ ७॥ हे भगवान! तेरे जैसा महान मुझे अन्य कोई भी नहीं दिखता। तू स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही इसका विनाश करता है। हे भगवान! तू स्वयं ही सृष्टि का निर्माण करके एवं विनाश करके संवारता है। हे नानक! भगवान जीवों को अपने नाम में लगाकर उन्हें सुन्दर बना देता है॥८॥५॥६॥

माझ महला ३ ॥ सभ घट आपे भोगणहारा ॥ अलखु वरतै अगम अपारा ॥ गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर सबदु मंनि वसावणिआ ॥ सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच दूत मुहहि संसारा ॥ मनमुख अंधे सुधि न सारा ॥ गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ ॥ २ ॥ इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते ॥ सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥ मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ एकम एकै आपु उपाइआ॥ दुबिधा दूजा त्रिबिधि माइआ ॥ चउथी पउड़ी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ सभु है सचा जे सचे भावै ॥ जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥ गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥ ५ ॥ सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥ दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥ गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥ आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥ अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥ सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥ नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥ ८ ॥ ६ ॥ ७ ॥

समस्त जीवों में व्यापक होकर भगवान स्वयं ही पदार्थों को भोगने वाला है। अदृष्य, अगम्य, अनन्त परमात्मा सर्वत्र व्यापक हो रहा है। गुरु के शब्द द्वारा मेरे प्रभु–परमात्मा का ध्यान करने से मनुष्य सहज ही सत्य में लीन हो जाता है॥१॥ मैं तन–मन से उन पर न्यौछावर हूँ, जो गुरु की वाणी को अपने हृदय में बसाते हैं। यदि मनुष्य को गुरु की वाणी का ज्ञान हो जाता है, तब वह अपने मन से युद्ध करता है और अपनी तृष्णा को निवृत्त करके परमेश्वर में समा जाता है॥१॥ रहाउ॥ माया के पाँच दूत–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जगत् के जीवों के सद्‌गुणों को लूट रहे हैं। ज्ञानहीन अन्धे मनमुख को इसका कोई ज्ञान नहीं। जो गुरमुख हो जाता है, वह अपना हृदय रूपी घर इन दूतों से बचा लेता है। पांचों ही कट्टर वैरी गुरु के उपदेश से नाश किए जाते हैं॥२॥ कई गुरमुख हमेशा सत्यस्वरूप ईश्वर के प्रेम में मग्न रहते हैं। वह स्वाभाविक ही अपने ईश्वर की भक्ति करते हैं और रात–दिन उसके प्रेम में मस्त रहते हैं। जो मनुष्य प्रियतम गुरु से मिलकर सत्यस्वरूप परमात्मा का यशोगान करते हैं, वह ईश्वर के दरबार में शोभा पाते हैं॥३॥ पहले, प्रभु निराकार था। वह स्वयंभू है और उसने स्वयं ही अपना एक साकार रूप पैदा किया, दूसरा, द्वैत–भाव की सूझ को और तीसरा, रज, तम एवं सत त्रिगुणात्मक माया उत्पन्न की। त्रिगुणात्मक माया द्वारा सृष्टि–रचना हुई। त्रिगुणात्मक माया के जीव चौरासी लाख योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं। इन जीवों को ब्रह्म–ज्ञान का उपदेश देने के लिए संत, साधु, भक्त एवं ब्रह्मज्ञानी उत्पन्न किए गए जिन्हें गुरमुख कहा जाता है। यह चौथे पद की अवस्था वाले होते हैं। जिसे तुरीया पद भी कहा जाता है। गुरमुख अवस्था सर्वोच्च अवस्था है। वह नाम–सिमरन की साधना करते हैं॥४॥ जो सत्यस्वरूप परमात्मा को अच्छा लगता है, सब सत्य है। जो सत्य को पहचानता है, वह प्रभु में विलीन हो जाता है। गुरमुख की जीवन–मर्यादा सद्‌पुरुष की भक्ति–सेवा ही करती है। वे जाकर सत्य में ही समा जाते हैं॥५॥ सत्य (ईश्वर) के

अलावा अन्य कोई दूसरा नहीं। माया के मोह में फँस कर दुनिया बड़ी व्याकुल होकर मरती है। जो गुरमुख होता है, वह केवल एक ईश्वर को ही जानता है और एक ईश्वर की भक्ति करके सुख पाता है॥६॥ हे भगवान! समस्त जीव-जन्तु तुम्हारी शरण में हैं। यह जगत् एक चौपड़ की खेल है। तूने जीवों को इस खेल की कच्ची-पक्की गोटियाँ बनाया है। तू स्वयं ही जीवों की देखभाल करता है। तू स्वयं ही जीवों से कामकाज करवाता है और तू स्वयं ही इन्हें गुरु से मिलाकर अपने साथ मिलाने वाला है॥ ७॥ हे प्रभु! जो जीव तुझे प्रत्यक्ष देखते हैं, तू उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। तू स्वयं ही समस्त जीवों में विद्यमान हो रहा है। हे नानक! भगवान स्वयं ही सर्वव्यापक है परन्तु इसका ज्ञान गुरमुखों को ही होता है॥८॥६॥७॥

माझ महला ३ ॥ अंम्रित बाणी गुर की मीठी ॥ गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ॥ अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ सतिगुरु है अंम्रित सरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ ॥ गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ॥ तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥ २ ॥ एको वेखा अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी अंम्रितु पीआ ॥ गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥ ३ ॥ रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ लागै ॥ जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ अपनी किरपा करे सोई जनु पाए ॥ गुर का सबदु मंनि वसाए ॥ अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥ ५ ॥ भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरि गुण सहजे गावणिआ ॥ ६ ॥ सिम्रिति सासत बेद वखाणै ॥ भरमे भूला ततु न जाणै ॥ बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ ॥ ७ ॥ आपि करे किसु आखै कोई ॥ आखणि जाईऐ जे भूला होई ॥ नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ ८ ॥

{इस पद में वाणी का फल एवं स्वरूप विद्यमान है।}

अमृत रूपी गुरु की वाणी बड़ी मीठी है। कोई विरला गुरमुख ही इसको चख कर देखता है। जो इस अमृत रूपी महारस का पान करता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और सत्य प्रभु के दरबार में अनहद शब्द बजने लगता है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो गुरु के चरणों में मन को लगाते हैं। सतिगुरु अमृत का सत्य सरोवर है। जब मन इसमें स्नान करता है तो वह अपने विकारों की मैल दूर कर लेता है॥१॥ रहाउ॥ हे सत्यस्वरूप ईश्वर! तेरा अन्त कोई भी नहीं जानता। गुरु की दया से कोई विरला पुरुष ही तेरे चरणों में अपना मन लगाता है। इतनी बड़ी क्षुधा सत्यनाम की मुझे लगी हुई है कि तेरी उपमा करने से मुझे कदाचित तृप्ति नहीं होती॥ २॥ मैं केवल एक ईश्वर को देखता हूँ और किसी अन्य दूसरे को नहीं। गुरु की दया से मैंने नाम रूपी अमृत पान कर लिया है। गुरु के शब्द से मेरी तृष्णा बुझ गई है और मैं स्वाभाविक ही सदैव सुख में लीन हो गया हूँ॥३॥ ज्ञानहीन मनमुख व्यक्ति माया के प्रेम में लीन हो जाता है और रत्न जैसे अमूल्य नाम को व्यर्थ ही त्याग देता है। वह जैसा बीज बोता है, वह तैसा ही फल पाता है। जिसके कारण स्वप्न में भी उसे सुख प्राप्त नहीं होता॥४॥ जिस मनुष्य पर परमात्मा अपनी दया करता है, वही गुरु को प्राप्त करता है। गुरु के शब्द को वह अपने हृदय में बसाता है। दिन-रात वह सदा ही प्रभु के भय में रहता है और यम के भय को मिटा कर वह अपने संशय को निवृत्त कर देता है॥५॥ जो व्यक्ति अपने मन का भ्रम दूर कर देता है, वह सदैव ही सुखी रहता है। गुरु की कृपा से वह परमपद (मोक्ष)

प्राप्त कर लेता है। निर्मल वाणी से उसका अन्तर्मन भी निर्मल हो जाता है और वह सहज ही भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है॥६॥ पण्डित स्मृतियों, शास्त्रों एवं वेदों की कथा लोगों को सुनाता रहता है परन्तु वह स्वयं ही भ्रम में पड़कर भटकता रहता है और परम तत्व ब्रह्म को नहीं जानता। सतिगुरु की सेवा किए बिना उसको सुख नहीं मिलता और वह दुःख ही दुःख अर्जित करता है॥७॥ परमात्मा स्वयं ही सब कुछ करता है। फिर किसी को कोई क्या समझा सकता है? किसी को समझाने की तभी आवश्यकता है यदि वह भूल करता हो। हे नानक! परमात्मा स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है। नाम सिमरन करके जीव नाम में ही लीन हो जाता है॥८॥७॥८॥

माझ महला ३ ॥ आपे रंगे सहजि सुभाए ॥ गुर कै सबदि हरि रंगु चड़ाए ॥ मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ॥ गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै ॥ मरणु लिखाइ आए नही बूझै ॥ मनमुख करम करे नही पाए बिनु नावै जनमु गवावणिआ ॥ ३ ॥ सचु करणी सबदु है सारु ॥ पूरै गुरि पाईऐ मोख दुआरु ॥ अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते रंगि रंगावणिआ ॥ ४ ॥ रसना हरि रसि राती रंगु लाए ॥ मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ॥ सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहजि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ॥ हउ बलिहारी सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥ ६ ॥ सचा सचो सचि पतीजै ॥ गुर परसादी अंदरु भीजै ॥ बैसि सुथानि हरि गुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥ ७ ॥ जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी हउमै जाए ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ९ ॥

भगवान स्वयं ही जीव को सहज स्वभाव द्वारा अपने प्रेम में रंग देता है और गुरु के शब्द द्वारा अपने प्रेम का रंग चढ़ा देता है। उसका मन एवं तन प्रेम में रंग जाता है और उसकी जिह्वा पोस्त के पुष्प की भाँति लाल वर्ण धारण कर लेती है। भगवान उसे यह नाम रंग उसके मन में अपना भय एवं प्रेम उत्पन्न करके चढ़ाता है॥१॥ मैं उन पर न्यौछावर हूँ मेरा जीवन उन पर कुर्बान है, जो निडर परमात्मा को अपने हृदय में बसाते हैं। गुरु की दया से वे निर्भय परमेश्वर को स्मरण करते हैं और उनकी वाणी द्वारा विषैले संसार सागर को पार कर जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ मनमुख मूर्ख व्यक्ति चतुरता करता है। अपने स्नान व स्वच्छता के बावजूद वह स्वीकृत नहीं होता। जिस तरह वह जगत् में आया था, वैसे ही पापों पर पश्चाताप करता हुआ चला जाता है॥२॥ ज्ञानहीन मनमुखों को कुछ भी ज्ञान नहीं होता क्योंकि वह प्रारम्भ से ही अपनी किस्मत में अपनी मृत्यु के लेख लिखवा कर जगत् में आते हैं। वे अपने जीवन–मनोरथ को नहीं समझते। मनमुख कर्म करते रहते हैं परन्तु उन्हें नाम प्राप्त नहीं होता। नामविहीन होकर वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं॥३॥ सत्यनाम की साधना ही सर्वश्रेष्ठ है। पूर्णगुरु के द्वारा मोक्ष द्वार मिलता है। गुरु जी प्रतिदिन अपनी वाणी द्वारा सिक्खों को नाम सुनाते रहते हैं और वह शब्द द्वारा सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न हुए नाम रंग में लीन हो जाते हैं॥४॥ गुरमुख की रसना हरि–रस में रंग जाती है और प्रभु से ही प्यार करती है। सहज स्वभाव ही उसका मन एवं तन प्रभु प्रेम से मुग्ध हो जाता है। वह सहज ही अपने प्रियतम प्रभु को पा लेता है। फिर वह सहज ही सहज अवस्था में समा जाता है॥५॥ जिस मनुष्य में प्रभु का प्रेम विद्यमान है। वह ईश्वर का यशोगायन करता है और गुरु के शब्द द्वारा सहज ही आत्मिक आनंद में समा जाता है। मैं सदैव ही

उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो अपने मन को गुरु की सेवा में समर्पित करते हैं॥६॥ वही व्यक्ति सत्यवादी है जो सत्य नाम द्वारा सत्य प्रभु से विश्वस्त हो जाता है। गुरु की कृपा से उसका हृदय नाम-रस से भीग जाता है। वह साध संगत रूपी सुन्दर स्थान पर बैठकर भगवान की महिमा-स्तुति ही करता है। भगवान स्वयं ही उस पर कृपा करके उसके मन में यह श्रद्धा पैदा करता है कि सत्य का गुणानुवाद ही सत्यकर्म है॥७॥ जिस पर प्रभु अपनी दया-दृष्टि करता है, वह उसके नाम को पाता है। गुरु की दया से उसका अहंकार निवृत्त हो जाता है। हे नानक! जिसके मन में ईश्वर का नाम निवास करता है, वह सत्य दरबार में बड़ी शोभा पाता है॥८॥८॥६॥

माझ महला ३ ॥ सतिगुरु सेविऐ वडी वडिआई ॥ हरि जी अचिंतु वसै मनि आई ॥ हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अंम्रितु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥ हरि सतसंगति आपे मेलै गुर सबदी हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ ॥ हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ २ ॥ बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥ ३ ॥ इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥ अनहत बाणी निरमल सबदु वजाए गुर सबदी सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥ आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥ दूजा भरमु गुर सबदि जलाए ॥ काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु ॥ गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥ ७ ॥ सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥ पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

सतिगुरु की सेवा करने से बड़ी शोभा प्राप्त होती है और पूज्य परमेश्वर अकस्मात ही हृदय में आकर निवास करता है। हरि-परमेश्वर एक फलदायक पौधा है जो इसके नाम रूपी अमृत का पान करता है, उसकी प्यास बुझ जाती है॥१॥ मेरा तन, मन एवं प्राण उस प्रभु पर न्यौछावर हैं जो जीवों को सत्संग में मिलाकर अपने साथ मिला लेता है। भगवान स्वयं ही जीवों को सत्संग में मिलाता है और गुरु के शब्द द्वारा जीव भगवान की महिमा-स्तुति करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ जो सतिगुरु की सेवा करता है, गुरु की वाणी से शोभा पा रहा है। जिस व्यक्ति ने भगवान का नाम अपने मन में बसा लिया है, निर्मल भगवान उसके मन की अहंकार रूपी मैल को दूर कर देता है और वह व्यक्ति सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त करता है॥२॥ गुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती। सिद्ध-साधक इससे विहीन होकर विलाप करते हैं। गुरु की सेवा के बिना सुख नहीं मिलता लेकिन बड़े सौभाग्य से सुकर्मों द्वारा गुरु जी मिलते हैं॥३॥ यह मन एक दर्पण है। कोई विरला गुरमुख ही उसमें अपने-आपको देखता है। यदि मनुष्य अपना अहंकार जला दे तो उसे अहंकार रूपी जंगाल नहीं लगता। जिस गुरमुख के मन में अनहद ध्वनि वाला निर्मल अनहद बजने लग जाता है, वह गुरु के शब्द द्वारा सत्य (परमेश्वर) में समा जाता है॥४॥ सतिगुरु के बिना परमेश्वर किसी तरह भी देखा नहीं जा सकता। अपनी दया करके गुरदेव ने स्वयं ही मुझे ईश्वर के दर्शन करवा दिए हैं। ईश्वर अपने आप स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है। ब्रह्म-ज्ञान द्वारा मनुष्य सहज ही उसमें लीन हो जाता है॥५॥ जो व्यक्ति गुरमुख बन जाता है, वह एक ईश्वर के साथ स्नेह करता है। गुरु के शब्द द्वारा वह मोह माया रूपी

भ्रम को जला फैंकता है। अपनी देहि में ही वह नाम रूपी वस्तु का व्यापार करता है और सत्यनाम की निधि पा लेता है॥६॥ भगवान की महिमा–स्तुति करना ही गुरमुख की श्रेष्ठ करनी है। इसलिए गुरमुख मोक्ष द्वार को पा लेता है। प्रभु के स्नेह में रंगा हुआ वह रात–दिन उसकी कीर्ति का गायन करता रहता है और प्रभु उसे अपने आत्म–स्वरूप में आमंत्रित कर लेता है॥७॥ सतिगुरु नाम का दाता है और सतिगुरु भगवान का मिलाया हुआ ही जीव को मिलता है। जिस व्यक्ति के पूर्ण भाग्य होते हैं, सतिगुरु उसके मन में नाम बसा देते हैं। हे नानक! यदि सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा–स्तुति की जाए तो ही मनुष्य को नाम की शोभा प्राप्त होती है॥८॥६॥१०॥

माझ महला ३ ॥ आपु वंञाए ता सभ किछु पाए ॥ गुर सबदी सची लिव लाए ॥ सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥ हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ सचे सेविऐ सचु वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥ २ ॥ भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाए ॥ अन रसु चूकै हरि रसु मंनि वसाए ॥ सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ३ ॥ सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥ फिरि ओइ किथहु पाइनि मोख दुआरा ॥ मरि मरि जंमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥ ४ ॥ सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥ निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥ सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउ निधि नामु मंनि वसावणिआ ॥ ५ ॥ सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥ सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥ अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल नादु वजावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥ कूड़ु कमावनि दुखु लागै भारा ॥ भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥ पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥ नानक नामि मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥ ८ ॥ १० ॥ ११ ॥

यदि मनुष्य अपने अहंत्व को त्याग दे तो वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। गुरु के शब्द द्वारा वह सत्य परमेश्वर में सुरति लगाता है। वह सत्य–नाम का व्यापार करता है और सत्य नाम रूपी धन ही एकत्रित करता है और सत्य नाम का ही वह दूसरों से व्यापार करवाता है॥१॥ मैं तन–मन से उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो सदैव ही ईश्वर का यशोगान करते हैं। हे प्रभु! मैं तेरा सेवक हूँ, तुम मेरे ठाकुर हो। तुम मुझे नाम की शोभा प्रदान करते हो॥१॥ रहाउ॥ वह समय एवं क्षण सभी सुन्दर हैं, जब सत्यस्वरूप परमात्मा मेरे चित्त को अच्छा लगता है। सत्य प्रभु की सेवा–भक्ति द्वारा सच्ची महानता प्राप्त होती है किन्तु गुरु की दया से ही सत्यस्वरूप ईश्वर मिलता है॥२॥ प्रभु प्रीति का भोजन तभी मिलता है जब सतिगुरु जी परम प्रसन्न होते हैं। मनुष्य अन्य रस भूल जाता है जब वह हरि रस को अपने मन में बसा लेता है। प्राणी पूर्ण गुरु की वाणी से ही सत्य, संतोष एवं सहज सुख प्राप्त करता है॥३॥ मूर्ख, अंधे, गंवार मनुष्य सतिगुरु की सेवा नहीं करते। तब वह किस तरह मोक्ष–द्वार को प्राप्त होंगे? वह बार–बार मरते और जन्म लेते हैं और पुनःपुनः जीवन–मृत्यु के बंधन में फँसकर आवागमन करते हैं। मृत्यु के द्वार पर वह चोटें खाते हैं॥४॥ वह अपने स्वरूप की तभी पहचान कर सकते हैं, यदि वह शब्द के स्वाद को जानते हो और निर्मल वाणी द्वारा नाम–सिमरन करते हों। गुरमुख सत्य परमेश्वर की भक्ति द्वारा सदैव सुख प्राप्त करते हैं और अपने चित्त में ईश्वर के नाम की नवनिधि को बसाते हैं॥५॥ वह स्थान अति सुन्दर है जो परमेश्वर के मन को लुभाता है। केवल वही सत्संग है, जिस में बैठकर मनुष्य हरि–प्रभु का यशोगान करता है। गुरमुख प्रतिदिन भगवान की महिमा–स्तुति

करते रहते हैं और उनके मन में निर्मल नाद अर्थात् अनहद शब्द बजने लग जाता है॥६॥ मनमुख व्यक्ति माया–धन संचित करते हैं जो खोटी पूँजी है और वह इस खोटी पूँजी का ही प्रसार करते हैं। वह माया धन की मिथ्या कमाई करते हैं और अत्यंत कष्ट सहन करते हैं। वे भ्रम में फँसकर दिन–रात भटकते रहते हैं और जीवन–मृत्यु के बंधन में पड़कर अपना जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं॥७॥ सत्यस्वरूप परमात्मा मुझे अत्यन्त प्रिय है। पूर्ण गुरु का शब्द मेरा जीवन आधार है। हे नानक! जिनको परमात्मा के नाम की शोभा प्राप्त होती है, वह दुख–सुख को एक समान जानते हैं॥८॥१०॥११॥

माझ महला ३ ॥ तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥ गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ॥ हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए ॥ जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥ सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥ २ ॥ इहु मनु मैला इकु न धिआए ॥ अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥ तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥ जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥ हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ ॥ ४ ॥ बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥ अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥ ५ ॥ मुकते सेवे मुकता होवै ॥ हउमै ममता सबदे खोवै ॥ अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥ ६ ॥ आपे बखसे मेलि मिलाए ॥ पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥ सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥ गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ॥ ८ ॥ ११ ॥ १२ ॥

हे ठाकुर जी! चारों ही उत्पत्ति के स्रोत तेरे हैं और चारों ही वाणी तेरी है। प्रभु के नाम के बिना सारी दुनिया भ्रम में भटकी हुई है। गुरु की सेवा करने से ईश्वर का नाम प्राप्त होता है। सतिगुरु के बिना किसी को भी ईश्वर का नाम नहीं मिल सकता॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो ईश्वर के साथ अपना चित्त लगाते हैं। सत्यस्वरूप ईश्वर गुरु–भक्ति से ही प्राप्त होता है और प्रभु सहज ही मनुष्य के हृदय में निवास करता है॥१॥ रहाउ॥ यदि मनुष्य सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करे, तो वह सबकुछ प्राप्त कर लेता है। जिस तरह की कामना हेतु वह सेवा में सक्रिय होता है, वैसा ही फल वह प्राप्त करता है। सतिगुरु समस्त पदार्थों का दाता है। भगवान सौभाग्यशाली व्यक्ति को ही गुरु से मिलाता है॥२॥ यह मलिन मन एक ईश्वर की आराधना नहीं करता। मोह–माया में फँसने के कारण इसके भीतर बहुत सारी मैल लगी हुई है। अहंकारी मनुष्य दरिया के तट, धार्मिक स्थलों व प्रदेशों में भटकता रहता है परन्तु वह अपने मन को अहंकार की अधिक मैल लगा लेता है॥३॥ यदि वह सतिगुरु की सेवा करे तो उसकी मैल दूर हो जाती है। वह अहंत्व को मारकर हरि प्रभु में अपना चित्त लगाता है। भगवान निर्मल है और उस सत्य प्रभु को अहंकार की मैल नहीं लगती। जो व्यक्ति सत्य के साथ जुड़ जाता है वह अपनी मैल गंवा देता है॥४॥ गुरु के बिना जगत् में अज्ञानता का घोर अंधकार है। ज्ञानहीन व्यक्ति अज्ञानता के अंधेरे में अंधा बना रहता है। उसका ऐसा हाल होता है जैसे विष्टा के कीड़े का होता है, जो विष्टा खाने का कार्य करता है और विष्टा में ही जलकर मर जाता है॥५॥ जो व्यक्ति माया से मुक्त होकर गुरु की सेवा करता है, वही माया से मुक्त होता है। वह नाम द्वारा अपने अहंकार को दूर कर लेता है और रात–दिन पूज्य परमेश्वर की भक्ति करता रहता है। उसे पूर्ण भाग्य से गुरु मिलता है॥६॥ भगवान स्वयं ही मनुष्य को क्षमा कर देता है और उसे गुरु से मिलाकर

अपने साथ मिला लेता है। वह पूर्ण गुरु से नाम रूपी निधि प्राप्त कर लेता है। उसका मन सदैव ही सत्य नाम द्वारा प्रभु का सिमरन करता रहता है। फिर प्रभु का सिमरन करके वह अपना दुख मिटा लेता है॥७॥ भगवान स्वयं ही जीव के समीप रहता है, इसलिए उसे कहीं दूर मत समझो। गुरु के शब्द द्वारा भगवान को अपने मन में विद्यमान समझो। हे नानक ! नाम से जीव को बड़ी शोभा प्राप्त होती है परन्तु नाम पूर्ण गुरु द्वारा ही मिलता है॥८॥११॥१२॥

माझ महला ३ ॥ ऐथै साचे सु आगै साचे ॥ मनु सचा सचै सबदि राचे ॥ सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ॥ सचे सेवहि सचि समावहि सचे के गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंडित पड़हि सादु न पावहि ॥ दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥ माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ सबदि मरै मनु मारै अपना मुकती का दरु पावणिआ ॥ ३ ॥ किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥ गुर का सबदु रखै उर धारे ॥ सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ ४ ॥ अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ ॥ त्रिबिधि मनसा त्रिबिधि माइआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥ ५ ॥ आपे रंगे रंगु चड़ाए ॥ से जन राते गुर सबदि रंगाए ॥ हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥ गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ॥ गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥ गुरमुखि जाति पति सभु आपे ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ १२ ॥ १३ ॥

जो व्यक्ति इहलोक में सत्यवादी है, वह आगे परलोक में भी सत्यवादी है। वह मन सत्य है जो सत्य नाम में लीन रहता है। वह सत्यस्वरूप परमात्मा की आराधना करता है, सत्य नाम का वह जाप करता है और शुद्ध सत्य का ही वह कर्म करता है॥१॥ मेरा तन, मन सर्वस्व उन पर न्यौछावर है, जो व्यक्ति सत्य-नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। वे सत्य प्रभु की सेवा करते हैं, सत्य नाम में ही लीन रहते हैं और सत्य-परमेश्वर का ही यश गायन करते हैं॥१॥ रहाउ॥ पण्डित धार्मिक ग्रंथ पढ़ते हैं परन्तु उन्हें आनंद नहीं मिलता। क्योंकि द्वैत भाव के कारण उनका हृदय सांसारिक पदार्थों में भटकता रहता है। माया-मोह की लगन ने उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और दुष्कर्मों के कारण वे पश्चाताप करते हैं॥२॥ यदि मनुष्य को सतिगुरु मिल जाए तो उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है, फिर वह भगवान के नाम को अपने हृदय में बसाता है। वह नाम द्वारा अपने अहंकार को नष्ट करके विनम्रता धारण करता है। वह अपने मन को वश में करके मोक्ष द्वार को पा लेता है॥३॥ वह अपने पापों को नाश कर देता है और क्रोध को दूर कर देता है। वह गुरु की वाणी को अपने हृदय में बसाकर रखता है। वह सत्य नाम के प्रेम में मग्न रहता है और उसके मन में प्रभु-मिलन का वैराग्य बना रहता है। वह अपने अहंकार को नष्ट करके प्रभु को मिल पाता है॥४॥ मनुष्य के हृदय में नाम रूपी अमूल्य रत्न है। यह रत्न उसे गुरु के मिलाने से ही प्राप्त होता है। माया (रज, तम, सत) त्रिगुणात्मक है अतः मन की इच्छाएँ भी तीन प्रकार की होती हैं। पण्डित एवं मौनधारी ऋषि धार्मिक ग्रंथों को पढ़-पढ़कर थक चुके हैं परन्तु उन्हें चतुर्थ पद तुरीया अवस्था का ज्ञान नहीं हुआ॥५॥ ईश्वर स्वयं ही जीवों को अपना प्रेम रंग चढ़ाकर रंग देता है। लेकिन वही पुरुष प्रभु के प्रेम में रंग जाते हैं जो गुरु की वाणी के प्रेम में रंग जाते हैं। उन्हें अपार परमात्मा के प्रेम का रंग इतना चढ़ जाता है कि वह स्वाद ले लेकर भगवान की महिमा-स्तुति करते रहते हैं॥६॥ गुरमुख के लिए वह सद्पुरुष ही ऋद्धि, सिद्धि और

संयम है। गुरमुख को ज्ञान प्राप्त हो जाता है और हरिनाम द्वारा वह माया से मुक्त हो जाता है। पवित्रात्मा गुरमुख सत्य कर्म करता है और सत्य प्रभु के सत्य नाम में लीन हो जाता है॥७॥ भगवान स्वयं ही मनुष्य को गुरमुख बनाता है और गुरमुख यही अनुभव करता है कि ईश्वर ही सृष्टि की रचना करके स्वयं ही प्रलय करता है। गुरमुख का ईश्वर स्वयं ही जाति और समूह सम्मान है। हे नानक! गुरमुख सत्यनाम की आराधना करता है और परमेश्वर के नाम में ही लीन हो जाता है॥८॥१२॥१३॥

माझ महला ३॥ उतपति परलउ सबदे होवै ॥ सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ॥ गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥ गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥ सो निगुरा जो मरि मरि जंमै निगुरे आवण जावणिआ ॥ २ ॥ तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥ काइआ सरीरै विचि सभु किछु पाइआ ॥ सबदि भेदि कोई महलु पाए महले महलि बुलावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ॥ सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥ सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु रासी को वथु किउ पाए ॥ मनमुख भूले लोक सबाए ॥ बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइ दुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि सचु वणंजहि गुर सबदि पिआरे ॥ आपि तरहि सगले कुल तारे ॥ आए से परवाणु होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले ॥ मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥ जिथै वथु होवै तिथहु कोइ न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सबदि बुलाए ॥ महली महलि सहज सुखु पाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥ ८ ॥ १३ ॥ १४ ॥

सृष्टि की रचना एवं प्रलय शब्द द्वारा ही होती है और शब्द द्वारा ही प्रलय के उपरांत ही पुनः सृष्टि की उत्पत्ति होती है। वह सत्य-परमेश्वर स्वयं ही गुरु के रूप में सर्वव्यापक है। गुरु-परमेश्वर स्वयं ही सृष्टि-रचना करके इसमें समाया हुआ है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने पूर्ण गुरु को अपने हृदय में बसाया है। गुरु से ही मनुष्य को शांति प्राप्त होती है और वह दिन-रात भगवान की भक्ति करता रहता है। वह प्रभु के गुण अपने मुख से उच्चरित करता रहता है और गुणों के स्वामी परमात्मा में ही समा जाता है॥१॥ रहाउ॥ गुरु ने ही धरती, जल, पवन एवं अग्नि को पैदा किया है और गुरु स्वयं ही एक अद्भुत खेल को खेल रहा है। निगुरा वह व्यक्ति होता है, जो जन्मता-मरता रहता है। निगुरा जन्म-मरण के चक्र में ही पड़ा रहता है॥२॥ उस सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने यह जगत् अपनी एक खेल रचा हुआ है। उसने मानव शरीर में सब कुछ डाल दिया है जो व्यक्ति शब्द द्वारा भगवान के आत्मस्वरूप का भेद समझ लेता है, भगवान उस व्यक्ति को अपने आत्मस्वरूप में आमंत्रित कर लेता है॥३॥ वह परमात्मा ही सच्चा साहूकार है और जीव सच्चे व्यापारी हैं। जीव अनंत प्रभु के रूप गुरु से प्रेम करके सत्य नाम का व्यापार करते हैं। वे सत्य नाम खरीदते हैं और सत्य नाम की कमाई करते रहते हैं। वह सत्य द्वारा सत्य नाम ही कमाते हैं॥४॥ सत्य नाम की पूँजी के बिना सत्य नाम रूपी वस्तु को कोई कैसे प्राप्त कर सकता है? मनमुख व्यक्ति भटके हुए हैं और नाम रूपी पूँजी के बिना वह दुनिया से खाली हाथ चले जाते हैं और खाली हाथ बड़े दुःखी होते हैं॥५॥ जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा सत्य नाम का व्यापार करते हैं, वह भवसागर से पार हो जाते हैं और अपनी वंशावलि के समस्त सदस्यों को भी पार करवा देते हैं। ऐसे लोगों का ही जन्म लेकर दुनिया में आगमन सफल होता है और वे अपने प्रिय प्रभु से मिलकर सुखी रहते हैं॥६॥प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में नाम रूपी वस्तु विद्यमान है परन्तु मूर्ख मनमुख इसे अपने शरीर से बाहर ढूँढता

रहता है। ज्ञानहीन मनमुख प्रेतों की तरह पागल हुए फिरते रहते हैं। जहाँ नाम रूपी वस्तु मिलती है, वहाँ कोई भी उसे प्राप्त नहीं करता। मनमुख व्यक्ति भ्रम में फँसकर भटकते रहते हैं॥७॥ परमात्मा स्वयं ही जीव को आमंत्रित करके शब्द द्वारा नाम रूपी वस्तु देता है। जीव परमात्मा के स्वरूप में पहुँच कर परमानंद एवं सुख भोगता है। हे नानक! नाम में लीन रहने वाले को भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है और वह स्वयं ही सुन-सुनकर ध्यान लगाता है॥८॥१३॥१४॥

माझ महला ३ ॥ सतिगुर साची सिख सुणाई ॥ हरि चेतहु अंति होइ सखाई ॥ हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइ पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥ आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥ २ ॥ गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥ गुर कै तकीऐ नामि अधारे ॥ गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु पावणिआ ॥ ३ ॥ मनमुखि अंधे सुधि न काई ॥ आतम घाती है जगत कसाई ॥ निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु पहुचावणिआ ॥ ४ ॥ इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥ सदा समाले को नाही खाली ॥ जेही वासना पाए तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु रोगी है संसारा ॥ सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ॥ दुखीए निति फिरहि बिललादे बिनु गुर सांति न पावणिआ ॥ ६ ॥ जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥ आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥ जेहा अंदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥ ७ ॥ तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥ जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि जिसु देवै सो पावणिआ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १५ ॥

सतिगुरु ने यही सच्ची शिक्षा सुनाई है कि भगवान का भजन करो, जो अंतिमकाल तेरा सहायक बनेगा। भगवान अगम्य, अगोचर एवं अयोनि है, जिसका कोई भी स्वामी नहीं। ऐसे प्रभु को सतिगुरु के प्रेम द्वारा ही पाया जाता है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो अपने अहंत्व को दूर कर देते हैं। जो व्यक्ति अपने अहंत्व को छोड़ देता है, वह भगवान को पा लेता है और सहज ही भगवान में समा जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जीव वही कर्म करता है, जो उसकी किस्मत में पूर्व-जन्म के कर्मों द्वारा लिखा होता है। सतिगुरु की सेवा से वह सदा सुख प्राप्त करता है। भाग्य के बिना मनुष्य को गुरु नहीं मिलता। गुरु नाम द्वारा ही जीव को परमेश्वर से मिलाता है॥२॥ गुरमुख इस संसार में निर्लिप्त होकर रहता है। उसको गुरु का आश्रय एवं नाम का सहारा है। जो गुरमुख है उसके साथ कौन अन्याय कर सकता है? दुष्ट अपने आप ही मर मिटता है और कष्ट झेलता है॥३॥ ज्ञानहीन मनमुख को कोई ज्ञान नहीं होता। वह आत्मघाती और संसार का जल्लाद है। दूसरों की निंदा करके वह पापों का बोझ उठाता है। वह उस मजदूर जैसा है जो बिना मजदूरी लिए दूसरों का भार उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है॥४॥ यह संसार एक उपवन है और मेरा प्रभु इसका बागवां है। वह सदा ही इसकी रक्षा करता है। इसका कोई भाग उसकी देखरेख से अधूरा नहीं हुआ। जिस तरह की महक ईश्वर पुष्प में डालता है, वह वैसी ही उसमें प्रबल होती है। सुगंधित पुष्प अपनी सुगंध से जाना जाता है॥५॥ मनमुख प्राणी इस संसार में रोगग्रस्त रोगी है। उसने सुखदाता अगम्य व अनन्त प्रभु को विस्मृत कर दिया है। मनमुख हमेशा ही दुखी होकर रोते-चिल्लाते रहते हैं। गुरु के बिना उनको शांति प्राप्त नहीं होती॥६॥ जिस प्रभु ने उनकी सृजना की है, वह उनकी दशा को समझता है। यदि प्रभु स्वयं दया करे, तब मनुष्य उसके हुक्म की पहचान करता है। जिस तरह की बुद्धि ईश्वर प्राणी में डालता है, वैसे ही प्राणी कार्यरत होता है। परमात्मा स्वयं ही प्राणी को बाहर जगत् में जीवन-मार्ग पर लगाता है॥७॥ उस सत्यस्वरूप परमेश्वर

के अलावा मैं अन्य किसी को भी नहीं जानता। जिसको प्रभु अपनी भक्ति में लगाता है वह पवित्र हो जाता है। हे नानक ! परमेश्वर का नाम मनुष्य के हृदय में निवास करता है। लेकिन जिसे प्रभु अपना नाम देता है, वही इसको प्राप्त करता है॥८॥१४॥१५॥

माझ महला ३॥ अंम्रित नामु मंनि वसाए ॥ हउमै मेरा सभु दुखु गवाए ॥ अंम्रित बाणी सदा सलाहे अंम्रिति अंम्रितु पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी अंम्रित बाणी मंनि वसावणिआ ॥ अंम्रित बाणी मंनि वसाए अंम्रितु नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रितु बोलै सदा मुखि वैणी ॥ अंम्रितु वेखै परखै सदा नैणी ॥ अंम्रित कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि सुनावणिआ ॥ २ ॥ अंम्रित रंगि रता लिव लाए ॥ अंम्रितु गुर परसादी पाए ॥ अंम्रितु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अंम्रितु पीआवणिआ ॥ ३ ॥ सो किछु करै जु चिति न होई ॥ तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥ हुकमे वरतै अंम्रित बाणी हुकमे अंम्रितु पीआवणिआ ॥ ४ ॥ अजब कंम करते हरि केरे ॥ इहु मनु भूला जांदा फेरे ॥ अंम्रित बाणी सिउ चितु लाए अंम्रित सबदि वजावणिआ ॥ ५ ॥ खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥ तुधु आपे परखे लोक सबाए ॥ खरे परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥ ६ ॥ किउ करि वेखा किउ सालाही ॥ गुर परसादी सबदि सलाही ॥ तेरे भाणे विचि अंम्रितु वसै तूं भाणै अंम्रितु पीआवणिआ ॥ ७ ॥ अंम्रित सबदु अंम्रित हरि बाणी ॥ सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ॥ नानक अंम्रित नामु सदा सुखदाता पी अंम्रितु सभ भुख लहि जावणिआ ॥ ८ ॥ १५ ॥ १६ ॥

जो व्यक्ति अमृत–नाम को अपने हृदय में बसा लेता है, वह 'मैं' मेरा कहने वाले अहंत्व एवं समस्त दुःखों को नाश कर देता है। वह अमृत–वाणी द्वारा सदैव ही भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है और अमृत–वाणी द्वारा अमृत–नाम को पा लेता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ, जो अमृत वाणी को अपने हृदय में बसा लेते हैं। वह अमृत वाणी को अपने हृदय में बसाकर अमृत नाम का ध्यान करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ वह अपने मुँह से वचनों द्वारा हमेशा ही अमृत–नाम बोलता रहता है और अपनी आँखों से अमृत रूप परमात्मा को सर्वव्यापक देखता है एवं सत्य की परख करता रहता है। वह सदैव ही दिन–रात हरि की अमृत कथा करता है तथा दूसरों को भी यह कथा बोलकर सुनाता है॥२॥ अमृत–नाम के प्रेम में मग्न हुआ व्यक्ति भगवान में सुरति लगाता है और यह अमृत–नाम उसे गुरु की कृपा से ही मिलता है। वह दिन–रात नाम–अमृत को अपनी रसना से बोलता रहता है और भगवान उसे मन एवं तन द्वारा नाम–अमृत ही पान करवाता है॥३॥ भगवान वही कुछ करता है, जो मनुष्य की कल्पना में भी नहीं होता। उसके हुक्म को कोई भी मिटा नहीं सकता। भगवान के हुक्म से ही गुरु के माध्यम से जीवों को अमृत वाणी का पान करवाया जाता है। भगवान अपने हुक्म से ही मनुष्य को नाम–अमृत का पान करवाता है॥४॥ हे सृजनहार परमेश्वर ! तेरे कौतुक बड़े अद्‌भुत हैं। जब यह मन भटक जाता है तो तू ही उसे सन्मार्ग लगाता है। जब मनुष्य अमृत–वाणी में अपना चित्त लगाता है तो तू उसके अन्तर्मन में अमृत अनहद शब्द बजा देता है॥५॥ हे भगवान ! बुरे एवं भले जीव तूने ही पैदा किए हैं। समस्त लोगों के अच्छे एवं दुष्कर्मों की परख तू स्वयं ही करता है। भले जीवों को तुम अपने भक्ति–कोष में डाल देते हो परन्तु बुरे जीवों को तुम भ्रम में फँसाकर कुमार्ग लगा देते हो॥६॥ हे भगवान ! मैं तेरे दर्शन कैसे करूँ ? और कैसे तेरी महिमा–स्तुति करूँ ? गुरु की कृपा से ही मैं वाणी द्वारा तेरी ही महिमा कर सकता हूँ। हे प्रभु ! तेरी इच्छा से ही नाम–अमृत की वर्षा होती है और तू अपनी इच्छानुसार ही जीव को नाम–अमृत का पान करवाता है॥७॥ हे भगवान ! तेरा नाम अमृत है और तेरी वाणी भी अमृत है। सतिगुरु की सेवा करने से ही तेरी वाणी

मनुष्य के हृदय में समा जाती है। हे नानक ! अमृत–नाम सदैव ही सुखदाता है और नाम रूपी अमृत का पान करने से मनुष्य की तमाम भूख मिट जाती है॥८॥१५॥१६॥

माझ महला ३ ॥ अंम्रितु वरसै सहजि सुभाए ॥ गुरमुखि विरला कोई जनु पाए ॥ अंम्रितु पी सदा त्रिपतासे करि किरपा त्रिसना बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अंम्रितु पीआवणिआ ॥ रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती सहजे हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सहजु को पाए ॥ दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ॥ नदरि करे ता हरि गुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥ २ ॥ सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥ किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥ तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखि ततु है बीचारा ॥ अंम्रिति भरे तेरे भंडारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ४ ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै ॥ अंम्रिति नामि अंतरु मनु मोहै ॥ अंम्रिति मनु तनु बाणी रता अंम्रितु सहजि सुणावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु भूला दूजै भाइ खुआए ॥ नामु न लेवै मरै बिखु खाए ॥ अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥ ६ ॥ अंम्रितु पीवै जिस नो आपि पीआए ॥ गुर परसादी सहजि लिव लाए ॥ पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी आवणिआ ॥ ७ ॥ आपे आपि निरंजनु सोई ॥ जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥ नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ ॥ ८ ॥ १६ ॥ १७ ॥

नाम–अमृत सहज–स्वभाव ही बरस रहा है। गुरु के माध्यम से इसे कोई विरला पुरुष ही प्राप्त करता है। नाम–अमृत का पान करने वाले सदैव तृप्त रहते हैं। अपनी दया करके प्रभु उनकी प्यास बुझा देता है॥१॥ मैं उन पर न्यौछावर हूँ, जिन्हें गुरु जी नाम अमृत का पान करवाते हैं। नाम अमृत को चखकर जिह्वा सदैव प्रभु की प्रीति में लीन रहती है और सहज ही हरि प्रभु का यशोगान करती है॥१॥ रहाउ॥ गुरु की कृपा से कोई विरला प्राणी ही सहज अवस्था को प्राप्त करता है और अपनी दुविधा का नाश करके एक ईश्वर के साथ सुरति लगाता है। जब परमात्मा दया–दृष्टि करता है तो प्राणी उस प्रभु के गुण गायन करता है और उसकी दया से सत्य में लीन हो जाता है॥२॥ हे मेरे हरि–प्रभु ! तेरी कृपा–दृष्टि समस्त जीवों पर है किन्तु यह (कृपा–दृष्टि) किसी पर कम और किसी पर अधिकतर है। आपके सिवाय कुछ भी नहीं होता। इस बात का ज्ञान मनुष्य को गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होता है॥३॥ गुरमुख इस तथ्य पर चिंतन करते हैं कि तेरे भण्डार नाम–अमृत से परिपूर्ण हैं। सतिगुरु की सेवा करने के अलावा कोई भी नाम अमृत को प्राप्त नहीं कर सकता। यह तो गुरु की दया से ही मिलता है॥४॥ जो पुरुष सतिगुरु की सेवा करता है, वह शोभनीय है। प्रभु का अमृत–नाम मनुष्य के मन एवं हृदय को मोहित कर देता है। जिनके मन एवं तन अमृत वाणी में मग्न हो जाते हैं, प्रभु उन्हें सहज ही अपना अमृत–नाम सुनाता है॥५॥ स्वेच्छाचारी जीव भटका हुआ है और मोह–माया में फँसकर नष्ट हो जाता है। प्रभु नाम का वह जाप नहीं करता और माया रूपी विष सेवन करके प्राण त्याग देता है। रात–दिन उसका बसेरा सदैव विष्टा रूपी विषय–विकारों में रहता है। गुरु की सेवा के बिना वह अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥६॥ जिसको प्रभु स्वयं पिलाता है वही नाम अमृत का पान करता है। गुरु की कृपा से सहज ही वह परमात्मा में सुरति लगाता है। पूर्ण परमेश्वर स्वयं ही सर्वत्र परिपूर्ण हो रहा है। गुरु की मति द्वारा वह प्रत्यक्ष दिखाई देता है॥७॥ वह निरंजन प्रभु सब कुछ अपने आप से ही है। जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, वह स्वयं ही इसका विनाश भी करता है। हे नानक ! तुम सदैव ही प्रभु नाम का सिमरन करो। ऐसे तुम सहज ही परमात्मा में विलीन हो जाओगे॥८॥१६॥१७॥

माझ महला ३ ॥ से सचि लागे जो तुधु भाए ॥ सदा सचु सेवहि सहज सुभाए ॥ सचै सबदि सचा सलाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥ सचु धिआइनि से सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखा सचु सभनी थाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ तनु सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ ॥ २ ॥ मनसा मारि सचि समाणी ॥ इनि मनि डीठी सभ आवण जाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निज घरि वासा पावणिआ ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥ ४ ॥ जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥ हरि नामु समालहि से वडभागी ॥ सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि होवै ॥ ओहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥ अनदिनु सच सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि थाके सांति न आई ॥ त्रिसना जाले सुधि न काई ॥ बिखु बिहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥ ७ ॥ गुर परसादी एको जाणा ॥ दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥ नानक एको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥ ८ ॥ १७ ॥ १८ ॥

हे ईश्वर! जो तुझे अच्छे लगते हैं, वहीं सत्य (नाम) में लगते हैं। वह सहज–स्वभाव सदैव ही परमेश्वर की सेवा भक्ति करते हैं। वह सत्य–नाम द्वारा सत्य–प्रभु की सराहना करते हैं और सत्य–नाम उन्हें सत्य से मिला देता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से कुर्बान हूँ, जो सत्य परमेश्वर की सराहना करते हैं। जो सत्य परमेश्वर का ध्यान करते हैं, वह सत्य में ही रंग जाते हैं और सत्यवादी बन कर सत्य में लीन हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, सत्य परमात्मा मुझे सर्वत्र दिखाई देता है। वह गुरु की कृपा से मनुष्य के मन में आकर निवास करता है। फिर उस मनुष्य का शरीर शाश्वत हो जाता है और उसकी रसना सत्य में ही मग्न हो जाती है। वह मनुष्य सत्य नाम को सुनकर स्वयं भी मुँह से सत्य का ही बखान करता है॥२॥ जब बुद्धि मन की अभिलाषा को नष्ट करके सत्य में समा गई तो इस मन ने देख लिया कि यह सृष्टि जन्मती एवं मरती रहती है। जो व्यक्ति हमेशा ही सतिगुरु की सेवा करता है, उसका मन अटल हो जाता है और अपने आत्म–स्वरूप में निवास प्राप्त कर लेता है॥३॥ गुरु के शब्द ने मुझे प्रभु हृदय में ही दिखा दिया है और मेरे अन्तर्मन में से माया के मोह को जला दिया है। सत्य–प्रभु के दर्शन करके अब मैं उस सत्य–परमात्मा की ही महिमा–स्तुति करता रहता हूँ। वह सत्य गुरु के शब्द द्वारा ही मिलता है॥४॥ जो व्यक्ति सत्य–परमेश्वर के प्रेम में मग्न हो जाते हैं, उनकी प्रभु में सुरति लग जाती है। वह व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जो हरि–नाम का सिमरन करते हैं। सत्य–परमेश्वर उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है, जो सत्संग में मिलकर सत्य–परमेश्वर का गुणगान करते हैं॥५॥ परमात्मा लेखे से परे है। उसका लेखा–जोखा हम तब ही पढ़ें, यदि वह किसी लेखे–जोखे में आता हो। वह तो अगम्य एवं अगोचर है तथा उसकी सूझ गुरु के शब्द से ही होती है। मैं प्रतिदिन सत्य वाणी द्वारा उसकी महिमा–स्तुति करता रहता हूँ तथा अन्य कोई भी उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता॥६॥ कई विद्वान ग्रंथ पढ़–पढ़कर थक चुके हैं परन्तु उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं हुई। वे तृष्णाग्नि में ही जलते रहे और प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं मिला। वह जीवन भर विष रूप माया ही खरीदते रहे और उन्हें विष रूप मोह–माया की प्यास ही लगी रही। अतः वह झूठ बोल–बोलकर विष रूप माया ही सेवन करते रहे॥७॥ जिस व्यक्ति ने गुरु की कृपा से एक परमेश्वर को जाना है, उसका मन माया के मोह को नष्ट करके सत्य में समा गया है। हे नानक! जिसके मन में एक परमात्मा ही प्रवृत हो रहा है, गुरु की कृपा से वहीं भगवान को प्राप्त करता है॥८॥१७॥१८॥

माझ महला ३ ॥ वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥ मरि मरि जंमहि फेर पवहि घणेरे ॥ तूं एको निहचलु अगम अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी राम नामु मंनि वसावणिआ ॥ तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ एका जोति जाणै जे कोई ॥ सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥ गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥ २ ॥ तिसना अगनि जलै संसारा ॥ लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥ मरि मरि जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ ३ ॥ गुर का सबदु को विरला बूझै ॥ आपु मारे ता त्रिभवणु सूझै ॥ फिरि ओहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ माइआ महि फिरि चितु न लाए ॥ गुर कै सबदि सद रहै समाए ॥ सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सचु सालाही सदा हजूरे ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥ गुर परसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सचु मन अंदरि रहिआ समाइ ॥ सदा सचु निहचलु आवै न जाइ ॥ सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ सचु सालाही अवरु न कोई॥ जितु सेविऐ सदा सुखु होई ॥ नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥८॥१८॥१९॥

हे प्रभु ! जगत् में विभिन्न वर्ण एवं रूप वाले जितने भी जीव है, वह तेरे ही रूप हैं और तू स्वयं ही उन में प्रवृत्त हो रहा है। ये समस्त जीव बार-बार जन्मते एवं मरते रहते हैं और इन्हें जन्म-मरण के अधिकतर चक्र पड़े रहते हैं। लेकिन हे ईश्वर ! एक तू ही अमर, अगम्य एवं अपरंपार है और इस तथ्य का ज्ञान जीवों को तू गुरु की मति द्वारा ही देता है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो राम नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। प्रभु का कोई भी रूप-रंग आकार-प्रकार अथवा वर्ण नहीं है। वह स्वयं ही गुरु की मति द्वारा जीवों को ज्ञान प्रदान करता है॥१॥ रहाउ॥ समस्त जीवों में एक प्रभु की ही ज्योति विद्यमान है परन्तु इस भेद को कोई विरला ही जानता है। सतिगुरु की सेवा करने से यह ज्योति मनुष्य के हृदय में प्रगट हो जाती है अर्थात् उसे अपने हृदय में ही प्रकाश के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते हैं। भगवान अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप में सर्वत्र विद्यमान हैं एवं मनुष्य की ज्योति प्रभु की परम ज्योति में विलीन हो जाती है॥२॥ सारा संसार तृष्णा की अग्नि में जल रहा है। जीवों में लोभ, अभिमान तथा अहंकार अधिकतर बढ़ रहा है। जीव बार-बार मरता और जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिष्ठा गंवाता है। इस तरह वह अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥३॥ कोई विरला पुरुष ही गुरु के शब्द को समझता है। जब मनुष्य अपने अहंकार को नष्ट कर देता है, तब उसको तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है। यद्यपि मनुष्य मिथ्या-तत्व की परख उपरांत मृत्यु प्राप्त करे तो इसके पश्चात मृत्यु नहीं होती और वह सहज ही सत्य-परमात्मा में लीन हो जाता है॥४॥ तब वह अपना मन मोह-माया में नहीं लगाता और गुरु की वाणी में सदैव लीन हुआ रहता है। वह सत्य परमेश्वर की ही महिमा-स्तुति करता है जो सर्वव्यापक है। उसे यूं प्रतीत होता है कि एक सत्य-परमेश्वर ही सब में शोभायमान हो रहा है॥५॥ मैं सत्य-परमेश्वर की ही सराहना करता रहता हूँ और उसे ही सदैव प्रत्यक्ष समझता हूँ। गुरु के शब्द द्वारा मुझे प्रभु सारे जगत् में ही विद्यमान लगता है। सत्य-परमेश्वर के गुरु की कृपा से ही दर्शन होते हैं और सत्य-परमेश्वर से ही सुख प्राप्त होता है॥६॥ सत्य-परमेश्वर प्रत्येक जीव के मन में समाया हुआ है। वह सत्य-परमेश्वर सदैव अमर है और जन्म-मरण में कभी नहीं आता। जो मन सत्य-परमेश्वर के साथ प्रेम करता है, वह निर्मल हो जाता है और गुरु की मति द्वारा सत्य में ही समाया रहता है॥७॥ मैं तो एक परमेश्वर की ही सराहना करता रहता हूँ तथा किसी अन्य की पूजा नहीं करता। उसकी सेवा करने से सदैव ही सुख मिलता रहता है। हे नानक ! जो व्यक्ति परमेश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, वे परमेश्वर के बारे ही विचार करते रहते हैं और सत्य-परमेश्वर के सत्य-नाम की ही कमाई करते हैं॥८॥ १८॥१९॥

माझ महला ३ ॥ निरमल सबदु निरमल है बाणी ॥ निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥ निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥ हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल नामु वसिआ मनि आए ॥ मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥ निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ ॥ २ ॥ निरमल अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥ निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ॥ ३ ॥ जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥ हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥ निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ ४ ॥ निरमल ते सभ निरमल होवै ॥ निरमलु मनूआ हरि सबदि सोहै ॥ निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥ सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥ ६ ॥ मनु मैला है दूजै भाइ ॥ मैला चउका मैलै थाइ ॥ मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ मैले निरमल सभि हुकमि सबाए ॥ से निरमल जो हरि साचे भाए ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥ ८ ॥ १६ ॥ २० ॥

शब्द निर्मल है और वाणी भी निर्मल है। भगवान की निर्मल ज्योति समस्त जीवों में समाई हुई है। मैं निर्मल वाणी द्वारा भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता हूँ और निर्मल परमात्मा का भजन करके अपने मन की अहंत्व रूपी मैल को दूर करता हूँ॥१॥ मैं तन एवं मन से उन पर कुर्बान हूँ, जो सुखदाता परमात्मा को अपने हृदय में बसाते हैं। मैं गुरु के शब्द द्वारा निर्मल भगवान की महिमा–स्तुति करता हूँ और नाम को सुनकर अपनी तृष्णा को मिटा देता हूँ॥१॥ रहाउ॥ अब निर्मल नाम आकर मेरे मन में बस गया है, जिससे मेरा मन एवं तन निर्मल हो गया है और मेरे अन्तर्मन में से मोह–माया का विनाश हो गया है। जो व्यक्ति नित्य ही सत्य–परमेश्वर का गुणानुवाद करता है, उसके मन में निर्मल नाद अर्थात, अनहद शब्द गूंजने लग जाता है॥२॥ जो व्यक्ति गुरु से नाम रूपी निर्मल अमृत प्राप्त कर लेता है, उसके मन में से अहंकार नष्ट हो जाता है और उसके अन्तर्मन में माया का मोह नहीं रहता। उसके मन में निर्मल ज्ञान उत्पन्न हो जाता है और निर्मल प्रभु में उसका पूर्ण ध्यान लगता है। वह निर्मल वाणी को अपने हृदय में बसा लेता है॥३॥ जो व्यक्ति निर्मल परमात्मा की सेवा करता है, वह भी निर्मल हो जाता है। वह गुरु के शब्द द्वारा अपने अन्तर्मन में से अहंकार की मैल को स्वच्छ कर लेता है। उसके मन में अनहद वाणी की निर्मल ध्वनि गूंजने लग जाती है और वह सत्य परमेश्वर के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥४॥ निर्मल प्रभु से सभी निर्मल हो जाते हैं। निर्मल भगवान का नाम मनुष्य के मन को स्वयं में पिरो लेता है। सौभाग्यशाली व्यक्ति ही निर्मल नाम में लगते हैं और निर्मल नाम द्वारा शोभा के पात्र बन जाते हैं॥५॥ वहीं व्यक्ति निर्मल हैं, जो शब्द द्वारा सुन्दर हो जाते हैं। निर्मल नाम उनके तन एवं मन को मुग्ध कर देता है। सत्य–नाम में ध्यान लगाने से मन को कभी भी अहंकार की मैल नहीं लगती। सत्य–नाम उसके मुख को प्रभु के दरबार में उज्ज्वल करा देता है॥६॥ मन माया के मोह में फँसकर मैला हो जाता है। यदि मन मैला हो तो उसका चौका भी अपवित्र है और वह स्थान भी अपवित्र है। वह अपवित्र भोजन सेवन करके अपने पापों की मैल और भी अधिक बढ़ा लेता है। ऐसा मनमुख पापों की मैल के कारण बड़ा दुखी होता है॥७॥ सभी जीव भगवान के हुक्म में ही मैले अथवा निर्मल बने हैं। लेकिन वही मनुष्य निर्मल है जो सत्य–परमेश्वर को प्रिय लगता है। हे नानक! जो गुरु के माध्यम से अपने अहंकार की मैल को दूर कर लेता है, नाम उसके मन में ही आकर निवास करता है॥८॥२०॥२१॥

माझ महला ३॥ गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥ मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥ मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥ गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिदु गावहि सहजि सुभाए ॥ गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥ सदा अनंदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण गावणिआ ॥ २ ॥ मनूआ नाचै भगति द्रिड़ाए ॥ गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ॥ सचा तालु पूरे माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥ ३ ॥ ऊचा कूके तनहि पछाड़े ॥ माइआ मोहि जोहिआ जमकाले ॥ माइआ मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखि भगति जा आपि कराए ॥ तनु मनु राता सहजि सुभाए ॥ बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ पावणिआ ॥ ५ ॥ बहु ताल पूरे वाजे वजाए ॥ ना को सुणे न मंनि वसाए ॥ माइआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइ दुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता ॥ इंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥ गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा भगति हरि भावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥ होरतु भगति न पाए कोई ॥ नानक नामु गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ ८ ॥ २० ॥ २१ ॥

गोविन्द उज्ज्वल (सरोवर) है और गोविन्द का अंश जीवात्मा भी उज्ज्वल है। नाम-सिमरन से मेरा मन, वाणी एवं बुद्धि सब निर्मल हो गए हैं। मन उज्ज्वल होने से मेरा मुख हमेशा ही सुन्दर लगता है। मैं अत्यन्त उज्ज्वल नाम का सिमरन करता रहता हूँ॥१॥ मैं उस पर तन एवं मन से कुर्बान हूँ जो गोबिन्द का यशोगान करता है। वह दिन-रात गोविन्द-गोविन्द बोलता रहता है और वाणी द्वारा दूसरों को भी गोविन्द की महिमा सुनाता रहता है॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति सहज-स्वभाव ही गोविन्द का गुणानुवाद करता है, गुरु के भय से उसकी अहंकार रूपी मैल दूर हो जाती है और वह उज्ज्वल हो जाता है। जो व्यक्ति दिन-रात भगवान की भक्ति करता है, वह सदैव आनंदपूर्वक रहता है। वह दूसरों से भगवान की महिमा सुनता है और स्वयं भी उसकी महिमा-स्तुति करता है॥२॥ भक्ति करने से मनुष्य का मन प्रसन्न होकर नृत्य करने लग जाता है। वह गुरु की वाणी द्वारा अपने अशुद्ध मन को शुद्ध मन में ही मिलाकर रखता है। माया के मोह को दूर करना ही गुरमुख का ताल बजाना है। उसका नाम-सिमरन ही नृत्य करना है॥३॥ जो जोर-जोर से चिल्लाता है और अपने तन को गिराता है, माया ने उसे मुग्ध किया हुआ है। यम उसकी तरफ देख रहा है। जो इस मन को मोह-माया में नचाता है तथा मन में कपट है, वह बड़ा दुःखी होता है॥४॥ जब भगवान स्वयं मनुष्य से गुरु के सान्निध्य द्वारा अपनी भक्ति करवाता है तो सहज-स्वभाव ही उसका मन एवं तन भगवान के प्रेम में मग्न हो जाता है। जब वाणी का बजाया हुआ अनहद शब्द गुरमुख के हृदय में गूंजने लग जाता है तो ही उसकी भक्ति प्रभु को स्वीकार होती है॥५॥ स्वेच्छाचारी अत्यधिक ताल लगाते एवं बाजे बजाते हैं परन्तु उन में कोई भी न ही प्रभु के नाम को सुनता है और न ही नाम को अपने मन में बसाते हैं। वह तो माया के लिए अखाड़ा बांध कर नाचते हैं और माया के मोह में फँसकर दुःखी होते रहते हैं॥६॥ जिस व्यक्ति के मन में प्रभु की प्रीति उत्पन्न हो जाती है, वही मोह-माया से मुक्त है। इन्द्रियों को नियंत्रण में कर लेना ही संयम रूप सच्ची युक्ति है। भगवान को यही भक्ति अच्छी लगती है कि उसे हमेशा ही गुरु की वाणी द्वारा स्मरण किया जाए॥७॥ भगवान की भक्ति चारों युगों में गुरु के माध्यम से ही होती रही है। किसी अन्य विधि द्वारा भगवान की भक्ति होती ही नहीं। हे नानक! गुरु के चरणों में चित्त लगाने से भगवान का नाम गुरु-भक्ति द्वारा प्राप्त होता है॥८॥२०॥२१॥

माझ महला ३ ॥ सचा सेवी सचु सालाही ॥ सचै नाइ दुखु कब ही नाही ॥ सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥ जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु को तेरा भगतु कहाए ॥ सेई भगत तेरै मनि भाए ॥ सचु बाणी तुधै सालाहनि रंगि राते भगति करावणिआ ॥ २ ॥ सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥ गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥ जा तुधु भावै ता नाइ रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ ॥ ३ ॥ गुरमती हरि मंनि वसाइआ ॥ हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥ इकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥ ४ ॥ भगत रंगि राते सदा तेरै चाए ॥ नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे मेलि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ तूं दइआलु सदा सुखदाता ॥ तूं आपे मेलिहि गुरमुखि जाता ॥ तूं आपे देवहि नामु वडाई नामि रते सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सदा सदा साचे तुधु सालाही ॥ गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥ एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि मंनिऐ मनहि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥ साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ ॥ ८ ॥ २१ ॥ २२ ॥

मैं तो सत्यस्वरूप परमात्मा की ही सेवा करता हूँ और उस सत्यस्वरूप परमात्मा की ही महिमा-स्तुति करता रहता हूँ। सत्य परमेश्वर का नाम-सिमरन करने से दुःख कभी भी निकट नहीं आता। जो व्यक्ति सुखदाता भगवान की सेवा करते हैं और गुरु की मति द्वारा उसे अपने हृदय में बसाकर रखते हैं, ऐसे व्यक्ति सदैव सुखी रहते हैं॥१॥ मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ, जो सहज सुखदायक समाधि लगाते हैं। जो व्यक्ति भगवान की सेवा करते हैं, वह सदैव ही सुन्दर लगते हैं। वह भगवान में वृत्ति लगाकर शोभा के पात्र बन जाते हैं और भगवान के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु-परमेश्वर! प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को तेरा भक्त कहलवाता है परन्तु तेरे भक्त वहीं हैं जो तेरे मन को प्रिय लगते हैं। वह सच्ची वाणी द्वारा तेरी सराहना करते रहते हैं और तेरे प्रेम में मग्न हुए तेरी भक्ति करते रहते हैं॥२॥ हे सच्चे परमेश्वर! प्रत्येक जीव तेरा ही उत्पन्न किया हुआ है। यदि मनुष्य को गुरु मिल जाए तो उसका जीवन एवं मृत्यु का चक्र मिट जाता है। हे भगवान! जब तुझे उपयुक्त लगता है तो तू अपने नाम में जीव की रुचि उत्पन्न कर देता है और तू स्वयं ही उससे अपना नाम जपवाता है॥३॥ हे पूज्य-परमेश्वर! गुरु के उपदेश द्वारा तू मनुष्य के मन में अपना नाम बसा देता है और उसका हर्ष, शोक एवं मोह सब नष्ट कर देता है। जिसकी सुरति सदैव ही एक परमेश्वर में लीन रहती है, वह भगवान के नाम को अपने मन में बसा लेता है॥४॥ हे प्रभु परमेश्वर! तेरे भक्त हमेशा ही बड़े चाव से तेरे प्रेम में मग्न रहते हैं और नवनिधियाँ प्रदान करने वाला तेरा नाम, उनके मन में आकर बस जाता है। जो व्यक्ति सौभाग्य से सतिगुरु को पा लेता है, गुरु उसे शब्द द्वारा भगवान से मिला देता है॥५॥ हे प्रभु! तू बड़ा दयालु एवं सदैव ही जीवों को सुख देता रहता है। तू स्वयं ही जीवों को अपने साथ मिला लेता है और तुझे गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है। तू स्वयं ही जीवों को नाम रूपी महानता प्रदान करता है। जो व्यक्ति तेरे नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही सुखी रहते हैं॥६॥ हे सत्यस्वरूप परमेश्वर! मैं हमेशा ही तेरी महिमा-स्तुति करता रहता हूँ। तुझे गुरमुख ने ही जाना है और कोई दूसरा तुझे जान ही नहीं सकता। यदि मनुष्य का मन विश्वस्त हो जाए और वह एक परमेश्वर में ही समाया रहे तो सतिगुरु उसे उसके मन में ही प्रभु से मिला देता है॥७॥ हे मेरे सच्चे ठाकुर! तू बेपरवाह है, तेरी महिमा-स्तुति वही मनुष्य करता है जो गुरमुख बन जाता है। हे नानक! जिनके मन में नाम का निवास हो जाता है, गुरु अपनी वाणी द्वारा उसे भगवान से मिला देते हैं॥८॥२१॥२२॥

माझ महला ३ ॥ तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे ॥ गुर कै सबदि नामि सवारे ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ॥ हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जीउ साचा साची नाई ॥ गुर परसादी किसै मिलाई ॥ गुरि सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥ २ ॥ तुझ ते बाहरि कछू न होइ ॥ तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥ ३ ॥ कामणि गुणवंती हरि पाए ॥ भै भाइ सीगारु बणाए ॥ सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥ ४ ॥ सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥ भ्रमि भूले जिउ सुंञै घरि काउ ॥ हलतु पलतु तिनी दोवै गवाए दुखे दुखि विहावणिआ ॥ ५ ॥ लिखदिआ लिखदिआ कागद मसु खोई ॥ दूजै भाइ सुखु पाए न कोई ॥ कूड़ु लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥ से जन सचे पावहि मोख दुआरु ॥ सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥ गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २२ ॥ २३ ॥

हे सत्यस्वरूप परमेश्वर ! तेरे भक्त तेरे सत्य-दरबार में बैठे बड़ी शोभा पा रहे हैं। तूने उन्हें गुरु के शब्द द्वारा नाम में लगाकर ही संवारा है। वह दिन-रात सदैव आनंद में रहते हैं और गुणों के भण्डार प्रभु का गुणानुवाद कर-करके उसमें ही लीन रहते हैं॥१॥ मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ जो भगवान के नाम को सुनकर अपने हृदय में बसाते हैं। हे पूज्य परमेश्वर ! तू सदैव सत्य एवं सर्वोपरि है। भगवान जीव के अहंकार को नष्ट करके उसे स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥१॥ रहाउ॥पूज्य परमेश्वर सत्यस्वरूप है और उसकी महिमा भी सत्य है। गुरु की कृपा से वह परमेश्वर किसी विरले को ही अपने साथ मिलाता है। जो जीव गुरु की वाणी द्वारा प्रभु से मिल जाते हैं, फिर वह कभी भी प्रभु से जुदा नहीं होते और सहज ही सत्य में समाए रहते हैं॥२॥ हे परमेश्वर ! तेरे हुक्म से बाहर कुछ भी नहीं होता। तू ही जगत् की रचना करके उसकी देखरेख करता है और तू ही सबकुछ जानता है। सृष्टिकर्त्ता स्वयं ही सबकुछ करता और जीवों से करवाता है। वह स्वयं ही गुरु की मति द्वारा जीवों को अपने साथ मिला लेता है॥३॥ गुणवान जीव-स्त्री प्रियतम-प्रभु को पा लेती है। वह प्रभु के भय एवं प्रेम को ही अपना श्रृंगार बनाती है। जो जीव-स्त्री सतिगुरु की सेवा करती है, वह सदा सुहागिन है और वह सत्य-उपदेश में ही समाई रहती है॥४॥ जो व्यक्ति भगवान के नाम को भुला देते हैं, उन्हें सहारा लेने के लिए कहीं भी आश्रय एवं स्थान नहीं मिलता। वह भ्रम में फँसकर भटकते रहते हैं। वह जगत् में से खाली हाथ यूं ही चले जाते हैं जैसे किसी सूने घर में से कौआ खाली चला जाता है ऐसे व्यक्ति अपना लोक-परलोक दोनों ही गंवा देते हैं और जीवन भर दुखी ही होते रहते हैं॥५॥ मनमुख व्यक्ति माया के लेख लिखते-लिखते अनेक कागज एवं स्याही खत्म कर लेते हैं। कोई भी व्यक्ति माया के मोह में फँसकर सुख नहीं पा सकता। मनमुख मिथ्या माया के लेखे लिखते रहते हैं और मिथ्या माया ही कमाते रहते हैं। मिथ्या माया के मोह में चित्त लगाने वाले तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं॥६॥ गुरमुख सत्य-प्रभु का नाम एवं गुणों बारे लिखते रहते हैं। वह सत्यवादी बन जाते हैं और वह मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेते हैं। सत्य नाम ही उनका कागज, कलम एवं स्याही हैं। वे प्रभु की महिमा को लिख-लिख कर सत्य में ही समा जाते हैं॥७॥ मेरा प्रभु समस्त जीवों के हृदय में बैठकर उनके कर्म देख रहा है। जो पुरुष गुरु की दया से परमात्मा को मिलता है, जगत् में उसका आगमन ही सफल है। हे नानक ! प्रभु के नाम से उसके दरबार में महानता प्राप्त होती है और पूर्णगुरु द्वारा ही नाम पाया जाता है॥८॥२२॥२३॥

माझ महला ३ ॥ आतम राम परगासु गुर ते होवै ॥ हउमै मैलु लागी गुर सबदी खोवै ॥ मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ॥ तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे करता कारणु कराए ॥ जितु भावै तितु कारै लाए ॥ पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥ २ ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसाए ॥ सदा मुकतु हरि मंनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ ॥ ३ ॥ बहु करम कमावै मुकति न पाए ॥ देसंतरु भवै दूजै भाइ खुआए ॥ बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुर परसादी परम पदु पाए ॥ सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि कूड़ि लागे कूड़े फल पाए ॥ दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ॥ आपि डुबे सगले कुल डोबे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥ ६ ॥ इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥ भाइ भगति जा हउमै सोखै ॥ सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥ ७ ॥ आपि कराए करता सोई ॥ होरु कि करे कीतै किआ होई ॥ नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २३ ॥ २४ ॥

मनुष्य के हृदय में आत्म-राम का प्रकाश गुरु की कृपा से होता है। जब मनुष्य अपने मन को लगी अहंत्व की मैल को गुरु की वाणी द्वारा स्वच्छ कर लेता है तो उसका निर्मल मन रात-दिन भगवान की भक्ति में मग्न रहता है और भक्ति करके वह भगवान को पा लेता है॥१॥ मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ जो स्वयं भी भगवान की भक्ति करते हैं और दूसरों से भी भक्ति करवाते हैं। उन भक्तजनों को सदैव ही प्रणाम करो, जो रात-दिन ईश्वर का यशोगान करते हैं॥१॥ रहाउ॥ सृजनहार प्रभु स्वयं ही कारण बनाता है। जैसे उसको अच्छा लगता है, वैसे ही जीवों को कामकाज में लगाता है। पूर्ण सौभाग्य से ही गुरदेव की सेवा की जाती है और गुरु की सेवा से ही सुख प्राप्त होता है॥२॥ यदि मनुष्य अपने आपको मोह-माया से निर्लिप्त करके प्रभु भक्ति में जीवे तो उसे सबकुछ प्राप्त होता है। गुरु की कृपा से वह ईश्वर को अपने हृदय में बसाता है। जो प्राणी ईश्वर को अपने हृदय में बसा लेता है वह हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है और सहज ही प्रभु में समा जाता है॥३॥ जो व्यक्ति अधिकतर धर्म-कर्म करता है, वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। जो व्यक्ति देश-देशांतर भटकता रहता है, वह भी मोह-माया में फँसकर नष्ट हो जाता है। कपटी प्राणी व्यर्थ ही अपना जीवन गंवा देता है। हरि-नाम के बिना वह बहुत कष्ट सहन करता है॥४॥ जो व्यक्ति विषय-विकारों में भटकते हुए अपने मन को नियंत्रित कर लेता है, वह गुरु की कृपा से (परमपद) मोक्ष प्राप्त कर लेता है। सतिगुरु स्वयं ही जीव का भगवान से मिलाप करवाते हैं। फिर वह जीव अपने प्रियतम प्रभु को मिलकर सुख की अनुभूति करता है॥५॥ कई व्यक्ति मिथ्या माया के मोह में फँसे हुए हैं। वे मिथ्या माया रूपी फल ही प्राप्त करते हैं। द्वैत-भाव में फँसकर वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं। वह स्वयं तो भवसागर में डूब जाते हैं और अपने समूह वंशों को भी डुबा लेते हैं। झूठ बोलकर वह माया रूपी विष सेवन करते हैं॥६॥ गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही अपने शरीर में अपने मन को देखता है। जब वह अपने अहंकार को मिटा देता है तो ही उसके अन्तर्मन में भगवान की प्रेम-भक्ति उत्पन्न होती है। प्रेम-भक्ति द्वारा उसका अहंकार सूख जाता है। सिद्ध,साधक और मौनधारी सुरति लगाकर थक गए हैं। उन्होंने भी अपने तन में मन को नहीं देखा॥७॥ वह सृजनहार प्रभु स्वयं ही जीवों से कार्य करवाता है। अन्य कोई क्या कर सकता है? प्रभु के उत्पन्न किए जीवों द्वारा करने से क्या हो सकता है? हे नानक ! जिसको प्रभु अपने नाम की अनुकंपा करता है, वही उसको पाता है और वह मनुष्य नाम को सदैव ही अपने हृदय में बसाकर रखता है॥८॥२३॥२४॥

माझ महला ३॥ इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥ तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी अंम्रित नामु मंनि वसावणिआ ॥ अंम्रित नामु महा रसु मीठा गुरमती अंम्रितु पीआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ ॥ नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥ बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ ॥ २ ॥ गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ सरीरहु भालणि को बाहरि जाए ॥ नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए ॥ मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुर परसादी सचा हरि पाए ॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए ॥ बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥ ५ ॥ नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥ दसवै निज घरि वासा पाए ॥ ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥ ६ ॥ बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥ सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥ गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥ नानक नामु सालाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २४ ॥ २५ ॥

इस शरीर रूपी गुफा में ही नाम का अमूल्य भण्डार मौजूद हैं। इस गुफा में ही अलक्ष्य एवं अपरंपार प्रभु निवास करता है। वह स्वयं ही अप्रत्यक्ष एवं स्वयं ही प्रत्यक्ष है और गुरु के शब्द से आत्माभिमान नष्ट हो जाता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ जो अमृत नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। यह अमृत नाम महारस है और इसका स्वाद बड़ा मधुर है। यह नाम रूपी अमृत गुरु के उपदेश द्वारा पान किया जाता है॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति अपने अहंकार को नष्ट करके वज्र कपाट खोल लेता है, वह गुरु की कृपा से अमूल्य नाम को प्राप्त कर लेता है। गुरु के शब्द बिना किसी को भी नाम प्राप्त नहीं होता। नाम को गुरु की दया से ही हृदय में बसाया जा सकता है॥ २॥ जो व्यक्ति गुरु का ज्ञान रूपी सच्चा सुरमा अपने नेत्रों में डालता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है। उसकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है तथा उसका मन नाम–सिमरन से संतुष्ट हो जाता है और भगवान के दरबार में वह बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥३॥ यदि कोई व्यक्ति अपनी देहि से बाहर किसी अन्य स्थान पर प्रभु की तलाश में जाए तो वह नाम को नहीं पाता, अपितु बेगारी की तरह अधिक कष्ट सहन करता है। ज्ञानहीन मनमुख व्यक्ति इधर–उधर भटकने के पश्चात पुनः अपने घर लौट आता है परन्तु उसे नाम का ज्ञान नहीं होता। लेकिन सतिगुरु द्वारा वह असली पदार्थ को भीतर से ही प्राप्त कर लेता है॥४॥ गुरु की कृपा से वह सत्यस्वरूप परमात्मा को पा लेता है। उसकी अहंकार की मलिनता दूर हो जाती है और अपने मन एवं तन में वह प्रभु के ही दर्शन करता है। श्रेष्ठ स्थान सत्संग में विराजमान होकर वह सदैव प्रभु का यशोगान करता है और सत्य–परमेश्वर में लीन हो जाता है॥५॥ शरीर रूपी घर को दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, मुँह, गुदा एवं इन्द्री यह नौ द्वार लगे हुए हैं। इनके द्वारा ही मन बाहर भटकता रहता है। जो व्यक्ति इन द्वारों को बंद करके अपने भटकते मन को नियंत्रित कर लेता है तो उसका मन अपने आत्म–स्वरूप में निवास कर लेता है। वहाँ पर दिन–रात अनहद शब्द गूंजता रहता है। अनहद शब्द को गुरु की मति द्वारा ही सुना जा सकता है॥६॥ शब्द के बिना अन्तर्मन में अज्ञानता का अँधेरा बना रहता है। मनुष्य को नाम रूपी वस्तु प्राप्त नहीं होती और उसका आवागमन का चक्र मिटता नहीं। सतिगुरु के पास ब्रह्म–विद्या रूपी कुंजी है। किसी अन्य विधि से यह द्वार खुलता नहीं

और गुरु पूर्ण भाग्य से ही मिलता है॥७॥ हे ईश्वर! तू गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप में सर्वत्र विद्यमान है। गुरु की कृपा से प्रभु को मिलने से ही मनुष्य को इस भेद का ज्ञान होता है। हे नानक! तू सदैव भगवान के नाम की महिमा–स्तुति किया कर, चूंकि गुरु के माध्यम से ही मनुष्य के मन में नाम का निवास होता है॥ ८॥ २४॥ २५॥

माझ महला ३ ॥ गुरमुखि मिलै मिलाए आपे ॥ कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥ हउमै मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै हरि सेती चितु लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥ आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥ गुरमुखि मरै न कालु न खाए गुरमुखि सचि समावणिआ ॥ २ ॥ गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाए ॥ आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखि दुखु कदे न लगै सरीरि ॥ गुरमुखि हउमै चूकै पीर ॥ गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखि नामु मिलै वडिआई ॥ गुरमुखि गुण गावै सोभा पाई ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखि अनदिनु सबदे राता ॥ गुरमुखि जुग चारे है जाता ॥ गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥ ६ ॥ बाझु गुरू है अंध अंधारा॥ जमकालि गरठे करहि पुकारा ॥ अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ ॥ ७॥ गुरमुखि आपे करे कराए ॥ गुरमुखि हिरदै वुठा आपि आए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २५ ॥ २६ ॥

जो व्यक्ति गुरु की शरण में आता है, उसे भगवान मिल जाता है और भगवान स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है। ऐसे व्यक्ति को मृत्यु देख भी नहीं सकती और कोई दुख–क्लेश उसे पीड़ित नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति अपने अहंकार को नष्ट करके माया के तमाम बन्धनों को तोड़ देता है। गुरु की शरण में रहने वाला व्यक्ति नाम द्वारा सुशोभित हो जाता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ जो हरि–प्रभु के नाम से सुन्दर बन जाते हैं। गुरमुख भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है और मस्त होकर नाचता झूमता है और वह भगवान से अपना चित्त लगाकर रखता है॥१॥ रहाउ॥ गुरमुख का जीना एवं मरना प्रमाणिक है। उसका जीवन व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि वह परमात्मा को पहचानता है। गुरमुख मरता नहीं और न ही उसको मृत्यु निगलती है। गुरमुख सत्य में लीन रहता है॥२॥ ऐसे गुरमुख ईश्वर के दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं। गुरमुख अपने मन में से अहंकार को मिटा देता है। गुरमुख स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी पार कर लेता है और अपना जीवन संवार लेता है॥३॥ गुरमुख के शरीर को कभी कोई दुःख नहीं लगता। गुरमुख के अहंकार की वेदना–पीड़ा दूर हो जाती है। गुरमुख का मन अहंत्व की मैल से निर्मल हो जाता है और उसे फिर अहंत्व की मैल नहीं लगती। गुरमुख सहज ही समाया रहता है॥४॥ गुरमुख ईश्वर के नाम की महानता प्राप्त करता है। गुरमुख भगवान का गुणानुवाद करता है और दुनिया में बड़ी शोभा प्राप्त करता है। वह सदैव ही दिन–रात आनंदपूर्वक रहता है। गुरमुख भगवान के नाम की ही साधना करता है॥५॥ गुरमुख रात–दिन शब्द में मग्न रहता है। गुरमुख चारों युगों में जाना जाता है। गुरमुख सदा निर्मल प्रभु का यशोगान करता है और शब्द द्वारा भगवान की भक्ति करता रहता है॥६॥ गुरु के बिना घनघोर अंधकार है। यमदूत द्वारा जकड़े हुए मनुष्य जोर–जोर से चिल्लाते हैं। वह रात–दिन रोगी बने रहते हैं, जैसे विष्टा के कीड़े विष्टा में दुखी होते रहते हैं॥७॥ गुरमुख स्वयं ही भगवान की भक्ति करते एवं अन्यों से भी करवाते हैं। गुरमुख के हृदय में परमेश्वर स्वयं आकर निवास कर लेता है। हे नानक! प्रभु के नाम से महानता प्राप्त होती है। पूर्ण गुरु द्वारा ही नाम पाया जाता है॥८॥२५॥२६॥

माझ महला ३ ॥ एका जोति जोति है सरीरा ॥ सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ आपे फरकु कीतोनु घट अंतरि आपे बणत बणावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि ॥ तूं आपे नदरी जगतु परोवहि ॥ तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ ॥ २ ॥ आपे करता करे कराए ॥ आपे सबदु गुर मंनि वसाए ॥ सबदे उपजै अंम्रित बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥ ३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ बंधन तोड़े सदा है मुकता ॥ सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥ ४ ॥ आपे माइआ आपे छाइआ ॥ आपे मोहु सभु जगतु उपाइआ ॥ आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि सुणावणिआ ॥ ५ ॥ आपे करे कराए आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ तुझ ते बाहरि कछू न होवै तूं आपे कारै लावणिआ ॥ ६ ॥ आपे मारे आपि जीवाए ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ७ ॥ आपे ऊचा ऊचो होई ॥ जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि आपे वेखि विखालणिआ ॥ ८ ॥ २६ ॥ २७ ॥

समस्त शरीरों में जो ज्योति विद्यमान है, वह ज्योति एक ही है अर्थात् एक ईश्वर की ज्योति सब में विद्यमान है। पूर्ण सतिगुरु शब्द द्वारा मनुष्य को इस ज्योति के दर्शन करवा देते हैं। विभिन्न शरीरों में ईश्वर ने स्वयं ही विविधता उत्पन्न की है और स्वयं ही जीवों के शरीर की रचना की है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से कुर्बान हूँ जो सत्यस्वरूप परमेश्वर का गुणगान करते हैं। गुरु के अलावा किसी को भी सहज प्राप्त नहीं होता। गुरमुख सहज ही समाया रहता है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! तू स्वयं ही सर्वत्र सुन्दर रूप में शोभा दे रहा है और स्वयं ही जगत् को मोहित कर रहा है। तूने स्वयं ही अपनी कृपा-दृष्टि से समूचे जगत् को मोह-माया में पिरोया हुआ है। हे मेरे हरि-परमेश्वर ! तुम स्वयं ही दुख और सुख प्रदान करते हो और गुरमुखों को हरि-दर्शन करवाते हो॥२॥ जगत् का रचयिता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है। वह स्वयं गुरु का शब्द मनुष्य के हृदय में बसाता है। शब्द से अमृत-वाणी उत्पन्न होती है। गुरमुख इस अमृत-वाणी को बोलकर दूसरों को सुनाते हैं॥३॥ हरि-प्रभु स्वयं ही कर्त्ता और स्वयं ही जगत् के पदार्थों को भोगने वाला है। भगवान जिस व्यक्ति के बन्धनों को तोड़ देता है, वह हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है। सत्य स्वरूप परमेश्वर स्वयं भी माया के बन्धनों से हमेशा के लिए मुक्त है। वह अलक्ष्य परमेश्वर स्वयं ही अपने स्वरूप के दर्शन करवाता है॥४॥ परमेश्वर स्वयं ही माया है और स्वयं ही उस माया में प्रतिबिम्बित है। उस प्रभु ने स्वयं ही माया के मोह को पैदा किया है और स्वयं ही जगत् की रचना की है। परमेश्वर स्वयं ही गुणदाता है और वह स्वयं ही अपने गुण गा रहा है। वह स्वयं ही अपने गुण बोलकर सुना रहा है॥५॥ प्रभु स्वयं ही प्राणियों का कर्त्ता और उनसे कर्म करवाता है। परमात्मा स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और स्वयं ही सृष्टि का विनाश भी करता है। हे प्रभु ! तेरे हुक्म के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। तुमने स्वयं ही प्राणियों को विभिन्न कर्मों में लगाया हुआ है॥६॥ भगवान स्वयं ही जीवों को मारता है और स्वयं ही उन्हें जीवित भी रखता है। वह स्वयं ही जीवों को गुरु से मिलाता है और उन्हें गुरु के सम्पर्क में रखकर अपने साथ मिला लेता है। गुरु की सेवा करने से मनुष्य को सदैव ही सुख प्राप्त होता है और गुरु की प्रेरणा से जीव सहज ही सत्य में समा जाता है॥७॥ हे भगवान ! तू स्वयं ही बड़ों से भी बड़ा अर्थात् सर्वश्रेष्ठ है। जिस व्यक्ति को तू स्वयं अपना रूप दिखाता है, वहीं तेरे दर्शन कर सकता है। हे नानक ! जिसके हृदय में नाम का निवास हो जाता है, फिर प्रभु स्वयं ही उसके हृदय में प्रगट होकर अपने स्वरूप के दर्शन करवा देता है॥८॥२६॥२७॥

माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ गुर परसादी घर ही महि पाई ॥ सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी जगजीवनु मंनि वसावणिआ ॥ हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर महि धरती धउलु पाताला ॥ घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥ सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥ २ ॥ काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ जंमण मरणु न चूकै फेरा ॥ गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥ ३ ॥ काइआ अंदरि पापु पुंनु दुइ भाई ॥ दुही मिलि कै स्रिसटि उपाई ॥ दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ ॥ ४ ॥ घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥ ५ ॥ अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥ कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ ६ ॥ अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥ गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥ ७ ॥ आपे वथु राखै आपे देइ ॥ गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥ नानक जिसु नदरि करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २७ ॥ २८ ॥

मेरा प्रभु समस्त स्थानों में रहता है। गुरु की कृपा से मैंने उसको अपने हृदय घर में ही पा लिया है। मैं हमेशा ईश्वर की सेवा करता हूँ और एकाग्रचित्त होकर उसका ही ध्यान करता हूँ। गुरु के द्वारा मैं सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन हो गया हूँ॥१॥ मैं तन-मन से उन पर कुर्बान हूँ जो अपने मन में जगजीवन को बसाते हैं। भगवान जगत् का जीवन, निर्भीक एवं दाता है। गुरु की मति द्वारा जीव सहज ही उसमें समा जाता है॥१॥ रहाउ॥ धरती, धवल एवं पाताल-यह सबकुछ मानव के शरीर रूपी घर में ही हैं। मेरा नितनूतन प्रियतम परमेश्वर भी शरीर रूपी घर में ही रहता है। सुखदाता प्रभु सदैव ही आनंदपूर्वक रहता है और गुरु की मति द्वारा मनुष्य सहज ही उसमें समा जाता है॥२॥ जब तक काया के भीतर अहंकार एवं ममत्व है, तब तक जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता। जो प्राणी गुरमुख बन जाता है, वह अपने अहंकार को निवृत्त कर लेता है और परम सत्य प्रभु का ध्यान करता है॥३॥ पाप एवं पुण्य दोनों भाई शरीर में ही रहते हैं। इन दोनों ने मिलकर सृष्टि को पैदा किया है जो व्यक्ति इन दोनों का वध करके आत्म-स्वरूप में निवास कर लेता है, वह गुरु की मति द्वारा सहज ही समाया रहता है॥४॥ मोह-माया में फँसने के कारण मनुष्य के हृदय-घर में अज्ञानता का अँधेरा बना रहता है। यदि वह अहंत्व एवं ममत्व की भावना को त्याग दे तो उसके हृदय में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है। जब सुखदाता अनहद शब्द मन में प्रगट हो जाता है तो मनुष्य प्रतिदिन नाम का ध्यान करता रहता है॥५॥ जिस परमात्मा ने जगत् को प्रगट किया है, समस्त जीवों में उसकी ही ज्योति विद्यमान है। मनुष्य का अज्ञानता का अँधेरा गुरु की शिक्षा से मिट जाता है और उसका हृदय कंवल प्रफुल्लित हो जाता है। फिर मनुष्य की ज्योति परम-ज्योति प्रभु में विलीन हो जाती है॥६॥ भगवान के आत्म-स्वरूप रूपी महल में नाम रूपी रत्न के भण्डार भरे हुए हैं परन्तु मनुष्य अनंत प्रभु के नाम को गुरु के माध्यम से ही प्राप्त करता है। जीव रूपी व्यापारी हमेशा ही गुरु के माध्यम से नाम का व्यापार करता है और हमेशा ही नाम रूपी लाभ प्राप्त करता है॥७॥ भगवान स्वयं ही अपने आत्म-स्वरूप रूपी महल में नाम-वस्तु को रखता है और स्वयं यह नाम-वस्तु गुरु के माध्यम से जीवों को देता है। कोई विरला पुरुष गुरु के माध्यम से ही यह व्यापार करता है। हे नानक ! परमेश्वर जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वहीं नाम को प्राप्त करता है। परमेश्वर अपनी कृपा करके नाम को उसके हृदय में बसा देता है॥८॥२७॥२८॥

माझ महला ३ ॥ हरि आपे मेले सेव कराए ॥ गुर कै सबदि भाउ दूजा जाए ॥ हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥ सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु दाता करमि बिधाता ॥ सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥ अंम्रित नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥ २ ॥ इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥ पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि इहु गुफा वीचारे ॥ नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥ हरि गुण गावै सबदि सुहाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ जमु जागाती दूजै भाइ करु लाए ॥ नावहु भूले देइ सजाए ॥ घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ ॥ ५ ॥ पेईअड़ै पिरु चेते नाही ॥ दूजै मुठी रोवै धाही ॥ खरी कुआलिओ कुरूपि कुलखणी सुपनै पिरु नही पावणिआ ॥ ६ ॥ पेईअड़ै पिरु मंनि वसाइआ ॥ पूरै गुरि हदूरि दिखाइआ ॥ कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइ सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सदि बुलाए ॥ आपणा नाउ मंनि वसाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ २८ ॥ २९ ॥

भगवान स्वयं ही जीव को अपने साथ मिलाता है और उससे अपनी सेवा करवाता है। फिर गुरु के शब्द द्वारा माया का प्रेम जीव के मन से दूर हो जाता है। भगवान निर्मल है और सदैव ही गुणों का दाता है। भगवान स्वयं ही जीव को अपने गुणों में लीन करता है॥१॥ मैं कुर्बान हूँ और मेरा जीवन भी उन पर कुर्बान है जो परम सत्य परमात्मा को अपने अन्तर्मन में बसाते हैं। सत्य नाम हमेशा ही निर्मल है। इस निर्मल नाम को जीव गुरु के शब्द द्वारा अपने मन में बसा लेता है॥१॥ रहाउ॥ भगवान स्वयं ही जीवों को नाम की देन देने वाला गुरु है और स्वयं ही जीवों के कर्मों का भाग्यविधाता है। भगवान के सेवक उसकी सेवा करते हैं और गुरु के माध्यम से वह भगवान को पहचान लेते हैं। जो व्यक्ति हमेशा ही नाम–अमृत का पान करते रहते हैं वह सुन्दर बन जाते हैं। वह गुरु की मति द्वारा हरि–रस को प्राप्त कर लेते हैं॥२॥ इस शरीर रूपी गुफा में आत्मस्वरूप रूपी एक अत्यंत सुन्दर स्थान है। पूर्ण गुरु ने जिनका अहंकार नाश कर दिया है, वे रात–दिन प्रेमपूर्वक मग्न होकर नाम की सराहना करते रहते हैं। ऐसे लोगों को गुरु की कृपा से ही नाम प्राप्त होता है॥३॥ जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा इस गुफा का चिन्तन करता है, उसके हृदय में मुरारि प्रभु का निरंजन नाम बस जाता है। वह भगवान की महिमा गाता है और शब्द द्वारा प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करता है। फिर वह अपने प्रियतम–प्रभु से मिलकर सुख अनुभव करता है॥४॥ कर वसूल करने वाला यम द्वैत भाव रखने वाले लोगों पर कर लगाता है। जो ईश्वर के नाम को विस्मृत करते हैं वह उनको दण्ड देता है। यम प्रत्येक जीव से प्रत्येक घड़ी एवं मुहूर्त में किए कर्मों का लेखा–जोखा लेता है और उनके अंश के कण मात्र वजन के कर्मों को भी तोलता है॥ ५॥ जो जीव–स्त्री अपने पीहर (मृत्युलोक) में अपने पति–परमेश्वर को स्मरण नहीं करती, वह माया के प्रेम में फँसकर लुटी जा रही है, वह कर्मों का लेखा देते समय चिल्ला–चिल्ला कर विलाप करती है। वह नीच घराने की बहुत कुरुप और कुलक्षणी है और स्वप्न में भी वह अपने पति–परमेश्वर से नहीं मिलती॥ ६॥ जिस जीव–स्त्री ने अपने पति–प्रभु को अपने मन में बसा लिया है, पूर्ण गुरु ने उसे पति–प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन करवा दिए हैं। ऐसी जीव–स्त्री अपने प्रियतम को अपने हृदय के साथ लगाए रखती है और नाम द्वारा अपने प्रियतम के साथ उसकी सुन्दर सेज पर रमण करती है॥७॥ भगवान स्वयं ही अपने सेवक को बुला कर उसे नाम की देन प्रदान करता है। वह अपना नाम उसके मन में बसा देता है। हे नानक! नाम द्वारा सेवक को भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है। फिर भगवान का सेवक रात–दिन सदैव ही उसका गुणगान करता रहता है॥८॥२८॥२९॥

माझ महला ३ ॥ ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥ सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते हरि रसि मनु त्रिपतावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ॥ गुरमुखि पड़हि हरि नामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अलख अभेउ हरि रहिआ समाए ॥ उपाइ न किती पाइआ जाए ॥ किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥ २ ॥ दूजै भाइ पड़ै नही बूझै ॥ त्रिबिधि माइआ कारणि लूझै ॥ त्रिबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥ ३ ॥ इहु मनु चंचलु वसि न आवै ॥ दुबिधा लागै दह दिसि धावै ॥ बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥ ४ ॥ हउ हउ करे तै आपु जणाए ॥ बहु करम करै किछु थाइ न पाए ॥ तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥ ५ ॥ उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥ अनदिनु दूजै भाइ फिराही ॥ मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अंति गइआ पछुतावणिआ ॥ ६ ॥ पिरु परदेसि सिगारु बणाए ॥ मनमुख अंधु ऐसे करम कमाए ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ ७ ॥ हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक नामि रते जन सोहहि करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥ ९ ॥ २९ ॥ ३० ॥

जो व्यक्ति सत्संगति रूपी श्रेष्ठ स्थान पर रहते हैं, उनका जन्म उत्तम बन जाता है। ऐसे व्यक्ति अपने सच्चे गुरु की सेवा करते रहते हैं और गृहस्थ में रहते हुए भी निर्लिप्त रहते हैं। वह सदैव ही प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं। उनका मन हरि–रस का पान करके तृप्त हो जाता है॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, मेरा जीवन उन पर बलिहारी है जो ब्रह्म–ज्ञान को पढ़कर एवं समझकर अपने मन में बसाते हैं। गुरमुख ब्रह्म–ज्ञान को पढ़कर हरि–नाम की महिमा–स्तुति करते हैं और सत्य के दरबार में शोभा पाते हैं॥१॥ रहाउ॥ अलक्ष्य एवं अभेद परमात्मा सर्वव्यापक है। किसी भी उपाय से वह प्राप्त नहीं किया जा सकता। यदि परमात्मा कृपा करे तो मनुष्य को गुरु मिल जाता है। परमात्मा अपनी कृपा–दृष्टि से मनुष्य को सतिगुरु से मिलाकर उस द्वारा अपने साथ मिला लेता है॥२॥ जो व्यक्ति द्वैतभाव के कारण ग्रंथों का अध्ययन करता है, उसे कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता। वह त्रिगुणात्मक माया के लिए उलझता रहता है। लेकिन त्रिगुणात्मक माया के बंधन गुरु के शब्द से टूट जाते हैं और गुरु के शब्द से ही मोह–माया से मोक्ष प्राप्त होता है॥३॥ मनुष्य का यह मन बड़ा ही चंचल है और यह मनुष्य के वश में नहीं आता। यह दुविधा उत्पन्न करने वाली माया के पीछे लगकर दसों दिशाओं में भटकता रहता है। इस तरह मनुष्य विष–रूपी माया का कीड़ा बनकर विष रूपी विषय–विकारों में मग्न रहता है और विष रूपी माया के विषय–विकारों में ही गल–सड़ जाता है॥४॥ जो व्यक्ति अहंकार से बोलता है और स्वयं को बड़ा प्रगट करता है, वह अधिकतर धर्म–कर्म करता है परन्तु प्रभु के दरबार में स्वीकार नहीं होता। हे प्रभु ! तेरे हुक्म से बाहर कुछ भी नहीं होता। जिसे तुम क्षमा कर देते हो, वह शब्द द्वारा सुन्दर बन जाता है॥५॥ मनमुख जन्मता एवं मरता रहता है। उसे भगवान का ज्ञान ही नहीं होता। वह रात–दिन माया के मोह में फँसकर भटकता रहता है। इस तरह मनमुख व्यक्ति अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा देता है और अन्त में पश्चाताप करता हुआ जगत् से चला जाता है॥६॥ मनमुख ऐसे व्यर्थ कर्म करता है, जैसे कोई स्त्री जिसका पति तो परदेस गया हुआ है परन्तु फिर भी वह अपने शरीर का श्रृंगार करती रहती है। उसकी न इहलोक में शोभा होती है और न ही उसे परलोक में कोई सहारा मिलता है। उसका जीवन व्यर्थ ही चला जाता है॥७॥ किसी विरले ने ही

भगवान के नाम को जाना है। नाम की पहचान पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही होती है। जो व्यक्ति दिन-रात हर समय भगवान की भक्ति करता रहता है, उसे सहज ही सुख उपलब्ध हो जाता है॥८॥एक परमेश्वर समस्त जीवों में मौजूद है। परन्तु इस भेद को गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही समझता है। हे नानक! भगवान के दरबार में वहीं व्यक्ति शोभा प्राप्त करते हैं, जो उसके नाम में मग्न रहते हैं। भगवान स्वयं ही कृपा करके जीव को अपने साथ मिला लेता है॥७॥२६॥३०॥

माझ महला ३ ॥ मनमुख पड़हि पंडित कहावहि ॥ दूजै भाइ महा दुखु पावहि ॥ बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ ॥ वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥ अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥ २ ॥ अकथो कथीऐ सबदि सुहावै ॥ गुरमती मनि सचो भावै ॥ सचो सचु रवहि दिनु राती इहु मनु सचि रंगावणिआ ॥ ३ ॥ जो सचि रते तिन सचो भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ कूड़ु कुसतु तिना मैलु न लागै ॥ गुर परसादी अनदिनु जागै ॥ निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥ ५ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥ मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ॥ मोह बिआपे किछु सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ ॥ ६ ॥ वेदु पुकारै त्रिबिधि माइआ ॥ मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥ गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥ नानक नावै की सची वडिआई नामो मंनि सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

स्वेच्छाचारी जीव द्वैतभाव में ग्रंथ पढ़ते रहते हैं और स्वयं को विद्वान कहलवाते हैं। वे माया के मोह में फँसकर बहुत दुखी होते हैं। वह विष रूपी माया के मोह में मग्न रहते हैं और प्रभु बारे उन्हें कोई ज्ञान नहीं मिलता, जिसके कारण वह पुनः पुनः योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं॥१॥ मैं कुर्बान हूँ, मेरा जीवन उन पर कुर्बान है जो अपने अहंकार को नष्ट करके ईश्वर में विलीन हो जाते हैं। गुरु की सेवा से ईश्वर मनुष्य के हृदय में आ बसता है और वह सहज ही हरि-रस पान करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ कुछ व्यक्ति वेद पढ़ते हैं परन्तु उन्हें हरि-रस का आनंद नहीं मिलता। मोह-माया के कारण बुद्धिहीन हुए वह वाद-विवाद करते रहते हैं। अज्ञान बुद्धि वाले हमेशा अज्ञानता के अँधकार में हैं। गुरमुख ईश्वर को जान लेते हैं और हरि का यशोगान करते रहते हैं॥२॥ जो व्यक्ति अकथनीय प्रभु की महिमा का कथन करता रहता है, वह नाम द्वारा सुन्दर बन जाता है। गुरु की मति द्वारा सत्य-प्रभु उसके मन को प्रिय लगता है। वह दिन-रात सत्य-परमेश्वर का ही सिमरन करता रहता है। उसका यह मन सत्य-प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है॥३॥ जो सत्य-प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं, उन्हें सत्य-प्रभु ही प्रिय लगता है। प्रभु उन्हें अपने प्रेम की देन स्वयं ही देता है और यह देन देकर वह अफसोस नहीं करता। गुरु के शब्द से सत्य प्रभु सदैव ही जाना जाता है। सत्यस्वरूप प्रभु को मिलने से बड़ा आनंद प्राप्त होता है॥४॥ झूठ एवं कपट की मैल उनको नहीं लगती क्योंकि वे रात-दिन गुरु की कृपा से भजन में जागते हैं। निर्मल नाम उनके हृदय में निवास करता है और उनकी ज्योति प्रभु की ज्योति में विलीन हो जाती है॥५॥ मनमुख ऐसी पुस्तकें पढ़ते हैं, जिनका संबंध त्रिगुणात्मक माया से होता है। वह परम तत्व ईश्वर को नहीं समझ सकते। ऐसे व्यक्ति जगत् के मूल प्रभु को भूले हुए हैं परन्तु गुरु की वाणी का बोध नहीं करते। वे मोह-माया में मग्न हैं और उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता कि भगवान गुरु की वाणी द्वारा ही मिलता है॥६॥ वेद पुकार-पुकार कर

कह रहे हैं कि माया त्रिगुणात्मक है परन्तु स्वेच्छाचारी जीवों को कोई सूझ ही नहीं होती, उन्हें तो माया का मोह ही प्यारा लगता है। वह त्रिगुणात्मक माया से संबंधित ग्रंथ पढ़ते रहते हैं परन्तु उस एक ईश्वर को नहीं जान सकते। वह एक ईश्वर को समझे बिना बहुत दुःखी होते हैं॥७॥ जब भगवान को उपयुक्त लगता है तो ही वह जीव को अपने साथ मिला लेता है। भगवान गुरु-शब्द द्वारा जीव का भय एवं दुःख दूर कर देता है। हे नानक ! भगवान जिसे अपने नाम की महानता प्रदान कर देता है, वह अपने मन में नाम को बसाकर सुख प्राप्त करता है॥८॥३०॥३१॥

माझ महला ३ ॥ निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥ ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥ आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि रसु चखि सादु पावणिआ ॥ हरि रसु चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥ नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥ २ ॥ हउमै करै निहकरमी न होवै ॥ गुर परसादी हउमै खोवै ॥ अंतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥ ३ ॥ हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥ संत चुगहि नित गुरमुखि होई ॥ इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ४ ॥ निरमल हंसा प्रेम पिआरि ॥ हरि सरि वसै हउमै मारि ॥ अहिनिसि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु लाई ॥ इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥ जीवतु मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ६ ॥ रतनु पदारथु घर ते पाइआ ॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ गुर परसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥ ७ ॥ आपि उपाए तै आपे वेखै ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ८ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

ईश्वर स्वयं ही निर्गुण और स्वयं ही सगुण है। जो इस ज्ञान को समझ लेता है वही पण्डित बन जाता है। जो मनुष्य हरिनाम अपने हृदय में बसा लेता है, वह स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी भवसागर से पार करवा देता है॥१॥ मैं कुर्बान हूँ, मेरा जीवन भी उन पर कुर्बान है जो हरि रस का पान करते हैं और इसके स्वाद को प्राप्त करते हैं। जो हरि रस का पान करते हैं, वह पवित्र पुरुष हैं और वह निर्मल नाम का सिमरन करते हैं॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति शब्द का चिन्तन करता है, वहीं कर्मयोगी है। उसके हृदय में परम तत्त्व प्रभु का ज्ञान प्रगट हो जाता है और वह अपने अहंकार को नष्ट कर देता है। वह नाम-पदार्थ से नवनिधि पा लेता है और माया के त्रिगुणों को मिटाकर भगवान में लीन हो जाता है॥२॥ जो व्यक्ति अहंकार करता है, वह कर्मों के बंधनों से मुक्त नहीं होता। लेकिन गुरु की कृपा से मनुष्य अपना अहंकार नष्ट कर देता है। उसके अन्तर्मन में विवेक उत्पन्न हो जाता है, वह सदा अपने स्वरूप का चिंतन करता है और गुरु के शब्द से हरि-प्रभु का यशोगान करता है॥३॥ निर्मल भगवान स्वयं ही सरोवर है और स्वयं ही सागर है। संत रूपी हंस गुरु के माध्यम से सदैव ही इस सरोवर में से नाम रूपी मोती चुगते हैं। वह भगवान रूपी सरोवर में दिन-रात स्नान करते रहते हैं और अपने अहंकार की मैल स्वच्छ करते रहते हैं॥४॥ जीव रूपी हंस प्रेम एवं प्यार से निर्मल हो जाते हैं और अपने अहंकार को मार कर भगवान रूपी सरोवर में निवास करते हैं। वह दिन-रात सत्य नाम के प्रेम में अनुरक्त रहते हैं और भगवान के सागर में बसेरा कर लेते हैं॥५॥ मनमुख पाखंडी बगुले की तरह हमेशा मैला रहता है, जिसके मन को अहंकार की मैल लगी हुई है। वह तीर्थों पर स्नान करता है परन्तु उसके अहंकार की मैल दूर नहीं होती। उसकी अहंकार की मैल तभी दूर हो सकती है, यदि वह गुरु-शब्द का चिंतन करे और नम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करे॥६॥ जब

पूर्ण सतिगुरु ने उसे अपना शब्द सुनाया तो उसने अपनी आत्मा में ही हरि नाम रूपी अमूल्य रत्न पदार्थ पा लिया। गुरु की दया से उसके मन में से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है। उसके हृदय में ज्योति का प्रकाश हो गया है और उसने स्वयं ही अपने स्वरूप को पहचान लिया है॥७॥ प्रभु ने स्वयं ही जीवों की रचना की है और स्वयं ही अपनी रचना की देखभाल करता है। जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा करता है, वह प्रभु के दरबार में स्वीकार हो जाता है। हे नानक! जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है, गुरु की कृपा से वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है॥८॥३१॥३२॥

माझ महला ३ ॥ माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥ माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु लाए हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देवी देवा मूलु है माइआ ॥ सिम्रिति सासत जिंनि उपाइआ ॥ कामु क्रोधु पसरिआ संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥ ३ ॥ पेईअड़ै धन भरमि भुलाणी ॥ दूजै लागी फिरि पछोताणी ॥ हलतु पलतु दोवै गवाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअड़ै धन कंतु समाले ॥ गुर परसादी वेखै नाले ॥ पिर कै सहजि रहै रंगि राती सबदि सिंगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ ॥ दूजा भाउ गुर सबदि जलाइआ ॥ एको रवि रहिआ घट अंतरि मिलि सतसंगति हरि गुण गावणिआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु न सेवै सो काहे आइआ ॥ ध्रिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइआ ॥ मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥ आपे मेलै सबदि पछाणै ॥ नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

सम्पूर्ण संसार मोह-माया में लिप्त है। त्रिगुणी प्राणी माया में मोहित हुए दिखाई देते हैं। गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही सत्य का बोध करता है और अपनी वृति सहज ही चतुर्थ अवस्था में लगाता है॥ १॥ मैं उन पर तन-मन से कुर्बान हूँ जो गुरु की वाणी से मोह-माया की तृष्णा को जला देते हैं। जो प्राणी मोह-माया की तृष्णा को जला देता है और अपना मन हरि-प्रभु से लगाता है, वह हरि के दरबार में बड़ी शोभा पाता है॥ १॥ रहाउ॥ देवी-देवताओं का मूल माया है, जिन्होंने स्मृतियों एवं शास्त्रों को उत्पन्न किया है। इस संसार में काम, क्रोध प्रवृत्त है, इसलिए प्राणी आवागमन के चक्र में पड़कर जन्मता-मरता एवं कष्ट सहन करता है॥ २॥ भगवान ने मानव शरीर में एक ज्ञान रूपी रत्न डाल दिया है, जिसे गुरु की कृपा से हृदय में बसाया जाता है। वे ब्रह्मचार्य, जितेन्द्रिय, संयम धारण करके सत्य की भक्ति करते हैं परन्तु पूर्ण गुरु की दया से नाम का स्मरण प्राप्त होता है॥३॥ जो जीव-स्त्री अपने पीहर (मृत्युलोक) में भ्रम में पड़कर कुमार्ग लगी हुई है। द्वैतभाव में फँसी हुई वह अन्तः पश्चाताप करती है। वह अपना लोक तथा परलोक दोनों ही गंवा देती है और स्वप्न में भी उसको सुख नहीं मिलता॥ ४॥ जो जीव-स्त्री इहलोक में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण करती है, गुरु की कृपा से वह पति-परमेश्वर के निकट ही दर्शन करती है। वह सहज ही अपने प्रियतम के प्रेम में मग्न रहती है और उसकी वाणी को अपना हार-शृंगार बनाती है॥ ५॥ उनका ही जन्म सफल है जिन्होंने सतिगुरु को पाया है। गुरु के शब्द द्वारा उन्होंने माया-मोह को जला दिया है। सत्संग में सम्मिलित होकर वह एक ईश्वर का यशोगान करते हैं जो सबके हृदय में व्यापक है॥ ६॥ जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा नहीं करता, वह संसार में क्यों आया है? उसके जीवन को धिक्कार है। उसने अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गंवाया है। मनमुख नाम का सुमिरन नहीं करता। हरि नाम के बिना

वह बहुत कष्ट सहन करता है॥ ७॥ जिस प्रभु ने इस सृष्टि की रचना की है, वह इस बारे सबकुछ जानता है। प्रभु उनको अपने साथ मिला लेता है जो गुरु–शब्द को सदैव अपने नेत्रों में रखता है। हे नानक! नाम उन्हें ही मिलता है, जिनके मस्तक पर सुकर्मों के कारण आदि से ही भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं॥ ८॥ १॥ ३२॥ ३३॥

माझ महला ४ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु आपे ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ सभ महि वरतै एको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी निरंकारी नामु धिआवणिआ॥ तिसु रूपु न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥ २ ॥ तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥ भगती भरे तेरे भंडारा ॥ गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥ ३ ॥ अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुर परसादी तूं पावणिआ ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाई ॥ अपणी क्रिपा करहि तूं लैहि मिलाई ॥ पूरे गुर कै सबदि धिआईऐ सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ रसना गुणवंती गुण गावै ॥ नामु सलाहे सचे भावै ॥ गुरमुखि सदा रहै रंगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुखु करम करे अहंकारी ॥ जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ७ ॥ आपे करता दे वडिआई ॥ जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥ नानक नामु मिलै भउ भंजनु गुर सबदी सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३४ ॥

हे ईश्वर! तुम ही आदिपुरुष, अपरम्पार एवं सर्वज्ञ हो। वह स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही प्रलय करके सृष्टि का विनाश भी करता है। सबके भीतर एक ईश्वर ही व्यापक है। इस प्रकार अनुभव करके गुरमुख प्रभु के दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं॥ १॥ मैं तन–मन से उन पर बलिहारी हूँ, जो निरंकार परमात्मा के नाम का ध्यान करते हैं। उस प्रभु का न ही कोई रूप है अथवा न ही कोई रेखा है, उसे गुरमुखों ने घट–घट में देखा है। गुरमुख दूसरों को भी प्रभु के स्वरूप के दर्शन करवाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! तुम बड़े दयालु एवं कृपालु हो और तेरे अलावा अन्य कोई भी नहीं। जिस पर गुरु कृपा करता है, उसे ही वह अपना नाम देता है। वह व्यक्ति नाम द्वारा तेरे नाम में ही समा जाता है॥ २॥ हे नाथ! तुम स्वयं ही सच्चे सृजनहार हो। तेरे भण्डार प्रभु–भक्ति से परिपूर्ण हैं। जिसे गुरु के माध्यम से तेरा नाम मिल जाता है, उसका मन प्रसन्न हो जाता है और वह सहज ही समाधि लगाता है॥ ३॥ हे प्रभु! रात–दिन मैं तेरा ही यशोगान करता हूँ। हे मेरे प्रियतम प्रभु! मैं तेरी ही सराहना करता हूँ। हे ईश्वर! तेरे अलावा मैं किसी अन्य से नहीं माँगता। गुरु की दया से ही तुम प्राप्त होते हो॥ ४॥ हे अगम्य, अगोचर प्रभु! तेरी सीमा का पार नहीं पाया जा सकता। हे सृष्टिकर्त्ता! अपनी कृपा से तुम प्राणी को अपने साथ मिला लेते हो। तेरा ध्यान पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही करना चाहिए। परमेश्वर की सेवा से बड़ा सुख प्राप्त होता है॥ ५॥ वही रसना गुणवान है जो प्रभु का गुणगान करती है। नाम की उपमा करने से प्राणी सत्य स्वरूप ईश्वर को अच्छा लगने लग जाता है। पवित्रात्मा अपने प्रियतम–प्रभु के प्रेम में मग्न रहती है और सत्य से मिलकर बड़ी शोभा प्राप्त करती है॥ ६॥ मनमुख अपना कर्म–धर्म अहंकारवश ही करता है। वह अपना समूचा जीवन जुए के खेल में पराजित कर देता है। उसके हृदय में लालच एवं अज्ञानता का घोर अंधकार है, इसलिए वह पुनःपुनः जन्म लेता और मरता है अर्थात् आवागमन के चक्र में फँसा रहता है॥ ७॥ हे सृष्टिकर्त्ता! तुम उन्हें स्वयं ही महानता प्रदान करते हो, जिनकी किस्मत में उसने स्वयं ही आदि से ऐसा लेख लिखा हुआ है। हे नानक! जिसे गुरु के शब्द द्वारा भयनाशक परमात्मा का नाम मिल जाता है, वह बहुत सुख प्राप्त करता है॥ ८॥ १॥ ३४॥

माझ महला ५ घरु १ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥ नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥ अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा गुर कै सबदि लखावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥ संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥ ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥ कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुर मिलि हिरदै गावणिआ ॥ २ ॥ आठ पहर तुधु जापे पवना ॥ धरती सेवक पाइक चरना ॥ खाणी बाणी सरब निवासी सभना कै मनि भावणिआ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु गुरमुखि जापै ॥ पूरे गुर कै सबदि सिञापै ॥ जिन पीआ सेई त्रिपतासे सचे सचि अघावणिआ ॥ ४ ॥ तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥ अनद बिनोद करे सद केला ॥ सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मनु लावणिआ ॥ ५ ॥ पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥ पिछो दे तैं जंतु उपाहा ॥ तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै न कोई लावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु तूं तुठा सो तुधु धिआए ॥ साध जना का मंत्रु कमाए ॥ आपि तरै सगले कुल तारे तिसु दरगह ठाक न पावणिआ ॥ ७ ॥ तूं वडा तूं ऊचो ऊचा ॥ तूं बेअंतु अति मूचो मूचा ॥ हउ कुरबाणी तेरै वंञा नानक दास दसावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३५ ॥

अलक्ष्य परमात्मा जीव के हृदय में ही विद्यमान है लेकिन उसे देखा नहीं जा सकता। उसने नाम-रत्न को आत्म-स्वरूप में गुप्त रखा हुआ है। अगम्य, अगोचर परमात्मा सर्वश्रेष्ठ है, जिसे गुरु के शब्द द्वारा ही जाना जा सकता है॥ १॥ मैं तन-मन से उन पर कुर्बान हूँ, जो इस कलियुग में जीवों को भगवान का नाम सुनाते हैं। हे सच्चे परमेश्वर! तुझे संत अति प्रिय हैं, जिन्हें तूने सहारा दिया हुआ है। बड़े सौभाग्य से उनके दर्शन प्राप्त होते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिस प्रभु को पाने के लिए साधक, सिद्ध ढूँढते फिरते हैं, ब्रह्मा, इन्द्र भी अपने हृदय में उसी का ध्यान करते हैं और जिसे तेतीस करोड़ देवी-देवता तलाशते हैं, गुरु से भेंट करके उस प्रभु का संतजन अपने मन में यशोगान करते रहते हैं॥२॥ हे प्रभु! वायु देवता आठ प्रहर तेरा ही सिमरन करता रहता है और धरती माता तेरे चरणों की सेवा करती है। हे ईश्वर! समस्त दिशाओं एवं समस्त वाणियों में तेरा निवास है। सर्वव्यापक परमात्मा सबके मन को अच्छा लगता है॥ ३॥ हे सत्यस्वरूप परमात्मा! गुरमुख तेरा ही जाप करते हैं। लेकिन पूर्ण गुरु की वाणी द्वारा ही बोध होता है। जो परमात्मा के नाम अमृत का पान करते हैं, वे तृप्त हो जाते हैं। वे सत्य प्रभु के सत्य-नाम से कृतार्थ हो गए हैं॥ ४॥ जिस व्यक्ति के हृदय-घर में सहज अवस्था विद्यमान है वही सुखी रहता है। वह मोद-प्रमोद से सदैव आनन्द करता है। वही धनवान है और वही परम सम्राट है, जो गुरु चरणों में अपना हृदय लगाता है॥ ५॥ हे अकाल पुरुष! सर्वप्रथम तूने प्राणियों के लिए भोजन पहुँचाया है। तदुपरांत तुमने प्राणियों को उत्पन्न किया है। हे मेरे स्वामी! तेरे जैसा महान दाता अन्य कोई भी नहीं। हे प्रभु! कोई भी तेरी बराबरी नहीं कर सकता॥ ६॥ हे ईश्वर! जिस पर तुम परम-प्रसन्न हुए हो, वही तेरी आराधना करता है। ऐसा व्यक्ति ही संत-जनों के मंत्र का अनुसरण करता है। वह स्वयं इस संसार सागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी पार करवा देता है। प्रभु के दरबार में पहुँचने में उसे कोई रोक-टोक नहीं होती॥७॥ हे प्रभु! तुम महान हो, तुम सर्वोच्च एवं सर्वोपरि हो। हे दाता! तुम अनन्त हो और सर्वश्रेष्ठ हो। हे प्रभु! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। हे नानक! मैं प्रभु के दासों का दास हूँ॥ ८॥ १॥ ३५॥

माझ महला ५ ॥ कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥ कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥ कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥ १ ॥ किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥ किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥ कउण करम कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ

॥ २ ॥ कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥ कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥ किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥ ३ ॥ कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥ कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥ कउणु सु चाल जितु पारब्रहमु धिआए किनि बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥ ४ ॥ गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥ गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥ धंनु गिरही उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥ ५ ॥ हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥ गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥ गुरमुखि करम गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥ ६ ॥ गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥ गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥ गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥ ७ ॥ गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥ गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥ गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआए गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥ ८ ॥ सगली बणत बणाई आपे ॥ आपे करे कराए थापे ॥ इकसु ते होइओ अनंता नानक एकसु माहि समाए जीउ ॥ ९ ॥ २ ॥ ३६ ॥

{यहाँ पर गुरुदेव ने चौबीस प्रश्न प्रस्तुत किए हैं और बाद में प्रश्नों के उत्तर दिए हैं।}

वह कौन है जो माया के बंधनों से मुक्त हो गया है? और कौन परमात्मा से नाम द्वारा जुड़ा हुआ है? कौन ज्ञानी है? और कौन वक्ता है? कौन गृहस्थी है? और कौन त्यागी है? और परमेश्वर का मूल्य कौन पा सकता है?॥ १॥ मनुष्य कैसे माया के बंधनों में बंध जाता है? और कैसे मुक्त हो जाता है? किस विधि द्वारा जीव आवागमन (जन्म–मरण) से बच सकता है? धर्म–कर्म करने वाला कौन है? और वासना रहित होकर कर्म करने वाला कौन है? कौन ईश्वर के नाम की महिमा करता और अन्यों से महिमा करवाता है॥ २॥ जगत् में कौन सुखी है और कौन दुखी है? कौन समक्ष है और कौन विमुख? किस विधि से परमात्मा मिलता है और किस विधि से मनुष्य उससे बिछुड़ जाता है? यह विधि मुझे कौन बतलाएगा?॥ ३॥ वह कौन–सा दिव्य अक्षर है, जिसके अध्ययन से मन का भटकना मिट जाता है? वह कौन–सा उपदेश है? जिसके द्वारा प्राणी सुख–दुख को एक समान जानकर सहन करता है। वह कौन–सी युक्ति है? जिसके द्वारा प्राणी पारब्रह्म–परमेश्वर की आराधना करे? किस विधि द्वारा प्रभु का भजन कर सकता है?॥ ४॥ गुरु जी उत्तर देते हैं कि गुरमुख मुक्त है और गुरमुख ईश्वर से जुड़ा रहता है। गुरमुख ज्ञानी है और गुरमुख वक्ता है। धन्य है वह गुरमुख चाहे वह गृहस्थी हो अथवा त्यागी। गुरमुख ही प्रभु का मूल्यांकन जानता है॥ ५॥ जीव अहंकारवश माया के बंधनों में बंध जाता है परन्तु गुरमुख माया के बधनों से मुक्त हो जाता है। गुरमुख का आवागमन जीवन–मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है। गुरमुख सुकर्म (धर्म–कर्म) करता है, परन्तु फल की इच्छा नहीं रखता। गुरमुख प्रभु–प्रेम में जो भी कर्म करता है, वह शोभनीय है॥ ६॥ इस दुनिया में गुरमुख सदैव सुखी रहता है परन्तु मनमुख सदैव दुखी रहता है। गुरमुख हमेशा ही भगवान के समक्ष रहता है किन्तु मनमुख भगवान से विमुख हो जाता है। गुरमुख ही भगवान से मिलता है। परन्तु मनमुख भगवान से बिछुड़ जाता है। गुरु ही भगवान से मिलन की विधि प्रगट करता है॥ ७॥ गुरु का उपदेश दिव्य अक्षर है, जिससे भटका हुआ मन वश में आ जाता है। गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य दुःख एवं सुख को एक समान समझता है। गुरु का उपदेश ही सद्मार्ग है, जिस द्वारा पारब्रह्म प्रभु का चिन्तन किया जाता है। गुरमुख ही परमेश्वर का कीर्तन गायन करते हैं॥ ८॥ जगत–रचना की सारी संरचना प्रभु ने आप ही की है। परमात्मा प्राणियों का कर्त्ता है, स्वयं ही कर्म करवाता है और स्वयं ही जीवों को पैदा करता है। वह सृष्टि रचना के समय अनन्त रूप हो जाता है। हे नानक! जगत् के प्रलयकाल में समस्त प्राणी एक ईश्वर में ही समा जाते हैं॥ ९॥ २॥ ३६॥

माझ महला ५ ॥ प्रभु अबिनासी ता किआ काड़ा ॥ हरि भगवंता ता जनु खरा सुखाला ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता तूं करहि सोई सुखु पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥ तूं मेरा परबतु तूं मेरा ओला तुम संगि लवै न लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥ घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥ थानि थनंतरि तूंहै तूंहै इको इकु वरतावणिआ ॥ २ ॥ सगल मनोरथ तूं देवणहारा ॥ भगती भाइ भरे भंडारा ॥ दइआ धारि राखे तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥ ३ ॥ अंध कूप ते कंढै चाड़े ॥ करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ गुण गावहि पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥ ४ ॥ ऐथै ओथै तूंहै रखवाला ॥ मात गरभ महि तुम ही पाला ॥ माइआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ किआ गुण तेरे आखि समाली ॥ मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली ॥ तूं मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥ ६ ॥ जिस कउ तूं प्रभ भइआ सहाई ॥ तिसु तती वाउ न लगै काई ॥ तू साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥ ७ ॥ तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥ तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥ तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ३७ ॥

हे अविनाशी प्रभु ! जब तू मेरा रखवाला है तो मुझे क्या चिंता है ? हे हरि-परमेश्वर ! जब तू मेरा रक्षक है तो मैं तेरा उपासक बहुत सुखी रहता हूँ। तू ही मेरी आत्मा, प्राण एवं मान-प्रतिष्ठा है और तू ही सुखदाता है। तुम जो कुछ भी करते हो, उससे ही मैं सुख प्राप्त करता हूँ॥ १॥ मैं उन गुरमुखों पर तन-मन से बलिहारी हूँ जिनके मन एवं तन को तुम अच्छे लगते हो। तू ही मेरा पर्वत है और तू ही मेरा आधार है। हे प्रभु ! तेरे साथ कोई भी समानता नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति को तेरा किया (इच्छा) मीठा लगता है, उसे पारब्रह्म-प्रभु प्रत्येक जीव के हृदय में विद्यमान दिखाई देता है। एक तू ही समस्त स्थानों में रहता है। एक तू ही सर्वत्र अपना हुक्म चला रहा है॥ २॥ हे प्रभु ! तुम समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाले हो। तेरे भण्डार प्रेम एवं भक्ति से भरे हुए हैं। हे नाथ ! जिन पर तुम दया करके रक्षा करते हो, वह तेरी पूर्ण कृपा से तुझ में ही समा जाते हैं॥ ३॥ हे ईश्वर ! तूने अपनी कृपा-दृष्टि करके अपने भक्तों को कृतार्थ कर दिया है और उन्हें संसार रूपी अंधकूप में से निकाल कर पार कर दिया है। हे पूर्ण अविनाशी प्रभु ! सेवक तेरे गुणों का गुणगान करते हैं। कहने एवं श्रवण करने से भी प्रभु के गुणों में कभी कमी नहीं आती॥ ४॥ हे प्रभु ! इहलोक तथा परलोक में तुम ही रक्षक हो। तुम ही माता के गर्भ में आए शिशु का पालन-पोषण करते हो। जो प्रभु के प्रेम में मग्न हुए उसकी कीर्ति का गायन करते हैं, उन्हें माया की अग्नि प्रभावित नहीं कर सकती॥ ५॥ हे परमात्मा ! मैं तेरे कौन-कौन से गुणों को कहकर स्मरण करूँ? मैं अपने मन एवं तन में तुझे ही मौजूद देखता हूँ। हे प्रभु ! तुम ही मेरे मित्र, मेरे साजन एवं मेरे स्वामी हो। तेरे अलावा मैं अन्य किसी को भी नहीं जानता॥ ६॥ हे प्रभु ! जिस पुरुष के तुम सहायक सिद्ध हुए हो, उसे कोई गर्म हवा भी नहीं लगती अर्थात् किसी प्रकार की कोई पीड़ा नहीं आती। हे परमात्मा ! तू सबका मालिक है, तू ही आश्रयदाता एवं सुखदाता है। सत्संग में तेरे नाम की आराधना करने से तुम प्रकट हो जाते हो॥ ७॥ हे प्रभु ! तुम सर्वोच्च, अथाह, अनन्त एवं अनमोल हो। तू ही मेरा सच्चा साहिब है और मैं तेरा सेवक एवं दास हूँ। तुम सम्राट हो और तेरा साम्राज्य सत्य है। हे नानक ! मैं प्रभु पर तन-मन से न्यौछावर हूँ॥ ८॥ ३॥ ३७॥

माझ महला ५ घरु २ ॥ नित नित दयु समालीऐ ॥ मूलि न मनहु विसारीऐ ॥ रहाउ ॥ संता संगति पाईऐ ॥ जितु जम कै पंथि न जाईऐ ॥ तोसा हरि का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥ १ ॥ जो सिमरंदे सांईऐ ॥ नरकि न सेई पाईऐ ॥ तती वाउ न लगई जिन मनि वुठा आइ जीउ ॥ २ ॥ सेई सुंदर सोहणे ॥ साधसंगि जिन बैहणे ॥ हरि धनु जिनी संजिआ सेई गंभीर अपार जीउ ॥ ३ ॥ हरि अमिउ रसाइणु पीवीऐ ॥ मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥ कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥ ४ ॥ जो हरि कीता आपणा ॥ तिनहि गुसाई जापणा ॥ सो सूरा परधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥ ५ ॥ मन मंधे प्रभु अवगाहीआ ॥ एहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥ मंदा मूलि न उपजिओ तरे सची कारै लागि जीउ ॥ ६ ॥ करता मंनि वसाइआ ॥ जनमै का फलु पाइआ ॥ मनि भावंदा कंतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥ ७ ॥ अटल पदारथु पाइआ ॥ भै भंजन की सरणाइआ ॥ लाइ अंचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ३८ ॥

हे प्राणी ! हमें सदैव ही दयालु भगवान का सिमरन करना चाहिए और उस प्रभु को कभी भी अपने हृदय से विस्मृत नहीं करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ यदि सन्तों की संगति की जाए तो जीव को यम–मार्ग में नहीं जाना पड़ेगा। हरि के नाम का यात्रा–खर्च प्राप्त करो। उसे प्राप्त करने से तेरी वंश को कोई कलंक नहीं लगेगा॥ १॥ जो व्यक्ति परमात्मा की आराधना करते हैं, उन्हें नरक में नहीं डाला जाता। जिनके मन में ईश्वर ने आकर निवास कर लिया है, उनको गर्म हवा भी नहीं लगती अर्थात् उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचता॥ २॥ वहीं व्यक्ति सुन्दर एवं शोभनीय हैं जो सत्संग में वास करते हैं। जिन्होंने ईश्वर के नाम का धन अर्जित किया है वह बड़े दूरदर्शी और अपरम्पार हैं॥ ३॥ जो प्रभु–भक्त सत्संग में मिलकर हरि–नाम रूपी अमृत रस का पान करता है, मैं उस भक्त के दर्शन करके ही जीता हूँ। हे प्राणी ! सदैव गुरु–चरणों की पूजा करके अपने समस्त कार्य संवार लो॥ ४॥ जिसे प्रभु ने अपना सेवक बना लिया है, वहीं भगवान का सिमरन करता है। वही शूरवीर है और वही प्रधान है जिसके मस्तक पर भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं॥ ५॥ जिस व्यक्ति ने भगवान का अपने मन में सिमरन किया है, उसने ही इस रस का पान किया है। हरि–रस का भोग ही प्रभुत्ता के रस मानने की भाँति है। नाम–सिमरन करने वालों के मन में कदाचित बुराई उत्पन्न नहीं होती। वे नाम–सिमरन के शुभ–कर्म में लगकर भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ६॥ जिसने सृष्टि–कर्त्ता प्रभु को अपने हृदय में बसा लिया है उसने मानव जीवन का फल प्राप्त कर लिया है। हे जीव–स्त्री ! तुझे अपना मनपसंद हरि–प्रभु मिल गया है और अब तेरा सुहाग स्थिर हो गया है॥ ७॥ भयनाशक प्रभु की शरण में आने से तुझे हरि–नाम रूपी अटल पदार्थ मिल गया है। हे नानक ! भगवान ने अपने दामन से लगाकर तुझे भवसागर से पार कर दिया है और तूने अपनी जीवन–बाजी को जीत कर अपार प्रभु को प्राप्त कर लिया है॥ ८॥ ४॥ ३८॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ माझ महला ५ घरु ३ ॥

हरि जपि जपे मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि गुरदेउ मिटि गए भै दूरे ॥ १ ॥ सरनि आवै पारब्रहम की ता फिरि काहे झूरे ॥ २ ॥ चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥ ३ ॥ घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥ ४ ॥ पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की धूरे ॥ ५ ॥ सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरूरे ॥ ६ ॥ करतै कीआ तपावसो दुसट मुए होइ मूरे ॥ ७ ॥ नानक रता सचि नाइ हरि वेखै सदा हजूरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ ३६ ॥ १ ॥ ३२ ॥ १ ॥ ५ ॥ ३६॥

भगवान का नाम जपने से मेरे मन को धैर्य हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ गुरदेव का नाम–सिमरन करने से मेरे तमाम भय मिट गए हैं॥ १॥ जो पारब्रह्म की शरण में आ जाता है, वह फिर चिन्ता क्यों करेगा?॥ २॥ संतों व साधुजनों के चरणों की सेवा करने से मेरी समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो गई हैं॥ ३॥ कण–कण में एक ईश्वर ही विद्यमान है। जल, थल एवं गगन में भी वही समाया हुआ है॥ ४॥ संतों के चरणों की धूलि द्वारा पवित्र होकर मैंने पापों के विनाशक प्रभु की सेवा की है॥ ५॥ सारी सृष्टि को मालिक प्रभु ने स्वयं ही माया–जाल में से मुक्त किया है और सारी सृष्टि भगवान का नाम जप कर शीतल हो गई है॥ ६॥ सृजनहार प्रभु ने स्वयं इन्साफ किया है और काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि सभी दुष्ट मूक होकर प्राण त्याग गए हैं॥ ७॥ हे नानक! जो व्यक्ति सत्य–नाम में मग्न हो जाता है, वह प्रभु–परमेश्वर को सदैव अपने नेत्रों के समक्ष प्रत्यक्ष देखता है॥ ८॥ ५॥ ३६॥ १॥ ३२॥ १॥ ५॥ ३६॥

बारह माहा मांझ महला ५ घरु ४ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥ १ ॥

हे मेरे राम! पूर्व जन्म के कृत–कर्मों के अनुसार लिखी किस्मत के कारण हम तुझसे विछुड़ गए हैं, अतः कृपा करके हमें अपने साथ मिला लो। हे प्रभु! चारों ही कोनों उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम एवं दसों दिशाओं में भटकने के पश्चात थककर हम तेरी शरण में आए हैं। दूध न देने वाली गाय किसी भी कार्य नहीं आती। जल के बिना फसल मुरझा जाती है और उससे दाम बटोरने हेतु अनाज पैदा नहीं होता। यदि हम प्रभु–पति अपने मित्र से न मिलें तो हम किस तरह विश्राम पा सकते हैं? वह घर, गांव एवं नगर जहाँ पर हरि प्रभु प्रत्यक्ष नहीं होता, अग्निकुण्ड के तुल्य है। समूह हार–शृंगार, पान एवं रस सहित शरीर के सभी अंग व्यर्थ हैं। प्रभु–परमेश्वर के बिना सभी मित्र एवं सखा यमदूत के तुल्य हैं। नानक की विनती है कि हे प्रभु! अपनी कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए। हे सतिगुरु! मुझे मेरे स्वामी प्रभु से मिला दो, जिसका धाम (बैकुण्ठ) सदैव अटल है॥ १॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा॥ संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥ हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा॥ २ ॥

यदि चैत्र के महीने में गोविन्द का सिमरन किया जाए तो बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। संतजनों से मिलकर जिह्वा से नाम का जाप करने से हरि–प्रभु पाया जाता है। जिन्होंने हरि–प्रभु को प्राप्त कर लिया है, उनका ही जगत् में जन्म लेना सफल है। प्रभु को एक क्षण भर के लिए भी स्मरण न करने से मनुष्य के तमाम जन्म को ही व्यर्थ गया समझो। परमेश्वर जल, थल, एवं गगन में सर्वत्र विद्यमान

है और वनों में भी मौजूद है। यदि ऐसा प्रभु मुझे स्मरण न हो तो कैसे बताऊं कि मुझे कितना दुःख होता है ? जिन्होंने उस पारब्रह्म–प्रभु को स्मरण किया है, वे बड़े भाग्यवान हैं। हे नानक ! मेरा मन हरि के दर्शन करने हेतु अभिलाषी है और मेरे मन में उसके दर्शनों की तीव्र लालसा बनी हुई है। मैं उसके चरण स्पर्श करता हूँ जो मुझे चैत्र के महीने में उस ईश्वर से मिला दे॥ २॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥ ३ ॥

वैसाख के महीने में वह जीव–स्त्रियाँ कैसे धैर्य करें, जिनका अपने प्रियतम से विरहा हुआ है। अपने हरि–प्रभु साजन को भुलाकर वह झूठी माया के मोह में फँस गई हैं। मरणोपरांत पुत्र, पत्नी तथा धन–दौलत प्राणी के साथ नहीं जाते अपितु अविनाशी प्रभु ही उसका रक्षक बनता है। सारी दुनिया झूठे कर्मों की लगन में मोहबद्ध उलझ–उलझकर नष्ट हो गई है। आगे परलोक में एक ईश्वर के नाम के अलावा मनुष्य के किए हुए सभी कर्म–धर्म छीन लिए जाते हैं। अर्थात् उन्हें कोई फल नहीं मिलता। दयालु परमात्मा को विस्मृत करके मनुष्य तबाह हो जाता है। हरि–प्रभु के अलावा अन्य कोई भी जीव का रक्षक नहीं बनता। जो प्रियतम के चरणों में लग जाते हैं, वे बड़े पवित्र हैं और उनकी बहुत शोभा होती है। नानक की प्रभु के समक्ष प्रार्थना है कि हे प्रभु ! मुझे आकर मिलो एवं मुझे तेरे दर्शन प्राप्त होते रहें। वैसाख का महीना मुझे तभी सुन्दर लगता है यदि कोई हरि का संत मिल जाए॥ ३॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेइ कहीअहि धंनि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥ ४ ॥

ज्येष्ठ के महीने में सिमरन द्वारा उस भगवान से जुड़ने की आवश्यकता है जिसके समक्ष जगत् के सभी जीव अपना सिर झुकाते हैं। जो व्यक्ति हरि–मित्र के दामन से जुड़ा हुआ है अर्थात् शरण में है, उसे यम इत्यादि कोई भी बंदी नहीं बना सकता। प्रभु का नाम ऐसे माणिक–मोतियों के तुल्य है, जिसे कोई भी सेंध लगाकर चुरा नहीं सकता। जितने भी रंग–रूप मन को प्रिय लगते हैं, वे सभी रंग नारायण के ही हैं। भगवान वही कुछ करता है, जो उसकी इच्छा होती है और जगत् के सभी जीव भी वही कुछ करते हैं। जिनको प्रभु ने अपना सेवक बनाया है, लोग उन्हें ही धन्य–धन्य कहते हैं। यदि मनुष्य को भगवान उसके अपने प्रयास से मिल सकता हो तो वह उनसे जुदा होकर क्यों विलाप करें? हे नानक ! जिन्हें संतों की संगति मिल जाती है, वे प्रभु से मिलकर आनंद भोगते हैं। ज्येष्ठ का महीना उसके लिए ही हर्षोल्लास वाला है, जिसे जगत् का स्वामी भगवान मिल जाता है। लेकिन भगवान उसे ही मिलता है जिसके माथे पर किस्मत के शुभ लेख होते हैं॥ ४॥

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि

विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥ ५ ॥

आषाढ़ का महीना, उसे ही तपता हुआ लगता है जिसके पास हरि-प्रभु नहीं है। जो जीव-स्त्री जगजीवन प्रभु को त्याग कर मनुष्य पर उम्मीद और विश्वास रखती है, वह मोह-माया में फँसकर नष्ट हो जाती है और मरणोपरांत उसके गले में यम की फाँसी डाली जाती है। मनुष्य जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल प्राप्त होगा अर्थात् प्राणी जिस तरह बोएगा वैसे ही काटेगा, जो कुछ मस्तक में भाग्य विद्यमान है। जब जीव-स्त्री की जीवन-रात्रि व्यतीत हो जाती है तो वह पश्चाताप करती है और निराश होकर संसार त्याग देती है। जो संतों से मिलते हैं, वह प्रभु के दरबार में बन्धनमुक्त हुए शोभायमान होते हैं। हे प्रभु! मुझ पर कृपा कीजिए जिससे तेरे दर्शनों की अभिलाषा हो। नानक की यही प्रार्थना है कि हे प्रभु! तेरे अलावा मेरा अन्य कोई भी नहीं। आषाढ़ का महीना उसे ही सुहावना लगता है, जिसके हृदय में ईश्वर के चरणों का निवास हो जाता है॥ ५॥

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥ ६ ॥

श्रावण के महीने में वहीं जीव-स्त्री वनस्पति की तरह प्रफुल्लित हो जाती है, जिसका प्रभु के चरण कंवलों से प्रेम है। उसका तन-मन सद्पुरुष के प्रेम से मग्न हो जाता है और सत्य-परमेश्वर का नाम ही उसका एकमात्र सहारा बन जाता है। विष-रूपी माया का मोह झूठा है। सब कुछ जो दृष्टिमान होता है, वह क्षणभंगुर है। हरि-नाम रूपी अमृत की बूँद बहुत सुन्दर है। संतों-गुरुओं से मिलकर मनुष्य उनका पान करता है। प्रभु के मिलन से सारी वनस्पति वन एवं तृण प्रफुल्लित हो गए हैं। प्रभु बेअंत एवं सब कुछ करने में समर्थ है। ईश्वर के मिलन हेतु मेरा हृदय बहुत व्याकुल है। परन्तु प्रभु अपनी कृपा से ही जीव को अपने साथ मिलाता है। जो सखियाँ ईश्वर को प्राप्त हुई हैं, उन पर मैं सदैव कुर्बान हूँ। नानक जी का कथन है कि हे प्रभु! मुझ पर दया करो। प्रभु अपने नाम द्वारा जीव को संवारने वाला है। श्रावण का महीना उन सुहागिनों के लिए ही सुन्दर है, जिन्होंने राम नाम को अपने हृदय का हार बना लिया है॥ ६॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु॥ ७॥

भादों के महीने में जो जीवात्मा पति-प्रभु को छोड़कर द्वैतभाव से प्रीति लगाती है, वह भ्रम में भटकी हुई है। चाहे वह लाखों ही हार-श्रृंगार कर ले परन्तु वह किसी भी लाभ के नहीं। जिस दिन शरीर नाश होता है, उस समय लोग उसे प्रेत कहते हैं। यमदूत आत्मा को पकड़ कर चल देते हैं और

किसी को भी भेद नहीं बताते। जिनके साथ मनुष्य का बड़ा स्नेह होता है, एक क्षण में उस को त्याग कर दूर चले जाते हैं। जब मनुष्य की मृत्यु आती है तो वह अपने हाथ मरोड़ता है। यमदूतों को देख कर उसका शरीर कांपता है और प्राण निकलने के पश्चात् उसका शरीर काले से सफेद हो जाता है। मनुष्य जैसा बोता है वैसा ही काटता है अर्थात् जैसे कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। हे नानक ! जो व्यक्ति प्रभु की शरण में आता है, प्रभु उसे भवसागर से पार होने के लिए चरण रूपी जहाज दे देता है अर्थात् अपने चरणों की सेवा प्रदान करता है। भादों के महीने में जो व्यक्ति रक्षक गुरु से स्नेह करते हैं, वे नरककुण्ड में नहीं पड़ते॥ ७॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥ ८ ॥

आश्विन के महीने में मेरे मन में प्रभु से प्रेम करने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ है। मैं कैसे जाकर ईश्वर से मिलूं ? मेरे मन एवं तन में ईश्वर के दर्शनों की अधिकतर तृष्णा है। हे मेरी जननी ! कोई संत आकर मुझे उससे मिला दे। मैं संतों के चरणों में लगा हूँ क्योंकि संत प्रभु से प्रेम करने वालों की सहायता करते हैं। परमेश्वर के बिना सुख की उपलब्धि हेतु अन्य कोई स्थान नहीं है। जिन्होंने प्रभु प्रेम का अमृतपान किया है, वह तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं। अपना अहंकार त्याग कर वह प्रार्थना करते हैं, "हे ईश्वर ! हमें अपने दामन के साथ लगा लो।" जिन जीव-स्त्रियों को प्रभु पति ने अपने साथ मिला लिया है, वह कदापि जुदा होकर अन्य कहीं भी नहीं जाती। हे नानक ! भगवान की शरण लो, क्योंकि उस प्रभु के अलावा अन्य कोई भी शरण देने में समर्थ नहीं है। आश्विन के महीने में जिन पर परमेश्वर की दया होती है, वह बहुत सुखपूर्वक रहती हैं॥ ८॥

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥

कार्तिक माह में हे प्राणी ! पूर्व जन्मों में किए शुभ-अशुभ कर्मों के फल भोगने ही पड़ते हैं। अत: किसी अन्य पर दोष लगाना न्यायसंगत नहीं। पारब्रह्म-प्रभु को विस्मृत करके मनुष्य को समस्त रोग लग जाते हैं। जो व्यक्ति राम से विमुख हो जाते हैं, वे जन्म-जन्म के लिए जुदा हो जाते हैं। जितने भी भोगने वाले पदार्थ हैं, वह एक क्षण में ही उसके लिए कड़वे हो जाते हैं। फिर अपने रोज के दुःख किसके समक्ष रोएँ ? जुदाई को दूर करने के लिए कोई भी मध्यस्थ नहीं बनता। मनुष्य के करने से कुछ भी नहीं हो सकता, यदि प्रारम्भ से ही मनुष्य की किस्मत में ऐसा संयोग लिखा हुआ था। सौभाग्य से मेरा प्रभु मिल जाता है तो जुदाई के समूह दुख दूर हो जाते हैं। नानक का कथन है कि हे मेरे प्रभु ! तू जीवों को माया के बंधनों से मुक्त करने वाला है इसलिए नानक को भी बंधनों से मुक्त कर दो। यदि कार्तिक के महीने में संतों की संगति हो जाए तो समस्त चिंताएँ मिट जाती हैं॥ ९॥

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥ १० ॥

मार्गशीर्ष महीने में जीव-स्त्रियाँ भगवान के साथ बैठी भजन करती हुई बहुत सुन्दर लगती हैं। उनकी शोभा वर्णन नहीं की जा सकती, जिनको ईश्वर ने अपने साथ मिला लिया है। अपनी सत्संगी सहेलियों के साथ सत्संग में मिलकर राम का सिमरन करने से मेरा मन एवं तन प्रफुल्लित हो गया है। जो जीव-स्त्रियाँ संतजनों की संगति से वंचित रहती हैं, वे पति-प्रभु से जुदा होने के कारण अकेली रहती हैं। उनका पति-प्रभु से जुदाई का दुःख कभी दूर नहीं होता और वह यमदूत के पंजे में फँस जाती हैं। जिन्होंने अपने ईश्वर के साथ रमण किया है, वह उसकी सेवा में सदैव खड़ी दिखती हैं। उनका कण्ठ प्रभु-नाम रुपी रत्न-जवाहर, माणिकों तथा हीरों से जड़ित हुआ है। हे नानक ! वह उनके चरणों की धूलि का अभिलाषी है, जो ईश्वर के दरबार पर उसकी शरण में पड़े हैं। जो लोग मार्गशीर्ष महीने में ईश्वर की आराधना करते हैं, वह मुड़ कर जीवन-मृत्यु के बंधन में नहीं पड़ते और मुक्त हो जाते हैं॥ १०॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥ ११ ॥

पोष के महीने में हरि-प्रभु जिस जीव-स्त्री को उसके गले से लगकर मिलता है, उसे शीत नहीं लगती। प्रभु के चरण-कमलों का प्रेम उसके मन को बांधकर रखता है और उसकी सुरति मालिक-प्रभु के दर्शनों में लगी रहती है। वह गोविन्द गोपाल का सहारा लेती है और अपने स्वामी की सेवा करके नाम रूपी लाभ प्राप्त करती है। विष रूपी माया उसे प्रभावित नहीं कर सकती और वह संतों से मिलकर भगवान की महिमा गायन करती रहती है। वह जिस प्रभु से उत्पन्न हुई है, उसे मिलकर उसके प्रेम में लीन रहती है। पारब्रह्म प्रभु ने उसका हाथ पकड़ लिया है, वह पुनः जुदा नहीं होती। मैं लाख बार अपने अगम्य एवं अगोचर साजन हरि पर कुर्बान जाता हूँ। हे नानक ! जो जीव-स्त्रियाँ नारायण के द्वार पर नतमस्तक हो गई हैं, वह उनकी लाज-प्रतिष्ठा रखता है। पोष महीना उसके लिए सुन्दर एवं सर्वसुख प्रदान करने वाला है, जिसको बेपरवाह परमेश्वर क्षमा कर देता है॥ ११॥

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥ १२ ॥

माघ के महीने में साधुओं की चरणरज में स्नान करने को तीर्थ स्थलों के स्नान तुल्य समझो। भगवान के नाम का ध्यान करो एवं उसे सुनो तथा दूसरों को भी नाम का दान दो। नाम–सिमरन से जन्म–जन्मान्तरों की दुष्कर्मों की मलिनता दूर हो जाती है और मन का अहंकार दूर हो जाता है। इस तरह काम–क्रोध मोहित नहीं करते और लालच का कूकर (कुत्ता) नाश हो जाता है। संसार उनकी महिमा करता है जो सद्मार्ग पर चलते हैं। अठसठ तीर्थ स्थानों पर स्नान करने एवं समस्त दान–पुण्य करने से प्राणियों पर दया करना अधिकतर स्वीकार्य है। जिस पर दया करके ईश्वर यह गुण प्रदान करता है वह बुद्धिमान पुरुष है। नानक उन पर बलिहारी जाता है जो अपने ईश्वर से मिल गए हैं। माघ महीने में वहीं पवित्र कहे जाते हैं जिन पर पूर्ण गुरदेव जी मेहरबान हैं॥ १२॥

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥ १३ ॥

फाल्गुन के महीने में केवल वही आनंद प्राप्त करते हैं, जिनके हृदय में साजन हरि प्रभु प्रकट हुआ है। संतजन राम से मिलन करवाने हेतु जीव की सहायता कहते हैं। प्रभु ने कृपा करके संतों से मिला दिया है। उसकी हृदय रूपी शैय्या बहुत सुन्दर है, अब सर्व सुख प्राप्त हुए हैं और दुखों के लिए अब कोई स्थान नहीं। भाग्यशाली जीव–स्त्री की इच्छा पूरी हो गई है, उसे हरि–प्रभु वर के रूप में मिल गया है। वह अपनी सत्संगी सखियों सहित मंगल गीत गायन करती है और वह गोविन्द का ही भजन करती रहती है। हरि–प्रभु समान उसे अन्य कोई दिखाई नहीं देता। उस प्रभु के समान अन्य कोई नहीं है। प्रभु ने उसका लोक–परलोक संवार दिया है और उसे अटल स्थान दे दिया है। प्रभु ने उसे भवसागर से बचा लिया है और वह पुनः जन्म–मरण के चक्र में नहीं आएगी। हे नानक ! मनुष्य की रसना तो एक है परन्तु प्रभु के गुण असीम हैं। मनुष्य उसके चरणों से लगकर भवसागर से पार हो जाता है। हे मनुष्य ! फाल्गुन के महीने में हमें सदैव उस प्रभु की महिमा–स्तुति करनी चाहिए, जिसे तिल मात्र भी अपनी महिमा करवाने की लालसा नहीं॥ १३॥

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥ १४ ॥ १ ॥

जिन–जिन प्राणियों ने भगवान का नाम–सिमरन किया है, उनके समस्त कार्य सम्पूर्ण हुए हैं। जो परमेश्वर स्वरूप पूर्ण गुरु का चिन्तन करते हैं, वह हरि के दरबार में सच्चे एवं शुद्ध सिद्ध हुए हैं। ईश्वर के चरण सर्व–सुखों का भण्डार हैं। प्रभु द्वारा मनुष्य भयानक एवं विषम संसार–सागर से पार हो जाता है। वे प्रेमा–भक्ति को प्राप्त होते हैं और विषय–वासनाओं में नहीं जलते। उनका झूठ लुप्त हो गया है और द्वैत भाव भाग गया है और वह सत्य के साथ पूर्ण तौर पर निश्चय से भरे हुए हैं। वह पारब्रह्म प्रभु की भरपूर सेवा करते हैं और अद्वितीय प्रभु को अपने हृदय में धारण करते हैं। सारे महीने, दिवस एवं मुहूर्त उनके लिए भले हैं जिन पर प्रभु दया–दृष्टि करता है। हे परमात्मा ! नानक तेरे दर्शनों के दान की याचना करता है। हे प्रभु ! अपनी कृपा उस पर न्यौछावर कीजिए॥ १४॥ १॥

माझ महला ५ दिन रैणि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥ आपु तिआगि सरणी पवां मुखि बोली मिठड़े वैण ॥ जनम जनम का विछुड़िआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥ जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ॥ हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥ आप कमाणै विछुड़ी दोसु न काहू देण ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ नानक की बेनंतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥ १ ॥ जीअ की बिरथा सो सुणे हरि संम्रिथ पुरखु अपारु ॥ मरणि जीवणि आराधणा सभना का आधारु ॥ ससुरै पेईऐ तिसु कंत की वडा जिसु परवारु ॥ ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अंतु न पारावारु ॥ सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥ दीना नाथ दैआल देव पतित उधारणहारु ॥ आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥ कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥ मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥ २ ॥ संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥ गुर सबदी आराधीऐ जपीऐ निरमल मंतु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ परमेसुरु बेअंतु ॥ जिसु मनि वसै नराइणो सो कहीऐ भगवंतु ॥ जीअ की लोचा पूरीऐ मिलै सुआमी कंतु ॥ नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हंतु ॥ दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥ ३ ॥ सरब कला प्रभ पूरणो मंञु निमाणी थाउ ॥ हरि ओट गही मन अंदरे जपि जपि जीवां नाउ ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥ दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ मनु विछुड़िआ हरि मेलीऐ नानक एहु सुआउ ॥ सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

हे प्रभु ! मैं अपने सतिगुरु की सेवा करके समस्त दिन-रात्रि तेरी आराधना करता रहूँ। अपना अहंकार त्याग कर मैं ईश्वर का आश्रय ग्रहण करूँ और अपने मुख से मधुर वचन उच्चारण करूँ। हे मेरे मित्र एवं संबंधी प्रभु ! अनेक जन्मों से मैं तुझ से बिछुड़ा हुआ हूँ, मुझे अपने साथ मिला लो। हे मेरी बहन ! जो प्राणी ईश्वर से बिछुड़े हुए हैं, वह सुख में नहीं बराते। मैंने समस्त मण्डल खोज कर देख लिए हैं। ईश्वर पति के अलावा सुख प्राप्त नहीं होता। क्योंकि अपने मंदे कर्मों ने ही मुझे ईश्वर से जुदा किया है। फिर मैं किस पर दोष लगाऊँ ? हे नाथ ! कृपा करके मेरी रक्षा करें। तेरे सिवाय अन्य कोई भी कुछ करने एवं करवाने में समर्थ नहीं। हे हरि ! तेरे अलावा धूल में मिलना है। मैं अपने दुखों के वचन किसके समक्ष व्यक्त करूँ ? नानक यही प्रार्थना करता है, अपने नेत्रों से मैं महान परमात्मा के ही दर्शन करूँ॥ १॥ जो सर्वशक्तिमान एवं अनन्त हरि है, वही प्राणी की पीड़ा को सुनता है। मृत्यु एवं जीवन में उसकी ही आराधना करनी चाहिए, जो सबका आधार है। लोक-परलोक में जीव-स्त्री उस प्रभु की है, जिसका बड़ा परिवार है। प्रभु सर्वोच्च एवं अगम्य है। उसका ज्ञान अथाह है और उसके आर-पार का कोई अन्त नहीं। उसे वही सेवा भली लगती है जो सन्तों की चरण धूलि बनकर की जाती है। वह परमात्मा दीनानाथ एवं दयालु है और पापियों का कल्याण करने वाला है। सृष्टि के आदि-जुगादि काल से ही सृजनहार का सत्य नाम भक्तों की रक्षा करता रहा है। स्वामी के मूल्य को कोई भी नहीं जानता और न ही कोई इसका वजन करने वाला है। हे नानक ! जो परमात्मा गणना से परे है, वह मन एवं तन में निवास कर रहा है। मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता

हूँ जो परमात्मा की दिन–रात सेवा करते हैं॥ २॥ संतजन हमेशा ही भगवान की आराधना करते रहते हैं, जो समस्त जीवों पर क्षमावान है और जिसने आत्मा एवं तन की सृजना की है और दया करके प्राण प्रदान किए हैं। हे प्राणी! गुरु के शब्द द्वारा उस प्रभु की आराधना करनी चाहिए और निर्मल मंत्र रूपी नाम को स्मरण करना चाहिए। उस अनन्त परमेश्वर का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। उस व्यक्ति को ही भाग्यवान कहा जाता है, जिसके हृदय में नारायण निवास करता है। प्रभु–पति को मिलने से हृदय की समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाती हैं। नानक ईश्वर की स्तुति करने से जीता है और उसके समस्त पाप नष्ट हो गए हैं। दिन–रात जो ईश्वर को विस्मृत नहीं करता वह प्राणी कृतार्थ हो जाता है॥ ३॥ सर्वकला सम्पूर्ण परमेश्वर परिपूर्ण है। मुझ निराश्रित का तू ही आश्रय है। अपने हृदय में मैंने प्रभु का आश्रय लिया हुआ है और मैं नाम स्मरण एवं चिन्तन करने से जीता हूँ। हे ईश्वर! अपनी ऐसी कृपा कीजिए जो तेरे दासों की चरणधूलि के साथ मैं मिल जाऊँ। हे नाथ! जिस तरह तुम मुझे रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ। जो तुम मुझे देते हो, मैं वही पहनता और खाता हूँ। हे प्रभु! मुझे वह उपाय प्रदान करो जिससे मैं संतों से मिलकर तेरा यशोगान करूँ। तेरे सिवाय मैं किसी अन्य का ख्याल नहीं कर सकता। फिर मैं विनती करने के लिए कहाँ जाऊँ ? हे प्रभु! तुम अज्ञान का नाश करने वाले हो, तमोगुण के भी विनाशक, सर्वोच्च, अगम्य एवं माप से रहित हो। हे प्रभु! नानक का एक यही स्वार्थ है कि मुझ बिछुड़े हुए मन को अपने साथ मिला लो। हे प्रभु! उस दिन सर्व कल्याण होगा अर्थात् मोक्ष जानूंगा, जब मैं गुरु के चरण स्पर्श करूँगा॥ ४॥ १॥

वार माझ की तथा सलोक महला १

मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ १ ओं सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥ अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु नाम का दाता है और गुरु ही हिम अर्थात् शांति का घर है। गुरु ही तीनों लोकों में ज्ञान का प्रकाश करने वाला दीपक है। हे नानक! नाम रूपी पदार्थ जीव को अमर करने वाला है। यदि मनुष्य का मन गुरु की शरण लेने हेतु विश्वस्त हो जाए तो सुख उपलब्ध हो जाता है॥ १॥

मः १ ॥ पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ दूजै माइ बाप की सुधि ॥ तीजै भया भाभी बेब ॥ चउथै पिआरि उपंनी खेड ॥ पंजवै खाण पीअण की धातु ॥ छिवै कामु न पुछै जाति ॥ सतवै संजि कीआ घर वासु ॥ अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ नावै धउले उभे साह ॥ दसवै दधा होआ सुआह ॥ गए सिगीत पुकारी धाह ॥ उडिआ हंसु दसाए राह ॥ आइआ गइआ मुइआ नाउ ॥ पिछै पतलि सदिहु काव ॥ नानक मनमुखि अंधु पिआरु ॥ बाझु गुरू डुबा संसारु ॥ २ ॥

महला १॥ अपने जीवन की प्रथम अवस्था बचपन में प्राणी माता के दुग्ध से प्रेम पाता है। द्वितीय अवस्था में उसको अपने माता–पिता का ज्ञान होता है। तृतीय अवस्था में वह अपने भाई, भाभी एवं अपनी बहन को पहचानता है। चौथी अवस्था में उसमें खेलने की रुचि उत्पन्न हो जाती है। पंचम अवस्था में वह खाने–पीने की ओर दौड़ता है। छठी अवस्था में उसके भीतर कामवासना उत्पन्न होती है और वह कामवासना से अंधा हुआ जाति–कुजाति भी नहीं देखता। सप्तम अवस्था में वह धन–दौलत एकत्रित करता है और अपने घर में निवास कर लेता है। आठवीं अवस्था में उसका तन क्रोध में नष्ट हो जाता है। नौवीं अवस्था में उसके बाल–सफेद हो जाते हैं, और उसका सांस लेना कठिन हो जाता है। दसवीं अवस्था में उसका शरीर जल कर भस्म हो जाता है, उसके संगी साथी चित्ता तक उसके साथ जाते

हैं और अश्रु बहाते हैं। राजहंस (आत्मा) उड़ जाती है और जाने का मार्ग पूछती है। वह इस संसार में आया था और चला गया है और उसका नाम भी मर मिट गया है। उसके उपरांत पत्तलों पर भोजन दिया जाता है और कौए बुलाए जाते हैं अर्थात् श्राद्ध किए जाते हैं। हे नानक! स्वेच्छाचारी जीव का जगत् से मोह ज्ञानहीनों वाला है। गुरु के बिना सारा जगत् ही भवसागर में डूब रहा है॥ २॥

मः १ ॥ दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥ चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥ सतरि का मतिहीणु असीहां का विउहारु न पावै ॥ नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥ ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥ ३ ॥

महला १॥ मनुष्य के दस वर्ष बचपन में बीत जाते हैं। बीस वर्ष का युवक और तीस वर्ष का सुन्दर कहा जाता है। चालीस पर वह पूर्ण होता है। पचास वर्ष में उसके पग पीछे मुड़ जाते हैं और साठ वर्ष में वृद्धावस्था आ जाती है। सत्तर वर्ष में उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और अस्सी वर्ष की आयु में वह अपने कार्य नहीं कर सकता। नब्बे वर्ष में उसका आसन बिस्तर पर होता है और क्षीण होने के कारण वह बिल्कुल नहीं समझता कि शक्ति क्या है? खोज–तलाश करके मैंने देख लिया है, हे नानक! यह संसार धुएँ का क्षणभंगुर महल है॥ ३॥

पउड़ी ॥ तूं करता पुरखु अगंमु है आपि स्रिसटि उपाती ॥ रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥ तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती॥ इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ रंगि हरि रंगि राती ॥ सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती ॥ तूं आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥ जो मनि चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे कर्त्ता प्रभु! तू सर्वशक्तिमान एवं अगम्य है। तूने स्वयं सृष्टि की रचना की है। तूने अनेक प्रकार के रंग तथा विविध प्रकार के पक्षियों के रंग–बिरंगे पंख उपजाए हैं। तू ही जिसने यह सृष्टि–रचना की है, इस भेद को जानता है कि क्यों रचना की है। यह जगत् तेरी एक लीला है। कई प्राणी जन्म लेते हैं और कई संसार त्याग कर चले जाते हैं। नाम सिमरन के बिना सभी नाश हो जाते हैं। गुरमुख सदैव भगवान के प्रेम में गहरे लाल रंग की भाँति मग्न रहते हैं। उस सदैव सत्य एवं निरंजन प्रभु की सेवा करो जो हम सबका विधाता है। हे प्रभु! तू स्वयं चतुर है और जगत् में सबसे बड़ा महापुरुष है। हे मेरे सत्य परमेश्वर! मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ जो एकाग्रचित होकर तेरा ध्यान करते रहते हैं॥ १॥

सलोक मः १ ॥ जीउ पाइ तनु साजिआ रखिआ बणत बणाइ ॥ अखी देखै जिहवा बोलै कंनी सुरति समाइ ॥ पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥ नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ भगवान ने पंचभूतक तन की रचना करके उसमें प्राण कला प्रदान की है और इसकी रक्षा का प्रबंध किया है। मनुष्य अपने नेत्रों से देखता है, और जिह्वा से बोलता है। इसके कानों में सुनने की शक्ति समाई हुई है। वह पैरों से चलता है, हाथों से कार्य करता है और जो कुछ उसे मिलता है, उसको पहनता एवं सेवन करता है। लेकिन बड़े दुःख की बात है कि जिस परमात्मा ने मानव की रचना की है, उसे यह जानता ही नहीं। अंधा मनुष्य ज्ञानहीन होने के कारण बुरे कर्म करता

है। जब मनुष्य का शरीर रूपी घड़ा टूटता है तो वह टुकड़े-टुकड़े हो जाता है और इसकी बनावट पुनः नहीं की जा सकती। हे नानक! गुरु के बिना मान-सम्मान नहीं मिलता और इस मान-सम्मान के अलावा मनुष्य संसार से पार नहीं हो सकता॥ १॥

मः २ ॥ देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ ॥ सुरति मति चतुराई ता की किआ करि आखि वखाणीऐ ॥ अंतरि बहि कै करम कमावै सो चहु कुंडी जाणीऐ ॥ जो धरमु कमावै तिसु धरम नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीऐ ॥ तूं आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि वखाणीऐ ॥ जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिआणीऐ ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि इको सुघड़ु सुजाणीऐ ॥ २ ॥

महला २॥ मनमुख ऐसा समझता है कि देने वाले प्रभु से उसकी दी हुई वस्तु उत्तम है। उसकी बुद्धिमत्ता, समझ एवं चतुरता बारे क्या कथन किया जाए? चाहे वह अपने घर में बैठकर छिपकर दुष्कर्म करता है परन्तु फिर भी चारों दिशाओं में लोगों को इनका पता लग जाता है। जो व्यक्ति धर्म करता है, उसका नाम धर्मात्मा हो जाता है और जो पाप करता है, वह पापी जाना जाता है। हे सृजनहार प्रभु! तुम स्वयं ही समस्त लीलाएँ रचते हो। किसी अन्य की क्यों बात एवं कथा करें? हे प्रभु! जब तक तेरी ज्योति मानव शरीर में है, तब तक तुम ज्योतिमान देहि में बोलते हो। यदि कोई प्राणी दिखा दे कि उसने तेरी ज्योति के अलावा कुछ कर लिया है तो मैं उसको बुद्धिमान कहूँगा। हे नानक! गुरमुख को तो सर्वत्र एक चतुर एवं सर्वज्ञ प्रभु ही दिखाई देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे धंधै लाइआ ॥ मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥ तिसना अंदरि अगनि है नह तिपतै भुखा तिहाइआ ॥ सहसा इहु संसारु है मरि जंमै आइआ जाइआ ॥ बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके करम कमाइआ ॥ गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥ कुलु उधारे आपणा धंनु जणेदी माइआ ॥ सोभा सुरति सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! तुमने स्वयं ही जगत् को उत्पन्न किया और तुमने स्वयं ही इसको कामकाज में लगा दिया है। सांसारिक मोह रूपी नशीली बूटी खाने के लिए देकर तुमने स्वयं ही संसार को कुमार्ग लगा दिया है। प्राणी के भीतर तृष्णा की अग्नि विद्यमान है। वह तृप्त नहीं होता और भूखा तथा प्यासा ही रहता है। यह संसार सहसा भूल-भुलैया है। यह मरता, जन्म लेता, आता और जाता रहता है। सतिगुरु के बिना मोह नहीं टूटता। सभी प्राणी अपने कर्म करके थक चुके हैं। हे स्वामी! जब तुझे अच्छा लगता है, गुरु के उपदेश से प्राणी तेरे नाम की आराधना करके प्रसन्नता से संतुष्ट हो जाता है। वह अपने वंश का कल्याण कर लेता है। ऐसे व्यक्ति को जन्म देने वाली माता धन्य है। जिन्होंने प्रभु से अपना चित्त लगाया है, उनकी जगत् में बड़ी शोभा होती है एवं उनकी सुरति सुन्दर हो जाती है॥ २॥

सलोकु मः २ ॥ अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥ पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥ जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥ नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ यहाँ पर गुरु जी जीवनमुक्त मनुष्य के लक्षण इस प्रकार बताते हैं कि नेत्रों के बिना देखना, कानों के बिना सुनना, पैरों के बिना चलना, हाथों के बिना कार्य करना और जिह्वा के बिना वचन करना, अर्थात् नेत्रों से नहीं सुरति द्वारा ईश्वर को देखना चाहिए और स्थूल कानों से

नहीं अपितु श्रद्धा से प्रभु का यशोगान श्रवण करना चाहिए और हाथों के बिना मानसिक पूजा रूपी कर्म करना चाहिए, स्थूल जिह्वा के बिना प्रेम जिह्वा से उसका यश करना चाहिए। हे नानक! प्रभु का हुक्म पहचान कर प्राणी अपने पति–परमेश्वर को मिल सकता है॥ १॥

मः २ ॥ दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥ रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥ भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥ नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥ २ ॥

महला २॥ मनुष्य को अपने नेत्रों से भगवान सर्वत्र दिखाई देता भी है, वह महापुरुषों से सुनता भी है कि वह सर्वव्यापक है और उसे ज्ञान हो भी जाता है कि वह हर जगह मौजूद है परन्तु फिर भी वह उससे मिलकर आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। वह भगवान को मिले भी कैसे? क्योंकि उसको मिलने हेतु उसके पास पैर नहीं है, हाथ नहीं है और आँखे भी नहीं हैं। एक लंगड़ा, अपाहिज और नेत्रहीन पुरुष किस तरह दौड़कर परमात्मा को गले लगा सकता है? इसलिए नानक कहते हैं कि हे चतुर जीव–स्त्री! प्रभु से इस तरह मिलन हो सकता है कि तू ईश्वर के भय को अपने चरण, उसके प्रेम को अपने हाथ एवं उसके ज्ञान को अपने नेत्र बना॥ २॥

पउड़ी ॥ सदा सदा तूं एकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥ हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अंतरि जंता पाइआ ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥ इकना बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥ इकि खड़े करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥ होरु कार वेकार है इकि सची कारै लाइआ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥ ओहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ समाइआ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! तुम सदैव एक हो, अन्य क्रीड़ा रूपी संसार तूने माया द्वारा पैदा किया है। हे नाथ! तूने अहंकार एवं ममत्व पैदा करके प्राणियों के भीतर लोभ इत्यादि अवगुणों को डाल दिया है। हे स्वामी! जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही जीवों को रखो। प्रत्येक प्राणी वैसा ही कर्म करता है जिस तरह तुम करवाते हो। कुछ जीवों को तूने क्षमा करके अपने साथ मिला लिया है और कुछ जीवों को तूने ही गुरु की मति में लगाया है। कई तेरे मन्दिर में खड़े होकर भक्ति करते हैं। नाम के अलावा उनको कुछ भी अच्छा नहीं लगता। कईओं को तुमने सत्य कर्म में लगा दिया है। कोई अन्य कर्म उनके लिए लाभहीन है। जिन प्राणियों का कर्म तुझे लुभाया है, वे प्राणी स्त्री, पुत्र एवं परिवार से तटस्थ रहते हैं। हे प्रभु! ऐसे व्यक्ति अन्दर एवं बाहर से पवित्र हैं और वे सत्य नाम में लीन रहते हैं॥ ३॥

सलोकु मः १ ॥ सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥ कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा सिरि भारि ॥ पुरु करि काइआ कपड़ु पहिरा धोवा सदा कारि ॥ बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥ होइ कुचीलु रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥ ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ चाहे मैं स्वर्गलोक में जाकर सोने के सुमेर पर्वत पर रहने के लिए गुफा बना लूँ, चाहे पाताललोक में जाकर जल में रहूँ, चाहे मैं धरती अथवा आकाश के किसी लोक में सिर के बल उलटा खड़ा होकर तपस्या करूँ, चाहे मैं पूरी तरह शरीर को स्वच्छ करके वस्त्र पहनूँ और हमेशा ही यह कर्म करके अपने शरीर एवं वस्त्रों को स्वच्छ करता रहूँ, चाहे मैं सफेद, लाल, पीले एवं काले वस्त्र पहनकर चारों वेद–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद का पाठ करूँ, चाहे मैं गन्दा एवं मलिन रहूँ। परन्तु यह सब कर्म दुर्बुद्धि होने के कारण व्यर्थ ही हैं। हे नानक! मैं केवल शब्द का चिन्तन करता हूँ, जिसके अलावा किसी भी मूल्य का मैं नहीं था, न ही मैं हूँ और न ही मैं होऊंगा॥ १॥

मः १ ॥ वसत्र पखालि पखाले काइआ आपे संजमि होवै ॥ अंतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥ अंधा भूलि पइआ जम जाले ॥ वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपे नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥ २ ॥

महला १॥ जो व्यक्ति अपने वस्त्र धो कर एवं स्नान करके संयमी बन बैठता है, उसे अपने मन में लगी अहंकार रूपी मैल का पता ही नहीं लगता और वह अपने शरीर को बाहर से ही रगड़ रगड़ कर स्वच्छ करता रहता है। वह ज्ञानहीन होता है और कुमार्ग में पड़कर यम के जाल में फँस जाता है। वह पराई वस्तु को अपनी समझता है और अहंकारवश बड़े दुख सहन करता है। हे नानक! जब गुरु के माध्यम से मनुष्य का अहंकार नष्ट हो जाता है तो वह हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान करता रहता है। वह नाम का जाप करता है, नाम को स्मरण करता है और नाम द्वारा सुख में समा जाता है॥ २॥

पवड़ी ॥ काइआ हंसि संजोगु मेलि मिलाइआ ॥ तिन ही कीआ विजोगु जिनि उपाइआ ॥ मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ ॥ सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥ हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥ मूरख गणत गणाइ झगड़ा पाइआ ॥ सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकाइआ ॥ करता करे सु होगु न चलै चलाइआ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ भगवान ने संयोग बनाकर तन एवं आत्मा का मिलन कर दिया है। जिस प्रभु ने इनकी रचना की है, उसी ने उनको जुदा किया है। मूर्ख प्राणी भोग भोगता रहता है और यह भोग ही उसके तमाम दुःखों का कारण बनता है। वह सुख की उपलब्धि हेतु पाप करता है और इन सुखों से उसके शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। हर्ष से शोक तथा संयोग से वियोग और जन्म से मृत्यु उत्पन्न होते हैं। मूर्ख प्राणी ने दुष्कर्मों की गिनती गिनाकर जीवन-मृत्यु का विवाद खड़ा कर लिया है अर्थात् मूर्ख दुष्कर्मों में फँस जाता है। निर्णय सतिगुरु के हाथ में है, जो इस विवाद को खत्म कर देते हैं। सृष्टिकर्त्ता प्रभु जो करता है, वही कुछ होता है और प्राणी का चलाया हुक्म नहीं चलता॥ ४॥

सलोकु मः १ ॥ कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥ अवरी नो समझावणि जाइ ॥ मुठा आपि मुहाए साथै ॥ नानक ऐसा आगू जापै ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जो व्यक्ति झूठ बोलकर दूसरों का हक खाता है वह मुर्दे को खाता है अर्थात् हराम खाता है। फिर भी वह दूसरों को उपदेश करने जाता है कि झूठ मत बोलो। हे नानक! वह इस तरह का नेता मालूम होता है, जो स्वयं लुटा जा रहा है और अपने साथियों को भी लुटा रहा है॥ १॥

महला ४ ॥ जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥ ओहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाए ॥ जे अगै तीरथु होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥ तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥ ओहु आपि छुटा कुटंब सिउ दे हरि हरि नामु सभ स्रिसटि छडाए ॥ जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥ २ ॥

महला ४॥ जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है, वही सत्यवादी है और वह अपने मुख से सत्य बोलता है। वह स्वयं हरि के मार्ग चलता है और दूसरों को भी हरि के मार्ग लगाता है। यदि सामने पवित्र तीर्थ रूपी सत्संग हो, तब मैल उतर जाती है। लेकिन मंदे पुरुषों के साथ संगति करने से मैल उतरने की जगह और भी मैल लग जाती है। सतिगुरु जी पूर्णरूपेण तीर्थ हैं जो दिन-रात हरि-प्रभु

के नाम का ध्यान करते रहते हैं। वह अपने कुटुंब सहित संसार सागर से पार हो जाता है अर्थात् उसे मोक्ष मिल जाता है और हरि–परमेश्वर का नाम प्रदान करके सारे संसार को पार कर देता है। हे नानक! मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो स्वयं हरि के नाम का जाप करता है और दूसरों से भी नाम का जाप करवाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥ इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥ अंदरि त्रिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥ बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥ जमकालु सिरहु न उतरै त्रिबिधि मनसा ॥ गुरमती कालु न आवै नेड़ै जा होवै दासनि दासा ॥ सचा सबदु सचु मनि घर ही माहि उदासा ॥ नानक सतिगुरु सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ कई साधू वन प्रदेश में निवास करते हैं और कंदमूल चुनकर उनका सेवन करते हैं। कई भगवे रंग के वस्त्र पहन कर योगियों एवं संन्यासियों की भाँति फिरते हैं। उनके भीतर अधिकतर तृष्णा है और वे वस्त्रों एवं भोजन की लालसा करते हैं। वह अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। इस तरह न वह गृहस्थी हैं और न ही त्यागी। यमराज उनके सिर पर मंडराता रहता है क्योंकि वे त्रिगुणात्मक वासना के शिकार हैं। जब गुरु के उपदेश से प्राणी परमात्मा के सेवकों का सेवक हो जाता है, तो काल उनके निकट नहीं आता। सत्य–नाम उसके सत्यवादी हृदय में निवास करता है और वे घर में रहते हुए भी निर्लिप्त रहते हैं। हे नानक! जो प्राणी अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वे सांसारिक अभिलाषाओं से तटस्थ हो जाते हैं॥ ५॥

सलोकु मः १ ॥ जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥ जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥ अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि वस्त्रों को रक्त लग जाए तो वस्त्र अपवित्र हो जाता है। जो व्यक्ति दूसरों पर अत्याचार करके उनका रक्त चूसते हैं, उनका मन किस तरह पवित्र हो सकता है? हे नानक! उस अल्लाह का नाम साफ दिल से मुख से बोलो। नाम के बिना आपके सभी कार्य दुनिया के दिखावा मात्र ही हैं और आप सभी झूठे कर्म करते हैं॥ १॥

मः १ ॥ जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥ कीता करणा कहिआ कथना भरिआ भरि भरि धोवां ॥ आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवां ॥ नानक अंधा होइ कै दसे राहै सभसु मुहाए साथै ॥ अगै गइआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥ २ ॥

महला १॥ जब मैं कुछ भी नहीं तो दूसरों को मैं क्या उपदेश कर सकता हूँ? अथवा जब मुझ में कोई भी गुण नहीं तो मैं कैसे गुणों का दिखावा करूँ? जिस तरह का ईश्वर ने मुझे बनाया है, वैसे ही मैं करता हूँ। जिस तरह उसने मुझे कहा है, वैसे ही मैं बोलता हूँ। मैं बुरे कर्मों के कारण पापों से भरा हुआ हूँ। उनको अब मैं धोने का प्रयास करता हूँ। मैं स्वयं समझता नहीं लेकिन फिर भी दूसरों को समझाता हूँ। मैं इस तरह का ज्ञानहीन मार्गदर्शक बन सकता हूँ। हे नानक! जो व्यक्ति स्वयं ज्ञानहीन अंधा होकर मार्ग–दर्शन करता है, वह अपने साथियों को भी लुटवा देता है। आगे परलोक में जाकर उसके मुख पर जूते पड़ते हैं और फिर पता चलता है कि वह किस तरह का पाखंडी मार्गदर्शक था॥२॥

पउड़ी ॥ माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥ तूं गणतै किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥ पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥ नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥ गुरमती

नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥ निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥ जिस दा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥ सचा साहु इकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे अकालपुरुष! समस्त महीनों, ऋतुओं, घड़ी, मुहूर्त में मैं तेरी वन्दना करता हूँ। हे सच्चे अलख, अपार प्रभु! कर्मों की गणना करके तुझे किसी ने भी नहीं पाया। उस पढ़े हुए विद्वान व्यक्ति को महामूर्ख ही समझो, जिसके अन्तर्मन में लोभ, लालच एँव अहंकार है। गुरु की मति द्वारा हमें विचार करके नाम को पढ़ना एवं समझना चाहिए। जिस व्यक्ति ने गुरु की मति द्वारा नाम रूपी धन की कमाई की है, उसके भण्डार भक्ति से भर गए हैं। जिस व्यक्ति ने निर्मल नाम का मन से सिमरन किया है, वह सत्य के दरबार में सत्यवादी स्वीकृत हो जाता है। जिसने प्रत्येक जीव को आत्मा एवं प्राण दिए हैं, वह प्रभु अनंत है और उसकी ज्योति प्रत्येक जीव के हृदय में विद्यमान है। हे प्रभु! एक तू ही सच्चा शाह है और शेष सारा जगत् वणजारा है॥ ६॥

सलोकु मः १ ॥ मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥ सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥ करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥ तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जीवों पर दया करना ही मस्जिद में जाकर सजदा करना है। अल्लाह पर पूर्ण श्रद्धा रखना ही मुसल्ले पर बैठ कर नमाज पढ़ना है। हक-हलाल अर्थात् धर्म-कर्म करना ही कुरान को पढ़ना है। नाम की कमाई करना ही सुन्नत करवाना है। शील स्वभाव का बनना ही रोजा रखना है। तभी तुम एक सच्चे मुसलमान बनोगे। सत्य कर्म करना ही मक्का जाकर काबे के दर्शन करना है। सच्चे खुदा को जानना ही पीर की पूजा करना है। शुभ कर्म करना ही कलमा एवं नमाज है। अल्लाह की रजा में रहना ही माला फेर कर नाम जपना है। हे नानक! जो इन गुणों से युक्त होगा तो ही अल्लाह को अच्छा लगेगा और ऐसे मुसलमान की खुदा लाज-प्रतिष्ठा रखता है॥ १॥

मः १ ॥ हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥ मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! पराया हक खाना मुसलमान के लिए सूअर खाने के समान है और हिन्दू के लिए गाय खाने के समान है। हिन्दुओं का गुरु एवं मुसलमानों का पीर खुदा की दरगाह में तभी मनुष्य की रक्षा की हामी भरेंगे यदि वह पराया हक न खाए। अधिक बातें करने से प्राणी स्वर्गलोक को नहीं जाता। मुक्ति तो सत्य की कमाई द्वारा ही संभव है। हराम के भोजन में मसाला डालने से वह हलाल नहीं हो जाता, क्योंकि रिश्वत का धन दान करने से शुद्ध नहीं होता। हे नानक! झूठी बातों से केवल झूठ ही हासिल होता है॥ २॥

मः १ ॥ पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ ३ ॥

महला १॥ मुसलमानों के लिए पाँच नमाज़ें हैं, एवं नमाज़ों के लिए पाँच ही वक्त हैं और पाँचों नमाजों के पाँच अलग-अलग नाम हैं। पहली नमाज यह है कि सच्चे खुदा की बंदगी करो। दूसरी

नमाज है कि हक हलाल अर्थात् धर्म की कमाई करो। तीसरी नमाज यह है कि अल्लाह से सबकी भलाई माँगो, दान-पुण्य करो। चौथी नमाज यह है कि अपनी नीयत एवं मन को साफ रखो। पाँचवी नमाज यह है कि अल्लाह की महिमा एवं प्रशंसा करो। तू शुभ कर्मों का कलमा पढ़ और तभी तू स्वयं को सच्चा मुसलमान कहलवा सकता है। हे नानक! जितने भी झूठे हैं, उनकी प्रतिष्ठा भी झूठी है और उन्हें झूठ ही प्राप्त होगा॥ ३॥

पउड़ी ॥ इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥ विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥ मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥ इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥ इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥ विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥ नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जीव जगत् में व्यापार करने आते हैं। कई जीव नाम रूपी रत्न पदार्थों का व्यापार करते हैं और कई जीव कांच अर्थात् क्षणभंगुर सुखों का व्यापार करते हैं। यदि सतिगुरु प्रसन्न हो जाए तो यह नाम रूपी रत्न-पदार्थों का अक्षय भण्डार मिल जाता है। जीव के हृदय में ही नाम रूपी रत्न पदार्थों का भण्डार है परन्तु यह भण्डार गुरु के बिना किसी को भी नहीं मिला। अर्थात् परमेश्वर प्राप्त नहीं होता। झूठे एवं अज्ञानी लोग टक्करें मार-मारकर प्राण त्याग गए हैं। मनमुख लोग द्वैत भाव में पड़कर गल सड़कर मर जाते हैं और ज्ञान को नहीं समझते। एक ईश्वर के अलावा संसार में दूसरा कोई भी नहीं। वह किसके समक्ष जाकर फरियाद करें? कई धनहीन निर्धन हैं और हमेशा भटकते फिरते हैं और कईओं के खजाने दौलत से परिपूर्ण हैं। लेकिन इस संसार में हरि नाम के अलावा शेष कोई भी धन जीव के साथ जाने वाला नहीं। अन्य सब कुछ विष रूपी माया-धन धूलि के तुल्य है। हे नानक! ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। अपने आदेश द्वारा वह प्रभु स्वयं ही प्राणियों को संवारने वाला है॥ ७॥

सलोकु मः १ ॥ मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥ अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ॥ होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ रब की रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आपु गवावै ॥ तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मुसलमान कहलाना बड़ा कठिन है। यदि कोई गुणों से युक्त सच्चा मुसलमान है, तो ही वह अपने आपको मुसलमान कहलवा सकता है। सच्चा मुसलमान बनने के लिए सर्वप्रथम बात यह है कि वह अपने पैगम्बर के चलाए धर्म को मीठा समझकर माने। दूसरी बात यह है कि वह अपनी मेहनत की कमाई का धन गरीबों में यूं बांट दे जैसे रंग मार लोहे के जंग को दूर कर देता है। वह अपने पैगम्बर के धर्म का सच्चा मुरीद (शिष्य) होकर मृत्यु एवं जीवन के भ्रम को मिटा दे। सच्चे दिल से वह ईश्वर की इच्छा को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृत करे, सृष्टिकर्त्ता परमात्मा की वन्दना करे और अपना अहंकार नष्ट कर दे। हे नानक! यदि वह समस्त प्राणियों पर दयालु हो तो ही वह मुसलमान कहलवा सकता है॥१॥

महला ४ ॥ परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥ तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम लिव लावै ॥ नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरि नामि समावै ॥ २ ॥

महला ४॥ जो व्यक्ति काम, क्रोध, झूठ, निंदा एवं धन–दौलत को त्यागकर अपना अहंकार मिटा देता है, कामवासना का त्याग करके अपनी स्त्री का मोह त्याग देता है, वह माया में रहता हुआ भी निरंजन प्रभु को पा लेता है। हे नानक! सत्यस्वरूप प्रभु उस व्यक्ति के मन में आकर निवास करता है, जो व्यक्ति मान–अभिमान, अपने पुत्र एवं स्त्री का प्रेम, माया की तृष्णा एवं इच्छा को त्याग कर राम में सुरति लगाता है। ऐसा व्यक्ति सच्चे शब्द द्वारा हरिनाम में ही समा जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीओ ॥ हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ ॥ पके बंक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥ दरबि भरे भंडार रीते इकि खणे ॥ ताजी रथ तुखार हाथी पाखरे ॥ बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥ तंबू पलंघ निवार सराइचे लालती ॥ नानक सच दातारु सिनाखतु कुदरती ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ राजा, प्रजा एवं प्रधानों में किसी ने भी इस संसार में नहीं रहना। दुकानें, नगर एवं बाज़ार ईश्वर की इच्छा से नष्ट हो जाएँगे। मूर्ख मनुष्य सुन्दर द्वारों वाले पक्के मन्दिरों को अपना समझते हैं। धन–दौलत से परिपूर्ण भण्डार एक क्षण में ही खाली हो जाते हैं। घोड़ों, सुन्दर रथों, ऊँट, अम्बारियों वाले हाथी, उद्यान, सम्पत्तियाँ, घर एवं इमारतें इत्यादि जिन्हें मनुष्य अपना जानता है, वे अपने कहाँ हैं? तम्बू, निवार के पलंग, अतलस की कनातें सब क्षणभंगुर हैं। हे नानक! सदैव स्थिर एक सत्य परमेश्वर ही है, जो लोगों को यह सब वस्तुएँ देने वाला दाता है। उसकी पहचान उसकी कुदरत द्वारा ही होती है॥ ८॥

सलोकु मः १ ॥ नदीआ होवहि धेणवा सुंम होवहि दुधु घीउ ॥ सगली धरती सकर होवै खुसी करे नित जीउ ॥ परबतु सुइना रुपा होवै हीरे लाल जड़ाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे भगवान! यदि मेरे लिए नदियां कामधेनु गाय बन जाएँ, समुद्रों का जल दूध एवं घी बन जाए, सारी धरती शक्कर बन जाए और मेरा मन इन पदार्थों का सेवन करके प्रसन्न होता हो, यदि हीरे एवं जवाहरों से जड़ित सोने एवं चांदी का पर्वत भी मुझे मिल जाए, मैं फिर भी तेरा ही यशोगान करूँगा और तेरी महिमा करने की मेरी उमंग खत्म नहीं होगी॥ १॥

मः १ ॥ भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥ चंदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ २ ॥

महला १॥ हे प्रभु! यदि मेरे लिए अठारह भार वाली सारी वनस्पति मेवा बन जाए, जिसका स्वाद गुड़ जैसा मीठा हो, यदि मेरा निवास स्थान अटल हो जाए, जिसके आस–पास सूर्य एवं चंद्रमा दोनों ही घूमते रहें, फिर भी मैं तेरा ही यश करूँगा और तेरा यश करने का मेरा चाव हृदय से नहीं हटेगा॥ २॥

मः १ ॥ जे देहै दुखु लाईऐ पाप गरह दुइ राहु ॥ रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि एवै जापै भाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ३ ॥

महला १॥ हे भगवान! यदि मेरे शरीर को दुख लग जाए और दोनों पापी ग्रह राहु–केतु मुझे कष्ट दें। यदि रक्तपिपासु राजा मेरे सिर पर शासन करते हों मुझे फिर भी यूं ही लगे कि जैसे तुम मुझे प्रेम करते हो, हे ईश्वर! फिर भी मैं तेरी ही सराहना करूँगा और तेरा यश करने की चाहत खत्म नहीं होगी॥ ३॥

मः १ ॥ अगी पाला कपड़ु होवै खाणा होवै वाउ ॥ सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥ भी तूहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ४ ॥

महला १॥ यदि मेरे लिए अग्नि एवं शीत मेरा परिधान हो, हवा मेरा भोजन हो और यदि स्वर्ग की मोहिनी अप्सराएँ मेरी पत्नियाँ हों, हे नानक ! यह सब पदार्थ क्षणभंगुर हैं। हे प्रभु ! तो भी मैं तेरी ही महिमा गायन करूँगा। तेरी महिमा करने की तीव्र लालसा मिटती ही नहीं॥ ४॥

पवड़ी ॥ बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥ सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई ॥ कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ विणु नावै वेकारि भरमे पचीऐ ॥ राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥ कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥ सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ ॥ सिझै दरि दीवानि आपु गवाईऐ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ जो दुष्कर्मी हैवान है, वह परमात्मा को नहीं जानता। वह पागल कहा जाता है जो अपने स्वरूप को नहीं समझता। इस संसार में कलह हानिकारक है, क्योंकि वाद-विवाद में मनुष्य व्यर्थ ही पीड़ित हो जाता है। हरिनाम के अलावा प्राणी व्यर्थ है और भ्रम-विकारों में वह नष्ट हो जाता है। जो दोनों मार्गों को एक प्रभु की ओर जाते समझता है वह मुक्त हो जाएगा। झूठ बोलने वाला नरक में पड़कर जलकर राख हो जाता है। यदि मनुष्य सत्य में लीन रहता है तो उसके लिए सारी दुनिया ही सुन्दर है। वह अपना अहंकार मिटाकर प्रभु के दरबार में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो जाता है॥ ६॥

मः १ सलोकु ॥ सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥ नानक अवरु न जीवै कोइ ॥ जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ राजि रंगु मालि रंगु ॥ रंगि रता नचै नंगु ॥ नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥ विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥ १ ॥

महला १ श्लोक॥ जिसके मन में भगवान का निवास है, उस व्यक्ति को ही जिया समझो। हे नानक ! भगवान के नाम बिना किसी को भी जिया नहीं कहा जा सकता, वह तो मृतक के समान होता है। यदि वह जीता भी है तो वह जगत् में से अपनी मान-प्रतिष्ठा गंवा कर चला जाता है। वह जो कुछ भी खाता है, वह सब हराम बन जाता है। किसी व्यक्ति का शासन से प्रेम है और किसी का धन-दौलत से प्रेम है। ऐसा बेशर्म व्यक्ति मिथ्या माया के मोह में मग्न हुआ नग्न नृत्य कर रहा है। हे नानक ! वह ठगा और लुटपुट जाता है। ईश्वर के नाम के अलावा वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा कर चला जाता है॥ १॥

मः १ ॥ किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥ जा मनि नाही सचा सोइ ॥ किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥ किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥ किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥ नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥ २ ॥

महला १॥ हे जीव ! यदि तेरे मन में उस भगवान का निवास ही नहीं तो स्वादिष्ट भोजन खाने एवं सुन्दर वस्त्र पहनने का क्या अभिप्राय है? मेवा, घी, मीठा गुड़, मैदा एवं माँस खाने का क्या अभिप्राय है? सुन्दर वस्त्र पहनने, सुखदायक शय्या पर विश्राम करने और भोग-विलास का आनंद प्राप्त करने का क्या अभिप्राय है? सेना, द्वारपाल, कर्मचारी रखने एवं महलों में निवास करने का क्या अभिप्राय है ? हे नानक ! सत्य-परमेश्वर के नाम के सिवाय सभी पदार्थ क्षणभंगुर हैं॥२॥

पवड़ी ॥ जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥ महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥ सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीऐ ॥ हुकमु मंने सिरदारु दरि दीबाणीऐ ॥ फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥ तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥ इकि होए असवार इकना साखती ॥ इकनी बधे भार इकना ताखती ॥ १० ॥

पउड़ी॥ उच्च जाति वाले के वश में कुछ भी नहीं है, क्योंकि परमात्मा तो जीवों के शुभ–अशुभ कर्मों की ही जाँच करता है। ऊँची जाति का अभिमान विष समान है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में विष हो तो वह उस विष को खा कर प्राण त्याग देता है। सत्य परमेश्वर की सरकार युग–युग में जानी जाती है। जो उसके हुक्म का पालन करता है, वह उसके दरबार में प्रतिष्ठित हो जाता है। सत्य प्रभु का यही हुक्म है कि नाम–सिमरन का कर्म करो। इसलिए प्रभु ने मनुष्य को संसार में भेजा है। गुरु नगाड़ची ने वाणी द्वारा इस परमेश्वर की आराधना लोगों को सुनाई है। इसको श्रवण करके गुरमुख अपने घोड़ों पर सवार हो गए हैं और कई उनको तैयार कर रहे हैं। कईओं ने अपना सामान बांध लिया है और कई तो सवार होकर चले भी गए हैं॥ १०॥

सलोकु मः १ ॥ जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥ सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥ दुइ पुड़ चकी जोड़ि कै पीसण आइ बहिठु ॥ जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जब अनाज पक जाता है तो किसान उसे काट लेता है। केवल घासफूस और बाड़ रह जाती है। अनाज फसल से उतार लिया जाता है और उड़ा कर फसल से दाने अलग कर लिए जाते हैं। चक्की के दोनों पाट इकट्ठे करके मनुष्य आकर दानों को पीसने बैठ जाते हैं। जो केन्द्रीय धुरे से जुड़े रहते हैं, वह बच जाते हैं। हे नानक! यह एक आश्चर्यजनक बात देखी है॥ १॥

मः १ ॥ वेखु जि मिठा कटिआ कटि कुटि बधा पाइ ॥ खुंढा अंदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥ रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥ भी सो फोगु समालीऐ दिचै अगि जालाइ ॥ नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका आइ ॥ २ ॥

महला १॥ देखो कि गन्ना कट जाता है। इसको साफ करके ठोक पीटकर बन्धनों में बांधा है। बेलनों के बीच रखकर मलकर अथवा पहलवानों के समान जो पुरुष हैं वह इसको दबाते और दण्ड देते हैं। उसका रस खींचकर कड़ाहे में डाला जाता है और यह जलता हुआ चीखता–चिल्लाता है। गन्ने की खोई भी जिसका रस निकाल लिया है उसे भी इकट्ठा करके अग्नि में जला दिया जाता है। हे नानक! मीठे पत्तों वाले गन्ने से किस तरह का व्यवहार हुआ है, हे प्राणियों! आकर देखो॥ २॥

पवड़ी ॥ इकना मरणु न चिति आस घणेरिआ ॥ मरि मरि जंमहि नित किसै न केरिआ ॥ आपनड़ै मनि चिति कहनि चंगेरिआ ॥ जमराजै नित नित मनमुख हेरिआ ॥ मनमुख लूण हाराम किआ न जाणिआ ॥ बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ ॥ सचु मिलै मुखि नामु साहिब भावसी ॥ करसनि तखति सलामु लिखिआ पावसी ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ कुछ लोगों को मृत्यु स्मरण नहीं, उनके मन में दुनिया के सुख भोगने की अधिक आशा होती है। वह हमेशा जन्मते–मरते रहते हैं तथा किसी के भी सच्चे मित्र नहीं बनते। वह अपने मन ही मन में अपने आपको भला कहते हैं। यमराज हमेशा इन मनमुखों को समाप्त करने के लिए देखता रहता है। मनमुख नमक खाकर हराम करने वाला है और अपने ऊपर किए हुए परमेश्वर के उपकार का धन्यवादी नहीं होता। जो दबाव अधीन प्रणाम करते हैं वह प्रभु को अच्छे नहीं लगते। जो मुख से सत्यनाम बोलते हैं वह ईश्वर के मन को अच्छे लगने लग जाते हैं॥ ११॥

मः १ सलोकु ॥ मछी तारू किआ करे पंखी किआ आकासु ॥ पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु ॥ कुते चंदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥ बोला जे समझाईऐ पड़ीअहि सिंम्रिति पाठ ॥ अंधा चानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥ चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥ लोहा मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥ नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥ १ ॥

महला १ श्लोक॥ मछली को गहरे जल का क्या लाभ है, यदि वह उसे मछेरे से नहीं बचा सकता? खुले आकाश का पक्षी को क्या लाभ है, यदि वह उसे शिकारी से नहीं बचा सकता ? पत्थर को शीत का क्या लाभ है, जब उस पर सर्दी का कोई प्रभाव ही नहीं होता ? नपुंसक को विवाह करवाने का क्या लाभ है, यदि वह दुल्हन से भोग का आनंद ही नहीं ले सकता ? यदि कुत्ते को चंदन लगा दिया जाए तो फिर भी उसका कुत्ते वाला स्वभाव ही रहेगा और कुत्तिया की ओर ही दौड़ेगा। यदि बहरे मनुष्य को स्मृतियों का पाठ पढ़कर सुनाए तो भी वह सुनकर समझता नहीं। यदि अंधे मनुष्य के समक्ष पचास दीपकों का प्रकाश भी कर दिया जाए तो भी उसे कुछ भी दिखाई नहीं देगा। मनुष्य चाहे गाय एवं भैंसों के समूह के पास सोना रख दे तो भी वह घास को ही चुन-चुनकर खाएँगे। लोहे को कपास के समान लकड़ी के साथ झाड़ें तो भी वह नरम नहीं होता। हे नानक ! मूर्ख मनुष्य में यही गुण होते हैं कि वह जो कुछ भी बोलता है, उससे उसका अपना ही विनाश होता है॥ १॥

मः १ ॥ कैहा कंचनु तुटै सारु ॥ अगनी गंढु पाए लोहारु ॥ गोरी सेती तुटै भतारु ॥ पुतीं गंढु पवै संसारि ॥ राजा मंगै दितै गंढु पाइ ॥ भुखिआ गंढु पवै जा खाइ ॥ काला गंढु नदीआ मीह झोल ॥ गंढु परीती मिठे बोल ॥ बेदा गंढु बोले सचु कोइ ॥ मुइआ गंढु नेकी सतु होइ ॥ एतु गंढि वरतै संसारु ॥ मूरख गंढु पवै मुहि मार ॥ नानकु आखै एहु बीचारु ॥ सिफती गंढु पवै दरबारि ॥ २ ॥

महला १॥ जब कांस्य, सोना एवं लोहा टूट जाए तो सुनार अग्नि से गांठ लगा देता है। यदि पत्नी के साथ पति नाराज़ हो जाए तो पुत्र के द्वारा जगत् में पुनः संबंध कायम हो जाते हैं। राजा अपनी प्रजा से कर माँगता है और उसे कर देने से प्रजा का राजा से संबंध बना रहता है। भूखे लोगों का दानी सज्जनों से संबंध बन जाता है क्योंकि वे उनसे माँगकर भोजन खाते रहते हैं। अकाल पड़ने से लोगों का नदियों से संबंध तब बनता है, जब वर्षा होने पर उनमें से बहुत जल मिलने लगता है। प्रेम व मधुर वचनों का मेलजोल है। यदि कोई सत्य बोले तो उसका संबंध वेदों से हो जाता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में भलाई करते हैं और दान देते हैं, मरणोपरांत उनका संबंध दुनिया से बना रहता है। इस तरह का मेल-मिलाप इस संसार में प्रचलित है। मूर्ख के सुधार का हल केवल यही है कि वह मुँह की मार खाए। नानक एक ज्ञान की बात कहता है कि भगवान की महिमा-स्तुति करने से मनुष्य का उसके दरबार से संबंध कायम हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥ इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥ खरे खजाने पाईअहि खोटे सटीअहि बाहर वारि ॥ खोटे सची दरगह सुटीअहि किसु आगै करहि पुकार ॥ सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु ॥ सतिगुरु खोटिअहु खरे करे सबदि सवारणहारु ॥ सची दरगह मंनीअनि गुर कै प्रेम पिआरि ॥ गणत तिना दी को किआ करे जो आपि बखसे करतारि ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर स्वयं ही सृष्टि की रचना करके स्वयं ही विचार करता है। कई जीव दुष्ट हैं और कई जीव धर्मात्मा हैं। इन दुष्ट एवं धर्मी जीवों की जाँच भगवान स्वयं ही करता है। जैसे खजानची शुद्ध सिक्कों को खजाने में डाल देता है और खोटे सिक्कों को खजाने से बाहर फैंक देता है, वैसे

ही पापियों को प्रभु के दरबार में से बाहर फेंक दिया जाता है। वे पापी जीव किसके समक्ष विनती कर सकते हैं। वह दौड़कर सतिगुरु की शरण में आएँ, यही कर्म श्रेष्ठ है। सतिगुरु पापियों को पवित्र बना देता है। वह पापी मनुष्य को प्रभु के नाम से सुशोभित करने वाला है। गुरु के साथ प्रेम एवं स्नेह करने से प्राणी सत्य दरबार में प्रशंसा के पात्र हो जाते हैं। जिन्हें सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने स्वयं क्षमा कर दिया है, उनके कर्मों का कौन मूल्यांकन कर सकता है॥ १२॥

सलोकु मः १ ॥ हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ ॥ मे रवदि बादिसाहा अफजू खुदाइ ॥ एक तूही एक तुही ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ पीर, शेख एवं राजा इत्यादि सभी दुनिया के लोग जमीन में दफन कर दिए जाते हैं। बादशाह भी अंत में दुनिया से चले जाते हैं। केवल एक खुदा ही सदैव विद्यमान है। हे अल्लाह ! एक तू ही हैं और तू ही इस दुनिया में हमेशा रहने वाला है।

मः १ ॥ न देव दानवा नरा ॥ न सिध साधिका धरा ॥ असति एक दिगरि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ २ ॥

महला १॥ धरती पर सदैव रहने वाले न देवता हैं, न दैत्य हैं, न ही मनुष्य हैं, न ही सिद्ध एवं साधक हैं। यह सभी क्षणभंगुर हैं। हे ईश्वर ! एक तेरे सिवाय दूसरा कोई भी सदैव स्थिर नहीं है। तीनों कालों में एक तू ही सदैव सत्य है॥ २॥

मः १ ॥ न दादे दिहंद आदमी ॥ न सपत जेर जिमी ॥ असति एक दिगरि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ३ ॥

महला १॥ जगत् में न धरती के उपरोक्त आकाश के सप्त लोक स्थिर हैं, जहाँ मनुष्यों के कर्मों का न्याय करने वाले देवते रहते हैं, न जमीन के नीचे सात पाताल के लोग स्थिर हैं, जहाँ दैत्य रहते हैं। सभी क्षणभंगुर हैं। हे प्रभु ! एक तेरे सिवाय दूसरा कोई भी अमर नहीं है। एक तुम ही हो, आदि में भी तुम ही हो और अन्त में भी तुम ही हो॥ ३॥

मः १ ॥ न सूर ससि मंडलो ॥ न सपत दीप नह जलो ॥ अंन पउण थिरु न कुई ॥ एकु तुई एकु तुई ॥ ४ ॥

महला १॥ न सूर्यमण्डल, न चंद्र मण्डल, न ही सप्त द्वीप, न ही सागर, न ही अनाज और हवा कोई भी स्थिर नहीं। हे प्रभु ! केवल तुम ही हो, तीनों कालों में एक तुम ही हो॥ ४॥

मः १ ॥ न रिजकु दसत आ कसे ॥ हमा रा एकु आस वसे ॥ असति एकु दिगर कुई ॥ एक तुई एकु तुई ॥ ५ ॥

महला १॥ जगत् के समस्त जीवों का भोजन पदार्थ उस प्रभु के सिवाय किसी अन्य के वश में नहीं है। हम सबको एक प्रभु की ही आशा है। शेष सब क्षणभंगुर है। हे प्रभु ! एक तेरे सिवाय अन्य कोई दूसरा सदैव स्थिर नहीं है। तीनों कालों में केवल तुम ही हो॥ ५॥

मः १ ॥ परंदए न गिराह जर ॥ दरखत आब आस कर ॥ दिहंद सुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ६ ॥

महला १॥ परिंदों के न अपने घर हैं और न ही उनके पास धन है। वह जीने के लिए जल एवं वृक्षों में अपनी आशा रखते हैं। उन्हें भी आहार देने वाला एक प्रभु ही है। हे प्रभु ! तीनों कालों में तुम ही हो। एक तू ही अटल है॥ ६॥

मः १ ॥ नानक लिलारि लिखिआ सोइ ॥ मेटि न साकै कोइ ॥ कला धरै हिरै सुई ॥ एकु तुई एकु तुई ॥ ७ ॥

महला १॥ हे नानक! इन्सान के माथे पर जो तकदीर के लेख परमात्मा ने लिख दिए हैं, उन्हें कोई भी मिटा नहीं सकता। हे प्रभु! एक तू ही जीवों में प्राण-कला को धारण करते हो, तुम ही उसे वापिस निकाल लेते हो। हे ठाकुर! तीनों कालों में तुम ही हो। एक तू ही अनश्वर है॥ ७॥

पउड़ी ॥ सचा तेरा हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥ गुरमती आपु गवाइ सचु पछाणिआ ॥ सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥ सचा सबदु वीचारि सचि समाणिआ ॥ मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥ विसटा अंदरि वासु सादु न जाणिआ ॥ विणु नावै दुखु पाइ आवण जाणिआ ॥ नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ हे भगवान! तेरा हुक्म सदैव सत्य है और इसे गुरु द्वारा ही जाना जा सकता है। जो व्यक्ति गुरु के उपदेश द्वारा अपने अहंत्व को त्याग देता है, वह भगवान को पहचान लेता है। हे प्रभु! तेरा दरबार सत्य है और तेरा शब्द तेरे दरबार में जाने हेतु निशान है। जो व्यक्ति सत्य-नाम का चिंतन करता है, वह सत्य में ही समा जाता है। मनमुख सदैव झूठे हैं और भ्रम में पड़कर भटके हुए हैं। मरणोपरांत उनका निवास विष्टा में ही होता है क्योंकि अपने जीवन में कभी भी नाम के स्वाद को जाना नहीं होता अर्थात् उन्होंने कभी भी नाम-सिमरन नहीं किया होता। नाम के बिना वे बहुत दुःखी होते हैं। वे योनियों के चक्र में फँस कर जन्मते-मरते रहते हैं। हे नानक! ईश्वर स्वयं ही पारखी है, वह पापी एवं धर्मी की पहचान कर लेता है॥१३॥

सलोकु मः १ ॥ सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥ घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥ नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥ कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥ जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥ नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि भगवान की इच्छा हो तो वह शेरों, बाजों, चीलों तथा कुईयों इत्यादि माँसाहारी पशु-पक्षियों को घास खिला देता है। जो घास खाने वाले पशु हैं, उनको वह माँस खिला देता है। वह जीवों को ऐसे मार्ग पर चला देता है। वह नदियों में टीले बनाकर दिखा देता है और रेगिस्तान में गहरा सागर बना देता है। वह चाहे तो तुच्छ जीव को भी साम्राज्य सौंप देता है और राजाओं की सशक्त सेना का वध करके राख बना देता है। जगत् में जितने भी जीव हैं वे सभी श्वास लेकर जीते हैं अर्थात् श्वासों के बिना जीवित नहीं रह सकते परन्तु यदि परमात्मा की इच्छा हो तो उन्हें श्वासों के बिना भी जीवित रख सकता है। हे नानक! जिस तरह सत्य प्रभु को अच्छा लगता है, वैसे ही वह जीवों को आहार देता है॥ १॥

मः १ ॥ इकि मासहारी इकि त्रिणु खाहि ॥ इकना छतीह अंम्रित पाहि ॥ इकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥ इकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥ इकि निरंकारी नाम आधारि ॥ जीवै दाता मरै न कोइ ॥ नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइ ॥ २ ॥

महला १॥ कई जीव माँसाहारी हैं जैसे शेर, बाघ, चीते एवं बाज इत्यादि। कई जीव घास खाते हैं जैसे गाय, भैंस एवं घोड़े इत्यादि। कई जीव छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट भोजन खाते है जैसे मनुष्य। कई जीव मिट्टी में ही रहते हैं और मिट्टी ही खाते हैं। कई जीव पवन आहारी गिने जाते हैं। कई जीव निरंकार के पुजारी हैं और उन्हें नाम का ही आधार है। जीवनदाता प्रभु सदैव जीवित है। कोई भी जीव

भूखा नहीं मरता क्योंकि प्रभु सबको आहार देता है। हे नानक! जो उस परमेश्वर को अपने हृदय में नहीं बसाते, वे मोह–माया के हाथों ठगे जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ पूरे गुर की कार करमि कमाईऐ ॥ गुरमती आपु गवाइ नामु धिआईऐ ॥ दूजी कारै लगि जनमु गवाईऐ ॥ विणु नावै सभ विसु पैझै खाईऐ ॥ सचा सबदु सालाहि सचि समाईऐ ॥ विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईऐ ॥ दुनीआ खोटी रासि कूड़ु कमाईऐ ॥ नानक सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईऐ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ भाग्य से ही पूर्ण गुरु की सेवा की जाती है। गुरु की मति द्वारा हमें अपने अहंत्व को मिटाकर भगवान के नाम का ध्यान करते रहना चाहिए। धन–दौलत कमाने के कार्य में लगकर हम अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। नाम के सिवाय हमारा वस्त्र पहनना एवं भोजन ग्रहण करना सब कुछ ही विष खाने के समान है। अतः सत्यनाम की महिमा–स्तुति करने से ही सत्य में समाया जा सकता है। सतिगुरु की सेवा किए बिना मनुष्य का सुख में निवास नहीं होता और वह बार–बार जन्मता एवं मरता है। झूठे संसार में प्राणी झूठे कर्म करता रहता है। हे नानक! निर्मल सत्य नाम का यशोगान करने से मनुष्य सत्य के दरबार में सम्मानपूर्वक संसार से जाता है॥ १४॥

सलोकु मः १ ॥ तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि ॥ जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंडी नादु वजावहि ॥ जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥ जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥ जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ॥ जा तुधु भावै जाहि दिसंतरि सुणि गला घरि आवहि ॥ जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि ॥ नानकु एक कहै बेनंती होरि सगले कूड़ु कमावहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे भगवान! जब तुझे अच्छा लगता है तो मनुष्य संगीतमय बाजे बजाता और गाता है। जब तेरी इच्छा होती है तो वह जल में स्नान करता है। जब तुझे अच्छा लगता है तो प्राणी अपने शरीर पर विभूति मलता है और सिंगी नाद बजाता है। जब तुझे अच्छा लगता है तो मनुष्य कुरान पढ़ता है और मुल्लां और शेख कहलाया जाता है। हे नाथ! जब तेरी इच्छा होती है, तो कई राजा बन जाते हैं और अधिकतर स्वादों का आनंद लेते हैं। हे ठाकुर! जब तुझे उपयुक्त लगता है तो मनुष्य तलवार चलाते हैं और शीश को धड़ से काट फैंकते हैं। हे स्वामी! जब तेरी इच्छा होती है तो लोग देश–देशांतरों में जाते हैं और अनेकों सूचनाएँ श्रवण करके घर लौट आते हैं। हे प्राणपति! जब तुझे उपयुक्त लगता है, तो मनुष्य तेरे नाम में लीन हो जाता है और जब तेरी इच्छा होती है, वह तुझे अच्छा लगने लग जाता है। नानक एक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! तेरी इच्छा में चलने वालों के अलावा शेष सभी जीव झूठ ही कमाते हैं॥ १॥

मः १ ॥ जा तूं वडा सभि वडिआईआ चंगै चंगा होई ॥ जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइ न कोई ॥ आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥ २ ॥

महला १॥ हे ईश्वर! जब तू महान है, तो सारी महानता तुझ से ही प्रकट होती है। तुम स्वयं भले हो और तुझसे भला ही होना है। जब तू स्वयं सत्य है तो जो तेरी पूजा करते हैं वह सभी सत्यवादी बन जाते हैं। तेरे सच्चे भक्त को कोई भी मनुष्य झूठा दिखाई नहीं देता। जीवों का कहना, देखना, बोलना, चलना, जीना एवं मरना इत्यादि यह तेरी माया खेल ही है। हे नानक! सत्यस्वरूप परमात्मा स्वयं ही अपने हुक्म द्वारा सृष्टि रचना करता है और अपने हुक्म में ही समस्त प्राणियों को रखता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ॥ सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईऐ ॥ लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईऐ ॥ मनमुखि कूड़ु गुबारु कूड़ु कमाईऐ ॥ सचे दै दरि जाइ सचु चवांईऐ ॥ सचै अंदरि महलि सचि बुलाईऐ ॥ नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईऐ ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ यदि हम सतिगुरु की निष्काम सेवा करें तो भ्रम दूर हो जाते है। हमें वहीं कार्य करना चाहिए जो सतिगुरु करने के लिए कहते हैं। यदि सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ, तो ही हम नाम सिमरन कर सकते हैं। मनमुख व्यक्ति के लिए अज्ञानता का अँधेरा बना रहता और वे झूठे धन की ही कमाई करते रहते हैं। जो व्यक्ति सत्य के दर सत्य प्रभु का नाम–सिमरन करता है, ऐसे सत्यवादी को सत्य प्रभु के आत्मस्वरूप में बुला लिया जाता है। हे नानक! जो व्यक्ति हमेशा ही सत्य–नाम का सिमरन करता रहता है, वहीं सत्यवादी है और वह सत्य में ही समा जाता है॥ १५॥

सलोकु मः १ ॥ कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ हउ भालि विकुंनी होई ॥ आधेरै राहु न कोई ॥ विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ कलियुग छुरी है और बादशाह कसाई है। धर्म पंख लगाकर दुनिया में से उड़ गया है अर्थात् कलियुग में धर्म का नाश हो गया है। झूठ की इस अमावस्या की रात्रि में सत्य का चाँद कहीं उदय हुआ दिखाई नहीं देता अर्थात हर तरफ झूठ ही विद्यमान है और सत्य का नाश हो गया है। मैं सत्य की खोज–तलाश करती हुई पागल हो गई हूँ, सारी दुनिया ही झूठ के अंधेरे में अहंकारवश दुखी होकर विलाप कर रही है। हे नानक! इस झूठ से किस विधि द्वारा जीवों की मुक्ति होगी ?॥ १॥

मः ३ ॥ कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ जिस नो नदरि करे तिसु देवै ॥ नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥ २ ॥

महला ३॥ कलियुग में भगवान की महिमा दुनिया में ज्ञान रूपी प्रकाश प्रगट कर देती है। कोई विरला गुरमुख ही भवसागर को तर कर पार होता है। हे नानक! जिस व्यक्ति पर भगवान अपनी कृपा–दृष्टि करता है, उसे ही अपनी महिमा की देन प्रदान करता है किन्तु गुरमुख ही नाम रूपी रत्न प्राप्त करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥ करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥ भगत आपे मेलिअनु जिनी सची सचु कमाइआ ॥ सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥ चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु वधाइआ ॥ भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥ दासनि दास होइ कै जिनी विचहु आपि गवाइआ ॥ ओना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ भगवान के भक्तों एवं दुनिया के जीवों में मिलाप कभी भी योग्य नहीं बना। भगवान स्वयं अचूक है। वह किसी दूसरे के भुलाने से भी भूल नहीं करता। जिन्होंने सत्यवादी बनकर सत्य की ही साधना की है ऐसे भक्तों को भगवान ने स्वयं ही अपने साथ मिलाया हुआ है। जिन लोगों ने झूठ बोल–बोलकर माया रूपी विष खाया है, ऐसे लोगों को भगवान ने स्वयं ही कुमार्गगामी कर दिया है। जिन्होंने दिन–रात नाम का ही ध्यान किया है, ऐसे भक्तजन ही भगवान की भक्ति एवं सेवा करते रहते हैं। जिन्होंने प्रभु के दासों के दास बनकर अपने अन्तर्मन से अहंकार को मिटा दिया है, मालिक–प्रभु के दरबार में उनके ही मुख उज्ज्वल होते हैं और वे सत्य नाम द्वारा सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥ १६॥

सलोकु मः १ ॥ सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥ सेई पूरे साह वखते उपरि लड़ि मुए ॥ दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ ॥ बहुतु पए असगाह गोते खाहि न निकलहि ॥ तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकीआ ॥ खाधा होइ सुआह भी खाणे सिउ दोसती ॥ चउथै आई ऊंघ अखी मीटि पवारि गइआ ॥ भी उठि रचिओनु वादु सै वरिआ की पिड़ बधी ॥ सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ ॥ नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जो व्यक्ति प्रातः काल एकाग्रचित होकर ईश्वर का यश करते और उसे स्मरण करते हैं, वही पूर्ण सम्राट हैं और सही वक्त पर लड़कर मृत्यु को प्राप्त हुए हैं। दूसरे प्रहर में मन की वृत्ति बिखर जाती है और मन अनेक मार्गों पर दौड़ता है। मनुष्य बहुत सारे धंधों के झंझटों रूपी अथाह सागर में गिर जाता है और ऐसे गोते खाता है कि उसमें से बाहर निकल ही नहीं सकता। तीसरे प्रहर में जब भूख और प्यास रूपी दोनों कुत्ते भौंकने लग जाते हैं तो मनुष्य को उनके मुँह में भोजन एवं पानी डालना पड़ता है, जब पहला भोजन का ग्रास हजम हो जाता है तो और भोजन खाने की लालसा उत्पन्न होती है। चौथे प्रहर में मनुष्य को निद्रा आ जाती है, वह अपने नेत्र बन्द कर लेता है और स्वप्न मण्डलों में चला जाता है। फिर निद्रा से उठकर, वह पुनः विवाद खड़ा कर देता है और यूं अखाड़ा बनता है, जिस तरह उसने सैकड़ों वर्ष जीना है। यद्यपि मनुष्य के मन में आठों प्रहर परमात्मा का भय बना रहे तो उसके लिए सभी वक्त नाम–सिमरन हेतु शुभ हैं। हे नानक! यदि भगवान मनुष्य के हृदय में निवास कर ले तो उसका यह सच्चा स्नान हो जाता है॥१॥

मः २ ॥ सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥ अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥ दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥ करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥ नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥ २ ॥

महला २॥ वही व्यक्ति पूर्ण शाह हैं, जिन्होंने पूर्ण प्रभु को पा लिया है। वह दुनिया से बेपरवाह होकर आठों प्रहर एक परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहते हैं। ऐसे विरले पुरुष हैं जो अनंत परमात्मा के दर्शन प्राप्त करते हैं। बड़ी तकदीर से ही पूर्ण गुरु मिलता है, जिस गुरु के सारे ही किए वचन पूर्ण होते हैं। हे नानक! यदि गुरु जी किसी सेवक को सम्पूर्ण बना दें तो उसका विवेक कम नहीं होता॥ २॥

पउड़ी ॥ जा तूं ता किआ होरि मै सचु सुणाईऐ ॥ मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ ॥ एनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ ॥ जितु घटि सचु न पाइ सु भंनि घड़ाईऐ ॥ किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ ॥ कोइ न आखै घटि हउमै जाईऐ ॥ लईअनि खरे परखि दरि बीनाईऐ ॥ सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे प्रभु! मैं सत्य कहता हूँ जब तुम मेरे हो, तो मुझे शेष और क्या चाहिए? जिस जीव–स्त्री को लौकिक कार्यों रूपी चोरों ने लूट लिया है, वह प्रभु के आत्म–स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकती। उसने अपने निष्ठुर हृदय के कारण सेवा–भक्ति का अवसर गंवा दिया है। जिसके हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा का निवास नहीं होता उसको नष्ट करके नए तरीके से बनाया जाता है। अर्थात् उसका जन्म–मरण होता रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने कर्मों का लेखा देते वक्त पूरे माप सहित तोलने से कैसे पूरा तोला जाएगा? यदि जीव का अहंकार दूर हो जाए तो उसके कर्मों के तोल को कोई भी कम नहीं कहेगा। सभी जीव चतुर प्रभु के दरबार पर परखे जाते हैं कि वह धर्मात्मा है अथवा पापी हैं। नाम का सौदा एक सत्संग रूपी दुकान से ही मिलता है। यह पूर्ण गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है॥ १७॥

सलोक मः २ ॥ अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥ तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु ॥ करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु ॥ चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥ तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ ओथै अम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ ॥ कंचन काइआ कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥ सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि ॥ ओथै पापु पुंनु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि ॥ ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि ॥ बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ दिन-रात के वक्त को आठ भागों में विभक्त किया हुआ है, जिन्हें आठ प्रहर कहा जाता है। एक प्रहर तीन घण्टों का होता है। इन आठों प्रहरों में से एक प्रहर का संबंध शरीर से है। इस प्रहर को अगली तुकों में प्रातः काल का चतुर्थ प्रहर कहा गया है। उस शरीर में अद्वितीय परमात्मा के नाम की नवनिधि है। भले और गंभीर पुरुष उन निधियों को ढूँढते हैं। हे नानक! भाग्यशाली मनुष्य गुरु अथवा पीर धारण करके भगवान की महिमा गायन करते हैं। दिन के चौथे प्रहर प्रातः काल नाम में वृत्ति लगाने वाले व्यक्तियों के मन में उत्साह उत्पन्न होता है। उनकी मित्रता नदियों से होती हैं अर्थात् सत्संग रूपी नदिया पर जाकर स्नान है और उनके मन एवं मुख में सत्य नाम विद्यमान है। उस सत्संग में अमृत रूप ईश्वर का नाम बांटा जाता है और भाग्यशालियों को नाम की देन प्राप्त होती है। उनके सोने जैसे अर्थात् शुद्ध तन को जब नाम रूपी कसौटी लगाई जाती है तो उनके तन को भक्ति का सुन्दर रंग चढ़ जाता है। जब सतिगुरु रूपी सर्राफ की उन पर कृपा-दृष्टि हो जाती है तो उन्हें जन्म-मरण रूपी कष्ट नहीं मिलता। शेष सातों प्रहरों में सत्य बोलना एवं विद्वानों के पास बैठना अति उत्तम है। वहाँ पाप एवं पुण्य की पहचान होती है और झूठ की पूँजी कम होती है। वहाँ खोटे पुरुष दूर फैंके जाते हैं और भले पुरुषों को शाबाशी मिलती है। हे नानक! जीवों को दुःख एवं सुख भगवान स्वयं ही देता है और मनुष्य का किसी प्रकार का शिकवा करना व्यर्थ है॥ १॥

मः २ ॥ पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिनसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥ २ ॥

महला २॥ सारी दुनिया का गुरु पवन है, जल पिता है और पृथ्वी बड़ी माता है। दिन एवं रात्रि दोनों उपपिता एवं उपमाता है, जिनकी गोद में सारी दुनिया खेल रही है। परलोक में भगवान के समक्ष यमराज जीवों के शुभ-अशुभ कर्मों का विवेचन करता है। अपने-अपने कर्मों के अनुसार कुछ जीव ईश्वर के निकट एवं कुछ जीव दूर होते हैं। जिन्होंने भगवान का नाम-सिमरन किया है, वे पूजा-तपस्या इत्यादि की मेहनत को साकार कर गए हैं। हे नानक! ऐसे प्राणियों के चेहरे उज्ज्वल हुए हैं और अनेकों ही उनके साथ वाले मुक्ति प्राप्त कर गए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सचा भोजनु भाउ सतिगुरि दसिआ ॥ सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ ॥ सचै कोटि गिरांइ निज घरि वसिआ ॥ सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ ॥ सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥ झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ ॥ सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ ॥ सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ सतिगुरु ने जिस व्यक्ति को यह ज्ञान बता दिया है कि भगवान का प्रेम ही खाने योग्य सत्य-भोजन है, वही व्यक्ति सत्य प्रभु में निष्ठावान हुआ है और सत्य में समाकर फूल की तरह खिल

गया है। उसके गांव रूपी शरीर में जो भगवान का आत्मस्वरूप रूपी किला है, वहाँ स्थित हो गया है। सतिगुरु ने प्रसन्न होकर उसे नाम प्रदान किया है और वह भगवान के प्रेम से कृतार्थ हो गया है। कोई भी व्यक्ति सत्य के दरबार में झूठ की कमाई करके नहीं जा सकता। जो व्यक्ति केवल झूठ ही बोलता रहता है, वह आत्मस्वरूप में नहीं जा सकता। जो व्यक्ति सत्य–नाम का परवाना लेकर जाता है, उसे आत्मस्वरूप में जाने से कोई भी रोक नहीं सकता। जो व्यक्ति भगवान के सत्यनाम को सुनता, समझता एवं उसे जपता है, वह आत्म–स्वरूप में निमंत्रित कर लिया जाता है॥१८॥

सलोकु मः १ ॥ पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥ सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ धरि ताराजी अंबरु तोली पिछै टंकु चड़ाई ॥ एवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥ एता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥ जेवडु साहिबु तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥ नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि मैं अग्नि की पोशाक धारण कर लूँ, हिम में अपना घर बना लूँ और लोहे को अपना आहार बना लूँ, समस्त दुखों को यदि मैं जल की भाँति पान कर लूँ और धरती को पशुओं की भाँति हाँक कर चलाऊँ। आकाश को तराजू में रखकर तोलूँ और यदि मैं दूसरी ओर चार माशे के तोल से तोलूँ, यदि मैं अपने शरीर को इतना बड़ा कर लूँ कि कहीं भी समा न सकूँ और यदि मैं समस्त जीवों के नाक में नुकेल डालकर अपने हुक्म में चलाता रहूँ, यदि मेरे मन में इतना बल हो कि इस तरह की बातें मैं करूँ और अपने कथन से दूसरों से भी कराऊँ पर यह सब कुछ व्यर्थ है। जितना महान परमेश्वर है उतने महान ही उसके दान हैं। वह अपनी इच्छानुसार जीवों को दान देता है। हे नानक ! जिस पर प्रभु अपनी कृपा–दृष्टि करता है, उसको सत्य नाम की महानता प्राप्त होती है॥१॥

मः २ ॥ आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥ अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥ भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥ नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥ २ ॥

महला २॥ इन्सान का मुँह बातें कह–कह कर तृप्त नहीं होता, उसके कान बातें अथवा संगीत सुन–सुनकर संतुष्ट नहीं होते और उसकी आँखें सुन्दर रूप देख–देखकर तृप्त नहीं होतीं। प्रत्येक अंग एक प्रकार की विशेषता का ग्राहक है। भूखों की भूख निवृत्त नहीं होती। मौखिक बातों से भूख दूर नहीं होती। हे नानक ! भूखा मनुष्य तभी तृप्त होता है यदि वह गुणों के भण्डार परमात्मा की महिमा करके उसमें समा जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥ विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥ विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥ विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥ विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥ कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥ सभु जगु ठगिओ ठगि आईऐ जाईऐ ॥ तन महि त्रिसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥ १९ ॥

पउड़ी॥ सत्य नाम के अलावा सभी कार्य झूठे हैं और झूठ का ही कर्म करते हैं। सत्यनाम के सिवाय अन्य झूठे कार्य करने वाले लोगों को यमदूत बांधकर यमपुरी ले जाते हैं। सत्य नाम के अलावा यह तन मिट्टी समान है और मिट्टी में ही मिल जाता है। सत्यनाम के सिवाय मनुष्य जितना बढ़िया पहनता एवं खाता है, उससे उसकी भूख में ही वृद्धि होती है। मनुष्य सत्य नाम के बिना झूठे कार्य करके प्रभु के दरबार को प्राप्त नहीं कर सकता। सच्चे परमात्मा के अलावा झूठे लोग ईश्वर के मन्दिर

को प्राप्त नहीं होते। झूठे लोभ से सम्मिलित होकर मनुष्य प्रभु के मन्दिर को गंवा देता है। सारा जगत् धोखेबाज माया ने छल लिया है और प्राणी योनियों में फँसकर जन्म लेता और मरता रहता है। प्राणी के तन में तृष्णा की अग्नि विद्यमान है। यह प्रभु के नाम से ही बुझाई जा सकती है॥ १६॥

सलोक मः १ ॥ नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥ रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! गुरु संतोष रूपी वृक्ष है, इस वृक्ष को धर्म रूपी फूल लगता है और ज्ञान रूपी फल लगते हैं। हरि-रस रूपी जल से सींचा हुआ यह वृक्ष सदैव ही हरा-भरा रहता है। भगवान की कृपा से ध्यान द्वारा यह ज्ञान रूपी फल पकते हैं। इस ज्ञान रूपी फल को खाने वाला मनुष्य पति-प्रभु के मिलाप के आनंद को प्राप्त करता है। ज्ञान रूपी दान ही समस्त दानों में से बड़ा दान है॥ १॥

मः १ ॥ सुइने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ अठिसठि तीरथ गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥ २ ॥

महला १॥ गुरु सोने का वृक्ष है, जिसके पत्ते मूंगे हैं और इसके पुष्प जवाहर एवं माणिक हैं। उस पौधे को गुरु के मुखारबिंद के वचन की मणि का फल लगा हुआ है। जो व्यक्ति गुरु के वचनों को अपने हृदय में बसा लेता है, वह कृतार्थ हो जाता है। हे नानक! गुरु के शब्द रूपी फल उस व्यक्ति के मुँह में ही पड़ते हैं, जिस पर भगवान की कृपा होती है और उसके माथे पर तकदीर का शुभ लेख लिखा होता है। गुरु के चरणों में आने से अठसठ तीर्थों के स्नान से भी अधिक फल मिलता है। अतः हमेशा ही गुरु के चरणों की पूजा करनी चाहिए। हे नानक! हिंसा, मोह, लालच एवं क्रोध यह चारों ही अग्नि की नदियों हैं। इनमें पड़ने से प्राणी दग्ध हो जाता है। इन नदियों में से वहीं मनुष्य पार होते हैं जो भगवान की कृपा से नाम-सिमरन में लग जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ॥ झूठा इहु संसारु किनि समझाईऐ ॥ सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥ कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥ हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥ आपे देइ पिआरु मंनि वसाईऐ ॥ मुहतु न चसा विलंमु भरीऐ पाईऐ ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाईऐ ॥ २० ॥

पउड़ी॥ जीवित ही मर जाओ अर्थात् अपने अहंकार को नष्ट कर दो। अहंकार को नष्ट करने के उपरांत पश्चाताप नहीं होगा। यह दुनिया झूठी है, परन्तु किसी विरले ने ही यह बात गुरु से समझी है। मनुष्य सत्यनाम से प्रेम नहीं करता और दुनिया के धंधों में लगकर भटकता रहता है। यम बहुत निर्दयी है और जीवों का नाश करने वाला है। यह दुनिया के लोगों पर सवार है। ईश्वर के आदेश से यमदूत अवसर पाकर मनुष्य के सिर पर डण्डा मारता है। परमेश्वर स्वयं ही अपना प्रेम प्रदान करता है और इसे प्राणी के मन में वास कराता है। मनुष्य का शरीर त्यागने में मुहूर्त अथवा क्षण भर का विलम्ब नहीं होता। गुरु की कृपा से इस भेद को समझ कर प्राणी सत्य में ही समा जाता है॥ २०॥

सलोकु मः १ ॥ तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु॥ मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही॥ नानक कहीऐ किसु हंढनि करमा बाहरे ॥ १॥

श्लोक महला १॥ हे प्रभु! जिस व्यक्ति को तू हृदय में याद नहीं आता, उस व्यक्ति के मन एवं मुँह में तुंबी, विष, आक, धतूरा एवं नीम फल जैसी कड़वाहट बनी रहती है। हे नानक! ऐसे भाग्यहीन व्यक्ति भटकते रहते हैं और उनकी दुखद दशा किसे बताई जाए॥ १॥

मः १॥ मति पंखेरू किरतु साथि कब उतम कब नीच ॥ कब चंदनि कब अकि डालि कब उची परीति ॥ नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीति ॥ २ ॥

महला १॥ आदमी की मति एक पक्षी है। आदमी की किस्मत उस पक्षी के पंख हैं जो उसके साथ रहते हैं। यह पक्षी पंखों से उड़कर कभी उत्तम एवं कभी नीच स्थानों पर बैठता है। यह कभी स्वर्ग रूपी चंदन के वृक्ष और कभी नरक रूपी आक की डाली पर बैठता है। यह कभी भगवान से भी प्रेम कर लेता है। हे नानक ! भगवान प्राणियों को अपनी इच्छानुसार चलाता है। यह रीति आदिकाल से प्रचलित है॥ २॥

पउड़ी ॥ केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा ॥ वेद कहहि वखिआण अंतु न पावणा ॥ पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ पावणा ॥ खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा ॥ सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा ॥ मंने नाउ बिसंख दरगह पावणा ॥ खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा ॥ नानक जुगु जुगु एकु मंनि वसावणा ॥ २१॥

पउड़ी॥ कितने ही लोग भगवान के गुणों का बखान कर रहे हैं और कितने ही लोग बखान कर करके दुनिया से चले गए हैं। वेद भगवान के गुणों का बखान करते हैं परन्तु उसके गुणों का अंत नहीं पा सकते। पढ़ने से उसका भेद नहीं पाया जा सकता। उसका भेद ज्ञान से ही पाया जाता है। षट्दर्शन के छः मत्त हैं परन्तु उनके द्वारा कोई विरला पुरुष ही परमात्मा में लीन होता है। जिस प्राणी ने गुरु की शिक्षा से सच्चा अलख पुरुष पाया है, वह शोभायमान है। जिन्होंने अनन्त ईश्वर के नाम का चिंतन–मनन किया है, वह उसके दरबार में जाता है। मैं ढाडी हूँ और सृष्टि के सृजनहार को प्रणाम करता उसका यशोगान करता रहता हूँ। हे नानक ! वह एक ईश्वर प्रत्येक युग में विद्यमान है और उसे ही अपने मन में बसाना चाहिए॥ २१॥

सलोकु महला २ ॥ मंत्री होइ अठूहिआ नागी लगै जाइ ॥ आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ ॥ हुकमु पइआ धुरि खसम का अती हू धका खाइ ॥ गुरमुख सिउ मनमुखु अड़ै डुबै हकि निआइ ॥ दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइ ॥ नानक एवै जाणीऐ सभ किछु तिसहि रजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ यदि कोई आदमी मन्त्र तो बिच्छू का जानता हो, लेकिन सर्पों को जाकर पकड़ ले तो वह अपने हाथों से स्वयं अपने आपको अग्नि का लूका लगा लेता है। आदिकाल से ही ईश्वर का यह हुक्म हुआ है कि जो बुरा करता है वह भारी ठोकर खाता है। जो मनमुख इन्सान गुरमुख से विरोध करता है, वह नष्ट हो जाता है। यही सच्चा न्याय है। लोक एवं परलोक दोनों तरफ का न्याय करने वाला मालिक–प्रभु स्वयं ही न्याय करके देखता है। हे नानक ! इसे इस तरह समझो कि सबकुछ परमात्मा की इच्छानुसार ही हो रहा है॥ १॥

महला २ ॥ नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥ रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥ वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु ॥ मूलु जाणि गला करे हाणि लाए हाणु ॥ लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु ॥ सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु ॥ अगै ओहु अगंमु है वाहेदड़ु जाणु ॥ २ ॥

महला २॥ हे नानक ! यदि मनुष्य अपने आप को परखे, केवल तभी उसे पारखी समझो। यदि मनुष्य रोग एवं औषधि दोनों को समझता हो तो ही वह चतुर वैद्य है। मानव को चाहिए कि वह इस दुनिया में स्वयं को एक अतिथि समझे तथा धर्म–मार्ग पर चलता हुआ दूसरों से विवाद मत करे। वह जगत् के मूल प्रभु को समझकर दूसरों से प्रभु बारे विचार–विमर्श करे। वह दुनिया में नाम–सिमरन

करने आया है तथा उसे कामादिक हानिकारक पापों को नष्ट कर देना चाहिए। जो लालच के मार्ग पर नहीं चलता और सत्य में वास करता है, वह मध्यस्थ ही प्रभु के दरबार में स्वीकृत होता है। यदि बाण आकाश को मारा जाए, वह बाण किस तरह वहाँ पहुँच सकता है? ऊपर वह आकाश अगम्य है, इसलिए समझ लीजिए कि बाण उलटकर बाण चलाने वाले पर ही लगेगा॥ २॥

पउड़ी ॥ नारी पुरख पिआरु प्रेमि सीगारीआ ॥ करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ ॥ महला मंझि निवासु सबदि सवारीआ ॥ सचु कहनि अरदासि से वेचारीआ ॥ सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ ॥ सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ ॥ बिनु नावै ध्रिगु वासु फिटु सु जीविआ ॥ सबदि सवारीआसु अंम्रितु पीविआ ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ जीव–स्त्रियाँ अपने प्रभु–पति से मुहब्बत करती हैं और उन्होंने प्रेम का शृंगार किया हुआ है। दिन–रात वह प्रभु की भक्ति करती हैं और भक्ति करने से वह रुकती नहीं। परमेश्वर के मन्दिर में उनका निवास है और प्रभु के नाम से वह संवरी हुई हैं। वह विनीत होकर सच्चे हृदय से प्रार्थना करती हैं। वह अपने स्वामी के पास सुन्दर लगती हैं और पति–प्रभु के हुक्म में उसके पास पहुँची हैं। वह प्रभु को श्रद्धा से प्रेम करती है। वे सभी सखियां प्रभु के समक्ष प्रार्थना करती हैं। प्रभु–नाम के बिना मनुष्य का जीवन धिक्कार–योग्य है और उसका निवास भी धिक्कार योग्य है। जो जीव–स्त्री नाम द्वारा संवर गई है उसने ही नाम रूपी अमृत पान कर लिया है॥ २२॥

सलोकु मः १ ॥ मारू मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न भुख ॥ राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे किसुक ॥ नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जैसे मरुस्थल वर्षा से तृप्त नहीं होता वैसे ही अग्नि की भूख लकड़ियों से दूर नहीं होती। कोई भी सम्राट साम्राज्य से तृप्त नहीं होता और सागर को कभी कोई नहीं भर सका। हे नानक! भक्तजनों को सत्य नाम की कितनी भूख लगी रहती है, वह बताई नहीं जा सकती अर्थात् भक्त नाम जप–जप कर तृप्त ही नहीं होते॥१॥

महला २ ॥ निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥ सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ २ ॥

महला २॥ जब तक इन्सान को परमेश्वर का ज्ञान नहीं होता उसका जीवन व्यर्थ है। गुरु की कृपा से विरले पुरुष ही संसार सागर से पार होते हैं। नानक विचार कर कहते हैं कि परमेश्वर सब कार्य करने में समर्थ है। जगत् का कारण सृजनहार प्रभु के वश में है और प्रभु की कला ने इस जगत् को धारण किया हुआ है॥ २॥

पउड़ी ॥ खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ ॥ सचा खसमु कलाणि कमलु विगसिआ ॥ खसमहु पूरा पाइ मनहु रहसिआ ॥ दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ ॥ सचा सतिगुरु सेवनि सचा मारगु दसिआ ॥ सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिआ ॥ ढाढी कथे अकथु सबदि सवारिआ ॥ नानक गुण गहि रासि हरि जीउ मिले पिआरिआ ॥ २३ ॥

पउड़ी॥ भाट (यशोगान करने वाला) प्रभु के दरबार में वास करता है। सत्यस्वरूप परमेश्वर की महिमा गायन करने से उसका हृदय कंवल प्रफुल्लित हो गया है। ईश्वर से पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने से अपने हृदय में वह परम प्रसन्न हो गया है। उसने अपने हृदय में काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इत्यादि शत्रुओं को मार कर बाहर निकाल दिया है और उसके सज्जन–सत्य, संतोष, दया एवं धर्म इत्यादि

प्रसन्न हो गए हैं। सच्चे सतिगुरु ने उसे प्रभु-मिलन का सन्मार्ग बता दिया है। सत्यस्वरूप ब्रह्म का चिन्तन करने से उसने काल (मृत्यु) को नष्ट कर दिया है। यशोगान करने वाला चारण अकथनीय प्रभु की महिमा बखान करता है और प्रभु नाम से श्रृंगारा गया है अर्थात् उसका जन्म सफल हो गया है। हे नानक! शुभ गुणों की पूँजी पकड़ कर रखने से उसने पूज्य परमेश्वर हरि से भेंट कर ली है॥ २३॥

सलोकु मः १ ॥ खतिअहु जंमे खते करनि त खतिआ विचि पाहि ॥ धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ नानक बखसे बखसीअहि नाहि त पाही पाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हम जीवों के जन्म पूर्वकृत किए पापों के कारण हुए हैं। हम जन्म लेकर अब फिर पाप किए जा रहे हैं और अगले जन्मों में भी हम पाप कर्मों में ही पड़ेंगे। हमारे यह पाप धर्म-कर्म करने से बिल्कुल ही नहीं मिटते, चाहे हम हजारों बार तीर्थ-स्नान करके पाप धोने का प्रयास ही कर लें। हे नानक! यदि प्रभु क्षमादान कर दें तो यह पाप क्षमा कर दिए जाते हैं, अन्यथा अत्यन्त प्रताड़ना मिलती है॥१॥

मः १ ॥ नानक बोलणु झखणा दुख छडि मंगीअहि सुख ॥ सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥ जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! यदि हम भगवान से दुखों को छोड़कर सुख ही माँगें, तो यह बोलना व्यर्थ ही है। सुख एवं दुख यह दोनों ही भगवान के दरबार से मिले हुए वस्त्र हैं, जिन्हें मानव दुनिया में आकर पहनता है। जहाँ बोलने से पराजित ही होना है, वहाँ चुप रहने में ही भलाई है॥ २॥

पउड़ी ॥ चारे कुंडा देखि अंदरु भालिआ ॥ सचै पुरखि अलखि सिरजि निहालिआ ॥ उझड़ि भुले राह गुरि वेखालिआ ॥ सतिगुर सचे वाहु सचु समालिआ ॥ पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥ सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिआ ॥ निडरिआ डरु लगि गरबि सि गालिआ ॥ नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ ॥ २४ ॥

पउड़ी॥ चारों दिशाओं में ढूँढने के पश्चात मैंने परमात्मा को अपने हृदय में ही ढूँढ लिया है। उस अलक्ष्य, सद्पुरुष एवं सृष्टिकर्ता को देखकर कृतार्थ हो गया हूँ। मैं उजाड़ संसार में भटक गया था लेकिन गुरदेव ने मुझे सद्मार्ग दिखा दिया है। सत्य के पुंज सतिगुरु धन्य हैं, जिनकी दया से मैंने सत्य स्वरूप परमात्मा की आराधना की है। सतिगुरु ने मेरे अन्तर्मन में ही ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित कर दिया है, जिससे मैंने अपने हृदय-घर में नाम रूपी रत्न को पा लिया है। गुरु के शब्द द्वारा सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा-स्तुति करके मैं सुखी हो गया हूँ और सत्यवादी बन गया हूँ। जिन लोगों को प्रभु का भय नहीं, उन्हें यम का भय लगा रहता है और वे अहंकार में ही नष्ट हो जाते हैं। नाम को विस्मृत करके संसार प्रेत की भाँति भटकता रहता है॥ २४॥

सलोकु मः ३ ॥ भै विचि जंमै भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥ नानक भै विचि जे मरै सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मानव भय में जन्म लेता है और भय में ही प्राण त्याग देता है। जन्म-मरण के उपरांत भी उसके मन में भय ही बना रहता है। हे नानक! यदि मानव प्रभु के भय में मरता है अर्थात् मानता है तो उसका जगत् में आगमन सफल सुखदायक हो जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ भै विणु जीवै बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ॥ नानक भै विणु जे मरै मुहि कालै उठि जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ ईश्वर का भय धारण किए बिना प्राणी बहुत ज्यादा देर तक जीता और आनन्द ही आनन्द प्राप्त करता है। हे नानक! यदि वह ईश्वर के भय बिना प्राण त्याग दे तो वह चेहरे पर कालिख लगा कर दुनिया से चला जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईऐ ॥ २५ ॥

पउड़ी॥ जिस व्यक्ति पर सतिगुरु दयालु हो जाते हैं, उसकी श्रद्धा पूर्ण हो जाती है। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य कभी पश्चाताप नहीं करता। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य दुख को जानता ही नहीं। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य हरि की प्रीति का आनंद प्राप्त करता है। जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो मनुष्य को यम का भय नहीं रहता। जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो तन को सदा सुख प्राप्त होता है। जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य सत्य में ही समा जाता है॥२५॥

सलोकु मः १ ॥ सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥ फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥ भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥ माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥ ओना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥ अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अंनु न खाही ॥ सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥ झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥ लकी कासे हथी फुंमण अगो पिछी जाही ॥ ना ओइ जोगी ना ओइ जंगम ना ओइ काजी मुंला ॥ दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥ जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥ दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥ पाणी विचहु रतन उपंने मेरु कीआ माधाणी ॥ अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥ नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥ मुइआ जीवदिआ गति होवै जां सिरि पाईऐ पाणी ॥ नानक सिरखुथे सैतानी एना गल न भाणी ॥ वुठै होइऐ होइ बिलावलु जीआ जुगति समाणी ॥ वुठै अंनु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥ वुठै घाहु चरहि निति सुरही सा धन दही विलोवै ॥ तितु घिइ होम जग सद पूजा पइऐ कारजु सोहै ॥ गुरु समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥ नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ वह सिर के केश उखड़वाते हैं, मलिन जल पीते और दूसरों की जूठन बार–बार माँगते और खाते हैं। वह गंदगी बिखेरते हैं, अपने मुख से गन्दी हवा लेते हैं और जल देखने से संकोच करते हैं। भस्म से लथपथ हुए हाथों से भेड़ों की भाँति वह अपने केश उखड़वाते हैं। माता–पिता के प्रति जो कर्म था अर्थात् उनकी सेवा की मर्यादा वह त्याग देते हैं और उनके सगे–संबंधी फूट–फूट कर अश्रु बहाते हैं। उनके लिए कोई भी पिण्डदान, पत्तल क्रिया नहीं करता है, न ही अन्तिम संस्कार करता है, न ही कोई मिट्टी का दीपक प्रज्वलित करता है। मरणोपरांत वह कहाँ फैंके जाएँगे ? अठसठ तीर्थ स्थान भी उनको आश्रय नहीं देते और ब्राह्मण उनका भोजन नहीं करते। वह सदा दिन–रात मलिन रहते हैं और उनके माथे पर तिलक भी नहीं। शोक करने वालों की भाँति वह समूह बना कर बैठते हैं। अथवा जैसे मृतक के घर महिलाएँ मुख पर कपड़ा डालकर शोक

मनाती हैं और प्रभु–भक्तों के सत्संग में नहीं जाते। वे कमर से माँगने वाले प्याले लटकाते हुए और हाथों में धागों के गुच्छों सहित आगे–पीछे चलते हैं। न ही वह योगी हैं, न ही वह शिव के उपासक, न ही वह काजी और न ही मुल्लां हैं। प्रभु द्वारा कुमार्गगामी किए हुए वह अपमानित हुए फिरते हैं और उनका समूह समुदाय भ्रष्ट हो जाता है। वह यह भी नहीं समझते कि प्राणियों को केवल वही परमात्मा मारता और पुनर्जीवित करता है। दूसरा कोई भी उनको बचा नहीं सकता। वह पुण्य करने एवं स्नान करने से वंचित रह जाते हैं। उनके उखड़े हुए सिरों पर राख पड़ती है। वह इस बात को भी नहीं समझते कि जब देवताओं एवं दैत्यों ने मिलकर क्षीर सागर को सुमेर पर्वत की मथनी बनाकर मंथन किया था तो जल में से १४ रत्न निकले थे। देवताओं ने अठसठ तीर्थ–स्थलों को नियुक्त किया है। जहाँ पर्व त्यौहार मनाए जाते हैं और भजन गाए जाते हैं। अर्थात् वहाँ वाणी द्वारा हरि की कथा होती है। स्नान उपरांत मुसलमान नमाजें पढ़ते हैं और स्नान करके हिन्दु पूजा–अर्चना करते हैं और सभी बुद्धिमान सदैव नहाते हैं। जब मनुष्य जन्मते–मरते हैं, तब उनके सिर पर जल डाला जाता है ताकि उनकी गति हो जाए। हे नानक! सिर उखड़ाने वाले शैतान हैं और स्नान की बात उन्हें अच्छी नहीं लगती। जब जल बरसता है, हर तरफ प्रसन्नता होती है। प्राणियों के जीवन की युक्ति जल में विद्यमान है। जब जल बरसता है, अनाज, गन्ना, कपास इत्यादि जो सबके पोषक हैं उत्पन्न होते हैं। कपास, जो सबको ढांपने वाली चादर बनती है। जब मेघ बरसते हैं, गाएँ सदा घास चरती हैं और उनके दूध से दहीं होता है। तब स्त्रियां मंथन करती हैं। उसमें से जो घी निकलता है, उससे होम, यज्ञ, पवित्र भण्डारे और नित्य पूजा सदा ही सम्पन्न होते हैं और घी से अन्य संस्कार सुशोभित होते हैं। गुरु सागर है, गुरु–वाणी सभी नदियां (उनकी सेविकाएँ) हैं, जिन में स्नान करने से महानता प्राप्त होती है। हे नानक! यदि सिर मुंडाने वाले मुनि स्नान नहीं करते हैं तो उनके सिर पर सौ अंजुलि भस्म ही पड़ती है॥ १॥

मः २ ॥ अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ चंद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥ धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होइ ॥ नानक ता पति जाणीऐ जा पति रखै सोइ ॥ २ ॥

महला २॥ सर्दी अग्नि का क्या बिगाड़ सकती है? रात्रि सूर्य का क्या बिगाड़ सकती है? अंधेरा चाँद का क्या बिगाड़ सकता है? कोई जाति पवन एवं जल का क्या बिगाड़ सकती है? धरती का वस्तुएँ क्या बिगाड़ सकती हैं, जिसके भीतर सब वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं। हे नानक! प्राणी केवल तभी प्रतिष्ठित समझा जाता है, जब प्रभु उसका मान–सम्मान बरकरार रखे॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥ तूं सचा दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥ सचु जि मंगहि दानु सि तुधै जेहिआ ॥ सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥ मंनिऐ गिआनु धिआनु तुधै ते पाइआ ॥ करमि पवै नीसानु न चलै चलाइआ ॥ तूं सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ नानकु मंगै दानु जो तुधु भाइआ ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे आश्चर्यजनक परमेश्वर! मैं सदैव तेरी महिमा–स्तुति करता हूँ। तू सदैव स्थिर है और तेरा दरबार सत्य है तथा अन्य सभी जीव जन्मते–मरते रहते हैं। हे प्रभु! जो तुझसे सत्यनाम का दान माँग लेता है, वह तेरा नाम जप–जप कर तेरे जैसा ही बन जाता है। तेरा हुक्म सत्य है और मनुष्य तेरे नाम से शोभा पाते हैं। हे प्रभु! तेरा हुक्म मानने से ही मनुष्य को तुझसे ज्ञान–ध्यान की सूझ मिलती है। तेरे दरबार में जाने हेतु नाम रूपी परवाना तेरी कृपा से ही मिलता है तथा वहाँ अन्य कोई परवाना चलाया नहीं चलता। हे प्रभु! तू ही सच्चा दाता हैं और सदैव ही जीवों को देते रहते हो। तेरे भण्डार कभी भी समाप्त नहीं होते अपितु अधिकतर होते जाते हैं। हे प्रभु! नानक तुझसे वहीं दान माँगता है, जो तुझे अच्छा लगता है॥ २६॥

सलोकु मः २ ॥ दीखिआ आखि बुझाइआ सिफती सचि समेउ ॥ तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ जिन्हें गुरु ने शिक्षा अथवा उपदेश देकर समझा दिया है, वे सत्यनाम की महिमा करके सत्य में ही समा गए हैं। अब उनको उपदेश देने का क्या अभिप्राय है? जिनका गुरु नानक देव है॥१॥

मः १ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै ॥ कहि कहि कथना माइआ लूझै ॥ हुकमी सगल करे आकार ॥ आपे जाणै सरब वीचार ॥ अखर नानक अखिओ आपि ॥ लहै भराति होवै जिसु दाति ॥ २ ॥

महला १॥ जिसको प्रभु स्वयं समझा देता है, वही उसको समझता है। जिसे ईश्वर स्वयं ज्ञान प्रदान करता है, वह सर्वज्ञ जान लेता है। जो व्यक्ति कह–कह कर कथन ही करता रहता है, वह माया के झंझटों में फँसा रहता है। प्रभु ने अपने हुक्म से ही सूर्य, चन्द्रमा एवं पृथ्वी इत्यादि की रचना की है। वह स्वयं ही सबके विचारों को समझता है। हे नानक! प्रभु ने स्वयं ही वाणी का उच्चारण किया है। जिसको यह देन मिल जाती है, उसका अज्ञानता का अँधेरा दूर हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥ राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥ ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥ सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥ सचा अम्रित नामु भोजनु आइआ ॥ गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥ ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥ नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥ २७ ॥ सुधु

पउड़ी॥ मुझ बेकार ढाढी को प्रभु ने अपनी भक्ति कार्य में लगा लिया है। आदिकाल से प्रभु ने मुझे रात–दिन अपना यशोगान करने का हुक्म दिया है। स्वामी ने ढाढी को अपने सत्य दरबार में निमंत्रण दिया है। परमात्मा ने अपनी सच्ची महिमा–स्तुति की पोशाक मुझे पहना दी है। तब से सत्यनाम मेरा अमृत स्वरूप आहार बन गया है। जो गुरु के उपदेश से इस आहार को पेट भर कर सेवन करते हैं, वे सदा सुख पाते हैं। गुरु–वाणी गायन करने से मैं चारण परमेश्वर की महानता का प्रसार करता हूँ। हे नानक! सत्यनाम की स्तुति करके मैंने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है॥ २७॥ सुधु॥

[रागु माझ समाप्त]

☆☆☆

रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

परमात्मा एक है, उसका नाम सत्य है। वह सृष्टि का रचयिता सर्वशक्तिमान है। वह निडर है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं, वह कालातीत, अयोनि एवं स्वयंभू है। उसकी लब्धि गुरु-कृपा से होती है।

भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥ मन मति हउली बोले बोलु ॥ सिरि धरि चलीऐ सहीऐ भारु ॥ नदरी करमी गुर बीचारु ॥ १ ॥ भै बिनु कोइ न लंघसि पारि ॥ भै भउ रखिआ भाइ सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै तनि अगनि भखै भै नालि ॥ भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ॥ भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥ अंधा सचा अंधी सट ॥ २ ॥ बुधी बाजी उपजै चाउ ॥ सहस सिआणप पवै न ताउ ॥ नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥ अंधा अखरु वाउ दुआउ ॥ ३ ॥ १ ॥

ईश्वर का भय बहुत भारी और बड़ा वजनदार है। मन की मति पर चलने वाला मनुष्य तुच्छ मति अनुसार अपने मुँह से घटिया वचन ही बोलता है। प्रभु का भय अपने सिर पर धारण करके चलना चाहिए और उसका बोझ सहन करना चाहिए। प्रभु की कृपा-दृष्टि एवं भाग्य से ही मनुष्य को गुरु की शिक्षा मिलती है॥ १॥ परमात्मा के भय बिना कोई भी प्राणी संसार सागर से पार नहीं हो सकता। प्रभु के साथ जीव के प्रेम को प्रभु का भय ही संवार कर रखता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य के शरीर की क्रोध रूपी अग्नि ईश्वर के भय से जल जाती है। प्रभु के भय से शब्द की रचना सुन्दर बन जाती है। प्रभु के भय के बिना शब्द की रचना बहुत ही कच्ची रह जाती है। शब्द रचने वाला सांचा अर्थात् मनुष्य की बुद्धि ज्ञानहीन होती है और ज्ञानहीन बुद्धि पर ज्ञान रूपी हथौड़े की चोट कोई प्रभाव नहीं करती॥ २॥ जीवन बाजी खेलने का चाव मनुष्य की बुद्धि द्वारा ही उत्पन्न होता है। हजारों ही चतुराइयों के बावजूद ईश्वर-भय की तपस (आंच) नहीं लगती। हे नानक! मनमुख की बातचीत निरर्थक होती है। उसका उपदेश निकम्मा और व्यर्थ होता है॥ ३॥ १॥

गउड़ी महला १ ॥ डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ आगै पाछै हुकमि समाइ ॥ २ ॥ हंसु हेतु आसा असमानु ॥ तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥ भउ खाणा पीणा आधारु ॥ विणु खाधे मरि होहि गवार ॥ ३ ॥ जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥ जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥ ४ ॥ २ ॥

अपने हृदय-घर में प्रभु के भय को धारण करना चाहिए। जब प्रभु का भय हृदय-घर में निवास कर जाता है तो मृत्यु का भय भयभीत होकर भाग जाता है। यह प्रभु भय किस प्रकार का है, जिस द्वारा मृत्यु का भय भयभीत हो जाता है। हे भगवान! तेरे अलावा दूसरा कोई सुख का स्थान नहीं। जो कुछ भी होता है, सब तेरी इच्छानुसार ही होता है॥ १॥ हे प्रभु! हम भयभीत तब हों, जब कोई दूसरा भय कायम रहे। ईश्वर-भय बिना दूसरे के भय से सहम जाना मन का शोर है॥ १॥ रहाउ॥ आत्मा न ही मरती है, न ही जल में डूबती है और न ही जल में तैरती है। जिस परमात्मा ने सृष्टि

रचना की है, वहीं सब कुछ करता है। मनुष्य ईश्वर के हुक्म से संसार में आता है और उसके हुक्मानुसार संसार से कूच करता है। वर्तमान काल एवं भविष्य काल में भी प्राणी उसके हुक्म में लीन रहता है॥ २॥ जिस व्यक्ति के हृदय में हिंसा, मोह, आशा एवं अहंकार होता है उसमें नदी के जल की तरह माया की अत्यधिक भूख होती है। ऐसे व्यक्ति को इनसे मुक्ति पाने के लिए प्रभु के भय को अपना भोजन-पानी एवं जीवन का आधार बनाना चाहिए। जो मूर्ख व्यक्ति प्रभु के भय का सेवन नहीं करते, वह मरते एवं बर्बाद होते रहते हैं॥३॥ यदि प्राणी का कोई अपना है तो वह कोई बहुत ही विरला है। हे परमेश्वर! सभी जीव तेरे हैं और तुम सबके हो। हे नानक! जिस भगवान के ये जीव-जन्तु एवं धनमाल निर्मित किए हैं, उस बारे कहना एवं विचार करना बड़ा कठिन है॥ ४॥ २॥

गउड़ी महला १ ॥ माता मति पिता संतोखु ॥ सतु भाई करि एहु विसेखु ॥ १ ॥ कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ करणी कामणि करि मन लए ॥ २ ॥ साहा संजोगु वीआहु विजोगु ॥ सचु संतति कहु नानक जोगु ॥ ३ ॥ ३ ॥

मैंने बुद्धि को अपनी माता, संतोष को अपना पिता और सत्य को अपना भाई बना लिया है। बुद्धि, संतोष एवं सत्य मेरे अच्छे संबंधी हैं॥ १॥ भगवान के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ परन्तु मुझसे कुछ कहा नहीं जा सकता। हे भगवान! तेरी कुदरत का मूल्यांकन नहीं पाया जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ लज्जा एवं सुरति दोनों मेरे सास-ससुर बन गए हैं। सदाचरण को मैंने अपनी पत्नी बना लिया है॥ २॥ सत्संग मेरे विवाह का समय है और संसार से टूट जाना मेरा विवाह है। हे नानक! ऐसे प्रभु मिलन से मेरे यहाँ सत्य की संतान उत्पन्न हुई है॥ ३॥ ३॥

गउड़ी महला १ ॥ पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ चंचल चपल बुधि का खेलु ॥ नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥ बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥ १ ॥ कथता बकता सुनता सोई ॥ आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देही माटी बोलै पउणु ॥ बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥ मूई सुरति बादु अहंकारु ॥ ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥ २ ॥ जै कारणि तटि तीरथ जाही ॥ रतन पदारथ घट ही माही ॥ पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ॥ भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥ ३ ॥ हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ॥ ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥ कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ मरता जाता नदरि न आइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

मानव-शरीर की रचना पवन, जल एवं अग्नि के मिलन से हुई है। यह शरीर चंचल मन एवं चतुर बुद्धि का बनाया हुआ एक खिलौना है। इस शरीर को दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, मुँह, गुदा एवं इन्द्री रूपी नौ द्वार लगे हुए हैं और दसम द्वार गुप्त है। हे ज्ञानी! इस विचार को समझो॥ १॥ भगवान स्वयं ही कथा करने वाला, बोलने वाला एवं सुनने वाला है। वहीं व्यक्ति ज्ञानी होता है जो अपने आत्मिक जीवन को सोचता-समझता है॥ १॥ रहाउ॥ यह शरीर मिट्टी है और पवन उसमें बोलती है। हे ज्ञानी! इस तथ्य को समझो कि वह कौन है? जो प्राण त्याग गया है? यह शरीर एवं विवाद पैदा करने वाला अहंकार मरे हैं। भगवान का अंश आत्मा नहीं मरी जो दुनिया रूपी खेल देखने वाली है॥ २॥ जिस नाम रूपी रत्न-पदार्थ के लिए तुम तीर्थों के तट पर जाते हो, वह नाम रूपी अमूल्य रत्न तेरे हृदय में ही विद्यमान है। पण्डित ग्रंथ पढ़-पढ़ कर परस्पर विवाद करते हैं परन्तु वह उस नाम रूपी अमूल्य वस्तु को नहीं जानते जो उनके हृदय में ही है॥३॥ मैं नहीं मरा, अपितु मेरी विपदा लाने वाली अज्ञानता रूपी बला मरी है। वह आत्मा नहीं मरी, जो सब में समाई हुई है। हे नानक! गुरु ने मुझे ब्रह्म के दर्शन करवा दिए हैं और अब मुझे कोई भी मरता एवं जन्म लेता दिखाई नहीं देता॥ ४॥ ४॥

गउड़ी महला १ दखणी ॥ सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ आपि भुलाए ठउर न ठाउ ॥ तूं समझावहि मेलि मिलाउ ॥ १ ॥ नामु मिलै चलै मै नालि ॥ बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खेती वणजु नावै की ओट ॥ पापु पुंनु बीज की पोट ॥ कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ नामु विसारि चले मनि खोट ॥ २ ॥ साचे गुर की साची सीख ॥ तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥ जल पुराइनि रस कमल परीख ॥ सबदि रते मीठे रस ईख ॥ ३ ॥ हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥ पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥ आपि तुलै आपे वणजार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ५ ॥

मैं हमेशा ही उस पर कुर्बान जाता हूँ, जो प्रभु–नाम को निरन्तर सुनकर उसे समझने का प्रयास करता, एवं उस पर आस्था रखता है। हे प्रभु! जिसे तू स्वयं विस्मृत कर देता है, उसे कहीं भी स्थान नहीं मिलता। तू ही जीव को ज्ञान देता है और फिर उसे गुरु से साक्षात्कार करवा कर अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ मेरी यही कामना है कि मुझे नाम प्राप्त हो, जो मेरे साथ परलोक में जाएगा। प्रभु के नाम के अलावा सारी दुनिया काल ने बंधन में डाली हुई है॥ १॥ रहाउ॥ मेरी कृषि एवं व्यापार प्रभु के नाम के आश्रय में ही है। मनुष्य ने अपने सिर पर पाप एवं पुण्य रूपी कर्मों के बीज की पोटली उठाई हुई है। काम, क्रोध प्राणी के अन्तर्मन में घाव हैं। खोटे मन वाले प्रभु नाम को विस्मृत करके संसार से चले जाते हैं॥ २॥ सच्चे गुरु की शिक्षा सत्य है। सत्य नाम का सही मूल्यांकन जानने से तन एवं मन शीतल हो जाते हैं। सतिगुरु की यही परख है कि वह विकारों रूपी स्वादों से यूं निर्लिप्त रहता है जैसे कमल का फूल कीचड़ से निर्लिप्त रहता है। प्रभु के नाम में मग्न हुआ वह गन्ने के रस की भाँति मीठा है॥ ३॥ यह दस द्वारों वाला शरीर रूपी किला परमात्मा के हुक्म में बनाया गया है। इसमें अपार प्रभु की ज्योति के साथ मिलकर पाँच ज्ञान–इन्द्रियाँ रहती हैं। परमात्मा स्वयं ही व्यापारी है और स्वयं ही तुलने वाला सौदा है। हे नानक! परमात्मा का नाम ही जीव का जीवन सुन्दर बनाने वाला है॥४॥५॥

गउड़ी महला १ ॥ जातो जाइ कहा ते आवै ॥ कह उपजै कह जाइ समावै ॥ किउ बाधिओ किउ मुकती पावै ॥ किउ अबिनासी सहजि समावै ॥ १ ॥ नामु रिदै अंम्रितु मुखि नामु ॥ नरहर नामु नरहर निहकामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे आवै सहजे जाइ ॥ मन ते उपजै मन माहि समाइ ॥ गुरमुखि मुकतो बंधु न पाइ ॥ सबदु बीचारि छुटै हरि नाइ ॥ २ ॥ तरवर पंखी बहु निसि बासु ॥ सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥ साझ बिहाग तकहि आगासु ॥ दह दिसि धावहि करमि लिखिआसु ॥ ३ ॥ नाम संजोगी गोइलि थाटु ॥ काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥ गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥ ४ ॥ साधु मिलै पूरब संजोग ॥ सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ मनु तनु दे लै सहजि सुभाइ ॥ नानक तिन कै लागउ पाइ ॥ ५ ॥ ६ ॥

क्या यह जाना जा सकता है कि आत्मा कहाँ से आई है? वह कहाँ से उत्पन्न हुई है और वह कहाँ जाकर समा जाती है? वह किस तरह मोह–माया के बंधनों में फँस जाती है और कैसे बंधनों से मुक्ति प्राप्त करती है? वह किस तरह सहज ही अविनाशी प्रभु में समा जाती है॥ १॥ जिसके हृदय में परमात्मा का नाम निवास करता है और मुँह से भी अमृत–नाम उच्चरित होता है। वह प्रभु का अमृत नाम निष्काम होकर जपता रहता है और इच्छा रहित हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य सहज ही इस दुनिया में आता है और सहज ही दुनिया से चला जाता है अर्थात् वह सहज ही जन्मता–मरता रहता है। मन (की तृष्णाओं) से वह उत्पन्न हुआ है और मन (की तृष्णाओं) में ही वह समा जाता है। गुरमुख मोह–माया के बंधनों से मोक्ष प्राप्त कर लेता है और वह सांसारिक बंधनों में

नहीं पड़ता। वह शब्द का चिन्तन करता है और प्रभु–नाम द्वारा मुक्त हो जाता है॥ २॥ बहुत सारे पक्षी रात्रिकाल को पेड़ पर आकर निवास करते हैं। कई सुखी हैं और कई दुखी हैं। मन के मोह कारण वह सारे नाश हो जाते हैं। जब रात्रि बीतती है और सूर्योदय होता है, वह आकाश की ओर देखते हैं। विधाता की विधि अनुसार कर्मों के कारण वे दसों दिशाओं में उड़ जाते हैं॥ ३॥ जो नाम संजोगी हैं, वह संसार को चरागाह में एक अस्थिर स्थान समझते हैं। भोग–विलास एवं अहंकार की विषैली गागर अन्त में फूट जाती है। नाम के सौदे सूत के बिना देहि रूपी घर एवं मन की दुकान शून्य है। गुरु के मिलन से वज्र कपाट खुल जाते हैं॥ ४॥ किस्मत से ही संत मिलते हैं। परमात्मा के भक्त सत्य में हर्षित होते हैं। हे नानक ! मैं उनके चरणों पर नतमस्तक हूँ, जो अपना मन एवं तन समर्पित करने से सहज ही अपने प्रभु को पा लेते हैं॥ ५॥ ६॥

गउड़ी महला १ ॥ कामु क्रोधु माइआ महि चीतु ॥ झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥ तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥ १ ॥ वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ हउ पापी तूं निरमलु एकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥ जिहवा इंद्री एकु सुआउ ॥ दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥ आपु मारे ता पाए नाउ ॥ २ ॥ सबदि मरै फिरि मरणु न होइ ॥ बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥ परपंचि विआपि रहिआ मनु दोइ ॥ थिरु नाराइणु करे सु होइ ॥ ३ ॥ बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥ ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ सचु सालाही धंनु गुरदुआरु ॥ नानक दरि घरि एकंकारु ॥ ४ ॥ ७ ॥

तेरा मन काम, क्रोध एवं माया के मोह में लीन है। उनके मोह के कारण तेरे मन में झूठ एवं पाप उदय हो गए हैं। तुमने पाप एवं लोभ की पूँजी संग्रह की हुई है। अतः तू शुद्ध हृदय से मन द्वारा पावन नाम का जाप करके भवसागर से पार हो जा॥ १॥ हे मेरे सच्चे प्रभु ! तू धन्य–धन्य है। मुझे केवल तेरा ही सहारा है। हे प्रभु ! मैं पापी हूँ, एक तू ही पावन हैं॥ १॥ रहाउ॥ अग्नि व जल इत्यादि पंच तत्वों से बने शरीर में श्वास ऊँची–ऊँची गूँजते हैं। जिह्वा व इन्द्रिय अपना–अपना स्वाद प्राप्त करते हैं। तेरी दृष्टि विकारों में लीन है और तुझे प्रभु का भय एवं प्रेम नहीं। यदि प्राणी अपना अहंकार नष्ट कर दे तो वह नाम को प्राप्त कर लेता है॥ २॥ जो व्यक्ति शब्द द्वारा अहंकार को समाप्त कर देता है, उसे दोबारा मरना नहीं पड़ता। अहंकार को समाप्त किए बिना वह पूरा कैसे हो सकता है ? मन दुनिया के प्रपंचों एवं द्वैतभाव में लीन हो रहा है। एक नारायण ही स्थिर है और दुनिया में वही होता है जो वह करता है॥३॥ जब मेरी बारी आएगी तो मैं भवसागर से पार होने के लिए नाम रूपी जहाज पर सवार हो जाऊँगा। जो जहाज पर सवार होने से वर्जित हो जाते हैं, उनकी प्रभु के दरबार में खूब पिटाई होती है। गुरु का दरबार धन्य है, जहाँ सत्यस्वरूप परमात्मा का यशोगान किया जाता है। हे नानक ! अद्वितीय एक ईश्वर प्रत्येक हृदय–घर में व्यापक हो रहा है॥ ४॥ ७॥

गउड़ी महला १ ॥ उलटिओ कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ अंम्रित धार गगनि दस दुआरि ॥ त्रिभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥ १ ॥ रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ मनि मानिऐ अंम्रित रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु जीति मरणि मनु मानिआ ॥ आपि मूआ मनु मन ते जानिआ ॥ नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥ २ ॥ जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ नर नाराइण अंतरजामि ॥ ३ ॥ आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ किसु जाचउ नाही को थाउ ॥ नानक गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ ८ ॥

ब्रह्म का चिंतन करने से मोह–माया में उल्टा पड़ा हृदय–कमल बदल कर सीधा हो जाता है। दसम द्वार रूपी गगन से अमृत रस की धारा बहने लग जाती है। मुरारि–प्रभु तीनों लोकों में स्वयं ही

व्यापक हो रहा है॥ १॥ हे मेरे मन! किसी दुविधा में मत पड़। यदि मन विश्वस्त हो जाए तो वह नाम रूपी अमृत रस का पान करने लगता है॥ १॥ रहाउ॥ जब मन अपने अहंत्व को नाश करना स्वीकृत कर लेता है तो यह जीवन की बाजी को विजय कर लेता है। जब मन का अहंत्व नाश हो जाता है तो उसे हृदय में ही परमात्मा बारे ज्ञान हो जाता है। जब परमात्मा की कृपा होती है तो हृदय–घर में उसे आत्म–स्वरूप की पहचान हो जाती है॥ २॥ ईश्वर का नाम ही सच्चा ब्रह्मचार्य, सत्य तीर्थ एवं स्नान है। यदि मैं नाम को छोड़ कर अन्य अधिकतर आडम्बर करूँ तो वह सब व्यर्थ हैं। चूंकि नारायण बड़ा अन्तर्यामी है॥३॥ यदि भगवान के सिवाय मैं किसी दूसरे पर श्रद्धा धारण करूँ, तो ही मैं पराए घर जाऊँ। मैं नाम की देन किससे माँगूं? भगवान के सिवाय मेरे लिए कोई स्थान नहीं है। हे नानक! गुरु के उपदेश से मैं सहज ही सत्य में समा जाऊँगा॥ ४॥८॥

गउड़ी महला १ ॥ सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥ मरण रहण रसु अंतरि भाए ॥ गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥ १ ॥ मरणु लिखाइ आए नही रहणा ॥ हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥ जीवतु मरै महा रसु आगै ॥ २ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा ॥ गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥ ३ ॥ गुरि मिलिऐ मिलि अंकि समाइआ ॥ करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥ नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥

यदि सतिगुरु मिल जाए तो वह जीवित ही मृत्यु का मार्ग दिखा देता है। इस तरह की मृत्यु उपरांत जीवित रहने की प्रसन्नता मन को लुभाती है। अहंकार को मिटाकर ही दसम द्वार पाया जाता है॥ १॥ मानव जीव अपनी मृत्यु का समय लिखवा कर ही दुनिया में आते हैं और वे दुनिया में अधिक समय निवास नहीं कर सकते। इसलिए मनुष्य को दुनिया में आकर हरि का जाप करते रहना और हरि की शरणागत वास करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ यदि सतिगुरु मिल जाए तो समस्त दुविधा भाग जाती है। हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है और मन हरि–प्रभु के साथ जुड़ जाता है। जो व्यक्ति अहंकार का नाश करके जीता है, वह परलोक में नाम रूपी महारस का पान करता है॥ २॥ सतिगुरु के मिलन से मनुष्य सत्यवादी, त्यागी एवं पावन हो जाता है। गुरु का मार्ग धर्म की सीढ़ी है और उस सीढ़ी द्वारा मनुष्य सर्वोच्च आत्मिक अवस्था वाला हो जाता है। सतिगुरु भगवान की कृपा से ही मिलता है और मृत्यु का भय नाश हो जाता है॥ ३॥ गुरु को मिलने से मनुष्य प्रभु से मिल जाता है और उसकी गोद में समा जाता है। अपनी कृपा–दृष्टि करके गुरु जी प्राणी को उसके अपने हृदय–घर में प्रभु के आत्म–स्वरूप के दर्शन करवा देते हैं। हे नानक! गुरु प्राणी के अहंकार को नाश करके परमेश्वर के साथ मिला देते हैं॥ ४॥ ९॥

गउड़ी महला १ ॥ किरतु पइआ नह मेटै कोइ ॥ किआ जाणा किआ आगै होइ ॥ जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥ अवरु न करणै वाला दूआ ॥ १ ॥ ना जाणा करम केवड तेरी दाति ॥ करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू एवडु दाता देवणहारु ॥ तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥ कीआ गरबु न आवै रासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥ २ ॥ तू मारि जीवालहि बखसि मिलाइ ॥ जिउ भावी तिउ नामु जपाइ ॥ तूं दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥ गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥ ३ ॥ तन महि मैलु नाही मनु राता ॥ गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥ नानक रहणा भगति सरणाई ॥ ४ ॥ १० ॥

पूर्व जन्म के कर्मों के कारण जो मेरी किस्मत में लिखा हुआ है, उसे कोई भी मिटा नहीं सकता। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ आगे क्या बीतेगा ? जो कुछ ईश्वर की इच्छा है, वहीं कुछ हुआ है। प्रभु के अलावा दूसरा कोई करने वाला नहीं॥ १॥ हे ईश्वर ! मैं नहीं जानता कि तेरी कृपा की देन कितनी बड़ी है। सभी शुभ कर्म, धर्म, श्रेष्ठ जाति तेरे नाम अधीन हैं॥१॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! तू देन देने वाला इतना बड़ा दाता है कि तेरी भक्ति के भण्डार कभी कम नहीं होते। अहंकार करने से कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होता। हे प्रभु ! मेरी आत्मा एवं शरीर सभी तेरे पास अर्पण हैं॥ २॥ हे भगवान ! तू जीव को मार कर फिर जीवित कर देता है और तू ही क्षमा करके जीव को अपने साथ मिल लेता है। जैसे तुझे उपयुक्त लगता है वैसे ही तू जीव से अपना नाम सिमरन करवाता है। हे मेरे परमेश्वर ! तुम बड़े बुद्धिमान हो और मेरे मन की दशा जानते हो, तुम मेरे रक्षक हो और सत्य स्वरूप हो। हे प्रभु ! मुझे गुरु की मति दीजिए, चूंकि मैं तेरे भरोसे पर ही बैठा हूँ॥ ३॥ जिसका हृदय प्रभु के प्रेम में मग्न है, उसके तन में पापों की कोई मलिनता नहीं। मैंने तेरे सत्य–नाम को गुरु की वाणी द्वारा पहचान लिया है। मेरे शरीर में तेरा ही दिया हुआ बल है और तूने ही मुझे अपने नाम की ख्याति प्रदान की है। हे नानक! मुझे तो तेरी भक्ति की शरण में ही रहना है॥ ४॥ १०॥

गउड़ी महला १ ॥ जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥ अन भै विसरे नामि समाइआ ॥ १ ॥ किआ डरीऐ डरु डरहि समाना ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु नर रामु रिदै हरि रासि ॥ सहजि सुभाइ मिले साबासि ॥ २ ॥ जाहि सवारै साझ बिआल ॥ इत उत मनमुख बाधे काल ॥ ३ ॥ अहिनिसि रामु रिदै से पूरे ॥ नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥ ४ ॥ ११ ॥

जिस प्राणी ने अकथनीय परमात्मा को स्मरण किया है और दूसरों को आराधना हेतु प्रेरित किया है, उस प्राणी ने स्वयं अमृत पान किया है। वह प्राणी दूसरे समस्त भय विस्मृत कर देता है, क्योंकि वह ईश्वर के नाम में समा जाता है॥ १॥ हम क्यों भयभीत हों, जब तमाम भय परमात्मा के भय में नष्ट हो जाते हैं। पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा मैंने ईश्वर को पहचान लिया है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति के हृदय में राम का निवास हो जाता है, उसे हरि–नाम की पूँजी मिल जाती है और उसे सहज ही प्रभु के दरबार में प्रशंसा भी मिलती है॥ २॥ परमात्मा जिन स्वेच्छाचारी जीवों को संध्याकाल एवं प्रातःकाल मोह–माया रुपी निद्रा में मग्न रखता है, ऐसे मनमुख इहलोक तथा परलोक में काल द्वारा बंधे रहते हैं॥ ३॥ जिन व्यक्तियों के हृदय में दिन–रात राम का निवास होता है, वहीं पूर्ण संत हैं। हे नानक ! जिसे राम मिल जाता है, उसका भ्रम दूर हो जाता है॥ ४॥ ११॥

गउड़ी महला १ ॥ जनमि मरै त्रै गुण हितकारु ॥ चारे बेद कथहि आकारु ॥ तीनि अवसथा कहहि वखिआनु ॥ तुरीआवसथा सतिगुर ते हरि जानु ॥ १ ॥ राम भगति गुर सेवा तरणा ॥ बाहुड़ि जनमु न होइ है मरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि पदारथ कहै सभु कोई ॥ सिंम्रिति सासत पंडित मुखि सोई ॥ बिनु गुर अरथु बीचारु न पाइआ ॥ मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥ २ ॥ जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई ॥ गुरमुखि भगति परापति होई ॥ हरि की भगति मुकति आनंदु ॥ गुरमति पाए परमानंदु ॥ ३ ॥ जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ ॥ आसा माहि निरासु बुझाइआ ॥ दीना नाथु सरब सुखदाता ॥ नानक हरि चरणी मनु राता ॥ ४ ॥ १२ ॥

जिस व्यक्ति का त्रिगुणात्मक दुनिया से प्रेम है, वह जन्मता–मरता ही रहता है। चारों ही वेद सृष्टि का कथन करते हैं। वह मन की तीन अवस्थाओं का बखान करते हैं। मन की तुरीयावस्था भगवान रूप सतिगुरु से ही जानी जाती है॥ १॥ राम की भक्ति एवं गुरु की सेवा करने से प्राणी भवसागर से पार

हो जाता है। जो भवसागर से पार हो जाता है, उसका पुनः दुनिया में जन्म–मरण नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ प्रत्येक प्राणी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार उत्तम पदार्थों का वर्णन करता है। सत्ताइस स्मृतियों, छ : शास्त्रों और पण्डितों के मुख से यही सुना जाता है। गुरु के बिना अर्थ का ज्ञान किसी ने भी नहीं पाया। मुक्ति पदार्थ अर्थात् मोक्ष ईश्वर की भक्ति द्वारा ही प्राप्त होता है॥ २॥ जिस व्यक्ति के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है, उसे गुरु के माध्यम से परमात्मा की भक्ति प्राप्त हो जाती है। परमात्मा की भक्ति करने से मोक्ष एवं आनंद प्राप्त हो जाता है। गुरु की मति द्वारा उसे परमानन्द प्राप्त होता है॥ ३॥ जिसने गुरु को पा लिया है, गुरु स्वयं ही उसे भगवान के दर्शन करवा देता है। मुझे आशावादी को गुरु ने निर्लिप्त रहना सिखा दिया है। दीनानाथ प्रभु जीवों को सर्व सुख प्रदान करने वाला है। हे नानक ! मेरा मन भगवान के सुन्दर चरणों में मग्न हो गया है॥ ४॥ १२॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ अंम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥ लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥ तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥ १ ॥ सुणि सुणि सिख हमारी ॥ सुक्रितु कीता रहसी मेरे जीअड़े बहुड़ि न आवै वारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूं सुणि सिख हमारी ॥ निंदा चिंदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥ वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥ हंसु चलिआ तूं पिछै रहीएहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥ २ ॥ तूं काइआ रहीअहि सुपनंतरि तुधु किआ करम कमाइआ ॥ करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥ किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥ कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु अंम्रितु नामु तुमारा ॥ ४ ॥ दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥ संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥ सोइन लंका सोइन माड़ी संपै किसै न केरी ॥ ५ ॥ सुणि मूरख मंन अजाणा ॥ होगु तिसै का भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥ जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥ ६ ॥ १ ॥ १३ ॥

यह सुन्दर काया स्वयं को अमर समझकर जीवन के सुख भोगने में लगी रहती है किन्तु उसे यह ज्ञान नहीं कि यह दुनिया तो (भगवान की) एक खेल है। हे मेरी काया ! तू लालच, लोभ एवं बहुत झूठ कमा रही है और तू अपने सिर पर पापों का अत्यधिक भार उठा रही है। हे मेरी काया ! मैंने तुझे पृथ्वी पर राख की भाँति बर्बाद होते देखा है॥ १॥ हे मेरी काया ! मेरी सीख ध्यानपूर्वक सुन। तेरे किए हुए शुभ कर्म ही अन्तिम समय तेरे साथ रहेंगे। हे मेरे मन ! इस तरह का सुनहरी अवसर दोबारा तेरे हाथ नहीं लगेगा॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरी काया ! मैं तुझे फिर कहता हूँ, मेरी सीख को ध्यानपूर्वक सुन। तुम दूसरों की निन्दा और प्रशंसा करती हो और झूठी चुगली करती रहती हो। हे मन ! तुम पराई नारी को कुदृष्टि से देखते हो, तुम चोरी करते हो और कुकर्म करते हो। हे मेरी काया ! जब आत्मा रूपी राजहंस निकल कर परलोक चला जाएगी तो तू पीछे यही रह जाएगा और परित्यक्ता स्त्री की तरह हो जाओगी॥ २॥ हे मेरी काया ! तुम स्वप्न की तरह वास करती हो। तुमने कौन–सा शुभ कर्म किया है। जब मैं चोरी करके कोई वस्तु लाया तो यह हृदय को अच्छा लगता रहा। इस मृत्यु लोक में मुझे कोई शोभा नहीं मिली और परलोक में मुझे कोई सहारा नहीं मिलेगा। मैंने अपना अनमोल मानव जीवन व्यर्थ ही गंवा लिया है॥ ३॥ हे बाबा नानक ! मैं बहुत दुखी हो गई हूँ, और कोई भी मेरी चिन्ता नहीं

करता॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! यदि किसी के पास तुर्की घोड़े, सोना-चांदी एवं वस्त्रों के अम्बार हो परन्तु अन्तिम समय यह उसके साथ नहीं जाते। हे मूर्ख जीव! ये सभी दुनिया में ही रह जाते हैं। हे प्रभु! मैंने मिश्री एवं मेवा इत्यादि सभी फल खा कर देखे हैं, परन्तु एक तुम्हारा ही नाम अमृत है॥ ४॥ गहरी नींव रख-रख कर मनुष्य मकान की दीवार खड़ी करता है। परन्तु (काल आने पर) यह मन्दिर भी ध्वस्त होकर मिट्टी का ढेर बन जाता है। मूर्ख प्राणी धन-दौलत संचित करता है और किसी को भी नहीं देता। मूर्ख प्राणी ख्याल करता है कि सब कुछ उसका अपना है। परन्तु (यह नहीं जानता कि) सोने की लंका, सोने के महल (रावण के भी नहीं रहे, तू कौन बेचारा है) यह धन किसी का भी नहीं बना रहता॥ ५॥ हे मूर्ख एवं अज्ञानी मन! मेरी बात सुनो, उस ईश्वर की रज़ा ही फलीभूत होगी॥ १॥ रहाउ॥ मेरा ठाकुर-प्रभु बहुत बड़ा साहूकार है और मैं उसका एक व्यापारी हूँ। मेरी आत्मा एवं शरीर यह सब उसकी दी हुई पूँजी है। वह स्वयं ही जीवों को मार कर पुनः जीवित कर देता है॥ ६॥ १॥ १३॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥ मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥ १ ॥ स्री राम नामा उचरु मना ॥ आगै जम दलु बिखमु घना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसारि मड़ोली राखै दुआरा भतिरि बैठी सा धना ॥ अंम्रित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥ २ ॥ ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा सा धन पकड़ी एक जना ॥ जम डंडा गलि संगलु पड़िआ भागि गए से पंच जना ॥ ३ ॥ कामणि लोड़ै सुइना रुपा मित्र लुड़ेनि सु खाधाता ॥ नानक पाप करे तिन कारणि जासी जमपुरि बाधाता ॥ ४ ॥ २ ॥ १४ ॥

हे मेरे मन! मेरे काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पाँच शत्रु हैं, मैं अकेला हूँ, मैं इनसे अपना घर किस तरह बचाऊं, ये पाँच मुझे प्रतिदिन मारते और लूटते रहते हैं। फिर मैं किस के समक्ष विनती करूँ॥ १॥ हे मेरे मन! श्री राम के नाम का सिमरन कर। तेरे समक्ष यमराज की बेशुमार सेना दिखाई दे रही है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा ने देहि का देहुरा बनाया है, इसको दस द्वार लगाए हैं और इसके भीतर ईश्वर के आदेश से आत्मा रूपी स्त्री बैठी है। परन्तु देहि को अमर जानकर कामिनी सदैव खेल-तमाशे करती है और कामादिक पांचों वैरी भीतरी शुभ गुण लूटते रहते हैं॥ २॥ अंतः मृत्यु देहि रूपी इमारत को ध्वस्त कर देती है, मन्दिर को लूट लेती है और अकेली कामिनी पकड़ी जाती है। पांचों विकार भाग जाते हैं। जीव-स्त्री की गर्दन में जंजीरें पड़ती हैं और उसके सिर पर यम का दण्ड पड़ता है॥ ३॥ कामिनी (जीव-स्त्री) सोने-चांदी के आभूषणों की माँग करती है, उसके संबंधी स्वादिष्ट भोजन पदार्थ माँगते रहते हैं। हे नानक! इनकी खातिर प्राणी पाप करता है। अंतत : पापों के कारण बंधा हुआ यम (मृत्यु) की नगरी में जाता है॥ ४॥ २॥ १४॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिंथाता ॥ पंच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥ १ ॥ जोग जुगति इव पावसिता ॥ एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ॥ त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥ २ ॥ करि पटंबु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता ॥ एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥ ३ ॥ जपसि निरंजनु रचसि मना ॥ काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥ प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥ ४ ॥ ३ ॥ १५ ॥

हे योगी ! तू अपने हृदय में संतोष उत्पन्न कर, यही तेरे कानों में पहनने वाले वास्तविक कुण्डल हैं। अपने नश्वर शरीर को ही गुदड़ी बना। हे योगी ! अपने पाँच शिष्यों ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर और इस मन को अपना डण्डा बना॥ १॥ इस तरह तुझे योग करने की युक्ति मिल जाएगी। एक प्रभु का नाम ही सदैव स्थिर है, शेष सब कुछ क्षणभंगुर है। अपने मन को नाम–सिमरन में लगा, यह नाम ही तेरे लिए कन्दमूल रूपी भोजन है॥ १॥ रहाउ॥ यदि गंगा पर जाकर सिर मुंडाने से गुरु मिलता है तो मैंने तो पहले ही गुरु को गंगा बना लिया है अर्थात् गुरु ही पवित्र तीर्थ है। एक ईश्वर तीनों लोकों (के प्राणियों) को पार करने में समर्थ है। ज्ञानहीन मनुष्य प्रभु को स्मरण नहीं करता॥ २॥ हे योगी ! तुम आडम्बर रचते हो और मौखिक बातों से अपने मन को लगाते हो। लेकिन तेरा संशय कदापि दूर नहीं होगा। यदि तुम अपना मन एक प्रभु के चरणों से लगा लो तो झूठ, लोभ के कारण बनी तेरी दुविधा दूर हो जाए॥ ३॥ हे योगी ! निरंजन प्रभु की आराधना करने से तेरा मन उस में लीन हो जाएगा। हे योगी ! तुम इतना बड़ा छल–कपट क्यों बोलते हो॥ १॥ रहाउ॥ तेरी काया बावली है और मन मूर्ख है। तेरी समस्त अवस्था माया के मोह में बीतती जा रही है। नानक विनती करता है कि नग्न देहि जब जल जाती है तो समय समाप्त हुआ जानकर आत्मा पश्चाताप करती है॥ ४॥ ३॥ १५॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिड़ु चितु कीजै रे ॥ जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे ॥ १ ॥ मन एको साहिबु भाई रे ॥ तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥ राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ॥ २ ॥ मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥ जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे ॥ ३ ॥ सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥ तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६ ॥

हे मेरे मन ! यदि तू समस्त रोगों की औषधि रूपी मूल मन्त्र (प्रभु–नाम) को अपने हृदय में बसा ले, तो तू जन्म–जन्मांतरों में किए पापों का नाश करने वाले परमेश्वर को प्राप्त कर लेगा॥ १॥ हे मेरे भाई ! मेरे मन को एक ईश्वर ही अच्छा लगता है। हे परमेश्वर ! तेरी तीन विशेषताओं में जगत् समाया हुआ है अर्थात् त्रिगुणी इन्द्रियां संसार के मोह में लगी हुई हैं और उस अलक्ष्य परमेश्वर को समझा नहीं जा सकता॥१॥ रहाउ॥ यह माया शक्कर व चीनी की भाँति शरीर को मधुर लगती है। हम प्राणियों ने माया का बोझ उठाया हुआ है। ज्ञानहीन रूपी अंधेरी रात में कुछ दिखाई नहीं देता और मृत्यु का चूहा (यमराज) जीवन की रस्सी काटता जा रहा है॥ २॥ स्वेच्छाचारी जीव जितना अधिक धर्म कर्म करता है, उतना अधिक वह दुखी होता है। लेकिन गुरमुख को यश प्राप्त होता है। जो कुछ परमात्मा करता है, वही होता है, जीव की किस्मत मिटाई नहीं जा सकती॥ ३॥ जो प्राणी परमात्मा के चरणों में प्रीति लगाते और मग्न रहते हैं, वे प्रेम–रस से परिपूर्ण रहते हैं और प्रेम से शून्य नहीं होते। यदि नानक उनके चरणों की धूलि बन जाए तो उस विमूढ़ (मन) को भी कुछ प्राप्त हो जाए॥ ४॥ ४॥ १६॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ कत की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आए ॥ अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए ॥ १ ॥ मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ॥ कहे न जानी अउगण मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ॥ २ ॥ हट पटण बिज मंदर भंनै करि चोरी घरि आवै ॥ अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥ ३ ॥ तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥ लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही

महि वणजारा ॥ ४ ॥ जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥ दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥ ५ ॥ जीअड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै काती ॥ प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥ ६ ॥ ५ ॥ १७ ॥

(हम जीवों को पापों के कारण अनेक योनियों में भटकना पड़ता है, फिर हम क्या व्यक्त करें कि) कब की हमारी माता कौन है, कब का हमारा पिता कौन है, किस–किस स्थान से हम आए हैं ? पिता के जल रूपी वीर्य के बुलबुले से माता की गर्भ–अग्नि में पड़कर हम उत्पन्न हुए हैं लेकिन पता नहीं भगवान ने किस मकसद से हमारी रचना की है॥ १॥ हे मेरे भगवान ! तेरे गुणों को कौन जान सकता है ? मुझ में इतने अवगुण हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ हमने अनेक वृक्षों की योनियां देखीं। अनेक बार पशु–योनियों में उत्पन्न हुए। अनेक बार हम सर्पों के वंशों में उत्पन्न हुए और अनेक बार पक्षी बन–बनकर उड़ते रहे॥ २॥ मनुष्य नगरों की दुकानें एवं मजबूत महलों को सेंध लगाता है और वहाँ चोरी करके घर आ जाता है। वह मूर्ख अपने आगे देखता है और अपने पीछे भी देखता है किन्तु मूर्ख मनुष्य ईश्वर से अपने आपको कहाँ छिपा सकता है ?॥ ३॥ मैंने पावन तीर्थ–स्थलों के तट, नवखण्ड, नगर की दुकानें एवं व्यापार के केन्द्र देखे हैं। जीव रूपी व्यापारी अपने हृदय में तराजू लेकर अपने कमाए नाम रूपी धन को तोलता है॥ ४॥ हे प्रभु ! जितना सागर में जल भरा हुआ है, हमारे अवगुण उतने ही हैं। हे ईश्वर ! मुझ पर अपनी दया एवं कुछ कृपादृष्टि करो और मुझ डूबते पत्थर को भवसागर में से पार कर दो॥ ५॥ मेरा हृदय अग्नि की भाँति देदीप्यमान हो रहा है और उसके भीतर तृष्णा रूपी कैंची चल रही है। नानक प्रार्थना करता है कि हे मेरे प्रभु ! यदि मैं तेरे हुक्म को पहचान लूँ तो मुझे दिन–रात सुख मिलता रहेगा॥ ६॥ ५॥ १७॥

गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥ १ ॥ नामु न जानिआ राम का ॥ मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥ अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥ २ ॥ आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥ करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥ ३ ॥ नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ॥ हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥ ४ ॥ १ ॥ १८ ॥

मनुष्य अपनी रात्रि सोकर और दिन खा–पीकर व्यर्थ ही गंवा देता है। उसका हीरे समान अनमोल जीवन (भक्ति के बिना) कौड़ी के भाव व्यर्थ चला जाता है॥ १॥ हे मूर्ख ! तूने राम के नाम को नहीं जाना। तुम फिर मरणोपरांत पश्चाताप करोगे॥ १॥ रहाउ॥ तूने नाशवान धन संग्रह करके धरती में दबाकर रखा हुआ है। इस धन के कारण ही तेरे मन में अनन्त परमेश्वर के स्मरण की इच्छा उत्पन्न नहीं होती। जो भी नाशवान धन पदार्थ की ओर दौड़ते फिरते हैं, वे अनन्त प्रभु के नाम–धन को गंवा कर आए हैं॥ २॥ यदि केवल चाहने से धन मिलता हो तो सभी मनुष्य धनवान बन जाएँ। चाहे सभी मनुष्य धन की तृष्णा में रहते हैं परन्तु उनकी किस्मत का उनके कर्मों अनुसार ही फैसला होता है॥ ३॥ हे नानक ! जिसने सृष्टि की रचना की है, वही सबका पालन–पोषण करता है। मालिक–प्रभु का हुक्म जाना नहीं जा सकता कि वह किसे महानता प्रदान करता है॥ ४॥ १॥ १८॥

गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥ गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥ १ ॥ मै बनजारनि राम की ॥ तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि

अपारु ॥ २ ॥ मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥ उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥ ३ ॥ नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥

यदि मुझे मृगिनी बनकर वन में निवास करना पड़े तो मैं वहाँ कन्दमूल चुन–चुनकर खा लिया करूँगी। यदि गुरु की कृपा से मुझे मेरा पति–प्रभु मिल जाए तो मैं बार–बार उस पर कुर्बान जाऊँ॥ १॥ मैं राम की वनजारिन (व्यापारी) हूँ। हे प्रभु ! तेरा नाम ही व्यापार करने के लिए मेरा सौदा है॥ १॥ रहाउ॥ यदि मुझे कोयल बन कर आम के पौधे पर रहना पड़े तो भी मैं सहज ही नाम की आराधना करूँगी। यदि मुझे सहज–स्वभाव मेरा पति–प्रभु मिल जाए तो उसके अपार रूप के दर्शन करुँगी॥ २॥ यदि मुझे मछली बनकर जल में निवास करना पड़े तो भी मैं उसकी आराधना करूँगी, जो समस्त जीव–जन्तुओं की देखभाल करता है। प्रियतम प्रभु (इस संसार–सागर के अथाह जल के) दोनों ओर निवास करता है। अपनी भुजाएँ फैलाकर मैं उससे मिलूंगी॥ ३॥ यदि मुझे नागिन बनकर पृथ्वी में निवास करना पड़े तो भी मैं अपने प्रभु के नाम में ही निवास करूँगी और मेरा भय निवृत्त हो जाएगा। हे नानक ! वह जीव–स्त्री सदा सुहागिन है, जिसकी ज्योति प्रभु–ज्योति में समाई रहती है॥ ४॥ २॥ १६॥

गउड़ी पूरबी दीपकी महला १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥ १ ॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह अवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥ २० ॥

जिस सत्संगति में परमात्मा की कीर्ति का गान होता है और सृष्टिकर्त्ता की महिमा का चिंतन किया जाता है, उस सत्संगति रूपी घर में जाकर यश के गीत गायन करो और उस करतार की ही आराधना करो॥ १॥ हे मन ! तू सत्संगियों के साथ मिलकर निडर प्रभु की स्तुति के गीत गायन कर। मैं उस स्तुति के गीत पर कुर्बान जाता हूँ, जिस द्वारा सदैव सुख प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥

हे मानव ! जो पालनहार ईश्वर नित्यप्रति अनेकानेक जीवों का पोषण कर रहा है, वह तुझ पर भी कृपा–दृष्टि करेगा। उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थो का कोई मूल्यांकन नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं॥ २॥ इस मृत्युलोक से जाने का समय निश्चित किया हुआ है अर्थात् इहलोक से जाने हेतु साहे–पत्र रूपी संदेश संवत–दिन इत्यादि लिखकर तय किया हुआ है, इसलिए भगवान से मिलाप हेतु सत्संगियों के साथ मिलकर तेल डालने का शगुन कर लो अर्थात् मृत्यु रूपी विवाह होने से पूर्व शुभ कर्म कर लो। हे सज्जनो ! मुझे अपना आशीर्वाद दो कि मेरा प्रभु–पति से मिलन हो जाए॥ ३॥ प्रत्येक घर में इस साहे–पत्र को भेजा जा रहा है, नित्य ही यह सन्देश किसी न किसी घर पहुँच रहा है अर्थात् नित्य ही कोई न कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है। नानक कथन करते हैं कि हे जीव ! मृत्यु का निमंत्रण भेजने वाले को स्मरण कर, चूंकि वह दिन निकट आ रहे हैं॥ ४॥ १॥ २०॥

राग गउड़ी गुआरेरी ॥ महला ३ चउपदे ॥ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥ आपे मेलि मिलावै सोई ॥ मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥ हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ भै राचै सच रंगि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥ मेरा प्रभु भारा कीमति नही पाइ ॥ सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥ मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥ २ ॥ गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ॥ मनि निरमलि वसै सचु सोइ ॥ साचि वसिऐ साची सभ कार ॥ ऊतम करणी सबद बीचार ॥ ३ ॥ गुर ते साची सेवा होइ ॥ गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ॥ जीवै दाता देवणहारु ॥ नानक हरि नामे लगै पिआरु ॥ ४ ॥ १ ॥ २१ ॥

यदि गुरु मिल जाए तो ईश्वर से मिलन हो जाता है। वह ईश्वर स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है। मेरा प्रभु जीवों को अपने साथ मिलाने की समस्त युक्तियां जानता है। अपने हुक्म द्वारा वह उनको अपने साथ मिला लेता है, जो उसके नाम को पहचानते हैं॥ १॥ सतिगुरु के भय-आदर में रहने से संशय एवं दूसरे खौफ लुप्त हो जाते हैं। जो गुरु के भय में हर्षित रहता है, वह सत्य के प्रेम में लीन रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि गुरु मिल जाए तो ईश्वर सहज ही मनुष्य के हृदय में निवास कर जाता है। मेरा प्रभु महान है, उसका मूल्यांकन नहीं पाया जा सकता। गुरु के उपदेश से मैं प्रभु की सराहना करता हूँ, जिसका कोई अन्त नहीं, उसके अस्तित्व का ओर-छोर नहीं मिल सकता। मेरा परमेश्वर क्षमाशील है। वह दोषी जीवों को भी क्षमा कर देता है॥ २॥ गुरु के मिलन से समस्त चतुराइयां एवं सद्बुद्धि प्राप्त हो जाती है। इस तरह मन निर्मल हो जाता है और सत्यस्वरूप परमेश्वर उसमें निवास कर लेता है। यदि मनुष्य सत्य में निवास कर ले तो उसके कर्म सच्चे (श्रेष्ठ) हो जाते हैं। ईश्वर का नाम-सिमरन ही शुभ कर्म है॥ ३॥ गुरु के द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु की सेवा-भक्ति की जाती है। गुरु की दया से कोई विरला पुरुष ही हरिनाम को पहचानता है। समस्त जीवों को देने वाला दाता सदैव ही जीवित रहता है। हे नानक! मनुष्य का हरि-नाम से ही प्रेम हो जाता है॥ ४॥ १॥ २१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर ते गिआनु पाए जनु कोइ ॥ गुर ते बूझै सीझै सोइ ॥ गुर ते सहजु साचु बीचारु ॥ गुर ते पाए मुकति दुआरु ॥ १ ॥ पूरै भागि मिलै गुरु आइ ॥ साचै सहजि साचि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ त्रिसना अगनि बुझाए ॥ गुर ते सांति वसै मनि आए ॥ गुर ते पवित पावन सुचि होइ ॥ गुर ते सबदि मिलावा होइ ॥ २ ॥ बाझु गुरू सभ भरमि भुलाई ॥ बिनु नावै बहुता दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआई ॥ दरसनि सचै सची पति होई ॥ ३ ॥ किस नो कहीऐ दाता इकु सोई ॥ किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचि समावा ॥ ४ ॥ २ ॥ २२ ॥

कोई विरला पुरुष ही गुरु से ज्ञान प्राप्त करता है। जो व्यक्ति गुरु से ईश्वर बारे ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसका जीवन-मनोरथ सफल हो जाता है। गुरु से ही सत्यस्वरूप परमात्मा का नाम-स्मरण प्राप्त होता है। गुरु द्वारा ही मोक्ष का द्वार पाया जाता है॥ १॥ गुरु उसे ही आकर मिलता है, जिसके पूर्ण भाग्य होते हैं। वह परमात्मा का सिमरन करके सहज ही सत्य में समा जाता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु को मिलने से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है। गुरु के द्वारा सुख-शांति आकर मन में निवास करती है। गुरु के द्वारा मनुष्य पवित्र पावन एवं निर्मल हो जाता है। गुरु द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है॥ २॥

गुरु के बिना सारी दुनिया भ्रम में भटकती रहती है। नाम के बिना प्राणी बहु
जो प्राणी गुरमुख बन जाता है, वहीं व्यक्ति ईश्वर के नाम का ध्यान करता
से मनुष्य को सच्ची शोभा प्राप्त होती है॥ ३॥ केवल एक वही दाता है, दूस
किया जाए? जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपा कर देता है, उसका शब्द द्वारा उस
मैं अपने प्रियतम गुरु से मिलकर सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति करता
सच्चे गुरु की कृपा से सत्यस्वरूप परमात्मा में समाया रहता हूँ॥ ४॥ २॥

**गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सु थाउ सचु मनु निरमलु होइ ॥ सचि निवा
बाणी जुग चारे जापै ॥ सभु किछु साचा आपे आपै ॥ १ ॥ करमु होवै सत
गावै बैसि सु थाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलउ इह जिहवा दूजै भाइ ॥ हरि रसु न
बिनु बूझे तनु मनु फीका होइ ॥ बिनु नावै दुखीआ चलिआ रोइ ॥ २ ॥ रसना
सुभाइ ॥ गुर किरपा ते सचि समाइ ॥ साचे राती गुर सबदु वीचार ॥ अंम्रितु प
नामि समावै जो भाडा होइ ॥ ऊंधै भांडै टिकै न कोइ ॥ गुर सबदी मनि नाम
भांडा जिसु सबद पिआस ॥ ४ ॥ ३ ॥ २३ ॥**

यह (सत्संग का) स्थान सत्य का पावन स्थल है, जहाँ मन निर्मल हो
सत्य है, जहाँ सत्यस्वरूप परमात्मा निवास करता है। सच्ची वाणी चारों ही
स्वरूप परमात्मा स्वयं ही सब कुछ है॥ १॥ यदि परमात्मा की कृपा हो जाए
संगति मिल जाती है। फिर वह उस श्रेष्ठ स्थान पर विराजमान होकर भगवान
रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यह जिह्वा जल जाए, जो दूसरे स्वादों में लगी रहती है
की चाहवान है। यह हरि-रस का आस्वादन नहीं करती और मन्दे वचन बोल
समझे बिना तन एवं मन फीके हो जाते हैं। स्वामी के नाम के बिना दुःखी हो
हुआ दुनिया से चला जाता है। २॥ जिनकी जिह्वा सहज ही हरि-रस का पा
कृपा से सत्य में ही समा जाती है। वह गुरु के शब्द का चिंतन करती रहती
रहती है। फिर वह अमृत रस की निर्मल धारा का पान करती रहती है॥ ३
व्यक्ति के हृदय रूपी बर्तन में तभी समाता है, यदि वह शुद्ध हो तथा अशुद्ध
भी नहीं ठहरता। गुरु के शब्द द्वारा मन में भगवान के नाम का निवास हो जा
व्यक्ति के हृदय में प्रभु-नाम को पान करने की तीव्र लालसा होती है, उसक
शुद्ध होता है॥ ४॥ ३॥ २३॥

**गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ॥ हउमै वि
गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ॥ साची बाणी सबद बीचारु ॥ १ ॥ गावत
मनु तनु राता नामि सुहावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि गावहि इकि भगति करेहि
असनेह ॥ सची भगति गुर सबद पिआरि ॥ अपना पिरु राखिआ सदा उरि धा
मूरख आपु जणावहि ॥ नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥ नचिऐ टपिऐ**

ईश्वर के नाम से प्रेम करते हैं, वही असल में प्रभु के गीत गाते हैं। वह सच्ची वाणी एवं शब्द का चिंतन करते हैं॥ १॥ यदि सतिगुरु को अच्छा लगे तो मनुष्य प्रभु का यशोगान करता रहता है। उसका मन एवं तन नाम में मग्न हो जाता है और नाम से उसका जीवन सुन्दर बन जाता है॥ १॥ रहाउ॥ कई प्राणी प्रभु के गुणों के गीत गाते हैं और कई भक्ति करते हैं। परन्तु मन में प्रेम न होने के कारण उन्हें नाम प्राप्त नहीं होता। जो व्यक्ति गुरु के शब्द से प्रेम करता है उसकी ही भक्ति सच्ची है। ऐसा व्यक्ति सदैव ही अपने प्रियतम प्रभु को अपने हृदय में बसाकर रखता है॥ २॥ कई मूर्ख व्यक्ति रास प्रदर्शन करके भक्ति करते हैं और स्वयं को भक्त होने का दिखावा ही करते हैं। वे निरन्तर नृत्य करते और कूदते हैं और बहुत दुख सहन करते हैं। नृत्य करने एवं कूदने से प्रभु की भक्ति नहीं होती। प्रभु की भक्ति वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जो गुरु के शब्द द्वारा अपने अहंकार को नष्ट कर देता है॥ ३॥ भक्तवत्सल प्रभु स्वयं ही भक्तों से अपनी भक्ति करवाता है। अपने अन्तर्मन में से अहंकार को नाश करना ही सच्ची भक्ति है। मेरा सत्यस्वरूप प्रभु जीवों से भक्ति करवाने की समस्त विधियों को जानता है। हे नानक! भगवान उन्हें ही क्षमा कर देता है, जो उसके नाम को पहचान लेता है॥ ४॥ ४॥ २४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ बिनु मूए कैसे हरि पाइ ॥ मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिस नो बखसे दे वडिआई ॥ गुर परसादि हरि वसै मनि आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥ अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥ गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजे विकार ॥ ३ ॥ जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे ही जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ५ ॥ २५ ॥

जब मनुष्य अपने मन को नियंत्रण में कर लेता है तो उसकी समस्त दुविधा समाप्त हो जाती है। मन को नियंत्रण में किए बिना भगवान की प्राप्ति कैसे हो सकती है? कोई विरला पुरुष ही मन को नियंत्रण में करने की औषधि को जानता है। मन भगवान के नाम द्वारा ही नियंत्रण में आता है परन्तु इस भेद को वही जानता है जो नाम-सिमरन करता है॥ १॥ ईश्वर जिसे क्षमा कर देता है, उसे ही वह शोभा प्रदान करता है। गुरु की कृपा से ईश्वर आकर उसके हृदय में निवास करता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति गुरमुख बनकर शुभ कर्मों के आचरण की कमाई करता है, उसे ही मन के स्वभाव की सूझ होती है। मनुष्य का मन मदिरा में मस्त हुए हाथी की भाँति है। गुरु ही आत्मिक रूप से मृत इस मन को अपनी वाणी द्वारा अंकुश लगाकर आत्मिक जीवन प्रदान करने में समर्थ है॥ २॥ यह मन सहज रूप में नियंत्रण में आने वाला नहीं। कोई विरला पुरुष ही इसे नियंत्रण में करता है। यदि मनुष्य मन के स्वेच्छाचरण को नष्ट कर दे, केवल तभी यह मन पवित्र होता है। गुरमुख ने यह मन सुन्दर बना लिया है। वह अपने भीतर से अहंकार रूपी विकार को बाहर निकाल देता है॥ ३॥ जिन लोगों को परमात्मा ने आदि से ही साधुओं के मिलाप में मिला रखा है, वह कदाचित अलग नहीं होते और ईश्वर में ही लीन रहते हैं। सर्वकला सम्पूर्ण परमात्मा अपनी कला (शक्ति) स्वयं ही जानता है। हे नानक! गुरमुख ही नाम को पहचानता है॥ ४॥ ५॥ २५॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥ बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ॥ धंधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥ १ ॥ हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥ जगजीवनु सेवि जुग चारे

जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ क्रिपा करे प्रभ करम बिधाता ॥ २ ॥ से जन सचे जो गुर सबदि मिलाए ॥ धावत वरजे ठाकि रहाए ॥ नामु नव निधि गुर ते पाए ॥ हरि किरपा ते हरि वसै मनि आए ॥ ३ ॥ राम राम करतिआ सुखु सांति सरीर ॥ अंतरि वसै न लागै जम पीर ॥ आपे साहिबु आपि वजीर ॥ नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ २६ ॥

सारी दुनिया अहंकार में फँसकर पागल हो रही है तथा द्वैत–भाव के कारण भ्रम में पड़कर कुमार्गगामी हो रही है। चिंता में पड़कर लोग बहुत सोचते रहते हैं परन्तु अपने स्वरूप की पहचान नहीं करते। अपने कर्म (धंधा) करते हुए उनके रात–दिन बीत जाते हैं॥ १॥ हे मेरे भाई! अपने हृदय में राम का सिमरन करते रहो। गुरमुख की जिह्वा हरि–रस का आनंद प्राप्त करती रहती है॥ १॥ रहाउ॥

जो गुरमुख अपने हृदय में राम को पहचान लेते हैं, वह जगजीवन प्रभु की सेवा करके चारों युगों में प्रसिद्ध हो जाते हैं। वह अपना अहंकार नष्ट कर के गुरु के शब्द द्वारा प्रभु को समझ लेते हैं। कर्मविधाता प्रभु उन पर अपनी कृपा करता है॥ २॥ जिन लोगों को गुरु के शब्द द्वारा भगवान अपने साथ मिला लेता है, वहीं व्यक्ति सत्यवादी हैं। वह अपने मन को विकारों की ओर दौड़ने से वर्जित करते हैं और उस पर विराम लगाते हैं। नवनिधियाँ पदान करने वाले नाम को वह गुरु से प्राप्त करते हैं। भगवान अपनी कृपा करके उनके मन में आकर निवास कर लेता है॥ ३॥ 'राम–राम' नाम का सिमरन करने से शरीर को बड़ा सुख एवं शांति प्राप्त होती है। जिस प्राणी के हृदय में प्रभु–नाम आ बसता है, उसको मृत्यु की पीड़ा स्पर्श नहीं करती। ईश्वर स्वयं ही जगत् का स्वामी है और स्वयं ही मंत्री है। हे नानक! सदैव ही गुणों के भण्डार भगवान की सेवा करते रहो॥ ४॥ ६॥ २६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥ सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥ जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥ १ ॥ हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥ तूं विसरहि तदि ही मरि जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन तूं विसरहि जि तुधु आपि भुलाए ॥ तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥ मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥ २ ॥ जिन इक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥ जिन इक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ॥ गुरमती हरि नामि समाए ॥ ३ ॥ जिना पोतै पुंनु से गिआन बीचारी ॥ जिना पोतै पुंनु तिन हउमै मारी ॥ नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ २७ ॥

उस भगवान को हम क्यों विस्मृत करें? जिसके हमें ये आत्मा और प्राण दिए हुए हैं। उसे हम क्यों विस्मृत करें? जो समस्त जीवों में समाया हुआ है। जिसकी सेवा–भक्ति करने से जीव उसके दरबार में स्वीकार हो जाता है तथा वहाँ उसे बड़ा आदर–सत्कार मिलता है॥ १॥ मैं हरि के नाम पर बलिहारी जाता हूँ। हे मेरे प्रभु! जब मैं तुझे विस्मृत करूँ, मैं उसी क्षण ही प्राण त्याग देता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

हे परमात्मा! तू उन्हें ही विस्मृत हो जाता है, जिन्हें तूने स्वयं ही कुमार्गगामी बनाया है। तू उन्हें ही विस्मृत होता है जो माया के मोह में लीन रहते हैं। तू ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी जीवों को योनियों में डालकर रखता है॥ २॥ जिन प्राणियों पर परमात्मा प्रसन्न होता है, उनको वह सतिगुरु की सेवा में लगा देता है। जिन प्राणियों पर भगवान बड़ा प्रसन्न होता है, भगवान स्वयं को उनके मन में बसा देता है। गुरु के उपदेश से वह हरि के नाम में लीन हो जाते हैं॥ ३॥ जिन्होंने पुण्य–कर्म किए हुए हैं, वे ज्ञान का चिंतन करते रहते हैं और अपने अहंकार को नष्ट कर देते हैं। हे नानक! जो ईश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ ४॥ ७॥ २७॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥ गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥ तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥ १ ॥ जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥ तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥ जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥ जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥ २ ॥ गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए ॥ गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाए ॥ गुरमुखि भगति हरि नामि समाए ॥ ३ ॥ आपे दाति करे दातारु ॥ पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ४ ॥ ८ ॥ २८ ॥

हे भगवान ! तू अकथनीय है। फिर तुझे किस तरह कथन किया जा सकता है ? जो व्यक्ति गुरु के शब्द से अपने मन को वश में कर लेते हैं, भगवान उसके मन में आ बसता है। हे ईश्वर ! तेरे गुण अनेक हैं और उनका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ १॥ यह गुरुवाणी जिस (परमेश्वर) की है, उस (प्रभु) में ही लीन रहती है। हे प्रभु ! तेरी अकथनीय कथा को गुरु के शब्द द्वारा ही वर्णन किया गया है॥ १॥ रहाउ॥

जहाँ सतिगुरु जी होते हैं, वहाँ सत्संगति हो जाती है। सतिगुरु सत्संगति में सहज ही भगवान की गुणस्तुति करते हैं। जहाँ सतिगुरु जी होते हैं, वहाँ नाम द्वारा प्राणियों का अहंकार जल जाता है॥ २॥ गुरमुख ईश्वर की सेवा–भक्ति करके उसके आत्म–स्वरूप में स्थान प्राप्त कर लेता है। गुरमुख ही अपने हृदय में भगवान के नाम को बसा लेता है। गुरमुख भक्ति द्वारा भगवान के नाम में ही समा जाता है॥ ३॥ दाता प्रभु जिस व्यक्ति को नाम की देन प्रदान करता है, उस व्यक्ति का पूर्ण सतिगुरु से प्रेम हो जाता है। हे नानक ! जो व्यक्ति नाम में मग्न रहते हैं, उनकी लोक–परलोक में जय–जयकार होती है॥ ४॥ ८॥ २८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ एकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा ॥ भिंन भिंन वेखै हरि प्रभु रंगा ॥ १ ॥ एकु अचरजु एको है सोई ॥ गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥ कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ आपे सुतिआ देइ जगाई ॥ २ ॥ तिस की कीमति किनै न होई ॥ कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥ गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥ ३ ॥ सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥ वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥ नानक नामि रते हरि नामि समाए ॥ ४ ॥ ९ ॥ २९ ॥

एक ईश्वर से ही समस्त रूप एवं रंग उत्पन्न हुए हैं। पवन, जल एवं अग्नि सब में मिले हुए हैं। हरि–प्रभु इन भिन्न–भिन्न रंगों वाले जीवों एवं पदार्थों को देखकर प्रसन्न होता है॥ १॥ यह एक अद्भुत कौतुक है कि यह सारा जगत–प्रसार एक ईश्वर का ही है और वह स्वयं इसमें विद्यमान है। कोई विरला पुरुष ही गुरु के माध्यम से इस कौतुक पर विचार करता है॥ १॥ रहाउ॥

परमेश्वर सहज ही सर्वव्यापक हो रहा है। परमेश्वर ने ऐसी सृष्टि रचना की है कि किसी स्थान पर वह लुप्त है और कहीं प्रत्यक्ष है। भगवान स्वयं ही अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए जीवों को ज्ञान देकर जगा देता है॥ २॥ उसका मूल्यांकन कोई नहीं कर सका चाहे सभी लोग उसके गुणों को कह–कहकर कथन कर रहे हैं। जो प्राणी गुरु के शब्द में लीन होता है, वह भगवान को समझ लेता है॥ ३॥ भगवान जीवों की प्रार्थना सुन–सुनकर उनकी जरुरतों को देखता और उन्हें नाम द्वारा अपने साथ मिला लेता है। गुरु की सेवा करने से मनुष्य को बड़ी शोभा प्राप्त होती है। हे नानक ! जो व्यक्ति नाम में मग्न रहते हैं, वह भगवान के नाम में ही समा जाते हैं॥ ४॥ ९॥ २९॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनमुखि सूता माइआ मोहि पिआरि ॥ गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥ १ ॥ सहजे जागै सवै न कोइ ॥ पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असंतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥ कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥ अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥ २ ॥ इसु जुग महि राम नामि निसतारा ॥ विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥ आपि तरै सगले कुल उधारा ॥ ३ ॥ इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ॥ कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ॥ नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥ ४ ॥ १० ॥ ३०॥

स्वेच्छाचारी जीव माया के मोह एवं प्रेम में फँस कर अज्ञानता की निद्रा में सोया रहता है परन्तु गुरमुख भगवान के गुणों का चिंतन करके ज्ञान द्वारा जागता रहता है। जो व्यक्ति प्रभु के नाम से प्रेम करते हैं, वहीं जागते रहते हैं॥ १॥ जो व्यक्ति सहज ही जागता रहता है, वह अज्ञानता की निद्रा में नहीं सोता। इस तथ्य को कोई पुरुष पूर्ण गुरु द्वारा समझता है॥ १॥ रहाउ॥

दुष्ट एवं अनाड़ी व्यक्ति समझाने से कभी भी नहीं समझता। वह बातें तो बहुत करता रहता है परन्तु माया से ही उलझा रहता है। मोह-माया में अन्धा हुआ ज्ञानहीन व्यक्ति कभी भी अपने जीवन-मनोरथ में सफल नहीं होता॥ २॥ इस युग में राम के नाम द्वारा ही मोक्ष संभव है। कोई विरला पुरुष ही गुरु के शब्द द्वारा इस तथ्य को समझता है। वह स्वयं तो भवसागर से पार होता है और अपने समूचे वंश को भी बचा लेता है॥ ३॥ इस कलियुग में कोई भी व्यक्ति धर्म-कर्म करने में सफल नहीं होता। कलियुग का जन्म चंडाल के घर में हुआ है। हे नानक! परमात्मा के नाम बिना कोई भी मोक्ष नहीं पा सकता॥ ४॥ १०॥ ३०॥

गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥ सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥ मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥ सचै महलि सचि नामि समाहु ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥ राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमे आवै भरमे जाइ ॥ इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥ मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥ २ ॥ आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥ इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥ महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ किरपा करि सतिगुरू मिलाए ॥ एको नामु चेते विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए ॥ ४ ॥ ११ ॥ ३१ ॥

भगवान विश्व का सच्चा बादशाह है और उसका हुक्म भी सत्य अर्थात् अटल है। जो व्यक्ति अपने मन से सत्यस्वरूप एवं बेपरवाह भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं। वे उसके सच्चे महल में निवास प्राप्त कर लेते है और उसके सत्य-नाम में ही समा जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! सुनो, प्रभु का चिन्तन करो। राम का भजन करो और भवसागर से पार हो जाओ॥ १॥ रहाउ॥

जीव मोह-माया के भ्रम में फँसने के कारण जन्मता एवं मरता रहता है। इस जगत् के जीवों ने माया के प्रेम कारण जन्म लिया है। स्वेच्छाचारी मनुष्य प्रभु को स्मरण नहीं करता इसलिए वह जन्मता-मरता रहता है॥ २॥ क्या प्राणी स्वयं कुमार्गगामी होता है अथवा ईश्वर स्वयं उसको कुमार्गगामी करता है? यह आत्मा माया की सेवा में लिप्त हुई है। भगवान ने इस जीव को माया की सेवा में लगाया है, जिसके फलस्वरूप यह भारी दुःख प्राप्त करता है और अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥ ३॥ प्रभु अपनी कृपा करके मनुष्य का सतिगुरु से मिलन करवाता है। वह तब, केवल नाम का ही स्मरण करता है और अपने अन्तर्मन से वह भ्रम को निकाल देता है। हे नानक! वह नाम का जाप करता है और ईश्वर के नाम की नवनिधि प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ ११॥ ३१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥ गुर सेवा ते मनु पतीआइ ॥ से धनवंत हरि नामु कमाइ ॥ पूरे गुर ते सोझी पाइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥ जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥ हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥ सहजे सहजि समावै सोइ ॥ २ ॥ दूजै भाइ न सेविआ जाइ ॥ हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥ पुति कुटंबि ग्रिहि मोहिआ माइ ॥ मनमुखि अंधा आवै जाइ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ॥ अनदिनु भगति गुर सबदी होइ ॥ गुरमति विरला बूझै कोइ ॥ नानक नामि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ३२ ॥

जिन लोगों ने गुरु की प्रेरणा से भगवान के नाम का ध्यान किया है, मैं उन से जाकर पूछता हूँ। गुरु की सेवा करने से मन संतुष्ट हो जाता है। वहीं धनवान हैं जो हरि का नाम धन कमाते हैं। इस बात का ज्ञान पूर्ण—गुरु से ही प्राप्त होता है॥ १॥ हे मेरे भाई ! हरि—परमेश्वर के नाम का जाप करते रहो। गुरु की प्रेरणा से की हुई सेवा—भक्ति के परिश्रम को भगवान स्वीकार कर लेता है॥ १॥ रहाउ॥ अपने स्वरूप की पहचान करने से मन निर्मल हो जाता है। वह अपने जीवन में माया के बंधनों से मुक्त होकर भगवान को पा लेता है। जो व्यक्ति भगवान की गुणस्तुति करता है, उसकी बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। वह सहज ही ईश्वर में लीन हो जाता है॥ २॥ मोह—माया में फँसने से परमात्मा की सेवा—भक्ति नहीं की जा सकती। मनुष्य अहंकारवश माया रूपी महा विष सेवन करता है। उसके पुत्र, कुटुंब एवं घर इत्यादि के मोह के कारण माया उसे ठगती रहती है और वह ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी व्यक्ति जन्मता—मरता रहता है॥ ३॥ जिस मनुष्य को हरि—प्रभु अपना नाम देता है, वह उसका भक्त बन जाता है। भगवान की भक्ति रात—दिन सदैव ही गुरु के शब्द से होती है। परन्तु कोई विरला पुरुष ही गुरु की मति द्वारा इस भेद को समझता है। हे नानक ! ऐसा व्यक्ति हमेशा ही ईश्वर के नाम में लीन रहता है॥ ४॥ १२॥ ३२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर सेवा जुग चारे होई ॥ पूरा जनु कार कमावै कोई ॥ अखुटु नाम धनु हरि तोटि न होई ॥ ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥ १ ॥ ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥ गुरमुखि सेवा अंम्रित रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवहि से महा पुरख संसारे ॥ आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥ हरि का नामु रखहि उर धारे ॥ नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥ हउमै मारि कमलु परगासा ॥ अनहदु वाजै निज घरि वासा ॥ नामि रते घर माहि उदासा ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥ जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥ अनदिनु जपहि हरि सारंगपाणी ॥ नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ३३ ॥

गुरु की सेवा चारों युगों (सतियुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग) में सफल हुई है। कोई पूर्ण मनुष्य ही गुरु अनुसार कार्य करता है। सेवा करने वाला मनुष्य अक्षय हरि—नाम रूपी धन संचित कर लेता है और उस नाम—धन में कभी कोई कमी नहीं आती। उस मनुष्य को इहलोक में सदैव सुख मिलता है और वह प्रभु के दरबार में भी शोभा प्राप्त करता है॥ १॥ हे मेरे मन ! इसके बारे कोई शंका मत कर। अमृत रस गुरु की सेवा करके ही पान किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की तन—मन से सेवा करते हैं, वह इस संसार में महापुरुष हैं। वह स्वयं भवसागर से पार हो जाते हैं और अपने समूचे वंशों को भी पार कर देते हैं। हरि के नाम को वह अपने हृदय में धारण करके रखते हैं। हरि के नाम में मग्न हुए वह भवसागर से पार हो जाते हैं॥ २॥ जो व्यक्ति मन में विनीत भावना रखकर अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वे अपने अहंत्व को नष्ट कर देते हैं और उनका हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता

है। उनके मन में अनहद शब्द गूंजने लगता है और वे आत्म–स्वरूप में निवास कर लेते हैं। नाम के साथ अनुरक्त हुए वे अपने घर में निर्लिप्त रहते हैं॥ ३॥ उनकी वाणी सत्य है जो सतिगुरु की सेवा करते हैं। प्रत्येक युग में भगवान के भक्तों ने वाणी की रचना करके उसका बखान किया है। वे दिन–रात सारंगपाणि प्रभु का सिमरन करते रहते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति भगवान के नाम में मग्न रहते हैं, वे वासना–रहित एवं पवित्र हो जाते हैं॥ ४॥ १३॥ ३३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सतिगुरु मिलै वडभागि संजोग ॥ हिरदै नामु नित हरि रस भोग ॥ १ ॥ गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥ जनमु जीति लाहा नामु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥ गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥ २ ॥ करम कांड बहु करहि अचार ॥ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥ ३ ॥ बंधनि बाधिओ माइआ फास ॥ जन नानक छूटै गुर परगास ॥ ४ ॥ १४ ॥ ३४ ॥

सौभाग्य एवं संयोग से सतिगुरु जी मनुष्य को मिलते हैं। फिर उस मनुष्य के हृदय में नाम का निवास हो जाता है और वह नित्य ही हरि–रस का भोग करता रहता है॥ १॥ जो प्राणी गुरु के सान्निध्य में रहकर भगवान के नाम का ध्यान करता है, वह अपनी जीवनबाजी जीत लेता है और उसे नाम धन का लाभ प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसे गुरु का शब्द मधुर–मीठा लगता है, वह ज्ञान एवं ध्यान को पा लेता है। गुरु की कृपा से किसी विरले पुरुष ने ही इसका रस चखकर देखा है॥ २॥ जो व्यक्ति अधिकतर कर्मकाण्ड के आचरण करता है, भगवान के नाम बिना उसके यह कर्म अहंकार रूप होते हैं। ऐसा नामविहीन व्यक्ति धिक्कार योग्य है॥ ३॥ हे दास नानक! ऐसा व्यक्ति बंधनों में जकड़ा और मोह–माया में फँसा हुआ है, और वह गुरु के ज्ञान–प्रकाश द्वारा ही बन्धनों से मुक्त होता है॥ ४॥ १४॥ ३४॥

महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥ जैसी धरती ऊपरि मेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥ जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥ १ ॥ बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ॥ जो किछु करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसतरी पुरख होइ कै किआ ओइ करम कमाही ॥ नाना रूप सदा हहि तेरे तुझ ही माहि समाही ॥ २ ॥ इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥ जा का कारजु सोई परु जाणै जे गुर कै सबदि समाही ॥ ३ ॥ तेरा सबदु तूंहै हहि आपे भरमु कहा ही ॥ नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ ३५ ॥

जिस तरह मेघ धरती पर जल बरसाते हैं, (इसी तरह गुरुवाणी नाम के जल की बरसात करती है)। परन्तु क्या धरती में जल नहीं है? जिस तरह धरती में जल व्याप्त है (इसी तरह प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में नाम–जल व्याप्त है) परन्तु मेघ पैरों के बिना अधिक मात्रा में बरसता रहता है॥ १॥ हे बाबा! इस तरह तू अपने भ्रम को दूर कर दे। जो कुछ भी परमात्मा मनुष्य को बनाता है, वहीं कुछ वह हो जाता है। उस तरह वह जाकर उस में ही मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥ स्त्री एवं पुरुष होकर (तेरी महानता के बिना) वह कौन–सा कर्म सम्पूर्ण कर सकते हैं? हे प्रभु! भिन्न–भिन्न रूप सदैव ही तेरे हैं और तुझ में ही लीन हो जाते हैं॥ २॥ मैं अनेक जन्मों से भूला हुआ था, अब जब परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, मैं पुन: उसे विस्मृत नहीं करूँगा। यदि मनुष्य गुरु के शब्द में लीन रहे तो वह अनुभव करेगा कि जिसका यह कर्म है, वही इसको भलीभांति जानता है॥ ३॥ हे प्रभु! जो तेरा नाम है, वह भी तू

स्वयं ही है। तू स्वयं ही सबकुछ है, फिर भ्रम कहाँ है? हे नानक! जब आत्म-तत्व अर्थात् जीवात्मा परम तत्व प्रभु में मिल जाता है तो फिर उसका पुनः पुनः जन्म नहीं होता॥ ४॥ १॥ १५॥ ३५॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सभु जगु काले वसि है बाधा दूजै भाइ ॥ हउमै करम कमावदे मनमुखि मिलै सजाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लए छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह भरमदे मनहठि आवै जाइ ॥ गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि नामे सुखि समाइ ॥ ३ ॥ मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥ जन नानक करमी पाईअनि हरि नामा भगति भंडार ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ३६ ॥

यह सारा जगत् मृत्यु के अधीन है और मोह-माया के बंधन में फँसा हुआ है। स्वेच्छाचारी अपना कर्म अहंकारवश करते हैं और परिणामस्वरूप उनको सत्य के दरबार में दण्ड मिलता है॥ १॥ हे मेरे मन! अपना चित्त गुरु के चरणों में लगा। गुरु के सान्निध्य में नाम-निधि को प्राप्त कर। प्रभु के दरबार में यह तेरी मुक्ति करवा देगी और बड़ी शोभा मिलेगी॥ १॥ रहाउ॥ मन के हठ कारण मनुष्य चौरासी लाख योनियों में भटकते हैं और संसार में जन्मते-मरते रहते हैं। वह गुरु के शब्द को अनुभव नहीं करते और पुनःपुनः गर्भ योनियों में डाले जाते हैं॥ २॥ जब मनुष्य गुरु के माध्यम से अपने आत्मिक जीवन को समझ लेता है तो हरि का नाम उसके मन में निवास कर जाता है। वह रात-दिन भगवान की भक्ति में मग्न रहता है और भगवान के नाम द्वारा सुख में समा जाता है॥ ३॥ जब मनुष्य का मन गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व से रहित हो जाता है तो उस मनुष्य की श्रद्धा बन जाती है और वह अपना अहंकार एवं विकारों को त्याग देता है। हे नानक! ईश्वर की कृपा से ही मनुष्य उसके नाम एवं भक्ति के भण्डार को प्राप्त करता है॥ ४॥ २॥ १६॥ ३६॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ पेईअड़ै दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥ सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥ पेवकड़ै गुण संमलै साहुरै वासु पाइआ ॥ गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥ १ ॥ ससुरै पेईऐ पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ आपि निरंजनु अलखु है आपे मेलाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईऐ ॥ वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अंम्रितु पाईऐ ॥ हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईऐ ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईऐ ॥ २ ॥ मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥ सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ मेरे करते एवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥ ३ ॥ मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥ मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा ॥ हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ३७ ॥

हरि-प्रभु ने (प्रत्येक जीव के मस्तक पर यही भाग्य) लिखकर रख दिया है कि जीव-स्त्री ने अपने मायके (मृत्युलोक) चार दिनों (कुछ दिन) के लिए रहना है। वही जीव-स्त्री शोभावान है जो गुरु के माध्यम से ईश्वर की महिमा गायन करती है। जो अपने मायके (इहलोक) में सदाचार को सँभालती है, वह अपने ससुराल (परलोक) में बसेरा पा लेती है। गुरमुख के हृदय को हरि-प्रभु ही अच्छा लगता है, और वह सहज ही उसमें लीन हो जाता है॥ १॥ प्रियतम (प्रभु) इस लोक एवं परलोक में निवास करता है। बताइए, उसको किस विधि से प्राप्त किया जा सकता है? निरंजन प्रभु स्वयं ही

अलक्ष्य है और वह जीव को स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर स्वयं ही सुमति प्रदान करता है और मनुष्य हरि के नाम का ध्यान करता है। बड़े सौभाग्य से सतिगुरु जी मिलते हैं, जो उसके मुख (हरिनाम का) अमृत डालते हैं। जब अहंकार एवं दुविधा नष्ट हो जाते हैं, वह सहज ही सुख में लीन हो जाता है। प्रभु स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और स्वयं ही मनुष्य को अपने नाम-सिमरन में लगाता है॥ २॥ स्वेच्छाचारी अहंकारवश ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते, वे मूर्ख एवं ज्ञानहीन हैं। वे सतिगुरु की सेवा-भक्ति नहीं करते और पुनः पुनः पश्चाताप करते हैं। गर्भयोनि में उनको निवास मिलता है और गर्भ में ही गल-सड़ जाते हैं। मेरे सृजनहार प्रभु को यहीं भला लगता है कि स्वेच्छाचारी भटकते रहें॥ ३॥ मेरे हरि-प्रभु ने आदि से ही प्राणी के मस्तक पर उसका भाग्य लिख दिया था। जब मनुष्य शूरवीर गुरु से मिलता है, वह हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना करता है। हरि का नाम मेरा पिता एवं मेरी माता है। भगवान ही मेरा संबंधी और भ्राता है। हे प्रभु ! कृमि सेवक नानक को क्षमादान करके अपने साथ मिला लो॥ ४॥ ३॥ १७॥ ३७॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा ॥ सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥ १ ॥ हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥ हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ हरि गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥ जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥ २ ॥ गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे ॥ ३ ॥ सहजु अनंदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ३८ ॥

सतिगुरु से ज्ञान प्राप्त करके मैंने परम तत्व ईश्वर के मूल का चिन्तन किया है। मुरारि प्रभु के नाम का जाप करने से मेरी मलिन बुद्धि निर्मल हो गई है। ईश्वर ने माया का नाश कर दिया है और मेरा अज्ञानता का अंधकार दूर हो गया है। जिनके मस्तक पर आदि से ही भाग्य-रेखाएँ विद्यमान हों, उनको हरि का नाम प्रिय लगता है॥ १॥ हे सन्तजनो ! कौन-से साधनों द्वारा परमात्मा को पाया जा सकता है ? जिसके दर्शन करके मैं जीवित रहती हूँ। परमात्मा के बिना मैं निमेष मात्र भी जीवित नहीं रह सकती। मुझे गुरु के साथ मिला दीजिए चूंकि जो मैं हरि-रस का पान करूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं नित्य ईश्वर की गुणस्तुति करती हूँ और प्रतिदिन परमेश्वर की महिमा ही सुनती हूँ। मुझे हरि-प्रभु ने (संसार से) मुक्त कर दिया है। हरि-रस मैंने गुरु से प्राप्त किया है। मेरा मन एवं तन उसमें लीन हो गए हैं। वह सत्यपुरुष गुरु धन्य-धन्य है, जिन्होंने मुझे भगवान की भक्ति प्रदान की है। मैंने उसे ही अपना गुरु धारण किया है, जिस गुरु के द्वारा मैंने परमात्मा को पाया है॥ २॥ विश्व का मालिक प्रभु गुणों का दाता है परन्तु हम जीवों में अनेक अवगुण विद्यमान हैं। पानी में डूबते पत्थरों की तरह भवसागर में डूबते पापी जीवों को भगवान ने गुरु की मति देकर पार कर दिया है। हे गुणों के दाता ! तू बड़ा निर्मल है लेकिन हम जीवों में अनेक अवगुण भरे हुए हैं। हे भगवान ! तू महांमूर्खों को भी भवसागर से पार कर देता है, अतः मैं तेरी ही शरण में आया हूँ और मुझे भी भवसागर से पार कर दो॥ ३॥ जो व्यक्ति गुरु की मति द्वारा अपने मन में हरि-परमेश्वर का ध्यान करते हैं, उन्हें हमेशा ही सहज सुख एवं आनंद प्राप्त होता है। वे अपने सज्जन प्रभु को पाकर अपने हृदय-घर में उसकी

महिमा–स्तुति के गीत गाते रहते हैं। हे हरि! मुझ पर दया करो। हे प्रभु! मेरी यही विनती है कि मैं सर्वदा ही हरि–परमेश्वर का नाम याद करता रहूँ। जन नानक उन महापुरुषों की चरण–धूलि की ही कामना करता है, जिन्होंने सतिगुरु को पाया है॥ ४॥ ४॥ १८॥ ३८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे ੧ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

पंडितु सासत सिम्रिति पड़िआ॥ जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥ १ ॥ ना जाना किआ गति राम हमारी ॥ हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संनिआसी बिभूत लाइ देह सवारी ॥ पर त्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥ मै मूरख हरि आस तुमारी ॥ २ ॥ खत्री करम करे सूरतणु पावै ॥ सूदु वैसु पर किरति कमावै ॥ मै मूरख हरि नामु छडावै ॥ ३ ॥ सभ तेरी स्रिसटि तूं आपि रहिआ समाई ॥ गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥ मै अंधुले हरि टेक टिकाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३६ ॥

पण्डित शास्त्रों एवं स्मृतियों का अध्ययन करता है। योगी अपने गुरु का नाम ''गोरख गोरख'' पुकारता है। लेकिन मैं मूर्ख हरि–परमेश्वर के नाम का ही जाप करता हूँ॥ १॥ हे मेरे राम! मैं नहीं जानता कि मेरी क्या हालत होगी। हे मेरे मन! तू भगवान का भजन करके भवसागर से पार हो जा॥ १॥ रहाउ॥

संन्यासी विभूति लगाकर अपने शरीर का श्रृंगार करता है। वह पराई नारी को त्याग कर ब्रह्मचारी बनता है। हे हरि! मुझ मूर्ख को तुझ पर ही भरोसा है॥ २॥ क्षत्रिय शूरवीरता के कर्म करता है और वीरता पाता है। शूद्र एवं वैश्य दूसरों की सेवा का कर्म करते हैं। मुझ मूर्ख को भगवान का नाम ही मुक्त करवाएगा॥ ३॥ हे प्रभु! यह सारी सृष्टि तेरी ही रचना है और तू स्वयं ही समस्त जीवों में समाया हुआ है। हे नानक! गुरमुख को प्रभु महानता प्रदान करता है। मुझ ज्ञानहीन ने भगवान का ही सहारा लिया है॥ ४॥ १॥ ३६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ निरगुण कथा कथा है हरि की ॥ भजु मिलि साधू संगति जन की ॥ तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥ १ ॥ गोबिंद सतसंगति मेलाइ ॥ हरि रसु रसना राम गुन गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जन धिआवहि हरि हरि नामा ॥ तिन दासनि दास करहु हम रामा ॥ जन की सेवा ऊतम कामा ॥ २ ॥ जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥ सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥ जन पग रेणु वडभागी पावै ॥ ३ ॥ संत जन सिउ प्रीति बनि आई ॥ जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥ ते जन नानक नामि समाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४० ॥

हरि की कथा माया के तीनों गुणों से परे है। संतजनों की संगति में मिलकर भगवान का भजन करो और हरि की अकथनीय कथा को सुनकर भवसागर से पार हो जाओ॥ १॥ हे गोविन्द! मुझे संतों की संगति में मिला दो चूंकि मेरी रसना राम के गुण गा–गाकर हरि–रस का पान करती रहे॥ १॥ रहाउ॥

हे मेरे राम! मुझे उन पुरुषों के दासों का दास बना दो, जो हरि–परमेश्वर के नाम का ध्यान करते रहते हैं। तेरे सेवक की सेवा एक उत्तम कार्य है॥ २॥ जो व्यक्ति मुझे हरि की हरि कथा सुनाता है, वह मेरे मन एवं चित्त को बहुत अच्छा लगता है। ईश्वर के सेवकों की चरण–धूलि भाग्यवान ही प्राप्त करते हैं॥ ३॥ संतजनों से उनकी प्रीति होती है, जिनके मस्तक पर विधाता ने ऐसा भाग्य लिख दिया है। हे नानक! ऐसे व्यक्ति प्रभु के नाम में समा जाते हैं॥ ४॥ २॥ ४०॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥ मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥ सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥ १ ॥ ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे ॥ जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥ कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥ हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥ २ ॥ सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥ नरपति प्रीति माइआ देखि पसारा ॥ हरि जन प्रीति जपै निरंकारा ॥ ३ ॥ नर प्राणी प्रीति माइआ धनु खाटे ॥ गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४१ ॥

जब पुत्र कोई स्वादिष्ट पदार्थ खाता है तो माता बड़ी प्रसन्न होकर प्रेम करती है। जब मछली जल में स्नान करती है तो उसका जल से प्रेम हो जाता है। सतिगुरु का प्रेम गुरसिक्ख के मुख में नाम रूपी भोजन डालने से है॥ १॥ हे प्रिय प्रभु ! मुझे ऐसे हरि के भक्तों से मिला, जिनको मिलने से मेरे दुःख दूर हो जाएँ॥ १॥ रहाउ॥ जिस तरह अपने गुम हुए बछड़े से मिलकर गाय प्रेम करती है, जैसे कामिनी (पत्नी) अपने पति से मिलकर प्रेम करती है, जब वह घर लौट कर आता है, वैसे ही जब प्रभु का भक्त प्रभु का यशोगान करता है तो उसका मन प्रभु के प्रेम में लीन हो जाता है॥ २॥ पपीहा मूसलाधार वर्षा के जल से प्रेम करता है। नरपति (सम्राट) को धन-दौलत का आडम्बर (विस्तार) देखने का चाव है। हरि का सेवक निरंकार की आराधना करने से प्रेम करता है॥ ३॥ मनुष्य को धन-दौलत एवं सम्पत्ति कमाने से अति प्रेम है। गुरु के सिक्ख को गुरु से प्रेम होता है, जब गुरु उसे गले लगकर मिलता है। नानक तो संतों के चरण चूमने से ही प्रेम करता है॥ ४॥ ३॥ ४१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइ ॥ भूखे प्रीति होवै अंनु खाइ ॥ गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइ ॥ १ ॥ हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥ करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥ मिलै पिआरे सभ दुख तिआगै ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लागै ॥ २ ॥ बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइ ॥ हिरदै बिगसै देखै माइ ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लाइ ॥ ३ ॥ होरु सभ प्रीति माइआ मोहु काचा ॥ बिनसि जाइ कूरा कचु पाचा ॥ जन नानक प्रीति त्रिपति गुरु साचा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४२ ॥

भिखारी को भिक्षा से प्रेम है, जो वह किसी दानी से प्राप्त करता है। भूखे का प्रेम भोजन खाने से है। गुरु के सिक्ख की प्रीति गुरु से भेंट करके तृप्त होने से है॥ १॥ हे प्रभु ! मुझे अपने हरि दर्शन दीजिए। मुझे एक तेरी ही आशा है। हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करके मेरी कामना पूरी करो॥ १॥ रहाउ॥

चकवी को प्रसन्नता तब होती है, जब उसे सूर्य के दर्शन होते हैं। अपने प्रियतम से मिलकर उसके सारे दुःख दूर हो जाते हैं। गुरु का सिक्ख तब प्रसन्न होता है जब उसे गुरु के दर्शन होते हैं॥ २॥ बछड़ा (अपनी माता का) अपने मुख से दूध चूषन करके प्रसन्न होता है। अपनी माता को देखकर उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। (इसी तरह) गुरु का सिक्ख गुरु के दर्शन करके बड़ा हर्षित होता है॥ ३॥ (गुरु-परमात्मा के अलावा) दूसरा मोह झूठा है, चूंकि माया की प्रीति क्षणभंगुर है। यह झूठी प्रीति कांच की तरह टूट कर नाश हो जाती है। जन नानक सच्चे गुरु से ही प्रेम करता और उसके दर्शन करके तृप्त हो जाता है॥ ४॥ ४॥ ४२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥ जितु मिलि हरि नामु धिआइआ हरि धणी ॥ जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥ १ ॥ गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥ हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइआ ॥ धावत पंच रहे हरि

धिआइआ ॥ अनदिनु नगरी हरि गुण गाइआ ॥ २ ॥ सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥ तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥ ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥ ३ ॥ गुरू सेवा आपि हरि भावै ॥ क्रिसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४३ ॥

जिस सतिगुरु को मिलकर जगत् के स्वामी परमात्मा के नाम का ध्यान किया जाता है, उस सतिगुरु की सेवा फलदायक है। जिन्होंने ईश्वर का नाम–स्मरण किया है, उनका अनुसरण करके बहुत सारे लोग भवसागर से मुक्त हो गए हैं॥ १॥ हे मेरे भाइयो ! गुरु के शिष्यो, 'हरि–हरि' बोलो। हरि बोलने से मनुष्य के समस्त पाप दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब गुरु जी मिलते हैं तो मन वश में आ जाता है। भगवान का ध्यान करने से पांचों ज्ञानेन्द्रियां (विकारों की ओर) दौड़ने से रुक जाती हैं और रात–दिन मनुष्य अपनी शरीर रूपी नगरी में ईश्वर का यशोगान करता रहता है॥ २॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की चरण–धूलि अपने चेहरे पर लगाते हैं, वह झूठ को त्याग देते हैं और प्रभु के साथ वृत्ति लगा लेते हैं। हे भाई ! प्रभु के दरबार में उनके चेहरे ही उज्ज्वल होते हैं॥ ३॥ गुरु की सेवा परमेश्वर को भी स्वयं भली लगती है। श्री कृष्ण एवं बलभद्र ने अपने गुरु संदीपन के चरणों में नतमस्तक होकर भगवान का ही ध्यान किया था। हे नानक ! गुरमुखों को परमात्मा भवसागर से स्वयं पार करवाता है॥ ४॥ ५॥ ४३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ हरि आपे रवि रहिआ बनवारी ॥ हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥ १ ॥ ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ हरि आपि जपाइ आपे हरि जापे ॥ २ ॥ हरि आपे सारिंग अंम्रितधारा ॥ हरि अंम्रितु आपि पीआवणहारा ॥ हरि आपि करे आपे निसतारा ॥ ३ ॥ हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥ हरि आपे गुरमती निसतारा ॥ हरि आपे नानक पावै पारा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४४ ॥

ईश्वर स्वयं ही (हाथों में) डंडा रखने वाला योगी है। (जगत् का) बनवारी परमेश्वर सर्वव्यापक हो रहा है। ईश्वर स्वयं ही समाधि लगाकर तपस्या करता है॥ १॥ मेरा राम ऐसा है जो सर्वत्र स्थानों में भरपूर है। ईश्वर (प्राणी के) निकट ही रहता है, वह कहीं दूर नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर स्वयं ही अनहद शब्द है और स्वयं ही अनहद शब्द की ध्वनि को सुनने वाली सुरति है। ईश्वर स्वयं ही अपनी सृष्टि को देख–देख कर स्वयं ही प्रसन्न होता है। प्रभु स्वयं ही अपने नाम का जाप करता है और जीवों से भी अपने ही नाम का जाप करवाता है॥ २॥ ईश्वर स्वयं ही पपीहा है और स्वयं ही नाम–अमृत की धारा है। ईश्वर स्वयं ही जीवों को नाम–अमृत पिलाने वाला है। ईश्वर स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करता है और स्वयं ही जीवों को भवसागर से पार करवाता है॥ ३॥ परमात्मा स्वयं ही नाव, तुला और नावक है। गुरु के उपदेश से ईश्वर स्वयं ही प्राणियों का उद्धार करता है। हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही प्राणियों को संसार–सागर से पार करवाता है॥ ४॥ ६॥ ४४॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥ १ ॥ हम वणजारे राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥ हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ २ ॥ होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥ ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥ ३ ॥ हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥ जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४५ ॥

हे ईश्वर! तू ही मेरा शाह एवं मालिक हैं। जैसी पूँजी तुम मुझे देते हो, वैसी ही पूँजी मैं लेता हूँ। यदि तुम दयालु होकर स्वयं मुझे हरि–नाम दो तो ही मैं हरि–नाम का व्यापार करूँ॥ १॥ हे भाई! मैं तो राम का व्यापारी हूँ और भगवान अपनी पूँजी देकर मुझसे अपने नाम का व्यापार करवाता है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने हरि–भक्ति के नाम रूपी धन का लाभ कमाया है और सच्चे साहूकार परमेश्वर के हृदय को पसंद आ गया हूँ। मैंने हरि का नाम जपकर हरि–नाम रूपी सौदा सत्य के दरबार में ले जाने के लिए लाद लिया है और कर लेने वाला यमदूत मेरे निकट नहीं आता॥ २॥ जो व्यापारी नाम के सिवाय अन्य पदार्थों का व्यापार करते हैं, वह अनंत तरंगों वाली माया के मोह में फँसकर बड़ा दुखी होते हैं। जिस तरह का व्यापार ईश्वर ने उनके लिए लगाया है, वैसा ही फल वे प्राप्त करते हैं॥ ३॥ भगवान के नाम का व्यापार वहीं व्यक्ति करते हैं, जिन्हें प्रभु कृपालु होकर नाम का व्यापार करने के लिए देता है। हे नानक! जो व्यक्ति साहूकार भगवान की सेवा करता है, भगवान फिर उससे बिल्कुल ही कर्मों का लेखा नहीं माँगता॥ ४॥ १॥ ७॥ ४५॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा दे आपि हथासा ॥ १ ॥ मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंदरि घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥ हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥ २ ॥ जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥ ३ ॥ लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥ जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ ४६ ॥

जैसे कोई माता यह आशा रखकर गर्भ में पड़े शिशु की नौ माह रक्षा करती है कि उसे पुत्र पैदा होगा और वह बड़ा होकर धन कमा कर सुख एवं आनंद हेतु उसे देगा, वैसे ही भगवान अपने भक्तों से प्रेम करता है, और उन्हें अपनी सहायता का हाथ देता है॥ १॥ हे मेरे राम! हे मेरे गुसाई! मैं मूर्ख हूँ, मेरी रक्षा कीजिए। हे प्रभु! तेरे सेवक की उपमा तेरी अपनी ही कीर्त्ति है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय को हरि–प्रभु का यश लुभाता है, वह अपने हृदय रूपी मन्दिर एवं धाम में आनन्द भोगता है। जब वह परमात्मा का यश गायन करता है तो उसका मुख समस्त मीठे रसों (कामनाओं) को चखता है। प्रभु का सेवक अपने परिवार का कल्याण करने वाला है। वह अपने इक्कीस वंशों (सात पिता के, सात माता के, सात ससुर के) के समस्त प्राणियों का उद्धार कराता है॥ २॥ जो कुछ किया है, परमेश्वर ने किया है और परमेश्वर का यश है । मेरे प्रभु–परमेश्वर समस्त जीव–जन्तु तेरे हैं। तुम उनमें व्यापक हो रहे हो और उनसे अपनी पूजा–अर्चना करवाते हो। परमेश्वर स्वयं ही प्राणियों को अपनी सेवा–भक्ति का खजाना दिलवाता है और स्वयं ही इसे बांटता है॥ ३॥ मैं तो दुकान से खरीदा हुआ तेरा गुलाम हूँ, मैं क्या चतुरता कर सकता हूँ? यदि हे प्रभु! तू मुझे सिंघासन पर आरूढ़ कर दे तो भी मैं तेरा ही गुलाम रहूँगा तथा एक घसियारे की अवस्था में भी तुम मुझसे अपने नाम का ही जाप करवा। नानक तो परमात्मा का दास है और परमात्मा की ही स्तुति करता रहता है॥ ४॥ २॥ ८॥ ४६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥ १ ॥ मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ धनु

खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥ २ ॥ बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥ ३ ॥ इहु माइआ मोह कुटंबु है भाइ दूजै फास ॥ गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥ जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ४७ ॥

कृषक बड़े चाव से एवं दिल लगाकर कृषि करता है। वह हल चलाता है और कड़ी मेहनत करता है और लालसा करता है कि उसके पुत्र एवं पुत्री संतुष्ट होकर खाएँ। इसी तरह प्रभु का सेवक प्रभु के नाम का जाप करता रहता है, जिसके फलस्वरूप परमेश्वर अन्तिम समय उसे मोह-माया के पन्जे से मुक्त कराता है॥ १॥ हे मेरे राम! मुझ मूर्ख की मुक्ति करो। भगवान ने मुझे गुरु-सतिगुरु की सेवा के कार्य में लगा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ व्यापारी कुशल घोड़े लेकर उनके व्यापार हेतु चलता है। वह धन कमाता है और अधिकतर धन की आशा करता है। फिर मोह-माया के साथ अपनी लालसा को बढ़ाता है। इसी तरह हरि का सेवक हरि-परमेश्वर का नाम बोलता है और हरि बोलकर सुख पाता है॥ २॥ दुकानदार दुकान में बैठकर दुकानदारी करता है और माया रूपी धन एकत्रित करता है। जो उसके आत्मिक जीवन में विष का काम करती है। माया ने जीवों को फँसाने हेतु झूठे मोह का प्रसार किया हुआ है और वे माया के झूठे मोह से लिपटे हुए हैं। इसी तरह हरि का सेवक हरि-नाम रूपी धन संचित करता है और हरि-नाम रूपी धन को वह जीवन-यात्रा हेतु खर्च के रूप में ले जाता है॥ ३॥ माया धन एवं परिवार के मोह के कारण मनुष्य माया की मोह रूपी फाँसी में फँस जाता है। गुरु के उपदेश से वहीं मनुष्य भवसागर से पार होता है जो प्रभु के सेवकों का सेवक बन जाता है। जन नानक ने गुरु के माध्यम से भगवान के नाम का ही ध्यान किया है और उसके हृदय में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया है॥ ४॥ ३॥ ६॥ ४७॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ जो गुर की जनु सेवा करे सो घर कै कंमि हरि लाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कंमि लाइ ॥ नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥ कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥ धंनु धनु सेवा सफल सतिगुरू की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥ जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई ॥ ३ ॥ जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥ जिसु हरि आपि क्रिपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै॥ जन नानक हरि रसि त्रिपतिआ फिरि भूख न लागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४८ ॥

जो व्यक्ति नित्य दिन-रात लालच करता है। मोह-माया की प्रेरणा से भ्रम में ही भटकता रहता है। वह उस वेगारी के तुल्य है जो अपने सिर पापों का बोझ उठाकर बेगार करता है। जो व्यक्ति गुरु की सेवा करता है, उसे ही भगवान ने अपने घर की सेवा अर्थात् नाम-सिमरन में लगाया है॥ १॥ हे मेरे राम! हमें मोह-माया के बंधन से मुक्त कर और हमें अपने घर की सेवा नाम- सिमरन में लगा। मैं प्रतिदिन प्रभु की गुणस्तुति ही करता हूँ और प्रभु के नाम में लीन रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ नश्वर मनुष्य धन की खातिर राजा-महाराजा की नौकरी करता है। राजा कई बार किसी आरोप के कारण उसे बंदी बना लेता है अथवा कोई (जुर्माना इत्यादि) दण्ड देता है अथवा राजा जब स्वयं ही प्राण त्याग देता है तो उसकी नौकरी ही समाप्त हो जाती है। परन्तु सतिगुरु की सेवा धन्य-धन्य और फलदायक

है जिसकी बदौलत मनुष्य प्रभु–परमेश्वर का नाम–स्मरण करके सुख प्राप्त करता है॥ २॥ धन–दौलत की खातिर मनुष्य विभिन्न प्रकार का व्यापार करता है। यदि व्यापार में लाभ प्राप्त हो तो वह सुख अनुभव करता है। लेकिन क्षति (घाटा) होने पर उसका दिल टूट जाता है। परन्तु जो गुरु के साथ गुणों (भलाई) को सांझा करता है वह सदा के लिए सुख प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ मनुष्य को जितनी ज्यादा भूख दूसरे रसों एवं आस्वादनों के लिए है उतनी अधिक भूख (लालसा) उसे बार–बार लगती है। जिस पर परमात्मा कृपा–दृष्टि करता है, वह अपना शीश गुरु के समक्ष बेच देता है। हे नानक ! जो व्यक्ति हरि–रस से तृप्त हो जाता है, उसे दोबारा भूख नहीं लगती॥ ४॥ ४॥ १०॥ ४८॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ हमरै मनि चिति हरि आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥ जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥ हउ कुरबानी गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥ १ ॥ मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥ मतु निरगुण हम मेलै कबहूं अपुनी किरपा धारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥ तूं गुणवंता हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥ हम अपराधी राखे गुर संगती उपदेसु दीओ हरि नामु छडावै ॥ २ ॥ तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥ हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥ तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥ ३ ॥ जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥ हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥ ४९ ॥

हे भगवान ! मेरे मन एवं चित्त में सदैव ही यह उम्मीद बनी रहती है मैं कैसे हरि–दर्शन करूँ ? जो प्रभु से प्रेम करता है वही इसको समझता है। मेरे मन एवं चित्त को ईश्वर अत्यन्त ही प्यारा लगता है। मैं अपने उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे मेरे सृजनहार प्रभु से मिला दिया है, जिससे मैं जुदा हुआ था॥ १॥ हे मेरे राम ! मैं पापी हूँ। मैंने तेरी शरण ली है और मैं तेरे द्वार पर आ पड़ा हूँ चूंकि तुम अपनी कृपा करके मुझ अल्पबुद्धि, गुणहीन एवं मलिन को कभी अपने साथ मिला लो॥ १॥ रहाउ॥ मुझ में अत्यंत अवगुण हैं और मेरे अवगुण गिने नहीं जा सकते और मैं बार–बार अवगुण करता जाता हूँ। हे प्रभु–परमेश्वर ! तुम गुणवान एवं दयालु हो। हे प्रभु ! जब तुझे भला लगता है, तुम स्वयं ही क्षमा कर देते हो। मुझ अपराधी को गुरु की संगति ने बचा लिया है। गुरु जी ने मुझे उपदेश दिया है कि ईश्वर का नाम जीवन से मुक्ति दिलवा देता है॥ २॥ हे मेरे सतिगुरु ! मैं तेरे गुण कैसे बताऊं? जब गुरु जी मधुर वचन करते हैं तो मैं आश्चर्य से सुप्रसन्न हो जाता हूँ। क्या कोई दूसरा मुझ जैसे अपराधी को बचा सकता है जैसे सतिगुरु ने मुझे बचाकर भवसागर से मुक्त कर दिया है। हे मेरे गुरु ! तुम मेरे पिता हो। तुम ही मेरी माता हो और तुम ही मेरे भाई–बन्धु, साथी एवं सहायक हो॥ ३॥ हे मेरे सतिगुरु जी ! जो अवस्था मेरी थी उस अवस्था को तुम हे हरि रूप गुरु जी स्वयं ही जानते हो। हे प्रभु ! मैं मिट्टी में ठोकरें खा रहा था और कोई भी मेरी बात नहीं पूछता था अर्थात् कोई भी चिन्ता नहीं करता था। सतिगुरु ने अपनी संगति देकर मुझ तुच्छ कीड़े को सम्मान प्रदान किया है। नानक का गुरु धन्य–धन्य है। जिसको मिलने से मेरे सारे दुख एवं संताप मिट गए हैं॥ ४॥ ५॥ ११॥ ४९॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ कंचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥ घर मंदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥ हरि प्रभु चिति न आवई किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥ १ ॥ मेरे राम इह

नीच करम हरि मेरे ॥ गुणवंता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण सभि मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढंगु न मेरा ॥ किआ मुहु लै बोलह गुण बिहून नामु जपिआ न तेरा ॥ हम पापी संगि गुर उबरे पुंनु सतिगुर केरा ॥ २ ॥ सभु जीउ पिंडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥ अंनु खाणा कपड़ु पैनणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥ जिनि दीए सु चिति न आवई पसू हउ करि जाणी ॥ ३ ॥ सभु कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी ॥ हम जंत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥ जन नानकु हाटि विहाझिआ हरि गुलम गुलामी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२ ॥ ५० ॥

मेरा मन सुन्दर नारी के मोह में फँसा हुआ है एवं माया का मोह मुझे बड़ा मीठा लगता है। मुझे घर, मन्दिर, घोड़े देख-देखकर बड़ी खुशी होती है और दूसरे रसों के आनन्द में मेरा मन चाव से लगा हुआ है। प्रभु-परमेश्वर को मैं स्मरण नहीं करता। हे मेरे प्रभु ! फिर मुझे कैसे मोक्ष मिलेगा॥ १॥ हे मेरे राम ! ऐसे मेरे नीच कर्म हैं। हे मेरे गुणनिधि एवं दयालु प्रभु-परमेश्वर ! मुझ पर कृपा-दृष्टि करके मेरे समस्त अवगुण क्षमा कर दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! न मेरा (सुन्दर) रूप है, न मेरी उच्च जाति है, न ही मेरा जीवन आचरण अच्छा है। मुझ गुणहीन ने तेरा नाम भी नहीं जपा, अतः मैं कौन-सा मुँह लेकर बोलूं? सतिगुरु ने मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मैं अपराधी गुरु की संगति से (मोह-माया से) बच गया हूँ॥ २॥ परमात्मा ने समस्त प्राणियों को आत्मा, देह, मुख, नाक और प्रयोग करने के लिए जल दिया है। प्रभु ने उनको खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र एवं अनेक रस ऐश्वर्य भोग करने के लिए दिए हैं। जिस प्रभु ने प्राणियों की रचना करके यह कुछ दिया है, मनुष्य को वह (प्रभु) स्मरण नहीं होता। यह मनुष्य पशु के समान है जो यह समझता है कि यह सब कुछ मैंने स्वयं प्राप्त किया है॥ ३॥ हे ईश्वर ! दुनिया में सब कुछ तेरा किया हो रहा है, तुम अंतर्यामी हो। हे परमात्मा ! हम जीव बेचारे क्या कर सकते हैं ? अर्थात् हमारे वश में कुछ भी नहीं। हे मेरे स्वामी ! यह सारी दुनिया तेरी एक लीला है। (जिस तरह कोई गुलाम मण्डी से खरीदा जाता है वैसे ही) मण्डी में से मूल्य लिया हुआ सेवक नानक प्रभु के सेवकों का सेवक है॥ ४॥ ६॥ १२॥ ५०॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥ अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥ तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥ १ ॥ मेरे राम हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे ॥ धंनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली ॥ ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥ तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली ॥ २ ॥ जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी ॥ कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी ॥ तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥ ३ ॥ भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥ जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥ ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अंती अउसरि लए छडाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥ ५१ ॥

जैसे माता पुत्र को जन्म देकर उसकी परवरिश करती है और उसको अपनी दृष्टि में रखती है। घर के भीतर एवं बाहर वह उसके मुख में ग्रास देती है और क्षण-क्षण उसको दुलारती है। वैसे ही सतिगुरु अपने सिक्खों को भगवान का प्रेम-प्यार देकर रखते हैं॥ १॥ हे मेरे राम ! हम हरि-प्रभु के नादान बच्चे हैं। गुरु-सतिगुरु उपदेशदाता धन्य-धन्य है, जिसने हमें हरि-नाम का उपदेश देकर

बुद्धिमान बना दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे श्वेत पंखों वाली (चिड़िया) गगन में उड़ती फिरती है, परन्तु उसका मन अपने पीछे छोड़े बच्चों में अटका रहता है और अपने मन में सदा उन्हें स्मरण करती है, वैसे ही सतिगुरु गुरु के सिक्ख में हरि–प्रभु का प्रेम दे कर गुरु सिक्ख को अपने ह्रदय से लगाकर रखते हैं॥ २॥ जैसे परमेश्वर माँस एवं रुधिर की बनी हुई जिह्वा की तीस अथवा बत्तीस दांतों की कैंची में से रक्षा करता है। कोई यह न समझे कि इस तरह करना जिह्वा अथवा कैंची के कुछ वश में है। प्रत्येक वस्तु परमेश्वर के वश में है। इसी तरह ही मनुष्य संतजनों की आलोचना–निन्दा करता है तो परमेश्वर अपने सेवक की प्रतिष्ठा को बचाता है॥ ३॥ मेरे भाइओ! कोई यह न समझे कि किसी के कुछ वश में है। सभी लोग वहीं कर्म करते है, जो परमेश्वर उनसे करवाता है। बुढ़ापा, मृत्यु, बुखार, सिर–दर्द एवं ताप सभी रोग परमेश्वर के वश में हैं। परमेश्वर के हुक्म के बिना कोई रोग प्राणी को स्पर्श नहीं कर सकता। हे दास नानक! अपने चित्त एवं मन में ऐसे परमात्मा के नाम का नित्य ध्यान करो जो अन्तिम समय (यम इत्यादि से) मुक्ति करवाता है॥ ४॥ ७॥ १३॥ ५१॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥ मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥ हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥ इछ पुंनी जन केरीआ ले सतिगुर धूरा ॥ २ ॥ हरि भगति द्रिड़ावै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुर मिलीऐ ॥ तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति द्रिड़ीऐ ॥ ३ ॥ जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥ नानक तिसु गुर मिलि उधरै हरि गुण गावाही ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ ५२ ॥

जिसको मिलने से मन को खुशी मिलती है, उसे ही सतिगुरु कहा जाता है। मन की दुविधा दूर हो जाती है और हरि के परमपद की प्राप्ति हो जाती है॥ १॥ मेरा प्रिय सतिगुरु मुझे किस विधि से मिल सकता है? मैं उस गुरु को क्षण–क्षण प्रणाम करता रहता हूँ। मुझे मेरा पूर्ण गुरु कैसे मिल सकता हैं?॥ १॥ रहाउ॥ अपनी कृपा करके ईश्वर ने मुझे मेरे पूर्ण सतिगुरु से मिला दिया है। सतिगुरु की चरण–धूलि प्राप्त करने से उसके सेवक की कामना पूर्ण हो गई है॥ २॥ मनुष्य को उस सतिगुरु से मिलना चाहिए, जिससे वह भगवान की भक्ति के बारे में सुने एवं उसे भगवान की भक्ति ह्रदय में दृढ़ करवा दे। उससे मिलकर मनुष्य हमेशा ही भगवान का नाम रूपी लाभ प्राप्त करता रहता है और उसे बिल्कुल ही कोई कमी नहीं आती॥ ३॥ हे नानक! जिसके ह्रदय में प्रसन्नता विद्यमान है और परमात्मा के सिवाय कोई मोह नहीं, उस गुरु से मिलकर मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है, जो ईश्वर का यशोगान करवाता है॥ ४॥ ८॥ १४॥ ५२॥

महला ४ गउड़ी पूरबी ॥ हरि दइआलि दइआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखि हरि बोली ॥ गुरमुखि रंगु भइआ अति गूड़ा हरि रंगि भीनी मेरी चोली ॥ १ ॥ अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥ जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल अमोली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढंढोली ॥ हरि हरि रूपु सभ जोति सबाई हरि निकटि वसै हरि कोली ॥ २ ॥ हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपरंपर पुरखु अतोली ॥ हरि हरि प्रगटु कीओ गुरि पूरै सिरु वेचिओ गुर पहि मोली ॥ ३ ॥ हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥ जनु नानकु अनदिनु हरि गुण गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ ५३ ॥

दयालु हरि–परमेश्वर ने मुझ पर अपनी दया की है और उसने मेरे मन, तन एवं मुँह में हरि की वाणी डाल दी है। मेरी ह्रदय रूपी चोली हरि–रंग में भीग गई है। गुरु का आश्रय लेकर वह रंग बहुत

गहरा हो गया है॥ १॥ मैं अपने प्रभु-परमेश्वर की दासी हूँ। जब प्रभु के साथ मेरा मन प्रसन्न हो गया तो उसने सारे जगत् को मेरा बिना मूल्य दास बना दिया॥ १॥ रहाउ॥ हे सन्तजनो, भाइओ! विचार करो! अपने हृदय में ही खोज-तलाश करके ईश्वर को देख लो। यह सारी दुनिया भगवान का रूप है और समस्त जीवों में उसकी ही ज्योति विद्यमान है। भगवान प्रत्येक जीव के निकट एवं पास ही निवास करता है॥ २॥ अनन्त, सर्वशक्तिमान एवं अतुलनीय प्रभु-परमेश्वर सारे जगत् के निकट ही रहता है। उस ईश्वर को पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय में ही प्रकट किया है, (इसलिए) मैंने अपना सिर गुरु के पास बेच दिया है॥ ३॥ हे पूज्य परमेश्वर! तू जीवों के अन्दर एवं बाहर सर्वत्र विद्यमान है और अन्दर एवं बाहर मैं तेरी शरण में हूँ, (मेरे लिए) तुम दुनिया के सबसे बड़े महापुरुष हो। जन नानक मध्यस्थ-सतिगुरु से मिलकर रात-दिन प्रभु की महिमा-स्तुति करता रहता है॥ ४॥ १॥ १५॥ ५३॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ जगजीवन अपरंपर सुआमी जगदीसुर पुरख बिधाते ॥ जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥ १ ॥ राम मेरा मनु हरि सेती राते ॥ सतसंगति मिलि राम रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवखधु हरि हरि नामु हरि साते ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥ २ ॥ जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर संतोख सरि नाते ॥ दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो राम नाम रंगि राते ॥ ३ ॥ राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम जेवड अवरु न दाते ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै हरि जपीऐ हरि किरपा ते ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ५४ ॥

हे प्रभु! तू जगत् का जीवन, अपरम्पार एवं हम सबका स्वामी है। हे जगदीश्वर! तुम सर्वशक्तिमान एवं भाग्यविधाता हो। हे मेरे स्वामी! हम प्राणियों को तुम जिस मार्ग की भी प्रेरणा करते हो, उसी मार्ग में हम चलते हैं॥१॥ हे मेरे राम! मेरा मन प्रभु के प्रेम में मग्न हो गया है। सत्संग में मिलकर मैंने राम रस प्राप्त किया है और अब मेरा मन हरि-राम के नाम में लीन रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि-परमेश्वर का नाम जगत् में समस्त रोगों की औषधि है। हरि-परमेश्वर का नाम सदैव सत्य है। जो व्यक्ति गुरु के उपदेश से राम रस को चखते हैं, उनके तमाम पाप एवं दोष नाश हो जाते हैं॥ २॥ जिनके मस्तक पर विधाता ने प्रारम्भ से ही ऐसा भाग्य लिख दिया है, वह गुरु रूपी संतोष सरोवर में स्नान करते हैं। जो राम-नाम के प्रेम में मग्न रहते हैं, उनकी मंदबुद्धि में से पापों की तमाम मैल दूर हो जाती है॥ ३॥ हे मेरे राम! तुम स्वयं ही सबकुछ हो। तुम स्वयं ही समस्त जीवों के ठाकुर हो और तेरे जैसा महान दाता दूसरा कोई नहीं। नानक केवल ईश्वर का नाम लेने से ही जीता है। प्रभु की दया से ही प्रभु का जाप होता है॥ ४॥ २॥ १६॥ ५४॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ करहु क्रिपा जगजीवन दाते मेरा मनु हरि सेती राचे ॥ सतिगुरि बचनु दीओ अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु माचे ॥ १ ॥ राम मेरा मनु तनु बेधि लीओ हरि साचे ॥ जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे ॥ तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि विसटा मरि मरि पाचे ॥ २ ॥ तुम दइआल सरणि प्रतिपालक मो कउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥ हरि के दास दास हम कीजै मनु निरति करे करि नाचे ॥ ३ ॥ आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥ मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ५५ ॥

हे जगजीवन! हे दाता! मुझ पर अपनी ऐसी कृपा करो कि मेरा मन प्रभु की स्मृति में लीन रहे। सतिगुरु ने मुझे अत्यन्त निर्मल वचन किया है और हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करने से मेरा मन प्रसन्न हो गया है॥ १॥ हे मेरे राम! मेरा मन एवं तन सच्चे परमेश्वर ने बींध लिया है। हे हरि-परमेश्वर! गुरु-सतिगुरु के उपदेश से मैं उस काल (मृत्यु) से बच गया हूँ, जिसके मुख (पंजे) में सारा जगत् फँसा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ जिनकी प्रीति परमेश्वर से नहीं, वह अधमी, मूर्ख एवं झूठे पुरुष हैं। वह जन्म एवं मृत्यु का अत्यंत भारी दुख उठाते हैं और बार-बार जन्मते-मरते और विष्टा में सड़ते रहते हैं॥ २॥ हे प्रभु! तुम दया के घर एवं शरणार्थियों के पालनहार हो। हे ठाकुर! मैं याचना करता हूँ कि मुझे अपने प्रेम का दान प्रदान करो। मुझे प्रभु के सेवकों का सेवक बना दे, चूंकि मेरा मन प्रेम धारण करके नृत्य करे॥ ३॥ हे मेरे स्वामी प्रभु! तू स्वयं ही बड़ा साहूकार है और मैं तेरा व्यापारी हूँ। मेरा मन, तन एवं जीवन सब कुछ तेरी ही पूँजी है। हे सच्चे प्रभु! तुम नानक के साहूकार हो॥ ४॥ ३॥ १७॥ ५५॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ तुम दइआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने ॥ जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने ॥ १ ॥ राम हम सतिगुर पारब्रहम करि माने ॥ हम मूड़ मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने रस अन रस हम देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥ हरि का नामु अंम्रित रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥ २ ॥ जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने ॥ तिन के करमहीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥ ४ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ५६ ॥

हे प्रभु! तुम बड़े दयालु एवं सर्व दुःखों का नाश करने वाले हो। अतः मेरी एक प्रार्थना ध्यानपूर्वक सुनो। हे मेरे स्वामी हरि! मुझ उस सतिगुरु से मिला दो जिसकी कृपा से तुझे जाना जाता है और जो मेरे प्राण हैं॥ १॥ हे मेरे राम! मैं सतिगुरु को पारब्रह्म कह कर मानता हूँ। मैं मूर्ख, मक्कार और खोटी बुद्धि वाला हूँ। हे ईश्वर! मैंने तुझे सतिगुरु की वाणी से जान लिया है॥ १॥ रहाउ॥ संसार के जितने भी विभिन्न रस हैं, मैंने देख लिए हैं परन्तु ये सभी बिल्कुल फीके हैं। सतिगुरु से मिलकर मैंने हरि-नाम रूपी अमृत रस चख लिया है, जो गन्ने के रस के समान बड़ा मीठा है॥ २॥ जो व्यक्ति गुरु-सतिगुरु से नहीं मिले, वह मूर्ख, दीवाने एवं शाक्त हैं। (लेकिन उनके भी क्या वश?) उन भाग्यहीनों की किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसे नीचे कर्म लिखे हुए हैं। वे माया के मोह में फँसकर यूं जलते हैं जैसे पतंगा दीपक को देखकर जल जाता है॥३॥ हे हरि-परमेश्वर! जिनको तुम दया करके गुरु से मिला देते हो, वह तेरी सेवा-भक्ति में जुट जाते हैं। हे नानक! ऐसे मनुष्य हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करने से दुनिया में प्रसिद्ध हो जाते हैं और गुरु के उपदेश से नाम में लीन रहते हैं॥ ४॥ ४॥ १८॥ ५६॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥ हरि आपे बखसि लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीऐ ॥ १ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऐ ॥ सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे मन सेवहु सो प्रभ सब सुखदाता जितु सेविऐ निज घरि वसीऐ ॥ गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीऐ ॥ २ ॥ मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीऐ ॥ हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अंम्रितु हरि रसु चखीऐ ॥ ३ ॥ मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीऐ ॥ ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥ ४ ॥ मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥ जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीऐ ॥ ५ ॥ ५ ॥ १९ ॥ ५७ ॥

हे मेरे मन ! वह स्वामी–प्रभु सदैव हमारे साथ रहता है। बताओ ! परमेश्वर से भागकर हम कहाँ जा सकते हैं ? सत्यस्वरूप प्रभु–परमेश्वर स्वयं ही जीवों को क्षमा कर देता है। यदि प्रभु स्वयं मनुष्य को मुक्त करे तो ही वह मुक्त होता है॥ १॥ हे मेरे मन! हृदय से हरि–परमेश्वर का हरि–नाम ही जपते रहना चाहिए। हे मेरे मन ! भाग कर सतिगुरु की शरण लो। सतिगुरु का आश्रय लेने से तेरी (मोह–माया के बंधनों से) मुक्ति हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन ! उस सर्वसुखदाता परमेश्वर की सेवा–भक्ति करो, जिसकी सेवा–भक्ति करने से आत्मस्वरूप में निवास हो जाता है। गुरु के माध्यम से अपने आत्मस्वरूप रूपी घर में जाकर निवास करो और जैसे चन्दन को शिला पर घिसाया जाता है, वैसे ही हरि–यश को अपने मन पर घिसाओ॥ २॥ हे मेरे मन ! हरि–परमेश्वर का हरि–नाम जप। हरि–परमेश्वर का यश सर्वोत्तम है। हरि–परमेश्वर का नाम रूपी लाभ प्राप्त करके हृदय में सुप्रसन्न होना चाहिए। यदि हरि–परमेश्वर स्वयं दया कर दे तो मनुष्य हरि–रस रूपी अमृत को चखता है॥ ३॥ हे मेरे मन! जो प्रभु के नाम से विहीन होकर माया–मोह में तल्लीन हैं, उन शाक्त पुरुषों को यमदूत दबोचकर मार देता है। हे मेरे मन! जिन्होंने परमात्मा के नाम को भुला दिया है, उनके निकट नहीं आना चाहिए, क्योंकि वे तो शाक्त एवं प्रभु के चोर हैं॥ ४॥ हे मेरे मन! उस अलख निरंजन नृसिंह भगवान की सेवा–भक्ति करो, जिसकी सेवा–भक्ति करने से कर्मों का लेखा जोखा समाप्त हो जाता है। हे नानक ! जिन्हें हरि–प्रभु ने तोल में पूर्ण कर दिया है, उनका फिर तोल एक माशा मात्र भी कम नहीं होता॥ ५॥ ५॥ १६॥ ५७॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥ १ ॥ राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ गुर क्रिपालि क्रिपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥ २ ॥ गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ अनदिनु अनदु भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥ ३ ॥ जगंनाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ जन नानक सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ ५८ ॥

हे मेरे ईश्वर ! मेरे प्राण तेरे ही वश में हैं। मेरी आत्मा एवं शरीर सभी तेरे ही हैं। हे प्रभु ! मुझ पर दया करके अपने दर्शन दीजिए, क्योंकि मेरे मन एवं तन में तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा है॥ १॥ हे मेरे राम ! मेरे मन एवं तन में प्रभु–मिलन की तीव्र लालसा है। हे प्राणी ! जब कृपा के घर गुरु ने मुझ पर थोड़ी–सी कृपा की, तो मेरा प्रभु–परमेश्वर आकर मुझे मिल गया॥ १॥ रहाउ॥

हे प्रभु–परमेश्वर ! जो कुछ भी मेरे मन एवं चित्त में है, मेरी उस अवस्था को तुम जानते हो। हे प्रभु ! रात–दिन मैं तेरे नाम का जाप करता और सुख पाता हूँ। मैं सदा ही तेरी आशा में जीता हूँ॥ २॥ जब दाता सतिगुरु ने मुझे सन्मार्ग दिखाया तो हरि–प्रभु आकर मुझसे प्रत्यक्ष आ मिला। तकदीर से मेरे हृदय में रात–दिन आनंद बना रहता है। प्रभु ने मुझ सेवक की अभिलाषा पूरी कर दी है॥ ३॥ हे जगन्नाथ ! हे जगदीश्वर ! हे कर्त्ता–प्रभु ! सारी जगत् क्रीड़ा तेरे वश में है। हे प्रभु ! नानक तेरी शरणागत आया है, अपने सेवक की लाज–प्रतिष्ठा रखो॥ ४॥ ६॥ २०॥ ५८॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इहु मनूआ खिनु न टिकै बहु रंगी दह दह दिसि चलि चलि हाढे ॥ गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंत्रु दीआ मनु ठाढे ॥ १ ॥ राम हम सतिगुर लाले कांढे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरू बहु साढे ॥ परउपकारु पुंनु बहु कीआ भउ दुतरु तारि

पराढे ॥ २ ॥ जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥ जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख गरभि गलाढे ॥ ३ ॥ हम जानिआ कछू न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥ हम भूल चूक गुर किरपा धारहु जन नानक कुतरे काढे ॥ ४ ॥ ७ ॥ २१ ॥ ५६ ॥

यह चंचल मन माया के अनेक रंग–तमाशों में फँसकर क्षण–मात्र भी नहीं टिकता। यह दसों–दिशाओं में दौड़–दौड़कर भटकता रहता है। लेकिन बड़े सौभाग्य से मुझे पूर्ण गुरु मिल गए हैं, जिन्होंने मुझे हरि नाम रूपी मंत्र प्रदान किया है, जिससे यह अस्थिर मन शांत हो गया है॥ १॥ हे मेरे राम! मुझे सतिगुरु का गुलाम कहा जाता है॥ १॥ रहाउ॥

मेरे मस्तक पर सतिगुरु के गुलाम होने का चिन्ह लगा हुआ है। गुरु के उपकार का मैंने बहुत अधिक कर्जा अदा करना है अर्थात् मैं गुरु कर्जा उतार नहीं सकता इसलिए गुरु का गुलाम बन गया। गुरु ने मुझ पर बहुत बड़ा परोपकार एवं उदार किया है और मुझे इस कठिन एवं भयानक संसार–सागर से पार कर दिया है॥ २॥ जिन लोगों के हृदय में प्रभु का प्यार नहीं होता, वे झूठी योजनाएँ ही बनाते रहते हैं। जैसे जल में कागज का नाश हो जाता है, वैसे ही स्वेच्छाचारी जीव अहंकार में योनियों के चक्र में फँसकर नष्ट हो जाता है॥ ३॥ मुझे भूतकाल का कुछ पता नहीं, न ही मैं भविष्यकाल बारे कुछ जानता हूँ, जैसे परमेश्वर हमें रखता है, उसी अवस्था में हम रहते हैं। हे गुरु जी! हम बहुत भूल–चूक करते रहते हैं अतः हम पर कृपा करो। हे नानक! मुझे गुरु के घर का कुत्ता कहा जाता है॥ ४॥ ७॥ २१॥ ५६॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥ १ ॥ करि साधू अंजुली पुंनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ २ ॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥ ४ ॥ ८ ॥ २२ ॥ ६० ॥

यह मानव शरीर रूपी–नगर काम–क्रोध जैसे विकारों से पूरी तरह भरा हुआ है। लेकिन सन्तजनों के मिलाप से तुमने इन्हें क्षीण कर दिया है। जिस मनुष्य ने पूर्व लिखित कर्मों के माध्यम से गुरु को प्राप्त किया है, उसका चंचल मन ही भगवान में लीन हुआ है॥ १॥ संतजनों को हाथ जोड़कर नमन करना बड़ा पुण्य कर्म है। उन्हें दण्डवत् प्रणाम करना भी महान् पुण्य कर्म है॥ १॥ रहाउ॥

पतित मनुष्यों (माया में लिप्त अथवा जो भगवान से विस्मृत) ने हरि–रस का आनंद प्राप्त नहीं किया, क्योंकि उनके अन्तर्मन में अहंकार रूपी कांटा होता है। जैसे–जैसे वह अहंकारवश जीवन मार्ग पर चलते हैं, वह अहं का कांटा उन्हें चुभ–चुभकर कष्ट देता रहता है और अन्तिम समय में यमों द्वारा दी जाने वाली यातना को सहन करते हैं॥ २॥ प्रभु के भक्त प्रभु–परमेश्वर के नाम सिमरन में लीन रहते हैं और वे आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करके संसार के दुखों से छूट जाते हैं। फिर वे अविनाशी सर्वव्यापक प्रभु को पा लेते हैं और वे खण्डों–ब्रह्माण्डों में शोभा पाते हैं॥ ३॥ हे प्रभु! हम निर्धन व निराश्रय तुम्हारे ही अधीन हैं तुम सर्वोच्चत्तम शक्ति हो, इसलिए हमें इन विकारों से बचा लो। हे नानक! जीव को तुम्हारे ही नाम का आधार है, हरि–नाम में लिप्त होने से ही आत्मिक सुखों की उपलब्धि होती है॥ ४॥ ८॥ २२॥ ६०॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इसु गड़ महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥ हरि दीन दइआलि अनुग्रहु कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥ १ ॥ राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि अगमु अगोचरु पारब्रहमु है मिलि सतिगुर लागि बसीठा ॥ जिन गुर बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥ २ ॥ मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥ बिसीअर कउ बहु दूधु पीआईऐ बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥ ३ ॥ हरि प्रभ आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुड़ु सबदु मुखि लीठा ॥ जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥ ४ ॥ ६ ॥ २३ ॥ ६१ ॥

मानव-शरीर रूपी दुर्ग में जगत् के बादशाह हरि-परमेश्वर का निवास है परन्तु निर्लज्ज प्राणी उसके स्वाद को प्राप्त नहीं करता। जब दीनदयालु ईश्वर ने मुझ पर करुणा-दृष्टि की तो मैंने गुरु के शब्द द्वारा हरि-रस के स्वाद को चख कर देख लिया॥ १॥ हे मेरे राम! गुरु में सुरति धारण करने से परमेश्वर का यश गायन करना मुझे मीठा लगने लग गया॥ १॥ रहाउ॥ हरि-परमेश्वर अगम्य, अगोचर एवं पारब्रह्म है। सतिगुरु-मध्यस्थ के साथ मिलने से वह मिलता है। जिनके हृदय को गुरु का वचन सुखदायक लगता है, गुरु उनके समक्ष नाम रूपी अमृत रस सेवन करने के लिए परोस देता है॥ २॥ स्वेच्छाचारी का हृदय बड़ा निष्ठुर है, उनके भीतर माया के विकारों की कालिख ही कालिख होती है। यदि हम साँप को कितना भी दूध पिलाएँ, जाँच पड़ताल करने पर उसके भीतर से विष ही निकलेगा॥ ३॥ हे मेरे हरि-प्रभु! मुझे गुरदेव से मिला दीजिए चूंकि जो साँप का विष नाश करने के लिए मैं अपने मुख से गुरुवाणी को नीलकण्ठ के मन्त्र के तौर पर पीकर सेवन करूँ (गायन करूँ)। हे नानक! मैं गुरु का सेवक एवं गुलाम हूँ। उनकी सत्संग से मिलकर कड़वा विष भी मीठा अमृत बन जाता है॥ ४॥ ६॥ २३॥ ६१॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हरि हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे ॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥ १ ॥ राम गुरमति हरि लिव लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥ हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुर बचनी भागे ॥ २ ॥ अंधिआरै दीपक आनि जलाए गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥ अगिआनु अंधेरा बिनसि बिनासिओ घरि वसतु लही मन जागे ॥ ३ ॥ साकत बधिक माइआधारी तिन जम जोहनि लागे ॥ उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ ओइ आवहि जाहि अभागे ॥ ४ ॥ हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि प्रभू हरि मागे ॥ जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिओ सतिगुर आगे ॥ ५ ॥ १० ॥ २४ ॥ ६२ ॥

हरि-परमेश्वर का नाम लेने की खातिर मैंने अपना शरीर पूर्ण गुरु के समक्ष बेच दिया है। दाता सतिगुरु ने मेरे हृदय में ईश्वर का नाम सुदृढ़ कर दिया है। मेरे चेहरे एवं मस्तक पर भाग्य जाग गए हैं, मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ॥ १॥ हे मेरे राम! गुरु की मति से मेरी सुरति भगवान में लग गई है॥ १॥ रहाउ॥ राम प्रत्येक हृदय में विद्यमान है। गुरु के शब्द एवं गुरु द्वारा प्रभु में वृत्ति लगती है। अपने मन एवं तन के टुकड़े-टुकड़े करके मैं उनको गुरु के समक्ष अर्पण करता हूँ। गुरु के वचन द्वारा मेरा भ्रम एवं भय निवृत्त हो गए॥ २॥ जब अज्ञानता के अन्धेरे में गुरु ने अपना ज्ञान-रूपी दीपक प्रज्वलित कर दिया तो मेरी वृत्ति परमात्मा में लग गई। मेरे हृदय में से अज्ञानता का अँधेरा नाश हो गया और माया के मोह में निद्रामग्न मेरा मन जाग गया। मेरे मन को हृदय-घर में ही नाम रूपी वस्तु मिल गई है॥ ३॥ भगवान से विमुख, हिंसक, पतित एवं मायाधारी जीवों को ही यमदूत मृत्यु के बन्धन में बांधता

है। जिन्होंने सतिगुरु के समक्ष अपना सिर नहीं बेचा, वे भाग्यहीन आवागमन (जीवन–मृत्यु) के चक्र में पड़े रहते हैं॥ ४॥ हे प्रभु–ठाकुर! मेरी एक विनती सुनो। मैं प्रभु की शरणागत हूँ और हरि नाम की याचना करता हूँ। गुरु ही नानक की लाज–प्रतिष्ठा रखने वाला है। उसने अपना सिर सतिगुरु के समक्ष बेच दिया है॥ ५॥ १०॥ २४॥ ६२॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हम अहंकारी अहंकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइआ ॥ हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ धनु धंनु गुरू हरि राइआ ॥ १ ॥ राम गुर कै बचनि हरि पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै प्रीति राम राइ की गुरि मारगु पंथु बताइआ ॥ मेरा जीउ पिंडु सभु सतिगुर आगै जिनि विछुड़िआ हरि गलि लाइआ ॥ २ ॥ मेरै अंतरि प्रीति लगी देखन कउ गुरि हिरदे नालि दिखाइआ ॥ सहज अनंदु भइआ मनि मोरै गुर आगै आपु वेचाइआ ॥ ३ ॥ हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ ॥ अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ २५ ॥ ६३ ॥

हम (प्राणी) बड़े अहंकारी हैं, हमारी बुद्धि अहंकार और अज्ञानता वाली बनी रहती है। लेकिन गुरु से मिलकर हमारा अहंकार नष्ट हो गया है। हमारे हृदय में से अहंकार का रोग निवृत्त हो गया है और हमें सुख उपलब्ध हो गया है। हरि–परमेश्वर का रूप गुरु धन्य–धन्य है॥ १॥ हे मेरे राम! गुरु के वचन द्वारा मैंने प्रभु को पा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे हृदय में राम का प्रेम है। गुरु ने मुझे प्रभु–मिलन का मार्ग दिखा दिया है। मेरी आत्मा एवं देहि सब कुछ सतिगुरु के समक्ष समर्पित हैं, जिन्होंने मुझ बिछुड़े को परमात्मा के आलिंगन लगा दिया है॥ २॥ मेरे अन्तर्मन में प्रभु के दर्शनों की प्रीति उत्पन्न हुई है। गुरु ने मुझे मेरे हृदय में ही मेरे साथ विद्यमान प्रभु को दिखा दिया है। मेरे मन में सहज आनंद उत्पन्न हो गया है। मैंने खुद को गुरु के समक्ष बेच दिया है॥ ३॥ मैंने बहुत अपराध एवं पाप किए हैं। जैसे कोई चोर अपनी की हुई चोरी को छिपाता है, वैसे ही मैंने बुराइयां करके उन्हें छिपाया है। हे नानक! अब मैं हरि की शरण में आया हूँ। हे हरि! जैसे तुझे उपयुक्त लगे, वैसे ही मेरी लाज रखो॥ ४॥ ११॥ २५॥ ६३॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धंनु गुरू लिव लावै ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा मनु गुर की कार कमावै ॥ हम मलि मलि धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥ २ ॥ हिरदै गुरमति राम रसाइणु जिहवा हरि गुण गावै ॥ मन रसकि रसकि हरि रसि आघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥ ३ ॥ कोई करै उपाव अनेक बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु द्रिड़ावै ॥ ४ ॥ १२ ॥ २६ ॥ ६४ ॥

गुरु के उपदेश से मेरे अन्तर में अनहद शब्द गूंजने लग गया है और गुरु के उपदेश से ही मेरा मन परमात्मा का यश गायन करता है। बड़े सौभाग्य से मुझे गुरु जी के दर्शन नसीब हुए हैं। वह गुरु धन्य–धन्य है, जिसने मेरी वृति ईश्वर से लगा दी है॥ १॥ गुरु के माध्यम से ही ईश्वर में वृति लगती है॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण सतिगुरु ही मेरा ठाकुर है और मेरा मन गुरु की ही सेवा करता है। मैं गुरु के चरण मल–मल कर धोता हूँ, जो मुझे हरि की हरि कथा सुनाता है॥ २॥ गुरु के उपदेश से रसों का घर प्रभु मेरे हृदय में आकर बस गया है। मेरी जिह्वा ईश्वर का यश गायन करती रहती है। मेरा मन प्रेम में भीगकर ईश्वर के अमृत से तृप्त हो गया है और तदुपरांत इसको दोबारा भूख नहीं

लगती॥ ३॥ चाहे कोई अनेक उपाय करे किन्तु प्रभु की कृपा बिना उसको नाम प्राप्त नहीं होता। नानक पर हरि-परमेश्वर ने अपनी कृपा धारण की है, गुरु के उपदेश से उसकी बुद्धि में हरि का नाम बस गया है॥ ४॥ १२॥ २६॥ ६४॥

रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥ गुरमुखि जिंदू जपि नामु करंमा ॥ मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥ संतोखु पिता करि गुरु पुरखु अजनमा ॥ वडभागी मिलु रामा ॥ १ ॥ गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रंगु माणी जीउ ॥ गुरु हरि रंगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥ वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु हरि रंगि भिंना ॥ २ ॥ आवहु संतहु मिलि नामु जपाहा ॥ विचि संगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥ करि सेवा संता अंम्रितु मुखि पाहा जीउ ॥ मिलु पूरबि लिखिअड़े धुरि करमा ॥ ३ ॥ सावणि वरसु अंम्रिति जगु छाइआ जीउ ॥ मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ ॥ हरि अंम्रितु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥ जन नानक प्रेमि रतंना ॥ ४ ॥ १ ॥ २७ ॥ ६५ ॥

हे मेरे प्राण! गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा के नाम का जाप करो। हे मेरे प्राण! उस बुद्धि को अपनी माता बना, बुद्धि को ही अपना जीवन-आधार बना और मुँह में राम का नाम जप। संतोष को अपना पिता और गुरु को अपना अजन्मा सत्पुरुष बना। हे सौभाग्यशाली! राम से मिल॥ १॥ मैं, योगी गुरु परमेश्वर से मिल गया हूँ और उसके रंग में आनंद प्राप्त करता हूँ। गुरु परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहता है और सदैव पावन-पवित्र है। सौभाग्य से मैं चतुर एवं सर्वज्ञ प्रभु से मिल गया हूँ। मेरा मन एवं तन परमेश्वर के रंग में मग्न है॥ २॥ हे संतजनों! आओ हम मिलकर प्रभु के नाम का जाप करें। हम सत्संगति में मिलकर सदैव नाम रूपी लाभ प्राप्त करें। संतों की सेवा करके हम अपने मुख में नाम रूपी अमृत डालें। प्रारम्भ से किस्मत में पूर्व कर्मों के लिखे लेखों अनुसार प्रभु से जा मिलो॥ ३॥ श्रावण के महीने में नाम अमृत वाला बादल जगत् पर छाया हुआ है। नाम अमृत को चखकर मेरे मन का मोर प्रसन्न होकर चहचहाने लग गया। जब हरि-नाम रूपी अमृत मेरे हृदय में आ बसा तो मुझे प्रभु-परमेश्वर मिल गया। हे नानक! मैं प्रभु की प्रीति में मग्न हो गया हूँ॥ ४॥ १॥ २७॥ ६५॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥ गुर दीपकु गिआनु सदा मनि बलीआ जीउ ॥ हरि तुठै ढुलि ढुलि मिलीआ जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ मै मेले मित्रु सतिगुरु वेचोले जीउ ॥ मनु देवां संता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥ हरि विटड़िअहु सदा घोले जीउ ॥ २ ॥ वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥ हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥ ३ ॥ हरि आपि उपाए हरि आपे वेखै हरि आपे कारै लाइआ जीउ ॥ इकि खावहि बखस तोटि न आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥ इकि राजे तखति बहहि नित सुखीए इकना भिख मंगाइआ जीउ ॥ सभु इको सबदु वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥ ६६ ॥

हे मेरी सत्संगी सखियों! आओ, हम प्रभु को वश में करने के लिए शुभ गुणों के जादू-टोने तैयार करें और संतजनों से मिलकर हम प्रभु-प्रेम का सुख एवं आनंद भोगें। मेरे हृदय में गुरु के ज्ञान का दीपक सदैव प्रज्वलित रहता है। परम प्रसन्न एवं दया से कोमल होकर प्रभु मुझे मिल गया है॥ १॥ मेरे मन एवं तन में प्रियतम प्रभु का प्रेम लगा हुआ है। मेरी यही कामना है कि मध्यस्थ सतिगुरु मुझे

मेरे प्रिय मित्र प्रभु से मिला दे। मैं अपना मन उन संतों को अर्पण कर दूँगा जो मुझे मेरे प्रभु से मिला देंगे। प्रभु पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ हे मेरे प्रिय गोविन्द! मेरे मन में आकर निवास करो। हे प्रभु! कृपा करके मेरे मन में आकर निवास करो। हे मेरे गोविन्द! मुझे मनोवांछित फल मिल गया है। पूर्ण गुरु के दर्शन करके मैं अत्यंत प्रसन्न हो गई हूँ। हे मेरे गोविन्द! मुझे गुरु से हरि-नाम मिल गया है और मैं सुहागिन बन गई हूँ। अब मेरे मन में दिन-रात प्रसन्नता एवं आनंद बना रहता है। हे मेरे गोविन्द! बड़े भाग्य से मैंने प्रभु को पाया है और मैं नित्य ही नाम रूपी लाभ प्राप्त करके अपने मन में मुस्कराती रहती हूँ॥ ३॥ भगवान ने स्वयं ही जीवों को उत्पन्न किया है और वह स्वयं ही उनकी देखभाल करता है। भगवान ने स्वयं ही जीवों को कामकाज में लगाया है। कई प्रभु की नियामतें सेवन करते हैं, जिनमें कभी कमी नहीं आती और कइयों को केवल मुट्ठी भर दानों की मिलती है। भगवान ने कई जीवों को राजा बनाया है, वे राजसिंघासन पर विराजमान होते हैं और सदा ही सुखी रहते हैं और भगवान कई जीवों को भिखारी बनाकर उनसे दर-दर से भीख मंगवाता है। हे मेरे गोविन्द! सर्वत्र एक तेरा ही नाम विद्यमान है। हे नानक! प्रभु का सेवक प्रभु नाम का ही ध्यान करता है॥ ४॥ २॥ २८॥ ६६॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ मन माही मन माही मेरे गोविंदा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥ हरि रंगु नालि न लखीऐ मेरे गोविदा गुरु पूरा अलखु लखाही जीउ ॥ हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविंदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥ हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविंदा वडभागी नामि समाही जीउ ॥ १ ॥ नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥ संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविदा मेरा हरि प्रभु सजणु सैणी जीउ ॥ हरि आइ मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥ २ ॥ मै मेलहु संत मेरा हरि प्रभु सजणु मै मनि तनि भुख लगाईआ जीउ ॥ हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥ हरि राइआ मेरा सजणु पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥ मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मनि वाधाईआ जीउ ॥ ३ ॥ वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का मेरे गोविदा हरि पूंजी राखु हमारी जीउ ॥ सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैबारी जीउ ॥ हरि नामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २९ ॥ ६७ ॥

हे मेरे गोविन्द! मैं अपने मन में ही हरि-रंग में मग्न हो गया हूँ। हरि रंग प्रत्येक जीव के भीतर उसके साथ ही रहता है परन्तु उसे देखा नहीं जा सकता। हे मेरे गोविन्द! पूर्ण गुरु ने मुझे अदृश्य प्रभु के दर्शन करा दिए हैं। हे मेरे गोविन्द! जब गुरु ने मेरे हृदय में हरि-परमेश्वर के नाम का प्रकाश कर दिया तो मेरी दरिद्रता के तमाम दुख निवृत्त हो गए। हे मेरे गोविन्द! मैंने हरि-मिलन की उच्च पदवी प्राप्त कर ली है और बड़े भाग्य से मैं हरि के नाम में लीन हो गया हूँ॥ १॥ हे मेरे प्रिय गोविन्द! हरि-प्रभु को किसी विरले पुरुष ने ही अपने नेत्रों से देखा है। हे मेरे गोविन्द! मेरा मन एवं तन तेरे विरह में वैराग्यवान हो गया है। मालिक-प्रभु के बिना मैं जीव-स्त्री बहुत उदास हो गई हूँ। हे मेरे गोविन्द! संतजनों से मिलकर मैंने अपने मित्र एवं सज्जन हरि-प्रभु को पा लिया है। हे मेरे गोविन्द! जगजीवन हरि आकर मुझे मिल गया है और अब मेरी जीवन रूपी रात्रि सुख से बीत रही है॥ २॥ हे संतजनो! मुझे मेरे सज्जन हरि-प्रभु से मिलाओ। मेरे मन एवं तन को उसके मिलन की भूख लगी हुई है। मैं अपने प्रियतम के दर्शनों के बिना जीवित नहीं रह सकती। मेरे मन में प्रभु की जुदाई की

पीड़ा विद्यमान है। सम्राट प्रभु मेरा सर्वप्रिय मित्र है। गुरुदेव ने मुझे उनसे मिला दिया है और मेरा मन पुनः जीवित होकर ईश्वर–परायण हो गया है। मेरे मन एवं तन की आशाएँ पूर्ण हो गई हैं। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर को मिलने से मेरे मन को शुभकामनाएँ मिल रही हैं॥ ३॥ हे मेरे प्रिय गोविन्द! मैं तुझ पर तन एवं मन से कुर्बान हूँ। हे मेरे गोविन्द! मेरे मन एवं तन में मेरे प्रियतम–पति की प्रीति है। हे प्रभु! मेरी प्रेमी रूपी पूँजी की रक्षा कीजिए। हे मेरे गोविन्द! मुझे मेरे मध्यस्थ सतिगुरु से मिला दो, जो अपने मार्गदर्शन से मुझे परमेश्वर से मिला देगा। हे मेरे गोविन्द! तेरी दया से मैंने हरि का नाम प्राप्त किया है। नानक ने तेरी ही शरण ली है॥ ४॥ ३॥ २६॥ ६७॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥ हरि आपे कान्हु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥ हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥ हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥ १ ॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ ॥ इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ ॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥ भगता नामु आधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ ॥ २ ॥ हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥ आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥ हरि आतम रामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥ ३ ॥ हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाए तिउ वाजै जीउ ॥ हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुर सबदी हरि प्रभु गाजै जीउ ॥ आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै जीउ ॥ वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६८ ॥

हे मेरे प्रिय गोविन्द! तू बड़ा विनोदी है, मेरा प्रभु–परमेश्वर विनोदी है। परमेश्वर ने स्वयं ही कृष्ण को उत्पन्न किया है। हरि स्वयं ही कृष्ण को खोजने वाली गोपी है। हे मेरे गोविन्द! हरि स्वयं ही समस्त शरीरों में पदार्थों को भोगता है और स्वयं ही रस भोगने वाला भोगी है। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर चतुर एवं अचूक है। वह स्वयं ही भोगों से निर्लिप्त सतिगुरु है॥ १॥ हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही अनेकों विधियों से खेलता है। हे मेरे गोविन्द! कई प्राणियों को वह नियामतें प्रदान करता है, जिससे वे आनंद प्राप्त करते हैं और कई प्राणी नग्न होकर (जिनके तन पर वस्त्र नहीं) नंगे भटकते फिरते हैं। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं सृष्टि की रचना करता है और माँगने वाले समस्त प्राणियों को दान प्रदान करता है, हे मेरे गोविन्द! भक्तों को प्रभु–नाम का ही आधार है। और वे श्रेष्ठ हरि कथा की माँग करते रहते हैं॥ २॥ हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं ही भक्तों से अपनी भक्ति करवाता है और अपने भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी करता है। हे मेरे गोविन्द! हरि जल–थल सर्वत्र विद्यमान है। वह सर्वव्यापक है और कहीं दूर नहीं रहता। हे मेरे गोविन्द! भीतर एवं बाहर प्रभु स्वयं ही विद्यमान है। ईश्वर स्वयं ही समस्त स्थानों को परिपूर्ण कर रहा है। हे मेरे गोविन्द! राम स्वयं ही इस जगत्–प्रसार को प्रसारित कर रहा है। प्रभु स्वयं निकट से सभी को देखता है॥ ३॥ हे मेरे गोविन्द! प्राणियों के भीतर पवन का नाद (बज रहा) है। जैसे ईश्वर स्वयं इसको बजाता है, वैसे ही यह गूंजता है। हे मेरे गोविन्द! हम जीवों के अन्तर्मन में नाम रूपी खजाना है। गुरु के उपदेश से हरि–प्रभु प्रकट हो जाता है। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं ही मनुष्य को अपनी शरणागत में प्रवेश करवाता है और भक्तजनों की लाज रखता है। हे मेरे गोविन्द! कोई सौभाग्यशाली मनुष्य ही सत्संग में जुड़ता है। हे नानक! प्रभु के नाम से उसके जीवन मनोरथ सफल हो जाते हैं॥४॥ ४॥ ३०॥ ६८॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ मै हरि नामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ मेरा हरि प्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥ हरि प्रभु देखि जीवा मेरी माई जीउ ॥ मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥ १ ॥ गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभ केरे जीउ ॥ जपि गुरमुखि नामु जीउ भाग वडेरे जीउ ॥ हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥ फिरि बहुड़ि न भवजल फेरे जीउ ॥ २ ॥ किउ हरि प्रभ वेखा मेरै मनि तनि चाउ जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥ गुर सबदी पाईऐ हरि प्रीतम राउ जीउ ॥ वडभागी जपि नाउ जीउ ॥ ३ ॥ मेरै मनि तनि वडड़ी गोविंद प्रभ आसा जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ गोविद प्रभ पासा जीउ ॥ सतिगुर मति नामु सदा परगासा जीउ ॥ जन नानक पूरिअड़ी मनि आसा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३१ ॥ ६६ ॥

हे भद्रपुरुषो ! हरि ने मुझे हरि–नाम की प्रेम–प्यास लगा दी है। यदि मेरा मित्र हरि–प्रभु मुझे मिल जाए तो मुझे बड़ा सुख उपलब्ध होगा। हे मेरी माँ ! मैं हरि को देख कर ही जीवित रहती हूँ। हरि का नाम मेरा सखा एवं भाई है॥ १॥ हे पूज्य संतो ! मेरे हरि–प्रभु का यश–गायन करो। गुरु के माध्यम से प्रभु के नाम का जाप करने से भाग्य उदय हो जाते हैं। हरि–परमेश्वर का नाम और हरि मेरे प्राण एवं आत्मा हैं। नाम का जाप करने से मुझे दोबारा भवसागर पार नहीं करना पड़ेगा॥ २॥ मेरे मन एवं तन में बड़ा चाव बना हुआ है कि मैं कैसे हरि–प्रभु के दर्शन करूँ? हे संतजनो ! मुझे हरि से मिला दीजिए। मेरे मन में हरि के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है। गुरु के शब्द से प्रियतम प्रभु प्राप्त होता है। हे सौभाग्यशाली प्राणी ! तू प्रभु के नाम का जाप कर॥ ३॥ मेरे मन एवं तन में गोविन्द प्रभु के मिलन की बड़ी लालसा बनी हुई है। हे संतजनो ! मुझे गोविन्द प्रभु से मिला दीजिए, जो मेरे पास ही रहता है। सतिगुरु की शिक्षा द्वारा हमेशा जीव के हृदय में नाम का प्रकाश होता है। हे नानक ! मेरे मन की अभिलाषा पूरी हो गई है॥ ४॥ ५॥ ३१॥ ६६॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ मेरा बिरही नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥ मन अंदरि अंम्रितु गुरमति हरि लीवा जीउ ॥ मनु हरि रंगि रतड़ा हरि रसु सदा पीवा जीउ ॥ हरि पाइअड़ा मनि जीवा जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥ मेरा प्रीतमु मितु हरि पुरखु सुजाणु जीउ ॥ गुरु मेले संत हरि सुघड़ु सुजाणु जीउ ॥ हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥ २ ॥ हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई जीउ ॥ हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥ सतिगुरु तुठड़ा दसे हरि पाई जीउ ॥ हरि नामे नामि समाई जीउ ॥ ३ ॥ मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ गुर सरधा पूरि अंम्रितु मुखि पाई जीउ ॥ हरि होहु दइआलु हरि नामु धिआई जीउ ॥ जन नानक हरि रसु पाई जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ १८ ॥ ३२ ॥ ७० ॥

यदि मुझसे जुदा हुआ प्रिय नाम मुझे मिल जाए तो ही मैं जीवित रह सकता हूँ। मेरे मन में नाम रूपी अमृत है। गुरु के उपदेश से मैं हरि से यह नाम लेता हूँ। मेरा मन हरि के प्रेम में अनुरक्त है। मैं सदैव हरि–रस का पान करता रहता हूँ। मैंने प्रभु को हृदय में पा लिया है, इसलिए मैं जीवित हूँ॥ १॥ हरि का प्रेम रूपी तीर मेरे मन एवं तन में लग गया है। मेरा प्रिय मित्र हरि पुरुष बहुत चतुर है। कोई संत गुरु ही जीव को चतुर एवं दक्ष हरि से मिला सकता है। मैं हरि के नाम पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ मैं अपने सज्जन एवं मित्र हरि–परमेश्वर का पता पूछता हूँ। हे संतजनों ! हरि के बारे में बताओ, मैं हरि की खोज करता रहता हूँ। यदि सतिगुरु प्रसन्न होकर मुझे बता दें तो मैं हरि को पा सकता हूँ और हरि के नाम द्वारा हरि–नाम में ही समा सकता हूँ॥३॥ हरि ने मेरे अन्तर्मन में प्रेम

वेदना लगा दी है। गुरु ने मेरी श्रद्धा पूरी कर दी है और मेरे मुँह में नाम रूपी अमृत डाल दिया है। हे हरि! मुझ पर दयालु हो जाओ चूंकि मैं हरि–नाम का ध्यान करता रहूँ। नानक ने तो हरि रस पा लिया है॥ ४॥ ६॥ २०॥ १८॥ ३२॥ ७०॥

महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥ किउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसलु न ग्रिहि मेरी सभ माइआ ॥ ऊचे मंदर सुंदर छाइआ ॥ झूठे लालचि जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ हसती घोड़े देखि विगासा ॥ लसकर जोड़े नेब खवासा ॥ गलि जेवड़ी हउमै के फासा ॥ २ ॥ राजु कमावै दह दिस सारी ॥ माणै रंग भोग बहु नारी ॥ जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥ ३ ॥ एकु कुसलु मो कउ सतिगुरू बताइआ ॥ हरि जो किछु करे सु हरि किआ भगता भाइआ ॥ जन नानक हउमै मारि समाइआ ॥ ४ ॥ इन बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥ इउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥

हे मेरे भाई! किस विधि से आत्मिक सुख उपलब्ध हो सकता है। उस सहायक हरि को कैसे पाया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि मनुष्य के घर में दुनिया की तमाम दौलत आ जाए और वह यह माने यह सारी दौलत मेरी ही है तो भी उसे सुख उपलब्ध नहीं होता। यदि मनुष्य के पास ऊँचे महल और छाया वाले सुन्दर बाग हो तो वह इनके झूठे लालच में फँसकर अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा देता है॥ १॥ मनुष्य अपने हाथी और घोड़े देखकर बड़ा प्रसन्न होता है। वह भारी भरकम फौज इकट्ठी करता है और मंत्री तथा शाही नौकर रखता है लेकिन यह सबकुछ अहंकार की फाँसी रूपी रस्सी है जो उसके गले में पड़ जाती है॥ २॥ दसों दिशाओं में शासन करना, अनेक भोगों में आनन्द प्राप्त करना, अधिकतर नारियों से भोग–विलास करना एक भिखारी के स्वप्न में राजा बनने के समान है॥ ३॥ सतिगुरु ने मुझे सुखी होने की एक विधि बताई है। वह विधि यह है कि जो कुछ भी ईश्वर करता है, वह प्रभु के भक्तों को अच्छा लगता है। हे नानक! गुरमुख अपने अहंकार को मिटा कर प्रभु में समा जाता है॥ ४॥ हे मेरे भाई! इस विधि से सुखी हुआ जाता है और इस तरह सहायक प्रभु पाया जाता है॥ १॥ रहाउ दूजा॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ किउ भ्रमीऐ भ्रमु किस का होई ॥ जा जलि थलि महीअलि रविआ सोई ॥ गुरमुखि उबरे मनमुख पति खोई ॥ १ ॥ जिसु राखै आपि रामु दइआरा ॥ तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि वरतै एकु अनंता ॥ ता तूं सुखि सोउ होइ अचिंता ॥ ओहु सभु किछु जाणै जो वरतंता ॥ २ ॥ मनमुख मुए जिन दूजी पिआसा ॥ बहु जोनी भवहि धुरि किरति लिखिआसा ॥ जैसा बीजहि तैसा खासा ॥ ३ ॥ देखि दरसु मनि भइआ विगासा ॥ सभु नदरी आइआ ब्रहमु परगासा ॥ जन नानक की हरि पूरन आसा ॥ ४ ॥ २ ॥ ७१ ॥

हम क्यों भ्रम करें? किस बात का भ्रम करना है? जब वह प्रभु जल, थल, धरती और आकाश में विद्यमान हो रहा है। गुरमुख भवसागर से बच जाते हैं परन्तु स्वेच्छाचारी अपनी प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं॥ १॥ उसकी समानता कोई दूसरा नहीं कर सकता, जिसकी दया का घर राम स्वयं रक्षा करता है॥ १॥ रहाउ॥ समस्त जीवों में एक अनन्त परमेश्वर व्यापक हो रहा है। इसलिए तू निश्चिंत होकर सुख से सो जा। संसार में जो कुछ हो रहा है प्रभु सब कुछ जानता है॥ २॥ जिन स्वेच्छाचारी जीवों को माया की तृष्णा लग जाती है, वे माया के मोह में फँसकर मरते हैं। वह अनेक योनियों में भटकते रहते हैं। उनकी किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसा कर्म–लेख लिखा होता है। जैसा वह बोते हैं (कर्म करते हैं), वैसा ही वह खाते हैं॥ ३॥ प्रभु के दर्शन प्राप्त करके मेरा हृदय प्रसन्न हो गया है। अब मैं सर्वत्र परमेश्वर का प्रकाश देखता हूँ। नानक की प्रभु ने अभिलाषा पूर्ण कर दी है॥ ४॥ २॥ ७१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कई जनम भए कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥ कई जनम पंखी सरप होइओ ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥ १ ॥ मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥ कई जनम साख करि उपाइआ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥ २ ॥ साधसंगि भइओ जनमु परापति ॥ करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥ तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥ जीवत मरहि दरगह परवानु ॥ ३ ॥ जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥ अवरु न दूजा करणै जोगु ॥ ता मिलीऐ जा लैहि मिलाइ ॥ कहु नानक हरि हरि गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७२ ॥

हे प्राणी ! तू अनेकों जन्मों में कीड़ा और पतंगा बना हुआ था। अनेकों जन्मों में तू हाथी, मछली एवं मृग था। अनेक योनियों में तू पक्षी एवं सर्प बना था। अनेक योनियों में तू घोड़ा और बैल बनकर जोता गया था॥ १॥ अब तुझे मानव-जन्म में जगत् के ईश्वर को मिलने का समय मिला है, अतः तू उसे मिल। चिरकाल पश्चात् यह मानव-जन्म तुझे प्राप्त हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ अनेक योनियों में तू चट्टान एवं पहाड़ों में उत्पन्न किया गया था। अनेक जन्मों में तेरी माँ का गर्भ ही गिर गया था। अनेक योनियों में तू वनस्पति बन कर उत्पन्न किया गया था। इस तरह तू चौरासी लाख योनियों में भटकाया गया था॥ २॥ अब तुझे अमूल्य मानव जीवन मिला है। अतः तू संतों की संगति किया कर। तू संतों की निष्काम सेवा किया कर और गुरु की मति द्वारा हरि-परमेश्वर का भजन कर। तू अपना अहंकार, झूठ एवं अभिमान त्याग दे। यदि तू अपने अहंकार को नष्ट कर देगा तो ही प्रभु के दरबार में स्वीकृत होगा॥ ३॥ हे परमात्मा ! जो कुछ भी हुआ है अथवा होगा, वह तुझ पर निर्भर है। दूसरा कोई उसको करने में समर्थ नहीं। हे प्रभु ! यदि तू मिलाए तो केवल तभी मनुष्य तुझे मिलता है। हे नानक ! हे प्राणी ! तू हरि-परमेश्वर का यश-गायन कर॥ ४॥ ३॥ ७२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ करम भूमि महि बोअहु नामु ॥ पूरन होइ तुमारा कामु ॥ फल पावहि मिटै जम त्रास ॥ नित गावहि हरि हरि गुण जास ॥ १ ॥ हरि हरि नामु अंतरि उरि धारि ॥ सीघर कारजु लेहु सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ ता तूं दरगह पावहि मानु ॥ उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ संत जना की चरणी लागु ॥ २ ॥ सरब जीअ हहि जा कै हाथि ॥ कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥ उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥ निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥ ३ ॥ सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥ प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७३ ॥

हे प्राणी ! शरीर रूपी कर्म-भूमि में तू नाम का बीज बो। तेरा कर्म सफल हो जाएगा। तुम फल (मोक्ष) प्राप्त कर लोगे और तेरा मृत्यु का भय दूर हो जाएगा। इसलिए हमेशा प्रभु-परमेश्वर के गुण एवं उपमा गायन कर। हरि-परमेश्वर के नाम को तू अपने ह्रदय एवं मन से लगाकर रख और शीघ्र ही अपने कार्य संवार लो॥ १॥ रहाउ॥ अपने प्रभु की सेवा के लिए सदा सावधान रह। तब तुझे उसके दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपनी युक्तियां एवं समस्त चतुरता त्याग दे और संतजनों के चरणों से लग जा॥ २॥ जिस भगवान के वश में समस्त जीव हैं, जो सदा जीवों के साथ रहता है, वह कभी उनसे अलग नहीं होता। हे प्राणी ! अपनी युक्तियां त्याग और उसकी शरण में आ। एक क्षण में तेरी मुक्ति हो जाएगी॥ ३॥ प्रभु को हमेशा अपने निकट समझ। प्रभु की आज्ञा को सत्य करके स्वीकार कर। गुरु के उपदेश से अपने अहंत्व को मिटा दे। हे नानक ! हरि-परमेश्वर का नाम जप, हमेशा प्रभु के गुणों का जाप करता रह॥ ४॥ ४॥ ७३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥ गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥ गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥ १ ॥ जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ संत का कीआ सति करि मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का बचनु अटल अछेद ॥ गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥ २ ॥ गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ गुर कै बचनि नरकि न पवै ॥ गुर कै बचनि रसना अंम्रितु रवै ॥ ३ ॥ गुर का बचनु परगटु संसारि ॥ गुर कै बचनि न आवै हारि ॥ जिसु जन होए आपि क्रिपाल ॥ नानक सतिगुर सदा दइआल ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७४ ॥

गुरु का वचन सदा अविनाशी है। गुरु के वचन द्वारा मृत्यु की फाँसी कट जाती है। गुरु का वचन सदैव जीव के साथ रहता है। गुरु के वचन द्वारा मनुष्य राम के प्रेम में लीन रहता है॥ १॥ गुरु जो कुछ भी देते हैं, वह आत्मा के लाभ हेतु है। जो कुछ भी संत करते हैं, उसको सत्य जानकर स्वीकार करो॥ १॥ रहाउ॥ गुरु का वचन अटल एवं शाश्वत है। गुरु के वचन से तमाम भ्रम एवं भेदभाव मिट जाते हैं। गुरु का वचन मनुष्य को छोड़कर कहीं नहीं जाता। गुरु के वचन से ही प्राणी हरि का यश गायन करता है॥ २॥ गुरु का वचन जीव के साथ रहता है। गुरु का वचन अनाथों का नाथ है। गुरु के वचन द्वारा प्राणी नरक में नहीं जाता। गुरु के वचन द्वारा प्राणी की रसना नाम रूपी अमृत का आनंद प्राप्त करती है॥ ३॥ गुरु का वचन विश्व में प्रकट है। गुरु के वचन से प्राणी कभी पराजित नहीं होता। हे नानक ! जिस प्राणी पर प्रभु स्वयं कृपालु हो जाता है, उस पर सतिगुरु जी हमेशा ही दयालु रहते हैं॥ ४॥ ५॥ ७४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥ १ ॥ रमईआ रेनु साधु जन पावउ ॥ गुर मिलि अपुना खसमु धिआवउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीता मूड़ ते बकता ॥ जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ जिसु परसादि नवै निधि पाई ॥ सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥ २ ॥ जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥ जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥ सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥ ३ ॥ जिसु प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥ गुर प्रसादि अंम्रितु बिखु खाटी ॥ कहु नानक इस ते किछु नाही ॥ राखनहारे कउ सालाही ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७५ ॥

जिस भगवान ने मिट्टी से मेरे शरीर की रचना करके इसे रत्न जैसा अमूल्य बना दिया है, जिसने प्रयास करके मातृ-गर्भ में मेरी रक्षा की है, जिसने मुझे शोभा एवं बड़ाई प्रदान की है, मैं उस भगवान का आठ प्रहर सिमरन करता रहता हूँ॥ १॥ हे मेरे राम ! मुझे संतजनों की चरण धूलि प्राप्त हो। गुरु से मिलकर मैं अपने परमेश्वर का ध्यान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ जिसने मुझे मूर्ख से प्रचारक बना दिया, अचेत पुरुष से जिसने मुझे चतुर बना दिया है, जिसकी दया से मुझे नवनिधि प्राप्त हुई है, उस प्रभु को मेरा हृदय विस्मृत नहीं करता॥ २॥ जिस (प्रभु) ने मुझ निराश्रित को आश्रय दिया और जिस (प्रभु) ने मुझ तुच्छ प्राणी को आदर-सत्कार प्रदान किया है, जिसने मेरी समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण की हैं। हे प्राणी ! दिन-रात, प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से उसका ध्यान करो॥ ३॥ जिसके प्रसाद (दया) से मोह-माया के बंधन कट गए हैं। गुरु की कृपा से (मोह-माया का) खट्टा विष अमृत बन गया है। हे नानक ! इस जीव से कुछ नहीं हो सकता। मैं रक्षक-प्रभु की सराहना करता हूँ॥ ४॥ ६॥ ७५॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥ उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ दास अपने की राखनहार ॥ १ ॥ जपि मन मेरे राम राम रंगि ॥ घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की टेक मनै महि राखु ॥ गुर का सबदु अंम्रित रसु चाखु ॥ अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ करि किरपा राखै आपि लाज ॥ २ ॥ किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥ झूठा माइआ का सभु सोरु ॥ करण करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ ३ ॥ सरब सुखा सुखु साचा एहु ॥ गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ जा कउ राम नाम लिव लागी ॥ कहु नानक सो धंनु वडभागी ॥ ४ ॥ ७ ॥ ७६ ॥

उस भगवान की शरण में आने से कोई भय एवं चिंता नहीं रहती। उसके हुक्म बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता। मैंने चतुराई, बल एवं मन्दबुद्धि त्याग दी है। वह अपने दास की प्रतिष्ठा बचाने वाला है॥ १॥ हे मेरे मन ! तू प्रेमपूर्वक राम–नाम का सिमरन कर। वह हृदय–घर में एवं बाहर सदैव तेरे साथ रहता है॥ १॥ रहाउ॥

अपने मन में उसके सहारे की आशा रख। हे प्राणी ! गुरु का शब्द अमृत रस है और इस अमृत रस का पान कर। हे भाई ! बताओ, तेरे अन्य प्रयास किस काम के हैं ? प्रभु स्वयं ही कृपा करके मनुष्य की लाज बचाता है॥ २॥ बेचारा मनुष्य क्या कर सकता है ? बताइए, उसमें कौन–सा बल है ? धन–दौलत का शोर–शराबा सब झूठा है। जगत् का स्वामी प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने एवं कराने वाला है। अन्तर्यामी (प्रभु) सर्वज्ञाता है॥ ३॥ सर्व सुखों में सच्चा सुख यही है कि गुरु की शिक्षा को अपने हृदय में स्मरण रखो। हे नानक ! जिसकी वृत्ति राम नाम में लगी हुई है, वह बड़े धन्य एवं भाग्यवान है॥ ४॥ ७॥ ७६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥ महा पुनीत भए सुख सैलु ॥ वडै भागि पाइआ साधसंगु ॥ पारब्रहम सिउ लागो रंगु ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥ अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि कीरतनु मन सीतल भए ॥ जनम जनम के किलविख गए ॥ सरब निधान पेखे मन माहि ॥ अब ढूढन काहे कउ जाहि ॥ २ ॥ प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥ पूरन होई सेवक घाल ॥ बंधन काटि कीए अपने दास ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥ ३ ॥ एको मनि एको सभ ठाइ ॥ पूरन पूरि रहिओ सभ जाइ ॥ गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥ हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७७ ॥

जिन्होंने हरि की कथा सुनकर अपने मन की अहंत्व रूपी मैल उतार दी है, वे बहुत ही पवित्र एवं सुखी हो गए हैं। उन्हें बड़े भाग्य से संतों की संगति मिल गई है और उनका पारब्रह्म से प्रेम पड़ गया है॥ १॥ हरि–परमेश्वर के नाम की आराधना करने वाले सेवक भवसागर से पार हो गए हैं। गुरु जी ने उन्हें तृष्णा रूपी अग्नि–सागर से पार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

प्रभु का कीर्तन करने से उनका हृदय शीतल हो गया है और जन्म–जन्मांतरों के पाप धुल गए हैं। समस्त खजाने उन्होंने अपने हृदय में देख लिए हैं। अब वह सुखों को ढूंढने के लिए बाहर क्यों जाएँ?॥ २॥ जब मेरा प्रभु दयालु हो गया तो उसके सेवक की सेवा सम्पूर्ण हो गई है। उसने (मोह–माया के) बंधन काट कर अपना दास बना लिया है। अब वे गुणों के भण्डार प्रभु का सिमरन करते रहते हैं॥ ३॥ केवल वही अंतःकरण में है और केवल वही सर्वत्र विद्यमान है। सम्पूर्ण प्रभु समस्त स्थानों को पूर्णतया भर रहा है। पूर्ण गुरु ने समस्त भ्रम निवृत्त कर दिए हैं। हे नानक ! हरि का सिमरन करके उसने सुख प्राप्त किया है॥ ४॥ ८॥ ७७॥

हों, परन्तु उन में से हृदय को संतोष प्राप्त नहीं होता॥ २॥ राजसिंहासन, राजकीय दरबार, आभूषण, गलीचे, समूह फल, सुन्दर उद्यान, आखेट का शौक और राजाओं की क्रीड़ाएँ–मनोरंजन, ऐसे झूठे प्रयासों से हृदय प्रसन्न नहीं होता॥ ३॥ संतों ने कृपा करके यह सत्य ही कहा है कि यह आनंद एवं सर्व सुख वही मनुष्य प्राप्त करता है, जो संतों की संगति करके भगवान का कीर्तन गायन करता है। हे नानक! संतों की संगति सौभाग्यवश ही मिलती है॥ ४॥ जिसके पास हरि नाम रूपी धन है, वही सुप्रसन्न है। प्रभु की दया से संतों की संगति प्राप्त होती है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ १२॥ ८१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥ बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥ पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥ होनु न पाईऐ राम के दासा ॥ १ ॥ कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥ कवन सु मति जितु तरै इह माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो भलाई सो बुरा जानै ॥ साचु कहै सो बिखै समानै ॥ जाणै नाही जीत अरु हार ॥ इहु वलेवा साकत संसार ॥ २ ॥ जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥ अंम्रितु नामु जानै करि कउरा ॥ साधसंग कै नाही नेरि ॥ लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥ ३ ॥ एकै जालि फहाए पंखी ॥ रसि रसि भोग करहि बहु रंगी ॥ कहु नानक जिसु भए क्रिपाल ॥ गुरि पूरै ता के काटे जाल ॥ ४ ॥ १३ ॥ ८२ ॥

प्राणी विचार करता है कि यह शरीर उसका अपना है। वह बार–बार उस शरीर से ही लिपटता है। जितनी देर तक पुत्र, स्त्री एवं गृहस्थ के मोह का फँदा उसके गले में पड़ा रहता है, तब तक वह राम का दास नहीं बनता॥ १॥ वह कौन–सी विधि है, जिससे राम का यश गायन किया जाए? हे माता! वह कौन–सी बुद्धि है, जिससे यह प्राणी माया से पार हो जाए॥ १॥ रहाउ॥ जो कार्य मानव की भलाई का है, उसको वह बुरा समझता है। यदि कोई उसको सत्य कहे, तो वह उसको विष के समान कड़वा लगता है। वह नहीं जानता कि जीत क्या है और हार क्या है? इस दुनिया में शाक्त व्यक्ति का यही जीवन–आचरण है॥ २॥ जो विष है, पागल पुरुष उसको पान करता है। प्रभु के अमृत नाम को वह कड़वा समझता है। वह साधु–संतों की संगति के निकट नहीं आता, जिससे वह चौरासी लाख योनियों में भटकता फिरता है॥ ३॥ समस्त जीव रूपी पक्षी माया ने अपने मोह रूपी जाल में फँसाए हुए हैं। मनुष्य स्वाद लेकर अनेक प्रकार के भोग भोगता है। हे नानक! कहो– जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपालु हो गया है, पूर्ण गुरु ने उसके मोह–माया के बंधन काट दिए हैं॥ ४॥ १३॥ ८२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥ तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥ १ ॥ तुम लावहु तउ लागह सेव ॥ हम ते कछू न होवै देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु भावै ता गावा बाणी ॥ तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥ तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥ २ ॥ जो तुधु भावै सो निरमल करमा ॥ जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥ सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥ तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥ ३ ॥ मनु तनु निरमलु होइ हरि रंगि ॥ सरब सुखा पावउ सतसंगि ॥ नामि तेरै रहै मनु राता ॥ इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥ ४ ॥ १४ ॥ ८३ ॥

हे प्रभु! तेरी कृपा से जीवन–मार्ग मिलता है। प्रभु की कृपा से नाम का ध्यान किया जाता है। प्रभु की कृपा से प्राणी बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। हे प्रभु! तेरी कृपा से अहंकार दूर हो जाता है॥ १॥ हे ईश्वर! यदि तू मुझे अपनी सेवा में लगाए, तो ही मैं तेरी सेवा–भक्ति में लगता हूँ। हे देव! अपने आप मैं कुछ भी नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! यदि तुझे अच्छा लगे तो मैं

तेरी वाणी गा सकता हूँ। हे प्रभु ! यदि तुझे अच्छा लगे तो मैं सत्य बोलता हूँ। यदि तुझे अच्छा लगे तो ही सतिगुरु की दया जीव पर होती है। हे मेरे ठाकुर ! तेरी दया से ही जीव को सर्व सुख प्राप्त होते हैं॥ २॥ हे प्रभु ! जो तुझे उपयुक्त लगता है, वही पवित्र कर्म है। हे नाथ ! जो तुझे लुभाता है, वही सत्य धर्म है। सर्वगुणों का खजाना तेरे पास है। हे प्रभु ! तू मेरा स्वामी है और तेरा सेवक तेरे समक्ष यही प्रार्थना करता है॥ ३॥ ईश्वर के प्रेम से मन एवं तन पवित्र हो जाते हैं। सत्संग में जाने से सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं। हे प्रभु ! मेरा मन तेरे नाम में ही मग्न रहे। हे नानक ! मैं उसे ही कल्याण समझता हूँ॥ ४॥ १४॥ ८३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ आन रसा जेते तै चाखे ॥ निमख न त्रिसना तेरी लाथे ॥ हरि रस का तूं चाखहि सादु ॥ चाखत होइ रहहि बिसमादु ॥ १ ॥ अंम्रितु रसना पीउ पिआरी ॥ इह रस राती होइ त्रिपतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे जिहवे तूं राम गुण गाउ ॥ निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥ आन न सुनीऐ कतहूं जाईऐ ॥ साधसंगति वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ आठ पहर जिहवे आराधि ॥ पारब्रहम ठाकुर आगाधि ॥ ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥ हरि गुण गावत रसन अमोली ॥ ३ ॥ बनसपति मउली फल फुल पेडे ॥ इह रस राती बहुरि न छोडे ॥ आन न रस कस लवै न लाई ॥ कहु नानक गुर भए है सहाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ ८४ ॥

हे मेरी जिह्वा ! हरि-रस के सिवाय अन्य जितने भी रस तू चखती है, उनसे तेरी तृष्णा एक क्षण-मात्र के लिए भी दूर नहीं होती। यदि तू हरि-रस की मिठास चख ले तो तू इसको चखकर चकित हो जाएगी॥ १॥ हे मेरी प्रिय जिह्वा ! तू हरि-रस रूपी अमृत का पान कर। इस हरि-रस के स्वाद में अनुरक्त हुई तू तृप्त हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ हे जिह्वा ! तू राम का यशोगान कर। क्षण-क्षण तू हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान कर। हरि-परमेश्वर के नाम के अलावा कुछ भी सुनना नहीं चाहिए और सत्संगति के अलावा कहीं ओर नहीं जाना चाहिए। सत्संग बड़े सौभाग्य से मिलती है॥ २॥ हे जिह्वा ! आठ प्रहर ही तू अगाध एवं जगत् के ठाकुर पारब्रह्म की आराधना कर। यहाँ (इहलोक) और वहाँ (परलोक) तू सदैव सुप्रसन्न रहेगी। हे जिह्वा ! प्रभु का यशोगान करने से तू अमूल्य गुणों वाली हो जाएगी॥ ३॥ चाहे वनस्पति खिली रहती है और पेड़ों को फल एवं फूल लगे होते हैं परन्तु हरि-रस में मग्न हुई जिह्वा इस हरि-रस को नहीं छोड़ती चूंकि कोई दूसरे मीठे व नमकीन स्वाद इसके तुल्य नहीं। हे नानक ! गुरु मेरे सहायक हो गए हैं॥ ४॥ १५॥ ८४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ मनु मंदरु तनु साजी बारि ॥ इस ही मधे बसतु अपार ॥ इस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥ कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥ १ ॥ नाम रतन को को बिउहारी ॥ अंम्रित भोजनु करे आहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥ कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥ पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥ कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥ २ ॥ महलु साह का किन बिधि पावै ॥ कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥ तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ कवनु सु दाता ले संचारे ॥ ३ ॥ खोजत खोजत निज घरु पाइआ ॥ अमोल रतनु साचु दिखलाइआ ॥ करि किरपा जब मेले साहि ॥ कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८५ ॥

मन एक मन्दिर है और तन को इसके पास मेड़ बनाया गया है। इस मन्दिर में अनन्त प्रभु की नाम-रूपी वस्तु विद्यमान है। संतों से सुनते हैं कि इस मन्दिर में ही नाम देने वाला साहूकार प्रभु निवास करता है। वह कौन-सा व्यापारी है, जिसका वहाँ विश्वास किया जाता है॥ १॥ कोई विरला

ही व्यापारी है, जो नाम रत्न का व्यापार करता है। वह व्यापारी नाम रूपी अमृत को अपना आहार बनाता है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपना मन एवं तन उसे अर्पण करके उसकी सेवा करूँगा जो मुझे यह बताए कि वह कौन–सी युक्ति है जिससे परमात्मा हर्षित होता है। अपना अहंत्व मेरी–तेरी गंवा कर मैं उसके चरण स्पर्श करता हूँ। वह कौन–सा मनुष्य है, जो मुझे भी नाम के व्यापार में लगा दे॥ २॥ किस विधि से मैं उस व्यापारी के मन्दिर पहुँच सकता हूँ। वह कौन–सी विधि है जिस द्वारा वह मुझे अन्दर बुलवा ले ? हे प्रभु ! तू बड़ा व्यापारी है, जिसके करोड़ों ही दुकानदार हैं। वह कौन–सा दाता है जो मुझे हाथ से पकड़ कर उसके मन्दिर में पहुँचा दे॥ ३॥ खोजते–खोजते मैंने अपना धाम (गृह) पा लिया है। सत्यस्वरूप प्रभु ने मुझे अमूल्य रत्न दिखा दिया है। जब व्यापारी (प्रभु) कृपा करता है, वह प्राणी को अपने साथ मिला लेता है। हे नानक ! यह तब होता है, जब प्राणी गुरु जी पर विश्वास धारण कर लेता है॥ ४॥ १६॥ ८५॥

गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥ रैणि दिनसु रहै इक रंगा ॥ प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥ ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि ॥ त्रिपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥ १ ॥ हरि संगि राते मन तन हरे ॥ गुर पूरे की सरनी परे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल आतम आधार ॥ एकु निहारहि आगिआकार ॥ एको बनजु एको बिउहारी ॥ अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥ २ ॥ हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥ सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥ दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥ ३ ॥ संतन की महिमा कवन वखानउ ॥ अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ पारब्रहम मोहि किरपा कीजै ॥ धूरि संतन की नानक दीजै ॥ ४ ॥ १७ ॥ ८६ ॥

जो व्यक्ति दिन–रात भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं और प्रभु को हमेशा अपने आसपास समझते हैं, उन्होंने ठाकुर के नाम को अपना जीवन–आचरण बना लिया है। वह ईश्वर के दर्शनों द्वारा संतुष्ट एवं तृप्त हो जाते हैं॥ १॥ ईश्वर के साथ अनुरक्त होने से उनका मन एवं तन प्रफुल्लित हो जाते हैं। वे पूर्ण गुरु की शरण लेते हैं॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के चरण कमल उनकी आत्मा का आधार बन जाता है। वह एक ईश्वर को ही देखते हैं और उसके आज्ञाकारी बन जाते हैं। वे एक नाम का ही व्यापार करते हैं और नाम–सिमरन ही उनका व्यवसाय बन जाता है। निरंकार परमेश्वर के बिना वह किसी को भी नहीं जानते॥ २॥ वे हर्ष एवं शोक दोनों से मुक्त हैं। हमेशा ही संसार से निर्लिप्त और प्रभु से जुड़े रहने की विधि उनको आती है। वे सबसे प्रेम करते दिखाई देते हैं और सबसे अलग भी दिखाई देते हैं। वे पारब्रह्म–प्रभु के स्मरण में वृत्ति लगाकर रखते हैं॥ ३॥ संतों की महिमा का मैं क्या–क्या वर्णन कर सकता हूँ। उनका बोध अनन्त है लेकिन मैं उनका मूल्य नहीं जानता। हे पारब्रह्म–परमेश्वर ! मुझ पर कृपा कीजिए। नानक को संतों की चरण–धूलि प्रदान करो॥ ४॥ १७॥ ८६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥ तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥ १ ॥ तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥ २ ॥ तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥ रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥ तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥ ३ ॥ मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥ सतिगुर ते द्रिड़िआ इकु एकै ॥ नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥ ४ ॥ १८ ॥ ८७ ॥

हे ईश्वर! तू ही मेरा साथी है और तू ही मेरा मित्र। तू ही मेरा प्रियतम है और तेरे साथ ही मेरा प्रेम है। तू ही मेरी प्रतिष्ठा है और तू ही मेरा आभूषण है। तेरे बिना मैं एक क्षण भर भी नहीं रह सकता॥ १॥ हे प्रभु! तू ही मेरा सुन्दर लाल है और तू ही मेरे प्राण है। तू मेरा स्वामी है और तू ही मेरा सामन्त है॥ १॥ रहाउ॥ हे ठाकुर! जैसे तुम मुझे रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ। जो कुछ तुम कहते हो, वही मैं करता हूँ। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, उधर ही मैं तेरा निवास पाता हूँ। हे निर्भय प्रभु! अपनी जिह्वा से मैं तेरे नाम का जाप करता रहता हूँ॥ २॥ हे प्रभु! तू मेरी नवनिधि है और तू ही मेरा भण्डार है। हे स्वामी! तेरे प्रेम से मैं सींचा हुआ हूँ और तू मेरे मन का आधार है। तू ही मेरी शोभा है और तेरे साथ ही मैं सुरति लगाकर रखता हूँ। तू मेरी शरण है और तू ही मेरा आश्रय है॥ ३॥ हे प्रभु! मैं अपने मन एवं तन में तेरा ही ध्यान करता रहता हूँ। तेरा भेद मैंने गुरु जी से प्राप्त किया है। सतिगुरु से मैंने एक ईश्वर का नाम-सिमरन ही दृढ़ किया है। हे नानक! हरि-परमेश्वर का नाम ही मेरा एक आधार है॥ ४॥ १८॥ ८७॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बिआपत हरख सोग बिसथार ॥ बिआपत सुरग नरक अवतार ॥ बिआपत धन निरधन पेखि सोभा ॥ मूलु बिआधी बिआपसि लोभा ॥ १ ॥ माइआ बिआपत बहु परकारी ॥ संत जीवहि प्रभ ओट तुमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिआपत अहंबुधि का माता ॥ बिआपत पुत्र कलत्र संगि राता ॥ बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥ बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥ २ ॥ बिआपत भूमि रंक अरु रंगा ॥ बिआपत गीत नाद सुणि संगा ॥ बिआपत सेज महल सीगार ॥ पंच दूत बिआपत अंधिआर ॥ ३ ॥ बिआपत करम करै हउ फासा ॥ बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥ आचार बिउहार बिआपत इह जाति ॥ सभ किछु बिआपत बिनु हरि रंग रात ॥ ४ ॥ संतन के बंधन काटे हरि राइ ॥ ता कउ कहा बिआपै माइ ॥ कहु नानक जिनि धूरि संत पाई ॥ ता कै निकटि न आवै माई ॥ ५ ॥ १९ ॥ ८८ ॥

माया का सुख-दुख में प्रसार है। वह स्वर्ग में जन्म लेने वाले जीवों को सुख रूप में तथा नरक के जीवों को दुख रूप में प्रभावित करती है। यह धनवानों, कंगालों एवं शोभावानों पर प्रभाव करती देखी जाती है। यह लोभ रूप में जीवों में फैली हुई है और तमाम रोगों की जड़ है॥ १॥ माया अनेक विधियों से प्रभाव करती है। हे प्रभु! तेरी शरण में साधु-संत इसके प्रभाव के बिना ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ माया उससे लिपटी हुई है जो अहंबुद्धि से मदहोश हुआ है। जो अपने पुत्रों एवं भार्या के प्रेम में अनुरक्त हुआ है, माया उससे भी लिपटी हुई है। मोहिनी उससे लिपटी हुई है जो हाथियों, घोड़ों एवं सुन्दर वस्त्रों में लीन है। यह (मोहिनी) उस पुरुष से लिपटी हुई है जो सुन्दरता एवं यौवन के नशे में मस्त हुआ है॥ २॥ माया धरती के स्वामियों, निर्धनों एवं भोग-विलासियों से लिपटी हुई है। यह सभाओं में गीत एवं राग श्रवण करने वालों से लिपटी हुई है। यह सेज, हार-श्रृंगार, महलों में व्याप्त हुई है। यह मोह के अन्धेरे में कामादिक पांचों दूत बनकर प्रभाव डाल रही है॥ ३॥ यह मोहिनी उसके भीतर व्याप्त हुई है जो अहंकार में फँसकर अपना कर्म करता है। गृहस्थ में भी यह हम पर प्रभाव डालती है और त्याग में भी प्रभावित करती है। हमारे चरित्र, कामकाज और जाति द्वारा मोहिनी हम पर आक्रमण करती है। सिवाय उनके जो परमेश्वर के प्रेम में अनुरक्त है, यह प्रत्येक पदार्थ को चिपकती है॥ ४॥ संतों के बन्धन प्रभु ने काट दिए हैं। मोहिनी उनको किस तरह चिपक सकती है? हे नानक! मोहिनी उनके निकट नहीं आती जिसको संतों की चरण-धूलि प्राप्त हुई है॥ ५॥ १९॥ ८८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार ॥ स्रवण सोए सुणि निंद वीचार ॥ रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥ मनु सोइआ माइआ बिसमादि ॥ १ ॥ इसु ग्रिह महि कोई जागतु रहै ॥ साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सहेली अपनै रस माती ॥ ग्रिह अपुने की खबरि न जाती ॥ मुसनहार पंच बटवारे ॥ सूने नगरि परे ठगहारे ॥ २ ॥ उन ते राखै बापु न माई ॥ उन ते राखै मीतु न भाई ॥ दरबि सिआणप ना ओइ रहते ॥ साधसंगि ओइ दुसट वसि होते ॥ ३ ॥ करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥ संतन धूरि सरब निधान ॥ साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥ नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥ ४ ॥ सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥ इह पूंजी साबतु धनु मालु ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २० ॥ ८९ ॥

पराई नारी के सौन्दर्य को कामवासना रूपी विकृत दृष्टि से देखने से नेत्र निद्रा में सोए हुए हैं। परनिन्दा के विचारों को सुनकर कान सोए हुए हैं। मीठे पदार्थों के स्वाद की तृष्णा-लालसा में जिह्वा सोई हुई है। मन माया की आश्चर्यजनक लीला को देखकर सोया हुआ है॥ १॥ शरीर रूपी घर में कोई विरला पुरुष ही जागता रहता है और वह अपनी पूँजी सुरक्षित पा लेता है॥ १॥ रहाउ॥ मन की सखियां पाँच ज्ञानेन्द्रियां अपने स्वाद में मस्त हैं। वह अपने घर की रक्षा करनी नहीं जानती। पांचों दुष्ट विकार अपहरणकर्त्ता एवं लुटेरे हैं। लुटेरे सुनसान नगर में आ जाते हैं॥ २॥ उनसे माता-पिता बचा नहीं सकते। मित्र एवं भाई भी उनसे रक्षा नहीं कर सकते। दौलत एवं चतुरता से वे नहीं रुकते। लेकिन सत्संग में वे दुष्ट वश में आ जाते हैं॥ ३॥ हे सारिंगपाणि प्रभु! मुझ पर कृपा कीजिए। मुझे संतों की चरण-धूलि प्रदान कीजिए चूंकि मेरे लिए यह चरण-धूलि ही सर्वनिधि है। सतिगुरु की संगति में नाम रूपी पूँजी सुरक्षित रहती है। नानक पारब्रह्म प्रभु के प्रेम में जागता है॥ ४॥ केवल वही जागता है जिस पर प्रभु दयालु है। ये पूँजी, पदार्थ और सम्पत्ति फिर बचे रहते हैं॥ १॥ रहाउ दूजा॥ २०॥ ८९॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जा कै वसि खान सुलतान ॥ जा कै वसि है सगल जहान ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥ १ ॥ कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥ काज तुमारे देइ निबाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ सरब बिआपित पूरन धनी ॥ जा की सोभा घटि घटि बनी ॥ २ ॥ जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥ जिसु सिमरत होत सूके हरे ॥ जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ ३ ॥ संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥ कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥ ४ ॥ २१ ॥ ९० ॥

हे प्राणी! जिस प्रभु के वश में सरदार और सुल्तान हैं। जिसके अधीन सारा संसार है। जिसके करने से सब कुछ हो रहा है, उससे बाहर कुछ भी नहीं॥ १॥ हे प्राणी! अपने सतिगुरु के पास विनती कर। वह तेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण कर देगा॥ १॥ रहाउ॥ उस प्रभु का दरबार सबसे ऊँचा है। उसका नाम उसके समस्त भक्तों का आधार है। जगत् का स्वामी प्रभु सबमें विद्यमान है। उसकी शोभा समस्त जीवों के हृदय में प्रकट है॥ २॥ जिस प्रभु का सिमरन करने से दुखों का पहाड़ नष्ट हो जाता है। जिसका सिमरन करने से यमदूत तुझे दुख नहीं देता। जिसकी आराधना करने से नीरस मन प्रफुल्लित हो जाता है। जिसकी आराधना करने से डूबते हुए पत्थर अर्थात् पापी जीव भी भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ३॥ संतों की सभा को मैं सदैव नमन करता हूँ। हरि-परमेश्वर का नाम संतजनों के प्राणों का आधार है। हे नानक! प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुन ली है। संतों की कृपा से मुझे ईश्वर के नाम में निवास मिल गया है॥ ४॥ २१॥ ९०॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ अम्रित बाणी गुरमुखि बोलै ॥ १ ॥ सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥ संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥ २ ॥ संत क्रिपा ते मिटे मोह भरम ॥ साध रेण मजन सभि धरम ॥ साध क्रिपाल दइआल गोविंदु ॥ साधा महि इह हमरी जिंदु ॥ ३ ॥ किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥ साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥ मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥ साधसंगि नानक नामु लइआ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ९१ ॥

सतिगुरु के दर्शनों से तृष्णा की अग्नि बुझ गई है। सतिगुरु को मिलने से अहंकार मिट गया है। सतिगुरु की संगति में मन डाँवाडोल नहीं होता। गुरु के माध्यम से प्राणी अमृत वाणी का उच्चारण करता है॥ १॥ जब से मेरा मन सत्य के प्रेम में मग्न हुआ है, तब से मुझे वह सत्य-प्रभु सारी दुनिया में निवास करता दिखाई देता है। गुरु के माध्यम से प्रभु को जानकर मेरा मन शीतल एवं शांत-स्थिर हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की कृपा से मनुष्य हरि का नाम स्मरण करता है। संतों के प्रसाद से मनुष्य हरि का यश कीर्त्तन करता है। संतों की दया से मनुष्य की समस्त पीड़ा दूर हो जाती है। संतों की कृपा से प्राणी (मोह-माया के) बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ २॥ संतों की कृपा से मोह एवं भ्रम मिट गए हैं। संतों की चरण-धूलि में स्नान करने से सभी धर्म कर्मों का फल मिल जाता है। जब संत कृपालु हैं तो गोविन्द दयालु हो जाता है। मेरे यह प्राण संतों में निवास करते हैं॥ ३॥ यदि मैं कृपा के भण्डार दयालु परमात्मा का चिन्तन करूँ, तो ही मैं संतों की संगति में बैठ सकता हूँ। हे नानक ! जब प्रभु ने मुझ गुणहीन पर दया की तो मैंने संतों की सभा में नाम-सिमरन किया है॥ ४॥ २२॥ ९१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ साधसंगि जपिओ भगवंतु ॥ केवल नामु दीओ गुरि मंतु ॥ तजि अभिमान भए निरवैर ॥ आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥ १ ॥ अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥ जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहज सूख आनंद निधान ॥ राखनहार रखि लेइ निदान ॥ दूख दरद बिनसे भै भरम ॥ आवण जाण रखे करि करम ॥ २ ॥ पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ सदा संगि ता कउ मन जापि ॥ संत प्रसादि भइओ परगासु ॥ पूरि रहे एकै गुणतासु ॥ ३ ॥ कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥ गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥ कहु नानक जा कउ होहु क्रिपाल ॥ तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥ ४ ॥ २३ ॥ ९२ ॥

मैं संतों की सभा में मिलकर भगवान का सिमरन करता हूँ। गुरु ने मुझे केवल नाम का ही मंत्र प्रदान किया है। अपना अहंकार त्याग कर मैं निर्वेर हो गया हूँ। दिन के आठ प्रहर गुरु के चरणों की पूजा करो॥ १॥ जब से मैंने हरि का यश अपने कानों से सुना है, मेरी पराई दुष्ट बुद्धि नष्ट हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ रक्षक प्रभु जो सहज सुख एवं आनन्द का भण्डार है, अन्ततः मेरी रक्षा करेगा। मेरे दुख-दर्द एवं भय-भ्रम नाश हो गए हैं। प्रभु ने कृपा करके जन्म-मृत्यु के आवागमन से मेरी रक्षा की है॥ २॥ प्रभु स्वयं ही सब कुछ देखता, बोलता एवं सुनता है। हे मेरे मन! उस प्रभु का सदैव ही सिमरन कर, जो सदैव तेरे साथ रहता है। संतों की कृपा से मेरे मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया है। गुणों का भण्डार एक ईश्वर सर्वत्र व्यापक हो रहा है॥ ३॥ जो व्यक्ति सदैव ही गोविन्द की महिमा-स्तुति करते रहते हैं, मुख से उसकी महिमा करते एवं सुनते रहते हैं, वे सभी पवित्र-पावन हो जाते हैं। हे नानक ! जिस पर ईश्वर कृपालु हो जाता है, उस प्राणी की नाम-साधना सम्पूर्ण हो जाती है॥ ४॥ २३॥ ९२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥ मन महि लागै साचु धिआनु ॥ मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥ ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥ १ ॥ सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥ करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु होइ दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ सरब निधान गुरू ते पावै ॥ आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥ साध कै संगि पारब्रहमु पछाणा ॥ २ ॥ जन ऊपरि प्रभ भए दइआल ॥ जन की टेक एक गोपाल ॥ एका लिव एको मनि भाउ ॥ सरब निधान जन कै हरि नाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम सिउ लागी प्रीति ॥ निरमल करणी साची रीति ॥ गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥ नानक का प्रभु अपर अपारा ॥ ४ ॥ २४ ॥ ९३ ॥

सतिगुरु मोह–माया के बन्धन तोड़कर मनुष्य से राम का सिमरन करवाता है। उस व्यक्ति के मन में सत्य–परमेश्वर का ध्यान लग जाता है। उसके क्लेश मिट जाते हैं और वह मनुष्य सुखपूर्वक रहता है। ऐसे दाता को ही सतिगुरु कहा जाता है॥ १॥ केवल वही सुखदाता है, जो प्राणी से प्रभु के नाम का जाप करवाता है और कृपा करके उसके साथ मिला देता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति पर परमात्मा दयालु हो जाता है, उसको वह गुरु से मिला देता है। समस्त भण्डार सर्वनिधि वह गुरु द्वारा प्राप्त कर लेता है। जो व्यक्ति अपना अहंकार त्याग देता है, उसका जन्म–मरण का चक्र मिट जाता है। वह संतों की संगति करके पारब्रह्म को पहचान लेता है॥ २॥ अपने सेवक पर प्रभु दयालु हो गया है। उस सेवक का सहारा एक गोपाल ही है। वह सेवक एक परमेश्वर में ही अपनी सुरति लगाता है और उसके मन में एक प्रभु का ही प्रेम होता है। सेवक के लिए हरि का नाम ही तमाम भण्डार है॥ ३॥ जो पारब्रह्म से प्रेम करता है, उसके कर्म पवित्र और जीवन–आचरण सत्य है। पूर्ण गुरु ने अज्ञानता का अंधकार मिटा दिया है। नानक का प्रभु असीम एवं अनन्त है॥ ४॥ २४॥ ९३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥ जा कै करमि परापति होइ ॥ दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥ अम्रित नामु रिदै हरि जापै ॥ १ ॥ पारब्रहमु परमेसुरु धिआईऐ ॥ गुर पूरे ते इह मति पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण करावनहार दइआल ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ अगम अगोचर सदा बेअंता ॥ सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥ २ ॥ जा की सेवा सरब निधानु ॥ प्रभ की पूजा पाईऐ मानु ॥ जा की टहल न बिरथी जाइ ॥ सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥ सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई ॥ ४ ॥ २५ ॥ ९४ ॥

जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर निवास करता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है। जिसकी किस्मत में लिखा होता है, वह ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। दुख, रोग एवं भय उसको तनिक मात्र भी प्रभावित नहीं करते, जो अपने हृदय में ईश्वर के अमृत नाम का सिमरन करते रहते हैं॥ १॥ हमें पारब्रह्म–परमेश्वर का ही ध्यान करना चाहिए। पूर्ण गुरु से यह सूझ प्राप्त होती है॥ १॥ रहाउ॥ दयावान प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने वाला एवं जीवों से कराने वाला है। वह सृष्टि के समस्त जीव–जन्तुओं की पालना करता है। प्रभु सदैव ही अगम्य, अगोचर एवं अनन्त है। हे मेरे मन! पूर्ण गुरु के उपदेश से प्रभु का सिमरन कर॥ २॥ प्रभु की सेवा करने से तमाम भण्डार प्राप्त हो जाते हैं। प्रभु की पूजा करने से मान–सम्मान प्राप्त होता है। प्रभु की सेवा व्यर्थ नहीं जाती, अतः नित्य ही उसका गुणानुवाद करते रहो॥ ३॥ अन्तर्यामी प्रभु मुझ पर कृपा कीजिए। जगत् का स्वामी, अलक्ष्य परमेश्वर सुखों का खजाना है। समस्त जीव–जन्तु तेरी शरण में हैं। हे नानक! मुझे प्रभु का नाम मिल जाए चूंकि उसका नाम ही मेरे लिए बड़ाई है॥ ४॥ २५॥ ९४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥ सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ प्रभ चिति आए सभु दुखु जाइ ॥ भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥ १ ॥ बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥ जा की जोति जीअ परगास ॥ जा की बखस न मेटै कोइ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइ ॥ २ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥ अनिक तीरथ मजनु इसनानु ॥ पारब्रहम की सरणी पाहि ॥ कोटि कलंक खिन महि मिटि जाहि ॥ ३ ॥ बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ गुरि पूरै राखे दे हाथ ॥ नानक पारब्रहम समराथ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९५ ॥

जिस भगवान के वश में जीवों की जीवन-युक्ति है, उसका ही सिमरन करो। वह अनाथों का नाथ है। यदि मनुष्य भगवान को स्मरण करता रहे तो उसके समस्त दुख नष्ट हो जाते हैं। हरि के नाम सिमरन से समस्त भय नाश हो जाते हैं॥ १॥ हे प्राणी ! तू ईश्वर के अलावा किसी दूसरे का भय क्यों अनुभव करता है ? यदि तू प्रभु को विस्मृत कर देता है तो फिर तू अपने आप को सुख में क्यों समझते हो॥ १॥ रहाउ॥ जिसने अनेकों धरती-आकाश कायम किए हैं, जिसकी ज्योति का समस्त जीवों में प्रकाश है, जिसकी दया को कोई भी मिटा नहीं सकता। उस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य निर्भीक हो जाता है॥ २॥ दिन के आठ प्रहर प्रभु के नाम का सिमरन करते रहो। चूंकि प्रभु का नाम-सिमरन ही अनेकों तीर्थों का स्नान है। पारब्रह्म की शरण में आने से मनुष्य के करोड़ों ही कलंक एक क्षण में मिट जाते हैं॥ ३॥ वह बेपरवाह पूर्ण बादशाह है। ईश्वर के सेवक की उसमें सच्ची आस्था है। अपना हाथ देकर पूर्ण गुरु जी उसकी रक्षा करते हैं। हे नानक ! पारब्रह्म प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है॥ ४॥ २६॥ ९५॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर परसादि नामि मनु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ अंम्रित गुण उचरै प्रभ बाणी ॥ पूरे गुर की सुमति पराणी ॥ १ ॥ प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए ॥ घरि बाहरि सुख सहज सबाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥ बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥ २ ॥ मंत्रु तंतु अउखधु पुनहचारु ॥ हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥ साचा धनु पाइओ हरि रंगि ॥ दुतरु तरे साध कै संगि ॥ ३ ॥ सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥ हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ॥ जिसहि परापति तिसु गुरु देइ ॥ नानक बिरथा कोइ न हेइ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ९६ ॥

गुरु की कृपा से मेरा मन प्रभु के नाम में लग गया है। यह मन जन्म-जन्मांतरों से अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ था परन्तु अब यह जाग गया है अर्थात् इसे ज्ञान हो गया है। वही प्राणी प्रभु की वाणी द्वारा उसके अमृतमयी गुणों का उच्चारण करता है, जिसे पूर्ण गुरु की सुमति प्राप्त हो जाती है॥ १॥ प्रभु का सिमरन करने से मुझे सर्वसुख प्राप्त हो गए हैं। घर के भीतर एवं बाहर मुझे सहज ही सर्वसुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने उस प्रभु को पहचान लिया है, जिसने मुझे उत्पन्न किया है। प्रभु ने कृपा करके मुझे अपने साथ मिला लिया है। भुजा से पकड़कर प्रभु ने मुझे अपना बना लिया है। हरि की सुन्दर हरि-कथा एवं नाम का मैं हमेशा जाप जपता हूँ॥ २॥ मन्त्र-तन्त्र, औषधि, प्रायश्चित कर्म समूह प्रभु-परमेश्वर के नाम में विद्यमान है, जो मेरे मन एवं प्राणों का आधार है। मैंने प्रभु के प्रेम की सच्ची दौलत प्राप्त की है। साधु-संतों की संगत से ही विषम संसार सागर पार किया जा सकता है॥ ३॥ हे संतजनो ! सज्जनों के परिवार सहित सुख में विराजो। मैंने हरिनाम का धन कमाया है जो गणना से बाहर है। यह नाम-धन उसे ही मिलता है, जिसे गुरु जी देते हैं। हे नानक ! गुरु के द्वार से कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता॥ ४॥ २७॥ ९६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हसत पुनीत होहि ततकाल ॥ बिनसि जाहि माइआ जंजाल ॥ रसना रमहु राम गुण नीत ॥ सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ राम नाम हरि अंम्रित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥ सिमरत राम नाही जम मार ॥ धरम राइ के दूत न जोहै ॥ माइआ मगन न कछूऐ मोहै ॥ २ ॥ उधरहि आपि तरै संसारु ॥ राम नाम जपि एकंकारु ॥ आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥ राम नाम हिरदै परवेस ॥ ३ ॥ जा कै माथै एहु निधानु ॥ सोई पुरखु जपै भगवानु ॥ आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥ कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ९७ ॥

हे भाई! यदि जिह्वा के साथ सदैव ही राम का यशोगान किया जाए तो हाथ तत्काल ही पवित्र हो जाते हैं एवं माया के जंजाल नाश हो जाते हैं। हे मेरे भाई एवं मित्र! इस तरह तू सुख-शांति प्राप्त कर॥ १॥ अपनी कलम एवं दवात से तू कागज पर राम का नाम एवं हरि की अमृतमयी वाणी लिख॥ १॥ रहाउ॥ इस कर्म से तेरे पाप धुल जाएँगे। राम का भजन करने से यमदूत तुझे दण्ड नहीं देगा। धर्मराज के दूत तेरी ओर नहीं देख सकेंगे। मोहिनी का उन्माद तुझे तनिक मात्र भी मुग्ध नहीं करेगा॥ २॥ यदि तू राम का नाम सिमरन और एक ओंकार का स्मरण करता रहेगा तो तेरा स्वयं उद्धार हो जाएगा और तेरे द्वारा संसार का भी कल्याण हो जाएगा। नाम-स्मरण की स्वयं साधना कर और दूसरों को उपदेश दे। राम के नाम को अपने हृदय में विराजमान कर॥ ३॥ जिसके मस्तक पर उसकी किस्मत में नाम-भण्डार की उपलब्धि का लेख लिखा हुआ है, वही पुरुष भगवान की आराधना करता है। हे नानक! मैं उस व्यक्ति पर बलिहारी जाता हूँ, जो आठ प्रहर हरि- परमेश्वर की महिमा-स्तुति करता रहता है॥ ४॥ २८॥ ९७॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जो पराइओ सोई अपना ॥ जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥ १ ॥ कहहु गुसाई मिलीऐ केह ॥ जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ झूठु बात सा सचु करि जाती ॥ सति होवनु मनि लगै न राती ॥ २ ॥ बावै मारगु टेढा चलना ॥ सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥ ३ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥ जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥ ४ ॥ २९ ॥ ९८ ॥

जो धन पराया हो जाना है, उसे मनुष्य अपना समझता है। जो कुछ त्याग जाना है, उससे उसका मन लीन रहता है॥ १॥ बताओ, गुसाई-प्रभु कैसे मिल सकता है? जो कुछ वर्जित किया हुआ है, उससे उसका स्नेह है॥ १॥ रहाउ॥ झूठी बात को वह सत्य करके जानता है। जो सदा सत्य है, क्षण भर भी हृदय उससे जुड़ा हुआ नहीं है॥ २॥ वह वाम मार्ग टेढा होकर चलता है। जीवन के सन्मार्ग को त्याग कर जीवन के ताने-बाने को उल्टा बुन रहा है॥ ३॥ लोक-परलोक दोनों कोनों का स्वामी प्रभु स्वयं ही है। हे नानक! जिसको परमात्मा अपने साथ मिला लेता है, वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ २९॥ ९८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कलिजुग महि मिलि आए संजोग ॥ जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥ १ ॥ जलै न पाईऐ राम सनेही ॥ किरति संजोगि सती उठि होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखा देखी मनहठि जलि जाईऐ ॥ प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईऐ ॥ २ ॥ सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै ॥ तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ ॥ धंनु सती दरगह परवानिआ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ९९ ॥

कलियुग में संयोगवश पति–पत्नी पूर्व संबंधों के कारण इहलोक में आकर मिलते है। जब तक परमात्मा का हुक्म होता है, तब तक वह भोग भोगते हैं॥ १॥ जो स्त्री अपने मृत पति के साथ जल कर मर जाती है, उसे प्रियतम राम नहीं मिलता। वह अपने किए हुए कर्मों के संयोग कारण उठकर अपने पति के साथ जल कर सती हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ देखादेखी और मन के हठ द्वारा जल जाती है। वह मरणोपरांत अपने मृत पति को भी नहीं मिलती और अनेक योनियों में भटकती रहती है॥ २॥ जिसके पास शील एवं संयम है और पति–परमेश्वर की आज्ञा मानती है, वह जीव–स्त्री यमदूतों से कष्ट नहीं प्राप्त करती॥ ३॥ हे नानक! जो जीव–स्त्री परमेश्वर को अपने पति के रूप में जानती है, वह जीव–स्त्री धन्य है और वह ईश्वर के दरबार में स्वीकार हो जाती है॥ ४॥ ३०॥ ६६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥ हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥ १ ॥ रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ भरे भंडार अखूट अतोल ॥ २ ॥ खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ तोटि न आवै वधदो जाई ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥ सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ १०० ॥

प्रभु के सत्य–नाम से मैं धनवान एवं भाग्यशाली बन गया हूँ, मैं सहज–स्वभाव ही हरि–परमेश्वर की गुण–स्तुति करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जब मैंने अपने पिता और दादा का भण्डार अर्थात् गुरुओं की वाणी का भण्डार खोल कर देखा तो मेरे मन में आनंद का भण्डार भर गया॥ १॥ अक्षय एवं अतुल भण्डार प्रभु की गुणस्तुति के अमूल्य रत्न एवं जवाहरों से भरे हुए हैं॥ २॥ हे भाई! हम सभी मिलकर इन भण्डारों को सेवन और इस्तेमाल करते हैं। इस भण्डार में कोई कमी नहीं और प्रतिदिन वह अधिकाधिक बढ़ता जाता है॥ ३॥ हे नानक! जिस व्यक्ति के मस्तक पर विधाता ने ऐसी भाग्यरेखाएँ विद्यमान की हैं, वह इस (गुणस्तुति के) भण्डार में भागीदार बन जाता है॥ ४॥ ३१॥ १००॥

गउड़ी महला ५ ॥ डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥ डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥ १ ॥ सतिगुर अपुने कउ बलिहारै ॥ छोडि न जाई सरपर तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥ सदा अनंदु जा हरि गुण गामु ॥ २ ॥ बुरा भला कोई न कहीजै ॥ छोडि मानु हरि चरन गहीजै ॥ ३ ॥ कहु नानक गुर मंतु चितारि ॥ सुखु पावहि साचै दरबारि ॥ ४ ॥ ३२ ॥ १०१ ॥

जब मैं प्रभु को दूर समझता था तो मैं डर–डर कर मरता रहता था। उस प्रभु को सर्वव्यापक देखकर मेरा भय दूर हो गया है॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ। मुझे छोड़कर वह कहीं नहीं जाता और निश्चित ही मुझे भवसागर से पार कर देगा॥ १॥ रहाउ॥ जब प्राणी ईश्वर के नाम को भुला देता है तो उसे दुख, रोग एवं संताप लग जाते हैं। लेकिन जब वह प्रभु का यश गायन करता है, उसको सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ हमें किसी को बुरा–भला नहीं कहना चाहिए और अपना अहंकार त्याग कर भगवान के चरण पकड़ लेने चाहिए॥ ३॥ नानक का कथन है कि (हे प्राणी!) गुरु के मन्त्र (उपदेश) को स्मरण करो। सत्य के दरबार में बड़ा सुख प्राप्त होगा॥ ४॥ ३२॥ १०१॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा का मीतु साजनु है समीआ ॥ तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥ १ ॥ जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥ सो अन रस नाही लपटाइओ ॥ २ ॥ जा का कहिआ दरगह चलै ॥ सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥ ३ ॥ जा का सभु किछु ता का होइ ॥ नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥ ४॥ ३३॥ १०२॥

हे भाई ! जिसका मित्र एवं सज्जन सर्वव्यापक प्रभु है। बताओ–उस पुरुष को किस पदार्थ की कमी हो सकती है॥ १॥ जिसका प्रेम गोविन्द से हो जाता है, उसके दुख–दर्द एवं भ्रम भाग जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति को हरि–रस का आनंद प्राप्त हो जाता है, वह हरि–रस के सिवाय अन्य रसों से नहीं लिपटता॥ २॥ जिसका बोला हुआ शब्द प्रभु के दरबार में माना जाता है, वह किसकी चिन्ता करता है (अर्थात् उसे कोई आवश्यकता नहीं रहती)॥ ३॥ हे नानक ! जिस ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है, जीव–जन्तु अथवा समूचा जगत् उसका है, उस ईश्वर का भक्त जो मनुष्य बनता है, उसे सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ४॥ ३३॥ १०२॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥ ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥ १ ॥ सहज अनंद हरि साधू माहि ॥ आगिआकारी हरि हरि राइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥ ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥ २ ॥ जा कै बिनसिओ मन ते भरमा ॥ ता कै कछू नाही डरु जमा ॥ ३ ॥ जा कै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥ कहु नानक ता कै सगल निधाना ॥ ४ ॥ ३४ ॥ १०३ ॥

जिस व्यक्ति को दुःख एवं सुख एक समान प्रतीत होते हैं, उसे कोई चिन्ता कैसे हो सकती है ?॥१॥ जिस भगवान के साधू के मन में सहज आनंद उत्पन्न हो जाता है, वह सदैव प्रभु–परमेश्वर का आज्ञाकारी बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में अचिंत परमेश्वर आकर निवास कर जाता है, उसको चिन्ता कदापि नहीं लगती॥ २॥ जिसके हृदय से भ्रम निवृत्त हो गया है, उसको मृत्यु का लेशमात्र भी भय नहीं रहता॥ ३॥ जिसके हृदय में गुरदेव ने प्रभु–नाम प्रदान किया है। हे नानक ! वह समस्त निधियों का स्वामी बन जाता है॥ ४॥ ३४॥ १०३॥

गउड़ी महला ५ ॥ अगम रूप का मन महि थाना ॥ गुर प्रसादि किनै विरलै जाना ॥ १ ॥ सहज कथा के अंम्रित कुंटा ॥ जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनहत बाणी थानु निराला ॥ ता की धुनि मोहे गोपाला ॥ २ ॥ तह सहज अखारे अनेक अनंता ॥ पारब्रहम के संगी संता ॥ ३ ॥ हरख अनंत सोग नही बीआ ॥ सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ १०४ ॥

अगम्य स्वरूप परमेश्वर का मनुष्य के मन में निवास है। गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही इस तथ्य को समझता है॥ १॥ प्रभु की सहज कथा के अमृत–कुण्ड हैं। जिसकी इनको प्राप्ति हो जाती है, वह अमृत पान करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ बैकुण्ठ में एक अद्भुत स्थान है, जहाँ हर पल अनहद वाणी की मधुर ध्वनि गूंजती रहती है। इस मधुर ध्वनि को सुनकर गोपाल भी मुग्ध हो जाता है॥ २॥ वहाँ विभिन्न प्रकार के आनंददायक एवं अनन्त सुख के निवास स्थान हैं। वहाँ पारब्रह्म प्रभु के साथी, साधु निवास करते हैं॥ ३॥ वहाँ अनन्त हर्ष है और दुख अथवा द्वैत भाव नहीं। वह घर गुरु (ने) नानक को प्रदान किया है॥ ४॥ ३५॥ १०४॥

गउड़ी मः ५ ॥ कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ कवन जोग काइआ ले साधउ ॥ १ ॥ कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥ कवन बोल पारब्रहम रीझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन सु पूजा तेरी करउ ॥ कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥ २ ॥ कवन तपु जितु तपीआ होइ ॥ कवनु सु नामु हउमै मलु खोइ ॥ ३ ॥ गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥ जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥ ४ ॥ तिस ही गुनु तिन ही प्रभु जाता ॥ जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ३६ ॥ १०५ ॥

हे प्रभु ! तेरे तो अनन्त रूप हैं। इसलिए तेरा वह कौन–सा रूप है, जिसकी मैं आराधना करूँ। हे ईश्वर ! योग का वह कौन–सा साधन है जिससे मैं अपने तन को वश में करूँ॥ १॥ हे पारब्रह्म–प्रभु ! वह कौन–सी गुणस्तुति है, जिससे मैं तुझे प्रसन्न कर दूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे नाथ ! वह कौन–सी पूजा–अर्चना है, जो मैं तेरी करूँ। हे दीनदयालु ! वह कौन–सी विधि है, जिससे मैं भयानक सागर से पार हो जाऊँ ?॥ २॥ हे प्रभु ! वह कौन–सी तपस्या है, जिससे मैं तपस्वी हो जाऊँ ? हे परमात्मा ! वह कौन–सा नाम है, जिस द्वारा अहंकार की मैल दूर हो जाती है॥ ३॥ हे नानक ! दयालु सतिगुरु अपनी कृपा करके जिस व्यक्ति को मिल जाते हैं, उसकी तमाम साधना, गुणानुवाद, पूजा, ज्ञान एवं ध्यान सफल हो जाते है॥ ४॥ केवल वही गुण (फल) प्राप्त करता है और केवल वही प्रभु को समझता है, जिसकी भक्ति सुखदाता स्वीकार कर लेता है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ ३६॥ १०५॥

गउड़ी महला ५ ॥ आपन तनु नही जा को गरबा ॥ राज मिलख नही आपन दरबा ॥ १ ॥ आपन नही का कउ लपटाइओ ॥ आपन नामु सतिगुर ते पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुत बनिता आपन नही भाई ॥ इसट मीत आप बापु न माई ॥ २ ॥ सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥ हैवर गैवर आपन नही काम ॥ ३ ॥ कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥ तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ १०६ ॥

हे प्राणी ! यह तन जिसका तुझे अभिमान है, यह तेरा अपना नहीं है। शासन, सम्पति, धन (सदा के लिए) तेरे नहीं है॥ १॥ हे प्राणी ! जब यह तेरे नहीं, तो फिर उनसे क्यों मोह करते हो ? केवल नाम ही तेरा है और वह तुझे सतिगुरु से प्राप्त होगा॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! पुत्र, पत्नी एवं भाई तेरे नहीं। इष्ट मित्र, पिता एवं माता तेरे अपने नहीं हैं॥ २॥ सोना, चांदी एवं धन–दौलत भी तेरे नहीं हैं। कुशल घोड़े एवं सुन्दर हाथी तेरे किसी काम नहीं॥ ३॥ हे नानक ! जिसको गुरु जी क्षमा कर देते हैं, उसको वह प्रभु से मिला देते हैं। जिसका प्रभु–परमेश्वर है उसके पास सब कुछ है॥ ४॥ ॥ ३७॥ १०६॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥ ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥ १ ॥ सतिगुर अपुने कउ कुरबानी ॥ आतम चीनि परम रंग मानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥ अहंबुधि तिनि सगल तिआगी ॥ २ ॥ गुर का सबदु लगो मनि मीठा ॥ पारब्रहमु ता ते मोहि डीठा ॥ ३ ॥ गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥ जीअ प्राण नानक गुरु आधारु ॥ ४ ॥ ३८ ॥ १०७ ॥

गुरु के चरण मेरे मस्तक पर विद्यमान हैं। इससे मेरे समस्त दुःख दूर हो गए हैं॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु पर कुर्बान जाता हूँ। जिनके द्वारा मैंने अपने आत्मिक जीवन को समझ लिया है और सर्वोपरि आनन्द भोगता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की चरण–धूलि मेरे चेहरे पर लग गई है और उसने मेरी अहंबुद्धि सारी निवृत्त कर दी है॥ २॥ गुरु का शब्द मेरे मन को मीठा लग रहा है। पारब्रह्म प्रभु का इस कारण मैं दर्शन कर रहा हूँ॥ ३॥ गुरु ही सुखदाता और गुरु ही कर्त्तार हैं। हे नानक ! गुरु मेरी आत्मा एवं प्राणों का आधार है॥ ४॥ ३८॥ १०७॥

गउड़ी महला ५ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ आहि ॥ जा कै ऊणा कछहू नाहि ॥ १ ॥ हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥ प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ सेवि ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥ २ ॥ तिसु ऊपरि मन करि तूं आसा ॥ आदि जुगादि जा का भरवासा ॥ ३ ॥ जा की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १०८ ॥

हे मेरे मन ! तू उस प्रभु के मिलन की लालसा कर, जिसके घर में किसी पदार्थ की कोई कमी नहीं है॥ १॥ हे मेरे मन ! तू उस प्रियतम हरि को अपना मित्र बना। तू सदैव ही प्रभु को अपने हृदय में बसा कर रख, जो तेरे प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन ! तू उसकी सेवा कर, जो आदिपुरुष एवं अपरंपार देव है॥ २॥ हे मेरे मन ! तू उस पर अपनी आशा रख, जो आदि एवं युगों के आरम्भ से प्राणियों का सहारा है॥ ३॥ जिसके प्रेम से हमेशा सुख-शांति प्राप्त होती है, हे नानक ! गुरु से मिलकर वह उसकी महिमा ही गायन करता है॥ ४॥ ३६॥ १०८॥

गउड़ी महला ५ ॥ मीतु करै सोई हम माना ॥ मीत के करतब कुसल समाना ॥ १ ॥ एका टेक मेरै मनि चीत ॥ जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीतु हमारा वेपरवाहा ॥ गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥ २ ॥ मीतु हमारा अंतरजामी ॥ समरथ पुरखु पारब्रहमु सुआमी ॥ ३ ॥ हम दासे तुम ठाकुर मेरे ॥ मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥ ४ ॥ ४० ॥ १०६ ॥

जो कुछ मेरा मित्र (प्रभु) करता है, उसको मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ। मेरे मित्र प्रभु के कार्य मुझे सुख के तुल्य प्रतीत होते हैं॥ १॥ मेरे मन एवं चित्त में एक ही प्रभु का सहारा है, जिसकी यह सब रचना है, वही मेरा मित्र-प्रभु है॥१॥ रहाउ॥ मेरा मित्र प्रभु बेपरवाह है। गुरु की दया से मेरा उससे प्रेम हो गया है॥ २॥ मेरा मित्र प्रभु अन्तर्यामी है। पारब्रह्म पुरुष रूप एवं सारे जगत् का स्वामी है और सब कुछ करने में समर्थ है॥ ३॥ हे प्रभु ! मैं तेरा दास हूँ और तू मेरा ठाकुर है। नानक का कथन है कि हे दयालु परमात्मा ! मुझे प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान तेरा ही दिया हुआ है॥४॥ ४०॥ १०६॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ तुम भए समरथ अंगा ॥ ता कउ कछु नाही कालंगा ॥ १ ॥ माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥ ता कउ कछु नाही संसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै हिरदै ठाकुरु होइ ॥ ता कउ सहसा नाही कोइ ॥ २ ॥ जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥ ता कै निकटि न आवै पीर ॥ ३ ॥ कहु नानक मै सो गुरु पाइआ ॥ पारब्रहम पूरन देखाइआ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ११० ॥

हे सर्वशक्तिमान स्वामी ! तू जिस व्यक्ति की सहायता करता है, उसे कोई भी कलंक नहीं लग सकता॥ १॥ हे माधो ! जिसकी आशा तुझ में है, उसे संसार की तृष्णा लेशमात्र भी नहीं रहती॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में जगत् का ठाकुर निवास करता है, उसको कोई भी दुःख-दर्द स्पर्श नहीं कर सकता॥ २॥ हे सर्वेश्वर प्रभु ! जिसे तू अपना धैर्य प्रदान करता है, उसके निकट कोई भी पीड़ा नहीं आती॥ ३॥ हे नानक ! मुझे वह गुरु प्राप्त हुआ है, जिसने मुझे पूर्ण पारब्रह्म प्रभु के दर्शन करवा दिए हैं॥ ४॥ ४१॥ ११०॥

गउड़ी महला ५ ॥ दुलभ देह पाई वडभागी ॥ नामु न जपहि ते आतम घाती ॥ १ ॥ मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥ नाम बिहून जीवन कउन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥ कवन अरथ मिरतक सीगार ॥ २ ॥ जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥ पसु पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ १११ ॥

यह दुर्लभ मानव-देहि सौभाग्य से प्राप्त हुई है। जो ईश्वर का नाम-स्मरण नहीं करते, वे आत्मघाती हैं॥ १॥ जो व्यक्ति राम को विस्मृत करते हैं, वह मृत्यु को क्यों नहीं प्राप्त होते ? नाम के बिना यह जीवन किस काम का है॥ १॥ रहाउ॥ खाना-पीना, खेलना-हँसना इत्यादि साधन आडम्बर हैं, क्योंकि यह मृतक को आभूषणों से सज्जित करने के समान हैं॥ २॥ जो व्यक्ति परमानंद प्रभु का यश नहीं सुनता, वह पशु-पक्षियों, रेंगने वाले जीवों की योनियों से भी बुरा है॥ ३॥ हे नानक ! गुरु ने मेरे भीतर नाम मंत्र सुदृढ़ कर दिया है। केवल नाम ही मेरे हृदय में लीन रहता है॥ ४॥ ४२॥ १११॥

गउड़ी महला ५ ॥ का की माई का को बाप ॥ नाम धारीक झूठे सभि साक ॥ १ ॥ काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥ मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एका माटी एका जोति ॥ एको पवनु कहा कउनु रोति ॥ २ ॥ मेरा मेरा करि बिललाही ॥ मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥ मुकतु भए बिनसे भ्रम थाट ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ११२ ॥

न कोई किसी की माता है और न कोई किसी का पिता है। ये सारे रिश्ते नाममात्र एवं झूठे हैं॥ १॥ हे मूर्ख! तू किसके लिए दुहाई दे रहा है? भगवान के हुक्म एवं संयोगवश तू इस दुनिया में आया है॥ १॥ रहाउ॥ समस्त प्राणियों में एक ही मिट्टी है और एक ही ब्रह्म-ज्योति है। सब में एक ही प्राण हैं, जिसके द्वारा जीव श्वास लेते एवं जीवित रहते हैं। अतः किसी के दुनिया से चले जाने से हम क्यों विलाप करें?॥ २॥ लोग 'मेरा मेरा' कहकर विलाप करते हैं। परन्तु यह आत्मा नाशवंत नहीं॥ ३॥ हे नानक! गुरु ने जिनके कपाट खोल दिए हैं, वे मुक्त हो गए हैं और उनका भ्रम का प्रसार नाश हो गया है॥ ४॥ ४३॥ ११२॥

गउड़ी महला ५ ॥ वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥ १ ॥ कउन वडा माइआ वडिआई ॥ सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥ छोडि चलै त्रिसना नही बुझै ॥ २ ॥ कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥ ३ ॥ ४४ ॥ ११३ ॥

जितने भी बड़े-बड़े (धनवान) लोग दिखाई देते हैं, उनको चिन्ता का रोग लगा रहता है॥ १॥ माया की प्रशंसा के कारण कोई भी मनुष्य बड़ा नहीं बनता? वही महान है जिसने राम से वृत्ति लगाई है॥ १॥ रहाउ॥ भूमि का स्वामी मनुष्य भूमि के लिए दूसरों से लड़ाई-झगडा करता है। लेकिन जिसकी खातिर वह लड़ता है, वह सारी भूमि यहीं छोड़कर चला जाता है परन्तु उसकी तृष्णा नहीं मिटती॥ २॥ हे नानक! वास्तविक बात जिस पर मैंने विचार किया है, वह यह है कि भगवान के भजन के बिना किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती॥ ३॥ ४४॥ ११३॥

गउड़ी महला ५ ॥ पूरा मारगु पूरा इसनानु ॥ सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥ १ ॥ पूरी रही जा पूरै राखी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥ पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥ २ ॥ हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥ पूरी सोभा पूरा लोकीक ॥ ३ ॥ करणहारु सद वसै हदूरा ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ११४ ॥

जिस व्यक्ति के हृदय में नाम का निवास हो जाता है, उसका सब कुछ पूर्ण हो जाता है। प्रभु लब्धि हेतु नाम-मार्ग पूर्ण सही है और नाम-सिमरन ही पूर्ण तीर्थ-स्नान है॥ १॥ जब सेवक ने अपने स्वामी पारब्रह्म की शरण ली तो उस पूर्ण ब्रह्म ने उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा रख ली॥ १॥ रहाउ॥ सेवक को पूर्ण सुख एवं पूर्ण संतोष प्राप्त हो गया है। नाम-सिमरन ही पूर्ण तपस्या और पूर्ण राज योग है॥२॥ भगवान के मार्ग पर चलने वाला पापी भी पवित्र हो जाता है और वह लोक-परलोक में पूर्ण शोभा प्राप्त करता है तथा लोगों से उसका व्यवहार भी अच्छा हो जाता है॥३॥ सृजनहार प्रभु सदैव उसके निकट वास करता है। हे नानक! मेरा सतिगुरु पूर्ण है॥ ४॥ ४५॥ ११४॥

गउड़ी महला ५ ॥ संत की धूरि मिटे अघ कोट ॥ संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥ १ ॥ संत का दरसु पूरन इसनानु ॥ संत क्रिपा ते जपीऐ नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत कै संगि मिटिआ अहंकारु ॥ द्रिसटि आवै सभु एकंकारु ॥ २ ॥ संत सुप्रसंन आए वसि पंचा ॥ अंम्रितु नामु रिदै लै संचा ॥ ३ ॥ कहु नानक जा का पूरा करम ॥ तिसु भेटे साधू के चरन ॥ ४ ॥ ४६ ॥ ११५ ॥

संतों की चरण–धूलि से करोड़ों ही पाप मिट जाते हैं। संतों की कृपा से जन्म–मरण से मुक्ति हो जाती है॥ १॥ संतों के दर्शन ही पूर्ण तीर्थ स्नान है। संतों की कृपा से हरिनाम का जाप किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगति से मनुष्य का अहंत्व मिट जाता है और फिर सर्वत्र एक ईश्वर ही दृष्टिगोचर होता है॥ २॥ संतों की सुप्रसन्नता से पाँच विकार–(काम, क्रोध, लोभ, मोह–अहंकार) वश में आ जाते हैं। मनुष्य अपने हृदय को अमृत नाम से संचित कर लेता है॥ ३॥ हे नानक! जिसकी किस्मत पूर्ण है, वही संतों के चरण स्पर्श करता है॥ ४॥ ४६॥ ११५॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि गुण जपत कमलु परगासै ॥ हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥ १ ॥ सा मति पूरी जितु हरि गुण गावै ॥ वडै भागि साधू संगु पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि पाईऐ निधि नामा ॥ साधसंगि पूरन सभि कामा ॥ २ ॥ हरि की भगति जनमु परवाणु ॥ गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक सो जनु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥ ४ ॥ ४७ ॥ ११६ ॥

भगवान की महिमा–स्तुति करने से हृदय–कमल प्रफुल्लित हो जाता है। भगवान का सिमरन करने से समस्त भय नाश हो जाते हैं॥ १॥ वही मति पूर्ण है, जिससे भगवान का यश गायन किया जाता है। संतों की संगति किस्मत से ही मिलती है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगति करने से नाम–निधि प्राप्त हो जाती है। संतों की संगति करने से समस्त कार्य सफल हो जाते हैं॥ २॥ भगवान की भक्ति करने से मनुष्य का जन्म सफल हो जाता है। गुरु की कृपा से प्रभु का नाम सिमरन होता है॥ ३॥ हे नानक! जिस मनुष्य के हृदय में भगवान का निवास हो जाता है, वह सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाता है॥ ४॥ ४७॥ ११६॥

गउड़ी महला ५ ॥ एकसु सिउ जा का मनु राता ॥ विसरी तिसै पराई ताता ॥ १ ॥ बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥ करन करावन करता सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ २ ॥ जा कै हरि धनु सो सच साहु ॥ गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥ ३ ॥ जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक परम पदु पाइआ ॥ ४ ॥ ४८ ॥ ११७ ॥

जिस व्यक्ति का मन एक ईश्वर के प्रेम में मग्न हो जाता है, वह दूसरों से ईर्ष्या–द्वेष करना भूल जाता है॥ १॥ उसे गोविन्द के अलावा दूसरा कोई नहीं दिखाई देता। उसे ज्ञान हो जाता है कि जगत् का कर्त्ता स्वयं ही सबकुछ करने वाला एवं जीवों से कराने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति एकाग्रचित होकर नाम–सिमरन की साधना करता है और अपने मुख से हरि–परमेश्वर का नाम बोलता रहता है, वह लोक–परलोक में कहीं भी डगमगाता नहीं॥ २॥ जिस मनुष्य के पास हरि नाम रूपी धन है, वही सच्चा साहूकार है। पूर्ण गुरु ने उसकी प्रतिष्ठा बना दी है॥ ३॥ उसे जीवन पुरुष हरि–परमेश्वर मिल जाता है। हे नानक! इस तरह वह परम पद प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ ४८॥ ११७॥

गउड़ी महला ५ ॥ नामु भगत कै प्रान अधारु ॥ नामो धनु नामो बिउहारु ॥ १ ॥ नाम वडाई जनु सोभा पाए ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु भगत कै सुख असथानु ॥ नाम रतु सो भगतु परवानु ॥ २ ॥ हरि का नामु जन कउ धारै ॥ सासि सासि जनु नामु समारै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥ नाम संगि ता का मनु लागु ॥ ४ ॥ ४९ ॥ ११८ ॥

प्रभु का नाम ही उसके भक्त के प्राणों का आधार है। नाम ही उसका धन है, नाम ही उसका व्यापार है॥ १॥ नाम द्वारा भक्त प्रशंसा एवं शोभा प्राप्त करता है। लेकिन यह नाम उसे ही प्राप्त होता है, जिसको प्रभु स्वयं कृपा करके दिलवाता है॥ १॥ रहाउ॥ नाम भक्त की सुख–शांति का निवास है।

जो भक्त नाम में मग्न रहता है, वह स्वीकार हो जाता है॥ २॥ हरि का नाम उसके सेवक को आधार प्रदान करता है। श्वास-श्वास से ईश्वर का सेवक नाम-सिमरन करता रहता है॥ ३॥ हे नानक ! जिस व्यक्ति की किस्मत अच्छी होती है, उसका ही मन नाम से लगा रहता है॥४॥४९॥११८॥

गउड़ी महला ५ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ ॥ तब ते धावतु मनु त्रिपताइआ ॥ १ ॥ सुख बिस्रामु पाइआ गुण गाइ ॥ स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल अराधि भगवंता ॥ हरि सिमरन ते मिटी मेरी चिंता ॥ २ ॥ सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥ ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥ ३ ॥ दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥ करणहारु नानक मनि बसिआ ॥ ४ ॥ ५० ॥ ११९ ॥

संत की कृपा से जब से मैंने भगवान के नाम का ध्यान किया है, तब से मेरा विकारों की ओर भटकता हुआ मन तृप्त हो गया है॥ १॥ प्रभु की गुणस्तुति करने से मुझे सुख का विश्राम प्राप्त हो गया है। मेरी पीड़ा दूर हो गई है और मेरे कुकर्मों का दैत्य नष्ट हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! भगवान के चरण-कमलों का चिन्तन कर। हरि का सिमरन करने से मेरी चिन्ता मिट गई है॥ २॥ मैं अनाथ सब सहारों को त्याग चुका हूँ और एक ईश्वर की शरणागत हूँ। तब से मैंने सर्वोच्च स्थान को सहज ही प्राप्त कर लिया है॥ ३॥ मेरे दुःख-दर्द, भ्रम-भय नाश हो गए हैं। हे नानक ! सृजनहार प्रभु ने हृदय में निवास कर लिया है॥ ४॥ ५०॥ ११९॥

गउड़ी महला ५ ॥ कर करि टहल रसना गुण गावउ ॥ चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥ १ ॥ भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥ प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥ २ ॥ सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥ जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥ ३ ॥ चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ दुलभ देह नानक निसतारि ॥ ४ ॥ ५१ ॥ १२० ॥

मैं अपने हाथों से प्रभु की सेवा करता हूँ और मुख से उसकी गुणस्तुति करता हूँ। चरणों से मैं ठाकुर के मार्ग का अनुसरण करता हूँ॥ १॥ जीवन का वह समय बड़ा शुभ है, जिसमें भगवान का सिमरन करने का अवसर मिलता है। भगवान का नाम-सिमरन करने से भयानक सागर से पार हुआ जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! अपने नेत्रों से संतों के दर्शन कर। अविनाशी प्रभु को अपने हृदय में धारण कर ले॥ २॥ संतों के पास जाकर ईश्वर का भजन सुन और इस प्रकार तेरा जन्म-मरण का भय दूर हो जाएगा॥ ३॥ हे भाई ! ठाकुर जी के सुन्दर चरणों को अपने हृदय में बसाकर रख। हे नानक ! इस तरह अपने अमूल्य मानव शरीर का कल्याण कर ले॥ ४॥ ५१॥ १२०॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ सो जनु रसना नामु उचारै ॥ १ ॥ हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥ सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥ २ ॥ हरि की टहल करत जनु सोहै ॥ ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥ ३ ॥ मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥ नानक तजीअले अवरि जंजाल ॥ ४ ॥ ५२ ॥ १२१ ॥

जिस व्यक्ति पर ईश्वर अपनी कृपा धारण करता है, वह अपनी रसना से भगवान के नाम का जाप करता है॥ १॥ हरि को विस्मृत करके सन्देह एवं दुख प्राणी को लग जाते हैं। लेकिन नाम-सिमरन करने से भ्रम एवं भय भाग जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति ईश्वर का भजन सुनता है और ईश्वर का भजन गाता है, उस व्यक्ति के निकट कोई भी मुसीबत नहीं आती॥ २॥ ईश्वर का

सेवक उसकी सेवा करता हुआ सुन्दर लगता है। उसे माया की अग्नि स्पर्श नहीं करती॥ ३॥ हे नानक ! दया के घर ईश्वर का नाम जिस व्यक्ति के हृदय एवं मुख में वास कर जाता है, उस व्यक्ति ने दूसरे समस्त जंजाल त्याग दिए हैं॥ ४॥ ५२॥ १२१॥

गउड़ी महला ५ ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ गुर पूरे की टेक टिकाई ॥ १ ॥ दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥ गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का नामु दीओ गुरि मंत्रु ॥ मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥ २ ॥ अनद भए गुर मिलत क्रिपाल ॥ करि किरपा काटे जम जाल ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ ५३ ॥ १२२ ॥

हे भाई ! अपनी बुद्धिमता एवं अधिक चतुरता को त्याग कर पूर्ण गुरु की शरण ले॥ १॥ जिस व्यक्ति की पूर्ण गुरु से भेंट हो जाती है, वह गुरु की कृपा से भगवान में ही सुरति लगाता है। ऐसा व्यक्ति भगवान का गुणानुवाद करता हुआ सुखी हो जाता है और उसके तमाम दुख नाश हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु ने मुझे ईश्वर के नाम का मंत्र प्रदान किया है, जिससे मेरी चिन्ताएँ मिट गई हैं और व्याकुलता दूर हो गई है॥ २॥ कृपा के घर गुरु को मिलने से आनन्द प्राप्त हो गया है। अपनी कृपा धारण करके गुरु ने यमदूतों का फँदा काट दिया है॥ ३॥ हे नानक ! मैंने पूर्ण गुरु को पा लिया है, इसलिए माया मुझे पुनः पीड़ित नहीं करेगी॥ ४॥ ५३॥ १२२॥

गउड़ी महला ५ ॥ राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ मनमुख कउ लागो संतापु ॥ १ ॥ गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥ २ ॥ गुर का सबदु तेरै संगि सहाई ॥ दइआल भए सगले जीअ भाई ॥ ३ ॥ गुरि पूरै जब किरपा करी ॥ भनति नानक मेरी पूरी परी ॥ ४ ॥ ५४ ॥ १२३ ॥

पूर्ण गुरु ने स्वयं मेरी रक्षा की है। लेकिन स्वेच्छाचारी पर मुसीबतों का पहाड़ उमड़ पड़ा है॥ १॥ हे मेरे मित्र ! गुरु को हमेशा स्मरण कर। प्रभु के दरबार में तेरा मुख उज्ज्वल होगा॥ १॥ रहाउ॥ हे मित्र ! तू गुरु के चरण अपने हृदय में बसा, तेरा दुःख, शत्रु एवं आपदा नष्ट हो जाएँगे॥ २॥ गुरु का शब्द ही तेरा साथी एवं सहायक है। हे भाई ! सभी लोग तुझ पर दयालु होंगे॥ ३॥ हे नानक ! जब पूर्ण गुरु ने अपनी कृपा-दृष्टि की, तो मेरा जीवन परिपूर्ण हो गया॥ ४॥ ५४॥ १२३॥

गउड़ी महला ५ ॥ अनिक रसा खाए जैसे ढोर ॥ मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥ १ ॥ मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥ आवत जात जोनी दुख खीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक बसत्र सुंदर पहिराइआ ॥ जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥ २ ॥ सगल सरीर आवत सभ काम ॥ निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥ ३ ॥ कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥ साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥ ४ ॥ ५५ ॥ १२४ ॥

मनुष्य अधिकतर स्वादिष्ट पदार्थ पशु की भाँति सेवन करता है और सांसारिक मोह की रस्सी से वह चोर की भाँति जकड़ा रहता है॥ १॥ हे भाई ! जो व्यक्ति संतों की संगति से विहीन रहता है, उसका शरीर मृतक है। ऐसा व्यक्ति योनियों में फँसकर आवागमन करता रहता है और दुख से नष्ट हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य मोहवश विभिन्न प्रकार की सुन्दर पोशाकें धारण करता है, परन्तु निर्धनों के लिए वह ऐसा होता है जैसे फसल में पशुओं को डराने के लिए बनावटी रक्षक खड़ा किया होता है॥ २॥ दूसरे पशुओं इत्यादि के शरीर काम आ जाते हैं। लेकिन जो व्यक्ति भगवान के नाम का जाप नहीं करता, उसका दुनिया में आगमन निष्फल हो जाता है॥ ३॥ हे नानक ! भगवान जिस व्यक्ति पर दयालु हो जाता है, वह संतों की संगति में शामिल होकर गोपाल का भजन करता रहता है॥ ४॥ ५५॥ १२४॥

गउड़ी महला ५ ॥ कलि कलेस गुर सबदि निवारे ॥ आवण जाण रहे सुख सारे ॥ १ ॥ भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥ साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कवल रिद अंतरि धारे ॥ अगनि सागर गुरि पारि उतारे ॥ २ ॥ बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥ ३ ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जिसु भेटत गति भई हमारी ॥ ४ ॥ ५६ ॥ १२५ ॥

गुरु की वाणी मानसिक क्लेश एवं कष्टों को दूर कर देती है। गुरु की वाणी के फलस्वरूप जन्म–मरण का चक्र मिट जाता है और सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं॥ १॥ निडर ईश्वर का ध्यान करने से मेरा भय दूर हो गया है। संतों की संगति में मैं ईश्वर की गुणस्तुति करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के चरण कमल मैंने अपने हृदय में टिका लिए हैं। गुरु ने मुझे तृष्णा के अग्नि सागर से पार कर दिया है॥ २॥ मैं भवसागर में डूब रहा था परन्तु पूर्ण गुरु ने मेरी रक्षा की है। गुरु ने मुझे प्रभु से मिला दिया है, जिससे मैं जन्म–जन्मांतरों से बिछुड़ा हुआ था॥ ३॥ हे नानक! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिनको मिलने से मेरी मुक्ति हो गई है॥ ४॥ ५६॥ १२५॥

गउड़ी महला ५ ॥ साधसंगि ता की सरनी परहु ॥ मनु तनु अपना आगै धरहु ॥ १ ॥ अम्रित नामु पीवहु मेरे भाई ॥ सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु जनम मरणु निवारहु ॥ हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥ २ ॥ सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥ सो धनु संचहु जो चालै नाले ॥ ३ ॥ तिसहि परापति जिसु मसतकि भागु ॥ कहु नानक ता की चरणी लागु ॥ ४ ॥ ५७ ॥ १२६ ॥

हे भाई! संतों की सभा में उसकी शरण में पड़ो। अपना मन एवं तन ईश्वर के समक्ष समर्पित कर दो॥ १॥ हे मेरे भाई! अमृत रूपी नाम पान करो। प्रभु की स्तुति एवं आराधना करने से मोह–माया की अग्नि पूर्णतया बुझ जाती है॥ १॥ रहाउ॥ अपना अभिमान त्याग कर अपने जन्म–मरण को समाप्त कर लो। ईश्वर के सेवक के चरणों पर प्रणाम करो॥ २॥ श्वास–श्वास से अपने मन में प्रभु स्मरण कर लो। हे भाई! वह नाम धन संचित करो जो तेरे साथ परलोक में जाएगा॥ ३॥ केवल वही व्यक्ति नाम धन को पाता है, जिसके मस्तक पर विधाता द्वारा भाग्यरेखाएँ विद्यमान होती हैं। हे नानक! तू उसके चरणों पर झुक॥ ४॥ ५७॥ १२६॥

गउड़ी महला ५ ॥ सूके हरे कीए खिन माहे ॥ अंम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥ १ ॥ काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥ करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥ २ ॥ दुख नाठे सुख आइ समाए ॥ ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥ ३ ॥ इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥ नानक ते जन सुफल फले ॥ ४ ॥ ५८ ॥ १२७ ॥

नीरस (सूखों) को गुरदेव क्षण में ही हरा–भरा कर देता है। उसकी अमृत रूपी दृष्टि उनको सींच कर पुनर्जीवित कर देती है॥ १॥ पूर्ण गुरदेव ने मेरे कष्ट दूर कर दिए हैं। अपने सेवक को वह अपनी सेवा प्रदान करता है॥ १॥ रहाउ॥ जब से गुणों के भण्डार, सतिगुरु ने अपनी दया धारण की है, मेरी चिन्ता मिट गई है और मनोकामनाएँ पूर्ण हो गई हैं॥ २॥ जब गुरु जी आज्ञा करते हैं, दुख दौड़ जाते हैं और सुख आकर उसका स्थान ले लेता है। इसमें कोई देरी नहीं लगती॥ ३॥ हे नानक! जिन पुरुषों को पूर्ण गुरु जी मिल जाते हैं, उनकी तमाम इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं और वे श्रेष्ठ फलों से प्रफुल्लित हो जाते हैं॥ ४॥ ५८॥ १२७॥

गउड़ी महला ५ ॥ ताप गए पाई प्रभि सांति ॥ सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥ १ ॥ प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥ जनम जनम के बिछुरे मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥ सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥ २ ॥ सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥ आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥ ३ ॥ दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥ कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥ ४ ॥ ५६ ॥ १२८ ॥

जिन्हें प्रभु ने नाम की देन प्रदान की है, वे सभी शीतल हो गए हैं। प्रभु ने उन्हें ऐसी सुख-शांति प्रदान की है कि उनका ताप दूर हो गया है॥ १॥ प्रभु की कृपा से हम सुखी हो गए हैं। जन्म-जन्मांतरों के बिछुड़े हुओं को ईश्वर ने मिला दिया है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के नाम की स्तुति-आराधना करने से समस्त रोगों का स्थान नष्ट हो गया है॥ २॥ वह सहज स्वभाव हरि की वाणी बोलता रहता है। हे प्राणी! दिन के आठ प्रहर ही प्रभु का सिमरन करो। हे नानक! जो व्यक्ति ईश्वर का यशोगान करता है, दुख-दर्द एवं यमदूत उसके निकट नहीं आते॥ ४॥ ५६॥ १२८॥

गउड़ी महला ५ ॥ भले दिनस भले संजोग ॥ जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ॥ १ ॥ ओह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥ जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥ जितु रसना उचरै हरि हरी ॥ २ ॥ सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥ चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥ ३ ॥ कहु नानक भला मेरा करम ॥ जितु भेटे साधू के चरन ॥ ४ ॥ ६० ॥ १२९ ॥

वह दिन बड़ा शुभ है और वह संयोग भी भला है, जब मुझे निर्लिप्त पारब्रह्म मिला॥ १॥ उस समय पर मैं बलिहारी जाता हूँ, जब मेरा मन ईश्वर के नाम की आराधना करता है॥ १॥ रहाउ॥ वह मुहूर्त सफल है और वह घड़ी भी सफल है, जब मेरी रसना हरि-प्रभु का नाम उच्चरित करती है॥ २॥ वह मस्तक भाग्यवान है जो संतों के समक्ष नतमस्तक होता है। वह चरण पवित्र हैं जो प्रभु-मार्ग का अनुसरण करते हैं॥ ३॥ हे नानक! मेरा भाग्य भला है, जिसके फलस्वरूप मैं संतों के चरणाश्रय लगा॥ ४॥ ६०॥ १२९॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु राखु मन माहि ॥ नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥ १ ॥ बिनु भगवंत नाही अन कोइ ॥ मारै राखै एको सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण रिदै उरि धारि ॥ अगनि सागरु जपि उतरहि पारि ॥ २ ॥ गुर मूरति सिउ लाइ धिआनु ॥ ईहा ऊहा पावहि मानु ॥ ३ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ ॥ मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ६१ ॥ १३० ॥

गुरु का शब्द अपने मन में धारण करो। प्रभु का नाम-सिमरन करने से समस्त चिन्ताएँ मिट जाती हैं॥ १॥ भगवान के अलावा प्राणी का दूसरा कोई नहीं। एक भगवान ही जीवों की रक्षा करता और नाश करता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के चरणों को अपने हृदय में बसाओ। अग्नि का सागर तू परमेश्वर का स्मरण करने से पार कर लेगा॥ २॥ गुरु के स्वरूप पर ध्यान लगाने से तुझे लोक-परलोक में बड़ा सम्मान प्राप्त होगा॥ ३॥ हे नानक! सब कुछ त्यागकर उसने गुरु की शरण ली है और उसकी चिंताएँ मिट गई हैं एवं आत्मिक सुख प्राप्त हो गया है॥ ४॥ ६१॥ १३०॥

गउड़ी महला ५ ॥ जिसु सिमरत दूखु सभु जाइ ॥ नामु रतनु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥ साधू जन रामु रसन वखाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकसु बिनु नाही दूजा कोइ ॥ जा की द्रिसटि सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ साजनु मीतु सखा करि एकु ॥ हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥ ३ ॥ रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥ गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥ ४ ॥ ६२ ॥ १३१ ॥

जिसका सिमरन करने से समस्त दुःख मिट जाते हैं और नाम-रत्न मन में आकर बस जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! उस गोविन्द की वाणी का जाप कर। संतजन तो अपनी रसना से राम का ही

गुणानुवाद करते रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ दुनिया में एक ईश्वर के सिवाय दूसरा कोई नहीं। उसकी कृपादृष्टि से सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ २॥ हे मेरे मन! एक ईश्वर को अपना मित्र, सखा एवं साथी बना। अपने हृदय में हरि-परमेश्वर की गुणस्तुति का अक्षर लिख ले॥ ३॥ इस जगत् का स्वामी हर जगह मौजूद है। हे नानक! वह तो अन्तर्यामी प्रभु का ही यशोगान करता रहता है?॥ ४॥ ॥ ६२॥ १३१॥

गउड़ी महला ५ ॥ भै महि रचिओ सभु संसारा ॥ तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥ १ ॥ भउ न विआपै तेरी सरणा ॥ जो तुधु भावै सोई करणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोग हरख महि आवण जाणा ॥ तिनि सुखु पाइआ जो प्रभ भाणा ॥ २ ॥ अगनि सागरु महा विआपै माइआ ॥ से सीतल जिन सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ राखि लेइ प्रभु राखनहारा ॥ कहु नानक किआ जंत विचारा ॥ ४ ॥ ६३ ॥ १३२ ॥

सारा जगत् (किसी न किसी) भय में दबा हुआ रहता है। जिस व्यक्ति को भगवान के नाम का आधार मिल जाता है, उसे कोई भय नहीं॥ १॥ हे प्रभु! जो तेरी शरण में आता है, उसे कोई भय नहीं लगता। हे प्रभु! तू वही करता है, जो तुझे लुभाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य सुख एवं दुख में जन्मता-मरता रहता है। लेकिन जो ईश्वर को अच्छे लगते हैं, वह आत्मिक सुख पाते हैं॥ २॥ यह दुनिया तृष्णा की अग्नि का सागर है, जहाँ लोगों को माया प्रभावित करती रहती है। जिस व्यक्ति को सतिगुरु प्राप्त हो जाता है, वह माया में रहता हुआ भी शांत रहता है॥ ३॥ हे रक्षक प्रभु! हमारी रक्षा कीजिए। हे नानक! भय से बचने हेतु जीव बेचारा क्या कर सकता है?॥ ४॥ ६३॥ १३२॥

गउड़ी महला ५ ॥ तुमरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ तुमरी क्रिपा ते दरगह थाउ ॥ १ ॥ तुझ बिनु पारब्रहम नही कोइ ॥ तुमरी क्रिपा ते सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै ॥ तुमरी क्रिपा ते भ्रमु भउ भागै ॥ २ ॥ पारब्रहम अपर्मपर सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ ३ ॥ करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥ नानक नामु मिलै सचु रासि ॥ ४ ॥ ६४ ॥ १३३ ॥

हे प्रभु! तुम्हारी कृपा से ही नाम-स्मरण किया जा सकता है। तुम्हारी कृपा से ही तेरे दरबार में जीव को सम्मान मिलता है॥ १॥ हे पारब्रह्म प्रभु! तेरे सिवाय (जगत् में) दूसरा कोई नहीं। तुम्हारी कृपा से सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे ठाकुर! यदि तू हृदय में बस जाए तो प्राणी को दुख नहीं लगता। तुम्हारी कृपा से भ्रम एवं भय दौड़ जाते हैं॥ २॥ हे अपरंपार पारब्रह्म प्रभु! हे जगत् के स्वामी! तू सबके दिलों का ज्ञाता हैं॥ ३॥ मैं नानक अपने गुरु के समक्ष विनती करता हूँ कि मुझे सत्य नाम की पूँजी की देन प्राप्त हो जाए॥ ४॥ ६४॥ १३३॥

गउड़ी महला ५ ॥ कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥ नाम बिहून सूने से मुखा ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु नित प्राणी ॥ नाम बिहून ध्रिगु देह बिगानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नाही मुखि भागु ॥ भरत बिहून कहा सोहागु ॥ २ ॥ नामु बिसारि लगै अन सुआइ ॥ ता की आस न पूजै काइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥ नानक नामु जपै दिन राति ॥ ४ ॥ ६५ ॥ १३४ ॥

जैसे अनाज के बिना भूसा शून्य है, वैसे ही वह मुख शून्य है जो नामविहीन है॥ १॥ हे नश्वर प्राणी! नित्य ही हरि-परमेश्वर का नाम-सिमरन करते रहो। प्रभु के नाम बिना यह शरीर धिक्कार योग्य है, जो पराया हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ नाम सिमरन के बिना चेहरा भाग्य से उदय नहीं होता। अपने पति के बिना सुहाग कहाँ है? ॥ २॥ जो व्यक्ति नाम को विस्मृत करके दूसरे रसों में लगा हुआ है, उसकी कोई भी आकांक्षा पूरी नहीं होती। नानक का कथन है कि हे प्रभु! जिस व्यक्ति को तू कृपा करके नाम की देन प्रदान करता है, वह दिन-रात तेरा नाम-सिमरन ही करता रहता है॥ ४॥ ६५॥ १३४॥

गउड़ी महला ५ ॥ तूं समरथु तूंहै मेरा सुआमी ॥ सभु किछु तुम ते तूं अंतरजामी ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन जन ओट ॥ तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥ तुमरी क्रिपा ते सूख घनेरे ॥ २ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥ ३ ॥ करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥ नानक सिमरै नामु निधानु ॥ ४ ॥ ६६ ॥ १३५ ॥

हे प्रभु ! तू सर्वशक्तिमान है और तू ही मेरा स्वामी है। हे ठाकुर ! तू अंतर्यामी है और इस दुनिया में सब कुछ तेरी प्रेरणा से ही हो रहा है॥ १॥ हे पूर्ण पारब्रह्म प्रभु ! तू ही सेवक का सहारा है। तेरी शरण लेकर करोड़ों ही प्राणी (भवसागर से) पार हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे गोविन्द ! संसार में जितने भी जीव-जन्तु हैं, वह सभी तेरे उत्पन्न किए हुए हैं, तेरी कृपा से हम जीवों को अनंत सुख उपलब्ध हो रहे हैं॥ २॥ हे प्रभु ! जगत् में जो कुछ भी घटित होता है, वह सब तेरी इच्छानुसार है। जो व्यक्ति भगवान के हुक्म को समझ लेता है, वह सत्य में ही समा जाता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे मेरे प्रभु ! कृपा करके नाम की देन प्रदान कीजिए चूंकि वह तेरे नाम के भण्डार का ही सिमरन करता रहे॥ ४॥ ६६॥ १३५॥

गउड़ी महला ५ ॥ ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥ जा की राम नामि लिव लागी ॥ १ ॥ जा कै हरि वसिआ मन माही ॥ ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब निधान राखे जन माहि ॥ ता कै संगि किलविख दुख जाहि ॥ २ ॥ जन की महिमा कथी न जाइ ॥ पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजे ॥ दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥ ४ ॥ ६७ ॥ १३६ ॥

उस प्रभु के दर्शन वह भाग्यशाली ही प्राप्त करता है, जिसकी सुरति राम नाम में लग जाती है॥ १॥ जिसके हृदय में ईश्वर का निवास हो जाता है, उसे स्वप्न में भी कोई दुःख स्पर्श नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ गुणों के समूचे भण्डार ईश्वर ने अपने सेवक के हृदय में बसाए हैं। उसकी संगति में पाप व संताप निवृत्त हो जाते हैं॥ २॥ ईश्वर के सेवक की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। ऐसा सेवक पारब्रह्म-प्रभु में ही लीन रहता है॥ ३॥ हे प्रभु ! कृपा करके मेरी एक विनती सुन लो कि अपने दास की चरण-धूलि की देन नानक को दे दीजिए॥ ४॥ ६७॥ १३६॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥ सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥ १ ॥ भजु मन मेरे एको नाम ॥ जीअ तेरे कै आवै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥ गुर पूरे का निरमल मंता ॥ २ ॥ छोडि उपाव एक टेक राखु ॥ महा पदारथु अंम्रित रसु चाखु ॥ ३ ॥ बिखम सागरु तेई जन तरे ॥ नानक जा कउ नदरि करे ॥ ४ ॥ ६८ ॥ १३७ ॥

हे जीव ! भगवान का नाम-सिमरन करने से तेरी विपदा दूर हो जाएगी और तेरे मन में सर्व कल्याण आकर वास कर जाएँगे॥ १॥ हे मेरे मन ! एक परमेश्वर के नाम का भजन कर ले, चूंकि यह नाम ही तेरी आत्मा के लिए परलोक में काम आएगा॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण गुरु के निर्मल मंत्र से रात-दिन अनन्त प्रभु का यशोगान करता रह॥ २॥ दूसरे उपाय त्याग दे और अपनी आस्था एक प्रभु पर रख। इस तरह तू महा पदार्थ अमृतमयी रस को चख लेगा॥ ३॥ हे नानक ! वही पुरुष भवसागर से (आत्मिक पूँजी सहित) पार होते हैं, जिन पर प्रभु कृपा-दृष्टि करता है॥ ४॥ ६८॥ १३७॥

गउड़ी महला ५ ॥ हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥ पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥ १ ॥ गोविंद गुण गावहु मेरे भाई ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ देह होई परवानु ॥ सतिगुर ते पाइआ नाम नीसानु ॥ २ ॥ हरि सिमरत पूरन पदु पाइआ ॥ साधसंगि भै भरम मिटाइआ ॥ ३ ॥ जत कत देखउ तत रहिआ समाइ ॥ नानक दास हरि की सरणाइ ॥ ४ ॥ ६९ ॥ १३८ ॥

जिस व्यक्ति ने प्रभु के सुन्दर चरण–कमल अपने हृदय में धारण किए हैं, ऐसा व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु से मिलकर भवसागर से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ १॥ हे मेरे भाई! गोविन्द का यशोगान करते रहो। संतों से मिलकर भगवान के नाम का ध्यान करो॥ १॥ रहाउ॥ जब प्राणी को सतिगुरु से नाम का प्रमाण मिल जाता है तो उसकी दुर्लभ देहि सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाती है॥ २॥ प्रभु का नाम–सिमरन करने से पूर्ण पद मिल जाता है। संतों की सभा में भय–भ्रम मिट जाते हैं॥ ३॥ जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ प्रभु व्यापक हो रहा है। इसलिए दास नानक ने ईश्वर की शरण ही ली है॥ ४॥ ६६॥ १३८॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥ जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन गुरदेव ॥ करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल हिरदै उर धारी ॥ मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥ २ ॥ सफल जनमु होवै परवाणु ॥ गुरु पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ ३ ॥ संत धूरि पाईऐ वडभागी ॥ नानक गुर भेटत हरि सिउ लिव लागी ॥ ४ ॥ ७० ॥ १३६ ॥

मैं अपने गुरु जी के दर्शन पर तन–मन से कुर्बान जाता हूँ। मैं तो अपने सतिगुरु के नाम का निरंतर जाप करने से ही जीवित रहता हूँ॥ १॥ हे मेरे पूर्ण पारब्रह्म, गुरदेव! कृपा करो चूंकि जो मैं तेरी सेवा–भक्ति में जुट जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के चरण–कमल मैं अपने हृदय में बसाता हूँ, चूंकि गुरदेव के सुन्दर चरण ही मेरे मन, तन, धन एवं प्राणों का एकमात्र आधार है॥ २॥ पारब्रह्म गुरदेव को अपने निकट समझने से तेरा जीवन सफल एवं सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाएगा॥ ३॥ संतों की चरण–धूलि सौभाग्य से ही प्राप्त होती है। हे नानक! गुरु जी को मिलने से ईश्वर से प्रेम की लगन लग जाती है॥ ४॥ ७०॥ १३६॥

गउड़ी महला ५ ॥ करै दुहकरम दिखावै होरु ॥ राम की दरगह बाधा चोरु ॥ १ ॥ रामु रमै सोई रामाणा ॥ जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बिखु मुखि अम्रितु सुणावै ॥ जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥ २ ॥ अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥ खिन महि प्रगट होहि संसार ॥ ३ ॥ अंतरि साचि नामि रसि राता ॥ नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥ ४ ॥ ७१ ॥ १४० ॥

मनुष्य दुष्कर्म करता है परन्तु बाहर लोगों को दूसरा रूप दिखाता है। ऐसा व्यक्ति राम के दरबार में चोर की भाँति जकड़ा जाएगा॥ १॥ जो व्यक्ति राम को स्मरण करता है, वह राम का ही उपासक है। एक ईश्वर जल, थल एवं आकाश में सर्वत्र मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी व्यक्ति अपने मुख से अमृत सुनाता है परन्तु उसके भीतर विष विद्यमान है। ऐसा व्यक्ति यमलोक में बंधा हुआ चोटें खाता है॥ २॥ अनेक पर्दों में (पीछे) प्राणी पाप कर्म करता है। परन्तु एक क्षण में वह संसार के समक्ष प्रकट हो जाता है॥ ३॥ हे नानक! जो व्यक्ति सदा सत्य में मग्न रहता है और नाम अमृत से रंगा हुआ है, उस पर विधाता दयालु हो जाता है॥ ४॥ ७१॥ १४०॥

गउड़ी महला ५ ॥ राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥ गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥ १ ॥ हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥ लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥ ता का रंगु न उतरै जाइ ॥ २ ॥ बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥ आन रंग फीके सभ माइआ ॥ ३ ॥ गुरि रंगे से भए निहाल ॥ कहु नानक गुर भए है दइआल ॥ ४ ॥ ७२ ॥ १४१ ॥

राम का प्रेम रंग कभी दूर नहीं होता, जिसको पूर्ण गुरु प्रदान करता है, वही इस प्रेम को पाता है॥ १॥ जिसका मन भगवान के रंग में मग्न रहता है, वही मन सच्चा है। उस पर माया का कोई

दूसरा रंग प्रभाव नहीं डाल सकता, वह मानो गहरे लाल रंग वाला हो जाता है, ऐसा व्यक्ति पूर्ण पुरुष विधाता का रूप हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति संतों के साथ विराजमान होकर प्रभु का यशोगान करता है, उसका प्रेम रंग कभी नहीं उतरता॥ २॥ भगवान के सिमरन के बिना सुख उपलब्ध नहीं होता और माया के अन्य सभी रंग फीके हैं॥ ३॥ जिस व्यक्ति को गुरु जी प्रभु के प्रेम से रंग देते हैं, वह कृतार्थ हो जाता है। हे नानक! उन पर गुरु जी दयालु हो गए हैं॥ ४॥ ७२॥ १४१॥

गउड़ी महला ५ ॥ सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥ सूख सहज आनंद निवासे ॥ १ ॥ राम जना कउ राम भरोसा ॥ नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि कछु भउ न भराती ॥ गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥ २ ॥ करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥ चरण कमल की दीनी ओट ॥ ३ ॥ कहु नानक मनि भई परतीति ॥ निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥ ४ ॥ ७३ ॥ १४२ ॥

जगत् के स्वामी प्रभु का नाम सिमरन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य सहज सुख एवं प्रसन्नता में वास करता है॥ १॥ राम के भक्तों को राम पर ही भरोसा है। भगवान का नाम-स्मरण करने से तमाम फिक्र मिट जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ सत्संग में रहने से कोई भय एवं दुविधा स्पर्श नहीं करती और दिन-रात गोपाल का यशोगान होता रहता है॥ २॥ प्रभु ने अपनी कृपा करके अपने भक्तों को (मोह-माया के) बंधनों से मुक्त कर दिया है और अपने चरण कमलों का सहारा दे दिया है॥ ३॥ हे नानक! प्रभु-भक्त के हृदय में आस्था बनी रहती है और वह सदैव ही प्रभु के निर्मल यश का पान करता रहता है॥ ४॥ ७३॥ १४२॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि चरणी जा का मनु लागा ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥ १ ॥ हरि धन को वापारी पूरा ॥ जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ भए क्रिपाल गुसाई ॥ से जन लागे गुर की पाई ॥ २ ॥ सूख सहज सांति आनंदा ॥ जपि जपि जीवे परमानंदा ॥ ३ ॥ नाम रासि साधसंगि खाटी ॥ कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥ ४ ॥ ७४ ॥ १४३ ॥

जिस व्यक्ति का मन हरि के चरणों में लग जाता है, उसके दुःख, दर्द एवं भ्रम भाग जाते हैं॥ १॥ वह व्यापारी पूर्ण है, जो हरि के नाम रूपी धन का व्यापार करता है। जिसे परमात्मा नाम की देन देता है, वही शूरवीर होता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति पर भगवान कृपा के घर में आता है, ऐसा व्यक्ति ही गुरु के चरणों में आकर लगता है॥ २॥ उस व्यक्ति को सहज सुख, शांति एवं आनंद प्राप्त हो जाता है और वह परमानन्द प्रभु की स्तुति-आराधना करके ही जीता है॥ ३॥ हे नानक! जिस व्यक्ति ने सत्संग में रहकर ईश्वर के नाम-धन की पूँजी कमाई है, ईश्वर ने उसकी प्रत्येक विपदा निवृत्त कर दी है॥ ४॥ ७४॥ १४३॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत सभि मिटहि कलेस ॥ चरण कमल मन महि परवेस ॥ १ ॥ उचरहु राम नामु लख बारी ॥ अंम्रित रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख सहज रस महा अनंदा ॥ जपि जपि जीवे परमानंदा ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मद खोए ॥ साध कै संगि किलबिख सभ धोए ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानक दीजै साध रवाला ॥ ४ ॥ ७५ ॥ १४४ ॥

भगवान का सिमरन करने से तमाम दुख-कलेश मिट जाते हैं और प्रभु के सुन्दर चरण कमल मन में बस जाते हैं॥ १॥ हे प्यारी जिह्वा! राम नाम का लाखों बार उच्चारण कर। हे मेरी प्रिय जिह्वा! तू नाम रूपी अमृत रस का पान कर॥ १॥ रहाउ॥ परमानंद प्रभु का बार-बार भजन करने से अपना

जीवन व्यतीत करे तो तुझे सहज सुख एवं महा आनंद प्राप्त होगा॥ २॥ संतों की सभा में रहने से काम, क्रोध, लोभ, अहंकार इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य के तमाम पाप दूर हो जाते हैं॥ ३॥ हे दीनदयालु प्रभु ! अपनी कृपा–दृष्टि करके नानक को संतों की चरण–धूलि प्रदान कीजिए ॥ ४॥ ७५॥ १४४॥

गउड़ी महला ५ ॥ जिस का दीआ पैनै खाइ ॥ तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥ १ ॥ खसमु बिसारि आन कंमि लागहि ॥ कउडी बदले रतनु तिआगहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभू तिआगि लागत अन लोभा ॥ दासि सलामु करत कत सोभा ॥ २ ॥ अंम्रित रसु खावहि खान पान ॥ जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ॥ ३ ॥ कहु नानक हम लूण हरामी ॥ बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ७६ ॥ १४५ ॥

हे जननी ! जिस भगवान का दिया हुआ वस्त्र इन्सान पहनता है और दिया हुआ भोजन खाता रहता है, उस भगवान का सिमरन करने में आलस्य नहीं करना चाहिए॥ १॥ जो जीव–स्त्री अपने प्रभु–पति को भुलाकर दूसरे कामों में व्यस्त होती है, वह कौड़ी के भाव अपने हीरे जैसे अमूल्य जीवन को व्यर्थ गंवा देती है॥ १॥ रहाउ॥ वह प्रभु को त्यागकर दूसरे पदार्थों की तृष्णा में लगी हुई है। लेकिन प्रभु की बजाय उसकी दासी माया को वन्दना करने से किसने शोभा पाई है ?॥ २॥ मनुष्य अमृत समान स्वादिष्ट खानपान को चखता है परन्तु कुत्ता उसको नहीं जानता, जो (यह पदार्थ) प्रदान करता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! हम (प्राणी) कृतघ्न नमकहरामी हैं। हे अन्तर्यामी प्रभु ! हमें क्षमा कर दीजिए॥ ४॥ ७६॥ १४५॥

गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ के चरन मन माहि धिआनु ॥ सगल तीरथ मजन इसनानु ॥ १ ॥ हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ मन बांछत सगले फल पाई ॥ २ ॥ जीवन मरणु जनमु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥ ३ ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ जिना परापति साधू धूरे ॥ ४ ॥ ७७ ॥ १४६ ॥

हे मेरे भाई ! प्रभु के चरणों का अपने मन में ध्यान करो। चूंकि प्रभु के चरणों का ध्यान ही तमाम तीर्थ–स्थानों का स्नान है॥ १॥ प्रतिदिन हरि–परमेश्वर का सिमरन करो। चूंकि हरि का सिमरन करने से करोड़ों जन्मों की मैल दूर हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति हरि की कथा अपने हृदय में बसा कर रखता है, उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं॥ २॥ जिसके हृदय में भगवान निवास करता है, उसका जीवन, मृत्यु एवं जन्म स्वीकार हो जाता है॥ ३॥ हे नानक ! वहीं व्यक्ति पूर्ण हैं, जिन्हें संतों की चरण–धूलि प्राप्त हो जाती है॥ ४॥ ७७॥ १४६॥

गउड़ी महला ५ ॥ खाटा पैनदा मूकरि पाइ ॥ तिस नो जोहहि दूत धरम राइ ॥ १ ॥ तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥ कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत की ऐसी है रीति ॥ जो किछु करै सगल बिपरीति ॥ २ ॥ जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥ सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥ ३ ॥ बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ नानक उधरु क्रिपा सुख सागर ॥ ४ ॥ पारब्रहम तेरी सरणाइ ॥ बंधन काटि तरै हरि नाइ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७८ ॥ १४७ ॥

जो प्राणी प्रभु की नियामतें खाता और पहनता रहता है लेकिन इस बात को अस्वीकार करता है कि ये प्रभु ने दिए हैं, उस प्राणी को यमराज के दूत अपनी दृष्टि में रखते हैं॥ १॥ जिस भगवान ने मनुष्य को आत्मा एवं शरीर दिए हैं, वह उससे ही विमुख बना रहता है। प्रभु से विमुख रहने वाला

व्यक्ति करोड़ों ही जन्म अधिकतर योनियों में भटकता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान से टूटे हुए शाक्त व्यक्ति का यही जीवन-आचरण है कि जो कुछ भी वह करता है, सब विपरीत ही करता है॥ २॥ जीव अपने मन से उस प्रभु को विस्मृत कर देता है, जिसने उसकी आत्मा, प्राण, मन और शरीर का निर्माण किया है॥ ३॥ नास्तिक प्राणी के पाप इतने बढ़ जाते हैं कि ढेर सारे कागजों पर लिखे जाते हैं। नानक की प्रार्थना है कि हे सुख के सागर! हम प्राणियों की रक्षा करो॥ ४॥ हे पारब्रह्म प्रभु! जो व्यक्ति तेरी शरण में आ जाता है, वह हरि-नाम के फलस्वरूप बन्धनों को तोड़कर भवसागर से पार हो जाता है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ ७८॥ १४७॥

गउड़ी महला ५ ॥ अपने लोभ कउ कीनो मीतु ॥ सगल मनोरथ मुकति पदु दीतु ॥ १ ॥ ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ जा ते बिरथा कोइ न होइ ॥ १ ॥ रहाउ॥ अपुनै सुआइ रिदै लै धारिआ ॥ दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥ २ ॥ रसना गीधी बोलत राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ अनिक बार नानक बलिहारा ॥ सफल दरसनु गोबिंदु हमारा ॥ ४ ॥ ७९ ॥ १४८ ॥

मनुष्य अपने लोभ हेतु ईश्वर को अपना मित्र बनाता है। ईश्वर उसके सभी मनोरथ पूर्ण करता है और उसे मोक्ष की पदवी प्रदान कर देता है॥ १॥ हरेक मनुष्य ऐसे ईश्वर को अपना मित्र बनाए, जिसके द्वार से कोई खाली नहीं लौटता॥ १॥ रहाउ॥ जिस मनुष्य ने अपने स्वार्थ हेतु भी उस प्रभु को मन में बसाया है, प्रभु उसके दुःख-दर्द एवं तमाम रोग निवृत्त कर देता है॥ २॥ जिसकी जिह्वा राम का नाम उच्चारण करना चाहती है, उसके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं॥ ३॥ हे नानक! हम अपने गोविन्द पर अनेक बार कुर्बान जाते हैं, हमारा गोविन्द ऐसा है कि उसके दर्शन तमाम फल प्रदान करते हैं॥ ४॥ ७९॥ १४८॥

गउड़ी महला ५ ॥ कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥ हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥ १ ॥ पीवत राम रसु अंम्रित गुण जासु ॥ जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब कलिआण सुख सहज निधान ॥ जा कै रिदै वसहि भगवान ॥ २ ॥ अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥ करणैहारु रिदे महि धारु ॥ ३ ॥ तजि सभि भरम भजिओ पारब्रहमु ॥ कहु नानक अटल इहु धरमु ॥ ४ ॥ ८० ॥ १४९ ॥

जो व्यक्ति संतों की निर्मल सभा में हरि की हरिकथा सुनता है, उसके करोड़ों विघ्न एक क्षण में ही मिट जाते हैं॥ १॥ वह राम रस का पान करता है और अमृत गुणों का यश करता है। हरि के चरणों का ध्यान धारण करने से उसकी भूख निवृत्त हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में भगवान का निवास हो जाता है, उसको सर्वकल्याण और सहज सुख के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं॥ २॥ सृजनहार प्रभु को अपने हृदय में धारण करो चूंकि प्रभु के अलावा समस्त औषधियां एवं मंत्र-तंत्र व्यर्थ हैं॥ ३॥ हे नानक! सभी भ्रम त्यागकर पारब्रह्म प्रभु का ही भजन करो चूंकि यही अटल धर्म है॥ ४॥ ८०॥ १४९॥

गउड़ी महला ५ ॥ करि किरपा भेटे गुर सोई ॥ तितु बलि रोगु न बिआपै कोई ॥ १ ॥ राम रमण तरण भै सागर ॥ सरणि सूर फारे जम कागर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मंत्रु दीओ हरि नाम ॥ इह आसर पूरन भए काम ॥ २ ॥ जप तप संजम पूरी वडिआई ॥ गुर किरपाल हरि भए सहाई ॥ ३ ॥ मान मोह खोए गुरि भरम ॥ पेखु नानक पसरे पारब्रहम ॥ ४ ॥ ८१ ॥ १५० ॥

भगवान जिस व्यक्ति पर अपनी कृपा कर देता है, उसे गुरु मिल जाता है। ऐसे व्यक्ति को गुरु के बल के फलस्वरूप कोई रोग नहीं लगता॥ १॥ सर्वव्यापक राम की आराधना करने से भयानक संसार सागर पार किया जाता है। शूरवीर गुरु का आश्रय लेने से यमों के लेखे खत्म हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥

सतिगुरु ने मुझे हरि के नाम का मन्त्र प्रदान किया है। इस आश्रय द्वारा मेरे सभी कार्य सफल हो गए हैं॥ २॥ जब गुरु जी कृपा के घर में आए तो भगवान भी सहायक बन गए और मुझे ध्यान, तपस्या, संयम एवं पूर्ण प्रशंसा प्राप्त हो गए॥ ३॥ हे नानक! देख, गुरु ने जिस व्यक्ति के घमण्ड, मोह एवं भ्रम नाश कर दिए हैं, उस व्यक्ति को पारब्रह्म प्रभु के सर्वत्र दर्शन हो गए हैं॥ ४॥ ८१॥ १५०॥

गउड़ी महला ५ ॥ बिखै राज ते अंधुला भारी ॥ दुखि लागै राम नामु चितारी ॥ १ ॥ तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥ माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोग गिरसत चितारे नाउ ॥ बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ आन सुखा नही आवहि चीति ॥ ३ ॥ सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥ मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥ ४ ॥ ८२ ॥ १५१ ॥

अन्धा मनुष्य अत्याचारी सम्राट से भला है। क्योंकि दुख लगने पर अंधा मनुष्य राम के नाम का भजन करता है॥ १॥ हे प्रभु! अपने सेवक की तू ही मान-प्रतिष्ठा है। माया का नशा प्राणी को नरक में ले जाता है॥ १॥ रहाउ॥ रोग से ग्रस्त हुआ अन्धा मनुष्य नाम का सिमरन करता है। परन्तु विकारों में मस्त हुए दुराचारी मनुष्य को कोई सुख का स्थान नहीं मिलता॥ २॥ जो व्यक्ति प्रभु के चरण-कमलों से प्रेम करता है, वह अन्य लौकिक सुखों का ध्यान ही नहीं करता॥ ३॥ सदैव ही जगत के स्वामी प्रभु का भजन करो। नानक की प्रार्थना है कि हे अन्तर्यामी प्रभु! मुझे आकर मिलो॥ ४॥ ८२॥ १५१॥

गउड़ी महला ५ ॥ आठ पहर संगी बटवारे ॥ करि किरपा प्रभि लए निवारे ॥ १ ॥ ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥ सरब कला पूरन प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा तपति सागर संसार ॥ प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥ २ ॥ अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥ सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥ ३ ॥ उकति सिआनप इस ते कछु नाहि ॥ करि किरपा नानक गुण गाहि ॥ ४ ॥ ८३ ॥ १५२ ॥

आठों प्रहर (कामादिक पांचों विकार) लुटेरे मेरे साथी बने हुए थे। अपनी कृपा करके प्रभु ने उनको तितर-बितर (नष्ट) कर दिया है॥ १॥ वह ईश्वर सर्वकला सम्पूर्ण है। प्रत्येक प्राणी ऐसे समर्थाशाली प्रभु के नाम-रस का आस्वादन करे॥ १॥ रहाउ॥ कामादिक विकारों की संसार -सागर में बड़ी तेज गर्मी पड़ रही है। लेकिन प्रभु एक क्षण में ही प्राणी को इस जलन से पार कर देने वाला है॥ २॥ ऐसे अनेक बंधन हैं, जो काटे नहीं जा सकते। लेकिन भगवान के नाम का सिमरन करने से मनुष्य मोक्ष फल प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ हे नानक! मनुष्य किसी युक्ति अथवा चतुरता से कुछ नहीं कर सकता। हे प्रभु! कृपा कर चूंकि वह तेरा ही यश गायन करता रहे॥ ४॥ ८३॥ १५२॥

गउड़ी महला ५ ॥ थाती पाई हरि को नाम ॥ बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥ १ ॥ वडभागी हरि कीरतनु गाईऐ ॥ पारब्रहम तूं देहि त पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण हिरदै उरि धारि ॥ भव सागरु चड़ि उतरहि पारि ॥ २ ॥ साधू संगु करहु सभु कोइ ॥ सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥ ३ ॥ प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥ नानक दरगह पाईऐ मानु ॥ ४ ॥ ८४ ॥ १५३ ॥

जिसे हरि के नाम का धन प्राप्त हो जाता है, वह निसंकोच होकर संसार में गतिमान होता है और उसके सारे कार्य सफल हो जाते हैं॥ १॥ सौभाग्यवश ही ईश्वर का भजन गायन किया जा सकता है। हे मेरे पारब्रह्म प्रभु! यदि तू हम प्राणियों को गुणस्तुति की देन प्रदान करे तो ही मिल सकती है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसाओ। प्रभु-चरणों के जहाज पर सवार होने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ २॥ प्रत्येक प्राणी को संतों की संगति करनी चाहिए, जिससे सदैव कल्याण मिलता है और पुनः कोई दुःख प्राप्त नहीं होता॥ ३॥ हे नानक! प्रेमा-भक्ति द्वारा गुणों के भण्डार भगवान का भजन करो, इस तरह प्रभु के दरबार में मान-सम्मान प्राप्त होता है॥ ४॥ ८४॥ १५३॥

गउड़ी महला ५ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥ १ ॥ ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥ जा कै सिमरणि जम नही डरूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ सगल दूख का होइआ नासु ॥ २ ॥ आसा माणु ताणु धनु एक ॥ साचे साह की मन महि टेक ॥ ३ ॥ महा गरीब जन साध अनाथ ॥ नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥ ४ ॥ ८५ ॥ १५४ ॥

जल, धरती एवं गगन में मित्र–प्रभु सर्वव्यापक है। उस प्रभु का नित्य यशोगान करने से भ्रम निवृत्त हो जाते हैं॥ १॥ जागते–सोते हर समय प्रभु मनुष्य के साथ रक्षक–रूप में है। उस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य मृत्यु के दूत के भय से रहित हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि प्रभु के सुन्दर चरण हृदय में निवास कर जाए तो तमाम दुःख–क्लेश नष्ट हो जाते हैं॥ २॥ एक ईश्वर ही मेरी आशा, प्रतिष्ठा, बल एवं धन है। मेरे हृदय में सच्चे साहूकार का ही सहारा है॥ ३॥ हे नानक! परमात्मा के संतों का मैं एक महा निर्धन एवं अनाथ सेवक हूँ। परन्तु ईश्वर ने अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की है॥ ४॥ ८५॥ १५४॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ कोटि ग्रहण पुंन फल मूचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण रिदे महि बसे ॥ जनम जनम के किलविख नसे ॥ १ ॥ साधसंगि कीरतन फलु पाइआ ॥ जम का मारगु द्रिसटि न आइआ ॥ २ ॥ मन बच क्रम गोविंद अधारु ॥ ता ते छुटिओ बिखु संसारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ नानक जापु जपे हरि जपना ॥ ४ ॥ ८६ ॥ १५५ ॥

हरि–परमेश्वर के नाम (तीर्थ) में स्नान करने से मैं पवित्र हो गया हूँ। नाम–तीर्थ में स्नान करने से करोड़ों ग्रहणों के समय किए दान–पुण्य से भी अधिक फल प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि भगवान के सुन्दर चरण हृदय में निवास कर जाएँ तो जन्म–जन्मांतरों के पाप नाश हो जाते हैं॥ १॥ सत्संग में ईश्वर का भजन गायन करने का फल मुझे मिल गया है और इसलिए मृत्यु का मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता॥ २॥ जो व्यक्ति अपने मन, वचन एवं कर्म का आधार गोविन्द के नाम को बना लेता है, वह विषैले भवसागर से पार हो जाता है॥ ३॥ हे नानक! भगवान ने जिस व्यक्ति को अपनी कृपा करके अपना बना लिया है, वह सदा प्रभु का जाप जपता है और प्रभु का भजन करता रहता है॥ ४॥ ८६॥ १५५॥

गउड़ी महला ५ ॥ पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥ १ ॥ भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥ डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥ २ ॥ जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥ सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥ ३ ॥ मीतु साजनु सखा प्रभु एक ॥ नामु सुआमी का नानक टेक ॥ ४ ॥ ८७ ॥ १५६ ॥

हे जीव! जिन्होंने भगवान को समझ लिया है, उनकी शरण में पड़े रहो। भगवान के चरणों में मग्न होने से मन एवं तन शीतल हो जाते हैं॥ १॥ जो व्यक्ति भयनाशक प्रभु को अपने मन में नहीं बसाता, उसके अनेक जन्म इसी आतंक–भय में कांपते हुए बीत जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है, उसकी तमाम मनोकामनाएँ एवं कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ २॥ जिसके वश में जन्म, बुढ़ापा एवं मृत्यु है उस सर्वशक्तिमान प्रभु को अपने हर श्वास एवं ग्रास से स्मरण करता रह॥ ३॥ हे नानक! एक ईश्वर ही हमारा मित्र, साजन और साथी है। जगत् के स्वामी प्रभु का नाम ही उसका एकमात्र सहारा है॥ ४॥ ८७॥ १५६॥

गउड़ी महला ५ ॥ बाहरि राखिओ रिदै समालि ॥ घरि आए गोविंदु लै नालि ॥ १ ॥ हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ मनु तनु राता राम कै रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ जनम जनम के किलविख सभि हिरिआ ॥ २ ॥ सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ पूरे गुर का निरमल मंतु ॥ ३ ॥ चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ नानकु पेखि जीवै परतापु ॥ ४ ॥ ८८ ॥ १५७ ॥

संतजन संसार के साथ लोक–व्यवहार करते हुए गोविन्द को अपने मन में बसाकर रखते हैं। घर को लौटते हुए वह उसको साथ लेकर आते हैं॥ १॥ हरि–परमेश्वर का नाम संतजनों का साथी है। उनका मन एवं तन राम के प्रेम रंग में ही मग्न रहता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की कृपा से संसार सागर से पार हुआ जा सकता है और जन्म–जन्मांतरों के तमाम पाप नाश हो जाते हैं॥ २॥ भगवान के नाम से ही मनुष्य को शोभा एवं सुरति प्राप्त होती है। पूर्ण गुरु का नाम–मंत्र सदैव निर्मल है॥ ३॥ भगवान के चरण–कमलों का हृदय में भजन कर। नानक तो उस ईश्वर का प्रताप देखकर जीवन प्राप्त करता है॥ ४॥ ८८॥ १५७॥

गउड़ी महला ५ ॥ धंनु इहु थानु गोविंद गुण गाए ॥ कुसल खेम प्रभि आपि बसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥ १ ॥ हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥ प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥ २ ॥ सो वडभागी निहचल थानु ॥ जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥ ३ ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी ॥ नानक कउ मिलिआ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ८९ ॥ १५८ ॥

वह स्थान बड़ा धन्य है, जहाँ गोविन्द की गुणस्तुति की जाती है। प्रभु स्वयं उनको सुख व आनंद में (कुशलक्षेम) बसाता है॥ १॥ रहाउ॥ जहाँ प्रभु का भजन नहीं होता है, वहाँ विपदा विद्यमान है। वहाँ करोड़ों ही आनंद हैं, जहाँ भगवान की महिमा का गायन किया जाता है॥ १॥ प्रभु को विस्मृत करने से मनुष्य को अधिकतर दुख एवं रोग लग जाते हैं। प्रभु की सेवा–भक्ति के फलस्वरूप यमदूत प्राणी के निकट नहीं आता॥ २॥ वह स्थान सौभाग्यशाली एवं अटल है, जहाँ केवल प्रभु के नाम का ही जाप होता रहता है॥ ३॥ जहाँ कहीं भी मैं जाता हूँ, वहाँ मेरा स्वामी मेरे साथ होता है। नानक को अन्तर्यामी प्रभु मिल गया है॥ ४॥ ८९॥ १५८॥

गउड़ी महला ५॥ जो प्राणी गोविंदु धिआवै ॥ पड़िआ अणपड़िआ परम गति पावै ॥ १ ॥ साधू संगि सिमरि गोपाल ॥ बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूपवंतु सो चतुरु सिआणा ॥ जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥ २ ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक जा के पूरन भाग ॥ हरि चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ ९० ॥ १५९ ॥

जो प्राणी गोविन्द का ध्यान करता है, वह चाहे विद्वान हो अथवा अनपढ़–वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ १॥ हे भाई! संतों की सभा में रहकर गोपाल का सिमरन करो, क्योंकि नाम के बिना धन–दौलत एवं सम्पत्ति सब झूठे हैं॥ १॥ रहाउ॥ केवल वही मनुष्य सुन्दर, चतुर एवं बुद्धिमान है, जो व्यक्ति प्रभु की इच्छा को स्वीकार करता है॥ २॥ इस दुनिया में उसका जन्म ही सफल होता है, जो सर्वव्यापक प्रभु को जान लेता है॥ ३॥ हे नानक! जिसके भाग्य पूर्ण हैं, वही व्यक्ति ईश्वर के चरणों में अपने मन को लगाता है॥ ४॥ ९०॥ १५९॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥ ओहु बिखई ओसु राम को रंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥ १ ॥ बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥ गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥ २ ॥ गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥ ३ ॥ नानक राम नामु जपि चीत ॥ सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥ ४ ॥ ९१ ॥ १६० ॥

प्रभु-भक्त के साथ (भगवान से टूटे हुए) शाक्त इन्सान का साथ नहीं होता। क्योंकि वह नास्तिक विषयों का प्रेमी होता है और उस भक्त को प्रभु का रंग चढ़ा होता है॥ १॥ रहाउ॥ उनका मिलन ऐसे है, जैसे अनाड़ी घुड़सवार के लिए एक सुसज्जित घोड़ी हो। जैसे कोई नपुंसक किसी नारी को प्रेम करता है॥ १॥ नास्तिक और आस्तिक का मिलन ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति बछड़े द्वारा बैल दुहता हो। जैसे गाय पर सवार होकर व्यक्ति शेर का पीछा करता है॥ २॥ जैसे कोई व्यक्ति भेड़ लेकर उसे कामधेनु समझकर पूजा-अर्चना करने लगे अथवा जैसे धन-दौलत के बिना व्यक्ति सौदा खरीदने के लिए जाता है॥ ३॥ हे नानक! अपने मन में राम नाम का जाप कर। तू मित्र जैसे स्वामी प्रभु की आराधना कर॥ ४॥ ६१॥ १६०॥

गउड़ी महला ५ ॥ सा मति निरमल कहीअत धीर ॥ राम रसाइणु पीवत बीर ॥ १ ॥ हरि के चरण हिरदै करि ओट ॥ जनम मरण ते होवत छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ राम रंगि निरमल परतापु ॥ २ ॥ साधसंगि मिटि जात बिकार ॥ सभ ते ऊच एहो उपकार ॥ ३ ॥ प्रेम भगति राते गोपाल ॥ नानक जाचै साध रवाल ॥ ४ ॥ ६२ ॥ १६१ ॥

हे भाई! वही बुद्धि निर्मल एवं धैर्यवान कही जाती है, जो राम के अमृत (नाम) का पान करती है॥ १॥ अपने हृदय में ईश्वर के चरणों का सहारा ले। इस तरह जन्म-मरण से तुझे मुक्ति प्राप्त हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ वही शरीर निर्मल है, जिसके भीतर पाप उत्पन्न नहीं होता। राम के प्रेम (रंग) से व्यक्ति का निर्मल प्रताप बढ़ता जाता है॥ २॥ संतों की संगति में रहने से (मनुष्य के) पाप नष्ट हो जाते हैं। संतों की संगति का यही सर्वोच्च उपकार है॥ ३॥ नानक ऐसे संतों की चरण-धूलि की याचना करता है, जो गोपाल के प्रेमा-भक्ति के रंग में मग्न रहते हैं॥ ४॥ ६२॥ १६१॥

गउड़ी महला ५ ॥ ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥ मेलि लए पूरन वडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥ १ ॥ पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥ २ ॥ लोभी अनदु करै पेखि धना ॥ जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥ ३ ॥ बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥ नानक के प्रभ प्रान अधार ॥ ४ ॥ ६३ ॥ १६२ ॥

मुझे गोविन्द से ऐसा प्रेम हो गया है कि उसने मुझे अपने साथ मिला लिया है और मैं पूर्ण भाग्यशाली हो गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जैसे पत्नी अपने पति को देख कर हर्षित होती है, वैसे ही प्रभु का सेवक उसके नाम को उच्चारण करने से आत्मिक प्रसन्नतापूर्वक जीता है॥ १॥ जैसे अपने पुत्र को देखकर माता जीवन ग्रहण करती है, वैसे ही प्रभु का भक्त परमात्मा के साथ ताने-बाने के धागे के तुल्य मग्न रहता है॥ २॥ जैसे कोई लोभी व्यक्ति धन को देख कर प्रसन्नता व्यक्त करता है, वैसे ही प्रभु के भक्त का मन प्रभु के चरण कमलों से लगा रहता है॥ ३॥ हे मेरे दाता! तुम मुझे क्षण भर के लिए विस्मृत न हो। नानक का प्रभु उसके प्राणों का सहारा है॥ ४॥ ६३॥ १६२॥

गउड़ी महला ५ ॥ राम रसाइणि जो जन गीधे ॥ चरन कमल प्रेम भगती बीधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ नाम बिना निहफल संसार ॥ १ ॥ अंध कूप ते काढे आपि ॥ गुण गोविंद अचरज परताप ॥ २ ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि पूरन गोपाल ॥ ब्रहम पसारु जीअ संगि दइआल ॥ ३ ॥ कहु नानक सा कथनी सारु ॥ मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥ ४ ॥ ६४ ॥ १६३॥

जो भक्त राम के अमृत (नाम) में लीन हुए हैं, वह उसके चरण-कमलों की प्रेमा-भक्ति में बंधे हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ ऐसे भक्तों को दूसरे भोग-विलास राख के तुल्य दिखाई देते हैं। भगवान के नाम

गउड़ी महला ५ ॥ गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥ पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥ १ ॥ पूरा निआउ करे करतारु ॥ अपुने दास कउ राखनहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥ निंदकु मुआ उपजि वड तापु ॥ २ ॥ तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥ आगै पाछै मंदी सोइ ॥ ३ ॥ अपुने दास राखै कंठि लाइ ॥ सरणि नानक हरि नामु धिआइ ॥ ४ ॥ ६८ ॥ १६७ ॥

हे प्राणी ! जो दाढ़ी निर्धनों पर खिझती रहती है, उस दाढ़ी को पारब्रहम-प्रभु ने अग्नि में जला दिया है (अर्थात् जो मनुष्य गुस्से में आकर अहंकारवश दूसरों को तंग करता है, वह स्वयं भी क्रोधाग्नि में जलता रहता है)॥ १॥ सृष्टि का निर्माता प्रभु पूर्ण न्याय करता है। वह अपने सेवकों का रखवाला है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! सृष्टि के प्रारम्भ से, युगों के आदिकाल से ही प्रभु का प्रताप उजागर है। निंदक मनुष्य भारी ताप से प्राण त्याग देता है॥ २॥ उसको उस प्रभु ने मार दिया है, जिसे कोई बचा नहीं सकता। ऐसे मनुष्य की लोक-परलोक में बदनामी ही होती है॥ ३॥ हे नानक ! अपने सेवकों को प्रभु अपने गले से लगाकर रखता है। हमें प्रभु की ही शरण लेनी चाहिए और भगवान के नाम का ध्यान करना चाहिए॥ ४॥ ६८॥ १६७॥

गउड़ी महला ५ ॥ महजरु झूठा कीतोनु आपि ॥ पापी कउ लागा संतापु ॥ १ ॥ जिसहि सहाई गोबिदु मेरा ॥ तिसु कउ जमु नही आवै नेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साची दरगह बोलै कूड़ु ॥ सिरु हाथ पछोड़ै अंधा मूड़ु ॥ २ ॥ रोग बिआपे करदे पाप ॥ अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥ ३ ॥ अपन कमाइऐ आपे बाधे ॥ दरबु गइआ सभु जीअ कै साथै ॥ ४ ॥ नानक सरनि परे दरबारि ॥ राखी पैज मेरै करतारि ॥ ५ ॥ ६९ ॥ १६८ ॥

ईश्वर ने स्वयं दावा झूठा सिद्ध कर दिया है। अपराधी को विपदा पड़ गई है॥ १॥ जिसका सहायक मेरा गोविन्द है। मृत्यु उसके निकट भी नहीं आती॥ १॥ रहाउ॥ ज्ञानहीन मूर्ख मनुष्य ईश्वर के सच्चे दरबार में झूठ बोलता है और अपने हाथों से अपना सिर पीटता है॥ २॥ जो व्यक्ति पाप करते रहते हैं, उन्हें अनेक रोग लग जाते हैं। ईश्वर स्वयं ही न्यायकर्त्ता बनकर बैठा हुआ है॥ ३॥ मनुष्य अपने कर्मों के कारण स्वयं ही बंध गए हैं। सारा धन-पदार्थ जीवन (प्राणों) के साथ ही चला जाता है॥ ४॥ हे नानक ! जिन्होंने प्रभु के दरबार में शरण ली है। मेरे करतार ने उनकी प्रतिष्ठा रख ली है॥ ५॥ ६९॥ १६८॥

गउड़ी महला ५ ॥ जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥ पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि मन पूरि थिधाई ॥ साध धूरि करि सुध मंजाई ॥ १ ॥ अनिक जला जे धोवै देही ॥ मैलु न उतरै सुधु न तेही ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटिओ सदा क्रिपाल ॥ हरि सिमरि सिमरि काटिआ भउ काल ॥ ३ ॥ मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥ प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥ ४ ॥ १०० ॥ १६९ ॥

जिस प्राणी के ललाट पर पूर्व जन्म में किए कर्मों अनुसार आदि से लेख लिखा होता है, उसके मन को भगवान के सेवक की चरण-धूलि ही मीठी लगती है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति का मन अहंकारी बुद्धि की चिकनाई से भरा हुआ होता है। संतों के चरणों की धूलि से साफ करके शुद्ध हो जाता है॥ १॥ यदि शरीर को अनेक जलों से धोया जाए, उससे इसकी मलिनता नहीं उतरती और यह शुद्ध नहीं होता॥ २॥ मुझे सदैव ही कृपा का घर सतिगुरु मिल गया है, और भगवान का सिमरन करने से मैंने मृत्यु के भय को निवृत्त कर दिया है॥ ३॥ भगवान का नाम ही मुक्ति, भुक्ति एवं युक्ति है। हे नानक ! प्रेमा-भक्ति से ईश्वर की गुणस्तुति करते रहो॥ ४॥ १००॥ १६९॥

गउड़ी महला ५ ॥ जीवन पदवी हरि के दास ॥ जिन मिलिआ आतम परगासु ॥ १ ॥ हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥ सुखु पावहि हरि दुआर परानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर धिआईऐ गोपालु ॥ नानक दरसनु देखि निहालु ॥ २ ॥ १०१ ॥ १७० ॥

ईश्वर के सेवक (नाम सिमरन करके) जीवन पदवी प्राप्त कर लेते हैं। उन्हें मिलने से आत्मा को (ज्ञान का) प्रकाश मिलता है॥ १॥ हे नश्वर प्राणी! अपने मन से ध्यानपूर्वक भगवान का सिमरन सुनो, तुझे प्रभु के द्वार पर सुख प्राप्त होगा॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! हमें आठ प्रहर भगवान का ध्यान करना चाहिए, जिसके फलस्वरूप भगवान के दर्शन करने से मनुष्य का मन कृतार्थ हो जाता है॥ २॥१०१॥ १७०॥

गउड़ी महला ५ ॥ सांति भई गुर गोबिदि पाई ॥ ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु नित रसन बखान ॥ बिनसे रोग भए कलिआन ॥ १ ॥ पारब्रहम गुण अगम बीचार ॥ साधू संगमि है निसतार ॥ २ ॥ निरमल गुण गावहु नित नीत ॥ गई बिआधि उबरे जन मीत ॥ ३ ॥ मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥ ४ ॥ १०२ ॥ १७१ ॥

गोबिन्द गुरु ने जिस व्यक्ति को नाम की देन प्रदान की है, उसे शांति प्राप्त हो गई है। हे मेरे भाई! उस व्यक्ति की जलन एवं पाप नष्ट हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ अपनी जिह्वा से नित्य ही राम के नाम का बखान करते रहो। तेरे समस्त रोग दूर हो जाएँगे और तुझे मुक्ति प्राप्त होगी॥ १॥ अगम्य पारब्रह्म के गुणों का चिन्तन करते रहो। संतों की संगति में रहने से कल्याण की प्राप्ति होती है॥ २॥ हे मेरे मित्र! जो मनुष्य सदैव हरि की पवित्र महिमा गायन करता है, उसके रोग दूर हो जाते हैं और वह भवसागर से बच जाता है॥ ३॥ मन, वचन एवं कर्म से मैं अपने प्रभु की आराधना करता रहता हूँ। हे प्रभु! दास नानक ने तेरी ही शरण ली है॥ ४॥ १०२॥ १७१॥

गउड़ी महला ५ ॥ नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥ भरम गए पूरन भई सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सीतला ते रखिआ बिहारी ॥ पारब्रहम प्रभ किरपा धारी ॥ १ ॥ नानक नामु जपै सो जीवै ॥ साधसंगि हरि अंम्रितु पीवै ॥ २ ॥ १०३ ॥ १७२ ॥

गुरदेव ने ज्ञान नेत्र दिए हैं। जिससे मेरे भ्रम दूर हो गए हैं और मेरी साधना सफल हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ हे दयालु प्रभु! तूने ही दया करके सीतला से बचाया है। (वर्णनीय है कि गुरु हरिगोबिन्द जी बचपन में सीतला की लपेट में आ गए थे) पारब्रह्म प्रभु ने अपनी कृपा धारण की है॥ १॥ हे नानक! जो प्रभु के नाम का जाप करता है, उसे ही जीवन प्राप्त होता है। संतों की संगति में रहकर वह हरि अमृत का पान करता है॥ २॥ १०३॥ १७२॥

गउड़ी महला ५ ॥ धनु ओहु मसतकु धनु तेरे नेत ॥ धनु ओइ भगत जिन तुम संगि हेत ॥ १ ॥ नाम बिना कैसे सुखु लहीऐ ॥ रसना राम नाम जसु कहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन ऊपरि जाईऐ कुरबाणु ॥ नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥ २ ॥ १०४ ॥ १७३ ॥

हे ईश्वर! वह मस्तक धन्य है (जो तेरे समक्ष झुकता है), ये नेत्र भी धन्य हैं जो तेरे दर्शन करते हैं। वह भक्त धन्य हैं जिनका तेरे साथ अनुराग बना रहता है॥ १॥ प्रभु के नाम-स्मरण के बिना कभी सुख नहीं मिल सकता। हमें अपनी रसना से राम नाम का ही यश बखान करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! जिन्होंने निर्लिप्त प्रभु के नाम का जाप किया है, हमें उन पर सर्वदा ही कुर्बान होना चाहिए॥२॥ १०४॥ १७३॥

गउड़ी महला ५ ॥ तूंहै मसलति तूंहै नालि ॥ तूहै राखहि सारि समालि ॥ १ ॥ ऐसा रामु दीन दुनी सहाई ॥ दास की पैज रखै मेरे भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगै आपि इहु थानु वसि जा कै ॥ आठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥ २ ॥ पति परवाणु सचु नीसाणु ॥ जा कउ आपि करहि फुरमानु ॥ ३ ॥ आपे दाता आपि प्रतिपालि ॥ नित नित नानक राम नामु समालि ॥ ४ ॥ १०५ ॥ १७४ ॥

हे भगवान! तू ही मेरा सलाहकार हैं और तू ही मेरे साथ रहता है। तू ही ध्यानपूर्वक मेरी रक्षा करता है॥ १॥ हे मेरे भाई! ऐसा है मेरा राम जो इहलोक एवं परलोक में मेरा सहायक है। वह अपने सेवक की लाज-प्रतिष्ठा रखता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस प्रभु के वश में यह लोक है, वही स्वयं परलोक में भी रक्षक है। यह मन दिन-रात भगवान के नाम का जाप करता रहता है॥ २॥ उसकी प्रतिष्ठा स्वीकृत होती है और उसको ही सत्यनाम का चिन्ह लगता है, जिसके लिए प्रभु स्वयं हुक्म लागू करता है॥ ३॥ ईश्वर स्वयं दाता है और स्वयं ही पालनहार है। हे नानक! हमेशा ही प्रभु के नाम की आराधना करते रहो॥ ४॥ १०५॥ १७४॥

गउड़ी महला ५ ॥ सतिगुरु पूरा भइआ क्रिपालु ॥ हिरदै वसिआ सदा गुपालु ॥ १ ॥ रामु रवत सद ही सुखु पाइआ ॥ मइआ करी पूरन हरि राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ हरि हरि नामु असथिरु सोहागु ॥ २ ॥ १०६ ॥

जब पूर्ण सतिगुरु जी कृपा के घर में आ जाते हैं तो जगत् का मालिक गोपाल मनुष्य के हृदय में हमेशा के लिए निवास कर लेता है॥ १॥ राम का चिन्तन करने से मुझे सदैव सुख प्राप्त हो गया है। पूर्ण हरि-परमेश्वर ने मुझ पर बड़ी दया धारण की है॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! कह - जिस व्यक्ति के मस्तक पर पूर्ण भाग्य उदय होते हैं, वह सदा प्रभु-परमेश्वर का नाम-स्मरण करता है और सदा स्थिर रहने वाला स्वामी अपना हाथ रखता है॥ २॥ १०६॥

गउड़ी महला ५ ॥ धोती खोलि विछाए हेठि ॥ गरधप वांगू लाहे पेटि ॥ १ ॥ बिनु करतूती मुकति न पाईऐ ॥ मुकति पदारथु नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा तिलक करत इसनानां ॥ छुरी काढि लेवै हथि दाना ॥ २ ॥ बेदु पड़ै मुखि मीठी बाणी ॥ जीआं कुहत न संगै पराणी ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु किरपा धारै ॥ हिरदा सुधु ब्रहमु बीचारै ॥ ४ ॥ १०७ ॥

हे मान्यवर! ब्राह्मण अपनी धोती खोलकर अपने नीचे विछा लेता है। जो कुछ उसके हाथ (खीर-पूरी इत्यादि) आता है, गधे की भाँति अपने पेट में डालता रहता है॥ १॥ शुभ कर्मों के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। मुक्ति तो भगवान के नाम का ध्यान करने से ही मिलती है॥ १॥ रहाउ॥ ब्राह्मण पूजा-अर्चना एवं स्नान करता है और अपने माथे पर तिलक लगाता है। दान-पुण्य लेने के लिए स्वर्ग का धोखा देकर छुरी निकाल लेता है। (अर्थात् निर्दयता से दान लेता है)॥ २॥ वह अपने मुख से मधुर स्वर में वेदों का पाठ करता है। नश्वर मनुष्य जीव-जन्तुओं को मारने में संकोच नहीं करता॥ ३॥ हे नानक! जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपा करता है, उसका हृदय शुद्ध हो जाता है और वह प्रभु का चिन्तन करता रहता है॥ ४॥ १०७॥

गउड़ी महला ५ ॥ थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे ॥ सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ जन की पैज रखी करतारे ॥ १ ॥ बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥ अंम्रित नाम महा रस पीने ॥ २ ॥ निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥ ३ ॥ सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥ नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥ ४ ॥ १०८ ॥

हे प्रभु के प्रिय भक्तजनों! अपने हृदय घर में एकाग्रचित होकर बैठो। सतिगुरु ने तुम्हारे कार्य संवार दिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर ने दुष्ट एवं नीचों का नाश कर दिया है। अपने सेवक की प्रतिष्ठा सृजनहार प्रभु ने रखी है॥ १॥ संसार के राजा-महाराजा प्रभु ने अपने सेवक के सब अधीन कर दिए हैं। उसने प्रभु के अमृत नाम का परम रस पान किया है॥ २॥ निडर होकर भगवान का भजन करो। साध संगत में मिलकर प्रभु स्मरण का यह दान (फल) दूसरों को भी प्रदान करो॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे अन्तर्यामी प्रभु! मैं तेरी शरण में हूँ और उसने जगत् के स्वामी प्रभु का सहारा ले लिया है॥ ४॥ १०८॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि संगि राते भाहि न जलै ॥ हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥ हरि संगि राते नही डूबै जला ॥ हरि संगि राते सुफल फला ॥ १ ॥ सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥ हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥ हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥ हरि संगि राते पूरन आस ॥ २ ॥ हरि संगि राते दूखु न लागै ॥ हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥ हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥ हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै ॥ ३ ॥ हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥ हरि संगि राते निरमल सोइ ॥ कहु नानक तिन कउ बलि जाई ॥ जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥ ४ ॥ १०९ ॥

जो व्यक्ति भगवान की भक्ति में मग्न रहता है, वह तृष्णा की अग्नि में नहीं जलता। जो व्यक्ति प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है, उससे माया किसी प्रकार का छल नहीं करती। जो व्यक्ति भगवान की स्मृति में मग्न रहता है, वह भवसागर के जल में नहीं डूबता। जो व्यक्ति प्रभु की प्रीति में मग्न रहता है, उसको जीवन का श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है॥ १॥ हे प्रभु! तेरे नाम से सारे भय नाश हो जाते हैं। हे नश्वर प्राणी! सत्संग में मिलकर तू हरि प्रभु का यश-गायन करता रह॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति भगवान की याद में मग्न रहता है, उसकी तमाम चिन्ता मिट जाती है। लेकिन भगवान की याद में वही व्यक्ति जुड़ता है जिसे साधु का नाम-मंत्र मिल जाता है। प्रभु की याद में अनुरक्त होने से मृत्यु का भय नहीं सताता। प्रभु की स्मृति में अनुरक्त होने से तमाम मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं॥ २॥ परमात्मा के चरणों में जुड़े रहने से कोई दुःख स्पर्श नहीं करता। प्रभु के चिंतन में मस्त हुआ व्यक्ति दिन-रात सचेत रहता है। प्रभु के चिंतन में जुड़े रहने से व्यक्ति सहज घर में वास करता है। प्रभु के स्मरण में रहने से मनुष्य का भ्रम एवं भय दौड़ जाते हैं॥ ३॥ प्रभु के चिन्तन में जुड़े रहने से बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। प्रभु के स्मरण में जुड़े रहने से जीवन-आचरण निर्मल हो जाता है। हे नानक! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो मेरे प्रभु को विस्मृत नहीं करते॥ ४॥ १०९॥

गउड़ी महला ५ ॥ उदमु करत सीतल मन भए ॥ मारगि चलत सगल दुख गए ॥ नामु जपत मनि भए अनंद ॥ रसि गाए गुन परमानंद ॥ १ ॥ खेम भइआ कुसल घरि आए ॥ भेटत साधसंगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥ धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥ गोबिंद की टहल सफल इह कांइआ ॥ संत प्रसादि परम पदु पाइआ ॥ २ ॥ जन की कीनी आपि सहाइ ॥ सुखु पाइआ लगि दासह पाइ ॥ आपु गइआ ता आपहि भए ॥ क्रिपा निधान की सरनी पए ॥ ३ ॥ जो चाहत सोई जब पाइआ ॥ तब ढूंढन कहा को जाइआ ॥ असथिर भए बसे सुख आसन ॥ गुर प्रसादि नानक सुख बासन ॥ ४ ॥ ११० ॥

संतों की पावन सभा में जाने का उद्यम करने से मन शीतल हो जाता है। प्रभु-मार्ग का अनुसरण करने से तमाम दुःख दूर हो गए हैं। प्रभु के नाम का जाप करने से मन प्रसन्न हो जाता है। प्रेमपूर्वक

प्रभु की महिमा गायन करने से परमानंद प्राप्त हो जाता है॥ १॥ संतों की सभा में रहने से तमाम मुसीबतें दूर हो गई हैं और चारों ओर खुशियाँ हो गई हैं तथा प्रसन्नता घर में आ गई है। ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु जी के दर्शन करते ही नेत्र पुनीत हो जाते हैं। गुरु जी के चरणों को स्पर्श करते ही मस्तक प्रशंसनीय हो जाता है। यह शरीर गोविन्द की सेवा करने से फलदायक हो जाता है। संतों की कृपा से मुझे परम पद (मोक्ष) मिल गया है॥ २॥ अपने सेवकों की प्रभु स्वयं ही सहायता करता है। प्रभु के सेवकों के चरण स्पर्श करके मुझे सुख उपलब्ध हो गया है। जब अहंत्व चला जाता है तो मनुष्य स्वयं ही स्वामी हो जाता है और दया के भण्डार प्रभु की शरण लेता है॥ ३॥ जब मनुष्य भगवान को पा लेता है, जिसकी वह कामना करता रहता है, तब वह उसको ढूँढने के लिए किसी स्थान पर नहीं जाता। वह अमर हो जाता है और सुख के आसन में वास करता है। हे नानक! गुरु की कृपा से वह प्रसन्नता के घर में दाखिल हो गया है॥ ४॥ ११०॥

गउड़ी महला ५ ॥ कोटि मजन कीनो इसनान ॥ लाख अरब खरब दीनो दानु ॥ जा मनि वसिओ हरि को नामु ॥ १ ॥ सगल पवित गुन गाइ गुपाल ॥ पाप मिटहि स.धू सरनि दइआल ॥ रहाउ ॥ बहुतु उरध तप साधन साधे ॥ अनिक लाभ मनोरथ लाधे ॥ हरि हरि नाम रसन आराधे ॥ २ ॥ सिंम्रिति सासत बेद बखाने ॥ जोग गिआन सिध सुख जाने ॥ नामु जपत प्रभ सिउ मन माने ॥ ३ ॥ अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥ नामु जपत नामु रिदे बीचारे ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारे ॥ ४ ॥ १११ ॥

जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में भगवान का नाम निवास कर लेता है, उसने (मानो) करोड़ों तीर्थों पर स्नान कर लिए और लाखों, अरबों एवं खरबों पुण्यदान करने का फल प्राप्त कर लेता है॥ १॥ जो व्यक्ति गोपाल की गुणस्तुति करते हैं, वे सभी पवित्र हैं। दयालु संतों का आश्रय लेने से पाप नाश हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति अपनी रसना से हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना करता रहता है, मानो उसने अधिकतर उल्टे लटककर अनेकों तपों के साधन साध लिए तथा अनेक लाभ और मनोकामनाएँ प्राप्त करने का फल पा लिया है॥ २॥ जब मनुष्य प्रभु से संतुष्ट हो जाता है और उसका नाम-स्मरण करता है, मानो उसने स्मृतियां, शास्त्र एवं वेदों का बखान कर लिया है और उसने योग, ज्ञान एवं सिद्धियों का सुख समझ लिया है॥ ३॥ उस अगम्य, अपरंपार भगवान का ज्ञान अगाध है। नानक पर ईश्वर ने कृपा की है और वह नाम का जाप करता है और हरि के नाम का ही वह अपने हृदय में ध्यान करता है॥ ४॥ १११॥

गउड़ी मः ५ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥ चरन कमल गुर रिदै बसाइआ ॥ १ ॥ गुर गोबिंदु पारब्रहमु पूरा ॥ तिसहि अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥ अनदिनु जपउ गुरू गुर नाम ॥ ता ते सिधि भए सगल कांम ॥ २ ॥ दरसन देखि सीतल मन भए ॥ जनम जनम के किलबिख गए ॥ ३ ॥ कहु नानक कहा भै भाई ॥ अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥ ४ ॥ ११२ ॥

भगवान का सिमरन करने से मुझे सुख प्राप्त हो गया है और गुरु के सुन्दर चरण कमल अपने हृदय में बसा लिए हैं॥ १॥ पारब्रह्म, गुरु-गोविन्द सर्वोपरि है। उसकी आराधना करने से मेरा मन धैर्यवान हो गया है॥ रहाउ॥ मैं तो रात-दिन गुरु का नाम ही जपता रहता हूँ। जिसकी कृपा से मेरे तमाम कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं॥ २॥ गुरु जी के दर्शन करके मेरा मन शीतल हो गया है और मेरे जन्म-जन्मांतरों के पाप मिट गए हैं॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे भाई! मेरे लिए अब भय कहाँ है? अपने सेवक की गुरु ने स्वयं ही लाज-प्रतिष्ठा रखी है॥ ४॥ ११२॥

गउड़ी महला ५ ॥ अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥ नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥ १ ॥ प्रभ की सरनि उबरै सभ कोइ ॥ करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥ अब मनि बसिआ करनैहारा ॥ भै बिनसे आतम सुख सारा ॥ २ ॥ करि किरपा अपने जन राखे ॥ जनम जनम के किलबिख लाथे ॥ ३ ॥ कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥ नानक दास सदा सरनाई ॥ ४ ॥ ११३ ॥

भगवान अपने सेवक का स्वयं ही सहायक होता है। वह नित्य ही ऐसे देखभाल करता है जैसे माता–पिता करते हैं॥ १॥ प्रभु की शरण में आने से हरेक व्यक्ति का उद्धार हो जाता है। वह परमात्मा ही सबकुछ करता एवं जीवों से करवाता है, जो सदैव सत्य एवं सर्वव्यापक है॥ रहाउ॥ अब मेरा मन उस जगत् के रचयिता प्रभु में वास करता है। जिससे सभी भय नाश हो गए हैं और आत्मा को सुख प्राप्त हो गया है॥ २॥ अपने सेवकों को प्रभु ने कृपा धारण करके बचा लिया है। उनके जन्म–जन्मांतरों के पाप निवृत्त हो गए हैं॥ ३॥ प्रभु की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। हे नानक! प्रभु के सेवक सदैव प्रभु की शरण में रहते हैं॥ ४॥ ११३॥

रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

राम को बलु पूरन भाई ॥ ता ते ब्रिथा न बिआपै काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो चितवै दासु हरि माई ॥ सो सो करता आपि कराई ॥ १ ॥ निंदक की प्रभि पति गवाई ॥ नानक हरि गुण निरभउ गाई ॥ २ ॥ ११४ ॥

हे भाई! राम की शक्ति सर्वव्यापक है। राम की उस शक्ति के प्रभाव से कोई दुःख–क्लेश प्रभावित नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरी माता! जो कुछ भी प्रभु का सेवक अपने मन में कल्पना करता है, वह सब कुछ परमात्मा स्वयं ही करवा देता है॥ १॥ निन्दा करने वालों की प्रभु इज्जत गंवा देता है। हे नानक! वह निडर प्रभु की गुणस्तुति करता रहता है॥ २॥ ११४॥

गउड़ी महला ५ ॥ भुज बल बीर ब्रहम सुख सागर गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥ १ ॥ दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ ॥ चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥ २ ॥ २ ॥ ११५ ॥

हे भुजबल शूरवीर प्रभु! हे सुखों के सागर! मैं (विकारों के) गड्ढे में गिर रहा हूँ, मुझे अंगुलि से पकड़ लीजिए॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! मेरे कानों में तेरी महिमा सुनने की सूझ नहीं, मेरे नयन सुन्दर नहीं और मैं दुखी एवं लंगड़ा तेरे द्वार पर पुकारता हूँ (कि मुझे विकारों के गड्ढे से बचा लो)॥ १॥ हे दीनानाथ! हे अनाथों पर करुणा करने वाले! तू ही मेरा मित्र, सखा, पिता एवं माता है। हे नानक! प्रभु के चरण कमलों को अपने हृदय से लगा कर रख, जो अपने संतों को भयानक सागर से पार कर देता है॥ २॥ २॥ ११५॥

रागु गउड़ी बैरागणि महला ५ १ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दय गुसाई मीतुला तूं संगि हमारै बासु जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुझ बिनु घरी न जीवना ध्रिगु रहणा संसारि ॥ जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥ १ ॥ हसत अलंबनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥ मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दइआल ॥ २ ॥ किआ सुख तेरे संमला

कवन बिधी बीचार ॥ सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥ ३ ॥ सगल पदारथ असट सिधि नाम महा रस माहि ॥ सुप्रसंन भए केसवा से जन हरि गुण गाहि ॥ ४ ॥ मात पिता सुत बंधपो तूं मेरे प्राण अधार ॥ साधसंगि नानकु भजे बिखु तरिआ संसारु ॥ ५ ॥ १ ॥ ११६ ॥

हे दया के पुंज! हे गुसाईं! तू मेरा प्रिय मित्र है और हमेशा ही मेरे साथ बसता रह॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तेरे बिना मैं एक क्षण भर के लिए भी जीवित नहीं रह सकता और तेरे बिना इस दुनिया में जीना धिक्कार योग्य है। हे आत्मा, प्राण एवं सुख प्रदान करने वाले प्रभु! हर क्षण मैं तुझ पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ हे गोपाल! मुझे अपने हाथ का आश्रय दीजिए और मुझे गड्ढे में से बाहर निकालें क्योंकि मैं निर्गुण एवं अल्पबुद्धि वाला हूँ लेकिन तू सदैव ही दीनदयाल है॥ २॥ तेरे दिए हुए कौन-कौन से सुख मैं स्मरण कर सकता हूँ और किस विधि से मैं तेरी आराधना कर सकता हूँ? हे सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार प्रभु! तू अपने सेवकों से प्रेम करता है और जो तेरा आश्रय लेते हैं, उनको अपने साथ लीन कर लेता है॥ ३॥ हे भाई! संसार के समस्त पदार्थ, आठों सिद्धियाँ, महा रस नाम के परम अमृत में विद्यमान हैं। हे भाई! जिन पर केशव सुप्रसन्न होता है, वे व्यक्ति प्रभु की गुणस्तुति करते रहते हैं॥ ४॥ हे प्राणों के आधार प्रभु! तू ही मेरी माता, पिता, पुत्र, रिश्तेदार सब कुछ तू ही है। संतों की संगति में नानक तेरा भजन करता है, जो तेरी स्तुति करता है वह विष से भरे संसार सागर से पार हो जाता है॥५॥१॥ ११६॥

गउड़ी बैरागणि रहोए के छंत के घरि मः ५ १ओं सतिगुर प्रसादि॥

है कोई राम पिआरो गावै ॥ सरब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥ बनु बनु खोजत फिरत बैरागी ॥ बिरले काहू एक लिव लागी ॥ जिनि हरि पाइआ से वडभागी ॥ १ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक चाहै ॥ जोगी जती सिध हरि आहै ॥ जिसहि परापति सो हरि गुण गाहै ॥ २ ॥ ता की सरणि जिन बिसरत नाही ॥ वडभागी हरि संत मिलाही ॥ जनम मरण तिह मूले नाही ॥ ३ ॥ करि किरपा मिलु प्रीतम पिआरे ॥ बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥ नानकु मांगतु नामु अधारे ॥ ४ ॥ १ ॥ ११७ ॥

कोई विरला व्यक्ति ही प्रिय राम का यश गायन करता है? वह सत्य, सर्व कल्याण एवं सुख प्राप्त कर लेता है॥ रहाउ॥ वैरागी अनेकों वनों में प्रभु की खोज हेतु जाता है। परन्तु कोई विरला पुरुष ही है जिसकी सुरति एक ईश्वर से लगती है। जिन्होंने भगवान को पा लिया है, ऐसे व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं॥ १॥ ब्रह्मा इत्यादि देवते एवं सनक, सनन्दन एवं सनत कुमार भी भगवान को मिलने की लालसा करते हैं। योगी, ब्रह्मचारी एवं सिद्ध पुरुष ईश्वर से मिलने की आशा करते रहते हैं। जिसको यह देन प्राप्त हुई है, वह ईश्वर की महिमा करता रहता है॥ २॥ मैंने उनकी शरण ली है, जिनको ईश्वर नहीं भूलता। बड़ी किस्मत से ही हरि का संत मिलता है। चूंकि वह जीवन-मृत्यु से वास्तव में मुक्त है॥ ३॥ हे मेरे प्रियतम प्यारे! कृपा करके मुझे दर्शन दीजिए। हे मेरे सर्वोपरि एवं अपार प्रभु! मेरी एक प्रार्थना सुनो, नानक तेरे नाम का आधार ही माँगता है॥ ४॥ १॥ ११७॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥ १ ॥ नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥ २ ॥ खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ११८ ॥

हे मेरी माता! मैं कौन से गुण द्वारा प्राणपति प्रभु को मिल सकती हूँ?॥ १॥ रहाउ॥ मैं रूपहीन, बुद्धिहीन एवं बलहीन हूँ और मैं परदेसिन विभिन्न योनियों की यात्रा से गुजरकर दूर से आई हूँ॥ १॥ मेरे पास न ही (नाम-) धन है और न ही यौवन का गर्व है। हे प्रभु! मुझ अनाथ को अपने साथ मिला लो॥ २॥ ढूँढते-ढूँढते मैं वैरागिन हो गई हूँ। प्रभु के दर्शनों हेतु मैं प्यासी होकर फिर रही हूँ॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे दीनदयाल! हे कृपा के घर प्रभु! संतों की संगति ने मेरी यह जुदाई की जलन बुझा दी है॥ ४॥ १॥ ११८॥

गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥ पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥ १ ॥ पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥ २ ॥ २ ॥ ११९ ॥

मेरे मन में प्रभु को मिलने के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है। यदि मुझे सौभाग्य से कोई गुरु-संत आकर मिल जाए, तो मैं उसके चरण स्पर्श करती हूँ और उसे विनती करती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपना मन उसको अर्पण करती हूँ, उसके समक्ष अपना धन अर्पित करती हूँ और मैंने अपने मन की मति सब त्याग दी है, जो मुझे प्रभु की हरि-कथा सुनाता है। मैं वैराग्यवान होकर रात-दिन उसके आगे-पीछे फिरती हूँ॥ १॥ जब पूर्व जन्मों में किए शुभ कर्मों के अंकुर प्रकट हो गए तो उसे सर्वव्यापक प्रभु मिल गया है जो समस्त प्राणियों में विराजमान होकर रस भोगने वाला है और जो रसों से निर्लिप्त भी है। हे नानक! ईश्वर को मिल जाने से मेरा (अज्ञानता का) अंधेरा मिट गया है और जन्म-जन्मांतरों की मोह-माया में सोई हुई मैं जाग गई हूँ॥ २॥ २॥ ११९॥

गउड़ी महला ५ ॥ निकसु रे पंखी सिमरि हरि पांख ॥ मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम रतनु हीअरे संगि राखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भ्रम की कूई त्रिसना रस पंकज अति तीख्यण मोह की फास ॥ काटनहार जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहु निवास ॥ १ ॥ करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ सुनहु अरदासि ॥ करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरी रासि ॥ २ ॥ ३ ॥ १२० ॥

हे मेरे मन रूपी पक्षी! भगवान के सिमरन को अपने पंख बनाकर संसार रूपी घोंसले से स्वयं को निकाल कर बचा ले। संतों से मिलकर उनकी शरण ले और प्रभु के पूर्ण नाम-रत्न को अपने हृदय से लगाकर रख॥ १॥ रहाउ॥ अंधविश्वास का एक लघु कुआँ है, हर्षोल्लास मनाने की तृष्णा इसका कीचड़ है और मोह की फाँसी अत्यंत तीक्ष्ण है। जगद्गुरु गोबिन्द उन बंधनों को काटने वाला है। उसके चरण कमलों में निवास करो॥ १॥ हे गोविन्द! हे दीनानाथ! हे मेरे प्रियतम प्रभु! कृपा करके मेरी प्रार्थना सुनो। हे नानक के स्वामी, मुझे हाथ से पकड़ ले, मेरी आत्मा और शरीर तमाम तेरी ही पूँजी हैं॥ २॥ ३॥ १२०॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥ आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है कोई संतु मिलावै नेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवा करउ दास दासन की अनिक भांति तिसु करउ निहोरा ॥ तुला धारि तोले सुख सगले बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥ १ ॥ संत प्रसादि गाए गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥ आनद सूख भेटत हरि नानक जनमु क्रितारथु सफलु सवेरा ॥ २ ॥ ४ ॥ १२१ ॥

मेरा मन भगवान के दर्शन करने के लिए उसका सिमरन करता रहता है। अपने स्वामी को देखने की आशा एवं प्यास में मैं दिन–रात उसका चिंतन करती हूँ। क्या कोई ऐसा संत है, जो मुझे निकट से उससे मिला दे॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपने स्वामी के सेवकों के सेवकों की सेवा करती हूँ और अनेक उपायों से उसके समक्ष निवेदन करती हूँ। मैंने तमाम सुख तराजू में रखकर तोले हैं, लेकिन ईश्वर के दर्शनों के बिना सभी थोड़े हैं॥ १॥ संतों की कृपा से मैंने गुणों के सागर का यश गायन किया है और वह जन्म–जन्मांतरों के भटकते हुए को (जीवन–मृत्यु के चक्र में से) मोड़कर ले आता है। हे नानक! ईश्वर को मिलने से उसने आनंद एवं सुख प्राप्त कर लिए हैं और उसका जन्म कृतार्थ हो गया है तथा उसका सवेरा भी सफल हो गया है॥ २॥ ४॥ १२१॥

रागु गउड़ी पूरबी, महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥ कोई ऐसा संतु सहज सुखदाता मोहि मारगु देइ बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ॥ माइआ मोहि सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥ १ ॥ एका संगति इकतु ग्रिहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥ एक बसतु बिनु पंच दुहेले ओह बसतु अगोचर ठाई ॥ २ ॥ जिस का ग्रिहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई ॥ अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥ ३ ॥ जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ॥ पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई ॥ ४ ॥ मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई ॥ सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ १२२ ॥

हे मेरे राम! मैं किस विधि से अपने गोसाई प्रभु से मिल सकता हूँ? क्या कोई ऐसा सहज सुखदाता संत है जो मुझे प्रभु का मार्ग बता दे॥ १॥ रहाउ॥ अलक्ष्य परमेश्वर जीव के अन्तर्मन में ही है, किन्तु अंतर में पड़े हुए अहंकार के पर्दे के कारण वह देखा नहीं जा सकता। सारी दुनिया मोह–माया में निद्रामग्न है। बताइए? यह भ्रम किस प्रकार दूर हो सकता है॥ १॥ हे भाई! आत्मा और परमात्मा की एक ही संगति है और इकट्ठे एक ही घर में वास करते हैं परन्तु वह एक दूसरे से बातचीत नहीं करते। ईश्वर नाम के एक पदार्थ के बिना पाँचों ज्ञानेन्द्रियां दुःखी हैं। वह पदार्थ अगोचर स्थान पर विद्यमान है॥ २॥ जिस भगवान का यह शरीर रूपी गृह है, उसने ही इसे मोह–माया का ताला लगा दिया है और कुंजी गुरु को सौंप दी है। सतिगुरु की शरण लिए बिना दूसरे अनेक उपाय करने पर भी मनुष्य उस कुंजी को प्राप्त नहीं कर सकता॥ ३॥ जिनके मोह–माया के बंधन सतिगुरु ने काट दिए हैं। उन्होंने ही साधसंगत में अपनी सुरति लगाई है। हे नानक! उनकी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों ने मिलकर मंगल गीत गाए हैं। हे भाई! उनमें और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं रह गया॥ ४॥ हे मेरे राम! गोसाई प्रभु इस विधि से मिलता है। जिस व्यक्ति को सहज आनंद प्राप्त हो गया, उसकी दुविधा एक क्षण में ही दौड़ गई है और उसकी ज्योति परमज्योति में विलीन हो गई है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ १॥ १२२॥

गउड़ी महला ५ ॥ ऐसो परचउ पाइओ ॥ करी क्रिपा दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसुआसु होइ आइओ ॥ कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ॥ १ ॥ लहिओ सहसा बंधन गुरि तोरे तां सदा सहज सुखु पाइओ ॥ होणा सा सोई फुनि होसी सुखु दुखु कहा दिखाइओ ॥ २ ॥ खंड ब्रहमंड का एको ठाणा

गुरि परदा खोलि दिखाइओ ॥ नउ निधि नामु निधानु इक ठाई तउ बाहरि कैठै जाइओ ॥ ३ ॥ एकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोई है इव ततै ततु मिलाइओ ॥ ४ ॥ २ ॥ १२३ ॥

मेरी भगवान से ऐसी मैत्री पड गई है कि अपनी कृपा करके दयालु बिट्ठल प्रभु ने मुझे सतिगुरु का पता बता दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ मैं तुझे ही पाता हूँ। अब मेरा यह दृढ़ विश्वास हो गया है। हे रघुराई! मैं किसके पास विनती व प्रार्थना करूँ, जब तू सबकुछ स्वयं सुन रहा है॥ १॥ गुरु ने जिस व्यक्ति के मोह–माया के बन्धन तोड़ दिए हैं, उसकी दुविधा समाप्त हो गई है और उसे हमेशा के लिए सहज सुख मिल गया है। ईश्वरेच्छा से दुनिया में जो कुछ भी होना है, अंतत अवश्य होगा। भगवान के हुक्म के सिवाय दुःख एवं सुख तब कहाँ देखा जा सकता है? ॥ २॥ खण्डों और ब्रह्माण्डों का एक प्रभु ही सहारा है। अज्ञानता का पर्दा दूर करके गुरु जी ने मुझे यह दिखा दिया है। नवनिधि एवं नाम रूपी भंडार एक स्थान (मन) में है। तब मनुष्य कौन से बाहरी स्थान को जाए?॥ ३॥ जैसे एक सोने से सुनार ने आभूषणों की विभिन्न किस्मों की बनावट बना दी, उसी भाँति प्रभु ने अनेक किस्मों की यह सृष्टि–रचना की है। हे नानक! गुरु ने जिसकी दुविधा निवृत्त कर दी है। जैसे सोने के आभूषण अंतत : सोना हो जाते हैं। उसी प्रकार प्रत्येक तत्व, मूल तत्व (ईश्वर) से मिल जाता है॥ ४॥ २॥ १२३॥

गउड़ी महला ५ ॥ अउध घटै दिनसु रैनारे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करउ बेनंती सुनहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥ १ ॥ इहु संसारु बिकारु सहसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ पीआए हरि रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥ २ ॥ जा कउ आए सोई विहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥ ३ ॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानकु दासु इही सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२४ ॥

हे मेरे मन! तू इस दुनिया में जिस मनोरथ हेतु आया है, गुरु से मिलकर अपना वह कार्य संवार ले क्योंकि तेरी जीवन–अवधि दिन–रात कम होती जा रही है अर्थात् तेरी उम्र बीतती जा रही है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मित्र! मैं एक प्रार्थना करता हूँ, ध्यानपूर्वक सुनो। साधुओं की सेवा करने का यह स्वर्णिम अवसर है। इहलोक में प्रभु–नाम का लाभ प्राप्त करके प्रस्थान कर। परलोक में तुझे सुन्दर निवास प्राप्त होगा॥ १॥ यह दुनिया विकारों एवं (मोह–माया के) सन्देह से भरी हुई है तथा केवल ब्रह्मज्ञानी ही भवसागर से पार होता है। भगवान जिस व्यक्ति को मोह–माया की निद्रा से जगा देता है, उसे ही वह हरि–रस का पान करवाता है और फिर वह अकथनीय प्रभु की कथा को समझ लेता है॥ २॥ हे जीव! इस दुनिया में तू जिस नाम–पदार्थ का सौदा खरीदने के लिए आया है, उस नाम–पदार्थ को खरीद ले। गुरु की कृपा से प्रभु तेरे मन में निवास कर लेगा। अपने हृदय घर में ही प्रभु को पाकर तुझे सहज सुख प्राप्त हो जाएगा एवं तुझे पुन : जन्म–मरण का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा॥ ३॥ हे अन्तर्यामी विधाता! मेरे मन की श्रद्धा पूरी करो। दास नानक यही सुख की कामना करता है कि मुझे अपने संतों की चरण–धूलि बना दे॥ ४॥ ३॥ १२४॥

गउड़ी महला ५ ॥ राखु पिता प्रभ मेरे ॥ मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच बिखादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥ खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि आइओ सरनि तुहारे ॥ १ ॥ करि करि

हारिओ अनिक बहु भाती छोडहि कतहू नाही ॥ एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही ॥ २ ॥ करि किरपा संत मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइआ ॥ संती मंतु दीओ मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइआ ॥ ३ ॥ जीति लए ओइ महा बिखादी सहज सुहेली बाणी ॥ कहु नानक मनि भइआ परगासा पाइआ पदु निरबाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२५ ॥

हे मेरे पिता–परमेश्वर ! मुझ गुणहीन की रक्षा करें। समस्त गुण तुझ में ही विद्यमान हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे संरक्षक प्रभु ! मैं निर्धन अकेला हूँ और कामादिक मेरे पाँच शत्रु हैं। इसलिए मेरी रक्षा करें। वे मुझे बहुत दुःख देते हैं और अत्यंत तंग करते हैं, इसलिए मैं तेरी शरण में आया हूँ॥ १॥ मैं भरसक प्रयास करके हार गया हूँ, परन्तु ये किसी प्रकार भी मेरा पीछा नहीं छोड़ते। मैंने एक बात सुनी है कि संतजनों की संगति में उनकी जड़ें उखड़ जाती हैं। इसलिए मैंने उनकी शरण ली है॥ २॥ कृपा करके संत मुझे मिल गए हैं। उनसे मुझे धैर्य प्राप्त हो गया है। संतों ने मुझे निर्भय प्रभु का मंत्र (नाम) प्रदान किया है और मैंने गुरु के शब्द की कमाई की है॥ ३॥ सतिगुरु की आत्मिक स्थिरता एवं मधुर वाणी के प्रभाव से मैंने कामादिक झगड़ालु पाँचों शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है। हे नानक ! मेरे मन में प्रभु ज्योति का प्रकाश हो गया है और मैंने निर्वाण पद प्राप्त कर लिया है॥ ४॥ ४॥ १२५॥

गउड़ी महला ५ ॥ ओहु अबिनासी राइआ ॥ निरभउ संगि तुमारै बसते इहु डरनु कहा ते आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक महलि तूं होहि अफारो एक महलि निमानो ॥ एक महलि तूं आपे आपे एक महलि गरीबानो ॥ १ ॥ एक महलि तूं पंडितु बकता एक महलि खलु होता ॥ एक महलि तूं सभु किछु ग्राहजु एक महलि कछू न लेता ॥ २ ॥ काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै ॥ जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै ॥ ३ ॥ अनिक कोठरी बहुतु भाति करीआ आपि होआ रखवारा ॥ जैसे महलि राखै तैसै रहना किआ इहु करै बिचारा ॥ ४ ॥ जिनि किछु कीआ सोई जानै जिनि इह सभ बिधि साजी ॥ कहु नानक अपरंपर सुआमी कीमति अपुने काजी ॥ ५ ॥ ५ ॥ १२६ ॥

हे मेरे प्रभु ! तुम एक वह राजा हो जो सदैव अनश्वर हो। हम (प्राणी) निडर होकर तेरे साथ निवास करते हैं। फिर यह भय कहाँ से आता है॥ १॥ रहाउ॥ एक शरीर में तुम ही अभिमानी हो और एक दूसरे शरीर में तुम विनीत हो। एक शरीर में तुम सर्वाधिकारी हो और दूसरे शरीर में तुम बिल्कुल निर्धन हो॥ १॥ एक शरीर में तुम विद्वान एवं वक्ता हो। एक शरीर में तुम मूर्ख हो। एक शरीर में तुम सब कुछ संग्रह कर लेते हो और एक शरीर में तुम (विरक्त बनकर) कोई पदार्थ भी स्वीकार नहीं करते हो॥ २॥ यह प्राणी बेचारा काठ की पुतली है, इसे खिलाने वाला (प्रभु) सब कुछ जानता है। बाजीगर (ईश्वर) जैसा वेष (स्वांग) रचाता है, वह प्राणी वैसा ही वेष (स्वांग) रचता है अर्थात् जैसी भूमिका (संसार में) प्रभु निभाने के लिए प्राणी को देता है, वैसे ही भूमिका प्राणी (संसार में) निभाता है॥ ३॥ ईश्वर ने (संसार में विभिन्न योनियों के प्राणियों की) अनेक (देहि) कोठड़ियाँ बना दी हैं और ईश्वर स्वयं ही सबका रक्षक बना हुआ है। जैसे शरीर रूपी मन्दिर में प्रभु प्राणी को रखता है, वैसे ही वह वास करता है। यह प्राणी बेचारा क्या कर सकता है ? ॥ ४॥ हे नानक ! जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, जिसने यह सारी क्रीड़ा बनाई है, वही उसके भेद को जानता है। वह प्रभु अपरंपार है। अपने कार्यों का मूल्य वह स्वयं ही जानता है॥ ५॥ ५॥ १२६॥

गउड़ी महला ५ ॥ छोडि छोडि रे बिखिआ के रसूआ ॥ उरझि रहिओ रे बावर गावर जिउ किरखै हरिआइओ पसूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जानहि तूं अपुने काजै सो संगि न चालै तेरै तसूआ ॥ नागो आइओ नाग सिधासी फेरि फिरिओ अरु कालि गरसूआ ॥ १ ॥ पेखि पेखि रे कसुंभ की लीला राचि

माचि तिनहूं लउ हसूआ ॥ छीजत डोरि दिनसु अरु रैनी जीअ को काजु न कीनो कछूआ ॥ २ ॥ करत करत इव ही बिरधानो हारिओ उकते तनु खीनसूआ ॥ जिउ मोहिओ उनि मोहनी बाला उस ते घटै नाही रुच चसूआ ॥ ३ ॥ जगु ऐसा मोहि गुरहि दिखाइओ तउ सरणि परिओ तजि गरबसूआ ॥ मारगु प्रभ को संति बताइओ द्रिड़ी नानक दास भगति हरि जसूआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२७ ॥

हे प्राणी! मोह–माया के स्वादों को त्याग दे। हे मूर्ख प्राणी! जैसे हरी–भरी फसल में पशु मस्त होता है वैसे ही तू (विकारों में) इन स्वादों में उलझा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ हे मूर्ख प्राणी! जिस पदार्थ को तू अपने काम आने वाला समझता है, वह तनिकमात्र भी तेरे साथ नहीं जाता। हे प्राणी! तू (जगत् में) नग्न आया था और नग्न ही (जगत से) चला जाएगा। तू जन्म–मरण के चक्र में फँसकर योनियाँ काटेगा और मृत्यु का ग्रास हो जाएगा॥ १॥ हे प्राणी! कुसुम के फूल की भाँति क्षणभंगुर सांसारिक खेलों को देख–देख कर तू उनमें कैसे मस्त हो रहा है और जब तक वह कायम है तू हंसता और खेलता है। तेरी अवस्था की डोरी दिन–रात क्षीण होती जा रही है। तूने अपनी आत्मा के काम आने वाला कोई भी कर्म नहीं किया॥ २॥ सांसारिक कर्म करता हुआ मनुष्य वृद्ध हो गया है। बुद्धि भी सुस्त हो गई है और शरीर भी दुर्बल हो गया है। जैसे तुझे उस माया ने बाल्यावस्था में मोहित कर लिया था, उस लोभ में अब तक तनिकमात्र भी कमी नहीं हुई॥ ३॥ हे नानक! गुरु ने मुझे दिखा दिया है कि दुनिया का मोह ऐसा है तो मैंने अहंकार को त्याग कर संत (गुरु) की शरण ले ली। उस संत ने मुझे प्रभु–मिलन का मार्ग बता दिया है तथा अब मैंने भगवान की भक्ति एवं भगवान का यश अपने मन में दृढ़ कर लिया है॥ ४॥ ६॥ १२७॥

गउड़ी महला ५ ॥ तुझ बिनु कवनु हमारा ॥ मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतर की बिधि तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले ॥ सरब सुखा मै तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥ १ ॥ बरनि न साकउ तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते ॥ अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते ॥ २ ॥ भ्रमु भउ काटि कीए निहकेवल जब ते हउमै मारी ॥ जनम मरण की चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥ ३ ॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख बरीआ ॥ जिह प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक प्रिअ संगि मिरीआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १२८ ॥

हे मेरे प्रियतम! हे प्राणों के आधार! तेरे सिवाय हमारा अन्य कौन है?॥ १॥ रहाउ॥ मेरे अन्तर्मन की दशा को केवल तुम ही जानते हो। तुम ही मेरे साजन एवं सुखदाता हो। हे मेरे ठाकुर! हे मेरे अगम्य एवं अतुलनीय प्रभु! तमाम सुख मैंने तुझ से ही प्राप्त किए हैं॥ १॥ हे गुणों के भण्डार! हे सुखदाता! मैं तेरे कौतुक वर्णन नहीं कर सकता। अगम्य, अगोचर एवं अविनाशी प्रभु का पूर्ण गुरु के द्वारा बोध प्राप्त होता है॥ २॥ जब भी मैंने अपना अहंकार निवृत्त किया है, मेरी दुविधा एवं भय नाश करके प्रभु ने मुझे पवित्र कर दिया है। हे ईश्वर! तेरा दर्शन सत्संग में देखकर मेरा जन्म एवं मृत्यु की चिन्ता मिट गई है॥ ३॥ मैं गुरु जी के चरण धोकर उनकी सेवा करता हूँ और लाखों बार उन पर कुर्बान जाता हूँ। हे नानक! जिनकी कृपा से उसने यह भयानक संसार सागर पार कर लिया है और वह अपने प्रियतम प्रभु में मिल गया है॥ ४॥ ७॥ १२८॥

गउड़ी महला ५ ॥ तुझ बिनु कवनु रीझावै तोही ॥ तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग पइआल मिरत भूअ मंडल सरब समानो एकै ओही ॥ सिव सिव करत सगल कर जोरहि सरब मइआ ठाकुर तेरी दोही ॥ १ ॥ पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई निरमल सीतलोही ॥ गिआन धिआन नानक वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥ २ ॥ ८ ॥ १२९ ॥

हे प्रभु ! तेरे बिना तुझे कौन प्रसन्न कर सकता है ? तेरा सुन्दर रूप देखकर प्रत्येक व्यक्ति मुग्ध हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ स्वर्ग, पाताल, मृत्युलोक एवं भूमण्डल में सर्वत्र एक ईश्वर ही समाया हुआ है। हे दयालु परमेश्वर ! समस्त प्राणी हाथ जोड़ कर 'शिव शिव' कहकर तेरा नाम उच्चारण करते हैं और तेरे द्वार पर सहायतार्थ पुकारते हैं॥ १॥ हे ठाकुर जी ! तुम्हारा नाम पतितपावन है, तुम जीवों को सुख प्रदान करने वाले हो, बड़े निर्मल एवं शांति के पुंज हो। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! ज्ञान, ध्यान एवं मान-सम्मान तेरे संतजनों के साथ धार्मिक-वार्ता करने में बसते हैं॥ २॥ ८॥ १२६॥

गउड़ी महला ५ ॥ मिलहु पिआरे जीआ ॥ प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ ॥ तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥ १ ॥ सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न किन ही कीता ॥ तुमरै भाणै भरमि मोहि मोहिआ जागतु नाही सूता ॥ २ ॥ बिनउ सुनहु तुम प्रानपति पिआरे किरपा निधि दइआला ॥ राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥ ३ ॥ जिस नो तुमहि दिखाइओ दरसनु साधसंगति कै पाछै ॥ करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानकु इहु बाछै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३० ॥

हे मेरे प्रियतम प्रभु ! मुझे आकर मिलो। हे प्रभु ! इस दुनिया में सब कुछ तेरा किया ही क्रियान्वित है॥ १॥ रहाउ॥ अनेक जन्मों में अधिकतर योनियों में भटकते हुए मैंने बार-बार कष्ट सहन किया है। हे मेरे हरि प्रभु ! तुम्हारी कृपा से अब मुझे मानव शरीर प्राप्त हुआ है। अतः अब मुझे दर्शन दीजिए॥ १॥ दुनिया में वही कुछ हुआ है, जो प्रभु को अच्छा लगा है। ईश्वरेच्छा के बिना दूसरा कोई कुछ भी नहीं कर सकता। हे ठाकुर ! तेरी इच्छा में मोह की दुविधा एवं माया में मुग्ध हुआ प्राणी निद्रामग्न है और जागता नहीं॥ २॥ हे प्राणपति ! हे प्रियवर ! हे कृपा के भण्डार ! हे दया के घर ! तुम मेरी एक विनती सुनो। हे मेरे पिता प्रभु ! मेरी रक्षा कीजिए और मुझ अनाथ की पालना करो ॥ ३॥ हे ईश्वर ! जिस व्यक्ति को भी तूने अपने दर्शन दिए हैं, संतों की संगति के सहारे ही दिए हैं। हे प्रभु ! नानक तुझ से एक यही सुख की कामना करता है कि मुझे कृपा करके संतजनों की चरण-धूलि ही प्रदान करें॥ ४॥ ६॥ १३०॥

गउड़ी महला ५ ॥ हउ ता कै बलिहारी ॥ जा कै केवल नामु अधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महिमा ता की केतक गनीऐ जन पारब्रहम रंगि राते ॥ सूख सहज आनंद तिना संगि उन समसरि अवर न दाते ॥ १ ॥ जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा ॥ उन की सरणि परै सो तरिआ संतसंगि पूरन आसा ॥ २ ॥ ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै संगि निहाला ॥ भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू किरपाला ॥ ३ ॥ राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग महि घाटिआ ॥ नामु निधानु सद नवतनु निरमलु इहु नानक हरि धनु खाटिआ ॥ ४ ॥ १० ॥ १३१ ॥

मैं उन पर तन-मन से कुर्बान जाता हूँ, जिनका आधार केवल ईश्वर का नाम ही है॥ १॥ रहाउ॥ मैं उन संतजनों की महिमा कितनी गिन सकता हूँ, जो हमेशा पारब्रह्म के प्रेम-रंग में मग्न रहते हैं। सहज सुख एवं आनंद उनकी संगति में रहने से ही मिलता है और उनके तुल्य दूसरा कोई दाता नहीं है॥ १॥ जिन संतजनों को भगवान के दर्शनों की तीव्र लालसा लगी हुई है, वहीं जगत् का उद्धार करने के लिए आए हैं। जो भी प्राणी उनकी शरण में आता है, उसका इस संसार से कल्याण हो जाता है। संतों की संगति में रहने से समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं॥ २॥ यदि मैं उनके चरण स्पर्श कर लूँ, तो ही मैं जीवित रहता हूँ। प्रभु के भक्तों की संगति में मैं सदैव प्रसन्न रहता हूँ। हे प्रभु ! मुझ पर दयालु हो जाओ चूंकि मेरा मन तेरे भक्तों के चरणों की धूलि हो जाए॥

३॥ शासन, यौवन एवं आयु जो कुछ भी नश्वर संसार में दिखाई देता है, वह सब कुछ न्यून होता जा रहा है। ईश्वर के नाम का भण्डार सदैव ही नवीन एवं निर्मल है। नानक ने तो यह हरि नाम रूपी धन ही अर्जित किया है॥ ४॥ १०॥ १३१॥

गउड़ी महला ५ ॥ जोग जुगति सुनि आइओ गुर ते ॥ मो कउ सतिगुर सबदि बुझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउ खंड प्रिथमी इसु तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा ॥ दीखिआ गुर की मुंद्रा कानी द्रिड़िओ एकु निरंकारा ॥ १ ॥ पंच चेले मिलि भए इकत्रा एकसु कै वसि कीए ॥ दस बैरागनि आगिआकारी तब निरमल जोगी थीए ॥ २ ॥ भरमु जराइ चराई बिभूता पंथु एकु करि पेखिआ ॥ सहज सूख सो कीनी भुगता जो ठाकुरि मसतकि लेखिआ ॥ ३ ॥ जह भउ नाही तहा आसनु बाधिए सिंगी अनहत बानी ॥ ततु बीचारु डंडा करि राखिओ जुगति नामु मनि भानी ॥ ४ ॥ ऐसा जोगी वडभागी भेटै माइआ के बंधन काटै ॥ सेवा पूज करउ तिसु मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥ ५ ॥ ११ ॥ १३२ ॥

योग की युक्ति मैंने गुरु जी से सुन ली है। मुझे सतिगुरु ने यह (युक्ति) अपनी वाणी द्वारा समझा दी है॥ १॥ रहाउ॥ मैं उस ईश्वर को पल–पल प्रणाम करता हूँ, जो पृथ्वी के नवखण्डों एवं इस शरीर में समाया हुआ है। गुरु की दीक्षा को अपने कानों की मुंद्रा बनाया है और एक निरंकार प्रभु को मैंने अपने हृदय में बसा लिया है॥ १॥ पाँचों शिष्यों (पाँचों ज्ञानेन्द्रियों) को इकट्ठा मिलाकर मैंने उनको एक सर्वोच्च सुरति के अधीन कर दिया है। जब दस इन्द्रियाँ (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्म इन्द्रियाँ) मेरी आज्ञाकारी हो गई तो मैं निर्मल योगी बन गया॥ २॥ मैंने अपनी दुविधा को जला दिया है और इसकी विभूति मैंने अपने शरीर से लगा ली है। मेरा योग धर्म यही है कि मैं ईश्वर को समूचे जगत् में मौजूद देखता हूँ। उस सहज सुख को मैंने अपना भोजन बनाया है, जो कि ईश्वर ने मेरे लिए मेरे मस्तक पर लिखा हुआ था॥ ३॥ जहाँ कोई भय मौजूद नहीं, मैंने वहाँ आसन लगाया है और भगवान की महिमा की श्रृंगी से अनहद वाणी बजा रहा हूँ। जगत् के मूल परमात्मा की महिमा का चिंतन करना ही योगियों वाला डण्डा बनाकर रख लिया है। भगवान का नाम–सिमरन करना ही यह युक्ति मेरे मन को उपयुक्त लगी है॥ ४॥ ऐसा योगी किस्मत से ही मिलता है जो मोह–माया के बंधन दूर कर देता है। नानक ऐसे योगी महापुरुष की सेवा और पूजा करता तथा उसके चरण चाटता है॥ ५॥ ११॥ १३२॥

गउड़ी महला ५ ॥ अनूप पदारथु नामु सुनहु सगल धिआइले मीता ॥ हरि अउखधु जा कउ गुरि दीआ ता के निरमल चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंधकारु मिटिओ तिह तन ते गुरि सबदि दीपकु परगासा ॥ भ्रम की जाली ता की काटी जा कउ साधसंगति बिस्वासा ॥ १ ॥ तारीले भवजलु तारू बिखड़ा बोहिथ साधू संगा ॥ पूरन होई मन की आसा गुरु भेटिओ हरि रंगा ॥ २ ॥ नाम खजाना भगती पाइआ मन तन त्रिपति अघाए ॥ नानक हरि जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकमु मनाए ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३३ ॥

हे मित्रो! ईश्वर का नाम एक अनूप धन है। सभी इसे सुनो एवं चिन्तन करो। गुरु ने जिस व्यक्ति को भी हरि–नाम रूपी औषधि दी है, उसका मन निर्मल हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ उस गुरु ने जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में अपने शब्द द्वारा ज्ञान का दीपक प्रज्वलित कर दिया है, उसके तन से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है। जो व्यक्ति संतों की संगति में आस्था धारण करता है, उसका भ्रम का जाल कट जाता है॥ १॥ तैरने हेतु विषम एवं भयानक संसार सागर संतों की संगति के जहाज द्वारा पार किया जाता है। भगवान के रंग में मग्न रहने वाले गुरु से मिलकर मेरे मन की आशा पूरी हो गई

है॥ २॥ जिन भक्तों ने नाम का खजाना प्राप्त किया है, उनका मन एवं तन तृप्त व संतुष्ट हो गए हैं। हे नानक! (यह नाम का खजाना) पूज्य प्रभु केवल उसे ही देता है, जिनसे प्रभु अपने हुक्म का पालन करवाता है॥ ३॥ १२॥ १३३॥

गउड़ी, महला ५ ॥ दइआ मइआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥ अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन सभ किछु तुम ही तुम समरथ नाही अन होरी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी से सेवक जिन भाग मथोरी ॥ १ ॥ अपुने सेवक संगि तुम प्रभ राते ओति पोति भगतन संगि जोरी ॥ प्रिउ प्रिउ नामु तेरा दरसनु चाहै जैसे द्रिसटि ओह चंद चकोरी ॥ २ ॥ राम संत महि भेदु किछु नाही एकु जनु कई महि लाख करोरी ॥ जा कै हीऐ प्रगटु प्रभु होआ अनदिनु कीरतनु रसन रमोरी ॥ ३ ॥ तुम समरथ अपार अति ऊचे सुखदाते प्रभ प्रान अधोरी ॥ नानक कउ प्रभ कीजै किरपा उन संतन कै संगि संगोरी ॥ ४ ॥ १३ ॥ १३४ ॥

हे मेरे प्राणपति! मुझ पर दया एवं कृपा करो। हे प्रभु! मैं अनाथ तेरी ही शरण में हूँ। अपना हाथ देकर इस अन्धे (मोह-माया के) कुएँ में से मुझे बाहर निकाल लीजिए। क्योंकि मेरी कोई भी अक्लमंदी एवं उक्ति सफल नहीं हो सकती॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे परमेश्वर! तुम स्वयं ही सबकुछ कर रहे हो और जीवों से करवा रहे हो। सब कुछ तुम ही हो, तू ही सामर्थ्यशाली है। तेरे अलावा दूसरा कोई भी नहीं। हे ईश्वर! तेरी गति एवं विस्तार कैसा है! इसका भेद केवल तू ही जानता है। केवल वही तेरे सेवक बनते हैं जिनके मस्तक पर शुभ कर्मों के कारण भाग्यरेखाएँ विद्यमान हो॥ १॥ हे प्रभु! अपने सेवकों से तुम सदा प्रेम करते हो। जैसे ताने बाने में धागे मिले होते हैं, वैसे ही तुमने अपने भक्तों से प्रेम जोड़ा हुआ है। (वह तेरे प्रिय एवं मधुर नाम एवं दर्शनों के लिए ऐसे व्याकुल होते हैं।) जैसे चकोर की दृष्टि चाँद की ओर रहती है। तेरे भक्त तुझे 'प्रिय प्रिय' कहकर तेरा नाम स्मरण करते हैं और तेरे दर्शनों के अभिलाषी बने रहते हैं॥ २॥ राम एवं उसके संत में कोई अन्तर नहीं। लाखों और करोड़ों ही प्राणियों में कोई एक विरला ही है, जिसके हृदय में प्रभु प्रगट हुआ है, ऐसा व्यक्ति दिन-रात अपनी जिह्वा से उसका भजन करता रहता है॥ ३॥ हे मेरे प्राणों के आधार प्रभु! तुम सर्वशक्तिमान, अपार, सर्वोपरि एवं सुखदाता हो। हे प्रभु! नानक पर कृपा कीजिए चूंकि वह उन संतों की संगति में जुड़ा रहे॥ ४॥ १३॥ १३४॥

गउड़ी महला ५ ॥ तुम हरि सेती राते संतहु ॥ निबाहि लेहु मो कउ पुरख बिधाते ओड़ि पहुचावहु दाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा मरमु तुमा ही जानिआ तुम पूरन पुरख बिधाते ॥ राखहु सरणि अनाथ दीन कउ करहु हमारी गाते ॥ १ ॥ तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥ करि किरपा जिसु राखहु संगे ते ते पारि पराते ॥ २ ॥ ईत ऊत प्रभ तुम समरथा सभु किछु तुमरै हाथे ॥ ऐसा निधानु देहु मो कउ हरि जन चलै हमारै साथे ॥ ३ ॥ निरगुनीआरे कउ गुनु कीजै हरि नामु मेरा मनु जापे ॥ संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन सीतल ध्रापे ॥ ४ ॥ १४ ॥ १३५ ॥

हे संतजनो! तुम भगवान में मग्न हो। हे अकालपुरुष विधाता! हे मेरे दाता! मुझे भी (अपने प्रेम में) निभा ले और मुझे मेरी अंतिम मंजिल तक पहुँचा दे॥ १॥ रहाउ॥ तेरा भेद केवल तू ही जानता है। तू सर्वव्यापक अकालपुरुष विधाता है। मुझ दीन अनाथ को अपनी शरण में रखो और मुझे मोक्ष प्रदान करो॥ १॥ हे प्रभु! तेरे चरण संसार सागर से पार होने के लिए एक जहाज हैं। अपनी परम्परा को तू स्वयं ही जानता है। वे तमाम (प्राणी) जिन्हें तू कृपा धारण करके अपने साथ रखते हो, संसार

सागर से पार हो जाते हैं॥ २॥ हे ईश्वर! इहलोक एवं परलोक में तुम सर्वशक्तिशाली हो। सब कुछ तेरे ही वश में है। हे प्रभु के भक्तजनों! मुझे ऐसा नाम भण्डार प्रदान करो, जो परलोक में मेरे साथ जाए॥ ३॥ मुझ गुणहीन को ऐसा गुण प्रदान करो चूंकि मेरा मन प्रभु के नाम का ही जाप करता रहे। हे नानक! संतों की कृपा से जिन्हें भगवान मिल जाता है, उनका मन एवं तन शीतल तथा संतुष्ट हो जाते हैं॥ ४॥ १४॥ १३५॥

गउड़ी महला ५ ॥ सहजि समाइओ देव ॥ मो कउ सतिगुर भए दइआल देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काटि जेवरी कीओ दासरो संतन टहलाइओ ॥ एक नाम को थीओ पूजारी मो कउ अचरजु गुरहि दिखाइओ ॥ १ ॥ भइओ प्रगासु सरब उजीआरा गुर गिआनु मनहि प्रगटाइओ ॥ अंम्रितु नामु पीओ मनु त्रिपतिआ अनभै ठहराइओ ॥ २ ॥ मानि आगिआ सरब सुख पाए दूखह ठाउ गवाइओ ॥ जउ सुप्रसंन भए प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइओ ॥ ३ ॥ ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु कीओ हरि राइओ ॥ कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरि नाइओ ॥ ४ ॥ १५ ॥ १३६ ॥

हे ज्योतिस्वरूप परमेश्वर! मुझ पर सतिगुरु जी दयालु हो गए हैं और मैं सहज ही ईश्वर में समा गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु जी ने मेरी मृत्यु का रस्सा काट कर मुझे अपना सेवक बना लिया है और संतों की सेवा में लगा दिया है। मैं केवल नाम का ही पुजारी बन गया हूँ और गुरु जी ने मुझे प्रभु का अद्‌भुत रूप दिखा दिया है॥ १॥ गुरु जी ने मेरे मन में ही ज्ञान प्रगट कर दिया है और अब हर तरफ (ज्ञान का) प्रकाश एवं उजाला हो गया है। नाम अमृत का पान करने से मेरा मन तृप्त हो गया है और दूसरे भय दूर हट गए हैं॥ २॥ गुरु की आज्ञा मानकर मैंने सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं और दुःखों का आवास ध्वस्त कर दिया है। जब प्रभु-परमेश्वर सुप्रसन्न हो गया तो उसने प्रत्येक पदार्थ मुझे आनंद के स्वरूप में दिखा दिया॥ ३॥ न कुछ आता है और न ही कुछ जाता है। यह सारा खेल जगत् के मालिक प्रभु ने जारी किया है। हे नानक! वह ठाकुर प्रभु अगम्य एवं अपार है। उसके भक्तों को ईश्वर के नाम का ही सहारा है॥ ४॥ १५॥ १३६॥

गउड़ी महला ५ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥ जिनि धारे ब्रहमंड खंड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की मति तिआगहु हरि जन हुकमु बूझि सुखु पाईऐ रे ॥ जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे ॥ १ ॥ कोटि पतित उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥ दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिसु भावै तिसहि निवाजै रे ॥ २ ॥ सभ को मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥ देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि रहिओ रतनागरु रे ॥ ३ ॥ जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥ नानकु दासु ता की सरणाई जा ते ब्रिथा न कोई रे ॥ ४ ॥ १६ ॥ १३७ ॥

हे मेरे मन! हमें उस पूर्ण पारब्रह्म-परमेश्वर की शरण ही ग्रहण करनी चाहिए, जिसने ब्रह्माण्ड एवं भू-मण्डलों को धारण किया हुआ है। अतः हमें उस ईश्वर का नाम ही जपना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ हे परमात्मा के सेवको! मन की चतुरता को त्याग दीजिए। भगवान के हुक्म को समझने से ही सुख उपलब्ध हो सकता है। हे भक्तजनों! जो कुछ प्रभु करता है, उसको खुशी-खुशी स्वीकार करो। सुख एवं दुःख में उस ईश्वर का ध्यान करते रहना चाहिए॥ १॥ हे भक्तजनो! कर्त्तार प्रभु करोड़ों ही पापियों का एक क्षण में ही उद्धार कर देता है और उसमें कोई देरी नहीं लगती। हे दुख भंजन स्वामी! तुम दीनों के दुख-दर्द नाश करने वाले हो। जिस पर तुम प्रसन्न होते हो, उसे सम्मान प्रदान करते हो॥ २॥ हे भक्तजनो! प्रभु समस्त प्राणियों की माता, पिता एवं पालनहार है। वह समस्त

प्राणियों का प्राण दाता एवं सुख का सागर है। प्राणियों को देन देते वक्त ईश्वर के भण्डार में कमी नहीं आती। रत्नों की खान प्रभु सर्वव्यापक है॥ ३॥ हे मेरे स्वामी! भिखारी तेरे नाम का दान माँगता है। वह प्रभु सबके ह्रदय में समाया हुआ है। दास नानक ने उस प्रभु की शरण ली हुई है, जिसके द्वार से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता॥ ४॥ १६॥ १३७॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि कबहू न मनहु बिसारे ॥ ईहा ऊहा सरब सुखदाता सगल घटा प्रतिपारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कसट काटै खिन भीतरि रसना नामु चितारे ॥ सीतल सांति सूख हरि सरणी जलती अगनि निवारे ॥ १ ॥ गरभ कुंड नरक ते राखै भवजलु पारि उतारे ॥ चरन कमल आराधत मन महि जम की त्रास बिदारे ॥ २ ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर ऊचा अगम अपारे ॥ गुण गावत धिआवत सुख सागर जूए जनमु न हारे ॥ ३ ॥ कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीनो निरगुण के दातारे ॥ करि किरपा अपुनो नामु दीजै नानक सद बलिहारे ॥ ४ ॥ १ ॥ १३८ ॥

हमें अपने मन से प्रभु-परमेश्वर को कभी भी विस्मृत नहीं करना चाहिए। चूंकि वह ईश्वर ही लोक एवं परलोक में प्राणियों का सुखदाता है और तमाम शरीरों का पालन-पोषण करता है॥ १॥ रहाउ॥

यदि मनुष्य की रसना भगवान के नाम का जाप करे तो वह एक क्षण में ही महाकष्ट निवृत्त कर देता है। प्रभु की शरण में शीतलता, शांति एवं सुख विद्यमान है और वह जलती अग्नि बुझा देता है॥ १॥ प्रभु मनुष्य को गर्भ के नरककुण्ड से बचाता है और उसको भवसागर से पार कर देता है। प्रभु के सुन्दर चरणों की मन में आराधना करने से वह मृत्यु का भय दूर कर देता है॥ २॥ पारब्रह्म परमेश्वर सर्वव्यापक है, वह सर्वोपरि, अगम्य एवं अनन्त है। सुखों के सागर प्रभु की महिमा-स्तुति एवं ध्यान करने से प्राणी अपना जन्म व्यर्थ नहीं गंवा कर जाता॥ ३॥ हे निर्गुण के उदारचित्त दाता! मेरा मन भोग-विलास, क्रोध, लालच एवं सांसारिक मोह में लीन है। हे प्रभु! कृपा करके अपने नाम का दान दीजिए। चूंकि नानक तो सदैव ही तुझ पर कुर्बान जाता है॥ ४॥ १॥ १३८॥

रागु गउड़ी चेती महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुखु नाही रे हरि भगति बिना ॥ जीति जनमु इहु रतनु अमोलकु साधसंगति जपि इक खिना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुत संपति बनिता बिनोद ॥ छोडि गए बहु लोग भोग ॥ १ ॥ हैवर गैवर राज रंग ॥ तिआगि चलिओ है मूड़ नंग ॥ २ ॥ चोआ चंदन देह फूलिआ ॥ सो तनु धर संगि रूलिआ ॥ ३ ॥ मोहि मोहिआ जानै दूरि है ॥ कहु नानक सदा हदूरि है ॥ ४ ॥ १ ॥ १३९ ॥

भगवान की भक्ति के बिना कोई सुख उपलब्ध नहीं होता। साधसंगत में रहकर एक क्षण भर के लिए भी प्रभु का चिन्तन करके मनुष्य जीवन का यह अनमोल रत्न जीत ले॥ १॥ रहाउ॥

हे प्राणी! बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो पुत्र, सम्पत्ति, पत्नी का प्रेम, हर्षोल्लास भरे मनोरंजन एवं भोग को त्याग गए हैं॥ १॥ अपने कुशल घोड़े, हाथी एवं शासन के आनन्द को त्याग कर मूर्ख मनुष्य नग्न ही अन्त में दुनिया से चला जाता है॥ २॥ जिस शरीर पर इत्र तथा चन्दन लगाकर मनुष्य अभिमान करता था, वह शरीर (अन्त में) पार्थिव (मिट्टी) हो जाता है॥ ३॥ हे नानक! दुनिया के मोह में मुग्ध हुआ मनुष्य ईश्वर को दूर समझता है। परन्तु ईश्वर सदा ही प्राणी के आसपास रहता है॥ ४॥ १॥ १३९॥

गउड़ी महला ५ ॥ मन धर तरबे हरि नाम नो ॥ सागर लहरि संसा संसारु गुरु बोहिथु पार गरामनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कालख अंधिआरीआ ॥ गुर गिआन दीपक उजिआरीआ ॥ १ ॥ बिखु बिखिआ पसरी अति घनी ॥ उबरे जपि जपि हरि गुनी ॥ २ ॥ मतवारो माइआ सोइआ ॥ गुर भेटत भ्रमु भउ खोइआ ॥ ३ ॥ कहु नानक एकु धिआइआ ॥ घटि घटि नदरी आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १४० ॥

हे प्राणी ! तू ईश्वर–नाम के आधार से संसार सागर से पार हो जाएगा। संशय की लहरों से भरे हुए जगत् सागर से पार होने के लिए गुरु जी जहाज हैं॥ १॥ रहाउ॥ कलियुग में गहरा अंधकार है। गुरु के दिए हुए ज्ञान का दीपक उजाला कर देता है॥ १॥ मोह–माया का विष अधिक मात्रा में फैला हुआ है। ईश्वर की निरन्तर आराधना करने से महापुरुष बच जाते हैं॥ २॥ माया में मुग्ध हुआ मनुष्य (इस विष की मार से) सोया हुआ है। लेकिन गुरु को मिलने से दुविधा एवं भय दूर हो जाते हैं॥ ३॥ हे नानक ! जिस व्यक्ति ने एक ईश्वर का ध्यान किया है। उस व्यक्ति को ही भगवान कण–कण में मौजूद दिखाई दिया है॥ ४॥ २॥ १४०॥

गउड़ी महला ५ ॥ दीबानु हमारो तुही एक ॥ सेवा थारी गुरहि टेक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जुगति नही पाइआ ॥ गुरि चाकर लै लाइआ ॥ १ ॥ मारे पंच बिखादीआ ॥ गुर किरपा ते दलु साधिआ ॥ २ ॥ बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥ सूख सहज आनंद बिस्राम ॥ ३ ॥ प्रभ के चाकर से भले ॥ नानक तिन मुख ऊजले ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४१ ॥

हे ईश्वर ! एक तू ही हमारा सहारा है। गुरु की शरण में मैं तेरी ही सेवा करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! अनेक युक्तियों द्वारा मैं तुझे प्राप्त न कर सका। गुरु ने कृपा करके मुझे तेरी सेवा–भक्ति में लगा दिया है॥ १॥ मैंने पाँच दुष्टों (कामादिक विकारों) का नाश कर दिया है। गुरु की कृपा से मैंने बुराई की सेना को पराजित कर दिया है॥ २॥ मुझे एक नाम प्रभु के दान के तौर पर प्राप्त हुआ है। अब मेरा निवास सहज सुख एवं आनंद में है॥ ३॥ हे नानक ! जो ईश्वर के सेवक हैं, वे भले हैं। प्रभु के दरबार में उनके चेहरे उज्ज्वल हो जाते हैं॥४॥ ३॥ १४१॥

गउड़ी महला ५ ॥ जीअरे ओल्हा नाम का ॥ अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर जतनि नही पाईऐ ॥ वडै भागि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ लाख हिकमती जानीऐ ॥ आगै तिलु नही मानीऐ ॥ २ ॥ अहंबुधि करम कमावने ॥ ग्रिह बालू नीरि बहावने ॥ ३ ॥ प्रभु क्रिपालु किरपा करै ॥ नामु नानक साधू संगि मिलै ॥ ४ ॥ ४ ॥ १४२ ॥

हे मेरे प्राण ! ईश्वर का नाम ही तेरा एकमात्र सहारा है। दूसरा जो कुछ भी किया एवं करवाया जाता है, उनमें मृत्यु का भय बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ किसी दूसरे उपाय द्वारा ईश्वर प्राप्त नहीं होता। भगवान का ध्यान बड़ी किस्मत से ही किया जा सकता है॥ १॥ मनुष्य चाहे लाखों चतुराइयां जानता हो परन्तु तनिकमात्र भी ये (परलोक में) आगे कारगर नहीं होतीं॥ २॥ अहंबुद्धि से किए गए धर्म–कर्म भी ऐसे बह जाते हैं जैसे रेत का घर पानी में बह जाता है॥ ३॥ हे नानक ! कृपा का घर प्रभु जिस इन्सान पर अपनी कृपा कर देता है, उसे संतों की संगति में भगवान का नाम मिल जाता है॥ ४॥ ४॥ १४२॥

गउड़ी महला ५ ॥ बारनै बलिहारनै लख बरीआ ॥ नामो हो नामु साहिब को प्रान अधरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करन करावन तुही एक ॥ जीअ जंत की तुही टेक ॥ १ ॥ राज जोबन प्रभ तूं धनी ॥ तूं निरगुन तूं सरगुनी ॥ २ ॥ ईहा ऊहा तुम रखे ॥ गुर किरपा ते को लखे ॥ ३ ॥ अंतरजामी प्रभ सुजानु ॥ नानक तकीआ तुही ताणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४३ ॥

हे सज्जन! मैं ईश्वर के नाम पर लाखों बार कुर्बान जाता हूँ। जगत् के स्वामी–प्रभु का नाम ही जीवों के प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! एक तू ही जगत् में सब कुछ करता एवं जीवों से करवाता है। एक तू ही जीव–जन्तुओं का आसरा है॥ १॥ हे मेरे प्रभु! एक तू ही विश्व के शासन का स्वामी है और तू ही यौवन का स्वामी है। तू ही निर्गुण और तू ही सगुण है॥ २॥ हे ठाकुर! लोक–परलोक में तुम ही मेरे रक्षक हो। गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही तुझे समझता है॥ ३॥ हे सर्वज्ञ एवं अन्तर्यामी प्रभु! तू ही नानक का सहारा एवं शक्ति है॥ ४॥ ५॥ १४३॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि हरि आराधीऐ ॥ संतसंगि हरि मनि वसै भरमु मोहु भउ साधीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुराण सिम्रिति भने ॥ सभ ऊच बिराजित जन सुने ॥ १ ॥ सगल असथान भै भीत चीन ॥ राम सेवक भै रहत कीन ॥ २ ॥ लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥ गोबिंद लोक नही जनमि मरहि ॥ ३ ॥ बल बुधि सिआनप हउमै रही ॥ हरि साध सरणि नानक गही ॥ ४ ॥ ६ ॥ १४४ ॥

हमेशा ही हरि–परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। संतों की सभा में ही हरि मन में आकर निवास करता है, जिससे भ्रम, मोह एवं भय दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ वेद, पुराण एवं स्मृतियाँ पुकारते हैं कि प्रभु के सेवक सर्वोच्च आत्मिक निवास में बसते सुने जाते हैं॥ १॥ दूसरे तमाम स्थान भयभीत देखे जाते हैं। लेकिन राम के भक्त भयरहित हैं॥ २॥ प्राणी चौरासी लाख योनियों में भटकते फिरते हैं लेकिन गोविन्द के भक्त आवागमन (जीवन–मृत्यु के चक्र) से मुक्त रहते हैं। नानक ने हरि के संतों की शरण ली है और उसका बल, बुद्धि, चतुरता एवं अहंकार दूर हो गए हैं॥ ४॥ ६॥ १४४॥

गउड़ी महला ५ ॥ मन राम नाम गुन गाईऐ ॥ नीत नीत हरि सेवीऐ सासि सासि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतसंगि हरि मनि वसै ॥ दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ॥ १ ॥ संत प्रसादि हरि जापीऐ ॥ सो जनु दूखि न विआपीऐ ॥ २ ॥ जा कउ गुरु हरि मंत्रु दे ॥ सो उबरिआ माइआ अगनि ते ॥ ३ ॥ नानक कउ प्रभ मइआ करि ॥ मेरै मनि तनि वासै नामु हरि ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४५ ॥

हे मेरे मन! राम के नाम का गुणगान करते रहो। सदैव ही प्रभु की सेवा करो एवं अपने श्वास–श्वास से प्रभु का ध्यान करते रहो॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगति द्वारा ही ईश्वर मन में निवास करता है और दुःख–दर्द, अज्ञानता का अंधेरा एवं दुविधा दौड़ जाते हैं॥ १॥ संतों की कृपा से जो पुरुष प्रभु का जाप करते रहते हैं, ऐसे व्यक्ति कभी दुखी नहीं होते॥ २॥ जिस व्यक्ति को गुरु हरि–नाम रूपी मंत्र देता है, ऐसा व्यक्ति माया की अग्नि से बच जाता है॥ ३॥ हे ईश्वर! मुझ नानक पर कृपा करो चूंकि मेरे मन एवं तन में भगवान के नाम का निवास हो जाए॥ ४॥ ७॥ १४५॥

गउड़ी महला ५ ॥ रसना जपीऐ एकु नाम ॥ ईहा सुखु आनंदु घना आगै जीअ कै संगि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कटीऐ तेरा अहं रोगु ॥ तूं गुर प्रसादि करि राज जोगु ॥ १ ॥ हरि रसु जिनि जनि चाखिआ ॥ ता की त्रिसना लाथीआ ॥ २ ॥ हरि बिस्राम निधि पाइआ ॥ सो बहुरि न कत ही धाइआ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु जा कउ गुरि दीआ ॥ नानक ता का भउ गइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४६ ॥

अपनी रसना से एक परमेश्वर के नाम का ही जाप करना चाहिए। परमेश्वर का नाम जपने से इहलोक में बड़ा सुख एवं आनंद उपलब्ध होता है और आगे परलोक में भी यह आत्मा के काम आता है और साथ रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे जीव! (परमात्मा का नाम जपने से) तेरा अहंकार का रोग निवृत्त हो जाएगा। गुरु की कृपा से तू सांसारिक एवं आत्मिक शासन करेगा॥ १॥ जिस व्यक्ति ने

भी हरि–रस का स्वाद चखा है, उसकी तृष्णा मिट गई है॥ २॥ जिसने सुख के भण्डार परमात्मा को पा लिया है, वह दोबारा अन्य कहीं नहीं जाता॥ ३॥ हे नानक ! जिस व्यक्ति को गुरु ने हरि–परमेश्वर का नाम दिया है, उसका भय दूर हो गया है॥ ४॥ ८॥ १४६॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ बिसरै राम नाम ताहू कउ पीर ॥ साधसंगति मिलि हरि रवहि से गुणी गहीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ गुरमुखि रिदै बुधि ॥ ता कै कर तल नव निधि सिधि ॥ १ ॥ जो जानहि हरि प्रभ धनी ॥ किछु नाही ता कै कमी ॥ २ ॥ करणैहारु पछानिआ ॥ सरब सूख रंग माणिआ ॥ ३ ॥ हरि धनु जा कै ग्रिहि वसै ॥ कहु नानक तिन संगि दुखु नसै ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४७ ॥

जिस व्यक्ति को राम का नाम भूल जाता है, ऐसे व्यक्ति को ही दुख–क्लेशों की पीड़ा लग जाती है। जो व्यक्ति संतों की संगति में मिलकर प्रभु का चिन्तन करते हैं, वहीं गुणवान एवं उदारचित हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की प्रेरणा से जिसके हृदय में ब्रह्म–ज्ञान विद्यमान है, उसके हाथ की हथेली में नवनिधि एवं तमाम सिद्धियाँ विद्यमान हैं॥ १॥ जो व्यक्ति गुणों के स्वामी हरि–प्रभु को जान लेता है, उसके घर में किसी पदार्थ की कोई कमी नहीं रहती॥२॥ जो सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की पहचान कर लेता है, वे सर्व सुख एव आनंद प्राप्त करता है॥ ३॥ हे नानक ! जिस व्यक्ति के हृदय–घर में हरि नाम रूपी धन बसा रहता है, उसकी संगति में रहने से दुख नाश हो जाते हैं॥ ४॥ ९॥ १४७॥

गउड़ी महला ५ ॥ गरबु बडो मूलु इतनो ॥ रहनु नही गहु कितनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेबरजत बेद संतना उआहू सिउ रे हितनो ॥ हार जूआर जूआ बिधे इंद्री वसि लै जितनो ॥ १ ॥ हरन भरन संपूरना चरन कमल रंगि रितनो ॥ नानक उधरे साधसंगि किरपा निधि मै दितनो ॥ २ ॥ १० ॥ १४८ ॥

हे प्राणी ! तेरा अहंकार तो बहुत बड़ा है किन्तु इसका मूल तुच्छमात्र ही है। इस दुनिया में तेरा निवास अस्थाई है, जितना चाहे माया के प्रति आकर्षित रह॥ १॥ रहाउ॥ (जिस माया के प्रति) वेदों एवं संतों ने तुझे वर्जित किया है, उसी से तेरा आकर्षण अधिक है। जैसे जुए की बाजी पराजित जुआरी को भी अपने साथ सम्मिलित रखती है, वैसे ही भोग–इन्द्रिय तुझ पर विजय पा कर अपने वश में रखती है॥ १॥ हे प्राणी ! तू संहारक तथा पालनहार ईश्वर के सुन्दर चरणों के प्रेम से रिक्त है। हे नानक ! कृपा के भण्डार प्रभु ने मुझ नानक को संतों की संगति प्रदान की है, जिससे मैं भवसागर से पार हो गया हूँ॥ २॥ १०॥ १४८॥

गउड़ी महला ५ ॥ मोहि दासरो ठाकुर को ॥ धानु प्रभ का खाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसो है रे खसमु हमारा ॥ खिन महि साजि सवारणहारा ॥ १ ॥ कामु करी जे ठाकुर भावा ॥ गीत चरित प्रभ के गुन गावा ॥ २ ॥ सरणि परिओ ठाकुर वजीरा ॥ तिना देखि मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ एक टेक एको आधारा ॥ जन नानक हरि की लागा कारा ॥ ४ ॥ ११ ॥ १४९ ॥

मैं अपने ठाकुर जी का तुच्छमात्र दास हूँ। परमात्मा जो कुछ भी मुझे (भोजन) देता है, मैं वहीं (भोजन) खाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे सज्जन ! हमारा मालिक–प्रभु ऐसा है, जो क्षण में ही सृष्टि–रचना करके उसे संवार देता है॥ १॥ मैं वही कार्य करता हूँ जो मेरे ठाकुर जी को लुभाता है। मैं प्रभु की गुणस्तुति एवं अद्भुत कौतुकों के गीत गायन करता रहता हूँ॥ २॥ मैंने ठाकुर जी के मन्त्री (गुरु जी) की शरण ली है। उनको देखकर मेरा हृदय धैर्यवान हो गया है॥ ३॥ हे नानक ! (प्रभु के मंत्री का आश्रय लेकर) मैंने एक ईश्वर को ही आधार एवं सहारा बनाया है और ईश्वर की सेवा (गुणस्तुति) में लगा हुआ हूँ॥ ४॥ ११॥ १४९॥

गउड़ी महला ५ ॥ है कोई ऐसा हउमै तोरै ॥ इसु मीठी ते इहु मनु होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनी मानुखु भइआ जो नाही सो लोरै ॥ रैणि अंधारी कारीआ कवन जुगति जितु भोरै ॥ १ ॥ भ्रमतो भ्रमतो हारिआ अनिक बिधी करि टोरै ॥ कहु नानक किरपा भई साधसंगति निधि मोरै ॥ २ ॥ १२ ॥ १५० ॥

हे सज्जन ! क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने अहंत्व को चकनाचूर कर दे और इस मीठी माया से अपने मन को वर्जित कर ले॥ १॥ रहाउ॥ अज्ञानी मनुष्य अपनी बुद्धि गंवा चुका है, क्योंकि जो नहीं है, उसी को खोजता रहता है। मनुष्य के हृदय में मोह-माया की काली अन्धेरी रात्रि है। वह कौन-सी विधि हो सकती है, जिस द्वारा इसके भीतर ज्ञान का दिन उदय हो सके॥ १॥ मैं अनेक विधियों से खोज करता-करता और घूमता एवं भटकता हुआ थक गया हूँ। हे नानक ! ईश्वर ने मुझ पर कृपा की है और मुझे संतों की संगति का भण्डार मिल गया है॥ २॥ १२॥ १५०॥

गउड़ी महला ५ ॥ चिंतामणि करुणा मए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआला पारब्रहम ॥ जा कै सिमरणि सुख भए ॥ १ ॥ अकाल पुरख अगाधि बोध ॥ सुनत जसो कोटि अघ खए ॥ २ ॥ किरपा निधि प्रभ मइआ धारि ॥ नानक हरि हरि नाम लए ॥ ३ ॥ १३ ॥ १५१ ॥

हे करुणामय परमेश्वर ! तू ही वह चिंतामणि है जो तमाम प्राणियों की मनोकामना पूर्ण करती है॥ १॥ हे पारब्रह्म ! तू ही वह दीनदयाल है, जिसका सिमरन करने से सुख प्राप्त होता है॥ १॥ हे अकालपुरुष ! तेरे स्वरूप का बोध अगाध है। तेरी महिमा सुनने से करोड़ों ही पाप मिट जाते हैं॥ २॥ नानक का कथन है कि हे कृपानिधि प्रभु ! मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मैं तेरे हरि-परमेश्वर नाम का सिमरन करता रहूँ॥ ३॥ १३॥ १५१॥

गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाए ॥ जा दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥ ग्रिह मंदर संपै जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥ १ ॥ तनु मेरा संपै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाए ॥ देवनहारा बिसरिओ ठाकुरु खिन महि होत पराए ॥ २ ॥ पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाए ॥ निरभउ निरंकार नही चीनिआ जिउ हसती नावाए ॥ ३ ॥ जउ होइ क्रिपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ॥ मुकतु भइआ बंधन गुरि खोले जन नानक हरि गुण गाए ॥ ४ ॥ १४ ॥ १५२ ॥

हे मेरे मन ! जो व्यक्ति ईश्वर की शरण में आता है, उसे ही सुख उपलब्ध होता है। जिस दिन प्राणपति, सुखों का दाता प्रभु भूल जाता है, वह दिन व्यर्थ बीत जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे जीव ! तुम एक रात्रिकाल के अतिथि के तौर पर दुनिया में आए हो परन्तु तुमने अनेक युग रहने की आशा बढ़ा ली है। घर, मन्दिर एवं धन-दौलत जो कुछ भी दृष्टिमान होता है, वह तो एक पेड़ की छाया की भाँति है॥ १॥ मनुष्य कहता है कि यह तन मेरा है, यह धन-दौलत, बाग एवं संपति सब कुछ मेरा है लेकिन अंततः सब कुछ समाप्त हो जाएँगे। हे मानव ! तू देने वाले दाता जगत् के ठाकुर प्रभु को भूल गया है। एक क्षण में सब कुछ पराया हो जाता है॥ २॥ हे मानव ! तुम नहा धोकर सफेद वस्त्र पहनते हो और अपने आपको चन्दन के इत्र से सुगंधित करते हो। तुम निर्भय, निरंकार ईश्वर का चिन्तन नहीं करते, तेरा स्नान हाथी के नहाने जैसा है॥ ३॥ जब ईश्वर कृपा के घर में आता है तो वह सतिगुरु से मिला देता है। संसार के तमाम सुख ईश्वर के नाम में वास करते हैं। हे नानक ! गुरु ने उसके बन्धन खोलकर भवसागर से मुक्त कर दिया है और अब वह भगवान का ही गुणानुवाद करता रहता है॥ ४॥ १४॥ १५२॥

गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ मेरे मन गुरु गुरु गुरु सद करीऐ ॥ रतन जनमु सफलु गुरि कीआ दरसन कउ बलिहरीऐ॥ १॥ रहाउ ॥ जेते सास ग्रास मनु लेता तेते ही गुन गाईऐ ॥ जउ होइ दैआलु सतिगुरु अपुना ता इह मति बुधि पाईऐ ॥ १ ॥ मेरे मन नामि लए जम बंध ते छूटहि सरब सुखा सुख पाईऐ ॥ सेवि सुआमी सतिगुरु दाता मन बंछत फल आईऐ ॥ २ ॥ नामु इसटु मीत सुत करता मन संगि तुहारै चालै ॥ करि सेवा सतिगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै ॥ ३ ॥ गुरि किरपालि क्रिपा प्रभि धारी बिनसे सरब अंदेसा ॥ नानक सुखु पाइआ हरि कीरतनि मिटिओ सगल कलेसा ॥ ४ ॥ १५ ॥ १५३ ॥

हे मेरे मन! हमेशा ही गुरु को याद करते रहना चाहिए। जिस गुरु ने अमूल्य मानव–जन्म को सफल कर दिया है, उस गुरु के दर्शनों पर तन–मन से बलिहारी जाना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन! मनुष्य जितनी भी सांसें एवं ग्रास लेता है, उतनी बार ही भगवान की महिमा–स्तुति करनी चाहिए। जब सतिगुरु दयालु हो जाते हैं, तो ही यह बुद्धि एवं सुमति प्राप्त होती है॥ १॥ हे मेरे मन! यदि तू ईश्वर का नाम–सिमरन करता रहे तो यम के बन्धनों से तुझे मुक्ति मिल जाएगी (क्योंकि) ईश्वर के नाम का चिन्तन करने से सर्वसुखों में आत्मिक सुख उपलब्ध हो जाता है। जगत् के स्वामी प्रभु के नाम की देन देने वाले सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं॥ २॥ हे मेरे मन! परमात्मा का नाम ही तेरा वास्तविक प्रिय मित्र एवं पुत्र है और यही तेरे साथ परलोक में जाएगा। अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा कर। गुरु के द्वारा भगवान का नाम मिल जाता है॥ ३॥ जब कृपालु गुरु, प्रभु ने मुझ पर कृपा की तो मेरे समस्त दुःख मिट गए। हे नानक! ईश्वर की महिमा करने से उसने सुख प्राप्त किया है और उसके तमाम क्लेश मिट गए हैं॥ ४॥ १५॥ १५३॥

रागु गउड़ी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

त्रिसना बिरले ही की बुझी हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥ परै परै ही कउ लुझी हे ॥ १ ॥ सुंदर नारी अनिक परकारी पर ग्रिह बिकारी ॥ बुरा भला नही सुझी हे ॥ २ ॥ अनिक बंधन माइआ भरमतु भरमाइआ गुण निधि नही गाइआ ॥ मन बिखै ही महि लुझी हे ॥ ३ ॥ जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै साधसंगि माइआ तरै ॥ नानक सो जनु दरि हरि सिझी हे ॥ ४ ॥ १ ॥ १५४ ॥

दुनिया में किसी विरले पुरुष की ही तृष्णा निवृत्त हुई है॥ १॥ रहाउ॥ जीवन में मनुष्य करोड़ों कमाता है और लाखों–करोड़ों रुपए संग्रह करता है परन्तु फिर भी अपने मन पर अंकुश नहीं लगाता। वह अधिकाधिक धन–दौलत जमा करने के लिए तृष्णाग्नि में जलता रहता है॥ १॥ वह अपनी सुन्दर नारी के साथ बहुत प्रेम करता है लेकिन फिर भी पराई नारी के साथ व्यभिचार करता है। वह बुरे–भले की पहचान ही नहीं करता॥ २॥ ऐसा व्यक्ति मोह–माया के बन्धनों में फँसकर भटकता ही रहता है और गुणों के भण्डार परमेश्वर की महिमा–स्तुति नहीं करता। (क्योंकि) उसका मन नीच कर्मों में लीन रहता है॥ ३॥ जिस व्यक्ति पर परमात्मा दया धारण करता है, वह सांसारिक कर्म करता हुआ भी माया के मोह से दूर रहता है। वह सत्संग में रहकर माया के सागर से पार हो जाता है। हे नानक! ऐसा व्यक्ति परमात्मा के दरबार में सफल हो जाता है॥ ४॥ १॥ १५४॥

गउड़ी महला ५ ॥ सभहू को रसु हरि हो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहू जोग काहू भोग काहू गिआन काहू धिआन ॥ काहू हो डंड धरि हो ॥ १ ॥ काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥ काहू हो गउनु करि हो ॥ २ ॥ काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥ नानका भगति प्रिअ हो ॥ ३ ॥ २ ॥ १५५ ॥

ईश्वर का नाम ही समस्त जीवों का रस है॥ १॥ रहाउ॥ हे सज्जन! (ईश्वर नाम से विहीन होकर) किसी व्यक्ति को योग विद्या, किसी को सांसारिक पदार्थ भोगने का उत्साह है। किसी व्यक्ति को ज्ञान एवं किसी को ध्यान की लालसा है। किसी व्यक्ति को डण्डाधारी साधु होना पसन्द है॥ १॥ किसी को जाप, किसी को तपस्या अच्छी लगती है। किसी व्यक्ति को पूजा-उपासना एवं किसी को हवन, धार्मिक संस्कार प्यारे लगते हैं। किसी व्यक्ति को (महात्मा-संत बनकर) धरती पर भ्रमण वाला जीवन लुभाता है॥ २॥ किसी व्यक्ति को नदी के तट से प्रेम है। किसी को जल से एवं किसी को वेदों का अध्ययन प्रिय है। परन्तु नानक को प्रभु-भक्ति ही प्रिय है॥ ३॥ २॥ १५५॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुन कीरति निधि मोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूंही रस तूंही जस तूंही रूप तूही रंग ॥ आस ओट प्रभ तोरी ॥ १ ॥ तूही मान तूंही धान तूही पति तूही प्रान ॥ गुरि तूटी लै जोरी ॥ २ ॥ तूही ग्रिहि तूही बनि तूही गाउ तूही सुनि ॥ है नानक नेर नेरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १५६ ॥

हे ईश्वर! तेरी महिमा की कीर्ति करना ही मेरी निधि है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तू ही मेरा रस है, तू ही मेरा यश है, तू ही मेरी सौन्दर्य एवं तू ही मेरा रंग है। हे ईश्वर! तू ही मेरी आशा एवं शरण है॥ १॥ हे प्रभु! तू ही मेरा मान है, तू ही मेरा धन है। तू ही मेरी प्रतिष्ठा है और तू ही मेरे प्राण है। हे ठाकुर! (मेरी टूटी हुई वृत्ति को) तेरे साथ गुरु जी ने मुझे मिला दिया है, जिससे मैं अलग हो गया था॥ २॥ हे ईश्वर! तू ही मेरे हृदय गृह में मौजूद है। तू ही वन में है, तू ही गाँव में एवं तू ही उजाड़ स्थल में है। हे नानक! ईश्वर (प्रत्येक जीव-जन्तु के) अत्यन्त निकट वास करता है॥ ३॥ ३॥ १५६॥

गउड़ी महला ५ ॥ मातो हरि रंगि मातो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओुही पीओ ओुही खीओ गुरहि दीओ दानु कीओ ॥ उआहू सिउ मनु रातो ॥ १ ॥ ओुही भाठी ओुही पोचा उही पिआरो उही रूचा ॥ मनि ओहो सुखु जातो ॥ २ ॥ सहज केल अनद खेल रहे फेर भए मेल ॥ नानक गुर सबदि परातो ॥ ३ ॥ ४ ॥ १५७ ॥

(हे योगी!) मैं भी मतवाला हूँ, लेकिन ईश्वर की प्रेम-भक्ति की मदिरा से मतवाला हो रहा हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं उस प्रेम की मदिरा का पान करता हूँ, उससे मैं मस्त हुआ हूँ। गुरु जी ने मुझे वह दान के तौर पर प्रदान की है। अब मेरा मन उस नाम-मद में ही मग्न है॥ १॥ (हे योगी!) ईश्वर का नाम ही अग्नि-कुण्ड है, प्रभु नाम ही शीतलदायक वस्त्र है, परमेश्वर का नाम ही प्याला है और नाम ही मेरी रुचि है। (हे योगी!) मेरा मन उसको ही सुख समझता है॥ २॥ हे नानक! मैं प्रभु से ही आनंद प्राप्त करता और हर्षोल्लास में खेलता हूँ। मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है और मैं उस ईश्वर में लीन हो गया हूँ। वह गुरु के शब्द में लीन हो गया है॥ ३॥ ४॥ १५७॥

रागु गौड़ी मालवा महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि नामु लेहु मीता लेहु आगै बिखम पंथु भैआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवत सेवत सदा सेवि तेरै संगि बसतु है कालु ॥ करि सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम जालु ॥ १ ॥ होम जग तीरथ कीए बिचि हउमै बधे बिकार ॥ नरकु सुरगु दुइ भुंचना होइ बहुरि बहुरि अवतार ॥ २ ॥ सिव पुरी ब्रहम इंद्र पुरी निहचलु को थाउ नाहि ॥ बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि ॥ ३ ॥ जैसो गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ॥ नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइ उधारु ॥ ४ ॥ १ ॥ १५८ ॥

हे मेरे मित्र! परमेश्वर के नाम का भजन करो। जिस जीवन पथ पर तुम चल रहे हो, वह पथ बड़ा विषम एवं भयानक है॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर की सदैव पूजा-अर्चना, ध्यान एवं श्रद्धापूर्वक सेवा करो, क्योंकि काल (मृत्यु) तेरे सिर पर खड़ा है। तू संतों की भरपूर सेवा कर, इस तरह मृत्यु का फँदा कट जाता है॥ १॥ हवन, यज्ञ एवं तीर्थ यात्रा करने के अहंकार में पापों में और भी वृद्धि होती है। प्राणी नरक-स्वर्ग दोनों भोगता है और बार-बार नश्वर संसार में जन्म लेता है॥ २॥ शिवलोक, ब्रह्मलोक एवं इन्द्रलोक इनमें से कोई भी लोक अटल नहीं। प्रभु की सेवा-भक्ति के बिना कोई सुख नहीं। (भगवान से टूटा हुआ) शाक्त मनुष्य आवागमन के चक्र में ही फँसा रहता है॥ ३॥ जैसे गुरु ने मुझे उपदेश प्रदान किया है, वैसे ही मैंने उच्च स्वर में कथन किया है। नानक कहता है-हे मेरे मन! ध्यानपूर्वक सुन, ईश्वर का भजन-कीर्त्तन करने से तेरी भवसागर से मुक्ति हो जाएगी॥ ४॥ १॥ १५८॥

रागु गउड़ी माला महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पाइओ बाल बुधि सुखु रे ॥ हरख सोग हानि मिरतु दूख सुख चिति समसरि गुर मिले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ लउ हउ किछु सोचउ चितवउ तउ लउ दुखनु भरे ॥ जउ क्रिपाल गुरु पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे ॥ १ ॥ जेती सिआनप करम हउ कीए तेते बंध परे ॥ जउ साधू करु मसतकि धरिओ तब हम मुकत भए ॥ २ ॥ जउ लउ मेरो मेरो करतो तउ लउ बिखु घेरे ॥ मनु तनु बुधि अरपी ठाकुर कउ तब हम सहजि सोए ॥ ३ ॥ जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे ॥ पोट डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक निरभए ॥ ४ ॥ १ ॥ १५९ ॥

हे बन्धु! जिसने भी सुख प्राप्त किया है, उसने बालबुद्धि में ही प्राप्त किया है। गुरु को मिलने से हर्ष, शोक, हानि, मृत्यु, दुःख-सुख मेरे हृदय को एक समान लगते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब तक मैं कुछ कल्पनाएँ एवं युक्तियों की बातें करता रहा, तब तक मैं दुःखों से भरा रहा। लेकिन जब कृपा के घर पूर्ण गुरु जी मिल गए तो मुझे सहज ही प्रसन्नता प्राप्त हो गई॥ १॥ जितने अधिक कर्म मैंने चतुराई द्वारा किए, उतने ही अधिकतर बंधन पड़ते गए। जब संतों (गुरु) ने अपना हाथ मेरे मस्तक पर रख दिया तो मैं मुक्त हो गया॥ २॥ जब तक मैं कहता रहा कि, "यह (गृह) मेरा है, यह (धन) मेरा है," तब तक मुझे (मोह-माया के) विष ने घेरे हुआ था। जब मैंने अपना तन, मन एवं बुद्धि परमेश्वर को समर्पित कर दी, तो मैं सुख की नींद में सो गया॥ ३॥ हे नानक! जब तक मैं सांसारिक मोह की पोटली सिर पर उठा कर घूमता रहा, तो मैं (सांसारिक भय का) दण्ड भरता रहा। जब मैंने इस पोटली को फैंक दिया तो मुझे पूर्ण गुरु जी मिल गए और मैं निडर हो गया हूँ॥ ४॥ १॥ १५९॥

गउड़ी माला महला ५ ॥ भावनु तिआगिओ री तिआगिओ ॥ तिआगिओ मै गुर मिलि तिआगिओ ॥ सरब सुख आनंद मंगल रस मानि गोबिंदै आगिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिओ ॥ संपत हरखु न आपत दूखा रंगु ठाकुरै लागिओ ॥ १ ॥ बास बासरी एकै सुआमी उदिआन द्रिसटागिओ ॥ निरभउ भए संत भ्रमु डारिओ पूरन सरबागिओ ॥ २ ॥ जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिओ ॥ साधसंगति परसादि संतन कै सोइओ मनु जागिओ ॥ ३ ॥ जन नानक ओड़ि तुहारी परिओ आइओ सरणागिओ ॥ नाम रंग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिओ ॥ ४ ॥ २ ॥ १६० ॥

हे मेरी सखी! मैंने अपनी इच्छाएँ त्याग दी हैं, सदा के लिए इसे छोड़ दिया है। गुरु को मिलकर तमाम संकल्प–विकल्पों को मैंने त्याग दिया है। गोबिन्द की आज्ञा का पालन करके मैंने सर्वसुख, आनन्द, सौभाग्य एवं रस प्राप्त कर लिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ मेरे लिए मान–अभिमान दोनों एक समान हैं। अपना मस्तक मैंने गुरु के चरणों पर अर्पित कर दिया है। मुझे धन–दौलत, हर्ष एवं विपदा दुखी नहीं करती क्योंकि मेरा प्रेम ठाकुर जी से हो गया है॥ १॥ एक ईश्वर हृदय–गृह में वास करता है और उद्यान में भी दृष्टिगोचर होता है। संतों ने मेरी दुविधा निवृत्त कर दी है और मैं निडर हो गया हूँ। सर्वज्ञ प्रभु सर्वत्र विद्यमान हो रहा है॥ २॥ संयोगवश प्रभु जो भी करता है, मेरे हृदय को बुरा नहीं लगता। साधसंगत एवं संतों की कृपा से मेरा मोह–माया में सोया हुआ मन जाग गया है॥३॥ नानक का कथन है कि हे प्रभु! मैं तुम्हारी ओट में आकर पड़ गया हूँ और तुम्हारी शरण में आ गया हूँ। अब वह नाम रंग में सहज ही आनंद भोगता है और अब उसे फिर से कोई दुख प्रभावित नहीं करता॥ ४॥ २॥ १६०॥

गउड़ी माला महला ५ ॥ पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ ॥ तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर सबदि समाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाथी भूख त्रिसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥ करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ मनु जीतो जगु सारी ॥ १ ॥ त्रिपति अघाइ रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥ अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही रे मूके ॥ २ ॥ अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥ लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई ॥ ३ ॥ कहिओ न जाई एहु अचंभउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥ कहु नानक सच भए बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६१ ॥

मैंने अपने मन में ही लाल रत्न (माणिक जैसा प्रियतम) पा लिया है। मेरा तन शीतल हो गया है, मेरा मन भी शीतल हो गया है और मैं सतगुरु के शब्द में समा गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मेरी मोह की भूख निवृत्त हो गई है, मेरी तमाम तृष्णाएँ खत्म हो गई हैं और मेरी सारी चिन्ता मिट गई है। पूर्ण गुरु ने अपना हाथ मेरे मस्तक पर रखा है और अपने मन पर विजय पाने से मैंने सम्पूर्ण संसार जीत लिया है॥ १॥ अपने हृदय के भीतर मैं तृप्त एवं संतुष्ट रहता हूँ और अब मैं डांवाडोल नहीं होता। नाम रूपी अक्षय भण्डार सतिगुरु ने मुझे प्रदान किया है, न ही यह कम होता है और न ही यह समाप्त होता है॥ २॥ हे भाई! एक आश्चर्यजनक बात सुनो, गुरु ने मुझे ऐसा ज्ञान दिया है कि जब पर्दा दूर हटाकर मैं अपने ईश्वर से मिला तो मुझे दूसरों से ईर्ष्या करनी भूल गई॥ ३॥ यह एक आश्चर्य है, जो वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस व्यक्ति ने इसे चखा है, वही इसे जानता है। हे नानक! मेरे अन्तर्मन में सत्य का प्रकाश हो गया है। प्रभु–नाम रूपी धन गुरु जी से प्राप्त करके मैंने इसे अपने हृदय में बसा लिया है॥ ४॥ ३॥ १६१॥

गउड़ी माला महला ५ ॥ उबरत राजा राम की सरणी ॥ सरब लोक माइआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत सिंम्रिति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥ बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न किनहूं लहिआ ॥ १ ॥ तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥ २ ॥ अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल ब्रिथे बिनु नामा ॥ ३ ॥ हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥ साधसंगति जनम मरणु निवारै नानक जन की धूरा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६२ ॥

विश्व के राजा राम की शरण में आकर जीव (मोह–माया से) बच जाता है। इहलोक, आकाशलोक एवं पाताललोक के प्राणी माया के आकर्षण में ही फँसे हुए हैं। माया के आकर्षण के

कारण ये उच्चस्तर से गिर गिर कर निम्नस्तर पर आ जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ शास्त्रों, स्मृतियों एवं वेदों ने यही विचार किया है और महापुरुषों ने भी यही कहा है कि भगवान के भजन के बिना भवसागर से उद्धार नहीं हो सकता और न ही किसी को सुख उपलब्ध हुआ है॥ १॥ चाहे मनुष्य तीनों लोकों की लक्ष्मी (दौलत) एकत्रित कर ले परन्तु उसके लोभ की लहरें मिटती नहीं। भगवान की भक्ति के बिना मन को स्थिरता कहाँ प्राप्त हो सकती है और प्राणी हमेशा ही माया के आकर्षण में भटकता रहता है॥ २॥ मनुष्य मन को आकर्षित करने वाले विलासों में लिप्त होता है परन्तु उसकी तृष्णाएँ तृप्त नहीं होतीं। वह सदा तृष्णाग्नि में जलता रहता है और कदापि शांत नहीं होता। प्रभु के नाम बिना सबकुछ व्यर्थ हैं॥ ३॥ हे मेरे मित्र! भगवान के नाम का जाप करो, यह पूर्ण सुख का सार है। हे नानक! संतों की संगति में जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है और वह प्रभु के सेवकों की धूलि हो जाता है॥ ४॥ ४॥ १६२॥

गउड़ी माला महला ५ ॥ मो कउ इह बिधि को समझावै ॥ करता होइ जनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनजानत किछु इनहि कमानो जप तप कछू न साधा ॥ दह दिसि लै इहु मनु दउराइओ कवन करम करि बाधा ॥ १ ॥ मन तन धन भूमि का ठाकुरु हउ इस का इहु मेरा ॥ भरम मोह कछु सूझसि नाही इह पैखर पए पैरा ॥ २ ॥ तब इहु कहा कमावन परिआ जब इहु कछू न होता ॥ जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभु किछु आपहि करता ॥ ३ ॥ अपने करतब आपे जानै जिनि इहु रचनु रचाइआ ॥ कहु नानक करणहारु है आपे सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६३ ॥

हे मान्यवर! मुझे यह विधि कौन समझा सकता है? यदि मनुष्य करने वाला हो, तो ही वह कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥ यह मनुष्य अज्ञानता में सब कुछ करता है, परन्तु वह आराधना एवं तपस्या कुछ भी नहीं करता। तृष्णा में वह अपने इस मन को दसों दिशाओं में भगाता है। वह कौन-से कर्म द्वारा फँसा पड़ा है?॥ १॥ प्राणी यह कहता है कि मैं अपने मन, तन, धन एवं भूमि का स्वामी हूँ। मैं इनका हूँ और यह मेरे हैं। भ्रम एवं मोहवश उसको कुछ भी दिखाई नहीं देता। मोह-माया की जंजीर उसके पैरों को पड़ी हुई है॥ २॥ तब यह मनुष्य क्या कर्म करता था, जब इसका अस्तित्व ही नहीं था? जब निरंजन एवं निरंकार प्रभु स्वयं ही था, तब वह सब कुछ स्वयं ही करता था॥ ३॥ जिस परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की है, अपनी लीलाओं को वह स्वयं ही जानता है। हे नानक! ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करने वाला है। सतिगुरु ने मेरा भ्रम दूर कर दिया है॥ ४॥ ५॥ १६३॥

गउड़ी माला महला ५ ॥ हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥ जप तप संजम करम कमाणे इहि ओरै मूसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरत नेम संजम महि रहता तिन का आढु न पाइआ ॥ आगै चलणु अउरु है भाई ऊंहा कामि न आइआ ॥ १ ॥ तीरथि नाइ अरु धरनी भ्रमता आगै ठउर न पावै ॥ ऊहा कामि न आवै इह बिधि ओहु लोगन ही पतीआवै ॥ २ ॥ चतुर बेद मुख बचनी उचरै आगै महलु न पाईऐ ॥ बूझै नाही एकु सुधाखरु ओहु सगली झाख झखाईऐ ॥ ३ ॥ नानकु कहतो इहु बीचारा जि कमावै सु पार गरामी ॥ गुरु सेवहु अरु नामु धिआवहु तिआगहु मनहु गुमानी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६४ ॥

भगवान के सिमरन के सिवाय अन्य सभी कार्य व्यर्थ हैं। आडम्बरपूर्ण जाप, तपस्या, संयम एवं दूसरे संस्कारों का करना यह सब निकट ही छीन लिए जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्राणी व्रतों एवं संयमों के नियम में क्रियाशील रहता है परन्तु उन प्रयासों का फल उसे एक कौड़ी भी नहीं मिलता। हे सज्जन! प्राणी के साथ परलोक निभाने वाला पदार्थ दूसरा है, व्रत, नियम एवं संयम में से कोई

भी परलोक में काम नहीं आता॥ १॥ जो व्यक्ति तीर्थों पर स्नान करता है और धरती पर भ्रमण करता रहता है, उसको भी परलोक में कोई सुख का निवास नहीं मिलता। वहाँ यह विधि काम नहीं आती। इससे वह केवल लोगों को ही धार्मिक होने की भ्रान्ति ही कराता है॥ २॥ चारों ही वेदों का मौखिक पाठ करने से मनुष्य आगे प्रभु के दरबार को प्राप्त नहीं होता। जो मनुष्य प्रभु के पवित्र नाम का बोध नहीं करता, वह सब व्यर्थ की बकवाद करता है॥ ३॥ नानक यह एक विचार की बात व्यक्त करता है, जो इस बात पर अनुसरण करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है। वह बात यह है कि गुरु की सेवा करो और प्रभु के नाम का ध्यान करो तथा अपने मन का अहंत्व त्याग दो॥ ४॥ ६॥ १६४॥

गउड़ी माला ५ ॥ माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऐ ॥ हम ते कछू न होवै सुआमी जिउ राखहु तिउ रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ किछु करै कि करणैहारा किआ इसु हाथि बिचारे ॥ जितु तुम लावहु तित ही लागा पूरन खसम हमारे ॥ १ ॥ करहु क्रिपा सरब के दाते एक रूप लिव लावहु ॥ नानक की बेनंती हरि पहि अपुना नामु जपावहु ॥ २ ॥ ७ ॥ १६५ ॥

हे माधो! हे हरि-परमेश्वर! ऐसी कृपा करो कि हम अपने मुख से तेरा हरिनाम ही उच्चरित करते रहें। हे जगत् के स्वामी! हम से कुछ भी नहीं हो सकता। जैसे तू हम जीवों को रखता है, वैसे ही हम रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्राणी बेचारा क्या कर सकता है, वह क्या करने योग्य है और इस विनीत प्राणी के वश में क्या है? हे हमारे सर्वव्यापक मालिक! प्राणी उस तरफ लगा रहता है, जिस तरफ तू उसे लगा देता है॥ १॥ हे समस्त जीवों के दाता! मुझ पर कृपा करो और केवल अपने स्वरूप के साथ ही मेरी वृत्ति लगाओ। मुझ नानक की भगवान के समक्ष यही विनती है कि हे प्रभु! मुझसे अपने नाम का जाप करवाओ॥ २॥ ७॥ १६५॥

रागु गउड़ी माझ महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दीन दइआल दमोदर राइआ जीउ ॥ कोटि जना करि सेव लगाइआ जीउ ॥ भगत वछलु तेरा बिरदु रखाइआ जीउ ॥ पूरन सभनी जाई जीउ ॥ १ ॥ किउ पेखा प्रीतमु कवण सुकरणी जीउ ॥ संता दासी सेवा चरणी जीउ ॥ इहु जीउ वताई बलि बलि जाई जीउ ॥ तिसु निवि निवि लागउ पाई जीउ ॥ २ ॥ पोथी पंडित बेद खोजंता जीउ ॥ होइ बैरागी तीरथि नावंता जीउ ॥ गीत नाद कीरतनु गावंता जीउ ॥ हरि निरभउ नामु धिआई जीउ ॥ ३ ॥ भए क्रिपाल सुआमी मेरे जीउ ॥ पतित पवित लगि गुर के पैरे जीउ ॥ भ्रमु भउ काटि कीए निरवैरे जीउ ॥ गुर मन की आस पूराई जीउ ॥ ४ ॥ जिनि नाउ पाइआ सो धनवंता जीउ ॥ जिनि प्रभु धिआइआ सु सोभावंता जीउ ॥ जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी जीउ ॥ जन नानक सहजि समाई जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥ १६६ ॥

हे दीनदयाल! हे पूज्य दमोदर! तूने करोड़ों ही लोगों को अपनी भक्ति सेवा में लगाया हुआ है। तेरा विरद् भक्तवत्सल है अर्थात तुम अपने भक्तों के प्रिय हो और यहीं विरद तूने धारण किया हुआ है। हे प्रभु! तू सर्वव्यापक है॥ १॥ मैं अपने प्रियतम को किस तरह देखूँगी? वह कौन-सा शुभ कर्म है? संतों की दासी बनकर उनके चरणों की सेवा कर। मैं अपनी यह आत्मा उन पर न्यौछावर करती हूँ और तन-मन से उन पर बलिहारी जाती हूँ। मैं झुक-झुक कर उनके चरण स्पर्श करती हूँ॥ २॥ पण्डित ग्रंथों एवं वेदों का अध्ययन करता है। कोई व्यक्ति त्यागी होकर तीर्थ-स्थान पर स्नान करता है। कोई गीत एवं मधुर भजन का गायन करता है। किन्तु मैं निर्भय हरि के नाम का ही ध्यान करती हूँ॥ ३॥ मेरा प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है। गुरु जी के चरण स्पर्श करके मैं पतित से पवित्र हो गई

हूँ। गुरु ने मेरी दुविधा एवं भय निवृत्त करके मुझे निर्वेर कर दिया है। गुरु ने मेरे मन की आशा पूर्ण कर दी है॥ ४॥ जिन्होंने नाम–धन प्राप्त किया है, वह धनवान बन गया है। जिन्होंने अपने प्रभु का ध्यान किया है, वह शोभायमान बन गया है। हे नानक! जो व्यक्ति संतों की संगति में रहता है, उसके तमाम कर्म श्रेष्ठ हैं और ऐसा व्यक्ति सहज ही सत्य में समा गया है॥ ५॥ १॥ १६६॥

गउड़ी महला ५ माझ ॥ आउ हमारै राम पिआरे जीउ ॥ रैणि दिनसु सासि सासि चितारे जीउ ॥ संत देउ संदेसा पै चरणारे जीउ ॥ तुधु बिनु कितु बिधि तरीऐ जीउ ॥ १ ॥ संगि तुमारै मै करे अनंदा जीउ ॥ वणि तिणि त्रिभवणि सुख परमानंदा जीउ ॥ सेज सुहावी इहु मनु बिगसंदा जीउ ॥ पेखि दरसनु इहु सुखु लहीऐ जीउ ॥ २ ॥ चरण पखारि करी नित सेवा जीउ ॥ पूजा अरचा बंदन देवा जीउ ॥ दासनि दासु नामु जपि लेवा जीउ ॥ बिनउ ठाकुर पहि कहीऐ जीउ ॥ ३ ॥ इछ पुंनी मेरी मनु तनु हरिआ जीउ ॥ दरसन पेखत सभ दुख परहरिआ जीउ॥ हरि हरि नामु जपे जपि तरिआ जीउ॥ इहु अजरु नानक सुखु सहीऐ जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ १६७ ॥

हे मेरे प्रिय राम जी! आओ, हमारे हृदय में आकर निवास कर लो। रात–दिन श्वास–श्वास से तेरा ही चिंतन करती रहती हूँ। हे संतजनो! मैं आपके चरण स्पर्श करती हूँ। मेरा यह सन्देश प्रभु को पहुँचा देना, तेरे अलावा मेरा किस तरह भवसागर से कल्याण हो सकता है॥ १॥ मैं तेरी संगति में आनन्द प्राप्त करती हूँ। हे प्रभु! तुम वन, वनस्पति एवं तीनों लोकों में विद्यमान हो। तुम सुख एवं परम आनन्द प्रदान करते हो। तेरे साथ मुझे यह सेज सुन्दर लगती है एवं मेरा यह मन कृतार्थ हो जाता है। हे स्वामी! तेरे दर्शन करने से मुझे यह सुख प्राप्त होता है॥ २॥ हे नाथ! मैं तेरे सुन्दर चरण धोती और प्रतिदिन तेरी श्रद्धापूर्वक सेवा करती हूँ। हे देव! मैं तेरी पूजा–अर्चना एवं पुष्प भेंट करके तेरी वन्दना करती हूँ। हे स्वामी! मैं तेरे दासों की दास हूँ और तेरे नाम का भजन करती हूँ। हे संतजनों! मेरी यह प्रार्थना मेरे ठाकुर जी के पास वर्णन कर देना॥ ३॥ मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई है और मेरा मन एवं तन प्रफुल्लित हो गए हैं। प्रभु के दर्शन करने से मेरे तमाम दुःख दूर हो गए हैं। हरि–परमेश्वर के नाम का जाप जपने से मैं भवसागर से पार हो गई हूँ। हे नानक! उसने प्रभु दर्शनों के इस अक्षुण्ण सुख को सहन कर लिया है॥ ४॥ २॥ १६७॥

गउड़ी माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि साजन मन मित पिआरे जीउ ॥ मनु तनु तेरा इहु जीउ भि वारे जीउ ॥ विसरु नाही प्रभ प्राण अधारे जीउ ॥ सदा तेरी सरणाई जीउ ॥ १ ॥ जिसु मिलिऐ मनु जीवै भाई जीउ ॥ गुर परसादी सो हरि हरि पाई जीउ ॥ सभु किछु प्रभ का प्रभ कीआ जाई जीउ ॥ प्रभ कउ सद बलि जाई जीउ ॥ २ ॥ एहु निधानु जपै वडभागी जीउ ॥ नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ ॥ गुरु पूरा पाइआ सभु दुखु मिटाइआ जीउ ॥ आठ पहर गुण गाइआ जीउ ॥ ३ ॥ रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ ॥ तूं सचा साहु भगतु वणजारा जीउ ॥ हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ ॥ जन नानक सद बलिहारा जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६८ ॥

हे मेरे प्रिय साजन! हे मेरे मन के मीत! मेरी विनती ध्यानपूर्वक सुनो। हे प्रभु! मेरा मन एवं तन सब कुछ तेरा है और यह प्राण भी तुझ पर न्यौछावर हैं। हे स्वामी! मैं तुझे कभी भी विस्मृत न करूँ, तुम मेरे प्राणों का आधार हो। हे ठाकुर! मैं हमेशा ही तेरी शरण में रहती हूँ॥ १॥ हे भाई! जिसको मिलने से मेरा मन जीवित हो जाता है, गुरु की कृपा से मैंने उस हरि–परमेश्वर को प्राप्त कर लिया है। समस्त पदार्थ परमेश्वर के हैं और परमेश्वर के ही सर्वत्र स्थान हैं। मैं अपने प्रभु पर सदैव ही कुर्बान जाती हूँ॥ २॥ कोई भाग्यशाली ही इस नाम के भण्डार का भजन करता है। वह एक पवित्र

प्रभु के नाम से वृत्ति लगाता है। जिसे पूर्ण गुरु मिल जाता है, उसके तमाम दुःख मिट जाते हैं। मैं आठ पहर अपने प्रभु का यश गायन करता रहता हूँ॥ ३॥ हे प्रभु! तेरा नाम रत्नों का खजाना है। तू सच्चा साहूकार है और तेरा भक्त तेरे नाम का व्यापारी है। जिस व्यक्ति के पास हरि नाम रूपी धन है उसका व्यापार ही सच्चा है। जन नानक सदैव ही प्रभु पर बलिहारी जाता है॥ ४॥ ३॥ १६८॥

रागु गउड़ी माझ महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तूं मेरा बहु माणु करते तूं मेरा बहु माणु ॥ जोरि तुमारै सुखि वसा सचु सबदु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभे गला जातीआ सुणि कै चुप कीआ ॥ कद ही सुरति न लधीआ माइआ मोहड़िआ ॥ १ ॥ देइ बुझारत सारता से अखी डिठड़िआ ॥ कोई जि मूरखु लोभीआ मूलि न सुणी कहिआ ॥ २ ॥ इकसु दुहु चहु किआ गणी सभ इकतु सादि मुठी ॥ इकु अधु नाइ रसीअड़ा का विरली जाइ वुठी ॥ ३ ॥ भगत सचे दरि सोहदे अनद करहि दिन राति ॥ रंगि रते परमेसरै जन नानक तिन बलि जात ॥ ४ ॥ १ ॥ १६९ ॥

हे सृष्टिकर्ता! मैं तुझ पर बड़ा गर्व करता हूँ, क्योंकि तू ही मेरा स्वाभिमान है। तेरी समर्था द्वारा मैं सुखपूर्वक निवास करता हूँ। तेरा सत्य नाम ही मेरा पथप्रदर्शक है॥ १॥ रहाउ॥

मनुष्य सबकुछ जानता है परन्तु सुनकर वह चुप ही रहता है। माया में मोहित हुआ वह कदापि ध्यान नहीं देता॥ १॥ पहेलियां एवं संकेत दिए गए हैं। उनको प्राणी अपने नयनों से देखता है। परन्तु मूर्ख एवं लोभी मनुष्य इस कथन को बिल्कुल ही नहीं सुनता॥ २॥ हे भाई! किसी एक, दो अथवा चार प्राणियों की बात क्या बताऊं? सारी दुनिया को उतना ही सांसारिक स्वादों ने ठगा हुआ है। कोई विरला व्यक्ति ही प्रभु के नाम का रसिया है और कोई विरला स्थान ही प्रफुल्लित रह गया है॥ ३॥ प्रभु के भक्त सत्य के दरबार में सुन्दर लगते हैं। वे दिन-रात आनन्द प्राप्त करते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति परमेश्वर के प्रेम रंग में मग्न रहते हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥ ४॥ १॥ १६९॥

गउड़ी महला ५ मांझ ॥ दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥ आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥ जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥ १ ॥ सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥ ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥ २ ॥ भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥ तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥ ३ ॥ गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥ गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥ ४ ॥ २ ॥ १७० ॥

हे भगवान! तेरा नाम दुखों का नाश करने वाला है। आठों प्रहर नाम की आराधना करनी चाहिए, पूर्ण सतिगुरु का यही ज्ञान है (जो ईश्वर से मिला सकता है)॥ १॥ रहाउ॥ जिस के अन्तर्मन में पारब्रह्म निवास करता है, वह सुन्दर स्थान है। जो व्यक्ति अपनी जिह्वा से प्रभु की गुणस्तुति करता है, यमदूत उसके निकट नहीं आता॥ १॥ मैंने प्रभु की सेवा में सावधान रहने के मूल्य को नहीं समझा और न ही मैंने उसकी आराधना को अनुभव किया है। हे जगजीवन! हे मेरे अगम्य एवं अगाध ठाकुर! अब तू ही मेरा सहारा है॥ २॥ जिस व्यक्ति पर गुसाई कृपा के घर में आ जाता है, उसका शोक एवं संताप दूर हो जाते हैं। उसे किसी प्रकार का दुःख स्पर्श नहीं करता, जिसकी सतिगुरु स्वयं रक्षा करते हैं॥ ३॥ गुरु ही नारायण हैं, गुरु ही दया का घर ईश्वर एवं गुरु ही सत्यस्वरूप कर्त्तार हैं। जब गुरु प्रसन्न हो जाता है तो सब कुछ मिल जाता है। हे नानक! मैं गुरु पर हमेशा ही तन-मन से न्यौछावर हूँ॥ ४॥ २॥ १७०॥

गउड़ी माझ महला ५ ॥ हरि राम राम राम रामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवितु ॥ हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मितु ॥ १ ॥ सभि पदारथ सभि फला सरब गुणा जिसु माहि ॥ किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥ २ ॥ जिसु लड़ि लगिऐ जीवीऐ भवजलु पईऐ पारि ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥ ३ ॥ जीवन रूप गोपाल जसु संत जना की रासि ॥ नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७१ ॥

हे जिज्ञासु! हरि–राम–राम–राम का लगातार जाप करने से सभी कार्य संवर जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ राम गोबिन्द का जाप करने से मुख पवित्र हो जाता है। जो व्यक्ति मुझे भगवान का यश सुनाता है, वही मेरा मित्र एवं भाई है॥ १॥ हम अपने मन में से गोबिन्द को क्यों विस्मृत करें, जिसका सिमरन करने से तमाम दुःख निवृत्त हो जाते हैं और जिस गोविन्द के वश में समस्त पदार्थ, समस्त फल एवं सर्वगुण हैं॥ २॥ हे जिज्ञासु! उस भगवान का ही सिमरन करना चाहिए, जिसके दामन के साथ जुड़ने से मनुष्य को जीवन मिलता है और जीव भवसागर से पार हो जाता है। संतों की संगति में रहने से प्राणी का उद्धार हो जाता है और प्रभु के दरबार में उसका मुख उज्ज्वल हो जाता है॥ ३॥ सृष्टि के पालनहार गोपाल का यश जीवन का सारांश एवं संतजनों की पूँजी है। हे नानक! प्रभु के नाम का भजन करने से संतों का उद्धार हो जाता है और सत्य के दरबार में उनको बड़ी शोभा मिलती है॥ ४॥ ३॥ १७१॥

गउड़ी माझ महला ५ ॥ मीठे हरि गुण गाउ जिंदू तूं मीठे हरि गुण गाउ ॥ सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होरि साद सभि फिकिआ तनु मनु फिका होइ ॥ विणु परमेसर जो करे फिटु सु जीवणु सोइ ॥ १ ॥ अंचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥ पारब्रहमु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥ २ ॥ साजनु बंधु सुमितु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥ अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥ ३ ॥ मालु खजाना थेहु घरु हरि के चरण निधान ॥ नानक जाचकु दरि तेरै प्रभ तुधनो मंगै दानु ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७२ ॥

हे मेरे प्राण! तू भगवान के मीठे गुण गाता जा, उसका ही गुणानुवाद कर। सत्यस्वरूप ईश्वर के साथ मग्न रहने से निराश्रय को भी आश्रय प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ दूसरे तमाम स्वाद फीके हैं और उन से तन–मन फीके हो जाते हैं। परमेश्वर का नाम स्मरण छोड़ कर मनुष्य जो कुछ भी करता है, उसका जीवन धिक्कार योग्य है॥ १॥ हे मेरे प्राण! संतों का दामन पकड़ने से इस भवसागर से पार हुआ जा सकता है। हमें पारब्रह्म की आराधना करनी चाहिए, क्योंकि आराधना करने वाले का समूचा परिवार भी भवसागर से पार हो जाता है॥ २॥ वही मेरा साजन, बन्धु एवं प्रिय मित्र है, जो प्रभु के नाम को मेरे हृदय में स्थापित करता है। वह मेरे तमाम अवगुणों को मिटा देता है और मुझ पर बड़ा परोपकार करता है॥ ३॥ ईश्वर के चरण ही (तमाम पदार्थों के) भण्डार हैं, वही धन, भण्डार एवं प्राणी के लिए वास्तविक निवास है। हे प्रभु! याचक नानक तेरे द्वार पर खड़ा है और तुझे ही अपने दान के तौर पर माँगता है॥ ४॥ ४॥ १७२॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी महला ९ ॥ साधो मन का मानु तिआगउ ॥ कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥ हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥ १ ॥ उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥ जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥ २ ॥ १ ॥

हे संतजनो ! अपने मन का अभिमान त्याग दो। काम, क्रोध एवं दुर्जन लोगों की संगति से दिन-रात दूर रहो॥ १॥ रहाउ॥ जो इन्सान सुख-दुख एवं मान-सम्मान को एक समान समझता है और जो सुख एवं दुख से पृथक रहता है, वह जगत् में जीवन के तथ्य को पहचान लेता है॥ १॥ मनुष्य को किसी की प्रशंसा एवं निन्दा करना दोनों ही त्यागने योग्य हैं और उसके लिए मुक्ति पद को ढूँढना न्यायोचित है। हे दास नानक ! यह खेल कठिन है। गुरु की प्रेरणा से किसी विरले को ही इसका ज्ञान होता है॥ २॥ १॥

गउड़ी महला ६ ॥ साधो रचना राम बनाई ॥ इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥ १ ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥ जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥ २ ॥ २ ॥

हे संतजनो ! राम ने (एक अद्भुत) सृष्टि की रचना की है। एक व्यक्ति अपने प्राण त्याग देता है और एक अपने आपको अनश्वर समझता है। यह एक अद्भुत लीला है जिसका बोध नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ नश्वर प्राणी कामवासना, क्रोध एवं सांसारिक मोह के वश में है और वह प्रभु के व्यक्तित्व को भूल गया है। मानव देहि जो रात्रि के स्वप्न की भाँति मिथ्या है, मनुष्य उसे सत्य समझता है॥ १॥ जो कुछ भी दिखाई देता है, वह बादल की छाया की भाँति समस्त लुप्त हो जाएगा। हे नानक ! जो व्यक्ति संसार को मिथ्या समझता है, वह राम की शरण में रहता है॥ २॥ २॥

गउड़ी महला ६ ॥ प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥ अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥ म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥ १ ॥ भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥ जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥ २ ॥ ३ ॥

नश्वर प्राणी भगवान के यश को अपने हृदय में नहीं बसाता। वह दिन-रात माया के मोह में ही मग्न रहता है। बताइए, फिर वह किस तरह प्रभु की महिमा गायन कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥ इस विधि से वह अपने आपको बच्चों, मित्र-बन्धुओं, माया एवं अहंत्व के साथ बांध लेता है। मृगतृष्णा की भाँति यह नश्वर संसार मिथ्या है। फिर भी उसको देखकर प्राणी इसके पीछे भागता है॥ १॥ परमात्मा भुक्ति (संसार के भोगों) एवं मुक्ति का स्वामी है। लेकिन मूर्ख मनुष्य उस परमात्मा को विस्मृत रखता है। हे नानक ! करोड़ों में से कोई विरला ही व्यक्ति है, जो राम के भजन को प्राप्त करता है॥ २॥ ३॥

गउड़ी महला ६ ॥ साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥ चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥ रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥ १ ॥ जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥ जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥ २ ॥ ४ ॥

हे संतजनो ! यह मन वश में नहीं किया जा सकता। चूंकि यह चंचल मन तृष्णा के साथ निवास करता है। इसलिए यह स्थिर होकर नहीं रहता॥ १॥ रहाउ॥ प्रचण्ड क्रोध हृदय के भीतर है, जो समस्त चेतना को विस्मृत कर देता है। इस क्रोध ने प्रत्येक व्यक्ति का ज्ञान-रत्न छीन लिया है। इसके समक्ष किसी का भी वश नहीं चलता॥ १॥ बहुत सारे योगी यत्न करते हुए पराजित हो गए हैं। विद्वान पुरुष प्रभु की स्तुति करते हुए थक गए हैं। हे दास नानक ! जब ईश्वर दयालु हो जाता है तो प्रत्येक कोशिश सफल हो जाती है॥ २॥ ४॥

गउड़ी महला ९ ॥ साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥ मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥ गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥ १ ॥ तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥ नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे संतजनो ! सृष्टि के स्वामी गोबिन्द की गुणस्तुति करते रहो। आपको अनमोल मनुष्य जीवन मिला है। इसको व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर पापियों को पवित्र करने वाला एवं निर्धनों का संबंधी है। आप लोग उस भगवान की शरण में आओ। आप लोग उस भगवान को क्यों विस्मृत करते हो, जिसका सिमरन करने से हाथी का भय मिट गया था॥ १॥ अभिमान, मोह एवं माया को त्याग दीजिए और राम के भजन को अपने मन के साथ लगाओ। नानक कहते हैं–मोह–माया से मुक्त होने का यही मार्ग है। लेकिन गुरु का आश्रय लेकर ही तुम यह मार्ग प्राप्त कर सकते हो॥ २॥ ५॥

गउड़ी महला ९ ॥ कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥ बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥ माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥ १ ॥ अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥ २ ॥ ६ ॥

हे मेरी माता ! मुझे कोई ऐसा महापुरुष मिल जाए जो मेरे भटकते हुए मन को सुमति प्रदान करे। मनुष्य वेद–पुराण एवं संतों–महांपुरुषों के उपदेश को सुनता रहता है, परन्तु फिर भी वह एक क्षण भर के लिए भी प्रभु का गुणानुवाद नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ दुर्लभ मानव देहि प्राप्त करके वह जीवन को व्यर्थ ही गंवा रहा है। यह दुनिया मोह–माया का संकट से भरा हुआ वन है तो भी मनुष्य उससे ही रुचि उत्पन्न करता है॥ १॥ प्रभु हृदय के भीतर व बाहर सदैव ही प्राणी के साथ रहता है। परन्तु प्राणी प्रभु में वृत्ति नहीं लगाता। हे नानक ! उस व्यक्ति को ही मुक्ति मिली समझो, जिसके हृदय में राम वास कर रहा है॥ २॥ ६॥

गउड़ी महला ९ ॥ साधो राम सरनि बिसरामा ॥ बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥ हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥ १ ॥ सुरग नरक अंम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥ उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥ २ ॥ दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥ नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥ ३ ॥ ७ ॥

हे संतजनो ! राम की शरण में आने से ही सुख उपलब्ध होता है। वेदों एवं पुराणों के अध्ययन का लाभ यही है कि प्राणी भगवान के नाम का सिमरन करता रहे॥ १॥ रहाउ॥ लालच, मोह, माया, ममता, विषयों की सेवा एवं फिर हर्ष एवं शोक जिसे स्पर्श नहीं करते, वह पुरुष प्रभु का स्वरूप है॥ १॥ जिस व्यक्ति को स्वर्ग–नरक, अमृत एवं विष एक जैसे प्रतीत होते हैं और जिस इन्सान को सोना एवं तांबा ये सभी एक समान प्रतीत होते हैं। जिसके हृदय में प्रशंसा व निन्दा एक समान हैं, जिसके हृदय में लोभ तथा मोह कोई प्रभावित नहीं करते॥ २॥ जिसे कोई सुख अथवा दुख बन्धन में बांध नहीं सकता। आप उसको ज्ञानी समझो। हे नानक ! उस प्राणी को मोक्ष मिला समझो, जो प्राणी इस जीवन–आचरण वाला है॥ ३॥ ७॥

गउड़ी महला ९ ॥ मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥ अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥ इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥ १ ॥ रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥ निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥ २ ॥ कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥ अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥ ३ ॥ ८ ॥

हे मेरे मन! तू क्यों बावला हो रहा है? तू क्यों नहीं समझता कि तेरी जीवन-अवधि दिन-रात कम होती जा रही है। लोभ के साथ तू तुच्छ हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ (हे मन!) वह तन एवं घर की सुन्दर नारी जिन्हें तुम अपना समझते हो, इनमें तेरा कुछ नहीं। देख और ध्यानपूर्वक सोच-विचार कर॥ १॥ तुम ने अपना अनमोल मनुष्य जीवन गंवा लिया है और सृष्टि के स्वामी गोबिन्द की गति को नहीं जाना। एक क्षण भर के लिए भी तू प्रभु के चरणों में नहीं समाया। तेरी अवस्था व्यर्थ ही बीत गई है॥ २॥ हे नानक! वही व्यक्ति सुखी है, जो राम नाम का यश गायन करता रहता है। दूसरे तमाम लोग माया ने मुग्ध किए हुए हैं और वह निर्भय-पद को प्राप्त नहीं होते॥ ३॥ ८॥

गउड़ी महला ९ ॥ नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥ पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥ १ ॥ मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥ नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥ २ ॥ ९ ॥ २५१ ॥

हे चेतनाहीन प्राणी! तू पापों से भय कर। उस दीनदयाल एवं समस्त भय नाश करने वाले प्रभु की शरण ले॥ १॥ रहाउ॥ अपने हृदय में उस प्रभु के नाम को बसा कर रख, जिसकी महिमा वेद एवं पुराण भी गायन करते हैं। ईश्वर का नाम इस संसार में पवित्र-पावन है। इसका भजन सिमरन करने से तू अपने तमाम पाप निवृत्त कर ले॥ १॥ हे प्राणी! मानव देहि दोबारा तुझे प्राप्त नहीं होनी। इसलिए अपनी मुक्ति हेतु कुछ उपाय कर ले। नानक कहते हैं, हे जीव! करुणानिधि परमेश्वर का भजन गायन कर के भवसागर से पार हो जा॥ २॥ ९॥ २५१॥

रागु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी १ओं सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

निधि सिधि निरमल नामु बीचारु ॥ पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि ॥ त्रिकुटी छूटी बिमल मझारि ॥ गुर की मति जीइ आई कारि ॥ १ ॥ इन बिधि राम रमत मनु मानिआ ॥ गिआन अंजनु गुर सबदि पछानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु सुखु मानिआ सहजि मिलाइआ ॥ निरमल बाणी भरमु चुकाइआ ॥ लाल भए सूहा रंगु माइआ ॥ नदरि भई बिखु ठाकि रहाइआ ॥ २ ॥ उलट भई जीवत मरि जागिआ ॥ सबदि रवे मनु हरि सिउ लागिआ ॥ रसु संग्रहि बिखु परहरि तिआगिआ ॥ भाइ बसे जम का भउ भागिआ ॥ ३ ॥ साद रहे बादं अहंकारा ॥ चितु हरि सिउ राता हुकमि अपारा ॥ जाति रहे पति के आचारा ॥ द्रिसटि भई सुखु आतम धारा ॥ ४ ॥ तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु ॥ किसु सेवउ किसु देवउ चीतु ॥ किसु पूछउ किसु लागउ पाइ ॥ किसु उपदेसि रहा लिव लाइ ॥ ५ ॥ गुर सेवी गुर लागउ पाइ ॥ भगति करी राचउ हरि नाइ ॥ सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ ॥ हुकमि संजोगी निज घरि जाउ ॥ ६ ॥ गरब गतं सुख आतम धिआना ॥ जोति भई जोती माहि समाना ॥ लिखतु मिटै नही सबदु नीसाना ॥ करता करणा करता जाना ॥ ७ ॥ नह पंडितु नह चतुरु सिआना ॥ नह भूलो नह भरमि भुलाना ॥ कथउ न कथनी हुकमु पछाना ॥ नानक गुरमति सहजि समाना ॥ ८ ॥ १ ॥

नवनिधि एवं (अठारह) सिद्धियाँ पवित्र नाम के चिंतन में हैं। माया के विष का नाश करके मनुष्य परमात्मा को सर्वव्यापक देखता है। पवित्र प्रभु में वास करने से मैंने तीनों गुणों से मुक्ति प्राप्त कर ली है। गुरु जी का उपदेश ही मेरे मन के लिए लाभदायक (सिद्धियाँ) हैं॥ १॥ इस विधि से राम के नाम का जाप करने से मेरा मन संतुष्ट हो गया है। ज्ञान के सुरमे को मैंने गुरु के शब्द द्वारा पहचान लिया है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अब एक सहज सुख को भोगता हूँ और प्रभु में लीन हो गया हूँ। पवित्र वाणी द्वारा मेरी शंका निवृत्त हो गई है। मोहिनी के लाल रंग के स्थान पर मैंने ईश्वर के नाम का गहरा लाल रंग धारण कर लिया है। जब प्रभु अपनी कृपा दृष्टि धारण करता है तो बुराई का विष नष्ट हो जाता है॥ २॥ मेरी वृत्ति मोह–माया से पृथक हो गई है, सांसारिक कर्म करते हुए ही मेरा मन मर गया है और मैं आत्मिक तौर पर जागृत हो गया हूँ। नाम का उच्चारण करने से मेरा मन प्रभु के साथ जुड़ गया है। माया के विष को त्याग कर मैंने प्रभु के अमृतरस का संग्रह किया है। प्रभु के प्रेम में वास करने से मेरा मृत्यु का भय भाग गया है॥ ३॥ मेरे सांसारिक रस, विवाद एवं अहंकार मिट गए हैं। अनंत ईश्वर के हुक्म द्वारा मेरा मन ईश्वर के साथ मग्न हो गया है। मेरे लोक व्यवहार के कार्य जाते रहे हैं। जब ईश्वर ने मुझ पर कृपा–दृष्टि की तो मैंने अलौकिक सुख को अपने हृदय में बसा लिया॥ ४॥ हे नाथ! तेरे बिना मैं अपना मित्र किसी को नहीं समझता। किसी दूसरे की मैं क्यों सेवा करूँ और किस को अपनी आत्मा समर्पित करूँ? मैं किससे पूछूँ और किसके चरण स्पर्श करूँ? किसके उपदेश द्वारा मैं प्रभु के प्रेम में लीन रह सकता हूँ?॥ ५॥ मैं गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करता हूँ और गुरु के ही चरण स्पर्श करता हूँ। मैं प्रभु की भक्ति करता हुआ उसके नाम में समाया हुआ हूँ। प्रभु की प्रीति मेरे लिए उपदेश, प्रभु दीक्षा एवं भोजन है। प्रभु के हुक्म से जुड़कर मैंने अपने आत्मस्वरूप में प्रवेश कर लिया है॥ ६॥ अहंकार की निवृत्ति द्वारा आत्मा को सुख एवं ध्यान प्राप्त हो जाते हैं। ईश्वरीय ज्योत उदय हो गई है और मेरे प्राण परम ज्योति में लीन हो गए हैं। अनन्त लिखित मिटाई नहीं जा सकती और मैं प्रभु के नाम का तिरंगा प्राप्त कर लिया है। मैंने सृजनहार प्रभु को ही कर्त्तार एवं रचयिता जाना है॥ ७॥ अपने आप मनुष्य न विद्वान, चतुर अथवा बुद्धिमान है, न ही मार्ग से भटका हुआ, न ही भ्रम का गुमराह किया हुआ है। मैं व्यर्थ बातें नहीं करता, परन्तु हरि के हुक्म को पहचानता हूँ। हे नानक! गुरु के उपदेश द्वारा वह प्रभु में लीन हो गया है॥ ८॥ १॥

गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ मनु कुंचरु काइआ उदिआनै ॥ गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ॥ राज दुआरै सोभ सु मानै ॥ १ ॥ चतुराई नह चीनिआ जाइ ॥ बिनु मारे किउ कीमति पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर महि अंम्रितु तसकरु लेई ॥ नंनाकारु न कोइ करेई ॥ राखै आपि वडिआई देई ॥ २ ॥ नील अनील अगनि इक ठाई ॥ जलि निवरी गुरि बूझ बुझाई ॥ मनु दे लीआ रहसि गुण गाई ॥ ३ ॥ जैसा घरि बाहरि सो तैसा ॥ बैसि गुफा महि आखउ कैसा ॥ सागरि डूगरि निरभउ ऐसा ॥ ४ ॥ मूए कउ कहु मारे कउनु ॥ निडरे कउ कैसा डरु कवनु ॥ सबदि पछानै तीने भउन ॥ ५ ॥ जिनि कहिआ तिनि कहनु वखानिआ ॥ जिनि बूझिआ तिनि सहजि पछानिआ ॥ देखि बीचारि मेरा मनु मानिआ ॥ ६ ॥ कीरति सूरति मुकति इक नाई ॥ तही निरंजनु रहिआ समाई ॥ निज घरि बिआपि रहिआ निज ठाई ॥ ७ ॥ उसतति करहि केते मुनि प्रीति ॥ तनि मनि सूचै साचु सु चीति ॥ नानक हरि भजु नीता नीति ॥ ८ ॥ २ ॥

काया रूपी उद्यान में मन रूपी एक हाथी है। गुरु जी अंकुश है, जब हाथी पर सत्यनाम का चिन्ह पड़ जाता है तो यह प्रभु के दरबार में मान–सम्मान प्राप्त करता है॥ १॥ किसी चतुराई से परमेश्वर

का बोध नहीं हो सकता। मन पर विजय पाने के बिना परमेश्वर का मूल्य किस तरह पाया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ नाम अमृत मनुष्य के हृदय घर में ही विद्यमान है, जिसे चोर लिए जा रहे हैं। कोई भी उनको मना नहीं करता। यदि मनुष्य अमृत की रक्षा करे तो ईश्वर स्वयं उसको सम्मान प्रदान करता है॥ २॥ हजारों, अरबों एवं असंख्य इच्छाओं की अग्नियां हृदय में विद्यमान हैं, गुरु जी के विदित किए हुए ज्ञान रूपी जल से वह बुझ जाती हैं। अपनी आत्मा अर्पित करके मैंने ज्ञान प्राप्त किया है और अब मैं प्रसन्नतापूर्वक ईश्वर का यश गायन करता हूँ॥ ३॥ जैसे प्रभु हृदय-घर में है, वैसे ही वह बाहर है। गुफा में बैठकर मैं उसको किस तरह वर्णन कर सकता हूँ। निडर प्रभु सागरों एवं पहाड़ों में वैसा ही है॥ ४॥ बताइए, उसको कौन मार सकता है, जो आगे ही मृत है ? कौन-सा भय, एवं कौन-सा पुरुष निडर को डरा सकता है। वह तीनों ही लोकों में प्रभु को पहचानता है॥ ५॥ जो केवल कहता ही है, वह केवल एक प्रसंग ही वर्णन करता है। जो वास्तविक समझता है, वह प्रभु को अनुभव कर लेता है। वास्तविकता को देखने एवं सोच-विचार करने से मेरा मन प्रभु के साथ मिल गया है॥ ६॥ शोभा, सौन्दर्य एवं मुक्ति एक नाम में है। उस नाम में ही निरंजन परमात्मा लीन रहता है। प्रभु अपने आत्म-स्वरूप एवं अपने स्थान नाम में निवास करता है॥ ७॥ अनेक मुनिजन प्रेमपूर्वक उसकी प्रशंसा करते हैं। उस सत्यनाम को हृदय में बसाने से उनका तन-मन पवित्र हो जाता है। हे नानक ! तू नित्य परमेश्वर का भजन करता रह॥ ८॥ २॥

गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ ना मनु मरै न कारजु होइ ॥ मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥ मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥ १ ॥ निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥ आपु निवारि बीचारे सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु भूलो बहु चितै विकारु ॥ मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥ मनु मानै हरि एकंकारु ॥ २ ॥ मनु भूलो माइआ घरि जाइ ॥ कामि बिरूधउ रहै न ठाइ ॥ हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥ ३ ॥ गैवर हैवर कंचन सुत नारी ॥ बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥ जूऐ खेलणु काची सारी ॥ ४ ॥ संपउ संची भए विकार ॥ हरख सोक उभे दरवारि ॥ सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥ ५ ॥ नदरि करे ता मेलि मिलाए ॥ गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाए ॥ गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥ ६ ॥ बिनु नावै सभ दूख निवासु ॥ मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥ गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥ ७ ॥ मनु चंचलु धावतु फुनि धावै ॥ साचे सूचे मैलु न भावै ॥ नानक गुरमुखि हरि गुण गावै ॥ ८ ॥ ३ ॥

मनुष्य का मन कामादिक विकारों के वश में होने के कारण मरता नहीं। इसलिए जीवन का मनोरथ सम्पूर्ण नहीं होता। मन दुष्कर्मों, मंदबुद्धि एवं द्वैतभाव के वश में है। गुरु से ज्ञान प्राप्त करके मन तृप्त हो जाता है और ईश्वर से एकरूप हो जाता है॥ १॥ निर्गुण राम गुणों के वश में है। जो व्यक्ति अपने अहंकार को मिटा देता है, वह प्रभु का चिन्तन करता है॥ १॥ रहाउ॥ भटका हुआ मन अधिकतर विकारों का ध्यान करता है। जब तक मन कुमार्ग चलता रहता है, तब तक पापों का बोझ उसके सिर पर पड़ता है। जब मन की संतुष्टि हो जाती है, तो वह केवल एक ईश्वर को अनुभव करता है॥ २॥ भटका हुआ मन पापों के गृह में प्रवेश करता है। कामग्रस्त मन उचित स्थान पर नहीं रहता। हे नश्वर प्राणी ! प्रेमपूर्वक अपनी जिह्वा से प्रभु के नाम का भजन कर॥ ३॥ हाथी, घोड़े, सोना, पुत्र एवं पत्नी प्राप्त करने की अधिकतर चिन्ता में प्राणी (जीवन) खेल हार जाता है और कूच कर जाता है। शतरंज की खेल में उसका मोहरा चलता नहीं॥ ४॥ जैसे-जैसे मनुष्य धन संग्रह करता है। उससे विकार उत्पन्न हो जाता है और हर्ष एवं शोक उसके द्वार पर खड़े रहते हैं। हृदय में परमात्मा का जाप करने से सहज ही सुख प्राप्त हो जाता है॥ ५॥ जब प्रभु दया के घर में आता है, तब वह मनुष्य को गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है। ऐसा मनुष्य गुरु की शरण में रहकर गुणों का संग्रह करता

है और गुरु के उपदेश द्वारा अपने अवगुणों को जला देता है और गुरु के समक्ष होकर नाम-धन प्राप्त कर लेता है॥ ६॥ प्रभु के नाम बिना समस्त दुख निवास करते हैं। मूर्ख स्वेच्छाचारी व्यक्ति के मन का निवास माया में ही होता है। पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के कारण भाग्य की बदौलत मनुष्य गुरु से ज्ञान प्राप्त कर लेता है॥ ७॥ चंचल मन अस्थिर पदार्थों के पीछे बार-बार भागता है। सत्यस्वरूप एवं पवित्र प्रभु मलिनता को पसन्द नहीं करता। हे नानक ! गुरमुख ईश्वर की महिमा गायन करता रहता है॥ ८॥ ३॥

गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ हउमै करतिआ नह सुखु होइ ॥ मनमति झूठी सचा सोइ ॥ सगल बिगूते भावै दोइ ॥ सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥ १ ॥ ऐसा जगु देखिआ जूआरी ॥ सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥ बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥ गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥ सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥ २ ॥ सुखु मांगत दुखु आगल होइ ॥ सगल विकारी हारु परोइ ॥ एक बिना झूठे मुकति न होइ ॥ करि करि करता देखै सोइ ॥ ३ ॥ त्रिसना अगनि सबदि बुझाए ॥ दूजा भरमु सहजि सुभाए ॥ गुरमती नामु रिदै वसाए ॥ साची बाणी हरि गुण गाए ॥ ४ ॥ तन महि साचो गुरमुखि भाउ ॥ नाम बिना नाही निज ठाउ ॥ प्रेम पराइण प्रीतम राउ ॥ नदरि करै ता बूझै नाउ ॥ ५ ॥ माइआ मोहु सरब जंजाला ॥ मनमुख कुचील कुछित बिकराला ॥ सतिगुरु सेवे चूकै जंजाला ॥ अंम्रित नामु सदा सुखु नाला ॥ ६ ॥ गुरमुखि बूझै एक लिव लाए ॥ निज घरि वासै साचि समाए ॥ जंमणु मरणा ठाकि रहाए ॥ पूरे गुर ते इह मति पाए ॥ ७ ॥ कथनी कथउ न आवै ओरु ॥ गुरु पुछि देखिआ नाही दरु होरु ॥ दुखु सुखु भाणै तिसै रजाइ ॥ नानकु नीचु कहै लिव लाइ ॥ ८ ॥ ४ ॥

अहंकार करने से सुख प्राप्त नहीं होता। मन की बुद्धि झूठी है। लेकिन वह प्रभु ही सत्य है। जो व्यक्ति द्वैत भाव से प्रेम करते हैं, वह सभी बर्बाद हो जाते हैं। विधाता द्वारा जो प्राणी के भाग्य में लिखा होता है, उसी के अनुसार वह कर्म करता है॥ १॥ मैंने संसार को जुए का खेल खेलते देखा है जो प्रभु के नाम को विस्मृत करके सर्वसुखों की याचना करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि अदृश्य प्रभु देख लिया जाए केवल तभी वह वर्णन किया जा सकता है। बिना देखे उसका वर्णन निरर्थक है। गुरु के समक्ष रहने वाले को प्रभु सहज ही दिखाई देता है। हे प्राणी ! अपनी वृति एक ईश्वर की सेवा एवं प्रेम के साथ लगा॥ २॥ सुख माँगने से मनुष्य का दुख बढ़ता है। चूंकि इन्सान अपने गले में विकारों की माला पहन लेता है। झूठे मोह में ग्रस्त हुए इन्सान को एक परमेश्वर के नाम बिना मुक्ति नहीं मिलती। परमात्मा खुद ही सृष्टि-रचना करके इस खेल को देखता रहता है॥ ३॥ ईश्वर का नाम तृष्णाग्नि को बुझा देता है। तब द्वैत-भाव एवं सन्देह सहज ही मिट जाते हैं। गुरु के उपदेश से नाम हृदय में वास करता है। सच्ची वाणी द्वारा मनुष्य प्रभु का यशोगान करता है॥ ४॥ सत्यस्वरूप प्रभु उसके मन में निवास करता है, जो गुरु के समक्ष रहकर उसके लिए प्रेम धारण करता है। नाम के बिना मनुष्य अपने आत्मस्वरूप को प्राप्त नहीं करता। प्रियतम पातशाह प्रेम परायण हुआ है। यदि प्रभु दया करे तो मनुष्य उसके नाम को समझ लेता है॥ ५॥ माया का मोह तमाम बन्धन ही है। स्वेच्छाचारी जीव मलिन, कुत्सित एवं भयानक है। सतिगुरु की सेवा से विपदा मिट जाती है। प्रभु के नाम अमृत से मनुष्य सदैव सुख में रहता है॥ ६॥ गुरमुख व्यक्ति प्रभु को समझ लेता है, वह अपनी वृति एक ईश्वर में ही लगाता है। वह सदैव ही अपने आत्म-स्वरूप में रहता है और सत्य में ही समाया रहता है। उसका आवागमन (जन्म-मरण का चक्र) मिट जाता है। किन्तु यह ज्ञान उसे पूर्ण गुरु से ही मिलता है॥ ७॥ जिस भगवान की महिमा का कथन नहीं किया जा

सकता, मैं तो उसकी ही महिमा करता हूँ। मैंने गुरु से पूछ कर देख लिया है कि भगवान के बिना दूसरा सुख का द्वार नहीं। दुःख एवं सुख उसके हुक्म एवं इच्छा में है। विनीत नानक कहता है – हे प्राणी! तू प्रभु के साथ वृत्ति लगा॥ ८॥ ४॥

गउड़ी महला १ ॥ दूजी माइआ जगत चित वासु ॥ काम क्रोध अहंकार बिनासु ॥ १ ॥ दूजा कउणु कहा नही कोई ॥ सभ महि एकु निरंजनु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजी दुरमति आखै दोइ ॥ १ ॥ आवै जाइ मरि दूजा होइ ॥ २ ॥ धरणि गगन नह देखउ दोइ ॥ नारी पुरख सबाई लोइ ॥ ३ ॥ रवि ससि देखउ दीपक उजिआला ॥ सरब निरंतरि प्रीतमु बाला ॥ ४ ॥ करि किरपा मेरा चितु लाइआ ॥ सतिगुरि मो कउ एकु बुझाइआ ॥ ५ ॥ एकु निरंजनु गुरमुखि जाता ॥ दूजा मारि सबदि पछाता ॥ ६ ॥ एको हुकमु वरतै सभ लोई ॥ एकसु ते सभ ओपति होई ॥ ७ ॥ राह दोवै खसमु एको जाणु ॥ गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥ ८ ॥ सगल रूप वरन मन माही ॥ कहु नानक एको सालाही ॥ ९ ॥ ५ ॥

द्वैतवाद उत्पन्न करने वाली माया दुनिया के लोगों के मन में निवास करती है। कामवासना, क्रोध एवं अहंकार ने दुनिया के लोगों का जीवन नष्ट कर दिया है॥ १॥ मैं दूसरा किसे कहूँ, जब प्रभु के सिवाय दूसरा कोई है ही नहीं? समस्त प्राणियों में वह एक पवित्र प्रभु ही मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥ द्वैतवाद उत्पन्न करने वाली माया ही इन्सान की खोटी बुद्धि को कहती रहती है कि उसका अस्तित्व परमात्मा से अलग है। जिसके फलस्वरूप इन्सान दुनिया में जन्मता–मरता रहता है जो द्वैतवाद की प्रीति धारण करता है॥ २॥ धरती एवं अम्बर पर मुझे दूसरा कोई दिखाई नहीं देता। तमाम नारियों एवं पुरुषों में ईश्वर की ज्योति मौजूद है॥३॥ मैं सूर्य, चन्द्रमा एवं दीपकों में ईश्वर का प्रकाश देखता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर में मेरा यौवन सम्पन्न प्रियतम प्रभु ही दिखाई दे रहा है॥ ४॥ अपनी कृपा करके गुरु ने मेरा मन प्रभु के साथ लगा दिया है। सतिगुरु ने मुझे एक ईश्वर दिखा दिया है॥ ५॥ गुरमुख एक निरंजन को ही जानता है। सांसारिक मोह को मिटा कर वह प्रभु को पहचान लेता है॥ ६॥ ईश्वर का हुक्म ही समस्त लोकों में क्रियाशील है। एक ईश्वर से ही सभी उत्पन्न हुए हैं॥ ७॥ (मनमुख एवं गुरमुख) मार्ग दो हैं परन्तु सबका मालिक एक है, उसे ही समझो। गुरु के शब्द द्वारा उसके हुक्म को पहचान॥ ८॥ हे नानक! मैं एक ईश्वर की प्रशंसा करता हूँ जो तमाम रूपों, रंगों एवं हृदयों में व्यापक है॥ ९॥ ५॥

गउड़ी महला १ ॥ अधिआतम करम करे ता साचा ॥ मुकति भेदु किआ जाणै काचा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी जुगति बीचारै ॥ पंच मारि साचु उरि धारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस कै अंतरि साचु वसावै ॥ जोग जुगति की कीमति पावै ॥ २ ॥ रवि ससि एको ग्रिह उदिआनै ॥ करणी कीरति करम समानै ॥ ३ ॥ एक सबद इक भिखिआ मागै ॥ गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥ ४ ॥ भै रचि रहै न बाहरि जाइ ॥ कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥ ५ ॥ आपे मेले भरमु चुकाए ॥ गुर परसादि परम पदु पाए ॥ ६ ॥ गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥ हउमै मारे करणी सारु ॥ ७ ॥ जप तप संजम पाठ पुराणु ॥ कहु नानक अपरंपर मानु ॥ ८ ॥ ६ ॥

यदि मनुष्य आध्यात्मिक कर्म करे तो ही वह सत्यवादी है। झूठा मनुष्य मोक्ष के भेद को क्या समझ सकता है?॥ १॥ ऐसा मनुष्य ही योगी है, जो प्रभु के मिलन–मार्ग का विचार करता है तथा पाँच कट्टर शत्रुओं (कामादिक विकारों) का वध करके सत्य (परमेश्वर) को अपने हृदय से लगाकर रखता है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर जिसके हृदय में सत्य को बसाता है। वह उसके साथ योग युक्ति (मिलन मार्ग) के मूल्य को अनुभव कर लेता है॥ २॥ एक ईश्वर को वह सूर्य, चन्द्रमा, गृह एवं वन में देखता है।

ईश्वर का यश रूपी कर्म उसकी सामान्य करनी है॥ ३॥ वह केवल नाम का भजन करता है और एक ही ईश्वर के नाम का दान माँगता है। वह ज्ञान, ध्यान, जीवन युक्ति एवं सत्य में ही जागृत रहता है॥ ४॥ वह ईश्वर के भय में लीन रहता है और कदापि उस भय से बाहर नहीं होता। वह प्रभु की वृत्ति में लीन रहता है। ऐसे योगी का मूल्य कौन पा सकता है॥ ५॥ ईश्वर उसकी दुविधा दूर कर देता है और उसे अपने साथ मिला लेता है। गुरु की कृपा से वह परम पद प्राप्त कर लेता है॥ ६॥ वह गुरु की सेवा करता और शब्द का चिंतन करता रहता है। वह अपने अहंकार को मिटाकर शुभ कर्म करता है॥ ७॥ हे नानक! अपरंपार ईश्वर में आस्था धारण करना ही जाप, तपस्या, संयम एवं पुराणों का पाठ है॥ ८॥ ६॥

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥ रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥ १ ॥ जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥ रूखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥ सो जोगी मेरै मनि भावै ॥ २ ॥ कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ॥ जरा मरण गतु गरबु निवारे ॥ आपि तरै पितरी निसतारे ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सो जोगी होइ ॥ भै रचि रहै सु निरभउ होइ ॥ जैसा सेवै तैसो होइ ॥ ४ ॥ नर निहकेवल निरभउ नाउ ॥ अनाथह नाथ करे बलि जाउ ॥ पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ॥ ५ ॥ अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ साचै सबदि दरि नीसाणै ॥ ६ ॥ सबदि मरै तिसु निज घरि वासा ॥ आवै न जावै चूकै आसा ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासा ॥ ७ ॥ जो दीसै सो आस निरासा ॥ काम क्रोध बिखु भूख पिआसा ॥ नानक बिरले मिलहि उदासा ॥ ८ ॥ ७ ॥

क्षमा कर देने का स्वभाव धारण करना मेरे लिए उपवास, उत्तम आचरण एवं संतोष है। इसलिए न रोग और न ही मृत्यु की पीड़ा मुझे तंग करती है। मैं रूपरेखा रहित ईश्वर में लीन होकर मुक्त हो गया हूँ॥ १॥ उस योगी को कैसा भय हो सकता है, जब वह प्रभु पेड़-पौधों एवं घर के भीतर एवं बाहर सर्वत्र व्यापक है॥ १॥ रहाउ॥ निर्भय योगी निरंजन प्रभु का ध्यान करता रहता है। वह रात-दिन मोह-माया से जाग्रत रहता है और सत्य नाम के साथ वृत्ति लगाता है। ऐसा योगी मेरे मन को भला लगता है॥ २॥ मृत्यु के जाल को वह ब्रह्म (के तेज) की अग्नि से जला देता है। वह बुढ़ापे एवं मृत्यु के भय को निवृत्त कर देता है और अपने अहंकार को मिटा देता है। ऐसा योगी स्वयं तो भवसागर पार हो जाता है और अपने पूर्वजों को भी बचा लेता है॥ ३॥ वहीं व्यक्ति योगी है, जो सतिगुरु की सेवा करता है। जो ईश्वर के भय में लीन रहता है, वह निडर हो जाता है। प्राणी जैसे प्रभु की सेवा करता है, वैसा ही आप बन जाता है॥ ४॥ प्राणी निर्भय प्रभु का नाम स्मरण करके पवित्र एवं निडर हो जाता है। प्रभु निराश्रितों को आश्रयवान बना देता है। मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। उसकी गुणस्तुति करने से मनुष्य इस संसार में पुनः जन्म नहीं लेता॥ ५॥ जो भीतर एवं बाहर एक ईश्वर को पहचानता है और जो गुरु के शब्द द्वारा अपने आपको समझता है, प्रभु के दरबार में उस पर सत्यनाम का चिन्ह विद्यमान होता है॥ ६॥ जो शब्द पर मरता है, उसका निवास सदा ही आत्मस्वरूप में रहता है। उसकी तृष्णा मिट जाती है और वह जीवन-मृत्यु के चक्र में नहीं पड़ता। गुरु के शब्द द्वारा उसका हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है॥ ७॥ जो कोई भी दिखाई देता है, वह आशा, निराशा, कामचेष्टा, क्रोध, माया की भूख का प्यासा है। हे नानक! कोई विरला जगत् का त्यागी ही प्रभु को मिलता है॥ ८॥ ७॥

गउड़ी महला १ ॥ ऐसो दासु मिलै सुखु होई ॥ दुखु विसरै पावै सचु सोई ॥ १ ॥ दरसनु देखि भई मति पूरी ॥ अठसठि मजनु चरनह धूरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र संतोखे एक लिव तारा ॥ जिहवा

सूची हरि रस सारा ॥ २ ॥ सचु करणी अभ अंतरि सेवा ॥ मनु त्रिपतासिआ अलख अभेवा ॥ ३ ॥ जह जह देखउ तह तह साचा ॥ बिनु बूझे झगरत जगु काचा ॥ ४ ॥ गुरु समझावै सोझी होई ॥ गुरमुखि विरला बुझै कोई ॥ ५ ॥ करि किरपा राखहु रखवाले ॥ बिनु बूझे पसू भए बेताले ॥ ६ ॥ गुरि कहिआ अवरु नही दूजा ॥ किसु कहु देखि करउ अन पूजा ॥ ७ ॥ संत हेति प्रभि त्रिभवण धारे ॥ आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥ ८ ॥ साचु रिदै सचु प्रेम निवास ॥ प्रणवति नानक हम ता के दास ॥ ९ ॥ ८ ॥

जिसने ईश्वर को पा लिया है, ऐसे सेवक को मिलने से सुख प्राप्त होता है एवं दुख दूर हो जाता है॥ १॥ उसके दर्शन करने से मेरी बुद्धि पूर्ण हो गई है। उसकी चरण-धूलि अठसठ तीर्थों का स्नान है॥ १॥ रहाउ॥ एक ईश्वर में सुरति लगाने से मेरे नेत्र संतुष्ट हो गए हैं। हरि रस से मेरी जिह्वा शुद्ध हो गई है॥ २॥ मेरी करनी सत्य है और मेरे हृदय में प्रभु की सेवा विद्यमान है। अलक्ष्य तथा अकल्पनीय प्रभु से मेरा मन संतुष्ट हो गया है॥ ३॥ जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहीं मैं सत्य स्वरूप ईश्वर के दर्शन करता हूँ। प्रभु की सूझ के बिना मिथ्या संसार विवाद करता है॥ ४॥ जब गुरु उपदेश प्रदान करते हैं तो सूझ प्राप्त हो जाती है। कोई विरला गुरमुख ही प्रभु को पहचानता है॥ ५॥ हे रखवाले प्रभु ! कृपा करके हमारी रक्षा करो। प्रभु की सूझ बिना प्राणी पशु एवं प्रेत वृत्ति हो रहे हैं॥ ६॥ गुरु जी ने कहा है, ईश्वर बिना दूसरा कोई नहीं। बताइए, दूसरा किस को देखूँ और किस की पूजा करू॥ ७॥ संतजनों हेतु ईश्वर ने तीन लोक स्थापित किए हैं। जो अपने आत्म-स्वरूप को समझता है, वह वास्तविकता को समझ लेता है॥ ८॥ जिसके हृदय में सत्य निवास करता है, ईश्वर का प्रेम उसके हृदय में ही रहता है। नानक प्रार्थना करता है – मैं भी उसका दास हूँ॥ ९॥ ८॥

गउड़ी महला १ ॥ ब्रहमै गरबु कीआ नही जानिआ ॥ बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥ जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥ १ ॥ ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥ जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि राजा माइआ अहंकारी ॥ जगन करै बहु भार अफारी ॥ बिनु गुर पूछे जाइ पइआरी ॥ २ ॥ हरीचंदु दानु करै जसु लेवै ॥ बिनु गुर अंतु न पाइ अभेवै ॥ आपि भुलाइ आपे मति देवै ॥ ३ ॥ दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥ प्रभु नाराइणु गरब प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ ४ ॥ भूलो रावणु मुगधु अचेति ॥ लूटी लंका सीस समेति ॥ गरबि गइआ बिनु सतिगुर हेति ॥ ५ ॥ सहसबाहु मधु कीट महिखासा ॥ हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥ दैत संघारे बिनु भगति अभिआसा ॥ ६ ॥ जरासंधि कालजमुन संघारे ॥ रकतबीजु कालुनेमु बिदारे ॥ दैत संघारि संत निसतारे ॥ ७ ॥ आपे सतिगुरु सबदु बीचारे ॥ दूजै भाइ दैत संघारे ॥ गुरमुखि साचि भगति निसतारे ॥ ८ ॥ बूडा दुरजोधनु पति खोई ॥ रामु न जानिआ करता सोई ॥ जन कउ दूखि पचै दुखु होई ॥ ९ ॥ जनमेजै गुर सबदु न जानिआ ॥ किउ सुखु पावै भरमि भुलानिआ ॥ इकु तिलु भूले बहुरि पछुतानिआ ॥ १० ॥ कंसु केसु चांडूरु न कोई ॥ रामु न चीनिआ अपनी पति खोई ॥ बिनु जगदीस न राखै कोई ॥ ११ ॥ बिनु गुर गरबु न मेटिआ जाइ ॥ गुरमति धरमु धीरजु हरि नाइ ॥ नानक नामु मिलै गुण गाइ ॥ १२ ॥ ९ ॥

ब्रह्मा ने अभिमान किया (कि मैं महान हूँ, फिर कमलनाभि से कैसे पैदा हो सकता हूँ) उसने भगवान की महिमा को नहीं समझा। जब उसका घमंड तोड़ने के लिए उस पर वेदों के चुराए जाने की विपदा पड़ी तो उसने पश्चाताप किया। जब उसने ईश्वर को स्मरण किया तो उसे आस्था हुई

कि ईश्वर ही महान है॥ १॥ दुनिया में अहंकार का विकार बहुत बुरा है। जिसे गुरु जी मिल जाते हैं, वह उसका अहंकार दूर कर देते हैं॥ १॥ रहाउ॥ राजा बलि को धन–दौलत का बहुत अभिमान था। उसने बहुत सारे यज्ञ किए। अहंकारवश बड़ा घमंडी हो गया। अपने गुरु शुक्राचार्य से पूछे बिना ही उसने विष्णु अवतार भगवान वामन को दान देना स्वीकार कर लिया था। जिसके कारण उसको पाताल में जाना पड़ा॥ २॥ राजा हरिश्चन्द्र ने बहुत दान किया और बड़ा यश प्राप्त किया। लेकिन गुरु के बिना उसको ईश्वर के अन्त का पता न लगा। प्रभु स्वयं ही गुमराह करता है और स्वयं ही ज्ञान प्रदान करता है॥ ३॥ दुर्बुद्धि हिरण्यकशिपु बड़ा अत्याचारी शासक था। नारायण स्वयं ही अहंकारियों का अहंकार नाश करने वाला है। कृपा के घर नारायण ने नृसिंह अवतार धारण करके अपने भक्त प्रहलाद का उद्धार किया था॥ ४॥ मूर्ख एवं चेतना रहित रावण ने प्रभु को विस्मृत कर दिया। उसकी सोने की लंका लुट गई और उसका सिर भी कट गया। अहंकारवश गुरु की शरण लिए बिना रावण का विनाश हुआ था॥ ५॥ हजार भुजाओं वाले सहस्रबाहु का परशुराम ने वध किया, मधु तथा कैटभ का विष्णु ने वध किया, महिषासुर का माता दुर्गा के हाथों वध हुआ, हिरण्यकशिपु का नृसिंह भगवान ने नाखुनों से वध किया। ये समस्त दानव–राक्षस प्रभु की भक्ति से विहीन होने के कारण मारे गए॥ ६॥ ईश्वर ने राक्षसों का वध करके ऋषि–मुनियों की रक्षा की। जरासंध तथा कालयवन प्रभु द्वारा नष्ट किए गए। रक्तबीज (माता दुर्गा के हाथों) मारा गया तथा कालनेमि भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र से मारा गया॥ ७॥ ईश्वर स्वयं ही गुरु रूप होकर अपने नाम की आराधना करता है। ईश्वर ने द्वैतभाव के कारण मोह–माया में फँसे राक्षसों का विनाश कर दिया। उनकी सच्ची सेवा–भक्ति के कारण प्रभु ने गुरु के समक्ष आई पवित्र आत्माओं का कल्याण कर दिया॥ ८॥ अहंकार में डूबकर दुर्योधन ने अपनी प्रतिष्ठा गंवा दी। अहंकारवश उसने सर्वव्यापक प्रभु कर्त्तार को स्मरण न किया। जो ईश्वर के सेवक को दुख देता है, वह स्वयं पीड़ा में दुखी होता है॥ ९॥ राजा जन्मेजय ने अपने गुरु के शब्द को न समझा। भ्रम में कुमार्गगामी होकर वह सुख किस तरह पा सकता था। ईश्वर को थोड़ी देर के लिए भूलकर मनुष्य बाद में पश्चाताप करता है॥ १०॥ मथुरा का राजा कंस, केशी एवं चांडूर के तुल्य कोई नहीं था। परन्तु अहंकारवश ईश्वर को समझे बिना उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा गंवा दी। सृष्टिकर्त्ता जगदीश के अलावा कोई भी प्राणी को बचा नहीं सकता॥ ११॥ गुरु के बिना अहंत्व मिटाया नहीं जा सकता। गुरु की शिक्षा द्वारा धर्म, धैर्य एवं परमेश्वर का नाम प्राप्त होते हैं। हे नानक! ईश्वर की महिमा गायन करने से ही नाम प्राप्त होता है॥ १२॥ ६॥

गउड़ी महला १ ॥ चोआ चंदनु अंकि चड़ावउ ॥ पाट पटंबर पहिरि हढावउ ॥ बिनु हरि नाम कहा सुखु पावउ ॥ १ ॥ किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कानी कुंडल गलि मोतीअन की माला ॥ लाल निहाली फूल गुलाला ॥ बिनु जगदीस कहा सुखु भाला ॥ २ ॥ नैन सलोनी सुंदर नारी ॥ खोड़ सीगार करै अति पिआरी ॥ बिनु जगदीस भजे नित खुआरी ॥ ३ ॥ दर घर महला सेज सुखाली ॥ अहिनिसि फूल बिछावै माली ॥ बिनु हरि नाम सु देह दुखाली ॥ ४ ॥ हैवर गैवर नेजे वाजे ॥ लसकर नेब खवासी पाजे ॥ बिनु जगदीस झूठे दिवाजे ॥ ५ ॥ सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ ॥ ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ ॥ बिनु जगदीस कहा सचु पावउ ॥ ६ ॥ खानु मलूकु कहावउ राजा ॥ अबे तबे कूड़े है पाजा ॥ बिनु गुर सबद न सवरसि काजा ॥ ७ ॥ हउमै ममता गुर सबदि विसारी ॥ गुरमति जानिआ रिदै मुरारी ॥ प्रणवति नानक सरणि तुमारी ॥ ८ ॥ १० ॥

यद्यपि मैं चन्दन का इत्र अपनी देहि पर लगा लूँ, अपनी देहि पर रेशम एवं रेशमी वस्त्र पहन लूँ तो भी ईश्वर के नाम बिना कहाँ सुख प्राप्त कर सकता हूँ ?॥ १॥ मैं क्या पहनूँ और कौन-सी परिधान में अपने आपको प्रकट करूँ ? सृष्टि के स्वामी जगदीश के बिना मैं कैसे सुख प्राप्त कर सकता हूँ॥ १॥ यदि मैं कानों में कुण्डल पहन लूँ और गले में मोतियों की माला हो। मेरे पास चाहे लाल पलंग पोश एवं पुष्प गुलाल बिखेरा हो। फिर भी जगत् के रचयिता जगदीश के सिवाय मुझे कहाँ सुख प्राप्त हो सकता है॥ २॥ मेरे पास चाहे सुन्दर नयनों वाली रूपवती नारी हो, वह सोलह प्रकार का हार-शृंगार लगाए और अपने आपको परम मनमोहिनी बना ले। फिर भी परमात्मा के भजन के बिना नित्य दुख ही मिलता है॥ ३॥ अपने घर द्वार के मन्दिर में मनुष्य के पास चाहे सुखदायक पलंग हो, उस पर माली रात-दिन फूल बिखेरता रहे किन्तु फिर भी प्रभु के नाम सिमरन बिना उसका शरीर दुखी ही होगा॥ ४॥ यदि मेरे पास कुशल घोड़े, बढ़िया हाथी, नेजे, बाजे, सेना, द्वारपाल, सरकारी कर्मचारी हों, यह सारा आडम्बर हो, फिर भी जगत् के स्वामी जगदीश के भजन बिना ये सब आडम्बर व्यर्थ हैं॥ ५॥ यदि मैं अपने आपको करामाती सिद्ध कहलवाऊँ एवं ऋद्धियों-सिद्धियों को अपने पास बुला लूँ, अपने सीस के लिए मैं चाहे राजसी मुकुट एवं शाही छत्र झुला लूँ, फिर भी जगदीश के भजन बिना मैं कहाँ सत्य प्राप्त कर सकता हूँ॥ ६॥ यदि मैं अपने आपको सरदार, शहंशाह एवं राजा बनकर कहलवाऊँ, अहंकार में सरकारी कर्मियों को डांट झिड़क भी सकूँ, परन्तु यह सब कुछ झूठा आडम्बर है। गुरु के शब्द बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता॥ ७॥ अहंकार एवं अहंत्व को मैंने गुरु के शब्द से भुला दिया है। गुरु की शिक्षा से मुरारी प्रभु को अपने हृदय में मैंने जान लिया है। नानक वन्दना करता है- हे प्रभु! मैं तुम्हारी ही शरण में हूँ॥ ८॥ १०॥

गउड़ी महला १ ॥ सेवा एक न जानसि अवरे ॥ परपंच बिआधि तिआगै कवरे ॥ भाइ मिलै सचु साचै सचु रे ॥ १ ॥ ऐसा राम भगतु जनु होई ॥ हरि गुण गाइ मिलै मलु धोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उंधो कवलु सगल संसारै ॥ दुरमति अगनि जगत परजारै ॥ सो उबरै गुर सबदु बीचारै ॥ २ ॥ भ्रिंग पतंगु कुंचरु अरु मीना ॥ मिरगु मरै सहि अपुना कीना ॥ त्रिसना राचि ततु नही बीना ॥ ३ ॥ कामु चितै कामणि हितकारी ॥ क्रोधु बिनासै सगल विकारी ॥ पति मति खोवहि नामु विसारी ॥ ४ ॥ पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइ ॥ गलि जेवरी धंधै लपटाइ ॥ गुरमुखि छूटसि हरि गुण गाइ ॥ ५ ॥ जिउ तनु बिधवा पर कउ देई ॥ कामि दामि चितु पर वसि सेई ॥ बिनु पिर त्रिपति न कबहूं होई ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि पोथी सिम्रिति पाठा ॥ बेद पुराण पड़ै सुणि थाटा ॥ बिनु रस राते मनु बहु नाटा ॥ ७ ॥ जिउ चात्रिक जल प्रेम पिआसा ॥ जिउ मीना जल माहि उलासा ॥ नानक हरि रसु पी त्रिपतासा ॥ ८ ॥ ११ ॥

हे भाई! जो व्यक्ति एक ईश्वर की सेवा-भक्ति करता है, वह ईश्वर के सिवाय किसी दूसरे को नहीं जानता। वह कड़वे सांसारिक (कामादिक) विकारों को त्याग देता है। ईश्वर के प्रेम एवं सत्य द्वारा वह सत्यस्वरूप प्रभु में मिल जाता है॥ १॥ ऐसा व्यक्ति ही राम का भक्त होता है, जो अपनी मलिनता को धो देता है और प्रभु की गुणस्तुति करके प्रभु में ही मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥ सारी दुनिया का हृदय कंवल विपरीत है। दुर्बुद्धि की अग्नि संसार को जला रही है। वही प्राणी बच जाता है, जो गुरु के शब्द का ध्यान करता है॥ २॥ भँवरा, परवाना, हाथी, मछली एवं मृग अपने किए कर्मों का फल प्राप्त करते हैं और फिर मर जाते हैं। तृष्णा में लीन होकर वे वास्तविकता को नहीं देखते॥ ३॥ कामिनी (नारी) का प्रेमी भोग-विलास का ध्यान करता है। क्रोध सभी विकारियों को नष्ट कर देता है। प्रभु-नाम को विस्मृत करके मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा एवं बुद्धि गंवा देता है॥ ४॥ स्वेच्छाचारी इन्सान का मन पराई नारी की लालसा करता है। उसकी गर्दन पर मृत्यु का फँदा

होता है और वह सांसारिक विवादों में फँसा रहता है। गुरमुख की ईश्वर की गुणस्तुति करने से मुक्ति हो जाती है॥ ५॥ जिस प्रकार एक आचरणहीन नारी, जो अपना तन पराए पुरुष को अर्पित कर देती है और भोगविलास अथवा धन की खातिर जिसका मन दूसरे के वश में हो जाता है, उसे अपने पति बिना संतोष नहीं होता। द्वैत भाव वाला मनुष्य वैसा ही है॥ ६॥ प्राणी ग्रंथों का अध्ययन करता है, स्मृतियों का पाठ करता है और वेदों, पुराणों एवं दूसरी रचनाओं का अध्ययन करता उसे सुनता है। परन्तु नाम-रस के साथ अनुरक्त हुए बिना मन बहुत डोलता है॥ ७॥ जैसे चात्रिक का वर्षा की बूँदों के साथ प्रेम एवं उल्लास है, जैसे मछली जल में प्रसन्न होती है, वैसे ही नानक हरि रस का पान करके तृप्त हो गया है॥ ८॥ ११॥

गउड़ी महला १ ॥ हठु करि मरै न लेखै पावै ॥ वेस करै बहु भसम लगावै ॥ नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥ १ ॥ तूं मनि हरि जीउ तूं मनि सूख ॥ नामु बिसारि सहहि जम दूख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोआ चंदन अगर कपूरि ॥ माइआ मगनु परम पदु दूरि ॥ नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि ॥ २ ॥ नेजे वाजे तखति सलामु ॥ अधकी त्रिसना विआपै कामु ॥ बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥ ३ ॥ वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला ॥ मनु दे पावहि नामु सुहेला ॥ दूजै भाइ अगिआनु दुहेला ॥ ४ ॥ बिनु दम के सउदा नही हाट ॥ बिनु बोहिथ सागर नही वाट ॥ बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥ ५ ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥ ६ ॥ वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ ॥ गुर सबदी मथि अंम्रितु पीउ ॥ नाम वडाई तुधु भाणै दीउ ॥ ७ ॥ नाम बिना किउ जीवा माइ ॥ अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइ ॥ नानक नामि रते पति पाइ ॥ ८ ॥ १२ ॥

जो व्यक्ति हठ करके मरता है, वह स्वीकार नहीं होता, चाहे वह धार्मिक वेशभूषा पहन ले अथवा अपने शरीर पर अधिकतर विभूति लगा ले। प्रभु नाम को विस्मृत करके वह अंततः पश्चाताप करता है॥ १॥ हे भाई ! तू पारब्रह्म प्रभु की आराधना कर और अपने मन में आत्मिक सुख प्राप्त कर। प्रभु के नाम को विस्मृत करके तू मृत्यु का कष्ट सहन करेगा॥ १॥ रहाउ॥ चन्दन, अगर, कपूर, इत्र इत्यादि सुगन्धियां एवं सांसारिक पदार्थों की मस्ती मनुष्य को परम पद से बहुत दूर ले जाती है। प्रभु नाम को विस्मृत करके वह तमाम झूठों का झूठा अर्थात् व्यर्थ हो जाता है॥ २॥ नेजे, बैंड वाजे, राजसिंघासन एवं दूसरों से नमस्कारें लालसा को बढ़ाते हैं और प्राणी कामवासना में लीन हो जाता है। भगवान के दर से माँगे बिना उसकी भक्ति एवं नाम प्राप्त नहीं होते॥ ३॥ वाद-विवाद एवं अहंकार के कारण प्रभु से मिलन नहीं होता। अपने मन को प्रभु के समक्ष अर्पित करने से मनुष्य सुखदायक नाम को प्राप्त कर लेता है। अज्ञानता द्वारा प्राणी दूसरे की चाहत में उलझ जाता है, जो उसे बहुत दुखी कर देती है॥ ४॥ जैसे मूल्य बिना दुकान से सौदा प्राप्त नहीं किया जा सकता। जैसे जहाज के बिना सागर की यात्रा नहीं की जा सकती। वैसे ही गुरु की सेवा बिना आत्मिक पूँजी की दृष्टि से नुक्सान ही नुक्सान होता है॥ ५॥ (हे भाई !) वह गुरु धन्य, धन्य है, जो सही जीवन मार्ग दिखाता है। वह गुरु धन्य, धन्य है, जो मुझे शब्द सुनाता है। (हे भाई !) धन्य, धन्य है उसको जो मुझे ईश्वर के मिलन में मिलाता है॥ ६॥ धन्य, धन्य है उसको जिसका यह अमूल्य जीवन है। गुरु के शब्द से नाम अमृत का जाप एवं पान कर। हे प्रभु ! नाम की शोभा तेरी इच्छा द्वारा प्रदान होती है॥ ७॥ हे मेरी माता ! प्रभु नाम के बिना मैं किस तरह जीवित रह सकता हूँ। हे प्रभु ! रात-दिन मैं नाम-स्मरण करता हूँ और तेरी शरणागत रहता हूँ। हे नानक ! प्रभु नाम में मग्न होने से मनुष्य मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है॥ ८॥ १२॥

गउड़ी महला १ ॥ हउमै करत भेखी नही जानिआ ॥ गुरमुखि भगति विरले मनु मानिआ ॥ १ ॥ हउ हउ करत नही सचु पाईऐ ॥ हउमै जाइ परम पदु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै करि राजे बहु धावहि ॥ हउमै खपहि जनमि मरि आवहि ॥ २ ॥ हउमै निवरै गुर सबदु वीचारै ॥ चंचल मति तिआगै पंच संघारै ॥ ३ ॥ अंतरि साचु सहज घरि आवहि ॥ राजनु जाणि परम गति पावहि ॥ ४ ॥ सचु करणी गुरु भरमु चुकावै ॥ निरभउ कै घरि ताड़ी लावै ॥ ५ ॥ हउ हउ करि मरणा किआ पावै ॥ पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥ ६ ॥ जेती है तेती किहु नाही ॥ गुरमुखि गिआन भेटि गुण गाही ॥ ७ ॥ हउमै बंधन बंधि भवावै ॥ नानक राम भगति सुखु पावै ॥ ८ ॥ १३ ॥

अहंकार में प्रवृत्त होने से मनुष्य ईश्वर को नहीं जानता, चाहे वह कोई धार्मिक वेष धारण कर ले। कोई विरला पुरुष ही है, जिसका मन गुरु के आश्रय द्वारा प्रभु की भक्ति करने से तृप्त हुआ है॥ १॥ अहंत्व (मैं, मेरी) की करनी से सत्य (ईश्वर) प्राप्त नहीं होता। जब मनुष्य का अहंकार निवृत्त हो जाता है तो उसे परम पद प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ राजा (अपनी शक्ति का) बहुत अहंकार करते हैं और इसलिए दूसरे राज्यों पर आक्रमण करते हैं। अहंकारवश वे बर्बाद हो जाते हैं और परिणामस्वरूप जन्म-मरण के चक्र में पड़कर पुनः (संसार में) उत्पन्न होते हैं॥ २॥ गुरु के शब्द का चिन्तन करने से (मनुष्य का) अहंकार निवृत्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने चंचल मन पर अंकुश लगाता है और पाँच (कामादिक) विकारों का संहार करता है॥ ३॥ जिस व्यक्ति के हृदय में सत्य नाम विद्यमान है, वह सहज घर में पहुँच जाता है। प्रभु पातशाह को समझकर वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ गुरु जी उसकी दुविधा दूर कर देते हैं, जिसके कर्म शुभ (सच्चे) हैं। वह निर्भय ईश्वर के चरणों में अपनी वृति लगाता है॥ ५॥ जो (मैं, मैं) अभिमान एवं घमण्ड करता हुआ प्राण त्याग देता है, वह क्या कर्म करता है ? लेकिन जो पूर्ण गुरु से मिलता है, वह अपने तमाम वाद-विवाद मिटा लेता है॥ ६॥ जो कुछ भी है, वह वास्तव में कुछ भी नहीं। गुरमुख ज्ञान प्राप्त करके ईश्वर की गुणस्तुति करते रहते हैं॥ ७॥ अहंकार मनुष्य को बंधनों में जकड़ लेता है और उसको (जन्म-मरण के चक्र) आवागमन में भटकाता है। हे नानक ! राम की भक्ति करने से ही सुख उपलब्ध होता है॥ ८॥ १३॥

गउड़ी महला १ ॥ प्रथमे ब्रहमा कालै घरि आइआ ॥ ब्रहम कमलु पइआलि न पाइआ ॥ आगिआ नही लीनी भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ जो उपजै सो कालि संघारिआ ॥ हम हरि राखे गुर सबदु बीचारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहे देवी सभि देवा ॥ कालु न छोडै बिनु गुर की सेवा ॥ ओहु अबिनासी अलख अभेवा ॥ २ ॥ सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥ नामहु भूलै जम का दुखु सहना ॥ मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥ ३ ॥ चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥ साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥ मै धनु दीजै हरि अंम्रित नामु ॥ ४ ॥ रयति महर मुकदम सिकदारै ॥ निहचलु कोइ न दिसै संसारै ॥ अफरिउ कालु कूड़ु सिरि मारै ॥ ५ ॥ निहचलु एकु सचा सचु सोई ॥ जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥ ओहु गुरमुखि जापै तां पति होई ॥ ६ ॥ काजी सेख भेख फकीरा ॥ वडे कहावहि हउमै तनि पीरा ॥ कालु न छोडै बिनु सतिगुर की धीरा ॥ ७ ॥ कालु जालु जिहवा अरु नैणी ॥ कानी कालु सुणै बिखु बैणी ॥ बिनु सबदै मूठे दिनु रैणी ॥ ८ ॥ हिरदै साचु वसै हरि नाइ ॥ कालु न जोहि सकै गुण गाइ ॥ नानक गुरमुखि सबदि समाइ ॥ ९ ॥ १४ ॥

सर्वप्रथम ब्रह्मा ही (इस संसार में) काल (मृत्यु) के वश में आया। ब्रह्मा (जिस नाभिकमल से उत्पन्न हुआ था उसका रहस्य जानने के लिए) दुविधा में पड़कर कमल में प्रवेश कर गया और पाताल

की खोज करके भी उसको कमल (ईश्वर) के अन्त का पता न चला। उसने प्रभु की आज्ञा को स्वीकार न किया और कुमार्गगामी होकर भटकता रहा॥ १॥ इस दुनिया में जिस व्यक्ति ने भी जन्म लिया है, काल (मृत्यु) ने उसका नाश कर दिया है। ईश्वर ने मेरी रक्षा की है, क्योंकि मैंने गुरु के शब्द का चिंतन किया है॥ १॥ रहाउ॥ माया ने समस्त देवी-देवताओं को मुग्ध किया हुआ है। गुरु की सेवा-भक्ति के बिना मृत्यु किसी को भी नहीं छोड़ती। केवल ईश्वर ही अमर, अदृश्य एवं अभेद है॥ २॥ (इस संसार में) महाराजा, सरदार एवं बादशाह कदापि नहीं रहेंगे (क्योंकि काल अटल है)। प्रभु के नाम को विस्मृत करके वह काल (मृत्यु) का दुःख सहन करेंगे। हे प्रभु! मेरा सहारा (केवल) नाम है, जैसे तुम मुझे (सुख-दुख में) रखते हो, मैं वैसे ही रहता हूँ॥ ३॥ चाहे चौधरी हो अथवा राजा हो किसी का भी इस संसार में स्थाई निवास नहीं। साहूकार धन-दौलत संग्रह करके प्राण त्याग देते हैं। हे प्रभु! मुझे अपने अमृतमयी नाम का धन प्रदान कीजिए॥ ४॥ प्रजा, सामन्त, प्रधान एवं चौधरी कोई भी नश्वर संसार में स्थिर दिखाई नहीं देता। अनिवार्य मृत्यु मोह-माया में लिप्त झूठे प्राणियों के सिर पर प्रहार करती है॥ ५॥ केवल परम सत्य प्रभु ही सदा स्थिर रहने वाला है, जिसने इस सृष्टि की रचना की है, वही तमाम जीव-जन्तुओं सहित सृष्टि का विनाश करता है। जब गुरु के आश्रय में आकर मनुष्य प्रभु को जान लेता है तो ही उसे शोभा प्राप्त होती है॥ ६॥ काजी, शेख एवं धार्मिक परिधान में फकीर अपने आपको महान कहलवाते हैं, किन्तु अहंकारवश उनके शरीर में पीड़ा विद्यमान है। सतिगुरु के आश्रय बिना काल (मृत्यु) उन्हें नहीं छोड़ता॥ ७॥ मृत्यु का फँदा मनुष्य की जिह्वा व नेत्रों पर है। मृत्यु उसके कानों पर विद्यमान है जब वह विषैली बातचीत श्रवण करता है। प्रभु नाम के बिना मनुष्य दिन-रात (आत्मिक गुणों से) लुटता जा रहा है॥ ८॥ जिस प्राणी के हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है और जो प्रभु का यशोगान करता है, मृत्यु उसे कदापि दिखाई नहीं देती। हे नानक! गुरमुख शब्द में ही समा जाता है॥ ६॥ १४॥

गउड़ी महला १ ॥ बोलहि साचु मिथिआ नही राई ॥ चालहि गुरमुखि हुकमि रजाई ॥ रहहि अतीत सचे सरणाई ॥ १ ॥ सच घरि बैसै कालु न जोहै ॥ मनमुख कउ आवत जावत दुखु मोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपिउ पीअउ अकथु कथि रहीऐ ॥ निज घरि बैसि सहज घरु लहीऐ ॥ हरि रसि माते इहु सुखु कहीऐ ॥ २ ॥ गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥ गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥ पीवै अंम्रितु ततु विरोलै ॥ ३ ॥ सतिगुरु देखिआ दीखिआ लीनी ॥ मनु तनु अरपिओ अंतरगति कीनी ॥ गति मिति पाई आतमु चीनी ॥ ४ ॥ भोजनु नामु निरंजन सारु ॥ परम हंसु सचु जोति अपार ॥ जह देखउ तह एकंकारु ॥ ५ ॥ रहै निरालमु एका सचु करणी ॥ परम पदु पाइआ सेवा गुर चरणी ॥ मन ते मनु मानिआ चूकी अहं भ्रमणी ॥ ६ ॥ इन बिधि कउणु कउणु नही तारिआ ॥ हरि जसि संत भगत निसतारिआ ॥ प्रभ पाए हम अवरु न भारिआ ॥ ७ ॥ साच महलि गुरि अलखु लखाइआ ॥ निहचल महलु नही छाइआ माइआ ॥ साचि संतोखे भरमु चुकाइआ ॥ ८ ॥ जिन कै मनि वसिआ सचु सोई ॥ तिन की संगति गुरमुखि होई ॥ नानक साचि नामि मलु खोई ॥ ६ ॥ १५ ॥

जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा के हुक्म अनुसार चलता है। वह सदैव सत्य ही बोलता है और उसमें तनिक मात्र भी झूठ विद्यमान नहीं होता। ऐसा व्यक्ति सत्य (परमेश्वर) की शरण में ही निर्लिप्त रहता है॥ १॥ वह सत्य के गृह में वास करता है और मृत्यु उसे स्पर्श नहीं करती। लेकिन स्वेच्छाचारी व्यक्ति जगत् में जन्मता-मरता रहता है और सांसारिक मोह की पीड़ा सहन करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ नाम अमृत का पान करके तथा अनन्त ईश्वर की महिमा-स्तुति करके ही आत्म-स्वरूप में स्थिर रहा जा सकता है। उस आत्मस्वरूप में बैठकर प्रसन्नता का गृह प्राप्त किया

जा सकता है, यह प्रसन्नता उसको प्राप्त हुई कही जाती है, जो प्रभु के अमृत से अनुरक्त है॥ २॥ गुरु की शिक्षा अनुसार जीवन–आचरण करने से स्थिर हुआ जा सकता है और कदापि डांवाडोल नहीं होना पड़ता। गुरु की शिक्षा से वह सहज ही प्रभु के सत्य नाम का उच्चारण करता है। वह अमृत पान करता है और वास्तविकता को खोजकर अलग निकाल लेता है। सतिगुरु के दर्शन करके मैंने उनसे दीक्षा प्राप्त की है। मैंने अपना मन एवं तन गुरु को अर्पित करके अपने अंतः करण की खोज कर ली है। अपने आपको समझने से मैंने मुक्ति का मूल्य अनुभव कर लिया है॥ ४॥ जो व्यक्ति निरंजन प्रभु के नाम को अपना भोजन बना लेता है, वह परमहंस बन जाता है और उसके अन्तर्मन में सत्यस्वरूप परमात्मा की ज्योति प्रज्वलित हो जाती है। वह जहाँ कहीं भी देखता है वहाँ वह एक ईश्वर को पाता है॥ ५॥ ऐसा व्यक्ति (मोह–माया से) निर्लिप्त रहता है और केवल शुभ कर्म करता है, वह परम पद प्राप्त कर लेता है और गुरु के चरणों की सेवा करता है। मन से ही उसके मन की संतुष्टि हो जाती है और उसका अहंकार में भटकना मिट जाता है॥ ६॥ इस विधि से किस–किस को प्रभु ने (संसार सागर से) पार नहीं किया। प्रभु के यश ने उसके संतों एवं भक्तों का कल्याण कर दिया है। एक ईश्वर को मैंने पा लिया है और अब मैं किसी दूसरे को नहीं ढूँढता॥ ७॥ गुरु जी ने मुझे अदृश्य प्रभु के सत्य मन्दिर में दर्शन करवा दिए हैं। प्रभु का यह मन्दिर अटल है। यह मोहिनी का प्रतिबिम्ब नहीं। सच्चाई द्वारा संतोष आ जाता है और दुविधा दूर हो जाती है॥ ८॥ जिसके हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा निवास करता है, उनकी संगति में प्राणी धर्मात्मा बन जाता है। हे नानक ! सत्य नाम (विकारों की) मलिनता स्वच्छ कर देता है॥ ६॥ १५॥

गउड़ी महला १ ॥ रामि नामि चितु रापै जा का ॥ उपजंपि दरसनु कीजै ता का ॥ १ ॥ राम न जपहु अभागु तुमारा ॥ जुगि जुगि दाता प्रभु रामु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमति रामु जपै जनु पूरा ॥ तितु घट अनहत बाजे तूरा ॥ २ ॥ जो जन राम भगति हरि पिआरि ॥ से प्रभि राखे किरपा धारि ॥ ३ ॥ जिन कै हिरदै हरि हरि सोई ॥ तिन का दरसु परसि सुखु होई ॥ ४ ॥ सरब जीआ महि एको रवै ॥ मनमुखि अहंकारी फिरि जूनी भवै ॥ ५ ॥ सो बूझै जो सतिगुरु पाए ॥ हउमै मारे गुर सबदे पाए ॥ ६ ॥ अरध उरध की संधि किउ जानै ॥ गुरमुखि संधि मिलै मनु मानै ॥ ७ ॥ हम पापी निरगुण कउ गुणु करीऐ ॥ प्रभ होइ दइआलु नानक जन तरीऐ ॥ ८ ॥ १६ ॥ सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ ॥

जिस व्यक्ति का हृदय राम के नाम में मग्न रहता है, उसके दर्शन प्रातःकाल उठते ही करने चाहिए॥ १॥ हे भाई ! यदि तुम राम का भजन–सिमरन नहीं करते तो यह तुम्हारा दुर्भाग्य है। युग–युगों से हमारा प्रभु राम हमें नियामतें देता आ रहा है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति गुरु की मति द्वारा राम का नाम जपता रहता है, वही व्यक्ति पूर्ण बन जाता है। ऐसे पूर्ण व्यक्ति के हृदय में अनहद मधुर बाजे बजते रहते हैं॥ २॥ जो व्यक्ति राम एवं राम की भक्ति से प्रेम करते हैं, उनको ईश्वर कृपा करके भवसागर से बचा लेता है॥ ३॥ जिन लोगों के हृदय में हरि–परमेश्वर वास करता है, उनके दर्शन करने से आत्मिक सुख प्राप्त होता है॥ ४॥ समस्त जीवों के अन्तर में एक ईश्वर मौजूद है। अहंकारी पुरुष अंततः योनियों में भटकता रहता है॥ ५॥ जिसे सतिगुरु मिल जाता है, उसे ज्ञान हो जाता है। ऐसा प्राणी अपना अहंत्व निवृत्त करके गुरु के शब्द में लीन होकर ईश्वर को प्राप्त कर लेता है॥ ६॥ आत्मा के परमात्मा से मिलन बारे इन्सान किस तरह जान सकता है। गुरु की संगति एवं मन के संतोष द्वारा जीवात्मा प्रभु के मिलन में मिल जाता है॥ ७॥ हे प्रभु ! हम जीव गुणविहीन एवं पापी हैं, और हमें कृपा करके गुणवान बना दो। हे नानक ! जब प्रभु दया के घर में आ जाता है तो जीव भवसागर से पार हो जाता है॥ ८॥ १६॥ यह सोलह अष्टपदियां (राग) गउड़ी गुआरेरी की हैं।

गउड़ी बैरागणि महला १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिउ गाई कउ गोइली राखहि करि सारा ॥ अहिनिसि पालहि राखि लेहि आतम सुखु धारा ॥ १ ॥ इत उत राखहु दीन दइआला ॥ तउ सरणागति नदरि निहाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥ तूं दाता भुगता तूंहै तूं प्राण अधारा ॥ २ ॥ किरतु पइआ अध ऊरधी बिनु गिआन बीचारा ॥ बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अंधिआरा ॥ ३ ॥ जगु बिनसत हम देखिआ लोभे अहंकारा ॥ गुर सेवा प्रभु पाइआ सचु मुकति दुआरा ॥ ४ ॥ निज घरि महलु अपार को अपरंपरु सोई ॥ बिनु सबदै थिरु को नही बूझै सुखु होई ॥ ५ ॥ किआ लै आइआ ले जाइ किआ फासहि जम जाला ॥ डोलु बधा कसि जेवरी आकासि पताला ॥ ६ ॥ गुरमति नामु न वीसरै सहजे पति पाईऐ ॥ अंतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईऐ ॥ ७ ॥ नदरि करे प्रभु आपणी गुण अंकि समावै ॥ नानक मेलु न चूकई लाहा सचु पावै ॥ ८ ॥ १ ॥ १७ ॥

जैसे एक ग्वाला अपनी गायों की देखभाल करता है, वैसे ही प्रभु प्राणियों का दिन–रात पोषण एवं रक्षा करता है और उनके हृदय में आत्मिक सुख स्थापित करता है॥ १॥ हे दीनदयालु ईश्वर! इहलोक एवं परलोक में मेरी रक्षा कीजिए। हे प्रभु! मैं तेरी शरण में आया हूँ। इसलिए मुझ पर कृपा–दृष्टि कीजिए॥ १॥ रहाउ॥ हे रक्षक प्रभु! जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ तुम सर्वव्यापक हो। मेरी रक्षा कीजिए। हे ईश्वर! तू देन देने वाला दाता है, तू ही भोगनेवाला है और तू ही मेरे प्राणों का आधार है॥ २॥ ज्ञान को सोचने विचारने के बिना प्राणी अपने कर्मो अनुसार नीचे गिरता अथवा उच्च हो जाता है। सृष्टि के स्वामी जगदीश की उपमा के बिना (मोह–माया का) अंधकार दूर नहीं होता॥ ३॥ लालच एवं अभिमान में फॅसकर मैंने जगत् का विनाश होते देखा है। गुरु की सेवा द्वारा परमेश्वर एवं मोक्ष का सच्चा द्वार प्राप्त होता है॥ ४॥ अनन्त परमेश्वर का आत्मस्वरूप प्राणी के अपने हृदय गृह में विद्यमान है और वह परमेश्वर अपरम्पार है। प्रभु नाम के बिना कुछ भी स्थिर नहीं। ईश्वर के बोध द्वारा आत्मिक सुख प्राप्त होता है॥ ५॥ हे भाई! इस जगत् में तुम क्या लेकर आए थे और जब तुझे मृत्यु का फँदा फॅसा लगा तो क्या लेकर जाओगे? रस्सी के साथ बंधे हुए कुएँ के डोल की भाँति कभी तुम आकाश में होते हो और कभी पाताल में होते हो॥ ६॥ यदि गुरु के उपदेश से प्राणी प्रभु नाम को विस्मृत न करे तो वह सहज ही शोभा पा लेता है। मनुष्य के अन्तर्मन में ही प्रभु नाम का खजाना है, परन्तु यह (खजाना) अपने अहंकार को दूर करने से ही मिलता है॥ ७॥ यदि ईश्वर अपनी कृपा–दृष्टि करे तो प्राणी गुणवान बनकर परमात्मा की गोद में जाकर लीन होता है। हे नानक! यह मिलन टूटता नहीं और सच्चा लाभ प्राप्त कर लेता है॥ ८॥ १॥ १७॥

गउड़ी महला १ ॥ गुर परसादी बूझि ले तउ होइ निबेरा ॥ घरि घरि नामु निरंजना सो ठाकुरु मेरा ॥ १ ॥ बिनु गुर सबद न छूटीऐ देखहु वीचारा ॥ जे लख करम कमावही बिनु गुर अंधिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ ॥ बिनु गुर पंथु न सूझई कितु बिधि निरबहीऐ ॥ २ ॥ खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥ अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥ ३ ॥ सूते कउ जागतु कहै जागत कउ सूता ॥ जीवत कउ मूआ कहै मूए नही रोता ॥ ४ ॥ आवत कउ जाता कहै जाते कउ आइआ ॥ पर की कउ अपुनी कहै अपुनो नही भाइआ ॥ ५ ॥ मीठे कउ कउड़ा कहै कड़ूए कउ मीठा ॥ राते की निंदा करहि ऐसा कलि महि डीठा ॥ ६ ॥ चेरी की सेवा करहि ठाकुरु नही दीसै ॥ पोखरु नीरु विरोलीऐ माखनु नही रीसै ॥ ७ ॥ इसु पद जो अरथाइ लेइ सो गुरू

हमारा ॥ नानक चीनै आप कउ सो अपर अपारा ॥ ८ ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाइआ ॥ गुर किरपा ते बूझीऐ सभु ब्रहमु समाइआ ॥ ६ ॥ २ ॥ १८ ॥

हे जिज्ञासु! यदि गुरु की कृपा से प्राणी ईश्वर की महिमा को समझ ले तो उसे आवागमन से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। हे प्राणी! जिसका नाम निरंजन (पवित्र) है और उसका नाम प्रत्येक हृदय में समा रहा है, वही मेरा ठाकुर है॥ १॥ गुरु के शब्द बिना मनुष्य की मुक्ति नहीं होती। इस बात का विचार करके देख ले। मनुष्य चाहे लाखों धर्म-कर्म कर ले परन्तु गुरु के ज्ञान बिना अन्धेरा ही अन्धेरा है॥ १॥ रहाउ॥ हम उन्हें क्या कह सकते हैं जो ज्ञान से अंधे एवं बुद्धि से विहीन हैं? गुरु के बिना सत्य मार्ग दिखाई नहीं देता, तब मनुष्य का किस तरह निर्वाह चले?॥ २॥ नकली को मनुष्य असली कहता है और असली का वह मूल्य ही नहीं पहचानता। यह कलियुग का समय आश्चर्यजनक है कि ज्ञानहीन मनुष्य को अक्लमंद कहा जा रहा है॥ ३॥ बड़ी अद्‌भुत बात है कि दुनिया अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए इन्सान को जागता कह रही है और जो इन्सान भगवान की भक्ति में जाग्रत रहता है उसे दुनिया सोया हुआ कह रही है। जो व्यक्ति भगवान की भक्ति में मग्न रहता है, उसे दुनिया मृत कहती है और लेकिन वास्तव में मृतकों के लिए विलाप नहीं करता॥ ४॥ जो आ रहा है, वह कहता है जा रहा है और जो गया हुआ है उसको आया कहता है। मनुष्य पराए को अपना कहता है और अपने को पसंद नहीं करता॥ ५॥ जो मीठा है, उसको वह कड़वा कहता है और कड़वे को वह मीठा बताता है। भगवान की भक्ति में मग्न हुए भक्त की दुनिया निन्दा करती है। दुनिया में ऐसा तमाशा मैंने कलियुग में देखा है॥ ६॥ मनुष्य दासी (माया) की सेवा करता है परन्तु ठाकुर को वह देखता ही नहीं। तालाब का जल मथने से मक्खन नहीं निकलता॥ ७॥ जो इस परम अवस्था के अर्थ को समझता है, वह मेरा गुरु है। हे नानक! जो अपने आत्म-स्वरूप को समझता है, वह अनन्त एवं अपार है॥ ८॥ परमेश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और स्वयं ही प्राणियों को कुमार्गगामी करता है। गुरु की कृपा से मनुष्य यह समझता है कि ईश्वर सर्वव्यापक है॥ ६॥ २॥ १८॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन का सूतकु दूजा भाउ ॥ भरमे भूले आवउ जाउ ॥ १ ॥ मनमुखि सूतकु कबहि न जाइ ॥ जिचरु सबदि न भीजै हरि कै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभो सूतकु जेता मोहु आकारु ॥ मरि मरि जंमै वारो वार ॥ २ ॥ सूतकि अगनि पउणै पाणी माहि ॥ सूतकु भोजनु जेता किछु खाहि ॥ ३ ॥ सूतकि करम न पूजा होइ ॥ नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ ॥ मरै न जनमै कालु न खाइ ॥ ५ ॥ सासत सिंम्रिति सोधि देखहु कोइ ॥ विणु नावै को मुकति न होइ ॥ ६ ॥ जुग चारे नामु उतमु सबदु बीचारि ॥ कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि ॥ ७ ॥ साचा मरै न आवै जाइ ॥ नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥ ८ ॥ १ ॥

ईश्वर को विस्मृत करके माया से मोह ही मन का सूतक (अपवित्रता) है। दुविधा के कारण मोह-माया में ग्रस्त हुआ मनुष्य आवागमन के चक्र में पड़कर संसार में जन्मता-मरता रहता है॥ १॥ स्वेच्छाचारी जीव के मन का सूतक (अपवित्रता) तब तक निवृत्त नहीं होता, जब तक वह गुरु के उपदेश अनुसार ईश्वर के नाम में तल्लीन नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ इस संसार का मोह जो कुछ भी दृष्टिमान है, यह तमाम सूतक का मूल है। परिणामस्वरूप प्राणी पुनः पुनः मर मर कर जन्म लेता है॥ २॥ सूतक अग्नि, पवन एवं जल में विद्यमान है। तमाम भोजन जो हम सेवन करते हैं, उसमें भी सूतक

विद्यमान है॥ ३॥ मनुष्य के कर्मों में भी सूतक विद्यमान है, क्योंकि वह प्रभु की पूजा-अर्चना नहीं करता। प्रभु के नाम में मग्न हो जाने से मन पवित्र हो जाता है॥ ४॥ सतिगुरु की सेवा करने से सूतक दूर हो जाता है। गुरु की शरण में आने से न मनुष्य मरता है, न ही पुनः संसार में जन्म लेता है। न ही मृत्यु उसे निगलती है॥ ५॥ (बेशक) कोई व्यक्ति शास्त्रों एवं स्मृतियों का अध्ययन करके देख ले। ईश्वर नाम के सिवाय कोई भी मुक्त नहीं होता॥ ६॥ चारों युगों (सतियुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग) में नाम एवं शब्द का चिन्तन सर्वश्रेष्ठ पदार्थ है। लेकिन कलियुग में केवल गुरमुख का ही उद्धार होता है॥ ७॥ सत्यस्वरूप परमेश्वर अनश्वर है और आवागमन के चक्र में नहीं पड़ता। हे नानक! गुरमुख सत्य में ही समाया रहता है॥ ८॥ १॥

गउड़ी महला ३ ॥ गुरमुखि सेवा प्रान अधारा ॥ हरि जीउ राखहु हिरदै उर धारा ॥ गुरमुखि सोभा साचु दुआरा ॥ १ ॥ पंडित हरि पड़ु तजहु विकारा ॥ गुरमुखि भउजलु उतरहु पारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि विचहु हउमै जाइ ॥ गुरमुखि मैलु न लागै आइ ॥ गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ गुरमुखि करम धरम सचि होई ॥ गुरमुखि अहंकारु जलाए दोई ॥ गुरमुखि नामि रते सुखु होई ॥ ३ ॥ आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ॥ लोक समझावहु सुणे न कोई ॥ गुरमुखि समझहु सदा सुखु होई ॥ ४ ॥ मनमुखि डंफु बहुतु चतुराई ॥ जो किछु कमावै सु थाइ न पाई ॥ आवै जावै ठउर न काई ॥ ५ ॥ मनमुख करम करे बहुतु अभिमाना ॥ बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥ जमि पकड़िआ तब ही पछुताना ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ गुर परसादी मिलै हरि सोई ॥ गुरु दाता जुग चारे होई ॥ ७ ॥ गुरमुखि जाति पति नामे वडिआई ॥ साइर की पुत्री बिदारि गवाई ॥ नानक बिनु नावै झूठी चतुराई ॥ ८ ॥ २ ॥

भगवान की भक्ति ही गुरमुख के प्राणों का आधार है। अतः पूज्य परमेश्वर को ही अपने हृदय एवं अन्तर्मन में बसाकर रखो। गुरमुख को सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त होती है॥ १॥ हे पण्डित! भगवान की महिमा का चिन्तन कर और विकारों को त्याग दे। गुरमुख भयानक संसार सागर से पार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरमुख के मन को विकारों की मैल नहीं लगती। गुरमुख के मन में भगवान का नाम आकर बस जाता है॥ २॥ गुरमुख का प्रत्येक कर्म-धर्म सत्य ही होता है। गुरमुख अहंकार एवं द्वेष को जला देता है। गुरमुख भगवान के नाम में मग्न रहकर ही सुखी होता है॥ ३॥ अपने मन को जागृत कर और परमेश्वर का बोध कर। अन्यथा जितना भी चाहे तू लोगों को उपदेश देता रह, कोई भी तेरी बात नहीं सुनेगा। गुरु के माध्यम से जीवन-मार्ग को समझो जिससे तुझे सदैव सुख प्राप्त होगा॥ ४॥ स्वेच्छाचारी जीव बड़ा पाखंडी और चतुर होता है। जो कुछ भी कर्म वह करता है, वह (प्रभु के दरबार में) स्वीकार नहीं होता। वह जीवन-मृत्यु के बन्धन में पड़कर संसार में जन्मता-मरता रहता है और उसे सुख का कोई भी स्थान नहीं मिलता॥ ५॥ स्वेच्छाचारी अपना प्रत्येक कर्म बड़े अहंकार में करता है। बगले की भाँति वह सदैव ही ध्यान लगाकर बैठता है। जब यमदूत उसे पकड़ता है तो वह बड़ा पश्चाताप करता है॥ ६॥ इसलिए (संसार में) सतिगुरु की सेवा बिना मुक्ति नहीं मिलती। गुरु की दया से वह प्रभु को मिल जाता है। चारों ही युगों (सतियुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) में गुरु नाम देने वाले दाता हैं॥ ७॥ ईश्वर का नाम गुरमुख की जाति, सम्मान एवं शोभा है। समुद्र की कन्या माया को उन्होंने पीट-पीट कर मार दिया है। हे नानक! नाम के बिना समस्त चतुराई झूठी है॥ ८॥ २॥

गउड़ी मः ३ ॥ इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥ पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ ऐथै अगै हरि नामु सखाई ॥ १ ॥ राम पड़हु मनि करहु बीचारु ॥ गुर परसादी मैलु उतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥ मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥ गुर कै सबदि सचि लिव लाइ ॥ २ ॥ हउमै मैला इहु संसारा ॥ नित तीरथि नावै न जाइ अहंकारा ॥ बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा ॥ ३ ॥ सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥ गुर कै सबदि पंच संघारै ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥ ४ ॥ माइआ मोहि नटि बाजी पाई ॥ मनमुख अंध रहे लपटाई ॥ गुरमुखि अलिपत रहे लिव लाई ॥ ५ ॥ बहुते भेख करै भेखधारी ॥ अंतरि तिसना फिरै अहंकारी ॥ आपु न चीनै बाजी हारी ॥ ६ ॥ कापड़ पहिरि करे चतुराई ॥ माइआ मोहि अति भरमि भुलाई ॥ बिनु गुर सेवे बहुतु दुखु पाई ॥ ७ ॥ नामि रते सदा बैरागी ॥ ग्रिही अंतरि साचि लिव लागी ॥ नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे भाई ! आप लोग इस युग के धर्म (परमेश्वर नाम) का चिन्तन करो। क्योंकि पूर्ण गुरु ने मुझे सारी सूझ बता दी है। इस लोक एवं परलोक में ईश्वर का नाम ही प्राणी का सहारा है॥ १॥ (हे भाई !) राम के नाम का भजन करो और अपने हृदय में उसके गुणों का विचार करो। गुरु की कृपा से अपनी विकारों की मैल को साफ कर लो॥ १॥ रहाउ॥ वाद-विवाद एवं विरोध से प्रभु प्राप्त नहीं होता। मोह-माया की लगन से मन-तन फीके हो जाते हैं। इसलिए गुरु के शब्द द्वारा सत्य परमेश्वर में वृत्ति लगा॥ २॥ अहंकार के कारण सारा जगत् मैला हो गया है। प्रतिदिन तीर्थों का स्नान करने से अहंकार दूर नहीं होता। गुरु के मिलन बिना काल (मृत्यु) मनुष्य को बड़ा तंग करता है॥ ३॥ वही मनुष्य सत्यवादी है जो अपने अहंकार को मिटा देता है और गुरु के शब्द द्वारा पाँच विकारों का संहार कर देता है। ऐसा मनुष्य स्वयं भी बच जाता है और अपने समूचे वंश का भी उद्धार कर लेता है॥ ४॥ कलाकार (प्रभु) ने माया का मोह प्राणियों हेतु एक खेल रचा है। ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी जीव मोह-माया से लिपटे रहते हैं। लेकिन गुरमुख इससे निर्लिप्त रहकर ईश्वर से वृत्ति लगाते हैं॥ ५॥ कपटी इन्सान अनेकों वेष धारण करता है। उसके भीतर तृष्णा विद्यमान है और वह अभिमानी होकर विचरता है। कपटी इन्सान अपने आपको समझता नहीं और जीवन की बाजी हार जाता है॥ ६॥ धार्मिक वेष धारण करके कई लोग चतुरता करते हैं। माया के मोह एवं दुविधा ने उनको बहुत कुमार्गगामी किया हुआ है। गुरु की सेवा-भक्ति के बिना वह बहुत कष्ट सहन करते हैं॥ ७॥ जो व्यक्ति ईश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही (मोह माया से) निर्लिप्त रहते हैं। चाहे वे गृहस्थी हैं, वह अपने हृदय में सत्य के साथ वृत्ति लगाते हैं। हे नानक ! वे व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जो सतिगुरु की सेवा करते हैं॥ ८॥ ३॥

गउड़ी महला ३ ॥ ब्रहमा मूलु वेद अभिआसा ॥ तिस ते उपजे देव मोह पिआसा ॥ त्रै गुण भरमे नाही निज घरि वासा ॥ १ ॥ हम हरि राखे सतिगुरू मिलाइआ ॥ अनदिनु भगति हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण बाणी ब्रहम जंजाला ॥ पड़ि वादु वखाणहि सिरि मारे जमकाला ॥ ततु न चीनहि बंनहि पंड पराला ॥ २ ॥ मनमुख अगिआनि कुमारगि पाए ॥ हरि नामु बिसारिआ बहु करम द्रिड़ाए ॥ भवजलि डूबे दूजै भाए ॥ ३ ॥ माइआ का मुहताजु पंडितु कहावै ॥ बिखिआ राता बहुतु दुखु पावै ॥ जम का गलि जेवड़ा नित कालु संतावै ॥ ४ ॥ गुरमुखि जमकालु नेड़ि न आवै ॥ हउमै दूजा सबदि जलावै ॥ नामे राते हरि गुण गावै ॥ ५ ॥ माइआ दासी भगता की कार कमावै ॥ चरणी लागै ता महलु पावै ॥ सद ही निरमलु सहजि समावै ॥ ६ ॥ हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि जुग माही ॥ तिन कउ सभि निवहि अनदिनु पूज कराही ॥ सहजे गुण रवहि साचे मन माही ॥७॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइआ ॥ नानक हउमै मारि ब्रहम मिलाइआ ॥ ८ ॥ ४ ॥

ब्रह्मा वेदों के अध्ययन का रचयिता है। सांसारिक मोह एवं तृष्णा में फँसे हुए देवते उसी से उत्पन्न हुए हैं। वे तीन गुणों में भटकते रहे और उन्हें ईश्वर के चरणों में स्थान न मिला॥ १॥ हमें ईश्वर ने (मोह–माया से) बचा लिया है और सतिगुरु जी से मिला दिया है। रात–दिन भगवान की भक्ति एवं ईश्वर का नाम गुरु जी ने सुदृढ़ कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ ब्रह्मा की रचित वाणी लोगों को (माया के) तीन गुणों के जंजाल में फँसा देती है। उसका अध्ययन करके पण्डित वाद–विवाद करते हैं और यमदूत उनके सिर पर प्रहार करता है। वह वास्तविकता को नहीं समझते और घास–फूस की गठरी सिर पर बांधते हैं॥ २॥ अज्ञानी स्वेच्छाचारी जीव कुमार्ग ही पड़ा रहता है। वह ईश्वर के नाम को विस्मृत कर देता है और (मोह–माया के) अनेकों कर्म दृढ़ करता है। ऐसे स्वेच्छाचारी द्वैतवाद के कारण भयानक संसार सागर में डूब जाते हैं॥ ३॥ धन–दौलत का अभिलाषी अपने आपको पण्डित कहलवाता है। पापों में अनुरक्त हुआ वे वड़े कष्ट सहन करता है। यमदूत की रस्सी उसकी गर्दन के निकट है और मृत्यु हमेशा ही उसको पीड़ित करती है॥ ४॥ लेकिन गुरमुख के निकट यमदूत नहीं आता। ईश्वर का नाम उनके अहंकार एवं द्वैतवाद को जला देता है। गुरमुख नाम में मग्न होकर प्रभु की महिमा करता रहता है॥ ५॥ माया प्रभु के भक्तों की सेविका है और उनकी भरपूर सेवा करती है। यदि मनुष्य भक्तों के चरण–स्पर्श करता है तो उसे प्रभु का स्वरुप मिल जाता है। ऐसा व्यक्ति सदैव ही पवित्र है और सहज ही सत्य में समा जाता है॥ ६॥ जो व्यक्ति हरि कथा सुनता है, वह इस संसार में धनवान दिखाई देता है। सभी उसको प्रणाम करते हैं और लोग दिन–रात उसकी पूजा–अर्चना करते हैं। वह अपने हृदय में सहज ही सत्य परमेश्वर का यश गायन करते हैं॥ ७॥ पूर्ण सतिगुरु जी ने अपना उपदेश सुनाया है, जिससे (माया के) तीन गुणों का प्रभाव लुप्त हो गया है और मनुष्य का मन आत्मिक अवस्था से जुड़ गया है। हे नानक ! अपना अहंकार निवृत्त करके वह ब्रह्म में मिल गया है॥ ८॥ ४॥

गउड़ी महला ३ ॥ ब्रहमा वेदु पड़ै वादु वखाणै ॥ अंतरि तामसु आपु न पछाणै ॥ ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै ॥ १ ॥ गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ॥ मनमुख खाधे दूजै भाइ ॥ १ ॥ रहाउ॥ गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे ॥ गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे ॥ मेरा प्रभु पाइआ गुर कै सबदि सीधे ॥ २ ॥ सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाए ॥ मेरे प्रभ साचे कै मनि भाए ॥ हरि गुण गावहि सहजि सुभाए ॥ ३ ॥ बिनु गुर साचे भरमि भुलाए ॥ मनमुख अंधे सदा बिखु खाए ॥ जम डंडु सहहि सदा दुखु पाए ॥ ४ ॥ जमूआ न जोहै हरि की सरणाई ॥ हउमै मारि सचि लिव लाई ॥ सदा रहै हरि नामि लिव लाई ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवहि से जन निरमल पविता ॥ मन सिउ मनु मिलाइ सभु जगु जीता ॥ इन बिधि कुसलु तेरै मेरे मीता ॥ ६ ॥ सतिगुरू सेवे सो फलु पाए ॥ हिरदै नामु विचहु आपु गवाए ॥ अनहद बाणी सबदु वजाए ॥ ७ ॥ सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो मेरे भाई ॥ भगती सीधे दरि सोभा पाई ॥ नानक राम नामि वडिआई ॥ ८ ॥ ५ ॥

पण्डित ब्रह्मा के रचित वेदों का अध्ययन करता है और वाद–विवाद वर्णन करता है। उसकी अन्तर्आत्मा में क्रोध विद्यमान है, जिससे वह अपने आपको नहीं समझता। यदि वह गुरु के शब्द का बखान करे तभी उसे परमात्मा प्राप्त हो सकता है॥ १॥ हे भाई ! गुरु की सेवा करो, तब तुझे मृत्यु अपना ग्रास नहीं बनाएगी। क्योंकि माया–मोह की लगन ने स्वेच्छाचारियों को निगल लिया है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के आश्रय में आने से पापी पुरुष भी पवित्र–पावन हो गए हैं। गुरु के शब्द से आत्मा परमात्मा से जुड़ जाती है। गुरु के शब्द से मनुष्य सुधर जाता है और मेरे प्रभु को पा लेता है॥ २॥ ईश्वर उनको अपने साथ

मिला लेता है, जिन्हें सतिगुरु जी मिलाना चाहते हैं। वे मेरे सत्यस्वरूप ईश्वर के हृदय को अच्छे लगने लगते हैं। वह सहज ही प्रभु की गुणस्तुति करते हैं॥ ३॥ गुरु के बिना प्राणी दुविधा में भूले हुए हैं। ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी पुरुष सदैव ही (मोह-माया का) विष सेवन करते हैं। वे यमदूत का दण्ड सहन करते हैं और सदैव ही दुखी होते हैं॥ ४॥ लेकिन यदि मनुष्य परमेश्वर की शरण प्राप्त कर ले तो यमदूत उसे दुखी नहीं करता। अपने अहंत्व को निवृत्त करने से मनुष्य की वृत्ति प्रभु के साथ लग जाती है। वह सदैव ही अपनी वृत्ति ईश्वर नाम के साथ लगाकर रखता है॥ ५॥ जो पुरुष सतिगुरु की सेवा करते हैं, वही पुरुष पवित्र एवं पावन हैं। अपने मन को गुरु के मन के साथ जोड़ने से वे सारे जगत् पर विजय पा लेते हैं। हे मेरे मित्र! इस विधि से तुझे भी आनन्द प्राप्त होगा॥ ६॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की निष्ठापूर्वक सेवा करता है, वह फल प्राप्त कर लेता है। उसके हृदय में नाम विद्यमान है और उसके भीतर से अहंकार दूर हो जाता है। उसके लिए अनहद वाणी का शब्द गूंजता रहता है॥ ७॥ हे मेरे भाई! कौन-कौन सा व्यक्ति सतिगुरु की शरण में नहीं सुधरा? प्रभु की भक्ति द्वारा वह उसके दरबार में शोभा पाते हैं। हे नानक! राम के नाम से बड़ी प्रशंसा मिलती है॥ ८॥ ५॥

गउड़ी महला ३ ॥ त्रै गुण वखाणै भरमु न जाइ ॥ बंधन न तूटहि मुकति न पाइ ॥ मुकति दाता सतिगुरु जुग माहि ॥ १ ॥ गुरमुखि प्राणी भरमु गवाइ ॥ सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण काले की सिरि कारा ॥ नामु न चेतहि उपावणहारा ॥ मरि जंमहि फिरि वारो वारा ॥ २ ॥ अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥ मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥ बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥ ३ ॥ माइआ करि मूलु जंत्र भरमाए ॥ हरि जीउ विसरिआ दूजै भाए ॥ जिसु नदरि करे सो परम गति पाए ॥ ४ ॥ अंतरि साचु बाहरि साचु वरताए ॥ साचु न छपै जे को रखै छपाए ॥ गिआनी बूझहि सहजि सुभाए ॥ ५ ॥ गुरमुखि साचि रहिआ लिव लाए ॥ हउमै माइआ सबदि जलाए ॥ मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाए ॥ ६ ॥ सतिगुरु दाता सबदु सुणाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ ७ ॥ आपे करता स्रिसटि सिरजि जिनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ नानक गुरमुखि बूझै कोई ॥ ८ ॥ ६ ॥

जो व्यक्ति त्रिगुणात्मक माया का बखान करता है, उसका भ्रम दूर नहीं होता। उसके मोह-माया के बंधन समाप्त नहीं होते और उसे मुक्ति नहीं मिलती। इस युग में मुक्ति देने वाला सतिगुरु ही है॥ १॥ गुरमुख प्राणी का भ्रम दूर हो जाता है। परमेश्वर के साथ वृत्ति लगाने से सहज ध्वनि उत्पन्न हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति त्रिगुणात्मक (माया) में वास करते हैं, वे मृत्यु की प्रजा हैं। वे सृजनहार प्रभु के नाम को स्मरण नहीं करते। इसलिए वह बार-बार जीवन मृत्यु के चक्र में फँसकर जन्म लेते और मरते हैं॥ २॥ अज्ञानी गुरु द्वारा दुविधा निवृत्त नहीं होती। संसार के मूल सृष्टिकर्त्ता को त्याग कर प्राणी द्वैतवाद से जुड़े हुए हैं। माया के विष में मग्न हुआ जीव माया के विष में ही समा जाता है॥ ३॥ माया को मूल सहारा जानकर प्राणी भटकते फिरते हैं। माया के मोह में उन्होंने पूज्य परमेश्वर को विस्मृत कर दिया है। ईश्वर जिस प्राणी पर कृपा-दृष्टि करता है, वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है, वह बाहर भी सत्य ही बांटता है। सत्य छिपा नहीं रहता चाहे मनुष्य इसको छिपा कर ही रखे। ज्ञानी सहज ही सत्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता है॥ ५॥ गुरुमुख सत्य में वृत्ति लगाकर रखता है। ऐसा व्यक्ति अहंकार एवं माया का मोह ईश्वर के नाम से जला देता है। मेरा सत्यस्वरूप परमेश्वर उसको अपने मिलाप में मिला लेता है॥ ६॥ नाम की देन देने वाला सतिगुरु अपना शब्द ही सुनाता है। वह माया के पीछे भागते मन पर विराम लगाकर उसे

नियंत्रित करता है। पूर्ण गुरु से प्राणी ज्ञान प्राप्त करता है॥ ७॥ सृजनहार प्रभु स्वयं सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही इसका विनाश भी करता है। उस प्रभु के बिना दूसरा कोई नहीं। हे नानक! कोई गुरमुख ही इस तथ्य को समझता है॥ ८॥ ६॥

गउड़ी महला ३ ॥ नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ॥ नामो सेवे नामि सहजि समावै ॥ अंम्रितु नामु रसना नित गावै ॥ जिस नो क्रिपा करे सो हरि रसु पावै ॥ १ ॥ अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥ गुरमुखि पावउ परम पदु सूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै सूखु भइआ परगासु ॥ गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु ॥ दासनि दास नित होवहि दासु ॥ ग्रिह कुटंब महि सदा उदासु ॥ २ ॥ जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥ परम पदारथु पावै सोई ॥ त्रै गुण मेटे निरमलु होई ॥ सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥ ३ ॥ मोह कुटंब सिउ प्रीति न होइ ॥ जा हिरदै वसिआ सचु सोइ ॥ गुरमुखि मनु बेधिआ असथिरु होइ ॥ हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइ ॥ ४ ॥ तूं करता मै अवरु न कोइ ॥ तुझु सेवी तुझ ते पति होइ ॥ किरपा करहि गावा प्रभु सोइ ॥ नाम रतनु सभ जग महि लोइ ॥ ५ ॥ गुरमुखि बाणी मीठी लागी ॥ अंतरु बिगसै अनदिनु लिव लागी ॥ सहजे सचु मिलिआ परसादी ॥ सतिगुरु पाइआ पूरै वडभागी ॥ ६ ॥ हउमै ममता दुरमति दुख नासु ॥ जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥ गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु ॥ जब हिरदै रविआ चरण निवासु ॥ ७ ॥ जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ॥ गुरमुखि मेले आपु गवाए ॥ हिरदै साचा नामु वसाए ॥ नानक सहजे साचि समाए ॥ ८ ॥ ७ ॥

परमेश्वर का अमूल्य नाम गुरमुख ही प्राप्त करता है। वह नाम की सेवा करता रहता है और नाम में सहज ही समा जाता है। वह नित्य ही अपनी जिह्वा से अमृतमयी नाम का गुणानुवाद करता है। जिस पर भगवान अपनी कृपा करता है, वही व्यक्ति हरि रस प्राप्त करता है॥ १॥ हे जिज्ञासु! अपने मन में रात-दिन सृष्टि के स्वामी जगदीश का जाप करो। गुरु के माध्यम से तुझे परम पद अवस्था प्राप्त होगी॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति गुणों के भण्डार सत्यस्वरूप परमेश्वर का भजन करते है, उस गुरमुख के मन में प्रसन्नता प्रकट हो जाती है। वह सदा अपने ईश्वर के सेवकों के सेवकों का सेवक बना रहता है। वह अपने गृह एवं परिवार में हमेशा निर्लिप्त रहता है॥ २॥ कोई विरला गुरमुख ही जीवन में मोह-माया के बन्धनों से मुक्त होता है। केवल वही नाम पदार्थ को प्राप्त करता है। वह माया के त्रिगुणों को मिटा कर पवित्र हो जाता है। वह सहज ही उस सत्यस्वरूप परमेश्वर में लीन हो जाता है॥ ३॥ जिस व्यक्ति के हृदय में सत्य का निवास हो जाता है, उसका अपने परिवार से मोह एवं प्रेम नहीं रहता। गुरमुख का मन भगवान की भक्ति में लग जाता है और वह स्थिर रहता है। जो प्रभु के हुक्म को पहचानता है, वह सत्य को समझ लेता है॥ ४॥ हे प्रभु! तू स्रष्टा है, मैं किसी दूसरे को नहीं जानता। हे नाथ! मैं तेरी ही सेवा करता हूँ और तेरे द्वारा ही मैं शोभा पाता हूँ। यदि वह प्रभु दया करे तो मैं उसका यश गायन करता हूँ। समूचे जगत् में (प्रभु के) नाम रत्न का ही प्रकाश है॥ ५॥ गुरुमुख को वाणी बहुत मीठी लगती है। उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और रात-दिन उसकी वृत्ति इस पर केन्द्रित हुई रहती है। गुरु की कृपा से सत्य नाम सहज ही मिल जाता है। पूर्ण किस्मत से प्राणी को सतिगुरु मिलता है॥ ६॥ जब गुणों के सागर प्रभु का नाम हृदय में बसता है तो अहंकार, मोह, दुर्बुद्धि एवं दुख नाश हो जाते हैं। जब प्रभु के चरण हृदय में बसा कर गुरु के माध्यम से ईश्वर का भजन एवं उसका यश गायन किया जाता है तो मनुष्य की बुद्धि जाग जाती है॥ ७॥ जिसे प्रभु नाम प्रदान करता है, केवल वही पुरुष ही इसको पाता है। जो गुरु के माध्यम से अपने अहंकार को त्याग देते हैं, उनको प्रभु अपने साथ मिला लेता है। अपने हृदय में वह सत्य नाम को बसा लेते हैं। हे नानक! वे सहज ही सत्य में समा जाते हैं॥ ८॥ ७॥

गउड़ी महला ३ ॥ मन ही मनु सवारिआ भै सहजि सुभाइ ॥ सबदि मनु रंगिआ लिव लाइ ॥ निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ ॥ १ ॥ सतिगुरु सेविऐ जाइ अभिमानु ॥ गोविदु पाईऐ गुणी निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ ॥ मेरा प्रभु निरमला सभ तै रहिआ समाइ ॥ गुर किरपा ते मिलै मिलाइ ॥ २ ॥ हरि दासन को दासु सुखु पाए ॥ मेरा हरि प्रभु इन बिधि पाइआ जाए ॥ हरि किरपा ते राम गुण गाए ॥ ३ ॥ ध्रिगु बहु जीवणु जितु हरि नामि न लगै पिआरु ॥ ध्रिगु सेज सुखाली कामणि मोह गुबारु ॥ तिन सफलु जनमु जिन नामु अधारु ॥ ४ ॥ ध्रिगु ध्रिगु ग्रिहु कुटंबु जितु हरि प्रीति न होइ ॥ सोई हमारा मीतु जो हरि गुण गावै सोइ ॥ हरि नाम बिना मै अवरु न कोइ ॥ ५ ॥ सतिगुर ते हम गति पति पाई ॥ हरि नामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ॥ सदा अनंदु हरि नामि लिव लाई ॥ ६ ॥ गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ॥ हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझई ॥ बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥ ७ ॥ हरि आपे क्रिपा करे नामु देवै ॥ गुरमुखि रतनु को विरला लेवै ॥ नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै ॥ ८ ॥ ८ ॥

जिस व्यक्ति ने ईश्वर के भय में सहज स्वभाव ही मन को संवार लिया है, उसका मन नाम में मग्न रहता है और वह प्रभु में सुरति लगाकर रखता है। प्रभु की इच्छा से वह अपने आत्मस्वरूप में ही रहता है॥ १॥ सतिगुरु की सेवा करने से अभिमान दूर हो जाता है एवं गुणों का भण्डार गोविन्द प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जब मनुष्य का मन प्रभु का भय धारण कर लेता है तो वह इच्छा रहित हो जाता है। मेरा निर्मल प्रभु सर्वत्र व्यापक हो रहा है। गुरु की कृपा से प्राणी प्रभु मिलन में मिल जाता है॥ २॥ ईश्वर के सेवकों का सेवक आत्मिक सुख प्राप्त करता है। मेरा प्रभु-परमेश्वर इस विधि से प्राप्त होता है। परमेश्वर की कृपा से मनुष्य राम की गुणस्तुति करता है॥ ३॥ ऐसे लम्बे जीवन पर धिक्कार है जिसमें प्रभु के नाम से प्रेम नहीं होता। सुन्दर स्त्री की सुखदायक सेज भी धिक्कार योग्य है जिससे मोह का अन्धेरा बना रहता है। उनका जीवन ही फलदायक है, जिन्हें नाम का सहारा प्राप्त है॥ ४॥ ऐसा गृहस्थ-जीवन एवं परिवार भी धिक्कार योग्य है, जिसके कारण प्रभु से प्रेम नहीं होता। केवल वही मेरा मित्र है, जो उस ईश्वर का यश गायन करता है। प्रभु के नाम बिना मेरा दूसरा कोई नहीं॥ ५॥ सतिगुरु से मैंने मुक्ति एवं शोभा प्राप्त की है। भगवान के नाम का ध्यान करने से सभी दुःख मिट गए हैं। भगवान के नाम में वृति लगाने से सदैव आनंद प्राप्त हो गया है॥ ६॥ गुरु को मिलने से हमारा शरीर शुद्ध हो गया है। जिससे अहंकार एवं तृष्णा की अग्नि समस्त बुझ गए हैं। मेरा क्रोध मिट गया है और मैंने सहनशीलता धारण कर ली है॥ ७॥ भगवान स्वयं ही कृपा करके अपना नाम प्रदान करता है। कोई विरला गुरमुख ही नाम-रत्न को प्राप्त करता है। हे नानक! वह तो अलक्ष्य तथा अभेद परमेश्वर की ही गुणस्तुति करता है॥ ८॥ ८॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसंनि ॥ अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला ना लहंनि ॥ १ ॥ हरि हरि राखहु क्रिपा धारि ॥ सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलंनि ॥ आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि ॥ २ ॥ जिस दा पिंडु पराण है तिस की सिरि कार ॥ ओहु किउ मनहु विसारीऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि ॥ ३ ॥ नामि मिलिऐ पति पाईऐ नामि मंनिऐ सुखु होइ ॥ सतिगुर ते नामु पाईऐ करमि मिलै प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ सतिगुर ते जो मुहु फेरे ओइ भ्रमदे ना टिकंनि ॥ धरति असमानु न झलई विचि विसटा पए पचंनि ॥ ५ ॥ इहु जगु भरमि भुलाइआ मोह ठगउली

पाइ ॥ जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माइ ॥ ६ ॥ सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हउमै मैलु गवाइ ॥ सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाइ ॥ ७ ॥ हरि प्रभ दाता एकु तूं तूं आपे बखसि मिलाइ ॥ जनु नानकु सरणागती जिउ भावै तिवै छडाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ६ ॥

जो इन्सान गुरु से मुँह फेर लेते हैं, ऐसे विमुख इन्सान बड़े बुरे दिखाई देते हैं। ऐसे व्यक्ति बन्धनों में फँसकर दिन–रात दुख भोगते रहते हैं और फिर उन्हें बन्धनों से बचने का अवसर प्राप्त नहीं होता॥ १॥ हे प्रभु–परमेश्वर ! कृपा धारण करके हमारी रक्षा करें। हे ईश्वर ! मुझे सत्संग में मिला दो, चूंकि मैं अपने मन में प्रभु–परमेश्वर के गुणों को स्मरण करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ भगवान को वही भक्त अच्छे लगते हैं, जो गुरु की इच्छानुसार चलते हैं। वे अपना अहंकार त्यागकर प्रभु की सेवा–भक्ति करते हैं और संसार का कर्म करते हुए भी माया के मोह से मृत रहते हैं॥ २॥ जिस प्रभु का दिया हुआ यह शरीर और यह प्राण है, उसकी ही सरकार है अर्थात् उसका हुक्म सब पर है सक्रिय है। उसको अपने हृदय से किसी भी अवस्था में क्यों विस्मृत करें ? हमें ईश्वर को अपने हृदय से लगाकर रखना चाहिए॥ ३॥ यदि नाम प्राप्त हो जाए तो ही मनुष्य को मान–सम्मान मिलता है और नाम में आस्था रखने से उसको आत्मिक सुख मिलता है। सतिगुरु से ही नाम प्राप्त होता है। उसकी अपनी कृपा से ही वह प्रभु पाया जाता है॥ ४॥ जो व्यक्ति सतिगुरु से मुँह फेर लेते हैं, वह (संसार में) भटकते ही रहते हैं और उन्हें शांति नहीं मिलती। गुरु से विमुख होने वाले लोगों को धरती एवं गगन भी सहारा नहीं देते। विष्टा में गिरे हुए वह वहाँ गल–सड़ जाते हैं॥ ५॥ माया ने इस संसार को दुविधा में डालकर मोह की बूटी खिलाकर कुमार्गगामी बना दिया है लेकिन जिन्हें सतिगुरु जी मिल जाते हैं, माया उनके निकट नहीं आती॥ ६॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वह अति सुन्दर हैं। वह अपने अहंकार की मलिनता को दूर फेंक देते हैं। वही व्यक्ति निर्मल हैं जो गुरु के शब्द में मग्न रहते हैं। वह सतिगुरु के निर्देशानुसार अनुसरण करते हैं॥ ७॥ हे मेरे प्रभु–परमेश्वर ! एक तू ही दाता है, तू स्वयं ही प्राणियों को क्षमादान करके अपने साथ मिला लेता है। हे ईश्वर ! नानक ने तेरी शरण ली है। जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही उसको तू मुक्ति प्रदान कर॥ ८॥ १॥ ६॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ करहले   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ॥ गुरु भागि पूरै पाइआ गलि मिलिआ पिआरा आइ ॥ १ ॥ मन करहला सतिगुरु पुरखु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारीआ हरि राम नाम धिआइ ॥ जिथै लेखा मंगीऐ हरि आपे लए छडाइ ॥ २ ॥ मन करहला अति निरमला मलु लागी हउमै आइ ॥ परतखि पिरु घरि नालि पिआरा विछुड़ि चोटा खाइ ॥ ३ ॥ मन करहला मेरे प्रीतमा हरि रिदै भालि भालाइ ॥ उपाइ कितै न लभई गुरु हिरदै हरि देखाइ ॥ ४ ॥ मन करहला मेरे प्रीतमा दिनु रैणि हरि लिव लाइ ॥ घरु जाइ पावहि रंग महली गुरु मेले हरि मेलाइ ॥ ५ ॥ मन करहला तूं मीतु मेरा पाखंडु लोभु तजाइ ॥ पाखंडि लोभी मारीऐ जम डंडु देइ सजाइ ॥ ६ ॥ मन करहला मेरे प्रान तूं मैलु पाखंडु भरमु गवाइ ॥ हरि अम्रित सरु गुरि पूरिआ मिलि संगती मलु लहि जाइ ॥ ७ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ इक गुर की सिख सुणाइ ॥ इहु मोहु माइआ पसरिआ अंति साथि न कोई जाइ ॥ ८ ॥ मन करहला मेरे साजना हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ ॥ ९ ॥ मन करहला गुरि मंनिआ गुरमुखि कार कमाइ ॥ गुर आगै करि जोदड़ी जन नानक हरि मेलाइ ॥ १० ॥ १ ॥

हे मेरे ऊँट समान परदेसी मन! तू किस तरह अपनी माता समान प्रभु से मिल सकता है? जब पूर्ण सौभाग्य से गुरु मिल जाए तो ही प्रियतम (प्रभु) आलिंगन करके मिल सकता है॥ १॥ हे मेरे स्वेच्छाचारी मन! महापुरुष सतिगुरु का ध्यान करता रह॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे विचारवान भटकते मन! तू हरि राम के नाम का ध्यान कर। जिस स्थान पर कर्मों का लेखा-जोखा माँगा जाएगा, ईश्वर स्वयं तेरी मुक्ति करा देगा॥ २॥ हे मेरे स्वेच्छाचारी मन! कभी तुम अत्यंत निर्मल होते थे लेकिन अब तुझे अहंकार की मैल आकर लग गई है। प्रियतम प्रभु तेरे हृदय गृह में तेरे सामने ही प्रत्यक्ष है। उससे जुदा होकर तुम चोटें खा रहे हो॥ ३॥ हे मेरे प्यारे मन! कोशिश कर और अपने हृदय में ईश्वर की भलीभाँति खोज कर। किसी भी उपाय से वह मिल नहीं सकता, गुरु जी तेरे हृदय में ही तुझे ईश्वर के दर्शन करवा देंगे॥ ४॥ हे मेरे मन! दिन-रात प्रभु के चरणों में वृति लगा। इस प्रकार प्रियतम के महल में जाकर अपना स्थान प्राप्त कर लोगे। लेकिन गुरु ही तुझे प्रियतम प्रभु से मिला सकता है॥ ५॥ हे मेरे मन! तुम मेरे मित्र हो, इसलिए तू पाखण्ड एवं लोभ को त्याग दे। क्योंकि पाखण्डी एवं लोभी की खूब पिटाई होती है, अपनी छड़ी से मृत्यु उनको दण्ड देती है॥ ६॥ हे मेरे स्वेच्छाचारी मन! तुम मेरे प्राण हो, तू पाखण्ड एवं दुविधा की मैल त्याग दे। हरि नाम रूपी अमृत का सरोवर पूर्ण गुरु ने भरा हुआ है। अत: सत्संग में मिलने से विकारों की मैल दूर हो जाती है॥ ७॥ हे मेरे परदेसी मन! एक गुरु की सीख सुन। माया का यह मोह अत्याधिक फैला हुआ है। अन्त में प्राणी के साथ कुछ भी नहीं जाता॥ ८॥ हे स्वेच्छाचारी मन! हे मेरे साजन! ईश्वर के नाम को अपनी यात्रा खर्च के तौर पर प्राप्त करके शोभा पा। ईश्वर के दरबार में तुझे मान-सम्मान की पोशाक पहनाई जाएगी और ईश्वर स्वयं तुझे अपने आलिंगन लगाएगा॥ ९॥ हे मेरे स्वेच्छाचारी मन! जो गुरु का आदेश मानता है, वह गुरु जी के उपदेश से प्रभु की सेवा करता है। हे नानक! गुरु के समक्ष प्रार्थना कर, वह तुझे ईश्वर के साथ मिला देंगे॥ १०॥ १॥

गउड़ी महला ४ ॥ मन करहला वीचारीआ वीचारि देखु समालि ॥ बन फिरि थके बन वासीआ पिरु गुरमति रिदै निहालि ॥ १ ॥ मन करहला गुर गोविंदु समालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन करहला वीचारीआ मनमुख फाथिआ महा जालि ॥ गुरमुखि प्राणी मुकतु है हरि हरि नामु समालि ॥ २ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ सतसंगति सतिगुरु भालि ॥ सतसंगति लगि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तेरै नालि ॥ ३ ॥ मन करहला वडभागीआ हरि एक नदरि निहालि ॥ आपि छडाए छुटीऐ सतिगुर चरण समालि ॥ ४ ॥ मन करहला मेरे पिआरिआ विचि देही जोति समालि ॥ गुरि नउ निधि नामु विखालिआ हरि दाति करी दइआलि ॥ ५ ॥ मन करहला तूं चंचला चतुराई छडि विकरालि ॥ हरि हरि नामु समालि तूं हरि मुकति करे अंत कालि ॥ ६ ॥ मन करहला वडभागीआ तूं गिआनु रतनु समालि ॥ गुर गिआनु खड़गु हथि धारिआ जमु मारिअड़ा जमकालि ॥ ७ ॥ अंतरि निधानु मन करहले भ्रमि भवहि बाहरि भालि ॥ गुरु पुरखु पूरा भेटिआ हरि सजणु लधड़ा नालि ॥ ८ ॥ रंगि रतड़े मन करहले हरि रंगु सदा समालि ॥ हरि रंगु कदे न उतरै गुर सेवा सबदु समालि ॥ ९ ॥ हम पंखी मन करहले हरि तरवरु पुरखु अकालि ॥ वडभागी गुरमुखि पाइआ जन नानक नामु समालि ॥ १० ॥ २ ॥

हे मेरे विचारशील मन! विचार करके ध्यानपूर्वक देख। वनों में रहने वाले वनवासी वनों में भटकते थक गए हैं। गुरु की शिक्षा द्वारा प्रभु-पति को अपने हृदय में ही देख॥ १॥ हे मेरे स्वेच्छाचारी मन! गुरु गोविन्द को स्मरण कर॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे विचारवान मन! स्वेच्छाचारी (मोह-माया के) भारी जाल में फँसे हुए हैं। गुरमुख प्राणी मोह-माया के बन्धनों से मुक्त है चूंकि वह हरि-परमेश्वर का नाम

ही याद करता रहता है॥ २॥ हे प्यारे मन! सत्संग में सतिगुरु को खोज। संतों की संगति में रहकर भगवान के नाम का ध्यान करता रह, क्योंकि भगवान का नाम ही तेरे साथ (परलोक में) जाएगा ॥ ३॥ हे भटकते मन! जिस व्यक्ति पर भगवान अपनी एक कृपा-दृष्टि कर देता है, वह भाग्यशाली हो जाता है। यदि ईश्वर तुझे स्वयं मुक्त करे, तुम मुक्त हो जाओगे। सतिगुरु के चरणों की तू उपासना कर॥ ४॥ हे मेरे प्रिय मन! देहि में मौजूद ज्योति को ध्यानपूर्वक रख। गुरु जी ने नाम के नौ भण्डार दिखा दिए हैं। दयालु ईश्वर ने यह देन प्रदान कर दी है॥ ५॥ हे मेरे चंचल मन! अपनी विकराल चतुराई को त्याग दे। प्रभु-परमेश्वर के नाम का तू भजन कर। अंतिम समय ईश्वर का नाम तेरा कल्याण करेगा॥ ६॥ हे मेरे स्वेच्छाचारी मन! यदि तू ज्ञान रुपी रत्न की सँभाल कर ले तो तू बड़ा सौभाग्यशाली होगा। अपने हाथ में मृत्यु का वध करने वाली गुरु के ज्ञान की तलवार पकड़ कर तू यमदूत का संहार कर दे॥ ७॥ हे स्वेच्छाचारी मन! तेरे भीतर नाम का भण्डार है, तू इसे ढूँढता हुआ दुविधा में बाहर भटकता फिरता है। महापुरुष गुरु जी जब तुझे मिलेंगे तो मित्र प्रभु को अपने साथ ही पा लोगे॥ ८॥ हे मेरे भटकते मन! तू सांसारिक ऐश्वर्य-वैभव में लीन है। प्रभु के प्रेम को तू सदैव धारण कर। गुरु की सेवा करने और नाम-स्मरण द्वारा प्रभु का रंग फीका नहीं होता॥ ९॥ हे मेरे भटकते मन! हम पक्षी हैं, प्रभु-परमेश्वर एक अमर वृक्ष है। हे नानक! गुरु के माध्यम से भाग्यशाली ही नाम रूपी वृक्ष को प्राप्त करते हैं और नाम का चिंतन करते रहते हैं॥ १०॥ २॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ असटपदीआ ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

जब इहु मन महि करत गुमाना ॥ तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥ जब इहु हूआ सगल की रीना ॥ ता ते रमईआ घटि घटि चीना ॥ १ ॥ सहज सुहेला फलु मसकीनी ॥ सतिगुर अपुनै मोहि दानु दीनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब किस कउ इहु जानसि मंदा ॥ तब सगले इसु मेलहि फंदा ॥ मेर तेर जब इनहि चुकाई ॥ ता ते इसु संगि नही बैराई ॥ २ ॥ जब इनि अपुनी अपनी धारी ॥ तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥ जब इनि करणैहारु पछाता ॥ तब इस नो नाही किछु ताता ॥ ३ ॥ जब इनि अपुनो बाधिओ मोहा ॥ आवै जाइ सदा जमि जोहा ॥ जब इस ते सभ बिनसे भरमा ॥ भेदु नाही है पारब्रहमा ॥ ४ ॥ जब इनि किछु करि माने भेदा ॥ तब ते दूख डंड अरु खेदा ॥ जब इनि एको एकी बूझिआ ॥ तब ते इस नो सभु किछु सूझिआ ॥ ५ ॥ जब इहु धावै माइआ अरथी ॥ नह त्रिपतावै नह तिस लाथी ॥ जब इस ते इहु होइओ जउला ॥ पीछै लागि चली उठि कउला ॥ ६ ॥ करि किरपा जउ सतिगुरु मिलिओ ॥ मन मंदर महि दीपकु जलिओ ॥ जीत हार की सोझी करी ॥ तउ इसु घर की कीमति परी ॥ ७ ॥ करन करावन सभु किछु एकै ॥ आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥ दूरि न नेरै सभ कै संगा ॥ सचु सालाहणु नानक हरि रंगा ॥ ८ ॥ १ ॥

जब इन्सान अपने मन में घमण्ड करता है तो वह पागल व पराया होकर भटकता रहता है। परन्तु जब यह सब की चरण-धूलि हो जाता है तो वह राम के प्रत्येक हृदय में दर्शन कर लेता है॥ १॥ विनम्रता का फल प्राकृतिक तौर पर सुहावना है। यह देन मेरे सतिगुरु ने मुझे दान की है॥ १॥ रहाउ॥ जब तक मनुष्य दूसरों को बुरा समझता है तो सभी उसको (बेईमानी के) जाल में फँसाते हैं। जब वह भेदभाव के अर्थों में ख्याल करने से हट जाता है तो उससे कोई भी शत्रुता नहीं करता॥ २॥ जब वह 'मेरी अपनी' का स्वार्थ रखता है तो उस पर भारी विपदा टूट पड़ती है। लेकिन जब वह अपने प्रभु को पहचान लेता है तो इसे कोई भी जलन नहीं होती॥ ३॥ जब मनुष्य अपने आपको सांसारिक

मोह में उलझा लेता है, तो वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है और सदा मृत्यु की दृष्टि में होता है। जब समस्त दुविधाएँ उससे निवृत्त हो जाती हैं तो इसमें पारब्रह्म प्रभु के बीच कोई अन्तर नहीं रहता॥ ४॥ जब से मनुष्य ने कुछ भेदभाव नियत किया है, तब से वह दुःख, दण्ड एवं विपदा सहन करता है। जब से यह केवल एक ईश्वर को जानने लग जाता है, तब से उसको सर्वस्व का ज्ञान हो जाता है॥ ५॥ जब वह धन-दौलत हेतु भाग-दौड़ करता है तो वह संतुष्ट नहीं होता और न ही उसकी प्यास बुझती है। जब वह इससे भाग जाता है तो लक्ष्मी उठकर उसके पीछे लग जाती है॥ ६॥ जब मनुष्य को कृपा करके सतिगुरु जी मिल जाते हैं तो मनुष्य के मन-मन्दिर में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित हो जाता है। जब मनुष्य विजय एवं पराजय की अनुभूति कर लेता है तो वह इस घर के मूल्य को जान लेता है॥ ७॥ एक परमेश्वर सब कुछ करता और जीवों से करवाता है। वह स्वयं ही बुद्धि, विचार एवं विवेक है। वह कहीं दूर नहीं अपितु सबके निकट एवं पास ही है। हे नानक! सत्यस्वरूप परमेश्वर की प्रेमपूर्वक प्रशंसा कर॥ ८॥ १॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर सेवा ते नामे लागा ॥ तिस कउ मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥ मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥ १ ॥ ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥ धावत मनूआ आवै ठाइ ॥ जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥ जासु जपत इह हउमै भागै ॥ २ ॥ जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥ जासु जपत रिदै अंम्रितु संचा ॥ जासु जपत इह त्रिसना बुझै ॥ जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥ ३ ॥ जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥ जासु जपत हरि होवहि साध ॥ जासु जपत मनु सीतलु होवै ॥ जासु जपत मलु सगली खोवै ॥ ४ ॥ जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥ बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥ जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥ जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥ ५ ॥ जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥ जासु जपत इहु कालु न जोहत ॥ जासु जपत तेरा निरमल माथा ॥ जासु जपत सगला दुखु लाथा ॥ ६ ॥ जासु जपत मुसकलु कछू न बनै ॥ जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥ जासु जपत इह निरमल सोइ ॥ जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥ ७ ॥ गुरि सुभ द्रिसटि सभ ऊपरि करी ॥ जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥ अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ ८ ॥ २ ॥

गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से ही मनुष्य नाम के साथ लग जाता है। जिसके मस्तक पर भाग्यरेखाएँ विद्यमान हों केवल वहीं व्यक्ति नाम को प्राप्त करता है। वह प्रभु उसके हृदय में निवास करता है। (प्रभु के निवास से) मनुष्य का मन एवं तन शीतल तथा स्थिर हो जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! ईश्वर का ऐसा भजन गायन कर, जो लोक तथा परलोक में तेरे काम आएगा॥ १॥ रहाउ॥ जिसकी महिमा-स्तुति करने से भय एवं विपदा दूर हो जाते हैं और भटकता हुआ मन स्थिर हो जाता है। जिसकी महिमा-स्तुति करने से पीड़ा दोबारा नहीं आती। जिसकी महिमा-स्तुति करने से यह अहंकार भाग जाता है॥ २॥ जिसकी महिमा-स्तुति करने से पाँच विकार (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार) वश में आ जाते हैं। जिसकी महिमा-स्तुति करने से हरि-रस हृदय में संचित हो जाता है। जिसकी महिमा-स्तुति करने से यह तृष्णा मिट जाती है। जिसकी महिमा-स्तुति करने से प्रभु के दरबार में मनुष्य स्वीकार हो जाता है॥ ३॥ जिसकी महिमा-स्तुति करने से करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं। जिसकी महिमा-स्तुति करने से मनुष्य हरि का संत बन जाता है। जिसकी महिमा-स्तुति करने से मन शीतल हो जाता है। जिसकी महिमा-स्तुति करने से तमाम (मोह-माया की) मैल साफ हो जाती

है॥ ४॥ जिसकी महिमा–स्तुति करने से हरि रत्न प्राप्त हो जाता है। मनुष्य दोबारा प्रभु को नहीं छोड़ता और उसके साथ घुलमिल जाता है। जिसकी महिमा–स्तुति करने से अधिकतर स्वर्ग में निवास पा लेते हैं। जिसका भजन करने से मनुष्य सहज ही आत्मिक सुख में निवास करता है॥ ५॥ जिसकी महिमा–स्तुति करने से यह अग्नि प्रभावित नहीं करती। जिसका भजन करने से यह मृत्यु दृष्टि नहीं करती। जिसकी महिमा–स्तुति करने से तेरा मस्तक निर्मल हो जाएगा। जिसकी महिमा–स्तुति करने से तमाम दुःख–क्लेश दूर हो जाता है॥ ६॥ जिसकी महिमा–स्तुति करने से मनुष्य पर कोई विपदा पेश नहीं आती। जिसकी महिमा–स्तुति करने से मनुष्य अनहद ध्वनि श्रवण करता है। जिसकी महिमा–स्तुति करने से प्राणी का जीवन पवित्र हो जाता है। जिसकी महिमा–स्तुति करने से हृदय कमल सीधा (सरल) हो जाता है॥ ७॥ जिनके हृदय में ईश्वर ने अपना नाम (मंत्र) प्रदान किया है, गुरु जी ने अपनी शुभ दृष्टि उन सब पर की है। हे नानक ! कह – जिनके पूर्ण सतिगुरु जी मार्गदर्शक हैं, वह प्रभु के अखंड कीर्त्तन को अपना आहार व सुन्दर भोजन मानते हैं॥ ८॥ २॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु रिद अंतरि धारै ॥ पंच जना सिउ संगु निवारै ॥ दस इंद्री करि राखै वासि ॥ ता कै आतमै होइ परगासु ॥ १ ॥ ऐसी द्रिड़ता ता कै होइ ॥ जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजनु दुसटु जा कै एक समानै ॥ जेता बोलणु तेता गिआनै ॥ जेता सुनणा तेता नामु ॥ जेता पेखनु तेता धिआनु ॥ २ ॥ सहजे जागणु सहजे सोइ ॥ सहजे होता जाइ सु होइ ॥ सहजि बैरागु सहजे ही हसना ॥ सहजे चूप सहजे ही जपना ॥ ३ ॥ सहजे भोजनु सहजे भाउ ॥ सहजे मिटिओ सगल दुराउ ॥ सहजे होआ साधू संगु ॥ सहजि मिलिओ पारब्रहमु निसंगु ॥ ४ ॥ सहजे ग्रिह महि सहजि उदासी ॥ सहजे दुबिधा तन की नासी ॥ जा कै सहजि मनि भइआ अनंदु ॥ ता कउ भेटिआ परमानंदु ॥ ५ ॥ सहजे अम्रितु पीओ नामु ॥ सहजे कीनो जीअ को दानु ॥ सहज कथा महि आतमु रसिआ ॥ ता कै संगि अबिनासी वसिआ ॥ ६ ॥ सहजे आसणु असथिरु भाइआ ॥ सहजे अनहत सबदु वजाइआ ॥ सहजे रुण झुणकारु सुहाइआ ॥ ता कै घरि पारब्रहमु समाइआ ॥ ७ ॥ सहजे जा कउ परिओ करमा ॥ सहजे गुरु भेटिओ सचु धरमा ॥ जा कै सहजु भइआ सो जाणै ॥ नानक दास ता कै कुरबाणै ॥ ८ ॥ ३ ॥

जो व्यक्ति गुरु के शब्द को अपने हृदय में धारण कर लेता है, वह पाँच विकारों–काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से अपना संबंध तोड़ लेता है और दसों इन्द्रियों (पाँच ज्ञान व पाँच कर्म) को अपने वश में कर लेता है। उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है॥ १॥ केवल उसे ही ऐसा आत्मबल प्राप्त होता है, जिस इन्सान पर प्रभु की दया एवं कृपा होती है॥ १॥ रहाउ॥ ऐसे इन्सान के लिए मित्र एवं शत्रु एक समान हैं। जो कुछ वह बोलता है, वह ज्ञान ही कहता है। जो कुछ वह सुनता है, वह प्रभु का नाम ही सुनता रहता है। जो कुछ वह दृष्टिगोचर करता है, उस सब में ईश्वर की अनुभूति है॥ २॥ वह सुख में जागता है और सुख में ही सोता है। जो कुछ प्राकृतिक होना है, वह उसके होने पर प्रसन्न रहता है। सहज ही वह वैराग्यवान होता है और सहज ही मुस्कराता है। सुख में ही वह खामोश रहता है और सुख में ही प्रभु के नाम का जाप करता है॥ ३॥ सहज ही वह भोजन करता है और सहज ही वह प्रभु से प्रेम करता है। उसका अज्ञानता का पर्दा सहज ही सब निवृत्त हो जाता है। वह सहज ही संतों की संगति में मिल जाता है। सहज ही उसे पारब्रह्म प्रभु प्रत्यक्ष रूप से मिल जाता है॥ ४॥ आत्मिक स्थिरता में वह घर में रहता है और आत्मिक स्थिरता में ही वह निर्लिप्त रहता है। सहज ही उसके शरीर की दुविधा नाश हो जाती है। जिसके पास सहज है, प्रसन्नता उसके हृदय में उदय हो जाती है। उसको परमानन्द प्रभु मिल जाता है॥ ५॥ सहज ही वह

नाम–अमृत का पान करता है। सहज ही वह आवश्यकतामंद प्राणियों को दान देता है। प्रभु की कथा में उसकी आत्मा स्वाद प्राप्त करती है। उसके साथ अनश्वर परमात्मा वास करता है॥ ६॥ सहज ही उसको आसन अच्छा लगने लग जाता है। सहज ही उसके हृदय में अनहद शब्द गूंजने लगता है। भीतर के आत्मिक आनन्द की मधुर ध्वनि सहज ही उसको शोभायमान कर देती है। उसके हृदय–घर में पारब्रह्म प्रभु निवास करता है॥ ७॥ जिसके भाग्य में प्रभु को मिलने का विधान लिखा हुआ है, वह सहज ही सच्चे धर्म वाले गुरु जी से मिल जाता है। केवल वही ईश्वर की अनुभूति करता है, जिसे सहज की देन प्राप्त हुई है। दास नानक उस पर कुर्बान जाता है॥ ८॥ ३॥

गउड़ी महला ५ ॥ प्रथमे गरभ वास ते टरिआ ॥ पुत्र कलत्र कुटंब संगि जुरिआ ॥ भोजनु अनिक प्रकार बहु कपरे ॥ सरपर गवनु करहिगे बपुरे ॥ १ ॥ कवनु असथानु जो कबहु न टरै ॥ कवनु सबदु जितु दुरमति हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इंद्र पुरी महि सरपर मरणा ॥ ब्रहम पुरी निहचलु नही रहणा ॥ सिव पुरी का होइगा काला ॥ त्रै गुण माइआ बिनसि बिताला ॥ २ ॥ गिरि तर धरणि गगन अरु तारे ॥ रवि ससि पवणु पावकु नीरारे ॥ दिनसु रैणि बरत अरु भेदा ॥ सासत सिंम्रिति बिनसहिगे बेदा ॥ ३ ॥ तीरथ देव देहुरा पोथी ॥ माला तिलकु सोच पाक होती ॥ धोती डंडउति परसादन भोगा ॥ गवनु करैगो सगलो लोगा ॥ ४ ॥ जाति वरन तुरक अरु हिंदू ॥ पसु पंखी अनिक जोनि जिंदू ॥ सगल पासारु दीसै पासारा ॥ बिनसि जाइगो सगल आकारा ॥ ५ ॥ सहज सिफति भगति ततु गिआना ॥ सदा अनंदु निहचलु सचु थाना ॥ तहा संगति साध गुण रसै ॥ अनभउ नगरु तहा सद वसै ॥ ६ ॥ तह भउ भरमा सोगु न चिंता ॥ आवणु जावणु मिरतु न होता ॥ तह सदा अनंद अनहत आखारे ॥ भगत वसहि कीरतन आधारे ॥ ७ ॥ पारब्रहम का अंतु न पारु ॥ कउणु करै ता का बीचारु ॥ कहु नानक जिसु किरपा करै ॥ निहचल थानु साधसंगि तरै ॥ ८ ॥ ४ ॥

सर्वप्रथम मनुष्य गर्भ (की पीड़ा) निवास से मुक्ति पाकर बाहर आता है। तदुपरांत वह अपने आपको पुत्र, पत्नी एवं परिवार के मोह में फँसा लेता है। हे विनीत मनुष्य! अनेक प्रकार के भोजन एवं अनेक प्रकार के वस्त्र निश्चित ही चले जाएँगे॥ १॥ कौन–सा निवास है जो कदाचित नाश नहीं होता। वह कौन–सी वाणी है, जिससे मंदबुद्धि दूर हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ इन्द्रलोक में मृत्यु निश्चित एवं अनिवार्य है। ब्रह्मा का लोक भी स्थिर नहीं रहना। शिवलोक का भी नाश हो जाएगा। तीन गुणों वाली माया एवं दानव लुप्त हो जाएँगे॥ २॥ पहाड़, वृक्ष, धरती, आकाश और सितारे, सूर्य, चन्द्रमा, पवन, अग्नि, दिन, रात, उपवास एवं उनके भेद, शास्त्र, स्मृतियां एवं वेद समस्त नाश हो जाएँगे॥ ३॥ तीर्थ स्थान, देवते, मन्दिर एवं ग्रंथ, माला, तिलक, चिन्तनशील, पवित्र, एवं हवन करने वाले, धोती, दण्डवत–नमस्कार, अन्नदान व भोग–विलास, ये तमाम पदार्थ एवं सारा संसार ही कूच कर जाएगा॥ ४॥ जाति, वर्ण, मुसलमान एवं हिन्दु, पशु, पक्षी, अनेक योनियों के प्राणी, सारा जगत् एवं रचना जो दृष्टिगोचर होता है, ये तमाम नष्ट हो जाएँगे॥ ५॥ प्रभु की प्रशंसा, उसकी भक्ति एवं यथार्थ ज्ञान द्वारा मनुष्य सदैव सुख एवं अटल सच्चा निवास पा लेता है। वहाँ सत्संग में वह प्रेमपूर्वक ईश्वर की गुणस्तुति करता है। वहाँ वह सदैव भयरहित नगर में रहता है॥ ६॥ वहाँ कोई भय, दुविधा, शोक एवं चिन्ता नहीं। वहाँ हमेशा प्रसन्नता एवं सहज कीर्त्तन के मंच हैं। प्रभु के भक्त वहाँ रहते हैं और ईश्वर का यश गायन करना उनका आधार है॥ ७॥ सर्वोपरि परमेश्वर का कोई अन्त एवं सीमा नहीं। सृष्टि में कोई भी ऐसा प्राणी नहीं जो उसके गुणों का अन्त पाने का विचार कर सके। हे नानक! जिस पर प्रभु कृपा धारण करता है, वह संतों की संगति द्वारा भवसागर से पार हो जाता है और अटल निवास को प्राप्त कर लेता है॥ ८॥ ४॥

गउड़ी महला ५ ॥ जो इसु मारे सोई सूरा ॥ जो इसु मारे सोई पूरा ॥ जो इसु मारे तिसहि वडिआई ॥ जो इसु मारे तिस का दुखु जाई ॥ १ ॥ ऐसा कोइ जि दुबिधा मारि गवावै ॥ इसहि मारि राज जोगु कमावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो इसु मारे तिस कउ भउ नाहि ॥ जो इसु मारे सु नामि समाहि ॥ जो इसु मारे तिस की त्रिसना बुझै ॥ जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥ २ ॥ जो इसु मारे सो धनवंता ॥ जो इसु मारे सो पतिवंता ॥ जो इसु मारे सोई जती ॥ जो इसु मारे तिसु होवै गती ॥ ३ ॥ जो इसु मारे तिस का आइआ गनी ॥ जो इसु मारे सु निहचलु धनी ॥ जो इसु मारे सो वडभागा ॥ जो इसु मारे सु अनदिनु जागा ॥ ४ ॥ जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥ जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥ जो इसु मारे सोई सुगिआनी ॥ जो इसु मारे सु सहज धिआनी ॥ ५ ॥ इसु मारी बिनु थाइ न परै ॥ कोटि करम जाप तप करै ॥ इसु मारी बिनु जनमु न मिटै ॥ इसु मारी बिनु जम ते नही छुटै ॥ ६ ॥ इसु मारी बिनु गिआनु न होई ॥ इसु मारी बिनु जूठि न धोई ॥ इसु मारी बिनु सभु किछु मैला ॥ इसु मारी बिनु सभु किछु जउला ॥ ७ ॥ जा कउ भए क्रिपाल क्रिपा निधि ॥ तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ॥ गुरि दुबिधा जा की है मारी ॥ कहु नानक सो ब्रहम बीचारी ॥ ८ ॥ ५ ॥

वही व्यक्ति शूरवीर है, जो इस अहंत्व का नाश कर देता है। जो व्यक्ति इस अहंत्व को मार देता है, वही पूर्ण है। जो व्यक्ति इस अहंत्व को समाप्त कर देता है, वही यश प्राप्त कर लेता है। जो इस अहंत्व को मार देता है, वह दुखों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ १॥ कोई विरला ही ऐसा पुरुष है, जो अपने द्वैतवाद को मारकर दूर फेंकता है। इस अहंत्व को खत्म करके वह राजयोग प्राप्त करता है॥ १॥ रहाउ॥ जो इस दुविधा का नाश कर देता है, उसको कोई भय नहीं रहता। जो इस दुविधा का संहार कर देता है, वह नाम में लीन हो जाता है। जो व्यक्ति इस अहंत्व को समाप्त कर देता है, उसकी तृष्णा मिट जाती है। जो व्यक्ति इस अहंत्व का विनाश करता है, वह प्रभु के दरबार में स्वीकार हो जाता है॥ २॥ जो व्यक्ति दुविधा को मार देता है, वह धनवान हो जाता है। जो इस दुविधा का संहार कर देता है, वह आदरणीय हो जाता है। जो इस अहंत्व का नाश कर देता है, वह ब्रह्मचारी हो जाता है। जो इस दुविधा का विनाश कर देता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ जो इस अहंत्व का संहार कर देता है, उसका (संसार में) आगमन सफल हो जाता है। जो इस दुविधा का विनाश कर देता है, वही स्थिर एवं धनी है। जो इस अहंत्व का नाश कर देता है, वह बड़ा सौभाग्यशाली है। जो इस दुविधा का विनाश कर देता है, वह रात-दिन सतर्क रहता है॥ ४॥ जो इस (तेरे-मेरे) का नाश कर देता है, वह जीवित ही मुक्त हो जाता है। जो प्राणी इस अहंत्व का संहार करता है, उसका जीवन-आचरण पवित्र बन जाता है। जो इस दुविधा को तबाह कर देता है, वह ब्रह्मज्ञानी है। जो इस अहंत्व का विनाश करता है, वह प्रभु का विचारवान है॥ ५॥ इस अहंत्व के मोह का नाश किए बिना मनुष्य सफल नहीं होता, चाहे वह करोड़ों ही कर्म-धर्म, पूजा एवं तपस्या करता रहे। इस दुविधा का विनाश किए बिना प्राणी का जीवन-मृत्यु का चक्र समाप्त नहीं होता। इस (अहंत्व) का विनाश किए बिना मनुष्य मृत्यु से नहीं बच सकता॥ ६॥ इस अहंत्व का नाश किए बिना मनुष्य को (प्रभु बारे) ज्ञान प्राप्त नहीं होता। इस दुविधा का नाश किए बिना मनुष्य की अशुद्धता दूर नहीं होती। इस दुविधा का विनाश किए बिना सब कुछ मलिन रहता है। इस अहंत्व का नाश किए बिना संसार के प्रत्येक पदार्थ बंधन रूप हैं॥ ७॥ जिस मनुष्य पर कृपा का भण्डार प्रभु कृपालु हो जाता है, उसकी मुक्ति हो जाती है और वह पूर्णता सफल हो जाता है। हे नानक ! जिसकी दुविधा गुरु ने नाश कर दी है, वह प्रभु का चिन्तन करने वाला है॥ ८॥ ५॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिउ जुरै त सभु को मीतु ॥ हरि सिउ जुरै त निहचलु चीतु॥ हरि सिउ जुरै न विआपै काढा ॥ हरि सिउ जुरै त होइ निसतारा ॥ १ ॥ रे मन मेरे तूं हरि सिउ जोरु ॥ काजि तुहारै नाही होरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडे वडे जो दुनीआदार ॥ काहू काजि नाही गावार ॥ हरि का दासु नीच कुलु सुणहि ॥ तिस कै संगि खिन महि उधरहि ॥ २ ॥ कोटि मजन जा कै सुणि नाम ॥ कोटि पूजा जा कै है धिआन ॥ कोटि पुंन सुणि हरि की बाणी ॥ कोटि फला गुर ते बिधि जाणी ॥ ३ ॥ मन अपुने महि फिरि फिरि चेत ॥ बिनसि जाहि माइआ के हेत ॥ हरि अबिनासी तुमरै संगि ॥ मन मेरे रचु राम कै रंगि ॥ ४ ॥ जा कै कामि उतरै सभ भूख ॥ जा कै कामि न जोहहि दूत ॥ जा कै कामि तेरा वड गमरु ॥ जा कै कामि होवहि तूं अमरु ॥ ५ ॥ जा के चाकर कउ नही डान ॥ जा के चाकर कउ नही बान ॥ जा कै दफतरि पुछै न लेखा ॥ ता की चाकरी करहु बिसेखा ॥ ६ ॥ जा कै ऊन नाही काहू बात ॥ एकहि आपि अनेकहि भाति ॥ जा की द्रिसटि होइ सदा निहाल ॥ मन मेरे करि ता की घाल ॥ ७ ॥ ना को चतुरु नाही को मूड़ा ॥ ना को हीणु नाही को सूरा ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा ॥ सो सेवकु नानक जिसु भागा ॥ ८ ॥ ६ ॥

यदि इन्सान अपने मन को भगवान के साथ अनुरक्त कर ले तो हरेक व्यक्ति उसका मित्र बन जाता है। यदि इन्सान अपने मन को परमेश्वर के साथ जोड ले तो उसका मन स्थिर हो जाता है। फिर वह चिन्ता एवं फिक्र से मुक्त हो जाता है। यदि इन्सान ईश्वर के साथ अनुरक्त हो जाए तो उसका भवसागर से उद्धार हो जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! तू अपने आपको ईश्वर के साथ अनुरक्त कर ले। क्योंकि इसके अलावा कोई दूसरा यत्न तेरे लाभ में नहीं आना॥ १॥ रहाउ॥ हे अज्ञानी मनुष्य! बड़े-बड़े एवं ऊँचे दुनिया के लोग किसी काम के नहीं। चाहे प्रभु का सेवक निम्न कुल में सुना जाता हो परन्तु उसकी संगति में तेरा एक क्षण में ही कल्याण हो जाएगा॥ २॥ जिस (प्रभु) का नाम सुनने से करोड़ों ही स्नानों का फल मिल जाता है। जिस (प्रभु) की आराधना करोड़ों ही पूजा के समान है। परमेश्वर की वाणी को सुनना ही करोड़ों दान पुण्यों के तुल्य है। गुरु जी से प्रभु के मार्ग का बोध करोड़ों ही फलों के समान है॥ ३॥ अपने हृदय में बार-बार ईश्वर को स्मरण कर। तेरा माया का मोह नाश हो जाएगा। अनश्वर ईश्वर तेरे साथ है। हे मेरे मन! तू राम के प्रेम में लीन हो जा॥ ४॥ जिसकी सेवा करने से सारी भूख दूर हो जाती है। जिसकी सेवा-भक्ति में यमदूत नहीं देखते। जिसकी सेवा करने से तुम महान उच्चपद प्राप्त कर लोगो। जिसकी सेवा से तुम अमर हो जाओगे॥ ५॥ जिसके सेवक को दण्ड नहीं मिलता, जिसका सेवक किसी बन्धन में नहीं पड़ता। जिसके दरबार में उससे लेखा-जोखा नहीं माँगा जाता। हे मनुष्य! उसकी सेवा-भक्ति तू भलीभाँति कर॥ ६॥ जिसके घर में किसी वस्तु की कमी नहीं। अनेकों स्वरूपों में दिखने के बावजूद ईश्वर स्वयं केवल एक ही है। जिसकी कृपा-दृष्टि से तुम सदा प्रसन्न रहोगे। हे मेरे मन! तू उसकी सेवा-भक्ति करता रह॥ ७॥ अपने आप न कोई बुद्धिमान है और न ही कोई मूर्ख है। अपने आप न कोई कायर है और न ही शूरवीर। जिसके साथ प्रभु प्राणी को लगाता है, उसके साथ वह लग जाता है। हे नानक! प्रभु का सेवक केवल वही व्यक्ति बनता है जो भाग्यशाली है॥ ८॥ ६॥

गउड़ी महला ५ ॥ बिनु सिमरन जैसे सरप आरजारी॥ तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी ॥ १ ॥ एक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥ कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन ध्रिगु करम करास ॥ काग बतन बिसटा महि वास ॥ २ ॥ बिनु सिमरन भए कूकर काम ॥ साकत बेसुआ पूत निनाम ॥ ३ ॥ बिनु सिमरन जैसे सीङ छतारा ॥ बोलहि कूरु साकत मुखु कारा

॥ ४ ॥ बिनु सिमरन गरधभ की निआई ॥ साकत थान भरिसट फिराही ॥ ५ ॥ बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥ ६ ॥ बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥ ७ ॥ जिसु भइआ क्रिपालु तिसु सतसंगि मिलाइआ ॥ कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥ ८ ॥ ७ ॥

भगवान के सिमरन के बिना जैसे मनुष्य का जीवन सर्प जैसा है। वैसे ही (भगवान से टूटा हुआ) शाक्त इन्सान नाम को भुलाकर जीवन बिताता है॥ १॥ जो व्यक्ति एक पल भर के लिए भी भगवान के सिमरन में समय बिताता है, ऐसा व्यक्ति समझो लाखों, करोड़ों दिनों सदा के लिए स्थिर हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के सिमरन बिना अन्य सांसारिक कर्म करने धिक्कार योग्य हैं। जिस तरह कौए की चोंच विष्टा में होती है, वैसे ही स्वेच्छाचारी का निवास विष्टा में होता है॥ २॥ भगवान के सिमरन बिना मनुष्य के कर्म कुत्ते जैसे हो जाते हैं। शाक्त इन्सान वेश्या के पुत्र की भाँति बदनाम हो जाते हैं॥ ३॥ भगवान के सिमरन बिना प्राणी सींगों वाले मेंढे की तरह है। शाक्त इन्सान झूठ व्यक्त करता है और जिस कारण दुनिया में उसका मुँह काला किया जाता है॥ ४॥ भगवान के सिमरन के बिना शाक्त इन्सान गधे की भाँति भ्रष्ट स्थानों पर भटकता रहता है॥५॥ भगवान के सिमरन बिना इन्सान पागल कुत्ते की तरह भौंकता रहता है। शाक्त इन्सान लोभ में फँसकर बन्धनों में ही पड़ा रहता है॥ ६॥ भगवान के सिमरन बिना मनुष्य आत्मघाती है। भगवान से टूटा हुआ इन्सान नीच है और उसकी कोई कुल अथवा जाति नहीं होती॥ ७॥ जिस व्यक्ति पर ईश्वर कृपालु हो जाता है, उसको वह संतों की संगति में मिला देता है। हे नानक! गुरु जी ने समूचे संसार का कल्याण कर दिया है॥ ८॥ ७॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर के बचनि मोहि परम गति पाई ॥ गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ॥ १ ॥ गुर के बचनि धिआइओ मोहि नाउ ॥ गुर परसादि मोहि मिलिआ थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के बचनि सुणि रसन वखाणी ॥ गुर किरपा ते अंम्रित मेरी बाणी ॥ २ ॥ गुर के बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥ गुर की दइआ ते मेरा वड परतापु ॥ ३ ॥ गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥ गुर कै बचनि पेखिओ सभु ब्रहमु ॥ ४ ॥ गुर कै बचनि कीनो राजु जोगु ॥ गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥ ५ ॥ गुर के बचनि मेरे कारज सिधि ॥ गुर के बचनि पाइआ नाउ निधि ॥ ६ ॥ जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥ तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ ७ ॥ गुर कै बचनि जागिआ मेरा करमु ॥ नानक गुरु भेटिआ पारब्रहमु ॥ ८ ॥ ८ ॥

गुरु के वचन से मुझे परमगति मिल गई है। पूर्ण गुरु ने मेरा मान-सम्मान रख लिया है॥ १॥ गुरु के वचन से मैंने भगवान के नाम का ध्यान किया है। गुरु की कृपा से मुझे आत्मिक सुख का निवास प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ मैं गुरु का वचन ही सुनता और अपनी जिह्वा से उच्चरित करता रहता हूँ। गुरु की कृपा से मेरी वाणी अमृत समान मधुर हो गई है॥ २॥ गुरु के वचन से मेरा अहंकार दूर हो गया है। गुरु की कृपा से मेरा दुनिया में बड़ा प्रताप हो गया है॥ ३॥ गुरु के वचन से मेरा भ्रम मिट गया है। गुरु के वचन से मैंने सर्वव्यापक परमात्मा के दर्शन कर लिए हैं॥ ४॥ गुरु के वचन से मुझे राजयोग प्राप्त हुआ है। गुरु की संगति करने से बहुत सारे लोग भवसागर से पार हो गए हैं॥५॥ गुरु के वचन से मेरे तमाम कार्य सफल हो गए हैं। गुरु के वचन से मुझे नाम का भण्डार मिल गया है॥ ६॥ जिस किसी व्यक्ति ने भी मेरे गुरु पर आस्था धारण की है, उसकी मृत्यु का बन्धन कट गया है॥ ७॥ गुरु के वचन से ही मेरे भाग्य जाग गए हैं। हे नानक! गुरु को मिलने से ही भगवान प्राप्त हो गया है॥ ८॥ ८॥

गउड़ी महला ५ ॥ तिसु गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥ गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥ गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥ १ ॥ गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥ जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥ २ ॥ तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥ ३ ॥ तिसु गुर कै ग्रिहि ढोवउ पाणी ॥ जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥ ४ ॥ तिसु गुर कै ग्रिहि पीसउ नीत ॥ जिसु परसादि वैरी सभ मीत ॥ ५ ॥ जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥ आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥ ६ ॥ आपे लाइओ अपना पिआरु ॥ सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥ ७ ॥ कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥ कहु नानक मेरा गुरु समराथा ॥ ८ ॥ ९ ॥

उस गुरु को मैं श्वास-श्वास से याद करता रहता हूँ। गुरु मेरे प्राणों का आधार है, वह सतिगुरु ही मेरी जीवन-पूंजी है॥ १॥ रहाउ॥ मैं गुरु के दर्शन करके ही जीवित रहता हूँ। मैं गुरु के चरण धो-धोकर उस चरणामृत का पान करता हूँ॥ १॥ मैं गुरु की चरणधूलि में प्रतिदिन स्नान करता हूँ। यूं मैंने जन्म-जन्मांतरों के अहंकार की मैल को धो दिया है॥ २॥ उस गुरु को मैं पंखा करता हूँ। अपना हाथ देकर गुरु ने मुझे मोह-माया की महा अग्नि से बचा लिया है॥ ३॥ मैं उस गुरु के घर के लिए जल ढोता हूँ, जिन से मैंने ज्ञान का मार्ग समझा है॥ ४॥ उस गुरु के घर के लिए मैं सदा ही चक्की पीसता हूँ, जिसकी दया से मेरे तमाम शत्रु मित्र बन गए हैं॥ ५॥ जिस गुरु ने मुझे जीवन दिया है, उसने मुझे स्वयं खरीद लिया है और अपना सेवक बना लिया है॥ ६॥ गुरु ने मुझे स्वयं प्रेम की देन प्रदान की है। सदा-सदा मैं उस गुरु को प्रणाम करता रहता हूँ॥ ७॥ मेरे झगडे, क्लेश, भय, भ्रम एवं तमाम दुःख दूर हो गए हैं। हे नानक! मेरा गुरदेव ऐसा शूरवीर है॥ ८॥ ९॥

गउड़ी महला ५ ॥ मिलु मेरे गोबिंद अपना नामु देहु ॥ नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु असनेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना जो पहिरै खाइ ॥ जिउ कूकरु जूठन महि पाइ ॥ १ ॥ नाम बिना जेता बिउहारु ॥ जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥ २ ॥ नामु बिसारि करे रस भोग ॥ सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥ ३ ॥ नामु तिआगि करे अन काज ॥ बिनसि जाइ झूठे सभि पाज ॥ ४ ॥ नाम संगि मनि प्रीति न लावै ॥ कोटि करम करतो नरकि जावै ॥ ५ ॥ हरि का नामु जिनि मनि न आराधा ॥ चोर की निआई जम पुरि बाधा ॥ ६ ॥ लाख अडंबर बहुतु बिसथारा ॥ नाम बिना झूठे पासारा ॥ ७ ॥ हरि का नामु सोई जनु लेइ ॥ करि किरपा नानक जिसु देइ ॥ ८ ॥ १० ॥

हे मेरे गोविन्द! मुझे दर्शन देकर अपना नाम प्रदान करो। नामविहीन सांसारिक प्रेम को धिक्कार है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के नाम बिना इन्सान जो कुछ पहनता एवं खाता रहता है, वह उस कुत्ते की तरह है जो जूठे पत्तलों में मुँह मारता रहता है॥ १॥ भगवान के नाम की स्मृति बिना समस्त कार्य-व्यवहार मृतक के हार-शृंगार की तरह व्यर्थ है॥ २॥ जो व्यक्ति नाम को भुलाकर भोग-विलास में पड़ता है, उसको स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता और उसका शरीर रोगी हो जाता है॥ ३॥ प्रभु के नाम को त्याग कर यदि मनुष्य दूसरे काम धन्धे करता है, तो उसके झूठे आडम्बर सब के सब नाश हो जाते हैं॥ ४॥ जो इन्सान अपने हृदय में प्रभु का प्रेम नहीं लगाता, ऐसा व्यक्ति नरक में जाता है, चाहे वह करोड़ों ही कर्म-धर्म करता रहे॥ ५॥ जो व्यक्ति अपने हृदय में परमेश्वर के नाम की आराधना नहीं करता, वह यमलोक में चोर की भाँति पकड़ा जाता है॥ ६॥ लाखों ही आडम्बर एवं अनेक प्रसार, प्रभु के नाम बिना ये सब झूठे दिखावे हैं॥ ७॥ हे नानक! वही व्यक्ति भगवान के नाम का सिमरन करता है, जिस व्यक्ति को भगवान कृपा-दृष्टि करके देता है॥ ८॥ १०॥

गउड़ी महला ५ ॥ आदि मधि जो अंति निबाहै ॥ सो साजनु मेरा मनु चाहै ॥ १ ॥ हरि की प्रीति सदा संगि चालै ॥ दइआल पुरख पूरन प्रतिपालै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनसत नाही छोडि न जाइ ॥ जह पेखा तह रहिआ समाइ ॥ २ ॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु जीअ दाता ॥ भाई पूतु पिता प्रभु माता ॥ ३ ॥ जीवन प्रान अधार मेरी रासि ॥ प्रीति लाई करि रिदै निवासि ॥ ४ ॥ माइआ सिलक काटी गोपालि ॥ करि अपुना लीनो नदरि निहालि ॥ ५ ॥ सिमरि सिमरि काटे सभि रोग ॥ चरण धिआन सरब सुख भोग ॥ ६ ॥ पूरन पुरखु नवतनु नित बाला ॥ हरि अंतरि बाहरि संगि रखवाला ॥ ७ ॥ कहु नानक हरि हरि पदु चीन ॥ सरबसु नामु भगत कउ दीन ॥ ८ ॥ ११ ॥

जो सृष्टि के आदि, मध्य, अंतकाल में जीव का साथ निभाता है, मेरा मन तो उस साजन–परमात्मा से मिलने का ही इच्छुक बना हुआ है॥ १॥ ईश्वर का प्रेम सदा प्राणी के साथ जाता है। सर्वव्यापक एवं दया का घर परमात्मा समस्त जीव–जन्तुओं का पालन पोषण करता है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु न ही कभी मरता है और न ही अपने प्राणियों को छोड़कर कहीं जाता है। जहाँ कहीं मैं देखता हूँ, वहाँ ईश्वर मौजूद है॥ २॥ ईश्वर अति सुन्दर, बुद्धिमान, चतुर एवं प्राणदाता है। वह ही मेरा भाई, पुत्र, पिता एवं माता है॥ ३॥ वह मेरा जीवन एवं प्राणों का आधार है और वही मेरी जीवन पूँजी है। मेरे हृदय में निवास करके प्रभु ने मेरे साथ प्रीति लगाई है॥ ४॥ सृष्टि के पालनहार गोपाल ने मेरा माया का बन्धन काट दिया है। मेरी ओर कृपा–दृष्टि से देखकर प्रभु ने मुझे अपना बना लिया है॥ ५॥ उसका सिमरन करने से तमाम रोग (दुःख) दूर हो गए हैं। उसके चरणों में वृत्ति लगा कर सर्व सुख प्राप्त कर लिए जाते हैं॥ ६॥ सर्वव्यापक प्रभु सदा नवांगतुक एवं यौवन सम्पन्न है। भीतर एवं बाहर ईश्वर ही मेरा रखवाला है। हे नानक! जो प्रभु–परमेश्वर के महान पद की अनुभूति करता है, उस भक्त को वह दुनिया का सर्वस्व अपने नाम के रूप में दे देता है॥ ८॥ ११॥

रागु गउड़ी माझ महला ५   १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

खोजत फिरे असंख अंतु न पारीआ ॥ सेई होए भगत जिना किरपारीआ ॥ १ ॥ हउ वारीआ हरि वारीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि पंथु डराउ बहुतु भैहारीआ ॥ मै तकी ओट संताह लेहु उबारीआ ॥ २ ॥ मोहन लाल अनूप सरब साधारीआ ॥ गुर निवि निवि लागउ पाइ देहु दिखारीआ ॥ ३ ॥ मै कीए मित्र अनेक इकसु बलिहारीआ ॥ सभ गुण किस ही नाहि हरि पूर भंडारीआ ॥ ४ ॥ चहु दिसि जपीऐ नाउ सूखि सवारीआ ॥ मै आही ओड़ि तुहारि नानक बलिहारीआ ॥ ५ ॥ गुरि काढिओ भुजा पसारि मोह कूपारीआ ॥ मै जीतिओ जनमु अपारु बहुरि न हारीआ ॥ ६ ॥ मै पाइओ सरब निधानु अकथु कथारीआ ॥ हरि दरगह सोभावंत बाह लुडारीआ ॥ ७ ॥ जन नानक लधा रतनु अमोलु अपारीआ ॥ गुर सेवा भउजलु तरीऐ कहउ पुकारीआ ॥ ८ ॥ १२ ॥

असंख्य प्राणी भगवान को खोजते रहे हैं लेकिन किसी प्राणी को भी भगवान की महिमा का अन्त प्राप्त नहीं हुआ। जिन पर भगवान की कृपा–दृष्टि हो जाती है, ऐसे व्यक्ति ही भगवान के भक्त बनते हैं॥ १॥ हे मेरे प्रभु! मैं तुझ पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ॥ १॥ रहाउ॥ भवसागर भयानक मार्ग बारे सुन–सुन कर मैं अत्यंत भयभीत हो गया हूँ। अंतः मैंने संतों का सहारा लिया है। हे प्रभु के प्रिय जनो! आप मेरी रक्षा कीजिए॥ २॥ हे मन को मुग्ध करने वाले अनूप प्रभु! हे मोहन! तू समस्त जीवों को सहारा देने वाला है। मैं झुक–झुक कर गुरु के चरण स्पर्श करता हूँ। हे मेरे सतिगुरु! मुझे ईश्वर के

दर्शन कराओ॥ ३॥ मैंने अनेक मित्र बनाए हैं, लेकिन मैं केवल एक पर ही कुर्बान जाता हूँ। किसी में भी तमाम गुण विद्यमान नहीं। लेकिन भगवान गुणों का परिपूर्ण भण्डार है॥ ४॥ हे नानक! चारों ही दिशाओं में प्रभु के नाम का यश होता है। उसका यश करने वाले प्रसन्नता से सुशोभित होते हैं। (हे प्रभु!) मैंने तेरा ही सहारा देखा है और मैं (नानक) तुझ पर कुर्बान जाता हूँ॥ ५॥ अपनी भुजा आगे बढ़ाकर गुरु ने मुझे सांसारिक मोह के कुएँ में से बाहर निकाल लिया है। मैंने अनमोल मनुष्य जीवन विजय कर लिया है, जिसे मैं दुबारा नहीं हारूँगा॥ ६॥ मैंने सर्व भण्डार ईश्वर को पा लिया है, जिसकी कथा वर्णन से बाहर है। प्रभु के दरबार में शोभायमान होकर मैं प्रसन्नतापूर्वक अपनी भुजा लहराऊँगा॥ ७॥ नानक को अनन्त एवं अमूल्य रत्न मिल गया है कि गुरु की सेवा द्वारा भयानक संसार सागर पार किया जाता है। मैं सबको ऊँचा बोलकर यही बताता हूँ॥ ८॥ १२॥

गउड़ी महला ५ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइण हरि रंग रंगो ॥ जपि जिहवा हरि एक मंगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि हउमै गुर गिआन भजो ॥ मिलि संगति धुरि करम लिखिओ ॥ १ ॥ जो दीसै सो संगि न गइओ ॥ साकतु मूड़ु लगे पचि मुइओ ॥ २ ॥ मोहन नामु सदा रवि रहिओ ॥ कोटि मधे किनै गुरमुखि लहिओ ॥ ३ ॥ हरि संतन करि नमो नमो ॥ नउ निधि पावहि अतुलु सुखो ॥ ४ ॥ नैन अलोवउ साध जनो ॥ हिरदै गावहु नाम निधो ॥ ५ ॥ काम क्रोध लोभु मोहु तजो ॥ जनम मरन दुहु ते रहिओ ॥ ६ ॥ दूखु अंधेरा घर ते मिटिओ ॥ गुरि गिआनु द्रिड़ाइओ दीप बलिओ ॥ ७ ॥ जिनि सेविआ सो पारि परिओ ॥ जन नानक गुरमुखि जगतु तरिओ ॥ ८ ॥ १ ॥ १३ ॥

हे जीव! अपने मन को नारायण प्रभु के प्रेम में रंग ले। अपनी जिह्वा से ईश्वर के नाम का जाप करता रह और केवल उसे ही मांग॥ १॥ रहाउ॥ अपना अहंकार त्यागकर गुरु के ज्ञान का चिन्तन करता रह। आदि से जिस मनुष्य के भाग्य में लिखा होता है, केवल वही संतों की संगति में मिलता है॥ १॥ जो कुछ भी दृष्टिगोचर होता है, वह मनुष्य के साथ नहीं जाता। भगवान से टूटा हुआ मूर्ख मनुष्य गल–सड़ कर मर जाता है॥ २॥ मुग्ध करने वाले मोहन का नाम सदा के लिए मौजूद है। करोड़ों में कोई विरला ही गुरु के माध्यम से नाम को प्राप्त करता है॥ ३॥ हे जीव! संतजनों को नमन करते रहो। इस तरह तुझे नौ भण्डार एवं अनन्त सुख प्राप्त हो जाएगा॥ ४॥ अपने नयनों से संतजनों के दर्शन करो। अपने हृदय में नाम–भण्डार का यश गायन करो॥ ५॥ हे जीव! कामवासना, क्रोध, लालच एवं सांसारिक मोह को त्याग दे। इस तरह जन्म–मरण दोनों के चक्र से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी॥६॥ जब तेरे हृदय में गुरु ने ज्ञान दृढ़ कर दिया और प्रभु ज्योत प्रज्वलित कर दी तो तेरे हृदय घर से दुख का अन्धेरा निवृत्त हो जाएगा॥ ७॥ हे नानक! जिन्होंने भगवान की सेवा–भक्ति की है, वे भवसागर से पार हो गए हैं। गुरु के माध्यम से जगत् ही पार हो जाता है॥ ८॥ १॥ १३॥

महला ५ गउड़ी ॥ हरि हरि गुर गुर करत भरम गए ॥ मेरै मनि सभि सुख पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलतो जलतो तउकिआ गुर चंदनु सीतलाइओ ॥ १ ॥ अगिआन अंधेरा मिटि गइआ गुर गिआनु दीपाइओ ॥ २ ॥ पावकु सागरु गहरो चरि संतन नाव तराइओ ॥ ३ ॥ ना हम करम न धरम सुच प्रभि गहि भुजा आपाइओ ॥ ४ ॥ भउ खंडनु दुख भंजनो भगति वछल हरि नाइओ ॥ ५ ॥ अनाथह नाथ क्रिपाल दीन संम्रिथ संत ओटाइओ ॥ ६ ॥ निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइओ ॥ ७ ॥ नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरै आइओ ॥ ८ ॥ २ ॥ १४ ॥

हरि–परमेश्वर का सिमरन एवं गुरु को याद करते हुए मेरे भ्रम दूर हो गए हैं। मेरे मन ने सभी सुख प्राप्त कर लिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ (कामादिक विकारों से) मेरे सुलगते एवं दग्ध मन पर गुरु जी ने (वाणी का) जल छिड़क दिया है। गुरु जी चन्दन की भाँति शीतल हैं॥ १॥ गुरु के ज्ञान की ज्योति से मेरा अज्ञानता का अँधेरा मिट गया है॥ २॥ (विकारों का) यह अग्नि सागर बहुत गहरा है, नाम की नैया पर सवार होकर सन्तजनों ने मेरा कल्याण कर दिया है॥ ३॥ हमारे पास शुभ कर्म, धर्म तथा पवित्रता नहीं। लेकिन फिर भी परमेश्वर ने भुजा से पकड़ कर मुझे अपना बना लिया है॥ ४॥ भगवान का नाम भय को नाश करने वाला, दुःख नाश करने वाला और भक्तवत्सल है॥ ५॥ परमेश्वर अनाथों का नाथ, दीनदयालु, सर्वशक्तिमान एवं संतजनों का सहारा है॥ ६॥ हे प्रभु पातशाह ! मुझ गुणविहीन की यही प्रार्थना है कि मुझे अपने दर्शन दीजिए॥ ७॥ हे ठाकुर जी ! नानक तेरी शरण में है और तेरा सेवक (नानक) तेरे द्वार पर आया है॥ ८॥ २॥ १४॥

गउड़ी महला ५ ॥ रंग संगि बिखिआ के भोगा इन संगि अंध न जानी ॥ १ ॥ हउ संचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी ॥ रहाउ ॥ हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥ २ ॥ जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥ ३ ॥ जिउ उलझाइओ बाध बुधि का मरतिआ नही बिसरानी ॥ ४ ॥ भाई मीत बंधप सखे पाछे तिनहू कउ संपानी ॥ ५ ॥ जितु लागो मनु बासना अंति साई प्रगटानी ॥ ६ ॥ अहंबुधि सुचि करम करि इह बंधन बंधानी॥ ७॥ दइआल पुरख किरपा करहु नानक दास दसानी ॥ ८ ॥ ३ ॥ १५ ॥ ४४ ॥ जुमला

इन्सान दुनिया के विषय–विकारों के आनंद भोगने में डूब गया है तथा ज्ञानहीन (इन्सान) इन भोगों की संगति में फँसकर भगवान को नहीं जानता॥ १॥ वह कहता है कि "मैं माया एकत्र करता हूँ, मैं माया प्राप्त करता हूँ।" ऐसे ही उसकी सारी आयु बीत जाती है॥ रहाउ॥ वह कहता है, "मैं शूरवीर हूँ, मैं प्रधान हूँ, मेरे समान दूसरा कोई नहीं॥ २॥ वह कहता है, "मैं यौवन सम्पन्न, शुभ आचरण वाला एवं उच्च जाति का हूँ।" अपने हृदय में वह इस तरह अभिमानी बना हुआ है॥ ३॥ झूठी बुद्धि वाला इन्सान मोह–माया में फँसा रहता है, मृत्यु काल के समय भी वह अहंकार को नहीं भूलता॥ ४॥ वह मरने के पश्चात अपने भाई, मित्र, सगे–संबंधी एवं साथियों को ही अपनी दौलत–सम्पति सौंप देता है॥ ५॥ जिस वासना से मन जुड़ा हुआ है, मृत्यु के समय आकर प्रकट होती है॥ ६॥ मनुष्य अहंबुद्धि से शुभ कर्म करता है। फिर वह इन बन्धनों में फँसा रहता है॥ ७॥ नानक का कथन है कि हे दयालु अकालपुरुष ! मुझ पर अपनी कृपा करो और अपने दासों का दास बना लो॥ ८॥ ३॥ १५॥ ४४॥जोड़॥

१ओं सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी पूरबी छंत महला १ ॥ मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ॥ सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥ धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए ॥ सीगार मिठ रस भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥ मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥ १ ॥ मुंध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे ॥ किउ सुखु पावैगी बिनु उर धारे ॥ नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ ॥ बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥ सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ॥ नानक नामु न छोडै सा धन नामि सहजि समाणीआ ॥ २ ॥ मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥ गुर पुछि लिखउगी जीउ सबदि सनेहा ॥ सबदु साचा गुरि दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ॥ निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥ साच की मति सदा नउतन सबदि

नेहु नवेलओ ॥ नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥ ३ ॥ मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥ मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ॥ गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ साजन रहंसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ ॥ कर जोड़ि सा धन करै बिनती रैणि दिनु रसि भिंनीआ ॥ नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुंनीआ ॥ ४ ॥ १ ॥

पति-प्रभु की जुदाई में जीव-स्त्री के लिए रात्रि बड़ी दुखदायक है। अपने प्रियतम के वियोग में उसे नींद नहीं आती। अपने पति-प्रभु के विरह की वेदना में जीव-स्त्री कमजोर हो गई है। वह अपने पति-प्रभु के वियोग में यह कहती हुई कमजोर हो गई है, "मैं प्रियतम को अपने नेत्रों से किस तरह देखूँगी ? उसके लिए हार शृंगार, मीठे रस, काम-भोग एवं भोजन सभी झूठे हैं और किसी गणना में नहीं"। यौवन के अभिमान की मदिरा से मस्त हुई वह बर्बाद हो गई है। चोए हुए दुग्ध के दोबारा स्तनों में न आने की तरह उसको दोबारा अवसर नहीं मिलना। हे नानक ! जीव-स्त्री अपने प्रभु-पति से तभी मिल सकती है, यदि वह उसको अपने साथ मिलाता है। प्रभु-पति के बिना उसको नींद नहीं आती॥ १॥ अपने प्रियतम प्रभु के बिना जीव-स्त्री आदरहीन है। उसको अपने हृदय के साथ लगाए बिना वह सुख-शांति किस तरह प्राप्त कर सकती है ? पति-प्रभु के बिना घर रहने के योग्य नहीं चाहे अपनी सखियों-सहेलियों से पूछ लो। नाम के बिना कोई प्रीति एवं स्नेह नहीं। अपने सच्चे स्वामी के साथ वह सुख में वास करती है। सत्य एवं संतोष द्वारा मित्र (प्रभु) का मिलन प्राप्त होता है और गुरु के उपदेश द्वारा पति-परमेश्वर समझा जाता है। हे नानक ! जो दुल्हन (जीव-स्त्री) नाम को नहीं त्यागती, वह नाम के द्वारा प्रभु में लीन हो जाती है॥ २॥ आओ मेरी सखियो एवं सहेलियो ! हम अपने प्रियतम प्रभु का यश करें। मैं अपने गुरदेव से पूछूंगी और उनके उपदेश को अपने सन्देश के तौर पर लिखूंगी। सच्चा शब्द गुरु ने मुझे दिखा दिया है। लेकिन स्वेच्छाचारी पश्चाताप करेंगे। जब मैंने सत्य को पहचान लिया तो मेरा दौड़ता मन स्थिर हो गया है। सत्य का बोध हमेशा नवीन होता है और सत्य नाम का प्रेम सदैव नवीन रहता है। हे नानक ! सत्यस्वरूप परमेश्वर की कृपा-दृष्टि से सुख-शांति प्राप्त होती है। मेरी सखियो एवं सहेलियो ! उससे मिलो॥ ३॥ मेरी कामना पूरी हो गई है और मेरा साजन प्रभु मेरे (मन के) घर में आ गया है। पति व पत्नी के मिलन पर मंगलगीत गायन किया गया। पति-प्रभु की महिमा एवं प्रेम में मंगल (खुशी के) गीत गायन करने से जीव-स्त्री की आत्मा प्रसन्न हो गई है। मित्र प्रसन्न हैं और शत्रु (विकार) अप्रसन्न हैं। सद्पुरुष का भजन करने से सच्चा लाभ प्राप्त होता है। जीव-स्त्री हाथ जोड़कर विनती करती है कि रात-दिन वह अपने प्रभु के प्रेम में लीन रहे। हे नानक ! अब प्रियतम प्रभु एवं उसकी पत्नी (जीवात्मा) मिलकर आत्मिक आनन्द भोगते हैं और मेरी कामना पूर्ण हो गई है॥ ४॥ १॥

गउड़ी छंत महला १ ॥ सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ॥ किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ॥ धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ॥ नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनंती मेरीआ ॥ बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥ १ ॥ पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै ॥ रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥ सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ॥ सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै ॥ सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अंम्रित बाणी ॥ नानक सा धन ता पिरु रावे जा तिस कै मनि भाणी ॥ २ ॥ माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे ॥ हरि प्रीति पिआरे सबदि वीचारे तिस ही का सो होवै ॥ पुंन दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥ नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रहि बेबाणै ॥ नानक सच घरु सबदि सिञापै दुबिधा

महलु कि जाणै ॥ ३ ॥ तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥ तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥ नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥ तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिनु खिनो ॥ परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ ॥ नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मेरे पूज्य परमेश्वर ! सुनो, मैं (जीवात्मा) इस वीराने (संसार) में अकेली हूँ। हे मेरे बेपरवाह प्रभु ! मैं तेरे बिना किस तरह धैर्य कर सकती हूँ ? जीव–स्त्री अपने पति (प्रभु) के बिना नहीं रह सकती। उसके लिए रात्रि बड़ी विषम है। हे मेरे प्रियतम पति ! आप मेरी प्रार्थना सुनो, मुझे (आपके बिना) नींद नहीं आती। मेरा प्रियतम ही मुझे लुभाता है। हे मेरे प्रियतम ! तेरे अलावा कोई भी मुझे नहीं पूछता। वीराने (संसार) में मैं अकेली रोती हूँ। हे नानक ! अपने प्रियतम के बिना जीव–स्त्री बड़े कष्ट सहन करती है। वह उसको केवल तभी मिलती है, जब वह अपने साथ मिलाता है॥ १॥ पति की त्यागी हुई नारी को उसके स्वामी से कौन मिला सकता है ? प्रभु–प्रेम एवं सुन्दर नाम का स्वाद लेने से वह अपने पूज्य पति को मिल जाती है। जब जीव–स्त्री नाम से श्रृंगारी जाती है, तो वह अपने पति को पा लेती है और उसकी काया ज्ञान के दीपक से उज्जवल हो जाती है। हे मेरी सखी–सहेली ! सुन, अपने सत्यस्वरूप स्वामी एवं सच्चे की महानताएँ स्मरण करके जीव–स्त्री सुखी हो जाती है। जब सतिगुरु ने अपनी वाणी में मिलाया तो प्रभु–पति ने उसे चरण–कंवलों में मिला लिया। अमृतमयी वाणी से वह प्रफुल्लित हो गई है। हे नानक ! प्रियतम अपनी पत्नी को तभी प्रेम करता है, जब उसके हृदय को वह लुभाती है॥ २॥ मोहित करने वाली मोहिनी ने उसको बेघर कर दिया है। झूठी को झूठ ने ठग लिया है। परम प्रिय गुरु के बिना उसकी गर्दन के पास वाला फँदा किस तरह खुल सकता है ? जो प्रिय प्रभु को प्रेम करता एवं उसके नाम का भजन करता है, वह उसका हो जाता है। दान–पुण्य करने एवं अधिकतर तीर्थों पर स्नान अन्तर्मन की मलिनता को किस तरह धो सकते हैं ? नाम के बिना किसी को भी मोक्ष नहीं मिलता। दुःसाध्य इन्द्रियों को रोकने का प्रयत्न एवं वीराने में निवास का कोई लाभ नहीं। हे नानक ! सत्यस्वरूप परमात्मा का दरबार गुरु की वाणी द्वारा पहचाना जाता है। दुविधा से यह दरबार किस तरह जाना जा सकता है ?॥ ३॥ हे पूज्य परमेश्वर ! तेरा नाम सत्य है और तेरे नाम का भजन सत्य है। हे प्रभु ! तेरा दरबार सत्य है, तेरे नाम का व्यापार भी सत्य है। हे ईश्वर ! तेरे नाम का व्यापार बहुत मधुर है। तेरे भक्त दिन–रात इससे लाभ प्राप्त करते हैं। इसके अलावा मैं किसी और सौदे का ख्याल नहीं कर सकता। क्षण–क्षण प्रभु के नाम का भजन करो। सत्यस्वरूप परमेश्वर की दया एवं पूर्ण सौभाग्य से प्राणी ऐसे हिसाब की जाँच करके प्रभु को प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! नाम अमृत का महारस बड़ा मीठा है और पूर्ण गुरु के द्वारा ही सत्य प्राप्त होता है॥ ४॥ २॥

रागु गउड़ी पूरबी छंत महला ३ ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

सा धन बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे ॥ खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ॥ बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु महलु न पाईऐ ॥ जो गुरु कहै सोई परु कीजै तिसना अगनि बुझाईऐ ॥ हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविऐ सुखु न पाए ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई जिस नो आपि मिलाए ॥ १ ॥ धन रैणि सुहेलड़ीए जीउ हरि सिउ चितु लाए ॥ सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाए ॥ विचहु आपु गवाए हरि गुण गाए अनदिनु लागा भाओ ॥ सुणि सखी सहेली जीअ की मेली गुर कै सबदि समाओ ॥ हरि गुण सारी ता कंत पिआरी नामे धरी पिआरो ॥ नानक कामणि नाह पिआरी राम नामु गलि हारो ॥ २ ॥ धन एकलड़ी जीउ बिनु नाह पिआरे ॥ दूजै

भाइ मुठी जीउ बिनु गुर सबद करारे ॥ बिनु सबद पिआरे कउणु दुतरु तारे माइआ मोहि खुआई ॥ कूड़ि विगुती ता पिरि मुती सा धन महलु न पाई ॥ गुर सबदे राती सहजे माती अनदिनु रहै समाए ॥ नानक कामणि सदा रंगि राती हरि जीउ आपि मिलाए ॥ ३ ॥ ता मिलीऐ हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाए ॥ बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाए ॥ गुरु भरमु चुकाए इउ मिलीऐ माए ता सा धन सुखु पाए ॥ गुर सेवा बिनु घोर अंधारु बिनु गुर मगु न पाए ॥ कामणि रंगि राती सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानक कामणि हरि वरु पाइआ गुर कै भाइ पिआरे ॥ ४ ॥ १ ॥

जीवात्मा अपने परमेश्वर के आगे विनती करती एवं उसके गुणों को स्मरण करती है। जीवात्मा एक क्षण–पल मात्र भी अपने प्रियतम प्रभु के बिना नहीं रह सकती। अपने प्रियतम प्रभु के दर्शनों बिना जीवात्मा नहीं रह सकती। गुरु जी के बिना उसे प्रभु का मन्दिर प्राप्त नहीं होता। गुरु जी जो कुछ भी वर्णन करते हैं, वह उसको निश्चित ही करना चाहिए। क्योंकि तृष्णा की अग्नि तभी बुझ सकती है। एक ईश्वर ही सत्य है और उसके अलावा दूसरा कोई नहीं। प्रभु की सेवा–भक्ति के बिना सुख प्राप्त नहीं होता। हे नानक ! वहीं जीवात्मा गुरु की मिलाई हुई परमात्मा से मिल सकती है, जिसे परमात्मा स्वयं कृपा करके अपने साथ मिलाता है॥ १॥ उस जीवात्मा की रात्रि सुन्दर हो जाती है, जो ईश्वर से अपने मन को जोड़ती है। वह सतिगुरु की प्रेमपूर्वक सेवा करती है। वह अपनी अन्तरात्मा से अहंत्व को निवृत्त कर देती है। अपनी अन्तरात्मा से अहंत्व को दूर करके और ईश्वर की गुणस्तुति करके वह दिन रात प्रभु से प्रेम करती है। हे मेरी सखी सहेली ! हे मेरे मन की संगिनी ! तू गुरु के शब्द में लीन हो जा। यदि तू प्रभु के गुणों को स्मरण करेगी तो तू अपने पति की प्रिया हो जाओगी और तेरा प्रेम नाम के साथ हो जाएगा। हे नानक ! जिस जीवात्मा के गले में राम के नाम की माला विद्यमान है, वह अपने पति–प्रभु की प्रियतमा है॥ २॥ अपने प्रियतम पति के बिना जीवात्मा बिल्कुल अकेली है। कारगर (इष्ट फलप्रद) गुरु के शब्द के बिना वह द्वैतवाद के प्रेम कारण ठगी गई है। शब्द के बिना उसको विषम सागर से कौन पार कर सकता है ? माया के मोह ने उसको कुमार्गगामी कर दिया है। जब झूठ ने उसको नष्ट कर दिया तो पति–प्रभु ने उसको त्याग दिया। फिर जीवात्मा प्रभु का महल प्राप्त नहीं करती। लेकिन जो जीवात्मा गुरु के शब्द में अनुरक्त है, वह प्रभु के प्रेम में मतवाली हो जाती है और दिन–रात उस में लीन रहती है। हे नानक ! जो जीवात्मा उसके प्रेम में सदा अनुरक्त रहती है, पूज्य परमेश्वर उस कामिनी (जीवात्मा) को अपने साथ मिला लेता है॥ ३॥ यदि ईश्वर अपने साथ मिलाए तो ही हम उसको मिल सकते हैं। ईश्वर के बिना कौन हमें उससे मिला सकता है ? अपने प्रियतम गुरु के बिना हमारी दुविधा कौन दूर कर सकता है ? गुरु के द्वारा दुविधा निवृत्त हो जाती है। हे मेरी माता ! यह है विधि ईश्वर से मिलने की और इस तरह दुल्हन (जीवात्मा) सुख प्राप्त करती है। गुरु की सेवा के अलावा घनघोर अन्धकार है। गुरु के (मार्गदर्शन) बिना मार्ग नहीं मिलता। जो जीवात्मा प्रभु रंग में लीन है, वह गुरु के शब्द का चिन्तन करती है। हे नानक ! प्रियतम गुरु से प्रेम पाकर जीवात्मा ने प्रभु को अपने पति के तौर पर पा लिया है॥ ४॥ १॥

गउड़ी महला ३ ॥ पिर बिनु खरी निमाणी जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥ पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ु तनि न सुहाई ॥ कापरु तनि सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईऐ ॥ सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अंकि समाईऐ ॥ गुर सबदै मेला ता पिरु रावी लाहा नामु संसारे ॥ नानक कामणि नाह पिआरी जा हरि के गुण सारे ॥ १ ॥ सा धन रंगु माणे जीउ आपणे नालि पिआरे ॥ अहिनिसि रंगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ॥ गुर सबदु वीचारे हउमै मारे इन बिधि मिलहु पिआरे ॥

सा धन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरे ॥ अपुने गुर मिलि रहीऐ अंम्रितु गहीऐ दुबिधा मारि निवारे ॥ नानक कामणि हरि वरु पाइआ सगले दूख विसारे ॥ २ ॥ कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ॥ झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ कूड़ु निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ॥ गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥ हरि का नामु रिदै वसाए ऐसा करे सीगारो ॥ नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो ॥ ३ ॥ मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥ मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी ॥ पाणी अंनु न भावै मरीऐ हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ॥ गुर आगै करउ बिनंती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ ॥ आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए ॥ नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मेरी माता! प्रभु-पति के बिना मैं बहुत लज्जाजनक-सी हूँ। मैं अपने स्वामी के बिना किस तरह जीवित रह सकती हूँ? अपने पति के बिना मुझे नींद नहीं आती और कोई वस्त्र मेरे शरीर को शोभा नहीं देता। जब मैं अपने पति-प्रभु को अच्छी लगती हूँ तो मेरे शरीर पर वस्त्र बहुत शोभा देते हैं, गुरु के उपदेश से मेरा चित्त उससे एक ताल में हो गया है। यदि वह सतिगुरु की श्रद्धा से सेवा करे तो सदा सुहागिन हो जाती है और गुरु जी के अंक में लीन हो जाती है। यदि वह गुरु के शब्द द्वारा अपने प्रियतम से मिल जाए तो वह उसको प्रेम करता है। इस संसार में केवल नाम ही एक लाभदायक काम है। हे नानक! जब जीवात्मा प्रभु की गुणस्तुति करती है तो वह अपने प्रभु-पति को अच्छी लगने लग जाती है॥ १॥ अपने प्रियतम के साथ पत्नी (जीवात्मा) उसके प्रेम का आनन्द प्राप्त करती है। वह दिन-रात उसके प्रेम में अनुरक्त हुई, गुरु के शब्द का चिन्तन करती है। वह गुरु के शब्द का ध्यान करती है, तथा अपने अहंत्व को मिटा देती है और यूं अपने प्रियतम प्रभु से मिल जाती है। जो जीवात्मा मधुर सत्यनाम के प्रेम में सदैव ही अनुरक्त है, वह अपने पति-प्रभु की प्रियतमा हो जाती है। अपने गुरु की संगति में रहने से हम नाम अमृत को ग्रहण कर लेते हैं और अपनी दुविधा का नाश करते हैं। हे नानक! ईश्वर को अपने पति के तौर पर प्राप्त करके दुल्हन को तमाम दुःख भूल गए हैं॥ २॥ माया के मोह एवं लगाव के कारण पत्नी (जीवात्मा) अपने प्रियतम पति को भूल गई है। झूठी पत्नी (जीवात्मा) झूठ से जुड़ी हुई है। कपटी नारी कपट ने छल ली है। जो जीवात्मा असत्य त्याग देती है और गुरु के उपदेश पर अनुसरण करती है, वह अपने जीवन को जुए में नहीं हारती। जो जीवात्मा गुरु के शब्द का चिन्तन करती है, वह अपनी अन्तरात्मा से अहंत्व को दूर कर के सत्य में लीन हो जाती है। (हे जीवात्मा!) प्रभु के नाम को अपने हृदय मे बसा, तू ऐसा हार-शृंगार कर। हे नानक! जिस दुल्हन का सहारा सत्य नाम है, वह सहज ही स्वामी में लीन हो जाती है॥ ३॥ हे मेरे प्रियतम! मुझे दर्शन दीजिए। तेरे बिना मैं बहुत ही बेइज्जत हूँ। मेरे नयनों में नींद नहीं आती और भोजन व जल मुझे अच्छे नहीं लगते और मैं उसके विरह के शोक से मर रही हूँ। अपने प्रियतम पति के बिना सुख किस तरह मिल सकता है? मैं गुरु के समक्ष विनती करती हूँ यदि उनको अच्छा लगे। जैसे भी वह मिला सकता है, मुझे अपने साथ मिला ले। सुखों के दाता, प्रभु ने मुझे अपने साथ मिला लिया है और वह स्वयं ही मेरे हृदय घर में आकर मुझे मिल गया है। हे नानक! ऐसी जीव-स्त्री हमेशा के लिए अपने पति-प्रभु की सौभाग्यवती है। प्रियतम प्रभु न कभी मरता है और न ही अलग होता है॥ ४॥ २॥

गउड़ी महला ३ ॥ कामणि हरि रसि बेधी जीउ हरि कै सहजि सुभाए ॥ मनु मोहनि मोहि लीआ जीउ दुबिधा सहजि समाए ॥ दुबिधा सहजि समाए कामणि वरु पाए गुरमती रंगु लाए ॥ इहु सरीरु

कूड़ि कुसति भरिआ गल ताई पाप कमाए ॥ गुरमुखि भगति जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ॥ नानक कामणि पिरहि पिआरी विचहु आपु गवाए ॥ १ ॥ कामणि पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ॥ रैणि सुखि सुती जीउ अंतरि उरि धारे ॥ अंतरि उरि धारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु दुखु निवारे ॥ अंतरि महलु पिरु रावे कामणि गुरमती वीचारे ॥ अंम्रितु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे ॥ नानक सचि मिली सोहागणि गुर कै हेति अपारे ॥ २ ॥ आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे ॥ कामणि बिनउ करे जीउ सचि सबदि सीगारे ॥ सचि सबदि सीगारे हउमै मारे गुरमुखि कारज सवारे ॥ जुगि जुगि एको सचा सोई बूझै गुर बीचारे ॥ मनमुखि कामि विआपी मोहि संतापी किसु आगै जाइ पुकारे ॥ नानक मनमुखि थाउ न पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥ ३ ॥ मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥ आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा ॥ अवगण बखसणहारा कामणि कंतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई ॥ प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ सतिगुर बूझ बुझाई ॥ सदा अनंदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥ नानक सहजे हरि वरु पाइआ सा धन नउ निधि पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥

जीव-स्त्री सहज-स्वभाव ही हरि-रस में विंध गई है। मनमोहन प्रभु ने उसको मुग्ध कर दिया है और उसकी दुविधा सहज ही नाश हो गई है। जीव-स्त्री सहज ही अपनी दुविधा निवृत्त करके और अपने पति-प्रभु को प्राप्त होकर गुरु के उपदेश द्वारा आनन्द प्राप्त करती है। यह शरीर गले तक झूठ एवं असत्य से भरा हुआ है और पाप करता रहता है। गुरु के माध्यम से भक्ति करने से ही सहज ध्वनि उत्पन्न होती है। प्रभु की भक्ति के बिना (विकारों की) मैल दूर नहीं होती। हे नानक ! जो जीव-स्त्री अपने अहंकार को अपनी अन्तरात्मा से निकाल देती है, वह अपने प्रियतम की प्रिया हो जाती है॥ १॥ गुरु की प्रीति एवं प्रेम द्वारा पत्नी ने अपना प्रियतम स्वामी प्राप्त कर लिया है। गुरु को अपनी अन्तरात्मा एवं हृदय से लगाने से वह रात को सुख से सोती है। गुरु को अपनी अन्तरात्मा एवं हृदय में रात-दिन टिकाने से वह अपने प्रियतम से मिल जाती है और उसके दुःख दूर हो जाते हैं। गुरु के उपदेश का चिन्तन करने से अपने हृदय-मन्दिर में दुल्हन अपने दुल्हे (प्रभु) का प्रेम पाती है। दिन-रात वह नाम अमृत का पान करती है और अपनी दुविधा का नाश करती है। हे नानक ! गुरु के अनन्त प्रेम द्वारा सौभाग्यवती पत्नी अपने सत्यस्वरूप स्वामी को मिल जाती है॥ २॥ हे मेरे प्रियतम ! अपनी दया करो और मुझे अपने दर्शन प्रदान करें। उसको सत्य नाम से सुशोभित करने के लिए पत्नी (जीवात्मा) तुझे प्रार्थना करती है। सत्य नाम से शृंगारी हुई जीव-स्त्री अपने अहंकार को मिटा देती है और गुरु के माध्यम से उसके काम संवर जाते हैं। युग-युगों में वह एक प्रभु ही सत्य है और गुरु के प्रदान किए हुए विचार द्वारा वह जाना जाता है। स्वेच्छाचारी जीव-स्त्री कामवासना के विलास में लीन एवं सांसारिक मोह की पीड़ित की हुई है। वह किसके समक्ष जाकर पुकार करे ? हे नानक ! परम प्यारे गुरु के बिना स्वेच्छाचारी नारी को कोई सुख का ठिकाना नहीं मिलता॥ ३॥ जीव-स्त्री मूर्ख, भोली एवं गुणविहीन है। पति-प्रभु अगम्य एवं अनन्त है। ईश्वर स्वयं ही अपने मिलन में मिलाता है और स्वयं ही क्षमाशील है। जीव-स्त्री का प्रियतम पति दोषों को क्षमा करने वाला है और कण-कण में मौजूद है। गुरु ने मुझे यह बोध विदित कर दिया है कि प्रभु प्रेम, प्रीति एवं भक्ति द्वारा पाया जाता है। जो जीव-स्त्री अपने पति के स्नेह में रात-दिन लीन रहती है, वह रात-दिन प्रसन्न रहती है। हे नानक ! जो जीव-स्त्री नाम के नौ भण्डार (नवनिधि) प्राप्त कर लेती है, वह सहज ही ईश्वर को अपने पति के तौर पर पा लेती है॥ ४॥ ३॥

गउड़ी महला ३॥ माइआ सरु सबलु वरतै जीउ किउ करि दुतरु तरिआ जाइ ॥ राम नामु करि बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि पाइ ॥ सबदु खेवटु विचि पाए हरि आपि लघाए इन बिधि दुतरु तरीऐ ॥ गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ खिन महि राम नामि किलविख काटे भए पवितु सरीरा ॥ नानक राम नामि निसतारा कंचन भए मनूरा ॥ १ ॥ इसतरी पुरख कामि विआपे जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी ॥ मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुए बिनु पाणी ॥ डूबि मुए बिनु पाणी गति नही जाणी हउमै धातु संसारे ॥ जो आइआ सो सभु को जासी उबरे गुर वीचारे ॥ गुरमुखि होवै राम नामु वखाणै आपि तरै कुल तारे ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ॥ २ ॥ राम नाम बिनु को थिरु नाही जीउ बाजी है संसारा ॥ द्रिड़ु भगति सची जीउ राम नामु वापारा ॥ राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईऐ ॥ सेवा सुरति भगति इह साची विचहु आपु गवाईऐ ॥ हम मति हीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाए ॥ नानक गुरमुखि सबदि सुहावे अनदिनु हरि गुण गाए ॥ ३ ॥ आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे ॥ आपे सतिगुरु आपि सबदु जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे ॥ जुगु जुग भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाए ॥ आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराए ॥ आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए ॥ नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराए ॥ ४ ॥ ४ ॥

माया का सागर अत्याधिक हलचल मचा रहा है, भयानक जगत् सागर किस तरह पार किया जा सकता है? (हे प्राणी!) ईश्वर के नाम का जहाज बना और गुरु के शब्द को नाविक (मल्लाह) के तौर पर इसमें रख। जब गुरु के शब्द का नाविक (मल्लाह) उसमें रख लिया जाता है तो ईश्वर स्वयं भवसागर से पार कर देता है। इस विधि से अगम्य सागर पार किया जाता है। गुरु के माध्यम से ही प्रभु की भक्ति प्राप्त होती है और इस तरह मनुष्य जीवित ही मोह-माया से मृत रहता है। एक क्षण में ही राम का नाम उसके पाप मिटा देता है और उसका शरीर पवित्र हो जाता है। हे नानक! राम के नाम द्वारा उद्धार हो जाता है और मन शुद्ध हो जाता है॥ १॥ स्त्री एवं पुरुष भोग-विलास में फँसे हुए हैं और राम के नाम का भजन करने की विधि नहीं जानते। माता, पिता, पुत्र एवं भाई सर्वप्रिय हैं और वह जल के बिना ही (मोह में) डूबकर मरते हैं। जो प्राणी मोक्ष के मार्ग को नहीं जानते और अहंकार में जगत् के अन्दर भटकते रहते हैं, वे जल के बिना ही डूबकर प्राण त्याग देते हैं। जो कोई भी इस संसार में आए हैं, वे सभी चले जाएँगे। लेकिन जो गुरु जी का चिन्तन करते हैं, उनका उद्धार हो जाता है। जो व्यक्ति गुरमुख बनकर राम के नाम का भजन करता है, ऐसा व्यक्ति स्वयं पार हो जाता है और अपने समूचे वंश का भी उद्धार कर लेता है। हे नानक! नाम उसकी अन्तरात्मा में वास कर जाता है और गुरु के उपदेश द्वारा वह प्रियतम से मिल जाता है॥ २॥ राम के नाम बिना कुछ भी स्थिर नहीं। यह संसार एक लीला ही है। भगवान की भक्ति को अपने हृदय में सुदृढ़ कर और केवल राम के नाम का ही व्यापार कर। राम के नाम का व्यापार अगम्य एवं अनन्त है। गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु नाम रूपी धन प्राप्त हो जाता है। भगवान की सेवा, भगवान में सुरति लगाना और भगवान की भक्ति ही सत्य है, जिससे हम अपने अन्तर्मन से अहंत्व को दूर कर सकते हैं। हम जीव बुद्धिहीन, मूर्ख, बेवकूफ, माया-मोह में अन्धे हैं। सतिगुरु ने हमें सन्मार्ग दिखा दिया है। हे नानक! गुरुमुख ही शब्द से सुन्दर बने हैं और वे हमेशा ही भगवान की महिमा-स्तुति करते रहते हैं॥ ३॥ प्रभु स्वयं ही करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। वह स्वयं ही मनुष्य को अपने नाम से संवारता है। ईश्वर स्वयं सतिगुरु है और स्वयं ही शब्द है। युग-युग में प्रभु के भक्त उसके प्रिय हैं। युग-युग में वह अपने

प्रिय भक्तों को स्वयं शोभायमान करता है। वह स्वयं ही उनको अपनी भक्ति में लगाता है। वह स्वयं ही परम बुद्धिमान और स्वयं ही सब कुछ देखने वाला है। वह स्वयं ही मनुष्य से अपनी भक्ति करवाता है। प्रभु स्वयं ही गुणों का दाता है और बुराईयों का नाश करता है। अपने नाम को वह स्वयं ही मनुष्य के हृदय में बसाता है। हे नानक! मैं उस सत्य के पुंज ईश्वर पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ, जो स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है॥ ४॥ ४॥

गउड़ी महला ३ ॥ गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआए ॥ मंञहु दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाए ॥ घरि बैठिआ हरि पाए सदा चितु लाए सहजे सति सुभाए ॥ गुर की सेवा खरी सुखाली जिस नो आपि कराए ॥ नामो बीजे नामो जंमै नामो मंनि वसाए ॥ नानक सचि नामि वडिआई पूरबि लिखिआ पाए ॥ १ ॥ हरि का नामु मीठा पिरा जीउ जा चाखहि चितु लाए ॥ रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाए ॥ सदा हरि रसु पाए जा हरि भाए रसना सबदि सुहाए ॥ नामु धिआए सदा सुखु पाए नामि रहै लिव लाए ॥ नामे उपजै नामे बिनसै नामे सचि समाए ॥ नानक नामु गुरमती पाईऐ आपे लए लवाए ॥ २ ॥ एह विडाणी चाकरी पिरा जीउ धन छोडि परदेसि सिधाए ॥ दूजै किनै सुखु न पाइओ पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाए ॥ बिखिआ लोभि लुभाए भरमि भुलाए ओहु किउ करि सुखु पाए ॥ चाकरी विडाणी खरी दुखाली आपु वेचि धरमु गवाए ॥ माइआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु दुखु संताए ॥ नानक माइआ का दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाए ॥ ३ ॥ मनमुख मुगध गावारु पिरा जीउ सबदु मनि न वसाए ॥ माइआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए ॥ किउ मारगु पाए बिनु सतिगुर भाए मनमुखि आपु गणाए ॥ हरि के चाकर सदा सुहेले गुर चरणी चितु लाए ॥ जिस नो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाए ॥ नानक नामु रतनु जगि लाहा गुरमुखि आपि बुझाए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

हे मेरे प्रिय मन! गुरु की सेवा और भगवान के नाम का ध्यान करते रहो। हे मेरे प्रिय मन! मुझसे दूर मत जाना और हृदय-घर में बैठकर ही तू अपने ईश्वर को प्राप्त कर ले। सहज ही सत्य से हमेशा प्रभु से अपनी वृत्ति लगाने से तू अपने हृदय-घर में बसता हुआ उसे प्राप्त कर लेगा। गुरु की सेवा बड़ी सुखदायक है। गुरु की सेवा केवल वही व्यक्ति करता है, जिससे प्रभु स्वयं करवाता है। वह नाम को बोता है, नाम उसके भीतर अंकुरित होता है और नाम को ही वह अपने हृदय में बसा लेता है। हे नानक! सत्य नाम से ही शोभा प्राप्त होती है। मनुष्य वही प्राप्त करता है, जो विधाता के विधान द्वारा उसके लिए लिखा होता है॥ १॥ हे मेरे प्रिय मन! ईश्वर का नाम मधुर है। (लेकिन यह बोध तभी तुझे होगा) जब तू चित्त से लगा कर इसे (नाम-रस) चखोगे। हे प्राणघातक! अपनी जिह्वा से हरि रस चख और दूसरे रसों के आस्वादन त्याग दे। जब प्रभु को अच्छा लगेगा, तू हरि-रस को सदैव के लिए पा लोगे और तेरी जिह्वा उसके नाम से सुहावनी हो जाएगी। जो व्यक्ति नाम का ध्यान करता है और अपनी वृत्ति नाम पर केन्द्रित रखता है, वह सदैव सुख पा लेता है। प्रभु की इच्छा से प्राणी संसार में जन्म लेता है, उसकी इच्छा से ही वह प्राण त्याग देता है और उसकी इच्छा से ही वह सत्य में समा जाता है। हे नानक! नाम गुरु की शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है। अपने नाम से वह स्वयं ही मिलाता है॥ २॥ हे प्रिय मन! किसी दूसरे की सेवा बुरी है। पत्नी को त्याग कर तुम परदेस चले गए हो। हे प्रिय मन! द्वैतवाद में कभी किसी ने सुख नहीं पाया। तुम पाप एवं लालच की तृष्णा करते हो। जो विष एवं लोभ के बहकाए हुए हैं और भ्रम में कुमार्गगामी हो गए हैं, वह किस तरह सुख पा सकते हैं? किसी दूसरे की सेवा बहुत पीड़ादायक है। उसमें प्राणी अपने आपको बेच देता है और अपना धर्म गंवा

लेता है। माया के बन्धन में जकड़ा हुआ मन स्थिर नहीं रहता। क्षण-क्षण पीड़ा उसको पीड़ित करती है। हे नानक! सांसारिक माया का दुख केवल तभी दूर होता है, जब मनुष्य अपने मन को गुरु के शब्द में मिला लेता है॥ ३॥ हे मेरे प्रिय मन! स्वेच्छाचारी जीव मूर्ख एवं अनाड़ी हैं। प्रभु के नाम को तुम अपने ह्रदय में नहीं बसाते। माया के भ्रम कारण तुम (ज्ञान से) अन्धे हो गए हो। हे मेरे प्रिय मन! तुम प्रभु का मार्ग किस तरह प्राप्त कर सकते हो? जब तक सतिगुरु को अच्छा नहीं लगता, तुझे मार्ग किस तरह मिल सकता है? स्वेच्छाचारी अपने अहंत्व को प्रकट करता है। प्रभु के सेवक भक्त सदैव ही सुखी हैं। वह अपने मन को गुरु के चरणों से लगाते हैं। ईश्वर जिस व्यक्ति पर अपनी कृपा करता है, वह सदैव प्रभु की गुणस्तुति करता रहता है। हे नानक! इस संसार में केवल नाम के रत्न का ही लाभ है। गुरमुखों को प्रभु स्वयं यह सूझ प्रदान करता है॥ ४॥ ५॥ ७॥

रागु गउड़ी छंत महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मैरै मनि बैरागु भइआ जीउ किउ देखा प्रभ दाते ॥ मेरे मीत सखा हरि जीउ गुर पुरख बिधाते ॥ पुरखो बिधाता एकु सीधरु किउ मिलह तुझै उडीणीआ ॥ कर करहि सेवा सीसु चरणी मनि आस दरस निमाणीआ ॥ सासि सासि न घड़ी विसरै पलु मूरतु दिनु राते ॥ नानक सारिंग जिउ पिआसे किउ मिलीऐ प्रभ दाते ॥ १ ॥ इक बिनउ करउ जीउ सुणि कंत पिआरे ॥ मेरा मनु तनु मोहि लीआ जीउ देखि चलत तुमारे ॥ चलता तुमारे देखि मोही उदास धन किउ धीरए ॥ गुणवंत नाह दइआलु बाला सरब गुण भरपूरए ॥ पिर दोसु नाही सुखह दाते हउ विछुड़ी बुरिआरे ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु घरि आवहु नाह पिआरे ॥ २ ॥ हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी अरपी सभि देसा ॥ हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे जो प्रभ देइ सदेसा ॥ अरपिआ त सीसु सुथानि गुर पहि संगि प्रभू दिखाइआ ॥ खिन माहि सगला दूखु मिटिआ मनहु चिंदिआ पाइआ ॥ दिनु रैणि रलीआ करै कामणि मिटे सगल अंदेसा॥ बिनवंति नानकु कंतु मिलिआ लोड़ते हम जैसा ॥ ३ ॥ मैरै मनि अनदु भइआ जीउ वजी वाधाई ॥ घरि लालु आइआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥ मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मंगलु गाइआ ॥ सभ मीत बंधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइआ ॥ अनहत वाजे वजहि घर महि पिर संगि सेज विछाई ॥ बिनवंति नानकु सहजि रहै हरि मिलिआ कंतु सुखदाई ॥ ४ ॥ १ ॥

मेरे मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया है। मैं किस तरह अपने दाता प्रभु के दर्शन करूँ? पूज्य परमेश्वर, सर्वशक्तिमान विधाता ही मेरा मित्र एवं सखा है। हे भाग्य विधाता! हे श्रीधर! मैं व्याकुल तुझे किस तरह मिल सकता हूँ? हे प्रभु! मेरे हाथ तेरी सेवा-भक्ति करते हैं। मेरा सिर तेरे चरणों पर झुका हुआ है और मेरे विनीत मन में तेरे दर्शनों की अभिलाषा है। हे ईश्वर! श्वास-श्वास और एक घड़ी भर के लिए मैं तुझे विस्मृत नहीं करता। हर क्षण, मुहूर्त एवं दिन-रात मैं तुझे स्मरण करता हूँ। हे नानक! हे दाता प्रभु! हम जीव पपीहे की भाँति प्यासे हैं। तुझ से किस तरह मिलेंगे?॥ १॥ हे मेरे प्रिय प्राणनाथ! मैं एक विनती करती हूँ, इसे सुनिए। तेरी अद्भुत लीलाएँ देखकर मेरा मन एवं तन मुग्ध हो गए हैं। तेरी आश्चर्यजनक लीलाएँ देखकर मैं मुग्ध हो गई हूँ। लेकिन अब मैं तेरी (लीलाओं से) उदास हो गई हूँ, (तेरे मिलन बिना) मुझे धैर्य नहीं मिलता। हे गुणों के स्वामी! तू बड़ा दयालु, यौवन-सम्पन्न एवं समस्त गुणों से परिपूर्ण है। हे सुखों के दाता! तू दोष-रहित है। अपने पापों से मैं तुझ से जुदा हो गई हूँ। नानक विनती करते हैं, हे मेरे प्रिय पति! दया करो और मेरे ह्रदय घर में आ बसो॥ २॥ मैं अपनी आत्मा समर्पित करता हूँ, मैं अपना समूचा शरीर समर्पित करता हूँ

एवं अपनी समस्त भूमि समर्पित करता हूँ। मैं अपना शीश उस प्रिय मित्र को अर्पित करता हूँ, जो मुझे मेरे प्रभु का सन्देश दे। परम प्रतिष्ठित निवास वाले गुरु जी को मैंने अपना शीश समर्पित किया है और उन्होंने प्रभु को मेरे साथ ही दिखा दिया है। एक क्षण में मेरे तमाम दुख दूर हो गए हैं और सब कुछ जो मेरे हृदय की लालसा है, मुझे प्राप्त हो गया है। दिन-रात अब जीवात्मा आनन्द प्राप्त करती है और उसकी तमाम चिन्ताएँ मिट गई हैं। नानक वन्दना करते हैं कि उनको अपना मनपसन्द पति प्राप्त हो गया है॥ ३॥ मेरे हृदय में आनन्द विद्यमान है और बधाइयां मिल रही हैं। मेरा प्रियतम मेरे हृदय घर में आ गया है और मेरी प्यास बुझ गई है। मैं गोपाल ठाकुर जी को मिल गई हूँ और मेरी सखियों ने मंगल गीत गायन किए हैं। मेरे समस्त मित्र एवं सगे-संबंधी आनंदपूर्वक हैं और मेरे कट्टर (कामादिक) शत्रुओं का नामोनिशान मिट गया है। अब मेरे हृदय में अनहद भजन गूंज रहा है और मेरे तथा मेरे प्रियतम हेतु सेज बिछाई गई है। नानक वन्दना करते हैं कि अब मैं सहज में रहता हूँ। मेरा सुखों का दाता पति-परमेश्वर मुझे मिल गया है॥ ४॥ १॥

गउड़ी महला ५ ॥ मोहन तेंरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥ मोहन तेंरे सोहनि दुआर जीउ संत धरम साला ॥ धरम साल अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥ जह साध संत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥ करि दइआ मइआ दइआल सुआमी होहु दीन क्रिपारा ॥ बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥ १ ॥ मोहन तेंरे बचन अनूप चाल निराली ॥ मोहन तूं मानहि एकु जी अवर सभ राली ॥ मानहि त एकु अलेखु ठाकुरु जिनहि सभ कल धारीआ ॥ तुधु बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥ तूं आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥ बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥ २ ॥ मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥ मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ॥ जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इक मनि धिआवहे ॥ मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥ मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना॥ बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥ ३ ॥ मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥ मोहन पुत्र मीत भाई कुटंब सभि तारे ॥ तारिआ जहानु लहिआ अभिमानु जिनी दरसनु पाइआ ॥ जिनी तुधनो धंनु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइआ ॥ बेअंत गुण तेरे कथे न जाही सतिगुर पुरख मुरारे ॥ बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मेरे मोहन! तेरे मन्दिर बहुत ऊँचे हैं और तेरा महल अनन्त है। हे मोहन! तेरे द्वार अति सुन्दर हैं। वे साधु-संतों के लिए पूजा-स्थल हैं। तेरे मन्दिर में संतजन सदैव ही अनन्त एवं दयावान प्रभु का भजन गायन करते रहते हैं। जहाँ साधु एवं संतों की सभा होती है, वहाँ वह तेरी ही आराधना करते हैं। हे दयालु स्वामी! दया एवं कृपा करो तथा दीनों पर कृपालु हो जाओ। नानक विनती करता है - मैं तेरे दर्शनों हेतु प्यासा हूँ। तेरे दर्शन करके मैं तमाम सुख प्राप्त कर लेता हूँ॥ १॥ हे मोहन! तेरी वाणी बड़ी अनूप है और तेरी चाल (मर्यादा) बड़ी अनोखी है। हे मोहन! तू एक ईश्वर में ही आस्था रखता है, तेरे लिए शेष समस्त धूल के तुल्य है। हे मोहन! तुम एक परमात्मा की आराधना करते हो, जो अपनी अपार शक्ति द्वारा सृष्टि को सहारा दे रहा है। हे मोहन! गुरु के उपदेश द्वारा तूने आदिपुरुष सृजनहार के हृदय को जीत लिया है। हे मोहन! तू स्वयं ही (आयु भोगकर) चलते हो, स्वयं ही स्थिर व्यापक हो और स्वयं ही सृष्टि में अपनी सत्ता व्याप्त की हुई है। नानक प्रार्थना करता है - (हे प्रभु!) मेरी मान-प्रतिष्ठा की रक्षा कीजिए। तेरे समस्त सेवक तेरी शरण ढूँढते हैं॥ २॥ हे मोहन! साधु-संतों की संगति (सत्संग) तेरा भजन करती है और तेरे दर्शनों का ध्यान करती है।

हे चित्तचोर मोहन ! जो प्राणी अन्तिम समय आपको स्मरण करते हैं, यमदूत उसके निकट नहीं आता। यमकाल (मृत्यु का समय) उसे स्पर्श नहीं कर सकता, जो प्राणी एक हृदय से प्रभु का भजन करता है। हे मोहन ! जो पुरुष अपने मन, वचन एवं कर्म द्वारा तेरी आराधना करता है, वह समस्त फल प्राप्त कर लेता है। जो प्राणी मल–मूत्र की भाँति गन्दे, मूर्ख एवं बेवकूफ हैं, वह तेरे दर्शन करके श्रेष्ठ ज्ञानी हो जाते हैं। नानक प्रार्थना करता है – हे मेरे पूर्ण सर्वव्यापक भगवान ! तेरी सत्ता सदैव स्थिर है॥ ३॥ हे मोहन ! तुम (संसार रूपी) बड़े परिवार से फलित विधि से प्रफुल्लित हुए हो। हे मोहन ! तुमने पुत्र, मित्र एवं कुटंब सहित सबका कल्याण कर दिया है। हे मोहन ! तुमने समस्त विश्व का कल्याण कर दिया है। जिन्होंने तेरे दर्शन किए, तूने उनका अभिमान त्याग दिया है। हे मोहन ! जो तुझे धन्य कहते हैं अर्थात् गुणस्तुति करते हैं, यमदूत उनके कदापि निकट नहीं आता। हे मुरारी ! हे सच्चे गुरु ! तेरे गुण अनन्त हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। नानक वन्दना करता है–(हे प्रभु !) मैंने वह सहारा पकड़ा है, जिससे जुड़कर समूचे जगत् का उद्धार हो जाता है॥ ४॥ २॥

गउड़ी, महला ५ ॥ सलोकु ॥ पतित असंख पुनीत करि पुनह पुनह बलिहार ॥ नानक राम नामु जपि पावको तिन किलबिख दाहनहार ॥ १ ॥ छंत ॥ जपि मना तूं राम नराइणु गोविंदा हरि माधो ॥ धिआइ मना मुरारि मुकंदे कटीऐ काल दुख फाधो ॥ दुखहरण दीन सरण स्रीधर चरन कमल अराधीऐ ॥ जम पंथु बिखड़ा अगनि सागरु निमख सिमरत साधीऐ ॥ कलिमलह दहता सुधु करता दिनसु रैणि अराधो ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा गोपाल गोबिंद माधो ॥ १ ॥ सिमरि मना दामोदरु दुखहरु भै भंजनु हरि राइआ ॥ स्रीरंगो दइआल मनोहरु भगति वछलु बिरदाइआ ॥ भगति वछल पुरख पूरन मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ तम अंध कूप ते उधारै नामु मंनि वसाईऐ ॥ सुर सिध गण गंधरब मुनि जन गुण अनिक भगती गाइआ ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा पारब्रहम हरि राइआ ॥ २ ॥ चेति मना पारब्रहमु परमेसरु सरब कला जिनि धारी ॥ करुणा मै समरथु सुआमी घट घट प्राण अधारी ॥ प्राण मन तन जीअ दाता बेअंत अगम अपारो ॥ सरणि जोगु समरथु मोहनु सरब दोख बिदारो ॥ रोग सोग सभि दोख बिनसहि जपत नामु मुरारी ॥ बिनवंति नानक करहु किरपा समरथ सभ कल धारी ॥ ३ ॥ गुण गाउ मना अचुत अबिनासी सभ ते ऊच दइआला ॥ बिसंभरु देवन कउ एकै सरब करै प्रतिपाला ॥ प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै ॥ कालु कंटकु लोभु मोहु नासै जीअ जा कै प्रभु बसै ॥ सुप्रसंन देवा सफल सेवा भई पूरन घाला॥ बिनवंत नानक इछ पुनी जपत दीन दैआला ॥ ४ ॥ ३ ॥

श्लोक॥ हे प्रभु ! असंख्य पापियों को तुम पवित्र पावन करते हो, मैं तुम पर बार–बार कुर्बान जाता हूँ। हे नानक ! राम नाम के भजन की अग्नि पापों को जला देने वाली है॥ १॥ छंद॥ हे मेरे मन ! तू राम, नारायण, गोविन्द, हरि का भजन कर, जो सृष्टि का रक्षक एवं माया का पति है। हे मेरे मन ! तू मुकुंद मुरारी का चिन्तन कर, जो दुखदायक मृत्यु की फाँसी को काट देता है। हे प्राणी ! प्रभु के सुन्दर चरणों की आराधना कर, जो दुखों का नाशक, निर्धनों का सहारा एवं लक्ष्मी का स्वामी श्रीधर है। एक क्षण भर के लिए प्रभु को स्मरण करने से मृत्यु के विषम मार्ग एवं अग्नि के सागर से उद्धार हो जाता है। हे प्राणी ! दिन–रात प्रभु का चिन्तन कर, जो कल्पना को नाश करने वाला एवं विकारों की मैल को पवित्र पावन करने वाला है। नानक प्रार्थना करता है – हे सृष्टि के पालनहार गोपाल ! हे गोविन्द ! हे माधव ! मुझ पर कृपा करो॥ १॥ हे मेरे मन ! उस परमात्मा दामोदर को स्मरण कर, जो दुख दूर करने वाला और भय का नाश करने वाला है। हे बन्धु ! अपने स्वभाव अनुसार

दयालु प्रभु लक्ष्मीपति, मन को चुराने वाला मनोहर एवं भक्तवत्सल है। हे मन! पूर्ण परमेश्वर भक्तवत्सल है, उससे मनवांछित मनोकामनाएँ प्राप्त होती हैं। प्रभु मनुष्य को अन्धकूप से बाहर निकाल लेता है। उसके नाम को अपने हृदय में बसाओ। हे प्रभु! देवते, सिद्ध पुरुष, देवगण, गन्धर्व, मुनिजन एवं भक्त तेरी ही भक्ति का यशोगान करते हैं। नानक प्रार्थना करता है – हे मेरे पारब्रह्म! हे हरि बादशाह! मुझ पर कृपा करो॥ २॥ हे मेरे मन! उस पारब्रह्म परमेश्वर का भजन कर, जो सर्वकला सम्पूर्ण है। प्रभु समर्थावान एवं दया का पुंज है। वह प्रत्येक हृदय के प्राणों का आधार है। अनन्त, अगम्य, अपार प्रभु प्राण, मन एवं तन का दाता है। शरण में आने वाले की रक्षा करने वाला, समर्थावान एवं मन चुराने वाला मोहन तमाम दुख निवृत्त कर देता है। हे मन! मुरारी प्रभु के नाम का भजन करने से समस्त रोग, शोक एवं दोष नाश हो जाते हैं। नानक प्रार्थना करता है – हे समर्थावान प्रभु! तू सर्वकला सम्पूर्ण है, मुझ पर भी कृपा करो॥ ३॥ हे मेरे मन! जो सदा अटल रहने वाला, अनश्वर है एवं जो सर्वोपरि है, उस दया के घर परमात्मा की महिमा–स्तुति करते रहो। केवल विश्वंभर ही दुनिया को देन देने वाला है और वह समस्त जीव–जन्तुओं का पोषण करता है। परम दयालु एवं बुद्धिमान सृष्टि का पालनहार सब पर दया करता है। जिस इन्सान के हृदय में प्रभु आ बसता है, दुखदायक काल, लोभ, मोह उससे भाग जाते हैं। हे मन! जिस पर प्रभु देवा सुप्रसन्न हो जाता है, उसकी सेवा फलदायक एवं परिश्रम सम्पूर्ण हो जाता है। नानक प्रार्थना करता है–दीनदयाल ईश्वर का भजन करने से प्रत्येक इच्छा पूर्ण हो जाती है॥ ४॥ ३॥

गउड़ी महला ५ ॥ सुणि सखीए मिलि उदमु करेहा मनाइ लैहि हरि कंतै ॥ मानु तिआगि करि भगति ठगउरी मोहह साधू मंतै ॥ सखी वसि आइआ फिरि छोडि न जाई इह रीति भली भगवंतै ॥ नानक जरा मरण भै नरक निवारै पुनीत करै तिसु जंतै ॥ १ ॥ सुणि सखीए इह भली बिनंती एहु मतांतु पकाईऐ ॥ सहजि सुभाइ उपाधि रहत होइ गीत गोविंदहि गाईऐ ॥ कलि कलेस मिटहि भ्रम नासहि मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ पारब्रहम पूरन परमेसर नानक नामु धिआईऐ ॥ २ ॥ सखी इछ करी नित सुख मनाई प्रभ मेरी आस पुजाए ॥ चरन पिआसी दरस बैरागनि पेखउ थान सबाए ॥ खोजि लहउ हरि संत जना संगु संम्रिथ पुरख मिलाए ॥ नानक तिन मिलिआ सुरिजनु सुखदाता से वडभागी माए ॥ ३ ॥ सखी नालि वसा अपुने नाह पिआरे मेरा मनु तनु हरि संगि हिलिआ ॥ सुणि सखीए मेरी नीद भली मै आपनड़ा पिरु मिलिआ ॥ भ्रमु खोइओ सांति सहजि सुआमी परगासु भइआ कउलु खिलिआ ॥ वरु पाइआ प्रभु अंतरजामी नानक सोहागु न टलिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥

हे मेरी सत्संगी सखी! सुन, हम मिलकर (भजन) उपाय करके अपने पति–परमेश्वर को प्रसन्न करें। अपना अहंकार त्यागकर भक्ति को ठगबूटी बनाकर और संतों (गुरु) के मन्त्र (वाणी) द्वारा आओ हम मिलकर उसे (पति) मुग्ध कर लें। हे मेरी सत्संगी सखी! यदि वह एक बार हमारे वश में हो जाए तो वह फिर हमें त्याग कर नहीं जाएगा। उस भगवान की यही सुन्दर मर्यादा है। हे नानक! (जो उसकी शरण में आता है) परमेश्वर उस प्राणी का बुढ़ापा, मृत्यु एवं नरक का भय दूर कर देता है और वह प्रसन्न होकर उसको पवित्र कर देता है॥ १॥ हे मेरी सखियो! इस भली प्रार्थना की तरफ ध्यान दो। आओ हम मिलकर सुदृढ़ फैसला करें। रोगों से रहित होकर आओ हम सहज ही गोविन्द का यश गायन करें। इससे (हमारे विकारों का) क्लेश एवं लड़ाई झगड़े निवृत्त हो जाएँगे। दुविधा मिट जाएगी और हम मनोवांछित फल प्राप्त कर लेंगे। हे नानक! आओ हम पूर्ण पारब्रह्म परमेश्वर के नाम का ध्यान करें॥ २॥ हे मेरी सत्संगी सखी! मैं सदैव उसकी इच्छा करती हूँ और उससे सुख माँगती हूँ। प्रभु मेरी आशा पूर्ण करे। मैं प्रभु के चरणों की प्यासी हूँ और उसके दर्शनों की इच्छा करती हूँ।

उसको मैं सर्वव्यापक देखती हूँ। (हे सखी!) ईश्वर को खोज कर मैं संतों की संगति प्राप्त करती हूँ। (क्योंकि) साधु-संत ही प्राणी को समर्थावान प्रभु से मिला देते हैं। हे नानक! हे माता! वही व्यक्ति भाग्यशाली हैं जिन्हें देवलोक का स्वामी एवं सुखों का दाता प्रभु मिल जाता है॥ ३॥ हे मेरी सत्संगी सखी! अब मैं प्रियतम पति के साथ रहती हूँ। मेरा मन एवं तन प्रभु के साथ एक हो गया है। हे मेरी सत्संगी सखी! सुनो, मेरी नींद भली है, क्योंकि मुझे अपना प्रियतम पति मिल गया है। मेरी दुविधा दूर हो गई है। मुझे शांति एवं सुख प्राप्त हो गए हैं। प्रभु का मेरे भीतर प्रकाश हो गया है और मेरा कंवल रूपी हृदय प्रफुल्लित हो गया है। हे नानक! अन्तर्यामी प्रभु को मैंने वर के रूप में पा लिया है, मेरा सुहाग कभी समाप्त नहीं होगा॥ ४॥ ४॥ २॥ ५॥ ११॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥ सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ गुरदेव तीरथु अंम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा ॥ गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥ १ ॥

श्लोक॥ गुरु ही माता है, गुरु ही पिता है और गुरु ही जगत् का स्वामी परमेश्वर है। गुरु अज्ञानता का अन्धकार नाश करने वाला साथी है और गुरु ही संबंधी एवं भाई है। गुरु परमात्मा के नाम का दाता और उपदेशक है और गुरु ही अचूक मन्त्र है। गुरु सुख-शांति, सत्य एवं बुद्धि की मूर्त्त है। गुरु ऐसा पारस है, जिसको स्पर्श करने से प्राणी का उद्धार हो जाता है। गुरु ही तीर्थ एवं अमृत का सरोवर है। गुरु के ज्ञान में स्नान करने से मनुष्य अनन्त प्रभु को मिल जाता है। गुरु ही कर्त्तार एवं समस्त पापों को नाश करने वाला है। गुरु ही पतित को पवित्र पावन करने वाला है। गुरु आदि, युगों के आरम्भ से एवं युग-युग में विद्यमान है। गुरु हरि के नाम का मन्त्र है, जिसका भजन करने से प्राणी का भवसागर से उद्धार हो जाता है। हे मेरे प्रभु! कृपा करके मुझ मूर्ख एवं पापी को गुरदेव की संगति में मिला दो, जिससे मिलकर मैं जीवन के विषम सागर से पार हो जाऊँ। हे नानक! गुरु ही सतिगुरु एवं पारब्रह्म परमेश्वर है और उस गुरदेव हरि को नमस्कार है॥ १॥

सलोकु ॥ आपहि कीआ कराइआ आपहि करनै जोगु ॥ नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु ॥ १ ॥

श्लोक॥ परमात्मा ने स्वयं ही सृष्टि-रचना की है और वह स्वयं ही इसे करने में समर्थ है। हे नानक! एक परमेश्वर ही सारी सृष्टि में मौजूद है और उसके सिवाय न कोई है और न ही कोई होगा॥ १॥

पउड़ी ॥ ओअं साध सतिगुर नमसकारं ॥ आदि मधि अंति निरंकारं ॥ आपहि सुंन आपहि सुख आसन ॥ आपहि सुनत आप ही जासन ॥ आपन आपु आपहि उपाइओ ॥ आपहि बाप आप ही माइओ ॥ आपहि सूखम आपहि असथूला ॥ लखी न जाई नानक लीला ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ तेरे संतन की मनु होइ रवाला ॥ रहाउ॥

पउड़ी॥ मैं उस एक ईश्वर संत स्वरूप सतिगुरु को प्रणाम करता हूँ। निरंकार प्रभु संसार के प्रारंभ में भी स्वयं ही था, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी स्वयं ही मौजूद रहेगा। प्रभु स्वयं ही शून्य अवस्था में

होता है और स्वयं ही सुख आसन (शांत समाधि) में होता है। वह स्वयं ही अपना यश सुनता है। अपना प्रत्यक्ष रूप उसने स्वयं ही उत्पन्न किया है। वह स्वयं ही अपना पिता है और स्वयं ही अपनी माता है। वह स्वयं ही प्रत्यक्ष है और स्वयं ही अप्रत्यक्ष है। हे नानक! उस ईश्वर की लीला कथन नहीं की जा सकती। हे दीनदयालु प्रभु! मुझ पर कृपा करो चूंकि मेरा मन तेरे संतों की चरण-धूलि बन जाए॥ रहाउ॥

सलोकु ॥ निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक ॥ एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक ॥ १ ॥

श्लोक॥ निरंकार परमेश्वर स्वयं ही (सृष्टि) आकार की रचना करता है। वह स्वयं ही निर्गुण और सगुण है। हे नानक! यही बखान किया जा सकता है कि निरंकार ईश्वर अकेला स्वयं ही है चूंकि एक ईश्वर अनेक रूप बना लेता है॥ १॥

पउड़ी ॥ ओअं गुरमुखि कीओ अकारा ॥ एकहि सूति परोवनहारा ॥ भिंन भिंन त्रै गुण बिसथारं ॥ निरगुन ते सरगुन द्रिसटारं ॥ सगल भाति करि करहि उपाइओ ॥ जनम मरन मन मोहु बढाइओ ॥ दुहू भाति ते आपि निरारा ॥ नानक अंतु न पारावारा ॥ २ ॥

पउड़ी॥ एक ईश्वर ने गुरमुख बनने के लिए संसार की रचना की है। इस रचना में समस्त जीव-जन्तुओं को अपने एक ही सूत्र में पिरोया हुआ है। माया के तीन लक्षणों का उसने भिन्न-भिन्न प्रसार कर दिया है। निर्गुण से वह सगुण दृष्टिमान होता है। कर्तार ने अनेक प्रकार की संसार की रचना की है। जन्म-मरण का मूल सांसारिक मोह ईश्वर ने प्राणी के मन में खुद ही बढ़ाया हुआ है। लेकिन दोनों (जन्म-मरण) प्रकार से वह स्वयं अलग है। हे नानक! ईश्वर के आर-पार का अन्त नहीं मिल सकता॥ २॥

सलोकु ॥ सेई साह भगवंत से सचु संपै हरि रासि ॥ नानक सचु सुचि पाईऐ तिह संतन कै पासि ॥ १ ॥

श्लोक॥ वहीं व्यक्ति शाह एवं भाग्यवान है जिनके पास सत्य की संपति एवं प्रभु के नाम की पूँजी है। हे नानक! उन संतजनों के पास से ही सत्य (नाम) एवं पवित्रता की प्राप्त होती है॥ १॥

पवड़ी ॥ ससा सति सति सति सोऊ ॥ सति पुरख ते भिंन न कोऊ ॥ सोऊ सरनि परै जिह पायं ॥ सिमरि सिमरि गुन गाइ सुनायं ॥ संसै भरमु नही कछु बिआपत ॥ प्रगट प्रतापु ताहू को जापत ॥ सो साधू इह पहुचनहारा ॥ नानक ता कै सद बलिहारा ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ स-वह परमात्मा सदैव सत्य, सत्यस्वरूप एवं सत्य का पुंज है। कोई भी सत्यस्वरूप प्रभु से अलग नहीं। जिस प्राणी को ईश्वर अपनी शरण में लेता है, केवल वही प्राणी उसकी शरण में आता है। ऐसा प्राणी प्रभु की महिमा-स्तुति ही करता रहता है और दूसरों को भी उसकी महिमा सुनाता रहता है। ऐसे प्राणी को दुविधा एवं भ्रम कदाचित प्रभाव नहीं डालते। उस प्राणी को प्रभु का प्रताप प्रत्यक्ष ही दिखाई देता है। केवल वही संत है, जो इस आत्मिक अवस्था को प्राप्त करता है, हे नानक! मैं उस पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ ३॥

सलोकु ॥ धनु धनु कहा पुकारते माइआ मोह सभ कूर ॥ नाम बिहूने नानका होत जात सभु धूर ॥ १ ॥

श्लोक॥ (हे जीव!) तू हर वक्त धन की लालसा के लिए क्यों चिल्लाता रहता है। क्योंकि माया का मोह बिल्कुल मिथ्या है। हे नानक! नामविहीन सभी इन्सान धूलि होते जा रहे हैं॥ १॥

पवड़ी ॥ धधा धूरि पुनीत तेरे जनूआ ॥ धनि तेऊ जिह रुच इआ मनूआ ॥ धनु नही बाछहि सुरग न आछहि ॥ अति प्रिअ प्रीति साध रज राचहि ॥ धंधे कहा बिआपहि ताहू ॥ जो एक छाडि अन कतहि न जाहू ॥ जा कै हीऐ दीओ प्रभ नाम ॥ नानक साध पूरन भगवान ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ ध–हे प्रभु ! तेरे सन्तों–भक्तों की चरण–धूलि पवित्र पावन है। जिनके हृदय में इस धूलि की इच्छा है, वे भाग्यशाली हैं। ऐसे लोग धन को नहीं चाहते और स्वर्ग की भी चाहत नहीं रखते। क्योंकि वह प्रिय प्रभु के प्रेम एवं संतों की चरण–धूलि में मग्न रहते हैं। जो लोग ईश्वर का सहारा त्याग कर कहीं ओर नहीं जाते, सांसारिक माया का बन्धन उन पर प्रभाव नहीं डाल सकता। हे नानक ! जिस व्यक्ति के हृदय में प्रभु ने अपना नाम बसा दिया है, वही व्यक्ति भगवान के पूर्ण संत हैं॥ ४॥

सलोक ॥ अनिक भेख अरु ङिआन धिआन मनहठि मिलिअउ न कोइ ॥ कहु नानक किरपा भई भगतु ङिआनी सोइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ अनेक धार्मिक वेश धारण करने एवं ज्ञान, ध्यान एवं मन के हठ से भगवान में सुरति लगाने से कोई भी पुरुष ईश्वर से नहीं मिल सकता। हे नानक ! जिस व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा हो जाती है, वही भक्त एवं ज्ञानी है॥ १॥

पउड़ी ॥ ङंङा ङिआनु नही मुख बातउ ॥ अनिक जुगते सासव करि भातउ ॥ ङिआनी सोइ जा कै द्रिड़ सोऊ ॥ कहत सुनत कछु जोगु न होऊ ॥ ङिआनी रहत आगिआ द्रिड़ु जा कै ॥ उसन सीत समसरि सभ ता कै ॥ ङिआनी ततु गुरमुखि बीचारी ॥ नानक जा कउ किरपा धारी ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ ङ– ज्ञान केवल मौखिक बातों से प्राप्त नहीं होता। शास्त्रों की बताई हुई अनेकों विधियों की युक्तियों द्वारा भी प्राप्त नहीं होता। केवल वही ज्ञानी है, जिसके हृदय में प्रभु बसा हुआ है। कहने एवं सुनने से मनुष्य मूल रूप से ही योग्य नहीं होता। जो मनुष्य प्रभु की आज्ञा मानने में तत्पर रहता है, वही ईश्वर का वास्तविक ज्ञानी है। गर्मी और सर्दी (दुःख–सुख) सभी उसके लिए एक समान हैं। हे नानक ! ज्ञानी वहीं है, जो गुरु की शरण में प्रभु का भजन करता है और जिस पर वह अपनी कृपा करता है॥ ५॥

सलोकु ॥ आवन आए स्रिसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर ॥ नानक गुरमुखि सो बुझै जा कै भाग मथोर ॥ १ ॥

श्लोक॥ आने वाले सृष्टि में आते हैं परन्तु जीवन का सन्मार्ग समझे बिना वे जानवर एवं पशुओं की भाँति ही रहे हैं। हे नानक ! गुरु की शरण में केवल वही प्रभु को समझता है, जिसके मस्तक पर भाग्यरेखाएँ विद्यमान होती हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ या जुग महि एकहि कउ आइआ ॥ जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥ गरभ कुंट महि उरध तप करते ॥ सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥ उरझि परे जो छोडि छडाना ॥ देवनहारु मनहि बिसराना ॥ धारहु किरपा जिसहि गुसाई ॥ इत उत नानक तिसु बिसरहु नाही ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ इस जगत् में मनुष्य ने प्रभु का भजन करने के लिए जन्म लिया है। लेकिन जन्म काल से ही मोह लेने वाली माया ने उसको मुग्ध कर लिया है। माता के गर्भ में विपरीत लटका हुआ प्राणी तपस्या करता था। वहाँ वह अपनी हर सांस से प्रभु की आराधना करता रहता था। वह उस माया से उलझ गया

है, जिसे उसने अवश्य छोड़ जाना है। दाता प्रभु को वह अपने हृदय से विस्मृत कर देता है। हे नानक! गोसाई जिस व्यक्ति पर कृपा धारण करता है, वह लोक-परलोक में उसे नहीं भूलते॥ ६॥

सलोकु ॥ आवत हुकमि बिनास हुकमि आगिआ भिंन न कोइ ॥ आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मनि सोइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ इन्सान ईश्वर के हुक्म से दुनिया में जन्म लेता है, उसके हुक्म से वह मृत्यु प्राप्त करता है। कोई भी इन्सान ईश्वर के हुक्म का विरोध नहीं कर सकता। हे नानक! जिस इन्सान के हृदय में ईश्वर का निवास हो जाता है, उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है॥ १॥

पउड़ी ॥ एऊ जीअ बहुतु ग्रभ वासे ॥ मोह मगन मीठ जोनि फासे ॥ इनि माइआ त्रै गुण बसि कीने ॥ आपन मोह घटे घटि दीने ॥ ए साजन कछु कहहु उपाइआ ॥ जा ते तरउ बिखम इह माइआ ॥ करि किरपा सतसंगि मिलाए ॥ नानक ता कै निकटि न माए ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ ये प्राणी अनेक योनियों में वास करते हैं। मीठे मोह में मस्त होकर प्राणी योनियों के चक्र में फँस जाते हैं। इस मोहिनी ने (प्राणियों को) अपने तीन गुणों के वश में किया हुआ है। इस मोहिनी ने प्रत्येक प्राणी के हृदय में अपना मोह टिका दिया है। हे मित्र! मुझे कोई ऐसा उपाव बता, जिससे मैं मोहिनी के विषम सागर से पार हो जाऊँ। हे नानक! जिस व्यक्ति पर ईश्वर कृपा-दृष्टि करके सत्संग में मिलाता है, माया उसके निकट नहीं आती॥ ७॥

सलोकु ॥ किरत कमावन सुभ असुभ कीने तिनि प्रभि आपि ॥ पसु आपन हउ हउ करै नानक बिनु हरि कहा कमाति ॥ १ ॥

श्लोक॥ ईश्वर स्वयं (प्राणी में विद्यमान होकर) उससे शुभ-अशुभ कर्म करवाता है। लेकिन इस बात का मूर्ख मनुष्य अहंकार एवं अभिमान करता है। लेकिन हे नानक! भगवान के अलावा प्राणी कुछ भी करने में सक्षम नहीं॥ १॥

पउड़ी ॥ एकहि आपि करावनहारा ॥ आपहि पाप पुंन बिसथारा ॥ इआ जुग जितु जितु आपहि लाइओ ॥ सो सो पाइओ जु आपि दिवाइओ ॥ उआ का अंतु न जानै कोऊ ॥ जो जो करै सोऊ फुनि होऊ ॥ एकहि ते सगला बिसथारा ॥ नानक आपि सवारनहारा ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ एक ईश्वर ही प्राणियों से कर्म करवाता है। वह स्वयं पाप एवं पुण्य का प्रसार करता है। इस मनुष्य जन्म में प्रभु जिस-जिस ओर स्वयं लगाता है, उधर ही प्राणी लगते हैं। जो कुछ ईश्वर स्वयं प्रदान करता है, वह वही कुछ प्राप्त करते हैं। उस ईश्वर का अन्त कोई भी नहीं जानता। जो कुछ प्रभु (संसार में) करता है, आखिरकार वही कुछ होता है। इस जगत् का प्रसार केवल ईश्वर द्वारा ही हुआ है। हे नानक! ईश्वर स्वयं ही जीवों का जीवन संवारने वाला है॥ ८॥

सलोकु ॥ राचि रहे बनिता बिनोद कुसम रंग बिख सोर ॥ नानक तिह सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥ १ ॥

श्लोक॥ मनुष्य नारियों एवं ऐश्वर्य-विलासों में लीन रहता है। विषय-विकारों का शोर-शराबा कुसुंभे के फूल की तरह क्षणभंगुर है। हे नानक! मैं तो उस ईश्वर की शरण लेता हूँ, जिसकी कृपा से अहंकार एवं मोह दूर हो जाते हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥ जिह बिधि कतहू न छूटीऐ साकत तेऊ कमाहि ॥ हउ हउ करते करम रत ता को भारु अफार ॥ प्रीति नही जउ नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥ बाधे जम की जेवरी मीठी माइआ रंग ॥ भ्रम के मोहे नह बुझहि सो प्रभु सदहू संग ॥ लेखै गणत न छूटीऐ काची भीति न सुधि ॥ जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल बुधि ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे मन! परमेश्वर के अलावा जिस किसी (मोह) में भी तू प्रवृत्त होता है, वहाँ ही तुझे बन्धन जकड लेते हैं। शाक्त इन्सान वही कर्म करता है, जिससे उसको कभी मुक्ति नहीं मिल सकती। कर्मों के प्रेमी अपने शुभ–अशुभ कर्मों का अहंकार करते रहते हैं, इस अहंकार का असह्य बोझ उन्हें ही सहन करना पडता है। जब प्रभु के नाम से प्रेम नहीं तो यह कर्म विकार भरे हैं। जो मधुर माया से प्रेम करते हैं, वे मृत्यु की फॉसी में फँसे हुए हैं। दुविधा में फँसे हुए प्राणी समझते नहीं कि ईश्वर सदैव उनके साथ है। जब उनके कुकर्मों का लेखा–जोखा किया जाता है उनको मुक्ति नहीं मिलती। गारे की कच्ची दीवार कभी स्वच्छ नहीं हो सकती। हे नानक! जिस मनुष्य को प्रभु स्वयं सूझ प्रदान करता है, उस गुरमुख की बुद्धि निर्मल हो जाती है॥ ६॥

सलोकु ॥ टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ॥ जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु ॥ १ ॥

श्लोक॥ जिस जीव के (माया के) बन्धन कट जाते हैं, उसे संतों की संगति मिल जाती है। हे नानक! जो जीव एक ईश्वर के प्रेम रंग में मग्न रहते हैं, उनका रंग बहुत गहरा होता है, जो कभी उतरता नहीं॥ १॥

पउड़ी ॥ रारा रंगहु इआ मनु अपना ॥ हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥ रे रे दरगह कहै न कोऊ ॥ आउ बैठु आदरु सुभ देऊ ॥ उआ महली पावहि तू बासा ॥ जनम मरन नह होइ बिनासा ॥ मसतकि करमु लिखिओ धुरि जा कै ॥ हरि संपै नानक घरि ता कै ॥ १० ॥

पउड़ी॥ र – अपने इस मन को प्रभु के प्रेम से रंग लो। अपनी रसना से प्रभु–परमेश्वर के नाम का बार–बार भजन करो। प्रभु के दरबार में तुझे कोई निरादर के शब्द नहीं बोलेगा। सभी यह संबोधन करके तेरा स्वागत करेंगे, "आइए पधारिए"। प्रभु के उस दरबार में तुझे निवास मिलेगा। प्रभु के दरबार में कोई जन्म, मृत्यु एवं विनाश नहीं। हे नानक! जिसके माथे पर शुभ कर्मों द्वारा कृपा का लेख लिखा होता है, उसी व्यक्ति के हृदय–घर में हरि–नाम रूपी संपति होती है॥ १०॥

सलोकु ॥ लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥ लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक! जो व्यक्ति लालच, झूठ, पाप, सांसारिक मोह के बन्धनों में फँस जाते हैं, उन ज्ञानहीन मूर्खों को ये विकार दबाव डालते रहते हैं। माया में फँसे हुए वे कुकर्मों में ही लगे रहते हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ लला लपटि बिखै रस राते ॥ अहंबुधि माइआ मद माते ॥ इआ माइआ महि जनमहि मरना ॥ जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥ कोऊ ऊन न कोऊ पूरा ॥ कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक ठाकुर सदा अलिपना ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ ल – मनुष्य पाप से भरे विकारों में लिपटे रहते हैं। वह अहंबुद्धि एवं माया के नशे में मग्न रहते हैं। इस मोहिनी के जाल में फँसकर प्राणी (जन्म–मरण के चक्र में पड़कर) संसार में

आते–जाते रहते हैं। (लेकिन प्राणी के वश में कुछ नहीं) जैसे जैसे ईश्वर की आज्ञा होती है, वैसे ही प्राणी करते हैं। कोई भी प्राणी अधूरा नहीं और कोई पूर्ण भी नहीं। अपने आप न कोई चतुर है और न ही कोई मूर्ख। जहाँ कहीं भी प्रभु प्राणी को लगाता है, वहीं वह लग जाता है। हे नानक! ईश्वर हमेशा (माया के प्रभाव से) निर्लिप्त रहता है॥ ११॥

सलोकु ॥ लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गंभीर अथाह ॥ दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह ॥ १ ॥

श्लोक॥ वह गोविन्द गोपाल हम सबका प्रिय है। मेरा प्रियतम प्रभु सर्वज्ञाता, धैर्यवान एवं विशाल हृदय वाला तथा अथाह है। हे नानक! उस जैसा दूसरा कोई नहीं। वह बिल्कुल बेपरवाह है॥ १॥

पउड़ी ॥ लला ता कै लवै न कोऊ ॥ एकहि आपि अवर नह होऊ ॥ होवनहारु होत सद आइआ ॥ उआ का अंतु न काहू पाइआ ॥ कीट हसति महि पूर समाने ॥ प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥ जा कउ दीनो हरि रसु अपना ॥ नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ ल – उसके समान दूसरा कोई नहीं। वह ईश्वर एक है, उस जैसा दूसरा कोई होगा भी नहीं। वह अब भी अस्तित्व में है, वही होगा और सदा होता आया है। उसका अन्त कभी किसी को भी नहीं मिला। चींटी से लेकर हाथी तक सब में प्रभु मौजूद है। सर्वव्यापक परमेश्वर हर तरफ प्रत्यक्ष गोचर है। हे नानक! जिस किसी को भी प्रभु अपना हरि–रस प्रदान करता है, वह गुरु के आश्रय द्वारा हरि–परमेश्वर का भजन करता रहता है॥ १२॥

सलोकु ॥ आतम रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु ॥ नानक धनि धनि धंनि जन आए ते परवाणु ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो व्यक्ति प्रभु के अमृत के स्वाद को जानता है, वह सहज ही हरि के प्रेम का आनंद लेता है। हे नानक! वे व्यक्ति भाग्यशाली हैं एवं उनका इस संसार में जन्म लेना सफल है॥ १॥

पउड़ी ॥ आइआ सफल ताहू को गनीऐ ॥ जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ ॥ आइ बसहि साधू कै संगे ॥ अनदिनु नामु धिआवहि रंगे ॥ आवत सो जनु नामहि राता ॥ जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥ एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥ नानक हरि कै दरसि समाइआ ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ जिसकी जिह्वा प्रभु–परमेश्वर की महिमा करती रहती है, उसका इस जगत् में आगमन सफल गिना जाता है। वह (संसार में) आकर संतों से संगति करता है और रात–दिन प्रेमपूर्वक नाम का ध्यान करता है। उस जीव का जन्म सफल है, जो प्रभु के नाम में मग्न हुआ है और जिस पर विधाता की दया एवं कृपा हुई है। ऐसा जीव (संसार में) एक बार ही जन्म लेता है और पुनः योनि के चक्र में नहीं पड़ता। हे नानक! ऐसा व्यक्ति प्रभु के दर्शनों में ही समा जाता है॥ १३॥

सलोकु ॥ यासु जपत मनि होइ अनंदु बिनसै दूजा भाउ ॥ दूख दरद त्रिसना बुझै नानक नामि समाउ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक! जिस ईश्वर का भजन करने से मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है, द्वैतवाद का मोह मिट जाता है एवं दुःख, दर्द व सांसारिक तृष्णा का नाश हो जाता है, उसके नाम में समा जाओ॥ १॥

पउड़ी ॥ यया जारउ दुरमति दोऊ ॥ तिसहि तिआगि सुख सहजे सोऊ ॥ यया जाइ परहु संत सरना ॥ जिह आसर इआ भवजलु तरना ॥ यया जनमि न आवै सोऊ ॥ एक नाम ले मनहि परोऊ ॥ यया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥ नानक तिह सुखु पाइआ जा कै हीअरै एक ॥ १४ ॥

पउडी॥ य – अपनी दुर्बुद्धि एवं द्वैतवाद को जला दो। इनको त्याग कर सहज सुख में निद्रा करो। य – जाकर उन संतों की शरण में पड़ जाओ, जिनकी सहायता से भवसागर से पार हुआ जा सकता है। य – जिस व्यक्ति ने एक ईश्वर का नाम अपने मन में पिरो लिया है, वह बार–बार संसार में जन्म नहीं लेता। य – पूर्ण गुरु के आश्रय से अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ नहीं जाता। हे नानक! जिसके हृदय में एक परमेश्वर ही विद्यमान है, वह आत्मिक सुख प्राप्त कर लेता है॥ १४॥

सलोकु ॥ अंतरि मन तन बसि रहे ईत ऊत के मीत ॥ गुरि पूरै उपदेसिआ नानक जपीऐ नीत ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो इस लोक एवं परलोक में जीव का मित्र है, वह उसके मन–तन में रहता है। हे नानक! पूर्ण गुरु ने मुझे हमेशा प्रभु का भजन करने का उपदेश प्रदान किया है॥ १॥

पउड़ी ॥ अनदिनु सिमरहु तासु कउ जो अंति सहाई होइ ॥ इह बिखिआ दिन चारि छिअ छाडि चलिओ सभु कोइ ॥ का को मात पिता सुत धीआ ॥ ग्रिह बनिता कछु संगि न लीआ ॥ ऐसी संचि जु बिनसत नाही ॥ पति सेती अपुनै घरि जाही ॥ साधसंगि कलि कीरतनु गाइआ ॥ नानक ते ते बहुरि न आइआ ॥ १५ ॥

पउडी॥ रात–दिन उसका सिमरन करो, जो अन्तिम समय में जीव का सहायक बनता है। मोह–माया का यह विष केवल चार अथवा छ : दिनों का ही है। सभी इसे छोड़कर चले जाते हैं। माता, पिता, पुत्र एवं पुत्री कोई भी किसी का संगी नहीं है। कोई भी इन्सान घर, पत्नी एवं अन्य पदार्थ कुछ भी साथ लेकर नहीं जाता। इसलिए ऐसा नाम–धन संचित करो जो कभी नाश नहीं होता और जो सम्मानपूर्वक अपने घर (परलोक) में जा सके। हे नानक! जो लोग अपने जीवन में सत्संग में प्रभु का भजन गायन करते हैं, वह पुनः जन्म–मरण के चक्र में फँसकर इस संसार में नहीं आते॥ १५॥

सलोकु ॥ अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत॥ मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥ १ ॥

श्लोक॥ यदि कोई व्यक्ति अति सुन्दर, कुलीन, चतुर एवं उच्चकोटि का ज्ञानी एवं धनवान हो तो भी हे नानक! जिनके हृदय में भगवान की प्रीति नहीं है वे मृतक ही कहलाए जाएँगे॥ १॥

पउड़ी ॥ ङंङा खटु सासत्र होइ ङिआता ॥ पूरकु कुंभक रेचक करमाता ॥ ङिआन धिआन तीरथ इसनानी ॥ सोमपाक अपरस उदिआनी ॥ राम नाम संगि मनि नही हेता ॥ जो कछु कीनो सोऊ अनेता ॥ उआ ते ऊतमु गनउ चंडाला ॥ नानक जिह मनि बसहि गुपाला ॥ १६ ॥

पउडी॥ ङ – कोई व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता हो, वह (योगी की भाँति) श्वास अन्दर खींचने, बाहर निकालने एवं टिकाने का कर्म करता हो, वह ज्ञान (धार्मिक) चर्चा, मनन, तीर्थ यात्रा एवं स्नान करता हो, वह अपना भोजन स्वयं पकाता हो, किसी के साथ न लगता हो एवं जंगल में रहता हो, यदि उसके हृदय में प्रभु के नाम से प्रीति नहीं तो सब कुछ जो वह करता है, वह नाशवान है। हे नानक! उससे उत्तम उस चंडाल को समझो, जिसके मन में गोपाल निवास करता है॥ १६॥

सलोकु ॥ कुंट चारि दह दिसि भ्रमे करम किरति की रेख ॥ सूख दूख मुकति जोनि नानक लिखिओ लेख ॥ १ ॥

श्लोक॥ मनुष्य अपने किए कर्मों के संस्कारों के अनुसार संसार के चारों कुण्ट एवं दसों दिशाओं में भटकता रहता है। हे नानक ! सुख–दुःख, मोक्ष एवं योनि (आवागमन) लिखी हुई किस्मत अनुसार ही मिलता है॥ १॥

पवड़ी ॥ कका कारन करता सोऊ ॥ लिखिओ लेखु न मेटत कोऊ ॥ नही होत कछु दोऊ बारा ॥ करनैहारु न भूलनहारा ॥ काहू पंथु दिखारै आपै ॥ काहू उदिआन भ्रमत पछुतापै ॥ आपन खेलु आप ही कीनो॥ जो जो दीनो सु नानक लीनो ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ क – परमात्मा स्वयं ही संयोग बनाने वाला है। कोई भी प्राणी विधाता के विधान को मिटा नहीं सकता। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जो उसे फिर से करना पड़े, परमात्मा कभी भूल नहीं करता। कुछ जीवों को वह स्वयं ही सन्मार्ग दिखा देता है। कुछ जीवों को वह भयानक जंगल में भटकाता रहता है। यह समूचा जगत्–खेल भगवान ने स्वयं ही रचा है। हे नानक ! जो कुछ भी प्रभु प्राणियों को देता है, वही उन्हें मिल जाता है॥ १७॥

सलोकु ॥ खात खरचत बिलछत रहे टूटि न जाहि भंडार ॥ हरि हरि जपत अनेक जन नानक नाहि सुमार ॥ १ ॥

श्लोक॥ (प्रभु के खजाने को) मनुष्य खाते, खर्च करते और भोगते रहते हैं परन्तु प्रभु का खजाना कभी समाप्त नहीं होता। हे नानक ! हरि–परमेश्वर के नाम का अनेकों ही मनुष्य भजन करते रहते हैं, जो कि गणना से परे है॥ १॥

पउड़ी ॥ खखा खूना कछु नही तिसु संम्रथ कै पाहि ॥ जो देना सो दे रहिओ भावै तह तह जाहि ॥ खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥ खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥ खेलहि बिगसहि अनद सिउ जा कउ होत क्रिपाल ॥ सदीव गनीव सुहावने राम नाम ग्रिहि माल ॥ खेदु न दूखु न डानु तिह जा कउ नदरि करी ॥ नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी तिना परी ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ ख – परमात्मा जो समस्त शक्तियों का स्वामी है, उसके घर में किसी वस्तु की कोई कमी नहीं। जो कुछ प्रभु ने देना है, वह देता जा रहा है। मनुष्य चाहे जहाँ मन करता है, वहाँ चलता रहे। नाम–धन भक्तों के पास खर्च करने के लिए भण्डार है। यह उनकी राशि–पूंजी है। सहनशीलता, नम्रता, आनंद एवं सहजता से वह गुणों के भण्डार प्रभु का जाप करते जाते हैं। परमेश्वर जिन पर कृपा करता है, वह आनंदपूर्वक जीवन का खेल खेलते हैं और सदैव प्रसन्न रहते हैं। जिनके हृदय घर में राम के नाम का पदार्थ है, वह सदैव ही धनवान एवं सुन्दर हैं। ईश्वर जिन पर कृपा–दृष्टि करता है, उनको न ही कोई कष्ट होता है, न ही कोई पीड़ा एवं दण्ड मिलता है। हे नानक ! जो प्रभु को भले लगते हैं, वह पूर्णतया सफल हो जाते हैं॥ १८॥

सलोकु ॥ गनि मिनि देखहु मनै माहि सरपर चलनो लोग ॥ आस अनित गुरमुखि मिटै नानक नाम अरोग ॥ १ ॥

श्लोक॥ (हे जिज्ञासु !) अपने चित्त में भलीभाँति विचार कर देख लो, कि लोगों ने इस दुनिया से निश्चित ही चले जाना है। हे नानक ! क्षणभंगुर पदार्थों की तृष्णा गुरु की शरण लेने से ही मिटती है। केवल भगवान के नाम में ही अरोग्यता है॥ १॥

पउड़ी ॥ गगा गोबिद गुण रवहु सासि सासि जपि नीत ॥ कहा बिसासा देह का बिलम न करिहो मीत ॥ नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु ॥ ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फंधु ॥ गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इह ठाइ ॥ छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि ॥ गुर प्रसादि सिमरत रहे जाहू मसतकि भाग ॥ नानक आए सफल ते जा कउ प्रिअहि सुहाग ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ ग – (हे जिज्ञासु !) अपने प्रत्येक श्वास से गोविन्द की गुणस्तुति करते रहो और नित्य उसका भजन करो। शरीर के ऊपर क्या विश्वास किया जा सकता है ? हे मेरे मित्र ! देरी न कर। चाहे बचपन हो, जवानी हो, बुढ़ापा हो, मृत्यु को आने से किसी समय भी रुकावट नहीं है। उस वक्त का पता नहीं लग सकता कि कब यमराज का रस्सा गले में आ पड़ता है। यह बात समझ लो चाहे कोई ज्ञानी हो, चाहे कोई ध्यानी हो, चाहे कोई चतुर हो, किसी ने भी दुनिया में सदा नहीं रहना। मूर्ख ही उन वस्तुओं की प्राप्ति में लगते हैं, जिन्हें समूचा जगत् त्याग गया है। जिसके माथे पर शुभ भाग्य लिखा हुआ है, वह गुरु की कृपा से प्रभु का भजन करता रहता है। हे नानक ! जिन्हें प्रियतम प्रभु का सौभाग्य प्राप्त है, उनका ही इस संसार में आगमन सफल है॥ १६॥

सलोकु ॥ घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥ आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ मैंने समस्त शास्त्र एवं वेद अध्ययन करके देख लिए हैं। कोई भी यह नहीं बताता कि भगवान के अलावा कोई अन्य भी हमेशा रहने वाला है। हे नानक ! एक परमेश्वर ही सृष्टि के आदि में, युगों के आरम्भ में था, अब है और हमेशा ही रहने वाला है॥ १॥

पउड़ी ॥ घघा घालहु मनहि एह बिनु हरि दूसर नाहि ॥ नह होआ नह होवना जत कत ओही समाहि ॥ घूलहि तउ मन जउ आवहि सरना ॥ नाम ततु कलि महि पुनहचरना ॥ घालि घालि अनिक पछुतावहि ॥ बिनु हरि भगति कहा थिति पावहि ॥ घोलि महा रसु अंम्रितु तिह पीआ ॥ नानक हरि गुरि जा कउ दीआ ॥ २० ॥

पउड़ी॥ घ – अपने मन में यह बात दृढ़ कर लो कि प्रभु के अलावा कोई नहीं। न कोई था और न ही आगे कोई होगा। वह प्रभु सर्वव्यापक हो रहा है। हे मन ! यदि तू प्रभु की शरण लेगा तो ही प्रभु में लीन होगा। इस कलियुग में प्रभु का नाम ही वास्तविक प्रायश्चित कर्म है। दुविधा में मेहनत–परिश्रम करके अनेकों पश्चाताप करते हैं। भगवान की भक्ति के सिवाय कैसे शांति मिल सकती है ? हे नानक ! जिसे हरि रूप गुरु जी महारस अमृत प्रदान करते हैं, वह इसे घोलकर पान करता है॥ २०॥

सलोकु ॥ ङणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार ॥ जीवन लोरहि भरम मोह नानक तेऊ गवार ॥ १ ॥

श्लोक॥ समस्त दिवस एवं श्वास प्रभु ने गिन कर ही मनुष्य में डाले हैं। वह एक तिलमात्र भी न अधिक होते हैं और न ही कम होते हैं। हे नानक ! जो व्यक्ति भ्रम एवं मोह में जिंदगी जीना चाहते हैं, ऐसे व्यक्ति मूर्ख हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ ङंङा ङ्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन ॥ अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥ ङिआन धिआन ताहू कउ आए ॥ करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥ ङणती ङणी नही कोऊ छूटै ॥ काची गागरि सरपर फूटै ॥ सो जीवत जिह जीवत जपिआ ॥ प्रगट भए नानक नह छपिआ ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ ङ – काल (मृत्यु) उसे अपना ग्रास बना लेता है, जिसे प्रभु ने नास्तिक बना दिया है। जो व्यक्ति राम को अनुभव नहीं करते, वे अनेकों योनियों में जन्मते–मरते रहते हैं। केवल वही व्यक्ति ज्ञान एवं ध्यान को प्राप्त करता है, जिस पर ईश्वर स्वयं कृपा करके देता है। कर्मों का लेखा पता करने से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता। यह शरीर मिट्टी की कच्ची गागर है जिस ने निश्चित ही टूट जाना है, केवल वही जीवित है, जो जीवित ही प्रभु का भजन करता है। हे नानक ! भगवान का सिमरन करने वाला मनुष्य छिपा नहीं रहता अपितु जगत् में प्रसिद्ध हो जाता है॥ २१॥

सलोकु ॥ चिति चितवउ चरणारबिंद ऊध कवल बिगसांत ॥ प्रगट भए आपहि गोबिंद नानक संत मतांत ॥ १ ॥

श्लोक॥ अपने चित्त में प्रभु के सुन्दर चरणों का चिन्तन करने से मेरा विपरीत मन कंवल की भाँति प्रफुल्लित हो गया है। हे नानक ! संतजनों के उपदेश से गोबिन्द स्वयं ही प्रकट हो जाता है॥ १॥

पउड़ी ॥ चचा चरन कमल गुर लागा ॥ धनि धनि उआ दिन संजोग सभागा ॥ चारि कुंट दह दिसि भ्रमि आइओ ॥ भई क्रिपा तब दरसनु पाइओ ॥ चार बिचार बिनसिओ सभ दूआ ॥ साधसंगि मनु निरमल हूआ ॥ चिंत बिसारी एक द्रिसटेता ॥ नानक गिआन अंजनु जिह नेत्रा ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ च – वह दिन बड़ा शुभ है, वह संयोग भी भाग्यशाली है, जब गुरु के सुन्दर चरणों में मन लगा। मैं चारों तरफ एवं दसों दिशाओं से भटक कर आया हूँ। जब प्रभु ने कृपा की तो ही मुझे गुरु के दर्शन प्राप्त हुए। भगवान की महिमा का विचार करने से समूह द्वैतवाद नाश हो गया है। संतों की संगति में मेरा मन निर्मल हो गया है। हे नानक ! जिसके नेत्रों में ज्ञान का सुरमा पड़ जाता है, वह चिन्ता को भूल जाता है और वह एक ईश्वर के दर्शन कर लेता है॥ २२॥

सलोकु ॥ छाती सीतल मनु सुखी छंत गोबिद गुन गाइ ॥ ऐसी किरपा करहु प्रभ नानक दास दसाइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ गोबिन्द की महिमा के छंद गायन करने से छाती शीतल एवं मन सुखी हो जाता है। नानक की प्रार्थना है कि हे मेरे प्रभु ! मुझ पर ऐसी कृपा–दृष्टि करो कि मैं तेरे दासों का दास बन जाऊँ॥ १॥

पउड़ी ॥ छछा छोहरे दास तुमारे ॥ दास दासन के पानीहारे ॥ छछा छारु होत तेरे संता ॥ अपनी क्रिपा करहु भगवंता ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ संतन की मन टेक टिकाई ॥ छारु की पुतरी परम गति पाई ॥ नानक जा कउ संत सहाई ॥ २३ ॥

पउड़ी॥ छ – मैं तेरा दास बालक हूँ। मैं तेरे दासों के दासों का जल भरने वाला हूँ। छ – हे भगवान ! मुझ पर अपनी ऐसी कृपा करो कि मैं तेरे संतों की चरण–धूलि बन जाऊँ। मैंने अपनी अधिकतर बुद्धिमत्ता एवं चतुरता त्याग दी है और अपने मन को संतों के आसरे टिका दिया है। हे नानक ! संत जिस व्यक्ति की मदद करते हैं, उसकी यह देहि चाहे मिट्टी का पुतला है, वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ २३॥

सलोकु ॥ जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार ॥ अहंबुधि बंधन परे नानक नाम छुटार ॥ १ ॥

श्लोक॥ मासूम लोगों पर अत्याचार एवं जुल्म करके मनुष्य बड़ा ही अभिमान करता है और अपने नश्वर शरीर से पाप करता है। हे नानक ! ऐसा व्यक्ति अहंबुद्धि के कारण बंधनों में फँस जाता है लेकिन उस व्यक्ति की परमेश्वर के नाम से ही मुक्ति होती है॥ १॥

पउड़ी ॥ जजा जानै हउ कछु हूआ ॥ बाधिओ जिउ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ जउ जानै हउ भगतु गिआनी ॥ आगै ठाकुरि तिलु नही मानी ॥ जउ जानै मै कथनी करता ॥ बिआपारी बसुधा जिउ फिरता ॥ साधसंगि जिह हउमै मारी ॥ नानक ता कउ मिले मुरारी ॥ २४ ॥

पउड़ी॥ ज – यदि कोई मनुष्य यह सोचता है कि मैं कुछ बन गया हूँ, वह इस अभिमान में यूं फँस जाता है जिस तरह कोई तोता (दाने के) भ्रम में कमलिनी के साथ फँस जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपने आपको भक्त एवं ज्ञानी समझता है तो परलोक में प्रभु उसको थोड़ा–सा भी सम्मान नहीं देता। यदि कोई व्यक्ति अपने आपको धार्मिक प्रचारक समझता है तो वह फेरी वाले व्यापारी की भाँति धरती पर भटकता रहता है। हे नानक ! जो व्यक्ति संतों की संगति में अपने अहंकार का नाश कर देता है, उसे मुरारी प्रभु मिल जाता है॥ २४॥

सलोकु ॥ झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि ॥ कार्हा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥ १ ॥

श्लोक॥ नानक का कथन है कि (हे जीव !) प्रातःकाल उठकर ईश्वर का नाम जप और रात–दिन उसकी आराधना कर। फिर तुझे कोई चिन्ता फिक्र प्रभावित नहीं करेगी और मुसीबत लुप्त हो जाएगी॥ १॥

पउड़ी ॥ झझा झूरनु मिटै तुमारो ॥ राम नाम सिउ करि बिउहारो ॥ झूरत झूरत साकत मूआ ॥ जा कै रिदै होत भाउ बीआ ॥ झरहि कसंमल पाप तेरे मनूआ ॥ अंम्रित कथा संतसंगि सुनूआ ॥ झरहि काम क्रोध द्रुसटाई ॥ नानक जा कउ क्रिपा गुसाई ॥ २५ ॥

पउड़ी॥ झ – परमेश्वर के नाम का व्यापार करने से तेरा पश्चाताप मिट जाएगा। शाक्त मनुष्य जिसके हृदय में मोह–माया की प्रीति है, वह बड़ी चिन्ता एवं दुःख से मर जाता है। हे मेरे मन ! संतों की संगति में अमृत कथा सुनने से तेरे समस्त पाप–विकार एवं दोष मिट जाएँगे। हे नानक ! जिस व्यक्ति पर परमात्मा कृपा कर देता है, उसके काम–क्रोध इत्यादि समूचे दुष्ट नाश हो जाते हैं॥ २५॥

सलोकु ॥ ञतन करहु तुम अनिक बिधि रहनु न पावहु मीत ॥ जीवत रहहु हरि हरि भजहु नानक नाम परीति ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे मेरे मित्र ! चाहे तू अनेक प्रकार के उपाय कर ले, परन्तु दुनिया में सदा के लिए नहीं रह सकेगा। हे नानक ! यदि हरि–परमेश्वर का भजन करोगे और नाम से प्रेम करोगे तो सदा के लिए आत्मिक जीवन प्राप्त हो जाएगा॥ १॥

पवड़ी ॥ ञंञा ञाणहु द्रिड़ु सही बिनसि जात एह हेत ॥ गणती गणउ न गणि सकउ ऊठि सिधारे केत ॥ ञो पेखउ सो बिनसतउ का सिउ करीऐ संगु ॥ ञाणहु इआ बिधि सही चित झूठउ माइआ रंगु ॥ ञाणत सोई संतु सुइ भ्रम ते कीचित भिंन ॥ अंध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसंन ॥ ञा कै हाथि समरथ ते कारन करनै जोग ॥ नानक तिह उसतति करउ ञाहू कीओ संजोग ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ ज – यह बात निश्चित तौर पर समझ ले कि यह दुनिया का मोह नाश हो जाएगा। चाहे मैं गणना करता रहूँ किन्तु मैं गिन नहीं सकता कि कितने प्राणी संसार त्याग कर चले गए हैं? जिस किसी को भी मैं देखता हूँ, वह नाश होने वाला है। इसलिए मैं किससे संगति करूँ ? इस प्रकार अपने मन में उचित समझ ले कि दुनिया के पदार्थों की प्रीति झूठी है। इस तथ्य को वहीं जानता है और वही संत है, जिसको प्रभु ने दुविधा से खाली किया है। हे ईश्वर! जिस मनुष्य पर तुम सुप्रसन्न होते हो, उसे तुम अन्धे कुएँ से बाहर निकाल लेते हो। जिसका हाथ सामर्थ्य है, वह संसार के संयोग बनाने के योग्य है। हे नानक! उस प्रभु की गुणस्तुति करते रहो, जो संयोग बनाने वाला है॥ २६॥

सलोकु ॥ टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ ॥ नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ संतों की निष्काम सेवा करने से जन्म-मरण के चक्र मिट जाते हैं और सुख उपलब्ध हो जाता है। हे नानक! गुणों का भण्डार गोविन्द-प्रभु उसके मन से कभी भी विस्मृत न हो॥ १॥

पउड़ी ॥ टहल करहु तउ एक की जा ते ब्रिथा न कोइ ॥ मनि तनि मुखि हीऐ बसै जो चाहहु सो होइ ॥ टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध क्रिपाल ॥ साधू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥ टोहे टाहे बहु भवन बिनु नावै सुखु नाहि ॥ टलहि जाम के दूत तिह जु साधू संगि समाहि ॥ बारि बारि जाउ संत सदके ॥ नानक पाप बिनासे कदि के ॥ २७ ॥

पउड़ी॥ ट – उस एक ईश्वर की सेवा करते रहो, जिसके दरबार से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता। यदि प्रभु तेरे मन, शरीर, मुख एवं हृदय में बस जाए तो जो कुछ भी तुम चाहते हो, वही मिल जाएगा। जिन पर संत कृपा के घर में हैं, उन्हें भगवान की सेवा का मौका मिल जाता है। संतों की संगति में मनुष्य तभी निवास करता है, जब ईश्वर स्वयं दयाल होता है। मैंने अनेकों लोक ढूँढ लिए हैं परन्तु ईश्वर के नाम बिना सुख-शांति नहीं। जो व्यक्ति संतों की संगति में बसता है, यमदूत उससे दूर हट जाते हैं। हे नानक! मैं बार-बार संतों पर कुर्बान जाता हूँ, जिनके द्वारा मेरे कई जन्मों के किए अशुभ कर्मों के पाप नाश हो गए हैं॥ २७॥

सलोकु ॥ ठाक न होती तिनहु दरि जिह होवहु सुप्रसंन ॥ जो जन प्रभि अपुने करे नानक ते धनि धंनि ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे ईश्वर! जिन पर तुम सुप्रसन्न हो जाते हो, उनके मार्ग में तेरे दर पर पहुँचते हुए कोई रुकावट नहीं आती। हे नानक! वह पुरुष भाग्यशाली हैं, जिनको ईश्वर ने अपना बना लिया है॥ १॥

पउड़ी ॥ ठठा मनूआ ठाहहि नाही ॥ जो सगल तिआगि एकहि लपटाही ॥ ठहकि ठहकि माइआ संगि मूए ॥ उआ कै कुसल न कतहू हूए ॥ ठांढि परी संतह संगि बसिआ ॥ अंम्रित नामु तहा जीअ रसिआ ॥ ठाकुर अपुने जो जनु भाइआ ॥ नानक उआ का मनु सीतलाइआ ॥ २८ ॥

पउड़ी॥ ठ – जो सब कुछ त्याग कर एक ईश्वर से जुड़े हुए हैं, वह किसी के भी मन को दुःख नहीं पहुँचाते। जो लोग सांसारिक माया से उलझे हुए हैं, वह मृत हैं और उनको कहीं भी प्रसन्नता नहीं मिलती। जो व्यक्ति संतों की संगति में वास करता है, उसका मन शीतल हो जाता है और नाम अमृत उसके हृदय को बड़ा मीठा लगता है। हे नानक! जो व्यक्ति अपने ईश्वर को भला लगता है, उसका मन शीतल हो जाता है॥ २८॥

सलोकु ॥ डंडउति बंदन अनिक बार सरब कला समरथ ॥ डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक ! (इस तरह वन्दना कर–) हे सर्वकला सम्पूर्ण प्रभु ! मैं अनेक बार तुझे प्रणाम करता हूँ। मुझे अपना हाथ देकर माया के मोह में विचलित होने से बचा ले॥ १॥

पउड़ी ॥ डडा डेरा इहु नही जह डेरा तह जानु ॥ उआ डेरा का संजमो गुर कै सबदि पछानु ॥ इआ डेरा कउ स्रमु करि घालै ॥ जा का तसू नही संगि चालै ॥ उआ डेरा की सो मिति जानै ॥ जा कउ द्रिसटि पूरन भगवानै ॥ डेरा निहचलु सचु साधसंग पाइआ ॥ नानक ते जन नह डोलाइआ ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ ड – (हे जीव!) यह जगत् तेरा निवास नहीं, उस स्थान को पहचान, जहाँ तेरा वास्तविक घर है। गुरु के शब्द द्वारा तू उस निवास में पहुँचने की विधि पहचान ले। संसार के इस निवास हेतु मनुष्य कड़ा परिश्रम करके साधना करता है, किन्तु मृत्यु आने पर इसका थोड़ा–सा भी इसके साथ नहीं जाता। उस निवास–स्थान की मर्यादा वही जानता है, जिस पर पूर्ण भगवान अपनी कृपा–दृष्टि करता है। यह निवास स्थान निश्चित एवं सच्चा है और यह सत्संग द्वारा ही प्राप्त होता है। हे नानक ! वह सेवक जो इस शाश्वत निवास को संतों की संगति द्वारा प्राप्त कर लेते हैं, उनका हृदय विचलित नहीं होता॥ २६॥

सलोकु ॥ ढाहन लागे धरम राइ किनहि न घालिओ बंध ॥ नानक उबरे जपि हरी साधसंगि सनबंध ॥ १ ॥

श्लोक॥ जब यमराज ध्वस्त करने लगता है तो कोई भी उसके मार्ग में रुकावट नहीं डाल सकता। हे नानक ! जो व्यक्ति सत्संग में संबंध जोड़ कर ईश्वर की आराधना करते हैं, उनका भवसागर से उद्धार हो जाता है॥ १॥

पउड़ी ॥ ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इआ मन माहि ॥ संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥ ढेरी ढाहहु साधसंगि अहंबुधि बिकराल ॥ सुखु पावहु सहजे बसहु दरसनु देखि निहाल ॥ ढेरी जामै जमि मरै गरभ जोनि दुख पाइ ॥ मोह मगन लपटत रहै हउ हउ आवै जाइ ॥ ढहत ढहत अब ढहि परे साध जना सरनाइ ॥ दुख के फाहे काटिआ नानक लीए समाइ ॥ ३० ॥

पउड़ी॥ ढ – तुम परमात्मा को ढूँढने के लिए कहाँ फिर रहे हो ? खोज–तलाश तो इस हृदय में ही करनी है। ईश्वर तेरे साथ ही रहता है, तुम वन–वन में क्यों भटकते फिरते हो ? सत्संग में अपनी अहंबुद्धि के विकराल ढेर को गिरा दो। ऐसे तुझे सुख प्राप्त होगा और सुख–शांति में वास करोगे तथा प्रभु के दर्शन करके प्रसन्न होवोगे। जिसके भीतर अहंकार का यह अम्बार विद्यमान है, वह जन्मता–मरता है और गर्भयोनि का कष्ट सहन करता है। जो व्यक्ति दुनिया के मोह में मस्त हुआ है और अहंकार एवं अहंत्व में फँसा है, वह जगत् में जन्मता–मरता रहता है। मैं अब शनैः शनैः साधु–संतों की शरण में आ गिरा हूँ। हे नानक ! ईश्वर ने मेरे दुःख–क्लेश के फंदे काट दिए हैं और मुझे अपने में लीन कर लिया है॥ ३०॥

सलोकु ॥ जह साधू गोबिद भजनु कीरतनु नानक नीत ॥ णा हउ णा तूं णह छुटहि निकटि न जाईअहु दूत ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक ! जहाँ संत–महापुरुष प्रतिदिन गोबिन्द के नाम का भजन–कीर्तन करते रहते हैं। यमराज संबोधन करता है, "हे दूतो ! उस निवास के निकट मत जाना, अन्यथा न ही मेरा और न ही तुम्हारा बचाव होगा"॥ १॥

पउड़ी ॥ णाणा रण ते सीझीऐ आतम जीतै कोइ ॥ हउमै अन सिउ लरि मरै सो सोभा दू होइ ॥ मणी मिटाइ जीवत मरै गुर पूरे उपदेस॥ मनूआ जीतै हरि मिलै तिह सूरतण वेस ॥ णा को जाणै आपणो एकहि टेक अधार ॥ रैणि दिणसु सिमरत रहै सो प्रभु पुरखु अपार ॥ रेण सगल इआ मनु करै एऊ करम कमाइ ॥ हुकमै बूझै सदा सुखु नानक लिखिआ पाइ ॥ ३१ ॥

पउडी॥ ण – यदि कोई व्यक्ति अपने मन को वश में कर लेता है, तो वह जीवन के युद्ध को विजय कर लेता है। जो व्यक्ति अपने अहंत्व एवं द्वैतवाद के साथ लड़ता मर जाता है, वही योद्धा है। जो व्यक्ति अपने अहंत्व को त्याग देता है, वह गुरु के उपदेश द्वारा जीवित ही मोह–माया से मरा रहता है। वह अपने मन को जीत कर ईश्वर से मिल जाता है और उसकी वीरता के लिए उसको सम्मान की वेशभूषा मिलती है। किसी पदार्थ को भी वह अपना नहीं समझता। एक ईश्वर ही उसका सहारा एवं आसरा होता है। वह रात–दिन अनन्त ईश्वर की आराधना करता रहता है। वह अपने इस मन को सबकी चरण धूलि बना देता है, ऐसे कर्म वह करता है। हे नानक ! ईश्वर के हुक्म को समझ कर वह सदैव सुख प्राप्त करता है और जो कुछ उसके भाग्य में लिखा होता है, उसको प्राप्त कर लेता है॥ ३१॥

सलोकु ॥ तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥ नानक भ्रम भउ काटीऐ चूकै जम की जोह ॥ १ ॥

श्लोक॥ मैं अपना तन, मन एवं धन उसको समर्पित करता हूँ, जो मुझे मेरे प्रभु से मिला दे। हे नानक ! चूंकि प्रभु–मिलाप से ही दुविधा एवं भय नाश हो जाते हैं और मृत्यु का आतंक भी दूर हो जाता है॥ १॥

पउड़ी ॥ तता ता सिउ प्रीति करि गुण निधि गोबिद राइ ॥ फल पावहि मन बाछते तपति तुहारी जाइ ॥ त्रास मिटै जम पंथ की जासु बसै मनि नाउ ॥ गति पावहि मति होइ प्रगास महली पावहि ठाउ ॥ ताहू संगि न धनु चलै ग्रिह जोबन नह राज ॥ संतसंगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ॥ ताता कछू न होई है जउ ताप निवारै आप ॥ प्रतिपालै नानक हमहि आपहि माई बाप ॥ ३२ ॥

पउडी॥ त – उस परमात्मा से प्रीति करो जो गुणों का भण्डार एवं सृष्टि का स्वामी है। तुझे अपने मनोवांछित फल प्राप्त होंगे और तृष्णा मिट जाएगी। जिसके हृदय में नाम निवास करता है, उसको मृत्यु का मार्ग एवं भय नहीं सताता। वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है और उसकी मति उज्ज्वल हो जाती है और उसको स्वामी के आत्मस्वरूप में निवास मिल जाता है। अन्तकाल जीव के साथ न ही धन साथ जाता है, न ही घर, जवानी एवं राज्य साथ जाता है। हे जीव ! संतों की संगति में ईश्वर का भजन करता रह, केवल वही परलोक में तेरे काम आएगा। जब ईश्वर स्वयं तेरे ताप का निवारण करेगा तो तुझे निश्चित ही कोई जलन नहीं होगी। हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही हमारा पालन–पोषण करता है, वह हमारी माता एवं पिता है॥ ३२॥

सलोकु ॥ थाके बहु बिधि घालते त्रिपति न त्रिसना लाथ ॥ संचि संचि साकत मूए नानक माइआ न साथ ॥ १ ॥

श्लोक॥ स्वेच्छाचारी जीव अनेक विधियों से परिश्रम करके हार–थक गए हैं। उनकी तृप्ति नहीं हुई और न ही उनकी तृष्णा मिटी है। हे नानक ! शाक्त जीव धन संचित करते–करते मर जाते हैं परन्तु धन–दौलत उनके साथ नहीं जाता॥ १॥

पउड़ी ॥ थथा थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥ अनिक बंच बल छल करहु माइआ एक उपाव ॥ थैली संचहु स्रमु करहु थाकि परहु गावार ॥ मन कै कामि न आवई अंते अउसर बार ॥ थिति पावहु गोबिद भजहु संतह की सिख लेहु ॥ प्रीति करहु सद एक सिउ इआ साचा असनेहु ॥ कारन करन करावनो सभ बिधि एकै हाथ ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि नानक जंत अनाथ ॥ ३३ ॥

पउड़ी॥ थ– कोई भी जीव स्थिर नहीं, तुम क्यों अपने चरण फैलाते हो ? केवल धन के प्रयास की खातिर तुम बहुत धोखे एवं छल–कपट करते हो। हे मूर्ख ! तुम थैली भरने के लिए परिश्रम करते हो और फिर हार–थक कर गिर जाते हो। यह अन्तिम अवसर तेरी आत्मा के किसी काम नहीं आना। इसलिए गोविन्द का भजन करने एवं संतों के उपदेश का अनुसरण करने से तुझे स्थिरता प्राप्त हो जाएगी। सदैव एक ईश्वर से प्रेम करो। यही (तेरा) सच्चा प्रेम है। ईश्वर सब कुछ करने वाला एवं जीव से कराने वाला है। समस्त युक्तियाँ केवल उसके वश में है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जीव तो असहाय एवं विवश है, चूंकि जीवों को तुम जहां –जहां भी लगा देते हो, वे उस तरफ ही लग जाते हैं॥ ३३॥

सलोकु ॥ दासह एकु निहारिआ सभु कछु देवनहार ॥ सासि सासि सिमरत रहहि नानक दरस अधार ॥ १ ॥

श्लोक॥ उसके दासों ने एक ईश्वर को देखा है, जो सब कुछ देने वाला है। हे नानक ! वह श्वास–श्वास से ईश्वर का चिन्तन करते जाते हैं और उसके दर्शन ही उनके जीवन का आधार है॥ १॥

पउड़ी ॥ ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥ देंदे तोटि न आवई अगनत भरे भंडार ॥ दैनहारु सद जीवनहारा ॥ मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥ दोसु नही काहू कउ मीता ॥ माइआ मोह बंधु प्रभि कीता ॥ दरद निवारहि जा के आपे ॥ नानक ते ते गुरमुखि ध्रापे ॥ ३४ ॥

पउड़ी॥ द– एक परमात्मा ही वह दाता है जो समस्त जीवों को भोजन–पदार्थ देने वाला है। जीवों को देते वक्त उसकी देन में कोई कमी नहीं आती, क्योंकि उसके अक्षय भण्डार भरपूर हैं। वह देने वाला सदैव जीवित है। हे मूर्ख मन ! तू उस देने वाले दाता को क्यों भूल रहा है ? हे मेरे मित्र ! इसमें किसी का दोष नहीं। क्योंकि माया–मोह के बन्धन ईश्वर ने ही रचे हैं। हे नानक ! जिस गुरमुख का वह स्वयं दुःख दूर कर देता है, वह कृतार्थ हो जाता है॥ ३४॥

सलोकु ॥ धर जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे मेरे मन ! तू एक ईश्वर का सहारा ले तथा किसी दूसरे की आशा को त्याग दे। हे नानक ! भगवान के नाम का ध्यान करने से समस्त कार्य संवर जाते हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ धधा धावत तउ मिटै संतसंगि होइ बासु ॥ धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥ धनु साचा तेऊ सच साहा ॥ हरि हरि पूंजी नाम बिसाहा ॥ धीरजु जसु सोभा तिह बनिआ ॥ हरि हरि नामु स्रवन जिह सुनिआ ॥ गुरमुखि जिह घटि रहे समाई ॥ नानक तिह जन मिली वडाई ॥ ३५ ॥

पउड़ी॥ ध– यदि संतों–महापुरुषों की संगति में निवास हो जाए तो मन की भटकना मिट जाती है। यदि ईश्वर स्वयं आदि से ही कृपा करे तो मन में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। जिनके पास सच्चा

नाम-धन है, वही सच्चे साहूकार हैं। हरि-परमेश्वर का नाम उनकी जीवन-पूंजी होती है और वह उसके नाम का व्यापार करते रहते हैं। जो आदमी अपने कानों से हरि-परमेश्वर का नाम सुनता रहता है, वही आदमी धैर्यवान होता है और उसे बड़ा यश एवं शोभा मिलती है। हे नानक! जिस गुरमुख के अन्तर्मन में भगवान का नाम निवास कर लेता है, उसे ही दुनिया में ख्याति प्राप्त होती है॥ ३५॥

सलोकु ॥ नानक नामु नामु जपु जपिआ अंतरि बाहरि रंगि ॥ गुरि पूरे उपदेसिआ नरकु नाहि साधसंगि ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक! जो व्यक्ति भीतर एवं बाहर एकाग्रचित होकर ईश्वर के नाम का जाप करता रहता है, पूर्ण गुरु से उपदेश प्राप्त करता है और संतों की सभा में शामिल होता है, ऐसा व्यक्ति कभी नरक में नहीं जाता॥ १॥

पउड़ी ॥ नंना नरकि परहि ते नाही ॥ जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥ नामु निधानु गुरमुखि जो जपते ॥ बिखु माइआ महि ना ओइ खपते ॥ नंनाकारु न होता ता कहु ॥ नामु मंत्रु गुरि दीनो जा कहु ॥ निधि निधान हरि अंम्रित पूरे ॥ तह बाजे नानक अनहद तूरे ॥ ३६ ॥

पउड़ी॥ न-जिस व्यक्ति के मन एवं तन में भगवान का नाम निवास करता है, वह नरक में नहीं पड़ता। जो गुरमुख नाम-भण्डार का भजन करते रहते हैं, वे माया के विष में नष्ट नहीं होते। जिन जिज्ञासुओं को गुरु ने नाम-मंत्र दिया है, उनके जीवन-मार्ग में कोई बाधा नहीं आती। हे नानक! जिनके अन्तर्मन सर्वगुणों के भण्डार हरि-नाम के अमृत से भरे रहते हैं, उनके भीतर एक ऐसा आनन्द कायम रहता है, जिस तरह लगातार अनहद ध्वनि के सर्व प्रकार के संगीत मिले-जुले स्वर में गूंज रहे हों॥ ३६॥

सलोकु ॥ पति राखी गुरि पारब्रहम तजि परपंच मोह बिकार ॥ नानक सोऊ आराधीऐ अंतु न पारावारु ॥ १ ॥

श्लोक॥ जिस पुरुष का मान-सम्मान गुरु पारब्रह्म ने बचाया है, ऐसे पुरुष ने छल, मोह एवं पाप सब कुछ छोड़ दिए हैं। हे नानक! हमें उस पारब्रह्म-प्रभु की आराधना करनी चाहिए, जिसकी महिमा का अंत नहीं मिल सकता तथा जिसके अस्तित्व का ओर-छोर भी प्राप्त नहीं हो सकता॥ १॥

पउड़ी ॥ पपा परमिति पारु न पाइआ ॥ पतित पावन अगम हरि राइआ ॥ होत पुनीत कोट अपराधू ॥ अंम्रित नामु जपहि मिलि साधू ॥ परपच ध्रोह मोह मिटनाई ॥ जा कउ राखहु आपि गुसाई ॥ पातिसाहु छत्र सिर सोऊ ॥ नानक दूसर अवरु न कोऊ ॥ ३७ ॥

पउड़ी॥ प- परमेश्वर अपरंपार है और उसका अंत नहीं पाया जा सकता। हरि-परमेश्वर अगम्य एवं पतितपावन है। ऐसे करोड़ों ही अपराधी पवित्र हो जाते हैं, जो संतों की संगति में मिलकर भगवान के अमृत नाम का जाप करते रहते हैं। हे गुसाई! जिसकी तुम स्वयं रक्षा करते हो, उसका छल-कपट, धोखा एवं सांसारिक मोह मिट जाते हैं। हे नानक! ईश्वर सर्वोपरि बादशाह है, वहीं वास्तविक छत्रधारी है, कोई दूसरा उसकी समानता करने योग्य नहीं है॥ ३७॥

सलोकु ॥ फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि जीत ॥ नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक! यदि मन को जीत लिया जाए तो वासनाओं पर विजय हासिल हो जाती है और मोह-माया के बन्धन मिट जाते हैं एवं मोहिनी के पीछे की शंका नष्ट हो जाती है। जिस व्यक्ति

को गुरु द्वारा मन की स्थिरता प्राप्त हो जाती है, उस व्यक्ति के जन्म–मरण के चक्र हमेशा के लिए मिट जाते हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ फफा फिरत फिरत तू आइआ ॥ दूलभ देह कलिजुग महि पाइआ ॥ फिरि इआ अउसरु चरै न हाथा ॥ नामु जपहु तउ कटीअहि फासा ॥ फिरि फिरि आवन जानु न होई ॥ एकहि एक जपहु जपु सोई ॥ करहु क्रिपा प्रभ करनैहारे ॥ मेलि लेहु नानक बेचारे ॥ ३८ ॥

पउड़ी॥ फ – (हे जीव!) तू कितनी ही योनियों में भटकता आया है तथा इस कलियुग में तुझे दुर्लभ मनुष्य देहि प्राप्त हुई है। यदि तू मोह–माया के बन्धनों में फँसा रहा तो ऐसा सुनहरी अवसर दुबारा नहीं मिलेगा। ईश्वर के नाम की स्तुति करता रह, मृत्यु का बन्धन कट जाएगा। केवल एक ईश्वर के नाम का चिन्तन करने से तेरा बार–बार जन्म–मरण का चक्र मिट जाएगा। नानक का कथन है कि हे सृष्टिकर्त्ता प्रभु! अपनी कृपा धारण करो और बेचारे जीव को अपने साथ मिला लो॥ ३८॥

सलोकु ॥ बिनउ सुनहु तुम पारब्रहम दीन दइआल गुपाल ॥ सुख संपै बहु भोग रस नानक साध रवाल ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे दीनदयाल! हे गोपाल! हे पारब्रह्म! तुम मेरी एक विनती सुनो। हे नानक! संतजनों की चरणधूलि ही विभिन्न सुखों, धन–पदार्थों एवं अनेक रसों के भोग के समान है॥ १॥

पउड़ी ॥ बबा ब्रहमु जानत ते ब्रहमा ॥ बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा ॥ बीरा आपन बुरा मिटावै ॥ ताहू बुरा निकटि नही आवै ॥ बाधिओ आपन हउ हउ बंधा ॥ दोसु देत आगह कउ अंधा ॥ बात चीत सभ रही सिआनप ॥ जिसहि जनावहु सो जानै नानक ॥ ३६ ॥

पउड़ी॥ ब – जो ब्रह्म को समझता है, वही वास्तविक ब्राह्मण है। वैष्णव वही है जो गुरु का सान्निध्य लेकर आत्मिक शुद्धता के धर्म का पालन करता है। जो व्यक्ति अपनी बुराई का नाश कर देता है, वही शूरवीर होता है तथा फिर बुराई उसके निकट नहीं आती। मनुष्य स्वयं ही अहंकार के बन्धनों में फँसा हुआ है। परन्तु ज्ञानहीन मनुष्य दूसरों पर दोष लगाता है। बातचीत एवं चतुरता किसी योग्य नहीं। हे नानक! जिसको ईश्वर सूझ प्रदान करता है, वही उसको समझता है॥ ३६॥

सलोकु ॥ भै भंजन अघ दूख नास मनहि अराधि हरे ॥ संतसंग जिह रिद बसिओ नानक ते न भ्रमे ॥ १ ॥

श्लोक॥ (हे जीव!) अपने मन में उस भगवान की आराधना कर, जो भय को नष्ट करने वाला और सर्व प्रकार के पाप एवं दुःखों का नाश करने वाला है। हे नानक! संतों की संगति में रहकर जिन लोगों के हृदय में प्रभु आ बसता है, उनके हर प्रकार के भ्रम समाप्त हो जाते हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ भभा भरमु मिटावहु अपना ॥ इआ संसारु सगल है सुपना ॥ भरमे सुरि नर देवी देवा ॥ भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ॥ भरमि भरमि मानुख डहकाए ॥ दुतर महा बिखम इह माए ॥ गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ ॥ नानक तेह परम सुख पाइआ ॥ ४० ॥

पउड़ी॥ भ–अपना भ्रम मिटा दो, क्योंकि यह समूचे संसार का साथ स्वप्न के तुल्य है। स्वर्ग निवासी पुरुष और देवी–देवते भी भ्रम में पड़ते रहे हैं। सिद्ध, साधक एवं ब्रह्मा भी भ्रम में भटकाए हुए हैं। भटक–भटक कर मनुष्य नष्ट हो गए हैं। यह माया का सागर बड़ा विषम एवं तैरने के लिए कठिन है। हे नानक! जिसने गुरु की शरण में अपना भ्रम, भय एवं सांसारिक मोह को नष्ट कर दिया है, वह परम सुख प्राप्त कर लेता है॥ ४०॥

सलोकु ॥ माइआ डोलै बहु बिधी मनु लपटिओ तिह संग ॥ मागन ते जिह तुम रखहु सु नानक नामहि रंग ॥ १ ॥

श्लोक॥ इन्सान का चंचल मन बहुत प्रकार से माया हेतु डगमगाता रहता है और माया से ही लिपटता रहता है। नानक का कथन है कि हे ईश्वर! जिसे तुम माया माँगने से रोकते हो, उसका नाम से प्रेम हो जाता है॥ १॥

पउड़ी ॥ ममा मागनहार इआना ॥ देनहार दे रहिओ सुजाना ॥ जो दीनो सो एकहि बार ॥ मन मूरख कह करहि पुकार ॥ जउ मागहि तउ मागहि बीआ ॥ जा ते कुसल न काहू थीआ ॥ मागनि माग त एकहि माग ॥ नानक जा ते परहि पराग ॥ ४१ ॥

पउडी॥ म – माँगने वाला जीव मूर्ख है। देने वाला चतुर दाता देन देता जा रहा है। जो कुछ भी प्रभु ने देना होता है, वह उसको एक बार ही दे देता है। हे मूर्ख मन! तुम क्यों ऊँची–ऊँची पुकार कर रहे हो? जब कभी भी तुम माँगते हो, तब तुम सांसारिक पदार्थ ही माँगते हो, जिन से किसी को भी प्रसन्नता प्राप्त नहीं हुई। नानक का कथन है कि हे मूर्ख मन! यदि तूने दात ही माँगनी है तो एक ईश्वर के नाम की माँग, जिससे तेरा संसार सागर से कल्याण हो जाएगा॥ ४१॥

सलोकु ॥ मति पूरी परधान ते गुर पूरे मन मंत ॥ जिह जानिओ प्रभु आपुना नानक ते भगवंत ॥ १ ॥

श्लोक॥ जिनके मन में पूर्ण गुरु का मंत्र विद्यमान हो जाता है, उनकी बुद्धि पूर्ण हो जाती है और वे विख्यात हो जाते हैं। हे नानक! वे जीव बड़े भाग्यशाली हैं, जो अपने प्रभु को जान लेते हैं॥ १॥

पउड़ी ॥ ममा जाहू मरमु पछाना ॥ भेटत साधसंग पतीआना ॥ दुख सुख उआ कै समत बीचारा ॥ नरक सुरग रहत अउतारा ॥ ताहू संग ताहू निरलेपा ॥ पूरन घट घट पुरख बिसेखा ॥ उआ रस महि उआहू सुखु पाइआ ॥ नानक लिपत नही तिह माइआ ॥ ४२ ॥

पउडी॥ म–जिसने ईश्वर का भेद पा लिया है, वह संतों की संगति में मिलकर तृप्त हो जाता है। ऐसा व्यक्ति दुःख–सुख को एक समान समझता है। वह नरक–स्वर्ग में फँसने से बच जाता है। वह संसार के साथ रहता है, लेकिन फिर भी इससे निर्लिप्त रहता है। वह श्रेष्ठ प्रभु प्रत्येक हृदय में परिपूर्ण दिखता है। हे नानक! ईश्वर के उस प्रेम में ही उसे सुख प्राप्त होता है और माया उसको प्रभावित नहीं कर सकती॥ ४२॥

सलोकु ॥ यार मीत सुनि साजनहु बिनु हरि छूटनु नाहि ॥ नानक तिह बंधन कटे गुर की चरनी पाहि ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे मित्रो, हे सज्जनों एवं दोस्तो! ध्यानपूर्वक सुनो। भगवान के सिमरन बिना किसी को भी मुक्ति प्राप्त नहीं होती। हे नानक! जो लोग गुरु के चरण–स्पर्श करते हैं, उनके (मोह–माया के) बन्धन मिट जाते हैं॥ १॥

पवड़ी ॥ यया जतन करत बहु बिधीआ ॥ एक नाम बिनु कह लउ सिधीआ ॥ याहू जतन करि होत छुटारा ॥ उआहू जतन साध संगारा ॥ या उबरन धारै सभु कोऊ ॥ उआहि जपे बिनु उबर न होऊ ॥ याहू तरन तारन समराथा ॥ राखि लेहु निरगुन नरनाथा ॥ मन बच क्रम जिह आपि जनाई ॥ नानक तिह मति प्रगटी आई ॥ ४३ ॥

पउड़ी॥ य – इन्सान (मोक्ष की प्राप्ति हेतु) अनेक प्रकार के यत्न करता रहता है किन्तु भगवान का नाम–सिमरन किए बिना उसे कामयाबी नहीं मिलती। जिन यत्नों द्वारा मोक्ष मिल सकता है, वह यत्न यही है कि संतों की संगति की जाए। चाहे हरेक व्यक्ति मोक्ष का ख्याल धारण किए बैठा है परन्तु उस ईश्वर को स्मरण किए बिना मोक्ष नहीं मिल सकता। इस भवसागर को पार करने के लिए ईश्वर ही जहाज के सामर्थ्य है। हे प्रभु! गुणविहीन प्राणियों की रक्षा कीजिए। हे नानक! जिन लोगों के मन, कर्म, वचन में ईश्वर स्वयं सूझ उत्पन्न कर देता है, उनकी मति उज्जवल हो जाती है॥ ४३॥

सलोकु ॥ रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥ होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥ १ ॥

श्लोक॥ (हे मानव!) किसी अन्य पर क्रोध मत करो और अपने आप पर विचार करो। हे नानक! यदि तू दुनिया में नम्रता सहित रहे तो ईश्वर की कृपा से तेरा भवसागर से उद्धार हो जाएगा॥ १॥

पउड़ी ॥ ररा रेन होत सभ जा की ॥ तजि अभिमानु छुटै तेरी बाकी ॥ रणि दरगहि तउ सीझहि भाई ॥ जउ गुरमुखि राम नाम लिव लाई ॥ रहत रहत रहि जाहि बिकारा गुर पूरे कै सबदि अपारा ॥ राते रंग नाम रस माते ॥ नानक हरि गुर कीनी दाते ॥ ४४ ॥

पउड़ी॥ र – सारा विश्व जिस गुरु की चरण–धूलि होता है, तू भी उसके समक्ष अपना अभिमान त्याग दे और तेरे सुपुर्द जो (विकारों का) बकाया है, वह खत्म हो जाएगा। हे भाई! इस संसार–रूपी रणभूमि में एवं ईश्वर के दरबार में तभी तुझे कामयाबी मिल सकती है, यदि गुरु के सान्निध्य में रहकर ईश्वर के नाम में वृत्ति लगाएगा। पूर्ण गुरु के अपार शब्द द्वारा तेरे पाप धीरे–धीरे मिट जाएँगे। हे नानक! जिन लोगों को गुरु ने ईश्वर–नाम की देन प्रदान की है, वे नाम के प्रेम में मग्न रहते हैं और ईश्वर नाम के रस में मस्त हो जाते हैं॥ ४४॥

सलोकु ॥ लालच झूठ बिखै बिआधि इआ देही महि बास ॥ हरि हरि अंम्रितु गुरमुखि पीआ नानक सूखि निवास ॥ १ ॥

श्लोक॥ इस तन में लोभ, झूठ एवं पापों–विकारों के रोग वास करते हैं। हे नानक! जिस गुरमुख ने हरि–परमेश्वर के नाम का अमृत पान किया है, वह सुखपूर्वक निवास करता है॥ १॥

पउड़ी ॥ लला लावउ अउखध जाहू ॥ दूख दरद तिह मिटहि खिनाहू ॥ नाम अउखधु जिह रिदै हितावै ॥ ताहि रोगु सुपनै नही आवै ॥ हरि अउखधु सभ घट है भाई ॥ गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥ गुरि पूरै संजमु करि दीआ ॥ नानक तउ फिरि दूख न थीआ ॥ ४५ ॥

पउड़ी॥ ल – हे ईश्वर! जिसे भी तुम अपने नाम की औषधि लगाते हो, एक क्षण में ही उसके दुःख–दर्द समाप्त हो जाते हैं। जो व्यक्ति अपने हृदय में ईश्वर के नाम की औषधि से प्रेम करता है, स्वप्न में भी रोग उसको नहीं सताते। हे भाई! ईश्वर के नाम की औषधि प्रत्येक हृदय में विद्यमान है। पूर्ण गुरु के अलावा किसी को भी इसे तैयार करने की विधि नहीं आती। हे नानक! जब पूर्ण गुरु संयम दर्शाकर औषधि देते हैं, मनुष्य पुनः दुखी नहीं होता॥ ४५॥

सलोकु ॥ वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ ॥ अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक! वासुदेव तो प्रत्येक स्थान पर मौजूद है, ऐसा कोई भी स्थान नहीं है, जहाँ वह मौजूद न हो। समस्त प्राणियों के भीतर एवं बाहर ईश्वर है, उससे क्या छिपाया जा सकता है॥ १॥

पउड़ी ॥ ववा वैरु न करीऐ काहू ॥ घट घट अंतरि ब्रहम समाहू ॥ वासुदेव जल थल महि रविआ ॥ गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ॥ वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥ हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥ वरन चिहन सगलह ते रहता ॥ नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥ ४६ ॥

पउडी॥ व – परमात्मा कण–कण में प्रत्येक हृदय में विद्यमान है, इसलिए किसी से भी वैर मत करो। वासुदेव सागर एवं धरती में व्यापक है। गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही उसका यशोगान करता है। जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहकर भगवान का भजन–कीर्तन सुनते हैं, उनके मन से वैर–विरोध मिट जाते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान के नाम का चिन्तन करते हैं, वे जात–पात एवं रूपरेखा से मुक्त हो जाते हैं॥ ४६॥

सलोकु ॥ हउ हउ करत बिहानीआ साकत मुगध अजान ॥ ड़ड़कि मुए जिउ त्रिखावंत नानक किरति कमान ॥ १ ॥

श्लोक॥ शाक्त, मूर्ख एवं नासमझ इन्सान अहंकार करता हुआ अपनी आयु बिता देता है। हे नानक! दुःख में वह प्यासे पुरुष की भाँति मर जाता है और अपने किए कर्मों का फल भोगता है॥ १॥

पउड़ी ॥ ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै संगि साधू ॥ करम धरम ततु नाम अराधू ॥ रूड़ो जिह बसिओ रिद माही ॥ उआ की ड़ाड़ि मिटत बिनसाही ॥ ड़ाड़ि करत साकत गावारा ॥ जेह हीऐ अहंबुधि बिकारा ॥ ड़ाड़ा गुरमुखि ड़ाड़ि मिटाई ॥ निमख माहि नानक समझाई ॥ ४७ ॥

पउडी॥ ड़ – संतजनों की संगति करने से मनुष्य के हर प्रकार के झगड़े समाप्त हो जाते हैं। भगवान के नाम की आराधना करनी ही कर्म एवं धर्म का मूल है। जिसके हृदय में सुन्दर प्रभु निवास करता है, उसका झगड़ा नाश हो जाता है। भगवान से टूटे हुए मूर्ख व्यक्ति के हृदय में अहंबुद्धि का पाप निवास करता है और वह विवाद उत्पन्न कर लेता है। हे नानक! गुरमुख का एक क्षण में ही झगड़ा मिट जाता है और उसे सुख उपलब्ध हो जाता है॥ ४७॥

सलोकु ॥ साधू की मन ओट गहु उकति सिआनप तिआगु ॥ गुर दीखिआ जिह मनि बसै नानक मसतकि भागु ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे मेरे मन! अपनी उक्ति एवं चतुराई को त्याग कर संतों की शरण ले। हे नानक! जिस व्यक्ति के हृदय में गुरु–उपदेश का वास हो जाता है, उसके माथे पर भाग्य उदय हो जाता है॥ १॥

पउड़ी ॥ ससा सरनि परे अब हारे ॥ सासत्र सिम्रिति बेद पूकारे ॥ सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ बिनु हर भजन नही छुटकारा ॥ सासि सासि हम भूलनहारे ॥ तुम समरथ अगनत अपारे ॥ सरनि परे की राखु दइआला ॥ नानक तुमरे बाल गुपाला ॥ ४८ ॥

पउडी॥ स–हे परमात्मा! अब हारकर तेरी शरण में आए हैं। विद्वान लोग शास्त्र, स्मृतियों का उच्च स्वर में अध्ययन करते हैं, जांच–पडताल एवं निर्णय करने से अनुभव कर लिया है कि भगवान के भजन के अलावा मनुष्य को मुक्ति नहीं मिलती। हम श्वास–श्वास से भूल करते रहते हैं। हे प्रभु! तुम सर्वशक्तिमान, गणना–रहित एवं अनन्त हो। हे दया के घर! शरण में आए हुओं की रक्षा करो। नानक का कथन है कि हे गोपाल! हम तो तेरी ही संतान हैं॥ ४८॥

सलोकु ॥ खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥ नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥ १ ॥

श्लोक॥ जब अहंकार मिट जाता है तो सुख-शांति उत्पन्न हो जाती है और मन एवं तन स्वस्थ हो जाते हैं। हे नानक! अहंकार के मिटने से ही प्राणी को प्रभु दिखाई देता है, जो सत्य ही महिमा-स्तुति का हकदार है॥ १॥

पउड़ी ॥ खखा खरा सराहउ ताहू ॥ जो खिन महि ऊने सुभर भराहू ॥ खरा निमाना होत परानी ॥ अनदिनु जापै प्रभ निरबानी ॥ भावै खसम त उआ सुखु देता ॥ पारब्रहमु ऐसो आगनता ॥ असंख खते खिन बखसनहारा ॥ नानक साहिब सदा दइआरा ॥ ४६ ॥

पउड़ी॥ ख – उस परमात्मा की एकाग्रचित होकर प्रशंसा करते रहो, जो एक क्षण में ही उन हृदयों को शुभ गुणों से भरपूर कर देता है, जो पहले गुणों से शून्य थे। जब प्राणी भली प्रकार से विनीत हो जाता है तो वह रात-दिन निर्मल प्रभु का भजन करता रहता है। यदि ईश्वर को भला लगे तो वह सुख प्रदान करता है। पारब्रह्म प्रभु ऐसा अनन्त है। वह असंख्य पाप एक क्षण में क्षमा कर देता है। हे नानक! प्रभु सदैव ही दया का घर है॥ ४६॥

सलोकु ॥ सति कहउ सुनि मन मेरे सरनि परहु हरि राइ ॥ उकति सिआनप सगल तिआगि नानक लए समाइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे मेरे मन! मैं तुझे सत्य कहता हूँ, जरा ध्यानपूर्वक सुन। हरि-परमेश्वर की शरण में आओ। हे नानक! अपनी समस्त युक्तियाँ एवं चतुरता त्याग दे, फिर ईश्वर तुझे अपने भीतर लीन कर लेगा॥ १॥

पउड़ी ॥ ससा सिआनप छाडु इआना ॥ हिकमति हुकमि न प्रभु पतीआना ॥ सहस भाति करहि चतुराई ॥ संगि तुहारै एक न जाई ॥ सोऊ सोऊ जपि दिन राती ॥ रे जीअ चलै तुहारै साथी ॥ साध सेवा लावै जिह आपै ॥ नानक ता कउ दूखु न बिआपै ॥ ५० ॥

पउड़ी॥ स – हे मूर्ख प्राणी! अपनी चतुरता को त्याग दे। ईश्वर चतुराइयों एवं हुक्म (उपदेश) करने से प्रसन्न नहीं होता। चाहे तू हजारों प्रकार की चतुरता भी करे परन्तु एक चतुराई भी तेरा साथ नहीं देगी। हे मेरे मन! उस ईश्वर को ही दिन-रात स्मरण करता रह, ईश्वर की याद ने ही तेरे साथ जाना है। हे नानक! जिस व्यक्ति को ईश्वर स्वयं संतों की सेवा में लगाता है, उसे कोई भी मुसीबत प्रभावित नहीं करती॥ ५०॥

सलोकु ॥ हरि हरि मुख ते बोलना मनि वूठै सुखु होइ ॥ नानक सभ महि रवि रहिआ थान थनंतरि सोइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हरि-परमेश्वर के नाम को मुख से बोलने एवं इसको हृदय में बसाने से सुख प्राप्त होता है। हे नानक! प्रभु सर्वव्यापक है और प्रत्येक स्थान के भीतर वह मौजूद है॥ १॥

पउड़ी ॥ हेरउ घटि घटि सगल कै पूरि रहे भगवान ॥ होवत आए सद सदीव दुख भंजन गुर गिआन ॥ हउ छुटकै होइ अनंदु तिह हउ नाही तह आपि ॥ हते दूख जनमह मरन संतसंग परताप ॥ हित करि नाम द्रिड़ै दइआला ॥ संतह संगि होत किरपाला ॥ ओरै कछू न किनहू कीआ ॥ नानक सभु कछु प्रभ ते हूआ ॥ ५१ ॥

पउड़ी॥ देखो! भगवान सबके हृदय में परिपूर्ण हो रहा है। ईश्वर सदैव अस्तित्व वाला चलायमान है, वह प्राणियों के दुःख नष्ट करने वाला है तथा यह सूझ गुरु का ज्ञान प्रदान करता है। अपना

अहंकार नष्ट करने से मनुष्य प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है। जहाँ अहंकार नहीं वहाँ ईश्वर स्वयं मौजूद है। संतों की संगति के प्रताप द्वारा जन्म-मरण की पीड़ा निवृत्त हो जाती है। जो लोग संतों की संगति में रहकर प्रभु के नाम को प्रेमपूर्वक अपने हृदय में स्थित करते हैं, दया का घर ईश्वर उन पर कृपालु हो जाता है। यहाँ (इहलोक में) किसी ने कुछ भी स्वयं सम्पूर्ण नहीं किया। हे नानक! प्रभु ने ही यह सृष्टि रचना की हुई है॥ ५१॥

सलोकु ॥ लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥ बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक! यदि हम जीवों के कर्मों का हिसाब किया जाए तो हमें मुक्ति नहीं मिल सकती, क्योंकि हम हर समय भूल ही करते रहते हैं। हे क्षमाशील ईश्वर! तुम स्वयं ही हमारी भूल क्षमा करके हमें भवसागर से पार कर दो॥ १॥

पउड़ी ॥ लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति ॥ जीउ पिंडु जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ॥ लाहा माइआ कारने दह दिसि ढूढन जाइ ॥ देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥ लालच झूठ बिकार मोह इआ संपै मन माहि ॥ लंपट चोर निंदक महा तिनहू संगि बिहाइ ॥ तुधु भावै ता बखसि लैहि खोटे संगि खरे ॥ नानक भावै पारब्रहम पाहन नीरि तरे ॥ ५२ ॥

पउड़ी॥ मूर्ख एवं अल्पबुद्धि वाला जीव नमकहराम एवं गुनहगार है। जिस प्रभु ने उसे यह आत्मा, शरीर एवं सुख प्रदान किया है, उससे वह अपरिचित ही रहता है, उसे पहचानता ही नहीं। माया की खातिर वह दसों दिशाओं में खोज करने हेतु जाता है लेकिन सबकुछ देने वाले दाता-प्रभु को वह क्षण भर के लिए भी अपने हृदय में नहीं बसाता। लालच, झूठ, विकार एवं सांसारिक मोह, इनको वह अपने हृदय में एकत्र करता है। जो बड़े विषयी, तस्कर एवं निन्दक हैं, उनके साथ वह अपना जीवन व्यतीत करता है। हे परमात्मा! यदि तुझे उपयुक्त लगे तो तुम स्वयं ही बुरे लोगों को भले लोगों की संगति में रखकर क्षमा कर देते हो। हे नानक! यदि पारब्रह्म प्रभु को उपयुक्त लगे तो पत्थर भी जल में तैरने लग जाता है॥ ५२॥

सलोकु ॥ खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥ भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥ १ ॥

श्लोक॥ नानक का कथन है कि हे ईश्वर! हम प्राणी माया से संबंधित पदार्थ ही खाते-पीते एवं माया के विलासों में ही हंसते-खेलते कितनी ही योनियों में भटकते आ रहे हैं। हे प्रभु! हम जीवों को भवसागर से बाहर निकाल, क्योंकि हमें तो तेरा ही सहारा है॥ १॥

पउड़ी ॥ खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाइ ॥ खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाइ ॥ खिमा गही सचु संचिओ खाइओ अंम्रितु नाम ॥ खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम ॥ खेप निबाही बहुतु लाभ घरि आए पतिवंत ॥ खरा दिलासा गुरि दीआ आइ मिले भगवंत ॥ आपन कीआ करहि आपि आगै पाछै आपि ॥ नानक सोऊ सराहीऐ जि घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ ५३ ॥

पउड़ी॥ जीव माया के विलासों में मन लगाता, अनगिनत योनियों से गुजरता हुआ, दुःख सहन करता आता है। संतों को मिलने एवं सतिगुरु के उपदेश में लीन होने से दुःख-क्लेश नष्ट हो जाते हैं। सहनशीलता को धारण करने और सत्य को एकत्र करने से मनुष्य नाम रूपी अमृत का सेवन करता है। जब प्रभु अपनी कृपा करता है तो हमें आनन्द एवं प्रसन्नता में सुख का निवास मिल जाता है। जिस

पुरुष ने (गुरु जी से विधि सीखकर गुणस्तुति का) व्यापार समस्त आयु निभाया, उसने लाभ प्राप्त किया है, और वह (दुविधा से बचकर) आदर–सत्कार पाता है। गुरु ने उसे भारी धैर्य प्रदान किया है और वह भगवान के चरणों में मिला है। हे ईश्वर! यह सारी लीला तूने ही रची है, अब भी तुम स्वयं ही सब कुछ कर रहे हो। लोक–परलोक में प्राणियों के रक्षक तुम स्वयं हो। हे नानक! केवल उस भगवान की महिमा–स्तुति करते रहो, जो प्रत्येक हृदय में समाया हुआ है॥ ५३॥

सलोकु ॥ आए प्रभ सरनागती किरपा निधि दइआल ॥ एक अखरु हरि मनि बसत नानक होत निहाल ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे कृपा के भण्डार, हे दया के घर प्रभु! हम जीव तुम्हारी ही शरण में आए हैं। हे नानक! जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में एक अनश्वर परमात्मा मौजूद है, वह कृतार्थ हो जाता है॥ १॥

पउड़ी ॥ अखर महि त्रिभवन प्रभि धारे ॥ अखर करि करि बेद बीचारे ॥ अखर सासत्र सिंम्रिति पुराना ॥ अखर नाद कथन वख्याना ॥ अखर मुकति जुगति भै भरमा ॥ अखर करम किरति सुच धरमा ॥ द्रिसटिमान अखर है जेता ॥ नानक पारब्रहम निरलेपा ॥ ५४ ॥

पउड़ी॥ तीनों लोकों की रचना ईश्वर ने अपने हुक्म में की है। ईश्वर के हुक्मानुसार वेद रचे गए और अध्ययन किए गए। समस्त शास्त्र, स्मृतियां एवं पुराण भगवान के हुक्म का प्रकट रूप हैं। इन पुराणों, शास्त्रों एवं स्मृतियों के भजन, कथन एवं व्याख्या भी भगवान के हुक्म का ही प्रकाश है। संसार के भय एवं दुविधा से मुक्ति पाना भी भगवान के हुक्म का प्रकाश है। धार्मिक संस्कारों, सांसारिक कर्मों, पवित्रता एवं धर्म का वर्णन भी भगवान का हुक्म हैं। हे नानक! जितना भी यह दृष्टिगोचर जगत् है, इसमें अनश्वर प्रभु का हुक्म सक्रिय है, फिर भी पारब्रह्म प्रभु निर्लिप्त है॥ ५४॥

सलोकु ॥ हथि कलंम अगंम मसतकि लिखावती ॥ उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥ १ ॥

श्लोक॥ उस अगम्य ईश्वर के हाथ में (हुक्म–रूपी) कलम है। वह समस्त जीवों के मस्तक पर कर्मों के अनुसार भाग्य लिख रहा है। अनूप सुन्दरता वाला प्रभु समस्त प्राणियों के साथ मिला हुआ है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! तेरी महिमा मैं अपने मुख से व्यक्त नहीं कर सकता। तेरे दर्शन करके मैं मुग्ध हो गया हूँ और तुझ पर न्योछावर हो रहा हूँ॥ १॥

पउड़ी ॥ हे अचुत हे पारब्रहम अबिनासी अघ नास ॥ हे पूरन हे सरब मै दुख भंजन गुणतास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निरगुण सभ टेक ॥ हे गोबिद हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक ॥ हे अपरंपर हरि हरे हहि भी होवनहार ॥ हे संतह कै सदा संगि निधारा आधार ॥ हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही कोइ ॥ नानक दीजै नाम दानु राखउ हीऐ परोइ ॥ ५५ ॥

पउड़ी॥ नानक का कथन है कि हे अच्युत! हे पारब्रह्म! हे अविनाशी! हे पापनाशक! हे सर्वव्यापक! हे दुःखनाशक! हे गुणों के भण्डार! हे निरंकार प्रभु! हे निर्गुण! हे समस्त प्राणियों के सहारे! हे गोबिन्द! हे गुणों के खजाने! तेरे पास सदैव विवेक है। हे अपरम्पार प्रभु! तुम अब भी मौजूद हो, तुम सदा सत्यस्वरूप हो। हे संतों के सदा सहायक! तू ही निराश्रितों का आश्रय है। हे ठाकुर! मैं तेरा छोटा–सा (निम्न) सेवक हूँ। मैं गुणविहीन हूँ, मुझ में कोई भी गुण मौजूद नहीं। मुझे अपने नाम का दान प्रदान कीजिए चूंकि जो मैं इसे अपने हृदय में पिरोकर रखूँ॥ ५५॥

सलोकु ॥ गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ गुरदेव तीरथु अंम्रित सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा ॥ गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥ १ ॥ एहु सलोकु आदि अंति पड़णा ॥

श्लोक॥ गुरु ही माता है, गुरु ही पिता है और गुरु ही जगत् का स्वामी परमेश्वर है। गुरु ही अज्ञानता का अँधेरा नाश करने वाला मित्र है। गुरु ही रिश्तेदार एवं भाई है। गुरु ही दाता एवं हरि नाम का उपदेशक है और गुरु ही मेरा अचूक मन्त्र है। गुरु सुख-शांति, सत्य एवं बुद्धि की मूर्ति है। गुरु ही ऐसा पारस है, जिसे स्पर्श करके प्राणी का भवसागर से उद्धार हो जाता है। गुरु ही तीर्थ एवं अमृत का सरोवर है। गुरु के ज्ञान में स्नान करने से मनुष्य अपरम्पार प्रभु को मिल जाता है। गुरु ही सृष्टिकर्त्ता एवं समूचे पापों का नाश करने वाले हैं और गुरु पतितों को पवित्र-पावन करने वाले हैं। जब से संसार की रचना हुई है, गुरु आदिकाल से ही हरेक युग में है। गुरु ईश्वर के नाम का मन्त्र है, जिसका जाप करने से प्राणी का उद्धार हो जाता है। हे प्रभु ! कृपा करके हमें गुरु की संगति प्रदान करो तांकि हम मूर्ख एवं पापी उसकी संगति में रहकर भवसागर से पार हो जाएँ। गुरु स्वयं ही पारब्रह्म एवं परमेश्वर है। हे नानक ! भगवान के रूप गुरु की वन्दना करनी चाहिए॥ १॥ यह श्लोक शुरु से लेकर अंत तक पढ़ना है।

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥ सलोकु ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥ जुगादि गुरए नमह ॥ सतिगुरए नमह ॥ स्री गुरदेवए नमह ॥ १ ॥

श्लोक॥ मैं आदि गुरु को प्रणाम करता हूँ। मैं पहले युगों के गुरु को प्रणाम करता हूँ। मैं सतिगुरु को प्रणाम करता हूँ। मैं श्री गुरुदेव जी को प्रणाम करता हूँ॥ १॥

असटपदी ॥ सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥ नामु जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ कांखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन संगि मोहि उधारो ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ परमात्मा का नाम सिमरन करो और नाम-सिमरन करके सुख हासिल करो। इस तन में जो दुःख-क्लेश हैं, उन्हें मिटा लो। केवल, एक जगत् के पालनहार प्रभु के यश को स्मरण करो। असंख्य लोग प्रभु के अनेक नामों का जाप करते हैं। पवित्र अक्षर वाले वेद, पुराण एवं स्मृतियां प्रभु के एक अक्षर की रचना है। जिसके हृदय में राम का नाम थोड़ा-सा भी वास करता है, उसकी महिमा व्यक्त नहीं की जा सकती। हे प्रभु ! जो लोग तेरे दर्शनों के अभिलाषी हैं, उनकी संगति में रखकर मुझ नानक का भी उद्धार कर दो॥ १॥

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥ प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥ सरब निधान नानक हरि रंगि ॥ २ ॥

सुखमनी प्रभु का सुख रूपी अमृत नाम है। जिसका भक्तजनों के मन में निवास होता है॥ रहाउ॥ प्रभु को स्मरण करने से प्राणी गर्भ में नहीं आता। प्रभु को स्मरण करने से दुःख एवं मृत्यु का भय निवृत्त हो जाता है। प्रभु का सिमरन करने से काल भी दूर हो जाता है। प्रभु को स्मरण करने से शत्रु टल जाता है। प्रभु को स्मरण करने से कोई विघ्न नहीं पड़ता। प्रभु को स्मरण करने से मनुष्य रात–दिन जाग्रत रहता है। प्रभु को स्मरण करने से भय प्रभावित नहीं करता। प्रभु को स्मरण करने से दुःख–क्लेश प्रभावित नहीं करता। ईश्वर को स्मरण करने से संतों की संगति प्राप्त होती है। हे नानक! समस्त निधियाँ ईश्वर की प्रीति में है॥ २॥

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥ ३ ॥

प्रभु के सिमरन में ऋद्धि, सिद्धि एवं नौ निधियाँ हैं। प्रभु के सिमरन से ही मनुष्य ज्ञान, ध्यान, दिव्यदृष्टि एवं बुद्धि का सार प्राप्त करता है। प्रभु के सिमरन में ही, जप, तपस्या एवं पूजा है। प्रभु को स्मरण करने से द्वैतभाव दूर हो जाता है। प्रभु को स्मरण करने से तीर्थ स्नान का फल प्राप्त हो जाता है। प्रभु को स्मरण करने से प्राणी उसके दरबार में मान–सम्मान प्राप्त कर लेता है। प्रभु को स्मरण करने से प्राणी उसकी इच्छा को मीठा (भला) मानता है। प्रभु को स्मरण करने से मनुष्य–जन्म का मनोरथ सफल हो जाता है। केवल वही जीव उसे स्मरण करते हैं, जिन्हें वह स्वयं स्मरण करवाता है। हे नानक! मैं उन सिमरन करने वाले महापुरुषों के चरण–स्पर्श करता हूँ॥ ३॥

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥ ४ ॥

प्रभु का सिमरन सबसे ऊँचा है। प्रभु का सिमरन करने से अनेक प्राणियों का उद्धार हो जाता है। प्रभु का सिमरन करने से तृष्णा मिट जाती है। प्रभु का सिमरन करने से सब कुछ सूझ जाता है। प्रभु का सिमरन करने से यम (मृत्यु) का भय निवृत्त हो जाता है। प्रभु का सिमरन करने से अभिलाषा पूरी हो जाती है। प्रभु का सिमरन करने से मन की मैल उतर जाती है और भगवान का अमृत नाम हृदय में समा जाता है। पूजनीय प्रभु अपने संत पुरुषों की रसना में निवास करते हैं। हे नानक! मैं गुरमुखों के दासों का दास हूँ॥ ४॥

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥ नानक जन की मंगै रवाला ॥ ५ ॥

जो प्रभु का सिमरन करते हैं, ऐसे व्यक्ति ही धनवान हैं। जो प्रभु का सिमरन करते हैं, वही व्यक्ति इज्जतदार हैं। जो लोग प्रभु को स्मरण करते हैं, वे प्रभु के दरबार में स्वीकृत होते हैं। जो व्यक्ति प्रभु

का सिमरन करते हैं, वे जगत् में प्रसिद्ध हो जाते हैं। जो पुरुष प्रभु का सिमरन करते हैं, वे किसी के आश्रित नहीं रहते। जो प्राणी प्रभु का सिमरन करते हैं, वे सब के सम्राट हैं। जो प्राणी प्रभु को स्मरण करते हैं, वह सुख में निवास करते हैं। जो प्रभु को स्मरण करते हैं, वे अमर हो जाते हैं। जिन पर ईश्वर दयालु होता है, केवल वही व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं। हे नानक! मैं प्रभु के सेवकों की चरणधूलि ही मांगता हूँ॥ ५॥

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥ नानक सिमरनु पूरै भागि ॥ ६ ॥

जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, ऐसे व्यक्ति परोपकारी बन जाते हैं। जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, मैं उन पर हमेशा ही कुर्बान जाता हूँ। जो व्यक्ति प्रभु का सिमरन करते हैं, उनके मुख अति सुन्दर हैं। जो प्राणी प्रभु को स्मरण करते हैं, वह अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं। जो प्रभु का सिमरन करते हैं, वह अपने मन को जीत लेते हैं। जो प्राणी प्रभु को स्मरण करते हैं, उनका जीवन–आचरण पावन हो जाता है। जो प्रभु का सिमरन करते हैं, उन्हें अनेक खुशियाँ एवं हर्षोल्लास ही प्राप्त होते हैं। जो प्राणी प्रभु का सिमरन करते हैं, वह ईश्वर के निकट वास करते हैं। संतों की कृपा से वह रात–दिन जाग्रत रहते हैं। हे नानक! प्रभु–सिमरन की देन भाग्य से ही प्राप्त होती है॥ ६॥

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥ प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥ प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥ सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥ सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥ नानक तिन जन सरनी पइआ ॥ ७ ॥

प्रभु का सिमरन करने से समस्त कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं। प्रभु का सिमरन करने से प्राणी कभी चिन्ता–क्लेश के वश में नहीं पड़ता। प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य भगवान की गुणस्तुति की वाणी करता है। प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य सहज ही परमात्मा में लीन हो जाता है। प्रभु के सिमरन द्वारा वह अटल आसन प्राप्त कर लेता है। प्रभु के सिमरन द्वारा मनुष्य का हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है। प्रभु के सिमरन द्वारा दिव्य भजन गूंजता है। प्रभु के सिमरन द्वारा सुख का कोई अन्त अथवा पार नहीं। जिन प्राणियों पर प्रभु की कृपा होती है, वह उसका सिमरन करते रहते हैं। हे नानक! (कोई किस्मत वाला ही) उन प्रभु–स्मरण करने वालों की शरण लेता है॥ ७॥

हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥ हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥

भगवान का सिमरन करके भक्त दुनिया में लोकप्रिय हो जाते हैं। भगवान के सिमरन में ही सम्मिलित होकर वेद (इत्यादि धार्मिक ग्रंथ) रचे गए। भगवान के सिमरन द्वारा ही मनुष्य सिद्ध, ब्रह्मचारी एवं दानवीर बन जाते हैं। भगवान के सिमरन द्वारा नीच पुरुष चारों दिशाओं में प्रसिद्ध हो गए। भगवान के सिमरन ने ही सारी धरती को धारण किया हुआ है। हे जिज्ञासु! संसार के कर्त्ता

परमेश्वर को सदा स्मरण करते रहो। प्रभु ने अपने सिमरन हेतु सृष्टि की रचना की है। जहाँ प्रभु का सिमरन होता है, उस स्थान पर स्वयं निरंकार विद्यमान है। हे नानक! भगवान जिसे कृपा करके सिमरन की सूझ प्रदान करता है, गुरु के माध्यम से ऐसे व्यक्ति को भगवान के सिमरन की देन मिल जाती है॥ ८॥ १॥

सलोकु ॥ दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे दीनों के दर्द एवं दुःख का नाश करने वाले प्रभु! हे प्रत्येक शरीर में व्यापक स्वामी! हे अनाथों के नाथ परमात्मा! मैं तेरी शरण में आया हूँ, आप प्रभु मेरे साथ हो॥ १॥

असटपदी॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ जहाँ माता, पिता, पुत्र, मित्र एवं भाई, कोई (सहायक) नहीं, वहाँ हे मेरे मन! ईश्वर का नाम तेरे साथ सहायक होगा। जहाँ महा भयानक यमदूत तुझे कुचलेगा, वहाँ केवल प्रभु का नाम ही तेरे साथ जाएगा। जहाँ बहुत भारी विपत्ति बनेगी, वहाँ ईश्वर का नाम एक क्षण में ही तेरी रक्षा करेगा। अनेकों धार्मिक कर्म करने से भी मनुष्य की पापों से मुक्ति नहीं होती, परन्तु ईश्वर का नाम करोड़ों ही पापों का नाश कर देता है। हे मेरे मन! गुरु के सान्निध्य में रहकर प्रभु के नाम का जाप कर। हे नानक! ऐसे तुझे बहुत सुख प्राप्त होगा॥ १॥

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ लाख करोरी बंधु न परै ॥ हरि का नामु जपत निसतरै ॥ अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै ॥ जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥ २ ॥

सारे संसार का राजा (बनकर भी मनुष्य) दुखी होता है। लेकिन ईश्वर का नाम-स्मरण करने से सुखी हो जाता है। चाहे मनुष्य लाखों-करोड़ों बन्धनों में फँसा हो, (किन्तु) प्रभु के नाम का जाप करने से वह मुक्त हो जाता है। धन-दौलत की अत्याधिक खुशियाँ मनुष्य की तृष्णा को नहीं मिटा सकते। (लेकिन) ईश्वर का नाम-स्मरण करने से वह तृप्त हो जाता है। जिस (यम) मार्ग पर प्राणी अकेला जाता है, वहाँ ईश्वर का नाम सुखदायक होता है। हे मेरे मन! ऐसा नाम सदा स्मरण करो, हे नानक! गुरु की शरण में नाम-स्मरण करने से परमगति प्राप्त हो जाती है॥ २॥

छूटत नही कोटि लख बाही ॥ नामु जपत तह पारि पराही ॥ अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥ हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ नामु जपत पावै बिस्राम ॥ हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥ हरि का नामु कोटि पाप खोवै॥ ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥ नानक पाईऐ साध के संगि ॥ ३ ॥

जहाँ लाखों-करोड़ों भुजाओं के होते हुए भी मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती, वहाँ नाम-स्मरण करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है। जहाँ अनेक विपत्तियाँ आकर मनुष्य को नष्ट करती हैं, वहाँ प्रभु

का नाम तत्काल उसकी रक्षा करता है। जो व्यक्ति अनेक योनियों में जन्मता-मरता रहता है, वह प्रभु के नाम का जाप करने से सुख प्राप्त कर लेता है। अहंकार से मैला हुआ प्राणी कभी यह मैल धो नहीं सकता, (परन्तु) ईश्वर का नाम करोड़ों पापों को नाश कर देता है। हे मेरे मन! ईश्वर के ऐसे नाम को प्रेमपूर्वक स्मरण करो। हे नानक! ईश्वर का नाम संतों की संगति में ही प्राप्त होता है॥ ३॥

जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥ जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ हरि का नामु संगि उजीआरा ॥ जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै ॥ ४ ॥

जिस (जीवन रूपी) मार्ग के कोस इत्यादि गिने नहीं जा सकते, ईश्वर का नाम वहाँ तेरे साथ राशि-पूंजी होगा। जिस मार्ग में घोर-अंधकार है, वहाँ ईश्वर का नाम तेरे साथ प्रकाश होगा। जिस मार्ग पर तेरा कोई जानकार नहीं, वहाँ ईश्वर का नाम तेरे साथ जानने वाला (जानकार) होगा। जहाँ अत्याधिक भयानक गर्मी एवं अत्याधिक धूप है, वहाँ ईश्वर के नाम की तुझ पर छाया होगी। हे प्राणी! जहाँ (माया की) प्यास तुझे खींचती है, वहाँ हे नानक! हरि-परमेश्वर के नाम के अमृत की वर्षा होती है॥ ४॥

भगत जना की बरतनि नामु ॥ संत जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का नामु दास की ओट ॥ हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत संत दिनु राति ॥ हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ मन तन रंगि रते रंग एकै ॥ नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥ ५ ॥

ईश्वर का नाम भक्तजनों हेतु व्यावहारिक सामग्री है। ईश्वर का नाम संतजनों के मन को सुख विश्राम देता है। ईश्वर का नाम उसके सेवक का सहारा है। ईश्वर के नाम द्वारा करोड़ों ही प्राणियों का कल्याण हो गया है। संतजन दिन-रात हरि का यशोगान करते रहते हैं। संत हरि-परमेश्वर के नाम को अपनी औषधि के रूप में उपयोग करते हैं। ईश्वर का नाम ईश्वर के सेवक का खजाना है। पारब्रह्म ने उसे यह दान किया है। जो मन एवं तन से एक ईश्वर के प्रेम में रंगे हुए हैं। हे नानक! उन दासों की वृति ज्ञान वाली हुई है॥ ५॥

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥ हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥ हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥ हरि का नामु जन की वडिआई ॥ हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥ हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥ हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥ जनु राता हरि नाम की सेवा ॥ नानक पूजै हरि हरि देवा ॥ ६ ॥

भगवान का नाम ही भक्त हेतु मुक्ति का साधन है। भगवान का भक्त उसके नाम-भोजन से तृप्त हो जाता है। भगवान का नाम उसके भक्त का सौन्दर्य एवं हर्ष है। भगवान के नाम का जाप करने से मनुष्य को कभी बाधा नहीं पड़ती। भगवान का नाम उसके भक्त की मान-प्रतिष्ठा है। भगवान के नाम द्वारा उसके भक्त को दुनिया में शोभा प्राप्त होती है। भगवान का नाम ही भक्त के लिए योग (साधन) एवं गृहस्थी का माया-भोग है। भगवान के नाम का जाप करने से उसे कोई दुःख-क्लेश नहीं होता। भगवान का भक्त उसके नाम की सेवा में ही मग्न रहता है। हे नानक! (भक्त सदैव) प्रभुदेवा परमेश्वर की ही पूजा करता है॥ ६॥

हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥ हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ ओति पोति जन हरि रसि राते ॥ सुंन समाधि नाम रस माते ॥ आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥ हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ हरि की भगति मुकति बहु करे ॥ नानक जन संगि केते तरे ॥ ७ ॥

हरि–परमेश्वर का नाम भक्त के लिए धन का भण्डार है। हरि नाम रूपी धन प्रभु ने स्वयं अपने भक्त को दिया है। हरि–परमेश्वर का नाम उसके भक्त का सशक्त सहारा है। हरि के प्रताप से भक्तजन किसी दूसरे को नहीं जानता। ताने–बाने की भाँति प्रभु का भक्त हरि–रस में मग्न रहता है। शून्य समाधि में लीन वह नाम–रस में मस्त रहता है। भक्त दिन के आठ पहर हरि–परमेश्वर के नाम का ही जाप करता रहता है। हरि का भक्त दुनिया में लोकप्रिय हो जाता है, छिपा नहीं रहता। भगवान की भक्ति अनेकों को मोक्ष प्रदान करती है। हे नानक ! भक्तों की संगति में कितने ही भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ७॥

पारजातु इहु हरि को नाम ॥ कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा संत रिद वसै ॥ संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥ संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥ नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥

हरि का नाम ही कल्पवृक्ष है। हरि–परमेश्वर के नाम का यशोगान करना ही कामधेनु है। हरि की कथा सबसे उत्तम है। भगवान का नाम सुनने से दुःख–दर्द दूर हो जाते हैं। नाम की महिमा संतों के हृदय में निवास करती है। संतों के तेज प्रताप से समस्त पाप नाश हो जाते हैं। संतों की संगति सौभाग्य से ही प्राप्त होती है। संतों की सेवा से नाम–सिमरन किया जाता है। ईश्वर के नाम के तुल्य कोई दूसरा नहीं। हे नानक ! कोई विरला गुरमुख ही नाम को प्राप्त करता है॥ ८॥ २॥

सलोकु ॥ बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥ १ ॥

श्लोक॥ बहुत सारे शास्त्र एवं बहुत सारी स्मृतियाँ देखी हैं और उन सबकी (भलीभाँति) खोज की है। (लेकिन) यह ईश्वर के नाम की बराबरी नहीं कर सकते। हे नानक ! हरि–परमेश्वर का नाम अमूल्य है॥ १॥

असटपदी ॥ जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥ जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥ सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ पुंन दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥ वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ जप, तपस्या, समस्त ज्ञान एवं ध्यान, छः शास्त्रों के ग्रंथ एवं स्मृतियों का वखान, योग का साधन एवं धार्मिक कर्म–काण्डों का करना, प्रत्येक वस्तु को त्याग देना एवं वन में भटकना, अनेक प्रकार के बहुत यत्न करे, दान–पुण्य, होम यज्ञ एवं अत्याधिक दान करना, शरीर को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटना एवं उनकी अग्नि में आहूति देना, अनेक प्रकार के व्रत एवं नियमों की पालना, लेकिन यह सभी राम के नाम की आराधना के तुल्य नहीं हैं। हे नानक ! (चाहे) यह नाम एक बार ही गुरु की शरण में जपा जाए॥ १॥

नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥ महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ अगनि माहि होमत परान ॥ कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ निउली करम करै बहु आसन ॥ जैन मारग संजम अति साधन ॥ निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥ तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥ २ ॥

इन्सान चाहे पृथ्वी के नौ खण्डों पर भ्रमण करे, चिरकाल (लम्बी आयु) तक जीता रहे, वह महा निर्वाण एवं तपस्वी हो जाए और अपने शरीर को अग्नि में होम कर दे, वह सोना, घोड़े एवं भूमिदान कर दें, वह निउली कर्म (योगासन का रूप) और बहुत सारे योगासन करें, वह जैनियों के मार्ग पर चलकर अत्यंत कठिन साधन तथा तपस्या करें, वह अपने शरीर को छोटा–छोटा करके कटवा दे, तो भी उसके अहंकार की मैल दूर नहीं होती। भगवान के नाम के बराबर कोई वस्तु नहीं। हे नानक ! गुरु के माध्यम से भगवान के नाम का जाप करने से इन्सान को मुक्ति मिल जाती है॥ २॥

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥ ३ ॥

कुछ लोगों की मनोकामना होती है कि किसी तीर्थ–स्थान पर शरीर त्यागा जाए परन्तु (फिर भी) मनुष्य का अहंकार एवं अभिमान मन से दूर नहीं होते। चाहे मनुष्य दिन–रात पवित्रता करता है परन्तु मन की मैल उसके शरीर से दूर नहीं होती। चाहे मनुष्य अपने शरीर से बहुत संयम–साधना करता है, फिर भी माया के बुरे विकार उसके मन को नहीं त्यागते। चाहे मनुष्य इस नश्वर शरीर को कई बार पानी से साफ करता है, तो भी (यह शरीर रूपी) कच्ची दीवार कहाँ पवित्र हो सकती है ? हे मेरे मन ! हरि के नाम की महिमा बहुत ऊँची है। हे नानक ! (प्रभु के) नाम से बहुत सारे पापी मुक्त हो गए हैं॥ ३॥

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥ अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥ अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥

अधिक चतुराई के कारण मनुष्य को मृत्यु का भय आ दबोचता है। अनेक यत्न करने से भी तृष्णा नहीं बुझती। अनेकों धार्मिक वेष बदलने से (तृष्णा की) अग्नि नहीं बुझती। (ऐसे) करोड़ों ही उपायों द्वारा मनुष्य प्रभु के दरबार में मुक्त नहीं होता। जो व्यक्ति मोह के कारण माया के जाल में फँसते हैं, वह चाहे आकाश में चले जाएँ अथवा पाताल में चले जाएँ, उनकी मुक्ति नहीं होती। मनुष्य की दूसरी सब करतूतों पर यमराज उन्हें दण्ड देता है। (लेकिन) गोविन्द के भजन के बिना मृत्यु तनिकमात्र भी परवाह नहीं करती। नानक सहज स्वभाव यही बोलता है कि भगवान के नाम का जाप करने से हर प्रकार के दुःख दूर हो जाते हैं॥ ४॥

चारि पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की सेवा लागै ॥ जे को आपुना दूखु मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ साधसंगि इह हउमै छोरै ॥ जे को जनम मरण ते डरै ॥ साध जना की सरनी परै ॥ जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ नानक ता कै बलि बलि जासा ॥ ५ ॥

यदि कोई व्यक्ति चार पदार्थों–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अभिलाषी हो तो उसे संतजनों की सेवा में लगना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपना दुःख मिटाना चाहता है तो उसे अपने हृदय में हरि–परमेश्वर का नाम सदैव स्मरण करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपनी शोभा चाहता हो तो वह संतों की संगति में रहकर इस अहंकार को त्याग दे। यदि कोई व्यक्ति जन्म–मरण के दुःख से डरता है, तो उसे संतजनों की शरण लेनी चाहिए। जिस व्यक्ति को परमात्मा के दर्शनों की तीव्र लालसा है, हे नानक ! मैं उस पर सदा कुर्बान जाता हूँ॥ ५॥

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥ आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥ सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥ नानक पाप पुंन नही लेपा ॥ ६ ॥

समस्त पुरुषों में वहीं पुरुष प्रधान है जिस पुरुष का सत्संग में रहकर अभिमान मिट जाता है। जो पुरुष अपने आपको निम्न (विनीत) जानता है, वह सबसे भला (ऊँचा) समझा जाता है। जिस पुरुष का मन सबके चरणों की धूलि बन जाता है, वह हरि–परमेश्वर के नाम को प्रत्येक हृदय में देखता है। जो अपने मन से बुराई को मिटा देता है, वह सारी सृष्टि को अपना मित्र देखता है। हे नानक ! जो पुरुष सुख–दुःख को एक समान देखता है, वह पाप–पुण्य से निर्लिप्त रहता है॥ ६॥

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन संगि आपि प्रभ राते ॥ तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥ नानक अवरु न जानसि कोइ ॥ ७ ॥

हे नाथ ! निर्धन के लिए तेरा नाम ही धन–दौलत है। निराश्रित को तेरा नाम ही आश्रय है। हे प्रभु ! निरादरों का तू आदर है। तू ही समस्त प्राणियों को दान देता है। हे जगत् के स्वामी ! तुम स्वयं ही सब कुछ करते एवं स्वयं ही जीवों से करवाते हो। तू बड़ा अन्तर्यामी है। हे ठाकुर ! अपनी गति एवं अपनी मर्यादा तुम स्वयं ही जानते हो। हे प्रभु ! अपने आप से तुम स्वयं ही रंगे हुए हो। हे ईश्वर ! अपनी महिमा केवल तुम ही कर सकते हो। हे नानक ! कोई दूसरा तेरी महिमा को नहीं जानता॥ ७॥

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥ साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥ सगल उदम महि उदमु भला ॥ हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अंम्रित बानी ॥ हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥ ८ ॥ ३ ॥

समस्त धर्मों में ईश्वर के नाम का जाप करना एवं पवित्र कर्म करना ही सर्वोपरि धर्म है। समस्त धार्मिक क्रियाओं में सत्संग में मिलकर दुर्बुद्धि की मैल को धो फैंकना ही सर्वश्रेष्ठ क्रिया है। समस्त प्रयासों में उत्तम प्रयास यही है कि सदा मन में हरि के नाम का जाप करते रहो। समस्त वाणियों में ईश्वर की महिमा सुननी एवं इसको जिह्वा से उच्चारण करना अमृत वाणी है। हे नानक ! समस्त स्थानों में वह स्थान उत्तम है, जिस में ईश्वर का नाम निवास करता है॥ ८॥ ३॥

सलोकु ॥ निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे गुणविहीन एवं मूर्ख जीव ! उस ईश्वर को सदैव स्मरण कर। हे नानक ! जिसने तुझे उत्पन्न किया है, उसको अपने हृदय में बसा, केवल ईश्वर ही तेरा साथ देगा॥ १॥

असटपदी ॥ रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ हे नश्वर प्राणी ! सर्वव्यापक राम के गुण स्मरण कर। तेरा क्या मूल है और तू कैसा दिखाई देता है। जिसने तुझे रचा, संवारा एवं सुशोभित किया है, जिसने तेरी गर्भ की अग्नि में रक्षा की है, जिसने तुझे बाल्यावस्था में पीने के लिए दूध दिया है, जिसने तुझे यौवन में भोजन, सुख एवं सूझ दी और जिसने जब तू वृद्धा हुआ तो बैठे ही मुँह में भोजन डालने के लिए तेरी सेवा के लिए सगे-संबंधी एवं मित्र दिए हैं। यह गुणविहीन मनुष्य किए हुए उपकारों की कुछ भी कद्र नहीं करता। नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! यदि तू उसको क्षमा कर दे तो ही वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है॥ १॥

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥ २ ॥

(हे प्राणी !) जिसकी कृपा से तू धरती पर सुखपूर्वक रहता है और अपने पुत्र, भाई, मित्र एवं पत्नी के साथ हँसता खेलता है, जिसकी कृपा से तू शीतल जल पीता है और तुझे प्रसन्न करने वाली सुखदायक वायु एवं अमूल्य अग्नि मिली है, जिसकी कृपा से तुम तमाम रस भोगते हो और समस्त पदार्थों के साथ तुम रहते हो, जिसने तुझे हाथ, पैर, कान, आँख एवं जीभ प्रदान किए हैं, (हे प्राणी !) तुम उस ईश्वर को भुलाकर दूसरों के साथ प्रेम करते हो। ऐसे दोष ज्ञानहीन मूर्ख के साथ फँसे हुए हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! इनकी तुम स्वयं ही रक्षा करो॥ २॥

आदि अंति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥ ता कउ अंधा जानत दूरे ॥ जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥ ३ ॥

जो परमात्मा आदि से लेकर अंत तक (जन्म से मृत्यु तक) सबका रक्षक है, मूर्ख पुरुष उससे प्रेम नहीं करता। जिसकी सेवा से उसको नौ निधियाँ मिलती हैं, उसे मूर्ख जीव अपने हृदय से नहीं लगाता। जो ठाकुर सदैव ही प्रत्यक्ष है, उसको ज्ञानहीन जीव दूर जानता है। मूर्ख एवं अज्ञानी पुरुष उस ईश्वर को भुला देता है, जिसकी सेवा-भक्ति से उसने प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करनी है। नश्वर प्राणी हमेशा ही भूल करता रहता है। हे नानक ! केवल अनन्त ईश्वर ही रक्षक है॥ ३॥

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥ साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥ जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै॥ छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ संगि सहाई तिसु परहरै ॥ चंदन लेपु उतारै धोइ ॥ गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥ अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥ ४ ॥

नाम–रत्न को त्याग कर मनुष्य माया रूपी कौडी के संग खुश रहता है। वह सत्य को त्यागकर झूठ के साथ प्रसन्न होता है। जिस दुनिया के पदार्थों को उसने त्याग जाना है, उसको वह सदैव स्थिर जानता है। जो कुछ होना है, उसको वह दूर समझता है। जिसे उसे छोड़ जाना है, उसके लिए वह कष्ट उठाता है। वह उस सहायक (प्रभु) को त्यागता है, जो सदैव उसके साथ है। वह चन्दन के लेप को धोकर उतार देता है। गधे का केवल भस्म (राख) से ही प्रेम है। मनुष्य भयंकर अन्धेरे कुएँ में गिरा पड़ा है। नानक की प्रार्थना है कि हे दया के घर ईश्वर ! इन्हें तुम अन्धेरे कुएँ से बाहर निकाल लो॥ ४॥

करतूति पसू की मानस जाति ॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥ बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥ ५ ॥

जाति मनुष्य की है, लेकिन कर्म पशुओं वाले हैं। इन्सान रात–दिन लोगों के लिए आडम्बर करता रहता है। बाहर (देहि में) वह धार्मिक वेष धारण करता है परन्तु उसके मन में माया की मैल है। चाहे जितना दिल करे वह छिपाए परन्तु वह अपनी असलियत को छिपा नहीं सकता। वह ज्ञान, ध्यान एवं स्नान करने का दिखावा करता है। परन्तु उसके मन को लालच रूपी कुत्ता दबाव डाल रहा है। उसके शरीर में तृष्णा की अग्नि विद्यमान है और बाहर शरीर पर वैराग्य की भस्म विद्यमान है। अपनी गर्दन पर वासना रूपी पत्थर के साथ वह अति गहरे सागर से किस तरह पार हो सकता है ? हे नानक ! जिसके हृदय में ईश्वर स्वयं निवास करता है ऐसा व्यक्ति सहज ही प्रभु में समा जाता है॥ ५॥

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥ करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥ कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसनपद गावै गुंग ॥ जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ कह पिंगुल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥ ६ ॥

केवल सुनने से ही अन्धा पुरुष किस तरह मार्ग ढूँढ सकता है ? उसका हाथ पकड़ लो (चूंकि यह) अन्त तक प्रेम का निर्वाह कर सके। बहरा पुरुष बात किस तरह समझ सकता है ? जब हम रात कहते हैं तो वह दिन समझता है। गूँगा पुरुष किस तरह बिसनपद गा सकता है ? यदि वह कोशिश भी करे तो भी उसका स्वर भंग हो जाता है। लंगडा किस तरह पहाड़ पर चक्कर काट सकता है ? उसका वहाँ जाना संभव नहीं। हे नानक ! हे करुणामय ! हे करतार ! (यह) दीन सेवक प्रार्थना करता है कि तेरी कृपा से ही जीव भवसागर से पार हो सकता है॥ ६॥

संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥ ७ ॥

जो परमात्मा जीव का साथी एवं सहायक है, वह उसे अपने चित्त में याद नहीं करता। अपितु वह उससे प्रेम करता है, जो उसका शत्रु है। वह बालू (रेत) के घर में ही रहता है। वह आनंद के खेल एवं धन के रंग (खुशी) भोगता है। वह इन रंगरलियों का भरोसा मन में दृढ समझता है। लेकिन मूर्ख जीव अपने मन में काल (मृत्यु) को स्मरण ही नहीं करता। वैर, विरोध, कामवासना, क्रोध, मोह, झूठ, पाप, महालोभ एवं छल–कपट की युक्तियों में मनुष्य ने अनेकों जन्म व्यतीत कर दिए हैं। नानक की विनती है कि हे प्रभु ! अपनी कृपा धारण करके जीव को भवसागर से बचा ले॥ ७॥

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥ कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥ सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥ तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ ८ ॥ ४ ॥

(हे ईश्वर !) तू हमारा ठाकुर है और हमारी तुझ से ही प्रार्थना है। यह आत्मा एवं शरीर सब तेरी ही पूँजी है। तुम हमारे माता-पिता हो और हम तेरे बालक हैं। तेरी कृपा में बहुत सारे सुख हैं। हे प्रभु ! तेरा अन्त कोई भी नहीं जानता। तू सर्वोपरि भगवान है। समूचा जगत् तेरे सूत्र (धागे) में पिरोया हुआ है। जो कुछ (सृष्टि) तुझ से उत्पन्न हुआ है, वह तेरा आज्ञाकारी है। तेरी गति एवं मर्यादा को केवल तू ही जानता है। हे नानक ! तेरा सेवक सदा ही तुझ पर कुर्बान जाता है॥ ८॥ ४॥

सलोकु ॥ देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥ नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ देने वाले दाता प्रभु को त्याग कर प्राणी दूसरे स्वादों में लगता है, (परन्तु) हे नानक ! ऐसा प्राणी कदापि सफल नहीं होता, क्योंकि प्रभु के नाम के बिना मान-सम्मान नहीं रहता॥ १॥

असटपदी ॥ दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥ जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥ सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ मनुष्य (ईश्वर से) दस वस्तुएँ लेकर पीछे सँभाल लेता है। (परन्तु) एक वस्तु की खातिर वह अपना विश्वास गंवा लेता है। यदि प्रभु एक वस्तु भी न देवे और दस भी छीन ले तो बताओ यह मूर्ख क्या कर सकता है ? जिस ठाकुर के समक्ष कोई जोर नहीं चल सकता, उसके समक्ष सदैव प्रणाम करना चाहिए। जिसके मन को प्रभु मीठा लगता है, समस्त सुख उसके मन में वास करते हैं। हे नानक ! जिस पुरुष से परमेश्वर अपने हुक्म का पालन करवाता है, संसार के समस्त पदार्थ उसने पा लिए हैं॥ १॥

अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥ अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥ अपनी परतीति आप ही खोवै॥ बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ उस ते चउगुन करै निहालु ॥ नानक साहिबु सदा दइआलु ॥ २ ॥

साहूकार प्रभु प्राणी को (पदार्थों की) असंख्य पूँजी प्रदान करता है। प्राणी इसको आनंद एवं उल्लास से खाता-पीता एवं उपयोग करता है। यदि साहूकार प्रभु अपनी धरोहर में से कुछ वापिस ले ले, तो मूर्ख व्यक्ति अपने मन में क्रोध करता है। इस तरह वह अपना विश्वास स्वयं ही गंवा लेता है। प्रभु दोबारा उस पर विश्वास नहीं करता। जिसकी वस्तु है, उसके समक्ष (स्वयं ही खुशी से) रख देनी चाहिए और प्रभु की आज्ञा उसके लिए सहर्ष मानने योग्य है। प्रभु उसे पहले की अपेक्षा चौगुणा कृतार्थ कर देता है। हे नानक ! ईश्वर सदैव ही दयालु है॥ २॥

अनिक भाति माइआ के हेत ॥ सरपर होवत जानु अनेत ॥ बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥ ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥ बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि न आवै केह ॥ मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥ करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥ ३ ॥

माया के मोह अनेक प्रकार के हैं, परन्तु यह तमाम अन्त में नाश हो जाने वाले समझो। मनुष्य वृक्ष की छाया से प्रेम करता है। (परन्तु) जब वह नाश होता है तो वह अपने मन में पश्चाताप करता है। दृष्टिगोचर जगत् क्षणभंगुर है, इस जगत् से ज्ञानहीन इन्सान अपनत्व बनाए बैठा है। जो भी पुरुष यात्री से प्रेम लगाता है, आखिरकार उसके हाथ कुछ नहीं आता। हे मेरे मन! भगवान के नाम का प्रेम सुखदायक है। हे नानक! भगवान उनको अपने साथ लगाता है, जिन पर वह कृपा धारण करता है॥ ३॥

मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥ मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥ मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥ ४ ॥

यह शरीर, धन–दौलत एवं परिवार सब झूठा है। अहंकार, ममता एवं माया भी झूठे हैं। राज्य, यौवन, धन एवं सम्पत्ति सब कुछ मिथ्या है। काम एवं विकराल क्रोध सब नश्वर हैं। सुन्दर रथ, हाथी, घोड़े एवं सुन्दर वस्त्र ये सभी नश्वर (मिथ्या) हैं। धन–दौलत संग्रह करने की प्रीति, जिसे देख कर मनुष्य हँसता है, यह भी मिथ्या है। छल–कपट, सांसारिक मोह एवं अभिमान भी क्षणभंगुर हैं। अपने ऊपर घमण्ड करना झूठा है। भगवान की भक्ति एवं संतों की शरण अटल है। हे नानक! भगवान के चरणों को ही जप कर प्राणी वास्तविक जीवन जीता है॥ ४॥

मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥ मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥ ५ ॥

इन्सान के वे कान झूठे हैं जो पराई निन्दा सुनते हैं। वे हाथ भी झूठे हैं जो पराया धन चुराते हैं। वे नेत्र मिथ्या हैं, जो पराई नारी का सौन्दर्य रूप देखते हैं। वह जिह्वा भी मिथ्या है, जो पकवान एवं दूसरे स्वाद भोगती है। वे चरण झूठे हैं, जो दूसरों का बुरा करने के लिए दौड़ते हैं। वह मन भी झूठा है जो पराए धन का लोभ करता है। वे शरीर मिथ्या है, जो परोपकार नहीं करता। वह नाक व्यर्थ है, जो विषय–विकारों की गन्ध सूंघ रही है। ऐसी समझ के बिना प्रत्येक अंग नश्वर है। हे नानक! वह शरीर सफल है, जो हरि–परमेश्वर का नाम जपता रहता है॥ ५॥

बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥ ६ ॥

शाक्त इन्सान का जीवन व्यर्थ है। सत्य के बिना वह कैसे शुद्ध हो सकता है? नाम के बिना अज्ञानी पुरुष का शरीर व्यर्थ है। (क्योंकि) उसके मुख से बदबू आती है। प्रभु के सिमरन के बिना दिन और रात व्यर्थ गुजर जाते हैं, जिस तरह वर्षा के बिना फसल नष्ट हो जाती है। गोबिन्द के भजन बिना तमाम कार्य व्यर्थ हैं, जैसे कंजूस पुरुष की दौलत व्यर्थ है। वह इन्सान बड़ा भाग्यशाली है, जिसके हृदय में भगवान का नाम वास करता है। हे नानक! मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥ ६॥

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥ तिस की सीख तरै संसारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥ ७ ॥

मनुष्य कहता कुछ है और करता बिल्कुल ही कुछ और है। उसके हृदय में (प्रभु के प्रति) प्रेम नहीं लेकिन मुख से व्यर्थ बातें करता है। सबकुछ जानने वाला प्रभु बड़ा चतुर है, (वह कभी) किसी के बाहरी वेष से खुश नहीं होता। जो दूसरों को उपदेश देता है और स्वयं उस पर अनुसरण नहीं करता, वह (जगत् में) आता-जाता एवं जन्मता-मरता रहता है। जिस पुरुष के हृदय में निरंकार वास करता है, उसके उपदेश से समूचा जगत् (विकारों से) बच जाता है। हे प्रभु! जो तुझे अच्छे लगते हैं, केवल वही तुझे जान सकते हैं। हे नानक! मैं ऐसे भक्तों के चरण-स्पर्श करता हूँ॥ ७॥

करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥ ८ ॥ ५ ॥

मैं उस पारब्रह्म के समक्ष प्रार्थना करता हूँ, जो सब कुछ जानता है। अपने उत्पन्न किए प्राणी को वह स्वयं ही सम्मान प्रदान करता है। ईश्वर स्वयं ही (प्राणियों के कर्मों के अनुसार) न्याय करता है। किसी को यह सूझ प्रदान करता है कि ईश्वर हमारे समीप है और किसी को लगता है कि ईश्वर कहीं दूर है। समस्त कोशिशों एवं चतुराईयों से ईश्वर परे है। (क्योंकि) वह मनुष्य के मन की अवस्था भलीभाँति समझता है। वह उसको अपने साथ मिला लेता है, जो उसको भला लगता है। प्रभु समस्त स्थानों एवं स्थानों की दूरी पर सर्वव्यापक हो रहा है। जिस पर ईश्वर कृपा धारण करता है, वही उसका सेवक है। हे नानक! क्षण-क्षण हरि का जाप करते रहो॥ ८॥ ५॥

सलोकु ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहंमेव ॥ नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥ १ ॥

श्लोक॥ नानक की प्रार्थना है कि हे ईश्वर! मैं तेरी शरण में आया हूँ, हे गुरुदेव! मुझ पर ऐसी कृपा करें ताकि मेरा काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार निवृत्त हो जाए॥ १॥

असटपदी ॥ जिह प्रसादि छतीह अम्रित खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥ तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥ तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥ जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥ आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥ नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ (हे जीव!) जिसकी कृपा से तू छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन खाता है, उस प्रभु को अपने मन में याद कर। जिसकी कृपा से तुम अपने शरीर पर सुगंधियाँ लगाते हो, उसका भजन

करने से तुझे परमगति मिल जाएगी। जिसकी कृपा से तुम महलों में सुख से रहते हो, अपने मन में हमेशा उसका ध्यान करो। जिसकी कृपा से तुम अपने घर में सुखपूर्वक रहते हो, अपनी जिह्वा से आठ पहर उसका सिमरन करो। हे नानक! जिस की कृपा से रंग तमाशे, स्वादिष्ट व्यंजन एवं पदार्थ प्राप्त होते हैं, उस याद करने योग्य ईश्वर का सदैव ध्यान करना चाहिए॥ १॥

जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥ तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥ मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक पति सेती घरि जावहि ॥ २ ॥

जिसकी कृपा से तुम रेशमी वस्त्र पहनते हो, उसे भुलाकर क्यों दूसरों में मस्त हो रहे हो। जिसकी कृपा से तुम सुखपूर्वक सेज पर सोते हो। हे मेरे मन! उस प्रभु का आठों प्रहर यशोगान करना चाहिए। जिसकी कृपा से प्रत्येक व्यक्ति तेरा आदर-सत्कार करता है, अपने मुँह एवं जिह्वा से उसका यश सदैव बखान कर। जिसकी कृपा से तेरा धर्म कायम रहता है, हे मेरे मन! तू हमेशा उस पारब्रह्म का ध्यान कर। पूज्य परमेश्वर की आराधना करने से तू उसके दरबार में शोभा प्राप्त करेगा। हे नानक! इस तरह तुम प्रतिष्ठा सहित अपने धाम (परलोक) जाओगे॥ २॥

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥ लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ जिह प्रसादि पाई दुलभ देह ॥ नानक ता की भगति करेह ॥ ३ ॥

हे मन! जिसकी कृपा से तुझे सोने जैसा सुन्दर शरीर मिला है, उस प्रियतम राम से वृत्ति लगा। जिसकी कृपा से तेरा पर्दा रहता है, उस प्रभु-परमेश्वर की स्तुति करने से तुम सुख प्राप्त कर लोगे। जिसकी कृपा से तेरे तमाम पाप छिप जाते हैं। हे मन! उस प्रभु-परमेश्वर की शरण ले। जिसकी कृपा से कोई तेरे बराबर नहीं पहुँचता, हे मेरे मन! अपने श्वास-श्वास से सर्वोपरि प्रभु को याद कर। जिसकी कृपा से तुझे दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है, हे नानक! उस भगवान की भक्ति किया कर॥ ३॥

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥ ४ ॥

जिसकी कृपा से आभूषण पहने जाते हैं, हे मन! उसकी आराधना करते हुए आलस्य क्यों किया जाए? जिसकी कृपा से तुम घोड़ों एवं हाथियों की सवारी करते हो, हे मन! उस ईश्वर को कभी विस्मृत न कर। जिसकी कृपा से उद्यान, धरती एवं धन प्राप्त हुए हैं, उस ईश्वर को अपने मन में पिरोकर रख। हे मन! जिस ईश्वर ने तेरी रचना की है, उठते-बैठते हर वक्त उसका ध्यान करते रहना चाहिए। हे नानक! उस एक अदृश्य प्रभु का चिन्तन कर। वह लोक-परलोक दोनों में तेरी रक्षा करेगा॥ ४॥

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥ जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥ सो प्रभु

सिमरहु सदा अनूपु ॥ जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ गुर प्रसादि नानक जसु कहै॥ ५ ॥

जिसकी कृपा से तुम बड़ा दान-पुण्य करते हो, हे मन! आठों पहर उसका ही ध्यान करना चाहिए। जिसकी कृपा से तू धार्मिक संस्कार एवं सांसारिक कर्म करता है, अपने श्वास-श्वास से उस प्रभु का चिन्तन करना चाहिए। जिसकी कृपा से तेरा सुन्दर रूप है, उस अनुपम प्रभु का हमेशा सिमरन करना चाहिए। जिसकी दया से तुझे उच्च (मनुष्य) जाति मिली है, सदा उस प्रभु का दिन-रात चिन्तन कर। जिसकी कृपा से तेरी प्रतिष्ठा बरकरार रही है, हे नानक! गुरु की कृपा से उसकी महिमा किया कर॥ ५॥

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥ जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥ ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥ ६ ॥

जिसकी दया से तू कानों से शब्द सुनता है। जिसकी दया से तू आश्चर्यजनक कौतुक देखता है। जिसकी दया से तू अपनी जिह्वा से मीठे वचन बोलता है। जिसकी कृपा से तू सहज ही सुखपूर्वक रहता है। जिसकी दया से तेरे हाथ हिलते और काम करते हैं। जिसकी दया से तेरे सम्पूर्ण काम सफल होते हैं। जिसकी दया से तुझे परमगति मिलती है। जिसकी दया से तुम सहज सुख में लीन हो जाओगे, ऐसे प्रभु को छोड़कर तुम क्यों किसी दूसरे से लग रहे हो? हे नानक! गुरु की कृपा से अपने मन को ईश्वर की ओर जाग्रत कर॥ ६॥

जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ नानक जापु जपै जपु सोइ ॥ ७ ॥

जिसकी कृपा से तू दुनिया में लोकप्रिय हुआ है, उस प्रभु को कभी अपने हृदय से न भुला। जिसकी कृपा से तेरा तेज-प्रताप बना है, हे मेरे मूर्ख मन! तू उसकी आराधना करता रह। जिसकी दया से तेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण हुए हैं, अपने हृदय में उसको सदा निकट समझ। जिसकी दया से तुझे सत्य प्राप्त होता है, हे मेरे मन! तू उससे प्रेम कर। जिसकी कृपा से सबकी गति हो जाती है, हे नानक! उस प्रभु के नाम का एक रस जाप करना चाहिए॥ ७॥

आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इन कै कछू न हाथ ॥ ८ ॥ ६ ॥

वही पुरुष ईश्वर का नाम जपता है, जिससे वह स्वयं जपाता है। केवल वही ईश्वर का यशोगान करता है, जिससे वह स्वयं गुणगान करवाता है। प्रभु की कृपा से प्रकाश होता है। प्रभु की कृपा से हृदय-कमल प्रफुल्लित होता है। जब प्रभु सुप्रसन्न होता है, तो वह मनुष्य के हृदय में आ निवास

करता है। प्रभु की दया से मनुष्य की बुद्धि उत्तम हो जाती है। हे प्रभु ! समस्त खजाने तेरी दया में हैं। अपने आप किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता। हे हरि-परमेश्वर ! तुम जहाँ प्राणियों को लगाते हो, वे उधर ही लग जाते हैं। हे नानक ! इन प्राणियों के वश में कुछ नहीं है॥ ८॥ ६॥

सलोकु ॥ अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥ जो जो कहै सु मुकता होइ ॥ सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥ साध जना की अचरज कथा॥ १ ॥

श्लोक॥ वह पारब्रह्म प्रभु अगम्य एवं अनन्त है। जो कोई भी उसके नाम का जाप करता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। नानक प्रार्थना करता है, हे मेरे मित्र ! ध्यानपूर्वक सुन, साधुओं की कथा बड़ी अद्भुत है॥ १॥

असटपदी ॥ साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥ साधसंगि मलु सगली खोत ॥ साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥ साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥ साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥ साधसंगि सभु होत निबेरा ॥ साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥ साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥ साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥ नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ साधुओं की संगति करने से मुख उज्ज्वल हो जाता है। साधुओं की संगति करने से विकारों की तमाम मैल दूर हो जाती है। साधुओं की संगति करने से अभिमान मिट जाता है। साधुओं की संगति करने से आत्म-ज्ञान प्रगट हो जाता है। साधुओं की संगति करने से प्रभु निकट ही रहता हुआ प्रतीत होता है। साधुओं की संगति करने से तमाम विवाद निपट जाते हैं। साधुओं की संगति करने से नाम-रत्न प्राप्त हो जाता है। साधुओं की संगति में मनुष्य केवल एक ईश्वर हेतु ही प्रयास करता है। कौन-सा प्राणी साधुओं की महिमा का वर्णन कर सकता है ? हे नानक ! साधुओं की शोभा प्रभु (की महिमा) में ही लीन हुई है॥ १॥

साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥ साध कै संगि सदा परफुलै ॥ साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥ साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा ॥ साधसंगि होइ सभ की रेन ॥ साध कै संगि मनोहर बैन ॥ साध कै संगि न कतहूं धावै ॥ साधसंगि असथिति मनु पावै ॥ साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥ साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥ २ ॥

साधुओं की संगति करने से अगोचर प्रभु मिल जाता है। साधुओं की संगति करने से प्राणी सदा प्रफुल्लित रहता है। साधुओं की संगति करने से पाँच शत्रु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) वश में आ जाते हैं। साधुओं की संगति करने से मनुष्य अमृत रूप नाम का रस चख लेता है। साधुओं की संगति करने से मनुष्य सबकी धूलि बन जाता है। साधुओं की संगति करने से वाणी मनोहर हो जाती है। साधुओं की संगति करने से मन कहीं नहीं जाता। साधुओं की संगति करने से मन स्थिरता प्राप्त कर लेता है। साधुओं की संगति में यह माया से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! साधुओं की संगति में रहने से प्रभु सुप्रसन्न हो जाता है॥ २॥

साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥ साधू कै संगि महा पुनीत ॥ साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥ साध कै संगि न बीगा पैरु ॥ साध कै संगि नाही को मंदा ॥ साधसंगि जाने परमानंदा ॥ साध कै संगि नाही हउ तापु ॥ साध कै संगि तजै सभु आपु ॥ आपे जानै साध बडाई ॥ नानक साध प्रभू बनि आई ॥ ३ ॥

साधु की संगति करने से सभी दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं। साधु की संगति करने से मनुष्य महापवित्र हो जाता है। साधुओं की संगति करने से वह किसी से वैर नहीं करता। साधुओं की संगति

में रहने से मनुष्य कुमार्ग की ओर चरण नहीं करता। साधु की संगति करने से कोई बुरा दिखाई नहीं देता। साधुओं की संगति करने से मनुष्य महान सुख के मालिक ईश्वर को ही जानता है। साधुओं की संगति करने से मनुष्य के अहंकार का ताप उतर जाता है। साधुओं की संगति करने से मनुष्य तमाम अहंत्व को त्याग देता है। ईश्वर स्वयं ही साधुओं की महिमा को जानता है। हे नानक! साधु एवं परमेश्वर का प्रेम परिपक्व हो जाता है॥ ३॥

साध कै संगि न कबहू धावै ॥ साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥ साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥ साधू कै संगि अजरु सहै ॥ साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥ साधू कै संगि महलि पहूचै ॥ साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥ साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥ साध कै संगि पाए नाम निधान ॥ नानक साधू कै कुरबान ॥ ४ ॥

साधु की संगति करने से प्राणी का मन कभी नहीं भटकता। साधु की संगति करने से वह सदा सुख प्राप्त करता है। साधुओं की संगति करने से नाम रूपी अगोचर वस्तु प्राप्त हो जाती है। साधुओं की संगति करने से मनुष्य शिथिल न होने वाली शक्ति को सहन कर लेता है। साधुओं की संगति करने से प्राणी सर्वोच्च स्थान में निवास करता है। साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य आत्मस्वरूप में पहुँच जाता है। साधुओं की संगति करने से प्राणी का धर्म पूरी तरह सुदृढ़ हो जाता है। साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य केवल पारब्रह्म की ही आराधना करता है। साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य नाम रूपी खजाना प्राप्त कर लेता है। हे नानक! मैं उन साधुओं पर तन-मन से न्यौछावर हूँ॥ ४॥

साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥ साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै ॥ साधू कै संगि सो धनु पावै ॥ जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥ साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥ साधू कै संगि पाप पलाइन ॥ साधसंगि अंम्रित गुन गाइन ॥ साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥ नानक साध कै संगि सफल जनंम ॥ ५ ॥

साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य के समूचे वंश का उद्धार हो जाता है। साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य के मित्र-सज्जन एवं परिवार का भवसागर से उद्धार हो जाता है। साधुओं की संगति में रहने से वह धन प्राप्त हो जाता है, जिस धन से हरेक पुरुष लाभ प्राप्त करता है और तृप्त हो जाता है। साधुओं की संगति में रहने से यमराज भी सेवा करता है। जो साधुओं की संगति में रहता है, देवदूत एवं देवते भी उसका यशोगान करते हैं। साधुओं की संगति करने से समूचे पाप नाश हो जाते हैं। साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य अमृतमयी नाम का यश गायन करता है। साधुओं की संगति द्वारा मनुष्य की समस्त स्थानों पर पहुँच हो जाती है। हे नानक! साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है॥ ५॥

साध कै संगि नही कछु घाल ॥ दरसनु भेटत होत निहाल ॥ साध कै संगि कलूखत हरै ॥ साध कै संगि नरक परहरै ॥ साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥ साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥ जो इछै सोई फलु पावै ॥ साध कै संगि न बिरथा जावै ॥ पारब्रहमु साध रिद बसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥ ६ ॥

साधुओं की संगति करने से मनुष्य को मेहनत नहीं करनी पड़ती। साधुओं के दर्शनमात्र एवं भेंट से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है। साधुओं की संगति करने से मनुष्य के तमाम पाप नाश हो जाते हैं। साधुओं की संगति करने से मनुष्य नरक से बच जाता है। साधुओं की संगति करने से प्राणी लोक-परलोक में सुखी हो जाता है। साधुओं की संगति करने से जो ईश्वर से जुदा हुए हैं, वे उससे

मिल जाते हैं। साधुओं की संगति करने से मनुष्य खाली हाथ नहीं जाता, अपितु जिस फल का वह इच्छुक होता है, उसे मिल जाता है। पारब्रह्म–प्रभु साधुओं के हृदय में निवास करता है। हे नानक! साधुओं की जिह्वा से ईश्वर का नाम सुनकर जीव पार हो जाता है॥ ६॥

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥ साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥ साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥ साधसंगि सरपर निसतरै ॥ साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥ साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥ साधसंगि भए आगिआकारी ॥ साधसंगि गति भई हमारी ॥ साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥ नानक साध भेटे संजोग ॥ ७ ॥

साधु की संगति में रहकर भगवान का नाम सुनो। साधुओं की संगति में ईश्वर का गुणानुवाद करो। साधुओं की संगति में मनुष्य प्रभु को अपने हृदय से नहीं भुलाता। साधुओं की संगति में उसका निश्चित ही भवसागर से उद्धार हो जाता है। साधुओं की संगति में रहने से मनुष्य को प्रभु मीठा लगने लगता है। साधुओं की संगति में ईश्वर प्रत्येक हृदय में दिखाई देता है। साधुओं की संगति में मनुष्य ईश्वर का आज्ञाकारी हो जाता है। साधुओं की संगति में हमारी गति हो गई है। साधुओं की संगति में रहने से तमाम रोग मिट जाते हैं। हे नानक! संयोग से ही साधु मिलते हैं॥ ७॥

साध की महिमा बेद न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ साध की उपमा रही भरपूरि ॥ साध की सोभा का नाही अंत ॥ साध की सोभा सदा बेअंत ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध की सोभा साध बनि आई ॥ नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥ ८ ॥ ७ ॥

साधु की महिमा वेद भी नहीं जानते। वे उनके बारे जितना सुनते हैं, उतना ही बखान करते हैं। साधु की उपमा (माया के) तीनों ही गुणों से दूर है। साधु की उपमा सर्वव्यापक है। साधु की शोभा का कोई अन्त नहीं। साधु की शोभा सदैव ही अनन्त है। साधु की शोभा सर्वोच्च एवं महान है। साधु की शोभा महानों में बड़ी महान है। साधु की शोभा केवल साधु को ही उपयुक्त लगती है। नानक का कथन है कि हे मेरे भाई! साधु एवं प्रभु में कोई भेद नहीं॥ ८॥ ७॥

सलोकु ॥ मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥ अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ नानक इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ जिसके मन में सत्य है और मुँह में भी वही सत्य है और जो एक परमात्मा के अलावा किसी दूसरे को नहीं देखता, हे नानक! यह गुण ब्रह्मज्ञानी के होते हैं॥ १॥

असटपदी॥ ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिआनी सदा निरदोख ॥ जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ ब्रह्मज्ञानी हमेशा निर्लिप्त रहता है, जैसे जल में कमल का फूल स्वच्छ होता है। ब्रह्मज्ञानी सदा निर्दोष है, जैसे सूर्य समस्त (रसों को) सुखा देता है। ब्रह्मज्ञानी सबको एक आँख से देखता है, जैसे हवा राजा और कंगाल को एक समान लगती है। ब्रह्मज्ञानी की सहनशीलता एक समान होती है, जैसे कोई धरती को खोदता है और कोई चन्दन का लेप करता है। ब्रह्मज्ञानी का यही गुण है। हे नानक! जैसे अग्नि का सहज स्वभाव होता है॥ १॥

ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥ ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ ब्रहम गिआनी से जन भए ॥ नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥ २ ॥

ब्रह्मज्ञानी निर्मल से भी परम निर्मल है, जैसे जल को मैल नहीं लगती। पृथ्वी के ऊपर आकाश की भाँति ब्रह्मज्ञानी के मन में यूं प्रकाश होता है। ब्रह्मज्ञानी के लिए मित्र एवं शत्रु एक समान होते हैं। ब्रह्मज्ञानी में थोड़ा-सा भी अभिमान नहीं होता। ब्रह्मज्ञानी सर्वोच्च है। परन्तु अपने मन में वह सबसे निम्न होता है। हे नानक! केवल वही पुरुष ब्रह्मज्ञानी बनता है, जिन्हें परमेश्वर स्वयं बनाता है॥ २॥

ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥ आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥ ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥ ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥ ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥ ३ ॥

ब्रह्मज्ञानी सबकी चरण-धूलि है। ब्रह्मज्ञानी आत्मिक आनन्द को अनुभव करता है। ब्रह्मज्ञानी सब पर कृपा करता है। ब्रह्मज्ञानी के पास कोई बुराई नहीं होती और वह कुछ भी बुरा नहीं करता। ब्रह्मज्ञानी सदैव समदर्शी होता है। ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि से अमृत बरसता है। ब्रह्मज्ञानी बन्धनों से मुक्त रहता है। ब्रह्मज्ञानी का जीवन-आचरण बड़ा पवित्र है। ब्रह्मज्ञानी का भोजन ज्ञान होता है। हे नानक! ब्रह्मज्ञानी भगवान के ध्यान में ही मग्न रहता है॥ ३॥

ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥ ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥ ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥ ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥ ब्रहम गिआनी सुफल फला॥ ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु॥ नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥ ४ ॥

ब्रह्मज्ञानी की एक ईश्वर पर ही आशा होती है। ब्रह्मज्ञानी का विनाश नहीं होता। ब्रह्मज्ञानी नम्रता में ही टिका रहता है। ब्रह्मज्ञानी को परोपकार करने का उत्साह बना रहता है। ब्रह्मज्ञानी सांसारिक विवादों से परे होता है। ब्रह्मज्ञानी अपने भागते मन को नियंत्रण में कर लेता है। ब्रह्मज्ञानी के कर्म श्रेष्ठ हैं, वह जो भी करता है, भला ही करता है। ब्रह्मज्ञानी भलीभाँति सफल होता है। ब्रह्मज्ञानी की संगति में रहने से सबका उद्धार हो जाता है। हे नानक! सारी दुनिया ब्रह्मज्ञानी की प्रशंसा करती है॥ ४॥

ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥ ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥ ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥ ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥ ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥ ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥ ५ ॥

ब्रह्मज्ञानी केवल एक ईश्वर से ही प्रेम करता है। ईश्वर ब्रह्मज्ञानी के साथ-साथ रहता है। ईश्वर का नाम ही ब्रह्मज्ञानी का आधार है। ईश्वर का नाम ही ब्रह्मज्ञानी का परिवार है। ब्रह्मज्ञानी हमेशा जाग्रत रहता है। ब्रह्मज्ञानी अपनी अहंबुद्धि को त्याग देता है। ब्रह्मज्ञानी के हृदय में परमानन्द वास करता है। ब्रह्मज्ञानी के हृदय-रूपी घर में सदा आनंद बना रहता है। ब्रह्मज्ञानी हमेशा सहज सुख में निवास करता है। हे नानक! ब्रह्मज्ञानी का विनाश नहीं होता॥ ५॥

ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥ ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥ ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥ ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥ ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥ ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥ ६ ॥

ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म ज्ञाता होता है। ब्रह्मज्ञानी एक ईश्वर से ही प्रेम करता है। ब्रह्मज्ञानी के हृदय में हमेशा बेफिक्री रहती है। ब्रह्मज्ञानी का मन्त्र पवित्र करने वाला होता है। ब्रह्मज्ञानी वही होता है, जिसे ईश्वर स्वयं लोकप्रिय बनाता है। ब्रह्मज्ञानी का बड़ा प्रताप है। ब्रह्मज्ञानी के दर्शन किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होते हैं। ब्रह्मज्ञानी पर हमेशा बलिहारी जाना चाहिए। ब्रह्मज्ञानी को शिवशंकर भी खोजते रहते हैं। हे नानक! परमेश्वर स्वयं ही ब्रह्मज्ञानी है॥ ६॥

ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥ ७ ॥

ब्रह्मज्ञानी के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। सब गुण ब्रह्मज्ञानी के हृदय में विद्यमान हैं। ब्रह्मज्ञानी के भेद को कौन जान सकता है? ब्रह्मज्ञानी को सदैव प्रणाम करना चाहिए। ब्रह्मज्ञानी की महिमा का एक आधा अक्षर भी वर्णन नहीं किया जा सकता। ब्रह्मज्ञानी समस्त जीवों का पूज्य स्वामी है। ब्रह्मज्ञानी का अनुमान कौन लगा सकता है। केवल ब्रह्मज्ञानी ही ब्रह्मज्ञानी की गति को जानता है। ब्रह्मज्ञानी के गुणों का कोई आर-पार नहीं। हे नानक! ब्रह्मज्ञानी को हमेशा ही प्रणाम करते रहो॥ ७॥

ब्रहम गिआनी सभ सिसटि का करता ॥ ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥ ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥ ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥ नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥ ८ ॥ ८ ॥

ब्रह्मज्ञानी सारी दुनिया का कर्त्तार है। ब्रह्मज्ञानी सदैव ही जीवित रहता है और मरता नहीं। ब्रह्मज्ञानी जीवों को मुक्ति, युक्ति एवं जीवन देने वाला दाता है। ब्रह्मज्ञानी पूर्ण पुरुष विधाता है। ब्रह्मज्ञानी अनाथों का नाथ है। ब्रह्मज्ञानी का रक्षक हाथ समस्त मानव जाति पर है। यह सारा जगत्-प्रसार ब्रह्मज्ञानी का ही है। ब्रह्मज्ञानी स्वयं ही निरंकार है। ब्रह्मज्ञानी की शोभा केवल ब्रह्मज्ञानी को ही बनती है। हे नानक! ब्रह्मज्ञानी सबका मालिक है॥ ८॥ ८॥

सलोकु ॥ उरि धारै जो अंतरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो व्यक्ति अपने हृदय में भगवान के नाम को बसाता है, जो सब में भगवान के दर्शन करता है और क्षण-क्षण प्रभु को प्रणाम करता है, हे नानक! ऐसा सत्यवादी निर्लिप्त महापुरुष समस्त प्राणियों का भवसागर से उद्धार कर देता है॥ १॥

असटपदी॥ मिथिआ नाही रसना परस ॥ मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥ पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल संतसंगि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निंदा ॥ सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥ गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ जो व्यक्ति जिह्वा से झूठ नहीं बोलता, जिसके हृदय में पवित्र प्रभु के दर्शनों की अभिलाषा बनी रहती है, जिसके नेत्र पराई नारी के सौन्दर्य को नहीं देखते, जो साधुओं की श्रद्धापूर्वक सेवा करता है और संतों की संगति से प्रेम करता है, जो अपने कानों से किसी की निन्दा नहीं सुनता, जो अपने आपको बुरा (निम्न) समझता है, जो गुरु की कृपा से बुराई को त्याग देता है, जो अपने मन की वासना अपने मन से दूर कर देता है और जो अपनी ज्ञान-इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है और पाँचों ही विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से बचा रहता है, हे नानक! करोड़ों में से कोई ऐसा विरला पुरुष 'अपरस' (पवित्र-पावन) होता है॥ १॥

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥ करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इछा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥ मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥ २ ॥

जिस व्यक्ति पर परमात्मा प्रसन्न है, वही वैष्णव है। वह विष्णु की माया से अलग रहता है और शुभकर्म करता हुआ निष्कर्मी ही रहता है। उस वैष्णव का धर्म भी पवित्र है। वह किसी फल की इच्छा नहीं करता। वह केवल प्रभु-भक्ति एवं उसके कीर्तन में ही समाया रहता है। उसकी आत्मा एवं शरीर में सृष्टि के पालनहार गोपाल का सिमरन ही होता है। वह समस्त जीवों पर कृपालु होता है। वह स्वयं ईश्वर का नाम अपने मन में बसाता है और दूसरों से नाम का जाप करवाता है। हे नानक! ऐसा वैष्णव परमगति प्राप्त कर लेता है॥ २॥

भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥ सगल तिआगै दुसट का संगु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥ साधसंगि पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥ ३ ॥

जिसके चित्त में भगवान की भक्ति का प्रेम होता है, वही भगवान का वास्तविक भक्त है। वह समस्त दुष्टों की संगति त्याग देता है और उसके मन से हर प्रकार की दुविधा मिट जाती है। वह पारब्रह्म को हर जगह मौजूद समझता है और केवल उसकी ही पूजा करता है। जो साधुओं-संतों की संगति में रहकर पापों की मैल मन से निवृत्त कर देता है, ऐसे भक्त की बुद्धि उत्तम हो जाती है। वह अपने भगवान की नित्य सेवा करता रहता है। वह अपना मन एवं तन अपने प्रभु के प्रेम में समर्पित कर देता है। वह भगवान के चरण अपने हृदय में बसाता है। हे नानक! ऐसा भक्त ही भगवान को प्राप्त करता है॥ ३॥

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥ बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥ ४ ॥

पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥ जैसी मति देइ तैसा परगास ॥ पारब्रहमु करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइआल ॥ सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥ ८ ॥ ९ ॥

परमात्मा के ही समस्त स्थान है। जिस–जिस स्थान पर ईश्वर प्राणियों को रखता है, वैसा ही वह नाम धारण कर लेते हैं। भगवान स्वयं ही सब कुछ करने और (प्राणियों से) करवाने में समर्थ है। जो परमात्मा को भला लगता है, वही होता है। परमात्मा ने अपने आपको अनन्त लहरों में मौजूद होकर फैलाया हुआ है। परमात्मा के कौतुक जाने नहीं जा सकते। परमात्मा जैसी बुद्धि प्रदान करता है, वैसा ही प्रकाश होता है। सृष्टिकर्त्ता परमात्मा अनश्वर है। ईश्वर हमेशा ही दयालु है। हे नानक! उस परमात्मा का सिमरन करके कितने ही जीव कृतार्थ हो गए हैं॥ ८॥ ९॥

सलोकु ॥ उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥ नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥ १ ॥

श्लोक॥ बहुत सारे मनुष्य प्रभु की गुणस्तुति करते रहते हैं, परन्तु परमात्मा के गुणों का कोई ओर–छोर नहीं मिलता। हे नानक! परमात्मा ने जो यह सृष्टि–रचना की है, वह अनेक प्रकार की होने के कारण बहुत सारी विधियों से रची है॥ १॥

असटपदी ॥ कई कोटि होए पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अंतु न पावहि ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ कई करोड़ जीव उसकी पूजा करने वाले हुए हैं। कई करोड़ धार्मिक एवं सांसारिक आचरण–व्यवहार करने वाले हुए हैं। कई करोड़ जीव तीर्थों के निवासी हुए हैं। कई करोड़ जीव वैरागी बनकर जंगलों में भटकते रहते हैं। कई करोड़ वेदों के श्रोता हैं। कई करोड़ तपस्वी बने हुए हैं। कई करोड़ अपनी आत्मा में प्रभु–ध्यान को धारण करने वाले हैं। कई करोड़ कवि काव्य–रचनाओं द्वारा विचार करते हैं। कई करोड़ पुरुष नित्य नवीन नाम का ध्यान करते रहते हैं, तो भी हे नानक! उस परमात्मा का कोई भेद नहीं पा सकते॥ १॥

कई कोटि भए अभिमानी ॥ कई कोटि अंध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥ २ ॥

इस दुनिया में कई करोड़ (पुरुष) अभिमानी हैं। कई करोड़ (पुरुष) अन्धे अज्ञानी हैं। कई करोड़ (पुरुष) पत्थर दिल कंजूस हैं। कई करोड़ (मनुष्य) शुष्क एवं संवेदनहीन हैं। कई करोड़ (मनुष्य) दूसरों का धन चुराते हैं। कई करोड़ (मनुष्य) दूसरों की निन्दा करते हैं। कई करोड़ (पुरुष) धन संग्रह करने हेतु श्रम में लगे हैं। कई करोड़ दूसरे देशों में भटक रहे हैं। हे प्रभु! जहाँ कहीं तुम जीवों को (काम में) लगाते हो, वहाँ–वहाँ वे लग जाते हैं। हे नानक! कर्त्ता–प्रभु की सृष्टि रचना (का भेद) कर्त्ता–प्रभु ही जानता है॥ २॥

कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥ कई कोटि देस भू मंडल ॥ कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥ ३ ॥

इस दुनिया में कई करोड़ सिद्ध, ब्रह्मचारी एवं योगी हैं। कई करोड़ रस भोगने वाले राजा हैं। कई करोड़ पक्षी एवं साँप परमात्मा ने पैदा किए हैं, कई करोड़ पत्थर एवं वृक्ष उगाए गए हैं। कई करोड़ हवाएँ, जल एवं अग्नियां हैं। कई करोड़ देश एवं भूमण्डल हैं। कई करोड़ चन्द्रमा, सूर्य एवं तारे हैं। कई करोड़ देवते, राक्षस एवं इन्द्र हैं, जिनके सिर पर छत्र हैं। ईश्वर ने सारी सृष्टि को अपने (हुक्म के) धागे में पिरोया हुआ है। हे नानक ! जो जो परमात्मा को भला लगता है, उसे ही वह भवसागर से पार कर देता है॥ ३॥

कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जख्य किंनर पिसाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥ सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥ ४ ॥

कई करोड़ रजोगुणी, तमोगुणी एवं सतोगुणी जीव हैं। कई करोड़ वेद, पुराण, स्मृतियां एवं शास्त्र हैं। कई करोड़ समुद्रों में रत्न पैदा कर दिए हैं। कई करोड़ विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु हैं। करोड़ों प्राणी लम्बी आयु वाले बनाए गए हैं। (परमात्मा के हुक्म द्वारा) कई करोड़ ही सोने के सुमेर पर्वत बन गए हैं। कई करोड़ यक्ष, किन्नर एवं पिशाच हैं। कई करोड़ ही भूत-प्रेत, सूअर एवं शेर हैं। ईश्वर सबके निकट और सबके ही दूर है। हे नानक ! ईश्वर हरेक में परिपूर्ण हो रहा है, जबकि वह स्वयं निर्लिप्त रहता है॥ ४॥

कई कोटि पाताल के वासी ॥ कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ कई कोटि कीए धनवंत ॥ कई कोटि माइआ महि चिंत ॥ जह जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥ ५ ॥

कई करोड़ जीव पाताल के निवासी हैं। कई करोड़ जीव नरकों तथा स्वर्गों में रहते हैं। कई करोड़ जीव जन्मते, जीते और मरते हैं। कई करोड़ जीव अनेक योनियों में भटक रहे हैं। कई करोड़ (व्यर्थ) बैठकर खाते हैं। करोड़ों ही जीव परिश्रम से थककर टूट जाते हैं। कई करोड़ जीव धनवान बनाए गए हैं। करोड़ों ही जीव धन-दौलत की चिन्ता में लीन हैं। ईश्वर जहाँ कहीं चाहता है, वहाँ ही वह जीवों को रखता है। हे नानक ! सब कुछ ईश्वर के अपने हाथ में है॥ ५॥

कई कोटि भए बैरागी ॥ राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥ कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥ आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥ कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥ कई कोटि मागहि सतसंगु॥ पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥ जिन कउ होए आपि सुप्रसंन ॥ नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥ ६ ॥

इस दुनिया में कई करोड़ जीव वैराग्यवान बने हुए हैं और राम के नाम से उनकी वृति लगी हुई है। करोड़ों ही जीव परमात्मा को खोजते रहते हैं और अपनी आत्मा में ही भगवान को पा लेते हैं।

करोड़ों ही प्राणियों को ईश्वर के दर्शनों की प्यास (अभिलाषा) लगी रहती है, उन्हें अनश्वर प्रभु मिल जाता है। कई करोड़ प्राणी सत्संगति की माँग करते हैं। वे भगवान के प्रेम में ही मग्न रहते हैं। हे नानक! जिन पर ईश्वर स्वयं सुप्रसन्न होता है, ऐसे व्यक्ति हमेशा ही भाग्यवान हैं॥ ६॥

कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥ कई कोटि होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो बिसथार ॥ कई बार पसरिओ पासार ॥ सदा सदा इकु एकंकार ॥ कई कोटि कीने बहु भाति ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥ ता का अंतु न जानै कोइ ॥ आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥ ७ ॥

धरती के नौ खण्डों एवं (चार) दिशाओं में करोड़ों ही प्राणी पैदा हुए हैं। कई करोड़ आकाश एवं ब्रह्माण्ड हैं। करोड़ों ही अवतार हो चुके हैं। कई युक्तियों से ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है। इस सृष्टि का कई बार प्रसार हुआ है लेकिन परमात्मा हमेशा से एक ही है। कई करोड़ जीव ईश्वर ने अनेक विधियों के बनाए हैं। परमेश्वर से वे (जीव) उत्पन्न हुए हैं और परमेश्वर में ही समा गए हैं। उसके अन्त को कोई नहीं जानता। हे नानक! वह परमेश्वर सब कुछ आप ही है॥ ७॥

कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ तिन होवत आतम परगास ॥ कई कोटि तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥ ८ ॥ १० ॥

इस दुनिया में कई करोड़ जीव परमात्मा के दास हैं और उनकी आत्मा में प्रकाश हो जाता है। कई करोड़ जीव तत्त्व ज्ञाता हैं, और अपने नेत्रों से वे सदैव एक ईश्वर के दर्शन करते रहते हैं। कई करोड़ जीव नाम-रस पीते रहते हैं, जो अमर होकर हमेशा ही जीते हैं। करोड़ों ही जीव नाम का यशोगान करते रहते हैं। वे आत्म-रस के सुख में सहज ही समा जाते हैं। अपने भक्तों की प्रभु श्वास-श्वास से देखभाल करता है। हे नानक! ऐसे भक्त ही परमेश्वर के प्रिय होते हैं॥ ८॥ १०॥

सलोकु ॥ करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ एक ईश्वर ही सृष्टि का मूल कारण (सर्जक) है, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं। हे नानक! मैं उस ईश्वर पर कुर्बान जाता हूँ, जो जल, धरती, पाताल एवं आकाश में विद्यमान है॥ १॥

असटपदी ॥ करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ अंतु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे अनिक रंग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ हर कार्य करने और जीवों से कराने वाला एक ईश्वर सब कुछ करने में समर्थ है। जो कुछ उसे भला लगता है, वही होता है। वह क्षण भर में इस सृष्टि को उत्पन्न करने एवं नाश भी करने वाला (प्रभु) है। उसकी ताकत का कोई ओर-छोर नहीं। अपने हुक्म द्वारा उसने धरती की स्थापना की है और बिना किसी सहारे के उसने (टिकाया) रखा हुआ है। जो कुछ उसके हुक्म द्वारा उत्पन्न हुआ है, अन्त में उसके हुक्म में लीन हो जाता है। भले तथा बुरे कर्म उसकी इच्छा (रज़ा)

अनुसार हैं। उसके हुक्म द्वारा अनेकों प्रकार के खेल–तमाशे हो रहे हैं। सृष्टि–रचना करके वह अपनी महिमा को देखता रहता है। हे नानक! ईश्वर समस्त जीवों में समा रहा है॥ १॥

प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥ २ ॥

यदि प्रभु को भला लगे तो मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है। यदि प्रभु को भला लगे तो पत्थर को भी पार कर देता है। यदि प्रभु को भला लगे तो श्वासों के बिना भी प्राणी को (मृत्यु से) बचाकर रखता है। यदि प्रभु को भला लगे तो मनुष्य ईश्वर की गुणस्तुति करता रहता है। यदि प्रभु को भला लगे तो वह पापियों का भी उद्धार कर देता है। ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही विचार करता है। ईश्वर स्वयं ही लोक–परलोक का स्वामी है। अन्तर्यामी प्रभु जगत्–खेल खेलता रहता है और (इसे देखकर) खुश होता है। जो कुछ प्रभु को लुभाता है, वही काम मनुष्य से करवाता है। हे नानक! उस जैसा दूसरा कोई नजर नहीं आता॥ २॥

कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥ ३ ॥

बताओ, मनुष्य से कौन–सा काम हो सकता है? जो ईश्वर को भला लगता है, वही (काम) प्राणी से करवाता है। यदि मनुष्य के वश में हो तो वह हरेक पदार्थ सँभाल ले। जो कुछ परमात्मा को उपयुक्त लगता है, वह वही कुछ करता है। ज्ञान न होने के कारण मनुष्य विषय–विकारों में मग्न रहता है। यदि वह जानता हो तो वह अपने आपको (विकारों से) बचा ले। भ्रम में भूला हुआ उसका मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है। चारों कोनों में चक्कर काट कर वह एक क्षण में वापिस लौट आता है। जिसे कृपा करके प्रभु अपनी भक्ति प्रदान करता है। हे नानक! वह पुरुष नाम में लीन हो जाता है॥ ३॥

खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥ तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥ ४ ॥

क्षण में ही ईश्वर कीड़े समान निम्न (पुरुष) को (राज्य प्रदान करके) राजा बना देता है। भगवान गरीबों पर दया करने वाला है। जिस प्राणी का कोई गुण दिखाई नहीं देता, उसे क्षण भर में तुरन्त ही दसों दिशाओं में लोकप्रिय कर देता है। विश्व का स्वामी जगदीश जिस पर अपनी कृपा–दृष्टि कर देता है, वह उसके कर्मों का लेखा–जोखा नहीं गिनता। यह आत्मा एवं शरीर सब उसकी दी हुई पूँजी है। पूर्ण ब्रह्म का प्रत्येक हृदय में प्रकाश है। यह सृष्टि–रचना उसने स्वयं ही रची है। हे नानक! मैं उसकी महिमा को देखकर जी रहा हूँ॥ ४॥

इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥ कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥ ५ ॥

सबका मालिक एक परमात्मा ही सबकुछ करने एवं जीव से कराने वाला है, इसलिए इस जीव का बल इसके अपने हाथ में नहीं है। बेचारा जीव तो परमात्मा का आज्ञाकारी है। जो कुछ ईश्वर को भला लगता है, अंतः वही होता है। मनुष्य कभी उच्च जातियों एवं कभी निम्न जातियों में बसता है। कभी वह दुःख में दुखी होता है और कभी खुशी में प्रसन्नता से हंसता है। कभी निन्दा करना ही उसका व्यवसाय होता है। कभी वह आकाश में होता है और कभी पाताल में। कभी वह ब्रह्म विचार का ज्ञाता होता है। हे नानक! ईश्वर मनुष्य को अपने साथ मिलाने वाला स्वयं ही है॥ ५॥

कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूं सरब की होत रवाल ॥ कबहू होइ बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥ ६ ॥

यह जीव कभी अनेक प्रकार के नृत्य कर रहा है। कभी वह दिन-रात सोया रहता है। कभी वह अपने महाक्रोध में भयानक हो जाता है। कभी वह सब की चरण-धूलि बना रहता है। कभी वह महान राजा बन बैठता है। कभी वह नीच भिखारी का वेष धारण कर लेता है। कभी वह अपकीर्ति (बदनामी) में आ जाता है। कभी वह बहुत भला कहलवाता है। जिस तरह प्रभु उसको रखता है, वैसे ही जीव रहता है। गुरु की कृपा से नानक सत्य ही कहता है॥ ६॥

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक दूजा अवरु न कोइ ॥ ७ ॥

कभी मनुष्य पण्डित बनकर उपदेश देता है। कभी वह मौनधारी साधु बनकर ध्यान लगाए बैठा है। कभी वह तीर्थों के किनारे जाकर स्नान करता है। कभी वह सिद्ध, साधक बनकर मुख से ज्ञान करता है। कभी मनुष्य कीड़ा, हाथी अथवा पतंगा बना रहता है और अनेक योनियों में लगातार भटकता रहता है। बहुरूपिए की भाँति वह अत्याधिक रूप धारण करता हुआ भी दिखाई देता है। जिस तरह प्रभु को उपयुक्त लगता है, वैसे ही नचाता है जैसे उसको अच्छा लगता है, वही होता है। हे नानक! उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं॥ ७॥

कबहू साधसंगति इहु पावै ॥ उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ अंतरि होइ गिआन परगासु ॥ उसु असथान का नही बिनासु ॥ मन तन नामि रते इक रंगि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥ जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥ तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ के सद कुरबान ॥ ८ ॥ ११ ॥

यह जीव कभी सत्संगति को पाता है तो उस (पवित्र) स्थान से दोबारा वह लौटकर नहीं आता। उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है। उस निवास का कभी विनाश नहीं होता। जिसका मन एवं तन ईश्वर के नाम एवं प्रेम में मग्न रहता है। वह हमेशा ही परमात्मा के संग बसता है। जैसे जल आकर जल में ही मिल जाता है, वैसे ही उसकी ज्योति परम ज्योति में लीन हो जाती है। उसका आवागमन (जन्म-मरण) मिट जाता है और वह सुख पा लेता है। हे नानक! ऐसे प्रभु पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ ८॥ ११॥

सलोकु ॥ सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥ १ ॥

श्लोक॥ विनम्र स्वभाव वाला पुरुष सुख में रहता है। वह अपने अहंकार को त्याग कर विनीत हो जाता है। (परन्तु) हे नानक! बड़े-बड़े अहंकारी इन्सान अपने अहंकार में ही नाश हो जाते हैं॥ १॥

असटपदी ॥ जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥ सो नरकपाती होवत सुआनु ॥ जो जानै मै जोबनवंतु ॥ सो होवत बिसटा का जंतु ॥ आपस कउ करमवंतु कहावै ॥ जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ जिस व्यक्ति के हृदय में शासन का अभिमान होता है, ऐसा व्यक्ति नरक में पड़ने वाला कुत्ता होता है। जो पुरुष अहंकार में अपने आपको अति सुन्दर (यौवन सम्पन्न) समझता है, वह विष्टा का कीड़ा होता है। जो व्यक्ति स्वयं को शुभकर्मों वाला कहलाता है, वह जन्म-मरण के चक्र में फँसकर अधिकतर योनियों में भटकता रहता है। जो प्राणी अपने धन एवं भूमि का घमण्ड करता है, वह मूर्ख, अन्धा एवं अज्ञानी है। जिस इन्सान के हृदय में प्रभु कृपा करके विनम्रता बसा देता है, हे नानक! ऐसा इन्सान इहलोक में मोक्ष तथा परलोक में सुख प्राप्त करता है॥ १॥

धनवंता होइ करि गरबावै ॥ त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवंतु ॥ खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥ किसै न बदै आपि अहंकारी ॥ धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥ गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥ सो जनु नानक दरगह परवानु ॥ २ ॥

जो आदमी धनवान होकर अपने धन का अभिमान करता है, एक तिनके के बराबर भी कुछ उसके साथ नहीं जाता। जो आदमी बहुत बड़ी सेना एवं लोगों पर आशा लगाए रखता है, उसका एक क्षण में ही नाश हो जाता है। जो आदमी अपने आपको सबसे शक्तिशाली समझता है, वह एक क्षण में भस्म हो जाता है। जो आदमी अपने अहंकार में किसी की भी परवाह नहीं करता, यमराज अन्त में उसे बड़ा दुःख देता है। हे नानक! गुरु की कृपा से जिस इन्सान का अभिमान मिट जाता है, ऐसा इन्सान ही प्रभु के दरबार में स्वीकार होता है॥ २॥

कोटि करम करै हउ धारे ॥ स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥ हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥ आपस कउ जो भला कहावै ॥ तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥ सरब की रेन जा का मनु होइ ॥ कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥ ३ ॥

यदि व्यक्ति करोड़ों शुभ कर्म करता हुआ अभिमान करे, तो वह दुःख ही उठाता है। उसके तमाम कार्य व्यर्थ हो जाते हैं। जो व्यक्ति अनेक तपस्या करके अहंकार करता है, वह पुनः पुनः नरक-स्वर्ग में जन्म लेता रहता है। जिसका हृदय अधिकतर यत्न करने के बावजूद भी विनम्र नहीं होता, तो बताओ, वह पुरुष भगवान के दरबार में कैसे जा सकता है ? जो पुरुष अपने आपको भला कहलाता है, भलाई उसके निकट नहीं आती। हे नानक! जिसका मन सबकी चरण-धूलि बन जाता है, उसकी निर्मल शोभा होती है॥ ३॥

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥ तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥ ४ ॥

जब तक इन्सान यह समझने लगता है कि मुझे से कुछ हो सकता है, तब तक उसको कोई सुख उपलब्ध नहीं होता। जब तक इन्सान यह समझने लगता है कि मैं कुछ करता हूँ, तब तक वह गर्भ की योनियों में भटकता रहता है। जब तक इन्सान किसी को शत्रु एवं किसी को मित्र समझता है, तब तक उसका मन स्थिर नहीं होता। जब तक इन्सान माया के मोह में मग्न रहता है, तब तक यमराज उसको दण्डित करता रहता है। प्रभु की कृपा से इन्सान के बन्धन टूट जाते हैं। हे नानक ! गुरु की कृपा से अहंकार मिट जाता है॥ ४॥

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥ अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥ बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥ नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥ बडभागी किसै परापति होइ ॥ करन करावन आपे आपि ॥ सदा सदा नानक हरि जापि ॥ ५ ॥

इन्सान हजारों कमा कर भी लाखों के लिए भाग-दौड़ करता है। धन-दौलत की तलाश में उसकी तृप्ति नहीं होती। इन्सान अधिकतर विषय-विकारों के भोग में लगा रहता है, परन्तु वह तृप्त नहीं होता और उसकी अभिलाषा करता हुआ मर मिटता है। संतोष के बिना किसी को तृप्ति नहीं होती। उसके सब कार्य स्वप्न के मनोरथ की भाँति व्यर्थ हैं। भगवान के नाम रंग द्वारा सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं। किसी भाग्यशाली इन्सान को ही नाम की प्राप्ति होती है। प्रभु स्वयं सब कुछ करने तथा जीवों से कराने में समर्थ है। हे नानक ! हरि के नाम का जाप सदैव करो॥ ५॥

करन करावन करनैहारु ॥ इस कै हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥ आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥ जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥ सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥ आपहि एक आपहि अनेक ॥ मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥ नानक सद ही रहिआ समाइ ॥ ६ ॥

केवल परमात्मा ही करने एवं कराने वाला है। विचार कर देख लो, प्राणी के वश में कुछ नहीं। जैसी दृष्टि परमात्मा धारण करता है, मनुष्य वैसा ही हो जाता है। वह प्रभु स्वयं ही सब कुछ है। जो कुछ उसने किया है, वह उसकी इच्छा के अनुकूल है। वह सबसे दूर है, फिर भी सबके साथ है। वह समझता, देखता और निर्णय करता है। परमात्मा स्वयं ही एक है और स्वयं ही अनेक रूप है। परमात्मा न ही मरता है और न ही नाश होता है। वह न ही आता है और न ही जाता है। हे नानक ! परमात्मा सदा सब में समाया हुआ है॥ ६॥

आपि उपदेसै समझै आपि ॥ आपे रचिआ सभ कै साथि ॥ आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥ उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥ थान थनंतरि एकै सोइ ॥ अपुने चलित आपि करणैहार ॥ कउतक करै रंग आपार ॥ मन महि आपि मन अपुने माहि ॥ नानक कीमति कहनु न जाइ ॥ ७ ॥

वह स्वयं ही उपदेश देता है और स्वयं ही समझता है। परमात्मा स्वयं ही सबके साथ मिला हुआ है। अपना विस्तार उसने स्वयं ही किया है। प्रत्येक वस्तु उसकी है, वह सृजनहार है। बताओ, उससे अलग कुछ हो सकता है ? एक ईश्वर स्थानों एवं उनकी सीमाओं पर सर्वत्र मौजूद है। अपनी लीलाओं को वह स्वयं ही करने वाला है। वह कौतुक रचता है और उसके रंग अनन्त हैं। (जीवों के) मन में स्वयं वास कर रहा है, (जीवों को) अपने मन में स्थिर किए बैठा है। हे नानक ! उस (परमात्मा) का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ ७॥

सति सति सति प्रभु सुआमी ॥ गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ सचु सचु सचु सभु कीना ॥ कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला तेरा रूप ॥ अति सुंदर अपार अनूप ॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥ ८ ॥ १२ ॥

जगत् का स्वामी परमात्मा सदैव सत्य है। यह बात गुरु की कृपा से किसी विरले ने ही बखान की है। परमात्मा जिसने सबकी रचना की है, वह भी सत्य है। करोड़ों में कोई विरला ही उसको जानता है। हे प्रभु ! तेरा रूप कितना भला–सुन्दर है। हे ईश्वर ! तुम अत्यंत सुन्दर, अपार एवं अनूप हो। हे परमात्मा ! तेरी वाणी अति पवित्र, निर्मल एवं मधुर है। प्रत्येक व्यक्ति इसको कानों से सुनता एवं व्याख्या करता है। हे नानक ! जो व्यक्ति अपने मन में प्रेम से भगवान के नाम का जाप करता है। वह पवित्र पावन हो जाता है॥ ८॥ १२॥

सलोकु ॥ संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो व्यक्ति संतों की शरण में आता है, उस व्यक्ति का उद्धार हो जाता है। हे नानक ! संतों की निन्दा करने से प्राणी पुनः पुनः जन्म लेता रहता है॥ १॥

असटपदी ॥ संत कै दूखनि आरजा घटै ॥ संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥ संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥ संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥ संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ संत के हते कउ रखै न कोइ ॥ संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥ संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥ नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ संत को दुखी करने से मनुष्य की आयु कम हो जाती है। संत को दुःखी करने से मनुष्य यमदूतों से नहीं बच सकता। संत को दुखी करने से मनुष्य के समस्त सुख नाश हो जाते हैं। संत को दुखी करने से मनुष्य नरक में जाता है। संत को दुखी करने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। संत को दुखी करने से मनुष्य की शोभा समाप्त हो जाती है। संत से तिरस्कृत पुरुष की कोई भी रक्षा नहीं कर सकता। संत को दुखी करने से स्थान भ्रष्ट हो जाता है। हे नानक ! यदि कृपा के घर संत स्वयं कृपा करे तो सत्संगति में निंदक भी (भवसागर से) पार हो जाता है॥ १॥

संत के दूखन ते मुखु भवै ॥ संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥ संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥ संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥ संत कै दूखनि सभु को छलै ॥ संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥ संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥ संत दोखी का थाउ को नाहि ॥ नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥ २ ॥

संत को दुखी करने से मुख भ्रष्ट हो जाता है। संत को दुखी करने वाला पुरुष कोए के समान निन्दा करता रहता है। संत को दुखी करने से मनुष्य सर्पयोनि में पड़ता है। संत को दुखी करने वाला मनुष्य कीड़े इत्यादि की त्रिगद योनि में भटकता है। संत को दुखी करने वाला मनुष्य तृष्णा की अग्नि में जलता रहता है। संत को दुखी करने वाला सबके साथ छल–कपट करता रहता है। संत को दुखी करने से मनुष्य का सारा तेज–प्रताप नाश हो जाता है। संत को दुखी करने से मनुष्य नीचों का महानीच हो जाता है। संत के दोषी का कोई सुख का सहारा नहीं रहता। हे नानक! यदि संत को भला लगे तो निंदक भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ २॥

संत का निंदकु महा अतताई ॥ संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥ संत का निंदकु महा हतिआरा ॥ संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥ संत का निंदकु राज ते हीनु ॥ संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ संत के निंदक कउ सरब रोग ॥ संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ संत की निंदा दोख महि दोखु ॥ नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥ ३ ॥

संत की निन्दा करने वाला सबसे बुरे कर्म करने वाला महानीच है। संत की निन्दा करने वाले को क्षण भर भी सुख नहीं मिलता। संत की निन्दा करने वाला महा हत्यारा है। संत की निन्दा करने वाला परमेश्वर की ओर से तिरस्कृत होता है। संत की निन्दा करने वाला शासन से रिक्त रहता है। संत की निन्दा करने वाला दुखी तथा निर्धन हो जाता है। संत की निन्दा करने वाले को सर्व रोग लग जाते हैं। संत की निन्दा करने वाला सदा वियोग में रहता है। संत की निंदा दोषों का भी दोष महापाप है। हे नानक! यदि संत को भला लगे तो उसकी भी मुक्ति हो जाती है॥ ३॥

संत का दोखी सदा अपवितु ॥ संत का दोखी किसै का नही मितु ॥ संत के दोखी कउ डानु लागै ॥ संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ संत का दोखी महा अहंकारी ॥ संत का दोखी सदा बिकारी ॥ संत का दोखी जनमै मरै ॥ संत की दूखना सुख ते टरै ॥ संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥ ४ ॥

संत का दोषी सदेव अपवित्र है। संत का दोषी किसी भी मनुष्य का मित्र नहीं होता। संत के दोषी को (धर्मराज से) दण्ड मिलता है। संत के दोषी को सभी त्याग देते हैं। संत का दोषी महा अहंकारी होता है। संत का दोषी सदेव पापी होता है। संत का दोषी जन्मता–मरता रहता है। संत का निन्दक सुख से खाली हो जाता है। संत के दोषी को कोई रहने का स्थान नहीं मिलता। हे नानक! यदि संत को लुभाए तो वह उसको अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥

संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥ संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥ संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ नानक संत भावै ता लए उबारि ॥ ५ ॥

संत का दोषी बीच में टूट जाता है। संत का दोषी किसी काम में सफल नहीं होता। संत का दोषी भयानक जंगलों में भटकता रहता है। संत का दोषी कुमार्ग में डाल दिया जाता है। संत का दोषी वैसे ही भीतर से खाली होता है, जैसे मृतक व्यक्ति का शव श्वास के बिना होता है। संत के दोषी की जड बिल्कुल ही नहीं होती। जो कुछ उसने बोया है, वह स्वयं ही खाता है। संत के दोषी का कोई भी रक्षक नहीं हो सकता। हे नानक! यदि संत को भला लगे तो वह उसको बचा लेता है॥ ५॥

संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ संत का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ संत का दोखी धरम ते रहत ॥ संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥ ६ ॥

संत का दोषी यूं विलाप करता है, जैसे जल के बिना मछली दुःख में तड़पती है। संत का दोषी हमेशा भूखा ही रहता है और तृप्त नहीं होता, जैसे अग्नि ईंधन से तृप्त नहीं होती। संत का दोषी वैसे ही अकेला पड़ा रहता है, जैसे भीतर से जला हुआ तिल का पौधा खेत में व्यर्थ पड़ा रहता है। संत का दोषी धर्म से भ्रष्ट होता है। संत का दोषी सदा झूठ बोलता रहता है। निन्दक का भाग्य आदि से ही ऐसा लिखा हुआ है। हे नानक ! जो कुछ प्रभु को भला लगता है, वही होता है॥ ६॥

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥ संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥ ७ ॥

संत का दोषी बदसूरत रूप वाला हो जाता है। संत पर दोष लगाने वाला ईश्वर के दरबार में दण्ड प्राप्त करता है। संत का दोषी सदा मृत्यु-निकट होता है। संत का दोषी जीवन एवं मृत्यु के बीच लटकता है। संत के दोषी की आशा पूर्ण नहीं होती। संत का दोषी निराश चला जाता है। संत को दोषी को स्थिरता प्राप्त नहीं होती। जैसे ईश्वर की इच्छा होती है, वैसा ही मनुष्य हो जाता है। कोई भी व्यक्ति पूर्व जन्म के कर्मों को मिटा नहीं सकता। हे नानक ! यह सच्चा प्रभु सब कुछ जानता है॥ ७॥

सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥ सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥ अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर कउनु कहै बीचारु ॥ जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥ ८ ॥ १३ ॥

समस्त जीव-जन्तु उस परमात्मा के हैं। उसको हमेशा प्रणाम करते रहो। भगवान का गुणानुवाद दिन-रात करते रहो। अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से उसका ही ध्यान करते रहो। सब कुछ उस (परमात्मा) का किया ही होता है। ईश्वर जैसे मनुष्य को बनाता है, वैसा ही वह बन जाता है। अपनी खेल का वह स्वयं ही निर्माता है। दूसरा कौन उसका विचार कर सकता है। परमात्मा जिस पर अपनी कृपा करता है, उसे ही अपना नाम दे देता है। हे नानक ! ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली है॥ ८॥ १३॥

सलोकु ॥ तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे भद्रपुरुषो ! अपनी चतुराई त्याग कर हरि-परमेश्वर का सिमरन करो। अपने मन में भगवान की आशा रखो। हे नानक ! इस तरह दुख, भ्रम एवं भय दूर हो जाएँगे॥ १॥

असटपदी ॥ मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥ मारै राखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ नानक बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ (हे प्राणी!) किसी मनुष्य पर भरोसा रखना सब व्यर्थ है। एक भगवान ही सब को देने वाला है। जिसके देने से ही तृप्ति होती है और फिर तृष्णा आकर नहीं लगती। एक ईश्वर स्वयं ही मारता है और रक्षा करता है। मनुष्य के वश में कुछ भी नहीं है। उसका हुक्म समझने से सुख उपलब्ध होता है। उसके नाम को पिरोकर अपने कण्ठ में डालकर रखो। हे नानक! उस प्रभु को हमेशा स्मरण करते रहो, कोई विघ्न नहीं आएगा॥ १॥

उसतति मन महि करि निरंकार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥ निरमल रसना अंम्रितु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥ साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥ चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥ मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥ २ ॥

अपने मन में परमात्मा की महिमा-स्तुति करो। हे मेरे मन! सत्य का कार्य-व्यवहार कर। नाम का अमृत पान करने से तेरी जिह्वा पवित्र हो जाएगी और तू अपनी आत्मा को हमेशा के लिए सुखदायक बना लेगा। अपने नेत्रों से ईश्वर का कौतुक देख। सत्संगति में मिलने से दूसरे तमाम मेल-मिलाप लुप्त हो जाते हैं। अपने चरणों से गोबिन्द के मार्ग पर चलो। एक क्षण भर के लिए भी हरि का जाप करने से पाप मिट जाते हैं। प्रभु की सेवा करो और कानों से हरि कथा सुनो। हे नानक! (इस प्रकार) प्रभु के दरबार में तेरा मस्तक उज्ज्वल हो जाएगा॥ २॥

बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवंत गनी संसार ॥ मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ एको एकु एकु पछानै ॥ इत उत की ओहु सोझी जानै ॥ नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥ ३ ॥

दुनिया में वही व्यक्ति भाग्यशाली हैं, जो हमेशा भगवान की महिमा गाते रहते हैं। जो व्यक्ति राम के नाम का चिन्तन करते रहते हैं, वही व्यक्ति जगत् में धनवान गिने जाते हैं। जो व्यक्ति अपने मन, तन एवं मुख से परमेश्वर के नाम का उच्चारण करते हैं, समझ लीजिए कि वे हमेशा सुखी हैं। जो पुरुष केवल एक प्रभु को ही पहचानता है, उसे इहलोक एवं परलोक का ज्ञान हो जाता है। हे नानक! जिसका मन ईश्वर के नाम में मिल जाता है, वह प्रभु को पहचान लेता है॥ ३॥

गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥ साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥ एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥ ४ ॥

गुरु की कृपा से जो व्यक्ति अपने आपको समझ लेता है, जान लीजिए कि उसकी तृष्णा मिट गई है। जो व्यक्ति संतों की संगति में हरि-परमेश्वर का यश करता रहता है, वह प्रभु भक्त तमाम रोगों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। जो व्यक्ति रात-दिन केवल ईश्वर का भजन ही बखान करता है, वह अपने गृहस्थ में ही निर्लिप्त रहता है। जिस मनुष्य ने एक ईश्वर पर आशा रखी है, उसके लिए मृत्यु का फँदा कट जाता है। जिसके मन में पारब्रह्म की भूख है, हे नानक! उसको कोई दुख नहीं लगता॥ ४॥

जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥ अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥ सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥ ५ ॥

जिसको हरि–प्रभु मन में याद आता है, वह संत सुखी है और उसका मन कभी नहीं डगमगाता। जिस पर ईश्वर अपनी कृपा धारण करता है, कहो वह सेवक किससे डर सकता है ? जैसा ईश्वर है, वैसा ही उसको दिखाई देता है। अपनी रचना में प्रभु स्वयं ही समाया हुआ है। अनेक बार विचार करके विचार लिया है। गुरु की कृपा से समस्त वास्तविकता को समझ लिया है। जब मैं देखता हूँ तो सबकुछ परमात्मा ही है। हे नानक ! वह स्वयं ही सूक्ष्म और स्वयं ही अस्थूल है॥ ५॥

नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ आपन चलितु आप ही करै ॥ आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥ आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खंड ॥ धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाए त नानक जाप ॥ ६ ॥

न कुछ जन्मता है, न कुछ मरता है। भगवान अपनी लीला स्वयं ही करता है। जन्म–मरण, गोचर एवं अगोचर–यह समूचा जगत् उसने अपने आज्ञाकारी बनाए हुए हैं। सब कुछ वह अपने आप से ही है। वह स्वयं ही सब (जीव–जन्तुओं) में विद्यमान है। अनेक युक्तियों द्वारा वह सृष्टि की रचना करता एवं उसका नाश भी करता है। लेकिन अनश्वर परमात्मा का कुछ भी नाश नहीं होता। वह ब्रह्माण्ड को सहारा दे रहा है। प्रभु का तेज–प्रताप अलक्ष्य एवं भेद रहित है। हे नानक ! यदि वह अपना जाप मनुष्य से स्वयं करवाए तो ही वह जाप करता है॥ ६॥

जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥ सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेलि लए किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥ ७ ॥

जो प्रभु को जानते हैं, वे शोभायमान हैं। समूचा जगत् उनके मन्त्र (उपदेश) द्वारा बच जाता है। प्रभु के सेवक सबका कल्याण कर देते हैं। प्रभु के सेवकों की संगति द्वारा दुःख भूल जाता है। कृपालु प्रभु उनको अपने साथ मिला लेता है। गुरु के शब्द का जाप करने से वह कृतार्थ हो जाते हैं। केवल वही सौभाग्यशाली उनकी सेवा में लगता है, जिस पर प्रभु कृपा धारण करता है। जो प्रभु के नाम का जाप करते हैं, वे सुख पाते हैं। हे नानक ! उन पुरुषों को महान समझो॥ ७॥

जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु एको जानु ॥ ८ ॥ १४ ॥

वह जो कुछ करता है, प्रभु की रजा में करता है। वह हमेशा के लिए प्रभु के साथ बसता है। जो कुछ होता है, वह सहज स्वभाव ही होता है। वह उस सृजनहार प्रभु को ही पहचानता है। प्रभु का

किया उसके सेवकों को मीठा लगता है। जैसा प्रभु है, वैसा ही उसको दिखाई देता है। वह उसमें लीन हो जाता है, जिससे वह उत्पन्न हुआ था। वह सुखों का भण्डार है। यह प्रतिष्ठा केवल उसको ही शोभा देती है। अपने सेवक को प्रभु ने स्वयं ही शोभा प्रदान की है। हे नानक! समझो कि प्रभु एवं उसका सेवक एक समान ही हैं॥ ८॥ १४॥

सलोकु ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥ १ ॥

श्लोक॥ प्रभु सर्वकला सम्पूर्ण है और हमारे दुःखों को जानने वाला है। हे नानक! जिसका सिमरन करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥

असटपदी ॥ टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइ ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति नानक जपि एक हरि नाम ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ जगतपालक गोपाल टूटों को जोड़ने वाला है। वह स्वयं ही समस्त प्राणियों का पालन-पोषण करता है। जिसके मन में सब की चिन्ता है, उससे कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता। हे मेरे मन! सदा ही परमात्मा का जाप कर। अनश्वर प्रभु सब कुछ स्वयं ही है। प्राणी के अपने करने से कुछ नहीं हो सकता, चाहे वह सैकड़ों बार इसकी इच्छा करे। उसके अतिरिक्त कुछ भी तेरे काम का नहीं। हे नानक! एक ईश्वर के नाम का जाप करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है॥ १॥

रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवंता होइ किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक सो जनु सदा अरोगु ॥ २ ॥

यदि प्राणी अति सुन्दर है तो अपने आप वह दूसरों को मोहित नहीं करता। प्रभु की ज्योति ही समस्त शरीरों में सुन्दर लगती है। धनवान होकर कोई पुरुष क्या अभिमान करे, जब समस्त धन उसका दिया हुआ है। यदि कोई पुरुष अपने आपको महान शूरवीर कहलवाता हो, प्रभु की कला (शक्ति) बिना वह क्या प्रयास कर सकता है? यदि कोई पुरुष दानी बन बैठे तो दाता प्रभु उसको मूर्ख समझता है। गुरु की कृपा से जिसके अहंकार का रोग दूर होता है, हे नानक! वह मनुष्य सदैव स्वस्थ है॥ २॥

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥ गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि ॥ ३ ॥

जैसे मन्दिर को एक खम्भा सहारा देता है, वैसे ही गुरु का शब्द मन को सहारा देता है। जैसे नाव में रखा पत्थर पार हो जाता है, वैसे ही प्राणी गुरु के चरणों से लगकर भवसागर से पार हो जाता है। जैसे दीपक अन्धेरे में प्रकाश कर देता है, वैसे ही गुरु के दर्शन करके मन प्रफुल्लित हो जाता

है। जैसे मनुष्य को महा जंगल में पथ मिल जाता है, वैसे ही सत्संगति में रहने से प्रभु की ज्योति मनुष्य के भीतर प्रकट हो जाती है। मैं उन संतों के चरणों की धूलि माँगता हूँ। हे ईश्वर ! नानक की आकांक्षा पूर्ण करो॥ ३॥

मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तेरै संग ॥ लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥ राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥ ४ ॥

हे मूर्ख मन ! क्यों विलाप करते हो ! तुझे वह कुछ मिलेगा, जो तेरे पूर्व जन्म के कर्मों द्वारा लिखा हुआ है। प्रभु दुःख एवं सुख देने वाला है। अन्य सब कुछ छोड़कर तू उसकी ही आराधना कर। परमात्मा जो कुछ करता है, उसको सुख समझ। हे मूर्ख ! तुम क्यों भटकते फिरते हो। कौन-सी वस्तु तेरे साथ आई है। हे लालची परवाने ! तुम सांसारिक ऐश्वर्य-भोग में मस्त हो रहे हो ? तू अपने मन में राम के नाम का जाप कर। हे नानक ! इस तरह तुम सम्मानपूर्वक अपने धाम (परलोक) को जाओगे॥ ४॥

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ लादि खेप संतह संगि चालु ॥ अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥ इहु वापारु विरला वापारै ॥ नानक ता कै सद बलिहारै ॥ ५ ॥

(हे जीव !) जिस सौदे को लेने लिए तू दुनिया में आया है, वह राम नाम रूपी सौदा संतों के घर से मिलता है। अपने अभिमान को त्याग दे, राम का नाम अपने हृदय में तोल और अपने मन से इसे खरीद। अपना सौदा लाद ले और संतों के संग चल। माया के दूसरे जंजाल त्याग दे। हरेक तुझे धन्य ! धन्य !! कहेगा। उस प्रभु के दरबार में तेरा मुख उज्ज्वल होगा। यह व्यापार कोई विरला व्यापारी ही करता है। हे नानक ! मैं ऐसे व्यापारी पर सदा बलिहारी जाता हूँ॥ ५॥

चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इसनानु ॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ हरि गुन गाइ अंम्रित रसु चाखै ॥ ओट गही संतह दरि आइआ ॥ सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥ ६ ॥

(हे जीव !) साधुओं के चरण धो-धोकर पी। साधुओं पर अपनी आत्मा भी अर्पण कर दे। साधुओं के चरणों की धूलि से स्नान कर। साधु पर कुर्बान हो जाना चाहिए। साधु की सेवा सौभाग्य से ही मिलती है। साधु की संगति में हरि का भजन गान करना चाहिए। साधु अनेक विघ्नों से मनुष्य की रक्षा करता है। जो प्रभु की गुणस्तुति करता है, वह अमृत रस को चखता है। जिसने संतों का सहारा पकड़ा है और उनके द्वार पर आ गिरा है, हे नानक ! वह सर्व सुख प्राप्त कर लेता है॥ ६॥

मिरतक कउ जीवालनहार ॥ भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥ करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥ ७ ॥

परमात्मा मृतक प्राणी को भी जीवित करने वाला है। वह भूखे को भी भोजन प्रदान करता है। तमाम खजाने उसकी दृष्टि में हैं। (परन्तु प्राणी) अपने पूर्व जन्म के किए कर्मों का फल भोगते हैं। सबकुछ उस परमात्मा का ही है और वही सब कुछ करने में समर्थावान है। उसके अलावा कोई दूसरा न ही था और न ही होगा। हे जीव! दिन-रात सदैव उसकी आराधना कर। यह जीवन-आचरण सबसे ऊँचा एवं पवित्र है। हे नानक! जिस पुरुष पर परमात्मा ने कृपा धारण करके अपना नाम प्रदान किया है, वह पवित्र हो जाता है॥ ७॥

जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥ जा कै हिरदै एको होइ ॥ सचु करणी सचु ता की रहत ॥ सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची द्रिसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥ नानक सो जनु सचि समाता ॥ ८ ॥ १५ ॥

जिसके मन में गुरु जी पर आस्था है, वह मनुष्य हरि-प्रभु को स्मरण करने लग जाता है। जिसके हृदय में एक ईश्वर विद्यमान होता है, वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध भक्त हो जाता है। उसका कर्म सत्य है और जीवन-मर्यादा भी सत्य है। उसके मन में सत्य है और वह अपने मुख से सत्य ही बोलता है। उसकी दृष्टि सत्य है और उसका स्वरूप भी सत्य है। वह सत्य बांटता है और सत्य ही फैलाता है। हे नानक! जो पुरुष पारब्रह्म को सत्य समझता है, वह पुरुष सत्य में ही समा जाता है॥ ८॥ १५॥

सलोकु ॥ रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥ तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥ १ ॥

श्लोक॥ परमेश्वर का न कोई रूप अथवा चिन्ह है और न ही कोई रंग है। वह माया के तीनों गुणों से परे है। हे नानक! परमात्मा स्वयं उस पुरुष को समझाता है, जिस पर स्वयं प्रसन्न होता है॥ १॥

असटपदी ॥ अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥ सरब निरंतरि एको सोइ ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥ पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥ क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥ साध तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इहु अनराउ ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ (हे जीव!) अपने मन में अनश्वर प्रभु को याद रख और मनुष्य का प्रेम (मोह) त्याग दे। उससे परे कोई वस्तु नहीं। वह एक ईश्वर समस्त जीव-जन्तुओं के भीतर मौजूद है। वह स्वयं सबकुछ देखने वाला और स्वयं ही सब कुछ जानने वाला है। प्रभु अथाह गम्भीर, गहरा एवं परम बुद्धिमान है। वह पारब्रह्म, परमेश्वर एवं गोविन्द कृपा का भण्डार, बड़ा दयालु एवं क्षमाशील है। हे प्रभु! नानक के मन में यही अभिलाषा है कि वह तेरे साधुओं के चरणों पर नतमस्तक होवे॥ १॥

मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो करि पाइआ सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मंतु न जानै होरु ॥ अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥ धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥ नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥ २ ॥

भगवान मनोकामना पूर्ण करने वाला एवं शरण देने योग्य है। जो कुछ ईश्वर ने अपने हाथ से लिख दिया है, वही होता है। वह पलक झपकते ही सृष्टि की रचना एवं विनाश कर देता है। दूसरा

कोई उसके भेद को नहीं जानता। वह प्रसन्नता का रूप है एवं उसके मन्दिर में सदैव मंगल–खुशियाँ हैं। मैंने सुना है कि समस्त पदार्थ उसके घर में मौजूद हैं। राजाओं में वह महान राजा एवं योगियों में महायोगी है। तपस्वियों में वह महान तपस्वी है और गृहस्थियों में भी स्वयं ही गृहस्थी है। उस एक ईश्वर का ध्यान करने से भक्तजनों ने सुख प्राप्त कर लिया है। हे नानक! उस परमात्मा का किसी ने भी अन्त नहीं पाया॥ २॥

जा की लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल परोई अपुनै सूति ॥ सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥ ३ ॥

जिस भगवान की (सृष्टि–रूपी) लीला का कोई अंत नहीं, उसे खोज–खोजकर देवता भी थक चुके हैं। चूंकि अपने पिता के जन्म बारे पुत्र क्या जानता है ? सारी सृष्टि ईश्वर ने अपने (हुक्म रूपी) धागे में पिरोई हुई है। जिन्हें प्रभु सुमति, ज्ञान एवं ध्यान प्रदान करता है, उसके सेवक एवं दास उसका ही ध्यान करते रहते हैं। जिसको प्रभु माया के तीन गुणों में भटकाता है, वह जन्मता–मरता रहता है और आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है। ऊँच–नीच सब उसके ही स्थान हैं। हे नानक! जैसी सूझ वह देता है, वैसे ही सूझ वाला प्राणी बन जाता है॥ ३॥

नाना रूप नाना जा के रंग ॥ नाना भेख करहि इक रंग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥ ४ ॥

ईश्वर के अनेक रूप हैं और अनेक उसके रंग हैं। अनेक वेष धारण करते हुए वह फिर भी एक ही रहता है। अनश्वर प्रभु जो एक ही है, उसने विभिन्न विधियों से अपनी सृष्टि का प्रसार किया हुआ है। एक क्षण में वह विभिन्न खेल रच देता है। पूर्ण प्रभु समस्त स्थानों में समा रहा है। अनेक विधियों से उसने सृष्टि–रचना की है। अपना मूल्यांकन उसने स्वयं ही पाया है। समस्त हृदय उसके हैं और उसके ही समस्त स्थान हैं। हे नानक! मैं हरि का नाम जप–जप कर ही जीता हूँ॥ ४॥

नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥

ईश्वर नाम ने ही समस्त जीव–जन्तुओं को सहारा दिया हुआ है। धरती के खण्ड एवं ब्रह्माण्ड ईश्वर नाम ने ही टिकाए हुए हैं। ईश्वर के नाम ने ही स्मृतियों, वेदों एवं पुराणों को सहारा दिया हुआ है। नाम के सहारे द्वारा प्राणी ज्ञान एवं मनन बारे सुनते हैं। परमेश्वर का नाम ही आकाशों एवं पातालों का सहारा है। ईश्वर का नाम समस्त शरीरों का सहारा है। तीनों भवन एवं चौदह लोक ईश्वर के नाम ने टिकाए हुए हैं। नाम की संगति करने एवं कानों से इसको श्रवण करने से मनुष्य पार हो गए हैं। जिस पर प्रभु कृपा धारण करके अपने नाम के साथ मिलाता है, हे नानक! वह मनुष्य चतुर्थ स्थान में पहुँचकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ५॥

रूपु सति जा का सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जा की बाणी ॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥ ६ ॥

जिस भगवान का रूप सत्य है, उसका निवास भी सत्य है। केवल वह सद्पुरुष ही प्रधान है। उसके करतब सत्य हैं और उसकी वाणी सत्य है। सत्यस्वरूप प्रभु सब में समाया हुआ है। उसके कर्म सत्य हैं और उसकी सृष्टि भी सत्य है। उसका मूल सत्य है एवं जो कुछ उससे उत्पन्न होता है, वह भी सत्य है। उसकी करनी सत्य है और पवित्र से भी पवित्र है। भगवान जिसे समझाता है, उसे सब भला ही लगता है। प्रभु का सत्यनाम सुख देने वाला है। हे नानक ! (प्राणी को) यह सच्चा विश्वास गुरु से मिलता है॥ ६॥

सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै जे कोइ ॥ नामु जपत ता की गति होइ ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥ आपे जानै अपनी मिति गति ॥ जिस की स्रिसटि सु करणैहारु ॥ अवर न बूझि करत बीचारु ॥ करते की मिति न जानै कीआ ॥ नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥ ७ ॥

साधु का उपदेश सत्य वचन हैं। वे पुरुष सत्य हैं, जिनके हृदय में सत्य प्रवेश करता है। यदि कोई व्यक्ति सत्य को समझे और प्रेम करे, तो नाम जपने से उसकी गति हो जाती है। प्रभु स्वयं सत्यस्वरूप है और उसका किया सब सत्य है। वह स्वयं ही अपने अनुमान एवं अवस्था को जानता है। जिसकी यह सृष्टि है, वही उसका सृजनहार है। कोई दूसरा उसको नहीं समझता, चाहे वह कैसे विचार करे। करतार का विस्तार, उसका उत्पन्न किया हुआ जीव नहीं जान सकता। हे नानक ! जो कुछ उसे लुभाता है, केवल वही होता है॥ ७॥

बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥ प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥ गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥ ओइ दाते दुख काटनहार ॥ जा कै संगि तरै संसार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥ जन कै संगि एक लिव लागी ॥ गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥ ८ ॥ १६ ॥

प्रभु के अद्भुत, आश्चर्यजनक कौतुक देखकर मैं चकित हो गया हूँ। जो प्रभु की महिमा को समझता है, वही आनन्द प्राप्त करता है। प्रभु के सेवक उसके प्रेम में लीन रहते हैं। गुरु के उपदेश द्वारा वह (नाम-) पदार्थ को प्राप्त कर लेते हैं। वह दानी एवं दुःख दूर करने वाले हैं। उनकी संगति में संसार का कल्याण हो जाता है। ऐसे सेवकों का सेवक सौभाग्यशाली है। उसके सेवक की संगति में मनुष्य की वृत्ति एक ईश्वर से लग जाती है। प्रभु का सेवक उसकी गुणस्तुति एवं भजन गायन करता है। हे नानक ! गुरु की कृपा से वह फल प्राप्त कर लेता है॥ ८॥ १६॥

सलोकु ॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥ १ ॥

श्लोक॥ भगवान सृष्टि-रचना से पहले सत्य था, युगों के प्रारम्भ में भी सत्य था, अब वर्तमान में उसी का अस्तित्व है। हे नानक ! भविष्य में भी उस सत्यस्वरूप भगवान का अस्तित्व होगा॥ १॥

असटपदी ॥ चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥ नामु सति सति धिआवनहार ॥ आपि सति सति सभ धारी ॥ आपे गुण आपे गुणकारी ॥

सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ सुरति सति सति जसु सुनता ॥ बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ नानक सति सति प्रभु सोइ ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ प्रभु के चरण सत्य हैं और सत्य है वह जो उसके चरण-स्पर्श करता है। उसकी पूजा सत्य है एवं उसकी पूजा करने वाला भी सत्य है। उसके दर्शन सत्य हैं और दर्शन करने वाला भी सत्य है। उसका नाम सत्य है और वह भी सत्य है जो इसका ध्यान करता है। वह स्वयं सत्यस्वरूप है, सत्य है प्रत्येक वस्तु जिसे उसने सहारा दिया हुआ है। वह स्वयं ही गुण है और स्वयं ही गुणकारी है। प्रभु की वाणी सत्य है और वह सत्य वक्ता है। वह कान सत्य हैं जो सद्पुरुष का यशोगान सुनते हैं। जो प्रभु को समझता है, उसके लिए सब सत्य ही है। हे नानक! वह प्रभु सदा सर्वदा सत्य है॥ १॥

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिंन न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नाराइन मिले नानक एक ॥ २ ॥

जो मनुष्य अपने हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा पर आस्था धारण करता है, वह सब कुछ करने वाले एवं कराने वाले (सृष्टि के) मूल को समझ लेता है। जिसके हृदय में प्रभु का विश्वास प्रवेश कर गया है, उसके मन में तत्व ज्ञान प्रत्यक्ष होता है। डर को त्याग कर वह निडर होकर बसता है और जिससे वह उत्पन्न हुआ था, उस में ही समा जाता है। जब एक वस्तु अपनी प्रकार की दूसरी वस्तु से मिल जाती है तो वह इससे भिन्न नहीं कही जा सकती। इस विचार को कोई सूझवान ही समझता है। हे नानक! जो प्राणी नारायण से मिल चुके हैं, वे उसके साथ एक हो चुके हैं॥ २॥

ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥ प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरंकारा ॥ सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥ नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥ ३ ॥

भगवान का सेवक उसका आज्ञाकारी होता है। भगवान का सेवक सदा उसकी ही पूजा करता रहता है। ईश्वर के सेवक के मन में आस्था होती है। प्रभु के सेवक का जीवन-आचरण पवित्र होता है। प्रभु का सेवक जानता है कि उसका स्वामी सदैव उसके साथ है। परमेश्वर का सेवक उसके नाम की प्रीति में बसता है। अपने सेवक का प्रभु पालन-पोषणहार है। निरंकार प्रभु अपने सेवक की प्रतिष्ठा रखता है। वही सेवक है, जिस पर प्रभु दया करता है। हे नानक! वह सेवक प्रत्येक श्वास से ईश्वर को स्मरण करता रहता है॥ ३॥

अपुने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की सरपर राखै ॥ अपने दास कउ देइ वडाई ॥ अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ अपने सेवक की आपि पति राखै ॥ ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥ ४ ॥

परमात्मा अपने सेवक का पर्दा रखता है। वह अपने सेवक की निश्चित ही प्रतिष्ठा रखता है। प्रभु अपने सेवक को मान-सम्मान प्रदान करता है। अपने सेवक से वह अपने नाम का जाप करवाता

है। अपने सेवक की वह स्वयं ही लाज रखता है। उसकी गति एवं अनुमान को कोई नहीं जानता। कोई भी व्यक्ति प्रभु के सेवक की बराबरी नहीं कर सकता। ईश्वर के सेवक सर्वोच्च हैं। प्रभु जिसको अपनी सेवा में लगाता है, हे नानक! वह सेवक दसों दिशाओं में लोकप्रिय हो जाता है॥ ४॥

नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ जिस का सासु न काढत आपि ॥ ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भाति ॥ तिस के करतब बिरथे जाति ॥ मारै न राखै अवरु न कोइ ॥ सरब जीआ का राखा सोइ ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥ ५ ॥

यदि प्रभु छोटी-सी चींटी में शक्ति भर दे तो वह लाखों, करोड़ों लश्करों को भस्म बना सकती है। जिस प्राणी का श्वास परमेश्वर स्वयं नहीं निकालता, उसको वह अपना हाथ देकर बचा लेता है। मनुष्य अनेक विधियों से यत्न करता है, परन्तु उसके काम असफल हो जाते हैं। ईश्वर के अलावा दूसरा कोई मार अथवा बचा नहीं सकता। समस्त जीव-जन्तुओं का परमात्मा ही रखवाला है। हे नश्वर प्राणी! तुम क्यों चिन्ता करते हो? हे नानक! अलक्ष्य एवं आश्चर्यजनक परमात्मा को स्मरण कर॥ ५॥

बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥ पी अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥ नाम-रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥ तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥ नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥ नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥ नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥ मन तन नामहि नामि समाने ॥ ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥ ६ ॥

बार-बार ईश्वर के नाम का जाप करना चाहिए। नाम-अमृत पीकर यह मन एवं शरीर तृप्त हो जाते हैं। जिस गुरमुख को नाम-रत्न प्राप्त हुआ है, वह ईश्वर के अलावा किसी दूसरे को नहीं देखता। नाम उसका धन है और नाम ही उसका रूप, रंग है। नाम उसका सुख है और हरि का नाम ही उसका साथी होता है। जो मनुष्य नाम-अमृत से तृप्त हो जाते हैं, उनकी आत्मा एवं शरीर केवल नाम में ही लीन हो जाते हैं। हे नानक! उठते-बैठते, सोते हुए सदैव ईश्वर का नाम-स्मरण ही सेवकों का काम होता है॥ ६॥

बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ करहि भगति आतम कै चाइ ॥ प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ ७ ॥

अपनी जिह्वा से दिन-रात परमेश्वर की गुणस्तुति करो। यह देन परमेश्वर ने अपने सेवक को प्रदान की है। वह मन के उत्साह से भक्ति करता है और अपने प्रभु में ही लीन रहता है। वह जो कुछ हो रहा है, भगवान की इच्छा से सहर्ष जानता है और अपने प्रभु के हुक्म को पहचानता है। उसकी महिमा कौन वर्णन कर सकता है? उसकी एक प्रशंसा को भी मैं वर्णन करना नहीं जानता। जो सारा दिन प्रभु की उपस्थिति में बसते हैं, हे नानक! वह पूर्ण पुरुष हैं॥ ७॥

मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर सिआनप सगली छाडु ॥ तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥ ८ ॥ १७ ॥

हे मेरे मन! तू उनकी शरण ले। अपना मन एवं तन उन पुरुषों को समर्पित कर दे। जिस पुरुष ने अपने प्रभु को पहचान लिया है, वह मनुष्य समस्त वस्तुएँ देने वाला है। उसकी शरण में तुम्हें सर्व सुख मिल जाएँगे। उसके दर्शन द्वारा समस्त पाप नाश हो जाएँगे। दूसरी चतुराई त्याग कर प्रभु के उस सेवक की सेवा में स्वयं को लगा ले। तेरा आवागमन मिट जाएगा। हे नानक! सदैव ही उस सेवक के चरणों की पूजा करो॥ ८॥ १७॥

सलोकु ॥ सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥ १ ॥

श्लोक॥ जिसने सत्यस्वरूप परमात्मा को जान लिया है, उसका नाम सतिगुरु है। हे नानक! उसकी संगति में ईश्वर की गुणस्तुति करने से उसका शिष्य भी पार हो जाता है॥ १॥

असटपदी ॥ सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥ गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥ गुर का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ सतिगुरु अपने शिष्य का पालन-पोषण करता है। अपने सेवक पर गुरु जी हमेशा दयालु रहते हैं। गुरु अपने शिष्य की मन्दबुद्धि रूपी मैल को साफ कर देते हैं। गुरु के उपदेश द्वारा वह हरि के नाम का जाप करता है। सतिगुरु अपने शिष्य के बन्धन काट देते हैं। गुरु का शिष्य विकारों से हट जाता है। सतिगुरु अपने शिष्य को ईश्वर-नाम रूपी धन प्रदान करते हैं। गुरु का शिष्य बड़ा भाग्यशाली है। सतिगुरु अपने शिष्य का इहलोक एवं परलोक संवार देते हैं। हे नानक! सतिगुरु अपने शिष्य को अपने हृदय से लगाकर रखता है॥ १॥

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥ २ ॥

जो सेवक गुरु के घर में रहता है, वह गुरु की आज्ञा सहर्ष मन में स्वीकार करता है। वह अपने आपको बड़ा नहीं जतलाता। वह अपने हृदय में हमेशा ही हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान करता रहता है। जो अपना मन सतिगुरु के समक्ष बेच देता है, उस सेवक के तमाम कार्य संवर जाते हैं। जो सेवक निष्काम भावना से गुरु की सेवा करता है, वह प्रभु को पा लेता है। हे नानक! जिस पर गुरु जी स्वयं कृपा करते हैं, वह सेवक गुरु की शिक्षा प्राप्त करता है॥ २॥

बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ सरब निधान जीअ का दाता ॥ आठ पहर पारब्रहम रंगि राता ॥ ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ एकहि आपि नही कछु भरमु ॥ सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥ नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥ ३ ॥

जो सेवक अपने गुरु का मन पूर्णतया जीत लेता है, वह परमेश्वर की गति को जान लेता है। सतिगुरु वही है, जिसके हृदय में हरि का नाम है। मैं अनेक बार अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ।

गुरु जी प्रत्येक पदार्थ के खजाने एवं जीवन प्रदान करने वाले हैं। वह आठ प्रहर ही पारब्रह्म के रंग में मग्न रहते हैं। भक्त ब्रह्म में बसता है और पारब्रह्म भक्त में बसता है। प्रभु केवल एक ही है इसमें कोई सन्देह नहीं। हे नानक! हजारों ही चतुराइयों द्वारा गुरु प्राप्त नहीं होता, ऐसा गुरु बड़े भाग्य से ही मिलता है॥ ३॥

सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गति निरमल रीति ॥ भेटत संगि राम गुन रवे ॥ पारब्रहम की दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि संतोखु आतम पतीआने ॥ पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥ अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥ गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ ४ ॥

गुरु का दर्शन फल प्रदान करने वाला है तथा दर्शन-मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है। उनके चरण स्पर्श करने से मनुष्य की अवस्था एवं जीवन-आचरण निर्मल हो जाते हैं। गुरु की संगति करने से प्राणी राम की गुणस्तुति करता है और पारब्रह्म के दरबार में पहुँच जाता है। गुरु के वचन सुनने से कान तृप्त हो जाते हैं तथा मन में संतोष आ जाता है और आत्मा तृप्त हो जाती है। गुरु पूर्ण पुरुष हैं और उनका मंत्र सदैव अटल है। जिसे वह अपनी अमृत दृष्टि से देखते हैं, वह संत बन जाता है। गुरु के गुण अनन्त हैं, जिसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। हे नानक! ईश्वर को जो प्राणी अच्छा लगता है, उसे वह गुरु से मिला देता है॥ ४॥

जिहबा एक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बंदन नित करहि ॥ चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥ ५ ॥

जिह्वा एक है परन्तु ईश्वर के गुण अनन्त हैं। वह सद्पुरुष पूर्ण विवेक वाला है। किसी भी वचन द्वारा प्राणी ईश्वर के गुणों तक पहुँच नहीं सकता। प्रभु अगम्य, अगोचर एवं पवित्र पावन है। प्रभु को भोजन की आवश्यकता नहीं, वह वैर-रहित एवं सुख प्रदान करने वाला है। कोई भी प्राणी उसका मूल्यांकन नहीं कर पाया। अनेकों भक्त नित्य उसकी वन्दना करते रहते हैं। उसके चरण कमलों को वह अपने हृदय में स्मरण करते हैं। हे नानक! अपने सतिगुरु पर हमेशा बलिहारी जाता हूँ, जिनकी कृपा से वह ऐसे प्रभु का नाम-स्मरण करता है॥ ५॥

इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥ अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ अंधकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥ ६ ॥

यह हरि रस किसी विरले पुरुष को ही प्राप्त होता है। जो इस अमृत का पान करता है, वह अमर हो जाता है। उस पुरुष का कभी नाश नहीं होता, जिसके हृदय में गुणों का भण्डार प्रकट हो जाता है। आठ पहर ही वह हरि का नाम लेता है और अपने सेवक को सच्चा उपदेश प्रदान करता है। मोह-माया के साथ उसका कभी मेल नहीं होता। वह अपने हृदय में एक हरि-परमेश्वर को ही बसाता है। अज्ञानता रूपी अन्धेरे में उसके लिए नाम रूपी दीपक रौशन हो जाता है। हे नानक! दुविधा, मोह एवं दुःख उससे दूर भाग जाते हैं॥ ६॥

तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥ साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥ ७ ॥

गुरु के पूर्ण उपदेश ने मोह–माया की अग्नि में शीतलता प्रविष्ट करा दी है, प्रसन्नता उत्पन्न हो गई है व दुःख दूर हो गया है और जन्म–मरण का भय मिट गया है। भय नाश हो गया है और निडर रहते हैं। तमाम रोग नष्ट होकर मन से लुप्त हो गए हैं। जिस गुरु के थे, उसने कृपा की है, सत्संगति में वह मुरारी के नाम का जाप करता है। हे नानक! हरि–परमेश्वर की महिमा कानों से सुनकर शांति मिल गई है और भय एवं दुविधा मिट गए हैं॥ ७॥

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥ कला धारि जिनि सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥ अपुनी कीमति आपे पाए ॥ हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सरब निरंतरि एको सोइ ॥ ओति पोति रविआ रूप रंग ॥ भए प्रगास साध कै संग ॥ रचि रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ८ ॥ १८ ॥

वह स्वयं निर्गुण स्वामी है और वह ही सर्गुण है, जिसने अपनी कला (शक्ति) प्रकट करके समूचे विश्व को मुग्ध किया हुआ है। अपने कौतुक प्रभु ने स्वयं ही रचे हैं। अपना मूल्यांकन वह स्वयं ही जानता है। ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं। सबके भीतर वह अकालपुरुष स्वयं ही मौजूद है। ताने–बाने की तरह वह तमाम रूप–रंगों में समा रहा है। संतों की संगति करने से वह प्रगट हो जाता है। सृष्टि की रचना करके प्रभु ने अपनी सत्ता टिकाई है। हे नानक! मैं अनेक बार उस (प्रभु) पर कुर्बान जाता हूँ॥ ८॥ १८॥

सलोकु ॥ साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे प्राणी! भगवान के भजन के सिवाय कुछ भी साथ नहीं जाता, सभी विषय–विकार धूल समान हैं। हे नानक! हरि–परमेश्वर के नाम–स्मरण की कमाई करना ही अति उत्तम धन है॥ १॥

असटपदी ॥ संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ संतजनों की संगति में मिलकर यही विचार करो। एक ईश्वर को स्मरण करो और नाम का सहारा लो। हे मेरे मित्र! दूसरे तमाम प्रयास भुला दो। ईश्वर के चरण कमल अपने मन एवं हृदय में बसाओ। वह ईश्वर तमाम कार्य करने व जीव से करवाने में सामर्थ्य रखता है। ईश्वर के नाम रूपी वस्तु को दृढ़ करके पकड़ लो। इस (प्रभु के नाम रूपी) धन को एकत्रित करो और भाग्यशाली बन जाओ। संतजनों का मंत्र पवित्र–पावन है। एक ईश्वर की आशा अपने मन में रखो। हे नानक! इस तरह तेरे तमाम रोग मिट जाएँगे॥ १॥

जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ सो सुखु साधू संगि परीति ॥ जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ सा सोभा भजु

हरि की सरनी ॥ अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥ जपि नानक दरगहि परवानु ॥ २ ॥

(हे मित्र !) जिस धन हेतु तू चारों ओर भागता–फिरता है, वह धन तुझे ईश्वर की सेवा से प्राप्त होगा। हे मेरे मित्र ! जिस सुख की तू नित्य इच्छा करता है, वह सुख तुझे संतों की संगति में प्रेम करने से मिलेगा। जिस शोभा के लिए तू शुभ कर्म करता है, वह शोभा भगवान की शरण में जाने से मिलती है। जो रोग अनेक प्रयासों से नहीं मिटता, वह रोग हरि नाम रूपी औषधि लेने से मिट जाता है। तमाम खजानों में ईश्वर का नाम सर्वश्रेष्ठ खजाना है। हे नानक ! उसके नाम का जाप कर, ईश्वर के दरबार में स्वीकार हो जाओगे॥ २॥

मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥ दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ भगति भाइ आतम परगास ॥ तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥ ३ ॥

अपने मन को भगवान के नाम द्वारा जगाओ। दसों दिशाओं में भटकता हुआ यह मन इस तरह अपने गृह आ जाएगा। जिसके हृदय में वह ईश्वर बसता है, उसे कोई संकट नहीं आता। यह कलियुग गर्म (अग्नि) है और हरि का नाम शीतल है। उसे सदैव स्मरण करो एवं सुख पाओ। नाम–सिमरन से भय नाश हो जाता है और आशा पूर्ण हो जाती है। प्रभु की भक्ति के साथ प्रेम करने से आत्मा उज्ज्वल हो जाती है। जो नाम–स्मरण करता है, उसके हृदय–घर में अनश्वर प्रभु आ बसता है। हे नानक ! (नाम का जाप करने से) यम की फाँसी कट जाती है॥ ३॥

ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै सो काचो काचा ॥ आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥ हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिंम्रिति सासत बेद बीचारे ॥ हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥ मनि बंछत नानक फल पाइ ॥ ४ ॥

वही सच्चा मनुष्य है, जो सार–तत्व के स्मरण का उपदेश देता है। वह बिल्कुल कच्चा (झूठा) है, जो आवागमन (जन्म–मरण के चक्र) में पड़ता है। प्रभु की सेवा से आवागमन मिट जाता है। अपना अहंत्व त्याग दे और गुरदेव की शरण ले। इस तरह अनमोल जीवन का उद्धार हो जाता है। हरि–परमेश्वर की आराधना कर, जो तेरे प्राणों का आधार है। अनेक उपाय करने से छुटकारा नहीं होता। चाहे स्मृतियों, शास्त्रों व वेदों का विचार करके देख लो। मन लगाकर केवल भगवान की भक्ति ही करो। हे नानक ! (जो भक्ति करता है) उसे मनोवांछित फल मिलता है॥ ४॥

संगि न चालसि तेरै धना ॥ तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥ इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माइआ बिसथार ॥ इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा डंफु झूठु पासारी ॥ जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥ ५ ॥

हे मूर्ख मन ! धन–दौलत तेरे साथ नहीं जाने वाला, फिर तू क्यों इससे लिपटा हुआ है। पुत्र, मित्र, परिवार एवं पत्नी – इन में से तू बता कौन तेरा सहायक है ? राज्य, रंगरलियां एवं धन–दौलत

का विस्तार इनमें से बता कौन कब बचा है ? अश्व, हाथी एवं रथों की सवारी करनी – यह सब झूठा आडम्बर है। मूर्ख पुरुष उस परमात्मा को नहीं जानता, जिसने ये तमाम पदार्थ दिए हैं। हे नानक! नाम को भुला कर प्राणी अन्त में पश्चाताप करता है॥ ५॥

गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥ चरन कमल राखहु मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ सार भूत सति हरि को नाउ ॥ सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥ ६ ॥

हे मूर्ख मनुष्य! तू गुरु की शिक्षा ले। प्रभु की भक्ति के बिना बड़े बुद्धिमान लोग भी डूब गए हैं। हे मेरे मित्र! अपने मन में भगवान की भक्ति कर, उससे तेरा मन निर्मल हो जाएगा। प्रभु के चरण कमल अपने हृदय में बसा, तेरे जन्म–जन्मांतर के पाप दूर हो जाएँगे। स्वयं ईश्वर के नाम का जाप कर और दूसरों से भी नाम का जाप करवा। सुनने, कहने एवं इस आचरण में रहने से मुक्ति मिल जाएगी। सारभूत हरि का सत्य नाम है। हे नानक! सहज स्वभाव से प्रभु की गुणस्तुति कर॥ ६॥

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥ सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ छाडि सिआनप सगली मना ॥ साधसंगि पावहि सचु धना ॥ हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥ ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब निरंतरि एको देखु ॥ कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥ ७ ॥

(हे जीव!) ईश्वर के गुण गाते हुए तेरी पापों की मैल उतर जाएगी एवं अहंकार–रूपी विष का विस्तार भी मिट जाएगा। अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से हरि के नाम की आराधना करने से बेफिक्र हो जाएगा और सुखपूर्वक बसेगा। हे मन! अपनी तमाम चतुरता त्याग दे। साधसंगत करने से सच्चा धन मिल जाएगा। ईश्वर के नाम की पूँजी संचित कर और उसका ही व्यापार कर। इस तरह इस जीवन में सुख मिलेगा और प्रभु के दरबार में सत्कार होगा। हे नानक! जिसके माथे पर भाग्य विद्यमान है, वह एक ईश्वर को सर्वत्र देखता है॥ ७॥

एको जपि एको सालाहि ॥ एकु सिमरि एको मन आहि ॥ एकस के गुन गाउ अनंत ॥ मनि तनि जापि एक भगवंत ॥ एको एकु एकु हरि आपि ॥ पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ अनिक बिसथार एक ते भए ॥ एकु अराधि पराछत गए ॥ मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥ गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥ ८ ॥ १६ ॥

एक ईश्वर के नाम का जाप कर और केवल उसकी ही सराहना कर। एक ईश्वर का चिन्तन कर और केवल उसे ही अपने हृदय में बसा। उस अनन्त एक ईश्वर के गुण गायन कर। मन एवं तन से एक भगवान का जाप कर। वह परमात्मा आप ही आप है। जीवों में व्यापक होकर प्रभु सब ओर बस रहा है। एक ईश्वर से अनेक प्रसार हुए हैं। भगवान की आराधना करने से पाप मिट जाते हैं। मेरा मन एवं शरीर एक प्रभु में मग्न हुए हैं। हे नानक! गुरु की कृपा से उसने एक ईश्वर को ही जाना है॥ ८॥ १६॥

सलोकु ॥ फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे पूज्य प्रभु ! मैं भटक–भटक कर तेरी ही शरण में आया हूँ। हे प्रभु ! नानक एक यही विनती करता है कि मुझे अपनी भक्ति में लगा ले॥ १॥

असटपदी ॥ जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ साध जना की मागउ धूरि ॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ एक ओट एको आधारु ॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ हे प्रभु ! मैं भिखारी तेरे नाम का दान माँगता हूँ। हे हरि ! कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए। मैं तो साधुओं के चरणों की धूलि ही मांगता हूँ। हे पारब्रह्म ! मेरी श्रद्धा पूर्ण कीजिए। मैं हमेशा ही प्रभु का गुणानुवाद करता रहूँ। हे प्रभु ! प्रत्येक श्वास से मैं तेरी ही आराधना करूँ। प्रभु के चरणों से मेरा प्रेम पड़ा हुआ है। मैं हमेशा ही प्रभु की भक्ति करता रहूँ। हे भगवान ! तुम ही मेरी एक ओट तथा एक सहारा हो। हे मेरे प्रभु ! नानक तेरे सर्वोत्तम नाम की याचना करता है॥ १॥

प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥ हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥ जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥ पूरन पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥ उपजै चाउ साध कै संगि ॥ परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥ २ ॥

प्रभु की करुणा–दृष्टि से परम सुख उपलब्ध होता है। कोई विरला पुरुष ही हरि–रस को पाता है। जो इसे चखते हैं, वे जीव तृप्त हो जाते हैं। वे पूर्ण पुरुष बन जाते हैं और कभी (माया में) डगमगाते नहीं। वह प्रभु के प्रेम की मिठास एवं आनंद से पूर्णता भरे रहते हैं। साधुओं की संगति में उनके मन में आत्मिक चाव उत्पन्न हो जाता है। अन्य सब कुछ त्याग कर वह प्रभु की शरण लेते हैं। उनका हृदय उज्ज्वल हो जाता है और दिन–रात वह अपनी वृत्ति ईश्वर में लगाते हैं। भाग्यशाली पुरुषों ने ही प्रभु का जाप किया है। हे नानक ! जो पुरुष प्रभु के नाम में मग्न रहते हैं, वे सुख पाते हैं॥ २॥

सेवक की मनसा पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥ सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥ जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥ इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥ जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥ नानक भगती नामि समाइ ॥ ३ ॥

सतिगुरु से निर्मल उपदेश लेकर सेवक की मनोकामना पूर्ण हो गई है। अपने सेवक पर प्रभु कृपालु हो गया है। अपने सेवक को हमेशा के लिए उसने कृतार्थ कर दिया है। सेवक के (माया के) बन्धन कट गए हैं और उसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है। उसका जन्म–मरण, दुःख एवं दुविधा दूर हो गए हैं। उसकी इच्छा पूर्ण हो गई है और श्रद्धा भी पूरी हो गई है। भगवान हमेशा साथ बस रहा है। जिसका था, उसने अपने साथ मिला लिया है। हे नानक ! प्रभु की भक्ति से सेवक नाम में लीन हो गया है॥ ३॥

सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥ सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥ प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥ ४ ॥

उस भगवान को क्यों भुलाएँ, जो इन्सान की सेवा–भक्ति की उपेक्षा नहीं करता। उस भगवान को क्यों भुलाएँ, जो किए को जानता है। वह ईश्वर क्यों विस्मृत हो, जिसने हमें सब कुछ दिया है। वह परमात्मा क्यों विस्मृत हो, जो जीवों के जीवन का आधार है। उस अकालपुरुष को क्यों भुलाएँ, जो गर्भ की अग्नि में हमारी रक्षा करता है। गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही इसको देखता है। उस ईश्वर को क्यों भुलाएँ, जो मनुष्य को पाप से बचाता है और स्वयं से जन्म–जन्मांतरों से बिछुड़े हुए को अपने साथ मिला लेता है? पूर्ण गुरु ने मुझे यह वास्तविकता समझाई है। हे नानक! उसने तो अपने प्रभु का ही ध्यान किया है॥ ४॥

साजन संत करहु इहु कामु ॥ आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥ बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥ बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ सगल दूख का होवत नासु ॥ नानक नामु जपहु गुनतासु ॥ ५ ॥

हे सज्जन, संतजनों! यह कार्य करो। अन्य सबकुछ छोड़कर भगवान के नाम का जाप करो। भगवान के नाम का सिमरन करके सुख पाओ। आप भी नाम का जाप करो और दूसरों से भी नाम का जाप करवाओ। प्रभु की भक्ति द्वारा यह संसार सागर पार किया जाता है। भक्ति के बिना यह शरीर भस्म हो जाएगा। प्रभु का नाम सर्व कल्याण एवं सुखों का खजाना है, डूबता हुआ जीव भी इसमें सुख पा लेता है। समस्त दुखों का नाश हो जाता है। हे नानक! गुणों के भण्डार के नाम का जाप करते रहो॥ ५॥

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ मन तन अंतरि इही सुआउ ॥ नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥ मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥ भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥ बिरला कोऊ पावै संगु ॥ एक बसतु दीजै करि मइआ ॥ गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ ता की उपमा कही न जाइ ॥ नानक रहिआ सरब समाइ ॥ ६ ॥

भगवान की प्रीति व प्रेम रस का चाव उत्पन्न हुआ है। मन–तन के भीतर यही स्वाद भर गया है। अपने नेत्रों से प्रभु के दर्शन करके मैं सुख पाता हूँ। संतों के चरण धोकर मेरा मन प्रसन्न हो गया है। भक्तजनों की आत्मा एवं शरीर में प्रभु की प्रीति विद्यमान है। कोई विरला पुरुष ही उनकी संगति प्राप्त करता है। हे ईश्वर! दया करके हमें एक नाम–वस्तु प्रदान कीजिए (ताकि) गुरु की दया से तेरा नाम जप सकें। हे नानक! ईश्वर तो सर्वव्यापक है, उसकी उपमा वर्णन नहीं की जा सकती॥ ६॥

प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥ भगति वछल सदा किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ भगति भाइ लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥ ७ ॥

परमात्मा क्षमाशील एवं दीनदयालु है। वह भक्तवत्सल एवं सदेव कृपालु है। वह गोविन्द, गोपाल अनाथों का नाथ है। वह समस्त जीव–जन्तुओं का पोषण करता है। वह आदिपुरुष एवं सृष्टि का रचयिता है। वह भक्तजनों के प्राणों का आधार है। जो कोई भी उसका जाप करता है, वह पवित्र–पावन हो जाता है। वह अपने मन का प्रेम ईश्वर की भक्ति पर केन्द्रित करता है। नानक का कथन है कि हे सर्वशक्तिमान भगवान! हम गुणविहीन, नीच व मूर्ख तुम्हारी शरण में आए हैं॥ ७॥

सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवंत ॥ हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥ साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥ ८ ॥ २० ॥

जिस जीव ने एक क्षण भर के लिए भी भगवान की महिमा-स्तुति की है, उसने तमाम स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त कर लिए हैं। जिसके मन को हरि के नाम की कथा भली लगती है, वह अनेक राज्य, भोग-पदार्थ एवं उपलब्धियां प्राप्त करता है। जिसकी रसना सदेव हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करती रहती है, वह अनेक प्रकार के भोजन, वस्त्र एवं संगीत का आनंद प्राप्त करता है। जिसके हृदय में पूर्ण गुरु का मंत्र बसता है, उसके कर्म शुभ हैं, उसी को शोभा मिलती है और वही धनवान है। हे ईश्वर! अपने संतों की संगति में स्थान दीजिए। हे नानक! सत्संगति में रहने से सर्व सुखों का आलोक हो जाता है॥ ८॥ २०॥

सलोकु ॥ सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥ १ ॥

श्लोक॥ निरंकार प्रभु स्वयं ही सर्गुण एवं निर्गुण है। वह स्वयं ही शून्य समाधि में रहता है। हे नानक! निरंकार प्रभु ने स्वयं ही सृष्टि-रचना की है और फिर स्वयं ही (जीवों द्वारा) जाप करता है॥ १॥

असटपदी ॥ जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥ पाप पुंन तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुंन समाधि ॥ तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥ जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥ आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ जब इस सृष्टि का प्रसार कुछ भी दिखाई नहीं देता था, तब पाप अथवा पुण्य किस (प्राणी) से हो सकता था? जब परमात्मा स्वयं शून्य समाधि में था, तब वैर-विरोध कोई किससे करता था। जब (दुनिया का) कोई वर्ण अथवा चिन्ह दिखाई नहीं देता था, बताओ तब हर्ष एवं शोक किसे स्पर्श कर सकते थे। जब पारब्रह्म स्वयं ही सब कुछ था, तब मोह कहाँ हो सकता था और दुविधा किसे हो सकती थी? हे नानक! (सृष्टि रूपी) अपनी लीला अकालपुरुष ने स्वयं ही रची है, इसके अलावा दूसरा कोई रचयिता नहीं॥ १॥

जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ जब एकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥ जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ आपन चलित आपि करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥ २ ॥

जब जगत् का स्वामी परमात्मा केवल स्वयं ही था, तब बताओ किसे बन्धनयुक्त एवं किसे बन्धनमुक्त गिना जाता था? जब केवल अगम्य एवं अपार हरि ही था, तब बताओ, नरकों तथा स्वर्गों में आने वाले कौन से प्राणी थे। जब निर्गुण परमात्मा अपने सहज स्वभाव सहित था, तब बताओ शिव-शक्ति किस स्थान पर थे? जब परमात्मा स्वयं ही अपनी ज्योति प्रज्वलित किए बैठा था, तब कौन निडर था और कौन किससे डरता था? हे नानक! परमात्मा अगम्य एवं अपार है। अपने कौतुक स्वयं ही करने वाला है॥ २॥

अबिनासी सुख आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥ जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥ तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥ आपन आप आप ही अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥ ३ ॥

जब अमर परमात्मा अपने सुखदायक आसन पर विराजमान था, बताओ तब जन्म–मरण और विनाश (काल) कहाँ थे? जब पूर्ण अकालपुरुष कर्त्तार ही था, बताओ तब मृत्यु का भय किसे हो सकता था? जब केवल अलक्ष्य एवं अगोचर परमात्मा ही था, तब चित्रगुप्त किस से लेखा पूछते थे? जब केवल निरंजन, अगोचर एवं अथाह नाथ (परमात्मा) ही था, तब कौन माया के बन्धन से मुक्त थे और कौन बन्धनों में फंसे हुए थे? परमात्मा सबकुछ अपने आप से ही है, वह स्वयं ही अद्भुत है। हे नानक! अपना रूप उसने स्वयं ही उत्पन्न किया है॥ ३॥

जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ जह निरंजन निरंकार निरबान ॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥ करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥ ४ ॥

जहां निर्मल पुरुष ही पुरुषों का पति होता था और वहाँ कोई मल नहीं थी, बताओ! तब वहाँ स्वच्छ करने को क्या था? जहाँ केवल निरंजन, निरंकार एवं निर्लिप्त परमात्मा ही था, वहाँ किसका मान एवं किसका अभिमान होता था? जहाँ केवल सृष्टि के स्वामी जगदीश का ही रूप था, बताओ, वहाँ छल–कपट एवं पाप किसको दुःखी करते थे? जहाँ ज्योति स्वरूप अपनी ज्योति से ही समाया हुआ था, तब वहाँ किसे भूख लगती थी और किसे तृप्ति आती थी? सृष्टि का रचयिता करतार स्वयं ही सबकुछ करने वाला और प्राणियों से कराने वाला है। हे नानक! दुनिया का निर्माण करने वाले परमात्मा का कोई अन्त नहीं है॥ ४॥

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥ तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गति जानहु आपि ॥ ५ ॥

जब परमात्मा ने अपनी शोभा अपने साथ ही बनाई थी, तब माता–पिता, मित्र, पुत्र एवं भाई कौन थे? जब वह स्वयं ही सर्वकला में पूरी तरह प्रवीण था, तब वेद तथा कतेब को कहाँ कोई पहचानता था। जब अकालपुरुष अपने आपको अपने हृदय में ही धारण किए रखता था, तब शगुन (शुभ) एवं अपशगुन (अशुभ लग्नों) का कौन सोचता था? जहाँ परमात्मा स्वयं ही ऊँचा और स्वयं ही निकट था, वहाँ कौन स्वामी और कौन सेवक कहा जा सकता था? मैं प्रभु के अद्भुत कौतुक देखकर चकित हो रहा हूँ। नानक का कथन है कि हे परमेश्वर! अपनी गति तू स्वयं ही जानता है॥ ५॥

जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥ आपस कउ आपहि आदेसु ॥ तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ जह एकहि एक एक भगवंता ॥ तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥ ६ ॥

जहाँ छलरहित, अछेद एवं अभेद परमेश्वर अपने आप में लीन था, वहाँ माया किस पर प्रभाव करती थी? जब ईश्वर स्वयं अपने आपको प्रणाम करता था, तब (माया के) त्रिगुणों का (जगत् में) प्रवेश नहीं हुआ था। जहाँ केवल एक आप ही भगवान था, वहाँ कौन बेफिक्र था और किसे चिन्ता लगती थी? जहाँ परमात्मा अपने आप से स्वयं संतुष्ट था, वहाँ कौन कहने वाला और कौन सुनने वाला था? हे नानक! परमात्मा बड़ा अनन्त एवं सर्वोपरि है, केवल वही अपने आप तक पहुँचता है॥ ६॥

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥ पापु पुंनु तह भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ आल जाल माइआ जंजाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥ ७ ॥

जब परमात्मा ने स्वयं सृष्टि का परपंच रच दिया और माया के त्रिगुणों का प्रसार जगत् में कर दिया, तो यह बात प्रचलित हो गई कि यह पाप है अथवा यह पुण्य है। कोई नरक में जाने लगा और कोई स्वर्ग की अभिलाषा करने लगा। ईश्वर ने सांसारिक विवाद, धन-दौलत के जंजाल, अहंकार, मोह, दुविधा एवं भय के भार बना दिए। दुःख-सुख, मान-अपमान अनेक प्रकार से वर्णन होने प्रारम्भ हो गए। अपनी लीला प्रभु स्वयं ही रचता और देखता है। हे नानक! जब परमात्मा अपनी लीला को समेट लेता है तो केवल वही रह जाता है॥ ७॥

जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासारु संत परतापि ॥ दुहू पाख का आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग ॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥ ८ ॥ २१ ॥

जहाँ पर अनन्त परमात्मा है, वहीं उसका भक्त है, जहाँ पर भक्त है, वहीं परमात्मा स्वयं है। जहाँ कहीं वह रचना का प्रसार करता है, वह उसके संत के प्रताप के लिए है। दोनों पक्षों का वह स्वयं ही मालिक है। उसकी शोभा केवल उसी को ही शोभा देती है। भगवान स्वयं ही लीला एवं खेल करता है। वह स्वयं ही आनंद भोगता है और फिर भी निर्लिप्त रहता है। जिस किसी को वह चाहता है, उसको अपने नाम के साथ लगा लेता है। जिस किसी को वह चाहता है, उसको संसार का खेल खिलाता है। नानक का कथन है कि हे अनन्त! हे अ ह! हे गणना-रहित, अतुलनीय परमात्मा! जैसे तुम बुलाते हो, वैसे ही यह दास बोलता है॥ ८॥ २१॥

सलोकु ॥ जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे जीव-जन्तुओं के पालनहार परमेश्वर! तू स्वयं ही सर्वव्यापक है। हे नानक! एक ईश्वर ही सर्वत्र व्यापक है। इसके अलावा दूसरा कोई कहाँ दिखाई देता है॥ १॥

असटपदी ॥ आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते भिंन नही किछु होइ ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ सचु नामु सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ वह स्वयं ही वक्ता है और स्वयं ही श्रोता है। वह स्वयं ही एक है और स्वयं ही उसका विस्तार है। जब उसे भला लगता है तो वह सृष्टि की रचना कर देता है। अपनी इच्छानुसार वह इसे स्वयं में लीन कर देता है। हे परमात्मा! तुम्हारे बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता। तूने समूचे जगत्

को एक सूत्र में पिरोया हुआ है। जिसे पूज्य परमेश्वर स्वयं ज्ञान देता है, वह मनुष्य सत्यनाम प्राप्त कर लेता है। वह समदर्शी तथा तत्वज्ञाता है। हे नानक! वह समूचे जगत् को विजयी करने वाला है॥ १॥

जीअ जंत सभ ता कै हाथ ॥ दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥ सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥ अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥ गुन निधान बेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ २ ॥

समस्त जीव-जन्तु उस परमात्मा के वश में हैं। वह दीनदयालु एवं अनाथों का नाथ है। जिसकी परमात्मा रक्षा करता है, उसे कोई भी मार नहीं सकता। जिसे वह अपने हृदय से विस्मृत कर देता है, वह पूर्व ही मृत है। उसे छोड़कर कोई मनुष्य दूसरे के पास क्यों जाए? सबके सिर पर एक निरंजन प्रभु है। जिसके वश में प्राणी की समस्त युक्तियां हैं, समझ ले कि वह भीतर एवं बाहर तेरे साथ है। दास नानक सदैव उस गुणों के भण्डार, अनंत एवं अपार परमात्मा पर बलिहारी जाता है॥ २॥

पूरन पूरि रहे दइआल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥ मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥ करनहारु नानक इकु जानिआ ॥ ३ ॥

दयालु परमात्मा हर जगह पर मौजूद है और समस्त जीवों पर कृपालु होता है। अपनी लीला वह स्वयं ही जानता है। अन्तर्यामी प्रभु सबमें समाया हुआ है। वह अनेक विधियों से जीवों का पोषण करता है। जिस किसी की भी उसने उत्पत्ति की है, वह उसका ध्यान करता रहता है। जो कोई भी भगवान को भला लगता है, उसे वह अपने साथ मिला लेता है। ऐसा भक्त हरि-प्रभु की भक्ति एवं गुणस्तुति करता है। हे नानक! जिसने मन में श्रद्धा धारण करके भगवान को माना है, उसने एक सृष्टिकर्त्ता प्रभु को ही जाना है॥ ३॥

जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ तिस की आस न बिरथी जाइ ॥ सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥ इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥ जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥ बंधन तोरि भए निरवैर ॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥ ४ ॥

जो भक्त भगवान के एक नाम में लगा है, उसकी आशा व्यर्थ नहीं जाती। सेवक को सेवा करनी ही शोभा देती है। प्रभु के हुक्म का पालन करके वह परम पद (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है। जिसके हृदय में निरंकार प्रभु बसता है, उसे इससे ऊपर और कोई भी विचार नहीं आता। वह अपने बन्धन तोड़कर निर्वैर हो जाता है और दिन-रात गुरु के चरणों की पूजा-अर्चना करता है। वह इहलोक में सुखी एवं परलोक में आनंद-प्रसन्न होता है। हे नानक! हरि-प्रभु उसे अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥

साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥ गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ दुलभ देह का करहु उधारु ॥ अंम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥ सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥ ५ ॥

साधसंगत में मिलकर आनंद करो और परमानन्द प्रभु की गुणस्तुति करते रहो। राम-नाम के तत्व का विचार करो। इस तरह दुर्लभ मानव शरीर का कल्याण कर लो। परमेश्वर की महिमा के अमृत वचन गायन करो। अपनी आत्मा का कल्याण करने की यही विधि है। आठ पहर प्रभु को निकट देखो। (इससे) अज्ञान मिट जाएगा और अन्धकार का नाश हो जाएगा। गुरु का उपदेश सुनकर इसे अपने हृदय में बसाओ। हे नानक! इस तरह तुझे मनोवांछित फल प्राप्त होगा॥ ५॥

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु अंतरि उरि धारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥ ६ ॥

राम के नाम को अपने हृदय में बसाकर लोक एवं परलोक दोनों को संवार लो। पूर्ण गुरु का पूर्ण उपदेश है। जिसके हृदय में यह बसता है, वह सत्य का निरीक्षण कर लेता है। अपने मन एवं तन से वृत्ति लगाकर प्रभु के नाम का जाप करो। इस तरह दुःख-दर्द एवं भय मन से निवृत्त हो जाएँगे। हे व्यापारी! तू सच्चा व्यापार कर। तेरा सौदा ईश्वर के दरबार में सुरक्षित पहुँच जाएगा। एक ईश्वर का सहारा अपने हृदय में कायम कर। हे नानक! तेरा आवागमन (जन्म-मरण का चक्र) पुनः नहीं होगा॥ ६॥

तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥ ७ ॥

उससे दूर कोई मनुष्य कहाँ जा सकता है? रक्षक परमात्मा का चिन्तन करने से मनुष्य बच जाता है। उस निर्भय प्रभु का जाप करने से सब भय मिट जाते हैं। प्रभु की कृपा से जीव की मुक्ति हो जाती है। जिसकी ईश्वर रक्षा करता है, उसे कोई दुःख नहीं लगता। नाम की आराधना करने से मन को सुख प्राप्त हो जाता है। उससे चिन्ता दूर हो जाती है और अहंकार मिट जाता है। उस प्रभु के भक्त की कोई समानता नहीं कर सकता। हे नानक! जिसके सिर पर शूरवीर गुरु खड़ा हो, उसके तमाम कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ ७॥

मति पूरी अंम्रितु जा की द्रिसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत सिसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥ अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥ साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥ ८ ॥ २२ ॥

जिस (गुरु) की बुद्धि पूर्ण है और जिसकी दृष्टि से अमृत बरसता रहता है, उनके दर्शन करके दुनिया का कल्याण हो जाता है। उनके चरण कमल अनूप हैं। उनके दर्शन सफल हैं और परमेश्वर जैसा अति सुन्दर उनका रूप है। उनकी सेवा धन्य है एवं उनका सेवक स्वीकृत है। वह (गुरु) अन्तर्यामी एवं प्रधान पुरुष है। जिसके हृदय में गुरु निवास करते हैं, वह कृतार्थ हो जाता है। काल (मृत्यु) उसके निकट नहीं आता। हे नानक! जिन्होंने साधुओं की संगति में भगवान का ध्यान किया है, वे अमर हो गए हैं और अमरपद प्राप्त कर लिया है॥ ८॥ २२॥

सलोकु ॥ गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥ हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥ १ ॥

श्लोक॥ गुरु ने ज्ञान रूपी सुरमा प्रदान किया है, जिससे अज्ञान के अंधेरे का नाश हो गया है। हे नानक! भगवान की कृपा से संत-गुरु मिला है, जिससे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है॥ १॥

असटपदी ॥ संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥ अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥ नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्रामु ॥ सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥ कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ संतों की संगति में अन्तर्मन में ही प्रभु के दर्शन कर लिए हैं। प्रभु का नाम मुझे मधुर मीठा लगा है। समस्त सृष्टि एक परमात्मा के स्वरूप में है, जिसके विभिन्न प्रकार के अनेक रंग दिखाई दे रहे हैं। प्रभु का अमृत नाम नवनिधि है। मानव शरीर में ही इसका निवास है। वहाँ शून्य समाधि में अनहद शब्द होता है। इस आश्चर्यचकित एवं विस्माद का वर्णन नहीं किया जा सकता। जिसको ईश्वर स्वयं दिखाता है, वही इसको देखता है। हे नानक! ऐसा पुरुष ज्ञान प्राप्त कर लेता है॥ १॥

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥ २ ॥

वह अनन्त परमात्मा अन्तर्मन में भी है और बाहर भी विद्यमान है। भगवान कण-कण में मौजूद है। वह धरती, गगन एवं पाताल में मौजूद है। समस्त लोकों का वह पूर्ण पालनहार है। पारब्रह्म-प्रभु वनों, तृणों एवं पर्वतों में व्यापक है। जैसी उसकी आज्ञा होती है, वैसे ही जीव के कर्म हैं। भगवान पवन, जल एवं अग्नि में विद्यमान है। वह चारों तरफ और दसों दिशाओं में समाया हुआ है। उससे भिन्न कोई स्थान नहीं। गुरु की कृपा से नानक ने सुख पा लिया है॥ २॥

बेद पुरान सिंम्रिति महि देखु ॥ ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर परसादि भरम का नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु ॥ ३ ॥

उस भगवान को वेद, पुराण एवं स्मृतियों में देखो। चन्द्रमा, सूर्य एवं तारों में वही एक ईश्वर है। प्रत्येक जीव प्रभु की वाणी बोलता है। वह अटल है और कभी विचलित नहीं होता। सर्व कला रचकर (सृष्टि का) खेल खेलता है। उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, (क्योंकि) उसके गुण अमूल्य हैं। ईश्वर की ज्योति समस्त ज्योतियों में प्रज्वलित है। प्रभु ने संसार का ताना-बाना अपने वश में किया हुआ है। हे नानक! गुरु की कृपा से जिसके भ्रम का नाश हो जाता है, उसके भीतर यह दृढ़ विश्वास बन जाता है॥ ३॥

संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥ संत जना कै हिरदै सभि धरम ॥ संत जना सुनहि सुभ बचन ॥ सरब बिआपी राम संगि रचन ॥ जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ सति बचन साधू सभि कहत ॥ जो

जो होइ सोई सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥ नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥ ४ ॥

संतजन हर जगह पर भगवान को ही देखते हैं। संतजनों के मन में सब धर्म ही होता है। संतजन शुभ वचन सुनते हैं। वे सर्वव्यापक राम में लीन रहते हैं। जिस जिस संत–धर्मात्मा ने (ईश्वर को) समझ लिया है, उसका जीवन–आचरण ही यह बन जाता है। साधु सदैव सत्य वचन करता है। जो कुछ भी होता है, वह इसे सुख मानता है। वह जानता है कि प्रभु समस्त कार्य करने वाला एवं कराने वाला है। संतजनों हेतु ईश्वर भीतर–बाहर सर्वत्र बसता है। हे नानक ! उसके दर्शन करके हरेक व्यक्ति मुग्ध हो जाता है॥ ४॥

आपि सति कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥ तिसु भावै ता एकंकारु ॥ अनिक कला लखी नह जाइ ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥ आपे आपि आप भरपूरि ॥ अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥ नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥ ५ ॥

ईश्वर सत्य है और उसकी सृष्टि–रचना भी सत्य है। उस परमेश्वर से समूचा जगत् उत्पन्न हुआ है। जब उसे भला लगता है तो वह सृष्टि का प्रसार कर देता है। यदि एक ईश्वर को उपयुक्त लगे तो वह स्वयं ही एक रूप हो जाता है। उसकी अनेक कलाएँ (शक्तियां) हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस किसी को वह चाहता है, उसे अपने साथ मिला लेता है। वह पारब्रह्म किसी से दूर एवं किसी से निकट कहा जा सकता है ? लेकिन ईश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक है। हे नानक ! वह उस मनुष्य को (अपनी सर्वव्यापकता की) सूझ देता है, जिसे (ईश्वर) स्वयं भीतरी उच्च अवस्था सुझा देता है॥ ५॥

सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन आपि पेखनहारा ॥ सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥ आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी कीनी माइआ ॥ सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ नानक जा भावै ता लए समाइ ॥ ६ ॥

सारी दुनिया के लोगों में परमात्मा स्वयं ही मौजूद है। सर्व नयनों द्वारा वह स्वयं ही देख रहा है। यह सारी सृष्टि–रचना उसका शरीर है। वह अपनी महिमा स्वयं ही सुनता है। लोगों का आवागमन (जन्म–मरण) ईश्वर ने एक खेल रचा है। माया को उसने अपना आज्ञाकारी बनाया हुआ है। सबके भीतर होता हुआ भी प्रभु निर्लिप्त रहता है। जो कुछ कहना होता है, वह स्वयं ही कहता है। उसकी आज्ञानुसार प्राणी (दुनिया में) जन्म लेता है और आज्ञानुसार प्राण त्याग देता है। हे नानक ! जब उसे लुभाता है तो वह प्राणी को अपने साथ मिला लेता है॥ ६॥

इस ते होइ सु नाही बुरा ॥ ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला करतूति अति नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥ ओति पोति आपन संगि राचु ॥ ता की गति मिति कही न जाइ ॥ दूसर होइ त सोझी पाइ ॥ तिस का कीआ सभु परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥ ७ ॥

भगवान द्वारा जो कुछ भी होता है, दुनिया के लिए बुरा नहीं होता। कहो, उस भगवान के अलावा कभी किसी ने कुछ किया है ? ईश्वर स्वयं भला है और सबसे भले उसके कर्म हैं। अपने हृदय की

बात वह स्वयं ही जानता है। वह स्वयं सत्य है और उसकी सृष्टि–रचना भी सत्य है। ताने–बाने की भाँति उसने स्वयं सृष्टि को अपने साथ मिलाया हुआ है। उसकी गति एवं विस्तार व्यक्त नहीं किए जा सकते। यदि कोई दूसरा उस समान होता तो वह उसको समझ सकता। हे नानक! गुरु की कृपा से यह तथ्य समझो कि ईश्वर का किया हुआ लोगों को स्वीकार करना पड़ता है॥ ७॥

जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥ आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥ ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥ जन आवन का इहै सुआउ ॥ जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥ ८ ॥ २३ ॥

जो व्यक्ति ईश्वर को समझता है, उसे सदैव सुख मिलता है। वह ईश्वर उसे अपने साथ मिला लेता है। जिस जीव के हृदय में भगवान बसता है, वह जीवित ही मुक्ति पा लेता है। वह धनवान, कुलवान एवं मान–प्रतिष्ठा वाला बन जाता है। उस महापुरुष का दुनिया में जन्म लेना धन्य–धन्य है, जिसकी कृपा से सारे जगत् का उद्धार हो जाता है। महापुरुष के आगमन का यही मनोरथ है कि उसकी संगति में रहकर दूसरे प्राणियों को ईश्वर का नाम–स्मरण आता है। ऐसा महापुरुष स्वयं मुक्त होकर संसार को भी मुक्त करा देता है। हे नानक! ऐसे महापुरुष को हमारा सदैव प्रणाम है॥ ८॥२३॥

सलोकु ॥ पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥ १ ॥

श्लोक॥ उस पूर्ण नाम वाले पूर्ण प्रभु की आराधना की है। हे नानक! मैंने पूर्ण प्रभु को पा लिया है, तुम भी पूर्ण प्रभु की महिमा गाओ॥ १॥

असटपदी ॥ पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस अनित तिआगहु तरंग ॥ संत जना की धूरि मन मंग ॥ आपु छोडि बेनती करहु ॥ साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥ १ ॥

अष्टपदी॥ पूर्ण गुरु का उपदेश सुनो और पारब्रह्म को निकट समझ कर देखो। अपनी प्रत्येक सांस से गोविन्द का सिमरन करो, इससे तेरे मन के भीतर की चिन्ता मिट जाएगी। तृष्णाओं की तरंगों को त्याग कर संतजनों की चरण धूलि की मन से याचना करो। अपना अहंकार त्याग कर प्रार्थना करो। सत्संगति में रहकर (विकारों की) अग्नि के सागर से पार हो जाओ। हे नानक! परमेश्वर के नाम–धन से अपने खजाने भरपूर कर ले एवं पूर्ण गुरु को प्रणाम करो॥ १॥

खेम कुसल सहज आनंद ॥ साधसंगि भजु परमानंद ॥ नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ ॥ चिति चितवहु नाराइण एक ॥ एक रूप जा के रंग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥ दुख भंजन पूरन किरपाल ॥ सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥ नानक जीअ का इहै अधार ॥ २ ॥

संतों की संगति में परमानंद प्रभु का भजन करो, इससे मुक्ति, प्रसन्नता एवं सहज आनंद प्राप्त होंगे। गोबिन्द की गुणस्तुति करके नाम–अमृत का रसपान करो, इससे नरक में जाने से बच जाओगे और आत्मा पार हो जाएगी। अपने मन में एक नारायण का ध्यान करो, जिसका रूप एक एवं रंग अनेक हैं। वह गोपाल, दामोदर, दीनदयालु, दुःखनाशक एवं पूर्ण कृपालु है। हे नानक! बार–बार उसके नाम का सिमरन करते रहो चूंकि जीव का एकमात्र यही सहारा है॥ २॥

उतम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आपि तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥ जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥ जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥ ३ ॥

साधु के वचन उत्तम श्लोक हैं। यही अमूल्य रत्न एवं जवाहर है। जो व्यक्ति इन वचनों को सुनता और पालन करता है, उसका भवसागर से उद्धार हो जाता है। वह स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और दूसरे लोगों का भी कल्याण कर देता है। जिसके हृदय में ईश्वर का प्रेम बन जाता है, उसका जीवन सफल हो जाता है और उसकी संगति दूसरों की कामनाएँ पूर्ण करती हैं। उसकी जय, जय है, जिसके लिए अनहद ध्वनि होती है। जिसे सुनकर वह हर्षित होता है और प्रभु की महिमा की मुनादी करता है। ऐसे महापुरुषों के मस्तक पर परमात्मा प्रगट होता है। हे नानक ! ऐसे महापुरुष की संगति करने से बहुत सारे लोगों का उद्धार हो जाता है॥ ३॥

सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥ अंम्रित नामु साधसंगि लैन ॥ सुप्रसंन भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जजाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥ करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ नानक निबही खे[illegible] हमारी ॥ ४ ॥

हे भगवान ! यह सुनकर कि तू जीवों को शरण देने में समर्थ है, अतः हम तेरी शरण में आए हैं। प्रभु ने दया करके हमें अपने साथ मिला लिया है। अब हमारे वैर मिट गए हैं और हम सबकी चरण-धूलि हो गए हैं। साधसंगत से नाम-अमृत लेने वाले हुए हैं। गुरुदेव हम पर सुप्रसन्न हो गए हैं और सेवक की सेवा सफल हो गई है। राम का नाम सुनकर और अपनी जिह्वा से इसको उच्चरित करने से हम सांसारिक धंधों एवं विकारों से बच गए हैं। हे नानक ! भगवान ने कृपा करके (हम पर) यह दया की है और हमारा किया हुआ परिश्रम प्रभु-दरबार में [illegible]फल हो गया है॥ ४॥

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान एकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥ जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ सरब इछा ता की पूरन होइ ॥ प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥ सभ ते ऊच पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥ नानक जिसहि परापति होइ ॥ ५ ॥

हे संत मित्रो ! सावधान एवं एकाग्रचित होकर प्रभु की महिमा-स्तुति करो। सुखमनी में सहज सुख एवं गोविन्द की महिमा एवं नाम है। जिसके मन में यह बसती है, वह धनवान बन जाता है। उसकी तमाम मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। वह प्रधान पुरुष बन जाता है और सारी दुनिया में लोकप्रिय हो जाता है। वह सर्वोच्च निवास पा लेता है। उसे पुनः जीवन-मृत्यु का [illegible]क्र नहीं पड़ता। हे नानक ! जिस इन्सान को (सुखमनी) यह देन (ईश्वर से) मिलती है, वह मनुष्य हरि नामरूपी धन प्राप्त करके दुनिया से चला जाता है॥ ५॥

खेम सांति रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥ बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥ गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ समदरसी एक द्रिसटेता ॥ इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥ ६ ॥

सहज सुख, शांति, रिद्धियां, नवनिधियां, बुद्धि, ज्ञान एवं सर्व सिद्धियाँ उस प्राणी को मिलती हैं; विद्या, तपस्या, योग, प्रभु का ध्यान, श्रेष्ट ज्ञान, उत्तम स्नान, चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष), हृदय कंवल का खिलना, सब में रहते हुए सबसे तटस्थ रहना, सुन्दरता, बुद्धिमत्ता एवं तत्ववेत्ता, समदर्शी एवं एक दृष्टि से ईश्वर को देखना, हे नानक! ये तमाम फल उसे मिलते हैं, जो अपने मुँह से (सुखमनी) सुखों की मणि का जाप करता है और गुरु के वचन तथा प्रभु के नाम की महिमा मन लगाकर सुनता है॥ ६॥

इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मतांत केवल हरि नाम॥ गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥ कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥ संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥ ७ ॥

जो भी जीव इस गुणों के भण्डार का हृदय से जाप करता है, उसकी समस्त युगों में गति हो जाती है। यह वाणी गोविन्द का यश एवं नाम की ध्वनि है, जिस बारे स्मृतियॉं, शास्त्र एवं वेद वर्णन करते हैं। समस्त धर्मों का सारांश भगवान का नाम ही है। इस नाम का निवास गोविन्द के भक्त के हृदय में होता है। करोड़ों ही अपराध संतों की संगति करने से नाश हो जाते हैं। संतों की कृपा से जीव यमों से छूट जाता है। हे नानक! जिस व्यक्ति के मस्तक पर ईश्वर ने भाग्य लिख दिया है, वही व्यक्ति साधु की शरण में आता है॥ ७॥

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥ ८ ॥ २४ ॥

जिस पुरुष के हृदय में सुखमनी निवास करती है और जो इसे प्रेमपूर्वक सुनता है, वही हरि-प्रभु को स्मरण करता है। उसके जन्म-मरण के दुःख नाश हो जाते हैं। वह इस दुर्लभ शरीर को तत्काल विकारों से बचा लेता है। उसकी शोभा निर्मल है एवं उसकी वाणी अमृत रूप होती है। एक ईश्वर का नाम ही उसके मन में समाया रहता है। दुःख, रोग, भय एवं दुविधा उससे दूर हो जाते हैं। उसका नाम साधु हो जाता है और उसके कर्म पवित्र होते हैं। उसकी शोभा सर्वोच्च हो जाती है। हे नानक! इन गुणों के कारण (ईश्वर की) इस वाणी का नाम सुखमनी है॥ ८॥ २४॥

थिती गउड़ी महला ५ ॥ सलोकु ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जलि थलि महीअलि पूरिआ सुआमी सिरजनहारु ॥ अनिक भांति होइ पसरिआ नानक एकंकारु ॥ १ ॥

श्लोक॥ इस विश्व का रचयिता परमात्मा जल, धरती एवं गगन में सर्वव्यापक है। हे नानक! सबका मालिक एक प्रभु अनेक प्रकार से सारे विश्व में फैला हुआ है॥ १॥

पउड़ी ॥ एकम एकंकारु प्रभु करउ बंदना धिआइ ॥ गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरि राइ ॥ ता की आस कलिआण सुख जा ते सभु कछु होइ ॥ चारि कुंट दह दिसि भ्रमिओ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ बेद पुरान सिम्रिति सुने बहु बिधि करउ बीचारु ॥ पतित उधारन भै हरन सुख सागर

निरंकार ॥ दाता भुगता देनहारु तिसु बिनु अवरु न जाइ ॥ जो चाहहि सोई मिलै नानक हरि गुन गाइ ॥ १ ॥ गोबिंद जसु गाईऐ हरि नीत ॥ मिलि भजीऐ साधसंगि मेरे मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥

पउड़ी॥ एकम– ईश्वर एक है और उस एक प्रभु की ही वंदना करो और उसे ही स्मरण करना चाहिए। उस गोबिन्द गोपाल का यशोगान करो एवं अकाल पुरुष की शरण लो। मोक्ष एवं सुख पाने के लिए उसमें अपनी आशा रखो, जिसके हुक्म से सबकुछ होता है। मैंने चारों कोनों एवं दसों दिशाओं में भटक कर देख लिया है, उस (प्रभु–परमेश्वर) के अलावा दूसरा कोई (रक्षक) नहीं है। (हे जीव!) वेद, पुराण एवं स्मृतियां सुनकर मैंने उन पर बहुत विधियों से विचार किया है। केवल निरंकार परमात्मा ही पापियों का उद्धार करने वाला, भयनाशक एवं सुखों का सागर है। प्रभु ही दाता, भोगनहार एवं देन देने वाला है। उस (प्रभु) के अलावा दूसरा कोई नहीं। हे नानक! परमात्मा की गुणस्तुति करने से मनुष्य को सब कुछ मिल जाता है, जिसकी वह अभिलाषा करता है॥ १॥ हे मेरे मित्र! नित्य ही गोबिन्द की गुणस्तुति करनी चाहिए, साधसंगति में मिलकर उस भगवान का भजन करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥

सलोकु ॥ करउ बंदना अनिक वार सरनि परउ हरि राइ ॥ भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीआ भाउ मिटाइ ॥ २ ॥

श्लोक॥ ईश्वर को अनेक बार प्रणाम कर और उस प्रभु की शरण में आओ। हे नानक! साधसंगत करने से दुनिया का मोह व द्वैतवाद मिट जाता है और तमाम भ्रम नाश हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ दुतीआ दुरमति दूरि करि गुर सेवा करि नीत ॥ राम रतनु मनि तनि बसै तजि कामु क्रोधु लोभु मीत ॥ मरणु मिटै जीवनु मिलै बिनसहि सगल कलेस ॥ आपु तजहु गोबिंद भजहु भाउ भगति परवेस ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै हरि दरगह पतिवंत ॥ राम नाम धनु संचवै साच साह भगवंत ॥ ऊठत बैठत हरि भजहु साधू संगि परीति ॥ नानक दुरमति छुटि गई पारब्रहम बसे चीति ॥ २ ॥

पउड़ी॥ द्वितीय– अपनी मंदबुद्धि को त्याग कर सदैव ही गुरु की सेवा करनी चाहिए। हे मित्र! काम, क्रोध एवं लालच त्याग देने से राम नाम रूपी रत्न तेरी आत्मा एवं शरीर में आ बसेगा। तेरा मरण मिट जाएगा और जीवन मिल जाएगा तथा तेरे तमाम दुःख–क्लेश नाश हो जाएँगे। अपना अहंकार त्यागकर गोबिन्द का भजन करो, प्रभु की भक्ति मन में प्रवेश कर जाएगी। तुझे लाभ प्राप्त होगा और कोई नुक्सान नहीं होगा एवं ईश्वर के दरबार में मान–सम्मान मिलेगा। जो व्यक्ति राम नाम रूपी धन एकत्र करता है वही व्यक्ति सच्चा साहूकार एवं भाग्यवान है। उठते–बैठते हरि का भजन करो एवं सत्संगति में प्रेम उत्पन्न करो। हे नानक! जब पारब्रह्म प्रभु मनुष्य के हृदय में बस जाता है तो उसकी दुर्बुद्धि नाश हो जाती है॥ २॥

सलोकु ॥ तीनि बिआपहि जगत कउ तुरीआ पावै कोइ ॥ नानक संत निरमल भए जिन मनि वसिआ सोइ ॥ ३ ॥

श्लोक॥ माया के तीण गुण दुनिया को बड़ा दुःखी कर रहे हैं, लेकिन कोई विरला पुरुष ही तुरीय अवस्था को पाता है। हे नानक! जिनके हृदय में प्रभु–परमेश्वर निवास करता है, वह संत पवित्र–पावन हो जाते हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ त्रितीआ त्रै गुण बिखै फल कब उतम कब नीचु ॥ नरक सुरग भ्रमतउ घणो सदा संघारै मीचु ॥ हरख सोग सहसा संसारु हउ हउ करत बिहाइ ॥ जिनि कीए तिसहि न जाणनी

चितवहि अनिक उपाइ ॥ आधि बिआधि उपाधि रस कबहु न तूटै ताप ॥ पारब्रहम पूरन धनी नह बूझै परताप ॥ मोह भरम बूड़त घणो महा नरक महि वास ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक तेरी आस ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ तृतीय– माया के तीन गुणों वाले मनुष्य (विषय–विकारों के) विष को फल के तौर पर एकत्रित करते हैं। कभी वे भले हैं और कभी वे बुरे हैं। वह नरक–स्वर्ग में अधिकतर भटकते हैं और मृत्यु सदैव ही उनका संहार करती है। दुनिया के हर्ष, शोक एवं दुविधा के चक्र में फँसे हुए वह अपना अमूल्य जीवन अहंकार करते हुए बिता देते हैं। जिस ईश्वर ने उनको उत्पन्न किया है, उसे वे नहीं जानते और दूसरे अनेक उपाय सोचते रहते हैं। लौकिक आस्वादनों के कारण प्राणी को मन एवं तन के रोग तथा दूसरे झंझट भी लगे रहते हैं, कभी इसके मन का दुःख क्लेश मिटता नहीं है। वह सर्वव्यापक पारब्रह्म–प्रभु के तेज–प्रताप को अनुभव नहीं करते। मोह एवं दुविधा में अत्याधिक सांसारिक लोग डूब गए हैं और कुंभी नरक में वे निवास पाते हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! कृपा करके मेरी रक्षा करो, चूंकि मुझे तेरी ही आशा है॥ ३॥

सलोकु ॥ चतुर सिआणा सुघड़ु सोइ जिनि तजिआ अभिमानु ॥ चारि पदारथ असट सिधि भजु नानक हरि नामु ॥ ४ ॥

श्लोक॥ जो मनुष्य अपना अभिमान त्याग देता है, वही चतुर, बुद्धिमान एवं गुणवान है। हे नानक ! भगवान के नाम का भजन करने से संसार के चार उत्तम पदार्थ एवं आठ सिद्धियाँ मिल जाती हैं॥ ४॥

पउड़ी ॥ चतुरथि चारे बेद सुणि सोधिओ ततु बीचारु ॥ सरब खेम कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥ नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस ॥ मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीरतन परवेस ॥ भउ बिनसै अंम्रितु रसै रंगि रते निरंकार ॥ दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥ सुरि नर मुनि जन खोजते सुख सागर गोपाल ॥ मनु निरमलु मुखु ऊजला होइ नानक साध रवाल ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ चतुर्थी– चारों वेद सुनकर और उनके यथार्थ को विचार कर मैंने निर्णय किया है कि राम के नाम का भजन, तमाम हर्ष एवं सुखों का भण्डार है। परमेश्वर के भजन में लीन होने से नरक मिट जाता है। दुःख नाश हो जाता है और अनेक क्लेश नष्ट हो जाते हैं, आत्मिक मृत्यु मिट जाती है और प्राणी यमराज से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। निरंकार परमात्मा के प्रेम में मग्न होने से मनुष्य का भय नाश हो जाता है और वह अमृत रस पान करता है। ईश्वर नाम के सहारे से दुःख, दर्द एवं अपवित्रता नष्ट हो जाते हैं। देवते, मनुष्य एवं मुनिजन भी सुख के सागर गोपाल की खोज करते हैं। हे नानक ! संतों की चरण–धूलि लेने से मन पवित्र एवं (लोक–परलोक में) मुख उज्ज्वल हो जाता है॥ ४॥

सलोकु ॥ पंच बिकार मन महि बसे राचे माइआ संगि ॥ साधसंगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ॥ ५ ॥

श्लोक॥ जीव माया के मोह में ही मग्न रहता है, जिसके कारण पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) उसके हृदय में बसे रहते हैं। हे नानक ! किन्तु सत्संगति करने से जीव पवित्र हो जाता है और वह प्रभु के रंग में मग्न रहता है॥ ५॥

पउड़ी ॥ पंचमि पंच प्रधान ते जिह जानिओ परपंचु ॥ कुसम बास बहु रंगु घणो सभ मिथिआ बलबंचु ॥ नह जापै नह बूझीऐ नह कछु करत बीचारु ॥ सुआद मोह रस बेधिओ अगिआनि रचिओ

ससारु ॥ जनम मरण बहु जोनि भ्रमण कीने करम अनेक ॥ रचनहारु नह सिमरिओ मनि न बीचारि बिबेक ॥ भाउ भगति भगवान संगि माइआ लिपत न रंच ॥ नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ पंचमी– संसार में वही महापुरुष सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं, जिन्होंने इस संसार के परपंच को समझ लिया है। पुष्पों की अधिक सुगन्धि एवं अनेक रंगों की भाँति समस्त छल–कपट झूठे हैं। मनुष्य देखता नहीं, वह यथार्थ को समझता नहीं, न ही वह थोड़ा–सा भी विचार करता है। दुनिया आस्वादनों, मोह, रस में बंधी रहती है और अज्ञान में लीन रहती है। जो मनुष्य अनेक कर्म करते हैं परन्तु कर्त्तार की आराधना नहीं करते और जिनके हृदय में विचार कर (भले बुरे काम की) परख नहीं, वे जन्म मरण के चक्र में पड़ते हैं और अनेक योनियों में भटकते रहते हैं। जो व्यक्ति भगवान की भक्ति तथा भगवान में श्रद्धा धारण करते हैं, उनके साथ माया बिल्कुल लिप्त नहीं होती। हे नानक! दुनिया में विरले इन्सान ही मिलते हैं जो दुनिया के परपंच में नहीं फँसते॥ ५॥

सलोकु ॥ खट सासत्र ऊचौ कहहि अंतु न पारावार ॥ भगत सोहहि गुण गावते नानक प्रभ कै दुआर ॥ ६ ॥

श्लोक॥ षट्शास्त्र उच्च स्वर से पुकारते हुए कहते हैं कि भगवान की महिमा का अन्त नहीं मिल सकता तथा उसके अस्तित्व का ओर–छोर नहीं पाया जा सकता। हे नानक! भगवान के भक्त भगवान के द्वार पर उसका गुणानुवाद करते हुए अति सुन्दर लगते हैं॥ ६॥

पउड़ी ॥ खसटमि खट सासत्र कहहि सिंम्रिति कथहि अनेक ॥ ऊतमु ऊचौ पारब्रहमु गुण अंतु न जाणहि सेख ॥ नारद मुनि जन सुक बिआस जसु गावत गोबिंद ॥ रस गीधे हरि सिउ बीधे भगत रचे भगवंत ॥ मोह मान भ्रमु बिनसिओ पाई सरनि दइआल ॥ चरन कमल मनि तनि बसे दरसनु देखि निहाल ॥ लाभु मिलै तोटा हिरै साधसंगि लिव लाइ ॥ खाटि खजाना गुण निधि हरे नानक नामु धिआइ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ षष्ठी– षट्शास्त्र कहते हैं, अनेक स्मृतियाँ भी कथन करती हैं कि भगवान बड़ा महान एवं सर्वोपरि है, जिसकी महिमा का अन्त अनेकों शेषनाग भी नहीं जान सकते। नारद मुनि, मुनिजन, शुकदेव एवं व्यास भी गोविन्द की महिमा का गायन करते हैं। ईश्वर के भक्त उसके नाम–रस में भीगे रहते हैं, उसके स्मरण में ओत–प्रोत रहते हैं और भगवान के भजन में लीन रहते हैं। दया के घर भगवान की शरण लेने से मोह, अभिमान एवं दुविधा नाश हो जाते हैं। जिनके मन तथा तन में ईश्वर के सुन्दर चरण बस गए, ईश्वर के दर्शन करके वे कृतार्थ हो जाते हैं। साधसंगत द्वारा ईश्वर चरणों में सुरति लगाकर लाभ प्राप्त किया जाता है। हे नानक! नाम का ध्यान करके गुणों के भण्डार भगवान का नाम रूपी भण्डार उपलब्ध कर लो॥ ६॥

सलोकु ॥ संत मंडल हरि जसु कथहि बोलहि सति सुभाइ ॥ नानक मनु संतोखीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ ७ ॥

श्लोक॥ संतों की मण्डली हमेशा ही भगवान का यश कथन करती रहती है और सहज स्वभाव सत्य ही बोलती रहती है। हे नानक! एक ईश्वर में सुरति लगाने से मन संतुष्ट हो जाता है॥ ७॥

पउड़ी ॥ सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ॥ संतसंगति महि पाईऐ अंतु न पारावार ॥ आपु तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राइ ॥ दूख हरै भवजलु तरै मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ आठ पहर मनि हरि जपै सफलु जनमु परवाणु ॥ अंतरि बाहरि सदा संगि करनैहारु पछाणु ॥ सो साजनु सो सखा मीतु जो हरि की मति देइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै हरि हरि नामु जपेइ ॥ ७ ॥

पउडी॥ सप्तमी– प्रभु का नाम रूपी धन संचित करो, क्योंकि नाम–धन का भण्डार कभी समाप्त नहीं होता। (यह नाम धन) संतों की संगति करने से ही प्राप्त होता है, जिस प्रभु के गुणों का कोई अन्त नहीं, जिसके स्वरूप का ओर–छोर नहीं मिलता। हे जिज्ञासुओ! अपना अहंकार त्याग कर भगवान का भजन करते रहो और उस प्रभु की शरण में ही आओ। भगवान की शरण में आने से दुख दूर हो जाते हैं, भवसागर भी पार हो जाता है तथा मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य दिन–रात अपने मन में ईश्वर का नाम–सिमरन करता है, उसका जन्म सफल हो जाता है। जो परमेश्वर (प्रत्येक जीव के) भीतर–बाहर सदैव साथ है, वह कर्त्तार प्रभु उस मनुष्य का मित्र बन जाता है। हे जीव! जो व्यक्ति (हमें) भगवान का नाम जपने का उपदेश देता है, वही हमारा वास्तविक मित्र, सखा एवं साथी है। हे नानक! जो पुरुष हरि–परमेश्वर के नाम का जाप करता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ॥७॥

सलोकु ॥ आठ पहर गुन गाईअहि तजीअहि अवरि जंजाल ॥ जमकंकरु जोहि न सकई नानक प्रभू दइआल ॥ ८ ॥

श्लोक॥ यदि हम आठों प्रहर भगवान की महिमा– स्तुति करते रहें और दूसरे तमाम बन्धन त्याग दें तो हे नानक! भगवान प्रसन्न होकर दया के घर में आ जाता है तथा यमदूत भी दृष्टि नहीं कर सकता॥ ८॥

पउड़ी ॥ असटमी असट सिधि नव निधि ॥ सगल पदारथ पूरन बुधि ॥ कवल प्रगास सदा आनंद ॥ निरमल रीति निरोधर मंत ॥ सगल धरम पवित्र इसनानु ॥ सभ महि ऊच बिसेख गिआनु ॥ हरि हरि भजनु पूरे गुर संगि ॥ जपि तरीऐ नानक नाम हरि रंगि ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ अष्टमी– आठ सिद्धियाँ, नौ निधियाँ, समस्त बहुमूल्य पदार्थ, पूर्ण बुद्धि, हृदय कमल का प्रकाश, सदैव आनंद, पवित्र जीवन आचरण, अचूक उपदेश, समस्त धर्म (गुण), पवित्र स्नान एवं सर्वोच्च तथा श्रेष्ठ ज्ञान, पूर्ण गुरु की संगति करने से प्रभु–परमेश्वर के भजन द्वारा प्राप्त हो जाते हैं। हे नानक! प्रेमपूर्वक ईश्वर का नाम–स्मरण करने से मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है॥ ८॥

सलोकु ॥ नाराइणु नह सिमरिओ मोहिओ सुआद बिकार ॥ नानक नामि बिसारिऐ नरक सुरग अवतार ॥ ९ ॥

श्लोक॥ जो व्यक्ति नारायण का नाम–सिमरन नहीं करता, ऐसे व्यक्ति को हमेशा विकारों के रसों ने मुग्ध किया हुआ है। हे नानक! यदि जीव भगवान का नाम भुला दे तो उसे बार–बार नरक–स्वर्ग में जन्म लेना पड़ता है॥ ९॥

पउड़ी ॥ नउमी नवे छिद्र अपवीत ॥ हरि नामु न जपहि करत बिपरीति ॥ पर त्रिअ रमहि बकहि साध निंद ॥ करन न सुनही हरि जसु बिंद ॥ हिरहि पर दरबु उदर कै ताई ॥ अगनि न निवरै त्रिसना न बुझाई ॥ हरि सेवा बिनु एह फल लागे ॥ नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे ॥ ९ ॥

पउडी॥ नवमी– शरीर की नौ इन्द्रियाँ (नाक–कान इत्यादि) अपवित्र रहती हैं। जीव प्रभु का नाम स्मरण नहीं करते और विपरीत कर्म करते रहते हैं। ईश्वर के नाम–स्मरण से विहीन मनुष्य पराई

नारियाँ भोगते हैं और साधुओं की निन्दा करते रहते हैं और अपने कानों से तनिक मात्र भी भगवान का यश नहीं सुनते। वे अपना पेट भरने के लिए पराया धन चुराते रहते हैं। फिर भी उनकी लालच की अग्नि तृप्त नहीं होती और न ही उनकी तृष्णा दूर होती है। प्रभु की भक्ति के बिना उनके तमाम प्रयासों को ऐसे फल ही लगते हैं। हे नानक! भगवान को भुलाकर भाग्यहीन लोग आवागमन के चक्र में फँसे रहते हैं॥ ६॥

सलोकु ॥ दस दिस खोजत मै फिरिओ जत देखउ तत सोइ ॥ मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ ॥ १० ॥

श्लोक॥ मैं दसों दिशाओं में ही खोज रहा हूँ। लेकिन जिधर कहीं भी देखता हूँ, उधर ही भगवान को मैं पाता हूँ। हे नानक! मनुष्य का मन वश में तभी आता है, यदि परमेश्वर उस पर पूर्ण कृपा करता है॥ १०॥

पउड़ी ॥ दसमी दस दुआर बसि कीने ॥ मनि संतोखु नाम जपि लीने ॥ करनी सुनीऐ जसु गोपाल ॥ नैनी पेखत साध दइआल ॥ रसना गुन गावै बेअंत ॥ मन महि चितवै पूरन भगवंत ॥ हसत चरन संत टहल कमाईऐ ॥ नानक इहु संजमु प्रभ किरपा पाईऐ ॥ १० ॥

पउड़ी॥ दसमी– जो मनुष्य अपनी दसों इन्द्रियों (पाँच ज्ञान एवं पाँच कर्म इन्द्रियों) को वश में कर लेता है, परमात्मा का नाम जपने से उसके मन में संतोष उत्पन्न हो जाता है। अपने कानों से गोपाल का यश सुनो। अपने नेत्रों से दयालु संतों को देखो। अपनी जिह्वा से अनन्त परमात्मा की गुणस्तुति करो। अपने हृदय में पूर्ण भगवान का चिन्तन करो। अपने हाथों एवं चरणों से साधुओं की सेवा करो। हे नानक! यह जीवन–आचरण ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होता है॥ १०॥

सलोकु ॥ एको एकु बखानीऐ बिरला जाणै स्वादु ॥ गुण गोबिंद न जाणीऐ नानक सभु बिसमादु ॥ ११ ॥

श्लोक॥ केवल एक ईश्वर की महिमा का ही बखान करना चाहिए, ऐसे स्वाद को कोई विरला पुरुष ही जानता है। गोविन्द की महिमा को जाना नहीं जा सकता। हे नानक! वह तो बहुत अद्‌भुत रूप है॥ ११॥

पउड़ी ॥ एकादसी निकटि पेखहु हरि रामु ॥ इंद्री बसि करि सुणहु हरि नामु ॥ मनि संतोखु सरब जीअ दइआ ॥ इन बिधि बरतु संपूरन भइआ ॥ धावत मनु राखै इक ठाइ ॥ मनु तनु सुधु जपत हरि नाइ ॥ सभ महि पूरि रहे पारब्रहम ॥ नानक हरि कीरतनु करि अटल एहु धरम ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ एकादशी– प्रभु–परमेश्वर को सदैव निकट देखो। अपनी इन्द्रियों को वश में करके प्रभु का नाम सुनो। जो व्यक्ति अपने मन में संतोष धारण करता है और समस्त जीवों के साथ दया करता है, इस विधि से उसका व्रत सफल हो जाता है। ऐसा करके वह अपने भागते हुए मन को स्थिर करके रखता है। भगवान के नाम का जाप करने से मन एवं शरीर शुद्ध हो जाते हैं। भगवान दुनिया में हर जगह मौजूद है, इसलिए हे नानक! भगवान का कीर्त्तन हरदम करते रहो चूंकि यही एक अटल धर्म है॥ ११॥

सलोकु ॥ दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध क्रिपाल ॥ नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जंजाल ॥ १२ ॥

श्लोक॥ कृपा के घर संतों को मिलने एवं उनकी सेवा करने से दुर्मति मिट जाती है। हे नानक! जो लोग प्रभु के साथ मिले रहते हैं, उनके हर प्रकार के बन्धन नाश हो जाते हैं॥ १२॥

पउड़ी ॥ दुआदसी दानु नामु इसनानु ॥ हरि की भगति करहु तजि मानु ॥ हरि अंम्रित पान करहु साधसंगि ॥ मन त्रिपतासै कीरतन प्रभ रंगि ॥ कोमल बाणी सभ कउ संतोखै ॥ पंच भू आतमा हरि नाम रसि पोखै ॥ गुर पूरे ते एह निहचउ पाईऐ ॥ नानक राम रमत फिरि जोनि न आईऐ ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ द्वादशी– दान–पुण्य करो, ईश्वर का नाम–सिमरन करो और जीवन पवित्र रखो। अपना अभिमान त्याग कर भगवान की भक्ति करते रहो। संतों की संगति में शामिल होकर हरि नाम रूपी अमृत का पान करो। प्रेमपूर्वक प्रभु का कीर्तन करने से मन तृप्त हो जाता है। मधुर वाणी हर किसी को संतोष प्रदान करती है। पंचभूतक आत्मा हरि–नाम रूपी रस से आनंदित हो जाती है। पूर्ण गुरु द्वारा यह निश्चय ही मिल जाता है। हे नानक! राम का नाम–सिमरन करने से जीव फिर से योनियों में नहीं आता॥ १२॥

सलोकु ॥ तीनि गुणा महि बिआपिआ पूरन होत न काम ॥ पतित उधारणु मनि बसै नानक छूटै नाम ॥ १३ ॥

श्लोक॥ दुनिया माया के तीन गुणों के दबाव में फँसी रहती है, इसलिए उसके कार्य पूर्ण नहीं होते। हे नानक! वही प्राणी मोक्ष प्राप्त करता है, जिसके हृदय में पतितों का उद्धार करने वाला ईश्वर का नाम बस जाता है॥ १३॥

पउड़ी ॥ त्रउदसी तीनि ताप संसार ॥ आवत जात नरक अवतार ॥ हरि हरि भजनु न मन महि आइओ ॥ सुख सागर प्रभु निमख न गाइओ ॥ हरख सोग का देह करि बाधिओ ॥ दीरघ रोगु माइआ आसाधिओ ॥ दिनहि बिकार करत स्रमु पाइओ ॥ नैनी नीद सुपन बरड़ाइओ ॥ हरि बिसरत होवत एह हाल ॥ सरनि नानक प्रभ पुरख दइआल ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ त्रयोदशी– यह संसार तीन गुणों के ताप से दुःखी पड़ा हुआ है। जिससे यह जन्म–मरण के चक्र में पड़कर नरक में जाता है। प्रभु–परमेश्वर का भजन इसके मन में प्रवेश नहीं करता। सुखों के सागर प्रभु की महिमा मनुष्य एक क्षण भर के लिए भी नहीं करता। हर्ष एवं शोक का यह शरीर पुतला है। इसे माया का दीर्घ एवं असाध्य रोग लगा हुआ है। वह दिन रात विकारों का कार्य करता है और हार थक जाता है। आँखों में नींद से वह स्वप्न में भी बातें करता है। भगवान को भुला कर उसकी यह दशा हो जाती है। नानक ने दया के घर प्रभु की शरण ली है॥ १३॥

सलोकु ॥ चारि कुंट चउदह भवन सगल बिआपत राम ॥ नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम ॥ १४ ॥

श्लोक॥ परमात्मा चारों दिशाओं एवं चौदह लोकों में हर जगह पर मौजूद है। हे नानक! उस ईश्वर के भण्डारों में कोई कमी नहीं देखी जाती, प्रभु द्वारा किए तमाम कार्य सफल होते हैं॥ १४॥

पउड़ी ॥ चउदहि चारि कुंट प्रभ आप ॥ सगल भवन पूरन परताप ॥ दसे दिसा रविआ प्रभु एकु ॥ धरनि अकास सभ महि प्रभ पेखु ॥ जल थल बन परबत पाताल ॥ परमेस्वर तह बसहि दइआल ॥ सूखम असथूल सगल भगवान ॥ नानक गुरमुखि ब्रहमु पछान ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ चौदश– चारों दिशाओं में ईश्वर स्वयं ही बस रहा है। सभी लोकों में उसका तेज–प्रताप चमक रहा है। दसों दिशाओं में एक प्रभु ही व्यापक है। धरती एवं आकाश हर स्थान पर ईश्वर को

देखो। जल, धरती, वन, पहाड़ एवं पाताल–इन सब में दयालु परमेश्वर बस रहा है। गोचर एवं अगोचर समूचे जगत् में भगवान मौजूद है। हे नानक! गुरमुख ईश्वर को पहचान लेता है॥ १४॥

सलोकु ॥ आतमु जीता गुरमती गुण गाए गोबिंद ॥ संत प्रसादी भै मिटे नानक बिनसी चिंद ॥ १५ ॥

श्लोक॥ गुरु के उपदेश द्वारा गोबिन्द की गुणस्तुति करने से आत्मा को जीता जा सकता है। हे नानक! संतों की कृपा से भय मिट जाता है और संशय निवृत्त हो जाता है॥ १५॥

पउड़ी ॥ अमावस आतम सुखी भए संतोखु दीआ गुरदेव ॥ मनु तनु सीतलु सांति सहज लागा प्रभ की सेव ॥ टूटे बंधन बहु बिकार सफल पूरन ता के काम ॥ दुरमति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥ सरनि गही पारब्रहम की मिटिआ आवा गवन ॥ आपि तरिआ कुटंब सिउ गुण गुबिंद प्रभ रवन ॥ हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ॥ गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्रामु ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ अमावस्या–जिस व्यक्ति को गुरदेव ने संतोष प्रदान किया है, उसकी आत्मा सुखी हो गई है। (गुरु की कृपा से) वह ईश्वर की भक्ति में लग गया है, जिससे उसका मन तन शीतल हो गया, उसके भीतर शांति एवं सहज सुख उत्पन्न हो गया। जो मनुष्य प्रभु का नाम–स्मरण करते हैं, उनके विकारों के बन्धन और अनेक पाप नाश हो जाते हैं। उसके तमाम कार्य सफल एवं सम्पूर्ण हो जाते हैं, उनकी दुर्बुद्धि नाश हो जाती है और उनका अहंकार निवृत्त हो जाता है। पारब्रह्म की शरण लेने से मनुष्य का जन्म–मरण का चक्र मिट जाता है। गोबिन्द प्रभु की महिमा–स्तुति के कारण वह अपने कुटुंब सहित (भवसागर से) पार हो जाता है। हे जीव! ईश्वर की भक्ति ही करनी चाहिए और भगवान के नाम का जाप करना चाहिए। हे नानक! सर्व सुखों का मूल वह परमात्मा पूर्ण गुरु के द्वारा मिलता है॥ १५॥

सलोकु ॥ पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥ दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥ १६ ॥

श्लोक॥ पूर्ण मनुष्य जिसे परमात्मा ने स्वयं पूर्ण किया है, वह कभी विचलित नहीं होता। हे नानक! वह दिन–रात प्रगति करता रहता है और जीवन में असफल नहीं होता॥ १६॥

पउड़ी ॥ पूरनमा पूरन प्रभ एकु करण कारण समरथु ॥ जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥ गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होइ ॥ अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥ पारब्रहमु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥ संत सहाई सरनि जोगु आठ पहर नमसकार ॥ अकथ कथा नह बूझीऐ सिमरहु हरि के चरन ॥ पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ पूर्णिमा– केवल एक परमेश्वर ही पूर्ण है। वह सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है। सर्वव्यापक परमात्मा समस्त जीव–जन्तुओं पर दयालु रहता है, समस्त जीवों पर उसका रक्षा करने वाला हाथ है। गोविन्द जिसकी इच्छानुसार सब कुछ होता है, गुणों का भण्डार है। वह बुद्धिमान, अदृश्य एवं निरंजन प्रभु अन्तर्यामी है। पारब्रह्म–परमेश्वर समस्त विधियों को जानने वाला है। वह संतों का सहायक एवं शरण देने में समर्थ है। मैं सदैव उसको प्रणाम करता हूँ। मैं हरि के सुन्दर चरणों की आराधना करता हूँ, जिसकी अकथनीय कथा जानी नहीं जा सकती। हे नानक! मैंने उस प्रभु की शरण ली है, जो पतितों का उद्धार करने वाला एवं अनाथों का नाथ है॥ १६॥

सलोकु ॥ दुख बिनसे सहसा गइओ सरनि गही हरि राइ ॥ मनि चिंदे फल पाइआ नानक हरि गुन गाइ ॥ १७ ॥

श्लोक॥ जब से मैंने भगवान की शरण ली है, मेरा दुःख नाश हो गया है और दुविधा भाग गई है। हे नानक ! भगवान का यशोगान करने से मैंने मनोवांछित फल प्राप्त कर लिए हैं॥ १७॥

पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥ को उपदेसै को द्रिड़ै तिस का होइ उधारु ॥ किलबिख काटै होइ निरमला जनम जनम मलु जाइ ॥ हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥ सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥ सो सूरा कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥ खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥ जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ चाहे कोई मनुष्य भगवान के नाम का गायन करे, चाहे कोई मनुष्य भगवान का नाम सुने, चाहे कोई मनुष्य विचार करे, चाहे कोई मनुष्य उपदेश करे एवं चाहे कोई मनुष्य इसको अपने मन में दृढ़ करे, उसका उद्धार हो जाता है। उसके पाप मिट जाते हैं, वह निर्मल हो जाता है और उसके जन्म-जन्मांतरों की मैल दूर हो जाती है। इस लोक एवं परलोक में उसका मुख उज्ज्वल होता है और माया उस पर प्रभाव नहीं करती। वह बुद्धिमान मनुष्य है, वही वैष्णो, वही ज्ञानी एवं धनवान है, वही शूरवीर एवं वही उच्च कुल का है, जिसने भगवान का भजन किया है। क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य एवं चण्डाल जातियों वाले भी प्रभु का सिमरन करने से पार हो गए हैं। नानक, उसके चरणों की धूलि है, जो अपने ईश्वर को जानता है॥ १७॥

गउड़ी की वार महला ४ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिस नो समतु सभु कोइ ॥ एक द्रिसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ ॥ सतिगुर विचि अंम्रितु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥ नानक किरपा ते हरि धिआईऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ महापुरुष सतिगुरु समस्त जीवों पर दयालु है, उसके लिए सभी जीव एक समान हैं। वह सबको एक दृष्टि से देखता है परन्तु वह मन की श्रद्धा से ही पाया जाता है। सतिगुरु के भीतर नाम-अमृत बसता है। वह प्रभु की भाँति उत्तम है और हरि पद रखता है। हे नानक ! गुरु की कृपा से ही भगवान का ध्यान किया जाता है, तथा विरले गुरमुख ही भगवान को प्राप्त करते हैं॥ १॥

मः ४ ॥ हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥ लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अंम्रितु हरि उर धारि ॥ सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥ नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि मेले सिरजणहारि ॥ २ ॥

महला ४॥ अहंकार एवं माया समस्त विष है। उनके साथ लगकर मनुष्य इस दुनिया में सदैव नुक्सान प्राप्त करता है। शब्द का चिन्तन करने से गुरमुख हरि-नाम रूपी धन का लाभ कमा लेता है। हरि एवं हरि-अमृत को हृदय में बसाने से अहंकार की मैल का विष उतर जाता है। जिन गुरमुखों पर वह कृपा करता है, उनके तमाम कार्य सफल हो जाते हैं। हे नानक ! ईश्वर को वही मिले हैं, जो आदि से मिले हैं और जिन्हें दुनिया के रचयिता भगवान ने स्वयं मिलाया है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥ तुधुनो सभ धिआइदी सभ लगै तेरी पाई ॥ तेरी सिफति सुआलिउ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥ गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥ वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥ १ ॥

पउडी॥ हे मेरे सच्चे मालिक ! हे गुसाई ! तू सदैव सत्य है। सारी दुनिया तेरा ही ध्यान करती रहती है और तेरे समक्ष नतमस्तक होती है। तेरी कीर्ति सुन्दर एवं सुन्दरता का घर है। जो भी तेरी सराहना करता है, उसे तू पार कर देता है। गुरमुखों को तुम फल प्रदान करते हो और वह सत्यनाम में समा जाते हैं। हे मेरे महान मालिक ! तेरी महिमा महान है॥ १॥

सलोक मः ४ ॥ विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥ मनमुख अहंकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥ जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥ जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ भगवान के नाम के सिवाय किसी अन्य की सराहना करना एवं तमाम बातचीत का स्वाद फीका है। स्वेच्छाचारी जीव अपने अहंकार की प्रशंसा करते हैं परन्तु अहंत्व का मोह व्यर्थ है। जिनकी वह सराहना करते हैं, वे मर जाते हैं। वह तमाम विवादों में नष्ट हो जाते हैं। हे नानक ! परमानंद हरि–परमेश्वर की आराधना करके गुरमुख बच गए हैं॥ १॥

मः ४ ॥ सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी ॥ नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली सभि दुख परहरी ॥ २ ॥

महला ४॥ हे सतिगुरु ! मुझे हरि–प्रभु की बातें सुनाइए, चूंकि मैं अपने मन में उसके नाम का ध्यान करूँ। हे नानक ! भगवान का नाम बड़ा पावन है, इसलिए मेरी यही इच्छा है कि मैं अपने मुख से (हरि–नाम) बोलकर अपने सभी दुख समाप्त कर लूँ॥ २॥

पउड़ी ॥ तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ ॥ जिनी तू इक मनि सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥ तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणाइआ ॥ तुधु जेवडु दाता तूहै निरंजना तूहै सचु मेरै मनि भाइआ ॥ सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥ २ ॥

पउडी॥ हे निरंजन प्रभु ! तू स्वयं ही निरंकार है। हे सत्य परमेश्वर ! जिन्होंने एकाग्रचित होकर तेरा ध्यान किया है, तूने उनके तमाम दुःख नाश कर दिए हैं। तेरी बराबरी करने वाला कोई नहीं, जिसे पास बैठा कर मैं तेरा जिक्र करूँ। हे निरंजन प्रभु ! तेरे जैसा बड़ा दाता तू ही है और तू ही मेरे हृदय को प्रिय लगता है। हे मेरे सच्चे मालिक ! तेरी महिमा सत्य है॥ २॥

सलोक मः ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जिनके अन्तर्मन में अहंकार का रोग विद्यमान है, ऐसे स्वेच्छाचारी दुर्जन जीव दुविधा में भटके हुए हैं। हे नानक ! यह अहंकार का रोग सतिगुरु से मिलकर एवं साधु–सज्जनों की संगति करके निवृत्त किया जा सकता है॥ १॥

मः ४ ॥ मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु ॥ जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥ २॥

महला ४॥ गुरमुखों का मन एवं शरीर गुणों के भण्डार परमात्मा की प्रीति में मग्न रहते हैं। हे नानक ! उसने भगवान की शरण ली है। वह गुरु धन्य है, जिन्होंने उसे ईश्वर से मिला दिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू करता पुरखु अगंमु है किसु नालि तू वड़ीऐ ॥ तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तूहै पड़ीऐ ॥ तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ ॥ तू सचा सभस दा खसमु है सभ दू तू चड़ीऐ ॥ तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे सर्वशक्तिशाली प्रभु ! तू अगम्य है, फिर मैं तेरी तुलना किससे करूँ ? यदि कोई तेरे जैसा महान हो तो मैं उसका नाम लूँ। लेकिन तेरे जैसा केवल तू ही कहा जाता है। (हे नाथ !) तू प्रत्येक शरीर में मौजूद है, परन्तु यह बात उन पर प्रकट होती है जो सतिगुरु के समक्ष होते हैं। हे प्रभु ! तू ही सत्य एवं हम सबका मालिक है और तू ही सर्वोपरि है। हे सत्यस्वरूप परमेश्वर ! यदि हमें यह विश्वस्त हो जाए कि जो कुछ तू करता है केवल वही होता है, तब हम क्यों अफसोस करें ?॥ ३॥

सलोक मः ४ ॥ मै मनि तनि प्रेमु पिरंम का अठे पहर लगंनि ॥ जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसंनि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ मेरा मन एवं तन आठों प्रहर प्रियतम के प्रेम में मग्न रहे। हे नानक ! जिन पर भगवान अपनी कृपा धारण करता है, वे सतिगुरु के सुख में रहते हैं॥ १॥

मः ४ ॥ जिन अंदरि प्रीति पिरंम की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि ॥ नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥ २ ॥

महला ४॥ जिनके अन्तर्मन में भगवान का प्रेम है, जब वह प्रभु का यशोगान करते हैं, तो वह बहुत सुन्दर लगते हैं। हे नानक ! जिस भगवान ने यह प्रेम लगाया है, वह स्वयं ही जानता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही ॥ तू करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥ तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥ तू साहिबु अगमु दइआलु है सभि तुधु धिआही ॥ सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ हे विश्व के रचयिता प्रभु ! तू स्वयं अविस्मरणीय है, इसलिए कोई भूल नहीं करते। हे सच्चे ! जो कुछ तू करता है, वह शुभ करता है। गुरु के शब्द द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है। हे प्रभु ! तू समस्त कार्य करने एवं जीवों से करवाने में समर्थ है। तेरे अलावा दूसरा कोई नहीं। हे मेरे मालिक ! तू अगम्य एवं दया का घर है और सारी दुनिया तेरा ही ध्यान करती रहती है। समस्त जीव-जन्तु तेरे हैं और तू सबका मालिक है। तू समस्त जीव-जन्तुओं को मुक्ति प्रदान करता है॥ ४॥

सलोक मः ४ ॥ सुणि साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लगंनि ॥ गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सवंनि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ साजन प्रभु का प्रेम भरा सन्देश सुनकर जिनके नेत्र दर्शनों की आशा में लग जाते हैं, हे नानक ! गुरु ने प्रसन्न होकर उन्हें साजन प्रभु से मिला दिया है एवं वे सुखपूर्वक रहते हैं॥ १॥

मः ४ ॥ सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो दइआ सदा होइ ॥ सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ ॥ निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ ॥ सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥ सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ ॥ नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइ ॥ २ ॥

महला ४॥ दाता सतिगुरु बड़े दयालु हैं। वह सदैव दया के घर में बसते हैं। सतिगुरु के हृदय में किसी के साथ शत्रुता नहीं, वह सर्वत्र एक ईश्वर को देखते रहते हैं। जो प्राणी निर्वैर के साथ वैर

करते हैं, उन में से कोई सुखी नहीं होता। सतिगुरु जी सबका भला चाहते हैं। उनका बुरा किस तरह हो सकता है? जिस श्रद्धा भावना से कोई मनुष्य सतिगुरु के पास जाता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। हे नानक! विश्व की रचना करने वाले परमात्मा से कोई बात छिपाई नहीं जा सकती, चूंकि वह सबकुछ जानता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी ॥ जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी ॥ जे को ओस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी ॥ जिस नो सतिगुरु मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥ नानक सचा सचु है बुझि सचु समाणी ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ जिसे मालिक बड़ा महान करता है, उसे ही महान समझना चाहिए। जिसे मालिक पसंद करता है, वह उसे क्षमा कर देता है और वह मालिक के मन में प्रिय लगता है। वह (जीव-स्त्री) मूर्ख एवं बुद्धिहीन है, जो उससे तुलना करती है। जिसे सद्गुरु प्रभु से मिलाते हैं वही मिलती है एवं प्रभु की गुणस्तुति करके दूसरों को सुनाती है। हे नानक! परमात्मा सदैव सत्य है, जो इस तथ्य को समझता है, वह सत्य में ही समा जाता है॥ ५॥

सलोक मः ४ ॥ हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु ॥ जिन जपिआ इक मनि इक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥ जिन गुरमुखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥ कोई निंदा करे पूरे सतिगुरू की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥ धनु धंनु गुरू गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥ जन नानक तिन कउ वारिआ जिन जपिआ सिरजणहारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ भगवान सत्य है, माया से रहित है, अनश्वर, निडर, निर्वैर एवं निराकार है। जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर उसका सिमरन करते हैं, वे अहंकार के भार से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। जिन गुरमुखों ने भगवान की आराधना की है, ऐसे संतजनों को विश्व में बड़ी लोकप्रियता हासिल होती है। यदि कोई व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु की निन्दा करता है तो उसको सारी दुनिया प्रताड़ित करती है। सतिगुरु के भीतर स्वयं भगवान बसता है और स्वयं ही उनका रक्षक है। वह गुरु धन्य! धन्य! है, जो प्रभु की गुणस्तुति करता रहता है। उसको मैं सदैव प्रणाम करता हूँ। हे नानक! मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने सृजनहार परमेश्वर की आराधना की है॥ १॥

मः ४ ॥ आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥ विचि आपे जंत उपाइअनु मुखि आपे देइ गिरासु ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख कटे तासु ॥ २ ॥

महला ४॥ ईश्वर ने स्वयं ही धरती बनाई और स्वयं ही आकाश बनाया। इस धरती में ईश्वर ने जीव-जन्तु उत्पन्न किए और स्वयं ही प्राणियों के मुख में भोजन दिया है। अपने आप ही वह सर्वव्यापक हो रहा है और स्वयं ही गुणों का भण्डार है। हे नानक! तू प्रभु के नाम की आराधना कर, वह तेरे तमाम पाप नाश कर देगा॥ २॥

पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥ जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ तिन के मुख दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥ कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूड़ु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥ मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइ जावै ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे सत्य के पुंज परमात्मा! तू सदैव सत्य है। उस सत्य के पुंज को सत्य ही प्रिय लगता है। हे सत्यस्वरूप प्रभु! जो जो प्राणी तेरी प्रशंसा करते हैं, यमदूत उनके निकट नहीं आता। जिनके हृदय को सत्य प्रभु अच्छा लगता है, उनके मुख उसके दरबार में उज्ज्वल हो जाते हैं। झूठे पीछे धकेल दिए जाते हैं, मन में झूठ एवं छल–कपट होने के कारण वह महा कष्ट सहन करते हैं। झूठों के मुख सत्य के दरबार में काले होते हैं। झूठे केवल झूठे ही रहते हैं॥ ६॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु धरती धरम है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाइ ॥ गुरसिखी अंम्रितु बीजिआ तिन अंम्रित फलु हरि पाए ॥ ओना हलति पलति मुख उजले ओइ हरि दरगह सची पैनाए ॥ इकन्हा अंदरि खोटु नित खोटु कमावहि ओहु जेहा बीजे तेहा फलु खाए ॥ जा सतिगुरु सराफु नदरि करि देखै सुआवगीर सभि उघड़ि आए ॥ ओइ जेहा चितवहि नित तेहा पाइनि ओइ तेहो जेहे दयि वजाए ॥ नानक दुही सिरी खसमु आपे वरतै नित करि करि देखै चलत सबाए ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ सतिगुरु धर्म की धरती है। उसमें जैसा कोई बीज बोता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है। गुरु के सिक्ख नाम–अमृत बोते हैं एवं ईश्वर को अपने अमृत फल के रूप में प्राप्त करते हैं। इस लोक एवं परलोक में उनके मुख उज्ज्वल होते हैं। प्रभु के सच्चे दरबार में उनको मान–सम्मान मिलता है। कुछ लोगों के मन में कपट होता है और वह सदैव ही कपट कमाते हैं, जैसा वह बोते हैं, वैसा ही फल खाते हैं। (क्योंकि) जब सर्राफ सतिगुरु जी दूरदृष्टि से देखता है तो सभी स्वार्थी प्रकट हो जाते हैं। जैसी उनके हृदय की भावना होती है, वैसा ही उन्हें फल मिलता है। प्रभु–परमेश्वर के द्वारा वे उसी तरह पुरस्कृत अथवा तिरस्कृत होते हैं। (किन्तु) हे नानक! (प्राणी के क्या वश?) ये तमाम कौतुक ईश्वर आप हमेशा करके देख रहा है और दोनों तरफ (गुरमुखों एवं स्वार्थियों में) स्वयं ही ईश्वर विद्यमान है॥ १॥

मः ४ ॥ इकु मनु इकु वरतदा जितु लगै सो थाइ पाइ ॥ कोई गला करे घनेरीआ जि घरि वथु होवै साई खाइ ॥ बिनु सतिगुर सोझी ना पवै अहंकारु न विचहु जाइ ॥ अहंकारीआ नो दुख भुख है हथु तडहि घरि घरि मंगाइ ॥ कूड़ु ठगी गुझी ना रहै मुलंमा पाजु लहि जाइ ॥ जिसु होवै पूरबि लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ जिउ लोहा पारसि भेटीऐ मिलि संगति सुवरनु होइ जाइ ॥ जन नानक के प्रभ तू धणी जिउ भावै तिवै चलाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ हरेक मनुष्य में एक ईश्वर व्यापक हो रहा है। जिस किसी से वह जुड़ता है, उसमें वह सफल हो जाता है। प्राणी चाहे अधिकतर बातें करें परन्तु वह वही चीज खाता है, जो उसके घर में विद्यमान हो। सतिगुरु के अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त नहीं होता। न ही अहंकार भीतर से जाता है। अहंकारी जीवों को दुख एवं भूख सताते हैं। वह अपना हाथ फैला–फैलाकर द्वार–द्वार माँगते फिरते हैं। झूठ एवं छल छिपे नहीं रहते। उनका पाज का मुलम्मा उतर जाता है। पूर्व कर्मों के अनुसार जिनके भले संस्कार लिखे हुए हैं, उन्हें पूर्ण सतिगुरु मिल जाते हैं। जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है, वैसे ही गुरु की संगति से मिलकर मनुष्य अनमोल बन जाता है। हे नानक के प्रभु! (जीवों के वश में कुछ नहीं) तू सबका मालिक है। जैसे तुझे भला लगता है, वैसे ही तू जीवों को चलाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिन हरि हिरदै सेविआ तिन हरि आपि मिलाए ॥ गुण की साझि तिन सिउ करी सभि अवगण सबदि जलाए ॥ अउगण विकणि पलरी जिसु देहि सु सचे पाए ॥ बलिहारी गुर आपणे जिनि अउगण मेटि गुण परगटीआए ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि आलाए ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जिन प्राणियों ने हृदय में ईश्वर का सिमरन किया है, उन्हें ईश्वर अपने साथ मिला लेता है। मैं उनके साथ गुणों की सांझ करता हूँ और शब्द द्वारा अवगुणों को जलाता हूँ। घास-फूस की भाँति पाप सस्ते खरीदे जाते हैं। केवल वही गुण प्राप्त करता है, जिसे वह सत्यस्वरूप परमात्मा प्रदान करता है। मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने पाप मिटा कर मुझ में गुणों का प्रकाश कर दिया है। जो प्राणी सतिगुरु के समक्ष होता है, वही महान प्रभु की महिमा-स्तुति करने लग जाता है॥ ७॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि नामु रमत सुच संजमु हरि नामे ही त्रिपतावै ॥ हरि नामु ताणु हरि नामु दीबाणु हरि नामो रख करावै ॥ जो चितु लाइ पूजे गुर मूरति सो मन इछे फल पावै ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की तिसु करता मार दिवावै ॥ फेरि ओह वेला ओसु हथि न आवै ओहु आपणा बीजिआ आपे खावै ॥ नरकि घोरि मुहि काले खड़िआ जिउ तसकरु पाइ गलावै ॥ फिरि सतिगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हरि हरि नामु धिआवै ॥ हरि बाता आखि सुणाए नानकु हरि करते एवै भावै ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ सतिगुरु में यही महान गुण है कि वह हर समय भगवान के नाम का ही ध्यान करता रहता है। भगवान के नाम का जाप ही सतिगुरु की पवित्रता एवं संयम है। वह भगवान के नाम से ही तृप्त रहते हैं। भगवान का नाम उनका बल है और भगवान का नाम ही उनकी सभा है। भगवान का नाम ही उनका रक्षक है। जो व्यक्ति श्रद्धा से गुरु-मूर्त्ति की पूजा करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है। जो मनुष्य पूर्ण सतिगुरु की निंदा करता है, उसका कर्त्तार विनाश कर देता है। वह अवसर उसे दोबारा नहीं मिलता। जो कुछ उसने बोया है, वह स्वयं ही सेवन करता है। जैसे चोर को गले में रस्सी डालकर ले जाया जाता है, वैसे ही मुँह काला करके उसे भयानक नरककुण्ड में डाला जाता है। जब वह दोबारा सतिगुरु की शरण लेता है और भगवान का नाम-सिमरन करता है तो वह (भयानक नरक से) पार हो जाता है। नानक भगवान की महिमा की बातें कह कर सुनाता है। चूंकि विश्व के रचयिता भगवान को ऐसे ही भला लगता है॥ १॥

मः ४ ॥ पूरे गुर का हुकमु न मंनै ओहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइआ ॥ ओसु अंदरि कूड़ु कूड़ो करि बुझै अणहोदे झगड़े दयि ओस दे गलि पाइआ ॥ ओहु गल फरोसी करे बहुतेरी ओस दा बोलिआ किसै न भाइआ ॥ ओहु घरि घरि हंढै जिउ रंन दोहागणि ओसु नालि मुहु जोड़े ओसु भी लछणु लाइआ ॥ गुरमुखि होइ सु अलिपतो वरतै ओस दा पासु छडि गुर पासि बहि जाइआ ॥ जो गुरु गोपे आपणा सु भला नाही पंचहु ओनि लाहा मूलु सभु गवाइआ ॥ पहिला आगमु निगमु नानकु आखि सुणाए पूरे गुर का बचनु उपरि आइआ ॥ गुरसिखा वडिआई भावै गुर पूरे की मनमुखा ओह वेला हथि न आइआ ॥ २ ॥

महला ४॥ जो मनुष्य गुरु के हुक्म की उल्लंघना करता है, वह स्वेच्छाचारी, अज्ञानी मनुष्य माया रूपी विष द्वारा ठग लिया गया है। उसके हृदय में झूठ विद्यमान है और वह हरेक को झूठा ही समझता है। इसलिए ईश्वर ने व्यर्थ के विवाद उसके गले में डाल दिए हैं। वह व्यर्थ बकवास करता है, परन्तु जो कुछ वह करता है, वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता। वह दुहागिन नारी की भाँति घर-घर फिरता है। जो कोई भी उससे मेल-मिलाप करता है, उसे भी बुराई का तिलक (चिन्ह) लग जाता है। जो गुरमुख होता है, वह मनमुख से अलग रहता है, वह स्वेच्छाचारी की संगति त्यागकर गुरु के

समक्ष बैठता है। हे संतजनों ! जो अपने गुरु की निंदा करता है, वह भला पुरुष नहीं। वह अपना मूल लाभ समस्त गंवा देता है। नानक कहकर सुनाता है कि पहले लोग शास्त्रों एवं वेदों को पढ़ते एवं प्रचार करते थे परन्तु पूर्ण गुरु की वाणी उन सबमें सर्वोच्च प्रामाणिक है। गुरु के सिक्खों को गुरु की प्रशंसा अच्छी लगती है। लेकिन स्वेच्छाचारी को यह अवसर प्राप्त नहीं होता॥ २॥

पउड़ी ॥ सचु सचा सभ दू वडा है सो लए जिसु सतिगुरु टिके ॥ सो सतिगुरु जि सचु धिआइदा सचु सचा सतिगुरु इके ॥ सोई सतिगुरु पुरखु है जिनि पंजे दूत कीते वसि छिके ॥ जि बिनु सतिगुर सेवे आपु गणाइदे तिन अंदरि कूड़ु फिटु फिटु मुह फिके ॥ ओइ बोले किसै न भावनी मुह काले सतिगुर ते चुके ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ सत्यस्वरूप परमात्मा सर्वोपरि है। यह (प्रभु) उस मनुष्य को मिलता है, जिसे सतिगुरु तिलक (आशीर्वाद) दें। सतिगुरु भी वही है जो सत्य का ध्यान-मनन करता है। यह सत्य है कि सत्यस्वरूप परमात्मा एवं सतिगुरु एक ही हैं। वही महापुरुष सतिगुरु है, जिसने (कामादिक) विकारों को अपने वश में किया हुआ है। जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा से विहीन रहते हैं और अपने आपको बड़ा कहलवाते हैं, उनके भीतर झूठ विद्यमान है। उनके रुक्ष चेहरे पर धिक्कार है। वह सतिगुरु से बिछुड़ा होता है, उसका मुख तिरस्कृत किया हुआ होता है और उसकी वार्तालाप किसी को भी अच्छी नहीं लगती॥ ८॥

सलोक मः ४ ॥ हरि प्रभ का सभु खेतु है हरि आपि किरसाणी लाइआ ॥ गुरमुखि बखसि जमाईअनु मनमुखी मूलु गवाइआ ॥ सभु को बीजे आपणे भले नो हरि भावै सो खेतु जमाइआ ॥ गुरसिखी हरि अम्रितु बीजिआ हरि अम्रित नामु फलु अम्रितु पाइआ ॥ जमु चूहा किरस नित कुरकदा हरि करतै मारि कढाइआ ॥ किरसाणी जंमी भाउ करि हरि बोहल बखस जमाइआ ॥ तिन का काड़ा अंदेसा सभु लाहिओनु जिनी सतिगुरु पुरखु धिआइआ ॥ जन नानक नामु अराधिआ आपि तरिआ सभु जगतु तराइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ सारी दुनिया भगवान का खेत है। भगवान स्वयं ही (जीवों से) कृषि करवाता है। गुरमुख प्रभु की कृपा की फसल पैदा करता है। लेकिन स्वेच्छाचारी अपना मूल भी गंवा देता है। हरेक व्यक्ति अपने लाभ हेतु बोता है। लेकिन भगवान उस फसल को उगाता है, जो उसे अच्छी लगती है। गुरु का सिक्ख भगवान के नाम रूपी अमृत को बोता है और वह भगवान के अमृतमयी नाम को अपने अमृत फल के तौर पर प्राप्त करता है। मृत्यु रूपी चूहा प्रतिदिन फसल को कुतरता है परन्तु विश्व के रचयिता ईश्वर ने इसे पीट कर बाहर निकाल दिया है। इसलिए गुरमुखों की फसल प्रेम-पूर्वक उगती है और ईश्वर की दया से अनाज के दानों का अम्बार लग जाता है। जिन्होंने महापुरुष सतिगुरु का ध्यान किया है, ईश्वर ने उनकी तमाम चिंता एवं दुःख नष्ट कर दिए हैं। हे नानक ! जो मनुष्य हरि-नाम की आराधना करता है, वह स्वयं पार हो जाता है और सारे जगत् का भी कल्याण कर देता है॥ १॥

मः ४ ॥ सारा दिनु लालचि अटिआ मनमुखि होरे गला ॥ राती ऊघै दबिआ नवे सोत सभि ढिला ॥ मनमुखा दै सिरि जोरा अमरु है नित देवहि भला ॥ जोरा दा आखिआ पुरख कमावदे से अपवित अमेध खला ॥ कामि विआपे कुसुध नर से जोरा पुछि चला ॥ सतिगुर कै आखिऐ जो चलै सो सति पुरखु भल भला ॥ जोरा पुरख सभि आपि उपाइअनु हरि खेल सभि खिला ॥ सभ तेरी बणत बणावणी नानक भल भला ॥ २ ॥

महला ४॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य सारा दिन लोभ में प्रवृत्त हुआ रहता है, चाहे बातें वह दूसरी ही करता है। वह रात को नींद में घुट जाता है, उसकी तमाम इन्द्रियों शिथिल हो जाती हैं। ऐसे स्वेच्छाचारी मनुष्यों पर स्त्रियों का हुक्म चलता है और वह उन्हें सदैव ही अच्छे-अच्छे पदार्थ लाकर देते हैं। जो पुरुष स्त्रियों का कहना मानते हैं, वे अपवित्र, बुद्धिहीन एवं मूर्ख होते हैं। अशुद्ध पुरुष कामवासना में लीन रहते हैं, वह स्त्रियों से परामर्श लेते हैं और उसके आदेशानुसार चलते हैं। जो सतिगुरु के हुक्म अनुसार चलता है, वह पुरुष सच्चा तथा सर्वोत्कृष्ट है। समस्त स्त्रियाँ एवं पुरुष ईश्वर ने स्वयं उत्पन्न किए हैं। ईश्वर ही तमाम खेलें खेलता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! सृष्टि की यह तमाम रचना तेरी रची हुई है, जो कुछ तूने किया है, सब भला है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू वेपरवाहु अथाहु है अतुलु किउ तुलीऐ ॥ से वडभागी जि तुधु धिआइदे जिन सतिगुरु मिलीऐ ॥ सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥ सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीऐ ॥ ओन्हा अंदरि होरु मुखि होरु है बिखु माइआ नो झखि मरदे कड़ीऐ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे मालिक ! तू बेपरवाह, अथाह एवं अतुलनीय है, फिर तुझे कैसे तोला जा सकता है? हे गोबिन्द ! जो तुझे याद करते हैं और जिन्हें सतिगुरु मिलता है, वे बड़े भाग्यशाली हैं। सतिगुरु की वाणी सत्य स्वरूप है। गुरुवाणी द्वारा मनुष्य पूर्ण जाना जाता है। कई दूसरे झूठ के व्यापारी सतिगुरु की नकल करके अधकचरी वाणी उच्चरित करते हैं परन्तु हृदय में झूठ होने के कारण शीघ्र ही नाश हो जाते हैं। उनके हृदय में कुछ और होता है तथा मुँह में कुछ और, वे विष रूपी माया का संग्रह करने के लिए पीड़ित होते हैं और खप-खप कर मरते हैं॥ ६॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुर की सेवा निरमली निरमल जनु होइ सु सेवा घाले ॥ जिन अंदरि कपटु विकारु झूठु ओइ आपे सचै वखि कढे जजमाले ॥ सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी किते थाइ भाले ॥ जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही तिना मुह भलेरे फिरहि दयि गाले ॥ जिन अंदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरकु वेराईअनि मनमुख बेताले ॥ सतिगुर नो मिलै सु आपणा मनु थाइ रखै ओहु आपि वरतै आपणी वथु नाले ॥ जन नानक इकना गुरु मेलि सुखु देवै इकि आपे वखि कढै ठगवाले ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ सतिगुरु की सेवा बड़ी निर्मल है, जो व्यक्ति निर्मल होता है, वही यह चुनौतीपूर्ण कार्य कर सकता है। जिनके अन्तर्मन में कपट, विकार एवं झूठ होता है, सत्यस्वरूप ईश्वर ने स्वयं ही उन कोढ़ियों को अलग कर दिया है। सत्यवादी सिक्ख सतिगुरु के पास बैठते हैं और उनकी सेवा करते हैं। झूठों को खोज-तलाश करते हुए कहीं भी स्थान नहीं मिलता। जिन्हें सतिगुरु के वचन अच्छे नहीं लगते, उनके चेहरे तिरस्कृत हैं और ईश्वर से अपमानित हुए वे भटकते फिरते हैं। जिनके हृदय में ईश्वर का प्रेम नहीं, उन स्वेच्छाचारी बेताल लोगों को कितनी देर तक दिलासा दिया जा सकता है? जो मनुष्य सतिगुरु को मिलता है, वह अपने मन को (विकारों से) अंकुश लगाकर रखता है। साथ ही, प्रभु के नाम की अपनी पूँजी का वह स्वयं ही इस्तेमाल करता है। हे नानक! (जीव के वश में कुछ नहीं) गुरु से मिलाकर कुछ लोगों को प्रभु सुख प्रदान करता है एवं कुछ कपट करने वालों को अलग कर देता है॥ १॥

मः ४ ॥ जिना अंदरि नामु निधानु हरि तिन के काज दयि आदे रासि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥ जां करता वलि ता सभु को वलि सभि दरसनु देखि करहि

साबासि ॥ साहु पातिसाहु सभु हरि का कीआ सभि जन कउ आइ करहि रहरासि ॥ गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतुलु सुखु पाइआ ॥ गुरि पूरै दानु दीआ हरि निहचलु नित बखसे चड़ै सवाइआ ॥ कोई निंदकु वडिआई देखि न सकै सो करतै आपि पचाइआ ॥ जनु नानकु गुण बोलै करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ॥ २ ॥

महला ४॥ जिनके अन्तर्मन में भगवान का नाम रूपी भण्डार है, उनके कार्य ईश्वर स्वयं संवार देता है। उन्हें दूसरे लोगों के सहारे की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि ईश्वर उनको अपना कर सदैव उनके साथ–साथ रहता है। सब लोग उनका दर्शन करके उनकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि जब सृजनहार परमात्मा स्वयं उनका पक्ष करता है तो प्रत्येक ही उनका पक्ष करेगा। भगवान के बनाए हुए राजे–महाराजे भी प्रभु के सेवक के समक्ष वन्दना करते हैं। पूर्ण गुरु की महिमा महान है। महान ईश्वर की सेवा करने से अतुलनीय सुख प्राप्त होता है। पूर्ण गुरु के द्वारा ईश्वर ने दान दिया है, वह समाप्त नहीं होता, क्योंकि ईश्वर सदैव ही दया किए जाता है और यह दान दिनों–दिन बढ़ता रहता है। जो कोई निंदक (ऐसे प्रभु के सेवक की) महानता देखकर सहन नहीं कर सकता, उसे सृजनहार ने स्वयं ईर्ष्याग्नि में पीड़ित किया है। दास नानक विश्व के रचयिता परमात्मा की गुणस्तुति करता है, जो अपने भक्तों की सदैव रक्षा करता आया है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू साहिबु अगम दइआलु है वड दाता दाणा ॥ तुधु जेवडु मै होरु को दिसि न आवई तूहैं सुघड़ु मेरै मनि भाणा ॥ मोहु कुटंबु दिसि आवदा सभु चलणहारा आवण जाणा ॥ जो बिनु सचे होरतु चितु लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ॥ नानक सचु धिआइ तू बिनु सचे पचि पचि मुए अजाणा ॥ १० ॥

पउड़ी॥ हे मेरे मालिक! तू अगम्य एवं दया का घर है, बड़ा दाता एवं चतुर है, मुझे तेरे समान बड़ा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता, तुम ही बुद्धिमान हो, जो मेरे मन को प्रिय लगे हो। जो मोह रूपी कुटुम्ब दिखाई देता है, सब क्षणभंगुर है और जन्म–मरण के अधीन है। जो मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा के अलावा किसी दूसरे से मन लगाते हैं, वह झूठ के व्यापारी हैं और उनका इस पर अभिमान भी झूठा है। हे नानक! सत्यस्वरूप परमात्मा का ध्यान कर, चूंकि सत्य (ईश्वर) से विहीन हुए मूर्ख जीव दुखी होकर मरते रहते हैं॥ १०॥

सलोक मः ४ ॥ अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कंमि न आवै ॥ अध विचि फिरै मनमुखु वेचारा गली किउ सुखु पावै ॥ जिसु अंदरि प्रीति नही सतिगुर की सु कूड़ी आवै कूड़ी जावै ॥ जे क्रिपा करे मेरा हरि प्रभु करता तां सतिगुरु पारब्रहमु नदरी आवै ॥ ता अपिउ पीवै सबदु गुर केरा सभु काड़ा अंदेसा भरमु चुकावै ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती जन नानक अनदिनु हरि गुण गावै ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ स्वेच्छाचारी पुरुष पहले तो सतिगुरु को सम्मान नहीं देता, तत्पश्चात् उसकी शिक्षा का कोई फायदा नहीं होता, वह भाग्यहीन दुविधा में ही भटकता रहता है, यदि गुरु के प्रति श्रद्धा न हो तो सिर्फ बातों से कैसे सुख मिल सकता है? जिसके अन्तर्मन में सतिगुरु का प्रेम नहीं, वह दिखावे के लिए (गुरु–द्वार पर) आता जाता है। यदि जगत् का रचयिता प्रभु–परमेश्वर दया करे तो दिखाई दे जाता है कि सतिगुरु भगवान का रूप है। वह तब गुरु का शब्द रूपी अमृत पान करता है और उसकी तमाम ईर्ष्या, चिन्ता एवं दुविधा मिट जाते हैं। हे नानक! वह दिन–रात सदैव ही प्रसन्न रहता है और सदा ही परमेश्वर की गुणस्तुति करता रहता है॥ १॥

मः ४ ॥ गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥ उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥ उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥ जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥ जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥ २ ॥

महला ४॥ जो मनुष्य सतिगुरु का (सच्चा) सिक्ख कहलाता है, वह प्रभातकाल उठकर ईश्वर के नाम का सिमरन करता है। वह प्रतिदिन सुबह उद्यम करता है, स्नान करता है और फिर नाम–रूपी अमृत के सरोवर में डुबकी लगाता है। गुरु के उपदेश द्वारा वह प्रभु–परमेश्वर के नाम का जाप जपता है और इस प्रकार उसके तमाम पाप दोष निवृत्त हो जाते हैं। फिर दिन निकलने पर गुरु की वाणी का कीर्त्तन करता है और उठते–बैठते प्रभु का नाम सिमरन करता रहता है। जो गुरु का सिक्ख अपनी हर सांस एवं ग्रास से मेरे हरि–परमेश्वर की आराधना करता है, वह गुरु के मन को अच्छा लगने लग जाता है। जिस पर मेरा स्वामी दयालु होता है, उस गुरसिक्ख को गुरु उपदेश देता है। नानक भी उस गुरसिक्ख की चरण–धूलि माँगता है, जो स्वयं नाम जपता है और दूसरों को जपाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जो तुधु सचु धिआइदे से विरले थोड़े ॥ जो मनि चिति इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े ॥ तुधुनो सभ धिआइदी से थाइ पए जो साहिब लोड़े ॥ जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मरि जंमे कोढ़े ॥ ओइ हाजरु मिठा बोलदे बाहरि विसु कढहि मुखि घोले ॥ मनि खोटे दयि विछोड़े ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ हे सत्यस्वरूप प्रभु ! वे बहुत थोड़े व्यक्ति हैं, जो तेरा ध्यान–मनन करते हैं। जो मनुष्य पूर्ण एकाग्रचित होकर एक ईश्वर की आराधना करते हैं, उनकी बरकत अनन्त जीव खाते हैं। हे प्रभु ! वैसे तो सारी सृष्टि तेरा चिन्तन करती है परन्तु स्वीकृत वही होते हैं, जिन्हें तुम पसन्द करते हो। सतिगुरु की सेवा से विहीन रहकर जो मनुष्य खाने–पीने एवं पहनने के रसों में मग्न रहते हैं, वे कोढ़ी बार–बार जन्म लेते हैं। ऐसे मनुष्य सामने तो मीठी बातें करते हैं परन्तु तत्पश्चात विष घोलकर निकालते हैं। ऐसे मन से खोटे पुरुषों को ईश्वर ने जुदा कर दिया है॥ ११॥

सलोक मः ४ ॥ मलु जूई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेमुखि वेमुखै नो पाइआ ॥ पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मलु लाइ मनमुखु आइआ ॥ पराई जो निंदा चुगली नो वेमुखु करि कै भेजिआ ओथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइआ ॥ तड़ सुणिआ सभतु जगत विचि भाई वेमुखु सणै नफरै पउली पउदी फावा होइ कै उठि घरि आइआ ॥ अगै संगती कुड़मी वेमुखु रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजीं फिरि आणि घरि पाइआ ॥ हलतु पलतु दोवै गए नित भुखा कूके तिहाइआ ॥ धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइआ ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ॥ एहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ उस विमुख ने दूसरे विमुख को जूओं से भरा हुआ नीला एवं काला पहरावा डाल दिया है। इस जगत् में उसे कोई निकट नहीं बैठने देता, गन्दगी में पड़कर अपितु बहुत–सी मैल लगाकर मनमुख (वापिस) आया। जो मनुष्य पराई निन्दा एवं चुगली करने के लिए परामर्श करके भेजा

गया था, वहाँ भी दोनों का मुँह काला किया गया। हे भाई ! जगत् में सब ओर एक–दम सुना गया कि विमुख को नौकर सहित जूतियाँ (खानी) पड़ीं और खूब हल्का होकर घर को उठ आया है। आगे संबंधियों में विमुख को बैठना मिले भी तो फिर पत्नी तथा भतीजों ने लाकर घर में स्थान दिया, उसके लोक–परलोक दोनों व्यर्थ गए और अब भूखा तथा प्यासा रोता है। जगत् का स्वामी कर्ता पुरुष धन्य धन्य है, जिसने न्याय के आसन पर विराज कर स्वयं सच्चा न्याय करवाया है। जो मनुष्य पूर्ण सतिगुरु की निन्दा करता है, उसको सच्चा स्वामी दण्ड देकर मार फेंकता है। यह न्याय का वचन उस ईश्वर ने स्वयं कहा है, जिसने इस सृष्टि की रचना की है॥ १॥

मः ४ ॥ साहिबु जिस का नंगा भुखा होवै तिस दा नफरु किथहु रजि खाए ॥ जि साहिब कै घरि वथु होवै सु नफरै हथि आवै अणहोदी किथहु पाए ॥ जिस दी सेवा कीती फिरि लेखा मंगीऐ सा सेवा अउखी होई ॥ नानक सेवा करहु हरि गुर सफल दरसन की फिरि लेखा मंगै न कोई ॥ २ ॥

महला ४॥ जिसका स्वामी कंगाल है, उसका नौकर कहाँ पेट भर कर खा सकता है। यदि स्वामी के घर में कोई वस्तु हो तो उसे उसका नौकर प्राप्त कर सकता है परन्तु यदि है ही नहीं तो उसे वह कहाँ से ले सकता है। जिसकी सेवा करने पर भी लेखा माँगा जाना हो, वह सेवा कठिन है। हे नानक ! जिस ईश्वर एवं गुरु का दर्शन (मानव जन्म को) सफल (करता) है, उसकी सेवा करो ताकि फिर कोई लेखा न माँगे॥ २॥

पउड़ी ॥ नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कहंदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणंदे ॥ सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ ओइ लोचनि ओना गुणै नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ वैरु करहि निरवैर नालि धरम निआइ पचंदे ॥ जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ पेडु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ हे नानक ! संतजन विचार करते हैं और चारों वेद कहते हैं कि भक्तजन जो वचन मुँह से बोलते हैं, वे सत्य ही पूरे हो जाते हैं। भक्त समूचे जगत् में लोकप्रिय हो जाते हैं, उनकी शोभा सभी लोग सुनते हैं। जो मूर्ख लोग संतों से वैर–विरोध करते हैं, वे सुख नहीं पाते। वे दोषी जलते तो अहंकार में हैं परन्तु संतजनों के गुणों को तरसते हैं। इन दोषी मनुष्यों के वश में भी क्या है ? चूंकि आदि काल से कुसंस्कार ही उनका भाग्य है। जिनका उस पारब्रह्म ने नाश किया है, वह किसी के भी मित्र नहीं। यह धर्म का न्याय है कि जो निर्वैर से वैर करते हैं, वह नष्ट हो जाते हैं। जिन्हें संतों ने तिरस्कृत किया है, वे भटकते रहते हैं ! जब वृक्ष जड़ सहित उखाड़ दिया जाता है, उसकी टहनियाँ भी सूख जाती हैं॥ १२॥

सलोक मः ४ ॥ अंतरि हरि गुरू धिआइदा वडी वडिआई ॥ तुसि दिती पूरै सतिगुरू घटै नाही इकु तिलु किसै दी घटाई ॥ सचु साहिबु सतिगुरू कै वलि है तां झखि झखि मरै सभ लोकाई ॥ निंदका के मुह काले करे हरि करतै आपि वधाई ॥ जिउ जिउ निंदक निंद करहि तिउ तिउ नित नित चड़ै सवाई ॥ जन नानक हरि आराधिआ तिनि पैरी आणि सभ पाई ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ गुरु की महिमा महान है, चूंकि वह अपने अन्तर्मन में भगवान का ध्यान करता रहता है। परमात्मा ने खुश होकर यह महिमा प्रदान की है, इसलिए किसी के घटाने पर तिल मात्र भी कम नहीं होती। जब सच्चा मालिक सतिगुरु के पक्ष में है तो सारी दुनिया के जितने भी लोग गुरु

के विरुद्ध होते हैं, वे खप–खप कर मर जाते हैं। सतिगुरु की महिमा कर्त्तार ने स्वयं बढ़ाई है और दोषियों के मुँह काले किए हैं। ज्यों–ज्यों निंदक मनुष्य सतिगुरु की निंदा करते, त्यों–त्यों सतिगुरु की महिमा बढ़ती रहती है। हे नानक! सतिगुरु ने जिस ईश्वर का स्मरण किया है, उसने सारा संसार लाकर गुरु के चरणों में रख दिया है॥ १॥

मः ४ ॥ सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥ नित झहीआ पाए झगू सुटे झखदा झखदा झड़ि पइआ ॥ नित उपाव करै माइआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइआ ॥ किआ ओहु खटे किआ ओहु खावै जिसु अंदरि सहसा दुखु पइआ ॥ निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ॥ ओसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अंबु पइआ ॥ जे सुइने नो ओहु हथु पाए ता खेहू सेती रलि गइआ ॥ जे गुर की सरणी फिरि ओहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइआ ॥ जन नानक अनदिनु नामु धिआइआ हरि सिमरत किलविख पाप गइआ ॥ २ ॥

महला ४॥ जो मनुष्य सतिगुरु के साथ वैर–विरोध करता है, उसका लोक–परलोक समूचे ही व्यर्थ जाते हैं। उसका वश नहीं चलता इसलिए वह सदा क्षुब्ध होता है और दांत पीसता है। धन एवं पदार्थ हेतु वह निरन्तर ही प्रयास करता है परन्तु उसका पहला पदार्थ भी समाप्त हो जाता है। वह क्या कमाएगा और क्या खाएगा, जिसके हृदय में दुःख चिन्ता की पीड़ा है। जो निर्वेर से शत्रुता करता है, वह संसार के तमाम पाप अपने सिर पर ले लेता है। जिसका मुँह उसके हृदय की निन्दा करता हो पर मुँह में मिठास हो, उसे लोक–परलोक में कोई सहारा नहीं देता। ऐसा खोटा मनुष्य यदि सोने को हाथ डाले तो वह भी राख हो जाता है। फिर भी यदि वह गुरु की शरण ले तो उसके पहले पाप क्षमा हो जाते हैं। हे नानक! जो मनुष्य (गुरु की शरण लेकर) प्रतिदिन नाम–स्मरण करता है, ईश्वर का सिमरन करते हुए उसके अपराध मिट जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ तूहै सचा सचु तू सभ दू उपरि तू दीबाणु ॥ जो तुधु सचु धिआइदे सचु सेवनि सचे तेरा माणु ॥ ओना अंदरि सचु मुख उजले सचु बोलनि सचे तेरा ताणु ॥ से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सचु सबदु नीसाणु ॥ सचु जि सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाणु ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ हे सत्यस्वरूप परमेश्वर! तू सदैव सत्य है। तेरी कचहरी सर्वोपरि है। हे सत्य के पुंज! जो तेरा ध्यान करते हैं, तेरी सेवा भक्ति करते हैं, उन्हें तेरा ही मान है। उनके हृदय में सत्य है इसलिए उनके चेहरे उज्ज्वल रहते हैं, वे सत्य बोलते हैं और हे सत्य प्रभु! तेरा ही उन्हें आश्रय है। जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान की सराहना करते हैं, वही सच्चे भक्त हैं और उनके पास सच्चा शब्द रूपी चिन्ह है। मैं उन पर न्यौछावर हूँ, बलिहारी हूँ, जो सत्यस्वरूप ईश्वर की सेवा–भक्ति करते रहते हैं॥ १३॥

सलोक मः ४ ॥ धुरि मारे पूरै सतिगुरू सेई हुणि सतिगुरि मारे ॥ जे मेलण नो बहुतेरा लोचीऐ न देई मिलण करतारे ॥ सतसंगति ढोई ना लहनि विचि संगति गुरि वीचारे ॥ कोई जाइ मिलै हुणि ओना नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥ गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे ॥ गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि एना वेचारे ॥ गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥ कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की तिसु कारज सभि सवारे ॥ जो इछै सो फलु पाइसी पुतु धनु लखमी खड़ि मेले हरि निसतारे ॥ सभि निधान सतिगुरू विचि जिसु अंदरि हरि उर धारे ॥ सो पाए पूरा सतिगुरू जिसु लिखिआ लिखतु लिलारे ॥ जनु नानकु मागै धूड़ि तिन जो गुरसिख मित पिआरे ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जो आदि से ही पूर्ण सतिगुरु द्वारा शापित हुए हैं, वे अब पुनः सतिगुरु की ओर से तिरस्कृत हो गए हैं, यदि उन्हें गुरु के साथ मिलाप की तीव्र लालसा भी हो तो भी परमात्मा ऐसे शापितों को मिलने नहीं देता। उन्हें सत्संगति में भी आश्रय नहीं मिलता। गुरु ने भी संगति में यही विचार किया है। यदि कोई भी अब जाकर उनको मिलता है, उसे मृत्यु का निर्दयी यमदूत प्रताडित करता है। जिन लोगों को गुरु नानक देव जी ने भी धिक्कार दिया, उन तिरस्कृत व्यक्तियों को गुरु अंगद देव ने भी झूठा घोषित किया। उस समय तीसरी पीढ़ी वाले श्री गुरु अमरदास जी ने विचार किया कि इन निर्धन लोगों के वश में क्या है ? जिन सतिगुरु ने चौथे स्थान पर गुरु नियुक्त किया था, उन्होंने तमाम निंदक एवं दुष्टों का कल्याण कर दिया। कोई पुत्र अथवा सिक्ख जो कोई भी सतिगुरु की सेवा करता है, उसके सारे काम गुरु जी संवार देते हैं। पुत्र, धन, लक्ष्मी जिस भी वस्तु की वह इच्छा करे, वही फल उसे मिलता है। सतिगुरु उसे ले जाकर ईश्वर से मिलाता है और ईश्वर उसे पार कर देता है। जिस सतिगुरु के हृदय में भगवान का निवास है, उसमें सारे खजाने विद्यमान हैं। केवल वही मनुष्य सतिगुरु को पाता है जिसके माथे पर पूर्वकृत शुभ कर्मो के संस्कार रूप लेख लिखे हुए हैं। नानक उनकी चरण–धूलि मांगता है, जो गुरसिक्ख मित्र प्यारे हैं॥ १॥

मः ४ ॥ जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाए ॥ डरीऐ तां जे किछु आप दू कीचै सभु करता आपणी कला वधाए ॥ देखहु भाई एहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि सभि आणि निवाए ॥ आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराए ॥ सतिगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराए ॥ अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥ सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥ गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥ २ ॥

महला ४॥ जिन्हें ईश्वर स्वयं शोभा देता है, उनके चरणों में सारे जगत् को भी डाल देता है। केवल तभी हमें डरना चाहिए, यदि हम स्वयं कुछ करें। परमात्मा अपनी कला स्वयं बढ़ा रहा है। हे भाई ! याद रखो, जिस ईश्वर ने अपने बल से जीवों को लाकर गुरु के समक्ष झुकाया है, उस सच्चे प्रियतम का यह जगत् एक अखाड़ा है, जिसमें जगत् का स्वामी प्रभु अपने भक्तों की रक्षा करता है और निंदक दुष्टों के मुँह काले कराता है। सतिगुरु की शोभा दिन–ब–दिन बढ़ती जाती है। ईश्वर अपने भक्तों को हमेशा अपना यश एवं भक्ति स्वयं ही करवाता है। हे गुरसिक्खो ! दिन–रात नाम का जाप करो और सतिगुरु के द्वारा हरि कर्त्तार को अपने हृदय में बसाओ। हे गुरसिक्खो ! सतिगुरु की वाणी बिल्कुल सत्य समझो चूंकि विश्व का रचयिता परमात्मा स्वयं यह वाणी सतिगुरु के मुख से कहलवाता है। प्रियतम प्रभु गुरसिक्खों के मुख उज्ज्वल करता है और सारी दुनिया में गुरु की जय–जयकार करवाता है। नानक हरि का दास है। हरि के दासों की हरि स्वयं ही लाज रखता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥ सचु पूजी नामु द्रिड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥ सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे ॥ सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे सच्चे शाह ! तू स्वयं ही सच्चा मालिक है। हे प्रभु ! हमें सत्य नाम रूपी पूँजी दृढ़ करवाओ, चूंकि हम तेरे ही वणजारे हैं। जो व्यक्ति सत्य नाम को जपते हैं, सत्य नाम का व्यापार

करते हैं, वह गुणों का कथन करते हैं, वे दुनिया से निराले हैं। जिन्होंने गुरु के शब्द द्वारा मन को संवार लिया है, वही व्यक्ति सेवक भावना वाले बनकर परमात्मा से जा मिले हैं। हे प्रभु! तू सच्चा साहिब अलक्ष्य है (परन्तु) गुरु के शब्द द्वारा ही तेरी सूझ होती है॥ १४॥

सलोक मः ४ ॥ जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस का कदे न होवी भला ॥ ओस दै आखिऐ कोई न लगै नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥ जिसु अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओस दा सभु गइआ ॥ नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कढि न सकै ओस दा काला भइआ ॥ करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए ॥ गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी ततकाल मरि जाए ॥ भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥ जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाए ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जिस व्यक्ति के अन्तर्मन में दूसरों को दुखी करने की द्वेष–भावना होती है, उस व्यक्ति का कभी भला नहीं होता। उस व्यक्ति के वचन पर कोई भरोसा नहीं करता, वह हमेशा उजाड़ में खड़ा पुकारता रहता है। जिस मनुष्य के हृदय में चुगली होती है, वह चुगलखोर के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है, उसकी सारी की हुई कमाई निष्फल हो जाती है। ऐसा व्यक्ति नित्य पराई झूठी चुगली करता है, इस लांछन के कारण वह किसी के सम्मुख भी नहीं जा सकता, फलस्वरूप उसका मुँह काला हो जाता है। इस कलियुग में शरीर कर्म रूपी धरती है, इसमें जैसा बीज इन्सान बोता है, वैसा ही फल खाता है, यूं ही बातों द्वारा कभी न्याय नहीं होता, यदि विष खाए तो तुरन्त मर जाता है। हे भाई! सच्चे परमात्मा का इन्साफ देखो, जैसे कोई कर्म करता है, वैसा ही उसका फल पाता है। नानक को प्रभु ने यह ज्ञान दिया है, और वह प्रभु के द्वार की ये बातें करके सुना रहा है॥ १॥

मः ४ ॥ होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥ कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥ जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही ॥ जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥ तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥ ओना दा आखिआ को ना सुणै नित हउले हउलि मराही ॥ सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही ॥ जो सतिगुरि मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही ॥ ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही ॥ हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही ॥ धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही ॥ जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही ॥ नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ॥ २ ॥

महला ४॥ जो व्यक्ति गुरु के समक्ष होते हुए भी बिछुड चुके हैं। उन्हें सत्य के दरबार में कोई सहारा नहीं मिलता। यदि कोई उन निंदकों को जाकर मिलता भी है, तो उसका भी मुँह फीका एवं काला होता है (अर्थात् लोक उसे तिरस्कृत करते हैं) चूंकि जो लोग सतिगुरु की ओर से तिरस्कृत हुए हैं, वे दुनिया में भी तिरस्कृत हुए हैं और वे हमेशा भटकते रहते हैं। जो व्यक्ति गुरु की निन्दा करते हैं, वे हमेशा रोते फिरते हैं। उनकी तृष्णा कभी नहीं बुझती और सदा भूख–भूख चिल्लाते हैं। कोई उनकी बात पर भरोसा नहीं करता इसलिए वे सदा चिन्ता–फिक्र में ही खपते हैं। जो मनुष्य गुरु की महिमा सहन नहीं करते, उन्हें लोक–परलोक में स्थान नहीं मिलता। गुरु से शापित हुए व्यक्तियों को जो मनुष्य जाकर मिलते हैं, वह भी अपनी थोड़ी–बहुत प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं, क्योंकि गुरु से शापित वे तो पहले ही कोढ़ी हैं। जो भी व्यक्ति ऐसे व्यक्ति का साथ करता है, उसे भी कोढ़ लग जाता है।

हे जिज्ञासुओ! भगवान के लिए उनके दर्शन भी मत करो, जो सतिगुरु को त्याग कर माया के मोह में लगते हैं। उनके साथ उन्हें कोई उपाय सफल नहीं होता। चूंकि परमात्मा ने आदिकाल से ही उनके द्वारा किए कर्मों के अनुसार ऐसे द्वैतभाव के संस्कार ही लिख दिए हैं। हे नानक! तुम नाम की आराधना करो, चूंकि नाम की आराधना वाले की समानता कोई नहीं कर सकता, नाम की महिमा महान है जो दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है॥ २॥

मः ४ ॥ जि होंदै गुरू बहि टिकिआ तिसु जन की वडिआई वडी होई ॥ तिसु कउ जगतु निविआ सभु पैरी पइआ जसु वरतिआ लोई ॥ तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकारु करहि जिस कै मसतकि हथु धरिआ गुरि पूरै सो पूरा होई ॥ गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ॥ जनु नानकु हरि करतै आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखै प्रभु सोई ॥ ३ ॥

महला ४॥ जिसे गुरु ने स्वयं बैठकर तिलक किया हो, उसकी बहुत शोभा होती है। उसके समक्ष सारी दुनिया झुकती है और उसके चरण स्पर्श करती है। उसकी शोभा सारे विश्व में फैल जाती है। जिस मस्तक पर पूर्ण गुरु ने हाथ रखा हो, वह समस्त गुणों में पूर्ण हो गया और समस्त खण्डों-ब्रह्माण्डों के जीव उसे प्रणाम करते हैं। गुरु की महिमा दिनों-दिन बढ़ती है, कोई मनुष्य उसकी समानता नहीं कर सकता, क्योंकि अपने सेवक नानक को सृजनहार प्रभु ने स्वयं मान दिया है इसलिए ईश्वर स्वयं ही उसकी लाज रखता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है अंदरि हटनाले ॥ गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥ नामु निधानु हरि वणजीऐ हीरे परवाले ॥ विणु काइआ जि होर थै धनु खोजदे से मूड़ बेताले ॥ से उझड़ि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ काया रूपी किला अपार है, जिसके भीतर इन्द्रियाँ रूपी बाजार है। जो गुरमुख इन्द्रियाँ रूपी बाजार में से नाम रूपी सौदा खरीदते हैं, वे भगवान की नाम रूपी वस्तु संभाल लेते हैं। काया रूपी किले में ही ईश्वर के नाम के खजाने का व्यापार किया जा सकता है, यही सौदे साथ-साथ निभने वाले हीरे तथा मूंगे हैं। जो व्यक्ति इस सौदे को काया के बिना किसी दूसरे स्थान पर खोजते हैं, वे मूर्ख हैं और मनुष्य काया में आए हुए भूत-प्रेत हैं। जैसे मृग कस्तूरी की सुगन्धि हेतु झाड़ियों को खोजता फिरता है, वैसे ही ऐसे मनुष्य भ्रम में फँसे हुए वनों में भटकते रहते हैं॥ १५॥

सलोक मः ४ ॥ जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ॥ नरक घोरु दुख खूहु है ओथै पकड़ि ओहु ढोइआ ॥ कूक पुकार को न सुणे ओहु अउखा होइ होइ रोइआ ॥ ओनि हलतु पलतु सभु गवाइआ लाहा मूलु सभु खोइआ ॥ ओहु तेली संदा बलदु करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु तिदू किछु गुझा न होइआ ॥ जैसा बीजे सो लुणे जेहा पुरबि किनै बोइआ ॥ जिसु क्रिपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥ गुर सतिगुर पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ संगोइआ ॥ जन नानक नामु धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुखु होइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जो व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु की निन्दा करता है, वह दुनिया में हमेशा दुखी रहता है। दुखों का कुआँ रूपी जो घोर नरक है, उस निंदक को पकड़कर उसमें डाला जाता है, जहाँ उसकी विनती कोई नहीं सुनता और वह दुखी होकर रोता है। ऐसा व्यक्ति लोक-परलोक, नाम-रूपी लाभ एवं मानव जन्म रूपी मूल सब कुछ गंवा देता है। अंत में ऐसा व्यक्ति तेली का बैल बनकर

प्रतिदिन नए सूर्य की भाँति ईश्वर के आदेश में लगाया जाता है। प्रभु सदैव (यह) सब कुछ देखता एवं सुनता है, उससे कोई बात छिपी नहीं रह सकती। जैसा बीज किसी इन्सान ने आदि से बोया है और जैसा वर्तमान में बो रहा है, वैसा ही फल खाता है। जिस प्राणी पर ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह सतिगुरु के चरण धोता है। जैसे लोहा काठ के साथ तैरता है, उसी प्रकार सतिगुरु के दिशा-निर्देश पर चलकर भवसागर से पार हो जाता है। हे नानक! तुम नाम की आराधना करो चूंकि हरि-परमेश्वर के नाम का जाप करने से ही सुख उपलब्ध होता है॥ १॥

मः ४ ॥ वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ अंतर जोति प्रगासीआ नानक नामि समाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ वे जीव-स्त्रियों बड़ी भाग्यवान एवं सुहागिन हैं, जिन्हें गुरु के माध्यम से हरि-प्रभु मिल गया है। हे नानक! ईश्वर की ज्योति ने उनका हृदय रोशन कर दिया है और वे उसके नाम में लीन हो गई हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥ गुहज रतन विचि लुकि रहे कोई गुरमुखि सेवकु कढै खोति ॥ सभु आतम रामु पछाणिआ तां इकु रविआ इको ओति पोति ॥ इकु देखिआ इकु मंनिआ इको सुणिआ स्रवण सरोति ॥ जन नानक नामु सलाहि तू सचु सचे सेवा तेरी होति ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ यह सारा शरीर धर्म है, इसमें सत्य (प्रभु) की ज्योति विद्यमान है। इस (शरीर) में दिव्य रत्न छिपे हैं। कोई विरला गुरमुख सेवक ही इन्हें खोजकर निकालता है। जब प्राणी राम को अनुभव करता है तो वह एक ईश्वर को सर्वव्यापक विद्यमान हुआ ऐसे देखता है जैसे ताने-बाने में एक धागा होता है। वह एक ईश्वर को ही देखता है, उस पर ही आस्था रखता है और अपने कानों से उसकी बातें सुनता है। हे नानक! तुम प्रभु के नाम की महिमा-स्तुति करो, सचमुच तेरी यह सेवा ईश्वर के द्वार पर स्वीकृत होगी॥ १६॥

सलोक मः ४ ॥ सभि रस तिन कै रिदै हहि जिन हरि वसिआ मन माहि ॥ हरि दरगहि ते मुख उजले तिन कउ सभि देखण जाहि ॥ जिन निरभउ नामु धिआइआ तिन कउ भउ कोई नाहि ॥ हरि उतमु तिनी सरेविआ जिन कउ धुरि लिखिआ आहि ॥ ते हरि दरगहि पैनाईअहि जिन हरि वुठा मन माहि ॥ ओइ आपि तरे सभ कुटंब सिउ तिन पिछै सभु जगतु छडाहि ॥ जन नानक कउ हरि मेलि जन तिन वेखि वेखि हम जीवाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जिनके मन में भगवान निवास करता है, तमाम रस (खुशियां) उनके भीतर मौजूद हैं। भगवान के दरबार में उनके मुख उज्ज्वल होते हैं और सभी उनके दर्शन हेतु जाते हैं। जिन लोगों ने निर्भय परमेश्वर के नाम का ध्यान किया है, उन्हें कोई भय नहीं होता। जिनकी तकदीर में आदि से ही लिखा होता है, उन्होंने उत्तम परमात्मा का सिमरन किया है। जिनके मन में भगवान निवास करता है, उन्हें उसके दरबार में ख्याति मिलती है। वह अपने समूचे परिवार सहित भवसागर से पार हो जाते हैं और उनके पदचिन्हों पर चलकर सारी दुनिया मुक्त हो जाती है। नानक का कथन है कि हे भगवान! मुझे भी ऐसे महापुरुषों से मिला दे, जिन्हें देख-देख कर हम जीते रहें॥ १॥

मः ४ ॥ सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ॥

धनु धंनु गुरू जिनि नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ ॥ हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ जिस धरती पर मेरा सतिगुरु आकर बैठा है, वह धरती समृद्ध हो गई है। वे लोग भी कृतार्थ हो चुके हैं, जिन्होंने मेरे सतिगुरु के जाकर दर्शन प्राप्त किए हैं। हे माँ! वह पिता बड़ा भाग्यशाली है, वह कुल भी भाग्यवान है, वह माँ बड़ी भाग्यवान है, जिसने गुरु को जन्म दिया है। वह गुरु धन्य–धन्य है, जिसने भगवान के नाम की आराधना की है। वह स्वयं भी भवसागर से पार हुए हैं और जिन्होंने गुरु के दर्शन किए हैं, उन्हें भी गुरु ने भवसागर से मुक्त करवा दिया है। हे हरि! दया करके मुझे (ऐसे) गुरु से मिला दे, चूंकि नानक उनके चरण जल से धोए॥ २॥

पउड़ी ॥ सचु सचा सतिगुरु अमरु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ सचु सचा सतिगुरु पुरखु है जिनि कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ जा डिठा पूरा सतिगुरू तां अंदरहु मनु साधारिआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥ गुरमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ सत्य का पुंज सतिगुरु अमर है, जिसने ईश्वर को अपने हृदय में बसाया है। सत्य का पुंज सतिगुरु ऐसे महापुरुष हैं, जिन्होंने अपने हृदय से काम–क्रोध रूपी विष को नाश कर दिया है। जब पूर्ण सतिगुरु के दर्शन किए तो मुझ में धैर्य हो गया, (इसलिए) मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ और सदैव उन पर न्यौछावर हूँ। गुरमुख ने मानव जन्म सफल कर लिया है और स्वेच्छाचारी ने मानव जन्म व्यर्थ गंवा दिया है॥ १७॥

सलोक मः ४ ॥ करि किरपा सतिगुरु मेलिओनु मुखि गुरमुखि नामु धिआइसी ॥ सो करे जि सतिगुर भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥ जिन अंदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥ जिन रखण कउ हरि आपि होइ होर केती झखि झखि जाइसी ॥ जन नानक नामु धिआइ तू हरि हलति पलति छोडाइसी ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ भगवान ने कृपा करके जिस व्यक्ति को सतिगुरु से मिला दिया है, ऐसा गुरमुख अपने मुख से भगवान के नाम का ही ध्यान करता रहता है। वह गुरमुख वही कार्य करता है, जो कार्य सतिगुरु को अच्छा लगता है। अत: पूर्ण गुरु उसे आत्मस्वरूप में बसाते हैं। जिनके अन्तर्मन में नाम रूपी खजाना है, गुरु उसका तमाम भय निवृत्त कर देता है। जिनकी भगवान स्वयं रक्षा करता है, अनेकों ही उनको नुक्सान पहुँचाने के प्रयास में खप–खप कर मर जाते हैं। हे नानक! तुम भगवान के नाम का ध्यान करो। भगवान लोक तथा परलोक में मुक्त कर देगा॥ १॥

मः ४ ॥ गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ॥ हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ॥ गुर सतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ॥ गुर सतिगुरु ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई ॥ जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई ॥ हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई ॥ जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन जो गुर के सिख मेरे भाई ॥ २ ॥

महला ४॥ सतिगुरु की महिमा गुरु के सिक्खों को बड़ी प्यारी लगती है। भगवान स्वयं ही सतिगुरु की लाज–प्रतिष्ठा रखता है, इसलिए सतिगुरु की महिमा नित्य ही बढ़ती रहती है। सतिगुरु के हृदय में भगवान निवास कर रहा है, इसलिए भगवान स्वयं ही गुरु को दुष्टों से बचाता है। भगवान ही गुरु का बल एवं सहारा है। उस भगवान ने सारी दुनिया लाकर गुरु के समक्ष झुका दी है। जिन्होंने

श्रद्धा से मेरे सतिगुरु के दर्शन किए हैं, उनके सभी पाप नाश हो गए हैं। भगवान के दरबार में ऐसे लोगों के मुख उज्जवल हुए हैं और उन्होंने बड़ी शोभा प्राप्त की है। नानक का कथन है कि मैं उनकी चरण–धूलि माँगता हूँ जो गुरु के सिक्ख मेरे भाई हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ आखि सलाही सिफति सचु सचु सचे की वडिआई ॥ सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाई ॥ सचु सचा रसु जिनी चखिआ से त्रिपति रहे आघाई ॥ इहु हरि रसु सेई जाणदे जिउ गूंगै मिठिआई खाई ॥ गुरि पूरै हरि प्रभु सेविआ मनि वजी वाधाई ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ जिस सत्य के पुंज सच्चे परमात्मा की कीर्ति सारे विश्व में हो रही है, मैं उस सच्चे (परमात्मा) की अपने मुख से महिमा–स्तुति करता हूँ। वह सच्चा परमात्मा जो हमेशा ही सराहनीय है, उस सच्चे का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जिन्होंने सत्यनाम रूपी रस चखा है, वे तृप्त होकर शांत हो गए हैं। इस हरि–रस के आनंद को वही गुरमुख जानते हैं, जिन्होंने यह रस चखा है। जैसे गूंगे की खाई हुई मिठाई के स्वाद को वह गूँगा ही जानता है, अन्य कोई नहीं जान सकता। जिन्होंने पूर्ण गुरु के द्वारा हरि–प्रभु की आराधना की है, उनके मन में आनंद की शुभकामनाएँ प्रगट हुई हैं॥ १८॥

सलोक मः ४ ॥ जिना अंदरि उमरथल सेई जाणनि सूलीआ ॥ हरि जाणहि सेई बिरहु हउ तिन विटहु सद घुमि घोलीआ ॥ हरि मेलहु सजणु पुरखु मेरा सिरु तिन विटहु तल रोलीआ ॥ जो सिख गुर कार कमावहि हउ गुलमु तिना का गोलीआ ॥ हरि रंगि चलूलै जो रते तिन भिनी हरि रंगि चोलीआ ॥ करि किरपा नानक मेलि गुर पहि सिरु वेचिआ मोलीआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जिस तरह जिनके शरीर में फोड़ा है, उसकी पीड़ा को वही व्यक्ति जानते हैं। वैसे ही जिन जिज्ञासुओं के भीतर भगवान की जुदाई है, उस जुदाई की पीड़ा को वहीं जानते हैं। मैं उन पर हमेशा ही न्यौछावर हूँ, जो ईश्वर से जुदाई की पीडा को जानते हैं। हे प्रभु ! मुझे किसी ऐसे (गुरु) सज्जन महापुरुष से मिला दे। जिनके लिए मेरा सिर उनके पैरों के नीचे झुक जाए। जो सिक्ख गुरु की बताई हुई करनी करते हैं, मैं उनके गुलामों का गुलाम हूँ। जिनके हृदय प्रभु नाम के गहरे रंग में रंगे हैं, उनके चोले (अर्थात् शरीर) प्रभु–प्रेम में भीगे हुए होते हैं। हे नानक ! भगवान ने दया करके उन्हें गुरु से मिलाया है और उन्होंने अपना सिर गुरु के समक्ष बेच दिया है॥ १॥

मः ४ ॥ अउगणी भरिआ सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥ गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥ सचु वणंजहि रंग सिउ सचु सउदा होइ ॥ तोटा मूलि न आवई लाहा हरि भावै सोइ ॥ नानक तिन सचु वणंजिआ जिना धुरि लिखिआ परापति होइ ॥ २ ॥

महला ४॥ हे संतजनों ! यह शरीर अवगुणों से भरा हुआ है, यह कैसे पवित्र हो सकता है ? यदि गुरमुख बनकर गुण खरीदे जाएँ तो अहंकार रूपी मैल को निकाल कर यह शरीर निर्मल हो सकता है। जो मनुष्य प्रेम–पूर्वक सत्य को खरीदते हैं, इनका यह सौदा सदा साथ निभाता है, (इस सौदे में) घाटा कभी नहीं होता और जिस तरह प्रभु की इच्छा होती है, वह लाभ प्राप्त करता है। हे नानक ! सत्य नाम की खरीद वही मनुष्य करते हैं, जिनकी किस्मत में आदि से ही लिखा होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सालाही सचु सालाहणा सचु सचा पुरखु निराले ॥ सचु सेवी सचु मनि वसै सचु सचा हरि रखवाले ॥ सचु सचा जिनी अराधिआ से जाइ रले सच नाले ॥ सचु सचा जिनी न सेविआ से मनमुख मूड़ बेताले ॥ ओह आलु पतालु मुहहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥ १९ ॥

पउड़ी॥ मैं उस सराहनीय सत्य प्रभु की महिमा-स्तुति करता हूँ। सत्यस्वरूप भगवान सत्य ही निराला है। सद्पुरुष की सेवा करने से सत्य हृदय में बस जाता है। सत्य का पुंज हरि सबका रक्षक है। जिन्होंने सचमुच सच्चे हरि की आराधना की है, वे उस सच्चे के साथ विलीन हो गए हैं। जो सत्यस्वरूप हरि की सेवा नहीं करते, वे मनमुख मूर्ख एवं बेताल (भूत) हैं। शराब पीकर धुत हुए शराबी की भाँति वे अपने मुख से बकवास करते हैं॥ १६॥

सलोक महला ३॥ गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥ भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारु करेइ ॥ सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ ॥ जिउ उबली मजीठै रंगु गहगहा तिउ सचे नो जीउ देइ ॥ रंगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु ॥ कूड़ु ठगी गुझी ना रहै कूड़ु मुलंमा पलेटि धरेहु ॥ कूड़ी करनि वडाईआ कूड़े सिउ लगा नेहु ॥ नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गउड़ी रागिनी तो ही सुलक्षणा है, यदि वह मालिक प्रभु को चित्त में बसा ले। वह सतिगुरु की इच्छानुसार चले, ऐसा हार-शृंगार उसके लिए करना उचित है। सच्चा शब्द प्राणी का कंत (पति) है, हमेशा उसे उसी का आनंद लेना चाहिए। जैसे मजीठ उबाल सहन करती है एवं उसका रंग गहरा लाल हो जाता है, वैसे ही (जीव रूपी स्त्री) अपनी आत्मा कंत (पति) पर न्यौछावर करे, तो उसका सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ प्रेम हो जाता है, वह (नाम के) गहरे रंग में रंग जाती है। मिथ्या (रूपी) मुलम्मा (निसंदेह सत्य के साथ) लपेट कर रखो, (फिर भी) जो झूठ एवं ठगी है, वे छिपे नहीं रह सकते। जिनका झूठ से प्रेम होता है। वह दुनिया की झूठी ही प्रशंसा करते हैं। हे नानक! ईश्वर ही सत्य है और वह स्वयं ही अपनी कृपा की दृष्टि करता है॥ १॥

मः ४ ॥ सतसंगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ ॥ ओइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि परउपकारिआ ॥ हरि नामु द्रिड़ावहि हरि नामु सुणावहि हरि नामे जगु निसतारिआ ॥ गुर वेखण कउ सभु कोई लोचै नव खंड जगति नमसकारिआ ॥ तुधु आपे आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ ॥ तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ ॥ कोई विछुड़ि जाइ सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जमि मारिआ ॥ तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिआ ॥ सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥ जन नानक के गुरसिख पुतहहु हरि जपिअहु हरि निसतारिआ ॥ २ ॥

महला ४॥ सत्संग में प्रभु की गुणस्तुति होती है, (क्योंकि) संतों की संगति करने से ही प्रियतम मिलता है। वे पुरुष-प्राणी भाग्यवान हैं (क्योंकि) वे परोपकार हेतु उपदेश करते हैं। ईश्वर के नाम में आस्था रखते हैं, ईश्वर का नाम ही सुनाते हैं और ईश्वर के नाम के द्वारा ही संसार का कल्याण करते हैं। हरेक जीव गुरु के दर्शनों की अभिलाषा करता है और संसार में नवखण्ड के जीव सतिगुरु के समक्ष प्रणाम करते हैं। हे भगवान! तूने अपना आप सतिगुरु में छिपा रखा है और तूने स्वयं ही गुरु को सुन्दर बनाया है। हे सतिगुरु को पैदा करने वाले परमात्मा! तुम स्वयं सतिगुरु की पूजा करते हो और दूसरों से उनकी पूजा करवाते हो। यदि कोई मनुष्य सतिगुरु से बिछुड़ जाए, उसका मुँह काला होता है और यमराज से उसे बड़ी मार पड़ती है। गुरु के सिक्खों ने अपने हृदय में विचार कर लिया है कि उसे लोक-परलोक में सहारा नहीं मिलता है। जो मनुष्य सतिगुरु से जाकर मिलते हैं और अपने हृदय में नाम का चिंतन करते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं। नानक के गुरसिक्ख पुत्रो! ईश्वर का नाम जपो (क्योंकि) ईश्वर भवसागर से पार करवा देता है॥ २॥

महला ३ ॥ हउमै जगतु भुलाइआ दुरमति बिखिआ बिकार ॥ सतिगुरु मिलै त नदरि होइ मनमुख अंध अंधिआर ॥ नानक आपे मेलि लए जिस नो सबदि लाए पिआरु ॥ ३ ॥

महला ३॥ अहंकार ने सारी दुनिया को भटकाया हुआ है, इसलिए दुनिया दुर्मति के कारण विषय–विकारों में फँसती है। जिस मनुष्य को गुरु मिलता है, उस पर भगवान की कृपा–दृष्टि होती है, अन्यथा स्वेच्छाचारी मनुष्य के लिए अज्ञान रूपी अँधेरा ही बना रहता है। हे नानक! प्रभु जिस मनुष्य का प्रेम 'शब्द' में लगाता है, उसे वह स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ सचु सचे की सिफति सलाह है सो करे जिसु अंदरु भिजै ॥ जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन का कंधु न कबहू छिजै ॥ धनु धनु पुरख साबासि है जिन सचु रसना अंम्रितु पिजै ॥ सचु सचा जिन मनि भावदा से मनि सची दरगह लिजै ॥ धनु धंनु जनमु सचिआरीआ मुख उजल सचु करिजै ॥ २० ॥

पउड़ी॥ सत्यस्वरूप प्रभु की गुणस्तुति सदैव स्थिर रहने वाली है, (यह गुणस्तुति) वही मनुष्य कर सकता है, जिसका हृदय भी प्रशंसा में भीगा हुआ हो। जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर एक ईश्वर का स्मरण करते हैं, उनका शरीर कभी क्षीण नहीं होता। वह पुरुष धन्य! धन्य! एवं उपमायोग्य हैं, जिनकी रसना सत्यनाम के अमृत को चखती है। जिनके हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा सचमुच प्रिय लगता है, वे सत्य के दरबार में सम्मानित होते हैं। सत्यवादियों का जन्म धन्य है जिनके चेहरे को सत्य उज्ज्वल कर देता है॥ २०॥

सलोक मः ४ ॥ साकत जाइ निवहि गुर आगै मनि खोटे कूड़ि कूड़िआरे ॥ जा गुरु कहै उठहु मेरे भाई बहि जाहि घुसरि बगुलारे ॥ गुरसिखा अंदरि सतिगुरु वरतै चुणि कढे लधोवारे ॥ ओइ अगै पिछै बहि मुहु छपाइनि न रलनी खोटेआरे ॥ ओना दा भखु सु ओथै नाही जाइ कूड़ु लहनि भेडारे ॥ जे साकतु नरु खावाईऐ लोचीऐ बिखु कढै मुखि उगलारे ॥ हरि साकत सेती संगु न करीअहु ओइ मारे सिरजणहारे ॥ जिस का इहु खेलु सोई करि वेखै जन नानक नामु समारे ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ यदि शाक्त इन्सान गुरु के समक्ष जाकर झुक भी जाए तो भी वह मन में खोट होने के कारण झूठ का व्यापारी बना रहता है। जब गुरु जी कहते है – 'हे मेरे भाइओ, सावधान हो जाओ।' फिर यह शाक्त भी बगुलों के समान मिलकर बैठ जाते हैं। गुरसिक्खों के मन में सतिगुरु बसता है, इसलिए सिक्खों में मिलकर बैठे हुए भी शाक्त जांच–पड़ताल के समय चुनकर निकाल दिए जाते हैं। वे आगे–पीछे होकर मुँह तो बहुत छिपाते हैं, लेकिन झूठ के व्यापारी सत्संगत में मिल नहीं सकते। शाक्त लोगों का भोजन वहाँ (गुरमुखों के साथ में) नहीं होता, (इसलिए) भेड़ों के समान (किसी अन्य स्थान पर) जाकर झूठ को प्राप्त करते हैं। यदि शाक्त मनुष्य को (नाम–रूपी) भला पदार्थ खिलाने की इच्छा भी करें तो भी वह मुँह से (निन्दा रूपी) विष ही उगलकर निकालता है। (हे संतजनों!) शाक्त के साथ संगति मत करो, क्योंकि जगत् के रचयिता ने स्वयं उन्हें मृत कर दिया है, जिस ईश्वर का यह खेल है, वह स्वयं इस खेल को रचकर देख रहा है। हे नानक! तुम ईश्वर का नाम–सिमरन करते रहो॥ १॥

मः ४ ॥ सतिगुरु पुरखु अगंमु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ सतिगुरू नो अपड़ि कोइ न सकई जिसु वलि सिरजणहारिआ ॥ सतिगुरू का खड़गु संजोउ हरि भगति है जितु कालु कंटकु मारि विडारिआ ॥ सतिगुरू का रखणहारा हरि आपि है सतिगुरू कै पिछै हरि सभि उबारिआ ॥ जो मंदा

चितवै पूरे सतिगुरू का सो आपि उपावणहारै मारिआ ॥ एह गल होवै हरि दरगह सचे की जन नानक अगमु वीचारिआ ॥ २ ॥

महला ४॥ महापुरुष सतिगुरु अगम्य है, जिसने अपने हृदय में भगवान को धारण किया हुआ है। सतिगुरु की समानता कोई नहीं कर सकता, क्योंकि परमात्मा उसके पक्ष में है। भगवान की भक्ति ही सतिगुरु का खड्ग और बख्तर है, जिससे उसने काल (रूपी) कंटक को मारकर दूर फेंक दिया है। ईश्वर स्वयं सतिगुरु का रखवाला है। जो सतिगुरु के पदचिन्हों पर चलते हैं, प्रभु उन सबको ही आप बचा लेता है। जो मनुष्य पूर्ण सतिगुरु का बुरा सोचता है, उसे पैदा करने वाला प्रभु स्वयं ही नष्ट कर देता है। यह न्याय भगवान के दरबार में होता है। हे नानक ! अगम्य हरि का सिमरन करने से यह सूझ पैदा होती है॥ २॥

पउड़ी ॥ सचु सुतिआ जिनी अराधिआ जा उठे ता सचु चवे ॥ से विरले जुग महि जाणीअहि जो गुरमुखि सचु रवे ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जि अनदिनु सचु लवे ॥ जिन मनि तनि सचा भावदा से सची दरगह गवे ॥ जनु नानकु बोलै सचु नामु सचु सचा सदा नवे ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति सोते समय भी सत्य की आराधना करते हैं और उठते समय भी सत्य-नाम का जाप करते हैं। ऐसे व्यक्ति कलियुग में विरले ही मिलते हैं, जो गुरमुख सत्य नाम में मग्न रहते हैं। मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ जो रात-दिन सत्यनाम उच्चरित करते रहते हैं। जिन लोगों के मन एवं तन में सत्य भला लगता है, वह सत्य के दरबार में पहुँच जाते हैं। दास नानक भी सत्य नाम बोलता रहता है। वह सत्य प्रभु सदैव ही नवीन है॥ २१॥

सलोकु मः ४ ॥ किआ सवणा किआ जागणा गुरमुखि ते परवाणु ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से पूरे पुरख परधान ॥ करमी सतिगुरु पाईऐ अनदिनु लगै धिआनु ॥ तिन की संगति मिलि रहा दरगह पाई मानु ॥ सउदे वाहु वाहु उचरहि उठदे भी वाहु करेनि ॥ नानक ते मुख उजले जि नित उठि संमालेनि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ क्या सोना और क्या जागना? गुरमुखों के लिए तो सब कुछ स्वीकार्य है। जिन्हें श्वास लेते और भोजन खाते समय एक क्षण भर के लिए भी भगवान का नाम विस्मृत नहीं होता, वही सर्वगुणसम्पन्न एवं प्रधान हैं। भगवान की कृपा से सतिगुरु (उन्हें) मिलता है और उनका ध्यान रात-दिन भगवान में लगा रहता है। मैं भी उन गुरमुखों की संगति करूँ ताकि भगवान के दरबार में सम्मान प्राप्त हो। वे सोते और जागते वक्त ईश्वर की गुणस्तुति करते हैं। हे नानक ! उनके चेहरे उज्ज्वल हैं जो प्रतिदिन सुबह जागकर ईश्वर को स्मरण करते हैं॥ १॥

मः ४ ॥ सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु ॥ भउजलि डुबदिआ कढि लए हरि दाति करे दातारु ॥ धंनु धंनु से साह है जि नामि करहि वापारु ॥ वणजारे सिख आवदे सबदि लघावणहारु ॥ जन नानक जिन कउ क्रिपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥ २ ॥

महला ४॥ अपने सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य अपार नाम प्राप्त करता है। दाता गुरदेव ईश्वर के नाम की देन प्रदान करता है और डूबते हुए मनुष्य को भयानक संसार-सागर में से निकाल लेता है। वह शाह धन्य-धन्य हैं जो ईश्वर के नाम का व्यापार करते हैं। सिक्ख व्यापारी आते हैं और सतिगुरु उन्हें शब्द द्वारा भवसागर से पार करवा देता है। हे नानक ! सृजनहार प्रभु की सेवा-भक्ति वही मनुष्य करते हैं, जिस पर वह स्वयं कृपा करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सचु सचे के जन भगत हहि सचु सचा जिनी अराधिआ ॥ जिन गुरमुखि खोजि ढंढोलिआ तिन अंदरहु ही सचु लाधिआ ॥ सचु साहिबु सचु जिनी सेविआ कालु कंटकु मारि तिनी साधिआ ॥ सचु सचा सभ दू वडा है सचु सेवनि से सचि रलाधिआ ॥ सचु सचे नो साबासि है सचु सचा सेवि फलाधिआ ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ जो सत्य के पुंज परमात्मा की सत्य ही भक्ति करते हैं, वही (परमात्मा) के भक्त है। जो मनुष्य गुरु के समक्ष होकर खोजकर ढूँढते हैं, वे अपने ह्रदय में ही प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं। जिन मनुष्यों ने सच्चे मालिक की सचमुच सेवा की है, उन्होंने दुःखदायक काल को मारकर नियंत्रित कर लिया है। सत्य का पुंज परमात्मा महान है, उसकी सेवा-भक्ति जो मनुष्य करते हैं, वे सत्य में ही लीन हो जाते हैं। वह सत्य का पुंज परमात्मा धन्य है, जो व्यक्ति सच्चे (परमात्मा) की भक्ति करते हैं, उन्हें उत्तम फल मिलता है॥ २२॥

सलोक मः ४ ॥ मनमुखु प्राणी मुगधु है नामहीण भरमाइ ॥ बिनु गुर मनूआ ना टिकै फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ हरि प्रभु आपि दइआल होहि तां सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ जन नानक नामु सलाहि तू जनम मरण दुखु जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ स्वेच्छाचारी प्राणी मूर्ख है, चूंकि ऐसा नामविहीन इन्सान भटकता ही रहता है। गुरु के बिना उसका मन स्थिर नहीं होता और वह बार-बार गर्भ-योनि में पड़ता है। जब हरि-प्रभु स्वयं दया के घर में आता है तो इसे सतिगुरु आकर मिल जाता है। (इसलिए) हे नानक! तुम भी नाम की महिमा-स्तुति करो चूंकि तेरा जन्म-मरण का दुःख मिट जाए॥ १॥

मः ४ ॥ गुरु सालाही आपणा बहु बिधि रंगि सुभाइ ॥ सतिगुर सेती मनु रता रखिआ बणत बणाइ ॥ जिहवा सालाहि न रजई हरि प्रीतम चितु लाइ ॥ नानक नावै की मनि भुख है मनु त्रिपतै हरि रसु खाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ मैं अपने गुरु की बड़े प्रेम से अनेक विधियों से प्रशंसा करता हूँ। मेरा मन गुरु के साथ मग्न है। गुरु जी ने मेरे मन को संवार दिया है। मेरी रसना प्रशंसा करके तृप्त नहीं होती और मन प्रियतम-प्रभु के साथ प्रेम करके तृप्त नहीं होता। हे नानक! मन को नाम की भूख है और मन हरि-रस को पान करने से तृप्त होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सचु सचा कुदरति जाणीऐ दिनु राती जिनि बणाईआ ॥ सो सचु सलाही सदा सदा सचु सचे कीआ वडिआईआ ॥ सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाईआ ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू ता हाजरु नदरी आईआ ॥ सचु गुरमुखि जिनी सलाहिआ तिना भुखा सभि गवाईआ ॥ २३ ॥

पउडी॥ सत्यस्वरूप प्रभु जिसने दिन और रात बनाए हैं, वह सत्य का पुंज (प्रभु) कुदरत से ही सचमुच बडी महानता वाला मालूम होता है। मैं सदैव उस सत्यस्वरूप परमात्मा की प्रशंसा करता हूँ और सच्चे (परमात्मा) की महिमा सत्य है। प्रशंसनीय परमात्मा सत्य है और उसकी प्रशंसा भी सत्य है। सत्यस्वरूप परमात्मा का कोई भी मूल्यांकन नहीं जान सका। जब पूर्ण सतिगुरु मिलता है तो परमात्मा प्रत्यक्ष दिखाई देता है। जो गुरमुख सत्य का यश गाते हैं, उनकी तमाम भूख निवृत्त हो जाती है॥ २३॥

सलोक मः ४ ॥ मै मनु तनु खोजि खोजेदिआ सो प्रभु लधा लोड़ि ॥ विसटु गुरू मै पाइआ जिनि हरि प्रभु दिता जोड़ि ॥ १ ॥

सलोक मः ५ ॥ रहदे खुहदे निंदक मारिअनु करि आपे आहरु ॥ संत सहाई नानका वरतै सभ जाहरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ शेष बचे हुए निन्दकों को भगवान ने स्वयं ही (प्रयास करके) समाप्त कर दिया है। हे नानक ! संतजनों की सहायता करने वाला भगवान सर्वत्र प्रत्यक्ष रूप में व्यापक हो रहा है॥ १॥

मः ५ ॥ मुंढहु भुले मुंढ ते किथै पाइनि हथु ॥ तिंनै मारे नानका जि करण कारण समरथु ॥ २ ॥

महला ५॥ जो पुरुष पहले से ही भगवान को भूल गए हैं, वे और किसका सहारा लें ? (क्योंकि) हे नानक ! इनको उस प्रभु ने मारा हुआ है, जो जगत् का मूल प्रत्येक कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है॥ २॥

पउड़ी ५ ॥ लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥ तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥ संन्ही देन्हि विखंम थाइ मिठा मदु माणी ॥ करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥ अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥ २७ ॥

पउड़ी ५॥ मनुष्य रात को कमन्द लेकर चलते हैं परन्तु ईश्वर उन्हें जानता है, भीतर छिपकर पराई औरतों की ओर देखते हैं, विषम स्थान पर सेंध लगाते हैं और मदिरा को मीठा मानते हैं। आखिरकार आप अपने किए कर्मों के अनुसार स्वयं ही पश्चाताप करते हैं चूंकि अजराईल मृत्यु का फरिश्ता नीच कर्म करने वालों को ऐसे पीसता है, जैसे कोल्हू में तिल॥ २७॥

सलोक मः ५ ॥ सेवक सचे साह के सेई परवाणु ॥ दूजा सेवनि नानका से पचि पचि मुए अजाण ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जो व्यक्ति सच्चे शाह के सेवक होते हैं, वही सत्य के दरबार में स्वीकार होते हैं। हे नानक ! जो भगवान के अलावा किसी दूसरे की सेवा करते हैं, ऐसे मूर्ख व्यक्ति बहुत दुखी होकर मरते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु प्रभ मेटणा न जाइ ॥ राम नामु धनु वखरो नानक सदा धिआइ ॥ २ ॥

महला ५॥ परमात्मा ने आदि से जो लेख लिखा होता है, उसे मिटाया नहीं जा सकता। हे नानक ! राम नाम रूपी धन ही उत्तम पूँजी है, इसलिए हमेशा ही नाम का ध्यान करते रहना चाहिए॥ २॥

पउड़ी ५ ॥ नाराइणि लइआ नाठूंगड़ा पैर किथै रखै ॥ करदा पाप अमितिआ नित विसो चखै ॥ निंदा करदा पचि मुआ विचि देही भखै ॥ सचै साहिब मारिआ कउणु तिस नो रखै ॥ नानक तिसु सरणागती जो पुरखु अलखै ॥ २८ ॥

पउड़ी ५॥ जिस इन्सान को नारायण की ओर से ठोकर लगे, वह जीवन के सन्मार्ग पर स्थिर नहीं रह सकता। ऐसा व्यक्ति बेशुमार पाप करता है और हमेशा ही विकार रूपी विष चखता है। दूसरों की निंदा करता हुआ वह गल सड़कर मर जाता है। अपने शरीर में भी वह सड़ता रहता है। जिसे सच्चे प्रभु ने मार दिया है, उसे कौन बचा सकता है। हे नानक ! उस अलक्ष्य परमात्मा की शरण प्राप्त करो॥ २८॥

सलोक मः ५ ॥ नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥ तिनि प्रभि मारे नानका होइ होइ मुए हरामु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ कृतघ्न लोगों का निवास घोर नरक में ही होता है, जहाँ उन्हें बहुत कष्टदायक दुख भोगने पड़ते हैं। हे नानक ! प्रभु द्वारा मारे हुए ऐसे लोग बड़े दुखी होकर मरते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि ॥ आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी पाहि ॥ २ ॥

महला ५॥ उस ईश्वर ने समस्त रोगों की औषधियाँ बनाई हैं परन्तु निंदकों का कोई उपचार नहीं। हे नानक ! जिन्हें ईश्वर स्वयं कुमार्गगामी करता है, ऐसे निन्दक इन्सान योनियों में गलते-सडते रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ५ ॥ तुसि दिता पूरै सतिगुरू हरि धनु सचु अखुटु ॥ सभि अंदेसे मिटि गए जम का भउ छुटु ॥ काम क्रोध बुरिआईआं संगि साधू तुटु ॥ विणु सचे दूजा सेवदे हुइ मरसनि बुटु ॥ नानक कउ गुरि बखसिआ नामै संगि जुटु ॥ २६ ॥

पउड़ी ५॥ जिस व्यक्ति को पूर्ण सतिगुरु ने प्रसन्न होकर हरि नाम रूपी सच्चा एवं अक्षय धन दिया है, उसके सभी संशय मिट जाते हैं एवं मृत्यु का भय भी समाप्त हो जाता है। काम, क्रोध एवं बुराइयां संतों की संगति करने से मिट जाते हैं। सच्चे प्रभु के अतिरिक्त जो दूसरों की सेवा करते हैं, वे निराश्रित होकर मर जाते हैं। नानक को गुरु ने क्षमा कर दिया है और वह ईश्वर के नाम में प्रवृत्त हो गया है॥ २६॥

सलोक मः ४ ॥ तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै जजमालिआ ॥ अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ लए नाही पिछो दे पछुताइ कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ ॥ पंच लोग सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥ जिथै थोड़ा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ ॥ भाई एहु तपा न होवी बगुला है बहि साध जना वीचारिआ ॥ सत पुरख की तपा निंदा करै संसारै की उसतती विचि होवै एतु दोखै तपा दयि मारिआ ॥ महा पुरखां की निंदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइआ तपे का घालिआ ॥ बाहरि बहै पंचा विचि तपा सदाए ॥ अंदरि बहै तपा पाप कमाए ॥ हरि अंदरला पापु पंचा नो उघा करि वेखालिआ ॥ धरम राइ जमकंकरा नो आखि छडिआ एसु तपे नो तिथै खड़ि पाइहु जिथै महा महां हतिआरिआ ॥ फिरि एसु तपे दै मुहि कोई लगहु नाही एहु सतिगुरि है फिटकारिआ ॥ हरि कै दरि वरतिआ सु नानकि आखि सुणाइआ ॥ सो बूझै जु दयि सवारिआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ वह व्यक्ति तपस्वी नहीं हो सकता, जिसका मन लालची होता है और कोढ़ी की तरह नित्य धन के लिए भटकता रहता है। जब इसे पहले निमंत्रण देकर बुलाया गया तो इसने सत्य की भिक्षा लेने से इन्कार कर दिया लेकिन तदुपरांत पश्चाताप करके उसने अपने पुत्र को लाकर संगत में बिठा दिया। गांव के बड़े आदमी यह कह कर हँसने लग पड़े कि लालच की लहर ने तपस्वी को नष्ट कर दिया है। तपस्वी जहाँ कम धन-पदार्थ देखता है, उस स्थान के वह निकट नहीं जाता। अधिक धन देखकर तपस्वी अपना धर्म भी हार जाता है। संतजनों ने बैठकर विचार किया है कि हे भाई ! यह तपस्वी नहीं है अपितु बगुला है। तपस्वी महापुरुषों की निन्दा करता है और दुनिया की

उस्तति गाता है। इस दोष के कारण ईश्वर ने उसे धिक्कार दिया है। देखो! महापुरुषों की निन्दा करने का इसे यह फल मिला है कि इसकी सारी मेहनत निष्फल हो गई है। वह बाहर मुखियों के पास बैठता है और तपस्वी कहलवाता है। जब वह भीतर बैठता है तो नीच कर्म करता है। भगवान ने तपस्वी का भीतरी पाप पंचों को प्रकट करके दिखा दिया है। धर्मराज ने अपने यमदूतों को कह दिया है कि इस तपस्वी को ले जाकर उस स्थान पर डाल दो, जहाँ बड़े से बड़े महाहत्यारे डाले जाते हैं। वहाँ भी इसके मुँह कोई न लगे, क्योंकि यह तपस्वी सतिगुरु की ओर से तिरस्कृत है। हे नानक! जो कुछ यह ईश्वर के दरबार में हुआ है, उसे कहकर सुना दिया है, इस तथ्य को वही इन्सान समझता है, जिसे परमात्मा ने संवारा हुआ है॥ १॥

मः ४ ॥ हरि भगतां हरि आराधिआ हरि की वडिआई ॥ हरि कीरतनु भगत नित गांवदे हरि नामु सुखदाई ॥ हरि भगतां नो नित नावै दी वडिआई बखसीअनु नित चड़ै सवाई ॥ हरि भगतां नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाई ॥ निंदकां पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देइ सजाई ॥ जेहा निंदक अपणै जीइ कमावदे तेहो फलु पाई ॥ अंदरि कमाणा सरपर उघड़ै भावै कोई बहि धरती विचि कमाई ॥ जन नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआई ॥ २ ॥

महला ४॥ भगवान के भक्त भगवान की आराधना करते हैं और भगवान की गुणस्तुति करते हैं। भक्त नित्य भगवान का भजन कीर्तन करते हैं। भगवान का नाम बड़ा सुखदायक है। अपने भक्तों को भगवान ने हमेशा के लिए नाम का गुण प्रदान किया है, जो दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है। भगवान ने अपने विरद की लाज रखी है और उसने अपने भक्तों को आत्मस्वरूप स्थिर घर में बिठा दिया है। निन्दकों से भगवान लेखा माँगता है और बहुत कठोर दण्ड देता है। निन्दक जैसा अपने मन में कमाते हैं, वैसा ही फल उन्हें मिलता है। (क्योंकि) भीतर बैठकर किया हुआ काम निश्चित ही प्रत्यक्ष हो जाता है चाहे कोई इसे धरती के नीचे करे। नानक भगवान की महिमा देखकर कृतार्थ हो रहा है॥ २॥

पउड़ी मः ५ ॥ भगत जनां का राखा हरि आपि है किआ पापी करीऐ ॥ गुमानु करहि मूड़ गुमानीआ विसु खाधी मरीऐ ॥ आइ लगे नी दिह थोड़ड़े जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥ जेहे करम कमावदे तेवेहो भणीऐ ॥ जन नानक का खसमु वडा है सभना दा धणीऐ ॥ ३० ॥

पउड़ी महला ५॥ भगवान अपने भक्तों का स्वयं रखवाला है। पापी क्या कर सकता है? मूर्ख घमण्डी इन्सान बड़ा घमण्ड करता है और (अहंकार-रूपी) विष खाकर मर जाता है। जीवन के थोड़े दिन जो उसने व्यतीत करने थे, समाप्त हो गए हैं और पकी हुई फसल की भाँति काट लिया जाएगा। मनुष्य जैसे जैसे करता है, (प्रभु के दरबार में भी) वैसे ही कहलवाते हैं। नानक का मालिक प्रभु महान है, जो सारी दुनिया का ही मालिक है॥ ३०॥

सलोक मः ४ ॥ मनमुख मूलहु भुलिआ विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करहि वीचारु ॥ सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअहि अंतरि तिसना बहु अगिआनु अंध्यारु ॥ नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइआ मोह पिआरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ झूठ, लालच एवं अहंकार के कारण स्वेच्छाचारी इन्सान अपने मूल (भगवान) को ही भुला देते हैं। उनके रात-दिन झगड़ा करते हुए ही बीत जाते हैं और वे शब्द का चिन्तन नहीं करते। परमात्मा ने उनकी सारी मति-बुद्धि छीन ली है और वह सब विकार ही बोलते हैं। वे किसी की

देन से संतुष्ट नहीं होते, क्योंकि उनके हृदय में तृष्णा एवं अज्ञानता का अँधेरा बना होता है। हे नानक ! ऐसे स्वेच्छाचारी लोगों से तो संबंधविच्छेद ही बेहतर है, जिनका मोह–माया से ही प्रेम होता है॥ १॥

मः ४ ॥ जिना अंदरि दूजा भाउ है तिन्हा गुरमुखि प्रीति न होइ ॥ ओहु आवै जाइ भवाईऐ सुपनै सुखु न कोइ ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु उचरै कूड़ि लगिआ कूड़ु होइ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है दुखि बिनसै दुखु रोइ ॥ नानक धातु लिवै जोड़ु न आवई जे लोचै सभु कोइ ॥ जिन कउ पोतै पुंनु पइआ तिना गुर सबदी सुखु होइ ॥ २ ॥

महला ४॥ जिन लोगों के अन्तर्मन में द्वैत भावना से प्रेम होता है, वह गुरमुखों से प्रेम नहीं करते। ऐसे व्यक्ति जन्मते–मरते और आवागमन में भटकते हैं, और उन्हें स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता। वह झूठ का ही कार्य करते हैं, झूठ ही बोलते हैं और झूठ से जुड़कर वह झूठे हो जाते हैं। माया का मोह दुःख ही है। दुख द्वारा मनुष्य मरता है और दुख द्वारा ही वह विलाप करता है। हे नानक ! माया एवं ईश्वर का प्रेम शोभायमान नहीं हो सकता, चाहे हरेक मनुष्य इच्छा करे। जिनके खजाने में पुण्य हैं, वे गुरु के शब्द द्वारा सुख प्राप्त करते हैं॥ २॥

पउड़ी मः ५ ॥ नानक वीचारहि संत मुनि जनां चारि वेद कहंदे ॥ भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ परगट पाहारै जापदे सभि लोक सुणंदे ॥ सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ ओइ लोचनि ओना गुणा नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ ओइ वेचारे किआ करहि जां भाग धुरि मंदे ॥ जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ वैरु करनि निरवैर नालि धरमि निआइ पचंदे ॥ जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ पेडु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥ ३१ ॥

पउड़ी महला ५॥ हे नानक ! संत एवं मुनिजन विचार करते हैं और चारों वेद भी कहते हैं कि भक्तजन जो वचन मुख से बोलते हैं, वे (सत्य) पूरे हो जाते हैं। भक्त सारी दुनिया में लोकप्रिय होते हैं और उनकी शोभा सभी लोग सुनते हैं। जो मूर्ख मनुष्य संतों से वैर करते हैं, वे दोषी जलते तो अहंकार में हैं परन्तु भक्तजनों के गुणों के लिए तरसते हैं। इन दोषी मनुष्यों के वश में भी क्या है ? क्योंकि आदि से (नीच कर्मों के कारण) नीच संस्कार ही उनका भाग्य है। जो मनुष्य पारब्रह्म द्वारा मृत हैं, वे किसी के (सगे) नहीं। यह धर्म का न्याय है कि जो लोग निर्वैरों के साथ वैर करते हैं, वे बहुत दुखी होते हैं। जो व्यक्ति संतों से शापित हैं, वे योनियों में भटकते रहते हैं। जब वृक्ष जड़ से उखाड़ दिया जाता है तो इसकी टहनियाँ भी सूख जाती हैं॥ ३१॥

सलोक मः ५ ॥ गुर नानक हरि नामु द्रिड़ाइआ भंनण घड़ण समरथु ॥ प्रभु सदा समालहि मित्र तू दुखु सबाइआ लथु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक ! मेरे मन में गुरु ने उस भगवान का नाम दृढ़ किया है, जो सहज ही सृष्टि की रचना एवं सृष्टि का विनाश करने में समर्थ है। हे मित्र ! यदि तू भगवान को सदैव स्मरण करे तो तेरे तमाम दुःख निवृत्त हो जाएँ॥ १॥

मः ५ ॥ खुधिआवंतु न जाणई लाज कुलाज कुबोलु ॥ नानकु मांगै नामु हरि करि किरपा संजोगु ॥ २ ॥

महला ५॥ भूखा मनुष्य मान–अपमान तथा अपशब्दों की परवाह नहीं करता। हे हरि ! नानक तो तेरा नाम ही माँगता है, इसलिए कृपा करके ऐसा संयोग बना दे॥ २॥

पउड़ी ॥ जेवेहे करम कमावदा तेवेहे फलते ॥ चबे तता लोह सारु विचि संघै पलते ॥ घति गलावां चालिआ तिनि दूति अमल ते ॥ काई आस न पुंनीआ नित पर मलु हिरते ॥ कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते ॥ सभे धिरां निखुटीअसु हिरि लईअसु धर ते ॥ विझण कलह न देवदा तां लइआ करते ॥ जो जो करते अहंमेउ झड़ि धरती पड़ते ॥ ३२ ॥

पउड़ी॥ इन्सान जैसा कर्म करता है, उसका वैसा ही फल प्राप्त करता है। यदि कोई इन्सान गर्म एवं कड़ा लोहा चबाए तो वह गले में चुभ जाता है। उसके खोटे कर्मों के कारण यमदूत उसके गले में रस्सा डालकर आगे धकेल देता है। उसकी कोई भी आशा पूरी नहीं होती, वह हमेशा पराई मैल चोरी करता है। कृतघ्न इन्सान भगवान के किए हुए उपकार का आभार व्यक्त नहीं करता, इसलिए योनियों में भटकता रहता है। जब उसके समस्त सहारे समाप्त हो जाते हैं तो फल भोगने हेतु ईश्वर उसे दुनिया से उठा लेता है। वह लड़ाई की अग्नि को बुझने नहीं देता था, इसलिए परमात्मा ने उसे समेट लिया है। जो जो लोग अभिमान करते हैं, वे ढह कर धरती पर ही गिरते हैं॥ ३२॥

सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ ॥ हरि गुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥ पवितु पावनु परम बीचारी ॥ जि ओसु मिलै तिसु पारि उतारी ॥ अंतरि हरि नामु बासना समाणी ॥ हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ॥ जि पुरखु सुणै सु होइ निहालु ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु धनु मालु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरमुख में ही ज्ञान तथा विवेक बुद्धि होती है। वह भगवान की महिमा-स्तुति करता है और अपने हृदय में उनकी माला पिरोता है। वह पवित्र-पावन एवं उच्च बुद्धि वाला होता है। जो व्यक्ति उसकी संगति करता है, वह उसे भी भवसागर से पार करवा देता है। उसके हृदय में प्रभु नाम (रूपी) सुगन्ध समाई होती है, वह भगवान के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है और उसकी वाणी सर्वोत्तम होती है, जो पुरुष उस वाणी को सुनता है, वह कृतार्थ हो जाता है। हे नानक! सतिगुरु को मिलकर उसने यह नाम (रूपी) धन-सम्पत्ति प्राप्त की है॥ १॥

मः ४ ॥ सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥ गुरसिखां अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखां नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥ सतिगुरू आखै सु कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखां की घाल सचा थाइ पावै ॥ विणु सतिगुर के हुकमै जि गुरसिखां पासहु कंमु कराइआ लोड़े तिसु गुरसिखु फिरि नेड़ि न आवै ॥ गुर सतिगुर अगै को जीउ लाइ घालै तिसु अगै गुरसिखु कार कमावै ॥ जि ठगी आवै ठगी उठि जाइ तिसु नेड़ै गुरसिखु मूलि न आवै ॥ ब्रहमु बीचारु नानकु आखि सुणावै ॥ जि विणु सतिगुर के मनु मंने कंमु कराए सो जंतु महा दुखु पावै ॥ २ ॥

महला ४॥ सतिगुरु के हृदय का भेद इन्सान की समझ में नहीं आ सकता कि सतिगुरु को क्या भला लगता है। परन्तु सतिगुरु गुरसिक्खों के हृदय में मौजूद है। जो मनुष्य उनकी (सेवा की) कामना करता है, वह गुरु की प्रसन्नता के दायरे में आ जाता है। (क्योंकि) सतिगुरु जो आज्ञा देता है, वही काम गुरसिक्ख करते हैं। सत्य के घर में गुरु के सिक्खों की सेवा स्वीकार हो जाती है। जो मनुष्य सतिगुरु की आज्ञा के विरुद्ध गुरसिक्खों के पास से काम कराना चाहे, गुरु का सिक्ख फिर उसके निकट नहीं जाता, (परन्तु) जो मनुष्य सतिगुरु के दरबार में एकाग्रचित होकर सेवा करता है, गुरसिक्ख उसकी सेवा करता है। जो मनुष्य छल-कपट करने हेतु आता है और छल-कपट के ख्याल में चला जाता है, उसके निकट गुरु का सिक्ख कभी नहीं आता। नानक यही ब्रह्म विचार कह कर सुनाता है कि जो व्यक्ति सतिगुरु के मन को प्रसन्न किए बिना कार्य कराता है, वह व्यक्ति बहुत दुख भोगता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तूं सचा साहिबु अति वडा तुहि जेवडु तूं वड वडे ॥ जिसु तूं मेलहि सो तुधु मिलै तूं आपे बखसि लैहि लेखा छडे ॥ जिस नो तूं आपि मिलाइदा सो सतिगुरु सेवे मनु गड गडे ॥ तूं सचा साहिबु सचु तू सभु जीउ पिंडु चंमु तेरा हडे ॥ जिउ भावै तिउ रखु तूं सचिआ नानक मनि आस तेरी वड वडे ॥ ३३ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पउड़ी॥ हे परमात्मा! तू ही सच्चा मालिक है जो सबसे महान है तथा तुझ जैसा तू स्वयं ही महान है, अन्य कोई नहीं। जिसे तू अपने साथ मिलाता है, वही तुझसे मिलता है। तू स्वयं ही उसका लेखा छोड़कर उसे क्षमा कर देता है। जिसे तू आप मिलाता है, वही मन लगाकर सतिगुरु की सेवा करता है। हे प्रभु! तू सत्य है, तू सच्चा मालिक है, जीवों का सब कुछ–प्राण, शरीर, त्वचा, अस्थि–तेरा ही दिया हुआ है। हे सत्यस्वरूप परमात्मा! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही हमें रख लो, नानक के मन में तेरी ही आशा है॥ ३३॥ १॥ शुद्ध॥

गउड़ी की वार महला ५ राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक मः ५ ॥ हरि हरि नामु जो जनु जपै सो आइआ परवाणु ॥ तिसु जन कै बलिहारणै जिनि भजिआ प्रभु निरबाणु ॥ जनम मरन दुखु कटिआ हरि भेटिआ पुरखु सुजाणु ॥ संतसंगि सागरु तरे जन नानक सचा ताणु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जो व्यक्ति भगवान के नाम का सिमरन करता है, उसका दुनिया में जन्म लेना सफल है। जिस व्यक्ति ने निर्लेप प्रभु का भजन किया है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। उसे सर्वज्ञ हरि मिल गया है, उसका जन्म–मरण का दुःख–क्लेश मिट गया है। हे नानक! उसे एक सत्यस्वरूप परमात्मा का ही सहारा है, उसने सत्संग में रहकर भवसागर पार कर लिया है॥ १॥

मः ५ ॥ भलके उठि पराहुणा मेरै घरि आवउ ॥ पाउ पखाला तिस के मनि तनि नित भावउ ॥ नामु सुणे नामु संग्रहै नामे लिव लावउ ॥ ग्रिहु धनु सभु पवित्रु होइ हरि के गुण गावउ ॥ हरि नाम वापारी नानका वडभागी पावउ ॥ २ ॥

महला ५॥ यदि प्रातः काल उठकर कोई महापुरुष अतिथि मेरे घर आए, मैं उस महापुरुष के चरण धोऊं और मेरे मन एवं तन को वह सदा प्यारा लगे। वह महापुरुष नित्य नाम सुने, नाम–धन संचित करे और नाम में ही सुरति लगाकर रखे। उसके आगमन से मेरा सारा घर पवित्र हो जाए, मैं भी भगवान का गुणानुवाद करता रहूँ। हे नानक! ऐसा प्रभु के नाम का व्यापारी भाग्य से ही मिल सकता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जो तुधु भावै सो भला सचु तेरा भाणा ॥ तू सभ महि एकु वरतदा सभ माहि समाणा ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ जीअ अंदरि जाणा ॥ साधसंगि मिलि पाईऐ मनि सचे भाणा ॥ नानक प्रभ सरणागती सद सद कुरबाणा ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे परमात्मा! जो कुछ तुझे भला लगता है, तेरा वही हुक्म भला है। तुम सब जीव–जन्तुओं में मौजूद हो, सब में समाए हुए हो। हे प्रभु! तुम सर्वव्यापक हो और समस्त प्राणियों में तुम ही जाने जाते हो। परमात्मा की इच्छा को स्वीकार करने से वह सत्य प्रभु सत्संग में रहकर ही प्राप्त होता है। नानक तो उस ईश्वर की शरण में है और उस पर सदैव ही न्यौछावर है॥ १॥

सलोक मः ५ ॥ चेता ई तां चेति साहिबु सचा सो धणी ॥ नानक सतिगुरु सेवि चड़ि बोहिथि भउजलु पारि पउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ यदि तुझे स्मरण है तो उस सच्चे साहिब को याद कर, जो सबका मालिक है। हे नानक ! सतिगुरु की सेवा रूपी जहाज पर सवार होकर भयानक संसार–सागर से पार हो जा॥ १॥

मः ५ ॥ वाऊ संदे कपड़े पहिरहि गरबि गवार ॥ नानक नालि न चलनी जलि बलि होए छारु ॥ २ ॥

महला ५॥ मूर्ख इन्सान सुन्दर सूक्ष्म वस्त्र बड़े अभिमान से पहनते हैं, परन्तु हे नानक ! मरणोपरांत ये वस्त्र प्राणी के साथ नहीं जाते, यहीं जलकर राख हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सेई उबरे जगै विचि जो सचै रखे ॥ मुहि डिठै तिन कै जीवीऐ हरि अंम्रितु चखे ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु संगि साधा भखे ॥ करि किरपा प्रभि आपणी हरि आपि परखे ॥ नानक चलत न जापनी को सकै न लखे ॥ २ ॥

पउड़ी॥ केवल वही इन्सान इस दुनिया में बचे हैं, जिनकी सच्चे परमेश्वर ने रक्षा की है। ऐसे लोगों के दर्शन करके हरि–नाम रूपी अमृत चखा जा सकता है। संतों की संगति करने से काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं। प्रभु स्वयं उनकी जांच–पड़ताल करता है, जिन पर वह अपनी कृपा–दृष्टि करता है। हे नानक ! भगवान के कौतुक समझे नहीं जा सकते, कोई प्राणी समझ नहीं सकता॥ २॥

सलोक मः ५ ॥ नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चिति ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रहमु फिटु भलेरी रुति ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक ! वही दिन शुभ एवं सुन्दर है, जिस दिन ईश्वर मन में याद आता है। जिस दिन भगवान भूल जाता है, वह ऋतु अशुभ एवं धिक्कार योग्य है॥ १॥

मः ५ ॥ नानक मित्राई तिसु सिउ सभ किछु जिस कै हाथि ॥ कुमित्रा सेई कांढीअहि इक विख न चलहि साथि ॥ २॥

महला ५॥ हे नानक ! उस (ईश्वर) के साथ मित्रता कर, जिसके वश में सब कुछ है। जो एक कदम भी मनुष्य के साथ नहीं चलते, वे कुमित्र कहलाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ अंम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥ करि सेवा पारब्रहम गुर भुख रहै न काई ॥ सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥ तुधु जेवडु तूहै पारब्रहम नानक सरणाई ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे भाई ! ईश्वर का नाम अमृत (रूपी) खजाना है, उस अमृत को सत्संग में मिलकर पियो। जिसका सिमरन करने से सुख प्राप्त होता है और सारी तृष्णा मिट जाती है। गुरु पारब्रह्म की सेवा करने से कोई भूख नहीं रहेगी। (नाम–सिमरन करने से) सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं और अमरपद प्राप्त हो जाता है। हे पारब्रह्म ! तुझ जैसा तू ही है और नानक तेरी शरण में है॥ ३॥

सलोक मः ५ ॥ डिठड़ो हभ ठाइ ऊण न काई जाइ ॥ नानक लधा तिन सुआउ जिना सतिगुरु भेटिआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ मैंने हर जगह पर (भगवान को) देखा है, कोई भी स्थान उससे खाली नहीं है। हे नानक! जिन्हें सतिगुरु मिल गया है, उन्हें जीवन का आनंद मिल गया है॥ १॥

मः ५ ॥ दामनी चमतकार तिउ वरतारा जग खे ॥ वथु सुहावी साइ नानक नाउ जपंदो तिसु धणी ॥ २ ॥

महला ५॥ दुनिया का व्यवहार वैसा है, जैसे दामिनी की चमक है। हे नानक! केवल वही वस्तु सुन्दर है, जो उस मालिक–प्रभु का नाम जपना है॥ २॥

पउड़ी ॥ सिम्रिति सासत्र सोधि सभि किनै कीम न जाणी ॥ जो जनु भेटै साधसंगि सो हरि रंगु माणी ॥ सचु नामु करता पुरखु एह रतना खाणी ॥ मसतकि होवै लिखिआ हरि सिमरि पराणी ॥ तोसा दिचै सचु नामु नानक मिहमाणी ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ मनुष्यों ने स्मृतियाँ, शास्त्र भली प्रकार देखे हैं परन्तु किसी ने भी ईश्वर का मूल्यांकन नहीं जाना। जो पुरुष संतों की संगति के साथ मिलता है, वह प्रभु की प्रीति का आनंद भोगता है। सृष्टि के रचयिता ईश्वर का सत्य नाम, रत्नों की खान है। जिसके मस्तक पर (शुभ कर्मों से) भाग्य हों, वही मनुष्य भगवान का चिन्तन करता है। हे स्वामी! नानक का आतिथ्य–सत्कार यही है कि अपना सत्य नाम परलोक के लिए खर्च के रूप में दे॥ ४॥

सलोक मः ५ ॥ अंतरि चिंता नैणी सुखी मूलि न उतरै भुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथो दुखु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिस पुरुष के मन में चिन्ता है, लेकिन नयनों से देखने से सुखी प्रतीत होता है, उसकी माया की भूख बिल्कुल नहीं मिटती। हे नानक! सत्य नाम के अतिरिक्त किसी का भी दुःख दूर नहीं होता॥ १॥

मः ५ ॥ मुठड़े सेई साथ जिनी सचु न लदिआ ॥ नानक से साबासि जिनी गुर मिलि इकु पछाणिआ ॥ २ ॥

महला ५॥ उन (जीव–) व्यापारियों के समूह के समूह लुट गए (मानो) जिन्होंने ईश्वर का नाम–रूपी सौदा नहीं लादा। (परन्तु) हे नानक! जिन्होंने गुरु को मिलकर ईश्वर को पहचान लिया है, उनको शुभकामनाएँ मिलती हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुहंदा ॥ ओइ सेवनि सम्रिथु आपणा बिनसै सभु मंदा ॥ पतित उधारण पारब्रहम संत बेदु कहंदा ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु है जुगि जुगि वरतंदा ॥ नानकु जाचै एकु नामु मनि तनि भावंदा ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ जहाँ साधुजन विराजमान होते हैं, वह स्थान अति सुन्दर है। चूंकि ऐसे व्यक्ति अपने समर्थ प्रभु को स्मरण करते हैं, जिससे उनके मन से तमाम पाप (विकार) मिट जाते हैं। हे पारब्रह्म! तुम पतित प्राणियों का उद्धार करने वाले हो– यह बात संतजन और वेद भी कहते हैं। तेरा विरद् भक्तवत्सल है, जो युगों–युगांतरों में इस्तेमाल होता है। नानक एक तेरा ही नाम माँगता है, जो उसके मन एवं शरीर को भला लगता है॥ ५॥

सलोक मः ५ ॥ चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥ अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जब पौ फूटती है अर्थात् थोड़ा-सा उजाला होता है तो चिड़ियाँ चहकती हैं और उस समय भक्तों के हृदय में स्मरण की लहरें उठती हैं। हे नानक! जिन संतजनों का ईश्वर के नाम में प्रेम होता है, उन्होंने पौ फूटने के समय कौतुकमय रूप रचे होते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ घर मंदर खुसीआ तही जह तू आवहि चिति ॥ दुनीआ कीआ वडिआईआ नानक सभि कुमित ॥ २ ॥

महला ५॥ हे ईश्वर! उन घरों, मन्दिरों में ही हर्षोल्लास होता है, जहाँ तू याद आता है। हे नानक! यदि ईश्वर भूल जाए तो दुनिया का तमाम ऐश्वर्य-वैभव खोटे मित्र समान है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि धनु सची रासि है किनै विरलै जाता ॥ तिसै परापति भाइरहु जिसु देइ बिधाता ॥ मन तन भीतरि मउलिआ हरि रंगि जनु राता ॥ साधसंगि गुण गाइआ सभि दोखह खाता ॥ नानक सोई जीविआ जिनि इकु पछाता ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे भाइयो! ईश्वर का नाम रूपी धन ही सच्ची पूँजी है। लेकिन किसी विरले पुरुष ने ही यह बात समझी है, केवल यह पूंजी उसे ही प्राप्त होती है, जिसे विधाता स्वयं प्रदान करता है। ईश्वर का सेवक (जिसे नाम-राशि मिलती है) ईश्वर के रंग में मग्न हो जाता है, वह अपने तन-मन में कृतार्थ हो जाता है। सत्संग में वह भगवान की प्रशंसा करता है और इस प्रकार तमाम दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। हे नानक! केवल वही मनुष्य जीता है, जिसने एक ईश्वर को पहचान लिया है॥ ६॥

सलोक मः ५ ॥ खखड़ीआ सुहावीआ लगड़ीआ अक कंठि ॥ बिरह विछोड़ा धणी सिउ नानक सहसै गंठि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ आक के फूल तब तक सुन्दर हैं जब तक आक के साथ लगे हुए हैं, (परन्तु) हे नानक! अपने मालिक से प्रीति टूटने पर उनके हजारों टुकड़े हो जाते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ॥ वेमुख होए राम ते जिउ तसकर उपरि सूलि ॥ २ ॥

महला ५॥ ईश्वर को भुलाने वाले प्राणी प्राण त्याग गए हैं, परन्तु वे अच्छी प्रकार मर भी नहीं सके। जो राम से विमुख हुए हैं, वे इस प्रकार हैं जैसे सूली पर चढ़ाए गए चोर हों॥ २॥

पउड़ी ॥ सुख निधानु प्रभु एकु है अबिनासी सुणिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ घटि घटि हरि भणिआ ॥ ऊच नीच सभ इक समानि कीट हसती बणिआ ॥ मीत सखा सुत बंधिपो सभि तिस दे जणिआ ॥ तुसि नानकु देवै जिसु नामु तिनि हरि रंगु मणिआ ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ एक ईश्वर ही सर्व सुखों का भण्डार है जो अविनाशी सुना जाता है। ईश्वर सागर, पृथ्वी, गगन हर जगह पर सर्वव्यापक है, वह तो कण-कण में मौजूद कहा जाता है, वह ऊँचे-नीचे तमाम जीवों में एक समान विद्यमान है। कीड़े से लेकर हाथी तक सभी उस ईश्वर से ही बने हैं। मित्र, साथी, पुत्र, रिश्तेदार सभी उस ईश्वर के ही पैदा किए हुए हैं। हे नानक! जिसे ईश्वर अपनी प्रसन्नता द्वारा अपना 'नाम' प्रदान करता है, वह उसकी प्रीति का आनंद प्राप्त करता है॥ ७॥

सलोक मः ५ ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामां मनि मंतु ॥ धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक! जिन लोगों को श्वास लेते एवं खाते समय कभी भी ईश्वर नहीं भूलता, जिनके हृदय में हरि नाम-रूपी मन्त्र है, ऐसे व्यक्ति ही भाग्यवान हैं और वही पूर्ण संत हैं॥ १॥

मः ५ ॥ अठे पहर भउदा फिरै खावण संदड़े सूलि ॥ दोजकि पउदा किउ रहै जा चिति न होइ रसूलि ॥ २ ॥

महला ५॥ जो व्यक्ति खाने के दुःख में दिन-रात भटकता फिरता है, ऐसा व्यक्ति नरक में पड़ने से किस तरह बच सकता है, यदि वह अपने हृदय में गुरु-पैगम्बर के माध्यम से ईश्वर को ही स्मरण नहीं करता॥ २॥

पउड़ी ॥ तिसै सरेवहु प्राणीहो जिस दै नाउ पलै ॥ ऐथै रहहु सुहेलिआ अगै नालि चलै ॥ घरु बंधहु सच धरम का गडि थंमु अहलै ॥ ओट लैहु नाराइणै दीन दुनीआ झलै ॥ नानक पकड़े चरण हरि तिसु दरगह मलै ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ हे प्राणियों! उस गुरु की सेवा करो जिसके पास ईश्वर का नाम है। इस तरह तुम इहलोक में सुखपूर्वक रहोगे तथा परलोक में भी नाम तुम्हारे साथ जाएगा। सत्य धर्म का अटल स्तम्भ स्थापित करके भक्ति का घर बनाओ, उस नारायण की ओट लो जो दीन एवं दुनिया को सहारा देता है। हे नानक! जिस प्राणी ने ईश्वर के चरण पकड़े हैं, वह उसके दरबार को हमेशा के लिए प्राप्त कर लेता है॥ ८॥

सलोक मः ५ ॥ जाचकु मंगै दानु देहि पिआरिआ ॥ देवणहारु दातारु मै नित चितारिआ ॥ निखुटि न जाई मूलि अतुल भंडारिआ ॥ नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे मेरे प्रियतम! मैं भिखारी दान माँगता हूँ, मुझे भीख दे। देन देने वाले दाता मैं तुझे हमेशा याद करता हूँ। (हे प्रभु!) तेरा खजाना अपरंपार व अतुलनीय है जो कभी समाप्त नहीं होता। हे नानक! शब्द अपार है, इस शब्द ने मेरा प्रत्येक कार्य संवार दिया है॥ १॥

मः ५ ॥ सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥ २ ॥

महला ५॥ हे प्रिय सज्जनों! शब्द की साधना करो चूंकि यह जीवन एवं मृत्यु दोनों का सहारा है। हे नानक! एक ईश्वर को याद करने से मुख उज्ज्वल हो जाते हैं और सदैव सुख उपलब्ध होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ ओथै अंम्रितु वंडीऐ सुखीआ हरि करणे ॥ जम कै पंथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥ जिस नो आइआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥ बाणी उचरहि साध जन अमिउ चलहि झरणे ॥ पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अंदरि धरणे ॥ ९ ॥

पउड़ी॥ वहाँ सत्संग में समस्त जीवों को सुखी करने वाला अमृत बाँटा जाता है। वे यम के मार्ग पर नहीं डाले जाते, उन्हें पुनः मृत्यु का भय स्पर्श नहीं करता। जिस पुरुष को हरि-नाम के प्रेम का स्वाद आता है, वह इस स्वाद को अपने भीतर टिकाता है। साधुजन वाणी उच्चरित करते हैं, वहाँ अमृत

के मानों झरने चल पड़ते हैं। नानक भी उन महापुरुषों के दर्शन करके जी रहा है, जिन्होंने हृदय में नाम को धारण किया हुआ है॥ ६॥

सलोक मः ५ ॥ सतिगुरि पूरै सेविऐ दूखा का होइ नासु ॥ नानक नामि अराधिऐ कारजु आवै रासि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ पूर्ण सतिगुरु की सेवा करने से दुखों का नाश हो जाता है। हे नानक! ईश्वर के नाम की आराधना करने से सभी कार्य सफल हो जाते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ जिसु सिमरत संकट छुटहि अनद मंगल बिस्राम ॥ नानक जपीऐ सदा हरि निमख न बिसरउ नामु ॥ २ ॥

महला ५॥ जिस भगवान का सिमरन करने से संकट दूर हो जाते हैं और मनुष्य आनंद–मंगल में रहता है। हे नानक! उस भगवान के नाम का हमेशा ही जाप करना चाहिए और एक पल भर के लिए उसके नाम को भूलना नहीं चाहिए॥ २॥

पउड़ी ॥ तिन की सोभा किआ गणी जिनी हरि हरि लधा ॥ साधा सरणी जो पवै सो छुटै बधा ॥ गुण गावै अबिनासीऐ जोनि गरभि न दधा ॥ गुरु भेटिआ पारब्रहमु हरि पड़ि बुझि समधा ॥ नानक पाइआ सो धणी हरि अगम अगधा ॥ १० ॥

पउड़ी॥ जिन महापुरुषों को भगवान मिल गया है, उनकी शोभा का बखान नहीं किया जा सकता। जो व्यक्ति संतों की शरण में आता है, वह माया के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। जो व्यक्ति अनश्वर परमात्मा के गुण गाता है, वह गर्भ–योनियों में नहीं पड़ता। जो पुरुष गुरु से मिलता है, वह ईश्वर के गुणों बारे पढ़ एवं समझकर समाधि स्थिर हो जाता है। हे नानक! उसने अगम्य एवं अथाह हरि–प्रभु को प्राप्त कर लिया है॥ १०॥

सलोक मः ५ ॥ कामु न करही आपणा फिरहि अवता लोइ ॥ नानक नाइ विसारिऐ सुखु किनेहा होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ इन्सान अपने जीवन का यथार्थ कार्य (भगवान का भजन) नहीं करता और दुनिया में स्वेच्छाचारी बनकर घूमता रहता है। हे नानक! भगवान के नाम को भुलाने से (उसे) कैसे सुख उपलब्ध हो सकता है?॥ १॥

मः ५ ॥ बिखै कउड़तणि सगल माहि जगति रही लपटाइ ॥ नानक जनि वीचारिआ मीठा हरि का नाउ ॥ २ ॥

महला ५॥ विष की कड़वाहट तमाम प्राणियों में है, जो संसार में सबको लिपटी हुई है। हे नानक! सेवक ने यही विचार किया है कि ईश्वर का नाम ही मीठा है॥ २॥

पउड़ी ॥ इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥ जमकंकरु नेड़ि न आवई फिरि बहुड़ि न मरीऐ ॥ भव सागरु संसारु बिखु सो पारि उतरीऐ ॥ हरि गुण गुंफहु मनि माल हरि सभ मलु परहरीऐ ॥ नानक प्रीतम मिलि रहे पारब्रहम नरहरीऐ ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ संत की निशानी यही है कि उसको मिलने से मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है। यमदूत उसके निकट नहीं आता और बार–बार मरना नहीं पड़ता है। वह उस विषैले एवं भयानक

भवसागर से पार हो जाता है। हे मानव! हृदय में ईश्वर के गुणों की माला गूंथो, इससे हृदय की तमाम मैल दूर हो जाती है। हे नानक! (जिन मनुष्यों ने यह माला गूंथी है) वे पारब्रह्म प्रभु में विलीन हुए रहते हैं॥ ११॥

सलोक मः ५ ॥ नानक आए से परवाणु है जिन हरि वुठा चिति ॥ गाल्ही अल पलालीआ कंमि न आवहि मित ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक! उन लोगों का इस दुनिया में जन्म लेना सफल है, जिनके मन में भगवान आकर बस गया है। हे मित्र! व्यर्थ बातें किसी काम नहीं आतीं॥ १॥

मः ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु द्रिसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद ॥ नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुर परसादि ॥ २ ॥

महला ५॥ मुझे सर्वव्यापक, अगम्य एवं अद्भुत पारब्रह्म-प्रभु नजर आया है। हे नानक! पूर्ण गुरु की कृपा से उसने राम के नाम को अपना धन बनाया है॥ २॥

पउड़ी ॥ धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते ॥ करतब करनि भलेरिआ मदि माइआ सुते ॥ फिरि फिरि जूनि भवाईअनि जम मारगि मुते ॥ कीता पाइनि आपणा दुख सेती जुते ॥ नानक नाइ विसारिऐ सभ मंदी रुते ॥ १२ ॥

पउडी॥ जगत् के मालिक प्रभु के साथ किसी प्रकार का धोखा सफल नहीं हो सकता। लोभ एवं मोह द्वारा प्राणी नष्ट हो जाता है। माया के नशे में सोए हुए मनुष्य नीच कर्म करते हैं और वह बार-बार योनियों में धकेले जाते हैं तथा यमराज के मार्ग में छोड़ दिए जाते हैं। दुःखों से बंधे हुए वह अपने कर्मों का फल पाते हैं। हे नानक! यदि भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया जाए तो सभी ऋतु व्यर्थ ही हैं॥ १२॥

सलोक मः ५ ॥ उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुखु सोइ ॥ नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक! भगवान के नाम की सराहना करने से मन एवं तन शीतल हो जाते हैं और यह सुख उठते-बैठते, सोते समय हमेशा बना रहता है॥ १॥

मः ५ ॥ लालचि अटिआ नित फिरै सुआरथु करे न कोइ ॥ जिसु गुरु भेटै नानका तिसु मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥

महला ५॥ प्राणी हमेशा लोभ में फँसा हुआ भटकता रहता है और कोई भी शुभ कर्म नहीं करता। हे नानक! जिस इन्सान को गुरु मिल जाता है, उसके हृदय में ईश्वर निवास कर जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा ॥ सादु आइआ तिन हरि जनां चखि साधी डिठा ॥ पारब्रहमि जिसु लिखिआ मनि तिसै वुठा ॥ इकु निरंजनु रवि रहिआ भाउ दुया कुठा ॥ हरि नानकु मंगै जोड़ि कर प्रभु देवै तुठा ॥ १३ ॥

पउडी॥ संसार की समस्त वस्तुएँ कड़वी हो जाती हैं, लेकिन एक ईश्वर का नाम ही सदा मीठा रहता है। (परन्तु) यह स्वाद भगवान के उन भक्तों को आता है, जिन्होंने यह नाम-रस चखकर देखा

है। उसी मनुष्य के मन में यह नाम (रस) बसता है, जिसके लिए पारब्रह्म ने ऐसा लिख छोड़ा है। एक निरंजन प्रभु ही हर जगह पर दिखता है। (मनुष्य का) द्वैतभाव नष्ट हो जाता है। नानक भी दोनों हाथ जोड़कर ईश्वर का नाम माँगता है, लेकिन ईश्वर जिस पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता है, उसे ही देता है॥ १३॥

सलोक मः ५ ॥ जाचड़ी सा सारु जो जाचंदी हेकड़ो ॥ गाल्ही बिआ विकार नानक धणी विहूणीआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ वही याचना सर्वोत्तम है जो एक ईश्वर (के नाम) को माँगना है। हे नानक! विश्व के मालिक परमेश्वर के नाम के सिवाय सब बातें व्यर्थ हैं॥ १॥

मः ५ ॥ नीहि जि विधा मंनु पछाणू विरलो थिओ ॥ जोड़णहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥ २ ॥

महला ५॥ जिसका मन ईश्वर के प्रेम में विंधा हो, ऐसा (प्रभु की) पहचान करने वाला कोई विरला पुरुष ही होता है। हे नानक! संत भगवान से मिलाने में समर्थ होता है और प्रभु को मिलने हेतु सन्मार्ग दिखा देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सोई सेविहु जीअड़े दाता बखसिंदु ॥ किलविख सभि बिनासु होनि सिमरत गोविंदु ॥ हरि मारगु साधू दसिआ जपीऐ गुर मंतु ॥ माइआ सुआद सभि फिकिआ हरि मनि भावंदु ॥ धिआइ नानक परमेसरै जिनि दिती जिंदु ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे मन! उस ईश्वर को याद कर, जो सबका दाता एवं क्षमाशील है। गोबिन्द का भजन करने से पापों का विनाश हो जाता है। गुरु ने ईश्वर के मिलन का मार्ग बतलाया है। गुरु का मन्त्र सदैव याद करना चाहिए। माया के तमाम रस फीके लगते हैं और केवल ईश्वर ही मन में प्रिय लगता है। हे नानक! जिस परमेश्वर ने यह प्राण दिए हैं, उसका हमेशा ही ध्यान करना चाहिए॥ १४॥

सलोक मः ५ ॥ वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइ ॥ तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ सत्यनाम रूपी बीज बोने हेतु शुभ समय आया है, जो व्यक्ति नाम रूपी बीज बोता है, वही इसका फल सेवन करता है। हे नानक! यह वस्तु उस पुरुष को ही प्राप्त होती है, जिसकी किस्मत में लिखा होता है॥ १॥

मः ५ ॥ मंगणा त सचु इकु जिसु तुसि देवै आपि ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ नानक साहिब दाति ॥ २ ॥

महला ५॥ यदि इन्सान ने माँगना है तो उसे एक सत्य-नाम ही माँगना चाहिए। यह सत्य-नाम उसे ही मिलता है, जिसे ईश्वर स्वयं अपनी खुशी से प्रदान करता है। हे नानक! यह परमेश्वर की ही देन है, जिसे खाने से मन तृप्त हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ लाहा जग महि से खटहि जिन हरि धनु रासि ॥ दुतीआ भाउ न जाणनी सचे दी आस ॥ निहचलु एकु सरेविआ होरु सभ विणासु ॥ पारब्रहमु जिसु विसरै तिसु बिरथा सासु ॥ कंठि लाइ जन रखिआ नानक बलि जासु ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ दुनिया में वही लोग लाभ प्राप्त करते हैं, जिनके पास हरि नाम-रूपी धन एवं पूँजी है। वे किसी दूसरे के साथ मोह करना नहीं जानते, उन्हें एक ईश्वर पर ही भरोसा होता है। वे सारी दुनिया

को नश्वर समझते हुए एक अटल परमेश्वर की ही भक्ति करते हैं। जिस व्यक्ति को ईश्वर भूल जाता है, उसका प्रत्येक श्वास निष्फल हो जाता है। हे नानक! जिस ईश्वर ने अपने सेवकों को स्वयं अपने गले से लगाकर बचाया है, मैं उस पर हमेशा ही न्यौछावर हूँ॥ १५॥

सलोक मः ५ ॥ पारब्रहमि फुरमाइआ मीहु वुठा सहजि सुभाइ ॥ अंनु धंनु बहुतु उपजिआ प्रिथमी रजी तिपति अघाइ ॥ सदा सदा गुण उचरै दुखु दालदु गइआ बिलाइ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ मिलिआ तिसै रजाइ ॥ परमेसरि जीवालिआ नानक तिसै धिआइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जब भगवान का हुक्म हुआ तो सहज स्वभाव ही बरसात होने लगी। इससे अधिक मात्रा में अन्न एवं धन उत्पन्न हुए और पृथ्वी भलीभांति तृप्त एवं संतुष्ट हो गई। साधु हमेशा ही प्रभु की महिमा उच्चरित करता है और उसके दुःख-दारिद्र दूर हो गए हैं। इन्सान वही कुछ हासिल करता है, जो आदि से उसकी किस्मत में लिखा होता है और यह परमेश्वर की इच्छानुसार मिलता है। हे नानक! जिसने यह अमूल्य जीवन प्रदान किया है, उस परमेश्वर को स्मरण कर॥ १॥

मः ५ ॥ जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीऐ ॥ दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीऐ ॥ डिठा सभु संसारु सुखु न नाम बिनु ॥ तनु धनु होसी छारु जाणै कोइ जनु ॥ रंग रूप रस बादि कि करहि पराणीआ ॥ जिसु भुलाए आपि तिसु कल नही जाणीआ ॥ रंगि रते निरबाणु सचा गावही ॥ नानक सरणि दुआरि जे तुधु भावही ॥ २ ॥

महला ५॥ जीवन पदवी पाने के लिए एक पवित्र प्रभु की आराधना करो। दूसरा कोई स्थान नहीं, (क्योंकि) किसी दूसरे से हमारी कैसे संतुष्टि हो सकती है? मैंने सारा संसार देख लिया है, ईश्वर के नाम के अलावा कोई सुख नहीं। यह तन एवं धन नष्ट हो जाएँगे परन्तु कोई विरला पुरुष ही इसे समझता है। हे नश्वर प्राणी! तुम क्या कर रहे हो? रंग-रूप एवं रस सब व्यर्थ हैं। (परन्तु प्राणी के भी क्या वश?) ईश्वर जिस पुरुष को स्वयं कुमार्गगामी करता है, वह उसकी शक्ति को नहीं समझता। जो मनुष्य पवित्र प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं, वे सत्यनाम का गायन करते हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु! जो भी जीव तुझे अच्छे लगते हैं, वे तेरे द्वार पर शरण हेतु आ जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जंमणु मरणु न तिन्ह कउ जो हरि लड़ि लागे ॥ जीवत से परवाणु होए हरि कीरतनि जागे ॥ साधसंगु जिन पाइआ सेई वडभागे ॥ नाइ विसरिऐ ध्रिगु जीवणा तूटे कच धागे ॥ नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति ईश्वर का सहारा लेते हैं, उनका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है। जो ईश्वर के भजन कीर्तन में सचेत रहते हैं, वे इस जीवन में सत्कृत हो जाते हैं। जिन लोगों को संतों की संगति प्राप्त होती है, वे बड़े भाग्यवान हैं। परन्तु यदि परमेश्वर का नाम भूल जाए तो यह जीवन धिक्कार योग्य है तथा यह कच्चे धागे की भाँति टूट जाता है। हे नानक! संतों की चरण-धूलि लाखों-करोड़ों प्रयागराज इत्यादि तीर्थों से अधिक पावन है॥ १६॥

सलोकु मः ५ ॥ धरणि सुवंनी खड़ रतन जड़ावी हरि प्रेम पुरखु मनि वुठा ॥ सभे काज सुहेलड़े थीए गुरु नानकु सतिगुरु तुठा ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिस हृदय में हरि-परमेश्वर के प्रेम का निवास है, वह हृदय ऐसा है जैसे ओस-मोतियों से जड़ित घास वाली धरती सुन्दर रंग वाली हो जाती है। हे नानक! जिस पुरुष पर गुरु नानक प्रसन्न हो जाता है, उसके तमाम कार्य सहज ही (सफल) हो जाते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ फिरदी फिरदी दह दिसा जल परबत बनराइ ॥ जिथै डिठा मिरतको इल बहिठी आइ ॥ २॥

महला ५॥ दसों दिशाओं में नदियों, पर्वतों एवं जंगलों पर उड़ती–उडती चील ने जहाँ शव देखा वहीं आ बैठी॥ २॥

पउड़ी ॥ जिसु सरब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमावउ ॥ नेड़ै देखउ पारब्रहमु इकु नामु धिआवउ ॥ होइ सगल की रेणुका हरि संगि समावउ ॥ दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥ पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ मैं उस सत्य के पुंज ईश्वर का चिन्तन करूँ, जिससे सर्व सुख एवं फल माँगे जाते हैं। उस पारब्रह्म को अपने साथ–साथ ही देखूँ और उसके नाम का ध्यान करता रहूँ। मैं सबकी चरण–धूलि होकर उस ईश्वर में समा जाऊँ। मैं किसी भी प्राणी को दुःख न दूँ और प्रतिष्ठा से अपने वास्तविक घर में जाऊँ। हे नानक! मैं दूसरों को भी सुनाता हूँ कि विश्व का रचयिता परमात्मा पतित जीवों को भी पवित्र करने वाला है॥ १७॥

सलोक दोहा मः ५ ॥ एकु जि साजनु मै कीआ सरब कला समरथु ॥ जीउ हमारा खंनीऐ हरि मन तन संदड़ी वथु ॥ १ ॥

श्लोक दोहा महला ५॥ मैंने उस एक ईश्वर को अपना साजन बनाया है जो सर्वकला सम्पूर्ण है। मेरी आत्मा उस पर न्यौछावर है और वह परमेश्वर ही मेरे मन एवं तन की यथार्थ दौलत है॥ १॥

मः ५ ॥ जे करु गहहि पिआरड़े तुधु न छोडा मूलि ॥ हरि छोडनि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि ॥ २ ॥

महला ५॥ हे मेरे प्रियतम! यदि तू मेरा हाथ थाम ले तो मैं तुझे कभी भी छोड़ नहीं सकूँगा। जो मनुष्य ईश्वर को त्याग देते हैं, ऐसे दुर्जन इन्सान नरक की असहनीय पीड़ा में पड़ते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सभि निधान घरि जिस दै हरि करे सु होवै ॥ जपि जपि जीवहि संत जन पापा मलु धोवै ॥ चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै ॥ गुरु पूरा जिसु भेटीऐ मरि जनमि न रोवै ॥ प्रभ दरस पिआस नानक घणी किरपा करि देवै ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ सारे खजाने उस ईश्वर के घर में हैं। परमात्मा जो कुछ करता है, वही होता है। संतजन उसका भजन–सिमरन करके जीते हैं, और वह उनके पापों की तमाम मैल स्वच्छ कर देता है। ईश्वर के चरण–कमल हृदय में बसाने से तमाम संकट दूर हो जाते हैं। जो मनुष्य पूर्ण गुरु से साक्षात्कार करता है, वह जन्म–मरण के चक्र में विलाप नहीं करता। नानक को भी प्रभु के दर्शनों की तीव्र लालसा है लेकिन अपनी कृपा–दृष्टि से ही वह दर्शनों की देन प्रदान करता है॥ १८॥

सलोक डखणा मः ५ ॥ भोरी भरमु वञाइ पिरी मुहबति हिकु तू ॥ जिथहु वंञै जाइ तिथाऊ मउजूदु सोइ ॥ १ ॥

श्लोक डखणा महला ५॥ यदि तू थोड़ा–सा भी भ्रम दूर कर दे और अपने प्रियतम (परमात्मा) के साथ मुहब्बत करे तो जहाँ कहीं भी जाओगे, वहाँ ईश्वर तुझे मौजूद दिखेगा॥ १॥

मः ५ ॥ चड़ि कै घोड़ड़ै कुंदे पकड़हि खूंडी दी खेडारी ॥ हंसा सेती चितु उलासहि कुकड़ दी ओडारी ॥ २ ॥

महला ५॥ जो व्यक्ति साधारण खेल खेलना जानते हों (लेकिन) सुन्दर घोड़े पर सवार होकर बन्दूक के हत्थे पकड़ते हों (उन्हें ऐसा समझो कि) उड़ान तो मुर्गे की उड़ना जानते हों और हंसों के साथ उड़ने के लिए मन को उत्साह देते हों॥ २॥

पउड़ी ॥ रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥ हरि जसु लिखहि लाइ भावनी से हसत पविता ॥ अठसठि तीरथ मजना सभि पुंन तिनि किता ॥ संसार सागर ते उधरे बिखिआ गड़ु जिता ॥ नानक लड़ि लाइ उधारिअनु दयु सेवि अमिता ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ हे मित्र ! जो व्यक्ति अपनी रसना से भगवान के नाम का उच्चारण करता है और कानों से सुनता है, ऐसे व्यक्ति का उद्धार हो जाता है। जो हाथ श्रद्धा से भगवान का यश लिखते हैं, वे बड़े पवित्र हैं। ऐसा पुरुष अठसठ तीर्थों के स्नान का फल पा लेता है और यह मान लिया जाता है कि उसने पुण्यकर्म कर लिए हैं। वह संसार–सागर से पार हो जाता है और माया रूपी विकारों के किले को विजय कर लेता है। हे नानक ! ऐसे अनन्त परमात्मा का चिन्तन कर, जो अपने साथ लगाकर तुझे (संसार सागर से) पार कर देगा॥ १६॥

सलोक मः ५ ॥ धंधड़े कुलाह चिति न आवै हेकड़ो ॥ नानक सेई तंन फुटंनि जिना सांई विसरै ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ दुनिया के ऐसे धन्धे नुक्सानदायक हैं, जिनके कारण एक ईश्वर चित्त में नहीं आता। हे नानक ! वे शरीर विकारों से नाश हो जाते हैं, जिन्हें जगत् का मालिक परमात्मा भूल जाता है॥ १॥

मः ५ ॥ परेतहु कीतोनु देवता तिनि करणैहारे ॥ सभे सिख उबारिअनु प्रभि काज सवारे ॥ निंदक पकड़ि पछाड़िअनु झूठे दरबारे ॥ नानक का प्रभु वडा है आपि साजि सवारे ॥ २ ॥

महला ५॥ उस सृष्टि के रचयिता प्रभु ने प्रेत से देवता बना दिया है। ईश्वर ने गुरु के समस्त सिक्खों का उद्धार कर दिया है और उनके कार्य संवार दिए हैं। झूठे निंदकों को पकड़कर ईश्वर ने धरती पर पटका कर मारा है और अपने दरबार में उनको झूठा घोषित कर दिया है। नानक का प्रभु महान है। वह स्वयं ही इन्सान को पैदा करता है और संवारता है॥ २॥

पउड़ी ॥ प्रभु बेअंतु किछु अंतु नाहि सभु तिसै करणा ॥ अगम अगोचरु साहिबो जीआं का परणा ॥ हसत देइ प्रतिपालदा भरण पोखणु करणा ॥ मिहरवानु बखसिंदु आपि जपि सचे तरणा ॥ जो तुधु भावै सो भला नानक दास सरणा ॥ २० ॥

पउड़ी॥ प्रभु अनन्त है, उसका कोई अन्त नहीं जाना जा सकता, सब कुछ वही करता है, उसने ही यह सृष्टि बनाई है। अगम्य एवं अगोचर प्रभु समस्त जीवों का आधार है। अपना हाथ देकर वह सबकी रक्षा करता है। वह सब जीवों का भरण–पोषण करता है। वह स्वयं मेहरबान एवं क्षमाशील है। उस सच्चे मालिक का जाप करने से प्राणी (भवसागर) से पार हो जाता है। नानक का कथन है, हे प्रभु ! जो कुछ तुझे उपयुक्त लगता है, केवल वही भला है, हम प्राणी तेरी शरण में हैं॥ २०॥

सलोक मः ५ ॥ तिंना भुख न का रही जिस दा प्रभु है सोइ ॥ नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिस व्यक्ति का सहारा वह परमात्मा आप है, उसे कोई भूख नहीं रहती। हे नानक! भगवान के चरणों में लगने से प्रत्येक प्राणी का उद्धार हो जाता है॥ १॥

मः ५ ॥ जाचिकु मंगै नित नामु साहिबु करे कबूलु ॥ नानक परमेसरु जजमानु तिसहि भुख न मूलि ॥ २ ॥

महला ५॥ जो पुरुष याचक बनकर प्रभु-परमेश्वर से नाम की देन माँगता है, उसकी प्रार्थना वह स्वीकार कर लेता है। हे नानक! जिस पुरुष का यजमान (स्वयं) परमात्मा है, उसे थोड़ी-सी भी भूख नहीं रहती॥ २॥

पउड़ी ॥ मनु रता गोविंद संगि सचु भोजनु जोड़े ॥ प्रीति लगी हरि नाम सिउ ए हसती घोड़े ॥ राज मिलख खुसीआ घणी धिआइ मुखु न मोड़े ॥ ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥ नानक मनि तनि चाउ एहु नित प्रभ कउ लोड़े ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु कीचे

पउड़ी॥ जिस व्यक्ति का मन गोविन्द के साथ मग्न हो जाता है, उसके लिए उसका नाम ही उत्तम भोजन एवं पहरावा बन जाता है। हरि के नाम के साथ उसका प्रेम बन जाता है, यही उसके लिए हाथी एवं घोड़े हैं। उसके लिए तो सहर्ष भगवान के नाम का ध्यान ही राज्य, सम्पत्ति एवं अनन्त प्रसन्नता होती है। ढाढी ने ईश्वर के द्वार की ही याचना करनी है, जो उसने कभी नहीं त्यागना। हे नानक! उसके मन एवं शरीर में सदैव उमंग बनी रहती है, तथा वह हमेशा ईश्वर से मिलन की ही अभिलाषा करता है॥ २१॥ १॥

रागु गउड़ी भगतां की बाणी १ओं सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

गउड़ी गुआरेरी स्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥ अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥ राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु मारण कारणि बन जाईऐ ॥ सो जलु बिनु भगवंत न पाईऐ ॥ १ ॥ जिह पावक सुरि नर है जारे ॥ राम उदकि जन जलत उबारे ॥ २ ॥ भव सागर सुख सागर माही ॥ पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥ ३ ॥ कहि कबीर भजु सारिंगपानी ॥ राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥ ४ ॥ १ ॥

अब मुझ तृष्णा में जल रहे को राम नाम रूपी अमृत (जल) मिल गया है। राम नाम रूपी अमृत (जल) ने मेरे जलते शरीर को शीतल कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ कुछ लोग अपने मन को वश में करने के लिए वनों में जाते हैं परन्तु तृष्णाग्नि को बुझाने हेतु नाम रूपी अमृत (जल) भगवान के बिना नहीं मिलता॥ १॥ जिस तृष्णा की अग्नि ने देवते एवं मनुष्य जला दिए हैं, राम नाम रूपी अमृत ने भक्तों को उस तृष्णाग्नि से बचा लिया है॥ २॥ भवसागर में ही एक सुखों का सागर है। मैं नाम रूपी अमृत पान करता जाता हूँ परन्तु अमृत समाप्त नहीं होता॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं – उस भगवान का ही भजन करो चूंकि राम नाम रूपी अमृत ने मेरी तृष्णा मिटा दी है॥ ४॥ १॥

गउड़ी कबीर जी ॥ माधउ जल की पिआस न जाइ ॥ जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥ जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥ १ ॥ तूं पिंजरु हउ

सूअटा तोर ॥ जमु मंजारु कहा करै मोर ॥ २ ॥ तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥ मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥ ३ ॥ तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥ कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥ ४ ॥ २ ॥

हे माधव ! तेरे नाम रूपी अमृत के लिए मेरी प्यास नहीं मिटती। तेरा नाम–अमृत पान करते हुए तीव्र लालसा उत्पन्न हो रही है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! तू जल की निधि है और मैं उस जल की एक मछली हूँ। मैं (मछली) जल में ही रहती हूँ और जल के बिना नाश हो जाती हूँ॥ १॥ हे भगवान ! तू मेरा पिंजरा है और मैं तेरा तोता हूँ, यम–रूपी बिडाल मेरा क्या बिगाड़ सकता है ?॥ २॥ हे प्रभु ! तू सुन्दर वृक्ष है और मैं एक पक्षी हूँ। (मुझ) भाग्यहीन को अब तक तेरे दर्शन नहीं हुए॥ ३॥ हे मेरे मालिक ! तू सतिगुरु है और मैं तेरा नया चेला हूँ। कबीर जी कहते हैं – हे प्रभु ! अब तो जीवन के अन्तिम क्षण हैं, अपने दर्शन प्रदान कीजिए॥ ४॥ २॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जब हम एको एकु करि जानिआ ॥ तब लोगह काहे दुखु मानिआ ॥ १ ॥ हम अपतह अपुनी पति खोई ॥ हमरै खोजि परहु मति कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मंदे मंदे मन माही ॥ साझ पाति काहू सिउ नाही ॥ २ ॥ पति अपति ता की नही लाज ॥ तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥ ३ ॥ कहु कबीर पति हरि परवानु ॥ सरब तिआगि भजु केवल रामु ॥ ४ ॥ ३ ॥

जब मैंने यह जान लिया है कि एक ईश्वर ही सर्वव्यापक है तो लोगों को इस बात का क्यों दुख अनुभव होता है॥ १॥ मैं अपमानित हूँ और मैंने अपनी इज्जत गंवा दी है। इसलिए मेरे पीछे कोई न लगे॥ १॥ रहाउ॥ यदि मैं बुरा हूँ तो चित्त में ही बुरा हूँ। मैंने किसी के साथ भी साझ (मेल मिलाप) नहीं रखी॥ २॥ मान एवं अपमान की मुझे कोई शर्म नहीं परन्तु आपको तब पता लगेगा, जब आपका पर्दाफाश होगा॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं – मान–प्रतिष्ठा उसी की है, जिसे ईश्वर स्वीकृत करता है। इसलिए सब कुछ त्यागकर केवल राम का भजन करो॥ ४॥ ३॥

गउड़ी कबीर जी ॥ नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥ बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥ १ ॥ किआ नागे किआ बाधे चाम ॥ जब नही चीनसि आतम राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥ मुकती भेड न गईआ काई ॥ २ ॥ बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥ खुसरै किउ न परम गति पाई ॥ ३ ॥ कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥ राम नाम बिनु किनि गति पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥

यदि नग्न घूमने से ईश्वर से मिलन हो सकता है तो वन के सभी मृग मुक्त हो जाने चाहिएँ॥ १॥ (हे जीव !) जब तक तुम राम को याद नहीं करते, तब तक तेरा नग्न रहने से क्या बनेगा तथा शरीर पर (मृग की) खाल लपेटने से क्या मिलना है ?॥ १॥ रहाउ॥ यदि सिर मुंडाने से सिद्धि मिल सकती है तो कोई भी भेड़ अब तक मुक्त क्यों नहीं हुई?॥ २॥ हे भाई ! यदि ब्रह्मचारी बनने से भवसागर से पार हुआ जा सकता है तो हिजड़े को क्यों परमगति नहीं मिली ?॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं– हे मेरे मानव भाईयो ! ध्यानपूर्वक सुनो, राम नाम के बिना किसी को मुक्ति नहीं मिली है॥ ४॥ ४॥

गउड़ी कबीर जी ॥ संधिआ प्रात इस्नानु कराही ॥ जिउ भए दादुर पानी माही ॥ १ ॥ जउ पै राम राम रति नाही ॥ ते सभि धरम राइ कै जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ रति बहु रूप रचाही ॥ तिन कउ दइआ सुपनै भी नाही ॥ २ ॥ चारि चरन कहहि बहु आगर ॥ साधू सुखु पावहि कलि सागर ॥ ३ ॥ कहु कबीर बहु काइ करीजै ॥ सरबसु छोडि महा रसु पीजै ॥ ४ ॥ ५ ॥

जो व्यक्ति प्रातः काल एवं सायंकाल के समय स्नान ही करते हैं तथा सोचते हैं कि हम पावन हो गए हैं, वे ऐसे हैं जैसे जल में मेंढक रहते हैं॥ १॥ यदि उनके मन में राम के नाम का प्रेम नहीं

है तो वह सभी अपने कर्मों का हिसाब देने हेतु धर्मराज के वश में पड़ते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति अपनी काया से प्रेम करते हैं और अनेक रूप धारण करते हैं, वे कभी स्वप्न में भी दया अनुभव नहीं करते॥ २॥ अनेकों बुद्धिमान लोग एवं चार चरण (सत्य, तप, दया एवं दान) भी यहीं कहते हैं कि संतजन ही वास्तव में संसार-सागर में सुख पाते हैं। हे कबीर! हम इतने संस्कार क्यों करें? शेष सब कुछ छोड़कर केवल नाम के महारस का पान कीजिए॥ ४॥ ५॥

कबीर जी गउड़ी ॥ किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥ जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥ १ ॥ रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥ चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥ परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥ २ ॥ करम करत बधे अहंमेव ॥ मिलि पाथर की करही सेव ॥ ३ ॥ कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥ भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के सिवाय किसी दूसरे का प्रेम है, उसके लिए जप, तपस्या, व्रत एवं पूजा करने का कोई अभिप्राय नहीं॥ १॥ हे भाई! मन को भगवान के साथ लगाना चाहिए। किसी चतुराई से चतुर्भुज प्रभु प्राप्त नहीं होता॥ रहाउ॥ (हे भाई!) लोभ एवं लोकाचार, काम, क्रोध एवं अहंकार को त्याग दो॥ २॥ कर्मकाण्ड करने से मनुष्य अहंकार में फँस जाता है। ऐसे मनुष्य मिलकर पत्थर की ही पूजा करते हैं॥ ३॥ हे कबीर! भक्ति करने से ही भगवान मिल सकता है। भोलेपन से ही रघुराम मिलता है॥ ४॥ ६॥

गउड़ी कबीर जी ॥ गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥ ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥ १ ॥ कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥ बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥ तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥ २ ॥ तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥ हम कत लोहू तुम कत दूध ॥ ३ ॥ कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥ सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥ ४ ॥ ७ ॥

प्रभु के अंश से ही समस्त जीव-जन्तु उत्पन्न हुए हैं। माँ के गर्भ में प्राणी को यह पता नहीं होता कि मैं किस कुल एवं जाति का हूँ॥ १॥ हे पण्डित! कहो, तुम ब्राह्मण कब से बन चुके हो? अपने आपको ब्राह्मण कह-कहकर अपना अनमोल जीवन बर्बाद मत कर॥ १॥ रहाउ॥ यदि (हे पण्डित!) तुम सचमुच ब्राह्मण हो और तुमने ब्राह्मणी माता के गर्भ से जन्म लिया है तो किसी दूसरे मार्ग द्वारा क्यों नहीं उत्पन्न हुए?॥ २॥ (हे पण्डित!) तुम ब्राह्मण कैसे हो? और हम किस तरह शूद्र हैं? हमारे शरीर में कैसे रक्त ही है? तुम्हारे शरीर में किस प्रकार (रक्त के स्थान पर) दूध है?॥ ३॥ हे कबीर! हम केवल उसी को ब्राह्मण कहते हैं जो ब्रह्म का चिंतन करता है॥ ४॥ ७॥

गउड़ी कबीर जी ॥ अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥ राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥ १ ॥ जउ पै रसना रामु न कहिबो ॥ उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥ प्रान गए कहु का की माइआ ॥ २ ॥ जस जंती महि जीउ समाना ॥ मूए मरमु को का कर जाना ॥ ३ ॥ हंसा सरवरु कालु सरीर ॥ राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥ ४ ॥ ८ ॥

भगवान को विस्मृत करके अज्ञानता रूपी अंधेरे में कभी सुखपूर्वक नहीं सोया जा सकता। राजा हो अथवा रंक हो, दोनों ही दुखी होकर रोते हैं॥ १॥ (हे जिज्ञासु!) जब तक मनुष्य की जिह्वा राम नाम को उच्चरित नहीं करती, तब तक वे जन्मते-मरते तथा रोते रहेंगे॥ १॥ रहाउ॥ जैसे पेड़ की छाया देखी जाती है, (वैसे ही इस माया का हाल है) जब मनुष्य के प्राण निकल जाते हैं तो कहो,

यह माया किसकी होगी ?॥ २॥ जैसे राग की ध्वनि वाद्ययन्त्र के बीच में समा जाती है, वैसे ही प्राण हैं। इसलिए मृतक इन्सान का रहस्य कोई प्राणी कैसे जान सकता है ?॥ ३॥ जैसे राज हंस सरोवर के आसपास घूमता है, वैसे ही मृत्यु मनुष्य के शरीर पर मंडराती है। इसलिए हे कबीर ! समस्त रसों में उत्तम राम रसायन का पान करो॥ ४॥ ८॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जोति की जाति जाति की जोती ॥ तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥ १ ॥ कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥ भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥ चार अचार रहे उरझाइ ॥ २ ॥ पाप पुंन दुइ एक समान ॥ निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥ ३ ॥ कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥ इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥ ४ ॥ ६ ॥

भगवान द्वारा रचित सारी दुनिया के लोगों की बुद्धि में कांच मोतियों के फल लगे हुए हैं॥ १॥ वह कौन-सा घर है, जिसे भय से मुक्त कहा जा सकता है। जहाँ भय दूर हो जाता है और मनुष्य निडर होकर रहता है॥ १॥ रहाउ॥ किसी पवित्र नदी के तट अथवा तीर्थ पर जाकर मन संतुष्ट नहीं होता, वहाँ भी कुछ व्यक्ति पाप-पुण्य में अग्रसर हैं॥ २॥ लेकिन पाप एवं पुण्य दोनों ही एक समान हैं। (हे मन!) तेरे हृदय घर के भीतर ही (काया-पलट देने वाला) पारस प्रभु है, इसलिए किसी दूसरे से गुण प्राप्त करने का ख्याल त्याग दे॥ ३॥ हे कबीर ! मोह-माया से सर्वोपरि प्रभु के नाम को विस्मृत मत कर एवं अपने मन को (बहलाने में मत बहला और) नाम सिमरन में लगाकर नाम में मग्न रह॥ ४॥ ६॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन परमिति परमनु जाना ॥ बातन ही बैकुंठ समाना ॥ १ ॥ ना जाना बैकुंठ कहा ही ॥ जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहन कहावन नह पतीअई है ॥ तउ मनु मानै जा ते हउमै जई है ॥ २ ॥ जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥ तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥ ३ ॥ कहु कबीर इह कहीऐ काहि ॥ साधसंगति बैकुंठै आहि ॥ ४ ॥ १० ॥

जो मनुष्य बेअंदाज एवं अगम्य प्रभु को नहीं जानता, वह कोरी (व्यर्थ) बातों से ही स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है॥ १॥ मैं नहीं जानता कि स्वर्ग कहाँ है। हरेक मनुष्य कहता है कि वह वहाँ जाना एवं पहुँचना चाहता है॥ १॥ रहाउ॥ व्यर्थ बातचीत से मनुष्य के मन की संतुष्टि नहीं होती। मन को संतुष्टि तभी होती है, जब अहंकार नष्ट हो जाता है॥ २॥ जब तक मनुष्य के हृदय में स्वर्ग की लालसा है, तब तक उसका प्रभु के चरणों में निवास नहीं होता॥ ३॥ हे कबीर ! यह बात मैं किस तरह बताऊँ कि साधु-संतों की संगति ही स्वर्ग है॥ ४॥ १०॥

गउड़ी कबीर जी ॥ उपजै निपजै निपजि समाई ॥ नैनह देखत इहु जगु जाई ॥ १ ॥ लाज न मरहु कहहु घरु मेरा ॥ अंत की बार नही कछु तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन करि काइआ पाली ॥ मरती बार अगनि संगि जाली ॥ २ ॥ चोआ चंदनु मरदन अंगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संगा ॥ ३ ॥ कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ ॥ बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥ ४ ॥ ११ ॥

(सर्वप्रथम जीव का आरम्भ पिता के वीर्य की बूँद से होता है, फिर माँ के गर्भ में आता है और) जीव जन्म लेता है, वह बड़ा होता है और बड़ा होने के पश्चात् प्राण त्याग कर मर जाता है। हमारे नेत्रों के समक्ष ही यह जगत् आता-जाता (जन्मता-मरता) दिखता है॥ १॥ (हे जीव !) तू घर को अपना कहता हुआ लज्जा से नहीं मरता। अंतिम समय तेरा कुछ भी नहीं (अर्थात् जिस समय मृत्यु आएगी तब कोई भी वस्तु तेरी नहीं रहेगी)॥ १॥ रहाउ॥ अनेक प्रयासों द्वारा इस शरीर का पालन पोषण किया जाता है लेकिन जब मृत्यु आती है, इसे अग्नि से जला दिया जाता है॥ २॥ वह शरीर

जिसके अंगों को इत्र एवं चन्दन लगाया जाता था। वह शरीर आखिरकार लकड़ियों से जला दिया जाता है॥ ३॥ कबीर का कथन है कि हे गुणवान पुरुष! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन, तेरी यह सुन्दरता नाश हो जाएगी, यह सारी दुनिया देखेगी॥ ४॥ ११॥

गउड़ी कबीर जी ॥ अवर मूए किआ सोगु करीजै ॥ तउ कीजै जउ आपन जीजै ॥ १ ॥ मै न मरउ मरिबो संसारा ॥ अब मोहि मिलिओ है जीआवनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इआ देही परमल महकंदा ॥ ता सुख बिसरे परमानंदा ॥ २ ॥ कूअटा एकु पंच पनिहारी ॥ टूटी लाजु भरै मति हारी ॥ ३ ॥ कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ ना ओहु कूअटा ना पनिहारी ॥ ४ ॥ १२ ॥

जब कोई व्यक्ति मरता है तो उसकी मृत्यु पर शोक करने का क्या अभिप्राय? वियोग तब करना चाहिए, यदि आप सदैव जीवित रहना हो॥ १॥ मैं वैसे नहीं मरूँगा, जैसे जगत् मरता है, क्योंकि अब मुझे जीवन देने वाला प्रभु मिल गया है॥ १॥ रहाउ॥ प्राणी इस शरीर को कई सुगन्धियाँ लगाकर महकाता है और इन सुखों में इसे परमानन्द प्रभु ही भूल जाता है॥ २॥ (यह शरीर, मानो) एक छोटा-सा कुआँ है (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मानो) पाँच चखियाँ हैं। मृत बुद्धि रस्सी के बिना जल भर रही है॥ ३॥ हे कबीर! जब विचारों वाली बुद्धि भीतर जाग पड़ी तो यह शारीरिक मोह नहीं रहा और न ही विकारों की ओर मुग्ध करने वाली इन्द्रियाँ रहीं॥ ४॥ १२॥

गउड़ी कबीर जी ॥ असथावर जंगम कीट पतंगा ॥ अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥ १ ॥ ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥ जब हम राम गरभ होइ आए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी जती तपी ब्रहमचारी ॥ कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥ २ ॥ साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥ राम रसाइनु रसना पीवहि ॥ ३ ॥ कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥ हारि परे अब पूरा दीजै ॥ ४ ॥ १३ ॥

हमने स्थावर, जंगम, कीट-पतंग यूं कई प्रकार के जन्म धारण किए हैं॥ १॥ हे राम! जब मैं अपनी माता के गर्भ में डाला गया था तो उससे पहले मैंने ऐसे बहुत से शरीरों में निवास किया था॥ १॥ रहाउ॥ मैं कभी योगी, कभी यती, कभी तपस्वी एवं कभी ब्रह्मचारी बना और कभी मैं छत्रपति राजा बना और कभी भिखारी बना॥ २॥ शाक्त इन्सान मर जाएँगे परन्तु साधु सभी जीवित रहेंगे और अपनी जिह्वा से राम-अमृत का पान करेंगे॥ ३॥ कबीर का कथन है कि हे मेरे प्रभु! मुझ पर कृपा करो, अब मैं थक-टूट गया हूँ, अब मुझे पूर्ण ज्ञान दीजिए॥ ४॥ १३॥

गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइ लिखिआ महला ५ ॥ ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥ दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरी अंगूरी गदहा चरै ॥ नित उठि हासै हीगै मरै ॥ १ ॥ माता भैसा अंमुहा जाइ ॥ कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥ २ ॥ कहु कबीर परगटु भई खेड ॥ लेले कउ चूघै नित भेड ॥ ३ ॥ राम रमत मति परगटी आई ॥ कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

हे कबीर! मैंने यह अद्भुत कौतुक देखा है कि मनुष्य दही के भ्रम में जल का मन्थन कर रहा है॥ १॥ रहाउ॥ गधा हरी अंगूरी चरता है और प्रतिदिन उठकर वह हँसता, हींगता रहता है आखिरकार मर जाता है (अर्थात् मूर्ख जीव मनभावन विकार भोगता है, इस प्रकार हँसता तथा हीं-हीं करता रहता है अतः जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाता है)॥ १॥ मतवाला भैंसा अनियंत्रित होकर भागता फिरता है। वह नाचता, कूदता, खाता और आखिरकार नरक में पड़ जाता है॥ २॥ हे कबीर! यह अद्भुत खेल प्रकट हो गई है। भेड़ हमेशा अपने लेले को चूंघती है। राम का नाम उच्चारित करने से मेरी बुद्धि उज्ज्वल हो गई है। हे कबीर! गुरु ने मुझे यह ज्ञान प्रदान किया है॥ ४॥ १॥ १४॥

गउड़ी कबीर जी पंचपदे ॥ जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥ पूरब जनम हउ तप का हीना ॥ १ ॥ अब कहु राम कवन गति मोरी ॥ तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥ मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥ २ ॥ बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥ मरनु भइआ मगहर की बासी ॥ ३ ॥ कासी मगहर सम बीचारी ॥ ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥ ४ ॥ कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥ मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥ ५ ॥ १५ ॥

जैसे मछली जल को त्यागकर बाहर निकल आती है (तो पीड़ित होकर प्राण त्याग देती है, वैसे ही) मैंने भी पूर्व जन्मों में तपस्या नहीं की थी॥ १॥ हे मेरे राम! अब बताओ, मेरी क्या गति होगी? लोग मुझे कहते हैं कि जब मैं बनारस छोड़ गया तो मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई?॥ १॥ रहाउ॥ मैंने अपनी समस्त आयु शिवपुरी (काशी) में गंवा दी है। मृत्यु के समय (काशी) छोड़कर मगहर चला आया हूँ॥ २॥ मैंने कई वर्ष काशी में रहकर तप किया। अब जब मृत्यु का समय आया तो मगहर आकर निवास कर लिया है॥ ३॥ मैंने काशी और मगहर को एक समान समझ लिया है, इस ओच्छी भक्ति से किस प्रकार भवसागर से पार हो सकता हूँ॥ ४॥ हे कबीर! मेरा गुरु (रामानंद), गणेश एवं भगवान शिव सभी जानते हैं कि कबीर श्री राम के नाम का जाप करता हुआ मर गया॥ ५॥ १५॥

गउड़ी कबीर जी ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ सो तनु जलै काठ कै संगा ॥ १ ॥ इसु तन धन की कवन बडाई ॥ धरनि परै उरवारि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राति जि सोवहि दिन करहि काम ॥ इकु खिनु लेहि न हरि को नाम ॥ २ ॥ हाथि त डोर मुखि खाइओ तंबोर ॥ मरती बार कसि बाधिओ चोर ॥ ३ ॥ गुरमति रसि रसि हरि गुन गावै ॥ रामै राम रमत सुखु पावै ॥ ४ ॥ किरपा करि कै नामु द्रिड़ाई ॥ हरि हरि बासु सुगंध बसाई ॥ ५ ॥ कहत कबीर चेति रे अंधा ॥ सति रामु झूठा सभु धंधा ॥ ६ ॥ १६ ॥

जिस सुन्दर शरीर के अंगों पर इत्र एवं चन्दन मला जाता है, वह आखिरकार लकड़ियों से जला दिया जाता है॥ १॥ इस शरीर एवं धन पर क्या अभिमान करना हुआ? ये यहीं पृथ्वी पर पड़े रह जाते हैं और प्राणी के साथ परलोक को नहीं जाते॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति रात सोने में बिता देते हैं और दिन में काम करते हैं और एक क्षणमात्र भी भगवान का नाम याद नहीं करते॥ २॥ जिनके हाथ में डोर है और मुख में पान चबा रहे हैं, ऐसे व्यक्ति मृत्यु के समय चोरों की भाँति कसकर बाँधे जाते हैं॥ ३॥ जो इन्सान गुरु की मति लेकर प्रेमपूर्वक भगवान के गुण गाता है, वह केवल प्रभु-परमेश्वर को ही याद करके सुख हासिल करता है॥ ४॥ जिस व्यक्ति के भीतर कृपा धारण करके प्रभु अपना नाम बसा देता है, वह हरि-परमेश्वर की महक एवं सुगन्ध को अपने हृदय में बसा लेता है॥ ५॥ कबीर जी कहते हैं कि हे मूर्ख जीव! (अपने परमेश्वर को) याद कर, चूंकि राम ही सत्य है और दुनिया के शेष धन्धे क्षणभंगुर हैं॥ ६॥ १६॥

गउड़ी कबीर जी तिपदे चारतुके ॥ जम ते उलटि भए है राम ॥ दुख बिनसे सुख कीओ बिसराम ॥ बैरी उलटि भए है मीता ॥ साकत उलटि सुजन भए चीता ॥ १ ॥ अब मोहि सरब कुसल करि मानिआ ॥ सांति भई जब गोबिदु जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन महि होती कोटि उपाधि ॥ उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥ आपु पछानै आपै आप ॥ रोगु न बिआपै तीनो ताप ॥ २ ॥ अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥ कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥ आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥ ३ ॥ १७ ॥

यम (मृत्यु) की तरफ जाने की बजाय अब मैंने राम का पक्ष ले लिया है। जिससे मेरे दुःख मिट गए हैं और मैं सुखपूर्वक विश्राम करता हूँ। मेरे शत्रु भी बदलकर मेरे मित्र बन गए हैं। भगवान से टूटे हुए शाक्त पुरुष बदलकर भद्रपुरुष बन गए हैं॥ १॥ अब मुझे समस्त सुख एवं मंगल प्रतीत हो रहे हैं, जब से मैंने गोबिन्द को अनुभव किया है, मेरे भीतर सुख–शांति हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ इस शरीर में करोड़ों ही रोग थे। ईश्वर का नाम–सिमरन करने से अब वे भी सहज सुख एवं समाधि में बदल गए हैं। मेरे मन ने अपने यथार्थ स्वरूप को पहचान लिया है, अब इसे ईश्वर ही ईश्वर दृष्टिमान हो रहा है, रोग एवं तीनों ताप प्रभावित नहीं कर सकते॥ २॥ अब मेरा मन हटकर सनातन (ईश्वर का रूप) हो गया है, इस बात का तब ज्ञान होता है, जब यह मन माया में विचरण करता हुआ भी माया के मोह से सर्वोच्च हो गया। हे कबीर ! अब मैं सहज सुख में समा गया हूँ। इसलिए अब न मैं स्वयं किसी दूसरे से भयभीत होता हूँ और न ही किसी दूसरे को भयभीत करता हूँ॥ ३॥ १७॥

गउड़ी कबीर जी ॥ पिंडि मूऐ जीउ किह घरि जाता ॥ सबदि अतीति अनाहदि राता ॥ जिनि रामु जानिआ तिनहि पछानिआ ॥ जिउ गूंगे साकर मनु मानिआ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु कथै बनवारी ॥ मन रे पवन द्रिड़ सुखमन नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥ सो पदु रवहु जि बहुरि न रवना ॥ सो धिआनु धरहु जि बहुरि न धरना ॥ ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना ॥ २ ॥ उलटी गंगा जमुन मिलावउ ॥ बिनु जल संगम मन महि न्हावउ ॥ लोचा समसरि इहु बिउहारा ॥ ततु बीचारि किआ अवरि बीचारा ॥ ३ ॥ अपु तेजु बाइ प्रिथमी आकासा ॥ ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥ कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥ तितु घरि जाउ जि बहुरि न आवउ ॥ ४ ॥ १८ ॥

(प्रश्न) जब किसी महापुरुष का शरीर प्राण त्याग देता है तो आत्मा कहाँ चली जाती है ? (उत्तर–) यह पवित्रात्मा शब्द के प्रभाव से अमर प्रभु में लीन हो जाती है। जो राम को समझता है, वही उसके स्वाद को अनुभव करता है, जैसे गूंगे मनुष्य का मन शक्कर खाने से संतुष्ट हो जाता है॥ १॥ ऐसा ज्ञान ईश्वर ही प्रकट करता है। हे मन ! प्रत्येक श्वास से नाम–स्मरण कर, यही सुषुम्ना नाड़ी का अभ्यास है॥ १॥ रहाउ॥ ऐसा गुरु धारण कर जो तुझे पुनः गुरु धारण करने की आवश्यकता न पड़े; ऐसा शब्द उच्चारण कर चूंकि जो तुझे और उच्चारण न करना पड़े। ऐसा ध्यान लगाओ कि फिर ध्यान लगाने की आवश्यकता ही न रहे। इस विधि से मरो कि तुझे जन्म–मरण के चक्र में न पड़ना पड़े॥ २॥ मैंने अपने मन का ध्यान बदल दिया है इस प्रकार मैं गंगा और यमुना को मिला रहा हूँ। इस प्रकार (मैं उस मन–रूपी त्रिवेणी) संगम में स्नान कर रहा हूँ, जहाँ (गंगा, जमुना, सरस्वती वाला) जल नहीं है, अब मैं इन नेत्रों से सबको एक समान देख रहा हूँ। यही मेरा जीवन–व्यवहार है। एक ईश्वर का चिन्तन कर, और चिन्तन की आवश्यकता नहीं॥ ३॥ ईश्वर के चरणों में लगकर मैं इस प्रकार का जीवन–आचरण कर रहा हूँ, जैसे जल, अग्नि, पवन, धरती एवं आकाश। कबीर जी कहते हैं कि तू निरंजन प्रभु का ध्यान कर, जिससे उस घर में पहुँच जहाँ से लौटकर न आना पड़े॥ ४॥ १८॥

गउड़ी कबीर जी तिपदे ॥ कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥ मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥ १ ॥ अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥ सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥ राम भगति बैठे घरि आइआ ॥ २ ॥ कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥ केवल राम भगति निज भागी ॥ ३ ॥ १ ॥ १९ ॥

अपने वजन जितना सोना दान देने से भगवान प्राप्त नहीं होता। मैंने तो अपना मन मूल्य के रूप में देकर राम को प्राप्त किया है॥ १॥ अब मुझे आस्था हो गई कि राम मेरा अपना ही है, मेरा मन

सहज स्वभाव उससे प्रसन्न है॥ १॥ रहाउ॥ जिस ईश्वर के गुण बतला–बतलाकर ब्रह्मा ने भी अन्त नहीं पाया, वह ईश्वर मेरी राम–भक्ति से मेरे ह्रदय (घर) में बैठ गया है॥ २॥ हे कबीर ! मैंने अपनी चंचल मति त्याग दी है, केवल राम की भक्ति ही मेरे अपने भाग्यों में आई है॥ ३॥ १॥ १६॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥ सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥ १ ॥ अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥ मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥ सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥ २ ॥ कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥ गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥ ३ ॥ २० ॥

जिस मृत्यु से सारी दुनिया भयभीत हुई रहती है, उस मृत्यु का यथार्थ गुरु के शब्द द्वारा प्रकट हो गया है (कि मृत्यु वास्तव में क्या है)॥ १॥ अब मैं कैसे जन्म–मरण (के चक्र) में पड़ूँगा ? मेरे मन ने मृत्यु को वश में कर लिया है। जो लोग राम को नहीं जानते, वे बार–बार जन्मते–मरते रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ दुनिया में प्रत्येक प्राणी 'मृत्यु' 'मृत्यु' कह रहा है, केवल वही (मनुष्य) अमर होता है, जो ज्ञान द्वारा मरता है॥ २॥ हे कबीर ! मेरे मन में आनंद उत्पन्न हो गया है। मेरी दुविधा का नाश हो गया है और परमानंद ह्रदय में स्थित है॥ ३॥ २०॥

गउड़ी कबीर जी ॥ कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥ खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥ १ ॥ लागी होइ सु जानै पीर ॥ राम भगति अनीआले तीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक भाइ देखउ सभ नारी ॥ किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥ २ ॥ कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥ सभ परहरि ता कउ मिलै सुहागु ॥ ३ ॥ २१ ॥

इस शरीर में कोई (विशेष) स्थान नहीं मिला जहाँ आत्मा को पीड़ा होती है तो फिर मैं औषधि कहाँ इस्तेमाल करूँ ? मैंने अपने शरीर की खोज कर ली है, परन्तु मुझे कोई ऐसा स्थान नहीं मिला॥ १॥ जिसे पीड़ा अनुभव हुई है, वही इसे जानता है। राम की भक्ति के बाण बड़े तीक्ष्ण हैं॥ १॥ रहाउ॥ मैं समस्त नारियों (जीव–स्त्रियों) को एक दृष्टि से देखता हूँ परन्तु मैं क्या जानूँ कि कौन–सी नारी (जीव–स्त्री) पति–प्रभु की प्रिया है॥ २॥ हे कबीर ! जिस जीव–स्त्री के माथे पर शुभ भाग्य है, पति–प्रभु सबको छोड़कर उसे आ मिलता है॥ ३॥ २१॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥ मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥ १ ॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहू का कवनु निहोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीनि लोक जा कै हहि भार ॥ सो काहे न करै प्रतिपार ॥ २ ॥ कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥ ३ ॥ २२ ॥

हे भाई ! जिसका भगवान जैसा ठाकुर मौजूद है, अनन्त मुक्तियाँ उसके समक्ष अपने आप न्योछावर होती हैं॥ १॥ हे राम ! बताओ ! अब जब मुझे तेरा ही भरोसा है तो अब मुझे किसी दूसरे की खुशामद करने की आवश्यकता नहीं॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु जो तीनों लोकों स्वर्ग लोक, पाताल लोक एवं मृत्युलोक का भार सहन कर रहा है, वह क्यों देखभाल नहीं करेगा ?॥ २॥ हे कबीर ! मैंने अपनी बुद्धि में इस बात पर ही विचार किया है कि यदि माता ही अपनी संतान को विष देने लगे तो हम क्या कर सकते हैं ?॥ ३॥ २२॥

गउड़ी कबीर जी ॥ बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥ पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥ १ ॥ प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥ जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥ सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥ २ ॥ तनु मनु धनु ग्रिहु सउपि सरीरु ॥ सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥ ३ ॥ २३ ॥

हे पण्डित ! हृदय में सोच–विचार कर देख, भला पतिव्रता एवं सदाचारण के सिवाय कोई नारी कैसे सती बन सकती है ?॥ १॥ यदि पत्नी का प्रभु–पति से प्रेम नहीं तो प्रभु–पति का उससे प्रेम कैसे बढ़ सकता है ? जब तक सांसारिक मोह है, तब तक ईश्वरीय प्रीति नहीं हो सकती॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति अपने हृदय में माया को सत्य समझता है, वह राम को अपने स्वप्न में भी नहीं मिलता॥ २॥ कबीर जी कहते हैं कि वही नारी सुहागिन व भाग्यवान है, जो अपना तन, मन, धन, घर और शरीर अपने स्वामी को अर्पण कर देती है॥ ३॥ २३॥

गउड़ी कबीर जी ॥ बिखिआ बिआपिआ सगल संसारु ॥ बिखिआ लै डूबी परवारु ॥ १ ॥ रे नर नाव चउड़ि कत बोड़ी ॥ हरि सिउ तोड़ि बिखिआ संगि जोड़ी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरि नर दाधे लागी आगि ॥ निकटि नीरु पसु पीवसि न झागि ॥ २ ॥ चेतत चेतत निकसिओ नीरु ॥ सो जलु निरमलु कथत कबीरु ॥ ३ ॥ २४ ॥

सारी दुनिया ही माया के विकारों में फँसी हुई है। माया के विकारों ने परिवारों को (जीवों को) ही डुबो दिया है॥ १॥ हे नश्वर मनुष्य ! तूने (अपने जीवन की) नाव कहाँ नष्ट कर छोड़ी है। तूने ईश्वर से प्रीति तोड़कर माया से सम्बन्ध कायम कर लिया है॥ १॥ रहाउ॥ सारी दुनिया में माया की तृष्णा की अग्नि लगी हुई है, देवता एवं मनुष्य (अग्नि में) जल रहे हैं। प्रभु का नाम–रूपी जल निकट ही है। बुरे–विकारों की झाग को दूर हटाकर पशु (जीव) इसका पान नहीं करता॥ २॥ हे कबीर ! वह नाम रूपी जल निरन्तर स्मरण करते हुए ही प्रकट होता है, वह जल बड़ा निर्मल होता है॥ ३॥ २४॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥ बिधवा कस न भई महतारी ॥ १ ॥ जिह नर राम भगति नहि साधी ॥ जनमत कस न मुओ अपराधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥ बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥ २ ॥ कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥ ३ ॥ २५ ॥

उस कुल की माता विधवा क्यों न हो गई, जिसके पुत्र को ज्ञान नहीं और जो प्रभु के नाम का चिन्तन नहीं करता॥ १॥ जिस मनुष्य ने राम–भक्ति हेतु साधना नहीं की, वह अपराधी जन्म लेते ही क्यों न मर गया ?॥ १॥ रहाउ॥ (सृष्टि में) कई गर्भ गिर जाते हैं, वह क्यों बच गया है। भयानक आकृति वाला पुरुष जगत् में नीच जीवन व्यतीत कर रहा है॥ २॥ हे कबीर ! जो पुरुष ईश्वर के नाम से विहीन हैं, वे चाहे देखने में सुन्दर रूप वाले हैं लेकिन वास्तव में कुबड़े तथा कुरूप हैं॥ ३॥ २५॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जो जन लेहि खसम का नाउ ॥ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ १ ॥ सो निरमलु निरमल हरि गुन गावै ॥ सो भाई मेरै मनि भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥ तिन की पग पंकज हम धूरि ॥ २ ॥ जाति जुलाहा मति का धीरु ॥ सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥ ३ ॥ २६ ॥

मैं हमेशा उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो व्यक्ति जगत् के मालिक प्रभु का नाम लेते हैं ॥ १॥ जो व्यक्ति पवित्र पावन है, वे भगवान के निर्मल गुण ही गाते रहते हैं, वो भाई मेरे मन को बहुत प्रिय लगते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिनके हृदय में राम मौजूद हो गया है, मैं उनके कमल–पुष्प जैसे सुन्दर चरणों की धूलि हूँ॥ २॥ मैं जाति से जुलाहा हूँ और स्वभाव से धैर्यवान हूँ। कबीर धीरे–धीरे (सहज ही) राम की गुणस्तुति करता है॥ ३॥ २६॥

गउड़ी कबीर जी ॥ गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥ संचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥ १ ॥ उआ कउ कहीऐ सहज मतवारा ॥ पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥ आनंदि माते अनदिनु जाई ॥ २ ॥ चीनत चीतु निरंजन लाइआ ॥ कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥ ३ ॥ २७ ॥

मेरी गगन–रूपी भट्ठी में से स्वादिष्ट अमृत टपक रहा है। अपने शरीर को लकडियाँ बनाकर मैंने प्रभु नाम के महारस को एकत्रित किया है॥ १॥ केवल वही सहज तौर पर मतवाला कहा जाता है। जिसने ज्ञान के विचार द्वारा राम रस का पान किया है॥ १॥ रहाउ॥ जब सहज अवस्था रूपी मदिरा पिलाने वाली आ मिलती है, तब दिन और रात आनंद में मस्त होकर बीतते हैं॥ २॥ हे कबीर! जब स्मरण द्वारा मैंने अपना मन निरंजन से जोड़ लिया तो मुझे निर्भय प्रभु प्राप्त हो गया॥ ३॥ २७॥

गउड़ी कबीर जी ॥ मन का सुभाउ मनहि बिआपी ॥ मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥ १ ॥ कवनु सु मुनि जो मनु मारै ॥ मन कउ मारि कहहु किसु तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन अंतरि बोलै सभु कोई ॥ मन मारे बिनु भगति न होई ॥ २ ॥ कहु कबीर जो जानै भेउ ॥ मनु मधुसूदनु त्रिभवण देउ ॥ ३ ॥ २८ ॥

मन का स्वभाव है, मन के पीछे पडना और इसका सुधार करना। अपने मन को मार कर कौन सिद्ध बना है?॥ १॥ वह कौन–सा मुनि है, जिसने अपने मन को मार दिया है? कहो, मन को नष्ट करके वह किसका कल्याण करता है?॥ १॥ रहाउ॥ मन के द्वारा ही हरेक मनुष्य बोलता है। मन को मारे बिना प्रभु की भक्ति नहीं होती॥ २॥ हे कबीर! जो पुरुष इस भेद को समझता है, वह अपने मन में ही तीन लोकों के स्वामी मधुसूदन के दर्शन कर लेता है॥ ३॥ २८॥

गउड़ी कबीर जी ॥ ओइ जु दीसहि अंबरि तारे ॥ किनि ओइ चीते चीतनहारे ॥ १ ॥ कहु रे पंडित अंबरु का सिउ लागा ॥ बूझै बूझनहारु सभागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥ सभ महि पसरिआ ब्रहम पसारा ॥ २ ॥ कहु कबीर जानैगा सोइ ॥ हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥ ३ ॥ २६ ॥

वे झिलमिलाते तारे जो अन्तरिक्ष में नजर आ रहे हैं, किस चित्रकार ने चित्रित किए हैं?॥ १॥ हे पण्डित! बताओ, अन्तरिक्ष किसके सहारे कायम है। इस बात को जानने वाला कोई भाग्यवान ही है॥ १॥ रहाउ॥ सूर्य एवं चन्द्रमा (दुनिया में) उजाला करते हैं। इस सृष्टि में ईश्वर की ज्योति का ही प्रकाश फैला हुआ है॥ २॥ हे कबीर! (इस रहस्य को) केवल वही मनुष्य समझेगा, जिसके हृदय में राम है और मुँह में भी केवल राम ही है॥ ३॥ २६॥

गउड़ी कबीर जी ॥ बेद की पुत्री सिंम्रिति भाई ॥ सांकल जेवरी लै है आई ॥ १ ॥ आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥ मोह कै फाधि काल सरु सांधिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कटी न कटै तूटि नह जाई ॥ सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥ २ ॥ हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥ कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥ ३ ॥ ३० ॥

हे भाई! यह स्मृति वेदों की पुत्री है। वह मनुष्यों हेतु (मानों कर्मकाण्ड की) जंजीरें एवं रस्सियाँ लेकर आई है॥ १॥ इसने स्वयं ही अपने नगर में श्रद्धालु कैद कर लिए हैं। इसने मोह की फाँसी में फँसाकर मृत्यु का तीर खिंचा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ यह स्मृति–रूपी रस्सी श्रद्धालुओं से काटने पर भी नहीं काटी जा सकती और न ही यह टूटती है। यह नागिन बनकर दुनिया को निगल रही है॥ २॥ हे कबीर! हमारी आँखों के समक्ष देखते ही देखते इस स्मृति ने सारी दुनिया को लूट लिया है, लेकिन मैं राम का सिमरन करके इससे छूट गया हूँ॥ ३॥ ३०॥

गउड़ी कबीर जी ॥ देइ मुहार लगामु पहिरावउ ॥ सगल त जीनु गगन दउरावउ ॥ १ ॥ अपनै बीचारि असवारी कीजै ॥ सहज कै पावड़ै पगु धरि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥ हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥ २ ॥ कहत कबीर भले असवारा ॥ बेद कतेब ते रहहि निरारा ॥ ३ ॥ ३१ ॥

मैं अपने मन रूपी घोड़े को प्रशंसा-निंदा से वर्जित करने की पूँजी देकर प्यार की लगन की लगाम डालता हूँ और ईश्वर को हर जगह समझना -यह काठी डालकर मन को भगवान के देश की उडान भरता हूँ॥ १॥ अपने स्वरूप के ज्ञान-रूपी घोडे पर सवार हो जाओ तथा बुद्धि-रूपी चरण को सहज के रकाब में रखो॥ १॥ रहाउ॥ हे मन रूपी घोड़े! चल, तुझे स्वर्ग की सैर कराऊँ, यदि जिद्द करोगे तो मैं तुझे प्रेम की चाबुक मारूँगा॥ २॥ हे कबीर! ऐसे चतुर सवार, वेदों एवं कतेब से तटस्थ रहते हैं॥ ३॥ ३१॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जिह मुखि पांचउ अंम्रित खाए ॥ तिह मुख देखत लूकट लाए ॥ १ ॥ इकु दुखु राम राइ काटहु मेरा ॥ अगनि दहै अरु गरभ बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ बिगूती बहु बिधि भाती ॥ को जारे को गडि ले माटी ॥ २ ॥ कहु कबीर हरि चरण दिखावहु ॥ पाछै ते जमु किउ न पठावहु ॥ ३ ॥ ३२ ॥

जिस मुख से पाँचों ही अमृत पदार्थ खाए जाते थे, (मरणोपरांत) उस मुख को अपने सामने ही लकड़ी जलाकर लगा दी जाती है॥ १॥ हे मेरे राम! यह जो तृष्णाग्नि जलाती है तथा बार-बार गर्भ का वास है, मेरा यह दुःख दूर कर दो॥ १॥ रहाउ॥ (मरणोपरांत) यह सुन्दर शरीर अनेकों ढंग एवं विधियों से खत्म किया जाता है। कोई मनुष्य इसे अग्नि में जला देता है और कोई इसे मिट्टी में दफन कर देता है॥ २॥ कबीर जी कहते हैं कि हे भगवान! मुझे अपने चरणों के दर्शन करवा दीजिए, तदुपरांत चाहे यमराज को ही भेज देना॥ ३॥ ३२॥

गउड़ी कबीर जी ॥ आपे पावकु आपे पवना ॥ जारै खसमु त राखै कवना ॥ १ ॥ राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥ राम नाम चितु रहिआ समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का को जरै काहि होइ हानि ॥ नट वट खेलै सारिगपानि ॥ २ ॥ कहु कबीर अखर दुइ भाखि ॥ होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥ ३ ॥ ३३ ॥

भगवान स्वयं ही अग्नि है और स्वयं ही वायु है। यदि मालिक स्वयं ही (प्राणी को) जलाने लगे तो कौन रक्षा कर सकता है॥ १॥ राम के नाम का जाप करते हुए चाहे निःसंदेह मेरा शरीर ही जल जाए? मेरा मन राम के नाम में मग्न रहता है॥ १॥ रहाउ॥ न किसी का कुछ जलता है, न किसी का कोई नुक्सान होता है, परमेश्वर स्वयं ही सर्वत्र नटखट खेल कर रहा है॥ २॥ हे कबीर! तू ('राम' के) दो अक्षर उच्चरित कर, यदि मेरा मालिक है तो मुझे भवसागर से बचा लेगा॥ ३॥ ३३॥

गउड़ी कबीर जी दुपदे॥ ॥ ना मै जोग धिआन चितु लाइआ ॥ बिनु बैराग न छूटसि माइआ ॥ १ ॥ कैसे जीवनु होइ हमारा ॥ जब न होइ राम नाम अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर खोजउ असमान ॥ राम समान न देखउ आन ॥ २ ॥ ३४ ॥

न ही मैंने योग विद्या की तरफ अपना ध्यान अथवा मन लगाया। फिर वैराग्य के बिना माया से मुक्ति नहीं हो सकती॥ १॥ मेरा जीवन कैसे व्यतीत होगा, जब राम के नाम का आधार नहीं होगा॥ १॥ रहाउ॥ हे कबीर! मैं आकाश तक खोज कर चुका हूँ परन्तु मुझे राम के तुल्य दूसरा कोई दिखाई नहीं दिया॥ २॥ ३४॥

गउड़ी कबीर जी ॥ जिह सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥ सो सिरु चुंच सवारहि काग ॥ १ ॥ इसु तन धन को किआ गरबईआ ॥ राम नामु काहे न द्रिढीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ इही हवाल होहिगे तेरे ॥ २ ॥ ३५ ॥ गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥

जिस सिर पर इन्सान संवार–संवार कर पगड़ी बाँधता है, (मरणोपरांत) उस सिर को कौए अपनी चोंचों से संवारते हैं॥ १॥ इस शरीर एवं धन पर क्या अहंकार किया जा सकता है? (हे प्राणी!) तू राम के नाम को क्यों याद नहीं करता?॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी कहते हैं–हे मेरे मन! सुन, जब मृत्यु आएगी तो तेरा भी यही हाल होगा॥ २॥ ३५॥

रागु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सुखु मांगत दुखु आगै आवै ॥ सो सुखु हमहु न मांगिआ भावै ॥ १ ॥ बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥ कैसे होई है राजा राम निवासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु सुख ते सिव ब्रहम डराना ॥ सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥ २ ॥ सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥ तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥ ३ ॥ इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ तन छूटे मनु कहा समाई ॥ ४ ॥ गुर परसादी जैदेउ नामां ॥ भगति कै प्रेमि इन ही है जानां ॥ ५ ॥ इसु मन कउ नही आवन जाना ॥ जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥ ६ ॥ इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥ हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥ ७ ॥ इस मन का कोई जानै भेउ ॥ इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥ ८ ॥ जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥ इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥ ९ ॥ १ ॥ ३६ ॥

इन्सान सुख माँगता है, परन्तु उसे दुःख आकर मिलता है। (इसलिए) मुझे उस सुख की कामना अच्छी नहीं लगती, जिस सुख से दुःख प्राप्त होता है॥ १॥ इन्सान की वृत्ति माया के विकारों में लगी हुई है लेकिन वह सुख की अभिलाषा करता है। तो फिर वह किस तरह राजा राम में निवास पाएगा॥ १॥ रहाउ॥ इस (माया के) सुख से शिवजी एवं ब्रह्मा (जैसे देवते भी) भयभीत हैं। इस सुख को मैं सत्य करके जानता हूँ॥ २॥ ब्रह्मा के चारों पुत्र सनकादिक, नारद मुनि एवं शेषनाग–इन्होंने भी अपनी आत्मा को अपने शरीर में नहीं देखा॥ ३॥ हे भाई! कोई इस आत्मा की खोज करो कि शरीर से जुदा होकर यह आत्मा कहाँ चली जाती है?॥ ४॥ गुरु की कृपा से जयदेव, नामदेव जैसे भक्तों ने भी इस रहस्य को प्रभु–भक्ति के चाव से जाना है॥ ५॥ जिस व्यक्ति का भ्रम मिट जाता है, वह सत्य को पहचान लेता है, और उसकी आत्मा जन्म–मरण के चक्र में नहीं पड़ती॥ ६॥ वास्तव में इस आत्मा का कोई स्वरूप अथवा चक्र–चिन्ह नहीं। प्रभु के हुक्म द्वारा ही इसकी रचना की गई थी और उसके हुक्म को समझ कर यह उसमें समा जाएगी॥ ७॥ क्या कोई मनुष्य इस आत्मा के रहस्य को जानता है? यह आत्मा अंतः सुखदाता प्रभु में ही समा जाती है॥ ८॥ आत्मा एक है लेकिन यह समस्त शरीरों में समाई हुई है। इस आत्मा (अर्थात् प्रभु) का ही कबीर चिन्तन कर रहा है॥ ९॥ १॥ ३६॥

गउड़ी गुआरेरी ॥ अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिध भए लिव लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधक सिध सगल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिप तर तारे ॥ १ ॥ जो हरि हरे सु होहि न आना ॥ कहि कबीर राम नाम पछाना ॥ २ ॥ ३७ ॥

उन लोगों में जो केवल नाम–सिमरन में ही दिन–रात जाग्रत रहते थे, बहुत सारे ऐसे व्यक्ति प्रभु के साथ वृत्ति लगाने से सिद्ध बन गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ साधक, सिद्ध एवं मुनिजन हार गए हैं।

केवल एक ईश्वर का नाम ही कल्पवृक्ष है जो जीवों का (भवसागर से) उद्धार कर देता है॥ १॥ कबीर जी कहते हैं—जो व्यक्ति हरि का सिमरन करते हैं, उनका दुनिया में जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। वह केवल राम के नाम को ही पहचानते हैं॥ २॥ ३७॥

गउड़ी भी सोरठि भी ॥ रे जीअ निलज लाज तोुहि नाही ॥ हरि तजि कत काहू के जांही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥ सो जनु पर घर जात न सोही ॥ १ ॥ सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥ सदा संगि नाही हरि दूरि ॥ २ ॥ कवला चरन सरन है जा के ॥ कहु जन का नाही घर ता के ॥ ३ ॥ सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥ सो सम्रथु निज पति है दाता ॥ ४ ॥ कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥ जा के हिरदै अवरु न होई ॥ ५ ॥ ३८ ॥

हे निर्लज्ज जीव! क्या तुझे शर्म नहीं आती? ईश्वर को छोड़कर तू कहाँ और किसके पास जाता है?॥ १॥ रहाउ॥ जिसका मालिक सर्वोपरि होता है, वह पुरुष पराए घर को जाता शोभा नहीं पाता॥ १॥ वह प्रभु-परमेश्वर हर जगह मौजूद है। वह सदा हमारे साथ है और कभी भी दूर नहीं॥ २॥ जिसके चरणों की शरण धन की देवी लक्ष्मी भी लिए बैठी है, हे भाई! बता, उस श्री हरि के घर किस वस्तु की कमी है?॥ ३॥ जिस परमात्मा की यश की बातें हरेक प्राणी कर रहा है, वह सर्वशक्तिमान, अपने आप का स्वयं स्वामी और दाता है॥ ४॥ कबीर जी कहते हैं—इस दुनिया में केवल वही मनुष्य गुणवान है, जिसके हृदय में ईश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं बसता॥ ५॥ ३८॥

कउनु को पूतु पिता को का को ॥ कउनु मरै को देइ संतापो ॥ १ ॥ हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥ हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउन को पुरखु कउन की नारी ॥ इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥ २ ॥ कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥ गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥ ३ ॥ ३९ ॥

कौन कोई किसी का पुत्र है? कौन कोई किसी का पिता है? अर्थात् कोई किसी का रक्षक नहीं। कौन कोई मरता है और कौन कोई किसी को दुःख देता है?॥ १॥ उस छलिया भगवान ने सारी दुनिया को मोहरूपी ठग बूटी लगा कर मुग्ध किया हुआ है। हे मेरी माँ! भगवान से बिछुड़कर मैं कैसे जीवित रहूँगा॥ १॥ रहाउ॥ कौन कोई किसी का पति है और कौन कोई किसी की पत्नी है? इस यथार्थ को (हे भाई!) तू अपने शरीर में ही विचार कर॥ २॥ कबीर जी कहते हैं कि छलिया भगवान से मेरा मन अब एक हो गया है। मेरी दुविधा दूर हो गई है और मैंने उस छलिया (भगवान) को पहचान लिया है॥ ३॥ ३९॥

अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥ जनम मरन कटि परम गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगति दीओ रलाइ ॥ पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥ अंम्रित नामु जपउ जपु रसना ॥ अमोल दासु करि लीनो अपना ॥ १ ॥ सतिगुर कीनो परउपकारु ॥ काढि लीन सागर संसार ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥ २ ॥ माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥ मनि संतोखु नामु आधारु ॥ जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥ जत पेखउ तत अंतरजामी ॥ ३ ॥ अपनी भगति आप ही द्रिड़ाई ॥ पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥ जिसु क्रिपा करे तिसु पूरन साज ॥ कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥ ४ ॥ ४० ॥

इस दुनिया का राजा राम अब मेरा सहायक बन गया है। जन्म-मरण की जंजीर काटकर मुझे परमगति मिल गई है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान ने मुझे साधुओं की संगति में मिला दिया है और

(कामादिक) पाँच विकारों से उसने मुझे बचा लिया है। अपनी जीभ से मैं अमृत नाम रूपी जाप जपता हूँ। भगवान ने मुझे बिना मूल्य के अपना सेवक बना लिया है॥ १॥ सतिगुरु ने मुझ पर बड़ा परोपकार किया है, उन्होंने मुझे भवसागर से बचा लिया है। अब प्रभु के सुन्दर चरणों से मेरा प्रेम बन गया है। गोबिन्द हर समय मेरे हृदय में बस रहा है॥ २॥ मोहिनी की दग्ध अग्नि बुझ गई है। (ईश्वर के) नाम के आधार से अब मेरे मन में संतोष है। जगत् का स्वामी प्रभु समुद्र, धरती सर्वत्र मौजूद है। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहीं अन्तर्यामी प्रभु विद्यमान है॥ ३॥ ईश्वर ने अपनी भक्ति स्वयं ही मेरे मन में दृढ़ की है। हे मेरे भाई! पूर्व जन्म के किए कर्मों का फल मुझे मिल गया है। वह जिस पर कृपा करता है, उसका संयोग सुन्दर बनाकर रख देता है। कबीर का स्वामी गरीबनिवाज है॥ ४॥ ४०॥

जलि है सूतकु थलि है सूतकु सूतक ओपति होई ॥ जनमे सूतकु मूए फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥ १ ॥ कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥ ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥ ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥ २ ॥ फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छूटन की इकु कोई ॥ कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥ ३ ॥ ४१ ॥

जल में सूतक (अपवित्रता) है, पृथ्वी में सूतक है और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें भी सूतक की उत्पति है। जीव के जन्म में सूतक है तथा मरने पर भी सूतक है। प्रभु की खलकत को सूतक ने नष्ट कर दिया है॥ १॥ हे पण्डित! बता, (फिर) कौन पवित्र है? हे मेरे मित्र! इस ज्ञान का ध्यानपूर्वक चिन्तन कर॥ १॥ रहाउ॥ नयनों में सूतक है, बोलने में सूतक है, कानों में भी सूतक है। उठते-बैठते हर समय प्राणी को सूतक लगता है। सूतक रसोई में भी प्रवेश करता है॥ २॥ हरेक प्राणी (सूतक के भ्रमों में) फँसने का ही ढंग जानता है परन्तु इससे मुक्ति पाने की सूझ किसी विरले को ही है। कबीर जी कहते हैं – जो व्यक्ति अपने हृदय में राम को स्मरण करता है, उसे कोई सूतक नहीं लगता॥ ३॥ ४१॥

गउड़ी ॥ झगरा एकु निबेरहु राम ॥ जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥ रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥ १ ॥ ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥ बेदु बडा कि जहां ते आइआ ॥ २ ॥ कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥ तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥ ३ ॥ ४२ ॥

हे राम! एक झगड़े का फैसला करो, यदि तूने अपने सेवक से कोई सेवा लेनी है॥ १॥ रहाउ॥ क्या यह आत्मा महान है अथवा वह (प्रभु) जिससे यह आत्मा मिली हुई है। क्या राम महान है अथवा वह महान जो राम को जानता है?॥ १॥ क्या ब्रह्मा महान है अथवा वह जिसने उसे पैदा किया है? वेद महान है अथवा वह जिससे (यह ज्ञान) आया है?॥ २॥ कबीर जी कहते हैं कि मैं इस बात से उदास हूँ कि तीर्थ-स्थल महान है अथवा भगवान का भक्त॥ ३॥ ४२॥

रागु गउड़ी चेती ॥ देखौ भाई ग्यान की आई आंधी ॥ सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा ॥ तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा ॥ १ ॥ आंधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनां ॥ कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा उदै भानु जब चीना ॥ २ ॥ ४३ ॥

हे भाइयो ! देखो, ज्ञान की आँधी आई है। इस दुविधा के छप्पर को पूर्णतया उड़ा कर ले गई है और माया के बँधन तक भी शेष नहीं बचे॥ १॥ रहाउ॥ द्वैतवाद के दोनों स्तम्भ गिर गए हैं और दुनिया का मोह–रूपी लकड़ी का डण्डा भी गिरकर टूट गया है। तृष्णा का छप्पर (लकड़ी टूटने पर) धरती पर आ गिरा है और दुर्मति का बर्तन फूट गया है॥ १॥ ज्ञान की अन्धेरी के पश्चात जो (नाम की) वर्षा होती है, उसमें तेरा भक्त भीग जाता है। कबीर जी कहते हैं– जब मैं सूर्य को उदय होता देखता हूँ तो मेरे हृदय में उजाला ही उजाला हो जाता है॥ २॥ ४३॥

गउड़ी चेती ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥ बातन ही असमानु गिरावहि ॥ १ ॥ ऐसे लोगन सिउ किआ कहीऐ ॥ जो प्रभ कीए भगति ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि न देहि चुरू भरि पानी ॥ तिह निंदहि जिह गंगा आनी ॥ २ ॥ बैठत उठत कुटिलता चालहि ॥ आपु गए अउरन हू घालहि ॥ ३ ॥ छाडि कुचरचा आन न जानहि ॥ ब्रहमा हू को कहिओ न मानहि ॥ ४ ॥ आपु गए अउरन हू खोवहि ॥ आगि लगाइ मंदर मै सोवहि ॥ ५ ॥ अवरन हसत आप हहि कांने ॥ तिन कउ देखि कबीर लजाने ॥ ६ ॥ १ ॥ ४४ ॥

कुछ लोग न कभी भगवान का यश सुनते हैं और न ही कभी भगवान के गुण गाते हैं, परन्तु अपनी व्यर्थ बातों से ही (मानो) आसमान को गिरा लेते हैं॥ १॥ ऐसे लोगों को उपदेश देने का कोई अभिप्राय नहीं, जिन्हें भगवान ने अपनी भक्ति से वंचित रखा हुआ है, उनसे सदैव ही डरना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ वे लोग स्वयं तो अंजुलि भर जल भी नहीं देते परन्तु उनकी निंदा करते हैं, जिन्होंने गंगा बहा दी है॥ २॥ उठते–बैठते वे कुटिल चालें चलते हैं, वे तो स्वयं नष्ट हो गए हैं और दूसरों को भी नष्ट करते हैं॥ ३॥ व्यर्थ वाद–विवाद के बिना वह अन्य कुछ नहीं जानते। वह ब्रह्मा जी की बात भी नहीं मानते॥ ४॥ ऐसे लोग आप कुमार्गगामी हुए हैं और दूसरों को भी गुमराह ही करते हैं, वे मानो मन्दिर में आग लगाकर सो रहे हैं॥ ५॥ वे स्वयं तो एक आँख वाले काने हैं लेकिन दूसरों की हँसी उड़ाते हैं। हे कबीर ! ऐसे लोगों को देखकर मुझे लज्जा आती है॥ ६॥ १॥ ४४॥

राग गउड़ी बैरागणि कबीर जी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥ पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥ १ ॥ मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥ कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥ ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही ॥ २ ॥ सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अंत काल कउ भारी ॥ राम नाम की गति नही जानी भै डूबे संसारी ॥ ३ ॥ देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहमु नही जाना ॥ कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥ ४ ॥ १ ॥ ४५ ॥

मनुष्य अपने पूर्वजों (माता–पिता) की उनके जीवित रहने तक तो सेवा नहीं करते परन्तु (उनके) मरणोपरांत पितरों का श्राद्ध करवाते हैं। बताओ, बेचारे पितर भला श्राद्धों का भोजन कैसे पाएँगे ? इसे तो कौए–कुत्ते खा जाते हैं॥ १॥ कोई मुझे बताओ कि सुख–खुशी क्या है ? सारी दुनिया (इसी दुविधा में) सुख–मंगल कहती मरती जा रही है (कि श्राद्ध कराने से घर में सुख मिलता है) आत्मिक सुख किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ?॥ १॥ रहाउ॥ लोग मिट्टी के देवी–देवता बनाकर उस देवी या देवता

के समक्ष जीवों की बलि देते हैं। (हे भाई!) इसी प्रकार तुम्हारे मृत पितर कहे जाते हैं, जो कुछ वह लेना चाहते हैं, कह कर नहीं ले सकते॥ २॥ लोग जीवित जीवों को मारते हैं और निर्जीव (मिट्टी के बनाए हुए) देवताओं की पूजा करते हैं। अंतकाल (मृत्यु के समय) तुम्हें बहुत मुश्किल होगा। आप राम के नाम की गति नहीं जानते, (इससे) आप भयानक संसार सागर में डूब जाओगे॥ ३॥ हे नश्वर प्राणी! तुम लोग देवी-देवताओं की पूजा करते हो। अपने भरोसे में डावांडोल होते रहते हो और पारब्रह्म को नहीं समझते। कबीर जी कहते हैं-आप लोग कुलरहित भगवान को याद नहीं करते और माया के विकारों में फँसे रहते हो॥ ४॥ १॥ ४५॥

गउड़ी ॥ जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुंनि समाइआ ॥ अंजन माहि निरंजनि रहीऐ बहुड़ि न भवजलि पाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईऐ ॥ गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अंम्रितु पीओईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै बाणि बजर कल छेदी प्रगटिआ पदु परगासा ॥ सकति अधेर जेवड़ी भ्रमु चूका निहचलु सिव घरि बासा ॥ २ ॥ तिनि बिनु बाणै धनखु चढाईऐ इहु जगु बेधिआ भाई ॥ दह दिस बूडी पवनु झुलावै डोरि रही लिव लाई ॥ ३ ॥ उनमनि मनूआ सुंनि समाना दुबिधा दुरमति भागी ॥ कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ४६ ॥

मनुष्य को विकारों की ओर से जीवित ही मरे रहना चाहिए और विकारों की ओर से मरकर प्रभु-नाम के द्वारा दोबारा जीना चाहिए। इस प्रकार वह निर्गुण प्रभु में लीन हो जाता है। वह माया में रहता हुआ भी माया-रहित परमात्मा में रहकर दोबारा भयानक संसार-सागर में नहीं पड़ता॥ १॥ हे मेरे राम! ऐसे दूध मंथन किया जा सकता है। हे प्रभु! मुझे गुरु का उपदेश देकर मेरा कमजोर मन स्थिर रख। इस विधि से प्रभु का नाम-अमृत पान किया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के बाण ने वज्र कलियुग को छेद दिया है और प्रकाश की अवस्था मुझ पर प्रकाशमान हुई है। शक्ति के अंधेरे के कारण रस्सी को साँप समझने की मेरी दुविधा दूर हो गई है और मैं अब प्रभु के निहचल मन्दिर में निवास करता हूँ॥ २॥ हे मेरे भाई! उस माया ने तीर के बिना ही धनुष खींचा है और इस संसार को छेद दिया है। (माया के विकारों में) डूबा हुआ प्राणी हवा में दसों दिशाओं में झूलता है परन्तु मैं प्रभु की प्रीति के धागे से जुड़ा हुआ हूँ॥ ३॥ उखड़ी हुई आत्मा ईश्वर में लीन हो गई है और दुविधा तथा दुर्बुद्धि भाग गए हैं। हे कबीर! राम के नाम से वृत्ति लगाकर मैंने निर्भय एक प्रभु को देख लिया है॥ ४॥ २॥ ४६॥

गउड़ी बैरागणि तिपदे॥ उलटत पवन चक्र खटु भेदे सुरति सुंन अनरागी ॥ आवै न जाइ मरै न जीवै तासु खोजु बैरागी ॥ १ ॥ मेरे मन मन ही उलटि समाना ॥ गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरु था बेगाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निवरै दूरि दूरि फुनि निवरै जिनि जैसा करि मानिआ ॥ अलउती का जैसे भइआ बरेडा जिनि पीआ तिनि जानिआ ॥ २ ॥ तेरी निरगुन कथा काइ सिउ कहीऐ ऐसा कोइ बिबेकी ॥ कहु कबीर जिनि दीआ पलीता तिनि तैसी झल देखी ॥ ३ ॥ ३ ॥ ४७ ॥

अपनी सोच को ईश्वर की तरफ जोड़कर मैंने शरीर के छः चक्रों को भेद दिया है और मेरा मन प्रभु पर मुग्ध हो गया है। हे बैरागी! उस प्रभु की खोज कर, जो न आता है, न जाता है, न मरता है, न जन्मता है॥ १॥ मेरा मन विकारों के प्रति मन की दौड़ को मोड़कर प्रभु में लीन हो गया है। गुरु की कृपा से मेरी बुद्धि विभिन्न हो गई है, अन्यथा मैं बिल्कुल ही अज्ञानी था॥ १॥ रहाउ॥ जो निकट था, वह दूर हो गया और दोबारा जो दूर था, वह निकट हो गया है। उसके लिए जो प्रभु को जैसा वह है, वैसा ही अनुभव करता है। जैसे मिश्री का शरबत हो तो उसका आनन्द उसी पुरुष ने

जाना है, जिसने वह शरबत पान किया है॥ २॥ हे प्रभु ! तेरी निर्गुण कथा किसे बताऊँ ? क्या कोई ऐसा विवेकी पुरुष है ? हे कबीर ! मनुष्य जैसी आत्मिक ज्ञान की चिंगारी लगाता है, वैसी ही ईश्वरीय झलक वह देख लेता है॥ ३॥ ३॥ ४७॥

गउड़ी ॥ तह पावस सिंधु धूप नही छहीआ तह उतपति परलउ नाही ॥ जीवन मिरतु न दुखु सुखु बिआपै सुंन समाधि दोऊ तह नाही ॥ १ ॥ सहज की अकथ कथा है निरारी ॥ तुलि नही चढै जाइ न मुकाती हलुकी लगै न भारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अरध उरध दोऊ तह नाही राति दिनसु तह नाही ॥ जलु नही पवनु पावकु फुनि नाही सतिगुर तहा समाही ॥ २ ॥ अगम अगोचरु रहै निरंतरि गुर किरपा ते लहीऐ ॥ कहु कबीर बलि जाउ गुर अपुने सतसंगति मिलि रहीऐ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४८ ॥

वहाँ ईश्वर के पास कोई वर्षा, ऋतु, सागर, धूप एवं छाया नहीं। वहाँ उत्पत्ति अथवा प्रलय भी नहीं। वहाँ जीवन-मृत्यु नहीं, न ही दुख-सुख अनुभव होता है। वहाँ केवल शून्य समाधि है तथा दुविधा नहीं॥ १॥ सहज अवस्था की कथा अनुपम एवं अकथनीय है। यह न ही तोली जाती है और न ही समाप्त होती है। न ही यह हल्की लगती और न ही भारी लगती है॥ १॥ रहाउ॥ लोक अथवा परलोक दोनों ही वहाँ नहीं हैं। रात और दिन भी वहाँ नहीं। फिर वहाँ जल, पवन एवं अग्नि भी नहीं। सतिगुरु वहाँ समा रहा है॥ २॥ अगम्य एवं अगोचर परमात्मा वहाँ अपने आप में ही निवास करता है। गुरु की कृपा से ही परमात्मा पाया जाता है। हे कबीर ! मैं अपने गुरु पर न्यौछावर हूँ, और सत्संगति में मिला रहता हूँ॥ ३॥ ४॥ ४८॥

गउड़ी ॥ पापु पुंनु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥ त्रिसना गूणि भरी घट भीतरि इन बिधि टांड बिसाहिओ ॥ १ ॥ ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥ सगल संसारु कीओ बनजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु दुइ भए जगाती मन तरंग बटवारा ॥ पंच ततु मिलि दानु निबेरहि टांडा उतरिओ पारा ॥ २ ॥ कहत कबीरु सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनि आई ॥ घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥ ३ ॥ ५ ॥ ४९ ॥

पाप एवं पुण्य दोनों से शरीर रूपी बैल मूल्य लिया गया है और प्राण पूँजी के तौर पर प्रकट हुए हैं। इस विधि से बैल खरीदा गया है। बैल की पीठ पर हृदय की बोरी तृष्णाओं से भरी हुई है॥ १॥ हमारा राम ऐसा धनी साहूकार है, जिसने सारी दुनिया को अपना व्यापारी बनाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ काम और क्रोध दोनों (प्राणियों के पथ पर चुंगी वसूलने वाले हैं) अर्थात् श्वासों की पूँजी का कुछ भाग काम एवं क्रोध में फँसने से नष्ट होता जा रहा है और प्राणियों के मन की तरंगें लुटेरे हैं। पाँच विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) मिलकर लूट के माल को आपस में बाँट लेते हैं। इस प्रकार बैल पार हो जाता है॥ २॥ कबीर जी कहते हैं-हे संतजनों ! सुनो, अब ऐसी अवस्था आ बनी है कि (प्रभु-स्मरण-रूपी) ऊँची पहाड़ी पर चढ़ते एक बैल थक गया है और तृष्णा का सौदा फेंककर वह अपनी यात्रा पर चलता बना है॥ ३॥ ५॥ ४९॥

गउड़ी पंचपदा ॥ पेवकड़ै दिन चारि है साहुरड़ै जाणा ॥ अंधा लोकु न जाणई मूरखु एआणा ॥ १ ॥ कहु डडीआ बाधै धन खड़ी ॥ पाहू घरि आए मुकलाऊ आए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओह जि दिसै खूहड़ी कउन लाजु वहारी ॥ लाजु घड़ी सिउ तूटि पड़ी उठि चली पनिहारी ॥ २ ॥ साहिबु होइ दइआलु क्रिपा करे अपुना कारजु सवारे ॥ ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥ ३ ॥ किरत की बांधी सभ फिरै देखहु बीचारी ॥ एस नो किआ आखीऐ किआ करे विचारी ॥ ४ ॥ भई निरासी उठि चली चित बंधि न धीरा ॥ हरि की चरणी लागि रहु भजु सरणि कबीरा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५० ॥

मूर्ख, नादान एवं ज्ञानहीन दुनिया यह नहीं समझती कि जीव-स्त्री ने (इहलोक रूपी) पीहर में चार दिन ही रहना है, तदुपरांत उसने (परलोक-रूपी) ससुराल ही जाना है॥ १॥ बताओ! (यह क्या कौतुक है?) गौना लेकर जाने वाले अतिथि घर में पहुँच गए हैं और उसका पति उसे लेने के लिए आ गया है, लेकिन पत्नी अभी लापरवाही से आधी धोती ही पहन कर खड़ी है॥ १॥ रहाउ॥ यह जो सुन्दर कुऑं है इसमें कौन-सी स्त्री रस्सी डाल रही है। जिसकी रस्सी घड़े सहित टूट जाती है, वह जल भरने वाली इहलोक से उठकर परलोक को चली जाती है॥ २॥ यदि मालिक दया के घर में आ जाए और अपनी कृपादृष्टि धारण करे तो जीव-स्त्री अपने कार्य संवार लेगी। केवल तभी वह (जीव स्त्री) सौभाग्यवती समझी जाती है यदि वह गुरु के शब्द का चिन्तन करती है॥ ३॥ (लेकिन हे भाई!) इसे क्या कहें? यह बेचारी क्या कर सकती है? अपने किए हुए कर्मों के कारण हरेक जीव-स्त्री भटक रही है। ऑंखें खोलकर आप इस तरफ ध्यान दीजिए॥ ४॥ वह निराश होकर (दुनिया से) चली जाती है। उसके मन में कोई सहारा एवं धैर्य नहीं। हे कबीर! भगवान के चरणों से लगा रह और उसकी शरण का भजन कर॥ ५॥ ६॥ ५०॥

गउड़ी॥ जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई॥ रुंडित मुंडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई॥ १॥ हरि बिनु भरमि भुलाने अंधा॥ जा पहि जाउ आपु छुटकावनि ते बाधे बहु फंधा॥ १॥ रहाउ॥ जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही॥ पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही॥ २॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै बिनु बूझे किउ रहीऐ॥ सतिगुरु मिलै अंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ॥ ३॥ तजि बावे दाहने बिकारा हरि पदु द्रिड़ु करि रहीऐ॥ कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ॥ ४॥ ७॥ ५१॥

योगी कहता है-हे भाई! योग (मार्ग) ही भला एवं मीठा है तथा अन्य कोई (उपयुक्त) नहीं। कनफटे, संन्यासी एवं अवधूत-यही कहते हैं कि उन्होंने ही सिद्धि प्राप्त की है॥ १॥ ज्ञानहीन इन्सान भगवान को विस्मृत करके दुविधा में फँसे हुए हैं, इसलिए मैं जिनके पास अपने अहंत्व से मुक्ति कराने के लिए जाता हूँ, वे सभी स्वयं ही अहंत्व के अनेक बन्धनों में फँसे हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब मनुष्य इस प्रकार का अहंकार भूल जाता है तो आत्मा उसमें लीन हो जाती है, जहाँ यह उत्पन्न हुई थी। पण्डित, गुणवान, शूरवीर एवं दानवीर-यही कहते हैं कि केवल हम ही महान हैं॥ २॥ भगवान जिस व्यक्ति को स्वयं सूझ प्रदान करता है, वही समझता है तथा उसे समझे बिना जीवन ही व्यर्थ है। सतिगुरु को मिलने से अज्ञानता का अंधकार दूर हो जाता है। इस विधि से प्रभु नाम रूपी हीरा प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ अपने बाएँ हाथ एवं दाएँ के पापों को छोड़कर ईश्वर के चरण पकड़ कर रखने चाहिएँ। हे कबीर! यदि गूंगे आदमी ने गुड़ खाया हो तो पूछे जाने पर वह क्या कह सकता है॥ ४॥ ७॥ ५१॥

रागु गउड़ी पूरबी, कबीर जी॥ १ओं सतिगुर प्रसादि॥

जह कछु अहा तहा किछु नाही पंच ततु तह नाही॥ इड़ा पिंगुला सुखमन बंदे ए अवगन कत जाही॥ १॥ तागा तूटा गगनु बिनसि गइआ तेरा बोलतु कहा समाई॥ एह संसा मो कउ अनदिनु बिआपै मो कउ को न कहै समझाई॥ १॥ रहाउ॥ जह बरभंडु पिंडु तह नाही रचनहारु तह नाही॥ जोड़णहारो सदा अतीता इह कहीऐ किसु माही॥ २॥ जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै जब लगु होइ बिनासी॥ का को ठाकुरु का को सेवकु को काहू कै जासी॥ ३॥ कहु कबीर लिव लागि रही है जहा बसे दिन राती॥ उआ का मरमु ओही परु जानै ओहु तउ सदा अबिनासी॥ ४॥ १॥ ५२॥

जहाँ कुछ था, वहाँ अब कुछ भी नहीं। पाँच तत्व भी वहाँ नहीं हैं। हे मनुष्य! इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ी अब ये किस तरह गिने जा सकते हैं॥ १॥ (मोह का) धागा टूट गया है और बुद्धि नाश हो गई है। तेरा वचन कहाँ लुप्त हो गया है। यह दुविधा मुझे रात–दिन लगी रहती है। कोई मनुष्य इसे वर्णन करके मुझे समझा नहीं सकता॥ १॥ रहाउ॥ जहाँ यह दुनिया है, शरीर वहाँ नहीं। इसका रचयिता भी वहाँ नहीं। जोड़ने वाला सदैव ही निर्लिप्त है। अब यह आत्मा किसके भीतर समाई हुई कही जा सकती है?॥ २॥ मिलाने से मनुष्य तत्वों को मिला नहीं सकता। जब तक शरीर का नाश न हो, वह अलग करने से इनको अलग नहीं कर सकता। आत्मा किसकी मालिक है और किसकी सेविका? यह कहाँ एवं किसके पास जा सकती है?॥ ३॥ हे कबीर! मेरी वृत्ति वहाँ लगी रहती है, जहाँ दिन–रात प्रभु निवास करता है। उसका रहस्य वह स्वयं ही जानता है और वह हमेशा ही अमर है॥ ४॥ १॥ ५२॥

गउड़ी ॥ सुरति सिम्रिति दुइ कंनी मुंदा परमिति बाहरि खिंथा ॥ सुंन गुफा महि आसणु बैसणु कलप बिबरजित पंथा ॥ १ ॥ मेरे राजन मै बैरागी जोगी ॥ मरत न सोग बिओगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खंड ब्रहमंड महि सिंङी मेरा बटूआ सभु जगु भसमाधारी ॥ ताड़ी लागी त्रिपलु पलटीऐ छूटै होइ पसारी ॥ २ ॥ मनु पवनु दुइ तूंबा करी है जुग जुग सारद साजी ॥ थिरु भई तंती तूटसि नाही अनहद किंगुरी बाजी ॥ ३ ॥ सुनि मन मगन भए है पूरे माइआ डोल न लागी ॥ कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गइओ बैरागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥

भगवान के चरणों में वृत्ति जोड़नी और नाम–सिमरन दोनों ही (मानों) मेरे कानों की दो मुद्राएँ हैं और भगवान का यथार्थ ज्ञान–यह मैंने अपने तन पर गुदड़ी ली हुई है। ध्यान अवस्था रूपी गुफा में मैं आसन लगाकर विराजमान हूँ और कल्पना का विवर्जित मेरा योग–मार्ग है॥ १॥ हे मेरे राजन! मैं ईश्वर की प्रीति से रंगा हुआ योगी हूँ। (इसलिए) मुझे मृत्यु, शोक एवं वियोग स्पर्श नहीं कर सकते हैं॥ १॥ रहाउ॥ समूचे ब्रह्माण्ड में (भगवान के अस्तित्व का सबको सन्देश देना) यह, मानों मैं बाजा बजा रहा हूँ। सारी दुनिया को क्षणभंगुर समझना यह मेरा भस्म डालने वाला थैला है। तीन गुणों वाली माया से मुक्ति एवं संसार से मोक्ष मेरा समाधि लगाना है॥ २॥ अपने हृदय एवं श्वास को मैंने वीणा के दो तुंबे बनाया है और सभी युगों में विद्यमान प्रभु को मैंने इसकी डण्डी बनाया है। तार स्थिर हो गई है और टूटती नहीं तथा (मेरे भीतर) सहज ही अनहद किंगुरी बज रही है॥ ३॥ इसको सुनने से मेरा मन मग्न हो जाता है और उसे मोहिनी का धक्का नहीं लगता। हे कबीर! जो प्रभु प्रीति वाला योगी ऐसा खेल–खेलकर जाता है, वह दोबारा जन्म नहीं लेता॥ ४॥ २॥ ५३॥

गउड़ी ॥ गज नव गज दस गज इकीस पुरीआ एक तनाई ॥ साठ सूत नव खंड बहतरि पाटु लगो अधिकाई ॥ १ ॥ गई बुनावन माहो ॥ घर छोडिऐ जाइ जुलाहो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गजी न मिनीऐ तोलि न तुलीऐ पाचनु सेर अढाई ॥ जौ करि पाचनु बेगि न पावै झगरु करै घरहाई ॥ २ ॥ दिन की बैठ खसम की बरकस इह बेला कत आई ॥ छूटे कूंडे भीगै पुरीआ चलिओ जुलाहो रीसाई ॥ ३ ॥ छोछी नली तंतु नही निकसै नतर रही उरझाई ॥ छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५४ ॥

नौ गज (गोलक), दस गज (नाड़ियाँ) और इक्कीस गजों का एक पूरा थान (ताना) बुन दे। साठ धागों (नाड़ियों के ताने) एवं बहत्तर पेटे (छोटी नाड़ियाँ) साथ नौ जोड़ (भाग) और मिला दे॥ १॥

सूत बुनाने के लिए गई हुई आत्मा ने कहा। अपने पुराने घर (शरीर) को छोड़कर आत्मा जुलाहे के बुने हुए में चली जाती है॥ १॥ रहाउ॥ शरीर गजों से मापा अथवा बाट से तोला नहीं जाता। इसकी खुराक ढाई सेर है। यदि शरीर को खुराक शीघ्र न मिले तो आत्मा झगड़ा करती है और शरीर का घर नष्ट हो जाता है॥ २॥ हे प्रभु के प्रतिकूल आत्मा ! तूने कितने दिन यहाँ बैठे रहना है ? यह अवसर तुझे दोबारा कब मिलेगा ? बर्तन एवं गीली नलियों को छोड़कर जुलाही आत्मा क्रोध में चली जाती है॥ ३॥ श्वास का धागा खाली हवा की नाली में से नहीं निकलता। उलझ कर श्वास का धागा टूट गया है। हे भाग्यहीन आत्मा ! यहाँ (इहलोक में) रहती हुई तू संसार को त्याग दे। तुझे यह ज्ञान देने के लिए कबीर यह कहता है॥ ४॥ ३॥ ५४॥

गउड़ी ॥ एक जोति एका मिली किंबा होइ महोइ ॥ जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥ १ ॥ सावल सुंदर रामईआ ॥ मेरा मनु लागा तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधु मिलै सिधि पाईऐ कि एहु जोगु कि भोगु ॥ दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥ २ ॥ लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥ जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार ॥ ३ ॥ कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥ कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ ५५ ॥

एक ज्योति परम ज्योति से मिल जाती है। क्या यह दोबारा अलग हो सकती है अथवा नहीं ? जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर का नाम अंकुरित नहीं होता, वह फूट-फूट कर दुखी होकर मरता है॥ १॥ हे मेरे सांवले एवं सुन्दर राम ! मेरा मन तो तेरे चरणों से लगा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ संतों को मिलने से सिद्धि प्राप्त होती है। क्या लाभ है इस योग-मार्ग का और क्या भोग का ? जब गुरु (की वाणी) एवं सिक्ख (की वृत्ति) दोनों आपस में मिल जाते हैं तो कार्य सफल हो जाता है और राम के नाम से संयोग कायम हो जाता है॥ २॥ लोग समझते हैं कि यह (गुरु का शब्द) एक गीत है परन्तु यह तो ब्रह्म का चिन्तन है। यह उस उपदेश की भाँति है जो बनारस में मनुष्य को मरते समय दिया जाता है॥ ३॥ जो भी व्यक्ति चित्त लगाकर भगवान के नाम को गायन करता अथवा सुनता है, हे कबीर ! इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह अवश्य ही परमगति प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ १॥ ४॥ ५५॥

गउड़ी ॥ जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिओ रे ॥ करम धरम करते बहु संजम अहंबुधि मनु जारिओ रे ॥ १ ॥ सास ग्रास को दातो ठाकुरु सो किउ मनहु बिसारिओ रे ॥ हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिओ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिसना त्रिखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिओ रे ॥ उनमत मान हिरिओ मन माही गुर का सबदु न धारिओ रे ॥ २ ॥ सुआद लुभत इंद्री रस प्रेरिओ मद रस लैत बिकारिओ रे ॥ करम भाग संतन संगाने कासट लोह उधारिओ रे ॥ ३ ॥ धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारिओ रे ॥ कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिओ रे ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥ ५६ ॥

भगवान के सिमरन के बिना मनुष्य जितने भी यत्न करते हैं, वे भवसागर में डूब जाते हैं और पार नहीं होते हैं। जो व्यक्ति धर्म, कर्म एवं बहुत संयम करते हैं, अहंबुद्धि उनके मन को जला देती है॥ १॥ हे नश्वर प्राणी ! तूने उस ठाकुर को अपने हृदय में से क्यों भुला दिया है, जिसने तुझे जीवन एवं भोजन प्रदान किए हैं ? यह मनुष्य-जन्म (मानो) हीरा एवं अमूल्य लाल है, लेकिन तूने इसे कौड़ी के लिए गंवा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! तुझे तृष्णा की प्यास एवं दुविधा की भूख का दुःख लगा हुआ है, क्योंकि अपने हृदय में तुम ईश्वर के नाम का चिंतन नहीं करते। धर्म-कर्म का नशा उनको

ठग लेता है, जो गुरु का शब्द अपने हृदय में नहीं बसाते॥ २॥ ऐसे व्यक्ति पापी हैं जो दुनिया के स्वादों में आकर्षित हैं, जो विषय-भोग के रसों में लीन हैं और मदिरा का स्वाद लेते हैं। जो उत्तम भाग्य एवं किस्मत द्वारा संतों की संगति से जुड़ते हैं, वह लकड़ी से लगे लोहे की भाँति (भवसागर से) पार हो जाते हैं॥ ३॥ भ्रम में फँसकर मैं अनेक योनियों के जन्मों में दौड़-दौड़कर भटकता हार गया हूँ। अब मैं इस दुःख से थक गया हूँ। हे कबीर! गुरु को मिलने से मुझे महा रस प्राप्त हुआ है और प्रेम-भक्ति ने मुझे (विकारों से) बचा लिया है॥ ४॥ १॥ ५॥ ५६॥

गउड़ी ॥ कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस ॥ काम सुआइ गज बसि परे मन बउरा रे अंकसु सहिओ सीस ॥ १ ॥ बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे ॥ निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिओ न राम जहाजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥ छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि ॥ २ ॥ जिउ नलनी सूअटा गहिओ मन बउरा रे माया इहु बिउहारु ॥ जैसा रंगु कसुंभ का मन बउरा रे तिउ पसरिओ पासारु ॥ ३ ॥ नावन कउ तीरथ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥ कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ५७ ॥

हे मूर्ख मन! भगवान ने यह दुनिया एक लीला रची है, जैसे हाथी को पकड़ने हेतु लोग कालबूत की हथिनी बनाते हैं। हे मूर्ख मन! कामवासना के वशीभूत हाथी पकड़ में आ जाता है और अपने सिर पर महावत का अंकुश सहता है॥ १॥ हे मूर्ख मन! विषय-विकारों से बच, ईश्वर में लीन हो और यह उपदेश धारण कर। हे मूर्ख मन! तूने निडर होकर भगवान का भजन नहीं किया और राम नाम रूपी जहाज पर सवार नहीं हुआ॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मूर्ख मन! अपना हाथ आगे फैलाकर बन्दर दानों की मुट्ठी भर लेता है। हे मेरे मूर्ख मन! मुक्ति पाने की चिन्ता धारण कर, उसे हरेक घर के द्वार पर नाचना पड़ता है॥ २॥ हे मेरे मूर्ख मन! जैसे तोता नलिनी पर बैठकर फँस जाता है, वैसे ही दुनिया की माया का प्रसार है और मनुष्य इसमें फँस जाता है। हे मूर्ख मन! जैसे कसुंभे का रंग थोड़े ही दिन का है वैसे ही दुनिया का प्रसार (चार दिन हेतु) बिखरा हुआ है॥ ३॥ हे मूर्ख मन! स्नान करने के लिए बहुत सारे धार्मिक तीर्थ हैं और पूजा करने के लिए अनेक देवी-देवता हैं। कबीर जी कहते हैं कि हे मूर्ख मन! इस तरह तेरी मुक्ति नहीं होनी। मुक्ति केवल भगवान का सिमरन एवं भक्ति करने से ही मिलेगी॥ ४॥ १॥ ६॥ ५७॥

गउड़ी ॥ अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै ॥ राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥ १ ॥ हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणीधरु इहै सार धनु कहीऐ ॥ जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु धन कारणि सिव सनकादिक खोजत भए उदासी ॥ मनि मुकंदु जिहबा नाराइनु परै न जम की फासी ॥ २ ॥ निज धनु गिआनु भगति गुरि दीनी तासु सुमति मनु लागा ॥ जलत अंभ थंभि मनु धावत भरम बंधन भउ भागा ॥ ३ ॥ कहै कबीरु मदन के माते हिरदै देखु बीचारी ॥ तुम घरि लाख कोटि अस्व हसती हम घरि एकु मुरारी ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ५८ ॥

(हे जीव!) राम नाम रूपी धन संचित कर। चूंकि यह धन कहीं नहीं जाता। इस नाम-धन को न अग्नि जला सकती है, न पवन उड़ाकर ले जा सकती है और इस धन के निकट चोर भी नहीं आता॥ १॥ हमारा धन तो माधव गोविन्द ही है, जो सारी धरती का सहारा है। इसी धन को सब धनों

में सर्वोत्तम कहा जाता है। जो सुख प्रभु गोविन्द के भजन में मिलता है, वह सुख राज्य-शासन में भी नहीं मिलता॥ १॥ रहाउ॥ इस धन के लिए शिवजी एवं (ब्रह्मा के पुत्र) सनकादिक खोज करते-करते संसार से विरक्त हुए। जिस जीव के हृदय में मुक्तिदाता ईश्वर रहता है, जिसकी जिह्वा पर नारायण विद्यमान है, उसे यम की फाँसी नहीं लग सकती॥ २॥ भगवान की भक्ति एवं ज्ञान ही (जीव का) यथार्थ धन है। जिस सुमति वाले को गुरु ने यह देन प्रदान की है, उसका मन उस प्रभु में बसता है। प्रभु का नाम (तृष्णा में) जलती हुई आत्मा हेतु जल है और भागते-दौड़ते मन हेतु स्तम्भ है। उससे दुविधा के बन्धनों का भय दूर हो जाता है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं-हे कामवासना में लिप्त मानव! अपने हृदय में सोच-विचार कर देख, यदि तेरे घर में लाखों-करोड़ों हाथी तथा घोड़े हैं तो मेरे हृदय-घर में एक मुरारी ही है॥ ४॥ १॥ ७॥ ५८॥

गउड़ी ॥ जिउ कपि के कर मुसटि चनन की लुबधि न तिआगु दइओ ॥ जो जो करम कीए लालच सिउ ते फिरि गरहि परिओ ॥ १ ॥ भगति बिनु बिरथे जनमु गइओ ॥ साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ उदिआन कुसम परफुलित किनहि न घ्राउ लइओ ॥ तैसे भ्रमत अनेक जोनि महि फिरि फिरि काल हइओ ॥ २ ॥ इआ धन जोबन अरु सुत दारा पेखन कउ जु दइओ ॥ तिन ही माहि अटकि जो उरझे इंद्री प्रेरि लइओ ॥ ३ ॥ अउध अनल तनु तिन को मंदरु चहु दिस ठाटु ठइओ ॥ कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर ओट लइओ ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥ ५९ ॥

जैसे लालच कारण बन्दर अपने हाथ में (भुने हुए) चनों की मुट्ठी को नहीं छोड़ता और इस कारण वह फँस जाता है, वैसे ही जीव लालच के वशीभूत होकर जो-जो कर्म करता है, वे सभी दोबारा उसके गले में ही पड़ते हैं॥ १॥ भगवान की भक्ति के बिना मनुष्य-जन्म व्यर्थ ही जाता है। साधसंगत में भगवान का भजन किए बिना सत्य कहीं भी निवास नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ जैसे भयानक वन में खिले हुए फूलों की सुगन्धि कोई नहीं ले सकता, वैसे ही प्रभु-वन्दना एवं भक्ति के बिना मनुष्य कई योनियों में भटकता है और मृत्यु उसे बार-बार नष्ट करती है॥ २॥ यह धन, यौवन, पुत्र एवं पत्नी- जो प्रभु के दिए हुए हैं, केवल एक बीत जाने वाला दृश्य है। जो इनमें फँस और उलझ जाते हैं, उनको इन्द्रियाँ आकर्षित करके कुमार्गगामी कर देती हैं॥ ३॥ आयु अग्नि है और शरीर तिनकों का घर है। चारों तरफ सर्वत्र यही बनावट बनी हुई है। हे कबीर! इस भयानक संसार-सागर से पार होने के लिए मैंने सतिगुरु की शरण ली है॥ ४॥ १॥ ८॥ ५९॥

गउड़ी ॥ पानी मैला माटी गोरी ॥ इस माटी की पुतरी जोरी ॥ १ ॥ मै नाही कछु आहि न मोरा ॥ तनु धनु सभु रसु गोबिंद तोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इस माटी महि पवनु समाइआ ॥ झूठा परपंचु जोरि चलाइआ ॥ २ ॥ किनहू लाख पांच की जोरी ॥ अंत की बार गगरीआ फोरी ॥ ३ ॥ कहि कबीर इक नीव उसारी ॥ खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी ॥ ४ ॥ १ ॥ ९ ॥ ६० ॥

पिता के वीर्य की मलिन बूँद एवं माँ के रक्त से भगवान ने जीव का यह मिट्टी का शरीर बनाया है॥ १॥ हे मेरे गोविन्द! मेरा कोई वजूद नहीं है और मेरे पास कुछ भी नहीं है। यह शरीर, धन एवं यह आत्मा सब तेरे दिए हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ इस मिट्टी के शरीर में प्राण डाल दिए गए हैं, लेकिन जीव सब झुठलाकर झूठा परपंच करके बैठ जाता है॥ २॥ कई मनुष्यों ने पाँच लाख की सम्पति जोड़ ली है, मृत्यु आने पर उनकी भी शरीर-रूपी गागर टूट जाती है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं-हे अभिमानी जीव! तेरी जीवन की जो बुनियाद रखी गई है, वह एक पलक में ही नाश होने वाली है॥ ४॥ १॥ ९॥ ६०॥

गउड़ी ॥ राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥ ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥ १ ॥ दीन दइआल भरोसे तेरे ॥ सभु परवारु चड़ाइआ बेड़े ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा तिसु भावै ता हुकमु मनावै ॥ इस बेड़े कउ पारि लघावै ॥ २ ॥ गुर परसादि ऐसी बुधि समानी ॥ चूकि गई फिरि आवन जानी ॥ ३ ॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ उरवारि पारि सभ एको दानी ॥ ४ ॥ २ ॥ १० ॥ ६१ ॥

हे मेरी आत्मा ! ऐसे राम का नाम जपो, जैसे ध्रुव एवं भक्त प्रहलाद ने श्री हरि की आराधना की थी॥ १॥ हे दीनदयालु! तेरे भरोसे पर मैंने अपना सारा परिवार ही तेरे नाम रूपी जहाज पर चढ़ा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जब प्रभु को अच्छा लगता है तो वह (इस सारे परिवार से) अपना हुक्म मनवाता है, और इस प्रकार परिवार सहित इस जहाज को विकारों की लहरों से पार कर देता है॥ २॥ गुरु की कृपा से मेरे भीतर ऐसी बुद्धि प्रकट हो गई है कि मेरा जन्म-मरण का चक्र ही मिट गया है॥ ३॥ हे कबीर ! तू सारंगपाणि प्रभु का भजन कर, इस लोक एवं परलोक में सर्वत्र केवल वही दाता है॥ ४॥ २॥ १०॥ ६१॥

गउड़ी ६ ॥ जोनि छाडि जउ जग महि आइओ ॥ लागत पवन खसमु बिसराइओ ॥ १ ॥ जीअरा हरि के गुना गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गरभ जोनि महि उरध तपु करता ॥ तउ जठर अगनि महि रहता ॥ २ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइओ ॥ अब के छुटके ठउर न ठाइओ ॥ ३ ॥ कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ आवत दीसै जात न जानी ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥ ६२ ॥

माँ का गर्भ छोड़कर जब प्राणी दुनिया में आता है तो (माया रूपी) हवा लगते ही मालिक-प्रभु को विस्मृत कर देता है॥ १॥ हे मेरे मन ! भगवान की महिमा-स्तुति कर॥ १॥ रहाउ॥ (हे मन !) जब तू गर्भ योनि में उल्टा लटका हुआ तपस्या करता था तो तू पेट की अग्नि में रहता था॥ २॥ जीव चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ इस दुनिया में आया है। लेकिन दुनिया में भी खाली घूमते हुए फिर कोई स्थान नहीं मिलता॥ ३॥ हे कबीर ! सारंगपाणि प्रभु का भजन कर, जो न जन्मता दिखता है और न मरता हुआ सुना जाता है॥ ४॥ १॥ ११॥ ६२॥

गउड़ी पूरबी ॥ सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु ॥ होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥ १ ॥ रमईआ गुन गाईऐ ॥ जा ते पाईऐ परम निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआ इसनानु ॥ जब लगु जुगति न जानीऐ भाउ भगति भगवान ॥ २ ॥ संपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥ जिउ संपै तिउ बिपति है बिध ने रचिआ सो होइ ॥ ३ ॥ कहि कबीर अब जानिआ संतन रिदै मझारि ॥ सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥ ६३ ॥

(हे जीव !) स्वर्ग में निवास के लिए कामना नहीं करनी चाहिए और न ही नरक में वास करने से डरना चाहिए। जो कुछ होना है, वह निश्चित ही होगा। इसलिए अपने मन में कोई आशा मत रख॥ १॥ (हे जीव !) भगवान की महिमा-स्तुति करते रहना चाहिए, इस प्रकार नाम रूपी सर्वश्रेष्ठ खजाना प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ क्या लाभ जप का, क्या तपस्या का, क्या संयम का, क्या व्रत का एवं क्या लाभ स्नान करने का। जब तक भगवान के साथ प्रेम एवं उसकी भक्ति की युक्ति ही नहीं आती ?॥ २॥ संपति देखकर खुश नहीं होना चाहिए और न ही विपत्ति देखकर रोना चाहिए। जो कुछ भगवान करता है वही होता है, जैसे संपति है वैसे ही विपत्ति है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं-अब यह ज्ञान हुआ है (कि ईश्वर) संतों के हृदय में बसता है, वही सेवक सेवा करते हुए भले लगते हैं, जिनके हृदय में ईश्वर बसता है॥ ४॥ १॥ १२॥ ६३॥

गउड़ी ॥ रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु ॥ बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु ॥ १ ॥ राम रसु पीआ रे ॥ जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउर मुए किआ रोईऐ जउ आपा थिरु न रहाइ ॥ जो उपजै सो बिनसि है दुखु करि रोवै बलाइ ॥ २ ॥ जह की उपजी तह रची पीवत मरदन लाग ॥ कहि कबीर चिति चेतिआ राम सिमरि बैराग ॥ ३ ॥ २ ॥ १३ ॥ ६४ ॥

हे मन ! अंतकाल तेरा कोई सहायक नहीं बनेगा, चाहे (दूसरे रिश्तेदारों का) भार खींचकर अपने सिर पर ले ले। जैसे पक्षियों का बसेरा वृक्षों पर होता है, वैसे ही इस दुनिया का निवास है॥ १॥ हे भाई ! मैंने राम रस का पान किया है जिस रस से मुझे दूसरे रस (स्वाद) भूल गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ किसी दूसरे की मृत्यु पर विलाप करने का क्या अभिप्राय, जब हमने आप ही सदा निवास नहीं करना। जो-जो इन्सान जन्म लेता है, उसकी मृत्यु हो जाती है, फिर तो इस दुःख कारण मेरे भूत-प्रेत ही रोएँ॥ २॥ जब इन्सान महापुरुषों की संगति में लगता है और नाम-अमृत पान करता है तो उसकी आत्मा उसमें लीन हो जाती है, जिससे वह उत्पन्न हुई थी। कबीर जी कहते हैं-मैंने अपने हृदय में राम को स्मरण किया है और उसे ही प्रेमपूर्वक याद करता हूँ॥ ३॥ २॥ १३॥ ६४॥

रागु गउड़ी ॥ पंथु निहारै कामनी लोचन भरी ले उसासा ॥ उर न भीजै पगु ना खिसै हरि दरसन की आसा ॥ १ ॥ उडहु न कागा कारे ॥ बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥ एकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु रवीजै ॥ २ ॥ १ ॥ १४ ॥ ६५ ॥

आहें भरती और अश्रुओं से भरी आँखों से जीव-स्त्री पति-प्रभु का मार्ग देखती है। उसका हृदय प्रसन्न नहीं और भगवान के दर्शनों की आशा में वह अपने चरण पीछे नहीं हटाती॥ १॥ हे काले कौए ! उड़ जा, चूंकि जो मैं अपने प्रियतम प्रभु को शीघ्र मिल जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी कहते हैं-जीवन पदवी प्राप्त करने के लिए भगवान की भक्ति करनी चाहिए। नारायण के नाम का ही एकमात्र सहारा होना चाहिए और जिह्वा से राम को ही स्मरण करना चाहिए॥ २॥ १॥ १४॥ ६५॥

रागु गउड़ी ११ ॥ आस पास घन तुरसी का बिरवा माझ बना रसि गाऊं रे ॥ उआ का सरूपु देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे ॥ १ ॥ तोहि चरन मनु लागो सारिंगधर ॥ सो मिलै जो बडभागो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिंद्राबन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊ रे ॥ जा का ठाकुरु तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १५ ॥ ६६ ॥

जिस मुरली मनोहर के आसपास तुलसी के सघन पौधे थे तथा जो तुलसी के वन में प्रेमपूर्वक गाएँ चराता गा रहा था, उसका दर्शन करके गोकुल की ग्वालिनी मुग्ध हो गई और कहने लगी, हे प्रियवर ! मुझे छोड़कर किसी अन्य स्थान पर मत जाना॥ १॥ हे सारिंगधर प्रभु ! मेरा मन तेरे चरणों से लगा हुआ है, लेकिन तुझे वही मिलता है जो भाग्यशाली होता है॥ १॥ रहाउ॥ वृंदावन मन को लुभाने वाला है, जहाँ मनोहर कृष्ण गौएँ चराता था। हे सारिंगधर ! मेरा नाम कबीर है, जिसका ठाकुर तू है॥ २॥ २॥ १५॥ ६६॥

गउड़ी पूरबी १२ ॥ बिपल बसत्र केते है पहिरे किआ बन मधे बासा ॥ कहा भइआ नर देवा धोखे किआ जलि बोरिओ गिआता ॥ १ ॥ जीअरे जाहिगा मै जानां ॥ अबिगत समझु इआना ॥ जत जत देखउ बहुरि न पेखउ संगि माइआ लपटाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनी धिआनी बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धंधा ॥ कहि कबीर इक राम नाम बिनु इआ जगु माइआ अंधा ॥ २ ॥ १ ॥ १६ ॥ ६७ ॥

कुछ व्यक्ति अनेक प्रकार के वस्त्र पहनते हैं। जंगल में बसेरा करने का क्या लाभ? यदि धूप इत्यादि जलाकर देवताओं की पूजा कर ली तो क्या लाभ हुआ? और यदि अपने शरीर को (तीर्थो के) जल में डुबा लिया तो क्या लाभ हुआ?॥ १॥ हे मन! मैं जानता हूँ कि तुम (इस दुनिया से) चले जाओगे। हे मूर्ख प्राणी! एक परमेश्वर को समझ। जो कुछ भी प्राणी अब देखता है, वह उसे दोबारा नहीं देखेगा परन्तु तो भी वह माया से लिपटा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ कोई ज्ञान–चर्चा कर रहा है, कोई मनन कर रहा है, कोई दूसरों को उपदेश दे रहा है, लेकिन यह समूचा जगत् माया का जंजाल ही है। कबीर जी कहते हैं–एक राम का नाम–सिमरन किए बिना यह दुनिया माया ने ज्ञानहीन बनाई हुई है॥ २॥ १॥ १६॥ ६७॥

गउड़ी १२ ॥ मन रे छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु इआ माइआ के डांडे ॥ सूरु कि सनमुख रन ते डरपै सती कि सांचै भांडे ॥ १ ॥ डगमग छाडि रे मन बउरा ॥ अब तउ जरे मरे सिधि पाईऐ लीनो हाथि संधउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध माइआ के लीने इआ बिधि जगतु बिगूता ॥ कहि कबीर राजा राम न छोडउ सगल ऊच ते ऊचा ॥ २ ॥ २ ॥ १७ ॥ ६८॥

हे मेरे मन! भ्रम छोड़ दे और प्रत्यक्ष तौर पर नृत्य कर। चूंकि यह सब माया के झगड़े हैं। वह कैसा शूरवीर है जो आमने–सामने लड़ाई से डरता है और वह नारी सती नहीं हो सकती जो घर के बर्तन एकत्रित करने लग जाती है?॥ १॥ हे मूर्ख मन! डगमगाना त्याग दे। जिस नारी ने हाथ में सिंदूर लगाया हुआ नारियल ले लिया उसे तो अब जल कर ही सिद्धि प्राप्त होगी॥ १॥ रहाउ॥ सारी दुनिया काम, क्रोध एवं माया में लीन है। इस तरह यह दुनिया नाश हो रही है। कबीर जी कहते हैं– तू राजा राम को मत त्याग, जो सर्वोपरि है॥ २॥ २॥ १७॥ ६८॥

गउड़ी १३ ॥ फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत बीचार ॥ तुही दरीआ तुही करीआ तुझै ते निसतार ॥ १ ॥ बंदे बंदगी इकतीआर ॥ साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरा आधारु मेरा जिउ फूलु जई है नारि ॥ कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै मारि ॥ २ ॥ १८ ॥ ६९ ॥

हे भगवान! तेरा हुक्म मुझे मंजूर है और पुनः इस पर विचार नहीं करता। हे प्रभु! तू ही दरिया है और तू ही मल्लाह है। तुझ से ही मेरा कल्याण है॥ १॥ हे मनुष्य! प्रभु की भक्ति स्वीकार कर, चाहे तेरा मालिक तुझ पर क्रोधित होवे अथवा तुझ से प्रेम करे॥१॥ रहाउ॥ (हे भगवान!) तेरा नाम ही मेरा ऐसे आधार है, जैसे फूल जल में खिला रहता है। कबीर जी कहते हैं–मैं तेरे घर का गुलाम हूँ, चाहे जीवित रखो, चाहे जीवन लीला समाप्त कर दो॥ २॥ १८॥ ६९॥

गउड़ी ॥ लख चउरासीह जीअ जोनि महि भ्रमत नंदु बहु थाको रे ॥ भगति हेति अवतारु लीओ है भागु बडो बपुरा को रे ॥ १ ॥ तुम्ह जु कहत हउ नंद को नंदनु नंद सु नंदनु का को रे ॥ धरनि अकासु दसो दिस नाही तब इहु नंदु कहा थो रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरंजन जा को रे ॥ कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु जा कै माई न बापो रे ॥ २ ॥ १९ ॥ ७० ॥

हे जिज्ञासु! चौरासी लाख जीवों की योनियों में भटक–भटक कर (श्रीकृष्ण का पालनहार पिता) नन्द बहुत थक गया था। उसकी भक्ति पर खुश होकर श्रीकृष्ण ने उसके घर अवतार धारण किया। तब उस बेचारे नन्द का भाग्य उदय हुआ॥ १॥ हे जिज्ञासु! तुम कहते हो कि श्री कृष्ण नन्द का पुत्र था, वह नन्द स्वयं किसका पुत्र था? जब यह धरती, आकाश एवं दसों दिशाएँ नहीं होते थे, तब यह नन्द कहाँ था?॥ १॥ रहाउ॥ हे जिज्ञासु! सत्य यही है कि जिस भगवान का नाम निरंजन है,

वह संकट में नहीं पड़ता और न ही कोई योनि धारण करता है। कबीर का स्वामी ऐसा ठाकुर है, जिसकी न कोई माता है और न ही पिता है॥ २॥ १६॥ ७०॥

गउड़ी ॥ निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥ निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निंदा बापु निंदा महतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥ नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥ रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥ १ ॥ निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि हमारा चीतु ॥ निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥ २ ॥ निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै उधारु ॥ जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥ ३ ॥ २० ॥ ७१ ॥

हे निन्दा करने वाले लोगो ! तुम लोग निन्दक बनकर जितनी चाहे मेरी निन्दा करो। मुझ प्रभु के सेवक को निन्दा बड़ी मीठी एवं प्यारी लगती है। निन्दा मेरा पिता है और निन्दा ही मेरी माता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि लोग मेरी निन्दा करें तो ही मैं स्वर्ग जा सकता हूँ और प्रभु का नाम रूपी धन मेरे मन में बस सकता है। यदि हृदय शुद्ध होते हुए हमारी निन्दा हो तो निंदक हमारे कपड़े धोता है अर्थात् हमें पवित्र करने में सहयोग देता है॥ १॥ जो मनुष्य हमारी निन्दा करता है, वह हमारा मित्र है, क्योंकि हमारी वृत्ति अपने निंदक पर रहती है। हमारा निंदक मनुष्य वह है जो हमारी बुराइयों को नष्ट होने से विराम लगाता है अपितु निंदक से तो हमारा जीवन भला बनता है॥ २॥ मैं उससे प्रेम एवं स्नेह करता हूँ, जो मेरी निन्दा करता है। निन्दा हमारा उद्धार करती है। दास कबीर के लिए तो उसके अवगुणों का नाश होना सर्वोत्तम बात है। परन्तु निंदक (दूसरों की निन्दा करता स्वयं अवगुणों में) डूब जाता है और हम (अवगुणों से सचेत होकर) बच जाते हैं॥ ३॥ २०॥ ७१॥

राजा राम तूं ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब हम होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही ॥ अब हम तुम एक भए हहि एकै देखत मनु पतीआही ॥ १ ॥ जब बुधि होती तब बलु कैसा अब बुधि बलु न खटाई ॥ कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ॥ २ ॥ २१ ॥ ७२ ॥

हे मेरे राजा राम ! तू बहुत ही निडर है। हे स्वामी राम ! जीवों को भवसागर से पार करवाने के लिए तू एक नैया है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! (तेरा कुछ अद्भुत ही स्वभाव है) जब मैं अभिमानी था तुम मुझ में नहीं थे। अब जब तुम मुझ में हो, मैं अभिमानी नहीं हूँ। हे प्रभु ! अब तुम और हम एकरूप हो गए हैं, अब तुम्हें देखकर हमारा मन कृतार्थ हो गया है॥ १॥ (हे स्वामी !) जब तक हम जीवों में अपनी बुद्धि (का अभिमान) होता है, तब तक हमारे भीतर कोई आत्मिक बल नहीं होता, लेकिन अब (जब तुम स्वयं हमारे भीतर प्रकट हुए हो) तब हमारी बुद्धि एवं बल का हमें अभिमान नहीं रहा। कबीर जी कहते हैं – (हे राम !) तुमने मेरी (अहंकारग्रस्त) बुद्धि छीन ली है, अब वह बदल गई है और सिद्धि प्राप्त हो गई है॥ २॥ २१॥ ७२॥

गउड़ी ॥ खट नेम करि कोठड़ी बांधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥ कुंजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥ १ ॥ अब मन जागत रहु रे भाई ॥ गाफलु होइ कै जनमु गवाइओ चोरु मुसै घरु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच पहरूआ दर महि रहते तिन का नही पतीआरा ॥ चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥ २ ॥ नउ घर देखि जु कामनि भूली बसतु अनूप न पाई ॥ कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवैं ततु समाई ॥ ३ ॥ २२ ॥ ७३ ॥

भगवान ने षट्चक्र बनाकर (मानव शरीर–रूपी) छोटा–सा घर बना दिया है और इसमें उसने (अपनी ज्योति–रूपी) अनुपम वस्तु रख दी है। ताला और चाबी की भाँति प्राणों को उसका रक्षक

बनाया गया है। इस खेल को करने में परमात्मा ने कोई देरी नहीं की॥ १॥ हे भाई ! अब तू अपनी आत्मा को जाग्रत रख। क्योंकि लापरवाह होकर तूने अपना अनमोल मानव–जीवन गंवा दिया है। तेरा घर विकार रूपी चोर लूटते जा रहे हैं॥ १॥ रहाउ॥ पाँच प्रहरी इस घर के द्वार पर पहरेदार खड़े हैं, परन्तु उन पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। जब तक तुम अपने सुचेत मन में जागते हो, तुझे (प्रभु का) प्रकाश एवं उजाला प्राप्त होगा॥ २॥ जो जीव–स्त्री शरीर के नौ घरों को देखकर भटक जाती है, उसे ईश्वर के नाम की अनूप वस्तु प्राप्त नहीं होती। कबीर जी कहते हैं–जब ये नौ ही घर वश में आ जाते हैं तो परमात्मा की ज्योति दसवें घर में समा जाती है॥ ३॥ २२॥ ७३॥

गउड़ी ॥ माई मोहि अवरु न जानिओ आनानां ॥ सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मोरे प्रानानां ॥ रहाउ ॥ हिरदे प्रगासु गिआन गुर गंमित गगन मंडल महि धिआनानां ॥ बिखै रोग भै बंधन भागे मन निज घरि सुखु जानाना ॥ १ ॥ एक सुमति रति जानि मानि प्रभ दूसर मनहि न आनाना ॥ चंदन बासु भए मन बासन तिआगि घटिओ अभिमानाना ॥ २ ॥ जो जन गाइ धिआइ जसु ठाकुर तासु प्रभू है थानानां ॥ तिह बड भाग बसिओ मनि जा कै करम प्रधान मथानाना ॥ ३ ॥ काटि सकति सिव सहजु प्रगासिओ एकै एक समानाना ॥ कहि कबीर गुर भेटि महा सुख भ्रमत रहे मनु मानानां ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥

हे मेरी माता ! मैं भगवान के अलावा किसी दूसरे को नहीं जानता, क्योंकि मेरे प्राण तो उस (भगवान) में बस रहे हैं, जिसका यश एवं महिमा शिव और सनकादिक भी गाते हैं॥ रहाउ॥ गुरु को मिलने से ज्ञान का प्रकाश मेरे ह्रदय में प्रवेश कर गया है और मेरा ध्यान गगन मण्डल (दसम द्वार) में स्थिर हो गया है। पाप का रोग, भय एवं दुनिया के बन्धन दौड़ गए हैं और मेरी आत्मा ने अपने आत्मस्वरूप में ही सुख अनुभव कर लिया है॥ १॥ मेरी सुमति का प्रेम एक ईश्वर में ही बन गया है। एक ईश्वर को (सहारा) समझकर और उसमें विश्वस्त होकर किसी दूसरे को अब मन में नहीं लाता। मन की तृष्णाओं को त्यागकर चन्दन की सुगन्धि पैदा हो गई है और अहंकार मिट गया है॥ २॥ जो व्यक्ति ठाकुर जी का यश गाता है, उसका ध्यान करता है, उसके ह्रदय में ईश्वर का निवास हो जाता है। जिसके ह्रदय में ईश्वर बस गया, उसकी किस्मत समझो, उसके माथे पर उत्तम भाग्य प्रकट हो गया॥ ३॥ शक्ति का प्रभाव दूर करके प्रभु–ज्योति का प्रकाश हो गया तो सदैव पवित्र एक ईश्वर में मन लीन रहता है। कबीर जी कहते हैं–गुरु को मिलकर मुझे महासुख प्राप्त हो गया है। मेरा मन दुविधा में भटकने से हटकर प्रसन्न हो गया है॥ ४॥ २३॥ ७४॥

रागु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की ੴसति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥ ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ॥ १ ॥

तीनों लोकों (आकाश, पाताल एवं पृथ्वी) से लेकर सब कुछ जो पदार्थ हैं, वह इन बावन अक्षरों में ही हैं। ये अक्षर नाश हो जाएँगे। लेकिन वह अनश्वर परमात्मा इन अक्षरों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता॥ १॥

जहा बोलि तह अछर आवा ॥ जह अबोल तह मनु न रहावा ॥ बोल अबोल मधि है सोई ॥ जस ओहु है तस लखै न कोई ॥ २ ॥

जहाँ बोल हैं, वहाँ अक्षर हैं। जहाँ वचन (बोल) नहीं, वहाँ मन स्थिर नहीं रहता। वचन एवं चुप (मौन) दोनों में वह प्रभु बसता है। जैसा प्रभु है, वैसा उसे कोई समझ नहीं सकता॥ २॥

अलह लहउ तउ किआ कहउ कहउ त को उपकार ॥ बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीनि लोक बिसथार ॥ ३ ॥

अ–यदि मैं अल्लाह को प्राप्त कर भी लूँ तो मैं उसका सही वर्णन नहीं कर सकता। उसका यशोगान करने से मैं दूसरों का क्या भला कर सकता हूँ? जिस परमेश्वर का प्रसार तीन लोकों में मौजूद है, वह (ऐसे व्याप्त है जैसे) बरगद के वृक्ष के बीज में व्यापक हो रहा है॥ ३॥

अलह लहंता भेद छै कछु कछु पाइओ भेद ॥ उलटि भेद मनु बेधिओ पाइओ अभंग अछेद ॥ ४ ॥

अ–जो अल्लाह को समझता है और उसके रहस्य को अल्पमात्र भी समझता है, उसके लिए जुदाई लुप्त हो जाती है। जब प्राणी दुनिया की ओर से पलट जाता है, उसका हृदय प्रभु के रहस्य से बिंध जाता है और वह अमर एवं अबोध प्रभु को पा लेता है॥ ४॥

तुरक तरीकति जानीऐ हिंदू बेद पुरान ॥ मन समझावन कारने कछूअक पड़ीऐ गिआन ॥ ५ ॥

मुसलमान तरीकत द्वारा अल्लाह को समझता है और हिन्दु वेदों एवं पुराणों द्वारा भगवान को समझता है। अपने मन को सन्मार्ग पर लगाने के लिए मनुष्य को कुछ ज्ञान एवं विद्या का अध्ययन करना चाहिए॥ ५॥

ओअंकार आदि मै जाना ॥ लिखि अरु मेटै ताहि न माना ॥ ओअंकार लखै जउ कोई ॥ सोई लखि मेटणा न होई ॥ ६ ॥

ओ–जो ओंकार सबकी रचना करने वाला है, मैं केवल उस प्रभु को जानता हूँ। मैं उस पर भरोसा नहीं रखता, जिसे प्रभु लिखता (रचना करता) और मिटा देता है। यदि कोई एक ईश्वर के दर्शन कर ले तो दर्शन करने से उसका नाश नहीं होता॥ ६॥

कका किरणि कमल महि पावा ॥ ससि बिगास संपट नही आवा ॥ अरु जे तहा कुसम रसु पावा ॥ अकह कहा कहि का समझावा ॥ ७ ॥

क–जब ज्ञान की किरणें हृदय–कमल में प्रवेश कर जाती हैं तो (माया रूपी) चन्द्रमा की चांदनी हृदय कमल में प्रवेश नहीं करती और यदि मनुष्य वहाँ आत्मिक पुष्प के रस को प्राप्त कर ले तो वह उस अकथनीय स्वाद का कथन नहीं कर सकेगा। वर्णन करने से वह किसे इसका बोध करवा सकता है?॥ ७॥

खखा इहै खोड़ि मन आवा ॥ खोड़े छाडि न दह दिस धावा ॥ खसमहि जाणि खिमा करि रहै ॥ तउ होइ निखिअउ अखै पदु लहै ॥ ८ ॥

ख–यह आत्मा प्रभु की गुफा में प्रवेश कर गई है। गुफा को त्याग कर यह आत्मा अब दसों दिशाओं में नहीं भटकती। जब मालिक प्रभु को अनुभव करके मनुष्य दया में विचरता है तो वह अमर हो जाता है और अमर पदवी प्राप्त कर लेता है॥ ८॥

गगा गुर के बचन पछाना ॥ दूजी बात न धरई काना ॥ रहै बिहंगम कतहि न जाई ॥ अगह गहै गहि गगन रहाई ॥ ९ ॥

ग–जो मनुष्य गुरु के वचन को पहचानता है, वह दूसरी बातों की तरफ अपने कान ही नहीं करता। वह पक्षी की भाँति सदैव निर्लिप्त रहता है, कभी भी नहीं भटकता। जिस ईश्वर को संसार की मोहिनी प्रभावित नहीं कर सकती, उसे वह अपने हृदय में बसा लेता है, हृदय में बसाकर अपनी वृत्ति को प्रभु–चरणों में टिकाए रखता है॥ ९॥

घघा घटि घटि निमसै सोई ॥ घट फूटे घटि कबहि न होई ॥ ता घट माहि घाट जउ पावा ॥ सो घटु छाडि अवघट कत धावा ॥ १० ॥

घ–वह प्रभु कण–कण (हरेक हृदय) में वास करता है। जब शरीर रूपी घड़ा टूट जाता है तो वह कभी कम नहीं होता। जब उस हृदय में मनुष्य प्रभु–मार्ग प्राप्त कर लेता है तो उस मार्ग को त्याग कर वह दूसरे विषम मार्ग की तरफ क्यों जाए ?॥ १०॥

ङंङा निग्रहि सनेहु करि निरवारो संदेह ॥ नाही देखि न भाजीऐ परम सिआनप एह ॥ ११ ॥

ङ–हे भाई ! अपनी इन्द्रियों पर अंकुश लगा, अपने प्रभु से प्रेम कर और अपनी दुविधा दूर कर दे। चाहे तुझे अपने प्रभु का मार्ग दिखाई नहीं देता तो (इस काम से) भागना नहीं चाहिए। यही बड़ी बुद्धिमानी है॥ ११॥

चचा रचित चित्र है भारी ॥ तजि चित्रै चेतहु चितकारी ॥ चित्र बचित्र इहै अवझेरा ॥ तजि चित्रै चितु राखि चितेरा ॥ १२ ॥

च–ईश्वर द्वारा रचित यह दुनिया एक बहुत बड़ा चित्र है। हे प्राणी ! चित्रकारी (दुनिया) को त्याग कर चित्रकार (प्रभु) को स्मरण कर। यह विचित्र चित्र (दुनिया) ही विवादों का मूल है। चित्र छोड़कर चित्रकार (प्रभु) में अपने हृदय को पिरोकर रख॥ १२॥

छछा इहै छत्रपति पासा ॥ छकि कि न रहहु छाडि कि न आसा ॥ रे मन मै तउ छिन छिन समझावा ॥ ताहि छाडि कत आपु बधावा ॥ १३ ॥

छ–छत्रपति प्रभु यहाँ तेरे साथ ही है। हे मन ! तू क्यों और किसके लिए तृष्णाएँ त्यागकर प्रसन्न नहीं रहता ? हे मन ! क्षण–क्षण मैं तुझे उपदेश देता हूँ। उसे (प्रभु को) त्याग कर तू क्यों अपने आपको माया के विकारों में फँसाते हो ?॥ १३॥

जजा जउ तन जीवत जरावै ॥ जोबन जारि जुगति सो पावै ॥ अस जरि पर जरि जरि जब रहै ॥ तब जाइ जोति उजारउ लहै ॥ १४ ॥

ज–जब (कोई प्राणी) माया में रहता हुआ ही शरीर (की लालसाएँ) जला लेता है, वह मनुष्य यौवन जलाकर सन्मार्ग पा लेता है। जब मनुष्य अपने धन के अहंकार को एवं पराई दौलत को जलाकर संयम में रहता है, तो सर्वोच्च अवस्था में पहुँचकर ईश्वर की ज्योति का उजाला प्राप्त करता है॥ १४॥

झझा उरझि सुरझि नही जाना ॥ रहिओ झझकि नाही परवाना ॥ कत झखि झखि अउरन समझावा ॥ झगरु कीए झगरउ ही पावा ॥ १५ ॥

झ–हे जीव ! तू दुनिया (के मोह) में उलझ गया है और अपने आपको इससे मुक्त करवाना नहीं जानता। तुम संकोच कर रहे हो और ईश्वर को स्वीकृत नहीं हुए। दूसरों को संतुष्ट करवाने के लिए तुम क्यों वाद–विवाद करते हो ? क्योंकि झगड़ा करने से झगड़ा ही तुझे मिलेगा॥ १५॥

ञंञा निकटि जु घट रहिओ दूरि कहा तजि जाइ ॥ जा कारणि जगु ढूढिअउ नेरउ पाइअउ ताहि ॥ १६ ॥

ञ–वह परमात्मा तेरे निकट तेरे हृदय में बसता है, उसे छोड़कर तू दूर कहाँ जाता है ? जिस प्रभु के लिए मैंने सारा जगत् खोजा है, उसे मैंने निकट ही प्राप्त कर लिया है॥ १६॥

टटा बिकट घाट घट माही ॥ खोलि कपाट महलि कि न जाही ॥ देखि अटल टलि कतहि न जावा ॥ रहै लपटि घट परचउ पावा ॥ १७ ॥

ट–ईश्वर का कठिन मार्ग मनुष्य के हृदय में ही है। कपाट खोलकर तू क्यों उसके महल में नहीं पहुँचता ? सदा स्थिर प्रभु को देखकर तुम डगमगा कर कहीं नहीं जाओगे। तुम प्रभु से लिपटे रहोगे और तेरा हृदय प्रसन्न होगा॥ १७॥

ठठा इहै दूरि ठग नीरा ॥ नीठि नीठि मनु कीआ धीरा ॥ जिनि ठगि ठगिआ सगल जगु खावा ॥ सो ठगु ठगिआ ठउर मनु आवा ॥ १८ ॥

ठ–(हे जीव !) इस माया की मृगतृष्णा के जल से अपने आपको दूर रख। बड़ी मुश्किल से मैंने अपने मन को धैर्यवान किया है। मैंने उस छलिया (प्रभु) को छल लिया है, जिस छलिए ने सारे जगत् को छल कर निगल लिया है। मेरा हृदय अब सुख में है॥ १८॥

डडा डर उपजे डरु जाई ॥ ता डर महि डरु रहिआ समाई ॥ जउ डर डरै त फिरि डरु लागै ॥ निडर हूआ डरु उर होइ भागै ॥ १९ ॥

ड–जब प्रभु का डर उत्पन्न हो जाता है तो दूसरे डर निवृत्त हो जाते हैं। उस डर में दूसरे डर लीन रहते हैं। जब मनुष्य प्रभु के डर को त्याग देता है तो उसे दूसरे डर आकर लिपट जाते हैं। यदि वह निडर हो जाए तो उसके मन के डर दौड़ जाते हैं॥ १९॥

ढढा ढिग ढूढहि कत आना ॥ ढूढत ही ढहि गए पराना ॥ चड़ि सुमेरि ढूढि जब आवा ॥ जिह गड़ु गड़िओ सु गड़ महि पावा ॥ २० ॥

ढ–ईश्वर तो तेरे समीप ही है, तू उसे कहाँ ढूँढता है ? बाहर ढूँढते–ढूँढते तेरे प्राण भी थक गए हैं। सुमेर पर्वत पर भी चढकर और ईश्वर को ढूँढते–ढूँढते जब मनुष्य अपने देहि में आता है (अर्थात् अपने भीतर देखता है), तो वह ईश्वर इस (देहि रूपी) किले में ही मिल जाता है, जिसने यह देहि–रूपी किला रचा है॥ २०॥

णाणा रणि रूतउ नर नेही करै ॥ ना निवै ना फुनि संचरै ॥ धंनि जनमु ताही को गणै ॥ मारै एकहि तजि जाइ घणै ॥ २१ ॥

ण–रणभूमि में जूझता हुआ जो व्यक्ति विकारों को वश में करने की सामर्थ्य हासिल कर लेता है, जो न झुकता है और न ही विकारों से मेल करता है, संसार उसी व्यक्ति को तकदीर वाला मानता है, क्योंकि वह मनुष्य एक मन को मारता है और इन अधिकतर विकारों को त्याग देता है॥ २१॥

तता अतर तरिओ नह जाई ॥ तन त्रिभवण महि रहिओ समाई ॥ जउ त्रिभवण तन माहि समावा ॥ तउ ततहि तत मिलिआ सचु पावा ॥ २२ ॥

त–यह नश्वर दुनिया एक ऐसा सागर है, जिसे पार करना विषम है, जिसमें से पार हुआ नहीं जा सकता (क्योंकि) नेत्र, कान, नाक इत्यादि ज्ञानेन्द्रियाँ दुनिया के रसों में डूबे रहते हैं, परन्तु जब दुनिया के रस देहि के भीतर ही नाश हो जाते हैं तब (प्राणी की) आत्मा परम ज्योति में लीन हो जाती है, तब सत्यस्वरूप परमात्मा मिल जाता है॥ २२॥

थथा अथाह थाह नही पावा ॥ ओहु अथाह इहु थिरु न रहावा ॥ थोड़ै थलि थानक आरंभै ॥ बिनु ही थाभह मंदिरु थंभै ॥ २३ ॥

थ–परमेश्वर अथाह है। उसकी गहराई जानी नहीं जा सकती। प्रभु अनन्त है परन्तु यह शरीर स्थिर नहीं रहता (अर्थात् मिट्टी हो जाता है) थोड़ी–सी भूमि पर मनुष्य नगर का निर्माण प्रारम्भ कर देता है। स्तम्भों के बिना वह महल को ठहराना चाहता है॥ २३॥

ददा देखि जु बिनसनहारा ॥ जस अदेखि तस राखि बिचारा ॥ दसवै दुआरि कुंची जब दीजै ॥ तउ दइआल को दरसनु कीजै ॥ २४ ॥

द–जो यह जगत् दिखाई दे रहा है, यह समूचा नाशवान है, (हे भाई !) तू सदा ईश्वर में वृति लगा, जो (इन नेत्रों से) दिखाई नहीं देता है। लेकिन जब दसम द्वार में ज्ञान की कुंजी लगाई जाती है तो दयालु ईश्वर के दर्शन किए जा सकते हैं॥ २४॥

धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ अरधहि उरधह मंझि बसेरा ॥ अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥ तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥ २५ ॥

ध–यदि मनुष्य निम्न मण्डल से उच्च मण्डल को उड़ान भर ले तो सारी बात समाप्त हो जाती है। धरती एवं गगन में ईश्वर का बसेरा है। जब धरती को त्याग आत्मा गगन में जाती है तो आत्मा एवं परमात्मा मिल जाते हैं और सुख प्राप्त होता है॥ २५॥

नंना निसि दिनु निरखत जाई ॥ निरखत नैन रहे रतवाई ॥ निरखत निरखत जब जाइ पावा ॥ तब ले निरखहि निरख मिलावा ॥ २६ ॥

न–प्रभु को देखते प्रतीक्षा में मेरी रात्रि एवं दिन गुजरते हैं। इस तरह देखने से (प्रतीक्षा में) मेरे नेत्र रक्त समान लाल हो गए हैं। दर्शन की अभिलाषा करते–करते जब अंततः दर्शन होता है तो वह इष्ट–प्रभु दर्शन के अभिलाषी अपने भक्त को अपने साथ मिला लेता है॥ २६॥

पपा अपर पारु नही पावा ॥ परम जोति सिउ परचउ लावा ॥ पांचउ इंद्री निग्रह करई ॥ पापु पुंनु दोऊ निरवरई ॥ २७ ॥

प–परमात्मा अपार है और उसका पार जाना नहीं जा सकता। मैंने परम ज्योति (प्रभु) से प्रेम लगा लिया है। जो कोई मनुष्य अपनी पाँचों–ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर लेता है, वह पाप एवं पुण्य दोनों से मुक्ति पा लेता है॥ २७॥

फफा बिनु फूलह फलु होई ॥ ता फल फंक लखै जउ कोई ॥ दूणि न परई फंक बिचारै ॥ ता फल फंक सभै तन फारै ॥ २८ ॥

फ–फूल के बिना ही फल उत्पन्न हुआ है। यदि कोई मनुष्य उस फल की फांक को देख ले और उस फांक का चिन्तन करता है, वह (जन्म–मरण) आवागमन में नहीं पड़ता। फल की वह फांक समस्त शरीरों को फाड़ देती है॥ २८॥

बबा बिंदहि बिंद मिलावा ॥ बिंदहि बिंदि न बिछुरन पावा ॥ बंदउ होइ बंदगी गहै ॥ बंदक होइ बंध सुधि लहै ॥ २९ ॥

ब–जब बूँद से बूँद मिल जाती है तो यह बूँदें पुनः अलग नहीं होतीं। प्रभु का सेवक बनकर जो मनुष्य प्रेमपूर्वक प्रभु–भक्ति करता है, वह (प्रभु के द्वार का) स्तुति करने वाला (माया–मोह के) बन्धनों का रहस्य पा लेता है॥ २९॥

भभा भेदहि भेद मिलावा ॥ अब भउ भानि भरोसउ आवा ॥ जो बाहरि सो भीतरि जानिआ ॥ भइआ भेदु भूपति पहिचानिआ ॥ ३० ॥

भ–दुविधा को भेदने (दूर करने) से मनुष्य का प्रभु से मिलन हो जाता है। भय को नाश करके अब मेरी ईश्वर में श्रद्धा बन गई है। जिसे मैं अपने आप से बाहर ख्याल करता था, उसे अब मैं अपने भीतर समझता हूँ। जब मुझे इस भेद का ज्ञान हुआ तो मैंने जगत् के मालिक को पहचान लिया॥ ३०॥

ममा मूल गहिआ मनु मानै ॥ मरमी होइ सु मन कउ जानै ॥ मत कोई मन मिलता बिलमावै ॥ मगन भइआ ते सो सचु पावै ॥ ३१ ॥

म–यदि सृष्टि के मूल परमात्मा को अपने मन में बसा लिया जाए तो मन कुमार्गगामी होने से बच जाता है। जो जीव यह रहस्य पा लेता है, वह मन को समझ लेता है। (इसलिए) कोई भी मनुष्य अपनी आत्मा को प्रभु के साथ सम्मिलित करने में देरी न करे। जो मनुष्य सत्यस्वरूप परमात्मा को पा लेते हैं, वे प्रसन्नता में भीग जाते हैं॥ ३१॥

ममा मन सिउ काजु है मन साधे सिधि होइ ॥ मन ही मन सिउ कहै कबीरा मन सा मिलिआ न कोइ ॥ ३२ ॥

जीवात्मा का काम अपने मन के साथ है। जो मन को वश में करता है, वह मनोरथ की सफलता पा लेता है। कबीर जी कहते हैं–मेरा आदान–प्रदान केवल अपने मन से है। मुझे मन जैसा दूसरा कोई नहीं मिला॥ ३२॥

इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥ इहु मनु पंच तत को जीउ ॥ इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥ तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥ ३३ ॥

यह मन शक्ति है। यह मन शिव है। यह मन शरीर के पाँच तत्वों के प्राण हैं। अपने मन को वश में करके जब मनुष्य परम–प्रसन्नता की अवस्था में विचरता है तो वह तीनों लोकों के रहस्य बता सकता है॥ ३३॥

यया जउ जानहि तउ दुरमति हनि करि बसि काइआ गाउ ॥ रणि रूतउ भाजै नही सूरउ थारउ नाउ ॥ ३४ ॥

य–(हे भाई !) यदि तुम कुछ जानते हो तो अपनी दुर्बुद्धि का नाश कर दो और अपने शरीर रूपी गांव को वश में करो। यदि तू इस युद्ध में लगकर पराजित नहीं होवोगे तो ही तेरा नाम शूरवीर हो सकता है॥ ३४॥

रारा रसु निरस करि जानिआ ॥ होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥ इह रस छाडे उह रसु आवा ॥ उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥ ३५ ॥

र–जिस प्राणी ने माया के स्वाद को फीका–सा समझ लिया है, उसने भौतिक आस्वादनों से बचे रहकर वह आत्मिक आनंद प्राप्त कर लिया है। जिसने यह लौकिक आस्वादन त्याग दिए हैं, उसे वह (ईश्वर के नाम का आनन्द) प्राप्त हो गया है, जिसने वह (नाम) रस पान किया है, उसे (यह माया वाला) आस्वादन अच्छा नहीं लगता॥ ३५॥

लला ऐसे लिव मनु लावै ॥ अनत न जाइ परम सचु पावै ॥ अरु जउ तहा प्रेम लिव लावै ॥ तउ अलह लहै लहि चरन समावै ॥ ३६ ॥

ल–अपने मन में मनुष्य को प्रभु से ऐसा प्रेम लगाना चाहिए कि वह किसी दूसरे के पास मत जाए और सत्य को प्राप्त करे और यदि वहाँ, वह उसके लिए प्रेम एवं प्रीति उत्पन्न कर ले, वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है और प्राप्त करके उसके चरणों में लीन हो जाता है॥ ३६॥

ववा बार बार बिसन सम्हारि ॥ बिसन सम्हारि न आवै हारि ॥ बलि बलि जे बिसनतना जसु गावै ॥ विसन मिले सभ ही सचु पावै ॥ ३७ ॥

व–बार–बार अपने प्रभु को स्मरण कर। प्रभु को स्मरण करने से तुझे जीवन रूपी बाजी में पराजित नहीं होना पड़ेगा। मैं उन भक्तजनों पर तन–मन से न्यौछावर हूँ जो प्रभु का यश गाते हैं। प्रभु को मिलने से सत्य प्राप्त होता है॥ ३७॥

वावा वाही जानीऐ वा जाने इहु होइ ॥ इहु अरु ओहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइ ॥ ३८ ॥

व–(हे भाई!) उस परमेश्वर के साथ जान–पहचान करनी चाहिए। उसे अनुभव करने से यह जीव उस जैसा ही हो जाता है। जब यह जीव एवं वह प्रभु एकरूप हो जाते हैं तो इस मिलन को कोई नहीं समझ सकता॥ ३८॥

ससा सो नीका करि सोधहु ॥ घट परचा की बात निरोधहु ॥ घट परचै जउ उपजै भाउ ॥ पूरि रहिआ तह त्रिभवण राउ ॥ ३६ ॥

स–उस मन को पूर्णतया साध लो। अपने आपको हरेक बात से रोको, जो मन को बहकाती है। जब प्रभु का प्रेम उत्पन्न हो जाता है तो मन प्रसन्न हो जाता है। वह तीन लोकों का राजा हर जगह मौजूद है॥ ३६॥

खखा खोजि परै जउ कोई ॥ जो खोजै सो बहुरि न होई ॥ खोज बूझि जउ करै बीचारा ॥ तउ भवजल तरत न लावै बारा ॥ ४० ॥

ख–यदि कोई मनुष्य प्रभु की खोज में लग जाए और उसे खोज कर पा लेता है तो वह दोबारा जन्मता–मरता नहीं। जब मनुष्य प्रभु को खोजता, समझता एवं उसका चिन्तन करता है तो उसे भयानक संसार–सागर से पार होते देरी नहीं लगती॥ ४०॥

ससा सो सह सेज सवारै ॥ सोई सही संदेह निवारै ॥ अलप सुख छाडि परम सुख पावा ॥ तब इह त्रीअ ओहु कंतु कहावा ॥ ४१ ॥

स–जिस जीव–स्त्री की सेज को कंत – प्रभु सुशोभित करता है, वह अपने संदेह को दूर कर देती है। तुच्छ सुख को त्याग कर वह परम सुख को पा लेती है। तब यह पत्नी कही जाती है और वह इसका पति कहलाता है॥ ४१॥

हाहा होत होइ नही जाना ॥ जब ही होइ तबहि मनु माना ॥ है तउ सही लखै जउ कोई ॥ तब ओही उहु एहु न होई ॥ ४२ ॥

ह–ईश्वर कण–कण में विद्यमान है परन्तु मनुष्य उसके अस्तित्व को नहीं जानता। जब वह उसके अस्तित्व को अनुभव कर लेता है, तो उसकी आत्मा विश्वस्त हो जाती है। ईश्वर तो अवश्य है लेकिन इस विश्वास का लाभ तब ही होता है जब कोई प्राणी इस बात को समझ ले। तब यह प्राणी उस प्रभु का रूप हो जाता है, यह अलग अस्तित्व वाला नहीं रह जाता॥ ४२॥

लिंउ लिंउ करत फिरै सभु लोगु ॥ ता कारणि बिआपै बहु सोगु ॥ लखिमी बर सिउ जउ लिउ लावै ॥ सोगु मिटै सभ ही सुख पावै ॥ ४३ ॥

समूचा संसार यही कहता फिरता है कि मैं (माया) सँभाल लूँ, मैं (माया) एकत्रित कर लूँ। इस माया के कारण ही फिर प्राणी को बड़ी चिन्ता हो जाती है। परन्तु जब प्राणी लक्ष्मीपति प्रभु के साथ प्रीति लगाता है तो उसकी चिन्ता मिट जाती है और वह समस्त सुख प्राप्त कर लेता है॥ ४३॥

खखा खिरत खपत गए केते ॥ खिरत खपत अजहूं नह चेते ॥ अब जगु जानि जउ मना रहै ॥ जह का बिछुरा तह थिरु लहै ॥ ४४ ॥

ख–अनेकों ही मनुष्य मरते–खपते नाश हो गए हैं। इस तरह मरते–खपते आवागमन में पड़ा हुआ मनुष्य अभी तक प्रभु को स्मरण नहीं करता। अब यदि संसार के यथार्थ को समझकर मन प्रभु में टिक जाए तो जिस प्रभु से यह जुदा हुआ है, उसमें इसे बसेरा मिल सकता है॥ ४४॥

बावन अखर जोरे आनि ॥ सकिआ न अखरु एकु पछानि ॥ सत का सबदु कबीरा कहै ॥ पंडित होइ सु अनभै रहै ॥ पंडित लोगह कउ बिउहार ॥ गिआनवंत कउ ततु बीचार ॥ जा कै जीअ जैसी बुधि होई ॥ कहि कबीर जानैगा सोई ॥ ४५ ॥

मनुष्य ने बावन अक्षर जोड़ लिए हैं। परन्तु वह ईश्वर के एक शब्द को नहीं पहचान सकता। कबीर सत्य वचन कहता है कि पण्डित वही है, जो निडर होकर विचरता है। अक्षरों को जोड़ना पण्डित पुरुषों का काम–धंधा है। ज्ञानवान ज्ञानी मनुष्य यथार्थ को सोचता–समझता है। कबीर जी कहते हैं– जैसी बुद्धि प्राणी के मन में है, वैसा ही वह समझता है॥ ४५॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी थितीं कबीर जी कीं ॥ सलोकु ॥ पंद्रह थितीं सात वार ॥ कहि कबीर उरवार न पार ॥ साधिक सिध लखै जउ भेउ ॥ आपे करता आपे देउ ॥ १ ॥

श्लोक॥ पन्द्रह तिथियाँ एवं सात सप्ताह के दिन हैं। कबीर कहता है–मैं उस ईश्वर का गुणानुवाद करता हूँ जो अनन्त है। साधक एवं सिद्ध जब प्रभु के रहस्य को समझ लेते हैं, वह स्वयं सृजनहार–स्वरूप एवं स्वयं ही प्रभु रूप हो जाते हैं॥ १॥

थितीं ॥ अंमावस महि आस निवारहु ॥ अंतरजामी रामु समारहु ॥ जीवत पावहु मोख दुआर ॥ अनभउ सबदु ततु निजु सार ॥ १ ॥ चरन कमल गोबिंद रंगु लागा ॥ संत प्रसादि भए मन निरमल हरि कीरतन महि अनदिनु जागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥

तिथि॥ अमावस्या के दिन अपनी अभिलाषाएँ त्याग कर अन्तर्यामी राम को (अपने हृदय में) स्मरण करो। इस प्रकार इसी जन्म में मोक्ष द्वार प्राप्त कर लोगे। (इस स्मरण के प्रभाव से) तुम्हारा यथार्थ तत्व जाग जाएगा, गुरु का शब्द अनुभवी रूप में संचरित होगा॥ १॥ जिस प्राणी का प्रेम गोविन्द के सुन्दर चरणों के साथ बन जाता है और संतों की कृपा से जिसका मन पवित्र हो जाता है, वह रात–दिन हरि का भजन करने में जागता रहता है॥ १॥ रहाउ॥

परिवा प्रीतम करहु बीचार ॥ घट महि खेलै अघट अपार ॥ काल कलपना कदे न खाइ ॥ आदि पुरख महि रहै समाइ ॥ २ ॥

एकम तिथि के दिन हे भाई! प्रियतम प्रभु का चिन्तन करो। अनन्त प्रभु हरेक हृदय में खेल रहा है। जो मनुष्य आदिपुरुष परमात्मा में लीन रहता है, मृत्यु का भय उसे कभी स्पर्श नहीं कर सकता॥ २॥

दुतीआ दुह करि जाने अंग ॥ माइआ ब्रहम रमै सभ संग ॥ ना ओहु बढै न घटता जाइ ॥ अकुल निरंजन एकै भाइ ॥ ३ ॥

द्वितीय–हे भाई ! समझ ले कि शरीर के अंग में (माया और ब्रह्म) दोनों खेल रहे हैं। माया एवं ब्रह्म कण–कण से अभेद हुए हैं। वह अकुल, निरंजन प्रभु न बढ़ता है और न ही घटता है॥ ३॥

त्रितीआ तीने सम करि लिआवै ॥ आनद मूल परम पदु पावै ॥ साधसंगति उपजै बिस्वास ॥ बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥ ४ ॥

तृतीय–यदि प्रभु की स्तुति करने वाला मनुष्य माया के तीनों गुणों को सहज अवस्था में समान रखता है, वह मनुष्य परम पद प्राप्त कर लेता है, जो आनंद का स्रोत है। सत्संगति में रहकर मनुष्य के भीतर यह विश्वास पैदा होता है कि भीतर–बाहर सर्वत्र उस प्रभु का ही प्रकाश है॥ ४॥

चउथहि चंचल मन कउ गहहु ॥ काम क्रोध संगि कबहु न बहहु ॥ जल थल माहे आपहि आप ॥ आपै जपहु आपना जाप ॥ ५ ॥

चतुर्थी–हे प्राणी ! अपने चंचल मन को वश में करके रख और काम, क्रोध की संगति में मत बैठ। जो ईश्वर समुद्र, पृथ्वी में सर्वत्र आप ही मौजूद है, वह स्वयं ही अपना जाप करता है॥ ५॥

पांचै पंच तत बिसथार ॥ कनिक कामिनी जुग बिउहार ॥ प्रेम सुधा रसु पीवै कोइ ॥ जरा मरण दुखु फेरि न होइ ॥ ६ ॥

पंचमी–यह संसार पाँच मूल अंशों का विस्तार है। स्वर्ण (धन) एवं स्त्री की तलाश इसके दो धन्धे हैं। कोई विरला पुरुष ही प्रभु–प्रेम का सुधारस पान करता है। वह दोबारा बुढ़ापा एवं मृत्यु का दुःख सहन नहीं करता॥ ६॥

छठि खटु चक्र छहूं दिस धाइ ॥ बिनु परचै नही थिरा रहाइ ॥ दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥ करम धरम की सूल न सहहु ॥ ७॥

षष्ठी–मनुष्य की पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ एवं छठा मन–यह सारा साथ संसार (के पदार्थों की लालसा) में भटकता फिरता है, जब तक प्राणी ईश्वर के स्मरण में नहीं लगता, तब तक यह साथ (इन भटकावों में से) हटता नहीं। हे बन्धु ! दुविधा मिटाकर सहनशीलता धारण करो और धर्म–कर्म का यह लम्बा विवाद त्याग दे॥ ७॥

सातैं सति करि बाचा जाणि ॥ आतम रामु लेहु परवाणि ॥ छूटै संसा मिटि जाइ दुख ॥ सुंन सरोवरि पावहु सुख ॥ ८ ॥

सप्तमी–हे भाई ! गुरु की वाणी में श्रद्धा धारण करो और इसके द्वारा प्रभु (के नाम) को अपने हृदय में पिरो लो। इस प्रकार दुविधा दूर हो जाएगी और दुःख–क्लेश मिट जाएँगे और बैकुंठी सरोवर का सुख प्राप्त करोगे॥ ८॥

असटमी असट धातु की काइआ ॥ ता महि अकुल महा निधि राइआ ॥ गुर गम गिआन बतावै भेद ॥ उलटा रहै अभंग अछेद ॥ ६ ॥

अष्टमी–यह शरीर आठ धातुओं का बना हुआ है। इसमें महानिधि अगाध प्रभु बस रहा है। ज्ञान को जानने वाला गुरु यह रहस्य बतलाता है। सांसारिक मोह से हटकर मनुष्य अमर प्रभु में बसता है॥ ६॥

नउमी नवै दुआर कउ साधि ॥ बहती मनसा राखहु बांधि ॥ लोभ मोह सभ बीसरि जाहु ॥ जुगु जुगु जीवहु अमर फल खाहु ॥ १० ॥

नवमी–हे भाई ! शारीरिक इन्द्रियों को वश में रखो, इनसे उठती हुई तृष्णाओं पर अंकुश लगाओ। लोभ तथा मोह इत्यादि विकार भुला दो। इस परिश्रम का ऐसा फल मिलेगा जो कभी खत्म नहीं होगा, ऐसा सुन्दर जीवन जियोगे जो सदा स्थिर रहेगा॥ १०॥

दसमी दह दिस होइ अनंद ॥ छूटै भरमु मिलै गोबिंद ॥ जोति सरूपी तत अनूप ॥ अमल न मल न छाह नही धूप ॥ ११ ॥

दसमी–दसों दिशाओं में आनन्द ही आनन्द विद्यमान है। दुविधा दूर हो जाती है और गोबिन्द मिल जाता है। ज्योति–स्वरूप का तत्व अनूप है। वह पवित्र एवं मलिनता रहित है जहाँ वह बसता है, वहाँ कोई छाया अथवा धूप नहीं॥ ११॥

एकादसी एक दिस धावै ॥ तउ जोनी संकट बहुरि न आवै ॥ सीतल निरमल भइआ सरीरा ॥ दूरि बतावत पाइआ नीरा ॥ १२ ॥

एकादशी–यदि इन्सान एक परमात्मा की स्मृति में लीन रहे तो वह दोबारा योनियों के संकट में नहीं आता, उसका शरीर शीतल एवं निर्मल हो जाता है। प्रभु जो दूर कहा जाता है, उसे वह निकट ही पा लेता है॥ १२॥

बारसि बारह उगवै सूर ॥ अहिनिसि बाजे अनहद तूर ॥ देखिआ तिहूं लोक का पीउ ॥ अचरजु भइआ जीव ते सीउ ॥ १३ ॥

द्वादशी–आकाश में बारह सूर्य चढ़ जाते हैं और दिन–रात अनहद बाजे बजते हैं। प्राणी तब तीन लोकों के पिता–प्रभु को देख लेता है। एक आश्चर्यजनक खेल बन जाता है कि वह मनुष्य साधारण पुरुष से प्रभु–रूप हो जाता है॥ १३॥

तेरसि तेरह अगम बखाणि ॥ अरध उरध बिचि सम पहिचाणि ॥ नीच ऊच नही मान अमान ॥ बिआपिक राम सगल सामान ॥ १४ ॥

त्रयोदशी–धार्मिक ग्रंथ कहते हैं कि आकाश–पाताल दोनों में प्रभु की पहचान करो। उसके लिए कोई ऊँचा अथवा निम्न और न ही आदर वाला अथवा निरादर वाला है। सर्वव्यापक राम सबके भीतर एक समान समाया हुआ है॥ १४॥

चउदसि चउदह लोक मझारि ॥ रोम रोम महि बसहि मुरारि ॥ सत संतोख का धरहु धिआन ॥ कथनी कथीऐ ब्रहम गिआन ॥ १५ ॥

चतुदर्शी–चौदह लोकों एवं रोम–रोम में मुरारी प्रभु बसता है। हे भाई ! अपना ध्यान सत्य एवं संतोष में लगाओ। ब्रह्म–ज्ञान की कथा कथन करो॥ १५॥

पूनिउ पूरा चंद अकास ॥ पसरहि कला सहज परगास ॥ आदि अंति मधि होइ रहिआ थीर ॥ सुख सागर महि रमहि कबीर ॥ १६ ॥

पूर्णिमा के दिन आकाश में पूर्ण चाँद होता है। इसकी किरणों की कला से सहज ही प्रकाश फैल जाता है। आदि, अंत एवं मध्य में प्रभु पूर्णतया स्थिर हो रहा है। कबीर सुखों के सागर में लीन हुआ है॥ १६॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥ बार बार हरि के गुन गावउ ॥ गुर गमि भेदु सु हरि का पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

राग गउड़ी सप्ताह के दिन कबीर जी के–सप्ताह के सभी दिन हरि का गुणगान करो। हे भाई ! गुरु के चरणों में पहुँचकर ईश्वर का रहस्य प्राप्त करो॥ १॥ रहाउ॥

आदित करै भगति आरंभ ॥ काइआ मंदर मनसा थंभ ॥ अहिनिसि अखंड सुरही जाइ ॥ तउ अनहद बेणु सहज महि बाइ ॥ १ ॥

रविवार–प्रभु की भक्ति प्रारम्भ करो और शरीर रूपी मन्दिर में ही तृष्णाओं को वश में करो। जब दिन–रात मनुष्य की वृत्ति अखंड स्थान पर लगी रहती है तो बांसुरी सहज ही अनहद बजाती है॥ १॥

सोमवारि ससि अम्रितु झरै ॥ चाखत बेगि सगल बिख हरै ॥ बाणी रोकिआ रहै दुआर ॥ तउ मनु मतवारो पीवनहार ॥ २ ॥

सोमवार–चन्द्रमा से अमृत टपकता है। जब (यह अमृत) चखा जाता है तो यह तुरन्त ही सारे विष (विकारों) को दूर कर देता है। गुरु की वाणी के प्रभाव से संयमित मन प्रभु के द्वार पर टिका रहता है और मतवाला मन उस अमृत का पान करता रहता है॥ २॥

मंगलवारे ले माहीति ॥ पंच चोर की जाणै रीति ॥ घर छोडें बाहरि जिनि जाइ ॥ नातरु खरा रिसै है राइ ॥ ३ ॥

मंगलवार–यथार्थ को देख और कामादिक पाँच चोरों के आक्रमण करने के ढंग को समझ। हे भाई ! अपने किले को छोड़कर बाहर कभी मत जाना (अर्थात् अपने मन को बाहर मत भटकने देना) अन्यथा प्रभु बहुत ही क्रुद्ध होगा॥ ३॥

बुधवारि बुधि करै प्रगास ॥ हिरदै कमल महि हरि का बास ॥ गुर मिलि दोऊ एक सम धरै ॥ उरध पंक लै सूधा करै ॥ ४ ॥

बुधवार–मनुष्य अपनी बुद्धि से प्रभु–नाम का प्रकाश पैदा कर लेता है, हृदय कमल में प्रभु का निवास बना लेता है। गुरु से मिलकर उसे सुख एवं दुःख दोनों को एक समान समझना चाहिए। अपने हृदय के उल्टे कमल को लेकर सीधा करना चाहिए॥ ४॥

ब्रिहसपति बिखिआ देइ बहाइ ॥ तीनि देव एक संगि लाइ ॥ तीनि नदी तह त्रिकुटी माहि ॥ अहिनिसि कसमल धोवहि नाहि ॥ ५ ॥

बृहस्पति–मनुष्य को अपने पाप धो देने चाहिए (अर्थात् विकार दूर कर देने चाहिए) तीन देवताओं को छोड़कर उसे एक ईश्वर से मन लगाना चाहिए। वह माया की त्रिगुणात्मक नदियों में ही गोते खाते हैं, दिन–रात नीच कर्म करते हैं, गुणस्तुति से विहीन रहकर उन्हें धोते नहीं हैं॥ ५॥

सुक्रितु सहारै सु इह ब्रति चड़ै ॥ अनदिन आपि आप सिउ लड़ै ॥ सुरखी पांचउ राखै सबै ॥ तउ दूजी द्रिसटि न पैसै कबै ॥ ६ ॥

शुक्रवार–जो रात–दिन अपने आप से युद्ध करता है और सहनशीलता की कमाई करता है, उसका यह व्रत सफलता प्राप्त कर जाता है। यदि प्राणी अपनी पाँचों ही ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर ले तो किसी पर भी कभी उसकी मेर–तेर की दृष्टि नहीं पड़ती॥ ६॥

थावर थिरु करि राखै सोइ ॥ जोति दी वटी घट महि जोइ ॥ बाहरि भीतरि भइआ प्रगासु ॥ तब हूआ सगल करम का नासु ॥ ७ ॥

शनिवार–जो मनुष्य प्रभु–ज्योति की बत्ती को स्थिर रखता है, जो उसकी अन्तरात्मा में है, वह भीतर से बाहर उज्ज्वल हो जाती है और तब उसके तमाम दुष्कर्म मिट जाते हैं॥ ७॥

जब लगु घट महि दूजी आन ॥ तउ लउ महलि न लाभै जान ॥ रमत राम सिउ लागो रंगु ॥ कहि कबीर तब निरमल अंग ॥ ८ ॥ १ ॥

लेकिन जब तक मनुष्य के हृदय में सांसारिक मोह की वासना है, तब तक वह प्रभु–चरणों की शरण में लग नहीं सकता। कबीर जी कहते हैं–जब राम का सिमरन करते करते मनुष्य का प्रेम राम के साथ हो जाता है तो उसका हृदय पावन हो जाता है॥ ८॥ १॥

रागु गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देवा पाहन तारीअले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥ चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥ हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥ १ ॥ दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥ जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥ २ ॥ १ ॥

राम ने वे पत्थर भी सागर पर तार दिए हैं (जिन पर राम का नाम लिखा हुआ था) तेरे नाम का जाप करने से मैं तेरा सेवक कैसे (संसार–सागर से) पार नहीं होऊंगा ?॥ १॥ रहाउ॥

हे प्रभु ! तुमने गनिका (वेश्या) को बचा लिया, तुमने कुरूप कुब्जा का कोढ़ दूर किया और पापों में ग्रस्त अजामल को पार कर दिया, (श्रीकृष्ण के) चरणों में निशाना लगाने वाले शिकारी तथा कई विकारी व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर गए। जिन्होंने राम का नाम याद किया है, मैं उन पर तन–मन से बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

हे परमात्मा ! दासी–पुत्र विदुर तेरा भक्त लोकप्रिय हुआ; सुदामा (जिसका तूने दारिद्रय दूर किया), उग्रसेन को शासन प्रदान किया। हे नामदेव के स्वामी ! तेरी दया से वे (संसार–सागर से) पार हो गए हैं, जिन्होंने कोई जप नहीं किया, कोई तपस्या नहीं की, जिनकी कोई उच्च जाति नहीं थी और जिनके कर्म भी शुभ नहीं थे॥ २॥ १॥

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥ १ ॥ राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥ मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥ चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥ २ ॥ कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥ बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥ ३ ॥ १ ॥

हे प्रभु ! मुझे दिन–रात यह चिन्ता लगी रहती है कि मेरी संगति बुरी है (अर्थात् नीच लोगों के साथ मेरा रहन–सहन है), मेरे कर्म भी कुटिल हैं और मेरा जन्म भी नीच जाति में से है॥ १॥ हे मेरे राम ! हे गुसाई ! हे मेरे प्राणों के सहारे ! मुझे मत भुलाओ, मैं तेरा सेवक हूँ॥ १॥ रहाउ॥

हे प्रभु ! मेरी विपत्ति दूर कीजिए और मुझ सेवक को अपनी श्रेष्ठ प्रीति प्रदान कीजिए। मैं तेरे चरण नहीं छोड़ूँगा, चाहे मेरे शरीर की शक्ति भी चली जाए॥ २॥ हे रविदास ! मैंने तेरी शरण ली है, हे प्रभु ! अपने सेवक को शीघ्र मिल एवं विलम्ब मत कर॥ ३॥ १॥

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥ १ ॥ अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥ आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥ २ ॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥ कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥ ३ ॥ २ ॥

बेगमपुरा (उस) शहर का नाम है। उस स्थान पर कोई दुःख एवं क्लेश नहीं। वहाँ सांसारिक धन नहीं और न ही उस धन को चुंगी लगने का भय है। वहाँ न कोई खौफ, न भूल, न ही प्यास और न ही कोई गिरावट है॥ १॥ हे मेरे भाई! मुझे वहाँ बसने के लिए सुन्दर वतन मिल गया है। वहाँ सदा सुख-मंगल ही है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु की सत्ता दृढ़, स्थिर एवं सदैव ही है। दूसरा अथवा तीसरा कोई नहीं, सब एक जैसे हैं, केवल वहीं वहाँ है। वह शहर हमेशा मशहूर है और समृद्ध है। वहाँ धनवान एवं तृप्त लोग रहते हैं॥ २॥ वे उस मालिक के मन्दिर के जानकार हैं, इसलिए उन्हें कोई नहीं रोकता। जिस तरह उनको भला लगता है, वैसे ही वहाँ विचरण करते हैं। बँधनों से मुक्त हुआ चमार रविदास कहता है-जो मेरे शहर का वासी है, वह मेरा मित्र है॥ ३॥ २॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥ घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥ रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥ १ ॥ को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥ मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥ २ ॥ उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥ मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥ ३ ॥ जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥ मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥ ४ ॥ १ ॥

प्रभु का मार्ग बड़ा विषम एवं पहाड़ी है और मेरा बैल निर्गुण (छोटा-सा) है। प्रियतम प्रभु के समक्ष मेरी वन्दना है-हे मुरारी! मेरी पूँजी की तुम स्वयं रक्षा करना॥ १॥ क्या कोई राम का व्यापारी है, जो मेरे साथ मिलकर चले? मेरा माल (नाम-धन) भी लदा हुआ जा रहा है॥ १॥ रहाउ॥ मैं राम का व्यापारी हूँ और सहज ही ज्ञान का व्यापार करता हूँ। मैंने राम के नाम का पदार्थ लादा है परन्तु संसार ने माया-रूपी विष का व्यापार किया है॥ २॥ प्राणियों के लोक-परलोक के सभी कर्म जानने वाले हे चित्रगुप्त! मेरे बारे में जो तुम्हारा मन करे लिख लेना अर्थात् यमराज के पास उपस्थित करने हेतु मेरे कार्यों में तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा, क्योंकि ईश्वर की दया से मैंने समस्त जंजाल छोड़ दिए हुए हैं, इसलिए मुझे यम का दण्ड नहीं मिलेगा॥ ३॥ हे चमार रविदास! कहो-जैसे जैसे मैं प्रभु-नाम का व्यापार कर रहा हूँ, मेरी आस्था हो रही है कि यह दुनिया ऐसे है जैसे कुसुंभड़े का रंग और मेरे प्रियतम प्रभु का नाम रंग इस तरह है जिस तरह मजीठ का रंग॥ ४॥ १॥

गउड़ी पूरबी रविदास जीउ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥ ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥ १ ॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥ २ ॥ जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥ ३ ॥ १ ॥

जैसे जल से भरे कुएँ के मेंढक को अपने देश एवं परदेस का कुछ भी पता नहीं होता, वैसे ही मेरा मन माया (के कुएँ) में इतनी बुरी तरह फँसा हुआ है कि इस लोक-परलोक की कुछ भी सूझ

नहीं॥१॥ हे समस्त लोकों के मालिक! मुझे एक क्षण भर के लिए ही दर्शन दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ हे माधव! मेरी बुद्धि (विकारों से) मैली हो गई है और मुझे तेरी गति की समझ नहीं आती। मुझ पर दया करो चूंकि मेरी दुविधा नाश हो जाए और मुझे सुमति प्रदान करो॥ २॥ हे प्रभु! महान योगी भी तेरे अनन्त गुणों का रहस्य नहीं पा सकते (पर) हे रविदास चमार! तू ईश्वर की महिमा–स्तुति कर, चूंकि तुझे प्रेम–भक्ति की देन मिल जाए॥ ३॥ १॥

गउड़ी बैरागणि १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥ तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥ १ ॥ पारु कैसे पाइबो रे ॥ मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥ जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥ कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥ २ ॥ करम अकरम बिचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥ संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥ ३ ॥ बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥ सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥ ४ ॥ रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ॥ ५ ॥ परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥ उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥ ६ ॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥ सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥ ७ ॥ अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥ प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥ ८ ॥ १ ॥

सतियुग में सत्य (दान–पुण्य इत्यादि) प्रधान था, त्रेता युग यज्ञों में लीन रहा, द्वापर में देवी–देवताओं की पूजा प्रधान कर्म था, तीनों युग इन तीन कर्मो–धर्मो पर बल देते हैं और कलियुग में केवल नाम का ही सहारा है॥ १॥ मैं किस तरह (संसार सागर से) पार होऊँगा? मुझे कोई इस तरह कहता और निश्चित नहीं करवाता, जिससे मेरा जन्म–मरण का चक्र मिट जाए॥ १॥ रहाउ॥ धर्म के अनेकों स्वरूप वर्णन किए जाते हैं और सारा संसार उन पर अनुसरण करता दिखाई देता है। वह कौन–से कर्म हैं, जिन से मुझे मोक्ष प्राप्त हो जाए और जिनकी साधना से मुझे सिद्धि प्राप्त हो जाए॥ २॥ यदि वेदों एवं पुराणों को सुन कर पाप–पुण्य का निर्णय किया जाए तो शंका पैदा हो जाती है। संशय हमेशा हृदय में रहता है। मेरे अभिमान को कौन दूर कर सकता है?॥ ३॥ मनुष्य अपने शरीर का बाहरी भाग (तीर्थों के) जल से धो लेता है परन्तु उसके मन में अनेक विकार विद्यमान हैं परन्तु वह किस तरह शुद्ध होगा? उसका शुद्धता को प्राप्त करने का तरीका हाथी के स्नान–कर्म जैसा है॥ ४॥ जैसे सारी दुनिया यह बात जानती है कि सूर्योदय होने पर रात का अँधेरा समाप्त हो जाता है। यह बात भी स्मरणीय है कि तांबे के पारस द्वारा स्पर्श किए जाने पर उसके सोना बनने में देर नहीं लगती॥ ५॥ इसी तरह यदि पूर्वकालीन भाग्य जागें तो गुरु मिल जाता है, जो समस्त पारसों से सर्वोपरि पारस है। गुरु की कृपा से मन में प्रभु से मिलने की लालसा उत्पन्न हो जाती है, वह अन्तरात्मा में ही प्रभु को मिल जाता है और मन के वज्र कपाट खुल जाते हैं॥ ६॥ जो मनुष्य प्रभु–भक्ति की युक्ति को अपने हृदय में दृढ़ करता है, उसके तमाम बन्धन एवं विकार मिट जाते हैं। वह अपने मन को रोकता है, प्रसन्नता पाता है और केवल उस प्रभु का चिंतन करता है जो माया के तीनों गुणों से परे है॥ ७॥ मैंने अनेक यत्न करके देखे हैं परन्तु दूर हटाने से संदेह की फाँसी दूर नहीं हटाई जा सकती। कर्मकाण्ड के इन यत्नों से प्रभु की प्रेम–भक्ति मुझ से उत्पन्न नहीं हुई इसलिए रविदास उदास है॥ ८॥ १॥

☆☆☆

को लिखने वाले चित्र-गुप्त भी तेरा ही गुणानुवाद कर रहे हैं तथा धर्मराज चित्र-गुप्त द्वारा लिखे जाने वाले शुभाशुभ कर्मों का विचार करता है। हे परमेश्वर ! तेरे द्वारा प्रतिपादित शिव, ब्रह्मा व अनेकों देवियाँ जो शोभायमान हैं, तेरी ही महिमा गा रहे हैं। समस्त देवताओं व स्वर्ग का अधिपति इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठा अन्य देवताओं के साथ मिलकर तेरे द्वार पर खड़ा तेरा ही यश गा रहा है। अनेक सिद्ध लोग समाधियों में स्थित हुए तेरी ही महिमा गा रहे हैं और विचारवान साधु भी विवेक से तेरा ही यशोगान कर रहे हैं। अनेक यति, सती एवं संतोषी भी तेरी ही महिमा-स्तुति गा रहे हैं और पराक्रमी योद्धा भी तेरी प्रशंसा के गीत गा रहे हैं। हे प्रभु ! दुनिया के समस्त विद्वान व महान जितेन्द्रिय ऋषि-मुनि युगों-युगों से वेदों को पढ़-पढ़ कर तेरा ही यशोगान कर रहे हैं। मन को मुग्ध करने वाली सुन्दर अप्सराएँ स्वर्ग लोक, मृत्युलोक एवं पाताल लोक में तेरा ही गुणगान कर रही हैं। तेरे उत्पन्न किए हुए चौदह रत्न, जगत के अड़सठ (६८) तीर्थ तथा उनमें विद्यमान संतजन भी तेरा यशोगान कर रहे हैं। बड़े-बड़े पराक्रमी योद्धा, महाबली एवं शूरवीर भी तेरा ही गुणानुवाद कर रहे हैं, तथा उत्पत्ति के चारों स्रोत (अण्डज, जरायुज, स्वेदज व उदभिज्ज) भी तेरी ही उपमा गा रहे हैं। हे विधाता ! नवखण्ड, मण्डल एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जो तूने बना-बना कर धारण कर रखे हैं, वे भी तेरी ही महिमा-स्तुति गा रहे हैं। वास्तव में वे ही तेरी कीर्ति को गा सकते हैं, जो तेरी भक्ति में लीन हैं, तेरे नाम के रसिया हैं और जो तुझे अच्छे लगते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि अनेकानेक और भी कई ऐसे जीव हैं जो मुझे स्मरण नहीं हो रहे, जो तेरा ही यशोगान करते हैं, मैं कहाँ तक उनका विचार करूँ, अर्थात् यशोगान करने वाले जीवों की गणना मैं कहाँ तक करूँ। वह सत्यस्वरूप परमात्मा भूतकाल में था, वही सद्गुणी परमेश्वर वर्तमान में भी है। वह जगत का रचयिता भविष्य में सदैव रहेगा, वह परमात्मा न जन्म लेता है और न ही उसका नाश होता है। जिस सृष्टि रचयिता ईश्वर ने रंग-बिरंगी, तरह-तरह के आकार वाली एवं अनेकानेक जीवों की उत्पत्ति अपनी माया द्वारा की है, अपनी इस सृष्टि-रचना को कर-करके वह अपनी रुचि अनुसार ही देखता है अर्थात् उनकी देखभाल अपनी इच्छानुसार ही करता है। जगत के रचयिता को जो कुछ भी भला लगता है, वही कार्य वह करता है और भविष्य में भी करेगा, इसके प्रति उसको आदेश करने वाला उसके समान कोई नहीं है। गुरु नानक जी का फुरमान है कि हे मानव ! वह परमात्मा शाहों का शाह अर्थात् सारे विश्व का शहंशाह है, इसलिए उसकी रजा में रहना ही उचित है॥१॥१॥

आसा महला ४ ॥ सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥ १ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन्ह कुरबाणा ॥ २ ॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन्ह हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन्ह हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन्ह सेविआ जिन्ह सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक

अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ २ ॥

वह अकालपुरुष सृष्टि के समस्त जीवों में व्यापक है, फिर भी मायातीत है, अगम्य है तथा अनन्त है। हे सत्यस्वरूप सृजनहार परमात्मा! तुम्हारा ध्यान अतीत में भी सब करते थे, अब भी करते हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। सृष्टि के समस्त जीव तुम्हारी ही रचना है और तुम ही सब जीवों के प्रतिभोग व मुक्ति दाता हो। हे भक्त जनो! उस निरंकार का सिमरन करो जो समस्त दुखों का नाश करके सुख प्रदान करता है। निरंकार स्वयं स्वामी व स्वयं ही सेवक है, सो हे नानक! मुझ दीन जीव की क्या योग्यता है कि मैं उस अकथनीय प्रभु का वर्णन कर सकूँ॥१॥ सर्वव्यापक निरंकार समस्त प्राणियों के हृदय में अभेद समा रहा है। संसार में कोई दाता बना हुआ है, किसी ने भिक्षु का रूप लिया हुआ है, हे परमात्मा! यह सब तुम्हारा ही आश्चर्यजनक कौतुक है। तुम स्वयं ही देने वाले हो और स्वयं ही भोक्ता हो, तुम्हारे बिना मैं किसी अन्य को नहीं जानता। तुम पारब्रह्म हो, तुम तीनों लोकों में अंतरहित हो, मैं तुम्हारे गुणों को मुख से कथन कैसे करूँ। सतगुरु जी कथन करते हैं कि जो जीव आप का अंतर्मन से सिमरन करते हैं, सेवा-भाव से समर्पित होते हैं उन पर मैं न्यौछावर होता हूँ॥ २॥ हे निरंकार! जो आपका मन व वाणी द्वारा ध्यान करते हैं, वो मानव-जीव युगों-युगों तक सुखों का भोग करते हैं। जिन्होंने आपका सिमरन किया है वे इस संसार से मुक्ति प्राप्त करते हैं और उनका यम-पाश टूट जाता है। जिन्होंने भय से मुक्त होकर उस अभय स्वरूप अकाल-पुरुष का ध्यान किया है उनके जीवन का समस्त (जन्म-मरण व यमादि का) भय वह समाप्त कर देता है। जिन्होंने निरंकार का चिन्तन किया, सेवा-भाव से उस में लीन हुए, वे तुम्हारे दुखहर्ता रूप में ही विलीन हो गए। हे नानक! जिन्होंने नारायण स्वरूप निरंकार का सिमरन किया, वे धन्य ही धन्य है, मैं उन पर कुर्बान होता हूँ॥ ३॥ हे अनंत स्वरूप! तेरी भक्ति के खजाने भक्तों के हृदय में अनंतानंत भरे हुए हैं। तेरे भक्त तीनों काल तेरी प्रशंसा के गीत गाते हैं कि हे परमेश्वर! तू अनेकानेक व अनंत स्वरूप है। संसार में तेरी नाना प्रकार से आराधना और जप-तपादि द्वारा साधना की जाती है। अनेकानेक ऋषि-मुनि व विद्वान कई तरह के शास्त्र, स्मृतियों का अध्ययन करके तथा षट्-कर्म, यज्ञादि धर्म कार्यो द्वारा तुम्हारा स्तुति-गान करते हैं। हे नानक! वे समस्त श्रद्धालु भक्त संसार में भले हैं जो निरंकार को अच्छे लगते हैं॥ ४॥ हे अकालपुरुष! तुम अपरिमेय पारब्रह्म अनन्त स्वरूप हो, तुम्हारे समान अन्य कोई भी नहीं है। युगों-युगों से तुम एक हो, सदा सर्वदा तुम अद्वितीय स्वरूप हो और तुम ही निश्चल रचयिता हो। जो तुम्हें भला लगता है वही घटित होता है, जो तुम स्वेच्छा से करते हो वही कार्य होता है। तुमने स्वयं ही इस सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही रच कर उसका संहार भी करते हो। हे नानक! मैं उस स्रष्टा प्रभु का गुणगान करता हूँ, जो समस्त सृष्टि का सृजक है अथवा जो समस्त जीवों के अन्तर्मन का ज्ञाता है॥ ५॥ २॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥ सुणि वडा आखै सभ कोई ॥ केवडु वडा डीठा होई ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥ १ ॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोई न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुर हाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआं ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥ आखण वाला किआ वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ १ ॥

हे निरंकार स्वरुप! (शास्त्रों व विद्वानों से) सुन कर तो प्रत्येक कोई तुझे बड़ा कहता है। किंतु कितना बड़ा है, यह तो तभी कोई बता सकता है यदि किसी ने तुझे देखा हो अथवा तुम्हारे दर्शन किए हों। वास्तव में उस सर्गुण स्वरूप परमात्मा की न तो कोई कीमत आंक सकता है और न ही उसका कोई अंत कह सकता है, क्योंकि वह अनन्त व असीम है। जिन्होंने तेरी महिमा का अंत पाया है अर्थात् तेरे सच्चिदानन्द स्वरूप को जाना है वे तुझ में ही अभेद हो जाते हैं॥ १॥ हे मेरे अकालपुरुष! तुम सर्वोच्च हो, स्वभाव में स्थिर व गुणों के निधान हो। तुम्हारा कितना विस्तार है, इस तथ्य का ज्ञान किसी को भी नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ समस्त ध्यान-मग्न होने वाले व्यक्तियों ने मिलकर अपनी वृत्ति लगाई। समस्त विद्वानों ने मिलकर तुम्हारा अन्त जानने की कोशिश की। शास्त्रवेता, प्राणायामी, गुरु व गुरुओं के भी गुरु तेरी महिमा का तिनका मात्र भी व्याख्यान नहीं कर सकते॥ २॥ सभी शुभ-गुण, सभी तप और सभी शुभ कर्म; सिद्ध-पुरुषों सिद्धि समान महानता; तुम्हारी कृपा के बिना पूर्वोक्त गुणों की जो सिद्धियाँ हैं वे किसी ने भी प्राप्त नहीं की। यदि परमेश्वर की कृपा से ये शुभ-गुण प्राप्त हो जाएँ तो फिर किसी के रोके रुक नहीं सकते॥ ३॥ यदि कोई कहे कि हे अकालपुरुष! मैं तुम्हारी महिमा कथन कर सकता हूँ तो वह बेचारा क्या कह सकता है। क्योंकि हे परमेश्वर! तेरी स्तुति के भण्डार तो वेदों, ग्रंथों व तेरे भक्तों के हृदय में भरे पड़े हैं। जिन को तुम अपनी स्तुति करने की बुद्धि प्रदान करते हो, उनके साथ किसी का क्या जोर चल सकता है। गुरु नानक जी कहते हैं कि वह सत्यस्वरूप परमात्मा ही सबको शोभायमान करने वाला है॥ ४॥ १॥

आसा महला १ ॥ आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥ १ ॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देंदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥ ३ ॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥ ४ ॥ २ ॥

[एक बार माता तृप्ता जी ने नानक देव जी को कहा कि हे पुत्र! तुम प्रभु का सिमरन प्रत्येक पल की बजाय एक समय किया करो तो आप ने इस शब्द का उच्चारण करते हुए कहा कि]

हे माता जी! जब तक मैं परमेश्वर का नाम सिमरन करता हूँ तब तक ही मैं जीवित रहता

हूँ, जब मुझे यह नाम विस्मृत हो जाता है तो मैं स्वयं को मृत समझता हूँ; अर्थात् मैं प्रभु के नाम में ही सुख अनुभव करता हूँ, वरन् मैं दुखी होता हूँ। किंतु यह सत्य नाम कथन करना बहुत कठिन है। यदि प्रभु के सत्य नाम की (भूख) चाहत हो तो वह चाहत ही समस्त दुखों को नष्ट कर देती है॥ १॥ सो हे माता जी! ऐसा नाम फिर मुझे विस्मृत क्यों हो। वह स्वामी सत्य है और उसका नाम भी सत्य है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा के सत्य नाम की तिनका मात्र महिमा; (व्यासादि मुनि) कह कर थक गए हैं, किंतु वे उसके महत्व को नहीं जान पाए हैं। यदि सृष्टि के समस्त जीव मिलकर परमेश्वर की स्तुति करने लगें तो वह स्तुति करने से न बड़ा होता है और न निन्दा करने से घटता है॥ २॥ वह निरंकार न तो कभी मरता है और न ही उसे कभी शोक होता है। वह संसार के जीवों को खान-पान देता रहता है जो कि उसके भण्डार में कभी भी समाप्त नहीं होता। दानेश्वर परमात्मा जैसा गुण सिर्फ उसी में ही है, अन्य किसी में नहीं। ऐसे परमेश्वर जैसा न पहले कभी हुआ है और न ही आगे कोई होगा॥ ३॥ जितना महान् परमात्मा स्वयं है उतनी ही महान् उसकी बख्शिश है। जिसने दिन बनाकर फिर रात की रचना की है। (यदि रात न होती तो जीव सांसारिक धन्धों में लिप्त ही मर जाते, इसलिए रात भी अनिवार्य थी।) ऐसे परमेश्वर को जो विस्मृत कर दे वह नीच है। गुरु नानक जी कहते हैं कि परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना मनुष्य संकीर्ण जाति का होता है॥ ४॥ २॥

आसा महला १ ॥ जे दरि मांगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥ भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥ १ ॥ जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि कराए आपि करेइ ॥ आपि उलाम्हे चिति धरेइ ॥ जा तूं करणहारु करतारु ॥ किआ मुहताजी किआ संसारु ॥ २ ॥ आपि उपाए आपे देइ ॥ आपे दुरमति मनहि करेइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ दुखु अन्हेरा विचहु जाइ ॥ ३ ॥ साचु पिआरा आपि करेइ ॥ अवरी कउ साचु न देइ ॥ जे किसै देइ वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

यदि कोई भिखारी प्रभु के द्वार पर पुकार करे तो महल का मालिक प्रभु उसकी पुकार को सुन लेता है। हे प्रभु! अपने भिखारी को एक सम्मान प्रदान कर अथवा आदर-धैर्य दे अथवा धक्के मार दे॥ १॥ सब जीवों में प्रभु ज्योति ही समाई हुई समझो और किसी को जाति-वर्ण बारे मत पूछो क्योंकि परलोक में कोई जाति नहीं है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर स्वयं ही सबकुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। वह स्वयं ही भक्तों की शिकायत की ओर ध्यान देता है। हे कर्त्तार! जब तुम ही करने वाले हो तो मैं संसार का मोहताज क्यों बनूँ और किसके लिए होऊँ?॥ २॥ हे प्रभु! तुम ने स्वयं जीवों को पैदा किया है और स्वयं ही सबकुछ देते हो। हे ठाकुर! तुम स्वयं ही दुर्मति को रोकते हो। जब गुरु के प्रसाद से प्रभु आकर मनुष्य के हृदय में बसेरा कर लेता है तो उसका दुःख एवं अन्धेरा भीतर से दौड़ जाते हैं॥ ३॥ वह स्वयं ही भीतर सत्य के लिए प्रेम उत्पन्न करता है। दूसरों (स्वेच्छाचारी) को वह सत्य प्रदान नहीं करता। हे नानक! यदि वह किसी को सत्य प्रदान करता है, तो उससे बाद में कर्मों का हिसाब-किताब नहीं माँगता॥ ४॥ ३॥

आसा महला १ ॥ ताल मदीरे घट के घाट ॥ दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥ नारदु नाचै कलि का भाउ ॥ जती सती कह राखहि पाउ ॥ १ ॥ नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥ अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरू पासहु फिरि चेला खाइ ॥ तामि परीति वसै घरि आइ ॥ जे सउ वरिहआ जीवण खाणु ॥ खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥ २ ॥ दरसनि देखिऐ दइआ न होइ ॥ लए दिते विणु

रहै न कोइ ॥ राजा निआउ करे हथि होइ ॥ कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥ ३ ॥ माणस मूरति नानकु नामु ॥ करणी कुता दरि फुरमानु ॥ गुर परसादि जाणै मिहमानु ॥ ता किछु दरगह पावै मानु ॥ ४ ॥ ४ ॥

मन के संकल्प ताल एवं घुँघरूओं की भाँति हैं और उनसे दुनिया का मोह रूपी ढोल एक रस बज रहा है। कलियुग के प्रभाव से मन रूपी नारद नृत्य कर रहे हैं। फिर ब्रह्मचारी एवं सत्यवादी मनुष्य अपने पैर कहाँ रखें ?॥ १॥ हे नानक ! मैं प्रभु के नाम पर कुर्बान जाता हूँ। यह दुनिया (मोह-माया में फँसने के कारण) अन्धी (ज्ञानहीन) बनी हुई है परन्तु प्रभु सबकुछ जानने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ देखो, कैसी विपरीत रीति चल पड़ी है कि चेला ही गुरु से खाता है? वह रोटी खाने के लोभ में गुरु के घर आकर रहता है अर्थात् उसका चेला बन जाता है। यदि मनुष्य सैकड़ों वर्ष जीवन रहने तक भी खाता रहे तो केवल वही दिन प्रभु के दरबार में स्वीकृत होगा, जब वह प्रभु को पहचानता है॥ २॥ निवेदन करने वाले मनुष्य के चेहरे को देखकर रिश्वतखोर हाकिम को उस पर दया नहीं आती। कोई भी ऐसा हाकिम नहीं है जो रिश्वत लेता अथवा न देता हो। राजा तब न्याय करता है, जब उसकी हथेली पर कुछ रख दिया जाता है और खुदा के नाम के वास्ते वह मानता नहीं॥ ३॥ हे नानक ! मनुष्य केवल आकार और नाम में ही मनुष्य है। प्रभु के दरबार का यही आदेश है कि इन्सान अपने आचरण के कारण कुत्ता ही है। गुरु की दया से यदि मनुष्य इस संसार में अपने आपको अतिथि समझ ले तो वह प्रभु के दरबार में कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ ४॥

आसा महला १ ॥ जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥ तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥ १ ॥ साहिबु मेरा एको है ॥ एको है भाई एको है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥ आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥ २ ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥ ३ ॥ कलि कलवाली माइआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ आपे रूप करे बहु भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे परमेश्वर ! सुरति द्वारा सुनाई देने वाला जितना भी तेरा यह अनहद शब्द है, यह सारी तेरी ही पैदा की हुई ध्वनि है। जितनी भी यह दुनिया दिखाई देती है, यह सब तेरी ही काया है। हे प्रभु ! तू स्वयं जिह्वा है और स्वयं ही नाक है। हे मेरी माता ! किसी दूसरे की बात ही मत कर॥ १॥ हे भाई ! मेरा मालिक केवल एक ही है और एक वही मेरा स्वामी है॥१॥ रहाउ॥ वह स्वयं जीवों का नाश करता है और स्वयं ही मुक्त करता है। वह स्वयं जान लेता है और स्वयं ही प्राण देता है। वह स्वयं देखता है और स्वयं ही खुश होता है। वह स्वयं ही जीवों पर अपनी दया-दृष्टि धारण करता है॥ २॥ जो कुछ उसने करना है, उसे वह कर रहा है। दूसरा कोई भी कुछ नहीं कर सकता। जैसे वह प्रभु करता है, वैसे ही मैं उसका वर्णन करता हूँ। हे प्रभु ! सब तेरी ही बड़ाई है॥ ३॥ कलियुग शराब की मटकी है। माया मीठी शराब है और मतवाला मन इसे पान करता जाता है। (बेचारा) नानक यही कहता है कि प्रभु स्वयं अनेक प्रकार के रूप धारण करता है॥ ४॥ ५॥

आसा महला १ ॥ वाजा मति पखावजु भाउ ॥ होइ अनंदु सदा मनि चाउ ॥ एहा भगति एहो तप ताउ ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ १ ॥ पूरे ताल जाणै सालाह ॥ होरु नचणा खुसीआ मन

माह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतु संतोखु वजहि दुइ ताल ॥ पैरी वाजा सदा निहाल ॥ रागु नादु नही दूजा भाउ ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ २ ॥ भउ फेरी होवै मन चीति ॥ बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥ लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥ ३ ॥ सिख सभा दीखिआ का भाउ ॥ गुरमुखि सुणणा साचा नाउ ॥ नानक आखणु वेरा वेर ॥ इतु रंगि नाचहु रखि रखि पैर ॥ ४ ॥ ६ ॥

(हे प्राणी!) बुद्धि को अपना बाजा और प्रीति को अपनी डफली बना। इनसे मन में आनंद एवं सदैव उमंग पैदा होती है। यही प्रभु-भक्ति एवं यही तपस्या की साधना है। इस प्रेम में तू अपने चरणों से ताल भरकर नृत्य कर॥ १॥ प्रभु की प्रशंसा को अपना ताल-स्वर समझो; दूसरे नृत्य हृदय में भोग-विलास पैदा करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ सत्य एवं संतोष को अपने दो ताल (छैना एवं तबला) बना और इनकी कमाई कर। प्रभु के सदैव दर्शन को अपने पैरों के घुंघरू बना। द्वैतभाव के नाश को अपना राग एवं गीत समझ। ऐसे प्रेम में अपने पैरों से ताल बनाकर तू नृत्य कर॥ २॥ बैठते-उठते, अपने मन एवं हृदय में प्रभु के सदैव भय को अपने नृत्य में चक्र काटने बना। शरीर को भस्म जानना ही मिट्टी में मिलना है। ऐसे प्रेम में अपने पैरों से ताल बनाकर तू नृत्य कर॥ ३॥ दीक्षा (उपदेश) को प्रेम करने वाले शिष्य तेरी मण्डली होवे। गुरुमुख बनकर भगवान के सत्य नाम को सुनता रह। हे नानक! बार-बार प्रभु के नाम का जाप करो। इस प्रेम में अपने पैरों से ताल बनाकर तू नृत्य कर॥ ४॥ ६॥

आसा महला १ ॥ पउणु उपाइ धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु कीआ ॥ अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥ १ ॥ किआ उपमा तेरी आखी जाइ ॥ तूं सरबे पूरि रहिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी काली नथि किआ वडा भइआ ॥ किसु तूं पुरखु जोरू कउण कहीऐ सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥ २ ॥ नालि कुटंबु साथि वरदाता ब्रहमा भालण स्रिसटि गइआ ॥ आगै अंतु न पाइओ ता का कंसु छेदि किआ वडा भइआ ॥ ३ ॥ रतन उपाइ धरे खीरु मथिआ होरि भखलाए जि असी कीआ ॥ कहै नानकु छपै किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ॥ ४ ॥ ७ ॥

भगवान ने पवन को उत्पन्न करके सारी धरती को स्थापित किया और जल एवं अग्नि को नियमबद्ध किया। दस सिरों वाले अन्धे अर्थात् मूर्ख (लंकापति) रावण ने अपने सिर कटवा लिए परन्तु उसको मारने से कौन-सी प्रशंसा पा ली?॥ १॥ हे प्रभु! तेरी कौन-कौन सी उपमा कही जा सकती है? तू सर्वव्यापक है और सब जीवों में समा रहा है तथा सभी जीव तुझ में ही वृत्ति लगाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! जीवों को पैदा करके तूने उनकी जीवन-युक्ति अपने हाथ में पकड़ी हुई है। फिर कालिया नाग के नाक में नुकेल डाल कर कौन-सी महानता प्राप्त कर ली? हे प्रभु! तुम किसके पति हो? कौन तेरी पत्नी कही जा सकती है? जबकि तुम सब जीवों में निरन्तर समा रहे हो॥ २॥ वरदाता ब्रह्मा अपने कुटुंब सहित सृष्टि का विस्तार पता करने के लिए कमल की नलकी में गया। लेकिन आगे जाकर उसको उसके अन्त का पता न लगा। हे प्रभु! तूने कंस का वध करके क्या महानता प्राप्त की?॥ ३॥ देवताओं तथा दैत्यों द्वारा क्षीर सागर का मंथन किया गया और अमूल्य रत्न पदार्थ उत्पन्न करके बाहर निकाले गए। (इससे) देवते एवं दैत्य और क्रोध में चिल्लाने लगे कि हमने यह क्या किया है। हे नानक! छिपाने से किस तरह छिपाया जा सकता है। एक-एक करके उसने तमाम रत्न (पदार्थ) बांट दिए थे॥४॥ ७॥

आसा महला १ ॥ करम करतूति बेलि बिसथारी राम नामु फलु हूआ ॥ तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ ॥ १ ॥ करे वखिआणु जाणै जे कोई ॥ अंम्रितु पीवै सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह पीआ से मसत भए है तूटे बंधन फाहे ॥ जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइआ के लाहे ॥ २ ॥ सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ ॥ रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइआ ॥ ३ ॥ बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा ॥ सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥ ४ ॥ ८ ॥

शुभ कर्मो एवं नेक आचरण की लता फैली हुई है और उस लता को राम के नाम का फल लगा हुआ है। उस राम नाम का कोई स्वरूप अथवा रेखा नहीं। यह अनहद शब्द (सहज ही) गूंजता है। निरंजन ने इस शब्द को पैदा किया है॥ १॥ यदि कोई मनुष्य इस शब्द को समझ ले तो ही वह इसकी व्याख्या कर सकता है और केवल वही अमृत रस का पान करता है॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य अमृत को चखते हैं, वे मस्त हो जाते हैं। उनके बन्धन एवं फाँसी कट जाती है जब वे ज्योति ज्योत समा जाते हैं तो उनकी माया की तृष्णा मिट जाती है॥ २॥ हे प्रभु ! समस्त ज्योतियों में मैं तेरा ही रूप देखता हूँ। समस्त लोकों में तेरी ही माया विद्यमान है यह विवादों वाला जगत तेरा ही रूप है पर तू इसमें इन विवादों से निर्लिप्त बैठा है। यह माया तेरी छाया है। तू मोह-माया में लीन जीवों पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥ ३॥ जो योगी शब्द की वीणा बजाता है, वह अनन्त सुन्दर स्वामी के दर्शन कर लेता है। नानक यही विचार करता है कि वह योगी अनहद शब्द द्वारा अपने मालिक-प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है॥ ४॥ ८॥

आसा महला १ ॥ मै गुण गला के सिरि भार ॥ गली गला सिरजणहार ॥ खाणा पीणा हसणा बादि ॥ जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥ १ ॥ तउ परवाह केही किआ कीजै ॥ जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की मति मतागलु मता ॥ जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥ किआ मुहु लै कीचै अरदासि ॥ पापु पुंनु दुइ साखी पासि ॥ २ ॥ जैसा तूं करहि तैसा को होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जेही तूं मति देहि तेही को पावै ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥ ३ ॥ राग रतन परीआ परवार ॥ तिसु विचि उपजै अंम्रितु सार ॥ नानक करते का इहु धनु मालु ॥ जे को बूझै एहु बीचारु ॥ ४ ॥ ९ ॥

मुझ में यही गुण है कि अपने सिर पर मैंने व्यर्थ बातों का बोझ उठाया हुआ है। हे जग के रचयिता ! सब बातों में तेरी बातें ही उत्तम हैं। जब तक हृदय में प्रभु याद नहीं आता, तब तक खाना, पीना एवं हँसना निरर्थक है॥ १॥ यदि अपने समूचे जीवन में मनुष्य प्राप्त करने योग्य वस्तु नाम को एकत्रित करे तो वह किसलिए और क्यों किसी दूसरे की परवाह करे॥ १॥ रहाउ॥ मन की बुद्धि मदमस्त हाथी जैसी है। जो कुछ हम बोलते हैं वह सब गलत ही है। कौन-सा मुँह लेकर हम (प्रभु के समक्ष) वन्दना करें, जबकि पाप एवं पुण्य दोनों साक्षी के तौर पर निकट ही हैं॥ २॥ हे प्रभु ! जैसा तुम किसी को बनाते हो, वैसा वह हो जाता है। तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं। जैसी सूझ बुद्धि तुम किसी को देते हो, वैसी ही वह प्राप्त करता है। जैसा तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तुम मनुष्य को चलाते हो॥३॥ राग एवं रागिनियों का सारा परिवार एक उत्तम रत्न है और इन में नाम रूपी अमृत तत्व उत्पन्न होता है। हे नानक ! यह सृजनहार प्रभु का धन एवं संपति है। क्या कोई ऐसा मनुष्य है जो इस विचार को समझता है॥ ४॥ ९॥

आसा महला १ ॥ करि किरपा अपने घरि आइआ ता मिलि सखीआ काजु रचाइआ ॥ खेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ ॥ १ ॥ गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥ हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ जां सहु मिलिआ तां जानिआ ॥ तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइआ मनु मानिआ ॥ २ ॥ आपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई ॥ जितु कारजि सतु संतोखु दइआ धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ॥ ३ ॥ भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ ॥ जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइ ॥ ४ ॥ १० ॥

जब अपनी कृपा से कंत-प्रभु मेरे घर में आ गया तो मेरी सहेलियों (इन्द्रियों) ने मिलकर विवाह का प्रबंध किया। इस खेल को देख कर मेरा मन प्रसन्न हो गया है। मेरा हरि-प्रभु दूल्हा मुझसे विवाह करने के लिए आया है॥ १॥ हे स्त्रियो! गाओ, विवेक एवं विचार के गीत गायन करो। मेरे घर में जगजीवन मेरा कंत-प्रभु पधारा है॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु द्वारा मेरा विवाह हो गया। जब मैं अपने कंत-प्रभु से मिल गई तो मैंने उसे पहचान लिया। उसका अनहद शब्द रूपी नाम तीन लोकों में विद्यमान हो रहा है। जब मेरा अहंकार निवृत्त हो गया तो मेरा हृदय प्रसन्न हो गया॥ २॥ अपना कार्य प्रभु स्वयं ही संवारता है। यह कार्य किसी दूसरे से संवर नहीं सकता अर्थात् सफल नहीं हो सकता। कोई विरला गुरुमुख ही इस तथ्य को समझता है, कि इस विवाह कार्य के फलस्वरूप सत्य, संतोष, दया, धर्म पैदा होते हैं॥ ३॥ हे नानक! एक प्रभु ही सब जीव-स्त्रियों का प्रिय है, जिस पर वह अपनी दया-दृष्टि धारण करता है, वह सौभाग्यवती हो जाती है॥ ४॥ १०॥

आसा महला १ ॥ ग्रिहु बनु समसरि सहजि सुभाइ ॥ दुरमति गतु भई कीरति ठाइ ॥ सच पउड़ी साचउ मुखि नांउ ॥ सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥ १ ॥ मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥ सरब जोति पूरन भगवानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक तिआस भेख बहु करै ॥ दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥ कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ दुविधा छोडि नामि निसतरै ॥ २ ॥ सिफति सलाहणु सहज अनंद ॥ सखा सैनु प्रेमु गोबिंद ॥ आपे करे आपे बखसिंदु ॥ तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥ ३ ॥ झूठ विकार महा दुखु देह ॥ भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥ जो उपजै सो आवै जाइ ॥ नानक असथिरु नामु रजाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥

जो मनुष्य सहजावस्था में रहता है, उसके लिए घर एवं जंगल एक समान हैं। उसकी दुर्मति नाश हो जाती है और परमात्मा की कीर्ति उसका स्थान ले लेती है। मुँह से सत्यनाम का जाप करना ईश्वर के पास पहुँचने के लिए सच्ची सीढ़ी है। सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य आत्मस्वरूप प्राप्त कर लेता है॥ १॥ अपने मन को जीतना ही षड्दर्शन का ज्ञान है। भगवान की ज्योति सर्व जीव-जन्तुओं में परिपूर्ण हो रही है॥ १॥ रहाउ॥ माया की अधिकतर तृष्णा के कारण मनुष्य अधिकतर वेष धारण करता है। दुःख की पीड़ा शरीर के सुख को नष्ट कर देती है। काम वासना एवं क्रोध आत्मा के धन को चुरा कर ले जाते हैं। दुविधा को छोड़कर मनुष्य प्रभु के नाम का जाप करने से मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ २॥ प्रभु की प्रशंसा एवं उपमा में ही सहज आनंद है। गोबिन्द का प्रेम इन्सान का मित्र एवं संबंधी है। प्रभु स्वयं ही सबकुछ करने वाला और स्वयं ही क्षमाशील है। मेरा तन, मन एवं जीवन परमेश्वर के समक्ष अर्पण है॥ ३॥ झूठ एवं विकार बहुत दुःख देते हैं। समस्त भेष एवं वर्ण (जातियाँ) मिट्टी की भाँति दिखाई देते हैं। जिसने जन्म लिया है, वह जन्मता-मरता रहता है अर्थात् जन्म मरण के चक्र में फँसा रहता है। हे नानक! केवल प्रभु की इच्छा ही अटल है॥ ४॥ ११॥

आसा महला १ ॥ एको सरवरु कमल अनूप ॥ सदा बिगासै परमल रूप ॥ ऊजल मोती चूगहि हंस ॥ सरब कला जगदीसै अंस ॥ १ ॥ जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥ बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिरला बूझै पावै भेदु ॥ साखा तीनि कहै नित बेदु ॥ नाद बिंद की सुरति समाइ ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पाइ ॥ २ ॥ मुकतो रातउ रंगि रवांतउ ॥ राजन राजि सदा बिगसांतउ ॥ जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥ बूडत पाहन तारहि तारि ॥ ३ ॥ त्रिभवण महि जोति त्रिभवण महि जाणिआ ॥ उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥ अहिनिसि भगति करे लिव लाइ ॥ नानकु तिन कै लागै पाइ ॥ ४ ॥ १२ ॥

एक सरोवर में अनुपम एवं सुन्दर कमल हैं। यह सदैव ही खिले रहते हैं और सुन्दर रूप वाले एवं सुगन्धित हैं। राजहंस उज्ज्वल मोती चुगता है। वह सर्वकला सम्पूर्ण जगदीश्वर का एक अंश है॥१॥ जो कोई दिखता है, वह जन्म-मरण के अधीन है। बिना जल के सरोवर में कमल नहीं दिखता॥ १॥ रहाउ॥ कोई विरला पुरुष ही इस रहस्य को जानता एवं समझता है। वेद सदा ही तीन शाखाओं का वर्णन करते हैं। जो निर्गुण एवं सर्गुण प्रभु की वृत्ति में लीन होता है, वह सतिगुरु की सेवा करके परम पदवी प्राप्त कर लेता है॥ २॥ जो मनुष्य प्रभु के प्रेम में अनुरक्त है और उसका नाम-स्मरण करता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। वह राजाओं का महाराजा है और हमेशा खिला रहता है। हे प्रभु ! अपनी कृपा धारण करके जिसे तुम बचाते हो, चाहे वह डूबता हुआ पत्थर हो, उसे तुम पार कर देते हो॥ ३॥ हे प्रभु ! तीनों लोकों में तेरा प्रकाश है और मैं तुझे तीनों लोकों में व्यापक अनुभव करता हूँ। जब मेरी सुरति माया से हट गई तो इसने मुझे शरीर रूपी घर में ही आत्म स्वरूप में स्थित कर दिया। हे नानक ! मैं उसके चरण पकड़ता हूँ, जो प्रेम में भीगा दिन-रात प्रभु की भक्ति करता है॥ ४॥ १२॥

आसा महला १ ॥ गुरमति साची हुजति दूरि ॥ बहुतु सिआणप लागै धूरि ॥ लागी मैलु मिटै सच नाइ ॥ गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ है हजूरि हाजरु अरदासि ॥ दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ु कमावै आवै जावै ॥ कहणि कथनि वारा नही आवै ॥ किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥ बिनु नावै मनि त्रिपति न आवै ॥ २ ॥ जो जनमे से रोगि विआपे ॥ हउमै माइआ दूखि संतापे ॥ से जन बाचे जो प्रभि राखे ॥ सतिगुरु सेवि अंम्रित रसु चाखे ॥ ३ ॥ चलतउ मनु राखै अंम्रितु चाखै ॥ सतिगुर सेवि अंम्रित सबदु भाखै ॥ साचै सबदि मुकति गति पाए ॥ नानक विचहु आपु गवाए ॥ ४ ॥ १३ ॥

गुरु की सच्ची शिक्षा द्वारा मनुष्य का वाद-विवाद दूर हो जाता है। अधिक चतुरता से प्राणी को पापों की धूल लग जाती है। (लेकिन) प्रभु के सत्यनाम से लगी हुई मैल मिट जाती है। गुरु की दया से जीव सत्यनाम के प्रेम में लीन रहता है॥ १॥ ईश्वर प्रत्यक्ष है। उसकी उपस्थिति में प्रार्थना कर। दुःख एवं सुख सत्यस्वरूप कर्त्तार प्रभु के पास हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य झूठ की कमाई करता है, वह जन्म-मरण के चक्र में फँस जाता है। कहने एवं कथन करने से आवागमन (जन्म-मरण के चक्र) के अन्त का पता नहीं लगता। उसे क्या दिखाई दे गया है ? वह कुछ भी सोच-समझ कर नहीं करता। प्रभु-नाम के बिना मनुष्य के मन में तृप्ति नहीं होती॥ २॥ जिन्होंने (मृत्युलोक में) जन्म लिया है, वह रोगों में ग्रस्त हैं और माया के अहंकार की पीड़ा से दुखी किए हुए हैं। जिन पुरुषों की परमात्मा स्वयं रक्षा करता है, वे (रोगों की पीड़ा से) बच जाते हैं। सतिगुरु की सेवा करके वह अमृत रस चखते हैं॥ ३॥ जो मनुष्य अपने चंचल मन पर अंकुश लगाता है,

वह अमृत रस चखता है। वह सतिगुरु की सेवा करता है और अमृत वचन बोलता है। सच्चे शब्द के माध्यम से उसकी मुक्ति एवं गति हो जाती है। हे नानक! ऐसे व्यक्ति के मन का अभिमान दूर हो जाता है॥ ४॥ १३॥

आसा महला १ ॥ जो तिनि कीआ सो सचु थीआ ॥ अंम्रित नामु सतिगुरि दीआ ॥ हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥ अनदिनु नालि पिआरे संगु ॥ १ ॥ हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई ॥ गुर परसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउ निधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम धरम सचु साचा नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ जो हरि राते से जन परवाणु ॥ तिन की संगति परम निधानु ॥ २ ॥ हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी ॥ हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥ आपि तरै संगति कुल तारै ॥ सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥ ३ ॥ हमरी जाति पति सचु नाउ ॥ करम धरम संजमु सत भाउ ॥ नानक बखसे पूछ न होइ ॥ दूजा मेटे एको सोइ ॥ ४ ॥ १४ ॥

परमात्मा ने जो कुछ भी किया है, वह सत्य हुआ है। प्रभु का अमृत नाम सतिगुरु ने दिया है। मनुष्य अपने हृदय में प्रभु-नाम सहित दिन-रात अपने प्रियतम प्रभु की संगति में रहता है और मानसिक तौर पर उससे अलग नहीं होता॥ १॥ हे श्रीहरि! मुझे अपनी शरण में रखें। गुरु की कृपा से मैंने हरि-रस प्राप्त किया है और नवनिधियाँ देने वाले नाम-पदार्थ को पा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ जिन मनुष्यों के कर्म एवं धर्म परमात्मा का सत्यनाम ही है, उन पर मैं हमेशा बलिहारी जाता हूँ। जो मनुष्य प्रभु में अनुरक्त रहते हैं, वे स्वीकृत हो जाते हैं। उनकी संगति में महान् धन प्राप्त होता है॥ २॥ वह नारी धन्य है, जिसे प्रभु अपने पति के तौर पर प्राप्त हुआ है। वह शब्द का चिन्तन करती है और प्रभु में मिल जाती है। वह न केवल स्वयं ही (संसार सागर से) पार हो जाती है, अपितु समुदाय को भी पार कर देती है। वह सतिगुरु की सेवा करती है और परम तत्व को सोचती समझती है॥ ३॥ प्रभु का सच्चा नाम मेरी जाति एवं प्रतिष्ठा है। सत्य का प्रेम ही मेरा कर्म, धर्म एवं संयम है। हे नानक! जिस मनुष्य को प्रभु क्षमा कर देता है, उससे (कर्मों का) कोई लेखा-जोखा नहीं लिया जाता। एक वह प्रभु ही द्वैतवाद का नाश करता है॥ ४॥ १४॥

आसा महला १ ॥ इकि आवहि इकि जावहि आई ॥ इकि हरि राते रहहि समाई ॥ इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि ॥ से करमहीण हरि नामु न धिआवहि ॥ १ ॥ गुर पूरे ते गति मिति पाई ॥ इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुर सबदी हरि पारि लंघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ आपि लए प्रभु मेलि ॥ तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥ गुरमुखि निरमल रहहि पिआरे ॥ जिउ जल अंभ ऊपरि कमल निरारे ॥ २ ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ ॥ दीसै ब्रहमु गुरमुखि सचु लहीऐ ॥ अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥ ३ ॥ सासत बेद सिंम्रिति बहु भेद ॥ अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥ गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥ ४ ॥ १५ ॥

कुछ मनुष्य दुनिया में जन्म लेते हैं और कुछ जन्म लेकर मर जाते हैं। भगवान में मग्न हुए कुछ मनुष्य उसमें ही समाए रहते हैं। कुछ मनुष्यों को धरती एवं गगन कोई सुख का स्थान नहीं मिलता। क्योंकि वह कर्महीन (बदकिस्मत) मनुष्य प्रभु के नाम का चिन्तन नहीं करते॥ १॥ पूर्ण गुरु से मुक्ति का मार्ग प्राप्त होता है। यह संसार विष जैसा महा भयानक सागर है। गुरु के शब्द द्वारा परमात्मा जीव को भवसागर से पार कर देता है॥ १॥ रहाउ॥ जिन्हें प्रभु अपने साथ मिला लेता है, उनको मृत्यु भी कुचल नहीं सकती। प्यारे गुरुमुख कमल की भाँति निर्मल रहते हैं जो

जल के भीतर एवं ऊपर निर्लिप्त विचरते हैं॥ २॥ बताओ, हम किसे बुरा अथवा भला कहें, जबकि प्रभु सबके भीतर नजर आता है। मैं गुरु के माध्यम से सत्य को जानता, अकथनीय प्रभु को बयान करता और गुरु के उपदेश को सोचता-समझता हूँ। मैं गुरु की संगति में मिलकर प्रभु के पार की खोज करता हूँ॥ ३॥ हरि रस का हृदय में निवास ही शास्त्रों, वेदों एवं स्मृतियों के अधिकतर भेदों का ज्ञान एवं अड़सठ तीर्थों का स्नान है। गुरुमुख बड़े पवित्र हैं क्योंकि उन्हें (विकारों की) कोई मैल नहीं लगती। हे नानक ! शुरु से ही जिनके भाग्य अच्छे लिखे हुए हों प्रभु का नाम उनके हृदय में ही बसता है॥ ४॥ १५॥

आसा महला १ ॥ निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥ करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥ १ ॥ बोलहु रामु करे निसतारा ॥ गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥ २ ॥ हरि हरि नामु भगति प्रिअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥ ३ ॥ मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥ नानक क्रिपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥ ४ ॥ १६ ॥

मैं झुक-झुक कर अपने गुरु के चरणों पर नतमस्तक होता हूँ, जिनकी दया से मैंने सर्वव्यापक राम को देख लिया है। हरि के गुणों का विचार करके मैं उसे ही याद कर रहा हूँ और अपने हृदय में हरि के दर्शन करके इसके गुणों का विचार कर रहा हूँ॥ १॥ राम-राम बोलो, चूंकि राम का नाम भवसागर से मुक्त करवा देता है। गुरु की कृपा से प्रभु रूपी रत्न मिलता है, जिससे अज्ञान मिट जाता है और प्रभु-ज्योति का उजाला हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ केवल जिह्वा से उच्चारण करने से बन्धन नहीं टूटते और भीतर से अहंकार एवं दुविधा दूर नहीं होते। जब मनुष्य का मिलन सतिगुरु से होता है तो उसकी दुविधा दूर हो जाती है। केवल तभी उसका मनुष्य जन्म सफल होता है॥ २॥ जो व्यक्ति सुखों के सागर प्रियतम परमात्मा को अपने हृदय में बसाता है, उसका हरि-हरि नाम जपता है और उसकी भक्ति करता रहता है, जो अपनी मति गुरुमत्त अनुसार रखता है, ऐसे भक्तजन को परमेश्वर भवसागर से पार कर देता है, चूंकि वह जग का जीवन, भक्तवत्सल एवं सबका दाता है॥ ३॥ जो जीव अपने मन से जूझता हुआ विकारों की ओर से मर जाता है, वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है, उसकी अभिलाषा मन में ही मिट जाती है। हे नानक ! यदि जगजीवन प्रभु कृपा धारण करे तो जीव की सहज ही उसमें वृति लगी रहती है॥ ४॥ १६॥

आसा महला १ ॥ किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥ किसै पड़ावहि पड़ि गुणि बूझे सतिगुर सबदि संतोखि रहे ॥ १ ॥ ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ हरि भजु मेरे मन गहिर गंभीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥ मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ राम भगति जनु रहै निरारा ॥ २ ॥ सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥ आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥ आदि अपारु अपरंपरु हीरा ॥ लालि रता मेरा मनु धीरा ॥ ३ ॥ कथनी कहहि कहहि से मूए ॥ सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है ॥ सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ ॥ नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥

किसे कुछ कहें, किसे कुछ सुनाएँ और किसे कुछ समझाएँ ताकि वह समझदार हो जाए ? किसे कुछ पढ़ाएं ताकि वह पढ़कर प्रभु के गुणों को समझ जाए और सच्चे गुरु के शब्द द्वारा संतोष में बसा रहे॥ १॥ हे मेरे मन ! सतिगुरु के उपदेश से ऐसे हरि का भजन कर, जो समस्त शरीरों

में समाया हुआ और बहुत ही गहरा एवं गंभीर है॥ १॥ रहाउ॥ जिनके मन में प्रभु-भक्ति की अनंत लहरें उठती रहती हैं और हरि के प्रेम में मग्न रहते हैं। जिसे प्रभु की प्रशंसा की संगति प्राप्त है, वह दिन-रात ही पवित्र है। इस संसार में शाक्त मनुष्य का जन्म निरर्थक है। राम की भक्ति करने वाला मनुष्य मोह-माया से निर्लिप्त रहता है॥ २॥ वही शरीर शुद्ध है जो हरि के गुण गाता रहता है। अपने चित्त में ईश्वर को स्मरण करके यह (शरीर) उसकी प्रीति में लीन रहता है। प्रभु आदि, अनन्त, अपरम्पार एवं हीरा है। उस प्रियतम प्रभु से मेरा मन अनुरक्त एवं संतुष्ट हुआ है॥ ३॥ जो केवल मौखिक बातें ही कहते हैं, वह वास्तव में मृत हैं। वह प्रभु दूर नहीं। हे प्रभु ! तुम निकट ही हो। मैंने समूचा जगत देखा है, यह माया तो प्रभु की छाया है। हे नानक ! गुरु के उपदेश से मैंने प्रभु-नाम का ध्यान किया॥ ४॥ १७॥

आसा महला १ तितुका ॥ कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥ कोई राजा रहिआ समाइ ॥ किस ही मानु किसै अपमानु ॥ ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥ तुझ ते वडा नाही कोइ ॥ किसु वेखाली चंगा होइ ॥ १ ॥ मै तां नामु तेरा आधारु ॥ तूं दाता करणहारु करतारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वाट न पावउ वीगा जाउ ॥ दरगह बैसण नाही थाउ ॥ मन का अंधुला माइआ का बंधु ॥ खीन खराबु होवै नित कंधु ॥ खाण जीवण की बहुती आस ॥ लेखै तेरै सास गिरास ॥ २ ॥ अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ ॥ भउजल डूबत चिंत करेइ ॥ कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥ हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥ नानकु एक कहै अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभ तेरै पासि ॥ ३ ॥ जां तूं देहि जपी तेरा नाउ ॥ दरगह बैसण होवै थाउ ॥ जां तुधु भावै ता दुरमति जाइ ॥ गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥ प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥ ४ ॥ १८ ॥

कोई भिखारी है, जो भिक्षा लेकर खाता है और कोई राजा है, जो राज के सुखों में लीन रहता है। किसी मनुष्य को मान मिलता है और किसी को अपमान। प्रभु ही दुनिया का नाश करता है, रचना करता है और सबको अपने ध्यान में रखता है। हे प्रभु ! तुझ से बड़ा कोई नहीं। मैं किसे तेरे समक्ष उपस्थित करूँ, जो तुझसे अच्छा है ?॥ १॥ हे प्रभु ! केवल तेरा नाम मेरे जीवन का आधार है। तू ही दाता, सबकुछ करने वाला जगत का करतार है॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी ! मैं तेरे मार्ग नहीं चलता अपितु टेढ़े (पेचदार) मार्ग जाता हूँ। प्रभु के दरबार में मुझे बैठने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता। मैं मन का अन्धा हूँ और माया में फँसा हुआ हूँ और मेरे शरीर की दीवार नित्य ही क्षीण एवं कमजोर हो रही है। तूने खाने और अधिक जीने की भारी आशा रखी हुई है परन्तु तुम जानते नहीं कि तुम्हारी सांस एवं ग्रास आगे गिने हुए हैं॥ २॥ हे प्रभु ! (ज्ञान से) अन्धे मनुष्य को सदैव ही ज्ञान का दीपक प्रदान कर और उसकी चिन्ता कर जो भयानक संसार-सागर में डूब रहा है। जो मनुष्य नाम का जाप करता है, सुनता एवं आस्था रखता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु ! नानक एक प्रार्थना करता है कि उसकी आत्मा एवं शरीर तुझ पर अर्पित है॥ ३॥ यदि तू प्रदान करे तो मैं तेरे नाम का जाप करूँगा। इस तरह मैं सत्य के दरबार में बैठने के लिए स्थान प्राप्त कर लूँगा। जब तुझे अच्छा लगता है तो दुर्बुद्धि दूर हो जाती है और ज्ञान रूपी रत्न आकर चित्त में बस जाता है। नानक प्रार्थना करते हैं, यदि प्रभु अपनी कृपादृष्टि धारण करे तो मनुष्य सतिगुरु को मिल जाता है और भवसागर से पार हो जाता है॥ ४॥ १८॥

आसा महला १ पंचपदे ॥ दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही ॥ किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥ १ ॥ की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥ दुखु लागै

तूं विसरु नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी अंधु जीभ रसु नाही कंनी पवणु न वाजै ॥ चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥ २ ॥ अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचित भाउ करेही ॥ सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥ ३ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥ ४॥ मति विचि मरणु जीवणु होरु कैसा जा जीवा तां जुगति नाही ॥ कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥ ५ ॥ १६ ॥

हे प्रभु ! दूध के बिना गाय, पंखों के बिना पक्षी एवं जल के बिना वनस्पति किसी काम की नहीं। वह कैसा सुल्तान है, जिसे कोई सलाम ही न करे ? इसी तरह तेरे नाम के बिना आत्मा की कोठी में भयानक अन्धेरा है॥ १॥ हे प्रभु ! मैं तुझे क्यों विस्मृत करूँ, तुझे भुलाने से मुझे बहुत दुःख लगता है॥ १॥ रहाउ॥ बुढ़ापा आने पर मनुष्य के नेत्रों की रोशनी कम हो जाती है, जिह्वा का स्वाद खत्म हो जाता है और उसके कान आवाज़ नहीं सुनते। किसी के आगे सहारा दिए हुए ही वह पैर से चलता है। बिना सेवा के ऐसे फल-जीवन को लगते हैं॥ २॥ अपने हृदय के बाग के खुले खेत में सतिगुरु के उपदेश का वृक्ष पैदा कर और इसे प्रभु के प्रेम से सींच। सभी वृक्षों को एक प्रभु के नाम का फल लगा हुआ है। उसकी दया बिना मनुष्य इसे किस तरह पा सकता है ?॥ ३॥ जितने भी जीव-जन्तु हैं, सब तेरे ही हैं। सेवा के बिना किसी को भी फल प्राप्त नहीं होता। दुख एवं सुख तेरी इच्छा में है। नाम के बिना जीवन नहीं रहता॥ ४॥ गुरु के उपदेश द्वारा मरना ही सत्य जीवन है। दूसरी प्रकार किस तरह जीवन हो सकता है ? यदि मैं दूसरी तरह जीता हूँ तो वह उपयुक्त युक्ति नहीं। हे नानक ! प्रभु जीवों को अपनी इच्छानुसार जीवन प्रदान करता है। हे प्रभु ! मुझे वहाँ रख, जहाँ तुझे अच्छा लगता है॥ ५॥ १६॥

आसा महला १ ॥ काइआ ब्रहमा मनु है धोती ॥ गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ हरि नामा जसु जाचउ नाउ ॥ गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥ १ ॥ पांडे ऐसा ब्रहम बीचारु ॥ नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ धोती टिका नामु समालि ॥ ऐथै ओथै निबही नालि ॥ विणु नावै होरि करम न भालि ॥ २ ॥ पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ एको वेखहु अवरु न भालि ॥ चीन्है ततु गगन दस दुआर ॥ हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥ ३ ॥ भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥ पाहरूअरा छबि चोरु न लागै ॥ तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥ बूझै ब्रहमु अंतरि बिबेकु ॥ ४ ॥ आचारी नही जीतिआ जाइ ॥ पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ॥ असट दसी चहु भेदु न पाइआ ॥ नानक सतिगुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ ५ ॥ २० ॥

यह मानव शरीर ही पूजनीय ब्राह्मण है और मन इस ब्राह्मण की धोती है, ब्रह्म-ज्ञान इसका जनेऊ है और प्रभु का ध्यान इसकी कुशा है। तीर्थों पर स्नान की जगह मैं हरि का नाम एवं यश ही माँगता हूँ। गुरु की दया से मैं प्रभु में विलीन हो जाऊँगा॥ १॥ हे पण्डित ! इस तरह ब्रह्म का विचार कर कि उसका नाम तेरी पवित्रता, उसका नाम तेरी पढ़ाई, उसका नाम तेरी बुद्धिमत्ता एवं जीवन-आचरण हो॥ १॥ रहाउ॥ बाहरी जनेऊ तब तक रहता है, जब तक प्रभु-ज्योति तेरे भीतर विद्यमान है। प्रभु का नाम-सिमरन किया कर, क्योंकि नाम ही तेरी धोती एवं तिलक है। यही लोक-परलोक में सहायक होगा। नाम के अलावा दूसरे कर्मों की खोज मत कर॥ २॥ प्रेम से भगवान की पूजा कर तथा माया की तृष्णा को जला दे। केवल एक ईश्वर को हर जगह देख तथा किसी अन्य की तलाश मत कर। दसम द्वार के आकाश पर तू यथार्थ को देख और अपने मुख

से हरि का पाठ पढ़ और इसका चिन्तन कर॥ ३॥ प्रभु-प्रेम के भोजन से दुविधा एवं भय भाग जाते हैं। यदि दबदबे वाला संतरी पहरा दे रहा हो तो चोर रात को सेंध नहीं लगाते। एक प्रभु का ज्ञान ही माथे के ऊपर का तिलक है। अपने हृदय में मौजूद परमात्मा को पहचानना ही असल ज्ञान है॥ ४॥ कर्मकाण्डों द्वारा ईश्वर जीता नहीं जा सकता। न ही धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन द्वारा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है। अठारह पुराण एवं चार वेद (भी) उसके रहस्य को नहीं जानते। हे नानक! सतिगुरु ने मुझे प्रभु दिखा दिया है॥ ५॥ २०॥

आसा महला १ ॥ सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥ ठाकुर का दासु गुरमुखि होई ॥ जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ १ ॥ साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥ गुरमुखि साचे साचे दरबारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचा अरजु सची अरदासि ॥ महली खसमु सुणे साबासि ॥ सचै तखति बुलावै सोइ ॥ दे वडिआई करे सु होइ ॥ २ ॥ तेरा ताणु तूहै दीबाणु ॥ गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥ मंने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥ ३ ॥ पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥ गुर बिनु सोझी बूझ न होइ ॥ साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥ ४ ॥ किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ तूं आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ नानक एको दरु दीबाणु ॥ गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥ ५ ॥ २१ ॥

गुरुमुख ही ठाकुर जी का दास होता है। असल में वही ठाकुर जी का सेवक, दास एवं भक्त है। जिस प्रभु ने यह सृष्टि-रचना की है, वही अन्त में इसका नाश करता है। उसके अलावा अन्य कोई महान् नहीं॥ १॥ गुरु के शब्द द्वारा गुरुमुख सत्यनाम की आराधना करता है और सत्य के दरबार में वह सत्यवादी माना जाता है॥ १॥ रहाउ॥ सच्चा मालिक प्रभु अपने महल में बैठकर अपने भक्त की विनती एवं सच्ची अरदास को सुनता है और उसे शाबाश कहता है। वह उसे अपने सत्य के सिंहासन पर निमंत्रित करता है और उनको मान-सम्मान प्रदान करता है। जो कुछ वह करता है, वही होता है॥ २॥ हे जग के रचयिता! तू ही मेरा दरबार है और तू ही मेरी ताकत है। तेरे दरबार में जाने हेतु गुरु का शब्द ही मेरे पास सत्य का चिन्ह है। जो मनुष्य प्रभु के हुक्म का पालन करता है, वह प्रत्यक्ष ही उसके पास चला जाता है। सत्य के चिन्ह कारण उसे बाधा नहीं आती॥ ३॥ पण्डित वेदों को पढ़ता एवं उनकी व्याख्या करता है। लेकिन वह अपने भीतर की उपयोगी वस्तु के रहस्य को नहीं समझता। गुरु के बिना इस बात का कोई ज्ञान नहीं होता कि वह सच्चा प्रभु हर जगह मौजूद है॥ ४॥ मैं क्या कहूँ और क्या बखान करूँ? हे सर्वकला सम्पूर्ण परमात्मा! तुम स्वयं ही सबकुछ जानते हो। हे नानक! न्यायकर्त्ता प्रभु का दरबार ही सबका सहारा है। वहाँ सत्य द्वार में ही गुरुमुखों का बसेरा है॥ ५॥ २१॥

आसा महला १ ॥ काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥ १ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ सरबी रंगी रूपी तूंहै तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ सखी साजनी के हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥ २ ॥ आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥ जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥ ३ ॥ आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई ॥ तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥ ४ ॥ गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥ नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥ ५ ॥ २२ ॥

यह शरीर कच्ची गागर की तरह है और यह हमेशा ही दुखी रहती है। यह पैदा होती है, नाश हो जाती है और बहुत कष्ट सहन करती है। यह भयानक संसार सागर किस तरह पार किया जा सकता है? गुरु-परमेश्वर के बिना यह पार नहीं किया जा सकता॥ १॥ हे मेरे प्रियतम प्रभु! मैं बार-बार यही कहता हूँ कि तेरे अलावा मेरा अन्य कोई नहीं है। सभी रंग-रूपों में तुम ही विद्यमान हो। प्रभु उसे क्षमा कर देता है, जिस पर वह स्वयं दयादृष्टि करता है॥ १॥ रहाउ॥ (माया रूपी) मेरी सास बहुत बुरी है। वह मुझे अन्तर्मन रूपी घर में रहने नहीं देती। दुष्टा सास मुझे अपने प्रियतम प्रभु से मिलने नहीं देती। मैं सखियों एवं सहेलियों के चरणों की सेवा करती हूँ। क्योंकि उनकी सत्संगति में गुरु की दया से हरि ने मेरी तरफ कृपापूर्वक देखा है॥ २॥ मैंने स्वयं विचार करके एवं अपने मन को नियन्त्रण में करके यह भलीभांति देखा है कि तेरे जैसा मित्र अन्य कोई नहीं। (हे प्रभु!) जैसे तू मुझे रखता है, मैं वैसे ही रहता हूँ। दुख-सुख प्रदान करने वाला तू ही है। जो तू करता है, वही होता है॥ ३॥ मैंने आशा एवं तृष्णा दोनों को मिटा दिया है और त्रिगुणात्मक माया की आशा भी छोड़ दी है। सत्संगति की शरण लेकर एवं गुरुमुख बनकर ही तुरीयावस्था प्राप्त होती है॥ ४॥ जिसके हृदय में अलक्ष्य एवं भेद रहित प्रभु बसता है, उसके पास जप, तप, ज्ञान-ध्यान इत्यादि सबकुछ होता है। हे नानक! जिसका मन राम-नाम में मग्न है, वह गुरु की मति द्वारा प्रभु की सेवा करके सहजावस्था प्राप्त कर लेता है॥ ५॥ २२॥

आसा महला १ पंचपदे ॥ मोहु कुटंबु मोहु सभ कार ॥ मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥ १ ॥ मोहु अरु भरमु तजहु तुम्ह बीर ॥ साचु नामु रिदे रवै सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु नामु जा नव निधि पाई ॥ रोवै पूतु न कलपै माई ॥ २ ॥ एतु मोहि डूबा संसारु ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ ३ ॥ एतु मोहि फिरि जूनी पाहि ॥ मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥ ४ ॥ गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥ ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥ ५ ॥ नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥ ६ ॥ २३ ॥

मोह इन्सान के मन में परिवार के प्रति ममता पैदा करता है। मोह ही जगत का कार्य चला रहा है। मोह मन में विकार पैदा करता है, इसलिए मोह को त्याग दीजिए॥ १॥ हे भाई! मोह एवं दुविधा निवृत्त कर दो, तभी तुम्हारी आत्मा एवं शरीर में परमात्मा का सत्यनाम बसा रहेगा॥ १॥ रहाउ॥ जब मनुष्य सत्यनाम की नवनिधि प्राप्त कर लेता है तो उसके बच्चे रोते नहीं और माता भी दुःखी नहीं होती॥ २॥ इस मोह में समूचा जगत डूबा हुआ है और गुरुमुख बनकर ही कोई इससे पार उतर सकता है॥ ३॥ इस मोह के कारण ही जीव बार-बार योनियों में आता है। मोह में लिप्त हुआ जीव यमपुरी को जाता है॥ ४॥ जो व्यक्ति गुरु की दीक्षा प्राप्त करके भी जप एवं तप करता है, उसका न सांसारिक मोह टूटता है और न ही वह सत्य के दरबार में स्वीकृत होता है॥ ५॥ यदि प्रभु अपनी कृपादृष्टि धारण करे तो यह मोह दूर हो जाता है। हे नानक! ऐसा जीव प्रभु में लीन हुआ रहता है॥ ६॥ २३॥

आसा महला १ ॥ आपि करे सचु अलख अपारु ॥ हउ पापी तूं बखसणहारु ॥ १ ॥ तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥ मनहठि कीचै अंति विगोवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥ बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥ २ ॥ दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥ जो उपजै सो अलख अभेवहु ॥ ३ ॥ ऐसा हमरा सखा सहाई ॥ गुर हरि मिलिआ भगति द्रिड़ाई ॥ ४ ॥ सगलीं सउदीं तोटा आवै ॥ नानक राम नामु मनि भावै ॥ ५ ॥ २४ ॥

अलक्ष्य एवं अपार सत्य का पुंज परमात्मा ही सबकुछ करता है। हे प्रभु ! मैं तो पापी हूँ परन्तु तू क्षमाशील है॥ १॥ हे प्रभु ! तेरी इच्छा में ही सबकुछ होता है। जो मनुष्य मन के हठ द्वारा कार्य करता है, वह अन्ततः नष्ट हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनमुख पुरुष की बुद्धि में सदा झूठ भरा रहता है। हरि के सुमिरन के बिना वह पापों के कारण बहुत दुखी होता है॥ २॥ हे प्राणी ! दुर्मति को त्यागकर कुछ लाभ प्राप्त कर लो। जो भी पैदा हुआ है, वह अगाध, भेदरहित स्वामी के द्वारा ही हुआ है॥ ३॥ मेरा सखा ईश्वर ऐसा सहायक है कि वह गुरु रूप में मुझे मिला और उसने भक्ति भाव को मेरे हृदय में सुदृढ़ कर दिया है॥ ४॥ दूसरे सांसारिक सौदों में मनुष्य को घाटा ही पड़ता है। हे नानक ! मेरे मन को राम का नाम ही अच्छा लगता है॥ ५॥ २४॥

आसा महला १ चउपदे॥ ॥ विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥ जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥ १ ॥ घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥ तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस निरासी तउ संनिआसी ॥ जां जतु जोगी तां काइआ भोगी ॥ २ ॥ दइआ दिगंबरु देह बीचारी ॥ आपि मरै अवरा नह मारी ॥ ३ ॥ एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ नानकु जाणै चोज न तेरे ॥ ४ ॥ २५ ॥

यदि विद्या का विचार-मनन किया जाए तो ही परोपकारी बना जा सकता है। यदि काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार को वश में कर लिया जाए तो ही इन्सान तीर्थ वासी कहा जा सकता है॥ १॥ यदि मेरा मन प्रभु-सिमरन में लगता है तो हृदय में घुंघरू जैसा अनहद शब्द बजता है। फिर परलोक में यमराज मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता॥ १॥ रहाउ॥ जब मैंने सब आशाएँ त्याग दीं तो मैं संन्यासी बन गया। जब मैंने योगी वाला यतीत्व धारण कर लिया तो मैं अपनी काया को भोगने वाला अच्छा गृहस्थी बन गया॥ २॥ जब मैं अपने शरीर को विकारों से बचाने के बारे में विचार करता हूँ तो मैं जीवों पर दया करने वाला दिगम्बर हूँ। जब मैं अपने अभिमान को खत्म करता हूँ तो मैं अहिंसक हूँ अर्थात् दूसरे जीवों को न मारने वाला हूँ ॥ ३॥ हे प्रभु ! एक तू ही है और तेरे अनेक वेश हैं। नानक तेरे आश्चर्यजनक कौतुकों को नहीं जानता॥ ४॥ २५॥

आसा महला १ ॥ एक न भरीआ गुण करि धोवा ॥ मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥ १ ॥ इउ किउ कंत पिआरी होवा ॥ सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस पिआसी सेजै आवा ॥ आगै सह भावा कि न भावा ॥ २ ॥ किआ जाना किआ होइगा री माई ॥ हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥ गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥ ३ ॥ अजै सु जागउ आस पिआसी ॥ भईले उदासी रहउ निरासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै खोइ करे सीगारु ॥ तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥ ४ ॥ तउ नानक कंतै मनि भावै ॥ छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥

मैं किसी एक अवगुण से ही नहीं भरी हूँ, जो मैं अपने अन्तर्मन में गुण उत्पन्न करके उस एक अवगुण को धोकर स्वच्छ हो जाऊँगी अर्थात् मुझ में अनेक अवगुण भरे हुए हैं। मेरा प्रियतम-प्रभु जागता रहता है और मैं सारी रात (मोह निद्रा में) सोती रहती हूँ॥ १॥ इस तरह मैं अपने कांत-प्रभु की प्रियतमा कैसे हो सकती हूँ ? मेरा पति-प्रभु जागता रहता है और मैं सारी रात सोती रहती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ अपने पति से मिलन की इच्छा एवं प्यास लेकर यदि मैं सेज पर आती भी हूँ तो मुझे पता नहीं है कि मैं प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगती हूँ कि नहीं॥ २॥ हे मेरी माता ! मैं नहीं जानती कि क्या होगा ? परन्तु हरि के दर्शन बिना मैं रह नहीं सकती॥ १॥ रहाउ॥ मैंने प्रभु-पति के प्रेम को नहीं चखा इसलिए मेरी प्यास नहीं बुझी और मेरी सुन्दर जवानी चली

गई है और मैं पत्नी पश्चाताप करती हूँ॥ ३॥ अब भी मैं उससे मिलन की आशा में जागती रहती हूँ। मैं उदास हो गई हूँ और निराश रहती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ यदि जीव-स्त्री अपना अहंकार त्याग दें और गुणों का हार-शृंगार करे तो ही पति-प्रभु जीव-स्त्री की सेज पर रमण करता है॥ ४॥ हे नानक! जीव स्त्री पति-प्रभु के मन को तभी भली लगती है, जब अहत्व त्याग कर अपने पति की इच्छा में लीन हो जाती है॥ १ ॥ रहाउ ॥ २६ ॥

आसा महला १ ॥ पेवकड़ै धन खरी इआणी ॥ तिसु सह की मै सार न जाणी ॥ १ ॥ सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥ नदरि करे मेलावा होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ ॥ सहजि सुभाइ अपणा पिरु जाणिआ ॥ २ ॥ गुर परसादी ऐसी मति आवै ॥ तां कामणि कंतै मनि भावै ॥ ३ ॥ कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥ सद ही सेजै रवै भतारु ॥ ४ ॥ २७ ॥

दुनिया के मोह में फँसकर जीव-स्त्री मूर्ख बनी रहती है और उस पति-प्रभु की महत्ता नहीं समझ सकी॥ १॥ मेरा पति-परमेश्वर केवल एक है। वह अद्वितीय है, उस जैसा कोई नहीं। यदि वह करुणादृष्टि धारण करे तो मेरा उससे मिलन हो सकता है॥ १॥ रहाउ॥ जो जीव-स्त्री संसार के मोह से निकल कर प्रभु-चरणों में लीन रहती है, वह उस सत्यस्वरूप ईश्वर (की महत्ता) पहचान लेती है और सहज ही प्रेम में जुड़कर अपने प्रियतम-प्रभु से गहरे संबंध बना लेती है॥ २॥ जब गुरु की कृपा से (जीव स्त्री में) ऐसी बुद्धि आ जाती है तो वह अपने पति-परमेश्वर के मन को प्रिय लगने लगती है॥ ३॥ नानक का कथन है कि जो जीव-स्त्री प्रभु के भय एवं प्रेम का शृंगार करती है, वह अपने पति-परमेश्वर के साथ हमेशा सेज पर रमण करती है॥ ४॥ २७॥

आसा महला १ ॥ न किस का पूतु न किस की माई ॥ झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥ १ ॥ मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥ जां तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते अउगण कूकै कोई ॥ जा तिसु भावै बखसे सोई ॥ २ ॥ गुर परसादी दुरमति खोई ॥ जह देखा तह एको सोई ॥ ३ ॥ कहत नानक ऐसी मति आवै ॥ तां को सचे सचि समावै ॥ ४ ॥ २८ ॥

इस दुनिया में न कोई किसी का पुत्र है, न ही कोई किसी की माता है। झूठे मोह के कारण दुनिया भ्रम में भटकती रहती है॥ १॥ हे मेरे मालिक! मैं तेरी रचना हूँ। जब तुम मुझे अपना नाम देते हो तो मैं नाम का जाप करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ यदि मनुष्य ने कितने ही पाप किए हुए हों फिर भी यदि कोई मनुष्य प्रार्थना करे परन्तु केवल तभी वह उसे क्षमा करेगा जब उसे अच्छा लगेगा॥ २॥ गुरु की कृपा से दुर्मति जड़ से उखड़ गई है। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ मैं प्रभु को पाता हूँ॥ ३॥ नानक कहते हैं कि जब जीव को ऐसी बुद्धि मिल जाती है, तो वह परम सत्य में ही समा जाता है॥ ४॥ २८॥

आसा महला १ दुपदे ॥ तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन्ह की सरणा जिन्ह तूं नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ २९ ॥

जीव का ऐसे भयंकर सरोवर में निवास है, जिसमें ईश्वर ने स्वयं ही जल के स्थान अग्नि उत्पन्न कर रखी है। उस सरोवर में मोह रूपी कीचड़ विद्यमान है, जिससे पांव आगे की ओर नहीं चलते और देखते ही देखते अनेकों पुरुष उस सरोवर में डूबते चले जा रहे हैं॥ १॥ हे मूर्ख मन!

तू परमात्मा को स्मरण नहीं करता। तुम जैसे-जैसे परमात्मा को विस्मृत करते हो, तेरे गुण कम होते जा रहे हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! न मैं यति हूँ, न ही सती हूँ, न पढ़ा-लिखा हूँ, मेरा जीवन तो मूर्ख एवं अज्ञानियों जैसा बना हुआ है। नानक वन्दना करता है - (हे प्रभु!) मुझे उन महापुरुषों की शरण में रख, जिन्होंने तुझे कभी नहीं भुलाया है॥ २॥ २९॥

आसा महला १ ॥ छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुर गुरु एको वेस अनेक ॥ १ ॥ जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु भइआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥ २ ॥ ३० ॥

(छिअ घर = छः शास्त्र-सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, योग और वेदांत। छिअ गुर = इन शास्त्रों के रचयिता कपिल मुनि, गौतम ऋषि, कणाद ऋषि, जैमिनी ऋषि, पातञ्जलि ऋषि, आचार्य वेद व्यास जी। छिअ उपदेस = इन शास्त्रों की अलग-अलग मान्यताएँ (उपदेश)। विसुए = ऑख के १५ बार फरकने के समान (काष्ठा)। चसिआ = १५ विसुए के समान (चसा)। घड़ीआ = ६० पलों की एक घड़ी (किन्तु ३० चसों का एक पल)। पहरा = साढे सात घड़ियों का एक पहर। आठ पहर का रात-दिन होता है। पंद्रह दिनों का एक पक्ष तथा पंद्रह दिनों की पंद्रह ही तिथियाँ होती है। सात दिनों का एक सप्ताह (जिन में सात वार होते है)। चार सप्ताह का एक माह होता है। बारह माह का एक वर्ष हुआ।)

सृष्टि की रचना में छः शास्त्र हुए, इनके छः ही रचयिता तथा उपदेश भी अपने-अपने तौर पर छः ही हैं। किंतु इनका मूल तत्त्व एक ही केवल परमात्मा है, जिसके भेष अनन्त हैं॥ १॥ हे मनुष्य! जिस शास्त्र रूपी घर में निरंकार की प्रशंसा हो, उसका गुणगान हो, उस शास्त्र को धारण कर, इससे तेरी इहलोक व परलोक दोनों में शोभा होगी॥ १॥ रहाउ॥ काष्ठा, चसा, घड़ी, पहर, तिथि व वार मिलकर जैसे एक माह बनता है। इसी तरह ऋतुओं के अनेक होने पर भी सूर्य एक ही है। (यह तो इस सूर्य के अलग-अलग अंश हैं।) वैसे ही हे नानक! कर्त्ता-पुरुष के उपरोक्त सब स्वरूप ही दिखाई पड़ते हैं॥ २॥ ३०॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु ३ महला १ ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥ लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥ जां पति लेखै ना पवै तां सभि निराफल काम ॥ १ ॥ हरि के नाम बिना जगु धंधा ॥ जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥ जां पति लेखै ना पवै तां जीअ किथै फिरि पाहि ॥ २ ॥ लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण ॥ जां पति लेखै ना पवै तां सभे कुपरवाण ॥ ३ ॥ सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥ अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥

(हे बन्धु!) यदि लाखों की संख्या में तेरी फौज हो, लाखों वाद्य एवं लाखों नेजे से संयुक्त हों, लाखों ही उठकर रोज़ सलाम करने वाले हों, यदि लाखों लोगों पर तेरा हुक्म चलता हो और लाखों ही मान-सम्मान करने वाले हों परन्तु यदि यह प्रतिष्ठा ईश्वर की दृष्टि में स्वीकृत नहीं तो यह प्रपंच निरर्थक हैं अर्थात् समस्त कार्य ही व्यर्थ गए॥ १॥ हरि के नाम-स्मरण के बिना यह समूचा जगत एक झूठा धन्धा ही है। मूर्ख मनुष्य को चाहे कितना ही अधिकतर समझाया जाए वह फिर भी अन्धा (ज्ञानहीन) ही बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि लाखों रुपए कमाए जाएँ, लाखों संग्रह किया जाए, लाखों खर्च किए जाएँ, लाखों आएँ और लाखों चले जाएँ किन्तु यदि परमात्मा की दृष्टि में यह स्वीकृत नहीं तो वह प्राणी जहाँ मर्जी भटकता फिरे दुखी ही रहता है॥ २॥ लाखों

शास्त्रों के माध्यम से व्याख्या की जाए और लाखों विद्वान पुराण आदि को पढ़ते रहें लेकिन यदि यह सब मान-प्रतिष्ठा ईश्वर को स्वीकृत नहीं तो यह सबकुछ कहीं भी स्वीकार नहीं होता॥ ३॥ सत्यस्वरूप प्रभु के नाम में वृत्ति लगाने से ही मान-सम्मान मिलता है और उस करतार के करम (कृपा) से ही उसका नाम प्राप्त होता है। हे नानक! यदि प्रभु का नाम हृदय में दिन-रात बसा रहे, तो उसकी करुणा-दृष्टि से मनुष्य संसार सागर से पार हो जाता है॥ ४॥ १॥ ३१॥

आसा महला १ ॥ दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥ १ ॥ लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥ २ ॥ गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ सचा नावणु तां थीऐ जां अहिनिसि लागै भाउ ॥ ३ ॥ इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥ नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

एक ईश्वर का नाम ही मेरा दीपक है, उस दीपक में मैंने दुःख रूपी तेल डाला हुआ है। जैसे-जैसे नाम रूपी दीपक का आलोक होता है तो वह दुःख रूपी तेल सूखता चला जाता है और यमराज के साथ संबंधविच्छेद हो जाता है॥ १॥ हे लोगो! मेरी आस्था को मिथ्या मत समझो। जैसे लाखों मन लकड़ी एकत्रित करके थोड़ी-सी चिंगारी भी उसे भस्म कर देती है वैसे ही प्रभु-नाम पापों का नाश कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥ पत्तलों पर पिण्ड भरना (दान करना) मेरे लिए प्रभु (का नाम) ही है, मेरे लिए करतार का सत्य नाम ही किरिया-संस्कार है। यह नाम लोक-परलोक में सर्वत्र मेरे जीवन का आधार है॥ २॥ हे परमेश्वर! तेरी गुणस्तुति ही मेरे लिए गंगा (हरिद्वार तथा), काशी इत्यादि तीर्थों का स्नान है, तेरा गुणानुवाद ही मेरी आत्मा का स्नान है। सच्चा स्नान तभी होता है, जब प्राणी दिन-रात ईश्वर-चरणों में प्रेम बनाकर मग्न रहे॥ ३॥ ब्राह्मण एक पिण्ड बनाकर देवताओं को अर्पण करता है और दूसरा पिण्ड पितरों को, पिण्ड बनाने के पश्चात् वह स्वयं खाता है (परन्तु) हे नानक! ब्राह्मण के माध्यम से दिया गया पिण्डदान कब तक अटल रह सकता है? हाँ, ईश्वर की कृपा का पिण्ड कभी खत्म नहीं होता॥ ४॥ २॥ ३२॥

आसा घरु ४ महला १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ कीए ॥ जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥ १ ॥ तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥ तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए ॥ पीर पेकांबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥ २ ॥ साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए ॥ दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥ ३ ॥ खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥ तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥ ४ ॥ १ ॥ ३३ ॥

हे जग के रचयिता! तेरे दर्शन करने के लिए देवताओं ने भी दुख, भूख-प्यास को सहन किया तथा तीर्थों पर भ्रमण किया। अनेक योगी एवं यति भी अपनी अपनी मर्यादा को निभाते हुए भगवे रंग के वस्त्र पहनते रहे॥ १॥ हे मेरे मालिक! तेरे मिलन हेतु अनेक पुरुष तेरे प्रेम में अनुरक्त रहते हैं। तेरे नाम अनेक हैं, अनन्त रूप हैं, अनन्त गुण हैं। ये किसी भी ओर से वर्णन नहीं किए जा सकते॥ १॥ रहाउ॥ तेरी खोज में कितने ही अपना घर-बार, महल, हाथी-घोड़े एवं अपना देश

छोड़कर परदेसों में चले गए। कितने ही पीरों-पैगम्बरों, ज्ञानियों तथा आस्तिकों ने तेरे द्वार पर सत्कृत होने के लिए दुनिया छोड़ दी और तेरे दर पर स्वीकार हो गए॥ २॥ अनेक लोगों ने सुख-वैभव, स्वाद, सभी रस एवं वस्त्र इत्यादि त्याग दिए और वस्त्र त्याग कर केवल चमड़ा ही पहना। अनेकों ही दुखी एवं गमों के मारे हुए तेरे नाम में लीन होकर तेरे द्वार पर खड़े रहने वाले दरवेश बन गए॥ ३॥ चमड़ा पहनने वाले, खप्पर में भिक्षा लेने वाले दण्डाधारी संन्यासी, मृगशाला पहनने वाले, चोटी, जनेऊ एवं धोती पहनने वाले अनेकों हैं (जो परमात्मा की तलाश हेतु मेरी भाँति स्वांग भरने वाले हैं)। परन्तु नानक वन्दना करता है -हे प्रभु ! तू मेरा मालिक है, मैं केवल तेरा स्वांगी हूँ। किसी विशेष जाति में पैदा होने का मुझे कोई अभिमान नहीं है॥ ४॥ १॥ ३३॥

आसा घरु ५ महला १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ भीतरि पंच गुपत मनि वासे ॥ थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥ १ ॥ मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै ॥ लोभी कपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥ मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥ २ ॥ पंच सखी हम एकु भतारो ॥ पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥ ३ ॥ पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥ साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार ये पाँचों ही विकार मेरे मन में छिपकर रहते हैं और वे स्थिर शांत नहीं रहते और भगौड़े की तरह उदासीन रहते हैं॥ १॥ मेरा मन दयालु ईश्वर के स्मरण में नहीं टिकता। यह मन लोभी, कपटी, पापी एवं पाखण्डी बन गया है और माया में लिप्त है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपने कांत-प्रभु के गले में फूलों की माला पहनाऊँगी। जब मेरा प्रियतम-प्रभु मिलेगा तो मैं हार-श्रृंगार करूँगी॥ २॥ मेरी पाँच सहेलियाँ (ज्ञानेन्द्रियाँ) हैं और जीवात्मा इनका पति है। यह ज्ञानेन्द्रियाँ शरीर रूपी पेड़ पर लगी हुई टहनियाँ हैं। जीवात्मा ने अवश्य ही छोड़कर चले जाना है॥ ३॥ (विछोह के समय) पाँचों सहेलियाँ (ज्ञानेन्द्रियाँ) विलाप करती हैं। नानक वन्दना करता है कि जब जीवात्मा पकड़ी जाती है तो उसे कर्मों का लेखा देना पड़ता है॥ ४॥ १॥ ३४॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आसा घरु ६ महला १ ॥ मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥ खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ १ ॥ लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥ तेरे गुण होहि न अवरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई ॥ कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥ २ ॥ मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥ धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥ ३ ॥ मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई ॥ गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३५ ॥

यदि जीवात्मा अपने मन को निर्मल मोती समान आभूषण बना ले, यदि प्रत्येक सांस धागा बने, यदि क्षमा अर्थात् सहनशीलता को वह श्रृंगार बनाकर अपनी देहि पर पहन ले तो वह पति-परमेश्वर की प्रियतमा होकर उसे मिल सकती है॥ १॥ हे प्रियतम ! मैं कामिनी तेरे गुणों पर आसक्त हो गई हूँ। हे प्रियतम ! तेरे गुण अन्य किसी में विद्यमान नहीं॥ १॥ रहाउ॥ यदि जीवात्मा परमेश्वर के नाम की माला अपने गले में डाल ले और प्रभु-स्मरण को अपने दांतों का

मंजन बना ले। यदि वह सृजनहार प्रभु की भक्ति-सेवा को अपने हाथों का कंगन बना कर धारण कर ले तो इस प्रकार उसका मन प्रभु-चरणों में टिका रहेगा॥ २॥ यदि जीवात्मा मधुसूदन को अंगूठी बनाकर हाथ की उंगली में पहन ले और परमेश्वर को रेशमी वस्त्र के तौर पर प्राप्त करे, कामिनी सहनशीलता की पट्टियाँ सजाने के लिए प्रयोग करे और श्रीरंग के नाम का सुरमा डाले॥ ३॥ यदि वह मन रूपी मंदिर में ज्ञान के दीपक को प्रज्वलित करे और अपनी काया को सेज बना ले तो हे नानक! (इस अवस्था में) जब ज्ञानदाता ईश्वर उसकी हृदय-सेज पर प्रकट होता है तो वह उससे रमण करता है॥ ४॥ १॥ ३५॥

आसा महला १ ॥ कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥ जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥ १ ॥ तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई ॥ जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥ जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥ ३ ॥ ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥ बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥ ४ ॥ २ ॥ ३६ ॥

हे भाई! परमात्मा का पैदा किया हुआ जीव वही कुछ करता है जो कुछ वह उससे करवाता है। उस परमात्मा को क्या कहा जाए? प्राणी की कोई चतुरता काम नहीं आती, जो कुछ परमात्मा करना चाहता है, वही कुछ कर रहा है॥ १॥ हे परमेश्वर! तेरा यह हुक्म मुझे भला लगता है, जो तुझे उपयुक्त लगता है। हे नानक! केवल उस प्राणी को ही आदर-सम्मान मिलता है जो सत्यनाम में लीन रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जैसी किसी जीव की किस्मत होती है, प्रभु ने वैसा ही हुक्म लिखा होता है। परमात्मा पुनः अन्य हुक्म नहीं करता अर्थात् उसके हुक्म को कोई भी टाल नहीं सकता। फिर जैसा जीवन-लेख लिखा होता है उसके अनुसार जीवन चलता है। कोई भी इसे मिटा नहीं सकता॥ २॥ यदि कोई प्राणी सभा में अत्याधिक बोलता है तो वह बकवादी कहा जाता है। (जीवन की बाजी) शतरंज की बाजी है जो जीती नहीं जा सकेगी सारे कच्चे ही रहते हैं। पक्के होने वाले घर में चली जाती हैं॥ ३॥ इस मार्ग में न किसी को विद्वान, पण्डित अथवा बुद्धिमान कहा जा सकता है, न कोई (अनपढ़) मूर्ख अथवा दुष्ट स्वीकृत किया जा सकता है। जब वह दास भाव से प्रभु की गुणस्तुति करता है केवल तभी वह सही मनुष्य कहा जा सकता है॥ ४॥ २॥ ३६॥

आसा महला १ ॥ गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥ जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ ॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं ॥ अंम्रितु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं ॥ सिंङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥ २ ॥ पतु वीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं ॥ हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥ ३ ॥ सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरन अनेकं ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रहम लिव एकं ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३७ ॥

गुरु का शब्द मैंने अपने मन में बसाया हुआ है, यही मुद्राएँ हैं। मैं क्षमा का स्वभाव अर्थात् गुदड़ी पहनता हूँ। परमात्मा जो कुछ करता है उसे मैं भला मानता हूँ। इस तरह मैं योग निधि को सहज ही प्राप्त कर लेता हूँ॥ १॥ हे बाबा! असल में वही योगी है, जो युगों-युगांतर तक परम तत्व परमात्मा के योग में लीन रहता है। जिसे निरंजन प्रभु का अमृत नाम प्राप्त हुआ है, उसका

शरीर ब्रह्मज्ञान के रस का भोग करता है॥ १॥ रहाउ॥ वह तृष्णाओं एवं विवादों को त्याग देता है और शिव नगरी में ध्यानावस्था में आसन लगाता है। सिंगी की आवाज से एक अनंत एवं सुन्दर ध्वनि उत्पन्न होती है। जो रात-दिन उसे दिव्य नाद से परिपूर्ण रखती है॥ २॥ ईश्वर के गुणों का चिंतन मेरा खप्पर है और ब्रह्मबोध सम्प्रदायी डण्डा है। प्रभु को सर्वव्यापक देखना शरीर पर मलने वाली विभूति है। परमात्मा की गुणस्तुति मेरी मर्यादा है और गुरु के सम्मुख टिके रहना ही धर्म-मार्ग है जो माया से विरक्त रखता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि - हे भर्तृहरि योगी! सुनो, समस्त जीवों में विभिन्न वर्णों रूपों में ईश्वर की ज्योति को देखना ही वैराग्यवृत्ति है जो हमें प्रभु-चरणों में लीन होने के लिए बल प्रदान करती है॥ ४॥ ३॥ ३७॥

आसा महला १ ॥ गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥ भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥ १ ॥ बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥ अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥ अंम्रित का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥ २ ॥ गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥ दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥ ३ ॥ सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥ कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अंम्रित धारै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३८ ॥

(हे योगी!) तू ज्ञान को अपना गुड़ बना और प्रभु सुमिरन से महुए के फूल बना। उनमें शुभ कर्मों की कमाई को कीकर की छाल बनाकर मिला दे। ईमान को अपनी भट्ठी एवं प्रेम को अपना लेप बना। इस विधि से मीठा अमृत निकाला जाता है॥ १॥ हे योगी! नाम-अमृत का पान करने से मन मतवाला हो जाता है और प्रभु-रंग में सहज ही लीन रहता है। प्रभु-प्रेम में वृति लगाने एवं अनहद शब्द को सुनने से रात-दिन सफल हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ यह सत्य का प्याला, परमात्मा सहज ही उसे पीने के लिए देता है, जिस पर वह अपनी कृपा-दृष्टि धारण करता है। जो अमृत का व्यापारी है, वह तुच्छ मदिरा से कैसे प्रेम कर सकता है?॥ २॥ गुरु की शिक्षा अमृत वाणी है, जिसका पान करते ही मनुष्य प्रभु दरबार में स्वीकार हो जाता है। जो मनुष्य प्रभु के दरबार एवं दर्शन का आकांक्षी होता है, वह मोक्ष एवं स्वर्ग की इच्छा नहीं करता॥ ३॥ जो प्रभु की स्तुति में अनुरक्त है, वह सदैव ही वैरागी है और अपना जीवन जुए में नहीं हारता। गुरु नानक का कथन है कि हे भर्तृहरि योगी! सुन, मैं अमृत की नदिया से मतवाला हो चुका हूँ॥ ४॥ ४॥ ३८॥

आसा महला १ ॥ खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥ आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥ १ ॥ करता तूं सभना का सोई ॥ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥ २ ॥ जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥ खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥ ३ ॥ ५ ॥ ३९ ॥

(सन् १५२१ में जब गुरु नानक देव जी मक्के की तीसरी उदासी से बगदाद एवं काबुल के मार्ग से हिन्दुस्तान लौट रहे थे तो बाबर ने सैदपुर पर हमला कर दिया। मुगलों के अत्याचारों से पीड़ित जनता को देखकर गुरु जी से रहा न गया और जो कुछ उच्चरित किया इस शब्द में है।)

खुरासान किसी अन्य को सौंपकर मुगल बादशाह बाबर ने हिन्दुस्तान को आक्रमण करके आ डराया। जग के रचयिता ने दोष अपने सिर पर तो नहीं लिया परन्तु मुगल बादशाह बाबर को यमराज बना कर हिन्दुस्तान भेज दिया। लोगों के साथ इतनी मारकाट हुई कि वे चीत्कार कर उठे परन्तु हे प्रभु ! क्या तुझे इन लोगों पर दया नहीं आई ?॥ १॥ हे सृष्टि के रचयिता ! एक तू ही सब जीवों का मालिक है। यदि एक शक्तिशाली दूसरे शक्तिशाली को मारे तो हृदय में क्रोध नहीं आता॥ १॥ रहाउ॥ यदि बलवान सिंह पशुओं के झुण्ड पर आक्रमण कर दे तो उस झुण्ड के स्वामी से पूछताछ तो अवश्य होती है कि वह क्या कर रहा था। इन मुगल रूपी कुत्तों ने रत्न जैसे इस देश तथा लोगों को मार-मार कर नष्ट कर दिया है और मृतकों की कोई बात नहीं पूछता। हे परमेश्वर ! तुम स्वयं ही मिलाते और स्वयं ही जुदा करते हो। देखो, यह है तेरी बड़ाई॥ २॥ यदि कोई मनुष्य अपने आपको बड़ा कहलवाए और अपने चित को अच्छे लगते स्वादों का आनंद भोगे तो परमेश्वर की दृष्टि में केवल दाने चुगने वाला अर्थात् भोग-विलास में मस्त रहने वाला वह मनुष्य एक कीड़े के समान ही दिखाई देता है। हे नानक ! जो मनुष्य विकारों की ओर से अहंत्व मार कर जीता है और परमात्मा का नाम-स्मरण करता है, वही सबकुछ हासिल करता है॥ ३॥ ५॥ ३६॥

रागु आसा घरु २ महला ३

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ हरि दरसनु पावै वडभागि ॥ गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥ खटु दरसनु वरतै वरतारा ॥ गुर का दरसनु अगम अपारा ॥ १ ॥ गुर कै दरसनि मुकति गति होइ ॥ साचा आपि वसै मनि सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर दरसनि उधरै संसारा ॥ जे को लाए भाउ पिआरा ॥ भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ॥ गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥ सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥ निगुरे कउ गति काई नाही ॥ अवगणि मुठे चोटा खाही ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि सुखु सांति सरीर ॥ गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि साचि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥

श्रीहरि का दर्शन कोई भाग्यशाली ही प्राप्त करता है। गुरु के शब्द से सच्चा वैराग्य प्राप्त होता है। (संसार में) हिन्दुओं के षड्दर्शन प्रचलित हैं परन्तु गुरु का दर्शन (अर्थात् शास्त्र) अगम्य एवं अपार है॥ १॥ गुरु के दर्शन (शास्त्र) से मुक्ति एवं गति हो जाती है। सत्यस्वरूप प्रभु स्वयं आकर मनुष्य के चित में बस जाता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के दर्शन (शास्त्र) से जगत का उद्धार हो जाता है, यदि मनुष्य इससे प्रेम एवं प्रीति करे। कोई विरला पुरुष ही गुरु के दर्शन से प्रेम करता है। गुरु के दर्शन से सदैव सुख प्राप्त होता है॥ २॥ गुरु के दर्शन (शास्त्र) से मोक्ष द्वार मिल जाता है। सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य के परिवार का कल्याण हो जाता है। जो निगुरा है, उसे मुक्ति नहीं मिलती। ऐसे मनुष्य अवगुणों के कारण लूटे जाते हैं और चोटें खाते रहते हैं॥ ३॥ गुरु के शब्द से शरीर में सुख एवं शांति प्राप्त होती है। जो गुरुमुख बन जाता है, उसे कोई पीड़ा नहीं सताती। यमदूत भी उसके निकट नहीं आता। हे नानक ! गुरुमुख सत्य में ही समा जाता है॥ ४॥ १॥ ४०॥

आसा महला ३ ॥ सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ ॥ निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥ सची बाणी पाए भागि कोइ ॥ १ ॥ गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥ पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥ अंम्रित सबदि नामु वखाणै ॥

साची बाणी सूचा होइ ॥ गुण ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥ गुण अमोलक पाए न जाहि ॥ मनि निरमल साचै सबदि समाहि ॥ से वडभागी जिन्ह नामु धिआइआ ॥ सदा गुणदाता मंनि वसाइआ ॥ ३ ॥ जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ दरि साचै साचे गुण गाउ ॥ आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ नानक कीमति कहणु न जाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥

जिस व्यक्ति का मन गुरु के शब्द द्वारा विकारों की ओर से मृत हो जाता है, उसका आत्माभिमान समाप्त हो जाता है और एक तिलमात्र भी लालच के बिना सतिगुरु की सेवा करता है। उसके हृदय में सदैव ही दाता निडर प्रभु निवास करता है। सच्ची गुरुवाणी की देन किसी विरले भाग्यशाली को ही प्राप्त होती है॥ १॥ (हे भाई !) गुणों का संग्रह कर चूंकि जो तेरे भीतर से अवगुण भाग जाएँ। इस तरह तुम पूर्ण गुरु के शब्द में लीन हो जाओगे॥ १॥ रहाउ॥ जो प्राणी गुणों का ग्राहक होता है, वही गुणों की विशेषता समझता है। वह अमृत शब्द द्वारा नाम का उच्चारण करता है। सच्ची वाणी द्वारा मनुष्य पवित्र हो जाता है। गुणों द्वारा प्रभु-नाम प्राप्त हो जाता है॥ २॥ ईश्वर के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। निर्मल मन सच्चे शब्द में लीन हो जाता है। जो मनुष्य नाम की आराधना करते हैं, वे बड़े भाग्यशाली हैं और सदैव ही गुणदाता प्रभु को अपने चित्त में बसाते हैं॥ ३॥ जो मनुष्य गुणों का संग्रह करते हैं, उन पर मैं बलिहारी जाता हूँ। मैं सत्य के दरबार पर सच्चे परमात्मा का गुणगान करता हूँ। वह प्रभु स्वयं सहज ही देन प्रदान करता है। हे नानक! ईश्वर के गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ ४॥ २॥ ४१॥

आसा महला ३ ॥ सतिगुर विचि वडी वडिआई ॥ चिरी विछुंने मेलि मिलाई ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ आपणी कीमति आपे पाए ॥ १ ॥ हरि की कीमति किन बिधि होइ ॥ हरि अपर्मपरु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥ विरले करमि परापति होइ ॥ ऊची बाणी ऊचा होइ ॥ गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥ २ ॥ विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥ सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥ बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥ मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥ पीवत रहै पीआए सोइ ॥ गुर किरपा ते हरि रसु पाए ॥ नानक नामि रते गति पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥

हे बन्धु ! सतिगुरु का यह बहुत बड़ा बड़प्पन है कि वह चिरकाल से बिछुड़े जीवों को प्रभु से मिला देता है। ईश्वर आप ही गुरु से मिलाकर प्राणी को अपने साथ मिला लेता है। वह अपना मूल्य स्वयं ही जानता है॥ १॥ हे बन्धु ! किस विधि से मनुष्य हरि का मूल्यांकन कर सकता है ? हरि अपरंपार, अगम्य एवं अगोचर है, गुरु के शब्द द्वारा कोई विरला मनुष्य ही परमात्मा को मिलता है॥ १॥ रहाउ॥ कोई गुरुमुख ही ईश्वर के नाम की महत्ता समझता है। कोई विरला मनुष्य ही प्रभु के करम से नाम प्राप्त करता है। ऊँची वाणी से मनुष्य का जीवन आचरण ऊँचा हो जाता है। कोई गुरुमुख ही नाम का सुमिरन करता है॥ २॥ नाम-स्मरण के बिना मनुष्य शरीर में दुख-दर्द उत्पन्न हुए रहते हैं। यदि सतिगुरु से भेंट हो जाए तो पीड़ा निवृत्त हो जाती है। गुरु से भेंटवार्ता बिना दुख ही हासिल होता है, लेकिन मनमुख को कठोर दण्ड मिलता है॥ ३॥ हरि का नाम बहुत मीठा है और बहुत स्वादिष्ट है। जिसे वह प्रभु पिलाता है, केवल वही इसका पान करता है। गुरु की कृपा से मनुष्य हरि रस प्राप्त करता है। हे नानक ! प्रभु-नाम में मग्न होने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ ३॥ ४२॥

आसा महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा गहिर गंभीर ॥ सेवत ही सुखु सांति सरीर ॥ सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥ तिन कै हम सद लागह पाइ ॥ १ ॥ जो मनि राते हरि रंगु लाइ ॥ तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ २ ॥ आखणि आखै बकै सभु कोइ ॥ आपे बखसि मिलाए सोइ ॥ कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाइ ॥ हरि रंगि राते मोहु चुकाइ ॥ अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥

हे बन्धु ! मेरा सच्चा प्रभु गहरा एवं गंभीर है। प्रभु की सेवा-भक्ति करने से शरीर को तुरंत ही सुख-शांति प्राप्त हो जाते हैं। शब्द द्वारा भक्तजन सहज ही संसार सागर से पार हो जाते हैं। इसलिए हम सदैव ही उनके चरण-स्पर्श करते हैं॥ १॥ जिनका मन हरि-रंग में रंग जाता है, उनका जन्म-मरण के चक्र का दुख दूर हो जाता है और वह सहज ही प्रभु के दरबार में मिल जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य शब्द को चखता है, वह सच्चे स्वाद को पा लेता है और हरि के नाम को अपने मन में बसा लेता है। हरि-प्रभु सदा ही सर्वव्यापक है। वह स्वयं निकट है और स्वयं ही दूर है॥ २॥ बातों द्वारा तो सभी मनुष्य कहते हैं और मुँह से बोल कर सुनाते भी हैं परन्तु वह प्रभु स्वयं क्षमा करता और अपने साथ मिला लेता है। केवल कहने एवं उच्चारण करने से प्रभु प्राप्त नहीं होता। गुरु की दया से प्रभु आकर मनुष्य के चित्त में बस जाता है॥ ३॥ गुरुमुख अपने भीतर से अहंत्व दूर कर देता है। वह मोह-माया को छोड़ कर प्रभु के प्रेम में रंगा हुआ है। वह गुरु के शब्द का चिन्तन करता है जो बड़ा निर्मल है। हे नानक ! प्रभु का नाम मनुष्य का जीवन संवारने वाला है॥ ४॥ ४॥ ४३॥

आसा महला ३ ॥ दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥ बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥ दूजै भाइ न लागै कोइ ॥ १ ॥ मूलि लागे से जन परवाणु ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुर सबदी हरि एको जाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ डाली लागै निहफलु जाइ ॥ अंधीं कंमी अंध सजाइ ॥ मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥ २ ॥ गुर की सेवा सदा सुखु पाए ॥ संतसंगति मिलि हरि गुण गाए ॥ नामे नामि करे वीचारु ॥ आपि तरै कुल उधरणहारु ॥ ३ ॥ गुर की बाणी नामि वजाए ॥ नानक महलु सबदि घरु पाए ॥ गुरमति सत सरि हरि जलि नाइआ ॥ दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४ ॥

जो द्वैतभाव तथा मोह-माया में लीन हुए हैं, उन्होंने दुःख ही पाया है। शब्द के बिना उन्होंने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है। सतिगुरु की सेवा करने से सूझ प्राप्त हो जाती है और मनुष्य मोह-माया व द्वैतवाद के साथ नहीं लगता॥ १॥ जो मनुष्य सृष्टि के मूल (कर्त्तार) से जुड़ते हैं, वे स्वीकृत हो जाते हैं। अपने हृदय में हमेशा राम का नाम जपते रहो और गुरु के शब्द द्वारा एक परमात्मा को ही समझो॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति सृष्टि के मूल परमात्मा को छोड़कर उसकी माया रूपी डाली से लगता है, वह निष्फल हो जाता है। ज्ञानहीन कर्मों के लिए अन्धा दण्ड ही पाता है। अन्धे स्वेच्छाचारी मनुष्य को कोई सुख का स्थान नहीं मिलता। वह विष्टा का कीड़ा है और विष्टा में ही गल-सड़ जाता है॥ २॥ गुरु की सेवा करने से मनुष्य को सदा सुख मिलता है और सत्संगति में मिलकर हरि की गुणस्तुति करता है। जो मनुष्य प्रभु का नाम-सुमिरन करता है, वह

स्वयं संसार सागर से पार हो जाता है और अपनी कुल का भी उद्धार कर लेता है॥ ३॥ गुरु की वाणी द्वारा मन में प्रभु-नाम बजता है। हे नानक! शब्द गुरु के द्वारा मनुष्य अपने हृदय-घर में ही प्रभु को प्राप्त कर लेता है। हे भाई! गुरु की शिक्षा द्वारा तू सत्य के सरोवर पर हरि नाम रूपी जल में स्नान कर इस तरह तेरी दुर्मति एवं पाप की सारी मैल साफ हो जाएगी॥ ४॥ ५॥ ४४॥

आसा महला ३ ॥ मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥ दूजै भाइ आतम संघारहि ॥ मेरा मेरा करि करि विगूता ॥ आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥ १ ॥ मरु मुइआ सबदे मरि जाइ ॥ उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूण गरभ गलि जाइ ॥ बिरथा जनमु दूजै लोभाइ ॥ नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ॥ सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥ २ ॥ मनु चंचलु बहु चोटा खाइ ॥ एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ ॥ गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥ ३ ॥ अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥ गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥ निरमल बाणी निज घरि वासा ॥ नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥

जब स्वेच्छाचारी मरते हैं तो इस तरह मरकर अपनी मृत्यु बिगाड़ लेते हैं, क्योंकि मोह-माया द्वारा वह अपना आत्म-संहार कर लेते हैं। यह मेरा (परिवार) है, यह मेरा (धन-दौलत) है, कहते हुए वे नष्ट हो जाते हैं। वह अपनी आत्मा की पहचान नहीं करते और भ्रम में सोये हुए हैं॥ १॥ जो शब्द द्वारा मरता है, वह यथार्थ मृत्यु मरता है। गुरु ने जिसे यह ज्ञान दिया है कि उस्तति एवं निन्दा एक समान है, वह इस युग में हरि का सिमरन करके नाम रूपी लाभ प्राप्त करके ले जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य नाम विहीन हैं, वे गर्भ में गल-सड़ जाते हैं। उसका जन्म निरर्थक है जो मोह-माया में फँसा रहता है। नाम विहीन सारी दुनिया दुःख-संताप में जल रही है। पूर्ण सतिगुरु ने मुझे यह ज्ञान प्रदान किया है॥ २॥ चंचल मन मोह-माया में भटक कर बहुत चोटें खाता है। मनुष्य जन्म का यह सुनहरी अवसर गंवा कर उसे कोई सुख का स्थान नहीं मिलता। गर्भयोनि (जन्म मरण का चक्र) मानों विष्टा का घर है। ऐसे घर में स्वेच्छाचारी मनुष्य निवास करता है॥ ३॥ मैं अपने सतिगुरु पर हमेशा बलिहारी जाता हूँ। गुरु के सम्मुख रहकर आत्म ज्योति परम-ज्योति में मिल जाती है। निर्मल गुरुवाणी द्वारा मनुष्य अपने आत्मस्वरूप में निवास प्राप्त कर लेता है। हे नानक! जो मनुष्य अपना अहंत्व समाप्त कर देता है, वह सदैव निर्लिप्त है॥ ४॥ ६॥ ४५॥

आसा महला ३ ॥ लालै आपणी जाति गवाई ॥ तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई ॥ हिरदै नामु वडी वडिआई ॥ सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥ १ ॥ सो लाला जीवतु मरै ॥ सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई ॥ बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥ करणी कीरति नामु वसाई ॥ आपे देवै ढिल न पाई ॥ २ ॥ मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥ बिनु रासी कूड़ा करे वापारु ॥ विणु रासी वखरु पलै न पाइ ॥ मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥ ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥ गुर पउड़ी सभ दू ऊचा होइ ॥ नानक नामि वडाई होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥

प्रभु का सेवक अपनी जाति गंवा देता है। वह अपना तन-मन सतिगुरु को अर्पण कर देता है और उनका आश्रय लेता है। उसकी बड़ी महानता यह है कि उसके हृदय में हरि का नाम विद्यमान है। प्रियतम-प्रभु सदैव ही उसका सखा-सहायक बना रहता है॥ १॥ हे बन्धु! केवल वही

प्रभु का सेवक है जो सांसारिक कार्य करता हुआ विषय-वासनाओं से निर्लिप्त रहता है। वह सुख-दुख दोनों को एक समान समझता है और गुरु की कृपा से शब्द द्वारा उसका उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा ने आरम्भ से ही जीवों को शुभ कर्म करने का हुक्म किया हुआ है। शब्द-साधना के बिना जीवन सफल नहीं होता। प्रभु का यशोगान करने से नाम जीव के मन में बस जाता है। ईश्वर स्वयं यशोगान की देन प्रदान करता है और यह देन में देरी नहीं करता॥ २॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य माया की दुविधा में फँसकर जगत में कुमार्गगामी हो जाता है। नाम-पूंजी के बिना वह झूठा व्यापार करता है। नाम-पूंजी के बिना सौदा प्राप्त नहीं होता। (माया की) दुविधा में पड़ा हुआ मनमुख व्यक्ति इस तरह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेता है॥ ३॥ जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा करता है, वह प्रभु का सेवक होता है। उसकी जाति उत्तम है एवं उसकी मान-प्रतिष्ठा भी उत्तम है। गुरु की सीढ़ी का आश्रय लेकर वह सर्वोत्तम बन जाता है। हे नानक ! ईश्वर के नाम-सुमिरन द्वारा प्रशंसा मिलती है॥ ४॥ ७॥ ४६॥

आसा महला ३ ॥ मनमुखि झूठो झूठु कमावै ॥ खसमै का महलु कदे न पावै ॥ दूजै लगी भरमि भुलावै ॥ ममता बाधा आवै जावै ॥ १ ॥ दोहागणी का मन देखु सीगारु ॥ पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥ गुर सबदी सीगारु बणावै ॥ सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥ २ ॥ सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु ॥ अपणा पिरु राखै सदा उर धारि ॥ नेड़ै वेखै सदा हदूरि ॥ मेरा प्रभु सरब रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ आगै जाति रूपु न जाइ ॥ तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥ सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥ नानक साचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥

स्वेच्छाचारी जीवात्मा केवल झूठ का ही आचरण करती है इसलिए उसे परमेश्वर का महल कदापि प्राप्त नहीं होता। मोह-माया में फँसी हुई वह दुविधा में भटकती रहती है। मोह-ममता में फँसी हुई वह जन्म-मरण के चक्र में पड़कर आती-जाती रहती है॥ १॥ हे मन ! दुहागिन अर्थात् परित्यक्ता नारी का हार-शृंगार देखो। जो पुत्र, स्त्री, एवं माया-धन में चित्त लगाता है, वह झूठ, मोह, पाखंड एवं विकारों में ही फँसा रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जो जीवात्मा प्रभु को अच्छी लगती है वह सदा सौभाग्यशालिनी है। गुरु के शब्द को वह अपना हार-शृंगार बनाती है। उसकी सेज सुखदायक है और रात-दिन वह अपने प्रभु-पति से रमण करती है। अपने प्रियतम-प्रभु से मिलकर वह सदा सुख पाती है॥ २॥ वह सुहागिन सच्ची है जो सत्यस्वरूप प्रभु से प्रेम करती है। अपने कांत-प्रभु को वह हमेशा अपने चित्त से लगाकर रखती है। वह उसको समीप ही नहीं अपितु सदा प्रत्यक्ष देखती है। मेरा प्रभु हर जगह मौजूद है॥ ३॥ परलोक में जाति एवं सौन्दर्य मनुष्य के साथ नहीं जाते अपितु जैसे कर्म मनुष्य करता है वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। शब्द द्वारा मनुष्य ऊँचा हो जाता है। हे नानक ! वह सत्य में ही समा जाता है॥ ४॥ ८॥ ४७॥

आसा महला ३ ॥ भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥ गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥ बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥ मनमुख रुंने अपनी पति खोइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥ सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे ते पूरा पाए ॥ हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥ अंतरु निरमलु अम्रित सरि नाए ॥ सदा सूचे साचि समाए ॥ २ ॥ हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥ गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥ जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥ गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ॥ ३ ॥ गुरु सागरु पूरा भंडार ॥ ऊतम रतन जवाहर अपार ॥ गुर परसादी देवणहारु ॥ नानक बखसे बखसणहारु ॥ ४ ॥ ६॥ ४८ ॥

जो भक्त प्रभु-भक्ति के रंग में सहज ही रंगा रहता है, वह गुरु के भय द्वारा निश्चित ही सत्य में समा जाता है। पूर्ण गुरु के बिना प्रभु की भक्ति नहीं होती और स्वेच्छाचारी मनुष्य अपना मान-सम्मान गंवा कर विलाप करते रहते हैं॥ १॥ हे मेरे मन ! हरि का जाप कर और सदा उसका ध्यान कर। फिर तुझे दिन-रात सदैव ही आनंद बना रहेगा। जिस फल की इच्छा होगी, वही फल मिल जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण गुरु के द्वारा पूर्ण गुणदाता प्रभु प्राप्त होता है। उसके हृदय में गुरु का शब्द और सत्यनाम बस जाता है। जो मनुष्य अमृत सरोवर में स्नान करता है उसका हृदय पवित्र हो जाता है। सदा के लिए पवित्र होने के कारण वह सत्य में लीन हो जाता है॥ २॥ हरि प्रभु जीवों को सदा देखता रहता है। गुरु की दया से जीव प्रभु को सर्वव्यापक पाता है। जहाँ कहीं भी मैं जाता हूँ, वहाँ मैं उस प्रभु को देखता हूँ। गुरु के बिना अन्य कोई दाता नहीं॥ ३॥ गुरु सागर है, उसका पूर्ण भण्डार अपार एवं बहुमूल्य रत्नों एवं जवाहरों से भरपूर है। प्रभु गुरु की कृपा से ही जीवों को देन देने वाला है। हे नानक ! क्षमाशील परमात्मा जीवों को क्षमा कर देता है॥ ४॥ ६॥ ४८॥

आसा महला ३ ॥ गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥ पूरै भागि गुर सेवा होइ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ गुर परसादी सेव कराए ॥ १ ॥ गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥ गुर परसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहु गुमानु गुर सबदि जलाए ॥ पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ अंतरि महलु गुर सबदि पछाणै ॥ आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥ २ ॥ जंमणु मरणा है संसारु ॥ मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ॥ पर निंदा बहु कूड़ु कमावै ॥ विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥ ३ ॥ सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ॥ गुर का सबदु हरि भगति द्रिड़ाए ॥ भाणा मंने सदा सुखु होइ ॥ नानक सचि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४९ ॥

गुरु ही गुणों का सागर है और वह सच्चा प्रभु स्वयं ही सतिगुरु है। पूर्ण भाग्य से ही गुरु की सेवा होती है। जिसे ईश्वर सूझ प्रदान करता है, केवल वही मनुष्य इस भेद को समझता है। गुरु की कृपा से ही मनुष्य प्रभु की सेवा-भक्ति करता है॥ १॥ गुरु के प्रदान किए हुए ज्ञान-रत्न से ही मनुष्य को पूर्ण सूझ प्राप्त होती है। गुरु के प्रसाद से अज्ञानता का नाश हो जाता है। मनुष्य रात-दिन सतर्क रहता है और सत्य प्रभु को देख लेता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के शब्द से मोह एवं अभिमान जल जाते हैं और पूर्ण गुरु से मनुष्य को सूझ प्राप्त होती है। गुरु के शब्द से मनुष्य अपने अन्तर्मन में आत्मस्वरूप को पहचान लेता है, उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है, वह स्थिरचित्त होकर प्रभु नाम में समा जाता है॥ २॥ यह संसार जन्म-मरण ही है परन्तु स्वेच्छाचरी मूर्ख मनुष्य माया-मोह के अन्धकार में फँसा हुआ है। ऐसा स्वेच्छाचारी मनुष्य दूसरों की निन्दा करता हुआ हर प्रकार से झूठ का आचरण करता है। वह विष्टा का कीड़ा बनकर विष्टा में ही समा जाता है॥ ३॥ सत्संगति में सम्मिलित होकर मनुष्य को पूर्ण सूझ प्राप्त हो जाती है। गुरु का शब्द हरि की भक्ति को चित्त में दृढ कर देता है। जो प्रभु की इच्छा को मानता है, वह सदा सुखी रहता है। हे नानक ! ऐसा इन्सान सत्य में ही समा जाता है॥ ४॥ १०॥ ४९॥

आसा महला ३ पंचपदे॥ ॥ सबदि मरै तिसु सदा अनंद ॥ सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥ ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥ पूरे गुर ते साचि समाइ ॥ १ ॥ जिन्ह कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥ ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥ तिन्ह की गहण गति कही न जाइ ॥ पूरै सतिगुर दिती वडिआई ॥ ऊतम पदवी हरि नामि समाई ॥ २ ॥

जो किछु करे सु आपे आपि ॥ एक घड़ी महि थापि उथापि ॥ कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥ जे सउ घाले थाइ न पाए ॥ ३ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु तिन्हा गुरू मिलाए ॥ सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥ जहां सबदु वसै तहां दुखु जाए ॥ गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥ ४ ॥ नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ पूरै सबदि मंनि वसाए ॥ नानक नामि रते सुखु पाए ॥ ५ ॥ ११ ॥ ५० ॥

जो पुरुष प्रभु-शब्द में जुड़कर आत्माभिमान को मार देता है, वह सदा आनंद प्राप्त करता है। वह सच्चे गुरु से मिलकर परमात्मा से मिल जाता है। फिर वह दोबारा मरता नहीं और जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है। पूर्ण गुरु के माध्यम से वह सत्य में ही समा जाता है॥ १॥ जिनके माथे पर विधाता ने नाम-सुमिरन का लेख लिखा होता है, वह पुरुष दिन-रात नाम सुमिरन करते हैं और पूर्ण गुरु के माध्यम से उन्हें प्रभु-भक्ति की देन प्राप्त हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जिन्हें हरि-प्रभु अपने साथ मिला लेता है, उनकी गहरी आत्मिक अवस्था कही नहीं जा सकती। पूर्ण सतिगुरु ने उसे नाम की महानता प्रदान की है। वह हरि नाम में लीन रहता है और उसने उत्तम पदवी पा ली है॥ २॥ प्रभु जो कुछ भी करता है, उसे वह आप ही करता है। एक घडी में वह उत्पादित करके नष्ट कर देता है। केवल बातें करते रहने एवं सुनाते रहने से सैंकड़ों बार से किया हुआ परिश्रम भी सत्य के दरबार में कबूल नहीं होता॥ ३॥ जिनके प्रारब्ध के भण्डार में पुण्य हैं, उन्हें गुरु ही मिलता है। वे सच्ची वाणी एवं गुरु-शब्द सुनते हैं। जहाँ नाम का निवास है, वहाँ से दुख दौड़ जाता है। ज्ञान रत्न के माध्यम से मनुष्य सहज ही सत्य में समा जाता है॥ ४॥ प्रभु-नाम जैसा दूसरा कोई धन नहीं। परन्तु यह धन उसे ही प्राप्त होता है, जिसे सत्य प्रभु प्रदान करता है। पूर्ण शब्द द्वारा नाम चित्त में बसाता है। हे नानक! नाम में अनुरक्त होने से मनुष्य सुख प्राप्त करता है॥ ५॥ ११॥ ५०॥

आसा महला ३ ॥ निरति करे बहु वाजे वजाए ॥ इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए ॥ अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥ दीवा बलै न सोझी पाइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥ आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥ पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥ मेरा प्रभु साचा आपे जाणु ॥ गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥ २ ॥ गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ॥ गुर का सबदु सहजि वीचारु ॥ गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥ पाखंडि भगति निरति दुखु होइ ॥ ३ ॥ एहा भगति जनु जीवत मरै ॥ गुर परसादी भवजलु तरै ॥ गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ हरि क्रिपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ॥ भगति रते तिन्ह सची सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥ ५ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

जो मनुष्य नृत्य करता और अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बजाता है, उसका यह मन ज्ञानहीन एवं बहरा है। तब वह कहकर किसे सुना रहा है ? उसके अन्तर्मन में तृष्णा की अग्नि एवं भ्रम की हवा है। इसलिए ज्ञान का दीपक प्रज्वलित नहीं होता और न ही उसे ज्ञान प्राप्त होता है॥ १॥ गुरुमुख के मन में भक्ति का प्रकाश होता है। वह अपने आत्मस्वरूप को पहचान कर ईश्वर से मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरुमुख के लिए प्रभु से प्रेम करना ही नृत्य है और अन्तर्मन से अहंकार को मारना ही सुरताल को पूर्णतया कायम रखने के बराबर है। मेरा सच्चा प्रभु स्वयं ही सबकुछ जानता है। (हे भाई!) गुरु के शब्द द्वारा ब्रह्म को अन्तर्मन में ही पहचान लो॥ २॥

अन्तर्मन में ईश्वर हेतु प्रेम एवं प्रीति ही गुरुमुख की भक्ति है। वह सहज ही गुरु के शब्द का चिन्तन करता है। गुरुमुख की भक्ति एवं जीवन-युक्ति सत्य ही है। पाखण्डपूर्ण की भक्ति एवं नृत्य से दुख ही मिलता है॥ ३॥ सच्ची भक्ति यह है कि परमात्मा का दास जीवन के अहंत्व के प्रति मर जाए। गुरु की कृपा से ऐसा दास संसार सागर से पार हो जाता है। गुरु के वचन द्वारा की हुई भक्ति सफल हो जाती है। पूज्य परमेश्वर स्वयं आकर हृदय में बस जाता है॥ ४॥ जब प्रभु कृपा धारण करता है तो वह मनुष्य को सतिगुरु से मिला देता है। तब उसकी भक्ति अटल हो जाती है और वह ईश्वर से अपना चित्त लगा लेता है। जो मनुष्य प्रभु की भक्ति में रंगे हुए हैं, उनकी शोभा भी सच्ची है। हे नानक ! नाम में अनुरक्त होने से ही मनुष्य को सुख प्राप्त होता है॥ ५॥ १२॥ ५१॥

आसा घरु ८ काफी महला ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ॥ गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥ १ ॥ मै सहु दाता एकु है अवरु नाही कोई ॥ गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि निरभउ हरि नामु है पाईऐ गुर वीचारि ॥ बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥ २ ॥ हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥ हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥ ३ ॥ हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ॥ नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ ५२ ॥

हरि की इच्छा से ही सतिगुरु मिलता है और सत्य की सूझ प्राप्त होती है। गुरु की कृपा से जिसके हृदय में नाम निवास करता है, वह प्रभु को समझ लेता है॥ १॥ एक पति-प्रभु ही मेरा मालिक एवं दाता है और उसके सिवाय कोई नहीं। गुरु की कृपा से जब वह मन में निवास करता है तो सदा सुख मिलता है॥ १॥ रहाउ॥ इस युग में निर्भय करने वाला हरि का नाम है और गुरु के विचार अर्थात् उपदेश द्वारा ही यह प्राप्त होता है। नामविहीन मनुष्य यमदूत के वश में रहता है और ऐसे स्वेच्छाचारी मनुष्य को अन्धा एवं मूर्ख कहा जाता है॥ २॥ जो सेवक हरि की इच्छा मान कर सेवा करता है, वह सत्य को समझ लेता है। हरि की इच्छा में ही उसका गुणानुवाद करना चाहिए, क्योंकि उसकी इच्छा मानने से सुख प्राप्त होता है॥ ३॥ हरि की इच्छा में ही मानव-जन्म रूपी उत्तम पदार्थ मिलता है और बुद्धि भी श्रेष्ठ हो जाती है। हे नानक ! तू प्रभु-नाम की उस्तति कर क्योंकि गुरुमुख बनकर ही गति प्राप्त होगी॥ ४॥ ३९॥ १३॥ ५२॥

आसा महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥ जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥ १ ॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ २ ॥ जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ५३ ॥

हे मालिक ! तू जगत का रचयिता है, तू सदैव सत्य है और जो तुझे अच्छा लगता है, केवल वही होता है। जो कुछ तुम मुझे देते हो, मैं वही प्राप्त करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ यह सारी दुनिया तेरी पैदा की हुई है और सब जीव तुझे ही याद करते हैं। जिस पर तुम दया धारण करते हो, वह तेरे नाम-रत्न को पा लेता है। गुरुमुख व्यक्ति नाम प्राप्त कर लेते हैं और स्वेच्छाचारी व्यक्ति इसे गंवा देते हैं। सच तो यही है कि तूने स्वयं ही जीवों को खुद से जुदा किया है और स्वयं ही भक्तगणों को अपने साथ मिलाया है॥ १॥ हे प्रभु ! तू दरिया है और सभी तुझ में समाए हुए हैं। तेरे अलावा दूसरा कोई नहीं। (सृष्टि के) तमाम जीव-जन्तु तेरा ही खेल है। वियोग कर्मों के कारण मिला हुआ प्राणी बिछुड़ जाता है और संयोगवश पुनः प्रभु से मिलन प्राप्त कर लेता है॥ २॥ हे प्रभु ! जिस मनुष्य को तुम गुरु द्वारा सुमति प्रदान करते हो वही मनुष्य तुझे समझता है और सदैव ही तेरी गुणस्तुति का बखान करता है। जिस मनुष्य ने भी हरि की सेवा-भक्ति की है, उसे सुख प्राप्त हुआ है। वह सहज ही हरिनाम में समा गया है॥ ३॥ हे प्रभु ! तुम स्वयं ही रचयिता हो और संसार में सबकुछ तेरा किया ही होता है। तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई बड़ा नहीं। हे प्रभु ! तुम ही सृष्टि की उत्पत्ति करके देखते एवं समझते हो। हे नानक ! यह भेद गुरुमुख के अन्दर ही प्रकाशमान होता है॥ ४॥ १॥ ५३॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु २ महला ४ ॥ किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥ हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥ १ ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥ मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥ झूठु धड़े करि पछोताहि ॥ थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥ हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥ २ ॥ एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥ माइआ कउ लूझहि गावारी ॥ जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥ हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥ ३ ॥ कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाए ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु सतसंगि मिलाए ॥ हमरा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ॥ ४ ॥ मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै ॥ पराइआ छिद्रु अटकलै आपणा अहंकारु वधावै ॥ जैसा बीजै तैसा खावै ॥ जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ स्रिसटि जिणि आवै ॥ ५ ॥ २ ॥ ५४ ॥

किसी ने अपने मित्र, पुत्र अथवा भाई के साथ रिश्ता बनाया हुआ है और किसी ने अपने सगे-समधी एवं दामाद के साथ रिश्ता बनाया हुआ है। किसी मनुष्य ने स्वार्थपूर्ति हेतु सरदारों एवं चौधरियों से रिश्तेदारी की हुई है। लेकिन मेरा रिश्ता सर्वव्यापक प्रभु के साथ है॥ १॥ मैंने हरि के साथ रिश्तेदारी की है और हरि ही मेरा सहारा है। हरि के बिना मेरा अन्य कोई भी पक्ष एवं नाता नहीं है। मैं हरि के असंख्य गुणों का ही यशोगान करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जिनके साथ रिश्तेदारी की जाती है, वह मर जाते हैं। झूठा नाता बनाकर मनुष्य अंतः पश्चाताप करते हैं। जो मनुष्य झूठ का आचरण करते हैं, वे स्थिर नहीं रहते। मैंने हरि से नाता बनाया है, जिसके समान कोई भी सामर्थ्यशाली नहीं॥ २॥ यह तमाम रिश्तेदारियाँ माया के मोह का प्रसार है। मूर्ख लोग माया के लिए लड़ते झगड़ते हैं। वह जन्म-मरण के वश में है और जुए में अपनी जीवन बाजी हार जाते हैं। हरि से ही मेरा नाता है, जो मेरे लोक-परलोक सब संवार देता है॥ ३॥ कलियुग में जितने भी रिश्ते हैं ये पाँच विकार-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अभिमान द्वारा उत्पन्न होते हैं। परिणामस्वरूप काम, क्रोध,

लोभ, मोह एवं अभिमान अधिकतर बढ़ गए हैं। जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, उसे सत्संगति में सम्मिलित कर देता है! मैं हरि के नाते में हूँ जिसने यह तमाम रिश्ते नाश कर दिए हैं॥ ४॥ झूठे सांसारिक मोह के माध्यम से लोग बैठकर गुटबन्दी करते हैं। वह दूसरों की कमजोरियों की निन्दा करते हैं और अपना अहंकार बढ़ाते हैं। वे जैसा बीज बोते हैं, वैसा ही फल खाते हैं। नानक ने हरि से नातेदारी की है, यह धर्म का नाता समूचे जगत को जीत लेता है॥ ५॥ २॥ ५४॥

आसा महला ४ ॥ हिरदै सुणि सुणि मनि अंम्रितु भाइआ ॥ गुरबाणी हरि अलखु लखाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥ एको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अंम्रित बैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥ सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥ २ ॥ दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ ॥ भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ अंम्रितु हरि रसु हरि आपि पीआइआ ॥ गुरि पूरै नानक हरि पाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५५ ॥

हृदय में सुन-सुनकर नामामृत मेरे मन को अच्छा लगने लग गया है। गुरुवाणी ने मुझे अदृश्य हरि के दर्शन करवा दिए हैं॥ १॥ हे मेरी सत्संगी बहनो! गुरुमुख बनकर हरि का नाम सुनो। अनन्त प्रभु प्रत्येक हृदय में समा रहा है। अपने मुख से तुम सब अमृत वचन गुरुवाणी का जाप करो॥ १॥ रहाउ॥ मेरे मन एवं तन में प्रभु-प्रेम एवं महा वैराग्य है। सौभाग्य से मुझे महापुरुष सतिगुरु मिल गया है॥ २॥ द्वैतभाव के कारण मनुष्य का मन विषैली माया के पीछे भटकता है। भाग्यहीन व्यक्ति को सतिगुरु नहीं मिलता॥ ३॥ परमात्मा स्वयं ही मनुष्य को अमृत रूपी हरि-रस का पान करवाता है। हे नानक! पूर्ण गुरु के द्वारा मैंने ईश्वर को पा लिया है॥ ४॥ ३॥ ५५॥

आसा महला ४ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥ नामु जपी नामो सुख सारु ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे साजन सैना ॥ नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नही जीविआ जाइ ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥ २ ॥ नामहीन कालख मुखि माइआ ॥ नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ ॥ ३ ॥ वडा वडा हरि भाग करि पाइआ ॥ नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५६ ॥ ॥

मेरे मन एवं तन में हरि नाम का ही प्रेम बना हुआ है, जो मेरे जीवन का आधार है। मैं नाम का सुमिरन करता हूँ, क्योंकि हरि का नाम सुखों का सार-तत्व है॥ १॥ हे मेरे मित्रो एवं सज्जनो! हरि-नाम का जाप करो। हरि-नाम के बिना मेरे पास कुछ भी नहीं। बड़े सौभाग्य से मुझे गुरु के सम्मुख होकर हरि का नाम प्राप्त हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ नाम के बिना जीना असंभव है। बड़े भाग्य से ही गुरु के माध्यम से ईश्वर प्राप्त होता है॥ २॥ नामहीन मनुष्य के मुख पर माया की कालिख है। हरि नाम के बिना यह जीवन धिक्कार योग्य है॥ ३॥ बड़ों से बड़ा हरि अहोभाग्य से ही प्राप्त होता है। हे नानक! हरि ने मुझे अपना नाम गुरु से दिलवाया है॥ ४॥ ४॥ ५६॥

आसा महला ४ ॥ गुण गावा गुण बोली बाणी ॥ गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥ १ ॥ जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा ॥ सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥ वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥ २ ॥ गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥ विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥ ३ ॥ सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥ नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५७ ॥

मैं हरि का गुणानुवाद करता हूँ और गुरुवाणी के माध्यम से हरि के गुणों का ही बखान करता हूँ। गुरुमुख बनकर ही मैं हरि के गुणों का उच्चारण करता हूँ॥ १॥ हरिनाम का जाप जपने से मेरे हृदय में आनंद आ गया है। सत्यस्वरूप प्रभु का सच्चा नाम सतिगुरु ने मेरे अन्तर्मन में बसा दिया है। मैं स्वाद से परमानंद प्रभु का गुणगान करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हरि के भक्त हरि के ही गुण गाते रहते हैं। सौभाग्य से ही निर्लिप्त प्रभु पाया जाता है॥ २॥ हे बन्धु! गुणविहीन लोग माया-मोह की मैल अपने चित्त में टिकाए रखते हैं। इसलिए गुणहीन अहंकारी लोग जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं॥ ३॥ देहि रूपी सरोवर में से गुणों के मोती प्रकट होते रहते हैं। हे नानक! गुरु के सम्मुख होकर सरोवर का मन्थन करके ये तत्व निकाल लिए जाते हैं॥ ४॥ ५॥ ५७॥

आसा महला ४ ॥ नामु सुणी नामो मनि भावै ॥ वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥ १ ॥ नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥ नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामै सुरति सुनी मनि भाई ॥ जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥ २ ॥ नामहीण गए मूड़ नंगा ॥ पचि पचि मुए बिखु देखि पतंगा ॥ ३ ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ नानक नामु देवै हरि आपे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५८ ॥

मैं नाम सुनता हूँ और नाम ही मेरे मन को अच्छा लगता है। अहोभाग्य से गुरुमुख बनकर मनुष्य ईश्वर को प्राप्त करता है॥ १॥ (हे बन्धु!) नाम का जाप करो, गुरुमुख बनने से अन्तर्मन में प्रकाश हो जाएगा। नाम के अलावा मेरा दूसरा कोई सहारा नहीं। हरि का नाम ही मेरी सांसों एवं ग्रासों में समाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ मेरी वृत्ति नाम-सुमिरन में लगी रहती है और मेरे चित्त को यही लुभाता है। जो मुझे हरि-नाम सुनाता है वही मेरा मीत एवं साथी है॥ २॥ नाम के बिना मूर्ख लोग नंगे लोगों की भाँति भटकते हैं। माया के विष को देखकर वह पतंगे की तरह गल सड़ कर मर जाते हैं॥ ३॥ प्रभु स्वयं ही पैदा करता है और पैदा करके स्वयं ही नाश कर देता है। हे नानक! हरि आप ही हरि-नाम की देन प्रदान करता है॥ ४॥ ६॥ ५८॥

आसा महला ४ ॥ गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई ॥ फल लागे हरि रसक रसाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥ जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जमकंकर भुइअंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥ गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥ २ ॥ हउमै करम किछु बिधि नही जाणै ॥ जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥ ३ ॥ जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥ नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५९ ॥

गुरुमुख ने हरि-प्रभु की बेल को दूसरों को सुख देने हेतु प्रफुल्लित किया है। इस बेल को हरि-प्रभु का फल लगा है, और रसिकजन इसके रस का आनन्द प्राप्त करते हैं॥१॥ तू हरि-परमेश्वर के नाम का जाप कर जिसमें प्रसन्नता की अनन्त लहरें विद्यमान हैं। गुरु की मति द्वारा नाम जपकर और प्रभु का गुणगान करके मैंने यमकाल रूपी सर्प का वध कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे भाई! हरि-प्रभु ने अपनी भक्ति गुरु के हृदय में स्थापित की है। यदि गुरु प्रसन्न हो जाए तो यह भक्ति अपने शिष्य को प्रदान करता है॥ २॥ जो मनुष्य अहंकार में धर्म-कर्म करता है, उसे कुछ भी ज्ञान नहीं होता। वह उसी प्रकार का मनुष्य है जैसे हाथी स्नान करके अपने सिर पर फिर मिट्टी डाल लेता है॥ ३॥ हे नानक! यदि ऊँचे और उत्तम भाग्य हों तो जीव सच्चे प्रभु का नाम जपकर सत्यवादी एवं शुद्ध हो जाता है॥ ४॥ ७॥ ५९॥

आसा महला ४ ॥ हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥ नामि सुनिऐ मनु त्रिपतै मेरे भाई ॥ १ ॥ नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥ नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥ नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥ २ ॥ नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥ सभ निहफल करम कीए दुखु धंधा ॥ ३ ॥ हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥ नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ६० ॥

हे मेरे भाई ! हरि ने मेरे मन को हरि नाम की भूख लगा दी है। हरि-नाम सुनकर मेरा मन तृप्त हो जाता है॥ १॥ हे मेरे गुरसिक्ख मित्रो ! प्रभु के नाम का जाप करो। नाम का जाप करो, प्रभु के नाम द्वारा सुख प्राप्त करो और गुरु की मति द्वारा नाम को अपने मन एवं चित्त में टिकाकर रखो॥ १॥ रहाउ॥ बार-बार प्रभु का नाम सुनने से मेरा चित्त सरस हो गया है। गुरु की मति से नाम का लाभ कमाकर मेरा चित्त खिल गया है॥ २॥ नाम के बिना मनुष्य कुष्ठी एवं मोह में अन्धा हो जाता है। उसके सभी कर्म निष्फल एवं दुखदायक धन्धा है॥ ३॥ भाग्यशाली मनुष्य ही हरि-परमेश्वर की महिमा का जाप करते हैं। हे नानक ! गुरु की मति द्वारा ही प्रभु के नाम में लगन लगती है॥ ४॥ ८॥ ६०॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥ हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥ गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥ १ ॥ जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥ जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥ जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल ॥ २ ॥ काइआ नगर महि करम हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥ मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥ ३ ॥ जोगी जंगम स्रिसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥ जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६१ ॥

हे योगी ! तुम हाथ में वीणा लेकर तार बजाते हो परन्तु तेरी वीणा व्यर्थ ही बज रही है। हे योगी ! गुरु की मति द्वारा हरि के गुण बोलो, तेरा यह मन हरि रंग में भीग जाएगा॥ १॥ हे योगी ! अपनी बुद्धि को हरि का उपदेश सुना। एक हरि-परमेश्वर समस्त युगों (सतियुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) में व्यापक हो रहा है, उसके समक्ष मैं नमन करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

तुम अनेक रागों में गाते एवं बहुत बोलते हो परन्तु तेरा यह मन केवल खेल ही खेलता है। तुम धरती सींचने हेतु उन बैलों से कुआं जोड़ना चाहते हो जो आगे ही चरने हेतु बेल खा जाते हैं॥ २॥ (हे योगी !) हरि की दया से काया रूपी नगर की भूमि में हरि नाम का बीज बोओ। तब हरिनाम ही अंकुरित होगा और तेरी काया रूपी फसल हरित हो जाएगी। हे योगी ! इस चंचल मन की दुविधा पर अंकुश लगाओ, स्थिरचित्त रूपी बैल को जोड़ो एवं गुरु की मति से हरि-नाम रूपी जल को सींचो॥ ३॥ हे प्रभु ! योगी, जंगम एवं सारी सृष्टि तेरी ही रचना है, जैसी सुमति तुम उनको प्रदान करते हो, वैसे ही ये चलते हैं। नानक के अन्तर्यामी प्रभु ! मेरे मन को प्रेरित करके हरि-नाम में सम्मिलित कर लो॥ ४॥ ९॥ ६१॥

आसा महला ४ ॥ कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥ आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥ १ ॥ मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग

धुनि उठावै ॥ मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥ २ ॥ कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥ हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम सम्हारै ॥ ३ ॥ कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६२ ॥

कब तक कोई घुघरू और ताल को ढूँढता फिरे ? कब तक कोई रबाब इत्यादि वाद्ययन्त्र बजाता रहे ? आने-जाने में कुछ न कुछ देरी तो लग ही जाएगी, तब तक क्यों न मैं ईश्वर का नाम-स्मरण कर लूँ॥ १॥ मेरे मन में प्रभु की ऐसी भक्ति बन गई है कि उसके बिना मैं एक क्षण एवं पल भर के लिए भी नहीं रह सकता जैसे जल के बिना मछली के प्राण पखेरू हो जाते हैं, वैसे ही मैं हरि के बिना नहीं रह सकता॥ १॥ रहाउ॥ कब तक कोई गाने के लिए पाँच तारें एवं सात सुर कहाँ तक मिलाता रहे ? कब तक कोई राग का स्वर उठाए ? तार, सुर मिलाते हुए एवं स्वर उठाने में कुछ न कुछ देरी अवश्य लग जाती है। मेरा मन तो उतना समय भी राम के गुणगान में लगा रहेगा॥ २॥ कब तक कोई नृत्य करेगा और अपने पैर चलाएगा ? कब तक कोई अपने हाथ घुमाए ? अपने हाथ-पैर घुमाने में थोड़ा-सा समय अवश्य लगता है, तब तक मेरा मन राम नाम का सुमिरन करता है॥ ३॥ कब तक कोई लोगों को प्रसन्न करेगा ? यदि लोग प्रसन्न हो भी जाएँ तो भी (प्रभु-द्वार पर) मान-सम्मान नहीं मिलेगा। हे नानक ! अपने हृदय में सदैव ही प्रभु का सुमिरन करते रहो, तभी हर कोई जय-जयकार करेगा॥ ४॥ १०॥ ६२॥

आसा महला ४ ॥ सतसंगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरि गुण गाइ ॥ गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ १ ॥ हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥ ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥ २ ॥ आपे हरि अपरंपरु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥ सेई संत भले तुधु भावहि जिन्ह की पति पावहि थाइ ॥ ३ ॥ नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ ॥ भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६३ ॥

परमात्मा के साधुओं की पावन संगति में शामिल होना चाहिए और सत्संगति में शामिल होकर हरि का गुणगान करते रहो। (सत्संगति में) ज्ञान रूपी रत्न के आलोक से अज्ञानता का अन्धेरा मन से नष्ट हो जाता है॥ १॥ हे हरि के भक्तो ! हरि-प्रभु का ध्यान करते हुए नृत्य करो। हे मेरे भाई ! यदि मुझे ऐसे संतजन मिल जाएँ तो मैं उन प्रभु-भक्तों के चरण धोऊँ॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन ! रात दिन ध्यान लगाकर हरि-परमेश्वर का नाम-स्मरण किया करो। जिस फल की इच्छा होगी वही फल तुझे मिलेगा और तुझे दोबारा कभी भूख नहीं लगेगी॥ २॥ अपरंपार हरि स्वयं ही जगत का रचयिता है। हरि स्वयं ही बोलता एवं बुलवाता है। वही संत भले हैं, जो तुझे अच्छे लगते हैं और जिनकी प्रतिष्ठा को तुम स्वीकार करते हो॥ ३॥ नानक, हरि की गुणस्तुति करता हुआ तृप्त नहीं होता है, जितनी अधिक वह उसकी महिमा करता है, उतना अधिक वह सुख प्राप्त करता है। हरि ने अपनी भक्ति के भण्डार (उपासक को) दिए हुए हैं और गुणों के व्यापारी उनको खरीद कर अपने घर (परलोक) में ले जाते हैं॥ ४॥ ११॥ ६३॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ८ के काफी महला ४ ॥ आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥ १ ॥ गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥ लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ ॥ चलणु अजु कि कल्हि धुरहु फुरमाइआ ॥ २ ॥ बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसारिआ ॥ जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥ ३ ॥ जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्हा गुरु पाइआ ॥ नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६४ ॥

हे भाई ! मृत्यु तो जन्म से ही लिखी हुई है। किसी की मृत्यु पर लोग अपने अहंकार के कारण ही रोते हैं। गुरुमुख बनकर प्रभु का ध्यान करने से जीव सदैव अटल हो जाता है॥ १॥ पूर्ण गुरु को शाबाश है, जिनके द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है कि सभी ने यहाँ से चले जाना है (अर्थात् मृत्यु अटल है।) जो व्यक्ति उत्तम नाम का लाभ प्राप्त करते हैं वे ब्रह्म-शब्द में लीन हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरी माता ! पूर्व जन्म के लिखे कर्मों अनुसार जिन्हें जीवन के दिन प्राप्त होते हैं वे संसार में आते हैं। आज अथवा कल मनुष्य ने अवश्य ही इहलोक से चले जाना है जैसा कि आदि से परमेश्वर का हुक्म है॥ २॥ जिन्होंने प्रभु-नाम को विस्मृत कर दिया है, उनका जन्म व्यर्थ है। उन्होंने संसार में जुए का खेल खेला और इस खेल में अपना मन पराजित कर दिया॥ ३॥ जिन मनुष्यों को गुरु प्राप्त हुआ है, वे जन्म-मरण में भी सुख की अनुभूति करते हैं। हे नानक ! सत्यवादी जीव सत्य के कारण परम सत्य में ही समा जाते हैं॥ ४॥ १२॥ ६४॥

आसा महला ४ ॥ जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥ १ ॥ जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिन्ही नामु कमाइआ ॥ दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥ अनदिनु नामु धिआइ हरि गुण गाईऐ ॥ २ ॥ अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ ॥ हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ॥ ३ ॥ नानक आपे आपि आपि खुआईऐ ॥ गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६५ ॥

जिसने बहुमूल्य मनुष्य जन्म प्राप्त करके प्रभु-नाम का ध्यान किया है, गुरु की कृपा से (मनुष्य-जन्म के) मनोरथ को समझकर वह सत्य में ही समा गया है॥ १॥ जिन मनुष्यों के आदि से ही मस्तक पर भाग्य लिखा हुआ है, उन्होंने प्रभु-नाम की कमाई की है। उन सत्यवादियों को सच्चे परमात्मा ने अपने महल में आमंत्रित कर लिया है॥ १॥ रहाउ॥ हमारे अन्तर्मन में नाम का खजाना विद्यमान है परन्तु यह गुरु के सम्मुख होकर ही मिलता है। रात-दिन हरि नाम का ध्यान करते रहना चाहिए और हरि का स्तुतिगान करना चाहिए॥ २॥ हमारी अन्तरात्मा में अनेक पदार्थ हैं परन्तु मनमुख मनुष्य को ये प्राप्त नहीं होते। अहंकार के कारण स्वेच्छाचारी मनुष्य अभिमान करता है और अपने आपको नष्ट कर लेता है॥ ३॥ हे नानक ! अपने कर्मों के कारण मनुष्य अपने आप का नाश कर लेता है लेकिन गुरु की मति से मन में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और सत्य (परमेश्वर) मिल जाता है॥ ४॥ १३॥ ६५॥

रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥ सतिगुरि मोकउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥ जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥ १ ॥

किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान ॥ हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥ २ ॥ १४ ॥ ६६ ॥

मैं निशदिन हरि-नाम का भजन करता रहता हूँ। सतिगुरु ने मुझे हरि-नाम (का भेद) बताया है। (इसलिए) अब मैं हरि के बिना एक क्षण अथवा पल भर भी नहीं रह सकता॥ १॥ रहाउ॥ हरि का भजन सुनना और उसका सुमिरन करना ही मेरे पास है। हरि के बिना मैं एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। जैसे राजहंस सरोवर के बिना नहीं रह सकता, वैसे ही हरि का भक्त हरि की भक्ति के बिना कैसे रह सकता है?॥ १॥ कई मनुष्य द्वैतभाव से प्रेम करते तथा इसे अपने हृदय में बसाते हैं। कई मनुष्य मोह-माया एवं अभिमान से प्रीति लगाकर रखते हैं। हरि का भक्त हरि के निर्वाण पद से प्रेम लगाकर रखता है लेकिन नानक तो श्रीहरि भगवान् का ही सिमरन करता रहता है॥ २॥ १४॥ ६६॥

आसावरी महला ४ ॥ माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै ताई ॥ जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥ जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥ २ ॥ ३९ ॥ १३ ॥ १५ ॥ ६७ ॥

हे मेरी माता! मुझे मेरे प्रियतम राम के बारे में कुछ बताओ। मैं वैसे ही हरि के बिना एक क्षण व पल भर के लिए भी रह नहीं सकता, जैसे ऊँट बेलों को देखकर रीझता है और सदैव खुश होता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि रूपी मित्र के दर्शन हेतु मेरा मन वैरागी एवं विरक्त हो गया है। जैसे भँवरा कमल के फूल बिना नहीं रह सकता वैसे ही हरि के बिना मैं भी रह नहीं सकता॥ १॥ हे प्यारे जगदीश्वर! मुझे अपनी शरण में रखें। हे हरि गोसाई! मेरी श्रद्धा पूर्ण करो। नानक का हृदय आनंद से भरपूर हो जाता है, जब एक क्षण भर के लिए भी हरि अपना दर्शन करवा देता है॥ २॥ ३९॥ १३॥ १५॥ ६७॥

रागु आसा घरु २ महला ५ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ भाई मीत कुटंब देखि बिबादे ॥ हम आई वसगति गुर परसादे ॥ १ ॥ ऐसा देखि बिमोहित होए ॥ साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि फिरहि उदासी तिन्ह कामि विआपै ॥ इकि संचहि गिरही तिन्ह होइ न आपै ॥ इकि सती कहावहि तिन्ह बहुतु कलपावै ॥ हम हरि राखे लगि सतिगुर पावै ॥ २ ॥ तपु करते तपसी भूलाए ॥ पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु ॥ हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥ ३ ॥ गिआनी की होइ वरती दासि ॥ कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥ जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥ जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥ ४ ॥ १ ॥

जिसने भी माया के साथ प्रेम लगाया है, यह उसे ही अंततः खा गई है। जिसने इसे सुखपूर्वक बैठाया है, उसे ही इसने अत्यंत भयभीत किया है। भाई, मित्र एवं कुटुंब के सदस्य इसे देखकर परस्पर विवाद एवं झगड़ा उत्पन्न करते हैं परन्तु गुरु की कृपा से यह मेरे वश में आ गई है॥ १॥ इसे ऐसा मीठा देखकर सभी मुग्ध हो जाते हैं। इस ठगिनी माया ने गुरु के सिवाय साधक,

सिद्ध, देवते एवं मनुष्य इत्यादि सबको ठग लिया है॥ १॥ रहाउ॥ कई उदासी बन कर भटकते फिरते हैं परन्तु कामवासना उन्हें दुखी करती है। कई गृहस्थी बनकर माया-धन को संचित करते हैं परन्तु यह उनकी अपनी नहीं बनती। जो अपने आपको दानी कहलवाते हैं यह उनको भी बहुत सताती है। लेकिन ईश्वर ने मुझे सतिगुरु के चरणों से लगाकर इससे बचा लिया है॥ २॥ तपस्या करते तपस्वी भी इसके कारण कुमार्गगामी हो जाते हैं। समस्त पण्डित भी लोभ में फँसकर मोहित हो गए। इस माया ने समस्त त्रिगुणी जीवों को भी आकर्षित किया हुआ है और आकाश निवासी भी ठगे गए हैं। (लेकिन) सतिगुरु ने अपना हाथ देकर हमारी रक्षा की है॥ ३॥ यह माया ब्रह्मज्ञानी के समक्ष दासी जैसा व्यवहार करती है। वह हाथ जोड़कर उनकी सेवा करती है और प्रार्थना करती है कि जो आप आज्ञा करेंगे मैं वही कार्य करूँगी। हे नानक! माया कहती है कि मैं गुरुमुख के निकट नहीं आऊँगी॥ ४॥ १॥

आसा महला ५ ॥ ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥ देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥ घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥ १ ॥ सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥ दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मोकउ हरि नामु दिवाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥ २ ॥ सहज गुफा महि आसणु बाधिआ ॥ जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥ महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥ प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥ ३ ॥ जन नानकु बोले ब्रहम बीचारु ॥ जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥

पति-परमेश्वर ने माया रूपी सास से मुझे अलग कर दिया है। मेरी देवरानी (आशा) एवं जेठानी (तृष्णा) दुख एवं संताप से मर गई हैं। घर के जेठ (धर्मराज) की भी मैंने मोहताजी छोड़ दी है। मेरे चतुर एवं सर्वज्ञ पति-प्रभु ने मुझे बचा लिया है॥ १॥ हे लोगो! सुनो, मुझे प्रेम रस प्राप्त हो गया है। जिससे सतिगुरु ने मुझे हरि का नाम दिलवाया है। मैंने दुर्जनों को मार दिया है और कामादिक शत्रुओं का भी संहार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ सर्वप्रथम मैंने अहंकार का प्रेम त्याग दिया है। द्वितीय मैंने सांसारिक प्रपंचों की रस्मों को छोड़ दिया है। त्रिगुणों का त्याग करने से अब दुष्ट एवं मित्र एक समान लगने लगे हैं। संत रूपी गुरु को मिलकर मैंने तुरीय अवस्था के गुणों को पहचान लिया है॥ २॥ मैंने परमानंद की गुफा में आसन लगा लिया है। ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने अनहद नाद बजाया है। गुरु-शब्द का चिंतन करने से मुझे महा आनंद प्राप्त हुआ है। जो जीव स्त्री अपने प्रियतम के प्रेम रंग में लीन हो गई है वह सुहागिन नारी धन्य है॥ ३॥ नानक ब्रह्म विचार की बात कर रहा है, जो इसे श्रवण करेगा और इसकी साधना करेगा, वह संसार-सागर से पार हो जाएगा। न ही वह जन्मता है और न ही मरता है, वह (सृष्टि में बार-बार) न आता है और न ही जाता है। वह सदैव हरि की स्मृति में लीन हुआ रहता है॥ ४॥ २॥

आसा महला ५ ॥ निज भगती सीलवंती नारि ॥ रूपि अनूप पूरी आचारि ॥ जितु ग्रिहि वसै सो ग्रिहु सोभावंता ॥ गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥ १ ॥ सुकरणी कामणि गुर मिलि हम पाई ॥ जजि काजि परथाइ सुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिचरु वसी पिता कै साथि ॥ तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि ॥ करि सेवा सत पुरखु मनाइआ ॥ गुरि आणी घर महि ता सरब सुख पाइआ ॥ २ ॥ बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥ आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥ इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥ सगल संतोखी देर जेठानी ॥ ३ ॥ सभ परवारै माहि सरेसट ॥ मती देवी देवर जेसट ॥ धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥ जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

भगवान की भक्ति वह शीलवान नारी है, जो अनुपम रूपवती एवं पूर्ण आचरणयुक्त है। जिस घर में वह रहती है, वह घर शोभावान हो जाता है। किसी विरले गुरुमुख को ही ऐसी नारी प्राप्त हुई है॥ १॥ गुरु से मिलकर मुझे शुभ कर्मो वाली (भक्ति रूपी) नारी प्राप्त हुई है। पूजा, शादी-विवाह इत्यादि शुभ कार्यों में सर्वत्र यह बहुत सुन्दर लगती है॥ १॥ रहाउ॥ जब तक भक्ति रूपी नारी अपने पिता अर्थात् गुरु के साथ रहती है, तब तक उसका जीव रूपी पति बहुत ही उदास होकर भटकता है। जब जीव ने सेवा करके सद्पुरुष परमात्मा को प्रसन्न किया तो गुरु ने जीव के हृदय घर में भक्ति रूपी नारी को लाकर बिठा दिया और इसने सर्व सुख प्राप्त कर लिए॥ २॥ यह भक्ति रूपी नारी लज्जा, नम्रता, दया, संतोष, सौन्दर्य एवं प्रेम इत्यादि बत्तीस शुभ लक्षणों वाली है, सत्य रूपी पुत्र इसकी संतान है। यह आज्ञाकारिणी, चतुर एवं रूपवती है, वह अपने कांत-स्वामी की हरेक इच्छा पूरी करती है। इसने अपनी देवरानी (आशा) एवं जेठानी (तृष्णा) को हर प्रकार से संतुष्ट कर लिया है॥ ३॥ समूचे परिवार में भक्ति रूपी नारी श्रेष्ठ है। वह अपने देवर एवं जेठ को सुमति देने वाली है। हृदय रूपी वह घर धन्य है, जहाँ वह प्रगट हुई है। हे नानक! जिस जीव के हृदय घर में प्रगट हुई है, उसका समय सुखी एवं हर्षपूर्वक व्यतीत होता है॥ ४॥ ३॥

आसा महला ५ ॥ मता करउ सो पकनि न देई ॥ सील संजम कै निकटि खलोई ॥ वेस करे बहु रूप दिखावै ॥ ग्रिहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥ १ ॥ घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥ जतन करउ उरझाइ परेवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुर की भेजी आई आमरि ॥ नउ खंड जीते सभि थान थनंतर ॥ तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस ॥ पड़ि थाके सिम्रिति बेद अभिआस ॥ २ ॥ जह बैसउ तह नाले बैसै ॥ सगल भवन महि सबल प्रवेसै ॥ होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥ कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥ ३ ॥ सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ ॥ गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ निज घरि वसिआ गुण गाइ अनंता ॥ प्रभु मिलिओ नानक भए अचिंता ॥ ४ ॥ घरु मेरा इह नाइकि हमारी ॥ इह आमरि हम गुरि कीए दरबारी ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥

मैं जो भी संकल्प करता हूँ उसे माया सफल नहीं होने देती। शील एवं संयम के निकट यह हर समय खड़ी रहती है। यह अनेक वेष धारण करती है और बहुत रूप दिखाती है। यह मुझे हृदय घर में बसने नहीं देती और विभिन्न ढंगों से भटकाती रहती है॥ १॥ यह हृदय घर की स्वामिनी बन बैठी है और मुझे घर में निवास नहीं करने देती। यदि मैं रहने का प्रयास करता हूँ तो अधिकतर उलझनें उत्पन्न करती है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु-दरबार से यह माया सेविका बनाकर भेजी हुई आई है लेकिन इसने नवखण्डों वाली समूची पृथ्वी जीत ली है। वह नदियों के तटों, धार्मिक स्थलों, योगियों एवं संन्यासियों को भी नहीं छोड़ती। स्मृतियाँ पढ़-पढ़कर एवं वेदों का अभ्यास करने वाले पण्डित भी माया के समक्ष नतमस्तक हो गए हैं॥ २॥ जहाँ भी मैं विराजमान होता हूँ, वहाँ यह मेरे साथ बैठती है। पृथ्वी, आकाश, पाताल समूचे भवनों में इसने सबल प्रवेश किया है। किसी तुच्छ की शरण लेने से मैं अपने आपको इससे बचा नहीं सकता। हे मेरे मित्र! बता, शरण लेने हेतु मैं किसके पास जाऊँ॥ ३॥ सत्संगी मित्र से उपदेश सुनकर मैं सतिगुरु के पास आया हूँ। गुरु ने हरि-नाम रूपी मंत्र मेरे अन्तर्मन में बसा दिया है। अब मैं अपने आत्म-स्वरूप में रहता हूँ और अनंत प्रभु का गुणगान करता हूँ। हे नानक! अब मुझे ईश्वर मिल गया है और मैं निश्चिन्त हो गया हूँ॥ ४॥ अब मेरा अपना घर बन गया है और यह स्वामिनी माया भी हमारी बन गई है।

गुरु ने इसे मेरी सेविका बना दिया है और मुझे प्रभु का दरबारी बना दिया है॥ रहाउ दूसरा॥ १॥ ४॥ ४॥

आसा महला ५ ॥ प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥ दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥ त्रितीए मता किछु करउ उपाइआ ॥ मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥ १ ॥ महा अनंद अचिंत सहजाइआ ॥ दुसमन दूत मुए सुखु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मोकउ दीआ उपदेसु ॥ जीउ पिंडु सभु हरि का देसु ॥ जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥ तूं मेरी ओट तूंहै दीबाणु ॥ २ ॥ तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि ॥ आन न बीआ तेरी समसरि ॥ तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥ साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥ ३ ॥ तेरी वडिआई कही न जाइ ॥ जह कह राखि लैहि गलि लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई ॥ प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥ ४ ॥ ५ ॥

[सिक्ख-इतिहास में वर्णित है कि दुष्ट सुलही खां के गुरु अर्जुन देव जी पर हमले के टलने पर यह पद गुरु जी ने उच्चरित किया था।]

सर्वप्रथम मुझे यह सलाह दी गई कि हमला करने आ रहे सुलही खां को पत्र लिखकर भेजा जाए। द्वितीय मुझे यह सलाह दी गई कि सन्धि करने के लिए दो व्यक्ति भेजे जाएँ। तृतीय सलाह यह मिली कि कुछ उपाय कर लिया जाए। लेकिन, हे प्रभु ! सबकुछ छोड़कर मैंने तेरा ही ध्यान किया है॥ १॥ सिमरन करने से मुझे महा आनंद प्राप्त हो गया है, मैं सहज ही चिंता रहित हो गया हूँ। समस्त वैरी एवं शत्रु नाश हो गए हैं और मुझे सुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु ने मुझे यह उपदेश दिया है कि यह शरीर एवं प्राण ईश्वर का निवास स्थान है। इसलिए मैं जो कुछ भी करता हूँ, तेरा बल लेकर करता हूँ। हे प्रभु ! तू ही मेरी ओट एवं तू ही मेरा सहारा है॥ २॥ हे प्रभु ! तुझे छोड़कर मैं किसके पास जाऊँ ? क्योंकि दूसरा कोई भी तेरे बराबर नहीं है। तेरा सेवक किसकी मोहताजी करे ? शाक्त मनुष्य कुमार्गगामी होकर भयानक जंगल में भटकता रहता है॥ ३॥ हे प्रभु ! तेरी बडाई का वर्णन नहीं किया जा सकता। तुम मुझे सर्वत्र अपने गले लगाकर मेरी रक्षा करते हो। दास नानक तो तेरी ही शरण में है (हे भाई !) प्रभु ने मेरी मान-प्रतिष्ठा बचा ली है और मुझे शुभ कामनाएँ मिल रही हैं॥ ४॥ ५॥

आसा महला ५ ॥ परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ गुण रासि बंन्हि पलै आनी ॥ देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥ १ ॥ साह वापारी दुआरै आए ॥ वखरु काढहु सउदा कराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहि पठाइआ साहै पासि ॥ अमोल रतन अमोला रासि ॥ विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥ २ ॥ भउ नही तसकर पउण न पानी ॥ सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥ सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥ सही सलामति घरि लै आइआ ॥ ३ ॥ मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ धंनु साह पूरे बखसिंद ॥ इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ सहली खेप नानकु लै आइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मैं परदेस में भटकने के पश्चात् बडी मुश्किल से तेरे द्वार पर नाम रूपी सौदा लेने हेतु आया हूँ। मैंने सुना है कि तेरे पास नाम एक अनूप एवं लाभदायक वस्तु है। हे गुरदेव ! गुणों की पूँजी अपने दामन से बाँधकर अपने साथ लाया हूँ। नाम-रत्न को देखकर मेरा यह मन मुग्ध हो गया है॥ १॥ हे शाह ! तेरे द्वार पर जीव-व्यापारी आए हैं। तुम अपने भण्डार में से नाम का सौदा दिखाकर इन सब का सौदा कर दो॥ १॥ रहाउ॥ शाह-परमेश्वर ने मुझे गुरु-साहूकार के पास

भेजा है। नाम-रत्न अनमोल है और गुणों की पूँजी अनमोल है। मुझे विचौलिया गुरु मिल गया है जो मेरा सुशील भाई एवं मित्र है। उससे मुझे प्रभु-नाम का सौदा मिल गया है और मेरा मन लौकिक पदार्थों से निहचल हो गया है॥ २॥ इस नाम-रत्न को चोरों का भय नहीं, हवा अथवा पानी का भी डर नहीं। सहज ही मैंने नाम का सौदा खरीदा है और सहज ही मैं यह सौदा अपने साथ ले जाऊँगा। मैंने सत्यनाम कमाया है और इसलिए मुझे दुख नहीं सहना पड़ेगा। यह नाम-सौदा कुशलतापूर्वक सँभालकर अपने हृदय-घर में ले आया हूँ॥ ३॥ हे गुरु-शाह! तू धन्य है, तू कृपा का घर है, जो तेरी अनुकंपा से मुझे नाम का लाभ प्राप्त हुआ है और मेरी अन्तरात्मा में आनंद उत्पन्न हो गया है। हे बन्धु! किसी विरले भाग्यशाली ने ही गुरुमुख बनकर यह नाम-सौदा प्राप्त किया है। नानक यह लाभदायक नाम-सौदा घर ले आया है॥ ४॥ ६॥

आसा महला ५ ॥ गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ नह देखिओ रूप रंग सींगारो ॥ चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥ १ ॥ सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥ करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥ कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ आंगनि मेरै सोभा चंद ॥ निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥ २ ॥ बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥ सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥ प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥ दुसट दूत की चूकी कानि ॥ ३ ॥ सद खुसीआ सदा रंग माणे ॥ नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥ कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

मेरे मालिक-प्रभु ने मेरे गुण-अवगुणों का कुछ भी विचार नहीं किया। न ही उसने मेरे रूप, रंग एवं श्रृंगार को देखा है। मैं शुभ गुणों एवं सदाचरण की कोई युक्ति भी नहीं जानती। फिर भी मेरी बाँह पकडकर प्रियतम-प्रभु अपनी सेज पर ले आए॥ १॥ हे मेरी सखियो! सुनो, मेरे पति-परमेश्वर ने मुझे अपनाकर अपनी पत्नी बना लिया है। मेरे मस्तक पर अपना हाथ रखकर मुझे अपना समझकर बचा लिया है। लेकिन यह मूर्ख संसार इस (भेद) को क्या समझे?॥ १॥ रहाउ॥ अब मेरा सुहाग सुन्दर लग रहा है। मेरा कंत-प्रभु मुझे मिल गया है और उसने मेरे सभी दुःख-रोग सूक्ष्मता से देख लिए हैं। मेरे हृदय-आंगन में चाँद जैसी शोभा है। रात-दिन मैं अपने प्रियतम-प्रभु से आनंदपूर्वक रमण करती हूँ॥ २॥ मेरे वस्त्र भी लाल वर्ण के प्रेम-वस्त्र हो गए हैं। सभी आभूषण और मेरे कण्ठ के फूलों का हार मुझे शोभा दे रहे हैं। जब मेरे प्रियतम प्रभु ने मुझे प्रेम की नजर से देखा तो मुझे सभी निधान मिल गए। अब कामादिक एवं दुष्ट यमदूतों की चिन्ता का भी नाश हो गया है॥ ३॥ मुझे सदैव प्रसन्नता प्राप्त हुई है और मैं सदा आनंद में रहती हूँ। नौ निधियों के समान ईश्वर का नाम मेरे हृदय घर में आ बसने से मैं तृप्त हो गई हूँ। हे नानक! जब प्रियतम ने मेरा शुभ-गुणों से श्रृंगार कर दिया तो मैं सुहागिन बन गई। अब मैं स्थिरचित्त होकर अपने पति-प्रभु के साथ रहती हूँ॥ ४॥ ७॥

आसा महला ५ ॥ दानु देइ करि पूजा करना ॥ लैत देत उन्ह मूकरि परना ॥ जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥ तितु दरि तूंही है पछुताणा ॥ १ ॥ ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥ निरापराध चितवहि बुरिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥ निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥ माइआ मूठा चेतै नाही ॥ भरमे भूला बहुती राही ॥ २ ॥ बाहरि भेख करहि घनेरे ॥ अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥ अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥ ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥ ३ ॥ मूरख बामण प्रभू समालि ॥

देखत सुनत तेरै है नालि ॥ कहु नानक जे होवी भागु ॥ मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥ ४ ॥ ८ ॥

यजमान लोग ढोंगी ब्राह्मणों को दान देकर उनकी पूजा-अर्चना करते हैं परन्तु ब्राह्मण सबकुछ लेकर भी मुकर जाते हैं अर्थात् दान लेना अपना अधिकार समझते हैं और धन्यवाद नहीं करते। हे ब्राह्मण! जिस ईश्वर के द्वार में तुझे जाना है वहाँ ही तुम पश्चाताप करोगे॥ १॥ हे भाई! ऐसे ब्राह्मणों को डूबे समझो, जो निर्दोष लोगों का बुरा करने का सोचते हैं॥ १॥ रहाउ॥ उनकी अन्तरात्मा में लोभ विद्यमान है और वह पागल हुए भटकते हैं। वह दूसरों की निन्दा करते हैं और अपने सिर पर पाप का बोझ लादते हैं। धन-दौलत में मस्त हुआ ब्राह्मण प्रभु को याद नहीं करता। वह भ्रम के कारण अनेकों मार्गों में भटकता हुआ कष्ट सहन करता है॥ २॥ लोगों को दिखाने के लिए वह बहुत सारे धार्मिक वेश धारण करता है। परन्तु उसकी अन्तरात्मा को विषय-विकारों ने घेरा हुआ है। वह दूसरों को उपदेश प्रदान करता है परन्तु अपने आपको सुमति नहीं देता। ऐसा ब्राह्मण किसी तरह भी मुक्त नहीं होता॥ ३॥ हे मूर्ख ब्राह्मण! प्रभु का ध्यान कर। वह तेरी सारी करतूतों को देखता एवं तेरी बातों को सुनता है और तेरे साथ रहता है। नानक का कथन है कि यदि तेरे अहोभाग्य हैं तो अपना अहंकार छोड़ कर गुरु-चरणों के साथ लग जा॥ ४॥ ८॥

आसा महला ५ ॥ दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ ॥ भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कत ही न जाइ ॥ १ ॥ तपति बुझी गुर सबदी माइ ॥ बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धावत रहे एकु इकु बूझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ ॥ जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥ २ ॥ जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ ॥ सहज धुनि गावै मंगल मनूआ अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥ ३ ॥ करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ ॥ नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरै संगि सहाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥

हरि-परमेश्वर का गुणानुवाद करने से मेरा मन निर्मल हो गया है और मेरे तन से दुःख-रोग मिट गए हैं। साधु की संगति में शामिल होकर मैं आनंदित हो गया हूँ और अब मेरा मन कहीं भी नहीं भटकता॥ १॥ हे मेरी माता! गुरु-शब्द द्वारा मेरी जलन बुझ गई है। मेरे तमाम दुख-क्लेश एवं संताप नाश हो गए हैं और अब मुझे शीतल सतिगुरु सहज स्वभाव मिल गया है॥ १॥ रहाउ॥ एक ईश्वर का बोध होने से मेरा भटकना खत्म हो गया है और अब मैं अटल स्थान पर रहता हूँ। हे प्रभु! तेरे साधु जगत का उद्धार करने वाले हैं। उनके दर्शन करके मैं तृप्त हो गया हूँ॥ २॥ अनेक जन्मों के दोषों से मेरी मुक्ति हो गई है और अब अटल साधु के चरण पकड़ लिए हैं। अब मेरा मन सहज ही प्रभु के यश की धुनि का गायन करता है और अब काल इसे दोबारा नहीं खाएगा॥ ३॥ हे मेरे हरि परमेश्वर! तू मुझे सुख देने वाला है और तू ही सबकुछ करने एवं कराने में समर्थावान है। नानक तेरा नाम जप-जप कर ही आत्मिक जीवन प्राप्त करता है, तुम मेरी सहायता करने वाले इस तरह हो जैसे ताने-बाने में धागा मिला होता है वैसे ही मेरे संग रहते हो॥ ४॥ ९॥

आसा महला ५ ॥ अरड़ावै बिललावै निंदकु ॥ पारब्रहमु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै ॥ अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥ १ ॥ परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥

भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै ॥ २ ॥ १० ॥

(साधु-संतों की) निंदा करने वाला मनुष्य बहुत चीखता-चिल्लाता एवं विलाप करता है। निंदक ने परब्रह्म-परमेश्वर को विस्मृत कर दिया है जिसके परिणामस्वरूप वह अपने किए कर्मों का फल भोग रहा है॥ १॥ रहाउ॥ (हे भाई !) यदि कोई पुरुष उस निंदक का संगी बने तो वह निंदक उसे भी अपने साथ (नरककुण्ड में) डूबो लेता है। निंदक अजगर के भार के समान अनन्त बोझ उठाए फिरता है और अपने आपको निन्दा की अग्नि में सदैव जलाता है॥ १॥ जो कुछ परमेश्वर के द्वार पर होता है, नानक वही बात कहकर सुनाता है। भक्तजन हमेशा आनंद में रहते हैं। चूंकि हरि का कीर्ति-गान करने से वे सदा प्रसन्न रहते हैं॥ २॥ १०॥

आसा महला ५ ॥ जउ मै कीओ सगल सीगारा ॥ तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥ अनिक सुगंधत तन महि लावउ ॥ ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥ मन महि चितवउ ऐसी आसाई ॥ प्रिअ देखत जीवउ मेरी माई ॥ १ ॥ माई कहा करउ इहु मनु न धीरै ॥ प्रिअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै ॥ ओइ भी जानउ कितै न लेखै ॥ पति सोभा अरु मानु महतु ॥ आगिआकारी सगल जगतु ॥ ग्रिहु ऐसा है सुंदर लाल ॥ प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥ २ ॥ बिंजन भोजन अनिक परकार ॥ रंग तमासे बहुतु बिसथार ॥ राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइसि ॥ मनु नही ध्रापै त्रिसना न जाइसि ॥ बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै ॥ मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥ साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ ॥ जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ ॥ पूरी आसा मनु त्रिपताइआ ॥ प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा ॥ नानक लधा मन तन मंझा ॥ ४ ॥ ११ ॥

मैंने बहुत सारे हार-श्रृंगार किए हैं फिर भी मेरा मन तृप्त नहीं हुआ। मैं अनेक सुगंधियाँ अपने शरीर पर लगाती हूँ परन्तु उस सुख को मैं तिलमात्र भी प्राप्त नहीं करती हूँ। हे मेरी माँ ! मैंने अपने हृदय में ऐसी आशा धारण की है कि अपने प्रियतम-प्रभु को देख कर मैं जीवित रहूँ॥ १॥ हे मेरी माँ ! मैं क्या करूँ ? मेरा यह मन धैर्य धारण नहीं करता। मेरे प्रियतम-प्रभु का वैराग्य अर्थात् मिलन की तड़प मुझे आकर्षित कर रही है॥ १॥ रहाउ॥ सुन्दर वस्त्र, आभूषण एवं बहुत सारे ऐश्वर्य-वैभव उनको भी मैं किसी हिसाब में नहीं जानती। आदर, शोभा, महानता एवं मान-प्रतिष्ठा, सारा संसार मेरी आज्ञा में चले, अति सुन्दर एवं अमूल्य घर मिले तो भी सदैव प्रसन्न तभी रह सकती हूँ यदि प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगूँ॥ २॥ यदि अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन-भोजन मिलें, विभिन्न प्रकार के रंग-तमाशे देखने को मिलें, यदि राज्य मिले, धरती का प्रभुत्व प्राप्त हो और बहुत हुकूमत भी मिले तो भी यह मन तृप्त नहीं होता और इसकी तृष्णा नहीं मिटती। पति-परमेश्वर से मिले बिना यह दिन व्यतीत नहीं होता। यदि पति-परमेश्वर मिल जाए तो सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं॥ ३॥ खोजते-खोजते मुझे यह खबर मिली है कि सत्संगति के बिना कोई भी मनुष्य पार नहीं हो सका। जिसके मस्तक पर भाग्य उदय हो, वह सतिगुरु को पा लेता है। फिर उसकी आशा पूर्ण हो जाती है और मन भी तृप्त हो जाता है। जब प्रभु मिल जाता है तो सारी जलन एवं प्यास बुझ जाती है। हे नानक ! उस परब्रह्म-प्रभु को मैंने मन-तन में प्राप्त कर लिया है॥ ४॥ ११॥

आसा महला ५ पंचपदे ॥ प्रथमे तेरी नीकी जाति ॥ दुतीआ तेरी मनीऐ पांति ॥ तितीआ तेरा सुंदर थानु ॥ बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥ १ ॥ सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि ॥ अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अति सूचो तेरी पाकसाल ॥ करि इसनानु पूजा तिलकु लाल ॥ गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन ॥ सभ बिधि खोई लोभि सुआन ॥ २ ॥ कापर पहिरहि भोगहि भोग ॥ आचार करहि सोभा महि लोग ॥ चोआ चंदन सुगंध बिसथार ॥ संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥ ३ ॥ अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥ इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥ सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥ ४ ॥ जा कउ द्रिसटि मइआ हरि राइ ॥ सा बंदी ते लई छडाइ ॥ साधसंगि मिलि हरि रसु पाइआ ॥ कहु नानक सफल ओह काइआ ॥ ५ ॥ सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि ॥ अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १२ ॥

हे जीव रूपी नारी ! सर्वप्रथम, तेरी जाति कुलीन है। द्वितीय, तेरा वंश भी महान् माना जाता है। तृतीय, तेरा निवास स्थान अति सुन्दर है परन्तु तेरा रूप कुरूप ही रहा क्योंकि तेरे मन में अभिमान है॥ १॥ हे सुन्दर स्वरूप वाली, बुद्धिमान एवं चतुर नारी! तू अत्यंत अहंकार एवं मोह-माया में फँसी हुई है॥ १॥ रहाउ॥ (हे जीव रूपी नारी!) तेरी पाकशाला अर्थात् रसोई बडी पावन है। तुम स्नान करके पूजा भी करती हो एवं माथे पर लाल तिलक लगाती हो। अपने मुख से तुम ज्ञान की बातें करती हो परन्तु अभिमान ने तुझे नष्ट कर दिया है। यह भी सत्य है कि लालच रूपी कुत्ते ने तेरी हर प्रकार की बड़ाई को बर्बाद कर दिया है॥ २॥ तुम सुन्दर वस्त्र धारण करती हो, भोग-विलास करती हो। संसार में शोभा पाने के लिए धर्म-कर्म करती हो। अपने शरीर पर इत्र, चन्दन एवं अन्य सुगन्धियाँ प्रयुक्त करती हो, लेकिन चाण्डाल क्रोध तेरा सदा खोटा साथी बना हुआ है॥ ३॥ दूसरी तमाम योनियाँ तेरी दासी हैं। इस धरती पर तेरा ही प्रभुत्व कायम है। तेरे पास सोना-चांदी इत्यादि धन पदार्थ हैं लेकिन कामवासना ने तेरा शील भ्रष्ट कर दिया है॥ ४॥ जिस पर भगवान कृपादृष्टि करता है, वह (विकारों की) कैद से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। हे नानक! वही काया सफल है जो सत्संगति में सम्मिलित होकर हरि-रस का आस्वादन करती है॥ ५॥ हे जीव रूपी नारी ! तब तुम समस्त रूप एवं समस्त सुखों वाली सुहागिन बन जाओगी। तब तुम सचमुच अत्यंत सुन्दर एवं चतुर बन जाओगी॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ १२॥

आसा महला ५ इकतुके २ ॥ जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥ मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥ १ ॥ जीवत मुए मुए से जीवे ॥ हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइआ गुर सबदी रसु अंम्रितु पीवे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काची मटुकी बिनसि बिनासा ॥ जिसु छूटै त्रिकुटी तिसु निज घरि वासा ॥ २ ॥ ऊचा चड़ै सु पवै पइआला ॥ धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइआ ॥ से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ॥ ४ ॥ जीउ पिंडु सभु हरि का मालु ॥ नानक गुर मिलि भए निहाल ॥ ५ ॥ १३ ॥

जो व्यक्ति (मोह-माया में फँसा) जीवित दिखाई देता है, उसने निश्चित ही मर जाना है। लेकिन जो व्यक्ति मोह-माया से निर्लिप्त है, वह सदैव ही स्थिर रहेगा॥ १॥ जो लोग अभिमान में जीवित रहते हैं दरअसल वे मरे हुए हैं और जो लोग अपना अभिमान समाप्त कर देते हैं, वास्तव में वही जिन्दा हैं। वे हरि-नाम की औषधि अपने मुँह में रखते हैं और गुरु-शब्द के माध्यम से वह अमर करने वाले अमृत रस का पान करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ यह देहि रूपी कच्चा घड़ा

अवश्य ही टूट जाएगा। लेकिन जिस मनुष्य की रजो, तमो एवं सतो गुण की त्रिकुटी रूपी कैद से मुक्ति हो गई है, वह अपने आत्मस्वरूप में निवास करता है॥ २॥ जो अत्यंत ऊँचा चढ़ता है अर्थात् अभिमान करता है, ऐसा अभिमानी आखिरकार पाताल में ही गिरता है। जो मनुष्य धरती पर गिरे हुए अर्थात् विनम्रतापूर्वक रहते हैं उन्हें काल स्पर्श नहीं कर सकता॥ ३॥ जो मनुष्य भटकते रहते हैं, उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता। लेकिन जिन्होंने गुरु के शब्द का आचरण किया है, वे स्थिरचित रहते हैं॥ ४॥ हे नानक! यह प्राण एवं शरीर सब ईश्वर का ही माल है, गुरु से मिलकर मनुष्य आनंदित हो गए हैं॥ ५॥ १३॥

आसा महला ५ ॥ पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥ जानु सति करि होइगी माटी ॥ १ ॥ मूलु समालहु अचेत गवारा ॥ इतने कउ तुम्ह किआ गरबे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥ अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥ २ ॥ बिसटा असत रकतु परेटे चाम ॥ इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥ ३ ॥ एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ॥ बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥ ४ ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबानु ॥ जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु ॥ ५ ॥ १४ ॥

हे मानव! तेरी यह शरीर रूपी पुतली की संरचना अति बुद्धिमत्ता से हुई है परन्तु तू यह बात सत्य जान कि इसने (एक दिन) मिट्टी हो जाना है॥ १॥ हे मूर्ख गंवार! अपने मूल परमात्मा को याद कर। अपने इस तुच्छ वजूद वाले शरीर का क्यों अभिमान करते हो॥ १॥ रहाउ॥ तू इस दुनिया में एक अतिथि है, जिसे रोजाना तीन सेर अन्न खाने को मिलता है। अन्य सभी वस्तुएँ तेरे पास धरोहर रूप में रखी हुई हैं॥ २॥ तुम विष्टा, हड्डियों, रक्त एवं चमड़ी में लपेटे हुए हो। लेकिन तुम इस पर ही घमण्ड कर रहे हो॥ ३॥ यदि तुम एक नाम रूपी वस्तु का बोध कर लोगे तो तुम पवित्र-जीवन वाले हो जाओगे। प्रभु-नाम की सूझ बिना तुम सदैव ही नापाक हो॥ ४॥ हे नानक! मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ जिसके माध्यम से सर्वज्ञ परमात्मा मिलता है॥ ५॥ १४॥

आसा महला ५ इकतुके चउपदे ॥ इक घड़ी दिनसु मोकउ बहुतु दिहारे ॥ मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥ १ ॥ इकु पलु दिनसु मोकउ कबहु न बिहावै ॥ दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मोकउ पिरहि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि पहर चहु जुगह समाने ॥ रैणि भई तब अंतु न जाने ॥ २ ॥ पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥ आतमु चीन्हि परम सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥

परमेश्वर से वियोग की एक घड़ी भी दिन में मेरे लिए बहुत दिनों के समान है। मेरा मन उसके बिना रह नहीं सकता। फिर मैं अपने प्रियतम से कैसे मिलूंगी॥ १॥ दिन में एक क्षण भी ईश्वर से जुदा होकर व्यतीत नहीं होता। मेरे मन में उसके दर्शन की तीव्र अभिलाषा है। आशा है कि कोई ऐसा संत (सच्चा गुरु) मिल जाए, जो मेरा प्रियतम से मिलन करवा दे॥ १॥ रहाउ॥ दिन के चार प्रहर चार युगों के बराबर हैं। जब रात्रि होती है तो वह समाप्त होने में नहीं आती॥ २॥ पाँच वैरियों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) ने मिलकर मुझे मेरे कंत-प्रभु से जुदा किया है। भटक-भटक कर मैं रोती और अपने हाथ पटकती हूँ॥ ३॥ नानक को हरि ने अपना दर्शन करवा दिया है और अपने आत्मिक जीवन को अनुभव करके उसे परम सुख मिल गया है॥ ४॥ १५॥

आसा महला ५ ॥ हरि सेवा महि परम निधानु ॥ हरि सेवा मुखि अंम्रित नामु ॥ १ ॥ हरि मेरा साथी संगि सखाई ॥ दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मोकउ कहा डराई ॥ १ ॥ रहाउ

॥ हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु ॥ हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥ २ ॥ हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥ गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥ ३ ॥ गुर किरपा ते इह मति आवै ॥ जन नानकु हरि कै अंकि समावै ॥ ४ ॥ १६ ॥

हे भाई ! हरि की सेवा में ही परम निधान हैं। नामामृत को मुँह में जपना ही हरि की सेवा-भक्ति है॥ १॥ हरि मेरा साथी, संगी एवं सहायक है। जब भी मैं दुःख-सुख में उसको याद करता हूँ तो वह मौजूद होता है। फिर बेचारा यमदूत मुझे क्योंकर भयभीत कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि मेरी ओट है और मुझे हरि का ही बल है। हरि मेरा मित्र है और मेरे मन में बसा हुआ है॥ २॥ हरि मेरी पूँजी है और हरि ही मेरे लिए प्रेरक स्रोत है। गुरुमुख बनकर मैं नाम-धन कमाता हूँ और हरि ही मेरा शाह है॥ ३॥ गुरु की कृपा से यह सुमति प्राप्त होती है। नानक तो हरि के अंक (गोद) में समा गया है॥ ४॥ १६॥

आसा महला ५ ॥ प्रभु होइ क्रिपालु त इहु मनु लाई ॥ सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥ १ ॥ मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा ॥ मनसा का दाता सभ सुख निधानु अम्रित सरि सद ही भरपूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥ प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥ २ ॥ पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥ अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥ ३ ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥ सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥ १७ ॥

जब प्रभु कृपालु हुआ तो यह मन उसमें ही लग गया। गुरु की सेवा करने से सभी फल मिल गए हैं॥ १॥ हे मन ! तू क्यों वैरागी होता है ? मेरा सतिगुरु पूर्ण है। मन की आकांक्षाओं के अनुरूप देन प्रदान करने वाला वह सर्व सुखों का कोष है और उसका अमृत का सरोवर सदैव ही भरा रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जब प्रभु के चरण-कमल को अपने हृदय में बसाया तो उसकी दिव्य ज्योति प्रगट हो गई और वह प्रिय राम मुझे मिल गया॥ २॥ पाँच सहेलियाँ (ज्ञानेन्द्रियाँ) अब मिलकर मंगल गीत गाने लगी हैं और अन्तर्मन में अनहद वाणी का नाद गूंज रहा है॥ ३॥ गुरु नानक के प्रसन्न होने पर जगत का बादशाह प्रभु मिल गया है, इसलिए अब जीवन रूपी रात्रि सहज स्वभाव ही सुखपूर्वक व्यतीत होती है॥ ४॥ १७॥

आसा महला ५ ॥ करि किरपा हरि परगटी आइआ ॥ मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥ १ ॥ ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई ॥ भाहि न जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥ खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा ॥ इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥ ३ ॥ तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥ जन नानक अंति वार नामु गहणा ॥ ४ ॥ १८ ॥

भगवान अपनी कृपा करके स्वयं ही मेरे मन में प्रकट हो गया है। सतिगुरु से मिलकर मुझे पूर्ण नाम-धन प्राप्त हुआ है॥ १॥ हे भाई ! ऐसा हरि नाम रूपी धन संचित करना चाहिए, क्योंकि इस नाम-धन को न ही अग्नि जलाती है, न ही जल डुबाता है और यह मनुष्य का साथ छोड़कर कहीं नहीं जाता॥ १॥ रहाउ॥ हरि का नाम धन ऐसा है कि इसमें कभी कमी नहीं आती और न ही यह कभी समाप्त होता है। इसे खर्च करते और खाते हुए मनुष्य का मन तृप्त रहता है॥ २॥ वही सच्चा साहूकार है जो हरि के नाम-धन को अपने हृदय घर में संचित करता है। इस नाम-धन से समूचा जगत लाभ प्राप्त करता है॥ ३॥ केवल वही मनुष्य हरि नाम रूपी धन को प्राप्त करता

है जिसके भाग्य में इसकी प्राप्ति आदि से लिखी हुई है। हे नानक ! हरि का नाम-धन ही अन्तिम समय का आभूषण है॥ ४॥ १८॥

आसा महला ५ ॥ जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥ काची पाकी बाढि परानी ॥ १ ॥ जो जनमै सो जानहु मूआ ॥ गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिन ते सरपर पउसी राति ॥ रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥ २ ॥ माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ गुर प्रसादि को विरला जागे ॥ ३ ॥ कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥ मुख ऊजल होइ निरमल चीत ॥ ४ ॥ १६ ॥

हे प्राणी ! जैसे कोई किसान अपनी फसल बोता है और जब चाहे कच्ची अथवा पक्की हो उसे काट लेता है॥ १॥ वैसे ही समझ लो कि जिसने जन्म लिया है, एक न एक दिन उसने अवश्य मरना भी है। इस दुनिया में गोविंद का भक्त ही सदा स्थिरचित्त रहता है॥ १॥ रहाउ॥ दिन के पश्चात् रात्रि अवश्य ही होगी। जब रात्रि बीत जाती है तो फिर प्रभात अर्थात् सवेरा हो जाता है॥ २॥ माया के मोह में भाग्यहीन मनुष्य सोये रहते हैं। गुरु की कृपा से कोई विरला मनुष्य ही मायावी निद्रा से जागता है॥ ३॥ हे नानक ! नित्य ही भगवान के गुण गाने चाहिए, क्योंकि गुणगान करने से सत्य के दरबार में मुख उज्ज्वल तथा चित्त निर्मल हो जाता है॥ ४॥ १६॥

आसा महला ५ ॥ नउ निधि तेरै सगल निधान ॥ इछा पूरकु रखै निदान ॥ १ ॥ तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तूं करहि सोई परवाणु ॥ साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥ २ ॥ जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥ तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥ ३ ॥ साचे साहिब अलख अभेव ॥ नानक लाइआ लागा सेव ॥ ४ ॥ २० ॥

हे जगत के मालिक ! तेरे घर में नवनिधियाँ एवं समस्त भण्डार हैं। तू जीवों की इच्छाएँ पूरी करने वाला है एवं अन्त में सबकी रक्षा करता है॥ १॥ जब तू मेरा प्रियतम है तो कैसी भूख रहेगी। जब तू मेरे हृदय में निवास करता है तो कोई भी दुःख मुझे स्पर्श नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ जो कुछ तुम करते हो वही मुझे मंजूर है। हे सच्चे साहिब ! तेरा हुक्म भी सच्चा है॥ २॥ हे हरि ! जब तुझे अच्छा लगता है तो मैं तेरा गुणगान करता हूँ। तेरे घर में सदैव ही न्याय है॥ ३॥ हे सच्चे मालिक ! तू अलक्ष्य एवं अपरंपार है। तेरे द्वारा प्रेरित नानक तेरी सेवा भक्ति में लगा हुआ है॥ ४॥ २०॥

आसा महला ५ ॥ निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥ कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥ १ ॥ करहै न झुरै ना मनु रोवनहारा ॥ अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ जिस की मीरा राखै आणि ॥ २ ॥ जो लउडा प्रभि कीआ अजाति ॥ तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥ ३ ॥ वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ नानक दास कहहु गुर वाहु ॥ ४ ॥ २१ ॥

भगवान जीव के बिल्कुल निकट है और सदैव ही उसके साथ रहता है। उसकी कुदरत समस्त रूपों एवं रंगों में कार्यशील है॥ १॥ मेरा मन न तो दुखी होता है, न ही पश्चाताप करता और न ही रोता है क्योंकि इसने उसे अपना मालिक मान लिया है जो अमर, अव्यक्त, अगोचर एवं सदैव कायम रहने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मालिक ! तेरे तुच्छ दास को किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती। उसकी मान-प्रतिष्ठा की तू मालिक-प्रभु स्वयं रक्षा करता है॥ २॥ जिस सेवक को मालिक ने जाति-पाति के बन्धनों से रहित कर दिया है, उस सेवक को किसी की

ईर्ष्या का डर नहीं रहता॥ ३॥ हे नानक! उस गुरु-परमात्मा को धन्य-धन्य कहते रहो, जो बेमुहताज एवं बेपरवाह है॥ ४॥ २१॥

आसा महला ५ ॥ हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥ १ ॥ सुनी न जाई सचु अंम्रित काथा ॥ रारि करत झूठी लगि गाथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥ ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥ २ ॥ तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी ॥ कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥ जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥ ४ ॥ २२ ॥

इन्सान हरि-रस को त्यागकर तुच्छ रसों में मस्त रहता है। नाम रूपी वस्तु उसके हृदय-घर में ही व्याप्त है परन्तु उसे खोजने हेतु बाहर भागता रहता है॥ १॥ ऐसे इन्सान से सत्य की अमृत कथा सुनी नहीं जाती। वह तो झूठी कहानियों से जुड़कर झगड़ा करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ विकारी मनुष्य ऐसा है जो खाता तो परमात्मा का दिया हुआ परन्तु सेवा किसी दूसरे की करता है। ऐसे गुनाहों से प्राणी आच्छादित रहता है॥ २॥ वह अपनी भूलें उससे छिपाता है, जो हमेशा ही उसके साथ है। जो उसके किसी काम नहीं, उसकी वह बार-बार माँग करता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे दीनदयाल प्रभु! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मेरा पोषण करो॥ ४॥ २२॥

आसा महला ५ ॥ जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ ईहा ऊहां उन संगि कामु ॥ १ ॥ बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥ त्रिपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥ गावत सुनत कमावत निहाल ॥ २ ॥ चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥ ३ ॥ नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह ॥ प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥ ४ ॥ २३ ॥

हरि का नाम ही मन तथा प्राणों हेतु सच्चा धन है। लोक-परलोक में यही धन जीव के काम आता है॥ १॥ हरि के नाम बिना अन्य सबकुछ थोड़ा ही है क्योंकि मेरा मन हरि के दर्शन करने से तृप्त एवं संतुष्ट हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरुवाणी प्रभु-भक्ति के रत्नों का भण्डार है। इसको गाने, सुनने एवं उसके अनुरूप आचरण करने से मनुष्य निहाल हो जाता है॥ २॥ मेरा मन तो हरि के चरण-कमल से ही लगा हुआ है। अपनी प्रसन्नता द्वारा सतिगुरु ने मुझे यह दान दिया है॥ ३॥ नानक को गुरु ने यह दीक्षा दी है कि उस अविनाशी प्रभु को प्रत्येक हृदय में देख॥ ४॥ २३॥

आसा महला ५ ॥ अनद बिनोद भरेपुरि धारिआ ॥ अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥ १ ॥ पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥ भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु निधानु जा की निरमल सोइ ॥ आपे करता अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥ रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥ नानक भगत मिली वडिआई ॥ ४ ॥ २४ ॥

संसार के समस्त कौतुक-तमाशे सर्वव्यापक प्रभु ने रचे हुए हैं। वह अपना कार्य स्वयं ही संवारता है॥ १॥ पूर्ण ठाकुर की यह सृष्टि रूपी सामग्री भी पूर्ण है। उसकी शोभा दुनिया में भरपूर होकर हर जगह फैली हुई है॥ १॥ रहाउ॥ जिस परमात्मा की शोभा बड़ी निर्मल है, उसका नाम जीवों के लिए खजाना है। प्रभु स्वयं ही दुनिया का रचयिता है, दूसरा कोई भी नहीं है॥ २॥ सृष्टि के समस्त जीव-जन्तु उसके वश में हैं। प्रभु सर्वव्यापी है और प्रत्येक जीव-जन्तु के साथ है॥ ३॥ पूर्ण गुरु-परमेश्वर ने जो कुछ भी रचा है वह पूर्ण है। हे नानक! प्रभु-भक्तों को ही प्रशंसा मिली है॥ ४॥ २४॥

आसा महला ५ ॥ गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु ॥ गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ॥ १ ॥ ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ ॥ धिआवउ गावउ गुण गोविंदा अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिपति अघावनु साचै नाइ ॥ अठसठि मजनु संत धूराइ ॥ २ ॥ सभ महि जानउ करता एक ॥ साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ॥ ३ ॥ दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥ नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥ ४ ॥ २५ ॥

हे बन्धु ! गुरु के शब्द में अपने मन को नेक बनाओ। गुरु का दर्शन करो और हरि-नाम रूपी धन संचित करो॥ १॥ हे उत्तम बुद्धि ! तू मेरे मन में प्रवेश कर जिससे मैं गोविन्द का गुणगान एवं ध्यान करूँ और मुझे उसका नाम अत्यन्त प्रिय लगे॥ १॥ रहाउ॥ सत्यनाम द्वारा मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया हूँ। संतों की चरण-धूलि मेरा अड़सठ तीर्थों का स्नान है॥ २॥ मैं एक ईश्वर को सबमें व्यापक हुआ अनुभव करता हूँ। साध-संगति में मुझे विवेक बुद्धि मिली है॥ ३॥ अभिमान को छोड़कर मैं सबका सेवक हो गया हूँ। नानक को गुरु ने सुमति का दान दिया है॥ ४॥ २५॥

आसा महला ५ ॥ बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥ ता ते बिनसी दुरमति दूरी ॥ १ ॥ ऐसी गुरमति पाईअले ॥ बूडत घोर अंध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अगाह अगनि का सागरु ॥ गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥ २ ॥ दुतर अंध बिखम इह माइआ ॥ गुरि पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥ ३ ॥ जाप ताप कछु उकति न मोरी ॥ गुर नानक सरणागति तोरी ॥ ४ ॥ २६ ॥

गुरु की मति से मेरी बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश हो गया है। इससे मेरी दुर्मति नाश हो गई है, जो मुझे मेरे मालिक से दूर रखती थी॥ १॥ हे मेरे भाई ! गुरु की मति से मुझे ऐसी सूझ प्राप्त हुई है कि मैं घोर अंधकूप रूपी संसार में से डूबता हुआ बच गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ यह जगत तृष्णा रूपी अग्नि का बहुत गहरा अथाह सागर है पर रत्नागर गुरु रूपी जहाज मनुष्य को भवसागर से पार कर देता है॥ २॥ यह माया का सागर बड़ा अन्धा एवं विषम है। इसे पार करने हेतु पूर्ण गुरु ने मार्ग प्रत्यक्ष तौर पर दिखा दिया है॥ ३॥ मेरे पास न कोई जाप है, न कोई तपस्या और न ही कोई उक्ति है। हे गुरु ! नानक तेरी ही शरण में आया है॥ ४॥ २६॥

आसा महला ५ तिपदे २ ॥ हरि रसु पीवत सद ही राता ॥ आन रसा खिन महि लहि जाता ॥ हरि रस के माते मनि सदा अनंद ॥ आन रसा महि विआपै चिंद ॥ १ ॥ हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥ आन रसा सभि होछे रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥ हरि रसु साधू हाटि समाइ ॥ लाख करोरी मिलै न केह ॥ जिसहि परापति तिस ही देहि ॥ २ ॥ नानक चाखि भए बिसमादु ॥ नानक गुर ते आइआ सादु ॥ ईत ऊत कत छोडि न जाइ ॥ नानक गीधा हरि रस माहि ॥ ३ ॥ २७ ॥

हरि-रस पीने से इन्सान सदैव ही रंगा रहता है। दूसरे तमाम स्वाद एक क्षण में मिट जाते हैं। हरि रस से मतवाला होकर वह अन्तर्मन से सदैव प्रसन्न रहता है लेकिन लौकिक पदार्थों के आस्वादन में पड़ने से चिन्ता बनी रहती है॥ १॥ जो हरि रस पीता है वह अलमस्त एवं मतवाला हो जाता है। हे इन्सान ! संसार के दूसरे सभी रस तुच्छ हैं॥ १॥ रहाउ॥ हरि रस का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। हरि रस साधु-संतों की दुकान (सत्संग) में लीन रहता है। लाखों-करोड़ खर्च करने पर भी यह किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। जिस मनुष्य के भाग्य में इसे प्राप्त करना लिखा होता है परमात्मा उसे ही देता है॥ २॥ नानक इस हरि रस को चख कर चकित हो गया है। हे नानक !

गुरु के माध्यम से इसका स्वाद प्राप्त हुआ है। इधर-उधर (लोक-परलोक में) इसे त्याग कर वह अन्य कहीं नहीं जाता। नानक तो हरि रस पीने में ही मस्त रहता है॥ ३॥ २७॥

आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥ होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥ १ ॥ सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी ॥ दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥ दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥ २ ॥ इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुम्हारी ॥ जो इहु मंतु कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥ ३ ॥ २८ ॥

यदि जीव-स्त्री अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह को मिटा दे, तो वह अपनी पैदा की हुई मंदबुद्धि से छूट जाती है। यदि वह विनीत होकर अपने प्रभु की सेवा करे तो वह अपने प्रियतम के मन की प्रियतमा हो जाती है॥ १॥ हे सुन्दरी! सुन, साधु के वचनों द्वारा तेरा उद्धार हो जाएगा। तेरा दुःख, भूख एवं भय सब मिट जाएंगे, हे नारी! तू जो सुख पाना चाहती है, तुझे वह सुख प्राप्त हो जाएंगे॥ १॥ रहाउ॥ हे सुन्दरी! गुरु के चरण धोने एवं उनकी सेवा करने से आत्मा शुद्ध हो जाती है और विषय-विकारों की प्यास बुझ जाती है। यदि तू प्रभु के सेवकों की दासी बन जाए तो तुझे प्रभु के द्वार में शोभा मिल जाएगी॥ २॥ यही तेरा पुण्य-कर्म है, यही तेरा नित्य का आचरण-व्यवहार है कि तू प्रभु की आज्ञा का पालन करे। यही तेरी पूजा-भक्ति है। जो इस मंत्र की कमाई करता है, हे नानक! वह भवसागर से पार हो जाता है॥ ३॥ २८॥

आसा महला ५ दुपदे ॥ भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ १ ॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥ २ ॥ २९ ॥

हे मानव! तुझे जो यह मानव जन्म प्राप्त हुआ है। यही तुम्हारा प्रभु को मिलने का शुभावसर है; अर्थात् प्रभु का नाम सिमरन करने हेतु ही यह मानव जन्म तुझे प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त किए जाने वाले सांसारिक कार्य तुम्हारे किसी काम के नहीं हैं। सिर्फ तुम साधुओं-संतों का संग करके उस अकाल-पुरुष का चिन्तन ही करो॥ १॥ इसलिए इस संसार-सागर से पार उतरने के उद्यम में लग। अन्यथा माया के प्रेम में रत तुम्हारा यह जीवन व्यर्थ ही चला जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ हे मानव! तुमने जप, तप व संयम नहीं किया और न ही कोई पुनीत कार्य करके धर्म कमाया है। साधु-संतों की सेवा नहीं की है तथा न ही परमेश्वर को स्मरण किया है। हे नानक! हम मंदकर्मी जीव हैं। मुझ शरणागत की लाज रखो॥ २॥ २९॥

आसा महला ५ ॥ तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही ॥ तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥ १ ॥ तुमरी ओट तुमारी आसा ॥ बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला ॥ नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥ २ ॥ ३० ॥

हे जगत के मालिक! तेरे बिना मेरा दूसरा कोई भी नहीं और तू ही मेरे मन में रहता है। हे प्रभु! जब तू मेरा साजन एवं साथी है तो फिर मेरे प्राण क्यों भयभीत हों?॥ १॥ हे नाथ! तुम ही

मेरी ओट एवं तुम ही मेरी आशा हो। बैठते-उठते, सोते-जागते, श्वास लेते अथवा खाते समय तुम मुझे कभी भी विस्मृत न हो॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! मुझे अपनी शरण में रखो, चूंकि यह दुनिया अग्नि का भयानक सागर है। हे नानक के सुखदाता सतिगुरु! हम तेरी ही संतान हैं॥ २॥ ३०॥

आसा महला ५ ॥ हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥ २ ॥ ३१ ॥

परमेश्वर ने अपने भक्तों को मोह-माया के जाल से बचा लिया है। मेरा मन प्रियतम-प्रभु के साथ मिल गया है और मेरा ताप विष सेवन करके मर गया है॥ १॥ रहाउ॥ राम नाम का गुणगान करने से मुझे सर्दी एवं गर्मी प्रभावित नहीं करते। प्रभु के चरण कमल का आश्रय प्राप्त करने से माया डायन का मेरे मन पर भी प्रभाव नहीं पड़ता॥ १॥ संतों की कृपा से ईश्वर मुझ पर कृपालु हो गया है और स्वयं मेरा सहायक बन गया है। नानक दुविधा एवं दुख को दूर करके गुणनिधान प्रभु के नित्य ही गुण गाता रहता है॥ २॥ ३१॥

आसा महला ५ ॥ अउखधु खाइओ हरि को नाउ ॥ सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥ १ ॥ तापु गइआ बचनि गुर पूरे ॥ अनंदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल सुखु पाइआ ॥ पारब्रहमु नानक मनि धिआइआ ॥ २ ॥ ३२ ॥

हे भाई! मैंने हरि-नाम रूपी औषधि खा ली है, जिससे मेरे दुःख का नाश हो गया है और आत्मिक सुख प्राप्त कर लिया है॥ १॥ पूर्ण गुरु के वचन द्वारा मेरे मन का संताप नष्ट हो गया है। मेरी समस्त चिन्ताएँ मिट गई हैं और आनंद प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! जिन्होंने अपने मन में परमात्मा को याद किया है, उन सभी जीव-जंतुओं ने सुख ही पाया है॥ २॥ ३२॥

आसा महला ५ ॥ बांछत नाही सु बेला आई ॥ बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥ १ ॥ ठंढी ताती मिटी खाई ॥ ओहु न बाला बूढा भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक दास साध सरणाई ॥ गुर प्रसादि भउ पारि पराई ॥ २ ॥ ३३ ॥

(हे बन्धु!) मृत्यु का वह समय आ गया है जिसे कोई भी प्राणी पसन्द नहीं करता। प्रभु के हुक्म बिना मनुष्य कैसे समझ सकता है चाहे उसे कितना भी समझाया जाए॥ १॥ हे भाई! पार्थिव शरीर को जलप्रवाह किया जाता है, अग्नि में जलाया जाता है अथवा मिट्टी में दफनाया जाता है परन्तु यह आत्मा न तो जवान होती है, न ही वृद्ध होती है॥ १॥ रहाउ॥ दास नानक ने साधु-संतों की शरण ली है, गुरु की कृपा से उसने मृत्यु के भय को पार कर लिया है॥ २॥ ३३॥

आसा महला ५ ॥ सदा सदा आतम परगासु ॥ साधसंगति हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ राम नाम निति जपि मन मेरे ॥ सीतल सांति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु नानक जा के पूरन करम ॥ सतिगुर भेटे पूरन पारब्रहम ॥ २ ॥ ३४ ॥ दूजे घर के चउतीस ॥

जो व्यक्ति साधु की संगति में मिलकर श्रीहरि के चरणों में निवास करता है, उसके मन में हमेशा के लिए (प्रभु-[illegible]ति का) प्रकाश हो जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! तू प्रतिदिन राम के नाम का जाप कर। इस तरह तुझे हमेशा के लिए शीतल, शांति एवं सुख प्राप्त होंगे और तेरे दुःख-क्लेश सब विनष्ट हो

जाएँगे॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! जिस जीवात्मा के पूर्ण भाग्य उदय होते हैं, उसे सच्चा गुरु मिल जाता है और (गुरु द्वारा) पूर्ण परब्रह्म भी मिल जाता है॥ २॥ ३४॥ दूसरे घर के चौंतीस॥

आसा महला ५ ॥ जा का हरि सुआमी प्रभु बेली ॥ पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा चरन संगि मेली ॥ सूख सहज आनंद सुहेली ॥ १ ॥ साधसंगि गुण गाइ अतोली ॥ हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥ २ ॥ ३५ ॥

जिस जीवात्मा का बेली जगत का स्वामी हरि-प्रभु है, उसका दुख-दर्द दूर हो जाता है और फिर कभी दुःखी नहीं होती॥ १॥ रहाउ॥ अपनी कृपा करके प्रभु उसे अपने चरणों से मिला लेता है और वह सहज सुख एवं आनंद प्राप्त कर लेती है तथा सदा के लिए सुखी होती है॥ १॥ साधसंगति के भीतर वह प्रभु का यशोगान करके अतुलनीय हो जाती है। हे नानक! हरि का ध्यान करने से वह मूल्यवान हो जाती है॥ २॥ ३५॥

आसा महला ५ ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥ सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै ग्रिह भीतरि वारे ॥ १ ॥ जनम मरन चूके सभि भारे ॥ मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ सम्हारे ॥ २ ॥ एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे ॥ जपि जपि होए सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥ ३ ॥ गहिर गंभीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे ॥ तुम्हरी क्रिपा ते गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥ ४ ॥ ३६ ॥

(हे बन्धु!) काम, क्रोध, मोह-माया का अभिमान एवं ईर्ष्या इत्यादि विकार मैंने जुए के खेल में हार दिए हैं। सत्य, संतोष, दया, धर्म एवं सच्चाई को मैंने अपने हृदय घर में प्रविष्ट कर लिया है॥१॥ इसलिए मेरे जन्म-मरण के तमाम बोझ उतर गए हैं। सत्संगति में शामिल होकर मेरा मन निर्मल हो गया है। पूर्ण गुरु ने एक क्षण में ही मेरा संसार-सागर से उद्धार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ मेरा मन सबकी चरण-धूलि हो गया है। हर कोई अब मुझे अपना प्यारा मित्र दिखाई देता है। मेरा ठाकुर प्रभु सब में बसा हुआ है। वह समस्त जीवों को दान देकर उनकी परवरिश करता है॥ २॥ प्रभु एक है और वह एक ही सब जीवों में बना रहता है। इस समूचे जगत का विस्तार उस एक ईश्वर का ही है। प्रभु का जाप एवं ध्यान करके सभी साधु पुरुष बन गए हैं। उस एक ईश्वर के नाम की आराधना करने से अनेकों का उद्धार हो गया है॥ ३॥ सृष्टि का मालिक गहरा, गंभीर एवं अनन्त है। प्रभु के अन्त का पारावर नहीं पाया जा सकता। हे प्रभु! तेरी कृपा से नानक तेरा गुणगान करता है और बार-बार तेरा ध्यान करके वह तुझे प्रणाम करता है॥ ४॥ ३६॥

आसा महला ५ ॥ तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इहु सभु तेरा आकारु ॥ किआ हम जंत करह चतुराई जां सभु किछु तुझै मझारि ॥ १ ॥ मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि ॥ देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि ॥ अनदु करै सासि सासि सम्हारै ना पोहै अगनारि ॥ २ ॥ पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥ चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥ ३ ॥ ग्रिहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥ जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु सम्हारि ॥ ४ ॥ ३७ ॥

हे सबके मालिक ! तू अनन्त, अव्यक्त एवं अगोचर है और यह समूचा जगत तेरा आकार है! हम जीव भला क्या चतुराई कर सकते हैं, जब सबकुछ तुझ में ही है॥ १॥ हे मेरे सतगुरु ! अपने बालक की अपनी जगत लीला के अनुसार रक्षा कीजिए। हे मेरे अगम्य, अपार ठाकुर ! मुझे सुमति प्रदान कीजिए ताकि मैं सदा तेरा गुणगान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ जैसे जननी के गर्भ में प्राणी रहता तो है किन्तु प्रभु-नाम के सहारे जीवित बना रहता है। वह गर्भ में आनन्द करता है और श्वास-श्वास से प्रभु को याद करता है और जठराग्नि उसे स्पर्श नहीं करती॥ २॥ हे प्राणी ! तू पराया-धन, पराई नारी एवं पराई निन्दा में लगाए हुए स्नेह को त्याग दे। पूर्ण गुरु का सहारा लेकर अपने अन्तर में प्रभु के चरण कमल की उपासना कर॥ ३॥ घर, मन्दिर महल जो कुछ भी दिखाई देता है, इनमें से कोई भी तेरे साथ नहीं जाना। जब तक तू इस घनघोर कलियुग में जीवित है, हे नानक ! तू प्रभु के नाम का ध्यान करता रह॥ ४॥ ३७॥

आसा घरु ३ महला ५ ੧ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

राज मिलक जोबन ग्रिह सोभा रूपवंतु जुोआनी ॥ बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी ॥ आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥ १ ॥ काहे एक बिना चितु लाईऐ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि जिते पवाड़े ॥ हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े ॥ आइआ हुकमु पारब्रहम का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥ २ ॥ करम धरम जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥ उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥ नांगा आइआ नांगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥ ३ ॥ संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥ मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा ॥ गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३८ ॥

राज्य, सम्पति, यौवन, घर, शोभा, रूपवंत जवानी, अत्याधिक धन, हाथी, घोड़े और लाखों रुपयों के मूल्य वाले जवाहरात लाल इत्यादि आगे ईश्वर के दरबार में किसी काम नहीं आते। अभिमानी मनुष्य इसे (इहलोक) यहीं छोडकर चला जाता है॥ १॥ एक ईश्वर के अतिरिक्त तुम अपना मन क्यों किसी दूसरे के साथ लगाते हो ? उठते-बैठते, सोते-जागते सदा सदा ही हरि का ध्यान करते रहना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ यदि कोई मनुष्य महा विचित्र सुन्दर अखाड़े जीतता है, यदि वह रणभूमि में जाकर युद्ध जीतता है और अपने मुँह से वह इस प्रकार व्यर्थ बकवास करता है कि मैं हर किसी को जान से मार, बांध एवं मुक्त कर सकता हूँ परन्तु जब परमात्मा का हुक्म आता है तो वह सबकुछ छोडकर एक दिन संसार से चला जाता है॥ २॥ मनुष्य अनेक युक्तियों द्वारा कर्म-धर्म करता है परन्तु रचयिता प्रभु को नहीं जानता। वह दूसरों को उपदेश करता है परन्तु खुद अनुसरण नहीं करता। वह शब्द के रहस्य को नहीं पहचानता। वह नग्न ही इस जगत में आया था और नग्न ही चला जाएगा। उसका धर्म-कर्म हाथी स्नान की तरह व्यर्थ है जैसे हाथी (स्नान करने के पश्चात् अपने ऊपर) मिट्टी डाल लेता है॥ ३॥ हे संतजनो, हे सज्जनो ! हे मित्रो ! सभी सुन लो यह समूचा जगत प्रसार झूठा है। मेरा-मेरा करते हुए अनेक मनुष्य (संसार सागर में) डूब गए हैं और मूर्ख खप-खप कर मर गए हैं। हे नानक ! गुरु से मिलकर मैंने प्रभु नाम का ध्यान किया है और सत्यनाम द्वारा मेरा उद्धार हो गया है॥ ४॥ १॥ ३८॥

रागु आसा घरु ५ महला ५ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध ॥ कोऊ जागै हरि जनु ॥ १ ॥ महा मोहनी मगन प्रिअ प्रीति प्रान ॥ कोऊ तिआगै विरला ॥ २ ॥ चरन कमल आनूप हरि संत मंत ॥ कोऊ लागै साधू ॥ ३ ॥ नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि ॥ वडभागे किरपा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३६ ॥

जगत के धन्धों में अन्धी हो चुकी दुनिया माया के भ्रम में सोई हुई है। लेकिन कोई विरला प्रभु का भक्त ही जागता है॥ १॥ दुनिया महा-मोहिनी माया के मोह में मग्न है और इस माया का प्रेम अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। कोई विरला मनुष्य ही माया के आकर्षण को त्यागता है॥ २॥ प्रभु के चरण कमल अनूप हैं और हरि के संतों का मंत्र भी सुन्दर है। कोई विरला साधु ही उनके साथ संलग्न होता है॥ ३॥ हे नानक! यदि किसी भाग्यशाली पुरुष पर भगवान की कृपा हो जाए तो सत्संगति में आकर ज्ञान के रंग में रंगकर वह जागता रहता है॥ ४॥ १॥ ३९॥

੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥ जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई ॥ करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥ १ ॥ तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि ॥ मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रितु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइआ ॥ त्रिपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥ २ ॥ जा कउ टेक तुम्हारी सुआमी ता कउ नाही चिंता ॥ जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥ ३ ॥ भरम मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ ॥ वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४० ॥

हे स्वामी! जो कुछ तुझे उपयुक्त लगता है, वही हमें मंजूर है और तेरी इच्छा ही हमारे हृदय में सहज सुख प्रदान करती है। तू सबकुछ करने एवं करवाने में समर्थ है, हे प्रभु! तेरे अलावा दूसरा समर्थ कोई नहीं॥ १॥ हे प्रभु! तेरे सेवक प्रेम से तेरा गुणगान करते हैं। हे नाथ! जो कुछ तुम करते अथवा करवाते हो, वही तेरे भक्तों हेतु सर्वोत्तम सलाह, इरादा एवं बुद्धिमत्ता है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे प्रियतम! तेरा नाम अमृत के तुल्य है और साधसंगति में मैंने इस अमृत रस को प्राप्त किया है। जो जीव सुखनिधान हरि का गुणगान करते हैं वे पूर्ण होकर तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं॥ २॥ हे स्वामी! जिसे तेरा सहारा मिल गया है, उसे कोई चिन्ता नहीं रहती। हे भगवान्! जिस पर तुम अपनी दया करते हो, वे (नाम-धन से) भले साहूकार एवं भाग्यशाली हैं॥ ३॥ हे दुनिया बनाने वाले! जब से मैंने तेरे दर्शन किए हैं, (मेरी) दुविधा, मोह एवं छल-कपट सब नष्ट हो गए हैं। हे नानक! मैंने सत्य नाम को अपनी दिनचर्या बना लिया है और मैं हरि नाम के रंग में समा गया हूँ॥ ४॥ १॥ ४०॥

आसा महला ५ ॥ जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै ॥ ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइ पचावै ॥ १ ॥ निंदकि अहिला जनमु गवाइआ ॥ पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरतु पइआ निंदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा ॥ तहा बिगूता जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा ॥ २ ॥ निंदक की गति कतहूं नाही खसमै एवै भाणा ॥ जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥ ३ ॥ संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई ॥ कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीए रुड़ाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४१ ॥

निन्दक व्यक्ति दूसरों के जन्म-जन्मांतरों के विकारों की मैल धोता है और अपने किए कर्मों का फल भोगता है। यहाँ (इहलोक में) उसे सुख नहीं और न ही उसे प्रभु के दरबार में निवास मिलता है। उसे यमपुरी में पीड़ित किया जाता है॥ १॥ निन्दा करने वाला अपना मूल्यवान मानव-जीवन व्यर्थ ही गंवा लेता है। वह किसी भी बात में सफल नहीं हो सकता और आगे भी उसे कोई स्थान नहीं मिलता॥ १॥ रहाउ॥ बेचारे निन्दक को अपने किए पूर्व-जन्मों के कर्मों का फल मिलता है लेकिन बेचारे निन्दक के भी वश की बात नहीं। वह वहाँ नष्ट हुआ है, जहाँ उसकी कोई रक्षा नहीं कर सकता। वह किसके समक्ष पुकार करे ?॥२॥ निन्दक की कहीं भी गति नहीं होती, प्रभु की यही इच्छा है। ज्यों ज्यों संतों की निन्दा होती है, त्यों त्यों संत मन में सुख अनुभव करते हैं॥ ३॥ हे स्वामी! संतों को तेरा ही सहारा है और तू ही संतों का सहायक है। हे नानक! संतों की प्रभु (स्वयं) रक्षा करता है और निन्दकों को निन्दा की बाढ़ में बहा देता है॥ ४॥ २॥ ४१॥

आसा महला ५ ॥ बाहरु धोइ अंतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए ॥ ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥ १ ॥ गोविंद भजन की मति है होरा ॥ वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै ॥ बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥ २ ॥ उघरि गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइआ ॥ अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥ ३ ॥ कूड़ि कपटि बंचि निंमुनीआदा बिनसि गइआ ततकाले ॥ सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४२ ॥

जो व्यक्ति बाहर से शरीर धो लेता है किन्तु भीतर से उसका मन मैला रहता है, वह लोक-परलोक दोनों गंवा लेता है। मृत्युलोक में वह काम, क्रोध एवं मोह में लीन रहता है और आगे परलोक में फूट-फूट कर अश्रु बहाता है॥ १॥ गोविन्द के भजन की मति अन्य प्रकार की होती है। साँप का बिल नष्ट करने से साँप नहीं मरता, बहरा मनुष्य प्रभु का नाम नहीं सुनता, चाहे वह जोर-जोर से चिल्लाता रहे॥ १॥ रहाउ॥ वह जीवनयापन हेतु धन कमाने का उद्यम त्याग देता है और वह प्रभु भक्ति का महत्व भी नहीं जानता। वह वेदों एवं शास्त्रों के उपदेश को छोड़ने लग गया है और परम तत्व प्रभु-मिलाप की विधि को नहीं पहचानता॥ २॥ जब कोई खोटा सिक्का सर्राफों की दृष्टि में आता है तो उसका खोट स्पष्ट दिखाई देता है, वैसे ही कोई प्राणी अपने भीतरी अवगुण छिपा नहीं सकता, अन्तर्यामी प्रभु सबकुछ जानता है॥ ३॥ झूठ, कपट एवं छल में लीन बिना बुनियाद का मनुष्य तत्काल ही नष्ट हो जाता है। (हे भाई!) नानक ने यह सब सत्य ही कहा है। अपने हृदय में इस तथ्य को देख एवं स्मरण कर॥ ४॥ ३॥ ४२॥

आसा महला ५ ॥ उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥ पंच जना ले वसगति राखै मन महि एकंकारे ॥ १ ॥ तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥ रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥ राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥ २ ॥ कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥ मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥ ३ ॥ जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥ ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४३ ॥

नाम-सिमरन का उद्यम करने से मन निर्मल हो जाता है और फिर मनुष्य अपना अहंकार छोड़कर प्रभु की रज़ा में चलने का नाच करता रहता है। ऐसा मनुष्य पाँच विकारों-काम, क्रोध,

मोह, लोभ एवं अभिमान को वश में रखता है और अपने मन में एक ईश्वर को याद करता रहता है॥ १॥ हे प्रभु ! तेरा भक्त तेरी खुशी में नाचता एवं तेरा गुणगान करता है। वह प्रभु नाम के रबाब, पखावज, तबला, घुंघरु (इत्यादि वाद्ययंत्र) के माध्यम से अनहद शब्द (सुनता एवं) बजाता है॥ १॥ रहाउ॥ सर्वप्रथम, प्रभु-भक्त अपने मन को उपदेश देता है फिर दूसरों को समझा कर रिझाता है। वह अपने हृदय में राम नाम का जाप करता है और फिर मुख से दूसरों को वह जाप सुनाता है॥ २॥ वह संतों को मिलकर उनके चरण धोता है। संतों की चरण-धूलि वह अपने शरीर पर लगाता है। वह अपना मन-तन गुरु के समक्ष समर्पित कर देता है और सत्य (नाम) पदार्थ (धन) को प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ जो भी मनुष्य श्रद्धापूर्वक गुरु के दर्शन करता है और उससे हरिनाम सुनता है, उसका जन्म-मरण का दुःख भाग जाता है। हे नानक ! ऐसा नृत्य नरक मिटा देता है और गुरुमुख हमेशा जागता रहता है॥ ४॥ ४॥ ४३॥

आसा महला ५ ॥ अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे ॥ पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥ १ ॥ घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥ अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाझु थूनीआ छपरा थाम्हिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे ॥ बिनु जड़ीए लै जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥ २ ॥ दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे ॥ मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु नैन दिखालनु धाइआ रे ॥ ३ ॥ सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥ कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४४॥

हे भाई ! नामामृत की अनुकंपा से अधम चाण्डाल वृत्ति ब्राह्मणी बन गई है और एक शूद्र जाति से कुलीना बन गई है। मेरी लोभ वृत्ति पहले जो पाताल से लेकर आकाश तक सारे जगत के पदार्थ लेकर भी भूखी रहती थी अब उसकी तृष्णाग्नि बुझ गई है॥ १॥ संतोषहीन वृत्ति घर की बिल्ली को अब गुरु से अलग ही उपदेश मिला है और वह दुनिया के पदार्थों रूपी चूहे को देखकर भयभीत हो जाती है। गुरु ने उसके अहंकार रूपी शेर को विनम्रता रूपी बकरी के अधीन कर दिया है। उसकी तमोगुणी इन्द्रियों रूपी कुत्तों को सतोगुणी दिशा में लगा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! प्रभु-भक्त का चित्त रूपी छप्पर सांसारिक पदार्थों की तृष्णाओं की टेक के बिना थम गया है। उसके भटकते चित ने (ईश्वर चरणों में) निवास प्राप्त कर लिया है। स्वर्णकारों के बिना ही चित्त का रत्न-जड़ित आभूषण तैयार हो गया तथा उस चित-आभूषण में प्रभु-नाम का अद्भुत नग जड़ दिया गया है॥ २॥ हे भाई ! शिकायतकर्ता न्याय कदापि प्राप्त नहीं कर सकता किन्तु अब प्रभु में लीन होने से शांतचित्त को न्याय मिलने लगा। ईश्वर नाम की अनुकंपा से मनुष्य को लौकिक पदार्थ अब ऐसे दिखने लगे हैं मानो वह मूल्यवान गलीचों पर बैठा हुआ मृतक है जो अब किसी को भी नेत्र नहीं दिखा सकता॥ ३॥ वह मूर्ख है जो कहता है कि मैं जानता हूँ। जानने वाला छिपा हुआ नहीं रहता। हे नानक ! गुरु ने मुझे अमृतरस पिलवाया है। प्रभु के प्रेम-रस में भीगकर अब मैं आनंदित हो गया हूँ॥ ४॥ ५॥ ४४॥

आसा महला ५ ॥ बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ ॥ होए क्रिपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥ १ ॥ गुरसिख राखे गुर गोपालि ॥ काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥ सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥ २ ॥ भगति प्रेम परम पदु पाइआ साधसंगि दुख नाठे

॥ छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥ ३ ॥ अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥ प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४५ ॥

परमात्मा ने मेरे (माया संबंधी) बन्धन काट दिए हैं, मेरे अवगुण भुला दिए हैं और इस प्रकार अपने विरद् की पालना की है। वह माता-पिता की भाँति मुझ पर कृपालु हुए हैं और उन्होंने अपनी संतान की भाँति मेरा पालन-पोषण किया है॥ १॥ गुरु-परमेश्वर ने अपने सिक्खों की रक्षा की है और अपनी दया-दृष्टि से देखकर उन्हें विषम संसार-सागर में से बाहर निकाल लिया है॥ १॥ रहाउ॥ जिस परमात्मा का सुमिरन करने से हमें मृत्यु से मुक्ति मिल जाती है और लोक-परलोक में सुख मिलता है, हे भाई ! प्रत्येक सांस एवं ग्रास द्वारा प्रभु नाम का रसना से जाप जपते रहना चाहिए और नित्य ही उसका गुणगान करना चाहिए॥ २॥ प्रभु की प्रेम-भक्ति से मुझे परम पद मिल गया है और साधु की संगति से दुख दूर हो गए हैं। मैंने निर्मल हरि नाम रूपी धन अपनी गांठ में बांध लिया है। इस हरि नाम रूपी धन का कभी नाश नहीं होता, न ही यह कहीं गुम होता है और न ही इसे चोर इत्यादि का डर होता है॥ ३॥ लोक-परलोक में रक्षा करने वाला प्रभु अन्तकाल तक सहायक होता है। प्रभु ही मेरे प्राण, मित्र, शुभचिंतक एवं धन-दौलत है। हे नानक ! मैं सदा ही उस पर कुर्बान जाता हूँ॥ ४॥ ६॥ ४५॥

आसा महला ५ ॥ जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥ एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥ १ ॥ बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥ रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥ ३ ॥ जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥ नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ ४६ ॥

हे परमपिता ! जब तू मेरा मालिक है तो फिर मुझे डर कैसा ? तेरे अलावा मैं किसकी स्तुति करूँ? जब एक तू ही मेरा है, तो मेरे पास सब कुछ है तेरे सिवाय मेरा अन्य कोई नहीं॥ १॥ हे बाबा ! मैंने देख लिया है कि यह संसार विष रूप है। हे गुसाई ! मेरी रक्षा कीजिए, तेरा नाम ही मेरे जीवन का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ हे नाथ ! तुम मेरे मन की हरेक अवस्था जानते हो। इसलिए, मैं किसके पास जाकर इसे कहूँ एवं सुनाऊँ ? नाम के बिना समूचा जगत बावला हो गया है। यदि प्रभु-नाम मिल जाए तो यह सुख पाता है॥ २॥ मैं क्या कहूँ ? मैं अपनी अवस्था किसे बताऊँ ? जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ, वह मैं अपने प्रभु जी के पास कहता हूँ। हे मालिक ! जो कुछ तुमने किया है, जगत में सब कुछ तेरा किया ही हो रहा है। मुझे सदैव ही तेरी आशा है॥ ३॥ यदि तुम मान-प्रतिष्ठा प्रदान करते हो तो यह तेरी मान-प्रतिष्ठा है। लोक-परलोक में मैं तुझे ही याद करता हूँ। नानक का प्रभु सदैव ही सुखदाता है। मेरा बल एक तेरा ही नाम है॥ ४॥ ७॥ ४६॥

आसा महला ५ ॥ अंम्रितु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महा रसु जनहि पीओ ॥ जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत मै जीओ ॥ सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते भइओ साधसंगु एहु काजु तुम्ह आपि कीओ ॥ दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीओ ॥ २ ॥ सुख निधान नामु प्रभ तुमरा

एहु अबिनासी मंतु लीओ ॥ करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥ ३ ॥ धंनु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ ॥ धंनु सु कलिजुगु साधसंगि कीरतनु गाईऐ नानक नामु अधारु हीओ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ४७ ॥

हे मेरे ठाकुर! तेरा नाम अमृत है और यह महा रस तेरे सेवक ने पान किया है। मेरे जन्म-जन्मांतरों के पापों का भयानक बोझ नाश हो गया है और द्वैतवाद की दुविधा भी चली गई है॥ १॥ हे मालिक! तेरे दर्शन करके मैं जीवित रहता हूँ। हे मेरे सच्चे गुरु! तेरे वचन सुनने से मेरा मन एवं तन शीतल हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर! तेरी कृपा से मुझे साधसंगत मिली है और यह शुभ कार्य तूने स्वयं ही किया है। मैंने तेरे चरण कसकर पकड़ लिए हैं और माया का विष सहज ही दूर हो गया है॥ २॥ हे प्रभु! तेरा नाम सुखों का भण्डार है। यह अमर मंत्र मैंने गुरदेव से प्राप्त किया है। अपनी कृपा करके सतिगुरु ने मुझे यह (मंत्र) प्रदान किया है और मेरा ताप-संताप एवं शत्रु नाश हो गए हैं॥ ३॥ यह मानव-शरीर जो मुझे मिला है वह धन्य है, क्योंकि इसकी बदौलत ही मेरे प्रभु ने मुझे अपने साथ मिला लिया है। यह कलियुग का समय धन्य है जिसमें साधसंगत में प्रभु का भजन किया जाता है। हे नानक! प्रभु का नाम ही मेरे हृदय का आधार है॥ ४॥ ८॥ ४७॥

आसा महला ५ ॥ आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना ॥ भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रहम भगवाना ॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ ॥ काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अंम्रितु मुखि नामु दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए ॥ अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥ २ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे ॥ ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥ ३ ॥ गुण निधान साहिब मनि मेला ॥ सरणि पइआ नानक सोहेला ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४८ ॥

सबकुछ पहले से ही नियत (किया) हुआ है। सोच-विचार, ज्ञान के द्वारा इससे अधिक क्या जाना जा सकता है ? परब्रह्म भगवान ने अपने बालक की भूल-चूक को क्षमा कर दिया है॥ १॥ मेरा सतिगुरु मुझ पर सदैव ही दयालु है। उसने मुझ दीन को बचा लिया है। उसने मेरा रोग काट दिया है और मेरे मुँह में हरि का नामामृत डाल दिया है जिससे मुझे महा सुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ (हे बन्धु!) सतिगुरु ने मेरे अनेक पाप काट दिए हैं, मेरे (विकारों के) बन्धन काट दिए हैं और मुझे मोक्ष मिल गया है। गुरु ने मेरी भुजा पकड़कर मुझे महा भयानक अंधकूप से बाहर निकाल लिया है॥ २॥ मैं निडर हो गया हूँ, मेरे तमाम भय नाश हो गए हैं। सारी दुनिया की रक्षा करने वाले ने मुझे बचा लिया है। हे मेरे प्रभु! मुझ पर तेरी ऐसी अनुकंपा हुई है कि मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं॥ ३॥ हे नानक! गुणनिधान प्रभु का मेरे हृदय में मिलन हो गया है और उसकी शरण लेने से मैं सुखी हो गया हूँ॥ ४॥ ६॥ ४८॥

आसा महला ५ ॥ तूं बिसरहि तां सभु को लागू चीति आवहि तां सेवा ॥ अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥ १ ॥ चीति आवै तां सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥ बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि ॥ जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥ २ ॥ ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥ ३ ॥ तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ

पिंडु सभु तेरा ॥ कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ४६ ॥

हे जग के रचयिता! जब तू भूल जाता है तो हर कोई मेरा शत्रु बन जाता है परन्तु जब मैं तेरा नाम याद करता हूँ तो सभी मेरी सेवा-सत्कार करते हैं। हे सत्य के पुंज, अलक्ष्य, अभेद परमात्मा! तेरे बिना मैं किसी को नहीं जानता॥ १॥ हे साहिब! जब मैं तुझे चित्त में याद करता हूँ तो तुझे हमेशा ही दयालु पाता हूँ। बेचारे लोग मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं ? जब सभी जीव तेरे ही पैदा किए हुए हैं तो फिर बतलाओ मैं किसे बुरा अथवा किसे भला कह सकता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी! तेरी ही टेक है, तू ही मेरा आधार है। अपना हाथ देकर तुम मेरी रक्षा करते हो। जिस भक्त पर तेरी कृपा है, उसे कोई दुःख-क्लेश निगल नहीं सकता॥ २॥ हे प्रभु जी! जो बात तेरे अपने मन में अच्छी लगती है, वही मेरे लिए सुख है, वही मेरे लिए मान-प्रतिष्ठा है। हे मालिक! तुम चतुर हो, तुम सदैव ही मेहरबान हो। तेरा नाम प्राप्त करके मैं सुख भोगता हूँ॥ ३॥ तेरे समक्ष मेरी यही प्रार्थना है मेरे प्राण एवं शरीर सभी तेरी देन हैं। नानक का कथन है कि हे मालिक! सब तेरी बड़ाई है, मेरा तो कोई नाम तक नहीं जानता॥ ४॥ १०॥ ४६॥

आसा महला ५ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी साधसंगि हरि पाईऐ ॥ खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥ १ ॥ मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे ॥ पारब्रहमु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना ॥ सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अंम्रितु हरि रसना ॥ २ ॥ तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बंधन बांधिआ ॥ गुर परसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥ ३ ॥ राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥ जीउ पिंडु सभु तुम्हरा दाते नानक सद कुरबाणे ॥ ४ ॥ ११ ॥ ५० ॥

हे अन्तर्यामी प्रभु! ऐसी कृपा करो तांकि साधसंगत में रहने से हरि मिल जाए। यदि अज्ञानता के कपाट खोलकर प्रभु अपना दर्शन कराता है तो प्राणी दोबारा जन्मों के चक्र में नहीं पड़ता॥ १॥ यदि प्रियतम स्वामी से मिलन हो जाए तो अपने सभी दुःख दूर कर लूँ। जिन्होंने अपने हृदय में परमात्मा की आराधना की है, उनकी संगति करने से शायद मैं भी भवसागर से पार हो जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ यह संसार एक महा भयानक जंगल एवं अग्नि का सागर है, जिसमें प्राणी हमेशा हर्ष-शोक में बसते हैं। सतिगुरु को मिलने से मन निर्मल हो गया है और रसना हरि-नामामृत का जाप करती है॥ २॥ हे भाई! इस तन एवं धन को अपना मानकर मनुष्य (मोह-माया के) मधुर-मीठे बन्धनों में बंधे रहते हैं। लेकिन जिन लोगों ने हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना की है, वे गुरु की दया से बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर गए हैं॥ ३॥ रक्षक प्रभु उनकी रक्षा करता है, जो अपने प्रभु को भले लगते हैं। नानक का कथन है कि हे दाता प्रभु! यह आत्मा एवं शरीर सब तेरा दिया हुआ है, मैं तुझ पर सदैव कुर्बान हूँ॥ ४॥ ११॥ ५०॥

आसा महला ५ ॥ मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री ॥ महा मोहनी तुधु न विआपै तेरा आलसु कहा गइओ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु गाखरो संजमि कउन छुटिओ री ॥ सुरि नर देव असुर त्रै गुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥ १ ॥ दावा अगनि बहुतु त्रिण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ॥ ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ॥ २ ॥ काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री ॥ महा मंत्रु गुर हिरदै बसिओ अचरज नामु सुनिओ

री ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥ प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ॥ ४ ॥ १२ ॥ ५१ ॥

हे जीव रूपी नारी ! तुझ पर कौन-सी करुणा-दृष्टि हुई है कि तू मन को मैला करने वाली मोह की नींद से छूट गई है। महा मोहिनी तुझे प्रभावित नहीं करती, तेरा आलस्य किधर चला गया है ?॥ १॥ रहाउ॥ किस संयम के माध्यम से तुझे दुखदायी काम, क्रोध एवं अहंकार से छुटकारा मिल गया है ? हे बहन ! भद्रपुरुष, देव, दैत्य समस्त त्रिगुणात्मक जीव-समूचा संसार ही इन्होंने लूट लिया है॥ १॥ हे सखी ! जब जंगल को अग्नि लगती है तो बहुत सारा घास-फूस जल जाता है, कोई विरला ही हरित पौधा बचता है। मेरा स्वामी ऐसा सामर्थ्य है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। उसकी उपमा कोई कह नहीं सकता॥ २॥ काजल भरी कोठरी में तू काली नहीं हुई। तेरा रंग अपितु पवित्र बन गया है। गुरु का महामंत्र (हरि-मंत्र) मेरे हृदय में बस गया है और मैंने आश्चर्यजनक नाम श्रवण किया है॥ ३॥ प्रभु ने अपनी कृपा करके मुझ पर दया-दृष्टि की है और मुझे अपने चरणों से लगा लिया है। हे नानक ! प्रेम भक्ति से मैंने साधुओं की संगति में बने रहने से सुख प्राप्त किया है॥ ४॥ १२॥ ५१॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥ लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥ सुरिजन भानी तां मनु मोहिआ ॥ १ ॥ कवन बनी री तेरी लाली ॥ कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥ तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥ २ ॥ तूं सतवंती तूं परधानि ॥ तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥ ३ ॥ प्रीतम भानी तां रंगि गुलाल ॥ कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥ ४ ॥ सुनि री सखी इह हमरी घाल ॥ प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ५२ ॥

तेरे शरीर पर लाल रंग का वस्त्र बड़ा सुन्दर लगता है। जब तू साजन प्रभु को अच्छी लगने लग गई तो उसका मन मोहित हो गया॥ १॥ तेरे मुख पर यह लाली कैसे बन गई है ? किस रंग के प्रभाव से तू गुलाल के रंग की तरह लाल हो चुकी है॥ १॥ रहाउ॥ तू बहुत सुन्दर है और तू ही सुहागिन है। तेरे हृदय घर में प्रियतम-प्रभु बस गया है और तेरे हृदय घर के भाग्य उदय हो गए हैं॥ २॥ तुम सत्यवती हो और तुम ही सर्वश्रेष्ठ हो। तुम अपने प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगती हो और तुम सर्वश्रेष्ठ ज्ञान वाली हो॥ ३॥ (जीव रूपी नारी कहती है) मैं प्रियतम-प्रभु को भली लगती हूँ इसलिए मैं गहरे प्रेम रंग में रंग गई हूँ। हे नानक ! परमेश्वर ने मुझे दया-दृष्टि से देखा है। हे मेरी सखी ! सुन, केवल यही मेरी साधना है। प्रभु स्वयं ही श्रृंगारने वाला एवं संवारने वाला है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ १॥ ५२॥

आसा महला ५ ॥ दूखु घनो जब होते दूरि ॥ अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥ १ ॥ चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि आनि प्रिअ सेज धरी ॥ काणि कढन ते छूटि परी ॥ २ ॥ मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥ अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥ ३ ॥ मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥ थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५३ ॥

हे सखी ! जब मैं हरि-चरणों से दूर थी तो मुझे बहुत दुख होता था। अब मालिक की उपस्थिति में मुझे नाम का उपदेश मिला है॥ १॥ मेरी सखियों एवं सहेलियों का शिकवा मिट गया है। मेरी दुविधा दूर हो गई है, गुरु ने मुझे मेरे प्रियतम-प्रभु से मिला दिया है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे प्रियतम-प्रभु ने समीप आकर मुझे सेज पर बिठा दिया है और मैं लोगों के आश्रय से मुक्त हो गई

हूँ॥ २॥ मेरे मन मन्दिर में ब्रह्म-शब्द का उजाला है। मेरा पति-प्रभु आनंद विनोदी है॥ ३॥ मेरे माथे पर भाग्य होने के कारण मेरा पति-प्रभु मेरे हृदय-घर में आ गया है। हे नानक ! मुझे अटल सुहाग मिल गया है॥ ४॥ २॥ ५३॥

आसा महला ५ ॥ साचि नामि मेरा मनु लागा ॥ लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥ १ ॥ बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥ अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुख की बात सगल सिउ करता ॥ जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥ २ ॥ दीसि आवत है बहुतु भीहाला ॥ सगल चरन की इहु मनु राला ॥ ३ ॥ नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥ अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५४ ॥

मेरा मन सत्यनाम में लग गया है। दुनिया के लोगों के साथ मेरा उतना ही मेल-मिलाप है जितने व्यवहार की जरुरत है॥ १॥ मेरा संबंध केवल देखने को ही है और सब के साथ प्रसन्न हूँ। जैसे कमल का फूल जल में निर्लिप्त रहता है वैसे ही मैं संसार से निर्लिप्त रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मुख द्वारा मैं सबके साथ बातचीत करता हूँ। परन्तु अपने प्रभु को मैं अपने हृदय से लगाकर रखता हूँ॥ २॥ चाहे लोगों को मेरा मन शुष्क दिखाई देता है परन्तु मेरा मन सबकी चरण-धूलि बना रहता है॥ ३॥ हे नानक ! इस सेवक को पूर्ण गुरु की प्राप्ति हो गई है। भीतर एवं बाहर अब उन्होंने मुझे एक ईश्वर दिखा दिया है॥ ४॥ ३॥ ५४॥

आसा महला ५ ॥ पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ नाम बिना माटी संगि रलीआ ॥ १ ॥ कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥ सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥ २ ॥ रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ ॥ हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥ ३ ॥ माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५५ ॥

जवानी के जोश में मनुष्य अनेक आनन्द भोगता है। परन्तु प्रभु-नाम के बिना अन्त में मिट्टी के साथ मिल जाता है॥ १॥ (हे भाई!) मनुष्य कानों में कुण्डल एवं सुन्दर वस्त्र पहनता है। कोमल सुखदायक बिस्तरों पर सोता है परन्तु वह अपने चित्त में इन सुख के साधनों का अभिमान करता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य के पास सवारी के लिए हाथी एवं सिर पर सोने का छत्र झूल रहा है परन्तु भगवान की भक्ति के बिना वह धरती के नीचे दफना दिया जाता है॥ २॥ इन्सान चाहे रूपवान सुन्दरियों एवं अनेक स्त्रियों के साथ भोग-विलास करता है परन्तु हरि रस के बिना ये सभी आस्वादन फीके हैं॥३॥ यह माया तो धोखेबाज ही है और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इत्यादि विकार विष समान हैं। नानक का कथन है कि हे दया के सागर, हे सर्वशक्तिमान प्रभु ! मैं तेरी ही शरण में हूँ॥ ४॥ ४॥ ५५॥

आसा महला ५ ॥ एकु बगीचा पेड घन करिआ ॥ अंम्रित नामु तहा महि फलिआ ॥ १ ॥ ऐसा करहु बीचारु गिआनी ॥ जा ते पाईऐ पदु निरबानी ॥ आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अंम्रितु है भाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंचनहारे एकै माली ॥ खबरि करतु है पात पत डाली ॥ २ ॥ सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥ सगली फूली निफल न काई ॥ ३ ॥ अंम्रित फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ ॥ नानक दास तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५६ ॥

यह दुनिया एक बगीचा है जिसमें बहुत सारे पेड़ लगे हुए हैं। पेड़ों में नामामृत रूपी फल लगा हुआ है॥ १॥ हे ज्ञानी ! कोई ऐसा विचार करो, जिससे तुझे निर्वाण पद प्राप्त हो। हे भाई !

बगीचे के आसपास विष के कुण्ड हैं और इसके बीच अमृत भी मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥ इसे सींचने वाला गुरु-परमात्मा रूपी एक बागवां है। वह हरेक पत्ते एवं डाल की रखवाली करता है॥२॥ यह बागवां सारी वनस्पति लाकर यहाँ लगाता है। सबको फल लगता है, कोई भी फल के बिना नहीं॥ ३॥ हे दास नानक! जिसने गुरु से नामामृत का फल प्राप्त किया है, वह माया रूपी भवसागर से पार हो गया है॥ ४॥ ५॥ ५६॥

आसा महला ५ ॥ राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥ १ ॥ सरब सुखा बने तेरै ओल्है ॥ भ्रम के परदे सतिगुर खोल्हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥ सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥ २ ॥ जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ नामि रता सोई निरबाणु ॥ ३ ॥ जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥ भनति नानक ता का पूर खजाना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५७ ॥

हे सत्य के पुंज! तेरे नाम ने ही मुझे राज-सुख प्रदान किए हैं। तेरा कीर्ति-गान करने से मुझे योग प्राप्त हो गया है॥ १॥ तेरी शरण में मुझे सर्व सुख हासिल होता है। सतिगुरु ने भ्रम के पर्दे खोल दिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर! तेरी रज़ा को समझकर मैं आत्मिक आनंद भोगता हूँ। सतगुरु की सेवा करने से मुझे महानिर्वाण पद प्राप्त हो गया है॥ २॥ जो तुझे समझता है, वह चाहे गृहस्थी हो अथवा त्यागी तेरे द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है। जो मनुष्य हरि-नाम में अनुरक्त है, वही संन्यासी है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे मेरे मालिक! जिसे तेरा नाम-भण्डार मिल गया है, उसके भण्डार सदैव भरे रहते हैं॥ ४॥ ६॥ ५७॥

आसा महला ५ ॥ तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ पंडित पूछउ त माइआ राते ॥ १ ॥ सो असथानु बतावहु मीता ॥ जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पाप पुंन वीचार ॥ नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥ २ ॥ गिरसत महि चिंत उदास अहंकार ॥ करम करत जीअ कउ जंजार ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ ॥ नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥ ४ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ इहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७ ॥ ५८ ॥

हे सज्जन! यदि मैं किसी तीर्थ पर जाता हूँ तो वहाँ मुझे 'मैं' 'मैं' अहंकार करते हुए बहुत सारे लोग मिलते हैं। यदि मैं पण्डितों बाबत पूछता हूँ तो वे भी माया में ही लीन देखता हूँ॥ १॥ हे मित्र! मुझे वह पावन स्थान बताओ जहाँ नित्य भगवान का भजन-कीर्तन होता है॥ १॥ रहाउ॥ शास्त्र एवं वेद पाप-पुण्य का विचार वर्णन करते हैं और कहते हैं कि मनुष्य पाप-पुण्य कर्म करने से ही बार-बार नरक-स्वर्ग में जन्म लेता है॥ २॥ गृहस्थ जीवन में चिन्ता है और विरक्त में अहंकार है। कर्मकाण्डों के संस्कार करना तो जीव हेतु एक जंजाल ही है॥३॥ जिस मनुष्य का मन प्रभु की कृपा से वश में आ जाता है, हे नानक! वह गुरुमुख बनकर माया के सागर से पार हो जाता है॥ ४॥ सुसंगति में हरि का कीर्ति-गान करना चाहिए और यह स्थान गुरु द्वारा ही मिलता है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ ७॥ ५८॥

आसा महला ५ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥ हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥ १ ॥ सगल सूख जां तूं चिति आंवैं ॥ सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥ २ ॥ हुकमु बूझै सोई परवानु ॥ साचु सबदु जा का नीसानु ॥ ३ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५६ ॥

मेरे हृदय-घर में सुख ही सुख है और घर के बाहर भी (दुनिया में निर्वाह करते हुए) सुख

ही सुख है। हरि का सिमरन करने से सभी दुख-क्लेश नाश हो गए हैं॥ १॥ हे हरि ! जब तू मेरे मन में याद आता है तो मुझे सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। केवल वही उपासक हरि-नाम का जाप करता है जो तुझे भाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! तेरे नाम का जाप करने से तन-मन शीतल हो जाते हैं। भगवान का ध्यान करने से दुखों का डेरा ही नष्ट हो जाता है॥ २॥ जो मनुष्य प्रभु की रज़ा को समझता है, वही सत्य के दरबार में स्वीकार होता है। उस स्वीकृत मनुष्य पर सत्य शब्द का निशान अंकित होता है॥ ३॥ पूर्ण गुरु ने मेरे मन में हरि का नाम बसा दिया है। नानक का कथन है कि मेरे मन को प्रभु-नाम से सुख प्राप्त हुआ है॥ ४॥ ८॥ ५६॥

आसा महला ५ ॥ जहा पठावहु तह तह जाई ॥ जो तुम देहु सोई सुखु पाई ॥ १ ॥ सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥ तुम्हरी क्रिपा ते त्रिपति अघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरा दीआ पैन्हउ खाई ॥ तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाई ॥ २ ॥ मन तन अंतरि तुझै धिआई ॥ तुम्हरै लवै न कोऊ लाई ॥ ३ ॥ कहु नानक नित इवै धिआई ॥ गति होवै संतह लगि पाई ॥ ४ ॥ ९ ॥ ६० ॥

हे प्रभु ! जहाँ कहीं भी तू मुझे भेजता है, वहीं मैं (सुखपूर्वक) जाता हूँ। जो कुछ तू मुझे देता है, उसमें ही मैं सुख मानता हूँ॥ १॥ हे गोविंद गोसाई ! मैं सदा तेरा चेला हूँ। तेरी कृपा से मैं तृप्त एवं संतुष्ट रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! जो कुछ तुम मुझे देते हो, वही मैं पहनता और खाता हूँ। तेरी कृपा से मैं सुखी जीवन बिता रहा हूँ॥ २॥ अपने मन एवं तन के भीतर मैं तुझे ही याद करता हूँ। तेरे बराबर मैं किसी को नहीं समझता॥ ३॥ हे नानक ! मैं सदा ही इस तरह तुझे याद करता हूँ । संतों के चरणों से लगने पर शायद मेरी भी गति हो जाए ॥ ४॥ ९॥ ६०॥

आसा महला ५ ॥ ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥ १ ॥ स्रवन सुनीजै अंम्रित कथा ॥ जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥ गुर प्रसादि हरि अंम्रितु पीजै ॥ २ ॥ दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥ ३ ॥ आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥ गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥ ४ ॥ १० ॥ ६१ ॥

हे भाई ! उठते-बैठते, सोते हर समय भगवान का ध्यान करते रहना चाहिए। मार्ग में चलते समय भी हरि का यशोगान करना चाहिए॥ १॥ अपने कानों से हरि की अमृत कथा सुननी चाहिए, जिसे सुनने से मन प्रसन्न हो जाता है एवं तमाम दुःख-रोग दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्रत्येक कार्य करते हुए, मार्ग पर चलते हुए एवं घाट पार करते समय प्रभु का जाप करना चाहिए। गुरु की कृपा से हरि-नामामृत का पान करना चाहिए॥ २॥ दिन-रात हरि-कीर्तन गाते रहना चाहिए, क्योंकि कीर्तन गाने वाला भक्त मृत्यु के मार्ग में नहीं पड़ता॥ ३॥ जो पुरुष आठों प्रहर परमात्मा को विस्मृत नहीं करता, हे नानक ! उसके चरण-स्पर्श करने से गति प्राप्त हो जाती है॥ ४॥ १०॥ ६१॥

आसा महला ५ ॥ जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥ भई कलिआण दुख होवत नासु ॥ १ ॥ अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥ २ ॥ पर का बुरा न राखहु चीत ॥ तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ ३ ॥ हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा ॥ इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥ ४ ॥ ११ ॥ ६२ ॥

जिस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य सुख में निवास करता है, उसका कल्याण हो जाता है

और उसके दुःख का नाश हो जाता है॥ १॥ (हे भाई !) प्रभु का गुणगान करो और आनंद प्राप्त करो। सदा-सर्वदा अपने गुरु को प्रसन्न करते रहो॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु के सच्चे शब्द को अपने अन्तर्मन में धारण करो। अपने हृदय घर में स्थिर बैठ कर अपने प्रभु को पा लो॥ २॥ हे मित्र ! अपने हृदय में किसी का बुरा मत सोचो, इससे तुझे कोई दुःख नहीं होगा॥ ३॥ गुरु ने मुझे हरि नाम का तंत्र-मंत्र प्रदान किया है। नानक रात-दिन हमेशा ही इस सुख को जानता है॥ ४॥ ११॥ ६२॥

आसा महला ५ ॥ जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥ १ ॥ दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै निकटि न आवै कोई ॥ सगल स्रिसटि उआ के चरन मलि धोई ॥ २ ॥ जो प्रानी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥ ३ ॥ साधसंगि मन सोवत जागे ॥ तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६३ ॥

हे दीनदयाल ! जिस नीच मनुष्य को कोई नहीं जानता, तेरा नाम जपने से वह चारों दिशाओं में लोकप्रिय हो जाता है॥ १॥ हे मेरे प्रियतम ! मैं तेरे दर्शन माँगता हूँ। मुझे दर्शन दीजिए। हे प्रभु ! तेरी उपासना करने से कौन-कौन पार नहीं हुआ है?॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! जिस के निकट भी कोई नहीं आता था, तेरा सेवक बनने से सारी सृष्टि उस (सेवक) के चरण मल-मल कर धोती है॥ २॥ जो प्राणी किसी भी काम नहीं आता, यदि संत उस पर कृपादृष्टि धारण करें तो सभी उसके नाम को जपते हैं॥ ३॥ साधुओं की संगति में सोया हुआ मन (भी) जाग जाता है तब, हे नानक ! प्रभु बड़ा मीठा लगता है॥ ४॥ १२॥ ६३॥

आसा महला ५ ॥ एको एकी नैन निहारउ ॥ सदा सदा हरि नामु सम्हारउ ॥ १ ॥ राम रामा रामा गुन गावउ ॥ संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल समग्री जा कै सूति परोई ॥ घट घट अंतरि रविआ सोई ॥ २ ॥ ओपति परलउ खिन महि करता ॥ आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥ ३ ॥ करन करावन अंतरजामी ॥ अनंद करै नानक का सुआमी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६४ ॥

मैं अपने नयनों से एक परमात्मा को ही हर जगह मौजूद देखता हूँ। मैं हमेशा ही हरि के नाम को याद करता हूँ॥ १॥ मैं केवल राम जी के गुण गाता हूँ। हे भाई ! संतों के प्रताप एवं गुरु की संगति में मिलकर मैं हरि नाम का ध्यान करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जिस परमात्मा के सूत्र में जगत की सारी सामग्री पिरोई हुई है, वह हरेक शरीर में मौजूद है॥ २॥ प्रभु एक क्षण में ही सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय कर देता है। लेकिन निर्गुण प्रभु स्वयं निर्लिप्त रहता है॥ ३ ॥ अन्तर्यामी प्रभु सब कुछ करने एवं जीवों से कराने में समर्थ है। नानक का स्वामी सदैव आनंद में रहता है॥ ४॥ १३॥ ६४॥

आसा महला ५ ॥ कोटि जनम के रहे भवारे ॥ दुलभ देह जीती नही हारे ॥ १ ॥ किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥ भए पुनीत संतन की धूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ के संत उधारन जोग ॥ तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥ २ ॥ मनि आनंदु मंत्रु गुरि दीआ ॥ त्रिसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ नानक गुर ते पाई बुधि ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६५ ॥

अब मेरे करोड़ों जन्मों के चक्र नष्ट हो गए हैं। दुर्लभ मानव-देहि को पाकर जीवन बाजी को जीत लिया है। मैंने माया के हाथों यह बाजी हारी नहीं॥ १॥ शुभ-आचरण से सारे पाप नष्ट हो गए हैं और दुःख-दर्द दूर हो गए हैं। संतों की चरण-धूलि से हम पावन हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु के संत दुनिया का उद्धार करने में समर्थ हैं। ऐसे संत उसे मिलते हैं, जिसे उनका संयोग

प्रारम्भ से लिखा होता है॥ २॥ गुरु के दिए नाम-मंत्र से मन आनंदित हो गया है। तृष्णा बुझ गई है और मन स्थिर हो गया है॥ ३॥ हरि का नाम रूपी पदार्थ ही नवनिधियों एवं सिद्धियों के तुल्य है। हे नानक! यह सुमति मुझे गुरु से प्राप्त हुई है॥ ४॥ १४॥ ६५॥

आसा महला ५ ॥ मिटी तिआस अगिआन अंधेरे ॥ साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥ १ ॥ सूख सहज आनंदु घना ॥ गुर सेवा ते भए मन निरमल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनसिओ मन का मूरखु ढीठा ॥ प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥ २ ॥ गुर पूरे के चरण गहे ॥ कोटि जनम के पाप लहे ॥ ३ ॥ रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥ कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ६६ ॥

अज्ञानता के अँधकार के कारण मेरे मन में पैदा हुई तृष्णा मिट गई है। संतों की सेवा करने से अनेक पाप मिट चुके हैं॥ १॥ मुझे सहज सुख एवं बड़ा आनंद प्राप्त हो गया है। गुरु की सेवा से मेरा मन निर्मल हो गया है। मैंने तो गुरु से श्रीहरि का 'हरि-हरि' नाम ही सुना है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे मन की मूर्खता एवं ढीठता मिट गई है। प्रभु की रज़ा मुझे बड़ी मीठी लगती है॥ २॥ मैंने पूर्ण गुरु के चरण पकड़ लिए हैं और मेरे करोड़ों जन्मों के पाप मिट गए हैं॥ ३॥ मेरा यह रत्न जैसा अमूल्य जन्म सफल हो गया है। हे नानक! प्रभु ने मुझ पर दया धारण की है॥ ४॥ १५॥ ६६॥

आसा महला ५ ॥ सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे ॥ गुर के चरन केस संगि झारे ॥ १ ॥ जागु रे मन जागनहारे ॥ बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ॥ गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥ २ ॥ गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥ गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥ ३ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु आपि ॥ आठ पहर नानक गुर जापि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ६७ ॥

अपने सतिगुरु को हमेशा ही याद करते रहना चाहिए और गुरु के चरणों को अपने बालों से झाड़ना चाहिए॥ १॥ हे मेरे जागने वाले मन! मोह-माया की नींद में से जाग जाओ अर्थात् सचेत हो जाओ। हरि के बिना तेरे कोई भी काम नहीं आएगा। परिवार का मोह झूठा है एवं माया का प्रसार नाशवान है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की वाणी से प्रेम लगाओ। यदि गुरु कृपालु हो जाए तो दुःख दूर हो जाता है॥ २॥ गुरु के सिवाय दूसरा कोई स्थान सुखदायक नहीं। क्योंकि गुरु दाता है और गुरु ही नाम प्रदान करता है॥ ३॥ गुरु स्वयं ही परब्रह्म परमेश्वर हैं। इसलिए हे नानक! आठों प्रहर गुरु को जपते रहना चाहिए॥ ४॥ १६॥ ६७ ॥

आसा महला ५ ॥ आपे पेडु बिसथारी साख ॥ अपनी खेती आपे राख ॥ १ ॥ जत कत पेखउ एकै ओही ॥ घट घट अंतरि आपे सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे सूरु किरणि बिसथारु॥ सोई गुपतु सोई आकारु ॥ २ ॥ सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥ दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइआ ॥ अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ॥ ४ ॥ १७ ॥ ६८ ॥

प्रभु स्वयं ही पेड़ है और जगत रूपी शाखाएँ उसका विस्तार हैं। अपनी जगत रूपी फसल की वह स्वयं ही रक्षा करता है॥ १॥ जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, मुझे प्रभु ही नज़र आता है। वह स्वयं ही प्रत्येक शरीर के भीतर मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु स्वयं ही सूर्य है और यह जगत समझो उसकी किरणों का विस्तार है। वह स्वयं ही अदृष्ट है और स्वयं ही साक्षात् है॥ २॥ निर्गुण एवं सगुण नाम इन दोनों रूपों ने मिलकर ईश्वर में ही स्थान बनाया हुआ है॥ ३॥ हे नानक! गुरु ने मेरा भ्रम एवं डर दूर कर दिया है और मैं आनंद रूप परमेश्वर को ही अब अपने नयनों से हर जगह देखता हूँ॥ ४॥ १७॥ ६८॥

आसा महला ५ ॥ उकति सिआनप किछू न जाना ॥ दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥ १ ॥ मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥ करन करावनहार प्रभ सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥ नाम तेरे की आस मनि धारी ॥ २ ॥ जपु तपु संजमु करम न साधा ॥ नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥ ३ ॥ किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥ बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥ ४ ॥ १८ ॥ ६९ ॥

हे भगवान् ! मैं कोई उक्ति एवं चतुराई नहीं जानता। मैं दिन-रात तेरा ही नाम जपता रहता हूँ॥ १॥ मैं निर्गुण हूँ, मुझमें कोई गुण नहीं। वह प्रभु ही करने एवं जीवों से करवाने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! मैं मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी एवं विचारहीन हूँ। मेरे मन में तेरे नाम की ही आशा है॥ २॥ मैंने कोई जप, तप, संयम एवं धर्म-कर्म नहीं किया परन्तु अपने मन में केवल प्रभु के नाम की आराधना की है॥ ३॥ मैं कुछ नहीं जानता, क्योंकि मुझ में अल्पबुद्धि विद्यमान है। नानक वन्दना करता है कि हे प्रभु ! मैंने तेरी ही ओट ली है॥ ४॥ १८॥ ६९॥

आसा महला ५ ॥ हरि हरि अखर दुइ इह माला ॥ जपत जपत भए दीन दइआला ॥ १ ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ करि किरपा राखहु सरणाई मोकउ देहु हरे हरि जपनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि माला उर अंतरि धारै ॥ जनम मरण का दूखु निवारै ॥ २ ॥ हिरदै समालै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ ३ ॥ कहु नानक जो राचै नाइ ॥ हरि माला ता कै संगि जाइ ॥ ४ ॥ १९ ॥ ७० ॥

'हरि-हरि' यह दो अक्षरों की मेरी माला है। 'हरि-हरि' नाम की माला को जपने से भगवान् मुझ दीन पर दयालु हो गया है॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु के समक्ष यही विनती करता हूँ कि हे सतिगुरु ! कृपा करके मुझे अपनी शरण में रखो एवं मुझे हरि-नाम की माला प्रदान करो॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य हरि-नाम की माला अपने हृदय में धारण करता है, वह जन्म-मरण के दुःख से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ २॥ जो मनुष्य अपने मुँह से हरि-हरि बोलता है और अपने हृदय में हरि-परमेश्वर को याद करता है, वह इधर-उधर (लोक-परलोक) में डांवाडोल नहीं होता॥ ३॥ हे नानक ! जो मनुष्य हरि-नाम में लीन रहता है, हरि-नाम की माला उसके साथ परलोक में जाती है॥ ४॥ १९॥ ७०॥

आसा महला ५ ॥ जिस का सभु किछु तिस का होइ ॥ तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ हरि का सेवकु सद ही मुकता ॥ जो किछु करै सोई भल जन कै अति निरमल दास की जुगता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल तिआगि हरि सरणी आइआ ॥ तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥ २ ॥ नामु निधानु जा के मन माहि ॥ तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥ ४ ॥ २० ॥ ७१ ॥

जो भगवान् का उपासक बना रहता है, जिसका यह सब कुछ बनाया हुआ है, उस मनुष्य पर मोह-माया का कोई असर नहीं होता॥ १॥ भगवान् का सेवक हमेशा ही मोह-माया से मुक्त है, वह जो कुछ करता है, उसके सेवक को वह भला ही लगता है। भगवान् के सेवक का जीवन-आचरण बड़ा निर्मल होता है॥ १॥ रहाउ॥ जो सबकुछ छोडकर श्रीहरि की शरण में आ गया है, उस मनुष्य को मोहिनी कैसे प्रभावित कर सकती है॥ २॥ जिस के मन में नाम का भण्डार है, उसे स्वप्न में भी चिन्ता नहीं होती॥ ३॥ हे नानक ! मैंने पूर्ण गुरु को पा लिया है और मेरा भ्रम एवं सांसारिक मोह सब नाश हो गए हैं॥ ४॥ २०॥ ७१॥

आसा महला ५ ॥ जउ सुप्रसंन होइओ प्रभु मेरा ॥ तां दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥ १ ॥ सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी ॥ मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गइआ दूखु बिसारी चिंता ॥ फलु पाइआ जपि सतिगुर मंता ॥ २ ॥ सोई सति सति है सोइ ॥ सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइ ॥ ३ ॥ कहु नानक कउन उह करमा ॥ जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥ ४ ॥ २१ ॥ ७२ ॥

जब मेरा भगवान् मुझ पर सुप्रसन्न हो गया है तो बताओ दुःख एवं भ्रम कैसे मेरे पास आ सकते हैं ?॥१॥ हे भगवान् ! तेरी शोभा सुन-सुनकर मैं जीवित हूँ। मुझ गुणहीन का संसार-सागर से उद्धार कर दो॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु के दिए हुए मंत्र का जाप करने से मुझे फल मिल गया है। मेरा दुःख मिट गया है और चिन्ता को मैंने भुला दिया है॥ २॥ भगवान् ही सत्य है और उसकी शोभा भी सत्य है। उसके नाम को याद कर करके अपने हृदय में पिरो कर रखो॥३॥ हे नानक ! वह कौन-सा कर्म है जिसे करने से मन में भगवान का नाम आ बसता है॥ ४॥ २१॥ ७२॥

आसा महला ५ ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥ हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥ १ ॥ सोइ रहे माइआ मद माते ॥ जागत भगत सिमरत हरि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ ॥ असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥ २ ॥ बंधन अंध कूप ग्रिह मेरा ॥ मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥ ईहा सुखु आगै गति पाई ॥ ४ ॥ २२ ॥ ७३ ॥

काम, क्रोध एवं अहंकार ने (मायाग्रस्त) जीवों को नष्ट कर दिया है। भगवान् का सिमरन करने से भक्तजन विकारों से छूट गए हैं॥ १॥ माया के नशे में मस्त हुए जीव अज्ञानता की नींद में सोए हुए हैं। भगवान् के सिमरन में रंगे हुए भक्त मोह-माया से सचेत रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ मोह की दुविधा में फँसकर मनुष्य अनेक योनियों में भटकते हैं। जिन भक्तों ने श्रीहरि के सुन्दर चरणों का ध्यान किया है वे अमर हो गए हैं॥२॥ जो कहता है कि यह मेरा घर है, उसे माया के बन्धन घेर लेते हैं और वह मोह के अंधकूप में जा गिरता है। लेकिन वे संतजन माया के बंधनों से छूट जाते हैं जो भगवान् को अपने निकट ही बसता समझते हैं॥ ३॥ हे नानक ! जो भगवान् की शरण में पड़ा रहता है, उसे यहाँ इहलोक में सुख मिलता है और परलोक में भी गति हो जाती है॥ ४॥ २२॥ ७३ ॥

आसा महला ५ ॥ तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥ तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥ १ ॥ तूं मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥ सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥ तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥ २ ॥ तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ तू समरथु मै तेरा ताणु ॥ ३ ॥ अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥ नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥ ४ ॥ २३ ॥ ७४ ॥

हे भगवान् ! तू मेरी जल की तरंग है एवं हम तेरी मछलियाँ हैं। तू मेरा ठाकुर है और हम तेरे द्वार पर आए हैं॥ १॥ हे हरि ! तू मेरा रचयिता है और मैं तेरा सेवक हूँ। हे गुणी गंभीर प्रभु ! मैंने तेरी ही शरण ली है॥ १ ॥ रहाउ॥ तू ही मेरा जीवन है और तू ही मेरा आधार है। तुझे देखने से मेरा हृदय कमल खिल जाता है॥ २॥ तू ही मेरी मुक्ति करने वाला, तू ही मेरी इज्जत रखने वाला है और तू ही मुझे स्वीकार करता है। हे गोविन्द ! तू सर्वकला समर्थ है और मुझे तेरा ही बल है॥ ३॥ हे गुणों के भण्डार परमात्मा ! नानक की यही प्रार्थना है कि मैं रात-दिन तेरा नाम ही जपता रहूँ॥ ४॥ २३॥ ७४॥

आसा महला ५ ॥ रोवनहारै झूठु कमाना ॥ हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥ १ ॥ को मूआ का के घरि गावनु ॥ को रोवै को हसि हसि पावनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥ पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥ २ ॥ त्रिहु गुण महि वरतै संसारा ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥ ३ ॥ कहु नानक जो लाइआ नाम ॥ सफल जनमु ता का परवान ॥ ४ ॥ २४ ॥ ७५ ॥

किसी की मृत्यु पर रोने वाला भी झूठा ही विलाप करता है। अपरिचित मनुष्य हँस-हँस कर मरने वाले का शोक करता है॥ १॥ दुनिया में हर्ष-शोक का चक्र चलायमान है, जहाँ कोई मरता है तो वहाँ शोक हो रहा है और किसी के घर में किसी हर्षोल्लास के कारण गाना-बजाना हो रहा है। कोई विलाप करता है और कोई खिलखिला कर हँसता है॥ १॥ रहाउ॥ बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक मनुष्य अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचता और अंततः पश्चाताप करता है॥ २॥ यह दुनिया माया के तीन गुणों अर्थात् रजो गुण, तमो गुण एवं सतो गुण के वश में है। इसलिए प्राणी बार-बार नरक-स्वर्ग में जन्म लेता है॥ ३॥ हे नानक ! उस मनुष्य का जन्म सफल है और वही सत्य के दरबार में स्वीकार होता है, जिसे प्रभु ने अपने नाम सिमरन के साथ लगाया है॥ ४॥ २४॥ ७५॥

आसा महला ५ ॥ सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥ भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥ १ ॥ प्रिअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥ प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर महि अंम्रितु आणि निसारिओ ॥ खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥ २ ॥ सादि मोहि लादी अहंकारे ॥ दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥ ३ ॥ साधसंगि मिटे भरम अंधारे ॥ नानक मेली सिरजणहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥ ७६ ॥

हे सखी ! जीव रूपी नारी रात भर अज्ञानता की नींद में सोई रही और उसने अपने प्रभु-पति के सन्देश को नहीं जाना। जब सूर्योदय हुआ अर्थात् सारी उम्र बीत गई और चलने का समय आ गया तो वह पश्चाताप करती है॥ १॥ हे जीव रूपी नारी ! अपने प्रियतम प्रभु के प्रेम द्वारा तुझे अपने मन में सहज ही सुख प्राप्त हो जाएगा। जब तेरी अन्तरात्मा में प्रभु-मिलन की लालसा है तो तू क्यों आलस्य करती है॥ १॥ रहाउ॥ उसके पति-प्रभु ने आकर उसके हाथ में अमृत दिया था परन्तु यह फिसल गया और भूमि पर गिर गया॥ २॥ हे सखी ! जीव रूपी नारी स्वयं ही विषय विकारों के आस्वादन, मोह एवं अहंकार में दबी रहती है फिर इसमें जग के रचयिता प्रभु का कोई दोष नहीं है॥ ३॥ हे नानक ! सत्संगति में आकर जिसके भ्रम का अन्धकार मिट जाता है, रचयिता प्रभु उसे अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ २५॥ ७६॥

आसा महला ५ ॥ चरन कमल की आस पिआरे ॥ जमकंकर नसि गए विचारे ॥ १ ॥ तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥ सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥ पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥ २ ॥ दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥ सहज अनंद बसै बैरागी ॥ ३ ॥ नानक की अरदासि सुणीजै ॥ केवल नामु रिदे महि दीजै ॥ ४ ॥ २६ ॥ ७७ ॥

हे प्रिय प्रभु ! मुझे तेरे चरण-कमल की आशा है। यमदूत बेचारे तो मेरे पास से भाग गए हैं॥१॥ हे भगवान् ! तू मुझे याद आता रहता है, मुझ पर यही तेरी बड़ी कृपा है। तेरा नाम-सिमरन करने से तमाम दुःख-क्लेश मिट गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! यमदूत दूसरों को अत्यंत पीड़ित करता है परन्तु वे तेरे भक्त के समीप नहीं आ सकता॥ २॥ हे वाहिगुरु ! मेरे मन में तेरे दर्शनों की प्यास लगी हुई है, इसलिए तेरे प्रेम में भीगकर सहज आनंद एवं वैराग्य में बसता हूँ॥ ३॥ हे परमेश्वर ! नानक की प्रार्थना सुनिए, केवल अपना नाम ही हृदय में बसा दीजिए॥ ४॥ २६॥ ७७॥

आसा महला ५ ॥ मनु त्रिपतानो मिटे जंजाल ॥ प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥ १ ॥ संत प्रसादि भली बनी ॥ जा कै ग्रिहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु द्रिड़ाइआ साध क्रिपाल ॥ मिटि गई भूख महा बिकराल ॥ २ ॥ ठाकुरि अपुने कीनी दाति ॥ जलनि बुझी मनि होई सांति ॥ ३ ॥ मिटि गई भाल मनु सहजि समाना ॥ नानक पाइआ नाम खजाना ॥ ४ ॥ २७ ॥ ७८ ॥

हे भाई ! मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है जिससे मेरा मन तृप्त हो गया है और मेरे माया के जंजाल मिट गए हैं॥ १॥ संतों की दया से (भाग्योदय होने से) मेरा भला हो गया है। मैं उस निर्भय प्रभु से मिल गया हूँ जिसका घर तमाम पदार्थों से भरपूर है॥ १॥ रहाउ॥ कृपालु संत ने मेरे अन्तर्मन में प्रभु का नाम बसा दिया है। अब मेरी महाविकराल भूख मिट गई है॥ २॥ मेरे ठाकुर ने मुझे एक देन प्रदान की है जिसके फलस्वरुप मेरी जलन बुझ गई है और मन शांत हो गया है॥ ३॥ मेरी खोज मिट गई है और मेरा मन सहज आनंद में लीन हो गया है। नानक को भगवान् के नाम का खजाना प्राप्त हो गया है॥ ४॥ २७॥ ७८॥

आसा महला ५ ॥ ठाकुर सिउ जा की बनि आई ॥ भोजन पूरन रहे अघाई ॥ १ ॥ कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा का धनी अगम गुसाई ॥ मानुख की कहु केत चलाई ॥ २ ॥ जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥ ३ ॥ जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥ कहु नानक नाही तिन कामी ॥ ४ ॥ २८ ॥ ७६ ॥

जिन लोगों की ठाकुर जी के साथ प्रीति बन गई है, वे नाम रूपी अक्षय भोजन खाकर तृप्त रहते हैं॥ १॥ हरि के भक्तजनों को किसी भी पदार्थ की कमी नहीं आती। उनके पास खाने, खर्चने, आनंद प्राप्ति एवं देने हेतु बहुत कुछ है॥ १॥ रहाउ॥ जिसका मालिक अगम्य गुसाई है, कहो-उस मनुष्य का कोई क्या बिगाड़ सकता है॥ २॥ जिसकी सेवा अठारह सिद्धियाँ करती हैं, उसके चरणों में लगने की एक पल भर की देरी भी मत करो॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे मेरे स्वामी ! जिस पर तुम दया करते हो, उसे किसी भी पदार्थ की कमी नहीं आती॥ ४॥ २८॥ ७६॥

आसा महला ५ ॥ जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥ तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥ नामि रते जन भए भगवंता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥ २ ॥ जउ मै ओट गही प्रभ तेरी ॥ तां पूरन होई मनसा मेरी ॥ ३ ॥ देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ नानक दास तेरा भरवासा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ८० ॥

जब से मैंने अपने सतिगुरु का ध्यान-मनन किया है, तब से मेरे मन को महा सुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ मेरा कर्मों का लेखा-जोखा मिट गया तथा मेरी दुविधा भी दूर हो गई है। प्रभु-नाम में लीन होने वाले भक्तजन भाग्यवान हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मित्र ! जब मैंने अपने मालिक को याद किया तो मेरा भय मिट गया॥ २॥ हे प्रभु ! जब से मैंने तेरी शरण ली है, मेरी अभिलाषा पूरी हो गई है॥ ३॥ हे भगवान् ! तेरे आश्चर्यजनक खेल देख कर मेरे मन को धैर्य हो गया है। दास नानक को तेरा ही भरोसा है॥ ४॥ २६॥ ८०॥

आसा महला ५ ॥ अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥ १ ॥ सोचत साचत रैनि बिहानी ॥ अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ द्रुम की छाइआ निहचल ग्रिहु बांधिआ ॥ काल कै फांसि सकत सरु सांधिआ ॥ २ ॥ बालू कनारा तरंग

मुखि आइआ ॥ सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ॥ ३ ॥ साधसंगि जपिओ हरि राइ ॥ नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ८१ ॥

यम रूपी चूहा रात-दिन जीवन रूपी रस्सी को कुतरता जा रहा है। माया रूपी कुएँ में गिरता हुआ प्राणी (विषय-विकारों की) मिठाई खा रहा है॥ १॥ सोचते-विचारते जीवन रूपी रात्रि बीतती जा रही है। मनुष्य माया के अनेक रंग-तमाशों को सोचता रहता है परन्तु सारिंगपाणि प्रभु को कभी याद नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ पेड़ की छाया को अटल सोचकर मनुष्य अपना घर इसके नीचे बनाता है। काल (मृत्यु) की फाँसी उसकी गर्दन नीचे है और माया ने मोह रूपी अपना तीर उस पर चलाया हुआ है॥ २॥ रेत का किनारा लहरों के मुँह में आ गया है। लेकिन उस स्थान को मूर्ख मनुष्य अटल समझता है॥ ३॥ साधु की संगति में मैंने जगत के बादशाह प्रभु का सिमरन किया है। हे नानक! हरि का गुणगान करके जीवित रहता हूँ॥ ४॥ ३०॥ ८१॥

आसा महला ५ दुतुके ६ ॥ उन कै संगि तू करती केल ॥ उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥ उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥ ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥ १ ॥ ते बैरागी कहा समाए ॥ तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन्ह कै संगि तू ग्रिह महि माहरि ॥ उन्ह कै संगि तू होई है जाहरि ॥ उन्ह कै संगि तू रखी पपोलि ॥ ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥ २ ॥ उन्ह कै संगि तेरा मानु महतु ॥ उन्ह कै संगि तुम साकु जगतु ॥ उन्ह कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥ ओसु बिना तूं होई है माटी ॥ ३ ॥ ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ जोड़ि विछोड़े नानक थापि ॥ अपनी कुदरति जाणै आपि ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ८२ ॥

हे मेरी काया! उस आत्मा के साथ मिलकर तू अद्‌भुत खेल खेलती है। उसके साथ ही तेरा हरेक से मेल-मिलाप बना हुआ है। उसकी संगति में हर कोई तुझे चाहता है। उसके बिना कोई भी तुझे देखना नहीं चाहता॥ १॥ हे मेरी काया! वह वैरागी आत्मा अब किधर समा गई है? उसके बिना तू दयनीय अवस्था में है॥ १॥ रहाउ॥ उसके साथ तू घर में महारानी थी। उसके साथ ही जगत में तू प्रगट हुई थी। उसके साथ ही तुझे पाल-पोसकर रखा जाता था। जब आत्मा छोड़कर चली जाती है तो तुम मिट्टी में मिल जाती हो॥ २॥ (हे काया!) उसके साथ ही तेरा मान-सम्मान है। उसके साथ ही तेरा जगत में रिश्ता है। उसकी संगति में तुझे समस्त विधियों से श्रृंगारा जाता था। उसके बिना तुम मिट्टी हो गई हो॥ ३॥ वह निर्लिप्त आत्मा न कभी मरती है और न ही जन्म लेती है। प्रभु के हुक्म में वह कार्य करती है। हे नानक! शरीर की रचना करके प्रभु आत्मा को इससे मिलाता और फिर इससे अलग कर देता है। परमात्मा अपनी कुदरत को आप ही जानता है॥ ४॥ ३१ ॥ ८२ ॥

आसा महला ५ ॥ ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥ ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥ ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥ १ ॥ अवरु न कोऊ मारनवारा ॥ जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥ ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥ ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ ओसु अनंदु त हम सद केला ॥ २ ॥ ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥ ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ ना उसु भूख न हम कउ त्रिसना ॥ जा उहु निरमलु तां हम जचना ॥ ३ ॥ हम किछु नाही एकै ओही ॥ आगै पाछै एको सोई ॥ नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥ हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ८३ ॥

जीवात्मा परमात्मा का अंश है। जो गुण परमात्मा में है, वही गुण जीवात्मा में है। जीवात्मा ही शरीर रूपी घर में रहता है। जीवात्मा कहती है कि परमात्मा न तो मरता है और न ही हम मृत्यु से भयभीत होते हैं। वह परमात्मा न ही कभी नाश होता है, न ही हम मृत्यु के डर से दुःखी होते हैं। भगवान न तो निर्धन है और न ही हम भूखे हैं। न उसे कोई दुख है और न ही हम दुखी होते हैं॥ १॥ भगवान के अलावा अन्य कोई मारने वाला नहीं। मेरा जीवनदाता भगवान है, वह मुझे जीवन प्रदान करता है॥ १॥ रहाउ॥ उसे कोई बंधन नहीं और न ही हम बंधन में फँसे हुए हैं। न ही उसे कोई कर्म का धंधा है, न ही हम किसी धन्धे में ग्रस्त हैं। न ही उसे कोई मैल है और न ही हम मैले हैं। वह सदैव आनन्द में है तो हम भी सदैव प्रसन्न हैं॥ २॥ न उसे कोई फिक्र है और न ही हमें कोई फिक्र है। उसमें कोई माया का लेप नहीं और न ही हम में कोई अवगुण है। न ही कोई उसे भूख है और न ही हम में कोई तृष्णा है। जब वह निर्मल है तो हम भी उस जैसे निर्मल लगते हैं॥ ३॥ हम कुछ भी नहीं केवल वही सब कुछ है। वह परमात्मा ही वर्तमान काल से पूर्व भूतकाल में भी था और भविष्यकाल में भी एक वही होगा। हे नानक! गुरु ने मेरे सारे भ्रम एवं भेदभाव दूर कर दिए हैं। वह और हम मिलकर एक ही रंग के हो चुके हैं॥ ४॥ ३२॥ ८३॥

आसा महला ५ ॥ अनिक भांति करि सेवा करीऐ ॥ जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥ पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥ अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥ १ ॥ साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दासनि दासी की पनिहारि ॥ उन्ह की रेणु बसै जीअ नालि ॥ माथै भागु त पावउ संगु ॥ मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥ २ ॥ जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ करम धरम अरपउ सभ होमा ॥ गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥ उन्ह कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥ ३ ॥ निमख निमख एही आराधउ ॥ दिनसु रैणि एह सेवा साधउ ॥ भए क्रिपाल गुपाल गोबिंद ॥ साधसंगि नानक बखसिंद ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ८४ ॥

अनेक प्रकार से भगवान की सेवा-भक्ति करनी चाहिए। अपने प्राण, आत्मा एवं धन को उसके समक्ष अर्पण कर देना चाहिए। अपना अभिमान त्याग कर जल एवं पंखे की सेवा करनी चाहिए। अनेक बार उस पर कुर्बान होना चाहिए॥ १॥ हे मेरी माता! केवल वही सुहागिन है जो अपने प्राणनाथ प्रभु को अच्छी लगती है। मैं उसकी संगति में उठती-बैठती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं उसकी दासों की दासी की पानी भरने वाली हूँ। मैं अपने मन में उनकी चरण-धूलि प्रेमपूर्वक रखती हूँ। यदि मेरे माथे पर भाग्योदय हो जाएँ तो मैं उनकी संगति को प्राप्त होती हूँ। अपनी प्रसन्नता द्वारा स्वामी मुझे मिल गया है॥ २॥ मैं सभी जप, तप एवं धार्मिक संस्कार उसे अर्पण करती हूँ। तमाम धर्म कर्म, यज्ञ एवं होम मैं उसको अर्पित करती हूँ। अभिमान एवं मोह को त्याग कर मैं उसकी चरण धूलि हो गई हूँ। मैं उनकी संगति में प्रभु को अपने नेत्रों से देखती हूँ॥३॥ क्षण-क्षण मैं इस तरह भगवान की आराधना करती हूँ। दिन-रात मैं इस तरह भगवान की सेवा करती हूँ। अब गोपाल गोविंद मुझ पर कृपाल हो गया है। हे नानक! साधसंगत में वह जीव को क्षमा कर देता है॥ ४॥ ३३॥ ८४॥

आसा महला ५ ॥ प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥ प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥ प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥ १ ॥ सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु ॥ जीअ प्रान घट घट आधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥ प्रभ की प्रीति रिदै निरमल नाम ॥ प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥ प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥ २ ॥ प्रभ की प्रीति इहु

भवजलु तरै ॥ प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥ प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥ ३ ॥ आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ जिसु क्रिपालु तिसु साधसंगि घूलै ॥ कहु नानक तेरै कुरबाणु ॥ संत ओट प्रभ तेरा ताणु ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ८५ ॥

प्रभु की प्रीति से सदैव सुख मिलता है। इससे कोई दुःख स्पर्श नहीं कर सकता। प्रभु की प्रीति से अहंत्व की मैल दूर हो जाती है और मनुष्य सदैव निर्मल हो जाता है॥ १॥ हे मित्र ! सुन, भगवान का प्रेम प्यार ऐसा है कि यह हरेक जीव के शरीर, जीवन एवं प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु की प्रीति से समस्त भण्डार मिल जाते हैं। इससे निर्मल नाम मन में बस जाता है। प्रभु की प्रीति से मैं हमेशा के लिए शोभा वाला बन गया हूँ । प्रभु की प्रीति से सारी चिन्ता मिट गई है॥ २॥ प्रभु की प्रीति से मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है। प्रभु की प्रीति से जीव मृत्यु से नहीं डरता। प्रभु की प्रीति सबका उद्धार कर देती है और परलोक में उनके साथ जाती है॥ ३॥ अपने आप न कोई मनुष्य (प्रभु-चरणों में) मिला रह सकता है और न कोई कुमार्गगामी होता है॥ जिस पर प्रभु कृपालु होता है, वह साधुओं की संगति में मिलता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुझ पर कुर्बान जाता हूँ, तू ही संतों का सहारा एवं उनका बल है॥ ४॥ ३४॥ ८५॥

आसा महला ५ ॥ भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥ करि करि अनरथ विहाझी माइआ ॥ संचत संचत थैली कीन्ही ॥ प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ही ॥ १ ॥ काच गगरीआ अंभ मझरीआ ॥ गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ होइओ भइआ निहंगा ॥ चीति न आइओ करता संगा ॥ लसकर जोड़े कीआ संबाहा ॥ निकसिआ फूक त होइ गइओ सुआहा ॥ २ ॥ ऊचे मंदर महल अरु रानी ॥ हसति घोड़े जोड़े मनि भानी ॥ वड परवारु पूत अरु धीआ ॥ मोहि पचे पचि अंधा मूआ ॥ ३ ॥ जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥ रंग रसा जैसे सुपनाहा ॥ सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ नानक दास जिसु खसमु दइआलु ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ८६ ॥

किसी (इन्सान) ने राजा बनकर लोगों पर राज किया है और बहुत सारे अनर्थ-जुल्म करके धन संचय किया है। उसने धन संचय करके खजाना भर लिया परन्तु आखिरकार परमात्मा ने उसकी धन-दौलत उससे छीनकर किसी दूसरे को दे दी है॥ १॥ यह मानव-शरीर कच्ची मिट्टी की गागर के समान है जो जल में ही गल जाता है। अभिमान एवं घमण्ड कर करके यह उस जल में ही डूब जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य मृत्यु के भय से निडर होकर निर्भीक बन जाता है लेकिन जगत के रचयिता परमात्मा को याद नहीं करता जो सदा उसके साथ है। वह फौजें भर्ती करता और हथियार संग्रह करता है। जब उसके प्राण निकल जाते हैं तो वह राख बन जाता है॥ २॥ उसके पास ऊँचे मन्दिर, महल, महारानियाँ, मन को लुभाने वाले हाथी-घोड़े, सुन्दर वस्त्र एवं पुत्र व पुत्रियों का बड़ा परिवार था परन्तु उनके मोह में लीन हुआ ज्ञानहीन मनुष्य दुःखी होकर प्राण त्याग देता है॥ ३॥ जिस विधाता ने उसे पैदा किया था, उसने ही उसे मार दिया है। भोग-विलास एवं स्वाद स्वप्न की भाँति हैं। हे दास नानक ! जिस पर मालिक प्रभु दयालु होता है, उसे ही मोक्ष मिलता है तथा उसके पास ही शासन एवं धन-ऐश्वर्य है॥ ४॥ ३५॥ ८६॥

आसा महला ५ ॥ इन्ह सिउ प्रीति करी घनेरी ॥ जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी ॥ गलि चमड़ी जउ छोडै नाही ॥ लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥ १ ॥ जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥ निरगुनु मिलिओ वजी वधाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै ॥ बाटि घाटि ग्रिहि बनि बनि जोहै ॥ मनि तनि

लागै होइ कै मीठी ॥ गुर प्रसादि मै खोटी डीठी ॥ २ ॥ अगरक उस के वडे ठगाऊ ॥ छोडहि नाही बाप न माऊ ॥ मेली अपने उनि ले बांधे ॥ गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥ ३ ॥ अब मोरै मनि भइआ अनंद ॥ भउ चूका टूटे सभि फंद ॥ कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ ॥ घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ८७ ॥

आदमी इस माया (धन) से बहुत ज्यादा प्रेम करता है। जैसे-जैसे यह (धन) मिलता जाता है वैसे ही इसके साथ मोह बढ़ता जाता है। गले से चिपकी हुई यह माया किसी भी तरह आदमी को छोड़ती नहीं परन्तु सच्चे गुरु के चरण-स्पर्श करने से इससे छुटकारा मिल जाता है॥ १॥ जगत को मुग्ध करने वाली माया हमने त्याग कर खुद से दूर कर दी है। अब हमें निर्गुण प्रभु मिल गया है और सब ओर से शुभ कामनाएँ मिल रही हैं॥ १॥ रहाउ॥ माया इतनी सुन्दर है कि यह मन को आकर्षित कर लेती है। यह मनुष्य के पथ, घाट, घर एवं वन-वन में दृष्टि लगाकर प्रभावित करती है। मन एवं तन को यह बहुत मीठी लगती है। गुरु की दया से मैंने देख लिया है कि यह माया बहुत खोटी है॥ २॥ उस माया के आगे काम करने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इत्यादि विकार बड़े ठग हैं। (और तो और) यह अपने माता-पिता को भी नहीं छोड़ते। अपने मेल-मुलाकात करने वाले लोगों को भी इन्होंने भलीभांति फँसा लिया है। परन्तु गुरु की कृपा से मैंने उन सब ठगों को वश में कर लिया है॥ ३॥ अब मेरे हृदय में आनंद है। मेरा भय मिट गया है और मेरे तमाम बन्धन कट गए हैं। हे नानक! जब से मुझे सच्चा गुरु मिला है, तब से मैंने अपना सारा घर सुखी बसा लिया है अर्थात् मेरे शरीर रूपी घर में बसने वाली ज्ञानेन्द्रियाँ सुखी हो गई हैं॥ ४॥ ३६॥ ८७॥

आसा महला ५ ॥ आठ पहर निकटि करि जानै ॥ प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ एकु नामु संतन आधारु ॥ होइ रहे सभ की पग छारु ॥ १ ॥ संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥ उआ की महिमा कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरतणि जा कै केवल नाम ॥ अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥ मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥ प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥ २ ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥ सूरबीर बचन के बली ॥ कउला बपुरी संती छली ॥ ३ ॥ ता का संगु बाछहि सुरदेव ॥ अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥ कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥ मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ८८ ॥

संतजन आठों प्रहर प्रभु को अपने निकट बसता समझते हैं। प्रभु के किए हरेक काम को मीठा समझकर मानते हैं। प्रभु का एक नाम ही संतों के जीवन का आधार है और सन्तजन सबकी चरण-धूलि बने रहते हैं॥ १॥ हे मेरे भाई! संतों का जीवन-आचरण ध्यानपूर्वक सुनो। उनकी महिमा कथन नहीं की जा सकती॥ १॥ रहाउ॥ उनका कार्य-व्यवहार केवल प्रभु का नाम है। आनंद स्वरूप प्रभु का भजन-कीर्तन उनका सच्चा सुख विश्राम है। मित्र एवं शत्रु उनके लिए एक समान हैं। अपने प्रभु के बिना वह किसी को नहीं जानते॥ २॥ संतजन करोड़ों ही पाप मिटाने वाले हैं। वह जीवों के दुःख को निवृत्त कर देते हैं और मनुष्य को आत्मिक जीवन प्रदान करने में सक्षम हैं। वे काम, क्रोध, इत्यादि विकारों को जीतने वाले शूरवीर एवं वचन के बली हैं। इस तुच्छ माया को भी संतों ने छल लिया है॥ ३॥ संतों की संगति देवते भी चाहते हैं। उनके दर्शन बड़े सफल हैं और उनकी सेवा बड़ी फलदायक है। हाथ जोड़कर नानक एक यही प्रार्थना करता है कि हे गुणों के भण्डार प्रभु! मुझे संतों की सेवा की देन प्रदान कीजिए॥ ४॥ ३७॥ ८८॥

आसा महला ५ ॥ सगल सूख जपि एकै नाम ॥ सगल धरम हरि के गुण गाम ॥ महा पवित्र साध का संगु ॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥ १ ॥ गुर प्रसादि ओइ आनंद पावै ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ बेद पुरान तिनि सिंम्रिति सुनीजा ॥ महा पुनीत जा का निरमल थानु ॥ साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥ २ ॥ प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ ॥ ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥ ३ ॥ आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ उन साधा का दरसनु पावउ ॥ मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ नानक आइ पए सरणाइ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ८९ ॥

भगवान का एक नाम जपने से ही सर्व सुख मिल जाते हैं। श्रीहरि का गुणगान करने से तीर्थ, तप, दान-पुण्य एवं दया इत्यादि सभी धर्मों का फल भी मिल जाता है। साधु की संगति महापवित्र है, जिसके मिलन से प्रभु से प्रेम हो जाता है॥ १॥ गुरु की कृपा से वह सुख पा लेता है। जिसका सिमरन करने से मन में प्रकाश हो जाता है, उसकी गति एवं अनुमान वर्णन नहीं किए जा सकते॥ १॥ रहाउ॥ उसकी पूजा करने से व्रत, नियम, तीर्थ-स्नान, वेदों, पुराणों एवं स्मृतियों के सुनने का भी फल मिल जाता है। जो व्यक्ति साधु की संगति करता है, उसके हृदय में परमात्मा का हरि-नाम बस जाता है और उसका हृदय रूपी स्थान भी महापवित्र एवं निर्मल हो जाता है॥ २॥ ऐसा भक्तजन सारे विश्व में लोकप्रिय हो जाता है। उसकी चरण-धूलि से पापी भी पवित्र हो जाते हैं। जिस मनुष्य को हरि-परमेश्वर बादशाह मिल गया है, उसकी गति एवं महत्ता वर्णन नहीं किए जा सकते॥ ३॥ मैं निशदिन हाथ जोड़कर प्रभु का ध्यान करता हूँ और उन संतों के दर्शन प्राप्त करता हूँ। हे प्रभु! मुझ गरीब को अपने साथ मिला लीजिए। नानक ने आकर तेरी शरण ले ली है॥ ४॥ ३८॥ ८९॥

आसा महला ५ ॥ आठ पहर उदक इसनानी ॥ सद ही भोगु लगाइ सुगिआनी ॥ बिरथा काहू छोडै नाही ॥ बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥ १ ॥ सालगिरामु हमारै सेवा ॥ पूजा अरचा बंदन देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट ॥ आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥ जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ ता का धूपु सदा परफुलै ॥ २ ॥ घटि घटि संपटु है रे जा का ॥ अभग सभा संगि है साधा ॥ आरती कीरतनु सदा अनंद ॥ महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥ ३ ॥ जिसहि परापति तिस ही लहना ॥ संत चरन ओहु आइओ सरना ॥ हाथ चड़िओ हरि सालगिरामु ॥ कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ९० ॥

यहाँ पर पूजा करने वाले पण्डित को उपदेश किया है कि हे पण्डित जी! तुम तो अपने शालग्राम को किसी-किसी समय ही स्नान कराते हो लेकिन हमारा शालग्राम आठों प्रहर ही जल में स्नान करने वाला है, मन को लुभाने वाला ज्ञानी हरि-शालग्राम सदैव भोग लगाता रहता है। वह किसी के भी दुःख-दर्द को नहीं रहने देता। हम उस हरि शालग्राम के बार-बार चरण स्पर्श करते हैं॥ १॥ हमारे हृदय में प्रभु की सेवा ही शालग्राम की पूजा है। प्रभु का नाम-सुमिरन ही पूजा अर्चना एवं वन्दना है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे शालग्राम हरि की इच्छा का घण्टा चारों दिशाओं सारे विश्व में सुनाई देता है। उसका आसन सदैव ही वैकुंठ में है। उसका चंवर समस्त जीवों पर झूलता है और जिसकी होम-सामग्री (धूप) सदैव महकती रहती है॥ २॥ हे पण्डित! तू अपने शालग्राम को डिब्बे में रखता है लेकिन हमारे शालग्राम का डिब्बा प्रत्येक जीव का हृदय है। संतों की संगति उसकी अटल सभा है। सदैव आनंद प्रदान करने वाला उसका कीर्तन ही उसकी

आरती है। उसकी महिमा बहुत सुन्दर एवं सदैव ही अनन्त है॥ ३॥ जो मनुष्य संतों के चरणों की शरण में आता है और जिसकी किस्मत में उसकी प्राप्ति का लेख लिखा होता है केवल वही शालग्राम प्रभु को पाता है। हरि शालग्राम मेरे हाथ में आ गया है अर्थात् मुझे मिल गया है। हे नानक! गुरु ने मुझे यह दान किया है॥ ४॥ ३९॥ ९०॥

आसा महला ५ पंचपदा, ॥ जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥ सो मारगु संतन दूरारी ॥ १ ॥ सतिगुर पूरे साचु कहिआ ॥ नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ॥ जह लालच जागाती घाट ॥ दूरि रही उह जन ते बाट ॥ २ ॥ जह आवटे बहुत घन साथ ॥ पारब्रहम के संगी साध ॥ ३ ॥ चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥ भगत जना कउ द्रिसटि न पेखा ॥ ४ ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ वाजे ता के अनहद तूरा ॥ ५ ॥ ४० ॥ ९१ ॥

जिस पथ पर विषय-विकारों में फँसी हुई पनिहारी जीवन की पूँजी लुटा बैठी है, वह मार्ग संतजनों से दूर है॥ १॥ पूर्ण सतिगुरु ने सत्य कहा है। हे प्रभु! तेरा नाम मोक्ष का मार्ग है और यमदूतों का मार्ग इससे बहुत दूर रह जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जहाँ पर लालची कर लेने वालों का घाट है, वह पथ भक्तजनों से दूर रह जाता है॥ २॥ जिस जीवन सफर में अनेकों ही काफिले पीड़ित होते रहते हैं, उस सफर में साधजन परब्रह्म के सत्संगी बने रहते हैं॥ ३॥ चित्रगुप्त समस्त जीवों के कर्मों का लेखा-जोखा लिखते रहते हैं परन्तु भक्तजनों की तरफ दृष्टि उठाकर भी नहीं देखते॥ ४॥ हे नानक! जिसका सतिगुरु पूर्ण है, उसके लिए भगवान के गुणानुवाद के निरन्तर बाजे बजते रहते हैं॥ ५॥ ४०॥ ९१॥

आसा महला ५ दुपदा १ ॥ साधू संगि सिखाइओ नामु ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ बुझि गई त्रिसना हरि जसहि अघाने ॥ जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥ १ ॥ करन करावन सरनि परिआ ॥ गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाल जवेहर भरे भंडार ॥ तोटि न आवै जपि निरंकार ॥ अंम्रित सबदु पीवै जनु कोइ ॥ नानक ता की परम गति होइ ॥ २ ॥ ४१ ॥ ९२ ॥

साधु की संगति ने मुझे भगवान का नाम-सिमरन सिखा दिया है, जिसके फलस्वरूप सारे मनोरथ एवं कार्य पूरे हो गए हैं। हरि यश गाने से मेरी तृष्णा बुझ गई है और मैं तृप्त हो गया हूँ। सारिंगपानि भगवान का नाम जप-जपकर मैं आत्मिक जीवन जीता हूँ॥ १॥ सबकुछ करने एवं करवाने में समर्थ प्रभु की मैंने शरण ली है। गुरु की कृपा से मुझे सहज घर मिल गया है। अन्धकार दूर हो गया है और ज्ञान का चन्द्रमा उदय हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हीरे-जवाहरातों से मेरे भण्डार भरे हुए हैं। निरंकार प्रभु का जाप करने से वह कम नहीं होते। हे नानक! कोई भक्तजन ही नाम-अमृत का पान करता है और उसकी परमगति हो जाती है॥ २॥ ४१॥ ९२॥

आसा घरु ७ महला ५ ॥ हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥ संगी साथी सगल तरांई ॥ १ ॥ गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥ सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥ २ ॥ ४२ ॥ ९३ ॥

मैं नित्य ही अपने हृदय में हरि का नाम स्मरण करता रहता हूँ। इस तरह मैं अपने समस्त संगी-साथियों को बचा लेता हूँ॥ १॥ गुरु सदैव ही मेरे साथ एवं निकट है। मैं उस भगवान को सदा याद करके अपने हृदय में बसाकर रखता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे भगवान्! तेरा किया हुआ प्रत्येक कार्य

मुझे मीठा लगता है। नानक तुझसे हरिनाम रूपी पदार्थ ही माँगता है॥ २॥ ४२॥ ६३॥

आसा महला ५ ॥ साधू संगति तरिआ संसारु ॥ हरि का नामु मनहि आधारु ॥ १ ॥ चरन कमल गुरदेव पिआरे ॥ पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै मसतकि लिखिआ भागु ॥ कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥ २ ॥ ४३ ॥ ६४ ॥

साधु की संगति करने से सारी दुनिया ही भवसागर से पार हो चुकी है। हरि का नाम मन का सहारा है॥ १॥ हे प्यारे गुरुदेव ! तेरे चरण कमल बड़े कोमल हैं। हरि के संतजन बड़े प्रेम से तेरे चरणों की पूजा करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक ! जिसके मस्तक पर सौभाग्य लिखा हुआ है, उसका सुहाग अटल है॥ २॥ ४३॥ ६४॥

आसा महला ५ ॥ मीठी आगिआ पिर की लागी ॥ सउकनि घर की कंति तिआगी ॥ प्रिअ सोहागनि सीगारि करी ॥ मन मेरे की तपति हरी ॥ १ ॥ भलो भइओ प्रिअ कहिआ मानिआ ॥ सूखु सहजु इसु घर का जानिआ ॥ रहाउ ॥ हउ बंदी प्रिअ खिजमतदार ॥ ओहु अबिनासी अगम अपार ॥ ले पखा प्रिअ झलउ पाए ॥ भागि गए पंच दूत लावे ॥ २ ॥ ना मै कुलु ना सोभावंत ॥ किआ जाना किउ भानी कंत ॥ मोहि अनाथ गरीब निमानी ॥ कंत पकरि हम कीनी रानी ॥ ३ ॥ जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा ॥ सूख सहज मेरा धनु सोहागा ॥ कहु नानक मोरी पूरन आसा ॥ सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ६५ ॥

प्राणनाथ प्रभु की आज्ञा मुझे बहुत मीठी लगती है। मेरे पति-परमेश्वर ने मेरी सौतन (माया) को हृदय-घर से बाहर निकाल दिया है। मेरे प्रियवर ने मुझे सुहागिन बनाकर सुन्दर बना दिया है। उसने मेरे मन की जलन को शीतल कर दिया है॥ १॥ भला हुआ कि मैंने अपने प्रियतम प्रभु का कहना मान लिया। मैंने इस घर में सहज सुख की अनुभूति कर ली है॥ रहाउ॥ मैं अपने प्रिय-प्रभु की दासी एवं सेविका हूँ। वह अविनाशी, अगम्य एवं अपार है। मैं अपने हाथ में पंखा लेकर एवं उसके चरणों में बैठकर अपने प्रियतम को पंखा करती हूँ। मुझे काटने वाले पाँच शत्रु-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान भाग गए हैं॥ २॥ न ही मैं उच्च वंश से हूँ और न ही शोभावान हूँ। मैं क्या जानती हूँ कि मैं क्यों अपने प्राणनाथ को भली लगने लग गई हूँ। मैं अनाथ, गरीब एवं मानहीन हूँ। लेकिन पकड़ कर मेरे स्वामी ने मुझे अपनी रानी बना लिया है॥ ३॥ जब से मुझे मेरा साजन प्रीतम मिला है, मुझे सहज सुख प्राप्त हो गया है और मेरा सुहाग धन्य हो गया है। हे नानक ! मेरी अभिलाषा पूर्ण हो गई है। सतिगुरु ने मुझे गुणों के भण्डार प्रभु से मिला दिया है॥ ४॥ १॥ ६५॥

आसा महला ५ ॥ माथै त्रिकुटी द्रिसटि करूरि ॥ बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥ सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥ १ ॥ ऐसी इसत्री इक रामि उपाई ॥ उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ ॥ ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ ॥ गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥ २ ॥ वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥ तट तीरथ भवे सभ धरना ॥ से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥ ३ ॥ माइआ मोहि सभो जगु बाधा ॥ हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥ गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥ ४ ॥ २ ॥ ६६ ॥

उसके माथे पर त्रिकुटी और दृष्टि भी बहुत करूर है। उसकी वाणी भी कड़वी है और जिह्वा भी फूहड़ है। वह सदैव भूखी रहती है और अपने प्रिय-प्रभु को दूर समझती है॥ १॥ हे मेरे भाई !

राम ने एक ऐसी माया रूपी स्त्री सृष्टि में उत्पन्न की है। उसने समूचा जगत निगल लिया लेकिन गुरु ने मेरी रक्षा की है॥ रहाउ॥ उस माया-स्त्री ने ठग-बूटी खिलाकर सारी दुनिया को वश में कर लिया है। उसने ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव को भी अपने मोह में फँसाकर मोहित कर लिया है। जो गुरुमुख प्रभु-नाम से संलग्न हुए हैं, वह सुन्दर दिखाई देते हैं॥ २॥ मनुष्य व्रत, नियम एवं प्रायश्चित कर्म करते हुए थक चुके हैं। वह समूचे जगत के पवित्र तीर्थो एवं तटों पर भटकते फिरते हैं। जो सतिगुरु की शरण में आए हैं, वे भवसागर से पार हो गए हैं॥ ३॥ माया के मोह में सारा जगत फँसा हुआ है। मनमुख मूर्ख मनुष्य अहंकार में दुखी होते हैं। हे नानक ! गुरु ने बाँह से पकड़ कर मुझे बचा लिया है॥ ४॥ २॥ ६६॥

आसा महला ५ ॥ सरब दूख जब बिसरहि सुआमी ॥ ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥ १ ॥ संत त्रिपतासे हरि हरि ध्याइ ॥ करि किरपा अपुनै नाइ लाए सरब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ संगि होवत कउ जानत दूरि ॥ सो जनु मरता नित नित झूरि ॥ २ ॥ जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥ ३ ॥ कहु नानक प्रभु सिमरहु एक ॥ गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

जब मनुष्य को परमात्मा भूल जाता है तो हर प्रकार के दुख घेर लेते हैं। ऐसा प्राणी लोक-परलोक में किसी काम का नहीं॥ १॥ हरि-परमेश्वर का ध्यान करते हुए संतजन तृप्त हो गए हैं। हे स्वामी ! कृपा करके तुम जीवों को अपने नाम के साथ लगाते हो और जीवों को सर्व सुख तेरी रजा में ही प्राप्त होते हैं॥ रहाउ॥ जो पुरुष करीब रहने वाले भगवान को दूर समझता है, वह सदैव ही दुखी होता हुआ मर जाता है॥ २॥ जिस भगवान ने सब कुछ दिया है, उसे मनुष्य याद नहीं करता। उसके दिन-रात महाविष रूपी माया में लीन होकर बीत जाते हैं॥ ३॥ हे नानक ! केवल प्रभु का सुमिरन करो। पूर्ण गुरु की टेक (शरण) लेने से गति प्राप्त हो जाती है॥ ४॥ ३॥ ६७॥

आसा महला ५ ॥ नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥ कलमल दोख सगल परहरिआ ॥ १ ॥ सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ हरि गुन गाइ परम गति पाई ॥ रहाउ ॥ साध जना के पूजे पैर ॥ मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥ २ ॥ गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥ पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥ ३ ॥ जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

भगवान का नाम जपने से मन-तन खिल गया है। उसके तमाम पाप एवं दोष दूर हो गए हैं॥ १॥ हे मेरे भाई ! वह दिन बड़ा शुभ है, जब भगवान का गुणगान करने से परमगति मिल जाती है॥ रहाउ॥ साधजनों के चरणों की पूजा करने से मन से हर प्रकार की मुसीबतें एवं वैर मिट गए हैं॥ २॥ पूर्ण गुरु को मिलने से विकारों का झगड़ा मिट गया है और सभी कामादिक पाँच शत्रु-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार वश में आ गए हैं॥ ३॥ नानक उस पर कुर्बान जाता है, जिसके मन में हरि का नाम निवास करता है॥ ४ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

आसा महला ५ ॥ गावि लेहि तू गावनहारे ॥ जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ जा की सेवा सरब सुख पावहि ॥ अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥ १ ॥ सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ ॥ बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥ जा का दानु निखूटै नाही ॥ भली भाति सभ सहजि समाही ॥ जा की बखस न मेटै कोई ॥ मनि वासाईऐ साचा सोई

॥ २ ॥ सगल समग्री ग्रिह जा कै पूरन ॥ प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ ओटि गही निरभउ पदु पाईऐ ॥ सासि सासि सो गुन निधि गाईऐ ॥ ३ ॥ दूरि न होई कतहू जाईऐ ॥ नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ ॥ अरदासि करी पूरे गुर पासि ॥ नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥ ४ ॥ ५ ॥ ९९ ॥

हे गवैये ! तू भगवान का गुणगान किया कर, जो सब की आत्मा, शरीर एवं प्राणों का आधार है। जिसकी सेवा करने से सर्व-सुख प्राप्त हो जाते हैं। तब तुझे किसी दूसरे के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी॥ १॥ मेरा मालिक सदैव आनंद में आनंदित रहता है। उस गुणों के भण्डार प्रभु का नित्य जाप करते रहना चाहिए। मैं उस प्रिय संत पर बलिहारी जाता हूँ, जिसकी दया से प्रभु हृदय में निवास कर लेता है॥ रहाउ॥ जिसका दिया हुआ दान कभी कम नहीं होता, उसे याद करने वाले भलीभांति सहज सुख में लीन हो सकते हैं। जिसके दान को कोई भी मिटा नहीं सकता, उस सत्यस्वरूप प्रभु को अपने मन में बसाओ॥ २॥ जिसके घर में समस्त सामग्री भरपूर है, उस प्रभु के सेवक कभी दुःख में पश्चाताप नहीं करते। उसकी शरण लेने से निर्भय पद प्राप्त हो जाता है। हे प्राणी ! श्वास-श्वास से उस गुणों के भण्डार प्रभु की स्तुति करनी चाहिए॥ ३॥ वह प्राणी से दूर नहीं और कहीं नहीं जाता। यदि वह अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही हरि-परमेश्वर का नाम प्राप्त होता है। मैं पूर्ण गुरु के पास प्रार्थना करता हूँ। नानक हरि-नाम रूपी धन की पूँजी माँगता है॥ ४॥ ५॥ ९९॥

आसा महला ५ ॥ प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥ मन सगल कउ होआ सूखु ॥ करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥ १ ॥ गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥ रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ मन चिंतत सगले फल पाए ॥ अगनि बुझी सभ होई सांति ॥ करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥ २ ॥ निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ बंधन काटि सेवक करि राखे ॥ अंम्रित बानी रसना चाखे ॥ ३ ॥ वडै भागि पूज गुर चरना ॥ सगल तिआगि पाई प्रभ सरना ॥ गुरु नानक जा कउ भइआ दइआला ॥ सो जनु होआ सदा निहाला ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०० ॥

सर्वप्रथम मेरे तन का दुःख मिटा है और तदुपरांत मन को सर्व सुख प्राप्त हो गया है। गुरु ने कृपा करके मुझे हरि का नाम दिया है। मैं उस सच्चे गुरु पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ हे मेरे भाई ! मैंने पूर्ण गुरु को पा लिया है। सच्चे गुरु की शरण लेने से मेरे तमाम रोग, शोक एवं दुःख विनष्ट हो गए हैं॥ रहाउ॥ गुरु के चरण मैंने अपने हृदय में बसाए हैं और मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गए हैं। मेरी तृष्णाग्नि बुझ गई है और मेरे अन्तर्मन में सम्पूर्ण शांति है। गुरु ने कृपा करके मुझे प्रभु-नाम की देन प्रदान की है॥ २॥ गुरु ने निराश्रित को आश्रय दिया है। मानहीन को गुरु ने सम्मान प्रदान किया है। गुरु ने बन्धन काट कर अपने सेवक की हर प्रकार से रक्षा की है। अमृत वाणी अब मैं अपनी रसना से चखता हूँ॥ ३॥ अहोभाग्य से ही मैंने गुरु के चरणों की पूजा की है। सब कुछ त्याग कर मैंने प्रभु की शरण ली है। हे नानक ! जिस पर गुरु दयालु हो गया है, वह मनुष्य सदैव प्रसन्नचित्त हो गया है॥ ४॥ ६॥ १००॥

आसा महला ५ ॥ सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥ १ ॥ जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥ मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥

गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ साचे साहिब के मनि भावै ॥ २ ॥ वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ धरम कला हरि बंधि बहाली ॥ मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥ भए अचिंत एक लिव लाइआ ॥ ३ ॥ जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ गुझी छंनी नाही बात ॥ गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०१ ॥

[उल्लेखनीय है कि गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु हरिगोबिन्द साहिब के जन्म की खुशी में यह शब्द उच्चरित किया था।]

मेरे सच्चे सतिगुरु नानक ने बालक हरिगोविन्द को मेरे घर में भेज दिया है। यह बालक किसी पूर्व संयोग के कारण पैदा हुआ है, जो लम्बा जीवन पाएगा। जब इस बालक ने आकर अपनी माता के उदर में निवास किया था तो उसकी माता के मन में बड़ा आनंद उत्पन्न हुआ था॥ १॥ जिस पुत्र ने हमारे घर जन्म लिया है, वह गोविन्द का भक्त है। जैसे प्रभु के दरबार से लिखा हुआ बालक का जन्म लेना जगत में सारे लोगों में प्रकट हो गया है॥ रहाउ॥ जब प्रभु के हुक्म से दसवें महीने बालक हरिगोविंद ने जन्म लिया तो सारी चिंता मिट गई और सर्वत्र महा आनंद (हर्षोल्लास ही) हो गया। आनंद में सखियाँ गुरुवाणी द्वारा मंगल गान करती हैं। यह वाणी सच्चे साहिब के मन को बहुत अच्छी लगती है॥ २॥ बालक के जन्म लेने से हमारी पीढ़ी बढ़ने लग गई है और गुरुगद्दी आगे चल पड़ी है। प्रभु ने धर्म की कला बालक में दृढ़ तौर पर स्थापित कर दी है। सतिगुरु ने मुझे मनोवांछित बालक प्रभु से दिलवाया है। मैं निश्चित हो गया हूँ और मैंने अपनी लगन एक ईश्वर में लगा ली है॥ ३॥ जैसे बालक अपने पिता पर बहुत गर्व करता है वैसे ही मैं वह कुछ बोलता हूँ जो गुरु जी को मुझ से कहलवाना भला लगता है। यह कोई लुकी-छिपी बात नहीं। गुरु नानक ने प्रसन्नचित्त होकर मुझे यह बालक की देन प्रदान की है॥ ४॥ ७॥ १०१॥

आसा महला ५ ॥ गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥ प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥ १ ॥ गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई ॥ जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥ सरनि परे साचे गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक सेव ॥ २ ॥ जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान ॥ कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥ ३ ॥ ८ ॥ १०२ ॥

पूर्ण गुरु ने अपना हाथ देकर मुझे बचा लिया है। अब उसके सेवक का प्रताप अर्थात् शोभा दुनिया में प्रगट हो गई है॥ १॥ मैं गुरु-गुरु ही मुँह से जपता रहता हूँ और गुरु-गुरु नाम मन से याद करता रहता हूँ। जिस पदार्थ हेतु मैं गुरु के समक्ष प्रार्थना करता हूँ वह मनोवांछित फल मैं गुरु से पा लेता हूँ॥ रहाउ॥ मैंने सच्चे गुरुदेव की शरण ली है। उसके सेवक की सेवा पूरी हो गई है॥ २॥ उसने मेरी आत्मा, शरीर, यौवन एवं प्राणों की रक्षा की है। हे नानक ! मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ॥ ३॥ ८॥ १०२॥

आसा घरु ८ काफी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥ १ ॥ माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥ जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥ २ ॥ चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥ तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥ ३ ॥ जे लख करम कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥ जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥ ४ ॥ १ ॥ १०३ ॥

हे प्रभु ! मैं तेरा मूल्य लिया हुआ बंदा हूँ और तू मेरा सच्चा मालिक है। मेरा मन एवं तन सब उसके दिए हुए हैं, मेरा जीवन इत्यादि सब कुछ तेरा ही दिया हुआ है॥ १॥ हे मालिक ! तू मानहीनों का सम्मान है और मुझे तेरा ही भरोसा है। जिसे सच्चे परमात्मा के अतिरिक्त किसी दूसरे का सहारा है, उसे कच्चा, अस्थिर ही समझो॥ १॥ रहाउ॥ हे वाहिगुरु ! तेरा हुक्म अपार है। कोई भी मनुष्य तेरे हुक्म का अन्त नहीं पा सकता। जिस मनुष्य को पूर्ण गुरु मिल जाता है, वह तेरी रज़ानुसार चलता है॥ २॥ चतुराई एवं बुद्धिमत्ता किसी काम नहीं आती। मालिक-प्रभु खुशी से जो कुछ भी देता है, वही मेरा सुख है॥ ३॥ चाहे मनुष्य लाखों धर्म-कर्म कर ले परन्तु उसकी तृष्णा को अंकुश नहीं लगता। दास नानक ने प्रभु-नाम को अपना सहारा बनाया है और शेष कार्य-व्यवहार छोड़ दिए हैं॥ ४॥ १॥ १०३॥

आसा महला ५ ॥ सरब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥ गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना ॥ नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागठु सचा सोइ है जिसु हरि धनु अंतरि ॥ सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥ २ ॥ गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥ ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥ ३ ॥ नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥ जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥ ४ ॥ २ ॥ १०४ ॥

मैंने जगत के सर्व सुखों की खोज करके देख ली है परन्तु हरि जैसा सुख कहीं नहीं है। यदि गुरु प्रसन्नचित्त हो जाए तो सच्चा मालिक मिल जाता है॥ १॥ मैं अपने गुरु पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ। हे मेरे मालिक ! मुझे यह दान प्रदान कीजिए कि मैं तेरे नाम को एक क्षण एवं निमेष मात्र भी विस्मृत न करूँ॥ १॥ रहाउ॥ सच्चा धनवान वही है जिसके हृदय में हरि नाम का धन विद्यमान है। जिसके अन्तर्मन में गुरु का शब्द मौजूद होता है केवल वही महाजाल से छूट सकता है॥ २॥ गुरु की महिमा मैं क्या वर्णन करूँ ? (क्योंकि) गुरु विवेक एवं सत्य का सरोवर है। वह आदि, युगों के आरंभ एवं युगों-युगांतरों में पूर्ण परमेश्वर है॥ ३॥ सदैव हरि-नाम का ध्यान करते रहो और अपने मन को प्रभु के प्रेम रंग में रंगो। गुरु ही मेरी आत्मा, प्राण एवं धन है और वह सदा नानक के साथ रहता है॥ ४॥ २॥ १०४॥

आसा महला ५ ॥ साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥ दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥ १ ॥ हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे ॥ होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिंदक गाल्हि सुणी सचे तिसु धणी ॥ सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥ २ ॥ नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥ ३ ॥ बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा ॥ नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १०५ ॥

हे मेरी माता ! यदि अलख एवं अपार मेरा मालिक प्रभु एक क्षण भर के लिए भी मेरे मन में बस जाए तो मेरे दुःख, दर्द एवं रोग सब दूर हो जाते हैं॥ १॥ मैं अपने मालिक पर कुर्बान जाती हूँ। उसका सुमिरन करने से मेरे मन-तन में बड़ा आनंद उत्पन्न होता है॥ १॥ रहाउ॥ उस सच्चे प्रभु के बारे में मैंने थोड़ी-सी बात सुनी है। हे मेरी माता ! मैं बहुत सुखी हूँ और सुख पाकर भी मैं उसका मूल्यांकन नहीं कर सकती॥ २॥ वह प्राणनाथ प्रभु मेरे नयनों को बहुत अच्छा लगता है। उसके दर्शन करके मैं मुग्ध हो गई हूँ। हे मेरी माता ! मैं गुणहीन हूँ, (फिर भी) उसने स्वयं

ही मुझे अपने दामन के साथ लगा लिया है॥ ३॥ वह प्रभु वेद, कतेब एवं समूचे जगत से अलग है। नानक का पातशाह हर जगह प्रगट दिखाई देता है॥ ४॥ ३॥ १०५॥

आसा महला ५ ॥ लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥ १ ॥ तेरी टेक गोविंद गुपाल दइआल प्रभ ॥ तूं सभना के नाथ तेरी सिसटि सभ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ नाम बिहूनड़िआ से मरन्हि विसूरि विसूरि ॥ २ ॥ दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥ विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥ ३ ॥ जैसे पसु हर्हिआउ तैसा संसारु सभ ॥ नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १०६ ॥

हे भगवान! तेरे लाखों ही भक्त तेरी आराधना करते रहते हैं और मुँह से 'प्रिय-प्रिय' जपते रहते हैं। फिर किस युक्ति से तुम मुझ गुणहीन एवं विकारी पुरुष को अपने साथ मिलाओगे॥ १॥ हे गोविन्द गोपाल! हे दयालु प्रभु! मुझे तेरी ही टेक है। तू सब जीवों का मालिक है, सारी सृष्टि तेरी पैदा की हुई है॥ १॥ रहाउ॥ तू सदैव ही संतों का सहायक है, जो तुझे सदैव प्रत्यक्ष देखते हैं। जो नाम विहीन मनुष्य हैं, वे दुःख एवं प्रायश्चित करते मरते हैं॥ २॥ जो सेवक दास भावना से प्रभु की सेवा करते हैं, उनका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है। जिन्होंने प्रभु नाम को भुला दिया है, उनका क्या हाल होगा ?॥ ३॥ जैसे पराए खेत में हरियाली खाने हेतु पशु जाता है और अपनी पिटाई करवाता है वैसे ही यह सारा संसार है। हे प्रभु! नानक के बन्धन काट कर उसे अपने साथ मिला लो॥ ४॥ ४॥ १०६॥

आसा महला ५ ॥ हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥ १ ॥ आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥ जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कंमु कमाइ जितु मुखु उजला ॥ सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥ २ ॥ जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥ हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥ ३ ॥ तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥ गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १०७ ॥

हे भाई! दुनिया के समस्त पदार्थ भुलाकर एक ईश्वर का ही चिन्तन करो। अपने झूठे अभिमान को छोड़कर अपना मन-तन प्रभु के समक्ष अर्पण कर दो॥ १॥ तू आठ प्रहर जग के रचयिता परमात्मा की स्तुति किया कर। हे मेरे मालिक! मैं तेरी नाम की देन से जीवित हूँ, मुझ पर कृपा धारण कीजिए। १॥ रहाउ॥ हे भाई! वही कर्म कर जिससे तेरा मुख लोक-परलोक में उज्ज्वल रहे। हे अल्लाह! जिसे तू (नाम) देता है वही सत्य से संलग्न होता है॥ २॥ हे भाई! उस हृदय घर को सुन्दर बना, जो कभी ध्वस्त नहीं होता। एक परमात्मा को अपने हृदय में बसाकर रख, वह अमर है, जो कभी मरता नहीं॥ ३॥ जो लोग प्रभु को अच्छे लगते हैं, उन्हें प्रभु प्यारा लगने लग जाता है। गुरु की कृपा से ही नानक ने अकथनीय परमात्मा का वर्णन किया है॥ ४॥ ५॥ १०७॥

आसा महला ५ ॥ जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥ भेदु न जाणहु मूलि सांई जेहिआ ॥ १ ॥ मनु तनु होइ निहालु तुम्ह संगि भेटिआ ॥ सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिंन्ह खे ॥ जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥ २ ॥ जिस नो मंने आपि सोई मानीऐ ॥ प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥ ३ ॥ दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह ॥ नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥ ४ ॥ ६ ॥ १०८ ॥

जो प्रभु-नाम को कभी विस्मृत नहीं करते, वे लोग कैसे होते हैं ? वे मालिक-प्रभु जैसे ही होते हैं, उनमें तथा प्रभु में बिल्कुल ही कोई भेद मत समझो॥ १॥ हे प्रभु! तुझे मिलने से मन-तन आनंदित हो जाते हैं। प्रभु-भक्त की कृपा से मैंने सुख पाया है और उसने मेरा सारा दुख मिटा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे मालिक! जितने भी खण्ड-ब्रह्मण्ड में तेरे भक्त रहते हैं, उनका तूने उद्धार कर दिया है। जिनके मन में तू स्वयं निवास करता है, वही पूर्ण भक्त होते हैं॥२॥ हे साहिब! जिसे तू स्वयं स्वीकार करता है, केवल उसे मान-सम्मान प्राप्त होता है। ऐसा स्वीकृत हुआ एवं प्रसिद्ध पुरुष सर्वत्र लोकप्रिय हो जाता है॥ ३॥ हे सच्चे पातशाह! नानक की यह इच्छा पूर्ण कीजिए कि वह दिन-रात तेरी आराधना करके तुम्हें श्वास-श्वास में बसाकर रखे॥ ४॥ ६॥ १०८॥

आसा महला ५ ॥ पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥ एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥ १ ॥ जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥ तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ ॥ जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ ॥ भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥ ३ ॥ जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ ॥ नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १०६ ॥

हमारा मालिक प्रभु हर जगह पर मौजूद है। सबका मालिक एक है, जिसके सिर पर स्वामित्व का छत्र झूलता है। उसके बराबर दूसरा कोई नहीं॥ १॥ हे सबके रखवाले ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा कीजिए। तेरा अलावा अपने नेत्रों से मैंने किसी को नहीं देखा॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु स्वयं ही (जीवों का) पालन-पोषण करता है और सबके हृदय की देखभाल करता है। जिसके मन में वह स्वयं बसता है, उसे कभी विस्मृत नहीं करता॥ २॥ जो कुछ भी परमात्मा कर रहा है, वह स्वयं अपनी इच्छा से कर रहा है। युगों-युगांतरों से वह अपने भक्तों का सहायक जाना जाता है॥ ३॥ जो व्यक्ति हरदम हरि का नाम जपता रहता है, यह कभी दुखी नहीं होता। हे प्रभु ! नानक को तेरे दर्शनों की प्यास है, इसलिए यह अभिलाषा पूरी कीजिए॥ ४॥ ७॥ १०६॥

आसा महला ५ ॥ किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥ कितीं इतु दरीआइ वंञन्हि वहदिआ ॥ १ ॥ बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लंघीऐ ॥ आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ ॥ हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥ २ ॥ कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा ॥ बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥ ३ ॥ महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥ छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ११० ॥

हे लापरवाह एवं गाफिल प्राणी ! तू प्रभु-नाम को भुलाकर क्यों अज्ञानता की नींद में सोया हुआ है। नाम से विहीन प्राणी इस जीवन की नदिया में बहे जा रहे हैं॥ १॥ हे मन ! हरि के सुन्दर चरणों रूपी जहाज पर सवार होकर संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। साधु की संगति में मिलकर आठ प्रहर भगवान के गुण गाते रहो॥ १॥ रहाउ॥ जो इन्सान अनेक भोग भोगता है वह प्रभु-नाम के बिना जगत से खाली हाथ चला जाता है। हरि की भक्ति के बिना वह माया में खप-खपकर बहुत रोता और दुखी होता है॥ २॥ जो व्यक्ति सुन्दर वस्त्र पहनता, स्वादिष्ट भोजन खाता, अपने शरीर पर सुगन्धित इत्र लगाता है। प्रभु-सिमरन के बिना उसका शरीर राख बन जाता है और अन्ततः उसने निश्चित ही संसार से चले जाना है॥ ३॥ यह संसार-सागर पार करने के लिए महा विषम है और विरले पुरुष ही इसको अनुभव करते हैं। हे नानक ! जीव का

जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा हरि की शरण लेने से ही होता है, और मुक्त वही होता है, जिसकी किस्मत में लिखा होता है॥ ४॥ ८॥ ११०॥

आसा महला ५ ॥ कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ ॥ एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥ १ ॥ मै गरीब सचु टेक तूं मेरे सतिगुर पूरे ॥ देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनो ॥ हरि कीरतनु आधारु निहचलु एहु धनो ॥ २ ॥ जेते माइआ रंग तेत पछाविआ ॥ सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥ ३ ॥ सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर गंभीरे ॥ आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ १११ ॥

दुनिया में कोई किसी का साथी नहीं, इसलिए अपने संबंधियों का कोई क्यों अहंकार करे ? एक परमात्मा का नाम ही जीवन का आधार है, जिससे भयानक संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥ १॥ हे मेरे पूर्ण सतिगुरु! एक तू ही मुझ गरीब का सच्चा सहारा है। तेरे दर्शन करने से मेरा मन धैर्यवान हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ राज्य, धन-पदार्थ एवं जंजाल किसी काम के नहीं गिने जाते। हरि का भजन ही मेरा आधार है और यह धन सदैव स्थिर है॥ २॥ माया के जितने भी रंग हैं, वे सब केवल परछाई समान हैं। परमात्मा का नाम सुखों का भण्डार है, गुरुमुख उसका यशोगान करते हैं॥ ३॥ हे प्रभु! तू गहनगम्भीर एवं सच्चा गुणीनिधान है। प्रभु की आशा एवं भरोसा नानक के मन में है॥ ४॥ ६॥ १११॥

आसा महला ५ ॥ जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥ सरब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु ॥ तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥ २ ॥ राखनहारु अपारु राखै अगनि माहि ॥ सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥ ३ ॥ सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा ॥ कारज सगले सिधि भए भेटिआ गुरु पूरा ॥ ४ ॥ १० ॥ ११२ ॥

जिसका सिमरन करने से दुख दूर हो जाते हैं और सहज सुख प्राप्त होता है, रात-दिन हाथ जोड़ कर उस हरि-प्रभु का ही ध्यान करना चाहिए॥ १॥ नानक का प्रभु वही है जिसकी सारी सृष्टि है। केवल वह सच्चा परमात्मा ही सत्य है और वह सब जीवों में समाया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ भीतर एवं बाहर वह मेरा साथी एवं सहायक है। वह ज्ञान प्राप्त किए जाने के योग्य है। हे मेरे मन! उसकी ही आराधना कर, तेरे समस्त रोग मिट जाएँगे॥ २॥ सबकी रक्षा करने वाला प्रभु अपार है। वह माता के गर्भ की अग्नि में भी जीवों की रक्षा करता है। हरि-प्रभु का नाम बहुत शीतल है, इसका सुमिरन करने से जलन बुझ जाती है॥ ३॥ हे नानक! जो मनुष्य संतजनों की चरण-धूलि हो जाता है, उसे सहज सुख एवं आनन्द प्राप्त हो जाता है। पूर्ण गुरु को मिलने से तमाम कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥ ४॥ १०॥ ११२॥

आसा महला ५ ॥ गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ ॥ होइ क्रिपालु दइआलु हरि रंगु माणीऐ ॥ १ ॥ आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥ अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥ मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥ २ ॥ चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइआ ॥ धंनु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥ नानक कै सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥ ४ ॥ ११ ॥ ११३ ॥

जगत का मालिक गोविंद गुणों का भण्डार है और उसे गुरु के समक्ष होकर ही जाना जाता है। जब दयालु प्रभु कृपालु हो जाता है तो जीव उसकी प्रीति का आनंद प्राप्त करता है॥ १॥ हे संतजनो! आओ हम मिल बैठकर हरि की कथा-कहानियों का गुणगान करें। लोगों की नुक्ताचीनी को छोड़कर हम रात-दिन प्रभु-नाम का सुमिरन करें॥ १॥ मैं प्रभु का नाम जप-जपकर ही जीवित रहता हूँ और इस तरह बड़ा आनंद प्राप्त होता है। इस संसार का मोह मिथ्या है, झूठा होने के कारण यह अति शीघ्र ही नष्ट हो जाता है॥ २॥ कुछ विरले पुरुष ही प्रभु के सुन्दर चरण कमलों से नेह लगाते हैं। वह मुख धन्य एवं सुहावना है, जो हरि का ध्यान करता है ॥ ३॥ भगवान का सिमरन करने से जन्म-मरण एवं काल (मृत्यु) का दुःख मिट जाता है। जो प्रभु को भला लगता है, वही नानक के लिए सुख-आनंद है॥ ४॥ ११॥ ११३॥

आसा महला ५ ॥ आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचहु ॥ अंम्रित नामु हरि हरि जपहु मिलि पापा मुंचहु ॥ १ ॥ ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥ २ ॥ जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते ॥ आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥ ३ ॥ दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥ राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥ ४ ॥ १२ ॥ ११४ ॥

हे मित्रजनो! आओ हम सब मिलकर हर प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ खाएँ। हम मिलकर हरि-परमेश्वर के नामामृत का जाप करें एवं अपने पापों को मिटाएँ॥ १॥ हे संतजनो! परम तत्व का विचार करो, इससे कोई विघ्न पैदा नहीं होता। गुरुमुख जन हमेशा सचेत रहते हैं और कामादिक पाँच विकारों का नाश कर देते हैं॥ १॥ रहाउ॥ बुद्धि एवं विनम्रता को अपनी जीवन-यात्रा के खर्च के तौर पर प्राप्त करके अहंत्व के विष को जला दो। गुरु की दुकान सच्ची है, जहाँ नाम रूपी पूरा सौदा मिलता है। आप नाम रूपी सौदे का ही व्यापार करो॥ २॥ जो अपने प्राण, शरीर एवं धन को गुरु के समक्ष अर्पण करते हैं, वे प्रतिष्ठित हैं। ऐसे मनुष्य अपने प्रभु को भले लगते हैं, और सदैव आनंद प्राप्त करते हैं॥ ३॥ जो लोग दुर्मति रूपी शराब को पीने लगते हैं, वे विकारग्रस्त होकर पागल हो जाते हैं। हे नानक! जो मनुष्य राम नाम रूपी रस में मस्त रहते हैं, वही सच्चे नशेड़ी हैं॥ ४॥ १२॥ ११४॥

आसा महला ५ ॥ उदमु कीआ कराइआ आरंभु रचाइआ ॥ नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥ २ ॥ सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥ नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥ ३ ॥ नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥ वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥ ४ ॥ १३ ॥ ११५ ॥

मैंने नाम जपने का उद्यम किया है पर यह उद्यम गुरु ने करवाया है। गुरु ने मेरे शुभ कार्य की शुरुआत कर दी है। गुरु ने मुझे यही मंत्र दृढ़ करवाया है कि मैंने नाम जप-जपकर ही जीना है॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु के चरण स्पर्श करता हूँ, जिन्होंने मेरी दुविधा निवृत्त कर दी है। प्रभु ने अपनी कृपा करके मुझे सत्य से संवार कर मेरा जीवन सुन्दर बना दिया है॥ १॥ रहाउ॥

अपनी इच्छा से प्रभु ने मेरा हाथ पकड़कर अपने हुक्म से मुझे अपने चरणों में लीन कर लिया है। जो प्रभु ने मुझे नाम की देन प्रदान की है, वह मेरे लिए पूर्ण प्रशंसा है॥ २॥ हे भाई ! प्रभु के नाम को जप कर मैं सदैव ही उसका गुणगान करता रहता हूँ। प्रभु ने मुझ पर कृपा धारण की है और सतिगुरु की दया से मेरा संकल्प सम्पूर्ण हो गया है॥ ३॥ मैं नाम धन प्राप्त करने के लिए प्रभु के गुण गाता हूँ। पूर्ण गुरु ने मुझे नाम-धन का लाभ दिया है। हे नानक ! संतजन व्यापारी हैं और अनन्त प्रभु उनका साहूकार है॥ ४॥ १३॥ ११५॥

आसा महला ५ ॥ जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥ ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥ १ ॥ हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा ॥ करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजा नाही अउरु को ता का भउ करीऐ ॥ गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥ २ ॥ द्रिसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना ॥ जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥ ४ ॥ १४ ॥ ११६ ॥

हे प्रभु ! जिस मनुष्य का एक तू ही ठाकुर है, वह बड़ा भाग्यशाली है। वह जीवन में सदैव सुखी एवं प्रसन्नचित्त रहता है और उसका सब भ्रम एवं डर दूर हो जाता है॥ १॥ (हे बन्धु !) हम गोबिन्द के सेवक है, मेरा ठाकुर सबसे बड़ा है। जो समस्त विधियों से स्वयं ही करने वाला और कराने वाला है, वही हमारा सच्चा गुरु है॥ १॥ रहाउ॥ सृष्टि में ईश्वर के बराबर दूसरा कोई नहीं, जिसका भय माना जाए। गुरु की सेवा करने से (प्रभु-चरणों में) निवास मिल जाता है और इस विषम जगत-समुद्र से पार हुआ जाता है॥ २॥ हे भगवान् ! तेरी दया-दृष्टि से आत्मिक सुख उपलब्ध होता है और नाम का भण्डार हृदय में बस जाता है। जिस पर तू कृपालु हो जाता है वह सेवक स्वीकार हो जाता है॥ ३॥ हरि का कीर्तन अमृत रस है, पर कोई विरला ही इस रस को पीता है। हे नानक ! यदि मुझ गोविन्द के चाकर को वेतन के रूप में उसका एक नाम मिल जाए तो मैं अपने हृदय में नाम जप-जप कर जीवन जीता रहूँ॥ ४॥ १४॥ ११६॥

आसा महला ५ ॥ जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥ सभु किछु ता का कांढीऐ थोरा अरु मूचा ॥ १ ॥ जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥ नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेपरवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा ॥ रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥ २ ॥ सखी सहेरी संग की सुमति द्रिड़ावउ ॥ सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥ ३ ॥ सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा ॥ ४ ॥ १५ ॥ ११७ ॥

हे सखियो ! मैं जिस परमात्मा की सेविका हूँ वह सबसे ऊँचा है। मेरे पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत है, उसका दिया हुआ ही कहलाता है॥१॥ हे सखियो ! यह शरीर, प्राण एवं धन इत्यादि मालिक प्रभु की दी हुई देन मानती हूँ। जिसके नाम से मैं उज्ज्वल हुई हूँ, मैं खुद को उसकी सेविका ही गिनती हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी ! तू बेपरवाह एवं आनंदमय है। तेरा नाम मेरे लिए माणिक एवं हीरा है। जिस जीव-स्त्री का तू मालिक है, वह हमेशा संतुष्ट रहती है और सदा सुख मानती है॥२॥ हे मेरी संगी सखी-सहेलियो ! मैं आपको एक सुमति समझाती हूँ। आप श्रद्धा से साधुओं की सेवा करो व नाम रूपी निधि हरि को पा लो॥ ३॥ सब जीव-स्त्रियाँ ठाकुर जी की दासियाँ हैं और सब उसे मेरा मालिक कहती हैं। हे नानक ! परमेश्वर जिस जीवात्मा का जीवन सुन्दर बना देता है, उनका बसेरा सदैव सुखद है॥ ४॥ १५॥ ११७॥

आसा महला ५ ॥ संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥ सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥ १ ॥ इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥ तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥ दूजा भाउ विसारीऐ एहु तंबोला खाइ री ॥ २ ॥ गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥ आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥ ३ ॥ तिस ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥ साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥ ४ ॥ १६ ॥ ११८ ॥

हे सुन्दर आत्मा! तू यह आचरण सीख ले कि तू संतजनों की दासी बनी रहे। समस्त गुणों में सर्वोत्तम गुण यही है कि तू अपने प्राणनाथ को कहीं दूर मत देख॥ १॥ हे सुन्दरी! तू अपने इस सुन्दर मन को मजीठ जैसे पक्के हरि-नाम के रंग से रंग ले। अपने अन्तर्मन से बुद्धिमता एवं चतुराई को छोड़कर जगत पालक प्रभु को अपने साथ समझ॥ १॥ रहाउ॥ हे आत्मा! प्राणनाथ प्रभु जो हुक्म करता है, उसे मानना चाहिए। इसे ही अपना शृंगार बना। प्रभु के अतिरिक्त दूसरा प्रेम भूल जा। तू यह पान खाया कर॥ २॥ हे आत्मा! गुरु के शब्द को अपना दीपक बना। इस सत्य की सेज बिछा। जो जीव-स्त्री हाथ जोड़कर आठ पहर उसके सम्मुख खड़ी रहती है, उसे जगत का बादशाह हरि मिल जाता है॥ ३॥ केवल उसके पास ही शुभ-आचरण एवं सभी शृंगार हैं और वही अपार रूपवान है। हे नानक! वही जीवात्मा सुहागिन है, जो करतार को प्यारी लगती है॥ ४॥ १६॥ ११८॥

आसा महला ५ ॥ डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥ १ ॥ ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥ हम छूटे अब उन्हा ते ओइ हम ते छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥ गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥ २ ॥ जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥ गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥ ३ ॥ ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा ॥ गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥ ४ ॥ १७ ॥ ११९ ॥

जब तक मेरे मन में भ्रम बने रहे, तब तक विकारों में गिरता और मोह में फँसकर डावांडोल होता रहा। जब गुरु ने मेरे भ्रम निवृत्त कर दिए तो मुझे सुख उपलब्ध हो गया॥ १॥ वे विवादास्पद कामादिक वैरी, सभी गुरु की कृपा से मुझ से दूर हो गए हैं। मैंने अब उनसे मुक्ति प्राप्त कर ली है, वे सब हमारा पीछा छोड़ गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब तक मैं भेदभाव की वृति को अपनाता रहा तो विकारों के बन्धन में फँसता रहा लेकिन जब गुरु ने अज्ञानता मिटा दी तो मोहिनी के बन्धनों से मुक्ति हो गई॥ २॥ जब तक मैं प्रभु के हुक्म को नहीं समझता था, तब तक मैं बहुत दुखी होता रहा। जब से गुरु को मिलकर मैंने उसके हुक्म को पहचान लिया है, तब से मैं सुखी हूँ॥ ३॥ मेरा कोई दुश्मन अथवा बुरा चाहने वाला नहीं, न ही कोई बुरा है। हे नानक! जो सेवक गुरु की श्रद्धा से सेवा करता है, वह प्रभु का बन्दा है॥ ४॥ १७॥ ११९॥

आसा महला ५ ॥ सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद सद बलि जाउ ॥ गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥ २ ॥ पुंन दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥ हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥ ३ ॥ भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ ॥ नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥ ४ ॥ १८ ॥ १२० ॥

मैं हरि का भजन-कीर्तन गाता रहता हूँ, जिससे मेरे मन में सहज सुख एवं आनंद बना रहता है। गुरु ने अपना नाम देकर नौ ग्रहों के संकट को दूर कर दिया है॥ १॥ मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, सदैव उस पर कुर्बान हूँ। जिन से मिलकर मेरा सच्चा प्रभु मुझे मिल गया है॥ १॥ रहाउ॥ जिसे प्रभु याद नहीं आता उसे ही शुभ-अशुभ शगुन प्रभावित करते हैं। जो मनुष्य हरि-प्रभु को भला लगता है, यमदूत उसके निकट नहीं आता॥ २॥ दान-पुण्य, जप-तप इत्यादि जितने भी शुभ कर्म हैं, ईश्वर का नाम इनसे सर्वश्रेष्ठ कर्म है। जो प्राणी अपनी रसना से परमेश्वर के नाम का जाप करता है उसके तमाम कार्य पूर्ण हो जाते हैं॥ ३॥ उसका भय विनष्ट हो गया है, उसकी दुविधा एवं मोह भी भाग गए हैं और प्रभु के बिना वह किसी दूसरे को नहीं देखता। हे नानक ! यदि परब्रह्म स्वयं रक्षा करे तो फिर मनुष्य को कोई दुःख नहीं सताता॥ ४॥ १८॥ १२०॥

आसा घरु ६ महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥ १ ॥ हउ मागउ आन लजावउ ॥ सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥ ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥ २ ॥ अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥ ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥ ३ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥ कहु नानक जउ साधसंगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥ ४ ॥ १ ॥ १२१ ॥

मैं अपने चित्त में प्रभु का सिमरन करता रहता हूँ और उसका सिमरन करके सर्व सुख पाता हूँ। मैं नहीं जानता कि आगे मैं उसको अच्छा लगूंगा अथवा नहीं। सब जीवों का दाता एक प्रभु ही है और शेष सभी उसके याचक हैं। प्रभु के अलावा मैं किसके पास माँगने के लिए जाऊँ॥ १॥ प्रभु के अतिरिक्त किसी दूसरे से माँगने पर मुझे लज्जा आती है। एक परमात्मा ही सृष्टि का छत्रपति राजा है, किसी दूसरे को उसके बराबर का सोच नहीं सकता॥ १॥ रहाउ॥ उठते-बैठते मैं उसके बिना रह भी नहीं सकता, उसके दर्शनों हेतु मैं बार-बार खोज करता हूँ। ब्रह्मा जैसे बड़े-बड़े देवते, सनक, सनंदन, सनातन एवं सनतकुमार जैसे ऋषि (जो ब्रह्मा के पुत्र कहलाए) प्रभु का महल तो उनके लिए भी दुर्लभ रहा॥ २॥ प्रभु अगम्य, अनन्त एवं अगाध बोध वाला है। उसकी उपमा का मूल्यांकन नहीं हो सकता। मैंने उस सद्पुरुष की शरण ली है और उस महापुरुष सतगुरु को ही स्मरण करता हूँ॥ ३॥ मेरा ठाकुर-प्रभु मुझ पर कृपालु एवं दयालु हो गया है, उसने मेरे गले से मोह-माया की फाँसी काट दी है। हे नानक ! अब जब मुझे साधु की संगति मिल गई है तो मैं फिर से जन्म नहीं लूँगा॥ ४॥ १॥ १२१॥

आसा महला ५ ॥ अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥ १ ॥ अवर बिसारी बिसारी ॥ नामु दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी ॥ नाम द्रिड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥ २ ॥ दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥ सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥ ३ ॥ जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥ स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥ ४ ॥ २ ॥ १२२ ॥

मैं अपने हृदय-घर में प्रभु का गुणानुवाद करता रहता हूँ और हृदय-घर से बाहर भी उसका ही यशोगान करता हूँ। सोते-जागते भी मैं उसका ही गुणगान करता हूँ। मैं गोविन्द के नाम का व्यापारी हूँ। मेरे साथ चलने हेतु उसने मुझे अपने नाम का यात्रा-खर्च दिया है॥ १॥ भगवान के अलावा दूसरी तमाम वस्तुएँ मैंने भुला दी हैं। पूर्ण गुरु ने मुझे प्रभु-नाम का दान दिया है और यह नाम ही मेरा जीवन का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ दुःख में भी मैं प्रभु का गुणगान करता हूँ, सुख में भी मैं उसका ही यशोगान करता हूँ और मार्ग पर चलते हुए यात्रा में भी मैं उसको ही याद करता हूँ। गुरु ने मेरे मन में नाम को बसा दिया है और मेरी प्यास बुझा दी है॥ २॥ मैं दिन में भी प्रभु की गुणस्तुति करता हूँ और रात को भी उसका ही गुणानुवाद करता हूँ और अपनी रसना से मैं उसको श्वास-श्वास से याद करता हूँ। सत्संगति में रहने से यह विश्वास कायम हो जाता है कि प्रभु जीवन एवं मृत्यु में भी हमारे साथ रहता है॥ ३॥ हे प्रभु! अपने दास नानक को यह दान दीजिए कि वह संतों की चरण-धूलि प्राप्त करके तेरी स्मृति को अपने मन में बसाकर रखे। मैं अपने कानों से तेरी ही कथा सुनूँ, अपने नयनों से तेरे ही दर्शन करूँ और अपना माथा गुरु के चरणों पर रखूँ॥ ४॥२॥ १२२॥

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा घरु १० महला ५ ॥ जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा ॥ पुत्र कलत्र ग्रिह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥ १ ॥ रे मन किआ करहि है हा हा ॥ द्रिसटि देखु जैसे हरिचंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥ भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति ओरको आहा ॥ २ ॥ जैसे अंभु कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा ॥ आवगि आगिआ पारब्रहम की उठि जासी मुहत चसाहा ॥ ३ ॥ रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥ सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण ओटाहा ॥ ४ ॥ १ ॥ १२३ ॥

हे मानव! यह शरीर जिसे तू शाश्वत मानता है, वह तो केवल दो दिनों का अतिथि है। पुत्र, पत्नी, गृह एवं घर की सारी सामग्री इन सबका मोह झूठा है॥ १॥ हे मन! तू क्यों खिलखिला कर मुस्कराता हुआ आहा! आहा! करता है? अपने नेत्रों से देख कि यह वस्तुएँ तो राजा हरिचंद की नगर की भाँति हैं इसलिए एक राम के भजन का लाभ प्राप्त कर ले॥ १॥ रहाउ॥ हे मन! जैसे शरीर पर पहने हुए वस्त्र दो-चार दिनों में पुराने हो जाते हैं, वैसे ही यह शरीर है। दीवार पर कहाँ तक भागा जा सकता है? अन्ततः उसका अन्तिम छोर आ ही जाता है॥ २॥ हे मन! जैसे कुण्ड में रखे हुए जल में गिर कर नमक गल जाता है, वैसे ही यह शरीर है। जब परब्रह्म की आज्ञा आती है तो एक क्षण एवं पल में ही प्राणी दुनिया छोड़ कर चला जाता है॥ ३॥ हे मन! तुम अपनी गिनी-चुनी सांसों के भीतर ही संसार में चलते-फिरते हो और भगवान के लिखे लेख अनुसार ही तुम सांस लेते हो। हे नानक! सदैव ही भगवान की कीर्ति करो। जिन्होंने सच्चे गुरु की शरण ली है, वे भवसागर में डूबने से बच गए हैं॥ ४॥ १॥ १२३॥

आसा महला ५ ॥ अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥ अंधकार महि रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ॥ १ ॥ जउ किरपा गोबिंद भई ॥ सुख संपति हरि नाम फल पाए सतिगुर मिलई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ॥ २ ॥ आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल त्रिसन बुझि गई ॥ एकु बोलु भी खवतो नाही साधसंगति सीतलई ॥ ३ ॥ एक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥ दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥ ४ ॥ २ ॥ १२४ ॥

अपुष्ट बात सीधी हो गई है और कट्टर कामादिक शत्रु भी सज्जन बन गए हैं। मेरे मन के अज्ञानता रूपी अन्धकार में ज्ञान रूपी रत्न आलोकित हो गया है और मलिन बुद्धि भी अब निर्मल हो गई है॥ १॥ जब जगतपालक गोविन्द कृपालु हो गया तो सतिगुरु से मिलकर मुझे सुख, सम्पत्ति एवं हरि-नाम का फल प्राप्त हो गए॥ १॥ रहाउ॥ मुझ कृपण को कोई नहीं जानता था लेकिन अब मैं तमाम लोकों में लोकप्रिय हो गया हूँ। पहले कोई भी मुझे अपने पास बैठने नहीं देता था परन्तु अब सारा संसार मेरे चरणों की सेवा करता है॥ २॥ पहले मैं आधे-आधे पैसे की खोज में भटकता रहता था परन्तु अब मेरे मन की तृष्णा बुझ गई है। पहले मैं किसी का एक कटु वचन भी सहन नहीं कर पाता था, पर अब सत्संगति के प्रभाव से सहनशील हो गया हूँ॥ ३॥ प्रभु के कौन-कौन से गुण एक जिह्वा से व्यक्त करूँ? क्योंकि वह तो अगम्य एवं अपरंपार है। नानक एक यही प्रार्थना करता है कि हे हरि! मैं तेरी शरण में आया हूँ, इसलिए मुझे अपने दासों का दास बना दे॥ ४॥ २॥ १२४॥

आसा महला ५ ॥ रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥ ससत वखरु तूं घिंनहि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥ १ ॥ सतिगुर तेरी आसाइआ ॥ पतित पावनु तेरो नामु पारब्रहम मै एहा ओटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥ निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥ २ ॥ पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥ साच धरम सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥ ३ ॥ दीन दइआल क्रिपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ॥ नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२५ ॥

हे मूर्ख! अपने लाभ के लिए तू बहुत ही आलसी है परन्तु अपने नुक्सान हेतु तू शीघ्र ही भाग कर जाता है। हे पापी! तुम प्रभु-नाम रूपी सस्ता सौदा नहीं लेते और विकारों के ऋण से बँधे हुए हो॥ १॥ हे मेरे सतिगुरु! मुझे तेरी ही आशा है। हे परब्रह्म! तेरा नाम पतितों को पावन करने वाला है। केवल यही मेरी ओट है॥ १॥ रहाउ॥ हे मूर्ख! अश्लील गीत सुनकर तुम मस्त हो जाते हो परन्तु प्रभु का नाम-सुमिरन करने में तुम आलस्य करते हो। किसी की निन्दा की कल्पना से तुम बहुत प्रसन्न होते हो परन्तु तेरी यह बुद्धि विपरीत है॥ २॥ हे मूर्ख! तुम पराया धन, पराया तन, पराई स्त्री एवं परनिन्दा में उलझे हो एवं पागल हो गए हो इसलिए अभक्ष्य का भक्षण करते हो। हे मूर्ख! सच्चे धर्म के साथ तुम्हारी कोई रुचि नहीं और सत्य को सुनकर तुम क्रुद्ध हो जाते हो॥ ३॥ हे दीनदयालु! हे कृपालु प्रभु-ठाकुर! तेरे भक्तों को तेरे हरि नाम का ही सहारा है। हे प्रभु! नानक ने बड़े चाव से तेरी शरण ली है, उसे अपना बनाकर उसकी लाज रख लो॥ ४॥ ३॥ १२५॥

आसा महला ५ ॥ मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥ जह जानो सो चीति न आवै अहंबुधि भए आंधे ॥ १ ॥ मन बैरागी किउ न अराधे ॥ काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी करत दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥ जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ॥ २ ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥ दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥ ३ ॥ जउ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ॥ ४ ॥ इउ जपिओ भाई पुरखु बिधाते ॥ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२६ ॥

मनुष्य नश्वर पदार्थों तथा कुसंगति में लिपटा हुआ है। वह माया के मोह में फँसा रहता है। जहाँ उसने जाना है, उसे वह स्मरण ही नहीं करता। वह अपनी अहंबुद्धि के कारण अन्धा बना रहता है॥ १॥ हे मेरे वैरागी मन! तू प्रभु का सिमरन क्यों नहीं करता ? तू काया रूपी कच्ची कोठरी में रहता है। तेरे साथ तमाम पापों के रोग लिपटे हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ मेरा-मेरा करते-करते दिन-रात बीत जाते हैं। प्रत्येक पल एवं क्षण तेरी उम्र बीतती जा रही है । जैसे मीठे के आस्वादन में मक्खी फँस जाती है, वैसे ही भाग्यहीन मनुष्य झूठे धन्धे की दुर्गन्धि में फँसा रहता है॥ २॥ मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह रूपी विकारों के कारण इन्द्रियों के रस में मस्त रहता है। विधाता ने तुझे बार-बार योनियों में जन्म लेने की दुविधा दे दी है इसलिए तुम पुनःपुनः आवागमन में भटकते हो॥ ३॥ जब गरीबों का दुःख दूर करने वाला प्रभु कृपालु होता है तो गुरु से मिलकर सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। हे नानक! मैं दिन-रात भगवान का ध्यान करता हूँ और उसने मेरे तमाम रोग पीट कर बाहर निकाल दिए हैं॥ ४॥ हे मेरे भाई! इस तरह तुम्हें विधाता का सुमिरन करना चाहिए। गरीबों के दुःख नाश करने वाला दयालु हो गया है और मेरा जन्म-मरण का दुःख दूर हो गया है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ ४॥ ४॥ १२६॥

आसा महला ५ ॥ निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥ १ ॥ अंधे चेति हरि हरि राइआ ॥ तेरा सो दिनु नेड़ै आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पलक द्रिसटि देखि भूलो आक नीम को तूंमरु ॥ जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥ २ ॥ बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥ छोडि जाहि तिन ही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥ ३ ॥ सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिसु गुरु पूरा ॥ कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२७ ॥

इन्सान क्षण भर के काम-सुख के स्वाद के कारण करोड़ों दिन के दुख भोगता है। वह एक घड़ी, क्षण हेतु रमण करता है और तदुपरांत बार-बार पछताता है॥ १॥ हे ज्ञानहीन प्राणी! जगत के मालिक परमेश्वर को याद कर, क्योंकि तेरा वह मृत्यु का दिन समीप आ रहा है॥ १॥ रहाउ॥ हे ज्ञानहीन प्राणी! तुम एक क्षण भर के लिए अपनी आँखों से कड़वे पदार्थ अक, नीम को देखकर भूल गए हो। जैसे विषैले सर्प का साथ होता है, वैसे ही पराई स्त्री का भोग-विलास है॥ २॥ वैर बढ़ाने वाली मोहिनी हेतु तू पाप करता रहता है और नाम रूपी वस्तु उसके पास अमानत ही पड़ी रहती है। जो संगी तुझे छोड़ देते हैं उनके साथ तुम्हारा मेल-जोल है और अपने मित्रों से तुम्हारी शत्रुता है॥ ३॥ समूचा जगत इस तरह माया-जाल में फँसा हुआ है, जिसका रखवाला पूर्णगुरु बनता है केवल वही इससे बचकर निकलता है। हे नानक! ऐसा व्यक्ति भवसागर से पार हो गया है और उसका शरीर भी पवित्र हो गया है॥ ४॥ ५॥ १२७॥

आसा महला ५ दुपदे ॥ लूकि कमानो सोई तुम्ह पेखिओ मूड़ मुगध मुकरानी ॥ आप कमाने कउ ले बांधे फिरि पाछै पछुतानी ॥ १ ॥ प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥ भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥ बखसि लैहु पारब्रहम सुआमी नानक सद कुरबानी ॥ २ ॥ ६ ॥ १२८ ॥

हे ईश्वर! जो कर्म मनुष्य छिपकर करता है, उसे तुम देखते हो लेकिन मूर्ख एवं बेवकूफ मनुष्य इससे मुकरता है। अपने कृत कर्मो के कारण वह जकड़ लिया जाता है और तदुपरांत वह पश्चाताप करता है॥ १॥ मेरा प्रभु मनुष्य की समस्त विधियों को पहले ही जान लेता है। हे भ्रम

के हाथों लुटे हुए जीव! तुम अपने कर्मों पर पर्दा डालते हो परन्तु तदुपरांत तुझे अपने मन के भेदों को स्वीकार करना पड़ेगा॥ १॥ रहाउ॥ जिस ओर प्रभु जीवों को लगाता है, वह बेचारे उधर ही लग जाते हैं। कोई नश्वर प्राणी क्या कर सकता है ? हे परब्रह्म स्वामी! मुझे क्षमा कर दीजिए, नानक सदैव ही तुझ पर कुर्बान जाता है॥ २॥ ६॥ १२८॥

आसा महला ५ ॥ अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥ १ ॥ सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥ २ ॥ ७ ॥ १२६ ॥

प्रभु स्वयं ही अपने सेवक की इज्जत रखता है और स्वयं ही उससे अपना नाम-सिमरन करवाता है। जहाँ-कहीं भी उसके सेवक का कामकाज होता है वहाँ ही प्रभु शीघ्र पहुँच जाता है॥ १॥ अपने सेवक को प्रभु उसके समीपस्थ होकर दिखा देता है। जो कुछ सेवक अपने स्वामी से कहता है, वह तत्काल ही पूरा हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मैं उस सेवक पर बलिहारी जाता हूँ जो अपने प्रभु को अच्छा लगता है। उसकी शोभा सुनकर नानक का मन खिल गया है और उस सेवक के चरण-स्पर्श करने के लिए वह उसके पास जाता है॥ २॥ ७॥ १२६॥

आसा घरु ११ महला ५ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसा रे ॥ अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही परवेसा रे ॥ १ ॥ साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे ॥ साधसंगि मिलि हरि गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ ब्रहम की कीन्ही कहहु कवन बिधि तरीऐ रे ॥ घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥ २ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे ॥ सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥ ३ ॥ १ ॥ १३० ॥

नटुआ अनेक विधियों से स्वांग दिखाता है, परन्तु वह जैसा होता है, वैसा ही रहता है। इसी तरह जीव भ्रम में फँसकर अनेक योनियों में भटकता रहता है परन्तु सुख में उसका प्रवेश नहीं होता॥ १॥ हे मेरे सज्जनो! मित्रो एवं संतजनो! हरि-परमेश्वर के नाम के बिना सब कुछ नश्वर है। जिस व्यक्ति ने भी साधु की संगति में मिलकर भगवान का गुणगान किया है उसने यह अमूल्य मानव जन्म जीत लिया है॥ १॥ रहाउ॥ त्रिगुणात्मक माया ब्रह्म ने उत्पादित की है बताओ, हे भाई! किस युक्ति से इससे पार हुआ जा सकता है ? इसमें विषय-विकारों के अनेक भँवर पड़ गए हैं। यह माया अथाह एवं विषम है। गुरु के शब्द द्वारा ही इससे पार हुआ जा सकता है॥ २॥ हे नानक! जिसने निरन्तर खोज, तलाश एवं चिन्तन करने से यह यथार्थ जान लिया है कि प्रभु का नाम तमाम गुणों का भण्डार है, जिसके तुल्य मोल का कोई पदार्थ नहीं, उसे सुमिरन करने से मन मोती जैसा हो जाता है और नाम-स्मरण में लीन हो जाता है॥ ३॥ १॥ १३०॥

आसा महला ५ दुपदे ॥ गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे ॥ नाम रंगि इहु मनु त्रिपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥ १ ॥ हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे ॥ खिन महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब देखउ प्रभु अपना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे ॥ नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥

गुरु की कृपा से प्रभु मेरे मन में बस गया है और जो कुछ मैं माँगता हूँ वही मुझे मिल जाता है। नाम के रंग से यह मन तृप्त हो गया है और दोबारा कहीं ओर नहीं जाता॥ १॥ हमारा ठाकुर सबसे ऊँचा है। इसलिए मैं रात-दिन उसका ही गुणगान करता रहता हूँ। मेरा प्रभु क्षण भर में उत्पन्न करके नाश करने की शक्ति रखने वाला है। मैं तुझे उसके भय में रखना चाहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जब मैं अपने प्रभु स्वामी को देख लेता हूँ तो किसी दूसरे को अपने हृदय में नहीं बसाता। दास नानक को प्रभु ने स्वयं ही प्रतिष्ठा की पोशाक पहनाई है। मैं अपना भ्रम एवं भय को मिटा कर प्रभु की महिमा लिख रहा हूँ॥ २॥ २॥ १३१॥

आसा महला ५ ॥ चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥ १ ॥ जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥ जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे ॥ कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साधसंगति कै झली रे ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥

हे बन्धु! चार वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र हैं परन्तु कामादिक विकार-काम, क्रोध, मोह लोभ एवं अभिमान इन चार वर्णों के लोगों का मर्दन करने वाले हैं। षट्दर्शन वाले साधुओं को भी हथेली पर नचाते हैं। सुन्दर, बांके, मनोहर एवं बुद्धिमान सब को कामादिक पाँचों विकारों ने मोहित करके छल लिया है॥ १॥ ऐसा महाबली कौन है? जिसने पाँचों कामादिक शूरवीरों को मार लिया है। वही मनुष्य इस कलियुग में पूर्ण है, जिसने पाँचों विकारों को मारकर टुकड़े-टुकड़े करके अपना जीवन बिताया है॥ १॥ रहाउ॥ कामादिक पाँचों विकारों का बड़ा शक्तिमान वंश है, ये न किसी के वश में आते हैं और न किसी से भयभीत होकर भागते हैं। इनकी सेना बड़ी सशक्त एवं दृढ़ इरादे वाली हठी है। हे नानक! उस मनुष्य ने ही इन्हें प्रताड़ित करके कुचल दिया है, जिसने साधु की संगति में शरण ली है।॥ २॥ ३॥ १३२॥

आसा महला ५ ॥ नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥ १ ॥ बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसंगि नानक पीकी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥

हरि की उत्तम कथा ही जीव के लिए सर्वोत्तम है, दूसरे तमाम स्वाद नीरस हैं॥ १ ॥ रहाउ॥ अनेक गुणी, ज्ञानी, राग विद्या वाले लोग मुनिजन एवं षट्दर्शन के ज्ञाता हरि कथा के सिवाय अन्य पदार्थों को जीव के लिए लाभदायक नहीं समझते॥ १॥ हरि की यह कथा विषय-विकारों का नाश करने वाली, निराली, अनूप एवं सुखदायक है। हे नानक! हरि कथा रूपी अमृत-धारा सत्संगति में ही पान की जा सकती है॥ २॥ ४॥ १३३॥

आसा महला ५ ॥ हमारी पिआरी अंम्रित धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥ १ ॥ खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥

गुरुवाणी मुझे बहुत मीठी लगती है। यह अमृत की धारा है। गुरु ने एक निमिष मात्र भी अमृत-धारा का बहना मेरे मन से दूर नहीं किया॥ १॥ रहाउ॥ इस वाणी द्वारा भगवान के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं, प्रभु चरणों का स्पर्श मिल जाता है, मुरझाया हुआ मन खिल जाता है और मन में आनंद पैदा हो जाता है। यह वाणी करतार प्रभु के प्रेम से रंगी हुई है॥ १॥ इस वाणी का एक

क्षण भर भी पाठ करने से मनुष्य गुरु के चरणों तक पहुँच जाता है। हरदम इसका जाप करने से जीव यमदूत के जाल में नहीं फँसता। हरि ने नानक के कण्ठ एवं हृदय में गुरुवाणी का हार पहनाया है॥ २॥ ५॥ १३४॥

आसा महला ५ ॥ नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥ पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥ १ ॥ चालत बैसत सोवत हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥ २ ॥ हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥ ३ ॥ ६ ॥ १३५ ॥

मनुष्य हेतु साधु की संगत अति शुभ है॥ रहाउ॥ वहाँ आठ प्रहर, हर पल एवं घड़ी गोविन्द का ही गुणगान होता रहता है और गोविन्द की गुणस्तुति की बातें होती रहती हैं॥ १॥ उठते-बैठते एवं सोते समय वहाँ हरि का यशोगान होता है और उनके मन-तन में भगवान आ बसता है॥ २॥ नानक का कथन है कि हे ठाकुर जी ! मैं गुणविहीन हूँ पर तू मेरा गुणसम्पन्न स्वामी है और मैंने तेरी शरण लेनी ही उपयुक्त समझी है॥ ३॥ ६॥ १३५॥

रागु आसा महला ५ घरु १२

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रहम निरंकारु ॥ एक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥ १ ॥ सो प्रभु जाणीऐ सद संगि ॥ गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ ॥ महा भउजलु लंघीऐ सदा हरि गुण गाउ ॥ २ ॥ जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जम पुरि होइ ॥ नामु निधानु सोई पाए क्रिपा करे प्रभु सोइ ॥ ३ ॥ एक टेक अधारु एको एक का मनि जोरु ॥ नानक जपीऐ मिलि साधसंगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥ ४ ॥ १ ॥ १३६ ॥

अपनी समस्त चतुराइयाँ त्यागकर निरंकार परब्रह्म का भजन करो। एक सत्य-नाम के बिना शेष सब कुछ धूल-मिट्टी ही दिखाई देता है॥ १॥ (हे बन्धु !) उस प्रभु को सदैव अपने साथ समझना चाहिए। लेकिन गुरु की कृपा से ही एक हरि के प्रेम-रंग द्वारा ही इस तथ्य की सूझ मिलती है॥ १॥ रहाउ॥ एक ईश्वर की शरण ही ताकतवर है, उसकी शरण विना अन्य कोई ठिकाना नहीं। सदैव हरि का गुणगान करने से महाभयानक संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥ २॥ भगवान का स्तुतिगान करने से जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है और मनुष्य को यमपुरी में दुःख नहीं सहन करना पड़ता। जिस पर प्रभु कृपा करता है, वही मनुष्य नाम निधान को प्राप्त करता है॥ ३॥ एक ईश्वर ही मेरी टेक है और एक वही मेरा जीवन का आधार है। एक ईश्वर का ही मेरे मन में बल है। हे नानक ! सत्संगति में मिलकर प्रभु का नाम जपना चाहिए, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं॥ ४॥१॥१३६॥

आसा महला ५ ॥ जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग ॥ दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥ १ ॥ मेरे मन धिआइ हरि हरि नाउ ॥ हलति पलति सहाइ संगे एक सिउ लिव लाउ ॥ १॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु ॥ करम धरम अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥ नामु द्रिड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥ ३ ॥ चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥ जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥ ४ ॥ २ ॥ १३७ ॥

इन्सान को यह आत्मा, मन, तन एवं प्राण ईश्वर के दिए हुए हैं। उसने ही समस्त स्वादिष्ट पदार्थ प्रदान किए हैं। वह गरीबों का संबंधी एवं जीवनदाता है और शरण में आए अपने भक्तों की रक्षा करने में समर्थ है॥ १॥ हे मेरे मन ! हरि नाम का ध्यान करते रहो, चूंकि लोक-परलोक में वही सहायता करता है। इसलिए एक प्रभु से ही लगन लगाकर रखो॥ १॥ रहाउ॥ लोग संसार-सागर से पार होने के लिए वेदों एवं शास्त्रों का ध्यान (चिन्तन) करते हैं। धर्म-कर्म एवं अनेक पारम्परिक संस्कार हैं परन्तु नाम-सुमिरन का आचरण इन सब से सर्वोपरि है॥ २॥ गुरुदेव को मिलने से मनुष्य की कामवासना, क्रोध एवं अहंकार नष्ट हो जाते हैं। अपने अन्तर में प्रभु का नाम भली प्रकार बसाकर रखो, हरि की भक्ति करो; प्रभु की सेवा ही भला कर्म है॥ ३॥ हे मेरे दयालु प्रभु ! मैंने तेरे चरणों की शरण ली है। तू सम्मानहीनों का सम्मान है। हे प्रभु ! तू ही मेरी आत्मा एवं प्राणों का आधार है। तू ही नानक की शक्ति है॥ ४॥ २॥ १३७॥

आसा महला ५ ॥ डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग ॥ खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रहम इक रंग ॥ १ ॥ हरि को नामु जपीऐ नीति ॥ सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥ तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥ २ ॥ मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु ॥ चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ पारब्रहम गुण तेरा जसु गाउ ॥ सरब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३८ ॥

साधु की संगति किए बिना डगमगा कर अर्थात् श्रद्धाहीन होकर बहुत भारी दुःख पाया है। अब तू परब्रह्म प्रभु के प्रेम द्वारा हरि रस को पी तथा गोविंद के नाम का लाभ प्राप्त कर॥ १॥ (हे बन्धु !) नित्य ही हरि-नाम का जाप करते रहना चाहिए। श्वास-श्वास से प्रभु का ध्यान करो और अन्य सब प्रेम त्याग दो॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु स्वयं करने एवं जीवों से करवाने में समर्थ है और स्वयं ही जीवनदाता है। अपनी तमाम चतुराइयाँ त्याग कर आठ प्रहर प्रभु का जाप करो॥ २॥ वह सर्वोच्च, अगम्य, अपार प्रभु तेरा मित्र, सखा, सहायक एवं साथी बन जाएगा। प्रभु के चरण-कमल अपने हृदय में बसा केवल वही जीवन का आधार है॥ ३॥ हे मेरे परब्रह्म प्रभु ! मुझ पर कृपा करो, चूंकि तेरा गुणगान एवं यशोगान करूँ। प्रभु के नाम का सिमरन करने से जीवन व्यतीत करना नानक हेतु सर्व सुख एवं बड़ी बड़ाई है॥ ४॥ ३ ॥ १३८ ॥

आसा महला ५ ॥ उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि ॥ हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥ १ ॥ मन महि राम नामा जापि ॥ करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥ दइआ करहु किरम अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥ २ ॥ तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥ जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरि जन धूरि ॥ भाइ भगति भरम भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३९ ॥

हे ठाकुर जी ! मैं साधु की संगति में मिलकर तेरा दर्शन करता रहूँ। तुम मुझ से यही उद्यम कराते रहो, चूंकि मैं यह उद्यम करता रहूँ। हे मेरे प्रभु ! मेरे मन पर हरि-हरि नाम का रंग चढ़ा दो, तुम स्वयं ही मुझे अपने नाम के रंग से रंग दो॥ १॥ मैं अपने मन में राम नाम का जाप करता रहूँ। अपनी कृपा करके मेरे हृदय में आन बसो और स्वयं मेरा सहायक बनो॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे

प्रियतम प्रभु! तेरा नाम सुन-सुनकर तेरे दर्शनों का मुझे चाव उत्पन्न हो गया है। अपने तुच्छ कीड़े पर दया करो, केवल यही मेरा मनोरथ एवं प्रयोजन है॥ २॥ हे मेरे प्रभु! तू मेरा मालिक है और मेरा तन एवं धन सब तेरे ही दिए हुए हैं। मेरे वश में कुछ भी नहीं है। जैसे तुम रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ। मैं वही खाता हूँ जो तुम मुझे देते हो॥ ३॥ हरि के भक्तजनों की चरण-धूलि में किया हुआ स्नान जन्म-जन्मांतर के पाप काट देता है। प्रभु की प्रेम-भक्ति के कारण दुविधा एवं भय नष्ट हो जाते हैं। हे नानक! ईश्वर सदैव जीव के साथ ही रहता है॥ ४॥ ४॥ १३६॥

आसा महला ५ ॥ अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥ आपि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥ १ ॥ कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू आपि करता सभ स्रिसटि धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥ धरम राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥ २ ॥ सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि ॥ अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥ ३ ॥ हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ॥ ४ ॥ ५ ॥ १४० ॥

हे परमपिता, तेरे दर्शन अगम्य और अगोचर हैं। इसलिए तेरे दर्शन वही करता है जिसके मस्तक पर भाग्य उदय हुआ हो। कृपालु प्रभु ने स्वयं मुझ पर कृपा की है, इसलिए सतिगुरु ने मुझे हरि का नाम प्रदान किया है॥ १॥ गुरुदेव ने कलियुग का भी उद्धार कर दिया है। हे प्रभु! मूर्ख एवं बेवकूफ जो मल-मूत्र की भाँति दूषित थे, सब तेरी सेवा में जुट गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ तू जगत का रचयिता है, सारी सृष्टि को स्थापित करने वाला है और तू सब में समा रहा है। समूचा जगत तेरी चरण-सेवा में लगा हुआ है और यह देख कर धर्मराज आश्चर्य-चकित हो गया है॥ २॥ सतियुग, त्रैता एवं द्वापर को भला युग कहा जाता है परन्तु कलियुग सब युगों से उत्तम है। क्योंकि इस युग में मनुष्य इस हाथ से जैसा कर्म करता है, उसे वैसे ही उस हाथ से फल मिलता है। कोई भी निर्दोष व्यक्ति दूसरे दोषी इन्सान के पापों के परिणामस्वरूप नहीं पकड़ा जाता॥ ३॥ हे पूजनीय हरि! तुम वही करते हो जो तेरे भक्त तुझसे माँगते हैं। यही तेरा विरद् है। हे हरि! नानक भी हाथ जोड़कर तुझसे एक यही दान माँगता है कि मुझे अपने संतों के दर्शन प्रदान करो॥ ४॥ ५॥ १४०॥

रागु आसा महला ५ घरु १३   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ निरगुण निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥ १ ॥ जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥ २ ॥ कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥ ३ ॥ कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥ ४ ॥ १ ॥ १४१ ॥

हे सतगुरु! तेरे वचनों ने निर्गुण जीव भी भवसागर से पार कर दिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ तेरी संगति में महा क्रूर, दुष्ट एवं अपवादी भी पवित्र-पावन बन गए हैं॥ १॥ जो मनुष्य योनियों में भटकते थे और नरक में डाले जाते थे, उनके वंश का भी तूने उद्धार कर दिया है॥ २॥ जिन्हें कोई नहीं जानता था और जिनका कोई सम्मान नहीं करता था, वह हरि के द्वार पर लोकप्रिय हो गए हैं॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे मेरे सतगुरु! मैं कौन-सी उपमा एवं कौन-सी बड़ाई तुझ पर अर्पित करूँ, मैं क्षण-क्षण तुझ पर न्यौछावर होता हूँ॥ ४॥ १ ॥ १४१॥

आसा महला ५ ॥ बावर सोइ रहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह कुटंब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥ १ ॥ मिथन मनोरथ सुपन आनंद उलास मनि मुखि सति कहे ॥ २ ॥ अम्रितु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥ ३ ॥ करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥ ४ ॥ २ ॥ १४२ ॥

बावले मनुष्य माया-मोह की निद्रा में सो रहे हैं॥ १॥ रहाउ॥ वे कुटुंब के मोह एवं विषय विकारों के रसों में मस्त हुए हैं और झूठी उपलब्धियां प्राप्त करते हैं॥ १॥ मिथ्या मनोरथ एवं स्वप्न के आनन्दों एवं उल्लासों को मनमुख मनुष्य सत्य कहते हैं॥ २॥ अमृत रूपी हरि-नाम ही सदैव साथ देने वाला पदार्थ है। लेकिन मनमुख मनुष्य हरि-नाम का भेद तिलमात्र भी नहीं समझते॥ ३॥ हे नानक! परमात्मा ने अपनी कृपा करके जिन लोगों को सत्संगति में रखा हुआ है, वही उसकी शरण में आए हैं॥ ४॥ २॥ १४२॥

आसा महला ५ तिपदे ॥ ओहा प्रेम पिरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥ १ ॥ राज न भाग न हुकम न सादन ॥ किछु किछु न चाही ॥ २ ॥ चरनन सरनन संतन बंदन ॥ सुखो सुखु पाही ॥ नानक तपति हरी ॥ मिले प्रेम पिरी ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४३ ॥

मुझे तो उस प्रिय-प्रभु का ही प्रेम चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ सोना, माणिक्य, गज मोती एवं लाल नहीं, नहीं मुझे नहीं चाहिए॥ १॥ न राज्य, न धन-दौलत, न प्रभुसत्ता और न ही स्वाद इनमें से मुझे कुछ भी नहीं चाहिए॥ २॥ प्रभु-चरणों की शरण एवं संतों की वन्दना इनमें ही मैं सुखों का सुख अनुभव करता हूँ। हे नानक! प्रियतम-प्रभु का प्रेम मिलने से मेरी जलन बुझ गई है॥ ३॥ ३॥ १४३॥

आसा महला ५ ॥ गुरहि दिखाइओ लोइना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥ १ ॥ कारन करना धारन धरना एकै एकै सोहिना ॥ २ ॥ संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥ ३ ॥ ४ ॥ १४४ ॥

गुरु ने मुझे इन नेत्रों से भगवान के दर्शन करवा दिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे मोहन! लोक-परलोक, प्रत्येक शरीर एवं मन में सर्वत्र तू ही दिखाई दे रहा है॥ १॥ हे सुन्दर स्वामी! एक तू ही सृष्टि का मूल रचयिता है और एक तू ही समूचे जगत को आधार देने वाला है॥ २॥ हे नानक! मैं तेरे संतजनों के चरण स्पर्श करता हूँ, उनके दर्शनों पर कुर्बान जाता हूँ और पूर्ण सुखपूर्वक सोता हूँ॥ ३॥ ४॥ १४४॥

आसा महला ५ ॥ हरि हरि नामु अमोला ॥ ओहु सहजि सुहेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगि सहाई छोडि न जाई ओहु अगह अतोला ॥ १ ॥ प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥ २ ॥ अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोल्हा ॥ ३ ॥ ५ ॥ १४५ ॥

हरि-प्रभु का नाम बड़ा अनमोल है। जिसे हरि-नाम मिल जाता है, वह सहज ही सुखपूर्वक रहता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान का नाम सर्वदा उसके साथ रहता है और उसे छोड़कर कहीं नहीं जाता। वह अथाह एवं अतुलनीय है॥ १॥ वह प्रभु ही मेरा प्रियतम, भाई, पिता एवं मेरी माता है और भक्तों (के जीवन) का आधार है॥ २॥ हे नानक! मैंने यह नाम गुरु से पाया है और उसने मुझे अलख प्रभु दिखा दिया है। यह प्रभु का अद्भुत खेल है॥ ३॥ ५॥ १४५॥

आसा महला ५ ॥ आपुनी भगति निबाहि ॥ ठाकुर आइओ आहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥ १ ॥ एह मुकता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥ २ ॥ नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४६ ॥

हे ठाकुर जी! मैं बड़ी आशा से तेरी शरण में आया हूँ, मेरी भक्ति को अंत तक निभा दो॥ १॥ रहाउ॥ नाम-पदार्थ पाकर मेरा जन्म साकार हो जाए, अपने चरण-कमल मेरे हृदय में बसा दो॥ १॥ मेरे लिए यही मोक्ष है और यही जीवन युक्ति है कि मुझे संत-महापुरुषों की संगति में रखो॥ २॥ नानक वन्दना करता है कि हे हरि! मैं तेरा नाम याद करता रहूँ और तेरा गुणगान करता हुआ सहज ही समाया रहूँ॥ ३॥ ६॥ १४६॥

आसा महला ५ ॥ ठाकुर चरण सुहावे ॥ हरि संतन पावे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥ १ ॥ एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥ २ ॥ दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥ ३ ॥ ७ ॥ १४७ ॥

ठाकुर जी के चरण अति सुन्दर हैं। हरि के संतजनों ने उन्हें प्राप्त किया है॥ १॥ रहाउ॥ वह अपना अहंत्व दूर कर देते हैं, प्रभु की सेवा करते हैं और प्रेम में भीगकर उसकी गुणस्तुति करते हैं॥ १॥ उनको एक ईश्वर की ही आशा है, उनको उसके दर्शनों की प्यास है और अन्य कुछ भी उन्हें अच्छा नहीं लगता॥ २॥ हे प्रभु! यह सब तेरी दया है। बेचारे जीवों के वश में क्या है? नानक तुझ पर बलिहारी जाता है॥ ३॥ ७॥ १४७॥

आसा महला ५ ॥ एकु सिमरि मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥ १ ॥ प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥ २ ॥ जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥ ३ ॥ ८ ॥ १४८॥

अपने मन में एक प्रभु को ही याद करते रहो॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के नाम का ध्यान करो और उसे अपने हृदय में बसाओ, उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं॥ १॥ प्रभु की शरण में आने से सर्व फल प्राप्त हो जाते हैं और सारे दुःख-संताप मिट जाते हैं॥ २॥ हे नानक! विधाता सब जीवों का दाता है और प्रत्येक हृदय में मौजूद है॥ ३॥ ८ ॥ १४८॥

आसा महला ५ ॥ हरि बिसरत सो मूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥ १ ॥ राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ २ ॥ कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥ ३ ॥ ९ ॥ १४९ ॥

जिस मनुष्य ने हरि को भुला दिया है वह मृतक है॥ १॥ रहाउ॥ जो नाम का ध्यान करता है, उसे सभी फल मिल जाते हैं और ऐसा व्यक्ति सुखी हो गया है॥ १॥ जो मनुष्य अहंकारवश अपने-आपको राजा कहलवाता है और अहंकारी कर्म करता है, उसे दुविधा ने यूं पकड़ लिया है जैसे दुविधावश तोता नलिनी से चिपटा रहता है॥ २॥ हे नानक! जिस मनुष्य को सतिगुरु मिल जाता है, वह अटल हो जाता है॥ ३॥ ९॥ १४९॥

आसा महला ५ घरु १४ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ओहु नेहु नवेला ॥ अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो प्रभ भावै जनमि न आवै ॥ हरि प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥ १ ॥ प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥ २ ॥ १ ॥ १५० ॥

वह प्रेम सदैव ही नवीन है जो प्रियतम प्रभु के साथ बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जो इन्सान प्रभु को भला लगता है, वह दोबारा जन्म नहीं लेता। वह हरि की प्रेम-भक्ति एवं उसकी प्रीति में लीन रहता है॥ १॥ अपना यह मन प्रभु के समक्ष अर्पण करने से ही उससे मिला जा सकता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु जी! अपनी दया करो ताकि मुझे तेरा नाम मिल जाए॥ २॥ १॥ १५०॥

आसा महला ५ ॥ मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंम्रिति सासत्र बहु करम कमाए प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥ १ ॥ वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥ २ ॥ २ ॥ १५१ ॥

हे मेरे प्यारे राम! मुझे आकर मिलो, तेरे सिवाय मुझे कोई धैर्य नहीं दे सकता॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! जिन लोगों ने स्मृतियाँ एवं शास्त्र पढ़े हैं और बहुत धर्म-कर्म किए हैं, उन्हें भी तेरे दर्शनों के बिना कोई सुख उपलब्ध नहीं हुआ॥ १॥ मनुष्य व्रत, संकल्प, संयम करते हुए थक गए हैं। हे नानक! साधुओं की शरण में जाने से ही इन्सान प्रभु के साथ जा बसता है॥ २॥ २॥ १५१॥

आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥ पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥ १ ॥ लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥ खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥ निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥ २ ॥ डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ जेंह कारजि रहै ओल्हा सोइ कामु न करिआ ॥ ३ ॥ ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥ मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १५२ ॥

मनुष्य विकारों एवं माया के नशे में सोया हुआ है और उसे कोई सूझबूझ नहीं आती। जब यमदूत उसे बालों से पकड़ कर उठाता है तो तभी उसे अपने असल घर की होश आती है॥ १॥ जो मनुष्य लोभ एवं विषय-विकारों के विष से लगा हुआ है, वह पराया धन चुराकर दूसरों के दिल को दुखाते हैं। एक क्षण में नाश होने वाले माया के नशे में असुर मस्त हुए हैं परन्तु प्रभु को नहीं जानते॥ १॥ रहाउ॥ वेद, शास्त्र एवं संतजन पुकार-पुकार कर उपदेश करते हैं परन्तु माया के नशे के कारण बहरा मनुष्य सुनता ही नहीं। जब जीवन की बाजी खत्म हो जाती है और इसे हार कर वह मर जाता है तो मूर्ख मनुष्य अपने मन में पश्चाताप करता है॥ २॥ सारा दण्ड उसने बिना कारण के ही भरा है। प्रभु के दरबार में यह स्वीकृत नहीं हुआ। जिस कर्म से उसके पापों पर पर्दा पड़ना था, वह कर्म उसने किया ही नहीं॥ ३॥ जब गुरु ने मुझे ऐसा जगत दिखा दिया तो मैं एक ईश्वर का ही भजन-कीर्तन करने लग गया। अपने गर्व एवं बल का अभिमान छोड़कर नानक ने प्रभु की शरण ली है॥ ४॥ १॥ १५२॥

आसा महला ५ ॥ बापारि गोविंद नाए ॥ साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रतिआ गोविंद सिउ ॥ संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥ १ ॥ गुर गिआनु मनि द्रिड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥ सभ तजी मनै की काम करा ॥ चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ हरि दरसनो दिखावहु

मोहि तुम बतावहु ॥ नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥ २ ॥ २ ॥ १५३ ॥

मैं गोविंद के नाम का व्यापार करता हूँ। मैंने साधु-संतों को मना लिया है अर्थात् प्रसन्न कर लिया है और अपने प्रिय-प्रभु को पा लिया है। मैं भगवान के गुण गाता रहता हूँ और मेरे मन में पाँच प्रकार के नाद गूँजते रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब मुझ पर प्रभु की कृपा हुई तो मुझे सहज ही उसके दर्शन प्राप्त हो गए और अब मैं गोविंद के प्रेम से रंगा हुआ हूँ। संतों की सेवा करने से मुझे अपने नाथ की प्रीति प्राप्त हो गई॥ १॥ मैंने गुरु के ज्ञान को अपने मन में बसा लिया है और मैं प्रसन्न हूँ कि मैं आवागमन में नहीं आऊँगा, मैंने सहज ही नाम का भण्डार अपने मन में पा लिया है। मैंने अपने मन की सभी कामनाओं को छोड़ दिया है। बहुत देर हो गई है, जब से मेरे मन में प्रभु दर्शनों की बहुत प्यास लगी हुई है। हे हरि ! मुझे अपने दर्शन दीजिए, आप स्वयं ही मेरा मार्गदर्शन कीजिए। नानक का कथन है कि हम दीन तेरी शरण में आए हैं, हमें अपने गले से लगा लो॥ २॥ २॥ १५३॥

आसा महला ५ ॥ कोऊ बिखम गार तोरै ॥ आस पिआस धोह मोह भरम ही ते होरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥ १ ॥ संतसंगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥ अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥ निधि नामु नानक मोरै ॥ २ ॥ ३ ॥ १५४ ॥

कोई विरला पुरुष ही मोह-माया के विषम किले को ध्वस्त करता है और अपने मन को आशा, प्यास, छल, मोह एवं भ्रम से रोकता है॥ १॥ रहाउ॥ काम, क्रोध, लोभ, अभिमान के इस रोग को कोई विरला ही दूर कर सकता है॥ १॥ मैं संतों की संगति में मिलकर नाम-रंग में लीन होकर गोविंद के गुण गाता रहता हूँ। मैं हर रोज प्रभु का ध्यान करता रहता हूँ ताकि भ्रम की दीवार को जीतकर मिटा दूँ। हे नानक ! इस भ्रम की दीवार को तोडने के पश्चात् नाम-निधि मेरी हो जाएगी॥ २॥ ३॥ १५४॥

आसा महला ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ मनि सिमरि गोबिंद नाम ॥ हरि भजन सफल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥ मन संतना कै चरनि लागु ॥ १ ॥ प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रहम हरि चरण सिमरि जागु ॥ करि भगति नानक पूरन भागु ॥ २ ॥ ४ ॥ १५५ ॥

(हे भाई !) कामवासना, क्रोध एवं लालच को त्याग कर अपने मन में गोबिन्द का नाम याद करते रहो। हरि का भजन करने से सारे कार्य सफल हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ अपना अभिमान, मोह, पाप एवं झूठ को छोडकर राम-नाम का जाप किया करो। हे मन ! संतों के चरणों से लग जाओ॥ १॥ हे भाई ! गोपाल प्रभु बड़ा दीनदयालु, पतितपावन एवं परब्रह्म है। इसलिए निद्रा से जागकर हरि-चरणों की आराधना करो। हे नानक ! प्रभु की भक्ति करो, तेरा भाग्य पूर्ण उदय होगा॥ २॥ ४॥ १५५॥

आसा महला ५ ॥ हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिनहूं भै निरभै खिनहूं खिनहूं उठि धाइओ ॥ खिनहूं रस भोगन खिनहूं खिनहू तजि जाइओ ॥ १ ॥ खिनहूं जोग ताप बहु पूजा खिनहूं भरमाइओ ॥ खिनहूं किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइओ ॥ २ ॥ ५ ॥ १५६ ॥

आनन्द रूपी भगवान ने यह दुनिया बना कर एक खेल दिखाया है, जिसमें कोई इन्सान खुशियाँ मना रहा है, कोई शोक में डूबा हुआ है और कोई वैराग्यवान है॥ १॥ रहाउ॥ एक क्षण

में ही मनुष्य भयभीत हो जाता है, एक क्षण में ही निडर एवं एक क्षण में ही वह उठकर दौड़ जाता है। एक क्षण में ही वह रस भोगता है और एक क्षण एवं पल में ही वह छोड़कर चला जाता है॥ १॥ एक क्षण में ही योग, तपस्या एवं बहुत प्रकार की पूजा करता है और एक क्षण में ही वह भ्रम में भटकता है। हे नानक ! एक क्षण में ही प्रभु अपनी कृपा द्वारा मनुष्य को सत्संगति में रखकर अपने रंग में लगा लेता है॥ २॥ ५॥ १५६॥

रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

गोबिंद गोबिंद करि हां ॥ हरि हरि मनि पिआरि हां ॥ गुरि कहिआ सु चिति धरि हां ॥ अन सिउ तोरि फेरि हां ॥ ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंकज मोह सरि हां ॥ पगु नही चलै हरि हां ॥ गहडिओ मूड़ नरि हां ॥ अनिन उपाव करि हां ॥ तउ निकसै सरनि पै री सखी ॥ १ ॥ थिर थिर चित थिर हां ॥ बनु ग्रिहु समसरि हां ॥ अंतरि एक पिर हां ॥ बाहरि अनेक धरि हां ॥ राजन जोगु करि हां ॥ कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥ २ ॥ १ ॥ १५७ ॥

हे मेरी सखी ! मैं गोविंद-गोविंद ही करती हूँ और अपने मन में हरि-नाम से प्यार करती हूँ। गुरु ने जो कुछ कहा है, उसे मैं अपने चित्त में धारण करती हूँ, मैं दूसरों से अपने प्रेम को तोड़कर अपने मन को उनकी तरफ से हटा रही हूँ। इस तरह मैंने प्रियतम-प्रभु को पा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ संसार-सरोवर में मोह रूपी कीचड़ विद्यमान है। मनुष्य के चरण इसलिए हरि की ओर नहीं चलते। मूर्ख मनुष्य इस मोह के कीचड़ में फँसा हुआ है। कोई दूसरा समाधान नहीं करता। हे सखी ! यदि मैं प्रभु की शरण में जाऊँगी तभी संसार-सरोवर के मोह रूपी कीचड़ से बाहर निकलूँगी॥ १॥ इस तरह मेरा हृदय अटल एवं दृढ़ है। जंगल एवं घर मेरे लिए एक समान हैं। मेरे अन्तर्मन में एक प्रियतम प्रभु ही बसता है। मैं अपने मन से अनेक सांसारिक धंधों को बाहर रखती हूँ। मैं राजयोग मानती हूँ। नानक का कथन है कि हे सखी ! सुन, इस तरह लोगों के साथ रहती हुई भी मैं लोगों से निर्लिप्त रहती हूँ॥ २॥ १॥ १५७॥

आसावरी महला ५ ॥ मनसा एक मानि हां ॥ गुर सिउ नेत धिआनि हां ॥ द्रिड़ु संत मंत गिआनि हां ॥ सेवा गुर चरानि हां ॥ तउ मिलीऐ गुर क्रिपानि मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटे अन भरानि हां ॥ रविओ सरब थानि हां ॥ लहिओ जम भइआनि हां ॥ पाइओ पेड थानि हां ॥ तउ चूकी सगल कानि ॥ १ ॥ लहनो जिसु मथानि हां ॥ भै पावक पारि परानि हां ॥ निज घरि तिसहि थानि हां ॥ हरि रस रसहि मानि हां ॥ लाथी तिस भुखानि हां ॥ नानक सहजि समाइओ रे मना ॥ २ ॥ २ ॥ १५८ ॥

हे मन ! केवल एक ईश्वर की ही अभिलाषा करो। नित्य गुरु के चरणों में ध्यान लगाकर रखो। संतों के मंत्र के ज्ञान को अपने हृदय में बसाओ। गुरु के चरणों की श्रद्धापूर्वक सेवा करो। हे मेरे मन ! तभी गुरु की कृपा से तुम अपने स्वामी से मिल जाओगे॥ १॥ रहाउ॥ मेरे सारे भ्रम समाप्त हो गए हैं। अब मुझे हर जगह पर भगवान मौजूद दिखता है। अब मौत का डर मेरे मन से दूर हो गया है। जब इस जगत रूपी पेड़ के मूल नाम को पा लिया तो मेरी हर प्रकार की मोहताजी समाप्त हो गई ॥ १॥ केवल वही प्रभु नाम को पाता है जिस मनुष्य के मस्तक पर भाग्य उदय हो जाता है और वह भयानक अग्नि सागर से पार हो जाता है। वह अपने आत्मस्वरूप में बसेरा प्राप्त कर लेता है और हरि रस के रस का आनंद प्राप्त करता है। उसकी भूख-प्यास मिट जाती है। नानक का कथन है कि हे मेरे मन ! वह प्रभु में सहज ही समा जाता है॥ २॥ २॥ १५८॥

आसावरी महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुनी हां ॥ जपीऐ सहज धुनी हां ॥ साधू रसन भनी हां ॥ छूटन बिधि सुनी हां ॥ पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजहि जन मुनी हां ॥ स्रब का प्रभ धनी हां ॥ दुलभ कलि दुनी हां ॥ दूख बिनासनी हां ॥ प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥ १ ॥ मन सो सेवीऐ हां ॥ अलख अभेवीऐ हां ॥ तां सिउ प्रीति करि हां ॥ बिनसि न जाइ मरि हां ॥ गुर ते जानिआ हां ॥ नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥ २ ॥ ३ ॥ १५६ ॥

हे मेरे मन ! सहज ही मधुर ध्वनि में गुणों के भण्डार परमात्मा का नाम जपते रहना चाहिए। साधुओं की ही रसना प्रभु नाम का जाप करती रहती है। मैंने सुना है कि मुक्ति पाने का एकमात्र यही मार्ग है। लेकिन बड़े पुण्य-कर्म करने से ही यह मार्ग प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ मुनिजन भी उसे खोजते हैं। प्रभु सबका मालिक है। कलियुगी दुनिया में प्रभु को प्राप्त करना बड़ा दुर्लभ है। वह दुःख नाशक है। हे मेरे मन ! प्रभु सभी आशाएँ पूर्ण करने वाला है॥ १॥ हे मेरे मन ! उस प्रभु की सेवा करो। वह अलख एवं भेद-रहित है। उसके साथ तू अपना प्रेम लगा। उसका कभी नाश नहीं होता और वह जन्म-मरण से रहित है। नानक का कथन है कि हे मन ! गुरु के माध्यम से ही प्रभु जाना जाता है। प्रभु के साथ मेरा मन संतुष्ट हो गया है॥ २॥ ३॥ १५६॥

आसावरी महला ५ ॥ एका ओट गहु हां ॥ गुर का सबदु कहु हां ॥ आगिआ सति सहु हां ॥ मनहि निधानु लहु हां ॥ सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीवत जो मरै हां ॥ दुतरु सो तरै हां ॥ सभ की रेनु होइ हां ॥ निरभउ कहउ सोइ हां ॥ मिटे अंदेसिआ हां ॥ संत उपदेसिआ मेरे मना ॥ १ ॥ जिसु जन नाम सुखु हां ॥ तिसु निकटि न कदे दुखु हां ॥ जो हरि हरि जसु सुने हां ॥ सभु को तिसु मंने हां ॥ सफलु सु आइआ हां ॥ नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥ २ ॥ ४ ॥ १६० ॥

हे मेरे मन ! एक ईश्वर की ओट लो, सदैव गुरु का शब्द उच्चारण करो। भगवान की आज्ञा को सत्य मानकर सहर्ष स्वीकार करो। अपने मन में मौजूद नाम के भण्डार को प्राप्त करो। इस तरह तुम सहज सुख में समाहित हो जाओगे॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन ! जो व्यक्ति सांसारिक कार्य करता हुआ मोह-माया से निर्लिप्त रहता है, वह भयानक संसार सागर से पार हो जाता है। जो सबकी चरण-धूलि हो जाता है, तू उसे ही निर्भय कह। संतों के उपदेश से तमाम फिक्र मिट जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन ! जिस मनुष्य के पास प्रभु नाम का सुख है, उसके पास कोई दुख नहीं आता। जो मनुष्य परमात्मा का यशोगान सुनते हैं, दुनिया के सभी लोग उसका मान-सन्मान करते हैं। नानक का कथन है कि हे मेरे मन ! इस संसार में उसका आगमन सफल है, जो प्रभु को अच्छा लगता है॥ २॥ ४॥ १६०॥

आसावरी महला ५ ॥ मिलि हरि जसु गाईऐ हां ॥ परम पदु पाईऐ हां ॥ उआ रस जो बिधे हां ॥ ता कउ सगल सिधे हां ॥ अनदिनु जागिआ हां ॥ नानक बडभागिआ मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत पग धोईऐ हां ॥ दुरमति खोईऐ हां ॥ दासह रेनु होइ हां ॥ बिआपै दुखु न कोइ हां ॥ भगतां सरनि परु हां ॥ जनमि न कदे मरु हां ॥ असथिरु से भए हां ॥ हरि हरि जिन्ह जपि लए मेरे मना ॥ १ ॥ साजनु मीतु तूं हां ॥ नामु द्रिड़ाइ मूं हां ॥ तिसु बिनु नाहि कोइ हां ॥ मनहि अराधि सोइ हां ॥ निमख न वीसरै हां ॥ तिसु बिनु किउ सरै हां ॥ गुर कउ कुरबानु जाउ हां ॥ नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥ २ ॥ ५ ॥ १६१ ॥

आओ हम मिलकर हरि का यशोगान करें एवं परम पद प्राप्त करें। जो इस रस को पाते हैं वे समस्त ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते हैं। नानक का कथन है कि हे मेरे मन! जो इन्सान रात-दिन (विकारों से) सचेत रहता है, वह बड़ा भाग्यशाली है॥ १॥ रहाउ॥ आओ, हम मिलकर संतों के चरण धोएं और अपनी दुर्मति को शुद्ध करें। प्रभु के सेवकों की चरण-धूलि होने से मनुष्य को कोई दुःख नहीं सताता। भक्तजनों की शरण लेने से मनुष्य को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। हे मेरे मन! जो मनुष्य हरि-नाम का जाप करते हैं, वे स्थिर हो जाते हैं॥ १॥ हे पूज्य परमेश्वर! तू ही मेरा साजन एवं मित्र है। मेरे मन में अपना नाम बसा दो। उसके अलावा दूसरा कोई नहीं। इसलिए अपने मन में मैं उसकी आराधना करता हूँ। एक निमिष मात्र भी मैं उसे विस्मृत नहीं करता। उसके अतिरिक्त मेरा किस तरह निर्वाह हो सकता है ? मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ। हे मेरे मन! नानक तो परमात्मा का नाम ही जपता रहता है॥ २॥ ५॥ १६१॥

आसावरी महला ५ ॥ कारन करन तूं हां ॥ अवरु ना सुझै मूं हां ॥ करहि सु होईऐ हां ॥ सहजि सुखि सोईऐ हां ॥ धीरज मनि भए हां ॥ प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगमे हां ॥ पूरन संजमे हां ॥ जब ते छुटे आप हां ॥ तब ते मिटे ताप हां ॥ किरपा धारीआ हां ॥ पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥ १ ॥ इहु सुखु जानीऐ हां ॥ हरि करे सु मानीऐ हां ॥ मंदा नाहि कोइ हां ॥ संत की रेन होइ हां ॥ आपे जिसु रखै हां ॥ हरि अम्रितु सो चखै मेरे मना ॥ २ ॥ जिस का नाहि कोइ हां ॥ तिस का प्रभू सोइ हां ॥ अंतरगति बुझै हां ॥ सभु किछु तिसु सुझै हां ॥ पतित उधारि लेहु हां ॥ नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥ ३ ॥ ६ ॥ १६२ ॥

हे प्रभु! एक तू ही जग का रचयिता है, तेरे सिवाय मुझे अन्य कोई नहीं सूझता। जो कुछ तू दुनिया में करता है, वही होता है। मैं इसलिए सहज सुख में सोता हूँ। हे मेरे मन! जब से मैंने प्रभु के द्वार की शरण ली है, मेरे मन में धैर्य हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ मैं साधुओं की संगति से जुड़ गया हूँ, मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ पूर्णतया मेरे वश में हैं। जब से मैंने अहंत्व से छुटकारा पा लिया है, तब से मेरे दुःख-संताप मिट गए हैं। हे मेरे मन! प्रभु ने मुझ पर कृपा की है। हे जग के मालिक! मुझ शरण में आए की लाज रखो॥ १॥ हे मेरे मन! भगवान जो कुछ करता है, उसे सहर्ष मानना चाहिए, केवल उसे ही सुख समझना चाहिए। दुनिया में कोई भी मनुष्य बुरा नहीं। मैं संतों की चरण-धूलि बन गया हूँ। हे मेरे मन! जिस व्यक्ति की परमात्मा खुद रक्षा करता है, वही हरि नाम रूपी अमृत चखता है॥ २॥ जिस मनुष्य का कोई नहीं, उसका वह प्रभु है। प्रभु सबके अन्तर्मन की अवस्था को समझता है। वह तमाम बातों को जानता है। हे मेरे मन! ईश्वर के दरबार में यूं वन्दना कर - हे प्रभु! पतितों का उद्धार करो, नानक की यही वन्दना है॥ ३॥ ६॥ १६२॥

आसावरी महला ५ इकतुका ॥ ओइ परदेसीआ हां ॥ सुनत संदेसिआ हां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा सिउ रचि रहे हां ॥ सभ कउ तजि गए हां ॥ सुपना जिउ भए हां ॥ हरि नामु जिन्हि लए ॥ १ ॥ हरि तजि अन लगे हां ॥ जनमहि मरि भगे हां ॥ हरि हरि जनि लहे हां ॥ जीवत से रहे हां ॥ जिसहि क्रिपालु होइ हां ॥ नानक भगतु सोइ ॥ २ ॥ ७ ॥ १६३ ॥ २३२ ॥

हे जीव! इस दुनिया में तू परदेसी है, यह सन्देश ध्यानपूर्वक सुन॥ १॥ रहाउ॥ जिस माया के साथ तुम मोहित हुए हो, उसे सब लोग यहीं छोड़कर चले गए हैं। जो हरि का नाम-सुमिरन

करता है, यह वस्तुएं उसे स्वप्न की भाँति लगती हैं॥ १॥ हरि को छोडकर जो विकारों में फँसे हुए हैं, वे जन्म-मरण की तरफ भाग कर जाते हैं। जो भक्तजन परमात्मा को प्राप्त होते हैं, वे आत्मिक तौर पर जीवित रहते हैं। हे नानक! जिस पर भगवान कृपालु हो जाता है, वही उसका भक्त है॥ २॥ ७॥ १६३॥ २३२॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ६ ॥ बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥ दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥ १ ॥ मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥ नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥ २ ॥ १ ॥ २३३ ॥

(हे भाई!) मैं मन की हालत किसे वर्णन करूँ? यह लोभ में ग्रस्त है और धन की आशा करके यह दसों दिशाओं की ओर भागता फिरता है॥ १॥ रहाउ॥ सुख की खातिर वह बहुत दुःख सहन करता है और जन-जन की सेवा खुशामद करता रहता है। वह कुत्ते की भाँति द्वार-द्वार पर भटकता रहता है और राम के भजन की सूझ ही नहीं होती॥ १॥ वह अपना मूल्यवान मनुष्य-जन्म निरर्थक ही गंवा देता है और लोगों की तरफ से हो रहे हंसी-मजाक की उसे लज्जा नहीं। नानक का कथन है कि (हे जीव!) तुम हरि का यश क्यों नहीं गाते, इससे तेरे तन की खोटी बुद्धि दूर हो जाएगी॥ २॥ १॥ २३३॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥ बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥ जलु आकासी सुंनि समावै ॥ रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥ भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥ सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥ गगनि निवासि समाधि लगावै ॥ पारसु परसि परम पदु पावै ॥ २ ॥ सचु मन कारणि ततु बिलोवै ॥ सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥ जै सिउ राता तैसो होवै ॥ आपे करता करे सु होवै ॥ ३ ॥ गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥ सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ निरमल बाणी नादु वजावै ॥ ४ ॥ अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥ तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ जोती जोति मिलावणहारा ॥ ५ ॥ रसि रसिआ मति एकै भाइ ॥ तखत निवासी पंच समाइ ॥ कार कमाई खसम रजाइ ॥ अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥ ६ ॥ जल महि उपजै जल ते दूरि ॥ जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ निधि गुण गावा देखि हदूरि ॥ ७ ॥ अंतरि बाहरि अवरु न कोइ ॥ जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ निरमल नामु मेरा आधारु ॥ ८ ॥ १ ॥

मनुष्य को पाप की दुष्कर घाटी से उतर कर सत्संग रूपी गुणों के सरोवर में स्नान करना चाहिए। उसे व्यर्थ नहीं बोलना चाहिए और भगवान के गुण गाते रहना चाहिए। वायुमण्डल में जल की भाँति उसे प्रभु में लीन रहना चाहिए। सत्य की प्रसन्नता का मंथन करके उसे महा रस अमृत का पान करना चाहिए॥ १॥ हे मेरे मन! ऐसा ज्ञान सुनो। प्रभु सर्वत्र व्यापक है और सबको सहारा दे रहा है॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य सत्य को अपना व्रत एवं नियम बनाता है, काल उसे दुखी

नहीं करता और सच्चे गुरु के शब्द से वह अपने क्रोध को जला देता है। वह दसम द्वार (उच्चमण्डल) में निवास करता है और समाधि की अवस्था धारण कर लेता है। वह गुरु रूपी पारस को स्पर्श करके परम पद प्राप्त कर लेता है॥ २॥ प्राणी को अपने मन की खातिर सत्य के तत्व का मंथन करना चाहिए और अपनी मलिनता को धोने के लिए नामामृत के सरोवर में स्नान करना चाहिए। जिसके साथ वह रंग जाता है, मनुष्य उस जैसा हो जाता है। जो कुछ कर्त्ता प्रभु स्वयं करता है, वही होता है॥ ३॥ बर्फ जैसे शीतल हृदय वाले गुरु से मिलकर मनुष्य अपनी तृष्णाग्नि को बुझाए। जो गुरु के द्वारा बतलाई सेवा में अपनी सुरति लगाता है, वह मानो यह विभूति अपने शरीर पर मलता है। सहज घर में बसना उसका धार्मिक वेष होवे और निर्मल वाणी उसका नाद बजाना॥ ४॥ अन्तर्मन का ज्ञान श्रेष्ठ महा रस है। गुरु-वाणी का विचार तीर्थ-स्थल का स्नान है। अन्तर्मन में प्रभु का निवास ही पूजा है। यह मनुष्य ज्योति को ईश्वरीय ज्योत से मिलाने वाला है॥ ५॥ जिस का मन नाम-रस में भीगा रहता है, जिसकी मति एक प्रभु के प्रेम में लगी रहती है। ऐसा व्यक्ति राजसिंहासन पर विराजमान होने वाले प्रभु में समा जाता है। परमात्मा की रजा में चलना ही उसकी प्रतिदिन की दिनचर्या एवं दैनिक कमाई हो जाती है। अविगत प्रभु जाना नहीं जा सकता॥ ६॥ जैसे कमल जल में से उत्पन्न होता है और जल से दूर रहता है, इसी तरह प्रभु की ज्योति समस्त जीवों में सर्वव्यापक है। मैं किसे प्रभु के निकट एवं किसे दूर कहूँ ? उस परमात्मा को सर्वव्यापक देखकर मैं गुणों के भण्डार का यशोगान करता हूँ॥ ७॥ भीतर एवं बाहर प्रभु के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं। जो कुछ उसे अच्छा लगता है, संसार में वही होता है। हे भर्तृहरि योगी ! सुन, नानक तुझे विचार की बात कहता है, उस प्रभु का निर्मल नाम मेरे जीवन का सहारा है॥ ८॥ १॥

आसा महला १ ॥ सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥ ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥ नाम बिहूणै माथे छाई ॥ १ ॥ साच धणी जगु आइ बिनासा ॥ छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥ गुरमती इकि भए उदासा ॥ अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ तिन्ह कउ नाही जम की त्रासा ॥ २ ॥ जगु त्रिअ जितु कामणि हितकारी ॥ पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥ बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥ सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ ३ ॥ बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥ अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥ माइआ मोहु गुर सबदि जलाए ॥ निरमल नामु सद हिरदै धिआए ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सिख संगति करमि मिलाए ॥ गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥ नदरि करे संजोगि मिलाए ॥ ५ ॥ रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥ अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ सभि दुख मेटे साचै नाई ॥ ६ ॥ कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥ अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥ नदरि करे राखै रखवाला ॥ ७ ॥ त्रिभवण सूझै आपु गवावै ॥ बाणी बूझै सचि समावै ॥ सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥ नानक धंनु सवारणहारा ॥ ८ ॥ २ ॥

मनुष्य अधिकतर जप-तप एवं समस्त चतुराई के बावजूद वियावान में भटकता है और उसे प्रभु-प्राप्ति का मार्ग नहीं मिलता। सत्य के बोध बिना कोई भी स्वीकार नहीं होता। नामविहीन मनुष्य के सिर पर धूल ही पड़ती है॥ १॥ संसार जन्मता मरता रहता है लेकिन सृष्टि का स्वामी सत्यस्वरूप है। जो मनुष्य गुरु की शरणागत प्रभु का सेवक बनता है, वह जन्म-मरण से छूट जाता है॥ १॥ रहाउ॥ यह जगत सांसारिक मोह एवं अनेक आशाओं में बंधा हुआ है। लेकिन कई मनुष्य

गुरमति के माध्यम से मोह से निर्लिप्त हो जाते हैं। उनके अन्तर्मन में नाम विद्यमान है और उनका हृदय कमल खिल जाता है। उन्हें मृत्यु का कोई डर नहीं रहता॥ २॥ स्त्री के मोह ने सारे जगत को जीत लिया है और यह जगत नारी से मोह करता है। पुत्रों एवं पत्नी के मोह में फँसकर मनुष्य ने प्रभु-नाम को भुला दिया है। इस प्रकार मनुष्य जीवन निरर्थक गंवा देता है और जीवन की बाजी हार जाता है। सतिगुरु की सेवा सर्वश्रेष्ठ करनी है॥ ३॥ जो खुले तौर पर अहंत्व के वचन बोलता है, उसके हृदय को मोक्ष का लेपन कदाचित नहीं होता। जो मनुष्य गुरु के शब्द में लीन होकर माया का मोह जला देता है, वह निर्मल नाम का सदैव ही हृदय में सुमिरन करता है॥ ४॥ वह अपने भटकते हुए मन पर अंकुश लगाता है और इसे जकड़ कर बांधकर रखता है। ऐसे शिष्य की संगति प्रभु के करम से ही प्राप्त होती है। गुरु के बिना मनुष्य कुमार्गगामी हो जाता है और जन्म मरण के चक्र में फँस जाता है। यदि प्रभु कृपा-दृष्टि करे तो वह मनुष्य को अपने संयोग में मिला लेता है॥ ५॥ हे भगवान ! तू अति सुन्दर है लेकिन यदि मैं बताने का प्रयास करूँ तो उसका वर्णन नहीं कर सकता। यदि मैं अकथनीय प्रभु का कथन करूँ तो मैं उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता। हे प्रभु ! सभी दुख एवं सुख तेरी इच्छा अनुसार ही मिलते हैं। सत्यनाम में सभी दुख मिट जाते हैं॥ ६॥ जब शब्द की सूझ होती है तो प्राणी हाथों के बिना ही बाजा बजाता है और पैरों के बिना ही नृत्य किए ताल बना रहता है। यदि वह शब्द के भेद को समझ ले तो सत्य को देख लेगा। जब सच्चा परमात्मा अन्तर्मन में विद्यमान है तो सभी सुख मनुष्य के साथ हैं। अपनी दया करके सबका रखवाला प्रभु प्राणी की रक्षा करता है॥ ७॥ जो मनुष्य अपना अहंत्व मिटा देता है, उसे तीन लोकों की सूझ हो जाती है। जो मनुष्य वाणी को समझता है, वह सत्य में समा जाता है। हे प्राणी ! निरन्तर प्रीति के साथ एक शब्द का ध्यान करो। हे नानक ! अपने भक्तों का जीवन संवारने वाला प्रभु धन्य है॥ ८॥ २॥

आसा महला १ ॥ लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥ कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ लेख असंख अलेखु अपारु ॥ १ ॥ ऐसा साचा तूं एको जाणु ॥ जंमणु मरणा हुकमु पछाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ बांधा छूटै नामु सम्हालि ॥ गुरु सुखदाता अवरु न भालि ॥ हलति पलति निबही तुधु नालि ॥ २ ॥ सबदि मरै तां एक लिव लाए ॥ अचरु चरै तां भरमु चुकाए ॥ जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ॥ गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥ ३ ॥ जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ सरब निरंतरि आपे आपि ॥ किसै न पूछे बखसे आपि ॥ ४ ॥ तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ तू निरमलु सचु गुणी गहीरु ॥ सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ एको साहिबु एकु वजीरु ॥ ५ ॥ जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ जगि गिआनी विरला आचारी ॥ जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥ ६ ॥ जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ ॥ जगु रोगी भोगी गुण रोइ ॥ जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥ गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥ ७ ॥ महघो मोलि भारि अफारु ॥ अटल अछलु गुरमती धारु ॥ भाइ मिलै भावै भइकारु ॥ नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ ८ ॥ ३ ॥

अनेकों ने भगवान के स्वरूप के अन्तर्गत असंख्य ही लेख लिखे हैं, लेकिन वह उसके स्वरूप का वर्णन नहीं कर सके। उन्होंने लेख लिख-लिख कर अपनी विद्वता का झूठा मान ही पाया है। जब इन्सान का मन सच्चे से संतुष्ट हो जाता है तो ही वह सुरति द्वारा बखान करता है। केवल मुख की बातें एवं बार-बार पढ़ना एक व्यर्थ भार है। असंख्य धार्मिक ग्रंथ हैं परन्तु अपार प्रभु

अकथनीय ही रहता है॥ १॥ हे प्राणी ! तू समझ ले कि एक सत्यस्वरूप परमात्मा ही ऐसा है। यह जन्म-मरण भी उस प्रभु की रजा ही समझ॥ १॥ रहाउ॥ इस दुनिया को मृत्यु ने माया के मोह में फँसा कर बांधा हुआ है। नाम-सुमिरन करने से बन्धनों में फँसा हुआ मनुष्य मोह-माया से छूट सकता है। गुरु ही सुखों का दाता है इसलिए किसी अन्य की खोज मत कर। इस लोक एवं परलोक में वह तेरा साथ निभाएगा॥ २॥ यदि मनुष्य शब्द-गुरु द्वारा मोह-माया से निर्लिप्त हो जाए तो उसकी लगन एक ईश्वर से लग जाती है। यदि वह खाए न जाने वाले कामादिक को विनष्ट कर दे तो उसकी दुविधा निवृत्त हो जाती है। नाम को हृदय में बसाने से मनुष्य जीवनमुक्त हो जाता है। यदि मनुष्य गुरुमुख बन जाए तो वह सत्य में समा जाता है॥ ३॥ जिस प्रभु ने धरती, गगन, आकाश की सृजना की है और जिसने सारी दुनिया बनाई है, जो निर्माण करके स्वयं ही नाश कर देता है, वह रचयिता प्रभु स्वयं ही सबके भीतर व्यापक है। वह किसी से परामर्श नहीं करता और स्वयं ही क्षमा कर देता है॥ ४॥ हे जग के रचयिता ! तू स्वयं ही भरपूर सागर है, तू स्वयं ही माणिक्य-हीरा है। तू बड़ा निर्मल, सदैव सत्य एवं गुणों का भण्डार है। जिसे गुरु-पीर मिल जाता है, वह सदा सुख भोगता है। एक परमात्मा ही दुनिया का बादशाह है और खुद ही अपना एक वजीर है॥ ५॥ यह समूचा जगत मोह-माया की कैद में है। जो अपना अभिमान मिटा देता है, वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है। जगत में कोई विरला ही ज्ञानी है, जिसका आचरण उस ज्ञान के अनुसार है। जगत में पण्डित भी कोई विरला है, जो सही विचारक है। सतिगुरु को मिले बिना सभी अहंकार में भटकते हैं॥ ६॥ जगत दुखी है परन्तु कोई विरला पुरुष ही सुखी है। जगत भोगी होने के कारण रोगी है और अपने गुणों को गंवा कर रोता है। जगत जन्मता है और अपनी प्रतिष्ठा गंवा कर यह मर जाता है। जो गुरुमुख बन जाता है, वह इस तथ्य को समझ लेता है॥ ७॥ प्रभु मूल्य में महंगा एवं भार में अनन्त है। हे प्राणी ! गुरु की मति से अटल एवं अछल प्रभु को अपने हृदय में धारण कर। प्रेम द्वारा मनुष्य उससे मिल जाता है जो प्रभु के भय में कार्य करता है, वह उसे अच्छा लगने लग जाता है। नानक यही विचारणीय बात कहता है॥ ८॥ ३॥

आसा महला १ ॥ एकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥ हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥ समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥ बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥ १ ॥ कउणु मरै कउणु रोवै ओही ॥ करण कारण सभसै सिरि तोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥ सो रोवै जिसु बेदन होइ ॥ जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥ आपे करता करे सु होइ ॥ २ ॥ जीवत मरणा तारे तरणा ॥ जै जगदीस परम गति सरणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥ ३ ॥ निरभउ आपि निरंतरि जोति ॥ बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥ दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥ जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥ ४ ॥ मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥ दुखु सुखु परहरि सहजि सुचीत ॥ तनु मनु सउपउ क्रिसन परीति ॥ ५ ॥ भीतरि एकु अनेक असंख ॥ करम धरम बहु संख असंख ॥ बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥ हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥ ६ ॥ आपि मरै मारे भी आपि ॥ आपि उपाए थापि उथापि ॥ स्रिसटि उपाई जोती तू जाति ॥ सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥ ७ ॥ सूतकु अगनि भखै जगु खाइ ॥ सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ ॥ नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ गुर परसादी हरि रसु पीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥

जब एक मरता है तो पाँचों संबंधी मिलकर रोते हैं। यह अहंत्व की मैल तब दूर होती है, जब इन्सान यह मैल शब्द द्वारा शुद्ध कर लेता है। जो इस तथ्य को समझता है वह सहज घर

में प्रवेश कर जाता है। ज्ञान के बिना मनुष्य सारी प्रतिष्ठा गंवा लेता है॥ १॥ कौन मरता है और कौन उसे रोता है। हे प्रभु! एक तू ही जग का रचयिता है, तेरा हुक्म सबके सिर पर है॥ १॥ रहाउ॥ यदि कोई मृतक को रोता है, वह वास्तव में दुख व्यक्त करता है। केवल रोता वही है जिस पर विपदा आ जाती है। जिसके साथ बीतती है, उसकी दशा वह प्रभु ही जानता है। जो कुछ कर्ता प्रभु स्वयं करता है, वही कुछ होता है॥ २॥ अहंकार को मारकर जीना ही भवसागर से पार करने के लिए एक नाव का काम करता है। उस जगदीश की जय करो, जिसकी शरण लेने से परमगति प्राप्त होती है। मैं सतिगुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ। गुरु जहाज है और उसके शब्द द्वारा भयानक संसार सागर से पार हुआ जा सकता है॥ ३॥ प्रभु स्वयं निर्भय है और उसकी ज्योति सबमें विद्यमान रहती है। नाम के बिना संसार में कहीं सूतक एवं कहीं छूत का वहम है। दुर्बुद्धि से मनुष्य नष्ट हो गया है इसलिए वह क्यों पुकार करता रोता है? प्रभु-भक्ति एवं भजन सुने बिना मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में फँसकर आता-जाता रहता है॥ ४॥ मरे हुए को असल में सच्चे मित्र ही रोते हैं। तीन गुणों (रजो, सतो, तमो) वाले मनुष्य सदैव ही रोते रहते हैं। दुख-सुख को त्याग कर अपने हृदय में प्रभु को धारण करो। अपना तन-मन भगवान के प्रेम में समर्पित कर दो॥ ५॥ अनेक प्रकार के असंख्य ही जीव हैं पर सबके भीतर एक परमात्मा ही बसता है। बहुत सारे कर्म धर्म हैं, जिनकी संख्या असंख्य है। प्रभु के भय एवं भक्ति के बिना मनुष्य जन्म निरर्थक है। हरि का गुणगान करने से परमार्थ मिल जाता है॥ ६॥ किसी प्राणी की मृत्यु में मानो वही मरता है और उस प्राणी को प्रभु ही मारता है। प्रभु स्वयं पैदा करता है और पैदा करके वह स्वयं ही नाश कर देता है। हे ज्योतिस्वरूप भगवान! तूने स्वयं ही सृष्टि की रचना की है और स्वयं ही अपनी ज्योति स्थापित कर दी है। जो शब्द का चिन्तन करता है, वह प्रभु से मिल जाता है, इसमें कोई भ्रांति नहीं॥ ७॥ अग्नि में भी सूतक है, जब अग्नि भड़कती है तो वह जगत को भस्म कर देती है। जल, धरती हर कहीं सूतक विद्यमान है। हे नानक! सूतक में प्राणी जन्मते-मरते रहते हैं, गुरु की कृपा से हरि रस का पान करते रहना चाहिए॥८॥ ४॥

रागु आसा महला १ ॥ आपु वीचारै सु परखे हीरा ॥ एक द्रिसटि तारे गुर पूरा ॥ गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥ १ ॥ ऐसा साहु सराफी करै ॥ साची नदरि एक लिव तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूंजी नामु निरंजन सारु ॥ निरमलु साचि रता पैकारु ॥ सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥ २ ॥ आसा मनसा सबदि जलाए ॥ राम नराइणु कहै कहाए ॥ गुर ते वाट महलु घरु पाए ॥ ३ ॥ कंचन काइआ जोति अनूपु ॥ त्रिभवण देवा सगल सरूपु ॥ मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥ ४ ॥ पंच तीनि नव चारि समावै ॥ धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥ बाहरि जातउ उलटि परावै ॥ ५ ॥ मूरखु होइ न आखी सूझै ॥ जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥ बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥ ६ ॥ ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥ गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥ ७ ॥ हीरा नामु जवेहर लालु ॥ मनु मोती है तिस का मालु ॥ नानक परखै नदरि निहालु ॥ ८ ॥ ५ ॥

जो मनुष्य आप विचार करता है वह नाम रूपी हीरे की परख कर लेता है। पूर्ण गुरु अपनी एक कृपा-दृष्टि से ही मनुष्य का (संसार-सागर से) उद्धार कर देता है। जो इन्सान सच्चे दिल से गुरु पर श्रद्धा धारण करता है, उसका मन चंचल नहीं होता॥ १॥ गुरु ऐसा साहूकार है जो अपने शिष्यों को परखता है। उसकी अचूक दयादृष्टि से मनुष्य को प्रभु-प्रेम की देन मिल जाती है और उसका उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ निरंजन प्रभु के नाम की राशि-पूंजी सर्वोत्तम है। जो सत्य

से रंगा हुआ है, वह महापुरुष पवित्र है। उसकी प्रशंसा गान करने से वह गुरु-कर्त्तार को सहज ही अपने हृदय-घर में बसा लेता है॥ २॥ जो अपनी आशा एवं तृष्णा को शब्द द्वारा जला देता है, वह राम-नारायण के नाम का स्वयं भजन करता है और दूसरों से भी भजन करवाता है। वह गुरु के माध्यम से प्रभु के महल एवं घर का मार्ग खोज लेता है॥ ३॥ उसकी काया प्रभु की अनूप ज्योति से सोना हो जाती है और वह सभी तीन लोकों में प्रभु का स्वरूप देख लेता है। मेरे दामन में प्रभु नाम का सच्चा एवं अक्षय धन है॥ ४॥ प्रभु पाँच तत्वों, माया के तीन गुणों, नवखण्डों एवं चारों दिशाओं में व्यापक हुआ है। अपनी सत्ता कायम करके वह धरती एवं गगन को सहारा दे रहा है। प्रभु प्राणी के बाहर दौड़ते हुए मन को उल्ट कर सन्मार्ग पर ले आता है॥ ५॥ जो मूर्ख है, वह अपनी आत्मिक आँखों से नहीं देखता। उसकी जिह्वा रस नहीं देती और जो कुछ उसे कहा जाता है, वह उसे नहीं समझता। वह विषैली माया में मस्त होकर दुनिया के साथ झगड़ता रहता है॥ ६॥ उत्तम संगति करने से इन्सान उत्तम बन जाता है। ऐसा मनुष्य गुणों के पीछे भागता है और अपने अवगुणों को मिटा देता है। गुरु की सेवा के बिना सहज सुख प्राप्त नहीं होता॥ ७॥ प्रभु का नाम हीरा, जवाहर एवं माणिक है। इन्सान का मोती जैसा अनमोल मन उस स्वामी का धन है। हे नानक! प्रभु भक्तजनों की परख करता है और कृपादृष्टि से उन्हें कृतार्थ कर देता है॥ ८॥ ५॥

आसा महला १ ॥ गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥ गुरमुखि महली महलु पछानु ॥ गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥ १ ॥ ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥ गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहिनिसि निरमलु थानि सुथानु ॥ तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥ साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥ २ ॥ साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥ अंम्रितु गिआनु महा रसु भोगु ॥ पंच समाई सुखी सभु लोगु ॥ ३ ॥ सगली जोति तेरा सभु कोई ॥ आपे जोड़ि विछोड़े सोई ॥ आपे करता करे सु होई ॥ ४ ॥ ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥ हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥ गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ॥ ५ ॥ बालक बिरधि न सुरति परानि ॥ भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥ बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥ ६ ॥ जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥ भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥ गलि फाही बउरा बउराना ॥ ७ ॥ बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे ॥ सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ नानक गुर की चरणी लागे ॥ ८ ॥ ६ ॥

गुरु के माध्यम से ही ज्ञान, ध्यान एवं मन को संतोष प्राप्त होते हैं। गुरु के समक्ष होकर ही प्रभु का महल पहचाना जाता है। गुरुमुख बनकर ही प्रभु का नाम मनुष्य की सुरति में प्रगट हो जाता है॥ १॥ इस तरह प्रभु की प्रेम-भक्ति का चिन्तन किया जाता है। गुरुमुख बन कर ही मुरारी प्रभु का सत्यनाम प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ जो गुरुमुख बनता है वह दिन-रात निर्मल रहता है और सुन्दर स्थान में बसता है। उसे तीन लोकों का ज्ञान हो जाता है। सच्चे गुरु के माध्यम से प्रभु का हुक्म पहचाना जाता है॥ २॥ वह सच्ची प्रसन्नता प्राप्त करता है और उसे कोई दुःख स्पर्श नहीं करता। वह अमृत ज्ञान एवं महारस का आनंद प्राप्त करता है। उसके कामादिक पाँचों विकार नष्ट हो जाते हैं और वह सारी दुनिया में सुखी हो जाता है॥ ३॥ हे प्रभु! तेरी ज्योति सब में मौजूद है और हर कोई तेरा ही है। वह स्वयं ही मिलाता और स्वयं ही जुदा करता है। जो कुछ सृजनहार प्रभु स्वयं करता है, वही होता है॥ ४॥ ईश्वर स्वयं ही सृष्टि को ध्वस्त करके स्वयं ही निर्मित करता है, उसके हुक्म अनुसार ही सृष्टि पुनः उसमें समा जाती है। जो कुछ उसे अच्छा लगता है, उसके हुक्म अनुसार हो जाता है। गुरु के बिना कोई भी पूर्ण प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता॥ ५॥ प्राणी को बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में कोई होश नहीं होती। भरपूर यौवन में वह अभिमान में डूब जाता है। नाम के बिना

वह मूर्ख क्या प्राप्त कर सकता है ?॥ ६॥ मनुष्य उस प्रभु को नहीं जानता, जिसका दिया अन्न एवं धन वह इस्तेमाल करता है। दुविधा में कुमार्गगामी होकर वह तदुपरांत पछताता है। परन्तु मूर्ख मनुष्य के गले में मोह की फाँसी पड़ी हुई है॥ ७॥ इस संसार को (मोह-माया में) डूबता हुआ देखकर मनुष्य भयभीत होकर भाग जाते हैं। जिनकी सच्चे गुरु ने रक्षा की है, वे बड़े भाग्यशाली हैं। हे नानक ! वे गुरु के चरणों से लग जाते हैं॥ ८॥ ६॥

आसा महला १ ॥ गावहि गीते चीति अनीते ॥ राग सुणाइ कहावहि बीते ॥ बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥ १ ॥ कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ गुरमुखि राम नामि त्रिपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥ राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥ २ ॥ अंतरि नावणु साचु पछाणै ॥ अंतर की गति गुरमुखि जाणै ॥ साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥ ३ ॥ निरंकार महि आकारु समावै ॥ अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥ ४ ॥ जहां नामु मिलै तह जाउ ॥ गुर परसादी करम कमाउ ॥ नामे राता हरि गुण गाउ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ अंम्रित नामु वसिआ सुखदाता ॥ अनदिनु बाणी नामे राता ॥ ६ ॥ मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥ हउमै मारे सबदे जागै ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु आगै ॥ ७ ॥ मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥ मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥ गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥ ८ ॥ हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ साधू जन संगति होइ निवासु ॥ किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥ ९ ॥ करि बीचारु आचारु पराता ॥ सतिगुर बचनी एको जाता ॥ नानक राम नामि मनु राता ॥ १० ॥ ७ ॥

कुछ लोग भगवान के भजन गीत गाते हैं लेकिन उनके चित्त में बुरे विचार होते हैं। वह राग सुना कर विद्वान कहलाते हैं, लेकिन नाम के बिना उनके मन में झूठ और बुरे विचार भरे रहते हैं॥ १॥ हे मन ! तुम कहाँ जाते हो ? अपने हृदय घर में ही वास करो। गुरुमुख राम के नाम से तृप्त हो जाते हैं और खोज करने से वह सहज ही प्रभु को ढूंढ लेते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति के मन में काम-क्रोध निवास करते हैं, उसे शरीर का मोह चिपका रहता है। लालच, लोभ एवं अहंकार उसके मन को बहुत दुखी करते हैं। राम के नाम बिना मन को धैर्य कैसे आ सकता है ?॥ २॥ जो मनुष्य अपने अन्तर्मन को नाम सरोवर में स्नान कराता है, वह सत्य को पहचान लेता है। गुरुमुख अपने अन्तर्मन की गति को स्वयं ही जानता है। सच्चे शब्द के बिना प्रभु का महल अनुभव नहीं किया जा सकता॥ ३॥ जो अपने आकार को निरंकार प्रभु में लीन कर देता है और सर्वकला सम्पूर्ण सत्य में बसता है, वह मनुष्य दोबारा योनियों में प्रवेश नहीं करता॥ ४॥ जहाँ नाम मिलता है, तुम वहीं जाओ। गुरु की दया से शुभ कर्म करो। नाम में अनुरक्त होकर हरि का गुणगान करो॥ ५॥ गुरु की सेवा से मैंने अपने आत्मस्वरूप को समझ लिया है। सुखदाता नामामृत अब मेरे हृदय में बसता है। मैं रात-दिन गुरुवाणी एवं नाम में लीन रहता हूँ॥ ६॥ यदि मेरा प्रभु लगाए तो ही कोई उससे जुड़ सकता है। यदि मनुष्य अहंकार को नष्ट कर दे तो वह शब्द की तरफ जागता रहता है। लोक-परलोक में वह सदैव सुख में रहता है॥ ७॥ चंचल मन युक्ति नहीं जानता। मनमुख मैला व्यक्ति शब्द को नहीं समझता। लेकिन गुरुमुख मनुष्य निर्मल नाम को उच्चरित करता है॥ ८॥ मैं पूज्य परमेश्वर के समक्ष प्रार्थना करता हूँ कि मुझे साधु जनों की संगति में निवास मिल जाए। हरि के नाम का प्रकाश पापों एवं दुखों को दूर कर देता है॥ ९॥ मैंने साधुओं से विचार करके शुभ-आचरण बना लिया है। सतिगुरु के वचनों द्वारा मैंने एक परमात्मा को समझ लिया है। हे नानक ! राम के नाम से मेरा मन रंग गया है॥ १०॥ ७॥

आसा महला १ ॥ मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ बन खंडि माइआ मोहि हैराना ॥ इत उत जाहि काल के चापे ॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥ १ ॥ बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥ सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥ बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥ आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥ कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥ २ ॥ इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥ इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥ साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा ॥ गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥ ३ ॥ गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥ गुरमुखि त्रिभवणि सोझी होई ॥ इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै ॥ गुरमुखि चीन्है हरि प्रभु आपै ॥ ४ ॥ मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥ राम रसाइणु गुरमुखि चाखै ॥ दरि घरि महली हरि पति राखै ॥ ५ ॥ इहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥ इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥ मारे पंच अपुनै वसि कीए ॥ हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥ ६ ॥ गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥ गुरमुखि इहु मनु भगती जागे ॥ अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥ आतमु चीन्हि भए निरंकारी ॥ ७ ॥ इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई ॥ गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥ अहिनिसि हरि जसु गुर परसादि ॥ घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥ ८ ॥ राम रसाइणि इहु मनु माता ॥ सरब रसाइणु गुरमुखि जाता ॥ भगति हेतु गुर चरण निवासा ॥ नानक हरि जन के दासनि दासा ॥ ९ ॥ ८ ॥

यह मन शाक्त एवं पागल हाथी है। यह मोह-माया के जंगल में आकर्षित हुआ भटकता रहता है। काल के दबाव के कारण यह इधर-उधर जाता है। लेकिन गुरुमुख इन्सान खोजकर अपने भीतर प्रभु का निवास प्राप्त कर लेता है॥ १॥ गुरु के शब्द बिना मन को सुख का स्थान नहीं मिलता। राम नाम को याद करो जो बहुत ही निर्मल है और कड़वा अहंकार त्याग दो॥ १॥ रहाउ॥ बताओ, यह मूर्ख मन कैसे बचाया जा सकता है ? बिना सोचे-समझे यह मृत्यु का दुख सहन करेगा। प्रभु स्वयं ही क्षमा करता है और सतिगुरु से मिलाता है। सत्यस्वरूप प्रभु मृत्यु के कष्टों को कुचल कर मार फैंकता है॥ २॥ यह मन कर्म करता है और यह मन ही धर्म करता है। इस मन का जन्म पाँच तत्वों से हुआ है। यह लोभी मन शाक्त एवं मूर्ख है। गुरु के समक्ष होकर नाम का जाप करने से मन सुन्दर बन जाता है॥ ३॥ गुरु के माध्यम से ही यह मन सत्य के स्थान पर जा बसता है। गुरु के माध्यम से ही इसे तीन लोकों का ज्ञान हो जाता है। यह मन योगी भोगी है और तपस्या-साधना करता है। गुरु के माध्यम से यह स्वयं ही हरि-प्रभु को समझ लेता है॥ ४॥ यह मन कभी अभिमान छोड़कर वैरागी और कभी त्यागी बन जाता है। हरेक शरीर को तृष्णा एवं दुविधा लगी हुई है। जो मनुष्य गुरु के माध्यम से राम नाम रूपी अमृत का पान करता है, उसकी हरि-प्रभु अपने दरबार में प्रतिष्ठा रखता है॥ ५॥ यह मन राजा है और कभी संग्राम में शूरवीर है। गुरुमुख बनकर नाम की आराधना करने से यह मन निडर हो जाता है। यह कामादिक पाँच विकारों को मारकर अपने वश में कर लेता है और अहंकार को अपनी पकड़ में लेकर मन इनको एक स्थान पर कैद कर देता है॥ ६॥ गुरुमुख बनकर मन तमाम राग एवं स्वादों को त्याग देता है। गुरु के सम्मुख होकर ही यह मन प्रभु-भक्ति में जाग्रत होता है। गुरु के शब्द एवं विचार को मानकर मन अनहद नाद सुनता है। अपने आत्मस्वरूप को समझने से आत्मा निरंकार प्रभु की हो जाती है॥ ७॥ उस प्रभु के दरबार एवं घर में यह मन निर्मल हो जाता है और गुरु के माध्यम से इसे प्रभु-भक्ति की प्रीति प्राप्त हो जाती है। गुरु की कृपा से मन दिन-रात हरि का यशोगान करता रहता है। जो सृष्टि के आदि में था और युगों-युगांतरों में मौजूद है, वह प्रभु इस मन को

हरेक शरीर में बसता दिखाई देता है॥ ८॥ राम रसायण से यह मन मतवाला हुआ रहता है और गुरु के माध्यम से यह सभी रसों के घर प्रभु को अनुभव कर लेता है। जब मन गुरु के चरणों में निवास कर लेता है तो प्रभु भक्ति का प्रेम जाग्रत हो जाता है। हे नानक! तब यह मन भक्तजनों का सेवक बन जाता है॥ ९॥ ८॥

आसा महला १ ॥ तनु बिनसै धनु का को कहीऐ ॥ बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ ॥ राम नाम धनु संगि सखाई ॥ अहिनिसि निरमलु हरि लिव लाई ॥ १ ॥ राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥ सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक कामनी हेतु गवारा ॥ दुबिधा लागे नामु विसारा ॥ जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ ॥ दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥ २ ॥ हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥ जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥ गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥ रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥ ३ ॥ अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥ हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥ तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥ तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥ ४ ॥ रोगु भरमु भेदु मनि दूजा ॥ गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥ आदि पुरख गुर दरस न देखहि ॥ विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥ ५ ॥ देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥ घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥ भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥ तुम समसरि अवरु को नाही ॥ ६ ॥ जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ संत भगत की संगति रामु ॥ बंधन तोरे सहजि धिआनु ॥ छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥ ७ ॥ ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥ जो जनु राम नामि लिव जागै ॥ भगति वछलु भगता हरि संगि ॥ नानक मुकति भए हरि रंगि ॥ ८ ॥ ९ ॥

जब इन्सान का तन नाश हो जाता है तो उसके द्वारा संचित धन किसका कहा जा सकता है? गुरु के बिना राम का नाम कैसे प्राप्त हो सकता है? राम नाम का धन ही सच्चा साथी एवं सहायक है। जो मनुष्य दिन-रात अपनी वृत्ति हरि के साथ लगाकर रखता है, वह निर्मल है॥ १॥ राम के नाम बिना हमारा कौन है? सुख-दुख को एक समान समझकर मैं नाम को नहीं छोड़ता। प्रभु क्षमा करके स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ रहाउ॥ मूर्ख मनुष्य सोने एवं सुन्दर नारी से प्रेम करता है। दुविधा से जुड़कर उसने नाम को भुला दिया है। जिसे प्रभु क्षमा कर देता है, उससे वह अपने नाम का जाप करवाता है। जो प्रभु के गुण गाता है, यमदूत उसे स्पर्श नहीं कर सकता॥ २॥ हे हरि! हे गोपाल! तू ही मेरा गुरु, दाता एवं राम है। हे दयालु प्रभु! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तुम मेरी रक्षा करो। गुरु के उपदेश से राम मेरे मन को भला लगा है। राम द्वारा मेरे रोग मिट गए हैं और दुःख भी दूर हो गए हैं॥ ३॥ रोगों से बचने के लिए नाम के सिवाय अन्य कोई औषधि, तंत्र एवं मंत्र नहीं। हरि-प्रभु का सिमरन पापों का नाश कर देता है। हे प्रभु! तू स्वयं जीवों को कुमार्गगामी करता है और वह तेरे नाम को भुला देते हैं। तू स्वयं ही अपनी कृपा करके अनेक जीवों की रक्षा करता है॥ ४॥ मन को दुविधा, भेदभाव एवं द्वैतवाद का रोग लगा हुआ है। गुरु के बिना जीव भ्रम में भटकता है और दूसरों का जाप जपता है। उन्हें आदिपुरुष गुरु के दर्शन नहीं होते। गुरु शब्द के बिना मनुष्य-जन्म कौन से लेखे जोखे में है॥ ५॥ आश्चर्यजनक प्रभु को देखकर मैं बहुत चकित हुआ हूँ। सहज समाधि में वह सबके हृदय में देवताओं एवं मनुष्यों के भीतर समाया हुआ है। पूर्ण व्यापक प्रभु को मैंने अपने मन में बसाया है। हे प्रभु! तेरे बराबर का दूसरा कोई नहीं॥ ६॥ जो भक्ति से प्रेम करता है, उसके मुख में प्रभु का नाम है। संतों एवं भक्तों की संगति में राम का निवास है। अपने बंधन तोड़कर मनुष्य को प्रभु की आराधना करनी चाहिए। गुरु-परमात्मा के ज्ञान द्वारा गुरुमुख मुक्त हो जाते हैं॥ ७॥ जो

मनुष्य राम के नाम में ध्यान लगाकर जागता है, उसे यमदूत एवं कोई भी दुख स्पर्श नहीं करता। भक्तवत्सल प्रभु अपने भक्तों के साथ रहता है। हे नानक ! हरि के प्रेम द्वारा भक्तजन जन्म-मरण के चक्र से छूट गए हैं॥ ८॥ ६॥

आसा महला १ इकतुकी ॥ गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥ दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥ १ ॥ रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥ सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता संसारि ॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥ २ ॥ बंधन करम धरम हउ कीआ ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥ ३ ॥ बंधन किरखी करहि किरसानु ॥ हउमै डंनु सहै राजा मंगै दान ॥ ४ ॥ बंधन सउदा अणवीचारी ॥ तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥ ५ ॥ बंधन साह संचहि धनु जाइ ॥ बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥ ६ ॥ बंधन बेदु बादु अहंकार ॥ बंधनि बिनसै मोह विकार ॥ ७ ॥ नानक राम नाम सरणाई ॥ सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥ ८ ॥ १० ॥

जो व्यक्ति गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करता है, वह ठाकुर जी को जान लेता है। वह शब्द द्वारा सत्य को पहचान लेता है और उसके तमाम दुःख मिट जाते हैं॥ १॥ हे मेरी सखी-सहेली ! राम का नाम जपो। सतिगुरु की सेवा के फलस्वरूप तुझे अपने नयनों से प्रभु के दर्शन प्राप्त होंगे॥ १॥ रहाउ॥ (नाम-सुमिरन के बिना) जगत में माता-पिता मोह के बंधन हैं। पुत्र, कन्या एवं नारी ये सभी मोह के बन्धन हैं॥ २॥ अहंकारवश किए गए कर्म-धर्म भी बन्धन हैं। पुत्र, पत्नी एवं मन में किसी दूसरे का प्रेम भी बन्धन है॥ ३॥ कृषकों द्वारा की गई कृषि भी बन्धन है। अपने अहंकार की खातिर मनुष्य दण्ड सहता है और राजा उससे कर माँगता है॥ ४॥ भले-बुरे की विचार के बिना व्यापार एक बन्धन है। माया-मोह के प्रसार से प्राणी तृप्त नहीं होता॥ ५॥ साहूकार धन संचित करते हैं लेकिन यह धन भी अंततः चला जाता है जो बन्धन ही है। हरि की भक्ति के बिना प्राणी स्वीकृत नहीं होता॥ ६॥ वेद, धार्मिक वाद-विवाद एवं अहंकार बन्धन हैं। मोह एवं विकारों के बन्धनों द्वारा मनुष्य का नाश हो रहा है॥ ७॥ नानक ने राम की शरण ली है। सतिगुरु ने उसकी रक्षा की है, अब उसे कोई बन्धन नहीं है॥ ८॥ १०॥

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥ से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥ महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ १ ॥ आदेसु बाबा आदेसु ॥ आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥ हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥ २ ॥ इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥ गरी छुहारे खांदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥ तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥ ३ ॥ धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥ दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥ जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥ ४ ॥ अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥ साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥ बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥ ५ ॥ इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥ चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥ रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥ ६ ॥ इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥ इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥ ७ ॥ ११ ॥

जिन सुन्दर नारियों के सिर पर माँग में सिन्दूर एवं काले केशों की पट्टियाँ शोभायमान होती थीं, उनके सिर कैंची से काटे जा रहे हैं और मुँह में मिट्टी डाली जा रही है। जो पहले सुन्दर महलों में बसती थीं, अब उन्हें महलों के निकट भी बैठने नहीं दिया जाता॥ १॥ हे परमपिता! तुझे शत-शत प्रणाम है। हे आदिपुरुष! तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता, तू अनेक वेष हरदम रचता एवं अपनी लीला देखता है॥ १॥ रहाउ॥ जब इन सुन्दरियों का विवाह हुआ था, उनके दूल्हे उनके समीप अति सुन्दर लगते थे। वे डोली में बैठकर आई थीं, इन्होंने हाथी दांत के सुन्दर चूड़े सजाए हुए थे। ससुराल आगमन पर स्वागत् के समय उन पर शगुनों का जल वार दिया था, झिलमिल करते पंखे उन पर फेरे जाते थे॥ २॥ जब वह ससुराल में बैठी थीं तो लाखों रुपए उन्हें दिए गए थे और जब खड़ी हुई तो लाखों ही भेंट किए गए। वह गिरी-छुहारे खाती थीं और सुन्दर सेजों पर शयन करती थीं। अब उनके गले पर दुष्टों ने रस्सियाँ डाली हुई हैं और उनकी मोतियों की माला टूट गई हैं॥ ३॥ धन एवं यौवन पर उनको बहुत गर्व था परन्तु आज दोनों ही उनके वैरी बन गए हैं। बाबर ने अपने क्रूर सिपाहियों को आदेश दिया हुआ है, जो उनकी इज्जत लूटकर उन्हें ले जा रहे हैं। यदि ईश्वर को भला लगे तो वह आदर-सम्मान प्रदान करता है, यदि उसकी रजा हो तो वह दण्ड देता है॥ ४॥ यदि इन्सान पहले ही प्रभु का नाम याद करता रहे तो उसे दण्ड क्यों मिले। रंग-तमाशों एवं रंगरलियों में हाकिमों ने अपनी होश गंवा दी थी। जब बाबर के शासन का ढिंडोरा पिट गया तो किसी (पठान) शहजादे ने भोजन नहीं खाया॥ ५॥ कई मुसलमानों के पाँच नमाजों के वक्त छिन गए हैं और कई हिन्दुओं का पूजा-पाठ का समय चला गया है। हिन्दु स्त्रियाँ न स्नान करके तिलक लगा सकती हैं, न ही उनके चौके पवित्र रह गए हैं। जिन हिन्दुओं ने कभी भी राम को याद नहीं किया था। अब उन्हें खुदा-खुदा कहना भी नहीं मिलता॥ ६॥ बाबर के बन्दीगृह से जो विरले पुरुष बचकर अपने घर आते हैं, वे परस्पर मिलकर कुशलक्षेम पूछते हैं। उनके भाग्य में यह मुसीबत पूर्वलिखित थी, वे एक दूसरे के पास बैठकर अपना-अपना दुःख रोते हैं। हे नानक! बेचारे मनुष्य के वश में क्या है? जो कुछ परमात्मा को उपयुक्त लगता है, केवल वही होता है॥ ७॥ ११॥

आसा महला १ ॥ कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥ कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई ॥ कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥ १ ॥ इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥ एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥ कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥ कहा सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥ २ ॥ इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥ पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥ जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥ ३ ॥ कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥ थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥ कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥ ४ ॥ मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥ ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥ जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥ ५ ॥ इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥ इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥ जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥ दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥ हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥ ७ ॥ १२ ॥

अभी की बात है कि सैदपुर में खुशियाँ एवं रौनक ही थी लेकिन वे खेल, अस्तबल और घोड़े कहाँ हैं ? नगारे और शहनाई कहाँ है ? कहाँ हैं पश्मीने के तेगबन्द और कहाँ है वे लाल वर्दियाँ ? वह शीशे-जडित अंगूठियाँ एवं सुन्दर चेहरे कहाँ हैं ? वह अब यहाँ दिखाई नहीं देते॥ १॥ हे ईश्वर ! यह जगत तेरा पैदा किया हुआ है, तू सबका मालिक है। इस सृष्टि की एक घड़ी में ही रचना करके इसे नष्ट भी कर देता है। जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, तू बादशाहों का धन दूसरों को बाँट देता है॥ १॥ रहाउ॥ कहाँ है वह घर, दर, मण्डप एवं महल ? कहाँ है वह सुन्दर सराय ? कहाँ है सुन्दरी की वह सुखदायक सेज, जिसे देखकर रात को नींद नहीं आती थी ? कहाँ है पान और पान बेचने वाली स्त्रियाँ और कहाँ हैं पर्दे में रहने वाली नारियाँ ? सब कहीं लुप्त हो गई हैं॥ २॥ इस धन के कारण बहुत तबाह हो गए हैं। इस धन ने अधिकतर को बर्बाद किया है। पापों के बिना यह धन एकत्रित नहीं होता और मृतकों के साथ यह नहीं जाता। जिसे कर्त्ता प्रभु स्वयं नष्ट करता है पहले वह उससे अच्छाई छीन लेता है॥ ३॥ जब पठान हाकिमों ने सुना कि मीर बाबर हमला करने आ रहा है तो उन्होंने बहुत सारे पीर-पैगम्बरों को जादू-टोने के लिए रोके रखा। मुगलों ने पठानों के घर, सुख के निवास एवं मजबूत महल जला दिए और टुकड़े-टुकड़े किए हुए शहजादों को मिट्टी में मिला दिया। कोई मुगल अन्धा न हुआ और किसी ने भी कोई करामात नहीं दिखाई॥ ४॥ मुगलों एवं पठानों के बीच भयंकर लड़ाई हुई और रणभूमि में खूब तलवार चलाई गई। मुगलों ने अपनी बन्दूकों के निशाने लगा-लगाकर गोलियाँ चलाई और उन पठानों ने हाथियों से आक्रमण किया। हे भाई ! प्रभु के दरबार से जिनकी आयु की चिट्ठी फाड़ दी जाती है, उन्हें अवश्य ही मरना पड़ता है॥ ५॥ क्या हिन्दू नारियाँ, क्या मुसलमान औरतें, क्या भाटों एवं ठाकुरों की स्त्रियाँ- कितनी ही औरतों के वस्त्र सिर से पैरों तक फटे हुए थे और कितनी ही औरतों का निवास श्मशान में हो गया था। जिनके सुन्दर पति घरों में नहीं आए, उनकी रात्रि कैसे बीती होगी॥ ६॥ यह दर्द भरी दास्तान किसे कहकर सुनाई जाए ? क्योंकि कर्त्ता प्रभु स्वयं ही करता और जीवों से करवाता है। हे जग के रचयिता ! जीवों को दुख-सुख तेरी रज़ा में ही होता है। तेरे सिवाय किसके पास जाकर अपना दुःख रोएं। हे नानक ! अपने हुक्म का स्वामी परमात्मा अपने हुक्म में ही दुनिया का कार्य चलाता है और प्रसन्न होता है। इन्सान अपनी तकदीर में लिखे लेख अनुसार ही दुःख सुख भोगता है॥ ७॥ १२॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥ जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा ॥ कूड़ु कमावहि आदमी बांधहि घर बारा ॥ १ ॥ जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नीत नीत घर बांधीअहि जे रहणा होई ॥ पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥ २ ॥ ओही ओही किआ करहु है होसी सोई ॥ तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ॥ ३ ॥ धंधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूड़ु कमावहु ॥ ओहु न सुणई कत ही तुम्ह लोक सुणावहु ॥ ४ ॥ जिस ते सुता नानका जागाए सोई ॥ जे घरु बूझै आपणा तां नीद न होई ॥ ५ ॥ जे चलदा लै चलिआ किछु संपै नाले ॥ ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥ ६ ॥ वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥ अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥ ७ ॥ धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥ तां वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥ ८ ॥ करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥ नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥ ९ ॥ जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥ जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥ १० ॥ १३ ॥

जिस प्रकार ग्वाला चरागाह में अल्प समय के लिए पशु लेकर आता है, वैसे ही इन्सान थोडे समय के लिए संसार में आता है। आदमी झूठ की कमाई करते हैं और अपना घर-द्वार निर्मित करते हैं॥ १॥ हे अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए जीवो! जागो, देखो कि वणजारा जीव दुनिया में से जा रहा है॥ १॥ रहाउ॥ हमेशा रहने वाले घर तभी बनाने चाहिए, यदि दुनिया में सदैव जीवित रहना हो। परन्तु यदि कोई विचार करे तो उसे ज्ञान हो जाएगा कि जब आत्मा चली जाती है तो शरीर भी पार्थिव हो जाता है॥ २॥ तुम क्यों क्यों हाय! हाय!! करते हो। आत्मा तो अब भी है और सदैव रहेगी। यदि तुम किसी की मृत्यु पर रोते हो तो तुम्हें कौन रोएगा॥ ३॥ हे मेरे भाई! तुम लोग सांसारिक धन्धों में ग्रस्त हुए हो और झूठ की कमाई करते हो। वह मृतक बिल्कुल नहीं सुनता। तुम केवल दूसरे लोगों को ही अपना रोना सुनाते हो॥ ४॥ हे नानक! जिस मालिक ने अपने हुक्म से उसे सुलाया है, वही उसे जगाएगा। यदि मनुष्य अपने असली घर को समझ ले उसे नींद नहीं आती॥ ५॥ यदि परलोक को जाता हुआ मनुष्य कुछ संपति साथ ले गया है तो तू भी धन संचित करके देख, सोच-समझ और विचार कर॥ ६॥ ऐसा नाम का व्यापार कर जिससे जीवन-मनोरथ का लाभ प्राप्त हो सके, अन्यथा पछताना पड़ेगा। अवगुण छोड़कर गुण ग्रहण करो, इस तरह तुझे सच्ची कमाई प्राप्त होगी॥ ७॥ शरीर रूपी धर्मभूमि में सत्य का बीज बोओ। इस प्रकार की कृषि करो। यदि तुम लाभ प्राप्त करके ले जाओगे तो बुद्धिमान व्यापारी समझे जाओगे॥ ८॥ यदि प्रभु की मेहर हो तो जीव सतिगुरु से मिलता है और उसके उपदेश को समझता है। वह नाम उच्चरित करता है, नाम सुनता एवं नाम का ही व्यापार करता है॥ ६॥ जैसे नाम सुनने से लाभ है, वैसे ही नाम भुलाने से नुकसान है। संसार की यह मर्यादा सदा से ही चली आ रही है। हे नानक! ईश्वर को जो कुछ भला लगता है वही होता है, यही उसकी महिमा है॥ १०॥ १३॥

आसा महला १ ॥ चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ॥ जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥ १ ॥ दरु बीभा मै नीम्हि को कै करी सलामु ॥ हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥ मै इकु नामु न वीसरै साचे गुर बुधि ॥ २ ॥ जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥ गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥ ३ ॥ पंडित पाधे जोइसी नित पढ़हि पुराणा ॥ अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥ ४ ॥ इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा ॥ आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥ ५ ॥ इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥ बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥ ६ ॥ इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥ नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥ ७ ॥ गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥ नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥ ८ ॥ १४ ॥

मैंने चारों दिशाओं में खोज की है परन्तु मेरा कोई भी हितैषी नहीं है। हे मेरे मालिक! यदि तुझे अच्छा लगे तो तू मेरा रखवाला है और मैं तेरा सेवक हूँ॥ १॥ मेरे लिए तेरे बिना दूसरा कोई शरण-द्वार नहीं है। मैं किसे वन्दना करूँ? तू ही मेरा स्वामी है। तेरा सत्य नाम मेरे मुँह में हमेशा रहता है॥ १॥ रहाउ॥ कुछ लोग सिद्धों एवं पीरों की सेवा करते हैं और उनसे ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ माँगते हैं। मुझे एक परमात्मा का नाम न भूले, सतिगुरु ने मुझे यह सुमति प्रदान की है॥ २॥ योगी, भोगी एवं फटे-पुराने वस्त्र पहनने वाले फकीर निरर्थक ही परदेसों में भटकते रहते हैं। वह गुरु के शब्द एवं निरन्तर श्रेष्ठ सच्चाई को नहीं खोजते॥ ३॥ पण्डित, प्रचारक एवं ज्योतिषी नित्य

ही पुराण इत्यादि ग्रंथों को पढ़ते हैं। लेकिन वह अन्तर में नाम वस्तु को नहीं पहचानते, परब्रह्म हृदय में छिपा हुआ है॥ ४॥ कई तपस्वी वनों में तपस्या करते हैं और कई नित्य ही तीर्थों पर निवास करते हैं। वह तामसी पुरुष अपने आत्मस्वरूप को नहीं समझते। वह किसके लिए विरक्त हुए हैं ?॥ ५॥ कई प्रयास करके वीर्य को संयमित करते हैं। इस प्रकार वे ब्रह्मचारी कहलाए जाते हैं। लेकिन फिर भी गुरु के शब्द बिना उनकी मुक्ति नहीं होती और भ्रम में पड़कर जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं॥ ६॥ कई गृहस्थी, प्रभु के सेवक, साधक हैं और वह गुरु की मति अनुसार चलते हैं। वह नाम, दान, स्नान को सुदृढ़ करते हैं और प्रभु की भक्ति में सचेत रहते हैं॥ ७॥ गुरु के माध्यम से ही प्रभु का घर-द्वार जाना जाता है और मनुष्य उस स्थान को पहचान लेता है। हे नानक! उसे प्रभु का नाम कभी नहीं भूलता, उसका मन सत्य की स्मृति में रम गया है॥ ८॥ १४॥

आसा महला १ ॥ मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥ आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥ १ ॥ तू दाती हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥ २ ॥ इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥ गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणि आई ॥ ३ ॥ कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ॥ मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥ ४ ॥ लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥ साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥ ५ ॥ दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई ॥ अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥ ६ ॥ मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥ जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥ ७ ॥ हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥ नानक नामु न वीसरै मथि अंम्रितु पीआ ॥ ८ ॥ १५ ॥

अपनी इच्छाओं को मन में ही नियंत्रित करके सत्य द्वारा भवसागर से पार हुआ जा सकता है। हे ठाकुर! तू जगत के आदि युगों-युगान्तरों से ही सब पर दयालु है और मैं तेरी ही शरण में आया हूँ॥ १॥ तू दाता है और मैं तेरे दर का भिखारी हूँ। हे हरि! मुझे दर्शन देकर कृतार्थ करो। गुरु के माध्यम से नाम का ध्यान करने से मन-मन्दिर हरि-नाम से भीग जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जब मनुष्य झूठे लालच को छोड़ देता है तो वह सत्य को पहचान लेता है। गुरु के शब्द में समाया हुआ वह जीवन के परमार्थ को समझ लेता है॥ २॥ यह लोभी मन शरीर रूपी नगरी का बादशाह है जो सदैव लोभ में आकर्षित हुआ (मोहिनी का) लोभ करता है। गुरु के माध्यम से लोभ दूर हो जाता है और मनुष्य का प्रभु से प्रेम बन जाता है॥ ३॥ बंजर भूमि में फसल बीज कर मनुष्य कैसे लाभ प्राप्त कर सकता है? मनमुख सत्य से खुश नहीं होता। ऐसा झूठा मनुष्य झूठ में फँसा रहता है॥ ४॥ हे अन्धे जीवो! मोहिनी का लालच त्याग दो अन्यथा लालच का भारी दुःख सहना पड़ेगा। यदि सत्यस्वरूप साहिब मन में बस जाए तो अहंकार का विष निवृत्त हो जाता है॥ ५॥ हे मेरे भाई! दुविधा के कुमार्ग को त्याग दो अन्यथा लूटे जाओगे। दिन-रात गुरु की शरण में नाम का स्तुतिगान करो॥ ६॥ मनमुख (का हृदय) एक पत्थर एवं चट्टान है और उसका जीवन धिक्कार योग्य एवं नीरस है। पत्थर को कितनी ही देर तक पानी में रखा जाए तो भी अभ्यंतर से सूखा ही रहता है॥ ७॥ पूर्ण गुरु ने मुझे हरि का नाम दिया है, जो गुणों का भण्डार है। हे नानक! जिस व्यक्ति ने नाम रूपी अमृत को मंथन करके पी लिया है, वह नाम को कभी भी नहीं भूलता॥ ८॥ १५॥

आसा महला १ ॥ चले चलणहार वाट वटाइआ ॥ धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥ १ ॥ किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ ॥ ममता मोहु विसरजिआ अपने घरि आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥ सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥ २ ॥ मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥ रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥ ३ ॥ हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ ॥ लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥ ४ ॥ हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ ॥ हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीऐ ॥ ५ ॥ लाहा सचु निआउ मनि वसाईऐ ॥ लिखिआ पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥ ६ ॥ मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईऐ ॥ ठगि मुठी कूड़िआर बंन्हि चलाईऐ ॥ ७ ॥ साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ गुनहां बखसणहारु सबदु कमावही ॥ ८ ॥ नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ ॥ मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीऐ ॥ ९ ॥ १६ ॥

जीव रूपी मुसाफिर सद्मार्ग से विचलित होकर कुमार्ग पर चल रहे हैं। यह नश्वर संसार सांसारिक धन्धों में लीन है और सत्य से स्नेह नहीं करता॥ १॥ जिस व्यक्ति को गुरु-शब्द ने सत्य (परमात्मा) दिखा दिया है, फिर वह इधर-उधर क्यों भटकता फिरे और क्यों खोज-तलाश करे। अब वह ममता एवं मोह को त्याग कर अपने घर (प्रभु के पास) आ गया है॥ १॥ रहाउ॥ सत्यवादियों को ही सत्य (प्रभु) मिलता है। झूठ से यह पाया नहीं जाता। सत्य के साथ चित्त लगाने से मनुष्य दोबारा जगत में नहीं आता॥ २॥ हे बन्धु ! तुम मृतक संबंधी हेतु क्यों रोते हो ? तुम्हें यथार्थ तौर पर रोना ही नहीं आता। सत्यस्वरूप प्रभु की सराहना करते हुए प्रेम में विलाप करो और उसके हुक्म को पहचानो॥ ३॥ जिसके भाग्य में भगवान ने नाम के निर्वाह की प्राप्ति लिखी है, उसका आगमन सफल है। उसके हुक्म को अनुभव करने से प्राणी लाभ प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ यदि विधाता को भला लगे तो मनुष्य प्रतिष्ठा की पोशाक पहन कर उसके दरबार में जाता है। उसकी आज्ञा से ही यम प्राणी के सिर पर चोट करते हैं और उसे कैद में डाला जाता है॥ ५॥ सत्य एवं न्याय को अपने मन में बसाने से मनुष्य लाभ प्राप्त करता है। जो कुछ उसके भाग्य में लिखा हुआ है, मनुष्य उसे पा लेता है अतः इन्सान को अहंकार त्याग देना चाहिए॥ ६॥ स्वेच्छाचारी लोगों की खूब पिटाई होती है और विवादों में नष्ट हो जाते हैं। कपटियों को झूठ ने लूट लिया है। यमदूत उन्हें बांध कर आगे यमलोक ले जाते हैं॥ ७॥ जो मालिक को अपने हृदय में बसाते हैं, उन्हें पश्चाताप नहीं करना पड़ेगा। यदि मनुष्य गुरु के उपदेश पर अनुसरण करे तो प्रभु उसके गुनाह क्षमा कर देता है॥ ८॥ नानक सत्य ही माँगता है जो गुरु के माध्यम से प्राप्त होता है। हे प्रभु ! तेरे बिना मेरा कोई सहारा नहीं, मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि करो॥ ९॥ १६॥

आसा महला १ ॥ किआ जंगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥ सचि टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥ १ ॥ जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीऐ ॥ गुर की कार कमाइ महलु पछाणीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥ चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥ २ ॥ सचा साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई ॥ आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥ ३ ॥ अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै ॥ पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥ ४ ॥ आपनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले ॥ गुरमुखि वसतु पछाणीऐ अपना घरु भाले ॥ ५ ॥ जंमण मरणा आखीऐ तिनि करतै कीआ ॥ आपु गवाइआ मरि रहै फिरि मरणु न थीआ ॥ ६ ॥ साई कार कमावणी धुर की फुरमाई ॥ जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥ ७ ॥ रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥ नानक साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥ ८ ॥ १७ ॥

मैं जंगल में (भगवान को) ढूँढने हेतु क्यों जाऊँ, जबकि मेरा अपना घर (हृदय) ही एक हरा-भरा वन है अर्थात् इस में ही भगवान दृष्टि-मान होता है। शब्द द्वारा सत्य हृदय-घर में बस जाता है और खुद भी मिलने हेतु उत्सुक है॥ १॥ जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ वहीं मेरा भगवान विद्यमान है। जग में उसके सिवाय कोई नहीं समझना चाहिए अर्थात् वह सारे जग में बसा हुआ है। गुरु की सेवा करने से प्रभु के महल की पहचान हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जब सत्य परमेश्वर जीव को अपने साथ मिला लेता है तो वह जीव के मन में अच्छा लगने लग जाता है। जो मनुष्य सदैव ही प्रभु की रज़ा अनुसार चलता है, वह उसकी गोद में लीन हो जाता है॥ २॥ सच्चा साहिब जिस प्राणी के हृदय में बस जाता है, उसे अपने हृदय में वही सत्य बसा हुआ दृष्टिगोचर होता है। भगवान स्वयं ही महानता प्रदान करता है। उसकी देनों में किसी पदार्थ की कमी नहीं॥ ३॥ किसी ऐरागैरा की सेवा करके मनुष्य भगवान के दरबार को कैसे प्राप्त हो सकता है? यदि मनुष्य पत्थर की नाव में सवार होकर जाए, वह इसके भार से ही डूब जाएगा॥ ४॥ अपना मन गुरु के पास बेच देना चाहिए और अपना सिर भी साथ ही अर्पित कर देना चाहिए। फिर गुरु द्वारा ही नाम-पदार्थ पहचाना जाता है और मनुष्य को अपना हृदय घर मिल जाता है॥ ५॥ लोग जन्म-मरण की बातें करते हैं। यह सब कुछ उस विधाता ने किया है। जो अपना अहंकार गंवा कर मर जाते हैं, वे जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ते॥ ६॥ मनुष्य को वही कार्य करना चाहिए, जिस बारे विधाता ने उसे हुक्म किया है। यदि मनुष्य सतिगुरु से मिलकर अपना मन उसको अर्पित कर दे तो उसका मूल्यांकन कौन पा सकता है?॥ ७॥ वह प्रभु स्वयं रत्नों की परख करता है और इनका मूल्यांकन करता है। हे नानक! यदि मालिक-प्रभु मन में बस जाए तो यही मेरे लिए सच्ची बड़ाई है॥ ८॥ १७॥

आसा महला १ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥ मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥ १ ॥ बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई ॥ गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन्ही एको सेविआ पूरी मति भाई ॥ आदि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥ २ ॥ साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ॥ किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥ ३ ॥ गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥ आपि दिखावै वाटड़ी सची भगति द्रिड़ाए ॥ ४ ॥ मनमुखु जे समझाईऐ भी उझड़ि जाए ॥ बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक समाए ॥ ५ ॥ जनमि मरै भरमाईऐ हरि नामु न लेवै ॥ ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥ ६ ॥ जेही सेव कराईऐ करणी भी साई ॥ आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ॥ ७ ॥ गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए ॥ नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए ॥ ८ ॥ १८ ॥

जिन लोगों ने भगवान के नाम को भुला दिया है, वे द्वैतवाद में फँसकर भ्रम में ही भटकते रहते हैं। जो मूल (भगवान) को त्यागकर पेड़ों की डालियों में लगे हैं, उन्हें जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होता॥ १॥ नाम के बिना मनुष्य कैसे मुक्त हो सकता है? अच्छा हो यदि कोई इसे समझ ले। यदि गुरुमुख हो जाए तो वह जन्म-मरण से छूट जाता है लेकिन स्वेच्छाचारी अपनी इज्जत गंवा लेता है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई! जो मनुष्य एक ईश्वर की सेवा भक्ति करते हैं, उनकी बुद्धि पूर्ण है। निरंजन परमात्मा जगत के आदि में और युगों के आदि में भी था, भक्तजन उस हरि की शरण में ही पड़े हुए हैं॥ २॥ हे भाई! मेरा मालिक एक परमात्मा ही है, दूसरा कोई नहीं। सच्चे परमात्मा की कृपा से मुझे सुख उपलब्ध हुआ है॥ ३॥ गुरु के विना किसी को भी परमात्मा

नहीं मिला चाहे कितनी ही दुनिया उसे पाने की अनेक विधियाँ बताती है। भगवान स्वयं मार्ग दिखाता है और सच्ची भक्ति मनुष्य के हृदय में दृढ़ करता है॥ ४॥ यदि स्वेच्छाचारी को सद्मार्ग का उपदेश दिया जाए तो भी वह कुमार्ग ही जाता है। हरि के नाम बिना वह जन्म-मरण से छुटकारा नहीं पा सकता और मर कर वह नरक में ही पड़ा रहता है॥ ५॥ जो मनुष्य हरि के नाम का सुमिरन नहीं करता, वह जन्म-मरण के चक्र में भटकता रहता है। गुरु की सेवा किए बिना उसका मूल्य नहीं पाया जा सकता॥ ६॥ भगवान जैसी सेवा मनुष्य से करवाता है, वह वैसा ही कार्य करता है। भगवान स्वयं ही करता है। मैं किसका वर्णन करूँ वह अपनी महानता को आप ही देखता है॥ ७॥ गुरु की सेवा वही मनुष्य करता है, जिससे प्रभु स्वयं करवाता है। हे नानक ! (गुरु के समक्ष) अपना सिर अर्पण करके मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है और प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करता है॥ ८॥ १८॥

आसा महला १ ॥ रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥ वडै भागि सतिगुरु मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥ १ ॥ मै ओल्हगीआ ओल्हगी हम छोरू थारे ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥ २ ॥ साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई ॥ जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई ॥ ३ ॥ आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई ॥ गुरमुखि होइ निहालीऐ इउ कीमति पाई ॥ ४ ॥ जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै ॥ पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥ ५ ॥ मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥ मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाए ॥ ६ ॥ ता जगि आइआ जाणीऐ साचै लिव लाए ॥ गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥ ७ ॥ अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी ॥ नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥ ८ ॥ १९ ॥

मेरा ठाकुर सुन्दर एवं सर्वोपरि है और गुरुवाणी भी अत्यंत सुन्दर है। पूर्ण सौभाग्य से ही सच्चा गुरु मिलता है, जिनके द्वारा निर्वाण पद मिलता है॥ १॥ हे मेरे भगवान ! मैं तेरे सेवकों का सेवक हूँ। मैं तेरा तुच्छ नौकर हूँ। जैसे तू मुझे रखता है, वैसे ही मैं रहता हूँ, तेरा नाम मेरे मुख में है॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी ! तेरे दर्शनों की मुझे तीव्र लालसा है। तेरी रजा में ही तू मन को भला लगने लग जाता है। मेरे ठाकुर के हाथ में सब उपलब्धियाँ हैं, उसकी इच्छा से ही सम्मान प्राप्त होता है॥ २॥ सत्य को दूर नहीं समझना चाहिए, वह हरेक प्राणी के अन्तर्मन में विद्यमान है। मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, वहीं मैं अपने भगवान को व्यापक पाता हूँ। हे प्रभु ! तेरा मूल्यांकन मैं किस तरह कर सकता हूँ ?॥ ३॥ प्रभु स्वयं ही दुनिया की रचना करता है और स्वयं ही नाश कर देता है। वह अपनी महानता स्वयं ही देखता है। गुरुमुख बनकर ही प्रभु के दर्शन प्राप्त होते हैं, इस तरह उसका मूल्यांकन पाया जाता है॥ ४॥ गुरु की सेवा करने से ही मनुष्य को जीवन में प्रभु नाम का लाभ मिलता है। लेकिन सच्चा गुरु भी मनुष्य को तभी प्राप्त होता है यदि पूर्व जन्मों के किए शुभ कर्मों के संस्कार लिखे हुए हों॥ ५॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य के आत्मिक गुणों में नित्य कमी आती रहती है और वह दुविधा में भटकता रहता है। माया में अन्धा हुआ स्वेच्छाचारी मनुष्य प्रभु को याद नहीं करता। फिर वह कैसे उसके दर्शन प्राप्त कर सकता है ?॥ ६॥ इस जगत में केवल तभी मनुष्य का जन्म सफल समझा जाता है, यदि वह सत्यस्वरूप प्रभु में ध्यान लगाता है। गुरु से मिलकर मनुष्य पारस की भाँति बन जाता है और उसकी ज्योति परम ज्योति में मिल जाती है॥ ७॥ वह दिन-रात निर्लेप होकर विचरता है और परमात्मा की रजानुसार कार्य करता है। हे नानक ! जो व्यक्ति नाम में संतुष्ट हो गए हैं, वह भगवान के चरणों में मग्न रहते हैं॥ ८॥ १९॥

आसा महला १ ॥ केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥ मै निधरिआ धर एक तूं मै ताणु सताणा ॥ १ ॥ नानक की अरदासि है सचि नामि सुहेला ॥ आपु गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु ॥ साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥ २ ॥ अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ॥ ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥ ३ ॥ हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥ खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ॥ ४ ॥ नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ ॥ खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ॥ ५ ॥ जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ॥ ६ ॥ अंम्रित फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥ तिंना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥ ७ ॥ हुकमि संजोगी आइआ चलु सदा रजाई ॥ अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥ ८ ॥ २० ॥

भगवान के गुणों का मैं जितना मन चाहे वर्णन करूँ परन्तु उसका अन्त नहीं जाना जा सकता। हे भगवान ! तुम ही निराश्रित के आश्रय हो, तुम ही बलहीनों के बल हो॥ १॥ नानक की यही प्रार्थना है कि वह सत्य नाम में लीन होकर सुखी रहे। जब अहंकार मिट गया तो मुझे सुमति प्राप्त हो गई। गुरु-शब्द द्वारा मेरा परमात्मा से मिलाप हो गया॥ १॥ रहाउ॥ अहंकार एवं गर्व को त्याग कर मनुष्य विवेक प्राप्त कर लेता है। जब मनुष्य का मन भगवान के साथ मिल जाता है तो वह उसे सत्यनाम का सहारा देता है॥ २॥ दिन-रात नाम से संतुष्ट रहो, वही सच्ची सेवा है। जो प्राणी रजा के स्वामी भगवान के हुक्म अनुसार चलता है, उसे कोई विघ्न नहीं आता॥ ३॥ जो प्राणी प्रभु के हुक्म को स्वीकार करता है, वह प्रभु-खजाने में डाला जाता है। खोटे लोगों को कोई स्थान नहीं मिलता, उनका जूठों के साथ मेल-मिलाप है॥ ४॥ यदि नित्य ही निर्मल नाम को याद किया जाए तो ही सत्य का सौदा खरीदा जाता है। प्रभु के खजाने में खोटे सिक्के दिखाई नहीं देते, वह पकड़ कर अग्नि में जला दिए जाते हैं॥ ५॥ जो लोग अपने आत्मिक जीवन को परख लेते हैं, उन्हें परमात्मा की पहचान हो जाती है। एक ईश्वर अमृत का वृक्ष है, जिसे अमृत का फल लगा हुआ है॥ ६॥ जो मनुष्य अमृत फल को चखते हैं, वे सत्य के साथ तृप्त रहते हैं। जिनकी जिह्वा हरि रस को मानती है, उन्हें कोई भ्रम एवं भेद नहीं रहता॥ ७॥ प्रभु के हुक्म एवं संयोग से ही जीव संसार में आया है इसलिए सदैव उसकी रजा में चलना चाहिए। हे प्रभु ! मुझ गुणहीन नानक को गुण प्रदान करो, मुझे सत्य मिल जाए, मेरे लिए यही बड़ाई है॥ ८॥ २०॥

आसा महला १ ॥ मनु रातउ हरि नाइ सचु वखाणिआ ॥ लोका दा किआ जाइ जा तुधु भाणिआ ॥ १ ॥ जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ ॥ लाहा हरि गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सची तेरी कार देहि दइआल तूं ॥ हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥ २ ॥ दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही ॥ भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥ ३ ॥ दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी ॥ वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥ ४ ॥ सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥ मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥ ५ ॥ सचे सचा नेहु सचै लाइआ ॥ आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥ ६ ॥ सचे सची दाति देहि दइआलु है ॥ तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥ ७ ॥ तूं उतमु हउ नीचु सेवकु कांढीआ ॥ नानक नदरि करेहु मिलै सचु वांढीआ ॥ ८ ॥ २१ ॥

जब से मेरा मन हरि नाम से रंगा है, तब से मैंने सत्य का ही बखान किया है। हे परमेश्वर ! लोगों का क्या बिगड़ता है, यदि मैं तुझे अच्छा लगने लग गया हूँ॥ १॥ जब तक जीवन एवं प्राण

है तब तक सत्य का ध्यान करते रहना चाहिए। हरि का गुणानुवाद करने से लाभ प्राप्त होता है और सुख उपलब्ध होता है॥ १॥ रहाउ॥ हे दयालु स्वामी! तेरी सेवा-भक्ति सत्य है, यह मुझे प्रदान कीजिए। मैं तेरी स्तुति करके जीवन जीता हूँ, तू ही मेरी जीवन की टेक एवं आधार है॥ २॥ हे भगवान्! मैं तेरा सेवक एवं तेरे द्वार पर द्वारपाल हूँ। तू ही मेरा दर्द जानता है। हे ठाकुर! तेरी भक्ति आश्चर्यजनक है, जो सभी दर्द मिटा देती है॥ ३॥ गुरुमुख जानते हैं कि हरि के नाम का सुमिरन करने से वह उसके दरबार में स्वीकृत हो जाएँगे। सत्य परमात्मा को इन्सान का वही जीवन समय मंजूर है, जब वह शब्द की पहचान करता है॥ ४॥ जो मनुष्य सत्य, संतोष एवं प्रेम की कमाई करते हैं, वह हरि नाम का यात्रा खर्च प्राप्त कर लेते हैं। अपने मन से विकारों को छोड़ देना चाहिए, सद्पुरुष तुझे सत्य प्रदान करेगा॥ ५॥ सत्यस्वरूप परमात्मा सत्यवादियों को अपना सच्चा प्रेम लगा देता है। प्रभु स्वयं ही न्याय करता है, जो उसे अच्छा लगता है॥ ६॥ हे सत्य के पुंज! तू बड़ा दयालु है, मुझे अपने नाम की सच्ची देन दीजिए। मैं दिन-रात उसकी सेवा (नाम-स्मरण) करता हूँ, जिसका नाम अमूल्य है॥ ७॥ हे प्रभु! तुम उत्तम हो और मैं विनीत हूँ परन्तु फिर भी मैं तेरा सेवक कहलाता हूँ। हे सत्यस्वरूप प्रभु! मुझ नानक पर अपनी दया-दृष्टि धारण करो चूंकि मैं जो तेरे नाम से बिछुड़ा हुआ हूँ, तुझसे मिल जाऊँ॥ ८॥ २१॥

आसा महला १ ॥ आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥ जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥ १ ॥ बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥ सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥ राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥ २ ॥ संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाए ॥ आदि पुरखु अपरंपरा गुरमुखि हरि पाए ॥ ३ ॥ नटूऐ सांगु बणाइआ बाजी संसारा ॥ खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥ ४ ॥ हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥ सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥ ५ ॥ जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरि नामु हमारै ॥ राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥ ६ ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा ॥ अंति सखाई पाइआ जन मुकति दुआरा ॥ ७ ॥ जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥ नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥ ८ ॥ २२ ॥

इन्सान का आवागमन कैसे मिट सकता है और कैसे वह प्रभु को मिल सकता है? जन्म-मरण का दुख बहुत भारी है और द्वैतवाद मनुष्य को सदैव पीड़ित करते हैं॥ १॥ नाम के बिना इन्सान का जीना व्यर्थ है और उसकी चतुराई पर धिक्कार एवं लाहनत है। जिस प्राणी ने साधु सच्चे गुरु की सेवा नहीं की, उसे हरि की भक्ति कभी अच्छी नहीं लगती॥ १॥ रहाउ॥ जब प्राणी को पूर्ण गुरु मिल जाता है तो उसका जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है। गुरु राम-नाम के धन की राशि प्रदान करता है, जिससे झूठा भ्रम नाश हो जाता है॥ २॥ जो संतजनों की संगति में रहता है वह भगवान को धन्य-धन्य कहता हुआ उसका यशोगान करता है। आदि पुरुष, अपरम्पार प्रभु गुरु के माध्यम से प्राप्त होता है॥ ३॥ यह संसार रूपी खेल नटुए के स्वांग की भाँति सजा हुआ है। एक क्षण एवं पल भर हेतु मनुष्य यह तमाशा देखता है। इसके नाश होते कोई समय नहीं लगता॥ ४॥ अभिमान की चौपड़ को घमण्डी मानव असत्य एवं अहंकार की गोटियों से खेल रहा है। सारा जगत पराजित हो जाता है लेकिन जो गुरु शब्द का चिन्तन करता है, वह जीवन बाजी जीत लेता है॥ ५॥ जैसे अन्धे मनुष्य के हाथ में डण्डी (सहारा) है वैसे ही हरि का नाम मेरे लिए (सहारा) है। दिन-रात एवं सुबह राम का नाम मेरी टेक है॥ ६॥ हे प्रभु! जैसे तू मुझे रखता है, वैसे ही मैं रहता हूँ। तेरा नाम मेरा आधार है, जो अन्तिम समय तक सहायता करने वाला एवं मोक्ष का द्वार है,

उसे तेरे सेवक ने प्राप्त कर लिया है॥ ७॥ मुरारि प्रभु के नाम का जाप करने से जन्म-मरण का दुःख मिट गया है। हे नानक! जो मनुष्य प्रभु नाम को विस्मृत नहीं करता, पूर्ण गुरु उसका उद्धार कर देते हैं॥ ८॥ २२॥

आसा महला ३ असटपदीआ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सासतु बेदु सिम्रिति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥ साखा तीनि मूलु मति रावै तूं तां सरब विडाणी ॥ १ ॥ ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अम्रित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥ २ ॥ तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥ करमु होवै ता परम पदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥ ३ ॥ तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥ जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥ ४ ॥ नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥ जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥ ५ ॥ चारे वेद ब्रहमे कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥ ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥ ६ ॥ जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥ ७ ॥ तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥ जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥ ८ ॥ १ ॥ २३ ॥

हे भगवान! तेरे नाम-सरोवर में शास्त्र, वेद एवं स्मृतियाँ विद्यमान हैं और तेरे चरणों में गंगा समाई हुई है। हे आदिपुरुष! तू इस जगत रूपी पेड़ का मूल अर्थात् जड़ है और त्रिगुणात्मक माया इस पेड़ की तीन शाखाएँ हैं। मेरी मति तेरी याद का आनंद प्राप्त करती है। तू सबमें बसा हुआ है, जो एक बड़ा कौतुक है॥ १॥ नानक उस परमात्मा के चरणों को याद करता रहता है और उसकी अमृत वाणी बोलता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तेंतीस करोड़ देवी-देवता तेरे दास हैं, तू ही ऋद्धियों, सिद्धियों एवं प्राणों का आधार है। उसके रूप जाने नहीं जा सकते, वर्णन करने एवं सोचने से मनुष्य क्या कर सकते हैं?॥ २॥ हे स्वामी! इस सृष्टि में तीन गुण (रजो, तमो, सतो) तेरे द्वारा उत्पादित हैं। सृष्टि रचना के चार स्रोत तेरे द्वारा ही निर्मित हैं। यदि तुम दयालु हो जाओ तो ही मनुष्य परम पदवी प्राप्त करता है और तेरी अकथनीय कहानी को कथन करता है॥ ३॥ हे भगवान! तू जग का रचयिता है। सब कुछ तेरा ही किया हुआ है, कोई प्राणी क्या कर सकता है? हे परमेश्वर! जिस मनुष्य पर तू कृपादृष्टि करता है केवल वही सत्य में समा जाता है॥ ४॥ प्रत्येक जीव जो आता एवं जाता है अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में पड़ा है, वह तेरे नाम का जाप करता है। यदि तुझे भला लगे तभी गुरुमुख तुझे समझता है। शेष स्वेच्छाचारी मूर्ख प्राणी भटकते ही रहते हैं॥ ५॥ चारों वेद (भगवान ने) ब्रह्मा जी को दे दिए लेकिन वह पढ़ पढ़ कर विचार ही करता रहता है। प्रभु के हुक्म को बेचारा समझता ही नहीं और नरक-स्वर्ग में जन्म लेता है॥ ६॥ युग-युग में ईश्वर ने राम, कृष्ण इत्यादि राजा उत्पन्न किए जिन्हें लोग अवतार मान कर गुणस्तुति करते आ रहे हैं। लेकिन वे भी उसका अन्त नहीं पा सके, फिर मैं क्या कहकर उसके गुणों का विचार कर सकता हूँ॥ ७॥ तू सदैव सत्य है और तेरा पैदा किया हुआ सब कुछ भी सत्य हैं। यदि तुम मुझे सत्य प्रदान करो, तभी मैं इसका वर्णन करूँगा। हे भगवान! जिस मनुष्य को तुम अपने सत्य की सूझ प्रदान करते हो, वह सहज ही तेरे नाम में समा जाता है॥ ८॥ १॥ २३॥

आसा महला ३ ॥ सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ॥ सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ जिनि ममता अगनि त्रिसना बुझाई ॥ सहजे माता हरि गुण गाई ॥ २ ॥ विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥ ३ ॥ गुर सेवा तपां सिरि तपु सारु ॥ हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ दरि साचै दीसै सचिआरु ॥ ४ ॥ गुर सेवा ते त्रिभवण सोझी होइ ॥ आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ साची बाणी महलु परापति होइ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥ निरमल नामु रखै उरि धारे ॥ साची सोभा साचि दुआरे ॥ ६ ॥ से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥ अनदिनु भगति सचु नामु द्रिड़ाए ॥ नामे उधरे कुल सबाए ॥ ७ ॥ नानकु साचु कहै वीचारु ॥ हरि का नामु रखहु उरि धारि ॥ हरि भगती राते मोख दुआरु ॥ ८ ॥ २ ॥ २४ ॥

सच्चे गुरु ने मेरा भ्रम दूर कर दिया है; उसने हरि का निरंजन नाम मेरे मन में बसा दिया है। शब्द की पहचान करने से मुझे सदैव सुख उपलब्ध हो गया है॥ १॥ हे मेरे मन! तू तत्व ज्ञान को सुन। देने वाला (परमात्मा) समस्त विधियाँ जानता है। गुरु की शरण में रहने से ही नाम का भण्डार प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु से भेंट करने की यह बड़ाई है कि उसने ममता एवं तृष्णाग्नि को बुझा दिया है और मैं सहज अवस्था में रंगा हुआ हरि का गुणगान करता रहता हूँ॥ २॥ पूर्ण गुरु के विना कोई भी जीव प्रभु को नहीं जानता। क्योंकि मनुष्य माया-मोह एवं व्यर्थ के लोभ में फँसा हुआ है। गुरु के माध्यम से ही मनुष्य प्रभु का नाम एवं हरि की वाणी को पा लेता है॥ ३॥ गुरु की सेवा समस्त तपस्याओं की महान् तपस्या एवं सार है। तब पूज्य परमेश्वर मनुष्य के मन में बस जाता है और वह सारे दुःख दर्द को भुलाने वाला है। वह सत्य के दरबार में सत्यवादी दिखाई देता है॥ ४॥ गुरु की सेवा करने से मनुष्य को तीन लोकों की सूझ प्राप्त हो जाती है और अपने आत्मस्वरूप को पहचान कर वह उस प्रभु को प्राप्त कर लेता है। सच्ची गुरुवाणी के माध्यम से प्राणी प्रभु के महल को प्राप्त कर लेता है॥ ५॥ गुरु की सेवा करने से मनुष्य अपनी कुल (वंश) का उद्धार कर लेता है और निर्मल नाम को अपने हृदय में बसा कर रखता है। सत्य के दरबार में वह सत्य की शोभा से शोभायमान होता है॥ ६॥ वे पुरुष बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें गुरु अपनी सेवा में लगाता है। वे दिन-रात प्रभु-भक्ति में प्रवृत्त रहते हैं और सत्य नाम को बसाकर रखते हैं। प्रभु-नाम के माध्यम से समूचे कुल का उद्धार हो जाता है॥ ७॥ नानक सत्य का विचार कहता है कि भगवान का नाम अपने हृदय में बसाकर रखो। हरि की भक्ति में मग्न होने से मोक्ष द्वार प्राप्त हो जाता है॥ ८॥ २॥ २४॥

आसा महला ३ ॥ आसा आस करे सभु कोई ॥ हुकमै बूझै निरासा होई ॥ आसा विचि सुते कई लोई ॥ सो जागै जागावै सोई ॥ १ ॥ सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न जाई ॥ नामे त्रिसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलि कीरति सबदु पछानु ॥ एहा भगति चूकै अभिमानु ॥ सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ॥ जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥ २ ॥ तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥ करि किरपा नामु मंनि वसाए ॥ इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥ हुकमै बूझे सदा सुखु पाए ॥ ३ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ आपे गुरमुखि नामु वसाए ॥ आपि भुलावै आपि मारगि पाए ॥ सचै सबदि सचि समाए ॥ ४ ॥ सचा सबदु सची है बाणी ॥ गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी ॥ मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥ बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥ ५ ॥ तीनि भवन महि एका

माइआ ॥ मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ द्रिड़ाइआ ॥ बहु करम कमावै दुखु सबाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ ६ ॥ अंम्रितु मीठा सबदु वीचारि ॥ अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥ सहजि अनंदि किरपा धारि ॥ नामि रते सदा सचि पिआरि ॥ ७ ॥ हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु वीचारि ॥ हरि जपि पड़ीऐ हउमै मारि ॥ हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि ॥ नानक नामु गुरमति उर धारि ॥ ८ ॥ ३ ॥ २५ ॥

हर कोई इन्सान आशा एवं इच्छा ही करता रहता है लेकिन जो प्रभु के हुक्म को बूझ लेता है, वह इच्छा रहित हो जाता है। बहुत सारे लोग आशा में सोए हुए हैं। वही प्राणी जागता है, जिसे प्रभु स्वयं जगाता है॥ १॥ सतिगुरु ने नाम का भेद बताया है। नाम के बिना भूख दूर नहीं होती। नाम के माध्यम से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है। परमात्मा की रजा से ही नाम प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ कलियुग में प्रभु की कीर्ति करो और शब्द की पहचान करो। सच्ची भक्ति तो यही है कि अभिमान मिट जाए। सच्चे गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से मनुष्य प्रभु-दरबार में स्वीकृत हो जाता है। हे प्राणी! तू उसको पहचान, जिसने तेरे भीतर आशा उत्पन्न की है॥ २॥ तुम उसे क्या भेंट करोगे, जो तुझे शब्द सुनाता है और कृपा करके तेरे मन में नाम बसाता है। अपना अहंत्व त्याग कर अपना यह सिर उसको अर्पित कर दो। जो मनुष्य प्रभु की रज़ा को समझता है, वह सदैव सुख प्राप्त करता है॥ ३॥ ईश्वर स्वयं सब कुछ करता है और स्वयं ही प्राणियों से करवाता है। वह स्वयं ही गुरुमुख के हृदय में नाम बसाता है। वह स्वयं ही मनुष्य को कुमार्गगामी करता है और स्वयं ही सद्मार्ग प्रदान करता है। सच्चे शब्द द्वारा मनुष्य सत्य में समा जाता है॥ ४॥ शब्द सत्य है और वाणी भी सत्य है। युग-युग में गुरुमुख इसका कथन एवं व्याख्या करते हैं। लेकिन स्वेच्छाचारी मनुष्य सांसारिक मोह एवं भ्रम में कुमार्गगामी हो गए हैं। नाम के बिना हर कोई पागल पुरुष की भाँति भटकता फिरता है॥ ५॥ तीनों लोकों में एक माया का ही वर्चस्व है। मूर्ख मनुष्य ने पढ़-पढ़कर द्वैतभाव ही सुदृढ़ किया है। वह बहुत धर्म-कर्म करता है परन्तु बहुत दुःख सहन करता है। लेकिन सतिगुरु की सेवा करने से वह सदा सुख प्राप्त कर सकता है॥ ६॥ शब्द का चिन्तन अमृत समान मीठा है। अपने अहंकार को मार कर जीव रात-दिन इसका भोग कर सकता है। जिस मनुष्य पर परमात्मा कृपा करता है, उसे सहज आनंद प्राप्त होता है। वह नाम से अनुरक्त हो जाता है और सदैव सत्य से प्रेम करता है॥ ७॥ गुरु के शब्द को विचार कर हरि बारे पढ़ना एवं जाप करना चाहिए। हरि का जाप एवं उसके बारे में पढ़ने से मनुष्य का अहंकार निवृत्त हो जाता है। भगवान के भय-सम्मान में रहकर सत्य के प्रेम में मस्त होकर हरि नाम का सुमिरन करना चाहिए। हे नानक! गुरु की मति द्वारा नाम अपने हृदय में बसाओ॥ ८॥ ३॥ २५॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥ गुर ते सांति ऊपजै जिनि तिसना अगनि बुझाई ॥ गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई ॥ १ ॥ एको नामु चेति मेरे भाई ॥ जगतु जलंदा देखि कै भजि पए सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ॥ गुर ते घरु दरु पाइआ भगती भरे भंडारा ॥ २ ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा ॥ गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥ ३ ॥ गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई ॥ गुरमुखि हउमै मारीऐ मनु निरमलु होई ॥ ४ ॥ सतिगुरि मिलिऐ आपु गइआ त्रिभवण सोझी पाई ॥ निरमल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥ ५ ॥ पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ॥ अंतरु सीतलु सांति होइ नामे सुखु होई ॥ ६ ॥ पूरा सतिगुरु तां मिलै जां नदरि करेई ॥ किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई ॥ ७ ॥ आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए ॥ नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥ ८ ॥ ४ ॥ २६ ॥

गुरु से ही शान्ति उत्पन्न होती है, जिसने तृष्णा की अग्नि को बुझा दिया है। गुरु द्वारा ही नाम मिलता है, जिससे दुनिया में बड़ी ख्याति प्राप्त होती है॥ १॥ हे मेरे भाई ! प्रभु के एक नाम को ही याद करो। इस जगत को (विषय-विकारों से) जलता देखकर मैं भागकर (गुरु की) शरण में आ गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु से ज्ञान की उत्पति होती है और जीव महा तत्व को विचारता है। गुरु के द्वारा ही प्रभु के घर-दर को पा लिया है और मेरे भण्डार भक्ति से भर गए हैं॥ २॥ गुरु के माध्यम से मनुष्य, नाम का ध्यान करता है और इस विचार को बूझ लेता है। गुरु के माध्यम से ही भक्ति एवं ईश्वर की गुणस्तुति होती है और उसके मन में अपार शब्द बस जाता है॥ ३॥ गुरुमुख बनकर ही मनुष्य को सुख प्राप्त होता है और उसे कदाचित दुःख नहीं होता। गुरुमुख बन कर ही अहंकार नष्ट हो जाता है और मन निर्मल हो जाता है॥ ४॥ सतिगुरु से मिलकर मनुष्य का अहंत्व नाश हो जाता है और उसे तीन लोकों की सूझ प्राप्त हो जाती है। तब वह प्रभु की निर्मल ज्योति को सर्वव्यापक देखता है और उसकी ज्योति परम ज्योति में समा जाती है॥ ५॥ जब पूर्ण गुरु उपदेश प्रदान करता है तो बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। अन्तर्मन शीतल एवं शांत हो जाता है और प्रभु नाम द्वारा सुख प्राप्त होता है॥ ६॥ जब भगवान करुणा-दृष्टि धारण करता है तो पूर्ण सतिगुरु मिलता है। तब प्राणी के सब अपराध एवं पाप नाश हो जाते हैं और उसे फिर से कोई दुःख एवं विघ्न नहीं होता॥ ७॥ सब उपलब्धियाँ भगवान के हाथ हैं, वह स्वयं ही (सम्मान) देकर अपने नाम के साथ मिला लेता है। हे नानक ! जिसके मन में नाम-निधान बस जाता है, वह जग में कीर्त्ति ही प्राप्त करता है॥ ८॥ ४॥ २६॥

आसा महला ३ ॥ सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई ॥ अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥ १ ॥ एको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई ॥ हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु भगती नो सुरि नर मुनि जन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ ॥ पंडित पड़दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥ २ ॥ आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई ॥ आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥ मंदा किस नो आखीऐ जे दूजा होई ॥ ४ ॥ इको हुकमु वरतदा एका सिरि कारा ॥ आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥ ५ ॥ इक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥ भगति भी ओना नो बखसीअनु अंतरि भंडारा ॥ ६ ॥ गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ॥ ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ही सचु जाणनि सोई ॥ ७ ॥ घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी ॥ नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ही नामि हउमै मारी ॥ ८ ॥ ५ ॥ २७ ॥

हे मेरे मन ! तू (गुरु से) परमात्मा का नाम सुनकर उसे अपने अन्तर में बसा। हे मेरे भाई ! वह परमात्मा आप ही आकर मिल जाता है। सच्चे में अपना चित्त लगाकर हर रोज सच्ची भक्ति करो॥ १॥ हे मेरे भाई ! एक नाम का ध्यान करो, तुझे आत्मिक सुख प्राप्त होगा। अपना अहंकार एवं द्वैतवाद को दूर कर दे, इससे तेरी मान-प्रतिष्ठा बहुत बढ़ेगी॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! इस भक्ति को पाने के लिए देवता, मनुष्य एवं मुनि जन भी जिज्ञासा रखते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना यह प्राप्त नहीं होती। पण्डित एवं ज्योतिषी धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते रहे परन्तु उन्हें भी प्रभु-भक्ति का ज्ञान नहीं मिला॥ २॥ भगवान ने सब कुछ अपने वश में रखा हुआ है, अन्य कुछ कहा नहीं जा सकता। गुरुदेव ने मुझे यह सूझ प्रदान की है कि भगवान जो कुछ हमें देता है, उसे ही हम प्राप्त करते हैं॥ ३॥ सब जीव-जन्तु भगवान के बनाए हुए हैं और वह सबका मालिक है।

हम बुरा किसे कह सकते हैं यदि भगवान के अलावा कोई दूसरा जीवों में निवास करता हो॥ ४॥ भगवान का हुक्म ही इस सृष्टि में चल रहा है, प्रत्येक जीव को वही कार्य करना है जो उसकी ओर से उसके सिर पर लिखा गया है। उसने स्वयं ही जीवों को कुमार्गगामी किया हुआ है, इसलिए उनके अन्तर्मन में लोभ एवं विकार निवास करते हैं॥ ५॥ भगवान ने कुछ मनुष्यों को गुरुमुख बना दिया है और वे ज्ञान समझते और विचार करते हैं। वह अपनी भक्ति भी उन्हें प्रदान करता है, जिनके अन्तर्मन में नाम धन के भण्डार भरे हुए हैं॥ ६॥ ज्ञानी पुरुष भी सत्य को ही समझते हैं और उन्हें सत्य का बोध प्राप्त होता है। वे केवल सत्यस्वरूप परमात्मा को ही जानते हैं और यदि कोई उन्हें कुमार्गगामी करना चाहे तो वे पथ-भ्रष्ट नहीं होते॥ ७॥ उन ज्ञानी पुरुषों के अन्तर्मन में कामादिक पाँचों निवास करते हैं लेकिन पाँचों ही बुद्धिमता से पेश आते हैं। हे नानक! सच्चे गुरु के बिना कामादिक पाँचों नियंत्रण में नहीं आते। नाम के माध्यम से अहंकार दूर हो जाता है॥ ८॥ ५॥ २७॥

आसा महला ३ ॥ घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥ गुर परसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥ १ ॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ॥ अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ॥ अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा ॥ २ ॥ अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥ मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा ॥ ३ ॥ पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥ नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥ ४ ॥ बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥ भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥ ५ ॥ घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥ चोरै वांगू पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई ॥ ६ ॥ जिन्ही घरु जाता आपणा से सुखीए भाई ॥ अंतरि ब्रहमु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥ ७ ॥ आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई ॥ नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई ॥ ८ ॥ ६ ॥ २८ ॥

हे भाई! तेरे हृदय-घर में ही समस्त पदार्थ हैं, बाहर कुछ भी नहीं मिलता। गुरु की कृपा से हरेक वस्तु प्राप्त हो जाती है और मन के किवाड़ खुल जाते हैं॥ १॥ हे भाई! सतिगुरु द्वारा ही भगवान प्राप्त होता है। मनुष्य के अन्तर्मन में नाम का भण्डार भरा हुआ है, पूर्ण सतिगुरु ने मुझे यह दिखा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जो मनुष्य हरि के नाम का ग्राहक है, वह इसे प्राप्त कर लेता है। लेकिन यह अमूल्य नाम रत्न इन्सान सिमरन द्वारा प्राप्त करता है। वह अपने अन्तर्मन को खोलता है और दिव्य-दृष्टि से मुक्ति के भण्डार को देखता है॥ २॥ शरीर के भीतर अनेक महल हैं और आत्मा उनके भीतर बसेरा करती है। वह अपना मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और दोबारा जन्म-मरण के बन्धन में नहीं पड़ता॥ ३॥ परख करने वाले लोग गुरु से नाम रूपी वस्तु प्राप्त करते हैं और उन्हें नाम रूपी वस्तु की सूझ गुरु से हुई है। नाम-पदार्थ बड़ा अनमोल है, गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही इसे पाता है॥ ४॥ हे मेरे भाई! जो बाहर ढूँढता है, उसे क्या मिल सकता है? क्योंकि नाम-भण्डार मनुष्य के हृदय-घर में ही है। सारा जगत भ्रम में कुमार्गगामी हुआ भटकता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य अपना मान-सम्मान गंवा लेते हैं॥ ५॥ झूठा मनुष्य अपना घर-द्वार छोड़कर पराए घर में जाता है। जहाँ वह चोर की भाँति पकड़ लिया जाता है और प्रभु-नाम के बिना वह चोटें खाता है॥ ६॥ हे मेरे भाई! जो मनुष्य अपने हृदय घर को समझता है, वह सुखी जीवन व्यतीत करता है। गुरु की महानता से वह अपने अन्तर्मन में ब्रह्म

को पहचान लेता है॥ ७॥ भगवान स्वयं ही नाम दान करता है और स्वयं ही सूझ प्रदान करता है। फिर उसके अलावा मैं किसके समक्ष विनती करूँ ? यह सूझ प्रभु स्वयं ही देता है। हे नानक ! तू नाम का ध्यान कर, इस तरह तुझे सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त होगी॥ ८॥ ६॥ २८॥

आसा महला ३ ॥ आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥ हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्हा साचो भाई ॥ १ ॥ हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥ गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई ॥ गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥ २ ॥ नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥ अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥ ३ ॥ नामु सुणीऐ नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥ ४ ॥ नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥ नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥ ५ ॥ बिनु नावै कोइ न मंनीऐ मनमुखि पति गवाई ॥ जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥ ६ ॥ नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥ नामहु ही नामु मंनीऐ नामे वडिआई ॥ ७ ॥ जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई ॥ नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥ ८ ॥ ७ ॥ २६ ॥

हे भाई ! जो मनुष्य अपने आप को पहचान लेता है, उसे मीठा हरि रस अच्छा लगता है। जो मनुष्य सत्य से प्रेम करते हैं, वे हरि रस को चख कर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं॥ १॥ पूज्य परमेश्वर अत्यंत निर्मल है, वह निर्मल परमात्मा निर्मल मन में बसता है। गुरु की शिक्षा पर चलकर परमात्मा की सराहना करके मनुष्य माया से निर्लिप्त रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! शब्द के बिना मनुष्य अपने आप को नहीं समझता, इसके बिना सारी दुनिया ज्ञानहीन है। गुरु की शिक्षा से ही मन में प्रकाश होता है और अन्तिम समय प्रभु-नाम ही मनुष्य का सहायक होता है॥ २॥ गुरुमुख मनुष्य सदा हरि नाम ही जपते रहते हैं और केवल नाम का ही व्यापार करते हैं। उनके अन्तर्मन में नाम ही बसा होता है, उनके मुँह में भी प्रभु का नाम ही होता है और शब्द-गुरु द्वारा वे नाम का ही चिन्तन करते हैं॥ ३॥ वह नाम सुनते हैं और नाम पर ही आस्था रखते हैं और नाम द्वारा उन्हें यश प्राप्त होता है। वह सदा नाम की सराहना करते हैं और नाम के माध्यम से प्रभु के मन्दिर को सदैव के लिए प्राप्त कर लेते हैं॥ ४॥ नाम के द्वारा उनके मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है और नाम द्वारा ही उन्हें लोक-परलोक में शोभा प्राप्त होती है। नाम के द्वारा ही उन्हें सुख प्राप्त होता है, नाम द्वारा ही उन्होंने प्रभु की शरण ली है॥ ५॥ नाम के बिना कोई भी मनुष्य प्रभु-दरबार में मंजूर नहीं होता। स्वेच्छाचारी मनुष्य अपना मान-सम्मान गंवा लेते हैं। वह यमपुरी में जकड़ कर मारे जाते हैं और अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा लेते हैं॥ ६॥ सारा संसार प्रभु-नाम की सेवा करता है और नाम-सुमिरन की सूझ गुरु से प्राप्त होती है। हे भाई ! केवल प्रभु-नाम की ही आराधना करो, क्योंकि नाम से ही लोक-परलोक में मान-प्रतिष्ठा मिलती है॥ ७॥ लेकिन नाम उसे ही मिलता है, जिसे परमात्मा देता है। गुरु की शिक्षा से ही नाम की सूझ होती है। हे नानक ! सब कुछ प्रभु-नाम के वश में है। कोई विरला मनुष्य ही पूर्ण भाग्य से प्रभु नाम को प्राप्त करता है॥ ८॥ ७॥ २६॥

आसा महला ३ ॥ दोहागणी महलु न पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥ फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥ १ ॥ इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥ गुर परसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥ सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥ २ ॥ सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥ पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि

प्रीतम सुखु पाइ ॥ ३ ॥ गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ॥ सा सभराई सुंदरी पिर कै हेति पिआरि ॥ ४ ॥ सोहागणी विचि रंगु रखिओनु सचै अलखि अपारि ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥ ५ ॥ सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥ प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥ ६ ॥ भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥ बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥ ७ ॥ हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥ नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ३० ॥

दुहागिन जीव-स्त्री अपने पति-परमेश्वर के महल को नहीं प्राप्त कर सकती और न ही वह उसके मिलाप के स्वाद को जानती है। वह कटु वचन व्यक्त करती है और नम्रता नहीं जानती एवं द्वैतभाव का ही स्वाद लेती रहती है॥ १॥ यह मन कैसे वश में आ सकता है? गुरु की कृपा से ही इस पर अंकुश लगाया जा सकता है और ज्ञान की सुमति से यह घर में प्रवेश कर लेता है॥ १॥ रहाउ॥ सुहागिन जीव-स्त्री को पति-प्रभु स्वयं ही अपना प्रेम लगाकर शोभायमान करता है। वह सच्चे गुरु की रजा अनुसार चलती है और उसने सहज ही प्रभु नाम का श्रृंगार किया हुआ है॥ २॥ वह सदा अपने प्रियतम-प्रभु से रमण करती है और उसकी सेज सत्यता ही शोभायमान हुई है। अपने प्रियतम से मिलकर वह आत्मिक सुख प्राप्त करती है॥ ३॥ अपार ज्ञान शोभावान नारी का श्रृंगार है। अपने पति-परमेश्वर के स्नेह एवं प्रेम द्वारा वह सुन्दरी एवं पटरानी है॥ ४॥ सुहागिन के भीतर सत्यस्वरूप, अलक्ष्य एवं अपार प्रभु ने अपना प्रेम भरा है। वह सच्चे प्रेम से अपने सतिगुरु की सेवा करती है॥ ५॥ सुहागिन जीव-स्त्री ने गुणों की माला अपने गले में पहनकर अपना श्रृंगार किया हुआ है। वह प्राणनाथ के प्रेम की सुगन्धि अपने तन पर लगाती है और उसके अन्तर्मन में नाम-चिन्तन रूपी रत्न होता है॥ ६॥ जो मनुष्य प्रभु-भक्ति से रंगे हुए हैं, वे सर्वोत्तम हैं। शब्द से ही जाति एवं सम्मान उत्पन्न होते हैं। नाम के बिना हरेक मनुष्य नीच जाति का है और विष्टा का कीड़ा होता है॥ ७॥ सारी दुनिया 'मैं-मेरी' का अहंकार करती फिरती रहती है परन्तु गुरु-शब्द के बिना अभिमान दूर नहीं होता। हे नानक! जो मनुष्य प्रभु-नाम से रंगे हुए हैं, उनका अभिमान दूर हो गया है और वे सत्य में समाए रहते हैं॥ ८॥ ८॥ ३०॥

आसा महला ३ ॥ सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥ ऐथै घरि घरि जापदे आगै जुगि जुगि परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन रूढ़े रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ॥ रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥ गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निरमल जोति अपार ॥ २ ॥ बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ॥ गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥ ३ ॥ भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥ बिनु भै करम कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥ ४ ॥ जिस नो आपे रंगे सु रपसी सतसंगति मिलाइ ॥ पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥ ५ ॥ बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥ जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥ ६ ॥ इकि गुण विहाझहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥ गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ ॥ ७ ॥ सभना का दाता एकु है सिरि धंधै लाइ ॥ नानक नामे लाइ सवारिअनु सबदे लए मिलाइ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ३१ ॥

जो मनुष्य सत्य में लीन हैं, वे पवित्र पावन हैं और दुनिया में सदैव ही उनकी सच्ची कीर्ति होती है। इस लोक में वह घर-घर में जाने जाते हैं और आगे भी वह सभी युगों-युगांतरों में लोकप्रिय होते

है॥ १॥ हे मेरे सुन्दर, रंगीले मन! तू सच्चा रंग अपने ऊपर चढ़ा। यदि तुम सुन्दर गुरु-वाणी से रंग जाओ तो यह रंग कभी नहीं उतरेगा और न ही कहीं जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ हम जीव नीच, मैले एवं अति अभिमानी है और द्वैतभाव के कारण विकारों में फँसे हुए हैं। गुरु पारस से मिलकर हम सोना बन जाते हैं और हमारे भीतर अपार प्रभु की निर्मल ज्योति उदित हो जाती है॥ २॥ गुरु के बिना कोई भी मनुष्य प्रभु-प्रेम में नहीं रंगा गया। गुरु से मिलकर प्रभु का रंग चढ़ता है। जो मनुष्य गुरु के भय एवं स्नेह में अनुरक्त है, वे प्रभु की कीर्ति द्वारा सत्य में समा जाते हैं॥ ३॥ प्रभु-भय के बिना प्रेम उत्पन्न नहीं होता और न ही मन निर्मल होता है। भय के बिना कर्मकाण्ड करने झूठे हैं और प्राणी को कोई सुख का स्थान नहीं मिलता॥ ४॥ जिसे प्रभु स्वयं रंग देता है, वही असल में रंगा जाता है और वह सत्संगति में मिल जाता है। पूर्ण गुरु द्वारा ही सत्संगति प्राप्त होती है और मनुष्य सहज ही सत्य से मिल जाता है॥ ५॥ सत्संगति के बिना मनुष्य ऐसे हैं जैसे पशु ढोर इत्यादि रहते हैं। जिस परमात्मा ने उन्हें पैदा किया है, वे उसे नहीं जानते। नाम के बिना सभी प्रभु के चोर हैं॥ ६॥ गुरु के प्रदान किए हुए सहज-स्वभाव से ही कई मनुष्य गुणों को खरीदते एवं अवगुणों को बेचते हैं। गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करने से ही नाम प्राप्त होता है और प्रभु आकर हृदय में आ बसता है॥ ७॥ एक ईश्वर ही सारी सृष्टि का दाता है, वह हरेक जीव को कामकाज में लगाता है। हे नानक! प्रभु अपने नाम के साथ लगाकर मनुष्य का जीवन संवार देता है और गुरु के शब्द द्वारा उसे अपने साथ मिला लेता है॥ ८॥ ६॥ ३१॥

आसा महला ३ ॥ सभ नावै नो लोचदी जिसु क्रिपा करे सो पाए ॥ बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए ॥ १ ॥ तूं बेअंतु दइआलु है तेरी सरणाई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि एकु है बहु बिधि स्रिसटि उपाई ॥ हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥ २ ॥ बुझणा अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरि कार ॥ इकन्हा बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥ ३ ॥ इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥ ४ ॥ इकि कुचल कुचील विखली पते नावहु आपि खुआए ॥ ना ओन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥ ५ ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाए ॥ सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥ ६ ॥ लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ ॥ गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥ ७ ॥ इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ॥ नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥ ८ ॥ १० ॥ ३२ ॥

सारी ही दुनिया नाम की अभिलाषा करती है परन्तु जिस पर भगवान कृपा करता है, उसे ही नाम प्राप्त होता है। प्रभु-नाम के बिना सभी दुःखी हैं। लेकिन सुखी वही है, जिसके मन में प्रभु अपना नाम बसा देता है॥ १॥ हे ईश्वर! तू बेअंत एवं दयालु है। मैं तेरी शरण में आया हूँ। पूर्ण गुरु के माध्यम से ही प्रभु-नाम की शोभा मिलती है॥ १॥ रहाउ॥ सब जीवों के भीतर एवं बाहर एक ईश्वर ही विद्यमान है, जिसने अनेक विधियों की सृष्टि उत्पन्न की है। हे भाई! अपने हुक्म अनुसार वह मनुष्य से कार्य करवाता है। दूसरा कौन है जिसका वर्णन किया जाए॥ २॥ हे भगवान! ज्ञान एवं अज्ञान तेरी रचना है, यह तेरा ही काम है। हे ईश्वर! कईयों को तुम क्षमादान करके अपने साथ मिला लेते हो और कई झूठों को तुम मार-पीट कर अपने दरबार से बाहर निकाल देते हो॥ ३॥ कई धुर (आदि) से ही पवित्र एवं पावन हैं, उनको तुमने अपने नाम-स्मरण में लगाया हुआ है। गुरु की सेवा से ही सुख उत्पन्न होता है और सत्य नाम द्वारा मनुष्य

प्रभु को समझ लेता है॥ ४॥ कई कुटिल चाल वाले, मलिन एवं चरित्रहीन जीव हैं, उन्हें भगवान ने स्वयं अपने नाम से विहीन किया हुआ है। उनके पास न सिद्धि है, न सुबुद्धि है, न ही वह संयमी हैं। वह डावांडोल होकर भटकते रहते हैं॥ ५॥ जिस पर ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसके भीतर नाम की श्रद्धा एवं आस्था उत्पन्न हो जाती है। ऐसा मनुष्य निर्मल शब्द को सुनकर सत्यवादी, संतोषी एवं संयमी बन जाता है॥ ६॥ प्रभु का लेखा-जोखा पढ़ने से मनुष्य उसके निष्कर्ष तक नहीं पहुँच सकता। कथन एवं वर्णन द्वारा उसका अन्त नहीं मिलता। गुरु के माध्यम से प्रभु की कद्र का पता लगता है और सच्चे शब्द द्वारा उसकी सूझ प्राप्त होती है॥ ७॥ हे भाई ! गुरु के शब्द द्वारा तू अपने इस मन एवं शरीर का शोधन कर ले। हे नानक ! इस शरीर के भीतर नाम का खजाना विद्यमान है, जो गुरु की अपार कृपा द्वारा ही प्राप्त होता है॥ ८॥ १०॥ ३२॥

आसा महला ३ ॥ सचि रतीआ सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि ॥ घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ १ ॥ अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥ हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥ किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥ २ ॥ जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥ अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥ ३ ॥ दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि ॥ पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥ ४ ॥ सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥ गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥ ५ ॥ सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥ पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥ ६ ॥ मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ॥ महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥ ७ ॥ सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिव लाइ ॥ नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥ ८ ॥ ११ ॥ ३३ ॥

जिन सुहागिनों ने गुरु के शब्द द्वारा अपने जीवन का श्रृंगार किया हुआ है, वे सत्य में लीन रहती हैं। सच्चे शब्द का चिंतन करने से उन्हें अपने हृदय घर में प्रभु मिल गया है॥ १॥ उन्होंने अपने गुणों द्वारा अपने अवगुणों को क्षमा करवा लिया है और हरि से लगन लगा ली है। इस तरह जीव-स्त्री ने हरि-प्रभु को वर के रूप में प्राप्त कर लिया है और यह मिलन गुरु ने करवाया है॥ १॥ रहाउ॥ कुछ जीव-स्त्रियाँ पति-प्रभु को अपने आस-पास नहीं जानतीं और द्वैतभाव एवं दुविधा में पड़कर कुमार्गगामी हुई रहती हैं। दुहागिन कैसे अपने पति-प्रभु को मिल सकती है। उसकी जीवन रात्रि दुःख में ही व्यतीत हो जाती है॥ २॥ जिनके मन में सत्य निवास करता है, वे सत्य की कमाई करती हैं। वह रात-दिन सहजता से प्रभु की सेवा करती रहती हैं और सत्य में समा जाती हैं॥ ३॥ दुहागिन जीव-स्त्रियाँ दुविधा में भटकती हैं और झूठ बोलकर माया के मोह का विष खाती हैं। वह अपने प्राणनाथ को नहीं जानती और सूनी सेज पर दुःख सहन करती हैं॥ ४॥ हे मेरे मन ! सच्चा साहिब एक प्रभु ही है, इसलिए तुम दुविधा में कुमार्गगामी होकर भटक मत जाना। गुरु से पूछ कर अपने प्रभु की निष्ठा से सेवा करो और निर्मल सत्य नाम को अपने मन में बसाओ॥ ५॥ सुहागिन जीव-स्त्री सदा अपने पति-प्रभु को पा लेती है और अपने अहंकार एवं द्वैतवाद को दूर कर देती है। वह रात-दिन अपने पति-प्रभु से जुड़ी रहती है और सत्य की सेज पर सुख प्राप्त करती है॥ ६॥ जो इस दुनिया में यही कहते रहते हैं कि यह धन मेरा है, यह सम्पत्ति मेरी है, उनके पास कुछ भी नहीं रहता और बिना कुछ प्राप्त किए ही संसार से चले जाते हैं। दुहागिन जीव-स्त्री अपने प्रभु के महल को प्राप्त नहीं होती और अंततः पश्चाताप करती हुई चली जाती है॥ ७॥ मेरा प्रियतम प्रभु केवल

एक ही है और मैं सिर्फ एक से ही प्रेम करता हूँ। हे नानक! यदि जीव-स्त्री सुख चाहती है तो उसे हरि का नाम अपने मन में बसाना चाहिए॥ ८॥ ११॥ ३३॥

आसा महला ३ ॥ अंम्रितु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ सहजि सुभाइ ॥ सचा वेपरवाहु है तिस नो तिलु न तमाइ ॥ १ ॥ अंम्रितु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥ मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ॥ जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सुो कमाहि ॥ २ ॥ गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥ ३ ॥ गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥ अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उर धारि ॥ ४ ॥ जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥ सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥ सेज सुखाली पिरु रवै हउमै त्रिसना मारि ॥ ६ ॥ करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥ वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥ ७ ॥ सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥ नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥ ८ ॥ १२ ॥ ३४ ॥

जिन्हें भगवान ने नामामृत स्वयं चखाया है, उन्हें सहज स्वभाव ही स्वाद प्राप्त हुआ है। वह सच्चा परमात्मा बेपरवाह है और उसे तिल मात्र भी लोभ-लालच नहीं॥ १॥ भगवान का सच्चा अमृत सर्वत्र बरस रहा है लेकिन यह अमृत गुरुमुख लोगों के मुँह में पड़ रहा है। गुरुमुखों का मन सदैव खिला रहता है और वे सहज ही भगवान का गुणगान करते रहते हैं॥ १॥ मनमुख जीव-स्त्रियाँ सदा दुहागिन रहती हैं और भगवान के द्वार पर खड़ी विलाप करती रहती हैं। जिन्हें पति-परमेश्वर के मिलन का स्वाद नहीं मिला, वे वही कर्म करती रहती हैं, जो उनके लिए प्रारम्भ से लिखा हुआ है॥ २॥ गुरुमुख हृदय रूपी खेत में सत्य नाम का बीज बोते हैं और जब यह अंकुरित हो जाता है तो वे केवल सत्यनाम का ही व्यापार करते हैं। जिन लोगों को भगवान ने इस लाभप्रद कार्य में लगाया है, उन्हें वह अपनी भक्ति का भण्डार प्रदान करता है॥ ३॥ गुरुमुख जीव-स्त्री सदा सुहागिन है, उसने प्रभु-भय एवं भक्ति का श्रृंगार किया हुआ है। वह रात-दिन अपने प्राणनाथ के साथ रमण करती है और सत्य को अपने हृदय के साथ लगाकर रखती है॥ ४॥ मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने अपने पति-प्रभु के साथ रमण किया है। अपने मन का अहंत्व नाश करके वह सदा अपने पति-परमेश्वर के साथ रहती हैं॥ ५॥ अपने पति-परमेश्वर के प्रेम के कारण उनका तन-मन शीतल एवं मुख उज्ज्वल बना रहता है। वे अपना अहंकार एवं तृष्णा का नाश करके सुखदायक सेज पर अपने पति-प्रभु के साथ रमण करती हैं॥ ६॥ गुरु के अपार प्रेम के कारण प्रभु कृपा धारण करके जीव-स्त्री के हृदय घर में आ जाता है। सुहागिन जीव-स्त्री को एक मुरारी प्रभु वर के रूप में प्राप्त हो जाता है॥ ७॥ गुरु उसके सारे गुनाह क्षमा कर देता है और मिलाने वाला उसे अपने साथ मिला लेता है। हे नानक! ऐसी स्तुतिगान की बात कहनी चाहिए, जिसे सुनकर तेरा स्वामी तुझसे प्रेम करने लग जाए॥ ८॥ १२॥ ३४॥

आसा महला ३ ॥ सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥ सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥ १ ॥ ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥ सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥ सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ए मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥ हरि सरणाई

भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥ ३ ॥ सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहे लिव लाइ ॥ सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥ ४ ॥ इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥ इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥ ५ ॥ जिनी नामु विसारिआ से मुए मरि जाहि ॥ हरि रस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥ ६ ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ॥ सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥ ७ ॥ बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अंन्हा भरमाइ ॥ बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥ ८ ॥ जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निरमल परवाणु ॥ नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥ ९ ॥ १३ ॥ ३५ ॥

जब प्रभु हमें सच्चे गुरु से मिला देता है तो हम गुरु से गुण प्राप्त करते हैं। सहजता से प्रभु-नाम का ध्यान करने से ज्ञान प्रगट हो जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! हरि को दूर मत समझ, अपितु उसे सदा अपने आसपास ही देख। प्रभु सदा सुनता है, सदा ही देखता है और गुरु के शब्द में वह सदा भरपूर रहता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरुमुख जीव-स्त्रियाँ अपने आपको पहचानती हैं। चूंकि वह एक मन से प्रभु का ध्यान-मनन करती हैं। वे सदैव ही अपने पति-परमेश्वर के साथ रमण करती हैं और सत्यनाम के कारण वे आत्मिक सुख प्राप्त करती हैं॥ २॥ हे मेरे मन! प्रभु के सिवाय तेरा कोई (सखा) नहीं। गुरु के शब्द को विचार कर चाहे देख ले। तू भाग कर हरि की शरण प्राप्त कर, तुझे मोक्ष का द्वार प्राप्त हो जाएगा॥ ३॥ तू गुरु के शब्द को सुन और शब्द के भेद को ही समझ तथा सत्य के साथ अपनी वृत्ति लगाकर रख। गुरु के शब्द द्वारा अपना अहंकार मिटा कर प्रभु के महल में सुख प्राप्त कर॥ ४॥ इस युग में प्रभु नाम की ही शोभा है। नाम के बिना मनुष्य को शोभा प्राप्त नहीं होती। यह माया की शोभा सिर्फ चार दिन ही रहती है और लुप्त होते इसे देरी नहीं होती॥ ५॥ जो लोग नाम को भूल जाते हैं, वे मरते हैं और मरते ही रहेंगे। उन्हें हरि रस का स्वाद नहीं मिलता और विष्टा में ही नष्ट हो जाते हैं॥ ६॥ कुछ जीवों को परमात्मा स्वयं रात-दिन नाम के साथ लगाकर रखता है और उन्हें क्षमादान करके अपने साथ मिला लेता है। वे सत्य की कमाई करते हैं, सत्य में ही रहते हैं और सत्यवादी होने के कारण सत्य में ही समा जाते हैं॥ ७॥ शब्द के बिना जगत को कुछ भी सुनाई एवं दिखाई नहीं देता। बहरे एवं अन्धे होने के कारण यह कुमार्गगामी होकर भटकता रहता है। प्रभु नाम के बिना यह (जगत) दुःख ही प्राप्त करता है क्योंकि प्रभु-नाम उसकी रज़ा से ही मिल सकता है॥ ८॥ वे भक्तजन निर्मल एवं स्वीकृत हैं जो अपने चित्त को गुरु की वाणी के साथ लगाते हैं। हे नानक! उन्हें नाम कदाचित विस्मृत नहीं होता जो सत्य के दरबार में सत्यवादी जाने जाते हैं॥ ९॥ १३॥ ३५॥

आसा महला ३ ॥ सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥ विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥ २ ॥ पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥ ३ ॥ आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ॥ गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी ॥ धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥ ५ ॥ बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥ ६ ॥ जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥ हिरदै एको नामु

वसै हउमै दुबिधा मारि ॥ ७ ॥ भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥ सदा सरणाई तिस की जिउ भावै तिउ कारजु सारि ॥ ८ ॥ भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥ नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥ ९ ॥ १४ ॥ ३६ ॥

शब्द से ही भक्त विश्व में लोकप्रिय होते हैं और जिनकी वाणी भी सत्य ही होती है। उनके अन्तर से अहंत्व निवृत्त हो जाता है, वे नाम को ही मन से याद करते हैं और सत्य से उनका मिलन हो जाता है॥ १॥ हरि-प्रभु के नाम से भक्तजनों को मान-सम्मान प्राप्त होता है। उनका इस संसार में जन्म सफल हो जाता है और हर कोई उनका आदर-सम्मान करता है॥ १॥ रहाउ॥ अहंकार, द्वैतवाद, अत्यंत क्रोध एवं अभिमान मनुष्य की जातियाँ हैं। यदि मनुष्य गुरु के शब्द में समा जाए तो वह इस जाति से मुक्ति प्राप्त कर लेता है और उसकी ज्योति भगवान की ज्योति के साथ मिल जाती है॥ २॥ पूर्ण सतिगुरु को मिलने से हमारा जन्म सफल हो गया है। मुझे हरि नाम की नवनिधि प्राप्त हो गई है। हरि नाम के अनमोल धन से हमारे भण्डार भरे रहते हैं॥ ३॥ यहाँ इस नाम-धन के वही व्यापारी आते हैं, जिन्हें प्रभु-नाम प्यारा लगता है। जो लोग गुरुमुख बन जाते हैं, वे इस नाम-धन को प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि उनके अन्तर्मन में शब्द का ही चिन्तन होता है॥ ४॥ अहंकारी मनमुख व्यक्ति प्रभु-भक्ति का महत्व नहीं जानते। प्रभु ने उन्हें स्वयं ही कुमार्गगामी किया हुआ है, वह जुए में अपनी जीवन की बाजी हार जाते हैं॥ ५॥ यदि चित्त में प्रेम नहीं तो फिर भक्ति नहीं की जा सकती और न ही शरीर को सुख प्राप्त होता है। प्रेम का धन गुरु से ही मिलता है और प्रभु-भक्ति से मन धैर्यवान बन जाता है॥ ६॥ गुरु के शब्द का चिन्तन करके वही प्राणी भगवान की भक्ति कर सकता है, जिससे वह स्वयं अपनी भक्ति करवाता है। फिर उसके हृदय में एक ईश्वर का नाम ही निवास करता है और वह अपनी दुविधा एवं अहंत्व का नाश कर देता है॥ ७॥ एक परमात्मा का नाम ही भक्तजनों की जाति एवं मान-सम्मान है। वह स्वयं ही उन्हें संवार देता है। वह सदा उसकी शरण में रहते हैं और जैसे उसे अच्छा लगता है, वैसे ही वह भक्तों के कार्य संवारता है॥ ८॥ अल्लाह की भक्ति बड़ी निराली है जो गुरु के उपदेश द्वारा ही समझी जाती है। हे नानक ! जिसके हृदय में परमात्मा का नाम बस जाता है वह प्रभु-भय एवं भक्ति द्वारा उसके नाम से अपना जीवन संवार लेता है॥ ६॥ १४॥ ३६॥

आसा महला ३ ॥ अन रस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥ सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥ १ ॥ ए मन मेरे बावले हरि रसु चखि सादु पाइ ॥ अन रसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिव लाइ ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥ २ ॥ आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ॥ गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥ ३ ॥ बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ ॥ इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥ ४ ॥ दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥ अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥ ५ ॥ सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥ गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥ ६ ॥ मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥ मनमुख मरि मरि जंमहि भी मरहि जम दरि होहि खुआरु ॥ ७ ॥ आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥ नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥ ८ ॥ २२ ॥ १५ ॥ ३७ ॥

दूसरे पदार्थों के स्वादों में फँसकर मनुष्य भटकता ही रहता है और नाम के बिना बड़ा दुःख प्राप्त करता है। उसे सच्चे गुरु जैसा महापुरुष नहीं मिलता जो सत्य की सूझ प्रदान करता है॥ १॥ हे मेरे बावले मन ! हरि-रस को चखकर उसका स्वाद प्राप्त कर। दूसरे रसों से जुड़ कर तुम भटकते फिरते हो और अपना अनमोल जन्म व्यर्थ ही गंवा रहे हो॥ १॥ रहाउ॥ इस युग में गुरुमुख पवित्र-पावन हैं जो सत्यनाम में लगन लगाकर रखते हैं। तकदीर के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होता और इस बारे हम क्या कह अथवा कर सकते हैं ?॥ २॥ जो अपने मन से विकारों को निकाल देता है और गुरु के शब्द द्वारा मर जाता है, वह अपने आपको पहचान लेता है। जो गुरु की शरणागत भागकर चले जाते हैं, उनको क्षमावान परमात्मा क्षमा कर देता है॥ ३॥ नाम के बिना सुख प्राप्त नहीं होता और न ही भीतर से दुःख दूर होता है। यह दुनिया माया के मोह में लिप्त है और द्वैतवाद एवं भ्रम में कुमार्गगामी हो गई है॥ ४॥ दुहागिन जीव-स्त्रियाँ अपने पति-प्रभु की कद्र को नहीं जानती। वह श्रृंगार करके क्या करेंगी ! वह रात-दिन सदा (तृष्णाओं में) जलती रहती हैं और अपने पति-प्रभु के साथ सेज पर रमण नहीं करतीं॥ ५॥ सुहागिन जीव-स्त्रियाँ अपने अहंत्व को भीतर से दूर करके अपने प्रभु के महल को प्राप्त कर लेती हैं। गुरु के शब्द से उन्होंने श्रृंगार किया हुआ है और उनका प्राणनाथ उन्हें अपने साथ मिला लेता है॥ ६॥ माया-मोह के अन्धकार में मनुष्य ने अपने मन में से मृत्यु को भुला दिया है। स्वेच्छाचारी मनुष्य बार-बार मरते और यम के द्वार पर दुःखी होते हैं॥ ७॥ जिन्हें भगवान आप मिलाता है वह गुरु-शब्द का चिन्तन करके उससे मिल जाते हैं। हे नानक ! जो प्रभु-नाम में समाए हुए हैं, उस सच्चे दरबार में उनके मुख उज्ज्वल हो जाते हैं॥ ८॥ २२॥ १५॥ ३७॥

आसा महला ५ असटपदीआ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ पंच मनाए पंच रुसाए ॥ पंच वसाए पंच गवाए ॥ १ ॥ इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥ दुरतु गइआ गुरि गिआनु द्रिड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच धरम की करि दीनी वारि ॥ फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥ २ ॥ नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥ सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥ ३ ॥ सांति सहज सुख के सभि हाट ॥ साह वापारी एकै थाट ॥ ४ ॥ जेजीआ डंनु को लए न जगाति ॥ सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥ ५ ॥ वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥ लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥ ६ ॥ सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥ पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥ ७ ॥ सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥ अबिचल नगरी नानक देव ॥ ८ ॥ १ ॥

सत्य, दया, धर्म, संतोष एवं ज्ञान-पाँचों गुणों को जब मैंने अपना मित्र बनाया तो कामादिक पाँचों विकार-काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार नाराज होकर मेरी अन्तरात्मा से निकल कर भाग गए। इस तरह पाँचों गुण भीतर बसने लगे और पाँच विकार दूर हो गए॥ १॥ हे मेरे भाई ! इस विधि से मेरा शरीर रूपी नगर बस गया। पाप-विकार दूर हो गए और गुरु ने मेरे भीतर ज्ञान दृढ कर दिया॥ १॥ रहाउ॥ इस शरीर रूपी नगर के चारों ओर रक्षा हेतु सत्य धर्म की बाड़ लगा दी। गुरु प्रदत्त ज्ञान एवं मनन के मजबूत द्वार लगा दिए गए॥ २॥ हे मेरे भाई ! हे मित्र ! प्रभु-नाम की फसल बीज। नित्य गुरु की सेवा का सौदा करो॥ ३॥ शांति एवं सहज सुख की सभी दुकानें भरी हुई हैं। गुरु शाह एवं शिष्य व्यापारी एक ही स्थान पर बसते हैं॥ ४॥ सतिगुरु ने प्रभु की मोहर लगा दी है, इसलिए कोई यम जजिया, दण्ड एवं महसूल चुंगी नहीं लगते॥ ५॥ हे भाई ! तुम भी नाम-सुमिरन का सौदा लादकर व्यापार किया करो। इस तरह तुम गुरु की शिक्षा

पर चलकर लाभ प्राप्त करके अपने घर आ जाओगे॥ ६॥ सतिगुरु नाम धन का शाह है और उसके शिष्य व्यापारी हैं। पूँजी प्रभु का ही नाम है और परमात्मा की आराधना लेखा-जोखा है॥ ७॥ हे नानक ! जो मनुष्य पूर्ण गुरु की सेवा करता है, वही इस घर में रहता है और प्रभु की नगरी अविचल (अटल) है॥ ८॥ १॥

आसावरी महला ५ घरु ३

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ साधसंगि हरि हरि जपत निरमल साची रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥ करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥ १ ॥ मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि ॥ जिसु वखर कउ चाहता सो पाइओ नामहि रंगि ॥ २ ॥ जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥ ३ ॥ सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥ करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥ ४ ॥ मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥ एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥ ५ ॥ चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह ॥ भेटिओ पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥ ६ ॥ साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥ ७ ॥ सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनंद ॥ कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमानंद ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

मेरे मन का प्रेम हरि के साथ लग गया है। सत्संगति में हरि-प्रभु का नाम जपने से मेरी जीवन-मर्यादा सच्ची एवं निर्मल बन गई है॥ १॥ रहाउ॥ हे भगवान् ! मुझे तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा लगी हुई है और मैं अनेक प्रकार से तुझे याद करता रहता हूँ। हे परब्रह्म ! हे मुरारि ! मुझ पर अनुग्रह करो। हे हरि ! मुझ पर कृपा करो॥ १॥ यह परदेसी मन अनेक योनियों में भटकता हुआ इस दुनिया में आया है और आकर सत्संगति के साथ मिल गया है। जिस पदार्थ की मुझमें आकांक्षा थी, वह प्रभु-नाम के रंग में रंग कर प्राप्त हो गया है॥ २॥ जितने भी माया के रंग एवं रस हैं, वे एक क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं। हे प्रभु ! तेरे भक्त तेरे नाम से अनुरक्त हैं और समस्त स्थानों पर वे सुख भोगते हैं॥ ३॥ समूचा जगत नश्वर दिखाई देता है लेकिन हरि का नाम ही निश्चल है। हे भाई ! तू साधुओं के साथ मित्रता (मैत्री) कर चूंकि तुझे निश्चल स्थान प्राप्त हो जाए॥ ४॥ मित्र, साजन, पुत्र एवं रिश्तेदार कोई भी तेरा साथी नहीं बना रहेगा। सदैव साथ निभाने वाला राम का नाम ही है। वह प्रभु दीनों का नाथ है॥ ५॥ प्रभु के चरण-कमल जहाज हैं। उनके साथ जुड़कर ही मैं संसार-सागर से पार हो गया हूँ। मुझे पूर्ण सतिगुरु मिल गया है और अब मेरा प्रभु से सच्चा प्रेम हो गया है॥ ६॥ हे भगवान ! तेरे साधु की विनती है कि एक श्वास एवं ग्रास के समय भी तेरा नाम विस्मृत न हो। जो कुछ तुझे भला लगता है, वही अच्छा है। तेरी रज़ा से ही सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं॥ ७॥ सुखों का सागर प्रियतम प्रभु जब मिल जाता है तो बड़ा आनंद उत्पन्न होता है। हे नानक ! परमानंद प्रभु को मिलने से सभी दुःख-क्लेश मिट गए हैं॥ ८॥ १॥२॥

आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ पारब्रहमु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥ १ ॥ जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥ २ ॥ इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ

मिलाइ ॥ ३ ॥ सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥ ४ ॥ कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥ ५ ॥ जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥ ६ ॥ हरि रसु जिन्ही चाखिआ पिआरे त्रिपति रहे आघाइ ॥ ७ ॥ अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥

हे प्यारे ! हमेशा परब्रह्म प्रभु को ही याद करना चाहिए। मैं उस भगवान् के दर्शनों पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ जिस भगवान् का सिमरन करने से दुःख-क्लेश भूल जाते हैं, उसे कैसे त्यागा जा सकता है॥ २॥ अपना यह तन मैं उस संत के पास बेचने को तत्पर हूँ यदि वह मुझे मेरे प्रियतम प्रभु से मिला दे॥ ३॥ हे मेरी माता ! विकारों से युक्त मोह-माया के सभी सुख-सौन्दर्य फीके मानते हुए मैंने त्याग दिए हैं॥ ४॥ सच्चे गुरु के चरणों में लगने से काम, क्रोध एवं लोभ मुझे छोड़कर चले गए हैं॥ ५॥ जो लोग राम के साथ अनुरक्त हुए हैं, वे अन्य कहीं नहीं जाते॥ ६॥ जिन्होंने हरि रस को चखा है, वे तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं॥ ७॥ हे नानक ! जो साधु का आंचल पकड़ते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ८॥ १॥ ३॥

जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥ १ ॥ सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥ २ ॥ जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥ ३ ॥ जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥ ४ ॥ जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥ ५ ॥ साची प्रीति न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥ ६ ॥ जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥ ७ ॥ नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥ ८ ॥ २ ॥ ४ ॥

हे प्यारे ! जब जगत का बादशाह हरि मिल जाता है तो जन्म-मरण का दुःख दूर हो जाता है॥ १॥ मेरा प्रभु सुन्दर, चतुर, सुजान एवं मेरे जीवन का आधार है, जब उसके दर्शन होते हैं तो मानो प्राण दाखिल हो गए हैं॥ २॥ हे प्यारे स्वामी ! जो जीव तुझ से बिछुड़े हैं, वे माया रूपी विष खाकर जन्मते-मरते रहते हैं॥ ३॥ हे प्यारे ! जिसे तू अपने साथ मिलाता है केवल वही तुझसे मिलता है। मैं उस भाग्यवान के चरण स्पर्श करता हूँ॥ ४॥ हे प्यारे ! तेरे दर्शन करने से जो सुख मिलता है, वह मुँह से मुझसे कहा नहीं जा सकता॥ ५॥ हे प्यारे ! मेरी सच्ची प्रीति तुझसे कभी नहीं टूटती और मेरी यह प्रीति युगों-युगांतरों में मेरे हृदय में समाई रहती है॥ ६॥ हे प्यारे ! जो कुछ तुझे अच्छा लगता है, वही भला है। तेरा हुक्म अटल है॥ ७॥ हे नानक ! जो व्यक्ति नारायण के प्रेम रंग में अनुरक्त रहते हैं, वे सहज ही उसके प्रेम में मस्त रहते हैं॥ ८॥ २॥ ४॥

सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥ १ ॥ तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥ २ ॥ सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥ ३ ॥ जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥ ४ ॥ दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ ५ ॥ साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥ ६ ॥ एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥ ७ ॥ संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥ ८ ॥ ३ ॥ २२ ॥ १५ ॥ २ ॥ ४२ ॥

हे प्यारे प्रभु ! समस्त विधियाँ तुम ही जानते हो, मैं किसके पास इसे सुनाकर कहूँ॥ १॥ हे प्रभु ! तू सब जीवों का दाता है, जो कुछ तू देता है, उसे ही वे खाते और पहनते हैं॥ २॥ हे प्यारे ! सुख-दुख तेरे आज्ञाकारी हैं अर्थात् प्राणियों को प्रभु की आज्ञा से ही कभी सुख एवं दुःख

मिलता है। तेरे अलावा दूसरा कोई ठिकाना नहीं॥ ३॥ जो कुछ तू करवाता है, मैं वही करता हूँ। अन्य कुछ भी मैं कर नहीं सकता॥ ४॥ सभी दिन-रात सुहावने हैं जब हरि का नाम सुमिरन किया जाता है॥ ५॥ जीव वही कर्म करता है, जो धुर से उसकी तकदीर का लेख उसके मस्तक पर लिखा हुआ है॥ ६॥ एक ईश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और वह घट-घट में समाया हुआ है॥ ७॥ हे हरि प्रभु ! नानक ने तेरी शरण ली है, इसलिए उसका संसार के कूप में से बाहर निकाल कर उद्धार कर दीजिए॥ ८॥ ३॥ २२॥ १५॥ २॥ ४२॥

रागु आसा महला १ पटी लिखी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥ सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ ॥ १ ॥ मन काहे भूले मूड़ मना ॥ जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

स–जिसने यह सृष्टि-रचना की है, वह सबका मालिक एक परमात्मा ही है। जिनका चित्त प्रभु की सेवा-भक्ति में लीन रहता है, उनका इस दुनिया में जन्म लेकर आना सफल हो गया है॥ १॥ हे मेरे मूर्ख मन ! तू परमात्मा को क्यों भुला रहा है ? हे भाई ! जब तुम अपने कर्मो का लेखा प्रदान करोगे तो तभी तुम विद्वान समझे जाओगे॥ १॥ रहाउ॥

ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई ॥ एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥ २ ॥

इ–आदिपुरुष ही समस्त जीवों का दाता है और वही सत्य है। इन अक्षरों के माध्यम से जो गुरुमुख बनकर भगवान को समझता है, उसके सिर पर कोई भी कर्मो का लेखा नहीं रहता॥ २॥

ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ ॥ सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥ ३ ॥

उ–उपमा उस परमात्मा की करनी चाहिए, जिसका अंत नहीं पाया जा सकता। जो मनुष्य सेवा करते हैं और सत्य की साधना करते हैं उन्हें जीवन का फल मिल जाता है॥ ३॥

ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई ॥ सरब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥ ४ ॥

ङ–यदि कोई व्यक्ति असल में ज्ञान को जान लेता है तो वह पढ़ा लिखा विद्वान पण्डित बन जाता है। यदि कोई व्यक्ति समस्त जीवों में एक ईश्वर को बसा हुआ समझ ले तो वह अहंत्व की बात व्यक्त नहीं करता॥ ४॥

ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥ जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥ ५ ॥

क–जब आदमी के सिर के बाल सफेद हो जाते हैं तो वे साबुन के बिना ही चमकते रहते हैं। यमराज के भेजे हुए दूत जब आ जाते हैं तो वे उसे माया की जंजीर से बांधकर जकड़ लेते हैं॥ ५॥

खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥ बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ

अवरी का नही हुकमु पइआ ॥ ६ ॥

ख–खुदा सारी दुनिया का बादशाह है, जो सारे आलम को अपना सेवक समझ कर रोजी प्रदान करता है। प्रभु ने समूचे जगत को बन्धनों में जकड़ा हुआ है। उस खुदा के अलावा किसी दूसरे का हुक्म जीवों पर नहीं चलता॥ ६॥

गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥ घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ॥ ७ ॥

ग–जो मनुष्य गोविन्द का गुणानुवाद करना छोड़ देता है, वह गोविन्द की बातें करके ही घमण्डी हो जाता है। गोविन्द ने जीव रूपी बर्तन बनाए हैं और सृष्टि रूपी भट्ठी की रचना की है, उनको उसमें डालने हेतु समय नियत किया हुआ है॥ ७॥

घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥ बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥ ८ ॥

घ–यदि मनुष्य सेवक बनकर गुरु की अथक साधना करता रहे और गुरु के शब्द से जुड़ा रहे अर्थात् पूर्ण आस्था रखे, यदि वह दुःख-सुख को एक समान समझता रहे तो वह इस विधि से प्रभु में लीन हो जाता है॥ ८॥

चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥ जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु आपि थीआ ॥ ९ ॥

च–जिस प्रभु ने चारों वेद रचे हैं, जिसने चारों स्रोत (अंडज, जेरज, स्वदेज एवं उद्‌भिज) एवं चारों युगों-सतयुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग की रचना की है, सभी युगों में वह स्वयं ही व्यापक होकर योगी, जीवन के स्रोतों का आनंद प्राप्त करने वाला भोगी एवं विद्वान और पण्डित बना हुआ है॥ ९॥

छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥ भरमु उपाइ भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन्ह गुरू मिलिआ ॥ १० ॥

छ–हे भगवान ! तेरी ही माया रूपी छाया समस्त जीवों के भीतर अग्रसर है। भ्रम तेरा ही बनाया हुआ है। भ्रम उत्पन्न करके तुम स्वयं ही जीवों को कुमार्गगामी करते हो। जिन पर तेरी मेहर है, उन्हें गुरु मिल जाता है॥ १०॥

जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ ॥ एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥ ११ ॥

ज–हे प्रभु ! तेरा यह याचक जो चौरासी लाख योनियों में भीख माँगता था, तुझसे तेरा ज्ञान माँगता है। एक प्रभु ही (दान) ले जाता है और एक वही दान देता है। किसी दूसरे के बारे में मैंने अभी तक नहीं सुना॥ ११॥

झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ ॥ दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीआ का रिजकु पइआ ॥ १२ ॥

झ–हे प्राणी ! तुम क्यों संवेदना से मर रहे हो। जो कुछ भगवान ने हमें निर्वाह हेतु देना

है, वह हमें देता जा रहा है। जैसे-जैसे प्राणियों हेतु विधि के विधान अनुसार भोजन निश्चित है, भगवान सबको दे रहा है, वह सबका भरण-पोषण कर रहा है ॥ १२॥

ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥ एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥ १३ ॥

ञ–जब मैं अपनी दृष्टि से हर तरफ देखता हूँ तो मुझे भगवान के अलावा कोई भी दिखाई नहीं देता। एक ईश्वर समस्त स्थानों में मौजूद है और वही मन में बसता है॥ १३॥

टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥ जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥ १४ ॥

ट–हे प्राणी ! तुम क्यों छल-कपट कर रहे हो। इस दुनिया से तुम एक क्षण एवं पल भर में ही उठकर चले जाओगे अर्थात् प्राण त्याग दोगे। अपने जन्म खेल को जुए में मत हारो और भाग कर हरि की शरण में चले जाओ॥ १४॥

ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा ॥ चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ ॥ १५ ॥

ठ–जिनका चित्त हरि के चरणों से लग जाता है, उनके अन्तर्मन में सुख-शांति बस जाती है। हे प्रभु ! जिनका चित्त तुझसे जुड़ा हुआ है, वे मनुष्य संसार-सागर से पार हो जाते हैं और तेरी कृपा से उन्हें सुख प्राप्त होता है॥ १५॥

डडै डंफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥ तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥ १६ ॥

ड–हे नश्वर प्राणी ! तुम क्यों व्यर्थ के आडम्बर करते हो, सृष्टि में जो कुछ उत्पन्न हुआ है, वे सब नाशवान है। यदि प्रभु की भक्ति करोगे तभी तुझे आत्मिक सुख प्राप्त होगा। प्रभु समस्त जीवों में निरन्तर व्यापक है॥ १६॥

ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ॥ १७ ॥

ढ–प्रभु स्वयं ही सृष्टि रचना को ध्वस्त करता है और स्वयं ही निर्मित करता है। जैसे उसको मंजूर है वह वैसे ही करता है। सृष्टि की रचना करके वह देखता एवं अपना हुक्म जीवों पर लागू करता है। वह जिस जीव पर अपनी करुणा-दृष्टि करता है, उसे मुक्ति प्रदान कर देता है॥ १७॥

णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई ॥ आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥ १८ ॥

ण–जिस प्राणी के अन्तर में प्रभु समाया हुआ है, वह हरि का गुणगान करता रहता है। कर्त्ता प्रभु जिसे अपने साथ मिला लेता है, वह बार-बार जन्म नहीं लेता॥ १८॥

ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइआ ॥ ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइआ ॥ १९ ॥

त–यह भयानक संसार-सागर बहुत गहरा है, इसका कोई भी अन्त (किनारा) नहीं पाया जा

सकता। हमारे पास न कोई नैया है और न ही कोई तुला है। हे तारनहार प्रभु! मैं डूब रहा हूँ, मुझे पार कर दीजिए॥ १६॥

थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ ॥ किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥ २० ॥

थ—समस्त स्थानों एवं हर जगह पर ईश्वर मौजूद है। उसका किया ही सृष्टि में सब कुछ होता है। भ्रम क्या है? माया किसे कहते हैं? जो कुछ उसे मंजूर है, वही भला है॥२०॥

ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ ॥ जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥ २१ ॥

द—हमें किसी पर दोष नहीं लगाना चाहिए क्योंकि दोष तो हमारे अपने कर्मों का है। जो कुछ (अच्छा-बुरा) कर्म मैंने किया था, उसका फल मुझे मिल गया है। इसलिए मैं किसी दूसरे पर दोष नहीं लगाता॥२१॥

धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ ॥ तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइआ ॥ २२ ॥

ध—जिस परमात्मा की कला (शक्ति) ने धरती को टिकाया एवं स्थापित किया हुआ है, जिसने प्रत्येक वस्तु को रंग (अस्तित्व) प्रदान किया है, जिसका दिया सभी प्राप्त करते हैं और उसका हुक्म प्राणियों के कर्मों अनुसार क्रियाशील है॥२२॥

नंनै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना संम्हलिआ ॥ गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मै मिलिआ ॥ २३ ॥

न—मैं अपने मालिक-प्रभु के दिए पदार्थ नित्य भोगती रहती हूँ लेकिन मैंने आज तक उसे न कभी देखा है और न कभी याद किया है। हे बहन! बातों से तो कहने को मैं सुहागिन कही जाती हूँ परन्तु मेरा पति-प्रभु मुझे कभी नहीं मिला॥२३॥

पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥ देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ २४ ॥

प—पातशाह परमेश्वर ने सृष्टि की रचना अपने देखने के लिए की है। प्रभु जीवों को देखता, समझता एवं सब कुछ जानता है। भीतर एवं बाहर वह सबमें समाया हुआ है॥ २४॥

फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइआ ॥ गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ ॥ २५ ॥

फ—समूचा जगत फाँसी में फँसा हुआ है और यम ने जंजीर से बांधा हुआ है। गुरु के प्रसाद (कृपा) से वही नर पार होते हैं जो भागकर हरि की शरण लेते हैं॥ २५॥

बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥ जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥ २६ ॥

ब—चारों ही युगों को अपनी चौपड़ बनाकर प्रभु ने खेल खेलना शुरू कर दिया। वह समस्त

जीव-जन्तुओं को अपनी गोटियां बनाकर स्वयं ही गोटियां फैंक कर खेलने लग गया॥ २६॥

भभै भालहि से फलु पावहि गुर परसादी जिन्ह कउ भउ पइआ ॥ मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥ २७ ॥

भ–गुरु की कृपा से जिनके मन में प्रभु का भय टिक जाता है, वह खोजते हुए फल के तौर पर उसे पा लेते हैं। स्वेच्छाचारी मूर्ख मनुष्य भटकते फिरते हैं और प्रभु को याद नहीं करते, परिणामस्वरूप वे चौरासी लाख योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं॥ २७॥

मंमै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ ॥ काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मंमा अखरु वीसरिआ ॥ २८ ॥

म–दुनिया के मोह के कारण जीव को मृत्यु एवं मधुसूदन याद नहीं आता लेकिन जब मृत्यु का समय आता है, तभी प्राणी में प्रभु स्मरण का विचार उत्पन्न होता है। जब तक काया में प्राण है, वह दूसरी बातें पढ़ता रहता है और 'म' अक्षर मृत्यु एवं मधुसूदन को विस्मृत कर देता है॥ २८॥

ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै ॥ गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥ २९ ॥

य–यदि मनुष्य सत्य को पहचान ले तो वह दोबारा कदाचित जन्म नहीं लेता। गुरुमुख बनकर ही प्रभु के बारे में कहा जा सकता है, गुरुमुख बनकर ही मनुष्य उसके भेद को समझता है और गुरुमुख ही एक ईश्वर को जानता है॥ २९॥

रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता ॥ जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥ ३० ॥

र–परमात्मा ने जितने भी जीव पैदा किए, वह सब जीवों के अन्तर में बस रहा है। प्रभु ने जीवों को उत्पन्न करके उन्हें जगत के कामकाज में लगा दिया है। जिन पर ईश्वर की करुणा होती है, वे उसका नाम-स्मरण करते हैं॥ ३०॥

ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ ॥ खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥ ३१ ॥

ल–प्रभु ने जीवों की उत्पत्ति करके उन्हें विभिन्न कार्यों में लगा दिया है, उसने उनके लिए माया का मोह मीठा बना दिया है। वह जीवों को खाने-पीने के पदार्थ देता है। उसकी रज़ा में उसका हुक्म क्रियान्वित होता है। इसलिए सुख-दुःख को एक समान समझना चाहिए॥ ३१॥

ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ ॥ वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ ३२ ॥

व–वासुदेव परमेश्वर ने देखने हेतु संसार रूपी वेष रचा है। वह देखता, चखता एवं सब कुछ जानता है। वह जीवों के भीतर एवं बाहर व्यापक हो रहा है॥ ३२॥

ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥ तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥ ३३ ॥

ङ–हे प्राणी ! तुम क्यों वाद-विवाद करते हो, इसका कोई लाभ नहीं इसलिए उस परमात्मा को याद करो जो अमर है। उसका ध्यान-मनन करो और सत्य में समा जाओ और उस पर कुर्बान होवो॥ ३३॥

हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥ हरि नामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरि नामु लीआ ॥ ३४ ॥

ह–प्रभु के अलावा दूसरा कोई दाता नहीं जो जीवों को उत्पन्न करके उन्हें रोज़ी प्रदान करके उनका भरण-पोषण करता है। हरि-नाम का ध्यान करो, हरि के नाम में समा जाओ और रात-दिन हरि नाम का लाभ प्राप्त करो॥ ३४॥

आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ॥ ३५ ॥ १ ॥

जिस परमात्मा ने आप ही दुनिया की रचना की है, वह जो कुछ करना चाहता है, वही कुछ कर रहा है। नानक कवि ने यही कहा है कि प्रभु खुद ही सबकुछ करता और जीवों से करवाता है। वह सबकुछ जानता है॥ ३५॥ १॥

रागु आसा महला ३ पटी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अयो अंङै सभु जगु आइआ काखे घंङै कालु भइआ ॥ रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥ १ ॥ मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ ॥ लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

अयो अंङै का अर्थ यह वर्णित किया गया है कि यह समूचा जगत परमात्मा के हुक्म से पैदा हुआ है, काखे घंङै का यह अर्थ बताया गया है कि यह जगत काल (मृत्यु) के वश में पड़ गया है। री री लली का अर्थ यह वर्णित है कि नश्वर प्राणी पाप कर्म करता जा रहा है और अवगुणों में फँसकर गुणों को विस्मृत किए जा रहा है॥ १॥ हे मेरे मन ! तूने भला ऐसा लेखा क्यों पढ़ा है, क्योंकि तेरे सिर पर लेखा देना अभी भी शेष है॥ १॥ रहाउ॥

सिधंङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ ॥ छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥ २ ॥

सिधंङाइऐ – हे जीव ! तुम प्रभु को याद नहीं करते। न–न ही तुम उसका नाम लेते हो। छ–हे मूर्ख जीव ! तुम रात-दिन नाश होते जा रहे हो अर्थात् अपना जीवन गंवा रहे हो। जब यमदूत ने तुझे पकड़ लिया तो फिर कैसे मुक्त होवोगे॥ २॥

बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ ॥ अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥ ३ ॥

ब–हे मूर्ख ! तुम सन्मार्ग नहीं समझते और भ्रम में कुमार्गगामी होकर तुम अपना जन्म व्यर्थ गंवा रहे हो। तुमने निरर्थक ही अपना नाम पण्डित (पांधा) रखवाया है, जबकि दूसरों का भार अपने सिर पर लादा हुआ है॥ ३॥

जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा ॥ एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥ ४ ॥

ज–हे मूर्ख ! तेरी सुमति मोह-माया ने छीन ली है, अन्तिम समय जब संसार से गमन करोगे तो पश्चाताप करोगे। एक शब्द (अर्थात् परमात्मा के नाम) की तुम पहचान नहीं करते जिसके परिणामस्वरूप बार-बार योनियों में आते रहोगे॥ ४॥

तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न सिखालि बिखिआ ॥ पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥ ५ ॥

हे पण्डित ! जो तेरे सिर पर तकदीर का लेख लिखा हुआ है, उसे पढ़ और दूसरों को विष रूपी माया का लेखा मत पढ़ा। क्योंकि पहले तो पण्डित के अपने गले में माया का फन्दा पड़ता है और तदुपरांत अपने शिष्यों के गले में भी वही फॉसी पड़ जाती है॥ ५॥

ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ ॥ साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥ ६ ॥

स–हे मूर्ख ! तूने अपना संयम गंवा दिया है। एक तो तूने अयोग्य दान ले लिया है। यजमान की पुत्री तेरी अपनी ही पुत्री है और उसका विवाह कराकर दान लेकर पाप किया है। इस धन को लेकर तूने अपने जन्म का सत्यनाश कर लिया है॥ ६॥

मंमै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइआ ॥ अंतर आतमै ब्रहमु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ७ ॥

म–हे मूर्ख ! तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, अहंकार का बड़ा रोग तुझे लग गया है। अपनी अन्तरात्मा में तुम ब्रह्म को नहीं पहचानते और माया के मोहताज बनकर रह गए हो॥ ७॥

कक्कै कामि क्रोधि भरमिओहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥ पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥ ८ ॥

क–हे मूर्ख ! तुम कामवासना एवं क्रोध में भटकते फिरते हो और सांसारिक ममता के साथ लग कर तूने हरि को भुला दिया है। तुम धार्मिक ग्रंथ पढ़ते रहते हो, उनके गुणों के बारे में सोचते रहते हो और बहुत ऊँची-ऊँची बोलकर दूसरों को सुनाते रहते हो। परन्तु ज्ञान को समझे बिना तुम डूब कर मर चुके हो॥ ८॥

ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ ॥ घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ ॥ ६ ॥

त–हे मूर्ख ! क्रोधाग्नि ने तुझे जला कर रख दिया है। थ–जिस स्थान पर तुम रहते हो, वह भी भ्रष्ट हो गया है। घ-हे मूर्ख (पण्डित) ! तुम घर-घर पर माँगते फिरते हो। द-प्रभु नाम का दान तूने अभी तक किसी गुरु से नहीं लिया॥ ६॥

पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ ॥ सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥ १० ॥

प–हे मूर्ख ! तुम दुनिया के प्रपंचों में इतने लिपटे हुए हो कि तुम्हारा भवसागर से पार उतारा नहीं होना। सत्य (प्रभु) ने तुझे स्वयं मोह-माया में कुमार्गगामी किया है। हे मूर्ख ! तेरे सिर पर यही भाग्य लेख लिखा हुआ था॥ १०॥

भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ ॥ गुर परसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥ ११ ॥

भ—हे मूर्ख ! तू माया में इतना लीन हो चुका है कि भवसागर में डूबता जा रहा है। जो गुरु की कृपा से एक ईश्वर को समझता है, वह एक क्षण में ही भवसागर से पार हो जाता है॥ ११॥

ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ ॥ एह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ ॥ १२ ॥

व—हे मूर्ख ! किस्मत से तेरी अब मानव जन्म में गोविन्द मिलन की बारी आई है। लेकिन तूने वासुदेव को भुला दिया। हे मूर्ख ! यह शुभावसर तुझे दोबारा प्राप्त नहीं होना, तुम यमदूतों के वश में आ जाओगे॥ १२॥

झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ॥ सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥ १३ ॥

झ—हे मूर्ख ! तुझे कभी दुःख क्लेश नहीं होगा यदि तू सच्चे गुरु का उपदेश सुनकर देख ले। सच्चे गुरु के बिना दूसरा कोई गुरु नहीं और निगुरे का नाम ही बुरा है॥ १३॥

धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइआ ॥ गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥ १४ ॥

ध—हे मूर्ख ! विषय-विकारों में भटकते हुए मन को अंकुश लगा क्योंकि तेरे अन्तर्मन में ही प्रभु नाम का खजाना है। यदि मनुष्य गुरुमुख बन जाए तो वह हरि रस का पान करता है और युग-युगांतरों तक वह इसका पान करता रहता है॥ १४॥

गगै गोबिदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइआ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥ १५ ॥

ग—हे मूर्ख ! गोविन्द को याद कर, केवल निरर्थक बातें करने से ही किसी ने कभी उसे प्राप्त नहीं किया। हे मूर्ख ! गुरु के चरण अपने हृदय में बसा, वह तेरे पिछले गुनाह सब क्षमा कर देंगे॥ १५॥

हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ॥ मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥ १६ ॥

ह—हे मूर्ख ! हरि की कथा को समझ, तभी तुझे सदैव सुख प्राप्त होगा। मनमुख जितना भी पढ़ते हैं उतना ही अधिक दुःख प्राप्त करते हैं, सच्चे गुरु के बिना उनकी जीवन-मृत्यु से मुक्ति नहीं होती॥ १६॥

रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ॥ गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥ १७ ॥

र—हे मूर्ख ! जिनके हृदय में राम बस रहा है, उनकी संगति करके तू राम को याद कर। गुरु की कृपा से जिन्होंने राम को पहचान लिया है, उन्होंने समझकर निर्गुण राम को पा लिया है॥ १७॥

तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥ नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥ १८ ॥ १ ॥ २ ॥

हे प्रभु ! तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता। अकथनीय हरि का कथन नहीं किया जा सकता। हे नानक ! जिन्हें सच्चा गुरु मिल गया है उनका (कर्मों का) लेखा मिट गया है॥ १८॥ १॥ २॥

रागु आसा महला १ छंत घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ मुंध जोबनि बालड़ीए मेरा पिरु रलीआला राम ॥ धन पिर नेहु घणा रसि प्रीति दइआला राम ॥ धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ सेजा सुहावी संगि पिर के सात सर अंम्रित भरे ॥ करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥ नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ १ ॥ मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिनंती राम ॥ मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥ प्रभ प्रेमि राती हरि बिनंती नामि हरि कै सुखि वसै ॥ तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए ॥ नानका प्रिउ प्रिउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥ २ ॥ सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥ हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥ मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥ इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए ॥ नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥ ३ ॥ हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥ रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥ आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥ तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अंम्रित फलु पावए ॥ बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मुग्धा यौवन वाला ! मेरा पिया राम बड़ा ही रंगीला आनंद विनोदी है। यदि पति-पत्नी में बड़ा प्रेम हो जाए तो दयालु राम और भी प्रीति प्रदान करता है। स्वामी-प्रभु जब स्वयं कृपा करता है तो जीव-स्त्री का अपने पिया के साथ मिलन हो जाता है। अपने पिया के साथ उसकी सेज सुहावनी हो जाती है, और उसके सातों सरोवर अर्थात् इन्द्रियाँ अमृत से भर जाती हैं। हे दयालु सच्चे प्रभु ! मुझ पर दया एवं कृपा करो चूंकि संगत में मिलकर सच्चे शब्द द्वारा तेरा गुणगान करूँ। हे नानक ! अपने वर हरि को देखकर मुग्धा नारी फूल की तरह खिल गई है और उसके मन में उमंग उत्पन्न हो गई है॥ १॥ हे सहज सलोनी मुग्धा ! अपने राम के समक्ष एक प्रेम भरी विनती कर। मेरे तन-मन को हरि अच्छा लगता है और मैं प्रभु राम के संगम पर मोहित हो गई हूँ। मैं प्रभु के प्रेम से रंग गई हूँ। हरि के समक्ष मैं विनती करती रहती हूँ और हरि के नाम द्वारा मैं सुखपूर्वक रहती हूँ। यदि तुम उसके गुणों को पहचान लो तो तुम प्रभु को जान लोगे। इस तरह गुण तेरे भीतर प्रवेश कर जाएँगे और अवगुण नाश हो जाएँगे। हे प्रभु ! तेरे बिना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकती, केवल सुनने एवं कहने से ही मुझे धैर्य नहीं होता। हे नानक ! जो जीव रूपी नारी प्रिय-प्रिय पुकार कर प्रभु को याद करती रहती है, उसका मन एवं जिह्वा प्रभु के अमृत से भीग जाते हैं॥ २॥ हे मेरी सखियो एवं सहेलियो ! मेरा पिया राम नाम का व्यापारी है। हरि का नाम मैंने उससे खरीदा है अर्थात् उसके साथ नाम का व्यापार किया है। उस राम की मिठास अमूल्य है। वह नाम प्राप्त करके मूल्य में अमूल्य बन गई है। वह अपने पिया के सत्य के घर में रहती है। यदि मुग्धा प्रियतम प्रभु को अच्छी लगने लग जाए तो वह प्रिया बन जाती है। कई तो प्रभु के साथ आनंदपूर्वक रमण करती रहती हैं जबकि मैं उसके द्वार पर खड़ी पुकार करती रहती

हूँ। श्रीधर प्रभु सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है। वह स्वयं ही सभी कार्य सिद्ध कर देता है। हे नानक ! अपने पति-प्रभु की कृपा-दृष्टि से जीव रूपी नारी सुहागिन बन गई है। शब्द ने उसके हृदय को सहारा दिया है॥ ३॥ मेरे हृदय घर में सत्य का स्तुतिगान है। चूंकि मेरा मित्र प्रभु राम मेरे हृदय घर में आकर बस गया है। प्रेम में अनुरक्त हुआ प्रभु मेरे साथ रमण करता है। उस राम का मन मैंने मोहित कर लिया है और अपना मन उसे अर्पित कर दिया है। मैंने अपना मन अर्पित करके हरि वर के रूप में पा लिया है। जैसे उसे भला लगता है, वैसे ही वह मुझ से रमण करता है। मैंने अपना यह तन-मन प्रियतम-प्रभु के समक्ष अर्पित किया है और नाम द्वारा सौभाग्यशाली बन गई हूँ। अपने हृदय घर में मैंने अमृत फल प्राप्त कर लिया है। बुद्धि, पूजा-पाठ एवं अधिक चतुरता द्वारा प्रभु प्राप्त नहीं होता। जो कुछ मन चाहता है, वह प्रेम भाव से प्राप्त होता है। हे नानक ! ठाकुर मेरा मित्र है। हम लोगों के नहीं अर्थात् प्रभु के हैं॥ ४॥ १॥

आसा महला १ ॥ अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥ अनदिनु राता मनु बैरागी सुंन मंडलि घरु पाइआ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥ आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ॥ १ ॥ तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम ॥ सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम ॥ सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥ तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥ जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ ॥ २ ॥ गुरु सागरो रतनागरु तितु रतन घणेरे राम ॥ करि मजनो सपत सरे मन निरमल मेरे राम ॥ निरमल जलि न्हाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे ॥ कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥ हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला ॥ नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥ ३ ॥ हउ बनु बनो देखि रही तिणु देखि सबाइआ राम ॥ त्रिभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम ॥ तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥ तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥ अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥ ४ ॥ २ ॥

मेरे मन में रुणझुन घुँघरुओं एवं वाद्य यन्त्रों की ध्वनि करने वाला अनहद शब्द निरन्तर बज रहा है। मेरा मन अपने प्रियतम राम के प्रेम में रंग गया है। वैरागी मन रात-दिन एक ईश्वर में लीन रहता है और शून्य मण्डल में बसेरा पा लेता है। सतिगुरु ने मुझे अपरम्पार, अदृष्ट एवं प्यारा आदिपुरुष दिखा दिया है। अपने आसन पर बैठने वाला नारायण सदैव स्थिर रहता है। मेरा मन उसके प्रेम में मग्न रहता है और उसका ही सिमरन करता रहता है। हे नानक ! जो परमात्मा के नाम में मग्न रहते हैं, उनके मन में वैराग्य पैदा हो जाता है और उनके मन में अनहद शब्द की सुरीली रुणझुनकार होती रहती है॥ १॥ कहो, मैं अगम्य राम के उस अगम्य नगर में किस विधि से पहुँच सकता हूँ ? सत्य, संयम एवं प्रभु के गुणों को ग्रहण करके गुरु के शब्द को कमाना चाहिए। सत्य शब्द के अनुकूल आचरण बनाने से मनुष्य प्रभु के घर पहुँच जाता है और गुणों के भण्डार को प्राप्त कर लेता है। उस भगवान का आश्रय लेने पर उसकी शाखाओं, डालियों, जड़ एवं पत्तों की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि वह खुद ही सबके सिर पर प्रधान स्वामी है। लोग जप, तप एवं संयम करके थक गए हैं। हठ निग्रह द्वारा भी उन्हें भगवान प्राप्त नहीं होता। हे नानक ! सहजता में रहकर ही जगजीवन प्रभु मिलता है, पर इसकी सूझ सतगुरु से ही जानी जाती

है॥ २॥ गुरु एक सागर एवं रतनागर है, जिसमें अनेक रत्न विद्यमान हैं। हे मेरे मन! सात सागर रूपी गुरु की संगति का स्नान करने से मन निर्मल हो जाता है। जब प्रभु को अच्छा लगता है तो मनुष्य पवित्र जल में स्नान कर लेता है और जीभ एवं काया इत्यादि यह पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ मन से मिलकर प्रभु के गुणों का विचार करते हैं। काम, क्रोध, कपट एवं विकारों को छोड़कर प्राणी सत्यनाम को अपने हृदय में पा लेता है। जब अहंकार, लोभ की लहर एवं मिथ्या इत्यादि मिट जाते हैं तो मनुष्य दीनदयालु प्रभु को प्राप्त कर लेता है। हे नानक! गुरु के समान कोई तीर्थ स्थान नहीं, वह स्वयं ही गुरु गोपाल है॥ ३॥ मैं वन-वन में देख रही हूँ और सारी वनस्पति को देख चुकी हूँ। हे प्रभु! तीनों लोक एवं सारा जगत तेरा ही बनाया हुआ है। यह सब कुछ तेरा ही उत्पन्न किया है, केवल तुम ही सदैव स्थिर हो। तेरे समान कोई नहीं। हे प्रभु! तू दाता है और शेष सभी तेरे याचक हैं। तेरे बिना मैं किस का स्तुतिगान करूँ? हे दाता! तुम तो बिना माँगे ही दान दिए जाते हो, तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं। नानक का विचार है कि राम नाम के बिना किसी जीव को मुक्ति प्राप्त नहीं होती॥ ४॥ २॥

आसा महला १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥ सचु साहिबो आदि पुरखु अपरंपरो धारे राम ॥ अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥ आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥ करम धरम की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ ॥ नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईऐ ॥ १ ॥ मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥ हउमै ममता माइआ संगि न जाई राम ॥ माता पित भाई सुत चतुराई संगि न संपै नारे ॥ साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥ आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई ॥ नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥ २ ॥ मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥ अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम ॥ अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥ आवणु जावणु ठाकि रहाए गुरमुखि ततु वीचारो ॥ साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु रतनु परगासिआ ऐसी गुरमति पाई ॥ ३ ॥ सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनो दाता राम ॥ जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ ॥ साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ ॥ हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥ नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥ ४ ॥ ३ ॥

मेरा मन अपने प्यारे राम के प्रेम में रंग गया है। वह सच्चा प्रभु सबका मालिक एवं अपरम्पार आदिपुरुष है। उसने सारी धरती को सहारा प्रदान किया हुआ है। वह अगम्य, अगोचर, अपरंपार परब्रह्म सारे विश्व का बादशाह है। परमात्मा युगों के आरम्भ में भी था, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी रहेगा। शेष दुनिया को झूठा मानो! मनुष्य कर्म-धर्म की सार नहीं जानता। फिर वह सुरति एवं मुक्ति को कैसे प्राप्त कर सकता है? हे नानक! गुरुमुख केवल शब्द को ही जानता है और रात-दिन परमात्मा के नाम का ध्यान करता रहता है॥ १॥ अब मेरे मन को आस्था हो चुकी है कि प्रभु का नाम ही लोक-परलोक में मनुष्य का सखा है। अहंत्व, ममता एवं माया मनुष्य के साथ नहीं जाती। माता, पिता, भाई, पुत्र, चतुराई, संपति एवं नारी उसका आगे साथ नहीं देते। प्रभु के सुमिरन द्वारा मैंने समुद्र की पुत्री लक्ष्मी अर्थात् माया को त्यागकर उसे अपने पैरों तले कुचल दिया है। आदिपुरुष ने एक अलौकिक कौतुक दिखाया है कि जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ मैं उसे ही पाता हूँ। हे नानक! मैं हरि की भक्ति को नहीं छोड़ूँगा, सहज रूप में जो होना

है वह होता रहे॥ २॥ मेरा मन उस सत्यस्वरूप राम के सुमिरन द्वारा निर्मल हो गया है। मैंने अपने अवगुणों को मिटा दिया है, इसलिए गुण मेरे साथ चलते हैं और गुणों के फलस्वरूप मेरा प्रभु के साथ संगम हो गया है। अवगुणों को त्यागकर मैं शुभ कर्म करता हूँ और सत्य के दरबार में सत्यवादी बन जाता हूँ। मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो गया है क्योंकि गुरुमुख बनकर मैंने परम तत्व प्रभु का चिन्तन किया है। हे प्रभु! तू ही मेरा साजन, मित्र, सुजान एवं सखा है। तेरे सत्य-नाम द्वारा मुझे बड़ाई मिलती है। हे नानक! मुझे ऐसी गुरमति प्राप्त हुई है कि नाम-रत्न मेरे भीतर प्रकाशमान हो गया है॥ ३॥ सत्य एक अंजन है और इस सत्य के अंजन को मैंने सँभालकर अपने नयनों में लगा लिया है तथा मैं निरंजन प्रभु के साथ रंग गया हूँ। मेरे तन-मन के भीतर जगजीवन दाता राम बस रहा है। मेरा मन जगजीवन दाता हरि के साथ लीन हुआ है और सहजता से मिलाने से ही मिलन हो गया है। साधुओं की सभा एवं संतों की संगति में मुझे प्रभु की कृपादृष्टि से ही सुख उपलब्ध हुआ है। वैरागी पुरुष हरि की भक्ति में लीन रहते हैं तथा उनका मोह एवं तृष्णा मिट जाते हैं। हे नानक! कोई विरला ही वैरागी प्रभु का दास है जो अपना अहंकार मिटाकर प्रसन्न रहता है॥ ४॥ ३॥

रागु आसा महला १ छंत घरु २

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ सभना का दाता करम बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥ दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जा का होवै ॥ कोट कोटंतर पापा केरे एक घड़ी महि खोवै ॥ हंस सि हंसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥ तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ १ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥ ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जंमणु मरणु तिन्हा का चूका जो हरि लागे पावै ॥ गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उर धारि जीउ ॥ जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ २ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥ ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥ हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै ॥ ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥ अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु परधानु जीउ ॥ जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥ ३ ॥ नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥ जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥ तिन्ह जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥ हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥ नामु लैन्हि सि सोहहि तिन्ह सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे सच्चे परमात्मा! हे जग के रचयिता! मैं जिधर भी जाता हूँ, तू हर जगह पर मुझे नजर आता है। तू सब जीवों का दाता, कर्मविधाता एवं दुःखों का नाश करने वाला है। जिसका किया हुआ सबकुछ दुनिया में होता है, वह दुनिया का स्वामी जीवों के सब दुःखों को दूर करने वाला है। वह जीवों के करोड़ों ही पाप एक क्षण में ही नाश कर देता है। हे प्रभु! तुम प्रत्येक हृदय के कर्मों की परख करते हो। हंस को हंस एवं बगुले को बगुला प्रगट कर देते हो अर्थात् जो महापुरुष

है उसे हंस ही माना जाए और जो मूर्ख है उनके साथ बगुले की भाँति व्यवहार किया जाए। हे दुनिया को बनाने वाले सच्चे परमात्मा! मैं जिधर भी जाता हूँ, तू हर जगह पर बसा हुआ दिखाई देता है॥१॥ जिन्होंने एकाग्रचित होकर परमात्मा का ध्यान किया है, उन्हें सुख ही उपलब्ध हुआ है। परन्तु इस संसार में ऐसे विरले ही हैं। वे गुरु के शब्द की साधना करते हैं इसलिए यमदूत उनके निकट नहीं आता और वे कभी भी अपने जीवन की बाजी हारकर नहीं आते। जो हरि-प्रभु के गुणों का चिन्तन करते हैं, वह कभी भी हार नहीं खाते, इसलिए यमदूत उनके निकट नहीं आता। जो हरि के चरणों से लग गए है, उनका जन्म-मरण का चक्र मिट गया है। उन्होंने गुरु की मति द्वारा परमात्मा के नाम को अपने हृदय में बसाकर भक्ति का फल हरि-रस पा लिया है। जिन्होंने एकाग्रचित होकर भगवान का ध्यान किया है, उन्हें सुख ही उपलब्ध हुआ है, लेकिन ऐसे व्यक्ति दुनिया में विरले ही हैं॥ २॥ जिस प्रभु ने इस जगत की रचना की है और जीवों को कार्यों में लगाया है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। हे जीव! उस प्रभु की सेवा कीजिए, इस जीवन का लाभ प्राप्त करो और हरि के दरबार में मान-सम्मान प्राप्त करो। लेकिन हरि के दरबार में वही पुरुष मान-सम्मान प्राप्त करता है, जो एक ईश्वर को पहचानता है। जो मनुष्य गुरु की मति द्वारा हरि का ध्यान करता है और नित्य ही प्रभु का गुणगान करता रहता है, उसे नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं। इसलिए रात-दिन उस प्रभु का नाम-सुमिरन करो, जो सर्वश्रेष्ठ, आदि पुरुष एवं सर्वव्यापक स्वामी है। मैं उस प्रभु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने इस जगत की रचना करके जीवों को कामकाज में लगाया है॥ ३॥ जो मनुष्य प्रभु का नाम मुँह से लेते हैं, वही सुन्दर हैं, उन्हें आत्मिक सुख रूपी फल प्राप्त हो जाता है। जो प्रभु-नाम को मानते हैं, वे जीवन की बाजी जीत जाते हैं। यदि उसे अच्छा लगे तो उन्हें प्रभु के फलों की कोई कमी नहीं आती चाहे अनेकों ही युग बीत जाएँ। हे जगत के स्वामी! चाहे कई युग बीत जाएँ लेकिन तेरी स्तुति करने वालों का फल कभी कम नहीं होता। जो हरि-नाम का ध्यान करते हैं वह वृद्ध नहीं होते, न ही उनकी मृत्यु आती है और न ही नरक में जाते हैं। हे नानक! जो मनुष्य परमात्मा का नाम-सिमरन करते हैं, वे कभी क्षीण नहीं होते और न ही वे कभी दुःख से पीड़ित होते हैं। जो मनुष्य परमात्मा का नाम याद करते हैं, वे शोभा पाते हैं और सुख रूपी फल को प्राप्त करते हैं। जो मनुष्य नाम को मानते हैं, वह जीवन की बाजी जीत लेते हैं॥ ४॥ १॥ ४॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला १ छंत घरु ३ ॥ तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम ॥ बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥ फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए ॥ ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥ हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥ १ ॥ भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥ मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ ॥ सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ ॥ जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥ २ ॥ मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम ॥ साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ ॥ संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ ॥ भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ ॥ सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥ ३ ॥ नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥ जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ कोई सहजि जाणै

हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥ बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥ सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥४॥१॥५॥

हे काले मृग रूपी मन ! तू मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन, तू इस सृष्टि रूपी उद्यान में क्यों मस्त हुआ जा रहा है ? इस उद्यान का विषय-विकारों का फल सिर्फ चार दिनों के लिए ही मीठा होता है, फिर यह दुखदायक बन जाता है। जिस स्वाद के लिए तू इतना आकर्षित मस्त हुआ है, यह फल परमात्मा के नाम के बिना अंततः दुखदायी बन जाता है। यह फल ऐसे है जैसे समुद्र की लहरें उत्पन्न होती हैं और बिजली की चमक की भाँति अस्थिर होता है। हरि के अलावा दूसरा कोई रखवाला नहीं है और उसे तुमने भुला दिया है। हे काले मृग रूपी मन ! नानक तुझे सत्य कहता है, मेरी बात याद रख, भगवान को याद कर ले तेरी मृत्यु अटल है॥ १॥ हे भँवरे रूपी मन ! जैसे सुगन्धि लेने के लिए फूलों पर मँडराने पर भँवरे को बहुत दुख सहना पड़ता है, वैसे ही जगत-पदार्थों के स्वाद भोगने से तुझे भारी दुख भोगना पड़ेगा। मैंने अपने गुरु से सत्य के ज्ञान के बारे में पूछा है। मैंने गुरु से पूछा है कि यह मन-भँवरा तो बेलों एवं फूलों पर आकर्षित हो रहा है। (गुरु ने मुझे बताया है कि) जब सूर्योदय होता है अर्थात् जीवन की रात्रि बीत जाती है तो यह शरीर गिरकर मिट्टी बन जाता है एवं इसे उस तेल की भाँति तपाया जाता है, जिसे कड़ाही में गर्म किया जाता है। यह भगवान के नाम के बिना बेताल बना हुआ जीव यम के मार्ग पर बांधा जाएगा और बहुत चोटें खाएगा। नानक सत्य कहता है, हे मन रूपी काले भँवरे ! प्रभु को याद कर ले अन्यथा तुम मर जाओगे॥ २॥ हे मेरी परदेसी जीवात्मा ! तू इस जगत के जंजाल में क्यों फँस रही है ? जब सच्चा मालिक तेरे मन में बसता है तो तू क्यों यम के जाल में फँसेगी ? जब शिकारी जाल फैलाता है और मछली जाल में फँसकर जल से बिछुड़ जाती है तो आँखें भरकर रोती है। संसार की माया का मोह मीठा लगता है परन्तु अन्त में यह भ्रम दूर हो जाता है। हे मेरी आत्मा ! चित्त लगाकर हरि की भक्ति करो और अपने मन की चिन्ताएँ छोड़ दे। नानक तुझे सत्य कहता है - हे मेरी परदेसी आत्मा ! हे मन ! मेरी बात को याद रख और परमात्मा का ध्यान कर॥ ३॥ नदियों से बिछुड़े प्रवाह का मिलन संयोग से ही होता है। युग-युग में माया का मोह जीवों को मीठा लगता है पर यह मोह विकारों के विष से भरा हुआ है। कोई विरला योगी ही इस तथ्य को समझता है। जिसने सतिगुरु को याद किया होता है, ऐसा विरला इन्सान ही सहजावस्था को जानता है और भगवान को पहचानता है। हरि के नाम के बिना लापरवाह, मूर्ख इन्सान माया के भ्रम में पड़कर भटकते हैं और नष्ट हो जाते हैं। जो प्राणी हरिनाम याद नहीं करते, भगवान की भक्ति नहीं करते, अपने हृदय में सत्य को नहीं बसाते, वे अन्ततः फूट-फूटकर अश्रु बहाते हैं। नानक सत्य कहता है कि शब्द द्वारा चिरकाल से बिछुड़े हुए प्राणी प्रभु के साथ मिल जाते हैं॥ ४॥ १॥ ५॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु १ ॥ हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम ॥ धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥ प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥ गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥ आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ ॥ कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइआ ॥ १ ॥ दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम ॥ कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम ॥ बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवंती झूरे ॥ आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु

मिलिआ हदूरे ॥ देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए ॥ नानक विणु नावै कामणि भरमि भुलाणी मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ २ ॥ पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम ॥ अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ॥ सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरि रसु चाखिआ ॥ मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ॥ नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ॥ ३ ॥ सा धन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम ॥ सा धन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम ॥ सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥ सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे ॥ जितु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे ॥ नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥

हमारे हृदय-घर में सत्य का स्तुतिगान हो रहा है और सच्चे शब्द द्वारा हमारा हृदय-घर सुहावना बन गया है। जीव-स्त्री का पति-परमेश्वर से मिलन हो गया है और यह प्रभु ने स्वयं ही मिलन किया है। जीव-स्त्री सहजता से मस्त हुई है, क्योंकि उसने सत्य अपने मन में बसाया है और प्रभु ने उसे अपने साथ मिला लिया है। गुरु के शब्द का उस जीव-स्त्री ने श्रृंगार किया है और सत्य ने उसे सुन्दर बनाया है और प्रेम के साथ रंग कर वह सदा अपने प्रियतम के साथ रमण करती है। जब अपने अहंकार को मिटा कर उसने हरि को वर के रूप में पा लिया तब हरि रस उसके हृदय में बस गया। हे नानक! जो जीवात्मा गुरु के शब्द से संवरी हुई है, उसका समूचा जीवन सफल हो गया है॥ १॥ जो जीव-स्त्री द्वैतभाव एवं भ्रम में कुमार्गगामी हो जाती है, उसे हरि अपने वर के रूप में प्राप्त नहीं होता। जिस जीव-स्त्री में कोई भी गुण विद्यमान नहीं, वह अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा लेती है। स्वेच्छाचारिणी मूर्ख एवं अवगुणी नारी अपना जन्म व्यर्थ गंवा लेती है और अंतः अवगुणों से भरी रहने के कारण पीड़ित रहती है। जब जीव-स्त्री अपने सतिगुरु की सेवा करती है तो उसे सदैव सुख प्राप्त होता है और तब उसका प्रियतम उसे प्रत्यक्ष ही मिल जाता है। अपने पति-प्रभु को देख कर वह फूल की तरह खिल जाती है और सच्चे शब्द द्वारा उसका हृदय सहज ही आनंद से भरपूर हो जाता है। हे नानक! नाम के बिना जीव रूपी कामिनी भ्रम में पड़कर भटकती रहती है और तदुपरांत अपने प्रियतम से मिल कर सुख प्राप्त करती है॥ २॥ गुरु ने जिस जीव-स्त्री को अपनी संगति में मिला कर प्रभु से मिला दिया है, उसने जान लिया है कि उसका पति-प्रभु तो उसके साथ ही रहता है। वह शब्द द्वारा अन्तर में ही प्रभु से मिली रहती है और उसकी तृष्णा की अग्नि सहज ही बुझ गई है। शब्द द्वारा उसकी जलन बुझ गई है, अब उसकी अन्तरात्मा में शांति आ गई है और उसने सहज ही हरि रस को चख लिया है। अपने प्रियतम से मिलकर वह सदा उसके प्रेम का आनंद प्राप्त करती है और सच्चे शब्द द्वारा सुन्दर वाणी बोलती है। पण्डित पढ़-पढ़कर और मौन धारण करने वाले ऋषि-मुनि समाधि लगाकर थक गए हैं। धार्मिक वेष धारण करने वाले साधुओं ने मुक्ति प्राप्त नहीं की। हे नानक! प्रभु-भक्ति के बिना दुनिया बावली हो गई है। लेकिन सच्चे शब्द से जीव-स्त्री प्रभु से मिल जाती है॥ ३॥ जिस जीव-स्त्री को हरि-प्रभु अपने चरणों में मिला लेता है तो उसके मन में आनंद उत्पन्न हो जाता है। गुरु के शब्द द्वारा जीव-स्त्री हरि रस में लीन रहती है। गुरु के अपार शब्द से वह अपने प्यारे-प्रभु से मिल जाती है और वह उसके गुणों को अपने मन में सदा याद करती एवं बसाती है। जब प्रियतम-प्रभु उससे रमण करता है तो उसकी सेज सुहावनी हो जाती है और अपने प्रियतम से

मिलकर उस जीव-स्त्री के अवगुण नाश हो जाते हैं। जिस हृदय-घर में सदा हरि-नाम का सुमिरन होता है वहाँ चारों युगों में मंगल गीत गाए जाते हैं। हे नानक! प्रभु-नाम में अनुरक्त होने से जीव हमेशा आनंद में रहता है। हरि-प्रभु को मिलने से उसके सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ ४॥ १॥६॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥ साजन मेरे प्रीतम्हु तुम सह की भगति करेहो ॥ गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥ भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावए ॥ आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ॥ भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए ॥ कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥ १ ॥ मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ॥ हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥ करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥ जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ॥ जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सरब सुख पावए ॥ इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥ २ ॥ जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥ मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबदु समाले ॥ साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ॥ जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति परम पदु पावहे ॥ साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥ इउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥ ३ ॥ सतिगुर मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ नामु विहाझे नामु लए नामि रहे समाए ॥ धावतु थंम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥ तिथै अंम्रित भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंम्हि रहाइआ ॥ तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥ इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ ४ ॥ मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥ मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥ गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥ मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥ इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥ ५ ॥

हे मेरे प्रिय सज्जनो! तुम भगवान की भक्ति करते रहो। हमेशा अपने गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करो एवं उससे नाम का धन प्राप्त करो। तुम अपने भगवान की ऐसी भक्ति करो, जो भक्ति प्रभु को अच्छी लगती है। यदि तुम अपनी मनमर्जी करोगे तो फिर प्रभु तुम पर खुश नहीं होगा। इस भक्ति-भाव का मार्ग बहुत कठिन है। लेकिन गुरु के द्वार पर आने से कोई विरला पुरुष ही इसे पाता है। हे नानक! जिस मनुष्य पर प्रभु कृपा करता है, वह हरि की भक्ति को अपने चित्त से लगाता है॥ १॥ हे मेरे वैरागी मन! तुम वैरागी बन कर किसे दिखाते हो? जो मनुष्य हरि का गुणगान करते हैं, वे सदैव ही हरि की प्रसन्नता में रहते हैं। इसलिए तू पाखंड को छोड़ कर वैराग्य धारण कर क्योंकि प्रभु सब कुछ जानता है। एक ईश्वर ही जल, थल, पृथ्वी एवं गगन में सर्वत्र बसा हुआ है। गुरुमुख मनुष्य प्रभु के हुक्म को पहचानते हैं। जो व्यक्ति प्रभु के हुक्म को पहचानता है वही सर्व सुख प्राप्त करता है। नानक इस तरह कहता है कि दरअसल वैरागी वही है, जो रात-दिन हरि की लगन में लीन रहता है॥ २॥ हे मेरे मन! जहाँ-जहाँ तू दौड़ता है, वहाँ-वहाँ ही हरि तेरे साथ है। हे मेरे मन! तू अपनी चतुराई छोड़ दे और गुरु के शब्द का मनन कर। वह मालिक प्रभु सदैव तेरे साथ रहता है। इसलिए तू एक क्षण भर के लिए ही हरि का नाम याद कर लिया कर, तेरे जन्म-जन्मांतर के पाप मिट जाएँगे और अंततः परमगति प्राप्त हो

जाएगी। गुरुमुख बनकर सदैव ही उसको याद कर, इस तरह तेरा सच्चे प्रभु के साथ अटूट प्रेम बन जाएगा। नानक इस तरह कहता है कि हे मेरे मन! जहाँ कहीं भी तू दौड़ता है, वहाँ हरि-प्रभु तेरे साथ रहता है॥ ३॥ यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो मोह-माया की ओर दौड़ता मन टिक जाता है और आकर अपने सच्चे घर प्रभु-चरणों में बस जाता है। तब यह नाम को खरीदता है, नाम का जाप करता है और नाम में ही समाया रहता है। सच्चे गुरु से मिलकर दुविधाओं में भटकता हुआ मन टिक जाता है और दसम द्वार में प्रवेश कर लेता है। वहाँ अमृत भोजन का आनंद मिलता है और सहज ध्वनि उत्पन्न हो जाती है और गुरु के शब्द से संसार के आकर्षण को अंकुश लगाता है। नानक इस तरह कहता है कि सच्चे गुरु को मिलने से मोह-माया की दुविधाओं में भटकता मन टिक जाता है और आकर प्रभु-चरणों में निवास कर लेता है॥ ४॥ हे मेरे मन! तू ज्योति स्वरूप है, इसलिए अपने मूल (प्रभु-ज्योति) को पहचान। हे मेरे मन! भगवान तेरे साथ रहता है, गुरु की मति द्वारा उसके प्रेम का आनंद प्राप्त कर। यदि तुम अपने मूल को पहचान लो तो तुम अपने प्रभु को जान लोगे और जीवन मृत्यु की तुझे सूझ हो जाएगी। गुरु की कृपा से यदि तुम एक ईश्वर को समझ लो तो तुम्हारी मोह-माया की अभिलाषा मिट जाएगी। मेरे मन में शांति आ गई है और शुभकामना के वाद्यन्त्र बजने लग गए हैं और मैं प्रभु-दरबार में स्वीकृत हो गया हूँ। नानक इस तरह कहता है कि हे मेरे मन! तू ज्योति स्वरूप (भगवान का अंश) है और अपने मूल को पहचान॥ ५॥

मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥ माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥ गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ॥ अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥ मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे ॥ इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥ ६ ॥ मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥ अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥ होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥ आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ॥ सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥ इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥ ७ ॥ धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ॥ सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥ जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥ से जन परवाणु होए जिन्ही इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥ इउ कहै नानकु धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ ८ ॥ इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए ॥ दूजै भाइ फिरहि हउमै करम कमाए ॥ तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई ॥ तिन की गति अवगति तूंहै जाणहि जिनि इह रचन रचाई ॥ हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ॥ इउ कहै नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए ॥ ९ ॥ सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥ सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥ तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥ जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ॥ इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ १० ॥ २ ॥ ७ ॥ ५ ॥ २ ॥ ७ ॥

हे मन! तुम अहंकार से भरे हुए हो और अहंकार से भरे ही चले जाओगे। मोहिनी माया ने

तुझे मुग्ध किया हुआ है और बार-बार तुम योनियों में भटकते रहते हो। हे मूर्ख मन! अहंकार से भरे हुए तुम चलते फिरते हो और अंत में संसार से जाते वक्त पश्चाताप करोगे। तुझे अहंकार एवं तृष्णा का रोग लगा हुआ है और तुम अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा रहे हो। स्वेच्छाचारी मूर्ख प्रभु को याद नहीं करता और परलोक को जाते हुए पश्चाताप करता है। नानक इस तरह कहता है कि हे मन! तुम अहंकार से भरे हुए हो और अहंकार से लदे ही चले जाओगे॥ ६॥ हे मन! तुम इस बात का घमण्ड मत करना कि तुम कुछ जानते हो अपितु गुरुमुख एवं विनीत बन जाना। तेरे भीतर अज्ञानता एवं बुद्धि का अहंकार है इसलिए गुरु के सच्चे शब्द से इसकी मैल को स्वच्छ कर ले। सच्चे गुरु के समक्ष विनीत बन और खुद पर गर्व मत करना कि मैं महान् हूँ। अपने अहंकार में यह जगत जल रहा है। इसलिए तू भी अपने आपको इस तरह नष्ट मत कर लेना। सच्चे गुरु की इच्छानुसार अपना कार्य कर और सच्चे गुरु की इच्छा के साथ लगा रह। नानक इस तरह कहता है कि हे मन! तू अपना अहंकार छोड़ दे और विनीत बना रह, इस तरह तुझे सुख प्राप्त होगा॥ ७॥ वह समय बड़ा धन्य है, जब मुझे सच्चा गुरु मिला और मुझे परमात्मा याद आया। मेरे अन्तर्मन में सहज ही महा-आनंद अनुभव हुआ और मन-तन में सुख प्राप्त हो गया। मैंने उस पति-प्रभु को याद किया है, उसे अपने मन में बसाया है और तमाम अवगुण भुला दिए हैं। जब प्रभु को अच्छा लगा तो मुझ में गुण प्रगट हो गए, और सच्चे गुरु ने आप मुझे संवार दिया है। जिन्होंने एक नाम को अपने मन में बसाया है और पराया मोह-प्यार त्याग दिया है, वे प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो गए हैं। नानक इस तरह कहता है कि वह समय धन्य है जब मुझे सच्चा गुरु मिला और उस प्रभु-पति को याद किया॥ ८॥ कुछ लोग मोह-माया की दुविधा में कुमार्गगामी हो गए हैं और उन्हें प्रभु-पति ने स्वयं ही कुमार्गगामी कर दिया है। वे द्वैतभाव के प्रेम में भटकते हैं और अहंकार में अपना कर्म करते हैं। उनके वश में भी कुछ नहीं क्योंकि प्रभु ने स्वयं ही उन्हें भुलाकर कुमार्ग लगाया है। हे परमपिता! उन जीवों की अच्छी-बुरी गति तू ही जानता है, क्योंकि तूने खुद ही यह दुनिया की रचना रची है। तेरे हुक्म पर अनुसरण करना बहुत कठिन है। लेकिन गुरुमुख बनकर कोई विरला पुरुष ही हुक्म को समझता है। नानक इस तरह कहता है कि हे प्रभु! जीव बेचारे क्या कर सकते हैं, जबकि तुम ने स्वयं ही उन्हें भ्रम में डालकर कुमार्गगामी किया हुआ है॥ ९॥ हे मेरे सच्चे साहिब! तेरी महिमा सत्य है। तू परब्रह्म बेअंत एवं जगत का स्वामी है। तेरी कुदरत व्यक्त नहीं की जा सकती। तेरी महिमा सत्य है जिसके मन में तुम इसे बसा देते हो, वे सदा तेरे गुण गाता रहता है। जब तुझे प्राणी भले लगते हैं तो वे तेरा ही गुणगान करते हैं और सत्य के साथ ही अपना चित्त लगाते हैं। हे प्रभु! जिसे तू अपने साथ मिला लेता है, वह गुरुमुख बनकर तुझ में ही समाया रहता है। नानक इस तरह कहता है कि हे मेरे सच्चे साहिब! तेरी महिमा सत्य है॥ १०॥ २॥ ७॥ ५॥ २॥ ७॥

रागु आसा छंत महला ४ घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरमुखि भाए राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम ॥ हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु संसा दूखु गवाइआ ॥ अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ पवित्र परम पदु पाइआ ॥ अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ॥ नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥ १ ॥ मनमुखा मनमुखि मुए मेरी करि माइआ राम ॥ खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइआ राम ॥ लाइआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुंभ

दिखाइआ ॥ खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइआ ॥ दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥ नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥ हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥ हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुंने सुंनि समावै ॥ वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥ नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥ ३ ॥ रतना रतन पदारथ बहु सागरु भरिआ राम ॥ बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम ॥ गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ॥ हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ॥ समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई ॥ गुर गोविंदु गुोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥

हे भाई ! गुरु की रजा में मुझे जीवन में सही आत्मिक जीवन मिल गया है। गुरु के माध्यम से मुझे प्रभु प्रिय लगने लगा है। हर वक्त गुरु मुझे हरि का नाम देते हैं और मेरे प्राणों में उसने हरि नाम बसा दिया है। गुरु ने जब से हरि का नाम मेरे प्राणों में बसा दिया है, तब से मेरे तमाम संशय एवं दुःख नाश हो गए हैं। गुरु के शुभ वचन द्वारा मैंने अदृष्ट एवं अगोचर प्रभु का ध्यान करके पवित्र परम पद प्राप्त कर लिया है। सच्चे गुरु की वाणी का गायन करने से नित्य ही अनहद ध्वनि गूँजती रहती है। हे नानक ! दाता प्रभु ने अब मुझ पर यह अनुकंपा की है कि मेरी ज्योति परम ज्योति में लीन रहती है॥ १॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य 'मेरा धन मेरा धन' पुकारते हुए मनमुखता में ही मर जाते हैं। वे अपने चित्त को दुर्गन्धयुक्त शरीर में लगाए रखते हैं, जो एक क्षण भर हेतु आता है और क्षण भर में ही चला जाता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य अपने चित्त को दुर्गन्धयुक्त देह से लगाते हैं, जैसे कुसुंभ के फूल का रंग दिखाई देता है, जो शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। जैसे छाया कभी पूर्व दिशा की ओर होती है और कभी पश्चिम दिशा की ओर हो जाती है। वे कुम्हार के चाक की भाँति घूमते रहते हैं। मनमुख व्यक्ति दुख सहन करते हैं, दुःख संचित करते हैं और दुःख ही भोगते रहते हैं। वे अपने जीवन में दुःखों की ही वृद्धि करते रहते हैं। हे नानक ! जब मनुष्य गुरु की शरण में आ जाता है तो वह विषम संसार सागर से सुखपूर्वक ही पार हो जाता है॥ २॥ मेरा ठाकुर प्रभु सुन्दर है लेकिन वह अगम्य एवं अथाह सागर की भाँति है। हे मेरे साहूकार सतिगुरु ! मैं तुझसे हरि नाम की पूंजी माँगता हूँ। मैं हरि-नाम की पूँजी को खरीदता हूँ और हरि-नाम का व्यापार करता हूँ। मैं हरि के गुण ही गाता रहता हूँ और हरि के गुण ही मुझे भाते हैं। मैंने निद्रा एवं भूख सब कुछ त्याग दिया है परन्तु एकाग्रता के साथ निर्गुण प्रभु में समाया रहता हूँ। जब हरि-नाम के व्यापारी सत्संगति में बैठते हैं तो वे हरि-नाम का लाभ कमा कर ले जाते हैं। हे नानक ! अपना मन-तन गुरु के समक्ष अर्पित कर दे, जिसकी किस्मत में इसकी प्राप्ति लिखी हुई है, वही प्रभु-नाम को प्राप्त करता है॥ ३॥ यह मानव-शरीर एक सागर है जो अनेक रत्नों (गुणों) से भरा हुआ है। जो मनुष्य गुरुवाणी से लगाव रखते हैं, उन्हें प्रभु-नाम की प्राप्ति हो जाती है। जो लोग गुरुवाणी में लीन रहते हैं, उन्हें अपार प्रभु का अमूल्य नाम-रत्न प्राप्त हो जाता है। हे हरि ! तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं और वे मनुष्य अमूल्य हरि-नाम प्राप्त कर लेते हैं। हे भाई ! गुरु की अनुकंपा से जब मैंने इस शरीर रूपी समुद्र का मंथन किया तो मुझे अनूप वस्तु दिखाई दी। हे नानक ! गुरु गोविन्द है और गोविन्द ही गुरु है। हे भाई ! इन दोनों में कोई भेद (अन्तर) नहीं है॥ ४॥ १॥ ८॥

आसा महला ४ ॥ झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा राम ॥ गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥ राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥ कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥ हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥ १ ॥ रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥ गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥ रविआ रामु हिरदै परम गति पाई जा गुर सरणाई आए ॥ लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाए ॥ जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए ॥ आपि क्रिपालु क्रिपा करि देवै नानक गुर सरणाए ॥ २ ॥ बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम ॥ रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआए राम ॥ राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ त्रिसना भूख गवाई ॥ मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा ॥ ३ ॥ जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम ॥ तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइआ लागी राम ॥ माइआ मलु लागी मूड़ भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ ॥ अनेक करम करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ ॥ महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआइआ ता पाए मोख दुआरा ॥ ४ ॥

हे राम ! रिमझिम रिमझिम करके तेरी अमृत की धारा बरस रही है। गुरुमुख की जीभ पर हर पल यह अमृत की धारा पड़ती रहती है। गुरु की कृपा-दृष्टि से गुरुमुख को राम नाम बहुत प्यारा लगता है। जगत का उद्धार करने वाला राम का नाम उसे प्रिय लगता है। संसार में राम नाम की ही शोभा है। कलियुग में राम का नाम जहाज है और गुरु के सान्निध्य में रहने से मनुष्य पार हो जाता है। यह लोक एवं परलोक राम के नाम से सुखी हो जाते हैं और गुरुमुख का जीवन-आचरण उत्तम हो जाता है। हे नानक ! जिस मनुष्य को प्रभु कृपा धारण करके अपने नाम का दान देता है, उसे राम नाम द्वारा भवसागर से पार कर देता है॥ १॥ मैंने राम-नाम का जाप किया है जिसने मेरे दुःख एवं पाप नाश कर दिए हैं। गुरु से मिलन द्वारा मैंने परमात्मा का ध्यान किया है और राम को अपने हृदय में बसाया है। जब मैंने गुरु की शरण ली तो राम का नाम मेरे हृदय में बस गया और मुझे परमगति प्राप्त हो गई। जब सच्चे गुरु ने मेरे भीतर राम का नाम दृढ़ कर दिया तो लोभ-विकारों से भरी हुई मेरी डूबती नैया बाहर निकल आई। पूर्ण गुरुदेव ने मुझे जीवन दान प्रदान किया और मैंने अपना चित्त राम नाम के साथ लगाया हुआ है। हे नानक ! जो मनुष्य गुरु की शरण लेता है, कृपालु प्रभु आप ही नाम की देन देता है॥ २॥ मैंने राम नाम की वाणी सुनी, जिससे सभी कार्य सुखद ही सम्पूर्ण हो गए हैं और सिद्धि प्राप्त हो गई है। गुरुमुख बनकर अपने रोम-रोम से मैं राम का ध्यान करता हूँ। राम नाम का ध्यान करने से मैं पवित्र हो गया हूँ। राम का कोई रूप एवं रेखा नहीं, राम का नाम मेरे अन्तर्मन में समाया हुआ है और मेरी तृष्णा एवं भूख सभी दूर हो गए हैं। गुरु की मति द्वारा राम मेरे भीतर प्रकाशमान हो गया है और मेरा मन-तन शीतल एवं सारा श्रृंगार हो गया है। हे नानक ! भगवान ने मुझ पर स्वयं अनुकंपा की है और तब से उसके दासों का दास बन गया हूँ॥ ३॥ जिन्होंने राम और राम नाम को भुला दिया है, वे मनमुख मूर्ख एवं भाग्यहीन हैं। उनके अन्तर्मन में मोह व्याप्त हुआ है और क्षण-क्षण उन्हें माया लगी रहती है। जिन्हें राम का नाम अच्छा नहीं लगता, उन्हें माया की मैल लगी रहती है, ऐसे मूर्ख भाग्यहीन हैं। अभिमानी मनुष्य अनेक कर्मकाण्ड करते हैं परन्तु वह राम

के नाम का जाप करने से अपना मन चुराते हैं। मोह के अन्धेरे की कालिमा के कारण यम (मृत्यु) का मार्ग महा विषम एवं दुःखदायक है। हे नानक! यदि मनुष्य गुरुमुख बनकर प्रभु-नाम की आराधना कर ले तो उसे मोक्ष का द्वार प्राप्त हो सकता है॥ ४॥

रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली भरमदा इकतु घरि आणै राम ॥ मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए ॥ जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराए ॥ रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइआ ॥ नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइआ ॥ ५ ॥ जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइआ राम ॥ सभि अरथा सभि धरम मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइआ राम ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए ॥ दुरमति कबुधि गई सुधि होई राम नामि मनु लाए ॥ सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु राम नामु परगासिआ ॥ नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥ ६ ॥ जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥ जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ॥ राम नामु मनि भाइआ परम सुखु पाइआ अंति चलदिआ नालि सखाई ॥ राम नाम धनु पूंजी संची ना डूबै ना जाई ॥ राम नामु इसु जुग महि तुलहा जमकालु नेड़ि न आवै ॥ नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥ ७ ॥ रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम ॥ सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइआ राम ॥ मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइ मिलाए ॥ दीना नाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाए ॥ गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥ राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥ ८ ॥ २ ॥ ६ ॥

राम का नाम ही गुरु है और गुरुमुख बनकर ही राम को जाना जाता है। यह मन क्षण भर में आकाश में होता है और क्षण भर में पाताल में भटकता है। गुरु भटकते हुए मन को एक घर (प्रभु के पास) ले आते हैं। जब मन एक घर (प्रभु के पास) में आता है तो मनुष्य अपनी गति एवं जीवन-मर्यादा को समझ लेता है और हरि-राम के नाम रस का पान करता है। राम का नाम उसके भक्त की लाज रखता है जैसे उसने भक्त प्रहलाद की रक्षा करके उसका उद्धार किया था। राम का नाम ही दुनिया में ऊँचा है, इसलिए बार-बार राम को याद करते रहो। उसके गुणों का वर्णन करने से उसका अन्त नहीं पाया जा सकता। हे नानक! राम का नाम सुनकर जिस व्यक्ति का मन आनंदित भाव-विभोर हो जाता है, वह राम के नाम में ही समा जाता है॥ ५॥ जिन मनुष्यों के अन्तर्मन में राम का नाम निवास करता है, उनकी तमाम चिन्ताएँ मिट जाती हैं। उन्हें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी पदार्थ मिल जाते हैं और मनोवांछित फल प्राप्त हो जाता है। जो मनुष्य राम नाम का ध्यान करता है एवं राम नाम का गुणगान करता है, उसे मनोवांछित फल मिल जाता है। फिर उसकी दुर्मति एवं कुबुद्धि दूर हो जाती है, उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है और वह राम नाम को अपने मन से लगा लेता है। जिसकी अन्तरात्मा में राम नाम का प्रकाश हो जाता है, उसका जन्म एवं शरीर सभी सफल हो जाते हैं। हे नानक! रात-दिन सदैव ही हरि का भजन करो और गुरुमुख बनकर ही मनुष्य अपने आत्मस्वरूप में निवास करता है॥ ६॥ जिनकी श्रद्धा राम के नाम में लगी है, उनका किसी अन्य पदार्थ में चित्त नहीं लगा। यदि सम्पूर्ण धरती स्वर्ण बनाकर उन्हें दे दी जाए तो भी राम-नाम के बिना वे किसी अन्य पदार्थ से स्नेह नहीं करते। राम का नाम उनके मन को भाता है और इसी द्वारा उन्हें परम सुख प्राप्त होता है। अन्तिम क्षण संसार से कूच करते

समय यह परलोक में भी उनका साथ देता है। उन्होंने राम नाम रूपी धन-पूंजी संचित कर ली है, जो न जल में डूबती है और न ही साथ छोड़ कर जाती है। राम का नाम ही इस युग में नाव का कार्य करता है और यमकाल इसके निकट नहीं आता। हे नानक ! गुरुमुख बनकर ही राम को पहचाना जाता है। कृपा करके वह मनुष्य को अपने साथ मिला लेता है॥ ७॥ राम का नाम ही सत्य है और गुरुमुख बनकर ही इसे जाना जाता है। प्रभु का सेवक वह है, जो गुरु की सेवा में लगता है, जिसने अपना तन-मन गुरु को अर्पण किया है, उसके मन में श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। जो सेवक अपना मन-तन अर्पण करता है और बहुत श्रद्धा रखता है, उसे गुरु सेवा-भाव के कारण प्रभु से मिला देता है। दीनानाथ एवं जीवों का दाता पूर्ण गुरु के माध्यम से प्राप्त होता है। गुरु ही शिष्य है और शिष्य ही गुरु है अर्थात् दोनों एक रूप हैं। दोनों ही गुरु के उपदेश को प्रचलित करते हैं। हे नानक ! गुरु राम-नाम का मंत्र शिष्य के हृदय में बसाता है और सहज ही उसका राम से मिलन हो जाता है॥ ८॥ २॥ ६॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा छंत महला ४ घरु २ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ हरि सेवा भाई परम गति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥ हरि ऊतमु कामु जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥ हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतम रामु जीउ ॥ हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ १ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ गुरमुखि हरि पड़ीऐ गुरमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ ॥ हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरि नामु परम सुखु पाइआ ॥ सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ ॥ हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥ आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ ॥ जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ ॥ जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥ हरि हरि मनि भाइआ परम सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ ३ ॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ हरि नामु वडाई हरि नामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ ॥ हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइआ ॥ से धंनु वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइआ ॥ जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥

सृष्टि का रचयिता हरि दुःखों का नाश करने वाला है। हरि का नाम पतितों को पावन करने वाला है। जिन्हें हरि की सेवा-भक्ति प्रिय लगती है, उन्हें परमगति प्राप्त हो जाती है। हरि का नाम-सुमिरन उत्तम कर्म है, इसलिए हरि की आराधना करनी चाहिए। प्रत्येक दृष्टि से हरि-नाम का जाप उत्तम कर्म है। हरि का जाप करने से मनुष्य आत्मिक स्थिरता प्राप्त कर लेता है। वह जन्म-मरण दोनों के दुःख को मिटा देता है और सहज ही सुख में सोता है। हे हरि ! मुझ पर कृपा करो। हे हरि ठाकुर ! मैं अपनी आत्मा में तेरा ही जाप करता रहूँ। जग का रचयिता परमात्मा दुःखों का नाश करने वाला है। हरि का नाम पतितों को पावन करने में समर्थ है॥ १॥ कलियुग में हरि नाम उत्तम पदार्थ है। लेकिन सच्चे गुरु के प्रेम द्वारा ही हरि का नाम जपा जा सकता है।

गुरुमुख बनकर ही हरि-नाम का अध्ययन करना चाहिए, और गुरुमुख बन कर ही हरि-नाम को सुनना चाहिए। हरि-नाम का जाप करने एवं सुनने से दुःख दूर हो जाते हैं। जिस व्यक्ति ने हरि-नाम जपा है, उसका दुख मिट गया है और उसने परम सुख देने वाला हरि नाम पा लिया है। जिस व्यक्ति के हृदय में सतिगुरु का ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित हो गया है, उसके आलोक से उसका अज्ञानता का अँधेरा दूर हो गया है। उन्होंने ही हरि-प्रभु के नाम की आराधना की है, जिनके मस्तक पर प्रभु ने प्रारम्भ से ही ऐसा लेख लिखा हुआ है। कलियुग में हरि-नाम उत्तम पदार्थ है। लेकिन सतिगुरु के प्रेम में लीन रहने से ही हरि का नाम जपा जा सकता है ॥२॥ जिस व्यक्ति के मन को हरि का नाम प्रिय लगा है, उसे ही परम सुख मिला है उसने हरि नाम रूपी लाभ प्राप्त कर लिया है और निर्वाण पद प्राप्त कर लिया है। उसने हरि (नाम) के साथ प्रीति लगाई है और हरि का नाम उसका सखा बन गया है, जिससे उसका भ्रम एवं जन्म-मरण का चक्र मिट गया है। जब से उसने हरि का गुणगान किया है, उसका जन्म-मरण का चक्र, दुविधा एवं भय नाश हो गया। उसके जन्म-जन्मांतरों के पाप एवं दुःख मिट चुके हैं और वह परमेश्वर के नाम में समा गया है। जिनके भाग्य में आदि से लेख लिखा हुआ है, वे हरि का ध्यान करते हैं। फिर उनका मनुष्य जन्म सफल हो जाता है और वे प्रभु-दरबार में सत्कृत हो जाते हैं। जिस मनुष्य के मन को हरि-प्रभु प्रिय लगा है, उसे परम सुख प्राप्त हुआ है और उसने लाभ में निर्वाण-पद प्राप्त किया है॥ ३॥ जिन्हें हरि मीठा लगा है, वही पुरुष प्रधान है। हरि-प्रभु के ऐसे लोग सर्वोत्तम हैं। हरि का नाम उनकी मान-प्रतिष्ठा है और हरि नाम उनका सखा है। गुरु के शब्द द्वारा वे हरि रस का भोग करते हैं। हरि-रस का आनंद प्राप्त करके वे निर्लिप्त रहते हैं और खुशकिस्मत ही हरि-रस को पाते हैं। वे पूर्ण सद्पुरुष महान् एवं धन्य हैं, जो गुरमति द्वारा नाम का ध्यान करते हैं। नानक साधुओं की चरण-धूलि माँगता है, जिससे उसका मन शोक-वियोग से मुक्त हो गया है। जिन्हें हरि मीठा लगता है, वे पुरुष प्रधान हैं और हरि-प्रभु के ऐसे लोग उत्तम हैं॥ ४॥ ३॥ १०॥

आसा महला ४ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ मनि तनि हरि गावहि परम सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥ हरि हरि लिव लाई हरि नामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥ सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ १ ॥

सतियुग में सभी लोग संतोषी थे एवं प्रभु का ध्यान करते थे और धर्म चार पैरों पर टिका था। सतियुग में लोग तन-मन से भगवान का गुणगान करते थे और परम सुख प्राप्त करते थे। वह भगवान को अपने हृदय में याद करते थे और उन्हें हरि के गुणों का ज्ञान प्राप्त था। भगवान के गुणों का ज्ञान उनका धन था। हरि-हरि नाम जपकर ही वे कृतार्थ होते थे और गुरुमुख लोगों की बहुत शोभा होती थी। वे समझते थे कि उनके हृदय में और बाहर हर जगह एक ही परमात्मा बसता है और दूसरा उनके लिए कोई भी नहीं था। वे हरि-नाम में लगन लगाकर रखते थे। हरि का नाम उनका सच्चा साथी था और हरि के दरबार में उनका बहुत मान-सम्मान होता था। सतियुग में सभी लोग संतोषी एवं ध्यानी थे और धर्म चार पैरों पर टिका हुआ था॥ १॥

तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ ॥ मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ ॥ अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइआ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ ॥ तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम करम कमाइ जीउ ॥ २ ॥

फिर त्रेता युग आया तो ताकत ने जोर पकड़ कर मनुष्यों के मन को वश में कर लिया। लोग ब्रह्मचार्य, संयम एवं कर्मकाण्ड का आचरण करने लगे। इस युग में धर्म का चौथा पैर खिसक गया। धर्म तीन पैरों पर ही टिक गया और लोगों के मन एवं हृदय में क्रोध जलने लगा। फिर लोगों के मन एवं हृदय में क्रोध एक महा भयानक विष की भाँति विद्यमान हो गया। राजा-महाराजा आक्रमण करके युद्ध करने लगे और दुःख पाने लगे। लोगों की अन्तरात्मा में ममता का रोग लग गया था और उनका अहंत्व एवं अहंकार अधिकतर बढ़ने लगा था। मेरे ठाकुर हरि-प्रभु ने जब कभी कृपा-दृष्टि की तो गुरमति एवं हरि नाम के माध्यम से क्रोध का विष दूर हो गया था। त्रेता युग का आगमन हुआ और बाहुबल ने जोर पकड़ कर लोगों की अन्तरात्मा को वश में कर लिया। लोग ब्रह्मचार्य, संयम एवं कर्मकाण्ड का आचरण करने लगे॥ २॥

जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ तपु तापन तापहि जग पुंन आरंभहि अति किरिआ करम कमाइ जीउ ॥ किरिआ करम कमाइआ पग दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ ॥ महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥ दीन दइआलि गुरु साधु मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥ जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कान्हु उपाइ जीउ ॥ ३ ॥

तदुपरांत द्वापर युग का आगमन हुआ। भगवान ने दुनिया को दुविधा एवं भ्रम में भटका दिया। उसने गोपियों एवं कान्हा (श्रीकृष्ण) को उत्पन्न किया। तपस्वी तप करते थे और धूनियां तपाने के दुःख सहने लगे। लोगों ने यज्ञ एवं दान-पुण्य का आरम्भ किया और वे अनेक धार्मिक कर्मकाण्ड एवं विधि-संस्कार करने लगे थे। धार्मिक कर्मकाण्ड एवं विधि संस्कार द्वारा धर्म का दूसरा पैर खिसक गया और अब द्वापर में धर्म दो पैरों पर ही टिक गया। बहुत सारे योद्धाओं ने महा भयंकर युद्ध किए और अहंकार के कारण वे नष्ट हो गए तथा दूसरों को भी नष्ट कर दिया। (महाभारत के युद्ध में लाखों योद्धा वीरगति प्राप्त कर गए।) दीनदयालु प्रभु ने जीवों को साधु गुरु से मिलाया। सच्चे गुरु को मिलने से उनकी मलिनता दूर हो जाती थी। द्वापर युग का आगमन हुआ तो प्रभु ने जगत को भ्रम में भटका दिया और उसने गोपियों एवं श्रीकृष्ण को उत्पन्न कर दिया॥ ३॥

कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि सांति पाइ जीउ ॥ हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥ कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ ॥ जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥ कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥

तदनन्तर परमात्मा ने कलियुग बनाया, जिसमें धर्म के तीन पैर खिसक गए और धर्म एक पैर पर ही कायम रहा। इस युग के जीवों ने गुरु-शब्द की कमाई की और दुखों की औषधि हरि नाम पा लिया। हरि ने उसका कीर्तिगान करने वाले भक्तजनों के हृदय में शांति प्रदान की। कलियुग में हरि के भजन-कीर्तन की ऋतु आई और हरि-नाम की शोभा होने लगी। शरीर रूपी खेत में परमेश्वर के नाम को लोग बोने लगे। कलियुग में यदि मनुष्य नाम के बिना कोई दूसरा बीज बोता है तो वह अपना सारा लाभ एवं मूल पूँजी गंवा लेता है। नानक ने पूर्ण गुरु को पा लिया है, जिसने उसके मन एवं हृदय में ही नाम प्रगट कर दिया है। परमात्मा ने कलियुग की रचना की, जिसमें धर्म के तीन पैर खिसक गए और धर्म (रूपी बैल) का चौथा पैर ही कायम रहा॥ ४॥ ४॥ ११॥

आसा महला ४ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥ धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ ॥ जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥ हरि कीरति मनि भाई परम गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ १ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ तिन्ह हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ परम सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे ॥ गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे ॥ सभ एक द्रिसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ ॥ हरि हरि जसु गाइआ परम पदु पाइआ ते ऊतम जन परधान जीउ ॥ २ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥ अवरु न कोइ हरि अंम्रितु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥ धनु धंनु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै ॥ नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥ सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ ३ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बांह प्रभू पकराइ जीउ ॥ प्रभि बांह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु लागा ॥ हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइ जीउ ॥ हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥

जिस व्यक्ति के मन में हरि की कीर्ति अच्छी लग गई है, उसने परमगति पा ली है। उसके मन-तन को परमात्मा मीठा लगने लग गया है। जिसने गुरु की मति द्वारा भगवान का ध्यान किया है, उसने हरि रस पा लिया है। आदि से ही उसके मस्तक पर पूर्व लिखित भाग्य जाग गए हैं। आदि से मस्तक पर लिखा उसका भाग्य उदय हो गया है और जब उसने हरि-नाम द्वारा भगवान का गुणगान किया तो हरि नाम द्वारा उसे सुहाग मिल गया। अब उसके मस्तक पर प्रभु के प्रेम की मणि चमक उठी है और भगवान ने अपने हरि-नाम द्वारा उसे सुन्दर बना दिया है। उसकी ज्योति परम ज्योति से मिल गई है और उसने अपने प्रभु को पा लिया है। सच्चे गुरु को मिलने से उसका मन तृप्त हो गया है। हरि की कीर्ति-महिमा जिसके मन में भा गई है उसने परमगति पा ली है और उसके मन एवं तन को प्रभु मीठा लगने लग गया है॥ १॥ जिस व्यक्ति ने परमेश्वर का यशगान किया है, उसे परम पद प्राप्त हो गया है। वे लोग उत्तम एवं प्रधान हैं। जिन्हें हरि मीठा लगने लग गया है, हम उनके चरणों की सेवा करते हैं और क्षण-क्षण उनके चरण धोते हैं। जिसे हरि मीठा लग गया है, उसे परम सुख प्राप्त हो गया है और उसका मुख भाग्यशाली एवं सुन्दर हो गया है। गुरु के उपदेश द्वारा उसने प्रभु का गुणगान किया है। प्रभु को हार के रूप में हृदय में पहना है और हरि के नाम को अपनी जिह्वा एवं कण्ठ में धारण किया है। जिस व्यक्ति ने परमेश्वर का यशगान किया है, उसे परम पद मिल गया है। वे लोग उत्तम एवं प्रधान हैं॥ २॥ जिसके मन में सत्संगति अच्छी लगती है, वे हरि रस का आस्वादन करते हैं। सत्संगति में हरि का रस बसता है। वह हरि-परमेश्वर की आराधना करता है और गुरु के शब्द द्वारा प्रसन्न रहता है। प्रभु के अलावा वह किसी दूसरे को नहीं जानता। उस हरि अमृत के अतिरिक्त दूसरा कोई अमृत नहीं। जो इसका पान करते हैं, वही इसकी विधि को जानते हैं। पूर्ण गुरु धन्य-धन्य है,

जिसके माध्यम से प्रभु प्राप्त होता है। सुसंगति में सम्मिलित होकर प्रभु-नाम को पहचाना जाता है। मैं नाम की पूजा करता हूँ, मैं नाम की ही आराधना करता हूँ एवं नाम के अलावा दूसरा कुछ भी नहीं। जिसके मन को सत्संगति प्यारी लगती है, वह हरि अमृत का स्वाद प्राप्त करता है। सत्संगति में ही प्रभु का नामामृत बसता है॥ ३॥ हे हरि-प्रभु! दया करो एवं हम पत्थरों को पार लगा दो। अपने शब्द द्वारा सहजता से हमें संसार के मोह से निकाल लो। हम नश्वर प्राणी मोह के कीचड़ में फँसे हुए डूबते जा रहे हैं। हे हरि प्रभु! हमें अपनी बांह पकड़ा दीजिए। प्रभु ने जब बांह पकड़ा दी तो उत्तम बुद्धि प्राप्त हो गई और सेवक गुरु के चरणों में लग गया। जिस मनुष्य के मुख एवं मस्तक पर सौभाग्य लिखा हुआ है, वह हरि-परमेश्वर का नाम जपता एवं आराधना करता है। ईश्वर ने नानक पर कृपा धारण की है और उसके मन को हरि-प्रभु मीठा लगने लगा है। हे हरि-प्रभु! दया करो, हम पत्थरों को पार लगा दो और अपने शब्द द्वारा सहजता से हमें दुनिया के मोह से निकाल लो॥ ४॥ ५॥ १२॥

आसा महला ४ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ जो जन मरि जीवे तिन्ह अंम्रितु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ ॥ मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई ॥ जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई ॥ मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥ मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ १ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ ॥ किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइ जीउ ॥ मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारू लाइ जीउ ॥ जिस की वसतु प्रभु लए सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ ॥ जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ २ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ ॥ हरि दरगह पैधे हरि नामै सोधे हरि नामै ते सुखु पाइआ ॥ जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ ॥ हरि जन प्रभु रलि एको होए जन प्रभु एक समानि जीउ ॥ धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ ३ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ गुरु मंतु द्रिड़ाए हरि रसकि रसाए हरि अंम्रितु हरि मुखि चोइ जीउ ॥ हरि अंम्रित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई ॥ हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ जीउ ॥ जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥

भक्तजन अपने मन में भगवान का नाम जपते हैं। उन्हें भगवान का हरि-नाम मन में बहुत प्यारा लगता है। हरि के भक्तजनों में नाम जपने का ही चाव बना रहता है। जो लोग अहंत्व मिटाकर जीवन जीते हैं, वे अमृतपान करते हैं। गुरमति द्वारा उनके मन में प्रभु से अनुराग हो जाता है। जब गुरु अपनी कृपा करता है तो उनके मन में नाम से प्रेम हो जाता है। वह जीवन्मुक्त हो जाते हैं और उन्हें सुख प्राप्त हो जाता है। हरि के नाम द्वारा उनका जीवन मरण सुखी बन जाता है और उनके मन एवं हृदय में परमात्मा ही निवास करता है। उनके हृदय में हरि-परमेश्वर का नाम बसता है। गुरु की शिक्षा द्वारा वे हरि का रस प्राप्त करते हैं। हरि-रस वे बड़े बड़े घूंट भर कर पीते हैं। भक्तजन तो अपने मन में भगवान का नाम ही जपते रहते हैं। उन्हें भगवान का

हरि-नाम मन में बहुत भाता है। हरि के भक्तजनों में हरि-नाम जपने की तीव्र लालसा बनी रहती है॥ १॥ जगत में किसी भी प्राणी को मृत्यु अच्छी नहीं लगती। वे अपने आपको छिपाकर रखते हैं कि कहीं यमराज उन्हें पकड़ कर न ले जाए। एक हरि-प्रभु जीवों के अन्तर में एवं बाहर दुनिया में हर जगह बसता है। यह प्राण उस प्रभु से छिपाकर नहीं रखे जा सकते। मनुष्य अपने प्राणों को कैसे छिपाकर रख सकता है, जबकि भगवान इस वस्तु को लेना चाहता है? जिस भगवान की वस्तु होती है, वह उसे ले जाता है। मनमुख मनुष्य पीड़ित होकर चिल्लाता हुआ भटकता है एवं सर्व प्रकार की औषधि करता रहता है। यह प्राण जिस भगवान की वस्तु है उसे ले जाता है। लेकिन भक्तजन शब्द की कमाई द्वारा संसार-सागर से पार हो जाते हैं। जगत में किसी भी मनुष्य को मृत्यु अच्छी नहीं लगती। वह नित्य अपने आपको छिपाकर रखता है कि कहीं यमदूत उसे पकड़ कर न ले जाए॥ २॥ गुरुमुखों को प्रारम्भ से लिखी हुई मृत्यु भी सुन्दर लगी है। भक्तजन परमात्मा का ध्यान करके भवसागर में डूबने से बच गए हैं। उन्होंने हरि-नाम द्वारा हरि के दर पर शोभा एवं बड़ाई प्राप्त की है। उन्होंने हरि के दरबार में जाकर अपना जन्म सफल कर लिया है। हरि-नाम द्वारा उन्होंने सुख पा लिया है। उनका जन्म-मरण दोनों का दुख मिट जाता है और वे परमात्मा के नाम में ही समा जाते हैं। भक्तजन एवं प्रभु मिलकर एक रूप हो गए हैं। अतः भक्तजन एवं प्रभु एक समान ही हैं। गुरुमुखों को प्रारम्भ से लिखी हुई मृत्यु भी सुन्दर लगी है। भक्तजन परमात्मा का ध्यान करके भवसागर से बच गए हैं॥ ३॥ दुनिया उत्पन्न होती है और नाश हो जाती है और सदैव ही दुनिया का विनाश होता रहता है लेकिन गुरु द्वारा इन्सान स्थिर हो जाता है। गुरु नाम-मंत्र मनुष्य के मन में दृढ़ करता है और उसके मुख में हरिनामामृत दोहन करता है। सो वह हरिनामामृत का पान करता है। प्रभु के अमर कर देने वाले अमृत रस को पाकर मृत प्राणी जीवित हो जाता है और वह फिर दोबारा नहीं मरता। हरि-परमेश्वर के नाम से मनुष्य अमर पद प्राप्त कर लेता है और हरि के नाम में ही समा जाता है। परमात्मा का नाम ही नानक का जीवनाधार एवं टेक है और नाम के बिना उसका कोई भी सहारा नहीं। जगत जन्मता एवं नाश हो जाता है और सदैव ही उसका विनाश होता रहता है। गुरु के सान्निध्य में रह कर इन्सान सदैव स्थिर हो जाता है॥ ४॥ ६॥ १३॥

आसा महला ४ छंत ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥ गोविंदु अलख अपारु अपरंपरु आपु आपणा जाणै ॥ किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥ जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ १ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ घट अंतरि पारब्रहमु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥ तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ २ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ पुरखु सुजानु तूं परधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तेरा सबदु सभु तूंहै वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥ हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ ३ ॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ

जीउ ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ सभ सबदि समावै जां तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई ॥ तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ ॥ सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

मेरा गोविन्द ही सबसे बड़ा है, वह अगम्य, अगोचर, जगत का आदि निरंजन निरंकार है। उसकी गति कही नहीं जा सकती। उसका प्रताप अपरिमित है। मेरा गोविन्द अलक्ष्य एवं अपार है। अलक्ष्य, अपार, अपरंपार गोविंद स्वयं ही अपने आपको जानता है। हे भगवान ! ये बेचारे जीव भी क्या विचार उच्चारण करें, जो तेरी व्याख्या एवं वर्णन कर सकें। जिस पर तू अपनी करुणा-दृष्टि करता है, वही गुरु द्वारा तेरे बारे में कुछ विचार करता है। मेरा गोविन्द ही सबसे बड़ा है, वह अगम्य, अगोचर, जगत का आदि, निरंजन निरंकार है॥ १॥ हे मालिक ! तू आदिपुरुष, अपरंपार एवं जगत का रचयिता है और तेरा पार पाया नहीं जा सकता। हे प्रभु ! तू कण-कण एवं प्रत्येक शरीर में निरंतर मौजूद है। तू सब में समाया रहता है। वह परब्रह्म-परमेश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है, जिसका अंत नहीं पाया जा सकता। उसका कोई रूप एवं रेखा नहीं। वह अदृष्ट एवं अगोचर है। गुरु ने जिस व्यक्ति को अलक्ष्य परमात्मा दिखा दिया है, वह दिन-रात सदा आनंदमय रहता है और सहज ही उसके नाम में समाया रहता है। हे मालिक ! तू आदिपुरुष, अपरंपार एवं जगत का रचयिता है और तेरा पार नहीं पाया जा सकता॥ २॥ हे श्रीहरि ! तू सदैव सत्य परमेश्वर है एवं सदा अविनाशी है। तू ही गुणों का भण्डार है। हे हरि-प्रभु ! सारे विश्व में एक तू ही है और तेरे समान अन्य कोई नहीं है। तू आप ही एक चतुर पुरुष है। हे चतुर पुरुष ! विश्व में तू ही प्रधान है और तेरे जैसा अन्य कोई बड़ा नहीं। हे प्रभु ! तेरा ही शब्द (हुक्म) सक्रिय है। तू सर्वव्यापक है। जो कुछ तू स्वयं करता है वही होता है। वह एक परमात्मा ही सबमें समाया हुआ है। गुरुमुख बनकर ही हरि का नाम जाना जाता है। हे भगवान ! तू सदैव सत्य परमेश्वर है जो सदा अविनाशी है। एक तू ही गुणों का भण्डार है॥ ३॥ हे दुनिया बनाने वाले ! हर जगह तू ही है। संसार में चारों ओर तेरा ही प्रताप है। जैसे तुझे भाता है, वैसे ही दुनिया को चलाते हो। जैसे तुम्हें स्वयं पसंद है, वैसे ही तुम सृष्टि को चलाते हो। सभी जीव तेरे शब्द में ही समाए हुए हैं। यदि तुझे अच्छा लग जाए तो सभी तेरे शब्द में समा जाते हैं। मनुष्य तेरे शब्द द्वारा ही बड़ाई पा लेता है। गुरुमुख बनकर ही मनुष्य बुद्धि प्राप्त करता है और अपना अहंकार मिटा कर प्रभु में समाया रहता है। हे प्रभु ! गुरुमुख बनकर ही तेरा अगोचर शब्द प्राप्त होता है। हे नानक ! मनुष्य नाम में समाया रहता है। हे विश्व को पैदा करने वाले ! सृष्टि में चारों ओर तेरा ही प्रताप है। जैसे तुझे मंजूर है, वैसे ही तू सृष्टि को चलाता है॥ ४॥ ७॥ १४॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥ हरि अम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥ जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥ १ ॥ हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥ २ ॥ हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥ ३ ॥ दीन दइआल सुणि बेनती

हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥

हरि के नामामृत से मेरे नेत्र भीग गए हैं और मेरा मन उसके प्रेम रंग में रंगा हुआ है। मेरे राम ने मेरे मन को कसौटी पर परखा है और यह शुद्ध कंचन बन गया है। गुरुमुख बनकर मेरा मन-तन प्रभु के प्रेम में भीग कर गहरा लाल हो गया है। नानक प्रभु की सुगन्धि में सुगन्धित हो गया है और उसका जन्म धन्य एवं सम्पूर्ण हो गया है॥ १॥ हरि की प्रेम वाणी का तीक्ष्ण बाण मेरे हृदय को लगा है। जिसे प्रेम की पीड़ा सताती है, वही जानता है कि इसे कैसे सहन किया जाना चाहिए। जो अपने अहंत्व को मारता है और मोह से अलग होकर जीवन व्यतीत करता है, वही जीवन्मुक्त कहा जाता है। हे हरि! नानक को सतिगुरु से मिला दीजिए चूंकि वह विषम संसार-सागर से पार हो जाए॥ २॥ हम मूर्ख एवं अज्ञानी तेरी शरण आए हैं। हे रंगीले गोविन्द ! हमें मिलो। पूर्ण गुरु के द्वारा हरि पाया जा सकता है। इसलिए मैं गुरु से हरि की भक्ति ही माँगता हूँ। मेरा मन एवं तन गुरु के शब्द से खिल गए हैं और मैं अनंत लहरों वाले प्रभु का सुमिरन करता हूँ। संतजनों से मिलकर नानक को सुसंगति में प्रभु की प्राप्ति हुई है॥ ३॥ हे दीनदयालु ! हे जगत के बादशाह ! मेरी विनती सुनो। मैं हरि-नाम की शरण माँगता हूँ। मैंने हरि-नाम अपने मुँह में डाल लिया है अर्थात् मैं अपने मुँह से हरि-नाम ही जपता रहता हूँ। भक्तवत्सल होना हरि का प्रारम्भ से ही विरद् है। हरि ने मेरी लाज रख ली है। नानक हरि की शरण में आ गया है और हरि-नाम ने उसे भवसागर से तार दिया है॥ ४॥ ८॥ १५॥

आसा महला ४ ॥ गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥ १ ॥ पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥ २ ॥ गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु वैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥ ३ ॥ गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे ॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥

गुरुमुख बनकर खोजते-खोजते मैंने हरि सज्जन ढूँढ लिया है। मेरी कंचन काया के कोटगढ़ में हरि-प्रभु प्रगट हुआ है। हरि-परमेश्वर एक हीरा एवं रत्न है, जिससे मेरा मन एवं तन बिंध गया है। हे नानक ! आदि से अहोभाग्य के कारण मैंने हरि को पा लिया है। मैं उसके अमृत रस में भीग गया हूँ॥ १॥ मैं सुन्दर कमसिन नारी नित्य खड़ी अपने प्रभु के पास जाने का मार्ग पूछती हूँ। हे गुरु ! मुझे हरि का नाम याद कराते रहो, जिससे मैं हरि के मार्ग पर चल सकूँ। मेरे मन एवं तन को प्रभु-नाम का ही आधार है और मैंने अहंकार के विष को जला दिया है। हे हरि ! नानक को सच्चे गुरु से मिला दो, चूंकि जिसे भी ईश्वर मिला है, गुरु के माध्यम से ही मिला है॥ २॥ हे प्रियतम प्रभु ! गुरु के द्वारा मुझे आकर मिलो क्योंकि मैं चिरकाल से तुझ से बिछुड़ा हुआ हूँ। मेरा तन एवं मन बहुत वैराग्यवान हो गया है और मेरे नेत्र हरि के रस से भीगे हुए हैं। हे गुरुदेव ! मुझे प्रियतम हरि-प्रभु के बारे में बता दो, ताकि उससे मिलकर मेरा मन प्रसन्न हो जाए।

हे नानक! मुझ मूर्ख को हरि ने अपने नाम-सुमिरन के कार्य में लगा दिया है॥ ३॥ गुरु का शरीर हरि-नामामृत से भीगा हुआ है और उसने नामामृत मुझ पर छिड़क दिया है। जिन लोगों को अपने मन में गुरु की वाणी अच्छी लगती है, वे अमृत का निरन्तर पान करते हैं। गुरु की कृपा-दृष्टि से मैंने प्रभु को पा लिया है और अब जन्म-मरण के धक्के नहीं लगेंगे। प्रभु का सेवक परमेश्वर का रूप बन गया है। हे नानक! प्रभु एवं उसका सेवक एक रूप ही हैं॥ ४॥ ६॥ १६॥

आसा महला ४ ॥ हरि अंम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥ १ ॥ सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भांडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भांडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥ २ ॥ हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥ ३ ॥ जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि कांढिआ हरि पैज रखाए ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥

गुरु सतिगुरु के पास अमृतमयी हरि-भक्ति का भण्डार विद्यमान है। गुरु सतिगुरु सच्चा साहूकार है, वही अपने सिक्खों को हरि-नाम रूपी पूँजी प्रदान करता है। व्यापारी सिक्ख एवं उसका व्यापार धन्य-धन्य है। गुरु साहूकार को शाबाश है। हे नानक! गुरु को उन्होंने ही पाया है, जिनके मस्तक पर आदि से ही किस्मत का लेख लिखा होता है॥ १॥ हे मेरे मालिक! एक तू ही हमारा सच्चा साहूकार है। समूचा जगत तेरा व्यापारी है। हे प्रभु! सभी जीव रूपी बर्तन तेरे द्वारा ही उत्पादित हैं। इनके भीतर तेरी ही आत्मा व्यापक है। जिस वस्तु को तुम बर्तन में डालते हो, केवल वही बाहर निकलती है अर्थात् जो पदार्थ तुम शरीरों में डालते हो, वही प्रगट होता है। कोई जीव बेचारा क्या कर सकता है? हे हरि! नानक को भी तूने अपनी भक्ति का भण्डार प्रदान किया है॥ २॥ हे स्वामी! हम तेरे कौन-से गुणों का वर्णन कर सकते हैं? हे राजन प्रभु! तू तो अपरंपार है। मैं रात-दिन हरि-नाम की सराहना करता हूँ केवल यही मेरी आशा एवं आधार है। हे प्रभु! हम मूर्ख हैं और कुछ भी नहीं जानते। हम तुम्हारा अन्त किस तरह पा सकते हैं? नानक हरि का दास है, वास्तव में हरि के दासों का पनिहार है॥ ३॥ हे प्रभु! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही हमें बचा लीजिए। हम तेरी शरण में आए हैं। हम दिन-रात जीवन-पथ से भ्रष्ट होकर अपने जीवन को नष्ट कर रहे हैं। हे हरि! हमारी मान प्रतिष्ठा रखें। हम तेरी संतान हैं तुम हमारे गुरु एवं पिता हो, हमें सुमति देकर सन्मार्ग लगाओ। हे प्रभु! नानक हरि का दास कहलाता है, इसलिए उसकी मान-प्रतिष्ठा रखो॥ ४॥ १०॥ १७॥

आसा महला ४ ॥ जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥ १ ॥ जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै

भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥ २ ॥ तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥ ३ ॥ कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥ ४ ॥ ११॥ १८॥

जिन लोगों के मस्तक पर प्रारम्भ से ही हरि ने लेख लिखा है, उन्हें सच्चा गुरु मिल गया है। गुरु ने उनके अज्ञान के अन्धेरे को मिटा दिया है और उनके अन्तर्मन में गुरु ज्ञान का दीपक प्रज्वलित हो गया है। उन्होंने हरि-नाम रूपी रत्न ढूँढ लिया है और वे दोबारा जन्म-मरण के चक्र में नहीं भटकते। नानक ने नाम की आराधना की है और आराधना द्वारा वह हरि-प्रभु से मिल गया है॥ १॥ जिन्होंने ऐसे हरि के नाम को याद नहीं किया, वे इस जगत में क्यों आए हैं? यह मानव-जन्म बड़ा दुर्लभ है और प्रभु-नाम के बिना यह व्यर्थ ही चला जाता है। अब जीवन रूपी योग्य ऋतु में मनुष्य हरि का नाम नहीं बोता तदुपरांत आगे (परलोक में) भूखा क्या खाएगा? मनमुख मनुष्य बार-बार जन्म लेते हैं, हे नानक! परमात्मा को यही मंजूर है ॥ २॥ हे हरि! तू समस्त जीवों का स्वामी है और यह सब कुछ तेरा ही है। तूने ही सब को पैदा किया है। जीवों के वश में कुछ भी नहीं, जैसे तुम चलाते हो वैसे ही वे जीवन-आचरण करते हैं। हे मेरे प्रिय प्रभु! वही जीव तुझसे मिलते हैं, जिन्हें तुम स्वयं मिलाते हो और जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं। नानक की सतिगुरु से भेंट हो गई है, जिसने हरि के नाम द्वारा उसे भवसागर से पार कर दिया है॥ ३॥ कुछ लोग अनेक प्रकार से राग गाकर, शंख बजाकर एवं वेदों के अध्ययन द्वारा भगवान का गुणगान करते हैं लेकिन इन विधियों से परमात्मा प्रसन्न नहीं होता। जिनके मन में छल-कपट एवं विकार हैं, उनके विलाप करने का क्या अभिप्राय है? विश्व का रचयिता परमात्मा सब कुछ जानता है चाहे मनुष्य अपने पाप छिपाने का कितना ही प्रयास करता रहे। हे नानक! जिन गुरुमुखों का हृदय शुद्ध है, वे हरि-भक्ति करके हरि को पा लेते हैं॥ ४॥ ११॥ १८॥

आसा महला ४ ॥ जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥ १ ॥ जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुरसिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥ २ ॥ गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥ ३ ॥ गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥

जिनके मन में भगवान का प्यार है, वे लोग सुघड़ एवं बुद्धिमान हैं। यदि वे बाहर से बोलने में भूल चूक भी करते हैं तो भी वे भगवान को बहुत अच्छे लगते हैं। भगवान के संतजनों का उसके

सिवाय दूसरा कोई स्थान नहीं। प्रभु ही मानविहीन लोगों का सम्मान है। हे नानक! हरि का नाम ही संतों भक्तों का सहारा है और उसका बल ही उन्हें बलवान बनाता है॥ १॥ जहाँ भी जाकर मेरा सच्चा गुरु विराजमान होता है, वह स्थान अति सुन्दर है। गुरु-सिक्ख उस स्थान को ढूंढ लेते हैं और उसकी धूलि लेकर अपने माथे पर लगाते हैं। जो गुरु के सिक्ख हरि-नाम का ध्यान करते हैं, उनकी सेवा सफल हो जाती है। हे नानक! जिन्होंने सतिगुरु की पूजा की है, प्रभु उनकी पूजा दुनिया से करवाता है॥ २॥ गुरु-सिक्खों के मन में परमात्मा के नाम से ही प्रेम है। हे प्रभु! वह तुझे प्रेम करते हैं। अपने हाथों से वे पूर्ण सच्चे गुरु की सेवा करते हैं और उनकी अहंत्व की भूख दूर हो जाती है। गुरु-सिक्खों की तमाम भूख दूर हो जाती है, उनकी संगति करके बहुत सारे लोग (नाम-स्मरण की) पेट-पूजा करते हैं। नानक ने हरि के नाम का पुण्य बोया है और दोबारा हरि के नाम के पुण्य-फल में कमी नहीं आती॥ ३॥ हे प्रभु! गुरु के सिक्खों के मन में शुभकामनाएँ हैं, जिन्होंने मेरे सच्चे गुरु के दर्शन प्राप्त किए हैं। यदि कोई उन्हें हरि-नाम की कथा सुनाए तो वह गुरु के सिक्खों के मन को मीठा लगता है। गुरु के सिक्ख जिन पर मेरा सच्चा गुरु सुप्रसन्न है, प्रभु के दरबार में उन्हें सम्मान की पोशाक पहनाई जाती है। नानक खुद भी हरि का रूप बन गया है, चूंकि उसके मन में हरि बस गया है॥ ४॥ १२॥ १६॥

आसा महला ४ ॥ जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजे ॥ तिस की तिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥ १ ॥ जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥ २ ॥ जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥ ३ ॥ हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

जिन्होंने मेरे पूर्ण सतिगुरु से भेंट की है, गुरु उनके मन में हरि का नाम दृढ़ कर देता है। जो लोग हरि-नाम का ध्यान करते हैं, उनकी तृष्णा एवं माया की तमाम भूख दूर हो जाती है। जो पुरुष हरि-नाम को याद करते हैं, उनके समीप यमदूत भी नहीं आता। हे भगवान! नानक पर कृपा करो, ताकि वह नित्य हरि नाम का जाप करता रहे और हरि नाम ही उसका उद्धार करता है॥ १॥ जो मनुष्य गुरुमुख बनकर नाम का ध्यान करते हैं, उन्हें दोबारा जीवन मार्ग में कभी विघ्न नहीं आता। जिन्होंने महापुरुष सच्चे गुरु को प्रसन्न कर लिया है, उनकी सारी दुनिया पूजा करती है। जिन्होंने अपने प्यारे सतिगुरु की सेवा की है, वे सदा सुखी रहते हैं। हे नानक ! जिन्हें सच्चा गुरु मिल गया है, उन्हें ही भगवान मिला है॥ २॥ जिन गुरुमुखों के हृदय में भगवान का प्रेम है, परमात्मा खुद ही उनका रखवाला है। कोई मनुष्य उनकी कैसे निन्दा कर सकता है, जिन्हें प्रभु का नाम प्यारा लगता है। जिनका मन प्रभु के साथ रम जाता है, दुष्ट लोग उनकी निन्दा चारों ओर करने के लिए टक्करें मारते रहते हैं। नानक ने नाम का ध्यान किया है, भगवान खुद उसका रखवाला है॥ ३॥ ईश्वर ने प्रत्येक युग में अपने भक्त उत्पन्न किए हैं और संकट के समय उनकी रक्षा करता आ रहा है। दुष्ट हिरण्यकशिपु का हरि ने संहार कर दिया और अपने

भक्त प्रहलाद की रक्षा की। अहंकारी एवं निन्दकों को प्रभु ने पीठ देकर अपने भक्त नामदेव को दर्शन दिए। नानक ने भी ऐसे अपने भगवान की भक्ति की है कि अंतकाल वह उसे भी बचा लेगा॥ ४॥ १३॥ २०॥

आसा महला ४ छंत घरु ५

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥ १ ॥ मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ मनि त्रिसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥ नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥ २ ॥ पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चात्रिक बूंद जिवै ॥ मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै ॥ तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥ हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥ ३ ॥ चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आंगणि धूड़ि लुते ॥ मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥ गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥ ४ ॥ हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥ सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ ॥ हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥ ५ ॥ पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥ हरि दातड़े मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥ गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखु सा ॥ ६ ॥ १४ ॥ २१ ॥

हे मेरे प्यारे परदेसी मन! तू अपने घर में लौट आ। हे मेरे प्यारे! हरि रूपी गुरु से मिल चूंकि प्रभु तेरे चित्त में बस जाए। हे मेरे प्यारे! यदि प्रभु तुझ पर कृपा करे तो तू उसके प्रेम में मौज कर। नानक का कथन है कि जब गुरु प्रसन्न हो जाता है तो वह ईश्वर से मिला देता है॥ १॥ हे मेरे प्यारे! मैंने अपने प्रभु के प्रेम का स्वाद नहीं चखा क्योंकि मेरे मन की तृष्णा नहीं बुझी है। हे मेरे प्रियतम! तुझे देखने की आशा मुझे सदैव लगी रहती है। नित्य यौवन बीतता जा रहा है और मृत्यु मेरी सांसें चुरा रही है। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे! वही जीव-स्त्री भाग्यवान बनती है, उसके माथे पर भाग्य-मणि चमकती है जो प्रभु को अपने हृदय में बसाए रखती है॥ २॥ हे मेरे प्यारे! मेरी आँखें अपने प्रियतम के प्रेम में यूं रंगी हुई हैं जैसे पपीहा स्वाति बूँद हेतु उत्सुक होता देखता है। हे प्यारे! हरि-नाम रूपी स्वाति बूँदों का पान करने से मेरा मन शीतल हो गया है। हे मेरे प्यारे! मेरे तन में उपजा हुआ जुदाई का दर्द मुझे जगाए रखता है और किसी तरह भी मुझे नींद नहीं आती। हे मेरे प्यारे! गुरु को प्रेम करने से नानक ने हरि सज्जन ढूँढ लिया है॥ ३॥ हे मेरे प्यारे! चैत्र के माह में बसंत की सुहावनी ऋतु आ गई है। लेकिन प्रियतम प्रभु के बिना मेरे हृदय आंगन में धूल ही उड़ती है। मेरे उदास मन में अभी भी आशा कायम है और मेरे दोनों नेत्र उस प्रियतम का इंतजार कर रहे हैं। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे! अब गुरु को देखकर मेरा मन यूं प्रसन्न हो गया है जैसे बालक अपनी माता को देखकर खिल जाता है॥ ४॥ हे मेरे प्यारे! मेरे सच्चे गुरु ने मुझे हरि की कथा-कहानियाँ सुनाई हैं। हे मेरे प्यारे! मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने मुझे प्रभु से मिला दिया है। हे मेरे प्यारे! प्रभु ने मेरी सभी आशाएँ पूरी कर दी हैं और मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है। हे मेरे प्यारे! जब प्रभु प्रसन्न

हुआ तो नानक उसके नाम में समा गया है॥ ५॥ हे प्यारे! अपने प्रियतम प्रभु के अलावा मैं किसी दूसरे से प्रेम की खेल नहीं खेलूँगा। मैं गुरु को कैसे प्राप्त करूँ, जिसके द्वारा प्रभु के दर्शन कर सकता हूँ? हे दाता हरि! मुझे गुरु से मिला दे। केवल गुरु के द्वारा ही मैं तुझसे मिल सकता हूँ। नानक का कथन है कि हे मेरे प्यारे! मुझे गुरु प्राप्त हो गया है, क्योंकि आदि से ही माथे पर ऐसा लेख लिखा हुआ था॥ ६॥ १४॥ २१॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥ अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥ चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम ॥ हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइआ ॥ ग्रिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ ॥ सीतल आघाणे अंम्रित बाणे साजन संत बसीठा ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥ १ ॥ सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥ पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥ संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ॥ आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा ॥ अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥ २ ॥ नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥ सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ॥ नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥ गणत मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥ गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥ कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई ॥ ३ ॥ सरसिअड़े सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ॥ बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥ गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भरम गड़ा ॥ पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥ सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥ कहु नानक जां वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥ ४ ॥ १ ॥

मेरी अन्तरात्मा में आनंद ही आनंद हो गया है क्योंकि मैंने भगवान के दर्शन कर लिए हैं। मैंने मीठा हरि रस चख लिया है। मीठा हरि रस मेरे मन में बरसा है जिससे सतिगुरु की प्रसन्नता द्वारा सहज भाव शांति मिल गई है। मेरा हृदय-घर अब बस गया है और मेरी ज्ञानेन्द्रियाँ मंगल गीत गा रही हैं क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार - पाँचों ही दुष्ट विकार भाग गए हैं। अमृतमयी वाणी से मैं शीतल एवं तृप्त हो गया हूँ, साजन संत गुरुदेव मेरे वकील बने हैं। हे नानक! मेरा मन ईश्वर के साथ लीन हो गया है और अपने नयनों से उसके दर्शन कर लिए हैं॥ १॥ हे राम! मेरे मन के सुन्दर द्वार शोभायमान हो गए हैं। मेरे प्यारे संत अतिथि बने हुए हैं। जब मैं उन्हें प्रणाम करके उनकी सेवा में जुट गया तो उन्होंने मेरा विवाह कार्य सम्पूर्ण कर दिया। प्रभु स्वयं ही बराती है, स्वयं ही कन्या पक्ष, स्वयं ही स्वामी और स्वयं ही देवा है। वह अपना कार्य स्वयं ही संवारता है और स्वयं ही सृष्टि को सहारा प्रदान करता है। हे नानक! पति-परमेश्वर मेरे हृदय-घर में विराजमान हो गया है और हृदय-घर के सुन्दर द्वार शोभा से युक्त हुए हैं॥ २॥ हे राम! मेरे हृदय घर में विश्व की नवनिधियाँ आ गई हैं। राम नाम का ध्यान करने से मैंने सब कुछ प्राप्त कर लिया है। सहज-स्वभाव से नाम का ध्यान करने से गोविन्द सदैव के लिए सखा बन गया है। उसकी तमाम गणनाएँ मिट गई हैं, मन की दुविधा भी दूर हो गई है और उसके मन को कभी चिन्ता नहीं आती। जब गोविन्द प्रगट हो जाता है तो अनहद नाद बजता है और आश्चर्यजनक शोभा का दृश्य बन जाता है। हे नानक! जब मेरा प्रियतम-प्रभु मेरे साथ है तो मुझे विश्व की नवनिधियाँ प्राप्त हो गई हैं॥ ३॥ हे राम! मेरे सभी भाई एवं मित्र सुप्रसन्न हो गए हैं। गुरु से मिलकर मैंने विषम जगत रूपी अखाड़ा जीत लिया है। मैंने यह जगत रूपी अखाड़ा गुरु

से मिलकर जीत लिया है। जब मैंने परमात्मा का नाम याद किया तो मेरे मन में बनी भ्रम के किले की दीवार टूट गई। मुझे अनेक खजानों की निधि (दौलत) प्राप्त हो गई है और प्रभु स्वयं मेरी सहायता के लिए खड़ा हुआ है। वही पुरुष श्रेष्ठ ज्ञानी एवं सर्वोच्च है, जिसे प्रभु ने अपना बना लिया है। हे नानक ! जब स्वामी पक्षधर हो गया है तो उसके सभी मित्र एवं भाई भी खुश हो गए हैं॥ ४॥ १॥

आसा महला ५ ॥ अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥ सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥ सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ ॥ जपि एकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी ॥ बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥ १ ॥ हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ॥ वडभागी वडभागी सतसंगति पाई राम ॥ वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापे ॥ गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपे ॥ करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥ २ ॥ हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥ वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥ सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता ॥ घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥ गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे ॥ ३ ॥ बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥ तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम ॥ हरि धूड़ी न्हाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥ अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे ॥ मिटे दूख कलिआण कीरतन बहुड़ि जोनि न पावा ॥ बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥ ४ ॥ २ ॥

हरि की कथा अकथनीय है और वह थोडी-सी भी जानी नहीं जा सकती। देवताओं, मनुष्यों और मुनिजनों ने बड़ा सहजता से हरि-कथा का वर्णन किया है। जिन्होंने भगवान के सुन्दर चरणों से प्रेम लगाया है, उन्होंने सहज ही अमृत वाणी का बखान किया है। एक अलक्ष्य एवं निरंजन प्रभु का जाप करने से उन्होंने मनोवांछित फल पा लिया है। अभिमान, मोह, द्वैतभाव एवं विकारों को त्याग कर वे ज्योति ज्योत समा गए हैं। नानक प्रार्थना करता है कि गुरु की कृपा से वे सर्वदा हरि रंग का आनंद लेते रहते हैं॥ १॥ हरि के संतजन ही मेरे सज्जन, मित्र एवं साथी हैं। हे राम ! बड़े सौभाग्य से मुझे सत्संगति प्राप्त हुई है। अहोभाग्य से मुझे सत्संगति मिली है और मैंने प्रभु का नाम सुमिरन किया है तथा मेरे दुःख एवं संताप निवृत्त हो गए हैं। मैं गुरु के चरणों से लगा हूँ, जिससे मेरा भ्रम एवं भय भाग गए हैं। परमात्मा ने स्वयं मेरा अहंत्व मिटा दिया है। प्रभु ने कृपा-दृष्टि करके मुझे अपने साथ मिला लिया है और अब मैं न जुदा होऊँगा और न ही कहीं जाऊँगा। नानक वन्दना करता है कि हे हरि ! मैं तेरा दास हूँ और सदा अपनी शरण में रखो॥ २॥ हे हरि ! तेरे द्वार पर तेरे प्यारे भक्त शोभा देते हैं। हे राम ! मैं उन (भक्तों) पर सदा बलिहारी जाता हूँ। मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ और सदा उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिन से भेंट करने से मैंने भगवान को जान लिया है। पूर्ण अकालपुरुष विधाता प्रत्येक हृदय में समाया हुआ है। जिसने पूर्ण गुरु को पाकर परमात्मा का नाम स्मरण किया है, वह अपना जीवन जुए में नहीं हारता। नानक प्रार्थना करता है-हे प्रभु ! मैंने तेरी शरण ली है, कृपा करके मेरी रक्षा करो॥ ३॥ हे राम ! तेरे गुण बेअंत हैं। फिर उन में से कौन-से गुणों का गायन करूँ ? तेरे चरण एवं चरण-धूलि मुझे सौभाग्य से प्राप्त हुई है। हरि की चरण-धूलि में स्नान करने से पापों की मैल धुल जाती है और जन्म-मरण

का दुःख समाप्त हो जाता है। भीतर एवं बाहर परमेश्वर सदा जीव के साथ रहता है। प्रभु का कीर्तन करने से कल्याण प्राप्त होता है, दुःख मिट जाते हैं और मनुष्य दोबारा योनियों के चक्र में नहीं आता। नानक प्रार्थना करता है कि गुरु की शरण में आने से मनुष्य का संसार सागर से उद्धार हो जाता है और अपने प्रभु को वह प्रिय लगने लगता है॥ ४॥ २॥

आसा छंत महला ५ घरु ४ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे ॥ मिलि संतसंगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥ हरि घटि घटे डीठा अंम्रितो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥ गुण निधि गाइआ सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥ प्रिउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा ॥ हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥ १ ॥ जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥ गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥ जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीए लड़ि लाए ॥ हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाए ॥ प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥ जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥ २ ॥ चात्रिकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे ॥ सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ ॥ हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ ॥ प्रभु पुरखु जगजीवनो संत रसु पीवनो जपि भरम मोह दुख डारा ॥ चात्रिकु जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ॥ ३ ॥ मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥ ढाठी भीति भरंम की भेटत गुरु सूरा राम राजे ॥ पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला ॥ सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥ हरि मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

मेरा मन हरि के चरण-कमलों में बिंध गया है, इसलिए प्रभु के अलावा मुझे अन्य कुछ भी मीठा (अच्छा) नहीं लगता। संतों की संगति में मिलकर मैंने हरि की आराधना की है और सबके हृदय में प्रभु के दर्शन करता हूँ। मैं हरि को प्रत्येक हृदय में देखता हूँ और उसका नामामृत मुझ पर बरस गया है तथा जन्म-मरण का दुःख मिट गया है। गुणों के भण्डार परमात्मा का गुणगान करने से मेरे सभी दुःख नाश हो गए हैं और मेरी अहंत्व की गांठ खुल गई है। मेरा प्रिय प्रभु अपने सहज-स्वभाव से मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाता। मेरे मन को मजीठ की भाँति प्रभु का गहरा रंग लग गया है। हे नानक ! हरि के चरण-कमलों ने मेरा मन बिंध दिया है और उसे अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता॥ १॥ जैसे मछली जल में मस्त रहती है, वैसे ही मैं राम रस से मस्त हुआ हूँ। पूर्ण गुरु ने मुझे उपदेश दिया है और मैं राम से प्रेम करता हूँ जिसने मुझे जीवन-मुक्ति की देन प्रदान की है। जिन मनुष्यों को अंतर्यामी स्वामी अपने दामन के साथ लगा लेता है, वे जीवन में मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। हरि अपना रत्न जैसा अमूल्य नाम अपने भक्तों के हृदय में प्रगट कर देता है। वह सब जीवों में समाया हुआ है और अपने भक्तों को छोड़कर कहीं नहीं जाता। जगत का स्वामी प्रभु सुन्दर स्वरूप एवं बुद्धिमान है, उसकी देन कभी समाप्त नहीं होती। हे नानक ! जैसे मछली जल में लीन हुई है वैसे ही मैं प्रभु में समाया हुआ हूँ॥ २॥ जैसे चातक स्वाति-बूँद की लालसा करता है वैसे ही हरि मेरे प्राणों का आधार है। प्रभु मुझे धन-भण्डार, पुत्र, भाई एवं मित्र सबसे प्रिय है। सबसे प्यारा एवं निराला आदिपुरुष मुझे सबसे प्रिय लगता है। उसकी गति

कोई भी मनुष्य जान नहीं सकता। प्रत्येक श्वास एवं ग्रास भर के लिए भी मैं हरि को विस्मृत नहीं करता। गुरु के शब्द द्वारा मैं उसके प्रेम का आनंद प्राप्त करता हूँ। परमपुरुष प्रभु जगत का जीवन है। संतजन हरि-रस का पान करते हैं और उसका सुमिरन करके अपना भ्रम, मोह एवं दुःख दूर कर लेते हैं। जैसे चातक स्वाति-बूँद की अभिलाषा करता है वैसे ही नानक को हरि प्यारा लगता है॥ ३॥ अपने नारायण से मिलकर मेरे मनोरथ पूरे हो गए हैं। शूरवीर गुरु को मिलने से भ्रम की दीवार ध्वस्त हो गई है। पूर्ण गुरु उन्हें ही मिला है, जिन्होंने अपने पूर्व जन्म के कर्मों अनुसार अपनी तकदीर में सर्व निधियाँ देने वाले दीन दयालु परमात्मा से शुभ लेख लिखाए हैं। सुन्दर गुरु गोपाल प्रभु ही सृष्टि के आदि, मध्य एवं अन्त तक विद्यमान है। साधुओं की चरण-धूलि पतितों को पावन कर देती है और बड़ा सुख एवं सहज आनंद प्रदान करती है। नानक को नारायण मिल गया है और उसका मनोरथ पूरा हो गया है॥ ४॥ १॥ ३॥

आसा महला ५ छंत घरु ६

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोकु ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगात ॥ १ ॥ छंतु ॥ जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे ॥ अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै ॥ खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ ॥ जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साधसंगि न डरपीऐ ॥ करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे ॥ कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥ १ ॥ जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा नेहु करेहु ॥ जैसी चात्रिक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥ हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी ॥ मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥ गुर सुप्रसंने मिलु नाह विछुंने धन देदी साचु सनेहा ॥ कहु नानक छंत अनंत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥ २ ॥ चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ ॥ कोकिल अंब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ ॥ हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥ अब किआ रंगु लाइओ मोहु रचाइओ नागे आवण जावणिआ ॥ थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीऐ ॥ कहु नानक छंत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥ ३ ॥ निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥ जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥ मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे ॥ पिरु अपना पाइआ रंगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे ॥ गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥ कहु नानक छंत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

श्लोक॥ जिन मनुष्यों पर प्रभु कृपालु हो जाता है, वे हरि-नाम ही जपते रहते हैं। हे नानक! साधसंगत में मिलने से ही उनका प्रेम राम से लगा है॥ १॥ छंद॥ हे मन! ईश्वर से ऐसा प्रेम कर, जैसा प्रेम जल का दूध से है। जब दोनों को आग पर रखा जाता है तो जल दूध को आंच नहीं आने देता। जैसे भँवरा कमल की सुगन्धि में मग्न होकर फँस जाता है तो एक क्षण भर के लिए भी इससे दूर नहीं होता। हे मन! इस तरह एक क्षण भर के लिए प्रभु के प्रेम से पीछे नहीं हटना चाहिए। अपने सारे श्रृंगार एवं रस प्रभु को अर्पण कर देने चाहिए। जहाँ दुःख सुना जाता है और यम का मार्ग बताया जाता है, वहाँ सत्संगति के प्रभाव से कोई भय प्रभावित नहीं करता।

गोविंद की कीर्ति का गुणगान करते रहो, इससे सब दुख एवं पाप दूर हो जाएँगे। नानक का कथन है कि हे मन! गोविन्द की महिमा के गीत गाता रह और हरि से प्रेम बनाए रख। हे मन! ऐसा प्रेम हरि से बनाकर रख॥ १॥ जैसे मछली जल के बिना धैर्य नहीं करती, हे मन! वैसे ही प्रभु से प्रेम कायम कर। जैसे चातक को स्वाति बूँद की प्यास रहती है और प्रत्येक क्षण कहता है, हे सुन्दर मेघ! वर्षा कर। वैसे ही तू अपने हरि से प्रीति कर। अपना यह मन उसको अर्पित कर देना चाहिए और अपना चित्त मुरारी प्रभु में लगाना चाहिए। हे मन! अहंकार नहीं करना चाहिए, प्रभु की शरण में जाना चाहिए और उसके दर्शनों पर बलिहारी होना चाहिए। जब गुरु सुप्रसन्न होता है तो जीव-स्त्री अपने सच्चे प्रेम का संदेश भेजती है और उसका बिछुड़ा हुआ प्रभु-पति आकर उसे मिल जाता है। नानक का कथन है कि हे मेरे मन! तू अनंत ठाकुर की महिमा के गीत गायन कर, तू हरि से प्रेम कर तथा उससे तू ऐसा स्नेह कर॥ २॥ चकवी का सूर्य से इतना स्नेह है कि वह रात को उसे याद करती रहती है और उसे अत्यंत आशा बनी रहती है कि कब दिन निकलेगा और कब सूर्य के दर्शन करेगी। कोयल का आम से प्रेम है और वह मीठा गाती है। हे मेरे मन! इस तरह तू भी हरि से प्रेम कर और प्रेम का अहंकार मत कर क्योंकि हम सभी एक रात्रि के अतिथि हैं। अब तुम कौन-सी रंगरलियों में फँस कर मोह में लीन हो गए हो? क्योंकि जीव नग्न ही दुनिया में आता और जाता है। साधु की शरण लेने एवं उसके चरणों पर नतमस्तक होने से सांसारिक मोह जो तुम अब अनुभव करते हो, वह मिट जाएगा और तुम स्थिर अनुभव करोगे। नानक का कथन है कि हे मन! दयालु परमात्मा की महिमा के गीत गायन कर और हरि से प्रीति लगा, अन्यथा तुम हरि रूपी सूर्य को कैसे देखोगे?॥ ३॥ हे मन! तू प्रभु से ऐसी प्रीति कर, जैसे रात को हिरण नाद सुनकर अपना हृदय नाद को अर्पित कर देता है। जैसे अपने पति के प्रेम में लीन हुई पत्नी अपने प्रियतम की सेवा करती है, वैसे ही तू यह मन अपने प्रिय-प्रभु को अर्पण कर दे। अपना मन अपने प्रियतम को दे दे और उसके साथ रमण कर। इस तरह तुझे समस्त खुशियाँ एवं आनंद प्राप्त हो जाएगा। मैंने अपने प्रियतम प्रभु को पा लिया है और प्रेम का लाल रंग बना लिया है तथा चिरकाल से अपने मित्र हरि को मिला हूँ। जब गुरुदेव मध्यस्थ बने तो मैंने अपने नेत्रों से प्रियतम-प्रभु के दर्शन कर लिए तथा दूसरा कोई भी मुझे मेरे प्रियतम जैसा दिखाई नहीं देता। नानक का कथन है कि हे मन! तू दयालु एवं मोहन प्रभु की महिमा के गीत गाता रह, हरि के चरण पकड़ तथा अपने हृदय में ऐसा प्रेम बनाकर रख॥ ४॥ १॥ ४॥

आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥ नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥ छंत ॥ जा कउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे ॥ ब्रहमे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥ जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥ करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥ मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते ॥ दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साधसंगति होइ गते ॥ १ ॥ कोटि बिसन अवतार संकर जटाधार ॥ चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥ अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥ सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किंनर गुण भनी ॥ कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार ॥ अनाथ नाथ दइआल नानक साधसंगति मिलि उधारु ॥ २ ॥ कोटि देवी जा कउ सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥ गुपत प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए ॥ सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए ॥ सिम्रिति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥ पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥ ३ ॥ जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥ अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा

॥ सरब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥ वसि भगत थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥ इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

श्लोक॥ मैं ईश्वर को पाने के लिए वन-वन में भटकती और खोजती हुई बहुत थक गई हूँ। हे नानक! जब साधु से भेंट हुई तो मैंने अपने मन में ही भगवान को पा लिया॥ १॥ छंद॥ जिस प्रभु को असंख्य मुनि एवं अनेक तपस्वी खोजते हैं। जिसकी करोड़ों ही ब्रह्मा आराधना करते और ज्ञानी जिसके नाम का जाप जपते हैं। जिसकी प्राप्ति हेतु अनेक जप, तपस्या, संयम, क्रियाएं, पूजा-अर्चना, शुद्धिकरण एवं वन्दना होती रहती है। जिस निरंजन प्रभु को मिलने हेतु लोग पृथ्वी पर रटन करते और तीर्थों पर स्नान करते हैं। हे भगवान! मनुष्य, वन, तृण, पशु-पक्षी सभी तेरी ही आराधना करते हैं। हे नानक! साधसंगति में सम्मिलित होने से वह दयालु, प्यारा गोविन्द मिल जाता है और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है॥ १॥ हे दयालु प्रभु! करोड़ों ही विष्णु अवतार एवं जटाधारी शंकर अपने मन एवं तन की अपार रुचि से तुझसे मिलने की तीव्र अभिलाषा करते हैं। हे गोविंद! तू अपरंपार, अगम्य एवं सबका ठाकुर है। तू सबमें समाया हुआ है और सबका मालिक है। देवता, सिद्धगण एवं गंधर्व सब तेरी ही आराधना करते हैं और यक्ष एवं किन्नर तेरा ही गुणगान करते रहते हैं। करोड़ों ही इन्द्र एवं अनेकों ही देवगण स्वामी का जाप एवं जय-जयकार करते हैं। हे नानक! दयालु प्रभु अनाथों का नाथ है और साधसंगति में सम्मिलित होकर ही मनुष्य का उद्धार हो सकता है॥ २॥ करोड़ों ही देवियाँ एवं धन की देवी लक्ष्मी विभिन्न प्रकार से उसकी सेवा करती हैं। गुप्त एवं प्रगट सभी जीव, पवन, पानी दिन-रात उसकी आराधना करते हैं। जिसकी नक्षत्र, चाँद एवं सूर्य वन्दना करते हैं और जिसकी स्तुति गगन एवं धरती गाते रहते हैं। जिसकी तमाम उत्पत्ति के स्रोत एवं वाणियाँ सदैव ही सुमिरन करती रहती हैं। स्मृतियाँ, पुराण, चार वेद, छःशास्त्र जिसका जाप करते रहते हैं। हे नानक! वह पतितपावन भक्तवत्सल प्रभु सत्संगति द्वारा ही मिलता है॥ ३॥ सृष्टि का जितना ज्ञान मुझे प्रभु ने प्रदान किया है, उतना मेरी जिह्वा ने वर्णन कर दिया है। मेरे ज्ञान से बाहर जो तेरी सेवा करते हैं, उनकी गणना नहीं की जा सकती। जगत का ठाकुर प्रभु अविगत, अगणित एवं अथाह है। सब जीवों में एवं बाहर प्रभु ही विद्यमान है। हे प्रभु! हम सभी भिखारी हैं और एक तू ही दाता है। तू कहीं दूर नहीं अपितु हमारे पास ही प्रत्यक्ष है। वह प्रभु अपने भक्तों के वश में है। जो प्राणी प्रभु से मिल चुके हैं, उनकी उपमा मैं किस तरह कर सकता हूँ? नानक की यही कामना है कि वह परमात्मा से यह दान एवं सम्मान प्राप्त करे कि वह अपना शीश साधुओं के चरणों पर रख दे॥ ४॥ २॥ ५॥

आसा महला ५ ॥ सलोक ॥ उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥ नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥ १ ॥ छंतु ॥ नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ॥ दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि धिआइ सो प्रभु मनि मुखी ॥ क्रिपाल दइआल रसाल गुण निधि करि दइआ सेवा लाईऐ ॥ नानकु पइअंपै चरण जंपै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ १ ॥ पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ भरम अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना ॥ गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीअलि पूरिआ ॥ इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥ अगाधि बोध समरथ सुआमी सरब का भउ भंजना ॥ नानकु पइअंपै चरण जंपै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ २ ॥ ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥ मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥ हरि चरन कारन करन सुआमी

पतित उधरन हरि हरे ॥ सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥ आदि अंति बेअंत खोजहि सुनी उधरन संतसंग बिधे ॥ नानकु पइअंपै चरन जंपै ओट गही गोपाल दइआल क्रिपा निधे ॥ ३ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥ जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइआ ॥ प्रभि आपि लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिआ ॥ आनंद हरि जस महा मंगल सरब दूख विसारिआ ॥ चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह द्रिसटाइआ ॥ नानकु पइअंपै चरण जंपै भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥

श्लोक॥ हे भाग्यशाली जीवो ! थोड़ा-सा उद्यम करो एवं जगत के मालिक परमात्मा को याद करो। हे नानक ! उस प्रभु का सिमरन करने से सर्व सुख प्राप्त होते हैं तथा दुःख, दर्द एवं भ्रम दूर हो जाते हैं॥ १॥ छंद॥ गोविन्द का नाम जपने में आलस्य नहीं करना चाहिए। साधु की संगति में रहने से यमपुरी नहीं जाना पड़ता। प्रभु का नाम याद करने से प्राणी सदा सुखी रहता है और उसे दुःख-दर्द एवं भय नहीं सताते। हे बन्धु ! हरेक श्वास के साथ हरि-परमेश्वर की आराधना करते रहो और मुख एवं मन से प्रभु को ही याद करो। हे अमृत के घर ! हे गुणों के भण्डार ! हे कृपालु एवं दयालु प्रभु ! दया करके मुझे अपनी सेवा-भक्ति में लगाओ। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मैं तेरे चरणों में ही पड़ता हूँ और तेरे चरणों की ही पूजा करता हूँ। गोबिन्द का नाम-जपने में आलस्य नहीं करना चाहिए॥ १॥ निरंजन प्रभु का पुनीत नाम पतितों को पावन करने वाला है। गुरु के ज्ञान का सुरमा भ्रम के अन्धेरे का विनाश कर देता है। गुरु के ज्ञान का सुरमा यह ज्ञान प्रदान करता है कि निरंजन प्रभु जल, धरती एवं गगन में हर जगह समाया हुआ है। जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु एक क्षण भर के लिए निवास कर लेता है, उसके दुःख-संताप मिट जाते हैं। जगत का स्वामी प्रभु अगाध ज्ञान वाला है और वह सब कुछ करने में समर्थ है तथा सभी के भय नाश करने वाला है। नानक प्रार्थना करता है और प्रभु-चरणों की पूजा करता है। निरंजन प्रभु का पुनीत नाम पतितों को पावन करने वाला है॥ २॥ मैंने कृपानिधि दयालु गोपाल की ओट ली है। हे प्रभु ! मुझे तेरे चरणों का सहारा है और तेरी ही शरण में मेरी सफलता है। सब कुछ करने एवं कराने वाले जगत के स्वामी हरि के चरणों में लगकर पतितों का उद्धार हो जाता है। भगवान का नाम ही भयानक संसार-सागर से पार करने वाला है और उसका नाम-सुमिरन करके बहुत सारे जीव पार हो गए हैं। आदि से अंत तक बेअंत लोग ईश्वर को खोजते रहे हैं लेकिन मैंने सुना है कि संतों की संगत ही मुक्ति का मार्ग है। नानक वन्दना करता है कि मैं प्रभु-चरणों की आराधना करता हूँ और कृपानिधि, दयालु गोपाल प्रभु की ओट ली है॥ ३॥ भक्तवत्सल हरि ने अपना विरद् आप बनाया है। जहाँ कहीं भी संतजन प्रभु की आराधना करते हैं, वह वहीं प्रगट हो जाता है। वह अपने भक्तों को सहज-स्वभाव ही अपने साथ मिला लेता है और उनके सभी कार्य सम्पूर्ण कर देता है। प्रभु के यश में वह आनंद एवं महा मंगल को पाते हैं और सभी दुःखों को भूल जाते हैं। एक प्रभु का चमत्कार एवं प्रकाश वह दसों दिशाओं में देखते हैं। नानक वन्दना करता है कि मैं प्रभु के चरणों की आराधना करता हूँ। प्रभु ने भक्त वत्सल होने का अपना विरद् आप बनाया है॥ ४॥ ३॥ ६॥

आसा महला ५ ॥ थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ जा कै ग्रिहि हरि नाहु सु सद ही रावए ॥ अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥ नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥ प्रानपति गति मति जा ते प्रिअ प्रीति प्रीतमु भावए ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ १ ॥ जा कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा ॥ सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥ माणु महतु कलिआणु हरि जसु संगि सुरजनु सो प्रभू ॥ सरब सिधि नव निधि तितु ग्रिहि नही

ऊना सभु कछू ॥ मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥ २ ॥ आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ ॥ तजि आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईऐ ॥ सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ ॥ करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ ३ ॥ जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ता की पूरन आस जिन्ह साधसंगु पाइआ ॥ साधसंगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥ भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ ॥ मनि सांति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइआ ॥ नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥

संतजनों का सुहाग ईश्वर सदैव स्थिर है क्योंकि वह न ही मरता है और न ही कहीं जाता है। जिसके हृदय घर में प्रभु-पति बसता है, वह सदा ही उसके साथ रमण करती है। वह प्रभु अविनाशी एवं अविगत है और वह सदैव नूतन एवं निर्मल है। ठाकुर कहीं दूर नहीं अपितु सदा आसपास है और वह सदैव ही दसों दिशाओं में मौजूद है। उस प्राणपति से मुक्ति एवं सुमति प्राप्त होती है। मुझे प्रियतम की प्रीति प्रिय लगती है। नानक वही बखान करता है जो उसने गुरु के वचन से समझा है। संतजनों का सुहाग (प्रभु) अटल है क्योंकि वह न ही मरता है और न ही कहीं जाता है॥ १॥ जिसका पति राम है, वह अत्यंत आनंद प्राप्त करती है। वही नारी सुखवंती है और उसी की पूरी शोभा बनती है। हरि का यशगान करके वह आदर, सुख एवं कल्याण प्राप्त कर लेती है। वह चतुर प्रभु सदा उसके साथ है। सर्व सिद्धियाँ एवं नवनिधियाँ उसके पास हैं। उसके घर में कोई कमी नहीं अपितु सब कुछ उसके पास है। प्रियतम-प्रभु द्वारा आदर दिए जाने के कारण उसकी मधुरवाणी हो जाती है और उसका सुहाग भी स्थिर रहता है। नानक वही बखान करता है जो कुछ उसने गुरु के वचन द्वारा जाना है कि जिसका पति राम है, वह बड़ा आनन्द प्राप्त करती है॥ २॥ हे सखी ! आओ, हम संतों के पास सेवा में जुट जाएँ। आओ, हम उसके दाने पीसें, उसके चरण धोएं और अपना अहंकार त्याग दें। अपना अहंकार त्याग देने से दुःख-संताप मिट जाता है। अपने आप का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। हे सखी ! आओ, हम संतों की शरण ले लें, उनकी आज्ञा का पालन करें और जो कुछ भी वह करते हैं, उससे सुखी रहें। हमें खुद को दासों की दासी बनाकर मन की चिंता मिटाकर दोनों हाथ जोड़ कर दिन-रात उनकी सेवा में जागना चाहिए। नानक वही बखान करता है जो कुछ उसने गुरु के वचन से जाना है। हे सखी ! आओ, संतों के पास आकर हम उनकी सेवा में तत्पर हो जाएँ॥ ३॥ जिसके माथे पर भाग्य लिखा हुआ है, उसे ही प्रभु अपनी सेवा में लगाता है। जिन्हें सत्संगति की प्राप्ति होती है, उनकी आशा पूर्ण हो जाती है। सत्संगति में जीव हरि के रंग में लीन हो जाता है और गोविन्द का सिमरन करने लग जाता है। भ्रम, मोह, विकार एवं द्वैतवाद वह सब को त्याग देता है। जब उसने आनंद से हरि का मंगल गुणगान किया तो उसके मन में सहज स्वभाव शांति आ गई। नानक वही वर्णन करता है, जो उसने गुरु के वचन से जाना है कि जिसके माथे पर भाग्य लिखा होता है, वही सेवा में लगता है॥ ४॥ ४॥ ७॥

आसा महला ५ ॥ सलोकु ॥ हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न कहै जमकालु ॥ नानक मनु तनु सुखी होइ अंते मिलै गोपालु ॥ १ ॥ छंत ॥ मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु ॥ बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम्ह दइआ ॥ कतहूं न

धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मइआ ॥ समरथ अगथ अपार निरमल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥ कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥ १ ॥ अपराधी मतिहीनु निरगुनु अनाथु नीचु ॥ सठ कठोरु कुलहीनु बिआपत मोह कीचु ॥ मल भरम करम अहं ममता मरणु चीति न आवए ॥ बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए ॥ खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु ॥ बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥ २ ॥ भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥ लपटि रहिओ तिह संगि मीठे भोग सोन ॥ भ्रमत भार अगनत आइओ बहु प्रदेसह धाइओ ॥ अब ओट धारी प्रभ मुरारी सरब सुख हरि नाइओ ॥ राखनहारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन ॥ सूख सहज आनंद नानक क्रिपा तेरी तरे भउन ॥ ३ ॥ नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥ जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन ॥ सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥ हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे ॥ बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥ बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण सरन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

श्लोक॥ हरि-प्रभु का नाम जपने से यमदूत जीव को कुछ भी नहीं कहता। हे नानक! नाम जपने से मन-तन सुखी हो जाता है और अंततः गोपाल प्रभु मिल जाता है॥ १॥ छंद॥ हे स्वामी! संतजनों की संगति में मुझसे आकर मिलो और मेरा उद्धार कीजिए। मैं दोनों हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि तुम मुझे अपना अनमोल हरि-नाम प्रदान करो। हे हरि! मैं तेरा नाम माँगता हूँ और तेरे चरणों में लगता हूँ यदि तुम दया करते हो तो अपना अहंकार दूर करता हूँ। हे करुणामय प्रभु! मुझ पर मेहर करो ताकि मैं तेरी शरण में पड़ा रहूँ तथा कहीं ओर न दौड़ूँ। हे समर्थ! अकथनीय, अपार एवं निर्मल स्वामी! मेरी यह विनती सुनो। नानक दोनों हाथ जोड़कर यह दान माँगता है, कृपा-दृष्टि करके मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त कर दो॥ १॥ हे भगवान! मैं अपराधी, बुद्धिहीन, गुणहीन, अनाथ तथा नीच हूँ। हे ठाकुर! मैं मूर्ख, कठोर, कुलहीन मोह के कीचड़ में फँसा हुआ हूँ। भ्रम रूपी कर्मों की मैल एवं अहंत्व की ममता के कारण मृत्यु का ख्याल मेरे मन में याद नहीं आता। अज्ञानता के कारण मैं स्त्री के विनोद एवं माया के आनंद में लिपटा हुआ हूँ। मेरा यौवन खत्म होता जा रहा है और बुढ़ापा बढ़ता जा रहा है। मेरी साथी मृत्यु मेरे जीवन के दिन देख रही है। नानक प्रार्थना करता है, हे प्रभु! मुझे तेरी ही आशा है इसलिए मुझ नीच को साधु की शरण में रखो॥ २॥ हे नाथ! मैं अनेक जन्मों में भटका हूँ और योनियों में बहुत संकट उठाए हैं। धन-दौलत एवं पदार्थों के भोग को मीठा समझते हुए मैं उन से लिपटा रहा हूँ। पापों के बेअंत भार से मैं योनियों में भटकता हुआ संसार में आया हूँ और बहुत सारे प्रदेशों में भाग-दौड़ कर चुका हूँ। अब मैंने मुरारि प्रभु की शरण ली है और हरि के नाम द्वारा सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं। हे रखवाले प्यारे प्रभु! मुझ से न कुछ हुआ है और न ही होगा। नानक का कथन है कि हे प्रभु! अब मुझे सहज सुख एवं आनंद मिल गया है और तेरी कृपा से मैं भवसागर से पार हो गया हूँ॥ ३॥ जो लोग नाममात्र के ही भक्त हैं, भगवान ने उन्हें भी बचा लिया है। सच्चे भक्तों को क्या संशय होना चाहिए? प्रत्येक यथायोग्य विधि से जैसे भी संभव हो, अपने कानों से हरि-परमेश्वर का यश सुनो। हे ज्ञानी पुरुष! उस प्रभु की वाणी को अपने कानों से सुनो और अपने मन में नाम के भण्डार को प्राप्त कर लो। जो व्यक्ति हरि के रंग में रंग जाते हैं, वे विधाता प्रभु राम के ही गुण गाते रहते हैं। यदि धरती कागज बन जाए, वनराज कलम बन जाए और पवन लिखने हेतु लेखक बन जाए तो भी बेअंत प्रभु का अन्त नहीं पाया जा सकता। हे नानक! मैंने उस प्रभु के चरणों की शरण ली है॥ ४॥ ५॥ ८॥

आसा महला ५ ॥ पुरख पते भगवान ता की सरणि गही ॥ निरभउ भए परान चिंता सगल लही ॥ मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ ॥ गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥ बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥ प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥ १ ॥ अंम्रित बनु संसारु सहाई आपि भए ॥ राम नामु उर हारु बिखु के दिवस गए ॥ गतु भरम मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥ अगनि सागर भए सीतल साध अंचल गहि रहे ॥ गोविंद गुपाल दइआल सम्रिथ बोलि साधू हरि जै जए ॥ नानक नामु धिआइ पूरन साधसंगि पाई परम गते ॥ २ ॥ जह देखउ तह संगि एको रवि रहिआ ॥ घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥ आदि अंते मधि सोई गुर प्रसादी जानिआ ॥ ब्रहमु पसरिआ ब्रहम लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि एकु नानक रवि रहिआ ॥ ३ ॥ दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत नामु हरे ॥ चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥ दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥ मिलि साधसंगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ हरि देखि दरसनु इछ पुंनी कुल संबूहा सभि तरे ॥ दिनसु रैणि अनंद अनदिनु सिमरंत नानक हरि हरे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ६ ॥

भगवान सभी पुरुषों का मालिक है और मैंने उसकी शरण ली है। अब मेरे प्राण निडर हो गए हैं और मेरी सारी चिन्ता मिट गई है। मैं भगवान को ही अपना माता-पिता, पुत्र, मित्र, शुभ-चिन्तक, इष्ट एवं बंधु जानता हूँ। गुरु ने मुझे उससे मिलाया है और उसने मुझे बांह से पकड़ कर गले से लगा लिया है, जिसका निर्मल यश संतजन उच्चरित करते हैं। वह बेअंत है और उसमें अनेक गुण हैं। उसकी महिमा की कीमत आंकी नहीं जा सकती। प्रभु एक है, जिसे अनेक प्रकार से अलक्ष्य ठाकुर कहा जाता है तथा नानक ने उसकी शरण ली है॥ १॥ जब भगवान स्वयं मेरा मददगार बन गया है तो संसार मेरे लिए अमृत का कुण्ड बन गया। राम के नाम की गले में पुष्पमाला पहनने से मेरे दुःख के दिवस मिट गए हैं। मेरे मन में से भ्रम चला गया है, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार एवं मोह रूपी विकार नष्ट हो गए हैं। मेरे योनियों के चक्र भी समाप्त हो गए हैं। साधु का आंचल पकड़ने से तृष्णा रूपी अग्नि सागर शीतल हो गया है। हे साधुओ ! गोविन्द, गोपाल, दयालु समर्थ हरि की जय-जयकार करो। हे नानक ! साधु की संगति में मिलकर पूर्ण परमात्मा के नाम का ध्यान करके मैंने परमगति पा ली है॥ २॥ मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ मैं वहीं ही उसे अपने साथ व्यापक पाता हूँ। एक परमात्मा ही सब जीवों में बसा हुआ है। वह स्वयं ही प्रत्येक हृदय में मौजूद है लेकिन कोई विरला पुरुष ही इसे अनुभव करता है। वह जल, धरती, गगन में हर जगह मौजूद है और चींटी एवं हाथी में भी एक समान समाया हुआ है। परमात्मा जगत-रचना के प्रारम्भ में भी था, जगत के अन्त में भी होगा और वह अब भी मौजूद है और गुरु की दया से ही वह जाना जाता है। हर तरफ ब्रह्म का ही प्रसार है और यह जगत प्रसार ब्रह्म की रचित लीला हो रही है। भक्तजन उस गोविंद को गुणों का भण्डार कहते हैं। हे नानक ! अन्तर्यामी स्वामी की आराधना करो; एक प्रभु ही सर्वव्यापी है॥ ३॥ हरि का नाम-सिमरन करने से दिन-रात सुहावने आ गए हैं। प्रभु के चरण-कमल के साथ प्रेम करने से बुराइयाँ एवं पाप नष्ट हो चुके हैं। फिर दुःख, भूख एवं दारिद्रता भाग गए हैं और सन्मार्ग प्रत्यक्ष दिखाई दिया है। सत्संगति में सम्मिलित होकर प्रभु-नाम से रंग गया हूँ और मेरी मनोकामना पूरी हो गई है। हरि के दर्शन करके मेरी इच्छा पूरी हो गई है और समस्त वंशावलि भी पार हो गई है। हे नानक ! दिन-रात सदैव ही हरि-परमेश्वर का भजन करने से आनंद बना रहता है॥ ४॥ ६॥ ६॥

आसा महला ५ छंत घरु ७ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ १ ॥ छंत ॥ भिंनी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥ जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥ राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥ चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥ तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥ बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥ १ ॥ मेरी सेजड़ीऐ आडंबरु बणिआ ॥ मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे ॥ अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥ मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ ॥ बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ॥ २ ॥ मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥ रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥ गुण गूड़ गुपत अपार करते निगम अंतु न पावहे ॥ भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥ सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥ बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ॥ ३ ॥ सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥ साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥ सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥ हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥ सुभ दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरि जन तागे ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

श्लोक॥ नानक की प्रार्थना है कि हे भगवान! मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मैं एक क्षण भर के लिए भी तेरा नाम न भूलूँ। मैं शुभ चिंतन करता रहूँ, गोविंद का नाम याद करता रहूँ और साधु की निर्मल संगति करता रहूँ॥ १॥ छंद॥ जब ओस से भीगी हुई रात्रि में तारे चमकते हैं तो मेरे राम के प्यारे संतजन इस सुहावनी रात्रि को जागते रहते हैं। वे राम के प्यारे संतजन सदैव ही जागते हैं और नित्य ही नाम को याद करते रहते हैं। वे अपने हृदय में प्रभु के चरण-कमल का ध्यान करते हैं और एक क्षण भर के लिए भी उसे विस्मृत नहीं करते। वे मन का अहंकार, मोह, विकार इत्यादि बुराइयों को त्याग कर दुःखों को नाश कर देते हैं। नानक वन्दना करता है कि हरि के दास प्यारे संतजन सदैव ही जागते रहते हैं॥ १॥ मेरे मन के सेज की भव्य सजावट हो गई है। जब से मैंने सुना है कि मेरा प्रभु आ रहा है तो मेरे मन में आनंद उत्पन्न हो गया है। स्वामी प्रभु को मिलकर मैं सुखी हो गई हूँ और चाव, मंगल के रस से भर गई हूँ। प्रभु मेरे अंग-संग लग गया है, जिससे दुःख भाग गए हैं और मेरा मन-तन फूल की तरह खिल गया है। प्रभु का ध्यान करने से मेरी मनोकामना पूरी हो गई है। मैं अपने विवाह संयोग के समय को शुभ मानती हूँ। नानक वन्दना करता है कि श्रीधर प्रभु से मिलकर मुझे समस्त खुशियों का रस प्राप्त हो गया है॥ २॥ मेरी सखियाँ मुझसे मिलकर पूछती हैं कि हमें अपने प्रियतम-पति की कोई निशानी बताओ। उसके प्रेम के रस से मैं इतनी भर गई थी कि मैं कुछ भी कह न सकी। जगत-रचयिता प्रभु के गुण गहन, गुप्त एवं अपार हैं और वेद भी उसका अन्त नहीं पा सकते। मैं भक्ति भाव से स्वामी का भजन करती हूँ और सदा हरि की गुणस्तुति करती रहती हूँ। समस्त गुणों एवं श्रेष्ठ ज्ञान से पूर्ण होने के कारण मैं अपने प्रभु को अच्छी लगने लग गई हूँ। नानक विनती करता है कि वह प्रभु के प्रेम रंग में रंगी हुई है और सहज ही उसमें समा गई है॥ ३॥ जब मैं भगवान की खुशी के गीत गाने लग गया तो मेरे सज्जन-सत्य, संतोष, दया एवं धर्म इत्यादि प्रसन्न हो गए

और मेरे दुश्मन-काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि दुःख भाग गए। मेरी खुशी एवं सुख बढ़ गए, मैं प्रभु के नाम में आनंद प्राप्त करने लगा क्योंकि भगवान ने स्वयं मुझ पर कृपा की है। मैं हरि के सुन्दर चरणों से जुड़ गया हूँ और सदा सावधान रहने के कारण मैं वनवारी प्रभु से मिल गया हूँ। अब शुभ दिन आ गए हैं और मैंने सहज सुख प्राप्त कर लिया है। प्रभु के चरणों की सेवा करने से मुझे निधियाँ मिल गई हैं। नानक प्रार्थना करता है कि हे जगत के स्वामी! भक्तजन सदैव ही तेरी शरण चाहते हैं॥ ४॥ १॥ १०॥

आसा महला ५ ॥ उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ ॥ मुहलति पुंनड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइआ ॥ कूड़े लुभाइआ धोहु माइआ करहि पाप अमितिआ ॥ तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ ॥ मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैनणु खाइआ ॥ नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥ सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥ पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥ हरिचंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ ॥ लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु ॥ नानक म्रिग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥ २ ॥ मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी ॥ हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥ तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥ दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ ॥ गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥ नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥ ३ ॥ हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी ॥ कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥ बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥ साधसंगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥ राखि लीए रखणहारै सदा निरमल करणी ॥ नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥

हे पथिक! उठ और यहाँ से चल दे, तू देरी क्यों कर रहा है? तेरे जीवन का नियत समय पूरा हो गया है। फिर तुम झूठे लोभ में क्यों फँसे हुए हो? झूठे लोभ में फँस कर तुम माया के छल के कारण असंख्य पाप करते जा रहे हो। यह तन तो भस्म की ढेरी है जिस पर यम ने दृष्टि कर ली है तथा काल ने बेचारे प्राणी को जीत लिया है। धन-दौलत एवं यौवन को छोड़कर तुम चले जाओगे तथा तेरा खाना पहनना भी खत्म हो गया है। नानक का कथन है कि तेरे कर्म तेरे साथ जाएँगे। कर्मों का प्रभाव मिटाया नहीं जा सकता॥ १॥ हे जीव! जिस तरह हिरण रात्रि में शिकारी द्वारा किए गए चंद्रायण जैसे प्रकाश को देखकर उसके जाल में फँस जाता है, वैसे ही तू झूठी माया के मोह में फँसा हुआ है। पाप करने से सुख से हटकर नित्य दुःख उत्पन्न होते हैं। तेरे किए हुए पाप तेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे। यमदूत तेरे गले में फँदा डालकर तुझे आगे ले चले हैं। राजा हरि चन्द की नगरी जैसी झूठी माया को देखकर तू धोखा खा रहा है और अपनी सेज पर तू मोहिनी रूपी झूठी नारी से भोग कर रहा है। लोभ, लालच एवं अहंकार से तुम मस्त हो गए हो और अभिमान से भर गए हो। हे नानक! जिस तरह मृग अज्ञानता में फँस कर नष्ट हो रहा है वैसे ही तेरा भी जन्म-मरण का चक्र नहीं मिटता॥ २॥ मक्खी मीठे में फँसकर ही मर जाती है और उड़ नहीं पाती। हाथी गड्ढे में गिर जाए तो तैर कर निकल नहीं सकता। जिस जीव-स्त्री को अपना पति-प्रभु एक क्षण भर के लिए भी याद नहीं आया, उसका संसार-सागर से पार होना कठिन हो गया। उसके दुःख एवं दण्ड गणना से बाहर हैं। वह अपने कर्मों का फल भोगती है। छिपकर किए गए पाप कर्म भी प्रगट हो जाते हैं और लोक-परलोक में वह तबाह हो जाती है। हे नानक! सच्चे गुरु के बिना स्वेच्छाचारिणी

अहंकारी जीव-स्त्री ठगी जाती है॥ ३॥ हरि के दास प्रभु-चरणों से लगकर आत्मिक जीवन जीते हैं। जो ठाकुर जी की शरण लेते हैं, वह उन्हें अपने गले लगा लेता है। वह उन्हें बल, बुद्धि, ज्ञान एवं ध्यान प्रदान करता है और स्वयं ही उनसे अपने नाम का जाप करवाता है। प्रभु स्वयं ही सत्संगति है और स्वयं ही संसार का उद्धार कर देता है। जिन मनुष्यों के कर्म सदा निर्मल होते हैं, रक्षक प्रभु उनकी रक्षा करता है। हे नानक ! हरि के संत हरि की शरण में ही रहते हैं और कभी नरक में नहीं जाते॥ ४॥ २॥ ११॥

आसा महला ५ ॥ वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती ॥ रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती ॥ संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ ॥ सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ ॥ बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ द्रिसटि सिंचंती ॥ बिनवंति नानकु मेरी इछ पुंनी मिले जिसु खोजंती ॥ १ ॥ नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥ दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साधसंगि वखाणिआ ॥ आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुर प्रसादी जाणिआ ॥ मनि सांति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ ॥ बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥ २ ॥ नरक न डीठड़िआ सिमरत नाराइण ॥ जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥ धरम धीरज सहज सुखीए साधसंगति हरि भजे ॥ करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥ गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत अघाइण ॥ बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस पुजाइण ॥ ३ ॥ निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥ सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥ गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥ संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ ॥ साधसंगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥

हे मेरे आलस्य ! मुझसे दूर हो जा, मैंने अपने प्रभु के पास प्रार्थना करनी है। मैं अपने कांत-प्रभु से रमण करती हूँ और प्रभु की संगति में ही सुन्दर लगती हूँ। मैं अपने कांत-स्वामी की संगति में सुन्दर लगती हूँ और रात-दिन उससे रमण करती हूँ। मैं श्वास-श्वास से प्रभु को याद करके उसके दर्शन करके जीवित रहती हूँ। मैं हरि का गुणगान करती रहती हूँ। विरहा लज्जा करता है, क्योंकि मैंने अपने पति-प्रभु के दर्शन कर लिए हैं और उसकी अमृत से भरी हुई दृष्टि मेरे स्नेह को सींचती है। नानक वन्दना करता है कि मेरी इच्छा पूरी हो गई है, जिस पति-प्रभु को मैं खोजता था, वह मुझे मिल गया है॥ १॥ हे महा पापो ! यहाँ से दौड़ जाओ, क्योंकि जगत का रचयिता प्रभु मेरे हृदय-घर में आया है। जब गोविंद मेरे हृदय में प्रगट हुआ तो मेरे भीतर के पाँचों दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) जल गए। जब मैंने साधसंगत में शामिल होकर स्तुतिगान किया तो प्यारा गोविंद गोपाल मेरे हृदय में प्रगट हो गया। मैंने अद्भुत प्रभु के दर्शन कर लिए हैं, वह मुझ पर अमृत बरसा रहा है तथा गुरु की दया से मैंने उसे जान लिया है। मेरे मन में अब शांति आई है और खुशी के वाद्य-यन्त्रों से मुझे शुभ कामनाएँ मिल रही हैं। प्रभु का अन्त पाया नहीं जा सकता। नानक वन्दना करता है कि सहज सुख का मेल प्रभु ने आप बनाया है॥ २॥ नारायण का सिमरन करने वाले इन्सान को कभी नरक नहीं देखना पड़ा। धर्मराज स्वयं उसकी जय-जयकार करता है और यमदूत भाग जाते हैं। साधसंगति में हरि का भजन करने से मनुष्य को धर्म, धैर्य, सहज सुख प्राप्त हो जाता है। अपनी अनुकंपा करके प्रभु ने उनका संसार-सागर से उद्धार कर दिया है, जिन्होंने मोह, ममता एवं अहंत्व को त्याग दिया है। गुरु ने उनको प्रभु

से मिला दिया है और प्रभु ने उन्हें अपने गले से लगा लिया है। गोविन्द का भजन करने से वे तृप्त हो गए हैं। नानक वन्दना करता है कि प्रभु की आराधना करने से समस्त आशाएँ पूरी हो जाती हैं॥ ३॥ यदि निधियों, सिद्धियों के स्वामी प्रभु के चरण पकड़ लिए हैं तो अब कैसी चिंता हो सकती है। जिसके वश में सब कुछ है वही मेरा प्रभु है। मुझे भुजा से पकड़ कर उसने अपना नाम प्रदान किया है और मेरे माथे पर अपना हाथ रखकर मेरी रक्षा की है। यह संसार-सागर मुझे प्रभावित नहीं करता, क्योंकि मैंने अमृत समान हरि रस चखा है। सत्संगति एवं नाम के प्रेम द्वारा मैंने संसार की रणभूमि का बड़ा युद्ध जीत लिया है। नानक प्रार्थना करता है कि जगत के स्वामी प्रभु की शरण लेने से यमदूत दोबारा पीड़ित नहीं करते॥ ४॥ ३॥ १२॥

आसा महला ५ ॥ दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥ जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥ संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥ सुक्रितु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥ आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥ भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥ १ ॥ वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥ सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा ॥ दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥ मिलु साधसंगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥ सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥ बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥ २ ॥ खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा ॥ कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा ॥ संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एकु धिआइआ ॥ तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥ बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥ ३ ॥ पेखु हरिचंदउरड़ी असथिरु किछु नाही ॥ माइआ रंग जेते से संगि न जाही ॥ हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥ हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥ मीतु जोबनु मालु सरबसु प्रभु एकु करि मन माही ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

मनुष्य दिन-रात जो भी शुभाशुभ कर्म करता है, वह उसके माथे पर लेख बन जाता है। जिस परमात्मा से वह पापों को छिपाता है, वह उसके साथ ही बैठा उसके कर्मों को देख रहा है। विश्व का रचयिता प्रभु उसके साथ है और उसके कर्मों को देखता है। फिर, वह क्यों पाप कर्म करता है ? यदि हम शुभ कर्म करें, प्रभु का नाम स्मरण करें तो कदापि नरक में नहीं जाएँगे। हे मानव ! आठ प्रहर हरि के नाम का भजन करते रहो, क्योंकि यही तेरे साथ जाएगा। हे नानक ! सत्संगति में सदा प्रभु का भजन करते रहो, तेरे किए हुए पाप कर्म मिट जाएँगे॥ १॥ हे मूर्ख गंवार ! तू छल-कपट करके अपना पेट भरता है। दाता प्रभु तुझे सब कुछ दिए जा रहा है। सबका दाता स्वामी सदा ही दयालु है, फिर हम अपने मन से उसे क्यों विस्मृत करें ? साधु की संगति में मिलकर निर्भय होकर प्रभु का भजन करते रहो। इस तरह तेरी समूह कुल का उद्धार हो जाएगा। प्रभु-नाम ही सिद्ध, साधक, देवतों, मुनिजन एवं भक्तों का आधार है। नानक प्रार्थना करता है कि एक प्रभु ही सृष्टि का रचयिता है इसलिए सदा उसी का भजन करना चाहिए॥ २॥ हे जीव ! किसी से छल-कपट मत कर, क्योंकि प्रभु ही परख करने वाला है। जो झूठ एवं कपट के कर्म करते हैं, वे इस संसार में दोबारा जन्म लेते हैं। जिसने एक ईश्वर का सुमिरन किया है, वह इस संसार-सागर से पार हो गया है। वह काम, क्रोध एवं अनिंद लोगों की निन्दा करना त्याग कर प्रभु की शरण में आ गया है। सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार दुनिया का मालिक जल, धरती एवं गगन में सर्वव्यापक है। नानक प्रार्थना करता है कि ईश्वर अपने भक्तजनों की टेक है और उसके

चरण-कमल ही उनका आधार है॥ ३॥ हे प्राणी ! देख, यह जगत एक राजा हरिचंद की नगरी के समान है और कोई भी वस्तु स्थिर नहीं। जितने भी माया के रंग हैं, वे प्राणी के संग नहीं जाते। केवल हरि ही तेरा साथी है जो सदा तेरे साथ है, इसलिए दिन-रात उसका भजन करते रहो। हरि के बिना दूसरा कोई भी तेरा नहीं। इसलिए तुझे द्वैतभाव को जला देना चाहिए। अपने मन में समझ ले कि एक प्रभु ही तेरा मित्र, तेरा यौवन, तेरा धन एवं सर्वस्व है। नानक प्रार्थना करता है कि किस्मत से जो मनुष्य प्रभु को पा लेता है, वह सहज सुख में समा जाता है॥ ४॥ ४॥ १३॥

आसा महला ५ छंत घरु ८

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥ गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे ग्रिह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥ दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणा पते ॥ जनम मरण अनेक बीते प्रिअ संग बिनु कछु नह गते ॥ कुल रूप धूप गिआनहीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥ कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात ॥ १ ॥ मीना जलहीन मीना जलहीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत ॥ सनमुख सहि बान सनमुख सहि बान हे म्रिग अरपे मन तन प्रान हे ओहु बेधिओ सहज सरोत ॥ प्रिअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु ध्रिगु तनु तिसु बिना ॥ पलका न लागै प्रिअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना ॥ स्रीरंग राते नाम माते भै भरम दुतीआ सगल खोत ॥ करि मइआ दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥ २ ॥ अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप ॥ चात्रिक चित पिआस चात्रिक चित पिआस हे घन बूंद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप ॥ तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥ सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु द्रिसटि धारत मिटत पाप ॥ नानकु जंपै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥ ३ ॥ चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥ सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥ प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ ॥ हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहंतीआ ॥ प्रभ द्रिसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥ बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

कमला (माया) भ्रम की दीवार है। यह भ्रम की दीवार बड़ी तीक्ष्ण है और इसका नशा विपरीत करने वाला है। इससे जुड़ कर मानव-जन्म व्यर्थ ही चला जाता है। यह माया घना और भयंकर वन है। मन रूपी चोर घर को लूटते जा रहे हैं और दिनकर (सूर्य) हमारी आयु नित्य खाए जा रहा है। जीवन के दिन बीतते जा रहे हैं और इस तरह प्रभु के बिना जीवन गुजरता जा रहा है। हे करुणापति प्रभु ! मुझे मिलो। मेरे अनेक जन्म-मरण बीत गए हैं परन्तु प्रिय के संग बिना गति नहीं होती। मैं कुल, रूप, शोभा एवं ज्ञान से विहीन हूँ। हे प्रभु ! तेरे अलावा मेरा कौन है। हे प्रिय नाथ ! नानक हाथ जोड़कर तेरी शरण में आया है, मेरी मुक्ति करो॥ १॥ जैसे मछली पानी के बिना बिछुड़ कर तन-मन से क्षीण हो जाती है वैसे ही प्रिय-पति प्रभु के बिना मेरा जीवन कैसे कायम रह सकता है ? मृग शिकारी के सन्मुख होकर उसका बाण सहता है और मधुर नाद (ध्वनि)

से बिंधा हुआ वह अपना मन, तन एवं प्राण अर्पित कर देता है। अपने प्रिय से मेरी प्रीति हो गई है। उससे मिलने हेतु मैं वैरागी हो गया हूँ। उस तन को धिक्कार है जो प्रिय प्रभु के बिना एक क्षण भी रहता है। अपने प्रिय के प्रेम में इतनी मग्न हो गई हूँ कि मेरी पलकें बन्द ही नहीं होती। मेरा मन रात-दिन प्रभु को याद करता है। श्रीरंग प्रभु के रंग में रंगकर और उसके नाम में मस्त होकर मैंने सभी भय, भ्रम, दुविधा निवृत्त कर दिए हैं। नानक प्रार्थना करता है कि हे दयालु एवं पूर्ण हरि! अपनी दया एवं कृपा करो ताकि मैं तेरे प्रेम में मग्न हो जाऊँ॥ २॥ भँवरा फूल पर गूंजता रहता है। फूलों के रस, सुगन्धि, एवं शहद से मस्त हुआ कमल के प्रेम के कारण यह अपने आपको फँसा लेता है। चातक के चित्त में स्वाति बूंद की प्यास है। इसका चित्त मेघ की विचित्र बूँदों हेतु तरसता है, जिनका पान करने से चातक का ताप नाश हो जाता है। हे ताप दूर करने वाले! हे दुःखों का नाश करने वाले हरि! मुझे मिलो मेरे तन-मन में अत्यंत ही घना प्रेम है। हे सुन्दर, चतुर, सुजान स्वामी! मैं कौन-सी जिह्वा से तेरे गुणों का गायन करूँ? हे स्वामी! मेरी भुजा पकड़ लीजिए और अपना नाम प्रदान करें। जिस पर तू दया-दृष्टि करता है, उसके पाप मिट जाते हैं। नानक का कथन है कि मैं तो पतितपावन हरि का ही नाम जपता रहता हूँ और हरि-दर्शन करने से अब मुझे कोई दुख नहीं लगता॥ ३॥ मैं अपने चित्त में नाथ को ही याद करता हूँ। हे नाथ! मुझ अनाथ को अपनी शरण में रखो। तुझे मिलकर मुझे बहुत चाव होता है और मेरे प्राणों को तेरी ही चाहत है। हे प्रभु! तेरे सुन्दर तन पर ही मेरा ध्यान लगा हुआ है। हे गोपाल! तेरे ज्ञान ने मेरा मन मोहित कर दिया है। तुम ही अपने याचक सेवकों का मान-सम्मान बरकरार रखते हो। हे प्रभु! तुम ही पूर्ण मान-सम्मान प्रदान करते हो, दुःखों का भी तुम नाश करते हो, मेरी समस्त इच्छाएँ तुमने पूरी कर दी हैं। वह दिन बड़ा भाग्यवान था, जब प्रभु ने मुझे अपने गले से लगाया। अपने कंत प्रभु को मिलने से मेरी हृदय रूपी सेज सुन्दर हो गई है। जब प्रभु ने कृपा-दृष्टि धारण की तो वह मुरारि प्रभु मुझे आ मिला और तब मेरे सभी पाप नष्ट हो गए। नानक वन्दना करता है कि मेरी आशा पूर्ण हो गई है क्योंकि गुणों के भण्डार श्रीधर प्रभु मुझे मिल गए हैं॥ ४॥ १॥ १४॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सबका मालिक वह परमपिता एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला है। वह सर्वशक्तिमान है, वह भय से रहित है, उसका किसी से वैर नहीं, वस्तुतः सब पर उसकी समान दृष्टि है, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति अमर है, वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है, वह स्वयं प्रकाशमान हुआ है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी॥

वार श्लोकों सहित। श्लोक भी महला पहला के लिखे गए हैं। पौड़ियां टुंडे असराज की ध्वनि पर गायन करना।

सलोकु मः १ ॥ बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मैं अपने उस गुरु पर दिन में सौ बार बलिहारी जाता हूँ, जिसने मनुष्य को देवता बनाने में कोई विलम्ब नहीं किया॥ १॥

महला २ ॥ जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥ २ ॥

महला २॥ यदि सौ चन्द्रमा उदित हो जाएँ और हजारों ही सूर्य का उजाला हो जाए तो भी संसार में इतना प्रकाश होते हुए भी गुरु के बिना घोर अंधकार ही होगा॥ २॥

मः १ ॥ नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥ ३ ॥

महला १॥ हे नानक! जो मनुष्य अपने गुरु को याद नहीं करते और अपने मन में चतुर होने का दावा करते हैं, वे निरर्थक तिलों की भाँति व्यर्थ समझकर सूने खेतों में फेंक दिए जाते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि वे निरर्थक तिल खेत में छोड़ दिए जाते हैं और उनके सौ स्वामी बन जाते हैं। वे बेचारे फलते-फूलते हैं परन्तु फिर भी उनके तन में राख ही होती है॥ ३॥

पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ भगवान स्वयंभू है, उसने स्वयं ही अपने आपको बनाया तथा स्वयं ही उसने अपना नाम रचा है। दूसरा उसने कुदरत की रचना की और इसमें आसन करके वह चाव से अपना जगत प्रसार देखता है। हे भगवान! तू स्वयं ही दाता एवं जग का रचयिता है। तू प्रसन्न होकर जीवों को देन देता है एवं अपनी कुदरत का प्रसार करता है। हे प्रभु! तू सबको जानने वाला है। अपनी रजा में ही तू जीवों को प्राण देता एवं प्राण लेता है। अपनी कुदरत का कौतुक तू उसी में आसन करके चाव से देख रहा है॥ १॥

सलोकु मः १ ॥ सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो मरि जंमे सु कचु निकचु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे प्रभु! तेरी रचना के समस्त खंड-ब्रह्माण्ड सत्य हैं। तेरी रचना के चौदह लोक सत्य हैं और तेरी कुदरत के आकार (सूर्य, चन्द्रमा, तारे) भी सत्य हैं। तेरे समस्त कार्य एवं सर्व विचार सत्य हैं। तेरा हुक्म और तेरा दरबार सत्य है। तेरा आदेश और तेरा फुरमान सत्य है। हे प्रभु! तेरा करम सत्य है और नाम रूपी परवाना भी सत्य है। लाखों-करोड़ों ही तुझे सत्य कहते हैं। सत्य (प्रभु) में ही समस्त बल एवं समस्त शक्ति है। तेरी महिमा और तेरी शोभा सत्य है। हे सच्चे पातशाह! तेरी यह कुदरत सत्य है। हे नानक! जो परम सत्य प्रभु का ध्यान करते हैं, वे भी सत्य हैं। लेकिन जो जीव जन्मते और मरते रहते हैं वे बिल्कुल कच्चे हैं॥ १॥

मः १ ॥ वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ नानक कार न कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥ २ ॥

महला १॥ उस परमात्मा की महिमा बहुत बड़ी है, जिसका नाम सारे विश्व में बहुत बड़ा है। भगवान की उपमा बहुत बड़ी है, जिसका न्याय सत्य है। उस मालिक की बड़ाई इसलिए भी बड़ी है, क्योंकि उसका आसन अटल है। उसकी महानता इसलिए भी बड़ी है क्योंकि वह अपने भक्तों की बात को जानता है। प्रभु का बड़प्पन इसलिए भी बड़ा है क्योंकि वह समस्त लोगों की प्रेम-भावना बूझ लेता है। प्रभु की प्रशंसा बहुत बड़ी है क्योंकि वह किसी से परामर्श किए बिना अपनी देन प्रदान करता है। उसकी बड़ाई इसलिए भी बड़ी है क्योंकि सब कुछ वह आप ही है। हे नानक! उस प्रभु के कार्यों की व्याख्या नहीं की जा सकती। जो कुछ परमात्मा ने किया है, कर रहा है अथवा जो कुछ करेगा सब उसकी अपनी रज़ा है॥ २॥

महला २ ॥ इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ ३ ॥

महला २॥ यह जगत सच्चे प्रभु का घर है और उस परम सत्य का ही इसमें निवास है। कुछ जीवों को वह अपने हुक्म द्वारा स्वयं में लीन कर लेता है और कई जीवों का अपने हुक्म द्वारा नाश कर देता है। अपनी रज़ा से कुछ जीवों को वह माया से बाहर निकाल लेता है और कुछ लोगों का माया के जंजाल में निवास कर देता है। यह भी कहा नहीं जा सकता कि वह किसे संवार देगा। हे नानक! यह भेद गुरु द्वारा ही जाना जाता है, जिसे परमात्मा खुद ज्ञान का प्रकाश करता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे नानक! ईश्वर ने जीवों को उत्पन्न करके उनके कर्मों का लेखा-जोखा करने के लिए धर्मराज को नियुक्त किया है। वहाँ धर्मराज के समक्ष सत्यानुसार ही निर्णय होता है और दुष्ट पापियों को चुनकर अलग कर दिया जाता है। झूठों को वहाँ स्थान नहीं मिलता और मुँह काला करके उन्हें नरक में धकेल दिया जाता है। हे प्रभु! जो मनुष्य तेरे नाम में अनुरक्त हैं, वे जीत जाते हैं और जो ठग हैं वे हार जाते हैं। प्रभु ने धर्मराज को जीवों के कर्मों का लेखा लिखने हेतु नियुक्त किया है॥ २॥

सलोक मः १ ॥ विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ विसमादु नागे फिरहि जंत ॥ विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पूरै भागि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे प्रभु! तेरे पैदा किए हुए नाद एवं तेरे रचे हुए वेद आश्चर्यजनक हैं। तेरे पैदा किए हुए जीव एवं जीवों में पैदा किए भेद भी विचित्र हैं। विभिन्न प्रकार के रूप एवं रंग बड़े अद्भुत हैं। वे जीव जो नग्न घूमते हैं, सब विस्मयबोधी हैं। पवन और जल भी विस्मय का कारण है। बड़ी हैरानी है कि अनेक प्रकार की अग्नियाँ अद्भुत खेलें खेलती हैं। धरती का वजूद

भी हैरानी का विषय है और जीवों की उत्पत्ति के चारों स्रोत भी हैरान कर रहे हैं। जीव जिन पदार्थों के स्वाद में लगे हुए हैं, वे भी विस्मयकारक हैं। संयोग और वियोग भी विचित्र हैं। संसार की भूख एवं भोग-विलास भी हैरानी का कारण बनी हुई है। भगवान की महिमा-स्तुति भी आश्चर्यजनक है। इन्सान का कुमार्गगामी होना और सन्मार्ग पर आ जाना भी विचित्र है। यह एक बड़ा ही विस्मय का विषय है कि परमात्मा जीवों के पास भी है और उनसे दूर भी है। वे भक्त अद्भुत हैं जो परमात्मा को अपने नेत्रों से प्रत्यक्ष देखते हैं। नानक का कथन है कि हे मालिक! तेरी कुदरत का बड़ा विस्मय देखकर मैं आश्चर्यचकित हो रहा हूँ। तेरी कुदरत के इस अद्भुत कौतुक को पूर्ण भाग्यवान ही समझ सकता है॥ १॥

मः १ ॥ कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥ २ ॥

महला १॥ जो कुछ दिखाई देता है और सुना जा रहा है, यह सब कुदरत के अन्तर्गत ही है। कुदरत अनुसार ही भय एवं सुख का सार है। आकाश, पाताल में कुदरत ही मौजूद है और यह सारी सृष्टि रचना कुदरत के अनुरूप ही है। कुदरत द्वारा ही वेद, पुराण, शरीयत इत्यादि धार्मिक ग्रंथ हैं और कुदरत अनुसार ही सर्व विचार हैं। कुदरत अनुसार ही खाना, पीना एवं पहनना है। कुदरत द्वारा ही हर तरफ प्रेम-भावना है। कुदरत अनुसार ही जगत के जीवों में जातियाँ, रंग एवं प्रकार हैं। कुदरत अनुसार ही अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ हैं। कुदरत अनुसार ही मान एवं अभिमान है। कुदरत अनुसार ही पवन, पानी एवं अग्नि है। कुदरत अनुसार ही धरती एवं मिट्टी है। हे प्रभु! यह सब तेरी कुदरत है, तू अपनी कुदरत का मालिक एवं रचयिता है और अपने पावन नाम के कारण तेरी बड़ी महिमा है। हे नानक! प्रभु अपने हुक्म अनुसार अपनी सृष्टि को देखता एवं क्रियाशील है, वह सर्वव्यापक है एवं अपने विधान अनुसार ही सबकुछ करता है॥२॥

पउड़ी ॥ आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ मनुष्य जगत में अपने भोग भोगकर मरणोपरांत ढेरी हो जाता है अर्थात् आत्मा चली जाती है। जब मनुष्य दुनिया के धंधों में बड़ा मानकर चला जाता है तो उसकी गर्दन में जंजीर डाल दी जाती है और उसे आगे धकेल दिया जाता है। वहाँ उसके कर्मों का विचार किया जाता है और उसे बिठा कर उसका लेखा समझाया जाता है। जब उसे दण्ड मिलता है तो उसे कोई स्थान नहीं मिलता। अब उसका रोना भी कौन सुनेगा? ज्ञानहीन मनुष्य ने अपना दुर्लभ जीवन व्यर्थ ही नष्ट कर लिया॥ ३॥

सलोक मः १ ॥ भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ भै विचि राजा धरम दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै विचि

आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ प्रभु के भय में अनेक प्रकार की पवन हमेशा चलती रहती है। परमात्मा के भय में ही लाखों दरिया बहते हैं। उसके भय में ही अग्नि अपना कार्य करती है। भय में ही धरती भार के नीचे दबी रहती है। परमेश्वर के आदेश में ही इन्द्र बादल बनकर सिर पर बोझ लिए चलता फिरता है। भय में ही धर्मराज उसके द्वार पर खड़ा है। प्रभु के भय में ही सूर्य एवं चंद्रमा सक्रिय हैं। करोड़ों कोस चलते रहने के पश्चात् भी उनकी यात्रा का कोई अन्त नहीं। सिद्ध, बुद्ध, देवते एवं नाथ-योगी ईश्वर के भय में ही विचरण करते हैं। भय में ही आकाश चारों ओर फैला हुआ है। प्रभु के भय में ही बड़े-बड़े योद्धा, महाबली एवं शूरवीर क्रियाशील हैं। प्रभु के भय में ही झुण्ड के झुण्ड जन्मते-मरते रहते हैं। प्रभु ने अपने भय में ही सबका भाग्य निश्चित कर रखा है। हे नानक! एक सत्यस्वरूप निरंकार परमात्मा ही निर्भय है॥ १॥

मः १ ॥ नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥ केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥ गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! एक निरंकार प्रभु ही निडर है, अन्य तो राम जैसे कितने ही उसके चरणों की धूल हैं। कृष्ण-कन्हैया की लीला की अनेक कहानियाँ दुनिया में प्रचलित हैं और कितने ही पण्डित वेदों का उच्चारण करने वाले हैं। अनेक भिखारी नाचने वाले हैं और बार-बार ताल पर झूमते हैं। रासधारी बाजार में आते हैं और झूठी रास दिखाते हैं। वे राजे-रानियाँ बनकर गाते हैं और उल्ट-पुल्ट बोलते हैं। वे लाखों रुपए के कानों के कुण्डल एवं लाखों रुपए के हार पहनते हैं। हे नानक! जिन शरीरों पर वे आभूषण पहनते हैं, वह शरीर तो राख बन जाते हैं। ज्ञान की प्राप्ति केवल बातों से नहीं होती, इसका कथन करना लोहे की भाँति कठिन है। यदि भगवान की मेहर हो जाए तो ही ज्ञान प्राप्त होता है। अन्य चतुराई एवं छल-कपट तो नाश करने वाले हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ यदि दयालु प्रभु करुणा-दृष्टि धारण करे तो उसकी कृपा से सच्चे गुरु की लब्धि होती है। यह जीवात्मा अनेक जन्मों में भटकती रही परन्तु सतिगुरु की शरण में आने से उसे सतिगुरु ने शब्द का भेद सुनाया। हे संसार के सब लोगो! ध्यान से सुनो, सतिगुरु जैसा बड़ा कोई दाता नहीं। जो मनुष्य अपने मन से अहंत्व मिटा देता है उसे सतिगुरु मिलता है और सच्चे गुरु के माध्यम से सत्य की प्राप्ति होती है। सच्चा गुरु ही सत्य के रहस्य को समझाता है॥ ४॥

सलोक मः १ ॥ घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जैसे रासधारी रास करते हैं, वैसे ही परमात्मा की भी रासलीला हो रही है। इस रासलीला में घड़ियाँ नृत्य करने वाली गोपियाँ हैं और सारे प्रहर कान्हा-गोपाल है। पवन, पानी एवं अग्नि इस रास लीला के पात्रों के आभूषण हैं और सूर्य एवं चाँद स्वांग धारण करने वाले नट हैं। समस्त धरती नाटक करने वालों का माल, धन है परन्तु ये सभी जंजाल ही हैं। हे नानक! ज्ञान से विहीन दुनिया इस नाटक में लुट जाती है और यमदूत उसे अपना ग्रास बना लेता है॥ १॥

मः १ ॥ वाइनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ गावनि सीता राजे राम ॥ निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ जा का कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अनंतु ॥ लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥ नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥ २ ॥

महला १॥ (समाज की अद्‌भुत विडम्बना है कि) चेले ताल बजाते हैं और उनके गुरु नाचते हैं। वह घुँघरु बांधकर अपने पैर हिलाते हैं और मस्त होकर अपना सिर घुमाते हैं। उनके सिर के बालों पर उड़-उड़कर धूल पड़ती है। यह तमाशा देखकर लोग हँसते हैं और घर को चले जाते हैं। रोटी के कारण वे ताल मिलाते हैं वह अपने आपको धरती पर पछाड़ते हैं। (संसार के मंच पर नाटक करने वाले जीव) गोपियाँ एवं कान्हा बनकर गाते हैं। सीता, राजा राम बनकर गाते हैं। किन्तु निर्भय, निरंकार प्रभु का ही नाम सत्य है जिसने समूची सृष्टि की रचना की है। जिन सेवकों का भाग्य उदय होता है, वे प्रभु की सेवा करते हैं। जिनके मन में प्रभु प्रेम का चाव है उनकी रात्रि सुहावनी हो जाती है। जिन्होंने गुरु विचारधारा द्वारा यह शिक्षा सीख ली है, दयालु स्वामी अपनी कृपा-दृष्टि से ही उन्हें मुक्ति प्रदान कर देता है। अनेकों ही कोल्हू, चरखा, चक्कियाँ एवं चाक हैं। मारूथल के बवन्डर भी अनन्त हैं। अनेकों ही लट्टू, मधानियाँ एवं अन्न निकालने के यन्त्र हैं। पक्षी घूमते हुए दम नहीं लेते। कई यंत्र लोहे के शूल पर चढ़ाकर घुमाए जाते हैं। हे नानक! घूमने वाले जीवों एवं यंत्रों की गणना का कोई अन्त नहीं। जो प्राणी माया के बन्धनों में फँस जाते हैं, उन्हें धर्मराज ऐसे ही कर्मों के अनुसार घुमाता है। अपने किए कर्मों अनुसार ही प्रत्येक जीव नृत्य करता है। जगत की मोहिनी में फँसकर जो मनुष्य नाच-नाचकर हँसता है वह मृत्यु के समय रोता है। वे उड़कर भी बच नहीं सका और न ही कोई सिद्धि हासिल कर सकता है। नाचना एवं कूदना मन का चाव है। हे नानक! जिनके हृदय में प्रभु का भय विद्यमान है, उनके हृदय में ही उसका प्रेम है॥ २॥

पउड़ी ॥ नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! तेरा नाम निरंकार है और तेरा नाम याद करने से मनुष्य नरक में नहीं जाता। प्राण एवं तन उस प्रभु के दिए हुए हैं, जो कुछ वह देता है, जीव वही कुछ खाता है। अन्य कुछ कहना निरर्थक है। हे प्राणी! यदि तू अपना भला चाहता है तो पुण्य कर्म कर और नीच (विनीत) कहलवा अर्थात् विनीत रहना चाहिए। यदि कोई जोरावर इन्सान बुढ़ापे को दूर रखना चाहे तो भी बुढ़ापा

अपना वेष धारण करके आ ही जाता है। जब मनुष्य के जीवन की घड़ियाँ पूरी हो जाती हैं तो दुनिया में कोई नहीं रह सकता अर्थात् आयु पूर्ण होने के बाद मृत्यु ही प्राप्त होती है॥ ५॥

सलोक मः १ ॥ मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मुसलमानों को शरीअत की प्रशंसा सबसे अच्छी लगती है और वे उसे पढ़-पढ़कर विचार करते हैं (अर्थात् शरीअत को ऊँचा मानते हुए उसे ही कानून समझते हैं)। मुसलमानों का यही मानना है कि खुदा का प्यारा बन्दा वही है जो अल्लाह के दर्शन-दीदार करने हेतु शरीअत की बन्दिश में पड़ता है। हिन्दू शास्त्र द्वारा प्रशंसनीय भगवान की स्तुति करते हैं, जिसका रूप बेअंत सुन्दर है। वे तीर्थ-स्थानों पर स्नान करते, देवताओं की मूर्तियों की पूजा-अर्चना करते हैं और चन्दन की सुगन्धि का प्रयोग करते हैं। योगी समाधि लगाकर निर्गुण प्रभु का ध्यान करते हैं और करतार को 'अलख' नाम से पुकारते हैं। अलक्ष्य प्रभु का रूप सूक्ष्म है, उसका नाम निरंजन है और यह दुनिया ही उसका शरीर है। दानी के मन में संतोष उत्पन्न होता है और वह दान देने के बारे में विचार करते हैं। परन्तु दिए दान के फलस्वरूप हजारों गुणा माँगता है और अभिलाषा करता है कि संसार उसकी शोभा करता रहे। चोर, व्यभिचारी तथा झूठे आचरण वाले पापी विकारी ऐसे लोग भी हैं, जो कुछ उनके पास था, कर्म-फल भोगकर यहाँ से खाली ही चले जाते हैं। क्या उन्होंने कोई शुभ-कर्म किया? समुद्र, धरती, देवताओं की पुरियों, लोकों, सूर्य, चन्द्रमा एवं तारों वाले इस जगत में बेअंत जीव रहते हैं। हे प्रभु! यह जीव जो कुछ कहते हैं, तू उन्हें जानता है। तू ही उनका भरण-पोषण करता है। हे नानक! भक्तों को परमात्मा की महिमा-स्तुति करने की भूख लगी रहती है और उसका सत्य नाम ही उनका आधार है। वे गुणवान पवित्र-पुरुषों के चरणों की धूल बनकर रात-दिन सदा आनंद में रहते हैं॥ १॥

मः १ ॥ मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥ २ ॥

महला १॥ मुसलमान जब मरता है तो उसे दफनाया जाता है और उसका शरीर मिट्टी बन जाता है लेकिन जब वह मिट्टी कुम्हार के पास आती है तो वह इससे बर्तन एवं ईंटें बनाता है। यह जलती हुई मिट्टी चीखती-चिल्लाती है। बेचारी मिट्टी जल-जलकर रोती है और जलते हुए अंगारे उस पर गिरते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जिस कर्त्ता प्रभु ने यह संसार बनाया है, वही इसका भेद जानता है कि जलाना भला है अथवा दफन करना॥ २॥

पउड़ी ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ ६ ॥

पउडी॥ सच्चे गुरु के बिना किसी भी मनुष्य को प्रभु प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि सतिगुरु के अन्तर्मन में प्रभु ने खुद को रखा हुआ है। मैंने यह तथ्य प्रत्यक्ष तौर पर कहकर सबको सुना दिया है। जिन्होंने अपने अन्तर से सांसारिक मोह को मिटा दिया है, वे सतिगुरु से मिलकर मुक्त हो गए हैं। उत्तम विचार यही है कि जिसने अपना चित सत्य से लगा लिया है, उसने जगत का जीवनदाता प्रभु पा लिया है॥ ६॥

सलोक मः १ ॥ हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मनुष्य अहंकार में जगत में आया है और अहंकार में ही जगत से चला गया है। उसने अहंकार में जन्म लिया था और अहंकार में ही मर गया है। अहंकार में ही उसने किसी को कुछ दिया था और अहंकार में ही किसी से कुछ लिया था। अहंकार में ही मनुष्य ने धन कमाया था और अहंकारवश ही वह गंवा गया था। अहंकारवश ही वह सत्यवादी और झूठा बन जाता है। अहंकार में ही वह पाप एवं पुण्य का विचार करता है। अहंकार में ही मनुष्य नरक अथवा स्वर्ग में जन्म लेता है। अहंकार में ही वह कभी हँसता है और अहंकारवश ही वह कभी रोता है। अहत्व में उसकी मति पापों से भर जाती है और अहत्व में ही अपने पापों को तीर्थ-स्नान द्वारा शुद्ध करता फिरता है। वह अहत्व में अपनी जाति-पाति भी गंवा लेता है। अहंकार में ही मनुष्य मूर्ख एवं बुद्धिमान बनता है। लेकिन वह मोक्ष एवं मुक्ति के सार (रहस्य) को नहीं जानता। वह अभिमान में ही माया को सत्य समझता है और अभिमान में ही इसे पेड की छाया की तरह झूठी समझता है। अहंकारवश ही प्राणी बार-बार योनियों में जन्म लेता है। यदि अहंकार दूर हो जाए तभी प्रभु का द्वार सूझता है। अन्यथा ज्ञान-विहीन मनुष्य वाद-विवादों में ही उलझा रहता है। हे नानक ! प्रभु के हुक्मानुसार मनुष्य की किस्मत का लेख लिखा जाता है। मनुष्य जैसी विचारधारा रखता है, वैसा ही सत्य को मानने लगता है॥ १॥

महला २ ॥ हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥ २ ॥

महला २॥ अहंकार का यह स्वभाव है कि मनुष्य अहंकार में ही कर्म करता है। यह अहंकार जीव के बंधनों का कारण है, इसलिए जीव बार-बार योनियों में पडता है। वास्तव में यह अहंकार

कहाँ से उत्पन्न होता है और किस युक्ति द्वारा इस पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है। प्रभु की रज़ा यह है कि अहंकार के कारण मनुष्य अपने पूर्व कर्मों के अनुसार भटकता रहे। अहंकार एक दीर्घ रोग है परन्तु इसका उपचार भी शामिल है। यदि प्रभु कृपा-दृष्टि धारण करे तो मनुष्य गुरु के शब्द अनुसार कर्म करता है (यही इस रोग का उपचार है)। नानक का कथन है कि हे लोगो! सुनो, इस युक्ति द्वारा यह अहंकार दुःख का रोग निवृत्त हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥ ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जिन्होंने एक परम सत्य का ही ध्यान किया है, उन संतोषी व्यक्तियों ने ही परमात्मा की सेवा-भक्ति की है। वे कुमार्ग पर अपना पैर नहीं रखते और शुभ कर्म एवं धर्म कमाते हैं। वे दुनिया के बन्धनों को तोड़ देते हैं और थोड़ा अन्न-पानी खाते हैं। हे ईश्वर! तू ही महान् दाता है, जो नित्य ही देनें देते रहता है। महान् प्रभु की गुणस्तुति करते हुए मनुष्य कीर्ति प्राप्त कर लेता है॥ ७॥

सलोक मः १ ॥ पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥ दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥ अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥ सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥ नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! पुरुषों, वृक्षों, तीर्थों, तटों, मेघों, खेतों, द्वीपों, लोकों, मण्डलों, खण्डों-ब्रह्माण्डों, अंडज, जेरज, स्वेदज एवं उद्भिज, सरोवर, पहाड़ों में रहने वाले सब जीवों की गणना परमात्मा ही जानता है कि कितनी है। हे नानक! भगवान ही जीवों को पैदा करके उनका भरण-पोषण करता है। जिस कर्ता ने सृष्टि-रचना की है वही इसकी चिन्ता एवं देखभाल करता है। वह कर्त्ता जिसने जगत की रचना की है, वह इसकी चिन्ता भी खुद ही करता है। वह भगवान कल्याणकारी है, उसे मेरा शत्-शत् प्रणाम है। उसका दरबार अटल है। हे नानक! सत्य नाम के सिमरन बिना तिलक एवं जनेऊ पहनने का क्या अभिप्राय है॥ १॥

मः १ ॥ लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ २ ॥

महला १॥ चाहे लाखों ही नेकियाँ, अच्छाइयाँ, लाखों ही पुण्य स्वीकृत हुए हों, चाहे तीर्थों पर लाखों ही तप किए हों तथा वनों में जाकर सहज योग किया हो, चाहे लाखों ही बाहुबल-शूरवीरता संग्राम में दिखाई हो तथा रणभूमि में वीरगति प्राप्त की हो, चाहे लाखों ही श्रुतियों में सुरति, लाखों ही ज्ञान-ध्यान एवं पुराणों के पाठ पढ़े हों, तो भी सब व्यर्थ है। चूंकि जिस परमात्मा ने यह जगत बनाया है, उसने ही जीवों का जन्म-मरण निर्धारित किया है। हे नानक! प्रभु का करम (मेहर) ही सत्य का चिन्ह है, शेष सभी चतुराइयाँ झूठी हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही

सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइआ ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ हे भगवान ! एक तू ही सच्चा मालिक है, जिसने परम सत्य का प्रसार किया हुआ है। जिसे तू (सत्य) देता है, वही सत्य को प्राप्त करता है और वह सत्य का कर्म करता है। जिस जीव को सतिगुरु मिल जाता है, उसे सत्य की प्राप्ति होती है। सच्चा गुरु उनके हृदय में सत्य को बसा देता है। लेकिन मूर्ख व्यक्ति सत्य को नहीं जानता, मनमुख होने के फलस्वरूप व्यर्थ ही जन्म गंवा लेता है। ऐसे लोग इस दुनिया में क्यों आए है॥ ८॥

सलोकु मः १ ॥ पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ चाहे गाड़ियाँ लादकर भी पुस्तकें पढ़ ली जाएँ, पुस्तकों के तमाम समुदाय अध्ययन कर लिए जाएँ। चाहे पढ़-पढ़कर पुस्तकें नाव भर ली जाएँ, चाहे पढ़-पढ़कर खड्डे भर लिए जाएँ। चाहे बरसों तक पढ़ाई की जाए चाहे जितने भी महीने पढें जाएँ। चाहे सारी उम्र पढ़ते रहो, जीवन की साँसें रहने तक पढ़ते रहो। परन्तु हे नानक ! एक ही बात सत्य के दरबार में मंजूर है, प्रभु का नाम-सुमिरन ही मनुष्य के कर्मालेख में है, शेष सबकुछ तो अहंकार में बकवाद करना है॥ १॥

मः १ ॥ लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥ मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अंधै पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ नानक नदरि करे सो पाए ॥ आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥ २ ॥

महला १॥ जितना अधिक मनुष्य पढ़ता-लिखता है, उतना अधिक वह दुख में जलता रहता है। जितना अधिक वह तीर्थों पर भटकता है, उतना अधिक वह निरर्थक बोलता है। जितना अधिक मनुष्य धार्मिक वेष धारण करता है, वह उतना ही अधिक शरीर को दुःखी करता है। हे जीव ! अब तू अपने कर्मो का फल भोग। जो मनुष्य अन्न नहीं खाता, वह जीवन का स्वाद गंवा लेता है। द्वैतभाव में पड़कर मनुष्य बहुत दुःखी होता है। जो वस्त्र नहीं पहनता, वह दिन-रात दुःखी होता है। मौन धारण करने से मनुष्य नष्ट हो जाता है। गुरु के बिना मोह-माया में सोया हुआ कैसे जाग सकता है। जो मनुष्य नंगे पैर चलता है, वह अपने कर्मो का फल भोगता है। जो मनुष्य अभक्ष्य गंदगी खाता है और सिर पर राख डलवाता है, वह मूर्ख अन्धा अपना मान-सम्मान गंवा लेता है। सत्य नाम के बिना कोई भी वस्तु मंजूर नहीं होती। वह जंगलों, कब्रिस्तान एवं श्मशान घाट में रहता है। अन्धा मनुष्य प्रभु को नहीं जानता एवं तत्पश्चात् पश्चाताप करता है। जो सतिगुरु से मिलता है, उसे सुख प्राप्त होता है और हरि का नाम वह अपने मन में बसा लेता है। हे नानक ! प्रभु की कृपा-दृष्टि से सब कुछ प्राप्त हो जाता है। आशा-चिंता से वह निर्लिप्त हो जाता है और ब्रह्म-शब्द द्वारा वह अहंकार को जला देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु ! तेरे मन को भक्त बहुत प्यारे लगते हैं, जो तेरे द्वार पर भजन-कीर्तन गाते हुए बहुत सुन्दर लगते हैं। हे नानक ! भाग्यहीन लोगों को प्रभु की कृपा-दृष्टि के बिना उसके दर पर शरण नहीं मिलती और वे भटकते रहते हैं। कुछ लोग अपने मूल (प्रभु) को नहीं पहचानते और व्यर्थ ही अपना अहंकार दिखाते हैं। मैं निम्न जाति का तुच्छ ढाढी हूँ, शेष अपने आपको उत्तम जाति के कहलवाते हैं। हे प्रभु ! मैं उनकी संगति माँगता हूँ, जो तेरा ध्यान-मनन करते हैं॥ ६॥

सलोकु मः १ ॥ कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ राजा झूठ है, प्रजा झूठ है। यह सारा संसार ही झूठ है, राजाओं के मंडप और महल झूठ एवं छल ही हैं। इसमें निवास करने वाला भी धोखा ही है। सोना-चांदी झूठा है और इसे पहनने वाला कपट ही है। यह काया, वस्त्र एवं अपार रूप सभी झूठे हैं। पति और पत्नी झूठ रूप ही है, क्योंकि दोनों ही वासनाओं में फँसकर खराब होते हैं। झूठा मनुष्य झूठ से प्रेम करता है और करतार प्रभु को विस्मृत कर देता है। मैं किसके साथ दोस्ती करूँ ? क्योंकि यह संसार नाशवान है। झूठ मीठा गुड़ है, झूठ मीठा मधु है। झूठ ही झुण्डों के झुण्ड जीवों को नरक में डुबो रहा है। नानक प्रभु के समक्ष प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे परम-सत्य ! तेरे बिना यह सारा संसार झूठा ही है॥ १॥

मः १ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ सचु तां परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥ २ ॥

महला १॥ सत्य तो तभी जाना जाता है यदि सत्य मनुष्य के हृदय में हो। उसकी झूठ की मैल उतर जाती है और वह अपने तन को शुद्ध कर लेता है। सत्य तो ही जाना जाता है यदि मनुष्य सत्य (प्रभु) से प्रेम करे। जब प्रभु नाम को सुनकर मन प्रसन्न हो जाता है तो जीव मोक्ष द्वार प्राप्त कर लेता है। सत्य का बोध तभी होता है यदि मनुष्य प्रभु-मिलन की युक्ति समझ लेता है। शरीर रूपी धरती को संवार कर वह इसमें कर्त्ता प्रभु के नाम का बीज बो देता है। सत्य तो ही जाना जा सकता है, जब वह सच्ची शिक्षा प्राप्त करता है। वह जीवों पर दया करता है और यथाशक्ति अनुसार दान-पुण्य करता है। सत्य तो ही जाना जा सकता है, जब वह अपनी आत्मा के तीर्थ-स्थान में निवास करता हो। वह सतिगुरु से पूछकर उपदेश प्राप्त करके उनकी रज़ा

अनुसार बैठता एवं निवास करता है। सत्य सबके लिए एक औषधि है, यह पाप को साफ करके बाहर निकाल देता है। नानक उनके समक्ष विनती करता है, जिनके दामन में सत्य विद्यमान है॥ २॥

पउड़ी ॥ दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥ १० ॥

पउड़ी॥ मेरा मन संतों की चरण-धूल का दान माँगता है। यदि यह मिल जाए तो मैं इसे अपने मस्तक पर लगाऊँ। झूठा लालच छोड़कर हमें एक मन होकर भगवान का ध्यान करना चाहिए। जैसा कर्म हम करते हैं वैसा ही फल हमें प्राप्त होता है। यदि प्रारम्भ से ऐसा कर्म लिखा हो तो मनुष्य को संतों की चरणों की धूल प्राप्त हो जाती है। अल्पबुद्धि के फलस्वरूप हम सेवा के फल को गंवा लेते हैं॥ १०॥

सलोकु मः १ ॥ सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ अब सत्य का अकाल पड़ गया है अर्थात् सत्य लुप्त हो गया है एवं झूठ का प्रसार प्रचलित है। इस कलियुग की कालिख ने लोगों को बेताल बना दिया है। जिन्होंने प्रभु-नाम का बीज बोया था वह मान-प्रतिष्ठा से (जगत से) गए हैं। परन्तु अब टूटा हुआ (नाम का) बीज कैसे अंकुरित हो सकता है? यदि बीज सम्पूर्ण हो और ऋतु भी सुहावनी हो तो यह अंकुरित हो सकता है। हे नानक! यदि लाग का प्रयोग न किया जाए तो नवीन वस्त्र रंगा नहीं जा सकता। यदि शरीर पर लज्जा की लाग लगा दी जाए तो यह प्रभु के भय में पापों से धुलकर उज्ज्वल हो जाती है। हे नानक! यदि मनुष्य प्रभु-भक्ति से रंगा जाए तो झूठ इसे निकट भी स्पर्श नहीं कर सकता॥ १॥

मः १ ॥ लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥ अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥ मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥ पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥ २ ॥

महला १॥ लोभ एवं पाप दोनों ही राजा तथा मंत्री हैं और झूठ चौधरी बना बैठा है। लोभ, पाप एवं झूठ यह तीनों ही अपने नायब कामवासना को बुलाकर उसकी सलाह लेते हैं। सभी मिल बैठ कर बुरे दांव पेच सोचते हैं। अन्धी प्रजा ज्ञान से विहीन है और मृतक की भाँति चुपचाप अन्याय सहती है। ज्ञानी नृत्य करते हैं, बाजे बजाते और अनेक प्रकार के रूप धारण करके शृंगार करते हैं। वे ऊँची आवाज में पुकारते हैं एवं युद्ध काव्य एवं शूरवीरों की शूरवीरता की कहानियाँ गाते हैं। मूर्ख पण्डित अपनी चतुराई एवं हुज्जत द्वारा धन-संग्रह करता है। उसका केवल धन से ही प्रेम है। धर्मी लोग धर्म का कर्म करते हैं परन्तु उसके प्रभाव से वंचित हो जाते हैं क्योंकि स्वार्थवश मोक्ष माँगते हैं। यती कहलवाने वाले जीवन की युक्ति को नहीं समझते और व्यर्थ ही घर-बार छोड़ देते हैं। सभी अपने आपको चतुर समझते हैं और कोई भी अपने आपको कम नहीं आंकता।

हे नानक! यदि इज्जत का तराजू पिछले पलडे में डाल दिया जाए तो ही मनुष्य भलीभांति तुला हुआ मालूम होता है॥ २॥

मः १ ॥ वदो सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥ ३ ॥

महला १॥ हे नानक! बुराई भली प्रकार उजागर हो जाती है क्योंकि वह सत्य-परमेश्वर सब कुछ देखता है। हरेक ने जगत में आगे बढ़ने हेतु छलांग लगाई है परन्तु जो कुछ जगत का रचयिता करता है, वही होता है। परलोक में जाति एवं बाहुबल का कोई मूल्य नहीं क्योंकि वहाँ तो जीव नवीन होते हैं। जिन्हें कर्मों का लेखा-जोखा होने पर सम्मान प्राप्त होता है, वही भले कहे जा सकते हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ हे विधाता! तूने आरम्भ से ही जिन जीवों का अच्छा भाग्य लिख दिया है तो ही उन्होंने अपने मालिक-प्रभु को याद किया है। इन जीवों के वश में कुछ भी नहीं, यह विभिन्न प्रकार का जगत तूने ही उत्पन्न किया है। हे प्रभु! कुछ जीवों को तू अपने साथ मिला लेता है और कुछ जीवों को स्वयं ही दूर करके ख्वार करता रहता है। जहाँ तूने खुद ही किसी को अपनी सूझ प्रदान की है, गुरु की कृपा से उसने ही तुझे जाना है और वह सहज ही सत्य में समा गया है॥ ११॥

सलोकु मः १ ॥ दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥ १ ॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ २ ॥

श्लोक महला १॥ दुःख औषधि है और सुख रोग है, क्योंकि जब सुख मिल जाता है तो जीव को प्रभु-स्मरण ही नहीं होता। हे प्रभु! तू सृष्टि रचयिता है, मैं कुछ भी नहीं कर सकता। यदि मैं कुछ करने का प्रयास भी करूँ तो भी कुछ नहीं होता॥ १॥ हे जगत-रचयिता! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ, तू अपनी कुदरत में निवास कर रहा है, और तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! जीवों में ही तेरी ज्योति विद्यमान है और जीव तेरी ज्योति में विद्यमान हैं। हे सर्वकला सम्पूर्ण! तू सर्वव्यापक है। तू सच्चा मालिक है। तेरी महिमा अत्यंत सुन्दर है, जो तेरी उस्तति करता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है। हे नानक! यह तो जगत-रचयिता की ही सब लीला है, जो कुछ प्रभु ने करना है, उसे वह किए जा रहा है॥ २॥

मः २ ॥ जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥ खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥ सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ३ ॥

महला २॥ योगियों का धर्म ज्ञान प्राप्त करना है और ब्राह्मण का धर्म वेदों का अध्ययन करना है। क्षत्रियों का धर्म शूरवीरता के कार्य करना है और शूद्रों का धर्म दूसरों की सेवा करना है। परन्तु सभी का धर्म एक ईश्वर का सुमिरन करना है। यदि कोई इस रहस्य को जानता है तो नानक उसका दास है और वह पुरुष स्वयं ही निरंजन प्रभु है॥ ३॥

मः २ ॥ एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ४ ॥

महला २॥ एक कृष्ण ही सभी देवताओं का देव है। वह उन देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव सब की भी आत्मा है। सब जीवों में बसने वाला वासुदेव स्वयं ही इनकी आत्मा है, यदि कोई इस रहस्य को समझता हो, नानक उसका दास है, वह स्वयं ही निरंजन प्रभु है॥ ४॥

मः १ ॥ कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ ५ ॥

महला १॥ जैसे घड़े में बंधा हुआ जल टिका रहता है वैसे ही जल के बिना घड़ा भी नहीं बन सकता। इसी तरह (गुरु के) ज्ञान का वश में किया हुआ मन टिका रहता है परन्तु गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता॥ ५॥

पउड़ी ॥ पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ यदि पढ़ा-लिखा विद्वान व्यक्ति गुनहगार हो तो अनपढ़ इन्सान को डरना नहीं चाहिए क्योंकि नेक होने के कारण उस अनपढ़ को दण्ड नहीं मिलता। मनुष्य जैसे कर्म करता है, वैसा ही उसका नाम दुनिया में गूंजता है। हमें ऐसी जीवन की खेल नहीं खेलनी चाहिए, जिसके फलस्वरूप प्रभु के दरबार में पहुँचने पर हारना पड़े। विद्वान एवं अनपढ़ के कर्मों का लेखा-जोखा परलोक में होगा, स्वेच्छाचारी मनुष्य को परलोक में कर्मों का दण्ड अवश्य मिलता है॥ १२॥

सलोकु मः १ ॥ नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! चौरासी लाख योनियों में सुमेर पर्वत समान मानव-शरीर सर्वोच्च है। इस शरीर का एक रथ एवं एक रथवान है। युग-युग के पश्चात् ये बदलते रहते हैं और ज्ञानी पुरुष ही इस भेद को समझते हैं। सतियुग में मानव-शरीर का रथ संतोष का था और धर्म रथवान था। त्रैता युग में (मानव-शरीर का) रथ यतीत्व का था और बाहुबल रथवान था। द्वापर युग में (मानव-शरीर का) रथ तपस्या का था और सत्य रथवान था। कलियुग में (मानव शरीर का) रथ तृष्णा रूपी अग्नि का रथ है और झूठ इसका रथवान है॥ १॥

मः १ ॥ साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ २ ॥

महला १॥ सामवेद कहता है कि जगत का स्वामी प्रभु श्वेत-वस्त्रों वाला है। सतियुग में

प्रत्येक मनुष्य सत्य को चाहता था, सत्य में विचरता था और सत्य में ही समा जाता था। ऋग्वेद कहता है कि प्रभु सर्वव्यापक है और सभी देवताओं में परमात्मा का राम नाम सर्वश्रेष्ठ है। राम नाम के सुमिरन द्वारा प्रायश्चित हो जाता है अर्थात् पाप निवृत हो जाते हैं। हे नानक! राम नाम लेने से ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है। यजुर्वेद के समय (द्वापर में) यादव वंश के कृष्ण-कन्हैया हुए, जिन्होंने अपने बाहुबल से चंद्रावलि को छल लिया था। श्रीकृष्ण अपनी गोपी (सत्यभामा) हेतु इन्द्र के उद्यान से पारिजात (कल्पवृक्ष) ले आए थे और वृन्दावन में कौतुक रचे तथा आनंद मनाते रहे। कलियुग में अथर्ववेद प्रसिद्ध हुआ तथा उसके अनुसार प्रभु का नाम 'अल्लाह' एवं 'खुदा' विख्यात हो गया। लोगों ने नीले रंग के वस्त्र पहने तथा तुर्कों एवं मुगलों का शासन हो गया। इस तरह चारों वेद-सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद सच्चे कहे गए। उनको पढ़ने एवं अध्ययन करने से मनुष्य उनमें चार सिद्धांत प्राप्त करता है। हे नानक! यदि मनुष्य प्रभु की भक्ति करके अपने आपको विनीत कहलवाए तो ही वह मोक्ष प्राप्त करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिनके मिलन से भगवान का सिमरन किया है। जिसने मुझे उपदेश देकर ज्ञान का सुरमा प्रदान किया है और इन नेत्रों से मैंने जगत के सत्य को देख लिया है। जो व्यापारी (प्राणी) अपने प्रभु-पति को त्यागकर द्वैतवाद में लीन हुए, वे डूब गए हैं। सतिगुरु संसार-सागर में से पार करवाने वाला एक जहाज है, कुछ विरले पुरुष ही इसे अनुभव करते हैं। अपनी कृपा करके वह उनको संसार-सागर से पार कर देता है॥ १३॥

सलोकु मः १ ॥ सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥ सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ सेमल का वृक्ष बड़ा सीधा, अत्यंत ऊँचा एवं बहुत मोटा होता है। कितने ही पक्षी उसका फल खाने की आशा करके इसके पास आते हैं परन्तु निराश होकर चले जाते हैं। चूंकि इसके फल बहुत फीके, फूल बकबके एवं पत्ते किसी काम के नहीं होते। हे नानक! नम्रता बड़ी मीठी होती है और यह सब गुणों एवं अच्छाइयों का निचोड़ है अर्थात् सर्वोत्तम गुण है। हरेक मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु झुकता है परन्तु दूसरों की भलाई हेतु कोई नहीं झुकता। यदि कोई वस्तु तराजू पर रख कर तौली जाए तो तराजू का जो पलड़ा झुकता है, वही भारी होता है। मृग के शिकारी की भाँति अपराधी दुगुना झुकता है परन्तु सिर झुकाने से क्या प्राप्त हो सकता है जब मनुष्य हृदय से ही मैला हो जाता है॥ १॥

मः १ ॥ पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जे जाणसि ब्रहमं करमं॥ सभि फोकट निसचउ करमं ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥ २ ॥

महला १॥ पण्डित (वेद इत्यादि धार्मिक ग्रंथ) पुस्तकें पढ़ता है, सन्ध्या-वन्दन एवं वाद-विवाद करता है। वह पत्थरों की पूजा करता है और बगुलों की भाँति समाधि लगाता है। वह अपने मुख से झूठ बोलता है और सुन्दर आभूषणों की तरह दिखाता है। वह दिन में तीन बार गायत्री मंत्र का पाठ करता है। गले में माला और माथे पर तिलक धारण करता है। दुहरी धोती पहनता और सिर पर वस्त्र भी रखता है। परन्तु यदि यह पण्डित ब्रह्म का कर्म जानता हो तो उसे पता लगेगा कि यह सभी निश्चय कर्म व्यर्थ के आडम्बर हैं। हे नानक! श्रद्धा धारण करके भगवान का ध्यान करना चाहिए। सतिगुरु के मार्गदर्शन के बिना नाम-सिमरन का मार्ग नहीं मिलता॥ २॥

पउड़ी ॥ कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ इस शरीर रूपी सुन्दर वस्त्र एवं सौन्दर्य को इस दुनिया में ही छोड़कर जीव ने जाना है। जीव ने स्वयं अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगना है। मनुष्य इहलोक में चाहे मन लुभावने हुक्म लागू करता रहे परन्तु परलोक में उसे कठिन मार्ग में से गुजरना होगा। जब वह नग्न ही नरक को जाता है तो वह सचमुच ही बड़ा भयानक लगता है। वह अपने किए हुए अवगुणों पर पश्चाताप करता है॥ १४॥

सलोकु मः १ ॥ दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे पण्डित! दया की कपास हो, संतोष का धागा हो, यतीत्व की गांठ हो और सत्य द्वारा बल डाला हो, यह ही आत्मा का जनेऊ है। हे पण्डित! यदि तेरे पास ऐसा जनेऊ है तो मुझे पहना दे। ऐसा आत्मा का जनेऊ न ही टूटता है, न इसे मैल लगती है, न ही यह जलता है और न ही यह गुम होता है। हे नानक! वह मनुष्य धन्य हैं जिन्होंने ऐसा जनेऊ अपने गले में पहन लिया है। हे पण्डित! यह जनेऊ तो तुमने चार कौड़ियाँ मूल्य देकर मंगवा लिया और विशिष्ट अनुष्ठान पर अपने यजमान के चौके में बैठकर उसके गले में पहना दिया, फिर तुम उसे कान में उपदेश देते हो कि आज से तेरा गुरु ब्राह्मण हो गया। परन्तु कुछ समय उपरांत वह यजमान जब प्राण त्याग देता है तो वह जनेऊ उसके पार्थिव शरीर सहित जल जाता है और आत्मा धागे के बिना ही दुनिया से चली जाती है॥ १॥

मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥ २ ॥

महला १॥ इन्सान लाखों ही चोरियाँ, लाखों ही व्यभिचार करता है और लाखों ही झूठ एवं लाखों ही मंदे वचन बोलता है। वह दिन-रात लाखों ही ठगियाँ एवं गोपनीय पाप प्राणों के साथ बनाए रखता है। कपास को कातकर धागा बनाया जाता है और ब्राह्मण आकर इसे बल देकर पहना देता है। घर आए हुए अतिथियों को बकरा मार कर पकाया एवं खिलाया जाता है। सभी

पढ़ते एवं मुसलमानों की भाँति जीवन-आचरण धारण करते हो। हे भाई! यह पाखण्ड त्याग दो। प्रभु का नाम-सुमिरन करने से ही तुझे मोक्ष प्राप्त होगा॥ १॥

मः १ ॥ माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥ उन्हा भि आवहि ओई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥ २ ॥

महला १॥ मानव-भक्षी मुसलमान पाँच वक्त की नमाज पढ़ते हैं। दूसरी तरफ अत्याचार की छुरी चलाते हैं, उनके गले में धागा है। उनके घर में ब्राह्मण शंख बजाते हैं। उनको भी वही स्वाद आता है। उनकी पूँजी झूठी है और उनका व्यापार झूठा है। झूठ बोलकर वह भोजन ग्रहण करते हैं। लज्जा एवं धर्म का बसेरा उनसे कहीं दूर है। हे नानक! झूठ उन सभी को भरपूर कर रहा है। वे माथे पर तिलक लगाते हैं और कमर के साथ भगवां धोती पहनते हैं। उनके हाथ में छुरी है और जगत पर कसाइयों की भाँति अत्याचार कर रहे हैं। ब्राह्मण नीले वस्त्र पहन कर मुसलमानों की नजर में स्वीकृत होना चाहते हैं। मुसलमानों से धन-धान्य लेते हैं, जिन्हें मलेच्छ कहते हैं और पुराणों की फिर भी पूजा करते हैं। एक तरफ अभाषा अरबी-फारसी का कलमा पढ़कर हलाल किया बकरा खाते हैं परन्तु दूसरी तरफ अपनी रसोई के भीतर किसी को दाखिल नहीं होने देते। वे रसोई की लिपाई करके उसके गिर्द रेखा लगाते हैं और चौकी रसोई में वे झूठे आकर बैठ जाते हैं। दूसरों को वे कहते हैं कि, "रसोई (चौकी) के निकट मत आना, हमारी चौकी को स्पर्श मत करना, अन्यथा हमारा भोजन भ्रष्ट हो जाएगा।" भ्रष्ट मलिन शरीर से वे दुष्कर्म करते हैं। अपवित्र मन से वे जूठन की चुल्लू करते हैं। हे नानक! यदि सत्य का ध्यान करने से मन शुद्ध हो जाता है तो सत्य प्राप्त हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा सब जीवों को अपने चित्त में याद रखता है और वह सबको देखकर अपनी निगाह में रखकर अपनी इच्छा से चलाता है। वह खुद ही जीवों को प्रशंसा प्रदान करता है और खुद ही उन से कर्म करवाता है। बड़ों से बड़ा प्रभु महान है और उसकी सृष्टि भी अनन्त है। वह हरेक को कामकाज में लगाता है। यदि प्रभु कोप-दृष्टि धारण कर ले तो वह राजाओं-महाराजाओं को भी घास के तृण की तरह कंगाल बना देता है। चाहे वे द्वार-द्वार माँगते रहें परन्तु उन्हें भिक्षा नहीं मिलती॥ १६॥

सलोकु मः १ ॥ जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि कोई चोर पराया घर लूट ले और पराए घर की लूट पित्तरों के निमित्त

श्राद्ध करे तो परलोक में वस्तु पहचानी जाती है। इस तरह वह पित्तरों को चोर बना देती है। (अर्थात् पित्तरों को दण्ड मिलता और चोरी की वस्तु से पुण्य नहीं मिलता) प्रभु आगे यह न्याय करता है कि जो ब्राह्मण अपने यजमान से वह चोरी की वस्तु पित्तरों नमित्त दान करवाता है, उस दलाल ब्राह्मण के हाथ काट दिए जाते हैं। हे नानक! आगे परलोक में केवल यही प्राप्त होता है, जो मनुष्य अपने परिश्रम से कमा कर देता है॥ १॥

मः १ ॥ जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥

महला १॥ जैसे स्त्री को बार-बार मासिक-धर्म होता है, वैसे झूठे इन्सान के मुँह में झूठ ही बना रहता है। ऐसा इन्सान सदैव ही दुःखी होता है। ऐसे इन्सान पवित्र नहीं कहे जाते, जो अपने शरीर को शुद्ध करके बैठ जाते हैं। हे नानक! पवित्र लोग वही हैं, जिनके मन में प्रभु निवास करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ जिन लोगों के पास पवन-वेग की तरह तेज चलने वाले सुन्दर काठीधारी घोड़े हैं, जिन्होंने अपनी रानियों के रनिवास को हर प्रकार के रंगों से सजाया है, जो मकानों, मंडपों एवं ऊँचे मन्दिरों में रहते हैं और आडम्बर करते रहते हैं। जो अपनी मन लुभावनी बातें करते हैं, परन्तु प्रभु को नहीं जानते इसलिए उन्होंने अपने जीवन की बाजी हार दी है। जिन व्यक्तियों ने दूसरों पर हुक्म चला कर भोजन खाया है और अपने महलों को देखकर मृत्यु को भुला दिया है जब उन पर बुढ़ापा आ गया तो उसके आगे उनका यौवन हार गया अर्थात् बुढ़ापे ने उनका यौवन नष्ट कर दिया॥ १७॥

सलोकु मः १ ॥ जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि सूतक रूपी वहम को सत्य मान लिया जाए तो सूतक सब में होता है। गोबर एवं लकड़ी में भी कीड़ा होता है। जितने भी अनाज के दाने इस्तेमाल किए जाते हैं, कोई भी दाना जीव के बिना नहीं। सर्वप्रथम जल ही जीवन है, जिससे सब कुछ हरा-भरा (ताजा) होता है। सूतक किस तरह दूर रखा जा सकता है? यह सूतक हमारी पाकशाला (रसोई) में भी रहता है। हे नानक! भ्रमों के कारण पड़ा सूतक इस तरह कभी दूर नहीं होता, इसे ज्ञान द्वारा ही शुद्ध करके दूर किया जा सकता है॥ १॥

मः १ ॥ मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥ कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥ २ ॥

महला १॥ मन का सूतक लोभ है अर्थात् लोभ रूपी सूतक मन को चिपकता है और जीभ का सूतक झूठ है अर्थात् झूठ रूपी सूतक जीभ से लगता है। आँखों का सूतक पराई नारी, पराया-धन एवं रूप-यौवन को देखना है। कानों का सूतक कानों से पराई निन्दा सुनना है। हे नानक! इन सूतकों के कारण मनुष्य की आत्मा जकड़ी हुई यमपुरी जाती है॥ २॥

मः १ ॥ सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पवितु है दितोनु रिजकु स्मबाहि ॥ नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि ॥ ३ ॥

महला १॥ यह जीवन-मृत्यु वाला सूतक सिर्फ भ्रम ही है, जो द्वैतभाव के कारण सबको लगा हुआ है। जन्म एवं मरण प्रभु का हुक्म है और उसकी रजा द्वारा ही मनुष्य जन्म लेता और प्राण त्यागता है। खाना-पीना पवित्र है, क्योंकि प्रभु ने सभी जीवों को भोजन दिया है। हे नानक! जो गुरुमुख बनकर इस भेद को समझ लेता है, उसे सूतक नहीं लगता॥ ३॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ जिस सतगुरु में महान् गुण मौजूद हैं, उसे बड़ा मानकर उसी की स्तुति करनी चाहिए। भगवान की कृपा से सतगुरु मिल जाए तो वह सतगुरु की बडाई को देखता है। जब उसे अच्छा लगता है तो वह मनुष्य के मन में बसा देता है। ईश्वर का हुक्म हो तो सतगुरु मनुष्य के मस्तक पर हाथ रखकर तमाम बुराइयाँ निकाल कर फेंक देता है। जब प्रभु प्रसन्न हो जाए तो नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं॥ १८॥

सलोकु मः १ ॥ पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ पहले ब्राह्मण आप निर्मल होकर पवित्र चौके पर बैठ जाता है। शुद्ध भोजन जिसे किसी ने स्पर्श नहीं किया होता, उसके समक्ष लाकर परोसा जाता है। इस तरह पवित्र होकर वह भोजन ग्रहण करता है और तब श्लोक पढ़ने लग जाता है। उसने पवित्र भोजन को अपने पेट में अशुद्ध स्थान में डाल लिया, यह दोष किसे लगा है? अन्न, जल, अग्नि एवं नमक चारों ही देवता अर्थात् पवित्र पदार्थ हैं। जब पाँचवां पदार्थ घी डाल दिया जाता है तो शुद्ध एवं पवित्र भोजन बन जाता है। देवताओं की तरह पवित्र भोजन पापी तन के संयोग से अपवित्र हो जाता है और उस पर फिर थूका जाता है। हे नानक! वह मुँह जो नाम का उच्चारण नहीं करता और नाम के बिना रसों का भोग करता है, यूं समझ लीजिए कि उस मुँह पर थूक ही पड़ता है॥ १॥

मः १ ॥ भंडि जमीऐ भंडि निमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जमहि राजान ॥ भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥ नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥ २ ॥

महला १॥ नारी जन्मदात्ती है, उसी के माध्यम से मनुष्य गर्भ में से जन्म लेता है, उसी के माध्यम से प्राणी का शरीर बनता है। नारी से ही उसकी सगाई एवं विवाह होता है। नारी से ही मनुष्य दोस्ती करता है और नारी द्वारा ही दुनिया की उत्पत्ति का मार्ग जारी रहता है। यदि किसी मनुष्य की पत्नी मर जाती है तो वह दूसरी स्त्री की खोज करता है। नारी से ही उसका दूसरों

से रिश्ता बनता है। फिर उस नारी को क्यों बुरा कहें? जिसने बड़े-बड़े राजा-महाराजा एवं महापुरुषों को जन्म दिया है। नारी से ही नारी पैदा होती है और नारी के बिना कोई भी पैदा नहीं हो सकता। किन्तु हे नानक! केवल एक परमात्मा ही नारी के बिना अयोनि में है। जिस मुख से सदा ही प्रभु की गुणस्तुति होती है, वह भाग्यशाली एवं सुन्दर है। हे नानक! वह मुख उस सत्य प्रभु के दरबार में उज्ज्वल होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! सभी तुझे अपना मालिक कहते हैं लेकिन जिसका तू नहीं है, उसे चुनकर बाहर निकाल दिया जाता है। हर किसी प्राणी ने अपने कर्मों का फल भोगना है और अपना लेखा-जोखा चुकाना है। यदि मनुष्य ने इस जगत में सदा नहीं रहना तो वह क्यों अभिमान करे। किसी को भी बुरा मत कहो और विद्या पढ़कर इस बात को समझना चाहिए। मूर्खों से कदापि झगड़ा नहीं करना चाहिए॥ १६॥

सलोकु मः १ ॥ नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! फीका बोलने से तन-मन दोनों ही फीके (शुष्क) हो जाते हैं। कड़वा बोलने वाला दुनिया में कटुभाषी ही मशहूर हो जाता है और लोग भी उसके कड़वे वचनों से ही याद करते हैं। कड़वे स्वभाव वाला जीव प्रभु के दरबार में दुत्कार दिया जाता है और कटुभाषी के मुँह पर थूक ही पड़ता है। कटुभाषी मनुष्य मूर्ख कहा जाता है और उसे दण्ड के तौर पर जूते पड़ते हैं॥ १॥

मः १ ॥ अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥ तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥ रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥ २ ॥

महला १॥ मन से झूठे पर बाहर से सत्यवादी होने का दिखावा करने वाले दुनिया में पाखण्ड ही बनाए रखते हैं। चाहे वे अड़सठ तीर्थों का स्नान कर लें परन्तु फिर भी उनकी मन की मैल दूर नहीं होती। इस दुनिया में वही लोग भले हैं, जिनके मन में रेशम की तरह कोमलता है, चाहे बाहर से उन्होंने शरीर पर फटे-पुराने ही कपड़े पहने हुए हैं। उनका भगवान से बहुत प्रेम है और उसके दर्शनों का ध्यान धारण करते हैं। प्रभु के प्रेम में वे हँसते हैं, प्रेम में ही रोते हैं और चुप भी हो जाते हैं। वह अपने सत्यस्वरूप परमेश्वर के अलावा किसी की भी परवाह नहीं करते। प्रभु-द्वार के मार्ग पर बैठे हुए वह भोजन की याचना करते हैं और जब वह देता है तो ही खाते हैं। परमात्मा की कचहरी एक है और एक ही उसकी जीवों की तकदीर लिखने की कलम है। हमारा और तुम्हारा वहाँ मेल होता है अर्थात् छोटे-बड़े का मेल होता है। प्रभु के दरबार में कर्मों का लेखा-जोखा किया जाता है। हे नानक! अपराधी मनुष्य कोल्हू में तेल वाले बीजों की तरह पीसे जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥ २० ॥

पउडी॥ हे परमात्मा ! तू स्वयं ही सृष्टि रचयिता है और स्वयं ही सत्ता को धारण किया हुआ है। तू अपनी रचना एवं कच्ची-पक्की गोटियों (अच्छे-बुरे जीवों) को धरती पर देखता है। जो भी जीव इस दुनिया में आया है, वह चला जाएगा। अपनी वारी आने पर सभी ने जाना ही होता है। अपने मन में से हम उस प्रभु को क्यों विस्मृत करें, जिसने हमें जीवन एवं प्राण दिए हुए हैं ? आओ, अपने हाथों से हम स्वयं ही अपने कार्य सम्पूर्ण करें अर्थात् शुभ कर्मों द्वारा भगवान को प्रसन्न करके अपना जीवन कार्य संवार लें॥ २०॥

सलोकु महला २ ॥ एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ यह कैसी आशिकी है, जो भगवान को छोड़कर द्वैतवाद से लगती है। हे नानक ! सच्चा आशिक वही कहलाता है, जो सदा प्रभु के प्रेम में ही समाया रहता है। जो व्यक्ति अपने किए शुभ कर्म के दिए फल सुख को अच्छा मानता है और अपने किए बुरे कर्म के दिए फल दुख को बुरा मानता है, उसे भगवान का आशिक नहीं कहा जा सकता। वह तो अच्छे एवं बुरे के लेखे में पड़कर प्रेम का हिसाब-किताब करता है। प्रभु जो कुछ करता है, ऐसा जीव उसमें सहमत नहीं रहता॥ १॥

महला २ ॥ सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥ २ ॥

महला २॥ जो मनुष्य अपने प्रभु के हुक्म को कभी प्रणाम करता है और कभी उसके किए पर संशय (ऐतराज) करता है, वह आदि से ही कुमार्गगामी हो जाता है। हे नानक ! उसके दोनों ही कार्य झूठे हैं और प्रभु के दरबार में उसको कोई स्थान नहीं मिलता॥ २॥

पउड़ी ॥ जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ जिसकी सेवा करने से सुख मिलता है, सदैव उस प्रभु को याद करते रहना चाहिए। जब अपने किए कर्मो का आप ही भोगना है तो फिर हम बुरे कर्म क्यों करें ? बुरा कर्म कदापि नहीं करना चाहिए, दूर-दृष्टि से नतीजे का ध्यान रखना चाहिए। हमें कर्मों का ऐसा खेल नहीं खेलना चाहिए, जिसके फलस्वरूप प्रभु के समक्ष हमें लज्जित होना पड़े, अर्थात् शुभ कर्म ही करने चाहिएँ। मनुष्य जन्म में ऐसी सेवा-भक्ति करो, जिससे लाभ प्राप्त हो॥ २१॥

सलोकु महला २ ॥ चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ यदि कोई सेवक अपने मालिक की सेवा करता है और साथ ही अभिमानी,

विवादास्पद झगडालू है। यदि वह अधिकतर बातें बनाता है तो वह अपने मालिक की प्रसन्नता का पात्र नहीं होता। लेकिन यदि वह अपना अहंकार मिटाकर सेवा करे तो कुछ मान-सम्मान प्राप्त कर लेता है। हे नानक! वह मनुष्य अपने उस मालिक से मिल जाता है, जिसकी सेवा में जुटा हुआ है, उसकी लगन स्वीकृत हो जाती है॥ १॥

महला २ ॥ जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मंगे अंम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥ २ ॥

महला २॥ जो (संकल्प) दिल में होता है, वह (कर्मो के रूप में) प्रगट हो जाता है। मुँह से कही बात तो हवा की तरह महत्वहीन होती है। मनुष्य विष बोता है परन्तु अमृत माँगता है। देखो! यह कैसा न्याय है॥ २॥

महला २ ॥ नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥ ३ ॥

महला २॥ मूर्ख के साथ मित्रता कदापि ठीक नहीं होती। जैसा वह जानता है, वैसा ही वह करता है। चाहे कोई इसका निर्णय करके देख ले। किसी वस्तु में दूसरी वस्तु तभी समा सकती है, यद्यपि पहले पडी हुई वस्तु को निकाल दिया जाए। प्रभु के समक्ष हुक्म करना सफल नहीं होता, अपितु उसके समक्ष तो विनम्र प्रार्थना ही करनी चाहिए। हे नानक! छल-कपट की कमाई करने से छल-कपट ही हासिल होता है। लेकिन प्रभु का यशोगान करने से प्राणी प्रसन्न हो जाता है॥ ३॥

महला २ ॥ नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥ ४ ॥

महला २॥ अज्ञानी व्यक्ति के साथ मित्रता एवं बड़े आदमी के साथ प्रेम जल में लकीर की भाँति है, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं रहता॥ ४॥

महला २ ॥ होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥ ५ ॥

महला २॥ यदि एक नासमझ व्यक्ति कोई कार्य करे तो वह इसे सम्पूर्ण नहीं कर सकता। यदि एकाध भला काम कर भी ले तो वह दूसरा बिगाड़ देता है॥ ५॥

पउड़ी ॥ चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ जो सेवक अपने स्वामी की इच्छानुसार चले तो ही मानो कि वह अपने स्वामी की नौकरी कर रहा है, इससे एक तो उसे बड़ा मान-सम्मान मिलेगा, दूसरा वेतन भी स्वामी से दुगुना प्राप्त करेगा। यदि वह अपने स्वामी की बराबरी करता है तो वह मन में लज्जित ही होता है। परिणामस्वरूप अपनी पहली कमाई भी गंवा लेता है और सदा जूते खाता है। जिसका दिया हम

खाते हैं, उसका हमें कोटि-कोटि आभार व्यक्त करना चाहिए। हे नानक ! प्रभु के समक्ष हुक्म नहीं सफल होता अपितु उसके समक्ष विनम्र प्रार्थना ही कारगर होती है॥ २२॥

सलोकु महला २ ॥ एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ यह कैसी देन है, जो हम स्वयं माँगकर प्राप्त करते हैं ? हे नानक ! अद्‌भुत देन वह है, जो प्रभु की कृपा-दृष्टि होने पर प्राप्त होती है॥ १॥

महला २ ॥ एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥ २ ॥

महला २॥ यह कैसी चाकरी (सेवा) है, जिससे स्वामी का भय दूर नहीं होता ? हे नानक ! सच्चा सेवक वही कहलवाता है, जो अपने स्वामी में समा जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥ आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥ २३ ॥

पउड़ी॥ हे नानक ! परमात्मा का अन्त जाना नहीं जाता। उसका ओर-छोर कोई नहीं, वह अनन्त है। वह स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही अपनी रचित सृष्टि का नाश कर देता है। कुछ जीवों के गले पर जंजीरें पड़ी हुई हैं अर्थात् बन्धनों में जकड़े हुए हैं और कई असंख्य घोड़ों पर सवार होकर आनंद प्राप्त करते हैं। वह प्रभु स्वयं ही लीला करता है और स्वयं ही जीव से करवाता है। मैं किसके पास फरियाद कर सकता हूँ ? हे नानक ! जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, वही फिर उसकी देखरेख करता है॥ २३॥

सलोकु मः १ ॥ आपे भांडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिन्हा सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ भगवान ने स्वयं ही जीव रूपी बर्तन बनाए हैं एवं वह स्वयं ही उनके शरीर में गुण-अवगुण, सुख-दुख डालता है। कुछ जीव रूपी बर्तनों में दूध भरा रहता है अर्थात् सद्‌गुण विद्यमान रहते हैं और कई चूल्हे पर ताप सहते रहते हैं। कुछ भाग्यशाली बिस्तरों पर निश्चिंत होकर विश्राम करते हैं और कई उनकी सेवा में खड़े होकर पहरा देते हैं। हे नानक ! भगवान उन मनुष्यों का जीवन सुन्दर बना देता है, जिन पर वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥

महला २ ॥ आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥ किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥ २ ॥

महला २॥ भगवान स्वयं ही दुनिया बनाता और स्वयं ही सबकुछ करता है। वह स्वयं ही अपनी रचना की देखभाल करता है। वह दुनिया में जीवों को उत्पन्न करके उनके जन्म-मरण को देखता रहता है। हे नानक ! भगवान के अतिरिक्त किसके समक्ष प्रार्थना कर सकते हैं, जबकि वह स्वयं ही सब कुछ करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै रजाइ ॥ २४ ॥ १ ॥ सुधु

पउडी॥ महान् प्रभु की महिमा एवं बडप्पन का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह विश्व का रचयिता, अपनी कुदरत को बनाने वाला तथा सब जीवों पर कृपा-दृष्टि करने वाला है। वह समस्त जीवों को रोजी प्रदान करता है। जीव वही कर्म करता है, जो उसने आदि से ही भाग्य में लिख दिया है। हे नानक ! उस एक प्रभु के अतिरिक्त दूसरा कोई शरण का स्थान नहीं। वह वही कुछ करता है, जो उसे मंजूर होता है॥ २४॥ १॥ शुद्ध॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला है। वह सर्वशक्तिमान है, वह भय से रहित है, उसका किसी से वैर नहीं, वस्तुतः सब पर उसकी समान दृष्टि है, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति अमर है, वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है, वह स्वयं प्रकाशमान हुआ है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

रागु आसा बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ आसा स्री कबीर जीउ॥

गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥ कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥ १ ॥ देव करहु दइआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै ॥ जनम मरन दुख फेड़ करम सुख जीअ जनम ते छूटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके ॥ आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥ २ ॥ कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥ उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥ ३ ॥ जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदक कुंभु बिगराना ॥ कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां ॥ ४ ॥ १ ॥

मैं अपने गुरु के चरणों में लगकर विनती करता हूँ एवं पूछता हूँ कि मनुष्य क्यों उत्पन्न किया गया है? यह जगत किसलिए उत्पन्न होता है और क्यों इसका विनाश हो जाता है ?॥ १॥ हे गुरुदेव ! मुझ पर दया करो और सन्मार्ग लगाओ, जिससे मेरे भय के बन्धन टूट जाएँ। मुझ पर ऐसी सुख की कृपा करो कि मेरे पूर्व जन्म के जन्म-मरण के दुःख नाश हो जाएँ और मेरी आत्मा जन्मों के चक्र से छूट जाए॥ १॥ रहाउ॥ मन माया की फाँसी के बन्धन को नहीं तोड़ता और इसलिए वह शून्य समाधि में लीन नहीं होता। वह अपने अहंत्व एवं मोक्ष के पद की पहचान नहीं करता। इस विधि से उसकी जन्म-मरण की दुविधा दूर नहीं होती॥ २॥ आत्मा कभी भी पैदा नहीं होती चाहे मनुष्य समझते हैं कि यह पैदा होती है। यह तो जन्म-मरण से रहित है। जब मन का जन्म-मरण का ख्याल निवृत्त हो जाता है तो सदैव ही प्रभु की वृत्ति में समाया रहता है॥ ३॥ जैसे जल के घड़े में पड़ने वाला प्रतिबिंब घड़े के फूटने से वस्तु में मिल जाता है, वैसे ही हे कबीर ! जब गुण के माध्यम से दुविधा भाग जाती है तो मन प्रभु में समा जाता है॥ ४॥ १॥

आसा ॥ गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥ गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥ ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥ १ ॥ ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥ डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बासन मांजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥ बसुधा खोदि करहि

दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥ २ ॥ ओइ पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥ सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुटंब डुबावहि ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे करम कमावै ॥ कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥ ४ ॥ २ ॥

जो व्यक्ति साढ़े तीन-तीन गज लम्बी धोती और त्रिसूत्ती जनेऊ पहनते हैं। जिनके गले में जपमाला तथा हाथों में चमचमाते लोटे होते हैं। दरअसल ऐसे लोग हरि के संत नहीं कहलवाते अपितु वे तो बनारस के ठग हैं॥ १॥ ऐसे संत मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। वे तो पेड़ों को डालियों सहित निगल जाते हैं अर्थात् लोगों को परिवार सहित लूटकर मार डालते हैं॥ १॥ रहाउ॥ वे अपने बर्तन को भलीभांति रगड़कर साफ करके चूल्हे पर रखते हैं, लकड़ी को धोकर जलाते हैं भूमि खोदकर दुहरे चूल्हे बनाते हैं और समूचे मनुष्य को निगलने में कोई संकोच नहीं करते॥ २॥ वे पापी सदा अपराधों में भटकते रहते हैं और अपने आपको मुख से यूं कहलवाते हैं कि हम माया को स्पर्श नहीं करते, अपितु अस्पृष्ट हैं। वे अभिमानी सदैव भटकते रहते हैं और अपने कुटुंब को भी डुबो देते हैं॥ ३॥ मनुष्य उसी से लगा हुआ है, जिससे प्रभु ने उसे लगाया है और वह वैसे ही कर्म करता है। हे कबीर ! सत्य तो यही है कि जिसका मिलन सतगुरु से हो जाता है, वह दुनिया में बार-बार जन्म नहीं लेता॥ ४॥ २॥

आसा ॥ बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥ सेज सुखाली मुखि अंम्रितु दीन्हा ॥ तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥ आगै गइआ न बाजी हारी ॥ १ ॥ मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥ पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ ॥ पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥ पंच मारि पावा तलि दीने ॥ हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥ २ ॥ पिता हमारो वड गोसाई ॥ तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥ सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥ जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥ ३ ॥ हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ॥ एकै ठाहर दुहा बसेरा ॥ कहु कबीर जनि एको बूझिआ ॥ गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

मेरे पिता-परमेश्वर ने मुझे धैर्य-दिलासा दिया है। उसने नाम रूपी अमृत मेरे मुँह में डाल दिया है, जिससे मेरी हृदय रूपी सेज सुखदायी हो गई है। उस परमपिता को मैं अपने मन में से कैसे भुला सकता हूँ। जब मैं परलोक में जाऊँगा तो अपनी जीवन बाजी नहीं हारूँगा॥ १॥ मेरी माया रूपी माता मर गई है और मैं बहुत सुखी हो गया हूँ। अब मैं गुदड़ी नहीं पहनता और न ही मुझे सर्दी लगती है॥ १॥ रहाउ॥ मैं उस परमपिता पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मुझे जन्म दिया है। उसने पाँच विकारों-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से मेरी संगति समाप्त कर दी है। मैंने पाँचों विकारों को मार कर अपने पैरों के नीचे कुचल दिया है। अब मेरा मन एवं तन भगवान के सिमरन में लीन रहता है॥ २॥ मेरा पिता संसार का बड़ा मालिक है। फिर उस पिता के पास मैं किस तरह जा सकता हूँ ? जब मुझे सच्चा गुरु मिला तो उसने मार्गदर्शन प्रदान किया। जगत का पिता मेरे मन को अच्छा लगता है ॥३॥ हे ईश्वर ! मैं तेरा पुत्र हूँ और तू मेरा पिता है। हम दोनों का बसेरा भी एक ही स्थान पर है। हे कबीर ! सेवक केवल एक प्रभु को ही जानता है और गुरु की कृपा से मैंने सब कुछ समझ लिया है॥ ४॥ ३॥

आसा ॥ इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥ आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकट दे रानी ॥ १ ॥ नकटी को ठनगनु बाडा डूं ॥ किनहि बिबेकी काटी तूं ॥ १ ॥ रहाउ

॥ सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥ सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥ २ ॥ हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥ ओहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥ ३ ॥ नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥ कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥ ४ ॥ ४ ॥

वाममार्गी मनुष्य एक ही बर्तन में पकाया हुआ मुर्गा परोसते हैं तथा एक पात्र में शराब रख लेते हैं। इनके इर्द-गिर्द पाँच कामादिक योगी बैठ जाते हैं तथा मध्य में नकटी माया भी बैठी होती है॥ १॥ नकटी माया का घण्टा दोनों लोकों में बज रहा है। कोई विवेकी पुरुष ही इसके बन्धनों को काट देता है॥ १॥ रहाउ॥ सभी जीवों के मन में निर्लज्ज नकटी माया का निवास है। वह सभी को मारकर उनको निहारती है। वह रानी कहती है कि, "मैं सभी की बहन एवं भांजी हूँ परन्तु मैं उसकी दासी हूँ, जिसने मेरे साथ विवाह कर लिया है अर्थात् मुझे वश में कर लिया है"॥ २॥ वह कहती है, हमारा पति बड़ा विवेकी है और पूर्ण संत कहलवाता है। वह हमारे माथे पर कायम रहता है तथा कोई दूसरा हमारे निकट नहीं आता॥ ३॥ हे कबीर ! संतजनों ने निर्लज्ज माया के नाक एवं कान काट दिए हैं और उसे भलीभांति काट-पीटकर व्यर्थ करके बाहर निकाल दिया है। वह निर्लज्ज माया संतजनों की शत्रु है परन्तु तीन लोक उसे बहुत प्रेम करते हैं और उनकी वह प्रिया है॥ ४॥ ४॥

आसा ॥ जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥ लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥ १ ॥ ता ते सेवीअले रामना ॥ रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगम निरगम जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥ २ ॥ राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥ पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥ ३ ॥ बेद पुरान सिंम्रिति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ कहु कबीर इउ रामहि जंपउ मेटि जनम मरना ॥ ४ ॥ ५ ॥

चाहे कोई योगी, ब्रह्मचारी, तपस्वी एवं संन्यासी बन जाए, चाहे बहुत सारे तीर्थ-स्थानों पर भ्रमण करता रहे। चाहे कोई जड़ से बालों को उखाड़ने वाला जैनी, साधु, वैरागी, मौन व्रत करने वाले मुनि एवं जटाधर दरवेश ही बन जाए। लेकिन फिर भी इन सभी ने अंततः मरना ही है॥ १॥ इसलिए भला यही है कि राम-नाम का भजन करना चाहिए। जिसकी रसना राम के नाम से प्रेम करती है, उसका यमदूत कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता॥ १ ॥ रहाउ॥ चाहे कोई शास्त्रों एवं वेदों का ज्ञाता है, ज्योतिष-विद्या एवं अनेक प्रकार की व्याकरण को जानता है, जो तंत्र, मंत्र एवं समस्त औषधियों को जानता है, आखिरकार सबकी मृत्यु आनी है॥ २॥ राज को भोगने वाले, सिंहासन पर छत्र धारण करने वाले, अनेक सुन्दर नारियों से रमण करने वाले, पान, कपूर तथा चन्दन की सुगन्धियों का आनंद लेने वाले भी अंततः प्राण त्याग देंगे॥ ३॥ चाहे कोई वेद, पुराण एवं स्मृतियों को खोज ले फिर भी उसका जन्म-मरण के चक्र से बचाव नहीं होना। हे कबीर ! इसलिए राम नाम का भजन-सुमिरन करने से ही जन्म-मरण का चक्र मिट सकता है॥ ४॥ ५॥

आसा ॥ फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥ पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥ १ ॥ राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥ किनै बूझनहारै खाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥ घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥ २ ॥

वंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए ॥ रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ ॥ कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मन रूपी हाथी सुन्दर वीणा बजाने वाला बन गया है। बैल वृत्ति पखावज बजाने लगी है और कौए वाला स्वभाव ताल बजा रहा है। मन के गधे वाला जिद्दी स्वभाव प्रेम रूपी चोला पहनकर नृत्य कर रहा है और मन का भैंसा जैसा स्वभाव भक्ति में मग्न है॥ १॥ मेरे राजा राम ने आक के आम समान फलों को रसदायक आम बना दिया है अर्थात् मन के कड़वे एवं कटु स्वभाव में मिठास भर गई है। परन्तु इस रस का स्वाद किसी विरले विवेकी पुरुष ने ही चखा है॥ १॥ रहाउ॥ मन रूपी निर्दयी शेर अपने घर में बैठकर पान का बीड़ा तैयार कर रहा है तथा मन रूपी छछूँदर तृष्णा सुपारी लाती है, अर्थात् सेवा में लीन है। मेरी इन्द्रियाँ रूपी चुहियाँ मंगलगान गा रही हैं और मन रूपी कछुआ जो सत्संगति से भयभीत होकर बैठा था, अब शंख बजाता है॥ २॥ बांझ स्त्री माया का पुत्र विवाह करवाने हेतु चल दिया है तथा सोने के मंडप सजाए गए हैं। अब मन ने प्रभु से जुड़ी वृत्ति रूपवान एवं सुन्दर कन्या से विवाह कर लिया है और खरगोश एवं शेर प्रभु का स्तुतिगान कर रहे हैं॥ ३॥ कबीर कहता है कि हे संतजनो ! मेरी बात ध्यान से सुनो, मन की विनम्रता चींटी ने अभिमान रूपी पर्वत को निगल लिया है। अब मन रूपी कछुआ मानवीय महानुभूति रूपी अंगार का अभिलाषी बन गया है तथा उसका अज्ञान अब ज्ञान में परिवर्तन होकर गुरु का शब्द सुना रहा है॥ ४॥ ६॥

आसा ॥ बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥ नवै खंड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥ १ ॥ ऐसा जोगी नउ निधि पावै ॥ तल का ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥ २ ॥ दइआ फाहुरी काइआ करि धूई द्रिसटि की अगनि जलावै ॥ तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥ ३ ॥ सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥ कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना ॥ ४ ॥ ७ ॥

यह शरीर एक बटुआ है जो बहत्तर शारीरिक नाड़ियों से तैयार हुआ है परन्तु इसका एक ही द्वार दशमद्वार है। इस जगत में केवल वही सच्चा योगी है जो एक ईश्वर के नाम की भिक्षा माँगता है, जिस नाम ने नवखण्डों वाली पृथ्वी को धारण किया हुआ है॥ १॥ ऐसा योगी ही नवनिधियाँ प्राप्त कर लेता है। वह अपनी आत्मा को तल से उठाकर गगनमण्डल में ले जाता है ॥१॥ रहाउ॥ वह ज्ञान-गुदड़ी को प्रभु-ध्यान की सुई में ब्रह्म शब्द के मजबूत धागे से टांकता है और वह पाँच इन्द्रियों को अपनी मृगशाला बनाकर अपने गुरु के मार्ग चल देता है॥ २॥ वह दया को अपनी फावड़ी एवं अपने शरीर को धूनी बनाता है और प्रभु-दृष्टि की वह अग्नि जलाता है। उसके प्रेम को वह अपने हृदय में बसाता है और चारों ही युगों में वह समाधि अवस्था में लीन रहता है॥३॥ समूचा योगीपन राम का नाम जपने में है जिसके दिए हुए यह शरीर एवं प्राण हैं। हे कबीर ! यदि प्रभु कृपा धारण करे तो वह मनुष्य को सत्य का चिन्ह प्रदान करता है॥ ४॥ ७॥

आसा ॥ हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥ दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥ १ ॥ काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकति सनेहु करि सुंनति करीऐ मै न बदउगा भाई ॥ जउ रे खुदाइ मोहि

तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥ २ ॥ सुंनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥ अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ॥ ३ ॥ छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥ कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥ ४ ॥ ८ ॥

हिन्दू तथा मुसलमान कहाँ से आए हैं ? धर्म के अलग-अलग यह दो मार्ग किसने चलाए हैं ? हे झगडालु काजी ! अपने दिल में अच्छी तरह सोच-विचार कर, कौन स्वर्ग एवं कौन नरक को प्राप्त करता है ?॥ १॥ हे काजी ! तूने कौन-सा कतेब पढ़ा है ? तेरे जैसे कतेब पढने एवं विचार करने वाले सभी नष्ट हो गए हैं। लेकिन किसी को भी ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ॥ १॥ रहाउ॥ मुसलमानों में स्त्री से आसक्ति-प्रेम के कारण सुन्नत करवाई जाती है लेकिन इसका संबंध अल्लाह के मिलन से नहीं। हे भाई ! इसलिए मैं (सुन्नत पर) विश्वास नहीं करता। यदि अल्लाह ने मुझे मुसलमान बनाना था तो अपने आप ही सुन्नत जन्मजात हो जाती॥ २॥ यदि सुन्नत करने से कोई मुसलमान बनता है तो औरत का क्या होगा ? नारी तो अर्धांगिनी है, जो मनुष्य के शरीर का आधा भाग है, उसे छोड़ा नहीं जा सकता। इसलिए हिन्दू बने रहना ही बेहतर है (सुन्नत का पाखण्ड नहीं करना चाहिए)॥ ३॥ हे मूर्ख प्राणी ! कतेबों को छोड़कर राम नाम का भजन कर। निरर्थक विवादों में फँसकर तू भारी अत्याचार कर रहा है। कबीर ने एक राम की टेक ही पकडी है तथा मुसलमान बुरी तरह ख्वार हो रहे हैं॥ ४॥ ८॥

आसा ॥ जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥ १ ॥ रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥ तूं राम नामु जपि सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥ घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥ २ ॥ देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई ॥ लट छिटकाए तिरीआ रोवै हंसु इकेला जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥ इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥ ४ ॥ ६ ॥ दुतुके

जब तक अन्तरात्मा रूपी दीपक में प्राण रूपी तेल रहता है, इस दीपक के मुँह में सुरति रूपी बाती जलती रहती है, तब तक जीवात्मा को शरीर रूपी मंदिर में हर वस्तु की सूझ होती है। जब प्राण रूपी तेल जल जाता है अर्थात् शरीर में से प्राण निकल जाते हैं तो सुरति रूपी बाती बुझ जाती है। चारों ओर अंधेरा होने से शरीर रूपी मन्दिर सुनसान हो जाता है॥ १॥ हे बावरे मनुष्य ! तेरे प्राण पखेरू होने के उपरांत तुझे एक घडी भर के लिए भी कोई रखने को तैयार नहीं होता। इसलिए तू राम-नाम का भजन-सुमिरन कर ले॥ १॥ रहाउ॥ बता ! कौन किसकी माता है और कौन किसका पिता है ? कौन किसी पुरुष की पत्नी है ? जब प्राणी रूपी घड़ा फूट जाता है अर्थात् देहांत होने पर कोई बात नहीं पूछता। हर कोई यही कहता है मृतक शरीर को घर से शीघ्र ही बाहर निकाल दो॥ २॥ देहुरी पर बैठी हुई माता रोती है और भाई अर्थी उठाकर श्मशानघाट ले जाते हैं। अपने बाल खिलार कर मृतक की पत्नी फूट-फूट कर रोती है और आत्मा अकेली ही चली जाती है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनो ! इस भवसागर संबंधी सुन लो। हे गुसाई ! यह मनुष्य अपने कर्मों के कारण बहुत अत्याचार सहन करता है और यमदूत उसका पीछा नहीं छोड़ते॥ ४॥ ६॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा स्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥ सनक सनंद अंतु नही पाइआ ॥ बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥ सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥ इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥ २ ॥ हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥ गुर प्रसादि पावै अंम्रित धारा ॥ ३ ॥ कहु कबीर नदरि करे जे मींरा ॥ राम नाम लगि उतरे तीरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १० ॥

ब्रह्मा के चार पुत्रों सनक, सनन्दन, सनातन एवं सनत कुमार ने बड़े ज्ञानी होते हुए भी प्रभु का अन्त नहीं पाया। वेदों के ज्ञाता ब्रह्मा ने भी वेद पढ़-पढ़ कर अपना अमूल्य जन्म गंवा लिया। अर्थात् वह भी भगवान का अन्त न पा सका॥१॥ हे मेरे भाई ! हरि का बिलोना बिलोवो अर्थात् जैसे दूध का मंथन किया जाता है, वैसे ही बार-बार हरि का जाप करो। जैसे दूध का धीरे-धीरे मंथन करने से मक्खन दूध में नहीं मिलता, वैसे ही सहज अवस्था में हरि का नाम जपो, चूंकि सिमरन का फल परम तत्त्व प्रभु प्राप्त हो जाए॥ १॥ रहाउ॥ अपने तन को मटकी बनाओ और उसमें अपने मन की मधानी से मंथन करो। इस मटकी के भीतर शब्द रूपी दही को संचित करो॥ २॥ हरि नाम का मंथन मन से उसका सुमिरन करना है। गुरु की कृपा से मनुष्य नाम रूपी अमृत धारा को प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ हे कबीर ! यदि प्रभु-बादशाह दया-दृष्टि धारण करे तो मनुष्य राम के नाम से लगकर भवसागर से पार होकर किनारे पहुँच जाता है॥ ४॥ १॥ १०॥

आसा ॥ बाती सूकी तेलु निखूटा ॥ मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥ १ ॥ बुझि गई अगनि न निकसिओ धूंआ ॥ रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटी तंतु न बजै रबाबु ॥ भूलि बिगारिओ अपना काजु ॥ २ ॥ कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥ ३ ॥ कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ तिन ते नाहि परम पदु दूरे ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥

शरीर रूपी दीपक में से प्राण रूपी तेल खत्म हो गया है अर्थात् शरीर में से प्राण पखेरू हो गए हैं। सुरति रूपी बाती सूख गई है अर्थात् जीव की सुरति नष्ट हो गई है। जीव रूपी नट सदा की नींद सो गया है और अब ढोल-मंजीरा भी नहीं बज रहा अर्थात् जीव का सारा कामकाज बंद हो गया है॥ १॥ तृष्णा रूपी अग्नि बुझ गई है और संकल्प-विकल्प रूपी धुआं नहीं निकल रहा। एक प्रभु ही सारे जगत में बसा हुआ है, दूसरा अन्य कोई भी नहीं॥ १॥ रहाउ॥ तार टूट गई है तथा वीणा बज नहीं रही अर्थात् परमात्मा से जीव की वृत्ति टूट गई है। भूल से मनुष्य ने अपना कार्य बिगाड़ लिया है॥ २॥ जब मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है तो वह उपदेश देना, डींगे मारना, विवाद करना (अर्थात् मौखिक बातें जो कहने-सुनने की थीं) तथा गाना-बजाना भूल जाता है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि जो मनुष्य कामादिक पाँच विकार नष्ट कर देता है, उससे परम पदवी (मोक्ष की प्राप्ति) दूर नहीं होती॥ ४॥ २॥ ११॥

आसा ॥ सुतु अपराध करत है जेते ॥ जननी चीति न राखसि तेते ॥ १ ॥ रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥ काहे न खंडसि अवगनु मेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे अति क्रोप करे करि धाइआ ॥ ता भी चीति न राखसि माइआ ॥ २ ॥ चिंत भवनि मनु परिओ हमारा ॥ नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥ ३ ॥ देहि बिमल मति सदा सरीरा ॥ सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥

पुत्र जितने भी अपराध करता है, माता उसे अपने चित्त में नहीं रखती॥ १॥ हे मेरे राम ! मैं तेरा नादान बालक हूँ, तू मेरे अवगुणों को नष्ट क्यों नहीं करता ?॥ १॥ रहाउ॥ यदि नासमझ

पुत्र अत्यंत क्रोध में अपनी माता को मारने के लिए भाग कर भी आए तो भी माता उसके इतने बड़े अपराध को अपने चित्त में नहीं रखती॥ २॥ मेरा मन चिन्ता-फिक्र के भँवर में पड़ गया है। प्रभु नाम के बिना यह कैसे पार हो सकता है?॥ ३॥ हे प्रभु! मेरे शरीर को सदैव निर्मल बुद्धि प्रदान कर चूंकि सहज-सहज कबीर तेरा गुणगान करता रहे॥ ४॥ ३॥ १२॥

आसा ॥ हज हमारी गोमती तीर ॥ जहा बसहि पीतंबर पीर ॥ १ ॥ वाहु वाहु किआ खूबु गावता है ॥ हरि का नामु मेरै मनि भावता है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नारद सारद करहि खवासी ॥ पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥ २ ॥ कंठे माला जिहवा रामु ॥ सहंस नामु लै लै करउ सलामु ॥ ३ ॥ कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १३ ॥

हमारा हज्ज गोमती-किनारे चले जाने से हो जाता है, जहाँ पीताम्बर पीर (परमात्मा) बसता है॥ १॥ वाह! वाह! मेरा मन कितना खूब गाता है। हरि का नाम मेरे मन को बहुत लुभाता है॥ १॥ रहाउ॥ नारद मुनि हो अथवा सरस्वती देवी, सभी उस हरि की सेवा-भक्ति में लीन हैं। हरि के पास उसकी दासी देवी लक्ष्मी भी विराजमान है॥ २॥ जिह्वा में राम का नाम ही मेरी गले की माला है, जिससे मैं उसके हजारों ही नाम उच्चरित करके उसे प्रणाम करता हूँ॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि मैं राम का गुणगान करता हूँ एवं हिन्दु-मुसलमान दोनों को भी यही उपदेश देता हूँ॥ ४॥ ४॥ १३॥

आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ६ दुतुके ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥ १ ॥ भूली मालनी है एउ ॥ सतिगुरु जागता है देउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥ तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥ २ ॥ पाखान गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥ जे एह मूरति साची है तउ गढ़णहारे खाउ ॥ ३ ॥ भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥ भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥ ४ ॥ मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥ कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥ ५ ॥ १ ॥ १४ ॥

[यहाँ पर कबीर जी ने मूर्ति-पूजा का खंडन किया है।]

हे मालिन! तू पूजा-अर्चना हेतु पत्ते तोड़ती है लेकिन समस्त फूल-पत्तों में प्राण हैं। किन्तु जिस पत्थर की मूर्ति हेतु तू पत्ते तोडती है वह पत्थर की मूर्ति तो निर्जीव है॥ १॥ हे मालिन! इस तरह तू भूल कर रही है क्योंकि सच्चा गुरु ही सजीव देव है॥ १॥ रहाउ॥ हे मालिन! पूजा-अर्चना हेतु जो तू पत्ते, डाली एवं फूल तोड़ती है वह पत्ते ब्रह्मा, विष्णु डालियाँ एवं शंकर देव फूल हैं। इस तरह तू प्रत्यक्ष तौर पर त्रिदेवों-ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर को तोड़ती है। फिर तू किस की सेवा करती है?॥ २॥ पत्थर को गढ़कर मूर्तिकार-मूर्ति बनाता है और गढ़ते हुए वह उसकी छाती पर अपने पांव भी रख देता है। यदि यह मूर्ति सच्ची है तो उसे पहले गढ़नेवाले मूर्तिकार को खाना चाहिए॥ ३॥ भात (चावल), दाल, हलवा, माल-पूड़े एवं पंजीरी इत्यादि स्वादिष्ट पदार्थों का भोग तो मूर्ति का सहारा लेकर भोगने वाला पुजारी ही कर लेता है तथा इस मूर्ति के मुख में तो कुछ भी नहीं जाता॥ ४॥ मालिन भूली हुई है और समूचा जगत भी भूला हुआ है लेकिन हम भूले हुए नहीं। कबीर जी कहते हैं कि अपनी कृपा धारण करके भगवान ने हमें सन्मार्ग दिखाकर भ्रम से बचा लिया है॥ ५॥ १॥ १४॥

आसा ॥ बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥ तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥ १ ॥ मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥ आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥ २ ॥ चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥ जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥ ३ ॥ हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥ गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥ आई तलब गोपाल राइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥ ५ ॥ २ ॥ १५ ॥

इन्सान की आयु के पहले बारह वर्ष तो बाल्यावस्था में ही बीत जाते हैं तथा अगले बीस वर्ष कोई तपस्या नहीं करता। अन्य तीस वर्ष वह कोई देव-पूजा भी नहीं करता तथा जब वृद्धावस्था आ जाती है तो वह पश्चाताप करता है॥ १॥ उसका सारा जीवन मेरी-मेरी करते ही व्यतीत हो जाता है और शरीर रूपी सरोवर सूखने पर भुजबल भी नाश हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ इस अवस्था में पहुँचने पर वह अपने हाथों से सूखे हुए सरोवर के इर्द-गिर्द बांध बनाता है और कटे खेत के पास बाड़ करता है। जब मृत्यु रूपी चोर आता है तो वह तुरंत ही उसे ले जाता है, जिसे मूर्ख मनुष्य अपने प्राण समझकर सँभालता फिरता था॥ २॥ बुढ़ापे में पैर, सिर एवं हाथ कांपने लग जाते हैं और नयनों से असार जल बहता है। जीभ से शुद्ध वचन नहीं निकलते। हे मूर्ख जीव ! तब तुम धर्म की आशा करते हो॥ ३॥ यदि पूज्य परमेश्वर कृपा धारण करे तो मनुष्य की उससे वृत्ति लग जाती है और वह हरि-नाम का लाभ प्राप्त कर लेता है। गुरु की कृपा से उसे हरि-नाम का धन मिल जाता है, जो अंततः परलोक को जाते समय उसके साथ जाता है॥ ४॥ कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनो ! सुनो, कोई भी मनुष्य मृत्यु के समय अपना अन्न-धन साथ नहीं लेकर गया। जब भगवान का बुलावा आ जाता है तो वह धन-दौलत एवं मन्दिरों को छोडकर चला जाता है॥ ५ ॥ २॥ १५॥

आसा ॥ काहू दीन्हे पाट पटंबर काहू पलघ निवारा ॥ काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥ १ ॥ अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥ सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई ॥ काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥ २ ॥ सूमहि धनु राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥ जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥ ३ ॥ हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥ ४ ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ॥ ५ ॥ ३ ॥ १६ ॥

भगवान ने किसी को रेशमी वस्त्र प्रदान किए हुए हैं तथा किसी को निवार वाले पलंग दिए हुए हैं। लेकिन किसी को जीर्ण गुदड़ी भी नहीं मिली तथा किसी के पास घास-फूस की झोंपड़ी है॥ १॥ हे मेरे मन ! किसी से ईर्ष्या एवं विवाद मत करो। शुभ कर्म करने से ही कुछ (सुख) प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ कुम्हार एक जैसी मिट्टी गूँधता है और अनेक विधियों से बर्तनों को रंग देता है। किसी में वह मोती एवं मोतियों की माला डाल देता है और दूसरों में वह व्याधि वाली शराब डाल देता है॥ २॥ कंजूस आदमी को प्रभु ने धन सँभालने हेतु अमानत के तौर पर दिया है परन्तु वह मूर्ख कहता है कि यह धन तो मेरा अपना है। जब यम का दण्ड उसके सिर पर पड़ता

है तो एक क्षण में ही निर्णय हो जाता है अर्थात् जब मनुष्य का देहांत हो जाता है तो धन वहीं रह जाता है॥ ३॥ हरि का सेवक उत्तम भक्त कहलवाता है और वह हरि की आज्ञा मानकर सुख प्राप्त करता है। जो हरि को अच्छा लगता है, वह सत्य मानकर स्वीकृत करता है और ईश्वरेच्छा को वह अपने मन में बसाता है॥ ४॥ कबीर जी कहते हैं कि हे संतजनो! सुनो, यह मैं-मेरी की रट झूठी है क्योंकि मृत्यु (जीवात्मा रूपी) पक्षी के पिंजरे (रूपी शरीर) को फाड़कर आत्मा को ले जाती है और निर्जीव शरीर रूपी धागे वहीं टूट जाते हैं॥ ५॥ ३॥ १६॥

आसा ॥ हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राजसु मनि भावै ॥ अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥ १ ॥ काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥ सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥ २ ॥ निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥ पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥ ३ ॥ खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥ आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥ ४ ॥ माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥ कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥ ५ ॥ ४ ॥ १७ ॥

हे काजी! हम मसकीन उस खुदा के पैदा किए हुए बंदे हैं। तुझे अपने चित्त की हकूमत भली लगती है अर्थात् तुझे उस पर बड़ा अभिमान है लेकिन अव्वल अल्लाह दीन धर्म का मालिक है और वह किसी पर जुल्म करने की आज्ञा नहीं देता॥ १॥ हे काजी! तेरे मुँह से निकली बातें अच्छी नहीं लगतीं॥ १॥ रोजा रखने, नमाज पढ़ने और कलमा पढ़ने से जन्नत (स्वर्ग) नहीं मिलती। अल्लाह का घर काबा तो तेरे अन्तर्मन के भीतर ही मौजूद है परन्तु मिलता तभी है यदि कोई इस भेद को जान ले॥ २॥ जो न्याय का विचार करता है, वही सच्ची नमाज पढ़ता है। यदि कोई अल्लाह को पहचानता है तो वही उसका कलमा है। जो मनुष्य पाँच विकारों को मारकर वश में करता है तो नमाज का मुसल्ला (आसन) बिछाता है और धर्म को पहचानता है॥ ३॥ हे काजी! अपने मालिक-खुदा को पहचान और अपने मन में तरस धारण कर। तू अपने अहंत्व को मिटाकर फीका कर दे। जब मनुष्य अपने आपको समझ कर दूसरों को अपने जैसा समझता है तो वह जन्नत (स्वर्ग) का हकदार बन जाता है॥ ४॥ मिट्टी तो एक ही है परन्तु इसने अनेक स्वरूप धारण किए हुए हैं। मैं उन सभी में एक परमात्मा को ही पहचानता हूँ। कबीर जी कहते हैं कि हे काजी! तूने तो जन्नत (स्वर्ग) के मार्ग को त्याग कर अपना मन जानबूझ कर दोजख (नरक) से जोड़ लिया है॥ ५॥ ४॥ १७॥

आसा ॥ गगन नगरि इक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥ पारब्रहम परमेसुर माधो परम हंसु ले सिधाना ॥ १ ॥ बाबा बोलते ते कहा गए देही के संगि रहते ॥ सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मंदरु कीन्हा ॥ साखी सबदु सुरति नही उपजै खिंचि तेजु सभु लीन्हा ॥ २ ॥ स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका ॥ चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥ ३ ॥ थाके पंच दूत सभ तसकर आप आपणै भ्रमते ॥ थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥ ४ ॥ मिरतक भए दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे ॥ कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥ ५ ॥ ५ ॥ १८ ॥

दशम द्वार रूपी गगन नगरी में अब एक बूँद भी नहीं बरसती। कहाँ है वह नाद जो इसके

भीतर समाया हुआ था। ब्रह्म-परमेश्वर आत्मा रूपी परमहंस को ले गया है॥ १॥ हे बाबा ! जो आत्मा बातें करती एवं शरीर के साथ रहती थी, वह कहाँ चली गई है ? वह आत्मा मन में नृत्य करती थी और कथा-वार्ता करती थी॥ १॥ रहाउ॥ वह बजाने वाला आत्मा कहाँ चला गया है जिसने इस शरीर रूपी मन्दिर को अपना बनाया हुआ था ? कोई साखी, शब्द, चेतना पैदा नहीं होती। प्रभु ने समूचा तेज-बल खींच लिया है॥ २॥ तेरे संगी कान बलहीन हो गए हैं तेरी काम-वासना का बल भी क्षीण हो गया है। तेरे पैर भी चलने में असमर्थ हैं, हाथ भी शिथिल हो गए हैं तथा तेरे मुँह से कोई बात भी नहीं निकलती॥ ३॥ तेरे कामादिक पाँचों विकार थक गए हैं तथा वे सभी चोर अपने-आप भटकने से हट गए हैं। मन रूपी हाथी भी हार-थक गया है और सूत्रधार हृदय जिसके द्वारा शरीर की इन्द्रियाँ चलती-फिरती थीं, वे भी थक गई हैं॥ ४॥ मृत्यु होने के पश्चात् दसों ही द्वारों के बन्धन टूट गए हैं तथा वह अपने मित्रों एवं भाईयों को छोड़ गया है। कबीर जी कहते हैं कि जो मनुष्य भगवान का ध्यान करता है, वह जीवित ही तमाम बन्धनों को तोड़ देता है॥ ५॥ ५॥ १८॥

आसा इकतुके ४ ॥ सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥ जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥ १ ॥ मारु मारु स्रपनी निरमल जलि पैठी ॥ जिनि त्रिभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥ जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥ २ ॥ स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥ स्रपनी जीती कहा करै जमरा ॥ ३ ॥ इह स्रपनी ता की कीती होई ॥ बलु अबलु किआ इस ते होई ॥ ४ ॥ इह बसती ता बसत सरीरा ॥ गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥ ५ ॥ ६ ॥ १९ ॥

सारे विश्व में माया रूपी सर्पिणी से अधिकतर कोई बलशाली नहीं, जिसने (त्रिदेवों) ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव को भी छल लिया है॥ १॥ हर तरफ मारा-मार करती हुई माया रूपी सर्पिणी अब सत्संगति रूपी निर्मल जल में बैठ गई है। जिस माया रूपी सर्पिणी ने त्रिभवनों अर्थात् समूचा जगत डंस लिया था, उसे मैंने गुरु की कृपा से देख लिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! तुम यह माया को सर्पिणी-सर्पिणी कहकर क्यों शोर मचा रहे हो ? जो सत्य को पहचान लेता है वह माया रूपी सर्पिणी को निगल जाता है॥ २॥ सिमरन करने वालों के बिना अन्य कोई भी इस सर्पिणी से नहीं बचा है। जिसने माया रूपी सर्पिणी को जीत लिया है, यमराज भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता॥ ३॥ यह माया रूपी सर्पिणी तो उस प्रभु की पैदा की हुई है, अपने आप उसमें कौन-सा बल अथवा अबल है॥ ४॥ जितनी देर तक माया रूपी सर्पिणी मनुष्य के मन में निवास करती है, तब तक वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। गुरु की अनुकंपा से कबीर सहज ही पार हो गया है॥ ५॥ ६॥ १९॥

आसा ॥ कहा सुआन कउ सिम्रिति सुनाए ॥ कहा साकत पहि हरि गुन गाए ॥ १ ॥ राम राम राम रमे रमि रहीऐ ॥ साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कऊआ कहा कपूर चराए ॥ कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥ २ ॥ सतसंगति मिलि बिबेक बुधि होई ॥ पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ॥ ३ ॥ साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥ ४ ॥ अंम्रितु लै लै नीमु सिंचाई ॥ कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥ ५ ॥ ७ ॥ २०॥

कुत्ते (अर्थात् लालची आदमी) को स्मृतियाँ पढ़कर सुनाने का क्या अभिप्राय है ? वैसे ही शाक्त के पास हरि का गुणगान करने का क्या लाभ है ?॥ १॥ हे भाई ! राम नाम में पूर्णतया लीन रहना

चाहिए तथा भूलकर भी शाक्त इन्सान को उपदेश नहीं करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ कौए को कर्पूर खिलाने से कोई लाभ नहीं (क्योंकि कौए की विष्ठा-भक्षी चोंच में अन्तर नहीं आएगा) इसी तरह विषधर साँप को दूध पिलाने का भी कोई लाभ नहीं (क्योंकि डंक मारने से वह हटेगा नहीं)॥ २॥ सत्संगति में सम्मिलित होने से विवेक-बुद्धि की प्राप्ति होती है, जैसे पारस के स्पर्श से लोहा स्वर्ण बन जाता है॥ ३॥ शाक्त एवं कुत्ता सब कुछ वही करते हैं, जो प्रभु उनसे करवाता है। जो शुरु से किस्मत में लिखा हुआ है, वह वही कर्म करते हैं॥ ४॥ कबीर जी कहते हैं कि यदि कोई मनुष्य अमृत लेकर भी नीम की सिंचाई करे तो भी उसका कड़वा स्वभाव दूर नहीं होता॥ ५॥ ७॥ २०॥

आसा ॥ लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥ तिह रावन घर खबरि न पाई ॥ १ ॥ किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥ देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥ तिह रावन घर दीआ न बाती ॥ २ ॥ चंदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥ बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥ ३ ॥ गुरमति रामै नामि बसाई ॥ असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥ ४ ॥ कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई ॥ ५ ॥ ८ ॥ २१ ॥

जिस महाबली रावण का लंका जैसा मजबूत किला था और समुद्र जैसी किले की रक्षा हेतु खाई थी, उस रावण के घर की आज कोई खबर नहीं अर्थात् कोई वजूद नहीं मिलता॥ १॥ मैं परमात्मा से क्या माँगू, क्योंकि कुछ भी स्थिर नहीं रहता अर्थात् सब कुछ नाशवान है। मेरे नयनों के देखते-देखते ही समूचा जगत चला जा रहा है अर्थात् नाश हो रहा है॥ १॥ रहाउ॥ जिस रावण के एक लाख पुत्र एवं सवा लाख नाती-पोते थे, उस रावण के घर में आज न दीया और न ही बत्ती है॥ २॥ रावण इतना बलशाली था कि चन्द्रमा एवं सूर्य देवता उसकी रसोई तैयार करते थे और अग्नि देवता उसके वस्त्र धोता था॥ ३॥ जो गुरु की मति द्वारा राम के नाम को अपने हृदय में बसाता है, वह स्थिर रहता है और कहीं भी नहीं भटकता॥ ४॥ कबीर जी कहते हैं कि हे लोगो! जरा ध्यान से सुनो, राम के नाम बिना जीव की मुक्ति नहीं होती॥ ५॥ ८॥ २१॥

आसा ॥ पहिला पूतु पिछैरी माई ॥ गुरु लागो चेले की पाई ॥ १ ॥ एकु अचंभउ सुनहु तुम्ह भाई ॥ देखत सिंघु चरावत गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल की मछुली तरवरि बिआई ॥ देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥ २ ॥ तलै रे बैसा ऊपरि सूला ॥ तिस कै पेडि लगे फल फूला ॥ ३ ॥ घोरै चरि भैस चरावन जाई ॥ बाहरि बैलु गोनि घरि आई ॥ ४ ॥ कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥ राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥ ५ ॥ ६ ॥ २२ ॥ बाईस चउपदे तथा पंचपदे

पहले (भगवान का अंश जीव) पुत्र था और तदुपरांत उसकी माता बन बैठी माया उत्पन्न हुई। वह जीव स्वयं गुरु के सादृश्य था परन्तु मन रूपी चेले की आज्ञा का पालन करने लगा॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई! एक अद्भुत बात सुनो। मैं निडर जीवात्मा रूपी सिंह को अब इन्द्रियों रूपी गायों को चराते देख रहा हूँ॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के अमृत जल में निवसित (आत्मा रूपी) मछली जल त्यागकर विकारों के पेड़ पर प्रसूत हो रही है अर्थात् सांसारिक बन्धनों में उलझ गई है। तृष्णा रूपी बिल्ली को संतोष रूपी कुत्ते को उठाकर भागते देखा है॥ २॥ जीव के गुणों की टहनियाँ नीचे दब गई हैं तथा काँटे ऊपर उठ आए हैं। उस पेड़ के तने को विषय-विकारों के फल-फूल लगे हुए हैं॥ ३॥ प्राण रूपी घोड़े पर सवार होकर वासना की भैंस जीवात्मा को चराने (भोग भोगने) हेतु ले जाती है। धैर्य रूपी बैल अभी बाहर है जबकि वासनाओं का बोझ जीव के घर में आ गया है॥ ४॥ कबीर जी कहते हैं कि जो इस पद को समझ लेता है, उसे राम नाम

का भजन करने से सब कुछ सूझ हो जाती है और वह माया के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ ५॥ ६॥ २२॥ बाईस चौपदे तथा पंचपदे॥

आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ ॥ दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइआ ॥ १ ॥ प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ ॥ पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ ॥ जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥ २ ॥ जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥ ३ ॥ १ ॥ २३ ॥

भगवान ने पिता के वीर्य-विन्दु से तेरे शरीर को बना दिया और गर्भ रूपी अग्निकुण्ड में तेरी रक्षा की। दस महीने उसने माता के उदर में बचाकर रखा और जगत में जन्म लेकर तुझे माया ने आकर्षित कर लिया॥ १॥ हे प्राणी ! लोभ में फँसकर तूने हीरे जैसा अनमोल जीवन क्यों गंवाया है? पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के कारण मिली इस शरीर रूपी कर्मभूमि में नाम रूपी बीज को तूने अभी तक बोया ही नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ अब बालक से तू वृद्ध हो गया है और जो कुछ होना था, वह हो गया है। जब यमदूत आकर तुझे बालों से पकड़ता है तो तू क्यों विलाप करता है ? तू अधिक जीवन जीने की आशा करता है परन्तु यम तेरी सांसें देख रहा है। हे कबीर ! यह दुनिया तो बाजीगर का खेल है इसलिए सोच-समझकर जीवन बाजी जीतने के लिए प्रभु-सिमरन की चाल चल॥ ३॥ १॥ २३॥

आसा ॥ तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥ १ ॥ गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥ मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रहम गिआन उचारा ॥ राम राइ सो दूलहु पाइओ अस बडभाग हमारा ॥ २ ॥ सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानां ॥ कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥ ३ ॥ २ ॥ २४ ॥

अपने तन को मैंने रंगने वाला पात्र बनाया है और फिर मन को शुभ गुणों से रंगा है। पाँच मूल तत्वों को मैंने अपना बराती बनाया है। राम जी से मैं अपने विवाह के फेरे ले रही हूँ और मेरी आत्मा उसके प्रेम में लीन हो गई है॥ १॥ हे दुल्हन सखियो ! तुम विवाह के मंगल गीत गायन करो। मेरे घर में राजा राम दूल्हा बन कर आए हैं॥ १॥ रहाउ॥ अपनी नाभि कमल में मैंने वेदी बनाई है और ब्रह्म-ज्ञान रूपी मंत्र उच्चरित किया है। मैं बड़ी भाग्यशालिनी हूँ जो राम जी को मैंने अपने दूल्हे (वर) के रूप में पाया है॥ २॥ सुर, नर, मुनिजन एवं तेंतीस करोड़ देवता अपने विमानों में सवार होकर इस आश्चर्यजनक विवाह का कौतुक देखने हेतु पधारे हैं। कबीर जी कहते हैं कि एक आदिपुरुष भगवान मुझे ब्याह कर ले चले हैं॥ ३॥ २॥ २४॥

आसा ॥ सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥ सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥ १ ॥ मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥ बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥ २ ॥ कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥ झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥ २५ ॥

मैं अपनी माया रूपी सास द्वारा बहुत दुःखी हूँ तथा अपने ससुर की प्यारी हूँ लेकिन अपने जेठ मृत्यु के नाम से मैं डरती हूँ। हे मेरी सखी सहेलियो ! मेरी अज्ञानता (इन्द्रियाँ) रूपी ननद ने मुझे पकड़ लिया है। अपने देवर (विवेक बुद्धि) के विरह में अत्यंत जल रही हूँ॥ १॥ मेरी बुद्धि बावली हो गई है, क्योंकि मैंने राम को भुला दिया है। अब मैं कैसे उपयुक्त जीवन बिता सकती हूँ। मेरा पति-परमात्मा मेरी सेज में विराजमान है परन्तु मेरे नयनों से वह मुझे दिखाई नहीं देता। यह दुःख मैं किससे व्यक्त करूँ॥ १॥ रहाउ॥ मेरा सौतेला पिता मुझ से झगड़ा करता है और माया मोहिनी सदैव नशे में मस्त रहती है। जब मैं बड़े भाई (ध्यान-मनन) की संगति करती थी तो मैं अपने प्रियतम की प्यारी थी॥ २॥ कबीर जी कहते हैं कि कामादिक पाँचों विकारों से झगड़ा झगड़ते ही मेरा जीवन नष्ट हो गया है। झूठी माया ने सारे जगत को बाँध लिया है परन्तु राम के नाम का भजन-सुमिरन करने से मुझे सुख प्राप्त हो गया है॥ ३॥ ३॥ २५॥

आसा ॥ हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥ १ ॥ मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥ जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥ कबहूं न पारि उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥ २ ॥ तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥ ३ ॥ ४ ॥ २६ ॥

हे ब्राह्मण ! हमारे घर में प्रतिदिन सूत का ताना ही तनता है परन्तु तुम्हारे गले में केवल सूत का जनेऊ ही है। तुम गायत्री-मंत्र का जाप एवं वेदों का अध्ययन करते रहते हो लेकिन हमारे हृदय में गोविन्द निवास करता है॥ १॥ मेरी जिह्वा में विष्णु, नयनों में नारायण एवं हृदय में गोविन्द बसता है। हे मुकुंद ब्राह्मण ! जब यम द्वार पर कर्मों का लेखा जोखा पूछा जाएगा तो बावले तब तुम क्या कहोगे॥ १॥ रहाउ॥ हम गौएं हैं और तुम ब्राह्मण हमारे ग्वाले बने हुए हो और जन्म-जन्म से हमारी रक्षा कर रहे हो। परन्तु तुम कभी भी हमें चराने हेतु पार उतार नहीं लेकर गए अर्थात् कोई ब्रह्म-ज्ञान प्रदान नहीं किया। फिर तुम हमारे कैसे स्वामी हो ?॥ २॥ तुम ब्राह्मण हो तथा मैं कांशी का जुलाहा हूँ। मेरी ज्ञान की बात को समझकर उसका सही उत्तर दो। तुम जाकर राजाओं-महाराजाओं से दान माँगते फिरते हो किन्तु मेरा ध्यान हरि के चरणों में ही लीन रहता है॥ ३॥ ४॥ २६॥

आसा ॥ जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥ साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥ १ ॥ बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥ जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि ॥ काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥ २ ॥ करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ ॥ कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ २७ ॥

जगत में जीवन ऐसा है, जैसे कि एक स्वप्न होता है। यह जीवन एक स्वप्न के समान है परन्तु इसे सत्य मानकर हमने पकड़ लिया है और प्रभु नाम के परम खजाने को छोड़ दिया है॥ १॥ हे बाबा ! हम उस माया-मोह से इतना स्नेह करते हैं जिसने हमारा ज्ञान-रत्न छीन लिया है॥ १॥ रहाउ॥ नयनों से देखता हुआ पतंगा भी दीपक की लौ से उलझ जाता है। मूर्ख कीड़ा अग्नि को नहीं देखता। मूर्ख मनुष्य सोने एवं कामिनी (स्त्री) में मुग्ध होकर मृत्यु के फंदे का ख्याल ही नहीं करता॥ २॥ हे प्राणी ! तू सोच-विचार कर विकारों को त्याग दे, भगवान तुझे संसार-सागर

से पार करवाने हेतु एक जहाज है। कबीर जी कहते हैं कि जगत का जीवन प्रभु इतना महान् एवं सर्वोपरि है कि उस जैसा दूसरा कोई नहीं॥ ३॥ ५॥ २७॥

आसा ॥ जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥ १ ॥ अब मोहि नाचनो न आवै ॥ मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी ॥ काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥ २ ॥ सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥ ३ ॥ ६ ॥ २८ ॥

चाहे मैंने अनेक रूप (जन्म) धारण किए हैं। परन्तु अब मैं दोबारा अन्य रूप (जन्म) धारण नहीं करूँगा। वाद्ययन्त्र एवं उसकी तार-तन्त्रिका सभी थक गए हैं और अब मेरा मन राम नाम के वश में हो गया है॥ १॥ अब मुझे माया अधीन नृत्य करना नहीं आता। मेरा मन अब जिंदगी का ढोल नहीं बजाता॥ १॥ रहाउ॥ मैंने काम, क्रोध एवं माया का नाश कर दिया है और मेरी तृष्णा की गागर फूट गई है। मेरी कामवासना का पहरावा पुराना हो गया है और मेरे सभी भ्रम निवृत्त हो गए हैं॥ २॥ सारी दुनिया के लोगों को मैं एक समान समझता हूँ और मेरे वाद-विवाद मिट गए हैं। कबीर जी कहते हैं कि राम की कृपा होने से मैंने पूर्ण परमात्मा पा लिया है॥ ३॥ ६॥ २८॥

आसा ॥ रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥ आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥ १ ॥ काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥ पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ॥ २ ॥ अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥ ३ ॥ ७ ॥ २९ ॥

हे काजी! तू अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए रोज़े (व्रत) रखता है और अपने स्वाद के लिए जीवों का भी संहार करता है। तू अपना मतलब ही देखता है, दूसरों का ध्यान नहीं रखता। तू क्यों निरर्थक ही भाग-दौड़ करता फिरता है ?॥ १॥ हे काजी! सबका मालिक एक है, वह खुदा तेरे मन में भी मौजूद है लेकिन तू सोच-विचार कर उसे देखता नहीं। हे कट्टरवादी धर्म के बावले! तू उसका पता नहीं करता, इसलिए तेरा जीवन किसी लेखे में नहीं अर्थात् व्यर्थ है॥ १॥ रहाउ॥ तेरा कतेब (कुरान) तुझे बताता है कि अल्लाह सत्य है और वह कोई नारी अथवा पुरुष नहीं। हे बावले! यदि दिल में कोई समझ न आई हो तो तेरा पढ़ने-विचारने का कोई अभिप्राय नहीं॥ २॥ अल्लाह सबके मन में निवास करता है, अपने हृदय में इस बात को धारण कर। कबीर पुकार कर यही कहता है कि हिन्दु एवं मुसलमानों दोनों में एक वही खुदा परमात्मा ही बसता है॥ ३॥ ७॥ २९॥

आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥ कीओ सिंगारु मिलन के ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥ १ ॥ हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धन पिर एकै संगि बसेरा ॥ सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥ २ ॥ धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥ कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

मैंने अपने प्रभु-पति से मिलन के लिए यह श्रृंगार अर्थात् धर्म-कर्म किया है परन्तु जगत का जीवन, ईश्वर मुझे नहीं मिला॥ १॥ हरि मेरा पति है और मैं हरि की पत्नी हूँ। मेरा राम बहुत

महान् है परन्तु मैं उनके समक्ष बालिका हूँ॥ १॥ रहाउ॥ वर (प्रभु) एवं वधु (जीवात्मा) एक ही स्थान पर बसेरा करते हैं। वह एक ही सेज पर लेटते हैं परन्तु उनका मिलन मुश्किल है॥ २॥ वह सुहागिन धन्य है जो अपने प्रिय प्रभु को भाती है। कबीर जी कहते हैं कि फिर वह दोबारा जन्म नहीं लेती अर्थात् जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ ८॥ ३०॥

आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥ १ ॥ हरि की कथा अनाहद बानी ॥ हंसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई ॥ गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

जब प्रभु रूपी हीरे ने आत्मा रूपी हीरे को बींध दिया तो पवन जैसा चंचल मन सहज ही उसमें समा गया। यह प्रभु हीरा सभी को अपनी ज्योति से भरपूर कर देता है। सच्चे गुरु के उपदेश से मैंने यह ज्ञान प्राप्त किया है॥ १॥ हरि की कथा एक अनाहत वाणी है। राजहंस अर्थात् संत बनकर मनुष्य प्रभु रूपी हीरे को पहचान लेता है॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी कहते हैं कि मैंने एक अद्भुत हीरा देखा है जो सारी सृष्टि में समाया हुआ है। गुप्त हुआ हीरा प्रगट हो गया है, गुरुदेव ने मुझे यह दिखा दिया है॥ २॥ १॥ ३१॥

आसा ॥ पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी ॥ अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥ १ ॥ भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ ॥ लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ ॥ २ ॥ २ ॥ ३२ ॥

मेरी पहली पत्नी (स्वेच्छाचरिणी कुबुद्धि) कुरूप, जातिहीन एवं कुलक्षिणी थी और ससुराल एवं पीहर दोनों जगह बुरी थी। लेकिन अब ब्याही हुई पत्नी सुन्दर, रूपवान, सुजान (बुद्धिमान) एवं सुलक्षिणी है और सहज ही वह मेरे मन में बस गई है॥ १॥ भला हुआ जो मेरी पहली पत्नी मर गई है, भगवान करे मेरी अब ब्याही हुई पत्नी युग-युग तक जीती रहे॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी कहते हैं कि जब छोटी दुल्हन आ गई है तो बड़ी पत्नी (कुबुद्धि) का सुहाग चला गया है। अब छोटी दुल्हन मेरे साथ बसती है और बड़ी (कुलक्षिणी) ने दूसरा पति धारण कर लिया है ॥ २ ॥ २॥ ३२॥

आसा ॥ मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ ले राखिओ राम जनीआ नाउ ॥ १ ॥ इन्ह मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहतु कबीर सुनहु मेरी माई ॥ इन्ह मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥ २ ॥ ३ ॥ ३३ ॥

(कबीर की माता कहती है कि) मेरी बहू का नाम धनीआ (धनवन्ती) था परन्तु (साधु-संतों के प्रभाव से) अब उसका नाम राम-जनिया (राम की सेविका) रख दिया गया है॥ १॥ इन साधु-संतों ने मेरा घर बर्बाद कर दिया है। उन्होंने मेरे बेटे कबीर को राम नाम का भजन करने में लगा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी कहते हैं कि हे मेरी माता! सुनो, (इनकी आलोचना मत करो) इन साधु-संतों ने तो मेरी नीच जाति खत्म कर दी है॥ २॥ ३॥ ३३॥

आसा ॥ रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै ॥ अंत की बार लहैगी न आढै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घूंघटु काढि गई तेरी आगै ॥ उन की गैलि तोहि जिनि लागै ॥ १ ॥ घूंघट काढे की इहै बडाई ॥ दिन दस पांच बहू भले आई ॥ २ ॥ घूंघटु तेरो तउ परि साचै ॥ हरि गुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥ ३ ॥ कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ हरि गुन गावत जनमु बितीतै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३४ ॥

हे बहू! अरे ठहर, रुक जा, जो तू घूँघट निकालती है, अन्तिम समय इसका कौड़ी भर भी मूल्य नहीं अर्थात् कोई लाभ नहीं होगा॥ १॥ रहाउ॥ तुझसे पहले वाली (पूर्व पत्नी) भी घूँघट निकाला करती थी (जो प्राण त्याग गई है) तू उसके पदचिन्हों पर अनुसरण मत कर॥ १॥ घूँघट निकालने की केवल यही बड़ाई है कि पाँच अथवा दस दिन के लिए लोग कहते हैं, ''बड़ी नेक एवं अच्छी बहू आई है''॥ २॥ तेरा घूँघट तभी सच्चा होगा, यदि तू हरि का गुणगान करती हुई कूदती और नाचती रहोगी॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि बहू तभी जीवनबाजी जीत सकती है यदि उसका जीवन हरि का गुणगान करते हुए व्यतीत हो॥ ४॥ १॥ ३४॥

आसा ॥ करवतु भला न करवट तेरी ॥ लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥ १ ॥ हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ करवटु दे मोकउ काहे कउ मारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥ पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥ २ ॥ हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥ तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ अब तुमरी परतीति न होई ॥ ४ ॥ २ ॥ ३५ ॥

हे स्वामी! तुम्हारा करवट बदलने से तो मुझे बदन पर आरा चलवा लेना अधिक अच्छा लगता है। मेरी बिनती सुनो एवं मुझे गले से लगा लो॥ १॥ हे प्रिय! मेरी ओर मुख कीजिए, मैं तुझ पर कुर्बान जाती हूँ। मुझसे करवट बदल कर तुम मुझे क्यों मार रहे हो॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी! यदि तुम मेरा तन चीर भी दो तो भी मैं अपना अंग नहीं मोड़ूँगी। चाहे मेरा शरीर नष्ट हो जाए तो भी मैं तुझ से अपनी प्रीति नहीं तोड़ूँगी॥ २॥ हमारे और तुम्हारे बीच दूसरा कोई मध्यस्थ नहीं। हे स्वामी! तुम मेरे पति हो और मैं तुम्हारी पत्नी हूँ॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि हे लोगो! सुनो, अब हमें तुम पर भरोसा नहीं होता॥ ४॥ २॥ ३५॥

आसा ॥ कोरी को काहू मरमु न जानां ॥ सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब तुम सुनि ले बेद पुरानां ॥ तब हम इतनकु पसरिओ तानां ॥ १ ॥ धरनि अकास की करगह बनाई ॥ चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥ २ ॥ पाई जोरि बात इक कीनी तह तांती मनु मानां ॥ जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ सूतै सूत मिलाए कोरी ॥ ४ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

कोई भी मनुष्य उस जुलाहे रूपी ईश्वर के भेद को नहीं जानता। प्रभु ने समूचे जगत में (जीव-जन्तुओं को उत्पन्न करके) ताना-बाना बनाया है॥ १॥ रहाउ॥ जब तक तुम वेद-पुराणों को सुनते हो, तब हम ताना-बाना तान लेते हैं॥ १॥ उस प्रभु रूपी जुलाहे ने धरती एवं आकाश को अपनी करघी बनाया है। उसके भीतर उसने चाँद एवं सूर्य की दो नलकियाँ चलाई हैं॥ २॥ अपने पैर जोड़कर मैंने एक बात की है, उस जुलाहे रूपी प्रभु से मेरा मन संयुक्त हो गया है। कबीर-जुलाहे ने अपने वास्तविक घर को समझ लिया है और अपने अंतर्मन में राम को पहचान लिया है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि जब शरीर रूपी करघा टूटता है तो प्रभु रूपी जुलाहा मेरे धागे (ज्योति) को अपने धागे (ज्योति) के साथ मिला लेता है॥ ४॥ ३॥ ३६॥

आसा ॥ अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां ॥ लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥ १ ॥ पूजहु रामु एकु ही देवा ॥ साचा नावणु गुर की सेवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥ २ ॥ मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बांचिआ जाई ॥ हरि का संतु मरै हाड़ंबै त सगली सैन तराई ॥ ३ ॥ दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥ कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

जिस व्यक्ति के हृदय में पापों की मैल भरी हुई हो, यदि वह तीर्थों पर जाकर स्नान कर भी ले तो भी उसे बैकुण्ठ प्राप्त नहीं हो सकता। दिखावे के तौर पर लोगों को प्रसन्न करने से कुछ नहीं बनता, क्योंकि राम कोई नादान नहीं वह तो सर्वज्ञाता है॥ १॥ केवल एक राम को ही इष्टदेव मानकर उसकी श्रद्धा से पूजा करो। गुरु की सेवा ही असल में सच्चा तीर्थ स्नान है॥ १॥ रहाउ॥ यदि जल में स्नान करने से मोक्ष मिलता है तो मेंढक तो प्रतिदिन ही जल में नहाता है (अर्थात् मेंढक की गति हो गई होती)। जैसे मेंढक है वैसे ही मनुष्य है जो बार-बार योनियों में आता है॥ २॥ यदि कठोर मन का व्यक्ति बनारस में प्राण त्याग देता है तो वह नरक में जाने से नहीं बच सकता। लेकिन यदि हरि का संत मगहर में प्राण त्याग देता है तो वह अपने सगे-संबंधियों को भी पार करवा देता है॥ ३॥ जहाँ दिन अथवा रात नहीं, न ही वेद अथवा शास्त्र हैं, वहाँ निरंकार प्रभु निवास करता है। कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी! यह सारा संसार तो बावला है, इसका मोह छोड़कर भगवान का ध्यान करो॥ ४॥ ४॥ ३७॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ आसा बाणी स्री नामदेउ जी की

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥ माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥ १ ॥ सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥ सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिंन न होई ॥ इहु परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न होई ॥ २ ॥ मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥ सुक्रित मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥ ३ ॥ कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥ ४ ॥ १ ॥

एक ईश्वर ही अनेक रूपों में सर्वव्यापक है और जिधर भी दृष्टि जाती है, उधर ही प्रभु का प्रसार दिखाई देता है। सारी दुनिया को आकर्षित करने वाली माया का रूप बड़ा विचित्र है और इसे कोई विरला मनुष्य ही समझता है। जगत में सब कुछ गोबिन्द ही गोबिन्द है तथा गोबिन्द के बिना कुछ भी नहीं। एक सूत्र में जैसे सैंकड़ों एवं हजारों मणियाँ पिरोई होती हैं वैसे ही प्रभु ने संसार को ताने-बाने की तरह पिरोया हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे जल तरंगें, झाग एवं बुलबुले जल से अलग नहीं होते वैसे ही यह प्रपंच सारी सृष्टि परब्रह्म की एक लीला है। विचार करने पर मनुष्य इसे अलग नहीं पाता॥ २॥ मिथ्या भ्रम एवं स्वप्न की वस्तुओं को मनुष्य सत्य पदार्थ समझता है। गुरु ने मुझे शुभ कर्म करने की मंशा धारण का उपदेश दिया है और मेरे जाग्रत मन ने इसे स्वीकार कर लिया है॥ ३॥ नामदेव जी कहते हैं कि हे भाई! अपने मन में विचार कर देख लो यह सारी जगत-रचना हरि की रची हुई है। घट-घट में और सभी के भीतर केवल एक मुरारि प्रभु ही मौजूद है॥ ४॥ १॥

आसा ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥ बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥ १ ॥ जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥ महा अनंद करे सद केला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥ पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥ २ ॥ आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥ पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥ ३ ॥ ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥ ४ ॥ २ ॥

मैं घड़ा लाकर उसे जल से भरकर यदि ठाकुर जी को स्नान कराऊँ तो यह स्वीकृत नहीं क्योंकि ब्यालीस लाख जीव इस जल में रहते हैं, फिर विट्ठल भगवान को उस जल से कैसे स्नान करवा सकता हूँ॥ १॥ जहाँ कहीं भी जाता हूँ, उधर ही विट्ठल भगवान मौजूद है। वह विट्ठल महा आनंद में सदा लीला करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि मैं फूल लाकर उन्हें माला में पिरोकर ठाकुर जी की पूजा करूँ, क्योंकि पहले उन फूलों से भँवरे ने सुगन्धि ले ली है और वे जूठे हो गए हैं फिर मैं कैसे विट्ठल भगवान की पूजा कर सकता हूँ॥ २॥ दूध लाकर खीर बनाकर नैवेद्य कैसे अपने ठाकुर को भेंट करूँ? क्योंकि पहले बछड़े ने दूध को पीकर जूठा कर दिया है, इससे मैं विट्ठल को कैसे भोग लगा सकता हूँ॥ ३॥ यहाँ भी विट्ठल भगवान है, वहाँ भी विट्ठल भगवान है। विट्ठल के बिना संसार का अस्तित्व नहीं। नामदेव प्रार्थना करता है, हे विट्ठल भगवान! विश्व के कोने-कोने में हर जगह तू ही सब में बस रहा है॥ ४॥ २॥

आसा ॥ मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥ मपि मपि काटउ जम की फासी ॥ १ ॥ कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥ राम को नामु जपउ दिन राती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥ राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥ २ ॥ भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥ आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥ ३ ॥ सुइने की सूई रुपे का धागा ॥ नामे का चितु हरि सउ लागा ॥ ४ ॥ ३ ॥

मेरा मन गज है और जिह्वा मेरी कैंची है। मैं माप-माप कर कैंची से यम की फाँसी को काट रहा हूँ॥ १॥ मैं जाति-पाति को क्या करूँ? दिन-रात मैं तो राम नाम का ही जाप करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं प्रभु के रंग में अपने आपको रंगता हूँ एवं जीविका हेतु वस्त्रों की सिलाई भी करता रहता हूँ। राम नाम के बिना मैं एक घड़ी भर भी जीवित नहीं रह सकता॥ २॥ मैं हरि की भक्ति करता हूँ तथा उसका ही गुणगान करता रहता हूँ। आठ प्रहर मैं अपने मालिक को याद करता रहता हूँ॥ ३॥ मेरे पास सोने की सुई एवं चांदी का धागा है और इस प्रकार नामदेव का चित्त हरि के साथ सिल गया है॥ ४॥ ३॥

आसा ॥ सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥ उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥ १ ॥ काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥ जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंघच भोजनु जो नरु जानै ॥ ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥ २ ॥ नामे के सुआमी लाहि ले झगरा ॥ राम रसाइन पीओ रे दगरा ॥ ३ ॥ ४ ॥

जैसे साँप अपनी केंचुली तो छोड़ देता है परन्तु अपना विष नहीं छोड़ता। जैसे मछलियाँ एवं मेंढक खाने के लिए जल में बगुला समाधि लगाता है। वैसे ही पाखण्डी लोग बाहर से दिखावा भक्तों वाला करते हैं मगर मन से खोटे ही होते हैं॥ १॥ हे भाई! तुम क्यों ध्यान एवं जाप कर रहे हो? जबकि तेरा अपना मन ही शुद्ध नहीं (अर्थात् मन अशुद्ध होने पर ध्यान एवं जाप का

कोई लाभ नहीं)॥ १॥ रहाउ॥ जो पुरुष सिंह जैसे भोजन खाता है अर्थात् हिंसा एवं लूटमार करके खाता है, ऐसे पुरुष को दुनिया महा ठग कहती है॥ २॥ नामदेव के स्वामी (प्रभु) ने सारा झगड़ा ही निपटा दिया है। हे दगाबाज! राम-नाम रूपी अमृत का पान कर॥ ३॥ ४॥

आसा ॥ पारब्रहमु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥ रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥ १ ॥ कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥ झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥ संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥ २ ॥ ५ ॥

जो आदमी परब्रह्म को पहचान लेता है, उसे अन्य आशाएँ अच्छी नहीं लगती। जो भक्त राम की भक्ति को मन में याद करता है, राम उसे चिंता से बचाकर रखता है॥ १॥ हे मेरे मन! तुम विषय-विकारों के जल से भरे हुए संसार-सागर को कैसे पार करोगे? हे मेरे मन! मिथ्या सांसारिक पदार्थों को देख कर तुम कुमार्गगामी हो गए हो॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तूने चाहे मुझे छीपी के घर में जन्म प्रदान किया है परन्तु गुरु का उपदेश मुझे मिल गया है। संतजनों की कृपा से नामदेव को हरि मिल गया है॥ २॥ ५॥

आसा बाणी स्री रविदास जीउ की **१ओं सतिगुर प्रसादि ॥**

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥ पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥ १ ॥ माधो अबिदिआ हित कीन ॥ बिबेक दीप मलीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच ॥ मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥ २ ॥ जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥ काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥ ३ ॥ रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥ ४ ॥ १ ॥

मृग, मछली, भँवरा, पतंगा एवं हाथी सभी का एक-एक दोष के फलस्वरूप विनाश हो जाता है। जिस व्यक्ति के भीतर पाँच असाध्य दोष विद्यमान हैं, उसकी क्या आशा की जा सकती है? ॥ १॥ हे माधो! मनुष्य का प्रेम अविद्या से है। उसके विवेक का दीपक मैला हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ तिर्यग्योनि तो अचेत (विचारहीन) है तथा पुण्य एवं पाप के बारे में सोचना उनके लिए संभव नहीं। मानव जन्म बहुत दुर्लभ है परन्तु इसकी संगति भी नीच है अर्थात् वह कामादिक विकारों से संलग्न रहता है॥ २॥ जीव-जन्तु जहाँ कहीं भी हैं, वे अपने पूर्व जन्म के कर्मों अनुसार जन्म लेते हैं। काल की फाँसी अचूक है, उससे बचने का कोई उपाय नहीं॥ ३॥ हे दास रविदास! तू विरक्त होकर अपना भ्रम त्याग दे और गुरु के ज्ञान की तपस्या कर। हे भक्तजनों के भय नाश करने वाले परमानंद प्रभु! आप ही कुछ निदान कीजिए॥ ४॥ १॥

आसा ॥ संत तुझी तनु संगति प्रान ॥ सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥ १ ॥ संत ची संगति संत कथा रसु ॥ संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥ २ ॥ अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥ जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥ ३ ॥ रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥ संत अनंतहि अंतरु नाही ॥ ४ ॥ २ ॥

हे देवाधिदेव! संतजन तेरा तन है और उनकी संगति प्राण है। सतिगुरु के ज्ञान द्वारा मैंने उन संतजनों को जान लिया है॥ १॥ हे देवों के देव! दया करके मुझे संतजनों की संगति, संतजनों की कथा का रस एवं संतजनों का प्रेम प्रदान कीजिए॥ १॥ रहाउ॥ हे देवाधिदेव!

संतजनों का आचरण, संतजनों का मार्ग एवं संतजनों के सेवकों की सेवा मुझे प्रदान कीजिए॥ २॥ हे प्रभु! मैं तुझसे एक अन्य दान माँगता हूँ। दया करके मुझे भक्ति की चिंतामणि प्रदान करें। मुझे दुष्ट एवं पापी लोगों के दर्शन मत करवाना॥ ३॥ रविदास कहता है कि वास्तव में बुद्धिमान-ज्ञानी वही है जो जानता है कि संत एवं भगवान में कोई अन्तर नहीं॥ ४॥ २॥

आसा ॥ तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥ नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥ १ ॥ माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥ हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥ २ ॥ जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥ राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥ ३ ॥ ३ ॥

हे परमात्मा! तुम चंदन हो और हम बेचारे एरंड का पेड़ हैं परन्तु तुम्हारी संगति में रहते हैं, जिससे एक नीच पेड़ से ऊँचे (श्रेष्ठ) हो गए हैं। तेरी मीठी सुगन्ध हमारे भीतर निवास करती है॥ १॥ हे माधव! हमने तेरी सत्संगति की शरण ली है। हम अवगुणी हैं और तुम उपकारी हो॥ १॥ रहाउ॥ तुम सफेद एवं पीले रेशम का धागा हो और हम बेचारे कीड़े की भाँति हैं। हे माधव! हम सत्संगति में ऐसे मिले रहें जैसे मधुमक्खियाँ शहद के छत्ते से मिली रहती हैं॥ २॥ हमारी जाति-पाति ओछी (नीच) है और जन्म भी ओछा (नीच) है। रविदास चमार कहता है कि सब कुछ ओछा (नीच) होने के साथ ही हमने राजा राम की सेवा-भक्ति भी नहीं की॥ ३॥ ३॥

आसा ॥ कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ १ ॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥ ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥ २ ॥ प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥ ३ ॥ ४ ॥

हे प्रभु! तो क्या हुआ? यदि मेरे तन के टुकड़े-टुकड़े भी हो जाएँ, मुझे कोई भय नहीं। तेरे सेवक को तो यही भय है कि कहीं तेरा प्रेम दूर न हो जाए॥ १॥ तेरे चरण-कमल ही मेरे मन का भवन है। तेरे नामामृत का पान करने से मुझे राम-धन प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ संपति, विपत्ति, माया एवं धन इत्यादि सभी छल-कपट ही हैं। तेरा सेवक इनके भीतर मग्न नहीं होता॥ २॥ रविदास कहते हैं कि हे प्रभु! तेरा सेवक तेरी प्रेम की रस्सी से बंधा हुआ है, फिर इससे छूटने का क्या अभिप्राय है॥ ३॥ ४॥

आसा ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम कबीर उजागर ॥ जनम जनम के काटे कागर ॥ १ ॥ निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥ तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥ २ ॥ जन रविदास राम रंगि राता ॥ इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥ ३ ॥ ५ ॥

'हरि-हरि' 'हरि-हरि', नाम मंत्र का ही जाप करो। हरि का सिमरन करने से भक्तजन भवसागर से मुक्ति प्राप्त कर गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हरि के नाम-स्मरण से ही कबीर दुनिया में विख्यात हुआ और उसका जन्म-जन्मांतर का कर्मालेख मिट गया॥ १॥ नामदेव ने भक्ति के निमित्त प्रभु को दूध पिलाया, जिसके फलस्वरूप वह जगत के जन्म संकट में नहीं आया॥ २॥ सेवक रविदास राम के प्रेम-रंग में अनुरक्त हुआ। इस तरह वह गुरु की कृपा से नरक में नहीं जाएगा॥ ३॥ ५॥

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥ १ ॥ मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥ २ ॥ कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥ ३ ॥ ६ ॥

आदमी मिट्टी का पुतला है लेकिन फिर भी (सांसारिक मोह में फँसकर) कैसे व्यंग्यपूर्ण नाचता है। वह बार-बार देखता, सुनता, बोलता और दौड़ता ही रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जब वह कुछ उपलब्धि करता है तो उस उपलब्धि का बड़ा अहंकार करता है। लेकिन जब धन-दौलत इत्यादि उसकी चली जाती है तो फूट-फूट कर रोने लगता है॥ १॥ मन, वचन एवं कर्मों के कारण वह मीठे एवं लुभावने सांसारिक पदार्थों में मग्न रहता है। लेकिन जब उसके जीवन का अंत हो जाता है तो पता नहीं चलता कि वह किस स्थान में जाकर समा जाता है॥ २॥ रविदास जी कहते हैं कि हे भाई! यह जीवन एक बाजी है तथा बाजीगर प्रभु से मेरी प्रीति बन गई है॥ ३॥ ६॥

आसा बाणी भगत धंने जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥ लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥ गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥ १ ॥ जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥ बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥ २ ॥ गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥ प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥ ३ ॥ जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥ धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

अनेक जन्म आवागमन के चक्र में भटकते हुए व्यतीत हो गए लेकिन तन, मन, धन तीनों ही स्थिर नहीं रहते। लालच एवं कामवासना के विष में लुब्ध होकर इस मन ने प्रभु रूपी हीरे को विस्मृत कर दिया है॥ १॥ बावले मन को विषय-विकारों का फल मीठा लगता है तथा सुन्दर विचारों को जाना नहीं है। शुभ गुणों के विपरीत पापों की अनेक भ्रांतियों से उसका प्रेम अधिकतर बढ़ गया है और वह दुबारा जन्म-मरण का ताना-बाना बना रहता है॥ १॥ उस प्रभु मिलन की युक्ति को नहीं जानता जो हृदय में निवास करता है। मोह के जाल में जलता हुआ वह मृत्यु के फंदे में फँस गया है। हे मेरे मन! इस तरह तूने विष रूपी फल संचित करके अपने हृदय-घर में भर लिए हैं और परमपुरुष प्रभु भूल गया है॥ २॥ जब गुरु ने मुझे नाम-धन दिया तो मन में ज्ञान का प्रवेश हो गया। ध्यान लगाने से मेरा मन प्रभु से एकाकार हो गया। प्रभु की प्रेम-भक्ति को धारण करने से मन को आत्मिक सुख की अनुभूति हो गई है और इस तरह मन तृप्त एवं संतुष्ट होने से मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो गई॥ ३॥ जिस मनुष्य के भीतर सर्वव्यापक परमात्मा की ज्योति समाई है, उसने निश्चल भगवान को पहचान लिया है। धन्ना जी का कथन है कि उसने धरणिधर प्रभु को अमूल्य धन के रूप में प्राप्त कर लिया है तथा संतों की संगति में मिलकर वह उसमें समा गया है॥ ४॥ १॥

महला ५ ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥ आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥ नीच कुला जोलाहरा भइओ

गुनीय गहीरा ॥ १ ॥ रविदासु दुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥ परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥ २ ॥ सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥ हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥ ३ ॥ इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥ ४ ॥ २ ॥

गोविंद का नाम जपने से नामदेव का मन गोविंद में ही लीन हुआ था, जिसके फलस्वरूप वह दो कौड़ी का छीपी लखपति बन गया॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी ने बुनने तथा तानने के कार्य को छोड़कर ईश्वर के चरणों में प्रीति लगाई थी, जिसके फलस्वरूप वह नीच कुल का जुलाहा गुणों का सागर बन गया॥ १॥ रविदास जी जो प्रतिदिन मृत पशु ढोते थे, उन्होंने भी सांसारिक माया को त्याग दिया तो वह साधुओं की संगति में रहकर सुविख्यात हो गए और उन्हें हरि के दर्शन प्राप्त हुए॥ २॥ सैन नाई छोटे-मोटे सामान्य कार्य लोगों के यहाँ करने वाला सुना जाता था लेकिन जब उसके चित्त में भगवान निवसित हो गया तो वह भी भक्तजनों में गिना जाने लगा॥ ३॥ इस तरह की कथाएँ सुनकर धन्ना जाट भी प्रेरित होकर भगवान की भक्ति करने लगा। धन्ना जाट भाग्यवान हो गया है, जो उसे साक्षात् गोसाई के दर्शन प्राप्त हुए॥ ४॥ २॥

रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥ देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥ १ ॥ कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥ पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥ २ ॥ पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥ कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥ ३ ॥ ३ ॥

हे मेरे चित्त ! तू दयालु दामोदर भगवान को याद क्यों नहीं करता ? भगवान के सिवाय किसी अन्य सहारे की उम्मीद मत रखो। यदि तू खंडों-ब्रह्माण्डों पर भी भागता-फिरता रहेगा, फिर भी वही होगा जो कर्त्ता-प्रभु को मंजूर होगा॥ १॥ रहाउ॥ भगवान ने जननी के उदर-जल में हमारा दसों द्वारों वाला शरीर बनाया। हमारा मालिक प्रभु ऐसा है कि वह गर्भ में ही आहार देकर गर्भ की अग्नि से रक्षा करता है॥ १॥ कछुआ जल में रहता है लेकिन उसके बच्चे जल से बाहर रहते हैं। उनकी रक्षा न ही माता के पंखों से होती है और न ही उनकी पालना उसके दूध से होती है। फिर भी अपने मन में सोच-समझ एवं देख कि पूर्ण परमानंद मनोहर उनका भरण-पोषण करता है॥ २॥ पत्थर में कीट छिपा हुआ रहता है। उसके लिए बाहर आने-जाने का कोई मार्ग नहीं होता। धन्ना कहता है कि फिर भी प्रभु उसका पालनहार है। हे जीव ! तू भय मत कर॥ ३॥ ३॥

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ॥ जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥ १ ॥ रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥ विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से ॥ २ ॥ परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥ जिना पछाता सचु चुंमा पैर मूं ॥ ३ ॥ तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥ सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥ ४ ॥ १ ॥

जो लोग दिल से खुदा से मुहब्बत करते हैं, वही उसके सच्चे आशिक हैं। जिन लोगों के मन में कुछ और है तथा मुँह में कुछ और है, वे कच्चे तथा झूठे कहे जाते हैं॥ १॥ जो लोग खुदा के

इश्क में रंगे हुए हैं, वे उसके दर्शन-दीदार के रंग में मस्त रहते हैं। जो लोग खुदा के नाम को भुला देते हैं, वे धरती पर बोझ बनकर ही रह जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिन लोगों को अल्लाह अपने दामन (शरण) से मिला लेता है, वही उसके द्वार पर सच्चे दरवेश हैं। उनको जन्म देने वाली माता धन्य है और उनका इस दुनिया में आगमन सफल है॥ २॥ हे परवदगार! तू अपार, अगम्य एवं बेअंत है। जिन्होंने सत्य को पहचान लिया है, मैं उनके पैर चूमता हूँ॥ ३॥ हे खुदा! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ, तू क्षमाशील है। शेख फरीद को अपनी बंदगी (भक्ति) की खैर (दान) प्रदान करो॥ ४॥ १॥

आसा ॥ बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥ इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥ १ ॥ आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ॥ झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥ २ ॥ बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥ जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ ३ ॥ छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥ कंचन वंने पासे कलवति चीरिआ ॥ ४ ॥ सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥ जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥ ५ ॥ कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीआं ॥ सीआले सोहंदीआं पिर गलि बाहड़ीआं ॥ ६ ॥ चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥ गंढेदिआं छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥ ७ ॥ जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥ जालण गोरां नालि उलामे जीअ सहे ॥ ८ ॥ २ ॥

शेख फरीद जी कहते हैं हे प्यारे! उस अल्लाह के साथ लग। यह तन एक दिन मिट्टी हो जाएगा तथा इसका निवास बेचारी कब्र में होगा॥ १॥ हे शेख फरीद! तेरा खुदा से मिलाप आज ही हो सकता है, यदि तू अपने मन को चंचल करने वाली इन्द्रियों पर अंकुश लगा दे॥ १॥ रहाउ॥ यदि यह पता है कि अन्तः मृत्यु के वश में ही होना है और दोबारा वापिस नहीं आना तो इस झूठी दुनिया में लिप्त होकर अपने आपको बर्बाद नहीं करना चाहिए॥ २॥ सत्य तथा धर्म ही बोलना चाहिए तथा झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए। गुरु जो मार्ग दिखाता है, मुरीदों को उसी मार्ग पर चलना चाहिए॥ ३॥ छैल-छबीले नवयुवकों को पार होते देखकर सुन्दर युवती के मन में भी धैर्य हो जाता है। जो लोग सोने की झलक की तरफ मुड़ते हैं, वे नरक में आरे से चीरे जाते हैं॥ ४॥ हे शेख! किसी भी मनुष्य का जीवन इस दुनिया में स्थिर नहीं रहता। जिस आसन पर अभी हम बैठे हैं, अनेकों ही इस पर बैठ कर चले गए हैं॥ ५॥ जैसे कार्तिक के मास में कूँजों का उड़ना, चैत्र महीने में दावाग्नि, श्रावण महीने में बिजली चमकती दिखाई देती है तथा शीतकाल (सर्दियों) में सुन्दर पत्नी की बाहें पति-प्रियतम के गले में शोभा देती हैं॥ ६॥ वैसे ही संसार से चले जाने वाले मनुष्य शरीर चले जा रहे हैं। अपने मन में इसे सोच-समझ लो। प्राणी को बनाने में छः महीने लगते हैं लेकिन उसे तोड़ने (खत्म करने) में एक क्षण भर लगता है॥ ७॥ हे फरीद! जमीन आसमान से पूछती है कि जीव रूपी खेवट कहाँ चले गए हैं? आसमान जवाब देता है कि कई लोगों के शरीर कब्रों में पड़े गल-सड़ रहे हैं परन्तु उनके कर्मों के दोष आत्मा सहन कर रही है॥ ८॥ २॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म परमेश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला सर्वशक्तिमान है, उसका किसी से वैर नहीं, वह निर्वेर है, वस्तुतः सब जीवों पर उसकी समान दृष्टि है, वह कालातीत है, वह जन्म-मरण से रहित है, वह स्वयं ही प्रकट हुआ है, जिसकी लब्धि गुरु की कृपा से होती है।

रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥

तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥ करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥ १ ॥ पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥ जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥ २ ॥ पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अम्रितु देहि ॥ नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण करम करेहि ॥ ३ ॥ नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले ॥ जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥ ४ ॥ १ ॥

हे परमात्मा ! यदि मेरा मन शिला बन जाए तो मैं तेरे नाम को चन्दन बनाकर उस पर घिस लूँ। यदि शुभ कर्मों का केसर उससे मिला दिया जाए तभी मेरे हृदय के भीतर तेरी सच्ची पूजा होती रहेगी॥ १॥ परमात्मा का नाम-सुमिरन करने से ही सच्ची पूजा होती है क्योंकि नाम के बिना कोई पूजा नहीं॥ १॥ रहाउ॥ बाहर से लोग देव-मूर्तियों को धोते हैं, यदि इसी तरह अपने मन को धो लें तो उनकी विकारों की जूठन दूर हो जाएगी। उनकी आत्मा पवित्र हो जाएगी तथा मोक्ष को प्रस्थान करेगी॥ २॥ पशुओं के पास भी गुण मिलते हैं जो घास चरते हैं और अमृत-समान दूध देते हैं लेकिन नाम-विहीन आदमी का जीवन एवं कर्म दोनों ही धिक्कार योग्य है चूंकि वह नाम को छोड़कर व्यर्थ कार्य करता रहता है॥ ३॥ हे प्राणी ! परमात्मा निकट ही है, उसे दूर मत समझो। वह प्रतिदिन दुनिया का भरण-पोषण कर रहा है। गुरु नानक का कथन है कि जो कुछ वह देता है, वही हम खाते हैं केवल वही सत्य है॥ ४॥ १॥

गूजरी महला १ ॥ नाभि कमल ते ब्रहमा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि ॥ ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥ १ ॥ प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार ॥ जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रवि ससि दीपक जा के त्रिभवणि एका जोति मुरारि ॥ गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥ २ ॥ सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥ अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥ ३ ॥ सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥ ४ ॥ २ ॥

विष्णु के नाभि कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ और अपने चारों मुख एवं कण्ठ को संवारकर वेदों का अध्ययन करने लगा। लेकिन ब्रह्मा भी ईश्वर का अन्त नहीं जान सका तथा आवागमन

के अन्धेरे में पड़ा रहा॥ १॥ मैं अपने प्रियतम-प्रभु को क्यों विस्मृत करूँ ? जो कि मेरे प्राणों का आधार है। जिसकी भक्ति पूर्ण पुरुष भी करते हैं और मुनिजन भी गुरु के उपदेशानुसार सेवा-भक्ति करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ दुनिया में रोशनी करने के लिए सूर्य एवं चन्द्रमा उसके दीपक हैं, तीनों लोकों में एक उसी मुरारि की ज्योति प्रज्वलित हो रही है। गुरुमुख मनुष्य रात-दिन मन में निर्मल रहता है तथा मनमुख लोग रात के अन्धेरे में भटकते रहते हैं॥ २॥ सिद्ध पुरुष अपनी समाधि में सदैव अपने साथ ही झगड़ा करता हुआ प्रभु की खोज करते रहते हैं। परन्तु अपने दोनों नयनों से वह क्या देख सकते हैं। जिसके हृदय में प्रभु ज्योति विद्यमान है। वह शब्द की ध्वनि से जाग जाता है और सच्चा गुरु उसके विवाद निपटा देता है॥ ३॥ हे अनंत, अयोनि प्रभु ! तुम देवताओं एवं मनुष्यों के नाथ हो, तुम्हारा सच्चा मन्दिर अपार है। हे जगजीवन प्रभु ! नानक को सहजता प्रदान कर तथा अपनी दया-दृष्टि से उसका उद्धार कर दो॥ ४॥ २॥

रागु गूजरी महला ३ घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥ जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥ १ ॥ ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥ हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥ आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥ २ ॥ बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥ ३ ॥ नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥ सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे क्रिपा करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

ऐसे जीवन को तो धिक्कार है, जिसमें हरि के साथ प्रीति नहीं लगती। ऐसे कार्य को भी धिक्कार है जिसमें हरि भूल जाता है तथा मन द्वैतभाव के साथ लग जाता है॥ १॥ हे मन ! ऐसे सतगुरु की श्रद्धा से सेवा करनी चाहिए, जिसकी निष्काम सेवा करने से गोविन्द से प्रीति उत्पन्न हो जाए एवं शेष सब कुछ भूल हो जाए। इस प्रकार चित्त ईश्वर के साथ लगा रहेगा एवं वृद्धावस्था का भय नहीं रहेगा और जीवन का मनोरथ मुक्ति मिल जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ गोविंद के प्रेम से मेरे मन में एक ऐसा सहज सुख पैदा हो गया है कि मेरी भक्ति आनंदमय बन गई है। जब मैंने अपने अहंत्व को मार दिया तो मेरा मन पावन हो गया और मेरी ज्योति परम-ज्योति में समा गई॥ २॥ अहोभाग्य के बिना ऐसा सतगुरु प्राप्त नहीं हो सकता, जितनी चाहे सभी अभिलाषा कर लें। यदि झूठ का पर्दा भीतर से दूर हो जाए तो सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ हे नानक ! ऐसे सतगुरु की वह सेवक क्या सेवा कर सकता है ? केवल गुरु के समक्ष उसे अपना मन एवं जीवन अर्पित कर देना ही सच्ची सेवा है। यदि वह सतगुरु की रज़ा को याद रखे तो वह स्वयं ही उस पर कृपा-दृष्टि कर देता है॥ ४॥ १॥ ३॥

गूजरी महला ३ ॥ हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥ हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥ १ ॥ हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥ गुर प्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मेरा सिम्रिति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥ हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु त्रिपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥ २ ॥ हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥ हरि मेरा

धनु मेरै साथि चाले जहा हउ जाउ तह जाई ॥ ३ ॥ सो झूठा जो झूठे लागै झूठे करम कमाई ॥ कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

हे भाई ! तुम हरि की ही सेवा-भक्ति करो तथा उसके अतिरिक्त किसी दूसरे की सेवा मत करो। हरि की सेवा-भक्ति करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है परन्तु किसी दूसरे की सेवा करने से अमूल्य मानव-जन्म व्यर्थ ही चला जाता है॥ १॥ हे भाई ! हरि ही मेरा प्रेम एवं जीवन-आचरण है तथा हरि ही मेरी कथा एवं कहानी है। गुरु की दया से मेरा मन प्रभु-प्रेम में भीग गया है, यही मेरी सेवा-भक्ति बनी है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! हरि ही मेरी स्मृति, मेरा शास्त्र, मेरा संबंधी एवं मेरा भाई है। हरि की मुझे भूख लगी रहती है और हरि के नाम से मेरा मन तृप्त हो जाता है। हरि ही मेरा रिश्तेदार है और वही मेरा अंतिमकाल का सखा है॥ २॥ हरि के बिना दूसरी पूँजी झूठी है। जब प्राणी संसार से कूच करता है तो यह उसके साथ नहीं जाती। हरि ही मेरा अमूल्य धन है जो मेरे साथ (परलोक में) चलेगा, जहाँ किधर भी मैं जाऊँगा, वहीं यह साथ जाएगा॥ ३॥ जो झूठ से लगा हुआ है, वह झूठा है और जो कर्म वह करता है, वे भी झूठे हैं। नानक कहते हैं कि दुनिया में सब कुछ हरि की इच्छानुसार ही होता है। नश्वर प्राणी का इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं॥ ४॥ २॥ ४॥

गूजरी महला ३ ॥ जुग माहि नामु दुलंभु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥ १ ॥ बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥ बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥ २ ॥ सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ ॥ दसवै दुआरि रहत करे त्रिभवण सोझी पाइ ॥ ३ ॥ नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ॥ इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

इस कलियुग में भगवान का नाम बड़ा दुर्लभ है तथा गुरु की शरण लेने से ही इसकी प्राप्ति होती है। नाम के बिना जीव की मुक्ति नहीं होती, चाहे कोई जितना भी उपाय करके देख लो॥ १॥ मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, सदैव ही उन पर न्यौछावर हूँ। सच्चे गुरु को मिलने से हरि-प्रभु मन में बस जाता है और तब वह सहज ही उसमें समाया रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जब हरि का भय मन में उत्पन्न होता है तो जीव संसार से बैरागी हो जाता है। वैराग्य द्वारा ही हरि-प्रभु प्राप्त होता है तथा जीव हरि के साथ समाया रहता है॥ २॥ वही जीव मुक्त होते हैं, जो अपने मन को जीत लेते हैं और माया उनके साथ दोबारा नहीं लगती। वे दशम द्वार में रहते हैं और उन्हें तीनों लोकों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ गुरु नानक की कृपा-दृष्टि से भाई लहना गुरु अंगद बन गया, उस परमात्मा की आश्चर्यजनक रज़ा देखो। सृजनहार प्रभु ने यह कार्य सम्पूर्ण किया है तथा लहने की ज्योति नानक की ज्योति में समा गई॥ ४॥ ३॥ ५॥

गूजरी महला ३ ॥ राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ॥ गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥ १ ॥ अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै जिन्ह कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ त्रिसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥ २ ॥ अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ जिसु नर की दुबिधा न जाइ धरम राइ तिसु देइ सजाइ ॥ ३ ॥ करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥ नानक विचहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

जीभ से 'राम-राम' तो सभी लोग कहते हैं लेकिन इस तरह कहने से राम प्राप्त नहीं होता। यदि गुरु की कृपा से किसी के मन में राम बस जाए तो तभी कोई राम-नाम जपने का फल प्राप्त करता है॥ १॥ जिस मनुष्य के हृदय में गोविंद से प्रीति लग गई है, वह प्रभु को कदाचित विस्मृत नहीं करता और सदैव ही मन एवं चित्त से हरि-हरि करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जिनके हृदय में कपट निवास करता है परन्तु बाहर से संत कहलवाते हैं, उनकी तृष्णा कभी खत्म नहीं होती और अंतः वह पछताते हुए संसार से चले जाते हैं॥ २॥ चाहे मनुष्य अनेक तीर्थ स्थलों पर स्नान का यत्न करता रहे परन्तु उसके मन का अहंकार कभी दूर नहीं होता। जिस मनुष्य की दुविधा दूर नहीं होती, धर्मराज उसे दण्डित करता है॥ ३॥ जिस व्यक्ति पर प्रभु की अनुकंपा हो जाती है, वही उसे प्राप्त करता है। कोई गुरुमुख बनकर ही सत्य को समझता है। हे नानक! यदि मनुष्य अपने भीतर से अपना अहंकार नष्ट कर दे तो वह प्रभु से मिल जाता है॥ ४॥ ४॥ ६॥

गूजरी महला ३ ॥ तिसु जन सांति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ॥ सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥ गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ॥ जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥ २ ॥ विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥ गुरू सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ॥ ३ ॥ नानक विणु नदरी किछू न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताए ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

ईश्वर जिस इन्सान का अभिमान दूर कर देता है, उसे शांति प्राप्त हो जाती है तथा उसकी बुद्धि सदैव निश्चल रहती है। वह मनुष्य निर्मल है जो गुरु के उपदेश द्वारा सत्य को समझता है तथा अपने चित्त को हरि-चरणों से लगाता है॥ १॥ हे मेरे अचेत मन! भगवान को याद कर, तुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। गुरु की कृपा से तुझे हरि-रस प्राप्त होगा, जिसे पान करने से सदैव सुख की उपलब्धि होगी॥ १॥ रहाउ॥ जब मनुष्य की सतिगुरु से भेंट होती है तो वह पारस बन जाता है। जब वह पारस (महान्) बन जाता है तो प्रभु जीवों से उसकी पूजा करवाता है, जो कोई उसकी पूजा करता है, वह फल प्राप्त कर लेता है। दूसरों को दीक्षा देकर वह उनको सत्य-मार्ग पर प्रेरित करता है॥ २॥ पारस (महान्) बने बिना मनुष्य पूजा के योग्य नहीं होता। अपने मन को समझाने के बिना वह दूसरों को समझाता है। अज्ञानी अंधा मनुष्य अपने आपको गुरु कहलवाता है लेकिन क्या वह किसी को मार्गदर्शन कर सकता है?॥३॥ हे नानक! प्रभु की दया के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होता। जिस मनुष्य पर भगवान दया-दृष्टि धारण करता है, वह उसे प्राप्त कर लेता है। गुरु की कृपा से प्रभु प्रशंसा प्रदान करता है और अपने शब्द का चारों ओर प्रसार करता है॥ ४॥ ५॥ ७॥

गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥ १ ॥ हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ ॥ इह मति तेरी थिरु रहै तां भरमु विचहु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख होवहि नासु ॥ पंच भू आतमा वसि करहि ता तीरथ करहि निवासु ॥ २ ॥ मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछू न पाइ ॥ हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ॥ ३ ॥ इहु मनु कासी सभि तीरथ सिम्रिति सतिगुर दीआ

बुझाइ ॥ अठसठि तीरथ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ॥ ४ ॥ नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥ जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहे समाइ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ८ ॥

न ही काशी में जाने से बुद्धि उत्पन्न होती है और न ही काशी में बुद्धि दूर होती है। विवेक बुद्धि तो सतिगुरु को मिलने से उत्पन्न होती है और तब मनुष्य को यह विवेक बुद्धि प्राप्त हो जाती है॥ १॥ हे मन ! तू श्रद्धा से हरि कथा सुन तथा उसके नाम को अपने हृदय में बसा। यदि तेरी यह बुद्धि स्थिर रहे तो भीतर से सारा भ्रम निवृत्त हो जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ (हे मन !) हरि के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसा, तेरे समस्त पाप नाश हो जाएँगे। यदि तुम अपने पाँच सूक्ष्म तत्वों से बनी आत्मा को वश में कर लो तो तुम्हारा निवास सत्य के तीर्थ में हो जाएगा॥ २॥ मनमुख व्यक्ति का यह मन मूर्ख है और इसे कुछ सूझ प्राप्त नहीं होती। मूर्ख मन हरि के नाम को नहीं जानता और अंततः पछताता हुआ दुनिया से चला जाता है॥ ३॥ सच्चे गुरु ने मुझे यह समझा दिया है कि यह मन ही काशी, सभी तीर्थ-स्नान एवं स्मृतियाँ हैं। जिनके हृदय में हरि समाया रहता है, उनके साथ अड़सठ तीर्थ सदा रहते हैं॥ ४॥ हे नानक ! सतिगुरु को मिलने से प्रभु का हुकम जान लिया जाता है और एक ईश्वर आकर मनुष्य के हृदय में बसेरा कर लेता है। हे सच्चे प्रभु ! जो तुझे अच्छे लगते हैं, वे सभी सत्य हैं और वे सत्य में ही समाए रहते हैं॥ ५॥ ६॥ ८॥

गूजरी महला ३ तीजा ॥ एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥ १ ॥ हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ हरि रसु रसना चाखु तूं तां मनु निरमलु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि तिसना भूख न होइ ॥ नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥ २ ॥ कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥ गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥ ३ ॥ सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥ ४ ॥ सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ६ ॥

हे पण्डित ! जरा ध्यान से सुन, एक ईश्वर का नाम ही अक्षय खजाना है, इसे ही सत्य समझकर सीख। जो कुछ भी तू द्वैतभाव के द्वारा पढ़ता है, ऐसे पढ़ने एवं चिन्तन करने से तुझे सदा दुःख मिलता है॥१॥ तू हरि के चरणों से लगा रह, गुरु के शब्द द्वारा तुझे सूझ मिल जाएगी। अपनी जिह्वा से तू हरि-रस का पान कर, तेरा मन निर्मल हो जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु को मिलने से मन संतोषी हो जाता है और फिर तृष्णा एवं भूख नहीं सताती। नाम के खजाने को प्राप्त करके कोई भी मनुष्य पराए घर में नहीं जाता॥ २॥ यदि मनमुख अपने मुँह द्वारा केवल बातें ही करता रहे तो उसे नाम-धन की सूझ नहीं होती। गुरु की मति द्वारा जिसके हृदय में ज्ञान रूपी आलोक हो जाता है, वह हरि-नाम को प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ तू शास्त्रों को सुनकर भी नाम-धन को नहीं समझता, इसलिए बार-बार इधर-उधर भटकता रहता है। वह मनुष्य मूर्ख है, जो अपने आत्मस्वरूप को नहीं पहचानता और सत्य से प्रेम नहीं करता॥ ४॥ सत्यस्वरूप प्रभु ने इस जगत को कुमार्गगामी किया हुआ है और मनुष्य का इसमें कुछ कहने का साहस नहीं। हे नानक ! जो कुछ परमात्मा को मंजूर है, अपनी इच्छानुसार वही कुछ करता है॥ ५॥ ७॥ ६॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥ हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ १ ॥ मेरे मीत गुरदेव मोकउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि

॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥ २ ॥ जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥ ३ ॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धंनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥ ४ ॥ १ ॥

[इस शब्द का उच्चारण श्री गुरु अमरदास जी ने तब किया माना जाता है, जब श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी पुत्री बीबी भानी के विवाह के बाद गुरु रामदास को कहा कि जेठा जी! हमारे यहाँ की रीति है कि जब दामाद स्वेच्छा से जो माँगता है उसे दिया जाता है। तब गुरु साहिब ने इस शब्द का उच्चारण किया था]

हे परमात्मा स्वरूप! हे सतगुरु सद्पुरुष जी! मेरी आप से यही विनती है कि मुझ तुच्छ जीव ने तेरी शरण ली है। सो हे सतगुरु जी! कृपा करके मेरे मन में हरि-नाम का प्रकाश कर दो॥ १॥ हे मेरे मीत गुरुदेव! मेरे मन में राम नाम का प्रकाश कर दो। गुरु उपदेशानुसार बताया परमात्मा का नाम मेरे प्राणों का सखा है और हरि की कीर्ति करना ही हमारी रीति है॥ १॥ रहाउ॥ हरि के भक्तों का बड़ा सौभाग्य है, जिनकी हरि-नाम में अगाध श्रद्धा है और जिन्हें हरि-नाम जपने की तीव्र लालसा है। हरि-प्रभु के नाम को प्राप्त करके वे तृप्त हो जाते हैं तथा सत्संगति में मिलने से उनके मन में हरि के गुणों रूपी प्रकाश हो जाता है॥ २॥ जिन्होंने हरि के हरि-हरि नाम रस को नहीं चखा, वे भाग्यहीन हैं तथा यम के पाश में फँसे रहते हैं। जो मनुष्य सतिगुरु की शरण एवं संगति में नहीं आते, उनके विमुख व्यक्तियों के जीवन को धिक्कार है तथा भविष्य में उनके जीने पर भी धिक्कार है॥ ३॥ जिन हरि-भक्तों को सतिगुरु की संगति प्राप्त हुई है, उनके मस्तक पर परमात्मा द्वारा जन्म से पूर्व ही ऐसा भाग्य लिखा होता है। हे नानक! वह सत्संगति धन्य-धन्य है जहाँ हरि रस की उपलब्धि होती है और परमात्मा के भक्तों को उसके नाम का ज्ञान-प्रकाश मिलता है। इसलिए हे सतगुरु जी! मुझे तो सिर्फ परमात्मा के नाम की देन प्रदान करो॥ ४॥ १॥

गूजरी महला ४ ॥ गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥ जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभु ओहै ॥ १ ॥ मेरे भाई जना मोकउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥ जन कउ राम नामु आधारा हरि नामु जपत हरि नामे सोहै ॥ २ ॥ दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥ कऊआ काग कउ अंम्रित रसु पाईऐ त्रिपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥ ३ ॥ अंम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥ नानक धनु धंनु वडे वडभागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥ ४ ॥ २ ॥

दुनिया का मालिक गोविंद मेरा प्रियतम है और मुझे मेरा प्रियतम मन में बहुत प्रिय है। सत्संगति में शब्द द्वारा वह मेरे मन को मोह लेता है। गोविन्द का नाम जप कर गोविन्द का ही ध्यान करते रहना चाहिए। चूंकि वह प्रभु ही सब जीवों को दान देता है॥ १॥ हे मेरे भक्तजनो भाईयो! गोविंद-गोविंद नाम जपने से गोविंद मेरे मन को मोह लेता है। मैं गोविंद-गोविंद कहकर गोविंद का गुणगान करता रहता हूँ। गुरु से मिलकर साधसंगति में तेरा भक्त बड़ा सुन्दर लगता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि की भक्ति सुखों का सागर है। गुरु के उपदेश द्वारा लक्ष्मी, रिधि-सिद्धियाँ उसके चरणों में आ लगती हैं। राम का नाम उसके सेवक के जीवन का आधार है। वह हरि का नाम जपता रहता है और हरि-नाम से ही सुन्दर लगता है॥ २॥ दुर्मति, भाग्यहीन एवं तुच्छ बुद्धि

वाले लोगों को प्रभु का नाम सुनकर ही मन में क्रोध आ जाता है। कौए के समक्ष चाहे स्वादिष्ट भोजन रखा जाए तो भी वह अपने मुँह से विष्ठा एवं गोबर खा कर ही तृप्त होता है॥ ३॥ सत्यवादी सतगुरु जी अमृत का सरोवर है, जिसमें स्नान करने से कौआ भी हंस बन जाता है। हे नानक! वे इन्सान धन्य-धन्य एवं बड़े भाग्यवान हैं, जो अपने मन की मैल को गुरु उपदेशानुसार प्रभु-नाम से धो देते हैं॥ ४॥ २॥

गूजरी महला ४ ॥ हरि जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥ जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥ १ ॥ राम मोकउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥ हरि हरि अंम्रितु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥ २ ॥ जिन दरसनु सतिगुर सत पुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥ से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥ ३ ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥ नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हरि के भक्त उत्तम हैं, उनकी वाणी बड़ी उत्तम होती है तथा वे अपने मुख से परोपकार के लिए ही वाणी बोलते हैं। जो लोग श्रद्धा एवं भक्ति-भाव से उनकी वाणी सुनते हैं, हरि कृपा करके उनकी मुक्ति कर देता है॥ १॥ हे राम! मुझे प्यारे भक्तों की संगति से मिला दे। पूर्ण गुरु सतिगुरु मुझे अपने प्राणों से भी प्रिय है। गुरुदेव ने मुझ पापी को भी मोक्ष प्रदान किया है॥ १॥ रहाउ॥ गुरुमुख बड़े भाग्यशाली हैं, और वे भी बड़े भाग्यवान हैं, हरि नाम ही जिनके जीवन का आधार बन गया है। वे हरिनामामृत एवं हरि रस का पान करते हैं तथा गुरु उपदेश द्वारा उनकी भक्ति के भण्डार भरे रहते हैं॥ २॥ परन्तु जिन्होंने सद्‌पुरुष सतिगुरु के दर्शन प्राप्त नहीं किए, वे भाग्यहीन हैं तथा उनको यमदूत नष्ट कर देता है। ऐसे मनुष्य कुत्ते, सूअर अथवा गधे जैसी गर्भ-योनियों के (जन्म-मरण के) चक्र में पीड़ित होते हैं तथा उन महा हत्यारों को भगवान मार देता है॥ ३॥ हे दीनदयालु! अपने सेवकों पर दया करो और अपनी कृपा-दृष्टि करके उनका उद्धार करो। नानक ने हरि की शरण ली है, जब हरि को उपयुक्त लगेगा तो वह उसका उद्धार कर देगा॥ ४॥ ३॥

गूजरी महला ४ ॥ होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥ सभि सुख सभि गुण सभि निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥ १ ॥ मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई ॥ गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लए छडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥ मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ॥ २ ॥ माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु बिरथा जाई ॥ नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥ ३ ॥ जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥ धंनु धंनु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरे राम! मुझ पर दयालु हो जाओ और मेरा मन भक्ति में लगा दो चूंकि मैं सर्वदा ही तेरे नाम का ध्यान करता रहूँ। परमात्मा सभी सुखों, सभी गुणों एवं समस्त निधियों का भण्डार है, जिसका नाम जपने से ही सभी दुख एवं भूख मिट जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! राम का नाम मेरा सखा एवं भाई है। गुरु की मति द्वारा मैं राम-नाम का यश गाता रहता हूँ। अन्तिम समय यह

मेरा साथी होगा और प्रभु-दरगाह में मुझे छुड़ा लेगा॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तू स्वयं ही दाता एवं अन्तर्यामी है, स्वयं ही कृपा करके मेरे मन में मिलन की तीव्र लालसा लगाई है। अब मेरे मन एवं तन में हरि के लिए तीव्र लालसा लगी है। प्रभु ने मुझे सतगुरु की शरण में डालकर मेरी लालसा पूरी कर दी है॥ २॥ अमूल्य मानव-जन्म पुण्य करने से ही प्राप्त होता है। प्रभु-नाम के बिना यह धिक्कार योग्य है तथा व्यर्थ ही जाता है। प्रभु-नाम के बिना विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ भी दुःख रूप हैं। उसका मुँह फीका ही रहता है और उसके चेहरे पर थूक ही पड़ता है॥ ३॥ जो लोग हरि-प्रभु की शरण लेते हैं, उन्हें हरि अपनी दरगाह में मान-सम्मान प्रदान करता है। हे नानक! अपने सेवक को प्रभु धन्य-धन्य एवं शाबाश कहता है। वह उसे गले लगा लेता है और अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ ४॥

गूजरी महला ४ ॥ गुरमुखि सखी सहेली मेरी मोकउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥ हम होवह लाले गोले गुरसिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ ॥ मेरे प्रान सखा गुर के सिख भाई मोकउ करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्ह वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥ वडभागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥ २ ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥ जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥ ३ ॥ आपि क्रिपालु क्रिपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥ जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरी गुरुमुख सखी-सहेलियो! मुझे हरि नाम का दान दीजिए, जो मेरे प्राणों का जीवन है। मैं उन गुरुसिक्खों का सेवक एवं दास हूँ जो रात-दिन हरि-प्रभु का ही ध्यान करते रहते हैं॥ १॥ भगवान ने मेरे मन एवं तन में गुरु सिक्खों के चरणों के लिए प्रेम पैदा कर दिया है। हे गुरु के सिक्खो! तुम मेरे प्राण, मेरे मित्र एवं मेरे भाई हो। मुझे उपदेश करो चूंकि आपका मिलाया हुआ मैं प्रभु से मिल सकता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जब हरि-प्रभु को अच्छा लगता है तो वह गुरुमुखों से मिला देता है, जिनके मन को गुरु-सतगुरु की वाणी बड़ी मधुर लगती है। गुरु के प्यारे सिक्ख भाग्यवान हैं, जो निर्वाणी प्रभु के द्वारा निर्वाण-पद प्राप्त कर लेते हैं॥ २॥ गुरु की सत्संगति हरि की प्यारी है, जिन्हें हरि-प्रभु का नाम मीठा एवं मधुर लगता है। जिन्हें सतिगुरु की संगति एवं साथ प्राप्त नहीं हुआ, उन भाग्यहीन पापियों को यमदूत निगल जाता है॥ ३॥ यदि कृपालु प्रभु स्वयं कृपा धारण करे तो गुरुमुखों के मिलाने से प्राणी ईश्वर से मिल पाता है। नानक भी गुणों वाली वाणी (गुरुवाणी) ही बोलता है। गुरुवाणी के माध्यम से जीव हरि के नाम में समा जाता है॥ ४॥ ५॥

गूजरी महला ४ ॥ जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मोकउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै ॥ मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥ १ ॥ भाई रे मोकउ कोई आइ मिलै हरि नामु द्रिड़ावै ॥ मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरि नामै हरि सिउ चितु लावै ॥ अंम्रित बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अंम्रितु पावै ॥ २ ॥ निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥ नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मरि जावै ॥ ३ ॥ आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥ तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥ ४ ॥ ६ ॥

मेरी कामना है कि जिसने महापुरुष सतगुरु, हरि-प्रभु को पा लिया है, वह मुझे भी उपदेश देकर हरि से मेरा प्रेम लगा दे। जो भाग्यवान इन्सान हरि के नाम का ध्यान करता है, उसका मन एवं तन शीतल हो जाता है और उसका मुरझाया हुआ सारा शरीर ही प्रसन्न हो जाता है॥ १॥ हे मेरे भाई! मेरी कामना है कि कोई ऐसा संत आकर मुझे मिले, जो मेरे अन्तर्मन में हरि का नाम बसा दे। जो मुझे मेरे प्रभु की हरि कथा सुनाएगा, मैं अपने प्राण, मन एवं तन उस प्रीतम को अर्पित कर दूँगा॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के उपदेश द्वारा मुझे धैर्य, धर्म एवं हरि-प्रभु प्राप्त हुए हैं। हरि-नाम द्वारा मैं अपना चित्त हरि से लगाए रखता हूँ। सतिगुरु की वाणी अमृत वचन हैं, जो मनुष्य वाणी उच्चरित करता है, उसके मुँह में अमृत टपकता है॥ २॥ हरि का नाम बड़ा पावन है, जिसका सिमरन करने से मन को अहंत्व की मैल नहीं लगती। जो व्यक्ति गुरु के उपदेश से प्रभु-नाम का जाप करता है, उसकी वृत्ति प्रभु-चरणों में लगी रहती है। जिस मनुष्य को प्रभु के नाम का पदार्थ प्राप्त नहीं हुआ, वह भाग्यहीन है और बार-बार मरता रहता है॥ ३॥ हे जगजीवन दाता! तू आनंद का स्रोत है। जो हरि का नाम-सुमिरन करते हैं, वह अपने सभी सेवकों को आनंदित कर देता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! तू सब जीवों का दाता है और सब जीव तेरे पैदा किए हुए हैं। तू अपने जीवों को गुरु के माध्यम से क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ ६॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गूजरी महला ४ घरु ३ ॥ माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥ सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥ १ ॥ हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ॥ हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥ विचे ग्रिसत उदास रहाई ॥ २ ॥ जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई ॥ तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥ ३ ॥ जितु कारै कंमि हम हरि लाए ॥ सो हम करह जु आपि कराए ॥ ४ ॥ जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥ ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ७ ॥ १६ ॥

माता, पिता एवं पुत्र इत्यादि सभी हरि ने बनाए हुए हैं। हरि ने स्वयं सभी के परस्पर संबंध कायम किए हैं॥ १॥ हे मेरे भाई! ईश्वर के समक्ष हमारा कोई भी जोर नहीं चल सकता। हमारे यह तन-मन सभी हरि के हैं और यह समूचा शरीर उसके वश में है॥ १॥ रहाउ॥ हरि आप ही भक्तजनों में अपनी श्रद्धा लगाता है और भक्तजन गृहस्थ जीवन में निर्लेप बने रहते हैं॥ २॥ जब हरि के साथ हृदय में प्रेम बन जाता है तो जो कुछ भी जीव करता है वह मेरे हरि-प्रभु को भला लगता है॥ ३॥ जिस कार्य एवं काम में हरि ने हमें लगाया है, हम वही कार्य करते हैं जो वह हमसे करवाता है॥ ४॥ हे नानक! जिनकी भक्ति मेरे प्रभु को लुभाती है, वे पुरुष अपना ध्यान राम नाम के साथ लगाकर रखते हैं॥ ५॥ १॥ ७॥ १६॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ १ ॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥ २ ॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै

बचरे छरिआ ॥ उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥ ३ ॥ सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

(इस शब्द के प्रति साहित्य मे यह तथ्य प्रमाणित है कि श्री गुरु अर्जुन देव जी के गुरुगद्दी पर स्थित होने के पश्चात एक बार लंगर में खर्च की न्यूनता अनुभव की गई, क्योंकि सेवकों व श्रद्धालुओं द्वारा जो भेंट भेजी जाती थी वह पृथी चंद जी सम्भाल लेते थे। उन्हीं दिनों वहाँ भाई गुरदास जी का आगमन हुआ और उन्होंने लंगर में खर्च के अभाव को देख कर स्वयं उद्यम किया और जो संगत वहाँ गुरु के दर्शन हेतु आई उन्हें स्वयं जाकर गुरु अर्जुन देव जी के गुरुगद्दी पर विराजमान होने के बारे मे बताया और उनकी भेंट को लाकर गुरु जी के समक्ष अर्पण किया और संगत को भी गुरु जी के दर्शन करवाए। यह सब देख-सुनकर गुरु साहिब ने इस शब्द के उच्चारण से उपदेश किया कि)

हे मन! तू किसलिए सोचता है, जबकि समस्त सृष्टि के प्रबन्ध का उद्यम तो स्वयं अकालपुरुष कर रहा है। चट्टानों एवं पत्थरों में जिन जीवों को निरंकार ने पैदा किया है, उनका भोजन भी उसने पहले ही तैयार करके रखा है॥१॥ हे निरंकार! जो भी संतों की संगति में जाकर बैठा है वह भव-सागर से पार उतर गया है। उसने गुरु की कृपा से परमपद (मोक्ष) प्राप्त किया है और उसका हृदय मानो यूं हो गया जैसे कोई सूखी लकड़ी हरी हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जीवन में माता, पिता, पुत्र, पत्नी व अन्य सम्बन्धीजन में से कोई भी किसी जगह आश्रय नहीं होता। प्रत्येक जीव को सृष्टि में पैदा करके निरंकार स्वयं भोग पदार्थ पहुँचाता है, फिर हे मन! तू भय किसलिए करता है ॥ २॥ कूंजों का समूह उड़ कर सैकड़ों मील दूर चला आता है और अपने बच्चों को वह पीछे (अपने घोंसले में ही) छोड़ आता है। उनको पीछे कौन खाना खिलाता है, कौन खेल खिलाता है, अर्थात् उनका पोषण उनकी माता के बिना कौन करता है, (उत्तर में कहा) उनकी माता के हृदय में अपने बच्चों का स्मरण होता है, वही उनके पोषण का साधन बन जाता है ॥३॥ (पदम्-शंखादि) समस्त नौ निधियाँ, (महापुराण श्री मद्भागवत में अंकित) अठारह सिद्धियाँ निरंकार ने अपनी हथेली पर रखी हुई है। हे नानक! ऐसे अकाल-पुरुष पर मैं सदा सर्वदा बलिहार जाता हूँ, असीम निरंकार का कोई पारावार व अंत नहीं है ॥ ४॥ १॥

गूजरी महला ५ चउपदे घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी ॥ अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥ कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत बेद सिम्रिति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी ॥ बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥ २ ॥ अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी ॥ अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥ ३ ॥ धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरि दुआरी ॥ दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

दुनिया के लोग जीवन में कर्मकाण्ड एवं षटकर्म करते रहते हैं, लेकिन उनके अन्तर से अहंकार की मैल दूर नहीं होती। गुरु के बिना वे अपने जीवन की बाजी हार जाते हैं॥ १॥ हे मेरे ठाकुर! कृपा करके मुझे बचा लो। करोड़ों में से कोई विरला पुरुष ही प्रभु का सेवक है, शेष सभी सांसारिक व्यापारी ही हैं॥ १॥ रहाउ॥ शास्त्र, वेद, स्मृतियाँ इत्यादि ग्रंथों का विश्लेषण किया है, वे सभी एक ही बात सत्य बताते हैं कि गुरु के बिना किसी को भी मोक्ष नहीं मिल सकता चाहे अपने मन में विचार करके देख लो॥ २॥ यदि कोई मनुष्य चाहे अड़सठ तीर्थों पर स्नान कर ले, चाहे

सारी धरती पर भ्रमण कर ले तथा यदि वह दिन-रात अनेक शारीरिक पवित्रता के साधन कर ले परन्तु सच्चे गुरु के बिना मोह-माया का अन्धकार दूर नहीं होगा॥ ३॥ समूचे जगत में भटकते-भटकते अब हम हरि के द्वार आए हैं। प्रभु ने मेरी दुर्मति मिटाकर बुद्धि को उज्ज्वल कर दिया है। हे नानक! गुरु के माध्यम से भगवान ने मुझे भवसागर से तार दिया है॥ ४॥ १॥ २॥

गूजरी महला ५ ॥ हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ॥ निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साधसंगति महि पाइआ ॥ १ ॥ माई खाटि आइओ घरि पूता ॥ हरि धनु चलते हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि धनु इसनानु हरि धनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना ॥ हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥ २ ॥ हरि धन मेरी चिंत बिसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥ हरि धन ते मै नव निधि पाई हाथि चरिओ हरि थोका ॥ ३ ॥ खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

हरि का नाम धन ही मेरा जाप, मेरी तपस्या तथा मेरा मनपसंद भोजन है, यह नाम-धन मुझे बहुत भाया है। एक क्षण भर के लिए भी मैं परमात्मा को अपने मन से विस्मृत नहीं करता, जिसे मैंने साधुओं की संगति में रहकर पाया है॥ १॥ हे मेरी माता! तेरा पुत्र नाम-धन का लाभ कमा कर घर आया है। अब मैं चलते, बैठते, जागते एवं सोते समय भी हरि-नाम धन ही कमाता रहता हूँ॥१॥रहाउ॥ हरि का नाम धन ही मेरा तीर्थ स्नान एवं ज्ञान है और हरि के साथ ही मैंने अपना ध्यान केन्द्रित किया हुआ है। हरि के नाम का धन मेरी तुलहा एवं नाव है और हरि-प्रभु ही मुझे संसार-सागर से पार करवाने हेतु जहाज है॥ २॥ हरि के नाम-धन द्वारा मेरी चिन्ता मिट गई है तथा हरि के नाम-धन द्वारा मेरा धोखा दूर हो गया है। हरि के नाम-धन से मुझे नवनिधियाँ प्राप्त हुई हैं और हरि-नाम-धन सार वस्तु मेरे हाथ लग गया है॥ ३॥ इस नाम रूपी धन को खाने एवं खर्च करने से भी यह कम नहीं होता तथा आगे लोक-परलोक में भी सदा साथ रहता है। इस खजाने को लाद कर गुरुदेव ने नानक को दिया है और उसका मन हरि के रंग में रंग गया है॥ ४॥ २॥ ३॥

गूजरी महला ५ ॥ जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥ सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥ १ ॥ पूता माता की आसीस ॥ निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥ कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥ २ ॥ अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥ रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥ ३ ॥ भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥

जिसका सिमरन करने से सभी पाप-विकार नाश हो जाते हैं और पूर्वजों-पितरों का भी उद्धार हो जाता है, उस हरि-परमेश्वर का तू सदैव ही जाप कर, जिसका कोई अन्त (ओर-छोर) एवं पारावार नहीं॥ १॥ हे पुत्र! माता की तुझे यही आशीष है कि एक क्षण भर के लिए भी तुझे भगवान विस्मृत न हो तथा तुम सदैव ही जगदीश का भजन करते रहो॥ १॥ रहाउ॥ सतिगुरु जी तुझ पर दयालु रहें तथा संतों की संगति में तेरी प्रीति बनी रहे। परमेश्वर का तेरी मान-प्रतिष्ठा को बचाना तेरा वस्त्र होवे तथा उसका भजन-कीर्तन करना तेरा प्रतिदिन का भोजन हो॥ २॥ सदैव ही प्रभु के नाम का अमृतपान करता रहे। ईश्वर करे तुम चिरंजीव रहो तथा हरि का सिमरन तुझे अनंत आनन्द प्रदान करे। जीवन में सदा हर्षोल्लास बना रहे, सभी आशाएँ पूर्ण हों एवं कोई चिन्ता

कभी तंग न करे॥ ३॥ तुम्हारा यह मन भँवरा होवे तथा हरि के सुन्दर चरण कमल के फूल हों। हे नानक! तू हरि-चरणों से यूं लिपटा रह, जैसे चातक स्वाति-बूँद का पान करके खिल जाता है॥ ४॥ ३॥ ४॥

गूजरी महला ५ ॥ मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥ खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥ १ ॥ सिआनप काहू कामि न आत ॥ जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास ॥ लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥ २ ॥ होइ अनंनि मनहठ की द्रिड़ता आपस कउ जानात ॥ जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥ ३ ॥ सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥

इन्सान पश्चिम की तरफ जाने की सलाह बनाता है परन्तु भगवान उसे पूर्व की तरफ ले जाता है। एक क्षण भर में ही भगवान रचना करने एवं विनाश करने में समर्थ है। सब फैसले परमात्मा के वश में हैं। इन्सान की बुद्धिमत्ता किसी काम में नहीं आती। जो कुछ मेरा ठाकुर अनुरूप समझता है केवल वही बात हो रही है॥ १॥ रहाउ॥ देश पर विजय प्राप्त करने तथा धन जोड़ने की इस इच्छा में ही मनुष्य के प्राण पखेरू हो जाते हैं। वह सेनाएँ, नायब, नौकर इत्यादि सभी को छोड़ देता है और उठकर यमपुरी को चला जाता है॥ २॥ इन्सान अनन्य भाव होने पर मन की जिद के कारण अपने आत्माभिमान को जाहिर करता है जो अनिन्द्य वस्तु है, उसी की निन्दा करके त्याग देता है और विवश होकर बार-बार उसी को खाता है॥ ३॥ जिस पर प्रभु सहज स्वभाव ही कृपालु हो जाता है, उस इन्सान के समस्त पाश कट जाते हैं। हे नानक! चाहे गृहस्थी हो अथवा वैरागी जो इन्सान पूर्ण गुरु से मिलता है, वह परमेश्वर के दरबार में स्वीकृत हो जाता है॥ ४॥ ४॥ ५॥

गूजरी महला ५ ॥ नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे ॥ काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥ १ ॥ हरि जसु साधसंगि मिलि गाइओ ॥ गुर परसादि भइओ मनु निरमलु सरब सुखा सुख पाइअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥ मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥ २ ॥ पूरन पूरि रहिओ सब थाई आन न कतहूं जाता ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ॥ ३ ॥ भए क्रिपाल दइआल गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ ॥ कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

परमात्मा का नाम सुखों का भण्डार है। जिन्होंने भी नाम का जाप किया है, प्रभु ने उनके मोह-माया के बन्धन काट दिए हैं। काम, क्रोध, विषैली माया तथा ममता इत्यादि रोगों से वे मुक्ति प्राप्त कर गए हैं॥ १॥ जिसने भी सुसंगति में मिलकर हरि का यश किया है, गुरु की कृपा से उसका मन निर्मल हो गया है और उसने सर्व सुख पा लिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु जो कुछ भी करता है, वह उसे भला लगता है। ऐसी भक्ति उसने की है। मित्र एवं शत्रु सभी उसके लिए एक समान हैं और यही प्रभु के मिलन हेतु योग युक्ति की निशानी है॥२॥ वह जानता है कि प्रभु सर्वत्र मौजूद है, इसलिए वह कहीं और नहीं जाता। प्रभु प्रत्येक हृदय में समस्त स्थानों में समा रहा है। वह उसकी प्रीति में रमा हुआ उसके प्रेम से ही रंग गया है॥ ३॥ जब परमात्मा कृपालु एवं दयालु हो गया, तो वह निर्भय प्रभु के मन्दिर में आ गया। हे नानक! एक क्षण में ही उसके भीतर से दुःख-कलेश मिट गए और वह सहज ही सत्य में समा गया॥ ४॥ ५॥ ६॥

गूजरी महला ५ ॥ जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥ पारब्रहमु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥ १ ॥ गुर हरि बिनु को न ब्रिथा दुखु काटै ॥ प्रभु तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ ॥ हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बांछत फल पाइआ ॥ २ ॥ लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि त्रिसन न बूझी ॥ सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥ ३ ॥ फिरत फिरत तुम्हरै दुआरि आइआ भै भंजन हरि राइआ ॥ साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्य के पास भी मैं (अपने दुःख की) विनती करता हूँ, वह पहले ही दुःखों से भरा मिलता है। जिस मनुष्य ने अपने हृदय में परब्रह्म की आराधना की है, वही भवसागर से पार हुआ है॥ १॥ गुरु-हरि के बिना दूसरा कोई भी व्यथा एवं दुःख को दूर नहीं कर सकता। यदि मनुष्य प्रभु को छोड़कर किसी दूसरे का सेवक बन जाए तो उसकी मान-प्रतिष्ठा, महत्ता एवं यश कम हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ सांसारिक संबंधी, रिश्तेदार एवं भाई-बन्धु किसी काम नहीं आते। नीच कुल का हरि का दास इन सबसे उत्तम है, उसकी संगति में मनोवांछित फल पाया है॥ २॥ मनुष्य के पास विषय-विकारों के लाखों-करोड़ों ही व्यंजन हों परन्तु उन में से उसकी तृष्णा निवृत्त नहीं होती। नाम-सिमरन करने से मेरे मन में प्रभु-ज्योति का इतना उजाला हो गया है जितना करोड़ों सूर्य का उजाला होता है एवं मुझे अगोचर वस्तु की सूझ हो गई है अर्थात् प्रभु-दर्शन हो गए हैं॥ ३॥ हे भयभंजन परमेश्वर ! मैं भटकता-भटकता तेरे द्वार पर आया हूँ। नानक का कथन है कि मैं साधुओं के चरणों की धूलि की ही कामना करता हूँ और मैंने यही सुख पाया है॥ ४॥ ६॥ ७॥

गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ ॥ चित्र साल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइआ ॥ १ ॥ अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥ गुरि पूरै दीओ हरि नामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ ॥ जब अंती अउसरु आइ बनिओ है उन्ह पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥ २ ॥ करि करि अनरथ बिहाझी संपै सुइना रूपा दामा ॥ भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥ ३ ॥ हैवर गैवर रथ संबाहे गहु करि कीने मेरे ॥ जब ते होई लांमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥ ४ ॥ नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुटंब सहाई ॥ नामु संपति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ८ ॥

सर्वप्रथम जीव ने माता के गर्भ में आकर निवास किया है, तदुपरांत उसे छोड़कर कर वह धरती में आया है। चित्रशाला, सुन्दर बाग एवं मन्दिर वह अन्तकाल कुछ भी साथ नहीं लेकर जाता॥ १॥ दूसरे सभी लोभ एवं लालच झूठे हैं। पूर्ण गुरु ने (मुझे) हरि का नाम प्रदान किया है यही एकमात्र वस्तु है जो (मेरी) आत्मा हेतु सुयोग्य है॥ १॥ रहाउ॥ जीव अपने इष्ट मित्र, संबंधी, पुत्र, भाई एवं पत्नी के साथ प्रेम लगाकर हँसता-खेलता है। परन्तु जब अन्तिम समय आता है तो उनके देखते ही देखते मृत्यु उसे निगल लेती है॥ २॥ जीव अनर्थ कर करके धन-संपत्ति, सोना, चांदी एवं रुपए संचित करता है परन्तु भाड़े के टट्टू को तो केवल उसका भाड़ा (किराया) ही मिलता है, शेष सब कुछ दूसरों के पास चला जाता है॥ ३॥ वह सुन्दर घोड़े, हाथी एवं रथ संग्रह करता है और पूरे ध्यान से इनको अपना बना लेता है। परन्तु जब वह लम्बी यात्रा पर

चलता है अर्थात् देहांत होता है तो उसके साथ कोई भी एक पैर तक नहीं चलता अर्थात् कोई साथ नहीं जाता॥ ४॥ हरि का नाम जीव का सच्चा धन है, नाम ही सुख का राजा है और हरि का नाम ही कुटुंब एवं साथी है। गुरु ने नानक को हरि नाम रूपी संपत्ति प्रदान की है, वह (नाम) न ही नाश होता है और न ही कहीं आता एवं जाता है॥ ५॥ १॥ ८॥

गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दुख बिनसे सुख कीआ निवासा त्रिसना जलनि बुझाई ॥ नामु निधानु सतिगुरू द्रिड़ाइआ बिनसि न आवै जाई ॥ १ ॥ हरि जपि माइआ बंधन तूटे ॥ भए क्रिपाल दइआल प्रभ मेरे साधसंगति मिलि छूटे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥ हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥ २ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥ कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥ ३ ॥ १ ॥ ६ ॥

दुःख नष्ट हो गए हैं, सर्व सुखों का निवास हो गया है तथा तृष्णा की जलन भी बुझ गई है, क्योंकि प्रभु-नाम का खजाना सच्चे गुरु ने दृढ़ कर दिया है, जो न ही नाश होता है और न ही कहीं जाता है॥ १॥ हरि का जाप करने से माया के बन्धन टूट गए हैं। मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु एवं दयालु हो गया है एवं साधुओं की संगति में मिलकर बन्धनों से छूट गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं आठ प्रहर हरि का गुणगान करता रहता हूँ एवं प्रेम-भक्ति द्वारा हरि रस में मस्त रहता हूँ। हर्ष एवं शोक दोनों में निर्लेप रहता हूँ तथा अपने रचयिता को पहचान लिया है॥ २॥ मैं जिस प्रभु का सेवक बना था, उसने ही मेरी रक्षा की है और मेरी सभी युक्तियाँ सम्पन्न हो गई हैं। हे नानक ! उस दयालु प्रभु (की दयालता) का मूल्यांकन नहीं बताया जा सकता॥ ३॥ १॥ ६॥

गूजरी महला ५ दुपदे घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥ १ ॥ ठाकुर ऐसो नामु तुम्हारो ॥ सगल स्रिसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥ नामदेउ त्रिलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चंमिआरो ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥

ईश्वर ने पतितों को भी पवित्र-पावन करके अपना बना लिया है और सारी दुनिया उन्हें प्रणाम करती है। अब कोई भी उनके वर्ण एवं जाति के बारे में नहीं पूछता, लोग उनकी चरण-धूलि के अभिलाषी बने हुए हैं॥ १॥ हे ठाकुर ! तेरे नाम का ऐसा तेज-प्रताप है कि तू समूची सृष्टि का मालिक कहलवाता है तथा अपने भक्तजनों का निराला ही पक्ष करता है॥ १॥ रहाउ॥ सत्संगति में नानक को बुद्धि प्राप्त हो गई है और हरि का भजन-कीर्तन करना उसका जीवन का आधार है। हरि-कीर्तन से ही नामदेव, त्रिलोचन, कबीरदास एवं रविदास चमार भी मुक्ति प्राप्त कर गए हैं॥ २॥ १॥ १०॥

गूजरी महला ५ ॥ है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥ १ ॥ प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥ सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥ २ ॥ २ ॥ ११ ॥

उस परमात्मा को बूझने वाला कोई भी नहीं, उसकी युक्तियों को कौन जान सकता है। शिव, ब्रह्मा तथा मुनिजन भी उसकी गति को समझ नहीं सकते॥ १॥ प्रभु की कथा अगम्य एवं अगाध है, यह सुनने में कुछ और है परन्तु समझने में कुछ और ही तरह की है। यह वर्णन एवं कथन करने से परे है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा स्वयं ही भक्त है और स्वयं ही स्वामी है। वह अपने आप से ही आसक्त रहता है। नानक का प्रभु सारे विश्व में बसा हुआ है और वह उसे सर्वत्र देखता है॥ २॥ २॥ ११॥

गूजरी महला ५ ॥ मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ ॥ जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥ १ ॥ प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥ करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जप तप संजम करम धरम हरि कीरतनु जनि गाइओ ॥ सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु पाइओ ॥ २ ॥ ३ ॥ १२ ॥

प्रभु के सेवक को कोई सलाह-मशविरा एवं चतुराई कुछ भी नहीं आता। जहाँ कहीं भी संकट का अवसर बनता है, वहाँ वह हरि का ध्यान करता है॥ १॥ भक्त-वत्सल होना प्रभु का विरद है। वह अपने सेवकों का बालक की तरह भरण-पोषण करता है और अपने बच्चों की तरह उन्हें लाड लडाता है॥ १॥ रहाउ॥ सेवक ने हरि-कीर्तन गाया है और हरि का कीर्तन ही उसके जप, तप, संयम एवं धर्म-कर्म हैं। हे नानक! सेवक अपने ठाकुर जी की शरण में पड़ा है और उसने उससे अभयदान का सुख पाया है॥ २॥ ३॥ १२॥

गूजरी महला ५ ॥ दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥ संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥ १ ॥ मोहनु प्रान मान रागीला ॥ बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहु जंगीला ॥ मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥ २ ॥ ४ ॥ १३ ॥

हे प्रिय भक्तजनो! दिन-रात भगवान की आराधना करो तथा क्षण भर के लिए भी विलम्ब मत करो। अपने अभिमान एवं हठ को त्याग कर श्रद्धा से संतों की सेवा करो॥ १॥ मोहन प्रभु बड़ा रंगीला है जो मेरे प्राण एवं मान-सम्मान है। वह मेरे हृदय के साथ बसता है और उसकी लीला देखकर मेरा मन मुग्ध हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ जिस का सुमिरन करने से मन में आनंद होता है और मन (की जंग) मैल उत्तर जाती है, ऐसे प्रभु के मिलन की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। हे नानक! उसकी महिमा अनुमान से परे अनंत है॥ २॥ ४॥ १३॥

गूजरी महला ५ ॥ मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही ॥ तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति कछु न रही ॥ १ ॥ बलवंति बिआपि रही सभ मही ॥ अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥ कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥ २ ॥ ५ ॥ १४ ॥

जो स्वयं को मुनि, योगी एवं शास्त्रों के ज्ञाता कहलवाते हैं, माया ने उन सभी को अपने वश में किया हुआ है। माया की इतनी प्रबलता देखकर त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु, महादेव और तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं की आश्चर्य की कोई सीमा न रही॥ १॥ यह बलवान माया सभी के भीतर वास कर रही है। उसका मर्म (भेद) गुरु की कृपा से ही पाया जाता है, दूसरा कोई भी इसे नहीं जानता॥ १॥ रहाउ॥ यह प्रबल माया सदैव से सभी स्थान विजय करती आ रही है तथा वह समूचे जगत

से लिपटी हुई है। हे नानक ! परन्तु वह प्रबल माया साधु के पास से दूर भाग गई है और दासी बनकर उसने साधु के चरण पकड़ लिए हैं॥ २॥ ५॥ १४॥

गूजरी महला ५ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुरु अपना धिआइआ ॥ हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण आनंद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥ २ ॥ ६ ॥ १५ ॥

मैंने अपने दोनों हाथ जोड़कर विनती की और अपने ठाकुर जी का ध्यान किया है। परमेश्वर ने अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की है तथा मेरे समस्त कष्ट मिटा दिए हैं॥ १॥ ठाकुर आप दयालु हुआ है। चारों ओर कल्याण एवं हर्षोल्लास हो गया है। उसने अपने बालकों (जीवों) का उद्धार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ अपने वर (प्रभु-पति) से मिलकर नारी (जीव-स्त्री) मंगल गीत गा रही है और अपने ठाकुर का जय-जयकार कर रही है। हे नानक ! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने सबका उद्धार कर दिया है॥ २॥ ६॥ १५॥

गूजरी महला ५ ॥ मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥ अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चाले भोरा ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥ मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्हरा थोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलि बलि बलि बलि चरण तुम्हारे ईहा ऊहा तुम्हारा जोरा ॥ साधसंगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥ २ ॥ ७ ॥ १६ ॥

इन्सान को अपने माता-पिता, भाई, पुत्र एवं संबंधियों का बल थोड़ा ही मिलता है। मैंने माया के अनेक रंग देखे हैं परन्तु अल्पमात्र कुछ भी इन्सान के साथ नहीं जाता॥ १॥ हे मेरे ठाकुर ! तुम्हारे बिना मेरा कोई भी नहीं है। मैं गुणहीन अनाथ हूँ, मुझ में कोई गुण मौजूद नहीं और मुझे तुम्हारा ही सहारा चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ मैं तेरे चरणों पर बार-बार बलिहारी एवं कुर्बान जाता हूँ। लोक-परलोक में तुम्हारा ही जोर है। हे नानक ! सत्संगति में मैंने प्रभु के दर्शन कर लिए हैं तथा दूसरों का अनुग्रह खत्म हो गया है॥ २॥ ७॥ १६॥

गूजरी महला ५ ॥ आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥ मन कउ इह उपदेसु द्रिड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥ १ ॥ साजन ऐसो संतु सहाई ॥ जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥ मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥ २ ॥ ८ ॥ १७ ॥

संत घर के जाल, भ्रम एवं मोह से मुक्त करा देता है और जीव का प्रभु से प्रेम डाल देता है। वह मन को यह उपदेश दृढ़ करता है कि सहज-सहज प्रभु का गुणगान करते रहो॥ १॥ हे साजन ! संत जी ऐसे सहायक हैं कि जिनके दर्शन मात्र से ही माया के बन्धन कट जाते हैं और मनुष्य प्रभु को कदाचित विस्मृत नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ अनेक प्रकार के कर्म एवं विधियाँ करते हुए अंततः यही निष्कर्ष अच्छा लगा है कि हे नानक ! जो मनुष्य साधु से मिलकर हरि का यशगान करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है॥ २॥ ८॥ १७॥

गूजरी महला ५ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥ राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥ १ ॥ धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥ सोच अंदेसा ता का कहा करीऐ जा महि

एक घरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्हारै परी ॥ अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥ २ ॥ ६ ॥ १८ ॥

भगवान एक क्षण में ही पैदा करने तथा ध्वस्त (नाश) करने में सक्षम है। इसलिए उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। एक क्षण में ही वह राजा को रंक बना देता है और नीच कहलवाने वालों के अन्तर में अपनी ज्योति प्रज्वलित कर देता है॥ १॥ सदैव ही अपने हरि का ध्यान करना चाहिए। जिस जीवन में इन्सान ने एक घडी भर अर्थात् थोडी देर के लिए ही रहना है, उस बारे चिंता एवं फिक्र क्यों किया जाए॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे पूर्ण सतगुरु ! हमें तुम्हारी ही टेक है और मेरे मन ने तेरी शरण ली है। हे नानक ! हम ज्ञानहीन एवं नासमझ बालक हैं, अपना हाथ देकर आप हमारी रक्षा कीजिए॥ २॥ ६॥ १८॥

गूजरी महला ५ ॥ तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥ चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥ १ ॥ ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥ करि किरपा सरब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥ नानक टेक भई करते की होर आस बिडाणी लाही ॥ २ ॥ १० ॥ १९ ॥

हे परमात्मा ! तू सभी जीवों का दाता है, मेरे मन में भी आकर बस जाओ। जिस हृदय में तेरे सुन्दर कमल-चरण बस जाते हैं, वहाँ कोई भ्रम एवं अज्ञानता का अन्धेरा नहीं रहता॥ १॥ हे मेरे ठाकुर ! मैं जहाँ कहीं भी तुझे याद करता हूँ, वहाँ ही तुझे पाता हूँ। हे समस्त जीवों के पालनहार प्रभु ! मुझ पर कृपा करो चूंकि मैं सदैव ही तुम्हारा स्तुतिगान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! मैं श्वास-श्वास से तुम्हारा नाम-स्मरण करता हूँ तथा सदैव तेरे मिलन की अभिलाषा करता हूँ। हे नानक ! मुझे केवल सृष्टिकर्ता प्रभु का ही सहारा है और मैंने अन्य समस्त पराई आशा त्याग दी है॥ २॥ १०॥ १९॥

गूजरी महला ५ ॥ करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥ १ ॥ ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥ चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख सरब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥ २ ॥ ११ ॥ २० ॥

हे परमेश्वर ! कृपा करके मुझे अपने दर्शन दीजिए, मैं दिन-रात तेरा ही यशोगान करता रहूँ। अपने केशों से मैं तेरे सेवकों के चरण साफ करूँ अर्थात् उनकी सेवा करता रहूँ, यही मेरे जीवन का मनोरथ है॥ १॥ हे ठाकुर ! तेरे बिना अन्य दूसरा कोई मेरा नहीं। हे हरि ! मैं अपने चित्त में तुझे ही याद करता हूँ एवं अपनी जिह्वा से तेरी ही आराधना करता हूँ तथा अपने नेत्रों से मैं तुझे ही देखता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे दयालु अकालपुरुष ! तुम सभी के ठाकुर हो और हाथ जोड कर मैं तेरे समक्ष विनती करता हूँ। तेरा दास नानक तेरे नाम का जाप करता रहे और पलक झपकने मात्र के समय में उसका उद्धार हो जाए॥ २॥ ११॥ २०॥

गूजरी महला ५ ॥ ब्रहम लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥ साधसंगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥ १ ॥ अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥ गुहज पावको बहुतु प्रजारै मोकउ सतिगुरि दीओ है बताइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिध साधिक अर जख्य किंनर नर रही कंठि उरझाइ ॥ जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ ॥ २ ॥ १२ ॥ २१ ॥

माया ब्रह्मलोक, रुद्रलोक और इन्द्रलोक को प्रभावित करती हुई (इहलोक में) दौड़ी आई है। परन्तु यह साधु की संगति को स्पर्श तक नहीं कर सकती एवं साधुओं के चरणों को मल-मल कर भलीभांति धोती है॥ १॥ अब मैं गुरु की शरण में आ गया हूँ। सतगुरु ने मुझे यह बता दिया है कि माया की इस गुप्त अग्नि ने अनेकों को बुरी तरह जला दिया है॥ १॥ रहाउ॥ यह प्रचंड माया सिद्ध, साधक, यक्ष, किन्नर तथा मनुष्यों के गले से लिपटकर उलझी हुई है। हे नानक! उस जगत-रचयिता ने मेरा ही पक्ष लिया है, जिस प्रभु की करोड़ों ही ऐसी दासियाँ हैं॥ २॥ १२॥ २१॥

गूजरी महला ५ ॥ अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईऐ ॥ जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ जा ते घाल न बिरथी जाईऐ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईऐ ॥ चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईऐ ॥ २ ॥ १३ ॥ २२ ॥

भगवान का सिमरन करने से अपयश मिट जाता है, जगत में कीर्ति हो जाती है तथा सत्य के दरबार में मान-सम्मान प्राप्त हो जाता है। मृत्यु का भय क्षण में नाश हो जाता है और मनुष्य सुख एवं आनंद से सच्चे घर को जाता है॥ १॥ इसलिए उसकी नाम-सिमरन की सेवा व्यर्थ नहीं जाती। आठों प्रहर अपने प्रभु का सुमिरन करो और अपने मन एवं तन से सदैव उसका ध्यान करो॥ १॥ रहाउ॥ हे दीनों के दुःख भंजक! मैं तेरी शरण में आया हूँ और मैं केवल वही प्राप्त करता हूँ जो तू मुझे देता है। तेरे चरण-कमल की प्रीति से नानक अनुरक्त हो गया है। हे हरि! तू ही अपने सेवकों की लाज रखता है॥ २॥ १३॥ २२॥

गूजरी महला ५ ॥ बिस्वंभर जीअन को दाता भगति भरे भंडार ॥ जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करै उधार ॥ १ ॥ मन मेरे चरन कमल संगि राचु ॥ सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नानक सरणि तुम्हारी करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥ होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥ २ ॥ १४ ॥ २३ ॥

ईश्वर सब जीवों का दाता है और उसकी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं। उसकी सेवा-भक्ति कभी निष्फल नहीं होती और एक क्षण में ही वह जीव का उद्धार कर देता है॥ १॥ हे मन! तू प्रभु के चरण-कमल के संग लीन रह। समस्त जीव उसकी ही आराधना करते हैं, तू उससे ही याचना कर॥ १॥ रहाउ॥ हे सृष्टिकर्त्ता! नानक तुम्हारी शरण में आया है। हे प्रभु! इसलिए तू मेरे प्राणों का आधार है। संसार उसका क्या बिगाड़ सकता है, जिसकी तू सहायक बन कर स्वयं रक्षा करता है॥ २॥ १४॥ २३॥

गूजरी महला ५ ॥ जन की पैज सवारी आप ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखधु उतरि गइओ सभु ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ मिटी बिआधि सरब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥ २ ॥ १५ ॥ २४ ॥

(वर्णनीय है कि यह पद श्री गुरु अर्जुन देव जी ने अपने सुपुत्र श्री हरिगोबिन्द साहिब के रोग से ठीक होने पर गान किया था।)

प्रभु ने स्वयं अपने सेवक की लाज रखी है। गुरु ने हरि-नाम की औषधि प्रदान की है और सारा ताप दूर हो गया है॥ १॥ परमेश्वर ने अपनी कृपा धारण करके हरिगोबिन्द (छठी

पातशाही) की रक्षा की है। उसकी सारी व्याधि मिट गई है और सर्व सुख हो गया। हम सदैव हरि के गुणों का चिंतन करते रहते हैं॥ १॥ यह पूर्णगुरु की बडाई है कि मेरे सृजनहार प्रभु ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की है। गुरु नानक देव ने धर्म की अटल नींव रखी है, जो नित्य ही प्रगति कर रहा है॥ २॥ १५॥ २४॥

गूजरी महला ५ ॥ कबहू हरि सिउ चीतु न लाइओ ॥ धंधा करत बिहानी अउधहि गुण निधि नामु न गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥ बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥ १ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥ गोबिंद दइआल क्रिपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ॥ २ ॥ १६ ॥ २५ ॥

हे मानव! तूने कभी भी भगवान के साथ अपना चित्त नहीं लगाया। दुनिया के कामकाज करते हुए धन की खातिर तेरा समूचा जीवन बीत गया है और कभी गुणों के भण्डार नाम का स्तुतिगान नहीं किया॥ १॥ रहाउ॥ तू जीवन में कपटता से कौड़ी-कौड़ी करके धन संचित करता है तथा धन के लिए अनेक युक्तियों का प्रयोग करता है। प्रभु का नाम विस्मृत करने से तुझे अनेकों ही दुःख पीड़ित करते हैं जो गिने नहीं जा सकते और प्रबल महामोहिनी ने तुझे निगल लिया है॥ १॥ हे स्वामी! अनुग्रह करो और मेरे कर्मों को मत गिन। हे गोविन्द! तू बड़ा दयालु, कृपालु एवं सुखों का सागर है। नानक की यही प्रार्थना है कि हे हरि! मैं तेरी शरण में आया हूँ॥ २॥ १६॥ २५॥

गूजरी महला ५ ॥ रसना राम राम रवंत ॥ छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु एकु अधारु भगता ईत आगै टेक ॥ करि क्रिपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥ १ ॥ करण कारण संम्रथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥ मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥ २ ॥ १७ ॥ २६ ॥

हे भाई! अपनी रसना से राम-राम ही जपो। तू अन्य मिथ्या व्यवसाय छोड़कर सदा ही भगवान का भजन कर॥ १॥ रहाउ॥ एक ईश्वर का नाम उसके भक्तों के जीवन का आधार है और इहलोक एवं परलोक में यही उनका सहारा है। गोविन्द ने कृपा करके गुरु-ज्ञान एवं विवेक-बुद्धि प्रदान की है॥ १॥ सब कुछ करने कराने में समर्थ श्रीधर प्रभु की ही मैंने शरण ली है। मुक्ति एवं युक्ति साधुओं की चरण-धूलि में है और नानक को हरि की यह निधि प्राप्त हुई है॥ २॥ १७॥ २६॥

गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे   १ओ सतिगुर प्रसादि ॥

छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥ पारब्रहम परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥ १ ॥ रे चित चरण कमल अराधि ॥ सरब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥ ईत ऊत जीअ नालि संगी सरब रविआ सोइ ॥ २ ॥ कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ॥ ३ ॥ अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ॥ ४ ॥ १ ॥ २७ ॥

अपनी समस्त चतुराइयाँ छोड़ कर साधुओं की शरण में आओ और ब्रह्म परमेश्वर प्रभु का

गुणगान करो॥ १॥ हे मेरे मन! भगवान के चरण-कमल की आराधना कर। आराधना करने से तुझे सर्व सुख एवं कल्याण की प्राप्ति होगी और तमाम दुःख-क्लेश मिट जाएँगे॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा के बिना यह माता-पिता, पुत्र, मित्र एवं भाई-कोई भी तेरा सहायक नहीं है। जो ईश्वर सर्वव्यापक है, वही इहलोक एवं परलोक में आत्मा का साथी है॥ २॥ करोड़ों ही यत्न एवं उपाय निष्फल हैं और किसी काम नहीं आते। लेकिन साधुओं की शरण में आने से प्राणी निर्मल हो जाता है और प्रभु के नाम द्वारा उसकी गति हो जाती है॥ ३॥ प्रभु अगम्य, दयालु एवं सर्वोपरि है, वह साधुओं को शरण देने में समर्थ है। हे नानक! केवल उसे ही ईश्वर की प्राप्ति होती है, जिसके लिए जन्म से पूर्व ही उसका संयोग लिखा होता है॥ ४॥ १॥ २७॥

गूजरी महला ५ ॥ आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥ सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ॥ १ ॥ मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ सूख सहज अनंद पावहि मिली निरमल थाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥ कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥ २ ॥ अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ता की आउ ॥ चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि ॥ सरब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥

अपने गुरुदेव की सदा ही सेवा करो तथा गोविन्द का गुणानुवाद करते रहो। श्वास-श्वास से भगवान की आराधना करने से मन की चिंता दूर हो जाती है॥ १॥ हे मेरे मन! प्रभु के नाम का जाप कर; इससे तुझे सहज सुख एवं आनंद की उपलब्धि होगी और निर्मल स्थान मिल जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ साधु की संगति में रहकर अपने इस मन का उद्धार कर और आठ प्रहर परमेश्वर की आराधना कर। तेरा काम, क्रोध एवं अहंकार नष्ट हो जाएँगे और तमाम रोग मिट जाएँगे॥ २॥ हे मन! तुम उस स्वामी की शरण में आओ, जो अटल, अछेद एवं अभेद है। उसके चरण-कमल की अपने हृदय में आराधना करो और एक ईश्वर से ही ध्यान लगाओ॥ ३॥ परब्रह्म-प्रभु ने दया करके स्वयं ही मुझे क्षमा कर दिया है। हे नानक! परमात्मा ने सर्व सुखों का भण्डार अपना हरि-नाम मुझे दिया है और तू भी उस प्रभु का जाप कर॥ ४॥ २॥ २८॥

गूजरी महला ५ ॥ गुर प्रसादी प्रभु धिआइआ गई संका तूटि ॥ दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ॥ १ ॥ हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥ मिलि साध बचन गोबिंद धिआए महा निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥ करि अनुग्रहु आपि राखे भए पूरन काम ॥ २ ॥ सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रहम प्रभ समरथ ॥ गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ॥ ३ ॥ दीन दरद निवारि तारण दइआल किरपा करण ॥ अटल पदवी नाम सिमरण द्रिड़ु नानक हरि हरि सरण ॥ ४ ॥ ३ ॥ २९ ॥

गुरु की कृपा से प्रभु का ध्यान करने से मेरी शंका मिट गई है। मेरे दुःख, अज्ञानता का अंधेरा एवं भय विनष्ट हो गए हैं और मेरे पाप भी नाश हो गए हैं॥ १॥ मेरे मन में हरि-नाम की प्रीति लगी हुई है। साधुओं को मिलकर उनके उपदेश से मैं गोविंद का ध्यान करता रहता हूँ, यही मेरी जीवन की निर्मल रीति हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ नाम-सिमरन से जन्म सफल हो जाता है और यह कर्म ही अनेक प्रकार के जप एवं तपस्या है। प्रभु ने स्वयं ही अनुग्रह करके मेरी रक्षा की है और मेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं॥ २॥ मैं श्वास-श्वास से समर्थ ब्रह्म का सिमरन करता

रहूँ और उसे कभी भी विस्मृत न करूँ। उस प्रभु के अनंत गुण हैं और रसना किस प्रकार उनका वर्णन कर सकती है? उसके गुण बेशुमार एवं सदा अकथनीय हैं॥ ३॥ हे प्रभु! तू गरीबों के दर्द दूर करने वाला, मुक्तिदाता, दयालु, एवं कृपा करने वाला है। नाम-सिमरन करने से अटल पदवी प्राप्त हो जाती है। हे नानक! हरि-परमेश्वर की शरण दृढ़ करो॥ ४॥ ३॥ २६॥

गूजरी महला ५ ॥ अहंबुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु ॥ हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण जोगु ॥ १ ॥ मनि तनि बाछीऐ जन धूरि ॥ कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल ॥ गुर गिआन कीरतन गोबिंद रमणं काटीऐ जम जाल ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण ॥ प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥ ३ ॥ मित्र पुत्र कलत्र सुर रिद तीनि ताप जलंत ॥ जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥ ४ ॥ सरब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥ हरि चरण सरण अपार प्रभ के द्रिड़ु गही नानक ओट ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३० ॥

अहंबुद्धि एवं माया से सघन प्रेम महा दीर्घ रोग है। इस रोग की औषधि हरि-नाम है। करने एवं करवाने में समर्थ हरि-नाम गुरु ने मुझे दिया है॥ १॥ अपने मन-तन से हमें संतों की चरण-धूलि की अभिलाषा करनी चाहिए, उससे करोड़ों जन्मों के पाप मिट जाते हैं। हे गोविन्द! मेरी मनोकामना पूर्ण कीजिए॥ १॥ रहाउ॥ आशा रूपी विकराल कुतिया जीवन के आदि, मध्य एवं अन्तिम समय तक अर्थात् बचपन, जवानी एवं बुढ़ापे तक इन्सान के साथ लगी रहती है। गुरु के ज्ञान द्वारा प्रभु का कीर्ति-गान करने से मृत्यु का जाल कट जाता है॥ २॥ जिस प्राणी को काम, क्रोध, लोभ एवं मोह ने छल लिया है, वह सदा जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। प्रभु की प्रेम-भक्ति एवं उसके सुमिरन से मनुष्य का योनियों का चक्र मिट जाता है॥ ३॥ मानव के मित्र, पुत्र, पत्नी एवं शुभचिंतक तीन तापों (आधि, व्याधि एवं उपाधि) में जल रहे हैं। जो व्यक्ति हरि के भक्तजनों एवं संतजनों से मिल जाते हैं, वे राम नाम जपकर अपने दुःख दूर कर लेते हैं॥ ४॥ लोग सब विधियों द्वारा हर तरफ भटकते रहते हैं और दुखी होकर विलाप करते हैं लेकिन कहीं भी उनका छुटकारा नहीं होता। हे नानक! मैंने हरि-चरणों की शरण ली है और अपार प्रभु की ओट भलीभांति पकड़ ली है॥ ५॥ ४॥ ३०॥

गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आराधि स्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ गुण रमण स्रवण अपार महिमा फिरि न होत बिओगु ॥ १ ॥ मन चरणारबिंद उपास ॥ कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु न उपाउ ॥ करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

भगवान की आराधना करो, उसके दर्शन जीवन को सफल कर देते हैं, वह करने-कराने में सम्पूर्ण समर्थ है। उसका गुणानुवाद करने एवं अपार महिमा श्रवण करने से फिर कभी वियोग नहीं होता॥ १॥ हे मन! ईश्वर के चरणारबिंद की उपासना करो। उसके सिमरन से तमाम दुःख-क्लेश मिट जाते हैं और यमदूत के बन्धन कट जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हरि-नाम का जाप ही शत्रु के दहन हेतु एक साधन है तथा दूसरा कोई उपाय नहीं। नानक की प्रार्थना है कि हे मेरे प्रभु! मुझ पर अनुग्रह करो चूंकि तेरे नाम का स्वाद प्राप्त हो सके॥ २॥ १॥ ३१॥

गूजरी महला ५ ॥ तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइ ॥ जाहि कलेस मिटे भै भरमा निरमल गुण प्रभ गाइ ॥ १ ॥ गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥ कवल प्रगास भए साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ॥ २ ॥ आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥ ३ ॥ चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥ सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३२ ॥

हे दाता! तू सर्व कला समर्थ है, अपने भक्तों को शरण देने वाला है एवं दुःखों का नाश करने वाला सुखों का राजा है। प्रभु का निर्मल गुणानुवाद करने से दुःख क्लेश दूर हो जाते हैं और भय-भ्रम मिट जाते हैं॥ १॥ हे गोविन्द! तेरे अलावा मेरा दूसरा कोई सहारा नहीं। हे परब्रह्म स्वामी! मुझ पर ऐसी कृपा करो ताकि तुम्हारे नाम का जाप करता रहूँ॥ रहाउ॥ सतिगुरु की सेवा से मैं हरि के चरणों में लग गया हूँ और अहोभाग्य से प्रभु से लगन लग गई है। साधु की संगति करने से हृदय कमल खिल गया है और खोटी बुद्धि त्याग दी है॥ २॥ जो प्राणी आठों प्रहर हरि का गुणगान करता है और दीनदयालु का सिमरन करता है तो वह स्वयं भी मोक्ष प्राप्त कर लेता है और संगति में आने वालों का भी उद्धार कर देता है तथा उनके समस्त बँधन कट जाते हैं॥ ३॥ हे प्रभु स्वामी! तेरे चरणों का ही मुझे आधार है। तू ताने-बाने की भाँति लोक-परलोक में सहायक है। हे प्रभु! नानक ने तेरी शरण ली है, अपना हाथ देकर हरि ने उसे बचा लिया है॥ ४॥ २॥ ३२॥

गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १ ੧ਓं सतिगुर प्रसादि ॥

एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ त्रिहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥ १ ॥ चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ रामु रिदै जपमाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥ सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रहम लिव जागे ॥ २ ॥ पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ सरब जोति निरंजन संभू छोडहु बहुतु जंजाला ॥ ३ ॥ सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥ मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥ ४ ॥ सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ तिसु कारणि कंमु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥ ५ ॥ कामु क्रोधु अहंकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥ मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥ ६ ॥ गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ ब्रहम कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥ ७ ॥ महा गंभीर पत्र पाताला नानक सरब जुआइआ ॥ उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अंम्रितु पीआइआ ॥ ८ ॥ १ ॥

शरीर रूपी एक नगरी में काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पाँच चोर निवास करते हैं। वर्जित करने पर भी वे शुभ गुणों को चोरी करने के लिए दौड़ते रहते हैं। हे नानक! जो प्राणी तीन गुणों एवं दस इन्द्रियों से अपने आत्मिक गुणों का सामान बचाकर रखता है, वह मोक्ष पा लेता है॥ १॥ हे भाई! वासुदेव को हमेशा याद करो। राम को हृदय में बसाना ही जपमाला है॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! जो जीव परब्रह्म की वृत्ति में सावधान रहता है, वह सहज ही परब्रह्म रूपी पेड़ के पास पहुँच जाता है, जिसकी जड़ें ऊपर को हैं तथा शाखाएँ नीचे लटकती हैं और उसके पत्ते चार वेद जुड़े हुए हैं॥ २॥ भगवान रूपी पारिजात वृक्ष मेरे घर के आंगन में है तथा ज्ञान रूपी इसके पुष्प, पत्ते

एवं टहनियाँ हैं। हे भाई ! उस स्वयंभू निरंजन परमात्मा की ज्योति सब में समाई हुई है, अतः दुनिया के जंजाल छोड़ दो॥ ३॥ हे शिक्षा के अभिलाषी ! सुनो, नानक विनती करता है कि यह सांसारिक माया-जाल त्याग दो। अपने मन में विचार कर ले कि एक ईश्वर से ध्यान लगाने से बार-बार के जन्म-मरण के चक्र में नहीं आना पड़ेगा॥ ४॥ वही गुरु कहलवाता है, वही शिष्य कहलवाता है और वही वैद्य है जो रोगी के रोग को जानकर उसका उपचार कर सके। वह सांसारिक काम-धन्धे में लिप्त नहीं होता और गृहस्थी में ही कर्म करता हुआ प्रभु से जुड़ा रहता है॥ ५॥ वह काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह एवं माया को त्याग देता है। अपने मन में वह सत्यस्वरूप एवं अविगत प्रभु का ध्यान करता है और गुरु की कृपा से उसे प्राप्त कर लेता है॥ ६॥ ज्ञान-ध्यान समस्त देन ईश्वर द्वारा उसे मिली कही जाती है। सभी कामादिक विकार उसके समक्ष सतोगुणी हो जाते हैं। वह ब्रह्म रूपी कमल के शहद का पान करता है और सदैव जाग्रत रहता है तथा माया की निद्रा का शिकार नहीं होता॥ ७॥ ब्रह्म रूपी कमल महा गंभीर है तथा इसके पत्ते पाताल हैं। हे नानक ! वह सारी सृष्टि से जुड़ा हुआ है। गुरु के उपदेश के फलस्वरूप मैं पुनः गर्भ में प्रवेश नहीं करूँगा, क्योंकि मैंने सांसारिक विष को त्याग कर नामामृत का पान किया है॥ ८॥ १॥

गूजरी महला १ ॥ कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार ॥ जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥ १ ॥ ऐ जी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥ हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भंडार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुंन समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ॥ जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥ २ ॥ ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चंद न जोति अपार ॥ सरब द्रिसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु त्रिभवण सार ॥ ३ ॥ पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रहमा बिसनु महेस अकार ॥ सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥ ४ ॥ कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक देदे तोटि नाही भंडार ॥ ऊंधै भांडै कछु न समावै सीधै अंम्रितु परै निहार ॥ ५ ॥ सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥ जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥ ६ ॥ बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥ ता कउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥ ७ ॥ अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥ नानक चात्रिकु अंम्रित जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥ ८ ॥ २ ॥

उस दाता प्रभु के समक्ष कौन-कौन माँगते हैं ? उनका कोई अंत नहीं एवं उनकी गिनती नहीं की जा सकती। जैसी लालसा किसी के हृदय में होती है, हे सत्यस्वरूप प्रभु ! तू वैसे ही देने में समर्थ है॥ १॥ हे प्रभु जी ! तेरे सत्यनाम का आधार ही मेरा जप, तपस्या एवं संयम है। मुझे अपना हरि-हरि नाम प्रदान करो चूंकि मैं सुख प्राप्त कर लूँ। तेरी भक्ति के भण्डार भरे हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ तू शून्य समाधि लगाकर अपनी वृत्ति में लीन रहता था। जब करतार ने खुद ही अपने स्वरूप की रचना की थी तो तब न जल था, न थल था, न धरती थी और न ही गगन था॥ २॥ तब न माया की मस्ती, न ही अज्ञानता की छाया, न सूर्य और न ही चन्द्रमा था और तब परमात्मा की अपार ज्योति ही थी। सबको देखने वाली आँखें परमात्मा के हृदय में ही हैं। वह अपनी एक कृपा-दृष्टि से ही पाताल, पृथ्वी एवं आकाश-तीनों लोकों की संभाल करता है॥ ३॥ उस ईश्वर ने ही पवन, पानी, अग्नि की रचना की है और ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश उसी की रचना हैं। हे प्रभु ! तू दाता है शेष सभी याचक हैं तथा अपनी रजा अनुसार यथायोग्य दान देता है॥ ४॥ तेतीस

करोड़ देवता भी उस नायक प्रभु से याचना करते हैं, जिसके भण्डार में दान की कोई कमी नहीं आती। उल्टे रखे बर्तन में कुछ भी डाला नहीं जा सकता और सीधे बर्तन में अमृत भरा दिखाई देता है॥ ५॥ सिद्ध लोग अपनी समाधि में लीन होकर प्रभु से ऋद्धियों-सिद्धियों का दान माँगते हैं और उसकी जय-जयकार करते हैं। हे प्रभु! मनुष्य के हृदय में जैसी प्यास होती है, वैसे ही प्रकार का जल तुम उसे देते हो॥ ६॥ अहोभाग्य से ही अपने गुरु की सेवा होती है तथा गुरुदेव एवं प्रभु के बीच कोई भेद नहीं। जो प्राणी अपने अन्तर्मन में शब्द पर विचार करते हैं, उन्हें यमदूत की कुदृष्टि भी नाश नहीं कर सकती॥ ७॥ हे हरि! मुझे अपने निरंजन नाम का प्रेम प्रदान करो, अब मैं तुझ से अन्य कुछ भी नहीं माँगता। नानक रूपी चातक तेरे अमृत जल की अभिलाषा करता है, कृपा करके उसे अपने हरि-यश का दान दीजिए॥ ८॥ २॥

गूजरी महला १ ॥ ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥ १ ॥ भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐ जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥ २ ॥ ऐ जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥ अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥ ४ ॥ ऐ जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥ ५ ॥ ऐ जी भागि परे गुर सरणि तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई ॥ अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥ ६ ॥ ऐ जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥ करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥ ७ ॥ ऐ जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥ नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे प्रिय! जीव जन्मता-मरता और बार-बार जगत में आता-जाता रहता है। किन्तु गुरु के बिना किसी की गति नहीं होती। गुरुमुख व्यक्ति प्रभु-नाम में रंगे रहते हैं और नाम के माध्यम से ही वह गति एवं मान-सम्मान प्राप्त करते हैं॥ १॥ हे भाई! अपना चित्त राम-नाम के साथ लगाओ। नाम की ऐसी महिमा है कि मनुष्य गुरु की कृपा से केवल हरि-प्रभु को ही माँगता है॥ १॥ रहाउ॥ हे महोदय! कितने ही लोग अपना पेट भरने के लिए भिक्षा माँगने के लिए अनेक वेष धारण करते हैं। हे प्राणी! हरि की भक्ति के बिना कहीं सुख नहीं और गुरु के बिना अभिमान दूर नहीं होता॥ २॥ हे जिज्ञासु! काल सदा प्राणी के सिर पर खड़ा है और वह जन्म-जन्मांतरों से उसका वैरी है। सच्चे गुरु ने मुझे यह ज्ञान प्रदान किया है जो प्राणी सत्यनाम में लीन होते हैं, वे बच जाते हैं॥ ३॥ गुरु की शरण में आने से यमदूत प्राणी को दुःखी नहीं कर सकता, अपितु उसकी ओर दृष्टि भी नहीं कर सकता। मैं अविगत एवं निरंजन नाथ में लीन हो गया हूँ और निर्भय प्रभु के साथ मैंने वृत्ति लगा ली है॥ ४॥ हे जीव! प्रभु-नाम को अपने भीतर दृढ़ करो, नाम के साथ ही वृत्ति लगाओ और सच्चे गुरु की शरण में आओ। जो कुछ परमात्मा को भला लगता है, वह वही करता है। उसके किए हुए को कोई भी मिटा नहीं सकता॥ ५॥ हे मेरे गुरुदेव! मैं दौड़कर तेरी शरण में आ गया हूँ, क्योंकि किसी अन्य की शरण मुझे अच्छी नहीं लगती। मैं सदैव उस एक ईश्वर को ही पुकारता हूँ, जो युग-युग से मेरा सहायक है॥ ६॥ हे प्रभु जी! तुम अपने नाम की लाज रखना, तेरे साथ ही मेरी प्रीति बनी हुई है। हे गुरुदेव! कृपा करके मुझे अपने दर्शन दीजिए

क्योंकि नाम द्वारा मैंने अपना अहंकार जला दिया है॥ ७॥ हे प्रभु जी! मैं क्या माँगू? क्योंकि इस सृष्टि में सबकुछ नश्वर है। जो कोई भी इस दुनिया में आया है, वह चला जाता है। हे स्वामी! नानक को नाम-पदार्थ प्रदान कीजिए, अपने हृदय एवं गले से इसे श्रृंगार बना कर स्मरण करूँगा॥ ८॥ ३॥

गूजरी महला १ ॥ ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥ १ ॥ भाई रे गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ बिनु हरि नाम ब्रिथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥ २ ॥ ऐ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई ॥ रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥ ३ ॥ ऐ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥ ४ ॥ ऐ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ऐ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥ ६ ॥ हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥ ७ ॥ तूं वड पुरखु अगंम तरोवरु हम पंखी तुझ माही ॥ नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥ ८ ॥ ४ ॥

हे प्रिय! न हम उत्तम हैं, न ही नीच एवं न ही मध्यम श्रेणी के हैं। हम तो हरि की शरणागत, हरि के सेवक हैं। हम तो केवल हरि-नाम में लीन होने के कारण वैरागी हैं और हमने शोक, वियोग एवं रोग को विसर्जित कर दिया है॥ १॥ हे भाई! गुरु की कृपा से ही ठाकुर जी की भक्ति होती है। सतगुरु की वाणी द्वारा मैंने निर्मल हरि को अपने हृदय में बसा लिया है, अब मुझे न ही यम की अधीनता रही है और न ही यमराज का लेखा-जोखा देना है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपनी जिह्वा से हरि का गुणगान करता रहता हूँ और प्रभु भी मेरे साथ रहता है। हरि सहज ही वही कुछ करता है जो कुछ उसे उपयुक्त लगता है। हरि-नाम के बिना इस जगत में मनुष्य का जीवन व्यर्थ है और हरि-भजन के बिना एक क्षण भी व्यतीत करना निष्फल है॥ २॥ हे मान्यवर! खोटे लोगों के लिए घर एवं बाहर कोई स्थान नहीं और निन्दक की तो कहीं गति नहीं होती। चाहे वह रोष प्रगट करता है परन्तु प्रभु अपनी अनुकंपा बन्द नहीं करता, जो नित्य ही बढ़ती जाती है॥ ३॥ हे मान्यवर! गुरु की दात को कोई भी मिटा नहीं सकता क्योंकि मेरे ठाकुर ने ही यह देन स्वयं दिलवाई होती है। जिन्हें गुरु की देन अच्छी नहीं लगती, उन निन्दकों का मुख कलंकित ही रहता है॥ ४॥ हे जिज्ञासु! जो प्रभु की शरण में आते हैं, वह उनको क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है और आधी राई भर भी वह विलम्ब नहीं करता। वह नाथों का नाथ प्रभु आनंद का स्रोत है, जो सच्चे गुरु के संपर्क में आने से मिल जाता है॥ ५॥ हे जिज्ञासु! प्रभु सदा दयालु है और सर्वदा ही अपने भक्तों पर दया करता रहता है। गुरु उपदेश द्वारा सभी भ्रम मिट जाते हैं। पारस रूपी गुरु के स्पर्श से साधारण (धातु) मनुष्य सोने की भाँति बन जाता है। ऐसी सत्संगति की बड़ाई है॥ ६॥ हरि का नाम निर्मल जल है और सतगुरु को निर्मल मन को इसमें स्नान करवाना ही भाया है। हरि के दास की संगति करने से मनुष्य दोबारा जन्म नहीं लेता और उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥ ७॥ हे सर्वेश्वर! तू अगम्य वृक्ष है और हम पक्षी तेरे संरक्षण में हैं। हे प्रभु! नानक को अपना निरंजन नाम प्रदान कीजिए चूंकि वह सभी युगों में शब्द द्वारा तेरा स्तुतिगान करता रहे॥ ८॥ ४॥

गूजरी महला १ घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥ बिललाप बिलल बिनंतीआ सुख भाइ चित हितं ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरि सरणी ॥ संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥ मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥ २ ॥ चल चित वित भ्रमा भ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥ थिरु नामु भगति दिड़ं मती गुर वाकि सबद रतं ॥ ३ ॥ भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥ असथानु हरि निहकेवलं सति मती नाम तपं ॥ ४ ॥ इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥ भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥ ५ ॥ गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥ सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥ ६ ॥ भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥ हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥ ७ ॥ लब लोभ लहरि निवारणं हरि नाम रासि मनं ॥ मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥ ८ ॥ १ ॥ ५ ॥

जो व्यक्ति प्रेम-भक्ति द्वारा सच्चे परमात्मा की आराधना करते हैं, उन्हें नाम-सिमरन की ही प्यास लगी रहती है और वे बड़े प्रेम से नाम जपते रहते हैं। वह विलाप भरी प्रभु के समक्ष विनती करते हैं और अपने चित्त के लिए सुख एवं प्रेम की कामना करते रहते है॥ १॥ हे मन ! भगवान का नाम जपो तथा उसकी शरण लो। राम का नाम संसार सागर से पार होने के लिए एक जहाज है, इसलिए ऐसा जीवन-आचरण धारण करो॥ १॥ रहाउ॥ हे मन ! यदि हम गुरु के शब्द द्वारा प्रभु का भजन करें तो मृत्यु भी शुभचिंतक बन जाती है। मन से प्रभु नाम का सिमरन करने से मनुष्य के हृदय को ज्ञान एवं कल्याण का खजाना प्राप्त हो जाता है॥ २॥ चंचल मन धन-दौलत के पीछे भटकता एवं दौड़ता रहता है और जगत के मोह एवं प्रेम में मग्न है। गुरु की वाणी एवं उपदेश में लीन होकर प्रभु का नाम एवं उसकी भक्ति मनुष्य के मन में दृढ़ता से स्थापित हो जाते हैं॥ ३॥ तीर्थो पर रटन करने से भ्रम दूर नहीं होता और संसार जन्म-मरण के रोग से नष्ट हो रहा है। हरि-स्थान ही इस रोग से मुक्त है, हरि-नाम का तप ही सच्ची मति है॥ ४॥ यह जगत माया-मोह के पाश में फँसा हुआ है और जन्म-मरण का भारी दुःख सहता है। इसलिए प्रभु-भजन करो तथा सच्चे गुरु की शरण में आओ, हरि का नाम हृदय में बसने से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है॥ ५॥ गुरु-मतानुसार प्रभु का चिन्तन करने से मनुष्य का मन निश्चल हो जाता है। जिस अन्तर्मन में सत्य एवं ज्ञान-रत्न विद्यमान है, वह मन निर्मल है॥ ६॥ हे मन ! प्रभु के भय तथा भक्ति भाव से इस भवसागर को पार कर लो तथा हरि के सुन्दर चरणों में अपना चित्त लगाओ। हे हरि ! मेरा यह शरीर तेरी शरण में है और तेरा पवित्र पावन नाम मेरे हृदय में बसता है॥ ७॥ हरि-नाम की पूँजी मन में आने से लोभ-लालच की लहरें नाश हो जाती हैं। गुरु नानक का कथन है कि हे निरंजन प्रभु ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, तू ही मेरे मन को वशीभूत कर दे॥ ८॥ १॥ ५॥

गूजरी महला ३ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

निरति करी इहु मनु नचाई ॥ गुर परसादी आपु गवाई ॥ चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥ १ ॥ नाचु रे मन गुर कै आगै ॥ गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए ॥ आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाए ॥ २ ॥ अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई ॥

सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥ ३ ॥ सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन गिआन बीचारी ॥ सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥ ४ ॥ खंड ब्रहमंड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी ॥ जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥ ५ ॥ जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए ॥ से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥ ६ ॥ एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥ जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥ ७ ॥ माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥ गुर परसादी सोई जनु पाए जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ ८ ॥ इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ ॥ साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइ ॥ ९ ॥ सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ॥ कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥ १० ॥ १ ॥ ६ ॥

मैं नृत्य करता हूँ परन्तु अपने इस मन को नचाता हूँ। गुरु की कृपा से मैंने अपना अहंकार मिटा दिया है। जो अपने मन को हरि-चरणों में स्थिर रखता है, उसकी मुक्ति हो जाती है तथा जैसी इच्छा करता है, वैसा ही मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है॥ १॥ हे मन! अपने गुरु के समक्ष श्रद्धा से नृत्य कर। यदि तुम गुरु की रज़ा अनुसार नृत्य करो तो तुझे सुख की प्राप्ति होगी और अन्तिम समय मृत्यु का भय भी तुझ से भाग जाएगा॥ रहाउ॥ जिसे प्रभु स्वयं नचाता है, वही भक्त कहलवाता है। अपने प्रेम से प्रभु उसे स्वयं ही अपने चरणों में शरण देता है। ईश्वर स्वयं ही गाता है और स्वयं ही सुनाता है तथा अन्धे ज्ञानहीन मन को सन्मार्ग पर लगाता है॥ २॥ जो दिन-रात नृत्य करता है और माया शक्ति पर अंकुश लगा देता है, वह प्रभु के मन्दिर में प्रविष्ट हो जाता है, जहाँ मोह-माया की निद्रा नहीं होती। माया के घर में सोया हुआ जगत नाचता-टापता एवं द्वैतवाद को गाता है। स्वेच्छाचारी पुरुष प्रभु-भक्ति नहीं कर सकता॥ ३॥ देवते, मनुष्य, विरक्त, कर्मकाण्डी, मुनिजन, ज्ञानी तथा चिंतक भी ईश्वर की कृपा से नृत्य करते हैं। सिद्ध, साधक पुरुष गुरु की शरणागत उत्तम बुद्धि प्राप्त करके विचारवान बन जाते हैं तथा प्रभु में सुरति लगाकर नृत्य करते हैं॥ ४॥ हे प्रभु! खण्ड, ब्रह्माण्ड में रहने वाले त्रिगुणात्मक जीव जिन्होंने तेरे साथ ध्यान लगाया हुआ है, वे तेरी रज़ा में नृत्य कर रहे हैं। जीव-जन्तु एवं जीवन के चारों स्रोत प्रभु-इच्छा में नृत्य कर रहे हैं॥ ५॥ हे प्रभु! जो तुझे अच्छे लगते हैं केवल वही नाचते हैं तथा जो गुरुमुख शब्द से ध्यान लगाते हैं, वह भी क्रियाशील हैं। जिन से प्रभु अपने हुक्म की पालना करवाता है वही भक्त एवं तत्व ज्ञानी है॥ ६॥ यही भक्ति है कि मनुष्य प्रभु में ध्यान लगाए। सेवा के बिना भक्ति नहीं हो सकती। जब मनुष्य सांसारिक कार्य करता हुआ माया के मोह से मर जाए तो वह गुर-शब्द का चिन्तन करता है तथा तब वह सत्य को प्राप्त कर सकता है॥ ७॥ धन-दौलत की प्राप्ति हेतु बहुत सारे लोग नाचते हैं। लेकिन कोई विरला पुरुष ही तत्व ज्ञान का बोध करता है। हे स्वामी! जिस मनुष्य पर तुम कृपा-दृष्टि करते हो, वह गुरु की दया से तुझे पा लेता है॥ ८॥ यदि मैं एक क्षण भर भी सत्य (परमात्मा) को विस्मृत करूँ तो वह समय व्यर्थ बीत जाता है। हे भाई! प्रत्येक श्वास से तू सदा प्रभु को हृदय में धारण कर, वह अपनी इच्छानुसार तुझे स्वयं ही क्षमा कर देगा॥ ९॥ हे प्रभु! केवल वही नाचते हैं जो तुझे अच्छे लगते हैं और जो गुरुमुख बनकर शब्द का चिन्तन करते हैं। नानक का कथन है कि हे प्रभु! जिन पर तुम्हारी दया-दृष्टि है, असल में वही सहजता से आत्मिक सुख की अनुभूति करते हैं॥ १०॥ १॥ ६॥

गूजरी महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥ अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥ १ ॥ मन रे हरि कीरति तरु तारी ॥ गुरमुखि नामु अम्रित जलु पाईऐ जिन कउ क्रिपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ सनक सनंदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥ सरणागति प्रहलाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥ २ ॥ अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी ॥ सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥ ३ ॥ भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥ सफल जनमु भइआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥ ४ ॥ मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥ संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥ ५ ॥ निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी ॥ संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥ ६ ॥ एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ हरि एको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिंचै एकंकारी ॥ ७ ॥ रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥ ७ ॥

भगवान के बिना मेरा यह मन (जीवित) रह नहीं सकता, जैसे दूध के आधार पर रहने वाला बालक दूध के बिना नहीं रह सकता। अगम्य, अगोचर प्रभु गुरु के माध्यम से ही पाया जा सकता है। इसलिए मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ हे मन! हरि की यश-कीर्ति संसार-सागर से पार होने के लिए एक जहाज है। हे प्रभु! जिन पर तुम्हारी कृपा-दृष्टि होती है, वह गुरु की शरण में नाम रूपी अमृत-जल को प्राप्त कर लेते हैं॥ रहाउ॥ सनक, सनंदन एवं नारद मुनि इत्यादि बनवारी प्रभु की सेवा-उपासना करते हैं और रात-दिन प्रभु-नाम का जाप करने में मग्न हैं। हे प्रभु! जब भक्त प्रहलाद तेरी शरण में आया था तो तूने उसकी लाज रख ली थी॥ २॥ अलख निरंजन एक ईश्वर ही सर्वव्यापक है तथा एक उसकी ज्योति ही समूची सृष्टि में प्रज्वलित हो रही है। हे प्रभु! एक तू ही दाता है, शेष सभी याचक हैं, अपना हाथ फैलाकर सभी तुझसे दान माँगते हैं॥ ३॥ भक्तजनों की वाणी सर्वोत्तम है। वे सदा प्रभु की निराली एवं अकथनीय कथा गायन करते रहते हैं। उनका जन्म सफल हो जाता है, वे स्वयं संसार-सागर से पार हो जाते हैं और अपनी कुल का भी उद्धार कर लेते हैं॥ ४॥ स्वेच्छाचारी लोग दुविधा एवं दुर्मति में फँसे हुए हैं। उनके भीतर सांसारिक मोह का अन्धेरा है। उन्हें सन्तजनों की कथा पसंद नहीं आती। इसलिए वे अपने परिवार सहित संसार-सागर में डूब जाते हैं॥ ५॥ निंदक निंदा करके दूसरों की मैल साफ करता है। वह मलभक्षी एवं मायाधारी है और संतजनों की निंदा करने में ही प्रवृत्त रहता है, इससे न वह इधर का होता है और न ही पार होता है॥ ६॥ यह समूचा जगत का प्रपंच-खेल रचनाकार ने ही रचा है तथा रचनाकार प्रभु ने ही सभी के भीतर अपनी सत्ता कायम की है। एक हरि-प्रभु का धागा ही जगत में क्रियाशील है। जब वह धागे को खींच लेता है तो सृष्टि का नाश हो जाता है और केवल एक ओंकार प्रभु ही रह जाता है॥ ७॥ जो अपनी जीभ से स्वाद ले-लेकर हरि का गुणगान करते रहते हैं, उनकी जीभ हरि रस चखती रहती है। हे नानक! हरि के अलावा मैं कुछ भी नहीं माँगता, क्योंकि हरि-रस की प्रीति ही मुझे प्यारी लगती है॥ ८॥ १॥ ७॥

गूजरी महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥ १ ॥ पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥ उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥ तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥ २ ॥ सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ ग्रसतन महि तूं वडो गिरहसती जोगन महि जोगी ॥ ३ ॥ करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥ ४ ॥ दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥ लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥ ५ ॥ नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥ जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥ ६ ॥ सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥ आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा ॥ ७ ॥ जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

हे परमात्मा ! राजाओं में तुझे सबसे बड़ा राजा कहा जाता है तथा भूमिपतियों में तू सबसे बड़ा भूमिपति है। ठाकुरों में तुम्हारी ठकुराई का ही वर्चस्व है तथा कौमों में तुम्हारी सर्वोपरि कौम है॥ १॥ मेरा पिता-प्रभु बड़ा धनवान एवं अगम्य स्वामी है। हे कर्त्तार ! मैं तेरी कौन-सी उस्तति का वर्णन करूँ ? तेरी लीला देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! सुखी लोगों में तू सबसे बड़ा सुखी कहलवाता है और दानियों में महान् दानी है। तेजवानों में तू सबसे बड़ा महातेजस्वी कहलवाता है और रसियों में तू सर्वोच्च रसिया है॥ २॥ हे स्वामी ! शूरवीरों में तू सबसे बड़ा शूरवीर कहलवाता है तथा भोगियों में तू महाभोगी है। गृहस्थियों में तू महान् गृहस्थी है (तुझ समान दूसरा कोई नहीं) तथा योगियों में तू महान् योगी है॥ ३॥ हे ईश्वर ! रचनहारों में तू सबसे बड़ा रचयिता कहलवाता है तथा कर्मकाण्ड में भी तू सर्वोपरि है। हे दाता ! साहूकारों में भी तुम सच्चे साहूकार हो तथा व्यापारियों में महान् व्यापारी हो॥ ४॥ हे स्वामी ! दरबार लगाने वालों में भी तेरा ही सच्चा दरबार है तथा शरणागतों की प्रतिष्ठा रखने वालों में भी तुम सर्वोत्तम हो। तेरे पास कितनी लक्ष्मी-धन है, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। तेरे पास कितने सिक्के हैं जो गणना से परे हैं॥ ५॥ हे सर्वेश्वर ! नामों में तेरा ही नाम श्रेष्ठ है (अर्थात् लोकप्रियता प्राप्त करने वालों में तुम्हारी ही लोकप्रियता है) तथा ज्ञानियों में तू महान् ज्ञानी है। समस्त युक्तियों में तुम्हारी ही युक्ति सर्वश्रेष्ठ है तथा सभी प्रकार के तीर्थ स्नानों में तुझ में किया हुआ स्नान महान् है॥ ६॥ हे प्रभु ! सिद्धियों में तुम्हारी सिद्धि ही सर्वश्रेष्ठ है तथा कर्मों में तेरा कर्म प्रधान है। हे प्रभु ! सभी आज्ञाओं में तेरी आज्ञा ही सर्वोपरि है और सभी हुक्मों में तेरा हुक्म सबसे ऊपर अग्रणी है॥ ७॥ हे स्वामी ! जैसे तुम बुलाते हो, वैसे ही हम बोलते हैं, अन्यथा हमारी क्या समर्था है कि हम कुछ बोल सकें ? सत्संगति में नानक ने वही यशोगान किया है, जो प्रभु को अत्यंत प्यारा है॥ ८॥ १॥ ८॥

गूजरी महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ नरहर दीन बंधव पतित पावन देव ॥ भै त्रास नास क्रिपाल गुण निधि सफल सुआमी सेव ॥ १ ॥ हरि गोपाल गुर गोबिंद ॥ चरण सरण दइआल केसव तारि जग भव सिंध ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद ॥ जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु

परमानंद ॥ २ ॥ जलत अनिक तरंग माइआ गुर गिआन हरि रिद मंत ॥ छेदि अहंबुधि करुणा मै चिंत मेटि पुरख अनंत ॥ ३ ॥ सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥ दीन दइआल प्रसंन पूरन जाचीऐ रज साध ॥ ४ ॥ मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार ॥ रखु धरम भरम बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥ ५ ॥ धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥ खल मुगध मूड़ कटाख्य स्रीधर भए गुण मति धीर ॥ ६ ॥ जीवन मुकत जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति ॥ जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणं परम हंसह रीति ॥ ७ ॥ देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार ॥ अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥ १ ॥ १ ॥ २ ॥ ५७ ॥

हे नाथ ! हे नरहरि (नृसिंह) ! हे दीनबंधु ! हे पतितपावन देव ! हे भयनाशक ! हे कृपालु स्वामी ! हे गुणों के भण्डार ! तेरी सेवा-भक्ति बड़ी फलदायक है॥ १॥ हे हरि ! हे गोपाल ! हे गुर गोबिन्द ! मैंने तेरे सुन्दर चरणों की शरण ली है। हे दयालु केशव ! मुझे भयानक संसार-सागर से पार कर दो॥ १॥ रहाउ॥ हे काम-क्रोध का नाश करने वाले ! हे मोह के नशे का दहन करने वाले मुरारि ! हे मन के मकरंद ! हे धरणिधर ! हे परमानंद ! मेरा जन्म-मरण का चक्र मिटाकर मेरी लाज रखें॥ २॥ हे हरि ! माया-अग्नि की अनेक तरंगों में जलते हुए प्राणी के हृदय में गुरु-ज्ञान का मंत्र प्रदान करो। हे करुणामय प्रभु ! हे अनंत अकालपुरुष ! मेरी अहंबुद्धि का छेदन करके मेरी चिंता मिटा दो॥ ३॥ हे प्राणी ! हर पल एवं मुहूर्त तू समर्थ प्रभु का सिमरन कर और उसके ध्यान में सहज समाधि लगा। हे दीनदयालु ! हे पूर्ण प्रसन्न स्वामी ! मैं तुझ से साधुओं की चरण-धूलि माँगता हूँ॥ ४॥ हे निरंकार हरि ! मिथ्या मोह, दुखदायक आशा, वासना एवं विकारों से मेरा धर्म बचा लीजिए तथा मेरे हृदय से भ्रम को दूर करके मेरा उद्धार कीजिए॥ ५॥ हे हरि ! जिनके पास वस्त्र मात्र भी नहीं, वह तेरी नाम-निधि प्राप्त करके धनवान एवं खजाने से भरपूर हो जाते हैं। हे श्रीधर ! तेरी दयादृष्टि से महामूर्ख, दुर्जन एवं मूढ़ भी गुणवान, बुद्धिमान एवं धैर्यवान बन जाते हैं॥ ६॥ हे मन ! जीवन से मुक्ति देने वाले जगदीश की आराधना कर और अपने हृदय में उसकी प्रीति धारण कर। जीवों पर दया एवं स्नेह करना तथा प्रभु को सर्वव्यापक अनुभव करना परमहंसों (गुरुमुखों) की जीवन-युक्ति है॥ ७॥ ईश्वर उन्हें ही अपने दर्शन देता है, जो उसका यश सुनते हैं और अपनी जिह्वा से उसका नाम उच्चरित करते हैं। वह भगवान को आस-पास समझ कर उसकी पूजा करते हैं। हे नानक ! प्रभु पतितों का भी उद्धार कर देता है॥ ८॥ १॥ २॥ ५॥ १॥ १॥ २॥ ५७॥

गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः ३ ॥ इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥ गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि ॥ ओइ सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥ नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यह जगत ममता में फँसकर मर रहा है और इसे जीने की विधि का कोई ज्ञान नहीं। जो व्यक्ति गुरु की रज़ा अनुसार आचरण करता है, उसे जीवन पदवी की उपलब्धि होती है। जो प्राणी हरि के चरणों में अपना चित्त लगाते हैं, वे सदैव जीवित रहते हैं। हे नानक ! अपनी करुणा-दृष्टि से प्रभु मन में निवास करता है तथा गुरुमुख सहज ही समा जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार ॥ दूजै भाइ सुते कबहि न जागहि माइआ

मोह पिआर ॥ नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का आचारु ॥ हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥ २ ॥

महला ३॥ जिन लोगों के मन में दुविधा एवं मोह-माया का दुख है, उन्होंने खुद ही दुनिया की उलझनों के साथ निपटना स्वीकार किया है। वे द्वैतभाव में सोए हुए कभी भी नहीं जागते, क्योंकि उनका माया से मोह एवं प्रेम बना हुआ है। वह प्रभु-नाम को स्मरण नहीं करते और न ही शब्द-गुरु का चिंतन करते हैं। स्वेच्छाचारियों का ऐसा जीवन-आचरण है। हे नानक! वे हरि के नाम को प्राप्त नहीं करते एवं अपना अनमोल जन्म व्यर्थ ही गंवा देते हैं, इसलिए यमदूत उन्हें दण्ड देकर अपमानित करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥ मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥ तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥ जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ १ ॥

पउड़ी॥ जब परमात्मा ने अपने आपको उत्पन्न किया, तब दूसरा कोई नहीं था। वह अपने आप से ही तब सलाह-मशवरा करता था। वह जो कुछ करता था, वही होता था। तब न ही आकाश था, न ही पाताल था और न ही तीन लोक थे। तब केवल निराकार प्रभु आप ही विद्यमान था और कोई उत्पत्ति नहीं हुई थी। जैसे उसे अच्छा लगता था, वैसे ही वह करता था एवं उसके अलावा दूसरा कोई नहीं था॥ १॥

सलोकु मः ३ ॥ साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥ ओहु अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ ॥ सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ॥ अवरु दूजा किउ सेवीऐ जंमै तै मरि जाइ ॥ निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ ॥ नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मेरा साहिब परमात्मा सदा अमर है लेकिन उसके दर्शन 'शब्द' की साधना से होते हैं। वह अनश्वर है और जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता (अर्थात् न ही जन्म लेता है और न ही मरता है।) सदैव ही उस प्रभु का सिमरन करना चाहिए जो प्रत्येक हृदय में समा रहा है। किसी दूसरे की क्यों सेवा-भक्ति करें ? जो जन्मता और मर जाता है। उनका जीवन निष्फल है जो अपने मालिक-प्रभु को नहीं जानते तथा अपना चित्त दूसरों में लगाते हैं। हे नानक! इस बात का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता कि विश्व का रचयिता उन्हें कितनी सजा देगा ?॥ १॥

मः ३ ॥ सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु ॥ नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु ॥ कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई अंधा कचु निकचु ॥ २ ॥

महला ३॥ परमेश्वर सर्वव्यापक है, इसलिए उस परम-सत्य का नाम-सिमरन करना चाहिए। हे नानक! प्रभु का हुक्म समझने से मनुष्य उसके दरबार में स्वीकार हो जाता है और तब उसे सत्य रूपी फल मिल जाता है। किन्तु जो लोग निरर्थक बातें ही करते रहते हैं, प्रभु के मूल हुक्म को नहीं बूझते, वे ज्ञानहीन हैं तथा झूठी बातें ही करने वाले हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ संजोगु विजोगु उपाइओनु स्रिसटी का मूलु रचाइआ ॥ हुकमी स्रिसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥ जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ॥ माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने संयोग एवं वियोग का नियम बनाकर सृष्टि के मूल सिद्धांत की सृजना कर दी। अपने हुक्म-अनुसार उसने सृष्टि की रचना की और जीवों में अपनी ज्योति प्रज्वलित कर दी। सच्चे गुरु ने यह शब्द सुनाया है कि ज्योतिस्वरूप प्रभु की ज्योति से ही सारा प्रकाश उत्पन्न होता है। परमात्मा ने ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवजी की उत्पत्ति करके उन्हें त्रिगुणात्मक-(सतोगुण, रजोगुण एवं तमोगुण) कार्यों में लगा दिया। प्रभु ने संयोग-वियोग रूपी माया का मूल रच दिया है। इस माया में रहकर ही मनुष्य ने तुरीयावस्था में पहुँचकर सुख प्राप्त किया है॥ २॥

सलोकु मः ३ ॥ सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥ सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥ नानक आपु छोडि गुर माहि समावै ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो सच्चे गुरु को अच्छा लगता है, वही जप एवं वही तप है। सतिगुरु की रज़ा अनुसार अनुसरण करने से जीव मान-सम्मान प्राप्त करता है। हे नानक! वह अभिमान को छोड़कर गुरु में ही समा जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ गुर की सिख को विरला लेवै ॥ नानक जिसु आपि वडिआई देवै ॥ २ ॥

महला ३॥ गुरु की शिक्षा कोई विरला जीव ही ग्रहण करता है। हे नानक! गुरु-शिक्षा उसे ही प्राप्त होती है, जिसे प्रभु आप बड़ाई देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥ पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी ॥ गुर सबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥ हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी ॥ ३ ॥

पउडी ॥ माया-मोह तथा अज्ञान का सागर अत्यंत भारी एवं विषम है। यदि जीवन की नैया पाप रूपी पत्थरों से अत्याधिक लदी हुई है तो यह संसार-सागर से कैसे पार होगी? लेकिन जो दिन-रात भक्ति में मग्न रहते हैं, हरि उन्हें संसार-सागर से पार कर देता है। गुरु के शब्द द्वारा यदि मनुष्य अभिमान एवं विकारों को छोड देता है तो मन निर्मल हो जाता है। परमात्मा का नाम-सिमरन करते रहना चाहिए, क्योंकि परमात्मा का नाम उद्धार करने वाला है॥ ३॥

सलोकु ॥ कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा राई दसवै भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करि जाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे कबीर! मुक्ति का द्वार राई के दाने के दसवें भाग के समान संकुचित है। यह मन मस्त हाथी बना हुआ है, फिर यह कैसे उस में से निकल सकता है? यदि ऐसा सच्चा गुरु मिल जाए जो परम प्रसन्न होकर दया-दृष्टि कर दे तो मुक्ति का द्वार बहुत खुला हो जाता है और सहज ही आया-जाया जा सकता है॥ १॥

मः ३ ॥ नानक मुकति दुआरा अति नीका नान्हा होइ सु जाइ ॥ हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥ सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ ॥ इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे नानक! मुक्ति का द्वार बहुत ही छोटा है परन्तु वही निकल सकता है जो बहुत छोटा अर्थात् विनीत हो जाए। अहंकार करने से मन अस्थूल हो गया है फिर यह कैसे इसमें से

गुज़र सकता है? सतिगुरु को मिलने से अहंकार दूर हो जाता है और प्रभु की ज्योति प्राणी के भीतर आ जाती है। यह जीवात्मा तो सदा मुक्त है और सहज ही (प्रभु में) लीन रहती है॥ २॥

पउड़ी ॥ प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥ गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥ सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता ॥ सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥ सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ प्रभु ने संसार पैदा करके इसे अपने वश में किया हुआ है। प्रभु गणनाओं अर्थात् चतुराइयों से प्राप्त नहीं होता और मनुष्य तो द्वैतभाव में ही भटकता है। सतिगुरु को मिलने से मनुष्य जीवित ही (माया के त्याग से) मरा रहता है और इस रहस्य को समझने से वह सत्य में समा जाता है। शब्द के माध्यम से अहंकार मिट जाता है और प्राणी हरि के मिलन में मिल जाता है। प्रभु स्वयं ही सब कुछ जानता है और सब कुछ आप ही करता है। अपनी रचना को देखकर वह स्वयं ही प्रसन्न होता है॥ ४॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥ ध्रिगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ आइ ॥ माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥ हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ॥ जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन्ह सुखु वसिआ मनि आइ ॥ हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरि नामि रहे लिव लाइ ॥ नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥ रंगु तिसै कउ अगला वंनी चड़ै चड़ाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिस व्यक्ति ने सतगुरु से चित्त नहीं लगाया और न ही प्रभु के नाम ने मन में आकर निवास किया तो उसके इस जीवन को धिक्कार है। इस जगत में आकर उसने क्या लाभ प्राप्त किया है। माया एक खोटी पूँजी है और एक क्षण में ही इसका पाखण्ड प्रगट हो जाता है। जब यह मनुष्य के हाथ से निकल जाती है तो इसका बदन काला हो जाता है और चेहरा मुरझा जाता है। जिन्होंने अपना चित्त सतगुरु से लगाया है, उनके मन में सुख आकर बस जाता है। वे हरि के नाम का प्रेमपूर्वक सिमरन करते रहते हैं और हरि के नाम में ही वे लीन रहते हैं। हे नानक! सतगुरु ने उन्हें वह नाम-धन सौंपा है, जो उनके मन में समाया रहता है। उन्हें प्रभु के प्रेम का गहरा रंग प्राप्त हुआ है, जिसका रंग दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥ इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥ गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलि दलि लाई पाइ ॥ नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ माया एक ऐसी नागिन है, जिसने सारे जगत को अपनी लपेट में लिया हुआ है। जो इसकी सेवा करता है, अन्ततः वह उसे ही निगल जाती है। कोई विरला ही गुरुमुख है जो इसके विष की औषधि रुपी मंत्र को जानता है। वह इसे मसल कर तथा कुचल कर अपने पैरों में डाल देता है। हे नानक! इस माया-नागिन से वही बचते हैं जो सत्य के ध्यान में मग्न रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी ॥ अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु से करम कमाइसी ॥ जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥ सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ जब ढाढी पुकार करता है तो प्रभु उसे सुनता है। उसके मन में धैर्य होता है और वह पूर्ण-प्रभु को प्राप्त कर लेता है। शुरु से जिसकी तकदीर में जैसा लेख लिखा होता है, मनुष्य वैसे ही कर्म करता है। जब पति-प्रभु दयालु हो जाता है तो वह प्रभु के महल में ही अपना सच्चा घर प्राप्त कर लेता है। वह मेरा प्रभु बहुत बड़ा है, जो गुरु के माध्यम से ही मिलता है॥ ५॥

सलोक मः ३ ॥ सभना का सहु एकु है सद ही रहै हजूरि ॥ नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि ॥ हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ ॥ हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सबका मालिक एक ईश्वर ही है, जो सदा ही साथ रहता है। हे नानक! यदि जीव-स्त्री उसका हुक्म नहीं मानती तो उसके हृदय-घर में रहता हुआ प्रभु कहीं दूर ही लगता है। लेकिन जिन पर प्रभु दया-दृष्टि धारण करता है, वे उसके हुक्म का पालन करती हैं। जिसने पति-प्रभु के हुक्म को मानकर सुख की प्राप्ति की है, वही जीवात्मा उसकी प्यारी सुहागिन बन गई है॥ १॥

मः ३ ॥ रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ ॥ नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन्ह पिआरा पुरखु हरि राउ ॥ २ ॥

महला ३॥ जो जीवात्मा पति-प्रभु से प्रेम नहीं करती, वह रात भर विरह में जलती हुई मृत्यु को प्राप्त होती रहती है। हे नानक! वही सुहागिन (जीव-स्त्रियाँ) सुख में रहती हैं, जो परमात्मा से सच्चा प्रेम कायम करके उसे ही प्राप्त करती है॥ २॥

पउड़ी ॥ सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥ उपाइ किते न पाईऐ हरि करम बिधाता ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥ अंदरहु तिसना अगनि बुझी हरि अम्रित सरि नाता ॥ वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥ ६ ॥

पउड़ी ॥ मैंने समूचा जगत घूमकर देख लिया है कि एक हरि ही सब जीवों का दाता है। किसी भी उपाय चतुराई इत्यादि से कर्मो का विधाता हरि पाया नहीं जा सकता। गुरु के शब्द द्वारा हरि-प्रभु मनुष्य के मन में निवास कर जाता है और सहज ही वह जाना जाता है। उसके भीतर से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है और वह हरि नामामृत के सरोवर में स्नान कर लेता है। उस महान् परमात्मा की बड़ी बड़ाई है कि वह अपनी गुणस्तुति भी गुरुमुखों से करवाता है॥ ६॥

सलोकु मः ३ ॥ काइआ हंस किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ ॥ एस नो कूड़ु बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥ काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ ॥ हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥ नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ शरीर एवं आत्मा की कैसी प्रीति है जो अन्तकाल में इस पार्थिव शरीर को त्याग कर आत्मा चली जाती है। जब चलते समय यह शरीर साथ नहीं जाता तो इसे झूठ बोल-बोलकर क्यों खिलाया जाए अर्थात् झूठ बोल कर पालने का क्या लाभ? यह शरीर तो मिट्टी है, अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन है। यदि जीवात्मा से पूछा जाए तो जीवात्मा कहती है कि मुझे तो मोह-माया ने आकर्षित किया हुआ है, इसलिए मैं बार-बार संसार में आती-जाती रहती हूँ। हे नानक! जीवात्मा संबोधन करती है कि मैं अपने पति-प्रभु के हुक्म को नहीं जानती, जिससे मैं सत्य में समा जाती॥ १॥

मः ३ ॥ एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥ इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥ इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥ पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥ धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥ २ ॥

महला ३॥ एक ईश्वर का नाम-धन ही शाश्वत है, अन्य सांसारिक धन तो आता-जाता रहता है। इस नाम-धन पर चोर कुदृष्टि नहीं रख सकता और न ही कोई उचक्का ले जा सकता है। हरि का नाम रूपी यह धन आत्मा के साथ ही बसता है और आत्मा के साथ ही परलोक में जाता है। लेकिन यह अमूल्य नाम धन पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है तथा स्वेच्छाचारी लोगों को यह धन प्राप्त नहीं होता। हे नानक! वे व्यापारी धन्य हैं, जिन्होंने संसार में आकर हरि के नाम-धन को अर्जित किया है॥ २॥

पउड़ी ॥ मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गंभीरा ॥ सभु जगु तिस कै वसि है सभु तिस का चीरा ॥ गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥ किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ॥ गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ मेरा परमेश्वर बड़ा महान् है, वह सदैव सत्य एवं गहन-गंभीर है। समूचा जगत उसके वश में है और सारी शक्ति उसी की है। गुरु की कृपा से ही सदैव अटल एवं धैर्यवान हरि का नाम-धन प्राप्त होता है। यदि शूरवीर गुरु से भेंट हो जाए तो उसकी कृपा से हरि प्राणी के मन में निवास कर जाता है। गुणवान लोग ही सदा अटल एवं पूर्ण हरि की सराहना करते हैं॥ ७॥

सलोकु मः ३ ॥ ध्रिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ ॥ मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ ॥ हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ ॥ गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ ॥ नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ उन मनुष्यों के जीवन को धिक्कार है, जो हरि-नाम स्मरण के सुख को त्याग देते हैं और अभिमान में पाप करके दुःख भोगते हैं। अज्ञानी मनमुख माया के मोह में फँसे रहते हैं और उन्हें कोई सूझ नहीं आती। इस लोक एवं परलोक में उन्हें सुख उपलब्ध नहीं होता और अंततः पछताते हुए चले जाते हैं। गुरु की कृपा से कोई विरला व्यक्ति ही नाम की आराधना करता है और उसके अन्तर्मन से अहंत्व दूर हो जाता है। हे नानक! जिसके भाग्य में शुरु से लिखा होता है, वह गुरु के चरणों में आ जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥ सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ ॥ तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ ॥ ओइ धरमि रलाए ना रलन्हि ओना अंदरि कूड़ु सुआउ ॥ नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ ॥ २ ॥

महला ३॥ मनमुख इन्सान उलटा पड़ा हुआ कमल है, उसके पास न ही भक्ति है और न ही प्रभु का नाम है। वह माया में ही क्रियाशील रहता है और झूठ ही उसका जीवन-मनोरथ होता है। उस मनमुख का अन्तर्मन भी स्नेह से नहीं भीगता, उसके मुँह से निकले वचन भी फीके (निरर्थक) ही होते हैं। ऐसे लोग धर्म में मिलाने पर भी धर्म से दूर रहते हैं और उनके भीतर झूठ एवं मक्कारी विद्यमान होती है। हे नानक! विश्व रचयिता प्रभु ने ऐसी रचना रची है कि मनमुख

झूठ बोल-बोलकर डूब गए हैं और गुरुमुख हरि-नाम का जाप करके संसार-सागर से पार हो गए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई ॥ सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई ॥ आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई ॥ त्रिसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥ सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥ ८ ॥

पउडी॥ सत्य को समझे बिना आवागमन का लम्बा चक्र लगाना पड़ता है, मनुष्य पुनः पुनः योनियों के चक्र में संसार में आता-जाता रहता है। वह गुरु की सेवा में तल्लीन नहीं होता, जिसके फलस्वरूप आखिर में पछताता हुआ जगत से चला जाता है। जब परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करता है तो गुरु से मिलन हो जाता है और प्राणी का अहंत्व दूर हो जाता है। तब सांसारिक मोह की तृष्णा की भूख दूर हो जाती है और मन में आत्मिक सुख का निवास हो जाता है। अपने हृदय में प्रभु से लगन लगाकर सदैव ही उसकी स्तुति करनी चाहिए॥ ८॥

सलोकु मः ३ ॥ जि सतिगुरु सेवे आपणा तिस नो पूजे सभु कोइ ॥ सभना उपावा सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइ ॥ अंतरि सीतल साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ ॥ अंम्रितु खाणा अंम्रितु पैनणा नानक नामु वडाई होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो व्यक्ति अपने सतिगुरु की श्रद्धा से सेवा करता है, सभी उसकी पूजा करते हैं। सभी उपायों में श्रेष्ठ उपाय यह है कि हरि के नाम की प्राप्ति हो जाए। नाम का जाप करने से अन्तर्मन में शीतलता एवं शांति का निवास होता है और हृदय सदैव सुखी रहता है। हे नानक। नामामृत ही उसका भोजन एवं उसका पहरावा बन जाता है, नाम से ही उसे जगत में कीर्ति प्राप्त होती है॥ १॥

मः ३ ॥ ए मन गुर की सिख सुणि हरि पावहि गुणी निधानु ॥ हरि सुखदाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥ नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ॥ २ ॥

महला ३॥ हे मेरे मन ! सच्चे गुरु की शिक्षा सुन, तुझे गुणों का भण्डार प्रभु प्राप्त हो जाएगा। सुखों का दाता हरि मन में निवास कर जाएगा और अभिमान एवं घमण्ड नाश हो जाएगा। हे नानक ! जब प्रभु कृपा-दृष्टि करता है तो प्राणी का ध्यान रात-दिन सत्य में ही लगा रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥ अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता ॥ तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता ॥ अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥ सभना दाता एकु है इको हरि मिता ॥ ९ ॥

पउडी॥ गुरुमुख मनुष्य पवित्र-पावन है और सत्य एवं संतोष का रूप है उसे सब सत्य ही दिखाई देता है। उसके अन्तर्मन से छल-कपट एवं विकार नाश हो जाते हैं और उसने सहज ही मन को जीत लिया होता है। उसके मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है, वह हरि रस का आनंद लेता रहता और उसका अज्ञान दूर हो जाता है। वह नित्य ही हरि का गुणगान करता रहता है, जो गुण उसके भीतर हरि ने प्रगट कर दिए हैं। सब जीवों का दाता एक परमात्मा ही सबका मित्र है॥ ९॥

सलोकु मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ॥ सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥ हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥ इसु जुग महि को विरला ब्रहम गिआनी जि हउमै मेटि समाए ॥ नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरि नामु धिआए ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो व्यक्ति ब्रह्म को जानता है, उसे ही ब्राह्मण कहा जाता है और वह रात-दिन परमात्मा में अपनी सुरति लगाकर रखता है। वह सद्‌गुरु की सलाह अनुसार सत्य एवं संयम का आचरण करता है और उसका अहंकार का रोग नाश हो जाता है। वह हरि का गुणगान करता है, हरि का यश ही संग्रह करता है और उसकी ज्योति परमज्योति में विलीन हो जाती है। इस जग में कोई विरला ही ब्रह्मज्ञानी है, जो अपना अहंकार मिटा कर प्रभु में विलीन होता है। हे नानक ! उसे मिलने से सदैव सुख प्राप्त होता है, जो रात-दिन हरि-नाम की आराधना करता रहता है॥ १॥

मः ३ ॥ अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥ कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥ दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥ इतु कमाणै सदा दुखु पावै जंमै मरै फिरि आवै जाइ ॥ सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥ जिस नो क्रिपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥ हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ अज्ञानी मनमुख के हृदय में छल-कपट है और अपनी जीभ से वह झूठ ही बोलता है। छल-कपट करने से परमात्मा खुश नहीं होता, क्योंकि वह सहज स्वभाव नित्य ही सभी को देखता एवं सुनता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य द्वैतभाव में फँसकर जगत को उपदेश देता है किन्तु आप विषैली माया के मोह एवं स्वाद में क्रियाशील रहता है। ऐसा करने से वह सदा दुःख ही भोगता है और वह जन्मता-मरता एवं बार-बार योनियों में फँसकर इहलोक में आता-जाता रहता है। उसकी दुविधा उसे बिल्कुल नहीं छोड़ती और विष्टा में ही वह गल-सड़ जाता है। जिस पर मेरा स्वामी कृपा करता है, उसे गुरु की शिक्षा सुनवाता है। फिर ऐसा मनुष्य हरि-नाम का ध्यान करता है, हरि-नाम का वह गुणगान करता है और हरि का नाम ही अंत में उसे मोक्ष प्रदान करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥ साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि वीचारि ॥ हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥ हरि का महलु तिन्ही पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उर धारि ॥ १० ॥

पउड़ी॥ परमात्मा जिन से अपनी आज्ञा का पालन करवाता है, वही इस दुनिया में पूर्णपुरुष हैं। वह अपने मालिक की सेवा करते हैं और गुरु के पूर्ण शब्द का विचार करते हैं। वह हरि की उपासना करते हैं और सत्यनाम से प्रीति लगाते हैं। जो मनुष्य अपने भीतर से अहंकार को नाश कर देते हैं, वे हरि के महल (दरबार) को प्राप्त कर लेते हैं। हे नानक ! हरि का नाम-सिमरन करने एवं उसे हृदय में धारण करने से गुरुमुख हरि से मिले रहते हैं॥ १०॥

सलोकु मः ३ ॥ गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ॥ गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥ गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि

रंगु लाइआ ॥ नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥ जिस नो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरुमुख व्यक्ति प्रभु का ध्यान करते हैं और उनकी अन्तरात्मा में सहज ध्वनि उत्पन्न होती है। वे अपना चित्त सत्यनाम के साथ ही लगाते हैं। गुरुमुख व्यक्ति रात-दिन प्रभु के प्रेम-रंग में अनुरक्त रहते हैं और हरि का नाम ही उनके मन को अच्छा लगता है। गुरुमुख हरि को ही देखते हैं और हरि के बारे में ही वचन करते हैं और सहज स्वभाव प्रभु से प्रेम पाते हैं। हे नानक! गुरुमुख मनुष्य को ही ज्ञान की प्राप्ति होती है और उसका अज्ञान रूपी घोर अन्धकार नष्ट हो जाता है। जिस पर पूर्ण प्रभु की अनुकंपा होती है, वह गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि-नाम की आराधना करता है॥ १॥

मः ३ ॥ सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥ सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥ फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ॥ कूड़ै लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु ॥ नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥ २ ॥

महला ३॥ जो सद्गुरु की सेवा नहीं करते, शब्द से प्रेम नहीं लगाते तथा सहजता में नाम की आराधना भी नहीं करते, फिर वे किसलिए इस संसार में आए हैं। ऐसे व्यक्ति पुनः पुनः योनियों के चक्र में पड़ते है और हमेशा ही विष्टा में खराब होते हैं। वे तो झूठे लालच से लगे हुए हैं और वे न इस किनारे पर हैं और न ही पार हैं। हे नानक! गुरुमुख मनुष्य संसार सागर से पार हो जाते हैं, उन्हें करतार प्रभु अपने साथ मिला लेता है॥ २॥

पउड़ी ॥ भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए ॥ हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए ॥ सफलु जनमु जिन्ही गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए ॥ बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ भक्त सच्चे परमात्मा के द्वार पर बैठे बड़े शोभा देते हैं। वे सच्चे शब्द द्वारा ही स्थिर रहते हैं। हरि की प्रीति उनके भीतर उत्पन्न हो जाती है और हरि के प्रेम में आकर्षित रहते हैं। वे हमेशा हरि के रंग में मग्न रहते हैं और उनकी जिह्वा हरि रस का पान करती है। जो लोग गुरु की शरणागत पूज्य परमेश्वर को पहचानते हैं और उसे अपने हृदय में बसाते हैं, उनका जीवन सफल है। गुरु के बिना दुनिया रोती फिरती है और मोह-माया में फँसकर नष्ट हो रही है॥ ११॥

सलोकु मः ३ ॥ कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ ॥ सतिगुर सेवि हरि नामु मनि वसाइआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ विचे ग्रिह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ ॥ आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धंनु जणेदी माइआ ॥ ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ॥ जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ इस कलियुग में भक्तों ने ही भगवान की भक्ति करके नाम-भण्डार प्राप्त किया है और प्रभु के उत्तम पद को पाया है। सतिगुरु की सेवा करके उन्होंने हरि के नाम को अपने मन में बसा लिया है और रात-दिन नाम का ही ध्यान किया है। अपने घर में ही वे गुरु के उपदेश द्वारा निर्लिप्त रहते हैं तथा अपने अहंत्व एवं मोह को जला दिया है। सद्गुरु स्वयं संसार-सागर से

पार हुआ है और उसने समूचे जगत को भी भवसागर से तार दिया है, वह माता धन्य है जिसने उन्हें जन्म दिया है। ऐसा सतिगुरु उसे ही प्राप्त होता है, जिसके मस्तक पर प्रभु ने प्रारम्भ से ऐसा लेख लिख दिया है। नानक अपने गुरु पर बलिहारी है, जिसने दुविधा में भटके हुए को सन्मार्ग लगाया है॥ १॥

मः ३ ॥ त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ॥ पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ ॥ दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ ॥ जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा अहंकारु बहु गरबु वधाइआ ॥ छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मनहठि जनमु गवाइआ ॥ एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ जन नानक किस नो आखि सुणाईऐ जा करदे सभि कराइआ ॥ २ ॥

महला ३॥ त्रिगुणात्मक माया को देखकर मनुष्य ऐसे कुमार्गगामी हो जाता है जैसे दीपक को देखकर पतंगा नाश हो जाता है। पण्डित बार-बार माया के लोभ में आकर्षित होकर देखता रहता है कि किसी ने उसके समक्ष कुछ भेंट रखी है अथवा नहीं। द्वैतभाव की प्रीति में पथभ्रष्ट हुआ वह नित्य पाप बारे पढ़ता है और प्रभु ने उसे अपने नाम से वंचित किया हुआ है। योगी, जंगम एवं संन्यासी भी भूले हुए हैं, क्योंकि उन्होंने अपना अहंकार एवं गर्व बहुत बढ़ाया हुआ है। वस्त्र एवं भोजन की सच्ची भिक्षा को वे स्वीकृत नहीं करते और अपने मन के हठ के कारण अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं। इनमें से केवल वही सेवक महान् है जो गुरु के सान्निध्य में रहकर नाम का ध्यान करता है। हे नानक ! किसे कहकर पुकार करें, जबकि सबकुछ करने कराने वाला सृष्टिकर्त्ता ही है॥ २॥

पउड़ी ॥ माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ॥ एह जम की सिरकार है एन्हा उपरि जम का डंडु करारा ॥ मनमुख जम मगि पाईअन्हि जिन्ह दूजा भाउ पिआरा ॥ जम पुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ॥ जिस नो क्रिपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ माया-मोह, काम, कोध एवं अहंकार इत्यादि भयानक प्रेत हैं। ये सब यमराज की प्रजा हैं और इन पर यमराज का सख्त दण्ड कायम रहता है। स्वेच्छाचारी मनुष्य जो मोह-माया से प्रेम करते हैं, वह यमराज के मार्ग पर धकेले जाते हैं। स्वेच्छाचारी यमपुरी में बंधे हुए पीटे जाते हैं और कोई भी उनकी पुकार नहीं सुनता। जिस पर प्रभु कृपा करता है, उसे गुरु मिल जाता है और गुरु के सान्निध्य में रहकर प्राणी की मुक्ति हो जाती है॥ १२॥

सलोकु मः ३ ॥ हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ ॥ जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥ गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ ॥ तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ नानक माइआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ अहंत्व एवं ममता पैदा करने वाली माया ऐसी मोहिनी है जो स्वेच्छाचारियों को निगल गई है। जो अपना चित्त द्वैतवाद के मोह में लगाते हैं, यह माया उनके साथ लिपटकर उन्हें वश में कर लेती है। यदि गुरु के शब्द द्वारा इसे जला दिया जाए तो यह तभी अन्तर से निकलती है। इस प्रकार तन, मन उज्ज्वल हो जाते हैं और नाम आकर मन में निवास कर लेता है। हे नानक ! हरि का नाम इस माया का मारण है जो गुरु के माध्यम से प्राप्त हो सकता है॥ १॥

मः ३ ॥ इहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ ॥ हरि भाणा ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु उपाइ ॥ जा हरि बखसे ता गुर मिलै असथिरु रहै समाइ ॥ नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ यह मन अनेक युगों में भटकता रहा है। यह स्थिर नहीं होता और जन्मता-मरता रहता है। जब हरि को अच्छा लगता है तो वह मन को भटकाता है और उसने ही यह परपंच बनाकर यह खेल रचा है। जब हरि मन को क्षमा कर देता है तो ही गुरु मिलता है और स्थिर होकर मन सत्य में विलीन हो जाता है। हे नानक! मन के द्वारा मन को आत्मिक सुख मिलता है और फिर न ही कुछ मरता है, न ही जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी ॥ काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥ आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी ॥ जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥ हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ मानव शरीर एक अपार किला है जो संयोग से ही प्राप्त होता है। इस शरीर में स्वयं प्रभु निवास कर रहा है और वह स्वयं ही रस भोगी है। परमात्मा स्वयं अतीत एवं अलिप्त रहता है, वह योगी होने के बावजूद विरक्त है। जो उसे अच्छा लगता है, वह वही कुछ करता है और जो कुछ प्रभु करता है, वही होता है। गुरुमुख बनकर नाम की आराधना करने से प्रभु से विछोह मिट जाता है॥ १३॥

सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥ वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥ नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ वह सत्यस्वरूप परमात्मा गुरु के शब्द द्वारा अपनी 'वाह-वाह' (महिमा) करवाता है। कोई विरला गुरुमुख ही इस तथ्य को समझता है कि 'वाह-वाह' प्रभु की उस्तति-महिमा है। यह सच्ची वाणी भी 'वाह-वाह' है, जिससे मनुष्य सत्य (प्रभु) को मिल जाता है। हे नानक! वाह-वाह (स्तुतिगान) करते हुए ही परमात्मा के करम (कृपा) से ही उसको पाया जा सकता है॥ १॥

मः ३ ॥ वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥ पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥ वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥ वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन्ह कउ परजा पूजण आई ॥ वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥ २ ॥

महला ३॥ वाह-वाह (गुणानुवाद) करती हुई रसना गुरु-शब्द से सुन्दर लगती है। पूर्ण शब्द-गुरु द्वारा प्रभु आकर मनुष्य को मिल जाता है। भाग्यवान ही अपने मुख से भगवान की वाह-वाह (गुणगान) करते हैं। ये सेवक सुन्दर हैं, जो परमेश्वर की वाह-वाह (स्तुतिगान) करते हैं, प्रजा उनकी पूजा करने के लिए आती है। हे नानक! करम से ही प्रभु की वाह-वाह (उस्तति) प्राप्त होती है और मनुष्य सच्चे द्वार पर शोभा पाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ बजर कपाट काइआ गढ़ भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ॥ भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ॥ उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥ गुर सबदी खोलाईअन्हि

हरि नामु जपानी ॥ हरि जीउ अंम्रित बिरखु है जिन पीआ ते त्रिपतानी ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ काया रूपी दुर्ग के भीतर झूठ, फरेब एवं अभिमान के वज्र कपाट लगे हुए हैं। भ्रम में भूले हुए अन्धे एवं अज्ञानी स्वेच्छाचारी उनको देखते ही नहीं। वे किसी भी उपाय द्वारा कपाट ढूँढ नहीं पाते। भेषधारी भेष धारण कर-करके थक गए हैं। जो व्यक्ति हरि-नाम जपते हैं, गुरु के शब्द द्वारा उनके कपाट खुल जाते हैं। श्रीहरि अमृत का वृक्ष है, जो इस अमृत का पान करते हैं, वे तृप्त हो जाते हैं॥ १४॥

सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥ वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ॥ नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ वाह-वाह अर्थात् ईश्वर का गुणानुवाद करने से जीवन-रात्रि सुखद व्यतीत होती है। हे मेरी माँ! ईश्वर का गुणगान करने से मनुष्य सदा आनंद में रहता है। वाह-वाह (स्तुतिगान) करने से मनुष्य की सुरति हरि के साथ लगी रहती है। प्रभु की कृपा से ही मनुष्य 'वाह-वाह' की वाणी बोलता एवं बुलवाता है। वाह-वाह (प्रभु की उस्तति) करने से मनुष्य को लोक-परलोक में शोभा मिलती है। नानक! इन्सान सच्चे प्रभु की इच्छा में ही वाह-वाह (स्तुतिगान) करता है॥ १॥

मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥ वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥ वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥ से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ॥ २ ॥

महला ३॥ वाह-वाह की वाणी सत्य है, जिसे गुरुमुख बनकर मनुष्य ढूँढ लेता है। वाह-वाह का उच्चारण गुरु के शब्द से हृदय से करना चाहिए। वाह-वाह करते हुए गुरुमुख अपनी खोज द्वारा सहज ही प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं। हे नानक! वे व्यक्ति खुशकिस्मत हैं, जो भगवान को हृदय में स्मरण करते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥ माइआ मनसा मोहणी दह दिस फिराता ॥ अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥ रसना हरि रसु न चखिओ फीका बोलाता ॥ जिना गुरमुखि अंम्रितु चाखिआ से जन त्रिपताता ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ यह मन अत्यंत लोभी है जो नित्य ही लोभ में आसक्त रहता है। मोहिनी माया की तृष्णा में मन दसों दिशाओं में भटकता फिरता है। आगे परलोक में बड़ा नाम एवं जाति (कुलीनता) साथ नहीं जाते। मनमुख मनुष्य को दुःख ही निगल जाता है, क्योंकि उसकी जिह्वा हरि-रस का पान नहीं करती और कटु वचन ही बोलती है। जो मनुष्य गुरु के सान्निध्य में रहकर नामामृत का पान करते हैं, वे सेवक तृप्त रहते हैं॥ १५॥

सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सचा गहिर गंभीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि गुणदाता मति धीरु ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ॥ वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि ॥ नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ वाह-वाह उसे कहना चाहिए जो सत्यस्वरूप एवं गहन-गंभीर है। वाह-वाह उसे ही कहना चाहिए जो गुणदाता एवं धैर्य-बुद्धि प्रदान करने वाला है। हमें उसका ही गुणगान करना चाहिए जो सब जीवों में समाया हुआ है। जो हमें भोजन प्रदान करता है, उसे ही वाह-वाह कहना चाहिए। हे नानक! वाह-वाह करके उस एक ईश्वर की ही प्रशंसा करनी चाहिए, जिसके सतिगुरु ने दर्शन करवाए हैं॥ १॥

मः ३ ॥ वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥ ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥ गुरमुखि अंम्रितु पीवणा वाहु वाहु करहि लिव लाइ ॥ नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले त्रिभवण सोझी पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ गुरुमुख व्यक्ति सदैव ही अपने प्रभु की वाह-वाह (स्तुतिगान) करते हैं और मनमुख मोह-माया रूपी विष सेवन करके मर जाते हैं। उन्हें वाह-वाह (स्तुतिगान) करना अच्छा नहीं लगता इसलिए उनका सारा जीवन दुख में ही व्यतीत होता है। गुरुमुख नामामृत पान करते हैं और अपनी सुरति लगाकर परमात्मा की स्तुति करते रहते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति भगवान की उस्तति करते हैं, वे निर्मल हो जाते हैं और उन्हें तीन लोकों का ज्ञान हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि के भाणे गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै ॥ हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥ हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै ॥ हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै ॥ हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा की इच्छा से ही गुरु मिलता है और गुरु की सेवा करने से प्रभु-भक्ति की युक्ति बनती है। ईश्वरेच्छा से ही हरि प्राणी के मन में निवास करता है और सहज ही हरि-रस का पान करता है। परमात्मा की मर्जी से ही मनुष्य को सुख प्राप्त होता है और नित्य ही नाम रूपी लाभ की उपलब्धि होती है। उस पवित्र पुरुष को हरि के राजसिंहासन पर विराजमान किया जाता है और वह सदा अपने घर में रहता है। ईश्वरेच्छा को वही सहर्ष स्वीकार करते हैं, जिन्हें गुरु मिल जाता है॥ १६॥

सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ ॥ वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै संगि मिलाइ ॥ वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥ नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिन्हें परमात्मा आप समझ प्रदान करता है, वे जीव सदा वाह-वाह (स्तुतिगान) करते रहते हैं। भगवान का गुणगान करने से मन निर्मल हो जाता है और अन्तर्मन से अहंकार दूर हो जाता है। गुरु का शिष्य जो नित्य ही प्रभु की स्तुति करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है। जो हरि की स्तुति करते हैं, वे सेवक सुन्दर हैं। हे हरि! मेरा मिलन उनसे करवा दे, ताकि मैं अपने हृदय में स्तुति करता रहूँ और अपने मुख से भी तेरा गुणगान ही उच्चरित करता रहूँ। हे नानक! जो व्यक्ति परमात्मा की प्रशंसा करते हैं, मैं अपना तन-मन उनको न्यौछावर करता हूँ॥ १॥

मः ३ ॥ वाहु वाहु साहिबु सचु है अंम्रितु जा का नाउ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो देइ सु खाइ ॥ वाहु वाहु जलि थलि भरपूर

है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥ नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जमकंकरु नेड़ि न आवै ॥ २ ॥

महला ३॥ मेरा सत्यस्वरूप मालिक धन्य-धन्य है, जिसका नाम अमृत रूप है। जिन्होंने मेरे मालिक-प्रभु की सेवा-भक्ति की है, उन्हें नाम-फल की प्राप्ति हो गई है, मैं उन महापुरुषों पर बलिहारी जाता हूँ। ईश्वर गुणों का भण्डार है, जिसे वह यह भण्डार देता है, वही इसे चखता है। परमात्मा जल एवं धरती में सर्वव्यापक है और गुरुमुख बनकर ही उसे पाया जाता है। हे गुरु के शिष्यो! नित्य ही सभी परमात्मा की स्तुति करो। पूर्ण गुरु को प्रभु की महिमा अच्छी लगती है। हे नानक! जो मनुष्य अपने मन एवं चित्त से प्रभु का गुणगान करता है, उसके निकट यमदूत नहीं आता॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥ सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ॥ अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ॥ गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुंन पराणी ॥ बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ पूज्य परमेश्वर परम-सत्य है तथा गुरु की सच्ची वाणी भी उसके यश में है। सतगुरु के माध्यम से सत्य की पहचान होती है और मनुष्य सहज ही सत्य में समा जाता है। ऐसे पवित्र पुरुष रात-दिन जाग्रत रहते हैं, वे सोते नहीं और जागते ही उनकी जीवन-रात्रि व्यतीत होती है। जो गुरु की शिक्षा द्वारा हरि रस को चखते हैं, वे प्राणी पुण्य के पात्र हैं। गुरु के बिना किसी को भी परमात्मा प्राप्त नहीं हुआ और मूर्ख लोग खप-खपकर मर जाते हैं॥ १७॥

सलोकु मः ३ ॥ वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥ वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥ वाहु वाहु अंम्रित नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ वाहु वाहु करमी पाईऐ आपि दइआ करि देइ ॥ नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ उस निराकार परमात्मा की वाणी वाह! वाह! प्रशंसनीय है और उस जैसा महान् अन्य कोई नहीं। वह परम सत्य अगम्य एवं अथाह प्रभु धन्य! धन्य! है। वह बेपरवाह है, जो कुछ वह करता है, वही होता है। उसका नाम अमृत रूप है, जिसकी प्राप्ति गुरुमुख को ही होती है। प्रभु की स्तुति मनुष्य को अहोभाग्य से ही मिलती है और वह स्वयं ही दया करके इसे प्रदान करता है। हे नानक! गुरुमुख बनकर ही वाह-वाह रूपी स्तुतिगान की देन प्राप्त होती है और जीव सदा परमात्मा का ही नाम जपता है॥ १॥

मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ ॥ जिन्हा अंतरि लोभ विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ जिन्हा सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि ॥ तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥ २ ॥

महला ३॥ सतगुरु की सेवा किए बिना मन को शान्ति नहीं आती और द्वैतभाव दूर नहीं होते। मनुष्य चाहे कितनी ही अभिलाषा करे परन्तु प्रभु की कृपा के बिना उसकी प्राप्ति नहीं होती। जिनकी अन्तरात्मा में लोभ विकार हैं, उन्हें द्वैतभाव नष्ट कर देता है। इसलिए उनका जन्म-मरण

का चक्र मिटता नहीं और अहंत्व में वे दुःख भोगते हैं। जिन्होंने सतगुरु से अपना चित्त लगाया है, उनमें कोई भी नाम की देन से खाली नहीं रहा। यमदूत उन्हें नहीं बुलाता और न ही वे दुःख सहते हैं। हे नानक! गुरुमुख पार हो जाते हैं और परम-सत्य परमात्मा में विलीन हो जाते हैं॥२॥

पउड़ी ॥ ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥ दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥ ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उर धारि ॥ ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि ॥ ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ जो अपने मालिक से प्रेम करता है, उसे ही ढाढी कहा जाता है। प्रभु के द्वार पर खड़ा हुआ वह उसकी सेवा करता है और गुरु के शब्द द्वारा ईश्वर का चिन्तन करता है। ढाढी प्रभु के दरबार एवं मन्दिर को प्राप्त कर लेता है और सत्य को अपने हृदय से लगाकर रखता है। ढाढी की पदवी सर्वोच्च होती है क्योंकि हरि के नाम से उसका प्रेम है। ऐसे ढाढी की सेवा-चाकरी यही है कि वह हरि का नाम-सिमरन करता है और प्रभु उसे मोक्ष प्रदान कर देता है॥ १८॥

सलोकु मः ३ ॥ गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा ॥ गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ॥ जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि ॥ सा हुकमु पछाणै कंत का जिस नो क्रिपा कीती करतारि ॥ ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥ भै पइऐ मलु कटीऐ निरमल होवै सरीरु ॥ अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु ॥ भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ॥ ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥ भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ नानक खसमै भावै सा भली जिस नो आपे बखसे करतारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गूजरी की जाति गंवार है परन्तु उसने भी अपना पति प्राप्त कर लिया है क्योंकि वह गुरु के शब्द का चिंतन करती है और रात-दिन प्रभु के नाम का जाप जपती है। जिसे सच्चा गुरु मिल जाता है, वह प्रभु-भय में रहती है और वही नारी कुलीन बन जाती है। जिस पर करतार कृपा करता है, वह अपने पति-प्रभु के हुक्म को पहचान लेती है। जो जीव-स्त्री मूर्ख एवं कुलक्षणी होती है, उसे पति-प्रभु त्याग देता है। प्रभु का भय धारण करने से मन की मैल शुद्ध हो जाती है और शरीर पवित्र हो जाता है। गुणों के समुद्र प्रभु का सुमिरन करने से आत्मा आलोकित एवं बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। जो प्रभु-भय में बैठता है, भय में रहता है और भय में ही अपना कार्य करता है, वह इहलोक में सुख एवं प्रशंसा तथा प्रभु के दरबार में मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेता है। प्रभु-भय द्वारा ही निर्भय प्रभु पाया जाता है और प्राणी की ज्योति अपार प्रभु में विलीन हो जाती है। हे नानक! जिसे करतार आप क्षमा कर देता है, वही जीव-स्त्री भली है जो अपने पति-प्रभु को अच्छी लगती है॥ १॥

मः ३ ॥ सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ ॥ नानक एकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥ २ ॥

महला ३॥ सदैव ही सत्यस्वरूप परमात्मा की प्रशंसा करनी चाहिए, मैं उस परम-सत्य पर सर्वदा बलिहारी जाता हूँ। हे नानक! जो एक ईश्वर को छोड़कर किसी दूसरे के गुणानुवाद में लगती है, वह जिह्वा जल जानी चाहिए॥ २॥

पउड़ी ॥ अंसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ ॥ जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ ॥ ईसरु ब्रहमा सेवदे अंतु तिन्ही न लहीआ ॥ निरभउ निरंकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥ तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा ने अंशावतारों की उत्पत्ति की और माया का मोह भी स्वयं ही उत्पन्न किया। ये अंशावतार भी राजाओं की भाँति राज्य करते रहे तथा दुःख-सुख हेतु भिड़ने लगे। शिवजी एवं ब्रह्मा भी एक परमात्मा का सिमरन करते हैं लेकिन उन्हें भी उसका भेद नहीं मिला। वह निर्भय, निराकार एवं अलक्ष्य है और गुरुमुख के अन्तर में ही प्रगट होता है। उस अवस्था में शोक एवं वियोग का प्रभाव नहीं होता और वह दुनिया में सदा स्थिर हो जाता है॥ १६॥

सलोकु मः ३ ॥ एहु सभु किछु आवण जाणु है जेता है आकारु ॥ जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥ नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जितना यह संसार दृष्टिगोचर है, सब नाशवान है। जो इस लेखे (बात) को समझता है, वह स्वीकार हो जाता है। हे नानक! यदि कोई अपने आपको महान् कहलवाता है, वह मूर्ख एवं गंवार है॥ १॥

मः ३ ॥ मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥ नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ यह मन हाथी है, गुरु महावत एवं ज्ञान अंकुश है, जहाँ कहीं भी गुरु ले जाता है, वहाँ ही मन जाता है। हे नानक! ज्ञान रूपी अंकुश के बिना मन रूपी हाथी बार-बार उजाड़ में भटकता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तिसु आगै अरदासि जिनि उपाइआ ॥ सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥ अंम्रित हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥ संत जना कै संगि दुखु मिटाइआ ॥ नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥ २० ॥

पउड़ी॥ मेरी उस परमात्मा के समक्ष प्रार्थना है, जिसने सारा जगत पैदा किया है। अपने सतिगुरु की सेवा करके मैंने सभी फल प्राप्त कर लिए हैं। मैं सदा ही हरि के नामामृत का ध्यान करता हूँ। संतजनों की संगति में रहकर मैंने अपने दुःख मिटा लिए हैं। हे नानक! हरि का निश्चल धन प्राप्त करके मैं निश्चिंत हो गया हूँ॥ २०॥

सलोक मः ३ ॥ खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ ॥ महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥ बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि ॥ नानक तिन्ह बलिहारणै जिन्ह गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिस तरह किसान ऊँचे बादल देखकर खेत की मेंढ ऊँची कर देता है, वैसे ही जीव-स्त्री के हृदय-घर में साजन प्रभु प्रवेश कर जाता है और भक्ति के कारण अतिथि बना रहता है। हे मेघ रूपी गुरुदेव! यद्यपि हरि-नाम की वर्षा करनी है तो करो क्योंकि आयु बीतने पर फिर बरसने का क्या अभिप्राय? हे नानक! जिन्होंने गुरुमुख बनकर परमात्मा को मन में प्राप्त कर लिया है, मैं उनसे बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

मः ३ ॥ मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥ २ ॥

महला ३॥ मीठा वही होता है, जो अच्छा लगता है और सच्चा मित्र वही है जो दुख-सुख में साथ निभाने वाला हो। हे नानक! जिसके मन में भगवान आप प्रकाश करता है, वही गुरुमुख जाना जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई ॥ तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई ॥ जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई ॥ चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥ २१ ॥

पउडी॥ प्रभु के पास सेवक की प्रार्थना है, हे प्रभु! तू ही मेरा सच्चा साँई है। तू सदैव ही मेरा रखवाला है, मैं तेरी ही आराधना करता हूँ। सारे जीव-जन्तु तेरे ही पैदा किए हुए हैं, तू सबमें समा रहा है। जो तेरे दास की निन्दा करता है, उसे तुम कुचल कर नष्ट कर देते हो। हे नानक! प्रभु के चरण-स्पर्श कर तथा चिन्ता छोड़कर अचिंत रह॥ २१॥

सलोक मः ३ ॥ आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥ नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सारा जगत आशा करता हुआ मर मिट जाता है परन्तु आशा नहीं मरती। हे नानक! सत्यस्वरूप परमात्मा के साथ चित्त लगाने से सब आशाएँ पूरी हो जाती हैं॥ १॥

मः ३ ॥ आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥ नानक निहचलु को नही बाझहु हरि के नाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ आशा-अभिलाषा तब मिट जाएँगी, जब इन्हें पैदा करने वाला भगवान इनका विनाश कर देगा। हे नानक! हरि के नाम के अलावा कोई भी वस्तु अनश्वर नहीं॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥ आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥ जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥ २२ ॥ १ ॥ सुधु

पउडी॥ भगवान ने स्वयं ही पूर्ण ढांचा बनाकर जगत की रचना की है। वह स्वयं ही साहूकार है, स्वयं ही व्यापारी एवं स्वयं ही हाट बाजार है। वह आप ही सागर, आप ही जहाज और आप ही खेवट है। वह आप ही गुरु एवं आप ही चेला है और आप ही घाट दिखाता है। हे नानक! तू उस परमात्मा का नाम-स्मरण कर और अपने सारे पाप दूर कर ले॥ २२॥ १॥ शुद्ध।

रागु गूजरी वार महला ५ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः ५ ॥ अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ अपने अन्तर्मन में गुरु की आराधना करो और जिह्वा से गुरु के नाम का जाप करो। अपने नेत्रों से सच्चे गुरु के दर्शन करो तथा कानों से गुरु का नाम सुनो। सतिगुरु

के प्रेम में रंग जाने से तुझे प्रभु के दरबार में आश्रय मिल जाएगा। हे नानक! जिस पर प्रभु कृपा करता है, उसे ही यह अमूल्य वस्तु देता है। कुछ विरले ही व्यक्ति होते हैं जो इस जगत में उत्तम कहलाते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥ २ ॥

महला ५॥ रक्षक प्रभु ने मेरी रक्षा की है और उसने स्वयं ही बचाकर मेरा कल्याण कर दिया है। गुरु के चरणों में लगने से मेरे कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं। जब प्रभु स्वयं दयालु हो गया है तो मैं अपने मन से उसे विस्मृत नहीं करता। संतजनों की संगति में रहकर भवसागर से पार हो गया हूँ। शाक्त, निन्दकों एवं दुष्टों का प्रभु ने क्षण में ही नाश कर दिया है। नानक के मन में उस मालिक की टेक है, जिसकी आराधना करने से सुख प्राप्त होता है और सभी दुःख दूर हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ अकुल निरंजन पुरखु अगमु अपारीऐ ॥ सचो सचा सचु सचु निहारीऐ ॥ कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ ॥ सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ ॥ इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ ॥ हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ ॥ प्रभ जीउ तुधु धिआए सोइ जिसु भागु मथारीऐ ॥ तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा कुल रहित, मायातीत, सर्वशक्तिमान, अगम्य एवं अपार है। वास्तव में सत्य का पुंज, परम-सत्य परमात्मा सत्य का रूप बनकर ही दिखाई देता है। हे प्रभु! यह सृष्टि तेरी पैदा की हुई है मगर कोई भी वस्तु काल्पनिक नहीं लगती। वह दाता सभी को भोजन देता है, जिन्हें उसने पैदा किया है और सभी को एक ही हुक्म रूपी धागे में पिरोकर उसने उनके भीतर अपनी ज्योति प्रकाशमान की है। उसके हुक्म से कई भवसागर में डूब जाते हैं और कई पार हो जाते हैं। हे पूज्य प्रभु! जिसके मस्तक पर भाग्य होता है, वही मनुष्य तुझे याद करता है। तेरी गति एवं अनुमान (शक्ति) जाने नहीं जा सकते, इसलिए मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥

सलोकु मः ५ ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान नउ निधि घर महि पाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि ॥ जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे मेहरबान परमात्मा! यदि तू खुश हो जाए तो अचिंत ही हमारे मन में निवास कर लेता है। हे मेहरबान! यदि तू खुश हो जाए तो हमारे हृदय रूपी घर में ही नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं। हे दयालु प्रभु! यदि तू प्रसन्न हो जाए तो मैं गुरु के मंत्र की साधना करता हूँ। नानक प्रार्थना करता है कि हे मेहरबान! जब तू प्रसन्न हो जाता है तो मैं सत्य में ही समा जाता हूँ॥ १॥

मः ५ ॥ किती बैहन्हि बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥ नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥ २ ॥

महला ५॥ कितने ही राजसिंहासन पर बैठते हैं और उनके लिए अनेक वाद्ययन्त्र बजते हैं। हे नानक! सत्यनाम के बिना किसी की भी मान-प्रतिष्ठा नहीं बची॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु धिआइन्हि बेद कतेबा सणु खड़े ॥ गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े ॥ ब्रहमे तुधु धिआइन्हि इंद्र इंद्रासणा ॥ संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥ पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीए ॥ ओति पोति निरंकार घटि घटि मउलीए ॥ कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ ॥ जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे स्वामी! वेद तथा कतेब साथ खड़े तेरी स्तुति कर रहे हैं। जो तेरे द्वार पर नतमस्तक पड़े हुए हैं, उनकी गणना नहीं की जा सकती। ब्रह्मा भी तेरी वन्दना करता है तथा इन्द्रासण पर विराजमान इन्द्र भी तुझे याद करता है। शंकर, विष्णु अवतार अपने मुख से हरि यश करते हैं। हे प्रभु! पीर-पैगम्बर, शेख और औलिया तुझे ही स्मरण करते हैं। हे निराकार परमात्मा! ताने-पेटे की भाँति हरेक जीव में तू ओत-प्रोत है। झूठ के कारण मानव का विनाश हो जाता है तथा धर्म के मार्ग पर वह प्रफुल्लित होता है। जहाँ-कहीं भी परमात्मा जीव को लगाता है, उधर ही वह लग जाता है॥ २॥

सलोकु मः ५ ॥ चंगिआईं आलकु करे बुरिआईं होइ सेरु ॥ नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ अज्ञानी मानव (शुभ कर्म) अच्छाई करने में आलस्य करता है लेकिन बुरा करने में शेर बन जाता है। हे नानक! आज अथवा कल मृत्यु ने आना ही है और मूर्ख मनुष्य के पैर में मौत का फँदा पड़ना ही है॥ १॥

मः ५ ॥ कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु ॥ नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥ २ ॥

महला ५॥ हमारे अनेक दुष्कर्मों का हित तुम से छिपा हुआ नहीं। हे नानक के परमेश्वर! तुम ही हमारे मन में सच्चे मित्र हो और तूने ही हमारी बुराइयों को ढंका हुआ है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥ नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥ अंम्रित नामु निधानु दासा घरि घणा ॥ तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥ कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥ पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥ आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥ मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरम सालीऐ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे दयालु परमेश्वर! मैं तुझसे यह दान माँगता हूँ कि मुझे अपने दासों का सेवक बना दो। हे दाता! तेरा नाम-स्मरण करने से ही मैं जीवित हूँ और नवनिधियाँ एवं राज प्राप्त करता हूँ। प्रभु के दासों के घर में अमृत नाम का भारी भण्डार है, उनकी संगति में विराज कर मैं अपने कानों से तेरा यश सुनकर आनंदित हो जाता हूँ। उनकी सेवा करने से मेरा शरीर पवित्र हो गया है। मैं उनके लिए पंखा करता हूँ, उनके लिए जल लाता हूँ, उनके लिए चक्की पीसता हूँ और उनके चरण धो कर खुश होता हूँ। हे प्रभु! मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि कर दीजिए, चूंकि अपने आप मैं कुछ भी नहीं कर सकता। मुझ निर्गुण को संतों की धर्मशाला में शरण दीजिए॥३॥

सलोक मः ५ ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे मेरे साजन ! मैं सदा ही तेरे चरणों की धूलि बना रहूँ। नानक की प्रार्थना है कि हे प्रभु जी ! मैंने तेरी ही शरण ली है और मैं हमेशा ही तुझे अपने पास देखता रहूँ॥ १॥

मः ५ ॥ पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग ॥ अठसठि तीरथ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग ॥ २ ॥

महला ५॥ हरि के चरणों में अपने मन को लगाकर असंख्य पतित जीव पवित्र-पावन हो गए हैं। हे नानक ! प्रभु का नाम ही अड़सठ तीर्थ (के समान) है लेकिन यह उसे ही प्राप्त होता है जिसके मस्तक पर भाग्य लिखा होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥ जिस नो करे रहंम तिसु न विसारदा ॥ आपि उपावणहार आपे ही मारदा ॥ सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥ जिस नो लाए सचि तिसहि उधारदा ॥ जिस दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ अपनी प्रत्येक सांस एवं ग्रास से परवरदिगार का नाम जपना चाहिए। जिस पर वह रहम करता है, वह उसे नहीं भुलाता। वह स्वयं ही दुनिया की रचना करने वाला है और स्वयं ही विनाशक है। जाननहार प्रभु सब कुछ जानता है एवं समझ कर अपनी रचना की तरफ ध्यान देता है। वह अपनी कुदरत द्वारा एक क्षण में ही अनेक रूप धारण कर लेता है और जिसे सत्य के साथ लगाता है, उसका उद्धार कर देता है। जिसके पक्ष में वह परमात्मा है, वह कदाचित नहीं हारता। उसका दरबार सदा अटल है, मैं उसे कोटि-कोटि नमन करता हूँ॥ ४॥

सलोक मः ५ ॥ कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइ ॥ जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे नानक ! काम, क्रोध एवं लोभ को छोड़कर उन्हें अग्नि में जला देना चाहिए। जब तक प्राण हैं, तब तक नित्य सत्यनाम का सुमिरन करना चाहिए॥ १॥

मः ५ ॥ सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि ॥ नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥ २ ॥

महला ५॥ अपने प्रभु का सिमरन करने से मैंने सभी फल प्राप्त कर लिए हैं। हे नानक ! मैंने नाम की आराधना की है और पूर्ण गुरु ने मुझे परमात्मा से मिला दिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥ तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥ तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥ जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ ॥ अंम्रितु साचा नाउ ओथै जापीऐ ॥ मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ ॥ जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ ॥ गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ जिसे भी गुरु ने उपदेश दिया है, वह इस संसार में मोह-माया के बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर गया है। उसकी विपदा दूर हो गई है तथा उसकी चिंता भी मिट गई है। उसके दर्शन करके जगत प्रसन्न हो जाता है। प्रभु के सेवक की संगति में रहकर प्राणी आनंदित हो जाता है और उसके पापों की मैल साफ हो जाती है। अमृत रूपी सत्य नाम का वहाँ जाप किया जाता है। मन को संतोष प्राप्त होता है और भूख से मन तृप्त हो जाता है। जिसके हृदय में नाम निवास

करता है, उसके बन्धन कट जाते हैं। गुरु की कृपा से कोई विरला व्यक्ति हरि धन का लाभ प्राप्त करता है॥ ५॥

सलोक मः ५ ॥ मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥ हरि कीरतन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ मैं अपने मन में सोचता रहता हूँ कि नित्य प्रभातकाल उठ कर हरि-कीर्तन का उद्यम करूँ। हे नानक के मित्र प्रभु! मुझे हरि-कीर्तन करने का उद्यम प्रदान कीजिए॥ १॥

मः ५ ॥ द्रिसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥ नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥ २ ॥

महला ५॥ अपनी दया-दृष्टि धारण करके प्रभु ने मेरी रक्षा की है और मेरा मन एवं तन सत्य में लीन रहते हैं। हे नानक! जो जीव-स्त्रियाँ अपने प्रभु को अच्छी लगती हैं, उनके हृदय की वेदना नाश हो जाती है॥ २॥

पउड़ी ॥ जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥ पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥ साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥ सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥ मन कउ होइ संतोखु धिआईऐ सदा हरि ॥ सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ अपने मन की पीड़ा संबंधी अपने गुरु के समक्ष प्रार्थना करो। अपनी समस्त चतुराइयाँ त्याग कर अपना मन-तन गुरु को अर्पित कर दो। गुरु के चरणों की पूजा करो चूंकि तेरी दुर्मति नष्ट हो जाए। संतजनों की संगति में रहकर विषम संसार-सागर से पार हो जाओ। अपने देव रूप सच्चे गुरु की श्रद्धा से सेवा करो, तदुपरांत परलोक में भयभीत होकर नहीं मरोगे। गुरुदेव एक क्षण में ही तुझे प्रसन्न कर देंगे और तेरे शून्य मन को गुणों से भरपूर कर देंगे। सदा हरि का ध्यान-मनन करने से मन को संतोष प्राप्त होता है। लेकिन सतिगुरु की सेवा में वही जुटता है, जिस पर प्रभु की मेहर हुई है॥ ६॥

सलोक मः ५ ॥ लगड़ी सुथानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥ नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ मेरा प्रेम पावन स्थान प्रभु-चरणों में लग गया है और मिलाप कराने वाले प्रभु ने स्वयं मिलाया है। हे नानक! इस संसार-सागर में लाखों लहरें उठ रही हैं परन्तु मेरा प्रियतम-प्रभु उन लहरों में मुझे डूबने नहीं देता॥ १॥

मः ५ ॥ बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामां ॥ २ ॥

महला ५॥ इस जगत रूपी भयानक वन में हरि-नाम रूपी साथी मिल गया है, जो दुःखों का नाशक है। हे नानक! मैं प्यारे संतों पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण कर दिए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥ न होवी पछोताउ तुध नो जपतिआ ॥ पहुचि

न सकै कोइ तेरी टेक जन ॥ गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ ॥ सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ ॥ रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जीवा सुणि सुणे ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु ! तेरे प्रेम में रंग जाने से सभी भण्डार प्राप्त हो जाते हैं और तेरा सुमिरन करने से जीव को पश्ताचाप नहीं होता। तेरे सेवक को तेरा ही सहारा है और कोई भी उसकी समानता नहीं कर सकता। पूर्ण गुरुदेव को वाह ! वाह ! कहता हूँ और अपने मन में उनको याद करके मैं सुख प्राप्त करता हूँ। गुरुदेव के पास प्रभु की महिमा का भण्डार है जो तकदीर से ही पाया जाता है। यदि सतिगुरु कृपा-दृष्टि कर दें तो प्राणी दोबारा नहीं भटकता। दया का सागर प्रभु प्राणी को अपना दास बनाकर स्वयं उसकी रक्षा करता है। मैं परमात्मा का 'हरि-हरि' नाम सुन-सुन कर जीवित हूँ॥ ७॥

सलोक मः ५ ॥ प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे मेरे मालिक ! तूने मेरी लाज बचाने के लिए अपने प्रेम का रेशमी वस्त्र दिया है। नानक का कथन है कि हे मेरे सॉई ! तू बड़ा चतुर एवं प्रवीण है किन्तु मैं तेरी महिमा नहीं जानता॥ १॥

मः ५ ॥ तैडै सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई ॥ जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ॥ २ ॥

महला ५॥ हे ईश्वर ! तेरा नाम-सुमिरन करने से मुझे सब कुछ मिल गया है तथा मुझे कोई मुश्किल नहीं आई। हे नानक ! जिसकी प्रतिष्ठा की रक्षा सच्चा मालिक परमात्मा करता है, उसे कोई मिटा नहीं सकता॥ २॥

पउड़ी ॥ होवै सुखु घणा दयि धिआइऐ ॥ वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ ॥ अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ ॥ पूरन होवै आस नाइ मंनि वसाइऐ ॥ कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइऐ ॥ गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ ॥ तिनि पाए सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ ॥ तूं सभना का खसमु सभ तेरी छाइऐ ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ भगवान का ध्यान करने से मनुष्य को महासुख मिलता है। हरि का गुणगान करने से हर प्रकार के रोग लुप्त हो जाते हैं। यदि प्रभु चित्त में आ जाए तो अन्तर्मन में ठंडक आ जाती है। नाम को मन में बसाने से आशा पूर्ण हो जाती है। यदि जीव अपना अहंत्व मिटा दे तो उसे कोई विघ्न नहीं आता। ज्ञान रूपी पदार्थ एवं बुद्धि गुरु से प्राप्त होते हैं। जिसे प्रभु स्वयं देता है, वह सबकुछ प्राप्त कर लेता है। हे परमेश्वर ! तू सबका मालिक है और सभी तेरी छत्रछाया में हैं॥ ८॥

सलोक मः ५ ॥ नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुंभै मंझि मुहबति तेरी ॥ तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे परमेश्वर ! जगत रूपी नदिया तैरते हुए मेरा पैर नहीं धंसता, क्योंकि मेरी तुझ से ही मुहब्बत है। तेरे चरणों में मेरा मन सिला हुआ है, जगत रूपी नदिया पार करने के लिए तू ही नानक की तुलहा एवं नाव है॥ १॥

मः ५ ॥ जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥ हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥ २ ॥

महला ५॥ जिनके दर्शन करने से दुर्मति नाश हो जाती है, वही हमारे मित्र हैं। हे नानक! मैंने सारा जगत खोज लिया परन्तु ऐसे विरले ही पुरुष मिलते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥ मन की कटीऐ मैलु साधसंगि वुठिआ ॥ जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि ॥ बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि ॥ तिसु सिउ लाइन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ ॥ ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ ॥ रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआईऐ ॥ जा आपे होइ दइआलु तां भगत संगु पाईऐ ॥ ६ ॥

पउडी॥ हे मालिक! तेरे भक्तों के दर्शन करने से तुम स्वयं ही हमारे मन में आ जाते हो। साधसंगति में रहने से मन की मैल दूर हो जाती है। भक्तजनों के शब्द को जपने से जन्म-मरण का डर दूर हो जाता है। संत माया संबंधी तमाम बन्धन खोल देते हैं, जिसके फलस्वरूप माया के दूत-काम, क्रोध, लोभ मोह इत्यादि लुप्त हो जाते हैं। संतजन उस ईश्वर के साथ हमारा प्रेम उत्पन्न कर देते हैं, जिसने इस सृष्टि की रचना की है। उस परमात्मा का निवास स्थान सबसे ऊँचा है, जो अगम्य एवं अपार है। हाथ जोड़कर रात-दिन अपनी प्रत्येक सांस से उसका ध्यान करना चाहिए। जब परमेश्वर स्वयं दयालु होता है तो भक्तों की संगति प्राप्त होती है॥ ६॥

सलोक मः ५ ॥ बारि विडानड़ै हुंमस धुंमस कूका पईआ राही ॥ तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ इस आश्चर्यजनक जगत रूपी जंगल में कोलाहल एवं मार्ग में लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। हे मेरे पति-परमेश्वर! मुझ नानक के चित्त की डोर तुझसे लगी हुई है, इसलिए मैं आनंद से जगत जंगल को पार कर रहा हूँ॥ १॥

मः ५ ॥ सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ॥ तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥ २ ॥

महला ५॥ उनकी संगति सच्ची है, जिनके साथ बैठकर भगवान का नाम-सिमरन किया जाता है। हे नानक! उनके साथ कदापि संगति नहीं करनी चाहिए, जिन्हें अपना ही कोई स्वार्थ होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥ होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ ॥ पाइआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ ॥ नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ ॥ ततु गिआनु लाइ धिआनु द्रिसटि समेटिआ ॥ सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥ हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥ परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥ १० ॥

पउडी॥ वही समय स्वीकार होता है, जब सच्चे गुरु से भेंट होती है। यदि मनुष्य साधु से संगति कर ले तो उसे दुःख नहीं लगते। यदि मनुष्य को निश्चित स्थान मिल जाए तो वह दोबारा गर्भयोनि में नहीं आता। उसे एक ब्रह्म ही सर्वत्र दिखाई देता है और सब ओर से दृष्टि समेटकर वह अपना ध्यान तत्व-ज्ञान से लगाता है। जो कुछ भी वह मुँह से बोलता है, वह सब प्रभु का ही जाप जपता है। प्रभु के हुक्म को समझ कर मनुष्य आनंदित हो जाता है और सुखपूर्वक रहता है।

जिन्हें परखकर परमात्मा ने अपने भण्डार में डाल दिया है, वे दोबारा खोटे घोषित नहीं होते ॥ १०॥

सलोकु मः ५ ॥ विछोहे जंबूर खवे न वंञनि गाखड़े ॥ जे सो धणी मिलंनि नानक सुख संबूह सचु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ विरह की पीड़ा जंबूर की भाँति इतनी असह्य है कि सहन नहीं की जा सकती। हे नानक! यदि मालिक-प्रभु मिल जाए तो सारे सच्चे सुख मिल जाते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ जिमी वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै भाहि ॥ नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥ २ ॥

महला ५॥ जमीन पानी में रहती है और लकडी अपने भीतर अग्नि को टिकाकर रखती है। हे नानक! उस मालिक की कामना कर, जो सभी जीवों का आधार है॥ २॥

पउड़ी ॥ तेरे कीते कंम तुधै ही गोचरे ॥ सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥ सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥ तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥ जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेइ लेहि ॥ अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ ॥ जिस नो होहि क्रिपालु सु नामु धिआईऐ ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ हे स्वामी! तेरे किए हुए कार्य तुझ पर ही निर्भर हैं। इस दुनिया में वही कुछ हो रहा है जो तू अपने हुक्म से करवा रहा है। मैं तेरी आश्चर्यजनक कुदरत को देखकर चकित हो गया हूँ। तेरे दास तेरी शरण में आ गए हैं, यदि तुम कृपा-दृष्टि धारण करो तो मेरी भी गति हो जाएगी। तेरे हाथ में नाम का भण्डार है, जो तुझे अच्छा लगता है, उसे तुम यह भण्डार दे देते हो। जिस व्यक्ति पर तू दयालु होता है, वही हरि-नाम का भण्डार प्राप्त करता है। हे अगम्य, अगोचर एवं अनन्त प्रभु! तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता। जिस पर तू कृपालु होता है वही तेरे नाम का ध्यान करता है॥ ११ ॥

सलोक मः ५ ॥ कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुञीआ ॥ सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ कलछियाँ भोजन के बर्तन पर चलती हैं परन्तु वह भोजन के स्वाद को नहीं जानतीं और स्वाद से खाली ही रहती हैं। हे नानक! वही मुख सुन्दर दिखाई देते हैं, जो प्रभु के प्रेम रस में लीन रहते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥ तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥ २ ॥

महला ५॥ खोजी गुरु के द्वारा मैंने उनकी खोज कर ली है, जिन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकारों ने मेरी हृदय रूपी फसल बर्बाद कर दी थी। नानक का कथन है कि हे पति-प्रभु! तूने गुरु रूपी बाड़ कर दी है और अब फसल नष्ट नहीं होगी॥ २॥

पउड़ी ॥ आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥ तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥ पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥ करम धरम ततु गिआनु संता संगु होइ ॥ जपीऐ अंम्रित नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ जिस नो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ पाईअन्हि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ हे भाई! उस परमात्मा की आराधना करो, जिसके पास सबकुछ है। वह स्वयं ही दोनों किनारों का मालिक है और एक क्षण में ही कार्य संवार देता है। तू सभी उपाय त्याग दे और उसकी ओट ले। भागकर उसकी शरण में जा और सर्वोत्तम सुख प्राप्त कर। शुभ कर्म, धर्म एवं तत्व ज्ञान संतजनों की संगति में प्राप्त होते हैं। अमृत नाम जपने से प्राणी को कोई विघ्न नहीं आता। जिस पर परमात्मा आप दयालु है, उसके मन में ही वह बसता है और उसकी प्रसन्नता से सभी खजाने प्राप्त हो जाते हैं॥ १२॥

सलोक मः ५ ॥ लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥ इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जब मेरे प्रियतम ने मुझ पर कृपा की तो खोजने योग्य ईश्वर को मैंने खोज लिया। हे नानक! एक ईश्वर ही जगत का रचयिता है, उसके सिवाय मुझे दूसरा कोई नजर नहीं आता॥ १॥

मः ५ ॥ पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै ॥ गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥ २ ॥

महला ५॥ सत्य का बाण तान कर दुर्जन पापों को पछाड़ दे। हे नानक! गुरु के मंत्र को याद करो, कोई दुःख नहीं सताएगा॥ २॥

पउड़ी ॥ वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥ जीअ जंत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥ दइआ धारी समरथि चुके बिल बिलाप ॥ नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि ॥ आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि ॥ तिसन बुझी आस पुंनी मन संतोखि ध्रापि ॥ वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ वह विश्व का निर्माता प्रभु धन्य-धन्य है, जिसने स्वयं हृदय शीतल कर दिया है। उस ईश्वर का सदैव जाप करना चाहिए जो जीव-जन्तुओं पर मेहरबान है, उस समर्थ प्रभु ने मुझ पर दया की है और मेरे सभी दुःख-क्लेश मिट गए हैं। पूर्ण गुरु के प्रताप से मेरे संताप, दुःख एवं रोग सभी भाग गए हैं। गरीबनिवाज परमात्मा ने स्वयं मेरी रक्षा करके मुझे स्थापित किया है और सभी बंधन काट कर उसने आप ही मुझे मुक्त कर दिया है। मेरी तृष्णा मिट गई है, आशा पूर्ण हो गई है और मेरा मन संतोषी एवं प्रसन्न हो गया है। वह मालिक प्रभु सबसे बड़ा और अपार है जो पुण्य एवं पाप से अलिप्त है॥ १३॥

सलोक मः ५ ॥ जा कउ भए क्रिपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिन पर प्रभु कृपालु हो जाता है, वे हरि-नाम ही जपते रहते हैं। हे नानक! सत्संगति में मिलने से जीव की प्रीति राम से लग जाती है॥ १॥

मः ५ ॥ रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लागै कोइ ॥ २ ॥

महला ५॥ हे भाग्यशाली जीवो! उस राम का नाम-सिमरन करो, जो जल, धरती एवं गगन में हर जगह मौजूद है। हे नानक! नाम की आराधना करने से जीव को कोई संकट नहीं आता॥ २॥

पउड़ी ॥ भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥ भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥ जिस नो होइ क्रिपालु तिस का दूखु जाइ ॥ भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ ॥ दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइ ॥ भगता एहु अधारु गुण गोविंद गाइ ॥ सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ ॥ पीवति अम्रित नामु जन नामे रहे अघाइ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ भक्तों का बोला हुआ हर वचन (भगवान को) मंजूर होता है और आगे सत्य के दरबार में काम आता है। हे प्रभु! भक्तों को तेरा ही सहारा है और वे तो सत्यनाम में ही लीन रहते हैं। जिस पर तू कृपालु हो जाता है, उसका दुःख-संताप नष्ट हो जाता है। हे दयानिधि! ये भक्त तेरे ही हैं, उन पर अपनी मेहर कर। दुःख, दर्द, बड़ा रोग एवं माया उनको स्पर्श नहीं कर सकती। गोविन्द का गुणगान ही भक्तों के जीवन का आधार है। वे सदा-सर्वदा दिन-रात एक ईश्वर का ही ध्यान करते रहते हैं और अमृत-नाम का पान करके नाम में ही तृप्त रहते हैं॥ १४॥

सलोक मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिसे ईश्वर का नाम भूल जाता है, उसे (पथ में) करोड़ों ही विघ्न लग जाते हैं। हे नानक! ऐसे लोग रात-दिन यूं रोते-चिल्लाते हैं जैसे सूने घर में कौआ कांव-कांव करता है॥ १॥

मः ५ ॥ पिरी मिलावा जा थीऐ साई सुहावी रुति ॥ घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऐ नित ॥ २ ॥

महला ५॥ वही ऋतु सुन्दर है, जब प्रियतम-प्रभु से मिलन होता है। हे नानक! उसे नित्य ही याद करते रहना चाहिए और एक घड़ी एवं मुहूर्त भर के लिए भी भुलाना नहीं चाहिए॥ २॥

पउड़ी ॥ सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऐ ॥ फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ ॥ दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऐ ॥ जिणि जिणि लैन्हि रलाइ एहो एना लोड़ीऐ ॥ त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ ॥ भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ ॥ गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऐ ॥ हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीऐ ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इतने शूरवीर एवं पराक्रमी हैं कि इन्होंने शक्तिशाली एवं हठीली सेना एकत्र कर ली है। ये पाँचों विकार किसी के रोकने पर भी नहीं रुकते। दस इन्द्रियाँ अवधूत पुरुषों को भी विषयों विकारों में लगाए रखती हैं। सभी पर विजय पाकर ये अपने साथ मिलाते जाते हैं और ये इसी बात की लालसा करते हैं। त्रिगुणात्मक दुनिया उनके वश में है और कोई भी उनसे संघर्ष नहीं कर सकता। भ्रम रूपी किला एवं माया की खाई को बताओ किस विधि से तोड़ा जा सकता है? पूर्ण गुरु की आराधना करने से यह भयानक दल फोड़ा जा सकता है इसलिए मैं रात-दिन उस गुरु के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा रहता हूँ॥ १५॥

सलोक मः ५ ॥ किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ ॥ कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ नित्य ही परमात्मा का गुणगान करने से सभी पाप उतर जाते हैं। हे नानक! यदि परमात्मा का नाम भूल जाए तो करोड़ों ही दुःख-क्लेश उत्पन्न हो जाते हैं॥ १॥

मः ५ ॥ नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥ हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ २ ॥

महला ५॥ हे नानक! सच्चे गुरु से भेंट होने पर जीवन से मुक्ति पाने की युक्ति मिल जाती है और फिर हँसते, खेलते, पहनते, खाते-पीते हुए भी मुक्ति हो जाती है॥ २॥

पउड़ी ॥ सो सतिगुरु धनु धंनु जिनि भरम गड़ु तोड़िआ ॥ सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ ॥ नामु निधानु अखुटु गुरु देइ दारूओ ॥ महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूओ ॥ पाइआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ ॥ जिता जनमु अपारु आपु पछानिआ ॥ महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव ॥ गुर पारब्रहम परमेसुर अपरंपर अलख अभेव ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ वह सतगुरु धन्य-धन्य है, जिसने भ्रम का दुर्ग ध्वस्त कर दिया है। वह सतगुरु स्तुति-योग्य है, जिसने मुझे भगवान से मिला दिया है। प्रभु-नाम का अक्षय भण्डार गुरु ने मुझे औषधि के रूप में दिया है और उसने इस औषधि से महाविकराल रोग दूर कर दिया है। मुझे प्रभु नाम-धन रूपी बहुत बड़ा खजाना हासिल हो गया है जिससे अपार जन्म का महत्व पहचान लिया है। सर्वकला समर्थ गुरुदेव की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती क्योंकि गुरू आप ही परब्रह्म-परमेश्वर अपरंपार, अलक्ष्य एवं अभेद सत्य का रूप है॥ १६॥

सलोकु मः ५ ॥ उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे जीव! तू नाम-सिमरन का उद्यम करते हुए अपना जीवन व्यतीत कर, इस साधना से तू सुख भोगेगा। हे नानक! नाम की आराधना करने से प्रभु मिल जाएगा और तेरी चिंता दूर हो जाएगी॥ १॥

मः ५ ॥ सुभ चिंतन गोबिंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥ २ ॥

महला ५॥ हे गोविन्द! मुझे शुभ चिंतन, सुमिरन एवं निर्मल साधु-संगति की देन प्रदान कीजिए। हे भगवान! नानक पर ऐसी कृपा करो कि वह तेरे नाम को एक घड़ी भर के लिए भी न भूले॥ २॥

पउड़ी ॥ तेरा कीता होइ त काहे डरपीऐ ॥ जिसु मिलि जपीऐ नाउ तिसु जीउ अरपीऐ ॥ आइऐ चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥ तिस नो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार ॥ सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥ सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥ तेरे दास धिआइनि तुधु तूं रखण वालिआ ॥ सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ हे स्वामी! जब सब कुछ तेरा किया ही घटित होता है तो हम क्यों डर अनुभव करें? जिसके साथ मिलकर नाम-सुमिरन किया जाता है उसे अपने प्राण अर्पण कर देने चाहिए। उस बेशुमार मालिक को मन में याद करने से जीव आनंदित हो जाता है। जिसके साथ निरंकार परमात्मा है, उसे कोई दुख स्पर्श नहीं कर सकता। सब कुछ उसके वश में है और कोई भी उसके हुक्म से बाहर नहीं। वह परम-सत्य प्रभु भक्तों के मन में निवास करता है और उनकी अन्तरात्मा में समा जाता है। हे भगवान! तेरे दास तेरा ही ध्यान करते हैं और तू ही उनका रखवाला है। तू ही सभी

जीवों के ऊपर समर्थ मालिक है और अपनी कृपा-दृष्टि से सबको कृतार्थ कर देता है॥ १७॥

सलोक मः ५ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि ॥ राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे मेरे ईश्वर ! काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह तथा दुष्ट वासना का नाश करके मेरी रक्षा करो। नानक सदैव ही तुझ पर बलिहारी जाता है॥ १॥

मः ५ ॥ खांदिआ खांदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु ॥ नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥ २ ॥

महला ५॥ (स्वादिष्ट व्यंजन) खाते-खाते मुँह घिस गया है और शरीर के सभी अंग पहनते-पहनते क्षीण हो गए हैं। हे नानक ! उनका जीवन धिक्कार योग्य है, जिनका सत्य के साथ प्रेम नहीं लगा॥ २॥

पउड़ी ॥ जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥ जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥ नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥ जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥ जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥ जिन्ही पछाता हुकमु तिन्ह कदे न रोवणा ॥ नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ हे पूज्य परमेश्वर ! जैसे-जैसे तेरा हुक्म होता है, वैसे ही दुनिया में होता है। जहाँ कहीं भी तू मुझे रखता है, वहाँ ही जाकर मैं खड़ा हो जाता हूँ। तेरे नाम के रंग से मैं अपनी दुर्मति को धोता हूँ। हे निराकार प्रभु ! तेरा नाम जप-जप कर मेरी दुविधा एवं भय दूर हो गए हैं। जो जीव तेरे प्रेम-रंग में लीन हैं, वे योनियों में नहीं भटकते। अपने नेत्रों से अन्दर-बाहर वे एक ईश्वर को ही देखते हैं। जो प्रभु-हुक्म को पहचानते हैं, वे कदाचित विलाप नहीं करते। हे नानक ! उन्हें प्रभु नाम का दान प्राप्त होता है, जिसे वह मन में पिरो लेते हैं॥ १८॥

सलोक मः ५ ॥ जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदड़ो खाक ॥ नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में भगवान को कभी याद नहीं किया लेकिन जब प्राण त्याग गया तो मिट्टी में मिल गया। हे नानक ! उस मूर्ख एवं नापाक शाक्त इन्सान ने दुनिया के साथ आसक्त होकर अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ १॥

मः ५ ॥ जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि ॥ जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥ २ ॥

महला ५॥ जिसने जीवन में हरि को याद किया और मृत्यु के समय भी हरि के प्रेम में लीन रहा, हे नानक ! ऐसे व्यक्ति ने अपना अनमोल मानव जन्म साधु की संगति में सफल कर लिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥ सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥ ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ ॥ मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥ जिन्ह मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ ॥ सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥ गुर पूरे की टेक नानक संम्हालिआ ॥ १९ ॥

पउडी॥ परमात्मा आप ही युगों-युगान्तरों से हम जीवों की रक्षा करने वाला है। हे करतार! तेरा नाम सत्य है और तेरे सत्य-नाम का ही सृष्टि के चारों ओर प्रसार है। तू किसी जीव के भीतर भी कम नहीं तथा कण-कण में मौजूद है। तू बड़ा मेहरबान है, सब कुछ करने में समर्थ है और तू स्वयं ही जीव से अपनी सेवा करवाता है। जिनके मन में तू निवास करता है, वे सदा सुखी रहते हैं। तू आप ही दुनिया बनाकर आप ही उसका पालन-पोषण करता है। हे अनंत एवं अपार प्रभु! सब कुछ तू आप ही है। हे नानक! मैं पूर्ण गुरु का सहारा लेकर नाम-स्मरण ही करता रहता हूँ॥ १६॥

सलोक मः ५ ॥ आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ ॥ सतिगुरि दिता हरि नामु अंम्रितु चखिआ ॥ साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै ॥ पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥ सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥ नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ आदि, मध्य तथा अन्त में सदा ही परमेश्वर ने हमारी रक्षा की है। सच्चे गुरु ने मुझे हरिनामामृत दिया है, जिसको मैंने बड़े स्वाद से चखा है। साधुओं की संगति में रात-दिन अपार हरि का गुणानुवाद करता रहता हूँ, जिसके फलस्वरूप जीवन के सभी मनोरथ प्राप्त हो गए हैं और अब मैं योनियों के चक्र में नहीं भटकूँगा। सब कुछ कर्त्तार के हाथ में है, जो खुद ही सब कारण बनाता है। नानक तो संतों की चरण-धूलि का ही दान माँगता है, जिससे वह भवसागर से तर जाएगा॥ १॥

मः ५ ॥ तिस नो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥ जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ ॥ सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ ॥ हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥ जिसु होआ आपि क्रिपालु सु नह भरमाइआ ॥ जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥ नानक जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित ॥ जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित ॥ २ ॥

महला ५॥ हे मानव! अपने मन में उसे ही बसा, जिसने तुझे उत्पन्न किया है। जिस व्यक्ति ने भी भगवान का ध्यान किया है, उसे सुख ही उपलब्ध हुआ है। गुरुमुख का आगमन ही स्वीकार्य है तथा उसी का जन्म सफल है। मालिक-प्रभु ने जो हुक्म दिया, उस हुक्म को समझकर वह कृतार्थ हो गया है। जिस पर परमात्मा आप कृपालु होता है, वह कभी भटकता नहीं। जो कुछ भी मालिक-प्रभु उसे देता है, उसमें ही वह सुख की अनुभूति करता है। हे नानक! जिस पर भी मित्र प्रभु दयालु होता है, उसे अपने हुक्म की सूझ प्रदान कर देता है। लेकिन जिसे वह आप कुमार्गगामी करता है, वह नित्य ही मर-मर कर जन्मता रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते ॥ प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि जोनी जुते ॥ मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ दुखि लगे बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते ॥ २० ॥

पउडी॥ ईश्वर निंदक मनुष्यों की जीवन लीला तत्काल ही समाप्त कर देता है और उन्हें क्षण मात्र भी टिकने नहीं देता। वह अपने दास का दुःख सहन नहीं कर सकता लेकिन निन्दकों को पकड़ कर योनियों में डाल देता है। वह निन्दकों को सिर के केशों से पकड़ कर पछाड़कर

उन्हें यम के मार्ग में धकेल देता है। वह उन्हें घोर नरक में भेज देता है, जहाँ वे दुःखी होकर रोते-चिल्लाते हैं। हे नानक ! (लेकिन) अपने दासों को गले से लगाकर सच्चा हरि उनकी रक्षा करता है॥ २०॥

सलोक मः ५ ॥ रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइ ॥ नानक नामि धिआइऐ बिघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे भाग्यशाली प्राणियो ! राम का नाम जपो, क्योंकि वह जल एवं धरती में पूर्ण तौर पर मौजूद है। हे नानक ! प्रभु-नाम का ध्यान करने से जीव को कोई विघ्न नहीं आता॥ १॥

मः ५ ॥ कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥ २ ॥

महला ५॥ जिस जीव को भगवान का नाम भूल जाता है, उसे करोड़ों ही विघ्न घेर लेते हैं। हे नानक ! वे रात-दिन ऐसे रोते रहते हैं जैसे सूने घर में कौआ कांव-कांव करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥ इछ पुंनी मनि आस गए विसूरिआ ॥ पाइआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥ जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥ सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि ॥ आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥ साहिबु सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ ॥ गुर प्रसादि नानक सचि समाइआ ॥ २१ ॥ १ ॥ २ ॥ सुधु

पउडी॥ दातार प्रभु का सिमरन करने से सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। मेरे मन की इच्छा एवं आशा पूर्ण हो गई है तथा सर्व प्रकार के दुःख-संताप नष्ट हो गए हैं। जिसे खोजता रहता था, उस प्रभु नाम रूपी भण्डार को प्राप्त कर लिया है। मेरी ज्योति परम-ज्योत में लीन हो गई है और मेरी साधना खत्म हो गई है। मैं अब उस घर में रहता हूँ, जहाँ सहज सुख एवं आनंद प्रवृत्त हो रहे हैं। मेरा आवागमन भी मिट गया है क्योंकि वहाँ जन्म-मरण नहीं होता। स्वामी एवं सेवक एकरूप ही हो गए हैं और दोनों एक समान ही दृष्टिगत होते हैं। हे नानक ! गुरु की कृपा से मैं सत्य में समा गया हूँ॥ २१॥ १॥ २॥ शुद्ध॥

रागु गूजरी भगता की बाणी ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥ ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥ १ ॥ हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥ जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पईहै ॥ २ ॥ दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि भरमईहै ॥ रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥ ३ ॥ भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै ॥ कहत कबीर राम नाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥ ४ ॥ १ ॥

हे जीव! पशु योनि में आकर जब तू चार पैर, दो सींग एवं मुँह से गूँगा बन जाएगा तो फिर कैसे ईश्वर का गुणगान करेगा ? उठते-बैठते तुझे डण्डे से मार पड़ेगी, तब तू अपना सिर कहाँ छिपा सकेगा ?॥ १॥ हरि-नाम के बिना तू उधारी बैल बन जाएगा, जिसका नाक फटा हुआ तथा कन्धा टूटा हुआ होता है और जो भूसा ही खाता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हे जीव! सारा दिन वन में भटकने के पश्चात् भी तेरा पेट नहीं भरेगा। तूने भक्तजनों का कहना तो माना नहीं, परिणामस्वरूप अपने कर्मों का फल अवश्य पाओगे॥ २॥ अब जीव दुःख-सुख भोगता तथा महा दुविधा में डूबा हुआ अनेक योनियों के चक्र में भटकेगा। हे जीव! प्रभु को भुला कर तूने हीरे जैसा अनमोल मनुष्य-जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है। ऐसा अवसर तुझे अब कहाँ प्राप्त होगा ?॥ ३॥ हे जीव! तेली के बैल एवं बन्दर की तरह भटकते हुए तेरी जीवन रूपी रात्रि मुक्ति प्राप्त किए बिना ही व्यतीत हो जाएगी। कबीर जी का कथन है कि हे जीव! राम नाम के बिना तू अपना सिर पटक पटक कर पछताएगा॥ ४॥ १॥

गूजरी घरु ३ ॥ मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ १ ॥ तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥ हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥ २ ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥ ३॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥ ४ ॥ २ ॥

कबीर की माता सुबक-सुबक रोती है और निवेदन करती है कि हे रघुराई ! ये (कबीर के) बच्चे किस तरह जीवित रह सकेंगे॥१॥ क्योंकि कबीर ने कातना एवं बुनना सभी छोड़ दिया है तथा हरि का नाम अपने शरीर पर लिख लिया है॥ १॥ रहाउ॥ कबीर अपनी माता से कहता है कि जितनी देर मैं नली के छेद में धागा पिरोता हूँ, उतनी देर तक तो मुझे अपना स्नेही राम भूल जाता है॥ २॥ मैं जाति का जुलाहा हूँ तथा मेरी बुद्धि ओछी (छोटी) है। हरि के नाम का लाभ मैंने प्राप्त कर लिया है॥ ३॥ कबीर जी कहते हैं कि हे मेरी माता! जरा ध्यान से सुनो, मेरा और इन बच्चों का दाता तो एक परमात्मा ही है॥ ४॥ २॥

गूजरी स्री नामदेव जी के पदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥ १ ॥ तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥ बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ तै उपाई भरम भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥ किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥ ३ ॥ एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥ जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥ कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥ ४ ॥ १ ॥

हे परमेश्वर ! यदि तू मुझे साम्राज्य भी दे दो तो इसमें मेरी कौन-सी बड़ाई है ? यदि तू मुझे भिखारी बनाकर भिक्षा मंगवा ले तो भी इसमें मेरा क्या कम हो जाएगा ?॥ १॥ हे मेरे मन! तू हरि का भजन कर, तुझे मोक्ष की पदवी प्राप्त हो जाएगी। इस तरह तेरा इस दुनिया में दोबारा जन्म-मरण नहीं होगा॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! सारी सृष्टि तूने स्वयं ही उत्पन्न की हुई है तथा स्वयं ही इसे भ्रम में भटकाया हुआ है। जिसे तू सुमति प्रदान करता है, वही तुझे समझता है॥ २॥ जब सतगुरु मिल जाता है तो मन की दुविधा नष्ट हो जाती है। हे भगवान! तेरे सिवाय मैं किसकी

पूजा करूँ? क्योंकि मुझे अन्य कोई गुणदाता दिखाई ही नहीं देता॥ ३॥ बड़ी हैरानी है कि एक पत्थर (मूर्ति बनाकर) श्रद्धा से पूजा जाता है और दूसरा पत्थर पैर से लताड़ा जाता है। यदि एक पत्थर देवता है तो दूसरा भी देवता ही है। नामदेव का कथन है कि हम तो (मूर्ति पूजा को छोड़कर केवल) परमात्मा की ही सेवा करते हैं॥ ४॥ १॥

गूजरी घरु १ ॥ मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥ आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥ १ ॥ कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥ जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥ २ ॥ जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ ॥ नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥ ३ ॥ २ ॥

हे बहन! उस ईश्वर में मोह-माया की मैल का लेशमात्र भी चिन्ह नहीं, वह तो मैल से परे है अर्थात् पवित्र-पावन है तथा चन्दन की सुगन्धि के समान सबके हृदय में आकर बसा हुआ है। उस ईश्वर को कभी किसी ने आते हुए नहीं देखा, इसलिए उसे कौन जान सकता है कि उसका स्वरूप कैसा है?॥ १॥ हे बहन! सर्वव्यापक प्रभु के गुणों के बारे में कौन वर्णन कर सकता है और उसके स्वरूप को कौन समझ सकता है? वह तो कुल रहित है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे आकाश में पक्षी उड़ता है किन्तु उसका रास्ता नजर नहीं आ सकता, जैसे जल में मछली तैरती है किन्तु उसका भी रास्ता दिखाई नहीं दे सकता॥ २॥ जैसे आकाश में मृगतृष्णा की भाँति जल से भरा घड़ा दिखाई दे किन्तु उसका निश्चित स्थान नहीं मिलता अर्थात् वैसे ही परमात्मा का निश्चित ठिकाना प्राप्त नहीं हो सकता। नामदेव का स्वामी विट्ठल भगवान तो ऐसे है, जिसने तीनों संताप नाश कर दिए हैं॥ ३॥ २॥

गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३   ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥ १ ॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥ बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा ॥ २ ॥ धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥ ३ ॥ तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥ ४ ॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कहि रविदास कवन गति मोरी ॥ ५ ॥ १ ॥

दूध तो गाय के थनों में ही बछड़े ने जूठा कर दिया है, फूलों को भँवरे ने सूँघा हुआ है तथा जल मछली ने अशुद्ध कर दिया है॥ १॥ हे मेरी माता! गोविन्द की पूजा-अर्चना करने के लिए मैं कौन-सी भेंट-सामग्री अर्पित करूँ? मुझे कोई अन्य अनूप सुन्दर फूल नहीं मिल सकता, क्या इसके अभाव से प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकूँगा?॥ १॥ रहाउ॥ जहरीले साँपों ने चन्दन के पेड़ को लिपेटा हुआ है। विष एवं अमृत सागर में साथ-साथ ही बसते हैं॥ २॥ हे प्रभु! धूप, दीप, नैवेद्य एवं सुगन्धियों से तेरा सेवक कैसे पूजा कर सकता है? क्योंकि ये भी अशुद्ध ही हैं॥ ३॥ अपना तन-मन भगवान को अर्पण करके पूजा की जाए तो गुरु की कृपा से निरंजन प्रभु को पाया जा सकता है॥ ४॥ रविदास का कथन है कि हे ईश्वर! यदि मुझसे तेरी पूजा-अर्चना नहीं हो सकी तो फिर आगे मेरी क्या गति होगी॥ ५॥ १॥

गूजरी स्री तिलोचन जीउ के पदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ हिरदै कमलु घटि ब्रहमु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥ १ ॥ भरमे भूली रे जै चंदा ॥ नही नही चीन्हिआ परमानंदा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥ भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥ २ ॥ काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥ लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥ ३ ॥ काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥ बदति तिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥ ४ ॥ १ ॥

यदि अन्तर मैला है और उसे निर्मल नहीं किया तथा बाहर से चाहे उदासीन का वेष धारण किया हुआ है तो इसका क्या अभिप्राय है? हे भाई! अपने हृदय कमल में ब्रह्म को न पहचान कर क्यों संन्यासी बने हुए हो?॥ १॥ हे जय चन्द! सारा संसार भ्रम में पड़कर कुमार्गगामी हो गया है और इसने परमानंद प्रभु को अनुभव नहीं किया॥ १॥ रहाउ॥ घर-घर से भिक्षा लेकर खा-खाकर पेट को मोटा कर लिया है और माया की लालसा में गुदड़ी एवं कानों में कुण्डल धारण करके घूमते फिरते हो। तूने अपने शरीर पर श्मशानघाट की भस्म लगाई हुई है किन्तु गुरु के बिना तुझे सत्य का पता नहीं लगा॥ २॥ किसे जप रहे हो, कैसी तपस्या-साधना में मगन हो और क्यों जल का मंथन कर रहे हो? उस निर्लिप्त परमात्मा का सिमरन कर, जिसने चौरासी लाख योनियों को पैदा किया है॥३॥ हे भगवा वेषधारी योगी! तू क्यों हाथ में कमण्डल लेकर अड़सठ तीर्थों पर भटक रहा है? त्रिलोचन का कथन है कि हे नश्वर जीव! ध्यानपूर्वक सुन, यदि अन्न के दाने नहीं हैं तो इसे गहाने का कोई अभिप्राय नहीं॥ ४॥ १॥

गूजरी ॥ अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥ १ ॥ अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥ २ ॥ अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ३ ॥ अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥ ४ ॥ अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबरु वा के रिदै बसै ॥ ५ ॥ २ ॥

जो व्यक्ति अन्तकाल लक्ष्मी (धन-दौलत) को याद करता है और इसी चिन्ता में डूबकर प्राण त्याग देता है तो मरकर बार-बार सर्पयोनि में आता रहता है॥ १॥ अरी बहन! मुझे गोबिन्द का नाम कदापि न भूले॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति मृत्यु के समय अपनी स्त्री को याद करता रहता है और इसी चिन्ता में उसके प्राण पखेरु हो जाते हैं तो वह बार-बार वेश्या की योनि में जन्म लेता रहता है॥ २॥ जिन्दगी के अन्तिम क्षणों में जो व्यक्ति अपने पुत्रों को ही याद करता रहता है और इसी स्मृति में मर जाता है तो वह बार-बार सूअर की योनि में जन्म लेता रहता है॥ ३॥ जीवन के अन्तिम क्षणों में जो व्यक्ति घर-महल में ही ध्यान लगाए रखता है और इसी चिंता में प्राण त्याग देता है तो वह बार-बार प्रेत योनि में अवतरित होता है॥ ४॥ अन्तकाल (मृत्यु के क्षणों में) जो मनुष्य नारायण का सिमरन करता है और इसी स्मृति में प्राण त्याग देता है तो त्रिलोचन का कथन है कि वह मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है तथा उसके हृदय में आकर ईश्वर निवास कर लेता है॥ ५॥ २॥

गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥ परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥ १ ॥ केवल राम नाम मनोरमं ॥ बदि अंम्रित तत मइअं ॥ न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥ भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसंनमिदं ॥ २ ॥ लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥ तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥ ३ ॥ हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥ जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥ ४ ॥ गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥ जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सरब गतं ॥ ५ ॥ १ ॥

आदिपुरुष परमात्मा परम पवित्र है, वह उपमा से रहित है, वह सदैव सत्य एवं सर्वगुणसम्पन्न है। वह परम अद्‌भुत परमात्मा प्रकृति से परे है, जिसका चिन्तन करने से सभी परमगति प्राप्त कर लेते हैं, वह सर्वव्यापक है॥ १॥ केवल राम के सुन्दर नाम का सुमिरन करो जो अमृत से भरपूर एवं परम तत्त्व यथार्थ का स्वरूप है। जिसका सिमरन करने से जन्म-मरण, बुढ़ापा, चिन्ता एवं मृत्यु का डर दुःखी नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ यदि यमदूत इत्यादि को पराजित करना चाहते हो, तो स्वस्ति स्वरूप प्रभु का यशोगान करने के शुभ कर्म करता जा। प्रभु वर्तमान काल, भूतकाल एवं भविष्य काल में सदैव ही पूर्ण रूप से व्यापक एवं परम प्रसन्न स्वरूप है॥ २॥ यदि शुभ आचरण का मार्ग पाना चाहते हो तो लोभ एवं पराए घर पर दृष्टि रखना त्याग दो। सभी दुष्कर्म एवं दुर्मति को त्याग दो और चक्रधर प्रभु की शरण में आ जाओ॥ ३॥ हरि के प्रिय भक्त मन, वचन एवं कर्म से पावन होते हैं इसलिए मन, वचन एवं कर्म द्वारा हरि की भक्ति करो। योग-तपस्या, दान-पुण्य एवं यज्ञ इत्यादि का इस दुनिया में क्या अभिप्राय है॥ ४॥ हे मानव! गोविन्द का ही नाम-सुमिरन एवं जाप करो क्योंकि वही सर्व सिद्धियों का श्रेष्ठ स्थान है। जयदेव भी उस प्रभु की शरण में आया है जो वर्तमान काल, भूतकाल एवं भविष्यकाल में सब की मुक्ति करने वाला है॥ ५॥ १॥

★★★

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ओंकार एक है, उसका नाम सत्य है। वह सम्पूर्ण सृष्टि को बनाने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है। वह निडर है, उसकी किसी से कोई शत्रुता नहीं, वह कालातीत, वह जन्म-मरण के चक्र से रहित है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ है और उसकी लब्धि गुरु-कृपा से होती है।

रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥

सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥ जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥ हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥ १ ॥ सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥ जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥ २ ॥ १ ॥

जो लोग ठाकुर जी के सेवक बन गए हैं, उनकी लगन उसमें ही लग गई है। हे मालिक ! जो व्यक्ति गुरु-उपदेश द्वारा तेरा यश गाते हैं, उनके मुख भाग्यवान बन गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर के नाम में लगन लगाने से मोह-माया के बन्धन-जाल कट जाते हैं। मन को मुग्ध करने वाले गुरु ने हमारा मन मोह लिया है तथा उसके दर्शन करके हम आश्चर्यचकित हो गए हैं॥ १॥ मैं अपनी जीवन रूपी सारी रात्रि में मोह-माया के अन्धकार में ही सोई रही किन्तु गुरु की थोड़ी-सी कृपा से अब जाग चुकी हूँ। हे नानक के प्रभु सुन्दर स्वामी ! मुझे तुझ जैसा कोई नजर नहीं आता॥ २॥ १॥

देवगंधारी ॥ मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥ हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥ लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥ १ ॥ एको प्रिउ सखीआ सभ प्रिअ की जो भावै पिर सा भली ॥ नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥ २ ॥ २ ॥

हे हरि के संतजनो ! मुझे बताओ, मेरा सुन्दर प्रभु किस गली में मिलेगा ? मेरा मार्गदर्शन करो, ताकि मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे चलती जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ मेरे प्रिय प्रभु के वचन मन को मीठे लगते हैं, अब यही युक्ति भली बनी है। चाहे वह लटूरी हो चाहे छोटे कद की हो यदि प्रभु को भाती हो तो वह सुन्दर बन जाती है। वह विनम्र होकर पति-प्रभु से मिल जाती है॥ १॥ प्रियतम प्रभु तो एक ही है किन्तु उस प्रियतम की अनेक सखियाँ (जीव-स्त्रियाँ) हैं। जो प्रियतम को अच्छी लगती है वही भाग्यशालिनी है। नानक गरीब बेचारा क्या कर सकता है ? जो परमात्मा को अच्छा लगता है, वह उस मार्ग पर चल देता है॥ २॥ २॥

देवगंधारी ॥ मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥ गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ ॥ कोई मेलै मेरा प्रीतमु

पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥ १ ॥ सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अंम्रितु पी झोलीऐ ॥ गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ॥ २ ॥ ३ ॥

हे मेरे मन! मुख से हरि का 'हरि-हरि' नाम ही बोलना चाहिए। गुरुमुख बनकर हरि-प्रेम में रंग गई हूँ और हरि-प्रेम में ही हृदय रूपी मेरी चोली भीगी हुई है॥ १॥ रहाउ॥ उस प्रियतम हरि के मिलन हेतु मैं दीवानी बावली होकर फिर रही हूँ। जो कोई भी मुझे मेरे प्रियतम प्यारे से मिलाएगा, मैं उसकी दासियों की दासी बनी रहूँगी॥ १॥ अपने सतिगुरु महापुरुष को प्रसन्न कर लो और हरि-नाम रूपी अमृत का पान करके झूमो। गुरु की कृपा से नानक ने अपनी देहि में ही हरि को खोज कर प्राप्त कर लिया है॥ २॥ ३॥

देवगंधारी ॥ अब हम चली ठाकुर पहि हारि ॥ जब हम सरणि प्रभू की आई राखु प्रभू भावै मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि ॥ कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीओ है ढारि ॥ १ ॥ जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि ॥ जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ॥ २ ॥ ४ ॥

अब मैं हर प्रकार से हार कर अपने ठाकुर जी के पास आ गई हूँ। अब जब मैं प्रभु की शरण में आ गई हूँ तो हे प्रभु! आप चाहे मुझे मार दे अथवा बचा लीजिए॥ १॥ रहाउ॥ लोगों की चतुराई एवं उपमा को मैंने अग्नि में जला दिया है। अब कोई चाहे मुझे भला कहे अथवा बुरा कहे, मैंने तो अपना तन प्रभु को न्यौछावर कर दिया है॥ १॥ हे ठाकुर प्रभु! जो कोई भी तेरी शरण में आता है, कृपा धारण करके तुम उसकी रक्षा करो। हे पूज्य परमेश्वर! दास नानक ने तेरी ही शरण ली है, तू उसकी लाज-प्रतिष्ठा बरकरार रखना॥ २॥ ४॥

देवगंधारी ॥ हरि गुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥ देखि देखि जीवा साध गुर दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ करि मिलह जूठारी ॥ हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥ १ ॥ हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि दुसट दुसटारी ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥ २ ॥ ५ ॥

जो हरि का गुणगान करता है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। मैं उस साधु गुरुदेव के दर्शन देख-देखकर जीवित हूँ, जिसके हृदय में परमात्मा का नाम बसा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ हे स्वामी-प्रभु! तुम पवित्र-पावन सद्पुरुष हो लेकिन मैं अपवित्र तुझे कैसे मिल सकता हूँ? हमारे अन्तर्मन में कुछ और ही होता है तथा मुँह में कुछ और ही होता है। हम कर्महीन एवं असत्यवादी हैं॥ १॥ हे मेरे स्वामी हरि! बाहरी दिखावे के तौर पर मैं तेरा नाम-सिमरन करता हूँ परन्तु अपने हृदय के भीतर मैंने दुष्टों जैसी दुष्टता धारण की हुई है। हे स्वामी! नानक ने तेरी ही शरण ली है, जैसे तुझे भाता है, वैसे ही उसकी रक्षा करो॥ २॥ ५॥

देवगंधारी ॥ हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी ॥ जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी ॥ जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥ १ ॥ जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी ॥ नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥ २ ॥ ६ ॥ छका १

जैसे एक वेश्या के घर कोई पुत्र जन्म लेता है तो उसका नाम धिक्कार योग्य नाजायज या हरामजादा पड़ जाता है। वैसे ही हरि-नाम के बिना सुन्दर व्यक्ति भी नकटा अथवा निर्लज्ज कहलाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिनके हृदय में हरि-स्वामी का निवास नहीं, वे कुरूप एवं कोढ़ी हैं। जैसे निगुरा पुरुष बहुत बातें जानता है, लेकिन हरि के दरबार में दुराचारी ही है॥ १॥ मेरा स्वामी जिन पर दयालु हो जाता है, वे साधुजनों के चरण-स्पर्श करते रहते हैं। हे नानक! सत्संगति में मिलकर पतित मनुष्य भी पवित्र पावन बन जाते हैं और सच्चे गुरु के मार्गदर्शन पर चलकर जन्म-मरण से छूट जाते हैं॥ २॥ ६॥ छका १॥ (छः पंक्तियों का जोड़)

देवगंधारी महला ५ घरु २ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

माई गुर चरणी चितु लाईऐ ॥ प्रभु होइ क्रिपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाईऐ ॥ घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रहमु दिखाईऐ ॥ १ ॥ उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ ॥ सुखदाते दुख भंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ॥ २ ॥ १ ॥

हे मेरी माता! सदा गुरु-चरणों में चित्त लगाना चाहिए। जब प्रभु कृपालु हो जाता है तो हृदय कमल खिल जाता है। हमें सदा-सर्वदा ही हरि का ध्यान करते रहना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ एक परमात्मा ही जीवों के मन में रहता है और वही सारी दुनिया में निवास करता है। सत्य तो यही है कि एक ईश्वर ही सबके हृदय में समाया हुआ है। घर में एवं घर से बाहर हर जगह सर्वव्यापक पूर्ण ब्रह्म हरि ही दृष्टिगत होता है॥ १॥ हे प्रभु! बहुत सारे सेवक एवं मुनिजन भी तेरी ही स्तुति करते हैं परन्तु कोई भी तेरा अन्त नहीं जानता। हे सुखों के दाता! हे दुखनाशक स्वामी! नानक सदैव ही तुझ पर बलिहारी जाता है॥ २॥ १॥

देवगंधारी ॥ माई होनहार सो होईऐ ॥ राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कह फूलहि आनंद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ ॥ कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ॥ १ ॥ कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ॥ २ ॥ २ ॥

हे मेरी माता! जो कुछ दुनिया में होता है, परमात्मा के हुक्म अनुसार ही होता है। प्रभु अपनी जगत-रचना में सक्रिय है, वह मानव को कहीं लाभ पहुँचा रहा है और किसी से कुछ छीन रहा है अर्थात् मानव के अपने कर्मों का ही लेन-देन है॥ १ ॥ रहाउ॥ किसी समय मानव आनंद में प्रफुल्लित रहता है व किसी समय वह विषयादि विकारों से दुखी होता है। कभी वह हँसता है और कभी वह रुदन करता है। कभी अभिमानी मानव अभिमान की मैल से भरा हुआ होता है और कभी वह सत्संगति में शामिल होकर मैल को धोकर पावन हो जाता है॥१॥ ईश्वर के किए हुए को कोई भी जीव मिटा नहीं सकता। मुझे उस ईश्वर के समान कोई दूसरा दिखाई नहीं देता। हे नानक! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसकी कृपा से सुखपूर्वक रहा जा सकता है॥ २॥ २॥

देवगंधारी ॥ माई सुनत सोच भै डरत ॥ मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जो कहै सोई भल मानउ नाहि न का बोल करत ॥ निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ॥ १ ॥ सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥ निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ॥ २ ॥ ३ ॥

हे मेरी माता ! जब मैं काल (मृत्यु) के बारे में सुनता एवं सोचता हूँ तो मेरा मन घबरा कर डर जाता है। अब मेरे-तेरे का अभिमान छोड़कर मैं स्वामी की शरण में आ गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जो कुछ भी स्वामी कहता है, उसे मैं भला मानता हूँ, जो कुछ भी वह बोलता है, मैं उसे मना नहीं कर सकता। हे मालिक ! तू निमिष मात्र भी मेरे हृदय से विस्मृत न होना क्योंकि तुझे भुला कर मैं जीवित नहीं रह सकता॥ १॥ सृष्टि का रचयिता पूर्ण प्रभु सुख प्रदान करने वाला है, वह मेरी बहुत सारी मूर्खता को सहन करता रहता है। हे नानक ! मैं गुणहीन, कुरूप एवं कुलहीन हूँ परन्तु मेरा स्वामी-पति आनंद का प्रत्यक्ष रूप है॥ २॥ ३॥

देवगंधारी ॥ मन हरि कीरति करि सदहूं ॥ गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूं ॥ जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइओ कबहूं ॥ १ ॥ सुखु आइओ भै भरम बिनासे क्रिपाल हूए प्रभ जबहू ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साधसंगि तजि लबहूं ॥ २ ॥ ४ ॥

हे मन ! सदैव ही हरि का कीर्ति-गान किया कर। प्रभु का यश गाने, उसकी महिमा सुनने एवं नाम-जपने से सभी जीव चाहे वे उच्च कुल से हो अथवा निम्न कुल से प्रभु सबका उद्धार कर देता है॥ १॥ रहाउ॥ जब जीव यह विधि समझ लेता है तो वह उस में ही समा जाता है, जिससे वह उत्पन्न हुआ था। जहाँ कहीं भी यह देहि धारण की गई थी, किसी समय भी यह आत्मा वहाँ टिकने नहीं दी गई॥ १॥ जब प्रभु कृपालु हो गया तो मन में सुख का निवास हो गया और भय एवं भ्रम नष्ट हो गए। हे नानक ! साधसंगत में लोभ को छोड़ने से मेरे सभी मनोरथ पूरे हो गए हैं॥ २॥ ४॥

देवगंधारी ॥ मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥ नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अडंबर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥ जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥ १ ॥ दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥ सरब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे मेरे मन ! जैसे भी हो सके, अपने प्रभु को अच्छा लगने लगूँ, इसलिए मैं नीचों से भी नीच, विनम्र एवं अत्यन्त गरीब बन कर प्रभु को पुकारता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ माया के अनेक आडम्बर व्यर्थ हैं और इनसे मैं अपनी प्रीति कम करता हूँ। जैसा मेरा स्वामी सुख की अनुभूति करता है, मैं उसी में शोभा प्राप्त करता हूँ॥ १॥ मैं तो प्रभु के दासानुदास की चरण-धूलि हूँ और दासों की श्रद्धा से सेवा करता हूँ। हे नानक ! मैं अपने मुँह से प्रभु का नाम बोलते हुए ही जीवित रहता हूँ। इसलिए अब मुझे सर्व सुख एवं बड़ाई मिल गए हैं॥ २॥ ५॥

देवगंधारी ॥ प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ ॥ तुमरी क्रिपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ ॥ नामु जपत महा सुखु पाइओ चिंता रोगु बिदारिओ ॥ १ ॥ कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिओ ॥ माइआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे प्रभु जी ! तेरी कृपा से मैंने अपने भ्रम को मिटा दिया है। मैंने अपने मन में यही विचार किया है कि तुम्हारी कृपा से सभी मेरे अपने हैं कोई पराया नहीं॥ १॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर ! तेरी सेवा-भक्ति से करोड़ों ही अपराध मिट जाते हैं और तेरे दर्शन दुःख दूर कर देते हैं। तेरे नाम का

जाप करने से मैंने महा सुख प्राप्त कर लिया है और मेरी चिंता एवं रोग मिट गए हैं॥ १॥ साधसंगत में रहकर मैं काम, क्रोध, लोभ, झूठ एवं निन्दा इत्यादि को भूल गया हूँ। हे नानक! कृपानिधि परमेश्वर ने आप मेरे माया के बन्धन काट कर मुझे मुक्त कर दिया है॥ २॥ ६॥

देवगंधारी ॥ मन सगल सिआनप रही ॥ करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु मेटि पए सरणाई इह मति साधू कही ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥ १ ॥ जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही ॥ खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥ २ ॥ ७ ॥

मेरे मन की तमाम चतुराईयाँ समाप्त हो गई हैं। हे नानक! मेरा स्वामी प्रभु ही सब कुछ करने एवं जीवों से करवाने में समर्थ है, इसलिए मैंने उसकी ओट ली है॥ १॥ रहाउ॥ अहंत्व को मिटाकर मैं प्रभु की शरण में आ गया हूँ। यह सुमति मुझे साधु ने कही है। प्रभु की आज्ञा का पालन करके मैंने सुख प्राप्त कर लिया है और मेरा भ्रम का अन्धेरा दूर हो गया है॥ १॥ हे मेरे स्वामी प्रभु! तुझे सर्वगुणसम्पन्न एवं प्रवीण समझ कर मैंने तेरी शरण की अभिलाषा की है। हे क्षण भर में बनाने एवं विनाश करने वाले परमात्मा! तेरी कुदरत का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ २॥ ७॥

देवगंधारी महला ५ ॥ हरि प्रान प्रभू सुखदाते ॥ गुर प्रसादि काहू जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥ रंगि तुमारै लाल भए है राम नाम रसि माते ॥ १ ॥ महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रिसटि तुहारी हाते ॥ सोवत जागि हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥ २ ॥ ८ ॥

परमात्मा ही प्राण एवं सुखदाता है, गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही इस सत्य को समझता है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रियतम प्रभु! तेरे संत तुझे अति प्रिय हैं और उन्हें काल नहीं निगलता। वे तेरे प्रेम-रंग में लाल हो गए हैं तथा राम-नाम के रस में ही मस्त रहते हैं॥ १॥ हे प्रभु! तेरी करुणा-दृष्टि से भारी अपराध, करोड़ों दोष एवं रोग नाश हो जाते हैं। हे नानक! मैं गुरु के चरणों में आकर सोते-जागते सदैव हरि-परमेश्वर का यशोगान करता रहता हूँ॥ २॥ ८॥

देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी ॥ सुखदाई जीअन को दाता अंम्रितु जा की बैणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥ करि किरपा करि लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥ १ ॥ करमु धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निरमल करणी ॥ छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥ २ ॥ ६ ॥

उस प्रभु को मैंने अपने नयनों से हर जगह देखा है। वह सुख प्रदान करने वाला जीवों का दाता है तथा उसकी वाणी अमृत समान मधुर है॥ १॥ रहाउ॥ संतों ने मेरा अज्ञान का अन्धेरा मिटा दिया है और गुरु ने मुझे जीवनदान दिया है। उसने अपनी कृपा धारण करके मुझे अपना बना लिया है, जिसके फलस्वरूप तृष्णाग्नि में जलता हुआ मेरा मन शीतल हो गया है॥ १॥ मुझ में कुछ भी शुभ कर्म एवं धर्म उत्पन्न नहीं हुए और न ही मुझ में निर्मल आचरण प्रगट हुआ है। हे नानक! चतुरता एवं संयम को छोड़कर मैं गुरु के चरणों में विराज गया हूँ॥ २॥ ६॥

देवगंधारी ५ ॥ हरि राम नामु जपि लाहा ॥ गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जन पहि आहा ॥ तिन्हा परापति एहु

निधाना जिन्ह कै करमि लिखाहा ॥ १ ॥ से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥ सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह हरि हरि नामु विसाहा ॥ २ ॥ १० ॥

हे मानव ! परमेश्वर के नाम का जाप करो, इसी में तेरी (अमूल्य मानव-जन्म की) उपलब्धि है। इस प्रकार तुझे मोक्ष, सहज सुख एवं आनंद की प्राप्ति हो जाएगी और मृत्यु की फाँसी कट जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ खोजते-खोजते एवं विचार करते हुए मुझे ज्ञान हुआ है कि हरि का नाम संतजनों के पास है। लेकिन जिनके भाग्य में लिखा होता है उन्हें ही इस नाम-भण्डार की उपलब्धि होती है॥ १॥ हे नानक ! वही भाग्यशाली हैं, वही प्रतिष्ठित, वही पूर्ण साहूकार हैं और वही सुन्दर, बुद्धिमान एवं मनोरम हैं, जिन्होंने परमेश्वर के नाम को खरीदा है॥ २॥ १०॥

देवगंधारी ५ ॥ मन कह अहंकारि अफारा ॥ दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥ तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥ १ ॥ अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥ करन करावनहार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ॥ २ ॥ ११ ॥

हे मन ! क्यों अहंकार में अकड़कर फूले हुए हो ? तेरे तन के भीतर अपवित्र, अपावन दुर्गन्ध मौजूद है और जो कुछ भी दृष्टिमान होता है, सब नश्वर है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! तू उस प्रभु की आराधना कर, जिसने तुझे पैदा किया है और जो जीवन एवं प्राणों का सहारा है। प्रभु को त्याग कर मूर्ख गंवार प्राणी सांसारिक पदार्थों से लिपटा हुआ है जिसके फलस्वरूप वह जन्मता-मरता रहता है॥ १॥ हे रखवाले प्रभु ! मैं तो अन्धा, गूंगा, पिंगुला (अपंग) एवं बुद्धिहीन हूँ, कृपा करके मेरी रक्षा कीजिए। हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही करने एवं करवाने में समर्थ है, किन्तु जीव बेचारा कितना विवश है॥ २॥ ११॥

देवगंधारी ५ ॥ सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥ सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद दिनु रैनि साझ सवेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ घरी न मुहतु न चसा बिलंबहु कालु नितहि नित हेरै ॥ १ ॥ अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥ नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥ २ ॥ १२ ॥ छके २ ॥

हे प्राणी ! वह प्रभु तेरे निकट और करीब ही है। इसलिए दिन-रात, प्रातःकाल-सायंकाल उस गोबिंद का ध्यान-सुमिरन कर और उसका गुणानुवाद करता जा॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! साधसंगत में रहकर हरि-नाम का जाप करके अपने दुर्लभ शरीर का उद्धार कर ले। तू एक घड़ी, मुहूर्त एवं पल भर का भी (सिमरन करने में) विलम्ब मत कर, क्योंकि मृत्यु तुझे नित्य ही देख रही है॥ १॥ हे जग के रचयिता ! मुझे दुनिया की अन्धी बिल से बाहर निकाल ले, तेरे घर में किसी पदार्थ का अभाव नहीं। हे परमात्मा ! नानक को अपने नाम का आधार दीजिए, चूंकि नाम में परम सुख एवं आनंद विद्यमान है॥ २॥ १२॥ छके २॥

देवगंधारी ५ ॥ मन गुर मिलि नामु अराधिओ ॥ सूख सहज आनंद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥ भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का मारगु साधिओ ॥ १ ॥ भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥ बलिहारै नानक लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिओ ॥ २ ॥ १३ ॥

हे मन! तूने गुरु से मिलकर परमात्मा के नाम की आराधना की है, इस तरह तूने सहज सुख, आनंद, हर्षोल्लास एवं जीवन की अच्छी बुनियाद रख ली है॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा ने अपनी कृपा करके तुझे अपना दास बना लिया है और तेरे माया के बन्धन समाप्त कर दिए हैं। तूने गोविन्द के गुण गाकर प्रेम-भक्ति से मृत्यु का मार्ग जीत लिया है॥ १॥ तुझ पर प्रभु की कृपा हो गई है, तेरी अहंकार की मैल उतर गई है और तुझे अमूल्य नाम-पदार्थ मिल गया है। नानक का कथन है कि हे मेरे अगम्य अपार ठाकुर जी! मैं तुझ पर लाखों बार बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ १३॥

देवगंधारी ५ ॥ माई जो प्रभ के गुन गावै ॥ सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रहम लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥ नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥ १ ॥ पूरन ब्रहमु रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै ॥ नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥ २ ॥ १४ ॥

हे माँ! जो व्यक्ति प्रभु के गुण गाता है, उसका दुनिया में जन्म लेना सफल है। उसे जीवन का फल प्राप्त हो जाता है और वह परब्रह्म में लगन लगाता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति साधसंगत प्राप्त करता है, वह सुन्दर, बुद्धिमान, शूरवीर तथा ज्ञानवान है। अपनी रसना से वह हरि के नाम को उच्चरित करता है तथा दोबारा योनियों में नहीं भटकता॥ १॥ उसके मन एवं तन में पूर्ण ब्रह्म बसा रहता है और उसके अलावा उसे कोई दिखाई नहीं देता। हे नानक! जिसे प्रभु अपने साथ मिला लेता है, उसे संतजनों की संगति करने से नरक का रोग नहीं लगता॥ २॥ १४॥

देवगंधारी ५ ॥ चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥ इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइओ संगि माइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥ लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइओ ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ ॥ करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ ॥ २ ॥ १५ ॥

यह चंचल मन स्वप्न (रूपी जगत) में ही उलझा हुआ है। यह इतनी बात भी नहीं बूझता कि किसी दिन उसने दुनिया से चल देना है, किन्तु माया में मोह लगा कर परेशान हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ यह कुसुम के रंग वाली माया के साथ प्रेम लगाकर उसके आस्वादन में लीन है और विषय-विकारों में ही प्रयासरत रहता है। जहाँ-कहीं भी वह कोई लोभ की बात सुनता है तो अपने मन में सुख की अनुभूति करता है और तुरंत ही उधर दौड़कर जाता है॥ १॥ फिरते-फिरते इसने बहुत पीड़ा सहन की है और अब संत के द्वार में आ गया है। हे नानक! परब्रह्म स्वामी ने कृपा करके इसे अपने साथ मिला लिया है॥ २॥ १५॥

देवगंधारी ५ ॥ सरब सुखा गुर चरना ॥ कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥ बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥ १ ॥ सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥ भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥ २ ॥ १६ ॥

सर्व सुख गुरु के चरणों में मौजूद हैं। यह पापों का नाश कर देते हैं, मन को आधार देते हैं और इनके सहारे मैंने संसार-सागर से पार हो जाना है॥ १॥ रहाउ॥ मैं केवल यही सेवा करता हूँ, गुरु-चरणों की सेवा ही मेरी पूजा-अर्चना, भक्ति एवं वंदना है। इन में मेरा मन खिलकर आलोकित हो जाता है, जिसके फलस्वरूप मुझे गर्भ-योनि में नहीं जाना पड़ेगा॥ १॥ अपने मन

में मैंने यही ध्यान धारण किया है कि संत रूपी गुरु के सफल दर्शन की प्राप्ति करूँ। जगत का ठाकुर परमात्मा नानक पर कृपालु हो गया है और अब वह साधु (रूपी गुरु) की शरण में पड़ गया है॥ २॥ १६॥

देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥ चारि पदारथ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥ आंच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥ १ ॥ कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥ करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥ २ ॥ १७ ॥

हे जीव! अपने भगवान से ही विनती करनी चाहिए। विनती करने से चार पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आनंद, खुशी का खजाना, सहज सुख एवं सिद्धियाँ मिल जाती हैं॥ १॥ रहाउ॥ अपना अहंकार त्याग कर हरि के चरणों में लग जाओ और उस प्रभु का आंचल (आश्रय) जकड़ कर पकड़ लो। यदि जगत के स्वामी की शरण की कामना की जाए तो माया रूपी अग्नि सागर की आँच नहीं लगती॥ १॥ प्रभु इतना दयावान है कि वह महा कृतघ्न लोगों के करोड़ों ही अपराध बार-बार सहन करता है। हे नानक! करुणामय पूर्ण परमेश्वर की शरणागत (हमें) जाना चाहिए॥ २॥ १७॥

देवगंधारी ५ ॥ गुर के चरन रिदै परवेसा ॥ रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागी सहजि धिआना ॥ १ ॥ करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥ जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥ २ ॥ १८ ॥ छके ३ ॥

गुरु के सुन्दर चरण हृदय में बसाने से रोग, शोक एवं सभी दुःख विनष्ट हो जाते हैं तथा सभी क्लेश-संताप मिट जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ इससे जन्म-जन्मांतरों के पाप मिट जाते हैं एवं करोड़ों ही तीर्थों पर स्नान एवं डुबकी लगाने का फल मिल जाता है। नाम के भण्डार गोविन्द के गुण गाते हुए मनुष्य का ध्यान सहज ही उस में लग जाता है॥ १॥ प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना दास बना लिया है और मेरे बन्धन तोड़ कर मुझे मुक्त कर दिया है। हे प्रभु! तेरा नाम जप-जपकर एवं तेरी वाणी उच्चरित करने से मैं जीवित हूँ। दास नानक तुझ पर बलिहारी जाता है॥ २॥ १८॥ छके ३॥

देवगंधारी महला ५ ॥ माई प्रभ के चरन निहारउ ॥ करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु न डारउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥ सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥ १ ॥ गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥ नाम निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरि धारउ ॥ २ ॥ १६ ॥

हे माता! मैं सदा प्रभु के चरण ही देखता रहूँ। हे मेरे स्वामी! मुझ पर अनुग्रह कीजिए चूंकि अपने मन से तुझे कभी भी न भुलाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ साधु की चरण-धूलि अपने चेहरे एवं मस्तक पर लगाकर काम, क्रोध जैसे विष को जला दूँ। मैं अपने आपको सबसे निम्न वर्ग का समझता हूँ और मन में यही सुख धारण करता हूँ॥ १॥ मैं अविनाशी ठाकुर का गुणानुवाद करता हुआ अपने समस्त पाप दूर करता हूँ। हे नानक! मैं नाम के भण्डार का दान प्राप्त करता हूँ और इसे अपने गले से लगाकर हृदय में धारण करता हूँ॥ २॥ १६॥

देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥ सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासत्र बेद पुरान अविलोके सिम्रिति ततु बीचारा ॥ दीना नाथ प्रानपति पूरन भवजल उधरनहारा ॥ १ ॥ आदि जुगादि भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा ॥ तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥ २ ॥ २० ॥

हे प्रभु जी ! मैं हमेशा तेरे दर्शन करने की अभिलाषा रखता हूँ। मैं दिन-रात तेरे सुन्दर दर्शन का ध्यान धारण करता हूँ और तेरे दर्शन मुझे अपनी आत्मा एवं प्राणों से भी प्रिय हैं॥ १॥ रहाउ॥ मैंने शास्त्र, वेद, पुराण एवं स्मृतियों को पढ़कर देखा तथा तत्व पर विचार किया है कि हे दीनानाथ ! हे प्राणपति ! हे पूर्ण प्रभु ! एक तू ही जीवों को भवसागर से पार करवाने में समर्थ है॥ १॥ हे प्रभु ! जगत के आदि एवं युगों के प्रारम्भ से तू ही भक्तजनों एवं सेवकों का विषय-विकारों से बचने हेतु आधार बना हुआ है। नानक नित्य ही उन भक्तजनों की चरण-धूलि की कामना करता है और परमेश्वर ही इस देन को देने वाला है॥ २॥ २०॥

देवगंधारी महला ५ ॥ तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥ प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥ १ ॥ सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रहमु पछाता ॥ २ ॥ २१ ॥

हे राम ! तेरा भक्त तेरे नाम-रसायन का पान करके मस्त बना हुआ है। जिसे प्रेम-रस की निधि प्राप्त होती है, वह इसे छोड़कर कहीं नहीं जाता॥ १॥ रहाउ॥ ऐसा भक्तजन बैठते हुए हरि-हरि ही जपता है और सोते समय भी हरि-हरि का चिन्तन करता है और हरि-रस को भोजन के रूप में खाता है। वह साधु की चरण-धूलि में नहाना ही अड़सठ तीर्थों के स्नान के बराबर समझता है॥ १॥ हरि के भक्त का जन्म लेना सफल है जिसने विधाता को पुत्रवान बना दिया है। हे नानक ! जिसने पूर्ण ब्रह्म को पहचान लिया है, वह अपने संगी-साथियों को साथ लेकर भवसागर से पार हो गया है॥ २॥ २१॥

देवगंधारी महला ५ ॥ माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥ अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ॥ टिकनु न पावै बिनु सतसंगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥ १ ॥ करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ ॥ संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥ २ ॥ २२ ॥

हे माँ ! गुरु के बिना ज्ञान की लब्धि नहीं होती। प्राणी अनेक प्रकार के साधन करके रोता-चिल्लाता हुआ भटकता रहता है परन्तु दुनिया का मालिक प्रभु उसे नहीं मिलता॥ १॥ रहाउ॥ मानव-शरीर मोह, रोग एवं शोक इत्यादि से जकड़ा हुआ है, इसलिए वह अनेक योनियों में भटकता रहता है। साधसंगत के बिना उसे कहीं भी आश्रय नहीं मिलता, फिर किस के समक्ष जाकर अपने दुःखों का विलाप कर सकता है ?॥ १॥ जब मेरा स्वामी अनुग्रह करता है तो प्राणी का साधु-चरणों में चित्त लग जाता है। हे नानक ! उसके घोर संकट क्षण में ही नष्ट हो जाते हैं और वह हरि-दर्शन में ही लीन हुआ रहता है॥ २॥ २२॥

देवगंधारी महला ५ ॥ ठाकुर होए आपि दइआल ॥ भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ दुइ कर जोड़ि करी बेनंती पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला

दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ वर नारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥ २ ॥ २३ ॥

जगत का ठाकुर आप दयालु हुआ है। मेरा कल्याण हो गया है और मेरा मन आनंद का रूप बन गया है। पिता-परमेश्वर ने अपने बालक (जीव) का संसार-सागर से उद्धार कर दिया है॥ रहाउ॥ जब मैंने दोनों हाथ जोड़कर विनती की और अपने मन में परब्रह्म का ध्यान किया तो अपना हाथ देकर परमेश्वर ने मेरी रक्षा की है और मेरे सारे पाप-विकार मिटा दिए॥ १॥ वर-वधु मिलकर मंगल गीत गायन करते हैं और ठाकुर की जय-जयकार करते हैं। हे नानक! मैं प्रभु के सेवक पर बलिहारी जाता हूँ, जो सभी का उद्धार कर देता है॥ २॥ २३॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ देवगंधारी महला ५ ॥ अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥ भए क्रिपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥ करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥ १ ॥ परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥ कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥ २ ॥ २४ ॥

जब मैंने अपने सच्चे गुरु के पास विनती की तो दुःखनाशक परमात्मा दयालु एवं कृपालु हो गया और मेरे सभी डर मिट गए॥ रहाउ॥ हे प्राणी! हम कितने पापी, पाखंडी एवं लोभी हैं किन्तु फिर भी दयावान प्रभु हमारे गुण-अवगुण सभी सहन करता है। प्रभु ने (हमें रचकर) अपना हाथ हमारे मस्तक पर रखकर गौरव प्रदान किया है, जो दुष्ट हमें मारना चाहते थे, स्वयं ही मर गए हैं॥ १॥ परमात्मा बड़ा परोपकारी एवं सभी को आधार देने वाला है। उसके दर्शन ही फलदायक हैं जो शांति का पुंज है। हे नानक! परमात्मा निर्गुणों का भी दाता है, उसके चरण-कमल मैंने ह्रदय में बसाए हुए हैं॥ २॥ २४॥

देवगंधारी महला ५ ॥ अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥ सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ सरब पाख राखु मुरारे ॥ आगै पाछै अंती वारे ॥ १ ॥ जब चितवउ तब तुहारे ॥ उन सम्हारि मेरा मनु सधारे ॥ २ ॥ सुनि गावउ गुर बचनारे ॥ बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥ ३ ॥ मन महि राखउ एक असारे ॥ नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥ ४ ॥ २५ ॥

हे मेरे प्रभु! तू अनाथों का नाथ है। हे दुनिया के रखवाले! मैं तेरी शरण में आया हूँ॥ रहाउ॥ हे मुरारि प्रभु! हर तरफ से मेरी रक्षा करो, लोक-परलोक एवं जिन्दगी के अन्तिम क्षण तक मेरी रक्षा करते रहना॥ १॥ हे मालिक! जब भी तुझे याद करता हूँ तो तेरे गुण ही याद करता हूँ। उन गुणों को धारण करने से मेरा मन शुद्ध हो जाता है॥ २॥ मैं गुरु के वचनों को सुनकर तेरे ही गुण गाता रहता हूँ तथा साधु (रूपी गुरु) के दर्शनों पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ॥ ३॥ मेरे मन में एक ईश्वर का ही सहारा है। हे नानक! मेरा प्रभु ही सबका रचयिता है॥ ४॥ २५॥

देवगंधारी महला ५ ॥ प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥ क्रिपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ प्रातहकाल लागउ जन चरनी निस बासुर दरसु पावउ ॥ तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥ १ ॥ सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संतसंगि नित रहीऐ ॥ एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ॥ २ ॥ २६ ॥

हे प्रभु! मेरा केवल यही मनोरथ है कि हे कृपानिधि! हे दीनदयाल! मुझे अपने संतजनों का सेवक बना दीजिए॥ रहाउ॥ मैं प्रातः काल संतजनों के चरण स्पर्श करता रहूँ और रात-दिन उनके

दर्शन प्राप्त करता रहूँ। अपना तन-मन अर्पित करके मैं संतजनों की श्रद्धा से सेवा करता रहूँ और अपनी जिह्वा से तेरा गुणानुवाद करता रहूँ॥ १॥ मैं श्वास-श्वास से अपने प्रभु का सिमरन करता रहूँ और नित्य ही संतों की संगत में मिला रहूँ। हे नानक ! ईश्वर का नाम-धन ही मेरा जीवन का एकमात्र आधार है और इससे ही मैं आत्मिक आनंद प्राप्त करता रहूँ॥ २॥ २६॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मीता ऐसे हरि जीउ पाए ॥ छोडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलिओ मनोहरु सरब सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥ अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥ १ ॥ मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥ कहु नानक सदा रंगु माणे ग्रिह प्रिअ थीते सद थाए ॥ २ ॥ १ ॥ २७ ॥

मैंने मित्र रूपी ऐसा भगवान पा लिया है, जो मुझे छोड़कर नहीं जाता और हमेशा ही मेरे साथ रहता है। गुरु से मिलकर मैं रात-दिन उसका यशोगान करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मुझे सर्व सुख देने वाला मनोहर प्रभु मिल गया है और वह मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाता। मैंने विविधि प्रकार के लोग देखे हैं किन्तु वे मेरे प्रिय-प्रभु के एक रोम की समानता भी नहीं कर सकते॥१॥ उसका मन्दिर बड़ा कीर्तिमान तथा द्वार बहुत शोभावान है, जिसमें मधुर अनहद ध्वनि गूंजती रहती है। हे नानक ! मैं सदा आनंद भोगता हूँ, क्योंकि प्रिय-प्रभु के घर में मुझे सदैव स्थिर स्थान मिल गया है॥ २॥ १॥ २७॥

देवगंधारी ५ ॥ दरसन नाम कउ मनु आछै ॥ भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो गाछै ॥ साधसंगति की सरनी परीऐ चरण रेनु मनु बाछै ॥ १ ॥ जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइ आछै ॥ आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥ २ ॥ २ ॥ २८ ॥

मेरा मन प्रभु के दर्शन एवं नाम का अभिलाषी है और सभी स्थानों पर भटक कर अब संतों के चरणों में लग गया है॥ १॥ रहाउ॥ मैं किसकी सेवा करूँ और किसकी आराधना करूँ, क्योंकि जो कुछ भी नजर आ रहा है, वह नाशवान है। इसलिए साधसंगत की शरण में ही आना चाहिए और मेरा मन उनकी ही चरण-धूलि की कामना करता है॥ १॥ न ही मैं कोई युक्ति जानता हूँ और न ही मुझ में कोई गुण विद्यमान है। इस माया रूपी जगत सागर से पार होना बहुत दुर्गम है। हे नानक ! अब जब मैं गुरु-चरणों में आ गया हूँ तो मेरी दुर्वासना का नाश हो गया है॥ २॥ २॥ २८॥

देवगंधारी ५ ॥ अंम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥ अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥ १ ॥ दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे ॥ कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥ २ ॥ ३ ॥ २६ ॥

हे प्रिय ! तुम्हारे वचन अमृत की तरह हैं। हे प्यारे प्रभु ! तू बहुत ही सुन्दर है और मन को मुग्ध करने वाला है। तू सबमें बसता है और सबसे निराला है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! न ही मुझे राज की चाहत है और न ही मुझ में मुक्ति की अभिलाषा है, मेरे मन को तो केवल तेरे सुन्दर चरण-कमल के प्रेम की ही तीव्र लालसा बनी हुई है। दुनिया के लोग तो ब्रह्मा, महेश, सिद्ध, मुनि

एवं इन्द्र देव के दर्शनों की आशा करते होंगे किन्तु मैं तो इन सबके मालिक एक ईश्वर के दर्शनों का अभिलाषी हूँ॥ १॥ हे ठाकुर जी! मैं दीन तेरे द्वार पर आया हूँ तथा हार-थक कर तेरे संतों की शरण में आया हूँ। हे नानक! मुझे मनोहर प्रभु मिल गया है जिसके फलस्वरूप मेरा मन शीतल हो गया है एवं फूल की तरह खिल गया है॥ २॥ ३॥ २६॥

देवगंधारी महला ५ ॥ हरि जपि सेवकु पारि उतारिओ ॥ दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिओ ॥ प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ॥ १ ॥ चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिओ ॥ नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ३० ॥

हरि का नाम जप कर उसका सेवक भवसागर से मुक्त हो गया है। दीनदयालु परमात्मा जब (सेवक का) अपना बन जाता है तो वह बार-बार जन्म-मरण के चक्र में नहीं डालता॥ १॥ रहाउ॥ जो साधसंगत में हरि का गुणगान करता है, वह अपना हीरे जैसा अमूल्य-जन्म नहीं हारता। प्रभु का यशगान करने से वह विषय-विकारों के सागर से पार हो जाता है और अपनी वंशावलि का भी उद्धार कर लेता है॥१॥ प्रभु के चरण-कमल उसके हृदय में बसते हैं और अपने प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से वह प्रभु-नाम का उच्चारण करता है। हे नानक! मैंने तो उस जगदीश्वर की शरण ली है और पुनः पुनः उस पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ ४॥ ३०॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥ १ ॥ अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥ २ ॥ मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खंडे धार ॥ ३ ॥ कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ॥ ४ ॥ १ ॥ ३१ ॥

बहुत सारे लोग अनेक वेष धारण करके (भगवान के लिए) वन में भटकते रहते हैं किन्तु मोहन-प्रभु सबसे अलग ही रहता है॥ १॥ रहाउ॥ वे कथन करते एवं उपदेश सुनाते हैं तथा मधुर गीत गायन करते हैं किन्तु उनके मन में विकारों की मैल व्याप्त है॥ १॥ असल में जो व्यक्ति विद्या के फलस्वरुप मधुरभाषी एवं सूक्षम वक्ता है, वही अति सुन्दर, बहुत चतुर एवं बुद्धिमान है॥ २॥ अभिमान, मोह एवं अपना-पराया से विवर्जित रहने का मार्ग कृपाण की धार की तरह दुर्गम है॥ ३॥ हे नानक! प्रभु की कृपा से जो व्यक्ति संतों की संगत में रहते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ४॥ १॥ ३१॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥ आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा ॥ तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईऐ मन रूचा ॥ १ ॥ खोज असंखा अनिक तपंथा बिनु गुर नही पहूचा ॥ कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि साधू रस भूंचा ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥

हे सखी! उस मोहन प्रभु को मैंने सबसे ऊँचा ही देखा है। मैं बहुत ढूँढता रहा लेकिन दुनिया में उसकी तुलना दूसरा कोई भी नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ वह प्रभु बेअंत, बहुत बड़ा गहरा

तथा अथाह है। वह पहुँच से परे ऊँचा है। वह तोलने में अतुलनीय है तथा उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। फिर मन में मनोहर प्रभु को कैसे पाया जा सकता है ?॥ १॥ अनेक मार्गों द्वारा असंख्य ही उसे खोजते फिरते हैं किन्तु गुरु के बिना कोई भी उस तक नहीं पहुँच सकता। हे नानक! ठाकुर जी ने मुझ पर कृपा की है और साधु से मिलकर अब हरि-रस का ही आनंद प्राप्त करता हूँ॥ २॥ १॥ ३२॥

देवगंधारी महला ५ ॥ मै बहु बिधि पेखिओ दूजा नाही री कोऊ ॥ खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिओ सभ लोऊ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगम अगंमा कवन महिमा मन जीवै सुनि सोऊ ॥ चारि आसरम चारि बरंना मुकति भए सेवतोऊ ॥ १ ॥ गुरि सबदु द्रिड़ाइआ परम पदु पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ ॥ कहु नानक भव सागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥

हे बहन! मैंने अनेक विधियों से देखा है, किन्तु उस भगवान जैसा दूसरा कोई नहीं है। विश्व के समस्त खण्डों एवं द्वीपों में वह ही समाया हुआ है और सभी लोकों में केवल वही मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥ वह अगम्य से भी अगम्य है, उसकी महिमा कौन उच्चरित कर सकता है? मेरा मन तो उसकी शोभा सुनकर ही जीवित है। हे भगवान! चारों आश्रम एवं चारों वर्ण के लोग तेरी भक्ति करके मुक्त हो गए हैं॥ १॥ गुरु ने मन में अपना शब्द बसा दिया है, जिससे परम पद की उपलब्धि हो गई है। हमारी दुविधा मिट गई है तथा सुख ही सुख हो गया है। हे नानक! हरि-नाम की निधि प्राप्त करने से मैं सहज ही भवसागर से पार हो गया हूँ॥ २॥ २॥ ३३॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

एकै रे हरि एकै जान ॥ एकै रे गुरमुखि जान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥ १ ॥ जिउ बैसंतरु कासट मझारि बिनु संजम नही कारज सारि ॥ बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥ मिलि संगति तजि अभिमान कहु नानक पाए है परम निधान ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥

परमात्मा एक ही है और उस एक को ही सबका मालिक समझो। गुरुमुख बनकर उसे एक ही समझो॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे भाई! क्यों भटक रहे हो? तुम मत भटको, ईश्वर तो सारे विश्व में मौजूद है॥ १॥ जैसे लकड़ी में अग्नि किसी युक्ति के बिना कार्य नहीं संवारती, वैसे ही गुरु के बिना परमेश्वर का द्वार प्राप्त नहीं हो सकता। हे नानक! गुरु की संगति में मिलकर अपना अभिमान त्याग दो, इस तरह नाम रूपी परम खजाना प्राप्त हो जाएगा॥ २॥ १॥ ३४॥

देवगंधारी ५ ॥ जानी न जाई ता की गाति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥ १ ॥ गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥ सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक ॥ चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥ अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥ गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न जाई परै पराति ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥

उस भगवान की गति समझी नहीं जा सकती॥ १॥ रहाउ॥ किसी चतुराई के माध्यम से उसकी गति को कैसे दिखा सकता हूँ? उसकी गति का कथन करने वाले भी आश्चर्यचकित हो जाते हैं॥ १॥ देवगण, गंधर्व, सिद्धपुरुष, साधक, देवते, नर, देव, ब्रह्मर्षि, ब्रह्मा इत्यादि तथा चारों वेद दिन-रात यही उच्चरित करते हैं कि परमात्मा अगम्य, अनन्त तथा अगाध है। हे नानक! उस

परमेश्वर के गुण अनन्त एवं अपार हैं और उसके गुणों की अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, क्योंकि वे पहुँच से पूर्णतया परे हैं॥ २॥ २॥ ३५॥

देवगंधारी महला ५ ॥ धिआए गाए करनैहार ॥ भउ नाही सुख सहज अनंदा अनिक ओही रे एक समार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥ जत कत पेखउ तत तत साथै ॥ चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥ १ ॥ समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥ घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥ ता की सरनि आसर प्रभ नानक जा का अंतु न पारावार ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

जो व्यक्ति विश्व रचयिता परमात्मा का नाम-स्मरण तथा गुणगान करता है, वह निडर हो जाता है और उसे सहज सुख एवं आत्मिक आनंद उपलब्ध हो जाता है। इसलिए उस मालिक का नाम ही हृदय में धारण करना चाहिए, जिसके अनेक रूप हैं परन्तु फिर भी वह एक ही है॥ १॥ रहाउ॥ जिस गुरु के दर्शन करने से जीवन सफल हो जाता है, उसने अपना हाथ मेरे माथे पर रखा हुआ है। मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही मैं भगवान को अपने साथ ही पाता हूँ। प्रभु के सुन्दर चरण-कमल मेरे प्राणों का आधार हैं॥१॥ मेरा प्रभु सर्वकला समर्थ, अथाह एवं महान् है। वह कण-कण में (प्रत्येक हृदय में) रहता है और बहुत ही समीप है। नानक ने उस परमात्मा की शरण में आश्रय लिया है, जिसका कोई अन्त तथा ओर-छोर प्राप्त नहीं हो सकता॥ २॥ ३॥ ३६॥

देवगंधारी महला ५ ॥ उलटी रे मन उलटी रे ॥ साकत सिउ करि उलटी रे ॥ झूठै की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो पैसै कालूखी रे ॥ दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु गुर मिलि छुटकी त्रिकुटी रे ॥ १ ॥ मागउ दानु क्रिपाल क्रिपा निधि मेरा मुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥ जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥ २ ॥ ४ ॥ ३७ ॥

हे मेरे मन! अपनी आदत को शीघ्र ही बदल दे तथा शाक्त इन्सान का साथ छोड़ दे। हे मन! परमात्मा से विमुख झूठे लोगों की प्रीति झूठी ही समझ और इन्हें त्याग दे, क्योंकि उनकी संगति में रहने से तुझे मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती॥ १॥ रहाउ॥ जैसे कोई व्यक्ति कालिख से भरे हुए घर में प्रविष्ट होता है तो काला ही हो जाता है। जो सच्चे गुरु से मिल जाता है उसके माथे की त्रिकुटी मिट जाती है और वह दुर्जन लोगों की संगति से दूर से ही भाग जाता है॥ १॥ हे कृपा के भण्डार! हे कृपालु परमात्मा! मैं तुझ से एक यही दान माँगता हूँ कि मेरा चेहरा शाक्त मनुष्य के सामने मत करना अर्थात् उससे मुझे दूर ही रखना। नानक को दासानुदास बना दो, चूंकि उसका सिर साधुओं के चरणों में विद्यमान रहे॥ २॥ ४॥ ३७॥

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ७ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥ गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जासन बासन सहज केल करुणा मै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥ १ ॥ रिधि सिधि निधि कर तल जगजीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ ॥ दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥ ६ ॥ ४४ ॥

हे सभी दिनों के समर्थ एवं पथ-प्रदर्शक प्रभु! मैं तुझ पर करोड़ों बार बलिहारी जाता हूँ। तेरे संतजन प्रेमपूर्वक तेरी गुणस्तुति करते हैं, जो तुझे बहुत अच्छे लगते हैं और मैं उनके ही चरण स्पर्श करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे दयास्वरूप! तुझे अपना यश सुनने की कोई लालसा नहीं और

तू सहज ही कौतुक करने वाला है। हे करुणामय एवं अद्वितीय परमात्मा! तेरा स्थान अनंत एवं अनूप है॥१॥ हे जगजीवन! ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ एवं निधियाँ सब तेरी हथेली पर मौजूद हैं। हे सबके मालिक! राम, हरि, गोपाल, गोबिन्द, अल्लाह, खुदा, वाहिगुरु इत्यादि तेरे अनेकों ही नाम हैं। हे दयानिधि! नानक पर अपनी कृपा करो ताकि तुम्हारा यश सुन-सुनकर जीवित रहे॥ २॥ १॥ ३८॥ ६॥ ४४॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु देवगंधारी महला ६ ॥ यह मनु नैक न कहिओ करै ॥ सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥ करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥ १ ॥ सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥ २ ॥ १ ॥

यह मन मेरी बात का अंश मात्र भी पालन नहीं करता। अपनी तरफ से मैं इसे बहुत शिक्षा प्रदान कर चुका हूँ किन्तु यह दुर्मति से हटता ही नहीं॥ १॥ रहाउ॥ यह माया के नशे में बावला हो गया है तथा हरि का यशगान उच्चरित नहीं करता। यह अनेक छल-कपट (प्रपंच) करके दुनिया को ठगता रहता है तथा अपना पेट भरता है॥ १॥ यह मन कुत्ते की पूंछ की भाँति कदापि सीधा नहीं होता और जो उपदेश देता हूँ, उस ओर कान नहीं करता। नानक का कथन है कि हे अज्ञानी मन! राम नाम का नित्य ही भजन करो, जिससे तेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाएँगे॥ २॥ १॥

देवगंधारी महला ६ ॥ सभ किछु जीवत को बिवहार ॥ मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥ आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥ १ ॥ म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥ २ ॥ २ ॥

माता-पिता, भाई, पुत्र, रिश्तेदार तथा घर की नारी (पत्नी)-सब जीवित रहने तक ही अपना संबंध-व्यवहार बनाए रखते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब शरीर से प्राण निकल जाते हैं तो सभी संबंधी रोते-चिल्लाते हुए मृतक देह को प्रेत कहकर पुकारते हैं। आधी घड़ी मात्र भी कोई (मृतक देह को) नहीं रखना चाहता और घर से बाहर निकाल देते हैं॥ १॥ अपने हृदय में सोच-विचार कर देख लो, यह जगत-रचना मृगतृष्णा की भाँति है। नानक का कथन है कि हे नश्वर प्राणी! नित्य ही राम-नाम का भजन करो, ताकि तेरा संसार-सागर से उद्धार हो जाए॥ २॥ २॥

देवगंधारी महला ६ ॥ जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥ अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥ १ ॥ मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥ नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ३८ ॥ ४७ ॥

इस जगत में मैंने झूठा ही प्रेम देखा है। सभी लोग अपने सुख में ही लगे हुए हैं चाहे वह पत्नी हो अथवा घनिष्ठ मित्र ही क्यों न हो॥ १॥ रहाउ॥ सभी लोग 'मेरा-मेरा' ही पुकारते रहते हैं तथा अपने हित के लिए अपना मन जोड़ते हैं। जीवन के अंतिम क्षणों में कोई भी साथी नहीं बनता। यह संसार की आश्चर्यजनक रीति है॥ १॥ हे मूर्ख मन! तू अभी भी नहीं समझ रहा, मैं नित्य ही इसे शिक्षा देकर पराजित हो गया हूँ। हे नानक! जो जीव प्रभु की महिमा के गीत गाता है, वह भवसागर से पार हो जाता है॥ २॥ ३॥ ६॥ ३८॥ ४७॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है। वह संसार का रचयिता सर्वशक्तिमान है। वह निडर है, उसका किसी से वैर नहीं, वह कालातीत, जन्म-मरण से रहित एवं स्वयंभू है और उसकी लब्धि केवल गुरु-कृपा से ही होती है।

रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥

दूतन संगरीआ ॥ भुइअंगनि बसरीआ ॥ अनिक उपरीआ ॥ १ ॥ तउ मै हरि हरि करीआ ॥ तउ सुख सहजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथन मोहरीआ ॥ अन कउ मेरीआ ॥ विचि घूमन घिरीआ ॥ २ ॥ सगल बटरीआ ॥ बिरख इक तरीआ ॥ बहु बंधहि परीआ ॥ ३ ॥ थिरु साध सफरीआ ॥ जह कीरतनु हरीआ ॥ नानक सरनरीआ ॥ ४ ॥ १ ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि दुष्टों के साथ निवास करना विषैले साँपों के साथ रहने के समान है। इन्हें छोड़ने के लिए मैंने अनेक उपाय किए हैं॥ १॥ तब मैंने परमेश्वर के नाम का भजन किया तो मुझे सहज सुख उपलब्ध हो गया॥ १॥ रहाउ॥ सांसारिक पदार्थों का मोह मिथ्या है, जो झूठा मोह प्राणी को अपना लगता है वही उसे आवागमन के भँवर में डाल देता है॥ २॥ सारे प्राणी यात्री हैं, जो दुनिया के वृक्ष के नीचे आ विराजते हैं। किन्तु अनेक मायावी बन्धनों में फँसे हुए हैं॥ ३॥ केवल साधु मुसाफिर ही अटल हैं जो हरि-नाम का कीर्तिगान करते रहते हैं। इसलिए नानक ने साधुओं की ही शरण ली है॥ ४॥ १॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिहागड़ा महला ९ ॥ हरि की गति नहि कोउ जानै ॥ जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥ रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥ १ ॥ अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥ नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥ २ ॥ अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥ सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥ ३ ॥ १ ॥ २ ॥

भगवान की गति कोई भी नहीं जानता। योगी, ब्रह्मचारी, तपस्वी और बहुत सारे बुद्धिमान-विद्वान लोग भी बुरी तरह विफल हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर एक क्षण में राजा को रंक (भिखारी) बना देता है और रंक (भिखारी) को राजा बना देता है। उसका ऐसा व्यवहार है कि वह खाली वस्तुओं को भी भरपूर कर देता है और जो भरपूर हैं, उसे शून्य करके रख देता है॥ १॥ अपनी माया का उसने आप ही प्रसार किया हुआ है और वह स्वयं ही जगत लीला को देख रहा है। वह अनेक रूप धारण करता है और अनेक लीलाएँ खेलता है किन्तु फिर भी सबसे न्यारा ही रहता है॥ २॥ वह निरंजन प्रभु गुण गणना से परे, अपार तथा अलक्ष्य है, जिसने समूचे जगत को भ्रम में डाला हुआ है। नानक का कथन है कि हे प्राणी ! अपने मोह-माया के सभी भ्रम त्याग दे और अपना चित्त प्रभु-चरणों में लगा॥ ३॥ १॥ २॥

राग़ु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए गुरमुखि नामु अमोले राम ॥ हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥ गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम ॥ मन चिंदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥ १ ॥ गुरमति मनि अंम्रितु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अंम्रित बैण अलाए राम ॥ अंम्रित बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीऐ हरि लिव लाए राम ॥ चिरी विछुंना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम ॥ जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए अनहत सबद वजाए राम ॥ २ ॥ सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥ हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥ गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम ॥ नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरी जिंदुड़ीए गुरमति नामु परगासे राम ॥ हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥ गुरि पूरै मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥ धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे राम ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मेरी आत्मा ! हरि-परमेश्वर के नाम का नित्य ही ध्यान करते रहना चाहिए। लेकिन गुरुमुख बनकर ही हरि का अमूल्य नाम प्राप्त होता है। मेरा मन हरि के नाम-रस में विंध गया है और मन को हरि ही प्रिय लगता है। हरि के नाम-रस से भीगकर यह मन पावन हो गया है। हे मेरी आत्मा ! गुरु उपदेशानुसार अपने मन को टिकाना चाहिए, फिर यह दोबारा किसी अन्य स्थान पर नहीं भटकता। हे नानक ! जो व्यक्ति हरि-प्रभु के गुणों की वाणी उच्चरित करता है, उसे मनोवांछित फल मिल जाता है॥ १॥ हे मेरी आत्मा ! गुरु उपदेशानुसार अमृत नाम प्राणी के हृदय में निवास कर जाता है और तब वह अपने मुखारविंद से अमृत वचन बोलता रहता है। हे मेरी आत्मा ! प्रभु के भक्तजनों की वाणी अमृत समान मधुर है, उसे चित्त लगाकर सुनने से प्राणी की हरि से सुरति लग जाती है। चिरकाल से बिछुड़ा हुआ हरि-प्रभु मुझे प्राप्त हो गया है और उसने सहज-स्वभाव ही मुझे अपने गले लगाया है। हे मेरी आत्मा ! दास नानक के हृदय में आनंद उत्पन्न हो गया है और उसके भीतर अनहद शब्द गूंज रहा है॥ २॥ हे मेरी आत्मा ! मेरी कोई सखी-सहेली आकर मुझे मेरे हरि-प्रभु से मिला दे। मैं अपना मन उसे अर्पित करता हूँ, जो मुझे प्रभु की हरि-कथा सुनाता है। हे मेरी आत्मा ! गुरुमुख बनकर तू सदैव ही हरि की आराधना कर, तुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाएगा। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! हरि की शरणागत आकर उसका भजन कर, क्योंकि भाग्यशाली ही राम के नाम का ध्यान करते हैं॥ ३॥ हे मेरे प्रभु ! अपनी कृपा करके मुझे आन मिलो, ताकि गुरु की मतानुसार मेरे मन में नाम का प्रकाश हो जाए। हे मेरी आत्मा ! हरि के बिना मैं ऐसे हतोत्साहित हूँ, जैसे जल के बिना कमल उदासीन होता है। हे मेरी आत्मा ! पूर्ण गुरु ने सज्जन हरि से मिला दिया है, वह हरि-प्रभु आस-पास मेरे साथ ही रहता है। हे मेरी आत्मा ! वह गुरुदेव धन्य-धन्य है जिसने मुझे हरि के बारे में बताया है, जिसके नाम से दास नानक फूल की तरह खिल गया है॥ ४॥ १॥

रागु बिहागड़ा महला ४ ॥ अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रितु गुरमति पाए राम ॥ हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति बिखु लहि जाए राम ॥ मनु सुका हरिआ होइआ मेरी

जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥ हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥ १ ॥ हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक लगि दुध खीरे राम ॥ हरि बिनु सांति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए जिउ चात्रिकु जल बिनु टेरे राम ॥ सतिगुर सरणी जाइ पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥ जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥ २ ॥ मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥ जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए तिउ मनमुख सभि वसि काले राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से मनमुख मूड़ बिताले राम ॥ जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए गुर नानक हरि रखवाले राम ॥ ३ ॥ हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ राम ॥ हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीए गुर खेवट सबदि तराइआ राम ॥ हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिंदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ लगाइआ राम ॥ करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मेरी आत्मा! परमेश्वर का नाम अमृत समान है, पर यह अमृत गुरु के उपदेश से ही प्राप्त होता है। यह अहंकार माया रूपी विष है, हे मेरी आत्मा! हरि के नामामृत द्वारा यह विष उतर जाता है। हे मेरी आत्मा! हरि के नाम का ध्यान करने से मेरा सूखा हुआ मन हरा-भरा हो गया है। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा! मेरी किस्मत में आदि से लिखे हुए अच्छे भाग्य से मैंने भगवान को पा लिया है और मैं राम-नाम में समा गया हूँ॥ १॥ हे मेरी आत्मा! मेरा चित्त हरि के साथ ऐसे जुड़ा हुआ है, जैसे नवजात बालक का चित्त दूध से लगा होता है। हे मेरी आत्मा! जैसे चातक वर्षा की बूँदों के बिना पुकारता रहता है वैसे ही हरि के बिना मुझे शांति प्राप्त नहीं होती। हे मेरी आत्मा! सच्चे गुरु की शरण में पड़ो, वहाँ तुझे भगवान के गुणों बारे ज्ञान प्राप्त होगा। हे मेरी आत्मा! दास नानक को हरि ने अपने साथ मिला लिया है और उसके घर में अनेक शब्द गूंज रहे हैं॥ २॥ हे मेरी आत्मा! अहंत्व ने स्वेच्छाचारी लोगों को प्रभु से जुदा कर दिया है और वे विषैले पापों से बंधे अहंकार की अग्नि में जल रहे हैं। हे मेरी आत्मा! जैसे पक्षी कबूतर आप ही दाने के लोभ के कारण जाल में फँस जाता है, वैसे ही सभी स्वेच्छाचारी मृत्यु के वश में आ जाते हैं। हे मेरी आत्मा! जो मोह-माया में चित्त लगाते हैं, वे स्वेच्छाचारी मूर्ख तथा पिशाच हैं। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा! परमात्मा के दास त्राहि-त्राहि करते हुए उसकी शरण में आते हैं और गुरु परमात्मा उनके रक्षक बन जाते हैं॥ ३॥ हे मेरी आत्मा! परमात्मा के भक्तजन उस में सुरति लगाने से संसार-सागर पार कर लेते हैं। प्रारम्भ से ही अहोभाग्य से वे अपने परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं। हे मेरी आत्मा! परमात्मा का नाम एक जहाज है और गुरु खेवट अपने शब्द के माध्यम से जीव को उस नाम द्वारा भवसागर से पार कर देते हैं। हे मेरी आत्मा! परमात्मा सर्वशक्तिमान तथा बड़ा दयालु है और गुरु सतगुरु की कृपा से वह मनुष्य को मीठा लगने लग जाता है। हे परमात्मा! कृपा करके मेरी प्राथना सुनो, चूंकि नानक ने तेरे नाम की ही आराधना की है॥ ४॥ २॥

बिहागड़ा महला ४ ॥ जगि सुक्रितु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरति हरि मनि धारे राम ॥ हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि नामु उधारे राम ॥ सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए मलु गुरमुखि नामि उतारे राम ॥ वड पुंनी हरि धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ॥ १ ॥ जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिंदुड़ीए तिना पंचे वसगति आए राम ॥ अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीए गुरु सतिगुरु अलखु लखाए राम ॥ गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी

जिंदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ जाए राम ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ॥ २ ॥ हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम ॥ वडभागी गुरु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुरि पूरे गति मिति पाइआ राम ॥ गुरि अंम्रितु हरि मुखि चोइआ मेरी जिंदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम ॥ जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिंदुड़ीए तिन के सभ दुख गवाइआ राम ॥ ३ ॥ अति ऊतमु हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए जितु जपिऐ पाप गवाते राम ॥ पतित पवित्र गुरि हरि कीए मेरी जिंदुड़ीए चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम ॥ हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति हरि सरि नाते राम ॥ अपराधी पापी उधरे मेरी जिंदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के नाम का यशगान करना ही इस दुनिया में एक सुकर्म है। परमात्मा की कीर्ति करने से ही वह मन में बस जाता है। हे मेरी आत्मा ! परमेश्वर का नाम बड़ा पवित्र है, उसके नाम का जाप करने से जीव का उद्धार हो जाता है। हे मेरी आत्मा ! परमात्मा के नाम से सभी किल्विष, पाप एवं दुःख नाश हो जाते हैं और गुरु ने परमात्मा के नाम से हमारी अहंत्व की मैल उतार दी है। नानक का कथन है कि बड़े पुण्य-कर्म से ही हरि के नाम की आराधना की है और इस तरह हम जैसे मूर्ख एवं अज्ञानियों का उद्धार हुआ है॥१॥ हे मेरी आत्मा ! जो व्यक्ति हरि के नाम का ध्यान-चिंतन करते हैं, कामादिक विकार उनके वश में आ जाते हैं। हे मेरी आत्मा ! अन्तरात्मा में ही हरि के नाम की नवनिधि है। किन्तु इस अलक्ष्य को गुरु-सतिगुरु दिखा देता है। हे मेरी आत्मा ! गुरु ने हमारी आशा एवं मंशा पूरी कर दी है, प्रभु को मिलने से सारी भूख मिट जाती है। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! भगवान ने प्रारम्भ से ही जिनके माथे पर भाग्य लिख दिया है, वही हरि का गुणगान करते हैं॥ २॥ हे मेरी आत्मा ! हम अज्ञानी पापी एवं छल-कपटी हैं तथा दूसरों से द्रोह करने वाले और (पराया) धन ठगने वाले ठग हैं। हे मेरी आत्मा ! सौभाग्य से ही गुरु प्राप्त हुआ है और पूर्ण गुरु के माध्यम से गति (मोक्ष) का मार्ग प्राप्त हुआ है। हे मेरी आत्मा ! गुरु ने हरिनामामृत मेरे मुख में डाल दिया है और फिर मेरी मृतक आत्मा दुबारा जीवित हो गई है। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! जो सच्चे गुरु को मिले हैं, उनके सारे दुःख नष्ट हो गए हैं॥ ३॥ हे मेरी आत्मा ! हरि का नाम अति उत्तम है, जिसकी आराधना करने से पाप नाश हो जाते हैं। हे मेरी आत्मा ! गुरु-हरि ने पतितों को भी पवित्र कर दिया है और वे चारों दिशाओं एवं चारों ही युगों में प्रख्यात हो गए हैं। हे मेरी आत्मा ! हरि-नामामृत के सरोवर में स्नान करने से मनुष्य की अहंकार की सारी मैल दूर हो गई है। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! एक क्षण भर के लिए भी हरि के नाम में लीन होने से अपराधी पापी जीवों का भवसागर से उद्धार हो गया है॥ ४॥ ३॥

बिहागड़ा महला ४ ॥ हउ बलिहारी तिन्ह कउ मेरी जिंदुड़ीए जिन्ह हरि हरि नामु अधारो राम ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मेरी जिंदुड़ीए बिखु भउजलु तारणहारो राम ॥ जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए तिन संत जना जैकारो राम ॥ नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥ १ ॥ सा रसना धनु धंनु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥ गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥ २ ॥ ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ ते हसत

पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥ तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धरम चलेसहि राम ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरि नामु मनेसहि राम ॥ ३ ॥ धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥ वणु त्रिणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरी आत्मा ! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने परमेश्वर के नाम को अपने जीवन का आधार बनाया हुआ है। हे मेरी आत्मा ! गुरु-सद्‌गुरु ने मेरे मन में परमात्मा का नाम बसा दिया है और उन्होंने मुझे भवसागर से पार कर दिया है। हे मेरी आत्मा ! जिन्होंने एकाग्रचित होकर ईश्वर का ध्यान किया है, उन संतजनों की मैं जय-जयकार करता हूँ। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! हरि का जाप करने से सुख की उपलब्धि होती है, क्योंकि वह सर्व दुःखनाशक है॥ १॥ हे मेरी आत्मा ! वह रसना धन्य-धन्य है जो भगवान का यशोगान करती रहती है। वे कान भी भले तथा अति सुन्दर हैं जो भगवान का भजन-कीर्तन सुनते रहते हैं। वह सिर भी भला तथा पवित्र-पावन है जो गुरु के चरणों में जाकर लगता है। हे मेरी आत्मा ! नानक उस गुरु पर न्यौछावर होता है, जिन्होंने भगवान का नाम याद करवाया है॥ २॥ वे नेत्र भी शुभ एवं (सत्य के दरबार में) स्वीकार हैं जो साधु सतिगुरु के दर्शन करते हैं। वे हाथ भी पुनीत एवं पवित्र हैं जो हरि यश एवं हरि-हरि नाम लिखते रहते हैं। उस भक्त के चरणों की नित्य ही पूजा करनी चाहिए, जो धर्म-मार्ग का अनुसरण करता रहता है। हे मेरी आत्मा ! नानक उन पर न्यौछावर होता है, जो हरि-यश सुनते हैं और उसके नाम पर आस्था धारण करते हैं॥ ३॥ हे मेरी आत्मा ! धरती, पाताल तथा आकाश सभी परमात्मा के नाम की आराधना करते हैं। पवन, पानी एवं अग्नि नित्य ही परमेश्वर का यश गाते रहते हैं। वन, तृण तथा सारा जगत ही अपने मुख से ईश्वर के नाम का सुमिरन करते हैं। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! जो व्यक्ति गुरुमुख बनकर परमात्मा की भक्ति को मन में धारण करते हैं, उन्हें सत्य के दरबार में ऐश्वर्य-परिधान पहनाकर प्रतिष्ठित किया जाता है॥ ४॥ ४॥

बिहागड़ा महला ४ ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए ते मनमुख मूड़ इआणे राम ॥ जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे राम ॥ हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥ जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥ १ ॥ सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु द्रिड़ावै राम ॥ हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥ सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥ २ ॥ हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप कमते राम ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥ हरि निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥ ३ ॥ सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभ दू साहिबु वडा राम ॥ जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही

किसै दी किछु चडा राम ॥ गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥ जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरी आत्मा! जिन्होंने प्रभु के नाम को कभी याद नहीं किया, वे स्वेच्छाचारी जीव विमूढ़ तथा नासमझ हैं। जो व्यक्ति अपना चित्त मोह-माया में लगाते हैं, हे मेरी आत्मा! वे अंतकाल में मृत्युलोक से पश्चाताप की अग्नि में जलते हुए चले जाते हैं। जो स्वेच्छाचारी जीव पापों में अनुरक्त बने हुए हैं, उन्हें हरि के दरबार में सहारा नहीं मिलता। नानक कथन करते हैं कि हे मेरी आत्मा! गुरु को मिलने से जीव का भवसागर से उद्धार हो जाता है तथा प्रभु के नाम का चिंतन करते हुए जीव नाम में ही समा जाता है॥ १॥ हे मेरी आत्मा! तुम सभी जाकर सच्चे गुरु से मिलो, जो हरि का नाम चित्त में बसाता है। हरि का नाम-स्मरण करने में क्षण भर के लिए भी देरी मत करो चूंकि क्या पता कि अग्रिम श्वास जीव को आएगा अथवा आएगा ही नहीं। हे मेरी आत्मा! वह समय, मुहूर्त, घडी तथा पल शुभ है, जब मेरा परमात्मा चित्त में आ जाता है। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा! जिसने परमात्मा के नाम का सुमिरन किया है, यमदूत उसके निकट नहीं आता॥ २॥ हे मेरी आत्मा! भगवान नित्य ही सब कुछ देखता एवं सुनता है, जो लोग पाप करते रहते हैं, उन्हें ही डर लगता है। जिस मनुष्य का हृदय शुद्ध है, वह अपने सभी भय परे फैंक देता है। हे मेरी आत्मा! जिस जीव का निर्भय परमेश्वर के नाम पर निश्चय है, उसके विरुद्ध सभी कामादिक दुष्ट झख मारने लगते हैं। नानक ने अपने पूर्ण गुरु की श्रद्धा से सेवा की है, हे मेरी आत्मा! जिसने सभी को लाकर उसके चरणों में डाल दिया है॥ ३॥ हे मेरी आत्मा! सो नित्य ही ऐसे परमेश्वर की भक्ति करनी चाहिए, जो सभी जीवों का बड़ा मालिक है। जो लोग एक मन से एक परमात्मा की आराधना करते हैं, वे किसी भी व्यक्ति के मोहताज नहीं होते। गुरु की सेवा करने से हरि का मन्दिर (आत्मस्वरूप) प्राप्त हो जाता है, हे मेरी आत्मा! उन्होंने ही हरि-नाम का चिंतन किया है, जिनके मस्तक पर जन्म से पूर्व प्रारम्भ से ही परमेश्वर ने लेख लिख दिया है॥ ४॥ ५॥

बिहागड़ा महला ४ ॥ सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीइ कमाईऐ राम ॥ हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम ॥ मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम ॥ जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥ १ ॥ से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥ तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम ॥ नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥ २ ॥ हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि त्रिसना जाए राम ॥ जिसु दइआ करे मेरा पारब्रहमु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम ॥ जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए राम ॥ वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥ ३ ॥ थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रहमु प्रभु दाता राम ॥ ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥ सरब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥ सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

हे मेरे हरि-प्रभु! सभी जीव तेरे पैदा किए हुए हैं और सब के भीतर तू ही मौजूद है। ये जीव

जो भी कर्म करते हैं, इस संबंध में तू सबकुछ जानता है। हे मेरी आत्मा ! हरि भीतर एवं बाहर सभी के साथ है तथा सबकुछ देखता है किन्तु अज्ञानी मानव अपने मन में किए पाप कर्मों से मुकर जाता है। हे मेरी आत्मा ! स्वेच्छाचारी लोगों से भगवान दूर ही रहता है तथा उनका तमाम परिश्रम निष्फल हो जाता है। हे मेरी आत्मा ! नानक ने गुरुमुख बनकर हरि की आराधना की है तथा वह हरि को हर तरफ प्रत्यक्ष ही देखता है॥ १॥ हे मेरी आत्मा ! वही सच्चे भक्त तथा सेवक हैं जो मेरे प्रभु के चित्त को लुभाते हैं। हे मेरी आत्मा ! हरि के दरबार में ऐसे सच्चे भक्तों एवं सेवकों को प्रतिष्ठा का वस्त्र पहनाया जाता है और वे रात-दिन सत्य में ही समाए रहते हैं। हे मेरी आत्मा ! उनकी संगति में रहने से विकारों की मैल उतर जाती है, जो प्राणी परमेश्वर के प्रेम-रंग में रंग जाता है और उस पर उसकी कृपा का चिन्ह अंकित हो जाता है। हे मेरी आत्मा ! नानक की प्रभु से विनती है कि वह साधुओं की संगति में रहकर तृप्त हो जाए॥ २॥ हे मेरी रसना ! परमात्मा का भजन कर, परमात्मा का भजन करने से तृष्णा मिट जाती है। हे मेरी आत्मा ! मेरा परब्रह्म जिस जीव पर भी दया करता है, वह उसके मन में अपने नाम को बसा देता है। जो व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु से मिलता है, उसे हरि धन रूपी निधि प्राप्त हो जाती है। नानक का कथन है कि हे मेरी आत्मा ! सौभाग्य से ही सद्पुरुषों की संगति मिलती है, जहाँ भगवान का यशोगान होता रहता है॥ ३॥ हे मेरी आत्मा ! परब्रह्म-प्रभु सब जीवों का दाता विश्व के कोने-कोने में बस रहा है, उसका अन्त नहीं पाया जा सकता है क्योंकि वह पूर्ण अकालपुरुष विधाता है। हे मेरी आत्मा ! वह सब जीवों का ऐसे भरण-पोषण करता है जैसे माता-पिता अपने बालक की परवरिश करते हैं। हे मेरी आत्मा ! हजारों चतुराईयों का प्रयोग करने पर भी परमात्मा नहीं मिलता किन्तु नानक ने गुरुमुख बनकर ईश्वर को समझ लिया है॥ ४॥ ६॥ छका १॥

बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का एकु अचंभउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धरम निआए राम ॥ हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥ आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥ इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ अंतु तेरा तूंहै जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाए ॥ सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धरम निआए ॥ १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥ करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥ मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ ॥ जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्हा रैणि दिनु लिव लाईऐ ॥ हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे ॥ जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥ २ ॥ कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥ बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥ जिसु होइ क्रिपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए ॥ भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ जनु कहै नानकु मिलि साधसंगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥ ३ ॥ दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम ॥ सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ ॥ मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ ॥ जहा देखा तहा सुआमी पारब्रहमु सभ ठाए ॥ जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मेरे प्यारे! ईश्वर का मैंने एक अद्‌भुत कौतुक देखा है कि वह जो कुछ भी करता है, वह धर्म अनुसार ही न्याय करता है। ईश्वर ने इस सृष्टि को एक ऐसा रंगभवन अथवा अखाड़ा बनाया हुआ है, जहाँ सभी जीवों का जन्म-मरण अटल किया हुआ है अर्थात् इस सृष्टि में प्राणी जन्म के रूप में आते तथा मृत्यु के रूप में चले जाते हैं। जिस ने पृथ्वी की रचना की है, उसने ही जीवों के जन्म-मरण का चक्र नियत किया हुआ है। परमात्मा कुछ जीवों को सतगुरु से मिलाकर उन्हें अपने दरबार में बुला लेता है। किन्तु कई जीव दुविधा में फँसकर भटकते रहते हैं। हे दुनिया के मालिक! अपना अन्त केवल तू ही जानता है, तू समस्त जीवों में समाया हुआ है। हे संतजनों! ध्यानपूर्वक सुनो, नानक सत्य ही कहता है कि ईश्वर धर्म अनुसार न्याय में क्रियाशील है॥ १॥ हे मेरी सखियो, आकर मुझे मिलो, ताकि हम मिलकर परमेश्वर के नाम की आराधना करें। हे मेरे प्यारे! आओ, हम मिलकर पूर्ण सतिगुरु की सेवा करें तथा यम का मार्ग संवार लें। गुरुमुख बनकर इस विषम मार्ग को सहज बनाकर हम परमेश्वर के दरबार में शोभा प्राप्त करें। जिनके लिए विधाता ने जन्म से पूर्व प्रारम्भ से ही ऐसा लेख लिख दिया है, वे रात-दिन उससे वृत्ति लगाते हैं। जब प्राणी संतों की सभा में शामिल हो जाता है तो उसके अहंकार, ममता एवं मोह का नाश हो जाता है। सेवक नानक कहता है कि जो जीव परमेश्वर के नाम की आराधना करता है, वह संसार-सागर से मुक्त हो जाता है॥ २॥ हे संतजनो! आओ हम इकट्ठे होकर हाथ जोड़कर अविनाशी परमात्मा की पूजा करें। हे मेरे प्यारे! मैंने पूजा करने की अनेक प्रकार की विधि की खोज की है किन्तु सच्ची पूजा यही है कि हम अपना यह मन-तन सब कुछ उसे अर्पण कर दें। यह मन, तन, धन सभी प्रभु के हैं, फिर कोई पूजा के तौर पर उसे क्या भेंट कर सकता है? जिस पर दुनिया का स्वामी हरि कृपालु तथा दयालु होता है, वही जीव उसकी गोद में लीन होता है। जिसके मस्तक पर ऐसा भाग्य लिखा होता है, उसका गुरु के साथ स्नेह हो जाता है। नानक कथन करता है कि आओ हम संतों की सभा में मिलकर परमेश्वर के नाम की पूजा करें॥ ३॥ हे मेरे प्यारे! हम दस-दिशाओं में प्रभु की खोज करते रहे किन्तु वह तो हमारे हृदय-घर में ही प्राप्त हो गया है। पूज्य हरि ने मानव-शरीर को ही हरि-मंदिर बनाया हुआ है, जिसमें वह निवास कर रहा है। जगत का स्वामी हरि ही सभी जीवों में समाया हुआ है और वह गुरु द्वारा मेरे हृदय-घर में प्रगट हो गया है। मेरे मन में से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है और दुःख-क्लेश भाग गए हैं और अमृत जैसा मीठा हरि-रस टपकने लग गया है। जहाँ-कहीं भी देखता हूँ, उधर ही परब्रह्म स्वामी सर्वव्यापक है। नानक का कथन है कि सतिगुरु ने मुझे परमात्मा से मिला दिया है, जिसे मैंने अपने हृदय-घर में ही पा लिया है॥ ४॥ १॥

रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥ गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥ नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा ॥ नानकु पइअंपै संत जंपै मेलि कंतु हमारा ॥ १ ॥ लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥ मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥ चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन बिधी न धीजीऐ ॥ खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ ॥ आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीऐ इकु तिलै ॥ नानकु पइअंपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥ २ ॥ सेज एक प्रिउ संगि दरसु न पाईऐ राम ॥ अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईऐ राम ॥ निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपा निधे ॥ भ्रम भीति खोईऐ सहजि सोईऐ प्रभ पलक पेखत नव निधे ॥ ग्रिहि

लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईऐ ॥ नानकु पइअंपै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईऐ ॥ ३ ॥ संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥ इछ पुंनी मनि सांति तपति बुझाइआ राम ॥ सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥ प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना ॥ भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥ नानकु पइअंपै संत जंपै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

मेरा भगवान बहुत प्यारा, मन को मुग्ध करने वाला, सब शरीरों में शोभा देने वाला तथा सब के प्राणों का आधार है। उस दयालु लाल गोपाल की बड़ी सुन्दर शोभा है, जो अपरंपार है। हे दयालु गोपाल! हे प्रियतम गोबिन्द! हे पति-परमेश्वर! मुझ विनीत जीव-स्त्री को भी दर्शन दीजिए। मेरे नेत्र तेरे दर्शन-दीदार हेतु तरस रहे हैं, मेरी जीवन रूपी रात्रि व्यतीत होती जा रही है किन्तु मुझे नींद नहीं आती। मैंने ज्ञान का सुरमा अपने नेत्रों में लगाया है और प्रभु के नाम को अपना भोजन बनाया है, इस प्रकार सभी श्रृंगार किए हुए हैं। नानक संतों के चरण स्पर्श करता है एवं प्रार्थना करता है कि मुझे पति-परमेश्वर से मिला दो॥ १॥ जब तक मेरा परमेश्वर नहीं मिलता, तब तक लोगों के लाखों उलाहने सहन करने पड़ते हैं। मैं प्रभु-मिलन हेतु उपाय करता हूँ किन्तु मेरा कोई भी उपाय सार्थक नहीं होता। यह धन-सम्पत्ति नश्वर है, प्रिय प्रभु के बिना किसी विधि से भी मुझे धैर्य नहीं मिलता। मेरा खानपान तथा सभी श्रृंगार व्यर्थ हैं। अपने पति-प्रभु के बिना जीना असंभव है। मैं रात-दिन उसके दर्शनों की आशा में प्यासी रहती हूँ, उसके बिना मैं क्षण भर के लिए भी नहीं रह सकती। नानक प्रार्थना करता है कि हे संत जनो! मैं आपकी दासी हूँ, मेरा प्रियतम-प्रभु आपकी कृपा से ही मिल सकता है॥ २॥ अपने प्रिय प्रभु के साथ ही मेरी सेज है किन्तु फिर भी उनके दर्शनों की प्राप्ति नहीं होती। मुझमें अनेक अवगुण विद्यमान हैं, जिसके फलस्वरूप मेरा पति-प्रभु अपने दरबार में कैसे आमंत्रित कर सकता है? निर्गुण, विनीत तथा अनाथ जीवात्मा विनती करती है कि हे कृपानिधि ! मुझे दर्शन देकर कृतार्थ कीजिए। एक पल भर के लिए भी नवनिधि के स्वामी प्रभु के दर्शन करने से भ्रम की दीवार ध्वस्त हो जाती है और मैं सहज सुख में सोती हूँ। यदि मेरा प्रियतम प्रभु मेरे हृदय-घर में आ जाए तो वहाँ टिक कर मैं उसके साथ मिलकर मंगल गीत गायन करूँगी। नानक संतों के चरण छूता है और उनकी शरण में पड़ता है। हे संतजनो! मुझे प्रभु के दर्शन करा दो॥ ३॥ संतजनों की अपार कृपा से मैंने भगवान को पा लिया है। मेरी इच्छा पूर्ण हो गई है, मन को शांति मिलने से तृष्णा की जलन बुझ गई है। वह दिन बड़ा शुभ है, वह रात भी सुहावनी है, आनंद, मंगल तथा हर्षोल्लास अधिकतर है, जब प्रियतम गोपाल गोविन्द मेरे हृदय में प्रगट हुआ है। किस रसना से मैं उसके गुणों का उच्चारण कर सकती हूँ? मेरा भ्रम, लोभ, मोह तथा विकार नष्ट हो गए हैं तथा अपनी ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी सखियों के साथ मिलकर मंगल गीत गाती हूँ। नानक उन संतों के चरणों में पड़ता है और उनके समक्ष प्रार्थना करता है, जिन्होंने संयोग बनाकर उसे भगवान से मिला दिया है॥ ४॥ २॥

बिहागड़ा महला ५ ॥ करि किरपा गुर पारब्रहम पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम ॥ अम्रित बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥ करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥ समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम्ह मना ॥ मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा ॥ बिनवंति नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥ १ ॥ साधह सरणी पाईऐ हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥ धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥ पतिता

पुनीता होहि तिन्ह संगि जिन्ह बिधाता पाइआ ॥ नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ ॥ रिधि सिधि नव निधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥ बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥ २ ॥ जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥ बहुतु खजाना तिंन पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥ कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥ एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥ लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना ओमाहा ॥ बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा ॥ ३ ॥ नानक सोई सिमरीऐ हरि जीउ जा की कल धारी राम ॥ गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम ॥ दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ वजी वधाई मनि सांति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥ बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुंनी हमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरे पूर्ण गुरु परब्रह्म ! मुझ पर ऐसी कृपा करो ताकि रात-दिन तेरा नाम ही याद करता रहूँ। मैं अमृत वाणी उच्चरित करूँ और हरि-यश द्वारा तेरी रजा मुझे मीठी लगे। हे गोपाल गोविन्द ! मुझ पर दया एवं कृपा करो, क्योंकि तेरे बिना मेरा कोई भी आधार नहीं। हे सर्वशक्तिमान, अकथनीय, अपार तथा सर्वव्यापक परमेश्वर ! मेरे प्राण, तन, धन एवं मन सभी तेरे ही दिए हैं। मैं मूर्ख, विमूढ़, अनाथ, चंचल, बलहीन, तुच्छ तथा नासमझ जीव हूँ। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर ! मैंने तेरी ही शरण ली है, मेरी जन्म-मरण के चक्र से रक्षा करो॥ १॥ साधुओं की शरण में आने से परमेश्वर की लब्धि हो जाती है, जहाँ नित्य ही परमेश्वर का गुणगान किया जाता है। हे पूज्य परमेश्वर ! यदि तेरे भक्तों की चरण-धूलि मन एवं तन को लग जाए तो सभी पतित जीव पावन हो जाते हैं। जिन्होंने अपने विधाता को प्राप्त कर लिया है, उनकी संगति करने से पतित व्यक्ति पावन हो जाते हैं। परमेश्वर के नाम में अनुरक्त हुए वे भक्तजन जीवों को नित्य ही आध्यात्मिक दान देते रहते हैं और उनका दान प्रतिदिन बढ़ता रहता है। जो प्राणी हरि नाम का जाप करते हुए अपने मन को जीत लेते हैं, उन्हें ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ एवं नवनिधियाँ मिल जाती हैं। नानक प्रार्थना करते हैं कि अहोभाग्य से ही साधु रूपी साजन तथा मित्र मिलते हैं॥ २॥ हे प्रभु जी ! जो तेरे सत्य-नाम का व्यापार करते हैं, वही पूर्ण साहूकार हैं। हे श्रीहरि ! उनके पास तेरे नाम का अपार खजाना है और वे हरि-कीर्तन का लाभ प्राप्त करते हैं। जो व्यक्ति प्रभु के प्रेम-रंग में अनुरक्त हुए हैं, वे काम, क्रोध तथा लोभ से दूर ही रहते हैं। वे केवल एक परमेश्वर को ही जानते हैं, उस एक पर ही आस्था धारण करते हैं और उसके रंग में मग्न रहते हैं। वे संतों के चरण-स्पर्श करते हैं, उनकी शरण लेते हैं तथा उनके मन में उमंग होती है। नानक प्रार्थना करता है कि जिनके पास परमात्मा का नाम है, वही सच्चे साहूकार हैं॥ ३॥ हे नानक ! उस पूज्य परमेश्वर की ही आराधना करनी चाहिए, जिसकी शक्ति समूचे जगत में क्रियाशील है। गुरुमुख व्यक्ति अपने मन से जगत के रचयिता श्रीहरि, मुरारि को विस्मृत नहीं करते। जिन्होंने परमेश्वर का ध्यान किया है, उन्हें कोई दुःख, रोग तथा भय नहीं लगता। संतों की अपार कृपा से वे भयानक संसार-सागर से तर जाते हैं तथा जो उनके लिए परमात्मा ने प्रारम्भ से लिखा होता है, उन्हें प्राप्त हो जाता है। अपार परमात्मा को मिलने से उन्हें शुभ कामनाएँ मिलती हैं तथा मन को शांति प्राप्त होती है। नानक विनती करते हैं कि भगवान की आराधना करने से हमारी मनोकामना पूरी हो गई है॥ ४॥ ३॥

बिहागड़ा महला ५ घरु २ ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥

वधु सुखु रैनड़ीए प्रिअ प्रेमु लगा ॥ घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥ पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥ प्रिअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥ गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥ १ ॥ मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥ मनि प्रिअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह ॥ हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥ मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥ बड पुरख पूरन गुण संपूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥ बिनवंति नानक सुणि मंतु सखीए हरि नामु नित नित नित जपह ॥ २ ॥ हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे ॥ रांड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे ॥ नह दूख पावै प्रभ धिआवै धंनि ते बडभागीआ ॥ सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ ॥ मिलि प्रेम रहणा हरि नामु गहणा प्रिअ बचन मीठे भाणे ॥ बिनवंति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥ ३ ॥ तितु ग्रिहि सोहिलड़े कोड अनंदा ॥ मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानंदा ॥ हरि कंत अनंत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो ॥ प्रभि क्रिपा धारी हरि मुरारी भै सिंधु सागर तारणो ॥ जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥ ४ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे सुखदायिनी रात्रि! तू बहुत लम्बी हो जा, चूंकि प्रिय प्रभु के संग मेरा अपार प्रेम लग चुका है। हे दुःखदायी निद्रा! तू छोटी हो जा, ताकि मैं नित्य ही प्रभु-चरणों में लीन रहूँ। मैं सदा परमात्मा की चरण-धूलि की कामना करती हूँ एवं उसके नाम दान की अभिलाषा करती हूँ, जिस हेतु मैं बैरागिन बनी हूँ। अपने प्रिय प्रभु के प्रेम-रंग में अनुरक्त होकर सहजता में मतवाली होकर मैंने महादुर्मति त्याग दी है। मुझ प्रेम-रस में भीगी हुई की भुजा प्रिय-प्रभु ने पकड़ ली है और प्रियतम का मिलन ही सच्चा-मार्ग है। नानक विनय करता है कि हे ईश्वर! मुझ पर अपनी कृपा धारण करो ताकि मैं तेरे चरणों के संग सदैव लगा रहूँ॥१॥ हे मेरी सखी-सहेलियो! आओ, हम परमात्मा के चरणों में लीन रहें। मन में प्रियतम प्रभु हेतु अत्यंत प्रेम है। आओ, हम मिलकर हरि की भक्ति की कामना करें। हरि-भक्ति प्राप्त करके प्रभु का ध्यान करें और जाकर भक्तों से मिलें। आओ, हम मान, मोह एवं विकारों को छोड़कर अपना यह तन, मन, धन परमात्मा को अर्पित कर दें। परमेश्वर बड़ा महान्, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक तथा सर्वगुणसम्पन्न है, जिसे मिलने से भ्रम की दीवार ध्वस्त हो जाती है। नानक विनय करता है कि हे सखियो! मेरा उपदेश ध्यानपूर्वक सुनो, हमने नित्य निशदिन ही हरि-नाम का जाप करते रहना है॥ २॥ हरि की पत्नी सदैव ही सुहागिन रहती है, वह सर्व प्रकार से ऐश्वर्य-सुख भोगती है। वह कभी विधवा होकर नहीं बैठती चूंकि उसका स्वामी प्रभु चिरजीवी है। वह पति-प्रभु को याद करती रहती है और कोई भी दुःख प्राप्त नहीं करती। ऐसी जीव-स्त्री धन्य एवं भाग्यशाली है। वह सहज सुख में विश्राम करती है और उसके तमाम दुःख-क्लेश नष्ट हो जाते हैं। वह तो नाम-रस में रंगकर जागती है। वह उसके प्रेम में लीन रहती है और हरि का नाम उसका अमूल्य आभूषण है। प्रियतम प्रभु के वचन उसे बड़े मीठे तथा भले लगते हैं। नानक प्रार्थना करता है कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई है, क्योंकि मुझे चिरजीवी पति-परमेश्वर मिल गया है॥ ३॥ उस घर हृदय में बड़े मंगल गीत, कौतुक तथा आनंद-उल्लास हैं, जिस मन, तन में परमानंद प्रभु निवास करता है। मेरा हरि-कांत अनंत दयालु

है। हे श्रीधर ! हे गोविन्द ! तू पतित जीवों का उद्धार करने वाला है। प्रभु सब पर कृपा करने वाला है और वह हरि मुरारी भयानक संसार-सागर से जीवों को पार करने वाला है। यह उस स्वामी का विरद् है कि जो कोई भी उसकी शरण में आता है, वह उसे अपने गले से लगा लेता है। नानक विनय करता है कि मेरा कांत (पति) हरि मुझे मिल गया है जो सदा ही आनंद-क्रीड़ा में क्रियाशील है॥ ४॥ १॥ ४॥

बिहागड़ा महला ५ ॥ हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना ॥ करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥ जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥ मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥ १ ॥ तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥ मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिंनीआ ॥ हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ एक अगम अपारो ॥ बिनवंति नानक सदा निरमल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥ २ ॥ सुणि वडभागीआ हरि अंम्रित बाणी राम ॥ जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥ अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥ हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ बिनवंति नानक सदा गाईऐ पवित्र अंम्रित बाणी ॥ ३ ॥ मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥ जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥ मिलि ब्रहम जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा द्रिसटाइआ ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥

हे मेरे मन ! भगवान के चरण पावन सरोवर हैं, वहाँ पर अपना निवास करो। हे मेरे मन ! भगवान के पावन सरोवर में स्नान करो, क्योंकि वहाँ पर तेरे सभी दुःख संताप नाश हो जाएँगे। उस गोविन्द-साजन के नाम-सरोवर में सदा स्नान करो, जिससे दुःख के अँधेरे का नाश हो जाता है। जीव की जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति हो जाती है, क्योंकि प्रभु उसकी यम (मृत्यु) की फाँसी काट देता है। संतों की सभा में शामिल होकर नाम-रंग में लीन रहो, वहाँ हर आशा पूर्ण हो जाएगी। नानक प्रार्थना करता है कि हे हरि ! कृपा धारण करके मुझे अपने सुन्दर चरण-कमल में निवास दीजिए॥ १॥ वहाँ पर सदा आनंद तथा हर्षोल्लास है और अनहद शब्द गूंजता रहता है। संतजन मिलकर प्रभु का यशोगान करते हैं तथा उसकी जय-जयकार करते रहते हैं। संतजन अपने मालिक को लुभाते हैं, वे अपने स्वामी की गुणस्तुति करते हैं तथा उसके प्रेम-रस के रंग में भीगे रहते हैं। वे अपना अहंत्व मिटाकर परमेश्वर रूपी कोष को प्राप्त कर लेते हैं तथा दीर्घकाल से जुदा हुए उससे मिल जाते हैं। एक अगम्य एवं अपार प्रभु उन पर अपनी दया-दृष्टि करता है और उन्हें अपनी भुजा से पकड़ कर अपना बना लेता है। नानक प्रार्थना करता है कि उनके मन में सदैव निर्मल सच्चा अनहद शब्द रुनझुन-झंकार करता रहता है॥ २॥ हे भाग्यशाली ! परमात्मा की अमृत-वाणी सुनो। जिनकी किस्मत में यह अमृत-वाणी लिखी होती है, उनके हृदय में यह प्रविष्ट हो जाती है। जिस पर प्रभु आप कृपा करता है, उसे ही उसकी अकथनीय कथा का ज्ञान होता है। ऐसा जीव अमर हो जाता है और फिर मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। उसके सभी दुःख-क्लेश तथा संताप विनष्ट हो जाते हैं। वह भगवान की शरण प्राप्त कर लेता है जो उसे त्याग

कर कहीं नहीं जाता और प्रभु की प्रीति उसके मन-तन को लुभाती है। नानक प्रार्थना करता है कि हे जीव ! हमें सदैव ही पवित्र अमृत-वाणी का गुणानुवाद करते रहना चाहिए॥ ३॥ परमात्मा की अमृत-वाणी में मन तथा तन इतना लीन हो जाता है कि कुछ कथन नहीं किया जा सकता। जिस (परमेश्वर) ने प्राणी को पैदा किया था, वह उसी में लीन हो जाता है। वह ब्रह्म-ज्योति में ताने-पेटे की भाँति ऐसे विलीन हो जाता है जैसे जल, जल में ही मिल जाता है। एक परमात्मा ही जल, धरती एवं गगन में मौजूद है, दूसरा कोई दृष्टिगोचर नहीं होता। वह वन, तृण एवं तीनों लोकों में परिपूर्ण व्यापक है तथा उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। नानक प्रार्थना करता है कि जिस परमात्मा ने यह सृष्टि-रचना की है, वह स्वयं ही इस संबंध में सब कुछ जानता है॥ ४॥ २॥ ५॥

बिहागड़ा महला ५ ॥ खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥ ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे करि दइआ लड़ि लाइ लीजीऐ ॥ देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ ॥ समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥ १ ॥ जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥ तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥ प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ ॥ अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ ॥ दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥ नानक चातिक हरि बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥ २ ॥ अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥ संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम ॥ सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥ आनंद अनदिनु सदा साचा सरब गुण जगदीसरै ॥ अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जा को धामा ॥ बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥ ३ ॥ कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥ हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥ हरि नामु जपत सोहंत प्राणी ता की महिमा कित गना ॥ हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवंति दरसनु सद मना ॥ सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए प्रभ ऊच अगम अपारे ॥ बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥

संतजन उस भगवान को खोजते रहते हैं, जो हम सभी के प्राणों का मूल आधार है। अपने प्रियतम प्रभु के मिलन बिना उनकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है। हे प्रियतम प्रभु ! कृपा करके मुझे आकर मिलो तथा दया करके अपने दामन के साथ मुझे मिला लीजिए। हे मेरे स्वामी ! कृपा-दृष्टि करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए जिससे मैं तेरी आराधना करता रहूँ और तेरे दर्शन करके ही मैं जीवित रह सकता हूँ। हे दुनिया के मालिक ! तू सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सदा अटल, सर्वोपरि, अगम्य तथा अपार है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्राण प्रिय परमेश्वर ! कृपा करके मुझे आकर मिलो॥ १॥ हे राम ! तेरे चरणों के दर्शनों हेतु मैंने अनेक ही जप, तपस्या एवं व्रत इत्यादि किए हैं परन्तु तेरी शरण के बिना मन की तृष्णा कदाचित नहीं बुझती। हे प्रभु ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, मेरी विकारों की बेड़ियाँ काट दीजिए और इस संसार-सागर से पार कर दें। मैं अनाथ तथा निर्गुण हूँ, मैं कुछ भी नहीं जानता, इसलिए तुम मेरे गुण-अवगुण पर विचार मत करना। प्रियतम गोपाल बड़ा दीनदयालु, सर्वशक्तिमान तथा करने कराने वाला है, नानक रूपी चातक हरि रूपी नाम-बूंद माँगता है तथा हरि के चरणों का जाप करते हुए जीवित रहता है॥ २॥ हे जीव ! हरि अमृत का सरोवर है, उस हरिनामामृत का पान करो। संतजनों की सभा में ही परमेश्वर मिलता है और उसकी आराधना करने से सभी कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं। वह सभी

कार्य सम्पूर्ण करने वाला तथा दुःखों का विदीर्ण करने वाला है, इसलिए अपने मन में हमें उसे एक पल भी विस्मृत नहीं करना चाहिए। सर्वगुणसम्पन्न जगदीश्वर रात-दिन आनंद में तथा सदा सत्यस्वरूप है, वह ठाकुर अनंत, सर्वोच्च तथा अपार है, जिसका धाम अगम्य है। नानक प्रार्थना करता है कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो गई है, क्योंकि मुझे ईश्वर मिल गया है॥ ३॥ प्रभु का यश सुनने एवं गाने वालों को कई करोड़ यज्ञों का फल प्राप्त होता है। परमात्मा के नाम का जाप करने वालों की सारी वंशावलि ही संसार-सागर से पार हो जाती है। हरि के नाम का जाप करने से प्राणी शोभावान बन जाता है, जिसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। हे प्राण प्यारे परमेश्वर ! मैं तुझे नहीं भुला सकता क्योंकि मेरे मन को सदैव ही तेरे दर्शनों की अभिलाषा बनी रहती है। वह बड़ा शुभ दिवस आया है, जब सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार प्रभु ने अपने गले से हमें लगाया है। नानक प्रार्थना करता है कि जब अत्यंत प्रिय प्रभु मिल जाता है,सबकुछ सफल हो जाता है॥ ४॥ ३॥ ६॥

बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ अन काए रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥ पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम ॥ कोए न बेली होइ तेरा सदा पछोतावहे ॥ गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥ तरवर विछुंने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली ॥ बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥ १ ॥ तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ लेखा धरम भइआ तिल पीड़े घाणी राम ॥ किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ ॥ महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइआ ॥ इकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी ॥ बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ॥ २ ॥ बीचु न कोइ करे अक्रितघणु विछुड़ि पइआ ॥ आए खरे कठिन जमकंकरि पकड़ि लइआ ॥ पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥ गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थंम्ह गलि लातिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥ बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥ ३ ॥ तुझ बिनु को नाही प्रभ राखनहारा राम ॥ पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥ पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपा निधि दइआला ॥ अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥ सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा ॥ बिनवंत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ॥ ४ ॥ सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥ सभि सुख परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥ सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥ भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥ गहि कंठि लाए सहजि सुभाए आदि अंकुरु आइआ ॥ बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू न जाइआ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे मानव-जीव ! क्यों निरर्थक पदार्थों के मोह में फँसे हुए हो ? क्योंकि यह जीवन-मार्ग बड़ा मुश्किल है। हे पाप कमाने वाले ! दुनिया में तेरा कोई भी साथी नहीं। यदि कोई भी तेरा साथी नहीं होगा तो अपने किए कर्मों पर सदा पश्चाताप ही करता रहेगा। तू अपनी रसना से दुनिया के मालिक गोपाल के गुणों का जाप नहीं करता। यह जीवन का शुभावसर दोबारा फिर तुझे कब मिलेगा ? जिस प्रकार वृक्ष से टूटे हुए पत्ते पुनः वृक्ष से नहीं जुड़ सकते, वैसे ही जीवात्मा मृत्यु के मार्ग पर अकेले ही चल देती है। नानक प्रार्थना करता है कि हरि के नाम के बिना जीवात्मा सदैव ही दुःख-संताप में भटकती रहती है॥ १॥ हे जीव ! तू छिप-छिपकर बड़े छल-कपट करता रहता है किन्तु प्रभु सब कुछ जानता है। जब परलोक में धर्मराज तेरे कर्मों का लेखा-जोखा करेगा तो दुष्कर्मों के कारण तुम तिलों की भाँति घानी में पेरे जाओगे। हे नश्वर प्राणी ! अपने किए हुए

कर्मों का दुःख रूपी दण्ड तुझे भोगना ही पड़ेगा तथा तुम अनेक योनियों के चक्र में पड़कर भटकते रहोगे। महा मोहिनी के आकर्षण में फँस कर प्राणी अपना हीरे जैसा अनमोल मनुष्य-जीवन गंवा देता है। एक परमेश्वर के नाम के अतिरिक्त जीवात्मा सभी कार्यों में कुशल एवं चतुर है। नानक प्रार्थना करता है कि जिनके कर्मालेख में ऐसा लिखा हुआ है, वह दुविधा तथा सांसारिक मोह में लीन रहते हैं॥ २॥ कृतघ्न मनुष्य परमेश्वर से जुदा ही रहता है और कोई भी उसका मध्यस्थ नहीं होता। कठिन यमदूत आकर उसे पकड़ लेते हैं और उसके दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप यमदूत उसे आगे लगा लेते हैं, क्योंकि वह महामोहिनी में लीन रहा था। जो मनुष्य गुरुमुख बनकर परमात्मा का गुणगान नहीं करता, वह तपते हुए स्तम्भ से लगा दिया जाता है। जीव काम, क्रोध एवं अहंकार में लीन होकर सबकुछ गंवा देता है और ज्ञान से विहीन होकर पश्चाताप करता रहता है। नानक प्रार्थना करता है कि कर्मों के फलस्वरूप ही मनुष्य संयोग कारण प्रभु को विस्मृत करके कुमार्गगामी बना है। इसलिए वह अपनी रसना से श्रीहरि के नाम का जाप नहीं जपता॥ ३॥ हे प्रभु! तेरे सिवाय हमारा कोई भी रखवाला नहीं है। हे श्रीहरि! पतित लोगों का उद्धार करना तेरा विरद है। हे पतितों का उद्धार करने वाले स्वामी! हे कृपानिधि! हे दया के घर! मैं तेरी शरण में (आया) हूँ। हे जगत के रचयिता! मेरा नश्वर जगत रूपी अन्धकूप से उद्धार करो तू सब जीवों का भरण-पोषण करने वाला है। मैं तेरी शरण में आया हूँ, कृपा करके मेरी सांसारिक महा बेड़ियों काट दीजिए और अपने एक नाम का आधार प्रदान कीजिए। नानक प्रार्थना करता है कि हे दीनदयाल गोबिन्द! अपनी कृपा का हाथ रखकर मेरी रक्षा कीजिए॥ ४॥ वह दिन बड़ा शुभ गिना जाता है, जब परमात्मा से मेरा मिलन होता है। सभी सुख-ऐश्वर्य प्रत्यक्ष हो गए हैं तथा दुःख मुझ से दूर हो गए हैं। नित्य ही जगतपालक गोपाल का गुणगान करने से सदैव सहज सुख एवं आनंद-विनोद की उपलब्धि होती है। संतों की सभा में शामिल होकर मैं प्रभु के नाम का भजन करता हूँ, जिसके फलस्वरूप मुझे दोबारा योनियों में नहीं भटकना पड़ेगा। परमात्मा ने सहज-स्वभाव ही मुझे अपने गले से लगा लिया है और मेरे पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का अंकुर अंकुरित हो गया है। नानक प्रार्थना करता है कि भगवान स्वयं ही मुझे मिल गया है और वह कदाचित मुझसे दोबारा दूर नहीं जाता॥ ५॥ ४॥ ७॥

बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ सुनहु बेनंतीआ सुआमी मेरे राम ॥ कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम ॥ दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भंजना ॥ सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरंजना ॥ सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे ॥ अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे ॥ १ ॥ तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम ॥ माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम ॥ लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने ॥ अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने ॥ करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥ बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी ॥ २ ॥ तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥ पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम ॥ अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना ॥ रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीचु इआना ॥ तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी ॥ नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥ ३ ॥ जा ते वीछुड़िआ तिनि आपि मिलाइआ राम ॥ साधू संगमे हरि गुण गाइआ राम ॥ गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिआण मै परगट भए ॥ सेजा सुहावी संगि प्रभ कै आपणे प्रभ करि लए ॥ छोडि चिंत अचिंत होए बहुड़ि दूखु न पाइआ ॥ नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुण निधि गाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ८ ॥

हे मेरे स्वामी! मेरा निवेदन सुनो, हम जीवों में चाहे करोड़ों ही अपराध भरे हुए हैं किन्तु फिर भी हम तेरे ही सेवक हैं। हे दुःखनाशक! हे कृपा करने वाले मोहन! हे कलह-क्लेश के नाशक! हे सर्वव्यापक निरंजन! मैं तेरी शरण में आया हूँ, दया करके मेरी लाज-प्रतिष्ठा रखें। प्रभु सभी को सुनता एवं देखता है। वह हम सभी के साथ है और निकट से अति निकट है। हे स्वामी! नानक की प्रार्थना सुन लो और मुझे अपने घर के सेवक की तरह रख लो॥ १॥ हे राम! तू सदैव सर्वशक्तिमान है परन्तु हम जीव तो दीन भिखारी हैं। हे मुरारि प्रभु! मैं माया के मोह में मग्न हूँ, दया करके मुझे माया से निकाल लीजिए। लोभ, मोह एवं विकारों में फँसकर मैंने अनेक दोष कमाए हैं। जीव अपने किए हुए शुभाशुभ कर्मों का फल भोगता रहता है। हे पतितपावन! मुझ पर अनुग्रह करो, क्योंकि मैं अनेक योनियों में भटकता हुआ हार गया हूँ। नानक प्रार्थना करता है कि मैं परमात्मा का सेवक हूँ और वह मेरी आत्मा एवं प्राणों का आधार है॥ २॥ हे राम! तू सर्वकला समर्थ एवं बहुत बड़ा है किन्तु मेरी बुद्धि बड़ी तुच्छ है। तू कृतघ्न जीवों का भी पालन पोषण करता है और सब जीवों पर तेरी पूर्ण कृपा-दृष्टि है। हे जग के रचयिता! तू अपार है और तेरा ज्ञान अनन्त है किन्तु मैं नीच जीव कुछ भी नहीं जानता। मैं तो पशु समान विमूढ़ एवं नीच हूँ जो तेरे अमूल्य नाम-रत्न को त्याग कर कौड़ियाँ एकत्रित की हैं। हे प्रभु! मैंने दोष कर करके वह माया अर्जित की है, जो महा चंचल है और जीव को त्याग कर चली जाती है। नानक का कथन है कि हे सर्वकला समर्थ प्रभु! मैं तेरी शरण में हूँ, दया करके मेरी लाज रखो॥ ३॥ जिस परमात्मा से जुदा हुआ था, उसने स्वयं ही अपने साथ मिला लिया है। संतों की सभा में सम्मिलित होकर श्रीहरि का गुणगान किया है। उस जगतपालक की गुणस्तुति करने से कल्याणस्वरूप ईश्वर प्रत्यक्ष हो गया है। प्रभु के संग मेरी हृदय-सेज सुहावनी हो गई है और उसने मुझे अपना बना लिया है। मैं चिन्ता को त्याग कर निश्चित हो गया हूँ और मैंने पुनः कोई दुःख प्राप्त नहीं किया। नानक का कथन है कि वह तो परमात्मा के दर्शन करके ही जीवित रहता है एवं गुणों के भण्डार प्रभु का यशोगान करता रहता है॥ ४॥ ५॥ ८॥

बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम ॥ तू नेत्री देखि चलिआ माइआ बिउहारी राम ॥ संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥ देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥ पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी ॥ बिनवंत नानक बिनु साधसंगम सभ मिथिआ संसारी ॥ १ ॥

हे सुधर्मी मानव जीव! बोल, क्यों मौन धारण किया हुआ है? अपने नेत्रों से तूने माया का व्यवहार करने वाले देख लिए हैं जो सभी नाशवान हैं। हे मानव जीव! गोविन्द के नाम के अतिरिक्त तेरे साथ कुछ भी नहीं जाना। देश, वस्त्र, स्वर्ण तथा चांदी ये सभी कार्य व्यर्थ हैं। पुत्र, पत्नी, दुनिया की शोभा जीव का साथ नहीं देते एवं हाथी-घोड़े तथा अन्य आकर्षण विकारों की तरफ प्रेरित करते रहते हैं। नानक प्रार्थना करता है कि संतों की संगति के बिना सारा जगत मिथ्या है॥ १॥

राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम ॥ बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥ आदि अंते मधि पूरन सरबत्र घटि घटि आही ॥ बिनवंत नानक जिन साधसंगमु से पति सेती घरि जाही ॥ २ ॥

हे राजन! क्यों गहरी निद्रा में सोया हुआ है और ज्ञान द्वारा क्यों जाग्रत नहीं हो रहा?

धन-दौलत हेतु रुदन करना झूठ ही है और कितने ही जीव धन-हेतु बिलखते रहते हैं। कितने ही जीव महामोहिनी माया हेतु रोते-चिल्लाते रहते हैं किन्तु हरि के अमूल्य नाम के अतिरिक्त कोई सुख नहीं। मानव जीव हजारों ही चतुराइयाँ तथा उपाय करके थक जाता है किन्तु जहाँ ईश्वर को भाता है, वह उधर ही जाता है। एक परमात्मा ही आदि, मध्य एवं अन्त में सर्वव्यापक है और समस्त जीवों के हृदय में वही समाया हुआ है। नानक प्रार्थना करता है जो जीव संतों की सभा में सम्मिलित होता है वह अपने शाश्वत घर प्रभु के पास आदर सहित जाता है॥ २॥

नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम ॥ सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम ॥ हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ ॥ बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥ हउ हउ करत न त्रिसन बूझै नह कांम पूरन गिआने ॥ बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥ ३ ॥

हे नरेश ! तू अपने घर के सेवकों को चतुर समझकर उनके मोह में फँस गया है। लेकिन तेरा उनसे जुदा होना अटल है, उनके मोह में तुझे पछताना पड़ेगा। काल्पनिक हरिचंद राजे की नगरी को देख कर तुम कुमार्गगामी हो चुके हो और उस में तुझे स्थिरता कैसे प्राप्त हो सकती है ? परमेश्वर के नाम के बिना सृष्टि रचना के अन्य पदार्थों में आकर्षित होने से अनमोल मानव-जन्म व्यर्थ ही जाता है। अहंकार करने से जीव की तृष्णा नहीं बुझती, न ही उसकी इच्छाओं की पूर्ति होती है और न ही उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है। नानक प्रार्थना करता है कि परमात्मा के नाम से वंचित होकर किनने ही जीव पछताते हुए दुनिया से चले गए हैं॥ ३॥

धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥ भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम ॥ साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥ महा धरम सुदान किरिआ संगि तेरै से चले ॥ रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥ नानक जिस नो हरि मिलाए सो सरब गुण परबीना ॥ ४ ॥ ६ ॥ ६ ॥

परमेश्वर ने अनुग्रह करके मुझे अपना बना लिया है। उसने बाँह से पकड़कर मुझे मोह-माया के कीचड़ से निकाल लिया है और साधु पुरुषों की संगति की देन प्रदान की है। साधुओं की सभा में ईश्वर की आराधना करने से मेरे सभी पाप एवं दुःख-संताप जल गए हैं। प्रभु की भक्ति ही महाधर्म एवं नाम-दान ही शुभ कर्म है, जो परलोक में तेरे साथ जाएँगे। मेरी रसना एक परमेश्वर के नाम की आराधना करती है और नाम से मेरा मन एवं तन भीग गया है। हे नानक ! जिस जीव को हरि अपने साथ मिला लेता है, वह सर्वगुणों में प्रवीण हो जाता है॥ ४॥ ६॥ ६॥

बिहागड़े की वार महला ४ — १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि ॥ गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि ॥ नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे मानव जीव ! गुरु की सेवा करने से ही सुख उपलब्ध होता है, इसलिए किसी अन्य स्थान पर सुख की तलाश मत कर। यदि गुरु के शब्द द्वारा मन विंध जाए तो ईश्वर सर्वदा जीव के साथ रहता है। हे नानक ! नाम उन जीवों को ही मिलता है, जिन्हें परमेश्वर दया-दृष्टि से देखता है॥ १॥

मः ३ ॥ सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ॥ सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके करम कमाइ ॥ नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ परमेश्वर का स्तुतिगान का भण्डार उसकी एक दात (देन) है, जिस जीव को वह दया करके प्रदान करता है, वही इसे खर्चता एवं खाता है। किन्तु यह भण्डार सच्चे गुरु के बिना जीव को उपलब्ध नहीं होता और सभी इसकी उपलब्धि हेतु कर्म करते हुए हार-थक गए हैं। हे नानक! स्वेच्छाचारी जगत भगवान के नाम रूपी धन से वंचित है, आगे जब परलोक में भूख लगेगी तो यह क्या खा सकेगा?॥ २॥

पउड़ी ॥ सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ ॥ सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥ तिस दी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ ॥ जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइआ ॥ सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनां की पैज रखदा आइआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! यह सारी जगत-रचना तेरी है और तू सबका मालिक है, सभी जीवों को तूने ही उत्पन्न किया है। सभी प्राणियों में तू बसा हुआ है और सभी तेरी ही आराधना में क्रियाशील हैं। हे परमेश्वर! जो प्राणी तेरे मन को लुभाता है, उसकी भक्ति को तू स्वीकार कर लेता है। जो कुछ भगवान को अच्छा लगता है, वही होता है। हे हरि! जीव वही करते हैं जो तुम उन से करवाते हो अर्थात् सृष्टि में परमेश्वर का ही सबकुछ किया-कराया हो रहा है। हे मानव जीव! उस सर्वेश्वर एवं महान् प्रभु की स्तुति करो, जो युगों-युगांतरों से ही संतजनों की लाज-प्रतिष्ठा रखता आया है॥ १॥

सलोक मः ३ ॥ नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइ ॥ नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥ गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ ॥ भगता का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि त्रिसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥ नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे नानक! ज्ञानी व्यक्ति ने इस दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली है किन्तु इस दुनिया ने प्रत्येक जीव-जन्तु सहित सबको विजय कर लिया है। परमात्मा के नाम द्वारा सभी कार्य सिद्ध सफल हो जाते हैं, जो कुछ भी होता है, वह सहज ही ईश्वर की इच्छानुसार होता है। गुरु की मति पर चलने से प्राणी की बुद्धि निश्चल हो जाती है और कोई भी उसे कुपथ नहीं कर सकता। भगवान अपने भक्तों का अंगीकार है अर्थात् उनका पक्ष निभाता रहता है तथा उनका हरेक कार्य सुहावना हो जाता है। स्वेच्छाचारी जीव आदि काल से ही कुमार्गगामी हुआ है, चूंकि उसके अंदर लालच, लोभ एवं अहंकार भरा हुआ है। झगड़ा करते हुए ही उसके रात-दिन गुजर जाते हैं और वह शब्द का चिंतन नहीं करता। रचयिता प्रभु ने उसकी शुद्ध बुद्धि छीन ली है, सो उसके सभी वचन विकारों से भरे हुए होते हैं। ऐसे लोगों को चाहे जितना भी दे दिया जाए, वे संतोषवान नहीं होते, क्योंकि उनके अन्तर्मन में तृष्णा तथा अत्याधिक अज्ञान का अंधकार होता है। हे नानक! इन स्वेच्छाचारी जीवों से तो संबंधविच्छेद ही भला है, जिन्हें माया-मोह से भरपूर प्रेम है॥ १॥

मः ३ ॥ तिन्ह भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥ धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥ २ ॥

महला ३॥ जिन सेवकों का सतगुरु करतार रखवाला है, उन्हें भय एवं संशय क्या प्रभावित कर सकते हैं? आदिकाल से आप ही रक्षक परमात्मा उनकी लाज बचाता रहा है। वे सच्चे शब्द का चिंतन करते हैं और अपने प्रियतम से मिलकर सुख की अनुभूति करते हैं। हे नानक! हमने उस सुखदाता परमात्मा की उपासना की है, जो आप ही परख करने वाला (पारखी) है॥ २॥

पउड़ी ॥ जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥ जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि ॥ जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मंनि लैहि सो जनु साबासि ॥ सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! यह सभी जीव-जन्तु तेरे ही हैं और तू इन सबकी पूंजी है। जिसे भी तू अपनी देन देता है, उसे सब कुछ मिल जाता है और तेरे बराबर का कोई प्रतिद्वन्दी नहीं। हे हरि! हमारी तुझसे ही प्रार्थना है, तू ही सब जीवों का एक दाता है। जिसकी प्रार्थना तुझे अच्छी लगती है, तुम उसकी प्रार्थना मंजूर कर लेते हो और ऐसा भक्त बड़ा भाग्यशाली है। हे स्वामी! हर जगह तेरा ही कौतुक हो रहा है, हम जीवों का दुःख-सुख तेरे ही सम्मुख है॥ २॥

सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि सचे भावदे दरि सचे सचिआर ॥ साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार ॥ अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरुमुख मनुष्य सच्चे परमात्मा को बहुत अच्छे लगते हैं एवं सत्य के दरबार में उन्हें सत्यवादी माना जाता है। ऐसे सज्जन पुरुषों के मन में आनंद बना रहता है और वे हमेशा गुरु के शब्द पर विचार करते रहते हैं। वे अपने अन्तर्मन में शब्द को बसाते हैं, जिससे उनका दुःख दूर हो जाता है और करतार उनके भीतर ज्ञान का प्रकाश कर देता है। हे नानक! सारी दुनिया का रखवाला परमात्मा अपनी कृपा धारण करके उनकी रक्षा करता है॥ १॥

मः ३ ॥ गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ गुरु की सेवा-चाकरी उसके भय में रहकर ही करनी चाहिए। जो अपने गुरु की रज़ा में चलता है, वह वैसा ही हो जाता है, जैसी वह सेवा करता रहता है। हे नानक! परमात्मा आप ही सब कुछ है और उसके अलावा दूसरा कोई आश्रय-स्थल जाने के लिए नहीं है॥ २॥

पउड़ी ॥ तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई ॥ जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥ तू भंनण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥ तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! अपनी बड़ाई को तू खुद ही जानता है और तुझ जैसा बड़ा दूसरा कोई नहीं। तुझ जैसा अन्य बराबर का कोई हो तो हम कहें लेकिन तुझ जैसा बड़ा तू आप ही है। हे प्रभु! जिन्होंने भी तेरी उपासना की है, उन्हें सुख ही उपलब्ध हुआ है। अन्य कौन उसकी क्या बराबरी कर सकता है? हे दाता! तू निर्माण एवं विनाश करने में सर्वशक्तिमान है और तेरे समक्ष सारी दुनिया हाथ जोड़कर माँगने हेतु खड़ी हुई है। तुझ जैसा दानवीर मुझे कोई नजर नहीं आता। तूने ही खण्डों, ब्रह्माण्डों, पातालों, पुरियों, सभी लोकों तथा समस्त जीवों को दान प्रदान किया हुआ है॥ ३॥

सलोक मः ३ ॥ मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ सबदै सादु न पाइओ मनहटि किआ गुण गाइ ॥ नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे जीव! यदि तेरे मन में प्रभु के प्रति आस्था नहीं तो सहजावस्था में तुम उससे स्नेह नहीं करते। तूने शब्द के स्वाद को प्राप्त नहीं किया, फिर मन के हठ से प्रभु का क्या यशोगान करोगे ? हे नानक! इस दुनिया में उस जीव का आगमन सफल है जो गुरुमुख बनकर सत्य में समा जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए ॥ मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ॥ सतिगुर कै भै भंनि न घड़िओ रहै अंकि समाए ॥ अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥ कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाए ॥ चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए ॥ सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नव निधि पाए ॥ जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाए ॥ धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ॥ गुर का सबदु समालि तू मूड़े गति मति सबदे पाए ॥ नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥ २ ॥

महला ३॥ विमूढ़ जीव अपने आप (अहं) की पहचान नहीं करता किन्तु अन्य लोगों को मंदे वचनों द्वारा दुःखी करता रहता है। विमूढ़ जीव का मूल स्वभाव नहीं बदला और परमात्मा से जुदा होकर वह दण्ड भोगता रहता है। सच्चे गुरु के भय द्वारा उसने अपने स्वभाव को बदलकर सुधार नहीं किया जिससे वह प्रभु की गोद में लीन हुआ रहे। रात-दिन उसका संदेह कदापि दूर नहीं होता और शब्द के बिना वह दुःख भोगता रहता है। उसके अन्तर्मन में कामवासना, क्रोध तथा लोभ इत्यादि प्रचंड विकार रहते हैं और उसकी आयु नित्य ही सांसारिक कार्य करते हुए व्यतीत हो जाती है। उसके हाथ, पैर, नेत्र (देख-देखकर) तथा कान (सुन-सुनकर) थक चुके हैं। उसके जीवन के दिन खत्म हो गए हैं और मृत्यु निकट आ गई है। उसे परमात्मा का सच्चा नाम मीठा नहीं लगता, जिस नाम द्वारा नवनिधियाँ प्राप्त होती हैं। यदि वह जीवित ही अपने अहंत्व को नष्ट कर दे और अपने अहंत्व को मार कर नम्रता से जीवन बिताए तो वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है। यदि प्राणी को प्रभु का करम प्राप्त नहीं हुआ तो बिना करम से वह क्या प्राप्त कर सकता है ? हे विमूढ़ जीव! तू गुरु के शब्द का मन में चिंतन कर, गुरु-शब्द द्वारा तुझे मोक्ष एवं सुमति प्राप्त हो जाएँगे। हे नानक! यदि जीव अपने अन्तर्मन से अहंकार को मिटा दे तो सच्चा गुरु तभी प्राप्त हो जाएगा॥ २॥

पउड़ी ॥ जिस दै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ ॥ हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ ॥ जिनि हरि धिआइआ तिस नो सरब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ॥ सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ ॥ हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ जिसके चित्त में मेरा स्वामी निवास कर गया है, उसे किसी बात की फिक्र नहीं करनी चाहिए। परमेश्वर समस्त पदार्थों का सुखदाता है, फिर उसकी आराधना करने में हम एक निमख एवं घड़ी भर भी मुँह क्यों मोड़ें ? जिसने भी भगवान का ध्यान किया है, उसका सर्व कल्याण हुआ है। इसलिए हमें नित्य ही संतजनों की सभा में विराजमान होना चाहिए तथा मिलकर भगवान

का गुणगान करना चाहिए। परमेश्वर के सेवक के सारे दुःख, भूख एवं रोग मिट गए हैं और उसके सभी बन्धन टूट गए हैं। हरि की कृपा से ही जीव हरि का भक्त बनता है तथा हरि के भक्तजनों के दर्शन मात्र से ही समूचा जगत पार हो जाना चाहता है॥ ४॥

सलोक मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ ॥ नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ वह रसना जल जाए, जिसने हरि-नाम का स्वाद प्राप्त नहीं किया। हे नानक ! वही रसना हरि के नाम-स्वाद का आनंद लेती है, जिसने मन में परमेश्वर को बसाया है॥ १॥

मः ३ ॥ सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥ नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥ २ ॥

महला ३॥ वह जुबान जल जाए, जिसने हरि का नाम भुला दिया है। हे नानक ! गुरुमुख पुरुष की जीभ हरि के नाम का जाप करती है और हरि के नाम से प्रेम करती है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाए ॥ हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए ॥ हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥ गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर आप ही मालिक, सेवक तथा भक्त है और आप ही सबकुछ करता एवं जीवों से करवाता है। वह आप ही देखता और आप ही प्रसन्न होता है, जैसे उसको भला लगता है, वैसे ही वह जीवों को लगाता है। कुछ जीवों को वह स्वयं ही सन्मार्ग प्रदान करता है और कुछ जीवों को भयानक कुपथ प्रदान कर देता है। परमेश्वर सच्चा मालिक है तथा उसका न्याय भी सच्चा है। वह अपने कौतुकों की रचना करता और देखता रहता है। गुरु की कृपा से नानक उसकी ही महिमा कहता हुआ उस सच्चे परमेश्वर के ही गुण गाता है॥ ५॥

सलोक मः ३ ॥ दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ जे घरि घरि हंढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥ जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ कोई विरला दरवेश ही दरवेशी की महानता को जानता है। यदि दरवेश बनकर कोई घर-घर जाकर दान-भिक्षा माँगता रहता है तो उसके जीवन एवं वेष को महा धिक्कार है। यदि वह आशा एवं चिन्ता को छोड़ देता है और गुरुमुख बनकर परमात्मा के नाम की भिक्षा माँगता है तो हमें उसके चरणों को धोना चाहिए। हे नानक ! हम उस पर बलिहारी जाते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरू आहि ॥ आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥ बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥ २ ॥

महला ३॥ हे नानक ! यह दुनिया एक ऐसा पेड़ है, जिस पर मोह-माया रूपी एक फल लगा हुआ है। इस पेड़ पर गुरुमुख तथा मनमुख रूपी दो पक्षी बैठे हैं, जिनके पंख भी नहीं हैं और आते-जाते समय नजर नहीं आते। मनमुख बहुरंगी रस भोगता रहता है किन्तु गुरुमुख शब्द में निर्लिप्त रहता है। हे नानक ! परमेश्वर के करम (प्रारब्ध) द्वारा जिसके ललाट पर सच्चा चिन्ह लगा है, वह हरि के नाम रस रूपी फल में लीन रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे धरती आपे है राहकु आपि जंमाइ पीसावै ॥ आपि पकावै आपि भांडे देइ परोसै आपे ही बहि खावै ॥ आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै ॥ आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै ॥ जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा आप ही धरती है और आप ही उस धरती पर कृषि करने वाला कृषक है। वह आप ही अनाज को उगाता और आप ही पिसवाता है। वह आप ही अन्न को पकाता है, आप ही बर्तन देकर उन (बर्तनों) पर भोजन परोसता है और आप ही बैठकर भोजन खाता है। वह आप ही जल है, आप ही दांत कुरेदने वाला तिनका प्रदान करता है और आप ही चुल्ली करने को जल देता है। वह आप ही मण्डली को आमंत्रित करके विराजमान करता है और आप ही उसे विदा भी करता है। जिस जीव पर परमेश्वर आप कृपालु होता है, उसी से अपना हुक्म मनवाता है॥ ६॥

सलोक मः ३ ॥ करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु ॥ ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥ जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥ नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरते अंधु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सभी कर्म-धर्म बन्धन ही हैं चूंकि इनका संबंध पाप-पुण्य से बना हुआ है। ममता एवं मोह भी बन्धन रूप ही हैं तथा पुत्र एवं पत्नी के स्नेह में किए हुए धन्धे संकट में डाल देते हैं। जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही सांसारिक मोह-माया के संबंध की फाँसी दिखाई देती है। हे नानक! एक सच्चे नाम के सिवाय ज्ञानहीन दुनिया माया के अन्धे व्यवहारों में क्रियाशील है॥ १॥

मः ४ ॥ अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिले रजाइ ॥ बंधन तोड़े सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ ॥ सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥ नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥ २ ॥

महला ४॥ ज्ञान से अन्धे जीव को तभी ज्ञान का उजाला प्राप्त होता है, यदि परमात्मा की रज़ानुसार सच्चा गुरु मिल जाए। वह गुरु के सान्निध्य में रहकर बंधनों को तोड़ देता है और सत्य में वास करता है, जिससे उसका अज्ञान का अँधेरा मिट जाता है। जिस परमात्मा ने तन का निर्माण करके उत्पत्ति की है, वह उसी का सबकुछ देखता है। नानक का कथन है कि वह करतार की शरण में है और कर्त्ता प्रभु ही उसकी लाज-प्रतिष्ठा रखता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥ तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जां अवरु न दूजा कीआ ॥ फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥ आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अंम्रितु पीआ ॥ आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जब कर्त्ता-परमेश्वर ने स्वयं ही विराजमान होकर सृष्टि-रचना की तो उसने अपने किसी दूसरे सेवक से इस संदर्भ में विचार-विमर्श नहीं किया। तब कोई क्या ले सकता है और कोई क्या दे सकता है, जब उसने कोई दूसरा अपने जैसा बनाया ही नहीं। फिर परमेश्वर ने स्वयं ही जगत-रचना करके सभी जीवों को दान (सर्वस्व) प्रदान किया। उसने स्वयं ही गुरु के द्वारा हमें अपनी सेवा-भक्ति का निर्देश किया और स्वयं ही नामामृत का पान किया। निरंकार परमात्मा स्वयं ही अपने आपको जगत रूपी आकार में प्रगट करता है, जो वह स्वयं करता है, वही सृष्टि में हो रहा है॥ ७॥

सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि ॥ सदा अनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरि धारि ॥ अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि ॥ नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरुमुख मनुष्य हमेशा सच्चे प्रभु की उपासना करते रहते हैं और रात-दिन सहजावस्था में उसकी प्रेमा-भक्ति में मग्न रहते हैं। वे सत्यस्वरूप परमात्मा का सदा आनंद में यशोगान करते हैं और पृथ्वी-आकाश में सर्वव्यापक प्रभु को अपने हृदय में धारण करते हैं। करतार ने प्रारम्भ से ही उनकी ऐसी किस्मत लिख दी है कि उनकी अन्तरात्मा में प्रियतम प्रभु ही निवास करता है। हे नानक! परमात्मा आप ही कृपा धारण करके उन्हें अपने साथ मिला लेता है॥ १॥

मः ३ ॥ कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ ॥ विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ ॥ गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥ नानक नदरी पाईऐ आपे लए मिलाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ कहने एवं वर्णन करने से परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। उसकी प्राप्ति हेतु हमें रात-दिन हमेशा ही उसका गुणगान करना चाहिए। भाग्य के विना किसी को भी वह प्राप्त नहीं होता और प्रभु से वंचित प्राणी रोते-चिल्लाते हुए मर गए हैं। जब गुरु के शब्द द्वारा मन-तन भीग जाता है तो वह स्वयं ही आकर मन में निवास कर लेता है। हे नानक! यदि परमात्मा की दया-दृष्टि हो तो वह तभी जीव को मिलता है और आप ही उसे अपने साथ मिला लेता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥ आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥ आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥ आपे पुंनु सभु आपि कराए आपि अलिपतु वरतीजै ॥ आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा स्वयं ही वेद, पुराण तथा समस्त शास्त्रों का रचयिता है। वह स्वयं ही उनकी कथा करता और स्वयं ही सुनकर प्रसन्न होता है। वह स्वयं ही बैठकर उपासना करता है और स्वयं ही संसार की रचना करके उसका प्रसार करता है। वह आप ही जगत के परपंच में क्रियाशील है और आप ही उससे निर्लिप्त भी रहता है। वह आप ही अकथनीय को कथन करता है। वह खुद ही पुण्य है और सभी पुण्य-कर्म आप ही करवाता है। वह आप ही अलिप्त रहकर विचरण करता है। वह आप ही दुनिया को दुःख तथा सुख प्रदान करता है और आप ही सब पर मेहर करता है॥ ८॥

सलोक मः ३ ॥ सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ ॥ गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥ मनु कठोरु सबदि भेदि तूं सांति वसै मनि आइ ॥ सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥ नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे शेख! तू अपने अन्तर्मन में से हठ छोड़ दे तथा अपना उन्मादपन मिटा कर गुरु-भय में निवास कर। कितने ही मनुष्य गुरु के भय में जगत-सागर से मुक्त हो गए हैं तथा गुरु-भय में ही निर्भय प्रभु को प्राप्त कर लिया है। तू अपने कठोर मन को गुरु-शब्द द्वारा भेद ले, इस प्रकार तेरे मन में शांति आकर निवास करेगी। शांति में किए गए सांसारिक कार्यों को मालिक स्वीकार कर लेता है। हे नानक! कामवासना एवं क्रोध द्वारा किसी भी जीव को परमेश्वर की प्राप्ति नहीं हुई, चाहे इस संदर्भ में किसी ज्ञानी महापुरुष से जाकर पूछ लो॥ १॥

मः ३ ॥ मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ॥ नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥ २ ॥

महला ३॥ स्वेच्छाचारी मनुष्य माया के मोह में लीन है, जिसके कारण वह परमात्मा के नाम से प्रेम नहीं लगाता। वह झूठ ही कमाता है और झूठ ही संग्रह करता रहता है तथा झूठ को ही अपना भोजन बनाता है। वह विषैली माया-धन को संचित करता हुआ प्राण त्याग देता है और अंततः यह सबकुछ भस्म बन जाता है। वह आडम्बर के तौर पर कर्म-धर्म, पवित्रता तथा आत्म-संयम के कार्य करता रहता है किन्तु उसके मन में लोभ तथा विकार मौजूद होते हैं। हे नानक! जो कुछ भी स्वेच्छाचारी मनुष्य करता है, वह स्वीकृत नहीं होता और परमात्मा के दरबार में ख्वार ही होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे ॥ आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥ आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥ आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे ॥ आपे करे कराए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! तू आप ही चारों उत्पत्ति के स्रोत है, आप ही वाणी है और आप ही खण्ड-ब्रह्माण्ड रचे हैं। तू आप ही समुद्र है और आप ही सागर है तथा आप ही उसमें हीरे-मोती इत्यादि रत्न रखे हैं। वह जिस व्यक्ति पर भी कृपा धारण करके गुरुमुख बना देता है, उसे आप ही हीरे-मोती इत्यादि रत्न दिलवा देता है। ईश्वर आप ही भयानक सागर है, आप ही जहाज है, आप ही खेवट और आप ही उससे पार होता है। विश्व का रचयिता आप ही सबकुछ करता एवं जीवों से करवाता है। हे कर्त्ता! तुझ जैसा बड़ा कोई भी नहीं॥ ६॥

सलोक मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ ॥ उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ॥ नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतिगुरु की सेवा तभी सफल है, यदि कोई व्यक्ति इसे मन लगाकर श्रद्धा से करे। इस प्रकार उसे परमात्मा का नाम रूपी बहुमूल्य धन प्राप्त हो जाता है और अचिंत ही परमात्मा उसके मन में आकर निवास कर लेता है। उसके जन्म-मरण की पीड़ा नष्ट हो जाती है और अहंकार तथा ममता दूर हो जाती है। वह उत्तम पदवी प्राप्त कर लेता है और सत्य में ही समाया रहता है। हे नानक! जिनके पूर्व के शुभकर्मों द्वारा भाग्य लिखा होता है, उन्हें सतिगुरु आकर मिल जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइ ॥ गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइ ॥ नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइ ॥ नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ सतिगुरु ही परमात्मा के नाम में लीन है, जो इस कलियुग में जीवों को पार कराने वाला एक जहाज है। जो मनुष्य गुरुमुख बन जाता है एवं जिसके हृदय में सच्चा परमात्मा निवास करता है, वह संसार-सागर से पार हो जाता है। यही उसके नाम को हृदय में सँभालता है और नाम को ही संग्रह करता है और परमात्मा के नाम द्वारा ही उसका मान-सम्मान होता है।

हे नानक! जिन्होंने सतिगुरु को पाया है, उन्हें प्रभु-कृपा से ही प्राप्त हुआ है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु ॥ आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु ॥ आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु ॥ आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु ॥ जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥ १० ॥

पउड़ी॥ परमात्मा स्वयं ही पारस है, स्वयं ही धातु है और वह स्वयं ही धातु को स्वर्ण बना देता है। वह स्वयं ही मालिक है, स्वयं ही सेवक है और स्वयं ही पाप नाश करने वाला है। वह स्वयं ही सबके हृदयों में व्याप्त होकर पदार्थों का भोग करने वाला मालिक है और स्वयं ही माया रूप है। वह स्वयं ही विवेक है, स्वयं ही वेत्ता है और स्वयं गुरुमुख होकर मोह-माया के बन्धन नाश करता है। हे जग के रचयिता हरि ! नानक तेरा स्तुतिगान करता हुआ तृप्त नहीं होता, तू सबसे बड़ा सुखदाता है॥ १०॥

सलोकु मः ४ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअहि मुहि काले उठि जाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ सतिगुरु की सेवा-चाकरी के बिना मानव जीव जितने भी कर्म करता है, वे उसके लिए बन्धन रूप हैं। गुरु की चाकरी के बिना मनुष्य को कहीं भी सुखद स्थान प्राप्त नहीं होता, जिसके कारण वह मरता और जन्मता रहता है तथा आवागमन के चक्र में फँसकर संसार में आता-जाता रहता है। गुरु की सेवा के बिना मनुष्य रसहीन फीका बोलता है, जिसके कारण परमात्मा का नाम आकर उसके मन में निवास नहीं करता। हे नानक ! सतिगुरु की सेवा-चाकरी के बिना मनुष्य काला मुँह करवाकर अर्थात् बेइज्जत होकर जगत से चल देता है और यमपुरी में बँधकर दण्ड भोगता रहता है॥ १॥

मः ३ ॥ इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥ नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥ २ ॥

महला ३॥ कुछ लोग सतिगुरु की सेवा-चाकरी करते हैं और परमेश्वर के नाम से प्रेम लगाते हैं। हे नानक ! वे अपने अमूल्य जीवन को संवार लेते हैं और अपनी समस्त वंशावलि का भी उद्धार कर लेते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे ॥ आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥ इक थै पड़ि बुझै सभु आपे इक थै आपे करे इआणे ॥ इकना अंदरि महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥ जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा स्वयं ही विद्या का मन्दिर है, स्वयं ही विद्या देने वाला शिक्षक है और स्वयं ही पढ़ने हेतु विद्यार्थियों को लाता है। वह आप ही पिता है और आप ही माता है और वह स्वयं ही बालकों को विद्वान बना देता है। एक तरफ वह आप ही सब कुछ पढ़ता और बोध करता है किन्तु दूसरी तरफ वह आप ही जीवों को नासमझ बना देता है। हे सच्चे परमात्मा ! कुछ जीव जो आप तेरे मन को अच्छे लगते हैं, उन्हें अपने दरबार में आमंत्रित कर लेते हो। जिन लोगों

को तुम गुरुमुख की बड़ाई प्रदान करते हो, वे तेरे सच्चे दरबार में विख्यात हो जाते हैं॥ ११॥

सलोकु मरदाना १ ॥ कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥ मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥ करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥ गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु ॥ गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ॥ १ ॥

श्लोक मरदाना १॥ यह कलियुग कामवासना की मदिरा से भरा हुआ मदिरालय है, जिसे मन पीने वाला है। क्रोध का कटोरा मोह से भरा हुआ है, जिसे अहंकार पिलाने वाला है। झूठे लोभ की महफिल में कामवासना की मदिरा पी-पीकर जीव बर्बाद हो रहा है। इसलिए हे जीव! शुभ कर्म तेरा पात्र हो और सत्य तेरा गुड़, इससे तू सत्यनाम की श्रेष्ठ मदिरा बना। गुणों को अपनी रोटी, शीलता को अपना घी तथा लज्जा को खाने हेतु अपना मांसाहार बना। हे नानक! ऐसा भोजन गुरुमुख बनने से ही प्राप्त होता है, जिसे खाने से सभी पाप-विकार मिट जाते हैं॥ १॥

मरदाना १ ॥ काइआ लाहणि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ॥ मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ॥ इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥ गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥ नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥ २ ॥

मरदाना १॥ मनुष्य का तन एक घड़ा है, अहंत्व मदिरा है और तृष्णा की एक महफिल है। मन के मनोरथों-वासनाओं की कटोरी झूठ से भरपूर है और यमदूत कटोरी पिलाने वाला है। हे नानक! इस मदिरा को पीने से जीव अत्याधिक पाप-विकार कमा लेता है। ब्रह्म-ज्ञान को अपना गुड़, प्रभु-भजन को अपनी रोटी तथा प्रभु-भय को खाने के लिए अपना मांसाहार बना। हे नानक! यह भोजन ही सत्य है, जिससे सत्यनाम ही मनुष्य के जीवन का आधार बनता है॥ २॥

कांयां लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार ॥ सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अंम्रित भरी पी पी कटहि बिकार ॥ ३ ॥

यदि यह शरीर घड़ा हो, आत्म-ज्ञान की मदिरा हो तो नामामृत उसकी धारा बन जाती है। यदि सत्संगति से मिलाप हो, प्रभु में सुरति की कटोरी जो नामामृत से भरी हुई है, उसे पी-पीकर पाप-विकार मिट जाते हैं॥ ३॥

पउड़ी ॥ आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी ॥ आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी ॥ आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी ॥ आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा स्वयं ही देवता, मानव, गण तथा गन्धर्व है और स्वयं ही षड्दर्शन की वाणी है। वह स्वयं ही शिवशंकर महेश है और स्वयं ही गुरुमुख बनकर अकथनीय कहानी वर्णन करता है। वह स्वयं ही योगी, स्वयं ही भोगी तथा स्वयं ही संन्यासी बनकर वनों में भ्रमण करता है। परमात्मा अपने साथ ही ज्ञान-गोष्ठी करता है, स्वयं ही उपदेश देता रहता है और स्वयं ही सुघड़ सुन्दर स्वरूप एवं विद्वान है। वह स्वयं ही अपनी जगत लीला रचकर स्वयं ही देखता रहता है और स्वयं ही सभी जीवों का ज्ञाता है॥ १२॥

सलोकु मः ३ ॥ एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥ हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ॥ गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ॥ नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जंमै होइ खुआरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ वही संध्या की प्रार्थना स्वीकार्य है, जिस द्वारा मेरा हरि-प्रभु मन में याद आता हो। इससे परमेश्वर के साथ प्रीति उत्पन्न होती है और यह माया के मोह को नष्ट कर देती है। गुरु की कृपा से दुविधा का नाश हो जाता है, मन स्थिर हो जाता है और प्रभु-स्मरण को मनुष्य अपनी संध्या की प्रार्थना बना लेता है। हे नानक ! जो स्वेच्छाचारी मनुष्य संध्या की प्रार्थना करते हैं, उनका चित्त स्थिर नहीं होता, जिससे वे जन्म-मरण के चक्र में फँसकर विनष्ट होते रहते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥ २ ॥

महला ३॥ प्रिय-प्रिय पुकारती हुई मैं समूचे जगत में भ्रमण करती रही किन्तु मेरी प्यास नहीं बुझी। हे नानक ! सतिगुरु को मिलकर मेरी प्यास बुझ गई है और अपने प्रिय-प्रभु को हृदय रूपी घर में ही पा लिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे तंतु परम तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइआ ॥ आपे दस अठ वरन उपाइअनु आपि ब्रहमु आपि राजु लइआ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ ॥ आपि अभुलु न भुलै कब ही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥ आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइआ ॥ १३ ॥

पउडी॥ परमात्मा आप ही तत्व है और आप ही समस्त तत्वों का परम तत्व है। वह स्वयं ही मालिक है और स्वयं ही सेवक है। उसने स्वयं ही संसार के अठारह वर्गों को उत्पन्न किया है और स्वयं ही रचयिता ब्रह्म है, जो अपनी हकूमत चला रहा है। वह खुद ही सबको मारता है, खुद ही मुक्त करता है और खुद ही दयादृष्टि धारण करके क्षमा प्रदान करता है। वह अचूक है और कदापि भूलता नहीं। सच्चे प्रभु का न्याय सम्पूर्णतया सत्य है तथा वह सत्य में ही विद्यमान है। जिन गुरुमुखों को वह स्वयं ज्ञान प्रदान करता है, उनके अन्तर्मन से दुविधा एवं भ्रम निवृत्त हो जाते हैं॥ १३॥

सलोकु मः ५ ॥ हरि नामु न सिमरहि साधसंगि तै तनि उडै खेह ॥ जिनि कीती तिसै न जाणई नानक फिटु अलूणी देह ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जो संतों की सभा में परमात्मा का नाम याद नहीं करते वे शरीर धूलि की भाँति उड़ जाते हैं। हे नानक ! उस रसहीन देह को धिक्कार है, जो उस परमात्मा को नहीं जानती, जिसने उसे बनाया है॥ १॥

मः ५ ॥ घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥ नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥ २ ॥

महला ५॥ जिस मानव के अन्तर में भगवान के सुन्दर चरण कमल बसते हैं और उसकी जीभ गोपाल को जपती है। हे नानक ! उस प्रभु को ही याद करना चाहिए, जो उस मानव-देहि का पोषण करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे अठसठि तीरथ करता आपे करे इसनानु ॥ आपे संजमि वरते स्वामी आपि जपाइहि नामु ॥ आपि दइआलु होइ भउ खंडनु आपि करै सभु दानु ॥ जिस नो गुरमुखि आपि बुझाए सो सद ही दरगहि पाए मानु ॥ जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥ १४ ॥

पउड़ी।। सृष्टि का रचयिता परमेश्वर आप ही अड़सठ तीर्थ है तथा आप ही उसमें स्नान करता है। दुनिया का स्वामी आप ही संयम में क्रियाशील है और आप ही जीवों से अपना नाम जपाता है। भयनाशक परमात्मा आप ही दयालु होता है और आप ही सबकुछ दान करता है। जिसे गुरु के द्वारा आप बोध प्रदान करता है, वह सदा उसके दरबार में शोभा प्राप्त करता है। जिसकी लाज-प्रतिष्ठा हरि-स्वामी रखता है, वह सच्चे परमेश्वर को ही जानता है।। १४।।

सलोकु मः ३ ॥ नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे करम कमाइ ॥ सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥ तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३।। हे नानक! सच्चे गुरु से भेंट के बिना यह जगत अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन है और अंधे कर्म (दुष्कर्म) कर रहा है। यह जगत शब्द में चित्त नहीं लगाता, जिससे सुख मन में आकर निवास करता है। यह जगत हमेशा ही क्रोध में लीन होकर भटकता रहता है और इसके दिन-रात क्रोध में जलते हुए बीत जाते हैं। जो कुछ भी परमात्मा को अच्छा लगता है, वही होता है और इस संदर्भ में कुछ भी कहा नहीं जा सकता।। १।।

मः ३ ॥ सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु ॥ गुरू दुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु ॥ साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥ हरि का नामु अंम्रितु है दारू एहु लाएहु ॥ सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥ नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥ २ ॥

महला ३।। सच्चे गुरु ने मुझे यह कार्य करने का फुरमान किया है कि गुरु के द्वार पर मालिक का नाम याद करते रहो। मालिक हमेशा करीब ही है अतः भ्रम के पर्दे को फाड़कर अन्तर में उसकी ज्योति का ध्यान धारण करो। हरि का नाम अमृत है, यह औषधि हृदय में धारण करो। सच्चे गुरु की रजा अपने चित्त में धारण करो और सच्चे प्रेम को अपना संयम बनाओ। हे नानक! इहलोक में सतगुरु तुझे सुखपूर्वक रखेगा और परलोक में परमेश्वर के साथ आनंद करो।। २।।

पउड़ी ॥ आपे भार अठारह वणसपति आपे ही फल लाए ॥ आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए ॥ आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए ॥ आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥ जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिस नो तिलु न तमाए ॥ १५ ॥

पउड़ी।। परमात्मा आप ही अठारह भार वनस्पति है और आप ही इसे फल लगाता है। वह आप ही सृष्टि रूपी बाग का बागवां है, आप ही सभी पौधों को सींचता है और आप ही उनके फल को मुँह में डालता है। परमात्मा आप ही निर्माता है और आप ही भोक्ता है। वह आप ही देता और दूसरों को दिलवाता है। वह आप ही मालिक है, आप ही रक्षक है और आप ही अपनी सृष्टि रचना में समाया हुआ है। नानक तो उस जगत के रचयिता परमात्मा का ही स्तुतिगान कर रहा है, जिसे अपनी स्तुति करवाने में तिल मात्र भी लोभ नहीं।। १५।।

सलोक मः ३ ॥ माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु

पवै विचि आइ ॥ आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥ झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥ नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ एक मनुष्य मदिरा से भरपूर बर्तन लेकर आता है और दूसरा मनुष्य आकर उसमें से प्याला भर लेता है। जिसका पान करने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और उन्मादपन दिमाग में आ जाता है, जिससे मनुष्य अपने व पराए की पहचान नहीं कर पाता और अपने मालिक प्रभु की ओर से धक्के खाता है। जिस मदिरा को पीने से मालिक प्रभु विस्मृत हो जाता है और जीव को उसके दरबार में कठोर दण्ड मिलता है। जहाँ तक तेरा वश चलता है, तू झूठी मदिरा का बिल्कुल पान मत कर। हे नानक ! जिसे सतिगुरु मिल जाता है, वह प्रभु की दया से सच्ची नाम-मदिरा को प्राप्त कर लेता है। वह सदा परमेश्वर के प्रेम-रंग में लीन रहता है और उसके दरबार में स्थान प्राप्त कर लेता है॥ १॥

मः ३ ॥ इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥ जा तिन्हि सवालिआ तां सवि रहिआ जगाए तां सुधि होइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जब परमात्मा ज्ञान प्रदान करता है तो यह जगत जीवित ही मरा रहता है अर्थात् मोह-माया से निर्लिप्त रहता है। जब परमात्मा इसे मोह-माया की नींद सुला देता है तो वह निद्रामग्न ही रहता है। परन्तु जब वह इसे ज्ञान से जगा देता है तो इसे अपने जीवन-उद्देश्य की होश आती है। हे नानक ! यदि परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि धारण करे तो वह मनुष्य की सतिगुरु से भेंट करा देता है। गुरु की कृपा से यदि मनुष्य जीवित ही मरा रहे अर्थात् मोह-माया से निर्लिप्त रहे तो वह दोबारा नहीं मरता॥ २॥

पउड़ी ॥ जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥ हरि जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥ जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥ सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥ सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ जिस परमात्मा का किया सबकुछ होता है, उसे किसी की कोई परवाह नहीं। हे श्रीहरि ! जीव तेरा दिया हुआ ही सबकुछ खाते हैं और सभी तेरी ही अनुसेवा करते हैं। हे निरंजन परमेश्वर ! जो भी तेरी महिमा-स्तुति करता है एवं जिस पर तू कृपा के घर में आता है, वह सबकुछ प्राप्त कर लेता है। हे भगवान ! वास्तव में वही साहूकार और सत्य का व्यापारी है, जो तेरे नाम-धन का सौदा लाद लेता है। हे संतजनो ! उस परमात्मा का स्तुतिगान करो, जिसने द्वैतभावना की ढेरी को ध्वस्त कर दिया है॥ १६॥

सलोक ॥ कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥ ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे कबीर ! यह जगत मरता-मरता मर गया है किन्तु असल में कोई भी इन्सान मरने का तरीका नहीं जानता। जो जीव ऐसी वास्तव मृत्यु मरता है, वह बार-बार नहीं मरता॥ १॥

मः ३ ॥ किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥ जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ ॥ मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ ॥ गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ

॥ नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हमें यह ज्ञान भी नहीं है कि हम किस प्रकार मरेंगे ? हमारी किस प्रकार की मृत्यु होगी ? यदि मालिक हृदय से विस्मृत न हो तो हमारी मृत्यु सुगम होगी। सारी दुनिया मरने से डरती है और हरेक जीव जीने की ही आशा करता है। गुरु की कृपा से जो व्यक्ति जीवित ही प्राण त्याग देता है, वह परमात्मा के हुक्म को बूझता है। हे नानक ! जो व्यक्ति ऐसी मृत्यु मरता है, तो वह सर्वकाल ही जीवित रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जा आपि क्रिपालु होवै हरि सुआमी ता आपणां नाउ हरि आपि जपावै ॥ आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणां सेवकु आपि हरि भावै ॥ आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥ धरम राइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥ जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ जब हरि-स्वामी आप कृपालु हो जाता है तो वह स्वयं ही अपना नाम प्राणियों से जपाता रहता है। हरि आप ही सतिगुरु से मिलाप करवाकर सुख प्रदान करता है और अपना सेवक उसे आप ही अच्छा लगता है। वह आप ही अपने सेवकों की लाज-प्रतिष्ठा रखता है और जीवों को अपने भक्तों के चरण-आश्रय में डाल देता है। धर्मराज जो हरि-परमेश्वर ने बनाया हुआ है, वह (यमराज) भी हरि के भक्तों व सेवकों के निकट नहीं आता। जो हरि का प्यारा है, वह सब लोगों का प्यारा है। अन्य कितने ही जीव व्यर्थ ही दुनिया में जन्मते-मरते रहते हैं॥ १७॥

सलोक मः ३ ॥ रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ॥ अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइ ॥ कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ ॥ गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ ॥ नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ ॥ आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सारी दुनिया राम-राम पुकारती रहती है किन्तु राम ऐसे प्राप्त नहीं होता। वह अगम्य, अगोचर, बहुत महान एवं अतुलनीय है और उसके गुणों की तुलना नहीं की जा सकती। उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जा सकता और किसी मूल्य से भी वह खरीदा नहीं जा सकता। केवल गुरु के शब्द द्वारा उसका भेद पाया जा सकता है, इस विधि से वह आकर जीव के मन में निवास कर लेता है। हे नानक ! राम अपरिमित है और गुरु की कृपा से चित्त में समाया रहता है। वह आप ही आकर मनुष्य को मिलता है और मिलकर मिला रहता है॥ १॥

मः ३ ॥ ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ तोटा मूलि न आवई लाहा सद ही होइ ॥ खाधै खरचिऐ तोटि न आवई सदा सदा ओहु देइ ॥ सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे मन ! यह परमात्मा का नाम ऐसा धन है, जिससे सर्वदा सुख ही उपलब्ध होता है। इससे कदापि न्यूनता नहीं आती और मनुष्य को हमेशा लाभ ही मिलता है। इसे खाने एवं खर्च करने से न्यूनता नहीं आती, क्योंकि परमात्मा सर्वदा ही देता रहता है। मनुष्य को बिल्कुल ही उसकी चिंता नहीं होती और कदापि हानि भी नहीं होती। हे नानक ! जिस पर परमात्मा कृपा-दृष्टि धारण करता है, उसे गुरु के माध्यम से नाम-धन प्राप्त हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि ॥ आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि ॥ जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुंनाहरि ॥ ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥ बैठा ताड़ी लाइ आपि

सभ दू ही बाहरि ॥ आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा स्वयं ही सभी के हृदय में मौजूद है और बाहर भी जग में स्वयं ही मौजूद है। वह आप ही गुप्त रूप में विचरन करता है और आप ही सबके अन्तर्मन में प्रत्यक्ष है। उस करतार ने स्वयं ही छत्तीस युगों तक घोर अन्धकार किया और शून्यावस्था में निवास करता रहा। वहाँ तब वेद, पुराण एवं शास्त्र इत्यादि नहीं थे तथा लोगों का राजा परमेश्वर आप ही था। सभी से तटस्थ होकर वह आप ही शून्य-समाधि लगाकर बैठा था। अपनी विस्तार सीमा वह स्वयं ही जानता है और आप ही गहरा समुद्र है॥ १८॥

सलोक मः ३ ॥ हउमै विचि जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ ॥ जिचरु विचि दंमु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥ गिआनी होइ सु चेतंनु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥ नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाए जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ समूचा विश्व अहंकार में मरा हुआ है और बार-बार मृत्यु को ही प्राप्त होता जा रहा है। जब तक शरीर में प्राण होते हैं, तब तक मनुष्य परमात्मा का नाम याद नहीं करता। फिर आगे परलोक में पहुँच कर क्या करेगा ? जो व्यक्ति ज्ञानवान है, वह चेतन होता है लेकिन अज्ञानी व्यक्ति अन्धे कर्मों में ही क्रियाशील रहता है। हे नानक ! इहलोक में मनुष्य जो भी कर्म करता है, वही मिलता है तथा परलोक में जाकर वही प्राप्त होता है॥ १॥

मः ३ ॥ धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिव लाइ ॥ दमि दमि सदा समालदा दंमु न बिरथा जाइ ॥ जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥ नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ आदि से ही परमात्मा का अटल हुक्म है कि सच्चे गुरु के बिना उसका नाम-सुमिरन नहीं हो सकता। सच्चा गुरु मिल जाए तो मनुष्य अपने मन में ही परमात्मा को व्यापक अनुभव करता है और हमेशा ही उसकी सुरति में समाया रहता है। श्वास-श्वास से सर्वदा वह उसे याद करता है और उसका कोई भी श्वास व्यर्थ नहीं जाता। भगवान का नाम याद करने से उसका जीवन-मृत्यु का आतंक नाश हो जाता है और वह अटल जीवन पदवी प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! परमात्मा यह अमर पदवी उसे ही प्रदान करता है, जिसे अपनी रज़ा से कृपा धारण करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे दानां बीनिआ आपे परधानां ॥ आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनां ॥ आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनां ॥ कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥ उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा आप ही सर्वज्ञाता, त्रिकालदर्शी और आप ही प्रधान है। वह आप ही अपने रूप का दर्शन करवाता है और आप ही मनुष्य को ध्यान-मनन में लगा देता है। वह आप ही मौनावस्था में विचरन करता है और आप ही ब्रह्म-ज्ञान का कथन करता है। वह किसी को कड़वा नहीं लगता और सभी को भला लगता है। उसकी महिमा-स्तुति वर्णन नहीं की जा सकती और मैं उस पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ॥ १६॥

सलोक मः १ ॥ कली अंदरि नानका जिंनां दा अउतारु ॥ पुतु जिनूरा धीअ जिंनूरी जोरू जिंना दा सिकदारु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ कलियुग में (नाम विहीन इन्सान) धरती में भूत-पिशाच ही पैदा हुए हैं।

पुत्र प्रेत है, पुत्री चुड़ैल और जोरू (पत्नी) इन प्रेत-चुड़ैलों की मालकिन है॥ १॥

मः १ ॥ हिंदू मूले भूले अखुटी जांही ॥ नारदि कहिआ सि पूज करांही ॥ अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥ पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥ ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥ २ ॥

महला १॥ हिन्दुओं ने तो मूल रूप से परमात्मा को विस्मृत ही कर दिया है और कुमार्गगामी होते जा रहे हैं। जैसे नारद मुनि ने कथन किया है वैसे ही मूर्ति-पूजा कर रहे हैं। वे अन्धे, गूंगे एवं अन्धों के भी महा अंधे अन्धकार में अंधे हो चुके हैं। वे मूर्ख तथा गंवार पत्थरों की मूर्तियाँ लेकर उनकी पूजा करते हैं। वे पत्थर जब स्वयं ही डूब जाते हैं, वे तुझे कैसे भवसागर से पार करवा सकते हैं ?॥ २॥

पउड़ी ॥ सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥ भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु ॥ अंम्रितु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु ॥ सभि पदारथ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥ संत पिआरे पारब्रहम नानक हरि अगम अगाहु ॥ २० ॥

पउड़ी॥ हे मालिक ! सबकुछ तेरे वश में है और तू ही एक सच्चा साहूकार है। तेरे भक्तजन केवल तेरी ही प्रेमा-भक्ति में रंगे हुए हैं और एक तुझ पर ही उनकी पूर्ण आस्था है। हरिनामामृत ही उनका भोजन है, जिसे पेट भर-भर कर भक्तजन खाते रहते हैं। परमात्मा का सिमरन ही सच्चा लाभ है, जिससे सभी पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं। नानक का कथन है कि जो हरि अगम्य एवं अनन्त है, उस परब्रह्म-प्रभु को संतजन ही प्रिय लगते हैं॥ २०॥

सलोक मः ३ ॥ सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥ जे को मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सब कुछ परमात्मा के हुक्म अनुसार ही आता है और उसके हुक्म में ही सब कुछ चला जाता है। यदि कोई मूर्ख अपने आपको ही करने वाला जानता है तो वह अन्धा ही है और अन्धे कर्म ही कर रहा है। हे नानक ! कोई विरला गुरुमुख ही परमात्मा के हुक्म को समझता है, जिस पर वह अपनी रज़ा से कृपा करता है॥ १॥

मः ३ ॥ सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥ नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसे गुरु के माध्यम से परमात्मा का नाम प्राप्त हुआ है, वही असल में योगी है और उसे ही सच्ची योग युक्ति प्राप्त होती है। उस योगी के देहि रूपी नगर में सर्व प्रकार के गुण निवास करते हैं किन्तु योगी का वेष धारण करने से सच्चा योग प्राप्त नहीं होता। हे नानक ! ऐसा विरला ही कोई योगी है, जिसके अन्तर्मन में परमात्मा प्रगट होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥ आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु ॥ आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु ॥ नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु ॥ होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पउडी॥ भगवान ने खुद ही जीव उत्पन्न किए हैं और खुद ही उन सबका आधार है। वह आप ही सूक्ष्म रूप में दिखाई देता है और आप ही उसका विश्व में प्रसार नजर आता है। वह आप ही अकेला विचरन करता रहता है और आप ही दुनिया रूपी बड़े कुटुंब वाला है। नानक तो परमात्मा के संतों की चरण-धूलि का ही दान माँगता है। हे परमेश्वर ! तू ही जीवों को देने वाला है और तेरे सिवाय मुझे अन्य कोई भी दाता नजर नहीं आता॥ २१॥ १॥ शुद्ध॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

परमेश्वर एक है, उसका नाम सत्य है। वह समूची सृष्टि-मानव जाति को बनाने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है। वह निडर है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं अर्थात् प्रेम की मूर्ति है, वह कालातीत, वह जन्म-मरण से रहित है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ है और गुरु-कृपा से लब्धि होती है।

रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥

अमली अमलु न अंबड़ै मछी नीरु न होइ ॥ जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥ १ ॥ हउ वारी वंञा खंनीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिबु सफलिओ रुखड़ा अंम्रितु जा का नाउ ॥ जिन पीआ ते त्रिपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ २ ॥ मै की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि ॥ तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥ ३ ॥ नानकु तेरा वाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥ मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥ ४ ॥ १ ॥

यदि अमली (नशेडी) व्यक्ति को अमल (नशा) न मिले और मछली को जल न मिले तो उन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता। लेकिन जो लोग अपने मालिक के प्रेम-रंग में रंगे हुए हैं, उन्हें सबकुछ अच्छा ही लगता है॥१॥ हे मेरे मालिक! मैं तेरे नाम पर बलिहारी जाता हूँ, तेरे नाम पर टुकड़े-टुकड़े होता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मेरा मालिक-परमेश्वर एक फलदायक पेड़ है, जिसका फल नाम रूपी अमृत है। जिन्होंने नामामृत का पान किया है, वे तृप्त हो चुके हैं और मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ तुम चाहे सभी प्राणियों के साथ निवास करते रहते हो किन्तु तुम मुझे नजर नहीं आते। मुझ प्यासे की प्यास कैसे बुझ सकती है, जबकि सरोवर और मेरे भीतर अहंकार रूपी दीवार है॥ ३॥ हे सच्चे मालिक! नानक तेरा व्यापारी है और तू मेरी पूँजी है। हे प्रभु! मेरे मन से धोखा तभी निवृत्त हो सकता है, जब तेरी महिमा-स्तुति एवं तेरे समक्ष प्रार्थना करता रहूँ॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला १ ॥ गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ॥ जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥ १ ॥ मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइ ॥ माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइ ॥ २ ॥ राहु दसाई न जुलां आखां अंमड़ीआसु ॥ तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥ ३ ॥ नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥ तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥ ४ ॥ २ ॥

गुणवान जीवात्मा अपने पति-प्रभु के साथ आनंद प्राप्त करती है परन्तु निर्गुण जीवात्मा क्यों शोक कर रही है? यदि वह गुणवान बन जाए तो वह भी अपने पति-प्रभु के साथ आनंद करेगी ॥ १॥ मेरा पति-प्रभु प्रेम-रस का भण्डार है। फिर जीव-स्त्री क्यों किसी अन्य के साथ आनंद करे? ॥ १॥ रहाउ॥ यदि जीव-स्त्री सदाचरण करे और अपने मन को धागा बना ले तो वह उसमें अपने

पति-प्रभु के मन को हीरे की भाँति पिरो लेती है जो किसी भी मूल्य पर नहीं मिल सकता॥ २॥ मैं दूसरों से मार्ग पूछती हूँ परन्तु स्वयं उस पर नहीं चलती। फिर भी कहती हूँ कि मैं पहुँच गई हूँ। हे पति-परमेश्वर! तेरे साथ तो वार्तालाप भी नहीं करती; फिर तेरे घर में मुझे कैसे निवास प्राप्त होगा॥ ३॥ हे नानक! एक परमेश्वर के अलावा दूसरा कोई नहीं। यदि जीवात्मा अपने पति-परमेश्वर के साथ अनुरक्त रहे तो वह तेरे संग आनंद प्राप्त करेगी॥ ४॥ २॥

वडहंसु महला १ घरु २ ॥ मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ॥ तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ॥ तेरे दरसन विटहु खंनीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥ जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥ चूड़ा भंनु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा ॥ एते वेस करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा ॥ ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा ॥ जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥ सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥ माठि गुंदाईं पटीआ भरीऐ माग संधूरे ॥ अगै गई न मंनीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥ मै रोवंदी सभु जगु रुना रुंनड़े वणहु पंखेरू ॥ इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥ आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥ आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥ तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥ सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥ १ ॥ ३ ॥

हे मेरी बहन! सावन का महीना आया है, सावन की काली घटा देख कर मोर खुश होकर मधुर बोल गा रहे हैं। हे प्रिय! तेरे कटार जैसे नयन रस्सी की भाँति फँसाने वाले हैं, जिन्होंने मेरे लोभी मन को मुग्ध कर लिया है। हे स्वामी! तेरे दर्शन हेतु मैं टुकड़े-टुकड़े हो जाऊँ एवं तेरे नाम पर मैं सर्वदा न्यौछावर हूँ। अब जब तू मेरा है तो मैं तुझ पर ही गर्व करती हूँ। तेरे अतिरिक्त मेरा कैसा गर्व है? हे मुग्धा नारी! अपने पहने हुए चूड़े को पलंग सहित तोड़ दे। हे मुग्धा नारी! तेरे इतने हार-श्रृंगार करने के बावजूद भी तेरा पति-प्रभु किसी दूसरे की प्रीति में रंगा हुआ है। तेरे पास न तो चूड़ियाँ पहनाने वाला मनिहार है, न ही सोने की चूड़ियाँ हैं और न ही कांच की चूड़ियाँ हैं। जो बांहें पति-प्रभु के गले के साथ नहीं लगतीं, वे बांहें जलन में जल जाती हैं। मेरी सभी सखियाँ अपने पति-प्रभु के साथ आनंद करने के लिए गई हैं किन्तु मैं तुच्छ बदनसीब किसके द्वार पर जाऊँ? हे मेरी सखी! अपनी तरफ से तो मैं बहुत ही शुभ आचरण वाली हूँ किन्तु मेरे उस पति-परमेश्वर को मेरा एक भी शुभ कर्म भला नहीं लगता। अपने बालों को संवारकर मैं चोटियाँ करती हूँ और अपनी माँग में सिंदूर भर लेती हूँ। परन्तु जब मैं अपने पति-परमेश्वर के समक्ष जाती हूँ तो स्वीकार नहीं होती और अत्यंत शोक में मर जाती हूँ। मैं पीड़ित होकर विलाप करती हूँ तो सारी दुनिया भी रोती है और मेरे साथ वन के पक्षी भी विलाप करते हैं। परन्तु एक मेरे तन की जुदा हुई आत्मा ही विलाप नहीं करती, जिसने मुझे मेरे प्रियतम से जुदा कर दिया है। वह मेरे स्वप्न में मेरे पास आया भी और फिर चला गया, जिसके विरह के दुःख में मैं अश्रु भर कर रोई। हे मेरे प्रियतम! मैं तेरे पास नहीं आ सकती, न ही मैं किसी को भेज सकती हूँ। हे मेरी भाग्यशालिनी निद्रा! आओ, शायद मैं अपने उस स्वामी को पुनः स्वप्न में देख सकूँ। नानक का कथन है कि जो मुझे मेरे मालिक की बात सुनाएगा, उसे मैं क्या भेंट दूँगा? अपने सिर को काटकर मैं उसे बैठने हेतु आसन पेश करूँगा तथा सिर के बिना ही उसकी सेवा करूँगा।

मैं क्यों नहीं प्राण त्याग देती और अपना जीवन क्यों नहीं देती, जबकि मेरा पति-परमेश्वर किसी दूसरे का हो चुका है॥ १॥ ३॥

वडहंसु महला ३ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मनि मैले सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ इहु जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥ १ ॥ जपि मन मेरे तू एको नामु ॥ सतगुरि दीआ मोकउ एहु निधानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥ मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥ २ ॥ इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ सतगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥ ३ ॥ भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ॥ ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥ ४ ॥ १ ॥

यदि जीव का मन मैला है तो सबकुछ मलिन है; शरीर को धोकर शुद्ध करने से मन निर्मल नहीं होता। यह दुनिया भ्रम में भूली हुई है किन्तु कोई विरला ही इस सत्य को बूझता है॥ १॥ हे मेरे मन ! तू एक परमेश्वर के नाम का जाप कर, चूंकि सतिगुरु ने मुझे यही नाम-भण्डार दिया है॥ १॥ रहाउ॥ यदि प्राणी सिद्ध महापुरुषों के आसन लगाना सीख ले तथा अपनी इन्द्रियों को काबू रखने का अभ्यास करे तो भी मन की मैल दूर नहीं होती और न ही उसकी अहंकार रूपी मलिनता निवृत्त होती है॥ २॥ सच्चे गुरु की शरण के बिना इस मन को किसी अन्य साधन द्वारा पावन नहीं किया जा सकता। सतिगुरु से भेंट करने से मन का दृष्टिकोण बदल जाता है और कुछ कथन नहीं किया जा सकता॥ ३॥ नानक का कथन है कि यदि कोई जीव सतिगुरु से भेंट करके सांसारिक विषय-विकारों से तटस्थ होकर मर जाए और गुरु के शब्द द्वारा फिर जीवित हो जाए तो उसकी सांसारिक मोह-ममता की मैल दूर हो जाती है और उसका यह मन निर्मल हो जाता है॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला ३ ॥ नदरी सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ ॥ नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ ॥ १ ॥ मेरे मन चेति सचा सोइ ॥ एको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ॥ नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ॥ २ ॥ जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ॥ अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ ३ ॥ सभना नदरि एक है आपे फरकु करेइ ॥ नानक सतगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥ ४ ॥ २ ॥

भगवान की कृपा-दृष्टि द्वारा ही सतगुरु की सेवा हो सकती है और उसकी करुणा से ही सेवा होती है। उसकी करुणा-दृष्टि से यह मन वश में आता है और उसकी कृपा-दृष्टि से ही मन पावन होता है॥ १॥ हे मेरे मन ! हमेशा ही सच्चे प्रभु को याद करते रहो। यदि तू एक परमेश्वर का नाम-स्मरण करेगा तो तुझे सुख की उपलब्धि होगी और तुझे फिर कदापि दुःख नहीं होगा॥ १॥ रहाउ॥ भगवान की कृपा-दृष्टि से ही प्राणी मोह-माया से तटस्थ होकर मर कर पुनः जीवित हो जाता है और उसकी कृपादृष्टि से ही प्रभु-शब्द आकर मन में निवास कर लेता है। उसकी कृपा-दृष्टि द्वारा उसका हुक्म समझा जाता है और जीव उसके हुक्म में समाया रहता है॥२॥ जिस जिह्वा ने हरि-रस को नहीं चखा, वह जल जानी चाहिए। यह दूसरे रसों के स्वाद में लगी हुई है और द्वैतभाव में फँसकर दुःख प्राप्त करती है॥ ३॥ एक ईश्वर की सभी जीवों पर कृपा-दृष्टि एक समान ही है परन्तु कोई

नेक बन जाता है और कोई बुरा बन जाता है। यह अन्तर भी प्रभु स्वयं ही बनाता है। हे नानक! सतगुरु को मिलने से ही फल प्राप्त होता है और जीव को गुरु द्वारा नाम से ही प्रशंसा प्राप्त होती है॥ ४॥ २॥

वडहंसु महला ३ ॥ माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमति करणी सारु ॥ सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए ॥ बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥ २ ॥ मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ ॥ सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥ ३ ॥ आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥ नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥ ४ ॥ ३ ॥

माया का मोह घोर अन्धेरा है एवं गुरु के विना ज्ञान का दीपक प्रज्वलित नहीं होता। जो व्यक्ति शब्द-गुरु में लीन होते हैं, वही इस तथ्य को समझते हैं अन्यथा द्वैतभाव में फँसकर सारी दुनिया त्रस्त हो रही है॥ १॥ हे मेरे मन! गुरु की मति द्वारा शुभ कर्मों का अनुसरण कर। यदि तू सर्वदा हरि-प्रभु की आराधना करता रहे तो तुझे मोक्ष का द्वार भी प्राप्त हो जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ एक परमात्मा ही सर्व गुणों का भण्डार है। यदि इस भण्डार को प्रभु स्वयं प्रदान करे तो ही कोई इसे प्राप्त कर सकता है। नाम-सुमिरन के विना सारी दुनिया भगवान से बिछुड़ी हुई है परन्तु गुरु के शब्द द्वारा प्रभु मिल जाता है॥ २॥ 'मेरी-मेरी' अर्थात् अहंकार करते हुए लोग क्षीण हो गए हैं और उनके हाथ कुछ नहीं आया। सतिगुरु से भेंट करने पर ही जीव को सत्य मिलता है और जीव सत्य नाम में समाया रहता है॥ ३॥ यह नश्वर शरीर आशा और तृष्णा में फँसा रहता है और गुरु इसके अन्तर्मन में सत्य की ज्योति प्रज्वलित करता है। हे नानक! स्वेच्छाचारी जीव जन्म-मरण के बन्धनों में कैद रहता है और गुरुमुख की परमात्मा मुक्ति कर देता है॥ ४॥ ३॥

वडहंसु महला ३ ॥ सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥ सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥ सतगुरि मोकउ हरि दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥ दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥ २ ॥ गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ॥ अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥ ३ ॥ सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥ नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लाइअनु लाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥

सुहागिन जीवात्मा का मुख सर्वदा उज्ज्वल है और गुरु के माध्यम से ही यह सहज स्वभाव वाली होती है। वह अपने अंतर्मन से अपना अहंकार दूर करके सर्वदा अपने प्रियतम प्रभु के साथ रमण करती है॥ १॥ हे मेरे मन! तू सर्वदा हरि-नाम की आराधना कर, क्योंकि सच्चे गुरु ने मुझे हरि-नाम स्मरण का ज्ञान प्रदान कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥ दुहागिन जीवात्माएँ दुखी होकर विलाप करती हैं और उन्हें अपने पति-प्रभु के चरणों में स्थान प्राप्त नहीं होता। मोह-माया में लीन हुई वे कुरूप ही दिखाई देती हैं और परलोक में जाकर वे दुःख ही प्राप्त करती हैं॥ २॥ गुणवान जीवात्मा अपने हृदय में परमात्मा के नाम को बसाकर नित्य ही उसका यशोगान करती है लेकिन अवगुणों से भरी जीव-स्त्री दुःख भोगकर विलाप करती रहती है॥ ३॥ एक परमात्मा ही समस्त जीव-स्त्रियों का पति है और उस स्वामी की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। हे नानक! कई जीवों को परमात्मा ने स्वयं ही अपने से अलग किया है और कई जीवों को स्वयं ही उसने अपने नाम से लगाया हुआ है॥ ४॥ ४॥

वडहंसु महला ३ ॥ अम्रित नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु आइआ ॥ सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥ १ ॥ हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइआ ॥ पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा ॥ महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥ २ ॥ किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा ॥ गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥ ३ ॥ सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥ साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोख दुआरा ॥ ४ ॥ एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥ नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥ ५ ॥ ५ ॥

हरि का अमृत-नाम मुझे सर्वदा मीठा लगता है और गुरु के शब्द द्वारा ही इसका स्वाद आया है। सच्ची गुरु-वाणी के माध्यम से मैं सहजता में लीन रहता हूँ और परमेश्वर को मन में बसा लिया है॥१॥ परमेश्वर ने अपनी कृपा करके मुझे सतगुरु से मिलाया है और परिपूर्ण सतगुरु के द्वारा मैंने हरि-नाम का ध्यान किया है॥ १॥ रहाउ॥ ब्रह्मा ने वेदों की वाणी का विधान रखा, लेकिन उसने भी माया-मोह का ही प्रसार किया। महादेव बड़ा ज्ञानी है और अपने आप में ही लीन रहता है लेकिन उसके हृदय में भी बहुत क्रोध एवं अहंकार है॥ २॥ विष्णु सर्वदा अवतार धारण करने में कार्यरत रहता है। फिर जगत का कल्याण किस की संगति से हो? इस युग में गुरुमुख ब्रह्म-ज्ञान में लीन रहते हैं और वे सांसारिक मोह के अंधेरे से मुक्त हो जाते हैं॥ ३॥ सच्चे गुरु की सेवा के फलस्वरूप ही मुक्ति प्राप्त होती है और गुरुमुख व्यक्ति संसार-सागर से तैर जाता है। वैरागी परमात्मा के सत्य नाम में रंगे रहते हैं और वे मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेते हैं॥ ४॥ एक सत्य ही सभी जीवों के अन्तर्मन में विद्यमान है और वह सबका पालन-पोषण करता है। हे नानक! एक सच्चे परमेश्वर के अलावा मैं किसी दूसरे को नहीं जानता, चूंकि वह सब जीवों का दयालु मालिक है॥ ५॥ ५॥

वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु ॥ गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥ १ ॥ गुरमुखि मन मेरे नामु समालि ॥ सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जाति पति सचु सोइ ॥ गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जिस नो आपि करे सो होइ ॥ गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइ ॥ ३ ॥ गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ॥ गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥

गुरुमुख जीव को ही सत्य, संयम एवं तत्वज्ञान प्राप्त होता है और गुरुमुख का ध्यान सच्चे परमेश्वर के साथ लगा रहता है॥१॥ हे मेरे मन! तू गुरु के माध्यम से परमात्मा के नाम की आराधना कर; वह सर्वदा ही तेरा साथ निभाएगा और परलोक में भी तेरे साथ चलेगा॥ रहाउ॥ वह सत्यस्वरूप परमेश्वर ही गुरुमुखों की जाति एवं मान-प्रतिष्ठा है। गुरुमुखों के अन्तर्मन में सहायता करने वाला प्रभु निवास करता है॥ २॥ गुरुमुख भी वही बनता है, जिसे ईश्वर आप गुरुमुख बनाता है। वह स्वयं ही गुरुमुख को बड़ाई प्रदान करता है॥ ३॥ गुरुमुख सच्चे नाम का सिमरन एवं शुभ आचरण के कर्म करता है। हे नानक! गुरुमुख अपनी वंशावलि का भी उद्धार कर देता है॥ ४॥ ६॥

वडहंसु महला ३ ॥ रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ ॥ मनु त्रिपतिआ हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥ आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥ मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥ २ ॥ देह सरीरि सुखु होवै सबदि

हरि नाइ ॥ नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥ गुर की बाणी सहज बैरागु ॥ ४ ॥ ७ ॥

मेरी जीभ हरि-नाम के स्वाद में सहज-स्वभाव ही लगी है; हरि-नाम का ध्यान करके मेरा मन तृप्त हो गया है॥ १॥ सच्चे परमेश्वर का चिंतन करने से सर्वदा सुख प्राप्त होता है और अपने सतिगुरु पर मैं हमेशा ही बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ एक परमात्मा के साथ लगन लगाकर मेरे नेत्र संतुष्ट हो गए हैं और द्वैतभाव को त्याग कर मेरे मन में संतोष आ गया है॥ २॥ शब्द-गुरु द्वारा हरि-नाम की आराधना करने से शरीर में सुख हो गया है और नाम की सुगन्धि मेरे हृदय में समाई हुई है॥ ३॥ हे नानक! जिसके माथे पर अहोभाग्य लिखा होता है, वह गुरु की वाणी द्वारा सहज स्वभाव ही वैरागी बन जाता है॥ ४॥ ७॥

वडहंसु महला ३ ॥ पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ सचै सबदि सचि समाइ ॥ १ ॥ ए मन नामु निधानु तू पाइ ॥ आपणे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ ॥ निरमलु नामु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ भरमे भूला फिरै संसारु ॥ मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥ ३ ॥ नानक से वडभागी जिन हरि नामु धिआइआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥

पूर्ण गुरु से ही परमेश्वर का नाम पाया जाता है और सच्चे शब्द के माध्यम से ही जीव सत्य में समा जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! यदि तू अपने गुरु की आज्ञा को स्वीकार कर ले तो तुझे नाम-भण्डार प्राप्त हो जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के शब्द द्वारा अन्तर्मन से मैल साफ हो जाती है और परमात्मा का निर्मल नाम आकर मन में निवास कर लेता है॥ २॥ यह दुनिया भ्रम में भूली हुई भटक रही है, इसलिए यह जन्म-मरण के चक्र में फँसी हुई है और यमदूत इसे करता है॥ ३॥ हे नानक! वे लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने हरि-नाम का ध्यान-मनन किया है और गुरु की कृपा से उन्होंने नाम को अपने मन में बसा लिया है॥ ४॥ ८॥

वडहंसु महला ३ ॥ हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥ हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥ १ ॥ हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ॥ हुकमु मंनहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ ॥ रहाउ ॥ हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ ॥ हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ॥ २ ॥ हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ॥ हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ ॥ सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १२ ॥

अहंकार का परमात्मा के नाम से विरोध है और ये दोनों ही परस्पर एक स्थान पर निवास नहीं कर सकते। अहंकार में परमात्मा की सेवा नहीं हो सकती, इसलिए मन व्यर्थ ही चला जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! परमात्मा को याद कर और तू गुरु के शब्द की साधना कर। यदि तू हुक्म का पालन करे तो ही परमेश्वर मिल सकता है और तभी तेरे भीतर से अहंकार दूर होगा॥ रहाउ॥ समस्त शरीरों में अहंकार विद्यमान है और अहंकार द्वारा ही जीव पैदा होते हैं। अहंकार बड़ा घोर अन्धेरा है और अहंकार के कारण पुरुष कुछ भी नहीं समझ सकता॥ २॥ अहंकार में परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती और न ही उसके हुक्म को समझा जा सकता है। अहंकार में ग्रस्त होकर जीव बन्धनों में कैद हो जाता है और परमात्मा का नाम आकर हृदय में निवास नहीं करता॥ ३॥ हे नानक! सतगुरु से भेंट करने पर जीव का अहंकार नाश हो जाता है और तब सत्य आकर

हृदय में निवास कर लेता है। इस तरह वह सत्य की ही कमाई करता है, सत्य में ही रहता है और सच्चे परमात्मा की आराधना करके सत्य में ही समा जाता है॥ ४॥ ६॥ १२॥

वडहंसु महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥ गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥ १ ॥ मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ॥ गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै अवगण भरपूरि सरीरि ॥ हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥ २ ॥ जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥ से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥ ३ ॥ हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥ नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥ ४ ॥ १ ॥

हृदय सेज एक है और सबका एक ठाकुर प्रभु ही उस हृदय-सेज पर विराजमान है। सुखों के सागर परमेश्वर में अनुरक्त होकर गुरुमुख जीवात्मा रमण करती रहती है॥ १॥ मेरे मन में प्रेम होने के फलस्वरूप प्रभु-मिलन की ही आशा कायम है। पूर्ण गुरु ही मुझे मेरे प्रियतम-प्रभु से मिलाता है और अपने गुरु पर मैं करोड़ों बार न्यौछावर होता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ मेरा यह शरीर अवगुणों से परिपूर्ण है, फिर भला मैं अपने गुणों से भरपूर प्रियतम से कैसे मिलन कर सकती हूँ?॥ २॥ हे मेरी माता! जिन गुणवानों ने मेरा प्रियतम-प्रभु प्राप्त कर लिया है, उनकी तरह तमाम गुण मुझमें विद्यमान नहीं, फिर मेरा मिलन कैसे हो?॥ ३॥ मैं अनेक उपाय करके थक चुका हूँ, नानक की प्रार्थना है कि हे मेरे हरि! मुझ गरीब को अपनी शरण में रखो॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला ४ ॥ मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी ॥ हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥ १ ॥ हउ किउ करि पिर कउ मिलउ इआणी ॥ जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै विचि दोस हउ किउ करि पिरु पावा ॥ तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥ २ ॥ जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि ॥ से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥ ३ ॥ नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥ मै करमहीण कब ही गलि लावै ॥ ४ ॥ तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा ॥ मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥ ५ ॥ २ ॥

मेरा हरि-प्रभु बहुत सुन्दर है किन्तु मैं उसकी कद्र को नहीं जानती। मैं तो प्रभु को छोड़कर मोह-माया के आकर्षण में ही फँसी हुई हूँ॥ १॥ मैं विमूढ़ अपने पति-परमेश्वर को कैसे मिल सकती हूँ? जो जीवात्मा अपने पति-परमेश्वर को अच्छी लगती है, वही सौभाग्यवती है और वही बुद्धिमान जीवात्मा अपने प्रियतम से मिलती है॥ १॥ रहाउ॥ मुझमें अनेक दोष हैं, फिर मेरा प्रियतम-प्रभु से कैसे मिलन हो सकता है? हे प्रियतम-प्रभु! तेरे तो अनेक ही प्रेमी हैं, मैं तो तुझे याद ही नहीं आती॥ २॥ जो जीवात्मा अपने पति-परमेश्वर के साथ रमण करती है, वही वास्तव में भली सौभाग्यवती है। वे गुण मुझमें विद्यमान नहीं है, फिर मैं दुहागिन जीवात्मा क्या करूँ?॥ ३॥ सौभाग्यवती जीवात्मा नित्य ही अपने पति-प्रभु के साथ सर्वदा रमण करती है। क्या मुझ कर्महीन को कभी मेरा पति-प्रभु अपने गले से लगाएगा?॥ ४॥ हे प्रियतम-प्रभु! तू गुणवान है किन्तु मैं अवगुणों से भरी हुई हूँ। मुझ निर्गुण एवं वेचारे नानक को क्षमा कर दो॥ ५॥ २॥

वडहंसु महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा ॥ हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगधु समझावा ॥ भूला मनु समझै गुर सबदी हरि हरि सदा धिआए ॥ नानक जिसु नदरि करे मेरा

पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ॥ १ ॥ हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥ सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥ जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥ नानक धनु धंनु धंनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥ २ ॥ हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥ मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥ सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीऐ ॥ आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीऐ ॥ ३ ॥ जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥ नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवां ॥ नित नित सेव करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥ धनु धंनु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाए ॥ ४ ॥ गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥ गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछां करि सांझी हरि गुण गावां ॥ गुण गावा नित नित सद हरि के मन जीवै नामु सुणि तेरा ॥ नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥ ५ ॥ हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥ जिस नो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥ सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ ॥ नानक हरि जन हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥ ६ ॥ १ ॥ ३ ॥

मेरे मन में बड़ी आशा है, फिर मैं कैसे हरि के दर्शन करूँ ? मैं अपने सतिगुरु से जाकर पूछता हूँ और गुरु से पूछकर अपने विमूढ़ मन को समझाता हूँ। यह भूला हुआ मन गुरु के शब्द द्वारा ही समझता है और इस तरह दिन-रात हरि-परमेश्वर का ध्यान करता है। हे नानक! मेरा प्रियतम जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह हरि के सुन्दर चरणों में अपना चित्त लगाता है॥ १॥ अपने प्रियतम-प्रभु के लिए मैं विभिन्न प्रकार के सभी वेष धारण करती हूँ चूंकि जो मैं अपने सत्यस्वरूप हरि-प्रभु को अच्छी लगने लगूँ। लेकिन वह प्रियतम प्यारा मेरी तरफ कृपा-दृष्टि से नजर उठाकर भी नहीं देखता तो फिर मैं क्योंकर धैर्य प्राप्त कर सकती हूँ ? जिसके कारण मैंने अनेक हार-शृंगारों से शृंगार किया है, वह मेरा पति-प्रभु दूसरों के प्रेम में लीन रहता है। हे नानक ! वह जीव-स्त्री धन्य-धन्य एवं सौभाग्यवती है, जिसने पति-प्रभु के साथ रमण किया है और इस सत्यस्वरूप सर्वश्रेष्ठ पति को ही बसाया हुआ है॥ २॥ मैं जाकर भाग्यशाली सुहागिन से पूछती हूँ कि आपने कैसे मेरे प्रभु (सुहाग) को प्राप्त किया है। वह कहती है कि मैंने मेरे-तेरे के अन्तर को छोड़ दिया है, इसलिए मेरे सच्चे पति-परमेश्वर ने मुझ पर कृपा-दृष्टि की है। हे मेरी बहन ! अपना मन, तन, प्राण एवं सर्वस्व हरि-प्रभु को अर्पित कर दे, यही उससे मिलन का सुगम मार्ग है। हे नानक ! अपना प्रभु जिस पर कृपा-दृष्टि से देखता है, उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥ ३॥ जो कोई पुण्यात्मा मुझे मेरे हरि-प्रभु का सन्देश देती है, उसे मैं अपना तन-मन अर्पण करती हूँ। मैं नित्य ही उसे पंखा फेरती हूँ, उसकी श्रद्धा से सेवा करती हूँ और उसके समक्ष जल लाती हूँ। जो मुझे हरि की हरि-कथा सुनाता है, उस हरि के सेवक की मैं दिन-रात सर्वदा सेवा करती हूँ। हे नानक ! मेरा पूर्ण गुरु-सतगुरु धन्य-धन्य है, जो मेरे मन की आशा पूरी करता है॥ ३॥ हे हरि ! मुझे मेरा सज्जन गुरु मिला दो, जिससे मिलकर मैं हरि-नाम का ध्यान करता रहूँ। मैं गुरु-सतगुरु से हरि की गोष्टि-वार्ता पूछूँ और उससे सांझ डालकर हरि का गुणगान करूँ। हे हरि ! मैं नित्य-नित्य सर्वदा ही तेरा गुणगान करता रहूँ और तेरा नाम सुनकर मेरा मन आध्यात्मिक रूप से जीवित है। हे नानक ! जिस समय मुझे मेरा स्वामी प्रभु विस्मृत हो जाता है, उस समय मेरी आत्मा मर जाती है॥ ५॥ हर कोई हरि-दर्शन की तीव्र लालसा करता है लेकिन

हरि उसे ही अपने दर्शन देता है, जिसे वह अपने दर्शन स्वयं प्रदान करता है। मेरा प्रियतम जिस पर कृपा-दृष्टि करता है, वह सर्वदा ही परमेश्वर का सिमरन करता है। जिसे मेरा पूर्ण सतगुरु मिल जाता है, वह सर्वदा ही हरि-नाम की आराधना करता रहता है। हे नानक! हरि का सेवक एवं हरि एक ही रूप हो गए हैं चूंकि हरि का जाप करने से हरि-सेवक भी हरि में ही समा गया है॥ ६॥ १॥ ३॥

वडहंसु महला ५ घरु १ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अति ऊचा ता का दरबारा ॥ अंतु नाही किछु पारावारा ॥ कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥ इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥ १ ॥ सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाख भगत जा कउ आराधहि ॥ लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥ लाख जोगीसर करते जोगा ॥ लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥ २ ॥ घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥ है कोई साजणु परदा तोरा ॥ करउ जतन जे होइ मिहरवाना ॥ ता कउ देई जीउ कुरबाना ॥ ३ ॥ फिरत फिरत संतन पहि आइआ ॥ दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ ॥ महलि बुलाइआ प्रभ अंम्रितु भूंचा ॥ कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥ ४ ॥ १ ॥

उस भगवान का दरबार अत्यंत ऊँचा है तथा उसका कोई अन्त अथवा कोई ओर-छोर नहीं। करोड़ों, करोड़ों, करोड़ों लाखों ही जीव भागदौड़ करते हैं किन्तु उसके यथार्थ निवास का भेद एक तिल मात्र भी नहीं पा सकते॥ १॥ वह कौन-सा समय शुभ सुहावना है, जब प्रभु से मिलन होता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस परमात्मा की लाखों ही भक्त आराधना करते हैं। लाखों ही तपस्वी उसकी तपस्या करते हैं। लाखों ही योगेश्वर योग-साधना करते हैं। लाखों ही भोगी उसके भोगों को भोगते रहते हैं॥ २॥ वह प्रत्येक हृदय में निवास करता है परन्तु बहुत थोड़े ही इसे जानते हैं। क्या कोई ऐसा सज्जन है, जो प्रभु और हमारे बीच बनी हुई झूठ की दीवार को तोड़ दे ? मैं कोई ऐसा प्रयास करता हूँ कि वह परमात्मा हम पर मेहरबान हो जाए और फिर मैं उस पर अपना जीवन न्यौछावर कर दूँ॥ ३॥ प्रभु-खोज में भटकता-भटकता मैं संतों के पास आया हूँ और उन्होंने मेरे सभी दुःख एवं भ्रम मिटा दिए हैं। नामामृत का पान करने के लिए प्रभु ने मुझे अपने चरणाश्रय में बुलाया है। हे नानक! मेरा प्रभु सबसे बड़ा एवं सर्वोपरि है॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला ५ ॥ धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ १ ॥ जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥ मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचु मंत्रु तुमारा अंम्रित बाणी ॥ सीतल पुरख द्रिसटि सुजाणी ॥ २ ॥ सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी ॥ आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥ ३ ॥ तुम मिहरवान दास हम दीना ॥ नानक साहिबु भरपुरि लीणा ॥ ४ ॥ २ ॥

वह समय बड़ा शुभ एवं धन्य है, जब परमात्मा के दर्शन प्राप्त होते हैं। मैं अपने सतिगुरु के चरणों पर बलिहारी जाता हूँ॥ १॥ हे मेरे प्रियतम प्रभु! तुम हम सभी के प्राणदाता हो। मेरा मन तो प्रभु का नाम-स्मरण करने से ही जीवित है॥ १॥ रहाउ॥ हे सर्वेश्वर! तुम्हारा नाम-मंत्र ही सत्य है और तुम्हारी वाणी अमृत है। तू शीतल शान्ति देने वाला है और तेरी दृष्टि त्रिकालदर्शी है॥ २॥ तुम्हारा हुक्म सत्य है और तुम ही सिंहासन पर विराजमान होने वाले हो। मेरा प्रभु अमर है और वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता॥ ३॥ तुम हमारे मेहरबान मालिक हो और हम तेरे दीन सेवक हैं। हे नानक! सबका मालिक प्रभु सर्वव्यापक है॥ ४॥ २॥

वडहंसु महला ५ ॥ तू बेअंतु को विरला जाणै ॥ गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सेवक की अरदासि पिआरे ॥ जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥ जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥ २ ॥ सदा सदा जाई बलिहारी ॥ इत उत देखउ ओट तुमारी ॥ ३ ॥ मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता ॥ नानक साधू देखि मनु राता ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे हरि ! तू बेअंत है और कोई विरला ही इस रहस्य को जानता है। गुरु की कृपा से कोई विरला ही शब्द की पहचान करता है॥ १॥ हे प्रियतम ! तेरे सेवक की यही विनम्र प्रार्थना है कि तुम्हारे चरणों में जाप करता हुआ ही जीवित रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे दाता प्रभु ! तू बड़ा दयालु एवं सर्वशक्तिमान है, वही तुझे जानता है, जिसे तू सूझ प्रदान करता है॥ २॥ मैं सदा-सर्वदा ही तुझ पर बलिहारी जाता हूँ और लोक-परलोक में तुम्हारी ही ओट देखता हूँ॥ ३॥ हे मालिक ! मैं गुणहीन हूँ और मैं तेरे किसी भी उपकार को नहीं जान सका। नानक का कथन है कि साधु के दर्शन प्राप्त करके मेरा मन तेरे प्रेम-रंग में अनुरक्त हो गया है॥ ४॥ ३॥

वडहंसु मः ५ ॥ अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥ दानु देइ साधू की धूरा ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी ओट पूरन गोपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥ निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥ २ ॥ जिस नो नदरि करे सो धिआए ॥ आठ पहर हरि के गुण गाए ॥ ३ ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥ ४ ॥ ४ ॥

वह सर्वशक्तिमान प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है। हे प्रभु ! मुझे साधुओं की चरण-धूलि का दान प्रदान करो॥ १॥ हे दीनदयालु प्रभु ! मुझ पर कृपा करो। हे सर्वज्ञ ! हे जगतपालक ! हमें तेरा ही आश्रय है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा जल, धरती एवं गगन में सर्वव्यापक है। वह हमारे निकट ही निवास करता है और कहीं दूर नहीं है॥ २॥ जिस पर वह कृपा-दृष्टि करता है, वही उसका ध्यान करता है और आठ प्रहर हरि का गुणगान करता रहता है॥ ३॥ वह सभी जीव-जन्तुओं का पालन-पोषण करता है और नानक ने तो हरि के द्वार की शरण ली है॥ ४॥ ४॥

वडहंसु महला ५ ॥ तू वड दाता अंतरजामी ॥ सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥ १ ॥ मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥ हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे ॥ मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥ २ ॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे ॥ तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥ ३ ॥ करि किरपा तेरे गुण गावा ॥ नानक नामु जपत सुखु पावा ॥ ४ ॥ ५ ॥

तू महान् दाता एवं अन्तर्यामी है। हे मालिक प्रभु ! तू सर्वशक्तिमान है और सबमें समाया हुआ है॥ १॥ हे मेरे प्रियतम प्रभु ! तुम्हारे नाम का ही मुझे सहारा है और मैं तेरा नाम सुन-सुनकर ही जीवित रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे पूर्ण सतगुरु ! मैं तेरी शरण में हूँ। संतों की चरण-धूलि से मन निर्मल हो जाता है॥ २॥ हे परमेश्वर ! अपने हृदय में तेरे सुन्दर चरण-कमलों को ही मैंने बसाया हुआ है और तेरे दर्शन पर मैं बलिहारी जाता हूँ॥ ३॥ मुझ पर अपनी कृपा करो चूंकि मैं तेरा ही गुणगान करता रहूँ। हे नानक ! मैं परमात्मा के नाम का भजन करने से ही सुख प्राप्त करता हूँ॥ ४॥ ५॥

वडहंसु महला ५ ॥ साधसंग हरि अम्रितु पीजै ॥ ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥ १ ॥ वडभागी गुरु पूरा पाईऐ ॥ गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रतन जवाहर हरि माणक लाला ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥ २ ॥ जत कत पेखउ साधू सरणा ॥ हरि गुण गाइ निरमल मनु करणा ॥ ३ ॥ घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥ नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥ ४ ॥ ६ ॥

संतों की सभा में रहकर हरिनामामृत का पान करना चाहिए। इसके फलस्वरूप जीवात्मा न कभी मरती है और न ही इसका कभी नाश होता है॥ १॥ बड़े भाग्य से ही पूर्ण गुरु की प्राप्ति होती है और गुरु की कृपा से ही प्रभु का ध्यान किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि का नाम ही रत्न, जवाहर, माणिक एवं मोती है। प्रभु का सिमरन करने से मैं कृतार्थ हो गया हूँ॥ २॥ जहाँ-कहीं भी मैं देखता हूँ साधु के अतिरिक्त कोई शरण-स्थल नजर नहीं आता। हरि का गुणगान करने से मन निर्मल हो जाता है॥ ३॥ सभी के ह्रदय में मेरा मालिक प्रभु ही निवास कर रहा है। हे नानक! जब परमात्मा प्रसन्न होता है तो ही जीव को नाम की देन मिलती है॥ ४॥ ६॥

वडहंसु महला ५ ॥ विसरु नाही प्रभ दीन दइआला ॥ तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥ जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥ १ ॥ तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥ संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥ २ ॥ आवणु जाणा तुम ही कीआ ॥ जिस तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥ ३ ॥ तू एको साहिबु अवरु न होरि ॥ बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे दीनदयाल प्रभु! सदा मेरी याद में रहो और मुझे कदापि न भूलो। हे पूर्ण कृपालु! मैं तो तेरी शरण में ही आया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! जहाँ कहीं भी तुम याद आते हो, वह स्थान सुहावना हो जाता है। जिस समय भी मैं तुझे भुला देता हूँ तो दुःखी होकर मुझे पछतावा होता है॥ १॥ ये सभी जीव तेरे ही हैं और तुम उनके सर्वदा ही साथी हो। अपना हाथ देकर हमें भयानक संसार-सागर से बाहर निकाल दो॥ २॥ यह जीवन-मृत्यु का बन्धन तुम्हारे द्वारा ही बनाया हुआ है। जिसकी तू स्वयं रक्षा करता है, उसे कोई दुःख प्रभावित नहीं करता॥ ३॥ तेरे समक्ष नानक हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है क्योंकि एक तू ही सबका मालिक है और (इस विश्व में) दूसरा कोई भी नहीं है॥ ४॥ ७॥

वडहंसु मः ५ ॥ तू जाणाइहि ता कोई जाणै ॥ तेरा दीआ नामु वखाणै ॥ १ ॥ तू अचरजु कुदरति तेरी बिसमा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥ हुकमे जंमणु हुकमे मरणा ॥ २ ॥ नामु तेरा मन तन आधारी ॥ नानक दासु बखसीस तुमारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

हे पूज्य परमेश्वर! जब तू ज्ञान प्रदान करता है तो ही कोई तुझे समझता है और फिर वह तेरे प्रदान किए हुए नाम का जाप करता है॥ १॥ तू अद्भुत है और तेरी कुदरत भी आश्चर्यजनक है॥ १॥ रहाउ॥ तू आप ही कारण और आप ही करने वाला है। तेरे हुक्म में ही जीवों का जन्म होता है और तेरे हुक्म में उनकी मृत्यु होती है॥ २॥ तेरा नाम ही मेरे मन एवं तन का सहारा है। दास नानक पर तो तुम्हारी ही बखशीश है॥ ३॥ ८॥

वडहंसु महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥ जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥ मेरै अंतरि भुख न उतरै अंमाली जे सउ भोजन मै नीरे ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥ १ ॥ सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥ ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चात्रिकु जल कउ बिललाता ॥ हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥ २ ॥ हउ भई उडीणी कंत कउ अंमाली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥ सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥ इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥ जिनी सखी लालु राविआ

पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥ ३ ॥ मै सभि सीगार बणाइआ अंमाली बिनु पिर कामि न आए ॥ जा सहि बात न पुछीआ अंमाली ता बिरथा जोबनु सभु जाए ॥ धनु धनु ते सोहागणी अंमाली जिन सहु रहिआ समाए ॥ हउ वारिआ तिन सोहागणी अंमाली तिन के धोवा सद पाए ॥ ४ ॥ जिचरु दूजा भरमु सा अंमाली तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अंमाली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥ मै सरब सुखा सुख पाइआ अंमाली पिरु सरब रहिआ भरपूरे ॥ जन नानक हरि रंगु माणिआ अंमाली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥ ५ ॥ १ ॥ ६ ॥

हे प्रियतम प्रभु ! मेरे हृदय में तुझ से मिलने की प्रबल अभिलाषा है। मैं अपने पूर्ण गुरु को किस तरह प्राप्त कर सकता हूँ ? चाहे बालक को सैंकड़ों प्रकार के खेलों में लगाया जाए लेकिन वह दूध के बिना नहीं रह सकता। हे मेरी सखी ! यदि मेरे लिए सैंकड़ों प्रकार के स्वादिष्ट भोजन भी परोस दिए जाएँ, फिर भी मेरे हृदय की भूख दूर नहीं होती। मेरे मन एवं तन में अपने प्रियतम प्रभु का ही प्रेम बसता है और उसके दर्शनों के बिना मेरे मन को कैसे धैर्य हो सकता है ?॥ १॥ हे मेरे सज्जन ! हे प्रीतम भाई ! ध्यानपूर्वक सुन, मेरा मिलन उस सुखों के दाता मित्र से करवा दो, क्योंकि वह मेरे मन की समस्त पीड़ा-वेदना को जानता है और नित्य ही मुझे परमेश्वर की बातें सुनाता है। मैं उसके बिना एक क्षण-मात्र भी नहीं रह सकता जैसे चातक स्वाति-बूंद हेतु रोता-कुरलाता रहता है, इसी प्रकार मैं भी उसके लिए कुरलाता हूँ। हे परमेश्वर ! तेरे कौन से गुणों को याद करके अपने चित्त में धारण करूँ, तुम मुझ जैसे गुणहीन जीव की रक्षा करते रहते हो॥ २॥ हे मेरी प्यारी सखी ! अपने स्वामी की प्रतीक्षा करती हुई मैं उदास हो गई हूँ। फिर मैं अपने उस पति-परमेश्वर को अपने नयनों से कब देखूँगी ? पति-परमेश्वर के बिना मुझे समस्त रसों के भोग भूल गए हैं और वे किसी हिसाब में नहीं अर्थात् व्यर्थ ही हैं। यह वस्त्र भी मेरे शरीर को अच्छे नहीं लगते, इसलिए इन वस्त्रों को भी नहीं पहन सकती। जिन सखियों ने अपने प्रियतम प्रभु को प्रसन्न करके रमण किया है, मैं उनके समक्ष प्रणाम करती हूँ॥ ३॥ हे मेरी सखी ! मैंने सभी हार-श्रृंगार किए हैं परन्तु अपने प्रियतम के बिना ये किसी काम के नहीं अर्थात् व्यर्थ हैं। हे मेरी सखी। जब मेरा स्वामी ही मेरी बात नहीं पूछता तो मेरा सारा यौवन व्यर्थ ही जा रहा है। हे मेरी सखी ! वे सुहागिन जीव-स्त्रियाँ धन्य-धन्य हैं, जिनके साथ उनका पति-प्रभु लीन हुआ रहता है। हे मेरी सखी ! मैं उन सुहागिन जीव-स्त्रियों पर बलिहारी जाती हूँ और हमेशा ही उनके चरण धोती हूँ॥ ४॥ हे मेरी सखी ! जब तक मेरे भीतर द्वैतभाव का भ्रम था, तब तक मैंने अपने प्रभु को दूर ही जाना। हे मेरी सखी ! जब मुझे पूर्ण सतिगुरु मिल गया तो मेरी समस्त आशाएँ एवं अभिलाषाएँ पूर्ण हो गई। हे मेरी सखी ! मैंने सर्व-सुखों के सुख पति-प्रभु को प्राप्त कर लिया है, वह पति-परमेश्वर सबके हृदय में समाया हुआ है। हे मेरी सखी ! गुरु-सतिगुरु के चरणों में लगकर नानक ने भी हरि के प्रेम-रंग का आनंद भोग लिया है॥ ५॥ १॥ ६॥

वडहंसु महला ३ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥ १ ॥ मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ॥ दासनि दासा होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ॥ बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥ २ ॥ सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा ॥ अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा

॥ ३ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरि नाउ ॥ जिस नो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥ ४ ॥ आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥ गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥ ५ ॥ अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ॥ सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥ ६ ॥ सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥ सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥ ७ ॥ नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ॥ जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥ ८ ॥ १ ॥

वाणी सत्य है, अनहद ध्वनि सत्य है और शब्द का चिंतन सत्य है। मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं हर वक्त सच्चे प्रभु का स्तुतिगान करता रहता हूँ॥ १॥ हे मेरे मन! सच्चे परमेश्वर के नाम पर न्यौछावर हो जाओ। यदि तू परमेश्वर का दासानुदास बन जाए तो तुझे सच्चा नाम प्राप्त हो जाएगा॥ १॥ रहाउ॥ वह जिह्वा सच्ची है जो सत्य के साथ रंगी हुई है। इस तरह तन एवं मन भी सच्चे हो जाते हैं। सच्चे परमेश्वर के अलावा किसी अन्य का यशोगान करने से मनुष्य अपना समूचा जीवन व्यर्थ ही गंवा कर चला जाता है॥ २॥ यदि सत्य की कृषि की जाए, सत्य का ही बीज बोया जाए और सच्चे परमेश्वर के नाम का ही व्यापार किया जाए तो रात-दिन सत्यनाम का ही लाभ प्राप्त होता है और प्रभु-भक्ति के नाम-धन के भण्डार भरे रहते हैं॥ ३॥ सत्य का भोजन, सत्य का पहनावा एवं हरि-नाम का सच्चा सहारा उसे ही प्राप्त होता है, जिसे परमेश्वर स्वयं कृपा करके प्रदान करता है। ऐसे मनुष्य को परमात्मा के दरबार में स्थान प्राप्त हो जाता है॥ ४॥ ऐसे लोग सत्य में ही आते हैं, सत्य में चले जाते हैं और पुनः योनियों के चक्र में कदापि नहीं डाले जाते। गुरुमुख परमेश्वर के सच्चे दरबार में सत्यवादी ही होते हैं और सत्य में ही समा जाते हैं॥ ५॥ गुरुमुख भीतर से सच्चे हैं, उनका मन भी सच्चा है और वे परमेश्वर की सच्ची स्तुतिगान करते हैं। वे सच्चे स्थान पर विराजमान होकर सत्य की ही स्तुति करते हैं। मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ॥ ६॥ वह समय सत्य है और वह मुहूर्त भी सत्य है, जब मनुष्य का सच्चे परमेश्वर के साथ प्रेम होता है। तब वह सत्य ही देखता है, सत्य ही बोलता है और सारी सृष्टि में सच्चा परमेश्वर ही उसे सर्वव्यापक अनुभव होता है॥ ७॥ हे नानक! जब परमेश्वर अपने साथ मिलाता है तो ही मनुष्य उसके साथ विलीन हो जाता है। जैसे प्रभु को अच्छा लगता है, वैसे ही वह जीवों को रखता है और वह स्वयं ही अपनी इच्छानुसार करता है॥ ८॥ १॥

वडहंसु महला ३ ॥ मनूआ दह दिस धावदा ओहु कैसे हरि गुण गावै ॥ इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥ १ ॥ वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै ॥ राम नामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ॥ गुरमती आपै आपु पछाणै ता निज घरि वासा पावै ॥ २ ॥ ए मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥ हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥ ३ ॥ हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥ पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥ ४ ॥ बिखु से अंम्रित भए गुरमति बुधि पाई ॥ अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥ ५ ॥ माणस जनमु दुलंभु है जग महि खटिआ आइ ॥ पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइ ॥ ६ ॥ मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु गवाइआ ॥ हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥ ७ ॥ मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥ नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥ ८ ॥ २ ॥

मनुष्य का मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है तो फिर भला यह कैसे भगवान का यशोगान कर सकता है ? शरीर की इन्द्रियाँ अधिकतर दुष्कर्मों में लीन होती हैं और काम-क्रोध नित्य ही दुःखी करते हैं॥ १॥ उस परमात्मा की वाह-वाह करते हुए उसका ही सहज रूप में गुणगान करते रहना चाहिए। इस दुनिया में राम का नाम बड़ा दुर्लभ है और गुरु-उपदेश द्वारा ही हरि रस का पान करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ जब शब्द की पहचान करके मन निर्मल होता है तो वह भगवान का ही गुणगान करता है। जब गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेता है तो उसका प्रभु-चरणों में निवास हो जाता है॥ २॥ हे मेरे मन! तू सर्वदा प्रेम-रंग में लीन रह और सदैव ही भगवान का गुणगान कर। निर्मल हरि सदैव ही सुख देने वाला है, उससे मनोवांछित फल पा लो॥ ३॥ हरि की शरण में आकर हम नीच से उत्तम बन गए हैं। उस सच्चे परमात्मा का बड़ा बड़प्पन है, जिसने हम जैसे डूबते हुए पत्थरों को भी भवसागर से बचा लिया है॥ ४॥ गुरु-उपदेश द्वारा निर्मल बुद्धि प्राप्त करके हम विष से अमृत बन गए हैं। आक से हम चंदन बन गए हैं और हमारे भीतर सुगन्ध का निवास हो गया है॥ ५॥ यह मानव-जन्म बड़ा दुर्लभ है और इस जगत में आकर मैंने लाभ प्राप्त किया है। जिसे पूर्ण भाग्य से सतगुरु मिलता है, वह हरि-नाम का सिमरन करता रहता है॥ ६॥ मनमुख मनुष्य कुमार्गगामी होकर माया के विष में ही लीन रहता है तथा उसने अपना अमूल्य जन्म बेकार ही गंवा दिया है। हरि का नाम सर्वदा ही सुखों का सागर है किन्तु मनमुख मनुष्य सच्चे नाम से प्रेम नहीं करता॥ ७॥ अपने मुँह से सभी परमेश्वर का ही नाम उच्चरित करते हैं किन्तु विरले ही इसे अपने हृदय में बसाते हैं। हे नानक! जिनके हृदय में हरि-नाम का निवास हुआ है, उन्हें मोक्ष एवं बन्धनों से मुक्ति प्राप्त हो गई है॥ ८॥ २॥

वडहंसु महला १ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ ॥ जब साच अंदरि होइ साचा तामि साचा पाईऐ ॥ लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाईऐ ॥ जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ १ ॥ ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ अंम्रितु हरि का नामु मेरै मनि भाइआ ॥ नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ ॥ सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै फुरमाइआ ॥ नदरि तुधु अरदासि मेरी जिंनि आपु उपाइआ ॥ ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ २ ॥ वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥ मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥ नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वञावणा ॥ जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किआ रूआवणा ॥ जो देइ सहणा मनहि कहणा आखि नाही वावणा ॥ वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥ ३ ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥ सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे ॥ किछु पुंन दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे ॥ नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे ॥ सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ ४ ॥ १ ॥

झूठ से दूषित किए हुए शरीर को स्नान करवाने का क्या अभिप्राय है ? क्योंकि उस व्यक्ति का ही स्नान स्वीकार होता है जो सत्य की साधना करता है। जब हृदय में सत्य आ बसता है तो ही मनुष्य सच्चा हो जाता है और सच्चे परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है। भाग्य के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता और मनुष्य निरर्थक ही बकवाद करता हुआ अपना जीवन नष्ट कर देता है। जहाँ भी जाकर हम बैठते हैं, वहाँ शुभ गुणों की बातें करनी चाहिए और परमात्मा के नाम को हृदय में

अंकित करना चाहिए। झूठ से दूषित किए हुए शरीर को स्नान करवाने का क्या अभिप्राय है ?॥ १॥ हे हरि ! जब तूने मुझसे कहलाया तो ही मैंने तेरी नाम-महिमा का कथन किया है। हरि का अमृत नाम मेरे मन को अच्छा लगा है। हरि-नाम मेरे मन को मधुर लगा है और इसने मेरे दुःखों के डेरे को ध्वस्त कर दिया है। जब तूने फुरमाया तो आत्मिक सुख मेरे मन में आकर निवास कर गया। तू स्वयंभू है। हे हरि! जब तूने मुझसे कहलाया तो ही मैंने यह सब तेरी महिमा की है॥ २॥ शुभाशुभ कर्मो के अनुसार परमात्मा जीव को अमूल्य मनुष्य जन्म का अवसर देता है। इसलिए किसी को भी बुरा कहकर झगडा नहीं खड़ा करना चाहिए। अपने स्वामी से झगड़ा करके संकट उत्पन्न मत कर, क्योंकि इससे अपने आपको पूर्णतया बर्बाद करना ही है। जिस मालिक के साथ रहना है, उससे बराबरी करने से फिर दुख आने पर उस पास जाकर रोने से तुझे क्या लाभ होना है ? परमेश्वर जो सुख-दुख प्रदान करता है, उसे खुशी-खुशी मानना चाहिए और अपने मन को समझाना चाहिए कि निरर्थक ही डांवाडोल न हो। किए हुए शुभाशुभ कर्मो के अनुसार ही परमात्मा जीव को अमूल्य मनुष्य जन्म का अवसर प्रदान करता है॥ ३॥ परमात्मा ने आप ही समूचे जगत का निर्माण किया है और आप ही सब पर कृपा-दृष्टि करता है। कोई भी प्राणी दुःख नहीं माँगता और सभी सुख ही माँगते हैं। हर कोई जीव चाहे सुख की ही अभिलाषा कर लें किन्तु मालिक वही करता है जो उसे मंजूर है। दान-पुण्य एवं अनेकों धर्म-कर्म परमेश्वर के नाम के बराबर भी नहीं। हे नानक ! जिन्हें नाम की देन प्राप्त हुई है, उन्हें प्रारम्भ से ही कभी उसका कर्म हुआ है। परमात्मा ने आप ही सारी दुनिया को पैदा किया है और आप ही सब पर कृपा-दृष्टि करता है॥ ४ ॥ १ ॥

वडहंसु महला १ ॥ करहु दइआ तेरा नामु वखाणा ॥ सभ उपाईऐ आपि आपे सरब समाणा ॥ सरबे समाणा आपि तूहै उपाइ धंधै लाईआ ॥ इकि तुझ ही कीए राजे इकना भिख भवाईआ ॥ लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा एतु भरमि भुलाणा ॥ सदा दइआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥ १ ॥ नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥ दूखु गइआ सुखु आइ समाणा ॥ गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा ॥ सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥ माइआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे ॥ इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो आइआ तिसु जाणा ॥ नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ॥ २ ॥ तेरा वखतु सुहावा अंम्रितु तेरी बाणी ॥ सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी ॥ साउ प्राणी तिना लागा जिनी अंम्रितु पाइआ ॥ नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि सवाइआ ॥ इकु करमु धरमु न होइ संजमु जामि न एकु पछाणी ॥ वखतु सुहावा सदा तेरा अंम्रित तेरी बाणी ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी साचे नावै ॥ राजु तेरा कबहु न जावै ॥ राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥ चाकरु त तेरा सोइ होवै जोइ सहजि समावए ॥ दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥ हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥ ४ ॥

हे परमात्मा ! मुझ पर दया करो, ताकि तेरे नाम का जाप करता रहूँ। तूने स्वयं ही सारी दुनिया पैदा की है और तू स्वयं ही सब जीवों में समाया हुआ है। तू खुद ही सब जीवों में समाया हुआ है और तूने ही उन्हें पैदा करके जगत के धंधों में लगाया हुआ है। किसी को तूने स्वयं ही बादशाह बनाया हुआ है और किसी को भिखारी बनाकर दर-दर पर भिक्षा माँगने के लिए भटका रहा है। लोभ एवं मोह को रचकर इतना मीठा बना दिया है कि इस भ्रम में फँसकर दुनिया भटक रही है। हे प्रभु ! मुझ पर सर्वदा ही दया करो, चूंकि तेरे नाम का जाप करता रहूँ॥ १॥ हे जग

के रचयिता ! तेरा नाम सदा सत्य है और यह हमेशा ही मेरे मन को भला लगता है। मेरा दुःख नाश हो गया है तथा सुख मेरे हृदय में आकर समा गया है। हे परमेश्वर ! देवते, मनुष्य, विद्वान एवं बुद्धिमान मनुष्य तेरा ही गुणगान करते हैं। जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं, वही देवते, नर, विद्वान एवं चतुर मनुष्य तेरा यशोगान करते हैं। माया के मोह में मुग्ध हुए व्यक्ति परमात्मा को याद नहीं करते और अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। कुछ विमूढ़ एवं मूर्ख लोग कदापि ईश्वर को स्मरण नहीं करते उन्हें यह ध्यान नहीं कि जो जन्म लेकर दुनिया में आया है, उसने जीवन छोड़कर अवश्य चले जाना है। हे जग के मालिक ! तेरा नाम सदैव सत्य है और वह मेरे मन को हमेशा मीठा लगता है॥ २॥ हे सच्चे परमेश्वर ! वह समय बहुत सुहावना है, जब तेरी आराधना की जाती है और तेरी वाणी अमृत समान है। तेरे सेवक प्रेमपूर्वक तेरी सेवा-भक्ति करते हैं और उन प्राणियों को तेरी सेवा-भक्ति का स्वाद प्राप्त हुआ है। केवल वही प्राणी परमात्मा की सेवा-भक्ति का स्वाद प्राप्त करते हैं, जिन्हें नामामृत की देन प्राप्त हुई है। जो जीव तेरे नाम में लीन हैं, वे नित्य ही प्रफुल्लित होते रहते हैं। कुछ लोग जो एक परमात्मा को नहीं पहचानते, उनसे कर्म-धर्म एवं संयम की साधना नहीं होती। हे परमेश्वर ! वह समय हमेशा सुहावना है, जब तेरी आराधना की जाती है और तेरी वाणी अमृत समान है॥ ३॥ हे परमेश्वर ! मैं तेरे सत्य-नाम पर न्यौछावर हूँ। तेरा शासन कदापि नष्ट नहीं होता। तेरा शासन सदैव अटल है यह कदापि नाश नहीं होता अर्थात् अनश्वर है। तेरा तो वही सच्चा सेवक है, जो सहज अवस्था में लीन रहता है। कोई दुश्मन एवं दुःख मूल रूप से उसे स्पर्श नहीं करते और न ही पाप उसके निकट आते हैं। हे परमेश्वर ! मैं एक तेरे नाम पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ॥ ४॥

जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥ जपहि त साचा एकु मुरारे ॥ साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे ॥ भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥ गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ ५ ॥ वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ किउ करि करउ बेनंती हउ आखि न जाणा ॥ नदरि करहि ता साचु पछाणा ॥ साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ दूख भूख संसारि कीए सहसा एहु चुकावहे ॥ बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥ ६ ॥ तेरे बंके लोइण दंत रीसाला ॥ सोहणे नक जिन लंमड़े वाला ॥ कंचन काइआ सुइने की ढाला ॥ सोवंन ढाला क्रिसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥ हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ बंके लोइण दंत रीसाला ॥ ७ ॥ तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए ॥ सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए ॥ स्रीरंग राती फिरै माती उदकु गंगा वाणी ॥ बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ ८ ॥ २ ॥

हे हरि ! युग-युगान्तरों से तुम्हारे ही भक्त हुए हैं। वे तेरे द्वार पर खड़े होकर तेरी ही कीर्ति करते रहे हैं। वे एक सत्यस्वरूप मुरारि का ही भजन करते हैं और सच्चे मुरारि का तभी भजन करते हैं जब वे उसे अपने मन में वसा लेते हैं। यह भ्रम का भुलावा जो तूने खुद ही पैदा किया है, तू इसे दूर कर देता है। गुरु की कृपा द्वारा मुझ पर भी कृपा करो और मुझे यम से बचा लो। हे हरि ! युगों-युगान्तरों से तुम्हारे ही भक्त तेरी महिमा कर रहे हैं॥ ५॥ हे मेरे सर्वोच्च परमेश्वर ! तू अलक्ष्य एवं अपार है। मैं किस तरह तेरे समक्ष प्रार्थना करूँ ? मैं नहीं जानता कि मैं किस तरह

प्रार्थना करूँ। यदि तुम मुझ पर कृपा-दृष्टि करो तो ही मैं सत्य को पहचान सकता हूँ। मैं तेरे सत्य को तभी समझ सकता हूँ, यदि तुम स्वयं मुझे सूझ प्रदान करोगे। दुःख एवं भूख तूने ही दुनिया में रचे हैं और इस चिन्ता-तनाव से मुझे मुक्त कीजिए। नानक प्रार्थना करता है कि मनुष्य की चिन्ता-तनाव तभी दूर होता है, यदि वह गुरु की शिक्षा को समझ ले। वह महान् परमात्मा आप ही अलक्ष्य एवं अनन्त है॥ ६॥ हे पूज्य परमेश्वर! तेरे नयन अत्यन्त सुन्दर हैं और तेरे दाँत भी अनुपम हैं। जिस परमात्मा के बड़े लम्बे केश हैं, उसकी नाक बहुत सुन्दर है। तेरी कंचन काया स्वर्ण रूप में ढली हुई है। हे मेरी सहेलियो! स्वर्ण में ढली हुई उसकी काया एवं कृष्ण (वर्ण जैसी) माला उसके पास है, उसकी आराधना करो। हे सहेलियो! यह उपदेश ध्यानपूर्वक सुनो कि उसकी आराधना करने से यमदूत तुम्हारे द्वार पर खड़ा नहीं होगा। तुम्हारे मन की मैल निवृत्त हो जाएगी और साधारण हंस से सर्वश्रेष्ठ हंस बन जाओगे। हे पूज्य परमेश्वर! तेरे नयन अत्यन्त सुन्दर हैं और तेरे दाँत बड़े रसदायक एवं अमूल्य हैं॥ ७॥ हे प्रभु! तेरी चाल बड़ी सुहावनी है और तेरी वाणी भी बड़ी मधुर है। तुम कोयल की भाँति बोलते हो और तुम्हारा चंचल यौवन मदमस्त है। तेरा मदमस्त चंचल यौवन तुझे ही अच्छा लगता है। इसका दर्शन मन की इच्छाओं को पूर्ण कर देता है। तुम हाथी की भाँति आहिस्ता-आहिस्ता चरण रखते हो और अपने आप में मदमस्त रहते हो। जो जीवात्मा अपने परमेश्वर के प्रेम में लीन है, वह मस्त होकर गंगा-जल की भाँति क्रीड़ाएँ करती है। हरि का सेवक नानक विनती करता है कि हे हरि! तेरी चाल बड़ी सुहावनी है और तेरी वाणी भी बड़ी मधुर-मीठी है॥ ८॥ २॥

वडहंसु महला ३ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥ सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥ सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥ आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥ सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥ १ ॥ निरगुणवंतड़ीए पिरु देखि हदूरे राम ॥ गुरमुखि जिनी राविआ मुईए पिरु रवि रहिआ भरपूरे राम ॥ पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि एको जाता ॥ धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ हरि सरि रही भरपूरे ॥ नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥ २ ॥ सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ ॥ जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥ कामणि वडभागी अंतरि लिव लागी हरि का प्रेमु सुभाइआ ॥ नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ ॥ ३ ॥ हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए ॥ हरि वरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए ॥ निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ॥ पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी ॥ हरि वरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए ॥ नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाए ॥ ४ ॥ १ ॥

हे नाशवान् सुन्दर नारी! तू अपने प्रिय-प्रभु के प्रेम-रंग में मग्न हो चुकी है। तू सच्चे शब्द द्वारा अपने पति-प्रभु से मिल गई है और वह प्रेम-प्यार से तेरे साथ रमण करता है। तू अपने प्रेम द्वारा सच्चे प्रभु की प्रियतमा बन गई है, तेरे स्वामी ने तुझे नाम द्वारा सुन्दर बना दिया है। तूने

भगवान के साथ प्रेम बना लिया है। जब तूने अपने अभिमान को दूर किया तो ही तूने अपने पति-प्रभु को पाया है और तेरा मन गुरु के शब्द द्वारा प्रभु में समाया रहता है। ऐसी जीव-स्त्री जिसे उसके स्वामी के प्रेम ने आकर्षित किया हुआ है और जिसके अन्तर्मन को उसकी प्रीति प्यारी लगती है, वह उसके नाम से सुहावनी हो जाती है। हे नानक! प्रिय-पति ने उस जीव-स्त्री को अपने साथ मिला लिया है तथा सच्चे बादशाह ने उसे अपने नाम से श्रृंगार दिया है॥ १॥ हे गुणहीन जीवात्मा! अपने पति-परमेश्वर को सदैव प्रत्यक्ष दृष्टिमान कर। हे नाशवान् नववधू! जो गुरु के माध्यम से अपने प्रभु को स्मरण करती है, वह उसे परिपूर्ण व्यापक देखती है। पति-परमेश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है; तू उसे प्रत्यक्ष देख और युग-युगान्तरों में उसे एक समान ही अनुभव कर। मासूम जीव-स्त्री भोलेपन में सहज ही अपने पति-प्रभु के साथ रमण करती है एवं अपने कर्मविधाता प्रभु को मिल जाती है। जो जीव-स्त्री हरि-रस को चखती है, वह प्रेमपूर्वक नाम का उच्चारण करती है और वह परमेश्वर के अमृत सरोवर में लीन रहती है। हे नानक! प्रिय-प्रभु को वही जीव-स्त्री लुभाती है, जो गुरु के शब्द द्वारा प्रत्यक्ष रहती है॥ २॥ हे जीवात्मा! उन सुहागिनों से भी जाकर पूछ लो, जिन्होंने अपना अहंत्व मिटा दिया है। जिन्होंने अपना अहंत्व नहीं मिटाया, उन्होंने अपने पति-प्रभु के हुक्म को अनुभव नहीं किया। लेकिन जिन्होंने अपना अहंत्व मिटा दिया है, उन्हें अपना पति-प्रभु मिल गया है और प्रेम-रंग में लीन होकर रमण करती हैं। अपने प्रभु के प्रेम में सदैव रंगी और सहज ही मतवाली हुई वह रात-दिन उसका नाम जपती रहती है। वह जीव-स्त्री बड़ी भाग्यशाली है, जिसके हृदय में पति-प्रभु की ही सुरति लगी हुई है और परमेश्वर का प्रेम मीठा लगता है। हे नानक! जिस जीव-स्त्री ने सत्य के साथ श्रृंगार किया है, वह सहज ही अपने पति-प्रभु के प्रेम में लीन रहती है॥ ३॥ हे नाशवान् जीवात्मा! तू अपना अहंकार नष्ट कर दे और गुरु की रज़ा पर अनुसरण कर। इस तरह तू परमेश्वर के साथ हमेशा आनंद उपभोग करेगी और अपने मूल घर आत्मस्वरूप में निवास प्राप्त कर लेगी। अपने मूल निवास प्रभु के पास रहकर वह नाम का उच्चारण करती है और सदा सुहागिन नारी हो जाती है। प्रिय-प्रभु बड़ा रंगीला एवं यौवन सम्पन्न है; वह रात-दिन अपनी पत्नी को संवारता है। अपने सुहाग हरि-परमेश्वर द्वारा उसके माथे के भाग्य उदय हो जाते हैं और वह सच्चे शब्द से शोभावान हो जाती है। हे नानक! जब जीव-स्त्री सतिगुरु की शिक्षा पर अनुसरण करती है तो वह परमेश्वर के प्रेम-रंग में लीन हो जाती है॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला ३ ॥ गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ॥ अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥ गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥ गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥ नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥ १ ॥ गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥ आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम ॥ लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ॥ हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥ मनमुख खेती वणजु करि थाके त्रिसना भुख न जाए ॥ नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥ २ ॥ हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥ गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ॥ मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी ॥ साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो ॥ नानक सबदि मिलै भउ भंजनु हरि रावै मसतकि भागो

॥ ३ ॥ खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥ गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥ हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥ भउ भंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥ ४ ॥ २ ॥

गुरुमुख बनकर सभी व्यापार भले हैं, यदि ये सहज अवस्था द्वारा किए जाएँ। हर समय परमात्मा के नाम का जाप करना चाहिए और हरि रस को पान करने का लाभ प्राप्त करना चाहिए। हरि-रस का लाभ प्राप्त करना चाहिए, हरि का सुमिरन करना चाहिए और रात-दिन नाम का चिंतन करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति गुणों का संग्रह करता है और अवगुणों को मिटा देता है; इस तरह वह अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेता है। वह गुरु की मति द्वारा नाम रूपी बड़ी शोभा पा लेता है और सच्चे शब्द द्वारा हरि-रस का पान करता रहता है। हे नानक ! हरि की भक्ति बड़ी विलक्षण है और कोई विरला गुरुमुख ही भक्ति करता है॥ १॥ गुरुमुख बनकर अपने अन्तर्मन में परमेश्वर रूपी खेती बोनी चाहिए और अपने शरीर में नाम रूपी बीज उगाना चाहिए। इस तरह तुम अपने हृदय-घर में ही हरि के नाम रस को चख लोगो और परलोक में भी इसका लाभ प्राप्त करोगे। हरि-परमेश्वर को अपने अन्तर्मन में बसाने की खेती एवं व्यापार धन्य है, जिस द्वारा परलोक में लाभ होता है। जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करता है और इसे अपने मन में बसाता है, वह गुरु के उपदेश को समझ लेता है। मनमुख प्राणी सांसारिक मोह-माया की खेती एवं व्यापार करके थक गए हैं और उनकी तृष्णा एवं भूख दूर नहीं होती। हे नानक ! अपने मन के भीतर परमात्मा के नाम का बीज बोया कर और सच्चे शब्द द्वारा शोभायमान हो जा॥ २॥ वही लोग हरि-परमेश्वर के नाम-व्यापार में सक्रिय हैं, जिनके माथे पर सौभाग्य की मणि उदय होती है। गुरु-उपदेश द्वारा मन अपने मूल घर प्रभु-चरणों में बसता है और सच्चे शब्द के माध्यम से मोह-माया से निर्लिप्त हो जाता है। जिनके मुख-मस्तक पर भाग्य उदय हो जाते हैं, वही सच्चे वैराग को प्राप्त होते हैं और वही विचारवान सच्चे नाम में लीन हो जाते हैं। हरि-नाम बिना सारी दुनिया मोह-माया में फँसकर बावली हो रही है और शब्द द्वारा ही अहंकार का नाश होता है। सत्यनाम में लीन होने से सुमति उत्पन्न होती है और गुरु के माध्यम से हरि-नाम रूपी सुहाग मिल जाता है। हे नानक ! शब्द द्वारा ही भय का नाश करने वाला हरि मिलता है और जीवात्मा मस्तक के भाग्य द्वारा ही उससे रमण करती है॥ ३॥ भगवान के हुक्म को स्वीकार करना उत्तम खेती एवं सर्वोत्तम व्यापार है, हुक्म को स्वीकार करने से मान-सम्मान मिलता है। गुरु की मति द्वारा ही परमात्मा के हुक्म को समझा जाता है और उसके हुक्म द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है। परमात्मा के हुक्म में ही जीव सहजता से उसमें विलीन हो जाता है। गुरु का शब्द अपरम्पार है, क्योंकि गुरु के द्वारा ही सच्ची बड़ाई प्राप्त होती है और मनुष्य सत्य से सुशोभित हो जाता है। जीव अपना अहंत्व मिटाकर भयनाशक परमात्मा को प्राप्त कर लेता है और गुरु के माध्यम से ही उसका मिलन होता है। नानक का कथन है कि परमात्मा का पावन नाम अगम्य एवं अगोचर है और यह उसके हुक्म में ही समा रहा है॥ ४॥ २॥

वडहंसु महला ३ ॥ मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥ आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥ सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥ दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि ॥ कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥ १ ॥ मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि ॥ जो भावै

सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥ गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई ॥ मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि ॥ नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥ २ ॥ मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै इकि सचि लगे वापारा ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥ अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥ मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥ हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥ नानक माणस जनमु दुलंभु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ३ ॥ मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ॥ से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ ॥ इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥ नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरे मन! तू सर्वदा ही सच्चे परमेश्वर को अपने अन्तर्मन में बसाकर रख। अपने हृदय-घर में इस तरह तू सुखपूर्वक निवास करेगा एवं यमदूत तुझे स्पर्श नहीं कर सकेगा। सच्चे शब्द में सुरति लगाने से मृत्यु रूपी जाल एवं यमदूत प्राणी को तंग नहीं कर सकते। सत्य-नाम में लीन हुआ मन हमेशा निर्मल है और जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। मनमुख दुनिया द्वैतभाव एवं भ्रम में फँसकर नाश हो रही है और इसे यमदूत ने मोह लिया है। नानक का कथन है कि हे मेरे मन! ध्यानपूर्वक सुन, तू सर्वदा सच्चे परमेश्वर की आराधना कर॥ १॥ हे मेरे मन! तेरे भीतर परमात्मा के नाम का भण्डार है, इसलिए तू अनमोल वस्तु को बाहर मत खोज। जो कुछ प्रभु को अच्छा लगता है, उसे सहर्ष ग्रहण कर और गुरुमुख बनकर उसकी कृपा-दृष्टि से कृतार्थ हो जा। हे मेरे मन! गुरुमुख बन और कृपादृष्टि से निहाल हो जा, क्योंकि तेरा सहायक हरि-नाम तेरे अन्तर्मन में ही है। मनमुख व्यक्ति मोह-माया में अन्धे एवं ज्ञानविहीन हैं और द्वैतभाव ने इन्हें नष्ट कर दिया है। परमात्मा के नाम के बिना किसी की भी मुक्ति नहीं होती; यमदूतों ने सारी दुनिया को जकड़ा हुआ है। नानक का कथन है कि तेरे भीतर परमात्मा के नाम का भण्डार है, इसलिए तू इस अनमोल वस्तु को बाहर मत खोज॥ २॥ हे मेरे मन! अमूल्य मनुष्य जन्म के पदार्थ को प्राप्त करके कुछ लोग सत्यनाम के व्यापार में क्रियाशील हैं। वे अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं और उनके अन्तर में अपार शब्द विद्यमान है। उनके भीतर अपार शब्द है; हरि-परमेश्वर का नाम उन्हें प्यारा लगता है और नाम के फलस्वरूप वे नवनिधियाँ प्राप्त कर लेते हैं। मनमुख प्राणी तो माया के मोह में ही लीन हैं, उससे वे दुःखी होते हैं और दुविधा में फँसकर अपनी प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं। जो अपने अहंकार को मार कर सच्चे शब्द में लीन होते हैं; वे अधिकतर सत्य में ही लीन रहते हैं। हे नानक! यह मानव जन्म बड़ा दुर्लभ है और सतिगुरु ही इस भेद को समझाता है॥ ३॥ हे मेरे मन! वे लोग बड़े खुशकिस्मत हैं, जो अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं। जो अपने मन को वश में कर लेता है, वही पुरुष वास्तव में बैरागी है। जो सच्चे परमेश्वर के साथ सुरति लगाते हैं, वही विरक्त हैं और वे अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेते हैं। उनकी बुद्धि बड़ी अटल एवं अत्यंत गहरी है और गुरुमुख बनकर वे सहजता से परमात्मा के नाम की स्तुति करते हैं। कुछ लोग सुन्दर नारियों से प्रेम करते हैं एवं माया का मोह उन्हें मीठा लगता है, ऐसे बदकिस्मत मनमुख अज्ञानता की निद्रा में सोये रहते हैं। हे नानक! जो सहज-स्वभाव ही अपने गुरु की सेवा करते हैं, वे पूर्ण भाग्यशाली हैं॥ ४॥ ३॥

वडहंसु महला ३ ॥ रतन पदारथ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥ लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥ गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥ बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥ वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥ रतन पदारथ वणजीअहि जां सतिगुरु देइ बुझाए ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥ कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम ॥ बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥ आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा॥ माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥ २ ॥ खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥ खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥ मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥ खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥ ३ ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई राम ॥ जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिस दी वडिआई राम ॥ जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥ जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥ गुर परसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई ॥ आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे जीव ! सतिगुरु ने यही सूझ दी है कि परमात्मा के नाम रूपी रत्न पदार्थों का ही व्यापार करना चाहिए। हरि की भक्ति ही सर्वोत्तम लाभ है और गुणवान प्राणी गुणों के स्वामी परमात्मा में ही समाया रहता है। जिसे वह स्वयं सूझ प्रदान करता है, वही गुणवान प्राणी गुणों के मालिक में लीन रहता है और इस नश्वर दुनिया में परमात्मा की भक्ति का ही वह लाभ प्राप्त करता है। परमात्मा की भक्ति के बिना कहीं सुख प्राप्त नहीं होता, द्वैतभाव में फँसकर वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है और गुरु की मति द्वारा नाम ही आधार बनता है। ईश्वर जिसे इस नाम-व्यापार में लगाता है, वह नाम के सौदे का सर्वदा लाभ प्राप्त करता है। जब सतिगुरु सूझ प्रदान करता है तो ही जीव नाम रूपी रत्न पदार्थ का व्यापार करता है॥ १॥ माया का मोह सब दुःख-संताप ही है और यह व्यापार बड़ा झूठा है। मनुष्य झूठ बोल-बोलकर माया रूपी विष ही खाता है और इसके फलस्वरूप उसके अन्दर बहुत सारे विकार बढ़ जाते हैं। इस प्रकार पाप बहुत बढ़ गए हैं और संसार में संशय बना रहता है। परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है। पण्डित ग्रंथ पढ़-पढ़कर वाद-विवाद करते हैं परन्तु ज्ञान के बिना उन्हें भी सुख प्राप्त नहीं होता। उन्हें तो मोह-माया से ही प्रेम है, इसलिए उनका जन्म-मरण का चक्र कदापि नहीं मिटता। माया का मोह सब दुःख-संताप ही है और यह व्यापार बड़ा झूठा तथा खोटा है॥ २॥ उस सच्चे परमेश्वर के दरबार में सभी बुरे एवं भले जीव परखे जाते हैं। बुरे जीव प्रभु के दरबार से बाहर निकाल दिए जाते हैं और वे खड़े होकर हमेशा रोते रहते हैं। विमूढ़ एवं गंवार खड़े होकर विलाप करते हैं। इस प्रकार ऐसे मनमुख व्यक्ति अपना अमूल्य जीवन विनष्ट कर लेते हैं। माया रूपी विष ने समूचे संसार को भुला दिया है और उसे सच्चे परमेश्वर का नाम अच्छा नहीं लगता। मनमुख व्यक्ति संतजनों से वैर करके दुनिया में दुःख ही प्राप्त करते हैं। उस सच्चे परमेश्वर के दरबार में खोटे एवं भले जीवों की परख की जाती है॥ ३॥ परमेश्वर आप ही जीवों को अच्छा-बुरा बनाता है। इसलिए किसी से गिला-शिकवा नहीं किया जा सकता क्योंकि दूसरा कोई कुछ नहीं कर सकता। जैसे उसकी कीर्ति है और जैसे उसकी खुशी है, वह वैसे ही जीवों को लगाता है। जैसे

उस परमात्मा का बड़प्पन है, वह स्वयं वैसे ही जीवों से करवाता है और अपने आप कोई महान् योद्धा अथवा कायर नहीं। दाता परमेश्वर जगत को जीवन प्रदान करने वाला एवं कर्म-विधाता है और वह स्वयं ही क्षमा करता है। हे नानक! गुरु की कृपा से ही अहंकार निवृत्त होता है और परमात्मा के नाम के फलस्वरूप मान-सम्मान प्राप्त होता है। परमेश्वर स्वयं ही जीवों को अच्छा बुरा बनाता है। इसलिए किसी से गिला-शिकवा नहीं किया जा सकता क्योंकि उसके अतिरिक्त अन्य कोई कुछ नहीं कर सकता॥ ४॥ ४॥

वडहंसु महला ३ ॥ सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥ अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥ नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥ नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥ १ ॥ हंउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम ॥ गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥ रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥ अंतरि खूहटा अंम्रिति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी ॥ जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥ नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैलु भरीजै ॥ २ ॥ पंडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥ माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥ माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥ बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिस्टा माहि समाई ॥ जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥ नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥ ३ ॥ माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥ गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम ॥ दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥ आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाए ॥ नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥ ४ ॥ ५ ॥

हरि का नाम ही सच्चा सौदा है और यही सच्चा व्यापार है। गुरु के उपदेश द्वारा ही हरि के नाम का व्यापार करना चाहिए और इस सच्चे नाम का व्यापार अत्यंत मूल्यवान एवं महान् है। इस सच्चे व्यापार का मूल्य अनन्त एवं बहुमूल्य है, जो लोग इस सच्चे व्यापार में क्रियाशील हैं, वे बड़े भाग्यशाली हैं। भीतर एवं बाहर से ऐसे प्राणी परमात्मा की भक्ति में लीन रहते हैं और सच्चे नाम में उनकी सुरति लगी रहती है। जो गुरु के शब्द का चिंतन करता है और जिस पर परमात्मा कृपा-दृष्टि करता है, उसे ही सत्य की प्राप्ति होती है। हे नानक! जो सत्यनाम में लीन रहते हैं, उन्हें ही सुख प्राप्त होता है और वही सच्चे परमेश्वर के नाम के सच्चे व्यापारी हैं॥ १॥ अहंत्व माया की मैल है और यह माया की मैल इन्सान के मन में भर जाती है। गुरु की मति द्वारा मन अहंत्व की मैल से निर्मल हो जाता है। अतः रसना द्वारा हरि रस पीते रहना चाहिए। रसना द्वारा हरि रस पीने से इन्सान का हृदय परमेश्वर के प्रेम से भीग जाता है और सच्चे नाम का ही चिंतन करता रहता है। जीवात्मा के अन्तर्मन में ही हरि के अमृत का सरोवर भरा हुआ है और नाम-सुमिरन द्वारा पनिहारिन इसे निकाल कर पान करती है। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि होती है, वही सत्य से लगता है और उसकी रसना परमात्मा के नाम का भजन करती है। हे नानक! जो लोग परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं, वही पवित्र-पावन हैं और शेष जीव अहंकार की मैल से भरपूर हैं॥ २॥ सभी पण्डित एवं ज्योतिषी पढ़-पढ़कर उच्च स्वर में उपदेश देते हैं किन्तु ये उच्च स्वर में किसे सुना रहे हैं? माया-मोह की मैल इनके हृदय में विद्यमान है और ये

केवल माया का ही व्यापार करने में सक्रिय हैं। जगत में इन्हें तो माया के व्यापार से ही प्रेम है और परिणामस्वरूप जन्म-मरण के चक्र में फँसकर दुःख ही भोगते हैं। विष का कीड़ा विष से ही लगा हुआ है और विष्टा में ही नष्ट हो जाता है। जो उसके लिए परमात्मा ने कर्म लिखा है, वह वही कार्य करता है और उसके लिखे लेख को कोई मिटा नहीं सकता। हे नानक ! जो व्यक्ति परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं, वे सर्वदा सुख प्राप्त करते हैं, अन्यथा शेष मूर्ख एवं गंवार चिल्लाते हुए मर जाते हैं॥ ३॥ जिसका मन माया के मोह में लीन रहता है, उसे मोहवश कोई सूझ नहीं रहती। लेकिन यदि यह मन गुरु के माध्यम से परमात्मा के नाम में लीन हो जाए तो द्वैतभाव का रंग दूर हो जाता है। इस प्रकार द्वैतभाव का प्रेम निवृत्त हो जाता है और मन सच्चे परमेश्वर में विलीन हो जाता है। फिर सच्चे परमेश्वर के नाम द्वारा उसके भण्डार भरपूर हो जाते हैं। जो मनुष्य गुरुमुख बन जाता है, वही इस भेद को समझता है और सच्चा परमेश्वर जीव को नाम से सुशोभित कर देता है। जिसे परमेश्वर स्वयं मिलाता है, वही प्राणी उससे मिलता है, शेष कुछ भी कथन नहीं किया जा सकता। हे नानक ! परमात्मा के नाम के बिना मनुष्य भ्रम में ही भूला रहता है और कई व्यक्ति प्रभु के प्रेम में मग्न होकर नाम में लीन रहते हैं॥ ४॥ ५॥

वडहंसु महला ३ ॥ ए मन मेरिआ आवा गउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम ॥ आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम ॥ फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई ॥ साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥ सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा ॥ नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥ माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥ हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥ जिनि सिसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई ॥ नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥ २ ॥ एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम ॥ अरदासि करी गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम ॥ रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥ सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता ॥ जतु सतु संजमु करम कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥ नानक तिस नो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ॥ ३ ॥ जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥ अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥ आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥ दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ ॥ घर महि निज घरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे मेरे मन ! यह दुनिया आवागमन अर्थात् जन्म-मरण का चक्र ही है, अन्ततः इस आवागमन से मुक्ति सच्चे परमेश्वर के नाम से ही मिलती है। जब सच्चा परमेश्वर स्वयं क्षमा कर देता है तो मनुष्य का दोबारा इहलोक में जन्म-मरण का चक्र नहीं पड़ता। वह दोबारा जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता और अन्ततः सत्यनाम द्वारा मोक्ष मिल जाता है एवं गुरु के माध्यम से प्रशंसा प्राप्त करता है। जो मनुष्य सच्चे परमेश्वर के रंग में लीन हो जाते हैं, वे सहज अवस्था में मस्त रहते हैं और सहज ही सत्य में समा जाते हैं। सच्चा परमेश्वर उसके मन को अच्छा लगता है और सत्य ही उसके भीतर निवास करता है और शब्द से रंग कर वह अंत में मुक्ति प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! जो परमात्मा के नाम में रंगे हुए हैं, वह सत्य में ही समा जाते हैं और दोबारा भवसागर

के चक्र में नहीं पड़ते॥ १॥ माया का मोह केवल पागलपन ही है, चूंकि द्वैतभाव के कारण मनुष्य नष्ट हो जाता है। माता-पिता का रिश्ता भी निरा मोह ही है और इस मोह में सारी दुनिया उलझी हुई है। पूर्व जन्म में किए कर्मों के फलस्वरूप ही दुनिया मोह में उलझी हुई है। (परमात्मा के अतिरिक्त) कोई भी कर्मों को मिटा नहीं सकता। जिस परमेश्वर ने सृष्टि रचना की है, वही इसे रचकर देख रहा है और उस जैसा महान् दूसरा कोई नहीं। ज्ञानहीन मनमुख प्राणी जल-जल कर नष्ट हो जाता है और शब्द के बिना उसे शांति नहीं मिलती। हे नानक ! भगवान के नाम से विहीन सभी भटके हुए हैं और माया के मोह ने उन्हें नष्ट कर दिया है॥ २॥ इस जगत को मोह-माया में जलता देखकर मैं भागकर भगवान की शरण में आया हूँ। मैं अपने पूर्ण गुरु के समक्ष प्रार्थना करता हूँ कि मेरी रक्षा करो एवं मुझे नाम की बड़ाई प्रदान करें। मेरे गुरुदेव मुझे अपनी शरण में रखें और हरि-नाम की बड़ाई प्रदान करें, तुझ जैसा अन्य कोई दाता नहीं। वे बड़े भाग्यशाली हैं, जो तेरी सेवा करते हैं और युग-युगान्तरों में वह एक ईश्वर को ही जानते हैं। मनुष्य ब्रह्मचार्य, सत्य, संयम एवं कर्मकाण्ड करता है परन्तु गुरु के बिना उसकी गति नहीं होती। हे नानक ! जो जाकर भगवान की शरण में आते हैं, उन्हें वह शब्द की सूझ प्रदान करता है॥ ३॥ हरि जैसी सुमति प्रदान करता है, वैसे ही मनुष्य के भीतर उत्पन्न होती है और शेष कोई सुमति उत्पन्न नहीं होती। हे हरि ! अन्तर्मन में एवं बाहर तुम ही मौजूद हो और इस बात की सूझ भी तुम स्वयं ही प्रदान करते हो। जिसे तुम यह सूझ प्रदान करते हो, वह किसी अन्य से प्रेम नहीं करता और गुरु के माध्यम से वह हरि-रस को चखता है। परमात्मा के सच्चे दरबार में सर्वदा सत्य ही रहता है और सच्चे शब्द का वह प्रेमपूर्वक स्तुतिगान करता है। वह अपने हृदय में अपना यथार्थ घर प्राप्त कर लेता है और सतगुरु उसे मान-सम्मान प्रदान करता है। हे नानक ! जो प्राणी परमेश्वर के नाम में लीन रहते हैं, वे सच्चे दरबार को प्राप्त कर लेते हैं और सच्चे प्रभु के सन्मुख उनकी मति स्वीकृत हो जाती है॥ ४॥ ६॥

वडहंसु महला ४ छंत १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरू हमारा ॥ ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ सांति पाई ॥ मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥ १ ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ हरि नामो हरि नामु द्रिड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥ जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवं निधि पाई ॥ हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥ हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥ हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥ २ ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥ हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ॥ मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ॥ हरि हरि क्रिपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ३ ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥ कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥ गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥ ४ ॥ १ ॥

सतिगुरु ने मेरे मन में प्रभु से प्रीति लगा दी है। उसने मेरे मन में परमात्मा का 'हरि-हरि' नाम बसा दिया है। सभी दुख मिटाने वाला हरि का हरि-नाम गुरु ने मेरे मन में बसा दिया है। अहोभाग्य से मुझे गुरु के दर्शन प्राप्त हुए हैं और मेरा सतिगुरु धन्य-धन्य है। मैं उठते-बैठते गुरु की सेवा ही करता रहता हूँ, जिसकी सेवा के फलस्वरूप शांति प्राप्त हुई है। मेरे मन में सतिगुरु ने परमात्मा से प्रीति लगा दी है॥ १॥ सतिगुरु को देखकर मैं जीता हूँ और मेरा मन फूलों की भाँति खिला रहता है। गुरु ने मेरे मन में हरि-नाम बसा दिया है और हरि-नाम जपकर मेरा मन खिला रहता है। हरि-नाम का भजन करने से हृदय-कमल खिल गया है और हरि-नाम द्वारा ही नवनिधियाँ प्राप्त कर ली हैं। अहंकार का रोग दूर हो गया है, पीड़ा भी मिट गई है और मैंने सहज अवस्था में हरि में समाधि लगाई है। हरि के नाम की कीर्ति मुझे सतिगुरु से प्राप्त हुई है और सुखदाता सतिगुरु के चरण-स्पर्श से मन आनंदित हो गया है। सतिगुरु को देखकर मैं जीवन जीता हूँ और मेरा मन फूलों की भाँति खिला रहता है॥ २॥ कोई आकर मुझे मेरे पूर्ण सतिगुरु से मिला दे। मैं अपना मन-तन उसे अर्पण कर दूँगा और अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके उसे भेंट कर दूँगा। जो मुझे सतिगुरु के वचन सुनाएगा, मैं उसको अपने मन-तन के टुकड़े कर करके अर्पण कर दूँगा। मेरा वैरागी मन संसार से विरक्त हो गया है और गुरु के दर्शन करके इसे सुख प्राप्त हो गया है। हे सुखों के दाता! हे हरि-परमेश्वर! मुझ पर कृपा करो, मुझे सतिगुरु की चरण-धूलि प्रदान करो। कोई आकर मुझे मेरे पूर्ण सतिगुरु से मिला दे॥ ३॥ गुरु जैसा महान् दाता मुझे कोई अन्य नजर नहीं आता। वह मुझे हरि के नाम का दान प्रदान करता है और वह स्वयं ही निरंजन हरि-परमेश्वर है। जिन्होंने हरि-नाम की आराधना की है, उनका दुःख, भ्रम एवं भय भाग गए हैं। वे लोग बड़े खुशनसीब हैं, जिन्होंने गुरु के चरणों में अपना मन लगाया है, वही सेवक भावना से परमात्मा को मिलते हैं। नानक का कथन है कि हरि-परमेश्वर स्वयं जीव को गुरु से मिलाता है और महापुरुष सतिगुरु को मिलने से सुख प्राप्त होता है। गुरु जैसा महान् दाता मुझे कोई और नजर नहीं आता॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला ४ ॥ हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥ जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ जिसु कारणि हंउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि पाइआ ॥ एक द्रिस्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥ १ ॥ जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥ तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥ हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु ध्याइआ ॥ तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए ॥ जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥ २ ॥ हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥ हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥ हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवां ॥ हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि अंम्रितु पीवां ॥ हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे ॥ हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥ ३ ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम ॥ जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥ गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥ ४ ॥ २ ॥

गुरु के बिना मैं बड़ी विनीत एवं मान-हीन हो गई थी। गुरु के मिलाप से मैं जगत को जीवन देने वाले दाता परमेश्वर में विलीन हो गई हूँ। सच्चे गुरु के मिलाप से मैं हरि-नाम में समा गई हूँ और हरि-नाम का भजन एवं ध्यान करती रहती हूँ। जिस प्रभु को मिलने के कारण मैं खोज-तलाश कर रही थी, उस सज्जन हरि को मैंने हृदय-घर में ही पा लिया है। एक ईश्वर को मैं देखती हूँ, एक को जानती हूँ और एक को ही हृदय में अनुभव करती हूँ। मैं गुरु के विना बड़ी विनीत एवं तुच्छ हूँ॥ १॥ जिन्होंने सतगुरु को पा लिया है, हरि-प्रभु ने उन्हें गुरु से साक्षात्कार करवाकर अपने साथ मिला लिया है। मेरी यही कामना है कि मैं उनके चरणों की पूजा करूँ और उनके चरण स्पर्श करता रहूँ। हे ईश्वर ! मैं उनके चरणों की पूजा करूँ, जिन्होंने सतगुरु महापुरुष प्रभु का ध्यान किया है। हे परमेश्वर ! तू ही बड़ा दाता है, तू ही अन्तर्यामी है, कृपा करके मेरी अभिलाषा पूरी कीजिए। गुरु के शिष्य को मिलकर मेरी अभिलाषा पूरीं हो गई है और मैं रात-दिन राम के गुण गाता रहता हूँ। जिन्होंने सतगुरु को पा लिया है, हरि-प्रभु ने उन्हें गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लिया है॥ २॥ मैं अपने मित्र-प्यारे गुरु के शिष्य पर सर्वदा न्यौछावार होता हूँ। वह मुझे हरि का नाम सुनाता है, प्रियतम-प्रभु का नाम मेरे जीवन का आधार है। हरि का नाम मेरे प्राणों का साथी है और इसके बिना मैं एक घड़ी एवं निमेष मात्र भी जीवित नहीं रह सकता अगर सुख देने वाला ईश्वर कृपा करे तो गुरुमुख बनकर मैं नामामृत का पान कर लूँ। ईश्वर स्वयं ही निष्ठा लगाकर अपने संग मिला लेता है और वह स्वयं ही शोभायमान करता है। मैं अपने प्यारे मित्र गुरु के शिष्य पर कुर्बान जाता हूँ॥ ३॥ वह निरंजन पुरुष हरि आप ही सर्वव्यापी है। वह सर्वशक्तिमान स्वयं ही जीव को अपने साथ मिलाता है, जो कुछ वह करता है, वही होता है। जो परमात्मा को मंजूर है वही होता है, उसकी मर्जी के बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता। अधिक चतुराई करने से उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि बहुत सारे चतुराई करने वाले थक गए हैं। गुरु की कृपा से नानक ने देख लिया है कि मेरे हरि-परमेश्वर के अलावा दूसरा कोई सहारा नहीं है। वह मायातीत ईश्वर ही सर्वव्यापी है॥ ४॥ २॥

वडहंसु महला ४ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥ तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम ॥ गुर गिआन अंजनु सतिगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥ सतिगुर सेवि परम पदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥ हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥ हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ ॥ धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥ मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥ २ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥ तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु ब्रिथा गवाइआ राम ॥ निहफलु जनमु तिन ब्रिथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे ॥ घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥ हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥ ३ ॥ हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती राम ॥ गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ हरि हरि सतिगुर करह भगती जां हरि प्रभु किरपा

धारे ॥ मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्हारे ॥ कहु नानक गुरि नामु द्रिड़ाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ हम चात्रिक हम चात्रिक दीन हरि पासि बेनंती ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे हरि ! मुझे सतगुरु से मिला दो, चूंकि सतगुरु के सुन्दर चरण मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। गुरु ने ज्ञान का सुरमा डालकर मेरी अज्ञानता का अन्धेरा दूर कर दिया है। सतगुरु से ज्ञान का सुरमा प्राप्त हुआ है, जिसने अज्ञानता का अँधेरा मिटा दिया है। सतगुरु की सेवा करने से मैंने परम पदवी प्राप्त कर ली है और अपने श्वास-ग्रास से हरि का सुमिरन किया है। जिन पर हरि-प्रभु कृपा धारण करता है, उन्हें वह सतगुरु की सेवा में लगाता है। हे प्रभु जी ! मुझे सतगुरु से मिला दो, चूंकि सतगुरु के सुन्दर चरण मुझे मधुर लगते हैं॥ १॥ मेरा सतगुरु मेरा प्रियतम है और गुरु के बिना मैं रह नहीं सकता। वह मुझे हरि का नाम प्रदान करता है जो अन्तिम क्षण तक मेरी सहायता करता है। हरि-नाम अन्तिम क्षणों तक मेरा सहायक होगा, गुरु सतगुरु ने मेरे मन में नाम दृढ़ किया है। जहाँ पुत्र, स्त्री कोई भी मेरा साथी नहीं होगा, वहाँ हरि का नाम मुझे मुक्ति प्रदान करवाएगा। महापुरुष सतगुरु धन्य-धन्य हैं, वह मायातीत हैं, जिससे भेंट करके मैं हरि के नाम का ध्यान करता रहता हूँ। मेरा सतगुरु मेरा प्रियतम है और गुरु के बिना मैं रह नहीं सकता॥ २॥ जिन्होंने महापुरुष सतगुरु के दर्शन नहीं किए, उन्होंने अपना सारा जीवन निष्फल व्यर्थ ही गंवा दिया है और वे शाक्त दुःखी होकर तड़प-तड़प कर मर गए हैं। नाम-रत्न की दौलत हृदय-घर में होने के बावजूद वे भूखे ही रहते हैं और वे भाग्यहीन प्रभु से बहुत दूर रहते हैं। हे परमेश्वर ! मैं उनके दर्शन नहीं करना चाहता, जिन्होंने हरि-नाम का ध्यान नहीं किया और न ही महापुरुष सतगुरु के दर्शन किए हैं॥ ३॥ हम दीन-चातक हैं और अपने हरि-परमेश्वर के समक्ष निवेदन करते हैं कि हमें प्रियतम गुरु से मिला दें चूंकि हम सतगुरु की भक्ति करें। जब हरि-प्रभु की कृपा होती है तो ही सतगुरु की भक्ति करते हैं। गुरु के बिना मेरा कोई मित्र नहीं और गुरु सतगुरु ही हमारे प्राण हैं। नानक का कथन है कि गुरु ने मेरे भीतर परमात्मा का नाम बसा दिया है और उस सच्चे हरि-परमेश्वर के नाम का सुमिरन करता हूँ। हम दीन चातक हैं और अपने प्रभु के समक्ष निवेदन करते हैं॥ ४॥ ३॥

वडहंसु महला ४ ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ पाइ लगह नित करह बिनंती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥ सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥ हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥ १ ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हंउमै पापा राम ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम ॥ हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥ सतिगुर गिआन खड़गु हथि दीना जमकंकर मारि बिदारे ॥ हरि प्रभि क्रिपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा ॥ सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हंउमै पापा ॥ २ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम ॥ मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए सरीरा ॥ अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गंभीरा ॥ जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन परम पदारथु पाइआ ॥ जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ ॥ ३ ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम ॥ हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ ॥ तू दुख भंजनु सरब सुखदाता हम

पाथर तरे तराइआ ॥ सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥ हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे हरि ! मुझ पर कृपा करो एवं सुखों के दाता सतिगुरु से मिला दो। सतिगुरु से मैं हरि की स्तुति की बातें पूछूँगा। जिसने नाम-धन प्राप्त किया है, मैं उस सतिगुरु से हरि की स्तुति की बातें पूछूँगा। गुरु सतगुरु ने मुझे मार्ग बताया है, इसलिए मैं नित्य उसके चरण स्पर्श करता हूँ और उसके समक्ष सदा निवेदन करता हूँ। जो हरि-नाम एवं हरि से रंगा हुआ है, वही भक्त दुःख-सुख को एक समान समझता है। हे हरि ! मुझ पर कृपा करो और मुझे सुखों के दाता गुरु से मिला दो॥ १॥ गुरु के मुख से परमात्मा का नाम सुनकर मेरे सभी पाप एवं अहंकार नष्ट हो गए हैं। हरि-नाम का भजन करने से संसार के तमाम रोग निवृत्त हो जाते हैं। जिन्होंने हरि-नाम की आराधना की है, उनके दुःख एवं पाप नाश हो गए हैं। सतगुरु ने मेरे हाथ में ज्ञान की कृपाण पकड़ा दी है, जिसके साथ मैंने यमदूतों का प्रहार करके वध कर दिया है। सुखों के दाता हरि-प्रभु ने मुझ पर कृपा धारण की है और मैं दुःख, पाप एवं संताप से मुक्त हो गया हूँ। गुरु से परमात्मा का नाम सुनकर मेरे सभी पाप एवं अहंकार नष्ट हो गए हैं॥ २॥ हरि का भजन करने से हरि का नाम मेरे मन को बहुत अच्छा लगा है। गुरुमुख बनकर परमात्मा का भजन करने से सभी रोग नष्ट हो गए हैं। गुरुमुख बनकर परमात्मा की आराधना करने से सभी रोग दूर हो गए हैं और शरीर अरोग्य हो गया है। रात-दिन सहज समाधि हरि में लगी रहती है चूंकि मैंने गहरे एवं गंभीर हरि का ही ध्यान किया है। उच्च कुल अथवा निम्न कुल से संबंधित जिस व्यक्ति ने भी परमात्मा का ध्यान-मनन किया है, उसने परम पदार्थ (मोक्ष) पा लिया है। हरि का भजन करने से हरि-नाम मेरे मन को अच्छा लगा है॥ ३॥ हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करो और अपनी कृपा करके मेरा उद्धार करो। हम पापी एवं गुणविहीन हैं किन्तु फिर भी तुम्हारे तुच्छ सेवक हैं। हे दयालु परमेश्वर ! चाहे हम पापी निर्गुण हैं, फिर भी तुम्हारी शरण में आए हैं। तू दुखनाशक, सर्व सुखों का दाता है और हम पत्थर तुम्हारे पार करवाने से ही पार हो सकते हैं। हे नानक ! जिन्होंने सतगुरु से मिलकर राम रस पा लिया है, नाम ने उनका उद्धार कर दिया है। हे हरि ! मुझ पर कृपा करो और अपनी कृपा द्वारा मेरा संसार-सागर से उद्धार कर दो॥ ४॥ ४॥

वडहंसु महला ४ घोड़ीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥ धंनु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥ माणस जनमु वड पुंने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥ गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नव रंगड़ीआ ॥ एह देह सु बांकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥ वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥ १ ॥ देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ॥ चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥ बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥ हरि बोहिथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥ अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥ तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥ अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ सुणि स्रवण बाणी गुरि वखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ ॥ महा मारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥ ३ ॥ घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धंनु

तुखाईआ राम ॥ जितु हरि प्रभु जापै सा धंनु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा ॥ चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा ॥ हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई ॥ जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

(जब दूल्हा विवाह करवाने के लिए घोड़ी पर सवार होता है तो उसकी बहनें घोड़ी की लगाम पकड़कर मंगल गीत गाती हैं। वह गीत 'घोड़ियाँ' कहलाते हैं। गुरु रामदास जी ने यह दो छंद उन गीतों 'घोड़ियों' की तर्ज पर लिखे हैं और इन छंदों का शीर्षक भी 'घोड़ीआ' ही लिखा है)

यह देह रूपी घोड़ी राम ने उत्पन्न की है। यह मनुष्य जीवन बड़ा धन्य है जो पुण्य कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। यह मनुष्य जन्म बड़े पुण्य कर्म करने के फलस्वरूप ही मिला है और यह शरीर सोने की भाँति उत्तम है। गुरु के माध्यम से यह शरीर फूलों की भाँति गहरा रंग प्राप्त करता है और हरि-परमेश्वर के नवीन रंग में रंग जाता है। यह शरीर अति सुन्दर है जो हरि का जाप करता है और हरि-नाम से यह सुहावना हो गया है। अहोभाग्य से ही यह देह प्राप्त हुई है और परमेश्वर का नाम इसका साथी है। हे नानक ! इस शरीर की रचना राम ने की है॥ १॥ मैंने देह रूपी घोड़ी पर राम की अच्छी सूझ रूपी काठी डाली है। इस शरीर रूपी घोड़ी पर सवार होकर मैं विषम संसार-सागर से पार होता हूँ। विषम संसार सागर में असंख्य ही तरंगें हैं और गुरु के माध्यम से ही जीव इससे पार होते हैं। हरि रूपी जहाज पर सवार होकर भाग्यशाली पार हो जाते हैं और गुरु खेवट अपने शब्द से जीवों को पार कर देता है। हरि के प्रेम से रंगा हुआ हरि का प्रेमी रात-दिन हरि का गुणगान करता रहता है और हरि जैसा ही हो जाता है। नानक ने निर्वाण पद पा लिया है, दुनिया में हरि सर्वोत्तम है और हरि पद ही भला है॥ २॥ मुँह में लगाम के स्थान पर गुरु ने ज्ञान दृढ़ किया है। उसने प्रभु के प्रेम का चाबुक मेरे तन पर मारा है। प्रभु-प्रेम का चाबुक अपने तन पर मारकर गुरुमुख अपने मन को जीत कर जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त कर लेता है। अपने बेकाबू मन को वह काबू करता है, शब्द को प्राप्त होता है और सजीव करने वाले हरि-रस का पान करता है। गुरु की उच्चरित की हुई वाणी को अपने कानों से सुनकर अपनी देह की घोड़ी को हरि-प्रेम का रंग चढ़ा दिया है। नानक ने मृत्यु का महामार्ग पथ पार कर लिया है॥ ३॥ यह शरीर रूपी फुर्तीली घोड़ी राम ने उत्पन्न की है। यह शरीर रूपी घोड़ी धन्य-धन्य है, जिसके माध्यम से हरि-प्रभु की आराधना की जाती है। जिससे प्रभु का जाप किया जाता है, वह शरीर रूपी घोड़ी धन्य एवं सराहनीय है और यह पूर्व जन्म में किए गए शुभ कर्मों के संचय से ही प्राप्त होती है। जीव शरीर रूपी घोड़ी पर सवार होकर विषम संसार-सागर से पार हो जाता है और गुरु के माध्यम से परमानन्द प्रभु को मिल जाता है। पूर्ण परमेश्वर ने जीवात्मा का विवाह रचाया है और संतजनों की मिलकर बारात आई है। नानक का कथन है कि उसने हरि-परमेश्वर को वर के रूप में पा लिया है। संतजन मिलकर मंगल गीत गा रहे हैं और उसे शुभ-कामनाएँ दे रहे हैं॥ ४॥ १॥ ५॥

वडहंसु महला ४ ॥ देह तेजनड़ी हरि नव रंगीआ राम ॥ गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम ॥ गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥ सभु जनमु सफलिउ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥ हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीआ ॥ जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीआ ॥ १ ॥ देह कंचन जीनु सुविना राम ॥ जड़ि हरि हरि नामु रतंना राम ॥ जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरि गुण सुख घणे ॥ गुर सबदु पाइआ हरि नामु

धिआइआ वडभागी हरि रंग हरि बणे ॥ हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीआ ॥ नानकु वखाणै नामु जाणै हरि नामु हरि प्रभ मंगीआ ॥ २ ॥ कड़ीआलु मुखे गुरि अंकसु पाइआ राम ॥ मनु मैगलु गुर सबदि वसि आइआ राम ॥ मनु वसगति आइआ परम पदु पाइआ सा धन कंति पिआरी ॥ अंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥ हरि रंगि राती सहजे माती हरि प्रभु हरि हरि पाइआ ॥ नानक जनु हरि दासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥ ३ ॥ देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम ॥ मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइआ राम ॥ हरि गाइ मंगलु राम नामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥ प्रभ जाइ पावै रंग महली हरि रंगु माणै रंग की ॥ गुण राम गाए मनि सुभाए हरि गुरमती मनि धिआइआ ॥ जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

यह देह हरि के सर्वदा नवीन रंग वाली घोडी है। मैंने गुरु से सत्य का ज्ञान माँगा है। मैं गुरु से सत्य का ज्ञान माँगता हूँ और मुझे हरि-कथा बहुत अच्छी लगती है। हरि-नाम द्वारा मैंने हरि की गति को जान लिया है। राम-नाम का वखान करने से कर्त्ता-परमेश्वर ने मेरा समूचा जीवन सफल कर दिया है। राम नाम का स्तुतिगान करके भक्तजन हरि-प्रभु की भक्ति ही माँगते हैं। नानक का कथन है कि हे संतजनो! जरा सुनो, गोविन्द की भक्ति ही भली है॥ १॥ यह कंचन काया सोने की सुन्दर काठी से शोभायमान है और यह परमेश्वर के नाम-रत्नों से जड़ी हुई है। इस तरह नाम के रत्नों से अलंकृत होकर इसने गोविन्द को पा लिया है। जब मुझे हरि मिल गया तो उसका गुणगान करके बहुत सुख पाया है। गुरु-शब्द को प्राप्त करके हरि-नाम का ही ध्यान किया है। मैं बड़ा भाग्यवान हूँ कि हरि के रंग में हरि का रूप बन गया हूँ। जगत का स्वामी अन्तर्यामी हरि मुझे मिल गया है और वह सदा ही नितनवीन एवं नवरंग है। नानक का कथन है कि जो नाम को जानता है वह प्रभु से हरि-नाम ही माँगता है॥ २॥ मैंने शरीर रूपी घोडी के मुँह में गुरु के ज्ञान के अंकुश की लगाम लगा दी है। यह मन रूपी हाथी गुरु के शब्द द्वारा ही वश में आता है। जिसका मन वश में आ जाता है, वह परम पदवी प्राप्त कर लेता है और वह जीव-स्त्री अपने प्रभु की प्रियतमा बन जाती है। ऐसी नारी अपने हृदय में प्रभु से प्रेम करती है और अपने प्रभु के चरणों में सुहावनी लगती है। हरि के प्रेम रंग मे रंगकर वह सहज ही मस्त हो जाती है और नाम की आराधना करके हरि-परमेश्वर को पा लेती है। हरि का दास नानक कहता है कि अहोभाग्य से ही हरि का ध्यान किया है॥ ३॥ यह काया एक सुन्दर घोडी है, जिसके माध्यम से हरि को पाया है। सतगुरु से मिलकर खुशी के मंगल गीत गाता हूँ। हरि का मंगल गान किया है, राम नाम का जाप किया है और हरि के सेवकों की सेवा की है। हरि के रंग में रंगकर प्रभु को पाकर आनंद किया जा सकता है। मैं सहज स्वभाव राम का गुणगान करता हूँ और गुरु-उपदेश द्वारा हरि को अपने मन में स्मरण करता हूँ। परमेश्वर ने नानक पर कृपा धारण की है और देह रूपी घोडी पर सवार होकर उसने हरि को पा लिया है॥ ४॥ २॥ ६॥

रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम ॥ इहु तनु मनु दितड़ा वारो वारा राम ॥ तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी कांणि जमाणी ॥ असथिरु थीआ अम्रितु पीआ रहिआ आवण जाणी ॥ सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा ॥ कहु नानक सुखि माणे रलीआं गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥ १ ॥ सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम ॥ गुरि मंतु सबदु सचु दीता राम ॥ सचु सबदु धिआइआ

मंगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा ॥ सो प्रभु पाइआ कतहि न जाइआ सदा सदा संगि बैसा ॥ प्रभ जी भाणा सचा माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥ कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥ २ ॥ तउ भाणा तां त्रिपति अघाए राम ॥ मनु थीआ ठंढा सभ त्रिसन बुझाए राम ॥ मनु थीआ ठंढा चूकी डंझा पाइआ बहुतु खजाना ॥ सिख सेवक सभि भुंचण लगे हंउ सतगुर कै कुरबाना ॥ निरभउ भए खसम रंगि राते जम की त्रास बुझाए ॥ नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाए ॥ ३ ॥ पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥ सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥ नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥ ४ ॥ १ ॥

गुरु से मिलकर मैंने प्रिय राम को खोज लिया है और यह तन-मन मैंने उस पर न्योछावर कर दिया है। अपना तन-मन न्योछावर करके मैं भवसागर से पार हो गया हूँ और मेरा मृत्यु का डर समाप्त हो गया है। नामामृत का पान करके मैं अटल हो गया हूँ और मेरा जीवन-मृत्यु का चक्र मिट गया है। मैंने वह निवास खोज लिया है, जहाँ सहज समाधि में प्रविष्ट हो जाता हूँ और वहाँ हरि का नाम ही मेरा आधार है। नानक का कथन है कि अब मैं सुख एवं आनंद का उपभोग करता हूँ एवं पूर्ण गुरु को मेरा शत-शत नमन है॥ १॥ हे मेरे मीत राम ! हे सज्जन जी ! कृपया सुनो, गुरु ने मुझे सच्चे शब्द (की आराधना) का मंत्र प्रदान किया है। सच्चे शब्द का ध्यान करने से मेरे मन की चिंता दूर हो गई है और मंगल गीत गायन करता हूँ। मैंने उस प्रभु को पाया है, जो कहीं नहीं जाता और सर्वदा मेरे साथ रहता है। जो पूज्य प्रभु को अच्छा लगा है, उसने मुझे सच्चा सम्मान प्रदान किया है, उसने सहज ही मुझे नाम का धन प्रदान किया है। नानक कहते हैं कि ऐसे प्रभु-भक्त पर मैं बलिहारी जाता हूँ और तेरा दान सभी ने लिया है॥ २॥ हे पूज्य परमेश्वर ! जब तुझे अच्छा लगा तो मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया। मेरा मन शीतल हो गया है और मेरी समस्त तृष्णा मिट गई है। मेरा मन शीतल हो गया है, जलन भी मिट गई है और मुझे तेरे नाम का बड़ा भण्डार मिल गया है। गुरु के सभी सिक्ख एवं सेवक इसका सेवन करते हैं। मैं अपने सतगुरु पर कुर्बान जाता हूँ। मालिक के प्रेम-रंग में लीन हो जाने से मैं मृत्यु के आतंक को दूर करके निडर हो गया हूँ। दास नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! सदैव ही अपने सेवक के साथ रहो ताकि तेरे चरणों में वृत्ति लगाकर मैं तेरी भक्ति करता रहूँ॥ ३॥ हे मेरे राम जी ! मेरी आशा एवं इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं। मैं गुणहीन हूँ और सभी गुण तुझ में ही विद्यमान हैं। हे मेरे ठाकुर ! समस्त गुण तुझ में ही हैं, फिर मैं किस मुँह से तेरी महिमा-स्तुति करूँ ? मेरे गुणों एवं अवगुणों की ओर तूने बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया और तूने मुझे एक क्षण में ही क्षमा कर दिया है। मैंने नवनिधियाँ प्राप्त कर ली हैं, शुभकामनाएँ गूँज रही हैं और अनहद-नाद बज रहे हैं। हे नानक ! मैंने अपने हृदय घर में अपने पति-प्रभु को पा लिया है और मेरी सभी चिंताएँ मिट गई हैं॥ ४॥ १॥

सलोकु ॥ किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ ॥ नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥ १ ॥

श्लोक॥ तुम क्यों झूठी बात सुनते रहते हो ? क्योंकि यह तो हवा के तेज झोंके की तरह लुप्त हो जाने वाली है। हे नानक ! वही कान परमात्मा को स्वीकार हैं, जो सच्चे परमेश्वर के नाम की महिमा सुनते हैं॥ १॥

छंतु ॥ तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम ॥ से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए ॥ भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाए ॥ जिन कंउ क्रिपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥ कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥ १ ॥

छंद॥ मैं उन पर न्यौछावर होता हूँ, जो अपने कानों से प्रभु का नाम सुनते हैं। जो अपनी जुबान से परमेश्वर का गुणगान करते हैं, वे सहज ही सुखी हैं। वे भी प्राकृतिक रूप से शोभायमान हैं एवं अमूल्य गुणों वाले हैं जो दुनिया का उद्धार करने के लिए आए हैं। प्रभु के सुन्दर चरण भवसागर से पार करवाने वाले जहाज हैं, जिन्होंने अनेकों को भवसागर से पार किया है। जिन पर मेरे ठाकुर जी ने कृपा-दृष्टि की है, उनसे उनके कर्मों का लेखा-जोखा नहीं पूछा जाता। नानक का कथन है कि मैं उन पर न्यौछावर होता हूँ, जिन्होंने अपने कानों से प्रभु की महिमा सुनी है॥ १॥

सलोकु ॥ लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥ १ ॥

श्लोक॥ अपने नेत्रों से मैंने भगवान का आलोक देख लिया है, परन्तु उसे देखने की मेरी अत्यन्त प्यास समाप्त नहीं होती। हे नानक ! वे आँखें भाग्यवान हैं जिन से मेरा प्रिय-प्रभु देखा जाता है॥ १॥

छंतु ॥ जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥ से साची दरगह भाणे राम ॥ ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते ॥ हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते ॥ सेई सजण संत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे ॥ कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥ २ ॥

छंद॥ जिन्होंने मेरे हरि-प्रभु के दर्शन किए हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ। वही सच्चे दरबार में सत्कृत होते हैं। ठाकुर जी के स्वीकृत किए हुए वे सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं और हरि के प्रेम रंग में लीन रहते हैं। वे हरि रस से तृप्त होते हैं, सहज अवस्था में लीन रहते हैं और सर्वव्यापक परमात्मा को वे घट-घट में देखते हैं। जो अपने ठाकुर को अच्छे लगते हैं, वही सज्जन एवं संत सुखी रहते हैं। नानक का कथन है कि जिन्होंने हरि-प्रभु के दर्शन किए हैं, मैं उन पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ॥ २॥

सलोकु ॥ देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ ॥ नानक सफल जनंमु जै घटि वुठा सचु धणी ॥ १ ॥

श्लोक॥ परमात्मा के नाम के बिना यह शरीर बिल्कुल अज्ञानपूर्ण एवं निर्जन है। हे नानक ! जिसके अन्तर्मन में सच्चे परमेश्वर का निवास है, उस प्राणी का जन्म सफल है॥ १॥

छंतु ॥ तिन खंनीऐ वंञां जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥ जन चाखि अघाणे हरि हरि अंम्रितु मीठा राम ॥ हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए ॥ दुख नास भरम बिनास तन ते जपि जगदीस ईसह जै जए ॥ मोह रहत बिकार थाके पंच ते संगु तूटा ॥ कहु नानक तिन खंनीऐ वंञा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥ ३ ॥

छंद॥ जिन्होंने मेरे हरि-प्रभु के दर्शन किए हैं, उनके लिए टुकड़े-टुकड़े होकर न्यौछावर होता

हूँ। हरिनामामृत का पान करके भक्तजन तृप्त हो गए हैं। उनके मन को तो परमेश्वर ही मीठा लगता है, प्रभु उन पर मेहरवान है, इसलिए उन पर अमृत बरसता है और वे सुख भोगते हैं। विश्व के मालिक जगदीश्वर का भजन एवं जय-जयकार करने से उनके शरीर के सभी दुःख एवं भ्रम नाश हो गए हैं और पाँचों विकार-कामवासना, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की संगति भी हट गई है। नानक का कथन है कि जिसकी अन्तरात्मा में मेरा परमात्मा निवास कर गया है, मैं उस पर टुकड़े-टुकड़े होकर कुर्बान होता हूँ॥ ३॥

सलोकु ॥ जो लोड़ीदे राम सेवक सेई कांढिआ ॥ नानक जाणे सति सांई संत न बाहरा ॥ १ ॥

श्लोक॥ जिन्हें राम को पाने की तीव्र लालसा लगी हुई है, वही उसके सच्चे सेवक कहलाते हैं। नानक इस सत्य को भलीभांति जानता है कि जगत का साँई अपने संतों से अलग नहीं है॥ १॥

छंतु ॥ मिलि जलु जलहि खटाना राम ॥ संगि जोती जोति मिलाना राम ॥ संमाइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥ तह सुंनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीऐ ॥ आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥ नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥ ४ ॥ २ ॥

छंद॥ जैसे जल, जल से मिलकर अभेद हो जाता है, वैसे ही संतों की ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है। सर्वशक्तिमान जग के रचयिता परमात्मा में विलीन होकर जीव अपने आत्मस्वरूप को समझ लेता है। तब उसकी सहज ही शून्य समाधि लग जाती है और वह एक ईश्वर का ही ध्यान करता है। ईश्वर आप ही गुप्त है और आप ही माया के बन्धनों से मुक्त है और वह स्वयं ही अपने आप का बखान करता है। हे नानक! ऐसे गुरुमुख व्यक्ति का भ्रम, भय एवं तीनों गुण-रजो, तमो एवं सतो गुण नाश हो जाते हैं और जैसे जल, जल में ही मिल जाता है वैसे ही वह परमात्मा में विलीन हो जाता है॥ ४॥ २॥

वडहंसु महला ५ ॥ प्रभ करण कारण समरथा राम ॥ रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ समरथ सरणा जोगु सुआमी क्रिपा निधि सुखदाता ॥ हंउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥ वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा ॥ बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥ १ ॥ एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम ॥ भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥ जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥ २ ॥ आठ पहर हरि धिआईऐ राम ॥ मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥ मन इछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जम के त्रासा ॥ गोबिदु गाइआ साध संगाइआ भई पूरन आसा ॥ तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥ बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥ ३ ॥ दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥ गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥ गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥ आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥ बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे प्रभु! तू सबकुछ करने-कराने में समर्थ है, अपना हाथ देकर सारी दुनिया की रक्षा करो। तू ही समर्थ, शरण प्रदान करने योग्य, सबका मालिक, कृपानिधि एवं सुखों का दाता है। मैं तेरे उन सेवकों पर कुर्बान जाता हूँ, जो केवल एक ईश्वर को ही पहचानते हैं। उस परमात्मा का कोई

रंग एवं चिन्ह वर्णन नहीं किया जा सकता क्योंकि उसका कथन अकथनीय है। नानक प्रार्थना करता है कि हे सबकुछ करने-करवाने में सर्वशक्तिमान प्रभु! मेरी एक वन्दना सुनो॥ १॥ ये जीव तेरे उत्पन्न किए हुए हैं और तू इनका रचयिता है। हे प्रभु! तू दुःख-दर्द एवं भ्रम का नाश करने वाला है। हे दीनदयालु! दुविधा, दुख-दर्द का नाश करके एक क्षण में मेरी रक्षा करो। तू ही माता-पिता, मालिक एवं मित्र है और यह सारा जगत तेरी संतान है। जो तेरी शरण में आता है, उसे गुणों का भण्डार प्राप्त हो जाता है और वह दुबारा न जन्म लेता है और न ही मृत्यु को प्राप्त होता है। नानक प्रार्थना करता है कि हे पूज्य परमेश्वर! यह सभी जीव तेरे हैं और तू सबका रचयिता है॥ २॥ दिन-रात परमात्मा का ध्यान करना चाहिए, इसके फलस्वरूप मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं। परमात्मा का ध्यान करने से मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं और मृत्यु का भय मिट जाता है। संतों की सभा में सम्मिलित होकर जगतपालक गोविन्द का गुणगान करने से सभी आशाएँ पूरी हो गई हैं। अपना अहंकार, मोह एवं सभी विकार त्याग कर हम प्रभु के मन को अच्छे लगने लग गए हैं। नानक प्रार्थना करता है कि हमें दिन-रात सदा-सर्वदा भगवान का ध्यान करते रहना चाहिए॥ ३॥ परमात्मा के दरबार में हमेशा ही अनहत कीर्तन गूंज रहा है। जगत का रक्षक गोविन्द प्रत्येक हृदय में बोल रहा है। वह सर्वदा ही बोलता एवं सभी के भीतर विराजमान है, वह अगम्य, मन-वाणी से परे एवं सर्वोपरि है। उस प्रभु के अनन्त गुण है, मनुष्य उसके गुणों का तिल मात्र भी वर्णन नहीं कर सकता और कोई भी उसके पास पहुँच नहीं सकता। वह स्वयं ही पैदा करता है, स्वयं ही पालन-पोषण करता है और सभी जीव-जन्तु उसकी ही रचना है। नानक प्रार्थना करता है कि जीवन के सभी सुख परमात्मा के नाम एवं भक्ति में है, जिसके द्वार पर अनहद नाद बजते रहते हैं॥ ४॥ ३॥

रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥ मुहलति पुनी पाई भरी जानीअड़ा घति चलाइआ ॥ जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुंने वीर सबाए ॥ कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जां दिन पुंने मेरी माए ॥ जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥ धंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥ १ ॥ साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥ आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥ जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै ॥ आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा ॥ साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ २ ॥ जो तिसु भावै सम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥ साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥ आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥ ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥ जो तिसु भावै सम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ ३ ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥ रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै ॥ चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै ॥ ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहंकारो ॥ नानक रुंना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ ४ ॥ १ ॥

(अलाहणियां-किसी की मृत्यु पर उसके दुःख में गाए जाने वाले गीत। मिरासन के उस गीत को अलाहणियां कहा जाता है। गुरु नानक देव जी ने शोक में विलाप करने की बजाय परमात्मा की इच्छा अनुसार चलने व उसका स्तुतिगान करने का उपदेश दिया है।)

वह जगत का रचयिता सच्चा पातशाह, प्रभु धन्य है, जिसने सारी दुनिया को धन्धे में लगाया है। जब अन्तिम समय पूरा हो जाता है और जीवन प्याला भर जाता है तो यह प्यारी आत्मा पकड़ कर आगे यमलोक में धकेल दी जाती है। जब ईश्वर का हुक्म आ जाता है तो प्यारी आत्मा यमलोक में धकेल दी जाती है और सभी सगे-संबंधी, भाई-बहन फूट-फूट कर रोने लग जाते हैं। हे मेरी माता ! जब जीव की जिन्दगी के दिन समाप्त हो जाते हैं तो शरीर एवं आत्मा जुदा हो जाते हैं। जीव पूर्व-जन्म में जैसे कर्म करता है, वैसे ही कर्म-फल की प्राप्ति होती है और उस अनुसार ही उसका भाग्य लिखा होता है। वह जगत का रचयिता सच्चा पातशाह, परमेश्वर धन्य है, जिसने जीवों को (कर्मों के अनुसार) धन्धे में लगाया हुआ है॥ १॥ हे मेरे भाइयो ! उस मालिक को याद करो चूंकि सभी ने दुनिया से चले जाना है। इहलोक का झूठा धंधा केवल चार दिनों का ही है, फिर जीव निश्चित ही आगे परलोक को चल देता है। जीव ने निश्चित ही संसार को छोड़कर चले जाना है और वह यहाँ पर एक अतिथि के समान है, फिर क्यों अहंकार कर रहे हो ? जिसकी उपासना करने से उसके दरबार में सुख प्राप्त होता है, उस प्रभु के नाम का भजन करना चाहिए। आगे परलोक में परमात्मा के अलावा किसी का हुक्म नहीं चलता और प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है। हे मेरे भाइयो ! परमात्मा को याद करो, चूंकि सभी ने संसार को छोड़कर चले जाना है॥ २॥ उस सर्वशक्तिमान प्रभु को जो मंजूर है, वही घटित होता है। जगत के जीवों का उद्यम तो एक बहाना ही है। सच्चा सृजनहार जल, धरती, आकाश-पाताल में सर्वव्यापी है। वह सच्चा सृजनहार परमात्मा अदृष्ट एवं अनन्त है, उसका अन्त पाया नहीं जा सकता। जो लोग एकाग्रचित होकर परमात्मा का ध्यान करते हैं, उनका इस दुनिया में जन्म लेना सफल है। वह स्वयं ही सृष्टि का निर्माण करता है और स्वयं ही इसका नाश कर देता है और अपने हुक्म द्वारा स्वयं ही संवारता है। उस सर्वशक्तिमान परमात्मा को जो कुछ मंजूर है, वही घटित होता है और यह संसार उद्यम करने का एक सुनहरी अवसर है॥ ३॥ गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! वही सच्चा रोता समझा जाता है, यदि वह प्रभु के प्रेम में रोता है। हे बाबा ! सांसारिक पदार्थों की खातिर जीव विलाप करता है, इसलिए सभी विलाप व्यर्थ हैं। यह सारा विलाप करना निरर्थक है। संसार प्रभु की ओर से विमुख होकर धन-दौलत के लिए रोता है। भले एवं बुरे की जीव को कुछ भी सूझ नहीं और इस शरीर को वह व्यर्थ ही गंवा देता है। इस दुनिया में जो भी आता है, वह इसे छोड़कर चला जाता है। इसलिए अभिमान करना तो झूठा ही है। गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! जो प्रभु प्रेम में विलाप करता है, वही मनुष्य सच्चा वैराग्यवान एवं सही रूप में रोता समझा जाता है॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला १ ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहां ॥ रोवह बिरहा तन का आपणा साहिबु सम्हालेहां ॥ साहिबु सम्हालिह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा ॥ जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा ॥ जो तिनि करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ॥ १ ॥ मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ ॥ सेविहु साहिबु संम्रथु आपणा पंथु सुहेला आगै होइ ॥ पंथि सुहेलै जावहु तां फलु पावहु आगै मिलै वडाई ॥ भेटै सिउ जावहु सचि समावहु तां पति लेखै पाई ॥ महली जाइ पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीआ माणै ॥ मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥ २ ॥ मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥ सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥ करि एकु धिआवहि तां फलु पावहि जितु सेविऐ भउ भागै ॥

ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥ मरणु मुणसां सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥ ३ ॥ नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो ॥ कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥ आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥ नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मेरी सखियो ! आओ हम मिलकर भगवान के सत्य-नाम का सिमरन करें। आओ, हम भगवान से अपनी आत्मा के विरह पर संवेदना व्यक्त करें और अपने मालिक का चिंतन करें। आओ, हम भगवान की आराधना करे एवं परलोक के मार्ग का ध्यान करें, क्योंकि हमने भी वहाँ जाना है। जिस ईश्वर ने उसे पैदा किया था, अब उसने ही उसे वापिस ले लिया है और यह (मृत्यु) ईश्वरेच्छा से हुई है। जो कुछ उसने किया है, वही आगे आया है। हम कैसे कोई हुक्म परमात्मा को कर सकते हैं ? अर्थात् हम जीवों के वश में कुछ भी नहीं। हे सखियो ! आओ, मिलकर भगवान के सत्य-नाम का स्तुतिगान करें॥ १॥ हे लोगो, मौत तो अटल है, इसे बुरा नहीं कहना चाहिए क्योंकि कोई विरला ही ऐसा जीव है, जो मौत को जानता है। इसलिए सर्वशक्तिमान भगवान की आराधना करो, इस तरह तुम्हारे परलोक का मार्ग सुखद हो जाएगा। यदि तुम सुखद मार्ग जाओगे तो अवश्य फल की प्राप्ति होगी एवं परलोक में भी तुझे प्रशंसा मिलेगी। यदि तुम भजन-सिमरन की भेंट सहित जाओगे तो तुम सत्य में विलीन हो जाओगे और तुम्हारी इज्जत स्वीकृत हो जाएगी। तुझे भगवान के महल में स्थान मिल जाएगा, उसे अच्छा लगेगा तथा प्रेमपूर्वक आनंद प्राप्त करोगे। हे लोगो ! मौत तो अटल है, इसे बुरा नहीं कहना चाहिए, चूंकि कोई विरला ही है जो मौत को जानता है॥ २॥ उन शूरवीरों का मरना सफल है, जो मर कर परमात्मा को स्वीकृत हो जाते हैं। जो सच्चे दरबार में सम्मानित होते हैं, वही आगे शूरवीर कहलाते हैं। वे आदरपूर्वक जाते हैं व भगवान के दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त करते है और परलोक में उन्हें कोई दुःख नहीं होता। वे एक परमात्मा को सर्वव्यापक समझकर उसका ही ध्यान करते हैं तो उन्हें दरबार से फल प्राप्त होता है और आराधना करने से उनके तमाम भय दूर हो जाते हैं। अभिमान करके ऊँचा नहीं बोलना चाहिए और अपने मन को काबू में रखना चाहिए क्योंकि सर्वज्ञाता भगवान सब कुछ स्वयं ही जानता है। उन शूरवीरों का मरना सफल है, जिनकी मौत भगवान के दरबार में स्वीकृत होती है॥ ३॥ गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! किसी के देहांत पर क्यों विलाप करें ? जबकि यह दुनिया तो केवल एक नाटक अथवा खेल ही है। भगवान अपनी सृष्टि-रचना को देखता है और अपनी कुदरत पर विचार करता है। वह अपनी कुदरत पर विचार करता है और जगत को उसने अपना सहारा दिया हुआ है। वह स्वयं ही देखता है, स्वयं ही समझता है और स्वयं ही अपने हुक्म की पहचान करता है। जिसने सृष्टि-रचना की है, वही इसे जानता है और उस भगवान का रूप अपार है। गुरु नानक का कथन है कि हे बाबा ! किसी की मृत्यु पर हम क्यों विलाप करें, क्योंकि यह संसार तो केवल एक नाटक अथवा खेल ही है॥ ४॥ २॥

वडहंसु महला १ दखणी ॥ सचु सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो ॥ जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥ दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥ सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥ १ ॥ सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥ तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥ नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥ खाणी बाणी

तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥ कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥ २ ॥ आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥ जंमणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥ भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥ गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥ ३ ॥ सदड़े आए तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो ॥ नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥ रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरि कारो ॥ बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥ ४ ॥ नउ दरि ठाके हुकमि सचै हंसु गइआ गैणारे ॥ सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे ॥ सुरति मुई मरु माईए महल रुंनी दर बारे ॥ रोवहु कंत महेलीहो सचे के गुण सारे ॥ ५ ॥ जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अंबारे ॥ वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मनु मारे ॥ जानी विछुंनड़े मेरा मरणु भइआ ध्रिगु जीवणु संसारे ॥ जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचड़ै हेति पिआरे ॥ ६ ॥ तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी संसारे ॥ हउ मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारे ॥ घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे ॥ मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥ ७ ॥ गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ सा धन सचु सीगारो ॥ आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो ॥ बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥ गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रहम बीचारो ॥ ८ ॥ ३ ॥

सच्चे सृष्टिकर्त्ता परमपिता को ही सत्य समझना चाहिए; वह सच्चा परमेश्वर सारी दुनिया का पालनहार है। जिसने स्वयं ही अपने आप को उत्पन्न किया हुआ है, वह सत्यस्वरूप परमेश्वर अदृष्ट एवं अपार है। उसने पृथ्वी एवं गगन दोनों को जोड़कर उन्हें अलग कर दिया है। इस दुनिया में गुरु के बिना घोर अन्धेरा है। सूर्य एवं चन्द्रमा की रचना भी परमेश्वर ने ही की है जो दिन एवं रात को उजाला करते हैं। उसकी इस जगत-लीला का विचार करो॥ १॥ हे सच्चे मालिक! तू ही सत्य है, कृपा करके मुझे अपना सच्चा प्रेम दीजिए॥ रहाउ॥ हे परमपिता! तूने ही सृष्टि-रचना की है और तू ही जीवों को दुःख-सुख देने वाला है। स्त्री एवं पुरुष तेरी ही रचना है और तूने ही मोह-माया का विष एवं (वासना का) प्रेम उत्पन्न किया है। उत्पत्ति के चारों स्रोत एवं विभिन्न वाणियाँ भी तेरी ही रचना है एवं तू ही जीवों को आधार प्रदान करता है। अपनी कुदरत को तूने अपना सिंहासन बनाया हुआ है और तू ही सच्चा न्यायकर्ता है॥ २॥ हे विश्व के रचयिता! जीवों का आवागमन अर्थात् जन्म-मृत्यु का चक्र तूने ही बनाया है और तुम सदा अमर हो। जीवात्मा विकारों में ग्रस्त होकर जन्म-मरण, आवागमन के चक्र में फंसी हुई है। दुष्टात्मा वाले जीव ने भगवान के नाम को विस्मृत कर दिया है, जिसके फलस्वरूप वह मोह-माया में प्रवृत्त है और इसका अब क्या उपचार है? गुणों को त्यागकर इसने बुराइयों को लाद लिया है और वह अवगुणों का व्यापारी बन बैठा है॥ ३॥ सच्चे करतार के हुक्म द्वारा प्यारी आत्मा को निमंत्रण आता है तो पति (आत्मा) पत्नी (शरीर) से जुदा हो जाता है। किन्तु उन बिछुड़ों हुओं को परमात्मा ही मिलाने वाला है। हे सुन्दरी! मृत्यु सौन्दर्य की परवाह नहीं करती और यमदूत भी अपने मालिक के हुक्म में बंधे हुए हैं। यमदूत बालक एवं वृद्ध के बीच कोई फर्क नहीं समझते और दुनिया से स्नेह एवं प्रेम को तोड़ देते हैं॥ ४॥ सच्चे परमेश्वर के हुक्म द्वारा शरीर के नौ द्वार बन्द हो जाते हैं और हंस रूपी आत्मा आकाश को चल देती है। देह रूपी स्त्री अलग हो गई है; झूठ में ठग कर वह विधवा हो गई है और मृतक लाश आँगन के द्वार पर पड़ी है। मृतक व्यक्ति की पत्नी द्वार पर जोर-जोर से रोती-चिल्लाती है। वह कहती है कि हे माँ! पति के देहांत से मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। हे पति-परमेश्वर की वधुओ! यदि रुदन करना है तो सच्चे मालिक के गुणों को याद

करके उसके प्रेम के अश्रु बहाओ॥ ५॥ प्यारे जीव को जल से मल-मल कर नहलाया जाता है और उसे बहुत सारे रेशमी वस्त्र पहनाए जाते हैं। सच्ची वाणी के कीर्तन सहित वाजे बजते हैं और शून्य मन से सभी सगे-संबंधी मृतक समान हो जाते हैं। पति के देहांत पर स्त्री पुकारती है कि मेरे जीवन-साथी की जुदाई मेरे लिए मृत्यु समान है और इस दुनिया में मेरा जीवन भी धिक्कार-योग्य है। जो अपने सच्चे पति-प्रभु के प्रेम हेतु सांसारिक कार्य करती हुई विरक्त रहती है, वही जीवित समझी जाती है॥ ६॥ हे स्त्रियो ! जो तुम रोने के लिए आई हो, रुदन करो परन्तु मोह-माया में ठगी हुई दुनिया का विलाप झूठा है। मैं ठगी हुई पत्नी सांसारिक कार्यों के पीछे भाग रही हूँ। मैं विधवा वाले अशुभ कर्म करती हूँ और पति ने मुझे त्याग दिया है। प्रत्येक घर में पति-परमेश्वर की स्त्रियाँ हैं। सच्ची स्त्रियाँ अपने सुन्दर पति के साथ स्नेह एवं प्रेम करती है। मैं अपने सच्चे पति-परमेश्वर की महिमा-स्तुति करती हूँ और अपने स्वामी के नाम द्वारा ही प्रसन्न होती हूँ॥ ७॥ गुरु को मिलने से जीवात्मा की वेशभूषा बदल जाती है अर्थात् जीवन संवर जाता है और वह सत्य से अपने आपको श्रृंगार लेती है। हे मेरी सखियो ! आओ, हम मिलकर सृजनहार प्रभु को याद करें। प्रभु-पति के नाम द्वारा जीव-स्त्री अपने स्वामी की सुहागिन बन जाती है और सत्यनाम उसको सुन्दर बनाने वाला है। इसलिए विरह के गीत मत गायन करो अपितु हे नानक ! ब्रह्म का चिन्तन करो॥ ८॥ ३॥

वडहंसु महला १ ॥ जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥ सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा ॥ सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची ॥ नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची ॥ जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥ जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥ १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा अध पंधै है संसारोवा ॥ सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥ दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥ जेहे करम कराए करता दूजी कार न भाले ॥ आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो ॥ अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ॥ २ ॥ जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा ॥ ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥ भोजन भाउ न ठंढा पाणी ना कापड़ु सीगारो ॥ गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ ना दीसै घर बारो ॥ इब के राहे जंमनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥ बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥ ३ ॥ बाबा रोवहि रवहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥ रोवै माइआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा ॥ धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपनंतरु संसारो ॥ जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहंकारो ॥ आपे मारगि पावणहारा आपे करम कमाए ॥ नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

जो जगत की रचना करके स्वयं भी उसमें ही समाया हुआ है, वह मालिक अपनी कुदरत से ही जाना जाता है। सत्यस्वरूप परमेश्वर को कहीं दूर नहीं खोजना चाहिए, क्योंकि वह तो प्रत्येक हृदय में विद्यमान है, इसलिए अपने हृदय में ही शब्द रूप में पहचानो। जिसने यह सृष्टि-रचना की है, उसे सच्चे परमेश्वर को सच्चे शब्द द्वारा पहचानो एवं उसे दूर मत समझो। जब मनुष्य परमात्मा के नाम का ध्यान-मनन करता है तो वह सुख प्राप्त करता है, अन्यथा नाम के बिना वह पराजित होने वाली जीवन खेल खेलता है। जो सृष्टि की रचना करता है, वही इसे आधार देने की विधि जानता है। कोई क्या कथन एवं वर्णन कर सकता है। जिसने संसार की रचना करके उस पर मोह-माया का जाल डाला हुआ है, उसे ही अपना मालिक मानना चाहिए॥

१॥ हे बाबा ! जो भी जीव दुनिया में आया है, उसने अवश्य ही उठकर चले जाना है। यह दुनिया एक बीच का आधा पड़ाव है अर्थात् जन्म-मरण का चक्र है। जीवों के पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्मों का विचार करके परमात्मा उनके मस्तक पर दुःख-सुख की तकदीर लिख देता है। जीवों के किए हुए कर्मों के फलस्वरूप परमेश्वर दुःख-सुख प्रदान करता है और वे जीव के साथ रहते हैं। कर्त्ता-प्रभु जैसे कर्म जीवों से करवाता है, वह वैसे ही कर्म करते हैं और वे किसी अन्य कार्य की तलाश भी नहीं करते। परमेश्वर स्वयं तो दुनिया से निर्लिप्त है किन्तु दुनिया मोह-माया के बंधनों में फँसी हुई है। अपने हुक्म अनुसार ही वह जीवों को मुक्ति प्रदान करता है। जीव द्वैतभाव से जुड़कर पाप करता रहता है और परमात्मा के सिमरन को आज अथवा कल को करने का टालते-टालते आयु निकल जाती है और मृत्यु आकर घेर लेती है॥ २॥ मृत्यु का मार्ग बड़ा निर्जन एवं घोर अन्धेरे वाला है और जीव को मार्ग दिखाई नहीं देता। वहाँ न तो जल मिलता है, न ही विश्राम के लिए ओढ़ने हेतु चादर एवं तोशक और न ही विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन पदार्थ खाने को मिलते हैं। वहाँ जीव को न ही भोजन, शीतल जल मिलता है और न ही वस्त्र एवं शृंगार पदार्थ मिलते हैं। वहाँ जीव की गर्दन जंजीर से जकड़ी जाती है, यमदूत सिर पर खड़ा होकर उसे मारता है और वहाँ कोई भी घर बार सुख का स्थान बचने के लिए नहीं मिलता। इस मार्ग के बोए हुए बीज नहीं फलते अर्थात् सभी प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। जीव पापों का बोझ अपने सिर पर उठाकर पश्चाताप करता है। केवल यही सच्चा विचार है कि सच्चे परमेश्वर के बिना मनुष्य का कोई भी सज्जन नहीं॥ ३॥ हे बाबा ! वास्तव में वैरागी होकर वही रोते एवं विलाप करते समझे जाते हैं, जो मिलकर प्रभु का यशोगान करते हुए अश्रु बहाते हैं। मोह-माया के ठगे हुए एवं अपने सांसारिक कार्यों की खातिर रोने वाले रोते ही रहते हैं। वे सांसारिक कार्यो हेतु रोते हैं और अपनी विकारों की मैल को नहीं धोते। उन्हें यह नहीं पता कि यह संसार तो एक स्वप्न की भाँति है। जैसे बाजीगर भ्रम भरी खेल में भूल जाता है, वैसे ही मनुष्य झूठ एवं कपट के अहंकार में ग्रस्त हैं। परमात्मा स्वयं ही सन्मार्ग प्रदान करता है और स्वयं ही कर्म कराने वाला है। हे नानक ! जो व्यक्ति परमात्मा के नाम में लीन रहते हैं, पूर्ण गुरु उनकी सहज-स्वभाव रक्षा करता है॥ ४॥ ४॥

वडहंसु महला १ ॥ बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा ॥ सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा ॥ कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥ अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काओ ॥ जंमणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए ॥ लबि धंधै माइआ जगतु भुलाइआ कालु खड़ा रूआए ॥ १ ॥ बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥ बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥ आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥ इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुर सबदी सचु खेलो ॥ जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥ साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥ २ ॥ बाबा नांगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥ लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ ॥ बहि साचै लिखिआ अंम्रितु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा ॥ कामणिआरी कामण पाए बहु रंगी गलि तागा ॥ होछी मति भइआ मनु होछा गुड़ु सा मखी खाइआ ॥ ना मरजादु आइआ कलि भीतरि नांगो बंधि चलाइआ ॥ ३ ॥ बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है ॥ लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है ॥ हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुंने रोवणहारे ॥ पुत भाई

भतीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥ भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले ॥ नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे बाबा ! जो कोई भी इस दुनिया में जन्म लेकर आया है, उसने एक दिन अवश्य ही यहाँ से चले जाना है, चूंकि यह क्षणभंगुर दुनिया तो झूठ का प्रसार है। सच्चे परमेश्वर की भक्ति करने से ही सच्चा घर मिलता है और सत्यवादी होने से सत्य मिल जाता है। झूठ एवं लालच के द्वारा मनुष्य स्वीकृत नहीं होता और उसे परलोक में भी शरण नहीं मिलती। उसे भीतर आने के लिए कोई नहीं कहता अर्थात् कोई भी उसका स्वागत नहीं करता; अपितु वह तो सूने घर में कौए की भाँति है। मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में फँसकर प्रभु से लम्बे समय के लिए बिछुड़ जाता है। इसी तरह ही सारा संसार नष्ट हो रहा है। लालच में माया के प्रपंच ने जगत को भुलाया हुआ है और काल (मृत्यु) सिर पर खड़ा होकर दुनिया को रुला रहा है॥ १॥ हे मेरे मित्र एवं भाईयो ! आओ, हम गले लगकर मिलें और मिल-मिलकर एक-दूसरे को आशीर्वाद दें। हे बाबा ! प्रभु का मिलाप सच्चा है, जो कभी नहीं टूटता। प्रियतम के मिलाप हेतु हम एक-दूसरे को आशीर्वाद दें। आशीर्वाद दो और भक्ति करो। जो आगे ही प्रभु से मिले हुए हैं, उन्हें क्या मिलाना है ? कुछ लोग परमात्मा के नाम एवं प्रभु-चरणों से भटके हुए हैं, उन्हें गुरु के शब्द द्वारा सच्ची खेल खेलते हुए कहो, अर्थात् सत्य का खेल सिखलाएं। उन्हें यह भी ज्ञान करवाओ कि मृत्यु के मार्ग नहीं जाना। वह परमात्मा में ही लीन रहें, क्योंकि युग-युगान्तरों में उसी का सच्चा स्वरूप है। संयोग से ही हमें ऐसे मित्र एवं संबंधी मिल जाते हैं, जिन्होंने गुरु से मिलकर मोह-माया के बन्धनों को खोल दिया है॥ २॥ हे बाबा ! इस जगत में दुःख-सुख की तकदीर लिखा कर मनुष्य नग्न ही आया है। पूर्व जन्म में किए कर्मों के अनुरूप परलोक जाने की जो तारीख लिखी गई है, वह बदली नहीं जा सकती। सच्चा परमेश्वर बैठकर अमृत एवं विष (सुख-दुख की तकदीर) लिखता है और जिससे वह लगाता है मनुष्य उसी के साथ लगता है। जादूगरनी माया अपना जादू करती है और प्रत्येक जीव की गर्दन पर बहुरंगी धागा डाल देती है। भ्रष्ट बुद्धि से मन भ्रष्ट हो जाता है और मनुष्य मीठे के लालच में मक्खी को भी निगल लेता है। मर्यादा के विपरीत नग्न ही मनुष्य दुनिया में जन्म लेकर आया था और नग्न ही वह बंधकर चला गया है॥ ३॥ हे बाबा ! यदि किसी ने अवश्य ही विलाप करना है, तो विलाप कर लो क्योंकि जीवन-साथी आत्मा जकड़ी हुई परलोक में भेज दी गई है। लिखी हुई तकदीर को मिटाया नहीं जा सकता, प्रभु के दरबार से निमंत्रण आया है। जब प्रभु को अच्छा लगा है, संदेशक आ गया है और रोने वाले रोने लग गए हैं। पुत्र, भाई, भतीजे एवं अत्यंत प्यारे प्रीतम विलाप करते हैं। मृतक के साथ कोई भी नहीं मरता। जो प्रभु के गुणों को स्मरण करके उसके भय में रोता है, वह भला है। हे नानक ! जो परमात्मा का नाम-स्मरण करते हुए रोते हैं, वे युग-युगान्तरों में बुद्धिमान समझे जाते हैं॥ ४॥ ५॥

वडहंसु महला ३ महला तीजा　　　　१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥ सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥ ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी ॥ जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अंम्रित बाणी ॥ गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥ सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥ १ ॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाए ॥ विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको

जाता ॥ कामणि इछ पुंनी अंतरि भिंनी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ सबद रंगि राती जोबनि माती पिर कै अंकि समाए ॥ सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ २ ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए ॥ पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती ॥ कदे न रांड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥ पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए ॥ जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ ३ ॥ पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ॥ अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती ॥ सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती ॥ पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ॥ पिरहु विछुंनीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ ४ ॥ १ ॥

हे जीव ! सच्चे हरि-प्रभु की स्तुति करनी चाहिए, चूंकि वह सबकुछ करने में समर्थ है। जो स्त्री पति-प्रभु का यशगान करती है, वह कदापि विधवा नहीं होती और न ही कभी उसे संताप होता है। वह अपने पति-प्रभु के चरणों में रहती है, उसे कदाचित शोक नहीं होता और वह रात-दिन आनंद का उपभोग करती है। जो जीव-स्त्री अपने प्रिय कर्मविधाता को जानती है, वह अमृत वाणी बोलती है। गुणवान जीव-स्त्रियाँ अपने पति-प्रभु के गुणों का चिन्तन करती रहती हैं एवं उसे याद करती रहती हैं और उनका अपने पति-परमेश्वर से कभी वियोग नहीं होता। इसलिए हमें सर्वदा सच्चे परमेश्वर की ही स्तुति करनी चाहिए, जो सब कुछ करने में समर्थ है॥ १॥ सच्चा मालिक शब्द द्वारा ही पहचाना जाता है और वह स्वयं ही जीव को अपने साथ मिला लेता है। प्रिय-प्रभु के प्रेम रंग में लीन हुई जीव-स्त्री अपने हृदय से अपना अहंकार दूर कर देती है। अपने हृदय से अहंकार निवृत्त करने के कारण मृत्यु उसे दुबारा नहीं निगलती और गुरु के माध्यम से वह एक ईश्वर को ही जानती है। जीव-स्त्री की इच्छा पूरी हो जाती है, उसका हृदय प्रेम से भर जाता है और उसे संसार को जीवन देने वाला दाता प्रभु मिल जाता है। वह शब्द के रंग से रंगी हुई है, यौवन से मतवाली है और अपने पति-परमेश्वर की गोद में विलीन हो जाती है। सच्चा मालिक शब्द द्वारा ही पहचाना जाता है और वह स्वयं ही जीव को अपने साथ मिला लेता है॥ २॥ जिन्होंने अपने पति-परमेश्वर को पहचान लिया है, मैं उन संतजनों के पास जाकर अपने स्वामी के बारे में पूछती हूँ। अपना अहंत्व मिटाकर मैं उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करती हूँ, इस तरह सहज स्वभाव ही सच्चा पति-प्रभु मुझे मिल जाएगा। जीव-स्त्री सत्य की साधना करती है एवं सच्चे शब्द में अनुरक्त हुई है। इस तरह सच्चा पति-परमेश्वर आकर उसे मिल जाता है। वह कभी विधवा नहीं होती और सदा सुहागिन बनी रहती है। पति-परमेश्वर सर्वव्यापक है, उसे प्रत्यक्ष देख कर वह सहज-स्वभाव ही उसके प्रेम का आनंद प्राप्त करती है। जिन्होंने अपने पति-परमेश्वर को पहचान लिया है, मैं उन संतजनों के पास जाकर अपने स्वामी के बारे में पूछती हूँ॥ ३॥ पति-परमेश्वर से जुदा हुई जीव-स्त्रियों का अपने स्वामी से मिलन हो जाता है; यदि वे सतगुरु के चरणों में लग जाएँ। सतगुरु हमेशा दया का घर है, उसके शब्द द्वारा मनुष्य के अवगुण मिट जाते हैं। अपने अवगुणों को गुरु के शब्द द्वारा जला कर जीव मोह-माया को त्याग देता है और केवल सत्य में ही समाया रहता है। सच्चे शब्द द्वारा हमेशा सुख प्राप्त होता है और अहंकार एवं भ्रांतियाँ दूर हो जाती हैं। हे नानक ! पवित्र-पावन पति-परमेश्वर हमेशा ही सुख देने वाला है और वह शब्द द्वारा ही मिलता है। पति-परमेश्वर से जुदा हुई जीव-स्त्रियों का भी अपने सच्चे स्वामी से मिलन हो जाता है, यदि वे सतगुरु के चरणों में लग जाएँ॥ ४॥ १॥

वडहंसु महला ३ ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेवहु सबदि वीचारि ॥ अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥ रोवै कंत संमालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ॥ गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ॥ जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥ १ ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारा ॥ माइआ मोहु खुआइअनु मरि जंमै वारो वारा ॥ मरि जंमै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥ बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥ पिरु जगजीवनु किस नो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥ सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥ २ ॥ सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ॥ भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए ॥ रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै ॥ जो किछु आइआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइ दूजै ॥ जमकालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए ॥ सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥ ३ ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले ॥ गुर परसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥ पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥ इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे ॥ नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ इकि रोवहि पिरहि विछुंनीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥ ४ ॥ २ ॥

हे पति-परमेश्वर की स्त्रियो ! ध्यानपूर्वक सुनो, शब्द का विचार करके अपने प्रियतम प्रभु की सेवा करो। अवगुणों से भरी स्त्री अपने प्रियतम को नहीं जानती और वह मोह-माया में ठगी हुई अपने पति-प्रभु को विस्मृत करके रोती रहती है। जो जीव-स्त्री अपने प्रभु के गुणों को याद करके वैराग में अश्रु बहाती है, उसका स्वामी न मरता है और न ही कहीं जाता है। जिस जीव-स्त्री ने गुरु के माध्यम से प्रभु को जान लिया है एवं शब्द द्वारा पहचान कर ली है, वह सच्चे प्रभु के प्रेम में समाई रहती है। जिसने अपने प्रियतम कर्मविधाता को नहीं समझा, उस झूठी जीव-स्त्री को झूठ ने ठग लिया है। हे पति-परमेश्वर की स्त्रियो ! ध्यानपूर्वक सुनो, शब्द का विचार करके अपने प्रियतम प्रभु की सेवा करो॥ १॥ सारे संसार की उत्पत्ति परमेश्वर ने स्वयं ही की है और यह संसार आवागमन अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में पड़ा है। माया के मोह ने जीव-स्त्री को नष्ट कर दिया है और वह बार-बार मरती एवं जन्म लेती है। वह बार-बार मरती एवं दुनिया में जन्म लेती है, उसके पाप-विकार बढ़ते जाते हैं एवं ज्ञान के बिना वह ठगी गई है। शब्द के बिना उसे प्रियतम प्राप्त नहीं होता और अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा देती है। इस प्रकार गुणों से विहीन झूठी जीव-स्त्री विलाप करती है। प्रियतम-प्रभु तो जगत का जीवन है तो फिर किसके लिए विलाप करना। जीव-स्त्री अपने पति-प्रभु को विस्मृत करने पर ही रुदन करती है। सारा जगत परमात्मा ने स्वयं उत्पन्न किया है और यह संसार जन्मता-मरता रहता है॥ २॥ वह पति-प्रभु सदैव सत्य है। वह अनश्वर है अर्थात् न ही वह मरता है एवं न ही कहीं जाता है। भूली हुई जीव-स्त्री भटकती रहती है और द्वैतभाव द्वारा विधवा बनी बैठी है। द्वैतभाव द्वारा वह विधवा की भाँति बैठी हुई है; माया के मोह के कारण वह दुःख प्राप्त करती है, उसकी आयु कम होती जा रही है और शरीर भी नाश होता जा रहा है। जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, वह सबकुछ नाश हो जाएगा। सांसारिक आकर्षण के कारण मनुष्य दुःख प्राप्त करता है। दुनिया माया की लालसा में हमेशा उलझती रहती है, उसे इसी लालसा में मृत्यु का भी ध्यान नहीं आता और अपने चित्त को लोभ एवं लालच में लगाती रहती है। वह पति-प्रभु सदैव सत्य है, वह अनश्वर है अर्थात् न ही वह मरता है और न

ही कहीं जाता है॥ ३॥ अपने पति-परमेश्वर से बिछुडी हुई कई जीव-स्त्रियाँ रोती रहती हैं। अज्ञानता में अंधी हुई वे यह नहीं जानती कि उनका पति-परमेश्वर तो उनके साथ ही निवास करता है। गुरु की कृपा से सच्चा पति-परमेश्वर मिलता है और जीव-स्त्री अपने हृदय में सर्वदा उसे याद करती है। प्रियतम प्रभु को सर्वदा अपने साथ समझकर वह अपने हृदय में उसे स्मरण करती है। लेकिन मनमुख जीव-स्त्रियाँ उसे दूर ही समझती हैं। जिन्होंने परमेश्वर को अपने पास अनुभव नहीं किया, उनका यह शरीर मिट्टी में मिलकर खराब हो जाता है और किसी काम में नहीं आता। हे नानक ! जो जीव-स्त्री अपने अन्तर्मन में पति-परमेश्वर को सदा याद करती रहती है, वह गुरु द्वारा मिलाई हुई अपने पति-प्रभु से मिल जाती है। अपने पति-परमेश्वर से बिछुडी हुई कई जीव-स्त्रियाँ रोती रहती है। लेकिन अज्ञानता में अन्धी हुई उन्हें यह नहीं पता कि उनका पति-परमेश्वर तो उनके साथ ही है॥ ४॥ २॥

वडहंसु मः ३ ॥ रोवहि पिरहि विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥ सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥ सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु न होइआ ॥ सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ रोवहि पिरहु विछुंनीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ १ ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलां प्रीतम पिआरे ॥ सतिगुरि मेली तां सहजि मिली पिरु राखिआ उर धारे ॥ सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥ माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥ पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥ प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥ २ ॥ मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ॥ सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ॥ अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥ अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै तां मनु भीजै त्रिसना दूख निवारे ॥ मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ ३ ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥ आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ॥ गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ ४ ॥ ३ ॥

मेरा सच्चा पति-परमेश्वर सर्वदा मेरे साथ रहता है किन्तु उससे जुदा होकर कई जीव-स्त्रियाँ विलाप करती रहती हैं। जिन्होंने दुनिया से कूच करने को सत्य समझ लिया है, वे सतगुरु की सेवा करती हैं और परमात्मा के नाम को याद करती रहती हैं। सतगुरु को साथ समझकर वे हमेशा नाम-सुमिरन करती हैं और सतगुरु की सेवा करके उन्होंने सुख पाया है। शब्द के माध्यम से उन्होंने काल के भय को मार दिया है और सत्य को अपने हृदय में लगाकर रखती हैं। फिर वे दुनिया में जन्म-मरण के चक्र में नहीं आती। परमात्मा सत्यस्वरूप है और उसकी कीर्ति भी सत्य है। वह नाम-स्मरण करने वाली जीव-स्त्रियों को अपनी कृपा-दृष्टि से देखता है। मेरा सच्चा प्रभु सदा मेरे साथ है किन्तु उससे जुदा हुई जीव-स्त्रियाँ रोती रहती हैं॥ १॥ मेरा मालिक-प्रभु सबसे ऊँचा है, फिर मैं अपने प्रियतम-प्यारे को कैसे मिलूँ? जब सतगुरु ने मुझे प्रभु से मिलाया तो मैं सहज ही उससे मिल गई। मैंने अपने प्रियतम को अपने मन में बसा लिया है। जिसका प्रिय-प्रभु से प्रेम होता है, वह उसे अपने मन में बसाता है और सतगुरु द्वारा ही प्रभु के दर्शन होते हैं। माया के मोह में रंगा हुआ शरीर रूपी चोला झूठा है, इसे पहनने से पैर सत्य की ओर से डगमगा जाते हैं। लेकिन प्रियतम-प्रभु के प्रेम में

रंगा हुआ चोला ही सच्चा है क्योंकि इसे पहनने से मन की तृष्णा बुझ जाती है। मेरा स्वामी प्रभु सबसे ऊँचा है, फिर मैं अपने प्रियतम प्यारे से कैसे मिल सकती हूँ ?॥ २॥ मैंने अपने सत्य प्रभु को पहचान लिया है लेकिन गुण-विहीन जीव-स्त्रियाँ उसे विस्मृत करके कुमार्गगामी हो गई हैं। मैं हमेशा ही अपने प्रियतम को स्मरण करके आनंद प्राप्त करती हूँ एवं सच्चे शब्द का चिंतन करती हूँ। जो जीव-स्त्री सच्चे शब्द का चिंतन करती है, वह अपने प्रियतम के प्रेम में मग्न रहती है और सतगुरु को मिलकर अपने प्रियतम को पा लेती है। उसका हृदय प्रभु के प्रेम से रंगा हुआ है, वह सहज अवस्था में लीन रहती है और उसके दुश्मन एवं दुःख सभी दूर हो गए हैं। यदि हम अपने गुरु को तन-मन अर्पण कर दें तो हमारा मन प्रसन्न हो जाएगा और तृष्णा एवं दुःख नाश हो जाएँगे। मैंने अपने सच्चे प्रभु को पहचान लिया है, अन्य अवगुणों से भरी जीव-स्त्रियाँ कुमार्गगामी हो गई हैं॥ ३॥ सच्चे परमेश्वर ने स्वयं जगत पैदा किया है परन्तु गुरु के बिना जग में घोर अन्धकार है। वह स्वयं ही जीव को गुरु से मिलाता है, स्वयं ही उसे मिलता है और स्वयं ही उसे अपने प्रेम का दान देता है। वह स्वयं ही अपना प्रेम प्रदान करता है और जीव इस तरह नाम-ज्ञान का व्यापार करता है और गुरुमुख बनकर अपना अमूल्य-जन्म संवार लेता है। इस दुनिया में उसका जन्म लेना सफल है, जो अपना अहंत्व दूर कर देता है और सच्चे दरबार में वह सत्यवादी माना जाता है। हे नानक ! उसके हृदय में ज्ञान-रत्न का प्रकाश हो गया है एवं प्रभु के नाम से उसका प्रेम है। सच्चे परमेश्वर ने स्वयं ही जगत उत्पन्न किया है परन्तु गुरु के बिना जगत में घोर अन्धकार है॥ ४॥ ३॥

वडहंसु महला ३ ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आए ॥ गुरि राखे से उबरे होरु मरि जंमै आवै जाए ॥ होरि मरि जंमहि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥ जम पुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥ इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आई ॥ १ ॥ काइआ कंचनु तां थीऐ जां सतिगुरु लए मिलाए ॥ भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाए ॥ सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए ॥ जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए ॥ कांइआ कंचनु तां थीऐ जा सतिगुरु लए मिलाए ॥ २ ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए ॥ किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ॥ नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाए ॥ तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए ॥ सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ ३ ॥ जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए ॥ से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ॥ तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए ॥ नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए ॥ अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए ॥ जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिन कै लागउ पाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

यह शरीर बड़ा नाजुक है तथा इसे आहिस्ता-आहिस्ता बुढ़ापा आ जाता है। जिनकी गुरु ने रक्षा की है, उनका उद्धार हो गया है परन्तु अन्य तो जन्म लेते और मरते रहते हैं तथा दुनिया में आते-जाते ही रहते हैं। शेष मरते-जन्मते और आते जाते रहते हैं, अन्तिम क्षण में जाते हुए अफसोस करते हैं और परमात्मा के नाम के बिना उन्हें सुख उपलब्ध नहीं होता। इहलोक में व्यक्ति जो कर्म करता है, वही फल प्राप्त होता है और स्वेच्छाचारी मनुष्य अपनी इज्जत गंवा देता है। यमलोक में भयानक अन्धेरा एवं महा गुबार है और वहाँ न कोई बहन है और न ही कोई भाई है। यह शरीर बड़ा

नाजुक एवं क्षीण है और इसे आहिस्ता-आहिस्ता बुढ़ापा आ जाता है॥ १॥ यदि सतिगुरु अपने साथ मिला लें तो यह काया स्वर्ण की भाँति पावन हो जाती है। सतगुरु उसके मन में से माया का भ्रम दूर कर देता है और फिर वह सत्य-नाम में समाया रहता है। सत्य-नाम में समाकर वह भगवान का गुणगान करता रहता है और अपने प्रियतम प्रभु से मिलकर सुख प्राप्त करता है। वह दिन-रात हमेशा ही आनंद में रहता है और उसके हृदय से अहंत्व दूर हो जाता है। जिन महापुरुषों ने हरि के नाम को अपने चित्त से लगाया है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ। यदि सतिगुरु अपने साथ मिला लें, तो यह शरीर स्वर्ण की भाँति पावन हो जाता है॥ २॥ यदि सद्‌गुरु सूझ प्रदान करें तो ही उस सच्चे प्रभु का स्तुतिगान किया जाता है। सच्चे गुरु के बिना जो जीव-स्त्रियाँ भ्रम में भूली हुई हैं, वे आगे जाकर परलोक में क्या मुँह दिखाएँगी? वे परलोक में क्या मुँह दिखाएँगी, वे अपने अवगुणों के कारण पछताती हैं और दुःख ही भोगती हैं। लेकिन जो जीव-स्त्रियाँ नाम में मग्न रहती हैं, उनका गहरा लाल रंग हो जाता है और वे अपने पति-परमेश्वर की गोद में विलीन हो जाती हैं। मुझे परमात्मा जैसा महान् अन्य कोई नहीं दिखाई देता। फिर मैं अपना दुःख किसके समक्ष जाकर कहूँ? यदि सतगुरु सूझ प्रदान करें तो उस परम-सत्य का स्तुतिगान किया जाता है॥ ३॥ जिन्होंने सच्चे परमात्मा की प्रशंसा की है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ। ऐसे मनुष्य सत्यवादी एवं निर्मल होते हैं और उन्हें मिलकर मन की अहंकार रूपी मैल दूर हो जाती है। उनको मिलकर अहंकार रूपी मैल निवृत्त हो जाती है और मनुष्य सत्यनाम के सच्चे सरोवर में स्नान करता है और सहज स्वभाव ही सत्यवादी बन जाता है। सतिगुरु ने मुझे अगम्य, अगोचर एवं मायातीत प्रभु-नाम का भेद बता दिया है। नानक का कथन है कि प्रेम-रंग में लीन हुए जो रात-दिन प्रभु-भक्ति करते हैं, वे सत्य में समा जाते हैं। जिन्होंने परम-सत्य ईश्वर का ध्यान किया है, मैं उनके चरण स्पर्श करता हूँ॥ ४॥ ४॥

वडहंस की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ सलोक मः ३ ॥ सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ॥ सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥ सदा निरमल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥ नानक हउ तिन के बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो लोग शब्द में मग्न हैं, वही परमहंस (परमार्थी) हैं और उन्होंने सत्यनाम को अपने हृदय में बसा कर रखा हुआ है। वे सत्य को संचित करते हैं, सत्य में लीन रहते हैं और सत्य नाम से ही प्रेम करते हैं। करतार ने उन पर यह दया-दृष्टि की हुई है कि वे हमेशा पावन रहते हैं और उन्हें कोई मैल नहीं लगती। हे नानक! मैं उन महापुरुषों पर कुर्बान जाता हूँ, जो निशदिन प्रभु का जाप करते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ मै जानिआ वड हंसु है ता मै कीआ संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ॥ २ ॥

महला ३॥ मैं यह जानती थी कि वह कोई परमहंस (परमार्थी) है, तभी मैंने उसकी संगति की। यदि यह समझती कि बेचारा बगुला अर्थात् कोई ढोंगी है तो जन्म से ही उससे मिलाप न करती॥ २॥

मः ३ ॥ हंसा वेखि तरंदिआ बगां भि आया चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ ३ ॥

महला ३॥ हंसों (परमार्थियों) को तैरते देखकर बगुलों (ढोंगियों) को भी तैरने की तीव्र लालसा उत्पन्न हुई है। लेकिन बेचारे बगुले तो भवसागर में डूबकर प्राण त्याग गए; उनके सिर नीचे एवं पैर ऊपर थे॥ ३॥

पउड़ी ॥ तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥ तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥ तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥ तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥ सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि दीआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे परमपिता! तू स्वयंभू, सर्वशक्तिमान है और तूने स्वयं ही संसार बनाया है। तू स्वयं ही निराकार है और तेरे सिवाय अन्य कोई दूसरा नहीं। तू ही करने एवं कराने में समर्थ है एवं जो तू करता है, वही होता है। तू ही सब जीवों को बिना माँगे हुए दान प्रदान करता है। सभी बोलो-सतिगुरु धन्य-धन्य हैं, जिसने हरि-नाम का दान हम जीवों के मुख में दिया हुआ है॥ १॥

सलोकु मः ३ ॥ भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ ॥ सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ ॥ दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइ ॥ गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ ॥ नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यह सारी दुनिया भय में है लेकिन एक पूज्य-परमेश्वर ही निर्भीक है। सतिगुरु की सेवा करने से परमेश्वर मन में निवास कर लेता है और फिर मन में भय कदापि प्रवेश नहीं करता। कोई दुश्मन एवं दुःख-संकट उसके समीप नहीं आते और कोई उसे तंग नहीं कर सकता। गुरुमुख ने अपने मन में यह विचार किया है कि जो परमात्मा को भला लगता है, वही होता है। हे नानक! परमेश्वर स्वयं ही मनुष्य की प्रतिष्ठा रखता है और वही सारे कार्य सम्पूर्ण करता है॥ १॥

मः ३ ॥ इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि ॥ जिनी सतिगुरु न सेविओ से आइ गए पछुताहि ॥ नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥ २ ॥

महला ३॥ कुछ साथी दुनिया से जा रहे हैं, कुछ मित्र पहले ही दुनिया को छोड़कर चले गए हैं और जो रहते हैं, अंतः वे भी यहाँ से चले जाएँगे। जिन्होंने सतगुरु की सेवा नहीं की है, वे दुनिया में आकर अफसोस करते चले गए हैं। हे नानक! जो लोग सत्य में मग्न रहते हैं, वे कदापि जुदा नहीं होते और सतगुरु की सेवा करके परमात्मा में विलीन हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥ तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि हंउमै विचहु मारी ॥ सो सतिगुरु पूरा धनु धंनु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ स्रिस्टि सवारी ॥ नित जपिअहु संतहु राम नामु भउजल बिखु तारी ॥ गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु हंउ सद वारी ॥ २ ॥

पउड़ी॥ जिसके हृदय में गुणकारी भगवान का निवास है, हमें ऐसे महापुरुष सतगुरु से भेंट करनी चाहिए। जिसने मन से अहत्व का नाश कर दिया है, हमें ऐसे प्रियतम सतगुरु से साक्षात्कार करना चाहिए। जिसने हरि का उपदेश देकर सारी सृष्टि का कल्याण कर दिया है, वह पूर्ण सद्गुरु धन्य-धन्य है। हे संतजनो! नित्य ही राम नाम का जाप करो, जो तुझे विषैले भवसागर से पार कर देगा। पूर्ण गुरु ने मुझे हरि का उपदेश दिया है, इसलिए मैं उस गुरुदेव पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ॥ २॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु ॥ ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥ सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु ॥ सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु ॥ सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥ नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिस नो नदरि करै करतारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतगुरु की सेवा-चाकरी सर्व सुखों का सार है। गुरु की सेवा करने से दुनिया में बड़ा मान-सम्मान मिलता है और भगवान के दरबार में मोक्षद्वार प्राप्त होता है। वह पुरुष सत्य-कर्म ही करता है, सत्य को ही धारण करता है और सत्य-नाम ही उसका आधार है। सच्ची संगति से उसे सत्य प्राप्त हो जाता है एवं सच्चे-नाम से उसका प्यार हो जाता है। सच्चे शब्द द्वारा वह सर्वदा हर्षित रहता है और सत्य-दरबार में सत्यशील माना जाता है। हे नानक ! सतिगुरु की सेवा वही करता है, जिस पर भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥ १॥

मः ३ ॥ होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ अंम्रितु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥ बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरास ॥ ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ॥ मनमुख मुहि मैले सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु ॥ सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कंमु न आवै रासि ॥ जम पुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥ २ ॥

महला ३॥ उनके जीवन पर धिक्कार है और उनका निवास भी धिक्कार योग्य है, जो सतिगुरु के अतिरिक्त किसी अन्य की सेवा करते हैं। वे अमृत को त्याग कर विष से संलग्न होकर विष को कमाते हैं और विष ही उनकी पूँजी है। विष ही उनका भोजन है, विष ही उनका पहरावा है और विष के ग्रास ही अपने मुँह में डालते हैं। इहलोक में वे घोर कष्ट ही कमाते हैं और मृत्यु के पश्चात् नरक में ही निवास करते हैं। स्वेच्छाचारी लोगों के मुँह बड़े मैले हैं, वे शब्द के भेद को नहीं जानते और कामवासना एवं गुस्से में ही उनका विनाश हो जाता है। वे सतगुरु का प्रेम त्याग देते हैं और मन के हठ के कारण उनका कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होता। यमपुरी में वे बांध कर पीटे जाते हैं और कोई भी उनकी प्रार्थना नहीं सुनता। हे नानक ! पूर्व जन्म में कर्मो के अनुसार विधाता ने जो तकदीर लिख दी है, हम जीव उसके अनुसार ही कर्म करते हैं तथा गुरु के माध्यम से ही प्रभु-नाम में निवास होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सो सतिगुरु सेविहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगंनाथु जगदीसु जपाइआ ॥ सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ ॥ तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइआ ॥ सो सतगुरु कहहु सभि धंनु धंनु जिनि हरि भगति भंडार लहाइआ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे साधुजनो ! उस सतगुरु की सेवा करो, जिसने परमात्मा का नाम मन में दृढ़ करवाया है। उस सतगुरु की दिन-रात पूजा करो, जिसने जगन्नाथ-जगदीश्वर का नाम हमें जपाया है। ऐसे सतगुरु के क्षण-क्षण दर्शन करो, जिसने हरि का हरि-मार्ग बताया है। सभी उस सतगुरु के चरण-स्पर्श करो, जिसने मोह का अन्धेरा नष्ट कर दिया है। सभी लोग ऐसे सतगुरु को धन्य-धन्य कहो, जिसने हरि-भक्ति के भण्डार जीवों को दिलवा दिए हैं॥ ३॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी भुख न जाइ ॥ दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥ अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ ॥ मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥ इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥ सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ ॥ पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥ नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतिगुरु से भेंट हो जाने पर भूख दूर हो जाती है लेकिन पाखण्ड धारण करने से भूख दूर नहीं होती। पाखण्डी व्यक्ति को बहुत दुःख होता है, वह घर-घर भटकता रहता है और परलोक में भी उसे दुगुना दण्ड मिलता है। उसके मन में संतोष नहीं होता ताकि जो कुछ भी उसे मिलता है, उसे संतोषपूर्वक खाए। जिस किसी से भी वह माँगता है, वह अपने मन के हठ से माँगता है और लेकर वे अपने देने वाले को दुःख ही पहुँचाता है। इस आडम्बर का वेष करने से तो गृहस्थी होना बेहतर है, जो किसी न किसी को तो कुछ देता ही है। जो व्यक्ति शब्द में मग्न हैं, उन्हें सूझ आ जाती है और कुछ लोग तो दुविधा में ही भूले हुए हैं। वे अपनी तकदीर के अनुसार कर्म करते हैं और इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। हे नानक! जो भगवान को अच्छे लगते हैं, वे भले हैं और जिनकी प्रतिष्ठा वह बरकरार रखता है॥ १॥

मः ३ ॥ सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥ चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥ अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ मैलु गई मनु निरमलु होआ अंम्रित सरि तीरथि नाइ ॥ सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ ॥ घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥ पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥ नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिव लाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य हमेशा सुखी रहता है और उसकी जन्म-मरण की पीड़ा दूर हो जाती है। उसे बिल्कुल ही चिन्ता नहीं होती और अचिंत प्रभु उसके मन में आकर निवास कर लेता है। सद्गुरु ने यह ज्ञान प्रदान किया है कि मनुष्य के हृदय में ही ज्ञान रूपी तीर्थ-स्थान है। इस ज्ञान रूपी तीर्थ-स्थान के अमृत-सरोवर में स्नान करने से सर्व प्रकार की मैल उतर जाती है और मन निर्मल हो जाता है। सच्चे शब्द के प्रेम द्वारा सज्जनों को अपना सज्जन (प्रभु) मिल जाता है। अपने घर में ही वे दिव्य ज्ञान को पा लेते हैं और उनकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है। ढोंगी पुरुष को यमदूत नहीं छोड़ता और उसे तिरस्कृत करके परलोक में ले जाता है। हे नानक! जो सत्य-नाम में मग्न रहते हैं, उनका उद्धार हो जाता है और सच्चे प्रभु के साथ ही उनकी वृत्ति लगी रहती है॥ २॥

पउड़ी ॥ तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ ॥ सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ ॥ नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ ॥ सो पाए पूरा सतगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ ॥ तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ उस सत्संगति में जाकर बैठो, जहाँ हरि-नाम का मंथन अर्थात् सिमरन किया जाता है। वहाँ सहज अवस्था में हरि के नाम का भजन करो चूंकि तुम हरि के नाम-तत्व को न गंवा बैठना। नित्य ही हरि-परमेश्वर का भजन करते रहो, हरि के दरबार में आश्रय जाएगा। जिस

व्यक्ति के माथे पर शुभ-कर्मों के फलस्वरूप विधाता द्वारा तकदीर लिखी होती है, उसे पूर्ण सतिगुरु मिल जाता है। सभी लोग उस गुरु को नमस्कार करो, जिसने हरि की कथा कथन की है॥ ४॥

सलोक मः ३ ॥ सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥ मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥ मन ही ते मनु मानिआ गुर कै सबदि अपारि ॥ एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥ इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥ विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥ मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥ इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥ जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥ नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिनका सतगुरु से प्यार होता है, उन सज्जनों को सज्जन ही मिलते हैं। सच्चे प्रेम-प्यार के कारण वे मिलकर प्रियतम-परमेश्वर को याद करते हैं। गुरु के अपार शब्द के कारण उनके मन में प्रभु के प्रति आस्था हो जाती है। यदि परमात्मा स्वयं मिलन करवा दे तो ऐसे सज्जन कभी जुदा नहीं होते। कुछ लोग इस तरह के भी हैं, जिनके हृदय में भगवान के दर्शनों की प्रतीति नहीं होती और शब्द के बारे में भी विचार नहीं करते। जो द्वैतभाव से स्नेह करते हैं, उन प्रभु से जुदा हुए मनुष्यों का और क्या वियोग हो सकता है ? मनमुख लोगों के साथ दोस्ती थोड़े समय केवल चार दिन ही रहती है। इस प्रेम के टूटते विलम्ब नहीं होता और ऐसी दोस्ती से तो केवल विकार ही उत्पन्न होते हैं। जिनके हृदय में सच्चे परमात्मा का भय विद्यमान नहीं होता और भगवान के नाम से प्यार नहीं करते, हे नानक ! इस तरह के मनुष्यों से दोस्ती नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनको करतार ने स्वयं ही विस्मृत करके कुमार्गगामी कर दिया है॥ १॥

मः ३ ॥ इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥ तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ त्रिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ कुछ लोग हमेशा भगवान के प्रेम-रंग में मग्न रहते हैं और मैं उन पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ। मैं अपना तन-मन-धन उन्हें समर्पित करता हूँ और झुक-झुक कर उनके चरण छूता हूँ। उन लोगों से भेंट करके मन को बड़ा संतोष होता है और तृष्णा व भूख इत्यादि सभी मिट जाते हैं। हे नानक ! जो भगवान के नाम में मग्न हैं, वे सदा सुखी रहते हैं और उनकी सत्य में ही लगन लगी रहती है॥ २॥

पउड़ी ॥ तिसु गुर कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई ॥ तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई ॥ सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई ॥ तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ॥ नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरि नामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने हरि की कथा सुनाई है। मैं उस गुरु पर हमेशा बलिहारी हूँ, जिसने हरि की उपासना का शुभावसर बनाया है। वह प्यारा सतिगुरु हमेशा मेरे साथ है एवं जहाँ-कहीं भी मैं होता हूँ, मुझे मुक्त करवा देता है। उस गुरु को शाबाश है, जिसने मुझे हरि का ज्ञान प्रदान किया है । हे नानक ! मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे हरि का नाम देकर मेरे मन की अभिलाषा पूर्ण कर दी है॥५॥

सलोक मः ३ ॥ त्रिसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार ॥ सतिगुर सीतल जे मिले फिरि जलै न दूजी वार ॥ नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ तृष्णा में दग्ध होकर सारी दुनिया जल कर मर गई है और जल-जल कर पुकार कर रही है। यदि शांति प्रदान करने वाले सतिगुरु से भेंट हो जाए तो उसे फिर से दूसरी बार जलना नहीं पड़ेगा। हे नानक! जब तक मनुष्य गुरु के शब्द पर विचार नहीं करता, तब तक परमात्मा के नाम के बिना कोई भी भय-रहित नहीं हो सकता॥ १॥

मः ३ ॥ भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥ वरमी मारी सापु ना मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥ सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ॥ मनु तनु सीतलु सांति होइ त्रिसना अगनि बुझाइ ॥ सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥ गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिव लाइ ॥ चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ ॥ नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ झूठा भेष अर्थात् ढोंग धारण करने से तृष्णा की अग्नि नहीं बुझती और मन में चिन्ता ही बनी रहती है। जैसे सर्प की बांबी को ध्वस्त करने से सर्प नहीं मरता वैसे ही निगुरा कर्म करता रहता है। दाता सतिगुरु की सेवा करने से मनुष्य के मन में शब्द का निवास हो जाता है। इससे मन-तन शीतल एवं शांति हो जाती है और तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है। जब मनुष्य अपने हृदय से अहंकार को निकाल देता है तो उसे सर्व सुखों का परम सुख मिल जाता है। वही गुरुमुख मनुष्य त्यागी होता है जो अपनी वृत्ति सत्य के साथ लगाता है। उसे बिल्कुल भी चिंता नहीं होती और हरि के नाम से वह तृप्त एवं संतुष्ट रहता है। हे नानक! भगवान के नाम के बिना मनुष्य का छुटकारा नहीं होता और अहंकार के कारण वह बिल्कुल नष्ट हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा ॥ सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥ जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन विसरि गए सभि दुखा ॥ ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा ॥ धनु धंनु तिना का गुरू है जिसु अंम्रित फल हरि लागे मुखा ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ जिन्होंने हरि के नाम का ध्यान किया है, उन लोगों को सर्व सुख प्राप्त हो गया है। उन लोगों का समूचा जीवन सफल है, जिनके मन में हरि के नाम की तीव्र लालसा लगी हुई है। जिन्होंने गुरु के वचन द्वारा हरि की आराधना की है, उनके सभी दुःख-क्लेश मिट गए हैं। वे सन्तजन, गुरु के शिष्य भले हैं, जिन्हें भगवान के अतिरिक्त किसी की भी तनिक चिन्ता नहीं। उनका गुरु धन्य-धन्य है, जिनके मुखारबिंद पर हरि के नाम का अमृत-फल लगा हुआ है॥ ६॥

सलोक मः ३ ॥ कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥ गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ ॥ जमकालै वसि जगु बांधिआ तिस दा फरू न कोइ ॥ जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ ॥ नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ इस कलियुग में यमराज प्राणों का शत्रु है लेकिन वह भी ईश्वर की रज़ा अनुसार कार्य करता है। जिन लोगों की गुरु ने रक्षा की है, उनका उद्धार हो गया है। लेकिन स्वेच्छाचारी जीवों को वह दण्ड देता है। सारी दुनिया यमकाल के वश में कैद है और उसे कोई

भी पकड़ नहीं सकता। जिस परमेश्वर ने यमराज को पैदा किया है, गुरुमुख बनकर उसकी आराधना करनी चाहिए, फिर कोई दुःख-कष्ट नहीं सताता। हे नानक! जिनके मन में सच्चा परमेश्वर होता है, उन गुरुमुखों की यमराज भी सेवा करता रहता है॥ १॥

मः ३ ॥ एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै ता निरमल होवै हरि नामो मंनि वसाइ ॥ नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ यह कोमल काया (अहंकार के) रोग से भरी हुई है और शब्द-ब्रह्म के बिना इसका अहंकार का रोग एवं दुःख नाश नहीं होता। यदि सतिगुरु से भेंट हो जाए तो यह काया निर्मल हो जाती है और हरि के नाम को अपने मन में बसा लेती है। हे नानक! सुख देने वाला परमात्मा के नाम का ध्यान करने से सहज-स्वभाव ही दुःख-क्लेश समाप्त हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जिनि जगजीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ खंनीऐ जिनि मधुसूदनु हरि नामु सुणाइआ ॥ तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥ तिसु सतिगुर कउ वड पुंनु है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥ सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ मैं उस गुरु पर हमेशा कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे जगत के जीवनदाता प्रभु की भक्ति का उपदेश प्रदान किया है। मैं उस गुरु पर खण्ड-खण्ड होकर न्यौछावर होता हूँ, जिसने मधुसूदन हरि का नाम सुनाया है। मैं उस गुरु पर शत्-शत् कुर्बान जाता हूँ, जिसने अहंकार रूपी विष एवं सभी रोगों को मिटा दिया है। उस गुरु का मुझ पर बड़ा उपकार है, जिसने अवगुणों को मिटाकर गुणों के भण्डार परमात्मा का ज्ञान प्रदान किया है। ऐसे सतगुरु से उन लोगों की ही भेंट होती है, जिनके मुख-मस्तक पर परमात्मा ने भाग्य लिखा होता है॥ ७॥

सलोकु मः ३ ॥ भगति करहि मरजीवड़े गुरमुखि भगति सदा होइ ॥ ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ ॥ गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मरजीवे ही भगवान की भक्ति करते हैं और गुरु द्वारा भक्ति की जा सकती है। भक्ति का भण्डार उन्हें प्रारम्भ से ही दिया हुआ है, जिसे कोई भी मिटा नहीं सकता। ऐसे महापुरुष अपने मन में ही गुणों के भण्डार एक परम-सत्य को प्राप्त कर लेते हैं। नानक का कथन है कि गुरुमुख व्यक्ति सदैव ही भगवान में मिले रहते हैं और वे फिर कभी जुदा नहीं होते॥ १॥

मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु ॥ सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु ॥ अगिआनी अंधु बहु करम कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥ अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥ नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ॥ २ ॥

महला ३॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की सेवा नहीं करता, वह कैसे चिंतन कर सकता है। मूर्ख व्यक्ति विकारों में भटकता रहता है और शब्द के सार को नहीं जानता। अज्ञानी एवं अन्धा मनुष्य बहुत सारे कर्म करता है और द्वैतभाव से प्रेम करता है। जो व्यक्ति गुणहीन होते हुए भी खुद को बड़ा कहलाते हैं, उन्हें मृत्युदूत मार-मार कर बड़ा तंग करता है। नानक का कथन है कि अन्य किस को बताया जाए, जबकि भगवान स्वयं ही क्षमाशील है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥ जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे ॥ तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे ॥ जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे ॥ हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ हे सृष्टिकर्त्ता ! तू सबकुछ जानता है एवं ये सारे जीव तेरे अपने ही हैं। जिसे तू पसन्द करता है, उसे अपने साथ मिला लेता है। लेकिन ये जीव बेचारे क्या कर सकते हैं। हे सच्चे सृजनहार ! तू समस्त कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है। हे प्रियतम ! जिसे तू स्वयं अपने साथ मिलाता है, वही गुरुमुख बनकर तेरा चिन्तन करके तुझ में विलीन हो जाता है। मैं अपने सच्चे गुरु पर शत्-शत् कुर्बान हूँ, जिसने मेरे अदृश्य भगवान के दर्शन करा दिए हैं॥ ८॥

सलोक मः ३ ॥ रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु ॥ रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु ॥ रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥ मूरख आपु गणाइदे मरि जंमहि होइ खुआरु ॥ नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु ॥ सदा सदा नामु उचरै हरि नामो नित बिउहारु ॥ क्रिपा करे जे आपणी ता हरि रखा उर धारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो रत्नों की परख करने वाला पारखी है, वही रत्नों पर विचार करता है। किन्तु अज्ञानी एवं परम अन्धा व्यक्ति रत्नों की कद्र को नहीं जानता। कोई मेधावी इन्सान ही यह बात समझता है कि गुरु का शब्द ही रत्न है। मूर्ख मनुष्य स्वयं पर बड़ा गर्व करते हैं परन्तु ऐसे मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में पड़कर दुखी होते रहते हैं। नानक का कथन है कि नाम-रत्नों की प्राप्ति उस व्यक्ति को ही होती है, जिसे गुरुमुख बनकर नाम से प्यार होता है। ऐसा व्यक्ति दिन-रात हरि-नाम का ही उच्चारण करता है और हरि का नाम ही उसका प्रतिदिन का व्यवहार बन जाता है। यदि परमेश्वर अपनी कृपा करे तो मैं उसे अपने हृदय में बसा कर रख सकता हूँ॥ १॥

मः ३ ॥ सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि ॥ हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै करम कमाइ ॥ नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जो व्यक्ति गुरु की सेवा नहीं करते एवं हरि के नाम से प्रेम नहीं लगाते, उन्हें तुम जीवित मत समझो, क्योंकि उन्हें कर्त्ता प्रभु ने स्वयं ही समाप्त कर दिया है। अहंकार एक बड़ा भयानक रोग है, यह रोग मनुष्य से द्वैतभाव के कर्म करवाता रहता है। नानक का कथन है कि मनमुख मनुष्य जीवित रहते हुए भी लाश के बराबर हैं और प्रभु को भुलाकर वे बहुत दुःखी होते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमसकारी ॥ जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरि नामु मुरारी ॥ सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥ सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बीचारी ॥ ९ ॥

पउड़ी॥ जिसका हृदय भीतर से शुद्ध है, उस व्यक्ति को सभी नमस्कार करते हैं। जिस के हृदय में नाम का भण्डार विद्यमान है, उस व्यक्ति पर मैं बलिहारी जाता हूँ। जिसके अन्दर विवेक-बुद्धि है तथा मुरारि हरि का नाम विद्यमान रहता है, वह सतिगुरु सभी का मित्र है तथा सारी

दुनिया से उसका प्रेम है। मैंने गुरु की दी हुई बुद्धि से यह विचार किया है कि सब आत्माओं में समाए हुए राम का ही यह प्रसार है॥ ६॥

सलोक मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै करम कमाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जंमहि आवहि जाहि ॥ बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअनि मुहि काले उठि जाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतिगुरु की सेवा के बिना वह कर्म जीव के लिए बन्धन बन जाते हैं जो कर्म वह अहंकार में ही करता रहता है। गुरु की सेवा के बिना जीव को सुख का स्थान नहीं मिलता और वह जन्मता-मरता और दुनिया में आता-जाता ही रहता है। सतिगुरु की सेवा के बिना मनुष्य कटु वचन ही बोलता रहता है और उसके मन में भगवान का नाम नहीं बसता। हे नानक! सतिगुरु की सेवा के बिना जीव दुनिया से मुँह काला करवा कर चला जाता है और यमपुरी में जकड़कर दण्ड भोगता है॥ १॥

महला १ ॥ जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥ २ ॥

महला १॥ मैं ऐसी रीति को जला दूँगा, जिसके फलस्वरूप मुझे मेरा प्यारा प्रभु भूल जाता है। हे नानक! वह प्यार ही भला है, जो प्रभु से प्रतिष्ठा कायम रखता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥ हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥ जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥ जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥ नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥ १० ॥

पउड़ी॥ एक दाता परमेश्वर की ही भक्ति करनी चाहिए और एक ईश्वर का ही ध्यान करना चाहिए। एक दाता परमेश्वर से ही माँगना चाहिए, क्योंकि उससे ही मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं। यदि हम भगवान के अलावा किसी दूसरे से माँगते हैं तो लज्जित होकर मरेंगे। जिसने उपासना की है, उसे फल प्राप्त हो गया है और उस व्यक्ति की सारी भूख दूर हो गई है। नानक उन लोगों पर न्यौछावर है, जो अपने हृदय में रात-दिन हरि-नाम का ध्यान करते हैं॥ १०॥

सलोकु मः ३ ॥ भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ॥ पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥ सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ॥ राजे ओइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥ नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मेरा प्यारा परमेश्वर भक्तजनों पर स्वयं प्रसन्न हुआ है और अपने भक्तों को उसने स्वयं ही भक्ति में लगा लिया है। अपने भक्तजनों का उसने साम्राज्य प्रदान किया है और उनके सिर हेतु उसने सच्चा मुकुट बनाया है। वे सर्वदा सुखी एवं निर्मल हैं और सतिगुरु की सेवा करते हैं। वे राजा नहीं कहे जा सकते, जो आपस में भिड़कर मर जाते हैं और तत्पश्चात् पुनः योनियों के चक्र में ही पड़े रहते हैं। हे नानक! भगवान के नाम के बिना वे नकटा अर्थात् तिरस्कृत होकर घूमते रहते हैं तथा बिल्कुल ही शोभा प्राप्त नहीं करते॥ १॥

मः ३ ॥ सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै ॥ २ ॥

महला ३॥ (शब्द को) सुनने एवं निर्देश देने से मनुष्य को इसका स्वाद नहीं आता, जब तक वह गुरुमुख बनकर शब्द में मग्न नहीं होता। गुरु की सेवा करने से भगवान का नाम जीव के मन में निवास कर लेता है और भ्रम एवं खौफ उसके भीतर से भाग जाते हैं। जीव जैसा गुरु को जानता है, वह भी वैसे ही हो जाता है और तब उसकी सुरति सत्य-नाम से लग जाती है। हे नानक ! नाम के फलस्वरूप ही जीव को कीर्ति प्राप्त होती है और आगे भगवान के दरबार में भी शोभायमान होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ गुरसिखां मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ हरि नामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरि नामु लै जावहि ॥ गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का वडभागी सिख गुण सांझ करावहि ॥ तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवहि ॥ ११ ॥

पउडी॥ गुरु के शिष्यों के मन में भगवान की प्रीति है और वे आकर गुरु की पूजा करते हैं। वे हरि-नाम का बडे प्रेम से व्यापार करते हैं और हरि-नाम का लाभ अर्जित करके चले जाते हैं। गुरु के शिष्यों के मुख हमेशा उज्ज्वल हैं और वे भगवान के दरबार में सत्कृत होते हैं। गुरु-सद्‌गुरु भगवान के नाम का अमूल्य भण्डार है और भाग्यशाली गुरु के शिष्य इस गुणों के भण्डार में उनके भागीदार बन जाते हैं। मैं गुरु के उन शिष्यों पर न्यौछावर हूँ, जो बैठते-उठते समय सदा हरि-नाम का ध्यान करते रहते हैं॥ ११॥

सलोक मः ३ ॥ नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे नानक ! भगवान का नाम एक अमूल्य भण्डार है, जिसकी उपलब्धि गुरु के माध्यम से ही होती है। स्वेच्छाचारी जीव अपने हृदय रूपी घर में मौजूद इस अनमोल वस्तु को नहीं जानते और ज्ञान से अन्धे भौंकते एवं रोते-चिल्लाते ही जीवन छोड़ देते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥ निरमल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥ नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥ २ ॥

महला ३॥ वह काया स्वर्ण की भाँति निर्मल है, जो सत्यस्वरूप परमात्मा के सत्य-नाम में मग्न हो गई है। गुरुमुख बनने से इस काया को निर्मल ज्योति वाले निरंजन प्रभु की प्राप्ति हो जाती है और इसका भ्रम एवं डर दूर हो जाते हैं। हे नानक ! गुरुमुख व्यक्ति हमेशा सुखी रहते हैं और रात-दिन भगवान के प्रेम में वैरागी बने रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ से गुरसिख धनु धंनु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कंनी ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ तिनि हंउमै दुबिधा भंनी ॥ बिनु हरि नावै को मितु नाही वीचारि डिठा हरि जंनी ॥ जिना गुरसिखां कउ हरि संतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मंनी ॥ जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वंनी ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ वे गुरु के शिष्य बड़े धन्य-धन्य हैं, जिन्होंने अपने कानों से ध्यानपूर्वक गुरु का उपदेश सुना है। गुरु-सद्‌गुरु ने उनके अन्तर में भगवान के नाम को दृढ़ किया है और उनकी दुविधा एवं अहंकार का नाश कर दिया है। भक्तों ने विचार करके यह देख लिया है कि हरि-नाम के सिवाय दूसरा कोई मित्र नहीं। जिन गुरु के शिष्यों पर भगवान परम संतुष्ट हैं, उन्होंने सतिगुरु की बात मानी है। जो गुरुमुख हरि-नाम का ध्यान-मनन करते हैं, वे उसके प्रेम रंग के चौगुणा रंग से रंगे जाते हैं॥ १२॥

सलोक मः ३ ॥ मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥ अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि ॥ नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ स्वेच्छाचारी पुरुष बड़ा कायर एवं बदशक्ल है और भगवान के नाम के बिना वह नकटा है अर्थात् उसका कोई सम्मान नहीं करता। ऐसा पुरुष दिन-रात दुनिया के धंधों में व्यस्त रहता है और स्वप्न में भी उसे सुख उपलब्ध नहीं होता। हे नानक! ऐसा पुरुष यदि गुरुमुख बन जाए तो ही उसे मुक्ति मिल सकती है, अन्यथा बन्धनों में फँसा हुआ वह दुख ही भोगता रहता है॥ १॥

मः ३ ॥ गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि ॥ अंतरि सांति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥

महला ३॥ गुरुमुख व्यक्ति भगवान के दरबार में सर्वदा सुन्दर लगते हैं और वे गुरु के शब्द का अभ्यास करते हैं। उनके अन्तर में सदा शांति एवं सुख बना रहता है और वे सच्चे परमेश्वर के द्वार पर बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं। हे नानक! जिन गुरुमुखों ने हरि-नाम पाया है, वे सहज स्वभाव ही सत्य में समा गए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ गुरमुखि जनकि हरि नामि लिव लाई ॥ गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥ बिनु गुर हरि नामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥ गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ गुरु के सान्निध्य में रहकर भक्त प्रहलाद ने हरि का जाप करके गति प्राप्त की थी। गुरु के माध्यम से ही जनक ने हरि के नाम में सुरति लगाई थी। गुरु के माध्यम से ही वसिष्ठ जी ने हरि का उपदेश सुनाया था। हे मेरे भाई! गुरु के बिना किसी को भी हरि का नाम प्राप्त नहीं हुआ। गुरुमुख व्यक्ति को ही हरि ने स्वयं अपनी भक्ति प्रदान की है॥ १३॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥ ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिस व्यक्ति की सतिगुरु पर श्रद्धा अथवा निष्ठा नहीं बनी और जो शब्द से प्रेम नहीं करता, उसे सुख की उपलब्धि नहीं होती, निरांदेह वह सौ बार दुनिया में आता (जन्म लेता) अथवा जाता (मरता) रहे। हे नानक! यदि गुरु के सान्निध्य में सच्चे परमेश्वर में सुरति लगाई जाए तो वह सहज स्वभाव ही प्राप्त हो जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥ सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥ कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥ अंतरि सांति मनि

सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ॥ नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे मन! ऐसे सतिगुरु की खोज कर लो, जिसकी सेवा करने से जन्म-मरण का दुःख दूर हो जाता है। गुरु को पाने से तब तुझे बिल्कुल भी दुविधा नहीं होगी और तेरा अहंकार शब्द के माध्यम से जल जाएगा। फिर झूठ की दीवार तेरे अन्तर से निकल जाएगी और तेरे मन में आकर सत्य का निवास हो जाएगा। सत्य की युक्ति अनुसार कर्म करने से तेरे अन्तर्मन के भीतर शांति एवं सुख हो जाएगा। हे नानक! पूर्ण तकदीर से सतिगुरु तभी मिलता है, जब परमात्मा अपनी इच्छा से कृपा-दृष्टि करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ ॥ तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ ॥ माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥ सो ऐसा हरि दीवानु वसिआ भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥ हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ जिस व्यक्ति के हृदय-घर में न्यायदाता श्रीहरि रहता हो, उसकी मुट्ठी में तो सारी दुनिया ही आ जाती है। उस व्यक्ति को किसी की भी अनुसेवा करने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि न्यायदाता श्रीहरि ही सारी दुनिया को लाकर उसके चरणों में झुका कर रख देता है। मनुष्यों के न्यायालय में से तो कोई भाग-दौड़कर निकल सकता है किन्तु श्रीहरि के न्यायालय में से कोई किधर जा सकता है? सो ऐसा श्रीहरि न्यायदाता बादशाह भक्तों के हृदय में निवास कर रहा है, जिसने शेष बचे-खुचे समस्त लोगों को भी लाकर भक्तों के समक्ष खड़ा कर दिया है। हरि-नाम की कीर्ति तकदीर से ही मिलती है और किसी विरले गुरुमुख ने ही उसका ध्यान किया है॥ १४॥

सलोकु मः ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥ दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जंमै आवै जाइ ॥ विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतिगुरु की सेवा के बिना जगत मुर्दा-लाश के बराबर बना हुआ है और अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा रहा है। मोह-माया में फँस कर जगत अत्यंत दुःख भोगता है और यह जन्मता एवं मरता रहता है। वह विष्टा में निवास करता है और बार-बार योनियों में घूमता रहता है। हे नानक! भगवान के नाम से विहीन लोगों को यम सख्त सज़ा देता है और अन्तिम क्षणों में लोग पश्चाताप में जलते हुए चले जाते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई ॥ सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई ॥ पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥ पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई ॥ तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ॥ निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥ अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥ नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥ २ ॥

महला ३॥ इस जगत में एक ही परमपुरुष (भगवान) है, शेष सारी दुनिया तो उसकी स्त्रियाँ हैं। वह सभी के हृदय में रमण करता है लेकिन फिर भी उनसे निर्लिप्त रहता है। वह अदृष्य है और उसे देखा नहीं जा सकता। इस विश्व में पूर्ण गुरु ने उसके दर्शन करा दिए हैं और शब्द के द्वारा उसका ज्ञान प्रदान कर दिया है। जो लोग परमपुरुष की आराधना करते हैं और गुरु-शब्द के माध्यम से अपना अहंकार जला देते हैं, वे स्वयं ही पूर्ण पुरुष बन जाते हैं। इस विश्व में उस ईश्वर का कोई भी शरीक नहीं है और न ही कोई उसका कंटक शत्रु है। उसका शासन सदैव अटल है और न वह योनियों में आता है और न ही जाता है अर्थात् वह अनश्वर है। उसके भक्त रात-दिन उसकी उपासना करते हैं और सच्चे हरि का गुणगान करते रहते हैं। उस सच्चे हरि की कीर्ति को देख कर नानक कृतार्थ हो गया है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिन कै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा ॥ हरि नामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मितु हमारा ॥ हरि नावै नालि गला हरि नावै नालि मसलति हरि नामु हमारी करदा नित सारा ॥ हरि नामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरि नामु परवारा ॥ जन नानक कंउ हरि नामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ जिनके अन्तर्मन में हमेशा हरि का नाम निवास करता है, हरि का नाम ही उनका रखवाला बन जाता है। हरि का नाम ही हमारा पिता है, हरि का नाम ही हमारी माता एवं हरि का नाम ही हमारा सखा एवं मित्र है। हरि के नाम से ही हमारी बातचीत है, हरि के नाम से हमारा सलाह-मशविरा है एवं हरि का नाम ही हमारी नित्य देख-रेख करता है। हरि का नाम हमारी अत्यंत प्यारी संगति है, हरि का नाम ही हमारा वंश है और हरि का नाम ही हमारा परिवार है। नानक को हरि-(रूप) गुरु ने हरि का नाम दिया है और हरि लोक-परलोक में सर्वदा ही हमें मोक्ष दिलवाता है॥ १५॥

सलोकु मः ३ ॥ जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥ अचिंतु हरि नामु तिन कै मनि वसिआ सचै सबदि कमाहि ॥ कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥ पारब्रहमु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिनकी सतिगुरु से भेंट हो जाती है, वे सर्वदा हरि का कीर्ति-गान करते रहते हैं। उनके मन में अचिंत हरि का नाम निवास कर लेता है और वे सच्चे-शब्द में समा जाते हैं। जिसके फलस्वरूप वे अपने वंश का उद्धार कर देते हैं और स्वयं मोक्ष पदवी को प्राप्त कर लेते हैं। जो श्रद्धालु गुरु के चरणों में आए हैं, परब्रह्म-परमेश्वर उन पर खुश हो गया है। नानक तो हरि का दास है और हरि अपनी कृपा करके उसकी लाज-प्रतिष्ठा बरकरार रखता है॥ १॥

मः ३ ॥ हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥ हंउमै वडा रोगु है मरि जंमै आवै जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ नानक गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ अहंकारवश मनुष्य के भीतर परेशानी ही बनी रहती है और इस असमंजस में वह अपना जीवन दुःखों में बिता देता है। अहंकार एक भयानक रोग है, जिसके परिणामस्वरूप वह मरता है, पुनः जन्म लेता है और दुनिया में आता जाता रहता है। विधाता ने जिनकी तकदीर में

लिखा होता है, उसे सद्गुरु-प्रभु मिल जाता है। हे नानक ! गुरु की अपार कृपा से उनका उद्धार हो जाता है और शब्द के माध्यम से वे अपने अहंकार को जला देते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा प्रभु अविगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता ॥ हरि नामु हम स्रेवह हरि नामु हम पूजह हरि नामे ही मनु राता ॥ हरि नामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरि नामो अंति छडाता ॥ हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धंनु गुरू का पिता माता ॥ हंउ सतिगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरि नामु मै जाता ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ हरि का नाम हमारा प्रभु है जो अविगत, अगोचर, अनश्वर, परमपुरुष, विधाता है। हम हरि के नाम की ही वन्दना करते हैं, हरि के नाम की ही पूजा करते हैं और हमारा मन हरि के नाम में ही मग्न रहता है। हरि के नाम जैसा कोई दूसरा नहीं सूझता, क्योंकि हरि का नाम ही अन्त में मोक्ष दिलवाता है। जिस परोपकारी गुरु ने हमें हरि का नाम दिया है, उस गुरु के माता-पिता धन्य-धन्य हैं। मैं अपने सतिगुरु को हमेशा नमन करता रहता हूँ, जिनके साथ भेंट करने से मुझे हरि के नाम का ज्ञान हुआ है॥ १६॥

सलोकु मः ३ ॥ गुरमुखि सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ॥ मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥ नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लंघे पारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जिस व्यक्ति ने गुरु के सान्निध्य में रहकर सेवा नहीं की, हरि के नाम से भी प्रेम नहीं लगाया और गुरु-शब्द का स्वाद भी नहीं प्राप्त किया, ऐसा अज्ञानी व्यक्ति बार-बार दुनिया में मरता एवं जन्मता रहता है। अन्धा मनमुख पुरुष यदि भगवान को कभी याद ही नहीं करता तो उसका इस दुनिया में आने का क्या अभिप्राय है ? हे नानक ! भगवान जिस पर अपनी करुणा-दृष्टि करता है, वह गुरु के सान्निध्य में रहकर भवसागर से पार हो जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥ सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥ मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥ २ ॥

महला ३॥ एक सतगुरु ही जाग्रत रहता है, परन्तु बाकी सारी दुनिया मोह एवं तृष्णा में निद्रा-मग्न है। जो लोग गुणों के भण्डार सत्य-नाम में मग्न हैं और सतगुरु की सेवा करते हैं, वे मोह-तृष्णा की ओर से जाग्रत रहते हैं। अन्धे मनमुख व्यक्ति भगवान को याद नहीं करते, जिसके कारण जन्म-मरण के चक्र में ही उनका विनाश हो जाता है। हे नानक ! जिनकी तकदीर में विधाता ने प्रारम्भ से ही लिखा हुआ है, उन्होंने ही गुरु के माध्यम से नाम का ध्यान किया है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ तिपति भई ॥ हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥ हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥ हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ हरि का नाम हमारा छत्तीस प्रकार का स्वादिष्ट भोजन है, जिसको खाने से हमें बड़ी तृप्ति हुई है। हरि का नाम हमारा पहनावा है, जिसे पहनने से हम दुबारा नग्न नहीं होंगे तथा अन्य

कुछ पहनने की हमारी चाहत दूर हो गई है। हरि का नाम ही हमारा वाणिज्य है, हरि का नाम ही व्यापार है और हरि के नाम का ही कारोबार सतिगुरु ने हमें दिया है। हरि-नाम का ही हमने लेखा लिख दिया है और यम की अगली सारी मुहताजी खत्म हो गई है। जिनकी तकदीर में विधाता ने शुरु से ही नाम लब्धि का ऐसा लेख लिखा है, ऐसे किसी विरले गुरुमुख ने ही हरि-नाम का ध्यान किया है॥ १७॥

सलोक मः ३ ॥ जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ करम कमाइ ॥ दूजै भाइ जेते करम करे दुखु लगै तनि धाइ ॥ गुर परसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ॥ सची बाणी करम करे अनदिनु नामु धिआइ ॥ नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यह दुनिया अज्ञानी एवं अन्धी है, जो द्वैतभाव में कर्म करती रहती है। यह द्वैतभाव में जितने भी कर्म करती है, उतने ही दुःख-कष्ट भागकर उसके तन को लग जाते हैं। यदि मनुष्य गुरु के शब्द का अभ्यास करे तो गुरु की कृपा से सुख उत्पन्न हो जाता है। वह सच्ची वाणी के द्वारा कर्म करे और रात-दिन नाम का ध्यान-मनन करता रहे। हे नानक ! मनुष्य उस तरफ ही लगता है, जिधर भगवान स्वयं उसे लगाता है और मनुष्य का उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं॥ १॥

मः ३ ॥ हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥ सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥ अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥ सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ इहु मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥ अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ नानक जिस नो नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥ २ ॥

महला ३॥ हमारे हृदय-घर में सर्वदा भगवान के नाम का खजाना विद्यमान है एवं भक्ति के भण्डार भरपूर हैं। सतगुरु जीवों को नाम की देन देने वाला दाता है और वह देने वाला सदा ही जीवित रहता है। गुरु के अपार शब्द द्वारा हम रात-दिन हरि का कीर्तन करते रहते हैं। हम सर्वदा गुरु के शब्द का उच्चारण करते रहते हैं, जो युग-युगान्तरों में नाम की देन बांटने वाला है। हमारा यह मन हमेशा सुखी रहता है और सहज ही नाम का व्यापार करता है। हमारे अन्तर्मन में गुरु का ज्ञान एवं हरि का नाम रत्न विद्यमान है, जो हमारी मुक्ति कराने वाला है। हे नानक ! भगवान जिस पर करुणा-दृष्टि करता है, वह इस देन को प्राप्त कर लेता है और वह उसके दरबार में सत्यवादी माना जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरि नामि सुणिऐ मनि अनदु भइआ ॥ धंनु धंनु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरि नामु लइआ ॥ तिसु गुरसिख कंउ हंउ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जो सतिगुरु के चरणों में जाकर लगा है। उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसने अपने मुखारबिंद से परमेश्वर के नाम का उच्चारण किया है। उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसके मन में हरि का नाम सुनकर आनंद पैदा हो गया है। उस गुरु के शिष्य को धन्य-धन्य कहना चाहिए, जिसने सतिगुरु की सेवा करके हरि के नाम को प्राप्त किया है। मैं हमेशा उस गुरु के शिष्य को नमन करता हूँ, जो गुरु की आज्ञा अनुसार चला है॥ १८॥

पउड़ी ॥ जिनि उपाए जीअ तिनि हरि राखिआ ॥ अम्रितु सचा नाउ भोजनु चाखिआ ॥ तिपति रहे आघाइ मिटी भभाखिआ ॥ सभ अंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ ॥ जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिआ ॥ २० ॥

पउड़ी॥ जिस परमात्मा ने जीव उत्पन्न किए हैं, वही उनकी रक्षा करता है। मैंने तो हरि के अमृत स्वरूप सत्य-नाम का ही भोजन चखा है। अब मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया हूँ तथा मेरी भोजन की अभिलाषा मिट गई है। सभी के हृदय में एक ईश्वर ही मौजूद है तथा इस तथ्य का किसी विरले को ही ज्ञान प्राप्त हुआ है। नानक प्रभु की शरण लेकर निहाल हो गया है॥ २०॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥ डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु ॥ इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार ॥ नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ परमात्मा ने जितना भी जगत-संसार बनाया है, जगत के सारे प्राणी सतिगुरु के दर्शन करते हैं। परन्तु गुरु के दर्शनों से प्राणी को तब तक मोक्ष नहीं मिलता, जब तक वह शब्द पर विचार नहीं करता, (जब तक) उसकी अहंकार की मैल दूर नहीं होती और न ही भगवान के नाम से प्रेम होता है। कुछ प्राणियों को तो भगवान क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है, जो दुविधा एवं विकार त्याग देते हैं। हे नानक ! कुछ लोग स्नेह, प्यार के कारण सतिगुरु के दर्शन करके अपने अहंत्व को मार कर सत्य से मिल जाते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ सतिगुरू न सेविओ मूरख अंध गवारि ॥ दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ॥ जिन कारणि गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार ॥ नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसणहार ॥ २ ॥

महला ३॥ मूर्ख, अन्धा एवं गंवार व्यक्ति सतगुरु की सेवा नहीं करता। द्वैतभाव के कारण वह बहुत दुःख भोगता है और दुःख में जलता हुआ बहुत चिल्लाता है। जिस दुनिया के मोह एवं पारिवारिक स्नेह के कारण वह गुरु को भुला देता है, वह भी अन्त में उस पर उपकार नहीं करते। हे नानक ! गुरु के उपदेश द्वारा ही सुख प्राप्त होता है और क्षमावान परमात्मा क्षमा कर देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ ॥ हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ ॥ हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ ॥ हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ ॥ उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! तू स्वयं ही सबका रचयिता है, यदि कोई दूसरा होता तो ही मैं उसका जिक्र करता। परमात्मा स्वयं ही बोलता है, स्वयं ही हम से बुलवाता है और वह स्वयं ही समुद्र एवं धरती में मौजूद है। परमेश्वर स्वयं ही नाश करता है और स्वयं ही मुक्ति प्रदान करता है। हे मन ! इसलिए परमेश्वर की शरण में पड़े रहना चाहिए। हे मेरे मन ! हमें तो परमेश्वर के सिवाय कोई मार अथवा जीवित नहीं कर सकता, इसलिए हमें निश्चिन्त एवं निडर होकर रहना चाहिए। उठते-बैठते एवं सोते वक्त सदा हरि-नाम का ध्यान करते रहना चाहिए। हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में ही परमेश्वर मिलता है॥ २१॥ १॥ शुद्ध॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, उसका नाम सदैव सत्य है, वह जगत का रचयिता है, सर्वशक्तिमान है, निर्भय है, उसका किसी से कोई वैर नहीं, वह मायातीत अमर है, जन्म-मरण के चक्र से परे है, स्वयंभू है, जो गुरु की बख्शिश से ही मिलता है।

सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥

सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह ॥ पुछहु जाइ सिआणिआ आगै मिलणु किनाह ॥ जिन साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥ १ ॥ भी सालाहिहु साचा सोइ ॥ जा की नदरि सदा सुखु ॥ रहाउ ॥ वडा करि सालाहणा है भी होसी सोइ ॥ सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ जो तिसु भावै सो थीऐ रंन कि रुंनै होइ ॥ २ ॥ धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ ॥ जो समानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ ॥ जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥ ३ ॥ नानक गुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥ जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥ अगै गए न मंनीअनि रि कढहु वेपीर ॥ ४ ॥ १ ॥

दुनिया में जो भी आया है, सभी के लिए मृत्यु अटल है और सभी ने अपनों से जुदा होना चाहे जाकर विद्वानों से इस बारे पूछ लो कि आगे जाकर प्राणियों का (प्रभु से) मिलाप होगा अथवा नहीं। जो मेरे मालिक को भुला देते हैं, उन लोगों को बड़ी वेदना होती है॥ १॥ इसलिए सदा ही उस परम-सत्य परमेश्वर की स्तुति करो, जिसकी कृपा-दृष्टि से सदा सुख मिलता है॥ रहाउ॥ उस परमेश्वर को महान् समझकर उसका स्तुतिगान करो चूंकि वह वर्तमान में भी स्थित और भविष्य में भी मौजूद रहेगा। हे परमेश्वर! एक तू ही सभी जीवों का दाता है और मनुष्य तिल मात्र भी कोई देन नहीं दे सकता। जो कुछ उस प्रभु को मंजूर है, वही होता है। औरतों तरह फूट फूट कर अश्रु बहाने से क्या उपलब्ध हो सकता है?॥ २॥ इस धरती में कितने ही ग करोड़ों दुर्ग निर्मित करके, (राज का) ढोल बजाकर कूच कर गए हैं। जो लोग अभिमान में कर आसमान में फूले हुए भी समाते नहीं थे, उनकी नाक में परमात्मा ने नुकेल डाल दी है र्थात् उनका अभिमान चूर-चूर कर दिया है। हे मन! यद्यपि तुझे यह बोध हो जाए कि संसार सारे विलास सूली चढ़ने के बराबर कष्टदायक हैं तो फिर तू क्यों विषय-विकारों को मीठा झते हुए ग्रहण करे॥ ३॥ गुरु नानक देव जी का कथन है कि ये जितने भी अवगुण हैं, उतनी मनुष्य की गर्दन में अवगुणों की जंजीरें पड़ी हुई हैं। यदि उसके पास गुण हों तो ही उसकी जीरों को काटा जा सकता है। इस तरह गुण ही हम सबके मित्र एवं भाई हैं। अवगुणों से भरे वे गुरु-विहीन आगे परलोक में जाकर स्वीकृत नहीं होते और उन्हें मार-मार कर वहाँ से काल दिया जाता है॥ ४॥ १॥

सोरठि महला १ घरु १ ॥ मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥ १ ॥ बाबा माइआ साथि न होइ ॥ इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥ हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥ सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥ वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥ २ ॥ सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥ खरचु बंनु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥ निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥ ३ ॥ लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥ बंनु बदीआ करि धावणी ता को आखै धंनु ॥ नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वंनु ॥ ४ ॥ २ ॥

अपने मन को कृषक, शुभ आचरण को कृषि, श्रम को जल एवं अपने तन को खेत बना। (प्रभु का) नाम तेरा बीज, संतोष भूमि समतल करने वाला सोहागा एवं नम्रता का पहनावा तेरी बाड़ हो। इस तरह प्रेम के कर्म करने से तेरा बीज अंकुरित हो जाएगा और तब तू ऐसे घर को भाग्यशाली होता देखेगा॥ १॥ हे बाबा! माया मनुष्य के साथ नहीं जाती। इस माया ने तो सारी दुनिया को ही मोहित कर लिया है लेकिन कोई विरला पुरुष ही इस तथ्य को समझता है॥ रहाउ॥ नित्य क्षीण होने वाली आयु को अपनी दुकान बना और उसमें सत्य-नाम को अपना सौदा बना। सुरति एवं चिंतन को अपना माल-गोदाम बना और उस माल-गोदाम में तू उस सत्य नाम को रख। प्रभु नाम के व्यापारियों से व्यापार कर और लाभ प्राप्त करके अपने मन में सुप्रसन्न हो ॥ २॥ शास्त्रों को सुनना तेरी सौदागिरी हो एवं सत्य नाम रूपी घोड़े माल बेचने के लिए ले चल। अपने गुणों को यात्रा का खर्च बना ले और अपने मन में आने वाली सुबह का ख्याल मत कर। जब तू निराकार प्रभु के देश में जाएगा तो तुझे उसके महल में सुख प्राप्त होगा॥ ३॥ चित्त लगाकर अपनी प्रभु-भक्ति रूपी नौकरी कर और मन में ही नाम-सिमरन का काम कर। बुराइयों की रोकथाम को अपना उद्यम बना तो ही लोग तुझे धन्य कहेंगे। हे नानक! तब ही प्रभु तुझे कृपा-दृष्टि से देखेगा और तुझ पर चौगुना रूप रंग चढ़ जाएगा॥ ४॥ २॥

सोरठि मः १ चउतुके ॥ माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई ॥ बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई ॥ हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥ नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥ १ ॥ मनु मानिआ नामु सखाई ॥ पाइ परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥ जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जन सिउ वादु रचाई ॥ माइआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई ॥ गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥ रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥ २ ॥ साध सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥ मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥ अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥ जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥ ३ ॥ नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥ कंनी सुणि सुणि सबदि सलाही अंम्रितु रिदै वसाई ॥ निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई ॥ नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ३ ॥

माता-पिता को अपना बेटा एवं ससुर को अपना चतुर दामाद बहुत प्रिय है। बाल कन्या को अपना पिता बहुत प्यारा है तथा भाई को अपना भाई अच्छा लगता है। लेकिन परमात्मा का हुक्म

होने पर (मृत्यु का निमंत्रण आने पर) प्राणी ने घर-बाहर हरेक को त्याग दिया और एक क्षण में ही सब कुछ पराया हो गया है। मनमुख मनुष्य ने भगवान के नाम का सिमरन नहीं किया, न ही दान-पुण्य किया है, न ही स्नान को महत्व दिया है, जिसके फलस्वरूप उसका शरीर धूल में ही फिरता रहता है अर्थात् नष्ट ही होता रहता है॥ १॥ मेरा मन भगवान के नाम को सहायक बनाकर सुखी हो गया है। मैं उस गुरु के चरण छूकर उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे सच्ची सूझ-सुमति दी है॥ रहाउ॥ मनमुख मनुष्य दुनिया के झूठे प्रेम से बंधा हुआ है और भक्तजनों के साथ वाद-विवाद में क्रियाशील रहता है। माया में मग्न हुआ वह दिन-रात्रि केवल माया का मार्ग ही देखता रहता है तथा भगवान का नाम नहीं लेता और माया रूपी विष खाकर ही प्राण त्याग देता है। वह अभद्र बातों में ही मस्त रहता है और हितकारी शब्द की ओर ध्यान नहीं लगाता। न ही वह भगवान के रंग में रंगा है, न ही वह नाम के रस से विंधा गया है। इस तरह मनमुख अपनी इज्जत गंवा देता है॥ २॥ साधुओं की सभा में वह सहजावस्था को नहीं चखता और उसकी जिह्वा में कण-मात्र भी मधुरता नहीं। वह मन, तन एवं धन को अपना मानकर जानता है लेकिन भगवान के दरबार का उसे कोई ज्ञान नहीं। हे भाई! ऐसा मनुष्य अपनी आँखें बन्द करके अज्ञानता के अन्धेरे में चल देता है और उसे अपना घर द्वार दिखाई नहीं देता। मृत्यु के द्वार पर उस बंधे हुए मनुष्य को कोई ठिकाना नहीं मिलता और वह अपने किए हुए कर्मों का फल भोगता है॥ ३॥ यद्यपि भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही मैं अपनी आँखों से उसके दर्शन कर सकता हूँ, जिसका कथन एवं वर्णन नहीं किया जा सकता। अपने कानों से मैं भगवान की महिमा सुन-सुनकर शब्द द्वारा उसकी स्तुति करता हूँ और उसका अमृत नाम मैंने अपने हृदय में बसाया है। निर्भीक, निराकार, निर्वैर प्रभु की पूर्ण ज्योति सारे जगत में समाई हुई है। हे नानक! गुरु के बिना मन का भ्रम दूर नहीं होता और सत्य-नाम से ही प्रशंसा प्राप्त होती है॥ ४॥ ३॥

सोरठि महला १ दुतुके ॥ पुड़ु धरती पुड़ु पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा ॥ सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥ १ ॥ मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सरब समाणा ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥ इकतु रूपि फिरहि परछंना कोइ न किस ही जेहा ॥ २ ॥ अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥ एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥ ३ ॥ तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥ प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे ईश्वर! यह जगत रूपी चौबारा तेरा निवास स्थान है। चारों दिशाएँ इस चौबारे की दीवारें हैं, इसका एक पाट धरती है और एक पाट पानी है। तेरे मुँह से उच्चरित हुआ शब्द ही एक टकसाल है, जिसमें सब भवनों के जीवों की मूर्तियाँ बनाई गई हैं॥ १॥ हे मेरे मालिक! तेरी लीलाएँ बड़ी अद्भुत हैं। तू समुद्र, धरती एवं गगन में भरपूर होकर स्वयं ही सब में समाया हुआ है॥ रहाउ॥ जहाँ-जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ तुम्हारी ही ज्योति विद्यमान है। तेरा रूप कैसा है? तेरा एक ही रूप कितना विलक्षण है और तू गुप्त तौर पर सबमें भ्रमण करता है। तेरी रचना में कोई भी जीव किसी एक जैसा नहीं॥ २॥ अण्डज, जेरज, उद्भिज और स्वदेज से पैदा हुए समस्त जीव तूने ही पैदा किए हैं। मैंने तेरी एक विचित्र लीला देखी है कि तू सब जीवों में व्यापक है॥ ३॥ हे भगवान! तेरे गुण अनन्त हैं परन्तु मैं तो तेरे एक गुण को भी नहीं जानता, मुझ मूर्ख को कुछ सद्बुद्धि दीजिए। नानक प्रार्थना करता है कि हे मेरे मालिक! सुनो, मुझ डूबते हुए पत्थर को बचा लीजिए॥ ४॥ ४॥

सोरठि महला १ ॥ हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥ अंम्रितु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥ १ ॥ करता तू मै माणु निमाणे ॥ माणु महतु नामु धनु पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥ २ ॥ तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥ ३ ॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जानिआ सोई ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मालिक ! मैं बड़ा पापी, पतित एवं परम पाखंडी हूँ, पर तू निर्मल और निराकार है। हे ठाकुर जी ! मैं तुम्हारी शरण में हूँ और नामामृत को चख कर मैं परम-रस में मग्न रहता हूँ॥ १॥ हे कर्त्ता प्रभु ! मुझ दीन-तुच्छ का तू ही मान-सम्मान है। जिनके दामन में भगवान का नाम रूपी धन है, उनका ही आदर सत्कार है और वे सच्चे शब्द में लीन रहते हैं॥ रहाउ॥ हे स्वामी ! तू परिपूर्ण है और हम अधूरे तथा अयोग्य हैं। तू गंभीर है और हम बड़े हल्के हैं। मेरा मन दिन-रात प्रभातकाल तुझ में ही मग्न रहता है। हे मन ! अपनी रसना से हरि का जाप करो॥ २॥ हे भगवान ! तुम सत्य हो और हम तुझ में मग्न हैं और तेरे शब्द के भेद को समझकर सत्यवादी बन गए हैं। जो लोग रात-दिन भगवान के नाम में मग्न रहते हैं, वे शुद्ध हैं लेकिन जो दुनिया में जन्मते-मरते रहते हैं, वे कच्चे हैं॥ ३॥ मुझे तो मेरे भगवान जैसा दूसरा कोई दिखाई नहीं देता, फिर मैं किसकी स्तुति करूँ ? क्योंकि कोई भी उसका शरीक नहीं। नानक विनती करते हैं कि मैं प्रभु के दासों का दास हूँ और गुरु की मति द्वारा मैंने सत्य को जान लिया है॥ ४॥ ५॥

सोरठि महला १ ॥ अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥ १ ॥ साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥ अकुल निरंजन अपर परंपरु सगली जोति तुमारी ॥ २ ॥ घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥ बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥ ३ ॥ जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥ सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥ ४ ॥ सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥ ५ ॥ ६ ॥

परमात्मा अलक्ष्य, अपार, अगम्य एवं अगोचर है, वह काल (मृत्यु) एवं प्रारब्ध से रहित है। उसकी कोई जाति नहीं, वह समस्त जातियों से दूर है, वह अयोनि एवं स्वयंभू है, उसे न कोई मोह-अभिलाषा है और न ही कोई भ्रम है॥ १॥ मैं उस सच्चे सत्यशील परमात्मा पर कुर्बान जाता हूँ, न उसका कोई रूप है, न कोई वर्ण है और न ही कोई आकार है, वह तो सच्चे-शब्द के माध्यम से ही मालूम होता है॥ रहाउ॥ न ही उसकी कोई माता है, न ही कोई पिता है, न ही कोई पुत्र है और न ही कोई बंधु है, न ही उसमें कोई कामवासना है और न ही उसकी कोई नारी है। हे परमात्मा ! तू अकुल, निरंजन एवं अपरम्पार है और तुम्हारी ज्योति सभी के भीतर मौजूद है॥ २॥ प्रत्येक शरीर में ब्रह्म छिपा हुआ है, सभी के हृदय में उसकी ही ज्योति मौजूद है। गुरु के उपदेश से वज्र कपाट भी खुल जाते हैं और निर्भय प्रभु में सुरति लग जाती है॥ ३॥ परमात्मा ने जीवों की रचना करके उनके सिर पर मृत्यु खड़ी कर दी है और समस्त जीवों की जीवन-युक्ति अपने वश में रखी हुई है। जो सतगुरु की सेवा करता है, उसे नाम-धन प्राप्त हो जाता है और शब्द की

साधना से उसकी मुक्ति हो जाती है॥ ४॥ काया रूपी शुद्ध वर्तन में ही सत्य समा सकता है तथा विरले इन्सान ही सदाचारी होते हैं। जीवात्मा को परमात्मा ने अपने साथ मिला लिया है, हे परमेश्वर! नानक तो तुम्हारी ही शरण में आया है॥ ५॥ ६॥

सोरठि महला १ ॥ जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥ तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥ १ ॥ मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥ अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥ २ ॥ जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥ तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥ ३ ॥ साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ ॥ सुख दुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥

जैसे मछली जल के बिना तड़पती मर जाती है, वैसे ही शाक्त इन्सान माया की तृष्णा से प्राण त्याग देता है। हे मन! यदि तेरा श्वास नाम-सिमरन के बिना व्यर्थ ही जाता है तो तुझे वैसे ही प्रभु के बिना मर जाना चाहिए॥ १॥ हे मन! राम-नाम का यशगान करो। लेकिन गुरु के बिना यह रस तुझे किस तरह मिल सकता है? क्योंकि गुरु के मिलने पर ही भगवान यह रस देता है॥ रहाउ॥ संतजनों की सभा में सम्मिलित होना गुरु के सान्निध्य में रहना ही तीर्थ-स्थान होता है। गुरु के दर्शन करने से ही अड़सठ तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है॥ २॥ जैसे ब्रह्मचर्य धारण किए बिना योगी नहीं बना जा सकता तथा सत्य एवं संतोष को धारण किए बिना तपस्या नहीं हो सकती, वैसे ही भगवान के नाम सिमरन बिना शरीर बेकार है। शरीर के भीतर अनेक दोष होने के कारण यम उसे कठोर दण्ड देता है॥ ३॥ शाक्त मनुष्य को प्रेम प्राप्त नहीं होता और सतगुरु के स्नेह से ही परमात्मा प्राप्त होता है। नानक का कथन है कि जिसे सुख एवं दुःख का दाता गुरु मिल जाता है, वह प्रभु की स्तुति में लीन रहता है॥ ४॥ ७॥

सोरठि महला १ ॥ तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥ मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥ १ ॥ घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ ॥ सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥ २ ॥ जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥ सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥ नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे प्रभु! तू दाता एवं दानशील है और बुद्धि से परिपूर्ण है, लेकिन हम तो तेरे भिखारी ही हैं। मैं तुझ से क्या माँगू? क्योंकि कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है अर्थात् प्रत्येक पदार्थ नश्वर है। इसलिए मुझे तो केवल अपना प्यारा हरि-नाम ही दीजिए॥ १॥ प्रभु तो प्रत्येक हृदय में विद्यमान है। वह समुद्र, धरती एवं गगन में गुप्त रूप से व्यापक है और गुरु के शब्द द्वारा उसके दर्शन करके कृतार्थ हुआ जा सकता है॥ रहाउ॥ गुरु-सतगुरु ने कृपा करके मृत्युलोक, पाताल लोक एवं आकाश में उसके दर्शन करवा दिए हैं। वह अयोनि ब्रह्म वर्तमान में भी है और भविष्य में भी विद्यमान रहेगा। इसलिए अपने हृदय में ही मुरारि प्रभु के दर्शन करो॥ २॥ बेचारी यह दुनिया तो जन्म मरण के चक्र में ही पड़ी हुई है, चूंकि इसने द्वैतभाव में फँसकर प्रभु-भक्ति को

ही भुला दिया है। जब सतगुरु मिल जाता है तो ही ज्ञान प्राप्त होता है। किन्तु शाक्त मनुष्य ने भक्ति के बिना अपनी जीवन की बाजी हार दी है॥ ३॥ सतिगुरु ने मेरे बन्धन तोड़कर मुझे मुक्त कर दिया है और अब मैं गर्भ-योनि में नहीं आऊँगा। हे नानक! अब मेरे हृदय में ज्ञान-रत्न का प्रकाश हो गया है और निराकार प्रभु ने मेरे मन में निवास कर लिया है॥ ४॥८॥

सोरठि महला १ ॥ जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंम्रितु गुर पाही जीउ ॥ छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥ १ ॥ मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥ २ ॥ अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ निरमल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥ ३ ॥ परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ ॥ जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥

जिस नामामृत रूपी निधि हेतु तुम इस दुनिया में आए हो, वह नामामृत गुरु के पास है। धार्मिक वेष का पाखण्ड एवं चतुराई को छोड़ दो, चूंकि दुविधा में ग्रस्त इन्सान को यह (अमृत) फल प्राप्त नहीं होता॥ १॥ हे मेरे मन! तू स्थिर रह और इधर-उधर मत भटक। बाहर तलाश करने से बहुत दुःख-कष्ट प्राप्त होते हैं। यह अमृत तो देहि रूपी घर में ही है॥ रहाउ॥ अवगुण छोड़कर गुणों की तरफ दौड़ो अर्थात् गुण संग्रह करो। यदि अवगुणों में ही सक्रिय रहे तो बहुत पछताना पड़ेगा। तुम भले एवं बुरे के अन्तर को नहीं समझते और बार-बार पापों के कीचड़ में डूबते रहते हो॥ २॥ यदि मन में लोभ की मैल तथा बहुत सारा झूठ है तो बाहर स्नान करने का क्या अभिप्राय है? गुरु के उपदेश द्वारा हमेशा ही निर्मल नाम का जाप करो, तभी तेरे अन्तर्मन का कल्याण होगा॥ ३॥ लोभ, निन्दा एवं झूठ को निकाल कर त्याग दो, गुरु के वचन द्वारा ही सच्चा फल मिल जाएगा। हे हरि! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो, नानक तो शब्द द्वारा तेरी ही स्तुति करता है॥ ४॥ ९॥

सोरठि महला १ पंचपदे ॥ अपना घरु मूसत राखि न साकहि की पर घरु जोहन लागा ॥ घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥ १ ॥ मन रे समझु कवन मति लागा ॥ नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥ आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥ २ ॥ हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो त्रिपतागा ॥ माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति लागा ॥ ३ ॥ मन का जीउ पवनपति देही देही महि देउ समागा ॥ जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु त्रिपतै हरि लिव लागा ॥ ४ ॥ साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥ ५ ॥ १०॥

अपने लुटते जा रहे घर की तो तुम रक्षा नहीं कर सकते, फिर पराए घर की तरफ बुरी नीयत से क्यों देख रहे हो? अपने घर, द्वार की रक्षा तुम तभी कर सकोगे, यदि तुम प्रभु के नाम-रस को चखोगे, नाम-रस भी वही सेवक चखता है जो गुरुमुख बनकर नाम में लीन हो जाता है॥ १॥ हे मन! तू स्वयं को समझा, किस खोटी बुद्धि में लग गए हो? भगवान के नाम को

भुलाकर पराए रसों में आकर्षित हो रहे हो। हे भाग्यहीन ! अन्त में तुम बहुत पछताओगे॥ रहाउ॥ जब धन आता है तो तू बड़ा खुश होता है लेकिन जब धन चला जाता है तो तू फूट-फूट कर रोने लगता है। यह दुःख तथा सुख तो साथ ही लगा रहता है। भगवान स्वयं ही मनुष्य से दुःख एवं सुख के भोग करवाता रहता है। लेकिन गुरुमुख व्यक्ति इससे विरक्त रहता है॥ २॥ हरि-रस से उत्तम कौन-सी वस्तु श्रेष्ठ कही जा सकती है। जो इस रस का पान करता है, वह तृप्त हो जाता है। जिस व्यक्ति ने माया में मुग्ध होकर यह रस गंवा दिया है, ऐसा शाक्त व्यक्ति दुर्मति में ही लग गया है॥ ३॥ परमात्मा शरीर के भीतर ही समाया हुआ है। वह मन का जीवन आधार है और शरीर के प्राणों का स्वामी है। हे हरि ! यद्यपि तू यह देन प्रदान करे तो ही मैं हरि रस की स्तुति कर सकता हूँ और मेरा मन भी तृप्त हो जाएगा तथा मेरी लगन तुझ में लग जाएगी॥ ४॥ संतों की सभा में ही हरि-रस प्राप्त होता है और गुरु को मिलने से मृत्यु का भय दूर हो जाता है। हे नानक ! गुरु के सान्निध्य में राम नाम का जाप करो, जिसके मस्तक पर भाग्य होता है, उसे परमात्मा मिल जाता है॥ ५॥ १०॥

सोरठि महला १ ॥ सरब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥ आपि अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥ १ ॥ मन रे राम जपहु सुखु होई ॥ अहिनिसि गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥ गुरमुखि एक द्रिसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥ २ ॥ चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होई जीउ ॥ देखि अद्रिसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥ ३ ॥ पीवहु अपिउ परम सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥ जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥ ४ ॥ ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥ अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥ ५ ॥ ११ ॥

समस्त जीवों के माथे पर कर्मों के अनुसार विधाता ने नसीब (लेख) लिखा हुआ है और कोई भी नसीब (लेख) के बिना नहीं है। परन्तु वह स्वयं लेख से रहित है, अपनी कुदरत की रचना करके वह उसे देखता रहता है और स्वयं ही अपने हुक्म का जीवों से पालन करवाता है॥ १॥ हे मेरे मन ! राम नाम का जाप करो तो ही तुझे सुख प्राप्त होगा। दिन-रात्रि गुरु के चरणों की सेवा करो तो ही तुझे ज्ञान होगा कि परमेश्वर ही दाता है और स्वयं ही भोगने वाला है॥ रहाउ॥ जो प्रभु अन्तर्मन में ही मौजूद है, उसके बाहर भी दर्शन करो, क्योंकि उसके अलावा दूसरा कोई भी नहीं। गुरु के उपदेश से सभी को एक दृष्टि से देखो, क्योंकि प्रत्येक हृदय में प्रभु की ही ज्योति समाई हुई है॥ २॥ अपने चंचल मन पर अंकुश लगाकर उसे अपने हृदय-घर में रखो। गुरु को मिलने से ही यह सद्बुद्धि प्राप्त होती है। अदृश्य प्रभु के दर्शन करके तू आश्चर्यचकित हो जाएगा और अपने दुःखों को भुलाकर तुझे सुख प्राप्त हो जाएगा॥ ३॥ नामामृत का पान करो, इसे पीने से परम सुख प्राप्त होगा और तुझे अपने आत्मस्वरूप में निवास प्राप्त हो जाएगा। जन्म-मरण का दुःख नाश करने वाले भगवान का गुणगान करने से तुझे बार-बार दुनिया में जन्म नहीं लेना पड़ेगा॥ ४॥ सृष्टि में परम तत्व, निरंजन प्रभु की ज्योति सबके भीतर समाई हुई है और वह परमात्मा ही सबकुछ है और उसमें कोई भी भेद नहीं। हे नानक ! अपरम्पार, परब्रह्म, परमेश्वर मुझे गुरु के रूप में मिल गया है॥ ५॥ ११॥

सोरठि महला १ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जा तिसु भावा तद ही गावा ॥ ता गावे का फलु पावा ॥ गावे का फलु होई ॥ जा आपे देवै सोई ॥ १ ॥ मन मेरे गुर बचनी निधि पाई ॥ ता ते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥ गुर साखी अंतरि जागी ॥ ता चंचल मति तिआगी ॥ गुर साखी का उजीआरा ॥ ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥ २ ॥ गुर चरनी मनु लागा ॥ ता जम का मारगु भागा ॥ भै विचि निरभउ पाइआ ॥ ता सहजे कै घरि आइआ ॥ ३ ॥ भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥ इसु जग महि करणी सारी ॥ करणी कीरति होई ॥ जा आपे मिलिआ सोई ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥

जब मैं उस भगवान को भला लगता हूँ तो ही उसका स्तुतिगान करता हूँ। इस तरह मैं स्तुतिगान करने का फल प्राप्त करता हूँ। लेकिन उसका स्तुतिगान करने का फल भी तब ही मिलता है, जब वह स्वयं देता है॥ १॥ हे मेरे मन! गुरु के उपदेश से नाम की निधि पा ली है, इसलिए अब मैं सत्य में समाया रहता हूँ॥ रहाउ॥ जब गुरु की शिक्षा मेरी अन्तरात्मा में जागी तो मैंने अपनी चंचल बुद्धि को त्याग दिया। गुरु की शिक्षा का उजाला होने से सारा अज्ञानता का अन्धेरा मिट गया है॥ २॥ जब मेरा मन गुरु के चरणों में लग गया तो मृत्यु का मार्ग मुझ से दूर हो गया है। प्रभु-भय में निर्भय (प्रभु) को पा लिया तो सहज आनन्द के घर में आ गया॥३॥ नानक का कथन है कि कोई विरला विचारवान ही जानता है कि इस दुनिया में सर्वश्रेष्ठ कर्म प्रभु की स्तुति करनी है। जब वह प्रभु स्वयं ही मुझे मिल गया तो उसकी महिमा-स्तुति मेरा नित्य कर्म हो गया॥ ४॥ १॥ १२॥

सोरठि महला ३ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइआ ॥ गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥ एको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी ॥ गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उर धारी ॥ २ ॥ इहु मनूआ दह दिसि धावदा दूजै भाइ खुआइआ ॥ मनमुख मुगधु हरि नामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि जन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि वीचारी ॥ आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उर धारी ॥ नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥ ४ ॥ १ ॥

हे ठाकुर जी! जिन्हें शब्द का स्वाद आया है, वे सारे सेवक तेरी ही सेवा करते हैं। गुरु की कृपा से वह मनुष्य निर्मल हो गया है, जिसने अपने अन्तर से अहंकार को मिटा दिया है। वह रात-दिन नित्य ही सच्चे परमेश्वर का गुणानुवाद करता है और गुरु के शब्द से सुन्दर बन गया है॥ १॥ हे मेरे ठाकुर! हम बालक तुम्हारी शरण में हैं। एक तू ही परम-सत्य है और केवल स्वयं ही सब कुछ है॥ रहाउ॥ जो मोह-माया से जाग्रत रहे हैं, उन्होंने प्रभु को पा लिया है और शब्द के माध्यम से अपने अहंकार को मार दिया है। हरि का सेवक गृहस्थ जीवन में ही सर्वदा निर्लिप्त रहता है और ज्ञान-तत्व पर चिंतन करता है। सतिगुरु की सेवा करके वह सदा सुख प्राप्त करता है और परमेश्वर को अपने हृदय में लगाकर रखता है॥ २॥ यह (चंचल) मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है और इसे द्वैतभाव ने नष्ट कर दिया है। मनमुख विमूढ़ व्यक्ति परमात्मा के नाम को स्मरण नहीं करता और अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है। लेकिन यदि उसकी सतिगुरु से

भेंट हो जाए तो वह नाम प्राप्त कर लेता है, जिससे उसका अहंकार एवं मोह दूर हो जाते हैं॥ ३॥ हरि के सेवक सत्यशील हैं, वे सत्य की साधना करते हैं और गुरु के शब्द पर चिंतन करते हैं। सच्चा प्रभु उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है और वे सत्य को अपने हृदय से लगाकर रखते हैं। हे नानक! नाम के माध्यम से हमें गति एवं ज्ञान मिला है और यही हमारी पूँजी है॥ ४॥ १॥

सोरठि महला ३ ॥ भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ ॥ अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइ ॥ नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुर सबदी हरि पाइआ जाइ ॥ बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥ इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥ अम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥ २ ॥ हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥ सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥ ३ ॥ सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥ ४ ॥ २ ॥

परमात्मा ने अपनी भक्ति का खजाना भक्तों को दिया है और हरि का नाम ही उनका सच्चा धन है। यह अक्षय नाम-धन कदापि खत्म नहीं होता और न ही इसका मूल्यांकन किया जा सकता है। हरि के नाम-धन से भक्तजनों के मुख उज्ज्वल हो गए हैं और उन्हें सत्यस्वरूप हरि मिल गया है॥ १॥ हे मेरे मन! गुरु के शब्द द्वारा ही श्रीहरि पाया जाता है। यह दुनिया शब्द के बिना दुविधा में पड़कर भटकती ही रहती है और हरि के दरबार में कठोर दण्ड प्राप्त करती है॥ रहाउ॥ इस शरीर के अन्दर पाँच चोर-कामवासना, क्रोध, लालच, मोह एवं अहंकार निवास करते हैं। वे नाम रूपी अमृत को लूटते रहते हैं। लेकिन मनमुख व्यक्ति इस तथ्य को नहीं समझते और कोई भी उनकी फरियाद नहीं सुनता। यह दुनिया अन्धी अर्थात् ज्ञानहीन है और इसके व्यवहार भी अन्धे हैं और गुरु के बिना घोर अन्धेरा है॥ २॥ अहंकार में मैं-मेरा करते हुए प्राणी पीड़ित होते रहते हैं किन्तु जब मृत्यु का समय आता है तो कुछ भी उनके साथ नहीं जाता। जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है वह नाम का ही ध्यान करता है और सदैव हरि-नाम की ही आराधना करता रहता है। वह सच्ची वाणी के द्वारा हरि का गुणगान करता है और करुणा के घर परमात्मा की करुणा-दृष्टि से कृतार्थ हो जाता है॥ ३॥ सतगुरु का दिया हुआ ज्ञान हमेशा ही उसके हृदय को रोशन करता है और परमात्मा का हुक्म बादशाहों के सिर पर भी है। भक्त रात-दिन प्रभु की भक्ति करते रहते हैं और राम-नाम रूपी सच्चा लाभ प्राप्त करते हैं। हे नानक! राम-नाम के फलस्वरूप ही मनुष्य की मुक्ति हो जाती है और शब्द में मग्न होने से हरि मिल जाता है॥ ४॥ २॥

सोरठि मः ३ ॥ दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥ भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥ आपणिआ दासा नो क्रिपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥ मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा ॥ साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥ २ ॥ महा गंभीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ

॥ पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥ मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ ३ ॥ हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए गुर वीचारा ॥ हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा ॥ ४ ॥ ३ ॥

यदि मनुष्य दासों का दास बन जाए तो उसे परमात्मा मिल जाता है और वह अपने मन से आत्माभिमान को गंवा देता है। भक्तों का मुख्य कार्य तो आनंद रूप श्रीहरि ही है। इसलिए वे रात-दिन हरि का ही गुणगान करते रहते हैं। शब्द के साथ मग्न हुए वे हमेशा एक ही रंग में लीन रहते हैं और हरि में समाए रहते हैं॥ १॥ हे श्रीहरि ! तुम्हारी कृपा-दृष्टि सच्ची है। हे प्यारे ! अपने सेवकों पर कृपा करो और हमारी लाज-प्रतिष्ठा भी बरकरार रखो॥ रहाउ॥ शब्द द्वारा स्तुतिगान करने से मैं सदैव जीवित रहता हूँ और गुरु के उपदेश द्वारा मेरा भय दूर हो गया है। मेरा सच्चा प्रभु अत्यंत सुन्दर है और गुरु की सेवा करने से मेरा चित्त उसमें लग गया है। जो व्यक्ति सच्चे शब्द एवं परम सच्ची वाणी का बोध करता है, वह दिन-रात चेतन रहता है॥ २॥ भगवान महा गंभीर और सर्वदा सुखों का दाता है और उसका कोई भी जीव अन्त नहीं पा सकता। जिसने पूर्ण गुरु की सेवा की है, उसने चिन्ता से रहित हरि को अपने मन में बसा लिया है। उसका मन, तन निर्मल हो गया है और अन्तर्मन सदा सुखी रहता है और मन से सन्देह भी दूर हो गया है॥ ३॥ भगवान (की उपलब्धि) का मार्ग सर्वदा ही एक विषम पथ है और कोई विरला पुरुष ही गुरु के विचार द्वारा चिंतन करते हुए इसे प्राप्त करता है। हरि के प्रेम-रंग में लीन एवं शब्द में मस्त हुआ व्यक्ति अपने अहंकार एवं विकारों को त्याग देता है। नानक तो प्रभु के नाम-रंग में रंगकर एक रंग हो गया है और ब्रह्म-शब्द उसे संवारने वाला है॥ ४॥ ३॥

सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥ इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥ १ ॥ हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥ हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सद ही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥ सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥ २ ॥ सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ॥ हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जंमहि वारो वारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥ ३ ॥ आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥ नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे हरि ! जब तक मेरे शरीर में जीवन सांसें हैं, तब तक मैं सर्वदा तेरी ही महिमा-स्तुति करता रहूँ। हे मेरे स्वामी ! यदि मैं तुझे एक पल एवं क्षण भर के लिए विस्मृत कर दूँ तो मैं इसे पचास वर्ष के बराबर समझता हूँ। हे भाई ! हम तो हमेशा से ही विमूढ़ एवं बुद्धिहीन थे लेकिन गुरु के शब्द से हमें ज्ञान का प्रकाश मिल गया है॥ १॥ हे हरि ! तुम स्वयं ही हम जीवों को सुबुद्धि प्रदान करते हो। इसलिए मैं तुझ पर हमेशा ही कुर्बान जाता हूँ और तेरे नाम पर न्यौछावर होता हूँ॥ रहाउ॥ हे भाई ! हम गुरु-शब्द द्वारा ही मोह-माया के प्रति मरे हैं और शब्द द्वारा ही मरकर पुनःजीवित हुए हैं और शब्द के द्वारा ही मुक्ति प्राप्त हुई है। शब्द से ही मन एवं तन निर्मल हुआ और हरि आकर मन में निवास कर गया है। शब्द रूपी गुरु ही दाता है, जिससे मेरा मन लीन हो गया है और मैं प्रभु में समाया रहता हूँ॥ २॥ जो शब्द के रहस्य को नहीं जानते, वे अन्धे एवं

बहते हैं, फिर वे दुनिया में किसलिए आए हैं? उन्होंने हरि रस को प्राप्त नहीं किया एवं यूं ही अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है और फिर बार-बार जन्मते रहते हैं। ऐसे मूर्ख एवं अज्ञानी मनमुख व्यक्ति विष्टा के ही कीड़े हैं और विष्टा में ही गल-सड़ जाते हैं॥ ३॥ हे भाई! ईश्वर स्वयं ही जीवों को पैदा करके उनका पालन-पोषण करता है और सन्मार्ग लगाता है। उसके अलावा दूसरा कोई रचयिता नहीं। हे भाई! जो जीवों की किस्मत में आरंभ से ही लिखा हुआ है, उसे कोई भी मिटा नहीं सकता, जो सृजनहार करता है, वही होता है। नानक का कथन है कि हे भाई! मन के भीतर प्रभु का नाम निवास कर गया है और उसके सिवाय कोई दूसरा है ही नहीं॥ ४॥ ४॥

सोरठि महला ३ ॥ गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥ भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥ तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥ १ ॥ मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥ अंत कालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ दुसट चउकड़ी सदा कूड़ु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥ निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥ प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥ २ ॥ आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥ साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥ राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥ ३ ॥ सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥ सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ नानक दासु कहै बेनंती हउ लागा तिन कै पाए ॥ ४ ॥ ५ ॥

गुरुमुख पुरुष ही भक्ति करते हैं और प्रभु को बहुत अच्छे लगते हैं। वे रात-दिन प्रभु के नाम का ही बखान करते हैं। हे प्रभु! तू स्वयं ही अपने भक्तों की देखरेख करता है, जो तेरे मन को बहुत भले लगते हैं। तू ही गुणों का दाता है और गुरु-शब्द द्वारा तेरी पहचान होती है और तेरा गुणानुवाद करते हुए तेरे भक्त तुझ में ही विलीन हो जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! सदा ही परमात्मा का सिमरन करते रहो, अन्तकाल में वही तेरा मित्र होगा और सर्वदा ही तेरा साथ निभाएगा॥ रहाउ॥ दुष्टों की मण्डली सर्वदा मिथ्याचरण ही करती रहती है और न कुछ ज्ञान प्राप्त करती है और न ही चिंतन करती है। दुष्टता एवं निन्दा से कब किसे फल प्राप्त हुआ है? चूंकि दुष्ट हिरण्यकश्यिपु नाखुनों से ही चीर दिया गया था। भक्त प्रहलाद हमेशा ही हरि का गुणगान करता रहता था और उसकी श्रीहरि ने रक्षा की थी॥ २॥ मनमुख व्यक्ति स्वयं को बहुत ही भला समझते हैं परन्तु उनके अन्दर बिल्कुल ही सुमति नहीं होती। वे तो साधु-संतों की निन्दा में ही प्रवृत्त रहते हैं और अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। वे राम का नाम कभी याद नहीं करते और अन्त में पछताते हुए दुनिया से विदा हो जाते हैं॥ ३॥ प्रभु ने अपने भक्तों का जन्म सफल कर दिया है और स्वयं ही उन्हें गुरु की सेवा में लगाया है। शब्द में मग्न एवं परम-आनंद में मस्त हुए भक्त रात-दिन हरि का गुणगान करते रहते हैं। दास नानक प्रार्थना करता है मैं तो उन भक्तों के ही चरण छूता हूँ॥ ४॥ ५॥

सोरठि महला ३ ॥ सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥ आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥ बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥ १ ॥ हरि के दास सुहेले भाई ॥ जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ इहु कुटंबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥ बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥ २ ॥ हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई

कोइ न किस ही केरा ॥ गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ वसेरा ॥ ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥ ३ ॥ सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥ एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! वही सच्चा सिक्ख मेरा मित्र एवं संबंधी है, जो गुरु की रज़ा में आचरण करता है। जो अपनी इच्छानुसार आचरण करता है, वह भगवान से बिछुड़ कर चोटें खाता रहता है। हे भाई ! सतगुरु के बिना उसे कदापि सुख नहीं मिलता और वह बार-बार पश्चाताप में जलता रहता है॥ १॥ हे भाई ! भगवान के भक्त हमेशा सुखी एवं प्रसन्न हैं। वह उनके जन्म-जन्मान्तरों के पाप एवं कष्ट मिटा देता है और उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ रहाउ॥ हे भाई ! यह सभी कुटुंब इत्यादि तो जीव हेतु बन्धन ही हैं और सारी दुनिया भ्रम में ही भटक रही है। गुरु के बिना बन्धन नष्ट नहीं होते और गुरु के माध्यम से मोक्ष का द्वार मिल जाता है। जो प्राणी सांसारिक कर्म करता है और गुरु के शब्द की पहचान नहीं करता, वह बार-बार दुनिया में मरता और जन्मता ही रहता है॥ २॥ हे भाई ! यह दुनिया तो अहंत्व एवं आत्माभिमान में ही उलझी हुई है परन्तु कोई भी किसी का सखा नहीं। गुरुमुख पुरुष सत्य के महल को प्राप्त कर लेते हैं, सत्य का ही गुणगान करते हैं और अपने आत्मस्वरूप (भगवान के चरणों) में बसेरा प्राप्त कर लेते हैं। जो व्यक्ति इहलोक में स्वयं को समझ जाता है, वह अपने आत्मस्वरूप को पहचान लेता है और हरि-प्रभु उसका बन जाता है॥ ३॥ हे भाई ! सतिगुरु तो हमेशा ही दयालु है परन्तु तकदीर के बिना प्राणी क्या प्राप्त कर सकता है ? सतिगुरु सभी पर एक समान कृपा-दृष्टि से ही देखता है परन्तु जैसी प्राणी की प्रेम-भावना होती है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। हे नानक ! यदि अन्तर्मन में से आत्माभिमान को दूर कर दिया जाए तो मन के अन्दर प्रभु-नाम का निवास हो जाता है॥ ४॥ ६॥

सोरठि महला ३ चौतुके ॥ सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥ बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी ॥ मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥ १ ॥ भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥ आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा ॥ हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥ सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥ जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ॥ हरि रसु चाखि सदा मनु तिपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ ॥ कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाइआ ॥ तनु मनु निरमलु निरमल बाणी सचे सचि समाइआ ॥ ३ ॥ राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥ गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

सतगुरु के माध्यम से ही सच्ची भक्ति होती है एवं हृदय में सच्ची वाणी का निवास हो जाता है। गुरु की सेवा करने से सदा सुख की उपलब्धि होती है और गुरु-शब्द के माध्यम से अहंकार मिट जाता है। गुरु के बिना सच्ची भक्ति नहीं हो सकती और गुरु के बिना नादान दुनिया दुविधा में फँसकर भटकती ही रहती है। मनमुख व्यक्ति भटकते ही रहते हैं, वे हमेशा दुःखी ही रहते हैं

और जल के बिना ही डूबकर मर जाते हैं॥ १॥ हे भाई ! हमेशा भगवान की शरण में रहो, वह अपनी कृपा-दृष्टि करके जीवों की हमेशा ही लाज-प्रतिष्ठा बचाता रहता है और अपने हरि-नाम की जीवों को कीर्ति प्रदान करता है॥ रहाउ॥ पूर्ण गुरु के माध्यम से मनुष्य सच्चे शब्द का चिंतन करने से अपने आत्माभिमान को समझ लेता है। वह काम, क्रोध एवं अहंकार को छोड़ देता है और जगत का जीवनदाता हरि हमेशा ही उसके हृदय में आकर निवास कर लेता है। अपरंपार नाम हृदय में निवास करने से प्रभु हमेशा उसे प्रत्यक्ष एवं समस्त स्थानों पर व्यापक दृष्टिमान होता है। युग-युगान्तरों में अनहद शब्द द्वारा ही प्रभु वाणी की पहचान हुई है और मन को नाम मधुर एवं प्यारा लगता है॥ २॥ सतगुरु की सेवा करके जिस व्यक्ति ने नाम की पहचान कर ली है, इस दुनिया में उसका आगमन एवं जन्म सफल हो गया है। हरि-रस को चखकर उसका मन हमेशा के लिए तृप्त हो गया है और वह गुणों के भण्डार प्रभु का गुणगान करते हुए संतुष्ट हुआ रहता है। उसका हृदय-कमल प्रफुल्लित हो गया है और प्रभु के प्रेम-रंग में वह सदैव मग्न रहता है और उसके भीतर अनहद शब्द गूंजता रहता है। उसका तन-मन निर्मल हो गया है और वाणी भी निर्मल हो गई है और वह सत्यशील बनकर परम-सत्य में विलीन हो गया है॥ ३॥ राम-नाम की महानता को कोई भी नहीं जानता और गुरु के उपदेश द्वारा ही यह हृदय में समाता है। जो व्यक्ति गुरुमुख होता है, वह मार्ग की पहचान कर लेता है और हरि-रस में ही उसकी रसना रसमग्न रहती है। जप, तप एवं संयम सभी गुरु से ही प्राप्त होते हैं और गुरु द्वारा ही हृदय में नाम का निवास होता है। हे नानक ! जो व्यक्ति नाम-सिमरन करते हैं, वे सुन्दर दिखाई देते हैं और सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥ ४॥ ७॥

सोरठि मः ३ दुतुके ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥ सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ ॥ मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ ॥ तुह कुटहि मनमुख करम करहि भाई पलै किछू न पाइ ॥ २ ॥ गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि ॥ सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥ ३ ॥ आइआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ॥ नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे भाई ! सतिगुरु से भेंट करके मेरी बुद्धि मोह-माया की तरफ से उलट गई है, यदि कोई जीवित ही विषय-विकारों की ओर से मृत रहता है तो उसे आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान मिल जाता है। हे भाई ! वही गुरु है और वही सिक्ख है, जिसकी ज्योति को परमात्मा अपनी परम ज्योति से मिला लेता है॥ १॥ हे मेरे मन ! परमात्मा के साथ सुरति लगाओ। हे भाई ! भजन करने से हरि जिसके मन को मीठा लगता है वह गुरुमुख व्यक्ति हरि के चरणों में स्थान प्राप्त कर लेता है॥ रहाउ॥ हे भाई ! गुरु के विना प्रभु-प्रीति उत्पन्न नहीं होती और मनमुख व्यक्ति द्वैतभाव में ही फँसे रहते हैं। मनमुख व्यक्ति जो भी कर्म करता है, वह छिलका कूटने के सादृश्य निरर्थक है, इससे उन्हें कुछ भी हासिल नहीं होता॥ २॥ हे भाई ! गुरु से भेंट करके नाम हृदय में प्रविष्ट हो गया है और प्रभु से सच्ची प्रीति एवं प्रेम हो गया है। हे भाई ! गुरु के अपार प्रेम से ही मनुष्य हरि का गुणगान करता रहता है॥ ३॥ हे भाई ! जिसने गुरु की सेवा में चित्त लगाया है, उसका दुनिया में आगमन परवान है। नानक का कथन है कि हे भाई ! गुरु के शब्द द्वारा प्राणी प्रभु के नाम को प्राप्त कर लेता है और उसमें विलीन हो जाता है॥ ४॥ ८॥

सोरठि महला ३ घरु १ ॥ तिही गुणी त्रिभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥ राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ १ ॥ मन रे तै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥ हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥ नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥ अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥ जग महि लाहा हरि नामु है भाई हिरदै रखिआ उर धारि ॥ ३ ॥ गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ॥ नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! पृथ्वी, पाताल एवं आकाश-इन तीनों लोक वाला जगत त्रिगुणों– रजोगुण, तमोगुण एवं सतोगुण में पूर्णतया लीन है और गुरुमुख व्यक्ति ही इस भेद को समझ सकता है। हे भाई ! राम के नाम में लीन होने से ही मुक्ति प्राप्त होती है, चाहे इस संदर्भ में जाकर ज्ञानी महापुरुषों से पूछ लो॥ १॥ हे मेरे मन ! तू त्रिगुणों (रज, तम एवं सत्व) को छोड़ दे और अपने चित्त को चौथे पद (परम पद) में लगा। हे भाई ! हरि ने तेरे मन में ही निवास किया हुआ है, इसलिए सर्वदा हरि का गुणगान करता रह॥ रहाउ॥ हे भाई ! नाम से ही सभी जीव उत्पन्न हुए हैं और नाम को विस्मृत करके वे मर जाते हैं। हे भाई ! यह अज्ञानी दुनिया तो माया-मोह में अन्धी है तथा माया-मोह में निद्रामग्न लोग माया के हाथों लूटे जा रहे हैं॥ २॥ हे भाई ! गुरुमुख व्यक्ति ही जाग्रत रहते हैं और उनका कल्याण हो जाता है तथा वे भयानक संसार-सागर से पार हो जाते हैं। हे भाई ! इस दुनिया में हरि का नाम ही फलप्रद है, इसलिए हमें हरि का नाम ही हृदय में रखना चाहिए॥ ३॥ हे भाई ! गुरु की शरण में आने एवं राम नाम में सुरति लगाने से उद्धार हो जाता है। नानक का कथन है कि हे भाई ! नाम ही जहाज है और नाम ही बेड़ा है, जिस पर सवार होकर प्रभु के भक्तजन संसार-सागर से पार हो जाते हैं॥ ४॥ ६॥

सोरठि महला ३ घरु १ ॥ सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होर थै सुखु नाही ॥ हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥ १ ॥ प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥ सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण धातु बहु करम कमावहि हरि रस सादु न आइआ ॥ संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिस नो आपि मिलाए ॥ हरि रसु पी जन सदा त्रिपतासे विचहु आपु गवाए ॥ ३ ॥ इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥ नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥ ४ ॥ १० ॥

सतगुरु ही सुखों का सागर है, इस दुनिया में दूसरा कोई सुखों का स्थान नहीं है। सारी दुनिया अहंकार के कारण दुखों एवं रोगों से ग्रस्त है, जिसके कारण लोग जन्मते-मरते और फूट-फूट कर रोते हैं॥ १॥ हे प्राणी ! सतिगुरु की निष्काम सेवा करने से सुख उपलब्ध होता है। यदि तू सतगुरु की सेवा करेगा तो ही तुझे सुख मिलेगा, अन्यथा तू अपना अमूल्य जन्म गंवा कर दुनिया से विदा हो जाएगा॥ रहाउ॥ मनुष्य त्रिगुणी माया (रज, तम, सत) के प्रभाव अधीन भाग-दौड़ करता हुआ अनेक कर्म करता है, लेकिन हरि-रस का स्वाद प्राप्त नहीं करता। वह संध्या-पाठ, तर्पण (पितरों को जल) एवं गायत्री मंत्र का पाठ करता है परन्तु ज्ञान के बिना वह दुःख ही भोगता है॥ २॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की सेवा करता है, वह बड़ा भाग्यशाली है लेकिन सतिगुरु से वही मिलता है, जिसे भगवान स्वयं मिलाता है। हरि-रस को पीकर भक्तजन हमेशा तृप्त रहते हैं और अपने अन्तर्मन से अपना

आत्माभिमान दूर कर देते हैं॥ ३॥ यह दुनिया तो अन्धी है, सब लोग अज्ञानता के कर्म ही करते हैं। गुरु बिना उन्हें सन्मार्ग नहीं मिलता। हे नानक! यदि सतगुरु से भेंट हो जाए तो मनुष्य ज्ञान-चक्षुओं से देखने लगता है और सत्य को अपने हृदय-घर में ही प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ १०॥

सोरठि महला ३ ॥ बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारि भरमाई ॥ हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु तुम पिआरे ॥ सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरि नामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥ मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा ॥ हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा ॥ २ ॥ सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ अंम्रितु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥ ३ ॥ दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥ नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ॥ ४ ॥ ११ ॥

गुरु की सेवा किए बिना मनुष्य अत्यन्त दुःखों में ही घिरा रहता है और चहुं युगों में भटकता फिरता है। हे भगवान्! हम बड़े दीन हैं और तुम तो युगों-युगान्तरों में दाता हो, कृपा करके हमें शब्द का ज्ञान प्रदान करो॥ १॥ हे प्रिय प्रभु! हम पर तुम कृपा करो। हमें सतगुरु दाता से मिला दो और हरि-नाम का सहारा प्रदान करो॥ रहाउ॥ मैंने अपनी अभिलाषा एवं दुविधा को मिटाकर तथा सहज अवस्था में लीन होकर अनन्त नाम को प्राप्त कर लिया है। पापों का नाश करने वाला हरि रस चख कर मेरा मन निर्मल हो गया है॥ २॥ गुरु के शब्द में मग्न होकर अहम् को मारोगे तो फिर हमेशा ही जीवित रहोगे और फिर दुबारा मृत्यु नहीं होगी। हरिनामामृत सर्वदा ही मन को मीठा लगता है लेकिन गुरु के शब्द द्वारा कोई विरला ही इसे प्राप्त करता है॥ ३॥ उस महान् दाता ने समस्त बख्शिशें अपने हाथ में रखी हुई हैं, वह जिसे चाहता है उसे देता रहता है। हे नानक! हरि-नाम में मग्न होकर जिन्होंने सुख प्राप्त किया है, भगवान के दरबार में वे सत्यवादी लगते हैं॥ ४॥ ११॥

सोरठि महला ३ ॥ सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाए ॥ हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाए ॥ १ ॥ बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥ मनमुखि अंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै बंधन कमाए ॥ जंमणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥ २ ॥ त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥ गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई ॥ ३ ॥ त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई ॥ नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥ ४ ॥ १२ ॥

जब मनुष्य सतिगुरु की सेवा करता है तो उसके भीतर सहज धुन उत्पन्न होती है और तब ही उसे मोक्ष एवं ज्ञान-बुद्धि प्राप्त होती है। हरि का सच्चा नाम उसके मन में निवास कर लेता है और नाम द्वारा वह नाम-स्वरूप भगवान में विलीन हो जाता है॥ १॥ सतिगुरु के बिना सारी दुनिया पागल हो गई है। अन्धा मनमुख व्यक्ति शब्द के भेद को नहीं जानता और झूठे भ्रम में ही भटकता रहता है॥ रहाउ॥ त्रिगुणी माया ने मनुष्य को भ्रम में ही गुमराह किया हुआ है, जिसके कारण वह अहंकार के बन्धन ही संचित करता रहता है। जन्म-मरण उसके सिर ऊपर खड़े रहते हैं और गर्भ-योनि में पड़कर वह दुःख प्राप्त करता रहता है॥ २॥ सारा संसार ही माया के त्रिगुणों के प्रभाव अधीन क्रियाशील है और अहंकार में इसने अपना मान-सम्मान गंवा दिया है। जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है, उसे चौथे पद का ज्ञान हो जाता है और राम नाम से सुखी रहता है॥ ३॥

हे परमेश्वर! माया के तीनों गुण-रज, तम, सत् तेरी ही रचना है और तू स्वयं ही स्रष्टा है। जो कुछ तू करता है, दुनिया में वही होता है। हे नानक! राम नाम द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति होती है और गुरु के शब्द द्वारा आत्माभिमान दूर हो जाता है॥ ४॥ १२॥

सोरठि महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥ वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥ आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नामु सलाह ॥ गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अंम्रितु अगम अथाह ॥ रहाउ ॥ आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु ॥ आपे उझड़ि पाइदा पिआरा आपि विखाले राहु ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥ २ ॥ आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धंधड़ै लाहु ॥ आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु ॥ आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लंघाहु ॥ ३ ॥ आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु ॥ आपे ही चड़ि लंघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥ आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥ ४ ॥ १ ॥

प्यारा प्रभु स्वयं ही सब जीवों में व्याप्त है और स्वयं ही निर्लिप्त रहता है। वह स्वयं ही जगत रूपी वणजारा है और स्वयं ही सच्चा साहूकार है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही वाणिज्य एवं व्यापारी है और स्वयं ही सच्ची रास-पूंजी है॥ १॥ हे मेरे मन! हरि का जाप करो, उसकी ही स्तुति करो। गुरु की अपार कृपा से ही वह अमृत रूप अगम्य एवं अथाह प्यारा परमेश्वर पाया जा सकता है॥ रहाउ॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सबको सुनता एवं देखता है और स्वयं ही सभी प्राणियों के मुख द्वारा अपने मुखारबिंद से बोलता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही कुमार्ग लगाता है और स्वयं ही सन्मार्ग प्रदान करता है। वह प्रियतम आप ही सबकुछ है और आप ही बेपरवाह है॥ २॥ वह स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और स्वयं ही प्रत्येक प्राणी को सांसारिक कार्यों में लगाता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही जीवों को पैदा करता है और स्वयं ही जब जीवों का नाश करता है तो यह नाश हो जाते है। वह स्वयं ही घाट और मल्लाह है और स्वयं ही पार करवाता है॥ ३॥ वह स्वयं ही सागर है और स्वयं ही जहाज है। वह स्वयं ही गुरु-खेवट बनकर जहाज चलाता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं जहाज पर सवार होकर पार होता है। सृष्टि का बादशाह वह परमेश्वर अपनी आश्चर्यजनक लीलाएँ रच-रचकर देखता रहता है। वह स्वयं ही दयावान है, हे नानक! वह स्वयं ही जीवों को क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ १॥

सोरठि महला ४ चउथा ॥ आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ ॥ आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ॥ आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥ १ ॥ मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अंम्रितु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥ सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥ आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ २ ॥ आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निरमल सोइ ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइ ॥ ३ ॥ आपे गहिर गंभीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ ॥ नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥

परमेश्वर स्वयं ही अंडज (अण्डे से उत्पन्न), जेरज (भ्रूण से उत्पन्न), स्वेदज (पसीने से उत्पन्न), उद्‌भिज (धरती से उत्पन्न) है। वह स्वयं ही धरती के खण्ड एवं स्वयं ही समस्त लोक है। वह स्वयं ही सूत्र है और स्वयं ही अनेक मणियां हैं। अपनी शक्ति धारण करके उसने सारी दुनिया को सूत्र में पिरोया हुआ है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही सूत्रधार है, जब वह सूत्र खींच लेता है तो दुनिया नाश हो जाती है॥ १॥ हे मेरे मन ! श्रीहरि के अलावा मेरा अन्य कोई आधार नहीं। सतगुरु के भीतर ही नाम का खजाना है और वह प्यारा प्रभु अपनी दया करके हमारे मुख में नामामृत डालता रहता है॥ रहाउ॥ प्यारा प्रभु स्वयं ही समुद्र, धरती में सर्वत्र मौजूद है और जो कुछ भी स्वयं करता है, जग में वही होता है। वह प्रियतम प्रभु समस्त प्राणियों को आहार प्रदान करता है उसके अलावा तो दूसरा कोई नहीं। वह परमेश्वर स्वयं दुनिया के खेल खेलता और खिलाता है, जो कुछ वह स्वयं करता है दुनिया में वही होता है॥ २॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही निर्मल है और उसकी कीर्ति भी निर्मल है। वह स्वयं ही अपना मूल्यांकन जानता है और जो वह स्वयं करता है, वही होता है। वह प्रियतम स्वयं ही अदृश्य है और देखा नहीं जा सकता और वह स्वयं ही जीव को अपने दर्शन करवाता है॥ ३॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही गहन और गंभीर है, उस जैसा महान् सृष्टि में कोई नहीं। वह प्रियतम समस्त हृदयों में व्याप्त होकर भोग भोगता है और समस्त स्त्रियों एवं पुरुषों में विद्यमान है। हे नानक ! प्यारा प्रभु स्वयं ही गुप्त रूप में सर्वव्यापी है और गुरु के माध्यम से ही वह प्रगट होता है॥ ४॥ २॥

सोरठि महला ४ ॥ आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥ आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै ॥ अंम्रित नामु महा रसु मीठा गुर सबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥ आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥ आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥ २ ॥ आपे सिंङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै ॥ आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥ ३ ॥ आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ आपे अंम्रितु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥ आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥ ४ ॥ ३ ॥

प्यारा प्रभु स्वयं ही सर्वशक्तिमान है, वह स्वयं ही संसार बनाकर स्वयं ही उसका नाश कर देता है। वह स्वयं ही अपनी सृष्टि रचना को देखकर खुश होता है और स्वयं ही लीलाएँ करके उन्हें स्वयं ही देखता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही वनों एवं तृणों में सर्वत्र विद्यमान है और वह गुरु के माध्यम से ही मालूम होता है॥ १॥ हे मन ! हरि-नाम का जाप करो, नाम-रस से तू तृप्त हो जाएगा। हरिनामामृत महा रस मीठा है और गुरु के शब्द द्वारा चखकर ही इसका स्वाद मालूम होता है॥ रहाउ॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही तीर्थ एवं बेड़ा है और स्वयं ही पार करवाता है। वह स्वयं ही जाल बिछाता है और वह हरि स्वयं ही सांसारिक जाल में फँसने वाली दुनिया रूपी मछली है। वह प्रियतम प्रभु अविस्मरणीय है और वह भूलता नहीं। उस जैसा महान् दूसरा कोई मुझे नजर नहीं आता॥ २॥ वह प्रियतम प्रभु स्वयं ही (सिंङीनाद) योगी की वीणा एवं नाद है और अपने आप ही ध्वनि बजाता है। वह स्वयं ही योगी पुरुष है और स्वयं ही तपस्या करता है। वह प्रभु स्वयं ही सतगुरु और स्वयं ही शिष्य है और आप ही उपदेश करता है॥ ३॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही प्राणियों से नाम का जाप करवाता है और स्वयं ही जाप जपता है। वह प्यारा स्वयं ही अमृत है और स्वयं

ही अमृत-रस का पान करता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही अपनी सरहाना करता है। सेवक नानक तो हरि रस से तृप्त हो गया है॥ ४॥ ३॥

सोरठि महला ४ ॥ आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥ आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥ आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥ हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ आपे धरती आपि जलु पिआरा आपे करे कराइआ ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ ॥ आपे ही भउ पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥ २ ॥ आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥ आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥ आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥ ३ ॥ आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइआ ॥ जिउ आपि चलाए तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥ आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

प्रभु आप ही (तराजू का) कांटा है, आप ही तराजू है और उसने आप ही बाटों से जगत को तोला है। वह स्वयं ही साहूकार है, स्वयं ही व्यापारी है और स्वयं ही वाणिज्य करवाता है। उस प्रियतम प्रभु ने आप ही धरती का निर्माण किया है और एक चार माशे के बाट से इसका वजन किया है॥ १॥ हे मेरे मन! हरि-परमेश्वर का सिमरन करने से सुख प्राप्त हुआ है। प्यारा हरि-नाम सुख-समृद्धि का भण्डार है और पूर्ण गुरु ने मुझे यह मीठा लगा दिया है॥ रहाउ॥ वह स्वयं ही धरती एवं स्वयं ही जल है और वह स्वयं ही सबकुछ करता और जीवों से करवाता है। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही हुक्म लागू करता है और जल एवं भूमि को बांधकर रखता है। वह प्यारा स्वयं ही जीवों में भय उत्पन्न करता है और बकरी एवं शेर को साथ बांधकर रखा हुआ है॥ २॥ प्यारा प्रभु आप ही लकड़ी भी है और लकड़ी में उसने स्वयं ही अग्नि को रखा हुआ है। वह प्यारा स्वयं ही लकड़ी एवं अग्नि दोनों में क्रियाशील है और उसके भय कारण अग्नि लकड़ी को जला नहीं सकती। मेरा प्रियतम प्रभु स्वयं ही मारकर पुनः जीवित करने वाला है और सभी लोग उसकी दी हुई सांसें लेते हैं॥ ३॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही शक्ति और अटल दरबार है और स्वयं ही उसने जीवों को कामकाज में लगाया हुआ है। हे प्यारे! जैसे वह स्वयं चलाता है, वैसे ही हम चलते हैं, जैसे मेरे हरि-प्रभु को अच्छा लगा है। वह स्वयं ही संगीतकार और संगीत (यंत्र) है। हे नानक! मनुष्य वैसे ही बजता है, जैसे प्रभु उसे बजाता है॥ ४॥ ४॥

सोरठि महला ४ ॥ आपे सिसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु ॥ आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥ आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥ सतसंगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥ आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥ आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥ आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥ २ ॥ आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥ आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु ॥ आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥ ३ ॥ आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधाणु ॥ आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु ॥ आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥

प्यारा प्रभु स्वयं ही सृष्टि-रचना करके सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश करता है। वह प्यारा प्रभु

स्वयं ही निर्बलों का बल है और स्वयं ही आदरहीन व्यक्तियों का आदर-सत्कार है। वह स्वयं ही दया करके सबकी रक्षा करता है और स्वयं ही बुद्धिमान एवं सर्वज्ञाता है॥ १॥ हे मेरे मन! राम-नाम का भजन कर, यह नाम ही दरगाह में जाने के लिए परवाना है। सत्संगति में सम्मिलित होकर तू परमेश्वर का सिमरन कर, जिसके फलस्वरूप तेरा फिर जन्म-मरण नहीं होगा॥ रहाउ॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही समस्त गुणों में सक्रिय है और स्वयं ही सत्कृत होता है। वह स्वयं ही जीवों पर बखशीश करता है और स्वयं ही सत्य के चिन्ह की देन प्रदान करता है। वह प्यारा स्वयं ही हुक्म में सक्रिय रहता है और स्वयं ही फुरमान करता है॥ २॥ वह प्यारा स्वयं ही भक्ति का भण्डार है और स्वयं ही भक्ति का दान प्रदान करता है। प्यारा प्रभु स्वयं ही जीवों से अपनी उपासना करवाता है और स्वयं ही दुनिया में मान-सम्मान दिलाता है। वह स्वयं ही शून्य समाधि लगाता है और स्वयं ही गुणों का खजाना है॥ ३॥ प्यारा प्रभु स्वयं ही महान् है और स्वयं ही प्रधान है। वह स्वयं ही अपना मूल्यांकन करता है और स्वयं ही तराजू एवं माप है। वह प्यारा प्रभु स्वयं अतुलनीय है लेकिन जीवों को तोल लेता है। नानक सर्वदा उस पर कुर्बान जाता है॥ ४॥ ५॥

सोरठि महला ४ ॥ आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥ आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥ आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा ॥ अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥ आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा ॥ कुवलीआ पीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥ २ ॥ आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥ करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा ॥ आपे ही बलु आपि है पिआरा बलु भंने मूरख मुगधाहा ॥ ३ ॥ सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि आपे जुगति हथाहा ॥ गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिंचै तिउ जाहा ॥ जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥ ४ ॥ ६ ॥

वह प्यारा प्रभु स्वयं ही जीवों को अपनी सेवा में लगाता है और स्वयं ही उनमें अपनी भक्ति की उमंग उत्पन्न करता है। वह स्वयं ही भक्तजनों से अपना गुणगान करवाता है और स्वयं ही अपने शब्द में समाया हुआ है। वह स्वयं ही कलम है, स्वयं ही लिखने वाला लिखारी है और स्वयं ही जीवों के कर्मों का लेख लिखता है॥ १॥ हे मेरे मन! तू उमंग से राम-नाम का भजन कर। भाग्यशाली जीव पूर्ण गुरु के द्वारा हरि-नाम का लाभ प्राप्त करते हैं और उनका प्रतिदिन आनंददायक होता है॥ रहाउ॥ प्रिय प्रभु स्वयं ही गोपी (राधा) एवं श्रीकृष्ण है और वह स्वयं ही वृंदावन में गाय चराने वाला है। वह स्वयं ही सांवला सुन्दर कन्हैया है और स्वयं ही मधुर ध्वनि में बांसुरी बजाने वाला है। उस प्यारे प्रभु ने स्वयं ही बालक का रूप धारण करके कुवलियापीड़ हाथी का वध किया था॥ २॥ वह स्वयं ही अखाड़ा बनाता है और लीलाएँ रचकर स्वयं ही उन्हें देखता है। वह स्वयं ही बालक कृष्ण-कन्हैया रूप में उत्पन्न हुआ और कृष्ण द्वारा चंडूर, कंस एवं केशि का वध किया। वह प्यारा प्रभु स्वयं ही शक्ति का रूप है और वह मूर्ख एवं विमूढ़ लोगों के बल का दमन करता है॥ ३॥ वह प्यारा प्रभु स्वयं ही समूचे जगत की रचना करता है और जगत की युक्ति उसी के वश में है। वह स्वयं ही प्राणियों के गले में जीवन की डोर डालता है और जैसे प्रभु उन्हें खींचता है, वैसे ही प्राणी जीवन-मार्ग की ओर जाते हैं। नानक का कथन है कि हे प्यारे! जो व्यक्ति केवल घमण्ड ही करता है, उसका अंत हो जाता है। इसलिए ईश्वर का नाम जपकर उसकी भक्ति में ही लीन रहो॥ ४॥ ६॥

सोरठि मः ४ दुतुके ॥ अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि करम करै अहंकारी ॥ साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥ १ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ सांति मुरारी ॥ रहाउ ॥ तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥ सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥ २ ॥ गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥ आतम ब्रहमु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥ ३ ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥ नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

अनेक जन्मों से भगवान से जुदा हुआ मनमुख पुरुष अत्यंत दुःख ही भोग रहा है और वह तो अहंकार के वशीभूत होकर कर्म करने में सक्रिय है। साधु रूपी गुरु के चरण-छूने से ही प्रभु की प्राप्ति हो गई है। हे गोविन्द ! मैं तो तुम्हारी शरण में ही आया हूँ॥ १॥ गोविन्द की प्रीति मुझे अत्यन्त प्यारी लगती है। जब साधुओं के साथ मेरा सत्संग हुआ तो मुझे मेरे हृदय में ही शांति प्रदान करने वाला मुरारि प्रभु प्राप्त हो गया॥ रहाउ॥ हे भगवान ! तू हम जीवों के हृदय में ही गुप्त रूप में रहता है लेकिन हम गंवार तुम्हारे स्नेह को नहीं समझते। महापुरुष सतगुरु के मिलाप से प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन हो गए हैं। अब तो मैं उसका ही यशगान करता हूँ और प्रभु के गुणों पर ही चिंतन करता हूँ॥ २॥ गुरु के सान्निध्य में रहकर मेरा मन उज्ज्वल हो गया है और शांति प्राप्त होने के कारण मेरे मन में से खोटी बुद्धि दूर हो गई है। हे सतगुरु ! तुम्हारी सत्संगति के फलस्वरूप आत्मा में ही ब्रह्म को जान कर मुझे सुख प्राप्त हो गया है॥ ३॥ हे प्रभु ! जिन पर तुम्हारी अपार कृपा हुई है, उन्हें गुरु प्राप्त हो गया है और गुरु से साक्षात्कार करके उन्हें तेरी प्राप्ति हो गई है। हे नानक ! उसे अतुलनीय सहज सुख प्राप्त हो गया है और वह अब प्रतिदिन भगवान में मग्न होकर जाग्रत रहता है॥ ४॥ ७॥

सोरठि महला ४ ॥ हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥ जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥ १ ॥ मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ हउ अंतरि नामु मंगा दिनु राती नामे ही सांति पाई ॥ रहाउ ॥ जिउ चात्रिकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥ गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥ २ ॥ मनमुख भूखे दह दिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥ जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥ ३ ॥ क्रिपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ नानक दीन दइआल भए है त्रिसना सबदि बुझाई ॥ ४ ॥ ८ ॥

हरि के प्रेम से मेरा मन विंध गया है एवं हरि के बिना मैं रह नहीं सकता। जैसे मछली जल के बिना नाश हो जाती है, वैसे ही जीवात्मा हरि-नाम बिना मर जाती है॥ १॥ हे मेरे प्रभु ! मुझे हरि-नाम रूपी कृपा-जल प्रदान कीजिए। मैं अपने मन में दिन-रात नाम ही माँगता रहता हूँ और नाम से ही शांति प्राप्त होती है॥ रहाउ॥ जैसे पपीहा जल के बिना तड़पता रहता है और जल के बिना उसकी प्यास नहीं बुझती; वैसे ही गुरु के माध्यम से ही ब्रह्म रूपी जल का सुख प्राप्त होता है और वह प्रभु-प्रेम से सहज ही प्रफुल्लित हो जाता है॥ २॥ मोह-माया के भूखे मनमुख पुरुष दसों दिशाओं में भटकते रहते हैं और नाम से वंचित रहने के कारण अत्यंत दुःख भोगते हैं। ऐसे लोग जन्मते-मरते रहते हैं, पुनः पुनः योनियों में आते हैं और भगवान के दरबार में उन्हें कठोर दण्ड मिलता है॥ ३॥ यदि भगवान कृपा करे तो मनुष्य हरि का गुणगान करता है और उसे हृदय

में ही हरि-रस प्राप्त हो जाता है। हे नानक ! भगवान दीनदयालु है, जिस पर वह दयालु होता है, उसकी शब्द के माध्यम से तृष्णा बुझा देता है॥ ४॥ ८॥

सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥ प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥ १ ॥ मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥ २ ॥ जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सु पाए ॥ वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥ ३ ॥ जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई ॥ रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥ ४ ॥ सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥ ५ ॥ ६ ॥

यदि मनुष्य अजेय मन पर विजय प्राप्त कर ले तो उसे सिद्धि की प्राप्ति होती है और सिद्धि के फलस्वरूप ही ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। जब भगवान के प्रेम के तीर तन के भीतर लगते हैं तो भ्रम दूर हो जाता है॥१॥ हे मेरे गोविन्द ! अपने सेवक को अपने नाम की बड़ाई प्रदान करो। गुरु के उपदेश द्वारा ही अपना राम नाम मेरे हृदय में उज्ज्वल करो चूंकि मैं हमेशा ही तुम्हारी शरण में पड़ा रहूँ॥ रहाउ॥ हे मूर्ख एवं अचेतन मन ! यह सारी दुनिया आवागमन (जन्म मरण) के वशीभूत है, इसलिए केवल भगवान का ही भजन करो। हे श्रीहरि ! मुझ पर कृपा करो और मुझे गुरु से मिला दो ताकि मैं तेरे हरि-नाम में लीन हो जाऊँ॥ २॥ जिसकी अनमोल वस्तु यह नाम है, वह प्रभु ही इसे जानता है। जिसे यह अनमोल वस्तु देता है, वही इसे प्राप्त करता है। यह नाम-वस्तु अत्यंत अनूप, अगम्य, अगोचर है और पूर्ण गुरु के द्वारा ही अलक्ष्य वस्तु प्रगट होती है॥ ३॥ जिसने इसे चखा है, वही इसके स्वाद को जानता है। जैसे गूँगा मिठाई का स्वाद नहीं बता सकता यह वैसे ही है। नाम-रत्न छिपाने पर भी छिपा नहीं रह सकता चाहे कोई छिपाने की कितनी ही कोशिश करे॥ ४॥ हे परमात्मा ! यह सारी सृष्टि तेरी ही है। तू अन्तर्यामी है और तू हम सबका प्रभु है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जिसे तू दान देता है, वही इसे प्राप्त करता है। दूसरा कोई नहीं जो इसे तेरे बिना प्राप्त कर ले॥ ५॥ ६॥

सोरठि महला ५ घरु १ तितुके १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किसु हउ जाची किसु आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥ १ ॥ हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥ ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई ॥ अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥ २ ॥ मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ जिन कउ क्रिपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥ ३ ॥ कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सरब जीआ दइआला ॥ सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥ राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥ ४ ॥ १ ॥

जब सब जीवों को ईश्वर ने ही पैदा किया हुआ है तो फिर उसके अलावा मैं किससे माँगूं ? किसकी आराधना करूँ ? जो कोई बड़े से बड़ा आदमी दिखाई देता है, वह भी आखिरकार मिट्टी

में ही मिल जाता है। वह निरंकार निर्भय है, संसार के जन्म-मरण के बंधन मिटाने वाला है और वह स्वयं ही सर्वसुख एवं नवनिधियाँ देता है॥ १॥ हे श्रीहरि! जब तेरे दिए हुए दान से मैं तृप्त हो जाता हूँ तो फिर मैं मनुष्य बेचारे की क्यों तारीफ करूँ? मुझे उस पर निर्भर होने की क्या आवश्यकता है?॥ रहाउ॥ जिसने भी भगवान का ध्यान किया है, विश्व का सब कुछ उसका हो गया है और भगवान ने उसकी तमाम भूख निवृत्त कर दी है। सुखों के दाता प्रभु ने ऐसा धन दिया है, जो कदापि खत्म नहीं होता। सतिगुरु ने मुझे उससे मिला दिया है, अब मैं बड़ा आनंदित हूँ और सहज सुख में लीन रहता हूँ॥ २॥ हे मेरे मन! नाम का भजन कर, नाम की आराधना कर और प्रतिदिन नाम का ही बखान कर। साधु-संतों का ध्यानपूर्वक उपदेश सुनकर मृत्यु का तमाम भय दूर हो गया है। जिन पर मेरा प्रभु कृपालु हुआ है, उसने गुरु की वाणी में वृत्ति लगा ली है॥ ३॥ हे प्रभु! तेरा मूल्यांकन कौन कर सकता है, जबकि तू तो सब जीवों पर दयालु है। हे परमपिता! विश्व में सबकुछ तेरा किया ही होता है, हम जीव क्या करने में समर्थ हैं? हे ईश्वर! नानक तेरा ही दास है, उसकी इस तरह रक्षा कर, जैसे पिता अपने पुत्र पर कृपालु होता है॥ ४॥ १॥

सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥ साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार ॥ १ ॥ सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥ गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाई गणी ॥ विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥ आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥ २ ॥ सिम्रिति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥ अनिक करम करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ ॥ चारे कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर नाही जाइ ॥ वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥ ३ ॥ सचु सदा है निरमला भाई निरमल साचे सोइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥ नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे भाई! अपने मन, तन एवं हृदय में प्रेम बसाकर गोविन्द-गुरु की स्तुति करनी चाहिए। सच्चा परमेश्वर हृदय में बसा रहे, यही सर्वश्रेष्ठ जीवन-आचरण है। जिस शरीर में भगवान का नाम उत्पन्न नहीं होता, वह शरीर भस्म हो जाता है। मैं उस सत्संगति पर मन-तन से न्यौछावर हूँ, जिसे केवल एक परमेश्वर का ही सहारा है॥ १॥ हे भाई! उस परम-सत्य परमेश्वर की ही आराधना करो, जिससे सबकुछ उत्पन्न हुआ है। पूर्ण गुरु ने ज्ञान करवा दिया है कि उस एक परमेश्वर के अलावा अन्य कोई समर्थ नहीं॥ रहाउ॥ हे भाई! परमेश्वर के नाम बिना कितने ही गल सड कर मर गए हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। सत्य के बिना पवित्रता प्राप्त नहीं होती और वह मालिक सत्यस्वरूप एवं अगम्य है। हे भाई! सांसारिक पदार्थों का अहंकार झूठा है और इन में मग्न होने से जन्म-मरण का चक्र नष्ट नहीं होता। हे भाई! गुरुमुख मनुष्य परमात्मा के नाम का एक कण-मात्र ही प्रदान करके करोड़ों की मुक्ति कर देता है॥ २॥ हे भाई! स्मृतियों तथा शास्त्रों का मैंने भलीभांति विश्लेषण किया है परन्तु सतगुरु के बिना भ्रम दूर नहीं होता। मनुष्य अनेक कर्म करके थक जाता है लेकिन फिर भी बार-बार वह बन्धनों में ही पड़ता है। हे भाई! मैंने चारों-दिशाओं में पड़ताल कर ली है लेकिन सतगुरु के अलावा मुक्ति का कोई मार्ग नहीं। हे भाई! अहोभाग्य से मुझे गुरु मिल गया है और अब मैं हरि-नाम का ही ध्यान करता हूँ

॥३॥ हे भाई ! परम-सत्य प्रभु हमेशा पवित्र है और वही पवित्र हैं जो सच्चे हैं। हे भाई ! जिस पर प्रभु की करुणा-दृष्टि होती है, उसे वह प्राप्त हो जाता है। करोड़ों में से कोई विरला पुरुष ही प्रभु-भक्त मिलता है। नानक का कथन है कि हे भाई ! भक्त तो सत्य-नाम में ही मग्न रहता है और जिसे सुनकर मन, तन पावन हो जाता है॥ ४॥ २॥

सोरठि महला ५ दुतुके ॥ जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दूराई ॥ आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥ १ ॥ माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥ सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥ प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥ २ ॥ सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥ साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥ ३ ॥ कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥ जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥ ४ ॥ ३ ॥

यह मन जब तक किसी से स्नेह एवं वैर-विरोध मानता रहता है, तब तक उसके लिए भगवान से मिलन करना असंभव है। जब तक मनुष्य अपने-पराए पर ही विचार करता है, तब तक उसके एवं भगवान के मध्य जुदाई की दीवार बनी रहती है॥ १॥ हे भगवान ! मुझे ऐसी सुमति दीजिए कि मैं संतों की सेवा में ही तल्लीन रहूँ, उनके चरणों का आश्रय लूँ और तुम मुझे एक क्षण एवं पल भर के लिए विस्मृत न हो सको॥ रहाउ॥ हे मेरे मूर्ख, अचेत एवं चंचल मन ! तेरे चित्त को ऐसी बात नहीं सूझी कि प्राणपति प्रभु को त्याग कर तू द्वैतभाव में मगन है और तू अपने शत्रुओं-कामवासना, अहंकार, लोभ, क्रोध, मोह के संग उलझा रहता है॥ २॥ संतों की पावन संगति में मुझे यह बुद्धि प्राप्त हुई है कि आत्माभिमान को स्थापित न करने से कोई शोक व्याप्त नहीं होता। भगवान से विमुख मनुष्य की वार्ता को यूं समझो जैसे कोई हवा का झोंका कहीं उड़ जाता है॥ ३॥ यह चंचल मन करोड़ों ही अपराधों से ढंका हुआ है, इसकी दुर्दशा के बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता। हे प्रभु ! नानक तो दीन होकर तेरी शरण में आया है, तू उसके कर्मों का प्रत्येक लेखा खत्म कर दे॥ ४॥ ३॥

सोरठि महला ५ ॥ पुत्र कलत्र लोक ग्रिह बनिता माइआ सनबंधेही ॥ अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥ १ ॥ रे नर काहे पपोरहु देही ॥ ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ तीनि संङिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ होइ आमरो ग्रिह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥ २ ॥ अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ॥ ३ ॥ जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट गहेही ॥ ४ ॥ ४ ॥

पुत्र, पत्नी, घर के सदस्य तथा अन्य महिला इत्यादि सभी धन-दौलत के संबंधी ही हैं। जीवन के अन्तिम क्षणों में इन में से किसी ने भी साथ नहीं देना, क्योंकि ये सभी झूठे हमदर्दी ही हैं॥ १॥ हे मानव ! तुम क्यों शरीर से ही दुलार करते रहते हो ? यह तो धुएं के बादल की तरह उड़ जाएगा। इसलिए एक ईश्वर का ही भजन कर, जो तेरा सच्चा हमदर्द है॥ रहाउ॥ स्रष्टा ने शरीर का निर्माण करते वक्त उसका अन्त तीन प्रकार से नियत किया है। १. शरीर का जल प्रवाह, २. शरीर को कुत्तों के हवाले करना ३. शरीर को जलाकर भस्म करना। परन्तु मनुष्य शरीर गृह को अमर समझकर बैठा है और परमात्मा को उसने भुला दिया है॥ २॥ भगवान ने अनेक विधियों

से जीव रूपी मोती बनाए हैं और उन्हें जीवन रूपी कमजोर धागे में पिरो दिया है। हे बेचारे मनुष्य! धागा टूट जाएगा और तू उसके उपरांत पछताता रहेगा॥ ३॥ हे मानव! जिसने तुझे बनाया है और बनाकर तुझे संवारा है, दिन-रात उस परमात्मा का सिमरन कर। नानक पर प्रभु ने कृपा की है और उसने सतिगुरु का आश्रय लिया हुआ है॥ ४॥ ४॥

सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥ कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥ १ ॥ अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनंदु हमारै ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥ निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥ २ ॥ सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥ कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥ ३ ॥ वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ रासे ॥ नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥ ४ ॥ ५ ॥

बड़ी अच्छी तकदीर से मेरा पूर्ण गुरु के साथ मिलाप हुआ है, गुरु के दर्शन से मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है। मैं तो अपने मालिक पर ही आश्वस्त हूँ, कोई अन्य उसके तुल्य पहुँचने वाला नहीं है॥ १॥ मैं अपने सतगुरु पर बलिहारी हूँ। गुरु के द्वारा आगे-पीछे अर्थात् लोक परलोक में मेरे लिए सुख ही सुख है और हमारे घर में सहज आनंद बना हुआ है॥ रहाउ॥ वह अन्तर्यामी स्रष्टा प्रभु ही हमारा मालिक है। गुरु के चरणों में आने से मैं निर्भीक हो गया हूँ और एक राम नाम ही हमारा आधार बन चुका है॥ २॥ उस अकालमूर्ति प्रभु के दर्शन फलदायक हैं, वह वर्तमान में भी स्थित है और भविष्य में भी विद्यमान रहेगा। वह अपने भक्तों को अपनी प्रीति प्यार द्वारा गले से लगाकर उनकी रक्षा करता है॥ ३॥ सतगुरु की बड़ी बड़ाई एवं अद्भुत शोभा है, जिसके द्वारा मेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं। नानक की पूर्ण गुरु से भेंट हो गई है और उसके सभी दुःख-क्लेश नष्ट हो गए हैं॥ ४॥ ५॥

सोरठि महला ५ ॥ सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥ १ ॥ मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रहमु पछाता ॥ रहाउ ॥ संत संगि जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठांढी ॥ हउमै रोगि जा का मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥ २ ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कउ सरब प्रगासा ॥ अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥ ३ ॥ सुणि बेनंती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥ जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥ ४ ॥ ६ ॥

सुखी रहने वाले को तो सभी लोग सुखी ही दिखाई देते हैं लेकिन रोगी को सारी दुनिया ही रोगी लगती है। भगवान सब कुछ करने एवं कराने वाला है और सारे संयोग उसके हाथ में हैं॥ १॥ हे मेरे मन! जिस व्यक्ति ने अपना भ्रम दूर कर दिया है, जिसने सबमें विद्यमान ब्रह्म को पहचान लिया है, उसके अनुसार कोई भी भटका हुआ नहीं है॥ रहाउ॥ जिसका मन संतों की सभा में सम्मिलित होकर शीतल हुआ है, वह सबको शांतचित ही जानता है। जिसका मन अहंकार के रोग से ग्रस्त है, वह जीवन-मृत्यु में फँसकर रोता रहता है॥ २॥ जिसके नेत्रों में ब्रह्म-ज्ञान का अञ्जन (सुरमा) पड़ा है, उसे हर तरफ उजाला ही नजर आता है। अज्ञानता के अन्धकार में फँसे अज्ञानी को कुछ भी सूझ नहीं आती और वह बार-बार आवागमन में भटकता है॥ ३॥ हे स्वामी! मेरी विनती सुनो; नानक तुझसे यही सुख माँगता है कि जहाँ साधु तेरा कीर्ति-गान करते हैं, मेरा मन वहाँ ही लगा रहे॥ ४॥ ६॥

सोरठि महला ५ ॥ तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ ॥ १ ॥ संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥ जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥ अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥ ३ ॥ निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ बूडत मोह ग्रिह अंध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥ ४ ॥ ७ ॥

मैंने अपना यह तन, धन एवं मन सबकुछ संतों को सौंप दिया है। संतों के प्रसाद से जब मैंने हरि-नाम का ध्यान किया तो सर्व सुख प्राप्त हो गए॥ १॥ संतों के सिवाय दूसरा कोई नाम का दान देने वाला नहीं। जो कोई भी संतों की शरण में आता है, वह भवसागर से पार हो जाता है॥ रहाउ॥ भगवान के भक्तों की निष्काम सेवा करने एवं हरि का रसपूर्वक भजन-कीर्तन करने से करोड़ों अपराध मिट जाते हैं। भक्त की संगति करने से इहलोक में सुख प्राप्त होता है और परलोक में मुख उज्ज्वल हो जाता है परन्तु भक्त की संगति बड़े भाग्य से मिलती है॥ २॥ मेरी एक रसना है, प्रभु भक्त अनेक गुणों से भरपूर हैं। फिर उनकी उपमा कितनी बखान की जा सकती है ? उस अगम्य, अगोचर एवं सदा अनश्वर परमात्मा की प्राप्ति संतों की शरण में आने से ही होती है॥३॥ मैं निर्गुण, नीच, अनाथ एवं अपराधी संतों की शरण की ही कामना करता हूँ। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तो पारिवारिक मोह के अन्धे कुएँ में ही डूब रहा हूँ, इसलिए मेरा साथ निभाकर मेरी रक्षा करो॥ ४॥ ७॥

सोरठि महला ५ घरु १ ॥ जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥ दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥ १ ॥ तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥ गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥ सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥ २ ॥ सरब निरंतरि तुमहि समाने जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥ गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥ ३ ॥ सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥ कहु नानक जिसु भए दइआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे सृष्टिकर्त्ता ! तू जिसके हृदय में भी निवास कर गया है, तूने उसकी मनोकामना पूरी कर दी है। अपने सेवक को तू कदापि विस्मृत नहीं होता और तेरी चरण-धूलि उसके मन को अच्छी लगती है॥ १॥ तेरी अकथनीय कथा कथन नहीं की जा सकती। हे गुणनिधान ! हे सुखदाता स्वामी ! तेरी बड़ाई सर्वोच्च है॥ रहाउ॥ प्राणी वही कर्म करता है, जैसा कर्म तूने उसकी तकदीर में लिख दिया है। अपने सेवक को तूने सेवा-भक्ति दी हुई है और तुम्हारे दर्शन प्राप्त करके वह तृप्त हो गया है॥ २॥ हे भगवान ! समस्त जीवों में निरन्तर तू ही समाया हुआ है और जिसे तू सूझ प्रदान करता है वही इसे समझता है। गुरु की अपार कृपा से उसका अज्ञान मिट गया है और वह सर्वत्र प्रख्यात हो गया है॥ ३॥ नानक का कथन है कि वही ज्ञानी है, वही ध्यानी है और वही पुरुष भद्र स्वभाव वाला है। जिस पर ईश्वर दया करता है, वह उसे अपने मन से कभी नहीं भुलाता॥ ४॥ ८॥

सोरठि महला ५ ॥ सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥ सुधु न होईऐ काहू जतना ओड़कि को न पहूचे ॥ १ ॥ मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥ बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि

आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिओ सगल संसारा ॥ पूरन भगतु पुरख सुआमी का सरब थोक ते निआरा ॥ २ ॥ निंदउ नाही काहू बाते एहु खसम का कीआ ॥ जा कउ क्रिपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥ ३ ॥ पारब्रहम परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥ कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥ ४ ॥ ९ ॥

सारी दुनिया मोह में फँसी हुई है, परिणामस्वरूप मनुष्य कभी ऊँचा हो जाता है और कभी निम्न हो जाता है। किसी भी प्रयास से वह शुद्ध नहीं होता और कोई भी अपने मुकाम को नहीं पहुँचता॥ १॥ हे मेरे मन ! साधुओं की शरण में आने से ही छुटकारा है। पूर्ण गुरु बिना जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता अपितु जीव बार-बार दुनिया में आता जाता (जन्मता-मरता) रहता है॥ रहाउ॥ वह जिसे भ्रम भुलावा कहा जाता है, सारी दुनिया उसमें उलझी हुई है। परन्तु परम-पुरुष स्वामी का पूर्ण भक्त समस्त पदार्थों से न्यारा है॥ २॥ दुनिया की किसी भी बात से निन्दा मत करो क्योंकि यह मालिक की ही रचना है। जिस पर मेरे प्रभु ने कृपा की हुई है, वह संतों की पावन सभा में प्रभु-नाम का भजन करता है॥ ३॥ परब्रह्म, परमेश्वर सतगुरु सबका उद्धार करता है। हे नानक ! गुरु बिना भवसागर से पार नहीं हुआ जा सकता, यही पूर्ण तत्व विचार है॥ ४॥ ९॥

सोरठि महला ५ ॥ खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा ॥ किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥ सुणि सुणि महा त्रिपति मनु पावै साधू अम्रित बानी ॥ रहाउ ॥ मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सरब सुखा का दाता ॥ अपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥ २ ॥ स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥ करण कारण समरथ सुआमी जा ते ब्रिथा न कोई ॥ ३ ॥ वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु क्रिपा किरपाला ॥ साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥ ४ ॥ १० ॥

खोजते-खोजते खोजकर मैंने इस बात पर निष्कर्ष किया है कि राम का नाम ही श्रेष्ठ है। एक क्षण भर भी इसकी आराधना करने से सब पाप मिट जाते हैं और गुरुमुख बनकर व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है॥ १॥ हे ज्ञानी पुरुषो ! हरि रस का पान करो। साधु रूपी गुरु की अमृतवाणी सुन-सुनकर मन को महा-तृप्ति प्राप्त होती है॥ रहाउ॥ अमृतवाणी के फलस्वरूप ही मुक्ति, भुक्ति, युक्ति एवं सत्य की प्राप्ति होती है, जो सर्व सुख देने वाला है। सर्वव्यापक अकालपुरुष विधाता अपने दास को अपनी भक्ति का दान देता है॥ २॥ सबकुछ करने-करवाने में समर्थ जिस स्वामी के घर से कोई खाली हाथ नहीं लौटता, उस प्रभु की महिमा को अपने कानों से सुनना चाहिए, अपनी जिह्वा से उसका गुणगान करना चाहिए और हृदय में भी उसका ही ध्यान-मनन करना चाहिए॥ ३॥ बड़ी किस्मत से मुझे मनुष्य जन्म रूपी रत्न प्राप्त हुआ है, हे कृपानिधि ! मुझ पर कृपा करो। साधसंगत में नानक परमात्मा के ही गुण गाता है और हमेशा ही उसकी आराधना करता है॥ ४॥ १०॥

सोरठि महला ५ ॥ करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥ १ ॥ प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥ गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥ संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥ २ ॥ हरि अम्रित नामु भोजनु नित भुंचहु सरब वेला मुखि पावहु ॥ जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥ ३ ॥ सुणी अरदासि सुआमी मेरै सरब कला बणि आई ॥ प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥ ४ ॥ ११ ॥

स्नान करके अपने प्रभु को स्मरण करने से मन एवं तन आरोग्य हो गए हैं। प्रभु की शरण लेने से करोड़ों विघ्न समाप्त हो गए हैं और भले संयोग उदय हो गए हैं॥ १॥ प्रभु की वाणी एवं शब्द शोभनीय है। हे भाई! इसे नित्य गाओ, सुनो एवं पढ़ो; पूर्ण गुरु ने तुझे भवसागर में डूबने से बचा लिया है॥ रहाउ॥ सच्चे परमेश्वर की महिमा अमित है। वह बड़ा दयालु एवं भक्तवत्सल है। अपने विरद् का पालन करने वाला प्रभु आदि से ही अपने संतों-भक्तों की लाज रखता आया है॥ २॥ नित्य ही हरिनामामृत का भोजन खाओ और हर समय इसे अपने मुँह में डालो। नित्य गोविन्द का गुणगान करो, वृद्ध अवस्था, मृत्यु एवं समस्त दुःख-संकट भाग जाएँगे॥ ३॥ मेरे स्वामी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है और मन में पूर्ण बल पैदा हो गया है। गुरु नानक की महिमा समस्त युगों में प्रगट हो गई है॥ ४॥ ११॥

सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ॥ १ ॥ सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तै कू देसा ॥ सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥ २ ॥ मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥ सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥ ३ ॥ भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥ ४ ॥ १ ॥ १२ ॥

एक (परमेश्वर) ही हमारा पिता है और हम सब एक पिता-परमेश्वर की ही संतान हैं। तू ही मेरा गुरु है। हे मेरे मित्र! सुनो, यदि तू मुझे हरि-दर्शन करवा दे तो मेरा मन तुझ पर बार-बार न्यौछावर होगा॥ १॥ हे मेरे मित्र! सुनो, मैं तेरी चरण-धूलि पर कुर्बान जाता हूँ। हे भाई! यह मन तेरा ही है॥ रहाउ॥ मैं तेरे पैरों की मालिश करता और अच्छी तरह मल-मलकर उन्हें धोता हूँ। मैं यह मन तुझे ही अर्पण करता हूँ। हे मेरे मित्र! सुनो, मैं तेरी शरण में आया हूँ, मुझे ऐसा उपदेश दो कि मेरा प्रभु से मिलाप हो जाए॥ २॥ हमें अभिमान नहीं करना चाहिए और प्रभु-शरण में ही आना चाहिए, चूंकि वह सबकुछ अच्छा ही करता है, इसलिए उसे भला ही मानना चाहिए। हे मेरे मित्र! सुनो, अपने प्राण, शरीर तथा अपना सबकुछ अर्पण कर देना चाहिए, इस प्रकार हरि-दर्शन की प्राप्ति होती है॥ ३॥ संतों के प्रसाद से प्रभु ने मुझ पर दया की है और हरि का नाम मुझे मीठा लगने लग गया है। गुरु ने नानक पर कृपा की है और उसने अकुल एवं निरंजन प्रभु को सर्वत्र देख लिया है॥ ४॥ १॥ १२॥

सोरठि महला ५ ॥ कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सरब जीआ का दाता रे ॥ प्रतिपाले नित सारि समाले इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥ १ ॥ हरि आराधि न जाना रे ॥ हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥ हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल क्रिपाल सुख सागर सरब घटा भरपूरी रे ॥ पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥ २ ॥ हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥ ३ ॥ मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥ ४ ॥ २ ॥ १३ ॥

ईश्वर तो करोड़ों ही ब्रह्माण्डों का स्वामी है और सब जीवों का दाता है। वह हमेशा ही सबका पालन-पोषण एवं देखभाल करता है किन्तु मुझ मूर्ख ने उसके एक उपकार को भी नहीं समझा॥ १॥ मुझे तो हरि की आराधना करने की कोई विधि नहीं आती। इसलिए मैं हरि-हरि एवं गुरु-गुरु ही बोलता रहता हूँ। हे हरि ! तेरी कृपा से मेरा नाम 'रामदास' पड़ गया है॥ रहाउ॥ दीनदयालु, कृपालु एवं सुख का सागर परमात्मा सबके हृदय में समाया हुआ है। वह दीनदयालु सबको देखता, सुनता एवं सदा साथ ही रहता है किन्तु मुझ मूर्ख ने उसे दूर ही समझा हुआ है॥ २॥ हरि बेअन्त है, मैं तो उसे किसी सीमा में ही वर्णन कर सकता हूँ परन्तु मुझे क्या मालूम वह कैसा है ? मैं अपने सतगुरु से विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि मुझ मूर्ख को भी उपदेश दीजिए॥ ३॥ मुझ मूर्ख की क्या बात है, गुरु के उपदेश से तो करोड़ों ही अपराधी भवसागर से पार हो गए हैं। जिन्होंने गुरु नानक देव जी के बारे में सुना एवं उनके दर्शन प्राप्त किए हैं, वे दोबारा गर्भ-योनि में नहीं पड़े॥ ४॥ २॥ १३॥

सोरठि महला ५ ॥ जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ ॥ सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥ १ ॥ देखहु अचरजु भइआ ॥ जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥ जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥ करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥ २ ॥ जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥ एकु रतनु मोकउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥ ३ ॥ एक बूंद गुरि अम्रितु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥ भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १४ ॥

जिन बातों का मुझे बहुत फिक्र सताता रहता था, वह सब अब मिट गए हैं। अब मैं सहज-सुख में सोता हूँ और सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा मेरा विपरीत पड़ा हृदय-कमल खिल गया है॥ १॥ देखो ! एक अद्भुत बात हो गई है। जिस भगवान के ज्ञान को अगाध सुना जाता है, उसे गुरु ने मेरे हृदय में बसा दिया है॥ रहाउ॥ जो माया के दूत कामादिक विकार मुझे बहुत सताते रहते थे, वे स्वयं ही भयभीत हो गए हैं। वे प्रार्थना करते हैं कि हमें अपने भगवान से बचा लो, हम तेरी शरण में आए हैं॥ २॥ गोविन्द की भक्ति का भण्डार तो खुला हुआ है, जिसकी तकदीर में इसकी लब्धि लिखी हुई है, उसे भक्ति का भण्डार मिल गया है। एक रत्न गुरु ने मुझे दिया है, जिसके फलस्वरूप मेरा मन एवं तन शीतल हो गए हैं॥ ३॥ गुरु ने मुझे एक अमृत की बूँद प्रदान की है, जिसके फलस्वरूप मैं अटल एवं आत्मिक तौर पर अमर हो गया हूँ और अब मेरे समीप काल नहीं आता। वाहिगुरु ने अपनी भक्ति के भण्डार (गुरु) नानक को सौंप दिए हैं और फिर कभी उनसे कर्मों का लेखा नहीं पूछा॥ ४॥ ३॥ १४॥

सोरठि महला ५ ॥ चरन कमल सिउ जा का मनु लीना से जन त्रिपति अघाई ॥ गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर त्रिसन त्रिखाई ॥ १ ॥ हरि आराधे अरोग अनदाई ॥ जिस नो विसरै मेरा राम सनेही तिसु लाख बेदन जणु आई ॥ रहाउ ॥ जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे ॥ जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥ २ ॥ जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनंद रसु करिआ ॥ जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥ ३ ॥ जितु को लाइआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा ॥ नानक सह पकरी संतन की रिदै भए मगन चरनारा ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥

जिनका मन भगवान के चरण-कमलों में समाया हुआ है, वे लोग तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं।

जिनके हृदय में अमूल्य गुण निवास नहीं करते, वे पुरुष तृष्णा के ही प्यासे रहते हैं॥ १॥ भगवान की आराधना करने से मनुष्य आरोग्य एवं आनंदित हो जाता है। जिसे भी मेरा प्यारा राम विस्मृत हो जाता है, उसे समझो लाखों ही संकट आकर घेर लेते हैं॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! जिन भक्तों ने तेरी ओट ली है, वे तेरी शरण में सुख भोगते हैं। जिन लोगों को परमपुरुष विधाता भूल गया है, वे दुःखी मनुष्यों में गिने जाते हैं॥ २॥ जिन्होंने गुरु पर श्रद्धा धारण करके प्रभु में सुरति लगाई है, उन्हें महा आनंद के रस की अनुभूति हुई है। जो प्रभु को विस्मृत करके गुरु से विमुख हो जाता है, वह भयानक नरक में पड़ता है॥ ३॥ जैसे भगवान किसी मनुष्य को लगाता है, वह वैसे ही लग जाता है, वैसा ही उसका आचरण बन जाता है। नानक ने तो संतों का आश्रय पकड़ा है और उसका हृदय प्रभु-चरणों में मग्न हो गया है॥ ४॥ ४॥ १५॥

सोरठि महला ५ ॥ राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी ॥ लोभन महि लोभी लोभाइओ तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥ १ ॥ हरि जन कउ इही सुहावै ॥ पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही व्रिपतावै ॥ रहाउ ॥ अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥ खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत ऐसे हितकारी ॥ २ ॥ बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥ जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरि जन हरि गुण गावहि ॥ ३ ॥ जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥ नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥

जैसे राजा राज्य के कार्यों में ही फँसा रहता है, जैसे अभिमानी पुरुष अभिमान में ही फँसा रहता है, जैसे लोभी पुरुष लोभ में ही मुग्ध रहता है, वैसे ही ज्ञानी पुरुष भगवान के रंग में लीन रहता है॥ १॥ भक्त को तो यही भला लगता है कि वह निकट ही दर्शन करके सतगुरु की सेवा करता रहे और भगवान का भजन करके ही तृप्त होता है॥ रहाउ॥ नशे करने वाला पुरुष मादक पदार्थों में ही लीन रहता है और भू-स्वामी का अपनी भूमि की वृद्धि से प्रेम है। जैसे छोटे बालक का दूध से लगाव है, वैसे ही संतजन प्रभु से अत्याधिक प्रेम करते हैं॥ २॥ विद्वान पुरुष विद्या के अध्ययन में ही मग्न रहता है और आँखें सौन्दर्य रूप देख-देखकर सुख की अनुभूति करती हैं। जैसे जीभ विभिन्न स्वादों में मस्त रहती है, वैसे ही भक्त भगवान का गुणगान करने में लीन रहता है॥ ३॥ वह समस्त हृदयों का स्वामी जैसी मनुष्य की भूख-अभिलाषा है, वैसी ही वह इच्छा पूरी करने वाला है। नानक को तो प्रभु-दर्शनों की तीव्र अभिलाषा थी और अंतर्यामी प्रभु उसे मिल गया है॥ ४॥ ५॥ १६॥

सोरठि महला ५ ॥ हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥ १ ॥ माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥ निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥ २ ॥ तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥ ३ ॥ तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥ कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥

हे पतितपावन ! हम पापों की मैल से मलिन हैं और तुम ही हमें पवित्र करते हो। हम निर्गुण हैं और तू हमारा दाता है। हम मूर्ख हैं, पर तुम चतुर-सियाने हो। तुम ही सर्वकला के ज्ञाता हो॥

१॥ हे ईश्वर ! हम जीव ऐसे नीच हैं और तुम ऐसे (सर्वकला सम्पूर्ण) हो। हम बड़े पापी हैं और तुम पापों का नाश करने वाले हो। हे ठाकुर जी ! तेरा निवास स्थान मनोरम है॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर ! तुम ही आत्मा, शरीर एवं प्राण देकर सबकी रचना करके निवाजते हो। हे मेहरबान प्रभु ! हम गुणविहीन हैं और कोई भी गुण हमारे भीतर विद्यमान नहीं। अतः हमें गुणों का दान दीजिए॥ २॥ हे दीनदयालु ! हम जीवों का तुम भला ही करते हो परन्तु हम तुच्छ जीव तेरे भले को नहीं समझते। तुम हम पर सर्वदा ही दयावान हो। हे परमपुरुष विधाता ! तुम हमें सुख-समृद्धि प्रदान करने वाले हो, इसलिए तुम अपनी संतान की रक्षा करना॥ ३॥ हे ईश्वर ! तुम गुणों के कोष हो, अटल सुल्तान हो और समस्त जीव तेरे समक्ष तुझ से ही (भिक्षा) माँगते हैं। नानक का कथन है कि हे परमेश्वर ! हम जीवों का यही हाल है। अतः तुम हम पर अपार कृपा करके हमें संतों के मार्ग पर चलाओ॥ ४॥ ६॥ १७॥

सोरठि महला ५ घरु २ ॥ मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥ १ ॥ माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ कीते कउ मेरै संमानै करणहारु त्रिणु जानै ॥ तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥ २ ॥ खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ रूड़ो गूड़ो गहिर गंभीरो ऊचौ अगम अपारे ॥ ३ ॥ साधसंगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी ॥ अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥ ४ ॥ ७ ॥ १८ ॥

जैसे तूने माता के गर्भ में अपने सिमरन की देन देकर मेरी रक्षा की थी; वैसे ही हे मुक्तिदाता प्रभु ! इस जगत रूपी अग्नि सागर की अथाह लहरों से मुझे पार कर दो॥ १॥ हे भगवान ! तू ही मेरे सिर पर मेरा ठाकुर है और लोक-परलोक में तेरा ही मुझे आसरा है॥ रहाउ॥ भगवान द्वारा रचित पदार्थों को तुच्छ मनुष्य पर्वत तुल्य बड़ा जानता है परन्तु उस रचयिता को तृण मात्र ही समझता है। हे परमात्मा ! तू दाता है और सभी तेरे द्वार पर भिखारी हैं। किन्तु तू अपनी इच्छानुसार ही दान देता है॥ २॥ हे ईश्वर ! तुम्हारी लीलाएँ अद्भुत हैं क्योंकि एक क्षण में तुम कुछ होते हो और एक क्षण में ही कुछ अन्य भी। तुम सुन्दर, रहस्यपूर्ण, गहन-गंभीर, सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार हो॥ ३॥ जब तूने मुझे साधुओं की पावन सभा में मिलाया तो ही मैंने तुम्हारी वाणी सुनी है। निर्लिप्त परमात्मा का तेज-प्रताप देखकर नानक के मन में आनंद पैदा हो गया है॥ ४॥ ७॥ १८॥

सोरठि महला ५ ॥ हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥ संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥ १ ॥ हम संतन सिउ बणि आई ॥ पूरबि लिखिआ पाई ॥ इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥ संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥ २ ॥ संतन मोकउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ धरम राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥ ३ ॥ महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे ॥ कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥ ४ ॥ ८ ॥ १९ ॥

हे प्यारे ! हम संतों की चरण-धूलि हैं और हम उनकी शरण में ही रहते हैं। संत हमारा प्रबल सहारा है और वही हमारा सुन्दर आभूषण हैं॥ १॥ संतों से ही हमारी बनती है। जो कुछ पूर्व-जन्म के कर्मों अनुसार तकदीर में लिखा था, वह मुझे मिल गया है। हे संतजनो ! मेरा यह मन आपका

ही है॥ रहाउ॥ संतों से ही मेरा लेन-देन है और उनसे ही मेरा व्यवहार है। संतों की संगति में हमने लाभ अर्जित किया है; हरि की भक्ति के भण्डार हमारे हृदय में भरे हुए हैं॥ २॥ जब संतों ने मुझे हरि-नाम की पूँजी सौंपी तो मेरे मन का धोखा उतर गया। अब यमराज भी क्या कर सकता है ? क्योंकि भगवान ने ही मेरे कर्मों का लेखा फाड़ दिया है॥ ३॥ संतों के प्रसाद से मैं महा आनंदित हो गया हूँ और मुझे सुख की प्राप्ति हो गई है। नानक का कथन है कि मेरा मन तो ईश्वर के साथ लग कर उसके अद्‌भुत प्रेम-रंग में ही रत हो गया है॥ ४॥ ८॥ १६॥

सोरठि मः ५ ॥ जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी ॥ राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥ १ ॥ पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरि पूरे दीआ उपदेसा तुम ही संगि पराता ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥ होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥ २ ॥ घाल न भानै अंतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥ करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥ ३ ॥ गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रहम निरंकारा ॥ नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥

हे मानव ! जितनी भी सामग्री-पदार्थ तुम देख रहे हो उसे तूने यहाँ ही छोड़ जाना है। अतः राम के नाम के साथ ही व्यापार करो, तभी तुझे मुक्ति पद की लब्धि होगी॥ १॥ हे प्यारे ! तू ही मेरा सुखदाता है। पूर्ण गुरु ने जबसे मुझे उपदेश दिया है, तब से मेरी तुझ में ही लगन लग गई है॥ रहाउ॥ कामवासना, क्रोध, लोभ, मोह एवं अभिमान में लीन होने से सुख की उपलब्धि नहीं होती। हे मेरे मन ! तू सबकी चरण-धूलि बन जा, तो ही तुझे आनंद-प्रसन्नता एवं सुख की उपलब्धि होगी॥ २॥ हे मन ! तू उसका भजन कर, जो सबके अन्तर की भावना को जानता है और जो तेरी सेवा को निष्फल नहीं होने देता। तू उस गुरुदेव की पूजा कर और अपना यह मन उसे अर्पण कर दे जो अकालमूर्ति (अमर) है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे गोविन्द, हे दामोदर, हे दीनदयाल, हे माधव, हे निरंकार परब्रह्म ! तेरा नाम ही मेरी नित्य की उपयोगी वस्तु है, तेरा नाम ही मेरा सामान है और तेरा नाम ही मेरे प्राणों का आधार है॥ ४॥ ६॥ २०॥

सोरठि महला ५ ॥ मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥ १ ॥ पूरे गुर की देखु वडाई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥ दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मंगल बिसरामा ॥ मन बांछत फल मिले अचिंता पूरन होए कामा ॥ २ ॥ ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे ॥ निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥ कहु नानक ता के पूर करंमा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥ ४ ॥ १० ॥ २१ ॥

सतगुरु ने मृतक के शरीर में (हरि-नाम) प्राण डाल दिए हैं और परमात्मा से बिछुड़े हुए जीव को उससे मिला दिया है। पशु, प्रेत एवं मूर्ख आदमी भी हरि-नाम के श्रोता बन गए हैं और उन्होंने अपने मुख से हरि-नाम का ही गुणगान किया है॥ १॥ पूर्ण गुरु की बड़ाई देखो, उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ रहाउ॥ उसने दुःख एवं शोक का डेरा ध्वस्त कर दिया है और जीव को आनंद-मंगल एवं विश्राम प्रदान कर दिया है। वह सहज ही अपने मनोवांछित फल प्राप्त कर लेता है और उसके समस्त कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ २॥ वह इहलोक में भी सुख प्राप्त करता है, परलोक में भी उसका मुख उज्ज्वल हो जाता है और उसका जन्म-मरण का चक्र मिट गया है।

जो अपने सतगुरु के मन को अच्छे लगते हैं, वे निर्भीक हो गए हैं और प्रभु का नाम उनके हृदय में बस गया है॥ ३॥ जो व्यक्ति उठते-बैठते भगवान का यशगान करता है, उसके दुःख-दर्द एवं सन्देह उससे लुप्त हो जाते हैं। नानक का कथन है कि जिसका मन गुरु के चरणों में लग जाता है, उसके तमाम कार्य पूर्ण हो जाते हैं॥ ४॥ १०॥ २१॥

सोरठि महला ५ ॥ रतनु छाडि कउडी संगि लागे जा ते कछू न पाईऐ ॥ पूरन पारब्रहम परमेसुर मेरे मन सदा धिआईऐ ॥ १ ॥ सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥ बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ म्रिग त्रिसना अरु सुपन मनोरथ ता की कछु न वडाई ॥ राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥ २ ॥ हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥ धावत धावत नह त्रिपतासिआ राम नामु नही चीना ॥ ३ ॥ साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे ॥ नानक की प्रभ पाहि बिनंती काटहु अवगुण मेरे ॥ ४ ॥ ११ ॥ २२ ॥

जीव अनमोल नाम-रत्न को छोड़कर मोह-माया रूपी कौड़ी में आसक्त है, जिसके द्वारा कुछ भी प्राप्त नहीं होता। हे मेरे मन! सदैव पूर्ण परब्रह्म परमेश्वर का ही ध्यान करना चाहिए॥ १ ॥ हे प्राणी! हरि-नाम का भजन करो। हे प्राणी! यह तेरा नाजुक शरीर एक दिन जरूर नाश हो जाएगा॥ रहाउ॥ मृगतृष्णा एवं स्वप्न मनोरथ को कोई महानता नहीं दी जा सकती। चूंकि राम के भजन के बिना कुछ भी प्राणी के काम नहीं आता, न ही अंत में कुछ उसके साथ जाता है॥ २॥ मनुष्य का समूचा जीवन अहंकार करते हुए ही व्यतीत हो जाता है और वह अपनी आत्मा की भलाई हेतु कुछ भी प्राप्त नही करता। वह जीवन भर धन-दौलत के लिए इधर-उधर दौड़ता हुआ तृप्त नहीं होता और राम के नाम को नहीं जानता॥ ३॥ वह माया में आसक्त होकर विकारों के स्वाद एवं विषय-विकारों के रसों में लीन रहता है और असंख्य दुष्कर्म करता हुआ योनियों में ही भटकता रहता है। नानक की तो प्रभु के समक्ष यही प्रार्थना है कि हे प्रभु! मेरे अवगुण नाश कर दीजिए॥ ४॥ ११॥ २२॥

सोरठि महला ५ ॥ गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥ महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥ १ ॥ पूरै गुरि मेटिओ भरमु अंधेरा ॥ भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥ जत कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गोपाला ॥ नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ता की पूरन घाला ॥ ३ ॥ कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥ कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥ ४ ॥ १२ ॥ २३ ॥

पूर्ण अविनाशी परमात्मा का गुणगान करो जिसके फलस्वरूप कामवासना एवं क्रोध का विष जल जाता है। यह सृष्टि महाभयंकर अग्नि का सागर है और साधुओं की संगति करने से ही इससे उद्धार होता है॥ १॥ पूर्ण गुरु ने भ्रम का अन्धकार नष्ट कर दिया है। प्रेमपूर्वक भक्ति करते हुए प्रभु का भजन करो चूंकि वह हमेशा ही निकट रहता है॥ रहाउ॥ हरि-नाम-भण्डार में से नामामृत का पान करने से मन एवं तन तृप्त रहते हैं। परमेश्वर सर्वत्र ही परिपूर्ण हो रहा है। वह न किधर जाता है और न ही कहीं से आता है॥ २॥ जिसके मन में भगवान का निवास है, उसे ही पूजा, तपस्या, संयम का ज्ञान है और वही तत्ववेत्ता है। जिसे गुरु के सान्निध्य में नाम-रत्न की उपलब्धि हो गई है, उसकी साधना सफल है॥ ३॥ उसके समस्त कलह-क्लेश एवं दुख-दर्द नाश हो गए हैं और उसकी मृत्यु की फाँसी भी कट गई है। हे नानक! प्रभु ने उस पर अपनी कृपा की है, जिससे उसका मन-तन विकसित हो गया है॥ ४॥ १२॥ २३॥

सोरठि महला ५ ॥ करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रहम प्रभु सुआमी ॥ सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥ सूख सहज आनंद मंगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥ गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने ॥ गुण गावत आराधि नामु हरि आए अपुनै थाने ॥ २ ॥ जै जै कारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी ॥ सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥ ३ ॥ गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥ भइओ क्रिपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २४ ॥

जगत का स्वामी परब्रह्म-प्रभु सबकुछ करने-करवाने वाला है, वह सबका दाता है। सब जीवों को पैदा करने वाला दयालु प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है॥ १॥ मेरा गुरु आप ही सहायक हुआ है, जिसके फलस्वरूप मुझे सहज सुख, आनंद, मंगल एवं खुशियों की उपलब्धि हो गई है और मेरी अद्भुत लोकप्रियता हो गई है॥ रहाउ॥ गुरु की शरण में आने से मेरे तमाम भय नाश हो गए हैं और सत्य के दरबार में सत्कृत हो गया हूँ। हरि-नाम का गुणगान एवं आराधना करते हुए मैं अपने मूल निवास में आ गया हूँ॥ २॥ अब सभी मेरी जय-जयकार एवं उस्तति करते हैं और साधुओं की संगति मुझे बहुत प्यारी लगती है। मैं अपने प्रभु पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ, जिसने पूर्णतया मेरी लाज बचा ली है॥ ३॥ जिस किसी को भी भगवान के दर्शन प्राप्त हुए हैं, ज्ञान-गोष्टि एवं नाम को श्रवण करके उनका उद्धार हो गया है। हे नानक ! मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है, जिससे मैं आनंद से अपने सच्चे घर में आ गया हूँ॥ ४॥ १३॥ २४॥

सोरठि महला ५ ॥ प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ ॥ दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥ १ ॥ प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ चिंता सगल बिनासी ॥ करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥ २ ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे ॥ चरन कमल बसे रिद अंतरि अम्रित हरि रसु चाखे ॥ ३ ॥ करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥ नानक दास ता कै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥ ४ ॥ १४ ॥ २५ ॥

प्रभु की शरण में आने से सारे भय निवृत्त हो गए हैं, दुःख-संकटों का अंत हुआ है और सुख की उपलब्धि हो गई है। पूर्ण सतगुरु का ध्यान करने से परब्रह्म स्वामी दयालु हो गया है॥ १॥ हे प्रभु जी ! तू ही मेरा मालिक एवं दाता है। हे दीनदयालु प्रभु ! मुझ पर कृपा करो ताकि तेरे रंग में लीन होकर तेरा गुणगान करता रहूँ॥ रहाउ॥ सतगुरु ने मेरे अन्तर्मन में नाम का खजाना दृढ कर दिया है और मेरी समस्त चिंताओं का नाश हो गया है। उसने अपनी कृपा करके मुझे अपना बना लिया है और अविनाशी प्रभु मेरे मन में निवास कर गया है॥ २॥ जिसकी रक्षा स्वयं सतगुरु करता है, उसे कोई संकट नहीं आता। उसके हृदय में भगवान के सुन्दर चरण कमल बस जाते हैं और वह हरि-रस अमृत को चखता रहता है॥ ३॥ जिस प्रभु ने तेरे मन की अभिलाषा पूर्ण कर दी है, उसकी सेवा-भक्ति सेवक की भांति कर। दास नानक तो उस प्रभु पर कुर्बान जाता है, जिसने उसकी पूर्ण लाज-प्रतिष्टा बचा ली है॥ ४॥ १४॥ २५॥

सोरठि महला ५ ॥ माइआ मोह मगनु अंधिआरै देवनहारु न जानै ॥ जीउ पिंडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ॥ १ ॥ मन मूड़े देखि रहिओ प्रभ सुआमी ॥ जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानो ॥ रहाउ ॥ जिहवा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा ॥ बहुतु

जोनि भरमत दुखु पाइआ हउमै बंधन के भारा ॥ २ ॥ देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥ चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥ ३ ॥ दीन दइआल पूरन दुख भंजन तुम बिनु ओट न काई ॥ काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ २६ ॥

माया-मोह के अन्धेरे में मग्न होकर मनुष्य सब कुछ देने वाले दाता को नहीं जानता। वह उसे नहीं जानता, जिसने प्राण एवं शरीर की सृजना करके उसकी रचना की है और जो शक्ति उसके भीतर है, वह उसे ही अपना मानता है॥ १॥ हे विमूढ़ मन ! स्वामी-प्रभु तेरे कर्मों को देख रहा है। जो कुछ तू करता है, वह सब जानता है और कुछ भी उससे छिपा नहीं रह सकता॥ रहाउ॥ जिह्वा के स्वाद एवं लालच के नशे में मदमस्त व्यक्ति के अन्दर अनेक पाप-विकार ही उत्पन्न होते हैं। अहंत्व के बन्धनों के बोझ के नीचे अनेक योनियों में भटकता हुआ वह बहुत दुःख भोगता है॥ २॥ द्वार बन्द करके एवं अनेक पर्दों के भीतर मनुष्य पराई नारी के साथ भोग-विलास करता है। लेकिन जब चित्रगुप्त तुझसे कर्मों का लेखा मांगेगा तो तेरे कुकर्मों पर कौन पर्दा डालेगा ?॥ ३॥ हे दीनदयालु ! हे सर्वव्यापी ! हे दुःखनाशक ! तेरे अलावा मेरा कोई सहारा नहीं है। हे प्रभु ! नानक ने तेरी ही शरण ली है, इसीलिए उसे संसार-सागर में से बाहर निकाल लो॥ ४॥ १५॥ २६॥

सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥ गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥ १ ॥ हरि साचा सिमरहु भाई ॥ साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥ जिस नो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥ २ ॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रंगि जागा ॥ ३ ॥ मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥ आदि अंति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ॥ ४ ॥ १६ ॥ २७ ॥

परब्रह्म-प्रभु मेरा सहायक हो गया है और उसकी कथा एवं कीर्तन सुखदायक है। हे प्राणी ! पूर्ण गुरु की वाणी का जाप करके नित्य आनंद करो॥ १॥ हे भाई ! सच्चे परमेश्वर की आराधना करो। सत्संगति में हमेशा सुख की प्राप्ति होती है और भगवान कभी भी विस्मृत नहीं होता॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर ! तेरा नाम अमृत है, जो भी तेरा नाम-सिमरन करता है, वह जीवित रहता है। जिस पर परमात्मा का करम होता है, वह मनुष्य पवित्र हो जाता है॥ २॥ मेरा मन उस गुरु के चरणों में लगा है, जो विघ्नों का विनाश करने वाला एवं सब दुःखों का नाशक है। अच्युत अविनाशी प्रभु का गुणगान करते हुए मैं रात-दिन हरि-रंग में जाग्रत रहता हूँ॥ ३॥ सुखकारी हरि की कथा सुनने से मुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है। आदिकाल, मध्यकाल एवं अन्तकाल तक वह प्रभु ही नानक का साथी बना हुआ है॥ ४॥ १६॥ २७॥

सोरठि महला ५ पंचपदा ॥ बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥ १ ॥ संतहु इहा बतावहु कारी ॥ जितु हउमै गरबु निवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवां सगल रेनारी ॥ २ ॥ पेखिओ प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥ ३ ॥ अउखधु नामु निरमल जलु अंम्रितु पाईऐ गुरू दुआरी ॥ ४ ॥ कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥ ५ ॥ १७ ॥ २८ ॥

ईश्वर करे मेरा मोह और मेरा-तेरा की भावना तथा अहंत्व का नाश हो जाए॥ १॥ हे संतो ! मुझे कोई ऐसी युक्ति बताओ, जिससे मेरा आत्माभिमान एवं घमण्ड का नाश हो जाए॥ १॥

रहाउ॥ सारी दुनिया के लोगों को मैं परब्रह्म का रूप ही मानता हूँ और सब की चरण-धूलि ही होता हूँ॥ २॥ पूज्य परमेश्वर को हमेशा मैंने अपने साथ ही देखा है, जिससे मेरी दुविधा की दीवार ध्वस्त हो गई है॥ ३॥ भगवान की नाम-औषधि एवं निर्मल अमृत जल की प्राप्ति गुरु के द्वारा ही होती है॥ ४॥ हे नानक! जिस व्यक्ति की तकदीर में लिखा हुआ है, उसने गुरु से मिलकर अपना रोग नष्ट कर लिया है॥ ५॥ १७॥ २८॥

सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥ ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥ १ ॥ संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥ पूरन पूरि रहिओ सरब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ ॥ सरब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ २९ ॥

जैसे समस्त वनस्पति में अग्नि विद्यमान है और समूचे दूध में घी होता है, वैसे ही उच्च एवं निम्न अच्छे-बुरे सब जीवों में परमात्मा की ज्योति समाई हुई है॥ १॥ हे संतो! घट-घट में परमात्मा सबमें समा रहा है। वह जल एवं धरती में सर्वव्यापी है॥ १॥ रहाउ॥ नानक तो गुणों के भण्डार भगवान का ही यशगान करता है। सतगुरु ने उसका भ्रम मिटा दिया है। सर्वव्यापक ईश्वर सबमें समाया हुआ है लेकिन वे समस्त प्राणियों से सदा निर्लिप्त रहता है॥ २॥ १॥ २९॥

सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥ चारि पदारथ नव निधि पावहि बहुरि न त्रिसना भुखी ॥ १ ॥ जा को नामु लैत तू सुखी ॥ सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥ गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि त्रिभवणि रुखी ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

जिस (भगवान) का सिमरन करने से आनंद प्राप्त होता है और जन्म-मरण के भय का दुःख नाश हो जाता है। चार उत्तम पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष एवं नवनिधियों की उपलब्धि होती है और फिर दुबारा तुझे तृष्णा की भूख नहीं लगती॥ १॥ जिसका नाम जपने से तू सुखी रहता है। हे जीव! अपने मन, तन एवं मुँह से, अपने श्वास-श्वास से, ठाकुर जी का ही ध्यान-मनन करते रहो॥ १॥ रहाउ॥ ध्यान-मनन से तुझे शांति प्राप्त होगी, तेरा मन शीतल हो जाएगा और तेरे अन्तर्मन में तृष्णा की अग्नि प्रज्वलित नहीं होगी। गुरु ने नानक को प्रभु के दर्शन समुद्र, धरती, पेड़ों एवं तीनों लोकों में करवा दिए हैं॥। २॥ २॥ ३०॥

सोरठि महला ५ ॥ काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु ॥ इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥ १ ॥ अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥ हरि जन मंगल गावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु ॥ गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥ २ ॥ ३ ॥ ३१ ॥

हे ईश्वर! काम, क्रोध, लोभ, झूठ एवं निन्दा इत्यादि से स्वयं ही मेरी मुक्ति करवा दो। इस मन के भीतर से इन बुराइयों को निकाल कर मुझे अपने निकट आमंत्रित कर लो॥ १॥ अपनी विधि तू स्वयं ही मुझे बोध करवा दे। हे भक्तजनो! हरि के मंगल गीत गायन करो॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! मेरे मन में यह विधि डाल दीजिए कि मैं अपने मन से तुझे कभी विस्मृत न करूँ। हे नानक! बड़े भाग्य से पूर्ण गुरु से भेंट हो गई है, इसलिए अब मैं इधर-उधर नहीं दौड़ता॥ २॥ ३॥ ३१॥

सोरठि महला ५ ॥ जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई ॥ तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई ॥ १ ॥ हरि हरि सिमरहु संत गोपाला ॥ साधसंगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥ कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥ २ ॥ ४ ॥ ३२ ॥

जिसका सिमरन करने से सबकुछ प्राप्त हो जाता है और मनुष्य की साधना व्यर्थ नहीं जाती: जो सबमें समा रहा है, उस प्रभु को छोड़कर किसी दूसरे में क्यों मग्न हो रहे हो ?॥ १॥ हे गोपाल के संतो ! हरि की आराधना करो, सत्संगति में मिलकर हरि-नाम का भजन करो, तुम्हारी साधना साकार हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ वह परमेश्वर अपने सेवकों की नित्य देखभाल एवं पालन-पोषण करता है और प्रेमपूर्वक अपने गले से लगा लेता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तुझे विस्मृत करके यह जगत कैसे जीवन प्राप्त कर सकता है॥ २॥ ४॥ ३२॥

सोरठि महला ५ ॥ अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥ गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥ १ ॥ मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥ जा की सरणि पइआं सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई ॥ तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३३ ॥

अविनाशी परमात्मा सब जीवों का दाता है, उसका सिमरन करने से विकारों की सारी मैल दूर हो गई है। वह गुणों का भण्डार अपने भक्तों की पूंजी है किन्तु कोई विरला ही उसे प्राप्त करता है॥ १॥ हे मेरे मन ! उस गोपाल-गुरु प्रभु का जाप करो; जिसकी शरण लेने से सुख की प्राप्ति होती है और दोबारा कदापि कोई दुःख नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ बड़ी किस्मत से संतों की संगति प्राप्त होती है, उनके साथ भेंट करने से दुर्बुद्धि नष्ट हो जाती है। दास नानक उनकी चरण-धूलि की अभिलाषा करता है, जिन्होंने हरि का नाम अपने हृदय में पिरोया हुआ है॥ २॥ ५॥ ३३॥

सोरठि महला ५ ॥ जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥ १ ॥ मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥ हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥ अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३४ ॥

गुरु जन्म-जन्मांतरों के दुःख-क्लेश नष्ट कर देता है और मुरझाए हुए मन को हरा-भरा कर देता है। गुरु के दर्शन करने से मनुष्य निहाल हो जाता है और हरि के नाम का चिंतन करता है॥ १॥ गोविन्द गुरु ही मेरा वैद्य है। वह मेरे मुख में हरि-नाम की औषधि डालता है और मृत्यु की फाँसी काट देता है॥ १॥ रहाउ॥ सर्वकला समर्थ पूर्ण पुरुष विधाता स्वयं ही रचयिता है। हे नानक ! परमात्मा ने स्वयं ही अपने दास को बचाया है और नाम ही उसके जीवन का आधार है॥ २॥ ६॥ ३४॥

सोरठि महला ५ ॥ अंतर की गति तुम ही जानी तुझ ही पाहि निबेरो ॥ बखसि लेहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥ काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥ २ ॥ ७ ॥ ३५ ॥

हे ईश्वर ! मेरे अन्तर्मन की गति तुम ही जानते हो और तेरे पास ही अन्तिम निर्णय है। हे मालिक-प्रभु ! मुझे क्षमा कर दो; चाहे मैंने लाखों ही भूलें एवं अपराध किए हैं॥ १॥ हे प्रभु जी ! तू ही मेरा मालिक है, जो मेरे निकट ही रहता है। हे हरि ! अपने इस शिष्य को अपने चरणों में शरण प्रदान कीजिए॥ १॥ रहाउ॥ मेरा प्रभु बेशुमार, बेअंत, सर्वोच्च एवं गुणों का गहरा सागर है। जब प्रभु ने बन्धनों की फांसी काटकर नानक को अपना दास बना लिया है तो अब उसे किसी के सहारे की क्या जरूरत है॥ २॥ ७॥ ३५॥

सोरठि मः ५ ॥ भए क्रिपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥ असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥ १ ॥ भलो समूरतु पूरा ॥ सांति सहज आनंद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ हरि नामु निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥ २ ॥ ८ ॥ ३६ ॥

जब गोविन्द गुरु मुझ पर मेहरवान हो गया तो मैंने सारे मनोरथ पा लिए। भगवान के सुन्दर चरणों में लगकर मैं स्थिर हो गया हूँ और गोविन्द के ही गुण गाए हैं॥ १॥ वह मुहूर्त पूर्ण एवं शुभ है, जब भगवान के नाम का भजन करने से मुझे आत्मिक शांति, धैर्य एवं आनंद की प्राप्ति हो गई है और मेरे भीतर अनहद नाद बजते हैं॥ १॥ रहाउ॥ अपने प्रियतम स्वामी से भेंट करके मेरा हृदय-घर सुखदायक हो गया है। दास नानक को हरि-नाम का खजाना प्राप्त हुआ है और उसकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं॥ २॥ ८॥ ३६॥

सोरठि महला ५ ॥ गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥ भए क्रिपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥ १ ॥ मेरो गुरु रखवारो मीत ॥ दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥ गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ९ ॥ ३७ ॥

गुरु के चरण मेरे हृदय में बस गए हैं और प्रभु ने शुभ लक्षण (गुण) पैदा कर दिए हैं। जब पूर्ण परमेश्वर मुझ पर कृपालु हुआ तो मैंने नाम के भण्डार को अपने हृदय में ही पहचान लिया॥ १॥ गुरु मेरा रखवाला एवं मित्र है। वह मुझे नित्य ही दोगुनी-चौगुनी प्रशंसा एवं शोभा देता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने दर्शन-दीदार करने वाले सब जीवों का उद्धार कर दिया है। पूर्ण गुरु की महिमा बड़ी अद्‌भुत है और नानक सदा ही उस पर बलिहारी जाता है॥ २॥ ९॥ ३७॥

सोरठि महला ५ ॥ संचनि करउ नाम धनु निरमल थाती अगम अपार ॥ बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥ १ ॥ हरि के चरन कमल आधार ॥ संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु चड़ि लंघउ बिखु संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भए क्रिपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥ २ ॥ १० ॥ ३८ ॥

निर्मल हरि-नाम रूपी धन को संचित करो, चूंकि नाम की धरोहर अनन्त एवं अपार है। हे गुरु के सिक्खो एवं मेरे परिजनो ! नाम-आहार का सेवन करके जीवित रहो और विलक्षण विनोद एवं आनन्द-सुख भोगो॥ १॥ हरि के सुन्दर चरण-कमल ही हमारा जीवनाधार है। संतों की कृपा से मुझे सत्य का जहाज़ प्राप्त हुआ है, जिस पर सवार होकर मैं विषैले जगत सागर से पार हो जाऊँगा॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण अविनाशी प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है और उसने स्वयं ही मेरी देखरेख की है। उसके दर्शन-दीदार करके नानक प्रसन्न हो गया है। हे नानक ! भगवान के गुणों का कोई शुमार नहीं वे तो बेशुमार हैं॥ २॥ १०॥ ३८॥

सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ ॥ आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥ १ ॥ सतिगुरु पूरा मेरै नालि ॥ पारब्रहमु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई ॥ नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ २ ॥ ११ ॥ ३६ ॥

पूर्ण गुरु ने अपनी ऐसी कला (शक्ति) प्रगट की है कि समस्त जीवों के मन में दया उत्पन्न हो गई है। भगवान ने मुझे अपने साथ मिलाकर शोभा प्रदान की है और हर तरफ कुशलक्षेम ही है॥ १॥ पूर्ण सतगुरु सदा मेरे साथ है। अपने परब्रह्म-प्रभु का जाप करने से मैं सदा निहाल रहता हूँ॥ रहाउ॥ अन्दर-बाहर, देश-दिशांत्तर जगत में जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, उधर ही भगवान मौजूद है। हे नानक! बड़ी किस्मत से मुझे ऐसा गुरु प्राप्त हुआ है कि उस जैसा महान् दूसरा कोई नहीं॥ २॥ ११॥ ३६॥

सोरठि महला ५ ॥ सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥ नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥ २ ॥ १२ ॥ ४० ॥

प्रभु के सुन्दर चरणों के दर्शन करने से सुख, मंगल, कल्याण एवं सहज ध्वनि की उपलब्धि हो गई है। रखवाले परमात्मा ने बालक हरिगोविंद की रक्षा की है और सतगुरु ने उसका ताप निवृत्त कर दिया है॥ १॥ जिसकी की हुई सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती, उस सतगुरु की शरण में आने से मेरा परिवार बच गया है॥ रहाउ॥ जब अपना प्रभु दयालु हो गया तो घर में सुख और बाहर भी सुख ही सुख हो गया। हे नानक! अब मुझे कोई भी विघ्न नहीं लगता, क्योंकि मेरा प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है॥ २॥ १२॥ ४०॥

सोरठि महला ५ ॥ साधू संगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥ मिटि गई चिंता सिमरि अनंता सागरु तरिआ भाई ॥ १ ॥ हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥ नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥ २ ॥ १३ ॥ ४१ ॥

साधु की संगत करने से मेरे मन में उद्यम उत्पन्न हो गया है और मैंने नाम-रत्न का यश गायन किया है। हे भाई! परमेश्वर का सिमरन करने से मेरी चिन्ता मिट गई है और संसार-सागर से तर गया हूँ॥ १॥ अपने हृदय में मैंने भगवान के चरणों को बसा लिया है। अब मुझे सुख प्राप्त हो गया है, सहज ध्वनि मेरे भीतर गूंज रही है एवं रोगों के समुदाय नष्ट हो गए हैं॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! तेरे कौन-कौन से गुणों का मैं बखान करूँ? तेरा तो मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। हे नानक! जब अपना प्रभु सहायक बन गया तो भक्त भी अविनाशी हो गए हैं॥ २॥ १३॥ ४१॥

सोरठि मः ५ ॥ गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ तू सुख संपति रासि ॥ राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥ २ ॥ १४ ॥ ४२ ॥

मेरे प्रभु ने अपनी कृपा की तो मेरे समस्त दुःख-क्लेश एवं रोग नाश हो गए। आठ प्रहर भगवान की आराधना करो चूंकि हमारी साधना भी पूर्ण हो गई है॥ १॥ हे पूज्य परमेश्वर! तू ही हमारी सुख-संपत्ति एवं पूंजी है। मेरी प्रभु के समक्ष यही प्रार्थना है कि हे मेरे प्रियतम! मुझे दुखों से बचा लो॥ रहाउ॥ जो कुछ भी मैं माँगता हूँ, वही कुछ मुझे प्राप्त हो जाता है, मुझे तो अपने मालिक पर ही भरोसा है। नानक का कथन है कि पूर्ण गुरु से भेंट हो जाने से मेरी समस्त चिन्ताएँ मिट गई हैं॥ २॥ १४॥ ४२॥

सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥ १ ॥ मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥ जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला ॥ २ ॥ १५ ॥ ४३ ॥

अपने गुरु सतगुरु का सिमरन करके मैंने अपने समस्त दुःखों-क्लेशों को मिटा लिया है। गुरु के वचनों द्वारा ताप एवं रोग दूर हो गए हैं तथा मुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है॥ १॥ मेरा पूर्ण गुरु सुखों का दाता है। वह समस्त कार्य करने एवं कराने वाला, सर्वकला समर्थ स्वामी एवं पूर्ण पुरुष विधाता है॥ रहाउ॥ हे नानक! अब आप आनंद करो, खुशियाँ मनाओ और प्रभु की उस्तति के मंगल गीत गायन करो, चूंकि गुरु आप पर दयालु हो गया है॥ सारी दुनिया में जय-जयकार हो रही है, चूंकि परब्रह्म मेरा रखवाला हो गया है॥ २॥ १५॥ ४३॥

सोरठि महला ५ ॥ हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि ॥ १ ॥ साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सरब कलिआण ॥ रहाउ ॥ जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥ अपणे दास की आपि पैज राखी नानक सद कुरबाणु ॥ २ ॥ १६ ॥ ४४ ॥

परमात्मा ने हमारे कर्मों की गणना नहीं की और अपने विरद् को पहचान कर हमें क्षमा कर दिया है। उसने अपना हाथ देकर मुझे अपना समझता हुए मेरी रक्षा की है और अब मैं उसके प्रेम का हमेशा आनंद प्राप्त करता रहता हूँ॥ १॥ मेरा सच्चा परमेश्वर सदैव ही मेहरवान है। मेरे पूर्ण सतगुरु ने दुःखों-संकटों पर अंकुश लगाया हैं और अब सर्व कल्याण हो गया है॥ रहाउ॥ जिस ईश्वर ने प्राण डाल कर मेरे शरीर की रचना की है और वस्त्र एवं भोजन प्रदान किया है; उसने स्वयं ही अपने दास की लाज बचा ली है। नानक तो उस पर सदा कुर्बान जाता है॥ २॥ १६॥ ४४॥

सोरठि महला ५ ॥ दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ ॥ पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥ १ ॥ होई राजे राम की रखवाली ॥ सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥ पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥ बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥ २ ॥ १७ ॥ ४५ ॥

हरि-प्रभु ने स्वयं ही पाप निवृत्त करके सारी दुनिया को बचाया है। परब्रह्म-प्रभु ने अपनी कृपा की है और अपने विरद् का पालन किया है॥ १॥ मुझे राजा राम का संरक्षण मिल गया है। सहज सुख एवं आनंद में भगवान का गुणगान करो, इससे मन, तन एवं शरीर सुखी हो जाएगा॥ रहाउ॥ मेरा सतगुरु तो पतितों का कल्याण करने वाला है और मुझे तो उस पर ही भरोसा है। नानक की प्रार्थना सुनकर सच्चे परमेश्वर ने उसके समस्त अवगुण क्षमा कर दिए हैं॥ २॥१७॥ ४५॥

सोरठि महला ५ ॥ बखसिआ पारब्रहम परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥ गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥ तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ॥ रहाउ ॥ सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ ॥ वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ॥ २ ॥ १८ ॥ ४६ ॥

परब्रह्म-परमेश्वर ने क्षमा करके समस्त रोग नष्ट कर दिए हैं। जो पूर्ण गुरु की शरण में आता है, उसका उद्धार हो जाता है और समस्त कार्य भी सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ १॥ हरि के दास ने नाम-सिमरन ही किया है और नाम का ही आसरा लिया है। पूर्ण सतगुरु ने अपनी कृपा करके बालक हरिगोविन्द का ताप उतार दिया है॥ रहाउ॥ हे मेरे प्यारे ! अब सभी सदैव ही आनंद करो, चूंकि मेरे गुरु ने श्री हरिगोविन्द को बचा लिया है। हे नानक ! कर्त्ता परमेश्वर की महिमा महान् है, चूंकि उसके शब्द सत्य हैं और उसकी वाणी भी सत्य है॥ २॥ १८॥ ४६॥

सोरठि महला ५ ॥ भए क्रिपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥ सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठांढि पई संसारि ॥ अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ॥ १ ॥ हरि के चरण रिदै उरि धारि ॥ सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥ करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥ नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥ २ ॥ १९ ॥ ४७ ॥

मेरा मालिक मुझ पर कृपालु हो गया है और मैं उसके सच्चे दरबार में सत्कृत हो गया हूँ॥ हे भाई ! सतगुरु ने हरिगोविन्द का बुखार उतार दिया है और सारे संसार में सुख-शांति हो गई है। अपने जीव की प्रभु ने स्वयं ही रक्षा की है और मृत्यु भी बेअसर हो गई है॥ १॥ भगवान के सुन्दर चरण अपने हृदय में धारण करो। हे भाई ! हमें सदा-सर्वदा ही प्रभु का ध्यान करना चाहिए, चूंकि वह दुःख-मुसीबतों एवं पापों का नाश करने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई ! जिसने सबको पैदा किया है, उसकी शरण में जाने से ही उद्धार होता है। वह तो समस्त कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है, उस परम-सत्य परमेश्वर की कीर्ति भी सत्य है। नानक का कथन है कि हे भाई ! हमें प्रभु का ही ध्यान करना चाहिए, जिसके फलस्वरूप मन तन शीतल हो जाता है॥ २॥ १९॥ ४७॥

सोरठि महला ५ ॥ संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥ सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥ १ ॥ सरब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥ नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥ २ ॥ २० ॥ ४८ ॥

हे संतो ! मैंने तो हरि-नाम का ही ध्यान-मनन किया है। मैं सुखों के सागर प्रभु को कदापि विस्मृत नहीं करता और मनोवांछित फल प्राप्त करता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण सतगुरु ने अपनी कृपा करके हरिगोविन्द का ताप (बुखार) उतार दिया है। परब्रह्म-प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है और मेरे सारे परिवार का दुःख मिट गया है॥ १॥ मुझे हरि के नाम का ही सहारा है, जो समस्त खुशियों, अमृत एवं सुन्दरता का खजाना है। हे नानक ! उस परमेश्वर ने मेरी लाज-प्रतिष्ठा को बचा लिया है और सारी दुनिया का कल्याण हो गया है॥ २॥ २०॥ ४८॥

सोरठि महला ५ ॥ मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥ धारि क्रिपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥ साधसंगति

ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जांई ॥ १ ॥ हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ४९ ॥

(उल्लेखनीय है कि गुरु अर्जुन देव जी के सुपुत्र श्री हरिगोबिन्द साहिब को एक समय बुखार हुआ था और प्रभु की कृपा से जब बुखार दूर हुआ तो गुरु जी ने इस शब्द का उच्चारण किया था।)

मेरा सतगुरु (बालक हरिगोबिन्द का) रखवाला हुआ है। अपनी कृपा करके प्रभु ने हाथ देकर श्री हरिगोबिन्द की रक्षा की है और अब वह बिल्कुल तन्दरुस्त है॥ १॥ रहाउ॥ श्री हरिगोबिन्द का बुखार अब निवृत्त हो गया है, जिसे प्रभु ने स्वयं मिटाया है और अपने सेवक की लाज-प्रतिष्ठा बचा ली है। सत्संगति से ही हमें सभी फल प्राप्त हुए हैं और सतिगुरु पर मैं कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ प्रभु ने मेरे लोक-परलोक दोनों ही संवार दिए हैं और उसने मेरे गुणों एवं अवगुणों का ख्याल नहीं किया। नानक का कथन है कि हे गुरु! तेरा वचन अटल है, अपना फलदायक हाथ तूने मेरे मस्तक पर रखा है॥ २॥ २१॥ ४९॥

सोरठि महला ५ ॥ जीअ जंत्र सभि तिस के कीए सोई संत सहाई ॥ अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥ १ ॥ पारब्रहमु पूरा मेरै नालि ॥ गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सरब दइआल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता ॥ अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै जिउ बारिक पित माता ॥ २ ॥ २२ ॥ ५० ॥

सभी जीव-जन्तु उस (परमेश्वर) के पैदा किए हुए हैं और वही संतों का सहायक है। अपने सेवक की वह स्वयं ही रक्षा करता है और उसकी महिमा पूर्ण है॥ १॥ पूर्ण परब्रह्म-परमेश्वर मेरे साथ है। पूर्ण गुरु ने भलीभांति पूर्णतया मेरी लाज-प्रतिष्ठा बचा ली है और वह सब पर दयालु हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ नानक रात-दिन जीवन एवं प्राणों के दाता परमेश्वर के नाम का ही ध्यान करता रहता है। अपने दास को वह ऐसे गले से लगाकर रखता है जैसे माता-पिता अपनी संतान को गले से लगाकर रखते हैं॥ २॥ २२॥ ५०॥

सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइआ ॥ सिकदारहु नह पतीआइआ ॥ उमरावहु आगै झेरा ॥ मिलि राजन राम निबेरा ॥ १ ॥ अब ढूढन कतहु न जाई ॥ गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ आइआ प्रभ दरबारा ॥ ता सगली मिटी पूकारा ॥ लबधि आपणी पाई ॥ ता कत आवै कत जाई ॥ २ ॥ तह साच निआइ निबेरा ॥ ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥ अंतरजामी जानै ॥ बिनु बोलत आपि पछानै ॥ ३ ॥ सरब थान को राजा ॥ तह अनहद सबद अगाजा ॥ तिसु पहि किआ चतुराई ॥ मिलु नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ५१ ॥

पंचों से मिलकर मेरा संशय दूर नहीं हुआ और चौधरियों से भी मेरी संतुष्टि नहीं हुई। मैंने अपना झगड़ा अमीरों-वजीरों के समक्ष भी रखा लेकिन जगत के राजन राम से मिलकर ही मेरा झगड़े का निपटारा हुआ है॥ १॥ अब मैं इधर-उधर ढूँढने के लिए नहीं जाता चूंकि सृष्टि का स्वामी गुरु-परमेश्वर मुझे मिल गया है॥ रहाउ॥ जब मैं प्रभु के दरबार में आया तो मेरे मन की फरियाद मिट गई। जो मेरी तकदीर में था, वह सब मुझे मिल गया है और अब मैंने कहाँ आना एवं कहाँ जाना है?॥ २॥ वहाँ सत्य के न्यायालय में सच्चा न्याय होता है। प्रभु के दरबार में तो

जैसा मालिक है, वैसा ही नौकर है। अंतर्यामी प्रभु सर्वज्ञाता है और मनुष्य के कुछ बोले बिना ही वह स्वयं ही मनोरथ को पहचान लेता है॥ ३॥ वह सब स्थानों का राजा है, वहाँ अनहद शब्द गूंजता रहता है। उसके साथ क्या चतुराई की जा सकती है ? हे नानक ! अपने अहंकार को दूर करके प्रभु से मिलन करो॥ ४॥ १॥ ५१॥

सोरठि महला ५ ॥ हिरदै नामु वसाइहु ॥ घरि बैठे गुरू धिआइहु ॥ गुरि पूरै सचु कहिआ ॥ सो सुखु साचा लहिआ ॥ १ ॥ अपुना होइओ गुरु मिहरवाना ॥ अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आए करि इसनाना ॥ रहाउ ॥ साची गुर वडिआई ॥ ता की कीमति कहणु न जाई ॥ सिरि साहा पातिसाहा ॥ गुर भेटत मनि ओमाहा ॥ २ ॥ सगल पराछत लाथे ॥ मिलि साधसंगति कै साथे ॥ गुण निधान हरि नामा ॥ जपि पूरन होए कामा ॥ ३ ॥ गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥ सभ सिसटि करै जैकारा ॥ नानक प्रभु मेरै साथे ॥ जनम मरण भै लाथे ॥ ४ ॥ २ ॥ ५२ ॥

अपने हृदय में परमात्मा के नाम को बसाओ और घर में बैठे ही गुरु का ध्यान करो। पूर्ण गुरु ने सत्य ही कहा है कि सच्चा सुख भगवान से ही प्राप्त होता है॥ १॥ मेरा गुरु मुझ पर मेहरबान हो गया है, जिसके फलस्वरूप आनंद, सुख, कल्याण एवं मंगल सहित मैं स्नान करके अपने घर में आ गया हूँ॥ रहाउ॥ मेरे गुरु की महिमा सत्य है, जिसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। वह तो राजाओं का भी महाराजा है। गुरु से भेंट करके मन में उत्साह उत्पन्न हो जाता है॥ २॥ संतों की संगति में सम्मिलित होने से सभी पाप नाश हो जाते हैं। हरि का नाम गुणों का खजाना है, जिसका जाप करने से कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ ३॥ गुरु ने मोक्ष का द्वार खोल दिया और सारी दुनिया गुरु की जय-जयकार करती है। हे नानक ! प्रभु मेरे साथ है, इसलिए मेरा जन्म-मरण का भय दूर हो गया है॥ ४॥ २॥ ५२॥

सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै किरपा धारी ॥ प्रभि पूरी लोच हमारी ॥ करि इसनानु ग्रिहि आए ॥ अनद मंगल सुख पाए ॥ १ ॥ संतहु राम नामि निसतरीऐ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ अनदिनु सुक्रितु करीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए ॥ कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥ २ ॥ उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥ जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥ ३ ॥ बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५३ ॥

पूर्ण गुरु ने मुझ पर बड़ी कृपा की है, जिसके फलस्वरूप प्रभु ने हमारी मनोकामना पूरी कर दी है। नाम का स्नान करके मैं घर आ गया हूँ और मुझे आनंद, मंगल एवं सुख की प्राप्ति हो गई है॥ १॥ हे संतो ! राम-नाम के स्मरण से ही मुक्ति प्राप्त होती है। इसलिए हमें उठते-बैठते हर समय परमात्मा का ध्यान करना चाहिए और प्रतिदिन शुभ कर्म ही करने चाहिएँ॥ १॥ रहाउ॥ संतों का मार्ग ही धर्म की सीढ़ी है, जिसे कोई भाग्यशाली ही प्राप्त करता है। हरि-चरणों में चित्त लगाने से करोड़ों जन्मों के किल्विष-पाप नाश हो जाते हैं॥ २॥ उस प्रभु की सदा ही उस्तति करो, जिसने पूर्ण कला (शक्ति) को धारण किया हुआ है। सतगुरु का सच्चा उपदेश सुनने से सभी जीव पवित्र हो गए हैं ॥ ३॥ सतगुरु ने विघ्नों का विनाश करने वाला एवं समस्त दुःखों का नाश करने वाला परमात्मा का नाम मन में दृढ़ कर दिया है। नानक का कथन है कि मेरे सभी पाप नाश हो गए हैं और मैं पावन होकर सुख के घर में आ गया हूँ॥ ४॥ ३॥ ५३॥

सोरठि महला ५ ॥ साहिबु गुनी गहेरा ॥ घरु लसकरु सभु तेरा ॥ रखवाले गुर गोपाला ॥ सभि जीअ भए दइआला ॥ १ ॥ जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥ भउ कतहि नही प्रभ सरणा ॥ रहाउ ॥ तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥ प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥ बलु धनु तकीआ तेरा ॥ तू भारो ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥ जिनि जिनि साधसंगु पाइआ ॥ सो प्रभि आपि तराइआ ॥ करि किरपा नाम रसु दीआ ॥ कुसल खेम सभ थीआ ॥ ३ ॥ होए प्रभू सहाई ॥ सभ उठि लागी पाई ॥ सासि सासि प्रभु धिआईऐ ॥ हरि मंगलु नानक गाईऐ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५४ ॥

हे मालिक ! तू गुणों का गहरा सागर है। मेरा (हृदय) घर एवं लश्कर (इन्द्रियाँ) सबकुछ तेरा ही दिया हुआ है॥ गोपाल-गुरु ही मेरा रखवाला है जिसके फलस्वरुप सभी जीव मुझ पर दयालु हो गए हैं॥ १॥ गुरु के चरणों का जाप करके मैं आनंदित रहता हूँ। प्रभु की शरण में आने से कहीं कोई भय नहीं॥ रहाउ॥ हे मुरारि ! तू अपने सेवकों के हृदय में ही रहता है। प्रभु ने अविचल आधारशिला का निर्माण किया हुआ है। तू ही शक्ति, धन एवं सहारा है। तू ही मेरा महान् ठाकुर है॥ २॥ जिस-जिस ने भी साधसंगत को प्राप्त किया है, प्रभु ने स्वयं ही उसे भवसागर से पार कर दिया है। उसने स्वयं ही कृपा करके नामामृत प्रदान किया है और हर तरफ कुशलक्षेम है॥ ३॥ प्रभु जब मेरा सहायक बन गया तो सभी उठकर मेरे चरण स्पर्श करने लगे। नानक का कथन है कि अपने श्वास-श्वास से हमें प्रभु का ध्यान ही करना चाहिए और हरि की महिमा के मंगल गीत गायन करने चाहिएँ॥ ४॥ ४॥ ५४॥

सोरठि महला ५ ॥ सूख सहज आनंदा ॥ प्रभु मिलिओ मनि भावंदा ॥ पूरै गुरि किरपा धारी ॥ ता गति भई हमारी ॥ १ ॥ हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥ नित बाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥ हरि चरण की ओट सताणी ॥ सभ चूकी काणि लोकाणी ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥ हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥ २ ॥ प्रभ काटिआ जम का फासा ॥ मन पूरन होई आसा ॥ जह पेखा तह सोई ॥ हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि राखे ॥ सभि जनम जनम दुख लाथे ॥ निरभउ नामु धिआइआ ॥ अटल सुखु नानक पाइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५५ ॥

मुझे मनभावता प्रभु मिल गया है, जिससे मन में सहज सुख एवं आनंद की प्राप्ति हो गई है। पूर्ण गुरु ने जब मुझ पर कृपा की तो हमारा कल्याण हो गया॥ १॥ मेरा मन हरि की प्रेम-भक्ति में लीन रहता है, जिसके फलस्वरुप अन्तर्मन में नित्य ही अनहद वीणा बजती रहती है॥ रहाउ॥ हरि के चरणों का सहारा बड़ा मजबूत है, इसलिए मेरी संसार के लोगों पर निर्भरता सब चूक गई है। मैंने जगत का जीवनदाता प्रभु पा लिया है, अब मैं खुशी से मोहित होकर उसका गुणगान करता हूँ॥ २॥ प्रभु ने मृत्यु की फांसी काट दी है और मेरे मन की आशा पूरी हो गई है। अब मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही वह विद्यमान है। प्रभु के सिवाय दूसरा कोई सहायक नहीं॥ ३॥ प्रभु ने कृपा करके मेरी रक्षा की है और जन्म-जन्मांतरों के सभी दुःखों से मुक्त हो गया हूँ॥ हे नानक ! ईश्वर के निर्भय नाम का ध्यान करने से मुझे अटल सुख मिल गया है॥ ४॥ ५॥ ५५॥

सोरठि महला ५ ॥ ठाढि पाई करतारे ॥ तापु छोडि गइआ परवारे ॥ गुरि पूरै है राखी ॥ सरणि सचे की ताकी ॥ १ ॥ परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥ सांति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु दीओ दारू ॥ तिनि सगला रोगु बिदारू ॥ अपणी किरपा धारी ॥ तिनि सगली बात सवारी ॥ २ ॥ प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ

॥ गुर का सबदु भइओ साखी ॥ तिनि सगली लाज राखी ॥ ३ ॥ बोलाइआ बोली तेरा ॥ तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ जपि नानक नामु सचु साखी ॥ अपुने दास की पैज राखी ॥ ४ ॥ ६ ॥ ५६ ॥

ईश्वर ने मेरे घर में शांति कर दी है, जिससे ज्वर मेरे परिवार को त्याग गया है। पूर्ण गुरु ने मेरी रक्षा की है और अब मैंने उस परम-सत्य प्रभु की शरण ली है॥ १॥ परमेश्वर आप ही मेरा रखवाला बना है और क्षण भर में ही सहज सुख एवं शांति उत्पन्न हो गए हैं और मन हमेशा के लिए सुखी हो गया है॥ रहाउ॥ गुरु ने मुझे हरि-नाम की औषधि दी है, जिसने सारा रोग दूर कर दिया है। प्रभु ने मुझ पर अपनी कृपा की है, जिसने मेरे समस्त कार्य संवार दिए हैं॥ २॥ प्रभु ने तो अपने विरद् का पालन किया है और हमारे गुणों एवं अवगुणों की ओर विचार नहीं किया। गुरु का शब्द साक्षात् हुआ है, जिसने पूर्णतया मेरी लाज बचा ली है॥ ३॥ हे मेरे मालिक! तू गुणों का गहरा सागर है, मैं वही कुछ बोलता हूँ जो तू मुझ से बुलवाता है। हे नानक! सत्य नाम का जाप करो वही परलोक में साक्षी होगा। भगवान ने अपने दास की लाज बचा ली है॥ ४॥ ६॥ ५६॥

सोरठि महला ५ ॥ विचि करता पुरखु खलोआ ॥ वालु न विंगा होआ ॥ मजनु गुर आंदा रासे ॥ जपि हरि हरि किलविख नासे ॥ १ ॥ संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥ जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै कारु जगु गावै ॥ मन चिंदिअड़े फल पावै ॥ सही सलामति नाइ आए ॥ अपणा प्रभू धिआए ॥ २ ॥ संत सरोवर नावै ॥ सो जनु परम गति पावै ॥ मरै न आवै जाई ॥ हरि हरि नामु धिआई ॥ ३ ॥ इहु ब्रहम बिचारु सु जानै ॥ जिसु दइआलु होइ भगवानै ॥ बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥ सभ चिंता गणत मिटाई ॥ ४ ॥ ७ ॥ ५७ ॥

कर्त्ता पुरुष स्वयं आकर खड़ा हुआ है और मेरा एक बाल भी बांका नहीं हुआ। गुरु ने मेरा स्नान सफल कर दिया है। हरि-परमेश्वर का सिमरन करने से मेरे किल्विष-पाप नाश हो गए हैं॥ १॥ हे संतो! रामदास का सरोवर उत्कृष्ट है, जो कोई भी इस में स्नान करता है, उसकी वंशावलि का उद्धार हो जाता है और वह अपनी आत्मा का भी कल्याण कर लेता है॥ १ ॥ रहाउ॥ जगत उसकी जय-जयकार करता है और उसे मनोवांछित फल मिल जाता है। जो यहाँ आकर स्नान करता है और प्रभु का ध्यान करता है, वह स्वस्थ हो जाता है॥ २॥ जो संतों के सरोवर में स्नान करता है, उस व्यक्ति को परमगति मिल जाती है। जो हरि-नाम का ध्यान करता है, उसका जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है॥ ३॥ जिस पर भगवान दयालु होता है, वही यह ब्रह्म विचार समझता है। नानक का कथन है कि हे बाबा! जो प्रभु की शरण में आता है उसकी समस्त चिंताएँ एवं संकट मिट जाते हैं॥ ४॥ ७॥ ५७॥

सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि निबाही पूरी ॥ काई बात न रहीआ ऊरी ॥ गुरि चरन लाइ निसतारे ॥ हरि हरि नामु सम्हारे ॥ १ ॥ अपने दास का सदा रखवाला ॥ करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥ जिनि जम का पंथु मिटाइआ ॥ हरि भगति भाइ चितु लागा ॥ जपि जीवहि से वडभागा ॥ २ ॥ हरि अंम्रित बाणी गावै ॥ साधा की धूरी नावै ॥ अपुना नामु आपे दीआ ॥ प्रभ करणहार रखि लीआ ॥ ३ ॥ हरि दरसन प्रान अधारा ॥ इहु पूरन बिमल बीचारा ॥ करि किरपा अंतरजामी ॥ दास नानक सरणि सुआमी ॥ ४ ॥ ८ ॥ ५८ ॥

परब्रह्म ने मेरा पूरा साथ निभाया है और कोई बात अधूरी नहीं रह गई। गुरु ने अपने चरणों से लगाकर मुझे भवसागर से पार कर दिया है और अब मैं हरि-नाम का सिमरन करता हूँ॥ १॥ भगवान सदा ही अपने दास का रखवाला है। अपनी कृपा करके अपना हाथ देकर उसने हमारी ऐसे रक्षा की है, जैसे माता-पिता पालन-पोषण करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ बड़ी किस्मत से मुझे सतगुरु मिला है, जिसने मृत्यु का मार्ग मिटा दिया है। मेरा चित्त तो भगवान की प्यारी भक्ति में लग गया है। वह बड़े भाग्यशाली हैं, जो भगवान का जाप करते हुए जीवित रहते हैं॥ २॥ दास हरि की अमृत वाणी गाता रहता है और संतों की चरण-धूलि में ही स्नान करता है। उसने स्वयं ही मुझे अपना नाम दिया है और कर्त्ता प्रभु ने स्वयं ही मेरी रक्षा की है॥ ३॥ हरि के दर्शन ही मेरे प्राणों का आधार है और यही पूर्ण एवं पवित्र विचार है। हे अन्तर्यामी प्रभु ! मुझ पर कृपा करो चूंकि दास नानक तो अपने स्वामी की शरण में ही आया है॥ ४॥ ८॥ ५८॥

सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥ हरि संगि सहाई पाइआ ॥ जह जाईऐ तहा सुहेले ॥ करि किरपा प्रभि मेले ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु सदा सुभाई ॥ मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाराइण प्राण अधारा ॥ हम संत जनां रेनारा ॥ पतित पुनीत करि लीने ॥ करि किरपा हरि जसु दीने ॥ २ ॥ पारब्रहमु करे प्रतिपाला ॥ सद जीअ संगि रखवाला ॥ हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ ॥ बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥ ३ ॥ जिसु देवै पुरखु बिधाता ॥ हरि रसु तिन ही जाता ॥ जमकंकरु नेड़ि न आइआ ॥ सुखु नानक सरणी पाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ५९ ॥

पूर्ण गुरु ने जब मुझे अपने चरणों में लगा लिया तो मैंने भगवान को अपने साथी एवं सहायक के रूप में पा लिया। जहाँ कहीं भी मैं जाता हूँ, उधर ही मैं सुखी हूँ। प्रभु ने कृपा करके मुझे अपने साथ मिला लिया है॥ १॥ सदैव ही श्रद्धा से भगवान का गुणगान करो, इससे सभी मनोवांछित फल प्राप्त कर लो और भगवान आत्मा का साथी एवं सहायक बना रहेगा॥ १॥ रहाउ॥ नारायण हमारे प्राणों का आधार है। हम तो संतजनों की चरण-धूलि हैं। मुझ पतित को प्रभु ने पावन कर दिया है। उसने कृपा करके हरि-यश की देन प्रदान की है॥ २॥ परब्रह्म-प्रभु हमेशा ही मेरा पालन-पोषण करता है। वह सदा ही मेरी आत्मा का रखवाला है। हमें तो रात-दिन हरि का कीर्तन ही गायन करना चाहिए, जिसके फलस्वरूप प्राणी बार-बार योनियों में नहीं पड़ता॥ ३॥ जिसे अकालपुरुष विधाता देता है, वही हरि के अमृत रस को अनुभव करता है और मृत्यु का दूत उसके निकट नहीं आता। हे नानक ! प्रभु की शरण में मुझे सुख प्राप्त हो गया है॥ ४॥ ९॥ ५९॥

सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै कीती पूरी ॥ प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥ खेम कुसल भइआ इसनाना ॥ पारब्रहम विटहु कुरबाना ॥ १ ॥ गुर के चरन कवल रिद धारे ॥ बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि साधू दुरमति खोए ॥ पतित पुनीत सभ होए ॥ रामदासि सरोवर नाते ॥ सभ लाथे पाप कमाते ॥ २ ॥ गुन गोबिंद नित गाईऐ ॥ साधसंगि मिलि धिआईऐ ॥ मन बांछत फल पाए ॥ गुरु पूरा रिदै धिआए ॥ ३ ॥ गुर गोपाल आनंदा ॥ जपि जपि जीवै परमानंदा ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥ ४ ॥ १० ॥ ६० ॥

पूर्ण गुरु ने मुझ पर पूरी कृपा कर दी है। प्रभु सर्वव्यापक है अब मैं कुशलक्षेम से स्नान करता हूँ। मैं परब्रह्म पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ अपने हृदय में मैंने गुरु के सुन्दर चरण-कमलों को धारण किया है। अब मुझे तिल-मात्र भी विघ्न नहीं आता और मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिन्होंने संतों से मिलकर दुर्मति नाश कर ली है। अतः वे सभी पतित भी पावन हो गए

हैं। रामदास सरोवर का इतना महात्म्य है कि इस में स्नान करने के फलस्वरूप मनुष्य के किए हुए सभी पाप उतर जाते हैं॥ २॥ हमें नित्य ही भगवान का गुणगान करना चाहिए और सत्संगति में सम्मिलित होकर उसका ही ध्यान-मनन करना चाहिए। पूर्ण गुरु का हृदय में ध्यान करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है॥ ३॥ गुरु-परमेश्वर आनंद का भण्डार है। परमानंद प्रभु का जाप करने से ही मनुष्य आध्यात्मिक तौर पर जीवित रहता है। नानक ने तो भगवान के नाम का ध्यान किया है और उसने अपने विरद् का पालन करते हुए उसे सत्कृत किया है॥ ४॥ १०॥ ६०॥

रागु सोरठि महला ५ ॥ दह दिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइओ ॥ सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥ १ ॥ हुणि नही संदेसरो माइओ ॥ एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइओ ॥ मंदरि चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥ २ ॥ हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥ भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥ ३ ॥ भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइओ ॥ कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥ ४ ॥ सभु रहिओ अंदेसरो माइओ ॥ जो चाहत सो गुरू मिलाइओ ॥ सरब गुना निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥ ११ ॥ ६१ ॥

दसों दिशाओं में मेघ छत्र की भांति फैले हुए हैं और काली घटा की दामिनी की चमक भयभीत कर रही है। मेरी सेज अकेली है, नयनों में नींद भी नहीं आ रही चूंकि मेरा प्रियवर परदेस चला गया है॥ १॥ हे माँ! अब तक मुझे उसका कोई सन्देश भी नहीं आया। इससे पूर्व जब मेरा प्रियवर एक मील भी दूर जाता था तो मुझे उसकी चार चिट्ठियाँ आ जाती थीं॥ रहाउ॥ मैं अपने दुलारे प्रियतम को कैसे भुला सकती हूँ जो सर्वगुणसम्पन्न एवं सुखों का दाता है। मैं छत पर चढ़कर अपने प्रियतम का मार्ग देखती हूँ और मेरे नयन भी अश्रुओं से भरे हुए हैं॥ २॥ अहंत्व एवं आत्माभिमान की दीवार मेरे एवं उसके मध्य पड़ी हुई है। मैं सुनती हूँ कि वह मेरे हृदय देश में निकट ही रहता है। मेरे प्रियतम के मध्य तितली के पंखों जैसा सूक्ष्म पर्दा है और उसके दर्शनों के बिना मैं उसे दूर ही समझती हूँ॥ ३॥ सबका मालिक मुझ पर कृपालु हो गया है और उसने मेरे समस्त दुःख मिटा दिए हैं। हे नानक! जब गुरु ने अहंत्व की दीवार ध्वस्त कर दी तो मैंने दयालु विट्ठल भगवान को पा लिया॥ ४॥ हे माँ! मेरे सभी भय अब दूर हो गए हैं, जो मेरी कामना थी, गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है। मेरा प्रभु तो सर्वगुणों का खजाना एवं बादशाह है॥ रहाउ दूसरा॥ ११॥ ६१॥

सोरठि महला ५ ॥ गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥ करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥ १ ॥ हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥ निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥ करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥ २ ॥ हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ॥ अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईऐ ॥ ३ ॥ होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ॥ पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ॥ हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥ ४ ॥ १२ ॥ ६२ ॥

निराकार परमात्मा खोई हुई वस्तु को दिलाने वाला, कैद से स्वतंत्र करने वाला एवं दुःखों का नाशक है। मैं तो लोभ एवं माया का पुजारी हूँ जो कोई शुभकर्म एवं धर्म नहीं जानता। हे ईश्वर! मेरा नाम गोविन्द का भक्त पड़ गया है, अतः अपने नाम की लाज रखो॥ १॥ हे ईश्वर! तू सम्मान-हीन व्यक्तियों का सम्मान है। मेरा गोविन्द नाचीज़ व्यक्तियों को भी गुणवान बना देता है। मैं तेरी कुदरत पर कुर्बान जाता हूँ॥ रहाउ॥ जैसे बालक स्नेह एवं स्वभाववश लाखों ही अपराध करता है और चाहे उसका पिता उसे अनेक तरीकों से उपदेश देता एवं झिड़कता है परन्तु अन्तः वह उसे अपने गले से लगा लेता है। इस तरह परमपिता परमेश्वर भी जीवों के पिछले अवगुणों को क्षमा कर देता है और भविष्य हेतु सन्मार्ग प्रदान कर देता है॥ २॥ अन्तर्यामी प्रभु समस्त विधियाँ जानता है तो फिर किस के समक्ष अपनी वेदना सुनाई जा सकती है? निरा बातें एवं खुशामद करने से गोविन्द प्रसन्न नहीं होता, यदि उसे उपयुक्त लगे तो ही वह मनुष्य की लाज बचाता है। हे स्वामी! मैंने अन्य सभी आश्रय देख लिए हैं, मुझे एक तेरा ही आश्रय रह गया है॥ ३॥ ठाकुर प्रभु दयालु एवं कृपालु होकर स्वयं ही विनती सुनता है। जब पूर्ण सतगुरु उसके संग मिला देता है, तब मन की सारी चिंता मिट जाती है। हे नानक! गुरु ने हरि-नाम की औषधि मेरे मुँह में डाल दी है और अब मैं सुखी रहता हूँ॥ ४॥ १२॥ ६२॥

सोरठि महला ५ ॥ सिमरि सिमरि प्रभ भए अनंदा दुख कलेस सभि नाठे ॥ गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले सांठे ॥ १ ॥ जगजीवन नामु तुमारा ॥ गुर पूरे दीओ उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ तूहै मंत्री सुनहि प्रभ तूहै सभु किछु करणैहारा ॥ तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥ २ ॥ किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई ॥ पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥ ३ ॥ धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥ सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६३ ॥

प्रभु का सिमरन करने से मुझे आनंद प्राप्त हो गया है और मेरे सभी दुःख एवं क्लेश दूर हो गए हैं। अपने प्रभु का गुणगान एवं ध्यान करते हुए हमारे सभी कार्य संवर गए हैं॥ १॥ हे ईश्वर! तुम्हारा नाम जगत का जीवन है। पूर्ण गुरु ने हमें उपदेश दिया है कि प्रभु का जाप करने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तू स्वयं ही मंत्री है, तू स्वयं सबकी प्रार्थना सुनता है और तू ही सबकुछ करने वाला है। तू स्वयं ही दाता है, स्वयं ही भोग भोगने वाला है, यह जीव बेचारा तो लाचार है?॥ २॥ मैं तेरे कौन-से गुणों का बखान करूँ? चूंकि तेरे गुणों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। तेरी महिमा बड़ी अद्‌भुत है चूंकि तेरे दर्शन-दीदार करके ही हम जीवित रहते हैं॥ ३॥ स्वामी प्रभु ने स्वयं ही अपनी मेहर करके हमारी लाज एवं बुद्धि को सुशोभित कर दिया है। नानक तो हमेशा ही प्रभु पर बलिहारी जाता है और संतों की चरण-धूलि की कामना करता है॥ ४॥ १३॥ ६३॥

सोरठि मः ५ ॥ गुरु पूरा नमसकारे ॥ प्रभि सभे काज सवारे ॥ हरि अपणी किरपा धारी ॥ प्रभ पूरन पैज सवारी ॥ १ ॥ अपने दास को भइओ सहाई ॥ सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥ पिछै लगि चली माइआ ॥ तोटि न कतहू आवै ॥ मेरे पूरे सतगुर भावै ॥ २ ॥ सिमरि सिमरि दइआला ॥ सभि जीअ भए किरपाला ॥ जै जै कारु गुसाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ ३ ॥ तू भारो सुआमी मोरा ॥ इहु पुंनु पदारथु तेरा ॥ जन नानक एकु धिआइआ ॥ सरब फला पुंनु पाइआ ॥ ४ ॥ १४ ॥ ६४ ॥

पूर्ण गुरु को हमारा शत्-शत् नमन है, प्रभु ने हमारे सभी कार्य संवार दिए हैं। भगवान ने मुझ पर अपनी कृपा की है और उसने हमारी पूर्ण लाज-प्रतिष्ठा सुशोभित की है॥ १॥ वह अपने दास का सहायक बन गया है। कर्त्ता-प्रभु ने हमारे सभी मनोरथ पूरे कर दिए हैं और कोई बात की कमी नहीं रह गई॥ रहाउ॥ कर्त्ता-पुरुष ने अमृत सरोवर दिलवाया है। माया हमारे पीछे लगकर चली आई है और अब हमें किसी वस्तु की कोई कमी नहीं। मेरे पूर्ण सतगुरु को यूं ही भला लगता है ॥ २॥ दयालु परमात्मा का सिमरन करने से सभी लोग मुझ पर कृपालु हो गए हैं। उस मालिक की जय-जयकार है, जिसने पूर्ण दिया हुआ रचना का विधान किया है॥ ३॥ हे प्रभु ! तू मेरा महान् मालिक है। यह पुण्य पदार्थ सबकुछ तेरा ही दिया हुआ है। नानक ने तो एक ईश्वर का ही ध्यान किया है और उसे सर्व फलों के पुण्य की प्राप्ति हो गई है॥ ४॥ १४॥ ६४॥

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामदास सरोवरि नाते ॥ सभि उतरे पाप कमाते ॥ निरमल होए करि इसनाना ॥ गुरि पूरै कीने दाना ॥ १ ॥ सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ साधसंगि मलु लाथी ॥ पारब्रहमु भइओ साथी ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥ २ ॥ १ ॥ ६५ ॥

रामदास सरोवर का इतना महात्म्य है कि इसमें स्नान करने के फलस्वरूप पिछले किए हुए सभी पाप नाश हो जाते हैं। इस सरोवर में स्नान करने से मनुष्य पवित्र हो जाता है और पूर्ण गुरु ने हमें यह प्रदान किया है॥ १॥ प्रभु ने सभी को सुख एवं खुशियों की देन प्रदान की है। गुरु के शब्द का चिंतन करने से सभी वस्तुएँ सही सलामत बच गई हैं अर्थात् सभी लोग भवसागर से पार हो गए है॥ रहाउ॥ सत्संगति में शामिल होने से मन की मैल निवृत्त हो गई है और परब्रह्म-परमेश्वर उसका साथी बन गया है। नानक ने तो हरि-नाम का ही ध्यान किया है और आदिपुरुष प्रभु को पा लिया है॥ २॥ १॥ ६५॥

सोरठि महला ५ ॥ जितु पारब्रहमु चिति आइआ ॥ सो घरु दयि वसाइआ ॥ सुख सागरु गुरु पाइआ ॥ ता सहसा सगल मिटाइआ ॥ १ ॥ हरि के नाम की वडिआई ॥ आठ पहर गुण गाई ॥ गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ प्रभ की अकथ कहाणी ॥ जन बोलहि अंम्रित बाणी ॥ नानक दास वखाणी ॥ गुर पूरे ते जाणी ॥ २ ॥ २ ॥ ६६ ॥

जिसे परब्रह्म याद आया है, उसका घर उसने सुख-समृद्ध कर दिया है। जब सुखों के सागर गुरु को पाया तो मेरे सभी भ्रम मिट गए॥ १॥ सृष्टि में हरि-नाम की ही बड़ाई है। इसलिए मैं तो आठ प्रहर उसका ही गुणगान करता हूँ और यह देन हमें पूर्ण गुरु से प्राप्त हुई है॥ रहाउ॥ प्रभु की कहानी अकथनीय है। उसके भक्तजन अमृत वाणी बोलते रहते हैं। हे नानक ! जिसने पूर्ण गुरु से अमृत-वाणी का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उस दास ने उस वाणी का ही बखान किया है॥ २॥ २॥ ६६॥

सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु गुरि दीआ ॥ पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥ सरब निधान सुख पाइआ ॥ गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥ १ ॥ अपने सतिगुर की वडिआई ॥ मन इछे फल पाई ॥ संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥ सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥ २ ॥ ३ ॥ ६७ ॥

यहाँ पहले गुरु ने सुख दिया है और भविष्य में भी उसने कुशलक्षेम की व्यवस्था कर दी है। अपने गुरु का हृदय में ध्यान करने से मुझे सर्व सुखों का भण्डार मिल गया है॥ १॥ यह मेरे अपने सतगुरु की बड़ाई है कि मुझे मनोवांछित फल प्राप्त हो गए हैं। हे संतो! गुरु की बड़ाई में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है॥ रहाउ॥ सभी जीव मुझ पर दयालु हो गए हैं, मेरे प्रभु ने स्वयं ही उन्हें ऐसा किया है। हे नानक! परमात्मा सहज स्वभाव ही मिल गया है और मेरा मन सत्य से प्रसन्न हो गया है॥ २॥ ३॥ ६७॥

सोरठि महला ५ ॥ गुर का सबदु रखवारे ॥ चउकी चउगिरद हमारे ॥ राम नामि मनु लागा ॥ जमु लजाइ करि भागा ॥ १ ॥ प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी ॥ ता की सेव न बिरथी जासी ॥ अनद करहि तेरे दासा ॥ जपि पूरन होई आसा ॥ २ ॥ ४ ॥ ६८ ॥

गुरु का शब्द मेरा रखवाला है और यह हमारे चारों तरफ की हिफाजत कर रहा है। मेरा मन राम-नाम में लीन हो गया है, जिसके फलस्वरूप मृत्यु का देवता भी लज्जित होकर भाग गया है॥ १॥ हे प्रभु जी! तू मेरा सुखों का दाता है। पूर्ण पुरुष विधाता बन्धन काटकर मन निर्मल कर देता है॥ रहाउ॥ हे नानक! अविनाशी प्रभु की सेवा-भक्ति निष्फल नहीं जाती। हे प्रभु! तेरे भक्त आनंद करते हैं चूंकि तेरा जाप करके उनकी आशा पूर्ण हो गई है॥ २॥ ४॥ ६८॥

सोरठि महला ५ ॥ गुर अपुने बलिहारी ॥ जिनि पूरन पैज सवारी ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥ १ ॥ संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ प्रभि अपनै वर दीने ॥ सगल जीअ वसि कीने ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ ता सगले दूख मिटाइआ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६९ ॥

मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने पूर्णतया मेरी लाज-प्रतिष्ठा बरकरार रखी है। मुझे मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है और मैंने हमेशा ही अपने प्रभु का ध्यान किया है॥ १॥ हे संतो! ईश्वर के अलावा दूसरा कोई साथी नहीं, चूंकि वह ही करने कराने में समर्थ है॥ रहाउ॥ मेरे प्रभु ने मुझे ऐसा वरदान दिया है कि सभी जीव मेरे वश में कर दिए हैं। दास नानक ने जब प्रभु का नाम-स्मरण किया तो उसके सभी दुःख मिट गए॥ २॥ ५॥ ६९॥

सोरठि महला ५ ॥ तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥ वाजे अनहद तूरे ॥ सरब कलिआण प्रभि कीने ॥ करि किरपा आपि दीने ॥ १ ॥ बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥ सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ जो मंगहि सो लेवहि ॥ प्रभ अपणिआ संता देवहि ॥ हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥ जन नानक साचु सुभाखिआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ७० ॥

पूर्ण गुरु ने हरिगोबिन्द का ज्वर दूर कर दिया है और अब घर में अनहद बाजे बज रहे हैं। प्रभु ने सर्व कल्याण किया है और अपनी कृपा करके उसने स्वयं ही सुख घर में दिया है॥ १॥ सतगुरु ने स्वयं ही हमारी विपत्ति दूर की है। हरि-नाम का ध्यान करने से सभी शिष्य एवं संत प्रसन्न हो गए हैं॥ रहाउ॥ जो कुछ संत मांगते हैं, वही वे पा लेते हैं। प्रभु अपने संतों को सबकुछ देता है। दास नानक सहजस्वभाव सत्य कह रहा है कि प्रभु ने श्री हरिगोबिन्द की रक्षा की है ॥ २॥ ६॥ ७०॥

सोरठि महला ५ ॥ सोई कराइ जो तुधु भावै ॥ मोहि सिआणप कछू न आवै ॥ हम बारिक तउ सरणाई ॥ प्रभि आपे पैज रखाई ॥ १ ॥ मेरा मात पिता हरि राइआ ॥ करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत तेरे धारे ॥ प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥ जि करावै सो करणा ॥ नानक दास तेरी सरणा ॥ २ ॥ ७ ॥ ७१ ॥

हे प्रभु ! जो तुझे भला लगता है, मुझ से वही करवा। चूंकि मुझे तो अन्य कोई भी चतुराई नहीं आती। मैं बालक तेरी शरण में आया हूँ। प्रभु ने आप ही मेरी लाज-प्रतिष्ठा बचाई है॥ १॥ हे हरि-परमेश्वर ! तुम ही मेरे माता-पिता हो और तुम ही कृपा करके हमारा पालन-पोषण करते हो। मैं वही कुछ करता हूँ जो तुम मुझ से करवाते हो॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! समस्त जीव-जन्तु तेरी ही रचना है और उनकी जीवन-डोर तुम्हारे हाथ में ही है। जो कुछ तुम जीवों से करवाते हो, वही वे करते हैं। दास नानक ने तो तेरी ही शरण ली है॥ २॥ ७॥ ७१॥

सोरठि महला ५ ॥ हरि नामु रिदै परोइआ ॥ सभु काजु हमारा होइआ ॥ प्रभ चरणी मनु लागा ॥ पूरन जा के भागा ॥ १ ॥ मिलि साधसंगि हरि धिआइआ ॥ आठ पहर अराधिओ हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ रहाउ ॥ परा पूरबला अंकुरु जागिआ ॥ राम नामि मनु लागिआ ॥ मनि तनि हरि दरसि समावै ॥ नानक दास सचे गुण गावै ॥ २ ॥ ८ ॥ ७२ ॥

जब से हमने परमात्मा का नाम अपने हृदय में पिरोया है, हमारे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं। प्रभु के चरणों में उसी का मन लगता है, जिसका पूर्ण भाग्योदय हो जाता है॥ १॥ सत्संगति में सम्मिलित होकर हमने भगवान का सिमरन किया है। आठ प्रहर परमेश्वर की आराधना करने से हमें मनोवांछित फल की प्राप्ति हो गई है॥ १॥ हमारे आदि एवं पूर्व कर्मों का अंकुर जाग गया है और मन राम-नाम में मग्न हो गया है। अब मन एवं तन हरि के दर्शनों में ही लीन रहता है। दास नानक तो सच्चे परमेश्वर का ही गुणगान करता है॥ २॥ ८॥ ७२॥

सोरठि महला ५ ॥ गुर मिलि प्रभू चितारिआ ॥ कारज सभि सवारिआ ॥ मंदा को न अलाए ॥ सभ जै जै कारु सुणाए ॥ १ ॥ संतहु साची सरणि सुआमी ॥ जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी ॥ रहाउ ॥ करतब सभि सवारे ॥ प्रभि अपुना बिरदु समारे ॥ पतित पावन प्रभ नामा ॥ जन नानक सद कुरबाना ॥ २ ॥ ६ ॥ ७३ ॥

गुरु से मिलकर हमने प्रभु को याद किया है, जिसके फलस्वरूप हमारे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं। अब कोई भी हमें बुरा नहीं कहता और हर कोई हमारी जय-जयकार करता है॥ १॥ हे भक्तजनो ! उस सच्चे परमेश्वर की शरण ही शाश्वत है। सभी जीव-जन्तु उसके वश में हैं और वह प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है॥ रहाउ॥ प्रभु ने अपने विरद् का पालन किया है और उसने हमारे सभी कार्य संवार दिए हैं। प्रभु का नाम पापियों को पावन करने वाला है। दास नानक तो हमेशा ही उस पर कुर्बान जाता है॥ २॥ ६॥ ७३॥

सोरठि महला ५ ॥ पारब्रहमि साजि सवारिआ ॥ इहु लहुड़ा गुरू उबारिआ ॥ अनद करहु पित माता ॥ परमेसरु जीअ का दाता ॥ १ ॥ सुभ चितवनि दास तुमारे ॥ राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु परउपकारी ॥ पूरन कल जिनि धारी ॥ नानक सरणी आइआ ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ २ ॥ १० ॥ ७४ ॥

परब्रह्म-परमेश्वर ने हमारे पुत्र (हरिगोविन्द) को उत्पन्न करके सुशोभित किया है। इस नन्हे बालक (हरिगोविन्द) की गुरु ने रक्षा की है। हे माता-पिता! आनंद करो। परमेश्वर ही प्राणों का दाता है॥ १॥ हे प्रभु! तुम्हारे सेवक सबका शुभ-भला ही सोचते हैं। तू अपने सेवक की लाज-प्रतिष्ठा कायम रखता है और स्वयं ही उसके कार्य संवार देता है॥ रहाउ॥ मेरा प्रभु बड़ा परोपकारी है, जिसने सम्पूर्ण कला (शक्ति) धारण की हुई है। नानक तो उसकी शरण में आया है और उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया है॥ २॥ १०॥ ७४॥

सोरठि महला ५ ॥ सदा सदा हरि जापे ॥ प्रभ बालक राखे आपे ॥ सीतला ठाकि रहाई ॥ बिघन गए हरि नाई ॥ १ ॥ मेरा प्रभु होआ सदा दइआला ॥ अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला ॥ रहाउ ॥ प्रभ करण कारण समराथा ॥ हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥ अपणे दास की सुणी बेनंती ॥ सभ नानक सुखि सवंती ॥ २ ॥ ११ ॥ ७५ ॥

मैं सदैव ही हरि का भजन करता हूँ। प्रभु ने स्वयं ही बालक (हरिगोबिन्द) की रक्षा की है। उसने कृपा करके शीतला (चेचक) पर अंकुश लगा दिया है। हरि-नाम स्मरण से हमारे सभी विघ्न नाश हो गए हैं॥ १॥ मेरा प्रभु सदैव ही मुझ पर दयालु हुआ है। उसने अपने भक्त की प्रार्थना सुन ली है और वह सभी जीवों पर कृपालु हो गया है॥ रहाउ॥ प्रभु सभी कार्य करने कराने में सर्वशक्तिमान है। भगवान का सिमरन करने से सभी दुःख दूर हो गए हैं। अपने दास की उसने प्रार्थना सुन ली है। हे नानक! अब सभी सुखी रहते हैं॥ २॥ ११॥ ७५॥

सोरठि महला ५ ॥ अपना गुरू धिआए ॥ मिलि कुसल सेती घरि आए ॥ नामै की वडिआई ॥ तिसु कीमति कहणु न जाई ॥ १ ॥ संतहु हरि हरि हरि आराधहु ॥ हरि आराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥ प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ सो पाए जिसु वडभागी ॥ जन नानक नामु धिआइआ ॥ तिनि सरब सुखा फल पाइआ ॥ २ ॥ १२ ॥ ७६ ॥

मैंने अपने गुरु का ध्यान किया है, जिससे मिलकर मैं कुशलपूर्वक घर को लौट आया हूँ। प्रभु-नाम की इतनी महिमा है कि उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ १॥ हे भक्तजनो! परमात्मा की आराधना करो चूंकि उसकी आराधना करने से सबकुछ प्राप्त हो जाता है और तुम्हारे भी सभी कार्य सिद्ध (सफल) हो जाएँगे॥ रहाउ॥ हमारा मन प्रभु की प्रेम-भक्ति में ही मग्न है लेकिन इसे वही प्राप्त करता है, जो भाग्यशाली होता है। दास नानक ने प्रभु-नाम का ही ध्यान किया है और उसे सर्व सुखों के फल की प्राप्ति हो गई है॥ २॥ १२॥ ७६॥

सोरठि महला ५ ॥ परमेसरि दिता बंना ॥ दुख रोग का डेरा भंना ॥ अनद करहि नर नारी ॥ हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥ १ ॥ संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ दइआल पुरख मिहरवाना ॥ हरि नानक साचु वखाना ॥ २ ॥ १३ ॥ ७७ ॥

परमेश्वर ने हमें पुत्र दिया है और समस्त दुःखों एवं रोगों का डेरा ही मिटा दिया है। अब सभी नर-नारी आनंद करते हैं चूंकि हरि-प्रभु ने अपनी कृपा की है॥ १॥ हे संतो! अब हर जगह सुख ही सुख हो गया है। मेरा पूर्ण परब्रह्म-परमेश्वर सब में समा रहा है॥ रहाउ॥ यह वाणी परमात्मा से आई है, जिसने सारी चिंता मिटा दी है। दयालु परमपुरुष प्रभु मुझ पर बड़ा मेहरबान है। नानक तो सत्य (परमेश्वर) की ही बात करता है॥ २॥ १३॥ ७७॥

सोरठि महला ५ ॥ ऐथै ओथै रखवाला ॥ प्रभ सतिगुर दीन दइआला ॥ दास अपने आपि राखे ॥ घटि घटि सबदु सुभाखे ॥ १ ॥ गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥ दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ आपि सहाई होआ ॥ सचे दा सचा ढोआ ॥ तेरी भगति वडिआई ॥ पाई नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १४ ॥ ७८ ॥

सतगुरु दीनदयालु प्रभु ही लोक-परलोक में हमारा रक्षक है। वह स्वयं ही अपने सेवकों की रक्षा करता है और सुन्दर शब्द प्रत्येक हृदय में गूँज रहा है॥ १॥ मैं अपने गुरु के चरणों पर कुर्बान जाता हूँ और दिन-रात, श्वास-श्वास से उसका ही सिमरन करता हूँ जो (पूर्ण परमेश्वर) सर्वव्यापक है॥ रहाउ॥ प्रभु स्वयं ही मेरा सहायक बन गया है। मुझे उस सच्चे प्रभु का सच्चा सहारा प्राप्त है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! यह तेरी भक्ति की ही बड़ाई है, जो उसने तेरी शरण प्राप्त कर ली है॥ २॥ १४॥ ७८॥

सोरठि महला ५ ॥ सतिगुर पूरे भाणा ॥ ता जपिआ नामु रमाणा ॥ गोबिंद किरपा धारी ॥ प्रभि राखी पैज हमारी ॥ १ ॥ हरि के चरन सदा सुखदाई ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥ प्रेम भगति ता का मनु लीणा पारब्रहम मनि भावै ॥ २ ॥ आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥ संगि मिलाइ लीआ मेरै करतै संत साध भए साथी ॥ ३ ॥ करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥ कहु नानक सरब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ ७९ ॥

जब पूर्ण सतगुरु को भला लगा तो ही मैंने सर्वव्यापी राम-नाम का जाप किया। गोविन्द ने जब मुझ पर कृपा की तो उसने हमारी लाज बचा ली॥ १॥ भगवान के सुन्दर चरण हमेशा ही सुखदायक हैं। प्राणी जैसी भी इच्छा करता है, उसे वही फल मिल जाता है और उसकी आशा निष्फल नहीं जाती॥ रहाउ॥ जिस पर प्राणपति दाता अपनी कृपा करता है वही संत उसका गुणगान करता है। जब परब्रह्म प्रभु के मन को अच्छा लगता है तो ही मन प्रेम-भक्ति में लीन होता है॥ २॥ आठ प्रहर भगवान का यशगान करने से माया की विषैली ठगौरी का असर नष्ट हो गया है। मेरे कर्त्तार-प्रभु ने मुझे अपने साथ मिला लिया है एवं साधु-संत मेरे साथी बन गए हैं॥ ३॥ प्रभु ने मुझे हाथ से पकड़ कर सर्वस्व प्रदान करके अपने साथ विलीन कर लिया है। हे नानक ! मैंने पूर्ण सतगुरु को पा लिया है, जिनके द्वारा मेरे सभी कार्य सम्पूर्ण हो गए हैं॥ ४॥ १५॥ ७९॥

सोरठि महला ५ ॥ गरीबी गदा हमारी ॥ खंना सगल रेनु छारी ॥ इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥ गुर पूरे एह गल सारी ॥ १ ॥ हरि हरि नामु संतन की ओटा ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत संगि जसु गाइआ ॥ इहु पूरन हरि धनु पाइआ ॥ कहु नानक आपु मिटाइआ ॥ सभु पारब्रहमु नदरी आइआ ॥ २ ॥ १६ ॥ ८० ॥

नम्रता हमारी गदा है और सबके चरणों की धूल बनना हमारा खण्डा है। पूर्ण गुरु ने इस बात की सूझ प्रदान की है कि इन शस्त्रों के समक्ष कोई विकारों से ग्रस्त दुराचारी टिक नहीं सकता॥ १॥ परमेश्वर का नाम संतों का सशक्त सहारा है। जो नाम-स्मरण करता है, उसकी मुक्ति हो जाती है और प्रभु का नाम-स्मरण करने से करोड़ों जीवों का उद्धार हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ संतों के संग भगवान का यशगान किया है और हरि-नाम रूपी यह पूर्ण धन हमें प्राप्त हो गया है। नानक का कथन है कि जब से हमने अपना आत्माभिमान मिटाया है तो सर्वत्र परब्रह्म ही नजर आया है॥ २॥ १६॥ ८०॥

सोरठि महला ५ ॥ गुरि पूरै पूरी कीनी ॥ बखस अपुनी करि दीनी ॥ नित अनंद सुख पाइआ ॥ थाव सगले सुखी वसाइआ ॥ १ ॥ हरि की भगति फल दाती ॥ गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥ गुरबाणी गावह भाई ॥ ओह सफल सदा सुखदाई ॥ नानक नामु धिआइआ ॥ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ २ ॥ १७ ॥ ८१ ॥

पूर्ण गुरु ने प्रत्येक कार्य पूर्ण किया है और मुझ पर अपनी कृपा कर दी है। मैं हमेशा आनंद एवं सुख प्राप्त करता हूँ। गुरु ने मुझे समस्त स्थानों पर सुखी बसा दिया है॥ १॥ भगवान की भक्ति समस्त फल प्रदान करने वाली है। पूर्ण गुरु ने कृपा करके भक्ति की देन प्रदान की है और कोई विरला पुरुष ही भक्ति के महत्त्व को समझता है॥ रहाउ॥ हे भाई! मधुर गुरुवाणी का गायन करो, क्योंकि यह हमेशा ही फलदायक एवं सुख देने वाली है। हे नानक! जिसने भगवान का नाम-सिमरन किया है, उसे वही प्राप्त हो गया है जो पूर्व ही उसके भाग्य में लिखा हुआ था॥ २॥ १७॥ ८१॥

सोरठि महला ५ ॥ गुरु पूरा आराधे ॥ कारज सगले साधे ॥ सगल मनोरथ पूरे ॥ बाजे अनहद तूरे ॥ १ ॥ संतहु रामु जपत सुखु पाइआ ॥ संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूरे की बाणी ॥ पारब्रहम मनि भाणी ॥ नानक दासि वखाणी ॥ निरमल अकथ कहाणी ॥ २ ॥ १८ ॥ ८२ ॥

पूर्ण गुरु की आराधना करने से सभी कार्य सिद्ध हो गए हैं। मेरे सभी मनोरथ भी पूरे हो गए हैं और मन में अनहद नाद बजते हैं॥ १॥ हे संतो! राम का भजन करने से सुख की उपलब्धि हुई है। संतों के पावन स्थान पर निर्मल सहज सुख पा लिया है और सभी दुःख मिट गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण गुरु की मधुर वाणी परब्रह्म-परमेश्वर के मन को लुभाती है। दास नानक ने प्रभु की निर्मल अकथनीय कहानी का ही बखान किया है॥ २॥ १८॥ ८२॥

सोरठि महला ५ ॥ भूखे खावत लाज न आवै ॥ तिउ हरि जनु हरि गुण गावै ॥ १ ॥ अपने काज कउ किउ अलकाईऐ ॥ जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ कामी कामि लुभावै ॥ तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥ २ ॥ जिउ माता बालि लपटावै ॥ तिउ गिआनी नामु कमावै ॥ ३ ॥ गुर पूरे ते पावै ॥ जन नानक नामु धिआवै ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८३ ॥

जैसे किसी भूखे पुरुष को खाते वक्त लज्जा नहीं आती वैसे ही प्रभु-भक्त निःसंकोच प्रभु का गुणगान करता है॥ १॥ अपने कार्य (प्रभु-भक्ति) को करने में क्यों आलस्य करें? जिसका सिमरन करने से प्रभु-दरबार में मुख उज्ज्वल होता है और हमेशा ही सुख की उपलब्धि होती है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे कामुक व्यक्ति कामवासना में ही तल्लीन रहता है, वैसे ही प्रभु के भक्त को प्रभु का यशगान ही अच्छा लगता है॥ २॥ जैसे माता अपने बालक के साथ मोह में लिपटी रहती है, वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति प्रभु-नाम की साधना में ही मग्न रहता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि पूर्ण गुरु से नाम-सिमरन की प्राप्ति होती है, और वह प्रभु-नाम का ही ध्यान करता है॥ ४॥ १६॥ ८३॥

सोरठि महला ५ ॥ सुख सांदि घरि आइआ ॥ निंदक कै मुखि छाइआ ॥ पूरै गुरि पहिराइआ ॥ बिनसे दुख सबाइआ ॥ १ ॥ संतहु साचे की वडिआई ॥ जिनि अचरज सोभ बणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बोले साहिब कै भाणै ॥ दासु बाणी ब्रहमु वखाणै ॥ नानक प्रभ सुखदाई ॥ जिनि पूरी बणत बणाई ॥ २ ॥ २० ॥ ८४ ॥

मैं अपने घर में सकुशल आ गया हूँ और निन्दकों का मुँह काला हो गया है अर्थात् निन्दक लज्जित हो गए हैं। पूर्ण गुरु ने मुझे प्रतिष्ठा का परिधान पहना दिया है और मेरे समस्त दुःखों का विनाश हो गया है॥ १॥ हे भक्तजनो! यह सच्चे परमेश्वर का बड़प्पन है, जिसने मेरी अद्‌भुत शोभा बनाई है॥ १॥ रहाउ॥ मैं तो मालिक की रज़ा में ही बोलता हूँ और यह दास तो ब्रह्म-वाणी का ही बखान करता है। हे नानक! वह प्रभु बड़ा सुखदायक है, जिसने पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है ॥ २॥ २०॥ ८४॥

सोरठि महला ५ ॥ प्रभु अपुना रिदै धिआए ॥ घरि सही सलामति आए ॥ संतोखु भइआ संसारे ॥ गुरि पूरै लै तारे ॥ १ ॥ संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥ अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि नामु रिदै उरि धारे ॥ तिनि सभे थोक सवारे ॥ गुरि पूरै तुसि दीआ ॥ फिरि नानक दूखु न थीआ ॥ २ ॥ २१ ॥ ८५ ॥

अपने प्रभु का हृदय में ध्यान करते हुए हम सकुशल घर लौट आए हैं। अब संसार को संतोष प्राप्त हो गया है चूंकि पूर्ण गुरु ने उसे भवसागर से तार दिया है॥ १॥ हे भक्तजनो! मेरा प्रभु हमेशा ही मुझ पर दयालु है। वह अपने भक्त के कर्मों का लेखा-जोखा नहीं करता और अपनी संतान की भांति उसकी रक्षा करता है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने तो अपने हृदय में भगवान का नाम ही धारण किया हुआ है और उसने मेरे सभी कार्य संवार दिए हैं। पूर्ण गुरु ने प्रसन्न होकर नाम-दान दिया है, अतः नानक को पुनः कोई कष्ट नहीं हुआ॥ २॥ २१॥ ८५॥

सोरठि महला ५ ॥ हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥ जै जै कारु करे सभु कोई ॥ गुर पूरे की वडिआई ॥ ता की कीमति कही न जाई ॥ १ ॥ हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥ जिस नो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं भारो सुआमी मेरा ॥ संतां भरवासा तेरा ॥ नानक प्रभ सरणाई ॥ मुखि निंदक कै छाई ॥ २ ॥ २२ ॥ ८६ ॥

मेरे मन-तन में हरि का निवास हो गया है, जिसके फलस्वरूप अब सभी मेरा मान-सम्मान कर रहे हैं। यह पूर्ण गुरु का बड़प्पन है कि उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ १॥ हे प्रभु! मैं तेरे नाम पर कुर्बान जाता हूँ। हे मेरे प्यारे! जिसे तू क्षमा कर देता है, वही तेरा यश गाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! तू मेरा महान् स्वामी है और संतों को तेरा ही भरोसा है। नानक का कथन है कि प्रभु की शरण में आने से निन्दकों का मुँह काला हो गया है॥ २॥ २२॥ ८६॥

सोरठि महला ५ ॥ आगै सुखु मेरे मीता ॥ पाछे आनदु प्रभि कीता ॥ परमेसुरि बणत बणाई ॥ फिरि डोलत कतहू नाही ॥ १ ॥ साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥ हरि सरब निरंतरि जानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ जीअ तेरे दइआला ॥ अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ अचरजु तेरी वडिआई ॥ नित नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २३ ॥ ८७ ॥

हे मेरे मित्र! भूतकाल-भविष्यकाल (लोक-परलोक) में मेरे लिए प्रभु ने सुख एवं आनंद कर दिया है। परमेश्वर ने ऐसा विधान बनाया है कि मेरा मन फिर कहीं ओर डांवाडोल नहीं होता ॥ १॥ मेरा मन अब तो सच्चे परमेश्वर में लीन हो गया है और मैंने उस प्रभु को निरन्तर सर्वव्यापी जान लिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे दयालु परमेश्वर! सभी जीव तेरे ही पैदा किए हुए हैं और अपने भक्तों का तू ही पोषण करता है। तेरी महिमा बड़ी अद्‌भुत है और नानक तो नित्य ही तेरा नाम-सिमरन करता रहता है॥ २॥ २३॥ ८७॥

सोरठि महला ५ ॥ नालि नराइणु मेरै ॥ जमदूतु न आवै नेरै ॥ कंठि लाइ प्रभ राखै ॥ सतिगुर की सचु साखै ॥ १ ॥ गुरि पूरै पूरी कीती ॥ दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभि सगले थान वसाए ॥ सुखि सांदि फिरि आए ॥ नानक प्रभ सरणाए ॥ जिनि सगले रोग मिटाए ॥ २ ॥ २४ ॥ ८८ ॥

नारायण सदा मेरे साथ है, अतः यमदूत मेरे निकट नहीं आता। वह प्रभु अपने गले से लगाकर मेरी रक्षा करता है। सतगुरु की शिक्षा सत्य है॥ १॥ पूर्ण गुरु ने पूर्ण कार्य किया है, उसने समस्त दुश्मनों को मार कर भगा दिया है और मुझ दास को सुमति दी है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु ने समस्त स्थानों को बसा दिया है और मैं फिर सकुशल घर लौट आया हूँ। नानक का कथन है कि मैंने तो प्रभु की शरण ली है, जिसने सभी रोग मिटा दिए हैं॥ २॥ २४॥ ८८॥

सोरठि महला ५ ॥ सरब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईऐ ॥ दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु गइआ हरि गाईऐ ॥ १ ॥ हरि रसु पीवहु भाई ॥ नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ नानक की बेनंती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ८९ ॥

सतगुरु सर्व सुखों का दाता है, अतः हमें उसकी शरण में ही जाना चाहिए। उसके दर्शन एवं साक्षात्कार होने से आनंद प्राप्त होता है और हरि का गुणगान करने से दुःखों का नाश हो गया है॥ १॥ हे भाई! हरि-रस का पान कीजिए। नाम का जाप करो, नाम की आराधना करो एवं पूर्ण गुरु की शरण प्राप्त करो॥ रहाउ॥ हे भाई! उसे ही नाम की प्राप्ति होती है, जिसके भाग्य में जन्म से पूर्व ही लिखा होता है और वही पूर्ण पुरुष होता है। हे प्रभु जी! नानक यही निवेदन करता है कि मेरी वृत्ति तेरे नाम-सिमरन में ही लीन रहे॥ २॥ २५॥ ८९॥

सोरठि महला ५ ॥ करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ जै जै कारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥ १ ॥ प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥ तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह धिआई ॥ रहाउ ॥ जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥ सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥ २ ॥ सूख सहज आनंद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥ जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥ ३ ॥ पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के कामा ॥ गुर चरनी लागि तरिओ भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ९० ॥

करने-करवाने में समर्थ अन्तर्यामी प्रभु अपने भक्तों की स्वयं ही रक्षा करता है। जो व्यक्ति गुरु-शब्द के रस को चखता है, उसकी सारी दुनिया के भीतर बड़ी जय-जयकार (कीर्ति) होती है॥ १॥ हे प्रभु जी! हे विश्व के मालिक! मुझे तो केवल तेरा ही सहारा है। तू बड़ा समर्थ एवं शरण दाता है और आठ प्रहर मैं तेरा ही ध्यान-मनन करता हूँ॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति तेरा भजन करता है, उसे कोई चिंता स्पर्श नहीं करती। सतगुरु के चरणों में लगने से मेरा भय मिट गया है और अपने मन में भगवान का गुणगान करता हूँ॥ २॥ सतगुरु ने मुझे ऐसा दिलासा दिया है कि अब मुझे सहज सुख एवं अधिकतर आनंद प्राप्त हो गया है। मैं विकारों पर विजय प्राप्त करके बड़ी शोभा से अपने घर आया हूँ और सारी आशा पूरी हो गई है॥ ३॥ पूर्ण गुरु की मति भी पूर्ण है और उस प्रभु के कार्य भी पूर्ण हैं। नानक का कथन है कि गुरु के चरणों में लगकर, हरि-नाम का भजन करते हुए मैं भवसागर से पार हो गया हूँ॥ ४॥ २६॥ ९०॥

पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥ भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥ २ ॥ ३० ॥ ९४ ॥

सभी सेवक भक्ति के फलस्वरूप भगवान के दरबार में बड़ी शोभा से रहते हैं और सभी जीव-जन्तु उनके वश में कर दिए हैं। भगवान ने तो हमेशा अपने सेवकों का साथ निभाया है और उन्हें भवसागर से पार कर दिया है॥ १॥ हमारा सर्वव्यापी मालिक बड़ा दीनदयालु, मेहरबान एवं कृपा का भण्डार है और उसने अपने संतों के सभी कार्य संवार दिए हैं॥ रहाउ॥ हर जगह पर हमारा आदर-सत्कार एवं अभिनन्दन होता है और हमें किसी बात की कोई कमी नहीं। नानक का कथन है कि भगवान अपने भक्तों को भक्ति का शोभायुक्त वस्त्र प्रदान करता है और ऐसे भगवान का तेज-प्रताप दुनिया में जान लिया है॥ २॥ ३०॥ ९४॥

सोरठि महला ९ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥ स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥ १ ॥ आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥ कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥ २ ॥ १ ॥

हे मन ! राम से प्रेम करो। अपने कानों से गोविन्द के गुण सुनो और जिह्वा से उसकी स्तुति के गीत गाओ॥ १॥ रहाउ॥ सत्संगति में सम्मिलित होकर भगवान का सिमरन करो, सिमरन से पतित भी पावन हो जाता है। हे सज्जन ! काल (मृत्यु) सर्प की भांति मुँह खोलकर चारों ओर भ्रमण कर रहा है॥ १॥ इस बात को समझकर अपने मन में याद रखो कि यह काल आज अथवा कल अंतः तुझे अपना ग्रास अवश्य बना लेगा। नानक का कथन है कि भगवान का भजन अवश्य कर ले, चूंकि यह सुनहरी अवसर व्यतीत होता जा रहा है॥ २॥ १॥

सोरठि महला ९ ॥ मन की मन ही माहि रही ॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही ॥ अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥ १ ॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥ २ ॥ २ ॥

मनुष्य के मन की अभिलाषा मन में ही अधूरी रह गई है, चूंकि न ही उसने भगवान का भजन किया है, न ही तीर्थ-स्थान पर जाकर सेवा की है, जिसके परिणामस्वरूप काल (मृत्यु) ने उसे चोटी से पकड़ लिया है॥ १॥ रहाउ॥ पत्नी, दोस्त, पुत्र, रथ, संपत्ति, बेशुमार धन-दौलत एवं सारा विश्व समझ लो नाशवान ही है और भगवान का भजन ही सत्य एवं सही है॥ १॥ अनेक युगों तक भटकते-भटकते हार कर अंतः जीव को दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त हुआ है। नानक का कथन है कि हे मानव ! भगवान से मिलाप का यह सुनहरी अवसर है, फिर तू उसका सिमरन क्यों नहीं करता ?॥ २॥ २॥

सोरठि महला ९ ॥ मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥ अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥ १ ॥ ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना

॥ घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥ २ ॥ बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥ मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥ ३ ॥ ३ ॥

हे मन ! तूने कैसी कुमति धारण की हुई है ? तूने राम की भक्ति नहीं की और तू पराई नारी एवं निन्दा के स्वाद में मग्न है॥ १॥ रहाउ॥ तूने मुक्ति के मार्ग को नहीं जाना लेकिन धन-दौलत संचित करने के लिए इधर-उधर दौड़ रहा है। जीवन के अन्तिम क्षणों में किसी ने भी तेरा साथ नहीं देना और तूने निरर्थक ही खुद को लौकिक पदार्थों में फंसा लिया है॥ १॥ न तूने भगवान का भजन किया, न ही गुरुजन की सेवा की और न ही तेरे भीतर कुछ ज्ञान उत्पन्न हुआ है। मायातीत प्रभु तो तेरे हृदय में ही विद्यमान है लेकिन तू उसे वीराने में खोज रहा है॥ २॥ तू अनेक योनियों में भटकता हुआ थक गया है और तुझे फिर भी स्थिर बुद्धि प्राप्त नहीं हुई। नानक ने तो यही बात बताई है कि दुर्लभ मानव शरीर को पाकर भगवान के चरणों का ही भजन कर॥ ३॥ ३॥

सोरठि महला ९ ॥ मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥ दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥ १ ॥ जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥ महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥ २ ॥ अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥ ३ ॥ ४ ॥

हे मन ! उस प्रभु की शरण में आने का विचार करो, जिसका सिमरन करने से गणिका का भी उद्धार हो गया था, इसलिए उस प्रभु का यश अपने हृदय में धारण करो॥ १॥ रहाउ॥ जिस भगवान का सिमरन करने से भक्त ध्रुव भी अटल हो गया था और उसे निर्भय पदवी प्राप्त हो गई थी। मेरा स्वामी इस प्रकार के दुःख नाश करने वाला है, फिर तूने उसे क्यों विस्मृत कर दिया है॥ १॥ जब ही हाथी कृपानिधि प्रभु की शरण में आया तो उसी समय वह मगरमच्छ से स्वतंत्र हो गया। मैं नाम की महिमा का कहाँ तक वर्णन करूँ ? चूंकि राम कहते ही बन्धन टूट जाते हैं ॥ २॥ इस जगत में वासना में रत अजामल पापी जाना जाता है, जिसका एक क्षण में ही उद्धार हो गया था। नानक कहते हैं कि उस चिंतामणि प्रभु को याद करो, तू भी भवसागर से पार हो जाएगा॥ ३॥ ४॥

सोरठि महला ९ ॥ प्रानी कउनु उपाउ करै ॥ जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥ कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥ १ ॥ कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥ अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥ २ ॥ सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥ सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥ ३ ॥ ५ ॥

प्राणी क्या उपाय करे, जिससे उसे राम की भक्ति प्राप्त हो जाए और मृत्यु का डर निवृत्त हो जाए॥ १॥ रहाउ॥ बताओ, वह कौन-सा कर्म, कैसी विद्या और फिर कौन-सा धर्म करे। वह कौन-सा गुरु का दिया नाम है, जिसका सिमरन करने से व्यक्ति भवसागर से पार हो जाए ? ॥ १॥ इस कलियुग में एक ईश्वर का नाम ही कृपा का भण्डार है, जिसका जाप करने से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेद भी यही विधि बताते हैं कि एक ईश्वर के नाम के तुल्य अन्य कोई भी धर्म नहीं॥ २॥ जिसे सारी दुनिया (विश्व का मालिक) गुसाँई कहती है, वह सुख-दुख से रहित

है और सर्वदा निर्लिप्त रहता है। नानक का कथन है कि वह भगवान तेरे भीतर निरन्तर दर्पण में अक्स की भांति निवास करता है॥ ३॥ ५॥

सोरठि महला ९ ॥ माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥ महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥ बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥ १ ॥ साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥ २ ॥ ६ ॥

हे मेरी माँ! मैं किस विधि से उस भगवान को पहचानूँ ? चूंकि मेरा मन तो महामोह एवं अज्ञानता के अन्धेरे में उलझा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने अपना समूचा जीवन भ्रम में भटक कर ही गंवा दिया है और मुझे सुमति प्राप्त नहीं हुई। मैं तो रात-दिन विषय-विकारों में ही आसक्त रहता हूँ और मेरी यह अधमता अभी तक नहीं छूटी॥ १॥ मैंने कभी भी सत्संगति नहीं की और न ही मैंने प्रभु का कीर्ति-गान किया है। नानक का कथन है कि हे ईश्वर! मुझ में तो कोई अच्छाई नहीं है, फिर भी दया करके मुझे अपनी शरण में रख लो॥ २॥ ६॥

सोरठि महला ९ ॥ माई मनु मेरो बसि नाहि ॥ निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥ पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥ १ ॥ मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥ घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥ २ ॥ जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥ तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥ ३ ॥ ७ ॥

हे मेरी माँ! मेरा चंचल मन नियंत्रण में नहीं है। यह तो रात-दिन विषय-विकारों के पीछे ही भागता रहता है, अतः मैं इस पर किस विधि से विराम लगाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ यह वेद, पुराणों एवं स्मृतियों के उपदेश को सुनकर एक क्षण भर के लिए भी अपने हृदय में नहीं बसाता। यह तो पराया धन एवं पराई नारी के आकर्षण में ही फँसकर अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा रहा है॥ १॥ यह तो केवल माया के नशे में ही बावला हो गया है और उसे कुछ ज्ञान नहीं सूझता। निरंजन परमात्मा तो उसके हृदय के भीतर ही निवास करता है लेकिन वह उसके रहस्य को नहीं जानता॥ २॥ जब ही यह साधु की शरण में आया है तो उसकी तमाम दुर्मति का नाश हो गया है। हे नानक! तब ही इसने चिंतामणि भगवान का सिमरन किया तो इसकी यम की फाँसी कट गई॥ ३॥ ७॥

सोरठि महला ९ ॥ रे नर इह साची जीअ धारि ॥ सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥ तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥ १ ॥ अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥ २ ॥ ८ ॥

हे मनुष्य! अपने हृदय में इस सत्य को धारण कर लो कि यह समूचा जगत एक स्वप्न जैसा है और इसका विनाश होने में कोई देरी नहीं लगती॥१॥ रहाउ॥ जैसे बनाई गई रेत की दीवार, पोतकर चार दिन भी नहीं रहती, वैसे ही यह माया के सुख हैं। हे गंवार मनुष्य! तू उन में क्यों फँसा हुआ है॥ १॥ आज ही कुछ समझ ले चूंकि अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है और भगवान के

नाम का भजन कर ले। नानक का कथन है कि हे मनुष्य ! संतों का यही निजी उपदेश एवं युक्ति है जो तुझे पुकार कर बता दी है॥ २॥ ८॥

सोरठि महला ६ ॥ इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥ सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥ जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥ १ ॥ कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥ दीना नाथ सगल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥ २ ॥ सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥ नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥ ३ ॥ ९ ॥

मैंने इस दुनिया में कोई घनिष्ठ मित्र नहीं देखा है। सारी दुनिया अपने सुख में ही मग्न है और दुःख में कोई किसी का साथी नहीं बनता॥ १॥ रहाउ॥ पत्नी, मित्र, पुत्र एवं सभी रिश्तेदारों का केवल धन-दौलत से ही लगाव है। जब ही वे मनुष्य को निर्धन होता देखते हैं तो सभी उसका साथ छोड़कर दौड़ जाते हैं॥ १॥ मैं इस बावले मन को क्या उपदेश दूँ ? इसने तो केवल इन सभी स्वार्थियों से ही स्नेह लगाया हुआ है। इसने उस प्रभु का यश भुला दिया है जो दीनों का स्वामी एवं सभी भय नाश करने वाला है॥ २॥ मैंने अनेक यत्न किए हैं परन्तु यह मन कुत्ते की पूंछ की तरह टेढ़ा ही रहता है और सीधा नहीं होता। नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! अपने विरद् की लाज रखो; चूंकि मैं तो तुम्हारा ही नाम-सिमरन करता हूँ॥ ३॥ ६॥

सोरठि महला ६ ॥ मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥ कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥ करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥ १ ॥ राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥ उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥ २ ॥ रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥ ३ ॥ १० ॥

हे मन ! तूने गुरु के उपदेश को तो ग्रहण नहीं किया, फिर सिर मुंडवा कर भगवा वेष धारण करने का क्या अभिप्राय है ?॥ १॥ रहाउ॥ सत्य को छोड़कर झूठ के साथ लगकर तूने अकारण ही अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर दिया है। तू अनेक छल-कपट करके अपने पेट का पोषण करता है और पशु की भांति सोता है॥ १॥ तूने राम भजन के महत्त्व को नहीं समझा और स्वयं को माया के हाथ बेच दिया है। यह बावला मन तो विषय-विकारों में ही फँसा रहा है और नाम-रत्न को भुला दिया है॥ २॥ यह अचेत रहकर भगवान को स्मरण नहीं करता और अपना जन्म व्यर्थ ही बिता दिया है। नानक का कथन है कि हे भगवान ! तू अपने विरद् को पहचानते हुए सब का कल्याण कर, चूंकि प्राणी तो हमेशा ही भूल-चूक करने वाला है॥ ३॥ १०॥

सोरठि महला ६ ॥ जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥ सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥ हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥ १ ॥ आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥ कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥ २ ॥ गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ ३ ॥ ११ ॥

जो पुरुष दुःख में भी दुःख नहीं मानता अर्थात् दुःख से विचलित नहीं होता, जिसे सुख के

साथ किसी प्रकार का कोई स्नेह नहीं और जिसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं और जो स्वर्ण को भी मिट्टी की भांति समझता है॥ १॥ रहाउ॥ जो न ही किसी की निन्दा करता है, न ही प्रशंसा की परवाह करता है और जिसे कोई लोभ, मोह एवं अभिमान नहीं, जो हर्ष एवं शोक से भी निर्लिप्त रहता है और जो न ही मान एवं न ही अपमान की ओर ध्यान देता है॥ १॥ जो आशा एवं अभिलाषा सबको त्याग देता है, जो दुनिया में इच्छा-रहित ही रहता है; जिसे कामवासना एवं गुस्सा जरा भी स्पर्श नहीं करते, वास्तव में उसके अन्तर्मन में ही भगवान का निवास है॥ २॥ जिस पुरुष पर गुरु ने अपनी कृपा की है, वही इस युक्ति से परिचित होता है। हे नानक! ऐसा पुरुष भगवान के साथ यूं विलीन हो जाता है, जैसे जल, जल में लीन हो जाता है॥ ३॥ ११॥

सोरठि महला ६ ॥ प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥ अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥ बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥ १ ॥ घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥ जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥ २ ॥ इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥ अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥ ३ ॥ १२ ॥ १३६ ॥

हे प्रियतम! अपने मन में इस तथ्य को भलीभांति समझ ले कि सारी दुनिया केवल अपने सुख में ही फँसी हुई है और कोई किसी का शुभचिन्तक नहीं॥ १॥ रहाउ॥ जीवन में सुख-समृद्धि के समय में तो बहुत सारे सगे-संबंधी मिलकर बैठते हैं तथा चहुं दिशाओं से घेर कर रखते हैं लेकिन जब कोई विपत्ति आती है तो सभी साथ छोड़ देते हैं और कोई भी निकट तक नहीं आता ॥ १॥ जिस गृहिणी (धर्मपत्नी) के संग पति बहुत स्नेह करता है और जो हमेशा ही अपने जीवनसाथी के संग लगी रहती है, जब हंस रूपी आत्मा इस शरीर को त्याग देती है तो वह जीवनसंगिनी भी मृत शरीर को प्रेत-प्रेत कहती हुई भाग जाती है॥ २॥ इस संसार में लोगों का इस तरीके का ही व्यवहार बना हुआ है, जिनके साथ हम भरपूर प्रेम करते हैं। नानक का कथन है कि जीवन के अन्तिम क्षणों में ईश्वर के अलावा कोई भी काम नहीं आता॥ ३॥ १२॥ १३६॥

सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ त्रिसना राचि न पर घरि जावा त्रिसना नामि बुझाई ॥ घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥ तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥ १ ॥ मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥ अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥ हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥ एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥ सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥ २ ॥ मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥ जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥ आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ भिखिआ नामि रजे संतोखी अंम्रितु सहजि पीआई ॥ ३ ॥ दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥ सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥ मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥ अपर अपार अगंम अगोचर कहणै कीम न पाई ॥ ४ ॥ सुंन समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥ मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं ॥ करम सुकरम कराए आपे आपे भगति द्रिड़ामं ॥ मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥ ५ ॥

कर सकता है॥ ६॥ हे परमेश्वर! तेरी लीला अपरंपार है, चूंकि कई जीव भ्रम में ही भटकते रहते हैं और कई तेरी भक्ति में मग्न रहते हैं। जिधर तू लोगों को लगाता है, वे वैसा ही फल प्राप्त करते हैं और तू ही अपना हुक्म लागू करने वाला है। यदि मेरा कुछ अपना हो तो ही मैं तेरी सेवा करूँ, मेरी यह आत्मा एवं शरीर तो तुम्हारा ही है। जो सतिगुरु से मिल जाता है, भगवान उस पर कृपा करता है और नामामृत ही उसका आधार बन जाता है॥ ७॥ जब गुरु ने मन में गुणों का प्रकाश कर दिया तो मन दसम द्वार में जा बसा। अब मन गुणों व ज्ञान में ही ध्यान लगाता है। नाम ही मन को अच्छा लगता है, नाम ही जपता और दूसरों से जपाता हूँ और परम तत्व का ही बखान करता हूँ। शब्द गुरु ही हम सभी का पीर है, जो बड़ा गहन एवं गंभीर है। शब्द के बिना तो सारी दुनिया ही बावलों की तरह आचरण करती है। हे नानक! जिसका मन सत्य नाम से निहाल हुआ है, वही पूर्ण वैरागी एवं सहज सौभाग्यशाली है॥ ८॥ १॥

सोरठि महला १ तितुकी ॥ आसा मनसा बंधनी भाई करम धरम बंधकारी ॥ पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ इह माइआ जगि मोहणी भाई करम सभे वेकारी ॥ १ ॥ सुणि पंडित करमा कारी ॥ जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥ सासतु बेदु बकै खड़ो भाई करम करहु संसारी ॥ पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ इन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥ २ ॥ दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥ बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥ सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥ ३ ॥ साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥ गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥ जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥ ४ ॥ पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥ जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥ गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥ ५ ॥ इहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइ ॥ बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके करम कमाइ ॥ इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछू न जाइ ॥ ६ ॥ गुर मिलिऐ भउ मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥ मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु ॥ गुरु अंकसु जिनि नामु द्रिड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥ ७ ॥ इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥ इहु वखरु वापारी सो द्रिड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु ॥ धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥ ८ ॥ २ ॥

हे भाई! आशा एवं मनसा तो मात्र बन्धन ही हैं और धर्म-कर्म भी इन्सान को बन्धनों में फँसाने वाले हैं। पाप एवं पुण्य के कारण ही लोग दुनिया में जन्म लेते हैं लेकिन नाम को विस्मृत करने से मनुष्य का नाश हो जाता है। हे भाई! यह माया तो दुनिया में लोगों को मोहित करने वाली ही है और माया के पीछे लगकर किए गए सभी कर्म पापपूर्ण हैं॥ १॥ हे कर्मकाण्डी पण्डित! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन; जिस कर्म से सुख उत्पन्न होता है, वह कर्म आत्मतत्व का चिंतन करना है॥ रहाउ॥ तू खड़ा होकर शास्त्रों एवं वेदों का पाठ करता है परन्तु हे भाई! स्वयं तो तुम सांसारिक कर्म ही करते हो। तेरे मन में तो विकारों की मैल भरी हुई है और यह मैल पाखण्ड करने से दूर नहीं हो सकती। इस तरह ही मकड़ी भी जाला बुनकर सिर के बल ही नष्ट हो जाती है॥ २॥ दुर्मति के कारण ही बहुत सारे लोग बर्बाद हो गए हैं; हे भाई! प्रभु के अलावा द्वैतभाव में पड़कर लोग ख्वार ही हुए हैं। सतगुरु के बिना नाम प्राप्त नहीं होता और नाम के बिना भ्रम दूर नहीं होता। हे भाई! यदि सतिगुरु की सेवा की जाए तो ही सुख की उपलब्धि होती है और मनुष्य का

जन्म-मरण का चक्र मिट जाता है॥ ३॥ हे भाई! सच्चा सुख तो गुरु से ही प्राप्त होता है और मन निर्मल होकर परम सत्य में समा जाता है। जो व्यक्ति गुरु की निष्काम सेवा करता है, उसे ही सन्मार्ग सूझता है और गुरु के बिना मार्ग नहीं मिलता। जिसके हृदय में मात्र लोभ ही भरा हुआ है, वह क्या शुभ कर्म कर सकता है? झूठ बोलकर तो वह विष ही खाता है॥ ४॥ हे पण्डित! यदि दही का मंथन किया जाए तो इस में से मक्खन ही निकलता है। यदि जल का मंथन किया जाए तो जल ही दिखाई देगा; यह जगत भी जल की तरह ही वस्तु है। हे भाई! गुरु के बिना मनुष्य दुविधा में ही नष्ट हो जाता है और घट-घट में विद्यमान अलक्ष्य प्रभु से जुदा ही रहता है॥ ५॥ हे भाई! यह नश्वर दुनिया तो सूत के धागे की भांति है, जिसे माया ने (अपने आकर्षण में) दसों दिशाओं में बाँध कर रखा हुआ है। गुरु के बिना माया की गांठ नहीं खुलती और लोग कर्मकाण्ड करते हुए ही थक जाते हैं। हे भाई! इस दुनिया को तो भ्रमों ने ही भटकाया हुआ है और इस बारे कुछ भी वर्णन नहीं किया जा सकता॥ ६॥ हे भाई! गुरु को मिलने से ही प्रभु का भय-प्रेम मन में निवास करता है और उस भय प्रेम में मरना ही सच्चा लेख है। स्नान, दान-पुण्य एवं अन्य शुभ कर्मों से तो नाम ही भगवान के दरबार में सर्वोत्तम साधन है। जो व्यक्ति गुरु के अंकुश द्वारा नाम को अपने भीतर दृढ़ करता है, उसका आडम्बर दूर हो जाता है और भगवान का उसके मन में निवास हो जाता है॥ ७॥ हे भाई! यह तन उस भगवान जौहरी की एक दुकान है, जिसमें अक्षय नाम की पूँजी विद्यमान है। जो व्यापारी गुरु के शब्द का चिन्तन करता है, वह इस सौदे को दृढ़ता से प्राप्त कर लेता है। नानक का कथन है कि हे भाई! वह व्यापारी धन्य है, जो गुरु से साक्षात्कार करके नाम का व्यापार करता है॥ ८॥ २॥

सोरठि महला १ ॥ जिन्ही सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन्ह के साथ तरे ॥ तिन्हा ठाक न पाईऐ पिआरे अंम्रित रसन हरे ॥ बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥ १ ॥ भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥ विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥ मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ॥ तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥ २ ॥ पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥ आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥ गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥ ३ ॥ हुकमै अंदरि निंमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥ हुकमै अंदरि जंमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥ गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥ ४ ॥ हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥ हुकमे बंन्हि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ ॥ हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥ ५ ॥ हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥ हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥ हुकमु सिञापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥ ६ ॥ आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥ जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ नाउ मिलै संतोखीआं पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥ ७ ॥ काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥ ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि ॥ धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरि धारि ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे मेरे प्यारे! जिन्होंने सतगुरु की सेवा की है, उनके साथी भी भवसागर से पार हो गए हैं। जिन की रसना हरिनामामृत चखती रहती है, उन्हें भगवान के दरबार में प्रवेश करने में कोई अड़चन नहीं आती। हे मेरे प्यारे! जो लोग भगवान के भय बिना पापों के भार से भरे हुए हैं, वे डूब गए हैं।

यदि ईश्वर उन पर दया करे तो वे भी भवसागर से पार हो सकते हैं॥ १॥ हे प्यारे प्रभु! मैं हमेशा ही तेरी स्तुति करता हूँ और सदा तेरी ही स्तुति करनी चाहिए। हे प्यारे! नाम-जहाज के बिना मनुष्य भवसागर में ही डूब जाता है और वह कैसे दूसरे किनारे को पा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्यारे! हमें महामहिम परमात्मा की महिमा करनी चाहिए चूंकि उसके अलावा दूसरा कोई भी महिमा के योग्य नहीं। जो मेरे प्रभु की प्रशंसा करते हैं, वे श्रेष्ठ हैं, वे शब्द के साथ मग्न रहते हैं और उन्हें प्रभु के प्रेम-रंग की देन मिलती है। हे प्यारे! यदि मैं भी उनकी संगति में मिल जाऊँ तो नाम-रस को लेकर तत्त्व का मंथन करूँ॥ २॥ हे प्यारे! सत्य-नाम ही प्रभु की दरगाह में जाने के लिए परवाना है और यही जीव की प्रतिष्ठा है। इस दुनिया में आकर मनुष्य को इस प्रकार का परवाना लेकर जाना चाहिए और हुकम करने वाले भगवान के हुक्म से परिचित होना चाहिए। गुरु के बिना परमात्मा के हुक्म की सूझ नहीं आती और उस सच्चे प्रभु का बल सत्य है॥ ३॥ हे प्यारे! परमात्मा के हुक्म में ही प्राणी माता के गर्भ में आता है और उसके हुक्म में वह माता के गर्भ में ही विकसित होता है। हे प्यारे! ईश्वर हुक्म में ही प्राणी माता के गर्भ में सिर के भार उल्टा होकर जन्म लेता है। हे प्यारे! गुरुमुख मनुष्य ईश्वर दरबार में सम्मानित होता है और अपने सभी कार्य संवार कर दुनिया से चल देता है॥ ४॥ हे प्यारे! मनुष्य भगवान के हुक्म में इस दुनिया में आया है और हुक्म में ही दुनिया से चले जाना है। हुक्म में ही मनुष्य बांधकर दुनिया से भेज दिया जाता है और मनमुख व्यक्ति भगवान के दरबार में दण्ड प्राप्त करता है। हे प्यारे! ईश्वर के हुक्म में जीव शब्द की पहचान करता है और दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥ ५॥ ईश्वर के हुक्म में ही मनुष्य कर्मों की गणनाएँ गिनता है और ईश्वर के हुक्म में ही अभिमान एवं अहंत्व उत्पन्न होते हैं। हे प्यारे! ईश्वर के हुक्म में ही मनुष्य कर्मों में जकड़ा हुआ भटकता फिरता है और बुराइयों में ठगी हुई दुनिया विलाप करती है। यदि मनुष्य ईश्वर के हुक्म को समझ ले तो उसे सत्य की प्राप्ति होती है और उसकी दुनिया में बहुत शोभा होती है॥ ६॥ हे प्यारे! भगवान के नाम का बखान करना बड़ा कठिन है, फिर हम कैसे सत्य नाम को कह एवं सुन सकते हैं। हे प्यारे! जिन्होंने ईश्वर का स्तुतिगान किया है, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ। ईश्वर के नाम को प्राप्त करके मुझे बड़ा संतोष हुआ है और उसकी कृपा से मैं उसके संग मिल गया हूँ॥ ७॥ हे प्यारे! यदि मेरा यह शरीर कागज बन जाए; मन को दवात मान लिया जाए और यदि मेरी यह जिह्वा सत्य की कलम बन जाए तो मैं विचार करके उस परमेश्वर की ही महिमा लिखूँगा। नानक का कथन है कि हे प्यारे! वह लिखने वाला धन्य है जो सत्य नाम को अपने हृदय में धारण करता और लिखता है॥ ८॥ ३॥

सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥ तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥ हम अपराधी निरगुणे भाई तुझ ही ते गुणु सोइ ॥ १ ॥ मेरे प्रीतमा तू करता करि वेखु ॥ हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम विसेखु ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइ ॥ चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ॥ २ ॥ रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु ॥ जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥ ३ ॥ पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु ॥ गुर मिलिऐ सुखु पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥ ४ ॥ जलि मलि काइआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइ ॥ गिआनि महा रसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥ ५ ॥ देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥ पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बुडहि तेहि ॥ ६ ॥ गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ ॥ मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥ ७ ॥ बईअरि

बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ ॥ बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि नाइ ॥ ८ ॥ सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥ जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥ ६ ॥ ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइ ॥ खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ॥ १० ॥ ४ ॥

हे ईश्वर ! तू हमें गुण प्रदान करने वाला एवं पवित्र-पावन है लेकिन हम जीवों का मन पवित्र नहीं होता। हम बड़े अपराधी एवं गुणविहीन हैं और तुझ से ही गुणों की उपलब्धि हो सकती है ॥१॥ हे मेरे प्रियतम ! तू जग का रचयिता है और तू ही सबको पैदा करके देखता रहता है। मैं बड़ा पापी एवं पाखण्डी हूँ और मेरे मन एवं तन के भीतर अपना विशेष नाम स्थापित कर दो॥ रहाउ॥ हे प्रियवर ! विषैली माया ने मनुष्य के मन को मोहित कर दिया है और उसने चतुराई द्वारा अपनी इज्जत गंवा दी है। हे भाई ! यदि गुरु का ज्ञान मन में समा जाए तो ही सच्चा ठाकुर चित में बस जाता है॥ २॥ हमारे ठाकुर जी को तो बहुत सुन्दर, मनोहर कहा जाता है, वह तो गहरे लाल रंग जैसा मनोहर है। हे भाई ! यदि मन भगवान के साथ मुहब्बत कर ले तो वह उसके दरबार में सत्यशील एवं भूल-रहित माना जाता है॥ ३॥ हे परमेश्वर ! तू ही आकाश एवं पाताल में समाया हुआ है और सबके हृदय में तेरे ही गुण एवं ज्ञान मौजूद है। हे भाई ! गुरु से साक्षात्कार होने पर ही सुख की उपलब्धि होती है और मन से घमण्ड दूर हो जाता है॥ ४॥ हे भाई ! इस काया को जल से भलीभांति मलकर स्वच्छ किया जाए तो भी यह तन फिर भी मैला ही रहता है। यदि ज्ञान के महारस से स्नान किया जाए तो मन एवं तन निर्मल हो जाते हैं॥ ५॥ हे भाई ! देवी-देवताओं की (मूर्ति) पूजा करके मनुष्य क्या मांग सकता है और देवी-देवता भी क्या दे सकते हैं ? देवताओं की मूर्तियों का जल से स्नान करवाया जाता है, हे भाई ! परन्तु वह पत्थर स्वयं ही जल में डूब जाते हैं॥ ६॥ गुरु के बिना अदृश्य परमात्मा की पहचान नहीं हो सकती और मोह-माया में आसक्त यह दुनिया गुरु के बिना अपनी प्रतिष्ठा गंवा कर डूब जाती है। हे भाई ! सारी बड़ाई तो मेरे ठाकुर जी के हाथ में है, यदि उसे मंजूर हो तो ही बड़ाई देता है॥ ७॥ जो जीव-स्त्री मधुर वचन बोलती है और सत्य वचन कहती है, वह अपने पति-परमेश्वर को अच्छी लगने लगती है। वह अपने स्वामी के प्रेम में आकर्षित हुई सत्य में निवास करती है और प्रभु के नाम में ही मग्न रहती है॥ ८॥ हे भाई ! मनुष्य सभी को अपना ही कहता है अर्थात् मोह-माया में फंसकर हरेक वस्तु पर अपना ही अधिकार समझता है लेकिन यदि गुरु द्वारा सूझ प्राप्त हो जाए तो वह बुद्धिमान बन जाता है। जो व्यक्ति अपने प्रभु के प्रेम में बिंधे हुए हैं, वे भवसागर से पार हो गए हैं और उनके पास दरगाह में जाने के लिए शब्द रूपी परवाना है॥ ६॥ हे भाई ! यदि अधिकतर ईंधन संग्रह करके उसे जरा-सी अग्नि प्रज्वलित कर दी जाए तो वह जलकर भस्म हो जाता है; हे नानक ! यूं ही यदि एक क्षण एवं पल भर के लिए नाम हृदय में बस जाए तो फिर सहज ही ईश्वर से मिलन हो जाता है॥ १०॥ ४॥

सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी **१ओं सतिगुर प्रसादि ॥**

भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ ॥ प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ ॥ गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥ १ ॥ हरि जी एह तेरी वडिआई ॥ भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई ॥ केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ॥ रिधि सिधि

सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥ २ ॥ मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥ गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ ॥ कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥ ३ ॥ भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥ माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥ हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥ ४ ॥ अचिंत कंम करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥ गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥ ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा ॥ ५ ॥ बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥ आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥ गुरमुखि होवै सु अंम्रितु पीवै सहजे साचि समाई ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक करम करै अधिकाई ॥ वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥ ७ ॥ जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥ ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥ नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥ ८ ॥ १ ॥

हे हरि! तू सदैव ही अपने भक्तों की रक्षा करता आया है, जगत-रचना से ही उनकी लाज बचाता आया है। अपने भक्त प्रहलाद की तूने ही रक्षा की थी और तूने ही नृसिंह अवतार धारण करके दैत्य हिरण्यकशिपु का वध करके उसे नष्ट कर दिया था। हे प्रभु जी! गुरुमुख व्यक्तियों की तुझ पर पूर्ण आस्था है किन्तु मनमुख व्यक्ति भ्रम में ही भटकते रहते हैं॥ १॥ हे परमेश्वर! यह तेरी ही बड़ाई है। हे स्वामी! तू अपने भक्तों की लाज रखना, क्योंकि भक्त तो तेरी ही शरण में रहते हैं॥ रहाउ॥ भक्तों को तो यमराज भी स्पर्श नहीं कर सकता और न ही काल (मृत्यु) उनके निकट जाता है। भक्तों के मन में तो केवल राम-नाम ही बसा हुआ है और नाम द्वारा ही वे मुक्ति प्राप्त करते हैं। गुरु के सहज स्वभाव के कारण सभी ऋद्धियाँ एवं सिद्धियाँ भक्तों के चरणों में लगी रहती हैं॥ २॥ स्वेच्छाचारी पुरुषों के भीतर तो भगवान के प्रति बिल्कुल आस्था नहीं होती, उनके भीतर तो लोभ एवं स्वार्थ की भावना ही बनी रहती है। गुरु के सान्निध्य में रहकर उनके हृदय में शब्द का भेदन नहीं होता और न ही हरि-नाम से उनका प्रेम होता है। मनमुख व्यक्ति हमेशा ही रुक्ष एवं कटु वचन बोलते हैं और उनके झूठ एवं कपट का ढोंग प्रत्यक्ष होकर उतर जाता है॥ ३॥ हे प्रभु! तू स्वयं ही अपने भक्तों में प्रवृत रहता है; तू भक्ति के द्वारा ही जाना जाता है। तेरी माया का मोह सब लोगों में रमा हुआ है और एक तू ही परमपुरुष विधाता है। अपने आत्माभिमान को नष्ट करके एवं तृष्णा को मन में ही मिटा कर मैंने गुरु के शब्द द्वारा परम-सत्य को पहचान लिया है॥ ४॥ जिन लोगों को हरि का नाम प्यारा लगता है, प्रभु उनके सभी कार्य सहज ही संवार देता है। सभी कार्य संवारने वाला परमात्मा गुरु की अपार कृपा से सदा ही मन में बसा रहता है। जिनका मेरा हरि-प्रभु रखवाला है, जो उनकी रीस करता है, वह नष्ट हो जाता है॥ ५॥ सतगुरु की सेवा किए बिना कभी किसी को परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई। मनमुख व्यक्ति तो रोते एवं चिल्लाते हुए ही प्राण त्याग गए हैं और योनि-चक्र में फँसकर जन्मते-मरते ही रहते हैं और कोई सुख का स्थान नहीं पाते। वे तो दुःख में दुखी रहकर मिट जाते हैं। यदि कोई गुरुमुख बन जाता है तो वह नामामृत का पान करके सहज ही सत्य में समा जाता है॥ ६॥ सतगुरु की सेवा किए बिना मनुष्य को जन्मों का बन्धन नहीं छोड़ता, चाहे वे कितने ही प्रकार के अनेक कर्मकाण्ड करता रहे। जो वेदों का अध्ययन करते हैं, वे भी वाद-विवाद में ही रहते हैं और

परमात्मा के बिना अपना मान-सम्मान गंवा देते हैं। सतगुरु सत्य है, जिसकी वाणी भी सत्य है। गुरु की शरण में आने से ही मनुष्य की मुक्ति हो जाती है॥ ७॥ जिनके हृदय में ईश्वर का वास हो गया है, वे उसके दरबार में सच्चे हैं और सत्य के दरबार में वे सत्यशील ही कहलाए जाते हैं। उनकी शोभा युगों-युगान्तरों में लोकप्रिय होती है और कोई भी इसे मिटा नहीं सकता। जिन्होंने भगवान को अपने हृदय में धारण किया हुआ है; नानक हमेशा ही उन पर कुर्बान जाता है॥ ८॥ १॥

सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥ सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ ॥ गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥ भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥ २ ॥ मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥ आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥ ३ ॥ हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥ नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥ ५ ॥ गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥ प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥ ६ ॥ जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥ जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥ ७ ॥ सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ॥ नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥ ८ ॥ २ ॥

हे भाई ! सतगुरु की सेवा में लगाकर ईश्वर स्वयं ही गुणविहीन जीवों को क्षमा कर देता है। सतगुरु की सेवा बड़ी उत्तम है, चूंकि इसके फलस्वरूप ही चित राम-नाम में संलग्न हो जाता है ॥ १॥ परमेश्वर स्वयं ही जीव को क्षमा करके अपने साथ मिला लेता है। हे भाई ! हम बड़े गुणविहीन एवं अपराधी हैं लेकिन पूर्ण सतगुरु ने कृपा करके हमें अपने साथ मिला लिया है॥ रहाउ॥ हे प्यारे ! शब्द गुरु का चिन्तन करने से भगवान ने कितने ही अपराधियों को क्षमा कर दिया है। भगवान ने सतगुरु रूपी जहाज पर सवार करवा कर कितने ही जीवों को भवसागर से पार कर दिया है॥ २॥ हे भाई ! गुरु रूपी पारस के मिलाप में मिलन होने से हम जले हुए लोहे से स्वर्ण अर्थात् गुणवान बन गए हैं। आत्माभिमान को त्याग देने से नाम हमारे हृदय में बस गया है और हमारी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई है॥ ३॥ हे भाई ! मैं गुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। जिसने हमें नाम का भण्डार दिया है, गुर-उपदेश द्वारा हम सहज अवस्था में समा गए हैं॥ ४॥ गुरु के बिना सहज अवस्था उत्पन्न नहीं होती; चाहे इस बारे ज्ञानियों से जाकर पूछ लो। हे भाई ! अपने मन से अपने आत्माभिमान को दूर करके हमेशा ही सतगुरु की सेवा करो॥ ५॥ गुरु की शिक्षा द्वारा प्रभु का भय-प्रेम उत्पन्न होता है और प्रभु के भय-प्रेम में किए गए सभी कर्म सत्य एवं श्रेष्ठ हैं। तब मनुष्य को प्रभु के प्रेम का पदार्थ (धन) प्राप्त हो जाता है और सत्य नाम ही उसका आधार बन जाता है॥ ६॥ हे भाई ! जो अपने सतगुरु की निष्काम सेवा करते हैं, हम उनके चरण स्पर्श करते हैं। हमने अपना अमूल्य मानव-जन्म सफल कर लिया है और अपने वंश के लिए भी क्षमा-दान प्राप्त कर लिया है॥ ७॥ हे भाई ! वाणी सत्य है और (गुरु का) शब्द भी सत्य है और इसकी उपलब्धि गुरु की कृपा से ही होती है। नानक का कथन है कि हे भाई ! जिसके मन में हरि-नाम का वास हो गया है, उसे कोई भी विघ्न नहीं लगता॥ ८॥ २॥

सोरठि महला ३ ॥ हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥ सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥ १ ॥ हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ ॥ गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ॥ रहाउ ॥ गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ ॥ सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥ २ ॥ पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥ मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥ ३ ॥ से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु ॥ अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥ ४ ॥ सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥ सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिस दी वडी है दाति ॥ ५ ॥ मनमुखि मैली डुंमणी भाई दरगह नाही थाउ ॥ गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥ ६ ॥ एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी जाइ ॥ किड़ी पवंदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥ ७ ॥ नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु सांति सरीर ॥ नानक नामु समालि तू भाई अपरंपर गुणी गहीर ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे भाई ! परमात्मा तो गुरु के शब्द द्वारा ही ज्ञात होता है, जो पूर्ण भाग्य से ही मिलता है। वे सुहागिन जीव-स्त्रियाँ तो सदा ही सुखपूर्वक रहती हैं जो प्रेम-रंग लगाकर रात-दिन स्वामी के साथ मग्न रहती हैं॥ १॥ हे परमेश्वर ! तू आप ही उन्हें अपना प्रेम-रंग चढ़ाता है। हे प्रभु-प्रेम में लीन जीव-स्त्रियो ! ईश्वर से प्रेम लगाकर उसके गुण गाओ॥ रहाउ॥ हे भाई ! जो जीव-स्त्री अपना आत्माभिमान छोड़कर मन लगाकर गुरु की सेवा करती है। इस तरह सदा सुख में रहकर उसे फिर कोई दुःख नहीं लगता और ईश्वर स्वयं ही आकर हृदय में निवास कर लेता है॥ २॥ हे भाई ! जो जीव-स्त्री अपने प्रियतम के हुक्म को नहीं जानती, वह कुलक्षणी एवं व्यभिचारिणी नारी है और अपना प्रत्येक कार्य अपने मन के हठ से ही करती है, हे भाई ! पति-परमेश्वर के नाम से विहीन होने के कारण वह झूठी है॥ ३॥ जिनके माथे पर शुभ भाग्य है, हे भाई ! वही भगवान का गुणगान करते हैं और सच्चे परमेश्वर के प्रेम द्वारा वे वैराग्यवान बन जाते हैं। वे अपनी सुरति निर्भय गुरु के साथ लगाकर रात-दिन प्रभु का यश-गान करने में मग्न रहते हैं॥ ४॥ हे भाई ! दिन-रात उसकी उपासना करो; जो सभी को मारता एवं पुनः जीवित कर देता है। अपने मन से हम उसे क्यों विस्मृत करें, जिसकी देन बहुत बड़ी है॥ ५॥ हे भाई ! मनमुख जीव-स्त्री बड़ी मैली एवं दुविधाग्रस्त है और भगवान के दरबार में उसे कोई सुख का स्थान नहीं मिलता। यदि वह भी गुरुमुख बन जाए तो ही वह प्रभु का यश गान करने में मग्न होती है और अपने प्रियतम से मिलकर उस सत्य में ही विलीन हो जाती है॥ ६॥ हे भाई ! इस जन्म में यदि भगवान का सिमरन नहीं किया तो आगे परलोक में क्या मुँह लेकर जाओगे ? हम तुझे निर्देश भी देते रहे लेकिन माया के कारण विकारों में फँसकर तूने अपना जीवन ही बर्बाद कर दिया॥ ७॥ हे भाई ! जो भगवान का नाम सिमरन करते हैं, वे सुखी रहते हैं और उनका शरीर भी हमेशा शान्त एवं सुखी रहता है। नानक का कथन है कि हे भाई ! तू उस भगवान का नाम-सिमरन करता रह, जो अपरंपार, गुणवान एवं गहनगंभीर है॥ ८॥ ३॥

सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥ किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु ॥ गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिस

ते जापै तथु ॥ १ ॥ मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता ॥ नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता ॥ रहाउ ॥ जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भंडार ॥ तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥ सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ॥ २ ॥ सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥ मिलि संत सभा मनु मांजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु ॥ मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु ॥ गुर बचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥ ३ ॥ मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥ घटि घटि ब्रहमु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ जितु दिनि विसरै पारब्रहमु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि ॥ करन करावन समरथो भाई सरब कला भरपूरि ॥ ४ ॥ प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥ तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥ गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु ॥ प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥ ५ ॥ गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ ॥ रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥ करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥ जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥ ६ ॥ बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥ रिजकु संबाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ ॥ जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ॥ ७ ॥ तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सरब कला भरपूरि ॥ सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥ साधू संगि मिलाइआ भाई सरब रहिआ भरपूरि ॥ जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥ ८ ॥ अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥ मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥ नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥ ९ ॥ १ ॥

हे भाई ! जिस ईश्वर ने समूचे जगत को पैदा किया है, वह सबकुछ करने-कराने में समर्थ है। वह ऐसा परमेश्वर है, जिसने अपनी सत्ता देकर आत्मा एवं शरीर का निर्माण किया है। उसका किस तरह कथन किया जा सकता है, किस तरह उसके दर्शन किए जा सकते हैं, जो एक ही अकथनीय जग का रचयिता है। हे भाई ! उस गोविन्द-गुरु की ही स्तुति करनी चाहिए, जिससे इस तथ्य का ज्ञान होता है॥ १॥ हे मेरे मन ! हमें तो भगवान का ही भजन करना चाहिए। वह तो सदैव ही अपने भक्तजनों को नाम-दान देता रहता है और दुःख-दर्द का अंत करने वाला है ॥ रहाउ॥ हे भाई ! जिसके घर में सबकुछ है, जिसके भण्डार नवनिधियों से भरे हुए हैं; उसका कैसे मूल्यांकन किया जा सकता है, जो स्वयं ही सर्वोच्च, अगम्य एवं अपार है। सृष्टि में जितने भी जीव-जन्तु हैं, वह सबका पालन-पोषण करता है और प्रतिदिन उनकी देखरेख करता है। हमें पूर्ण सतगुरु से साक्षात्कार करना चाहिए, जो अपने शब्द द्वारा भगवान से मिला देता है॥ २॥ हे भाई ! सच्चे परमेश्वर के चरणों की पूजा करने से भ्रम एवं भय का नाश हो जाता है। संतों की पावन सभा में सम्मिलित होकर अपने मन को स्वच्छ करना चाहिए, तो ही भगवान के नाम का मन में निवास हो जाता है। फिर अज्ञानता का अन्धेरा मिट जाता है और हृदय-कमल उज्ज्वल हो जाता है। गुरु के वचन से ही मन में सुख पैदा होता है और सतगुरु के पास सब फल हैं॥ ३॥ हे भाई ! 'मेरा-तेरा' की भावना त्याग देनी चाहिए और सबकी चरणों की धूल बन जाना चाहिए। ईश्वर तो घट-घट में विद्यमान है और वह प्रत्यक्ष सबको देखता एवं सुनता है। हे भाई !

जिस दिन भी मनुष्य को परब्रह्म विस्मृत हो जाता है, उस दिन उसे अफसोस से मर जाना चाहिए। हे भाई ! सृष्टि का मूल परमात्मा सभी कार्य करने-कराने में समर्थ है, वह सर्वकला सम्पूर्ण है॥ ४॥ भगवान का नाम ऐसा प्रेम रूपी बहुमूल्य धन है, जिसके कारण माया-मोह का नाश हो जाता है। हे भाई ! यद्यपि उसे भला लगे तो वह मनुष्य को अपने साथ मिला लेता है और उसके हृदय में नाम का निवास हो जाता है। हे भाई ! गुरु के सान्निध्य में हृदय-कमल प्रफुल्लित होने से हृदय में सत्य की ज्योति का प्रकाश हो जाता है। प्रभु के तेज-प्रताप से धरती एवं आकाश भी कृतार्थ हो गए हैं॥ ५॥ हे भाई ! पूर्ण गुरदेव ने हमें संतोष प्रदान किया है और अब हमारा दिन-रात भगवान से स्नेह लगा रहता है। हमारी रसना हमेशा राम का ही भजन करती है और हमें यही जीवन का सच्चा स्वाद एवं मनोरथ लगता है। हे भाई ! हम तो अपने कानों से हरि का नाम सुन-सुनकर कर ही जीवित हैं और अब हमें अटल स्थान प्राप्त हो गया है। जिस मन में भगवान के प्रति आस्था नहीं आती, उसे जल जाना ही चाहिए॥ ६॥ हे भाई ! मेरे मालिक-प्रभु में अनन्त गुण हैं और मैं उस पर ही बलिहारी जाता हूँ। वह तो गुणविहीनों का भी पोषण करता है और निराश्रितों को भी आश्रय देता है। वह हमें श्वास-श्वास से भोजन पहुँचाता है, जिसका नाम बड़ा गहनगंभीर है। जिसकी सच्चे गुरु से भेंट हो जाती है, उसकी तकदीर पूर्ण है॥ ७॥ हे भाई ! हम तो उसके बिना एक घड़ी भी जीवित नहीं रह सकते, जो सर्वकला सम्पूर्ण है। मैं तो अपने किसी श्वास एवं ग्रास से उसे विस्मृत नहीं करता और हमेशा ही उस प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन करता हूँ। हे भाई ! जो सर्वव्यापक है, सत्संगति ने मुझे उससे मिला दिया है। जो लोग भगवान से प्रेम नहीं करते, वह हमेशा ही दुःखी होकर मरते रहते हैं॥ ८॥ भगवान ने हमें अपने आंचल से लगाकर भयानक एवं दुःखों के संसार-सागर से पार कर दिया है। उसने अपनी कृपा-दृष्टि करके हमें निहाल कर दिया है और अंत तक बेहद साथ निभाएगा। हे भाई ! हमारा मन एवं तन शीतल हो गया है और नाम का भोजन ही हमारा जीवनाधार है। नानक तो उस ईश्वर की शरण में है, जो किल्विष-पापों को नाश करने वाला है॥ ६॥ १॥

सोरठि महला ५ ॥ मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ ॥ बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥ जिस नो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइआ ॥ सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ॥ १ ॥ मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी एक ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ ॥ साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ ॥ जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे साचै नाइ ॥ तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥ २ ॥ मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु ॥ कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥ भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥ जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु ॥ ३ ॥ माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥ जिन तू विसरहि पारब्रहम सुआमी से तन होए धूड़ि ॥ बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥ ४ ॥ साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ ॥ जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि कालै उठि जाइ ॥ मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ ॥ जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥ ५ ॥ संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि ॥ जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥ होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न

चली नालि ॥ सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥ ६ ॥ सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे ॥ अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अंम्रिति पूर भरे ॥ दुख सागरु तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे ॥ जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥ ७ ॥ संम्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु ॥ तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु ॥ हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥ सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥ ८ ॥ २ ॥

माता का गर्भ भी दुःख-तकलीफों का गहरा सागर है लेकिन हे प्यारे प्रभु ! वहाँ भी तूने अपने नाम का ही जाप करवाया है। जब माता के गर्भ से जीव बाहर निकला तो उसके भीतर मोह-माया का विष फैल गया। हे प्यारे प्रभु ! जिस पर तूने अपनी कृपा की, उसे पूर्ण गुरु से मिला दिया। गुरु से साक्षात्कार करके वह अपने श्वास-श्वास आराधना करता है और उसकी सुरति राम-नाम से लगा दी॥ १॥ हे प्रभु ! हमारे मन एवं तन में तेरा ही सहारा है। तेरे सिवाय अन्य कोई सृजनहार नहीं और एक तू ही अन्तर्यामी है॥ रहाउ॥ हे प्यारे ! जीव करोड़ों ही जन्मों में भटकने एवं अनेक योनियों में कष्ट सहन करके इस दुनिया में आता है। जब जीव सच्चे परमेश्वर को भुला देता है तो उसे कठोर दण्ड मिलता है। लेकिन जिनकी पूर्ण सतगुरु से भेंट हो जाती है, वे सत्य नाम में तल्लीन हो जाते हैं। हे प्यारे ! जो लोग सत्य की शरण में आते हैं, उनका अनुसरण करते हुए हम भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं॥ २॥ हे प्यारे ! मनुष्य लौकिक पदार्थों को मीठा समझते हुए खाता है, लेकिन वह तो शरीर में रोग ही उत्पन्न कर देता है। फिर यह कड़वा होकर निकलता है और जिससे शोक ही उत्पन्न होता है। हे प्यारे प्रभु ! तूने जीव को सांसारिक भोगों का लुत्फ प्राप्त करने में भटकाया हुआ है और इससे उसकी वियोग की दूरी खत्म नहीं होती है। हे प्यारे ! जिनका गुरु के मिलन से उद्धार हो गया है, उनका ऐसा ही संयोग लिखा था॥ ३॥ हे प्रभु ! मनुष्य तो धन-दौलत के लालच में ही भरा हुआ है और उसके चित्त में तू कदापि स्मरण नहीं होता। हे परब्रह्म-परमेश्वर ! जो तुझे भुला देते हैं, उनका शरीर धूल बन जाता है। वे बहुत रोते-चिल्लाते हैं किन्तु उनकी पीड़ा निवृत्त नहीं होती। हे प्यारे ! गुरु से मिलाकर तूने जिनका जीवन संवार दिया है, उनका मूल बरकरार रह गया है॥ ४॥ हे प्यारे मित्र ! जहाँ तक मुमकिन हो सके भगवान से विमुख मनुष्य की संगति मत करो। जिस विमुख को मिलकर भगवान ही भूल जाता है, फिर कुसंग के कारण मनुष्य तिरस्कृत होकर संसार से चला जाता है। हे प्यारे ! मनमुख व्यक्तियों को तो कहीं भी शरण नहीं मिलती और उन्हें भगवान के दरबार में कठोर दण्ड ही प्राप्त होता है। जो लोग गुरु से मिलकर अपना जीवन संवार लेते हैं, उनके सभी कार्य संवर जाते हैं॥ ५॥ हे प्यारे ! जीवन में यदि कोई व्यक्ति हजारों ही युक्तियाँ एवं चतुराईयों का प्रयोग भी क्यों न कर ले किन्तु एक भी युक्ति एवं चतुराई उसका साथ नहीं देती। जो परमात्मा से विमुख हो जाते हैं, उनका वंश ही कलंकित हो जाता है। हे प्यारे ! जो सदैव नाम रूपी वस्तु है, उसे व्यक्ति जानता ही नहीं और झूठ उसके किसी काम नहीं आने वाला। हे प्यारे ! ईश्वर जिसे सतगुरु से मिला देता है, वह सत्य नाम का ही चिंतन करता रहता है॥ ६॥ हे प्यारे ! जिस पर वह अपनी कृपा-दृष्टि करता है, उसे सत्य, संतोष, ज्ञान एवं ध्यान की प्राप्ति हो जाती है। फिर वह रात-दिन भगवान का ही गुणगान करता रहता है और उसका हृदय नामामृत से भरपूर हो जाता है। वह जीवन के दुःखों के सागर से पार होकर भवसागर से भी पार हो जाता है। हे प्यारे प्रभु ! जिसे तू पसंद करता है, उसे अपने साथ मिला लेता है और वे सदैव ही सत्यवादी एवं भले हैं॥ ७॥ हे प्यारे ! ईश्वर सर्वशक्तिमान,

सर्वव्यापी, दीन-दयालु एवं ज्योतिर्मय है और भक्तों को तो उसका ही सहारा है। जो बड़ा अन्तर्यामी एवं दक्ष है, भक्त उसकी शरण में ही पड़े रहते हैं। हे प्यारे! भगवान ने तो हमारा लोक-परलोक ही संवार दिया है और मस्तक पर सत्य का चिन्ह अंकित कर दिया है। हे प्यारे! वह प्रभु कदापि विस्मृत न हो चूंकि नानक तो सदा ही उस पर कुर्बान जाता है ॥ ८॥ २॥

सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ॥ पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे ॥ १ ॥ पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए करम अनेका ॥ हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही ॥ तट तीरथ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥ २ ॥ मन कामना तीरथ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥ मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥ ३ ॥ कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥ अंन बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥ ४ ॥ पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥ हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥ ५ ॥ जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ ॥ वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥ ६ ॥ राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥ सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥ ७ ॥ हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥ ८ ॥ तेरो सेवकु इह रंगि माता ॥ भइओ क्रिपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

मनुष्य ने अपने जीवन में विभिन्न पाठों का अध्ययन और वेदों का चिन्तन किया। उसने योगासन श्वास-नियन्त्रण एवं कुण्डलिनी की साधना भी की किन्तु फिर भी उसका पाँचों विकारों-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से साथ नहीं छूटा अपितु वह अधिक अहंकार में ही बंध गया॥ १॥ हे प्यारे! मैंने भी ऐसे अनेक कर्म किए हैं। लेकिन इन विधियों द्वारा भगवान से मिलन नहीं होता, मैं हार-थक प्रभु के द्वार पर आ गया हूँ और उससे यही प्रार्थना करता हूँ कि हे जगत के स्वामी! दया करके मुझे विवेक-बुद्धि दीजिए॥ रहाउ॥ मनुष्य मौन धारण करता है, अपने हाथों का ही पत्तल के रूप में प्रयोग करता है, वह वनों में नग्न भटकता है और तीर्थो के तटों सहित समस्त धरती में भ्रमण करता है परन्तु फिर भी उसकी दुविधा समाप्त नहीं होती॥ २॥ वह अपनी मनोकामना हेतु तीर्थ-स्थान पर जाकर भी बसता है, अपने सिर को आरे के नीचे भी रखवाता है, चाहे वह इस विधि के लाखों ही उपाय कर ले लेकिन फिर भी उसके मन की मैल दूर नहीं होती॥ ३॥ मनुष्य दानी बनकर अनेक प्रकार के दान करता है, जैसे सोना, कन्या (दान), बहुमूल्य हाथी, घोड़े दान करता है। वह अन्न, वस्त्र एवं बहुत भूमि अर्पित करता है किन्तु फिर भी उसे इस तरह भगवान का द्वार नहीं मिलता॥ ४॥ वह पूजा-अर्चना, दण्डवत प्रणाम, षट्-कर्म करने में भी लीन रहता है परन्तु फिर भी बड़ा अहंकार करता हुआ बन्धनों में ही पड़ता है। इन युक्तियों से भी उसे भगवान नहीं मिलता॥ ५॥ योगियों एवं सिद्धों के चौरासी आसन मनुष्य यह भी कर करके हार ही जाता है, वह चाहे लम्बी उम्र ही प्राप्त कर ले परन्तु फिर भी निरंकार से मिलन न होने के कारण बार-बार जन्म लेता हुआ भटकता ही रहता है॥ ६॥ मनुष्य राजा बनकर शासन करता है और बड़ा ऐश्वर्य बनाता है। वह प्रजा पर हुक्म चलाता है, शरीर

पर चंदन और इत्र लगाकर सुन्दर सेज पर सुख भोगता है परन्तु ये सभी सुख उसे घोर नरक की ओर ही धकेलते हैं॥ ७॥ सभी कर्मों में सर्वोत्तम कर्म सत्संगति में सम्मिलित होकर हरि का कीर्तिगान करना है। नानक का कथन है कि सत्संगति की उपलब्धि भी उसे ही होती है, जिसके भाग्य में पूर्व जन्मों के कर्मों अनुसार ऐसा लिखा होता है॥ ८॥ हे परमात्मा! तेरा सेवक तो इस रंग में ही मग्न है। दीनों के दुःख नाश करने वाला ईश्वर मुझ पर कृपालु हो गया है, जिससे यह मन अब उसका भजन करने में ही लीन रहता है॥ रहाउ दूसरा॥ १॥ ३॥

रागु सोरठि वार महले ४ की १ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥ दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥ ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ॥ परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि ॥ सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु ॥ देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किसु ॥ जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि मन में सत्य-(ईश्वर) स्थित हो जाए तो सोरठि रागिनी सदैव सुहावनी है। उसके दांतों पर कोई बुराई-निंदा की मैल न हो, मन में द्वेष-भावना न हो और जीभ सत्य का यशगान करती रहे। वह लोक-परलोक दोनों में प्रभु-भय में रहती हो और निर्भीक होकर अपने सतगुरु की सेवा करती रहे। जब वह लौकिक श्रृंगार त्याग कर अपने प्रियतम के पास जाती है तो वह अपने प्रियतम के साथ सहर्ष सुख भोगती है। अपने मन में नाम से वह सदा अलंकृत रहती है और उसमें कदाचित मैल नहीं होती। जब उसके देवर एवं जेठ (कामादिक विकार) दुःखी होकर मर गए हैं तो अब सास (माया) से किस बात का डर? हे नानक! यदि जीवात्मा अपने प्रियतम प्रभु को पसंद आ जाए तो उसके लिलाट पर भाग्य-मणि चमक पड़ती है और फिर उसे सब सत्य ही दिखाई देता है॥ १॥

मः ४ ॥ सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले ॥ गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुरि सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥ २ ॥

महला ४॥ सोरठि रागिनी तभी सुन्दर लगती है, यदि इसके द्वारा जीवात्मा हरि-नाम की खोज करे। वह अपने गुरु को प्रसन्न करे और गुरु-उपदेश द्वारा परमेश्वर के नाम का जाप करती रहे। वह दिन-रात प्रभु-प्रेम में आकर्षित रहती है और उसके शरीर का पहनावा हरि के प्रेम में लीन हो जाता है। मैंने समूचा जगत खोज कर देख लिया है परन्तु भगवान जैसा परमपुरुष मुझे कोई नहीं मिला। गुरु ने मेरे भीतर परमात्मा का नाम दृढ़ कर दिया है, जिससे मेरा मन कहीं और डावांडोल नहीं होता। नानक तो परमात्मा का दास है और गुरु-सतगुरु के सेवकों का सेवक है॥ २॥

पउड़ी ॥ तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥ तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥ दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥ सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥ हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ वारिआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे सृजनहार ईश्वर! तू स्वयं ही इस सृष्टि का कर्त्ता है, तूने स्वयं ही यह जगत रूपी खेल रचा है और तूने आप ही इसे सुन्दर बनाया है। तू स्वयं ही दाता एवं कर्त्ता है और आप ही भोगने

वाला है। हे दुनिया को पैदा करने वाले! तेरा शब्द (हुक्म) सर्वव्यापक है। मैं अपने गुरु पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जिस गुरु के माध्यम से मैं सदैव ही तेरा स्तुतिगान करता रहता हूँ॥ १॥

सलोकु मः ३ ॥ हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पंनै पाइ ॥ इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥ सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ अनेक जीव अहंकार की अग्नि में जलते हुए ही प्राण त्याग गए हैं, दुविधा में भटकते हुए अंतः गुरु के पास आए हैं। पूर्ण गुरु ने शरण में आए हुए जीवों के कर्मों को अपने लेखे में डालकर उनका कल्याण कर दिया है। गुरु के शब्द द्वारा सहज ही यह जगत मोह-माया में जलता हुआ नजर आया है। हे नानक! जो व्यक्ति शब्द में मग्न हैं, उनके मन शीतल हो गए हैं और अब वे हमेशा सत्य की साधना करते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ सफलिओ सतिगुरु सेविआ धंनु जनमु परवाणु ॥ जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥ २ ॥

महला ३॥ सतगुरु की सेवा बड़ी फलदायक है। जो गुरु की सेवा करता है, उसका जन्म धन्य एवं स्वीकृत है। जो जीते एवं मरते समय भी गुरु को विस्मृत नहीं करता, वही चतुर है। वह अपने वंश का उद्धार कर देता है और उसका जन्म स्वीकार हो जाता है। गुरुमुख व्यक्ति जीवन एवं मृत्यु में प्रामाणिक हैं लेकिन मनमुख व्यक्ति जन्मते-मरते रहते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति गुरु के शब्द में लीन रहते हैं, उन्हें मृत नहीं कहा जा सकता॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरि नामु धिआईऐ ॥ सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ ॥ हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईऐ ॥ हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईऐ ॥ हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईऐ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ निरंजन परमपुरुष परमेश्वर की ही उपासना करो और हरि-नाम का ध्यान-मनन करते रहो। संतों की पावन सत्संगति में सम्मिलित होकर हरि-नाम में ही लीन होना चाहिए। हे प्रभु! तेरी सेवा बड़ी महान् है, मुझ मूर्ख को भी अपनी सेवा में लगाओ। मैं तेरा गुलाम एवं सेवक हूँ, जैसे तुझे अच्छा लगता है, मुझे आज्ञा करो। जैसा गुरु उपदेश देता है, गुरुमुख बनकर मैं वही कार्य करूँगा॥ २॥

सलोकु मः ३ ॥ पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु ॥ मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु ॥ जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि ॥ दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥ लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥ मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु ॥ नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ पूर्व कर्मों के अनुसार सृष्टिकर्त्ता ने जो जीव की तकदीर में लिख दिया है, उसने वही कर्म करना है। माया ने जीव के मुँह में मोह रूपी ठग बूटी डाल दी है, जिसके कारण उसे गुणों का भण्डार ईश्वर भूल गया है। इस जगत को जिंदा मत समझो, चूंकि यह तो

दुविधा में फँसकर मरा हुआ है। जिन्होंने गुरुमुख बनकर परमात्मा के नाम को याद नहीं किया, उन्हें उसके पास बैठने का अवसर प्राप्त नहीं होता। वे बहुत अधिक दुःख भोगते हैं और अन्तिम समय उनके पुत्र एवं पत्नी में से कोई भी उनका साथ नहीं देता। लोगों के भीतर उनका तिरस्कार किया जाता है और वे कठिन श्वास अंदर खींचते हैं। मनमुख व्यक्तियों पर कोई भी भरोसा नहीं करता चूंकि उनका भरोसा टूट चुका होता है। हे नानक! जिनके अन्तर्मन में परमात्मा के नाम का निवास होता है, उन गुरुमुखों को अपार सुख प्राप्त होता है॥ १॥

मः ३ ॥ से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥ सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥ दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥ मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥ नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ २ ॥

महला ३॥ जो लोग गुरुमुख बनकर सहज-स्वभाव मिलते हैं, वही संबंधी एवं सज्जन हैं। वे तो रात-दिन सतगुरु की इच्छानुसार ही कार्य करते हैं और सत्य में ही समाए रहते हैं। जो लोग बड़ा अभिमान एवं पाप करते हुए द्वैतभाव में लीन रहते हैं, उन्हें सज्जन नहीं कहना चाहिए। मनमुख व्यक्ति स्वयं बड़े स्वार्थी हैं और वे कोई भी कार्य संवार नहीं सकते। हे नानक! वे वही कर्म करते हैं, जो पूर्व कर्मों के अनुसार विधाता ने लिखा होता है और कोई भी उसे मिटा नहीं सकता॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै आपि खेलु रचाइआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥ विचि हउमै लेखा मंगीऐ फिरि आवै जाइआ ॥ जिना हरि आपि क्रिपा करे से गुरि समझाइआ ॥ बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! तूने स्वयं ही जगत पैदा करके स्वयं ही इस खेल का निर्माण किया है। तूने स्वयं ही त्रिगुणों (रज, तम, सत) का निर्माण करके मोह-माया में वृद्धि की है। अहंकार में किए हुए कर्मों के कारण मनुष्य से दरगाह में कर्मों का लेखा मांगा जाता है और तब ही वह जगत में जन्मता-मरता रहता है। जिन पर ईश्वर स्वयं कृपा करता है, उन्हें गुरु उपदेश देता है। मैं अपने गुरु पर बलिहारी जाता हूँ और सदैव ही उस पर न्यौछावर हूँ॥ ३॥

सलोकु मः ३ ॥ माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥ मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ॥ बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ ॥ धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ॥ नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ माया की ममता मनुष्य के मन को मुग्ध करने वाली है, जिसने दांतों के बिना ही समूचे जगत को निगल लिया है। मनमुख व्यक्ति निगल लिए जाते हैं परन्तु जिन्होंने सत्य-नाम से अपना चित लगाया है, वे गुरुमुख (माया से) बच गए हैं। नाम से विहीन दुनिया पागलों की भांति भटक रही है और गुरुमुख बनकर यह सबकुछ नजर आया है। सांसारिक कार्य करता हुआ मनुष्य अपना जीवन निष्फल ही गंवा देता है और सुखों के दाता भगवान को अपने मन में नहीं बसाता। हे नानक! परमात्मा का नाम उन्हें ही मिला है, जिनके भाग्य में इस तरह जन्म से पूर्व प्रारम्भ से लिखा हुआ है॥ १॥

मः ३ ॥ घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥ जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥ अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ ॥ गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥ सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥ २ ॥

महला ३॥ मन रूपी घर में ही अमृत भरपूर है किन्तु मनमुख इसके आनंद को नहीं जानते। जैसे कोई मृग नाभि में ही कस्तूरी होने के बावजूद उसे नहीं जानता और दुविधा में पड़ कर भटकता ही रहता है। स्वेच्छाचारी व्यक्ति नामामृत को त्याग कर मोह-माया रूपी विष को ही संचित करता रहता है चूंकि ईश्वर ने स्वयं ही स्वेच्छाचारी व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है। किसी विरले गुरुमुख को ही ज्ञान की प्राप्ति हुई है और उसने अपने अन्तर्मन में ही ब्रह्म के दर्शन किए हैं। फिर उसका तन एवं मन शीतल हो गया है और उसकी जिह्वा को हरि-नाम का स्वाद आ गया है। गुरु-शब्द से ही हृदय में नाम पैदा होता है और शब्द-गुरु ने सत्य से मेल करवाया है। शब्द के बिना यह समूचा जगत पागल है और इसने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया है। हे नानक! एक शब्द ही अमृत है, जिसकी उपलब्धि गुरु के माध्यम से होती है॥ २॥

पउड़ी ॥ सो हरि पुरखु अगंमु है कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ तिसु रूपु न रेख अद्रिसटु कहु जन किउ धिआईऐ ॥ निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ॥ जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ ॥ गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ वह परमपुरुष प्रभु अगम्य है। बताओ, किस विधि से उसे पाया जा सकता है? उसका न कोई रूप है, न ही कोई चिन्ह है और वह अदृश्य है। हे भक्तजनो! बताओ, उसका कैसे ध्यान-मनन किया जाए? वह प्रभु निराकार, मायातीत एवं अपहुँच है। फिर क्या कहकर उसका गुणगान करें? जिसे वह स्वयं मार्ग दर्शन करता है, वही व्यक्ति उसके मार्ग पर चल देता है। पूर्ण गुरु ने हमें भगवान के दर्शन करा दिए हैं और गुरु की सेवा करने से ही उसकी प्राप्ति होती है॥ ४॥

सलोकु मः ३ ॥ जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ॥ जीउ वंञै चउ खंनीऐ सचे संदड़ै नेहि ॥ नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यदि सच्चे प्रभु के प्रेम के बदले मेरे चार टुकड़े कर दिए जाएँ, जैसे तिलों की तरह मेरे तन को कोल्हू में पीसा जाए और इस में से थोड़ा-सा भी रक्त नहीं निकलेगा। हे नानक! इस तरह मेरा प्रभु से मिलन रात-दिन कभी समाप्त नहीं होगा॥ १॥

मः ३ ॥ सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥ जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥ नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥ २ ॥

महला ३॥ मेरा सज्जन प्रभु बड़ा रंगीला है। वह अपना प्रेम प्रदान करके मन को इस तरह मोह लेता है जैसे मजीठ के साथ कपड़े रंग दिए जाते हैं। हे नानक! यह रंग फिर कभी भी उतरता नहीं तथा कोई अन्य रंग मन को नहीं लगता॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइदा ॥ हरि आपे स्रिसटि सवारि सिरि धंधै

लाइदा ॥ इकना भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥ इकना मारगि पाइ इकि उझड़ि पाइदा ॥ जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर स्वयं ही सब जीवों में व्यापक है और वह स्वयं ही जीव को बुलवाता है। वह स्वयं ही सृष्टि-रचना करके जीवों को कामकाज में लगाता है। वह किसी को अपनी भक्ति में लगा देता है और किसी को स्वयं ही कुपथ प्रदान कर देता है। वह किसी को सन्मार्ग प्रदान करता है और किसी को वीराने में धकेल देता है। नानक तो परमात्मा के नाम का ध्यान करता और गुरु के सान्निध्य में उसका ही गुणगान करता है॥ ५॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥ मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥ बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥ इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतगुरु की सेवा तभी फलदायक है, यदि कोई इसे मन लगाकर करता है। इस तरह मनचाहा फल मिल जाता है और अन्तर्मन से अहंकार का नाश हो जाता है। ऐसा पुरुष अपने बंधनों को तोड़ कर मोक्ष प्राप्त कर लेता है और सत्य में ही समाया रहता है। इस दुनिया में भगवान का नाम बड़ा दुर्लभ है और गुरुमुख बन कर ही यह मन में आकर स्थित होता है। हे नानक ! जो अपने गुरु की सेवा करता है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥

मः ३ ॥ मनमुख मंनु अजितु है दूजै लगै जाइ ॥ तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥ घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ ॥ इहु मनु वसि न आवई थके करम कमाइ ॥ भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीरथ नाइ ॥ मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥ गुर परसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥ भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥ सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ मनमुख व्यक्ति का मन नियंत्रण से बाहर है, चूंकि वह तो द्वैतभाव में ही लिप्त रहता है। उसे स्वप्न में भी सुख की उपलब्धि नहीं होती है और वह अपना जीवन अत्यंत कष्टों में ही व्यतीत कर देता है। पण्डित घर-घर में जाकर धर्म-ग्रंथों का पाठ पढ़-पढ़कर और सिद्ध पुरुष समाधि लगा-लगाकर थक गए हैं। लोग अनेकों ही कर्म कर करके थक गए हैं परन्तु उनका यह मन वश में नहीं आता। अधिक वेष धारण करके बहुत सारे वेषधारी अड़सठ तीर्थों पर स्नान करके भी थक गए हैं। वे अपने मन की अवस्था को नहीं समझते, चूंकि उनके अहंकार एवं भ्रम ने ही उन्हें भटका दिया है। गुरु की कृपा से ही मन में श्रद्धा-भावना पैदा होती है और सौभाग्य से ही भगवान मन में आकर अवस्थित होता है। जब भगवान के प्रति श्रद्धा भय उत्पन्न हो जाता है तो मन नियंत्रण में आ जाता है और शब्द के माध्यम से अहंकार जल कर राख हो जाता है। जो सत्य में मग्न हैं, वही निर्मल हैं और उनकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है। हे नानक ! सतगुरु से साक्षात्कार होने पर ही हरि-नाम की प्राप्ति हुई है और अब मैं सुख में लीन रहता हूँ॥ २॥

पउड़ी ॥ एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा ॥ एहु माइआ रंगु कसुंभ खिन महि लहि जावणा ॥ चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा ॥ जां पकड़ि चलाइआ कालि तां खरा डरावणा ॥ ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ ये राजाओं-महाराजाओं का ऐश्वर्य-वैभव चार दिनों के लिए सुहावना है (अर्थात् इनका भी नाश अवश्यंभावी है) माया की यह बहारें कुसुंभ के फूल के रंग जैसी हैं, जो एक क्षण में ही उठ जाती हैं। परलोक में जाते समय यह माया साथ नहीं जाती अपितु मनुष्य अपने पापों का बोझ अपने सिर पर उठाकर चल देता है। जब मृत्यु उसे पकड़ कर आगे धकेलती है तो वह अत्यंत भयंकर लगता है। जीवन का सुनहरी अवसर पुनः उसके हाथ नहीं आता और वह अंतः बहुत पश्चाताप करता है॥ ६॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥ फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जंमहि तै मरि जाहि ॥ सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥ नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो व्यक्ति सतगुरु की तरफ से मुँह मोड़ लेता है, वे यमपुरी में बंधे हुए दुःख सहन करता रहता है। वह बार-बार जन्मता-मरता रहता है और उसका भगवान से मिलन नहीं होता। उसका संशय-चिंता का रोग दूर नहीं होता और दुःख में ही वह बहुत दुःखी होता रहता है। हे नानक! यद्यपि परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि से जीव को क्षमा कर दे तो वह उसे शब्द द्वारा अपने साथ मिला लेता है॥ १॥

मः ३ ॥ जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥ जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥ नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥ २ ॥

महला ३॥ जो व्यक्ति सतगुरु की तरफ से मुँह मोड़ लेते हैं, अर्थात् विमुख हो जाते हैं, उन्हें कहीं भी शरण नहीं मिलती। वे तो छोड़ी हुई स्त्री की भांति घर-घर भटकते रहते हैं और दुराचारिणी के नाम से बदनाम होते हैं। हे नानक! जिन गुरुमुखों को क्षमादान मिल जाता है, सतगुरु उन्हें ईश्वर से मिला देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ ॥ जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ ॥ से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ ॥ हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ ॥ गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति परम-सत्य प्रभु की आराधना करते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं। जो हरि-नाम बोलते रहते हैं, उन्हें यमराज भी छोड़कर दूर हो गया है। जो परमात्मा का जाप करते हैं, वे सत्कृत होकर उसके दरबार में जाते हैं। हे परमेश्वर! जिन पर तुम्हारी कृपा है, वही पुरुष तेरी उपासना करते हैं। हे मेरे प्यारे! मैं सर्वदा ही तेरे गुण गाता रहता हूँ और गुरु के माध्यम से मेरा भ्रम एवं भय नष्ट हो गया है॥ ७॥

सलोकु मः ३ ॥ थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अंम्रितु सारु ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥ एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥ एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥ नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ थाल में तीन वस्तुएँ-सत्य, संतोष एवं सिमरन को परोसा हुआ है, यह हरिनामामृत रूपी सर्वोत्तम भोजन है, जिसे खाने से मन तृप्त हो जाता है और मोक्ष का द्वार सहज

ही मिल जाता है। हे संतो! यह नामामृत रूपी भोजन बड़ा दुर्लभ है और गुरु के ज्ञान को सोचने-समझने से ही इसकी उपलब्धि होती है। यह पहेली अपने हृदय में से कैसे निकालें? हरि-नाम की इस पहेली को अपने हृदय में धारण करके रखना चाहिए। यह पहेली सतगुरु ने ही स्थापित की है और इसका समाधान गुरु के शिष्यों ने बड़ी खोज के उपरांत ढूँढ लिया है। हे नानक! जिसे वह सूझ-बूझ प्रदान करता है, वही इस पहेली को बूझता है। कठिन साधना के द्वारा गुरुमुख भगवान को प्राप्त कर लेते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ आपि विछोड़ेनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ ॥ नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जिन्हें आदि से परमेश्वर ने मिलाया है, वे उससे मिले रहते हैं और अपना चित गुरु के साथ लगाते हैं। जिन्हें वह स्वयं जुदा करता है, वे उससे जुदा रहते हैं और द्वैतभाव के कारण तंग होते हैं। हे नानक! भगवान की कृपा के बिना क्या प्राप्त हो सकता है? मनुष्य वही कर्म करता है, जो उसके भाग्य में प्रारम्भ से ही लिखा होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ ॥ हरि नामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥ जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥ गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥ हउ बलि जावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ यश गाने वाली सत्संगी सखियाँ साथ बैठकर हरि का यशगान करती हैं। वह नित्य ही हरि-नाम की स्तुति करती हैं और हरि पर न्यौछावर होती हैं। जिन्होंने हरि-नाम सुनकर उस पर आस्था रखी है, मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर होता हूँ। हे परमेश्वर! मेरा गुरुमुख सत्संगी सखियों से मिलाप करवा दो, जो मुझे तेरे साथ मिलाने में समर्थ है। मैं तो दिन-रात उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो अपने गुरु के दर्शन करती रहती हैं॥ ८॥

सलोकु मः ३ ॥ विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा सैसारि ॥ मनमुखि करम कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥ गुरमुखि अंम्रितु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ नाम से विहीन सभी व्यक्ति नित्य भटकते ही रहते हैं और संसार में उनकी क्षति ही होती रहती है। मनमुख व्यक्ति अहंकार के घोर अन्धकार में ही कर्म करते रहते हैं। लेकिन, हे नानक! गुरुमुख शब्द के चिन्तन के फलस्वरूप नामामृत का ही पान करते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ सहजे जागै सहजे सोवै ॥ गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै ॥ मनमुख भरमै सहसा होवै ॥ अंतरि चिंता नीद न सोवै ॥ गिआनी जागहि सवहि सुभाइ ॥ नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥ २ ॥

महला ३॥ गुरुमुख व्यक्ति सहज में ही जाग्रत रहता है और सहज में ही सोता है। वह रात-दिन प्रभु की ही उस्तति करता रहता है। लेकिन मनमुख प्राणी भ्रम में फँसकर भटकता ही रहता है। उसके अन्तर्मन में चिंता ही सताती रहती है और वह सुख की नींद में कदापि नहीं सोता। ज्ञानवान पुरुष सहज-स्वभाव में जागते और सोते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति नाम में मग्न हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥

पउड़ी ॥ से हरि नामु धिआवहि जो हरि रतिआ ॥ हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ ॥

हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ ॥ जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ ॥ गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति हरि में मग्न है, वही हरि-नाम का ध्यान-मनन करता है। वह तो एक ईश्वर का ही चिंतन करता है, चूंकि एक वही सत्य है। एक ईश्वर ही सर्वव्यापक है और एक से ही सारी दुनिया पैदा हुई है। जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करता है, उसके सभी भय नाश हो जाते हैं। वह स्वयं ही प्राणी को गुरु की मति प्रदान करता है और उन गुरुमुखों ने भगवान का ही जाप किया है॥ ६॥

सलोक मः ३ ॥ अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ॥ विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ॥ नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मनुष्य के अन्तर्मन में वह ज्ञान तो प्रविष्ट ही नहीं हुआ, जिससे कुछ समझ प्राप्त होती है। भगवान के दर्शन एवं बोध के बिना वह कैसे स्तुति कर सकता है ? ज्ञानहीन मनुष्य ज्ञानहीन कर्म ही करता है। हे नानक ! जब वह शब्द की पहचान कर लेता है तो उसके मन में आकर भगवान का नाम बस जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥ सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥ गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥ सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥ विखु विचि अंम्रितु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥ नानक सचु सलाहीऐ धंनु सवारणहारु ॥ २ ॥

महला ३॥ इस सृष्टि में एक ही वाणी है, एक ही गुरु और एक ही शब्द है, जिसका हमें हमेशा ध्यान करना चाहिए। यही सत्य का सौदा एवं सत्य की दुकान है, जो सत्य-नाम रूपी रत्नों के भण्डार से भरा हुआ है। यदि दाता प्रभु प्रदान करे तो ही वह गुरु की कृपा से प्राप्त होते हैं। इस सत्य के सौदे का व्यापार करके मनुष्य हमेशा ही अपार नाम का लाभ प्राप्त करता है। इस (भयंकर) विष रूपी जगत में ही नामामृत प्रगट होता है और भगवान की अपार कृपा से ही नामामृत का पान किया जाता है। हे नानक ! उस सच्चे परमेश्वर की ही महिमा करनी चाहिए, चूंकि वह परम सत्य धन्य है, जो प्राणियों के जीवन को संवारने वाला है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥ जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥ कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥ जिसु हरि होइ क्रिपालु सो नामु धिआवई ॥ हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥ १० ॥

पउड़ी॥ जिनके मन में झूठ ही विद्यमान रहता है, उन्हें सत्य से कोई लगाव नहीं होता। यदि कोई सत्य बोलता है तो झूठा व्यक्ति तुरंत ही क्रोध की अग्नि में जल जाता है। जैसे कौआ विष्टा ही खाता है, वैसे ही झूठा व्यक्ति झूठ से संतुष्ट होता है। जिस पर परमात्मा मेहरबान होता है, वही उसके नाम का भजन करता है। जो गुरुमुख बनकर परमात्मा के नाम की आराधना करता है, उसकी झूठ एवं पाप से मुक्ति हो जाती है॥ १०॥

सलोकु मः ३ ॥ सेखा चउचकिआ चउवाइआ एहु मनु इकतु घरि आणि ॥ एहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु ॥ सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥ आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥ सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु ॥ नानक जि नामु न चेतनी तिन

धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे चहुं दिशाओं में चारों तरफ हवा में उड़ने वाले शेख! अपने इस मन को एक घर में स्थिर कर। तू छल-कपट करने वाली बातों को छोड़ दे और गुरु के शब्द की पहचान कर। हे शेख! तू सतगुरु की शरण में आ जा, चूंकि वह सबकुछ जानते हैं। तू अपनी आशा एवं मनसा को जला दे और इस दुनिया में चार दिनों का मेहमान बनकर ही रह। अब यदि तू सतगुरु की इच्छानुसार अनुसरण करे तो ही तुझे परमात्मा के दरबार में शोभा प्राप्त होगी। हे नानक! जो व्यक्ति नाम का सिमरन नहीं करते, उनके रहन-सहन एवं भोजन को धिक्कार है॥ १॥

मः ३ ॥ हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ परमात्मा के गुण अनन्त हैं और उनका मूल्यांकन वर्णन से परे है। हे नानक! गुरुमुख ही परमात्मा का गुणगान करते हैं और उसकी महिमा में ही समाए रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि ॥ हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि ॥ कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि ॥ सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि हरि ॥ जनु नानकु कहै विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ भगवान ने इस शरीर रूपी चोली का बड़ा सुन्दर निर्माण किया है और उसकी भक्ति द्वारा इस चोली की कढ़ाई करके ही मैं इसे पहनता हूँ। हरि-नाम का रेशम उस पर अनेक विधियों एवं अनेक ढंगों से लगा हुआ है। कोई विरला ही बुद्धिमान पुरुष है जो अपने अन्तर्मन में विवेक द्वारा इस तथ्य को समझता है। लेकिन इस विवेक को वही पुरुष समझता है, जिसे भगवान स्वयं समझाता है। दास नानक यही विचार कहता है कि गुरुमुख हरि-परमेश्वर को सदैव सत्य समझते हैं॥ ११॥

सलोकु मः ३ ॥ परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥ गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥ जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ महापुरुष किसी विशेष के संबंध में शिक्षा की बात बोलते हैं परन्तु उनकी शिक्षा जहान के सब लोगों के लिए होती है। जो व्यक्ति गुरुमुख बन जाता है, वह भगवान का भय मानता है और अपने आपको पहचान लेता है। यदि गुरु की कृपा से मनुष्य जीवित ही मोह की ओर से विरक्त हो जाए तो उसके मन की मन से संतुष्टि हो जाती है। हे नानक! जिनके मन में आस्था ही नहीं, वे फिर कैसे ज्ञान की बातें कथन कर सकते हैं?॥ १॥

मः ३ ॥ गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ ॥ अंदरहु बाहरहु अंधिआं सुधि न काई पाइ ॥ पंडित तिन की बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥ जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥ पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ ॥ पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत विहाइ ॥ कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ ॥ नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहकर अपना चित भगवान के साथ नहीं लगाता, वह अन्त में बहुत दुःखी होता है। वह तो भीतर एवं बाहर से अन्धा ही है और उसे कोई सूझ नहीं पड़ती। हे पण्डित! जो हरि-नाम में मग्न हैं, समूचा जगत उनकी साधना के फलस्वरूप ही खा रहा है। जो गुरु के शब्द द्वारा स्तुति करते हैं, वे भगवान में ही समाए रहते हैं। हे पण्डित! द्वैतभाव के कारण कदापि बरकत नहीं होती और न ही नाम धन प्राप्त होता है। विद्वान धर्म-ग्रंथ पढ़-पढ़कर थक गए हैं, परन्तु फिर भी संतोष नहीं आया और अपना जीवन रात-दिन ईर्ष्याग्नि में जलते हुए ही व्यतीत कर दिया है। उनकी चिल्लाहट एवं शिकायतें समाप्त नहीं होती और न ही उनके मन से संशय दूर होता है। हे नानक! नाम से विहीन व्यक्ति निंदा के पात्र बनकर संसार से चले जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई ॥ जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ॥ गुण साझी तिन सिउ करी हरि नामु धिआई ॥ हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई ॥ बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ हे प्यारे हरि! मेरा सज्जन (गुरु) से मिलन करवा दो, उससे मिलकर मैं तेरा मार्ग पूछूँगा। जो मित्र मुझे भगवान के बारे में मार्गदर्शन करेगा, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ। मैं उसके साथ उसके गुणों का भागीदार बन जाऊँगा और हरि-नाम का भजन करूँगा। मैं नित्य ही अपने प्यारे हरि की आराधना करता हूँ और हरि की आराधना करने से मुझे सुख की अनुभूति होती है। मैं उस सतगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मेरे भीतर सूझ प्रदान की है॥ १२॥

सलोकु मः ३ ॥ पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुग चारि ॥ त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि ॥ पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि ॥ अंतरि त्रिसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार ॥ सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ अंदरहु त्रिसना भुख गई सचै नाइ पिआरि ॥ नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरि धारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ पण्डित चाहे चारों युग तक वेदों को पढ़ता रहे लेकिन फिर भी उसकी मैल दूर नहीं होती। त्रिगुणात्मक माया ही मूल है और आत्माभिमान में उसने ईश्वर के नाम को भुला दिया है। पण्डित सत्य को भूल कर मोह-माया में ही लिप्त है और वह तो केवल माया का ही व्यापारी है। उसके मन में तृष्णा की भूख है और वह मूर्ख गंवार तो भूखा ही मर जाता है। सतगुरु की सेवा एवं सच्चे शब्द का चिंतन करने के फलस्वरूप ही सुख की उपलब्धि होती है। सत्य नाम के साथ प्रेम करने से मन से तृष्णा की भूख दूर हो जाती है। हे नानक! जो व्यक्ति हरि-नाम में मग्न हैं और जिन्होंने भगवान को अपने हृदय में धारण किया हुआ है, वे सहज ही संतुष्ट हो जाते हैं॥१॥

मः ३ ॥ मनमुख हरि नामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥ अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ॥ मनहठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ ॥ नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ मनमुख व्यक्ति हरि-नाम की आराधना नहीं करता जिसके कारण उसे अत्यंत कष्ट आकर लग जाते हैं। उसके मन में अज्ञान का ही अन्धेरा है और उसे कोई सूझ नहीं पड़ती। अपने मन के हठ के कारण वह हरि-नाम का बीज नहीं बोता, फिर भूख लगते समय परलोक में

क्या खाएगा ? उसने मोह माया में संलग्न होकर प्रभु नाम के भण्डार को विस्मृत कर दिया है। हे नानक ! जब भगवान स्वयं अपने साथ मिला लेता है तो उस गुरुमुख को बड़ी शोभा प्राप्त होती है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी ॥ जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी ॥ जो गुरमुखि चखै सादु सा त्रिपतावणी ॥ गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी ॥ जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ वह रसना बड़ी सुन्दर है, जो हरि का यशगान करती है। जो जीव-स्त्री अपने मन, तन एवं मुँह से हरि-नाम की महिमा ही करती है, वह हरि को बहुत अच्छी लगती है। जो गुरु के सान्निध्य में रहकर हरि के नाम-स्वाद को चखती है, वह तृप्त हो जाती है। वह नित्य ही प्यारे हरि की महिमा गान करती है और गुणवान हरि के गुणों का उपदेश प्रदान करती है। जिस पर वह स्वयं दयालु हो जाता है, वह गुरु-सद्‌गुरु का ही जाप करती रहती है॥ १३॥

सलोकु मः ३ ॥ हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ ॥ मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ ॥ नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जैसे किसी मस्त हाथी के सिर पर अंकुश होता है और जैसे अहरन (लुहार का एक औजार) हथौड़े के सन्मुख स्वयं को अर्पित करता है, वैसे ही अपना मन एवं तन गुरु के सन्मुख अर्पित करके और हमेशा खड़े होकर सेवा करो। इस प्रकार अपने आत्माभिमान को मिटा कर गुरुमुख सारे विश्व का शासन प्राप्त कर लेता है। हे नानक ! जब भगवान अपनी कृपा-दृष्टि करता है, तो ही मनुष्य गुरुमुख बनकर इस तथ्य को समझता है॥१॥

मः ३ ॥ जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥ नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥ २ ॥

महला ३॥ जिन्होंने गुरु के सान्निध्य में रहकर नाम का ध्यान किया है, जगत में जन्म लेकर आए वे मनुष्य ही परवान हैं। हे नानक ! वे अपनी वंशावलि का भी उद्धार कर लेते हैं और उन्हें भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है॥ २॥

पउड़ी ॥ गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥ जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥ गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥ गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ गुरुमुख सिक्ख-सहेलियों को गुरु ने अपने साथ मिला लिया है। इनमें से कुछ सेवक बनकर गुरु के पास रहती हैं और कुछ को गुरु ने अन्य कार्यों में लगाया है। जिन्हें गुरु अपने मन एवं चित में प्यारा लगता है, उन्हें गुरु अपना प्रेम देता है। गुरसिक्खों, मित्रों, पुत्रों एवं भाईयों से गुरु को एक-सा प्रेम होता है। सभी गुरु-गुरु बोलो। गुरु-गुरु कहने से गुरु ने उन्हें पुनः जीवित कर दिया है॥ १४॥

सलोकु मः ३ ॥ नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥ जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे नानक! अज्ञानी एवं अन्धे व्यक्ति परमात्मा के नाम को याद नहीं करते अपितु अन्य ही कर्म करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति यम के द्वार पर बँधे हुए बहुत दण्ड भोगते हैं और अन्त में वे विष्ठा में ही नष्ट हो जाते हैं ॥१॥

मः ३ ॥ नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥ २ ॥

महला ३॥ हे नानक! जो अपने सतगुरु की सेवा करते हैं, वही सत्यशील एवं प्रामाणिक हैं। ऐसे सत्यवादी पुरुष हरि-नाम में ही समाए रहते हैं और उनका जीवन एवं मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है॥२॥

पउड़ी ॥ धनु संपै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई ॥ घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥ जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अंति होइ सखाई ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ धन, सम्पति एवं माया के पदार्थों को संचित करना अंत में बड़ा दुखदायक बन जाता है। घर, मन्दिर एवं महलों को संवारा जाता है, लेकिन उन में से कोई भी इन्सान के साथ नहीं जाता। मनुष्य अनेक रंगों के कुशल घोड़ों को नित्य पालता है परन्तु वे भी अंत में किसी काम नहीं आते। हे भक्तजनो! अपना चित हरि-नाम में लगाओ, वही अंत में सहायक होगा। नानक ने गुरु के सान्निध्य में नाम का ही ध्यान किया है, जिसके फलस्वरूप उसे सुख प्राप्त हो गया है॥१५॥

सलोकु मः ३ ॥ बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ भाग्य के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती और पूर्ण भाग्य के द्वारा ही नाम प्राप्त हो सकता है। हे नानक! यदि ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही मनुष्य गुरु की मति द्वारा सत्य में मिल जाता है॥१॥

मः १ ॥ इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥ नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥ २ ॥

महला १॥ मरणोपरांत कुछ व्यक्तियों का दाह-संस्कार कर दिया जाता है, किसी को दफना दिया जाता है और कुछ लोगों को कुत्ते इत्यादि ही खा जाते हैं। कुछ लोग जल-प्रवाह कर दिए जाते हैं तथा कुछ लोग सूखे कुएँ में फैंक दिए जाते हैं। हे नानक! यह तो कुछ ज्ञात ही नहीं होता कि आत्मा किधर समा जाती है॥२॥

पउड़ी ॥ तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥ तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥ तिन के करम धरम कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ जिन कै पोतै पुंनु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ जो लोग परमात्मा के नाम में मग्न रहते हैं, उनका खाना, पहनना, धन-दौलत इत्यादि सभी पावन है। जिनके पास गुरुमुख सेवक, गुरु के शिष्य एवं अभ्यागत जाकर विश्राम

करते हैं, उनके घर, मन्दिर, महल एवं सराय सब पवित्र हैं। उनके सभी घोड़े, जीन एवं खुरगीर इत्यादि पवित्र हैं, जिन पर सवार होकर गुरुमुख, गुरु के शिष्य, साधु एवं संत अपने मार्ग चल देते हैं। उन लोगों के सभी कर्म, धर्म एवं समस्त कार्य पवित्र हैं, जो 'हरि-हरि' बोलते एवं राम नाम का जाप करते रहते हैं। जिनके पास (शुभ कर्मों के फलस्वरूप) पुण्य हैं, वे गुरुमुख शिष्य गुरु के पास जाते हैं ॥१६॥

सलोकु मः ३ ॥ नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ जम दरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे नानक ! नाम को विस्मृत करने से मनुष्य का लोक एवं परलोक सब व्यर्थ चला जाता है। उसकी पूजा, तपस्या एवं संयम सभी छीन लिया गया है और उसे द्वैतभाव ने ठग लिया है। फिर यम के द्वार पर उसे बांधकर बहुत पीटा जाता है और उसे बहुत सजा मिलती है ॥१॥

मः ३ ॥ संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥ अगै पिछै सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥ त्रिसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥ मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥ नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥ २ ॥

महला ३॥ निन्दक व्यक्ति संतों के साथ बड़ा वैर रखते हैं लेकिन दुष्टों के साथ उनका बड़ा मोह एवं प्यार होता है। ऐसे व्यक्तियों को लोक एवं परलोक में कदापि सुख नहीं मिलता, जिसके कारण वे पीड़ित होकर पुनः पुनः जन्मते एवं मरते रहते हैं। उनकी तृष्णा कदापि नहीं बुझती और दुविधा में पड़कर ख्वार होते हैं। उन निन्दकों के सत्य के दरबार में मुँह काले कर दिए जाते हैं। हे नानक ! हरि-नाम से विहीन व्यक्ति को लोक-परलोक कहीं भी शरण नहीं मिलती॥२॥

पउड़ी ॥ जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही ॥ जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥ सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥ हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥ वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ जो व्यक्ति हरि-नाम का ध्यान करते हैं, वे अपने हृदय में भी हरि-नाम में मग्न रहते हैं। जो अपने मन एवं चित में एक ईश्वर की ही आराधना करते हैं, वे एक प्रभु के सिवाय किसी दूसरे को नहीं जानते। वही पुरुष भगवान की उपासना करते हैं, जिनके मस्तक पर प्रारम्भ से ही ऐसा भाग्य लिखा हुआ है। वे तो नित्य ही भगवान की महिमा गाते रहते हैं और गुणवान भगवान की महिमा गायन करके अपने मन को सीख देते हैं। गुरुमुखों की बड़ी बड़ाई है कि वे पूर्ण गुरु के द्वारा हरि-नाम में ही लीन रहते हैं॥ १७॥

सलोकु मः ३ ॥ सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥ पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥ जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सतगुरु की सेवा बड़ी कठिन है चूंकि यह तो अपना आत्माभिमान मिटाकर, सिर अर्पित करके ही की जा सकती है। यदि व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा मोह-माया की

ओर से निर्लिप्त हो जाए तो वह दुबारा जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ता और उसकी सारी सेवा सफल हो जाती है। वह गुरु रूपी पारस को स्पर्श करके पारस अर्थात् गुणवान ही बन जाता है और सत्य में ही अपनी सुरति लगाकर रखता है। जिसकी तकदीर में प्रारम्भ से ही ऐसा लिखा होता है, उस व्यक्ति को सदगुरु प्रभु आकर मिल जाता है। हे नानक! यदि लेखा-जोखा किया जाए तो सेवक अपने भगवान से नहीं मिल सकता। जिसे वह क्षमादान कर देता है, वह स्वीकृत हो जाता है॥१॥

मः ३ ॥ महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥ सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥ सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥ सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ अपने स्वार्थ के कारण मूर्ख व्यक्ति अच्छे एवं बुरे की पहचान नहीं करते। यदि वे शब्द का चिंतन करे तो उन्हें सच्चे घर की प्राप्ति हो जाती है और उनकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है। यदि सच्चे परमेश्वर का प्रेम-भय हमेशा अन्तर्मन में विद्यमान रहे तो हर प्रकार की सूझ प्राप्त हो जाती है। सतगुरु अपने हृदय-घर में ही अवस्थित होता है और स्वयं भी उन्हें भगवान से मिला देता है। हे नानक! निरंकार अपनी इच्छानुसार जिस पर कृपा करता है, उसका गुरु से मिलाप हो जाता है और गुरु द्वारा उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ धंनु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥ धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ ॥ सभ दू वडे भाग गुरसिखा के जो गुर चरणी सिख पड़तिआ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ उन भक्तजनों का भाग्य धन्य-धन्य है, जो अपने मुखारबिंद से हरि-नाम का भजन करते हैं। उन संतजनों का भाग्य भी धन्य है, जो अपने कानों से हरि का यश सुनते है। उन साधुजनो का भाग्य भी धन्य है, जो भगवान का कीर्ति-गान करने से गुणवान बन जाते हैं। उन गुरुमुखों का भाग्य भी धन्य है जो गुरु की शिक्षा का अनुसरण करके अपने मन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। सबसे महाभाग्यवान तो गुरु के शिष्य है, जो अपने गुरु के चरणों में पड़ जाते हैं॥१८॥

सलोकु मः ३ ॥ ब्रहमु बिंदै तिस दा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिव लाइ ॥ नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु ॥ नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो ब्रह्म का ज्ञाता है और एक शब्द में ही अपनी लगन लगाकर रखता है, उसका ही ब्राह्मणत्व कायम रहता है। जो हमेशा ही अपने हृदय में परमात्मा को बसाकर रखता है, विश्व की नवनिधियाँ एवं अठारह सिद्धियाँ उसके आगे पीछे लगी रहती हैं। इस तथ्य को भली-भांति विचार कर समझ लो कि सतगुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती। हे नानक! पूर्ण भाग्य से ही सतगुरु से मिलन होता है और गुरु से साक्षात्कार होने पर मनुष्य को चारों युगों में सुख प्राप्त हो जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख त्रिसना भुख न जाइ ॥ गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥ अंदरु त्रिपति संतोखिआ फिरि भुख न लगै आइ ॥ नानक जि गुरमुखि करहि

सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ चाहे नवयुवक हो अथवा चाहे वृद्ध ही क्यों न हो, मनमुख की तृष्णा की भूख कदापि नहीं मिटती। गुरुमुख व्यक्ति शब्द में मग्न होकर अपना आत्माभिमान नष्ट करके शीतल-शांत हो जाते हैं। उनका मन तृप्त एवं संतुष्ट हो जाता है और उन्हें पुनः कोई भूख आकर नहीं लगती। हे नानक ! गुरुमुख जो कुछ भी करते हैं वह स्वीकृत हैं, चूंकि उनकी सुरति भगवान के नाम में ही लगी रहती है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ बलिहारी तिंन कंउ जो गुरमुखि सिखा ॥ जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा ॥ सुणि कीरतनु हरि गुण रवा हरि जसु मनि लिखा ॥ हरि नामु सलाही रंग सिउ सभि किलविख क्रिखा ॥ धनु धंनु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ मैं उन पर तन मन से बलिहारी जाता हूँ, जो गुरुमुख शिष्य हैं। मैं तो केवल उनके ही दर्शन करता हूँ, जो हरि-नाम का सिमरण करते हैं। मैं हरि का कीर्तन सुनकर उसका ही गुणगान करता हूँ, और अपने हृदय में हरि का ही यश लिखता हूँ। मैं प्रेमपूर्वक हरि-नाम की ही स्तुति करता हूँ और अपने समस्त पापों का मूल रूप से नाश करता हूँ। वह शरीर एवं स्थान धन्य धन्य एवं बड़ा सुहावना है, जहाँ मेरा गुरु अपने सुन्दर चरण रखता है॥१६॥

सलोकु मः ३ ॥ गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ ॥ नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता और न ही मन में आकर सुख का निवास होता है। हे नानक ! नाम से विहीन मनमुखी जीव अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा कर दुनिया से चले जाएँगे॥ १॥

मः ३ ॥ सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ गुरमुखि मिलै मिलाइ ॥ बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥ सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥ नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥ २ ॥

महला ३॥ समस्त सिद्ध एवं साधक पुरुष नाम की खोज करते हुए अपनी सुरति लगाकर थक गए हैं। गुरु के बिना किसी को भी नाम की प्राप्ति नहीं हुई और गुरु के सान्निध्य में रहकर ही परम-सत्य से मिलन होता है। नाम के बिना खाना-पहनना सब व्यर्थ है और नाम के बिना समस्त सिद्धियाँ एवं करामातें भी धिक्कार योग्य हैं। वही सिद्धि एवं वही करामात है, जिसे परमात्मा अपने दान के रूप में देता है। हे नानक ! हरि-नाम मन में स्थित हो जाए, यही सिद्धि एवं यही वास्तव में करामात है॥ २॥

पउड़ी ॥ हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥ हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥ हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता ॥ हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रिम जंता ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि धनवंता ॥ २० ॥

पउड़ी॥ हम उस मालिक हरि-प्रभु के गवैया हैं और नित्य ही उसके गुण गाते रहते हैं। हम तो हरि का ही कीर्तन करते हैं और उस कमलापति हरि का ही यश सुनते रहते हैं। एक हरि ही

सबका दाता है, यह समूचा विश्व मात्र भिखारी है और सभी जीव एवं लोग उसके याचक ही हैं। हे दीनदयाल श्रीहरि! दयालु होकर हमें भी दान दीजिए, चूंकि तुम तो पत्थरों में कीड़ों एवं जन्तुओं को दान प्रदान करते रहते हो। हे नानक! गुरु के सान्निध्य में जिन्होंने नाम का ध्यान-मनन किया है, दरअसल वही धनवान हैं॥ २०॥

सलोकु मः ३ ॥ पड़णा गुड़णा संसार की कार है अंदरि तिसना विकारु ॥ हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुआरु ॥ सो पड़िआ सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥ अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु ॥ गुण निधानु हरि पाइआ सहजि करे वीचारु ॥ धंनु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ अगर मन में तृष्णा एवं विकार विद्यमान हैं तो पढ़ना एवं विचारना जगत का एक धन्धा ही बन जाता है। अहंकार में पढ़ने से सभी थक चुके हैं और द्वैतभाव के कारण वे नष्ट हो जाते हैं। जो गुरु के शब्द का चिन्तन करता है, वास्तव में वही विद्वान एवं चतुर पण्डित है। वह अपने अन्तर्मन में ही तलाश करते हुए परम तत्व को पा लेता है और उसे मोक्ष का द्वार प्राप्त हो जाता है। वह गुणों के भण्डार परमात्मा को प्राप्त कर लेता है और सहजता से उसका ही चिन्तन करता है। हे नानक! वह व्यापारी धन्य है, जिसे गुरु के सान्निध्य में नाम का ही आधार मिल जाता है॥१॥

मः ३ ॥ विणु मनु मारे कोइ न सिझई वेखहु को लिव लाइ ॥ भेखधारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ ॥ गुरमुखि एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ॥ नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ अपने मन को वशीभूत किए बिना किसी भी मनुष्य को सफलता प्राप्त नहीं होती, चाहे कोई वृत्ति लगाकर देख ले। अनेक वेश धारण करने वाले तीर्थ-यात्रा पर भ्रमण करते हुए भी थक चुके हैं परन्तु फिर भी उनका यह मन नियंत्रण में नहीं आता। गुरुमुख व्यक्ति का तो यह मन जीवित ही वशीभूत को जाता है और वह अपनी सुरति सत्य में ही लगाकर रखता है। हे नानक! गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व को जला देने से ही इस मन की मैल दूर हो जाती है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु द्रिड़ावहु इक किनका ॥ हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥ ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥ हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलबिख काटै इक पलका ॥ हरि हरि दइआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि हरि जपि जिणका ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे भाई! हे हरि के संतो! मुझे आकर मिलो और मेरे भीतर थोड़ा-सा हरि का नाम दृढ़ कर दो। हे भक्तजनो! मुझे हरि-नाम से श्रृंगार दो और मुझे क्षमा का हरि वस्त्र पहना दो। ऐसा श्रृंगार मेरे प्रभु को बहुत अच्छा लगता है ऐसी प्रेम की सजावट मेरे प्रभु को बड़ी प्यारी लगती है। दिन-रात परमेश्वर का जाप करो, चूंकि वह तो एक पल में ही सारे किल्विष-पाप मिटा देता है। जिस पर हरि-परमेश्वर दयालु हो जाता है, वह गुरुमुख बन कर हरि-नाम का जाप करके अपने जीवन की बाजी को जीत लेता है॥ २१॥

सलोकु मः ३ ॥ जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ खंनली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥ नानक

मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ इस मन को तो जन्म-जन्मांतरों की मैल लगी हुई है और यह तो बिल्कुल मैला हो गया है। किसी तेली की धोती धोने से वह उज्ज्वल नहीं होती चाहे उसे सौ बार ही क्यों न धोया जाए। गुरु की कृपा से मनुष्य जीवित ही मोह-माया से विरक्त रहता है, उसका स्वभाव बदल कर सांसारिक पदार्थों की ओर से विपरीत हो जाता है। हे नानक! तब उसे किसी प्रकार की मैल नहीं लगती और वह फिर से योनियों के चक्र में नहीं पड़ता॥ १॥

मः ३ ॥ चहु जुगी कलि काली कांढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥ गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ नानक गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥ २ ॥

महला ३॥ चारों युगों-(सतियुग, त्रैता, द्वापर, कलियुग) में एक कलियुग ही सबसे काला युग कहा जाता है किन्तु इस युग में भी एक उत्तम पदवी प्राप्त हो सकती है। जिनकी विधाता ने ऐसी किस्मत लिख दी है, वे गुरु के सान्निध्य में रहकर इस युग में भगवान की कीर्ति का फल प्राप्त कर लेते है। हे नानक! ऐसे भक्तजन गुरु की अपार कृपा से रात-दिन भगवान की भक्ति का उच्चारण करते हैं और भक्ति में ही विलीन रहते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि ॥ हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥ जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ हे हरि! मुझे साधुजनों की सभा में मिला दो, चूंकि उनकी सभा में सम्मिलित होकर मैं अपने मुखारबिंद से तेरी हरि-नाम रूपी सुन्दर वाणी को बोलूँ। मैं तो सदा भगवान का गुणगान करता हूँ और उसका ही भजन करता हूँ तथा गुरु-उपदेशानुसार सदैव भगवान के रंग का आनंद प्राप्त करता हूँ। ईश्वर का जाप करके और जप रूपी औषधि को खाने से मेरे समस्त रोग एवं दुःखों का नाश हो गया है। जो श्वास लेते एवं खाते वक्त भी ईश्वर को नहीं भुलाते, उन भक्तजनों को पूर्ण सच्चे पुरुष समझो। जो गुरुमुख बनकर भगवान की आराधना करते हैं, उनकी मृत्यु का भय एवं दुनिया की अधीनता मिट जाती है॥ २२॥

सलोकु मः ३ ॥ रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥ सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥ सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे मानव! भयानक स्वप्न के दबाव के नीचे तेरा सारा जीवन निद्रा में सोते हुए ही व्यतीत हो गया है। तुम तो गुरु का शब्द सुनकर भी जाग्रत नहीं हुए और न ही तुम्हारे मन में चाव पैदा हुआ है। वह शरीर जो गुणों से खाली है और जो गुरु की सेवा भी नहीं करता, उसे जल जाना ही चाहिए। मैंने तो इस दुनिया को आत्माभिमान एवं द्वैतभाव में जलते हुए ही देखा है। हे नानक! जिन्होंने गुरु की शरण में आकर सच्चे मन से शब्द का चिंतन किया है, उनका कल्याण हो गया है॥ १॥

मः ३ ॥ सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥ पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥ ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥ २ ॥

महला ३॥ शब्द में मग्न होने से जीव-स्त्री का अहंकार नष्ट हो गया है और अब वह शोभावान हो गई है। यदि जीव-स्त्री सदैव अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करे तो ही उसका श्रृंगार उत्तम है। उस नारी की सेज सुहावनी हो जाती है, वह परमात्मा को ही अपने वर के रूप में प्राप्त कर लेती है और हमेशा ही अपने प्रियतम के साथ आनंद करती है। परमेश्वर तो अनश्वर है, जिसके कारण जीव रूपी नारी को कभी दुःख स्पर्श नहीं करता और वह तो सदा सुहागिन ही रहती है। हे नानक ! गुरु के स्नेह एवं प्रेम के कारण प्रभु उसे अपने साथ ही मिला लेता है॥२॥

पउड़ी ॥ जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥ वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥ हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥ २३ ॥

पउड़ी ॥ जिन्होंने अपने गुरु का तिरस्कार किया है, वे पुरुष बहुत बुरे हैं। हे ईश्वर ! हमें तो उनके दर्शन मत करवाना, चूंकि वे तो महापापी और हत्यारे हैं। वे खोटे मन वाले व्यभिचारिणी नारी की तरह घर-घर फिरते रहते हैं। लेकिन अहोभाग्य से ही वे सत्संगति में शामिल होते है और गुरु के सान्निध्य में उनका जीवन संवर जाता है। हे पूज्य परमेश्वर ! अपनी दया करके सतगुरु से मिला दो, चूंकि मैं तो गुरु पर ही बलिहारी जाता हूँ॥ २३॥

सलोकु मः ३ ॥ गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥ जंमणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥ हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिंन कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरु की सेवा करने से ही सुख उत्पन्न होता है और फिर कोई दुःख-क्लेश आकर नहीं लगता। गुरु की सेवा के फलस्वरूप मनुष्य का जन्म-मरण ही मिट जाता है और उसके ऊपर मृत्यु का भी कुछ वश नहीं चलता। फिर उसका मन भगवान के साथ ही लगा रहता है और अंतः सत्य में ही वह समाया रहता है। हे नानक ! मै तो उन पर कुर्बान जाता हूँ जो सतगुरु की आज्ञानुसार चलते हैं॥१॥

मः ३ ॥ बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥ पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥ सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥ २ ॥

महला ३॥ यदि जीव-स्त्री अनेक श्रृंगार करती रहे, लेकिन फिर भी वह शब्द के बिना शुद्ध नहीं होती। वह तो अपने प्रभु के महत्व को नहीं जानती और द्वैतभाव के स्नेह में ही लगी रहती है। हे नानक ! वह तो अपवित्र एवं कुलक्षणी है और समस्त नारियों में वह कुलटा नारी है॥२॥

पउड़ी ॥ हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी ॥ हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ॥ जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥ हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥ २४ ॥

पउड़ी॥ हे हरि ! मुझ पर अपनी दया करो, ताकि मैं तेरी पवित्र वाणी का बखान करता रहूँ। मैं तो हरि-नाम का ही ध्यान करता हूँ, हरि के नाम का ही उच्चारण करता हूँ और हरि-नाम को ही लाभ के रूप में प्राप्त करता हूँ। जो भक्त दिन-रात परमेश्वर का ही भजन करते रहते हैं, मैं उन पर तन-मन से कुर्बान जाता हूँ। जिन्होंने मेरे प्यारे सतगुरु की आराधना की है, अपने इन नयनों से मैं उन महापुरुषों के ही दर्शनों की कामना करता हूँ। मैं तो अपने गुरु पर तन मन से न्यौछावर हूँ, जिसने मुझे मेरे सज्जन एवं संबंधी प्रभु से मिला दिया है॥ २४॥

सलोकु मः ४ ॥ हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥ हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु ॥ हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥ किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥ हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥ सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ परमात्मा की अपने दासों से बड़ी प्रीति है, वही अपने दासों का घनिष्ठ मित्र है। वह तो अपने दासों के ऐसे वशीभूत होता है, जैसे कोई संगीत यंत्र किसी संगीतकार के वशीभूत होता है, अपने प्रियतम से प्रेम करके हरि के दास, हरि का ही ध्यान करते हैं। हे प्रभु ! कृपा करके सुनो और समूचे जगत में अपनी नाम-कृपा की मूसलाधार वर्षा कर दो। जो परमात्मा के दासों की उस्तति है, वह परमात्मा की महिमा है। परमात्मा को अपनी महिमा बहुत प्यारी लगती है, जिसके कारण वह अपने सेवकों की जय-जयकार करवाता है। जो नाम का ध्यान करता है वही भक्तजन है और परमात्मा एवं भक्तजन एक रूप ही होते हैं। नानक तो उस हरि-परमेश्वर का ही दास है, हे भगवान ! उसकी लाज-प्रतिष्ठा रखो॥१॥

मः ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥ २ ॥

महला ४॥ हे नानक ! उस सच्चे परमात्मा ने मन में ऐसा प्रेम पैदा कर दिया है कि उसके बिना अब एक क्षण भी जीना असंभव है। जब सतगुरु से साक्षात्कार होता है तो पूर्ण परमेश्वर की प्राप्ति होती है और जीभ हरि-रस का आनंद लेती है॥२॥

पउड़ी ॥ रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥ जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥ तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥ भगत जना कै संगि पाप गवावणा ॥ जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥ २५ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर ! रात, दिन एवं प्रभात काल तेरा ही यशगान करना है। सब जीव तेरे नाम का ही ध्यान करते हैं। हे दातार प्रभु ! तू ही हम सबका दाता है और हम सब तेरा दिया हुआ ही खाते हैं। भक्तजनों की संगति में ही सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। नानक तो सदैव तुझ पर बलिहारी है और तन-मन से न्यौछावर है॥ २५॥

सलोकु मः ४ ॥ अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥ अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥ सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥ किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जिस जीव के मन में अज्ञान है उसकी तो बुद्धि ही भ्रष्ट हो गई है, उसे सतगुरु के प्रति कोई आस्था नहीं। जिसके मन में छल-कपट ही है, वह सबको कपटी ही समझता है और इस छल-कपट के कारण वह बिल्कुल तबाह हो जाता है। उसके मन में गुरु की रज़ा प्रविष्ट नहीं होती और वह तो अपने स्वार्थ के लिए ही भटकता रहता है। हे नानक ! यदि ईश्वर अपनी कृपा करे तो ही वह शब्द में समा जाता है॥ १॥

मः ४ ॥ मनमुख माइआ मोहि विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥ अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥ ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥ नानक बखसि लए प्रभु साचा जि गुर चरनी चितु लाहि ॥ २ ॥

महला ४॥ मनमुख जीव माया के मोह में ही फँसे रहते हैं और द्वैतभाव के कारण उनका मन स्थिर नहीं होता। वे तो दिन-रात तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं और अहंकार में बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं (एवं दूसरों को भी नष्ट कर देते हैं)। इनके मन में लोभ का घोर अन्धेरा है और कोई भी उनके निकट नहीं आता। वे आप दुःखी रहते हैं और कभी भी उन्हें सुख की प्राप्ति नहीं होती। वे मर जाते हैं और जन्मते-मरते ही रहते हैं। हे नानक ! जो अपना चित गुरु के चरणों में लगाते हैं, सच्चा प्रभु उन्हें क्षमा कर देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ ॥ सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइआ ॥ अंम्रितु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥ संत जना की धूरि मसतकि लाइआ ॥ नानक भए पुनीत हरि तीरथि नाइआ ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ जो प्रभु को अच्छा लगता है, वही संत एवं भक्त परवान हैं। जिसने भगवान का ध्यान किया है, वही पुरुष चतुर है। वह अमृत नाम का भोजन ग्रहण करता है, जो सर्व गुणों का भण्डार है। वह तो संतजनों की चरण-धूलि ही अपने माथे पर लगाता है। हे नानक ! जिन्होंने हरि-नाम रूपी तीर्थ में स्नान किया है, वे पवित्र पावन हो गए हैं॥२६॥

सलोकु मः ४ ॥ गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामो चितवै नामु पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ गुरुमुख के मन में शांति है और उसका मन एवं तन नाम में ही समाया रहता है। वह नाम को ही याद करता है, नाम को ही पढ़ता है और नाम में ही सुरति लगाकर रखता है। अमूल्य नाम-पदार्थ को पा कर उसकी तमाम चिन्ता मिट गई है। गुरु के मिलाप से ही मन में नाम उत्पन्न होता है और इससे तृष्णा की तमाम भूख दूर हो जाती है। हे नानक ! परमात्मा के नाम में मग्न होने से वह अपने दामन में ही नाम को प्राप्त करता है॥१॥

मः ४ ॥ सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ ॥ ओसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ ॥ ओसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ ॥ किआ होवै किसै ही दै कीतै जां धुरि किरतु ओस दा एहो जेहा पइआ ॥ जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥ वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥ एहु

ब्रहम बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ॥ २ ॥

महला ४॥ जिस व्यक्ति को महापुरुष सतगुरु ने धिक्कार दिया है, वह अपना घर त्याग कर हमेशा ही भटकता रहता है। उसके बाद उसकी बहुत ही निन्दा होती है और आगे परलोक में भी उसका मुँह काला ही होता है। उसके मुँह से उल्टी-सीधी व्यर्थ बातें ही निकलती हैं और वह नित्य ही मुँह से झाग निकालता हुआ अर्थात् निन्दित कर्म करता हुए प्राण त्याग देता है। किसी के कुछ करने से क्या संभव हो सकता है ? जबकि उसके पूर्व जन्म के कारण उसका ऐसा ही भाग्य लिखा था। वह जिधर भी जाता है, वहाँ झूठ ही बोलता है और झूठा ही माना जाता है। उसका झूठ बोलना किसी को भी अच्छा नहीं लगता। हे भाई ! हे संतजनो ! अपने स्वामी प्रभु का बड़प्पन देखो, जैसा कोई कर्म करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। सत्य के दरबार में यही ब्रह्म-विचार होता है, इसलिए नानक इसे पूर्व ही कह कर सुना रहा है॥२॥

पउड़ी ॥ गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥ पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥ गुरि क्रिपालि बेअंति अवगुण सभि हते ॥ गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥ नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इते ॥ २७ ॥

पउड़ी॥ सच्चे गुरु ने सत्संगति रूपी एक उत्तम गांव का निर्माण किया है और उस गांव के लिए स्वयं ही रखवाले दिए हैं। गुरु के चरणों में मन को मग्न करने से हमारी आशा पूर्ण हो गई है। हमारा गुरु बेअन्त कृपालु है, जिसने हमारे सभी अवगुण नाश कर दिए हैं। गुरु ने अपनी कृपा करके हमें अपना बना लिया। नानक तो सदैव ही उस पर बलिहारी जाता है, जिस गुरु के भीतर इतने अनन्त गुण हैं॥२७॥

सलोक मः १ ॥ ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पांडे ॥ हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबड़िआ हंढहि जीअ कमांदे ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे पण्डित ! अब क्या कर सकते हैं ? चूंकि उस परमात्मा की इच्छानुसार जो लिखा है, वही प्राप्त होना है। जब उसका हुक्म हुआ था, तो तेरी किस्मत का निर्णय हो गया था और उसके हुक्म अनुसार ही जीव अपना जीवन-आचरण करता है॥१॥

मः २ ॥ नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥ जहा दाणे तहां खाणे नानका सचु हे ॥ २ ॥

महला २॥ सृष्टि के प्रत्येक प्राणी की नाक में उस मालिक की हुक्म रूपी नुकेल पड़ी हुई है, सबकुछ उसके ही वश में है और जीव के किए हुए कर्म ही उसे धकेलते हैं। हे नानक ! केवल यही सत्य है कि जहाँ भी जीव का भोजन-निर्वाह है, वहीं वह इसे खाने के लिए जाता है॥२॥

पउड़ी ॥ सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥ आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु ॥ आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु ॥ दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥ नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥ २८ ॥

पउड़ी॥ जगत-रचना की सब योजनाएँ परमात्मा ने स्वयं बनाकर नियत कर रखी हैं। वह स्वयं ही जगत-रचना करके स्वयं ही इसका नाश कर देता है। वह स्वयं ही सब जीवों को पैदा करके स्वयं ही उनका पालन-पोषण करता है। वह अपने सेवकों को अपने गले से लगाकर रखता है और कृपा-दृष्टि से उन्हें निहाल कर देता है। हे नानक ! परमात्मा के भक्त सदैव ही आनंदित

रहते हैं और द्वैतभाव को जला देते हैं॥२८॥

सलोकु मः ३ ॥ ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ ॥ हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ ॥ हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ॥ नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे मन! तू एकाग्रचित होकर सच्चे मन से भगवान का ध्यान कर। उस परमेश्वर की महिमा सदैव महान् है, जो जीवों को देन देकर पश्चाताप नहीं करता। मैं तो उस ईश्वर पर सदैव बलिहारी जाता हूँ, जिसकी उपासना करने से सुख पाया जाता है। हे नानक! गुरुमुख शब्द द्वारा अपने आत्माभिमान को जलाकर सत्य में ही लीन रहते हैं॥१॥

मः ३ ॥ आपे सेवा लाइअनु आपे बखस करेइ ॥ सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥ नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ परमात्मा ने स्वयं ही जीवों को अपनी सेवा में लगाया है और स्वयं ही उन पर अपनी कृपा करता है। वह स्वयं ही सबका माता-पिता है और स्वयं ही सबकी देखभाल करता है। हे नानक! जो भक्तजन नाम की आराधना करते हैं, उनका अपना वास्तविक घर प्रभु-चरणों में निवास हो जाता हैं और युगों-युगान्तरों में उनकी ही शोभा होती है॥२॥

पउड़ी ॥ तू करण कारण समरथु हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥ सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥ वडिआई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई ॥ गुरमुखि नानक आराधिआ सभि आखहु धंनु धंनु धंनु गुरु सोई ॥ २६ ॥ १ ॥ सुधु

पउड़ी॥ हे सृजनहार प्रभु! तू सबकुछ करने एवं कराने में समर्थ है और तेरे बिना मेरा कोई सहारा नहीं। तू स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और स्वयं ही आखिरकार इसका विनाश करता है। एक तेरा शब्द (हुक्म) ही सर्वव्यापी है और जो कुछ भी तू करता है, वही होता है। जिन गुरुमुख को तुम बड़ाई प्रदान करते हो, वही अपने हरि प्रभु को पा लेता है। हे नानक! गुरु ने हरि-नाम की आराधना की है, सभी तन-मन से कहो, वह गुरु धन्य-धन्य-धन्य है॥२६॥१॥ शुद्ध

रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १ 　　　 १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥ ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ १ ॥ मन रे संसारु अंध गहेरा ॥ चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥ जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥ २ ॥ दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी ॥ बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥ ३ ॥ राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥ हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥ ४ ॥ १ ॥

हिन्दू तो अपने देवताओं की मूर्तियों की पूजा-उपासना कर-करके मर गए हैं और मुसलमान भी सिर झुका-झुका कर अर्थात् सिजदा करते हुए मर गए हैं। हिन्दू मरणोपरांत पार्थिव देह को श्मशान घाट में ले जाकर जला देते हैं और मुसलमान मृतक को भूमि में दफन कर देते हैं। हे ईश्वर! इन हिन्दू एवं मुसलमानों दोनों को ही तेरी महिमा का पता नहीं लगा॥१॥ हे मेरे मन!

इस समूचे संसार में तो गहरा अन्धेरा ही विद्यमान है और चारों दिशाओं में मृत्यु का जाल फैला हुआ है॥१॥ रहाउ॥ कई कवि कविताएँ पढ़-पढ़कर व्यर्थ ही मर गए हैं और गुदड़ी धारण करने वाले कई साधु केदारनाथ तीर्थ पर जाकर ही मर गए हैं। कई जटाधारी योगी पर्वतों की चोटियों में व्यर्थ ही मर गए है। परन्तु हे ईश्वर! तेरी गति इन्हें भी ज्ञात नहीं हुई॥२॥ कई प्रसिद्ध राजा भी धन-दौलत को संचित कर-करके सोने-चांदी के भार को दबाते ही मर गए हैं। पण्डित भी वेदों को पढ़-पढ़कर मर गए हैं और कई सुन्दर नारियाँ भी अपना सुन्दर रूप ही देख-देख कर मर गई हैं॥३॥ हे मानव! अपने मन में भलीभांति निरीक्षण करके देख लो, राम-नाम के बिना सभी नष्ट हो गए हैं। कबीर तो यही उपदेश करता है कि हरि-नाम के बिना किसे मोक्ष की प्राप्ति हुई है॥४॥१॥

जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥ काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥ १ ॥ काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ ॥ जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ ॥ मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥ २ ॥ देहुरी लउ बरी नारि संगि भई आगै सजन सुहेला ॥ मरघट लउ सभु लोगु कुटंबु भइओ आगै हंसु अकेला ॥ ३ ॥ कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥ ४ ॥ २ ॥

जब मनुष्य प्राण त्याग देता है तो उसका शरीर जला दिया जाता है और जलकर राख हो जाता है। यदि मृत शरीर को दफना दिया जाए तो उसे कीड़ों का दल ही खा जाता है। जैसे मिट्टी की कच्ची गागर जल डालने से टूट जाती है, वैसे ही इस कोमल तन की बड़ाई है, जितना गागर का महत्व है॥१॥ हे भाई! तू क्यों घमण्ड में अकड़ा हुआ फिर रहा है? वे दिन तुझे कैसे भूल गए हैं, जब तू दस महीने माता के गर्भ में उल्टे मुँह लटका हुआ था?॥१॥ रहाउ॥ जैसे मधुमक्खी शहद इकट्ठा करती रहती है, वैसे ही मूर्ख मनुष्य जीवन भर धन-दौलत ही संचित करता रहता है। जब मनुष्य प्राण त्याग देता है तो सभी कहते हैं कि इस मृत शरीर को श्मशान ले जाओ, ले जाओ और इस भूत को क्यों यहाँ पर रखा हुआ है?॥२॥ उस मृतक व्यक्ति की पत्नी घर की दहलीज तक उसके साथ जाती है और आगे उसके सभी सज्जन एवं संबंधी जाते हैं। सारा परिवार एवं सभी लोग श्मशान जाते हैं और उसके उपरांत आत्मा अकेली ही रह जाती है॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी! जरा ध्यानपूर्वक सुनो तुझे काल (मृत्यु) ने ग्रास बनाया हुआ है और अन्धे कुएँ में गिरे हुए हो। जैसे तोता भ्रम में नलकी के संग फँसा रहता है, वैसे ही मनुष्य ने स्वयं को झूठी माया के बन्धन में फँसाया हुआ है॥४॥२॥

बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की आसा ॥ काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पंडित पै चले निरासा ॥ १ ॥ मन रे सरिओ न एकै काजा ॥ भजिओ न रघुपति राजा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बन खंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइआ ॥ नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥ २ ॥ भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ॥ राग रागनी डिंभ होइ बैठा उनि हरि पहि किआ लीना ॥ ३ ॥ परिओ कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥ कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥ ४ ॥ ३ ॥

वेदों एवं पुराणों के समस्त मत सुनकर हमें भी कर्म करने की आशा उत्पन्न हुई किन्तु सभी

चतुर लोगों को काल (मृत्यु) ग्रस्त देखकर पण्डितों से निराश होकर आ गए हैं॥ १॥ हे मन! तुम्हारा तो एक भी कार्य सम्पूर्ण नहीं हो सका, चूंकि तूने राम का भजन ही नहीं किया॥१॥ रहाउ॥ कुछ लोग वनों में जाकर योग साधना एवं तपस्या करते हैं और कंदमूल चुन कर खाते हैं। सिंगी का नाद बजाने वाले योगी, वेदों में बताए कर्मकाण्ड करने वाले बेदी, अलख-अलख बोलने वाले साधु एवं मौनी मृत्यु के रजिस्टर में दर्ज हैं॥ २॥ प्रेमा-भक्ति तो मनुष्य के हृदय में प्रविष्ट नहीं हुई और उसने अपने तन को बना संवार कर ही मृत्यु को सौंप दिया है। वह तो केवल राग-रागनियों को धारण करने वाला ढोंगी ही बनकर बैठता है किन्तु उसमें उसे प्रभु से क्या मिल सकता है?॥३॥ मौत का खौफ समूचे जगत के ऊपर मंडरा रहा है और भ्रम में पड़े हुए ज्ञानी भी मृत्यु के रजिस्टर में लिखे हुए हैं। हे कबीर! जिन्होंने प्रेमा-भक्ति को समझ लिया है, वे मुक्त हो गए हैं॥४॥३॥

घरु २ ॥ दुइ दुइ लोचन पेखा ॥ हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ नैन रहे रंगु लाई ॥ अब बे गल कहनु न जाई ॥ १ ॥ हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ जब राम नाम चितु लागा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाजीगर डंक बजाई ॥ सभ खलक तमासे आई ॥ बाजीगर स्वांगु सकेला ॥ अपने रंग रवै अकेला ॥ २ ॥ कथनी कहि भरमु न जाई ॥ सभ कथि कथि रही लुकाई ॥ जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ ता के हिरदै रहिआ समाई ॥ ३ ॥ गुर किंचत किरपा कीनी ॥ सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥ कहि कबीर रंगि राता ॥ मिलिओ जगजीवन दाता ॥ ४ ॥ ४ ॥

मैं इन दोनों नयनों से देखता हूँ लेकिन उस भगवान के सिवाय दूसरा कोई भी दिखाई नहीं देता। इन नयनों ने उसका प्रेम रंग लगाया हुआ है और अब किसी अन्य विषय का वर्णन नहीं किया जा सकता॥ १॥ जब हमारा राम नाम में चित लग गया तो हमारा भ्रम दूर हो गया और भय भी भाग गया॥ १॥ रहाउ॥ जब बाजीगर-परमात्मा अपनी डुगडुगी बजाता अर्थात् जगत-रचना करता है तो सारी दुनिया जीवन का तमाशा देखने के लिए आ जाती है। जब बाजीगर-परमात्मा अपनी खेल सृष्टि का विनाश करके समेट लेता है तो वह अकेला ही अपने रंग में मग्न रहता है॥२॥ कहने एवं कथन करने से भ्रम दूर नहीं होता। कथन कर करके सारी दुनिया ही हार गई है। भगवान जिसे गुरु के सान्निध्य में स्वयं ज्ञान देता है, उसके हृदय में वह समाया रहता है॥३॥ जब गुरु किंचत मात्र भी कृपा करता है तो समूचा तन, मन एवं शरीर उस भगवान में समा जाता है। कबीर जी का कथन है कि मैं तो उसके रंग में ही मग्न हो गया हूँ और मुझे जगत का जीवनदाता मिल गया है॥४॥४॥

जा के निगम दूध के ठाटा ॥ समुंदु बिलोवन कउ माटा ॥ ता की होहु बिलोवनहारी ॥ किउ मेटै गो छाछि तुहारी ॥ १ ॥ चेरी तू रामु न करसि भतारा ॥ जगजीवन प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥ तू घर घर रमईऐ फेरी ॥ तू अजहु न चेतसि चेरी ॥ तू जमि बपुरी है हेरी ॥ २ ॥ प्रभ करन करावनहारी ॥ किआ चेरी हाथ बिचारी ॥ सोई सोई जागी ॥ जितु लाई तितु लागी ॥ ३ ॥ चेरी तै सुमति कहां ते पाई ॥ जा ते भ्रम की लीक मिटाई ॥ सु रसु कबीरै जानिआ ॥ मेरो गुर प्रसादि मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

जिसके घर में वेद इत्यादि धार्मिक ग्रंथ दूध का भण्डार है और मन समुद्र मंथन के लिए मटकी है, हे जीवात्मा! तू उस भगवान की दूध का मंथन करने वाली बन जा, वह तुझे लस्सी

देने से क्यों मना करेगा॥ १॥ हे सेविका! तू उस राम को अपना पति क्यों नहीं बनाती? चूंकि वह तो जगत का जीवन एवं प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ तेरे गले में पट्टी और पैरों में जंजीर है। राम ने घर घर अर्थात् योनि-चक्र में तुझे भटकाया हुआ है। हे सेविका! अब भी तू उस परमात्मा को स्मरण नहीं कर रही। हे भाग्यहीन! तुझे मृत्यु देख रही है॥ २॥ वह परमात्मा ही सबकुछ करने एवं कराने वाला है, बेचारी सेविका के वश में कुछ भी नहीं। जिसे वह जगाता है, वही जीवात्मा जागती है और जिससे वह लगाता है, उससे ही वह लग जाती है॥ ३॥ हे सेविका! तूने सुमति कहाँ से प्राप्त की है? जिसके साथ तूने भ्रम की लकीर मिटा दी है। कबीर जी का कथन है कि मैंने उस रस को समझ लिया है और गुरु की कृपा से मेरा मन आनंदित हो गया है॥ ४॥ ५॥

जिह बाझु न जीआ जाई ॥ जउ मिलै त घाल अघाई ॥ सद जीवनु भलो कहांही ॥ मूए बिनु जीवनु नाही ॥ १ ॥ अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा ॥ निज निरखत गत बिउहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घसि कुंकम चंदनु गारिआ ॥ बिनु नैनहु जगतु निहारिआ ॥ पूति पिता इकु जाइआ ॥ बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥ २ ॥ जाचक जन दाता पाइआ ॥ सो दीआ न जाई खाइआ ॥ छोडिआ जाइ न मूका ॥ अउरन पहि जाना चूका ॥ ३ ॥ जो जीवन मरना जानै ॥ सो पंच सैल सुख मानै ॥ कबीरै सो धनु पाइआ ॥ हरि भेटत आपु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिस परमेश्वर के बिना जीवित नहीं रहा जा सकता, यदि वह मिल जाए तो उसकी साधना सफल हो जाती है। लोग तो सदैव जीवन को ही भला कहते हैं लेकिन अपने आत्माभिमान को मारे बिना यह जीवन प्राप्त नहीं होता॥ १॥ अब मैं किस प्रकार के ज्ञान विचार का कथन करूँ? चूंकि मेरे देखते देखते ही संसार तबाह हो रहा है॥ १॥ रहाउ॥ जिस तरह केसर को घिस कर चन्दन के साथ मिलाया जाता है वैसे ही नेत्रों के बिना जगत देख लिया है। पुत्र ने एक पिता (ज्ञान) को जन्म दिया है और स्थान के बिना नगर बसाया है॥ २॥ याचक ने दाता को पा लिया है। उसे दाता ने इतना कुछ दे दिया है कि यह खत्म भी नहीं होता। मेरा दूसरों से मांगने जाना समाप्त हो गया है॥ ३॥ जो जीवन में मृत्यु को स्वीकार करना जानता है, वही प्रमुख व्यक्ति पहाड़ जितना सुख भोगता है। कबीर ने वह धन प्राप्त कर लिया है और भगवान से भेंट करके उसने अपने अहंत्व को मिटा दिया है॥ ४॥ ६॥

किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥ किआ बेद पुरानां सुनीऐ ॥ पड़े सुने किआ होई ॥ जउ सहज न मिलिओ सोई ॥ १ ॥ हरि का नामु न जपसि गवारा ॥ किआ सोचहि बारं बारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंधिआरे दीपकु चहीऐ ॥ इक बसतु अगोचर लहीऐ ॥ बसतु अगोचर पाई ॥ घटि दीपकु रहिआ समाई ॥ २ ॥ कहि कबीर अब जानिआ ॥ जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ मन माने लोगु न पतीजै ॥ न पतीजै तउ किआ कीजै ॥ ३ ॥ ७ ॥

पढ़ने एवं चिंतन का क्या लाभ है और वेदों एवं पुराणों को सुनने का क्या लाभ है? उस पढ़ने एवं सुनने का क्या फायदा है, अगर उससे सहजभाव ही प्राप्त नहीं होता॥१॥ मूर्ख व्यक्ति भगवान के नाम का जाप नहीं करता। फिर वह बार-बार क्या सोचता है॥१॥ रहाउ॥ अन्धेरे में एक अगोचर वस्तु ढूँढने के लिए एक दीपक चाहिए। मैंने अगोचर वस्तु को पा लिया है चूंकि मेरे हृदय में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित हो रहा है॥२॥ कबीर जी का कथन है कि अब मैंने प्रभु को जान लिया है। जब मैंने उस प्रभु को समझ लिया तो मेरा मन कृतार्थ हो गया, परन्तु लोग इस

पर विश्वास नहीं करते। यदि वे विश्वास नहीं करते तो मैं क्या कर सकता हूँ॥३॥७॥

ह्रिदै कपटु मुख गिआनी ॥ झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥ १ ॥ कांइआ मांजसि कउन गुनां ॥ जउ घट भीतरि है मलनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥ कउरापनु तऊ न जाई ॥ २ ॥ कहि कबीर बीचारी ॥ भव सागरु तारि मुरारी ॥ ३ ॥ ८ ॥

तेरे हृदय में तो छल-कपट है और मुँह से ज्ञान की बातें कर रहा है। हे झूठे व्यक्ति! तू क्यों जल का मंथन कर रहा है अर्थात् बेकार ही बोल रहा है॥ १॥ इस काया को स्वच्छ करने का कोई फायदा नहीं, अगर तेरे हृदय में मैल ही भरी हुई है॥ १॥ रहाउ॥ यद्यपि लौकी अड़सठ तीर्थों पर जाकर स्नान कर ले तो भी इसका कड़वापन दूर नहीं होता। कबीर जी गहन सोच-विचार के पश्चात् यही कथन करते हैं कि हे मुरारि! मुझे इस भवसागर से पार कर दीजिए॥ ३॥ ८॥

सोरठि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥ सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥ १ ॥ मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥ तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ॥ २ ॥ कहतु कबीरु कोई नही तेरा ॥ हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥ ३ ॥ ९ ॥

मनुष्य अनेक प्रकार के प्रपंच करके पराया-धन लेकर आता है और उस धन को लाकर अपने पुत्र एवं पत्नी के पास लुटा देता है॥१॥ हे मेरे मन! भूल कर भी छल-कपट मत कीजिए, चूंकि जीवन के अंत में तेरी आत्मा को भी कर्मों का लेखा-जोखा देना पड़ेगा॥१॥ रहाउ॥ क्षण-क्षण यह तन क्षीण होता जा रहा है और बुढ़ापा बढ़ता जा रहा है। तब तेरी हाथों की ओक में किसी ने भी जल नही डालना॥२॥ कबीर जी कहते हैं कि तेरा कोई भी नहीं है, फिर तू उचित समय ब्रह्ममुहूर्त क्यों नहीं राम के नाम का जाप करता॥३॥९॥

संतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥ किछु जोगु परापति गनिआ ॥ रहाउ ॥ गुरि दिखलाई मोरी ॥ जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ मूंदि लीए दरवाजे ॥ बाजीअले अनहद बाजे ॥ १ ॥ कुंभ कमलु जलि भरिआ ॥ जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥ कहु कबीर जन जानिआ ॥ जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ २ ॥ १० ॥

हे संतो! पवन जैसे मन को सुख प्राप्त हो गया है और इस तरह लगता है कि मुझे किसी सीमा तक योग की प्राप्ति हो गई है॥रहाउ॥ गुरु ने मुझे वह मोरी (कमजोरी) दिखा दी है, जिसके कारण विकार रूपी मृग चोरी से भीतर घुसते हैं। मैंने दरवाजे बन्द कर लिए हैं और मेरे भीतर अनहद नाद बज रहा है॥१॥ मेरे हृदय-कमल का घड़ा पाप के जल से भरा हुआ है। मैंने विकारों से भरे जल को निकाल दिया है और घड़े को सीधा कर दिया है। कबीर जी का कथन है कि इस सेवक ने इसे समझ लिया है, अब जब समझ लिया है तो मेरा मन संतुष्ट हो गया है॥२॥१०॥

रागु सोरठि ॥ भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ हउ मांगउ संतन रेना ॥ मै नाही किसी का देना ॥ १ ॥ माधो कैसी बनै तुम संगे ॥ आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥ दुइ सेर मांगउ चूना ॥ पाउ घीउ संगि लूना ॥ अध सेरु मांगउ दाले ॥ मोकउ दोनउ वखत जिवाले ॥ २ ॥ खाट

मांगउ चउपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर कउ मांगउ खींधा ॥ तेरी भगति करै जनु थींधा ॥ ३ ॥ मै नाही कीता लबो ॥ इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ कहि कबीर मनु मानिआ ॥ मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥ ४ ॥ ११ ॥

हे ईश्वर ! भूखे रहकर मुझसे तेरी भक्ति नहीं हो सकती, इसलिए अपनी यह माला वापिस ले लो। मैं तो केवल संतजनों की चरण धूलि ही माँगता हूँ और मैंने किसी का कुछ नहीं देना ॥१॥ हे माधव ! मेरा तेरे साथ कैसे प्रेम बना रह सकता है ? यदि तू स्वयं मुझे नहीं देता तो तुझसे विनती करके प्राप्त कर लूँगा॥रहाउ॥ मैं दो सेर आटा, पाव घी सहित नमक माँगता हूँ। मैं आधा सेर दाल भी माँगता हूँ और यह सारी सामग्री दोनों समय जीवन निर्वाह के लिए मदद करेगी ॥२॥ मैं चार पावों वाली खाट माँगता हूँ और साथ एक तकिया और एक तोशक माँगता हूँ। तन के ऊपर लेने के लिए एक रजाई भी माँगता हूँ। तभी तेरा यह सेवक तेरी भक्ति प्रेमपूर्वक कर सकेगा॥ ३॥ हे प्रभु ! ये चीजें माँगने में मैंने कोई लालच नहीं किया और एक तेरा नाम ही मुझे भला लगता है। कबीर जी का कथन है कि मेरा मन प्रसन्न हो गया है। जब मेरा मन इस तरह प्रसन्न हो गया है तो मैंने प्रभु को जान लिया है॥ ४॥ ११॥

रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥ जब देखा तब गावा ॥ तउ जन धीरजु पावा ॥ १ ॥ नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥ तह अनहद सबद बजंता ॥ जोती जोति समानी ॥ मै गुर परसादी जानी ॥ २ ॥ रतन कमल कोठरी ॥ चमकार बीजुल तही ॥ नेरै नाही दूरि ॥ निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ जह अनहत सूर उज्यारा ॥ तह दीपक जलै छंछारा ॥ गुर परसादी जानिआ ॥ जनु नामा सहज समानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

जब ईश्वर के दर्शन करता हूँ, तब ही उसका गुणगान करता हूँ, तो ही मुझ सेवक को धीरज प्राप्त होता है॥१॥ सतगुरु से भेंट होने पर अनहद शब्द में समा गया हूँ॥१॥ रहाउ॥ जहाँ झिलमिल उजाले का प्रकाश दिखाई देता है, वहाँ अनहद शब्द बजता रहता है। मेरी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो गई है। गुरु की कृपा से मैंने इस तथ्य को समझ लिया है॥२॥ हृदय-कमल की कोठरी में गुणों के रत्न विद्यमान हैं और वहाँ वे दामिनी की तरह चमकते हैं। वह प्रभु कहीं दूर नहीं अपितु पास ही है। वह तो मेरी आत्मा में ही निवास कर रहा है॥ ३॥ जहाँ अनश्वर सूर्य का उजाला है, वहाँ जलते हुए सूर्य एवं चन्द्रमा के दीपक तुच्छ प्रतीत होते हैं। गुरु की अपार कृपा से मैंने यह समझ लिया है और दास नामदेव सहज ही प्रभु में समा गया है॥४॥१॥

घरु ४ सोरठि ॥ पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥ तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मोकउ बेढी देहु बताई हो ॥ १ ॥ री बाई बेढी देनु न जाई ॥ देखु बेढी रहिओ समाई ॥ हमारै बेढी प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥ २ ॥ ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥ गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ ३ ॥ बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो ॥ नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥ ४ ॥ २ ॥

'निकटवर्ती पड़ोसिन पूछती है कि हे नामदेव ! ''तूने अपनी यह कुटिया किससे बनवाई है ?'' तुम मुझे उस बढ़ई के बारे में बता दो, मैं उसे तुझ से भी दुगुनी मजदूरी दूँगी॥१॥ अरी बहन ! उस बढ़ई के बारे में तुझे बताया अथवा उसका पता दिया नहीं जा सकता। देख ! मेरा बढ़ई तो सबमें समा रहा है। वह बढ़ई हमारे प्राणों का आधार है॥१॥रहाउ॥ यदि कोई उससे कुटिया बनवाना चाहे तो यह बढ़ई प्रीति की ही मजदूरी माँगता है। जब मनुष्य लोगों एवं कुटुंब से रिश्ता तोड़ लेता है तो बढ़ई स्वयं ही ह्रदय में आ जाता है॥२॥ मैं ऐसे बढ़ई के बारे में वर्णन नहीं कर सकता, चूंकि वह तो सबके भीतर में स्थित है एवं सर्वव्यापी है। जैसे कोई गूंगा महा अमृत रस को चखता है, परन्तु यदि उससे पूछा जाए तो वह इसे कथन नहीं कर सकता॥ ३॥ अरी बहन ! तू उस बढ़ई की महिमा सुन; उसने ही समुद्र पर सेतु बनाया था और भक्त ध्रुव को भी उसने ही उच्च पदवी पर स्थापित किया था। नामदेव के स्वामी राम ही लंका पर विजय पाकर सीता जी को ले आए थे और लंका का शासन विभीषण को सौंप दिया था॥ ४॥ २॥

सोरठि घरु ३ ॥ अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥ बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ बादल बिनु बरखा होई ॥ जउ ततु बिचारै कोई ॥ १ ॥ मोकउ मिलिओ रामु सनेही ॥ जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिलि पारस कंचनु होइआ ॥ मुख मनसा रतनु परोइआ ॥ निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥ गुर पूछे मनु पतीआगा ॥ २ ॥ जल भीतरि कुंभ समानिआ ॥ सभ रामु एकु करि जानिआ ॥ गुर चेले है मनु मानिआ ॥ जन नामै ततु पछानिआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

खाल के बिना मढ़ा हुआ ढोलक बजता है। सावन के बिना ही बादल गर्जता है। बादल के बिना ही वर्षा होती है, यदि कोई परम-तत्व का विचार करता है तो ही ऐसा प्रतीत होता है॥१॥ मुझे अपना स्नेही राम मिल गया है, जिसको मिलने से मेरी यह देह निर्मल बन गई है॥१॥ रहाउ॥ पारस रूपी गुरु से मिलकर मैं सोना अर्थात् पावन बन गया हूँ। अपने मुँह एवं मन में उस प्रभु-नाम के रत्नों को पिरोया हुआ है। उस प्रभु को मैं अपना समझ कर प्यार करता हूँ और मेरा भ्रम निवृत्त हो गया है। गुरु से उपदेश प्राप्त करके मेरा मन तृप्त हो गया है॥२॥ जैसे जल घड़े के भीतर ही समाया हुआ है वैसे ही मैं जानता हूँ कि एक राम ही सब जीवों में समाया हुआ है। चेले का मन गुरु पर ही भरोसा करता है। सेवक नामदेव ने इस तथ्य को पहचान लिया है॥३॥३॥

रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥ अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही ॥ १ ॥ माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥ जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ॥ २ ॥ राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥ ३ ॥ सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥ ४ ॥ १ ॥

हे ईश्वर ! जब मुझ में आत्माभिमान था, तब तू मुझ में नहीं था, अब जब तू मेरे भीतर है तो मेरा आत्माभिमान दूर हो गया है। जैसे-जैसे अग्नि की अनंत चिंगारियाँ होती हैं, पर वे अग्नि

का ही रूप होती हैं। पवन के साथ बड़े समुद्र में भारी लहरें उठती हैं परन्तु वे लहरें केवल समुद्र के जल में जल ही होती हैं वैसे ही यह जगत परमात्मा में से पैदा होने के कारण उसका रूप है ॥१॥ हे माधव! हम प्राणियों का तो भ्रम ही ऐसा है, हम इसके बारे में क्या कह सकते हैं? जैसा हम किसी वस्तु को मानते हैं, वह वैसी नहीं होती॥१॥ रहाउ॥ जैसे एक राजा अपने सिंहासन पर निद्रा-मग्न हो जाता है और स्वप्न में वह भिखारी बन जाता है। उसका राज्य अच्छा है परन्तु इससे बिछुड़ कर वह बहुत दुखी होता है। ऐसी ही हालत हमारी हुई है॥२॥ जैसे अंधेरे में रस्सी को सांप समझने का प्रसंग है, वैसे ही मैं भूला हुआ था, पर अब तूने मुझे भेद बता दिया है। जैसे भूलकर मैं अनेक कंगनों को स्वर्ण से पृथक मानता था, वैसे ही मैं भूल गया था कि मैं तुझसे भिन्न हूँ। अब जब मेरा यह भ्रम दूर हो गया है तो अब यह भ्रम वाली बात कहनी शोभा नहीं देती॥३॥ एक ईश्वर ही अनेक रूप धारण करके सर्वव्यापी है। वह तो सबके हृदय में सुख भोग रहा है। रविदास जी का कथन है कि ईश्वर तो हाथों-पैरों से भी अत्यन्त निकट है, इसलिए जो कुछ प्राकृतिक रूप में हो रहा है, वह भला ही हो रहा है॥४॥१॥

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥ १ ॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ अब कहा करहुगे ऐसी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी ॥ खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥ २ ॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥ ३ ॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे प्रभु जी! यद्यपि हम सांसारिक मोह की फाँसी में बँधे हुए थे तो हमने तुझे भी अपने प्रेम-बन्धन में बाँध लिया है। अब तुम इस प्रेम-बन्धन से मुक्त होने का यत्न करो, चूंकि हम तो तुम्हारी आराधना करके मुक्त हो गए हैं॥१॥ हे माधव! जैसी तेरे साथ हमारी प्रीति है, वह तुम जानते ही हो। तेरे साथ हमारी ऐसी प्रीति होने से अब तुम हमारे साथ क्या करोगे?॥१॥ रहाउ॥ मनुष्य मछली को पकड़ता है, मछली को चीरता और काटता है तथा विभिन्न प्रकार से इसे भलीभांति पकाता है। मछली के टुकड़े-टुकड़े करके भोजन किया जाता है परन्तु फिर भी मछली जल को नहीं भूलती॥ २॥ परमात्मा किसी के बाप की जायदाद नहीं है, अपितु वह समूचे विश्व का मालिक है, जो प्रेम-भावना के ही वशीभूत है। समूचे जगत पर मोह का पर्दा पड़ा हुआ है। परन्तु यह मोह भक्त को संताप नहीं देता॥३॥ रविदास जी का कथन है कि एक प्रभु की भक्ति हृदय में बढ़ गई है, यह मैं अब किसे बताऊँ। हे प्रभु! जिस दुःख के कारण हमने तुम्हारी आराधना की थी, क्या वह दुःख हमें अब भी सहन करना होगा?॥४॥२॥

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥ राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥ १ ॥ न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥ जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥ २ ॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

यह दुर्लभ मनुष्य जन्म बड़े पुण्य फल के कारण प्राप्त हुआ है किन्तु अविवेक के कारण यह व्यर्थ ही बीतता जा रहा है। यदि राजा इन्द्र के स्वर्ग जैसे महल एवं सिंहासन भी हों तो भी भगवान की भक्ति के बिना बताओ यह मेरे लिए व्यर्थ ही हैं॥ १॥ जीव ने राम के नाम के स्वाद का चिंतन नहीं किया, जिस नाम स्वाद में दूसरे सभी स्वाद विस्मृत हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हम बावले हो गए हैं, हम उसे नहीं जानते, जो हमारे लिए जानने योग्य है और उसे नहीं सोचते, जिसे सोचना चाहिए। इस तरह हमारे जीवन के दिवस बीतते जा रहे हैं। विषय-विकार भोगने वाली हमारी इन्द्रियाँ बहुत बलवान हैं, इसलिए हमारा विवेक बुद्धि का परमार्थ में प्रवेश नहीं हुआ॥ २॥ हम कहते कुछ हैं और करते कुछ अन्य ही हैं। यह माया बड़ी प्रबल है और हमें इसकी कोई सूझ नहीं पड़ती। रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु! तेरे दास की मति उदास भाव परेशान हो रही है। इसलिए अपने क्रोध को दूर करके मेरे प्राणों पर दया करो॥ ३॥ ३॥

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥ १ ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥ बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ २ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥ ३ ॥ ४ ॥

परमात्मा सुखों का सागर है, जिसके वश में स्वर्ग के कल्पवृक्ष, चिंतामणि एवं कामधेनु है। चार पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष, अठारह सिद्धियाँ एवं नौ निधियाँ उसके हाथ की हथेली पर हैं॥ १॥ अन्य समस्त वाद-विवाद छोड़ कर वाणी में लीन होकर रसना से हरि-हरि नाम का जाप क्यों नहीं करते ?॥ १॥ रहाउ॥ पुराणों के भांति-भांति के प्रसंग, वेदों में बताई हुई कर्मकाण्ड की विधियाँ यह सभी चौंतीस अक्षरों में ही लिखी हुई हैं भाव यह अनुभवी ज्ञान नहीं है। व्यास ऋषि ने सोच विचार कर यह परमार्थ बताया है कि राम-नाम के तुल्य अन्य कुछ भी नहीं है॥ २॥ दुःख-क्लेशों से रहित सहज अवस्था वाली मेरी समाधि लगी रहती है और फिर साथ ही सौभाग्य से प्रभु में सुरति भी लगी रहती है। रविदास जी का कथन है कि मेरे हृदय में सत्य की ज्योति का प्रकाश हो जाने से मेरा जन्म-मरण का भय भाग गया है॥ ३॥ ४॥

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥ १ ॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥ २ ॥ साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥ ३ ॥ जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ ४ ॥ तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥ भगति हेत गावै रविदासा ॥ ५ ॥ ५ ॥

हे ईश्वर! यदि तुम सुन्दर पर्वत बन जाओ तो मैं तेरा मोर बन जाऊँ। यदि तुम चांद बन जाओ तो मैं चकोर बन जाऊँ॥ १॥ हे माधव! यदि तुम मुझ से प्रीत न तोड़ो तो मैं भी तुझ से अपनी प्रीत नहीं तोड़ूँगा। मैं तुझ से अपनी प्रीत तोड़कर अन्य किससे जोड़ सकता हूँ?॥१॥ रहाउ॥ यदि तुम सुन्दर दीपक बन जाओ तो मैं तेरी बाती बन जाऊँ। यदि तुम तीर्थ बन जाओ तो मैं तेरा तीर्थ-यात्री बन जाऊँ॥ २॥ मैंने तो तुझ से सच्ची प्रीति जोड़ ली है और तुम से प्रीति

जोड़कर दूसरों के साथ नाता तोड़ लिया है॥ ३॥ जहाँ-जहाँ भी मैं जाता हूँ, वहाँ ही मैं तेरी आराधना करता हूँ। हे प्रभु जी! तुझ जैसा ठाकुर एवं पूज्य देव दूसरा कोई नहीं॥ ४॥ तुम्हारा भजन करने से मृत्यु की फाँसी कट जाती है। तेरी भक्ति प्राप्त करने के लिए रविदास तेरा ही गुणगान करता है॥ ५॥ ५॥

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥ हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥ १ ॥ प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥ जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राखहु कंध उसारहु नीवां ॥ साढे तीनि हाथ तेरी सीवां ॥ २ ॥ बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥ इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥ ३ ॥ ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ राम नाम बिनु बाजी हारी ॥ ४ ॥ मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥ तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥ ५ ॥ ६ ॥

इस मानव शरीर की दीवारें जल की बनी हुई हैं, जिसके नीचे पवन का स्तंभ स्थापित किया हुआ है और इसे माँ के रक्त एवं पिता के वीर्य का गारा लगा हुआ है। यह शरीर माँस एवं नाड़ियों का बना हुआ एक ढाँचा है, जिसमें बेचारा जीव रूपी पक्षी निवास करता है॥१॥ हे नश्वर प्राणी! इस दुनिया में क्या मेरा है और क्या तेरा है? यह बात यूं है जैसे वृक्ष पर पक्षी का बसेरा होता है॥१॥रहाउ॥ तेरे शरीर की सीमा अधिक से अधिक साढ़े तीन हाथों की है परन्तु तू गहरी बुनियाद खोद कर उन पर महल बनाने के लिए दीवारें खड़ी कर रहा है॥२॥ तेरे सिर पर सुन्दर केश हैं और तू सिर पर तिरछी पगड़ी सुशोभित करता है किन्तु तेरा यह शरीर एक न एक दिन भस्म की ढेरी बन जाएगा॥३॥ लेकिन ऊँचे महलों एवं सुन्दर पत्नी के प्रेम में पड़कर राम नाम के बिना तूने अपनी जीवन-बाजी हार दी है॥४॥ मेरी जाति नीच है और मेरा गोत्र नीच है तथा मेरा जन्म भी ओछा ही है। रविदास चमार का कथन है कि हे राजा राम! फिर भी मैंने तेरी ही शरण ली है॥ ५॥ ६॥

चमरटा गांठि न जनई ॥ लोगु गठावै पनही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आर नही जिह तोपउ ॥ नही रांबी ठाउ रोपउ ॥ १ ॥ लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥ हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥ २ ॥ रविदासु जपै राम नामा ॥ मोहि जम सिउ नाही कामा ॥ ३ ॥ ७ ॥

मैं चमार गाँठना नहीं जानता परन्तु लोग मुझसे अपने जूते बनवाते हैं॥१॥ रहाउ॥ मेरे पास आर नहीं हैं, जिससे मैं जूतों को गाँठ दूँ और न ही मेरे पास खुरपी है, जिससे मैं जोड़ लगा सकूँ॥ १॥ अपने आपको जगत से जोड़-जोड़ कर लोग बिल्कुल नष्ट हो गए हैं। लेकिन बिना गांठे ही मैं प्रभु के पास पहुँच गया हूँ॥२॥ रविदास तो राम के नाम का ही भजन करता रहता है और अब उसका यम से कोई काम नहीं रहा॥३॥७॥

रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥ रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥ १ ॥ राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ अपने संतह लेहु उबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥ २ ॥ हरि का नामु अंम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥ ३ ॥ १ ॥

अब बुढ़ापे में मेरी यह अवस्था हो गई है कि नयनों में से जल बहता रहता है और तन भी क्षीण हो गया है तथा ये बाल दूध जैसे सफेद हो गए हैं। मेरा गला बंद हो गया है, जिस कारण मैं एक शब्द भी बोल नहीं सकता। मेरे जैसा नश्वर जीव अब क्या कर सकता है?॥१॥ हे बनवारी! हे राम! तुम स्वयं ही वैद्य बनकर अपने संतों को बचा लो॥१॥रहाउ॥ मेरे माथे में पीड़ा, शरीर में जलन एवं हृदय में दर्द है। मेरे भीतर ऐसी भयानक वेदना उत्पन्न हो गई है कि जिसकी कोई औषधि नहीं॥२॥ हरि का नाम अमृतमयी निर्मल जल है और यह औषधि इस जगत में समस्त रोगों का निदान है। भीखन का कथन है कि गुरु की कृपा से मैंने मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लिया है॥३॥१॥

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ ॥ अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥ १ ॥ हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ जैसे गूंगे की मिठिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥ कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ॥ २ ॥ २ ॥

हे भाई! परमात्मा का नाम ऐसा रत्न है जो बड़ा अमूल्य है। मैंने यह नाम-पदार्थ अपने पूर्व किए शुभ कर्मों के कारण प्राप्त किया है। अनेकों यत्न करके मैंने इसे अपने हृदय में छिपा कर रखा परन्तु यह रत्न छिपाए छिपता नहीं॥१॥ जैसे कोई गूँगा आदमी मिठाई खा कर उसका स्वाद नहीं बता सकता, वैसे ही मुझ से भगवान की महिमा बताने से बताई नहीं जा सकती॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर का नाम जिह्वा से जप कर, कानों से सुनकर एवं चित से स्मरण करके मुझे सुख की अनुभूति हुई है। भीखन का कथन है कि मेरे यह दोनों नयन संतुष्ट हो गए हैं। अब मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही भगवान दिखाई देता है॥२॥२॥

★★★

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ओंकार वही एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि एवं जीवों की रचना करने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है, उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं है, वह निर्वेर, अकालमूर्ति कोई योनि धारण नहीं करता, वह स्वयंभू है, जिसे गुरु की कृपा से ही पाया जाता है।

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥ २ ॥ दइआल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबाणै जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥ ३ ॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहां ॥ दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥ नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ ४ ॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

मेरी आत्मा डर रही है, मैं किसके पास पुकार करूँ ? इसलिए मैंने तो सब दुःख भुलाने वाले परमात्मा की ही उपासना की है, जो सदैव ही जीवों को देने वाला है॥१॥ मेरा मालिक नित्य ही नवीन है और वह हमेशा ही सबको देने वाला है॥१॥ रहाउ॥ निशदिन उस मालिक की सेवा करते रहना चाहिए, क्योंकि अंत में वही यम से मुक्त करवाता है। हे मेरी प्राण रूपी कामिनी! प्रभु का नाम सुनकर तेरा भवसागर से कल्याण हो जाएगा॥२॥ हे दयालु परमात्मा! तेरे नाम द्वारा मैं संसार-सागर से पार हो जाऊँगा। मैं तुझ पर सदैव ही कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ सबका मालिक एक सत्यस्वरूप ईश्वर ही सर्वव्यापी है, अन्य दूसरा कोई सत्य नहीं है। उसकी सेवा वही करता है, जिस पर वह अपनी करुणा-दृष्टि करता है॥३॥ हे मेरे प्यारे! तेरे बिना मैं कैसे रह सकता हूँ ? मुझे वही बड़ाई प्रदान करो, जिससे मैं तेरे नाम-सिमरन में लगा रहूँ। हे मेरे प्यारे! कोई अन्य दूसरा है ही नहीं, जिसके समक्ष मैं अनुरोध करूँ॥१॥ रहाउ॥ मैं तो अपने उस मालिक की ही सेवा करता रहता हूँ एवं किसी दूसरे से मैं कुछ नहीं माँगता। नानक तो उस मालिक का दास है और हर क्षण उस पर टुकड़े-टुकड़े होकर कुर्बान जाता है॥४॥ हे मेरे मालिक! हर क्षण मैं तेरे नाम पर टुकड़े-टुकड़े होकर कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥४॥१॥

धनासरी महला १ ॥ हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥ नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥ १ ॥ अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सासु मासु

सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥ नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥ २ ॥ जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥ ३ ॥ नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥ जम दुआरि जा पकड़ि चलाइआ ता चलदा पछुताणा ॥ ४ ॥ जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥ ५ ॥ २ ॥

हम एक साँस भर जीने वाले आदमी हैं; हमें इस बात का कोई ज्ञान नहीं कि हमारी जीवन-अवधि कितनी है और कब मृत्यु का समय आ जाना है। नानक विनती करते हैं कि जिसने यह आत्मा एवं प्राण दिए हैं, उस ईश्वर की ही उपासना करो॥ १॥ हे अन्धे मानव ! अच्छी तरह विचार करके देख ले कि तेरा जीवन कितने दिनों का है ?॥ १॥रहाउ॥ हे सच्चे परवदगार ! शायर नानक यही कहता है कि ये श्वास, शरीर एवं प्राण इत्यादि सब तेरी ही देन है और तू ही मुझे अत्यंत प्यारा है॥२॥ हे मेरे मालिक ! यदि तू किसी को कोई वस्तु न दे तो वह कौन-सा आभूषण गिरवी रखकर तुझसे कुछ ले सकता है ? नानक विनती करते हैं कि आदमी वही कुछ प्राप्त करता है, जो उसकी किस्मत में पूर्व जन्म का लेना लिखा होता है॥ ३॥ उस आदमी ने परमात्मा को कभी याद ही नहीं किया और वह कपटी तो कपट ही करता रहता है। जब उसे पकड़ कर यम के द्वार पर ले जाया गया तो वह पछताता हुआ चल दिया॥ ४॥ हे नानक ! जब तक हमने दुनिया में रहना है, हमें प्रभु के बारे में कुछ कहना एवं कुछ सुनना चाहिए। हमने बड़ी खोज-तलाश की है, किन्तु सदैव रहने का कोई मार्ग नहीं मिला। इसलिए जब तक जीना है, अहंकार को मारकर जीवन बिताना चाहिए॥५॥२॥

धनासरी महला १ घरु दूजा १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥ तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥ सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥ १ ॥ हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥ किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥ ना को चाखै ना को खाइ ॥ लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ ता पति रहै राखै जा सोइ ॥ २ ॥ जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ तुधु बिनु दूजा नाही जाइ ॥ जे को करे कीतै किआ होइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ ३ ॥ हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि ॥ किआ मुहु देसा गुण नही नालि ॥ जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ विणु नदरी नानक नही कोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

मैं कैसे सिमरन करूँ ? मुझ से तो परमात्मा का भजन-सिमरन नहीं किया जाता। सिमरन के बिना मेरा हृदय अग्नि की भांति जल रहा है और मेरी आत्मा भी दुःख में विलाप कर रही है। जब परम-सत्य परमात्मा सब जीवों को पैदा करके स्वयं ही उन्हें गुणवान बनाता है तो फिर उस प्रभु को विस्मृत करने से भला कैसे हो सकता है॥१॥ किसी चतुराई एवं हुक्म द्वारा प्रभु प्राप्त नहीं किया जा सकता। हे मेरी माता ! उस परम-सत्य ईश्वर को मैं कैसे मिल सकता हूँ ?॥१॥ रहाउ॥ कोई विरला मनुष्य ही नाम रूपी सौदा देखने के लिए जाता है। इस नामामृत को न कोई चखता है और न ही कोई खाता है। लोगों की खुशामद करने से मनुष्य को मान-सम्मान प्राप्त नही होता।

दि कोई मनुष्य कुछ करने का प्रयास भी करे तो भी उसका किया कुछ नहीं होता। वह सच्चा रमेश्वर जिस पर करुणा करता है, वही कुछ कर सकता है॥३॥ अब एक मुहूर्त अथवा हाथ की ली बजाने जितने समय में ही उठकर मैंने यहाँ से चले जाना है। मुझ में तो कोई भी गुण द्यमान नहीं, फिर मैं उस प्रभु को अपना कौन-सा मुँह दिखाऊँगा ? जैसी दृष्टि परमात्मा करता , वैसा ही मनुष्य हो जाता है। हे नानक ! उसकी (कृपा) दृष्टि के बिना कोई भी जीव नहीं है॥ ॥ १॥ ३॥

धनासरी महला १ ॥ नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥ आतमा परातमा को करै ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥ १ ॥ गुर परसादी पाइआ जाइ ॥ हरि सिउ चितु लागै फिरि ालु न खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥ ता ते बिखिआ महि रहै उदासु ॥ सतिगुर ी ऐसी वडिआई ॥ पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ २ ॥ ऐसी सेवकु सेवा करै ॥ जिस का जीउ तिसु ागै धरै ॥ साहिब भावै सो परवाणु ॥ सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ सतिगुर की मूरति हिरदै साए ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ साचा साहिबु किरपा करै ॥ सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥ ४ ॥ नति नानकु करे वीचारु ॥ साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥ ता को पावै मोख दुआरु ॥ जपु तपु भु इहु सबदु है सारु ॥ ५ ॥ २ ॥ ४ ॥

यदि परमात्मा अपनी कृपा-दृष्टि करे तो ही उसका भजन-सिमरन किया जाता है। जब नुष्य की आत्मा द्रवित हो जाती है तो वह अपना ध्यान सत्य में ही लगाता है। जब वह ात्मा-परमात्मा को एक रूप समझ लेता है तो उसके मन की दुविधा उसके मन में ही मर जाती ॥१॥ भगवान की प्राप्ति तो गुरु की अपार कृपा से ही होती है। यदि मनुष्य का चित्त भगवान के साथ लग जाए तो फिर काल उसे नहीं निगलता॥१॥ रहाउ॥ उस सच्चे प्रभु का सिमरन करने मन में ही सत्य का आलोक हो जाता है और वह विष रूपी माया में ही निर्लिप्त रहता है। तगुरु की ऐसी बड़ाई है कि मनुष्य अपने पुत्रों एवं अपनी पत्नी के बीच रहता हुआ मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥२॥ प्रभु का सेवक उसकी ऐसी सेवा करता है कि जिस प्रभु ने यह प्राण उसे दिए ए हैं, वह उसके समक्ष अर्पित कर देता है। जो मनुष्य प्रभु को अच्छा लगता है, वह परवान हो ाता है। ऐसा सेवक प्रभु के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥३॥ सतगुरु की मूर्त्त को वह पने हृदय में बसाता है, और जो उसकी इच्छा होती है, वही फल प्राप्त कर लेता है। सच्चा रमेश्वर स्वयं उस पर अपनी कृपा करता है तो ऐसा सेवक फिर मृत्यु से कैसे डर सकता है ४॥ हे नानक ! जो मनुष्य शब्द पर विचार करता है और सच्ची वाणी से प्रेम करता है, उसे मोक्ष के द्वार की प्राप्ति हो जाती है। यह शब्द ही समस्त जप एवं तप का सार है॥५॥२॥४॥

धनासरी महला १ ॥ जीउ तपतु है बारो बार ॥ तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥ जै तनि बाणी वसरि जाइ ॥ जिउ पका रोगी विललाइ ॥ १ ॥ बहुता बोलणु झखणु होइ ॥ विणु बोले जाणै सभु ोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कन कीते अखी नाकु ॥ जिनि जिहवा दिती बोले तातु ॥ जिनि मनु राखिआ गनी पाइ ॥ वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥ २ ॥ जेता मोहु परीति सुआद ॥ सभा कालख दागा ाग ॥ दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥ दरगह बैसण नाही जाइ ॥ ३ ॥ करमि मिलै आखणु तेरा नाउ । जितु लगि तरणा होरु नही थाउ ॥ जे को डूबै फिरि होवै सार ॥ नानक साचा सरब दातार ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

मेरी आत्मा बार-बार अग्नि की तरह जलती है। यह जल-जल कर दुखी होती रहती है और अनेक विकारों में फँस जाती है। जिस शरीर को वाणी विस्मृत हो जाती है, वह पक्के रोगी की तरह विलाप करता रहता है॥१॥ अधिकतर बोलना व्यर्थ बकवास हो जाता है क्योंकि वह प्रभु तो हमारे बोले बिना ही हमारे बारे में सबकुछ जानता है॥१॥ रहाउ॥ जिसने हमारे कान, नेत्र एवं नाक बनाया है, जिसने हमें जिह्वा दी है, जो शीघ्र बोलती है, जिसने माँ के गर्भ की अग्नि में पैदा करके हमारे मन की रक्षा की है। उस परमात्मा की कृपा से जीवन-साँसें चलती हैं और जीव परस्पर बातचीत करता है॥२॥ जितना भी मोह, प्रेम एवं स्वाद है, ये सभी हमारे मन को लगे हुए कालिख के केवल दाग ही हैं। जो मनुष्य अपने चेहरे पर पापों के धब्बे लगवा कर दुनिया से चल देता है, उसे प्रभु के दरबार में बैठने हेतु स्थान नहीं मिलता॥३॥ हे परमात्मा! तेरा नाम तेरी कृपा से ही सिमरन हेतु मिलता है, जिससे लग कर जीव भवसागर से पार हो जाता है और इस भवसागर में डूबने से बचने के लिए नाम के अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा नहीं है। यदि कोई भवसागर में डूब भी जाए तो नाम द्वारा उसकी पुनः संभाल हो जाती है। हे नानक! परम-सत्य परमेश्वर सब जीवों को देने वाला है॥४॥३॥५॥

धनासरी महला १ ॥ चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥ चोर की हामा भरे न कोइ ॥ चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥ १ ॥ सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥ बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ॥ खोटे का मुलु एकु दुगाणा ॥ जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥ जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥ २ ॥ जैसा करे सु तैसा पावै ॥ आपि बीजि आपे ही खावै ॥ जे वडिआईआ आपे खाइ ॥ जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥ ३ ॥ जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥ भावै सभु आखउ संसारु ॥ तुधु भावै अधी परवाणु ॥ नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

यदि चोर किसी व्यक्ति की सराहना करे तो उसका चित्त प्रसन्न नहीं होता परन्तु यदि चोर उसकी बुराई करे तो उसकी इज्जत तिनका भर भी कम नहीं होती। चोर की जिम्मेदारी कोई भी नहीं लेता। जिसे भगवान ने चोर बना दिया, वह मनुष्य भला कैसे हो सकता है॥१॥ हे ज्ञानहीन, लालची एवं झूठे मन! ध्यानपूर्वक सुन, तेरे बिना बोले ही वह सच्चा परमेश्वर तेरे मन की भावना को जानता है॥१॥ रहाउ॥ चोर चाहे सुन्दर एवं अक्लमंद हो परन्तु उस दुराचारी का मूल्य एक कौड़ी जितना ही होता है। यदि उसे गुणवानों में मिलाकर रख दिया जाए तो परखने पर वह खोटा ही पाया जाता है॥२॥ सच तो यही है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही उसका फल प्राप्त करता है। वह शुभाशुभ कर्मों का बीज बोकर स्वयं ही उसका फल खाता है। यदि वह स्वयं ही अपनी प्रशंसा करे तो जैसे उसकी समझ होती है, वैसे मार्ग पर वह चलता है॥३॥ यदि वह अपने झूठ को छिपाने हेतु सैंकड़ों झूठी बातें करे, चाहे सारी दुनिया उसे भला पुरुष कहे तो भी वह सत्य के दरबार में मंजूर नहीं होता। हे प्रभु! यदि तुझे उपयुक्त लगे तो एक साधारण पुरुष भी परवान हो जाता है। हे नानक! वह चतुर एवं अन्तर्यामी प्रभु सर्वज्ञाता है॥४॥४॥६॥

धनासरी महला १ ॥ काइआ कागदु मनु परवाणा ॥ सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥ दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥ खोटा कामि न आवै वेखु ॥ १ ॥ नानक जे विचि रुपा होइ ॥ खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥ ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥ जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥ तीने ओजाड़े का बंधु ॥ २ ॥ सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥ गुर परसादी एको जाणै ॥ काजी सो जो उलटी करै ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ॥ सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥ आपि तरै

सगले कुल तारै ॥ ३ ॥ दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥ मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ पड़िआ बूझै सो परवाणु ॥ जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥

मानव की यह काया कागज है और मन इस पर लिखा हुक्म उसकी किस्मत है। परन्तु नादान मानव अपने मस्तक पर लिखी हुई किस्मत के लेख को नहीं पढ़ता। उस भगवान के दरबार में तीन प्रकार की किस्मत के लेख लिखे जाते हैं। देख लो, खोटा सिक्का वहाँ किसी काम नहीं आता॥१॥ हे नानक ! यदि सिक्के पर चाँदी हो तो हर कोई उस सिक्के को खरा-खरा कहता है॥१॥ रहाउ॥ काजी कचहरी में झूठा न्याय सुना कर हराम का धन खाता है। ब्राह्मण अपने इष्ट देवता को बलि देने के लिए जीव-हत्या करके अपने पाप उतारने हेतु तीर्थ पर जाकर स्नान करता है। अन्धा अर्थात् ज्ञानहीन योगी योग साधना की युक्ति नहीं जानता। काजी, ब्राह्मण एवं योगी यह तीनों ही जीवों हेतु विनाश का बंधन हैं॥ २॥ सच्चा योगी वही है, जो प्रभु-मिलन की युक्ति को समझता है और जो गुरु की कृपा से एक ईश्वर को जानता है। काजी वही है, जो अपनी मनोवृति को विकारों से बदल लेता है और जो गुरु की कृपा से अपने अहंत्व को मार देता है। वास्तविक ब्राह्मण वही है, जो ब्रह्म का चिंतन करता है। वह भवसागर में से स्वयं तो पार होता ही है और अपने समस्त वंश को भी पार करवा देता है॥ ३॥ वही आदमी अक्लमंद है, जो अपने मन को स्वच्छ करता है। वास्तविक मुसलमान वही है, जो अपने मन की अपवित्रता को दूर करता है। वही मनुष्य विद्वान है, जो सत्य को समझता है और ऐसा मनुष्य प्रभु को स्वीकार हो जाता है। ऐसा मनुष्य वही होता है, जिसके माथे पर सत्य के दरबार की स्वीकृति का चिन्ह लगा होता है॥४॥५॥७॥

धनासरी महला १ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥ थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥ १ ॥ कल महि राम नामु सारु ॥ अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आंट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोअ ॥ मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ ॥ २ ॥ खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥ स्रिसटि सभ इक वरन होई धरम की गति रही ॥ ३ ॥ असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु ॥ बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

यह योग्य समय नहीं है, इस युग में योग-साधना नहीं हो सकती और सत्य-साधना के मार्ग पर भी चला नहीं जा सकता। जगत के सभी पूजा-स्थल भ्रष्ट हो गए हैं और यूं समूचा जगत ही तृष्णाग्नि के समुद्र में डूबता जा रहा है॥१॥ इस कलियुग में राम का नाम सभी धर्म-कर्मो से श्रेष्ठ साधन है। दुनिया को धोखा देने के लिए पाखण्डी ब्राह्मण अपनी आँखे मिटकर अपना नाक पकड़ कर कहता है॥१॥ रहाउ॥ समाधिस्थ होकर पाखण्डी अपने अँगूठे एवं दोनो ऊंगलियों से अपने नाक को पकड़ कर कहता है कि मुझे आकाश, पाताल एवं पृथ्वी ये तीनों लोक दिखाई देते हैं। मगर, उसे अपनी पीठ के पीछे कुछ भी दिखाई नहीं देता। उसका यह पद्‌म आसन कितना अद्‌भुत है॥२॥ क्षत्रिय हिन्दू-धर्म की रक्षा हेतु युद्ध करते थे परन्तु अब क्षत्रियों ने अपना धर्म त्याग दिया है और वह मुस्लमानों की भाषा पढ़ने लग गए हैं। सारी सृष्टि एक ही वर्ण की हो गई है और धर्म की प्राचीन प्रचलित मर्यादा मिट गई है॥ ३॥ पाणनी ऋषि की रचित व्याकरण के आठ अध्याय एवं वेद व्यास के रचित अठारह पुराणों का विद्वान धयानपूर्वक चिंतन करते हैं और वे वेदों

का भी अभ्यास करते रहते हैं। परन्तु दास नानक यही कहता है कि हरि-नाम के बिना मुक्ति संभव नहीं॥ ४॥ १॥ ६॥ ८॥

धनासरी महला १ आरती ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥ कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ २ ॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥ ३ ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ९ ॥

प्रकृति द्वारा तैयार की गई आरती-सामग्री का संकेत देते हुए सतिगुरु जी का फुरमान है कि सम्पूर्ण गगन रूपी थाल में सूर्य व चंद्रमा दीपक बने हुए हैं, तारों का समूह जैसे थाल में मोती जड़े हुए हों। मलय पर्वत की ओर से आने वाली चंदन की सुगंध धूप के समान है, वायु चंवर कर रही है, समस्त वनस्पति जो फूल आदि खिलते हैं, ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष की आरती के लिए समर्पित हैं॥ १॥ सृष्टि के जीवों का जन्म-मरण नाश करने वाले हे प्रभु ! प्रकृति में तेरी कैसी अलौकिक आरती हो रही है कि जो एक रस वेद ध्वनि हो रही है वह मानो नगारे बज रहे हों॥ १॥ रहाउ॥ हे सर्वव्यापक निराकार ईश्वर ! तुम्हारी हज़ारों आँखें हैं, लेकिन निर्गुण स्वरूप में तुम्हारी कोई भी आँख नहीं है, इसी प्रकार हज़ारों तुम्हारी मूर्तियाँ हैं, परंतु तुम्हारा एक भी रूप नहीं है क्योंकि तुम निर्गुण स्वरूप हो, सर्गुण स्वरूप में तुम्हारे हज़ारों निर्मल चरण-कंवल हैं किंतु तुम्हारा निर्गुण स्वरूप होने के कारण एक भी चरण नहीं है, तुम घ्राणेन्द्रिय (नासिका) रहित भी हो और तुम्हारी हजारों ही नासिकाएँ हैं; तुम्हारा यह आश्चर्यजनक स्वरूप मुझे मोहित कर रहा है॥ २॥ सृष्टि के समस्त प्राणियों में उस ज्योति-स्वरूप की ज्योति ही प्रकाशमान है। उसी की प्रकाश रूपी कृपा से सभी में जीवन का प्रकाश है। किंतु गुरु उपदेश द्वारा ही इस ज्योति का बोध होता है। जो उस ईश्वर को भला लगता है वही उसकी आरती होती है॥ ३॥ हरि के चरण रूपी पुष्पों के रस को मेरा मन लालायित है, नित्य-प्रति मुझे इसी रस की प्यास रहती है। हे निरंकार ! मुझ नानक पपीहे को अपना कृपा-जल दो, जिससे मेरे मन का टिकाव तुम्हारे नाम में हो जाए॥ ४॥ १॥ ७॥ ९॥

(उपरोक्त शब्द में सतिगुरु नानक देव जी ने सांसारिक जीवों द्वारा परमात्मा के सिमरन में की गई आरती में विद्यमान पाखंडों का निवारण करते हुए जीव को प्रकृति द्वारा प्रत्यक्ष हो रही आरती का कथन किया है, इसलिए मान्यता है कि यह शब्द श्री गुरु नानक देव जी ने हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ जगन्नाथ पुरी के मंदिर में हो रही आरती के बाद उच्चारण किया।)

धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ ॥ पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥ १ ॥ से धनवंत हरि नामि लिव लाइ ॥ गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइ ॥ रहाउ ॥ अवगुण काटि गुण रिदै समाइ ॥ पूरे गुर कै सहजि

सुभाइ ॥ पूरे गुर की साची बाणी ॥ सुख मन अंतरि सहजि समाणी ॥ २ ॥ एकु अचरजु जन देखहु भाई ॥ दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई ॥ नामु अमोलकु न पाइआ जाइ ॥ गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ सभ महि वसै प्रभु एको सोइ ॥ गुरमती घटि परगटु होइ ॥ सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ ॥ नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

यह नाम-धन कदापि खत्म होने वाला नहीं है अर्थात् यह तो अक्षय है, न यह कभी खत्म होता है और न ही यह चोरी होता है। पूर्ण सतगुरु ने मुझे यह दिखा दिया है। मैं अपने पूर्ण सतगुरु पर सदैव ही कुर्बान जाता हूँ। गुरु की कृपा से मैंने भगवान को अपने मन में बसा लिया है॥१॥ केवल वही धनवान है, जो हरि-नाम में ध्यान लगाकर रखता हैं। पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय में हरि-नाम धन का प्रकाश कर दिया है और भगवान की कृपा से यह नाम-धन मेरे मन में आकर बस गया है॥ रहाउ॥ पूर्ण गुरु के प्रेम द्वारा सहज स्वभाव ही अवगुण मिटकर गुण आकर उसके हृदय में बस गए हैं। पूर्ण गुरु की वाणी सत्य एवं शाश्वत है और इससे मन में सुख एवं सहजावस्था उत्पन्न हो जाती है॥ २॥ हे लोगो ! हे भाई ! एक आश्चर्य देखो मैंने अपनी दुविधा को मारकर भगवान को अपने हृदय में बसा लिया है। यह नाम बड़ा अमूल्य है और यह किसी भी मूल्य पर पाया नहीं जा सकता। यह तो गुरु की कृपा से ही मन में आकर बसता है॥३॥ एक प्रभु ही समस्त जीवों में निवास करता है और गुरु के उपदेश द्वारा वह हृदय में ही प्रगट हो जाता है। जिसने सहजावस्था में प्रभु को जान कर पहचान लिया है, हे नानक ! उसे हरि-नाम मिल गया है और उसका मन तृप्त हो गया है॥ ४॥ १॥

धनासरी महला ३ ॥ हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥ गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥ नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥ माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ ॥ तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥ रहाउ ॥ सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ जो चाखै सो निरमलु होइ ॥ निरमल नामि हउमै मलु धोइ ॥ साची भगति सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु चाखिआ सो हरि जनु लोगु ॥ तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥ आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै ॥ हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥ ३ ॥ बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ ॥ अनदिनु दाझहि साति न पाइ ॥ सतिगुरु मिलै सभु त्रिसन बुझाए ॥ नानक नामि सांति सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥

हरि-नाम का धन अत्यंत निर्मल एवं अपरंपार है और गुरु के शब्द द्वारा मैंने इस धन के भण्डार भर लिए हैं। नाम-धन के बिना अन्य सभी धन विष रूप समझो। मनुष्य अभिमान में आकर माया के मोह की अग्नि में ही जलता रहता है॥१॥ गुरु के माध्यम से कोई विरला ही हरि-रस को चखता है। वह दिन-रात सदैव आनंद में रहता है और पूर्ण भाग्य से ही हरि-नाम की प्राप्ति होती है॥ रहाउ॥ यह ब्रह्म-शब्द रूपी दीपक आकाश, पाताल एवं पृथ्वी-इन तीनों लोकों में ज्ञान रूपी प्रकाश कर रहा है। जो मनुष्य इस को चखता है, वह पावन हो जाता है। यह पावन नाम मन की अहंकार रूपी मैल को स्वच्छ कर देता है। भगवान की सच्ची भक्ति से मनुष्य सदैव ही सुखी रहता है॥२॥ जिसने हरि-रस को चख लिया है, वह हरि का सेवक बन गया है। उसे सदैव ही हर्ष बना रहता है और उसे कभी कोई चिन्ता नही होती। वह स्वयं माया के बन्धनों से मुक्त हो जाता है और दूसरों को भी मुक्त करवा लेता है। वह हरि-नाम का भजन करता है और हरि से ही सुख प्राप्त करता है॥३॥ गुरु के बिना सारी दुनिया दुखी हुई विलाप करती रहती है। वह रात-दिन

तृष्णा अग्नि में जलती रहती है और उसे शांति प्राप्त नहीं होती। यद्यपि गुरु मिल जाए तो समस्त तृष्णा मिट जाती है। हे नानक! नाम के द्वारा ही सुख एवं शांति की प्राप्ति होती है॥ ४॥ २॥

धनासरी महला ३ ॥ सदा धनु अंतरि नामु समाले ॥ जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ॥ मुकति पदारथु तिन कउ पाए ॥ हरि कै नामि रते लिव लाए ॥ १ ॥ गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥ अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ ॥ सांति सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥ हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥ मूलहु भुला जनमु गवाए ॥ २ ॥ गुर ते साति सहज सुखु बाणी ॥ सेवा साची नामि समाणी ॥ सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥ साच नामि वडिआई पाए ॥ ३ ॥ आपे करता जुगि जुगि सोइ ॥ नदरि करे मेलावा होइ ॥ गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए ॥ नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस परमात्मा ने समस्त जीवों का पालन-पोषण किया है, जीव उसका नाम-सिमरन करते रहते हैं और यह नाम-धन सदैव जीव के हृदय में बसता है। जो मनुष्य हरि के नाम में लीन रहते और उसमें ही ध्यान लगाकर रखते हैं, प्रभु मुक्ति पदार्थ उनके दामन में ही डालता है॥१॥ प्रत्येक मनुष्य गुरु की सेवा द्वारा हरि-नाम धन को प्राप्त करता है। जो हरि-नाम का ध्यान करता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है॥ रहाउ॥ यह हरि-प्रेम का गहरा रंग प्रभु-पति की उस जीव-स्त्री पर ही चढ़ता है, जो शांति को अपना श्रृंगार बनाती है। कोई भी मनुष्य अहंकार में प्रभु को नहीं पा सकता और वह अपने मूल प्रभु को भुला कर अपना जन्म व्यर्थ गंवा लेता है॥ २॥ शांति, आनंद एवं सुख देने वाली वाणी गुरु से ही प्राप्त होती है। गुरु की सच्ची सेवा करने से मन नाम में लीन हो जाता है। जिस व्यक्ति को शब्द की उपलब्धि हो जाती है, वह सदैव अपने प्रियतम प्रभु का ही ध्यान करता रहता है। इस तरह वह सत्य-नाम द्वारा प्रभु के दरबार पर शोभा प्राप्त करता है॥ ३॥ वह कर्त्ता-परमेश्वर युग-युगांतरों में विद्यमान है। यदि वह अपनी करुणा-दृष्टि करे तो जीव का उससे मिलन होता है। गुरुवाणी के द्वारा मनुष्य प्रभु को अपने मन में बसा लेता है। हे नानक! जो व्यक्ति सत्य के प्रेम में मग्न हो जाते हैं, प्रभु स्वयं ही उन्हें अपने साथ मिला लेता है॥ ४॥ ३॥

धनासरी महला ३ तीजा ॥ जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥ दूजै भाइ सभ परज विगोई ॥ मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥ १ ॥ गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ ॥ अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ॥ राम नामि राते भगति द्रिड़ाई ॥ भगति करे जनु वडिआई पाए ॥ साचि रते सुख सहजि समाए ॥ २ ॥ साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥ गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥ साची रासि साचा वापारु ॥ सो धंनु पुरखु जिसु नामि पिआरु ॥ ३ ॥ तिनि प्रभि साचे इकि सचि लाए ॥ ऊतम बाणी सबदु सुणाए ॥ प्रभ साचे की साची कार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ४ ॥

यह जगत अपवित्र है और जीव भी अपवित्र होते जाते हैं। द्वैतभाव में मुग्ध हुए वे जन्मते एवं मरते रहते हैं। द्वैतभाव में फँस कर सारी दुनिया ही बर्बाद हो गई है। मनमुख व्यक्ति चोटें खाता है और अपनी इज्जत गंवा लेता है॥१॥ गुरु की सेवा से मनुष्य निर्मल हो जाता है, उसके मन में नाम का निवास हो जाता है और उसकी इज्जत उत्तम हो जाती है॥ रहाउ॥ गुरुमुख व्यक्ति भगवान की शरण में आने से भवसागर से पार हो गए हैं। राम के नाम में मग्न हुए वह मन में

दृढ़ता से भक्ति करते हैं। भक्तजन तो भगवान की भक्ति करके ही यश प्राप्त करते हैं। वे सत्य में रत रहकर सहज सुख में ही समा जाते हैं॥ २॥ सत्य-नाम का ग्राहक किसी विरले को ही जानो। गुरु के शब्द द्वारा अपने आप की पहचान कर लो। हरि-नाम की राशि सत्य है और इसका व्यापार भी सत्य है। वह पुरुष धन्य है, जो प्रभु के नाम से प्रेम करता है॥ ३॥ उस सच्चे प्रभु ने किसी को सत्य नाम में लगाया हुआ है और वह उत्तम वाणी एवं शब्द ही सुनाता है। उस सच्चे प्रभु की आराधना भी सत्य है। हे नानक ! प्रभु का नाम मनुष्य को सुन्दर बनाने वाला है॥ ४॥ ४॥

धनासरी महला ३ ॥ जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥ तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ ॥ साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥ साचै सबदि वसै मनि आइ ॥ १ ॥ गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥ सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कूड़ु कुसतु त्रिसना अगनि बुझाए ॥ अंतरि सांति सहजि सुखु पाए ॥ गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइ ॥ साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥ मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥ सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥ हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥ ३ ॥ किस नो कहीऐ दाता इकु सोइ ॥ किरपा करे सबदि मिलावा होइ ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचा भावा ॥ ४ ॥ ५ ॥

मैं तो उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो भगवान का सिमरन करते हैं। उनके हृदय एवं मुख में हर समय सत्य-नाम ही रहता है अर्थात् वे हृदय और मुँह से सत्य-नाम ही जपते रहते हैं। परम-सत्य प्रभु का चिंतन करने से दुःख दूर हो जाता है और सत्य-नाम द्वारा प्रभु मन में आकर बस जाता है॥ १॥ गुरुवाणी सुनकर मनुष्य अपने मन की अहंकार रूपी मैल दूर कर लेता है और हरि-नाम को सहज ही अपने मन में बसा लेता है॥ १॥ रहाउ॥ वह झूठ, छल-कपट एवं तृष्णा रूपी अग्नि को बुझा लेता है और अपने मन में शांति एवं सहज सुख को पा लेता है। जो मनुष्य गुरु की रज़ा अनुसार आचरण करता है, उसके मन में से अहंत्व दूर हो जाता है। वह भगवान का गुणगान करता रहता है और वह सत्य को प्राप्त कर लेता है॥ २॥ ज्ञानहीन मनमुख की तमाम आयु दुःख में ही व्यतीत हो गई है, चूंकि न तो उसने शब्द के रहस्य को समझा है और न ही वाणी को जाना है। यदि वह सतगुरु से साक्षात्कार कर ले तो उसे सुख की प्राप्ति हो जाए। चूंकि गुरु उसके मन में से अहंकार को खत्म कर देता है॥३॥ जब एक ईश्वर ही सबका दाता है तो उसके अलावा किससे प्रार्थना करूँ? यदि वह मुझ पर अपनी कृपा कर दे तो मेरा शब्द द्वारा उससे मिलाप हो जाए। फिर मैं अपने सच्चे प्रियतम को मिलकर उसका स्तुतिगान करूँ। हे नानक ! मैं चाहता हूँ कि मैं सत्यवादी बनकर उस परम-सत्य प्रभु को अच्छा लगूँ॥ ४॥ ५॥

धनासरी महला ३ ॥ मनु मरै धातु मरि जाइ ॥ बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥ इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिस नो बखसे हरि दे वडिआई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ अचरु चरै ता निरमलु होई ॥ गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजै विकार ॥ ३ ॥ जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥

जब मन विकारों की तरफ से समाप्त हो जाता है तो मोह-ममता भी मिट जाती है। मन को वशीभूत किए बिना भगवान कैसे पाया जा सकता है? कोई विरला व्यक्ति ही इस मन को मारने

की औषधि जानता है। केवल वही व्यक्ति जानता है कि मन शब्द द्वारा ही विषय-विकारों की ओर से मरता है॥१॥ जिसे भगवान क्षमा कर देता है, उसे ही शोभा प्रदान करता है, गुरु की कृपा से हरि-नाम मन में आकर बस जाता है॥ रहाउ॥ जब व्यक्ति गुरुमुख बनकर शुभ कर्म करता है तो उसे इस मन की सूझ आती है। मन तो अहंकार रूपी मदिरा के नशे में मुग्ध होकर हाथी जैसा अहंकारी हो गया है। लेकिन गुरु नाम रूपी अंकुश लगाकर इस नाम विहीन मन को पुनः जीवित करने वाला है भाव नाम-सिमरन में लगाने वाला है॥२॥ कोई विरला आदमी ही इस असाध्य मन को अपने वश में करता है। यह मन चंचल है, यदि कोई इसे अचल कर दे तो यह पवित्र हो जाता है। जब गुरुमुख ने अपना यह मन अपने नियंत्रण में कर लिया तो इस मन ने स्वयं में विद्यमान अहंत्व एवं विकार को त्याग दिया॥३॥ जिन्हें प्रारम्भ से ही परमेश्वर ने गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लिया वे कदापि जुदा नहीं होते और उसके शब्द में लीन रहते हैं। अपनी कला को प्रभु स्वयं ही जानता है। हे नानक! गुरुमुख ही नाम के भेद को पहचानता है॥ ४॥ ६॥

धनासरी महला ३ ॥ काचा धनु संचहि मूरख गावार ॥ मनमुख भूले अंध गावार ॥ बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ॥ ना साथि जाइ न परापति होइ ॥ १ ॥ साचा धनु गुरमती पाए ॥ काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥ भवजलि डूबे न उरवारि न पारि ॥ सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥ २ ॥ चहु जुग महि अंम्रितु साची बाणी ॥ पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥ सिध साधिक तरसहि सभि लोइ ॥ पूरै भागि परापति होइ ॥ ३ ॥ सभु किछु साचा साचा है सोइ ॥ ऊतम ब्रहमु पछाणै कोइ ॥ सचु साचा सचु आपि द्रिड़ाए ॥ नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥ ४ ॥ ७ ॥

मूर्ख एवं गंवार मनुष्य नाशवान् धन को संचित करते रहते हैं। ऐसे ज्ञानहीन एवं गंवार मनमुख भटके हुए हैं। झूठा धन सदैव ही दुःख देता है, न यह व्यक्ति के साथ जाता है और न ही इससे कुछ उपलब्धि होती है॥१॥ सच्चा धन तो गुरु की शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होता है और झूठा नाशवान् धन सदैव आता एवं जाता रहता है॥ रहाउ॥ मनमुखी जीव तो भटके हुए ही हैं और वे सभी गंवार मरते ही रहते हैं। वे भवसागर में डूब जाते हैं, वे न तो इस पार लगते हैं और न ही उस पार। पूर्ण भाग्य से जिनकी गुरु से भेंट हो जाती है, वे सत्य-नाम में मग्न हुए दिन-रात वैराग्यवान रहते हैं॥२॥ चारों युगों में सच्ची वाणी ही अमृत समान है और पूर्ण भाग्य से ही जीव हरि-नाम में लीन होता है। सिद्ध, साधक एवं सभी लोग परमात्मा के नाम के लिए तरसते रहते हैं, किन्तु अहोभाग्य से ही नाम की उपलब्धि होती है॥ ३॥ एक ईश्वर ही सत्य है और सबकुछ उस सत्य का ही रूप है। वह ब्रह्म सर्वश्रेष्ठ है परन्तु कोई विरला मनुष्य ही उसे पहचानता है। परम-सत्य परमेश्वर स्वयं ही अपना नाम मनुष्य को दृढ़ करवाता है। हे नानक! वह स्वयं सबको देखता रहता है और स्वयं ही मनुष्य को सत्य-नाम में लगाता है॥४॥७॥

धनासरी महला ३ ॥ नावै की कीमति मिति कही न जाइ ॥ से जन धंनु जिन इक नामि लिव लाइ ॥ गुरमति साची साचा वीचारु ॥ आपे बखसे दे वीचारु ॥ १ ॥ हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए ॥ कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम मूरख मूरख मन माहि ॥ हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥ गुर परसादी हंउमै जाइ ॥ आपे बखसे लए मिलाइ ॥ २ ॥ बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥ अहंकारि डूबै न पावै मानु ॥ आपु छोडि सदा सुखु होई ॥ गुरमति सालाही सचु

सोई ॥ ३ ॥ आपे साजे करता सोइ ॥ तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ जिसु सचि लाए सोई लागै ॥ नानक नामि सदा सुखु आगै ॥ ४ ॥ ८ ॥

परमात्मा के नाम का मूल्य एवं विस्तार व्यक्त नहीं किया जा सकता। वे भक्तजन बड़े खुशनसीब हैं, जिन्होंने एक नाम में अपनी सुरति लगाई है। गुरु की मति सत्य है और उसका ज्ञान भी सत्य है। मनुष्य को ज्ञान प्रदान करके वह स्वयं ही उसे क्षमा कर देता है॥१॥ हरि-नाम एक अद्‌भुत अनहद ध्वनि है और प्रभु स्वयं ही जीवों को यह नाम सुनाता है। कलियुग के समय में कोई गुरुमुख ही यह नाम प्राप्त करता है॥१॥ रहाउ॥ हम (जीव) मूर्ख हैं और मूर्खता ही हमारे मन मे विद्यमान है। हम सभी कार्य अहंकार में ही करते हैं लेकिन गुरु की कृपा से ही मन से अहंकार दूर होता है। वह प्रभु स्वयं ही क्षमा करके जीव को अपने साथ मिला लेता है॥ २॥ विषय-विकारों का धन मनुष्य के मन में बहुत अभिमान पैदा कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप वह अहंकार में डूब जाता है और दरगाह में सम्मान प्राप्त नहीं करता। लेकिन अपने आत्माभिमान को छोड़कर वह सदैव सुखी रहता है। गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य सत्य का ही स्तुतिगान करता है॥ ३॥ वह कर्त्ता-परमेश्वर स्वयं ही सबका रचयिता है एवं उसके सिवाय विश्व में दूसरा कोई बड़ा नहीं। जिसे प्रभु स्वयं सत्य-नाम में लगाता है, वही व्यक्ति सत्य-नाम में लगता है। हे नानक! नाम द्वारा प्राणी आगे परलोक में सदैव सुखी रहता है॥४॥८॥

रागु धनासिरी महला ३ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥ होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥ १ ॥ हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥ होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥ २ ॥ भनति नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ ॥ साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥ ३ ॥ १ ॥ ९ ॥

हे ईश्वर! मैं तेरे दरबार पर भिक्षा माँगने वाला भिखारी हूँ और तू खुद ही अपना स्वामी है और सबको देने वाला है। हे सर्वेश्वर! मुझ पर दयालु हो जाओ और मुझ भिक्षुक को अपना नाम प्रदान कीजिए ताकि मैं सदैव ही तेरे प्रेम-रंग में मग्न रहूँ॥१॥ हे सच्चे परमेश्वर! मैं तेरे नाम पर कुर्बान जाता हूँ। एक तू ही इस जगत, माया एवं सब जीवों को पैदा करने वाला है और तेरे सिवाय दूसरा कोई सर्वशक्तिमान नहीं है॥१॥ रहाउ॥ हे परमपिता! मुझ कृपण को जन्म-मरण के बहुत चक्र पड़ चुके हैं, अब मुझ पर कुछ कृपा करो। मुझ पर दयालु हो जाओ एवं मुझे अपने दर्शन दीजिए, मुझ पर केवल ऐसी मेहर प्रदान करो॥ २॥ नानक का कथन है कि भ्रम के किवाड़ (परदे) खुल गए हैं और गुरु की कृपा से सत्य को जान लिया है। मेरे मन में प्रभु से सच्ची प्रीति लग गई है और मेरा मन गुरु के साथ संतुष्ट हो गया है॥३॥१॥९॥

धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥ हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥ १ ॥ हरि गुण कहि न सकउ बनवारी ॥ हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी ॥ जिउ

कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥ २ ॥ हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥ हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥ ३ ॥ हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरंपर पुरख अपारी ॥ जन कउ क्रिपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥ ४ ॥ १ ॥

हे भगवान् ! जो सन्त एवं भक्तजन तेरी आराधना करते हैं, तू उनके सभी पाप दूर कर देता हैं। हे मेरे स्वामी ! मुझ पर अपनी कृपा करो और मुझे उस सुसंगति में रखो, जो तुझे प्यारी लगती है॥१॥ हे परमात्मा ! मैं तेरी महिमा कथन नहीं कर सकता। हम पापी पत्थर की भांति जल में डूब रहे हैं, अपनी कृपा करके हम पापी पत्थरों का उद्धार कर दीजिए॥ रहाउ॥ मैंने अपने मन को जन्म-जन्मांतरों की लगी हुई विष रूपी माया की जंग साधसंगत में सम्मिलित होकर यूं उतार दी है, जैसे स्वर्ण को अग्नि में तपा कर उसकी सारी मैल को काटा एवं काट कर उतार दिया जाता है॥२॥ मैं दिन-रात हरि-नाम का जाप जपता रहता हूँ और हरि-नाम जपकर हरि को अपने हृदय में बसाता हूँ। परमात्मा का 'हरि-हरि' नाम इस जगत में पूर्ण औषधि है और हरि-नाम का भजन करके मैंने अपने अहंकार को मार दिया है॥३॥ हरि-परमेश्वर अगम्य, अगाध ज्ञान वाला, अपरम्पर सर्वशक्तिमान एवं अनन्त है। हे जगत के जीवन ! अपने दास पर कृपा करो और दास नानक की प्रतिष्ठा कायम रखो॥४॥१॥

धनासरी महला ४ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥ अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥ १ ॥ हरि कै नामि रता बैरागी ॥ हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना की जाति हरि सुआमी तुम्ह ठाकुर हम सांगी ॥ जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥ २ ॥ किआ हम किरम नान्ह निक कीरे तुम्ह वड पुरख वडागी ॥ तुम्हरी गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥ ३ ॥ हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥ नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥ ४ ॥ २ ॥

हरि के संतजनों ने हरि का ही जाप किया है, जिससे उनका दुःख, भ्रम एवं भय दूर हो गया है। उसने स्वयं ही अपनी आराधना उनसे करवाई है और गुरु के उपदेश द्वारा मन में सत्य का प्रकाश हो गया है॥१॥ जो हरि-नाम में मग्न है, वही सच्चा वैरागी है। उसने हरि की हरि-कथा सुनी है, जो उसके मन को अच्छी लगी है और गुरु के उपदेश द्वारा उसकी भगवान में सुरति लग गई है॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी हरि ! तू स्वयं ही संतजनों की जाति है। तू मेरा मालिक है और मैं तेरी कठपुतली हूँ। हे स्वामी ! तुम जैसी मति देते हो, हम वैसे ही वचन बोलते हैं॥२॥ हे प्रभु ! हम जीव क्या हैं ? नन्हे से कृमि एवं नन्हे से कीड़े हैं और तुम महान् महापुरुष हो। मैं तेरी गति एवं तेरा विस्तार कथन नहीं कर सकता। फिर मैं भाग्यहीन तुझे कैसे मिल सकता हूँ ?॥३॥ हे मेरे हरि-प्रभु स्वामी ! मुझ पर कृपा करो, ताकि मैं तेरी सेवा में तल्लीन हो जाऊँ। नानक विनती करता है कि हे प्रभु ! मुझे अपने दासों का दास बना लो चूंकि मैं सदैव ही हरि-कथा का कथन करता रहूँ॥४॥२॥

धनासरी महला ४ ॥ हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥ जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी ॥ १ ॥ हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥ हरि हरि कथा सुनहु

इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥ २ ॥ हरि हरि सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से त्रिपतानी ॥ हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ॥ ३ ॥ जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥ तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥ ४ ॥ ३ ॥

हरि का संत सतगुरु सत्यपुरुष है, जो हरि की वाणी बोलता रहता है। जो कोई भी हरि की वाणी का स्वयं कथन करता एवं सुनता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। मैं तो उस महापुरुष गुरु पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥१॥ हे हरि के संतो ! अपने कानों से हरि का यश सुनो। यदि तुम एक निमेष एवं पल भर के लिए भी हरि-कथा सुन लो तुम्हारे सभी किल्विष पाप नाश हो जाएँगे॥१॥ रहाउ॥ जिन्होंने ऐसा संत एवं साधु पा लिया है, वे महापुरुष बन गए हैं। हे मेरे प्रभु स्वामी ! मैं तो उन संतजनों की चरण-धूलि की कामना करता हूँ और मुझे तो तुझे मिलने की तीव्र लालसा लगी हुई है॥२॥ मेरा स्वामी हरि-प्रभु फलदायक वृक्ष है। जिसने उसका जाप किया है, वह तृप्त हो गया है। वह हरिनामामृत का पान करके तृप्त हो गया है और उसकी तमाम भूख मिट गई है॥३॥ जिनके बड़े उच्चतम भाग्य हैं, उन्होंने ही हरि का जाप जपा है। नानक का कथन है कि हे मेरे स्वामी हरि-प्रभु ! मुझे उनकी संगति में मिला दो और मुझे दासों का दास बना दीजिए॥४॥३॥

धनासरी महला ४ ॥ हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥ १ ॥ गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥ २ ॥ हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥ ३ ॥ हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥ ४ ॥ ४ ॥

हम अन्धे ज्ञानहीन विष रूपी विकारों में मग्न रहते हैं, फिर हम गुरु के मार्ग पर कैसे चल सकते हैं ? सुखों का दाता सतगुरु हम पर दया करे तो हमें अपने साथ मिला ले। हे गुरसिक्ख मित्रो ! गुरु के मार्ग पर चलो, जो कुछ गुरु कहता है, उसे भला समझ कर स्वीकार करो। हरि की कथा बड़ी अद्भुत है॥ १॥ रहाउ॥ हे हरि के संतजनो एवं भाइयो ! शीघ्र ही गुरु की सेवा में जुट जाओ। गुरु की सेवा करके यात्रा हेतु हरि-नाम रूपी व्यय अपने साथ ले लो, चूंकि पता नहीं आज अथवा कल को ही दुनिया से चल देना है॥ २॥ हे हरि के संतजनो ! हरि का जाप जपो; हरि का संत तो उसकी इच्छानुसार ही चलता है। जिन्होंने हरि का जाप किया है, वे हरि का ही रूप हो गए हैं और लीलाएँ करने वाला विनोदी प्रभु उन्हें मिल गया है॥ ३॥ मुझे तो हरि-नाम का जाप जपने की तीव्र लालसा लगी हुई है। हे बनवारी ! मुझ पर कृपा करो। नानक विनती करता है कि हे हरि ! मुझे साधसंगत में मिला दो, मैं तो संतजनों के चरण-धूलि की कामना करता हूँ॥ ४॥ ४॥

धनासरी महला ४ ॥ हरि हरि बूंद भए हरि सुआमी हम चात्रिक बिलल बिललाती ॥ हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥ १ ॥ हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥ जिउ

बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥ तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥ २ ॥ हरि के संत जना हरि जपिओ गुर रंगि चलूलै राती ॥ हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम पाती ॥ ३ ॥ आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥ नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरे स्वामी हरि ! तेरा हरि-नाम स्वाति-बूँद बन गया है और मैं चातक इसका पान करने के लिए तड़प रहा हूँ। हे हरि-प्रभु ! मुझ पर अपनी कृपा करो और एक क्षण भर के लिए मेरे मुँह में हरि-नाम रूपी स्वाति-बूँद डाल दो॥१॥ हे भाई ! उस हरि के बिना मैं एक क्षण भर के लिए भी नहीं रह सकता। जैसे नशे के बिना नशा करने वाला व्यक्ति मर जाता है, वैसे ही मैं हरि के बिना मर जाता हूँ॥ रहाउ॥ हे परमेश्वर ! तुम सागर की भांति अत्यन्त गहरे हो और मैं एक क्षण भर के लिए भी तेरा अन्त नहीं पा सकता। हे मेरे स्वामी ! तुम परे से परे और अपरंपार हो, अपनी गति एवं विस्तार तुम स्वयं ही जानते हो॥ २॥ हरि के संतजनों ने हरि का जाप किया है और वे गुरु के प्रेम के गहरे लाल रंग में मग्न हो गए हैं। हरि की भक्ति से उनकी अत्यंत शोभा हो गई है और हरि का जाप करने से उन्हें उत्तम ख्याति मिली है॥ ३॥ परमेश्वर स्वयं ही मालिक है, स्वयं ही सेवक है और वह स्वयं ही भक्ति की विधि बनाता है। हे हरि ! नानक तो तेरी ही शरण में आया है, इसलिए अपने भक्त की लाज रखो॥ ४॥ ५॥

धनासरी महला ४ ॥ कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥ हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥ १ ॥ हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥ हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥ रहाउ ॥ हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥ लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥ २ ॥ हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥ दिनीअरु सूरु त्रिसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदाकी ॥ ३ ॥ तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥ जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजे करि दासनि दास दसाकी ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे भाई ! तुम मुझे कलियुग का धर्म बताओ, मैं माया के बन्धनों से मुक्त होने का इच्छुक हूँ, फिर मैं कैसे छूट सकता हूँ ? हरि का जाप नाव है और हरि-नाम ही बेड़ा है; जिसने भी हरि का जाप किया है, वह तैराक बनकर भवसागर में से पार हो गया है॥ १॥ हे परमेश्वर ! अपने दास की लाज रखो; मुझ से अपने नाम का जाप करवाओ। मैं तो तुझसे एक तेरी भक्ति की कामना ही करता हूँ॥ रहाउ॥ जिन्होंने हरि की वाणी का जाप किया है, वही वास्तव में हरि के सेवक हैं और वे हरि के प्रिय हैं। चित्र-गुप्त ने उनके कर्मों का जो लेखा लिखा था, यमराज का वह शेष सारा लेखा ही मिट गया है॥ २॥ हरि के संतों ने साधुजनों की संगत में शामिल होकर अपने मन में हरि-नाम का ही जाप किया है। हरि-नाम ने उनके हृदय में से सूर्य रूपी तृष्णा की अग्नि बुझा दी है और उनके हृदय में शीतल रूप चांदनी वाला चांद उदय हो गया है॥३॥ हे प्रभु ! तुम ही विश्व में बड़े महापुरुष एवं अगम्य-अगोचर सर्वव्यापी हो। हे प्रभु ! नानक पर कृपा करो और उसे अपने दासों का दास बना लो॥ ४॥ ६॥

धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

उर धारि बीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नामु जपीने ॥ अद्रिसटु अगोचरु अपरंपर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥ १ ॥ राम पारस चंदन हम कासट लोसट ॥ हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥ जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

मन को मोहित करने वाले उस राम को अपने हृदय में बसाकर उसका चिन्तन करो और उसका ही नाम जपो। जगत का स्वामी प्रभु अदृष्य, अगोचर एवं अपरंपार है और पूर्ण गुरु ने उसे मेरे हृदय में प्रगट कर दिया है॥ १॥ राम तो पारस एवं चन्दन है लेकिन मैं एक लकड़ी एवं लोहा हूँ। जब उस हरि के सत्संग द्वारा मेरा उससे मिलाप हो गया तो उसने मुझे स्वर्ण एवं चन्दन बना दिया॥ १॥ रहाउ॥ कई विद्वान नौ प्रकार के व्याकरण एवं छः शास्त्र मौखिक बोलते रहते हैं परन्तु मेरा प्रभु इससे प्रसन्न नहीं होता। नानक का कथन है कि सदैव ही अपने हृदय में हरि का ध्यान-मनन करते रहो, इस तरह मेरा प्रभु प्रसन्न होता है॥ २॥ १॥ ७॥

धनासरी महला ४ ॥ गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥ हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥ १ ॥ जपि मन नामु हरी होहि सरब सुखी ॥ हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥ हरि क्रिपा निधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥ बहु चिंत विसारी हरि नामु उरि धारी नानक हरि भए है सखाई ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥

भगवान का गुणगान करो; इस ढंग से उसे पा लो, गुरु की सेवा करके इस तरह हरि-नाम का ध्यान-मनन करते रहो। इस तरह हरि के दरबार में अच्छे लगोगे, फिर तुम दुबारा जन्म-मरण के चक्र में नही आओगे और उस परम-सत्य की ज्योति में ही विलीन हो जाओगे॥ १॥ हे मेरे मन! हरि-नाम का जाप कर, फिर तू सर्वत्र सुखी रहेगा। हरि का यश सभी धर्म-कर्मों से उत्तम एवं उनसे श्रेष्ठ है और हरि की सेवा तुझे यम से मुक्त करवा देगी॥ रहाउ॥ जब कृपानिधि हरि ने मुझ पर कृपा की और गुरु ने मुझे हरि-भक्ति की देन प्रदान की तो हरि से मेरी प्रीति बन गई। हे नानक! मैंने अपनी सारी चिंता भुला कर अपने हृदय में हरि-नाम धारण कर लिया है और अब हरि मेरा मित्र बन गया है॥ २॥ २॥ ८॥

धनासरी महला ४ ॥ हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी ॥ मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥ १ ॥ मनि जपीऐ हरि जगदीस ॥ मिलि संगति साधू मीत ॥ सदा अनंदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥ हरि हरि करी द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी ॥ जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिओ है सरणि तुमारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ९ ॥

हरि-नाम पढ़ो,'हरि-हरि' लिखो, हरि का जाप करो और हरि का ही गुणगान करो, क्योंकि एक वही भवसागर से पार करवाने वाला है। अपने मन-वचन, हृदय में उसका ध्यान-मनन करो, प्रभु संतुष्ट हो जाता है, इसलिए इस तरह नाम ही जपते रहो॥ १॥ हे मेरे मित्र! साधु-महापुरुषों की संगत में मिलकर मन में परमात्मा का जाप करते रहना चाहिए। उस बनवारी प्रभु का कीर्ति-गान

करो, उससे सदैव दिन-रात आनंद बना रहता है॥ रहाउ॥ जब भगवान ने मुझ पर अपनी करुणा-दृष्टि की तो मेरे मन में उल्लास उत्पन्न हो गया। हरि-नाम का जाप करने से मेरी मुक्ति हो गई। हे मेरे स्वामी हरि! नानक की लाज रखो, मैं तो तुम्हारी शरण में आ गया हूँ॥ २॥ ३॥ ९॥

धनासरी महला ४ ॥ चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥ गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥ १ ॥ जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥ सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥ दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ॥ २ ॥ ४ ॥ १० ॥

हे परमेश्वर! चौरासी सिद्ध, बुद्ध, तेतीस करोड़ देवते एवं मुनिजन सभी तेरे नाम की कामना करते हैं, परन्तु इन में से कोई विरला ही गुरु की कृपा से नाम की देन प्राप्त करता है, जिसके माथे पर प्रारम्भ से ही प्रभु-प्रेम का लेख लिखा होता है॥ १॥ हे मेरे मन! राम नाम का जाप कर, चूंकि हरि का यशोगान सर्वोत्तम कार्य है। हे मेरे स्वामी! जो तेरा यश गाते एवं सुनते हैं, मैं उन पर सदैव ही बलिहारी जाता हूँ॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी हरि! तू अपनी शरण में आए जीवों का पालन-पोषण करने वाला है। जो तुम मुझे देते हो, मैं वही प्राप्त करता हूँ। हे दीनदयालु! अपनी कृपा करके नानक को अपने नाम की देन दीजिए, क्योंकि उसे तो हरि-सिमरन का ही अत्यंत चाव है॥ २॥ ४॥ १०॥

धनासरी महला ४ ॥ सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥ गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥ १ ॥ बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥ जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि भानी ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥

सभी सिक्ख-सेवक पूजा करने के लिए गुरु की संगति में आते हैं और वे सभी-मिलकर हरि की उत्तम वाणी ही गाते हैं। परन्तु वाणी द्वारा गाया एवं सुना हुआ यश प्रभु केवल उनका ही परवान करता है, जिन्होंने सतगुरु की आज्ञा को पूर्ण सत्य समझकर स्वीकार कर लिया है॥१॥ हे भाई! हरि का कीर्ति-गान करो, चूंकि भवसागर में से पार करवाने हेतु हरि ही पावन तीर्थ स्थल है। हे संतजनों! हरि के दरबार पर उनकी बात को उत्तम माना जाता है, जिन्होंने हरि-कथा की महिमा को समझा है॥रहाउ॥ वह हरि-प्रभु स्वयं ही गुरु है और स्वयं ही चेला है और स्वयं ही अद्‌भुत कौतुक करने वाला है। हे नानक! हरि को वही मनुष्य मिलता है, जिसे वह स्वयं ही अपने साथ मिलाता है और वही उसको भाता है, जो प्रभु-सिमरन के सिवाय अन्य सबकुछ त्याग देता है॥२॥५॥११॥

धनासरी महला ४ ॥ इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥ सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥ १ ॥ जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥ हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना ॥ जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥

जिस परमात्मा के वश में कामधेनु है, वह अपने भक्तों की हर इच्छाएँ पूरी करने वाला है और सर्व सुख प्रदान करने वाला है। हे मेरी आत्मा ! सो ऐसे प्रभु का ध्यान-मनन करना चाहिए, तो ही तुझे सर्व सुख प्राप्त होगा॥१॥ हे मेरे मन ! परमात्मा का नाम सदैव ही सत्य है इसलिए सत्य-नाम का ही जाप करो। यदि निरंजन परमपुरुष परमात्मा का नित्य ही ध्यान-मनन किया जाए तो इहलोक एवं परलोक में मुख उज्ज्वल होता है, अर्थात् प्रशंसा प्राप्त होती है॥ रहाउ॥ जहाँ भी भगवान का सिमरन हुआ है, वहाँ से सब दुःख-तकलीफें दूर हो गई हैं। भगवान का भजन-सिमरन तो अहोभाग्य से ही होता है। गुरु ने नानक को यह मति दी है कि परमात्मा का जाप करने से ही भवसागर से पार हुआ जाता है॥२॥६॥१२॥

धनासरी महला ४ ॥ मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥ हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥ साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ ॥ झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥ १ ॥ सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥ सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥ २ ॥ सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ सभि जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभि तुझ ही माहि समाहि ॥ ३ ॥ सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभि तुझहि धिआवहि मेरे साह ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥

हे मेरे स्वामी ! मैं तो तेरे दर्शन करके ही सुखी होता हूँ। मेरी वेदना तू ही जानता है, अन्य कोई क्या जान सकता है॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी ! तू ही सच्चा मालिक है, सदैव सत्य है और जो कुछ तू करता है, वह सब सत्य है। हे स्वामी ! जब तेरे सिवाय दूसरा कोई है ही नहीं, फिर झूठा किसे कहा जाए ?॥ १॥ सब में तू ही समाया हुआ है और सभी तुझे दिन-रात स्मरण करते रहते हैं। हे स्वामी ! सभी तुझ से ही दान माँगते हैं और एक तू ही सब को देता रहता है॥ २॥ हे मेरे मालिक ! सभी जीव तेरे हुक्म में हैं और कोई भी तेरे हुक्म से बाहर नहीं है। सभी जीव तेरे हैं, तू सबका स्वामी है और सभी तुझ में ही विलीन हो जाते हैं॥ ३॥ हे मेरे प्यारे स्वामी ! तू सबकी आशा है और सभी जीव तेरा ध्यान-मनन करते रहते हैं। हे प्यारे ! जैसे तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही तू मुझे रख। हे नानक के पातशाह ! तू सदैव सत्य है॥ ४॥ ७॥ १३॥

धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे ॥ कोटि पराध मिटे खिन भीतिर जां गुरमुखि नामु समारे ॥ १ ॥ मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥ दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥ सरब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥ २ ॥ तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥ जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥ ३ ॥ कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥ जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥ ४ ॥ १ ॥

हे निराकार परमात्मा ! तू जीवों का जन्म-मरण का चक्र काटने वाला, सब दुःख नाश करने वाला, सबका मालिक एवं भक्तवत्सल है। यदि कोई गुरु के सान्निध्य में रहकर तेरा नाम-स्मरण करे तो क्षण में उसके करोड़ों अपराध मिट जाते हैं॥ १॥ मेरा मन प्यारे राम से लग गया है।

दीनदयाल प्रभु ने मुझ पर अपनी अपार कृपा की है, जिससे कामादिक शत्रु-काम, क्रोध, लालच, मोह तथा अहंकार मेरे नियंत्रण में कर दिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे परमात्मा! तेरा निवास स्थान अति सुन्दर है, तेरा रूप भी बड़ा सुहावना है और तेरे भक्त तेरे दरबार में बहुत सुन्दर लगते हैं। हे सर्व जीवों के दाता-स्वामी! अपनी कृपा करके मुझे (भवसागर में डूबने से) बचा लो॥ २॥ हे परमेश्वर! तेरा कोई रंग दिखाई नहीं देता, तेरा कोई रूप समझा नहीं जाता। तेरी कुदरत की कौन विचार कर सकता है? हे अगम्य रूप गिरिधारी! तू जल, धरती एवं आकाश में सर्वव्यापी है और तेरे सब भक्तजन तेरी स्तुति करते हैं। हे मुरारि! तू अविनाशी परमपुरुष है। हे मेरे स्वामी! जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही मेरी रक्षा करो क्योंकि नानक ने तो तेरे ही द्वार की शरण ली है॥ ४॥ १॥

धनासरी महला ५ ॥ बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइओ ॥ कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥ १ ॥ अब मन एकस सिउ मोहु कीना ॥ मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर सबदी चीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम हेति कुंचरु लै फांकिओ ओहु पर वसि भइओ बिचारा ॥ नाद हेति सिरु डारिओ कुरंका उस ही हेत बिदारा ॥ २ ॥ देखि कुटंबु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना ॥ अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥ ३ ॥ बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला ॥ कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥ ४ ॥ २ ॥

जल के बिना मछली ने अपने प्राण त्याग दिये हैं, क्योंकि उसने जल के साथ अत्याधिक मोह-लगाव बढ़ाया हुआ था। कमल-फूल के मोह में भँवरा नाश हो गया है, चूंकि उसे फूल में से बाहर निकलने का मार्ग नहीं मिला॥१॥ अब मेरे मन ने एक परमेश्वर से ही अपना मोह-प्यार लगाया हुआ है, वह न तो कभी मरता है, न ही जन्म लेता है, वह तो सदैव मेरे साथ ही रहता है। सतगुरु के शब्द द्वारा मैंने उसे समझ लिया है॥१॥ रहाउ॥ कामवासना में आसक्त होने के कारण हाथी फँस जाता है, वह बेचारा पराए वश में पड़ जाता है अर्थात् पराधीन हो जाता है। नाद में मुग्ध होने के कारण हिरण अपना सिर शिकारी को दे देता है और नाद के मोह में मुग्ध होने के कारण वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है॥ २॥ प्राणी अपना कुटुंब देखकर धन-दौलत के लोभ में फँस जाता है, जिसके कारण वह धन-दौलत में ही लिपटा रहता है। वह सांसारिक पदार्थों को अपना ही समझता है और इन में ही अधिकतर मग्न रहता है। वह यह नहीं समझता कि उसने सब पदार्थों को यहाँ ही छोड़कर दुनिया से चले जाना है॥ ३॥ यह बात भलीभांति समझ लो कि जिस मनुष्य ने भगवान के अलावा किसी अन्य से प्रेम किया है, वह हमेशा ही दुखी रहता है। हे नानक! गुरु ने मुझे यही समझाया है कि भगवान के प्रेम में हमेशा आनंद ही बना रहता है॥ ४॥ २॥

धनासरी मः ५ ॥ करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥ मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ॥ १ ॥ साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥ अहंबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥ २ ॥ सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥ ३ ॥ बिनसिओ ढीठा अंम्रितु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ जलि थलि महीअलि सरब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥

ईश्वर ने कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान किया है और मुझे माया के बन्धनों से मुक्त कर दिया है। उसने मुझे गुरु के चरणों से लगा दिया है और जगत का समूचा ही धँधा मेरे मन से भूल गया है॥१॥ साधसंगत में मिलकर मैंने बेगानी चिंताएँ छोड़ दी हैं। मैंने अपनी अहंबुद्धि, माया का मोह एवं अपनी मन की वासनाओं को गड्ढा खोदकर उसमें दफन कर दिया है॥१॥ रहाउ॥ अब कोई भी मेरा दुश्मन नहीं रहा और न ही मैं किसी का वैरी हूँ। गुरु से मुझे यह सूझ प्राप्त हुई है कि जिसने यह सृष्टि-रचना का प्रसार किया है, वह ब्रह्म सर्वव्यापी है॥२॥ मैंने सभी को अपना मित्र बना लिया है और मैं सबका सज्जन बन गया हूँ। जब मेरे मन की जुदाई का दर्द दूर हो गया तो राजन प्रभु से मेरा मिलन हो गया॥३॥ मेरे मन की निर्लज्जता दूर हो गई है, मन में नामामृत आ बरसा है और गुरु का शब्द मेरे मन को मीठा लगता है। हे नानक ! मैंने जल, धरती एवं आकाश में सर्व निवासी राम को देख लिया है॥ ४॥३॥

धनासरी मः ५ ॥ जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥ महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥ १ ॥ अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥ भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भरम भउ भागा ॥ भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥ २ ॥ चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥ ३ ॥ गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥ ४ ॥ ४ ॥

जब से मुझे साधु (गुरुदेव) के दर्शन हुए हैं, तब से मेरे शुभ दिन आ गए हैं। सदैव ही प्रभु का कीर्तन करने से मेरे मन में महाआनंद बना रहता है और मैंने उस परमपुरुष विधाता को पा लिया है॥१॥ अब मैं अपने मन में राम का यशगान करता रहता हूँ। मैंने पूर्ण सतगुरु को पा लिया है, जिससे प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया है और मेरे मन में सदैव ही सुख बना रहता है॥१॥ रहाउ॥ जब गुणों का भण्डार प्रभु मेरे हृदय में आकर बस गया तो मेरा दुःख, भ्रम एवं भय सभी दूर हो गए। मेरा राम-नाम से प्रेम हो गया है और मुझे अगोचर वस्तु प्राप्त हो गई है॥२॥ मैं सब चिंताओं एवं सब सोचों से रहित हो गया हूँ अर्थात् अब मुझे कोई चिन्ता एवं सोच नहीं रही, मेरे मन में से शोक, लोभ एवं मोह थक चुका है अर्थात् मिट गया है। प्रभु की अपार कृपा से मेरा अहंकार का रोग मिट गया है और यम का मुझे अब कोई भय नहीं॥ ३॥ अब मुझे गुरु की सेवा-चाकरी एवं गुरु की आज्ञा ही अच्छी लगती है। हे नानक ! मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे यम के बिछाए हुए कर्म-जाल से निकाल लिया है॥ ४॥ ४॥

धनासरी महला ५ ॥ जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी ॥ तिन ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥ १ ॥ जीअ की एकै ही पहि मानी ॥ अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी ॥ डिगै न डोलै द्रिड़ु करि रहिओ पूरन होइ त्रिपतानी ॥ २ ॥ ओइ जु बीच हम तुम कछु होते तिन की बात बिलानी ॥ अलंकार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥ ३ ॥ प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥ ४ ॥ ५ ॥

जिस परमात्मा का मुझे तन, मन एवं धन दिया हुआ है, यह सबकुछ उसका ही पैदा किया हुआ है और वही चतुर एवं सर्वज्ञ है। जब उसने मेरा दुःख एवं सुख सुना तो मेरी दशा अच्छी

बन गई॥१॥ मेरे मन की एक प्रार्थना ही परमात्मा के पास स्वीकार हुई है। मैं अन्य बहुत सारे यत्न करता रहा परन्तु मेरे मन ने एक तिल मात्र भी कीमत नहीं समझी॥ रहाउ॥ हरिनामामृत एक अनमोल हीरा है, गुरु ने मुझे यह नाम-मंत्र दिया है। अब मेरा मन विकारों के गड्ढे में नहीं गिरता और न ही इधर-उधर भटकता अपितु दृढ़ रहता है और इसके साथ मेरा मन पूर्णतया तृप्त हो गया है॥२॥ वह जो मेरे तेरे वाली भेदभावना थी, उनकी बात अब मिट गई है। जब स्वर्ण के आभूषण पिघल कर एक थैली बन जाते हैं तो उन आभूषणों को स्वर्ण ही कहा जाता है॥३॥ मेरे मन में प्रभु की ज्योति प्रगट हो गई है और मन में सहज सुख उत्पन्न हो गया है। अब हर जगह मेरी शोभा हो रही है और मन में अनहद शब्द गूंज रहा है। हे नानक! मेरे मन ने दसम द्वार में अपना अटल घर बना लिया है परन्तु उसे बनाने का प्रबन्ध मेरे गुरु ने किया है॥४॥५॥

धनासरी महला ५ ॥ वडे वडे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी ॥ लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥ १ ॥ बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई ॥ जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥ उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥ २ ॥ कामवंत कामी बहु नारी पर ग्रिह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अपार अमोला अंम्रितु एकु निधाना ॥ सूखु सहजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥ ४ ॥ ६ ॥

जगत में बड़े-बड़े राजा एवं भूमिपति हुए हैं, परन्तु उनकी तृष्णाग्नि नहीं बुझी। वे माया के मोह में मस्त हुए उससे लिपटे रहे हैं और उन्हें अपनी आँखों से माया के सिवाय अन्य कुछ दिखाई नहीं दिया॥१॥ विष रूपी माया में किसी को तृप्ति प्राप्त नहीं हुई। जैसे अग्नि ईंधन से तृप्त नहीं होती, वैसे ही भगवान के बिना मन कैसे तृप्त हो सकता है?॥रहाउ॥ मनुष्य प्रतिदिन अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन एवं व्यंजन खाता रहता है, परन्तु उसकी खाने की भूख नहीं मिटती। वह कुत्ते की तरह प्रयास करता रहता है और चारों दिशाओं में माया की खोज करता रहता है॥२॥ कामासक्त हुआ कामुक मनुष्य अनेक नारियों से भोग-विलास करता है परन्तु फिर भी उसका पराए घरों की नारियों की ओर देखना खत्म नहीं होता। वह नित्य-प्रतिदिन पाप कर करके पछताता है और शोक एवं लोभ में सूखता जाता है॥३॥ परमात्मा का नाम बड़ा अपार-अनमोल है और यह एक अमृत रूपी खजाना है। हे नानक! मैंने यह भेद गुरु से समझ लिया है कि नामामृत से संतजनों के हृदय में सहज सुख एवं आनंद बना रहता है॥ ४॥ ६॥

धनासरी मः ५ ॥ लवै न लागन कउ है कछूऐ जा कउ फिरि इहु धावै ॥ जा कउ गुरि दीनो इहु अंम्रितु तिस ही कउ बनि आवै ॥ १ ॥ जा कउ आइओ एकु रसा ॥ खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूंद जिनि पाई ॥ बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥ २ ॥ घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥ जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥ ३ ॥ दीन दैआल सदा किरपाला सरब जीआ प्रतिपाला ॥ ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥ ४ ॥ ७ ॥

जिन पदार्थों के लिए मानव बार-बार इधर-उधर दौड़ता रहता है, इन में से कुछ भी प्रभु-नाम के तुल्य नहीं है। गुरु ने जिस व्यक्ति को यह नामामृत प्रदान किया है, उसे ही इसके मूल्य की समझ आती है॥१॥ जिस जिज्ञासु को प्रभु-नाम का एक स्वाद मिल गया है, उसके चित्त में

खाने-पीने एवं किसी अन्य पदार्थ की भूख नहीं रहती॥ रहाउ॥ जिसे इस नामामृत की एक बूँद भी मिल गई है, उसका मन एवं तन प्रफुल्लित एवं हरा-भरा हो गया है। मैं उसकी प्रशंसा वर्णन नहीं कर सकता और मुझ से उसका मूल्यांकन किया नहीं जा सकता॥ २॥ प्रभु मुझे कठिन परिश्रम करने से नहीं मिला और न ही सेवा करने से मिला, वह तो स्वयं ही आकर अचिन्त ही मुझे मिल गया है। मेरे ठाकुर ने जिस पर अपनी दया की है, उसने ही गुरु-मंत्र को कमाया है॥ ३॥ वह दीनदयाल सदैव कृपा का घर है और सब जीवों का पोषण करता है। हे नानक! परमात्मा जीव के संग ताने-बाने की तरह मिला रहता है और वह जीव का यूं पोषण करता है जैसे एक माता अपने बालक का पोषण करती है॥ ४॥ ७॥

धनासरी महला ५ ॥ बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु द्रिड़ाया ॥ महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥ १ ॥ हमरे प्रान गुपाल गोबिंद ॥ ईहा ऊहा सरब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सिमरनि सरब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥ नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥ २ ॥ सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥ पारब्रहम अपरंपर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥ ३ ॥ सीतल सांति महा सुखु पाइआ संतसंगि रहिओ ओल्हा ॥ हरि धनु संचनु हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा ॥ ४ ॥ ८ ॥

मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने परमात्मा का नाम मेरे हृदय में दृढ़ कर दिया है, जिसने मुझे संसार रूपी महा भयंकर जंगल के घोर अन्धकार में भटकते हुए को सन्मार्ग दिखा दिया है॥१॥ जगतपालक परमेश्वर ही मेरे प्राण है, जिसे लोक एवं परलोक में समस्त पदार्थ देने की हमारी चिन्ता रहती है॥१॥ रहाउ॥ जिसका सिमरन करने से सब निधियाँ, आदर-सत्कार, शोभा एवं पूर्ण सम्मान मिल जाता है, जिसका नाम लेने से करोड़ों पाप नाश हो जाते हैं, सब भक्तजन उस प्रभु की चरण-धूलि की कामना करते हैं॥ २॥ यदि कोई अपने समस्त मनोरथ पूरे करना चाहता है तो उसे एक ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए, जो समस्त पदार्थों का खजाना है। जगत का स्वामी परब्रह्म अपरंपार है, जिसका चिंतन करने से जीव का कल्याण हो जाता है॥ ३॥ मेरा मन शीतल हो गया है और मैंने शांति एवं परम सुख पा लिया है। संतों की संगति में मेरा मान-सम्मान कायम रह गया है। हे नानक! हरि-नाम धन संचित करना एवं हरि-नाम रूपी भोजन खाना मैंने यह अपना स्वादिष्ट पकवान बना लिया है॥४॥८॥

धनासरी महला ५ ॥ जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति ॥ संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिढ़ी बिपरीति ॥ १ ॥ माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ हरिचंदउरी बन हर पात रे इहै तुहारो बीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ अम्रित संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥ २ ॥ उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत ॥ जात अकारथ जनमु पदारथ काच बादरै जीत ॥ ३ ॥ जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत ॥ साधसंगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ॥ ४ ॥ ९ ॥

हे प्राणी! तू ऐसी मर्यादा इस्तेमाल कर रहा है, जिस आचरण के कारण तुझे भगवान के दरबार में शर्मिन्दा होना पड़ेगा। तू संतों की निन्दा करता है और भगवान से विमुख व्यक्ति की पूजा करता है। तूने ऐसी परम्परा ग्रहण कर ली है, जो धर्म की मर्यादा से विपरीत है॥ १॥ हे प्राणी! तू माया के मोह में फँसकर भटका हुआ है और प्रभु को छोड़कर दूसरों से प्रेम करता

है। तेरी अपनी दशा तो ऐसी है जैसी राजा हरि-चन्द की आकाश वाली नगरी का है और वन के हरे पत्तों का है॥१॥ रहाउ॥ चाहे गधे के शरीर पर चन्दन का लेप भी कर दिया जाए लेकिन फिर भी गधे को मिट्टी में लेट कर ही सुख मिलता है। हे प्राणी! नामामृत के संग तेरे मन में रुचि पैदा नहीं होती परन्तु विष रूपी ठगौरी से तू प्रेम करता है॥ २॥ उत्तम एवं भले संत संयोग से ही मिलते हैं, जो इस युग में पवित्र एवं पुनीत हैं। हे प्राणी! तेरा अनमोल मानव-जन्म व्यर्थ जा रहा है और यह काँच के बदले में जीता जा रहा है॥ ३॥ जब गुरु ने ज्ञान का सुरमा नेत्रों में लगा दिया तो जन्म-जन्मांतरों के किल्विष दुख भाग गए। हे नानक! साधुओं की संगत से इन दुःखों से निकल आया हूँ और अब मैंने एक प्रभु से ही प्रेम लगा लिया है॥४॥६॥

धनासरी महला ५ ॥ पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिस्राम निधि पाई ॥ १ ॥ तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥ ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥ अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥ २ ॥ तुम्ह दइआल किरपाल क्रिपा निधि पतित पावन गोसाई ॥ कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई ॥ ३ ॥ जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ नामु जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपति अघाई ॥ ४ ॥ १० ॥

मैं संतों की सेवा में पानी ढोता, पंखा करता और गेहूँ पीसता हूँ और गोविन्द का ही यशोगान करता हूँ। मेरा मन श्वास-श्वास से नाम जपता रहता है और मैंने यह नाम रूपी सुखों की निधि प्राप्त कर ली है॥ १॥ हे मेरे मालिक! मुझ पर दया करो। हे मेरे ठाकुर! मुझे ऐसी सुमति दीजिए कि मैं सर्वदा ही तेरा ध्यान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ तेरी कृपा से मेरा मोह एवं अभिमान छूट जाए और मेरा भ्रम भी मिट जाए। आनंद का स्वरूप वह प्रभु सबमें समाया हुआ है। मैं जिधर भी जाता हूँ, उसे ही देखता हूँ॥ २॥ हे पतितपावन सृष्टि के स्वामी! तुम बड़े दयालु, कृपालु एवं कृपानिधि हो। मैंने अपने मुँह से एक क्षण भर तेरे नाम का उच्चारण करके राज-भाग के करोड़ों सुख एवं आनंद पा लिए हैं॥३॥ केवल वही पूजा, तपस्या एवं भक्ति पूर्ण होती है, जो प्रभु के मन में भा गई है। हे नानक! नाम का जाप करने से मेरी सारी तृष्णा बुझ गई है, अब मैं तृप्त एवं संतृष्ट हो गया हूँ॥ ४॥ १०॥

धनासरी महला ५ ॥ जिनि कीने वसि अपुनै त्रै गुण भवण चतुर संसारा ॥ जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गही तउ छूटो ॥ साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥ ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥ २ ॥ माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ ॥ किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥ गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥ हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥ ५ ॥ ११ ॥

जिस माया ने रजोगुणी मनुष्यों, तमोगुणी दैत्यों, सतोगुणी देवताओं एवं संसार के चारों भवनों-आकाश, पाताल, पृथ्वी एवं सत्यलोक को जीत कर अपने वशीभूत कर लिया है, जिसने यज्ञ करने वाले, स्नान करने वाले एवं तपस्या करने वाले इन समस्त स्थानों को खण्डित कर दिया

है, ये बेचारा जीव इसके समक्ष क्या चीज हैं ?॥ १॥ जब मैंने प्रभु की शरण ली तो मैं माया से स्वतन्त्र हो गया। साधु-महापुरुष की कृपा से जब परमात्मा का स्तुतिगान किया तो मेरे पाप एवं रोग दूर हो गए॥ १॥ रहाउ॥ वह माया जीवों को मुग्ध करती हुई इन नेत्रों से दिखाई नहीं देती, उसकी आवाज भी सुनाई नहीं देती और न ही वह अपने मुँह से बोलती है। वह कोई ऐसी ठगौरी लोगों के मुँह में डाल कर उनको भटका देती है कि वह सभी के मन में मीठी लगती है॥२॥ घर-घर में परस्पर प्रेम करने वाले माता-पिता, पुत्रों एवं भाइयों में माया ने भेदभाव एवं अलगाव उत्पन्न कर दिया है। माया किसी के पास कम है, किसी के पास अधिक है और वे सभी परस्पर लड़-लड़कर मरते हैं॥ ३॥ मैं अपने सतगुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे माया की यह विचित्र लीला दिखा दी है। शरीरों में छिपी हुई इस तृष्णाग्नि से समूचा जगत जल रहा है परन्तु भक्तजनों को यह माया प्रभावित नहीं करती॥ ४॥ संतों की कृपा से मुझे परम सुख प्राप्त हो गया है और उन्होंने मेरे सभी बन्धन काट दिए हैं। हे नानक ! मैंने हरि-नाम रूपी धन को पा लिया है और मैं यह नाम-धन कमा कर अपने हृदय रूपी घर में ले आया हूँ॥ ५॥ ११॥

धनासरी महला ५ ॥ तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥ १ ॥ जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥ बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किन ही लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥ २ ॥ तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥ राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥ ३ ॥ १२ ॥

हे ईश्वर ! तुम हमारे दाता एवं ठाकुर हो, तुम ही हमारा पालन-पोषण करते हो, तुम ही समूचे विश्व के नायक और तुम ही हमारे मालिक हो। क्षण-क्षण तुम हमारा पालन-पोषण करते रहते हो, हम तुम्हारी ही पैदा की हुई संतान हैं॥ १॥ हम अपनी एक जिह्वा से तेरे कौन-कौन से गुण कथन करें ? हे बेशुमार एवं बेअन्त स्वामी ! किसी ने भी तेरा अन्त नहीं जाना॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! तुम हमारे करोड़ों पापों को नाश करते रहते हो और अनेक विधियों द्वारा उपदेश देते रहते हो। हम तो ज्ञानहीन हैं और हमारी मति बहुत ही थोड़ी एवं तुच्छ है, तुम अपने विरद की लाज रखते हो॥ २॥ हे प्रभु ! हम तेरी शरण में आए हैं और हमें तेरी ही आशा है, चूंकि तू ही हमारा सुखदायक सज्जन है। नानक प्रार्थना करता है कि हे रक्षा करने वाले दयालु प्रभु ! हमारी रक्षा करो, चूंकि हम तेरे घर के सेवक हैं॥ ३॥ १२॥

धनासरी महला ५ ॥ पूजा वरत तिलक इसनाना पुंन दान बहु दैन ॥ कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥ १ ॥ प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ बहु प्रकार खोजहि सभि ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥ इह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥ २ ॥ अंम्रित नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ जिसु क्रिपैन ॥ साधसंगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥ ३ ॥ १३ ॥

लोग अपने देवताओं की पूजा करते हैं, व्रत-उपवास रखते हैं, अपने माथे पर तिलक लगाते हैं, तीर्थों पर स्नान करते हैं, पुण्य-कर्म भी करते हैं और बहुत दान देते हैं, वे मधुर वचन भी बोलते हैं परन्तु स्वामी-प्रभु इन में से किसी भी युक्ति द्वारा प्रसन्न नहीं होता ॥१॥ प्रभु का नाम जपने से ही मन को शांति मिलती है। सभी लोग अनेक प्रकार की विधियों से उस प्रभु की तलाश करते रहते हैं परन्तु उसकी तलाश बड़ी कठिन है और उसे ढूँढा नहीं जा सकता॥१॥ रहाउ॥ मंत्रों

के जाप करने से, तपस्या करने से, पृथ्वी पर भ्रमण करने से, सिर के बल तप करने से, प्राणायाम द्वारा श्वासों को दसम द्वार में करने इत्यादि से ठाकुर प्रभु प्रसन्न नहीं होता। वह योग मत एवं जैन मत की युक्तियाँ करने से भी खुश नहीं होता॥२॥ प्रभु का अमृत नाम अनमोल है और हरि-यश की देन उस खुशकिस्मत ने ही प्राप्त की है, जिस पर उसकी कृपा हुई है। हे नानक! जिसे सत्संगति में प्रेम द्वारा प्रभु मिल जाता है, उस मनुष्य की जीवन-रात्रि सुख में बीतती है॥३॥१३॥

धनासरी महला ५ ॥ बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥ १ ॥ है कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥ सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर धन पर तन पर की निंदा इन सिउ प्रीति न लागै ॥ संतह संगु संत संभाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥ २ ॥ गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सरब सूख दइआला ॥ मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥ ३ ॥ १४ ॥

क्या कोई ऐसा है? जो मुझे माया के बन्धनों से स्वतंत्र करवा दे, मुझे प्रभु से मिला दे, मुझे हरि का नाम सुनाए, मेरा यह मन स्थिर एवं अटल कर दे, ताकि वह इधर-उधर कहीं न भटके ॥१॥ क्या कोई ऐसा मेरा मित्र है? मैं उसे अपनी सारी धन-सम्पति, अपने प्राण, अपना हृदय सबकुछ सौंप दूँगा॥ १॥ रहाउ॥ मेरी अभिलाषा है कि पराया धन, पराई नारी के तन एवं पराई निन्दा-इनसे मेरी प्रीति कदापि न लगे। मैं संतों के संग ज्ञान-गोष्ठी किया करूँ एवं हरि-कीर्तन में मेरा मन जाग्रत रहे॥ २॥ हे परमपुरुष! तू गुणों का भण्डार है, तू बड़ा दयालु है। हे दयालु प्रभु! तू सर्व सुख प्रदान करने वाला है। हे जगतपालक! जैसे बच्चे अपनी माता से भोजन माँगते हैं, वैसे ही नानक तुझसे तेरे नाम का दान माँगता है॥३॥१४॥

धनासरी महला ५ ॥ हरि हरि लीने संत उबारि ॥ हरि के दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि ॥ भ्रमत भ्रमत ऊहां ही मूए बाहुड़ि ग्रिहि न मंझारि ॥ १ ॥ नानक सरणि परिओ दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥ निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥ २ ॥ १५ ॥

हरि ने अपने संतों को बचा लिया है। जो व्यक्ति हरि के दास की बुराई सोचता है, उसे ही वह अंततः नष्ट कर देता है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु अपने सेवक का स्वयं ही मददगार बन गया है तथा निंदक पराजित होकर भाग गए हैं। भटकते-भटकते निंदक वहाँ ही मर गए हैं और वे पुनः अनेक योनियों में भटकते हैं एवं उन्हें अपने घर में निवास नहीं मिलता॥ १॥ नानक ने तो दुःखनाशक प्रभु की शरण ली है और सदैव ही अनंत प्रभु का गुणगान करता रहता है। दीन-दुनिया के स्वामी प्रभु के दरबार में उस निंदक का मुँह काला हुआ है अर्थात् तिरस्कृत हुआ है॥ २॥ १५॥

धनासिरी महला ५ ॥ अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥ पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥ सिमरि सिमरि पूरन नाराइन संगी सगले तारिआ ॥ १ ॥ अउखध मंत्र मूल मन एकै मनि बिस्वासु प्रभ धारिआ ॥ चरन रेन बांछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥ २ ॥ १६ ॥

अब जब मैंने रक्षक हरि को याद किया तो उसने मुझ पतित को एक क्षण में ही पवित्र बना दिया और मेरा सारा रोग नाश कर दिया॥१॥ रहाउ॥ जब साधुओं के समागम में मेरी ज्ञान चर्चा

हुई तो मेरे मन में से काम, क्रोध एवं लोभ नष्ट हो गए। मैंने उस पूर्ण नारायण का सिमरन करके अपने समस्त संगी-साथियों को भी भवसागर में डूबने से बचा लिया है॥ १॥ जगत के मूल प्रभु के नाम रूपी मंत्र का सिमरन ही तमाम रोगों की एकमात्र औषधि है। अपने मन में मैंने प्रभु के प्रति आस्था धारण कर ली है। नानक नित्य ही प्रभु की चरण-धूलि की कामना करता है और बार-बार उस पर कुर्बान जाता है॥ २॥ १६॥

धनासरी महला ५ ॥ मेरा लागो राम सिउ हेतु ॥ सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हाथ देइ राखिओ अपुना करि बिरथा सगल मिटाई ॥ निंदक के मुख काले कीने जन का आपि सहाई ॥ १ ॥ साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीए कंठि लाइ ॥ निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ १७ ॥

मेरा राम से प्रेम हो गया है। सतगुरु सदैव ही मेरा सहायक है, जिसने मेरे दुख की जड़ ही काट दी है॥ १॥ रहाउ॥ उसने मुझे अपना बना कर अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की है और मेरी तमाम पीड़ा मिटा दी है। उसने निंदकों के मुँह काले कर दिए हैं और वह अपने सेवक का सहायक बन गया है॥ १॥ वह सच्चा परमेश्वर मेरा रखवाला बन गया है और उसने अपने गले से लगाकर मुझे बचा लिया है। हे नानक! भगवान का गुणगान करने से निडर हो गया हूँ और हमेशा ही सुख की अनुभूति करता हूँ॥ २॥ १७॥

धनासिरी महला ५ ॥ अउखधु तेरो नामु दइआल ॥ मोहि आतुर तेरी गति नही जानी तूं आपि करहि प्रतिपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि ॥ बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥ १ ॥ तेरी सरनि पइआ हउ जीवां तूं संम्रथु पुरखु मिहरवानु ॥ आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबानु ॥ २ ॥ १८ ॥

हे दीनदयाल! तेरा नाम सर्व रोगों की औषधि है परन्तु मुझ दुखियारे ने तेरी महिमा को नहीं समझा, जबकि तू स्वयं ही मेरा पालन-पोषण करता है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी! मुझ पर अपनी कृपा करो और मेरे मन में से द्वैतभाव दूर कर दो। मेरे माया के बन्धन काट कर मुझे अपना सेवक बना लो, ताकि मैं जीवन की बाजी में कभी पराजित न होऊँ॥ १॥ हे प्रभु! तू सर्वकला समर्थ एवं मेहरबान है तथा तेरी शरण लेने से ही मैं जीवित रहता हूँ। हे नानक! मैं तो आठ प्रहर प्रभु की आराधना करता रहता हूँ और सदैव ही उस पर कुर्बान जाता हूँ॥२॥१८॥

रागु धनासरी महला ५   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हा हा प्रभ राखि लेहु ॥ हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुटंब सागर संसार ॥ भरम मोह अगिआन अंधार ॥ १ ॥ ऊच नीच सूख दूख ॥ ध्रापसि नाही त्रिसना भूख ॥ २ ॥ मनि बासना रचि बिखै बिआधि ॥ पंच दूत संगि महा असाध ॥ ३ ॥ जीअ जहानु प्रान धनु तेरा ॥ नानक जानु सदा हरि नेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ १६ ॥

हाय! हाय!! हे प्रभु! मुझे बचा लो। मुझ से कुछ भी नहीं हो सकता, हे मेरे स्वामी! अंतः अपनी कृपा करके मुझे अपना नाम दे दो॥ १॥ रहाउ॥ मेरा कुटुंब संसार सागर के समान है, जिसमें जल के स्थान पर तृष्णा रूपी अग्नि भरी हुई है। हर तरफ भ्रम, मोह एवं अज्ञान का अन्धेरा फैला हुआ है॥१॥ मैं कभी उच्च बन जाता हूँ, कभी निम्न बन जाता हूँ, कभी सुख भोगता हूँ तो

कभी दुःख सहन करता हूँ। मुझे सदैव ही माया की तृष्णा एवं भूख लगी रहती है और कभी भी संतुष्ट नहीं होता॥ २॥ मेरे मन में वासना है और विषय विकारों में लीन होने से मुझे रोग लग गए हैं। माया के पाँच दूत-काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार सदैव ही मेरे साथ रहते हैं और ये बड़े असाध्य हैं अर्थात् मेरे वश में आने वाले नहीं हैं॥ ३॥ हे प्रभु ! ये सभी जीव, समूचा जगत, प्राण एवं धन सभी तेरा ही है। हे नानक ! भगवान को हमेशा अपने समीप ही समझो॥४॥१॥१६॥

धनासरी महला ५ ॥ दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि ॥ तरण तारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥ १ ॥ साधू संगि भजहु गुपाल ॥ आन संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलि काल ॥ रहाउ ॥ आदि अंति दइआल पूरन तिसु बिना नही कोइ ॥ जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइ ॥ २ ॥ बेद सिंम्रिति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥ मुकति पाईऐ साधसंगति बिनसि जाइ अंधारु ॥ ३ ॥ चरन कमल अधारु जन का रासि पूंजी एक ॥ ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥

दीनों के दुःख निवृत्त करके ईश्वर स्वयं ही अपने सेवकों की लाज रखता है। वह तो सुखों का भण्डार है, वह भवसागर में से पार कराने वाला जहाज है, इसलिए उसके भक्तजनों को कोई भी दुःख प्रभावित नहीं कर सकता॥१॥ साधु की पावन सभा में सम्मिलित होकर भगवान का भजन करो। मुझे तो अन्य कोई साधन नहीं सूझता, इसलिए इन यत्नों द्वारा कलियुग का समय व्यतीत करो॥रहाउ॥ सृष्टि के आदि एवं अंत में उस पूर्ण दयालु प्रभु के सिवाए अन्य कोई नहीं है। भगवान का भजन करके अपना जन्म-मरण का चक्र समाप्त कर लो और उस स्वामी का सिमरन करते रहो॥२॥ हे प्रभु ! वेद, स्मृतियाँ एवं शास्त्र ये सभी तेरी ही महिमा कथन करते हैं और भक्तजन तेरे गुणों पर विचार करते हैं। मनुष्य को मुक्ति साधुओं की संगति करने से ही प्राप्त होती है और अज्ञानता का अन्धेरा दूर हो जाता है॥३॥ प्रभु के सुन्दर चरण-कमल भक्तजनों का सहारा है और यही उनकी राशि एवं पूँजी है। सच्चा प्रभु ही उनका बल, मान-सम्मान एवं दरबार है। हे नानक ! प्रभु ही उनका अवलम्ब है॥ ४॥ २॥ २०॥

धनासरी महला ५ ॥ फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥ आन सगल बिधि कांमि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥ १ ॥ ता ते मोहि धारी ओट गोपाल ॥ सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥ सुरग मिरत पइआल भू मंडल सगल बिआपे माइ ॥ जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइ ॥ २ ॥ नानक नामु निरंजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना ॥ करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥ ३ ॥ ३ ॥ २१ ॥

इधर-उधर भ्रमण करते हुए जब मेरा साधु-महापुरुष (गुरु) से साक्षात्कार हुआ तो पूर्ण गुरु ने मुझे उपदेश दिया कि अन्य समस्त विधियाँ कान नहीं आनी, इसलिए हरि-नाम का ही ध्यान-मनन किया है॥ १॥ इसलिए मैंने ईश्वर का ही सहारा लिया है। मैं तो पूर्ण परमेश्वर की शरण में आ गया हूँ और मेरे सभी कष्ट जंजाल नाश हो गए हैं॥ रहाउ॥ स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक एवं समूचे भूमण्डल में माया व्यापक है। अपनी आत्मा का उद्धार करने के लिए एवं अपनी समस्त वंशावलि को भवसागर में से पार करवाने के लिए हरि-नाम का ही ध्यान करना चाहिए॥२॥ हे नानक ! यदि मायातीत प्रभु-नाम का स्तुतिगान किया जाए तो सर्व सुखों के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं। इस रहस्य को किसी विरले पुरुष ने ही समझा है, जिसे जगत का स्वामी प्रभु कृपा करके नाम की देन प्रदान करता है॥ ३॥ ३॥ २१॥

धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

छोडि जाहि से करहि पराल ॥ कामि न आवहि से जंजाल ॥ संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥ जो बैराई सेई मीत ॥ १ ॥ ऐसे भरमि भुले संसारा ॥ जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ साचु धरमु नही भावै डीठा ॥ झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा ॥ दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ जाणै नाही मरणु विचारा ॥ २ ॥ वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ करम धरम सगला ई खोवै ॥ हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥ पाप करै ता पछोताणे ॥ ३ ॥ जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥ नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा ॥ राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥ ४ ॥ १ ॥ २२ ॥

अज्ञानी मनुष्य उन क्षणभंगुर पदार्थों को संचित करता रहता है, जिसे उसने यहीं छोड़कर चले जाना है। वह उन झंझट-जंजालों में उलझा रहता है, जो किसी काम नहीं आते। वह उनसे स्नेह करता है, जो जीवन के अन्तिम क्षणों में उसके साथ नहीं जाते। जो उसके शत्रु हैं, वही उसके मित्र बने हुए हैं॥१॥ ऐसे ही यह संसार भ्रम में फँसकर भटका हुआ है और अज्ञानी मनुष्य यूं ही अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ गंवा रहा है॥रहाउ॥ वह सत्य एवं धर्म को देखना भी पसंद नहीं करता। वह तो झूठ एवं छल-कपट में ही मग्न रहता है और यह उसे बड़ा मीठा लगता है। वह दी हुई वस्तुओं से तो बड़ा प्रेम करता है परन्तु देने वाले दातार को भूल गया है। बेचारा भाग्यहीन अपनी मृत्यु का ख्याल नहीं करता॥ २॥ वह पराई वस्तु को प्राप्त करने के लिए उठ-उठकर कोशिश करता है और न मिलने पर विलाप करता है। वह अपने धर्म कर्म का समूचा फल गंवा देता है। वह भगवान के हुक्म को नहीं समझता, इसलिए उसे जन्म-मरण के चक्र पड़े रहते हैं। जब वह पाप करता है तो तदुपरांत पछताता है॥ ३॥ हे प्रभु ! जो तुझे मंजूर है, वही मुझे सहर्ष स्वीकार है। मैं तेरी रज़ा पर कुर्बान जाता हूँ। गरीब नानक तेरा बंदा एवं सेवक है, हे मालिक प्रभु ! मेरी रक्षा करना॥ ४॥ १॥ २२॥

धनासरी महला ५ ॥ मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु ॥ खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ संचण कउ हरि एको नामु ॥ हलति पलति ता कै आवै काम ॥ १ ॥ नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥ साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥ साध की सोभा अति मसकीनी ॥ संत वडाई हरि जसु चीनी ॥ अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥ २ ॥ जह साध संतन होवहि इकत्र ॥ तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥ साध सभा महि अनद बिस्राम ॥ उन संगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ चरन पखारि कहां गुण तास ॥ प्रभ दइआल किरपाल हजूरि ॥ नानकु जीवै संता धूरि ॥ ४ ॥ २ ॥ २३ ॥

मुझ विनीत को प्रभु का नाम ही एक सहारा है। मेरे कमाने के लिए हरि-नाम ही मेरा रोजगार है। जिस व्यक्ति के पास संचित करने के लिए एकमात्र हरि-नाम है, यह नाम ही इहलोक एवं आगे परलोक में उसके काम आता है॥ १॥ प्रभु के प्रेम रंग एवं नाम में लीन होकर साधुजन तो केवल निराकार परमेश्वर का ही गुणगान करते हैं॥रहाउ॥ साधु की शोभा उसकी अत्यंत विनम्रता में है। संत का बड़प्पन उसके हरि-यश गायन करने से जाना जाता है। परमात्मा की भक्ति उनके हृदय में आनंद उत्पन्न करती है। संतों के मन में यही सुख की अनुभूति होती है कि उनकी चिंता का नाश हो जाता है॥ २॥ जहाँ भी साधु-संत एकत्र होते हैं, वहाँ ही वे संगीत एवं काव्य द्वारा हरि का यश-गान करते हैं। साधुओं की सभा में आनंद एवं शान्ति की प्राप्ति होती है। उनकी संगति

भी वही मनुष्य करता है, जिसके मस्तक पर पूर्व कर्मों द्वारा ऐसा भाग्य लिखा होता है॥ ३॥ मैं अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि मैं संतों के चरण धोता रहूँ और गुणों के भण्डार प्रभु का ही नाम-सिमरन करने में मग्न रहूँ। नानक तो उन संतों की चरण-धूलि के सहारे ही जीवित है, जो हमेशा ही दयालु एवं कृपालु प्रभु की उपस्थिति में रहते हैं॥ ४॥ २॥ २३॥

धनासरी मः ५ ॥ सो कत डरै जि खसमु सम्हारै ॥ डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव ॥ सफल मूरति जा की निरमल सेव ॥ एकु निरंजनु जा की रासि ॥ मिलि साधसंगति होवत परगास ॥ १ ॥ जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ ॥ कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ ॥ जनम मरन सगला दुखु नासै ॥ गुरमुखि जा कै मनि तनि बासै ॥ २ ॥ जिस नो आपि लए लड़ि लाइ ॥ दरगह मिलै तिसै ही जाइ ॥ सेई भगत जि साचे भाणे ॥ जमकाल ते भए निकाणे ॥ ३ ॥ साचा साहिबु सचु दरबारु ॥ कीमति कउणु कहै बीचारु ॥ घटि घटि अंतरि सगल अधारु ॥ नानकु जाचै संत रेणारु ॥ ४ ॥ ३ ॥ २४ ॥

जो मालिक-प्रभु की आराधना करता है, उस व्यक्ति को किसी प्रकार का भय नहीं होता। बेचारे मनमुखी व्यक्ति डर-डर कर ही नष्ट हो गए हैं॥१॥ रहाउ॥ मेरे माता-पिता रूप गुरुदेव मेरे रक्षक हैं, जिनका (स्वरूप) दर्शन शुभ फलदायक है और उनकी सेवा भी निर्मल है। जिस मनुष्य की पूंजी एक निरंजन प्रभु ही है, सत्संगति में सम्मिलित होने से उसके मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो जाता है॥ १॥ सब जीवों का दाता प्रभु सर्वव्यापी है। हरि-नाम से करोड़ों ही क्लेश मिट जाते हैं। गुरु के सान्निध्य में जिस व्यक्ति के मन एवं तन में भगवान का निवास हो जाता है, उसका जन्म-मरण का समूचा दुःख मिट जाता है॥ २॥ जिसे वह अपने साथ मिला लेता है, उस व्यक्ति को दरबार में उसे सम्मानजनक स्थान मिल जाता है। जो सच्चे प्रभु को अच्छे लगते हैं, वही व्यक्ति वास्तव में भक्त हैं और वे मृत्यु से निडर हो जाते हैं॥३॥ मालिक-प्रभु सत्य है और उसका दरबार भी सत्य है। उसका मूल्यांकन कौन वर्णन करे और कौन उसके गुणों का कथन करे ? वह तो प्रत्येक हृदय में निवास करता है और सबका जीवनाधार है। नानक तो संतों की चरण-धूलि ही माँगता है॥ ४॥ ३॥ २४॥

धनासरी महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥ करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥ १ ॥ जन कउ प्रभ अपने का ताणु ॥ जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी ॥ चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥ २ ॥ १ ॥ २५ ॥

हे ईश्वर ! मुझे घर एवं बाहर तेरा ही भरोसा है और तू हमेशा ही अपने सेवक के संग रहता है। हे मेरे प्रियतम प्रभु ! मुझ पर अपनी कृपा करो, ताकि मैं प्रेमपूर्वक तेरे नाम का जाप करता रहूँ॥ १॥ सेवक को तो अपने प्रभु का ही बल प्राप्त है। हे मेरे स्वामी ! जो कुछ तुम स्वयं करते एवं मुझ से करवाते हो, तेरी वह प्रेरणात्मक सलाह मुझे सहर्ष स्वीकार है॥रहाउ॥ वह नारायण स्वरूप, जगतपालक परमेश्वर ही मेरे लिए मेरी लाज-प्रतिष्ठा है, वही मेरी मुक्ति है और उसके गुणों की कथा ही मेरा धन है। हे दास नानक ! संतों ने यह युक्ति जान ली है कि परमात्मा के चरणों की शरण में पड़े रहो॥ २॥ १॥ २५॥

धनासरी महला ५ ॥ सगल मनोरथ प्रभ ते पाए कंठि लाइ गुरि राखे ॥ संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥ १ ॥ जिन कै मनि साचा बिस्वासु ॥ पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ ॥ जानि बूझि अपना कीओ नानक भगतन का अंकुरु राखिओ ॥ २ ॥ २ ॥ २६ ॥

सब मनोरथ प्रभु से प्राप्त कर लिए हैं और गुरु ने अपने गले से लगाकर बचा लिया है। गुरु ने संसार-सागर की तृष्णा रूपी अग्नि में जलने नहीं दिया और किसी भी भक्त ने कभी यह नहीं कहा कि संसार-सागर में से पार होना कठिन है॥१॥ जिनके मन में प्रभु के प्रति सच्चा विश्वास है, अपने स्वामी की शोभा देख-देखकर उनके मन में सदैव ही आनंद एवं उल्लास बना रहता है॥ रहाउ॥ उन्होंने अन्तर्यामी पूर्ण परमेश्वर के चरणों की शरण लेकर उसके दर्शन कर लिए हैं। हे नानक! प्रभु ने उनकी भावना को भलीभांति समझ कर उन्हें अपना बना लिया है। उसने अपने भक्तों के मन में भक्ति के अंकुरित हो रहे अंकुर को तृष्णा रूपी अग्नि में जलने से बचा लिया है॥ २॥ २॥ २६॥

धनासरी महला ५ ॥ जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥ रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥ १ ॥ ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥ बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥ सासि सासि संमालता मेरा प्रभु सोई ॥ २ ॥ अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ॥ जपि जपि करहि अनंदु जन अचरज आनूपु ॥ ३ ॥ सा मति देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥ नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥ ४ ॥ ३ ॥ २७ ॥

मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही परमात्मा प्रत्यक्ष दिखाई देता है, वह किसी भी स्थान से दूर नहीं है। वह तो सब में समा रहा है, इसलिए मन में सदैव ही उसका ध्यान-मनन करो॥ १॥ केवल उसे ही साथी गिना जाता है जो इहलोक एवं परलोक में जुदा नहीं होता। जो एक क्षण में ही नाश हो जाता है, उसे तुच्छ सुख कहा जाता है॥रहाउ॥ वह भोजन देकर सब जीवों का पालन-पोषण करता है और उन्हें किसी भी वस्तु की कमी नहीं आती। मेरा प्रभु श्वास-श्वास जीवों की देखरेख करता रहता है॥ २॥ प्रभु से किसी प्रकार का कोई छल नहीं किया जा सकता, वह तो अटल एवं अनंत है। उसका रूप भी सर्वोच्च है। उसकी बड़ी अद्भुत हस्ती है और वह बहुत ही सुन्दर है। उसके सेवक उसके नाम का भजन सिमरन करके आनंद प्राप्त करते हैं॥ ३॥ हे दयालु प्रभु! मुझे ऐसी मति दीजिए, जिससे मैं तेरी आराधना करता रहूँ। हे प्रभु! नानक तुझसे तेरे साधुओं की चरणरज का दान माँगता है॥ ४॥ ३॥ २७॥

धनासरी महला ५ ॥ जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥ अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥ १ ॥ तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥ तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके ॥ घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥ २ ॥ असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥ जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार ॥ ३ ॥ जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई ॥ अचरजु कीआ करनैहारै नानकु सचु वडिआई ॥ ४ ॥ ४ ॥ २८ ॥

जिस परमात्मा ने तुझे दुनिया में भेजा है, उसने ही अब तुझे वापिस बुला लिया है। अंतः सुख

एवं आनंदपूर्वक अपने मूल घर (परमात्मा के चरणों) में वापिस आ जाओ। आनंदपूर्वक मधुर ध्वनि में प्रभु-महिमा के मंगल गीत गायन करो और इस शरीर रूपी नगरी पर अटल राज करो॥ १॥ हे मेरे मित्र ! तुम अपने मूल घर में वापिस आ जाओ। तुम्हारे वैरियों-कामवासना, क्रोध, लालच, मोह एवं अहंकार को भगवान ने स्वयं ही तुझसे दूर कर दिया है तथा तेरी विपत्ति का समय अब बीत गया है॥रहाउ॥ रचयिता प्रभु ने तुझे दुनिया में लोकप्रिय कर दिया है और अब तेरी भाग-दौड़ खत्म हो गई है। अब तेरे घर में नित्य ही खुशी की अनहद ध्वनियों वाले बाजे बजते रहते हैं और तेरे अपने मालिक ने तुझे सत्कृत किया है॥ २॥ गुरु की वाणी के आधार पर स्थिर होकर रहो और कभी भी विचलित मत होना। सारा जगत तेरी जय-जयकार करेगा और तूं उज्ज्वल मुख से प्रभु के दरबार में सम्मानपूर्वक जाएगा॥ ३॥ जिसने ये जीव उत्पन्न किए हैं, उसने ही इन्हें भटका कर फिर से सन्मार्ग लगाया है और वह स्वयं ही इनका सहायक बन गया है। हे नानक ! रचयिता प्रभु ने एक अद्भुत लीला रची है और उसकी बड़ाई सदैव सत्य है॥ ४॥ ४॥ २८॥

धनासरी महला ५ घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥ हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ मन निरमल करम करि तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥ जीवन देवा पारब्रहम सेवा इहु उपदेसु मो कउ गुरि दीना जीउ ॥ १ ॥ तिसु सिउ न लाईऐ हीतु जा को किछु नाही बीतु अंत की बार ओहु संगि न चालै ॥ मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जा कै संगि तेरे बंधन छूटै ॥ २ ॥ गहु पारब्रहम सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥ सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जा कउ किरपा कीजै ॥ ३ ॥ १ ॥ २९ ॥

हे प्यारे संतजनो ! मेरी विनती ध्यानपूर्वक सुनो; भगवान के सिमरन के विना किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती॥रहाउ॥ हे मेरे मन ! शुभ एवं पवित्र कर्म करो, भगवान तो भवसागर में से पार करवाने वाला जहाज है; अन्य झंझट-जंजाल तेरे किसी काम नहीं आने। गुरु ने मुझे यह उपदेश दिया है कि अपने जीवन में परब्रह्म-गुरुदेव की ही उपासना करो॥ १॥ उससे स्नेह नहीं करना चाहिए, जिसकी अपनी कुछ भी हस्ती न हो चूंकि वह जीवन के अंतिम क्षणों में मनुष्य के साथ नहीं जाता। तू अपने मन एवं तन में भगवान की आराधना कर, उसके प्रियतम साधुओं की संगति करने से तेरे माया के तमाम बन्धन समाप्त हो जाएँगे॥ २॥ उस परब्रह्म की शरण लो और अपने हृदय में चरण कमल का ध्यान करो। उसके सिवाय किसी अन्य सहारे की कुछ भी आशा मत करो। हे नानक ! जिस पर भगवान कृपा करता है, वास्तव में वही भक्त, वही ज्ञानी, ध्यानी एवं तपस्वी है॥ ३॥ १॥ २९॥

धनासरी महला ५ ॥ मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना ॥ देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥ तनु धनु आपन थापिओ हरि जपु न निमख जापिओ अरथु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥ १ ॥ जा को रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना ॥ पाइओ रे परम निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥ २ ॥ २ ॥ ३० ॥

हे मेरे प्रिय ! भगवान का नाम माँगना बड़ा उत्तम एवं भला है। हे भाई ! अपने नेत्र खोलकर

भलीभांति देखो एवं साधु के अनमोल वचन सुनो। अपने प्राणों के पति प्रभु को अपने हृदय में बसाकर रखो, चूंकि सभी ने एक न एक दिन अवश्य मृत्यु को प्राप्त होना है॥रहाउ॥ तुम अपने शरीर पर चंदन एवं इत्र लगाते हो, स्वादिष्ट पदार्थ खाते हो तथा अनेकों विषय-विकार भोगते हो, देख लो, ये सभी रस फीके हैं। साधुजन कहते हैं कि परमात्मा का नाम ही सर्वोत्तम है। तुम अपने शरीर एवं धन को अपना समझते हो और भगवान का भजन सिमरन एक क्षण भर के लिए भी नहीं करते। देख लो, यह धन-संपति एवं दौलत कुछ भी तेरे साथ नहीं जाना॥ १॥ जिस मनुष्य की अच्छी किस्मत है, वही संतों की शरण लेता है। संतों की संगति करने से मृत्यु कदापि पीड़ित नहीं करती। हे नानक! उसने नाम रूपी परम खजाना प्राप्त कर लिया है, उसका अभिमान मिट गया है और मन एक निराकार प्रभु से लग गया है॥ २॥ २॥ ३०॥

धनासरी महला ५ घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे ॥ कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे ॥ साधसंग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥ १ ॥ चरन कमल नमसकार गुन गोबिद बीचारे ॥ साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

हे प्यारे! एक ईश्वर का सिमरन करो। वह तुझे कलह-क्लेश लोभ एवं मोह से बचाएगा और तुझे महा भयानक संसार-सागर से पार करवा देगा॥रहाउ॥ श्वास-श्वास, क्षण-क्षण एवं दिन-रात भगवान को मन में याद करते रहो। निश्चिंत होकर साधसंगति में भजन करके नाम रूपी खजाने को अपने हृदय में बसाकर रखो॥ १॥ परमात्मा के सुन्दर चरण-कमलों को नमन करो और उसके गुणों का चिन्तन करो। हे नानक! संतजनों की चरण-धूलि बड़ी खुशी एवं सुख प्रदान करती है॥ २॥ १॥ ३१॥

धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥ इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥ १ ॥ गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥ जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥ सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक करी क्रिपा किरपाले ॥ २ ॥ १ ॥ ३२ ॥

मैं परमात्मा का नाम-स्मरण करता हूँ और नाम-स्मरण करके सुखी होता हूँ। श्वास-श्वास से उसे ही स्मरण करता हूँ। परमात्मा का नाम ही इहलोक एवं आगे परलोक में मेरे साथ मेरा सहायक है और हर जगह मेरी रक्षा करता है॥ १॥ गुरु की वाणी मेरे प्राणों के साथ रहती है। यह जल में नहीं डूबती, चोर इसे चुरा कर नहीं ले जा सकता और अग्नि इसे जला नहीं सकती॥ १॥ रहाउ॥ जैसे निर्धन का सहारा धन है, अन्धे का सहारा छड़ी है और बालक का सहारा माता का दूध है, वैसे ही मुझे गुरु की वाणी का सहारा है। हे नानक! कृपा के घर परमात्मा ने मुझ पर अपनी कृपा की है और मुझे भवसागर में से पार निकलने के लिए हरि-नाम रूपी जहाज मिल गया है॥ २॥ १॥ ३२॥

धनासरी महला ५ ॥ भए क्रिपाल दइआल गोबिंदा अंम्रितु रिदै सिंचाई ॥ नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥ १ ॥ संतन कउ अनदु सगल ही जाई ॥ ग्रिहि बाहरि ठाकुरु भगतन का

रवि रहिआ सब ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता कउ कोइ न पहुचनहारा जा कै अंगि गुसाई ॥ जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥ २ ॥ २ ॥ ३३ ॥

जब दयालु परमात्मा कृपालु हो गया तो नामामृत को हृदय में ही संचित कर लिया। नवनिधियाँ एवं ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ हरि के सेवक के चरणों में रहती हैं॥ १॥ संतजनों को तो हर जगह पर आनंद ही आनंद बना रहता है। भक्तों का ठाकुर प्रभु उनके हृदय-घर एवं जगत में सर्वव्यापी है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु जिस मनुष्य के साथ होता है, फिर कोई भी उसकी समानता करने वाला नहीं होता। हे नानक! जिसका सिमरन करने से मृत्यु का भय मिट जाता है, उसके नाम का ही ध्यान-मनन करते रहो॥ २॥ २॥ ३३॥

धनासरी महला ५ ॥ दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी ॥ राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥ १ ॥ जे कोऊ अपुनी ओट समारै ॥ जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नही हारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन तिआगि भए इक आसर सरणि सरणि करि आए ॥ संत अनुग्रह भए मन निरमल नानक हरि गुन गाए ॥ २ ॥ ३ ॥ ३४ ॥

जैसे कोई धनवान व्यक्ति अपने धन को देख-देख कर बड़ा घमण्ड करता है, भूमिपति अपनी भूमि के कारण अभिमानी बन जाता है और जैसे कोई राजा समझता है कि सारा राज्य मेरा अपना ही है, वैसे ही भक्तजनों को अपने स्वामी का सहारा है॥ १॥ यदि कोई प्राणी अपने सहारे भगवान को हृदय में स्मरण करता है, और अपनी समर्था अनुसार कार्य करता है, तो वह अपना नाम रूपी बल नहीं हारता॥ १॥ रहाउ॥ मैंने अन्य सहारे छोड़कर एक प्रभु का ही सहारा लिया है। हे प्रभु! मुझे अपनी शरण में लो, अपनी शरण में लो, यह पुकारता हुआ मैं तेरे द्वार पर आया हूँ। हे नानक! संतों के अनुग्रह से मेरा मन निर्मल हो गया है और अब मैं भगवान का ही गुणगान करता रहता हूँ॥ २॥ ३॥ ३४॥

धनासरी महला ५ ॥ जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥ आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥ १ ॥ ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥ सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥ जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥ २ ॥ ४ ॥ ३५ ॥

जिस मनुष्य को इस युग में भगवान का प्रेम-रंग लग गया है, वास्तव में वही शूरवीर कहा जाता है। जिसका सतगुरु पूर्ण है, वह अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त कर लेता है और समूचा जगत उसके वश में हो जाता है॥ १॥ आत्मा के स्नेह से जगत के ठाकुर परमात्मा का स्तुतिगान करना चाहिए। उसकी शरण लेने से एवं नाम-स्मरण करने से मनुष्य सहज ही उसके साथ समा जाता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान के भक्तों के चरण मेरे हृदय में निवास करते है और उनकी संगति करने से मेरा तन पवित्र हो गया है। हे कृपा के भण्डार! नानक के लिए तो यही परम-सुख है कि मुझे अपने भक्तों की चरण-धूलि प्रदान करो॥ २॥ ४॥ ३५॥

धनासरी महला ५ ॥ जतन करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै ॥ पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥ १ ॥ जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि ॥ उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥ कहु नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥ २ ॥ ५ ॥ ३६ ॥

लोभी आदमी अनेक प्रयास करता है एवं अन्य लोगों से बड़ा छल-कपट करता है परन्तु अन्तर्यामी ईश्वर सबकुछ जानता है। आदमी त्यागी साधुओं वाला भेष बनाकर रखता है। लेकिन फिर भी वह बहुत पाप करता रहता है परन्तु पाप करके भी मुकरता रहता है॥ १॥ हे प्रभु! तू सब जीवों के निकट ही रहता है, परन्तु वह तुझे कहीं दूर ही समझते हैं। लोभी आदमी इधर-उधर झांकता है, फिर इधर-उधर देखता है और धन-दौलत के चक्र में ही फँसा रहता है॥ रहाउ॥ जब तक मनुष्य के मन का भ्रम नाश नहीं होता, तब तक कोई भी माया के बन्धनों से मुक्त नहीं होता। हे नानक! जिस पर सृष्टि का स्वामी भगवान दयालु हो जाता है, वास्तव में वही संत एवं वही भक्त है॥ २॥ ५॥ ३६॥

धनासरी महला ५ ॥ नामु गुरि दीओ है अपुनै जा कै मसतकि करमा ॥ नामु द्रिड़ावै नामु जपावै ता का जुग महि धरमा ॥ १ ॥ जन कउ नामु वडाई सोभ ॥ नामो गति नामो पति जन की मानै जो जो होग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ नामु बिउहारा नानक आधारा नामु परापति लाहा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३७ ॥

जिसके माथे पर शुभ भाग्य है, गुरु ने अपने उस सेवक को नाम ही प्रदान किया है। इस युग में गुरु का यही धर्म है कि वह अपने सेवकों को नाम का जाप करवाता है और नाम ही उनके मन में दृढ़ करता है॥१॥ प्रभु के दास के लिए नाम ही उसकी बड़ाई है और नाम ही उसकी शोभा है। परमात्मा का नाम ही उसकी मुक्ति है और नाम ही उसकी लाज-प्रतिष्ठा है। जो कुछ भी ईश्वरेच्छा में होता है, वह उसे भला ही समझता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति के पास नाम का धन है, वही पूर्ण साहूकार है। हे नानक! प्रभु का नाम ही उस मनुष्य का व्यवसाय है, नाम का ही उसे सहारा है और वह नाम रूपी लाभ ही प्राप्त करता है॥ २॥ ६॥ ३७॥

धनासरी महला ५ ॥ नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे माथै परउ रवाल ॥ रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥ १ ॥ तुम तउ राखनहार दइआल ॥ सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥ हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बांधिओ पाल ॥ २ ॥ ७ ॥ ३८ ॥

भगवान के दर्शन करके मेरे नेत्र पावन हो गए हैं। मेरे माथे पर उसकी चरण-धूलि ही पड़ी रहे। हे गोपाल! मेरे हृदय में आकर बस जाओ। मैं तो स्वाद ले-लेकर ठाकुर जी के ही गुण गाता रहता हूँ॥१॥ हे दयालु परमेश्वर! तुम सबके रखवाले हो। हे मेरे प्रभु-पिता! तुम बड़े सुन्दर, चतुर एवं अनन्त हो। मुझ पर भी कृपालु हो जाओ॥ १॥ रहाउ॥ हे महा आनंद एवं प्रसन्नता के रूप! तुम्हारी वाणी बड़ी अनूप एवं अमृत का घर है। हे नानक! मेरे हृदय में भगवान के चरण कमल बस गए हैं और मैंने गुरु का शब्द अपने दामन में बाँध लिया है॥ २॥ ७॥ ३८॥

धनासरी महला ५ ॥ अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥ सरब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥ १ ॥ हमरे पिता गोपाल दइआल ॥ जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीत साजन सरब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥ ईत ऊत जत कत तत तुम ही मिलै नानक संत सेवा ॥ २ ॥ ८ ॥ ३९ ॥

अपनी युक्ति से ही भगवान हमें भोजन खिलाता है और अपनी युक्ति से ही हमें (जीवन की) खेल खेलाता है। वह हमें समस्त सुख एवं स्वादिष्ट भोजन देता है और हमारे मन में ही रहता है

॥१॥ दया का घर परमेश्वर हमारा पिता है। जैसे माता अपने बालक की देखरेख करती है, वैसे ही प्रभु हमारा पालन-पोषण करता है॥ १॥ रहाउ॥ हे गुरुदेव प्रभु ! तू सच्चा मित्र एवं सज्जन है, तू ही गुणों का मालिक है और तू सदा शाश्वत रूप है। लोक-परलोक में जहाँ कहीं तू ही विद्यमान है। हे नानक ! ईश्वर तो संतों की निष्काम सेवा करने से ही मिलता है॥ २॥ ८॥ ३६॥

धनासरी महला ५ ॥ संत क्रिपाल दइआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इन ऊपरि लै बारे ॥ १ ॥ मनि तनि राम नाम हितकारे ॥ सूख सहज आनंद मंगल सहित भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥ धंनि सु थानु धंनि ओइ भवना जा महि संत बसारे ॥ जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥ २ ॥ ६ ॥ ४० ॥

कृपालु एवं दयालु संतजन अपने मन में से काम-क्रोध के विष को जला देते हैं। मैंने अपना राज्य, धन, यौवन, तन एवं प्राण सबकुछ इन पर न्यौछावर कर दिया है॥ १॥ वे अपने मन एवं तन में राम-नाम से ही प्रेम करते हैं। वे स्वयं सुख-शांति, आनंद एवं प्रसन्नता से रहते ही हैं, दूसरों को भी भवसागर से पार करवा देते हैं॥ रहाउ॥ वह स्थान बड़ा धन्य है और वह भवन भी खुशसनीब है, जहाँ संतजन रहते हैं। हे मेरे ठाकुर जी ! नानक की यह आकांक्षा पूरी करो, ताकि वह तेरे भक्तों को नमन करे॥ २॥ ६॥ ४०॥

धनासरी महला ५ ॥ छडाइ लीओ महा बली ते अपने चरन पराति ॥ एकु नामु दीओ मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥ १ ॥ सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥ हरि हरि नामु दीओ कीरतन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥ नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति ॥ २ ॥ १० ॥ ४१ ॥

गुरु ने अपने चरणों में लगाकर मुझे महाबली माया से बचा लिया है। उसने सिमरन करने के लिए मेरे मन को एक नाम रूपी मंत्र प्रदान किया है, जो न कभी नाश होता है और न ही कहीं जाता है॥१॥ पूर्ण सतगुरु ने मुझे नाम की देन प्रदान की है और कीर्तन करने के लिए मुझे परमात्मा का नाम प्रदान किया है और कीर्तन करने से मैं बंधनों से मुक्त हो गया हूँ॥ रहाउ॥ प्रभु ने हमेशा ही अपने भक्तों का पक्ष लिया है और उनकी लाज रखी है। हे नानक ! मैंने अपने प्रभु के चरण पकड़ लिए हैं और अब दिन-रात सुख प्राप्त कर रहा हूँ॥२॥१०॥४१॥

धनासरी महला ५ ॥ पर हरना लोभु झूठ निंद इव ही करत गुदारी ॥ म्रिग त्रिसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ॥ १ ॥ साकत की आवरदा जाइ ब्रिथारी ॥ जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी इह बंधन छुटकारी ॥ बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ॥ २ ॥ ११ ॥ ४२ ॥

पराया धन चोरी करना, लालच करना, झूठ बोलना एवं निन्दा करना— इस तरह करते ही शाक्त आदमी ने अपना जीवन व्यतीत कर दिया है। जिस तरह प्यासे मृग को मृगतृष्णा का जल बड़ा मीठा लगता है, वैसे ही शाक्त झूठी आशाओं को बड़ा मीठा समझता है और उसने इन झूठी आशाओं के सहारे को अपने मन में भलीभांति बसा लिया है॥१॥ शाक्त व्यक्ति का जीवन व्यर्थ ही बीत जाता है, जैसे कागज के ढेर को चूहा कुतर-कुतर कर गंवा देता है परन्तु वह कुतरे हुए कागज उस मूर्ख के कोई काम नहीं आते॥रहाउ॥ हे मेरे स्वामी परब्रह्म ! अपनी कृपा करके मुझे माया के इन बँधनों से मुक्त कर दीजिए। हे नानक ! प्रभु डूब रहे ज्ञानहीन मनुष्यों को साधुजनों की संगति में मिलाकर भवसागर में से बाहर निकाल लेता है॥ २॥ ११॥ ४२॥

धनासरी महला ५ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥ रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥ १ ॥ रसना राम रसाइनि माती ॥ रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥ जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥ मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥ २ ॥ १२ ॥ ४३ ॥

अपने स्वामी प्रभु का सिमरन करने से मेरा तन, मन एवं छाती शीतल हो गए हैं। मेरे प्राणों का स्वामी परब्रह्म ही मेरी जाति, रूप, रंग, सुख एवं धन है॥१॥ मेरी जिह्वा रसों के घर राम-नाम में मस्त रहती है और राम के प्रेम-रंग में रंग गई है। भगवान के सुन्दर चरण-कमल नवनिधियों का भण्डार हैं॥ रहाउ॥ जिसका मैं सेवक था, उसने मुझे भवसागर में डूबने से बचा लिया है। पूर्ण प्रभु का अपने सेवकों को बचाने का तरीका निराला ही है। सुखों के दाता ने मुझे स्वयं ही अपने साथ मिला लिया है। हे नानक! भगवान ने मेरी लाज-प्रतिष्ठा रख ली है॥२॥१२॥४३॥

धनासरी महला ५ ॥ दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥ जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु ततकाल तुम मारा ॥ १ ॥ निरखउ तुमरी ओर हरि नीत ॥ मुरारि सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥ नानक अनद भए दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥ २ ॥ १३ ॥ ४४ ॥

हे ईश्वर! तेरा तेज-प्रताप समूचे जगत में प्रगट है; कामादिक पाँच शत्रु तेरी कृपा से ही दूर होते हैं। जो कोई भी तेरे भक्तों को दुखी करता था, उसका तूने तुरंत ही वध कर दिया है॥१॥ हे हरि! मैं तो नित्य ही तेरी तरफ मदद के लिए देखता रहता हूँ। हे मुरारि! अपने दास के सहायक बन जाओ। हे मेरे मित्र प्रभु! मेरा हाथ पकड़ कर मेरा उद्धार कर दो॥रहाउ॥ मेरे ठाकुर जी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है और उसने मुझे अपना सेवक बना कर मालिक वाला कर्त्तव्य पूरा किया है। हे नानक! हमेशा ही हरि का जाप करने से आनंद बना रहता है और मेरे समस्त दुःख दूर हो गए हैं॥ २॥ १३॥ ४४॥

धनासरी महला ५ ॥ चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ ॥ क्रिपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥ १ ॥ हरि जन राखे गुर गोविंद ॥ कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥ जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै ॥ नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥ २ ॥ १४ ॥ ४५ ॥

जिस परमात्मा ने चारों दिशाओं में अपने बल का प्रसार किया हुआ है, उसने मेरे सिर पर अपना हाथ रखा हुआ है। उसने अपनी कृपा-दृष्टि से देखा है और अपने दास का दुःख नाश कर दिया है॥१॥ गोविन्द गुरु ने दास को संसार-सागर में डूबने से बचा लिया है। क्षमाशील एवं दयालु परमपुरुष ने अपने गले से लगा लिया है और सभी अवगुण मिटा दिए हैं॥रहाउ॥ वह अपने ठाकुर जी से जो कुछ भी माँगता है, वह वही कुछ दे देता है। हे नानक! परमात्मा का दास जो कुछ भी मुँह से बोलता है, वह लोक एवं परलोक में सत्य हो जाता है॥२॥१४॥४५॥

धनासरी महला ५ ॥ अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥ १ ॥ प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥ आदि अंति प्रभु सदा सहाई धंनु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥ २ ॥ १५ ॥ ४६ ॥

परमात्मा अपना विरद् याद रखता है और अपने दास को संकट काल की एक घड़ी भी देखने नहीं देता। वह अपना हाथ देकर अपने दास की रक्षा करता है और श्वास-श्वास उसका पालन-पोषण करता है॥१॥ मेरा चित्त प्रभु से ही लगा रहता है। मेरा मित्र प्रभु धन्य है, वह तो आदि से अंत तक सदैव ही मेरा सहायक बना रहता है॥रहाउ॥ मालिक की आश्चर्यजनक लीला एवं बड़ाई को देख कर मेरे मन में हर्षोल्लास उत्पन्न हो गया है। हे नानक ! प्रभु ने मेरी पूरी लाज-प्रतिष्ठा रख ली है, इसलिए परमेश्वर का नाम-स्मरण करके आनंद प्राप्त करो॥ २॥ १५॥ ४६॥

धनासरी महला ५ ॥ जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥ चरन कमल जा का मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥ १ ॥ तेरा जनु राम नाम रंगि जागा ॥ आलसु छीजि गइआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥ जह जह पेखउ तह नाराइण सगल घटा महि तागा ॥ नाम उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥ २ ॥ १६ ॥ ४७ ॥

जिस आदमी को प्राणपति दाता भूल जाता है, उसे बदनसीब समझो। जिसका मन प्रभु चरणों के प्रेम में लग गया है, उसने अमृत का सरोवर प्राप्त कर लिया है॥१॥ हे ईश्वर ! तेरा सेवक राम नाम के प्रेम में मग्न होकर अज्ञान की निद्रा में से जाग्रत हो गया है। मेरे शरीर में से सारा आलस्य दूर हो गया है तथा मेरा मन अपने प्रियतम के साथ लग गया है॥रहाउ॥ मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, उधर ही नारायण को माला के मोतियों के धागे की भांति समस्त शरीरों में निवास करता हुआ देखता हूँ। हरिनामामृत रूपी जल को पान करते ही नानक ने अन्य सभी अनुराग त्याग दिए हैं॥ २॥ १६॥ ४७॥

धनासरी महला ५ ॥ जन के पूरन होए काम ॥ कली काल महा बिखिआ महि लजा राखी राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम ॥ मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ॥ १ ॥ चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥ गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥ २ ॥ १७ ॥ ४८ ॥

दास के सभी काम सम्पूर्ण हो गए हैं। इस कलियुग के समय में महा विषैली माया के जाल में राम ने मेरी लाज-प्रतिष्ठा रख ली है॥१॥ रहाउ॥ अपने स्वामी प्रभु का बार-बार सिमरन करने से यम मेरे निकट नहीं आता। दास ने भगवान का धाम पा लिया है और उसके लिए साधु की संगति ही मुक्ति एवं वैकुंठ है॥१॥ भगवान के चरण कमल ही दास के लिए अक्षय धन की थैली है और करोड़ों सुखों का निवास है। हे नानक ! मैं दिन-रात गोविन्द की आराधना करता रहता हूँ और सदैव ही उस पर कुर्बान जाता हूँ॥२॥१७॥४८॥

धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते इकु दानु ॥ सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन तुम्हारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ ॥ सोग अगनि महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥ १ ॥ स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण ॥ नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण ॥ २ ॥ १८ ॥ ४६ ॥

मैं राम से एक यही दान माँगता हूँ कि मैं तुम्हारा नाम-सिमरन करता रहूँ, जिसके फलस्वरूप सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं॥ १॥ रहाउ॥ तेरे चरण कमल मेरे हृदय में बस जाएँ और मैं संतजनों की संगति प्राप्त करूँ। मेरा मन चिंता की अग्नि में न जले और आठ प्रहर तेरे गुण गाता रहूँ ॥१॥ मैं सुख-कल्याण की अवस्था में भगवान की भक्ति करता रहूँ और जीवन भर प्रभु का जाप

करता रहूँ। हे नानक! मेरा परमेश्वर से अटूट प्रेम-रंग लग गया है, अब पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ूँगा॥२॥१८॥४६॥

धनासरी महला ५ ॥ मांगउ राम ते सभि थोक ॥ मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घोखे मुनि जन सिंम्रिति पुरानां बेद पुकारहि घोख ॥ क्रिपा सिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥ १ ॥ आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥ नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥ २ ॥ १६ ॥ ५० ॥

मैं तो राम से ही सभी पदार्थ माँगता हूँ। किसी मनुष्य से माँगने से मेहनत के बाद चिंता ही मिलती है, किन्तु प्रभु के सिमरन से ही मोक्ष मिल जाता है॥१॥ रहाउ॥ ऋषियों-मुनियों ने स्मृतियों एवं पुराणों का ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया है और वे वेदों का अध्ययन करके उच्च स्वर में पढ़कर दूसरों को सुनाते रहते हैं। कृपा के सागर भगवान की भक्ति करने से ही उस परम-सत्य को पाया जाता है और यह लोक एवं परलोक दोनों ही सुखद हो जाते हैं॥१॥ भगवान के सिमरन के सिवाय अन्य जितने भी आचार-व्यवहार हैं, वे सभी निष्फल हैं। हे नानक! संत गुरुदेव को मिलने से चिन्ता मिट जाती है और जन्म-मरण का भय नाश हो जाता है॥२॥१६॥५०॥

धनासरी महला ५ ॥ त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥ महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥ अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥ १ ॥ सरब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥ जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥ २ ॥ २० ॥ ५१ ॥

भगवान के नाम-सिमरन से सारी तृष्णा बुझ जाती है। गुरु की वाणी से मन में बड़ा संतोष उत्पन्न होता है और प्रभु के साथ पूर्ण ध्यान लग जाता है॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे दीन-दयालु प्रभु! मुझ पर अपनी कृपा करो, ताकि मेरे मन में से माया के बड़े आनंद-कौतुक प्राप्त करने की तृष्णा बुझ जाए। मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए, जिसका जाप करके मैं जीवित रहूँ और तेरे दास की साधना सफल हो जाए॥१॥ हरि-कीर्तन करने एवं नाम का जाप करने से सदैव ही खुशियाँ बनी रहती हैं, सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं तथा राज के सभी सुख एवं आनंद प्राप्त हो जाते हैं। हे नानक! जिसकी किस्मत में कर्त्ता-प्रभु ने प्रारम्भ से ही ऐसा लेख लिखा होता है, उस व्यक्ति के सब काम पूर्ण होते हैं॥२॥२०॥५१॥

धनासरी मः ५ ॥ जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥ निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥ जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥ १ ॥ करनहारु रखवाला होआ जा का अंतु न पारावार ॥ नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥ २ ॥ २१ ॥ ५२ ॥

परब्रह्म ने अपने दास की देखरेख की है, अब दास के समक्ष निन्दक तो सर्वथा टिक ही नहीं पाते और बेकार ही बादलों की तरह उड़ गए हैं॥१॥ रहाउ॥ जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ ही मेरा स्वामी प्रभु स्थित है और कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। जो कोई भी दास की अवज्ञा करता है, वह तुरंत ही नष्ट हो गया है॥१॥ जिसका न कोई अन्त है, न ही कोई आर-पार है, वह सबका रचयिता प्रभु स्वयं रखवाला बन गया है। हे नानक! प्रभु ने अपने दास को बचा लिया है और निन्दकों को मार कर संगत में से बाहर निकाल दिया है॥२॥२१॥५२॥

धनासरी महला ५ घरु ६ पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि चरन सरन गोबिंद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥ द्रिसटि प्रभ धारहु क्रिपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥ प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥ १ ॥ पतित उधारणा जीअ जंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइओ ॥ गुणह सुख सागरा ब्रहम रतनागरा भगति वछलु नानक गाइओ ॥ २ ॥ १ ॥ ५३ ॥

हे दुःख नाश करने वाले गोविन्द ! हे हरि ! मैं तेरे चरणों की शरण चाहता हूँ, अपने दास को अपना अमूल्य नाम प्रदान करो। हे प्रभु ! मुझ पर कृपा-दृष्टि करो; मुझे भवसागर में से पार कर दो और मेरी भुजा पकड़ कर अज्ञान के कुएँ में से निकाल लो॥रहाउ॥ काम, क्रोध के कारण मैं अन्धा होकर माया के बंधनों में फँसा हुआ हूँ और मेरे शरीर पर अनेक पाप पूर्णतया भरे हुए हैं। प्रभु के अलावा अन्य कोई भी बंधनों से बचाने वाला नही हैं। हे शूरवीर प्रभु ! मैं तेरी शरण में आया हूँ, अंतः मुझसे अपने नाम का सिमरन करवाओ॥१॥ हे ईश्वर ! तू पतितों का उद्धार करने वाला एवं जीव-जन्तुओं का कल्याण करने वाला हैं। वेदों का अध्ययन करने वाले पण्डित भी तेरी महिमा का अन्त नहीं पा सके। हे ब्रह्म ! तू गुणों एवं सुखों का सागर है और तू ही रत्नों की खान है। नानक ने तो भक्तवत्सल परमात्मा का ही स्तुतिगान किया है॥ २॥ १॥ ५३॥

धनासरी महला ५ ॥ हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥ मिटहि कमाणे पाप चिराणे साधसंगति मिलि मुआ जीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महांत कहै ॥ आस पिआस रमण हरि कीरतन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥ १ ॥ सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा ॥ अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥ २ ॥ २ ॥ ५४ ॥

सदा-सर्वदा गोविन्द का नाम जपना चाहिए; नाम-सिमरन से इहलोक एवं परलोक में भी नित्य ही सुख प्राप्त होता है। साधु-संगति में शामिल होने से आध्यात्मिक तौर पर मृत व्यक्ति भी जीवित हो जाता है अर्थात् शाक्त से गुरुमुख बन जाता है तथा उसके पूर्वकृत पाप भी मिट जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ राज एवं यौवन में मनुष्य को भगवान भूल जाता है। महापुरुष यही बात कहते हैं कि माया का मोह एक महां दुःख है। मनुष्य को भगवान का कीर्तन करने की अभिलाषा एवं प्यास लगी रहनी चाहिए परन्तु यह अनमोल पदार्थ कोई भाग्यवान् ही प्राप्त करता है॥ १॥ हे अगोचर एवं अकथनीय प्रभु ! तू अपने भक्तों को शरण देने में समर्थ है, तेरा नाम पापियों का उद्धार करने वाला है। हे नानक के स्वामी प्रभु ! तू अन्तर्यामी है। मेरा ठाकुर सर्वव्यापी है॥ २॥ २॥ ५४॥

धनासरी महला ५ घरु १२ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥ रहाउ ॥ वडै भागि भेटे गुरदेवा ॥ कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥ १ ॥ चरन कमल जा का मनु रापै ॥ सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥ २ ॥ सागरु तरिआ साधू संगे ॥ निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥ ३ ॥ पर धन दोख किछु पाप न फेड़े ॥ जम जंदारु न आवै नेड़े ॥ ४ ॥ त्रिसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥ ५ ॥ १ ॥ ५५ ॥

भगवान की हमेशा वन्दना करो, जगतपालक परमात्मा का गुणगान करो॥रहाउ॥ अहोभाग्य से ही गुरुदेव से भेंट होती है। भगवान की भक्ति करने से करोड़ों ही अपराध मिट जाते हैं॥१॥ जिसका मन भगवान के चरण-कमलों के प्रेम में लीन हो जाता है, उस मनुष्य को चिन्ता की अग्नि प्रभावित नहीं करती॥२॥ वह संतों की सभा में सम्मिलित होकर संसार-सागर में से पार हो गया है। निर्भय प्रभु का नाम जपो; हरि के प्रेम में आसक्त रहो॥ ३॥ जो व्यक्ति पराया-धन के लोभ दोष एवं अन्य पापों से मुक्त रहता है, भयंकर यम उसके निकट नहीं आता॥ ४॥ उसकी तृष्णाग्नि प्रभु ने खुद ही बुझा दी है। हे नानक! वह प्रभु की शरण में आकर माया के बन्धनों से मुक्त हो गया है॥ ५॥ १॥ ५५॥

धनासरी मड्ला ५ ॥ त्रिपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥ १ ॥ जीवना हरि जीवना ॥ जीवनु हरि जपि साधसंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए ॥ अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥ २ ॥ हसती रथ असु असवारी ॥ हरि का मारगु रिदै निहारी ॥ ३ ॥ मन तन अंतरि चरन धिआइआ ॥ हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ५६ ॥

सत्य का भोजन खाने से मैं तृप्त हो गया हूँ। अपने मन, तन एवं जिह्वा से मैंने परमात्मा के नाम का ध्यान किया है॥१॥ भगवान के सिमरन में जीना ही वास्तव में सच्चा जीवन है। साधुओं की संगत में मिलकर उसका भजन करना ही वास्तविक जीवन है॥१॥रहाउ॥ मैंने प्रतिदिन ही जो भजन-कीर्तन एवं भगवान का गुणगान किया है, वही मैंने अनेक प्रकार के वस्त्र पहने हैं॥२॥ मैं भगवान से मिलन का मार्ग अपने हृदय में देखता हूँ, यही मेरे लिए हाथी, रथ एवं घोड़े की सवारी करना है॥३॥ मैंने अपने मन, तन, अन्तर में ईश्वर का ही ध्यान किया है। हे नानक! दास ने सुखों का भण्डार परमेश्वर पा लिया है॥४॥२॥५६॥

धनासरी महला ५ ॥ गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोई होआ क्रम रतु कोई तीरथ नाइआ ॥ दासीं हरि का नामु धिआइआ ॥ १ ॥ बंधन काटनहारु सुआमी ॥ जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५७ ॥

गुरु के चरण जीव का उद्धार कर देते हैं, जिसने एक क्षण में ही प्राणी को संसार-सागर में से पार कर दिया है॥१॥ रहाउ॥ कोई मनुष्य कर्मकाण्ड करने में ही मग्न हो गया है और कोई तीर्थों पर स्नान कर आया है परन्तु दास ने तो हरि-नाम का ध्यान-मनन किया है॥१॥ जगत का स्वामी परमेश्वर सब जीवों के बन्धन काटने वाला है। नानक तो उस अन्तर्यामी ईश्वर का सिमरन करता रहता है॥२॥३॥५७॥

धनासरी महला ५ ॥ कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति ॥ दास तेरे की निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ हउमै बंधु हरि देवणहारा ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ नानक की बेनंती एह ॥ २ ॥ ४ ॥ ५८ ॥

हे परमात्मा! तेरे दास का यही निर्मल आचरण है कि तुझसे किसी तरह भी प्रीति न टूटे॥१॥ रहाउ॥ तू मुझे मेरी आत्मा, प्राणों, मन एवं धन से भी अत्याधिक प्यारा है। हे परमेश्वर! एक तू ही अहंकार के मार्ग पर रोक लगाने वाला है॥१॥ नानक की तो यही प्रार्थना है कि तेरे सुन्दर चरण कमलों से मेरा प्यार लग जाए॥२॥४॥५८॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

धनासरी महला ९ ॥ काहे रे बन खोजन जाई ॥ सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥ तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥ १ ॥ बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥ जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ २ ॥ १ ॥

हे मानव ! तू भगवान को ढूँढने के लिए क्यों वन में जाता है। वह तो सबमें निवास करने वाला है, जो हमेशा माया से निर्लिप्त रहता है, वह तो तेरे साथ ही रहता है॥१॥ रहाउ॥ हे मानव ! जैसे फूल में सुगन्धि रहती है और जैसे देखने वाले का अपना प्रतिबिम्ब शीशे में रहता है, वैसे ही भगवान तेरे हृदय में निवास करता है; अंतः उसे अपने हृदय में खोजो॥१॥ गुरु का ज्ञान यह भेद बताता है कि शरीर से बाहर जगत में और शरीर के भीतर हृदय में एक परमात्मा का ही निवास समझो। हे नानक ! अपने आत्म-स्वरूप को पहचाने बिना मन से भ्रम की मैल दूर नहीं होती॥२॥१॥

धनासरी महला ९ ॥ साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥ राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥ जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥ १ ॥ दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥ जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥ २ ॥ २ ॥

हे संतजनो ! यह जगत भ्रम में पड़कर भटका हुआ है। इसने राम-नाम का सिमरन छोड़ दिया है और यह माया के हाथों बिक चुका है॥१॥रहाउ॥ यह जगत तो माता, पिता, भाई, पुत्र एवं पत्नी के मोह में फँस चुका है। यह यौवन, धन एवं प्रभुता के नशे में दिन-रात दीवाना हुआ रहता है॥१॥ जो सदैव ही दीनदयालु एवं दुखों का नाश करने वाला है, इसने उस भगवान के साथ अपना मन नहीं लगाया। हे नानक ! करोड़ों में किसी विरले मनुष्य ने ही गुरुमुख बनकर भगवान की पहचान की है॥२॥२॥

धनासरी महला ९ ॥ तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥ हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥ १ ॥ चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ ३ ॥

जिस के हृदय में लोभ, मोह एवं माया की ममता प्रबल रहती है, उस योगी को योग-साधना की युक्ति की सूझ नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके स्वभाव में पराई निन्दा एवं प्रशंसा नहीं है, जिसके लिए सोना एवं लोहा एक समान है और जो खुशी एवं चिन्ता से तटस्थ रहता है, उसे ही वास्तविक योगी समझो॥ १॥ यह चंचल मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है, जिसने इसे स्थिर कर लिया है। हे नानक ! जो आदमी इस प्रकार का है, उसे ही माया के बन्धनों से मुक्त हुआ समझो॥२॥३॥

धनासरी महला ९ ॥ अब मै कउनु उपाउ करउ ॥ जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥ मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥ १ ॥ गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥ कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥ ९ ॥ १३ ॥ ५८ ॥ ४ ॥ ९३ ॥

अब मैं क्या उपाय करूँ? जिस विधि से मेरे मन का संशय दूर हो जाए और मैं भयानक संसार-सागर से पार हो जाऊँ॥१॥रहाउ॥ अमूल्य मानव जन्म प्राप्त करके मैंने कोई शुभ-कर्म नहीं किया, इसलिए मैं बहुत डरता हूँ। यह चिन्ता मेरे मन में लगी रहती है कि मैंने अपने मन, वचन एवं कर्म से कभी भी भगवान का गुणगान नहीं किया॥१॥ गुरु का उपदेश सुनकर मेरे मन में कुछ भी ज्ञान पैदा नहीं हुआ और मैं तो पशु की भांति अपना पेट भरता रहता हूँ। नानक का कथन है कि हे प्रभु! तुम अपने विरद् को पहचानो, तब ही मैं पतित भवसागर में से पार हो सकता हूँ॥ २॥ ४॥ ६॥ ६॥ १३॥ ५८॥ ४॥ ६३॥

धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥ अंम्रितु संत चुगहि नही दूरे ॥ हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥ सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥ १ ॥ किआ बगु बपुड़ा छपड़ी नाइ ॥ कीचड़ि डूबै मैलु न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥ दुबिधा छोडि भए निरंकारी ॥ मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥ आवण जाण रहे गुरि राखे ॥ २ ॥ सरवर हंसा छोडि न जाइ ॥ प्रेम भगति करि सहजि समाइ ॥ सरवर महि हंसु हंस महि सागरु ॥ अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥ ३ ॥ सुंन मंडल इकु जोगी बैसे ॥ नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥ त्रिभवण जोति रहे लिव लाई ॥ सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥ ४ ॥ आनंद मूलु अनाथ अधारी ॥ गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥ भगति वछल भै काटणहारे ॥ हउमै मारि मिले पगु धारे ॥ ५ ॥ अनिक जतन करि कालु संताए ॥ मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ जनमु पदारथु दुबिधा खोवै ॥ आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥ ६ ॥ कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥ धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥ जतु सतु संजमु रिदै समाए ॥ चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥ ७ ॥ साचे निरमल मैलु न लागै ॥ गुर कै सबदि भरम भउ भागै ॥ सूरति मूरति आदि अनूपु ॥ नानकु जाचै साचु सरूपु ॥ ८ ॥ १ ॥

गुरु नाम रूपी रत्नों से भरा हुआ सागर है। संत रूपी हंस इस में से अमृत रूपी रत्न चुगते हैं और वे गुरु रूपी सागर से दूर नहीं होते। संत रूपी हंस हरि रस रूपी चोगा चुगते हैं और वे प्रभु को अच्छे लगते हैं। हंस रूपी संत, सागर रूपी गुरु में से अपने प्राणपति परमेश्वर को पा लेते हैं॥१॥ बेचारा बगुला (पाखण्डी) छोटे तालाब में क्यों स्नान करता है? वह तो छोटे तालाब के कीचड़ में ही डूबता है परन्तु उसकी (विकारों की) मैल दूर नहीं होती॥१॥रहाउ॥ विचारवान पुरुष बड़े ध्यानपूर्वक अपने पैर धरती पर रखते हैं और वे दुविधा को छोड़कर निरंकार के उपासक बन जाते है। वे मुक्ति पदार्थ को प्राप्त कर लेते हैं और हरि रस चखते रहते हैं। गुरु ने उन्हें भवसागर में डूबने से बचा लिया है और उनके जन्म-मरण के चक्र मिट गए हैं॥२॥ हंस रूपी संत, सागर रूपी गुरु को छोड़कर कहीं नहीं जाता और वह प्रेम-भक्ति करके सहज अवस्था में ही लीन रहता है। हंस रूपी संत, सागर रूपी गुरु में और सागर रूपी गुरु, हंस रूपी संत में मिलकर एक रूप हो जाते हैं। यह एक अकथनीय कथा है कि संत गुरु की वाणी द्वारा प्रभु के दरबार में आदर-सत्कार प्राप्त करता है॥ ३॥ शून्य मण्डल में एक योगी अर्थात् प्रभु विराजमान है। वह न तो स्त्री है और न ही वह पुरुष है। कोई कैसे कहे कि वह कैसा है? धरती, आकाश एवं पाताल-इन तीनों भवनों के जीव उस ज्योति में ध्यान लगाकर रखते हैं। देवते, मनुष्य एवं नाथ परम-सत्य परमेश्वर की शरण में रहते हैं॥ ४॥ परमेश्वर आनंद का स्रोत है, अनाथों का सहारा है और गुरुमुखजन सहज अवस्था में उसकी भक्ति एवं सिमरन करते रहते हैं। हे भय का नाश करने वाले

प्रभु ! तू भक्तवत्सल है, तेरे चरण को अपने हृदय में बसा कर एवं अपने अहंत्व को मारकर ही तेरे भक्तजन तुझे मिले हैं॥ ५॥ मनुष्य अनेक यत्न करता है परन्तु मृत्यु उसे बहुत दुःख देती है। सभी जीव अपने माथे पर मृत्यु का लेख लिखवा कर पृथ्वी में आए हैं परन्तु वे दुविधा में फँस कर अपना दुर्लभ जन्म व्यर्थ ही गंवा देते हैं। वे अपने आत्म स्वरूप को नहीं पहचानते और भ्रम में पड़कर रोते रहते हैं॥ ६॥ जो मनुष्य एक परमेश्वर की गुणों वाली वाणी का बखान करता रहता है, वाणी को पढ़ता और सुनता रहता है, पृथ्वी को धारण करने वाला परमेश्वर उसे धर्म, धैर्य एवं अपना सहारा देता है। यदि मनुष्य का मन तुरीयावस्था में प्रसन्न हो जाए तो उसके हृदय में ब्रह्मचार्य, सत्य एवं संयम समा जाते है॥ ७॥ सत्यवादी पुरुष के निर्मल मन को विकारों की मैल नहीं लगती और गुरु के शब्द द्वारा उसका भ्रम एवं मृत्यु का भय दूर हो जाता है। आदिपुरुष की सूरत एवं मूर्त्त अत्यंत सुन्दर है। नानक तो उस सत्यस्वरूप प्रभु के दर्शनों की ही कामना करता है॥ ८॥ १॥

धनासरी महला १ ॥ सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥ ना तिसु मरणु न आवणु जाणु ॥ ठाकुर महि दासु दास महि सोइ ॥ जह देखा तह अवरु न कोइ ॥ १ ॥ गुरमुखि भगति सहज घरु पाईऐ ॥ बिनु गुर भेटे मरि आईऐ जाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै ॥ अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ हरि के लोग अवर नही कारा ॥ साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥ २ ॥ तन महि मनूआ मन महि साचा ॥ सो साचा मिलि साचे राचा ॥ सेवकु प्रभ कै लागै पाइ ॥ सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि दिखावै आपे देखै ॥ हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥ घड़ि भाडे जिनि अंम्रितु पाइआ ॥ प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥ ४ ॥ पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि ॥ बहुतु सिआणप आवहि जाहि ॥ नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥ गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥ ५ ॥ पूजि सिला तीरथ बन वासा ॥ भरमत डोलत भए उदासा ॥ मनि मैलै सूचा किउ होइ ॥ साचि मिलै पावै पति सोइ ॥ ६ ॥ आचारा वीचारु सरीरि ॥ आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ पल पंकज महि कोटि उधारे ॥ करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥ ७ ॥ किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥ तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइ ॥ नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

जो व्यक्ति सहजावस्था में भगवान से मिलता है, उसका मिलाप ही स्वीकार होता है। फिर उसकी मृत्यु नहीं होती और न ही वह जन्म-मरण के चक्र में पड़ता है। दास अपने मालिक-प्रभु में ही लीन रहता है और दास के मन में वही निवास करता है। मैं जहाँ भी देखता हूँ, उधर ही भगवान के सिवाय मुझे अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता॥ १॥ गुरु के माध्यम से परमात्मा की भक्ति करने से मनुष्य सहज ही सच्चे घर को पा लेता है। गुरु से साक्षात्कार किए बिना मनुष्य मरणोपरांत आवागमन के चक्र में ही पड़ा रहता है अर्थात् जन्मता-मरता ही रहता है॥ १॥ रहाउ॥ ऐसा गुरु ही धारण करो, जो मन में सत्य को दृढ़ करवा दे एवं अकथनीय प्रभु की कथा करवाए और शब्द द्वारा भगवान से मिलाप करवा दे। भक्तों को नाम-सिमरन के सिवाय अन्य कोई कार्य अच्छा नहीं लगता। वे तो केवल सत्यस्वरूप परमेश्वर एवं सत्य से ही प्रेम करते हैं॥ २॥ मनुष्य के तन में मन का निवास है और मन में ही सत्य का वास है। वही मनुष्य सत्यवादी है, जो सत्य प्रभु को मिलकर उसके साथ लीन रहता है। सेवक प्रभु-चरणों में लग जाता है। यदि मनुष्य को पूर्ण सतगुरु मिल जाए तो वह उसे भगवान से मिला देता है॥ ३॥ भगवान स्वयं ही समस्त जीवों को देखता है लेकिन वह उन्हें अपने दर्शन स्वयं ही दिखाता है। वह न तो हठ योग से प्रसन्न होता

है और न ही वह अनेक वेष धारण करने से प्रसन्न होता है। जिसने शरीर रूपी बर्तन का निर्माण करके उसमें नाम रूपी अमृत डाला है, उसका मन केवल प्रेम-भक्ति से ही प्रसन्न होता है॥ ४॥ जो व्यक्ति धार्मिक ग्रंथ पढ़-पढ़कर भटक जाते हैं, वे यम द्वारा बहुत दुःखी होते हैं। वे अपनी अधिक चतुराई के कारण जन्मते-मरते ही रहते हैं। जो नाम का जाप करते रहते हैं और भगवान का भय रूपी भोजन खाते रहते हैं, वे सेवक गुरु के माध्यम से परम-सत्य में ही लीन रहते हैं ॥५॥ जो मनुष्य मूर्ति-पूजा करता है, तीर्थ-स्नान करता है, जंगलों में निवास कर लेता है, त्यागी भी बन गया है और स्थान-स्थान भटकता एवं विचलित होता रहता है, फिर वह अशुद्ध मन से कैसे पवित्र हो सकता है ? जिसे सत्य मिल जाता है, उसे ही शोभा प्राप्त होती है॥ ६॥ उसका आचरण अच्छा हो जाता है और उसके शरीर में शुभ विचार उत्पन्न हो जाते हैं। उसका मन युग-युगांतरों में भी सदैव ही धैर्य से सहज अवस्था में लीन रहता है। हे प्यारे परमेश्वर ! अपनी कृपा करके मुझे गुरु से मिला दो जो पलक झपकने के समय में ही करोड़ों जीवों का उद्धार कर देता है॥ ७॥ हे प्रभु ! मैं किसके समक्ष तेरी स्तुति करूँ ? चूंकि तेरे अलावा मेरे लिए अन्य कोई महान् नहीं। जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही तू मुझे अपनी इच्छानुसार रख। चूंकि नानक तो सहज स्वभाव प्रेमपूर्वक तेरे ही गुण गाता है॥८॥२॥

धनासरी महला ५ घरु ६ असटपदी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु संजोगि पाइआ ॥ ताकी है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइआ ॥ १ ॥ अनिक जनम भ्रमि थिति नही पाई ॥ करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक उपाव करउ माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥ कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥ २ ॥ पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥ कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अंम्रित नामु मेरै रिदै सिंचा ॥ ३ ॥ जेते रे तीरथ नाए अहंबुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥ कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥ ४ ॥ सगल अस्रम कीने मनूआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोए ॥ कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रहम कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥ ५ ॥ करम धरम जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥ जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुर परसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥ ६ ॥ मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी ॥ कोई ऐसो रे सुखह दाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥ ७ ॥ सुप्रसंन गोपाल राइ काटै रे बंधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥ सदा सदा आनंदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥ ८ ॥ सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ आवण जाण रहे मिले साधा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ १ ॥ ३ ॥

जो भी जीव जिस योनि में आया है, वह उस में ही उलझ गया है; अहोभाग्य से अमूल्य मानव-जन्म प्राप्त हुआ है। हे साधुजनो ! मैंने आपका सहारा ही देखा है, इसलिए अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो तथा कृपा करके विश्व के बादशाह प्रभु से मिला दो॥१॥ मैं तो अनेक जन्मों में भटका हूँ परन्तु मुझे कहीं भी स्थिरता प्राप्त नहीं हुई। अब मैं अपने गुरु के चरणों में लगकर उसकी सेवा करता हूँ। हे गुरुदेव ! मुझे गोविन्द से मिलन का मार्ग बता दीजिए॥१॥

रहाउ॥ मैं माया को अपने हृदय में बसाकर रखता हूँ और इसे प्राप्त करने हेतु अनेक उपाय करता रहता हूँ। हमेशा ही 'मेरी-मेरी' करते हुए मेरी तमाम आयु बीतती जा रही है। मेरी अभिलाषा है कि मुझे कोई ऐसा संत मिल जाए, जो मेरी सारी चिन्ता दूर कर दे और ठाकुर जी से मेरा प्यार लगा दे॥ २॥ मैंने सभी वेद पढ़े हैं परन्तु मेरे मन के सन्देह दूर नहीं होते और मेरे शरीर रूपी घर में रहने वाली पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, आँख, कान, नाक, जिह्वा इत्यादि एक क्षण भर के लिए धैर्य नहीं करते। क्या कोई ऐसा भक्त है, जो मोह-माया से निर्लिप्त हो और वह मेरे हृदय में नामामृत को सींच दे॥ ३॥ मैंने जितने भी तीर्थ किए हैं, इन तीर्थों पर स्नान करने से उतनी अहंकार रूपी मैल मैंने अपने मन को लगा ली है और मेरे हृदय रूपी घर का स्वामी प्रभु एक तिल भर के लिए भी प्रसन्न नहीं होता। मैं ऐसी साधसंगति कब प्राप्त करूँगा जिसमें मैं परमेश्वर का नाम जप कर सदैव ही आनंदित रहूँगा और मेरा मन अपनी आँखों में ज्ञान रूपी सुरमा डालकर ज्ञान रूपी तीर्थ में स्नान करेगा॥ ४॥ मैंने ब्रह्मचार्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास इन सभी आश्रमों के धर्म कमाए हैं परन्तु मेरा मन संतुष्ट नहीं होता। मैं ज्ञानहीन स्नान करके अपने शरीर को स्वच्छ करता रहता हूँ। मेरी तो कामना है कि कोई ऐसा महापुरुष मुझे मिल जाए जो विधाता परब्रह्म के प्रेम में मग्न हुआ हो और वह मेरी दुर्मति की मैल दूर कर दे॥ ५॥ मनुष्य धर्म-कर्मो में ही मग्न रहता है परन्तु वह क्षण भर के लिए भी प्रभु से प्रेम नहीं करता। वह तो घमण्ड एवं अहंकार में ही पड़ा रहता है परन्तु उसका कोई भी धर्म-कर्म किसी काम नहीं आता। जिसे शुभ फल देने वाला सत्य की मूर्ति गुरु मिल जाता है, वह सदा परमात्मा का कीर्ति-गान करता रहता है और गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही अपने नेत्रों से भगवान के दर्शन प्राप्त करता है॥ ६॥ जो मनुष्य अपने मन के हठ से अभ्यास करता है, उसकी साधना तिल भर भी स्वीकृत नहीं होती। वह तो मायाधारी बगुले की तरह ही ध्यान लगाकर रखता है। क्या कोई ऐसा सुख देने वाला महापुरुष है, जो मुझे प्रभु की कथा सुनाए और उसे मिलने से मेरी मुक्ति हो जाए॥ ७॥ यदि सृष्टि का पालनहार परमात्मा मुझ पर सुप्रसन्न हो जाए तो मेरे मोह-माया के बन्धन काट दे। मेरा मन गुरु के शब्द द्वारा प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है। अपने निर्भय गोविन्द को मिलकर मैं सदैव ही आनंदपूर्वक रहता हूँ। हे नानक! भगवान के चरणों में पड़कर मैंने सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं॥ ८॥ अब मेरी जीवन-यात्रा सफल हो गई है और संतों से मिलकर मेरा जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥ १॥ ३॥

धनासरी महला १ छंत १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥ गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥ १ ॥ साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥ गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ ॥ वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए ॥ आपि पारसु परम धिआनी साचु साचे भावए ॥ आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥ सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥ २ ॥ संगति मीत मिलापु पूरा नावणो ॥ गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥ सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुंन दान दइआ मते ॥ पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सत सते ॥ आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ ॥ गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ॥ ३ ॥ कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ

॥ हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ॥ सचु गुर की साखी अंम्रित भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥ कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥ नानक साचु कहै बेनंती मनु मांजै सचु सोई ॥ ४ ॥ १ ॥

मैं तीर्थ पर स्नान करने के लिए जाऊँ ? किन्तु परमात्मा का नाम ही वास्तविक तीर्थ है। शब्द का चिन्तन ही तीर्थ है और यह ज्ञान मेरे हृदय में है। गुरु का दिया हुआ ज्ञान ही सच्चा तीर्थ-स्थान और दसाहरा है, जहाँ हमेशा ही दस पर्व (अष्टमी, चौदश, संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावस्या, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, उत्तरायण, दक्षिणयान एवं व्यतिपात) मनाए जाते हैं। हे पृथ्वी को धारण करने वाले प्रभु ! मैं तुझसे सदैव ही नाम माँगता रहता हूँ, मुझे यह नाम प्रदान कीजिए। समूचा संसार ही रोगी है और इन रोगों की औषधि केवल परमात्मा का नाम ही है। सत्य नाम के बिना मन को अहंकार की मैल लग जाती है। गुरु की वाणी पवित्र है, जो सदैव ही मन में से अज्ञान रूपी अन्धेरे को दूर करके प्रकाश करती है। यह नित्य ही स्नान करने वाला सच्चा तीर्थ स्थान है॥ १॥ सत्य नाम में समावेश करने से मन को अहंकार की मैल नहीं लगती, तदन्तर अहंकार की मैल को स्वच्छ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अपने हृदय में भगवान के गुणों का हार पिरोने से मनुष्य को किसी के समक्ष विनती करने की जरूरत नहीं पड़ती। जो मनुष्य सिमरन द्वारा अपने मन के अहंकार को नष्ट कर देता है, वह भवसागर में से पार हो जाता है और दूसरों को भी भवसागर से पार करवा देता है। वह पुनः योनि-चक्र में नहीं पड़ता अर्थात् उसकी मुक्ति हो जाती है। वह स्वयं ही पारस और ध्यानी बन जाता है। ऐसा सत्यवादी पुरुष ही सच्चे प्रभु को अच्छा लगता है। वह रात-दिन आनंद एवं हर्ष की अनुभूति करता है और उसके तमाम दुःख एवं पाप नाश हो जाते हैं। वह सत्यनाम को प्राप्त कर लेता है और गुरु उसे भगवान के दर्शन करवा देता है। फिर उसके मन को अहंकार की मैल नहीं लगती, क्योंकि सत्य उसके हृदय में बस जाता है॥ २॥ हे मित्र ! सत्संगियों से मिलाप ही पूर्ण स्नान है। जो गाने वाला वाणी द्वारा प्रभु का स्तुतिगान करता है, वह सुन्दर बन जाता है। मन में गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा धारण करके सत्य परमेश्वर की स्तुति करने से मनुष्य दान, पुण्य एवं दया करने वाली बुद्धि वाला बन जाता है। जिस मनुष्य को सहज अवस्था में अपने प्रियतम-प्रभु की संगति अच्छी लगती है, वह त्रिवेणी के संगम व सर्वोत्तम पावन तीर्थ प्रयागराज में स्नान कर लेता है। उस एक सत्यस्वरूप ओंकार की ही आराधना करो, जो सदैव ही जीवों को देन देता रहता है। उस दाता की दी हुई देन दिन-ब-दिन प्रफुल्लित होती रहती है। हे मित्र ! संतों की संगति व सत्संगी मित्रों में सम्मिलित होने से मोक्ष प्राप्त हो जाता है। भगवान ने मुझ पर अपनी कृपा-दृष्टि करके मुझे सत्संगति में मिलाकर अपने साथ मिला लिया है॥३॥ हे प्रभु ! प्रत्येक मनुष्य तेरे बारे में कथन करता है परन्तु तुझे कितना महान् कहा जाए ? मैं तो मूर्ख, नीच एवं अनजान हूँ, मैंने गुरु की शिक्षा द्वारा तेरी महिमा के बारे में समझा है। गुरु की शिक्षा सत्य है, यह अमृत वाणी है और इससे मेरा मन प्रसन्न हो गया है। जो मनुष्य विष रूपी माया का भार लादते हैं, वे मरते एवं जन्मते रहते हैं। मेरा गुरु अपने सेवक को शब्द के द्वारा सत्य के साथ मिला देता है। कहने मात्र से प्रभु के गुण समाप्त नहीं होते और जीवों को देने से उसकी भक्ति के भण्डार में कोई न्यूनता नहीं आती। वह प्रभु तो सर्वव्यापक है। नानक प्रार्थना के तौर पर सत्य ही कहता है कि जो मनुष्य अपने मन को अहम् की मैल से स्वच्छ कर लेता है, वही सत्यवादी है और उसे सत्य ही दृष्टिगत होता है॥४॥१॥

धनासरी महला १ ॥ जीवा तेरै नाइ मनि आनंदु है जीउ ॥ साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥ गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई ॥ परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न

सकै कोई ॥ आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई ॥ नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥ १ ॥ तुम सरि अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ ॥ हुकमी होइ निबेड़ु भरमु चुकाइसी जीउ ॥ गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा ॥ आपि उपाए आपि समाए हुकमी हुकमु पछाणा ॥ सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई ॥ नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥ २ ॥ तू सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ ॥ एकु साहिबु दुइ राह वाद वधंदिआ जीउ ॥ दुइ राह चलाए हुकमि सबाए जनमि मुआ संसारा ॥ नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥ हुकमी आइआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा ॥ नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा सिरजणहारा ॥ ३ ॥ भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइआ जीउ ॥ बोलहि अंम्रित बाणि रसन रसाइआ जीउ ॥ रसन रसाए नामि तिसाए गुर कै सबदि विकाणे ॥ पारसि परसिऐ पारसु होए जा तेरै मनि भाणे ॥ अमरा पदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन वीचारी ॥ नानक भगत सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥ ४ ॥ भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ ॥ सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ ॥ सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥ दीना नाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा ॥ करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥ नानक नामु महा रसु मीठा त्रिसना नामि निवारी ॥ ५ ॥ २ ॥

हे पूज्य परमेश्वर ! मैं तेरे नाम-सिमरन द्वारा ही जीवित हूँ और मेरे मन में आनंद बना रहता है। सत्यस्वरूप परमेश्वर का नाम सत्य है और उस गोविन्द के गुण भी सत्य हैं। गुरु का ज्ञान बोध करवाता है कि सृष्टि का सृजनहार परमेश्वर अनंत है, जिसने यह सृष्टि रचना की है, उसने ही इसका विनाश किया है। जब प्रभु के हुक्म द्वारा भेजा हुआ (मृत्यु का) निमंत्रण आ जाता है तो कोई भी प्राणी उसे टाल नहीं सकता। वह स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करके देखता रहता है अर्थात् उनकी देखभाल करता रहता है और स्वयं ही जीवों के किए कर्मो अनुसार उनके माथे पर किस्मत का लेख लिखता है। उसने स्वयं ही जीवों को अपने बारे में ज्ञान प्रदान किया है। हे नानक ! वह मालिक-परमेश्वर अगम्य एवं अगोचर है और मैं उसके सत्य नाम की स्तुति करने से ही जीवित हूँ॥ १॥ हे ईश्वर ! तुम्हारे जैसा अन्य कोई भी नहीं है। जो भी जन्म लेकर दुनिया में आया है, वह यहाँ से चला जाएगा। तेरे हुक्म से ही जीवों के किए कर्मो का निपटारा होता है और तू ही उनका भ्रम दूर करता है। हे भाई ! गुरु अपने सेवक का भ्रम दूर कर देता है और उससे अकथनीय प्रभु की स्तुति करवाता है। फिर वह सत्यपुरुष सत्य में ही समा जाता है। भगवान स्वयं ही जीवों को पैदा करता है और स्वयं ही उन्हें पुनः अपने में ही विलीन कर लेता है। मैंने हुक्म करने वाले भगवान का हुक्म पहचान लिया है। हे मालिक प्रभु ! जिसने गुरु से तेरे नाम की सच्ची शोभा प्राप्त कर ली है, तू उसके मन में आकर बस जाता है और अन्तिम काल में भी उसका साथी बनता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तेरे सिवाय दूसरा कोई भी मालिक नहीं है और तेरे सत्य नाम द्वारा ही जीव को तेरे दरबार में बड़ाई मिलती है॥ २॥ हे परमेश्वर ! एक तू ही सच्चा सृजनहार एवं अलख है और तूने ही सब जीवों को पैदा किया है। सब का मालिक एक परमात्मा ही है परन्तु उससे मिलने के कर्म मार्ग एवं ज्ञान मार्ग-उन दो प्रचलित मार्गों ने जीवों में परस्पर विवाद बढ़ा दिए हैं। परमेश्वर ने अपने हुक्म में समस्त जीवों को इन दो मार्गो पर चलाया हुआ है। उसके हुक्म से ही यह जगत जन्मता एवं मरता रहता है। जीव ने व्यर्थ ही माया रूपी विष का भार उठाया हुआ है परन्तु परमात्मा के नाम बिना कोई भी उसका साथी नहीं बनता। जीव

तो परमात्मा के हुक्म से ही जगत में आया है। परन्तु वह उसके हुक्म को नहीं समझता। प्रभु स्वयं ही अपने हुक्म में जीव को सुन्दर बनाने वाला है। हे नानक! मालिक-परमेश्वर की पहचान तो शब्द के द्वारा ही होती है और वही सच्चा सृजनहार है॥ ३॥ भगवान के भक्त उसके दरबार में बैठे बड़े सुन्दर लगते हैं और उनका जीवन शब्द से ही सुन्दर बना हुआ है। वह अपने मुख से अमृत वाणी बोलते हैं और उन्होंने अपनी रसना को अमृत रस पिलाया हुआ है। वे अमृत रस के ही प्यासे होते हैं और अपनी रसना को अमृत रस ही पिलाते रहते हैं। वे तो गुरु के शब्द पर ही न्यौछावर होते हैं। हे प्रभु! जब वे तेरे मन को अच्छे लगते हैं तो वे पारस रूपी गुरु को स्पर्श करके स्वयं भी पारस (रूपी गुरु) बन जाते हैं। वे अपने अहंकार को समाप्त करके अमर पदवी प्राप्त कर लेते हैं। कोई विरला पुरुष ही इस ज्ञान पर चिंतन करता है। हे नानक! भक्त सत्य के द्वार पर ही शोभा देते हैं और सत्य नाम के ही व्यापारी हैं॥ ४॥ हे भाई! मैं तो माया का भूखा और प्यासा हैं। फिर मैं भगवान के दरबार पर कैसे जा सकता हूँ? मैं जाकर अपने गुरु से पूछूँगा एवं भगवान का नाम-सिमरन करूँगा। मैं अपने मन में सत्यनाम का ही ध्यान-मनन करता हूँ। अपने मुँह से सत्य नाम को जपता हूँ। अब तो मैं रात-दिन दीनानाथ, दयालु एवं पवित्र प्रभु के नाम का ही जाप करता हूँ। यह नाम-सिमरन करने का कार्य मुझे परमात्मा ने प्रारम्भ से ही करने की आज्ञा की है। इस तरह अहंकार मिट गया है और मन नियंत्रण में आ गया है। हे नानक! नाम महां मीठा रस है और नाम ने मेरी माया की तृष्णा दूर कर दी है॥ ५॥ २॥

धनासरी छंत महला १ ॥ पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥ मसतकि लिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ जीउ ॥ लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥ गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥ धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥ नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठि विछुंनिआ ॥ १ ॥ बूडी घरु घालिओ गुर कै भाइ चलो ॥ साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो ॥ हरि नामु धिआए ता सुखु पाए पेईअड़ै दिन चारे ॥ निज घरि जाइ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे ॥ विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥ नानक सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥ २ ॥ पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥ रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ ॥ गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥ माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रंगु करेई ॥ प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी ॥ नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥ ३ ॥ पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ ॥ झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥ झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥ अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी ॥ गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए ॥ नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥ ४ ॥ धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥ नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥ हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥ पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे रंगि राती ॥ गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥ नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥ ५ ॥ ३ ॥

हे माया से ठगी हुई जीव-स्त्री! तेरा प्रियतम-प्रभु तो तेरे साथ ही है परन्तु तुझे अभी तक इस बात की कोई खबर नहीं। जो कुछ तूने अपने पूर्व जन्म में किया है, तेरी उस किस्मत का लेख तेरे माथे पर लिखा हुआ है। पूर्व जन्म में किए कर्मों का लेख अब मिट नहीं सकता। मैं क्या

जानता हूँ कि आगे क्या होगा? गुणवान एवं सदाचारिणी बन कर तू अपने प्रियतम-प्रभु के प्रेम में मग्न नहीं हुई। इसलिए अपने अवगुणों के कारण तू सदैव ही परलोक में बैठी दुःखी होती रहेगी। यह धन एवं यौवन आक की छाया के समान है, वृद्ध होने से तेरी आयु के दिन समाप्त हो जाएँगे। नानक का कथन है कि नाम के बिना तू बदकिस्मत एवं परित्यक्ता स्त्री बन गई है और तेरे झूठ ने तुझे तेरे प्रियतम-प्रभु से तुझे जुदा कर दिया है॥१॥ हे जीव-स्त्री! तू भवसागर में डूब गई है और तूने अपना घर नष्ट कर लिया है। अंतः अब तू गुरु की रज़ानुसार आचरण कर। तू सत्य नाम का सिमरन कर, तू अपने प्रियतम प्रभु के महल का सुख प्राप्त कर लेगी। यदि तू हरि-नाम का ध्यान करे तो तुझे सुख प्राप्त हो जाएगा। तुझे इस पीहर जगत में केवल चार दिन ही रहना है। यदि तुझे सत्य (प्रभु) प्राप्त हो जाए तो तू अपने वास्तविक घर प्रभु-स्वरूप में जाकर बैठ जाए और वहाँ प्रतिदिन ही अपने प्रियतम के साथ रमण करे। हे लोगो! ध्यानपूर्वक सुन लो, भक्ति के बिना जीव-स्त्री का अपने वास्तविक घर प्रभु स्वरूप में निवास नहीं होता। हे नानक! यदि जीव-स्त्री सदैव ही सत्य-नाम में मग्न हो जाए तो वह प्रसन्न हो जाती है और प्रियतम-प्रभु को प्राप्त कर लेती है॥२॥ जब जीव-स्त्री को अपना प्रियतम-प्रभु अच्छा लगता है तो वह जीव-स्त्री भी अपने प्रियतम-प्रभु को अच्छी लगने लगती है। जब वह गुरु की वाणी द्वारा सिमरन करती है तो अपने प्रभु के प्रेम में मग्न हो जाती है। जब वह गुरु के शब्द द्वारा चिन्तन करती है तो वह अपने पति-परमेश्वर की लाडली बन जाती है। वह अपने पति-प्रभु के समक्ष झुक-झुक नम्रतापूर्वक उसकी भक्ति करती है। जब वह अपना माया का मोह जला देती है तो उसका प्रियतम-प्रभु बड़े उल्लास से उससे रमण करता है। जीव-स्त्री सत्य-प्रभु से मिलकर उसके प्रेम में मग्न हो गई है। उसने अपने मन पर अंकुश लगा लिया है और वह बहुत सुन्दर बन गई है। हे नानक! वह सुहागिन जीव-स्त्री सच्चे पति-प्रभु के घर अर्थात् परमात्मा के स्वरूप में जाकर बस गई है और अपने प्रियतम से प्रेम प्राप्त करके उसकी प्रियतमा बन गई है॥३॥ अपने प्रियतम-प्रभु के घर में वही जीव-स्त्री शोभा प्राप्त करती है, जो अपने पति-प्रभु को अच्छी लगने लगती है। जो जीव-स्त्री झूठे वचन बोलती है, वह झूठे वचन उसके किसी काम नहीं आते। वह झूठ बोलती है परन्तु वह झूठ उसके किसी काम नहीं आता। उसका प्रियतम-प्रभु उसे अपनी आँखों से देखता भी नहीं। उसके पति-प्रभु ने अवगुणों से भरी हुई उस जीव-स्त्री को भुला दिया है। वह परित्यक्ता स्त्री बन गई है और उसकी जीवन रूपी रात्रि प्रियतम के बिना दुःखों में ही व्यतीत होती है। ऐसी जीव-स्त्री गुरु के शब्द पर आस्था नहीं रखती, वह मृत्यु के जाल में फँस जाती है और अपने पति-प्रभु के महल अर्थात् प्रभु-स्वरूप को प्राप्त नही करती। हे नानक! जब जीव-स्त्री स्वयं ही अपने आत्म-स्वरूप को पहचान लेती है तो वह गुरु के द्वारा सहज अवस्था में लीन हो जाती है॥ ४॥ वह सुहागिन नारी धन्य है, जिसने अपना प्रियतम-प्रभु जान लिया है। नामविहीन झूठी जीव-स्त्री झूठ का ही कार्य करती है। भगवान की भक्ति करने वाली जीव-स्त्री अति सुन्दर होती है और वह सच्चे प्रभु को अच्छी लगती है और प्रभु की प्रेम-भक्ति में लीन रहती है। प्रियतम-प्रभु बड़ा रंगीला, यौवन सम्पन्न एवं जवान है, उसके प्रेम-रंग में मग्न हुई जीव-स्त्री उसके साथ रमण करती है। वह गुरु के शब्द द्वारा प्रफुल्लित होती है, अपने प्रियतम के साथ आनंद करती है और अपनी की हुई भक्ति का गुणकारी फल प्राप्त कर लेती है। हे नानक! उस जीव-स्त्री को सत्य प्रभु मिल जाता है, प्रभु के घर में उसे बड़ाई प्राप्त होती है और अपने प्रियतम के घर में बड़ी सुन्दर लगती है॥ ५॥ ३॥

धनासरी छंत महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥ गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥ अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥ आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥ हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ १ ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥ हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥ कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा ॥ स्रवणी सुणी त इहु मनु त्रिपतै गुरमुखि अंम्रितु पीवा ॥ नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥ अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥ २ ॥ सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥ सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥ हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥ हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥ सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ ३ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥ हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ ॥ माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए ॥ बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥ दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥ ४ ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥ सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥ प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ ॥ अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥ नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥ करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥ ५ ॥ १ ॥

अगर परमेश्वर अपनी कृपा करे तो ही उसके नाम का ध्यान किया जाता है। सद्गुरु मिल जाए तो सहज-स्वभाव ही प्रेमपूर्वक भगवान का गुणगान होता है। यदि परमेश्वर को स्वयं भा जाए तो मनुष्य दिन-रात उसकी महिमा गा कर सदैव ही प्रसन्न रहता है। वह अपना अहंकार, अपने अहंत्व एवं माया के मोह को त्याग देता है और सहज ही नाम में समा जाता है। कर्त्ता-परमेश्वर स्वयं ही सबकुछ करता है, जब वह स्वयं देन प्रदान करता है तो ही मनुष्य नाम की देन प्राप्त करता है। गुरु साहिब का फुरमान है कि यदि भगवान अपनी कृपा करे तो ही उसके नाम का ध्यान किया जाता है॥१॥ हे भाई ! पूर्ण सतगुरु ने मेरे मन में प्रभु हेतु सच्चा प्रेम उत्पन्न कर दिया है। अब मैं दिन-रात उसका ही सिमरन करता रहता हूँ और वह मुझे कदापि नहीं भूलता। मैं उसे कदापि विस्मृत नहीं करता और प्रतिदिन उसका ही सिमरन करता रहता हूँ। जब मैं उसका नाम लेता हूँ तो जिंदा रहता हूँ। जब मैं अपने कानों से नाम श्रवण करता हूँ तो मेरा यह मन तृप्त हो जाता है। मैं गुरु के माध्यम से नामामृत ही पीता रहता हूँ। ईश्वर अपनी कृपा-दृष्टि करे तो मनुष्य को सतगुरु से मिला देता है और फिर गुरु की अनुकंपा से उसके मन में विवेक बृद्धि विचरन करती है। सतगुरु ने मेरे हृदय में सच्चा प्रेम लगा दिया है॥२॥ यदि मनुष्य को अहोभाग्य से सत्संगति मिल जाए तो उसे हरि-रस ही प्राप्त होता है। वह दिन-रात परम-सत्य में ही अपना ध्यान लगाकर रखता है, जिसके फलस्वरूप वह हर समय सहज अवस्था में लीन हुआ रहता है। जब वह सहज अवस्था में समाया रहता है तो वह भगवान के मन को बड़ा अच्छा लगता है और सदैव निर्लिप्त एवं वैराग्यवान रहता है। राम नाम में लगन लगाने से लोक-परलोक एवं समूचे जगत में उसे शोभा प्राप्त हो जाती है। वह सुख एवं दुःख दोनों से ही मुक्त हो जाता है। फिर प्रभु जो

कुछ भी करता है, वही उसे अच्छा लगता है। अहोभाग्य से मनुष्य को सत्संगति मिल जाए तो उसे सत्संगति में हरि-रस प्राप्त हो जाता है॥३॥ मृत्यु ने स्वेच्छाचारी मनुष्य को अपनी दृष्टि में रखा हुआ है और द्वैतभाव के कारण वह बहुत दुःखी होता है। वह माया के दुःख में ही फँसकर 'हाय-हाय' करता रहता है। वह माया के दुःख में फँसा रहता है और अहंकार में फँसा हुआ क्रोधी बन गया है। उसका समूचा जीवन 'मेरी-मेरी' करते ही व्यतीत हो जाता है। जो प्रभु उसे सबकुछ देता है, उसे स्मरण नहीं करता, अंतिम समय वह पछताता है। नाम के सिवाय अन्य कुछ भी प्राणी के साथ नहीं जाता। उसके पुत्र, स्त्री एवं धन-दौलत ने उसे ठग लिया है। गुरु साहिब का फुरमान है कि द्वैतभाव में फँसकर स्वेच्छाचारी प्राणी बहुत दुःखी होता है और मृत्यु उस पर अपनी दृष्टि रखती है॥४॥ भगवान ने स्वयं ही अपनी कृपा करके उसे अपने साथ मिला लिया है, गुरुमुख ने दसम द्वार प्राप्त कर लिया है, वह प्रभु के मन को भा गया है और वह अपने दोनों हाथ जोड़कर सदैव ही उसके समक्ष खड़ा रहता है। उसका हुक्म मानकर उसने सुख प्राप्त किया है, जब प्रभु के मन को भा गया है तो वह उसके हुक्म में ही लीन हो गया। वह दिन-रात सर्वदा ही उस प्रभु का सिमरन करता रहता है और सहज ही नाम का ध्यान-मनन करता है। नाम के द्वारा ही उसे नाम रूपी बड़ाई प्राप्त होती है। प्रभु का नाम ही नानक के मन को भाया है। ईश्वर ने स्वयं ही अपनी कृपा से अपने साथ मिला लिया है और उसने प्रभु का महल दसम द्वार प्राप्त कर लिया है॥ ५॥ १॥

धनासरी महला ५ छंत १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर दीन दइआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ ॥ अंम्रितु हरि का नामु साधसंगि रावीऐ जीउ ॥ भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए ॥ धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥ भै भरम नाठे छुटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ ॥ बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥ १ ॥ निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ ॥ तू दाता दातारु सरब दुख भंजनो जीउ ॥ दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ ॥ संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइआ ॥ पूरि रहिआ सरब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो ॥ बिनवंति नानक सदा सिमरी सरब दुख भै भंजनो ॥ २ ॥ आपि लीए लड़ि लाइ किरपा धारीआ जीउ ॥ मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥ दइआल सदा क्रिपाल सुआमी नीच थापणहारिआ ॥ जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥ आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ ॥ बिनवंत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥ ३ ॥ तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥ निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ ॥ संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥ गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥ सद सदा सिंम्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥ बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥ ४ ॥ १ ॥

जिसकी संगति में मिलकर भगवान का गुणगान किया जाता है, वह सतगुरु दीनदयाल है। प्रभु का नाम अमृत है, जो साधु-संगति में मिलकर ही गाया जाता है। साधुओं की सभा में मिलकर भगवान का भजन करो, उसके एक नाम की ही आराधना करो, जिससे जन्म-मरण का दुःख नाश हो जाता है। जिस मनुष्य के माथे पर जन्म से पूर्व आरम्भ से ही अच्छी तकदीर लिखी हुई है, उसने गुरु की सच्ची शिक्षा प्राप्त कर ली है और उसकी मृत्यु की फाँसी कट गई है। उसके भय एवं भ्रम दूर हो गए हैं और माया की त्रिगुणात्मक गांठ खुल गई है। वह मृत्यु के मार्ग पर कदाचित नहीं

पड़ता। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! मुझ पर अपनी कृपा करो, ताकि मैं सदैव ही तेरा स्तुतिगान करता रहूँ॥१॥ परमात्मा का एक पवित्र नाम ही निराश्रितों का आश्रय है। हे मेरे दातार ! एक तू ही सबको देने वाला है और तू सब जीवों के दुःख नाश करने वाला है। हे जगत के स्वामी ! तू दुःखों का नाश करके सुख प्रदान करने वाला है। मैं तेरे साधु की शरण में आया हूँ। यह संसार सागर पार करना बहुत ही कठिन है परन्तु तेरे साधु ने मुझे एक पल में ही इससे पार करवा दिया है। जब मैंने गुरु के ज्ञान का सुरमा अपनी आँखों में लगाया तो मैंने देखा कि परमात्मा सर्वव्यापी है। नानक प्रार्थना करते हैं कि सर्व दुःख एवं भय का नाश करने वाले प्रभु ! मैं सदैव ही तेरा नाम-सिमरन करता रहूँ॥ २॥ हे प्रभु ! अपनी कृपा करके तूने स्वयं ही मुझे अपने आंचल के साथ लगा लिया है। मैं गुणविहीन, नीच एवं अनाथ हूँ परन्तु हे प्रभु ! तू अगम्य एवं अपरम्पार है। हे मेरे स्वामी ! तू सदैव ही दयालु एवं कृपालु है। तू मुझ जैसे नीच को भी सर्वोच्च बनाने वाला है। समस्त जीव-जन्तु तेरे वशीभूत हैं और तू सबकी देखरेख करता है। तू स्वयं ही सभी पदार्थ भोगने वाला है, तू स्वयं ही जीवों की आवश्यकता के बारे में विचार करता है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! मैं तेरा गुणगान करके ही जीता हूँ और तेरा ही जाप जपता रहूँ ॥ ३॥ हे ईश्वर ! तेरे दर्शन अपार फलदायक हैं और तेरा नाम अनमोल है। हे अतुलनीय परमपुरुष ! तेरे दास नित्य ही तेरे नाम का भजन करते रहते हैं। जिन संतजनों पर तू प्रसन्न हो गया है, तू उनकी रसना में आकर बस गया है और वे हरि-रस में ही मस्त रहते हैं। वे बड़े भाग्यशाली हैं, जो गुरु के चरणों में आ लगे हैं और सदा जाग्रत रहते हैं। वे सदैव ही स्मरणीय स्वामी के गुण श्वास-श्वास से बोलते रहते हैं। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मुझे साधु की चरण-धूलि प्रदान करो, तेरा नाम बड़ा अनमोल है॥ ४॥ १॥

रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की   १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सनक सनंद महेस समानां ॥ सेखनागि तेरी मरमु न जानां ॥ १ ॥ संतसंगति रामु रिदै बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हनूमान सरि गरुड़ समानां ॥ सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥ २ ॥ चारि बेद अरु सिंम्रिति पुरानां ॥ कमलापति कवला नही जानां ॥ ३ ॥ कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ पग लगि राम रहै सरनांही ॥ ४ ॥ १ ॥

हे ईश्वर ! ब्रह्मा जी के पुत्र सनक, सनन्दन एवं शिव-शंकर सरीखों और शेषनाग ने भी तेरा भेद नहीं समझा॥१॥ संतों की संगत करने से राम हृदय में आकर स्थित होता है॥१॥ रहाउ॥ हनुमान जैसे, पक्षियों के राजा गरुड़ जैसे, देवराज इन्द्र एवं मनुष्यों के राजाओं ने भी तेरे गुणों को नहीं जाना॥ २॥ चार वेद-ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, सत्ताईस स्मृतियाँ, अठारह पुराण, लक्ष्मीपति विष्णु एवं लक्ष्मी भी तेरे रहस्य को नहीं जान सके॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि वह मनुष्य दुविधा में कभी नहीं भटकता, जो संतों के चरणों में लगकर राम की शरण में पड़ा रहता है॥ ४॥ १॥

दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥ कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥ १ ॥ सो दिनु आवन लागा ॥ मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥ लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ २ ॥ कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥ केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥ ३ ॥ २ ॥

दिनों से प्रहर एवं प्रहरों से घड़ियाँ होकर मनुष्य की आयु कम होती जाती है और उसका शरीर कमजोर होता रहता है। काल रूपी शिकारी उसके आस-पास हत्यारे की तरह फिरता रहता है। बताओ, मृत्यु से बचने के लिए वह कौन-सी विधि का प्रयोग करे ?॥१॥ वह दिन निकट आने वाला है, जब मृत्यु ने उसके प्राण छीन लेने हैं। बताओ, माता-पिता, भाई, पुत्र एवं स्त्री इन में से कौन किस का है ?॥१॥ रहाउ॥ जब तक जीवन की ज्योति अर्थात् आत्मा शरीर में रहती है, तब तक यह पशु जैसा मूर्ख मनुष्य अपने आत्म-स्वरूप को नहीं समझता। वह और अधिक जीवन जीने की लालच करता है परन्तु उसे अपनी आँखों से कुछ भी नहीं सूझता॥२॥ कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी ! सुनो, अपने मन के सारे भ्रम छोड़ दो। हे प्राणी ! एक परमेश्वर की शरण में जाओ और केवल उसके नाम का ही भजन करो॥३॥२॥

जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो ॥ जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिओ जुलाहो ॥ १ ॥ हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥ जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥ किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥ २ ॥ ३ ॥

जो व्यक्ति भगवान के प्रेम एवं उसकी भक्ति के बारे में कुछ जानता है, उसके लिए कोई भी आश्चर्यजनक बात नहीं है। जैसे जल में मिलकर जल दुबारा अलग नहीं होता, वैसे ही कबीर जुलाहा भी अपने आत्माभिमान को समाप्त करके भगवान में लीन हो गया है॥१॥ हे भगवान के लोगो ! मैं तो बुद्धि का भोला हूँ। यदि कबीर अपना शरीर काशी (बनारस) में त्याग दे और मोक्ष प्राप्त कर ले तो इसमें मेरे राम का मुझ पर कौन-सा उपकार होगा॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी का कथन है कि हे लोगो ! ध्यानपूर्वक सुनो, कोई भ्रम में पड़कर मत भूलो; जिसके हृदय में राम स्थित है, उसके लिए क्या काशी और वीरान मगहर है, अर्थात् शरीर का त्याग करने के लिए दोनों एक समान हैं॥ २॥ ३॥

इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो ॥ ओछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥ १ ॥ किआ मांगउ किछु थिरु नाही ॥ राम नाम रखु मन माही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोभा राज बिभै बडिआई ॥ अंति न काहू संग सहाई ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र लछमी माइआ ॥ इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ ॥ ३ ॥ कहत कबीर अवर नही कामा ॥ हमरै मन धन राम को नामा ॥ ४ ॥ ४ ॥

यदि कोई मनुष्य तपस्या करके इन्द्रलोक एवं शिवलोक में चला जाता है तो ओछी तपस्या अथवा दुष्कर्मों के कारण वह पुनः वापिस आ जाता है॥१॥ मैं भगवान से क्या माँगू ? क्योंकि इस सृष्टि में कोई भी वस्तु स्थिर नहीं अर्थात् सबकुछ नश्वर होने वाला है। अतः राम के नाम को ही अपने मन में बसा कर रखो॥१॥ रहाउ॥ दुनिया में शोभा, धरती का राज्य शासन, ऐश्वर्य-वैभव एवं बड़ाई अंत में किसी के भी साथी एवं सहायक नहीं बनते॥२॥ पुत्र, पत्नी, धन-दौलत एवं सम्पति-इनसे बताओ, कब किसी ने सुख प्राप्त किया है ?॥३॥ कबीर जी का कथन है कि मेरी अन्य कोई अभिलाषा नहीं है, क्योंकि मेरे मन का धन तो राम का नाम है॥४॥४॥

राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥ राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई ॥ इन्ह मै कछु नाहि तेरो काल अवध आई ॥ १ ॥ अजामल गज गनिका पतित करम कीने ॥ तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥ २ ॥ सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई ॥ राम नाम छाडि अंम्रित काहे बिखु खाई ॥ ३ ॥ तजि भरम करम बिधि निखेध राम नामु लेही ॥ गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे भाई ! प्रेम से राम का सिमरन करते रहो, हमेशा राम का ही सिमरन करो। क्योंकि राम नाम के सिमरन के बिना बहुत सारे लोग भवसागर में ही डूब जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ स्त्री, पुत्र, सुन्दर शरीर, घर एवं सम्पति-ये सभी सुख देने वाले प्रतीत होते हैं परन्तु जब तेरी मृत्यु का समय आएगा, तब इन में से कुछ भी तेरा नहीं रहेगा॥१॥ अजामल ब्राह्मण, गजिन्द्र हाथी एवं एक वेश्या ने जीवन भर पतित कर्म ही किए थे, परन्तु राम नाम का सिमरन करने से वे भी भवसागर से पार हो गए॥२॥ हे प्राणी ! पूर्व जन्मों में तू सूअर एवं कुत्ते की योनियों में भटकता रहा, परन्तु फिर भी तुझे शर्म नहीं आई। राम नाम रूपी अमृत को छोड़कर तू क्यों विषय-विकार रूपी विष खाता है॥ ३॥ तू शास्त्रों की विधि अनुसार करने योग्य कर्म एवं निषेध कर्मों के भ्रम को छोड़कर राम नाम का ही सिमरन करता रह। कबीर जी का कथन है कि गुरु की कृपा से राम को अपना मित्र बना॥४॥५॥

धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥ मारकंडे ते को अधिकाई जिनि त्रिण धरि मूंड बलाए ॥ १ ॥ हमरो करता रामु सनेही ॥ काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥ २ ॥ सरब सोइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी खिन महि भई पराई ॥ ३ ॥ दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥ क्रिपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥ ४ ॥ १ ॥

लोगों ने गहरी नींव खोदकर उस पर बड़े ऊँचे-ऊँचे महल बनवाए हैं। किन्तु मार्कण्डेय ऋषि से भी अधिक लम्बी आयु वाला कौन हुआ है ? जिसने तिनकों की कुटिया बनाकर ही अपना जीवन व्यतीत किया था॥ १॥ मेरा रचयिता राम ही मेरा शुभचिन्तक है। हे प्राणी ! तू क्यों अभिमान करता है ? तेरा यह नश्वर शरीर एक दिन अवश्य नष्ट हो जाएगा॥१॥ रहाउ॥ जिनके भाई दुर्योधन जैसे पराक्रमी शूरवीर थे, वे कौरव भी अहंकार में आकर 'मेरी-मेरी' करते थे। जिस दुर्योधन का साम्राज्य बारह योजन तक फैला हुआ था, उसकी मृतक देह को भी गिद्धों ने अपना भक्षण बनाया॥२॥ महाबली लंकापति रावण की सारी लंका सोने की बनी हुई थी परन्तु उसके द्वार पर बंधे हुए हाथी भी उसके किसी काम नहीं आए और क्षण भर में ही उसकी सारी लंका पराई हो गई॥३॥ दुर्वासा ऋषि से कपट करके यादवों ने यह फल प्राप्त किया कि उसके श्राप देने से उनके समूचे वंश का ही सर्वनाश हो गया। भगवान ने स्वयं ही अपने भक्त पर कृपा की है और नामदेव अब भगवान का ही गुणगान करता रहता है॥ ४॥ १॥

दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ही पंचहु का मिट नावउ ॥ सतरि दोइ भरे अंम्रित सरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥ १ ॥ पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥ अंम्रित बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बजर कुठारु मोहि है छीनां करि मिंनति लगि पावउ ॥ संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥ २ ॥ इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ ॥ माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥ ३ ॥ इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईऐ ॥ कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ ॥ ४ ॥ २ ॥

मैंने अपनी दसों इन्द्रियों को अपने नियन्त्रण में कर लिया है और मन में से मेरे पाँचों शत्रु-काम, क्रोध, लालच, मोह एवं अहंकार का तो नामोनिशान ही मिट गया है। मैंने अपने शरीर के

सरोवरों को नामामृत से भर लिया है एवं विष रूपी विषय-विकारों का दमन करके बाहर निकाल दिया है॥१॥ अब मैं इन विकारों को वापिस नहीं आने दूँगा। अब मैं एकाग्रचित होकर अमृत वाणी का ही उच्चारण करता रहता हूँ और अपनी आत्मा को इसी कार्य में लगे रहने का उपदेश देता रहता हूँ॥१॥ रहाउ॥ मैं निवेदन करके गुरु के चरणों में लग गया हूँ और नाम रूपी वज कुठार से मोह को नाश कर दिया है। मैं संसार की तरफ से विमुख होकर संतों का सेवक बन गया हूँ और भक्तों का भय अपने मन में रखने लग गया हूँ॥२॥ इस संसार के बन्धनों से मैं तभी मुक्त होऊँगा यदि मैं माया के साथ संलग्न नहीं होऊँगा। माया तो उस शक्ति का नाम है, जो जीवों को गर्भ-योनि में भटकाती रहती है और इसका त्याग करके ही मैं भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकता हूँ॥३॥ जो व्यक्ति इस प्रकार अर्थात् माया का त्याग करके भक्ति करते है, उनका जन्म-मरण का सारा भय दूर हो जाता है। नामदेव जी का कथन है कि हे भाई ! भगवान को ढूँढने के लिए बाहर वनों में क्यों भटकते हो ? क्योंकि उपरोक्त विधि द्वारा वह तो हृदय-घर में ही प्राप्त हो जाता है॥४॥२॥

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥ जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ १ ॥ तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ २ ॥ चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥ जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ३ ॥ बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा ॥ मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥ ४ ॥ साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥ ५ ॥ ३ ॥

मारवाड़ देश में जैसे जल प्यारा होता है और ऊँट को लता प्यारी लगती है। जैसे मृग को रात्रिकाल में ध्वनि मधुर लगती है, वैसे ही मेरे मन में मुझे राम बहुत प्यारा लगता है॥१॥ हे मेरे राम ! तेरा नाम बहुत सुन्दर है, तेरा रूप सुन्दर है और तेरा रंग भी अति सुन्दर है॥१॥ रहाउ॥ जैसे धरती को बादल प्यारा लगता है, भँवरे को जैसे फूलों की महक प्यारी लगती है और कोयल को जैसे आम अति प्रिय है, वैसे ही मेरे मन में मुझे राम अति प्रिय है॥२॥ जैसे चकवी को सूर्य बहुत प्रिय होता है और हंस को मानसरोवर प्रिय होता है। जैसे युवती को अपना पति बहुत प्यारा होता है, वैसे ही मेरे मन को राम बड़ा प्रिय है॥ ३॥ जैसे बालक का दूध से अत्याधिक प्रेम होता है और जैसे पपीहे को मुँह में स्वाति बूँद की धारा बहुत प्यारी होती है। जैसे मछली का जल से प्रेम होता है, वैसे ही मेरे मन में राम से बहुत प्रेम है॥ ४॥ तमाम साधक, सिद्ध एवं मुनिजन राम के दर्शन करने की अभिलाषा करते हैं। परन्तु किसी विरले को ही उसके दर्शन प्राप्त होते हैं। हे राम ! जैसे तीन लोकों के जीवों को तेरा नाम बहुत प्यारा है, वैसे ही नामदेव के मन को बिट्ठल भगवान बहुत प्यारा है॥ ५॥ ३॥

पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥ ता चे हंसा सगले जनां ॥ क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥ १ ॥ पहिल पुरसाबिरा ॥ अथोन पुरसादमरा ॥ असगा अस उसगा ॥ हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाचंती गोपी जंना ॥ नईआ ते बैरे कंना ॥ तरकु न चा ॥ भ्रमीआ चा ॥ केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥ २ ॥ पिंधी उभकले संसारा ॥ भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा ॥ तू कुनु रे ॥ मै जी ॥ नामा ॥ हो जी ॥ आला ते निवारणा जम कारणा ॥ ३ ॥ ४ ॥

सर्वप्रथम विष्णु जी की नाभि से कमल पैदा हुआ, फिर उस कमल में से ब्रह्मा जी पैदा हुए और फिर इस जगत के समस्त जीव ब्रह्म जी से उत्पन्न हुए हैं। आदिपुरुष परमात्मा की पैदा की हुई सृष्टि माया में फँसकर जीवन रूपी नृत्य कर रही है॥१॥ सर्वप्रथम आदिपुरुष परमात्मा प्रगट हुआ और फिर आदिपुरुष से प्रकृति पैदा हुई। यह सारी सृष्टि इस प्रकृति एवं उस आदिपुरुष दोनों के सम्मिलन से रची हुई है। यह जगत भगवान का एक सुन्दर उपवन है, जिसमें जीव यूं नृत्य करते हैं जैसे कुएँ की रहटों में पानी नृत्य करता है॥१॥ रहाउ॥ स्त्री एवं पुरुष नृत्य कर रहे हैं। इस जग में जीवों से नृत्य कराने वाला परमेश्वर के सिवाय अन्य कोई नहीं है। तर्क करने से भ्रम उत्पन्न होता है। प्रभु का वचन है कि इस जगत में एक मैं ही हूँ और एक मैं ही अन्य सब रूपों में विद्यमान हो रहा हूँ॥ २॥ जगत के जीव कुएँ की रहटों की भांति भवसागर में डुबकियाँ लगाते रहते हैं अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में भटकते रहते हैं। हे प्रभु! अनेक योनियों में भटक-भटक कर अब मैं तेरे द्वार पर तेरी शरण में आया हूँ। प्रभु पूछता है कि हे प्राणी! तू कौन है? भक्त जी उत्तर देते हैं कि मैं नामदेव हूँ। हे प्रभु जी! मुझे जगत के जंजाल में से निकाल दीजिए, जो यमों के भय का कारण है॥ ३॥ ४॥

पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥ धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥ १ ॥ मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥ सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥ चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥ २ ॥ ५ ॥

हे माधव! तेरा विरद् पापियों को पावन करना है। वे मुनिजन धन्य हैं, जिन्होंने मेरे हरि-प्रभु का ध्यान किया है॥१॥ मेरे माथे पर गोविंद की चरण-धूलि लग चुकी है। देवते, मनुष्य एवं मुनिजन उसकी चरण-धूलि से दूर ही रहते रहे हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे माधव! तू दीनों पर दया करने वाला है और अहंकारियों का अहंकार नाश करने वाला है। नामदेव प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मैंने तेरे चरणों की शरण ली है और मैं तुझ पर ही कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ ५॥

धनासरी भगत रविदास जी की **१ओं सतिगुर प्रसादि ॥**

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ १ ॥ हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥ कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥ २ ॥ १ ॥

हे मेरे परमेश्वर! मुझ जैसा कोई दीन नहीं है और तुझ जैसा अन्य कोई दयालु नहीं है। अब भला और अजमायश क्या करनी है? अपने सेवक को यह पूर्णतया प्रदान कीजिए कि मेरा मन तेरे वचनों पर आस्था धारण करे॥१॥ हे मेरे राम! मैं तुझ पर तन एवं मन से कुर्बान जाता हूँ। फिर किस कारण तुम मुझसे बोल क्यों नहीं रहे॥ रहाउ॥ हे माधव! मैं अनेक जन्मों से तुझसे बिछुड़ा हुआ हूँ और अपना यह जन्म मैं तुझ पर अर्पण करता हूँ। रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु! तेरे दर्शन किए चिरकाल हो गया है, अब तो मैं तेरे दर्शन करने की आशा में ही जीवित हूँ॥ २॥ १॥

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥ मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥ १ ॥ मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥ मै तउ मोलि

महगी लई जीअ सटै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ २ ॥ २ ॥

मेरी तो यही अभिलाषा है कि मैं अपने चित्त से भगवान का सिमरन करता रहूँ और अपने नयनों से उसके दर्शन करता रहूँ। मैं वाणी श्रवण करूँ और भगवान का सुयश अपने कानों में सुनता रहूँ। मैं अपने मन को सुन्दर भँवरा बनाऊँ और प्रभु के चरण-कमलों को अपने हृदय में बसाकर रखूँ। मैं अपनी रसना से राम का अमृत नाम उच्चारण करता रहूँ॥१॥ मेरा प्रेम गोविन्द के साथ कभी कम न हो। चूंकि यह प्रेम अपने प्राण देकर मूल्य चुका कर बहुत महंगा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! संतों की संगति के बिना तेरे साथ प्रेम उत्पन्न नहीं होता और प्रेम के बिना तेरी भक्ति नहीं हो सकती। रविदास ईश्वर के समक्ष एक विनती करता है कि हे राजा राम! मेरी लाज-प्रतिष्ठा बचाओ॥२॥ २॥

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥ १ ॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥ २ ॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥ ३ ॥ दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥ कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे परमात्मा! तेरा नाम ही आरती है और यही पावन तीर्थ-स्नान है। भगवान के नाम-सिमरन के बिना अन्य सभी आडम्बर झूठे हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! तेरा नाम ही सुन्दर आसन है, तेरा नाम ही चन्दन घिसने वाला पत्थर है और तेरा नाम ही केसर है, जिसे जप कर तुझ पर छिड़का जाता है। तेरा नाम ही जल है और तेरा नाम ही चन्दन है। मैं इस चन्दन को घिस कर अर्थात् तेरे नाम को जप कर तेरे समक्ष भेंट करता हूँ॥ १॥ तेरा नाम ही दीपक है और तेरा नाम ही बाती है। तेरा नाम ही तेल है, जिसे लेकर मैं दीपक में डालता हूँ। मैंने तेरे नाम की ही ज्योति प्रज्वलित की है, जिससे समस्त लोकों में उजाला हो गया है॥ २॥ तेरा नाम ही धागा है और तेरा नाम ही फूलों की माला है। अन्य अठारह भार वाली सारी वनस्पति जूठी है। हे प्रभु! तेरा उत्पन्न किया हुआ कौन-सा पदार्थ तुझे भेंट करूँ? तेरा नाम ही चँवर है परन्तु यह चँवर भी तू स्वयं ही मुझ से झुलाता है॥ ३॥ समूचे संसार में यही व्यवहार हो रहा है कि लोग अठारह पुराणों की कथाएँ सुनते रहते हैं, अड़सठ तीर्थों पर स्नान करते रहते हैं। रविदास जी का कथन है कि हे परमेश्वर! तेरा नाम ही आरती है और तेरा सत्य-नाम ही तेरा भोग-प्रसाद है॥ ४॥ ३॥

धनासरी बाणी भगतां की त्रिलोचन ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥ दुक्रितु सुक्रितु थारो करमु री ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥ कुल जन मधे मिल्यिो सारग पान रे ॥ करम करि कलंकु मफीटसि री ॥ १ ॥ बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥ करम

करि अरुण पिंगुला री ॥ २ ॥ अनिक पातिक हरता त्रिभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥ करम करि कपालु मफीटसि री ॥ ३ ॥ अंम्रित ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥ करम करि खारु मफीटसि री ॥ ४ ॥ दाधीले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥ करम करि कछउटी मफीटसि री ॥ ५ ॥ पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥ बदति त्रिलोचन राम जी ॥ ६ ॥ १ ॥

हे भूली हुई मूर्ख स्त्री ! तू नारायण की क्यों निन्दा कर रही है ? पूर्व जन्म में किए हुए शुभाशुभ कर्म ही तेरा भाग्य है जो तू दुःख-सुःख के रूप में भोग रही है॥ १॥ रहाउ॥ चन्द्रमा शिव-शंकर के माथे पर बसता है और हमेशा ही गंगा में स्नान करता है। चाहे विष्णु का अवतार कृष्ण भी चंद्र वंश के लोगों में आ मिला था तो भी चन्द्रमा के कर्मों के कारण लगा कलंक नहीं मिट सका॥१॥ विश्व का दीपक सूर्य अपने सारथी अरुण का स्वामी है और पक्षिराज गरुड़ अरुण का भाई है किन्तु अपने कर्मो के कारण अरुण लंगड़ा है॥ २॥ तीनों लोकों का स्वामी शिव-शंकर जीवों के अनेक पाप हरण करने वाला है। वह भी अनेक तीर्थों पर भटकता रहा किन्तु फिर भी अन्त नहीं पा सका। शिव, ब्रह्मा के सिर काटने के बुरे कर्म को मिटा नहीं सके॥ ३॥ नदियों के स्वामी समुद्र में से अमृत, चन्द्रमा, कामधेनु, विष्णु की पत्नी लक्ष्मी, कल्प वृक्ष, उच्चैश्रवा घोड़ा, धन्वंतरि वैद्य इत्यादि रत्न निकले हैं परन्तु समुद्र अपने दुष्कर्मों के कारण ही अपना खारापन नहीं मिटा सका॥ ४॥ चाहे हनुमान जी ने लंका का दुर्ग जला दिया, रावण का उपवन बर्बाद कर दिया और लक्ष्मण जी के मूर्छित होने पर घाव ठीक करने के लिए संजीवनी बूटी लाकर श्रीरामचन्द्र जी को प्रसन्न किया परन्तु उसके कर्मो के कारण उसे एक छोटी-सी लंगोटी ही मिली और उसके कर्मो का फल न मिट सका॥ ५॥ हे मेरे घर की गृहिणी ! पूर्व जन्म में किए पाप-पुण्य के कर्मों का फल नहीं मिटता और उसका दुःख-सुःख भोगना ही पड़ता है। त्रिलोचन जी का कथन है कि इसलिए मैं राम का नाम ही जपता रहता हूँ और तू भी राम जी के नाम को जप॥ ६॥ १॥

स्री सैणु ॥ धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥ वारने जाउ कमला पती ॥ १ ॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राइ को ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतमु दीअरा निरमल बाती ॥ तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥ २ ॥ रामा भगति रामानंदु जानै ॥ पूरन परमानंदु बखानै ॥ ३ ॥ मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥ सैनु भणै भजु परमानंदे ॥ ४ ॥ २ ॥

हे लक्ष्मीपति प्रभु ! मैं तुझ पर तन-मन से न्यौछावर जाता हूँ, चूंकि यही मेरी धूप, दीप, घी इत्यादि सजाकर की हुई आरती के समान है॥ १॥ समूचे विश्व में हरि का मंगल-गान हो रहा है और मैं भी नित्य ही धरती के स्वामी प्रभु राम का मंगल-गान कर रहा हूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे लक्ष्मीपति ! तू ही निरंजन है। मेरे लिए तू ही उत्तम दीपक एवं निर्मल बाती है॥२॥ राम की भक्ति करनी मेरा गुरु रामानंद ही जानता है। मेरा गुरुदेव बताता है कि राम सर्वव्यापी है और परमानंद है॥३॥ हे गोविन्द ! तेरा स्वरूप बड़ा मनमोहक है, मुझे भवसागर से पार कर दो। भक्त सैन जी का कथन है कि उस परमानंद प्रभु का ही भजन करो॥४॥२॥

पीपा ॥ कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥ काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥ १ ॥ काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ ना कछु आइबो ना कछु

जाइबो राम की दुहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥ २ ॥ ३ ॥

मैं अपने शरीर में ही भगवान की खोज करता हूँ, चूंकि मेरा शरीर ही ईश्वर का मन्दिर है। मेरे शरीर में विद्यमान आत्मा ही तीर्थ-यात्रा करने वाला जंगम साधु है। मेरा शरीर ही आरती की सामग्री-धूप, दीप एवं नैवेद्य है। मेरा शरीर ही पूजा की फूलों की पतियाँ हैं॥ १॥ मैंने अपने शरीर में ही बहुत खोज-तलाश करके नवनिधियाँ प्राप्त कर ली हैं। मैं राम की दुहाई देकर कहता हूँ कि न कुछ यहाँ से आता है और न ही कुछ यहाँ से जाता है अर्थात् भगवान ही सर्वस्व है॥१॥ रहाउ॥ जो प्रभु ब्रह्माण्ड में निवास करता है, वही प्रत्येक मनुष्य के शरीर में भी निवास करता है। जो उसकी खोज करता है, वह उसे शरीर में से ही प्राप्त कर लेता है। भक्त पीपा प्रार्थना करता है कि ईश्वर ही परम-तत्व है और वह सतगुरु बनकर खुद ही दर्शन करवा देता है॥२॥३॥

धंना ॥ गोपाल तेरा आरता ॥ जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दालि सीधा मागउ घीउ ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ पन्हीआ छादनु नीका ॥ अनाजु मगउ सत सी का ॥ १ ॥ गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ घर की गीहनि चंगी ॥ जनु धंना लेवै मंगी ॥ २ ॥ ४ ॥

हे परमात्मा ! मैं भिक्षुक तुझ से प्रार्थना कर रहा हूँ। जो व्यक्ति भी तुम्हारी भक्ति करते हैं, तुम उनके सभी कार्य संवार देते हो॥१॥ रहाउ॥ मैं तुझ से दाल, घी एवं आटा माँगता हूँ, जिससे मेरा मन सदैव प्रसन्न रहेगा। मैं पैरों के लिए जूती एवं शरीर पर पहनने के लिए सुन्दर वस्त्र भी माँगता हूँ। मैं सात प्रकार का अनाज भी माँगता हूँ॥१॥ हे ईश्वर ! मैं दूध पीने के लिए एक गाय और एक दूध देती भैंस भी माँगता हूँ। मेरी इच्छा है कि सवारी के लिए एक कुशल अरबी घोड़ी भी मिल जाए। मैं अपने घर की देखभाल हेतु एक सुशील पत्नी भी चाहता हूँ। तेरा भक्त धन्ना केवल यही वस्तुएँ तुझसे माँगकर लेता है॥ २॥ ४॥

★★★

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे

੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

निरंकार वही एक है, जिसे सच्चे गुरु की बख्शिश से ही पाया जा सकता है।

मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥ जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नामु सभि अरथा ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥ तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥ २ ॥ जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥ मोकउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगंनाथा ॥ ३ ॥ हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥ हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥ ४ ॥ १ ॥

जब गुरु ने मेरे माथे पर अपना (आशीर्वाद का) हाथ रखा तो मेरे हृदय में हरि-नाम रूपी रत्न बस गया। मेरे जन्म-जन्मांतरों के किल्विष दुःख दूर हो गए हैं, क्योंकि गुरु ने मुझे परमात्मा का नाम प्रदान किया है और मेरा ऋण उतर गया है॥१॥ हे मेरे मन ! राम-नाम का भजन करो, जिससे तेरे सभी कार्य सिद्ध हो जाएँगे। पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय में भगवान का नाम दृढ़ कर दिया है और नाम के बिना जीवन व्यर्थ है॥ रहाउ॥ गुरु के बिना स्वेच्छाचारी मनुष्य मूर्ख बने हुए हैं और नित्य ही माया के मोह में फँसे रहते हैं। जिन्होंने कभी भी संतों के चरणों की सेवा नहीं की, उनका समूचा जीवन व्यर्थ ही चला गया है॥२॥ जिन्होंने संत-महात्मा जैसे महापुरुषों के चरणों की सेवा की है, उनका जीवन सफल हो गया है और प्रभु को पा लिया है। हे जगन्नाथ ! हे हरि ! मुझ पर दया करो और मुझे अपने दासों का दास बना लो॥३॥ हे प्रभु ! मैं अंधा, ज्ञानहीन एवं अज्ञानी हूँ, फिर भला मैं कैसे सन्मार्ग पर चल सकता हूँ। नानक का कथन है कि हे गुरु ! मुझ ज्ञान से अन्धे व्यक्ति को अपना आंचल (सहारा) प्रदान कीजिए चूंकि तेरे साथ मिलकर चल सकूँ॥४॥१॥

जैतसरी महला ४ ॥ हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥ रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ॥ १ ॥ मेरै मनि गुपत हीरु हरि राखा ॥ दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥ मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा ॥ ते ऊझड़ि भरमि मुए गावारी माइआ भुअंग बिखु चाखा ॥ २ ॥ हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा ॥ हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥ ३ ॥ जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥ जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डुबत हरि राखा ॥ ४ ॥ २ ॥

भगवान का नाम रूपी हीरा बड़ा अनमोल एवं बहुमूल्य है किन्तु ग्राहक के बिना यह नाम रूपी हीरा तिनके के बराबर है। जब नाम-रत्न के ग्राहक साधु रूपी गुरु ने देखा तो यह हीरा लाखों

में बिकने लगा॥१॥ भगवान ने मेरे हृदय में यह हीरा गुप्त तौर पर रखा हुआ है। जब दीनदयालु परमेश्वर ने मुझे साधु रूपी गुरु से मिला दिया तो गुरु को मिलकर मैंने हीरे को परख लिया ॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी व्यक्तियों के हृदय में अज्ञानता का अन्धेरा ही बना रहता है और उनके हृदय-घर में नाम रूपी हीरा दिखाई नहीं देता। वे मूर्ख वीराने में भटक कर ही मर मिट जाते हैं, चूंकि वे तो माया रूपी नागिन का विष ही चखते रहते हैं॥२॥ हे परमेश्वर ! मुझे महापुरुषों-संतों की संगति से मिला दो और साधु रूपी गुरु की शरण में ही रखो। हे हरि ! मुझे अपना बना लो, हे मेरे स्वामी-प्रभु ! मैं भागकर तेरे पास आ गया हूँ॥३॥ मेरी जिह्वा तेरे कौन-कौन से गुणों का वर्णन कर सकती है, क्योंकि तुम बड़े अगम्य एवं महान् पुरुष हो। हे नानक ! भगवान ने बड़ी कृपा की है और उसने मुझ जैसे डूबते हुए पत्थर को बचा लिया है॥ ४॥ २॥

जैतसरी मः ४ ॥ हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इआना ॥ हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥ १ ॥ मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥ हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥ गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥ बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥ २ ॥ जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥ तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥ ३ ॥ हरि हरि क्रिपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥ धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु द्रिड़ाइआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे ईश्वर ! हम तेरे मूर्ख, नासमझ एवं नादान बालक हैं और तेरी गति एवं महिमा कुछ भी नहीं जानते। हे प्रभु ! कृपा करके उत्तम मति प्रदान कीजिए और मुझ मूर्ख को चतुर बना दीजिए ॥१॥ मेरा मन बड़ा आलसी एवं निद्रा मग्न वाला है। मेरे प्रभु ने मुझे साधु रूपी गुरु से मिला दिया है और साधु रूपी गुरु से मिलकर मेरे मन के कपाट खुल गए हैं॥ रहाउ॥ हे गुरुदेव ! मेरे हृदय में क्षण-क्षण ऐसी प्रीति लगा दो, जो सदैव बढ़ती रहे और प्रियतम का नाम ही प्राण बन जाएँ। हे मेरे ठाकुर ! नाम के बिना तो ऐसे मर जाता हूँ, जैसे कोई नशा करने वाला नशे के बिना उत्तेजित हो रहा है॥ २॥ जिनके मन में भगवान की प्रीति पैदा हो गई है, उनका प्रारम्भ से भाग्योदय हो गया है। जिन महापुरुषों को भगवान का नाम बड़ा मीठा लगता है, मैं क्षण-क्षण उनके चरणों की पूजा करता हूँ॥ ३॥ मेरे ठाकुर हरि-परमेश्वर ने मुझ पर बड़ी कृपा की है और चिरकाल से बिछुड़े हुए सेवक को अपने साथ मिला लिया है। वह सतगुरु धन्य है, जिसने मेरे हृदय में नाम दृढ़ किया है। नानक तो उस गुरु पर कुर्बान जाता है॥ ४॥ ३॥

जैतसरी महला ४ ॥ सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥ माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥ १ ॥ मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा ॥ हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ धनु धनु वडभाग मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥ त्रिसना अगनि बुझी सांति पाई हरि निरमल निरमल गुन गाइबा ॥ २ ॥ तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा ॥ ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइबा ॥ ३ ॥ हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइबा ॥ जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइ दइआलु दिवाइबा ॥ ४ ॥ ४ ॥

मुझे सज्जन एवं महापुरुष सतगुरु मिल गया है और अब स्वाद ले-लेकर हरि-नाम रूपी फल खाने लग गया हूँ अर्थात् नाम जपने लग गया हूँ। माया नागिन ने प्राणी को पकड़ा हुआ है किन्तु भगवान ने गुरु के उपदेश द्वारा माया के विष को बाहर निकाल दिया है॥१॥ मेरा मन राम-नाम के रस में मग्न हो गया है अर्थात् राम-नाम जपने लग गया है। महापुरुष गुरु से मिला कर भगवान ने पापियों को पवित्र कर दिया है और अब वे हरिनामामृत को ही चखते हैं॥ रहाउ॥ जिसे साधु-गुरु मिल गया है, वह आदमी धन्य है, खुशकिस्मत है। साधु से मिलकर उसका ध्यान सहजावस्था में प्रभु से लग गया है, उसके मन की तृष्णाग्नि बुझ गई है और उसे शान्ति प्राप्त हो गई है। अब वह परमात्मा के निर्मल गुण ही गाता है॥२॥ जिन्हें सतगुरु के दर्शन प्राप्त नहीं हुए, उनके भाग्य प्रारम्भ से ही क्षीण लिखे गए हैं। द्वैतभाव के कारण वे गर्भ योनियों में ही पड़ते हैं और उनका समूचा जीवन व्यर्थ ही बीत जाता है॥३॥ हे ईश्वर! मुझे पवित्र बुद्धि प्रदान करो ताकि मैं गुरु के चरणों की सेवा कर सकूँ और तू मुझे मीठा लगने लगे। नानक संत गुरुदेव की चरण-धूलि की ही कामना करता रहता है और प्रभु दयालु होकर यह देन दिलवा देता है॥४॥४॥

जैतसरी महला ४ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा ॥ तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए करांझा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥ हरि हरि क्रिपालि क्रिपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥ हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥ हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥ २ ॥ दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए गवाझा ॥ सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहु गुण साझा ॥ ३ ॥ जिन कउ क्रिपा करी जगजीवनि हरि उरि धारिओ मन माझा ॥ धरम राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥ ४ ॥ ५ ॥

जिनके हृदय में ईश्वर का नाम नहीं बसा है, परमेश्वर उनकी माता को बाँझ बना दे तो ही अच्छा है। क्योंकि उनका सूना शरीर नाम के बिना भटकता ही रहता है और वे अपना जीवन विकारों में ही दुखी होकर नष्ट कर लेते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! राम-नाम का जाप करो, जो तेरे हृदय में ही बसा हुआ है। कृपालु हरि-प्रभु ने मुझ पर बड़ी कृपा की है, जिससे गुरु ने मुझे ज्ञान प्रदान किया है और मेरा मन नाम-स्मरण के लाभ को समझ गया है॥रहाउ॥ कलियुग में भगवान की महिमा उत्तम पदवी रखती है और गुरु की दया से ही भगवान की प्राप्ति होती है। मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने गुप्त नाम मेरे हृदय में प्रगट कर दिया है॥ २॥ मैं बड़ा खुशनसीब हूँ जो मुझे साधु रूपी गुरु के दर्शन प्राप्त हुए हैं और मेरे सभी किल्विष पाप नष्ट हो गए हैं। मैंने बड़े चतुर, शाह गुरु को प्राप्त कर लिया है और उसने भगवान के अनेक गुणों में मुझे भागीदार बना दिया है॥ ३॥ जगत के जीवन परमात्मा ने जिस पर अपनी कृपा की है, उसने अपने मन एवं हृदय में उसे बसा लिया है। यमराज ने अपने दरबार में उनके कर्मों के कागज फाड़ दिए हैं। हे नानक! उन परमात्मा के भक्तों का लेखा समाप्त हो गया है॥ ४॥ ५॥

जैतसरी महला ४ ॥ सतसंगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा ॥ अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अंम्रित धार रसि लीड़ा ॥ १ ॥ मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा ॥ मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ झपीड़ा ॥ रहाउ ॥ साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा ॥ हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥ २ ॥ जिन हरि अरथि सरीरु लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूड़ा ॥ हलति पलति हरि सोभा पावहि हरि रंगु लगा

मनि गूड़ा ॥ ३ ॥ हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा ॥ जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूड़ा ॥ ४ ॥ ६ ॥

अहोभाग्य से मुझे संतों की सुसंगति प्राप्त हुई है, जिससे मेरा अस्थिर मन स्थिर हो गया है। अब मेरे मन में नित्य ही अनहद ध्वनि का नाद बजता रहता है और मैं हरिनामामृत की धारा के रस से तृप्त हो गया हूँ॥१॥ हे मेरे मन ! सुन्दर हरि का राम-नाम जपो, गुरु ने मेरे मन एवं तन में प्रीति लगा दी है और भगवान ने मुझे गले लगा लिया है॥ रहाउ॥ भगवान से विमुख व्यक्ति माया के बन्धनों में फँसे हुए हैं और वे दृढ़ता से विषैली माया को संचित करते रहते हैं। वे इस माया को भगवान के नाम पर खर्च नहीं कर सकते और अपने सिर पर यमों की पीड़ा ही सहते रहते हैं॥ २॥ जिन्होंने अपना शरीर भगवान की आराधना में लगाया है और बड़ी श्रद्धा से संत गुरुदेव की चरण-धूलि अपने मुख पर लगाई है, वे इहलोक एवं परलोक में भगवान की शोभा का पात्र बनते हैं चूंकि उनके मन को भगवान के प्रेम का गहरा रंग लगा होता है॥ ३॥ हे मेरे परमेश्वर ! मुझे साधुओं की संगति में मिला दो, क्योंकि मैं तो उन साधुजनों का एक कीड़ा ही हूँ। हे नानक ! मेरी प्रीति तो साधु-गुरुदेव के चरणों से ही लगी हुई है और उनसे मिलकर मेरा विमूढ़ कठोर मन खिल गया है॥ ४॥ ६॥

जैतसरी महला ४ घरु २ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥ जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥ हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥ १ ॥ हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥ हरि हरि नामु रखहु उर धारे ॥ हरि हरि अंम्रित बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥ २ ॥ मधुसूदन हरि माधो प्राना ॥ मेरै मनि तनि अंम्रित मीठ लगाना ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥ हरि कै रंगि मेरा मनु राता ॥ हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

अगम्य एवं अपरंपार हरि का सिमरन करो, जिसका सिमरन करने से हमारा दुःख मिट जाता है। हे हरि ! मुझे महापुरुष सत्तगुरु से मिला दो, क्योंकि गुरु मिलने से ही सुख की प्राप्ति होती है॥१॥ हे मेरे मित्रो ! भगवान के गुण गाओ; हरि-नाम को अपने ह्रदय में बसाकर रखो। मुझे हरि के अमृत वचन सुनाओ। जब गुरु मिल जाता है तो भगवान चित में प्रगट हो जाता है॥ २॥ हे मधुसूदन ! हे हरि ! हे माधव ! तू ही मेरे प्राण है और मेरे मन एवं तन में तेरा नाम ही अमृत के समान मीठा लगता है। हे प्रभु ! दया करके मुझे गुरु से मिला दो, क्योंकि वही महापुरुष, माया से निर्लिप्त परमात्मा के समान है॥३॥ हरि-नाम हमेशा सुख प्रदान करने वाला है। अतः मेरा मन हरि के रंग में ही मग्न रहता है। हे हरि ! मुझे महापुरुष गुरु से मिला दो, क्योंकि हे नानक ! गुरु के नाम द्वारा ही सुख प्राप्त होता है॥४॥१॥७॥

जैतसरी मः ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥ गुरमुखि नामु सदा लै लाहा ॥ हरि हरि हरि हरि भगति द्रिड़ावहु हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि नामु दइआलु धिआहा ॥ हरि कै रंगि सदा गुण गाहा ॥ हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ २ ॥ आउ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥ सुणि हरि कथा नामु लै लाहा ॥ हरि हरि क्रिपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ करि कीरति जसु अगम अथाहा ॥ खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥ मोकउ धारि क्रिपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥

सदा-सर्वदा हरि-नाम का ही निरन्तर जाप करो; गुरु के सन्मुख रहकर सदैव ही नाम का लाभ प्राप्त करो। अपने मन में भगवान की भक्ति दृढ़ करो और हरि-नाम के लिए चाहत पैदा करो॥ १॥ दया के घर हरि-नाम का ध्यान करो। भगवान के रंग में मग्न होकर सदा उसका गुणगान करो। हरि का यशोगान करो और निष्ठा से उसका ही नृत्य करो और बड़े चाव से संतों की सभा में शामिल होकर आनंद करो॥ २॥ हे सत्संगी सखियो। आओ, हम भगवान की संगति में मिलें और हरि-कथा को सुनकर उसके नाम का लाभ प्राप्त करें। हे हरि! कृपा करके मुझे गुरु से मिला दो, क्योंकि गुरु से मिलकर ही तेरे प्रति उमंग पैदा होती है॥ ३॥ उस अगम्य एवं अनंत प्रभु का कीर्ति-गान करो, क्षण-क्षण राम-नाम का स्तुतिगान करो। हे मेरे दाता गुरु! कृपा करके मुझे दर्शन दीजिए, चूंकि नानक को तो भगवान की भक्ति की तीव्र लालसा लगी हुई है॥४॥२॥८॥

जैतसरी मः ४ ॥ रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥ मनु राम नामि भीना लै लाहा ॥ खिनु खिनु भगति करह दिनु राती गुरमति भगति ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥ मनु तनु जीति सबदु लै लाहा ॥ गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ २ ॥ नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥ हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥ दीन दइआल क्रिपा करि माधो हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥ जपि जगदीसु जपउ मन माहा ॥ हरि हरि जगंनाथु जगि लाहा ॥ धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ३ ॥ ९ ॥

मैं प्रेमपूर्वक रसों के घर राम का स्तुतिगान करता हूँ। मेरा मन राम के नाम से प्रसन्न हो गया है और नाम का लाभ प्राप्त कर रहा है। मैं दिन-रात प्रत्येक क्षण भक्ति करता हूँ और गुरु के उपदेश द्वारा मेरे मन में भक्ति की उमंग उत्पन्न होती है॥ १॥ मैं भगवान का गुणगान करता हूँ, गोविन्द का जाप जपता रहता हूँ। अपने मन एवं तन पर विजय प्राप्त करके शब्द-गुरु का लाभ प्राप्त किया है। गुरु की शिक्षा द्वारा कामादिक शत्रु नियन्त्रण में आ गए हैं और मन एवं तन में भगवान की भक्ति का चाव उत्पन्न होता रहता है॥ २॥ नाम अमूल्य रत्न है, अंतः हरि-नाम का जाप करो। भगवान का स्तुतिगान कर सदैव ही लाभ प्राप्त करो। हे दीनदयालु परमेश्वर! मुझ पर कृपा करो और मेरे मन में नाम की लालसा उत्पन्न कर॥ ३॥ अपने मन में जगदीश्वर का जाप जपता रहूँ। इस जगत में जगन्नाथ हरि-नाम ही लाभप्रद है। नानक का कथन है कि हे मेरे ठाकुर प्रभु! तू बड़ा धन्य-धन्य है, क्योंकि तेरा नाम जपकर ही भक्ति करने का चाव उत्पन्न होता है॥ ४॥ ३॥ ९॥

जैतसरी महला ४ ॥ आपे जोगी जुगति जुगाहा ॥ आपे निरभउ ताड़ी लाहा ॥ आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि ओमाहा राम ॥ १ ॥ आपे दीप लोअ दीपाहा ॥ आपे सतिगुरु समुंदु मथाहा ॥ आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओमाहा राम ॥ २ ॥ सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा ॥ गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥ हरि हरि भगति द्रिड़ी मनि भाई हरि हरि नामु ओमाहा राम ॥ ३ ॥ आपे वड दाणा वड साहा ॥ गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥ हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥

ईश्वर स्वयं ही योगी है और स्वयं ही समस्त युगों में योग की युक्ति है। वह स्वयं ही निर्भीक होकर समाधि लगाता है। वह स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और मनुष्य को स्वयं ही नाम-सिमरन की उमंग प्रदान करता है॥ १॥ वह स्वयं ही दीप, प्रकाश एवं प्रकाश करने वाला है। वह स्वयं ही सतगुरु है और स्वयं समुद्र मंथन करने वाला है। वह स्वयं ही मंथन करके तत्व निकालता है और

नाम-रत्न का जाप करने से मन में भक्ति करने का चाव उत्पन्न होता है॥ २॥ हे सत्संगी सखियो! आओ, हम मिलकर भगवान का गुणगान करें। गुरु के उन्मुख रहकर नाम का जाप करो और भगवान के नाम का लाभ प्राप्त करो। मैंने हरि की भक्ति अपने मन में दृढ़ कर ली है और यही मेरे मन को भा गई है। हरि का नाम-सिमरन करने से मन में उत्साह बना रहता है॥ ३॥ भगवान स्वयं ही बड़ा चतुर एवं महान् शाह है और गुरु के सान्निध्य में रहकर ही नाम की पूंजी प्राप्त होती है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! कृपा करके मुझे नाम की देन प्रदान करो क्योंकि तेरे ही गुण मुझे भाते हैं और मेरे हृदय में नाम का उत्साह बना रहे॥४॥४॥१०॥

जैतसरी महला ४ ॥ मिलि सतसंगति संगि गुराहा ॥ पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥ हरि हरि क्रिपा धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि ओमाहा राम ॥ १ ॥ हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलाहा ॥ गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि ओमाहा राम ॥ २ ॥ सभि तीरथ वरत जग पुंन तुोलाहा ॥ हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ॥ हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओमाहा राम ॥ ३ ॥ सभि करम धरम हरि नामु जपाहा ॥ किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥ दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु ओमाहा राम ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

मैं सत्संगत में मिलकर गुरु की संगत करता हूँ नाम की पूंजी संचित करता हूँ। हे मधुसूदन! हे हरि! मुझ पर कृपा करो ताकि सत्संगति में मिलकर मन में तेरी भक्ति करने के लिए तीव्र लालसा बनी रहे॥ १॥ हे परमेश्वर! कृपा करके मुझे सतगुरु से मिला दो, ताकि वाणी द्वारा अपने कानों से भगवान के गुण श्रवण करूँ। मैं हरि का गुणगान करूँ। बाणी द्वारा तेरे गुण उच्चारण करूँ और हरि के गुण जपकर मेरे मन में तुझे मिलने के लिए उत्साह बना रहे॥ २॥ मैंने समस्त तीर्थ, व्रत, यज्ञ एवं दान पुण्य के फलों को तोल लिया है। परन्तु यह सभी हरि-नाम सिमरण के बराबर नहीं पहुँचते। हरि का नाम अतुलनीय है, अत्यन्त महान् होने के कारण इसे तोला नहीं जा सकता। गुरु के उपदेश द्वारा ही हरि-नाम का जाप करने का उत्साह पैदा होता है॥ ३॥ जो हरि-नाम जपता है, उसे सभी धर्म-कर्मों का फल मिल जाता है, इससे किल्विष-पापों की सारी मैल धुल जाती है। नानक प्रार्थना करता है कि हे दीनदयालु! अपने सेवक पर दयालु हो जाओ तथा मेरे हृदय में अपना नाम देकर उत्साह बनाए रखो॥ ४॥ ५॥ ११॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥ जिसु होइ क्रिपालु सोई बिधि बूझै ता की निरमल रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥ पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥ १ ॥ मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥ हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥ २ ॥ हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा ॥ संगि न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नांगा ॥ ३ ॥ हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥ नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥ ४ ॥ १ ॥

कोई विरला ही जानता है कि इस दुनिया में हमारा कौन घनिष्ठ मित्र है? जिस पर भगवान कृपालु होता है, वही इस तथ्य को भलीभांति बूझता है और उसका जीवन-आचरण पवित्र बन जाता है॥१॥ रहाउ॥ माता-पिता, पत्नी, पुत्र, संबंधी, परम मित्र एवं भाई-पूर्व जन्म के संयोग से ही मिलते हैं, लेकिन जीवन के अन्तिम समय में कोई सहायक नहीं होता॥ १॥ मोतियों की

मालाएँ, स्वर्ण, जवाहरात एवं हीरे मन को आनंद देने वाली दौलत है। मनुष्य की जीवन-अवधि इन्हें एकत्र करने के दुःख में व्यतीत हो जाती है किन्तु इन सबकी उपलब्धि होने पर मनुष्य को संतोष प्राप्त नहीं होता॥ २॥ मनुष्य के पास चाहे हाथी, रथ, पवन की तरह तेज चलने वाले घोड़े, धन-दौलत, भूमि एवं चतुरंगिणी सेना भी क्यों न हो, इनमें से कुछ भी मनुष्य के साथ नहीं जाता और वह नग्न ही दुनिया को छोड़कर चला जाता है॥ ३॥ हरि के संतजन प्रियतम प्रभु के प्रिय होते हैं, इसलिए हमें उनकी संगति में रहकर सदैव भगवान का यशोगान करना चाहिए। हे नानक! ऐसे संतों की संगति में रहने से मनुष्य को इहलोक में सुख प्राप्त होता है और आगे परलोक में भी बड़ी शोभा प्राप्त होती है॥ ४॥ १॥

जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥ बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥ १ ॥ सरब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥ नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥ २ ॥ १ ॥ २॥

हे सत्संगी सुहागिन सखियो! मुझे मेरे प्रियतम-परमेश्वर का सन्देश दो, उस प्रिय के बारे में कुछ तो बताओ। उसके बारे में अनेक प्रकार की बातें सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गई हूँ ॥१॥ रहाउ॥ कोई कहता है कि वह शरीर से बाहर ही रहता है और कोई कहता है कि वह सबमें समाया हुआ है। उसका कोई वर्ण दिखाई नहीं देता और कोई चिन्ह भी दिखाई नहीं देता। हे सुहागिनो! मुझे सत्य बतलाओ॥ १॥ वह परमेश्वर सब में निवास कर रहा है, प्रत्येक शरीर में वे वास करने वाला है, वह माया से निर्लिप्त है और उस पर जीवों के शुभाशुभ कर्मों का कोई दोष नहीं लगता। नानक कहते हैं कि हे लोगो! ध्यानपूर्वक सुनो, मेरा परमेश्वर तो संतजनों की रसना पर निवास कर रहा है॥ २॥ १॥ २॥

जैतसरी मः ५ ॥ धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥ १ ॥ बेसुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥ २ ॥ जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

अपने प्रभु की महिमा सुनकर मुझे बड़ा धैर्य होता है॥१॥ रहाउ॥ अपने प्रभु के अत्यन्त निकट दर्शन करके मैं अपनी आत्मा, प्राण, मन एवं तन सबकुछ उसे अर्पण करता हूँ॥१॥ उस बेशुमार, बेअंत एवं महान् दाता प्रभु को देखकर मैं अपने हृदय में बसाता हूँ॥२॥ मैं जो कुछ चाहता हूँ, वही उससे प्राप्त कर लेता हूँ, अपने प्रभु का सिमरन करने से मेरी आशा एवं मनोरथ भी पूर्ण हो जाते हैं॥३॥ हे नानक! गुरु की अपार कृपा से वह मेरे मन में बस गया है और प्रभु को समझकर अब मैं दुःख में कभी व्याकुल नहीं होता॥ ४॥ २॥ ३॥

जैतसरी महला ५ ॥ लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥ घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥ नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥ १ ॥ थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा ॥ संतसंगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

वह मेरा साजन प्रभु ही है, जिसे पाने के लिए प्रत्येक जिज्ञासु के मन में तीव्र लालसा लगी हुई है। अतः घर-घर में उसका मंगल-गान करो, उसका निवास तो प्रत्येक जीव के हृदय में है॥१॥ रहाउ॥ हर्षोल्लास (सुख) के समय उसकी ही आराधना करो एवं किसी संकट काल (दुःख) के समय भी उसकी ही आराधना करो और किसी भी समय उसे कदापि विस्मृत न करो। उसके नाम का जाप करने से करोड़ों ही सूर्यों का उजाला हो जाता है एवं भ्रम, अज्ञान के अन्धेरे का नाश हो जाता है॥१॥ हे परमात्मा! देश-देशान्तर सबमें तू ही व्यापक है तथा जो कुछ भी दृष्टिगोचर होता है, वह तेरा ही है। हे नानक! जो व्यक्ति संतों की संगति में रहता है, वह पुनः आवागमन के चक्र में नहीं पड़ता अर्थात् उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है॥२॥३॥४॥

जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अब मै सुखु पाइओ गुर आग्यि ॥ तजी सिआनप चिंत विसारी अहं छोडिओ है तिआग्यि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि ॥ करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥ १ ॥ तरिओ सागरु पावक को जउ संत भेटे वड भागि ॥ जन नानक सरब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥

अब मैंने गुरु की आज्ञा में रहकर सुख प्राप्त कर लिया है। मैंने हर प्रकार की चालाकी छोड़ दी है, अपनी चिन्ता को भुला दिया है और अपने अहंत्व को पूर्णतया छोड़ दिया है॥१॥ रहाउ॥ मैंने जब यह देखा कि दुनिया के सभी लोग माया के मोह में ही लिप्त हैं तो मैं तुरंत ही गुरु की शरण में भागकर आ गया। जब गुरु ने कृपा करके मुझे भगवान की उपासना में लगाया तो यमों ने भी मेरा पीछा छोड़ दिया॥१॥ अहोभाग्य से जब मेरी संतों से भेंट हुई तो जगत के अग्नि सागर को पार कर लिया। नानक का कथन है कि अब मैंने सर्व सुख प्राप्त कर लिए हैं चूंकि मेरा चित भगवान के सुन्दर चरणों में ही लग गया है॥२॥१॥५॥

जैतसरी महला ५ ॥ मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥ द्रिढ़िओ गिआनु मंतु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा ॥ आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा ॥ १ ॥ नाव रूप भइओ साधसंगु भव निधि पारि परा ॥ अपिउ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥

मैंने अपने मन में सतगुरु का ध्यान धारण किया, जिसके फलस्वरूप प्रभु ने मुझ पर बड़ी करुणा की है। मैंने अपने मन में भगवान का नाम-मंत्र एवं ज्ञान को दृढ़ कर लिया है॥१॥ रहाउ॥ अब काल का जाल, सांसारिक बन्धनों का महा जंजाल एवं मृत्यु का भय अब सभी लुप्त हो चुके हैं। हे करुणापति! तू समस्त दुःख हरण करने वाला है, अतः मैं तेरी शरण में आया हूँ और तेरे चरणों का ही सहारा लिया है॥१॥ साधु-संतों की संगति भवसागर से पार होने के लिए एक नाव का रूप है। हे नानक! अब मैंने नामामृत पान कर लिया है, जिससे मेरी दुविधा का नाश हो गया है तथा अजर अवस्था प्राप्त होने के कारण अब मुझे बुढ़ापा भी नहीं आ सकता॥२॥२॥६॥

जैतसरी महला ५ ॥ जा कउ भए गोविंद सहाई ॥ सूख सहज आनंद सगल सिउ वा कउ बिआधि न काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥ एकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥ १ ॥ दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई ॥ तिन कै संगि नानक निसतरीऐ जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥

जिस जीव का परमात्मा सहायक बन गया है, वह आत्मिक सुख एवं तमाम हर्षोल्लास प्राप्त कर लेता है और उसे कोई भारी व्याधि प्रभावित नहीं करती॥१॥ रहाउ॥ वह सब के साथ रहता दृष्टिगत होता है परन्तु फिर भी निर्लिप्त रहता है और माया उसे बिल्कुल भी स्पर्श नहीं करती। वह एक परमेश्वर के रंग में मग्न रहता है तथा तत्ववेता बन जाता है परन्तु यह बुद्धि भी उसे सतगुरु से ही प्राप्त हुई है॥१॥ जिन पर ठाकुर जी की दया, मेहर एवं कृपा होती है, वही संत स्वभाव वाले हैं। हे नानक! जो महापुरुष प्रेमपूर्वक भगवान का गुणगान करते हैं, उनकी संगति में रहने से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है॥२॥३॥७॥

जैतसरी महला ५ ॥ गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥ अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥ अनिक बार करउ तिह बंदन मनहि चराहवउ धूप ॥ १ ॥ हारि परिओ तुम्हरै प्रभ दुआरै द्रिढु करि गही तुम्हारी लूक ॥ काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥ २ ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे गोविन्द! तू ही हमारा जीवन, प्राण, धन-दौलत एवं सौन्दर्य है। अज्ञान के कारण प्राणी मोह में मग्न रहता है और इस अज्ञानता के अन्धेरे में परमेश्वर ही एकमात्र ज्ञान का दीपक है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रियतम प्रभु! तेरे चरण कमल बड़े अनुपम हैं और तुम्हारे दर्शन बड़े फलदायक हैं। मैं बार-बार तेरी ही वन्दना करता हूँ एवं अपने मन को धूप-सामग्री के रूप में अर्पण करता हूँ॥ १॥ हे प्रभु! मायूस होकर अब मैं तुम्हारे द्वार पर आया हूँ और तेरे सहारे को जकड़ कर पकड़ लिया है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! इस संसार रूपी अग्नि के कुएँ में से मुझे बाहर निकाल दो॥ २॥ ४॥ ८॥

जैतसरी महला ५ ॥ कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥ चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ॥ इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ॥ १ ॥ आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि ॥ अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥

कोई महापुरुष मुझे भगवान के साथ मिला दे तो मैं उसके चरण पकड़ लूँ, अपनी जीभ से शुभ वचन बोलूँ तथा अपने प्राण भी उसे ही अर्पण कर दूँ॥ १॥ रहाउ॥ अपने मन एवं तन को निर्मल क्यारियाँ बनाकर मैं उन्हें हरिनामामृत से भलीभांति सींचता हूँ। भगवान की कृपा से ही प्राणी इस अमृत में मग्न होता है और विषय-विकारों से अलग हो जाता है॥१॥ हे दीनों के दुःख नष्ट करने वाले प्रभु! मैं तेरी ही शरण में आया हूँ और तुम्हारी ओट को ही स्मरण करता रहता हूँ। हे मेरे स्वामी! मुझे अभय पद एवं सिमरन का दान प्रदान करो। हे नानक! वह प्रभु जीवों के बन्धन काटने वाला है॥ २॥ ५॥ ६॥

जैतसरी महला ५ ॥ चात्रिक चितवत बरसत मेंह ॥ क्रिपा सिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति को नेंह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥ आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ॥ १ ॥ हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी क्रिपा करेंह ॥ चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ॥ २ ॥ ६ ॥ १० ॥

जैसे पपीहे को हर समय वर्षा की अभिलाषा रहती है, वैसे ही हे कृपा के समुद्र प्रभु! मुझ पर करुणा करो ताकि तेरी प्रेम-भक्ति से मेरी प्रीति बनी रहे॥१॥ रहाउ॥ चकवी को अनेक सुखों की लालसा नहीं, परन्तु सूर्य को देखकर वह आनंद से भर जाती है। मछली जल के अलावा किसी

अन्य उपाय द्वारा जीवित नहीं रह सकती और जल के बिना वह अपने प्राण त्याग देती है॥ १॥ हे मेरे मालिक ! तेरे बिना हम अनाथ हैं। हे प्रभु ! कृपा करके अपनी शरण में रखो। नानक तो प्रभु के चरण-कमलों की ही आराधना करता है और उसके बिना उसे कुछ भी उपयुक्त नहीं लगता॥२॥६॥१०॥

जैतसरी महला ५ ॥ मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥ करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥ ता की कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हम्हारी ॥ १ ॥ लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥

मेरे प्राणों का आधार परमात्मा मेरे मन एवं तन में बस रहा है। वह चतुर परमपुरुष सर्वव्यापी है और अपनी कृपा करके साधु की संगति द्वारा मुझे मिला है॥१॥ रहाउ॥ उसने जिन मनुष्यों के मुँह में प्रेम की ठग-बूटी डाल दी है, उन्होंने उत्तम हरि-नाम रूपी रस पान कर लिया है। मैं उनका मूल्यांकन बता नहीं सकता, क्योंकि ऐसा करने की मुझ में कौन-सी क्षमता है ?॥१॥ प्रभु ने अपने भक्तों को अपने आंचल के साथ लगा लिया है और वे पार होने वाले भवसागर से पार हो गए है। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तेरा बारंबार सिमरन करने से ही सुख प्राप्त हुआ है और मैं तेरे द्वार पर तेरी शरण में आया हूँ॥ २॥ ७॥ ११॥

जैतसरी महला ५ ॥ आए अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥ उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निरमल करणी ॥ साधसंगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइ तरणी ॥ १ ॥ सुख संपति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी ॥ हरि दरसन त्रिपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥

हे ईश्वर ! अनेक जन्म भटकने के पश्चात् हम तेरी शरण में आए हैं। हमारे शरीर को अज्ञानता के कुएँ में से बाहर निकाल दो और अपने चरणों में लगा लो॥ १॥ रहाउ॥ मैं ज्ञान, ध्यान एवं शुभ कर्म कुछ भी नहीं जानता और न ही मेरा जीवन-आचरण शुद्ध है। हे प्रभु ! मुझे संतों की शरण में लगा दो ताकि उनकी संगति में रहकर विषम संसार नदिया से पार हो जाऊँ ॥१॥ संसार की सुख-सम्पति एवं माया के मीठे रसों को अपने मन में धारण नहीं करना चाहिए। हे नानक ! भगवान के दर्शनों से तृप्त हो गया हूँ और भगवान के नाम की प्रीति ही मेरा आभूषण है॥ २॥ ८॥ १२॥

जैतसरी महला ५ ॥ हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥ हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम ॥ भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ॥ १ ॥ तजि गोपाल आन को करणी सोई सोई बिनसत खाम ॥ चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ॥ २ ॥ ६ ॥ १३ ॥

हे भक्तजनो ! अपने हृदय में राम का नाम-सिमरन करते रहो। भक्तजन के समीप कोई भी मुसीबत नहीं आती और दासों के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ भगवान की उपासना करने से करोड़ों ही विघ्न नष्ट हो जाते हैं और गोविन्द का अटल धाम प्राप्त हो जाता है। भगवान के भक्त को किसी भी प्रकार का डर प्रभावित नहीं करता और मृत्यु का देवता यमराज भी उसका पूर्ण आदर करता है॥१॥ ईश्वर को त्याग कर अन्य किए गए सभी कर्म क्षणभंगुर एवं झूठे हैं।

हे नानक! अपने हृदय में प्रभु के चरण कमल धारण कर लो, क्योंकि उसके चरण सर्व सुखों का परम निवास है॥ २॥ ६॥ १३॥

जैतसरी महला ९ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

भूलिओ मनु माइआ उरझाओ ॥ जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥ संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥ १ ॥ रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥ २ ॥ १ ॥

मेरा भूला हुआ (पंथविचलित) मन माया के मोह में ही उलझा हुआ है। लालच में आकर इसने जो भी कर्म किए हैं, उन सभी के साथ स्वयं को ही बँधनों में फँसा रहा है॥ १॥ रहाउ॥ इसे सत्य के मार्ग की कोई सूझ नहीं पड़ी और यह विषय-विकारों के स्वादों में ही लीन रहा और इसने हरि-यश को भुला दिया। स्वामी प्रभु तो हृदय में साथ ही है परन्तु उसे जानता ही नहीं और व्यर्थ ही भगवान की खोज हेतु जंगलों में दौड़ता रहा॥ १॥ राम-नाम रूपी रत्न हृदय में ही रहता है परन्तु इस बारे में कोई ज्ञान नहीं प्राप्त किया। हे नानक! भगवान के भजन के बिना इसने अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही बर्बाद कर दिया है॥ २॥ १॥

जैतसरी महला ९ ॥ हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥ जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥ भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥ १ ॥ कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥ घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥ २ ॥ नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥ नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥ ३ ॥ २ ॥

हे परमात्मा! मेरी लाज बचा लो। मेरे हृदय में मृत्यु का भय निवास कर चुका है। अतः हे कृपानिधि! मैंने तेरी ही शरण ली है॥१॥ रहाउ॥ मैं बड़ा पतित, मूर्ख एवं लालची हूँ और पाप कर्म करते-करते अब मैं थक चुका हूँ। मृत्यु का भय मुझे भूलता नहीं और इस चिन्ता ने मेरे शरीर को जलाकर रख दिया है॥१॥ अपनी मुक्ति हेतु मैंने अनेक उपाय किए हैं और दसों दिशाओं में भी भागता रहता हूँ। भगवान मेरे हृदय में ही निवास कर रहा है किन्तु उसके भेद को नहीं जाना॥२॥ हे प्रभु! मुझ में कोई गुण नहीं और न ही कुछ सिमरन एवं तपस्या की है। फिर तुझे प्रसन्न करने हेतु अब कौन-सा कर्म करूँ? नानक का कथन है कि हे प्रभु! अब मैं निराश होकर तेरी शरण में आया हूँ, अतः मुझे अभय दान (मोक्ष दान) प्रदान कीजिए॥३॥२॥

जैतसरी महला ९ ॥ मन रे साचा गहो बिचारा ॥ राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥ सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥ १ ॥ पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि संभारा ॥ नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥ २ ॥ ३ ॥

हे प्रिय मन! यह सच्चा विचार धारण कर लो कि राम नाम के बिना यह समूचा संसार झूठा ही समझो॥१॥ जिस की खोज करते हुए योगी भी निराश हो चुके हैं और उसका अन्त नहीं पा सके, उस परमात्मा को तुम निकट ही समझो, चूंकि उसका रूप एवं चिन्ह बड़ा न्यारा है॥१॥

भगवान का नाम इस दुनिया में पतितों को पावन बनाने वाला है परन्तु तूने उसे कदापि स्मरण नहीं किया। नानक का कथन है कि उसने उसकी शरण ली है, जिसकी समूचा जगत वन्दना करता है। हे प्रभु ! भक्तों की रक्षा करना ही तुम्हारा विरद् है, अतः मेरी भी रक्षा करो॥२॥३॥

जैतसरी महला ५ छंत घरु १ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥ खोल्हि कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥ १ ॥

श्लोक॥ मैं तो दिन-रात प्रभु के दर्शनों की प्यासी हूँ, और नित्य उसको ही स्मरण करती रहती हूँ। हे नानक ! गुरु ने मेरे मन के कपाट खोलकर मुझे मित्र-प्रभु के संग मिला दिया है॥ १॥

छंत ॥ सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥ तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ ॥ तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥ नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥ प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चात्रिक जिवै तिसंतीआ ॥ जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ॥ १ ॥

छंद॥ हे मेरे सज्जन, हे मित्र ! सुनो; मैं एक विनती करती हूँ, मैं उस मोहन प्रियतम को खोजती रहती हूँ। मुझे उस प्रियतम के बारे में बताओ। यदि वह एक क्षण भर के लिए मुझे दर्शन प्रदान कर दे तो मैं अपना सिर काट कर उसके समक्ष अर्पण कर दूँगी। मेरे नेत्र मेरे प्रिय के रंग में मग्न हैं और उसके विना एक क्षण भर के लिए भी धैर्य नहीं करते। मेरा मन प्रभु के साथ ऐसे मग्न है, जैसे जल के साथ मछली एवं स्वाति बूँद के साथ पपीहा मग्न होता है। हे नानक ! मैंने पूर्ण गुरु पा लिया है और प्रियतम के दर्शन करने की मेरी सारी प्यास बुझ गई है॥ १॥

यार वे प्रिअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥ यार वे हिक डूं हिकि चाड़े हउ किसु चितेहीआ ॥ हिक दूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥ तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ ॥ नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥ २ ॥

हे सज्जन ! प्रिय प्रभु की जितनी भी सखियाँ है, उनमें से मैं तो किसी के भी तुल्य नहीं। यह सखियाँ एक से बढ़कर एक सुन्दर हैं। इसलिए मुझे किसने याद करना है ? मेरे प्रियतम प्रभु की एक से बढ़कर एक सुन्दर सखियाँ उसके साथ नित्य ही रमण करती हैं। उन्हें देखकर मेरे हृदय में भी चाव उत्पन्न होता है। मैं उस गुणों के भण्डार प्रभु को कब प्राप्त करूँगी। जिन्होंने मेरे प्रिय प्रभु को प्रसन्न किया है, मैं अपना मन उनके समक्ष अर्पण करती हूँ। नानक का कथन है कि हे सुहागिन ! मेरी एक विनती ध्यानपूर्वक सुनो, मुझे बताओ मेरा प्रिय प्रभु कैसा दिखता है॥ २॥

यार वे पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा ॥ यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा ॥ लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥ बांह पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे ॥ गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा ॥ जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंदा ॥ ३ ॥

हे सज्जन ! मेरा प्रिय-प्रभु वही करता है, जो उसे अच्छा लगता है। वह किसी के अधीन नहीं। हे सज्जन ! तूने मेरे प्रियवर के साथ रमण किया है अतः मुझे उसके बारे में बताओ। जिनके माथे

पर शुभ भाग्य विद्यमान है, वे अपना अहंत्व मिटाकर प्रिय-प्रभु को प्राप्त कर लेते हैं। ठाकुर जी ने मुझे बाँह से पकड़ कर अपना बना लिया है और मेरे गुण एवं अवगुणों की ओर ध्यान नहीं दिया। हे प्रभु ! जिसे तू गुणों की माला से अलंकृत कर देता है और अपने लाल रंग से रंग देता है, उसे सबकुछ सुन्दर लगता है। हे नानक ! वह सुहागिन नारी धन्य है, जिसके साथ उसका पति-परमेश्वर रहता है॥ ३॥

यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नव रंगीआ ॥ वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसंगीआ ॥ आसा मनसा सगल पूरी प्रिअ अंकि अंकु मिलाई ॥ बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥ ४ ॥ १ ॥

हे सज्जन ! जिसकी कामना हेतु मैं मन्नत माँगती थी, उसे मैंने पा लिया है। मेरा मनचाहा दुल्हा आया है और मुझे शुभ-कामनाएँ मिल रही हैं। बड़ा आनंद एवं हर्षोल्लास उत्पन्न हो गया है, जब मेरा सदैव नवरंग सुन्दर प्रियवर प्रभु मुझ पर दयालु हो गया है। अहोभाग्य से मैंने अपने प्रियतम प्रभु को पा लिया है। संतों की सुसंगति में रहने से गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है। मेरी आशा एवं सारे मनोरथ पूरे हो गए हैं और मेरे प्रियवर प्रभु ने मुझे अपने गले से लगा लिया है। नानक प्रार्थना करते हैं, जिस प्रभु को पाने के लिए मैं मन्नत मानती थी, उसे मैंने गुरु से मिलकर पा लिया है॥ ४॥ १॥

जैतसरी महला ५ घरु २ छंत ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोकु ॥ ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥ नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥ १ ॥

श्लोक॥ मेरा प्रभु सर्वोच्च, अगम्य एवं अपरंपार है, वह अकथनीय है तथा उसका कथन करना असंभव है। नानक तो उस प्रभु की शरण में आया है, जो रक्षा करने में समर्थ है॥ १॥

छंतु ॥ जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ ॥ केते गनउ असंख अवगण मेरिआ ॥ असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ ॥ मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीऐ ॥ लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥ १ ॥

छन्द॥ हे हरि-प्रभु ! मैं तो तेरा ही दास हूँ; अतः जैसे तुझे उपयुक्त लगे, वैसे ही मेरी रक्षा करो। मुझ में तो असंख्य अवगुण हैं, फिर मैं अपने कितने अवगुण गिन सकता हूँ। मुझ में असंख्य अवगुण होने के कारण अपराधों में ही फँसा रहता हूँ तथा नित्य-प्रतिदिन सर्वदा ही भूल करता हूँ। मैं विकराल माया के मोह में मग्न हूँ और तेरी दया से ही मैं इससे मुक्ति प्राप्त कर सकता हूँ। हम छिपकर बड़े कष्टप्रद पाप करते हैं। लेकिन वह प्रभु तो बहुत निकट है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर ! मुझ पर दया करो और इस भवसागर के भँवर से बाहर निकाल दो॥ १॥

सलोकु ॥ निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ ॥ नानक की बेनंतीआ मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥

श्लोक॥ उस प्रभु का नाम महान् है और उसके असंख्य गुणों का निर्णय नहीं किया जा सकता। नानक की यही प्रार्थना है कि हे प्रभु ! हम बेसहारा जीवों को तेरे चरणों में सहारा मिल जाए॥ २॥

छंतु ॥ दूसर नाही ठाउ का पहि जाईऐ ॥ आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ ॥ धिआइ सो

प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईऐ ॥ अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ ॥ बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥ २ ॥

छंद॥ भगवान के अलावा हम जीवों हेतु अन्य कोई ठिकाना नहीं। फिर हम तुच्छ जीव उसके सिवाय किसके पास जाएँ। आठ प्रहर हमें दोनों हाथ जोड़कर प्रभु का ध्यान-मनन करना चाहिए। अपने उस प्रभु का ध्यान-मनन करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। अतः हम जीवों को अपना अभिमान, मोह तथा विकार त्याग कर एक परमेश्वर के साथ सुरति लगानी चाहिए। हमें अपना मन एवं तन प्रभु के समक्ष अर्पण करके अपना समूचा अहंत्व मिटा देना चाहिए। नानक प्रार्थना करते है कि हे प्रभु! मुझ पर कृपा करो ताकि मैं तेरे सत्य नाम में विलीन हो जाऊँ॥ २॥

सलोकु ॥ रे मन ता कउ धिआईऐ सभ बिधि जा कै हाथि ॥ राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥ ३ ॥

श्लोक॥ हे मन! उस प्रभु का ध्यान करना चाहिए, जिसके वश में समस्त युक्तियाँ हैं। हे नानक! राम-नाम का ही धन संचित करना चाहिए, जो परलोक में हमारा सहायक बनता है॥ ३॥

छंतु ॥ साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ ॥ थान थनंतरि आपि जलि थलि पूर सोइ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सरब दाता प्रभु धनी ॥ गोपाल गोबिंद अंतु नाही बेअंत गुण ता के किआ गनी ॥ भजु सरणि सुआमी सुखह गामी तिसु बिना अन नाहि कोइ ॥ बिनवंति नानक दइआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥ ३ ॥

छंद॥ जीवन में एक प्रभु ही हमारा सच्चा साथी है और उसके अलावा दूसरा कोई हितैषी नहीं। वह स्वयं ही देश-देशांतरों, समुद्र एवं धरती में सर्वव्यापी है। सबका दाता, मालिक-प्रभु समुद्र, पृथ्वी एवं अंतरिक्ष में विद्यमान हो रहा है। उस गोपाल गोविन्द का कोई अन्त नहीं चूंकि उसके गुण बेअंत हैं और हम उसके गुणों की गिनती कैसे कर सकते हैं। हमें सुख प्रदान करने वाले स्वामी प्रभु की शरण का ही भजन करना चाहिए चूंकि उसके बिना अन्य कोई सहायक नहीं। नानक प्रार्थना करते है कि हे प्रभु! जिस पर तू दया के घर में आता है, उसे तुम्हारे नाम की लब्धि हो जाती है॥ ३॥

सलोकु ॥ चिति जि चितविआ सो मै पाइआ ॥ नानक नामु धिआइ सुख सबाइआ ॥ ४ ॥

श्लोक॥ जो कुछ मैंने अपने चित में चाहा था, वह मुझे मिल गया है। हे नानक! भगवान का ध्यान करने से मुझे सर्व सुख प्राप्त हो गया है॥ ४॥

छंतु ॥ अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले ॥ गुरमुखि नामु लइआ जोती जोति रले ॥ हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ ॥ गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ ॥ लै अंकि लाए हरि मिलाए जनम मरणा दुख जले ॥ बिनवंति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥ ४ ॥ २ ॥

छंद॥ संतों-महापुरुषों की पावन संगति में रहने से अब मेरा मन संसार के बन्धनों से छूट गया है। गुरु के सान्निध्य में रहकर नाम-सिमरन करने से मेरी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो गई है। हरि-नाम का सिमरन करने से सभी किल्विष-पाप मिट गए हैं, तृष्णाग्नि बुझ चुकी है और मैं तृप्त हो गया हूँ। भगवान ने दया करके मुझे बाँह से पकड़कर अपना बना लिया है। गुरु ने मुझे अपने गले से लगाकर भगवान के संग मिला दिया है, जिससे मेरा जन्म-मरण का दुःख नष्ट

हो गया है। नानक प्रार्थना करते हैं कि भगवान ने मुझ पर बड़ी दया की है और एक क्षण में ही मुझे अपने साथ मिला लिया है॥ ४॥ २॥

जैतसरी छंत मः ५ ॥ पाधाणू संसारु गारबि अटिआ ॥ करते पाप अनेक माइआ रंग रटिआ ॥ लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए ॥ पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए ॥ पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धरम दूतह डिठिआ ॥ किरत करम न मिटै नानक हरि नाम धनु नही खटिआ ॥ १ ॥ उदम करहि अनेक हरि नामु न गावही ॥ भरमहि जोनि असंख मरि जनमहि आवही ॥ पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न आवए ॥ बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए ॥ रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू आपि न भावही ॥ बिनवंति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ॥ २ ॥ जोबनु गइआ बितीति जरु मलि बैठीआ ॥ कर कंपहि सिरु डोल नैण न डीठिआ ॥ नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ चालिआ ॥ कहिआ न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिआ ॥ स्रीराम रंग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ ॥ बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥ ३ ॥ चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ ॥ दुतरु भै संसारु प्रभि आपि तराइआ ॥ मिलि साधसंगे भजे स्रीधर करि अंगु प्रभ जी तारिआ ॥ हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ ॥ गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ बिनवंति नानकु सदा त्रिपते हरि नामु भोजनु खाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

यह संसार तो एक मुसाफिर है परन्तु फिर भी संसार के लोग अहंकार से भरे हुए हैं। वे माया के रंग में मग्न होकर जीवन में अनेक पाप कर्म करते हैं और लालच, मोह एवं अभिमान में ही डूबे लोगों को मृत्यु याद नहीं आती। अपने पुत्र, मित्र एवं धर्मपत्नी के मोह में कार्य करते हुए उनकी तमाम आयु बीत जाती है। हे माता ! अब जब जीवन के लिखे हुए दिवस पूरे हो गए हैं तो वे यमराज के दूतों को देखकर दुःखी होते हैं। हे नानक ! अपने जीवन में उन्होंने हरि-नाम रूपी धन संचित नहीं किया, जिसके परिणामस्वरूप उनके कृत्य कर्मों के फल मिट नहीं सकते ॥१॥ मनुष्य अपने जीवन में अनेक उद्यम करता रहता है किन्तु भगवान के नाम को वह स्मरण नहीं करता। इसलिए वह अनगिनत योनियों में भटकता रहता है, आवागमन में फँसकर पुनः पुनः संसार में जन्मता-मरता रहता है। वह पशु, पक्षी, पत्थर एवं पेड़ों की योनियों में पड़ता है, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती। मनुष्य अपने कर्मों का जैसा बीज बोता है, वैसा ही उसे फल प्राप्त होता है। वह अपने किए हुए कर्मों का ही फल भोगता है। अपना हीरे जैसा अनमोल मानव जन्म वह जुए में हार देता है और फिर वह अपने प्रभु को भी भला नहीं लगता। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! ये जीव दुविधा में पड़कर भटकते ही रहते हैं और एक क्षण भर के लिए भी उन्हें सुख का ठिकाना नहीं मिलता॥ २॥ मनुष्य का सुन्दर यौवन व्यतीत हो गया है और उसके शरीर पर बुढ़ापा कब्जा करके बैठ गया है। बुढ़ापे के कारण उसके हाथ थर-थर काँपते हैं, सिर डोलता है और आँखों से कुछ भी साफ नजर नहीं आता। ईश्वर के भजन बिना वह अपना धन छोड़कर चल पड़ा है। जिन परिजनों हेतु उसने अपना तन-मन जला दिया था, वे उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते अपितु उसके सिर पर धूल ही डालते है अर्थात् उसे अपमानित करते हैं। भगवान का पूर्ण एवं अपार प्रेम-रंग एक क्षण भर के लिए उसके मन में निवास नहीं कर सका। नानक प्रार्थना करते हैं कि जैसे करोड़ों कागज पल भर में जलकर राख हो जाते हैं, वैसा ही इस देह का नाश होने में कोई देरी नहीं होती॥ ३॥ नानक तो परमेश्वर के चरण-कमलों की शरण में आया है।

इस दुष्कर एवं भयानक संसार-सागर से मुझे प्रभु ने स्वयं ही पार कर दिया है। संतों की पावन संगति में भजन करने से प्रभु ने मेरा पक्ष लेकर मुझे भवसागर से पार कर दिया है। भगवान ने मुझे स्वीकार करके अपना नाम प्रदान किया है और किसी गुण-अवगुण की ओर ध्यान नहीं दिया। मैंने गुणों के भण्डार, अपरंपार एवं मनोवांछित ठाकुर जी को पा लिया है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हरि-नाम रूपी भोजन खाने से मैं हमेशा के लिए तृप्त हो चुका हूँ॥ ४॥ २॥ ३॥

जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक ॥ आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह ॥ सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघ नासन जगदीसुरह ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो सृष्टि रचना से पूर्व भी सर्वव्यापक था, सृष्टि काल में अब भी विद्यमान है और सृष्टि के अन्त तक भी सर्वव्यापी रहेगा, सभी सन्त-महात्मा उस सर्वत्र रमण करने वाले परमेश्वर का ही सिमरन करते रहते हैं। हे नानक! वह जगदीश्वर सर्व पापों का हरण करने वाला है॥ १॥

पेखन सुनन सुनावनो मन महि द्रिड़ीऐ साचु ॥ पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥ २ ॥

उस परम-सत्य ईश्वर को मन में भलीभांति याद करते रहना चाहिए, जो स्वयं ही सुनने, देखने एवं सुनाने वाला है। हे नानक! उस सर्वव्यापी परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहना चाहिए॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि एकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई ॥ करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥ खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥ खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥ जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निरमल जनु सोई ॥ १ ॥

पउड़ी॥ जो सबके अन्तर में मौजूद है, उस एक निरंजन परमेश्वर का ही यशोगान करना चाहिए। प्रभु प्रत्येक कार्य करने एवं करवाने में समर्थ है, वह जो कुछ भी करता है, वही होता है। वह एक क्षण में ही दुनिया को बनाकर उसका विनाश भी कर देता है, उसके सिवाय दूसरा कोई रचयिता नहीं। वह देशों, ब्रह्माण्डों, पातालों, दीपों एवं सब लोकों में विद्यमान है। परमात्मा जिसे स्वयं ज्ञान प्रदान करता है, वही उसे समझता है और वही व्यक्ति पावन हो जाता है॥१॥

सलोक ॥ रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥ सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥ १ ॥

श्लोक॥ रचयिता परमात्मा जीव की रचना करके उसे माता के गर्भ में स्थापित कर देता है। तदुपरांत वह माता के गर्भ में आकर श्वास-श्वास से उसका सिमरन करता है। हे नानक! इस तरह भगवान का सिमरन करने से गर्भ की भयानक अग्नि जीव का विनाश नहीं कर पाती॥ १॥

मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ ॥ नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ ॥ २ ॥

हे जीव! माता के गर्भ में तेरा मुँह नीचे एवं पैर ऊपर की ओर थे। इस तरह तू अपवित्र स्थान पर निवास कर रहा था। नानक का कथन है कि हे जीव! तूने अपने उस मालिक को क्यों विस्मृत कर दिया, जिसके नाम का सिमरन करने से तू गर्भ में से बाहर निकला है॥ २॥

पउड़ी ॥ रकतु बिंदु करि निंमिआ अगनि उदर मझारि ॥ उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि ॥ हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उर धारि ॥ बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥ प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥ २ ॥

पउड़ी॥ जीव माँ के रक्त एवं पिता के वीर्य द्वारा पेट की अग्नि में पैदा हुआ था। हे जीव! तेरा मुँह नीचे था और तू मलिन एवं भयानक नरक समान घोर अन्धेरे में रहता था। भगवान का सिमरन करने से तू जल नहीं सका था। अतः अब तू अपने मन, तन एवं हृदय में स्मरण करता रह। जिसने तेरी विषम स्थान से रक्षा की है, तू उसे एक क्षण भर के लिए भी मत भुला। चूंकि प्रभु को भुला कर तुझे कभी सुख प्राप्त नहीं होगा और तू अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा कर चला जाएगा॥ २॥

सलोक ॥ मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह ॥ खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो हमें मनोवांछित दान प्रदान करता है, हमारी समस्त अभिलाषाएँ पूरी करता है, हमारे दुःखों-क्लेशों का नाश करता है, अतः हे नानक! हमें उस प्रभु का ही सिमरन करते रहना चाहिए, जो हमसे कहीं दूर नहीं अर्थात् हमारे पास ही है॥ १॥

हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु ॥ सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥ २ ॥

जिसकी करुणा-दृष्टि से हम सभी सुख भोगते हैं, हमें तो उसके साथ ही अपना प्रेम लगाना चाहिए। हे नानक! जिसने इस सुन्दर शरीर का निर्माण किया है, उस मालिक को हमें एक क्षण भर के लिए भी विस्मृत नहीं करना चाहिए॥ २॥

पउड़ी ॥ जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥ ग्रिह मंदर रथ असु दीए रचि भले संजोग ॥ सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभ देवन जोग ॥ हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥ साधसंगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे जीव! भगवान ने तुझे जीवन, प्राण, शरीर एवं धन प्रदान किया है और सर्व प्रकार के रस भोग दिए हैं। भले संयोग बनाकर ही उसने तुझे घर, महल, रथ एवं घोड़े दिए हैं। सभी को देने में समर्थ उस प्रभु ने तुझे पुत्र, पत्नी, मित्र एवं सेवक दिए हैं। उस भगवान का भजन करने से तन एवं मन हर्षित हो जाते हैं तथा वियोग भी समाप्त हो जाते हैं। अतः संतों-महापुरुषों की पवित्र सभा में सम्मिलित होकर भगवान का गुणगान करो, जिससे सभी रोग नाश हो जाएँगे॥ ३॥

सलोक ॥ कुटंब जतन करणं माइआ अनेक उदमह ॥ हरि भगति भाव हीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेततह ॥ १ ॥

श्लोक॥ अपने परिवार की भलाई के लिए मानव जीव अथक यत्न करता है और धन कमाने हेतु भरसक प्रयास करता रहता है। परन्तु यदि वह भगवान की भक्ति भावना से विहीन है तो हे नानक! प्रभु को विस्मृत करने वाला जीव प्रेत ही माना जाता है॥ १॥

तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअंन सिउ ॥ नानक सची रीति सांई सेती रतिआ ॥ २ ॥

वह प्रेम जो भगवान के अलावा किसी दूसरे से लगाया जाता है, वह अंततः टूट ही जाता है। हे नानक! भगवान के साथ मग्न रहने की मर्यादा ही सत्य एवं शाश्वत है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु ॥ खिनु ग्रिह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥ करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु ॥ जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥ अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ जिस आत्मा के जुदा होने से मानव का शरीर भस्म हो जाता है, उस मृत शरीर को फिर लोग प्रेत कहने लगते हैं। जिन परिजनों के साथ मानव का इतना गहरा प्रेम था, वे अब घर में एक क्षण भर के लिए भी रहने नहीं देते। वह अनेक अनर्थ करके धन संचित करने में लगा रहा परन्तु अब वह उसके किसी काम का नहीं रहा। मानव जीव जैसा बीज बोता है, वैसा ही उसे काटता है। यह तन कर्मभूमि है। एहसान-फरामोश जीवों को परमात्मा भूल गया है, इसलिए वे योनि-चक्र में ही भटकते रहते हैं॥ ४॥

सलोक ॥ कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह ॥ उचरंति नानक हरि हरि रसना सरब पाप बिमुचते ॥ १ ॥

श्लोक॥ हे नानक! अपनी जुबान से भगवान का नाम उच्चारण करने से तमाम पाप नाश हो जाते हैं और फिर करोड़ों दान, स्नान, अनेक शुद्धिकरण एवं पवित्रता का फल प्राप्त हो जाता है॥ १॥

ईधणु कीतोमू घणा भोरी दितीमु भाहि ॥ मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ॥ २ ॥

मैंने अत्याधिक ईंधन संग्रह किया और जब उसमें थोड़ी-सी चिंगारी लगाई तो वह जल कर भस्म हो गया। हे नानक! ऐसे ही यदि हम परम-सत्य परमेश्वर को अपने हृदय में बसा लें तो दुःखों के अम्बार समाप्त हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ कोटि अघा सभि नास होहि सिमरत हरि नाउ ॥ मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥ जनम मरण भै कटीअहि निहचल सचु थाउ ॥ पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ भगवान का नाम-सिमरन करने से करोड़ों पाप नाश हो जाते हैं। उसका स्तुतिगान करने से मनुष्य को मनोवांछित फल प्राप्त होता है। फिर जन्म एवं मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है और मनुष्य को अटल एवं शाश्वत स्थान मिल जाता है। यदि मनुष्य की पूर्व से ही ऐसी तकदीर लिखी हुई हो तो वह भगवान के चरणों में समा जाता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! अपनी कृपा करके मेरी रक्षा करो चूंकि मैं तो तुझ पर ही बलिहारी जाता हूँ॥ ५॥

सलोक ॥ ग्रिह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥ कदांच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा क्रिमह ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो इन्सान अपने जीवन में घर की सुन्दर रचना, मन के विलासों, स्वादों एवं भोग रसों में ही मग्न रहते हैं और जो कभी भी भगवान का ध्यान-सिमरन नहीं करते। हे नानक! इस प्रकार के व्यक्ति तो विष्ठा के ही कीड़े हैं॥ १॥

मुचु अडंबरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह ॥ सो सांई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥ २ ॥

जिस इन्सान के पास काफी साज-सजावट एवं सबकुछ उपलब्ध है और उसके हृदय में शान-शौकत से ही प्यार-मुहब्बत बना हुआ है लेकिन हे नानक! यदि वह मालिक को भुला देता है तो उसका शरीर मात्र धूल के समान ही है॥ २॥

पउड़ी ॥ सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे ॥ ग्रिह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे ॥

मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥ सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥ बिनु हरि नाम न सांति होइ कितु बिधि मनु धीरे ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ इन्सान के पास चाहे सुन्दर शैय्या, जीवन के तमाम सुख तथा रसों का भोग करने के लिए पूर्ण सामग्री है। घर में चाहे स्वर्ण, चन्दन, सुगन्धि तथा पहनने हेतु हीरे-मोती उपलब्ध हैं। वह चाहे मनोवांछित सुख का आनंद प्राप्त करता हो और उसे कोई भी चिन्ता न हो परन्तु यदि वह प्रभु को याद नहीं करता तो वह विष्ठा के कीड़े समान ही है। हरि-नाम के बिना इन्सान को जीवन में शांति प्राप्त नहीं होती। फिर नाम के अलावा अन्य किस उपाय द्वारा मन को धैर्य हो सकता है॥ ६॥

सलोक ॥ चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दह दिसह ॥ तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह ॥ १ ॥

श्लोक॥ परमात्मा के सुन्दर चरण-कमलों के विरह की पीड़ा से वैरागी वैराग्यवान बनकर उसे दसों दिशाओं में ढूँढता रहता है। हे नानक ! वह कपट रूप माया को त्याग देता है और आनंद रूपी संतों-महापुरुषों की पवित्र सभा में संगम करता है॥ १॥

मनि सांई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥ नानक हभि अडंबर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइ ॥ २ ॥

मेरे मन में परमात्मा का नाम विद्यमान है, अपने मुख से उसका ही नाम उच्चरित करता हूँ और समस्त देशों में भ्रमण करता हूँ। हे नानक ! जीवन के सभी आडम्बर झूठे हैं और परमात्मा की सच्ची कीर्ति सुनकर ही जीवित्त हूँ॥ २॥

पउड़ी ॥ बसता तूटी झुंपड़ी चीर सभि छिंना ॥ जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिंना ॥ मित्र न इठ धन रूपहीण किछु साकु न सिंना ॥ राजा सगली स्रिसटि का हरि नामि मनु भिंना ॥ तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइ सुप्रसंना ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जो इन्सान टूटी हुई झोंपड़ी में रहता है और उसके वस्त्र भी फटे-पुराने हों, जिसकी न श्रेष्ठ जाति है, न ही आदर-सत्कार है और जो उजाड़ स्थल में भटकता है, जिसका न कोई मित्र अथवा शुभचिन्तक है, जो धन-दौलत एवं सौन्दर्य से विहीन है और जिसका कोई रिश्तेदार अथवा संबंधी भी नहीं, लेकिन यदि उसका मन परमात्मा के नाम में मग्न है तो वह सारे संसार का राजा है। उसकी चरण-धूलि से मन का कल्याण हो जाता है और प्रभु भी उस पर बड़ा प्रसन्न होता है॥ ७॥

सलोक ॥ अनिक लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं ॥ रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥ १ ॥

श्लोक॥ कुछ मूर्ख, अज्ञानी एवं अन्धे मनुष्य अनेक लीलाओं, राज्यसुख, मनोरंजन, सौन्दर्य, सिर पर छत्र, चंवर, राजसिंहासन जैसे प्रपंचों में ही डूबे रहते हैं। हे नानक ! माया के ये मनोरथ एक स्वप्न के समान हैं॥ १॥

सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥ नानक नाम विहूणीआ सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥ २ ॥

गुरु जी का फुरमान है कि आदमी स्वप्न में ही सभी सुख भोगता रहता है और उसका मोह उसे बड़ा मीठा लगता है। किन्तु हे नानक ! नाम के बिना यह सुन्दर दिखने वाली माया छल-कपट ही है॥ २॥

पउड़ी ॥ सुपनै सेती चितु मूरखि लाइआ ॥ बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ ॥ आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ ॥ पूरन भए न काम मोहिआ माइआ ॥ किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ मूर्ख इन्सान का चित स्वप्नों में ही डूबा रहता है। जब वह स्वप्न से जागता है तो उसे माया के प्रपंच-राज्यसुख, मनोरंजन तथा भोग-विलास इत्यादि भूल जाते हैं और वह मायूस हो जाता है। इन्सान की सारी जिन्दगी संसार के धन्धों में भागदौड़ करते ही बीत गई है। माया के मोह में मग्न रहने के कारण जिस उद्देश्य से वह जीवन में आया था, उसका कार्य सम्पूर्ण नहीं हुआ। सच तो यही है कि जब भगवान ने स्वयं ही उसे मोह-माया में भटकाया हुआ है तो जीव बेचारा भी क्या कर सकता है॥ ८॥

सलोक ॥ बसंति स्वरग लोकह जितते प्रिथवी नव खंडणह ॥ बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥ १ ॥

श्लोक॥ प्राणी चाहे स्वर्ग लोक में रहता हो, चाहे उसने पृथ्वी के नौ खण्डों पर भी विजय प्राप्त कर ली हो, परन्तु यदि वह पृथ्वीपालक परमात्मा को विस्मृत कर देता है तो हे नानक! वह भयानक वन में ही भटक रहा है॥ १॥

कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥ नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥ २ ॥

हे नानक! जिन्हें कौतुक, आनंद एवं खेल-तमाशों के कारण परमात्मा का नाम याद नहीं आता, वे मनुष्य नरक में रहने वाले कुष्ठी समान हैं और उनका निवास स्थान भी उजाड़ समान है॥ २॥

पउड़ी ॥ महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥ झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥ सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥ बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥ ९ ॥

पउड़ी॥ यह जगत एक महाभयानक वन के समान है परन्तु मूर्ख जीव ने इसे सुन्दर नगर समझ लिया है और झूठी सामग्री को देखकर उसने सत्य समझ लिया है। वह काम, क्रोध एवं अहंकार में मग्न होकर पागलों की तरह घूम रहा है। लेकिन जब मृत्यु की चोट इसके सिर पर आकर लगी तो वह पश्चाताप कर रहा है। पूर्ण गुरुदेव के बिना जीव एक शैतान की भांति घूमता रहता है॥ ९॥

सलोक ॥ राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह ॥ संचंति बिखिआ छलं छिद्र नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥ १ ॥

श्लोक॥ मानव जीव अपने जीवन में जिस राज्य, सौन्दर्य, धन-दौलत एवं उच्च कुल का घमण्ड करता रहता है, दरअसल ये सभी प्रपंच मात्र छल-कपट ही हैं। वह बड़े छल-कपट एवं दोषों द्वारा विष रूपी धन संचित करता है। परन्तु हे नानक! सत्य तो यही है कि परमात्मा के नाम-धन के सिवाय कुछ भी उसके साथ नहीं जाता॥ १॥

पेखंदड़ो की भुलु तुंमा दिसमु सोहणा ॥ अढु न लहंदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥ २ ॥

तूंबा देखने में बड़ा सुन्दर लगता है लेकिन मानव जीव इसे देखकर भूल में फँस जाता है। इस तूंबे का एक कौड़ी मात्र भी मूल्य प्राप्त नहीं होता। हे नानक! धन-दौलत जीव के साथ नहीं जाते॥ २॥

पउड़ी ॥ चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥ तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥ हरि बिसरिऐ किउ त्रिपतावै ना मनु रंजीऐ ॥ प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ॥ होहु क्रिपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥ १० ॥

पउड़ी॥ गुरु साहिब का फुरमान है कि उस धन को हम क्यों संचित करें? जो संसार से जाते समय हमारे साथ ही नहीं जाता। जिस धन को हमने इस दुनिया में ही छोड़कर चल देना है, बताओ, उसे प्राप्त करने के लिए हम क्यों प्रयास करें? भगवान को भुलाकर मन कैसे तृप्त हो सकता है? यह मन भी प्रसन्न नहीं हो सकता। जो इन्सान प्रभु को छोड़कर सांसारिक प्रपंचों में लीन रहता है, आखिरकार वह नरक में ही बसेरा करता है। नानक प्रार्थना करता है कि हे दया के घर, परमेश्वर! कृपालु होकर हमारा भय नष्ट कर दो॥ १०॥

सलोक ॥ नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥ मिसटं साधसंगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥ १ ॥

श्लोक॥ गुरु साहिब का फुरमान है कि न ही राज्य इत्यादि के सुख-वैभव मीठे हैं, न ही भोगने वाले रस मीठे हैं और न ही धन-दौलत के सुख मीठे हैं। हे नानक! भगवान के संतों-महापुरुषों की पवित्र संगति ही मीठी है और भक्तजनों को प्रभु के दर्शन ही मीठे लगते हैं॥ १॥

लगड़ा सो नेहु मंन मझाहू रतिआ ॥ विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥ २ ॥

मुझे तो ऐसी मुहब्बत हो गई है, जिसके भीतर ही मेरा मन मग्न हो गया है। हे नानक! मेरा यह मन भगवान के सत्य नाम रूपी धन के साथ लग गया है और वह मालिक ही मुझे मीठा लगता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा ॥ जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ भक्तजनों को भगवान (की भक्ति) के सिवाय कुछ भी मीठा नहीं लगता। मैंने भलीभांति यह निर्णय करके देख लिया है कि नाम के सिवाय जीवन के अन्य सभी स्वाद फीके हैं। जब गुरु मेरा मध्यस्थ बन गया तो अज्ञान, भ्रम एवं दुःख कट गया। मेरा मन भगवान के चरण-कमलों से ऐसे बिंध गया है, जैसे मजीठ से कपड़े को पक्का रंग चढ़ जाता है। मेरी यह आत्मा, प्राण, तन एवं मन सब प्रभु के ही हैं और अन्य सभी झूठे मोह नष्ट हो गए हैं॥ ११॥

सलोक ॥ तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चात्रिक मेघ मंडलह ॥ बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥ चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥ १ ॥

श्लोक॥ जैसे जल को त्याग कर मछली जीवित नहीं रहती, जैसे एक पपीहा भी मेघ मण्डल को त्याग कर जीवित नहीं रहता, जैसे एक मृग सुन्दर नाद को श्रवण करके मुग्ध हो जाता है, जैसे भँवरा फूलों की सुगन्धि के बन्धन में फँस जाता है। हे नानक! वैसे ही सन्त-महात्मा प्रभु के चरण-कमलों में मग्न रहते हैं और उसके सिवाय उनकी किसी अन्य में कोई रुचि नहीं होती॥ १॥

मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संतां मितु ॥ २ ॥

हे प्रभु ! यदि एक क्षण भर के लिए भी तेरे मुख के मुझे दर्शन हो जाएँ तो तुझे छोड़कर मैं अपना चित्त किसी दूसरे में नहीं लगाऊँगा। हे नानक ! वास्तविक जीवन तो उस मालिक-परमेश्वर के संगम में ही है, जो संतो-महापुरुषों का घनिष्ठ मित्र है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥ बूंद विहूणा चात्रिको किउ करि त्रिपतावै ॥ नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥ तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ जिस तरह मछली जल के बिना जीवन प्राप्त नहीं कर पाती, जिस तरह एक पपीहा स्वाति बूँद के सिवाय कैसे तृप्त रह सकता है, जैसे एक मृग नाद को सुनकर आकर्षित होकर नाद की तरफ उठ दौड़ता है, भँवरा पुष्पों की महक का लोभी है और पुष्प में ही फँस जाता है, वैसे ही संत-महापुरुषों की भगवान के साथ अटूट प्रीति है और उसके दर्शन प्राप्त करके वे आनंदित हो जाते हैं॥ १२॥

सलोक ॥ चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥ नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥ १ ॥

श्लोक॥ संतजन केवल भगवान के चरणों को ही स्मरण करते रहते हैं और सांस-सांस से उसकी आराधना में ही मग्न रहते हैं। हे नानक ! उन्हें अच्युत नाम विस्मृत नहीं होता और परमेश्वर उनकी प्रत्येक आशा पूरी करता है॥ १॥

सीतड़ा मंन मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥ नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥ २ ॥

जिन श्रद्धालुओं के हृदय में भगवान का नाम सिला हुआ है तथा पल भर के लिए भी नाम उन से दूर नहीं होता। हे नानक ! सच्चा मालिक उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी करता है और हमेशा ही उनकी देखरेख करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आसावंती आस गुसाई पूरीऐ ॥ मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ ॥ देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीऐ ॥ होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ ॥ पारब्रहम गुरदेव सदा हजूरीऐ ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ हे जगत के मालिक ! मुझ आशावान की आशा पूरी कीजिए। हे गोपाल, हे गोविन्द ! यदि तुम मुझे मिल जाओ तो मुझे कभी भी खेद एवं पश्चाताप नहीं होगा। मेरे मन में बड़ा चाव है, मुझे अपने दर्शन दो, ताकि मेरे सभी दुःख मिट जाएँ। तेरी चरण-धूलि मिलने से मेरा यह शरीर पवित्र-पावन हो सकता है। हे परब्रह्म, हे गुरुदेव ! करुणा करो ताकि मैं सर्वदा ही तेरी उपासना में उपस्थित रह सकूँ॥ १३॥

सलोक ॥ रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अंम्रितह ॥ नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥ १ ॥

श्लोक॥ जो अपनी रसना से परमेश्वर का नाम उच्चरित करते हैं, अपने कानों से अमृत शब्द सुनते रहते हैं। हे नानक ! मैं उन पर सर्वदा ही कुर्बान जाता हूँ, जिनका ध्यान परब्रह्म में लगा रहता है॥ १॥

हभि कूड़ावे कंम इकसु साई बाहरे ॥ नानक सेई धंनु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥ २ ॥

एक परमात्मा की भक्ति के बिना सभी कर्म झूठे हैं। हे नानक! वही इन्सान भाग्यवान् हैं, जिनका परम-सत्य परमेश्वर के साथ अटूट स्नेह बना हुआ है॥ २॥

पउड़ी ॥ सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥ पूरे ते परधान निवावहि प्रभ मथा ॥ हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥ चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥ संतां संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ गुरु साहिब का फुरमान है कि मैं उन महापुरुषों पर सदैव कुर्बान जाता हूँ, जो हरि-कथा सुनते रहते हैं। ऐसे महान् एवं पूर्ण गुणवान ही भगवान के समक्ष अपना शीश निवाते हैं। उनके वे हाथ अत्यंत सुन्दर हैं जो बेअंत हरि का यश लिखते हैं। जो चरण प्रभु के मार्ग पर चलते हैं, वे बड़े पवित्र एवं पावन हैं। संतों-महापुरुषों की संगति करने से ही मनुष्य का कल्याण होता है और सभी दुःख दूर हो जाते हैं॥ १४॥

सलोकु ॥ भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह ॥ गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥ १ ॥

श्लोक॥ पूर्ण संयोग से जिस मनुष्य का भाग्य उदय होता है, वही भगवान का सिमरन करता है। हे नानक! वह मुहूर्त फलदायक एवं शुभ है, जब जगतपालक परमेश्वर के दर्शन होते हैं॥ १॥

कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥ नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मा पिरी ॥ २ ॥

उसने मुझे आशा से भी अधिक अनन्त सुख प्रदान किए हैं, अतः मैं उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता। हे नानक! वह शुभ समय परवान है, जब मुझे मेरा प्रिय-परमेश्वर मिल जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥ सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥ आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥ वडै भागि सतसंगु होइ निवि लागा पाई ॥ मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ बताओ, वह कौन-सा समय है, जब प्रभु की प्राप्ति होती है। वही मुहूर्त व भला संयोग है, जब परमेश्वर प्राप्त होता है। उस हरि का आठ प्रहर सिमरन करने से सभी मनोकामनाएँ पूरी हो गई हैं। अहोभाग्य से ही संतों की संगति मिली है और मैं झुककर उनके चरणों में लगता हूँ। हे नानक! मेरे मन में ईश्वर के दर्शनों की तीव्र लालसा है और उस पर मैं तन-मन से कुर्बान जाता हूँ॥ १५॥

सलोक ॥ पतित पुनीत गोबिंदह सरब दोख निवारणह ॥ सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥ १ ॥

श्लोक॥ पतितों को पावन करने वाला गोविन्द ही सर्व दोषों का निवारण करने वाला है। हे नानक! जो 'हरि-हरि' नाम-मंत्र जपते रहते हैं, भगवान उन्हें शरण देने में समर्थ है॥१॥

छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि ॥ नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥ २ ॥

हे नानक! जो अपने अहम् को छोड़कर चरणों में लग गया है, प्रभु के दर्शन करने से उस मनुष्य के सभी दुःख एवं ताप दूर हो गए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥ भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ हे दयालु ईश्वर! मुझे अपने साथ मिला लो, मैं तेरे द्वार पर आ गिरा हूँ। हे दीनदयाल! मुझे बचा लो, मैं योनि-चक्र में भटकता हुआ बहुत थक गया हूँ। हे हरि! तेरा विरद् भक्तवत्सल एवं पतितों का कल्याण करना है। तेरे बिना अन्य कोई नहीं है, जो मेरी विनती को स्वीकार करे। हे दयालु! मेरा हाथ पकड़कर इस संसार-सागर से मुझे पार करवा दो॥ १६॥

सलोक ॥ संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥ निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥ १ ॥

श्लोक॥ दयालु परमेश्वर ही संतों का कल्याण करने वाला है, अतः उस प्रभु का कीर्तन ही उनके जीवन का एकमात्र सहारा है। हे नानक! संतों-महापुरुषों की संगति करने एवं परमेश्वर की शरण लेने से मनुष्य का मन निर्मल हो जाता है॥ १॥

चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घांम ॥ सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥ २ ॥

चन्दन का लेप लगाने, चाँदनी रात एवं शरद् ऋतु से मन की जलन बिल्कुल दूर नहीं होती। हे नानक! हरि-नाम का जाप करने से मन शीतल एवं शांत हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ चरन कमल की ओट उधरे सगल जन ॥ सुणि परतापु गोविंद निरभउ भए मन ॥ तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥ संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन ॥ आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ भगवान के चरण-कमलों की शरण में आने से ही समस्त भक्तजनों का कल्याण हो गया है। गोविन्द का यश-प्रताप सुनने से उनका मन निर्भीक हो गया है। नाम रूपी धन संचित करने से जीवन में किसी भी प्रकार की पदार्थ की कमी नहीं रहती। संतजनों से संगत बड़े पुण्य करम से होती है। इसलिए आठ प्रहर भगवान का ही ध्यान करते रहना चाहिए और नित्य ही हरि-यश सुनना चाहिए॥ १७॥

सलोक ॥ दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥ दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥ १ ॥

श्लोक॥ यदि परमात्मा का भजन-कीर्तन एवं उसका नाम-सिमरन किया जाए तो वह दया करके समस्त दुःख-क्लेशों को मिटा देता है। हे नानक! परमपुरुष भगवान जिस पर कृपा कर देता है, वह मोह-माया से निर्लिप्त हो जाता है॥ १॥

भाहि बलंदड़ी बुझि गई रखंदड़ो प्रभु आपि ॥ जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥ २ ॥

मेरे मन में प्रज्वलित तृष्णा की अग्नि बुझ गई है तथा प्रभु स्वयं ही मेरा रखवाला बना है। हे नानक! जिसने यह पृथ्वी उत्पन्न की है, उस प्रभु का जाप करो॥ २॥

पउड़ी ॥ जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ ॥ कोटि अघा गए नास हरि इकु धिआइआ ॥ निरमल भए सरीर जन धूरी नाइआ ॥ मन तन भए संतोख पूरन प्रभु पाइआ ॥ तरे कुटंब संगि लोग कुल सबाइआ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ जब प्रभु दयालु हो गया तो माया मुझे प्रभावित नहीं करती। एक परमेश्वर का ध्यान करने से करोड़ों पाप नाश हो गए हैं। संतजनों की चरण-धूलि में स्नान करने से शरीर शुद्ध हो गया है। जब पूर्ण प्रभु प्राप्त हुआ तो मन एवं तन सन्तुष्ट हो गए। फिर मेरे परिवार के सदस्य एवं वंशावलि मेरे साथ भवसागर से पार हो गए॥ १८॥

सलोक ॥ गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥ गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥ १ ॥

श्लोक॥ गुरु ही गोविंद एवं गुरु ही गोपाल है और गुरु ही पूर्ण नारायण का रूप है। हे नानक! गुरु ही दया का सागर है, वह सर्वकला समर्थ है और वही पतितों का उद्धार करने वाला है॥ १॥

भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥ नानक पूर करंम सतिगुर चरणी लगिआ ॥ २ ॥

यह भवसागर बड़ा विषम एवं भयानक है किन्तु गुरु रूपी जहाज के द्वारा मैं इस भवसागर से पार हो गया हूँ। हे नानक! पूर्ण भाग्य से ही सतगुरु के चरणों में लगा हूँ॥ २॥

पउड़ी ॥ धंनु धंनु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ॥ गुर क्रिपाल जब भए त अवगुण सभि छपे ॥ पारब्रहम गुरदेव नीचहु उच थपे ॥ काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अप दसे ॥ गुण गाए बेअंत रसना हरि जसे ॥ १९ ॥

पउड़ी॥ वह गुरुदेव धन्य-धन्य है, जिसकी संगति में भगवान का सिमरन किया जाता है। जब गुरु कृपा के घर में आया तो तमाम अवगुण लुप्त हो गए। परब्रह्म गुरुदेव ने मुझे निम्न से उच्च बना दिया है। उसने माया के दुखों के बन्धन को काटकर हमें अपना दास बनाया है। अब हमारी रसना भगवान का यश एवं उसका गुणगान करती रहती है॥ १६॥

सलोक ॥ द्रिसटंत एको सुनीअंत एको वरतंत एको नरहरह ॥ नाम दानु जाचंति नानक दइआल पुरख क्रिपा करह ॥ १ ॥

श्लोक॥ एक परमेश्वर ही सर्वत्र दिखाई दे रहा है, एक वही सब जगह सुना जा रहा है और एक वही सारी सृष्टि में व्यापक हो रहा है। हे दयालु परमेश्वर! कृपा करो, क्योंकि नानक तो तुझसे नाम-दान की ही याचना कर रहा है॥ १॥

हिकु सेवी हिकु संमला हरि इकसु पहि अरदासि ॥ नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥ २ ॥

मैं तो उस एक परमेश्वर की ही उपासना करता हूँ, उस एक को ही स्मरण करता हूँ तथा एक के समक्ष ही प्रार्थना करता हूँ। हे नानक! मैंने तो नाम पदार्थ एवं नाम धन ही संचित किया है, क्योंकि यह नाम धन ही सच्ची पूंजी है॥ २॥

पउड़ी ॥ प्रभ दइआल बेअंत पूरन इकु एहु ॥ सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥ आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु ॥ आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥ नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥ २० ॥ १ ॥

पउड़ी॥ प्रभु बड़ा दयालु एवं बेअन्त है और एक वही सर्वव्यापक है। वह आप ही सबकुछ है, फिर उस जैसा मैं अन्य किसे कहूँ ? हे प्रभु ! तुम स्वयं ही दान करते हो और स्वयं ही दान लेते हो। जन्म एवं मृत्यु सब तेरे हुक्म में ही है और तेरा पावन धाम सदा अटल है। नानक तो तुझसे नाम का दान ही माँगता है, इसलिए कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान करो॥ २०॥ १॥

जैतसरी बाणी भगता की १ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ कछूअ न जानउ ॥ मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥ १ ॥ इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥ पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥ २ ॥ जत देखउ तत दुख की रासी ॥ अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥ ३ ॥ गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥ ४ ॥ इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥ ५ ॥ कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥ ६ ॥ १ ॥

हे मालिक ! मैं कुछ भी नहीं जानता, क्योंकि मेरा यह मन माया के हाथ बिक चुका है॥ १॥ रहाउ॥हे स्वामी ! तुझे सारे जगत का गुरु कहा जाता है, किन्तु मैं कलियुग का कामी कहलाता हूँ॥ १॥ इन कामादिक पाँच विकारों ने मेरा मन दूषित कर दिया है, क्योंकि ये हर क्षण प्रभु से मेरी अंतरात्मा को दूर करते रहते हैं॥ २॥ मैं जिधर भी देखता हूँ, उधर ही दुःखों की राशि है। चाहे वेद इस बात के साक्षी हैं, परन्तु अभी भी मेरा मन इस सत्य को स्वीकार नहीं कर रहा कि विकारों का फल दुःख है॥ ३॥ गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या एवं पार्वती के स्वामी शिव का क्या हाल हुआ ? गौतम ऋषि के शाप से अहल्या पत्थर बन गई थी और अहल्या से देवराज इन्द्र द्वारा छलपूर्वक भोग करने के कारण उसके शरीर पर हजारों भग के चिन्ह बन गए थे। ब्रह्मा का अपनी कन्या पर कुदृष्टि रखने के कारण उमापति शिव ने जब ब्रह्मा का पाँचवाँ सिर काटा तो वह सिर शिव के हाथ से ही चिपक गया था॥ ४॥ इन कामादिक विकारों ने मेरे मूर्ख मन पर बड़े आक्रमण किए हैं किन्तु यह मन बड़ा निर्लज्ज है, जो अभी भी इसकी संगति नहीं छोड़ रहा॥ ५॥ रविदास जी कहते हैं कि अब मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ? अब परमेश्वर के सिवाय किस की शरण ली जाए॥ ६॥ १॥

☆☆☆

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

परमात्मा एक है, उसका नाम सत्य है। वह सृष्टि का रचयिता सर्वशक्तिमान है। उसमें किसी तरह का भय व्याप्त नहीं है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं, वह कालातीत, अजन्मा एवं स्वयंभू है और गुरु-कृपा से उसे पाया जा सकता है।

रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥

हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥ मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभु हेरा ॥ सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥ १ ॥ हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥ हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ॥ २ ॥ लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥ ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥ ३ ॥ बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा ॥ जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥ ४ ॥ १ ॥

भगवान के बिना मेरा यह मन रह नहीं सकता। यदि गुरु मुझे प्राणपति प्रियतम हरि-प्रभु से मिला दे तो इस संसार-सागर में पुनः जन्म लेकर आना नहीं पड़ेगा॥१॥रहाउ॥ मेरे मन में प्रभु-मिलन की तीव्र लालसा लगी हुई है और अपनी आँखों से हरि-प्रभु को ही देखता रहता हूँ। दयालु, सतगुरु ने मेरे मन में परमात्मा का नाम दृढ़ कर दिया है। चूंकि हरि-प्रभु की प्राप्ति का यह नाम रूपी मार्ग ही सुगम है॥१॥ मैंने प्रिय गोविन्द, हरि-प्रभु का हरि-नाम प्राप्त किया है। हरि का नाम मेरे हृदय, मन एवं तन को बड़ा मीठा लगता है। चूंकि मेरे मुख एवं माथे पर शुभ भाग्य जाग गया है॥२॥ जिनका मन लोभ एवं विकारों में लगा रहता है, उन्हें महान् परमपुरुष परमेश्वर विस्मृत ही रहता है। ऐसे व्यक्ति स्वेच्छाचारी, मूर्ख एवं अज्ञानी ही कहलाते हैं और उनके माथे पर भी दुर्भाग्य ही विद्यमान रहता है॥३॥ गुरु से ही मुझे विवेक बुद्धि प्राप्त हुई है और गुरु से ही प्रभु प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त हुआ है। हे नानक ! गुरु से ही मुझे प्रभु नाम की प्राप्ति हुई क्योंकि प्रारम्भ से ही मेरे माथे पर ऐसा भाग्य लिखा हुआ था॥ ४॥ १॥

टोडी महला ५ घरु १ दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

संतन अवर न काहू जानी ॥ बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी ॥ ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥ १ ॥ रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी ॥ निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥ २ ॥ १ ॥

संत-महापुरुष परमात्मा के अलावा अन्य किसी को भी नहीं जानते। जगत का स्वामी जिनका भी पक्ष लेता हैं, वे हमेशा ही निश्चिंत होकर प्रभु के रंग में बेपरवाह हुए रहते हैं॥ रहाउ॥ हे ठाकुर जी! तेरा नाम रूपी शामियाना सर्वोच्च है और तेरे अलावा अन्य कोई ताकतवर नहीं। भक्तों को ऐसा हुक्म मिला है कि वे ज्ञानी बनकर प्रभु के रंग में ही मग्न रहते हैं॥ १॥ रोग, शोक, दुःख, बुढ़ापा एवं मृत्यु भक्तजनों के निकट नहीं आते। हे नानक! ऐसे भक्त निर्भीक होकर एक परमेश्वर में ही वृति लगाकर रखते हैं और उनका मन उसकी भक्ति में ही प्रसन्न रहता है ॥२॥ १॥

टोडी महला ५ ॥ हरि बिसरत सदा खुआरी ॥ ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥ बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सरप जैसे अरजारी ॥ नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥ १ ॥ गुण निधान गुण तिन ही गाए जा कउ किरपा धारी ॥ सो सुखीआ धंनु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥ २ ॥ २ ॥

भगवान को विस्मृत करने से मनुष्य सदैव ही ख्वार होता रहता है। हे परमेश्वर! जिसे तुम्हारी शरण मिली हुई है, फिर वह कैसे धोखे का शिकार हो सकता है॥रहाउ॥ भगवान के सिमरन के बिना जीना वासनाओं की अग्नि में जलने की भांति है, जिस तरह एक साँप अपने आंतरिक जहर को पालता हुआ लम्बी उम्र तक जहर की जलन में जलता रहता है। चाहे मनुष्य समूचे विश्व को जीतकर शासन कर ले परन्तु सिमरन के बिना अंत में वह जीवन की बाजी हारकर चला जाएगा॥ १॥ हे नानक! जिस पर उसने अपनी कृपा-दृष्टि की है, उसने ही गुणों के भण्डार परमात्मा का गुणगान किया है। वास्तव में वही सुखी है और उसका ही जीवन धन्य है तथा मैं उस पर ही न्यौछावर होता हूँ॥ २॥ २॥

टोडी महला ५ घरु २ चउपदे ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

धाइओ रे मन दह दिस धाइओ ॥ माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ हरि कथा हरि जस साधसंगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ ॥ बिगसिओ पेखि रंगु कसुंभ को पर ग्रिह जोहनि जाइओ ॥ १ ॥ चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरखु मनाइओ ॥ धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥ २ ॥ नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ॥ नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥ ३ ॥ परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥ पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥ ४ ॥ करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइओ ॥ नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ॥ ५ ॥ १ ॥ ३ ॥

यह चंचल मन दसों दिशाओं की तरफ भटकता फिरता है। यह माया में मग्न रहता है और लोभ के स्वादों ने इसे मोह लिया है। सत्य तो यही है कि प्रभु ने खुद ही इसे भुलाया हुआ है॥ रहाउ॥ यह एक मुहूर्त भर के लिए भी हरि कथा, हरि यश एवं साधसंगत में सम्मिलित नहीं होता। यह कुसुंभ के पुष्प का रंग देखकर बड़ा प्रसन्न होता है और पराई स्त्रियों की ओर भी देखता रहता है॥ १॥ इस चंचल मन ने भगवान के चरण-कमलों पर श्रद्धा धारण नहीं की और न ही सद्पुरुष को प्रसन्न किया है। दौड़ने को अनेक प्रकार से नश्वर पदार्थों की तरफ ऐसे दौड़ता है, जिस तरह तेली का बैल एक ही स्थान पर चक्कर लगाता रहता है॥ २॥ इसने नाम-सिमरन, दान-पुण्य एवं

स्नान इत्यादि कुछ भी नहीं किया और एक पल भर के लिए भगवान का कीर्ति-गान नहीं किया। यह विभिन्न प्रकार के झूठ अपनाकर अपने चित्त को प्रसन्न करने में लगा रहता है परन्तु अपने स्वरूप को बिल्कुल नहीं समझा॥ ३॥ इसने कोई परोपकार भी नहीं किया, न ही गुरु की सेवा एवं ध्यान किया है। यह तो केवल कामादिक विकारों की संगति एवं गोष्ठी में मग्न होकर माया के नशे में ही मतवाला बना रहता है॥ ४॥ मैं विनती करता हूँ कि मुझे साध-संगत में मिला दो, हे हरि ! तुझे भक्तवत्सल सुनकर तेरी शरण में आया हूँ। हे नानक ! मैं भागकर हरि के पीछे पड़ गया हूँ मुझे अपना बनाकर मेरी लाज रख लो॥ ५॥ १॥ ३॥

टोडी महला ५ ॥ मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥ अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ॥ रहाउ ॥ धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ ॥ दानु पुंनु नही संतन सेवा कित ही काजि न आइआ ॥ १ ॥ करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥ संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥ २ ॥ सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥ खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥ ३ ॥ भइओ अनुग्रहु जा कउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥ साधसंगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

मनुष्य सत्य को बूझे बिना व्यर्थ ही इस दुनिया में आया है। वह अनेक प्रकार की सजावट एवं बहुत प्रकार के श्रृंगार करता है परन्तु यह तो मृतक को सुन्दर वस्त्र पहनाने की भांति ही समझो॥ रहाउ॥ जैसे कोई कंजूस इधर-उधर भागदौड़ करके बड़े परिश्रम से धन एकत्रित करता है। यदि वह कोई दान-पुण्य एवं संतों की सेवा में नहीं जुटता तो वह धन उसके किसी काम में नहीं आता॥ १॥ जीव रूपी नारी सुन्दर आभूषण पहनकर अपनी सेज को बड़ी संवारती एवं श्रृंगार करती है परन्तु यदि उसे अपने प्रियतम का संयोग प्राप्त नहीं होता तो वह अपने श्रृंगारों को देख-देखकर बहुत दुखी होती है॥ २॥ मनुष्य सारा दिन मजदूरी करता रहा किन्तु वह तो व्यर्थ ही छिलके को मूसल से पीटता रहा। दूसरे की बेगार करने वाले मनुष्य की तरह उसे दुःख ही मिला है क्योंकि उसने अपने घर का कोई भी कार्य नहीं संवारा॥ ३॥ जिस पर प्रभु की कृपा हो गई है, उसके हृदय में नाम का निवास हो गया है। हे नानक ! जिसने साधुओं की संगति का अनुसरण किया है, उसे हरि-रस की उपलब्धि हो गई है॥ ४॥ २॥ ४॥

टोडी महला ५ ॥ क्रिपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥ तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥ महा पतित ते होत पुनीता हरि कीरतन गुन गावउ ॥ १ ॥ आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ ॥ जो तू देहि तही इहु त्रिपते आन न कतहू धावउ ॥ २ ॥ सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥ साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥ ३ ॥ सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥ नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

हे कृपानिधान परमात्मा ! सदैव मेरे हृदय में बसे रहो। मेरे हृदय में ऐसी बुद्धि का प्रकाश करो कि मेरी तुझ से प्रीति लग जाए॥रहाउ॥ मैं तेरे दास की चरण-धूलि प्राप्त करूँ और उसे लेकर अपने माथे पर लगाऊँ। हरि का भजन एवं गुणगान करने से मैं महापतित से पवित्र हो गया हूँ॥ १॥ तुम्हारी आज्ञा मुझे बड़ी मीठी लगती है एवं तुम जो भी करते हो, वह सब मुझे अच्छा लगता है। तुम जो कुछ भी मुझे देते हो, उससे ही मेरा मन प्रसन्न हो जाता है और मैं किसी अन्य

के पीछे नहीं दौड़ता॥ २॥ उस मालिक-प्रभु को मैं हमेशा ही अपने निकट समझता हूँ और उसकी चरण-धूलि बना रहता हूँ। यदि संतों की संगति प्राप्त हो जाए तो सहज ही प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है॥ ३॥ हे प्रभु ! तू हमारा मालिक है और हम प्राणी हमेशा ही तेरी सन्तान है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुम्हारा बालक हूँ और तुम मेरे माता-पिता हो। तेरा नाम रूपी दूध हमेशा ही मेरे मुख में पीने के लिए है॥ ४॥ ३॥ ५॥

टोडी महला ५ घरु २ दुपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मागउ दानु ठाकुर नाम ॥ अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै क्रिपा गुण गाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम ॥ धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥ १ ॥ बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥

हे परमेश्वर ! मैं तो तुझसे नाम का दान ही माँगता हूँ, चूंकि इस दुनिया से नाम के सिवाय अन्य कुछ भी मेरे साथ नहीं जाना। अतः ऐसी कृपा करो कि मुझे तेरे गुणगान का दान प्राप्त हो जाए॥ १॥ रहाउ॥ तमाम राजसुख, धन-दौलत, अनेक प्रकार के भोग रस सभी पेड़ की छाया के समान लुप्त होने वाले हैं। मनुष्य अपने जीवन में सांसारिक सुखों की उपलब्धि हेतु अनेक विधियों द्वारा चारों ओर भागदौड़ करता है परन्तु ये सभी कार्य निष्फल हैं॥ १॥ गोविन्द के सिवाय किसी अन्य पदार्थ की लालसा करना निरर्थक बात ही नजर आती है। हे नानक ! मैं तो संत-महापुरुषों की चरण-धूलि की ही कामना करता हूँ, जिससे मेरे मन को सुख की उपलब्धि हो जाए॥ २॥ १॥ ६॥

टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी को नामु मनहि साधारै ॥ जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै ॥ नामु सखाई सदा मेरै संगि हरि नामु मोकउ निसतारै ॥ १ ॥ बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै ॥ इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥ २ ॥ २ ॥ ७ ॥

प्रभु का नाम ही मेरे मन का एकमात्र सहारा है। नाम ही इस मन की आत्मा, प्राण एवं सुख है और यही हमारे लिए नित्य उपयोग में आता है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु का नाम ही मेरी जाति, मेरा मान-सम्मान एवं मेरा परिवार है। नाम मेरा सखा बनकर सदैव ही मेरे साथ है और परमेश्वर का नाम ही मेरा भवसागर से उद्धार करता है॥ १॥ जीवन में बहुत सारे विषय-विलास कहे जाते हैं परन्तु अन्तिम समय कुछ भी साथ नहीं चलता। हे नानक ! नाम ही मेरा इष्ट-मित्र है और परमेश्वर का नाम ही मेरा अक्षय भण्डार है॥ २॥ २॥ ७॥

टोडी मः ५ ॥ नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥ मुख ऊजल मनु निरमल होई है तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥ छोडि आपतु बादु अहंकारा मानु सोई जो होगु ॥ १ ॥ संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥ कहु नानक एक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥ २ ॥ ३ ॥ ८ ॥

हे श्रद्धालुओ ! परमात्मा के सुन्दर गुण गाओ, जिसके फलस्वरूप तुम्हारे सर्व प्रकार के रोग मिटने वाले हैं। गुणगान से ही तुम्हारा मुख उज्ज्वल एवं मन शुद्ध होता है और तुम्हारा

लोक-परलोक संवरने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ मैं तो बड़ी श्रद्धा से अपने गुरु के चरण धोकर उनकी निष्काम सेवा करता हूँ और अपने मन को प्रसाद रूप में गुरु के समक्ष अर्पण करता हूँ। हे सज्जनो! अपना अहंत्व, वाद-विवाद एवं अहंकार को त्याग कर भगवान की ओर से जो कुछ भी हो रहा है, उसे सहर्ष स्वीकार करो॥ १॥ संतों-महापुरुषों की सेवा में वही व्यक्ति लगता है, जिसके मस्तक पर ऐसा भाग्य लिखा होता है। हे नानक! एक परमात्मा के सिवाय कोई अन्य कुछ भी करने योग्य नहीं है॥ २॥ ३॥ ८॥

टोडी महला ५ ॥ सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥ मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥ लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥ १ ॥ सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ९ ॥

हे मेरे सतगुरु! मैं तो तुम्हारी शरण में ही आया हूँ। तेरी दया से ही मुझे हरि-नाम का सुख एवं शोभा मिलेगी और हमारी चिन्ता दूर हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ मुझे अन्य कोई शरणस्थल नजर नहीं आता, इसलिए मायूस होकर तेरे द्वार पर आ गया हूँ। तुम हमारे कर्मों का लेखा-जोखा छोड़कर यदि कर्मों के लेखे को नजर-अंदाज कर दोगे तो हमारा कल्याण हो जाएगा। मुझ निर्गुण को भवसागर से बचा लो॥ १॥ तू सदैव क्षमाशील है, सदैव मेहरबान है और सभी को सहारा देता है। दास नानक तो संतों के पीछे पड़ा हुआ है, इसलिए इस बार जन्म-मरण से बचा लो॥ २॥ ४॥ ९॥

टोडी महला ५ ॥ रसना गुण गोपाल निधि गाइण ॥ सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण ॥ जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥ १ ॥ खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ॥ अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥ २ ॥ ५ ॥ १० ॥

यदि रसना से गुणों के भण्डार परमेश्वर का गुणानुवाद किया जाए तो मन को बड़ी शांति, आत्मिक स्थिरता एवं आनंद प्राप्त होता है और सभी दुःख निवृत्त हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ प्रसन्नता के घर, परमेश्वर के चरणों की आराधना करने से भक्त जो भी कामना करते हैं, उन्हें वही प्राप्त होता है। वे जीवन एवं मृत्यु दोनों से ही स्वतंत्र होकर भवसागर को पार कर जाते हैं॥ १॥ मैंने खोज-पड़ताल करके इस तत्व पर ही विचार किया है कि भक्त तो गोविन्द परायण ही होते हैं। हे नानक! यदि अटल कुशल-क्षेम चाहते हो तो हमेशा ही नारायण का सिमरन करते रहो॥ २॥ ५॥ १०॥

टोडी महला ५ ॥ निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥ पारब्रहम प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ ॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥ १ ॥ भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ ॥ आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥ २ ॥ ६ ॥ ११ ॥

गुरु की कृपा से निन्दक अब निन्दा करने से हट गया है। जब परब्रह्म-प्रभु मुझ पर दयालु हो गया तो उसने कल्याणकारी नाम रूपी बाण से उसका सिर काट दिया॥ १॥ रहाउ॥ सत्य-मार्ग का अनुसरण करने से अब मृत्यु का जाल एवं यम भी दृष्टि नहीं कर सकते। मैंने राम-नाम रूपी रत्न धन की कमाई की है, जो खाने एवं खर्च करने से न्यून नहीं होता॥ १॥ हमारा निन्दक एक क्षण में ही भस्माभूत हुआ है और इस प्रकार उसने अपने कर्मों का फल प्राप्त

किया है। हे नानक! शास्त्र एवं वेद भी कहते हैं और सम्पूर्ण विश्व इस आश्चर्य को देख रहा है॥ २॥ ६॥ ११॥

टोडी मः ५ ॥ किरपन तन मन किलविख भरे ॥ साधसंगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे ॥ जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥ १ ॥ गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥ जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥

हे कंजूस आदमी! तेरा तन एवं मन दोनों ही किल्विष-पापों से भरे पड़े हैं। अतः संतों की पवित्र सभा में भगवान का भजन कर, चूंकि एक वही तुम्हारे पापों को ढककर तेरा कल्याण कर सकता है॥ १॥ रहाउ॥ जब शरीर रूपी जहाज में बहुत सारे छिद्र हो जाएँ तो वह हाथों से बंद नहीं हो सकते। जिसका यह जहाज है, उसकी आराधना करने से दोषी भी महापुरुषों की संगति करने से पार हो जाते हैं॥ १॥ यद्यपि कोई बातों द्वारा पर्वत को उठाना चाहे तो वह उठाया नहीं जा सकता अपितु वही स्थित रहता है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु! हम जीवों के पास कोई जोर एवं शक्ति नहीं। हम तुम्हारी शरण में आए हैं, हमारी रक्षा करो॥ २॥ ७॥ १२॥

टोडी महला ५ ॥ हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥ काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥ ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥ १ ॥ संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥ २ ॥ ८ ॥ १३ ॥

अपने मन में परमात्मा के चरण-कमलों का चिन्तन करो। परमात्मा का नाम तो वह औषधि है जो पित रूपी क्रोध एवं वात रूपी अहंकार जैसे रोगों का कुल्हाड़ा निकाल कर नाश कर देती है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा का नाम तीनों ताप-मानसिक, शारीरिक एवं क्लेश इत्यादि का नाश करने वाला है तथा दुःख नाशक एवं सुख की पूंजी है। जो व्यक्ति अपने भगवान के समक्ष प्रार्थना करता है, उसे कोई संकट नहीं आता॥ १॥ सृष्टि का रचयिता एक प्रभु ही है और संतों की कृपा से उस वैद्य रूपी नारायण की उपलब्धि होती है। हे नानक! वह हरि-परमेश्वर ही बाल बुद्धि वाले जीवों हेतु पूर्ण सुखदाता एवं सहारा है॥ २॥ ८॥ १३॥

टोडी महला ५ ॥ हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहम सुआमी वसदी कीनी आपि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप ॥ हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ॥ १ ॥ जीअ जंत होए मिहरवाना दया धारी हरि नाथ ॥ नानक सरनि परे दुख भंजन जा का बड परताप ॥ २ ॥ ६ ॥ १४ ॥

सदैव ही परमेश्वर के नाम का जाप करो, अपनी कृपा करके परब्रह्म-प्रभु ने स्वयं ही निवास करके हृदय-नगरी को शुभ गुणों से बसा दिया है॥१॥ रहाउ॥ जिसने हमें उत्पन्न किया है, उसने हमारी देखभाल की है और सारे दुःख-क्लेश मिट गए हैं। परमात्मा ने माता-पिता बनकर अपना हाथ देकर अपने दास की रक्षा की है॥१॥ उस मालिक-प्रभु ने बड़ी दया धारण की है और सभी लोग मेहरबान हो गए हैं। हे नानक! मैं तो सब दुःख मिटाने वाले उस परमात्मा की शरण में हूँ, जिसका बड़ा तेज-प्रताप है॥ २॥ ६॥१४॥

टोडी महला ५ ॥ स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥ कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे ॥ साधसंगि परम गति पाईऐ माइआ रचि बंधि हारे ॥ १ ॥ चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे ॥ नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥ २ ॥ १० ॥ १५ ॥

हे स्वामी ! हम तो तेरे दरबार की शरण में पड़े हैं। हे करोड़ों अपराध नाश करने वाले दाता ! तेरे सिवाय हमारा कौन उद्धार कर सकता है॥ १॥ हमने तो अनेक प्रकार से खोज-पड़ताल करके समस्त अर्थों पर गहन चिन्तन किया है। अंततः सत्य यही है कि संतों-महापुरुषों की संगति द्वारा ही मुक्ति मिलती है तथा माया के बन्धनों में फँसकर मनुष्य अपने जीवन की बाजी हार जाता है ॥१॥ जब मन की प्रीति ईश्वर के सुन्दर चरण-कमलों के संग लग गई तो प्यारे महापुरुषों की संगति मिल गई। हे नानक ! मैं हरि-नाम जप-जपकर आनंद करता रहता हूँ और इसने मेरे सारे रोग दूर कर दिए हैं॥ २॥ १०॥ १५॥

टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हां हां लपटिओ रे मूढ़े कछू न थोरी ॥ तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥ जो पराई सु अपनी मनूआ ॥ १ ॥ नामु संगी सो मनि न बसाइओ ॥ छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥ २ ॥ सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥ अंम्रित नामु तोसा नही पाइओ ॥ ३ ॥ काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥ गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १६ ॥

अरे मूर्ख ! निःसंदेह तू माया से लिपटा पड़ा है किन्तु इसमें तेरा मोह कुछ थोड़ा नहीं है। जिसे तू अपना समझता है, दरअसल वह तेरी नहीं है॥ रहाउ॥ अपने राम को तू एक पल भर के लिए भी पहचानता नहीं लेकिन जो (माया) पराई है, उसे तू अपनी मानता है॥ १॥ ईश्वर का नाम ही तेरा साथी है, किन्तु उसे तूने अपने मन में नहीं बसाया। जिसने तुझे छोड़ जाना है, अपना चित्त तूने उसके साथ लगाया हुआ है॥ २॥ तुमने उन पदार्थों को संचित कर लिया जो तुम्हारी भूख एवं तृष्णा में वृद्धि करते हैं। तुमने परमात्मा का अमृत नाम जो जीवन-यात्रा का खर्च है, उसे प्राप्त ही नहीं किया॥३॥ तुम तो काम, क्रोध एवं मोह रूपी कुएँ में पड़े हुए हो। हे नानक ! गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही भवसागर से पार हुआ है॥४॥१॥१६॥

टोडी महला ५ ॥ हमारै एकै हरी हरी ॥ आन अवर सिञाणि न करी ॥ रहाउ ॥ वडै भागि गुरु अपुना पाइओ ॥ गुरि मोकउ हरि नामु द्रिड़ाइओ ॥ १ ॥ हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा ॥ हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥ २ ॥ आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥ महा अनंद कीरतन हरि सुनीआ ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥ सभु किछु तिस के ग्रिह महि आइआ ॥ ४ ॥ २ ॥ १७ ॥

हमारे मन में तो एक परमेश्वर ही बसा हुआ है तथा उसके अलावा किसी अन्य से हमारी जान-पहचान ही नहीं॥रहाउ॥ अहोभाग्य से मुझे अपना गुरु प्राप्त हुआ है तथा गुरु ने मुझे परमेश्वर का नाम दृढ़ करवाया है॥१॥ एक परमेश्वर ही हमारा जाप, तपस्या, व्रत एवं जीवन आचरण बना हुआ है। एक ईश्वर का ध्यान-मनन करने से हमारी सब कुशलक्षेम बनी हुई है॥२॥ भगवान का भजन ही हमारा जीवन-आचरण, व्यवहार एवं श्रेष्ठ जाति है तथा उसका कीर्तन सुनने से महा आनंद

मिलता है॥३॥ हे नानक! जिसने ठाकुर जी को पाया है, उसके हृदय-घर में सबकुछ आ गया है॥ ४॥ २॥ १७॥

टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै ॥ गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ हउ ढूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥ गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥ १ ॥ इह बुधि पाई मै साधू कंनहु लेखु लिखिओ धुरि माथै ॥ इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥ २ ॥ १ ॥ १८ ॥

मेरा यह सुन्दर मन भगवान के प्रेम-रंग की कामना करता है किन्तु बातों द्वारा उसका प्रेम नहीं मिलता॥ रहाउ॥ उसके दर्शन करने के लिए मैं गली-गली ढूँढती हुई देख रही हूँ। अब गुरु को मिलने से ही मेरा भ्रम दूर हुआ है॥१॥ यह बुद्धि मुझे साधु से उपलब्ध हुई है, चूंकि मेरे माथे पर प्रारम्भ से ऐसी तकदीर लिखी हुई थी। हे नानक! इस विधि द्वारा अपने नेत्रों से मैंने भगवान के दर्शन प्राप्त किए हैं॥२॥१॥१८॥

टोडी महला ५ ॥ गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीओ रे ॥ हीओ महराज री माइओ ॥ डीहर निआई मोहि फाकिओ रे ॥ रहाउ ॥ घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइओ रे ॥ महराज रो गाथु वाहू सिउ लुभड़िओ निहभागड़ो भाहि संजोइओ रे ॥ १ ॥ सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओ रे ॥ जा को लहणो महराज री गाठड़ीओ जन नानक गरभासि न पउड़िओ रे ॥ २ ॥ २ ॥ १६ ॥

इस विमूढ़ हृदय को घमण्ड ने जकड़ रखा है। परमेश्वर की माया ने डायन की तरह हृदय को अपने मोह में फँसाया हुआ है॥रहाउ॥ यह सदैव ही अत्याधिक धन-दौलत की कामना करता रहता है परन्तु तकदीर में लिखी हुई उपलब्धि के बिना वह इसे कैसे पा सकता है? वह भगवान के दिए हुए धन से फँसा हुआ है। यह दुर्भाग्यशाली हृदय स्वयं को तृष्णा की अग्नि से जोड़ रहा है॥१॥ हे मन! तू साधुजनों की शिक्षा को ध्यानपूर्वक सुन, इस तरह तेरे समस्त पाप पूर्णतया मिट जाएँगे। हे नानक! जिसकी किस्मत में ईश्वर-नाम की गठरी से कुछ लेना लिखा हुआ है, वह गर्भ-योनि में नहीं आता और उसे मोक्ष मिल जाता है॥ २॥ २॥ १६॥

टोडी महला ५ घरु ५ दुपदे १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन ॥ पंच दोख अरु अहं रोग इह तन ते सगल दूरि कीन ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते गुर को सबदु मेरै हीअरै दीन ॥ रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिओ प्रेम गहिओ मोहि हरि रंग भीन ॥ १ ॥ पेखिओ लालनु पाट बीच खोए अनद चिता हरखे पतीन ॥ तिस ही को ग्रिहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिस ही को धीन ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥

मेरे प्रभु ने मुझ पर ऐसा उपकार किया है कि मेरे पाँच दोष-काम, क्रोध, लोभ, मोह, घमण्ड तथा अहंकार की बीमारी को इस शरीर से दूर कर दिया है॥रहाउ॥ उसने मेरे बन्धनों को तोड़कर, विषय-विकारों से स्वतंत्र करवा कर मेरे हृदय में गुरु के शब्द को स्थापित कर दिया है। उसने मेरे रूप एवं कुरूपता की ओर बिल्कुल विचार नहीं किया और मुझे प्रेम से पकड़कर अपने हरि-रंग में भिगो दिया है॥ १॥ अब बीच का भ्रम का पर्दा दूर होने से प्रियवर के दर्शन हो गए

हैं, जिससे मेरा चित्त बड़ा आनंदित एवं हर्ष से तृप्त हो चुका है। हे नानक ! यह शरीर रूपी घर उस प्रभु का ही है, वही हमारा ठाकुर है और हम उसके अधीनस्थ हैं॥ २॥ १॥ २०॥

टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन की प्रीति ॥ एही करम धरम जप एही राम नाम निरमल है रीति ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति ॥ बाट घाट तोसा संगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि सखा कीत ॥ १ ॥ संत प्रसादि भए मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत ॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि भगतन के मीत ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥

हे मेरी माँ ! मेरे मन की प्रीति परमात्मा से लग गई है। यह प्रीति ही मेरा कर्म, धर्म एवं पूजा है और राम-नाम का भजन ही मेरा निर्मल आचरण है॥रहाउ॥ सर्वदा ही उस प्रभु के दर्शन प्राप्त करना मेरे जीवन का अमूल्य धन एवं प्राणों का आधार है। मार्ग एवं किनारे पर प्रभु के प्रेम का यात्रा-व्यय मेरे साथ है चूंकि अपने मन को मैंने भगवान का साथी बना लिया है॥ १॥ संतों के आशीर्वाद से मेरा मन शुद्ध हो गया है तथा भगवान ने कृपा करके मुझे अपना बना लिया है। हे नानक ! ईश्वर का भजन-सिमरन करने से ही सुख की उपलब्धि हुई है, सृष्टि-रचना एवं युगों के आरम्भ से ही वह अपने भक्तों का घनिष्ठ मित्र है॥ २॥ २॥ २१॥

टोडी महला ५ ॥ प्रभ जी मिलु मेरे प्रान ॥ बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान ॥ कोटि राज नाम धनु मेरै अंम्रित द्रिसटि धारहु प्रभ मान ॥ १ ॥ आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान ॥ तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥

हे प्रभु जी ! तुम ही मेरे प्राण हो, अतः मुझे मिलो। मेरे हृदय से एक पल भर के लिए भी विस्मृत मत होइए और अपने भक्त को पूर्ण नाम दान दीजिए॥रहाउ॥ हे मेरे प्रियतम, हे अन्तर्यामी ! तू बड़ा चतुर एवं बुद्धिमान है, अतः मेरा भ्रम दूर करके मेरी रक्षा करो। हे माननीय प्रभु ! मुझ पर अपनी अमृत-दृष्टि धारण करो, चूंकि तेरा नाम ही मेरे लिए राज के करोड़ों सुखों एवं धन-दौलत के बराबर है॥१॥ हे समर्थ प्रभु ! मेरी रसना आठों प्रहर तेरा गुणगान करती है और तेरा यश सुनकर मेरे कान पूर्णतया तृप्त हो जाते हैं। हे जीवों के दाता ! मैं तेरी ही शरण में आया हूँ और नानक तुझ पर सदा-सर्वदा ही कुर्बान जाता है॥ २॥ ३॥ २२॥

टोडी महला ५ ॥ प्रभ तेरे पग की धूरि ॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥ रहाउ ॥ दह दिस रवि रहिआ जसु तुमारा अंतरजामी सदा हजूरि ॥ जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥ १ ॥ धंध बंध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर ॥ सुख संपति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥

हे प्रभु ! मैं तेरे चरणों की धूल चाहता हूँ। हे दीनदयाल ! हे प्रियतम ! हे मनमोहन ! कृपा करके मेरी अभिलाषा पूरी करो॥रहाउ॥ हे अन्तर्यामी प्रभु ! तू सदैव ही मेरे साथ रहता है और तेरा यश दसों दिशाओं में फैला हुआ है। हे सृष्टिकर्त्ता ! जो व्यक्ति तेरा यशोगान करते हैं, वे कभी भी दुःखी होकर नहीं मरते॥१॥ संतों-महापुरुषों की संगति करने से उनके माया के बन्धन धंधे एवं समस्त चिन्ताएँ मिट जाती हैं। हे नानक ! इस मन की जितनी भी सुख-संपति एवं भोग इत्यादि है, वे सभी भगवान के नाम के बिना क्षणभंगुर ही समझो॥ २॥ ४॥ २३॥

टोडी मः ५ ॥ माई मेरे मन की पिआस ॥ इकु खिनु रहि न सकउ बिनु प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ सिमरउ नामु निरंजन करते मन तन ते सभि किलविख नास ॥ पूरन पारब्रहम सुखदाते अबिनासी बिमल जा को जास ॥ १ ॥ संत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेटे गुणतास ॥ सांति सहज सूख मनि उपजिओ कोटि सूर नानक परगास ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥

हे मेरी माई ! मेरे मन की प्यास बुझती नहीं अर्थात् प्रभु-दर्शनों की प्यास बनी हुई है। मैं तो अपने प्रियतम-प्रभु के बिना एक क्षण भर के लिए भी रह नहीं सकता और मेरे मन में उसके दर्शन करने की आशा ही बनी हुई है॥रहाउ॥ मैं तो उस निरंजन सृष्टिकर्ता का ही नाम-सिमरन करता हूँ, जिससे मेरे मन एवं तन के सभी पाप नाश हो गए हैं। वह पूर्ण परब्रह्म सदा सुख देने वाला और अनश्वर है, जिसका यश बड़ा पवित्र है॥१॥ संतों की अपार कृपा से मेरे सभी मनोरथ पूरे हो गए हैं और गुणों का भण्डार परमात्मा अपनी कृपा करके मुझे मिल गया है। हे नानक ! मेरे मन में करोड़ों सूर्य जितना प्रभु ज्योति का प्रकाश हो गया है और मन में सहज सुख एवं शांति उत्पन्न हो गई है॥ २॥ ५॥ २४॥

टोडी महला ५ ॥ हरि हरि पतित पावन ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ सुंदरु सुघड़ु चतुरु सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन ॥ निरमल रूप अनूप सुआमी करम भूमि बीजन सो खावन ॥ १ ॥ बिसमन बिसम भए बिसमादा आन न बीओ दूसर लावन ॥ रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥ २ ॥ ६ ॥ २५ ॥

हे पतितपावन परमात्मा ! तू ही जीवों को प्राण, मान-सम्मान एवं सुख देने वाला है। तू अंतर्यामी ही हमारे मन को भाया है॥रहाउ॥ हे प्रभु ! तू बहुत सुन्दर, समझदार, चतुर एवं सबकुछ जानने वाला है। तू अपने दास के हृदय में निवास करता है और तेरे भक्त हमेशा ही तेरे गुण गाते रहते हैं। हे मेरे स्वामी ! तेरा रूप बड़ा निर्मल एवं अनूप है। मनुष्य का शरीर कर्मभूमि है और वह जो कुछ भी अच्छा-बुरा इसमें बोता है, वह वही कुछ खाता है॥१॥ मैं उसकी आश्चर्यजनक लीलाएँ देखकर बहुत चकित हो गया हूँ तथा उस प्रभु के बराबर मैं किसी अन्य को नहीं जानता। मैं तो अपनी रसना से उस प्रभु का भजन-सिमरन करके ही जीवित रहता हूँ और दास नानक तो सदैव ही उस पर कुर्बान जाता है॥ २॥ ६॥ २५॥

टोडी महला ५ ॥ माई माइआ छलु ॥ त्रिण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइ कर जोड़ि साध मगि चलु ॥ सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु ऊतम फलु ॥ १ ॥ बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु ॥ प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भए मल ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥

हे माँ ! यह माया केवल छल ही है। गोविन्द के भजन के बिना यह बाढ़ के जल, घासफूस की अग्नि एवं बादलों की छाया मात्र है॥ रहाउ॥ इसलिए अपनी अधिकतर चतुराई एवं बुद्धिमता को छोड़कर दोनों हाथ जोड़कर साधु-संतों के मार्ग पर चलो। मनुष्य शरीर का तो यही उत्तम फल है कि उस अन्तर्यामी परमेश्वर का ही ध्यान-सिमरन करो॥ १॥ वेद एवं साधु-महात्मा भी यही बखान करते हैं किन्तु भाग्यहीन मूर्ख मनुष्य इस भेद को समझता नहीं। हे नानक ! भक्तजन प्रेम-भक्ति में ही लीन रहते हैं और भगवान के सिमरन से उनके पापों की मैल जल गई है॥ २॥ ७॥ २६॥

टोडी महला ५ ॥ माई चरन गुर मीठे ॥ वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ ॥ गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद ढीठे ॥ असथिर भए साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥ १ ॥ बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभि झूठे ॥ नाम रतनु पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥

हे मेरी माई ! गुरु के चरण मुझे बड़े मीठे लगते हैं। अहोभाग्य से परमेश्वर गुरु-चरणों का स्नेह प्रदान करता है, गुरु के दर्शन करने से मनुष्य को करोड़ों फल मिल जाते हैं॥रहाउ॥ अच्युत अविनाशी परमेश्वर का स्तुतिगान करने से काम एवं क्रोध रूप ढीठ विकारों के मद नाश हो गए हैं। सत्य के प्रेम-रंग में मग्न हुए जिज्ञासु अटल हो गए हैं और वे बार-बार जीवन एवं मृत्यु के चक्र में नहीं पड़े॥१॥ भगवान के भजन के बिना जितने भी रस एवं रंग हैं, उन सबको दयालु संत क्षणभंगुर एवं झूठा ही मानते हैं। हे नानक ! भक्तजनों ने नाम रत्न को ही पाया है परन्तु मोहिनी माया में लिप्त नामविहीन मनुष्य जगत से व्यर्थ ही चले गए हैं॥२॥८॥२७॥

टोडी महला ५ ॥ साधसंगि हरि हरि नामु चितारा ॥ सहजि अनंदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा ॥ रहाउ ॥ गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंतु न पारावारा ॥ करु गहि काढि लीओ जनु अपुना बिखु सागर संसारा ॥ १ ॥ जनम मरन काटे गुर बचनी बहुड़ि न संकट दुआरा ॥ नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥ २ ॥ ६ ॥ २८ ॥

मैंने साधुओं की संगति में ईश्वर का नाम-स्मरण किया है, जिससे अब मेरे मन में दिन-रात सहज आनंद बना रहता है और मेरे कर्मों का शुभ अंकुर फूट गया है॥ रहाउ॥ बड़ी तकदीर से मुझे पूर्ण गुरु मिला है, जिसका न कोई अन्त है और न ही कोई ओर-छोर है। इस विष रूपी संसार-सागर में से गुरु ने हाथ पकड़कर अपने सेवक को बाहर निकाल लिया है॥१॥ गुरु के वचनों द्वारा मेरे जन्म-मरण के बन्धन कट गए हैं और अब मुझे पुनः संकट का द्वार नहीं देखना पड़ेगा। हे नानक ! मैंने तो अपने स्वामी प्रभु की शरण ली है और मैं उसे बार-बार नमन करता हूँ॥ २॥ ६॥ २८॥

टोडी महला ५ ॥ माई मेरे मन को सुखु ॥ कोटि अनंद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख ॥ देखि सरूपु पूरनु भई आसा दरसनु भेटत उतरी भुख ॥ १ ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥ नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु ॥ २ ॥ १० ॥ २६ ॥

हे माँ ! मेरे मन को सुख मिल गया है। भगवान का सिमरन करने से सभी दुःख विनष्ट हो गए हैं और यह मन राज के करोड़ों आनंद एवं सुख भोगता है॥१॥रहाउ॥ ईश्वर का सिमरन करने से करोड़ों जन्म के पाप नाश हो जाते हैं, इससे शरीर पावन हो जाता है और मन को भी बड़ा सुख मिलता है। भगवान का सुन्दर स्वरूप देखकर मेरी आशा पूरी हो गई है तथा उसके दर्शन करके मेरी भूख मिट गई है॥१॥ मेरे लिए तो हरि-परमेश्वर ही चार पदार्थ—धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष, आठ महासिद्धियाँ— अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशता, वशिता, कामधेनु एवं पारिजात वृक्ष है। हे नानक ! मैंने तो सुखों के सागर भगवान की शरण पकड़ ली है। अब मेरा जन्म-मरण मिट गया है और अब मुझे गर्भ के दुःख में नहीं पड़ना पड़ेगा॥ २॥ १०॥ २६॥

टोडी महला ५ ॥ हरि हरि चरन रिदै उर धारे ॥ सिमरि सुआमी सतिगुरु अपुना कारज सफल हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुंन दान पूजा परमेसुर हरि कीरति ततु बीचारे ॥ गुन गावत अतुल सुखु पाइआ ठाकुर अगम अपारे ॥ १ ॥ जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे ॥ नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा हरि नानक कंठ मझारे ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥

मैंने भगवान के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसा लिए हैं और अपने स्वामी सतगुरु का सिमरन करने से मेरे सभी कार्य सफल हो गए हैं॥१॥ रहाउ॥ समस्त विचारों का परम तत्व यही है कि हरि-परमेश्वर का कीर्तिगान ही पूजा एवं दान-पुण्य है। उस अगम्य एवं अपरंपार ठाकुर जी का स्तुतिगान करने से मुझे अतुलनीय सुख उपलब्ध हुआ है॥१॥ परमात्मा ने जिन भक्तों को अपना बना लिया है, वह उनके गुणों-अवगुणों पर दोबारा विचार नहीं करता। हे नानक! मैं तो हरि-नाम रूपी रत्न की शोभा सुन-सुनकर एवं उसका जाप करके ही जीवित रहता हूँ और उसे ही मैंने अपने गले में पिरो लिया है॥ २॥ ११॥ ३०॥

टोडी महला ९ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥ उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥ दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥ १ ॥ मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥ कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

मैं अपनी अधमता के बारे में क्या बताऊँ? मैं तो केवल स्वर्ण एवं नारी के स्वादों में ही फँसा रहा और कभी भी प्रभु का कीर्तिगान नहीं किया॥१॥रहाउ॥ मैंने तो इस झूठे जगत को ही सत्य समझकर उसके साथ रुचि उत्पन्न की है। मैंने दीन-बन्धु परमात्मा का कभी भी सिमरन नहीं किया, जो हमारा सदैव ही सहायक बनता है॥ १॥ मैं तो निशदिन माया में ही मग्न रहा, जिससे मेरे मन की (अहंकार रूपी) मैल दूर नहीं हुई। हे नानक! अब तो भगवान की शरण में आने के सिवाय मुक्ति प्राप्त करने का अन्य कोई उपाय नहीं है॥ २॥ १॥ ३१॥

टोडी बाणी भगतां की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥ जल की माछुली चरै खजूरि ॥ १ ॥ कांइ रे बकबादु लाइओ ॥ जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंडितु होइ कै बेदु बखानै ॥ मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥ २ ॥ १ ॥

कोई कहता है कि ईश्वर हमारे निकट ही है और कोई कहता है कि वह कहीं दूर रहता है। यह बातें तो यूं ही अनहोनी लगती हैं जैसे यह कह दिया जाए कि जल की मछली खजूर पर चढ़ रही है॥ १॥ हे अज्ञानी जीव! तू क्यों व्यर्थ बकवास कर रहा है, चूंकि जिसने भी ईश्वर को प्राप्त किया है, उसने तो इस भेद को गुप्त ही रखा है॥ १॥ रहाउ॥ तू तो पण्डित बनकर वेद की व्याख्या करता है किन्तु मूर्ख नामदेव केवल राम को ही जानता है॥ २॥ १॥

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥ पतित पवित भए रामु कहत ही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥ एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जाईं ॥ १ ॥ भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ॥ गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥ २ ॥ २ ॥

राम का नाम लेने से ही बताओ किस मनुष्य का कलंक (शेष) रह गया है ? राम नाम कहते ही पापी मनुष्य पवित्र हो गए हैं॥ १॥ रहाउ॥ राम के संग ही नामदेव की पूर्ण आस्था हो गई है। अब वह एकादशी का व्रत क्यों रखे और तीर्थों पर भी स्नान करने के लिए क्यों जाए ?॥ १॥ नामदेव कहते हैं कि राम-सिमरन रूपी शुभ कर्म करने से सुमति प्राप्त हो गई है। बताओ, गुरु की मति द्वारा राम कहकर कौन-कौन बैकुण्ठ में नहीं गए॥ २॥ ३॥

तीनि छंदे खेलु आछै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुंभार के घर हांडी आछै राजा के घर सांडी गो ॥ बामन के घर रांडी आछै रांडी सांडी हांडी गो ॥ १ ॥ बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥ देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥ २ ॥ तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥ माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥ ३ ॥ संतां मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥ नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥ ४ ॥ ३ ॥

यह तीन छंदों वाला शब्द खेल रूप है॥ १॥ रहाउ॥ कुम्हार के घर में मिट्टी के बर्तन हैं, राजा के घर में शक्ति रूपी सांडनी है और ब्राह्मण के घर में विद्या है। इस प्रकार यह बर्तन, शक्ति एवं विद्या की कहानी है॥ १॥ बनिए (दुकानदार) के घर में हींग है, भैंसे के माथे पर सींग है और मन्दिर में शिवलिंग स्थापित है। यह हींग, सींग और शिवलिंग की कहानी है॥२॥ तेली के घर में तेल है, जंगल में बेल है और माली के घर में केले हैं। यह तेल, बेल और केले की कहानी है॥३॥ संतों की सभा में गोविन्द है, गोकुल में श्याम (कृष्ण) प्रमुख है और नामदेव के हृदय घर में राम है। यह राम, श्याम और गोविन्द की कहानी है॥ ४॥ ३॥

★★★

रागु बैराड़ी महला ४ घरु १ दुपदे

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ओंकार वही एक है, जिसे सच्चे गुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

सुनि मन अकथ कथा हरि नाम ॥ रिधि बुधि सिधि सुख पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम ॥ संकर क्रोड़ि तेतीस धिआइओ नही जानिओ हरि मरमाम ॥ १ ॥ सुरि नर गण गंध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम ॥ नानक क्रिपा करी हरि जिन कउ ते संत भले हरि राम ॥ २ ॥ १ ॥

हे मेरे मन! हरि-नाम की अकथनीय कथा ध्यानपूर्वक सुन। गुरु के उपदेश द्वारा राम का भजन करो, इससे ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ, सद्बुद्धि एवं अनेक सुखों की उपलब्धि हो जाएगी॥१॥ रहाउ॥ विभिन्न आख्यान, पुराण एवं छः शास्त्र भी राम का उत्तम यश गाते हैं। तेतीस करोड़ देवताओं एवं शिवशंकर ने भी भगवान का ही ध्यान किया है परन्तु वे भी उसका भेद नहीं पा सके॥१॥ देवते, मनुष्य, गण, गंधर्व भी भगवान की महिमा गाते रहते हैं और उत्पन्न की हुई जितनी भी सृष्टि है, वह भी उसका ही यशोगान करती है। हे नानक! जिन पर परमात्मा ने अपनी कृपा की है, वही उसके भले संत हैं॥ २॥ १॥

बैराड़ी महला ४ ॥ मन मिलि संत जना जसु गाइओ ॥ हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको गुरि सतिगुरि दानु दिवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ ॥ धनु माइआ संपै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइओ ॥ १ ॥ खिनु किंचित क्रिपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ ॥ जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइओ ॥ २ ॥ २ ॥

मेरे मन ने संतजनों के संग मिलकर परमात्मा का यश गायन किया है। परमात्मा का नाम अमूल्य रत्न एवं सर्वोत्तम है और यह नाम रूपी दान मुझे गुरु सतगुरु ने प्रभु से दिलवाया है॥ १॥ रहाउ॥ जिस महापुरुष ने मुझे हरि-नाम की महिमा सुनाई है, उसे मैं अपना मन एवं तन सबकुछ अर्पण करता हूँ। जिस गुरु ने मुझे मेरे मित्र परमात्मा से मिलाया है, मैं अपनी माया, धन-संपति सर्वस्व उसे सौंपता हूँ॥ १॥ जब जगदीश्वर ने मुझ पर एक क्षण भर के लिए थोड़ी-सी कृपा की तो ही मैंने हरि-यश का हृदय में ध्यान-मनन किया। नानक को जगत का स्वामी प्रभु मिल गया है और उसका अहंकार का रोग एवं सभी दुःख-संताप दूर हो गए हैं॥ २॥ २॥

बैराड़ी महला ४ ॥ हरि जनु राम नाम गुन गावै ॥ जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि आपे कार कमावै ॥ हरि आपे ही

मति देवै सुआमी हरि आपे बोलि बुलावै ॥ १ ॥ हरि आपे पंच ततु बिसथारा विचि धातू पंच आपि पावै ॥ जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ॥ २ ॥ ३ ॥

हरि का भक्त राम-नाम का ही गुणगान करता है। यदि कोई हरि-भक्त की निन्दा करता है तो भी वह अपने गुणों वाला स्वभाव नहीं छोड़ता॥ १॥ रहाउ॥ जो कुछ भी करता है, वह स्वामी प्रभु स्वयं ही करता है और वह स्वयं ही सभी कार्य करता है। परमात्मा स्वयं जीवों को सुमति देता है और स्वयं ही (वचन बोलकर) जीवों से वचन बुलाता है॥ १॥ उस परमात्मा ने स्वयं आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी इन पाँच तत्वों का जगत प्रसार किया है और वह स्वयं ही इसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी पाँच विकार डालता है। हे नानक ! परमात्मा स्वयं ही अपने भक्तों को सतगुरु से मिलाता है और वह स्वयं ही विषय-विकारों का झगड़ा मिटा देता है॥ २॥ ३॥

बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन राम नामु निसतारा ॥ कोट कोटंतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा ॥ हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुर वीचारा ॥ १ ॥ हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥ नानक जिसु क्रिपा करे सु हरि नामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ॥ २ ॥ ४ ॥

हे मेरे मन ! राम का नाम जप, चूंकि इससे ही मोक्ष की उपलब्धि होती है। राम का नाम करोड़ों ही जन्मों के समस्त पाप नष्ट कर देता है और मनुष्य को भवसागर से पार कर देता है ॥ १॥ रहाउ॥ जगत का स्वामी प्रभु मनुष्य के शरीर रूपी नगर में ही रहता है और वह निर्भय, निर्वेर एवं निराकार है। परमात्मा हमारे समीप ही रहता है, परन्तु हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता। गुरु के उपदेश द्वारा ही परमात्मा प्राप्त होता है॥१॥ परमात्मा स्वयं ही साहूकार, स्वयं ही सर्राफ, स्वयं ही रत्न एवं स्वयं ही अनमोल हीरा है और उसने स्वयं ही सृष्टि का प्रसार किया हुआ है। हे नानक ! जिस पर वह अपनी कृपा करता है, वही हरि-नाम को खरीदता है और वही सच्चा साहूकार एवं सच्चा व्यापारी है॥ २॥ ४॥

बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि निरंजनु निरंकारा ॥ सदा सदा हरि धिआईऐ सुखदाता जा का अंतु न पारावारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि कुंट महि उरध लिव लागा हरि राखै उदर मंझारा ॥ सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अंति छडावणहारा ॥ १ ॥ जा कै हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा ॥ हरि किरपा ते पाईऐ हरि जपु नानक नामु अधारा ॥ २ ॥ ५ ॥

हे मन ! निरंजन एवं निराकार परमात्मा का जाप करो। सदा-सर्वदा सुख देने वाले परमेश्वर का ही ध्यान-मनन करना चाहिए, जिसका कोई अन्त एवं आरपार नहीं है॥१॥ रहाउ॥ माँ के उदर में ईश्वर ही जीव की रक्षा करता है, जहाँ वह जठराग्नि के कुण्ड में उल्टे मुँह पड़ा हुआ उसमें अपनी सुरति लगाकर रखता है। हे मेरे मन ! सो ऐसे ईश्वर की उपासना करो, क्योंकि जीवन के अन्तिम क्षणों में एक वही जीव को यम से स्वतंत्र कराने वाला है॥ १॥ जिस महापुरुष के हृदय में मेरा परमेश्वर निवास कर गया है, उसे सदैव ही नमन करो। हे नानक ! परमात्मा का नाम ही हमारे जीवन का आधार है परन्तु परमात्मा का सिमरन उसकी कृपा से ही प्राप्त होता है॥ २॥ ५॥

बैराड़ी महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ॥ १ ॥ तू बेअंतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥ नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे मेरे मन! ईश्वर का जाप करो और नित्य ही उसके नाम का ध्यान करते रहो। उसका ध्यान करने से जो भी कामना होती है, वही फल प्राप्त हो जाता है और फिर से कोई भी दुःख आकर नहीं लगता॥ १॥ रहाउ॥ जिससे ईश्वर से प्रीति लग जाती है, वही जप, तपस्या, व्रत एवं पूजा है। ईश्वर से प्रीति के सिवाय शेष सारी प्रीति झूठी है जो एक क्षण में ही सब भूल जाती है॥ १॥ हे ईश्वर! तू बेअंत एवं सर्वकला सम्पूर्ण है और तेरा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। नानक वंदना करता है कि हे परमेश्वर! मैं तेरी शरण में आया हूँ, जैसे तुझे उपयुक्त लगता है, वैसे ही मुझे बन्धनों से छुड़ा लो॥ २॥ ६॥

रागु बैराड़ी महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥ कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो चाहत सोई मनि पाइओ ॥ करि किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥ १ ॥ सरब सूख हरि नामि वडाई ॥ गुर प्रसादि नानक मति पाई ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

संतजनों के संग मिलकर मैंने भगवान का ही यशगान किया है और अपने करोड़ों जन्मों के दुःख दूर कर लिए हैं॥ १॥ रहाउ॥ मन में जो भी अभिलाषा थी, वही कुछ प्राप्त कर लिया है। भगवान ने कृपा करके (संतों से) मुझे अपना नाम दिलवा दिया है॥१॥ हरि-नाम की बड़ाई करने से लोक एवं परलोक में बड़ी शोभा एवं सर्व सुख प्राप्त होते हैं। हे नानक! गुरु की कृपा से ही मुझे सुमति प्राप्त हुई है॥ २॥ १॥ ७॥

☆☆☆